प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

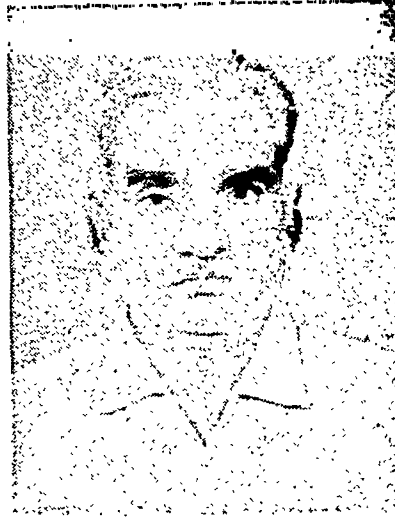
भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

मूल्य रुपये १५०)

प्रथम संस्करण

मुद्रक :
हरिदत्त शास्त्री,
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर

❁ श्रद्धांजलि ❁



ठा० गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) *आई. ए. एस. !*

जन्म : वि० सं० १९६६ चैत्र शुक्ल सप्तमी रविवार

निधन : वि० सं० २०३४ भाद्रपद शुक्ल ६ रविवार

दोहा :

मित्र मनोरथ पूरणा, कवि जंपै जग जीह,
इक तो गोरधन धारणा, दुजा गोरधन सीह ।

—सीताराम लालस

—: दूहा :—

सांई तूं वडा धणी, तूझ न वडा कोय।
तूं जिन्नां सिर हत्थ दे, से जग वडा होय॥
सांई सूं सब कुछ हुवै, बंदा सूं कुछ नांहि।
राई सूं परबत हुवै, परबत राई मांहि॥

—महात्मा ईसरदास



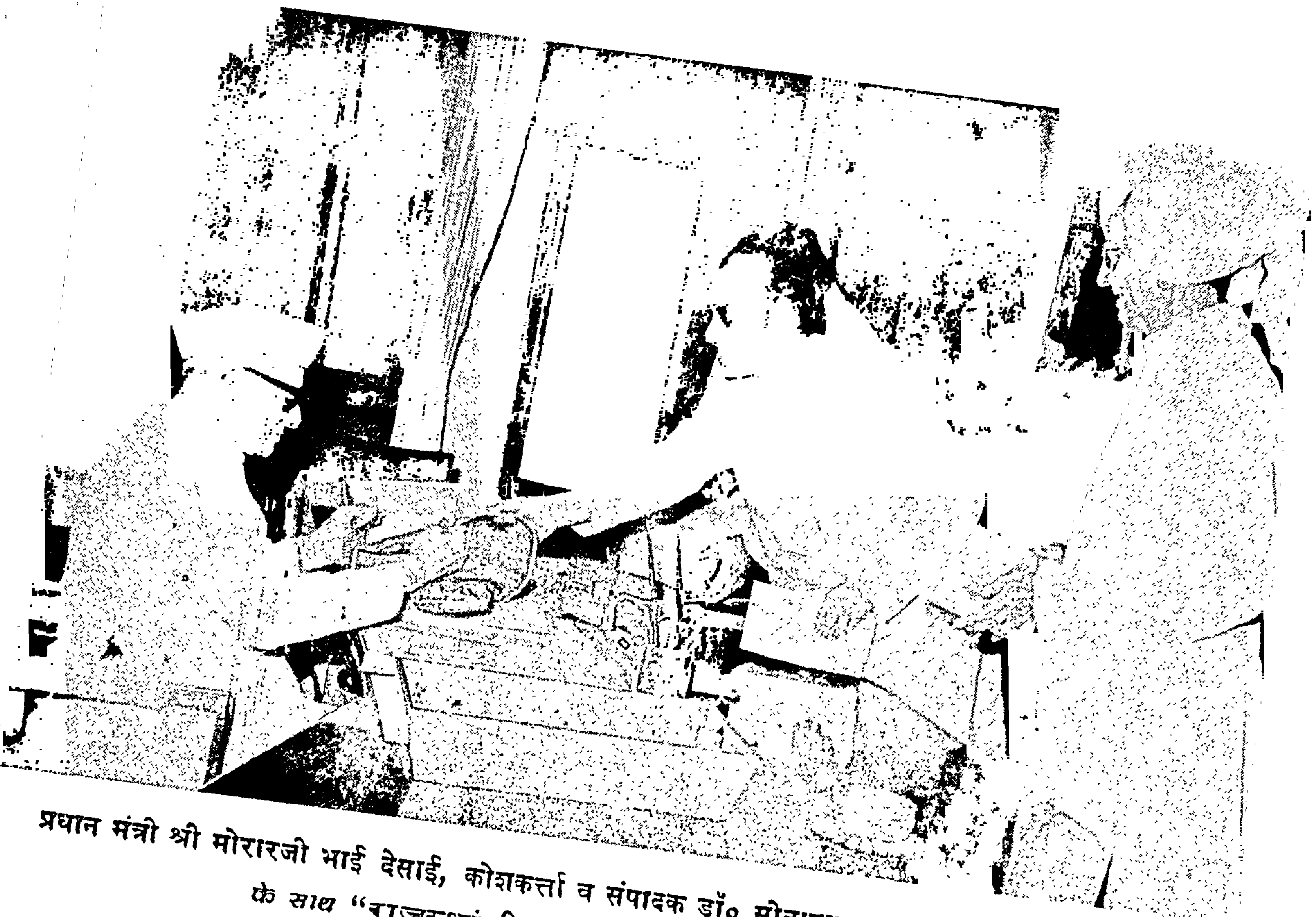
प्रधान मंत्री भवन
नई दिल्ली

सन्देश

शब्द संस्कृति के परिचायक होते हैं। व्यक्ति और समाज के विकास की प्रक्रिया में शब्द बनते हैं और प्रयोग की कसौटी पर उनकी परख होती है। 'शब्द कोष' में सांस्कृतिक इतिहास का स्पन्दन सुनाई देता है और उसकी अनुभूतियों का आभास मिलता है। इस दृष्टि से डा० सीताराम लाळस का राजस्थानी सबद कोस एक अपूर्व एवं अत्यन्त उपयोगी सांस्कृतिक उपलब्धि है। इस सबद कोस में न केवल संख्या की दृष्टि से विपुल शब्द भंडार है बल्कि उसमें व्युत्पत्ति, उदाहरण एवं अर्थवैविध्य की व्याख्या का भी समावेश हुआ है।

'सबद कोस' डा० लाळस के अध्यवसाय और निष्ठा तथा साधना का फल है। मैं साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में डा० लाळस की लगन और तपस्या की सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे देश की नई पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त करेगी।

'सबद कोस' के लिए एवं डा० लाळस के लिए मेरी शुभकामनाएं।



प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई, कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लाळस, डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी के साथ "राजस्थांनी सबद कोस" का अवलोकन करते हुए।



कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लालस, प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई व डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी



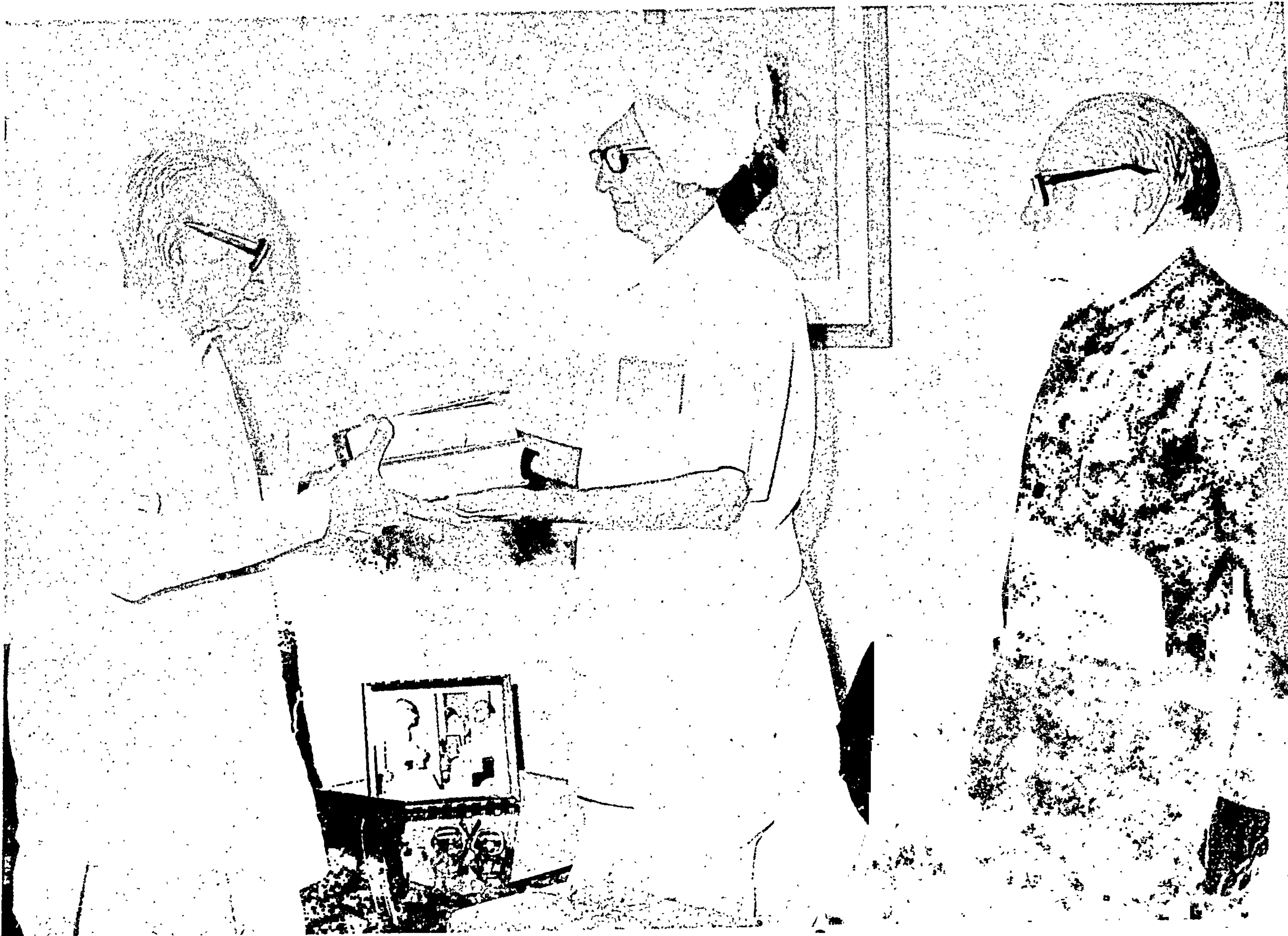
राज भवन
जयपुर

दिनांक दिसम्बर ५, १६७८

राजस्थान के वयोवृद्ध विद्वान श्री सीताराम लालस द्वारा ६ जिल्दों में लिखे हुए राजस्थानी कोश को मैं ने देखा। मुझे इस बात से अत्यन्त हर्ष तथा आश्चर्य हुआ कि इस विद्वान ने गरीबी की परिस्थितियों में भी अपने परिश्रम और लगन से कितना बड़ा काम सम्पादित किया।

श्री लालस प्रचार के कृत्रिम प्रकाश से दूर रहने वाले कर्मठ साहित्यकार हैं। इन्होंने जो कोश तैयार किया है वह राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ही। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए भी यह एक बहुत उपयोगी सन्दर्भ-ग्रन्थ है।

मैं चाहता हूं कि राजस्थान और भारत के विद्वान लोग इस कोश को देखें। राजस्थानी में और हिन्दी में इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थों की कमी है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि श्री लालस का यह परिश्रम विद्वानों द्वारा मान्य और प्रशंसित होगा।



राज्यपाल रघुकुल तिलक को कोश कर्त्ता : डॉ० सीताराम लाळस राजस्थानी सबद कोस भेंट कर रहे हैं। पास में पं. विष्णुदत्त शर्मा, श्रध्यक्ष राजस्थानी साहित्य एकेडेमी, खड़े हैं।



डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, श्री प्रताप चंद्र चंदर, शिक्षा मंत्री (भारत) एवम् डॉ० सीताराम लालस

राजस्थान सरकार

493/C.M.O. G/79

मुख्य मन्त्री, राजस्थान
जयपुर
Chief Minister of Rajasthan
JAIPUR
9 फरवरी, 1979

प्रिय श्री लालस,

आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने राजस्थानी शब्द कोष को पूरा कर लिया है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। शब्द कोष के बारे में जो जानकारी आपने मुझे भेजी है उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि आपने राजस्थानी साहित्य को एक सुदृढ़ आधार देने का ऐतिहासिक कार्य किया है। आपने न केवल इस प्रदेश के विभिन्न अंचलों में फैले हुए शब्दों को ढूँढा है बल्कि उनके अर्थ और वैज्ञानिक व्याख्या के साथ उनके प्रयोगों को जिस प्रकार संकलित किया है उसने सचमुच में इस कोष को राजस्थानी जन-जीवन के विश्व कोष के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

मैं आशा करता हूँ कि आपकी अनवरत तपस्या और सतत् साधना ने राजस्थानी साहित्य के निर्माण और आधुनिकरण की दिशा में एक बुनियादी आधार खड़ा किया है और मुझे विश्वास है कि ब्य में इसी आधार पर राजस्थानी भाषा का भवन खड़ा होगा। आपका यह प्रयत्न सचमुच में सराहनीय है और इसके माध्यम से न केवल राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि होगी बल्कि इससे हिन्दी भाषा के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान मिलेगा। मैं आपकी कठोर तपस्या और साधना के प्रतिफल के रूप में प्राप्त इस सफलता के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपका यह योगदान राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के लिए न केवल संजीवनी प्रदान करेगा बल्कि इस क्षेत्र में सदियों से व्याप्त अंधकार को दूर कर एक नई आभा और एक नये प्राण का संचार करेगा। मैं आपको इस महत्वपूर्ण उपलब्धी के लिए पुनः बधाई देता हूँ।

आपने मुझसे मिलने के लिए समय चाहा है। मार्च में बजट सत्र के दौरान मैं अधिकांशतः जयपुर में ही रहूँगा, आप जानकारी करके अवश्य पधारें मैं आपका स्वागत करूँगा।

❀ उप समिति राजस्थानी शब्द कोश की ओर से ❀

इस वृहत राजस्थानी शब्द कोश का अन्तिम खण्ड साहित्य-समाज के सम्मुख रखते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव होता है। एक लम्बी साधना के पश्चात् इस ग्रन्थ रत्न के सभी भाग प्रकाश में आने से हमारे साहित्य की एक बहुत बड़ी कमी की जहाँ पूर्ति हुई है वहाँ चौपासनी शिक्षा समिति के संकल्प को पूर्ण सफलता प्रदान करने में कोश के लिये निर्मित इस उप समिति की सेवाएँ भी सार्थक हुई हैं।

इस भाग में 'स' और 'ह' दोनों ही अक्षर एक जिल्द में समाहित कर दिये गये हैं। इसका मुख्य कारण 'ह' अक्षर की पृष्ठ संख्या का अति सीमित होना ही है। समिति ने यही उचित समझा कि कोश क्रय करने वालों पर एक अतिरिक्त जिल्द बँधाई का व्यय मूल्य निर्धारण में न पड़े।

इस खण्ड के प्रकाशन में भी भारत सरकार और राज्य सरकार से हमें जो आर्थिक सहायता उपलब्ध हुई है उसके लिये हम उन सभी सज्जनों का भी आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य में हमारी विभिन्न प्रकार से सहायता की है। कोश की उप समिति के मन्त्री श्री नारायणसिंहजी माणकलाव ने जिस तत्परता और सूझबूझ से कार्य को गति देने में हमारी सहायता की है उसके लिए उन्हें अनेक धन्यवाद देते हैं। साथ ही हमारे वयोवृद्ध मनीषी डॉ० सीतारामजी लालस के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं कि उन्होंने अपनी अपूर्व साधना के फलस्वरूप हमारे समाज की अविस्मरणीय सेवा की है, भगवान उन्हें दीर्घायु करे।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त, १९७८

महाराजा प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
जोधपुर

चौपासनी शिक्षा समिति की ओर से

राजस्थानी शब्द कोश के प्रकाशन का कार्य आज से 20 वर्ष पहले चौपासनी शिक्षा समिति के निर्णयानुसार राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के तत्वावधान में प्रारम्भ किया गया था। क्योंकि इस कोश की रचना का कार्य अनुभवी विद्वान् डॉ० सीतारामजी लाळस ने किया था और सम्पूर्ण कोश का अर्थ सहित प्रारूप बना हुआ तैयार था। अतः इस कार्य की प्रारम्भिक योजना बनाने और क्रियान्वित के लिए साधन आदि जुटाने का कार्य शिक्षा समिति के लिए जितना नया था उतना ही दुष्कर भी और फिर इतने बड़े साहित्यिक कार्य को उसकी गरिमा के अनुकूल नियोजित करके प्रकाश में लाना तो और भी कठिन था। परन्तु शिक्षा समिति के तत्कालीन अध्यक्ष स्वर्गीय श्री भैरूंसिंहजी खेजड़ला के धैर्य, लग्न और निष्ठा का ही परिणाम था कि आवश्यक साधन भी जुटाए जा सके और इस कार्य के लिए समुचित व्यवस्था की गई। इस कार्य में उन्हें समिति के सचिव स्व० श्री विजयसिंहजी सिरियारी का भी पूरा-पूरा सहयोग मिला।

किसी कार्य के लिए प्रारम्भ में सरकारी अनुदान प्राप्त करना और तदनुरूप उसके उपयोग की व्यवस्था आदि करना भी बड़ा ही कठिन कार्य होता है, परन्तु वह भी अति सीमित साधनों के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया। लगभग चार वर्षों के निरन्तर कार्य के पश्चात् कोश की प्रथम जिल्द लगभग एक हजार पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। इस जिल्द के प्रारम्भ में राजस्थानी भाषा और साहित्य पर विस्तृत सम्पादकीय भूमिका भी प्रकाशित की गई।

इस कार्यावधि के दौरान अनेक बाधाएँ और व्यवधान आये पर इस कार्य के महत्त्व को समझते हुए शिक्षा समिति के सदस्यों व उसके अध्यक्ष खेजड़ला ठाकुर भैरूंसिंहजी तथा कर्नल श्यामसिंहजी, श्री गोवर्धन-सिंहजी मेड़तिया, श्री विजयसिंहजी सिरियारी तथा झालावाड़ नरेश हरिश्चन्द्रजी ने पूरी दिलचस्पी के साथ हर बाधा को दूर करने का भरसक प्रयास किया और उन्हें इस कार्य को आगे बढ़ाने में सफलता मिली।

प्रथम जिल्द जब देश-विदेश के विद्वानों के हाथों में पहुँची तो इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा भाषाविदों ने की तथा उनसे उपयोगी सुझाव भी मिले, जिसके फलस्वरूप प्रोत्साहन मिलना भी स्वाभाविक था।

प्रारम्भ में इस कोश के अन्तर्गत लगभग दो लाख शब्दों को समाहित करने की योजना थी, पर बाद में नवीन सामग्री की उपलब्धि, विभिन्न बोलियों के शब्दों का आकलन तथा मुहावरों, कहावतों सहित शब्दों के सन्दर्भित अर्थों का उद्घाटन आदि शामिल कर लेने से यह योजना अनुमान से अधिक विस्तृत होती अनुभव की जाने लगी। उधर संस्थान का भी अपना कार्य विस्तार हो रहा था, फलस्वरूप यही उचित समझा गया कि शिक्षा समिति इस कार्य के लिए अपने अधीनस्थ एक उप-समिति गठित कर दे जो इस कार्य का क्रियान्वयन करती रहे।

आज के बहुधन्धी और अति व्यस्त युग में ऐसे संजीदा और अनुभवी व्यक्तियों की मानद सेवाएँ उपलब्ध होना बड़ा कठिन है जो ऐसे कार्य को पूरी दिलचस्पी से आगे बढ़ा सकें, पर इस मामले में शिक्षा समिति बड़ी भाग्यशाली रही कि समय-समय उप-समिति के लिए ऐसे योग्य सदस्य व पदाधिकारी उपलब्ध होते रहे। आज जब यह कार्य सम्पन्न हो रहा है, मैं चौपासनी शिक्षा समिति की ओर से उप-समिति के अध्यक्ष स्वर्गीय राजा साहिब देवीसिंहजी भाद्राजून, ठाकुर केसरी-सिंहजी जोजावर, ब्रिगेडियर आपजी रणधीरसिंहजी और वर्तमान अध्यक्ष महाराज प्रह्लादसिंहजी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने इस राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य को अपना बहुमूल्य समय देकर इसे सम्पन्न कराने में अपूर्व योगदान दिया। शिक्षा समिति उनकी सदैव ऋणी रहेगी। यहाँ मैं उन दो सज्जनों—स्व० श्री गोवर्धनसिंहजी मेड़तिया व स्व० कर्नल श्यामसिंहजी रोड़ला का विशेष रूप से सादर उल्लेख करना भी परम कर्त्तव्य समझता हूँ जिनकी लगन, सूझबूझ और मातृभाषा के प्रति ममत्व का ही परिणाम था कि इस कोश का निर्माण इस रूप में सम्भव हो सका। उनका निरन्तर हार्दिक सहयोग इस कार्य में शिक्षा समिति को मिलता रहा। कर्नल श्यामसिंहजी ने तो तन, मन और धन से आजीवन इस कार्य में पूरी निष्ठा के साथ सहयोग दिया और जब-जब कोश के कार्य में कोई कठिनाई आई तो उस कठिनाई से उसे उबारने में कर्नल साहिब ने महत्ती भूमिका निभाई और अनासक्त भाव से वे इस कार्य के प्रेरणा-पुंज बने रहे।

यहाँ पर मैं चौपासनी विद्यालय के भूतपूर्व प्राध्यापक और जोधपुर नरेश के पुस्तक प्रकाश के अध्यक्ष आशुकवि स्वर्गीय नित्यानन्दजी दाधीच का भी श्रद्धाभाव से स्मरण करता हूँ जिन्होंने कोश के शब्दों की व्युत्पत्ति आदि द्वारा संशोधन किया और अपनी पाण्डित्यपूर्ण सेवाएँ मातृभाषा के लिए प्रदान की।

इन महानुभावों के अलावा समय-समय पर अनेक व्यक्तियों, राजकीय पदाधिकारियों, राजनेताओं आदि का सहयोग व सहमति इस कार्य में हमें मिली जिनका उल्लेख समय-समय पर कोश की विभिन्न जिल्दों में किया गया है, उनके प्रति एक बार पुनः मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इस अवसर पर कोश कार्यालय के समय-समय पर कार्यरत सब सभी कर्मचारियों को भी मैं उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता और सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

यहाँ कोश के मुद्रण व प्रकाशन में सहयोग देने वाले साधना प्रेस के मालिक हरिप्रसादजी पारीक और सुमेर प्रेस के मैनेजर रामदत्तजी भानजी साहिब को भी नहीं भुलाया जा सकता जिन्होंने इस विशिष्ट कार्य में अपना पूरा सहयोग दिया।

इतने बड़े राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य में बहुत बड़ी राशि का व्यय होना स्वाभाविक ही है। चौपासनी शिक्षा समिति जहाँ अपने साधनों से यह कार्य करने में यथासंभव सक्रिय रही है, वहाँ इस मामले में अपने आपको बड़ी भाग्यशाली मानती है कि राजस्थान राज्य सरकार और भारत सरकार दोनों ने ही इस कार्य के लिए समुचित अनुदान की राशि समय-समय पर प्रदान कर हमारे इस कार्य को सुगम बनाया। एतदर्थ हम दोनों ही सरकारों के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

इस कोश यज्ञ की पूर्णाहुति पर शिक्षा समिति के समस्त सदस्य और शुभचिंतक तथा योगदान देने वाले सज्जन आह्लादित हैं पर सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि इस कोश के निर्माता डॉ० सीताराम जी लालस की सम्पूर्ण जीवन-आराधना का प्रतिफल मातृभाषा के लिए अमृत-घट की तरह निकल कर बाहर आ गया है अतः उनके असीम आनन्द की थाह लेना जितना कठिन है उतना ही कठिन है शब्दों में उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना। शिक्षा समिति ही क्या, भविष्य में में आने वाली विद्वानों की पीढ़ियाँ और साहित्य प्रेमी इनके चिर कृतज्ञ रहेंगे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त, १९७८

डॉ० गोविन्दसिंह
मन्त्री
चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर

॥ श्री ॥

❀ निवेदन ❀

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नहीं, अपणी माया, ईश ।	रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूडो होय, साच अमर संसार में ।	कैती धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम ।	इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री ।	आवे इण एवाह ईशर किरपा सूं उदय ॥४॥
खत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल अखै ।	दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगै ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भसावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरु हुवो।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण री कोई आधुनिक कोश नहीं हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा संग्रह रो उण ने काफी अनुभव है। श्री सीताराम जी इण काम सारु तैयार हो गया ने म्हें दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरुरत हुई तो उण बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज की। इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवी। सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनु तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कांम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफैर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बद हो गई, इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही। म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जवाब उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु. ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई। उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत वातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्यूंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हैं पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीवांज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासनी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५९ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सूं लोन पर ले लिया जद सूं वे इण संस्थान में काम करण लागा।

इण कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर री घणी मदद ही इण वास्ते बैकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो :—

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्रों (मैकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, उन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच-बीच में हर समय मेरे साथ विचार-विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। दस्तखत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरै ललगा विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबन्धी जांच वो शोध रो काम सारू सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनूं कोश वाली स्लिप कोपिया राख रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है :—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani Language can no Longer be denied.

Sd. W. S. Allen M. A., P. H. D.
Professor Comprative Philology
in the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरू होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मह चारणरो गुणी वण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत वेलो ॥१॥
लूटगा राजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड़ लाडा ॥२॥
मेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । मिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान वरसे ॥३॥
पांण भर थांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो । रची नह पढण में भावलां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणई चारणों व्याकरण विधोविध, वणेगो कोश ही लाखसबदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति में हजारों खरचवो, दाद उजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह वडो कवराज मिलियो । कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह वीम मिलियो॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदीयापुर रान के कोष बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन घर के ।
प्रांत को प्रबल भाषा प्रतिष्ठत परम्परा विबुधन दीनमाल वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं में रची नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूबत है माय भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है ।
जीवित उठेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है ।

Sd. हु० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. सत्येन्द्रप्रकाश गुप्ता

—— भूमिका ——

लेखक : डॉ० हीरालाल माहेश्वरी,
एम.ए., एल्.-एल् बी., डी.फिल्., डी.-लिट्.
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थानी-हिन्दी के वृहत् कोश—'राजस्थांनी सबद कोस,' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की इस अन्तिम जिल्द में भूमिका लिखना मानों सूर्य को दीपक दिखाना है। अद्यावधि प्रकाशित आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोशों में सामान्यतः और नागरी अक्षरों में प्रकाशित कोशों में विशेषतः इस कोश का अन्यतम स्थान है, यह निःसंकोच कहा जा सकता है।

साधारण पाठक को भी सरसरी तौर से देखने पर इसके महत्त्व का पता चल जाता है, तथापि श्री सीतारामजी लाळस का स्नेहानुरोध है कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ लिखूं। सो, इसका अधिकारी न होते हुए भी, इस भाषा और साहित्य के एक विद्यार्थी के नाते अपनी कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। श्री सीतारामजी लाळस की सतत दीर्घ साधना के साकार रूप इस कोश के महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए राजस्थानी भाषा और साहित्य पर दो शब्द कहने आवश्यक हैं।

राजस्थानी साहित्य अत्यन्त समृद्ध और विशाल है। इसकी अधिकांश महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अभी तक हस्तलिखित प्रतियों के रूप में ही प्राप्त हैं। इन रचनाओं की प्राप्ति और अध्ययन अत्यन्त श्रमसाध्य है। अनेक पण्डितों के प्रयासों के फलस्वरूप कुछ रचनाएँ पुस्तक रूप में सामने आई हैं और अनेक छोटी-छोटी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आई और आ रही हैं। साधनों के अभाव में आधुनिक लेखकों की बहुत सी कृतियाँ भी प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं। जो रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, उनकी प्राप्ति में भी काफी प्रयास करने पड़ते हैं। कुल मिलाकर स्थिति संतोषजनक नहीं है। एक सर्वांगपूर्ण मानक शब्द कोश के लिए उस भाषा की सभी महत्त्वपूर्ण कृतियों का सुसम्पादित रूप में प्रकाशित होना आवश्यक है। राजस्थानी के लिए यह बात अल्पांश में ही सत्य है। श्री सीतारामजी को कोश के शब्द चयन में कतिपय हस्तलिखित ग्रन्थों के अतिरिक्त अधिकतर ऐसी पुस्तकों पर निर्भर रहना पड़ा है। शब्द-चयन और रूप में इसी अनुपात से कोश की काया का निर्माण हुआ है। शब्द के अर्थ, उसके प्रयोग, व्याकरणिक परिचय, रूप-भेद, तत्सम्बन्धी मुहावरों और कहावतों तथा सम्बन्धित टिप्पणियाँ कर्ता की हैं जो इस विषय में उसके गहन पाण्डित्य की द्योतक हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास-क्रम में राजस्थानी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत से है। शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्रंश और गुर्जर या गौर्जरी अपभ्रंश का विकास हुआ है। शौरसेनी अपभ्रंश का क्षेत्र मुख्यतः मथुरा-मण्डल तथा उसके आसपास का प्रदेश था। गुर्जर अपभ्रंश का क्षेत्र गुर्जर-प्रदेश था जिसके अन्तर्गत वर्तमान राजस्थान, गुजरात तथा पंजाब, सिन्ध और मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्र सम्मिलित हैं। प्राप्त अपभ्रंश साहित्य के आधार पर अपभ्रंश को पूर्वी, पश्चिमी और उत्तरी रूपों में विभाजित किया जा सकता है। यहाँ यह भी लक्ष्यनीय है कि किसी समय अपभ्रंश पूरे उत्तर भारत में साहित्यिक भाषा की मर्यादा ग्रहण कर चुकी थी। उसका एक ऐसा सामान्य रूप था जिसका मूलाधार पश्चिमी अपभ्रंश था। पुन, प्राप्त अपभ्रंश साहित्य का बहुलांश पश्चिमी अपभ्रंश में है। इस पश्चिमी अपभ्रंश अथवा गुर्जरी अपभ्रंश की अनेक विशेषताएँ पुरानी राजस्थानी में पाई जाती हैं।

विक्रम संवत् 1100 के लगभग गुर्जरी अपभ्रंश से जिस भाषा का विकास हुआ उसके कई नाम दिये गए हैं, यथा—मरु-गुर्जर, पुरानी पश्चिमी राजस्थानी, मरु-सोरठ, जूनी गुजराती, पुरानी राजस्थानी आदि। इनमें मरु-गुर्जर नाम सर्वाधिक संगत लगता है जिससे गुजरात और मरु प्रदेश—दोनों की भाषाओं का बोध होता है। अपने उद्भव-काल से लेकर लगभग संवत् 1500 तक गुजराती और राजस्थानी एक ही थी। भाषिक दृष्टि से दोनों का इतिहास इसके पश्चात् पृथक्-पृथक् होता है।

मरु-गुर्जर या पुरानी राजस्थानी के उद्भव-काल—संवत् 1100 से लेकर वर्तमान समय तक राजस्थानी में विभिन्न शैलियों में प्रभूत परिमाण में साहित्य-रचना होती रही है। विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक 5–6 दशकों में अंग्रेजों के फैलते और सुदृढ़ होते राजनैतिक प्रभुत्व, तद्जन्य परिस्थितियों, वैचारिक परिवर्तनों आदि के कारण साहित्य की धारा मंद तो पड़ीं, पर किसी न किसी रूप में वह प्रवाहित अवश्य होती रही। वर्तमान शताब्दी में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आसपास से राजस्थानी में साहित्य-निर्माण की गति पुनः तेज हुई और उसका क्षेत्र-विस्तार हुआ। यह परम्परा अब पूरे जोर से चालू है।

मोटे रूप से इन साढ़े नौ सौ सालों के राजस्थानी-साहित्य के इतिहास को इन तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है :—

(1) प्रारम्भिक काल—सन् 11[illegible] से सन् 1500,
(2) मध्यकाल—सन् 15[illegible] से सन् 19[illegible],
(3) आधुनिक काल—सन् 19[illegible] से वर्तमान समय तक।

प्रारम्भिक काल में गद्य की मुख्य धाराएँ प्रवाहित मिलती हैं :—
(1) [illegible] (2) [illegible] और (3) धार्मिक गद्य। [illegible] की रचनाएँ [illegible] और [illegible] दोनों रूपों में प्राप्त हैं।

मध्यकाल में इनके अतिरिक्त [illegible] और [illegible] धाराएँ इस प्रकार [illegible] :—

(4) [illegible] और (5) [illegible]। इस काल में इन दोनों ही प्रकार की [illegible] की प्रचुरता रचनाएँ लिखी गईं। मुख्यतया और [illegible], बातों और [illegible] में इस काल का साहित्य [illegible] महत्वपूर्ण है। [illegible] मुख्यतः तीन धाराओं में विभाजित किया जा सकता है :—

(1) पौराणिक और धार्मिक (2) ऐतिहासिक और वीर-[illegible] तथा (3) [illegible]।

आधुनिक काल में परम्परागत रचनाओं के साथ नवीन शैली की रचनाएँ भी लिखी जाने लगीं। सन् 1940-50 तक इनमें [illegible] न होते हुए भी, देश, काल और वातावरण के अनुसार [illegible] है। इसके पश्चात् का राजस्थानी साहित्य समसामयिक [illegible], [illegible] जीवन-मूल्यों और विभिन्न परिवर्तनशील परिस्थितियों पर [illegible] भी करता है।

यहाँ यह भी उल्लेख्य है कि राजस्थानी गद्य की परम्परा प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान समय तक चलती आई है।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि इसमें विशाल और वैविध्यपूर्ण साहित्य तथा ज्ञान के [illegible] क्षेत्रों से शब्दों का आकलन, चयन और [illegible] प्रयासपूर्ण अर्थ [illegible] कार्य है। इस कोशकर्ता ने इसका [illegible] सम्पन्न किया है।

[illegible] 19 वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों से यूरोप के विद्वानों ने भारतीय विद्या से सम्बन्धित अनेक विषयों पर काम करना आरम्भ किया था। राजस्थान के गरिमामय और गौरवशाली इतिहास का सर्वप्रथम परिचय कर्नल टॉड ने अपने बहुचर्चित ग्रन्थ 'एनल्स् एण्ड एन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान' से दिया। इसका प्रथम संस्करण संवत् 18[illegible] (सन् 1829) में प्रकाशित हुआ था। [illegible] से [illegible] विद्वानों का [illegible] राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति की ओर भी आकर्षित हुआ था। अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों के [illegible] में इसका प्रमुख स्थान रहा है। स्वा-[illegible], देश की अन्य भाषाओं के साहित्यों में, इसमें [illegible] और [illegible] के आधार पर अनेकानेक रचनाएँ लिखी गईं। इस परम्परा में कविराजा श्यामलदास, म० [illegible], [illegible] गौरीशंकर हीराचन्द ओझा प्रभृति इतिहास-कारों ने राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित अपने-अपने ग्रन्थ लिखे। राजस्थानी-साहित्य के विद्यार्थी के लिए भी इनके ग्रन्थ अत्यन्त मूल्यवान हैं। समग्रता में पूर्व-आधुनिक (सन् 1527 से 1947 ईसवी) राजस्थान का इतिहास पहली बार डॉ० रघुबीरसिंहजी ने लिखा जो सन् 1949 में प्रकाशित हुआ था। अब तो राजस्थान के इतिहास-विषयक अनेक ग्रन्थ सामने आ रहे हैं।

इतिहास की भाँति राजस्थानी भाषा विषयक कार्य भी पश्चिमी पण्डितों ने प्रारम्भ किया। उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध में बाइबिल के द्वितीय खण्ड—'नए नियम' का श्रीरामपुर के बाप्तिस्त मिशन द्वारा राजस्थानी बोलियों में अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात् भारतीय आर्य भाषाओं विषयक जॉन बीम्स, रुडोल्फ हॉर्नले, भण्डारकर प्रभृति विद्वानों ने अपने-अपने ग्रन्थ लिखे पर उनमें राजस्थानी भाषा विषयक कोई विशेष बात नहीं कही गई। कैलाग के हिन्दी व्याकरण में कहीं-कहीं मारवाड़ी, मेवाड़ी और जयपुरी बोलियों का उल्लेख अवश्य है। राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वर्णनात्मक परिचय जार्ज ग्रियर्सन ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'भ.षा सर्वे' में दिया। ग्रियर्सन से कुछ पूर्व मैकालिस्टर ने जयपुरी बोली विषयक एक पुस्तक लिखी थी। ग्रियर्सन के पश्चात् सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य डॉ० टैसीटरी ने किया। उन्होंने इंडियन एंटीक्वेरी (सन 1914 से 1916) में पुरानी *पश्चिमी राजस्थानी का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रकाशित करवाया।* इसके अतिरिक्त उन्होंने एतद् विषयक कुछ टिप्पणियाँ भी लिखी थीं। इसके बाद डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ओरिजिन एण्ड डैवलपमेन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज' तथा अन्य पुस्तकों और निबन्धों में प्रासंगिक रूप से राजस्थानी की भी चर्चा की। उनकी 'राजस्थानी भाषा' नामक एक छोटी सी पुस्तिका भी पहली बार सन् 1949 में प्रकाशित हुई। तब से कई विद्वान् राजस्थानी भाषा और उसकी विभिन्न बोलियों पर विभिन्न दृष्टियों से प्रकाश डालते रहे हैं।

राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित साहित्यिक ग्रन्थों में सर्वाधिक चर्चा विवाद में रचित पृथ्वीराज रासो की हुई है। कर्नल टाड से लेकर अब पर्यन्त इस पर कुछ न कुछ लिखा जाता ही रहा है। विभिन्न पहलुओं को लेकर इस पर लिखा गया साहित्य इतना विशाल है कि वह अपने आप में एक स्वतन्त्र शोध और अध्ययन का विषय है। आधुनिक काल में राजस्थान से सम्बन्धित साहित्य और राजस्थानी साहित्य के अध्ययन में मनोरंजन, ज्ञानवर्द्धन, जिज्ञासा-पूर्ति तथा रसास्वादन के अतिरिक्त छः और उद्देश्य भी थे :—

(1) देश के इतिहास की, विशेषतः राजपूत-युग और उसके पश्चात् की टूटी कड़ियाँ जोड़ने, तद् विषयक नवीन जानकारी प्राप्त करने तथा राजस्थान के इतिहास के लिए,

(2) भारतीय आर्य भाषाओं और राजस्थानी के विकास-क्रम, तुलनात्मक अध्ययन आदि के लिए,

(3) पुनर्जागरण, शौर्य-गाथाओं, उदात्त चरित्रों और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के प्रकटीकरण हेतु, प्रेरणा-स्रोत के रूप में,

(4) राष्ट्रीय साहित्य की अनुपम धरोहर समझ कर,
(5) भारतीय विद्या के एक सुदृढ़ अंग के रूप में तथा
(6) प्रशासन की दृष्टि से—लोक-मानस, परम्पराओं, मान्यताओं आदि की जानकारी के लिए। तत्कालीन गजेटियरों में ऐसे संकेत-उल्लेख मिलते हैं।

चाहे कोई भी उद्देश्य रहा हो, उसकी प्राप्ति के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनिवार्य था और अब भी है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। लगभग साढ़े नौ सौ सालों के विशाल राजस्थानी साहित्य को सम्यक्रूपेण समझने के लिए आधुनिक पद्धति पर लिखे एक सुसम्पादित, वैज्ञानिक और सर्वांगपूर्ण वृहद् कोश की नितान्त आवश्यकता थी क्योंकि शब्दों की ईंटों से निर्मित भाषा ही वह दीवार है जिसको पार कर इस साहित्य तक पहुँचा जा सकता है। श्री सीतारामजी लाळस ने सर्वप्रथम साहित्य जगत को ऐसा कोश, इस—राजस्थानी हिन्दी-कोश के रूप में दिया है। इतना ही नहीं यह शब्द कोश राजस्थान की संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं को भी सुष्ठुरूपेण संकेतित करता है।

सन् ईस्वी की बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों से अनेक विद्वानों ने राजस्थानी साहित्य विषयक कार्य आरम्भ किए और वे तथा अनेक परवर्ती विद्वान् इस परम्परा को आगे बढ़ाते रहे। इनमें कतिपय उल्लेख्य नाम ये हैं :—

सर्वश्री पं० रामकर्ण आसोपा, पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, मुंशी देवीप्रसाद, हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० टैसं टरी, भूरसिंह शेखावत, पुरोहित हरिनारायण, मुनि जिनविजय, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह, नरोत्तमदास स्वामी डॉ० मोतीलाल मेनारिया आदि। सम्भवत: अनेक विद्वान् शब्द कोश के अभाव में चाह कर भी राजस्थानी साहित्य के अध्ययन से विरत हो गये हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

किसी भी साहित्य के स्थायित्व के लिये ये तीन आधारभूत आवश्यकताएँ हैं :—

(1) उसकी भाषा का इतिहास और व्याकरण,
(2) उसका सुसम्पादित, सर्वांगपूर्ण शब्द कोश तथा
(3) उसके साहित्य का इतिहास।

ऐसी बात नहीं है कि इन बातों की ओर विशेषत: राजस्थानी के शब्द कोश के निर्माण की ओर विद्वानों का ध्यान ही न गया हो। आधुनिक काल—पुनरुत्थान काल में इस ओर सर्वप्रथम ध्यान पण्डित रामकर्ण आसोपा का गया था और उन्होंने इसकी पूर्ति के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास भी किए थे। वैज्ञानिक पद्धति पर रचित उनका मारवाड़ी व्याकरण प्रथम बार सन् 1886 (संवत् 1953) में प्रकाशित हुआ था। इस कोटि के उत्कृष्ट व्याकरण उस समय अनेक भारतीय भाषाओं में भी नहीं लिखे गए थे। और तो और, उनका ऐसा ही एक उत्कृष्ट 'हिन्दी व्याकरण' ग्रन्थ श्री कामताप्रसाद गुरु के सुप्रसिद्ध 'हिन्दी व्याकरण' (प्रथम संस्करण—संवत् 1977) से नौ वर्ष पूर्व (संवत् 1968 में) प्रकाशित हो चुका था। यही नहीं, उन्होंने काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर एक विस्तृत हिन्दी व्याकरण भी बना कर उसको भेजा था। वह व्याकरण तो नहीं छपा; हाँ, उसकी 'अधिकांश उपयोगिता,' का उल्लेख श्री कामताप्रसाद गुरु ने अपने व्याकरण की भूमिका में किया है, अस्तु। आसोपाजी ने रतनू वीरभांण कृत 'राजरूपक', 'बाँकीदास ग्रन्थावली', भाग—एक और कविया करणीदान कृत 'सूरजप्रकास' का सम्पादन भी किया था। इनमें प्रथम दो ग्रन्थ और तीसरे का कुछ आरम्भिक अंश प्रकाशित हुआ है। उन्होंने राजस्थानी बच्चों की आरम्भिक पढ़ाई के लिए 'मारवाड़ी पैली', 'दूजी' और 'तीजी' पोथियाँ भी लिखी थीं। राजस्थानी भाषा और साहित्य के पुनरुत्थान के लिए आसोपाजी के प्रयास चिर स्मरणीय रहेंगे। प्रस्तुत सन्दर्भ में आसोपाजी का महत्त्वपूर्ण कार्य राजस्थानी कोश विषयक है। जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर सर शुकदेव प्रसाद काक के प्रोत्साहन पर उन्होंने ६० हजार शब्दों का एक सर्वांगपूर्ण राजस्थानी शब्द कोश तैयार किया तथा इसी आधार पर 20 हजार शब्दों का एक और संक्षिप्त कोश भी उन्होंने बनाया था। दुर्भाग्य से आसोपाजी के जीवन-काल में कोई कोश नहीं छप सका। सर शुकदेवप्रसादजी के देहावसान के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री धर्मनारायण काक ने तद् विषयक उपलब्ध सामग्री सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर को सौंप दी। 'कोश' वहाँ से भी प्रकाशित नहीं हो सका। वर्तमान में वह सामग्री कहाँ है इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार, आसोपाजी का एक विद्वत्तापूर्ण महान् कार्य बिना फलीभूत हुए ही काल-कवलित हो गया। वे अनेक विषयों और भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनका वृहद् कोश निश्चय ही माँ भारती का गौरव ग्रन्थ सिद्ध होता। इधर कोश की आवश्यकता तो दिनोंदिन तीव्रतर रूप में अनुभव की जाती रही।

इसी बिन्दु से प्रस्तुत कोश के कर्ता श्री सीतारामजी लाळस का कार्य-आरम्भ होता है।

यह भी एक सुखद आश्चर्य की बात है कि श्री सीतारामजी ने भी आसोपाजी की भाँति एक 'राजस्थानी व्याकरण' (प्रकाशन काल—सन् 1954) भी लिखा है तथा कविया करणीदान कृत 'सूरज प्रकास' (तीन भागों में), आढा किसना कृत छन्द शास्त्रीय ग्रन्थ रघुवरजसप्रकास' तथा गाडण केसौदास कृत 'गजगुणरूपकबन्ध' का सुसम्पादन कर उन्हें प्रकाशित करवाया है।

श्री सीतारामजी ने पहली जिल्द की भूमिका में बताया है कि कोश-निर्माण का मेरा विचार सन् 1932 में जयपुर के पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण की उत्प्रेरणा से दृढ़ हुआ। तब से लेकर प्रथम जिल्द के प्रकाशन समय – सन् 1962— लगभग 30 वर्ष तक वे यह कार्य करते रहे और जिसका नैरन्तर्य इस अन्तिम जिल्द के प्रकाशन काल—सन् 1978 तक रहा है। उनकी लगभग 46 वर्षों की निरन्तर साधना का सुफल है—यह राजस्थानी शब्द कोश। सतत

[illegible] है।

[illegible] कि इसमें पूर्व राजस्थानी के किसी [illegible] नहीं। [illegible] विभिन्न भाषाओं के प्राचीन कोशों [illegible] हैं। वे मुख्यतः तीन प्रकार के हैं :—

(१) [illegible] (यथा—डिंगल नाम-माला, नागराज डिंगल कोश, हमीर नाम-माला, अवधान माला, नाम माला; डिंगल कोश (कविराजा मुरारीदान कृत) आदि।
(२) [illegible] कोश, जैसे—उदयराम कृत 'अनेकार्थी कोश' तथा
(३) [illegible] कोश, जैसे—[illegible] दादू तथा उदयराम रचित [illegible] नाम माला आदि।

[illegible] कोशों का महत्व था जो अनेक दृष्टियों से [illegible] आज के पाठक और उपयोगकर्ता के [illegible] सीमित और प्रयोग-विधि जटिल है [illegible] आवश्यकता नहीं है। श्री सीतारामजी ने इनका [illegible] उपयोग किया है। [illegible] जा चुका है कि राजस्थानी का [illegible] गुजराती से है और दूसरी ओर हिन्दी से। [illegible] की दृष्टि से अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भाँति इसका सम्बन्ध वैदिक संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश से है। इस प्रकार, [illegible] सन्दर्भ में राजस्थानी का स्वरूप [illegible] है। [illegible] राजस्थानी शब्द कोश के निर्माण में इनमें रचित शब्द [illegible] मिलती है। संस्कृत के अमर कोश के अतिरिक्त राजा [illegible] देव बहादुर (शब्द कल्पद्रुम), तर्कवाचस्पति तारानाथ [illegible] (वाचस्पत्यम्) [illegible], मोनियर विलियम्स, तथा [illegible] आदि के संस्कृत शब्द कोश; प्राकृत-अपभ्रंश के धनपाल कृत [illegible], हेमचन्द्र कृत देशी नाम माला, विजय राजेंद्र सूरि कृत [illegible] तथा हरगोविन्द त्रिकमचन्द सेठ कृत पाइय सद्द महण्णवो; उर्दू-हिन्दी के मुहम्मद मुस्तफा खां मद्दाह कृत उर्दू-हिन्दी शब्द कोश, [illegible] भट्ट कृत उर्दू-हिन्दी कोश, रामचन्द्र वर्मा [illegible] उर्दू-हिन्दी कोश आदि, हिन्दी के वृहत् हिन्दी कोश, (ज्ञानमण्डल [illegible]), हिन्दी शब्द सागर (नागरी प्रचारिणी सभा), मानक हिन्दी कोश (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, अंतिम जिल्द सन् [illegible] में प्रकाशित), ब्रज भाषा सूर कोश, अवधी कोश, मानस शब्द [illegible] गुजराती [illegible] 'जोडणी कोश', गुजराती-इंग्लिश डिक्शनरी [illegible] आदि कोश अपने-अपने क्षेत्रों में अत्यन्त प्रसिद्ध [illegible] अंग्रेजी के [illegible] कई भारतीय भाषाओं में [illegible] प्रकाशित हो चुके हैं। श्री सीतारामजी ने इनसे [illegible] सहायता ली है। इससे प्रस्तुत कोश [illegible] वृद्धि हुई है।

[illegible] हिन्दी शब्द सागर की पद्धति पर निर्मित [illegible] शब्द और उनके प्रचलित अर्थ-भेद सहित शब्द के अर्थ देकर उनकी पुष्टि सम्बन्धित शब्द-प्रयोग के उदाहरणों से करने में, यौगिक शब्दों के सन्दर्भ में भी यही पद्धति अपनाने एवं कतिपय स्थलों पर पूर्ववर्ती कोशों की भूल सुधार करने में इसका समुत्कर्ष देखा जा सकता है। कोश को अधिकाधिक पूर्ण बनाने हेतु, सभी स्रोतों से शब्द-चयन का प्रयास भी किया गया है। इस संबंध में चार उदाहरण दिए जा रहे हैं।

प्रस्तुत कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 444 पर 'कल्हार' शब्द को संज्ञा पुल्लिंग बताते हुए उसके अर्थ—१ पुष्प २ श्वेत कमल और ३ सुगंधित कमल बताए हैं पर उदाहरण एक भी नहीं है। 'पुष्प' के लिए हमीर नाम माला का संदर्भ दिया है। प्रश्न है कि शेष अर्थ कहां से लिये ? हिन्दी शब्द सागर की दूसरी जिल्द के पृष्ठ 859 पर 'कल्हार' को संज्ञा पु० सं० बताते हुए उसके अर्थ सफेद कोई, श्वेत कमलिनी दिए हैं और उदाहरण से भी इसकी पुष्टि की है। मानक हिन्दी कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 485 पर इसके अर्थ-एक प्रकार का पौधा और उसके फूल तथा २ कमल दिए हैं किन्तु इस कोश में शब्द-प्रयोग के उदाहरण नहीं हैं। 'कल्हार' का प्रयोग अध्यात्म रामायण के अरण्य-काण्ड में इस प्रकार है :—

> इत्येवं भाषमाणौ तौ जग्मतुः सार्धयोजनम्।
> तत्रैका पुष्करिण्यासीत् कल्हार कुमुदोत्पलैः ॥१५॥

(इस प्रकार आपस में बातचीत करते हुए वे डेढ़ योजन (६ कोस) निकल गए। वहां कुमुद, कल्हार और कमलादि से सुशोभित एक पुष्करिणी (तलाई) थी।

मेहोजी रचित राजस्थानी 'रामायण' में इसका प्रयोग है :—

> लख चवरासी जीव तिरया, वणी अठारा भार।
> सातूं सायर जिणि तिरया, नवसे नदी कल्हार।

इसका रचनाकाल संवत् 1572 के आसपास है। कवि गणपति रचित 'माधवानल-कामकन्दल-प्रबन्ध' (गायकवाड़ ओरियंटल सिरीज, बड़ोदा, सन् 1942) में भी इसका प्रयोग हुआ है—पृष्ठ २८५, छन्द ३१२ तथा पृष्ठ ३१८, छन्द ६१। शब्द प्रयोग के उदाहरण देने की प्रतिज्ञा सी करके भी श्री सीतारामजी यहां ऐसा नहीं कर पाए। इस कारण यदि वे चाहते तो इस शब्द को छोड़ भी सकते थे। किन्तु उदाहरण न देकर भी उन्होंने इसको लिया। इस एक उदाहरण से उनकी बौद्धिक ईमानदारी का पता चलता है। हमीर नाम माला के साक्ष्य पर उन्होंने यह शब्द ग्रहण किया तथा प्राप्त कोशों और इतर सामग्री के आधार पर उसके अर्थ दिए।

दूसरा उदाहरण 'दिशा' विषयक है। अनेक ग्रंथों का मन्थन कर दिशा संबंधी उन्होंने जो टिप्पणियां और दिग्चक्र दिए हैं, वे उनके महत् पाण्डित्य के साथ-साथ राजस्थानी भाषा की समृद्धि के भी परिचायक हैं। इस विवेचन की तुलना परिवर्तित, संशोधित हिन्दी शब्द सागर के नवीन संस्करण के पांचवें भाग के पृष्ठ 2288–89 पर 'दिशा' के अन्तर्गत दी गई टिप्पणियों से करने पर स्पष्टतः पता

चलता हैं कि श्री सीतारामजी ने कितनी सांगोपांग अतिरिक्त जानकारी देकर 'दिशा' को स्पष्ट किया है।

तीसरा उदाहरण 'दिक्शूल' संबंधी है। हिन्दी शब्द सागर की इसी जिल्द के पृष्ठ 2270 पर इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है :—फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास जो कुछ विशेष योगिनियों के योग के कारण माना जाता है। जिस दिन जिस दिशा में कुछ विशिष्ट योगिनियों के योग के कारण इस प्रकार का वास और दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ और हानिकारक माना जाता है।' श्री सीतारामजी ने 'दिसासूळ' (सं० दिक्शूल) की यह परिभाषा दी है :—फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा मुहूर्त देखने में शूल की वह उपस्थिति जो विशिष्ट वार व नक्षत्र के कारण विशिष्ट दिशाओं में रहती है....आदि। फिर हिन्दी शब्द सागर की उल्लिखित पंक्तियों को बिना उसका नामोल्लेख किए वे लिखते हैं :—किन्तु उपर्युक्त मत भ्रमपूर्ण है। दिशाशूल काल एवं योगिनियों से पूर्णत: पृथक् है। दिशाशूल विशिष्ट वारों और नक्षत्रों के कारण केवल मुख्य दिशाओं में ही लागू होता है जबकि काल विशिष्ट वार के कारण मुख्य दिशाओं एवं उप दिशाओं पर भी लागू होता है। दिशा-शूल एवं काल की गति एक दूसरे के विपरीत होती है। दिशाशूल एवं योगिनियों में भी कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि योगिनियाँ तिथियों पर आधारित रहती हैं, उनका वारों और नक्षत्रों से कोई संबंध नहीं होता। काल व योगिनियाँ भी परस्पर पृथक् हैं क्योंकि काल विशिष्ट वार के कारण विशिष्ट दिशा अथवा उप दिशा में रहता है जबकि योगिनी की उपस्थिति विशिष्ट तिथि के कारण विशिष्ट दिशा में रहती है।

इस टिप्पणी से ही पता चलता है कि उन्होंने एक-एक शब्द पर कितना सूक्ष्म विचार किया है तथा यह कोश इस क्षेत्र में अन्य कोशों से कितना आगे है।

इसी प्रकार, 'दुगड़ियो' (पृष्ठ 1757) पर दी गई सीतारामजी की टिप्पणी और 'होरा' के अन्तर्गत दी गई हिंन्दी शब्द सागर (11 वाँ भाग, पृ० 5564) की टिप्पणी से मिलाने पर भी इस बात की पुष्टि होती है। ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

कोशकर्ता से 'डिंगळ' या 'डिंगल' शब्द पर भी ऐसी ही विस्तृत टिप्पणी की अपेक्षा थी क्योंकि इस विषय में परस्पर विरुद्ध अनेक धारणाएँ व्यक्त की गई हैं।

हिन्दी शब्दसागर के संशोधित नवीन संस्करण (सन् 1968) में 'डिंगल' को 'राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली आदि लिखते चले आते हैं' बताया है (पृष्ठ 1950)। 'मानक हिन्दी कोश' में इसके लिए 'मध्ययुग में राजस्थान में बोली जाने वाली एक भाषा जिसमें यथेष्ट साहित्य मिलता है, लिखा है (दूसरा खण्ड, पृ० 470)। 'शब्दसागर' का कथन तो बिल्कुल गलत है, 'मानक' का कथन सर्वांश में गलत न होकर आंशिक रूप में सत्य है।

अत: यहाँ 'डिंगल' पर भी दो शब्द कहने आवश्यक हैं। इस कोशकर्ता ने इसको 'राजस्थानी भाषा का एक नाम' या 'मरुभाषा' बताया है। 'राजस्थानी' शब्द के अन्तर्गत उसके दो भाषिक अर्थ दिए गए हैं :—'राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा' तथा 'इस प्रदेश की बोली'। ये अर्थ संगत हैं।

सन् 1913 में प्रकाशित श्री हरप्रसाद शास्त्री की 'प्रिलिमिनरी रिपोर्ट ऑन दि ऑपरेशन—इन-सर्च ऑफ मैन्यूस्क्रिप्टस् ऑफ बार्डिक क्रानिकल्स्' तथा उसके पश्चात् डॉ० टैसीटरी प्रभृति बहुत से विद्वानों ने 'डिंगल', 'डिंगळ' या 'डींगळ' शब्द की (साथ ही 'पिंगल' शब्द की भी) व्युत्पत्ति और उसके अर्थ को लेकर अनेक कल्पनाएँ की हैं किन्तु उनका परिणाम कुछ भी नहीं निकला, वे सभी अभी तक अनिर्णयात्मक ही हैं। (ऐसे विभिन्न मतों के लिए इन पंक्तियों के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य नामक ग्रंथ द्रष्टव्य है)। डिंगल को भाषा भी माना गया है और शैली भी। भाषा मानने वालों में भी मतैक्य नहीं है, इसकी किंचित् झलक 'शब्दसागर' और 'मानक-कोश' में दिए उल्लिखित अर्थों में भी मिलती है। इस विषय के विस्तार में न जाकर इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि डिंगल, मरुभाषा या राजस्थानी का ही पर्याय है, चाहे वह साहित्यिक हो या बोलचाल की। डिंगल के छन्दशास्त्र रचयिताओं और साहित्यकारों ने ऐसा ही समझा और माना है। पिंगळ सिरोमणी (अथ पिंगळ सिरोमणि मारवाड़ी भाषा लिख्यते), रघुनाथ रूपक गीताँ रो (मरुभूम भाषा तणों मारग, मुरभूम पाठ पिंगळ मता) तथा रघुवरजस प्रकास (मुरधर भाखा जिण निमंत, अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळ का रूपग गीत कवित, दूहा गाहा·····') में आई अनेकशः उक्तियों से मरुभाषा (जिसको कई नामों से सम्बोधित किया गया है) के स्वरूप, उसकी व्याप्ति और उसके आभोग में आने वाली सामग्री के संकेत मिलते हैं जिनसे उपर्युक्त बात सिद्ध होती है। ऐसा ही साहित्यकारों ने समझा था। इसके दो उदाहरण पर्याप्त होंगे।

१. पदम भगत ने संवत् 1545 के आसपास विभिन्न लोक-प्रचलित राग-रागिनियों में गेय 'रुकमणी मंगळ' या 'हरजी रो व्यांवलो' काव्य की रचना की थी। यह राजस्थानी के प्राचीनतम पौराणिक आख्यान काव्यों में से एक है। मेहोजी कृत रामायण, डेल्हजी कृत कथा अहमनी आदि अन्य आख्यान काव्यों की भाँति इसकी भाषा भी बोलचाल की मरुभाषा या राजस्थानी है। इसकी अनेकश: प्रतियाँ मिलती हैं, जिनमें प्राचीनतम प्रति संवत् 1669 की लिपिबद्ध है। इसमें तो नहीं पर इसके बाद में लिपिबद्ध बहुत सी प्रतियों में रचना के पुष्पिका स्वरूप यह दोहा मिलता है :—

कविता मेरी डींगळी, नहीं व्याकरण ग्यान।
छन्द प्रबन्ध कविता नहीं, केवल हर को ध्यान।

(पाठान्तर-मेरी)

[illegible] (और [illegible]) 'भाषा' को 'डींगली' [illegible] है। [illegible] कि बाँकीदास की राजस्थानी और डिंगल में [illegible] है।

2. [illegible] (समय—संवत् 1860–1923) ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ [illegible] में इसकी भाषा के लिए कहा है:—

डिंगल पिंगल संस्कृत सब समझन के काज।
मिश्रित की भाषा करी, क्षमा करहु कविराज॥

स्पष्ट है कि डिंगल भाषा है और यह 'सब समझन के काज' [illegible] भाषा भी है। सभी समझने लायक भाषा तो बोलचाल की ही हो सकती है। अतः बोलचाल की मरुभाषा और डिंगल एक ही है।

सूर्यमल्ल मिश्रण ने डिंगल उपनाम वाली मरुभाषा (डिंगल [illegible] राजस्थानी ही विशेष) का भी प्रयोग वंशभास्कर में किया है। इनके अनुसार मरुभाषा को कई लोग डिंगल भाषा भी कहते हैं (मरुभाषा डिंगलभाषा [illegible])। निष्कर्ष यह है कि 'डिंगल' का आशय राजस्थानी या मरुभाषा ही है।

जहाँ तक डिंगल शब्द के सर्वप्रथम प्रयोग का प्रश्न है, उसका श्रेय [illegible] को नहीं दिया जा सकता, जैसा कि विद्वान् अब तक मानते आए हैं। इस सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि से [illegible] ग्रन्थ 'डिंगळ सिरोमणि' ('परम्परा', भाग 13, सन् 1961–62, राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, जोधपुर) में एतद् विषयक उल्लेखों की चर्चा आवश्यक है। इसमें 'डिंगळ' (बारहट [illegible] डिंगळ री कहै, पृष्ठ 110; अथ डिंगळ नाममाळा लिख्यते पृ० 145) तथा 'उडिंगळ' (डिंगळ सिरोमणे उडिंगळ नाम माळा''' पृ० 150) दोनों शब्द रूप मिलते हैं। ऊपर के प्रथम दो उदाहरणों में '[illegible]' और 'अथ' के अन्तिम 'उ' का 'डिंगळ' के साथ जुड़कर 'उडिंगळ' शब्द होना अपेक्षाकृत अधिक संभव लगता है। इसके दो कारण हैं। एक तो इस 'नाम माळा' की पुष्पिका में स्वतंत्र रूप से 'उडिंगळ' शब्द प्रयुक्त है। दूसरे, इसी ग्रन्थ में अन्यत्र प्रयुक्त अकारान्त [illegible] यथा — भट्ट, गंग, शंकर, नागराज, काशीराम, केशव, भोज, [illegible], हरराज आदि के अन्त में 'उ' नहीं जुड़ा हुआ है। पर 'उडिंगळ' का भाव स्पष्ट नहीं है, इसको 'डिंगळ' का पूर्व रूप या मूल बताने में और विचार और प्रमाणों की आवश्यकता है। इसके सम्पादक [illegible] शर्मा ने इसकी सम्यक् परीक्षा किए बिना ही इसको जैसलमेर के कुँवर हरराज द्वारा रचित तथा रचनाकाल [illegible] संवत् 1610 और 1618 के बीच मान लिया है (सम्पादकीय, पृ० 10) जो भ्रम है। इसके कई कारण हैं। एक कारण तो यही है कि अधिकांश विद्वान् इसको कुशललाभ की रचना मानते हैं, कुँवर हरराज की नहीं। इस पर आगे विचार किया गया है। दूसरे, इसमें कुँवर हरराज के 'कुँवरपदे' (संवत् 1618) के पश्चात् प्रसिद्ध हुए कवियों की भी रचनाएँ संकलित हैं। इसमें बारहट ईसरदास और दुरसा आढ़ा के गीत दिए हुए हैं। बारहट ईसरदास का समय संवत् 1595 से 1675 है। उनके प्रारम्भिक 40 साल जामनगर में बीते थे। दुरसा आढ़ा का काल संवत् 1595 से 1708 है। उनकी विशेष प्रसिद्धि 34 साल की आयु में संवत् 1629 के आसपास हुई थी जब राजा रायसिंह कल्याणमलोत ने जोधपुर पर अधिकार के समय अन्य चारणों के साथ उनको भी एक हाथी, एक करोड़ पसाव और चार गाँव दिए थे। किन्तु जिस ढंग से इसमें इन कवियों का उल्लेख हुआ है, उससे यह हरराज के 'कुँवरपदे' की रचना तो दूर, उनके पूरे जीवनकाल—(संवत् 1634 तक) में भी रचित हुई सम्भव नहीं लगती। लखमलजी कृत तवारीख जैसलमेर, हरिदत्त गोविंद व्यास कृत जैसलमेर का इतिहास तथा गहलोत कृत जैसलमेर राज्य का इतिहास के अनुसार रावळ हरराज का देहावसान संवत् 1634 में हुआ था। तीसरे, इसमें हरराज के पुत्र भाटी भीम की प्रशंसा में माधवदास द्वारा रचित एक गीत दिया हुआ है (पृ० 155)। यह गीत भीम के रावळ बनने के बाद का रचा प्रतीत होता है। भीम अत्यन्त साहसी और वीर थे। उनके विषय में यह दोहा बहु-प्रचलित है:—

दूजा राजा शाह रे, कर में ले वारी।
भाटी भीम छोड़ायदी, नव रोजे नारी॥

चौथे, समग्र रचना में जिस रूप में कुँवर हरराज का उल्लेख हुआ है उससे यह उनकी रचना सिद्ध नहीं हो सकती। श्री अगरचन्द नाहटा प्रभृति अधिकांश लोग इसको जैन कवि कुशललाभ की रचना मानते हैं। कुशललाभ का समय लगभग संवत् 1580 से 1650 है। इस सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय हैं। एक तो इसमें जिस ढंग से कुँवर हरराज और कुशललाभ के प्रश्नोत्तर दिए हैं उनसे यह शंका होनी स्वाभाविक है कि यह कितनी और किस रूप में कुशललाभ की रचना है। दूसरे इसमें गंग भट्ट के कथन का भूतकालिक उल्लेख है (पृष्ठ 98)। गंग भट्ट तो कुशललाभ के बाद भी 12–15 साल तक जीवित रहे थे। उनकी मृत्यु संवत् 1662–1665 के बीच हुई थी (द्रष्टव्य—गंग कवित्त, भूमिका, पृष्ठ 10; ना. प्र. स., काशी)। वर्तमान में यह जिस रूप में प्राप्त है, उस रूप में इसको कुशललाभ की रचना मानने में तो संकोच होता है। यदि यह किसी अंश तक कुशललाभ की रचना मान भी ली जाए तो यह तो निश्चित ही है किसी परवर्ती लेखक ने इसमें संशोधन, संवर्द्धन करके इसका सम्पादन किया है। अतः वैज्ञानिक पद्धति पर इसके सुसम्पादन की नितान्त आवश्यकता बनी हुई है। ऐसा सम्पादन होने पर ही हम 'डिंगळ' या 'उडिंगळ' शब्दों और उनकी व्याप्ति पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार कर सकने की स्थिति में होंगे। कोशकर्ता ने 'उडिंगळ' को संदिग्ध समझकर सम्भवतः कोश में स्थान नहीं दिया जो ठीक ही किया है। असल में राजस्थानी और हिन्दी में भी सम्पादन की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। 'सम्पादन' के नाम पर अधिकांशतः या तो एक प्रति का हूबहू पाठ छपा दिया जाता है अथवा प्रति-विशेष के

पाठ को मूल का मान कर फुटनोट में शेष उपलब्ध प्रतियों के रूपान्तर और पाठान्तर दे दिए जाते हैं। यह दृष्टिकोण एकांगी है। सम्पादन की वैज्ञानिक पद्धति इससे भिन्न है, कदाचित् यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

पिंगळ-सिरोमणि के अतिरिक्त 'डिंगळ' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सुरजनदास पूनिया (संवत् 1640–1748) के एक कवित्त में मिलता है। विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त पाठ इस प्रकार है :—

कोक पढ्यां का होय, दुंनी करतूत पिछांणै।
गीता का सुध ग्यांन, ग्यांन का म्यांन न जांणै।।
अमर पढ्यां क्या होय, अमर तैं अमर न होई।
पींगळ डींगळ प्रीति, दीन घरि दीठा दोई।।
साखी सबदी तंत रस, नाद वेद गुण जांण।
सुरजन सुमत गुण उच्चरै, संमरत सुंणौ वखांण।।

सुरजनजी के 'कवित्तों' और 'रामरासौ' का रचनाकाल संवत् 1700 के लगभग है (द्रष्टव्य—इन पंक्तियों के लेखक का जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य नामक ग्रन्थ का दूसरा भाग)। कदाचित् 'डिंगळ' शब्द प्रयोग की परम्परा संवत् 1700 से भी पुरानी रही हो, तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। बाँकीदास के आश्रयदाता जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने भी डिंगळ का भाषा के रूप में प्रयोग किया है, यथा :—

डिंगळ पिंगळ संस्कृत, सब्यौ न एकौ सोध।
अखर अखर अवतारचित, पूरो मोहि प्रबोध।।

मुंशी देवीप्रसाद कृत चारण-चमत्कार (अप्रकाशित) में यह दोहा दिया गया है—(श्री सीताराम लाळस के सौजन्य से प्राप्त)। कोशकर्ता 'डिंगळ' और 'राजस्थानी' शब्दों पर अधिक प्रकाश डालता तो स्थिति और अधिक स्पष्ट होती।

राजस्थानी–शब्द कोश निर्माण में कतिपय विशेष प्रकार की कठिनाइयाँ और भी हैं, जैसे :—

(1) शब्दों के मानक रूप के स्थिरीकरण की। तद्भव और देशज शब्दों के अनेक रूप, शब्दार्थ-नियोजन में भी कठिनाई पैदा करते हैं।

(2) राजस्थानी के ध्वनि-परिवर्तनों, उदात्त, अनुदात्त ध्वनियों, अनुस्वार तथा 'ल' और 'ळ' वर्णों आदि विषयक।

कोशकर्ता ने इनका ध्यान रखते हुए शब्द-रूप और अर्थ दिए हैं तथापि कतिपय शब्दों का छूट जाना असम्भव बात नहीं है। राजस्थानी में 'र' का आगम और लोप प्राय: होता है। इसी प्रकार 'ऋ' का 'र', 'र' और लोप, 'क्ष' का 'ख', 'क्ख' आदि, छ। कश्यप ऋषि का एक नाम तृक्ष है। तृक्ष का राजस्थानी में तिखिया, तीख, तिरख, त्रख आदि रूपों में प्रयोग किया गया मिलता है, यथा :—

(1) **होतिव काज हठबाद करि, वीण विरोध विचखिया।**
एक एक तंन तीनि करि, तिणि सराप सुर तिखिया।।
(—सुरजनदासजी पुनिया कृत रामरासौ)

(2) **तांम कोड़ि तेतीस, तीख रिख तामस आया।**
वंनवासौ तंन तीनि, रीछ कपि धारै काया।
(—वही)

(3) **पूरव दिशा अपूरव वातू, रंग रळी जहाँ होय प्रभातू।**
तहाँ तिरख रिख क्रिरिया सारू, जोग ध्यान बैठे अवधारू।
(—सुरजनदासजी पूनिया कृत भोगळ पुराण)

(4) **बग दाळ‍ेव सींगी रिख सुणी, गुर गंगेव गोतम रिख गिणी।**
कपला रिख त्रख सुर सार, मारकुंड तंवर तत सार।
(केसीदासजी कृत कथा विगतावळी)

किन्तु जहाँ तक ज्ञात है, इस कोश में इस अर्थ में ऐसे शब्द नहीं दिए गए हैं। राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सुसम्पादित रूप में सामने न आना भी इसका एक मुख्य कारण है। पूर्वी राजस्थानी में क्रियान्त 'णो', 'णौ' के स्थान पर 'वो', 'वौ' का प्रयोग किया जाता है। अत: इस कोश में प्रत्येक क्रिया और उसका रूप जिसके अन्त में 'णो', 'णौ' होते हैं, को इस दूसरे 'वो, 'वौ' अन्त के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। शब्द के अनेक रूप भेदों का एक कारण यह भी है। श्री सीत रामजी ने यथासम्भव शब्द के रूप भेदों को भलीभाँति दर्शाया है। कोश में कतिपय शब्दों के रूप भेद देखने से ही इसके कर्ता के तद् विषयक प्रयास का पता चलता है। कई-कई शब्द तो ऐसे हैं जिनके 46-47 तक रूप-भेद दिए गए हैं, जैसे पहुंचाणो (पृ० 24-25) बोलाणौ (पृ० 5059) आदि। दस-दस बारह-बारह रूप तो साधारण बात है।

उदाहरणार्थ ऐसे कुछ शब्द नीचे दिए जाते हैं :—

छाव, जुधिष्ठिर, झूंबो, दिनंद, दीयौ, पपइयौ, पहरणौ, पछताणौ, बहस, बहणौ, विसम, विरुदाणौ, विकसाईजणौ, वरती, समरणौ आदि।

कोशकर्ता ने शब्द-विशेष के अनेकश: उदाहरण एकत्र कर उनके उपलब्ध सभी अर्थों को सोदाहरण देने का प्रयास किया है। साथ ही मुख्य शब्द के अन्तर्गत उसके पर्यायवाची, उससे सम्बन्धित यथा सम्भव मुहावरे और कहावतें भी दी हैं। इससे पता चलता है कि कोशकर्ता ने कोश को सर्वांगपूर्ण बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। 'सारंग' शब्द के 89 और 'वीर' शब्द के 72 अर्थ दिए गए हैं और इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप देते हुए राजस्थानी साहित्य में बहु प्रयुक्त 52 वीरों की नामावली भी दी है। अनेकश: अर्थों के लिए इन कतिपय शब्दों पर दृष्टिपात करना उचित होगा :—

कागलौ, चढणौ, जोग, वैठणौ, बहियोड़ौ, वाट, निकालियोड़ौ, दिन, लागणौ, विसम, संख, संभाळणौ, सत, सजियोड़ौ, सर, सरभ, सरस, सहज, साजियोड़ौ, सारंग, सार, सिद्ध, कुत्तौ आदि।

इतना होने पर भी अनेक ऐसे शब्द होंगे जिनके सभी अर्थ सम्भवत: नहीं दिए जा सके हों। एक उदाहरण द्रष्टव्य है। सतारा का अर्थ सप्तऋषि तथा सतारौ का एक प्रकार का वाद्य यन्त्र बताते हुए उस

पर पूरी टिप्पणी दी है। सतारो (सं० सत्वर) का अन्य अर्थ द्रुतगामी या तेज चलने वाला भी होता है। जैसे :—साता ऊंट'र घणा सतारा (—बीकानेरी ऊंट तथा जैसलमेर की)। सतारा सतारो का बहुवचन है। यह अर्थ कोश में नहीं है।

यहां से साथ मुहावरों और कहावतों का ठाठ पदे-पदे लक्षित होता है। 'बात' पर ……, तथा 'हाथ' पर 171 मुहावरे दिए गए हैं। 'बात' और 'हाथ' शब्दों के अन्तर्गत 67 कहावतें दी गई हैं। इनका नमूना निम्नलिखित शब्दों के अन्तर्गत देखा जा सकता है :—

आंख, आंधी, आणी, ऊंट, एक कण, करम, चक्कर, छाती, जीव, टको, दिन, नाम पाणी, तरवार, आदि।

मुख्य शब्दों के पर्यायवाची शब्द देकर कोश को समृद्ध किया गया है। सूरज के 127 पर्यायवाची दिए हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा, जुध, तरवार, दाता, समुद्र, मद्य, मिष, परवत, पाणी आदि के अनेक पर्यायवाची देखे जा सकते हैं।

शब्दों की यथासम्भव व्युत्पत्तियां दी गई हैं। कोशकर्ता ने इस सम्बन्ध में पं० नित्यानन्दजी शास्त्री के प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए ठीक ही स्वीकार किया है कि नित्य नवीन खोजों के फलस्वरूप व्युत्पत्तियों में मतभेद हो सकता है। शब्द की व्युत्पत्ति से उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम, तुलनात्मक अध्ययन और अर्थ में भी पर्याप्त सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतों का विवेचन कर सही निर्णयों पर पहुँचना सुधी जनों का कार्य है।

शब्द-विशेष की व्युत्पत्ति विषयक कितना मतभेद हो सकता है यह एक उदाहरण से स्पष्ट होगा। इस कोश में 'खोट' (पृ० 649) शब्द को संस्कृत 'क्षोट' से व्युत्पन्न बताया है। हिन्दी शब्दसागर (पृ० 1184) में सं० खोट = खोटा (दूषित) अंकित है। संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में इसको संस्कृत 'खोट्', से, मानक हिन्दी कोश में संस्कृत 'कूट' से तथा ब्रजभाषा सूर कोश में संस्कृत 'खोट' से निष्पन्न बताया है।

प्रस्तुत कोश यत्र-तत्र ज्ञान कोश की सीमा भी छूता है। अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंगों पर यथोचित टिप्पणियां दी गई हैं। संकरानारू, हनु, सरस्वती, मान, ऊंमती, जोगणी, साज, सिद्धी, सन्ति आदि अनेकश: शब्दों पर दी गई टिप्पणियां तथा इसके अतिरिक्त 'जोड़ी' कांगरी, 'हींदोळी' जैसे शब्दों के अन्तर्गत बनाए गए नक्शे इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप भी प्रदान करते हैं।

संक्षेप में कोश का मूल ढांचा इस प्रकार है :—(विशेष द्रष्टव्य—पहली जिल्द में कोशकर्ता की भूमिका)

(1) शब्द के व्याकरणिक रूप और व्युत्पत्ति दी गई है।

(2) अप्रयुक्त या अल्प प्रयुक्त शब्द भी लिए गए हैं।

(3) अर्थ की स्पष्टता और प्रामाणिकता के लिए शब्द-प्रयोगों के अनेकश: उदाहरण दिए गए हैं।

(4) पर्यायवाची और यौगिक शब्दों के अतिरिक्त मुख्य शब्द के साथ यथा सम्भव रूप-भेद, अल्पार्थ, महत्त्ववाची, विलोम शब्द तथा क्रिया प्रयोग भी तुरन्त बाद ही दिए गए हैं।

(5) शब्द-क्रम में देवनागरी लिपि में प्रकाशित कोशों के अनुसार अनुस्वार प्रधान प्रणाली अपनाई गई है।

(6) अनुस्वार और चन्द्र बिन्दु के स्थान पर अनुस्वार लिया गया है। ध्यातव्य है कि पुरानी हस्तलिखित प्रतियों में चन्द्र बिन्दु का द्योतक चिन्ह नहीं मिलता। राजस्थानी में विशेष ध्वनियों को प्रकट करने वाले विशेष वर्ण हैं, यथा :—ध–व़, ल–ळ, स–स़। इनमें नीचे बिन्दी वाले वर्ण पहले लिए गए हैं, जैसे—आळ के बाद आल। व़ और स़ से सम्बन्धित शब्दों को क्रमश: व और स के अन्तर्गत दिया है। छपाई में व़ और स़ वर्णों की व्यवस्था न होने से ऐसा किया गया है।

(7) शब्द कोशों में अर्थों का महत्त्व सर्वाधिक होता है। उनका उपयोग मुख्यत: अर्थ, परिभाषा मानक रूप, वर्तनी या व्याकरण के लिए किया जाता है। इसमें शब्द के विभिन्न अर्थों की संख्या देकर, पर्याय एवं व्याख्या दोनों विधियां अपनाई गई हैं। उसको (शब्द को) अलग-अलग वर्गों में बांटा गया है; साथ ही विवरण भी दिया गया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—तर, दाय, धजर, धू आदि।

यहां यह संकेत करना भी अनावश्यक न होगा कि इसमें 'ड' और 'ड़' वर्णों के क्रम में हिन्दी कोशों से कुछ भिन्नता है। इसमें 'ड़' वर्ण को 'क' वर्ग के अन्तर्गत लेकर उसी अनुसार वर्णानुक्रम रखा है, जबकि हिन्दी में 'ट' वर्ग के वर्ण 'ड' के पश्चात् 'ड़' रखा जाता है। तद्नुसार इस कोश में 'खग्रास' के पश्चात् 'खड़' शब्द है, जबकि हिन्दी शब्द सागर में इसके पश्चात् 'च' वर्ग का 'खचन' शब्द है। 'सागर' में 'खड़' शब्द 'ट' वर्ग के अन्तर्गत 'खड़ंगा' के बाद आया है (पृ० 1122)।

कोश की काया का निर्माण जिन रचनाओं के शब्दों को लेकर हुआ है उनका उल्लेख कोशकर्ता ने अपनी भूमिका में किया है। राजस्थानी साहित्य की चारण शैली के काव्य की शब्दावली अपेक्षया कठिन है। इसको सम्यक् रूपेण समझने वाले विद्वान् इने-गिने ही हैं और उनकी संख्या भी कम होती जा रही है। इस प्रकार की शब्दावली के अर्थों की तो अति शीघ्र बहुत ही आवश्यकता थी। यह भी विचित्र संयोग की बात है कि श्री सीतारामजी लाळस स्वयं एक चारण हैं तथा इस शैली की काव्य-परम्पराओं और शब्दावली से सुपरिचित हैं। इस कोश का यह सर्वाधिक सबल पक्ष कहा जा सकता है।

चारण शैली का एक बड़ा भाग ऐतिहासिक और वीर रसात्मक काव्य के रूप में है, यह लिख आए हैं। योद्धा, युद्ध, उसके विभिन्न उपकरण आदि आदि से सम्बन्धित सभी शब्दों का सूक्ष्म परिचय इस कोश में मिलता है। शस्त्र विशेष के पृथक् पृथक् अंगों के नामों के लिए बानगी के तौर पर तलवार के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित ये शब्द

द्रष्टव्य हैं :—कंठी, कलसियौ, खजानो, नळ, पेटा, पीपळो, टोंक, मोगरौ, बतासौ, थेलौ आदि। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न बनावटों के आधार पर शस्त्र-विशेष के अनेक नाम राजस्थानी में प्रचलित हैं। इनका सम्यक् परिचय भी कोशकर्ता ने दिया है; यथा—तलवार के विभिन्न नाम रूमीसूरा, सोसनपता, मगरेब, लालूवाड़, देवीकवच, हुसैनी, हलबी, सिरोही, माड़ आदि।

कोश में पूर्व लिखित शेष चार शैलियों की रचनाओं के शब्दों को भी स्थान मिला है। यह भी प्रशंसनीय है कि ज्यों-ज्यों कोशकर्ता को अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्राप्त होती गईं, वह उनका उपयोग भी यथा स्थान करता गया पर कतिपय महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का जो इस कोश से पूर्व प्रकाशित थे, उपयोग किया जाना आवश्यक था। इनमें से कतिपय का नामोल्लेख किया जा सकता है:—श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी तथा आचार्य भीखणजी की पद्य-रचनाओं का संकलन—भिक्षु ग्रन्थ रत्नाकर (2 भागों में)। ये दोनों वृहत् ग्रन्थ क्रमशः सन्त और जैन काव्यो की शब्दावली के महत्त्वपूर्ण भण्डार हैं। संत संप्रदायों में विष्णोई, जसनाथी साहित्य के और निम्बार्क सम्प्रदाय के परशुराम-देवाचार्य को (परशुराम रचनाओं के शब्दों को लेने का यत्न भी करना चाहिए था। इसी प्रकार जैन साहित्य तथा लोक साहित्य विषयक शब्दावली पर और अधिक ध्यान दिया जाता जो अच्छा ही होता। ये तो मात्र सुझाव हैं। वैसे इन शैलियों की रचनाओं में प्रयुक्त अनेक शब्द किसी न किसी रूप में कोश में आ ही गए हैं।

राजस्थानी के अतिरिक्त यहाँ के साहित्यकारों ने राजस्थानी मिश्रित व्रज और राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली में भी प्रभूतशः रचनाएँ लिखी हैं। पिंगल का तात्पर्य छन्दशास्त्र से है पर यहाँ राजस्थानी मिश्रित व्रजभाषा का नाम भी 'पिंगळ' है। सामान्यतः पिंगळ का व्याकरणिक ढाँचा व्रजभाषा के आधार पर होता है पर उसमें राजस्थानी शब्दों और राजस्थानी-ध्वनि-परिवर्तनों के आधार पर बने शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। एक उदाहरण लें।

राजस्थानी कड़ (संस्कृत-कटि) शब्द का अर्थ कमर है। 'ड़' ध्वनि 'र' में परिवर्तित हो जाती है। उसके आधार पर "कड़' से शब्द बना 'कर'। साधारणतः 'कर' का अर्थ हाथ होता है पर यहाँ 'कर' का अर्थ कमर भी होगा। वृहत् पृथ्वीराज रासौ में इस तरह के अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इस कोश में इनका संकेत-उल्लेख होना अतिरिक्त महत्त्व की बात होती। यों पिंगल का शब्दकोश-निर्माण एक पृथक् कार्य है। ध्यातव्य है कि पिंगल केवल काव्य भाषा के रूप में ही समादृत रही है। पृथ्वीराज रासौ, वंशभास्कर (अधिकांश में) पिंगल की रचनाएँ हैं। कतिपय संतों ने भी पिंगल में रचनाएँ की हैं पर उनमें भाषायी स्तर भेद काफी पाया जाता है। नीसाणी, झूलणा, चान्द्रायण आदि छन्दों में रचित रचनाएँ तथा कतिपय संतों और नाथों की वाणियों की भाषा राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है। दोनों ही प्रकार की कतिपय रचनाओं का प्रयोग श्री सीतारामजी ने किसी न किसी रूप में किया है। इसी प्रकार मुख्य-मुख्य आधुनिक लेखकों की रचनाओं और प्राचीन गद्य रचनाओं को भी शब्द-चयन में ग्रहण किया गया है।

इस शब्दकोश में दिए गए विभिन्न शब्दार्थों में मतभेद सम्भव है। यह अपने ढंग का पहला कार्य है। इस प्रकार के कार्यों में अनेक कारणों से भूल-चूक और त्रुटियाँ रह जाना बहुत स्वाभाविक है। आशा की जाती है कि विद्वान् इसकी 'चूक' पर द्रष्टिपात करते समय इसकी 'कूक' पर विशेष ध्यान देंगे।

श्री सीतारामजी के वैदुष्य का साकार रूप—यह कोश राजस्थानी का गौरव ग्रन्थ है। उनका यह कार्य भारतीय मनीषा के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यदि कोश में प्रयुक्त शब्द-संख्या देखी जाए, तो वह लगभग दो लाख होगी। इसमें आए मुहावरों की संख्या हजारों में है।

यह कोश पिछले अठारह सालों से शनैः शनैः प्रकाशित होता रहा है। इसकी इस अन्तिम जिल्द का इस वर्ष प्रकाशित होना एक घटना है। इस महान् कार्य को सम्पन्न हुआ देखकर प्रत्येक विद्या-प्रेमी गौरव का अनुभव करेगा, इसमें संदेह नहीं।

कोशकर्ता श्री सीतारामजी लाळस राजस्थानी भाषा और साहित्य के तथा भारतीय विद्या के प्रेमियों की ओर से हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

कोश के निर्माण कार्य में समय-समय पर जिन सज्जनों ने इसके महत्त्व को समझकर तन, मन, धन और विचार-विमर्श से सहयोग दिया है, वे सब बधाई के पात्र हैं। चौपासनी शिक्षा समिति और उप-समिति 'राजस्थांनी सबद कोस' के अधिकारी गण तथा कार्यकर्ता तो विशेष रूपेण बधाई के पात्र हैं। 'समिति' ने साहित्य जगत् के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जो ऐसी अन्य संस्थाओं के लिए स्पर्धा का विषय होना चाहिए।

भाषा एक सामाजिक दाय है। सभी जीवंत भाषाओं का शब्द-भंडार निरन्तर बढ़ता ही रहता है। वर्तमान में राजस्थानी साहित्य की दोहरी प्रगति हो रही है। एक ओर तो उसके प्राचीन ग्रन्थों का सुसम्पादन किया जा रहा है और दूसरी ओर अनेक लेखक साहित्य-सर्जना कर उसकी श्रीवृद्धि कर रहे हैं। अतः राजस्थानी शब्द कोश का कार्य ऐसा है जो इसके पश्चात् भी सतत रूप से चालू रहना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि 'समिति' इस ओर भी ध्यान देगी। मैं कोशकर्ता के स्वास्थ्य और शतायु होने की कामना करता हूँ।



सम्पादकीय निवेदन

भाषा की प्रामाणिकता एवं उसके संवर्द्धन के लिए शब्द कोश की अपनी महत्ता है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के अपने-अपने सुसम्पादित कोश हैं। राजस्थानी भाषा के पूर्व के प्रकाशित जो शब्द कोश उपलब्ध हैं, वे प्रायः अपूर्ण हैं और उनमें वैज्ञानिकता का अभाव है। राजस्थानी भाषा एवं उसके समृद्ध साहित्य के अनुरूप उपयोगी एवं उच्चस्तरीय शब्द कोश की नितान्त आवश्यकता थी। यह एक सुयोग था कि सुहृदजन से कोश सम्पादन की प्रेरणा से मेरे अन्तर की अभिलाषा बलवती हुई जिसके परिणामस्वरूप 46 वर्ष पूर्व बृहद् राजस्थानी शब्द कोश के आकार एवं स्वरूप के प्रारूप का आकलन किया गया। इसी के अनुसार अभावों एवं बाधाओं की नानाविध घाटियों को पार करते हुए यह शब्द कोश 4 खण्डों की कुल 9 जिल्दों में सम्पूर्ण हुआ। अन्तिम खण्ड की इस अन्तिम जिल्द की संप्रस्तुति के साथ कोश की सम्पूर्णता हो रही है, यह आत्मसन्तोष की एक सुखद स्थिति है। 46 वर्षों की अनवरत श्रम साधना की यह सफलता साहित्य मर्मज्ञों एवं भाषाविदों की सद्भावनाओं का ही परिणाम है।

शब्द कोश की निर्मिति कितनी श्रम-साध्य, समय-साध्य और व्यय-साध्य है, भाषा प्रेमियों को बताने की आवश्यकता नहीं। राजस्थानी शब्द कोश सम्पादन के विचार का अंकुरण जिस सहज भाव से हो गया था उसके विपरीत इसकी क्रियान्विति उतनी ही कठिन एवं दुस्साध्य हो गई थी। इस कोश के सम्पादन कार्यकाल का जो एक दीर्घकालीन इतिहास बना है उसमें अर्थाभाव की अनुभूत विकलताओं और सुहृदसहयोगीजन की सद्भावनाओं का सुन्दर समन्वय हुआ है।

राजस्थानी बृहद् शब्द कोश सम्पादन-कथा एक स्वतन्त्र प्रकरण है, उसकी अभिव्यक्ति सम्प्रति उचित नहीं होगी। कोश का यह बृहद् आकार किसी एक व्यक्ति की शक्ति की परिसीमा का कार्य नहीं है। प्रारम्भिक अर्थाभाव की चपेट में ही कोस निर्माण कार्य में जो व्यवधान उपस्थित हुआ और जिस विकट परिस्थिति की अनुभूति हुई उस आधार पर कोश की सम्पूर्णता असम्भव ही प्रतीत हो रही थी। धीरे-धीरे यही तथ्य उजागर हुआ कि सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग के अभाव में कोश निर्माण जैसे अनुष्ठान की सम्पूर्ति कदापि सम्भव नहीं।

साहित्य संवर्द्धन के लिए सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग देना सरकार का दायित्व भले ही हो, लेकिन इसकी उपलब्धि के लिए सुयोग्य जन की कड़ी की आवश्यकता होती है। कोश निर्माण का प्रारम्भिक कार्य तो सद्भावी साहित्य प्रेमियों के सहयोग से आरम्भ तो हो गया, लेकिन प्रकाशन और व्यय-साध्य कार्य बिना समुचित अर्थोपलब्धि के अभाव में कैसे सम्पन्न हो सकता था। विकट अर्थाभाव में जब कोश प्रकाशन की कोई आशा नहीं रही उस समय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोड़ला और स्व० श्री गोवर्द्धनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) आई० ए० एस० कोश के लिए ऐसे दृढ़ अवलम्ब बनकर आए कि इनके सान्निध्य और संरक्षण में कोश की सम्पूर्ति की आशा बंधने लगी।

श्रद्धेय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोडला साहित्य प्रेमी ही नहीं साहित्य सेवी भी थे। साहित्य संकलन एवं संवर्द्धन के प्रति उनकी विशिष्ट रुचि थी। इस कोश कार्य की प्रारम्भिक स्थिति में ही मुझे आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। कोश निर्मिति के लिए अपेक्षित साहित्य की उपलब्धि में आपका विशेष सहयोग रहा। अर्थाभाव के कारण जब-जब प्रकाशन कार्य में शैथिल्य आया आपने अपने स्तर पर ही अर्थ व्यवस्था कर कोश कार्य को गति दी। बाधाओं से उत्पन्न, नैराश्य से घिरा और परिस्थितियों से थकित जब भी मैं आपके पास पहुँचा आपने आत्मीय भाव से मेरी परिस्थितियों को समझा और अपनी उदारता का परिचय दिया। यह सत्य है कि कोश का वर्तमान स्वरूप आपके ही सहयोग का प्रतिफल है। स्व० ठाकुर साहब कर्नल श्यामसिंहजी ने इस कोश के प्रति जिस निष्ठा और उदारता का परिचय दिया उसे यहाँ शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। मैं इस पुण्यात्मा का ऋणी हूँ और कोश के प्रति आपने जो सहज स्नेहपूर्ण सहयोग प्रदान किया उनके लिए मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस कोश के प्रारम्भिक कार्य को जब स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) ने देखा तो अनायास ही उनका लगाव इस कोश के प्रति हो गया। इनके हृदय में साहित्य के प्रति सेवा भावना थी अतः इस कोश की सम्पूर्णता उनके जीवन की एक अभीप्सा बन गई। कोश सम्बन्धी कार्य में चाहे वह अर्थ सम्बन्धी था या व्यवस्था सम्बन्धी आपने सदैव पूर्ण उदारता दर्शायी। मैंने स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया में औदार्य, सौजन्य एवं सारल्य से परिपूर्ण जो व्यक्तित्व देखा उसके आधार पर यही कह सकता हूँ कि ऐसे सरल, सौम्य साहित्य प्रेमी इस धरा पर यदा-कदा ही अवतरित होते हैं। आप कोश के लिए सच्चे अर्थों में गोवर्द्धन बने और समय पर उसको विकट परिस्थितियों के वज्रपात से उबारा।

कोश के प्रति अपनत्व प्रकट करने वाले ऐसे आत्मीय-जन के लिए आभार-दर्शन को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) के सौजन्यपूर्ण सहयोग के लिए यह हृदय चिर ऋणि है और ऋणत्व भावना की मूक-स्थिति जितनी सत्य और निष्ठायुक्त है वह मुखर होकर नहीं रह सकती। मेरे लिए यह अपार दुःख की बात है कि राजस्थानी कोश का सच्चा हितैषी, दृढ़ समर्थक उसकी पूर्णता न देख सका। कोश का अन्तिम खण्ड प्रकाशनाधीन था कि 18 सितम्बर, 1977 को वह दिव्यात्मा इहलोक छोड़ गई। स्व० श्रीगोरधनसिंहजी मेड़तिया का पार्थिव शरीर भले ही कोश के स्थूल स्वरूप को न देख सके, परन्तु यह मेरी धारणा है कि उनकी आत्मा इस कोश के साथ आत्मसात् हो चुकी है। सृष्टि पर जब तक कोश की विद्यमानता है, उसकी उपयोगिता है, उस पावन आत्मा की स्मृति स्थिर है।

कोश के दूसरे खण्ड की पूर्णता के समय व्यय भार बढ़ने से पुनः अर्थाभाव का संकट उपस्थित हुआ। इस समय केन्द्रीय सरकार से आर्थिक सहयोग प्राप्त कराने में तत्कालीन संसद सदस्य डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने निःस्वार्थ भाव से सहयोग प्रदान किया। डॉ० सिंघवी एक अच्छे विचारक और लेखक हैं। साहित्य के प्रति अनुराग उनकी पैतृक विरासत है। प्रकाशित कोश जिल्दों को देखकर आप बड़े प्रभावित हुए। आप ही के सहयोग से मैं भू० पू० प्रधान मन्त्री स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी से साक्षात्कार कर उन्हें कोश के प्रकाशित खण्डों का अवलोकन कराते हुए इसकी सम्पूर्णता की मेरी एकमात्र अभिलाषा से परिचित कराया। अभी पुनः वर्तमान प्रधान मन्त्री मान्यवर श्री मोरारजी देसाई से भी साक्षात्कार करने में आपने सहयोग प्रदान किया। आपके सौजन्य के फलस्वरूप ही मैं मान्यवर मोरारजी देसाई को राजस्थानी शब्द कोश की रचना से परिचित करा सका। डॉ० सिंघवी के समयानुकूल समुचित सहयोग के लिए मैं हृदय से उनका आभार स्वीकार करता हूँ।

कोश की प्रकाशित जिल्दों को देखकर सहज भाव से प्रेरित हो कोश कार्य हेतु सहयोग प्रकट करने वालों में स्थानीय साहित्य प्रेमी एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित अभिभाषक श्री मरुधर मृदुल को भुलाया नहीं जा सकता। सरल स्नेहभाव से ओतप्रोत श्री मरुधर मृदुल ने सदैव मेरी समस्याओं को सुना और उनके निवारण में अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। कोश कार्य के सम्बन्ध में आपने जो सौजन्य प्रकट किया उसके लिए मैं हृदय से उनका पूर्ण आभार मानता हूँ।

स्थानीय साहित्य प्रेमियों में विशेषकर राजस्थानी भाषा में रूचि रखने वालों की सद्भावना मुझे कोश निर्माण कार्य के आरम्भ से ही प्राप्त होती रही। इनमें श्री कोमल कोठारी और श्री विजयदान देथा का प्रमुख स्थान है। रूपायन संस्थान बोरून्दा की स्थापना कर आपने लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के प्रति अपनी परिष्कृत रुचि का परिचय दिया है। आप दोनों ने कोश निर्माण के कार्य को निकट से देखा और प्रकाशित खण्डों का अध्ययन कर इसे युग की आवश्यकता बताते हुए राजस्थानी भाषा की समृद्धि के लिए अनिवार्य कृति बताया। कोश सम्बन्धी कार्यों के लिए आपने सदैव प्राथमिकता के आधार पर सहयोग प्रदान किया। आप दोनों के इस सौहार्द्रभाव के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कोश सम्पादन कार्य जिस लम्बी अवधि में सम्पन्न हुआ उसके अनुसार सम्पादन तथा प्रकाशन व्यवस्था का अनेक स्थितियों से गुजरना सहज स्वाभाविक था। सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग प्राप्त करना नितान्त आवश्यक था अतः नियमानुसार वैधानिक प्रकाशन समिति की देखरेख में कोश कार्य होना वाँछनीय था। द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य से ही कोश प्रकाशन कार्य "चौपासनी शिक्षा समिति" द्वारा गठित "उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश" की देखरेख में होने लगा। इस उप-समिति के प्रथम अध्यक्ष के रूप में स्व० भाद्राजून राजा साहब श्री देवीसिंहजी ने कार्य करते हुए कोश कार्य को गति प्रदान की। कुछ ही समय पश्चात् ब्रिगेडियर "आपजी" श्री रणधीरसिंहजी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया। आपकी हार्दिक चाहना रही कि इस कोश का प्रकाशन सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो। अपनी निजी व्यस्तता के होते हुए भी कोश के प्रकाशन कार्य में आने वाले व्यवधानों का निवारण करने के लिए व्यक्तिगत रूप से रुचि ली। द्वितीय एवं तृतीय खण्ड आपकी अध्यक्षता में ही प्रकाशित हुए। इस अवधि में आपका जो स्नेह-सिक्त संरक्षण एवं हितैषीजन्य मार्गदर्शन मिला उसके लिए आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अपना दायित्व समझता हूँ।

कोश के चतुर्थ खण्ड के प्रकाशन का कार्य जब प्रारम्भ हुआ तब माननीय महाराज श्री प्रह्लादसिंहजी ने उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश के अध्यक्ष पद को ग्रहण किया। राजस्थानी भाषा एवं उसके साहित्य के लिए कोश की अनिवार्यता को आपने समझा और अपने सद्प्रयत्नों से इसे सम्पूर्ण कराने की स्थिति की ओर अग्रसर हुए। मुझे अनेक बार आपसे मिलने का अवसर मिला। आपने कोश सम्बन्धी कार्य निष्पादन में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। आपके सामयिक सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित करता हूँ।

कोश कार्य हेतु निःस्वार्थ भाव से समय देने वालों में डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी, प्राध्यापक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का नाम भी उल्लेखनीय है, कोश की अन्तिम जिल्द में आपने भूमिका लिखकर साहित्य प्रेमियों के लिए कोश के स्वरूप का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है इस सहयोग के लिए डॉ० माहेश्वरी निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं।

उदार महानुभावों के सद्प्रयत्नों से सरकार की ओर से कोश प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा। इस कार्य हेतु वांछित पत्रों की प्रस्तुति के लिए शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों से मेरा सम्पर्क हुआ। तत्कालीन शिक्षा आयुक्त श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता एवं भूतपूर्व शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोर्डिया

ने कोश जैसे कार्य की महत्ता को पहिचाना और मुझे कोश कार्य हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान किया। जोधपुर में जिलाधीश के पद पर कार्य करते हुए श्री कृष्णकुमारजी भटनागर एवं श्री नरेन्द्रसिंहजी सिसोदिया ने भी मेरी समस्याओं के निवारण में सहयोग का हाथ बढ़ाया। इन सभी महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

स्थानीय सहयोगियों में श्री सतीशचन्द्र गोयल, भूतपूर्व उपकुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय, श्री जहूरखाँ मेहर प्रवक्ता विश्वविद्यालय, जोधपुर, श्री रामनिवास शर्मा, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, श्री ओमप्रकाश शर्मा एवं श्री शान्तिलाल आदि का नाम उल्लेखनीय है। कोश सम्बन्धी कार्य के लिए आप सभी का सहयोग मुझे मिला इसके लिए मैं आपके प्रति धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

इस कोश के सम्पादन में लगभग अर्द्ध शताब्दी की अवधि व्यतीत हुई इस अवधि में कोश सम्बन्धित कार्य वैविध्य के कारण अनेक महानुभावों के सहयोग की अपेक्षा होना नितान्त आवश्यक बात थी। कोश कार्य को लेकर मैं जिन महानुभावों से मिला उन्होंने मुझे यथा समय पूर्ण सहयोग प्रदान किया। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे प्रति सच्ची सहानुभूति रखने वाले एवं हृदय से कोश कार्य में सहयोग देने वाले सभी महानुभावों के नामों का उल्लेख यहाँ नहीं हो पाया है। आवश्यकतानुसार प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द के प्रकाशन के अवसर पर मैं आभार प्रदर्शित कर चुका हूँ फिर भी उन सभी महानुभावों से क्षमा चाहते हुए उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कोश सामग्री संग्रह करने प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग देने तथा अन्य स्रोत से उपयोगी साहित्य सामग्री उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया है।

इस खण्ड के प्रकाशन के साथ "राजस्थानी शब्द कोश" का पूर्ण स्वरूप जिसमें लगभग दो लाख शब्दों का संग्रह है, विद्वज्जन के समक्ष है। उपादेयता की कसौटी साहित्यिक समाज है। मुझ अकिंचन से जो प्रयास सध सका वही संप्रस्तुत है। न्यूनताओं और त्रुटियों के लिए विज्ञसमाज मुझे क्षमा करते हुए उपयोगी सुझाव प्रेषित कर अनुगृहीत करेगा ऐसी मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

धन्यवाद

शास्त्री नगर,
जोधपुर
संवत् २०३५
दिपावली

सीताराम लालस

संकेत और चिन्ह

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा
अ०	अरबी भाषा
अक०	अकर्मक
अक० रू०	अकर्मक रूप
अनु०	अनुकरण
अप०	अपभ्रंश
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप
अव्य०	अव्यय
इब्रा०	इब्रानी भाषा
उप०	उपसर्ग
उभ० लि०	उभयलिंग
कर्म वा०, कर्म० वा० रू०	कर्मवाच्य रूप
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
गु०	गुजराती भाषा
गो० रा०	गोरादि
ची०	चीनी भाषा
जा०	जापानी भाषा
डिं०	डिंगळ
तु०	तुर्की भाषा
पं०	पंजाबी भाषा
पा०	पाली भाषा
पु०	पुल्लिग
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली भाषा
पृष०	पृषोदरादि
प्र०	प्रत्यय
प्रा०	प्राकृत
प्रे०	प्रेरणार्थक
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा
फा०	फारसी भाषा
ब० व०	बहुवचन
भाव वा०	भाव वाच्य
भा० वा० रू०	भाव वाच्य रूप
भू० का०	भूतकाल
भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
म०	मराठी भाषा
मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
मा०	मागधी भाषा
यू०	यूनानी भाषा
यौ०	यौगिक शब्द
रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
लै०	लैटिन भाषा
व०	वर्तमानकाल
व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
वि०	विशेषण
विलो०	विलोम
व्या०	व्याकरण
शक०	शकन्ध्वादि
सं०	संस्कृत
सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
सं० पु०	संज्ञा पुल्लिग
सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
स०	सकर्मक
स० रू०	सकर्मक रूप
सर्व०	सर्वनाम
स्त्री०	स्त्रीलिंग
स्पे०	स्पेनिश भाषा
उ०	उदाहरण
कहा०	कहावत
क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
ज० खि०	जग्गी खिड़ियौ
ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
दे०	देखो
प्रा० रू०	प्राचीन रूप
प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
मि०	मिलाओ
मु० मुहा०	मुहावरा
वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान	प्रयोजन
❀	शब्द के आगे	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
,	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	यह ध्वनि-लोपक चिन्ह हैं, जहाँ 'ह' की ध्वनि लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'....'	शब्द के दोनों ओर सिरों पर	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इनवर्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ–सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेका० कोश०	अनेकार्थी कोश	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधांन माळा	उदयरांम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	वीरभांण रतनू, उदयरांम बारहठ
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपा. अगरचन्द बारहठ
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयरांम बारहठ
का० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबन्ध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढी
चितरांम	राजस्थानी संस्कृति रा चितरांम	जहूरखां मेहर
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगल नांम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
जां० वि० सं० सा०	जांभोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
जा० स०	जाभोजी की सबदवांणी	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियांण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माला	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	सांइयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियो
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० ग्रं०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्षु०	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० द्र०	,,	,,
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	मीरां
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदांन कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकाश	किसनौ आढ़ौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछारांम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गौ खिड़ियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी री रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी री छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रां० रा०	रांम रासौ	माधोदास दधवाड़ियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर भांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंस री विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह I	सम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगल	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालदांन कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० स०	विड़द सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदांन बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	संग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदांन कवियौ
शि० सु० रू०	शिवदांन सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माला	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	स्रीहरिपुरुष की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० झा०	हाला झाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

स

स-सं. पु. [सं.] नागरी या संस्कृत वर्णमाला का वत्तीसवां व्यञ्जन जिसका उच्चारण-स्थान दन्त होने के कारण दन्त्य कहा जाता है।
वि० वि०—संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में यह वर्ण उच्चारण भेद से तालव्य, मूर्धन्य एवं दन्त्य तीन प्रकार का माना गया है, जिनके रूप क्रमश: 'श', 'ष' तथा 'स' हैं। परन्तु प्राकृत, अपभ्रंश एवं राजस्थानी भाषा की लिखावट में दन्त्य 'स' का ही प्रयोग किया जाता है जो तीनों रूपों का प्रतिनिधित्व करता है। संस्कृत वैया-करणों के मतानुसार इसका उच्चारण स्थान दन्त, आभ्यन्तर प्रयत्न ईषद्विवृत व बाह्य प्रयत्न महाप्राण, और अघोष हैं। आधुनिक वैयाकरणों के अनुसार यह वर्त्स्य संघर्षी अघोष ध्वनि है इसका उच्चारण जीभ की नोक से वर्त्स्य स्थान को रगड़ के साथ छू कर किया जाता है।

सं-सं. पु. [सं. शं.] १ सुख, आनन्द, हर्ष। (एका.)
२ कल्याण। (एका.)
उ०—सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा नमया। ओहं सोहं अखया अभया, आई अजया विजया उमया।—देवि.
३ वैराग्य। ४ शान्ति।
५ शिव, शंकर। (एका.)
६ विष्णु। ७ षड्ज।
[सं. स] ८ आकाश। ९ इन्द्रिय।
१० कारण। (एका.)
११ धार। १२ पक्षी। १३ मधु।
१४ रक्षक। (एका.)
१५ रोग। १६ शनिश्चर।
१७ शरण। (एका.)
१८ शरीर। (एका.)
१९ सर्प, सांप। २० स्मरण।
२१ पवन, हवा। (एका.)
२२ प्रकाश। (नां. मा.)
वि.—१ शुभ। २ सर्वोत्तम।
३ रक्षक। (एका.)
अव्य. [सं. सम्] समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सूचित करने का एक अव्यय या उपसर्ग।

संई—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)
उ०—आयी रे आयी मारू सांवणियै री तीज। राय संइयां नै कसूंवौ रे म्हारा गाढा मारू ओढियौ।—लो. गी.
२ देखो 'सांमी' (रू. भे.)
उ०—मस्तक मेरै पांव धर, मंदिर मांहीं आव। संइयां सोवै सेज पर, दादू चंपै पांव।—दादूवांणी
३ देखो 'सांई' (रू. भे.)

संईयार—देखो 'सांईआर' (रू. भे.)

संक—देखो 'संका' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ धणी सूंपां सरण मरण संक धारियां, लाज मन धरै जैसांणगढ लारियां।—जसजी आढौ
उ०—२ सुर नर नाग नमै सह कोय, करै नह संक असंक न कोय।—रांमरासौ
उ०—३ नारायण देवां मंही, ज्यूं तारायण चंद। कमळा पगचंपी करै, 'बंक' संक तज वंद।—बां. दा.
उ०—४ ओटहि बैठा पड़िगनौ लै दांम उग्राही, मोटै खोंदाळम तणी, मन संक न काही।—मालौ सांदू

संकड़ाई-सं. स्त्री.—देखो 'सांकड़ीलौ' (रू. भे.)
उ०—१ कुसळौ तिलोक संकड़ाई में चालवा लागा। अनै मन मैं जांणै भीखणजी रा स्रावकां नें फेरां। परुपणां सांकड़ी करवा लागा—साधु ने तीजा पहर नीं गोचरी करणी।—भि. द्र.
उ०—२ स्वांमी भीखण जी बीलाड़ै पधारचा। गांम में लोक लुगाई द्वेस घणौ करै। आहार पांणी री संकड़ाई।—भि. द्र.

संकड़ेलौ—देखो 'सांकड़ीलौ' (रू. भे.)

सकड़ै—देखो 'सांकड़ै' (रू. भे.)
उ०—भड़ां रूप चाढण घड़ा वेहड़ा भावसिंघ, कळह रा थंभ न्यांहै कहावै। सदालग चाड जोधां तणो संकड़ै, आवियौ जेम रिणमाल आवै।—राठौड़ भावसिंघ कूंपावत री गीत

संकड़ौ—देखो 'सांकड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ कांम पताका काय, उदै जै अंकड़ा। राजस तजि चित रोस क, सोक्यां संकड़ा।—बां. दा.
उ०—२ अव्वल संकड़ी कोठरी, दूजी मांझळ-रात। तीजां संकड़ी ढोलियौ, मतवाळै कौ साथ।—लो. गी.
उ०—३ सुज दास टालण संकड़ा, लहरेक आपण लंक। भूपाळ सिंध धन भूपती, रिझवार कीरत वड रती।—र. ज. प्र.
क्रि. प्र.—करणौ, पड़णौ, होणौ।
(स्त्री. संकड़ी)

संकज-सं. स्त्री.—केसर। (अ. मा.)

संकट-सं. पु. [सं.] १ दुख, मुसीबत।
उ०—करता मांचा दै जांचा कूतरिया, उतरत्ता आसाढां मूंढा ऊनरिया। सैणां संकट में वंकट सब राया, घांटा घुटियोड़ा घूंघट घवराया।—ऊ. का.
२ पीड़ा, तकलीफ, कष्ट।
उ०—विना कळदार बुद्धि नहिं वंसा, पुनि या विन नहिं होत प्रसंसा। संकट हरण भहु वेसंसा, येह नर नारि जक्त अवतंसा।
—ऊ. का.
३ बाधा, अड़चन, रोड़ा।
उ०—रोम रोम आंमय रहै, पग पग संकट पूर। दुनियां सूं नजदीक दुख, दुनियां सूं सुख दूर।—बां. दा.

४ घात्न, निर्नि, नार्नि।

उ०—१ 'बांका' मेहामद्रु म बीनरे, संकट हरे नामक्रै नाद।
... कीनै गाजै, मद रै पीठै गडां अजाद।—बां. दा.

उ०—२ अरेम रहियो पहली मऊ री फरमांण आयो जरै ही म्हैं नां जाणि सीधो अब आगरै म्हारा माथा मूं कांम पड़ियो। अर इण संकट मूं भी विसेस अब तिसो कांम रहियो जिण री रीझ मार्ग वडा री देवी लेवड़ियो।—बं. भा.

क्रि. प्र.—करणो, देणो, पड़णो, लागणो, होणो।

५ रोग, बीमारी। (अ. मा.)

क्रि. प्र.—लागणो, होणो।

५ चौसठ भैरवों में से एक।

६ धर्म एवं बुद्रुम के पुत्रों में से एक।

रू. भे.—संगट, संगठ।

संकटगीर-वि. [सं. संकट+फा. गीर] १ दुःखी, पीड़ित।

२ रोगी, बीमार।

संकटचौथ-सं. स्त्री. यौ. [सं. संकट+चतुर्थी] १ प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि। (ज्योतिष)

२ माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि।

संकटणौ, संकटबौ-क्रि. अ.—संकट में पड़ना, पीड़ित होना, संकटयुक्त होना।

उ०—'चानक' नै सठ हैता चाकर, झांझरियाळ मदोमत भूलर।
धार-रंपाळ लगै है चाकर, आई आवजे अन संकटियै ऊपर।
—प्रथ्वीराज राठौड़

संकटणहार, हारौ (हारी), संकटणियौ—वि०।

संकटिश्रोड़ौ, संकटियोड़ौ, संकट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकटीजणौ, संकटीजबौ—भाव वा०।

संगटणौ, संगटबौ, संगठणौ, संगठबौ—रू० भे०।

संकटहर-वि. यौ. [सं. संकट+हर] संकट को हरण करने वाला, नाश करने वाला या दूर करने वाला।

सं. पु.—ईश्वर। (नां. मा.)

संकटा-सं. स्त्री. [सं. संकटा] १ एक देवी विशेष जो संकटों को नाश करने वाली मानी जाती है और उसका मन्दिर काशी में है।

२ आठ योगनियों में से एक योगिनी विशेष।

वि. वि.—ज्योतिषानुसार आठ योगनियों के नाम निम्नलिखित हैं:—

१ मंगला, २ पिंगला, ३ धन्या, ४ भ्रमरी, ५ संकटा, ६ भद्रिका, ७ उल्का और ८ सिद्धि।

संकटियोड़ौ-भू. का. कृ.—संकट में पड़ा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ, संकटयुक्त हुवा हुआ।
(स्त्री. संकटियोड़ी)

संकणौ, संकबौ-क्रि. अ. [सं. शंकनम्] १ शंका होना, सन्देह होना।

उ०—मनि संकांणी मारुवी, गुणसउ रातइ कंत। हंसतां प्री सूं बीनवइ, सांभळि, प्री विरतंत।—ढो. मा.

२ डरना, भयभीत होना, घबराना।

उ०—मन माहि संकै सुभट, पदमणि दीधी राय। जो छूटै नहीं तो रत्नै, दोन्यु स्वारथ जाय।—प. च. चौ.

३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

उ०—संकै जावै संग सूं, अरध निसा मैं ऊठ। नर मूरख तो गिण न दै, पातरियां नु पूठ।—बां. दा.

उ०—२ धोळा गोमै, काच-नकचूंटी हरदम हाथां में ही रातै। देराणियां सूं संकतो लकोवै है, पण ठोडी रै सिगदा घालतो ही जावै है।
—दसदोस

संकणहार, हारौ (हारी) संकणियौ—वि०।

संकिश्रोड़ौ, संकियोड़ौ, संक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकीजणौ संकीजबौ—भाव वा०।

संकाड़णौ सकाड़बौ, संकाणौ, संकाबौ, संकावणौ, संकावबौ।
—रू० भे०

संकदजणणी-सं. स्त्री. [सं. स्कंदजननी] पार्वती।

संकपालिका-सं. स्त्री. एक प्रकार का आभूषण विशेष। (व. स.)

संकप्प—देखो 'संकल्प' (रू. भे.)

उ०—दोस लागै तिको च्यार परकार ना, धुर थकी नांम नै अरथ तै धारणा। किणही कारण बसै पाप जे कीजियै, प्रथम तै नांम संकप्प कहीजियै।—घ. व. ग्रं.

संकमांन-सं. पु. [सं. शंकमान] नागवंशीय प्रवीर राजा का पुत्र, एक राजा।

सकर-सं. पु. [सं. शंकर] १ शिव, महादेव। (डि. को; ना. डि. को.)

उ०—पारस प्रासाद सेन संपेखे, जांणि मयंक कि जळहरी। मेरु पालती नखित्र माळा, ध्रू माळा सकर धरी।—वेलि.

२ शंकराचार्य।

३ सूरज, सूर्य। (ना. डि. को.)

३ एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में १६ व १० के विराम से २६ मात्राएं होती हैं तथा अन्त में लघु होता है। (क. कु. बो.)

३ संगीत में मेघ राग का पुत्र एक राग विशेष।

५ भीमसेनी कपूर।

[सं. संकर] ६ भिन्न वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान, दोगला।

७ भिन्न वस्तुओं का मिश्रण।

८ एक ही आश्रय से अनेक अभिप्राय देने वाली ध्वनि।
(साहित्य)

६ दो अलंकारों के इस प्रकार शामिल रहने की अवस्था, कि वे दोनों अलग २ नहीं किये जा सकते हों। (साहित्य)

[सं. शंकर] १० पाण्डव देशाधिपति सुरुचि का पिता जिसने गलती से शाकल्प मुनि का पत्नी सहित वध कर डाला था।
११ कश्यप एवं दनू का एक पुत्र, दानव।
१२ एक सनातन विश्वदेव। १३ एक शिव भक्त।
वि. [सं. शंकर] १ कल्याण करने वाला, कल्याणकारी।
२ आनन्ददायक, आनन्दकारी।
रू. भे.—संकरयं।
अल्पा;—संकरियौ।

संकरग्रास–सं. पु. [सं. शंकर+ग्रासः] धनुष। (अ. मा.)

संकरखण–सं. पु. [स. संकर्षण] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)
उ०—चढिया हरि सुणि संकरखण चढिया, कटबंध नह घणा, किध। एक उजाथर कळहि एहवा, साथी सहु आखाढसिध।
—वेलि.
२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
३ अपनी ओर खींचने की क्रिया।
४ खेत में हलजोतने की क्रिया।
५ संघर्षण। (४) ग्यारह रुद्रों में से एक। (७) एक वैष्णव सम्प्रदाय।

संकरघरणि, संकरघरणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकर+गृहिणी] शिव की स्त्री पार्वती। (डिं. को.)

संकरण–सं. पु. [सं.] मिश्रित होने की क्रिया या भाव।
वि. [सं. शंकरण] शिव का, शिव से सम्बन्धित।
उ०—सघण री छटा किरि उपटा अणसरण, संकरण चुवड़ि पण धरण सोधी। बंधव रौ ग्रहण करि उग्रहण अणसरण, 'करण' तण नळ बरण भखण कीधौ।—पदमसिंघ राठौड़ रौ गीत

संकरणी–सं. स्त्री. १ हरड़, हरड़ै, हड़। (नां. मा.)
२ दुर्गा, पार्वती, शिवा।

संकरजटा–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकरजटा] १ रुद्रजटा।
२ सागुदाना, साबूदाना।

संकरता–सं. स्त्री. [सं. संकर+ता प्रत्य.] १ मिश्रित होने की अवस्था या भाव।
२ दोगला होने की अवस्था या भाव, दोगलापन।

संकरताळ–सं. स्त्री. [सं. शंकर ताल] संगीत का एक ताल विशेष।

संकरतीरथ–सं. पु. यौ. [सं. शंकरतीर्थ] एक तीर्थ-स्थान। (पुराण)

संकरप्रिय–सं. पु. यौ. [सं. शंकरप्रिय] १ अर्क, आक।
२ भांग।
३ धतूरा।

संकरभास्य–सं. पु. यौ. [सं. शंकरभाष्य] शंकराचार्य द्वारा की गई श्रीमद् भगवत् गीता की टीका।

संकरयं—देखो 'संकर' (रू. भे.)

संकरवांणी–सं. स्त्री. यौ. [सं. शंकर वाणी] जो सदा सत्य होता है, ब्रह्मवाक्य।

संकरसेल–सं. पु. यौ. [सं. शंकर शैल] कैलाश पर्वत जो महादेव का निवास-स्थान माना जाता है।

संकरस्वांमी—देखो 'संकराचारय'।
उ०—वैसाखां में बिळखा वांमी, हुयगा सबळा जैन बिरांमी। आखातीजां धणी अमांमी, सिद्ध जन्मियौ संकरस्वांमी।
—ऊ. का.

संकरांत, संकरांति, संकरांयत, संकरांयति–सं. स्त्री. [सं. संक्रान्ति] १ सूर्य अथवा किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में जाने का समय।
२ सूर्य या अन्य ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में जाने की क्रिया।
३ वह दिन, जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में गमन करता है। इस दिन को प्रायः पवित्र माना जाता है एवं लोग स्नान, दान, पूजा आदि करते हैं तथा उत्सव मनाते है।
४ उक्त दिन मनाया जाने वाला उत्सव।
५ मकर सक्रान्ति।
उ०—१ पद वनरावन पांमियौ, दुरद दिखाळै दांत। सीह थयौ वन साहिबौ, ठींगां री संकरांत।—बां. दा.
उ०—२ म्हैं तौ आं चार पांच दिनां मैं आछी तरै पतवांणी कै लाठी जिणरी भैंस। लाठां री संकरायत है। पइसां री खीर है।
—फुलवाड़ी
वि० वि०—संक्रांन्ति का अर्थ सूर्य का मकर राशि में संक्रमण करते से है। अन्य ग्रहों के किसी राशि में संक्रमण होने वाले समय को इतना महत्व तथा पुण्यकाल नहीं माना जाता है।
मुहा०—ठींगां री संकरांत=बल के आधार पर जबरदस्ती कोई कार्य कर लेने वाले के प्रति।
रू. भे.—संक्रांत, संक्रांति, संक्रांयत, सकरांत, सकरांति, सकरायंत, सकरायंति।

संकरा–सं. स्त्री. [सं. शंकरा] १ पार्वती, भवानी।
२ मजीठ।
३ शमी वृक्ष।
४ शंकर नामक राग। (संगीत)
वि. स्त्री.—कल्याण करने वाली।

संकराचारज, संकराचारय, संकराचारिज, संकराचारी–सं. पु. [सं. शंकराचार्य] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत मत के प्रतिपादक तथा प्रवर्त्तक थे।
उ०—वांम दखिण मति दुज वारिज, चवै प्रमांण संकराचारिज। उवै सास्त्र लखि दुज्ज उचारै, ध्यांन धरेस अखंडित धारै।
—सू. प्र.

वि. वि.—इनका जन्म सन् ७८८ ई. में केरल देश में कालटी या कालडी नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरु व पितामह का नाम विद्याधर और माता का नाम सुभद्रा था। मतान्तर से इनका जन्म शिवगुरु और आर्याम्बा नामक नम्बूदरि दम्पति से हुआ था। शिवगुरु ने बहुत दिनों तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के पश्चात् इन्हें पुत्र रत्न के रूप में पाया था अतः इनका नाम शंकर रखा था। इनके पिता का देहान्त इनकी तीन वर्ष की अवस्था में ही हो गया था। ये इतने विलक्षण मेधावी थे कि ये छः वर्ष की अवस्था में ही कठिन दार्शनिक समस्याओं की मीमांसा करने लगे थे और शीघ्र ही वेद-वेदांगों में पारंगत हो गये और आठ वर्ष की अवस्था में संन्यास ग्रहण कर लिया था। मतान्तर से इन्होंने संन्यास-ग्रहण ब्रह्मचर्यावस्था के पश्चात् किया था। इनके संन्यास ग्रहण करने की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं कि माता अपने एक मात्र पुत्र को संन्यासी बनने की आज्ञा नहीं देती थी। एक दिन शंकर अपनी माता के साथ किसी आत्मीय के यहां से लौट रहे थे, तब नदी पार करने के लिए वे उसमें घुसे। गले तक पानी में पहुंच कर इन्होंने माता को संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा न देने पर डूब मरने की धमकी दी। इससे इनकी माता ने भयभीत होकर तुरन्त संन्यासी होने की आज्ञा प्रदान इस शर्त पर की कि उनकी (शंकराचार्य की माता) की मृत्यु के समय ये पास रहें और अन्त्येष्टि किया करें। इन्हें आज्ञा मिलते ही ये नर्मदा के तट पर श्री गौडपाद के शिष्य श्रीगोविन्द भगवत् पाद के शिष्य बने। वहां से काशी गये तत्पश्चात् इन्होंने विजिलबिंदु के तालवन में मंडनमिश्र और उनकी विदुषी पत्नी भारती को शास्त्रार्थ में पराजित किया और मंडनमिश्र को अपना शिष्य बनाया। इन्होंने वैराग्य आत्मज्ञान और भक्ति को मुक्ति का साधन बताया। इन्होंने ही वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित किया था। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् इन्होंने समस्त भारत की यात्रा अपने मत के प्रचारार्थ की थी जिसका नाम 'शंकरदिग्विजय' है। इन्होंने जैन व बौद्ध धर्म का खंडन किया था। उपनिषदों और वेदों पर इन्होंने कई टीकाएं लिखी थी। इन्होंने भारत वर्ष में चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रबन्धक व गद्दी के अधिकारी शंकराचार्य कहे जाते हैं। ये चारों स्थान निम्नलिखित हैं—पूर्व में जगन्नाथ पुरी में गोवर्धन पीठ, पश्चिम में द्वारिका में शारदापीठ, उत्तर में बद्रिकाश्रम के पास, उससे २० मील दक्षिण की तरफ ज्योतिर्मठ जिसे आजकल जोशीमठ भी कहते हैं और दक्षिण में शृंगेरी (मैसूर राज्य में) प्रथम और मुख्य पीठ। शब्द सागर व हिन्दी कोश आदि में शृंगेरी पीठ न लिखकर 'करवेरी मठ' लिखा है जो भ्रमित है। यह त्रुटि इस कारण हुई प्रतीत होती है कि इन चार पीठों या मठों के अतिरिक्त काशी के सुमेर और कांची कामकोठि भी आचार्य शंकर के पीठ कहे जाते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान इस बात के समर्थक नहीं है और इन्हें अधिकार सम्पन्न मठ नहीं मानते इनमें से कामकोटि पीठ के विषय में लिखा मिलता है कि मुसलमानों के आक्रमण के कारण १७ वीं शताब्दी के उपरान्त इसका स्थानान्तरण तंजोर और फिर कावेरी के किनारे कुंभ कोणम में कर दिया गया। इसी को 'करवीर' लिखा है।

ये शंकरावतार माने जाते हैं। ये भारतीय संस्कृति के प्रधान स्तम्भ हैं।

इन्होंने ब्रह्मसूत्र और उपनिषद, गीता आदि के भाष्य, सौन्दर्य लहरी, मोहमुद्गर, भजगोविन्दम, आत्मबोध ललिता त्रिशति, प्रबोध सुधाकर, अद्वैतानुभूति आदि कई विशिष्ट ग्रन्थ लिखे हैं।

ये सन् ८२२ ई० में केदारनाथ के समीप ३२ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हुवे थे।

संकराभरण—सं. पु. [सं. शंकराभरण] सम्पूर्ण जाति का एक राग विशेष। (संगीत)

संकरालय—सं. पु. यौ. [सं. शंकर+आलय] कैलाश पर्वत, जो शकर का निवास स्थान माना जाता है।

संकरावास—सं. पु. यौ. [सं. शंकर+आवास] १ शंकर का वास-स्थान, कैलाश पर्वत।

२ श्मशान भूमि।

संकरियो—सं. पु.—१ एक प्रकार का हाथी।

२ देखो 'संकर' (अल्पा; रू. भे.)

संकरी—सं स्त्री. [सं. शंकरी] १ पार्वती, गिरजा।

(अ. मा., डि. को; ह. नां. मा.)

२ दुर्गा, भवानी।

उ०—तू होज उपावै ईसरी, मनछा आपांणी। फेर सघारै संकरी, मन दया न आंणी।—गज-उद्धार

३ एक महाविद्या।

उ०—······वारुणी, दारुणी, भास्करी, संकरी, जया, विजया, घोरा, कोवेरी, प्रवाही, मदनसेना, बलमथनी, गोदिनी, पेसांनी, बागेस्वरी, सिद्धावी, अजरामरा इत्यादि महाविद्या।—व. स.

[सं. संकरी] मि. दोगला, वर्णसंकर।

संकरेचा—सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा।

संकळ—देखो 'सांकळ' (रू. भे.) (व. स)

उ०—१ सकळ सकळ मद मकळ, ममत घूमंत मदगळ। मेघ डमर नीसांण, महीमुरतवां मळाहळ।—सू. प्र.

उ०—२ गहि चाडै मंटोवर जंगळ, साकड़ा मिळिया दळ सब्बळ। समहर मुळ लड्या पं संकळ, गमा गयां वीटांणो 'गोकळ'।

—राठौड़ गोकळ (सुजांनसिहोत, ईसरोत) री गीत

उ०—३ 'सादूळै' संकळ सहै, तोडै लाज जंजीर। स्रोण सली-भौ चीतवै, गिणै निलौ-भौ नीर।—गु. रू. वं.

संकळजथा-सं. स्त्री.—डिंगळ साहित्य में गीत (छन्द) रचना का एक नियम विशेष जिसमें शृंखलाबद्ध विधानपूर्वक भावों का वर्णन किया जाता है।

संकलण-सं. पु. [सं. संकलन] १ संग्रह, ढेर।

२ एकत्रीकरण।

३ अनेक ग्रंथों से अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

संकळणौ, संकळबौ-क्रि. स.—१ संकलित करना, संग्रह करना।

२ एकत्रीकरण करना।

३ विभिन्न ग्रंथों में से अच्छे विषयों को चुनना।

क्रि. अ.—४ शस्त्रों से सुसज्जित होना।

उ०—माहौ माहि तै लसकर बै मिलिया, सनद्ध बद्ध संकळिया। टंकारव लागे नवि टलिया, भड़ सहु कोई भिलिया रे।—वि. कु.

संकळणहार, हारौ (हारी), संकळणियौ—वि०।

संकळिप्रोडौ, संकळियोड़ौ, संकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळाड़णौ, संकळाड़बौ, संकळाणौ, संकळाबौ, संकळावणौ, संकळावबौ—प्रे० रू०।

संकळीजणौ, संकळीजबौ—कर्म वा०।

संकळप—देखो 'संकल्प' (रू. भे.)

उ०—१ कमधजां छात जिग वात क्रत, लख विख्यात संकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ।—रा. रू.

उ०—२ दो जणां सायरौ देय'र ऊभौ कियौ। परणावण री विधि वेगी-वेगी होवण लागी। चंदू रौ हाथ पकड़'र संकळप भरायौ।—वरसगांठ

संकळपणौ, संकळपबौ-क्रि स. [सं. संकल्पनं] १ किसी बात के लिए पक्का विचार करना, दृढ़ निश्चय करना।

उ०—'विहारी' दिन वंकड़ै, वंका सेर जुआंण। रहिया गढ जाळोर सूं, संकळपै आपांण।—गु. रू. बं.

२ धार्मिक कार्य के निमित्त हाथ में जल लेकर कुछ मंत्र पढ़ कर दान करना।

उ०—तद गोगेजी नूं बूड़ैजी री बेटी परणाई। ताहरां बाई रै दायजै री वखत किहि गायां संकळपी, किही क्युं ही संकळपियौ। ताहरां पाबूजी कह्यौ—बाई! हूं तोनूं दोदै सूंमरै री सांढां रा वरग आंण देईस।—नैणसी

३ विचार करना, इरादा करना।

४ समर्पण करना।

संकळपणहार, हारौ (हारी), संकळपणियौ—वि०।

संकळपिप्रोड़ौ, संकळपियोड़ौ, संकळप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळपीजणौ, संकळपीजबौ—कर्म वा०।

संकळप्पणौ, संकळप्पबौ, संकल्पणौ, संकल्पबौ—रू० भे०।

संकळपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी बात के लिए पक्का विचार किया हुआ, दृढ़ निश्चय किया हुआ। २ धार्मिक कार्य के निमित्त हाथ में जल लेकर कुछ मंत्र पढ़ कर दान किया हुआ। ३ विचार किया हुआ, इरादा किया हुआ। ४ समर्पित। (स्त्री. संकळपियोड़ी)

संकळप्पणौ, संकळप्पबौ—देखो 'संकळपणौ, संकळपबौ' (रू. भे.)

उ०—वळिवंत जोधं (व्र) 'ढण' हरी, सूर धीर साकौ करण। संकळप्पि प्रांण जाळोर सूं, नीमै रहिया निज मरण।—गु. रू. वं.

संकळप्पणहार, हारौ (हारी), संकळप्पणियौ—वि०।

संकळप्पिप्रोड़ौ, संकळप्पियोड़ौ, संकळप्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संकळप्पीजणौ, संकळप्पीजबौ—कर्म वा०।

संकळप्पियोड़ौ—देखो 'संकळपियोड़ौ' (रू. भे.)

संकळि, संकळिक, संकलिक—देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—१ ......हेमजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरणसार कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेखक नुटक संकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक...... ।—व. स.

उ०—२ आखि और इंद्री छूटि २ पड़िया। हाड संकळि जुदी हुई—द. वि.

संकळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संकलित किया हुआ, संग्रह किया हुआ। २ एकत्रीकरण किया हुआ. ३ विभिन्न ग्रंथों में से अच्छे विषयों को चुना हुआ. ४ शस्त्रों से सुसज्जित हुवा हुआ। (स्त्री. संकळियोड़ी)

संकळौ—देखो 'सांकळौ' (रू. भे.)

उ०—इण भांत सूं कुंवर मन मैं विचार नै पचास मोहरां रौ संकळौ दियौ न वरजै राखौ खबरदार, कठहि जाव काढजै मती।—रिसालू री बात

संकल्प—सं. पु. [सं. संकल्प] १ दृढ़ निश्चय या विचार।

उ०—चालुक्य राज भीम आप रा वांम भुज नूं इच्छणी रा ताटंक री पीठ करण रौ संकल्प तजियौ।—वं. भा.

उ०—२ जिकी बात प्राची रा अधीस दूजा कुमार सुजासाह रा उर मैं न माई। अर अनामय पूछण रौ व्याज करि पिता नूं बडा भाई समेत मारि साह होण रौ संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरंग चमू चलाई।—वं. भा.

२ इच्छा, अभिलाषा।

उ०—अर कंठीरव कन्नह चालुक्य राज रै विजय रौ संकल्प वधावतौ निसंक थकौ एक महूरत लड़ियौ।—वं. भा.

३ इरादा, विचार।

उ०—१ अर रांमपुरै आपरौ सगपण हुवौ जिण रा विवाहण मैं दसोर रा फौजदार नूं नीड़ै जांणि केही बार संकल्प पाछौ पाड़ि तुरकां रा पेच मैं कैद होण रौ डर धारियौ।—वं.भा.

उ०—२ [illegible] मकरंद मूल्य। निरखांग नित्य. ग्रंतर [illegible]।—[illegible]

उ०—३ [illegible] कुमार नु मोकळियानी जरै ही पाछो भाई कही [illegible] मूं कवाई जिको मारन री तो संकल्प भी लावै नहीं।
—वं. भा.

४ किसी देव पूजनादि ग्रथवा धार्मिक कार्य के निमित्त चुल्लु में जल लेकर कोई विशेष मंत्र पढ़कर दान देने या किसी दृढ़ विचार [illegible] की क्रिया।

क्रि. प्र.—करणो, छोडणो, भराणो, लेणो।

५ संकल्प के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र।

६ सभा-समिति में किसी विषय में विचार पूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय, (प्रस्ताव)।

७ मन, चित्त।

८ समरांगण।

९ धर्म एवं दक्ष-पुत्री संकल्पा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—सकल्प, संकळप।

संकळपणो, संकळपबो—देखो 'संकळपणो, संकळपबो' (रू. भे.)

उ०—पछै मान्या रा गान, काना रा मोर छांटिया, तीखा कुरळा, कीया, पछै एक ग्रमळ नै पोडाड़ियो। पछै सिनांन संपाड़ो करि पाघ बांधी, तुळसीदळ पाघ माहे मेल्यो, काया स्रीनारायण प्रीत संकळपी।—जैतसी ऊदावत री वात

संकळपणहार, हारो (हारी), संकळपणियो—वि०।

संकळपियोड़ो, संकळिपयोड़ो, संकळप्योड़ो—भू० का० कृ०।

संकळपीजणो, संकळपीजबो—कर्म वा०।

संकल्पा-सं. स्त्री. [सं.] दक्ष की पुत्री एवं धर्म की पत्नी जो संकल्प की माता थी।

संकल्पित-वि. [सं.] १ संकल्प किया हुग्रा। २ जिस पर या जिसका संकल्प लिया गया हो।

संकळिपयोड़ो—देखो 'संकळपियोड़ो' (रू. भे.) (स्त्री. संकल्पियोड़ी)

संकांन—देखो 'संका' (रू. भे.)

उ०—सोहा चित्त न देखड़ी, सीह न चित्त संकांण। सोहां नित [illegible], 'राजन' सीह प्रमान।—जैतदांन बारहठ

संका-सं. स्त्री. [सं. शंका] १ मन में होने वाला अनिष्ट का भय, डर, खौफ।

उ०—[illegible] सीह सेठ उठै विसम, हसतम ऊधम हैमरां। मक [illegible] संका सहित, [illegible] संका वन्तरां।—रा. रू.

२ किसी विषय की सत्यता या असत्यता के सम्बन्ध में होने वाला संदेह, संशय, शक, अविश्वास।

उ०—[illegible] नव पदारथ में पांच जीव च्यार ग्रजीव री श्रद्धा [illegible]। [illegible] जीव ग्राठ ग्रजीव है। जद स्वामीजी सिमा कर विस्वासी ग्राहार पवेर ने बोल्या —ग्रा थारे संका है तो चरचा करांला।—भि. द्र.

३ ग्रौचित्यपूर्ण विचार, परवाह।

उ०—करै न संका कोय, गांव धणी संभड़ मिणें। रेत बराबर होय, रोळदट्ट में राजिया।—किरपाराम

४ हाजत, उपेक्षा।

उ०—ग्रर मासी ई चार-पांच महीनां मे बेटा री सै रग-रग पिछांण ली। उरानै कणां तिरस लागै, कणां भूख लागै कणां मळ-मूत री संका व्है, वो कणां रोवै, कणां सूवै ग्रर कणां हसै-मुळकै इत्याद सगळी वातां रै ग्रेक ग्रेक छिण री उणनै वेरो है।
—फुलवाड़ी

६ हिचकिचाहट, पेशोपेश।

७ ग्रर्थ ग्रादि के बारे में होने वाली उलझन, भ्रम।

८ ग्राशा, विश्वास।

९ लाज, लज्जा, शर्म।

उ०—१ साफ खोल नै कै दूं ला. संका री कांई वात, के भाईड़ा ग्रकल री लड़ाई लड़णी व्है तो ग्रपां सूं लड़. नींतर ग्रै हाथा-पायां ग्रपांनै नीं सुहावै।—फुलवाड़ी

उ०—२ उण जवाब री तो पैंला किणी नै कांई ठा पड़ै, पण सेठ माथो खुभळावता ग्रापरी घरवाळी नै तो तुरत जवाब देई दियो—म्हारै सवालां रो जवाब खुद भगवांन जैड़ो देवैला. वैड़ो जवाब म्हैं थांरै सवालां रो देय दूंला. इण में लिहाज संका री कांई वात।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संक, सकांण, सांक।

संकाग्रइयार-स. पु. यो. [सं. शंकाग्रतिचार] जैनियों के ग्रनुसार सर्वज्ञ भगवान द्वारा कथित तत्वों में शंका करने का दोष या पाप।

संकाड़णो, संकाड़बो—१ देखो 'संकाणो, संकाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'संकणो, संकबो' (रू. भे.)

संकाड़णहार, हारो (हारी), संकाड़णियो—वि०।

संकाड़िग्रोड़ो, संकाड़ियोड़ो संकाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

संकाड़ीजणो, संकाड़ीजबो—कर्म वा०।

संकाड़ियोड़ो—१ देखो 'संकायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'संकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संकाड़ियोड़ी)

संकाणो, संकाबो-क्रि. स. [संकणो क्रिया का प्रे. रू.] १ शंकित करना/कराना, सन्देहशील करना/कराना।

२ भयभीत करना/कराना, डराना।

३ परवाह करना/कराना, ग्रौचित्यपूर्ण विचार रखना/रखाना।

४ लज्जित करना/कराना, शर्मिन्दा करना/कराना।

५ देखो 'संकणो, संकबो' (रू. भे.)

उ०—ग्रलावदी ग्रारंभ कीध सोनागर ऊपर, हुवौ समर तलहटी जुड़ै चहुवांण मछर भर। सकतीपुर चौ सांम प्रांण सुरतांण संकायौ, गाजै घड़ गज रूप चीत ग्रालम चमकायौ।—ग्रग्यात

संकाणहार, हारौ (हारी), संकाणियौ—वि०।
संकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
संकाईजणौ, संकाईजबौ—कर्म वा०।
संकाड़णौ, संकाड़बौ, संकावणौ, संकावबौ—रू० भे०।

संकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शंकित कराया या किया हुग्रा, सन्देहशील कराया या किया हुग्रा।

२ भयभीत किया या कराया हुग्रा, डराया हुग्रा। ३ परवाह किया या कराया हुग्रा, ग्रौचित्यपूर्ण विचार रखा हुग्रा या रखाया हुग्रा। ४ लज्जित किया या कराया हुग्रा, शर्मिन्दा किया या कराया हुग्रा।
५ देखो 'संकियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. संकायोड़ी)

संकाळ, सकाळू–वि. [सं. शंका+ग्रालुच्] १ शंकित करने वाला, भयभीत करने वाला।

उ०—चाळौ बीर वाळौ सारौ, भूजाटां तुहाळै छाजै, कमधेस वाळौ हाकौ, ग्ररिंदा संकाळ।—गुलाब सिंह महड़ू

२ शंकित होने वाला।
३ भयभीत होने वाला।
४ लज्जित होने वाला, शर्मिन्दा होने वाला।
रू. भे.—संकीलौ।

संकावणौ, संकावबौ—१ देखो 'संकाणौ, संकाबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रादर देवण मीत, रंक ना रंच संकावै। परवत घण पौछाळ, प्रीतड़ी कही न जावै।—मेघ.

संकावणहार, हारौ (हारी), संकावणियौ—वि०।
संकाविग्रोड़ौ, संकावियोड़ौ, संकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संकावीजणौ, संकावीजबौ—कर्म वा०।

संकावियोड़ौ—देखो 'संकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संकावियोड़ी)

संकित–वि. [सं. शंकित] १ भयभीत, खोफजदा।
उ०—वदै 'जसौ' जिणवार, कंवर ग्रग्गळ जोड़ै कर। मीणां ग्रधम गंमार, घणै छक ग्रनड़ रहै घर। वीरां सम्मुह वेग, पूंछ पटकै मंडळ मित। एक खीची ग्राइ सबळ, कीधा खळ संकित।
—वं. भा.

२ जिसके मन में शंका हुई हो।

संकिय, संकियदोस–सं. पु.—जैनियों के ग्रनुसार साधु ग्रौर गृहस्थ को ग्राहार के विषय में शंका होने पर लगने वाला दोष।

संकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शंकित हुवा हुग्रा, सन्देहशील हुवा हुग्रा।
२ भयभीत हुवा हुग्रा, डरा हुग्रा।
३ लज्जित हुवा हुग्रा, शर्मिन्दा हुवा हुग्रा।
(स्त्री. संकियोड़ी)

संकीरण–वि. [सं. संकीर्ण] १ तंग, संकुचित।
२ मिला हुग्रा, मिश्रित।
३ नीच।
४ तुच्छ।
५ मदमस्त हाथी।
६ दो ग्रन्य रागों या रागनियों को मिलाने पर बनने वाली एक रागनी। (संगीत)
३ साहित्य में एक प्रकार का मिश्रित गद्य।

सकीरणता–सं. स्त्री. [स. संकीर्णता] १ संकीर्ण होने का भाव।
२ संकरापन।
३ नीचता।
४ क्षुद्रता, ग्रोछापन।

संकीरतन–सं. पु. [सं. संकीर्तन] १ किसी की कीर्ति का वर्णन करने की क्रिया या भाव।
२ देवताग्रों की उपासना।

संकीळ–स. पु. [सं. संकील] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

संकीलौ–वि. (स्त्री. संकीली] १ किसी विषय या बात की सत्यता या ग्रसत्यता के बारे में संशय या सन्देह करने वाला।
उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—ए पाली री चोथजी संकलैचो दरसन करवा ग्रायो। घणौ संकीलौ तौ ग्रौ छै पिण इण बात री संका तौ उणरै ई न पड़ी। तौ थारै ग्रा संका कठा सूं पड़ी।
—भि. द्र.

२ देखो 'संकाळू' (रू. भे.)

संकु–सं. पु. [सं. शंकु] १ कोई नुकीली वस्तु।
२ कील, मेख।
३ भाला, बरछा।
४ शंख (दस लाख कोटि के बराबर) नामक संख्या।
५ एक मछली।
६ कामदेव।
७ शिव, महादेव।
८ राक्षस, दैत्य।
९ हंस, बगुला। (१०) लिंग। (११) नुकीली वस्तु की नोक।
१२ बारह ग्रंगुल के बराबर का नाप या उक्त नाप की खूंटी।
१३ विष, जहर। (१४) एक प्रकार का वाद्य विशेष।
१५ घड़ी की सुई। (१६) जलजन्तु विशेष। (१७) वसिष्ठ एवं ऊर्जा के पुत्रों में से एक पुत्र जो स्वयं ऋषि था।
१८ पाप, कलुष। (१९) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम।

२० उग्रसेन का पुत्र एक यादव राजा। (२१) राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

२२ एक दानव। (२३) कृष्ण व सत्या का एक पुत्र।

२४ द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित एक यादव।

रू. भे.—संकू

संकुकरण-सं. पु. [सं. शंकु+कर्ण] १ शंकु के समान नुकीले व खड़े कान वाला, गधा। (हि. ना. मा.)

२ शिव का एक पार्षद। (३) स्वामी कार्तिकेय का पार्षद।

४ एक नाग का नाम। (५) अशोकवन में सीता के संरक्षणार्थ नियुक्त एक राक्षस। (६) दक्ष का अनुचर। (७) कश्यप व दनू के पुत्रों में से एक दानव। (८) जनमेजय व वपुष्टमा के पुत्रों में से एक राजा।

रू. भे.—संकुकरण।

संकुकरणेसर, संकुकरणेसुर, संकुकरणेस्वर-सं. पु. [सं. शंकुकर्णेश्वर] एक शिवमूर्ति जिसके पूजन से अश्वमेध यज्ञ का दसगुना फल प्राप्त होता है।

संकुड़न—देखो 'सिकुड़न' (रू. भे.)

संकुड़णो, संकुड़बो—देखो 'सिकुड़णो, सिकुड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ दिन जेहो रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा संकु-ड़िणि। नीठि हुई आकास पोस निसि, ओछा करणि पंगुरिणि।
—वेलि.

उ०—२ गुरजवंसी कमठ, तुरक हिंदू संकुड़िया। गड्ढ द्रुग परगाद, लोह नै ताळा जड़िया।—गु. रू. बं.

संकुड़णहार, हारो (हारी), संकुड़णियो—वि०।

संकुड़िग्रोड़ो, संकुड़ियोड़ो संकुड़योड़ो—भू० का० कृ०।

संकुड़ीजणो, संकुड़ीजबो—भाव वा०।

संकुड़ित-वि. [सं. संकुचित] १ सिकुड़ा हुवा, संकुचित।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—संकुड़ित समसमा संध्या समये, रति वंछित रुकमणि रमणि। पदिम सपू ढिठि पत्र पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।
—वेलि.

३ तंग, संकड़ा।

संकुड़ियोड़ो—देखो 'सिकुड़ियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. संकुड़ियोड़ी)

संकुचन-सं. स्त्री. [सं. संकुचन] संकुचित होने की क्रिया, अवस्था या भाव।

रू. भे.—सुकचण।

संकुचनि-सं. स्त्री.—संकोच, लज्जा।

उ०—[illegible] वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर-वर। [illegible] संकुचनि, सुंदरी हारि देहुरा सर।—वेलि.

वि. स्त्री.—संकोच करने वाली, लजवन्ती, लज्जावान।

संकुचणो, संकुचबो-क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

उ०—अग विस्फोटता कीयो। जंभाई आई पाछै वयों थोड़ा थोड़ा चाल्या गति दिखाई। पाछै वयों एक संकुच्या। ए पांचों बांण सेनां नैं लागा।—वेलि टी.

२ सिमटना, छोटा होना।

उ०—दिन तो यै सें संकुचिवा लागो जैसें रिणाई को देतें दांम को देणहार संकुचै। क्रमि क्रमि यों दिन संकुचै छै अर पोस कै विखै रात्रि छै सु आकास कों निठि छोडै छै।—वेलि टी.

३ सिकुड़ना, सलवट पड़ना, झुरियां पड़ना।

४ बन्द होना। (पुष्प, पत्ता)

संकुचणहार, हारो (हारी), संकुचणियो—वि०।

संकुचिग्रोड़ो, संकुचियोड़ो. संकुच्योड़ो—भू० क० कृ०।

संकुचीजणो. संकुचीजबो—भाव वा०।

संकुचाणो, सकुचाबो, सकुचणो. सकुचबो सकुछणो, सकुछबो, सुकचाणो. सुकचाबो, सुकजाणो सुकजाबो—रू० भे०।

संकुचाणो संकुचाबो—देखो 'सकुचणो, संकुचबो' (रू. भे.)

सकुचाणहार, हारो (हारी), संकुचाणियो—वि०।

सकुचायोड़ो—भू० का० कृ०।

सकुचाईजणो, संकुचाईजबो—भाव वा०।

सकुचायोड़ो— देखो सकुचियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सकुचायोड़ी)

संकुचित-वि.—१ संकुचन युक्त। (२) लज्जित, शर्मिन्दा। (३) बिना विस्तार का। (४) अव्यापक।

सं. स्त्री.—कली। (डिं. को.)

संकुचियोड़ो-भू. का. कृ.—१ लजित हुवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ। (२) सिमटा हुआ, छोटा हुवा हुआ. (३) सिकुड़ा हुआ, सलवट पड़ा हुआ, झुरियां पड़ा हुआ. (४) बन्द हुवा हुआ. (पुष्प, पत्ता)
(स्त्री. संकुचियोड़ी)

संकुडणो, संकुडबो—देखो 'सिकुड़णो, सिकुड़बो' (रू. भे.)

उ०—गोम ऊमर हुग्रै वोम गाहीजियै, ग्रंत रै वोम गरदोम ग्रागा। सोनरा ऊधड़ै थोभ रा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा।
—कल्याणदास महडू

संकुडणहार, हारो (हारी), संकुडणियो—वि०।

संकुडिग्रोड़ो; संकुडियोड़ो, संकुड्योड़ो—भू० का० कृ०।

सकुडीजणो, संकुडीजबो - भाव वा०।

संकुडियोड़ो—देखो 'सिकुड़ियोड़ो' (रू. भे.) (स्त्री. संकुडियोड़ी)

संकुद्वार-सं. पु. [सं संकुद्वारा] गुजरात के निकटस्थ छोटा टापू जहां नारायण की मूर्ति है।

संकुर-स. पु. [सं. संकुर] एक दानव। (पुराण)

संकुरय—सं. पु. [सं. संकुरय] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

संकुरोम, संकुरोमन–सं. पु. [सं. शंकुरोमन्] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक सहस्रशीर्ष नाग ।

संकुळ–वि. [सं. संकुल] १ परिपूर्ण, भरा हुआ ।
उ०—ऊजळ मळ संकुळ पीठी उबटांणी, करड़ै लौ' साथै अंरण कूटांणी । कळियां कूंलां री कादै में कळगी, विसहर संगत सूं पीपळियां बळगी ।—ऊ. का.
२ घना ।
२ पूर्ण, पूरा ।
४ अस्त-व्यस्त ।
सं. पु.—१ झुंड, समूह ।
२ भीड़ ।
३ जनता ।
४ तुमुल युद्ध ।
उ०—सेल भचक्कै संकुळै अति घाव ठबक्कै ।—वं. भा.
५ परस्पर विरोधी वाक्य ।

संकुळि, संकुळित–वि. [सं. संकुलित] १ परिपूर्ण, भरा हुआ ।
उ०—१ उम्मेद भूपति अंग में, रस वीर संकुळि रंग में । वर वीर बारह से प्रबीरन चक्क लै चहुवांण ।—वं. भा.
उ०—२ पांन संकुळित डाळ, तावड़ौ किसांण टाळै । बारै मासां सतत, जिनावर सरणौ भाळै ।—दसदेव
२ अस्त-व्यस्त । (३) एकत्रित इकट्ठा किया हुआ ।

संकुळी–सं. स्त्री. [सं. संकुली] १ रीढ़ की हड्डी ।
उ०—फटी पन्नग संकुळी, फन पलटि फिराया । खुल्लै नैन महेस कै, नव माळ लुभाया ।—वं भा.
वि. [संकुलित] परिपूर्ण, भरा हुआ ।

संकुळौ, संकुलौ–सं. पु. [सं. शंकुला] १ सुपारी काटने का सरौता ।
२ एक प्रकार का नश्तर या छुरी ।
३ सरौते से काटा गया सुपारी का टुकड़ा ।

संकुसिरा–स. पु. [सं. शंकुसिरा] कश्यप व दनु के संसर्ग से उत्पन्न ६१ दानवों में से एक ।

संकू—देखो 'संकु' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

संकूकरण—देखो 'संकुकरण' (रू. भे.) (अ. मा.)

सकेत–सं. पु. [सं. संकेतः] १ घर, भवन । (अ. मा; ह. नां. मा.)
२ नाम । (अ. मा.)
३ इशारा ।
४ चिन्ह, निशान ।
५ वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय । (टोकन, अंगूठी)
६ ऐसी शारीरिक चेष्टा, जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय ।
७ किसी घटना, प्रसंग आदि पर प्रकाश डालने वाली कोई बात ।
८ किसी प्रेमी एवं प्रेमिका के मिलने हेतु पूर्व निश्चितस्थान ।
९ कोई शृंगारिक चेष्टा ।

संकोड़णौ, संकोड़बौ–क्रि. अ.—१ संकुचित होना, लज्जित होना ।
उ०—गय गमणी गूजंर धरा, आंणां दखणी चीर । मन संकोड़ी माळवी, सोहइ तुझ्झ सरीर ।—ढो. मा.
२ भयभीत होना, डरना ।
उ०—सुर सुणंतां उर सत्रां संकोड़ै, राजु खांन नगारौ रोड़ै । सुख अप करण धरा फिरि साजा, रूठै जम सारीखौ राजा ।
—रा. रू.
३ संकुड़ित होना, बंद होना ।
४ सलवट पड़ना, सिकुड़ना ।
क्रि. स.—५ सिकोड़ना, संकुचित करना ।
६ भयभीत करना, डराना, आतंकित करना ।
उ०—अन अन्न देस धर गिर अवर संकोड़ौ संसार सहि । चहुवांण पिथम सूं चापड़ै 'गज्जणवै' सुरतांण गहि ।—नैणसी
७ संकुचित करना, लज्जित करना ।
८ लिहाज की दृष्टि से दबाव डालना, दबाना ।
९ सलवट डालना, सिकोड़ना ।
संकोड़णहार, हारौ (हारी), संकोड़णियौ—वि० ।
संकोड़िओड़ौ, संकोडियोड़ौ, संकोड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
संकोड़ीजणौ, संकोड़ीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
संकोडणौ, संकोडबौ—रू० भे० ।

संकोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ संकुचित हुवा हुआ/संकुचित किया हुआ, लज्जित हुवा हुआ/लज्जित किया हुआ. (२) भयभीत हुवा हुआ/भयभीत किया हुआ, डरा हुआ/डराया हुआ. (३) संकुड़ित हुवा हुआ/संकुड़ित किया हुआ, बन्द हुवा हुआ/बन्द किया हुआ. (४) सलवट पड़ा हुआ/सलवट डाला हुआ, सिकुड़ा हुआ. (५) लिहाज की दृष्टि से दबाव डाला हुआ, दबाया हुआ ।
(स्त्री. संकोड़ियोड़ी)

संकोच–सं. पु. [सं. सं. संकोचः] १ वह मानसिक स्थिति जिसमें भय, लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नहीं चाहता ।
२ असमंजस, झिझक, हिचकिचाहट ।
३ सिकुड़ने की क्रिया या भाव ।
६ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार ।
५ एक प्रकार की मछली ।
६ केसर । (नां. मा; ह. नां. मा.)
७ लिहाज, प्रभाव ।
उ०—आसव रौ उतार हुवां समुद्रसिंह नूं तौ उण रा पुरोहित

कौशिक प्रमुख संकोच रा कोरा बीच में प्राइ पाछो मोड़ियो ।
—वं. भा.

८ शर्म, लज्जा । (डि. को.)

क्रि. प्र.—प्राणो, करणो, पड़णो, होणो ।

९ प्राचीनकालीन राजा जो पृथ्वी का शासक था ।

रू. भे.—संकोच, सकुच ।

संकोचणो, संकोचबो-क्रि. प्र.—१ संकुचित होना, भयातुर होना ।

उ०—साहबरी सिणगार सजि, प्राई बालंम पास । मन संकोची पदमिणी, प्रीतम देखि उदास ।—ढो. मा.

२ असमंजस, झिझक या हिचकिचाहट होना ।

उ०—जो देसंतर ऊजरै, बाधीजै दळ संग । हर संकोचै मीरजां, तो सोचै 'मकरंद' ।—रा. रू.

३ कम होना, घटना ।

उ०—पाछै रह्या मास बरस तिण में दिन रा त्याग है । पारै लारै पाछै तीन बरस रह्या तिका में पांचूं तिथ्यां रा थारै त्याग है । बाकी बीस बरस ने चार महीना प्रागरै रह्या । इम संकोचतां संकोचतां पोहर री नेमो करतां पछै घड़ियां रै लेखै छै ।
—भि. द्र.

४ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना ।

संकोचणहार, हारौ (हारी), संकोचणियौ—वि० ।

संकोचिश्रोड़ो, संकोचियोड़ो, संकोच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संकोचीजणो, संकोचीजबो—भाव वा० ।

संकोचित-वि. [सं. संकुचित] १ सिकुड़ा हुआ, तंग ।

२ संकोच-युक्त, जिसमें संकोच हो ।

३ लज्जित, शर्मिन्दा ।

४ जिसमें उदारता का अभाव हो, अनुदार ।

संकोचियोड़ो-भू. का. कृ.—१ संकुचित हुवा हुआ, भयातुर हुवा हुआ । २ असमंजस, झिझक या हिचकिचाहट में पड़ा हुआ । ३ कम हुवा हुआ, घटा हुआ । ४ लज्जित हुवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ ।

(स्त्री. संकोचियोड़ी)

संकोचो-सं. पु.—एक प्रकार का रेगिस्तानी जन्तु विशेष जिसके शरीर पर छोटे छोटे कांटे या सूलें होती है । यह अपने शरीर को आवश्यकता पड़ने पर सिकोड़ कर गेंद के आकार का बना लेता है ।
(डि. को.)

संकोज—देखो 'संकोच' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—रतनां मद में मन निसंक हुई थी तिण रा संकोज हूं गरण लागी, लाज रै भार आंखियां झुकण लागी ।—र. हमीर

संकोड़णो, संकोड़बो—देखो 'सकोड़णो, संकोड़बो' (रू. भे.)

उ०—सेज रोग सारंग, मन कृपान छोड़ै । मच्छ पणौ मेल्हियौ; नहीं [illegible] संकोड़ै ।—रु. ह. वं.

संकोड़णहार, हारौ (हारी), संकोडणियौ—वि० ।

संकोड़िश्रोड़ो, संकोड़ियोड़ो, सकोड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संकोडीजणो, संकोडीजबो—भाव वा० ।

संकोड़ियोड़ो—देखो 'सकोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संकोड़ियोड़ी)

संको-सं. पु. [सं. शंका] १ सन्देह, शका, भ्रम ।

उ०—राजा कह्यो—बावळी, थनै इण में संको करण री कांई बात ! अणां रो कंवर है, फोड़ा नीं खावैला तो दूजो कुण खावैला थूं बतावै जकी बात कर । थनै साजी सूरी देसूं उण दिन म्हारो जमारो सुफळ होवै ।—फुलवाड़ी

२ भय, डर, आतंक ।

उ०—१ लोक जठै रंको नहीं, नंह संको पर थाट । सोढां जस डंको घुरै, पाघर वंको घाट ।—बां. दा.

उ०—२ अर लागां घमसांण असंको, समजतियां नांखण उर संको ।—क कु. बो.

३ लज्जा, शर्म ।

उ०—काली मासी उणनै घड़ी घड़ी पूछती के जद कदैई अउक पड़ै, मुळकणी हालै के अण-भावण व्है तो सुभट बताय दे, मां सूं किण भात री संको ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इत्ती बात सरू करदी तो अबै कैड़ी लाज । म्हारै माथै इत्ती भरोसो करनै आया तो पछै बोलण में कांई संको ।
—फुलवाड़ी

४ भेद-भाव, छिपाव ।

उ०—नगर सेठ बोल्या—बतावो, बतावो, अंदाता सूं कैड़ी चोज, कांई संको ।—फुलवाड़ी

५ चिन्ता, खयाल ।

उ०—टाट रो सैलांण मिट जावै तो नवो जमारो मिळ्यो । थूं मन में किणी बात रो संको मती राखजै, मूंडै मांग्यो इनांम देवाला ।—फुलवाड़ी

६ लिहाज, परवाह ।

उ०—हूं तो किण जोगो, पण म्हारै लायक कोई कांम व्है तो आधी रा ई भुळावण में संको मत करज्यो ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—आणो, करणो, लागणो, होणो ।

रू. भे.—सांक ।

संक्रंदन-सं. पु. [सं.] १ इन्द्र । (अ. मा.)

२ विदर्भ देशाधिपति वपुष्मान् का पिता ।

३ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

४ भौत्य मनु का एक पुत्र । (पुराण)

संक्रति, संक्रती-सं. पु. [सं. संकृती] १ यम । (अ. मा.)

२ महारथी जय जो अनेन के वंशज जयसेन का पुत्र था ।

३ रन्तिदेव के पिता एक प्राचीन नरेश ।

संक्रम-सं. पु. [सं. संक्रमः] १ दुःख, कष्ट या कठिनाई से बढ़ने की क्रिया।

२ पुल, सेतु।

३ ग्रह का किसी राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया।

४ चलने या गमन करने का कार्य।

५ अवस्था में परिवर्तन।

६ दुर्गम मार्ग, सकरा रास्ता।

७ वस्तु प्राप्ति का साधन।

८ स्कन्ददेव का एक पार्षद।

संक्रमण-सं. पु. [सं.] १ गमन, चलने या आगे की ओर बढ़ने की क्रिया या भाव।

उ०—अण जांण विगत ऊपर अडांह। संक्रमण प्रबळ किय सोह-डांह।—पा. प्र.

२ अतिक्रमण।

३ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया या भाव।

४ सूर्य के उत्तरायण या दक्षिणायण में होने वाला दिन।

५ घूमने या फिरने की क्रिया या भाव।

६ परिवर्त्तन।

रू. भे.—संक्रांमण।

संक्रमणकाळ-सं. पु. यौ. [सं. संक्रमणकाल] १ एक रूप से बदल कर दूसरे रूप में आने का समय।

२ अंतरण, हस्तांतरण।

३ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने का समय।

संक्रमणौ, सक्रमबौ-क्रि. अ.—१ गमन करना, जाना, आगे की ओर बढ़ना।

उ०—प्रफूलंत थइ फूलां चोसरा वणावे परी, धणौ दिनां जोसरा चोसटी गीत गात। भालां ओघ खवंतां संक्रम्यौ भूरै लोक भेळौ, भिड़ज्जां ताखड़ां हूंता 'जसा' हरौ भ्रात। —पावूदांन आसियौ

२ अतिक्रमण करना।

३ घूमना, फिरना।

उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क। सलभ मुआं सिर संक्रमै, कीड़ी जेम कटक।—बां. दा.

४ किटाणु, रोग आदि का फैलते हुए एक से दूसरे में होना।

५ प्रवेश करना, पहुँचना।

उ०—धर धळी धीरा धूंधळा, खड़ तणा जाया खूर। साथ कोळू सीम में, संक्रम्या ऊगां सूर। —पा. प्र.

६ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना।

संक्रमणहार, हारौ (हारी), संक्रमणियौ—वि०।

संक्रमिओड़ौ, संक्रमियोड़ौ, संक्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संक्रमीजणौ, संक्रमीजबौ—भाव वा०।

सक्रमियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गमन किया हुआ, गया हुआ, आगे की ओर बढा हुआ. २ अतिक्रमण किया हुआ. ३ घूमा हुआ, फिरा हुआ. ४ प्रवेश किया हुआ, पहुंचा हुआ. ५ किटाणु, रोग आदि फैला हुआ. ६ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश किया हुआ।

संक्रांत, संक्रांति—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिज नी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणीं, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

संक्रांतिचक्र-सं. पु. [सं.] मनुष्य के आकार का नक्षत्रों के राशि संचार से अंकित एक प्रकार का चक्र जो मनुष्यों के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है। (फलित ज्योतिष)

संक्रांतिव्रत-सं. पु. [सं.] संक्रांति के दिन किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—इस दिन स्नानादि करके अक्षत का अष्टकमलदल बना सूर्य की स्थापना कर पूजन किया जाता है। यह निराहार, साहार, अयाचित, नक्त या एकमुक्त किया जा सकता है।

संक्रांमक-वि. [सं. संक्रामक] संसर्ग या छूत से फैलने वाला।

सं. पु.—संसर्ग या छूत से फैलने वाला रोग।

संक्रांमण—देखो 'संक्रमण' (रू. भे.)

उ०—१ अे संक्रांमण सुंदरी, वहितइ विलसइ वार। जिम्म तिम्म यौवन पछइ, लाभइ नहीं लगार।—मा. कां. प्र.

उ०—सही अे सक्रांमण वहिउ, कइ माया अग जाळ। कइ समणू कइ सुन्य सर, इंद्र जाळ कइं आळ।—मा. कां. प्र.

संक्रांमि, संक्रांमी-सं. पु. [सं संक्रामिन्] संक्रमण कराने वाला।

संक्रांयत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

संक्षिप्त-वि. [सं.] १ जो छोटे रूप में कहा या लिखा गया हो, मुख्तसर।

२ लघु।

३ जिसे घटा कर छोटा रूप दे दिया गया हो।

संक्षिप्तता-सं. स्त्री.—संक्षिप्त होने की अवस्था, भाव या स्थिति।

संक्षिप्ता-सं. स्त्री. [सं.] बुधग्रह की सात प्रकार की गतियों में से एक गति। (ज्योतिष)

संक्षेप-सं. पु. [सं.] १ कोई बात थोड़े में कहना या लिखना, मुख्तसर।

उ०—संक्षेप माफक भाव ए कह्या, सूत्र अनुसार जोय।

—जयवांणी

२ संकोचन।

३ समास। ४ सार संग्रह।

रू. भे.—संखेप, संखेव, संख्यप, संछेप।

संख-स. पु. [सं. शंख] १ समुद्र में पाया जाने वाला एक बड़े मृत कीड़े का अस्थिपंजर जो फूंक देकर बजाया जाता है।

उ०—१ संख सबद नौबजै। ज्यां सूं न्यारी न्यारी जात।
—मीरां

उ०—२ औ नांव उणरै कांना में संख ज्यूं गूंजियौ। मरण वाळा रो नांव पूछ्यो ! नांव तो ठीक-ठाक है, पण मरण वाळा मिनख री नाव पूछ्यौ काई जांणने राख्यौ।—फुलवाड़ी.

उ०—३ संख नगारा तुरही बाजा, अनहद की नहि जांणै बाजा।
—अनुभववांणी

उ०—४ संख मृगाद जिणि पूरिय, भूरिय हरि मनि जंपु। टोल टमाटर रेवत, दैवत मनि आकंपु।—जयसेखर सूरि

पर्याय०—कंबु, गोह, त्रिरेख, दधिसुत, दर, नव्यभरेख, रतन, वारिज, विसर, समिमहोदर, सायरत।

क्रि. प्र.—पूरणो बजाणो, बाजणो।

२ एक सौ खरब की संख्या।

३ हाथ या पैर की अंगुलियों पर शंख की आकृति का चिन्ह विशेष जो सामुद्रिक विद्या के अनुसार शुभ या अशुभ माना जाता है।

उ०—असि मच्छ सकति तोरण उदार, अंकुसां संख चक्र सुभ अपार।—सू. प्र.

४ कनपुटी या कनपटी की हड्डी।

५ सिर में होने वाला दर्द विशेष जो प्रायः कान के पास होता है।
(अमरत)

६ हाथी का गंडस्थल। (७) सिर की हड्डी।

७ एक राक्षस जिसका वेदों को चुरा ले जाने के कारण विष्णु ने वध किया था।

उ०—कैटभ मधु कुंभ, कबंध कचरिया, संख संभ सारीसं। खळ अवगाह अनेरा माया, दाढ पीसतौ दीसं।—र. ज. प्र.

८ कुबेर की निधि के देवता।

९ कुबेर की नव निधियों में से एक। (हि. को; नां. मा.)

१० नर सूअर के मुंह के ऊपरि भाग में से निकल कर तुंड के पास तक आने वाला शंखाकृति दांत विशेष। क्रोधावस्था में सूअर इसको नीचे वाले नुकीले दांत से घिस कर उसे और अधिक पैना करता है। यह मुंह के स्थान पर होता है।

उ०—१ नोग मगळा घूमरो किया ऊभा राव रो डील संभाळै छै और टाटाळी निजोर थकियो परनं पासै जाय ऊभो खेल करै छै। एरा मुंहै छै संख सूं राग लगाय फौज सांम्हो जोवं छै।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ पोही नो कोई संवाय नकियो नहीं, ऊनां ही उलाळ निजरी बरछी वाही, केही तीर वाव्या नो डाढाळै रा डील में साल्हियां पण परनै पासै जाय माणी बरछी ऊपर आय मड़ो रहियो। घुरघुरी देर माना तीर उखाड़ दिया। केही अकेक मुंह सूं पकड़ काढ नांखिया। ऊभो ऊभो संख सूं रोह लगावै छै।
—डाढाळा सूर री वात

११ छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक शस्त्र।

उ०—चक्र, धनुष, वज्र, खड्ग, क्रपांणि, तोमर, कुंत, त्रिसूल, शक्ति, पासु मुग्दर, मतिका, भल्ल, भिडपाळ गुरुज, लुंठि, गदा, संख, परसु, पटसु, यष्टि, सपन, मटसु, हल, मूसळ, कुलिस, कातर, करपत्र, तरवारि, कुद्दाल, यंत्र, गोफल, डाहणि, संडासिका, कुहाडी, हिपुस इति छत्तीस दंडायुधानि।—व. स.

१२ विष्णु का एक शस्त्र।

उ०—जाके सिर मोर मुकट, मेरै पति वोई। संख चक्र गदा पद्म कंठ माळा सोई।—मीरां

१३ छप्पय छन्द का ६९ वां भेद विशेष जिसमें १४२ लघु व ३ गुरु अर्थात् १४८ मात्राएँ मतान्तर से २ गुरु व १४८ लघु अर्थात् १५२ मात्राएँ होती हैं।

१४ दो लघु मात्रा के 'नगण' के द्वितीय भेद का नाम।
(डि. को.)

१५ दंडक वृत्त के अन्तर्गत एक वर्ण वृत्त जिसमें दो तगण और १४ रगण होते हैं।

१६ कपाल। १७ राजा विराट का पुत्र। १८ चरण-चिन्ह।

१९ ललाट। २० कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग।

२१ स्वरोचिष मनु का एक पुत्र।

२२ वायु के जोर से चलने से उत्पन्न शब्द।

२३ धारानरेश गंधर्वसेन का ज्येष्ट पुत्र व विक्रमादित्य का अग्रज जिसका वध करके विक्रमादित्य राजा बना था।

२४ हैहयवंशीय राजा श्रुताभिधान जो विष्णुभक्त थे तथा वेंकटेश पर्वत पर अगस्त्य ऋषि के साथ तपस्या की थी।

२५ मणिभद्र व पुण्यजनी के एक पुत्र का नाम जो यक्ष था।

२६ जैगीषव्य ऋषि का पुत्र, एक ऋषि।

२७ कुबेर सभा का एक यक्ष।

२८ पाण्डवपक्षीय रथी, केकयराजकुमार।

२९ जैनियों के ८८ ग्रहों में से उन्नीसवें ग्रह का नाम।

वि.—१ मूर्ख।

उ०—संखां ढिग संखा अधम असंका, फूड़ फूड़ फूकंदा है।
—ऊ. का.

यौ.—डफोळसंख।

२ बाह्य आडंबर रचने वाला।

३ रूखा-सूखा।

४ कठोर।

५ श्वेत, सफेद। ६ (डि. को.)

६ उदासीन।

७ देखो 'संख्या' (रू. भे.)

उ०—नह संख्या कुंजरा, न का संख्यां केकांणां। नह संख्या हिंदुवां, सख नह मुस्सळमांणां।—गु. रू. वं.

रू. भे.—संखु।

अल्पा.—संखियौ, संखोलियौ, सांकलियौ, सांकळ्यौ, सांकल्यौ, सांकूळ्यौ, सांकूल्यौ, सांखूल्यौ।

मह.—संखौ।

संखकार-सं. पु. [सं. शंखकार] विश्वकर्मा पिता व शूद्रा माता के संसर्ग से उत्पन्न एक जाति विशेष। (पुराण)

सखकूट-सं. पु. [सं. शखकूट] एक पर्वत। (पुराण)

संखचूड़-सं. पु. [स. शंखचूड़] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस।

२ कुवेर का एक दूत और सखा।

३ एक यक्ष।

४ द्वारिका निवासी एक गृहस्थ। (पौराणिक)

५ एक प्रकार का भयंकर विषेला सर्प, शंखचूर।

उ०—वांडी काळा गोहिरा, सरळक अर संखचूड़। परवा में गैंळीजिया, लिट लिट ठंडी धूड़।—बादळी

६ राम सेना का एक वानर।

७ एक विष्णु-भक्त राक्षस जिसका, अत्याचारी हो जाने पर, शिव ने वध किया।

८ नागवंशी क्षत्रियों की वंशावली में एक नाग का नाम।

उ०—दक्ष प्रजापति राजा तिण रै तेरह पुत्री हुई तिकै राजा कासिप नै परणाई तिण रौ विस्तार कहै छै।......तीजी रांणी कद्रु नांमा तिण रा नव कुळी नाग हुवा। नागां रा नांम—तक्ष-नाग, पदमनाग, महापदम नाग, संखचूड़ नाग, पुलस्तनाग....।
—रा. वं.

९ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

संखण-सं. पु. [सं. शंखण] इक्ष्वाकुवंशीय खगण राजा का नामांतर।

संखणी-सं. स्त्री. [सं. शंखिनी] १ शिवलिंगी के समान फलों वाली एक वनौषधि।

२ कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से चौथे भेद की स्त्री।

उ०—हसि के साही कहै इसौ, क्यूं वे खोजा खूब। हम महलै सब संखणी, नहि पदमणि महबूब।—प. च. चौ.

वि. वि.—यह न अधिक मोटी व न अधिक पतली होती है। इसका शिर व स्तन छोटे एवं इसके पैर व बाहें लम्बी होती है। इसका स्वभाव कर्कश व चुगलखोर होता है। यह काम से अत्यधिक पीड़ित व परपुरुष-गमनी होती है।

३ गुदा द्वार की एक नस।

४ एक देवी।

५ एक अप्सरा।

६ मुंह की नाड़ी। ७ सीप।

८ कलहप्रिय नारी।

९ एक शक्ति जिसकी बौद्ध लोग पूजा करते हैं।

१० घोड़े के दोनों नेत्रों के बीच में होने वाली एक अशुभ भंवरी। (चक्र)। (शा. हो.)

११ वह गाथा छन्द जिसमें सकार की बाहुल्यता हो। (पिंगल)

उ०—विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत। च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतावी।
—र. ज. प्र.

रू. भे.—संखनी, संखिणी, संखिनी, सुंखणी, सुंखनी, सुंखिणी, सुंखिनी।

संखतीरथ-सं. पु. यौ. [सं. शंखतीर्थ] सरस्वती नदी के निकटस्थ का एक पुण्य तीर्थ।

संखद्राव-सं. पु. [सं. शंखद्राव] एक प्रकार का अर्क। (वैद्यक)

वि. वि.—इसका प्रयोग उदर रोग के उन्मूलनार्थ किया जाता है। यह इतना तेज होता है कि धातुओं को भी गला देता है अत: इसे कांच या चीनी में रखा जाता है।

संखधर-सं. पु. [सं. शंखधर] १ शंख को धारण करने वाला, विष्णु।

उ०—कंठ पोत कपोत कि कहूं नीळकंठ, वडगिरि कालिंद्री वळी। समै भागि किरि संख संखधर, एकण ग्रहियौं अंगुली।—वेलि.

२ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

रू. भे.—संखधार।

संखधार-सं. पु. [सं. संखधारिन्] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ देखो 'संखधर' (रू. भे.)

संखन-सं. पु. [स. शंखन] १ अयोध्यापति कल्माषपाद के पुत्र तथा सुदर्शन के पिता का नाम।

२ वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

संखनख-सं. पु. [सं. संखनख] एक नाग जो वरुण की सभा में रहकर वरुण की उपासना करता था।

संखनाद-सं. पु. यौ. [सं. शंख+नाद] शंख ध्वनि।

संखनाभ-सं. पु. [सं. शखनाभ] जैनियों के ८८ ग्रहों में से बीसवां ग्रह।

संखनारी-सं. स्त्री. [सं. शंख नारी] १ प्रत्येक पद में दो यगण का एक छन्द विशेष।

सं. पु.—२ सोमराजी नामक एक वृक्ष का नाम।

संखनी—देखो 'संखणी' (रू. भे.)

उ०—पढै जैत देवी सबै देत नासै, भजै कंकनी संखनी काळ फासै।
—ज्वाळामुखी री स्तुति

संखपद-सं पु. [सं. शंखपद] १ स्वारोचिष मनु का पुत्र, एक राजा।

२ कर्दम प्रजापति एवं श्रुति के पुत्रों में से एक पुत्र, राजा।

संखपरवत-सं. पु. [सं. शंखपर्वत] मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

संखनाभ-सं. पु. [सं. शंखनाभ] संखियो, सोमल।
 रू. भे.—संखनाभ।

संखपाणि, संखपांणी-सं. पु. यौ. [सं. शंखपाणि] १ जिसके हाथ में शंख हो, विष्णु।
 २ योद्धा।
 ३ संन्यासी।
 ४ विष्णु का पुजारी।
 वि.—जिसके हाथ में शंख हो।

संखपाद-सं. पु. [सं. शंखपाद] कर्दम ऋषि के पुत्र का नाम।

संखपाळ—देखो 'संखपाळ' (रू. भे.)

संखपिंड-सं. पु. [सं. शंखपिंड] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग।

संखपुष्पी-सं. स्त्री. [सं. शंख पुष्पी] १ सफेद अपराजिता। २ जुही ३ संखाहूळी।

संखप्रधान-सं. पु. यौ. [सं. शंख+प्रधान] किसी विशेष उद्देश्य से रखा हुआ शंख।
 उ०—तसु वंदन भवभंजन, अंजनपुंज समांन। नमियइ नाथ स चेतनि, चेतनि संखप्रधांन।—जयसेखर सूरि

संखभृत-सं. पु. [सं. शंख भृत] विष्णु।

संखमुख-सं. पु. [सं. शंखमुख] एक नाग का नाम।

संखमेखल-सं. पु. [सं. शंखमेखल] सर्पदंश से मृत प्रमद्वरा को देखने हेतु स्थूलकेश के आश्रम में उपस्थित ऋषियों में से एक।

संखरोम-सं. पु. [सं. शंखरोमन्] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र नाग।

संखवात-सं. पु. [सं. शंखवात] १ वैद्यक के अनुसार कनपटी में दाह सहित लाल रंग की एक फुन्सी निकल आने का रोग, जिसमें सिर और गला जकड़ जाता है।
 २ सिर की पीड़ा। (अमरत)

संखसबदी संखसबदी-सं. पु. यौ. [सं. शंख+शब्द+रा. प्र. ई] गधा। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संखसर, संखसिर-सं. पु. [सं. शंखशिर] वृत्रासुर का अनुचर एक राक्षस।

संखा—देखो 'संख्या' (रू. भे.)
 उ०—अलकापुरी राजन विचै, सोभा अधक अपार। ताकी संखा जांणिजो, जोजन दस्स हजार।—गज-उद्धार

संखाई-सं. स्त्री.—१ धूर्तता। २ कपट। ३ आडंबर।

संखाल-सं. पु. [सं. संख्य] युद्ध। (अ. मा.)
 रू. भे.—संखि।

संखाड़-सं. पु. [सं. शंख+[illegible]] १ बड़ा सूअर या वाराह जिसके ऊपर के होंठ पर मुंह के स्थान पर बड़े शंखाकृति दांत हों।
 २ विष्णु।

संखावळी-सं. स्त्री.—देखो 'संखाहूळी' (रू. भे.)

संखासर, संखासुर—देखो 'संख' (७) (रू. भे.)
 उ०—मच्छ रूप हुय अवतरै, संखासुर संघार। वेद आंण ब्रह्मा दिया, धरै सबर अवतार।—गज-उद्धार

संखाहूळी, संखाहूळी, संखाहोळी-सं. स्त्री.—भूमि पर छितराने वाला एक पौधा, जो प्रायः ऊसर भूमि में होता है। इसके पत्ते छोटे और धूसर रंग के होते हैं फूल भेद से इसके तीन भेद होते हैं। सफेद, लाल और नीला। सफेद कोयल, शंखपुष्पी।
 उ०—१ ऊंघाहूळी ऊजळी, संखाहूळी स्यांम। आंणइ अंधारी निसां, कांमिनि करवा कांम।—मा. कां. प्र.
 उ०—२ संखाहूळी सतावरी, नरिटवेलि नइं सोम। सायरि सारस सींगड़ो, पूरीसहू-परि रोम।—मा. कां. प्र.
 रू. भे.—संखावळी, सांकाहूळी, सांखाहूळी सांखोहोळी।

संखि—देखो 'संखात' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

संखिणी, संखिनी—देखो 'संखणी' (रू. भे.)
 उ०—पदमिनी स्वेत सिंगारा, रक्त सिंगारा चित्रणी। हस्तिनी नील सिंगारा, क्रस्ण सिंगारा संखिणी।—प. च. चौ.

संखिनीडंकिणी-सं. स्त्री. यौ. [सं. शंखिनीडंकिनी] एक प्रकार का उन्माद रोग।

संखियो-सं. पु. [सं. शृंक] १ एक प्रकार की सफेद पत्थर जैसी उपधातु जो बहुत विषैली होती है, सोमल।
 उ०—१ बाप नै तो रांम-जांणै कांई सुमत सूझी जको जांनियां सूं तीन दिन पै'ला मौत नै निवत दी। संखियो घोटनै पीयग्यो। तड़कै मूंडा माथै माखियां भिणभिणावण लागी।—फुलवाड़ी
 उ०—२ दुखां रो फंद कटण री आखरी आस मौत ही जकोई निरफळ गी। बेटी कांनी सूं आंख्यां फेर घरवाळी सांम्ही देखतो बोल्यो—इत्तो संखियो पीयो तो ई कार नीं करयो।—फुलवाड़ी
 २ उक्त उप-धातु की भस्म (मल्ल भस्म)।
 ३ एक प्रकार का छोटा घोंघा।
 ४ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)
 रू. भे.—संखोलियो, सांकलियो, सांकल्यो, सांकुल्यो, सांकूल्यो, सांखूल्यो।

संखी-सं. पु. [सं. शंखिन्] १ विष्णु।
 २ समुद्र।
 ३ शंख। (अ. मा.)
 सं. स्त्री. [सं. शंखिनी] ४ शिवलिंगी से मिलती-जुलती एक प्रकार की लता विशेष।

संखु—देखो 'संख' (रू. भे.)
 उ०—रिसह लंछणि धोरिउ उल्लसइ, सु भवपंकि पड्या जन तारिमिउ। अवरु संखु धरइ रलियांमणउ, ध्वनि-करी सिवपंथि मुहांमणउ।—जयसेखर सूरि

संखेप, संखेव—देखो 'संक्षेप' (रू. भे.)

उ०—१ तिण समै जोधपुर राव मालदै राज करै छै। विस्तार आगै लिखीजसी। पिण संखेप थोड़ौ सौ लिखियै छै।—द. वि.

उ०—२ सकरसै वीहै तरतकरका सवाद। ऐसी विध रस आई। राजेस्वरूं की भूंजाई। कविराजूं नै संखेप सी कही। सव कहिणै में ना आई।—सू. प्र.

उ०—३ सगळा वरत तणउ संखेव, निरारंभ रहइ नितमेव। जां लगि अटकळ कीजइ जेह, दसमउ देसावगासिक तेह।—स. कु.

संखेवि—क्रि. वि. [सं. संक्षेप] संक्षेप में, संक्षेप से।

उ०—सेतुज वंदिअ तीरथराज, गुरुया गणहर करउ पसाउ। वाग वांणि हउ सांमरउ देवि, चिहुँ गति गमण कहउ संखेवि।
—वस्तिग

संखेसर, संखेसरउ, संखेस्वर—सं. पु. [सं. शंखेस्वर] १ पार्श्वनाथ का एक नाम विशेष।

उ०—१ सेरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे। फलोधी थंभण पास, तीरथ तै नमुं रे।—स. कु.

उ०—२ महिमा मोटी त्रिभुवन मांहै, आवै यात्रा जग उमाहै। कल्पतरु फलियौ हितकांमी, सुखदायक संखेस्वर स्वांमी।
—ध. व. ग्रं.

२ जैनियों के तीर्थस्थान का नाम।

उ०—संखेस्वर सहिजिं जड, करतु कुरकुट ईस। आज वली उज्जंतगिरि, सिधसारण नमि सीस।—मा. कां. प्र.

संखोढाळ—सं. पु.—तांवे के पात्र में दूध, तिल, जौ आदि मिला जल संख में लेकर की जाने वाली पितृतर्पण विधि।

संखोदक—सं. पु. यौ. [सं. शंख+उदक] विष्णु की सेवा के शंख का जल जो सेवा निवृत्ति के उपरान्त उपस्थित जनों पर छिड़का जाता है।

उ०—उठै लोकांरी भीड़, सौ ठाकुरद्वारै जाय सधीया नहीं भीतर। उभा रहा। इतरै आरती हुई, संखोदक फेर ने वाह्यौ। तद लोक सरव आपोआप गया।—ठाकुरै साह री वात

संखोद्धार, संखोधार—सं. पु. यौ. [सं. शख+उद्धार] १ नाथ सम्प्रदाय में मृत्यु के पश्चात् मृतक की मोक्ष प्राप्ति के लिए किया जाने वाला योगमाया का पूजन।

२ द्वारिका के पास का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—१ ईडर संखोधार ऊपरा, आंण वधारै येती।-नवकोटी मारवाड खगां नर, सीहै लीध सहेती।—राव आसथांन रौ गीत

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढेल कहाया इण विगत्ति। इम लीध मंडळ ओखौ उदार, धर समंद वीटि संखोधार।—सू. प्र.

३ द्वारिका के पास का एक तीर्थ स्थान। (जैन)

उ०—········लक्षणवंती दिली, नवकोटी मारू आडि, संधु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण महाचीण भोट माहाभोट संखोद्धार, एतला संचिगत अह्यारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अहो सीआलक वोलि।—व. स.

[सं. शंख+धारिन्] ३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

५ संन्यासी।

६ विष्णु का पुजारी।

संखोलियौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सखियौ' (३) (रू. भे.)

संखौ—देखो 'संख' (मह; रू. भे.)

उ०—धारणौ गदा चक्रो:, संखौ पदम पांणि सारंगी। कमळा कंत कनौ:, तस्मै नाराइण नमौ।—गु. रू. बं.

संख्यप—देखो 'संक्षेप' (रू. भे.)

सख्या—सं. स्त्री. [सं.] १ गणना, गिनती, तादाद।

उ०—ओरंगसाह छत्री सह आयौ, उर राव रांण लगौ असहायौ। संख्या विण लीधां दळ साथै, मारग पड़ै पहाड़ां माथै।—रा. रू.

उ०—२ दूतां आखी वत्तड़ी, आयौ तहवरखांन। नर हैंवर संख्या किसी, कोई गैंवरां न ग्यांन।—रा. रू.

२ उपाय, युक्ति। ३ हेतु, कारण।

४ हिंदसा अंक।

५ समझ, बुद्धि।

६ विचार, खयाल।

७ ढंग, तौर, तरीका।

रू. भे.—संख, संखा।

संख्यात—वि. [सं.] १ वह जिसकी संख्या की जाय, गिनती की जाय।

[सं. संख्यात] २ गिनती किया हुआ, गिना हुआ।

सं. पु. [सं. संख्यातम्] संख्या, अंक।

उ०—पांच स्थावर तीन विकलेंद्रिय गयौ, संख्यात असंख्यात काल रयौ।—जयवांणी

रू. भे.—सख्याता।

संख्याता—सं. स्त्री. [सं.] १ पहेली विशेष।

२ देखो 'संख्यात' (रू. भे.)

उ०—१ तो पिण जीव न देखियौ, जव खंडवा कीधा चार। आठ सोलै संख्याता किया, पिण जीव दीठौ न्यार।—जयवांणी

उ०—२ दस ठांणा अति दीपतां रे जिनजी, गुण परयाय प्रयोग। पस्ति जेहनी वाचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग।—वि. कु.

संख्याति—वि.—१ मूर्तिमान, साकार।

२ असंख्य, अपार, असीम।

उ०—देवी मात जांनेसुरी ब्रन्न मेहा। देवी देव चामुंड संख्याति देहा।—देवि.

सं. पु.—मुलाकात, भेंट।

क्रि. वि.—प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने।

संख्यालिपि-सं. स्त्री. [सं.] वर्णों के स्थान पर संख्या सूचक चिन्ह या अंक लिखने की एक प्रकार की लेखन प्रणाली।

संग-सं. पु. [सं.] १ संगम, मिलन, मेल।

२ सम्पर्क, स्पर्श।

उ०—जिण सरामक रौ संग संग होतां ही आपरौ कोढ गमियो जाणि।—वं. भा.

३ संगत, सोहबत।

उ०—१ सांग सुहागी जिनस कौ, कदे न कांठै जाय। हरीया संग न कीजियै, जै कोई पारि बसाय।—अनुभववांणी

उ०—२ ब्रज बनिता कौ संग छांडिकै, कुबज्या संग लाई। मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरणां लिपट रही।—मीरां

४ संयोग।

५ सहवास।

उ०—सोवै प्रळगी मानधण, सुपनै ही नंह संग। गनका सूं राखै कपट, रमिया तोनूं रग।—बां. दा.

६ आसक्ति, वासना।

७ साथ।

उ०—१ दस पांच मांणस कुंवरजी कन्है राखौ बाकी कांम रा लोग सगळा संग हालौ।—गोपालदास गोड़ री वारता

उ०—२ हरणीमन हरियाळियां, उर हालिया उमंग। तीज परब रंग त्यारियां, सांवण लायौ संग।—बां. दा.

उ०—३ बूंदी ऊपर हल्लियो, हाडौ दुरजणसल्ल। दुंद सजोड़ अरोड़ दळ, संग राठौड़ दुभल्ल।—रा. रू.

उ०—४ कुण बेली संसार मैं, जीव एकलो जाय। हरीया हरि बिन दूसरा, संग न कोई थाय।—अनुभववाणी

उ०—५ देसरा 'माल' संग लियां चतुरंग दळ, थर हरां मार सेणां उथारै। रणनंदां सहल जूंभा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै।—कल्यांणदास महडू

८ सहित।

उ०—मणि कंकण अंगद, अमूल्य पद हाटक नूपर। नवळासी नवरंग, संग भुज बंसी सुंदर।—रा. रू.

[फा.] ९ पत्थर, पाषाण।

१० देखो 'संघ' (रू. भे.)

११ देखो 'सांग' (रू. भे.)

अल्पा;—संगड़ौ, संगडौ।

संगअसब, संगअसम—देखो 'संगअसव' (रू. भे.)

उ०—१ मंडि जाय ज्याय मतंग, संगअसम सरवर संग। तै बीच मरवर तम, छजि तखत जवहर छत्र।—सू. प्र.

उ०—२ संगअसम मरमरवर वस्मार बिलवर मूनै रूपै के मोरियां नूं अराक के प्यालै फिरतै हैं। जिस प्यानूं के बीच ही अनार दाळ गोनी पकराठी अंगुरी गन्दे गुलाब ऐसी भांति भांति के फूल ऐराक भरते हैं।—सू. प्र.

संगअसवद-सं. पु. [फा. अ. संगेअस्वद] वह काला पत्थर जो काबे की एक दीवार में लगा है और जिसे देखने के लिए मुसलमान मक्का जाते हैं, जिसे हज कहते हैं।

संगइ—देखो 'संगति' (रू. भे.) (जैन)

संगखारी-सं. पु. [फा. संगेखारा] एक प्रकार का खुरदरा और लाली लिए हुए पत्थर जो बहुत कड़ा होता है।

संगड़ौ—देखो 'संग' (अल्पा; रू. भे.)

संगजराहत-सं. पु. [फा. अ. संगेजराहत] एक सफेद और कोमल पत्थर जो घाव भरने के काम आता है, सिघा।

संगट—देखो 'संकट' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

उ०—रूज उपताप व्यथा पीड़ा रुग आमय आंम मांद आतंक। व्याध रोग असमाधि अपाटव, संगट गद मेटण हरि संक।

—ह. नां. मा.

संगटण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

संगटणौ, संगटबौ—देखो 'संकटणौ, संकटबौ' (रू. भे.)

संगटणहार, हारौ (हारी), संगटणियौ—वि०।

संगटिओड़ौ, संगटियोड़ौ, संगट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संगटीजणौ, संगटीजबौ—भाव वा०।

संगटियोड़ौ—देखो 'संकटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संगटियोड़ी)

संगटीयो-वि.—१ संकटापन्न।

२ दुःखी, पीड़ित।

संगट्टण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

उ०—सज्जौ अेक संगट्टण, पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढौ। मन में मिनखापण नेण सुरापण, खांधै खांपण मेल कढौ।

—चेतमांनखौ

संगठ—१ देखो 'संकट' (रू. भे.)

उ०—१ सुपखाळ अमीणाय पीर सुणौ, गढवाळां म संगठ आज घणौ। पित 'धांधल' अंस रू देव प्रभा, यम आखत चाळ ग्रहे ओळभा।

—पा. प्र.

उ०—२ रांम नांम है पतित उधारी, आयै संगठ लीयां उबारी। रांम नांम भगतिन का भीरी, सौ सिवरै ताही का सीरी।

—अनुभववांणी

२ देखो 'संघटण' (रू. भे.)

उ०—१ वडौ जस खाटियौ संगठ दांणव वहे, त्रिणावत ओडियो कंस आधी कहै।—पी. ग्रं.

उ०—२ साहिजादा अनै रायजादां संगठ, वांधियौ वळै दिखणाद वाळौ। ऊजळौ 'सुभौ' अजमेर रौ आभरण, कांमि आयौ वडै काजि काळौ।—मुभरांम गोड़ बलिरांमोत रौ गीत

संगठण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

संगठणी, संगठबौ—क्रि. अ. [सं. संघटनम्] १ संगठित होना, किसी वर्ग का एकमत होना, संगठन बनाना।
२ देखो 'संकटणी, संकटबौ' (रू. भे.)
संगठणहार, हारौ (हारी), संगठणियौ—वि०।
संगठिग्रोड़ौ, संगठियोड़ौ, संगठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संगठीजणौ संगठीजबौ—भाव वा०।

संगठासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे.)
उ०—ग्वाळा बिच ऊभौ ऊभौ गाज, सही संगठासुर बैठौ साभि। त्रणावत त्रोड़ि वंछासुर बांहि, ग्रहौ ग्रविगत तुहारी ग्राहि।
—पी. ग्रं.

संगठित—वि. [सं. संघटित] भलि-भांति व्यवस्था करके विभिन्न इकाईयों का एक में मिला हुआ।

संगठियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संगठित हुवा हुआ, किसी वर्ग का एकमत हुवा हुआ, संगठन बनाया हुआ।
२ देखो 'संकटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संगठियोड़ी)

संगडौ—देखो 'संग' (ग्रल्पा; रू. भे.)
उ०—पहली पेम न चखीया, पीछे क्या पछताय। पे बिनां सौ संगडौ, जनहरीया विख भाय। —ग्रनुभववांणी

संगत—सं. स्त्री. [सं.] १ साथ, सोहबत।
उ०—१ साधां की संगत दुख भारी, मांनौ बात हमारी। छापा तिलक गळ माळा उतारौ, पहिरौ हार हजारी।—मीरां
उ०—२ हरि भगति न की संगत करीयै, पलक घड़ी दिन पाव रे। जन हरि रांम कहै निस दिन मैं, जपता बेर न लाव रे।
—ग्रनुभववांणी
उ०—३ ऊजळ मळ संकुळ पीढी उबटांणी, करड़े लों' साथै ग्रैरण कूटांणी। कळियां कूळां री कादे में कळगी, बिसहर संगत सूं पीपळियां वळगी।—ऊ. का.
मुहा०—(१) संगत करणी=साथ में रहना, साधुग्रों की मंडली में बैठना। भक्तों को भोजन कराना।
(२) संगत जिसौ ग्रसर=जैसी सोहबत होती है वैसा ही प्रभाव पड़ता है।
(३) संगत जिसौ फळ=ग्रच्छे या बुरे जैसों कीं सोहबत होती वैसा ही परिणाम निकलता है।
(४) संगत जेड़ी रंगत=देखो 'संगत जिसौ ग्रसर'।
२ उपयुक्त या युक्तियुक्त कथन।
३ संग रहने या होने का भाव, ऐक्य, मेल।
४ मैत्री, घनिष्ठता।
उ०—सिंघणी रै भक्खण रा जांदा पड़ण लागा। केई वेळा लांघण रै'जाता। ग्रेकर तौ वा लगती तीन दिनां तांई भूखी रै'गी। भूख ग्रागै उणनें कीं चैतौ रह्यौ नीं। नीं धरम वैन रै गना रौ ग्रर नीं दिनां री संगत रौ।—फुलवाड़ी
५ ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है, संसर्ग।
उ०—मळियागिरां मंझार, हर कौ तर चंदण हुवै। संगत लियै सुधार, रूखां ई नै राजिया।—किरपारांम
६ साथ रहने वालों का दल या मंडली।
उ०—विदवांनां ग्रर धनमांनां री संगत, साथै देस सेवा भी। मार'जा तौ सै: चीजां छोड़'र हिरावड़ै पसुरी सौ लक्कड़, गळै में वैर बांध लियौ है।—दसदोख
७ सहवास, मैथुन, संभोग।
८ वेश्याग्रों या भांडों के साथ रहने वाला या तबला व सारंगी ग्रादि बजाने वाला पुरुष या पुरुषों का समूह।
९ हरि (ईश्वर) के भजन करते समय वाद्य बजाने वालों की मण्डली।
१० शालिशूक राजा का पिता एवं सुयशयस् राजा का पुत्र एक मौर्यवंशीय राजा।
११ हरिभजन में सम्मिलित जनसमूह।
उ०—ग्रेकर किणी गांव मैं ग्रेक रमतौ संत चौमासौ करचौ। सिंझ्या रा ब्याळू करनें वस्ती रा लोग भेळा व्है जाता। संत भगती व ग्यांन री बातां सुणावतौ। गांव मैं ग्रेक ही राईका रौ घर हौ। वौ घणां दिनां तांई संगत मैं नीं ग्रायौ तौ बस्ती रा वूड-बड़ेरा उणनें ग्रोळबौ दियौ।—फुलवाड़ी
१२ उदासी व निर्मल साधुग्रों के रहने का मठ।
वि.—१ जुड़ा हुग्रा, लगा हुग्रा, मिला हुग्रा।
२ इकट्ठा किया या हुवा हुग्रा, एकत्रित।
३ उपयुक्त, उचित, मुनासिब।
४ ग्रनैतिक सम्बन्धयुक्त हुवा हुग्रा।
५ संकुचित, सिकुड़ा हुग्रा।
६ दाम्पत्य या वैवाहिक बन्धन में बंधा हुग्रा।
७ समान वर्ग या जाति का।
८ देखो 'संगति' (रू. भे.)
रू. भे.—संगीति, संगीती।

संगतरास—सं. पु. यौ. [फा.संग+तराश] पत्थर काटने वाला।

संगति—सं. स्त्री. १ ताल-मेल, सामंजस्य।
२ संयोग, इत्तिफाकिया।
३ संगत होने की ग्रवस्था, क्रिया या भाव।
४ मेल-मिलाप।
५ ज्ञान।
६ ज्ञानप्राप्ति हेतु पूछे गये प्रश्न।
७ समाज।
८ देखो 'संगत' (रू. भे.)

उ०—१ म्याद्रा संगति पाय, नरक छोड़ै नेहरो। हाय कुसंगति लाग, गैल न पावै राजिया।—किरपारांम

उ०—२ घणो वैकुंठ हूंता सु विमांण, घणो सनकादिक ले अवसांण। घड़े वैकुंठ विमांण बनाय, वणी उधरी जिण संगति पाय।
—सू. प्र.

उ०—३ जिण री संगति रै प्रभाव स्वरगलोक रो मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रो निवास भाखियो।—वं. भा.

उ०—४ जन हरीया संगति करी, छाडि नूं नागर वेल। ता सेती निरदक रहो, अै कुसंगति मेल।—अनुभववांणी

रू. भे.—संगई, संगीति, संगीती।

संगनियो-सं. पु.—१ नाचने या गाने वाले के साथ रह कर तबला या सारंगी बजाने वाला, साजिंदा।

२ संगत करने वाला व्यक्ति।

संगन, संगना—देखो 'संग्या' (रू. भे.) (अ. मा.)

संगम-सं. पु. [सं.] १ दो पदार्थों के आपस में मिलने की क्रिया या भाव, मिश्रण।

२ वह स्थान जहा पर दो नदियां, धारायें या रेखाऐं आकर आपस में मिलती है।

३ मैथुन, संभोग, सुहबत।

४ संग, साथ।

५ संसर्ग, संस्पर्श।

उ०—दाळद पाप संताप दह, पारस संगम लोह पर। निज नांम नमो तो नारियण, हूंम नमो सिरताज हर।—ह. र.

६ सम्पर्क।

७ ज्योतिष में ग्रहों का संयोग या उनका एक स्थान पर एकत्रित होने की क्रिया।

संगमरमर, संगमरवर-सं. पु. [फा. संग+अ. मर्मर] एक प्रकार का प्रसिद्ध सफेद व चिकना पत्थर।

उ०—संगअसम संगमरवर कस्मीर बिलवर सूने रूपे के सोरियां नूं जड़ाऊ के प्याले फिरते हैं।—सू. प्र.

संगमूसो-सं. पु. [फा. संग+अ. मूसा] एक प्रकार का काले रंग का चिकना एवं बहुमूल्य पत्थर।

संगयशव, संगयसम, संगयस्व, संगयस्म-सं. पु. [फा. संग+यशब] एक प्रकार का हरे नीले, सफेद आदि रंगों का पत्थर जो दवा में काम आता है।

रू. भे.—संगअसब, संगअसम।

संगर-सं. पु. [सं. सम्+गॄ] १ युद्ध, समर, संग्राम। (डिं. को.)

उ०—हाथ बढ़तां ही निद्रा निवारि सम्यादिक संगर सांमग्री में सज्ज होइ।—वं. भा.

२ सौदा, व्यवहार। ३ भोजन, भक्षण। ४ विष, जहर।

[फा.] ५ रक्षा के लिए सेना के चारों ओर बनाई हुई खाई या दीवार।

६ संगठन।

उ०—फिरि करयो गाढ संगर लगाय, जो मारयो चहत सो निकट जाय।—ला. रा.

७ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

८ प्रण, प्रतिज्ञा।

रू. भे.—संगरि, संघर।

संगरण—देखो 'संग्रहण' (रू. भे.)

संगरणबो, संगरणवो—देखो 'संघरणो, संघरबो' (रू. भे.)

संगरणणहार, हारो (हारी), संगरणणियो—वि०।

संगरणविग्रोड़ो संगरणवियोड़ो, संगरणव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संगरणवीजणो, संगरणवीजबो—कर्म वा०।

संगरणवियोड़ो—देखो 'संघरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संगरणवियोड़ी)

संगरणी—देखो 'संग्रहणी' (रू. भे.)

संगरणो, संगरबो—१ देखो 'संघरणो, संघरबो' (रू. भे.)

२ देखो 'संग्रहणो, संग्रहबो' (रू. भे.)

संगरणहार, हारो (हारी), संगरणियो—वि०।

संगरिग्रोड़ो, संगरियोड़ो, संगरयोड़ो—भू० का० कृ०।

संगरीजणो, संगरीजबो—कर्म वा०।

संगरांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

संगरि—देखो 'संगर' (रू. भे.)

उ०—धड पडइ धड ऊपरी नाचतां, रडवडइ सिर संगरि झूझतां। रथ भरी हथीयार समा भिड्या, त्रप सुसरम विराट वेऊ जड्या।
—सालिभद्रसूरि

संगरियोड़ो—१ देखो 'संघरियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'संग्रहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संगरियोड़ी)

संगरोध-सं. पु. [सं.] संक्रामक रोग को रोकने के लिए की गई व्यवस्था।

संगल-सं. पु [सं.] एक प्रकार का रेशम।

सं स्त्री.—लोहे की शृंखला।

२ अपराधियों के पैरों में डाली जाने वाली लोहशृंखला।

संगव-सं पु. [सं.] प्रातःकाल का वह समय जब चरवाहा गायों का दूध निकाल कर उन्हें चराने के लिए ले जाता है।

संगवी-सं. पु —१ साथ रहने वाला, संगी, साथी।

उ०— संगवी 'कांन्हो' घर पड़ियो चित विकार। संगवी सही भागा तज संभार।—कारणी रूपक

२ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

संगसार-सं. पु. [सं.] प्राचीनकालीन दण्ड विशेष जिसमें अपराधी को दीवार में चुनवा दिया जाता था।

संगसुरमा-सं. पु. [फा. संगे+अ. सुर्मः] सुरमा बनाने की उपधातु।

संगसुलेमानी-सं. पु. [फा. संग+अ. सुलेमानी] एक प्रकार के धारीदार या दुरंगे पत्थर के नग जिनकी माला बनाई जाती है।

संगह—देखो 'संग्रह' (रू. भे.) (जैन)

संगहसंपया-सं. स्त्री.—ऐसी वस्तुओं का पहले से किया गया संग्रह जो कि साधुओं के उपयोगार्थ होती है। (जैन)

संगहिया-वि.—संग्रहित।

उ०—अजीवा जीव संगहिया, जीवा कंम्म संगहिया तास। आठ बोल थित लोक नी, ठाणायंग इम भास।—जयवांणी

संगांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.) (जैन)

संगा-वि. स्त्री.—साथ रहने वाली।

उ०—भवांनी नमौ स्वच्छ स्रंगार अंगा, भवांनी नमौ सुंदरी सिंभु संगा। भवांनी नमौ कासरिद्रारि हंता, भवांनी नमौ आसि आभा अनंता।—मे. म.

संगाति, संगाती-सं. पु.—१ वह जो साथ रहता हो, संगी, साथी।

उ०—१ नमि विनमी राजा विद्याधर, बि बि कोडि संगाति रे। फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमूं परभाति रे।

—स. कु.

उ०—२ संगी सोई कीजियै, सुख दुख का साथी। दादू जीवन मरण का, सो सदा संगाती।—दादूबांणी

उ०—३ पीहर बसूं न बसूं सास घर, सतगुरू सब्द संगाती। ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां हरि रंग राती।—मीरां

२ प्रेमी।

उ०—१ वैणां रा रसीला रैणां रा सवादी! रसराज सैणां रा संगाती प्रांण सूं प्यारा म्हारा राज।—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊधोजी हमारै रांम संगाती, उस लोभी ने भेजी है पाती। आप तौ जाय वहां पर छायैं, हमको भेजी जोग की पाती।

—मीरां

३ वह जो सहायता करे, सहायक।

उ०—परदा अंतर कर रहै, हम जीवैं किहि आधार। सदा संगाती प्रीतमा, अबकै लेहु उबार।—दादूबांणी

रू. भे.—संगाथी, संघति, संघाती।

संगाथी—देखो 'संगाती' (रू. भे.)

संगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—ससक्कै नगार वंध लटक्कै नाग रा सीस, आग रा अंगार तोपां भटक्कै अवाज। राखियौ खंगार दूजा खाग रा पांण सूं रधू, रांण वाळो वाध रा संगार जेम राज।

—भीमसिंह चूंडावत री गीत

संगि—१ देखो 'संगी' (रू. भे.)

उ०—१ हुइ हरख घणौ सिसुपाळ हालियौ, अथै गायौ जेणि गति। कुण जांणै संगि हुआ केतला, देस देस चा देसपति।—वेलि

उ०—२ सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभौ पौगंड मंड सिंगारी। ज्यौं व्रंदारक तरयं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम्।—रा. रू.

उ०—३ अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति, संगि अहूं विदिसि चेतन सकत्ति। दीपंत जुगळ कळ अमळ दत, सुत अरक पांणि लखि जांणि संत।—रा. रू.

२ देखो 'सांग' (रू. भे.)

उ०—सुरतेस सीस हकिय संजोर, मांनहु लखि जिलग मत्त मोर। इक जवण आंणि इहिं विच उमाही, वेध्यौ प्रयाग संगि बाहि।

—वं. भा.

संगियौ—देखो 'संगी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ जोगी तपै जिकाय, आंगण विच आतौ रहै। तोमें पड़ी तिकाय, जुड़ै न संगिया जेठवा।—जेठवा

उ०—२ गोत्य गुसांई व्है रहै, अब काहे न परकट होइ। रांम सनेही संगिया, दूजा नांही कोइ।—दादूबांणी

संगी-सं. पु. [सं. संग+राज. प्र. ई] (स्त्री. संगिनी) १ वह जो सदा साथ रहता है, साथी।

उ०—१ आवौ जी गिरधारी थां सूं मैं बोलै। थें तौ म्हारा जनम जनम रा संगी, थांरै लारां संग में डोलै।—मीरां

उ०—मिमता माया मोह मन, संसा सोग सरीर। हरीया जब संगी ईता, हरि सुख लहै न सीर।—अनुभववांणी

मुहा.—तंगी में कुण संगी=कठिनाई में कोई साथ नहीं देता।

२ वह जो किसी का साथ करे, साथ चलने वाला।

उ०—१ हरीया छळ बळ नां रहै, रहै न किनकै जोर। मन का संगी सबळ है, पांचपचीसूं चोर।—अनुभववांणी

उ०—२ समज मन सदा धरम एक संगी, तेरै कबहू न आवै तंगी। जन्मैं जीव अकेलो जग में, नित व्है काया नंगी।—ऊ. का.

३ सहायता करने वाला, सहायक।

उ०—१ दादू पारब्रह्म पैंडा दिया, सहज सुरति लै सार। मन का मारग मांहि घर, संगी सिरजनहार।—दादूबांणी

उ०—२ हरीया संगी रांम विन, या कलि मांहि न कोय। काळ पकड़ि लै जावसी, ऊभा देखै लोय।—अनुभववांणी

४ साथ रहने से लगने वाला रोग।

५ साथ।

उ०—हिलै संप हैथाट, चलै बांना बहरंगी। इळ जळनिध उल्लटै, जांण बड़वांनळ संगी।—रा रू.

[सं. सञ्ज्ञी] ६ वे जीव जिनके मन हो। (जैन)

रू. भे.—संगि।

अल्पा;—संगियौ।

संगीत-सं. स्त्री. [सं. संगीत] १ गायन, वादन व नृत्य।

उ०—चवसठ मभि वावन चिरताळा, मदछकिया रमै मतवाळा। धड़ वह जठै ऊठि व्रत धारै, ऊबट संगीत सीस उचारै।—सू. प्र.

२ निश्चित नियमों व लयानुसार मधुर ध्वनियों व स्वरों का होने वाला प्रस्फुटन ।

वि. वि.—यह दो प्रकार का होता है—(१) कंठ्य संगीत और (२) वाद्य संगीत ।

३ वह गाना जो कई लोगों द्वारा मिल कर गाया जाय ।

४ गाने बजाने की कला ।

५ वह गान जो वाद्य यंत्रों के साथ लय एवं ताल से गाया जाय ।

उ०—धुधूकट ग्रकट ग्रकट धम धमधम, बाजा विविध बजाड़ै । गेई गेई ग्रंग ग्रंग ग्रत भावत, गीत सगीत गवाड़ै ।—मे. म.

संगीतविद्या-सं. स्त्री. यौ. [सं.] १ गाने बजाने की कला का विवेचन ।

२ गाने-बजाने की कला ।

संगीति, सगीती-सं. स्त्री. [सं. संगीत] १ संगीत विद्या ।

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय । पंखा बरदारी करै, रंग बिरंग वणराय ।—बां. दा.

२ संगीतज्ञ, संगीत विद्या का पंडित ।

उ०—ज्योतिसी वैद पौरांणिक जोगी, संगीती तारकिक, सहि । चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकटा तौ ग्ररथ कहि ।
—वेलि

३ देखो 'संगति' (रू. भे.)

४ देखो 'संगत' (रू. भे.)

संगीन-सं. स्त्री. [फा.] बन्दूक की नाल के सिरे पर लगाया जाने वाला एक तिपहला और तीखा शस्त्र ।

उ०—१ लगि तोपां सानुळी, पुळी पलटण्यां पटैतां । संगीनां सावळां, ग्राभ छायौ ग्रसड़ैतां ।—मे. म.

उ०—२ ढळकती ढाल दंध लांमचोजर धकै, चमक संगीन वह सूर पोरस छकै । थरर डर कायरां होय ढीला थकै, वियो 'वखतेस' धर कोर किण सिरकै ।—पाबूदांन ग्रासियौ

वि. [फा. संग+प्र. ई.+न] १ पत्थर का बना हुग्रा ।

२ विकट, मजबूत ।

३ ग्रसाधारण ।

संग्यक-वि. [सं. संज्ञक] संज्ञा वाला, जिसकी संज्ञा हो ।

संग्या-सं. स्त्री. [सं. संज्ञा] १ होश, सुधि, चेतना शक्ति ।

उ०—सहु सेना मूरछित हुई । देखतां ही कहुँ ने संग्या रही नहीं ।
—वेलि टी.

२ ग्रवस्था, दशा, हालत ।

उ०—१ बुढापै संग्या होवै बुरी, जग में भूंडो जीवणो । हजारां मांय ग्रोगुण हुवै, पण भी होको पीवणो ।—ऊ. का.

उ०—२ राजकंवार नीमरांणा को, वांधरवाड़ै ब्याई । परतख होय पांगळो पाथां, कायर संग्या पाई ।—मे. म.

३ बुद्धि, ग्रक्ल ।

४ ध्यान । (ग्रमरत)

५ नाम । (ह. नां. मा.)

उ०—सुरजन सुत बूंदी सदन, संग्या दुरजणसाल । व्याहण हूं बलभद्र नूं, हुवौ सहायक हाल ।—वं. भा.

६ किसी पदार्थ ग्रादि का बोधक शब्द ।

७ विश्वकर्मा की कन्या व सूर्य की पत्नी इसके मनु व यम नामक पुत्र व यमी या यमुना नामक पुत्री थी । संज्ञा जब घर गई तो अपनी बहन छाया सूर्य की सेवा के लिए छोड़ गई । सूर्य यह नहीं जानते थे ग्रतः छाया से शनैःश्चरः मनु, तपती नामक तीन संतान हुई । संज्ञा सूर्य-तेज को सह नहीं सकती थी ग्रतः विश्वकर्मा ने सूर्य के कुछ तेज कणों को निकाल कर विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल, कुबेर का पुष्पक विमान व स्कन्द देव की शक्ति बनाई ।

८ किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु के बोध होने का व्याकरण विकारी शब्द ।

९ गायत्री मंत्र ।

१० ज्ञान ।

रू. भे.—संगन, संगना, सिग्या ।

संग्याकरणरस-सं. पु. यौ. [सं. संज्ञाकरणरस] होश में लाने वाली एक ग्रौषधि विशेष । (वैद्यक)

संग्यापुतरी, संग्यापुत्री-सं. स्त्री. यौ. [सं. संज्ञापुत्री] विश्वकर्मा की पुत्री ग्रौर सूर्य की धर्म पत्नी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्री का नाम ।

संग्यासुत-सं. पु. यौ. [सं. संज्ञासुत] सूर्य एवं संज्ञा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र, यम एवं शनि ।

संग्याहीण-वि. यौ. [सं. संज्ञाहीन] १ बेहोश, चेतना रहित ।

२ मैला, कुचेला, गंदा ।

३ घृणित ।

४ मूर्ख ।

रू. भे.—सिग्याहीण ।

संग्येय-सं. पु [सं. संज्ञेय] सोमवंशीय संहत राजा का नामांतर ।

संग्रह-सं. पु. [सं.] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

२ संग्रहीत वस्तुग्रों का ढेर ।

३ भोजन, पान, ग्रौषध खाने की क्रिया ।

४ वह मंत्रबल जिसके द्वारा कोई फेंका हुग्रा ग्रस्त्र वापिस प्राप्त किया जा सकता है ।

५ ग्रहण करने की क्रिया ।

६ समूह, जमघट ।

७ धारण करने की क्रिया ।

८ विवाह, शादी ।

९ मैथुन, संभोग ।

१० स्वागत, सम्मान ।

११ निग्रह, संयम ।

१२ रक्षा, हिफाजत।
१३ तालिका, सूची।
१४ योग, जोड़।
१५ शिवजी का नाम।
१६ स्कन्द के पार्षद का नाम।
रू. भे.—संगह, संघर।

संग्रहण-सं. पु. [सं.] १ ग्रहण करना, लेना।
२ प्राप्ति, लाभ।
३ गहनों में नग आदि जड़ना।
४ अपहरण।
५ व्यभिचार।
६ मैथुन, संभोग।
७ संहार, नाश।
उ०—जद धर पर जोवती, देख मन मांह डरंती। गायत्री संग्रहण द्रस्ट नागोर धरंती। सुर तेतीसूं कोट, आंण नीरंता चारी। नह खावत नह चरत, मनै करती हूंहकारी। कुंभेण रांण हणिया कलम, आजस उर डर उत्तरिय। तिण दीह द्वार संकर तणै, कांम धेनु तंडव करिय।—महारांणा कुंभा री छप्पय
८ युद्ध।
रू. भे.—संगरण संघरण।

संग्रहणि, संग्रहणी-सं. स्त्री. [सं. संग्रहणी] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें पाचन क्रिया के विकार के कारण बराबर और बार बार पतले दस्त होते रहते हैं।
रू. भे.—संगरणी, संग्रहांणि, संग्रहांणी।

संग्रहणौ, संग्रहबौ-क्रि. स. [सं. संग्रहणम्] १ संग्रह करना, संचय करना, जमा करना।
उ०—१ 'सळखा' हरा तणा तिण समहर, थाटां विहुं आचभ थियौ। महादेव संग्रहि महि माथौ, किरि वरि हार सिंगार कियौ।
—कचरा जसराजोत सळखावत री गीत
उ०—२ करणु दुजोहणु बेई मित्र, पंचह पंडव केरा सत्र। तसु दीधुं सउकूयरं राजौ, सौ संग्रहीइ जिणि हुइ काजौ।
—सालिभद्र सूरि
२ पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।
उ०—१ विळकुळियौ वदन जेम वाकारचौ, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रूकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि वंधि।—वेलि
उ०—२ सुंदरि चोरै संग्रही, सब लीया सिणगार। नक फूली लीधी नहीं, कहि सखि, कवण विचार।—ढो. मा.
उ०—३ पर उपकारी पुरस, औ जुध बार न डोलै। सांच बात संग्रहै, काछ पर नारि न खोलै।—सूरजमल मीसण
उ०—४ उद्धत संग्रहि कलाप हठि दंत निकारै, सुंडादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारै। सेकिम माळाकार सोम अति जोर उपारै, आघोरन घुम्मैं अचेत कपि ज्यौं द्रुम कारै—वं. भा.
३ धारण करना, पहिनना।
उ०—अंग सनाहां संग्रहै, साझ दुवाहां सार। गज कुंभां रिण गंजवा, चढ ऊभा तिणवार।—रा. रू.
४ हिफाजत या पालन करना।
५ रक्षा करना।
उ०—१ पण राखण दास गदापांणी, मझ सौ कथ जाहर भूमांणी। अपखी प्रहळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथ सूं।
—र. ज. प्र.
उ०—२ सूर सरम संग्रहै, भरम छडै कमधज्जां। मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सांमंत सकज्जां।—रा. रू.
६ स्थापित करना।
उ०—अम्ह कजि तुम्ह छंडि अवर वर आंणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।
—वेलि
७ कैद करना।
उ०—सत्थ न की बळ हत्थ कै, नां जीपै छळ मत्त। जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त।—रा. रू.
८ प्राप्त करना।
उ०—कीधी बहु पहिरावणी, राजवीयां नै रंग। रस राख्यौ जस संग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभंग।—स्रीपालरास
९ युद्ध करना।
उ०—वैरियां काज पलांण बाजिद, कांधोधर ओहौ 'मोहोकमौ'। बित घेरै मेरां बतळावै, संग्रहै रवि ऊगां समौ।
—मोहकमसिंघ राठौड़ री गीत
१० रोकना, थामना, ठहराना।
उ०—संग्रहियौ रथ सूर, पेखण नभ समहर 'पता'। खोभ दळां खेडूर, कूंत कनोजा भळकिया।—पाबूदांन आसियौ
११ धारण करना।
उ०—१ मच्छर और न संग्रहै, आ मछरीकां आद। अड़ै कमंधां अग्गळी, विचत्रां हूंता वाद।—रा. रू.
उ०—२ केइक पुण्यवंत प्राणिया रे, चेत कियौ धरम सार। साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेंठी धार रे।—जयवांणी
संग्रहणहार, हारौ (हारी), संग्रहणियौ—वि०।
संग्रहिओड़ौ संग्रहियोड़ौ, संग्रह्योड़ौ - भू० का० कृ०।
संग्रहीजणौ संग्रहीजबौ —कर्म वा०।
सगरणौ. संगरबौ. संघरणौ, संघरबौ —रू० भे०।

संग्रहांणि, संग्रहांणी—देखो 'संग्रहणी' (रू. भे.)
उ०—ताप मन्निपात जांणी अनीसार संग्रहांणि, फीहौ विध राल पांडु गोला सूल खेंन है। हीयारोग [illegible]

मोंम पीठ रोग प्रम वेहँ रोग नैन हैं ।—ध. व. ग्रं.

संग्रहियोड़ो–भू. का. कृ.—१ संग्रह किया हुआ, संचय किया हुआ, जमा किया हुआ. २ पकड़ा हुआ, लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ३ धारण किया हुआ, पहिना हुआ. ४ हिफाजत या पालन किया हुआ. ५ रक्षा किया हुआ. ६ स्थापित किया हुआ. ७ कैद किया हुआ. ८ प्राप्त किया हुआ. ९ युक्त किया हुआ. १० रोका हुआ, ठहराया हुआ. ११ धारण किया हुआ ।

(स्त्री. संग्रहियोड़ी)

संग्रही–वि. [सं.] संग्रह करने वाला, एकत्र करने वाला ।

संग्रांम–सं. पु. [सं. संग्राम] युद्ध, लड़ाई, समर । (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वजंत घाव जुगणं, निहाव चद्वेणियं । संग्रांम पंड कैरवं, कि, गंठ बांग सेणियं ।—रा. रू.

उ०—२ उवरै वचन्ना हीरा टाळी देर हुवो आघो, साघो सारो मेळगो संग्रांम हैके साथ । सोही काज लपेटो भालाळै सतावी संप्पो, निनारी सुरंद्रां लोक वणो श्रा विख्यात ।

—बादरदांन दववाड़ियो

उ०—३ जद स्वांमीजी बोल्या—रजपूत रो बेटो संग्रांम करतां म्हांग जावे तो सूर किम कहीवै । तिण नै राजा पटो किम खावा दै ।—भि. द्र.

उ०—४ गुजड वहंतां 'रयण' समोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ । कुळ छळ थायां हमैं केवियां, छांडैवा संग्रांम छळ ।

—महम्मदजी बारहठ

रू. भे.—संगरांम, संगांम, सगरांम ।

संग्रांमजित–सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण व भद्रा के संसर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक ।

२ कृष्ण व शैव्यकन्या सुदेवी का एक पुत्र ।

३ कर्ण का भाई जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

४ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

संग्रांमसाही–सं. पु.—महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया हुआ मेवाड़ राज्य का एक सिक्का ।

संग्रांमांगण–सं. पु. [सं. संग्राम+अंगण] युद्ध भूमि, रणक्षेत्र, रण-स्थल ।

उ०—संग्रांमांगण नै विसैं, जीतौ उत्तम राय । वीरसेन नै जीवतौ, बांधि लियौ तिण ठाय ।—वि. कु.

संग्राह–सं. पु. [सं.] १ श्रौजार या हथियार का दस्ता या मूठ ।

२ ढाल पकड़ने का हत्था विशेष । (डि. को.)

३ मुक्का, मुष्ठिका । (डि. को.)

संग्राहक–वि. [सं.] संग्रह करने वाला ।

संग्राही–सं. पु. [सं. संग्राहिन्] १ कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को सोखने वाला पदार्थ ।

२ कब्ज करने वाली वस्तु ।

संघ–सं. पु. [सं.] १ लोगों का समुदाय या समूह ।

उ०—देवी सुंभ निसुंभ दरपांध छळिया, देवी देव राग थापिया देत दळिया । देवी संव सुरां तणा काज सीधा, देवी कोड़ तेतीस उच्छाह कीधा ।—देवि.

२ साधु साध्वी, श्रावक श्राविका का समुदाय ।

उ०—१ संघ मन सेव गुरुदेव री साचवे, सगर समझै अरथ सूत्र सिद्धंत । दियै बहु दांन मन सुद्ध पालइ दया, भलो नित संघ रो करौ भगवंत ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ संवत्त सतरैं बरस बीसैं मास मिगसर जांण ए । भद्रापुरी थी संघ चाल्यौ, चढी जात्र प्रमांण ए ।—ध. व. ग्रं.

३ समूह, झुण्ड ।

उ०—कबहु करे न अटक उल्लघन, साह दाग न धरै हय संघ न । बंब मुख्य तोरन लग बज्जै, अज्ज अनुगव्है संग न सज्जै ।

—वं. भा.

३ तीर्थाटन के लिए जाने वाला यात्री दल । (जैन)

उ०—संघ कर्इ वधांमणा मन मोह्यउ रे । तीरथ नैण निहालि, लाल मन माह्यउ रे ।—स. कु.

४ साधुओं का मठ ।

५ संगठित रहने या होने की अवस्था, भाव ।

६ प्राचीन भारत में एक प्रकार का लोकतंत्रीय राज्य या शासन जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे, संघ-राज्य ।

७ राष्ट्रों का एक संगठन, जैसे राष्ट्र-संघ ।

८ देखो 'सिंह' (रू. भे.)

उ०—ए कागळ का समाचार रुखमणीजी बीनती करै छै । जु वळि वंधण इही जु संघ की वळि छै । सु स्याळ खासी । जो मुनै बीजो कोई परणस्यै ।—वेलि टी.

९ देखो 'संग' (रू. भे.)

संघट–सं. पु. [सं.] १ समूह, समुदाय ।

उ०—सुख लावै केलि स्यांम स्यांमा संगि, सखिए मनरखिए संघट । चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट ।—वेलि

२ देखो 'संकट' (रू. भे.)

उ०—बंधग्राह दरीयाव बीच, पड़ संघट फील पुकारियां । ईस कवाहण पाय श्राय, धर हत्थूं सूंड उधारियां ।—र. ज. प्र.

संघटण–सं. पु. [सं. संघटन] १ अपने हित रक्षार्थ किसी विशिष्ट वर्ग या कार्यक्षेत्र के लोगों का मिलकर धारण किया गया एक इकाई का रूप ।

२ बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिला कर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करने की क्रिया ।

३ किसी विशेष उद्देश्य के लिए बिखरी हुई शक्तियों को मिलाकर दिया गया रूप।

४ इस उद्देश्य से बनाई गई संस्था।

५ किसी वस्तु विशेष के विभिन्न अवयवों को जोड़कर उसे प्रतिष्ठित करने या रचने का ढंग या क्रिया।

६ व्यक्तियों के मिल कर एक होने की क्रिया।

७ स्वरों या शब्दों का संयोग।

रू. भे.—संगटण, संगट्टण, संगठ, संगठण, संघट्टण।

संघटा-सं. पु.—संसर्ग, संस्पर्श।

उ०—वुद्धि सूं विचारचौ इण री सील भागौ दीसै छै, पछै तै मिल्यौ जद स्वांमीजी पूछ्यौ—'थारौ सील घर री स्त्री सूं भागौ कै और स्त्री सूं भागौ'। जद तै बोल्यौ—पर स्त्री सूं तौ न भागौ घर स्त्री सूं पिण सघटा रूप हुवौ।—भि. द्र.

संघट्टचक्र-सं. पु. [सं.] फलित ज्योतिष के अन्तर्गत युद्ध-फल विचारने का नक्षत्रों का एक चक्र।

संघट्टण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

उ०—सज्जौ अेक संघट्टण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढौ। मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांधे खांपण मेल कढौ।

—चेतमांनखौ

संघपत, संघपति-सं. पु. [सं. संघपति] किसी संघ या समूह का प्रधान, दलपति, नायक।

उ०—१ संघपति सोम तणउ जस सगळइ, वरण अठारह करइ वखांण। मूयउ कहइ तिकै नर मूरिख, जीवइ जगि जोगी सुत जांण।—स. कु.

उ०—२ संघपति भरतेरु जात्रा करू रे। थाव्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरै।—स. कु.

संघर—१ देखो 'संगर' (रू. भे.)

उ०—१ सुजड़ां मुंहि संघर लड़िया लमकर, डिगमिग काइर कळह डरै। खारां पळ खंडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै।—गु. रू. बं.

उ०—२ जुध राज तणा धारै जतन, सारै वज्जां साह सूं। केवियां छेड़ संघर करां, औ निवेड़ निरवाह सूं।—रा. रू.

२ देखो 'संग्रह' (रू. भे.)

उ०—कर नवल किसोरी संघर सोरी, मरियादा मेटंदा है। बिस-फळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भोगी भुज मेटंदा है।—ऊ. का.

संघरण-वि.—१ संहार करने वाला, नाश करने वाला।

उ०—कौसळ्या, सुख करण, नेत बंध दसरथ नंदण। व्रत खित्रवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण। रिण सुबाह संघरण, असुर मारीच उडावण। रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'संग्रहण' (रू. भे.)

संघरणौ, संघरबौ-क्रि. स.—१ संहार करना, मारना।

उ०—१ विहित सुणौं भ्रत वांणि, एम चहुवांण उचारै। सको काळ संघरै, न को रहियौ वीसारै।—रा. रू.

उ०—२ बोलंत सकति मो वळि हुई, सुभट असंखां संघरै। स्रोण इक आज खप्पर भरसि, तई एक खप्पर भरै।—गु. रू. बं.

उ०—३ सवळा सत्र संघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया। जेथ भिड़ै दळि पड़ै, तेथ आडा भुज धरिया।—गु. रू. बं.

२ युद्ध करना।

३ देखो 'संग्रहणौ, संग्रहबौ' (रू. भे.)

संघरणहार, हारौ (हारी), संघरणियौ—वि०।

सघरिओड़ौ, संघरियोड़ौ, सघरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संघरीजणौ, संघरीजबौ—कर्म वा०।

संगरणवणौ, संगरणवबौ, संगरणौ, संगरबौ, सहरणौ, संहरबौ

—रू० भे०.

संघरस, संघरसण-सं. पु. [सं. सघर्ष, संघर्षण] १ रगड़ने, घिसने या घोटने की क्रिया।

२ किन्ही दो विरोधी दलों या पक्षों में एक दूसरे को दबाने के लिए चलने वाला झगड़ा।

३ किसी अभाव या कष्ट से बचने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न।

४ प्रतियोगिता, स्पर्धा।

५ द्वेष, वैर।

६ टक्कर, भिड़ंत।

७ डाट, ढक्कन।

८ बाधा, रुकावट।

संघरसी-वि. [स. संघर्षिन्] संघर्ष करने वाला, संघर्परत।

संघरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ। २ युद्ध किया हुआ।

३ देखो 'संग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संघरियोड़ी)

संघल, संघलदीप, संघलद्वीप, संघलि, संघलिदीप, संघलिद्वीप, संघली, संघलीदीप, संघलीद्वीप—देखो 'सिंहलद्वीप' (रू. भे.)

उ०—धरि मछर संघलि सांचरयउ, नेव जीत कन्या वरी। पद्मनी ज आंणि पयज करि, राय रत्नसेन अइसी करी।—प. च. चौ.

संघवाहणी—देखो 'सिंहवाहणी' (रू. भे.)

उ०—मतीभ्रोध दावा दुग्दाहणी असंतमाडां, संत चाडां आवै सग्रचाहणी सादेस। बुडती जेहाजां सध याहणी अथाह बाहां, ढग्राहणी साहां संघवाहणी आदेस।—हुकमीचंद खिड़ियौ

संघवी—देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

उ०—१ भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडधीरज थयउ रायौ जी। भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुंज संघवी कहायौ जी।—स. कु.

उ०—२ पींडार में बनांत में घणा नोक कुणता ताराचंद संघवी कोल्यो—थे बनात कुणो थारे दाहो लाग जावेला।—मि. द्र.

संघाड़—देखो 'संघाट' (रू. भे.)

संघाट—देखो 'संघात' (रू. भे.)

उ०—१ वरे चित आगळ वाज अपाळ, लड़े तदि 'रेण' तणी नंदनान। जयज्जय कीध संघाट जवन्न, तिलत्तिल कीध सिलेह मझ तन्न।—सू. प्र.

उ०—२ तिसरइ तउ वात कहतां वार लागइ। असी जन सहस नाळीगर कउ संघाट प्राइ संप्रासी हुवउ।—अ. वचनिका

संघाट—सं. पु.—दो की जोड़ी, युग्म।

उ०—वळि तें मुनिवर इम कहेजी, बाई! नगरी में वहु दातार। तीन संघाडे आविया जी, अमे छां छउ अणगार। देवकी लोभ नहीं छे कोय।—जयवांणी

रू. भे.—संघाड़।

संघाटि, संघाटी—सं. स्त्री. [सं. संघाटिका] १ वस्त्र के टुकड़े-टुकड़े जोड़ कर बनाया हुआ पहनने का वस्त्र, कंथा।

२ ओढने का वस्त्र।

३ जैन साध्वियों के पहनने का वस्त्र विशेष, साड़ी।

वि.—वस्त्र के छोटे छोटे टुकड़े जोड़ कर बनाये हुए वस्त्र (संघाटी) को धारण करने वाला। (जैन)

संघात—स. पु. [सं.] १ साथ।

उ०—१ लसकर मांहि जाइ नै, लै आवूं छूं वात रे भाई। इम कहि नै असवै चढ्या, साहस एक संघात रे भाई।—प. च. चौ.

उ०—२ नाक न साऊं तौ फूल फूल नवि भखुं, न जावुं जीमण काज। सरीर संघातै हो हूं हिण नवि रमुं, राखूं माहरी लाज।

—वि. कु.

२ एक्य, संयोग, मिलाप।

उ०—जिण वळी मेर बिना माथै चहुवांण रा केही निपाहां रा प्रांण गो संघात छुड़ायो।—वं. भा.

३ समुदाय, समूह।

उ०—१ जिकण में छ हाथी, अनेक कनिस्क, विविध, जवाहर, नांना वस्त्र गो संघात निवेदन कियो।—वं. भा.

उ०—२ भवांनी नमो धारनी मूलधारा, भवांनी नमो तेज संघात तारा। भवांनी नमो मोहनी मुंडमाळी, भवांनी नमो काळ कल्यादि काळी।—मे. म.

४ हत्या, वध।

उ०—कीरतिधर नउ थियउ घात रे, सहदेवी पापिणी मात रे। सुकोसलइ जांणी वात रे, नइ मलउ तात संघात रे।—स. कु.

५ संहार, ध्वंस।

६ कफ, श्लेष्मा।

७ इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। (जैन)

८ शरीर।

वि.—साथ, सहित।

उ०—राज देईसि जौ मुझ भणी, तौ आगै कहिस्युं वात। कहि कहि देइस तुझ भणी, कन्या राज संघात।—वि. कु.

रू. भे.—संघाट, संघातइ।

संघातइ—देखो 'संघात' (रू. भे.)

उ०—१ कंठ ग्रहण करी रहिउ, हईडइ दीधउ हेलि। तें संघातइ स्या-थिकी, खेलतां नर खेलि?—मा. कां. प्र.

उ०—२ इम सुणि वात घणुं हरखित थयो, कुमार विचारइ रे एम। सनेही सांयात्रिक संघातइं तैं भणी, पूछि चढुं तिहां खेम।

—वि. कु.

संघातक—वि. [सं.] १ घात करने वाला, प्राण लेने वाला।

२ नष्ट या बरबाद करने वाला।

३ मारने वाला।

संघाति, संघाती—देखो 'संगाती' (रू. भे.)

उ०—१ मुनिवर आव्या विहरता जी, झरती दीठी आंखि। जीभ संघाति काढियउ जी, तरणुं ततखिण नांखि।—सं. कु.

उ०—२ पापियउ आव्यउ पोल, स्यउ जीविता नउ सोस। दिन घट्या बाधी राति, तें गमुं केण संघाति।—स. कु.

उ०—३ जंप जीव नही आवतौ जांणौं, जोवण जावणहार जण। वह विलखी वीछड़ती वळा, बाळ संघाती बाळपण।—वेलि

सघार—देखो संहार' (रू. भे.)

उ०—१ दाखी अरज 'दुरग' यां, सब खळ करां संघार। साहब मन खुसियाळ सूं, जीवै साल हजार।—रा. रू.

उ०—२ भोम भार झल्लियो, खडग झल्लै खूमांणौं। कियौ सेन सघार, जांणि रुठै जमरांणौं।—गु. रू. बं.

उ०—३ भूपति लखपती भुजाळ, आदि रीति जादवां उजाळ। सूरधीर सात्रवां संघार, खाग त्याग दूसरौ खंगार।—ल. पिं.

संघारक—देखो 'संहारक' (रू. भे.)

उ०—स्रीमहाराज ईस्वरा अवतार, कळिजुग समुद्र जाकै आगै पगार। सूरिज सरूप ओपै जग में प्रताप, मेघ अंधकार को सघा-रक प्रमाण।—रा. रू.

संघारकर—सं. पु. [सं. संहारकर] सुदर्शनचक्र। (अ. मा; नां. मा.)

संघारगोड़—सं. पु.—शकुन शास्त्र के अनुसार चक्की के परिभ्रमण की गति का नाम।

संघारण—सं. पु. [सं. संहारण] १ सुदर्शनचक्र। (नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम, बलभद्र। (ह. नां. मा.)

वि.—संहार करने वाला, नाश करने वाला।

उ०—१ वडौ देव वाराह, इला वढ्ढां उधारण। वडौ देव वाराह सबळ दैतां संघारण।—ज. खि.

उ०—२ समहर दुयण पतंग संघारण, 'दीपा' हरा दीप गुण

दारण। लिखमीचंद हरी त्यां लेखौ, वांकिम वीज ससो सम वेखौ।
—रा. रू.

उ०—३ तिण सुत संचय रघुकुळ तारण, साक्य संजय सुत दुसह संघारण। संभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा।—सू. प्र.

संघारणौ, संघारबौ—देखो 'संहारणौ, संहारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साह 'फरक' संघारतां, नास गयौ 'जैसाह'। औ कांपै आंवेर में, साळै 'सैद' सगाह।—रा. रू.

उ०—२ अड़ताळीस सहंस असवारां, खांनजिहां जिण हणै संघारां। धर पूरब्ब धीर छत्र धारै, साठि हजारां हूंत संघारै।—सू. प्र.

उ०—३ सिंभ निसंभ संघारिया, महिसासुर मारै। चंडमुंड साचारिया, के असुर अपारै।—गज-उद्धार

उ०—४ ओरै स हरवळां, सेल खळ खगां संघारूं। गज असवारां गोळ, धड़छि घण लोह संघारूं।—सू. प्र.

उ०—५ नवकोट धणी 'गाजी' नरेस, दाहिणी भुजा दीवै 'महेस'। 'सूरिजमल' पित्ता सत्रु संघारि, जिण लियौ मांन चहवांण मारि।
—गु. रू. बं.

संघारणहार, हारौ (हारी), संघारणियौ—वि०।

संघारिओड़ौ, संघारियोड़ौ, संघारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संघारीजणौ, संघारीजबौ—कर्म वा०।

संघारभैरव—देखो 'संहारभैरव' (रू. भे.)

संघाळौ—देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

उ०—गळा गुद भकै मोस ऊडै के अंत्राळा ग्रहै, कराळा पंखाळा झाळा सेलाळा करद। संघाळा छौगाळा वाळा भड़ाळा ऊंधमै सार, दंताळा मदाळा खावै तमाळा दुरद।—पहाड़खां आढौ

संघासण—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

उ०—चडै संघासण तांम, करह करि कमल उधारयउ। जीहां गोरउ वादल, पाउ पदमिणी तांहां धारयउ।—प. च. चौ.

संच—देखो 'संचय' (रू. भे.)

उ०—१ मुग्धलोक ठगवा भणी जी, करूं अनेक प्रपंच। कूड़ कपट वहु केलवीजी, पाप तणौ करूं संच रे जिनजी।—वृस्त.

उ०—२ किल कवन कामंनि त्याग करै, धन संच प्रपंच न रंच घरै। तज स्वाद फिरै महि तारन कां, निरखै नहि नैंनन नारन कौं।—ऊ. का.

संचक, संचकर—स. पु.—वह जो संचय करे, कंजूस, कृपण।

रू. भे.—संचग, संचगर।

संचकार—सं. पु. [सं. सत्यंकार] १ सौदा तय होने पर कुछ पेशगी दी जाने वाली रकम, साई, मुद्दा।

उ०—कहदै घर आगम केसर रौ, संचकार उणौं दिन सूं सिर रौ। लख आंणिय केसर खेंग लखो, वांधळां खिचियां फिर वैर धुको।
—पा. प्र.

२ खुला स्थान।

उ०—'स्रीवयराट' सुणि कीचक चीनउ, माहरउं मन पराभवि भीनउं। काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ, संचकार यम नइ घरि घालिउ।—सालिसूरि

रू. भे.—संचगार, सचकार।

संचग, संचगर—देखो 'संचकर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सुत रायपाल कहै दिसि संचगां, सिर साजै सौभाग सुणौ। गरथ वडै जस बोलै गुणियण, गरथ तणौ कांइ लोभ गिणौ।
—खंगार रायपालोत सिंघला

उ०—२ वीसळदै खाधी नह विलसी; संची घणा दिन देख संताप। माया गडी रही धर मांहै, संचगर हुआ ऊपरै साप।
—गोरधन खीची

संचगार—देखो 'संचकार' (रू. भे.)

संचणलूण—सं. पु. यौ.—एक प्रकार का लवण विशेष।

संचणौ, संचबौ—क्रि. स. [सं. सम्+चि] १ संचय करना, एकत्र करना।

उ०—१ रस संचै माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कणरास। धरै भेस जिम जीरवै, बैस दुकानां बास।—वां. दा.

उ०—२ हाथां सचियोड़ा धन सूं ई वौ कम प्रीत नीं करतौ हौ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ लुगाई नित मौसा देवती कै जद इण पीच रा धणी हा तौ मुलकां रा डाळा गळा में क्यूं लिया। वाप री संच्योड़ौ धन उडावतां कांई जोर पड़चौ! हाथां कमाय अेक कीड़ी नगरी ई सींचै तौ जांणै।—फुलवाड़ी

२ देख-भाल करना।

क्रि. अ. [सं. सम्+चर] ३ प्रविष्ट होना।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हंसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा संच।—वेलि

४ तैयार होना, कटिवद्ध होना।

संचणहार, हारौ (हारी), संचणियौ—वि.।

संचिओड़ौ, संचियोड़ौ, संच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संचीजणौ, संचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संचवणौ, संचवबौ सचणौ सचबौ,—रू. भे.।

संचत—देखो 'संचित' (रू. भे.)

संचत-करम—देखो 'संचित-करम' (रू. भे.)

उ०—धड़ड़ै लाग धियाग, आग फैली मध अंबर। राती झाळ कराळ, कहर विकराळ भयंकर। सतियां कियौ सिनांन, विखम दुरभख वैसुंधर। मांनव देह प्रजाळ, दिव्य देही धर सुंदर। कर होम जीत सचत-करम, निकसी जोत निरम्मळी। हिम में विमांण त्यारी हुई, इतै आंण मूंह आगळी।—साहिवौ सुरतांणियौ

संचय-सं. पु. [सं.] १ समूह, झुंड।

उ०—१ [illegible] संचय संचारै। जळ नीली निभ [illegible] —वं. भा.

उ०—२ [illegible] छवि धारै। गंडक संगम [illegible], विहारै।—वं. भा.

२ चीजें इकट्ठी करने की क्रिया या भाव।

३ जमा करना, संकलन।

४ इकट्ठी की हुई चीजों व रुपयों आदि का ढेर या राशि। (ह. नां. मा.)

उ०—१ [illegible] एक फौज घेरै रह्यौ भीतर नूं संचय खूटौ।
—गोपाळदास गोड़ री वारता

उ०—२ अर बूंदी रा ही अमल में जेतौ कहै जिण ठांम सामग्री रा संचय करि बरात बुलावण धारी।—वं. भा.

उ०—३ आठौ रण गळियार उठायौ, लागि खजांन अप्प पुर लायौ। करि उरनार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त संचय नृप दीधौ।—वं. भा.

५ अधिकता, बाहुल्य।

रू. भे.—संच।

[सं. संचयन] ६ शव या मृत्य शरीर को भस्म बन जाने के पश्चात् अस्थि बीनने की क्रिया।

रू. भे.—संच, सचै।

संचर-सं. पु. [सं.] १ गमन, चलन।

२ ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में गमन।

३ मार्ग, पथ, रास्ता। (हि. को.)

४ शरीर, देह। (हि. को.)

५ संचित कर्म।

उ०—जन हरिदास हरि सुमरतां, संचर रहै न सेस। कहा दिखावै और कूं, उलटि आप कूं देस।—ह. पु. वां.

६ संचार, प्रवेश मार्ग।

उ०—मैं म्हारी घरि आव जागि, देखै नहि कोई। अरस परस रस एक, और संचर नहि कोई।—ह. पु. वां.

७ देखो 'संचय' (रू. भे.)

संचरण-सं. पु. [सं.] १ संचार करने की क्रिया या भाव, चलन, गमन।

२ पसरने, फैलने की क्रिया।

३ चलने की क्रिया या भाव।

४ मार्ग, रास्ता, पथ। (ह. नां. मा.)

५ पैर, चरण, पग। (ह. नां. मा.)

संचरणौ, संचरबौ-क्रि अ. [सं. सम्+चर] १ गमन करना, जाना।

उ०—१ के सूरा धन करज है, के सूरा पर काज। सुरपुर दोहूं संचरै, [illegible] रज-रज।—बां. दा.

उ०—२ धन देणौ जिण भ्रगड़े हेतौ पुरस न होय। सुपनै ही नहि संचरै, लोभी मंगण लोय।—बां. दा.

उ०—३ गिरिजा पूजणजी सियाजी संचरी, कोई सुभग सहेल्यां संग।—गी. रां.

उ०—४ पय पणमीय निय ताय, कूंती मद्री पय नमीय। सरा वयण निरवाहु, करिवा कांणणि संचरइं।—सालिभद्र सूरि

२ घूमना, विचरण करना, परिभ्रमण करना।

उ०—हायळ वळ निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ। सीह अकेला संचरै, सीहां केहा सत्थ।—बां. दा.

३ आना, आगमन करना।

उ०—१ परखण पांण 'प्रतापसी' वहसंतां वांहाळ। सम्मुख थारै संचरै, कवण जुहारै काळ।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ काका बाबा भ्रात कवि, हुवै दूर रुख हेर। संत महंत न संचरै, पातर रै पग फेर।—बां. दा.

उ०—३ राय तणी तै सेवा करइ, राति दिवस तीरइं संचरइ। राय तणइ मनि वसिउ अपार, निरलोभी नइ निर हंकार।
—हीराणंद सूरि

उ०—४ सही तिहां तै आवी कहिउं, मुहता नुं मन अति गहग-हिउ। गढ बाहिरि देवी देहरइ, राजा लोक तिहां संचरइ।
—हीराणंद सूरि

४ अनुसरण करना।

उ०—कइं तप तपुं हुं वांणारसी, कइ जाय भैरव पडण पड़ास। कइं पंडव पंथ संचरूं, कइ जाय सेवमूं गंग दवार।—बी. दे.

५ प्रविष्ट होना, पहुँचना।

उ०—१ मारू महलां संचरी, कनक वरण्णी तास। पुंगळ मांहै ऊपनी, नरवर हुम्रौ उजास।—ढो. मा.

उ०—२ पंडु नरेस री सइंवरि जाइ, हथिणाउरपुर संचरए। राइं दलै सरिसा कूयर लेउ, तारै मु निम चांदुलउ ए।
—सालिभद्र सूरि

६ अंकुरित होना, उभरना।

उ०—सींगां पुळी न संचरी, पगां न ठेठर बंध। दूध पियंतै वाछड़ै, दियौ महाभड कंध।—महाराजा मानसिंह

७ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ माग मुरद्धर देस री, लियौ उरद्धर ज्यास। घाट अनेकन संचरै, एक प्रभू री आस।—रा. रू.

उ०—जा मति पीछै संचरै, सौ जै पहली होय। काज न विणसै आपणौ, दुरजण हंसै न कोय।—पंचदंडी री वारता

८ भाग जाना, पलायन कर जाना।

उ०—१ पुळिया पुंडरीक सुपह संचरिया, वागौ हाक न कोय वळै। वाळा चंद कठ अतुळी वळ, भोजराज गढ तूझ भळै।
—भोजराज रूपावत री गीत

उ०—२ आयौ असमानां ऊतरियौ, घुरै दमांम क घणाहर घुरियौ।
धारण धूम्र धड़ै मन धरियौ, सहजादौ विमूंह न संचरियौ।
—गु. रू. वं.

९ फैलना, प्रसारित होना।
१० चल निकलना, व्यवहृत होना।
११ प्रस्थान करना, रवाना होना।
उ०—वेग करी नइं विलंब न कीज्यौ, रांमइं रथ जोतरियां।
हरि जोसी हाकेवा वइट्ठा, खीवेगइं संचरिया।—रुकमणी मंगळ

१२ आक्रमण करना।
१३ होना।
उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उतर मगहर अनुसरै। दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघुपण आदरै। मिळि अंब साख प्रसाख रसमय, अमिति मंजुर अंजुरै। रसहीन अनितर सरव रैणा, सीत छळ क्रति संचरै।—रा. रू.
१४ उच्चरित होना, निकलना।
उ०—हरीया पछमि देस की, वाट विखम घर दूरि। सुरित सबद जांह संचरै, ताप त्रिगढ कूं चूरि।—अनुभववांणी

१५ प्राप्त होना, मिलना।
संचरणहार, हारौ (हारी), संचरणियौ—वि०।
संचरिओड़ौ, संचरियोड़ौ, संचरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
संचरीजणौ, संचरीजबौ—भाव वा०।
सांचरणौ, सांचरबौ—रू० भे०।

संचरलूण—सं. पु.—एक प्रकार का नमक विशेष। (अमरत)

संचरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गमन किया हुआ, गया हुआ. २ घूमा हुआ विचरण किया हुआ, परिभ्रमण किया हुआ. ३ आया हुआ, आगमन किया हुआ. ४ अनुसरण किया हुआ. ५ प्रविष्ट हुवा हुआ, पहूंचा हुआ. ६ अंकुरित हुवा हुआ. उभरा हुआ. ७ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. ८ भागा हुआ, पलायित हुवा हुआ. ९ फैला हुआ, प्रसारित हुवा हुआ. १० प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ. ११ आक्रमण किया हुआ. १२ चला हुआ, व्यवहृत हुवा हुआ. १३ हुवा हुआ. १४ उच्चरित हुवा हुआ, निकला हुआ. १५ प्राप्त हुवा हुआ।
(स्त्री. संचरियोड़ी)

संचळ, संचल—सं. पु.—१ एक प्रकार का लवण। (डिं. को.)
२ कंपन, आहट।
उ०—बाघ आय निसरियौ, मिनख री संचळ देखनै गाजियौ।
—पंचदंडी री वारता

३ छूने की क्रिया, स्पर्श करने की क्रिया।
४ टटोलने की क्रिया।
उ०—अंगुलि नो संचल कीध, टपोरै कपाट दीध।—धर्म प.

संचवणौ, संचवबौ—क्रि. स.—१ जड़ना, वन्द करना।
उ०—सरै न ताळौ संचव्यां, सति नूं केम सताय। खळ जद लग ताळा खुलै, तौ ताळी की ताय।—रैवतसिंह भाटी
२ देखो 'संचणौ, संचबौ' (रू. भे.)
संचवणहार, हारौ (हारी), संचवणियौ—वि०।
संचविओड़ौ, संचवियोड़ौ, संचव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संचवीजणौ, संचवीजबौ—कर्म वा०।

संचवियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ जड़ा हुआ, बन्द किया हुआ।
२ देखो 'संचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संचवियोड़ी)

संचांण, संचांणौ—देखो 'सिचांण' (रू. भे.)
उ०—जस वांण संचांण संचांण सहवाचै, परदेस प्रवेस कीरत केती। नर नार उच्छाव करै व्हौ वारद ज्यूं इधकार भत्तो।
—ऐ. जै. का. सं.

संचांन—देखो 'सिचांन' (रू. भे.)

संचाड़णौ, संचाड़बौ—देखो 'संचाणौ, संचावौ' (रू. भे.)
संचाड़णहार, हारौ (हारी), संचाड़णियौ—वि०।
संचाड़िओड़ौ, संचाड़ियोड़ौ, संचाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संचाड़ीजणौ, संचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

संचाड़ियोड़ौ—देखो 'संचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संचाड़ियोड़ी)

संचाणौ, संचावौ—क्रि. स.—१ संचय कराना, एकत्र कराना।
२ देखभाल कराना।
३ प्रवेश कराना।
४ तैयार करना/कराना।
५ कटिबद्ध करना/कराना।
६ चूर्णादि को हाथों से दवा कर पिंड रूप में करना/कराना।
संचाणहार, हारौ (हारी), संचाणियौ—वि०।
संचायोड़ौ—भू० का० कृ०।
संचाईजणौ, संचाईजबौ—कर्म वा०।
संचाड़णौ, संचाड़बौ, संचावणौ, संचावबौ—रू० भे०।

संचायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संचय कराया हुआ, एकत्र कराया हुआ. २ देखभाल कराया हुआ. ३ प्रवेश कराया हुआ. ४ तैयार किया/कराया हुआ, कटिबद्ध किया/कराया हुआ. ५ पिंडरूप में बांधा हुआ। (लड्डु)
(स्त्री. संचायोड़ी)

संचार—सं. पु [सं. संचारः] १ गमन, चलन।
उ०—कुळवंती सूं क्रीत रौ, उळटौ है आचार। वा न तजै घर आपरौ, जग इण रौ संचार।—वां. दा.
उ०—२ अर वौ बाळ कन्हैयौ भटियांणी नै मां अर काली मासी नै नांनी-मां कैय बतळातौ जणा तीनूं लोकां रौ हरख अर उछाव

थारै कानां में गूंजती, रूं-रूं में उमरंग री संचार व्है तौ।

—फुलवाड़ी

२ ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में गमन करने की क्रिया या भाव।

३ आवागमन।

४ मार्ग, पथ, रास्ता।

५ दुर्गम मार्ग, कठिन मार्ग।

६ रास्ता दिखाने की क्रिया, मार्ग प्रदर्शन।

७ सांप के फन में मिली हुई मणि।

रू. भे.—संचारि।

संचारक–वि. [स्त्री. संचारिका] १ वह जो संचार करे।

२ नेता।

३ मुखिया, प्रधान।

४ चलाने वाला।

५ अन्वेषक।

सं पु.—स्वामी कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

संचारणौ, संचारबौ–क्रि. स.—१ संचार करना।

२ फैलाना।

३ चलना।

उ०—मंत्रावळि मलगरद्ध रूप संचय संचारै। जळ नीनी निभ सिनय जाळ द्रुत तिरत अपारै।—वं. भा.

संचारणहार, हारौ (हारी), संचारणियौ—वि०।

संचारिप्रोड़ौ, संचारियोड़ौ, संचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संचारीजणौ संचारीजबौ—कर्म वा०।

संचारि—१ देखो 'संचार' (रू. भे.)

उ०—पाडल परिमल पूजती, धूजती पवन संचारि। नव रंगिइं वनि विकसती, भ्रमती जिम न विचारि।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'संचारी' (रू. भे.)

संचारिक—देखो संचारी' (रू. भे.)

उ०—वांह नदन सुगम सेवइइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस प्रति मति स्मरण लज्जा, सोक निद्रादिक सधइ।—वि. कु.

संचारिका-स. स्त्री.—१ दूती, कुटनी।

२ नाक।

३ बू, गंध।

संचारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संचार किया हुआ। २ फैलाया हुआ।

३ चला हुआ।

(स्त्री संचारियोड़ी)

संचारी–सं. पु. [सं. संचारिन्] १ साहित्य के अन्तर्गत वह भाव जो रस का उपयोगी होकर उसमें संचार करता है।

वि. वि.—भरत ने संचारी भावों की संख्या ३३ मानी है उनके नाम निम्नलिखित हैं:—

(१) निर्वेद, (२) आवेग, (३) दैन्य, (४) श्रम, (५) मद, (६) जडता, (७) औग्रय् (८) मोह, (९) विबोध, (१०) स्वप्न, (११) अपस्मार, (१२) गर्व, (१३) मरण, (१४) अलसता, (१५) अमर्ष, (१६) निद्रा, (१७) अवहित्था, (१८) औत्सुक्य, (१९) उन्माद, (२०) शंका, (२१) स्मृति, (२२) मति, (२३) व्याधि, (२४) सन्त्रास, (२५) लज्जा, (२६) हर्ष, (२७) असूया, (२८) विषाद, (२९) धृति, (३०) चपलता, (३१) ग्लानि, (३२) चिन्ता और (३३) वितर्क।

उपर्युक्त संख्या शास्त्र-चर्चा सुविधा के कारण ही परिमित की गयी है। यदि आठ स्थायी भावों को, जो संचारी भी होते हैं उनमें जोड़ दिया जाय तो इनकी परिमित संख्या को बढ़ाना पड़ेगा। पर आठ स्थायी भावों के उनमें जोड़ दिये जाने पर कुछ संचारी अपने-आप व्यर्थ हो जायेंगे। शोक के संचारी होने पर विषाद भय के संचारी होने पर त्रास, क्रोध के संचारी होने पर अमर्ष को ३३ संचारियों में से पृथक करना पड़ेगा। कभी २ तो अनुभाव, नायिकाओं के २० अलंकार, भाव, हाव आदि सात्विक भाव, अलाद, आदि, दस कामावस्थाएँ, सभी को संचारी के अन्तर्गत गिना जाता हैं।

२ पद या गीत का तीसरा भाग। प्रायः यह मुख्य रूप में ध्रुपद में होता है। इसमें अस्थायी और अंतरा के दोनों ही स्वरों का प्रयोग होता है।

३ हवा, वायु।

वि.—१ संचरण या संचार करने वाला।

२ आया हुआ, आगन्तुक।

उ०—तुलसी वन कुंजन संचारी! गिरधरलाल नवल नटनागर, मीरां बळिहारी।—मीरां

रू. भे.—संचारि, संचारिक।

संचाळ, संचाल–सं. पु. [स. संचलन्] १ कंपन, कम्पकम्पाहट।

२ चलन, गमन।

संचालक–वि. [सं.] संचालन करने वाला, परिचालक।

संचालण–सं. पु. [सं. संचालनं] १ चलाने की क्रिया या भाव, परिचालन।

२ व्यवस्था करने या नियंत्रण रखने की क्रिया या भाव।

३ कार्य जारी रखने की क्रिया या भाव।

संचावणौ, संचावबौ—देखो 'संचाणौ, संचाबौ' (रू. भे.)

उ०—मीठै को मंडको, भळसी को तेल, वो थारी जच्चा रांणी पथ लियो, राज। राय कंदोई के ने वेग बुलाय, जच्चा रांणी नें लाडूड़ा संचावो, जी राज।—लो. गी.

संचावणहार, हारौ (हारी), संचावणियौ—वि०।

संचाविप्रोड़ौ, संचावियोड़ौ, संचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संचावीजणौ, संचावीजवौ—कर्म वा० ।

संचावियोड़ौ—देखो 'संचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संचावियोड़ी)

संचित-वि. [सं. संचित] १ संचय या एकत्रित किया हुआ ।

२ देखो 'संचितकरम'

उ०—कूड़ौ किण नें रे ! आपूं अब ओळभौ, कोई उघड़्या संचित पाप ।—मी. रां.

रू. भे.—संचत, संचिद ।

संचितकरम-सं. पु. यौ. [सं. संचितकर्म] १ वैदिक युग में यज्ञ की अग्नि संचित कर लेने पर किया जाने वाला एक विशिष्ट कर्म ।

२ आधुनिक मान्यतानुसार वे समस्त कर्म जो पूर्व जन्म में किये गये थे, जिनका फल इस जन्म में अथवा आने वाले जन्मों में भोगना पड़ता है ।

रू. भे.—संचतकरम ।

संचिद—देखो 'संचित' (रू. भे.)

उ०—आस्चरज रघुनाथ भूप महदं, स्वनांममुच्चारणम् । जन्म संचिद घोर घोर कळुसं, नासं तमेकं-छिनम् ।—र. ज. प्र.

संचियार—देखो 'सचियार' (रू. भे.)

उ०—केसवदास आदमी बड़ौ संचियार थौ, जलाल थौ, मरद मोटियार थौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

संचियोड़ौ-भू. का. कृ.—एकत्र किया हुआ, संचय किया हुआ ।

२ देख-भाल किया हुआ ।

(स्त्री. सचियोड़ी)

संची—देखो 'साची' (रू. भे.)

उ०—सारां मार परखै संची, खांन तहव्वर वागां खंची । हेकण दिस था सार हिलोळी, आहाडां कीधो दळ ओळी ।—रा. रू.

संचीत-वि.—चिंतित, दुःखी ।

उ०—आगै आंबां री दुख हुती हीज, ऊपरा भाई ए संचीत कियौ ।—द. वि.

संचीताई-सं. पु. [सं. स+चिन्ता] चिन्ता, दुख ।

उ०—ताहरां कुंवरी बोली—मुंहता रा बेटा राति च्यार पहर मारिग चालीया पिण बोलिया काहेर नहीं सु किसी संचीताई ।—चौबोली

संचै—देखो 'संचय' (रू. भे).

संचौ-स. पु.—१ वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ डाल कर अथवा गीली चीज रख कर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती हो, फरमा ।

ज्यूं—ईंटां रौ सचौ, टाइप रौ संचौ ।

उ०—जिण संचै सोरठ घड़ी, घड़ियौ राव खेंगार । कै तौ संचौ गळ गयौ, कै लाद वुहा लव्हार ।—अज्ञात

२ संग्रह, संचय, जमा ।

उ०—१ तिण गढ मांहे बावड़ी, कुआ, ताळाब, जळ, बहळ, धांन, घ्रित, तेल, लूण, खड़, ईंधण, अमल, कपड़ौ घणौ अपार संचौ कियौ छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ केई कहै छै, भीम दै, आदमी मेल कहाड़ियौ—'गढ रौ संचौ तूटौ छै, औ दूध दीठौ जिकौ भंडसूरियां रौ छै, थें पाछा आय उतरौ ।' दिन २ तथा ३ नै रावळ गढ रा किंवाड़ नांखसी । —नैणसी

३ तरह, प्रकार ।

उ०—राजा रांणी रै हरख रौ पार नीं । हिवड़ा रै हरख हरख रौ संचौ न्यारौ व्हिया करै । कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार पाय राजी व्है । जित्ता हिवड़ा उत्ताई हरख ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सांचौ ।

संछरदण-सं. पु. [सं. संछर्दन] ग्रहण में एक प्रकार का मोक्ष जो शुभ माना जाता है । (फलित ज्योतिष)

संछेप—देखो संक्षेप' (रू. भे.)

संज, संज-सं. पु.—१ एक देश का नाम ।

[फा.] २ कांसे की दो कटोरियां जो बजायी जाती है, झांझ, मजीरा ।

३ शिव, महादेव ।

४ ब्रह्मा ।

५ वह मुख्य वस्तु, उपकरण या वाहन जिसपर उससे सम्बन्धित अन्य उपकरण, सामान या साधन संलग्न किये जाय ।

उ०—हरी संज साजतां दला रै सहायक, बराबर खवां पर अगर बोली ।—कुंभकरण सांदू

यौ.—संज-साज ।

६ देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—१ पकड़ौ पकडौ री हाक मचावता च्यारूं भाई बिना संज ई घोडां माथै बैठा अर लारै रा लारै घोड़ा दाबिया—वड़गड़ां, वड़गड़ां ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हाळी भेला भला संज सगळा, एक मतै व्है लागा । ब्रह्म साखि यूं निपजी आई, घर का टोटा भागा ।—ह. पु. वां.

उ०—३ अठ दीह करार करै भड़ आया, मांहमां संज मंत्रियां फुरमाया । - सू. प्र.

उ०—४ दीवांण तौ खुद ग्रैड़ाई आदेस री बाट न्हाळतौ हौ । उण री तौ मन जांणी व्ही । काळा घोडा, काळी ई संज अर काळा गाभा देय चरवादार नै सांम्ही भेज्यौ । सगळी वातां समझाय दी । —फुलवाड़ी

उ०—५ रूपाळी लुगाई री झालो बिरथा गियौ तौ वा अेक नवौ चाळौ करचौ । सांयड वणनै मारग में चरण लागी । संज सजियोड़ी । पण माथै असवार नीं । सातूं वेली अठी-उठी भाळियौ । कठैई ओठी निगै नीं आयौ ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संझ।

२ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—हलकारां मारां मिळै, दाखी संज सलाह। रही कमंधां फोज पर, नहीं धाख्बर माह।—रा. रू.

संजड़ी—देखो 'सुजड़ी' (रू. भे.)

उ०—धागै सूर न काढिया, तुंगम काढी धाय। जै मिस रांणै संजड़ी, लेई रिणमल राय।—नैणसी

संजण—देखो 'सज्जण' (रू. भे.)

उ० – जळद नीळ देह जेह तड़िया पट पीत तेह, गोव्यंद सत क्रत गेह गीत नेह संजणं। रावण मियळेसराज लासांवात प्रघट लाज, करि प्रमाव सबळ करग गरग चाप भजणं।—र. ज. प्र.

संजणौ, संजबौ–क्रि. प्र.—१ सकुचाना, शर्माना।

२ ईर्ष्यायुक्त होना।

उ०—मोटा री ध्रम कांम मैं, अधिकौ करै अदेख। दसारण री रिधि देखनै, सक्र सज्यौ सुविसेख।—ध. व. ग्रं.

३ प्रभावित होना।

४ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—तोपां रा अग्राजां माहै संजिया न कोट कितां, महावीर साजां मांहै भंजिया अमाय। मारहठां कहै मैं गांजिया लोक पाजां मांहै, राजां मांहै अगंजी रंजियौ महाराव।

—महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ री गीत

संजणहार, हारौ (हारी), संजणियौ—वि०।

संजिम्रोड़ौ, सजियोड़ौ, संज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजीजणौ, संजीजबौ—भाव वा०।

संजत–स. पु.—१ सामान, सामग्री।

२ सजावट।

३ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—ती नूं देखतां ही लुगाई ऊठी, गरम जळ मूं हाथ पग धुवाया, धागत स्वागत करण लागी। सोमेसर अपणै घर री सजत देखनै राजी हूवौ।—जैसौ न्याय तैसी बुद्धि री वात

४ देखो 'संजुत' (रू. भे.)

उ०—दुत केसर घाट मनून दीध, कंथा नवरंगी सिलह कीध। जट भाल्बंध सेली जड़ाव, आवधां वीर संजत अड़ाव।—वि. सं.

५ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

संजनि–सं. स्त्री. [सं. शिञ्जनी] प्रत्यंचा। (डि. को.)

संजब – देखो 'सजाफी' (रू. भे.)

उ०—घोड़ा सातसौ अवलख, समदा भंवर, गंगाजळ, संजब, कुम्मेद घोर गुलदारी फुलवारी तयार कराया ज्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागै मखमल साज सजादा।—जलाल बूबना री वात

संजम–वि.—१ अंधा।

उ०—१ टूंक चावड़ौ रावराज नै कंवर बीज नांमै राज करै छै। तिको राव राज तौ आंख्या संजम छै, पिण हीया रा नेत्र खुल्या छै। आख्यां देखता सूं घणौ सूझै।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ तद रांणै वैणीदास रै एक बेटी, वरस पनरै मांहे। सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नहीं। सरग री परी, आभै री वीज, मांन–सरोवर रौ हंस, केळ रौ गरभ। सो रूपगुणाकर निपट अवल पण मांख्यां संजम मोतीयाबंध।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—संजमि, संजिमि।

२ देखो 'संयम' (रू. भे.)

उ०—१ सो पति मरत सद्धि दुख संजम। रहि सु पुस्कर गहन मनोहरम।—वं. भा.

उ०—२ संजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग विनांण। मांख तरच्छी ईखतां, जोता संमघा जांण।—वां. दा.

उ०—३ भोग तणउं अंतराइ इण परि वांधी संजम लेवि। निम्मल विपुल कीया तप गाढा, हिअडइ भाव धरेवि।—हीराणंद सूरि

उ०—४ द्वंद वाद किन हूं नहीं करीयैं, आपा सेती अजराजरीयैं। राग न वेस हरख नहीं धोखा, सीलादिक संजम सतोखा।

—अनुभववांणी

संजमणौ–वि.—संयम धारण करने वाला।

संजमणौ, संजमबौ–क्रि. स. – संयम ग्रहण करना, संयम धारण करना।

उ०—असत्री पीहर नर सासरै, सजमीयां सहवास। एता होमै अळखांमणा, जो मांडै घर वास।—ढो. मा.

संजमणहार, हारौ (हारी), संजमणियौ—वि०।

संजमिम्रोड़ौ, सजमियोड़ौ, संजम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संजमीजणौ, संजमीजबौ—कर्म वा०।

संजमनी–सं. स्त्री. [सं. संयमनी] यमराज की नगरी का नाम।

(नां. मा.)

संजमनीपत, संजमनीपति, संजमनीपती–सं. पु. [सं. संयमनीपति] यम–राज, काल। (डि. को; नां. मा.)

संजमभार–सं. स्त्री. यौ. [सं. संयम+राज. भार] दीक्षा।

उ०—१ जोवन ऊलट्यउ जाइ प्रियु विण क्यूं रहाइ, जादव गयउ रिसाइ, अब कैसी आस रे। जपति राजुल नारि जाऊंगी हूं गिर–नारि, लेउंगी सजमभार सुंदर कहकै पास रे।--स. कु.

उ०—२ मात पिता नै, पूछनै, लेसूं संजमभार। वलि तै मुनिवर इम कहै, म करो ढील लिगार।—जयवांणी

उ०—३ निस्चइं तरिसिइं तै संसार जे पुण लेसइं संजमभार। पंच महाव्रत सूधां धरइं मुगति सिरी ते जाई नय वरइं।—वस्तिग

संजमि –१ देखो 'संजम' (रू. भे.)

२ देखो 'संयमी' (रू. भे.)

३ देखो 'संयम' (रू. भे.)

उ०—गयणंगणि वांणीवदीय, खमि दमि संजमि एकु। धरमपूतु

जगि ऊपनउ, सत्यसोलि सुविवेक ।—सालिभद्र सूरि

संजमियोड़ौ—भू. का. कृ.—संयम ग्रहण किया हुआ, संयम धारण किया हुआ ।
(स्त्री. सजमियोड़ी)

संजमी—देखो 'संयमी' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—अण मिळ तूं सैं संजमी, तूं संसार अनेक । नारी मिळै जौ संजमी, जांणहु कोइ एक ।—पंचदंडी री वारता

संजय—सं. पु. [सं.] १ महाभारत के समय धृतराष्ट्र को युद्ध का वर्णन सुनाने वाला एक मंत्री ।
२ सौवीर देशीय राजकुमार जिसने युद्ध से पलायन किया था किन्तु माता विदुला के भत्सर्ना एवं उत्तेजनायुक्त शब्दों से प्रभावित होकर वापिस युद्ध क्षेत्र में युद्धार्थ गया ।
३ पुरुरवा के वंशज प्रति के पुत्र का नाम ।
४ पुरुवंशीय भर्म्याश्व के पांचाल कहलाने वाले पुत्र ।
५ एक सूर्यवंशी राजा ।
उ०—तिण सुत संजय रघुकुळ तारण, सावय संजय सुत दुसह संघारण । संभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत सायक राजा ।—सू. प्र.
६ ब्रह्मा का नाम ।
७ शिव, महादेव ।
८ विदेह देशाधिपति सुपार्श्व का पुत्र, एक राजा ।
९ सिंधुनरेश वृद्धक्षत्र का पुत्र, जो अपने भाई जयद्रथ के द्वारा किये द्रौपदी हरण के समय अर्जुन द्वारा मारा गया था ।
१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।
११ एक व्यास का नाम ।
वि.—सुसज्जित, तैयार ।

संजरामौ—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—नागवटां सारनाला खासटां अगिहिल कवीच संजरामां मदवी फूलपगरीयां सारीपी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ वयराजीउं महिदउरउं तीतत्रागिउ कचीयंउं पीठ समुमी पीठ देवगिरू मंदील होलीउं तलपकाउ नरम्म हरीफ प्रभ्रति वस्त्रजाति ।—व. स.

सजरी—सं. पु.—संज देश का व्यक्ति ।
उ०—सांमी रूपी संजरी, गोरी कासगरीह । ईरांनी यमनी अडर, सीराजी रण सीह ।—वां. दा.

संजवारी—सं. स्त्री.—झाड़ू । (डिं. को.)

संजाफ—स. स्त्री. [फा संजाफ़] १ गोट, झालर, किनारा, हाशिया । (मा. म.)
२ देखो 'संजाफी' (रू. भे.)
रू. भे.—संजाव ।

संजाफी—सं. पु. [सं. संजाफ़+रा. ई] वह घोड़ा जिसका रंग संजाफी (आधा लाल व आधा हरा) हो । (शा. हो.)
रू. भे.—संजव, संजाफ, संजाव ।

संजाव—सं. पु. [फा.] १ चूहे के आकार का एक जन्तु जो प्रायः तुर्किस्तान में होता है ।
२ देखो 'सजाफ' (रू. भे.)
३ देखो 'संजाफी' (रू. भे.)
उ०—१ कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळ महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाव संदली सीहा चकवा अबलख सिराजी ।—रा. सा. सं.
उ०—२ वह अबरस मुसकी अर संजाब, बौरता केहरी पेसव व । कासनी ताफता पंच-कल्यांण, सूलहरी चंपा पट सिचांण ।
—सू. प्र.

संजावणौ, संजववौ—देखो 'संजोणौ, संजोवौ' (रू. भे.)
उ०—आंमा जी सांमा दीवला संजावौ साहिब जी रे, विच ऊभी रंभा रांणी रे, हांजी रे रंभा रांणी रा ढोला वेगा रे पधारो रे ।
—लो. गी.

संजावणहार, हारौ (हारी), संजावणियौ—वि० ।
संजायिओड़ौ, संजावियोड़ौ, संजाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
संजावीजणौ, संजावीजवौ—कर्म वा० ।

संजावियोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संजावियोड़ी)

संजिगत—वि. [स. संयुक्त] सहित, संयुक्त ।
उ०—........नवकोटी मारू आदि, संघु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देव कूं पाटण, चीण महाचीण भोट महाभोट संखोद्धार, एतला संजिगत अम्हारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अहो सीआलक वोलि ।—व. स.

संजिम—सं. पु.—१ दीक्षा ।
उ०—धिन धिन स्रीवासपूज्य, फाग रमतइ थी वूझ्य, संजिम आदरइ ए, सिवरमणी वरइ ए ।—कल्यांण
२ देखो 'संजम' (रू. भे.)
३ देखो 'संयम' (रू. भे.)

संजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सकुचाया हुआ, शर्माया हुआ । २ ईर्ष्यायुक्त हुवा हुआ । ३ प्रभावित हुवा हुआ ।
४ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संजियोड़ी)

संजीदगी—सं. स्त्री. [फा.] १ आचरण, विचार व्यवहार आदि की दृष्टि से गंभीर होने की अवस्था या भाव ।
२ संजीदा होने की अवस्था या भाव ।
३ स्वाभाविक शिष्टता तथा सौम्यता ।

संजीदौ—वि. [फा. संजीदः] जिसके विचार व व्यवहार में गम्भीरता हो ।

उ०—गोपाळदास बडो सरदार कांम रो मांणस संजोदो छै सो इणां नूं हर भांत कर रासला।—गोपाळदास गोड़ री वारता

संजोरी—सं. पु.—१ रसोई की सामग्री।

२ भोजन सामग्री।

३ रसोई की सामग्री को समेटने की क्रिया।

४ रसोई का कार्य।

संजीव—सं. पु. [सं.] १ मृतक को पुनः जीवन दान देने की क्रिया।

२ वह जो पुनः जीवनदान दे।

३ एक नरक का नाम। (बौद्धमत)

रू. भे.—सजीव।

संजीवण—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

उ०—तेथी बीजो कुटी निवासी मिळियो। इयै अपणी संजीवणी-विद्या कर मंदारवती नूं जिवाड़ी। मंदारवती संजीवण होय जी ऊठी छै।—वैताळ पच्चीसी

संजीवणविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

संजीवणी—देखो 'संजीवनी' (रू. भे.)

संजीवणीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

उ०—तेथी बीजो कुटी निवासी मिळियो। इयै अपणी संजवणी-विद्या कर मंदारवती नूं जिवाड़ी। मंदारवती संजीवण होय जी ऊठी छै।—वैताळ पच्चीसी

संजीवणी बूंटी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवणीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

उ०—डाकण सूं वदळो नीं लेय वेलियां नै पाछा जीवता नीं करूं जित्तै गांय सांम्ही मूंडो ई नीं करूंला। इत्ता वरसां मैं वो केई केई संजीवणीविद्यावां सीखी। केई मंतर-जंतर सीख्या। भूत-प्रेतां री लीला सीखी। डाकणियां री भासा सीखी।—फुलवाड़ी

संजीवन—सं. पु. [सं.] १ पुनर्जीवित करने की क्रिया, नया जीवन देने की क्रिया।

उ०—वेरा वेरागर सागर सम सोभा, रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन संजीवन जीवन घन जोवै।—ऊ. का.

२ एक प्रकार की जड़ी विशेष जिससे मृत व्यक्ति के जीवित हो जाने की मान्यता है।

उ०—वैद पतुसतूम लंका वस, सो आवै धारक सुरत। जिको वतावै जड़ी संजीवन, तो लिछमण उठै तुरत।—र. रू.

वि.—जीवित, जिन्दा।

रू. भे.—संजीवण, सजीवण, सजीवन, सजीवन्न, सरजीवन।

संजीवनबूंटी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवनमणि, संजीवनमणी—सं. स्त्री. [सं. सञ्जीवनमणि] सर्पश्रेष्ठ के सिर में पाई जाने वाली एक प्रकार की मणि विशेष।

संजीवनमूळी—देखो 'संजीवनी'।

संजीवनविद्या—सं. स्त्री. यौ.—मृत प्राणी को जिलाने की एक विद्या।

उ०—तद फूलमती विचारी श्री कुंवर री ब्राह्मण श्रासै तो उवै पासै संजीवनविद्या छै। सु जीवाउसी। तद फूलमती उठै कुंवर नूं महलायत मांहे अरंड रो रूंख हुतो तैरै पांनां मांहे लपेट अर अरंड रै रूंख ऊपर राखीयो।—चौबोली

रू. भे.—संजीवणविद्या, संजीवणीविद्या, संजीवणीविद्या, संजीवनिविद्या, संजीवनीविद्या।

संजीवनि, संजीवनी—सं. स्त्री. [सं. संजीवनी] १ पुनः जीवन देने वाली।

२ मृत प्राणी को जीवित करने वाली एक बूंटी।

उ०—१ जंघाळस वंदण चित्र जास, किरि जळद इंद्र धांनुख प्रकास। अति नग जड़ाव सब साजि अंग, संजीवनि किरि द्रोण संग।—रा. रू.

उ०—२ सुरां भंत्र रूपो तरां अंब सोभै, लखै पारिजाती तजै मार लोभै। प्रभा संप चंपै कळी जाळ पेखै, लजै भोण संजीवनी द्रोण लेखै।—रा. रू.

३ वैद्यक के अनुसार एक औषधि का नाम, संजीवनी वटी।

४ एक मंत्र विशेष।

रू. भे.—संजीवणी।

संजीवनिविद्या, संजीवनीविद्या—देखो 'संजीवनविद्या' (रू. भे.)

संजुक्त—देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—अरु सूरसिंघजी नूं मा'राज रायसिंघजी फळोधी गांम ८४ सूं पटै दीनी ही जिण सूं सूरसिंघजी सिरकार संजुक्त फळोधी विराजता अरु दळपतसिंघजी आगै मुसायवी रो कांम प्रोहित मांन महेस करै है।—द. दा.

संजुग—सं. पु. [सं. संयुगः] युद्ध, लड़ाई। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संजुगत, संजुगता, संजुगति, संजुगुत, संजुगुता—वि. [सं. संयुक्ति] १ युक्तिपूर्वक।

उ०—अनि सुकवि कोइक पूछै अभास, किण अरथ नांम सूरिज प्रकास। जिण जतन काजि साचो जवाव, संजुगत अरथ दाखूं सताव।—सू. प्र.

२ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ सहुअै लखणां संजुगत, सुकलीणी सब जांण। घरण तणां कलियांण री, चत्र भाखा चहुवांण।

—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तिसी समन्नै के बीचि में कनक सिंघासन छत्र मसंद गाव-तकियै। तकियो संजुगत विराजमांन कियै। मांनूं इंद्र सूं जंग कर जीत कै लियै।—सू. प्र.

उ०—३ काळो वड पावस कंवळयं, वग पंकति दीप दंतूसळयं। हिळिया भद्र जातिय हींदुळता, परवत्त क पंखिय संजुगता।

—गु. रू. बं.

उ०—४ प्राचीप करम सुभए पुरखा, पाइत उत्तमा महिला।

कुळ दीप पुत्र जिणयै, कुळवधू विनै रूप संजुगता ।—गु. रू. बं.

उ०—५ सप्त सुर तीन ग्रांम इकवीस मूरछना अस्ट ताळ गुनचास कोटि तांनूं संजुगति छ राग छतीस रागणी का भेदग जिनूंनै बखत प्रमांण वचार कियै ।—सू. प्र.

उ०—६ दीरघ मिटि वधिआ लुघू दोइ, जिणिहूंत प्रघटिआ नांम जोइ । संजुगुत जगण एकणि सरूप, औ गाहा कुळवंती अनूप ।

—ल. पिं.

संजुगम, संजुग्म-वि. [सं. स+युग्म] सहित ।

उ०—अरोगि नै चळ कीजै छे। ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, नाडां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, संजुगम, मुखवास, मुंह-छण दीजै छै ।—रा. सा. सं.

संजुत-सं. पु. [सं. संयुक्त] १ युद्ध, लड़ाई । (ह. नां. मा.)

वि.—२ सुसज्जित ।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, अति अछर लेत विमोह । सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात झुंड सपूर ।—रा. रू.

रू. भे.—संजत, संजुति, संजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत ।

३ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ । संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ ।—बां. दा.

उ०—२ कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत वात । हरि रा दासां ज्यूं हुए, दासां नूं सुख दात ।—बां. दा.

उ०—३ अंत्र हिम विध सुस्त अचवावै, पूरण हुय चूरण सुध पावै । संजुत वसत वांणरस सोखां, नागलता मघई पत्र नोखां ।

—सू. प्र.

संजुक्त-सं. स्त्री. [सं. संयुक्तता] एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसमें प्रथम सगण, फिर दो जगण तथा अंत में एक गुरु के अनुसार कुल १० वर्ण होते हैं । (र. ज. प्र.)

संजुता—१ देखो 'संयोगिता' (रू. भे.)

२ देखो संयुक्ता' (रू. भे.)

संजुति, संजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत—१ देखो 'संजुत' (रू. भे.)

२ देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ आबदार ऊजळ बडवार मुकताफळ सोव्रन लाल संजुति रूपवंत स्रवणूं वीच राजै । सौ कैसै, मांनूं च्यार नक्षत्र दोइ रूप-धरि मंगळ वाळ-अवस्था धरि व्रहस्पति की वाहू कुंडळी कीलां करंत छाजै ।—सू. प्र.

उ०—२ मनु संजुति लोकेस, कना रवि हूंत प्रजापति । कै रघुवीर कुंवार, लियां अवधेस प्रभाजुति ।—रा. रू.

उ०—३ तळा तळै राजस करै, मै दांनव अदभुत्त । महातळै वासग वसै, सह सरपां संजुत्त ।—गज-उद्धार

उ०—४ सगण एक दुजगण सूं, कुरु अंति इम गांन । संजुत्ता आखर दसै, मांन चरण अनमांन ।—पिं. प्र.

उ०—५ वक्खांणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ । आरहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ । धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वर-गइ पाविज्जइ, चाउ त अणखंडियउ जु वंदिणु सलहिज्जइ ।

—कविपल्ह

उ०—६ बूडै पावू रा विनै, देवळ ऊजळ दूत । कमधज सिंह करा-ड़िया, सोव्रन कळस संजूत ।—पा. प्र.

संजोग—देखो 'संयोग' (रू. भे.)

उ०—१ सोधी दाता पलक में, तिरै तिरावण जोग । दादू ऐसा परम गुरु, पाया किंहि संजोग ।—दादूबांणी

उ०—२ कोइक पूरव भव संबंध सं रे, आइ मिल्यौ संजोग । भवि-तव्यता रइ जोग मिलइ इस्यौ रे, वणियौ एम वियोग ।

—प. च. चौ.

उ०—३ पींजारौ इचरज सूं कांन देय पूरी बात सुणी । औ तौ नांमी संजोग सजियौ । लाधोड़ी चीज वास्तै चोरी रौ बजी कीकर आय सकै ।—फुलवाड़ी

उ०—४ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र अरथ संजोग । अक्षर रूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ।—वृस्त.

उ०—५ जद स्वांमीजी बोल्या—इस संसार नां सुख काचा । संजोग रौ विजोग पड़ जावै । सारीरिक मांनसिक दुख ऊपजै ।

—भि. द्र.

उ०—६ कांमी तैं कूकर भलौ, रुति विन रहै विजोग । कांमी नर कै कांम कौ, हरीया सदा संजोग ।—अनुभववांणी

उ०—७ रांणी वणियां गरीब-गुरवां रौ भलौ करण सारू संजोग सजियौ हौ, पण म्हैं तौ उणरै ठोकर मारदी । परजा रौ भलौ करणौ तौ अळगौ म्हैं तौ खुदनै दुखां रै, अताळ-पताळ मैं थरका-यदी ।—फुलवाड़ी

उ०—८ सरद हिमंतह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग । धूना मिंदर धौहरै, सिसि वदनी संजोग ।—गु. रू. बं.

उ०—९ भाणजो री आटी गूंथतां मासी पूछ्यौ—म्हैं थनै अेक साव मांमूली वात पूछूं, जिणरौ जवाव दीजे वेटी के जद अपांरै जलम ई संजोग सूं व्है तौ पछै उणरी नींव माथै चिणियोड़ौ जीवण कीकर संजोग बिना आपरौ गुजारौ कर सकै ।

—फुलवाड़ी

उ०—१० सबदां रै संजोग सूं ई बात वणै, सार ऊपनै ।

—फुलवाड़ी

उ०—११ इणनै आप पूरबभव रा संस्कार समझौ अथवा कोई संजोग री वात के सूरज म्हारा सूं थोड़ौ दबती जरूर हो ।

—अमर चूंनड़ी

उ०—१२ विखम खीज जिण वार, 'जैत' भूपति उर जगी । सुरा धिरत संजोग, ज्वाळ जांणै जगमगी ।—मे. म.

संजोगमंत्र—देखो 'संयोगमंत्र' (रू. भे.)

संजोगि—देखो 'संयोगी' (रू. भे.)

उ०—मकरध्वज वाहणि चढ्यौ महिमकर, उत्तर वाउ वाए अठर।
समळ वाळि विरहिणी वदन किय, अंग पाळि संजोगि उर।—वेलि

संजोगिता—देखो 'संयोगिता' (रू. भे.)

संजोगी—१ मिला हुआ, संयुक्त, दीर्घ।

उ०—गण संजोगी आद गुरु, संजुत व्यंदु गुरेण। गुरु फिर वक्र सुमन गणि, लघु सुद्ध एक कळेण।—र. ज. प्र.

२ देखो 'संयोगी' (रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। संजोगणि गोहांमणां, विजोगि अंग दाधि।—ढो. मा.

उ०—२ सरद बीती पछै ससि रुत आई, संजोगण्यां हरखी। हरवहण्यां थरराइ। मुग्धा नायकां रै ऊपरै जोवन की दसा आवै ज्युं ज्युं कहि तो खीण होती जाय।—पनां

उ०—३ संजोगिणि चीर रई कैरव स्त्री, घरहट ताळ भमर गोघोख। दिणयर ऊगि एतला दीधा, मांखियां बंध बंधियां मोख।
—वेलि

उ०—४ तिण वात कमळ था सु बाळि इसा कीया जु जिसो विरहणी को मुख। आंब था सु इसा किया जिसो संजोगणी को उरस्थल।—वेलि टी.

३ देखो 'संयोग' (रू.भे.)

उ०—राजा माहइ उछव हूवउ, ब्राह्मण दीयउ बहुत पसाव। जोषी संजोगी गुणावीयउ, सुणी वचन हरख्यो मनि राव।—वी. दे.

(स्त्री. संजोगण, संजोगणी, संजोगन, संजोगिणि, संजोगिणी, संजोगिनी)

संजोगै-क्रि. वि.—संयोग से, देवयोग से।

उ०—१ पूगळि पिंगल राऊ, नळ राजा नरवरै नयरै। अदिठा दुरिट्ठा यै, सगाई दईय संजोगै।—ढो. मा.

उ०—२ भवसागर भमतां थकां जी, दीठा दुख अनंत। भाग संजोगै भेटिया जी, भय भंजण भगवंत।—स. कु.

संजोगो—१ देखो 'संयोग' (रू. भे.)

उ०—१ विरह संजोगा ग्यांन का, सुधि बुधि गुणां गंभीर। जन-हरीया अग्यांन कूं, काढि निकासै तीर।—अनुभववांणी

उ०—२ कुंवर महलां सूं उतरयो, बिलसै संसार ना भोगो रे। पुन्य जोग आयो मिल्यो, साव तणो संजोगो रे।—जयवांणी

२ देखो 'संयोगी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सूटै साथ जांणै अमीदार लीधां, किणां वेगनाढ़ं सजीवन्न दीधो। विजोगी संजोगी वडै वेगवार्यां, प्रभू आपरी जांण पंम्रत पादो।—ना. द.

संजोड़णो, संजोड़बो-क्रि. स.—१ मिलाना, संयुक्त करना।

२ तैयार करना।

उ०—हळिया हळ संजोड़िया, गळियो ग्रीख कियो, आयो धुर आसाढ।—पा. प्र.

संजोड़णहार, हारो (हारी), संजोड़णियो—संजोड़िओड़ो, संजोड़ियोड़ो, संजोड़योड़ो—संजोड़ीजणो, संजोड़ीजबो—कर्म वा०।

संजोड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ मिलाया हुआ, संयुक्त किया हुआ।

२ तैयार किया हुआ।

(स्त्री. संजोड़ियोड़ी)

संजोणो, संजोबो-क्रि. स. [सं. संयोजनम्] १ जलाना, प्रज्वलित करना। (दीपक)

उ०—१ सुरत निरत का दिवड़ा संजोलै, मनसा की कर लै बाती। प्रेम हाट का तेल मंगालै, जग रह्या दिन तै राती।—मीरां

उ०—२ लिखमी घर में दीया संजोया। पूजन सारू चावळ कूंकूं काढिया और तो लायण कनै हो-ई कांई? इत्तै मैं ही हीर आयो। लिखमी कयो—पूजन री सांमगरी त्यार है।—वरसगांठ

२ सजाना, सुसज्जित करना।

उ०—१ अंतर नीलंबर अवळ आभरण, अंगि अंगि नग नग उदित। जांणै सदनि सदनि संजोई मदन दीपमाळा मुदित।
—वेलि

उ०—२ पमंगां हुआ पिलांण भूप 'बूडा' चढ भेळो, वण चांदै वागेल ठट्ठै संग सारो ठेलो। वहै ढाल बीटियां जगै जांमकियां ढोया, दरकां सर दीवड़ा सोर भायड़ा संजोया।—पा. प्र.

३ तैयार करना, बनाना।

उ०—तो कर लाडा उगठणो, थारा उगठणा में बास घणी। थारी दादयां संजोयो उगठणो, थारी मांय संजोयो उगठणो।—लो. गी.

४ इकट्ठा करना, एकत्र करना।

उ०—राजा कनक सिखर सांमग्री संजोय कन्या आप री राजा विक्रमादित्य नूं परणाई।—पंचदंडी री वारता

५ पिरोना।

उ०—सरी नोसरैहार मोती संजोया, पड़ै त्रेणता हीणता सुक्र पोया। परीखै सरीकंठ में हीर पूरी, सभै सूर आकास जांणै सनूरी।—रा. रू.

६ लगाना, करना।

उ०—जोगी कहै 'पतीव्रता' सुणेस हुइ नच्यंत, प्रीव थारो आव्यो छइ मास वसंत। मांणिक मोती लै वळ्यो, रठि नै गोरी तीलक संजोई।—वी. दे.

७ देखना, निहारना।

उ०—तड़फड़ साकुर हिंजु तुंड, रड़वड़ ऊड गडां जिम रूंड। हड़-बड़ जोगण बेताल होय, सड़वड़ कायर पंथ संजोय।—गो. रू.

८ संजीवित करना, हरा-भरा करना, पल्लवित करना।

उ०—सूत्रै काठ संजोइयो, भुज माट मही भर। नीळी तर व्है

नेहड़ी, वणियौ गह डंबर ।—ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ
संजोणहार, हारौ (हारी) संजोणियौ वि० ।
संजोयोड़ो—भू० का० कृ० ।
संजोईजणौ, संजोईजबौ – कर्म वा० ।
संजावणो, संजावबौ, संजोइणौ, संजोइबौ, संजोवणौ, संजोवबौ; सजोणौ, सजोवौ, सजोवणौ, सजोववौ—रू० भे० ।

संजोत, संजोति-सं. स्त्री.—ज्योति, लौ ।
उ०—सती लै अरधंगा संग जळेवा में महासूर । जीव मारू राव मिळै, मोक्ष में संजोत ।—अग्यात
२ चमक ।
उ०—नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ संजोति । अहिर विद्रम ओपमां, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणी मंगळ

संजोयणादोस-सं. पु.—भिक्षा लेने के उपरान्त स्वाद के लिए उसमें कुछ मिलाने पर लगने वाला दोष । (जैन)

संजोयोड़ो-भू. का. कृ.—१ जलाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ. २ तैयार किया हुआ. ३ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. ४ इकट्ठा किया हुआ, एकत्र किया हुआ. ५ पिरोया हुआ. ७ लगाया हुआ, किया हुआ. ७ देखा हुआ, निहारा हुआ. ८ संजीवित किया हुआ, हरा-भरा किया हुआ, पल्लवित किया हुआ ।
(स्त्री. संजोयोड़ी)

संजोवणौ, संजोवबो—देखो 'संजोणौ, संजोबौ' (रू. भे.)
उ०—१ तिणरा झड़िया पांख, पळकती किरणां सो'वै । उमा पूत रै कोड, कंवळ ज्यूं करण संजोवै ।—मेघ
उ०—२ गोखे गोखै दिवला संजोव राजिंदा ढोला, दीयां रै चांनणियै ढाळूं ढोलियौ ।—लो. गी.
उ०—३ सखी संजोवै दीवला, पूजै लक्ष्मी मात । रळ-मिळ पोढै कांमणी, लै प्रीतम नै साथ ।—लो. गी.
संजोवणहार, हारौ (हारी), संजोवणियौ—वि० ।
संजोविओड़ो, संजोवियोड़ो, संजोव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
संजोवीजणो संजोवीजबौ—कर्म वा० ।

संजोवियोड़ो—देखो 'संजोयोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. संजोवियोड़ी)

संजोह-सं. पु. [सं. सं+फा. जोशन] १ कवच ।
उ०—ताहरां ओथि घोड़ा ठांमिया । ओथि राघवदास संजोह पहिरियो हुतौ अर अफीण खाधौ हुतौ ताहरां तळछर ऊपर छाल विहुं हुई ।—द. वि.
२ कपड़ा बुनते समय जुलाहे द्वारा छत से लटकाया गया लकड़ी का चौखटा जिसमें राछ या कंघी लटकी रहती है ।

संज्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)
उ०—सुवारै संज्या अठै आवौ सौ करजै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

संज्वर-सं. पु. [सं.] १ तीव्र बुखार । २ क्रोध, आवेश ।

संझ—१ देखो 'साज' (रू. भे.)
उ०—तरै रुपीया १०,०००) खरची नैं रखत रा दीना । तिणां सूं संझ कराय नैं दिली नैं चढिया ।—नैणसी
२ देखो 'संध्या' (रू. भे.)
उ०—१ करहा काछी काळिया, चाली गइ किरणांह । संझ बळंतइ दीवळड, धण जागंती जांह ।—ढो. मा.
उ०—२ ओपै गज सांमळा अनैसा, जपि गुण डौळ तिमंगळ जेसा । अरुण अंबाड़ी झूळ अरोहै, सांवण संझ की अंबुद सोहै ।
—रा. रू.
उ०—३ बीती ग्रीखम एण विध, सिर लग्गे बरसात । सरस वरस गुणियासियौ, सोहै संझ प्रभात ।—रा. रू.
३ देखो 'संज' (रू. भे.)

संझया, संझा—देखो 'संध्या' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)
उ०—१ मांणस थिकि पंखी भला, अळगा चूण चणंति । तरुवर भमि संझा समइ, माळइ आवि मिळंति ।—अग्यात
उ०—२ सउच न्हांण मुख साधि सब, राचै राजस राह । क्रम बैठौ संझा करण, 'दूदौ' कंवर दुवाह ।—वं. भा.
उ०—३ करि संझा जप आदि क्रम, पूजि इस्ट गोपाळ । स्वकरां करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ ।—वं. भा.

संझाड़ौ—देखो 'सझाड़ौ' (रू. भे.)

संझावळ-सं. पु. [सं. संध्यावल] राक्षस, निशाचर । (डिं. को.)

संझारावउं-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—.........मदव गजवडि, सुव्रण्णपडि, पंचव्रण्णपडि, क्रस्ण-पडि, माठउं, जादर, भातीगलुं, जादरपोति, परेवउं, पटसउल, मेघाडंबर, संझारावउं, रावेटउं, कणवीर, सौवन्नच्छतेउं...... ।
—व. स.

संझि, संझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)
उ०—१ लगनि थकी पहिलइ इक मासि, मांणस मूंकेस्यां तुम्हि पासि । छांनी वातविमासी बहू, संझि सहू को आविसी सहू ।
—ढो. मा.
उ०—२ दौड़िया साह दिस डाकदार, संझ्यां सुं वरस आडी सवार ।—रा. रू.
उ०—३ संझ्यां चलै उतावळा, बटाउ बनखंड मांहि । वरिया नाहीं ढलिकी, दादू वेगि घर जांहि ।—दादूबांणी
उ०—४ संझ्यां समै रावजी महिलां पधारिया तरै अपछरा मुजरौ करै नै सीख मांगी। अबै तौ साहिबजी मोनै लोकां दीठी । राज पीण हकीगत कीही सो म्हैं तौ जावसुं ।
—वीरमदै सोनगरा री वात

संठ—देखो 'सठ' (रू. भे.)
उ०—निनाद बंध अंध कै, दुकंध ओटतै नदें । महांन लंठ संठ कै,

कूकंट पोटरं मटै । —ऊ. का.

संठणौ, संठबौ-क्रि. अ.—१ धनी होना, सम्पन्न होना, वैभवयुक्त होना ।

२ जुड़ना, संयुक्त होना ।

३ संस्थापित होना ।

संठणहार, हारौ (हारी), संठणियौ—वि० ।

संठियोड़ौ, संठियोड़ौ, संठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठीजणौ, संठीजबौ—भाव वा० ।

संठवणौ, संठवबौ—रू० भे० ।

संठवणौ, संठवबौ—देखो 'संठणौ, संठबौ' (रू. भे.)

उ०—इणि परि ए गुरु आएसि, मुहगुरु पाटिहि संठविउ । तिहु-यणि ए मंगलनाद, जय जयकार समुच्छलिउ ।

—कवि ग्यांन कलस

संठवणहार, हारौ (हारी), संठवणियौ—वि० ।

संठवियोड़ौ, संठवियोड़ौ संठव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठवीजणौ संठवीजबौ—भाव वा० ।

संठया—देखो 'संठाव' (रू. भे.)

संठवाड़ौ-सं. पु.—वह खेत जिसमें घास-फूस तथा छोटे-छोटे झाड़-झंखाड़ अधिक हो ।

२ खेत में होने वाला घास-फूस व झाड़-झंखाड़ ।

३ हल्की एवं नन्हीं-नन्हीं बूंदों की निरन्तर होने वाली वर्षा, वर्षा की झड़ी ।

संठवाणौ, संठवाबौ—देखो 'संठाणौ, संठाबौ' (रू. भे.)

संठवाणहार, हारौ (हारी), संठवाणियौ—वि० ।

संठवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठवाईजणौ संठवाईजबौ—कर्म वा० ।

संठवायोड़ौ—देखो 'संठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संठवायोड़ी)

संठवियोड़ौ—देखो 'संठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संठियोड़ी)

संठाणौ, संठाबौ-क्रि. स.—१ संस्थापित करना/कराना ।

२ जुड़ाना या जोड़ना ।

संठाणहार, हारौ (हारी), संठाणियौ—वि० ।

संठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठाईजणौ, संठाईजबौ—कर्म वा० ।

संठवाणौ, संठवाबौ, संठावणौ, संठावबौ—रू० भे० ।

संठायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संस्थापित किया हुआ/कराया हुआ ।

२ जुड़ाया हुआ, जोड़ा हुआ ।

(स्त्री. संठायोड़ी)

संठाव-सं. पु.—उर्वरा शक्ति प्राप्त करने हेतु दो-तीन वर्ष बिना जोते पड़ी रही भूमि, पड़त भूमि ।

रू. भे.—संठया ।

संठावणौ, संठावबौ—देखो 'संठाणौ, संठाबौ' (रू. भे.)

संठावणहार, हारौ (हारी), संठावणियौ—वि० ।

संठाविश्रोड़ौ, संठावियोड़ौ, संठाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठावीजणौ, संठावीजबौ—कर्म वा० ।

संठावियोड़ौ—देखो 'संठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संठावियोड़ी)

संठियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ धनी हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ, वैभव-युक्त हुवा हुआ. २ जुड़ा हुआ, संयुक्त हुवा हुआ ।

३ संस्थापित हुवा हुआ ।

(स्त्री. संठियोड़ी)

संठीर-वि.—दृढ़, मजबूत ।

उ०—१ तूटियौ अधाप वेग होफरेल रातांखियौ, साप पांखियौ क धाप डांकियौ संठीर । ताप साई मैंगळां अळा हूं अमाप तेज, कुमारां सिंगार आप बूलायौ कंठीर ।—प्रतापसिंह राठौड़ री गीत

उ०—२ लागाळी इण चाह, अणियाळा अलता जिहि । सड संठीर सथाह, जड़िया पिंजर जेठवा ।—जेठवा

संठौ—देखो 'सोठौ' (रू भे.)

उ०—पदमणि पुरखारै पंगरण नह पूरा, भूखा सूतोड़ा संगरणवै भूरा । रोजा निसवासर संठां में साजै, वेंकति कंठां में अलगोजा वाजै ।—ऊ. का.

संड-सं. पु. [सं. शंड या षंड] १ नपुंसक, हिजड़ा ।

२ वह पुरुष जिसके सन्तान न हो ।

३ देखो 'सांड' (रू. भे.)

उ०—१ अमीति बीति कूंड देय, चंड-मुंड ज्यौं भरैं । अकाळ चंड चंडिका, अखड संड लो तरैं ।—ऊ. का.

उ०—२ 'मांडण' 'सीहौ' वहे, संड गंजे 'सिंघल' हर । अकबरि मांगी कुंअरि, तांम मुख दीनौ उत्तर ।—गु. रू. बं.

उ०—३ हिंदूवै सुरताण तूं, तूं सुरतांणां संड । तूं सुरतांणां चीतगर, तूं सुरतांणां चंड ।—गु. रू. बं.

४ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

उ०—खगां धार खूटै, तई संड तूटै । परां नाग जाए, जांणे उड्ड जाए ।—सू. प्र.

संडजोनि—देखो 'संडयोनि' (रू. भे.)

संडता-सं. स्त्री. [सं. षंडता] १ नपुंसकत्व, हिजड़ापन ।

२ मूर्खता; बेवकूफी ।

संडमुसंट, संडमुसंडौ, संडमुस्टंड, संडमुस्तंड—देखो 'सुंडमुस्तंड' (रू. भे.)

संडजोनि-सं. स्त्री. यौ. [सं. षंड+योनि] पुरुष समागम के अयोग्य वह स्त्री जिसके मासिक धर्म न होता हो व जिसके स्तन न हो ।

रू. भे.—संडजोनि ।

संडसी—देखो 'संडासी' (रू. भे.)

संडसौ—देखो 'संडासौ' (रू. भे.)

संडा–सं. पु. [सं. शंडा] १ एक यक्ष का नाम।
२ दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।
संडाई–सं. स्त्री.—१ मशक की तरह का भैंस आदि का वह हवा से भरा हुआ चमड़ा जो पानी में तैरने के काम में लिया जाता है।
२ देखो 'सांडाई' (रू. भे.)
३ देखो 'संडासी' (रू. भे.)
संडावौ—देखो 'संडासौ' (रू. भे.)
संडास–सं. पु.–पाखाना, शौच-कूप।
संडासी–सं. स्त्री.—१ लोहारों व स्वर्णकारों का गर्म लोहे या सोने चांदी को पकड़ने का एक औजार या उपकरण।
उ०—१ सांजत समहर डाव संडासी, चख धिखतां थहियां रंग चोळ। अहरण अकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजड़ां वाहै धम-रौळ।—लालसिंह राठौड़ री गीत
उ०—२ जैसे लोहार लोहा घड़ै छै; जब आगि माहै लोह पकड़ि नै संडासी देई तब तौ वहुत तप आवै। अरु ढिग पांणी कौ वासण राखै छै। तिहि मांहि दै संडासी ताढी करै।—वेलि टी.
२ लकड़ी का बना लम्बा उपकरण विशेष जो सर्प पकड़ने के काम आता है।
उ०—अर भिल्या तो पछै इसा भिल्या के जांणै संडासी में सांप।
—अमरचूनड़ी
३ रसोई में काम आने वाला वह उपकरण जो चूल्हे, अंगीठी आदि पर से चाय, सब्जी आदि के गर्म बर्तन उतारने के काम में आता है।
रू. भे.—संडसी, संडाई।
संडासौ–सं. पु.—संडासी के आकार का बड़ा औजार या उपकरण।
रू. भे.—संडसौ, संडावौ।
संडिल, संडिल्ल–सं. पु.—आर्यों के एक जनपद का नाम।
उ०—मगधमंडल अंग वंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पंचाल जांगल [सुरास्ट्र] बिदेह संडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भंग [वट्टा] कुणाल लाट केकयमंड-लारद्ध इत्यरद्ध पंचविसंति जनपदा आरया।—व. स.
संडी—देखो 'संडयोनि'।
संडेव–सं. पु.—१ नंदी।
उ०—महाराग छंडेव छंडेव व्है न दे न गूंड, वजंडेव डम्मरु चंडेव हत्तीबीस। संडेव छंडेव मेख पाथ बांण पाय साच, उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस।—बद्रीदास खिड़ियौ
२ वृषभ।
संडौ–सं. पु.—१ असुरों के पुरोहित शुक्राचार्य का एक पुत्र।
२ ऊंट।
३ देखो 'व्हास'।
४ देखो 'सांडौ' (रू. भे.)

संणकणौ, संणकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'सिणकणौ, सिणकवौ' (रू. भे.)
संणकणहार, हारौ (हारी), संणकणियौ—वि०।
संणकिओड़ौ, संणकियोड़ौ, संक्णयोड़ौ—भू० का० कृ०।
संणकीजणौ, संणकीजबौ—भाव वा०।
संणकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संणकियोड़ी)
संणक्कणौ, संणक्कवौ–क्रि. अ. (अनु.) तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से ध्वनि उत्पन्न होना।
उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणंक्कै यै बीमांण रंभा, लोयणां भणंक्क डंड मणंक्का लेवांण। हुवै पंखां भड़फ्फा ग्रीधांण वीर है हणक्कै, कैमरां संणक्कै वाजे खड़क्का केवांण।
—प्रभूदांन मोतीसर
उ०—२ खोपरां खणंक्कै वांण विछूटै अनेकां खळां, संणक्कै अंग मैं सार बहंतां सधीर। तड़च्छै द्रोयणां टूक घड़च्छै भुजाटां तेगां, कड़क्कै खीचियां माथै रड़क्कै कंठीर।—बादरदांन दधवाड़ियौ
२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)
संणक्कणहार, हारौ (हारी), संणक्कणियौ—वि०।
संणक्किओड़ौ, संणक्कियोड़ौ, संणक्कयोड़ौ—भू० का० कृ०।
संणक्कीजणौ, संणक्कीजबौ—भाव वा०।
संणकणौ, संणकवौ, सणंकणौ, सणंकबौ, सणकणौ, सणकबौ, सनंकणौ, सनंकबौ, सनकणौ, सनकवौ—रू० भे०।
संणक्कियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से तेज शब्द उत्पन्न हुवा हुआ।
२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संणक्कियोड़ी)
संणकौ, संणक्कौ–सं. पु.—तीर, गोली, तलवार आदि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।
संणगार—१ देखो 'सिणगार' (रू. भे.)
२ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)
संणगारणौ, संणगारवौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारवौ (रू. भे.)
संणगारणहार, हारौ (हारी), संणगारणियौ—वि०।
संणगारिओड़ौ, संणगारियोड़ौ, संणगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
संणगारीजणौ, संणगारीजबौ—कर्म वा०।
संणगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संणगारियोड़ी)
संणियौ—देखो 'सिणियौ' (रू. भे.)
संत–सं. पु. [सं. सत्] १ साधु, संन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष, महात्मा।
उ०—१ भावै कोई निंदौ आवै कोई विंदौ, म्हें तौ गुण गोविंदजी

रा जास्यां। जीं मारग वै संत गया छै, जीं मारग म्हैं जास्यां।
—मीरां

उ०—२ राता माता भात नवि, हुवै दूर ग्म हेर। संत महंत न संचरै, पातर रै पग फेर।—बां. दा.

२ सज्जन।

३ परम धार्मिक व्यक्ति, साधु।

उ०—हरीया ऐसा को मिळै, रांम सनेही संत। अपना औगन दूरि करि, औरन का मेटंत।—अनुभववांणी

४ भक्त।

उ०—१ निरगंत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुन मांन दांन नाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यांन ग्रौ ध्यांन कर।
—रा. रू.

उ०—२ भवांनी नमो सत्य आलाप वाळा, भवांनी नमो वंद विद्या विसाळा। भवांनी नमो देव हेरंभ माता, भवांनी नमो नम्रमो संत माता।—मे. म.

५ प्रत्येक चरण में २१ मात्राओं का एक प्रकार का छन्द विशेष।

६ [सं. सत्] होने या रहने की क्रिया।

उ०—सींगण कांई न गिरजियां, प्रीतम हाथ करंत। काठी साहंत मूठि मां, कोटी कासी संत।—ढो. मा.

वि.—बहुत निर्मल और पवित्र।

रू. भे.—संतण, संतणु, संतन, संतु, संतू, सत्तत।

संतण, संतणु—देखो 'संत' (रू. भे.)

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

उ०—१ विद्याधरि ग्रवहरीय जात मात्र तडि जमण मिल्हीय इसीय वाच गहणय पडी तउ मई लिद्ध कुमारि। सत्यवती नांमि हुसिए संतण घर नारि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हथिणाउरि पुरि कुरनरिंद, केरौ कुल मंडणु। सहजिहि गंनु मुहाम्मीलु, हूउ नरवर संतणु।—सालिभद्र सूरि

संतत-वि. [सं.] १ निरन्तर, लगातार।

उ०—घायन घिहायन लौ संतत समर मंहि, राखि रनथंभ राज गौरव गमाह्यौ नां। साह्यौ हठ बप्पवंस बिरद बढावन कों, रावन कों रीठा दे सिटावन को साह्यौ नां।—सूरजमल मीसण

२ फैलाया हुआ, फैलाया हुआ।

३ ग्रत्यधिक।

४ देखो 'संततज्वर'।

संततज्वर-सं. पु. यौ. [सं.] सदा बना रहने वाला ज्वर।

संतति-सं. स्त्री. [सं.] १ संतान, औलाद। (डि. को)

उ०—१ संभरीक सिच्चौ जिम संतति, भुजबळ ग्रनड़ हुवा भूपति।
—वं. भा.

उ०—२ मुहुवहरमा रो ग्रनुज लालसिंह १३५२ मद्रदेश में ग्रापरो ग्रमल जमाय महीप हुवौ जिनरी संतति समस्त माद्रेचा १/२ चहुवांण कहीजै।—वं. भा.

२ प्रजा, रियाया।

३ ग्रवली, पंक्ति।

४ वंश, कुल।

संततिपथ-सं. पु. यौ. [सं] जिस राह से सन्तान उत्पन्न हो, योनि।
(डि. को.)

संततिमांण, संततिमांन-सं. पु. [सं. सन्ततिमान] भरतवंशीय राजा कृति के पिता एवं सुमति का पुत्र, एक राजा।

संततेय संततेयु-सं. पु. [सं.] १ पुरुवंशीय रौद्राश्व का एक पुत्र जो घृताची नामक ग्रप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

२ रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

संतदासोतरांमावत-सं. पु.—रामावत साधुओं की एक शाखा।

संतन—१ देखो 'संत' (रू. भे.)

उ०—१ किनक कांमणी कारणै, हरीया करै कळाप। कांमी बंछै ग्राप कुं, संतन कै संताप।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ संतन की गति संत कुं, दुनियन की दुनीयांह। जनहरीया ग्रवगति की, गति न को लहीयांह।—ग्रनुभववांणी

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

उ०—सुत 'ग्रखैराज' मुवौ चढि सारै, गहणि गोपि ग्रनै गढ ग्रहणि। रणि संतन हरौ न चढियौ रूकै, 'रयण' कळोधर चढै रणि।
—रतनू भरमो

संतनु-सं. पु. [सं.] १ राधिका के साथ रहने वाला एक बालक।
(पुराण)

२ देखो 'सांतनु' (रू. भे.)

संतनुसुत, संतनुसुतन—देखो सांतनुसुत' (रू. भे.) (डि. को.)

संतप—१ देखो 'संतप्त' (रू. भे.)

उ०—झूरइ पूरइ हेज स्यूं जी, मांडइ मरण उपाय। प्रियु विरहा-गति झालरयूं जी, देही संतप थाय।—वि. कु.

२ देखो 'संताप' (रू. भे.)

संतप्त-वि. [सं.] १ ग्रधिक तपा हुआ।

२ दग्ध, जला हुआ।

३ दुःखी, पीड़ित।

रू. भे.—संतप।

संतमन-वि.—१ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)

२ निश्चल, ग्रटल, दृढ़। * (डि. को.)

सतमस-सं. पु. [सं. संतमस् ग्रथवा संतमस] ग्रंधकार, ग्रंधेरा।
(ग्र. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

संतर—देखो 'सत्र' (रू. भे.)

उ०—कियै संतर सोम ग्रचौ करड़ो, वळ ग्रांगम सांक मनै वरड़ो। दीयणी घर घांवळ चाल दवै, डमड़ा सवनी घर संक ग्रवै।
—पा. प्र.

संतरजण, संतरजन-सं. पु. [सं. संतर्जन] कुमार कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

संतरदण, संतरदन-सं. पु. [सं. संतर्दन] केकयदेशाधिपति धृष्टकेतु व श्रुतकीर्ति के पांच पुत्रों में से एक।

संतरदा—देखो 'संतरिदा' (रू. भे.) (अ. मा.)

संतरपण-सं. पु. [सं. संतर्पण] १ अच्छी तरह तृप्त करने की क्रिया या भाव।

२ तृप्त करने वाला व्यक्ति।

संतरिदा-सं. स्त्री. [सं. शतह्लदा] विद्युत, बिजली। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—संतरदा।

संतरी-सं. पु. [अं. सेंटरी] पहरेदार, द्वारपाल, सिपाही। (अ. मा.)

उ०—'पाल' छाड जाय पागड़ी, राख कोट सम रात। संतरी पारधियां सेहत, 'चांदो' 'ढेंमो' साथ।—पा. प्र.

रू. भे.—संत्री।

संतरी-सं. पु. [पुर्त्त. संगतरा] नारंगी।

संतांन-सं. पु. [सं. संतान] १ वंश। (डिं. को.)

२ संतति, औलाद। (डिं. को.)

उ०—भूप हुआ जिण कुळ भला, थिर अटेर मुख थांन। भाखै सुकवि भदोड़िया, सब जिणरा संतान।—वं. भा.

[सं. संतानः] ३ कल्पवृक्ष। (अ. मा, डिं. को; नां. मा.)

उ०—कलपवृक्ष संतांन, पारिजाती हरिचंदण। तर मंदार दुवार, आंण ऊगा सुख अप्पण।—रा. रू.

४ एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

संतांनक-सं. पु [सं. संतानक] १ कल्पवृक्ष। (सभा)

२ ब्रह्मलोक से परे एक लोक। (पौराणिक)

संतांनगणपति-सं. पु. [सं.] एक विशिष्ट गणपति जो संतान देने वाले कहे गये हैं।

संतांनास्टमी, सतांनाटमी-सं. स्त्री. [सं. संतानाष्टमी] चैत्रकृष्णाष्टमी को होने वाला व्रत विशेष जिसमें श्रीकृष्ण व देवकी की पूजा की जाती है।

संतांनिका-स. स्त्री. [सं. संतानिका] १ फेन, झाग।

२ मलाई।

३ एक प्रकार का घास, मर्कटजाल।

४ छुरी या तलवार की धार।

५ कुमार कार्तिकेय की एक अनुचरी एवं मातृका।

संतांपाळ-सं. पु. [सं. संतपालक] परमेश्वर, ईश्वर। (नां. मा.)

संताड़णौ, संताड़बौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—मुझ संताड़ि हिवै नहिं, बीजी काइ टाप। तीजै घर घालि दीयौ, तालौ टाल संताप।—ध. व. ग्रं.

संताड़णहार, हारौ (हारी), संताड़णियौ—वि०।

संताड़िओड़ौ, संताड़ियोड़ौ, संताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संताड़ीजणौ, संताड़ीजबौ—कर्म वा०।

संताड़ियोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संताड़ियोड़ी)

संताणौ, संताबौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ विरहा तूं संताय नां, मना बंधावौ धीर। हरीया सांई कारणै, मैं दुख सहूं सरीर।—अनुभववांणी

उ०—२ चोरी करणी तौ किणी लांठा धींग रौ घर ई फाड़णौ खासी भली मता तौ हाथ लागै। दूवळां नै संतायां तौ फगत हाय पांनै पड़ै।—फुलवाड़ी

संताणहार, हारौ (हारी), संताणियौ—वि०।

संतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संताईजणौ, संताईजबौ—कर्म वा०।

संताप-सं. पु. [सं.] १ अग्नि, धूप आदि का तीव्र ताप या आंच। (डिं. को.)

२ तीव्र मानसिक क्लेश या पीड़ा।

उ०—१ कूंडै मेळा वैस करि, जपै सकति कौ जाप। हरीया अंतर ऊपजै, सांसा सोग संताप।—अनुभववांणी

उ०—२ सांसा सोग संताप तज्य, आपा होय अबीह। सुंन्य सहज मैं पाईया, हरीया अभिनासीह।—अनुभववांणी

उ०—३ संभरियां संताप, वीसरियां न वीसरइ। काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।—ढो. मा.

३ चिन्ता, दुःख।

उ०—१ पोता रै जलमियां सेठ नै हरख नीं होय अणूं तौ संताप व्हियौ। इत्ता दिन तौ खावणिया दोय हा तौ कमावणिया ई दोय हा। पण पोता रै जलमतां ई खावणिया तीन व्हैगा अर कमावणिया फगत दोय रा दोय।—फुलवाड़ी

उ०—२ व्याव रा घर में उच्छव री ठौड़ संताप वापरग्यौ। बेटी किण नै कांई कैवती। मांय री मांय गोटीजती। उण रै आ बात समझ में नीं आवती कै जकी मां नौ महीना देह री रगत पाय उदर मैं पोसण करचौ, सोळै वरसां तांई घर मैं राखी, कांइ वळै नीं राख सकै।—फुलवाड़ी

४ शरीर में होने वाली दाह या जलन।

५ पाप आदि बुरे कृत्य करने पर मन में होने वाला अनुताप।

६ दुःख, कष्ट।

उ०—१ किम आविउ कहि रे चतुर, कांई कांइ संताप। माहरइ माधव वंभ विण, अवर पुरुस तै बाप।—मा. कां. प्र.

उ०—२ किण रै हीयै वत्ती वळत ही, इणरौ म्यांनौ खुद अंतरजांमी सूं ई अछांनौ हो। हरचा-भरचा सपना वळै जणां अंडौ ई विकट संताप व्हिया करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ व्है ठाढी गिर गिर पड़ै, मुख तै करै विलाप। राधा-वर किरपा करौ, तौ सह मिटै संताप।—गज-उद्धार

उ०—४ रग घर नरवर फळ तरह, सिर निज घर संताप। वसन लाज मर नीर विध, पर सुग दियण 'प्रताप'।
—जैतदांन बारहठ

७ पीड़ा।

उ०—१ उण वगत म्हैं थारा मूं कांई कम वेचेतै ही वेटी जिण विरा री वेळा मामा में फगत थोथी मुन्याड़ धरणावै, उण सूं वत्तो कीं दुख कै संताप नीं व्है।—फुलवाड़ी

उ०—२ दाळद्द पाप संताप दह, पारस मंगम लोह पर। निज नाम नमो तो नारियण, हंस नमो सिरताज हर।—ह. र.

उ०—३ पण विस्वास रा बळ आगै उण रा अखूट विस्रा नै ई हार मांनणी पड़ी। विस्वास रा बळ रै सांमी वापड़ा दुख, वळप अर संताप री कांई गाढ।—फुलवाड़ी

८ ज्वर; बुखार।

९ शत्रु, दुश्मन।

१० रोग, बीमारी।

वि.—तप्त। ० (डि. को.)

रू. भे.—संतप, संतापु, संताव।

संतापण-सं. पु. [सं. संतापन] १ संताप देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव।

२ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

३ एक प्रकार का अस्त्र। (पुराण)

रू. भे.—संतापन।

वि.—संतप्त करने वाला।

संतापणौ, संतापवौ-क्रि. स.—१ सताना; दुख देना, कष्ट पहुँचाना।

उ०—१ दंताळां दड़काप, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती संताप, लंकाळां गज भख 'लछा'।—भगवांनजी रतनू

उ०—२ जीव संताप्या मइं घणा, पर आसायें वींध। घालि रात्रि भोजन करघा, काज अकारज कीध।—वि. कु.

क्रि. अ.—२ पीड़ित होना, दुःखी होना।

उ०—रतिपति रयणि दिवस संतापति, व्यापति विरह दुख दियु दियु रे। राजुल कहइ सखि सांमि सुंदर विणु, कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे।—स. कु.

संतापणहार, हारौ (हारी), संतापणियौ —वि०।

संतापियोड़ौ संतापियोड़ौ, संताप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संतापीजणौ, संतापीजवौ—कर्म वा०।

संतावणौ, संतावबौ, सताड़णौ, सताड़बौ, सताणौ, सताबौ, सतावणौ, सतावबौ—रू० भे०।

संतापन—देखो 'संतापण' (रू. भे.)

संतापित-वि. [सं.] जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो, पीड़ित, संतप्त।

संतापियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सताया हुआ, पीड़ित किया हुआ, कष्ट पहुँचाया हुआ. २ पीड़ित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ।

(स्त्री. संतापियोड़ी)

संतापु—देखो 'संताप' (रू. भे.)

उ०—संतापु सुयणह करई, पुण्यहीन जिम राय रोलई। दारिद्र दुक्खु केई भरई तणा, कज्जि गिरि सिहरु ढोलई।
—सालिभद्र सूरि

संताप्योड़ौ—देखो संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संताप्योड़ी)

संताव—देखो 'संताप' (रू. भे.)

उ०—चउगइ भव-भंजण पवर, उपसांमिअ दुहदाह। रोग सोग संताव हर, जय जिण तिहु अणनाह।—स. कु.

संतावणौ, संतावबौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ संतावै मदन अपार रे. तन बाध्यो मदन विकार रे। मिलवो तोसुं इकवार रे, मैं कीधी एह विचार रे।—वि. कु.

उ०—२ मासी रीस में धुरकारती बोली—थूक थारै मूंडै सूं। म्हारै जैड़ो बुढापो तो भगवांन म्हनै संतावण वाळा पापियां नै ई नीं बगसै।—फुलवाड़ी

उ०—३ खीजइ मूंझइ रडइ बाल जिम सयरु संतावइ। कमलिणि कांणणि मण समाधि, सा किमइ न पामइ।—सालिभद्र सूरि

संति-सं पु.—१ सोलहवें तीर्थंकर का नाम, शान्तिनाथस्वामी।

उ०—१ इम थुण्यउ जिणवर संति दिणयर, भरिय तिमिर विहंडणो। अणहिल्ल पाटण मांहि श्री. अवाड़वाड़ा मंडणो।
—स. कु.

उ०—२ मित्तह ए रईस मणिचूड राय, रहइं सभा रयणम ए। राइहि ए संति जिणंद, नवउ प्रासादु करावीउ ए।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'सांति' (रू. भे.)

रू. भे.—संती।

संतिकरउ-वि. [सं. शान्तिकर] शान्ति करने वाला।

उ०—तिणि पुरि हूउ संति जिणेसरु, संघह संतिकरउ परमेसरु। चक्कवट्टि किरि पंचमउ।—सालिभद्र सूरि

संती—१ देखो 'संति' (रू. भे.)

उ०—जन सांकल जड़ीयो पड़ीयो बंदीखांणा, भय आठै भांजै न रहै पलक प्रमांण। सिर संती जिणेसर सेवत ही सुख खांण, इण-भव लहै लीला परभव पद निरवांण।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सांति' (रू. भे.)

संतीसर-सं. पु.—सोलहवें तीर्थंकर का नाम, शान्तिनाथ स्वामी, शान्ति-स्वर।

उ०—१ खरतर वसही वांदिया मन मोहउ रे, संतीसर सुखकंद लाल मन मोहउ रे। राइणि तल पगला नम्या मन मोहउ रे, अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोहउ रे।—स. कु.

उ०—२ जग नायक जिनवर पुहवी मांहै प्रत्यक्ष, सोलम संतीसर सुखदायक कल्पव्रक्ष। जसु यात्र करे वा लोक मिले तिहां लक्ष, दरसण देखत ही आणंद पावै अक्ष।—ध. व. ग्रं.

संतु-वि.—१ अच्छा।

२ शान्त।

३ देखो 'संत' (रू भे.)

उ०—हथिणाउरि पुरि कुरुनरिंद केरौ कुलमंडणु। सहजिहि संतु सुहागसीलु, हूउ नरवरु संतणु।—सालिभद्र सूरि

रू. भे.—संतू।

संतुख-सं. स्त्री.—१ सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी, जिसे चाट कर वह भूख शान्त करता है।

उ०—तण दुख भूलै ताखड़ी, मुछ मरड़ै जद मूक। संतुख नूं जिम चाट सिंघ, भगाय निज री भूक।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'संतोस' (रू. भे.)

संतुखित-सं. पु. [सं. संतुषित] एक देव पुत्र का नाम।

संतुट्ठ—देखो 'संतुस्ट' (रू. भे.) (जैन)

संतुलन-सं. पु. [सं. सन्तुलनम्] १ वह क्रिया जिससे तौल अच्छी तरह होता है।

२ तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर या ठीक करने की क्रिया या भाव।

३ लाक्षणिक अर्थ में सभी अंगों या पक्षों के बराबर या यथास्थान होने की स्थिति।

संतुलित-वि.—१ किसी का सतुलन हुवा हुआ होना।

२ दोनों पक्षों का बल या प्रभाव का समान होना।

संतुस्ट-वि. [सं. संतुष्ट] १ जिसे सन्तोष हो गया हो, सन्तुष्ट, तृप्त।

उ०—तरै राजा जिग आरंभ नै रिख तेडाया। तिका अठ्यासी हजार रखेस्वर आया, तेतीस कोडि देवता आया। राजा मनछा भोजन रखेस्वरां नै पोख्या, देवतां नै संतुस्ट कीया।

—राठोड़ां री वंसावळी

२ तुष्टमान, महरबांन।

उ०—तठा पछै रांणी नै बुलाय नै आंबौ दीधौ नै कह्यौ—हे रांणी! रातै स्रीगोरखनाथजी संतुस्ट हुवा। तै फळ दीधौ। औ थें फळ खावौ, ज्यू थांरै पुत्र होवै।—रिसाळू री वात

३ जो राजी हो गया हो, कोई बात मान गया हो, रजामंद।

४ प्रसन्न, खुश।

रू- भे.—संतुट्ठ, संतुस्ठ।

संतुस्टि, संतुस्टी-सं. स्त्री.—१ संतुष्ट होने की क्रिया या भाव।

२ संतोष।

३ प्रसन्नता।

संतुस्ठ—देखो 'संतुस्ट' (रू. भे.)

संतू—१ देखो 'संत' (रू. भे.)

२ देखो 'संतु' (रू. भे.)

उ०—मिळिया मनमेळूं माती मुसकाती, डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती। सासू सकुळीणी संतू सुर सांनी, ऊजळ दंती नें उर में उर लीनी।—ऊ. का.

संतोक, संतोख—देखो 'संतोस' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. कों; ह. नां. मा.)

उ०—१ हरीया जव सीतळ भया, सव तें एक सभाय। राग दोख अंतर नहीं, सुख संतोख समाय।—अनुभववांणी

उ०—२ किण सुख री आस में लारै आई, किण अदीठ हरख अर संतोख रै भरोसै पराई ठोड़ री वासी कवूल करयौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ लालचियां संतोख र्‌यूं, मन हींजड़ां मनोज। ऊंमर में नहं ऊपजै, इम मावड़ियां मोज।—वां. दा.

उ०—४ मैं राव कल्यांणमल सूं संतोख छै सु हूं राव कल्यांणमल नूं थांहरौ अरदास करि आउं छूं।—द. वि.

उ०—५ माता कर मक्र लहै चक्र मोख, तिलत्तिल अंग न जंग संतोख। चटच्चट पत्र रगत्र चठट्ठि, समै अनुसार रमै चवसट्ठि।

—मे. म.

संतोखड़ौ—देखो 'संतोस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—साधै सील संतोखड़ौ, वेली ग्यांन विग्यांन। जनहरीया दलमां फिरी, नांव निरप की आंन।—अनुभववांणी

संतोखणौ, संतोखबौ-क्रि. स. [सं. संतोषनम्] १ संतोष दिलाना, सन्तुष्ट करना।

उ०—तिण कांमना जाचियौ तिसड़ी, जिण पांमियौ सु इंछा जिसड़ी। संतोखियौ भूप जग सारौ, जस ध्रम करि जीतौ जमवारौ।

—सू प्र.

उ०—३ काहे कौ दुख दीजियै, घट घट आतम रांम। दादू सब संतोखियै, यह साधू का कांम।—दादूबांणी

उ०—३ जोसी नै राजा कहै रे, कांइ परणै कुमरी मुझ रे। दिवस लगन करि रूवड़ी रे, कांइ हुं संतोखिस तुझ रे।—वि. कु.

उ०—४ वाजा वाजै अति भला, वरत्या मंगल-माल। संतोखै याचक सुहासणी, हरख्या वाल गोपाल।—जयवांणी

२ राजी करना, खुश करना।

उ०—इतै विचवाळी सूर अपाळ, मिणधर आयौ रावळ 'माल'। संतोखै वातां वागां साय, जुदा दळ कीधां वहू जाय।—गो. रू.

क्रि. अ.—१ संतुष्ट होना।

२ राजी होना, खुश होना।

संतोखणहार, हारौ (हारी), संतोखणियौ—वि०।

संतोखिओड़ौ संतोखियोड़ौ, संतोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संतोखीजणौ, संतोखीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संतोसणौ, संतोसबौ, संतोखणौ, संतोखबौ—रू० भे०।

संतोखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संतोष दिलाया हुआ, संतुष्ट किया हुआ। (२) राजी किया हुआ, खुश किया हुआ। (३) संतुष्ट हुवा हुआ।

(४) राजी हुवा हुग्रा, खुस हुवा हुग्रा।
(स्त्री संतोखियोड़ी)

संतोखी—देखो 'संतोसी' (रू. भे.)
उ०—१ नाथ नगति का खाणा पीणा, सील सतोखी पत रा।
सुरति नरति की सेली सींगी, लीया लंगोटा जत रा।
—ग्रनुभववांणी
उ०—२ साध न ग्रांणे ग्रावदा, सील संतोखी थाय। हरीया राग न धेखता, सब सू एक सभाय।—ग्रनुभववांणी

संतोखौ—देखो 'संतोस' (रू. भे.)
उ०—१ चारित्र सूं टालिस सरव दोखौ, तप करि करमां नैं सोखौ जी। मोक्ष वृक्ष नैं जासी मोखौ, सुगियां ही हुवें संतोखौ जी।
—जयवांणी
उ०—२ द्वंदवाद किन हूं नहीं करीयें, ग्रापा सेती ग्रजरा जरीयें। राग न धेख हरख नहीं धोखा, सीलादिक संजम संतोखा।
—ग्रनुभववांणी

संतोगुण—देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

संतोपणौ, संतोपबौ—क्रि. स.—संतुष्ट करना।
उ०—परण कर कदी नहीं संतोप्या, जाय कर गढां पग रोप्या।
—सो. गी.

संतोल—देखो 'सतोल' (रू. भे.)
उ०—सोनजी सुनार, गांव री सुनार, बीभै री बेटो, ग्राज काले री पासांमी, गोत री कद्दोळ, तोल में संतोल।—दग्दोव

संतोस—सं. पु. [सं. सन्तोष] १ वह मानसिक ग्रवस्था जिसमें व्यक्ति प्राप्त वस्तु को यथेष्ट समझता है और इससे ग्रधिक की कामना नहीं करता, सब्र तृप्ति।
उ०—करण संतोस करै नहीं, लालच थाडै ग्रंक। सुपण वभीखण सूं मिळै, लिए ग्रजा रे लंक —वां. दा.
२ वह ग्रवस्था जिसमें ग्रभीष्ट कार्य होने या वांछित वस्तु के प्राप्त हो जाने पर क्षोभ मिट जाता है।
३ हर्ष, ग्रानंद, प्रसन्नता, खुशी।
४ विश्वास, भरोसा।
५ धैर्य, शान्ति।
उ०—१ ग्रोलंभा दीजइ कुणइ रइ रे कुण हि दीजइं दोस। हीराणंद इम ऊचरइ रे कीजइ मन संतोस।—हीराणंद सूरि
उ०—२ सील संतोस सूरता सारा, तूटण लग दिवस में तारा। छूटा नीर निवांणां सारा, चौपायां घर मिळै न चारा।—ऊ. का.
६ प्रेम, प्यार।
७ स्नेह।
पर्याय०—धीरज, धीरोज, धर्त।
क्रि. प्र.—ग्राणौ, करणौ, धरणौ, राखणौ, होणौ।
८ दक्ष एवं दक्षिणा के बारह पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—संतुस, संतोक, संतोख।
ग्रल्पा.—संतोखड़ो।
मह.—संतोखो।

संतोसणौ—वि.—१ सन्तुष्ट होने वाला।
२ सन्तुष्ट करने वाला।
उ०—जांमणां जोय गोचर गिरह जांणियां, दिया रळियांमणां दरस देवी। नेस संतोसणां भूपत्यां निवाजे, खोसणां ऊपरै रहै खीजी।—मे. म.

संतोसणौ, संतोसबौ—देखो 'संतोखणौ, संतोखबौ' (रू. भे.)
उ०—वीवाहे विलसतां, दुजण जड़ काढण दावै। संतोसतां सैण, कविय मुख सुजस कहावै।—घ. व. ग्रं.
संतोसणहार, हारौ (हारी), संतोसणियौ—वि०।
संतोसिग्रोड़ो, संतोसियोड़ो, संतोस्योड़ो—भू० का० कृ०।
संतोसीजणौ, सतोसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संतोसन—सं. पु.—संतोष, सतुष्टि, तृप्ति।

संतोसियोड़ो—देखो 'संतोखियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. संतोसियोड़ी)

संतोसी—वि. पु. (स्त्री. संतोसण) १ संतोष धारण करने वाला, सब्र करने वाला।
२ संतोष का, संतोष संबंधी।
रू. भे.—संतोखी।

संतोसीमाता—सं. स्त्री.—एक लोक देवी जिसकी पूजा मनोकामना की सिद्धि के लिए की जाती है।

संत्य—सं. पु. [सं.] ग्रग्नि देवता का नाम।

संत्रो—देखो 'संतरो' (रू. भे.)

संय—क्रि. वि. [सं. सन्ति] हैं, हुए हैं।
उ०—सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि ग्रनेक तै एक संय। श्री वरणण पहिलो कीजै तिणि, गूंथियै जेणि सिंगार ग्रंथ।—वेलि

संयउ, संयउ—सं. पु. [स. सीमन्तकः] स्त्रियों के पहनने का एक ग्रलंकार विशेष।
उ०—१ काजळि ग्रंजिवि नयणजुय, सिरि संयउ फाडेई। बोरियावडि कांचुलिय पुण उर मंडळि ताडेइ।—जिन् पद्म सूरि
उ०—२ केसर कुमकुम ऊगटि, ऊलटि करि सुविसाल। सिरि संयइ उद्योतीय, मोतीय तिलक मर्माल।—प्राचीन फागु-संग्रह

संयगर—वि. [स. सस्त्यानं] संग्रह करने वाला, संग्रहकर्त्ता।

संयणौ, संयबौ—क्रि. स. [सं. सस्त्यानम्] संचय करना, संग्रह करना।

संयर—देखो 'सायरो' (रू. भे.)

संयरइ—सं. स्त्री.—१ बिछौना।
२ सोने की क्रिया।
उ०—पाप ग्रठारइ परिहरै रे, चित्त धरइ सरणा च्यारि। ग्राभ संथारइ सयरइ रे, ध्यांन धरइ सुविचारी रे।—स. कु.

संथरी—देखो 'साथरी' (रू. भे.)

संथव-सं. पु. [सं. संस्तवः] स्तुति, गुणगान। (जैन)

संथा-सं. स्त्री. [सं. संहिता, प्रा. संइता, संता, संथा] १ गुरु के द्वारा एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ अंश, सबक, पाठ।

उ०—रमता रावळिया रळियारत रोवैं, धुन में धुन लागी पुन में सत सोवै। कमंडळ कापरदा कंबळ गळ कंथा, खोखा बांहारी खुद सीखी संथा।—ऊ. का.

२ विद्या, ज्ञान।

उ०—१ तिण ठांम संथा दांन रै समय गुरु छात्र रै। अंतर एक गजराज अचांणक आय कढियौ।—वं. भा.

उ०—२ संथा साच तताई पण री गाई गवै सारै, अनमाई राई—तनां जणाई ओसाप।—पूरजी भादौ

३ वेदों का मंत्र भाग।

उ०—माता गणाधीस री पढादै वेद संथा मंत्र, ईसुरी बढादै साता अनता अमाप मूझ।—देवी री गीत

४ धर्म शास्त्र।

५ शिक्षा, उपदेश।

क्रि. प्र.—लैणौ, घोलणौ।

६ वह ग्रन्थ जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो।

७ ईश्वर, परमात्मा।

८ इतिहास, हाल, इतिवृत।

उ०—संथा अहुं जुगां तणी सुण, कवियण सरब प्रकास करै। परै हुआ सोई रया पागतै, अब होसी सो तूझ ऊरै।
—महादांन महडू

संथार, संथारउ—देखो 'संथारी' (रू. भे.)

उ०—१ वन-पालक नै इम कहै, जौ आवै केसीकुमार। दीजै थांनक री आगन्या, पाट पाटला संथार।—जयवांणी

उ०—२ नारी तजि नीचउ उतरयउ, संवेग मारग सूवउ धरयउ। सिला ऊपरि संथारउ करयउ, वेगइ सुरसुंदरि नइ वरयउ।
—स. कु.

उ०—३ पाप अठारइ परिहरै रे, चित धरइ सरणा चारि। डाभ संथारइ संथरइ रे, ध्यांन धरइ सुविचारो रे।—स. कु.

संथारड़उ—देखो 'संथारी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सेज तलाइ में पउढतउ, वर पट कूल विछाइ रे। आज तउ भूमि संथारड़उ, बइठड़ां रयणी विहाइ रे।—स. कु.

संथारणौ, संथारबौ—क्रि. स.—विछाना।

संथारपयन्न—सं. पु. [सं. संस्तार प्रकीर्णक] वह ग्रन्थ विशेष जिसमें संथारा करने की विधि का विवेचन हो।

उ०—देवेंद त्थुय नवमों होइ, दाखी तिहां गाथा सय दोइ। दसम संथारपयन्न सेवासौ, दसै सतावीससै प्रकासौ।—ध. व. ग्रं.

संथारियोड़ौ—भू. का. कृ.—विछाया हुआ।

(स्त्री. संथारियोड़ी)

संथारौ—सं. पु. [सं. संस्तारक] १ जैनियों का शरीर त्यागने हेतु लिया जाने वाला व्रत विशेष जिसमें वे अन्न, जल आदि का त्याग कर देते हैं।

उ०—१ बहु पडिपन्ना खोरसी रे, वांदइ देव उल्लास। संथारा गाथा सुणइ रे, खामइ जीवनी रासी रे।—स. कु.

उ०—२ सीतळजी रा साध संथारौ करै त्यांनै कांई सरधौ ? जद बोल्यौ—उणां री अकांम मरण।—भि. द्र.

उ०—३ सुध मन संथारौ करी, करम खपाय गया मोखौ रे। राय केसी डवोई आतमा, जांमा लगायां दोखौ रे।—जयवांणी

क्रि. प्र.—करणौ, पचकणौ, पचकाणौ, लैणौ।

मुहा.—संथारौ सीजणौ=संथारा व्रत में शरीर त्यागना।

[सं. संस्तरः] २ डाभ, तृणादि का बिछौना। (जैन)

उ०—मन री जोस करी नै वेग सूं रे, आयौ पौसध-साला रै मांय रे। जायगा पड़ि लेही लघु बडी नीत नी रे, डाभादिक संथारौ दियौ ठाय रे।—जयवांणी

३ बिछौना, बिछाने का कपड़ा।

४ बिछाने हेतु लाया गया घास। (जैन)

५ सोने की क्रिया।

रू. भे.—संथार, संथारउ।

संथियोड़ौ—भू. का. कृ.—संचय किया हुआ, संग्रह किया हुआ।

(स्त्री. संथियोड़ी)

संथुणणौ, संथुणबौ, संथूणणौ, संथूणबौ—क्रि. स. [सं. संस्तुत] गुण-गान करना, स्तुति करना।

उ०—१ इय स्रीजिनचंद्रसूरि गुरु, संथूणिउ गुणि पुन्न। 'स्रीपुण्य-सागर' वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न।—पुण्यसागर

उ०—२ जिनचंद्रसूरि सुसिस्य पंडित, सकलचंद मुनीस ए। तसु सिस्य वाचक समयसुंदर, संथुण्योसु जगीस ए।—स. कु.

संथुणियोड़ौ, संथूणियोड़ौ—भू. का. कृ.—गुणगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ।

(स्त्री. संथुणियोड़ी, संथूणियोड़ी)

संद-सं. स्त्री. [सं. स्यन्द] १ बरसात या बरसाती हवा से उत्पन्न नमी या आर्द्रता।

२ धूलि, रेत। (अ. मा; ह. नां. मा.)

संदइ, संदउ—वि.—१ आर्द्र, नमीयुक्त।

उ०—लहरी सायर संदिया, वूठउ संदउ वाव। वीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउं ताढव ताव।—ढो. मा.

२ देखो 'हंदै' (रू. भे.)

उ०—आडा डूंगर दूरि घर वणइ न जांणइ भत्त। सज्जण संदइ कारणइ, हियउ हिलूसइ नित्त।—ढो. मा.

संदर—सं. स्त्री.—गहरी निद्रा ।

उ०—संदर मुनी सुहिणो लाधां लंका लाखण आयो । लाखण आयो लंका नीवां सायर सेत बंधायो ।—मेहोजी गोदारै

२ आर्द्रता, नमी ।

३ देखो 'संदूक' (रू. भे.)

संदग्ध—सं. पु. [सं. संदिग्धत्व] १ काव्य का एक दोष विशेष ।

उ०—ईद्दतै अरथ न कहै अवाचक, सो संदग्ध रहै संदेह । अप्रतीत निज थांन ऊघडै, ग्रांम्य गवार वचन मति ग्रेह ।—बां दा.

२ देखो 'संदिग्ध' (रू. भे.)

संदण—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)

उ०—नमो नर सदण हांकणहार. सर्वं दळ कौरव करण संघार ।

—ह. र.

संदणौ, संदबौ—क्रि. अ.—१ पानी से किसी मकान, दीवार या वस्तु में नमी, आर्द्रता या सीड़ बैठ जाना, समाजाना ।

२ देखो 'संधणौ, सधबौ' (रू. भे.)

उ०—लहरी सायर संदियां, वूठउ संदउ वाव । वीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउं ताढव ताव ।—ढो. मा.

संदणहार, हारौ (हारी), संदणियौ—वि० ।

संदिग्रोड़ौ, संदियोड़ौ, संदयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संदीजणौ, संदीजबौ—भाव वा० ।

संदन—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)

उ०—कळण प्रयाग नदी कळजुग मैं, अन नारां पग कळै प्रयाग । संदन खांच 'अभनमा' 'सांगा', मह सींगाळ करै तु माग ।

—किसनौ आढौ

संदरभ—सं. पु. [सं. सन्दर्भ] १ पूर्व वर्णित विषय ।

२ पूर्व वर्णित विषय से सम्बन्धित सूचना ।

३ बनावट, रचना ।

४ ग्रन्थ रचना ।

५ निबन्ध, लेख ।

६ वह विवेचनात्मक ग्रन्थ जो किसी गूढ़ विषय पर लिखा हो ।

७ कोई छोटा ग्रन्थ ।

८ अध्याय ।

रू. भे.—संद्रब, संद्रभ ।

संदरसण, संदरसन—सं. पु. [सं. संदर्शन] एक द्वीप का नाम ।

संदळ, संदल—सं. पु. [फा. संदल] चन्दन ।

उ०—१ चित उज्जळ संदळ मलय चूर, कंटक हित कंटक तरु करूर । तन ग्रमित घ्रांण ग्रगमद ग्रसींग, हठ धरिन ग्रमल व्है जात हींग ।—ऊ. का.

उ०—२ मांन चांमड़ी सोरख सेती लागी हीज रही । संदळ लूगै नूं म्हागै निम लागो हीज रहियो ।—द. वि.

संदळो, संदली—वि.—१ चन्दन का, चन्दन के रंग का ।

सं. पु.—१ चन्दन के रंग से मिलते-जुलते रंग का घोड़ा ।

(शा. हो.)

उ०—१ लाखीरी सुरंग अजूब लैंत, किसमसी साह ज्यांनूं कुमैत । तेलिया मुहा संदळी तुरंग, सोसनी सबज हंसा सुरंग ।—सू. प्र.

उ०—२ कुमैत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूबर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळा महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाब संदळी सीहा चकवा ग्रबलख सिराजी । फेर ही ग्रनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै ।

—रा. सा. सं.

३ एक प्रकार का शराव विशेष जिसमें चंदन की गंध दी गई हो ।

३ एक प्रकार का शराव विशेष ।

उ०—तठा उपरायंत दारु रा घड़ा मंगायजे छै । सु दारू किण भांत रौ छै ? ग्रैराक री वैराक, संदली री कंदली, फूल री ग्रतर, वानी वर्भ वुंवांधोर तिवारा री काढियो; वोटी वाड़ में नाखियां जग उठै ।—रा. सा. सं.

४ ख्वाजासरों का एक भेद विशेष जो पुरुषाकार (ग्रण्डकोष) को जड़ सहित ही काट डालते हैं । (मा. म.)

५ वह हाथी जिसके बाहरी दांत नहीं होते हों ।

६ मकान के अन्दर सामान रखने के निमित्त लगाया जाने वाला बड़ा ग्रौर सीधा लम्बा चौड़ा पत्थर जिसका एक किनार दीवार से संलग्न होता है ।

उ०—इतरो ग्राया हीज । ग्राइ नै करहौ वांधि नै ऊपर पधारीया । देखै तौ संदली ऊपर रवाब पड़ीयौ छै । पीतांबर धरती ऊपर बिछायौ छै ।—लाखै फूलांणी री वात

संदळौ—सं. पु.—फर्श या छत पर चूने ग्रादि के लेप को घिस कर सफाई के साथ बराबर करने की क्रिया ।

संदा—देखो 'हुंदा' (रू. भे.)

संदाणौ, संदावौ—देखो 'संधाणौ, संधावौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रब म्हांनै लाडूड़ा संदायद्यो बालमा, एजी ए जचा ग्रावै म्हांनै लाज, लाडूड़ा संदावै म्हारी माऊजी गोरियां ।—लो. गी.

संवाणहार, हारौ (हारी), सवाणियौ—वि० ।

संदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संदाईजणौ, संदाईजबौ—कर्म वा० ।

संदानित—वि. [सं.] वंधा हुग्रा । (डिं. को.)

संदायोड़ौ—देखो 'संधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संदायोड़ी)

संदावणौ, संदावबौ—देखो 'संधाणौ, संधावौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रब म्हांनै लाडूड़ा संदायद्यो बालमा, एजी ए जचा ग्रावै म्हांनै लाज, लाडूडा संदावै म्हारी माऊजी गोरियां ।—लो. गी.

संदावणहार, हारौ (हारी), संदावणियौ—वि० ।

संदाविग्रोड़ौ, संदावियोड़ौ, संदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संदावीजणौ, संदावीजबौ—कर्म वा०।

संदावियोड़ौ—देखो 'संधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संदावियोड़ी)

संदावेस—सं. पु. [सं संदेश] सन्देश, समाचार।
उ०—जिण धण कारण ऊमह्यउ, तिण धण संदावेस। तिण मारु रा तन खिस्या, पंडर हुवा ज केस।—ढो. मा.

संदि—देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)

संदिग्ध—वि. [सं.] १ सन्देहपूर्ण, जिसमें सन्देह हो, जिस पर सन्देह हो। २ देखो 'संदग्ध' (रू. भे.)

संदिपति—सं. पु. यौ. [सं. स्यन्दनः+पति] रथ हाँकने वाला, रथी।

संदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पानी से किसी मकान, दीवार या वस्तु में नमी, आर्द्रता या सीड बैठी हुई, समाई हुई।
२ देखो 'संधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संदियोड़ी)

संदी—१ देखो 'हुंदी' (रू. भे.)
उ०—१ बाळउं बावा देसड़उ, पांणी संदी ताति। पांणी केरइ कारणइ, प्री छंडइ अधराति।—ढो. मा.
उ०—२ पीहर संदी डूंमणी, 'ऊमर' हुंदइ सथ्थ। मारवणी नूं तंत मई, कहि समझावइ कथ्थ।—ढो. मा.
२ देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)

संदीणौ, सं्दीणौ, संदीनौ—सं. पु. [सं. सन्धान] शारीरिक पुष्टता बढ़ाने के लिए खाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो विशेषतया इसी उद्देश्य से तैयार किया जाता है।
रू. भे.—संधाणौ, संधिणौ, सदांणौ, सुदांणौ।

संदीपन—सं. पु. [सं. संदीपनः] १ श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।
२ कामदेव के पांच बाणों में से एक।
[सं. संदीपनं] ३ उद्दीपन या उत्तेजित करने की क्रिया या भाव।
वि.—उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाला।
रू. भे.—संदीपनी।

संदीपनी—सं. स्त्री.—१ पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी। (संगीत)
२ देखो 'संदीपन' (रू. भे.)

संदूक—सं. स्त्री. [अ. संदूक़] कपड़ा, आभूषण, नकद आदि वस्तुएं रखने का लोहे, काठ या चमड़े का आधान, बक्स, पेटी।
उ०—एक एक चीज दो-दो जगां मंडाय दीनी। मांही मां केई विकणी ही लागगी। चढी रा पिलांण, दुन्नाळी बंदूकां, कुड अर कडावां, सतोली संदूकां, लोग ऐकेक ले लग्या।—दसदोख
रू. भे.—संदक, संदूख, सिंदूक, सुंदूक।
अल्पा.—संदूकड़ियौ, संदूकड़ी, संदूकड़ौ, संदूकची, संदूकचौ।

संदूकड़ियौ—सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)

संदूकड़ी—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)

संदूकड़ौ—सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)

संदूकची—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)

संदूकचौ—सं. पु.—देखो 'संदूक' (अल्पा; रू. भे.)

संदूख—देखो 'संदूक' (रू. भे.)

संदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)
उ०—सिमरूं देवी सारदा, गणपत्त गणेसर। एक रदन गजबदन ओप, संदूर बणी सिर।—ठा. जुंझारसिंह मेड़तियौ

संदूरतळका, संदूरतिलका—देखो 'सिंदूरतिलका' (रू. भे.)

संदे'—देखो 'संदेह' (रू. भे.)
उ०—सांमा कहि 'केसिनी', सुणु, रूप तणु संदे' ज घणु। पासि रही परीक्षा करूं, भोजन नी सजाई धरु।—नळाख्यांन

संदेड़ौ—सं. पु.—बहुत कम पत्तों वाला सदा हरा रहने वाला एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—जाडी जाळां में संदेड़ा झुकिया, राखै बावोजो सगळां री रिखिया।—सादूळजी बोगसौ

संदेव—सं. पु. [सं.] देवक के एक पुत्र का नाम।

संदेवा—सं. स्त्री.—वसुदेव की स्त्री देवकी का एक नाम, जो देवक की सात पुत्रियों में से एक थी।

संदेस—सं. पु. [सं. सन्देश] १ खबर, समाचार, सूचना।
उ०—१ जब का बिछड़चा फेर न मिळिया; बहोरि न दियौ संदेस। या तन ऊपर भसम रमाऊं, खार करूं सिर केस।—मीरां
उ०—२ मेरै चाकर तौ जिसा, 'दुरग' तुमारै देस। जतन हमारी सरम कौ, लिखियौ वेग संदेस।—रा. रू.
२ प्रेम।
उ०—गिणतां गिणतां घिस गई उंगळी, घिस गई उंगळी की रेख। मैं बैरागण आद की, थारै म्हारै कद कौ संदेस।—मीरां
रू. भे.—संदेसौ, संनेसौ, सन्नेसौ।
अल्पा.—संदेसउ, संसदेड़उ, संदेसड़ौ, संनेसड़ौ, सनेसड़ौ।

संदेसउ, संदेसड़उ, संदेसड़ौ—देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सीता जी मोकल्यउ रे, कांइ मुंदरड़ी दे मूंक्यउ हनुमत वीर रे। जइ नइ संदेसउ कहिज्यौ माहरउ रे, तुम्है हियड़इ हुइज्यौ साहस धीर रे।—स. कु.
उ०—२ ढोला ढीली हूर कियां, मूंक्या मनह विसारि। संदेसउ न पाठवइ, जीवां किसइ अधारि।—ढो. मा.
उ०—३ पंथी एक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलांम। जब थी हम तुम बीछड़े, नयणां नींद हरांम।—ढो. मा.
उ०—४ पंथी हाथ संदेसड़इ, धण विललंती देह। पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआं भरेह।—ढो. मा.
उ०—५ संदेसडै न जिवाय, जा नयणां हि न दीस। नेड़ौ तीर न तिस हरै, जा हियड़ै नहिं पीस।—पंचदंडी री वारता

संदेसी—वि. पु. [सं. संदेशिन्] (स्त्री. संदेसण) सन्देश-वाहक।

संदेसो—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—१ आज उणमणा हो रया जी, रह्यो कं संदेसो आय। कं चित आयो थारो देसड़ो जी, कं चित आया माई-बाप।
—लो. गी.

उ०—२ मात-पिता मुण सखी सहेल्यां, लिख कर दूत पठाऊं। जिण गुन्हैं मोय तजी पियाजी, मैं भी संदेसो पाऊं।—जयवांणी

उ०—३ स्यांम संदेसो कछू न दीनों, जांणि बूझि गुझि बाती। डगर बुहारूं पंथ सुधारूं, जोइ जोइ अंखियां राती।—मीरां

संदेह—सं. पु. [सं.] १ मन की अनिश्चयात्मक अवस्था, संशय, शंका, शक, भ्रम। (डि. को.)

उ०—१ पावन तू हरि पाय करि, कै तो करि हरि पाय। हूं पावन औ मूझ हिय, मात संदेह मिटाय।—बां. दा.

उ०—२ जनहरिरांम जहां घर पाया, जनम मरण संदेह मिटाया। बिन गुरगम देखै नर दूरा, ब्रह्म बताया आप हजुरा।
—अनुभववांणी

पर्याय.—आरेक, द्वापर, भरम, विचिकित्सा, वैंम, संसय।

क्रि. प्र.—आणो, करणो, पड़णो, राखणो, होणो।

२ खतरा, भय।

३ वास्तविकता या सत्यता के अनिश्चय के आधार पर साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार; जिसमें किसी चीज को देख कर या बात को सुन कर उस की यथार्थता या वास्तविकता के सम्बन्ध में शंका व संशय बना रहता है।

रू. भे.—संदे'।

अल्पा.—संदेहौ।

संदेहाल—सं. पु.—१ जो संदेह में पड़ा हो, संदेहशील। (डि. को.)

२ वहमी, शकी।

संदेहो—देखो 'संदेह' (रू. भे.)

उ०—१ पाछो फिर नै देवकी, लुल लुल नीची थाय। एक संदेहो कानो दीजै मोहि बताय।—जयवांणी

उ०—२ जीव जिकै सुरवीमा हुवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह। तै जिणवर ना धरम थी रे, मति करज्यो संदेहो रे।—स. कु.

संदै—देखो 'हदै' (रू. भे.)

संदोल—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का कान का आभूषण विशेष।

संदोह—सं. पु. [सं.] १ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)

उ०—भवांनी नमो मेदनी भार भंगा, भवांनी नमो भारती नील रंगा। भवांनी नमो नाग बेधि अरोहा, भवांनी नमो दैत्य संदोह द्रोहा।—मे. म.

२ दुहने की क्रिया, दोहन।

रू. भे.—संधोह।

संद्रो—देखो 'हदो' (रू. भे.)

संद्रब, संद्रभ—देखो 'संदरभ' (रू. भे.) (डि. को.)

संद्राव—सं. पु. [सं.] युद्ध से भागने की क्रिया या भाव। (डि. को.)

संध—सं. पु.—१ दूरी, पृथकता।

उ०—हैंवर ऊभै पायगै, द्वारै हसती बंध। हरीया हेकै पलक मैं, सब सुं पड़िगी संध।—अनुभववांणी

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ पांण पाक संध पह, पासो पिसण पवंग। एता न हुवै आपणा, महिला डळा भुयंग।—मूळवै सांगावत री वात

उ०—हेलां अगस्त संध ज्यु हेकै हात हूंत हीलोळिया, धोस खगां हेकै ज्यूं बोळिया नाग धींग। सुरांपती हेकै वज्र रोळिया पाहाड़ सारा, सारा खळां हेकै ऊंतोळिया 'चांदसींग'।
—हुकमीचंद खिड़ियो

३ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—१ तद आलम्म 'दुरंग' सूं बांधै संध विचार। धार दिलासा मोकळी, मोहरां आठ हजार।—रा. रू.

उ०—२ जन हरिया मैं रांम का, चाकर कुरसीबंध। अब तोड़ी तूटै नहीं, सतगुरु देग्या संध।—अनुभववांणी

उ०—३ चांदणी चवदस रो दिन छै। सनि आदित्यवार री संध छै। ऊपर झड़ मंडियो छै।—नैणसी

उ०—४ वड जीव जळ थळ विकळ वळ, संध मेर सळ-सळ हुए सकळ। दुहुं ओर हूकळ कळळ दळ, बंध वहै बीजूजळ विमळ।
—र. रू.

उ०—५ कदंमां करणां घाव दाव व्हे अभूतकारा, उठै फूतकारा विखां फुणां रा अमाव। जंद हरी बंध काळी संधणा जोड़िया जकै, संध संध विछोड़िया नंद रै सुजाव।—र. ज. प्र.

उ०—६ इंदर खोटो हुवै जदी, बादळ कुण दोसां, हाथी खोटो हुवै, किसा मावतां भरोसा। सागर लोपै संध, जीव जळ केहा सारा, वागां दहै पवंन दोस कुण सींचणहारा।—अरजुणजी बारहठ

४ देखो 'संधा' (रू. भे.)

उ०—जिम थारो खूनी जिको, किर बळभद्र कबंध। अठै विवाहण आंणियो, सरणै मैं वळ सध।—वं. भा.

संधक—सं. पु. [सं. संध्यक] पुष्प, फूल। (नां. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिंधक।

संधणो, संधबो—क्रि. अ.—१ जुड़ना, बंधना।

उ०—१ चींथड़ ईंतां बुगदोळा चेंठोड़ा, आंणै झोळी में टुकड़ा ग्रेंठोड़ा। धोती घड़चाळी संधियोड़ा धागा, तुवियां तुणियोड़ा बंधियोड़ा वागा।—ऊ. का.

उ०—२ सगपण हांमै संधियो, बीर्जै सो बय बात। गैणोली 'सेतल' गयो, वरवरणि विदित वरात।—वं. भा.

३ संयुक्त होना, मिलना।

उ०—बैठो सुर नखत्र 'गजबंधी', सीम जितै सांमंद्रां संधी। सार क्रियावर उरै सकोयी, क्रत सम विक्रम भोज न कोयी।—रा. रू.

क्रि. स.—३ धारण करना, सांधना ।

उ०—पतसाह रहै गह पूरियौ, सुर निराहपण संधियौ । खित गई ठौड़ ठौड़ां खबर, वळ राठौड़ां बंधियौ ।—रा. रू.

४ ठानना, तय करना ।

उ०—बोल नवाव सरस द्रढ वंधै, सुत पितु हूंत महाछळ संधै । यूं रिम सूरत प्रवंधै, नेम लियौ विधि जेम निमंधै ।—रा. रू.

५ करना ।

उ०—गुण कांमणि छंदी वयण, नमि नमि संधै नेह । पी रौ कहियौ धण करै, धण रौ कांमणि ग्रेह ।—रा. सा. सं.

६ देखो 'सांधणौ, सांधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ थां सहिजादै ग्राखियो, सहित विनै हित संध । मेरै काज निवाह की, लाज कमंधा कंध ।—रा. रू.

उ०—२ जोधौ 'हरियंद' 'मांन' तण, साथै 'ग्याल' सकाज । संधी प्रीत नरिंद कज, गढ ची बंधी लाज ।—रा. रू.

उ०—३ बंद इरादित बोल मैं, हैदुरकुळी नवाब । संधी प्रीत 'ग्रजीत' सूं, बंधी नीत सिताव ।—रा. रू.

उ०—४ तालि चरंती कुंजड़ी, सर संधियउ गंमार । कोइक ग्राखर मनि वस्यउ, ऊडी पंख संमार ।—ढो. मा.

उ०—५ विळकुळियौ वदन जेम वाकारचो, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि । क्रिसन रुकम ग्राउध छेदण कजि, वेलखि ग्रणी मूठि द्रिठि बंधि ।—वेलि

संधणहार, हारौ (हारी), संधणियौ—वि० ।

संधिग्रोड़ौ, संधियोड़ौ, संध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संधीजणौ, संधीजबौ—कर्म वा० ।

संदणौ, संदबौ—रू० भे० ।

संधव, संधवौ-वि.—सम्वन्ध रखने वाला, सम्बन्धी ।

सं. पु.—१ रिश्तेदार, भाई-बन्धु ।

उ०—'पालह' पीरां पीर 'पाल' ग्रण वंधवां बंधव । 'पाल' ग्रमीरां मीर, 'पाल' पित मात संधव ।—पा प्र.

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे)

३ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

४ देखो 'सिंधुराग' (रू. भे)

उ०—डाढ धर सांगि धण गारडू बिखंतौ, कहर काळौ ग्रसौ कोप कीयौ । ग्रनड़ रण संधवा ऊपरै ग्रावियौ, बाचवंध जेम हदमाल वीयौ ।—भींवसिंघ हरदावत रौ गीत

संधांण, संधांणु, संधान-सं. पु. [सं. संधानं] १ निशाना लगाने के लिए धनुष पर बाण चढाने की क्रिया, निशाना वैठाने की क्रिया ।

उ०—१ पड़ै प्रांण संधांण वांणं वटक्कै, हुकैं केइ हाथाल रोसें हटक्कै । झला झाल गोलेहु नालै भटक्कै, तुटै तुंड मुंडां प्रचंडां तटक्कै । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ ग्राव्यउ मलिक सरोवरि देखइ, हींद करइ सनांन । फेरी वीटि ऊडव्या हाथी, कीधां बांण संधांण ।—कां. दे. प्र.

उ०—३ सूयर देखी मेल्हिउं बांणु, ग्ररजुन सिउं कुणु करइ संधांणु । तिणि खिणि मेल्हिउं वणचरि वांणु, ऊडिउं गयणि हूउं ग्रप्रमांणु ।—सालिभद्र सूरि

२ शरीर के जोड़, सन्धिस्थल ।

उ०—१ ढोलउ चाल्यउ है सखी, वाज्या विरह निसांण । हाथै चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुवा संधांण ।—ढो. मा.

उ०—२ हाड हाड संधांण हुग्रा जू जुग्रा जड़ालै । ढळतौ धड़ ऊपरा, सीस संकर उद्दाळै ।—गु. रू. वं.

उ०—३ खळहळै रत्त परनाळ खाळ, डोलियां पड़ै धड़ जूह डाळ । करडकै कंध संधांण घट्ट, फरडकै फीफरां ग्राळ फट्ट ।—गु. रू. वं.

उ०—४ तिणि कीधुं ति किम कहुं ? संभळि, चतुर सुजांण । ग्रबळा ग्रंग देखाडिउ, संधि संधि संधांण ।—मा. कां. प्र.

३ चिकित्सा, उपचार ।

उ०—राखउ करहउ डांभस्यउ, रे मूरखां ग्रजांण । नरवर कउ जांणौ नहीं, करहा तणु संधांण ।—ढो. मा.

४ ग्रन्वेषण, खोज ।

५ सीमा, हद ।

६ संयोग, संमिश्रण ।

७ संधि, मैत्री ।

८ एकाग्रता ।

९ समर्थन ।

१० मदिरा ग्रादि मादक वस्तु ।

११ व्यंजन जिससे प्यास बढ़े ।

१२ मुरब्बा ग्रादि बनाने की विधि ।

१३ गांठ, जोड़, सन्धिस्थल ।

उ०—नैण नख नासिका दुरसि नीकां वणी, सीस संधांण सुधि बुधि सारी । रांम ही पढण कुं रीझ रसनां करी, निस दिन ध्यायलो पुरख नारी ।—ग्रनुभववांणी

संधांणौ-सं. पु.—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

उ०—संधांणौ लाडूड़ा बांधिया ग्रो राज, किसमिस घाल विदांम । —लो. गी.

संधा-सं. स्त्री. [सं.] १ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ मूंछां कर देणहार नै मारण री कन्ह पूरव काळ में संधा लीधी तिकण नै इण रीति नम्रता सूं कुमार प्रथ्वीराज कन्ह रा लोयणां पट्टी लगाई ।—वं. भा.

उ०—२ ग्रायौ बूंदी भाखि इम, संधा लडण समाहि । करण बिजै दूदै कंवर, चुणिया भड ग्रड चाहि ।—वं. भा.

२ सीमा, हद, मर्यादा ।

३ घनिष्ट सम्बन्ध ।

४ दृढ़ता, मजबूती ।

५ स्वीकार, अंगीकार। (डि. को.)

६ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—सिड़ घाट समंधां दक्ख ग्रनमंधां, बंधक संधा ऊबंधां। ग्रति भेद लिखदा परम उरदा खिनव दरंघां प्रभुकदां।—रा. रू.

रू. भे.—संध।

संधाणौ, संधाबौ–क्रि. स. [सं. संधानम्] १ धनुष पर बाण चढ़ाना, निशाना साधना।

२ जोड़ना, संयुक्त करना।

उ०—गाती कूप बचावो ग्रहि वण, तूटी लाव संधांणो। हाकड़िया री हेक घड़ी भर पीनी भावड़ पांणी।—राघवदास भादो

३ चिकित्सा करना, उपचार करना।

४ संयुक्त करना, मिलाना।

५ प्रतिज्ञा करना, प्रण करना।

६ करना, जोड़ना।

७ संधि करना।

८ धारण करना।

९ नमी लाना, ग्रार्द्र करना।

संधाणहार, हारौ (हारी), संधाणियौ—वि०।

संधायोड़ौ —भू० का० कृ०।

संधाईजणौ, संधाईजबौ —कर्म वा०।

संदाणौ, संदाबौ, संदावणौ, संदावबौ—रू० भे०।

संधाता–सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु।

संधायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ धनुष पर बाण चढ़ाया हुग्रा, निशाना साधा हुग्रा. (२) जोड़ा हुग्रा, संयुक्त किया हुग्रा. (३) चिकित्सा किया हुग्रा, उपचार किया हुग्रा. (४) संयुक्त किया हुग्रा, मिलाया हुग्रा (५) प्रतिज्ञा किया हुग्रा, प्रण किया हुग्रा. (६) किया हुग्रा, जोड़ा हुग्रा. (७) संधि किया हुग्रा. (८) धारण किया हुग्रा. (९) नमी लाया हुग्रा, ग्रार्द्र किया हुग्रा।

(स्त्री. संधायोड़ी)

संधारण–वि. [सं.] १ धारण करने वाला।

उ०—सर्व रूप चो रूप, सर्व संसार संधारण। सर्व संत चो स्याय, सर्व देवां संधारण।—ज. गि.

२ धार लगाने वाला।

३ सुधार करने वाला।

संधि–सं. स्त्री. [सं.] १ दो वस्तुग्रों का मेल, संयोग, जोड़, मिलाप।

२ मिलने का स्थान, जोड़।

३ गांठ, जोड़।

४ शारीरिक संधि-स्थल।

उ०—सिखि कीधुं ति किम कहे? संभलि, चतुर सुजांण! ग्रबला ग्रंग देखांहिव, संधि संधि संधांण।—मा. कां. प्र.

५ व्याकरणानुसार शब्दों का वह विकार जो पास-पास ग्राने या मिलने से उत्पन्न होता है।

६ मनुष्य की दो ग्रवस्थाग्रों का मध्यकाल, वयः संधि।

उ०—सैसव तनि सुपपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ-पळ चढती जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि।—वेलि

७ दो राज्यों में परस्पर होने वाला ग्रहद, करार।

८ वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध भाव छोड़कर मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करते हैं, मेल, सुलह, समझौता।

उ०—कळ बीछुड़ि एक वसै गिरि कंदरि, मंदिर बाळक एक मरै। ग्रहि त्याग झुरै धन एक गमाय रू, कै रिध ग्रादरि संधि करै।—रा. रू.

९ दोस्ती, मित्रता।

१० दिन ग्रौर रात दोनों के मिलने का समय, कालसंधि।

उ०—दिवस न रयणी संधि त्रय, तिथि न पर्वणि पंच। कामिनि सिउं क्रीडा करइ, ग्रहनिसि ग्रेह प्रपंच।—मा. कां. प्र.

११ युगान्तकाल।

१२ कुशवंशीय राजा प्रसुश्रुत के पुत्र एवं ग्रमर्षण के पिता, एक राजा।

१३ देखो 'सुसंधि' (रू. भे.)

उ०—जै सुत हुवौ सधि हत दुजण, मरखण संधि सुतण कुळ मंडण। मरखण सुत सिहसांन भूप मणि, भूप विस्वासा है तै सुत भणि।—सू. प्र.

१४ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

रू. भे.—संध, संधा, संधी।

संधिक–सं. पु. [सं.] एक प्रकार का वातरोग विशेष जिससे शारीरिक सन्धियों में दर्द होता है। (वैद्यक)

संधिचोर, संधिचौर–सं. पु.—वह व्यक्ति जो सेंध लगाकर चोरी करता हो।

संधिणी–सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध न निकाला गया हो।

रू. भे.—संधीणी, संधणी।

संधिणौ—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

संधिपत्र–सं. पु. [सं.] वह पत्र जिस पर सन्धि होने पर ग्रापसी शर्तें लिखी जाती हैं।

संधिभग्न–सं. पु. [सं.] वह रोग जिसमें शारीरिक संधियों में दर्द होता है।

संधियास—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—सिनांन घात सधि संधियास, उचरत मंत्र गायत्रि ग्रभ्यास। ग्रासम चत्र ग्रह चत्र व्रण उदार, क्रत करत दांन खोडस प्रकार।—सू. प्र.

संधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ जुड़ा हुग्रा, बंधा हुग्रा. (२) संयुक्त हुवा

हुआ, मिला हुआ. (३) किया हुआ. (४) धारण किया हुआ. (५) ठाना हुआ, तय किया हुआ.
६ देखो 'सांधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संधियोड़ी)

संधिरेहु, संधिरेहौं-सं. पु. [सं. संधिलेखक] संधि लेखक ।
उ०—कथाकथक पीठ मरदक जिहा, संधिरेहा दूत पालक तिहा ।
एहवी सभाई बइठु राव, नरवर लक्ष सेवइ तस पाय ।
—नळदवदंती रास

संधिला-सं. स्त्री. [सं.] १ शराब, मदिरा ।
२ दीवार में लगाई गई सेंध ।
३ नदी ।
४ सुरंग ।

संधिवात, संधिवाय-सं. पु. [सं. संधिवात] शरीर की गांठों अर्थात् जोड़ों में होने वाला एव वात विकार, गठिया-रोग ।
उ०—जाफर नूं संधिवाय रोग थौ सौ हाल नहीं सकै थौ। बुरज रै झरोखै में बैठियौ थौ। उठै वारी सूं रण नै कोट री खाई दीसै थी ।—नी. प्र.

संधिविग्रहक, संधिविग्रहिक, संधिविग्रही-सं. पु.-प्राचीन भारत का वह राजकीय अधिकारी जो दूसरे देशों के साथ युद्ध या संधि का निर्माण करता था ।
उ०—१ ·········कोस्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक भांडपति स्रेस्टि महाजनिक दूत········ ।—व. स.
उ०—२ ········प्रमांणीक सेनापति मंत्रि महामंत्रि रांणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक, अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही········ ।—व. स.

संधिविच्छेद-सं. स्त्री. [सं.] १ आपसी समझौते को तोड़ने की क्रिया ।
२ व्याकरण में शब्द के संधि स्थान को तोड़ कर अलग-अलग करने की क्रिया ।

संधिहार, संधिहारक-सं. स्त्री. [सं.] सेंध लगाने वाला ।

संधी—देखो 'संधि' (रू. भे.)
उ०—खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी ।
सारां मिळै तुझ सूं संधी, वळ दाखै किण सिर 'गजबंधी' ।
—चतुरो मोतीसर

संधीणी—देखो 'संधिणी' (रू. भे.)

संधु—देखो 'सिंध' (रू. भे.)
उ०—अम्हारा देसदेसाउर वरणवु········जंबुद्वीप, भरतखेत्र, कुमारिकाखेत्र, कासी, कांती, ऊजेणी, अजोध्यां, अमया, मथुरां, कंनोज, मालवु, स्रीरंग, गाजणु, लक्षणवंती, दिली, नवकोटि, मारू आडि, संधु सवालक्ष,········ ।—व. स.

संधुर, संधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

संधेसरा-सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।
उ०—सेवंत्री संधेसरा, सूकडि सरकडि साय । सीमंतक सोह भला, सरव सदाफल खाय ।—मा. कां. प्र.

संधोळियौ—देखो 'संधोळी' (अल्पा; रू. भे.)

संधोळी-सं. स्त्री. [सं. संधितूलिका] कपड़ा बुनने के ताने के धागों व मिलाने व पृथक करने वाला सरकडों की तूलियों का एक उपकरण
अल्पा.—संधोळियौ ।

संधोह—देखो 'संदोह' (रू. भे.)

संधौ—देखो 'सांधौ' (रू. भे.)
उ०—तद नापै कही, नव पीढी नूरिया जमालिया पूछीजसै । रा खुससी पण मांहै संधौ लागसै ।—नापै सांखलै री वारता

संध्या-सं. स्त्री. [सं.] १ दिन व रात का संधिकाल ।
२ सूर्यास्त का समय, सायंकाल, शाम । (अ. मा; डिं. को)
उ०—१ संकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वांछिति रुखमणि रमणि । पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि
—वेलि
उ०—२ अधुरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत । सौ संध्य सूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत । फैली जांण फबंत, चकोरां चाहरी उड़ी रज घणसार, अनंत उछाहरी ।—बां. दा.
उ०—३ नमौ सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिस स्वाति नम्मौ । महा लक्षमी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात तात सामुद्रनांमी ।—मे म.
उ०—४ समतसर बिक्रम छत्तीस कम बै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नौमी । बार सुक्कर नखत स्वांति संध्या बखत, भवांनं ओतरचा खुड़द भोमी ।—मे. म.
पर्याय०—आसुरी, उत्तसूर, तमचरपाल, निसामुख, पित्रीप्रसू प्रदोख ।
३ प्रातः का समय ।
४ तड़का, भोर ।
५ सन्ध्याकालीन मेघ जिसमें लाल आभा होती है।
मुहा.—संध्या फूलणी=संध्या के समय लालिमायुक्त बादल आना ।
५ मध्यान्ह और सांय सन्ध्योपासन कृत्य ।
७ एक नदी का नाम ।
८ एक वर्षीय बालिका ।
९ सन्ध्या स्वरूपिणी देवी ।
१० ब्रह्मा की मानस कन्या अरुन्धति का पूर्व जन्म ।
११ मेल, सन्धि, जोड़ ।
१२ युग सन्धि ।
१३ ब्राह्मण की पत्नी, ब्राह्मणी ।
१४ सीमा, हद ।

१५ ध्यान, विचार।

१६ सौनःकार, इकरार।

१७ साम रस। ● (डिं. को.)

१८ देखो 'संध्योपासन, संध्योपासना।

रू. भे.—संझ, सञ्झा, सम्भ, सम्झया, सम्भा, संभि, संझ्या, सधियान, साझ, साझड़ी, सांभ।

संध्यापत, संध्यापति, संध्यापती—सं. पु. [सं. संध्यापति] शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)

संध्याभ्रन—सं. पु.—१ शिव, महादेव। (अ. मा.)

२ एक देवजाति विशेष। (अ. मा.)

संध्याराग—सं. पु. [सं.] १ संगीत में श्याम कल्याण राग।

२ सन्ध्या के समय नभोमण्डल में दिखाई देने वाली लालिमा।

संध्योपासन, संध्योपासना—सं. स्त्री. यौ. [सं. सन्ध्या+उपासना] भारतीय आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो प्रातः, मध्यान्ह व सायंकाल में की जाती है, अतः इसे त्रिकालसन्ध्या भी कहते हैं।

उ०—संध्योपासन तजि बांग साज, निस दिवस वुजू रोजा निवाज। नामरदय सिंह हम नहिं स'गाळ, गो मांस नांम पं देत गाळि।

—ऊ. का.

संध्रीच—सं. पु. [सं. सन्ध्रयञ्च, सन्ध्यञ्च] १ सखा, मित्र। (अ. मा.)

२ पति, खाविंद।

संनबंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—झूठे भांमरझोळ में, ऊळझि रहे नर अंध। साचो सबद न मांनियो, बांधि बिर्त संनबंध।—अनुभववांणी

संनबधी—देखो 'संबधी' (रू. भे.)

सनाह, सनाहु—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

उ०—राइ सनाहु समोपीयउ, भीमिहिं सुं भिडेउ। गदापहारि हणीय जांघ, मनि सालु सु फेडि उ।—सालिभद्र सूरि

संनिचय—सं. पु. [सं.] संग्रह।

संनिधांन—क्रि. वि.—पास, निकट, नजदीक। (डिं. को.)

संनिपात—देखो 'सन्निपात' (रू. भे.)

उ०—अंग संनिपात ज्यंहीं हुय आळस, आठूं पहर रहे घर अंदर। विरहा अगनि जळे नदवदनी, हुरमां कदे न आवै हाजर।—सू. प्र

संनिवेस—सं. पु. [सं. सन्निवेशः] निवास स्थान, रहने की जगह। (सभा)

उ०—.........८४ लक्ष रथ, १४ सहस्र जल पथ, २१ सहस्र संनिवेस, २८ सहस्र देस, ५६ अंतरद्वीप..........इति चक्रवरति रितु।—व. स.

संनेसड़ो—देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रतन कटूं नेवछावरी, लै आरती साजूं हो। पिया का दिया संनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूं हो।—मीरां

संनेसो—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—ग्यान ध्यांन सारा करि देख्या, सतगुर दीया संनेसा। एको रांम कह्यां सुरा सेती, अंतर मेट अनेसा।—अनुभववांणी

संनेह—देखो सनेह' (रू. भे.)

उ०—१ बिरह की मारी बिरहनी, देह सुं भई बदेह। जनहरीया किन स करै, सांई बिना संनेह।—अनुभववांणी

उ०—२ बिरह भालि सुं मरि गई, हिवड़ै रही साटक। हरीया रांम सनेह कुं, जीवड़ौ रह्यौ अटक।—अनुभववांणी

उ०—३ तीन लोक फिर देखिया, घर घर ठांणी ठांम। हरीया रांम संनेह बिन, किधू नही बिसरांम।—अनुभववांणी

संनेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—१ तूं सरवर की माछळी, वौंण पिता कुण माय। अलंप संनेही कारणै, हाटो हाट विकाय।—अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अैसा को मिळै, रांम सनेही संत। अपना औगन दूरि करि, औरन का मेटत।—अनुभववांणी

उ०—३ मात पिता सब जूंनन मांही, आयै उदर बसेरा। सकल कुटंब सुत बारि संनेही, नदियां नाव मलेरा।—अनुभववांणी

उ०—४ सैणां सेती रोसणी, असैणा सूं गूझ। सांम संनेही ना किया, औरां रह्या अळूझ।—अनुभववांणी

संन्नांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.)

उ०—सिरी गंग रो नीर संन्नांन सारू, दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आसावरी धूप हूमै, घणां सांघणां दीप सामीप घूमै।

—मे. म.

संन्नाह—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

संन्नाही—सं. पु.—वीर योद्धा।

उ०—चिहूं पासइ चांमर ढळइ, छत्र धरि अेकवीस संन्नाही सेवा करइ, राजकुळी छत्रीस।—मा. कां. प्र.

संन्यास—सं. पु. [सं.] १ भारतीय आर्य धर्म में आयु के अनुसार विभाजित चार आश्रमों में से चौथा आश्रम।

वि. वि.—इस आश्रम में मनुष्य गृहस्थाश्रम का पूर्ण त्याग कर देता है और संसार से विरक्त हो कर सभी कार्य निष्काम भाव से करता है।

उ०—रात रा सेठ मतै ई बात छेड़ी। कैवण लागा—अबै संन्यास लेलूं तौ सावळ है। फगत थांरी ब्यांन आयां मन डिगमगै।

—फुलवाड़ी

२ वैद्यक के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद जो बहुत भयानक होता है।

रू. भे.—सनीयास, सन्यास, सिनियास, सिन्यास।

संन्यासी—सं. पु. [सं.] १ संन्यास आश्रम का पालन करने वाला, त्यागी, वैरागी।

उ०—१ सेवक रिख मुनि भगत संन्यासी, अरज करै हुय दीन उदासी। त्रिभवणनाथ जगत निसारण, धरम वेद कीजै ध्रुधारण।

—रा. रू.

२ फकीर संन्यासी।

उ०—१ जगत सूत मागध बंदीजण, श्रासावंत किया श्रप ऊरण। जोगी जगत संन्यासी जेता, श्रनम्रत श्रमित लहै पुर एता।

—रा. रू.

उ०—२ संन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, कांइ इवड़ा हठ निग्रह किया। प्रांणी भवसागर वेलि पढंता, थिया पार तरि पारि थिया।—वेलि

२ साधुश्रों का एक पंथ जिसके दंडी श्रौर श्रवधूत दो भेद हैं।

वि. वि.—कहा जाता है कि संन्यास को मत या पंथ रूप दत्तात्रेय ने उस समय दिया जब कि गोरखनाथ ने योगियों का पंथ चलाया। गोरखनाथ को शिव का श्रौर दत्तात्रेय को नारायण का श्रवतार मानते हैं। दत्तात्रेय के श्रनुयायी दंडी श्रौर गोरखनाथ के श्रनुयायी श्रवधूत कहलाते हैं। दंडी सिर मुंडाते हैं श्रौर हाथ में दंड धारण करते हैं तथा श्रवधूत सिर पर जटा रखते हैं श्रौर हठ योग की क्रियाएं करते हैं। शास्त्रोक्त संन्यास के दंडी संन्यासी श्रधिक नजदीक पड़ते हैं।

रू. भे.—सन्यासी, सनीयासी, सिनियासी, सिन्यासी।

संप—सं. पु.—१ एकता, मेल, संगठन।

उ०—१ बडभागी दीना विविद, संपत हित सनमांन। संप राखणौ सीखियौ, थिर चित राजसथांन।—ऊ. का.

उ०—२ लोगां री राड़ मैं बांणिया री लिछमी वास करै। लोग यूं संप राखण लाग जावै तौ बांणियां री संपत कीकर वधै।

—फुलवाड़ी

उ०—३ राखै संप जिका धन राखै, 'वांकौ' दाखै सांच विध। न्याय नीमड़ै जित्तै नीमड़ै, राज चढै ज्यां तणी रिध।—बां. दा.

मुहा.—संप राखणौ=एकता रखना।

२ स्नेह, प्रेम।

[स. सर्प] ३ शेषनाग।

उ०—१ हिलै संप हैथाट, चलै वांना बहरंगी, इळ जळनिध उलटै जांण बडवानळ मंगी। गिर छीजै खुरताळ पहवि थळ सिखर पलट्टै, पड़ै श्रपंथै पथ, त्रणह तुट्टै सर खुट्टै।—रा. रू.

उ०—२ हलीलां हिलै संप फौजां हसत्ती, प्रथी संगि लागा केई देसपत्ती।—वचनिका

४ देखो 'संपा' (रू. भे.)

उ०—सिणगार सिरोमण साकुर रौ, तस वीड़िय रूप खुलै तुररौ। करती नभ सी किर सप किया, वळती फुरणां व्रत वाळकियां।

—पा. प्र.

५ देखो 'साप' (रू भे.)

उ०—श्राकां दतुण न कीजियै, संपां न खाजै मांस। जला जेथ न जायजै, जेठां जंद विनांस।—जलाल बूबनां री वात

संपड़—वि.—१ संभव। (विलो. 'श्रसंपड़')

सं. पु.—२ कोई प्राप्य वस्तु।

२ देखो 'संपाड़ौ' (रू. भे.)

संपड़णौ, संपड़बौ—क्रि. श्र. [सं. सम्प्रापणम्] १ प्राप्त होना, मिलना।

उ०—पग पगां संपड़ै श्रांख संपड़ै क श्रंधं। भूखै श्रख संपड़ै जेम लोभी द्रव लद्धं।—ज. खि.

२ सम्भव होना।

उ०—सेवग सधार श्रसरण सरण, पार न कोई पुन्न रौ। संसार श्रसंपड़ संपड़ै, 'जगा' नांम जगदीस रौ।—ज. खि.

[सं. समाप्लवनम् या सम्प्लवनम्] ३ स्नान करना, नहाना।

४ सम्भव करना।

संपड़णहार, हारौ (हारी), संपड़णियौ—वि०।

संपड़िश्रोड़ौ, संपड़ियोड़ौ, संपड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपड़ीजणौ, संपड़ीजबौ—भाव वा०; कर्म वा०।

संपडणौ, संपडबौ, सांपड़णौ, सांपड़बौ—रू० भे०।

संपड़ाणौ, संपड़ाबौ—क्रि. स.—स्नान कराना, नहलाना।

उ०—१ सहेलियां भेळी कर भेख उतरायौ, संपड़ायौ, बागौ पहरायौ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ मनजांणिया हथियार-पोसाख लीजै छै। फेर उजळै पांणी नहाइजै छै। घोड़ा दही कटोळां सूं संपाड़ाइजै छै।

—रा. सां. सं.

संपड़ाणहार, हारौ (हारी), संपड़ाणियौ—वि०।

संपड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संपड़ाईजणौ, संपड़ाईजबौ—कर्म वा०।

संपड़ावणौ, संपड़ावबौ, संपडाणौ, संपडाबौ, संपडावणौ, संपडावबौ, संपलाणौ, संपलाबौ, सपड़ाणौ, सपड़ाबौ, सपड़ावणौ, सपड़ावबौ, सांपड़ाणौ, सांपड़ाबौ, सांपड़ावणौ, सांपड़ावबौ—रू० भे०।

संपड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—स्नान कराया हुश्रा, नहलाया हुश्रा।

(स्त्री. संपड़ायोड़ी)

संपड़ावणौ, संपड़ावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चोर चुगल वाचाळ, ज्यांरी मांनीजै नहीं। संपड़ावै घसकाळ, रीती नाड्यां राजिया।—किरपारांम

उ०—खंख मैं भखभूर व्हिया दाळदनै डावड़ियां संपड़ावण लागी तद वौ वांनै पालतां कह्यौ—म्हैं श्रासंग वायरौ श्रर मांदो कोनीं, हाथां सींचनै सिनांन करूंला। डील सूं थुड़ियां बिनां म्हनै रंजत नीं व्है।—फुलवाड़ी

संपड़ावणहार, हारौ (हारी), संपड़ावणियौ—वि०।

संपड़ाविश्रोड़ौ, संपड़ावियोड़ौ, संपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपड़ावीजणौ, संपड़ावीजबौ—कर्म वा०।

संपड़ावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपड़ावियोड़ी)

संपड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ. (२) सम्भव हुवा हुआ. (३) स्नान किया हुआ. (४) सम्भव किया हुआ।

(स्त्री. संपड़ियोड़ी)

संपचूड़-सं. पु.—सर्प के फन के आकार का एक अस्त्र विशेष।

उ०—अरजुन संगति झूझतां, संपचूड सांनिद्ध। मागीउ आवी तुम्ह पय, पंचइ विद्या सिद्ध।—सालिभद्र सूरि

संपजणो, संपजबो-क्रि. प्र. [सं. संपदनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ ज्यांरी रिच्छया देवता, सेवा पीर प्रधांन। त्यां अणचीती संपजै, मुनस्थळ मैं पासांन।—रा. रू.

उ०—२ विण स्वभाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय। अंब न लागै नीब कै जी. बाग वसंतै जोय।—वृ. स्ता

उ०—३ समण वरद संपजै, सबद तैसा बाजंतां। मुख विरद भणिणां, इसा जै सद्ध कवित्तां।—रा. रू.

उ०—४ बहू बंध्याळु अस्त धरि, कामूं करइ विदेस। संपत सघळी संपजै, अै दिन थदो लेहस।—ढो. मा.

२ होना।

उ०—१ चितामणि पारस पोरसो, सुवा सरोवर कांमगा। संपजै तांम सुत संपनै, अह सुर धांम विरांमगा।—रा. रू.

उ०—२ सूनराजी सो वार, सयण घणांई संपजै। मिळै न दूजी वार, नाग सरीखो नाहलो।—नागजी नागवंती री वात

३ संचित होना, एकत्रित होना।

उ०—जो लाखां धन संपजै, अधप तोई न धापि। हरीया दुक संतोस बिन, मिमता किनी न मापि।—अनुभववांणी

४ प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ केहरिया 'करनेस' का, तो हाथां वळि जाव। जिन्हां खेत न संपजै तिन्हां दीन्हां गांव।—कुंभो सांदू

उ०—२ नमणी खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण इसी संपजइ, तउ किम ठल्लउ जाइ। ढो. मा

संपजणहार, हारो (हारी), संपजणियो—वि०।

संपजिओड़ो, संपजियोड़ो, संपज्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपजीजणो, संपजीजबो—भाव वा०।

सांपजणो, सांपजबो—रू० भे०।

संपजाड़णो, संपजाड़बो—देखो 'संपजाणो, संपजाबो' (रू. भे.)

संपजाड़णहार, हारो (हारी), संपजाड़णियो—वि०।

संपजाड़िओड़ो, संपजाड़ियोड़ो, संपजाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपजाड़ीजणो, संपजाड़ीजबो—भाव वा०।

संपजाणो संपजाबो-प्रे. रू.—१ उत्पन्न करना, कराना, पैदा करना, कराना।

२ संचित करना/कराना, एकत्रित करना/कराना।

३ प्राप्त करना/कराना।

४ करना/कराना।

संपजाणहार, हारो (हारी), संपजाणियो—वि०।

संपजायोड़ो—भू० का० कृ०।

संपजाईजणो, संपजाईजबो—भाव वा०।

संपजाड़णो, संपजाड़बो, संपजावणो, संपजावबो—रू० भे०।

संपजायोड़ो-भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ/कराया हुआ, पैदा किया हुआ/करवाया हुआ. (२) संचित किया या कराया हुआ। (३) प्राप्त किया हुआ या करवाया हुआ, मिला या मिलाया हुआ। (४) किया या कराया हुआ।

(स्त्री. संपजायोड़ी)

संपजावणो, संपजावबो देखो 'संपजाणो, संपजाबो' (रू. भे.)

संपजावणहार, हारो (हारी), संपजावणियो—वि०।

संपजाविओड़ो, संपजावियोड़ो, संपजाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपजावीजणो, संपजावीजबो—भाव वा०।

संपजावियोड़ो—देखो 'संपजायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपजावियोड़ी)

संपजियोड़ो-भू. का. कृ.—१ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. (२) प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. (३) संचित हुवा हुआ, एकत्रित हुवा हुआ. (४) हुवा हुआ।

(स्त्री. संपजियोड़ी)

संपट-वि.—१ समाप्त, लुप्त।

उ०—संपट हुयगी थळ जळ साई, लंपट हुयगा लोग लुगाई। कंपत लीली डाळ सुकाई, चंपत हुयगी सब चतुराई।—ऊ. का.

२ मूर्ख, अज्ञानी।

सं. पु [सं. संपुटक] १ अवसर, मौका।

२ संयोग, मिलन।

उ०—झिलमाझिल आधी रात। झीणी ठारी। सून्याड़ पंथ। तीजो कोई आदमी पाखती कोनीं। अैड़ी निरजण खुनी ठौड़ मैं असैंधी लुगाई रै अणचींत्या संपट रो नसो कुजरबो घणो व्है।

—फुलवाड़ी

३ देखो 'संपुट' (रू. भे.)

उ०—१ त्यारूं पंचकोहरणी परवरि नइ, सुहड़ निज भड़ टाळि। कर करीय करपट धरीय संपट, कठि टोडरमाळ।—रुकमणि मंगळ

उ०—२ पड़िदा मैं छिपियो रहै, सो सांई नहिं थाय। हरिया हरि तिहू लोक मैं, संपट मांहि न माय।—अनुभववांणी

संपटपाट-सं. पु.—१. सीधा एवं खुला मैदान।

२ बरबादी, नाश, ध्वंस।

उ०—सबळा संपटपाट, करता नह राखै कसर। निबळां एक निराट रांम तणो बळ राजिया।—किरपारांम

संपडणो, संपडबो—देखो 'संपड़णो, संपड़बो' (रू. भे.)

उ०—तिथि वार नखत्र उत्तम करण, पण महूरत अप चढै।

किल्यांण हुवै सिध कांमना, तांमह असड संपडै।—गु. रू. बं.
संपडणहार, हारौ (हारी), संपडणियौ—वि०।
संपडिग्रोड़ौ, संपडियोड़ौ, संपड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संपडीजणौ, संपडीजबौ—भाव वा०।

संपडाणौ, संपडाबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)
संपडाणहार, हारौ (हारी), संपडाणियौ—वि०।
संपाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संपडाईजणौ, संपडाईजबौ—कर्म वा०।

संपडायोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संपडायोड़ी)

संपडावणौ, संपडावबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)
संपडावणहार, हारौ (हारी), संपडावणियौ—वि०।
संपडाविग्रोड़ौ, संपडावियोड़ौ, संपडाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संपडावीजणौ, संपडावीजबौ—कर्म वा०।

संपडावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संपडावियोड़ी)

संपडियोड़ौ—देखो 'संपड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संपडियोड़ी)

संपणौ, संपबौ—क्रि. स.—१ एकता रखना या करना, मेल रखना या करना।
२ प्रेम करना, प्यार करना।
३ देखो 'सूंपणौ, सूंपबौ' (रू. भे.)
उ०—वणवीर ग्रांणि ग्रर मुंहतै ग्रवळै नूं ग्रर नाई लखमण लाहोरी नूं संपियो।—द. वि.
संपणहार, हारौ (हारी), संपणियौ—वि०।
संपिग्रोड़ौ, संपियोड़ौ, संप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संपीजणौ, संपीजबौ—कर्म वा०।

संपत—सं. स्त्री. [सं. संपद्] १ धन, दौलत।
(ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)
उ०—१ मियां-बीबी दोनूं ई मस्त। ग्रपारै लाखां री संपत है, पण म्हनैं तौ वी ग्रां बिचै घणौ सुखी लागै।—फुलवाड़ी
उ०—२ लोगां री राड़ में बांणिया री लिछमी वास करै। लोग यूं संप राखण लाग जावै तौ बांणियां री संपत कीकर बधै।
—फुलवाड़ी
उ०—३ ग्रर उठीनै मगरै ढळतां ई ग्रसवार रौ मन विटळियौ सोच्यौ—कैड़ो ग्रबूझपणो करियो। हाथै ग्रायोड़ी संपत नै ठुकराय दी।—फुलवाड़ी
उ०—४ वोहरां री खेरी मिळ्यौ इजं नीं हो। तद कीकर ऊपरलो पांनों ग्रांवतो। संपत रा नांव माथै इण राजपूत रै फगत बीस-पचीसे'क गायां, साठे'क बीघा करसणी जमीं ग्रर सौ-ग्रेक बीघा कांकरियौ मगरौ हाथै लागौ।—फुलवाड़ी
२ संपन्नता, समृद्धि, खुशहाली।
उ०—१ च्यारां पासै धन घणौ, बीजळ खिवै ग्रकास। हरियाळी रुत तौ भली, घर संपत पिव पास।—ग्रग्यात
उ०—२ कूकर लाय जळै नहीं, जुड़ै न कायर जंग। बिदर न ठहरै विपत में, संपत में हिज संग।—बां. दा.
३ ऐक्यता, मेल।
उ०—ग्राप पधारौ तौ ग्रापरी इंछा, पण इण घर में सदा संपत बणी रैवै, म्हनै ग्रौ वरदांन दिरावौ। किणी भांत घरवाळां री भेळप नीं तूटै।—फुलवाड़ी
मुहा.—संपत में लिछमी री वासौ=ऐक्यता में ही स्मृद्धि, वैभव का निवास होता है।
४ प्रेम, स्नेह।
उ०—पहली राज पधारजै, हूं भंळू कर हैत। वेगाह वळजो वलहा, संपत लछी सहेत।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात
५ वैभव, ऐश्वर्य।
उ०—१ वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत बधायक। ग्रवर वधै दिन इतो, वधै पल पल वरदायक।—सू. प्र.
उ०—२ वरखा रित सुख बोळवी, ग्रावी सरद ग्रनोप। नवकोटी नैपत निपट, ग्रोपत संपत ग्रोप।—रा. रू.
६ लाभ, फायदा।

संपतणौ, संपतबौ—क्रि. ग्र. [संपदनम्] १ पहुँचना।
२ उत्पन्न होना।
३ सम्पन्न होना, सफलीभूत होना।
संपतणहार, हारौ (हारी), संपतणियौ—वि०।
संपतिग्रोड़ौ, संपतियोड़ौ, संपत्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संपतीजणौ, संपतीजबौ—भाव वा०।
संपत्तणौ, संपत्तबौ—रू० भे०।

संपति, संपती—सं. स्त्री. [सं. संपत्ति] १ धन, दौलत।
(ग्र. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा;)
उ०—१ ग्रदतारां घर ग्राय, जे क्रोड़ां संपति जुड़ै। मीज देण मन मांय, रती न सूझै 'राजिया'।—किरपारांम
उ०—२ ग्रावैस धकै ग्रमास, उडि जाय गढ ग्रसि हास। लूटंत संपति लाख, सरदांण ह्वै घण साख।—सू. प्र.
उ०—३ घर घरणी पहती घरबारि, चिता पडिउ सूथल थाइ। ईंधण तउणि तणीग्र संपति, कारणि भमइ दीह नइ राति।
—वस्तिग
२ वैभव, ऐश्वर्य।
उ०—१ वड विना क्रांमति न कौ वीरति, पिंड हुई मत जाय संपति। हमैं इण भति धरौ हिम्मति, पुळौ पर खिति रहौ नर-पति।—रा. रू.

उ०—२ पातोस प्रभु जगत घामा मीन ग्रन ग्रति भार ए । गोगंदू बंदु ग्रनंत सुरानद सुख्द संपति सार ए ।—रा. रू.

३ कोई ऐसी चीज जो महत्व की हो और स्वामी के लिए लाभदायक हो ।

४ गुणाढ्यता, सम्पन्नता ।

उ०—१ ग्रस्ट करम मल पंक पयोधर, सेवक सुख संपति करणं । सुर नर किन्नर कोटि निसेवित, समयसुंदर प्रणमति चरणं ।
—स. कु.

उ०—२ राद्रघह महावीर विराजै, भय सगला दूरैं भाजै रे । सहु विधि सुख संपति साजै, नित सेवक काज निवाजै रे ।
—ध. व. ग्रं.

उ०—३ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत मोत सुख संपति, व्यापत नांहि विपत्ती ।—मे. म.

५ लक्ष्मी ।

उ०—साफल्य स्वप्न संपति समान, पांनी मंथन में घ्रत प्रमांन ।
—ऊ. का.

६ लाभ, सिद्धि ।

७ प्रेम, स्नेह ।

७ एकता ।

रू. भे.—संपत्त, संपत्ति, संपत्ती ।

संपतियोड़ो–भू. का. कृ.—१ पहुँचा हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ. ३ सम्पन्न हुवा हुआ, सफलीभूत हुवा हुआ ।
(स्त्री. संपतियोड़ी)

संपत्त–वि. [सं. संप्राप्त] १ समस्त कर्मों को क्षय करके जो सिद्धि को प्राप्त हुआ हो ।
२ देखो 'संपति' (रू. भे.)

संपत्तणौ, संपत्तबौ—देखो 'संपतणौ, संपतबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कोड़ प्रवाड़ा करै, सरण 'ग्रखई' संपत्तौ । रायसिंघ तिण पाट, ग्ररक वंदै ऊगंतौ ।—मालौ ग्रासियौ

उ०—२ गंभनयरि संपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरेई । गच्छ निवस नियपट्ट, सिवग्र ग्रायरि याह देई ।—ग्यांनकलस

उ०—३ किमन तणौ सांम्हौ क्रमै, चढतौ वांकिम वींद । नींदवतै नवतै नरां, ग्रणभंग रहे ग्रनींद । ग्रभंग ग्रणनींद सुजि माग ग्रावाहतौ, निसण घड़ पाड़तौ पूजवै संपत्तौ ।—हा. झा.

संपत्तणहार, हारो (हारी), संपत्तणियौ—वि० ।

संपत्तिग्रोड़ो, सपत्तियोड़ो, संपत्त्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संपत्तीजणौ, संपत्तीजबौ—भाव वा० ।

संपत्ति, संपत्ती—देखो 'संपति' (रू. भे.)

उ०—१ इगुणहत्तरि सागर कोडाकोडि, मोहनी करम तणी जोडि । बोधिलाभ नी हुइ संपत्ति, श्रावक तणइ कुलि तउ उतपत्ति ।
—वस्तिग

उ०—२ ग्रतिल जहांन सरन तकि ग्रावत, चरन कमळ रजसीस चढावत । पावत रिद्धि सिद्धि संपत्ती, तीकरनी जग जयति सकत्ती ।—मे. म.

संपद, संपदा–सं. स्त्री. [सं. संपद्] १ सुखद । (डि. को.)

२ देखो 'संपत' ।

उ०—१ उण दिनां मारग में चोर लुटेरां रो वडो उत्पात हो । धवळै दिन धाड़ा पड़ता ग्रर हजारां री संपदा खोसीज जावती ।
—रातवासो

उ०—२ बहुली संपद हूंती छांडि नइ रे, कहो किम कीजइ वीर । स्यौवन रै, भोला भोगवी रे, पछइ व्रत लेज्यौ तुमे वीर ।
—स. कु.

उ०—३ रांम नांम नहीं जांणीयो, कीया ग्रौर कळाप । हरीया जे घरि संपदा, होसी सांडा साप ।—ग्रनुभववांणी

उ०—४ लेर वीडौ लीधौ जिका पूंनारी संपदा लूट, फरकाबाद नै कीधौ खाख सालं फेर । तकां लेवीयै देर हलौ न कीधौ वजाड तासा, 'उंदारा' 'पत्ता'री कोट दूसरौ ग्रासेर ।—वां. दा.

संपनणौ, संपनबौ–क्रि. ग्र. [सं. सम्पन्नः] १ जन्म लेना, उत्पन्न होना ।

ऊ०—१ चितामणि पारस चोर सो, सुधा सरोवर कांमगा । संपजै तांम सुत संपनै, ग्रह सुर छांम विरामगा ।—रा. रू.

उ०—२ मन तेण थियौ मारीच मुनि, तणथी कासिप ऊपनौ । घर नूर प्रकासी प्रीत घर, सूर तेण घर संपनौ ।—रा. रू.

२ प्राप्त होना ।

उ०—हंस उपरि हो चढ्यां केवल न्यांन कि, इला पुत्र नइ ऊपनउ । संसार नउ हो नाटक निरखंत कि, संवेग सहु नइ संपनउ ।
—स. कु.

३ पूर्ण होना, सिद्ध होना ।

४ समृद्ध होना, समृद्धिवान होना ।

५ होना ।

६ युक्त होना ।

संपनणहार, हारो (हारी), संपनणियौ—वि० ।

सपनणिग्रोड़ो, संपनणिग्रोड़ो, संपन्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संपनणीजणौ, संपनणीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

संपन्नणौ, संपन्नबौ—रू० भे० ।

संपनियोड़ो–भू. का. कृ.—१ जन्म लिया हुआ. २ प्राप्त हुवा हुआ, पाया हुआ. ३ पूर्ण हुवा हुआ. ४ युक्त हुवा हुआ. ५ समृद्ध हुवा हुआ, समृद्धिवान हुवा हुआ. ६ हुवा हुआ ।
(स्त्री. संपनियोड़ी)

संपन्न, संपन्नउ–वि.—समृद्धिशाली, समृद्ध ।

२ भरापूरा, परिपूर्ण ।

३ पूर्ण, पूरा ।

४ युक्त, सहित ।

उ०—पहिउलउ वेटउ करमदोसि, वालप्पणि विवनउ। विचित्र-विरधु वीजउ कुमारु, बहुगुण संपन्नउ।—सालिभद्र सूरि

५ पाया हुआ, प्राप्त।

६ हुवा हुआ।

संपन्नणौ, संपन्नबौ—देखो 'संपनणौ, संपनबौ' (रू. भे.)

संपन्नणहार, हारौ (हारी), संपन्नणियौ—वि०।

संपन्निओड़ौ, संपन्नियोड़ौ, संपन्न्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपन्नीजणौ, संपन्नीजबौ—भाव वा०।

संपन्नियोड़ौ—देखो 'संपनियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपन्नियोड़ी)

संपन्नौ-वि.—१ संपन्न होने वाला।

२ उत्पन्न होने वाला।

संपय-क्रि. वि. [सं. संप्रत्ति] अभी, इस समय।

उ०—जिणकुसल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु। जिणउदय पट्टि जिणराजवर, संपय सिरि जिणभद्द गुरु।
—अभययतिक यति

संपरदांन—देखो 'संप्रदांन' (रू. भे.)

संपरदाय—देखो 'सप्रदाय' (रू. भे.)

संपराय-सं. पु. [सं. संपराय:] १ लड़ाई, युद्ध। (डिं. को.)

उ०—सरिता भो वह संपराय जळ सोंनित धारैं। वूंदी जेंपुर तट बिलंद घट विकट किनारैं। फुल्लि कुसेसय हृदय फांक छवि अतुळ अपारैं। उतपल गन लोचन अनूप हुव बिकच हजारैं।—वं. भा.

२ संकट, आपत्ति।

३ भावी दशा।

४ पुत्र।

संपरायक-सं. पु. [सं. संपरायकं] १ मुठभेड़, २ लड़ाई, संग्राम, जंग।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

संपहुतणौ, संपहुतबौ—देखो 'पहुँचणौ, पहुँचबौ' (रू. भे.)

उ०—संपहुता सज्जण मिल्या, हूंता मुझ हीयाह। आजूणइं दिन ऊपरइ, बीजा वळि कियाह।—ढो. मा.

संपहुतणहार, हारौ (हारी), संपहुतणियौ—वि०।

संपहुतिओड़ौ, संपहुतियोड़ौ, संपहुत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपहुतीजणौ, संपहुतीजबौ—भाव वा०।

संपहुतियोड़ौ—देखो 'पहुँचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपहुतियोड़ी)

संपलाणौ, संपलाबौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—कळां जळां संपलाय, तेल आंमळां चढावा। कळां जड़ै काटियां, कळां बांधिया कलावा।—सू. प्र.

संपलाणहार, हारौ (हारी), संपलाणियौ—वि०।

संपलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संपलाईजणौ, संपलाईजबौ—कर्म वा०।

संपळायोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपलायोड़ी)

संपसुज-सं. पु. [सं. संपसृज] युद्ध। (अ. मा)

संपा-सं. स्त्री [सं.] बिजली, विद्युत। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ जठै स्यांम धाराधर री लहर लेती संपा रा सळावां री सोभा चढण लागी।—वं. भा.

उ०—२ ऊधरी जांनि संपा जळद, चुवत स्रोन रंग चढ्ढियो। मांनहु कुमरि जावक सहित, कर बातायन कढ्ढियौ।—ला. रा.

रू. भे.—संप, सिपा।

संपाक-सं. पु. [सं. शम्पाक] भीष्म का गुरुतुल्य स्नेही एक हस्तिनापुर निवासी जीवनमुक्त त्यागी ब्राह्मण।

संपाड़णौ, संपाड़बौ-क्रि. स.—स्नान कराना।

संपाड़णहार, हारौ (हारी), संपाड़णियौ—वि०।

संपाड़िओड़ौ, संपाड़ियोड़ौ, संपाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपाड़ीजणौ, संपाड़ीजबौ—कर्म वा०।

संपाडणौ, संपाडबौ—रू० भे०।

संपाड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—स्नान कराया हुआ।

(स्त्री. संपाड़ियोड़ी)

संपाड़ौ-सं. पु. [सं. सम्प्लावतम्] १ स्नान।

उ०—१ बोली : खबरदार, म्हारै हाथ लगायौ तौ, पाछौ संपाड़ौ करणौ पड़ैला। सिवजी रा मिंदर में अधराती बोलवां बोल्योड़ी। मौड़ौ व्है, म्हनै जावण दौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ आपनै प्रथीराजजी सूं रांमरांम कहायौ। हूं संपाड़ौ करूं छूं, हुंई दरबार में आवूं छूं।—द. दा.

उ०—३ आप संपाड़ै बिराजिया, भीजै गढ री भींत। सोढां हुंदै देस मैं, पाग लेवण री रीत।—लो. गी.

रू. भे.—संपड़, संपाड़ौ, सांपाड़ौ।

संपाट-सं. पु.— संहार, नाश।

संपाठ्य-स. पु. —चौसठ कलाओं में से एक।

संपाडणौ, संपाडबौ—देखो 'संपाड़णौ, संपाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—अम्रत संचारइं, देव पंच धात्री वधारइं, यौवनि जं जोइइं तं सपाडइं, सहू काज कीधउं जि दिरवाडइ।—ध. स.

संपाडियोड़ौ—देखो 'संपाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संपाडियोड़ी)

संपाडौ—देखो 'संपाड़ौ' (रू. भे.)

संपात-सं. पु. [सं. सम्पात:] १ एक साथ प्रहार, बौछार।

उ०—१ अर सस्त्रां रै संपात जीवां री यात्रा र माथां रा व्यापार मंडिया।—वं. भा.

उ०—२ जठै दौ ही फौजां रै दूजे ही दिवस काळ कोप तोपां रौ घोर घमसांण राचियौ। अर बीच बीच वेंडी रा बेंहड़ा वज्रवेग वांनैत बीरां रै सस्त्रां रौ संपात माचियौ।—वं. भा.

२ प्रहार, वार।

उ०—१ पर दोहीं वीरां आप आपरो स्वामिध्रम कजळो दिखायो। दोहीं सामंतां रा सस्त्रां रा संपात सां दोहीं तुरंगां रा सीस भांड़िया।—वं. भा.

उ०—२ निर्भयरै समय घाटी रै संपात दिवाय आपरा गहणहार गुजरात रा अधीस सूं सामंत मंत्री अमरसिंह समेत जठी तठी पलायन कियो।—वं. भा.

३ मुठभेड़।

उ०—अतरै इण रा साथियां तुरकां रो संपात नीठि रोकियो अर कवर भी घायल होतां ही विभागी तोमर भुजादंड थी भमाइ सत्रुवां रै सांम्हे आप रो वाह भोकियो।—वं. भा.

४ युद्ध, लड़ाई। (डि. को.)

५ समागम, संगम।

६ संसर्ग, मेल।

७ एकयता, एकता।

८ देखो 'संपाति' (रू. भे.)

उ०—१ सुणे राम रो नांम उच्छाह साई, उठै ग्रीध संपात रै पंखि आई।—सू. प्र.

उ०—२ गढपत हूं सरात तणी गत, पावां आयो जगपत। हर 'माहेस' तणा कव हसा, 'मान' सरोवर ठेल मत।

—रिववदांन महड़ू

संपाति, संपाती–सं. पु. [सं. सम्पातिः] १ जटायु का वड़ा भाई व गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र।

२ माली नामक राक्षक एवं उसकी पत्नी वसुदा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो विभीषण का मंत्री था।

३ राम-रावण युद्ध का राम पक्षीय एक वीर वानर।

४ एक रावण पक्षीय राक्षस।

५ एक राक्षस जो रावण की माता कैकसी की वहिन कुंम्भीनसी का पुत्र था।

६ कौरव-पांडव युद्ध में द्रोण द्वारा निर्मित गरुड़ व्यूह के मध्यस्थान में खड़े होने वाले योद्धा का नाम।

७ देखो 'संपात' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

संपादक–वि० [सं.] १ किसी कार्य को सम्पन्न या उसका सम्पादन करने वाला।

२ किसी समाचार-पत्र या पुस्तक आदि को ठीक से तैयार करके प्रकाशन योग्य वनाने वाला।

३ तैयार करने वाला।

संपादन–सं. पु. [सं. संपादनम्] १ ठीक या दुरुस्त करने का कार्य।

२ काट-छांट कर किसी रचना को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप देने का कार्य।

३ तैयार करने की क्रिया।

उ०—सूरमज्जा सोवणरो साधन संपादन करतै वांणवै वरस रो वय वांसै वाळिपै'र अनेक आंटा रा अवमरद आसंगिया।

—वं. भा.

४ प्राप्ति, उपलब्धि।

उ०—१ विनां ही परिस्रम वडाह रै सुवरण रासि सदा ही संपादन होय, यौ ही वर चंडिका सूं पाय प्रच्छन्न ही आपरै नगर गियो।—व. भा.

उ०—२ जरै वडाह भी जिण तरह प्रतिदिन अरज करतो तिण रीति अरथी जनांनू देण काज आप रै द्वार सुवरण रासि संपादन होण रो ही प्रसाद मांगि············।—वं. भा.

संपादित–वि. [सं.] १ सम्पादन किया हुआ।

२ पूर्ण किया हुआ।

३ तैयार किया हुआ, तैयार।

उ०—पाछैसूं वडाह भी उठै ही पूगो जठै आकास सरस्वती कहियो, अ'वतीरै' अधीस विक्रम विभाकर थारो दुख निरस्त कीधी तिण सूं अव थारै द्वारा विनांही परिस्रम सदा सुवरण रो संचय संपादित पावसी।—वं. भा.

३ कोई पत्रिका, समाचार पत्र, पुस्तक आदि ठीक करके प्रकाशन योग्य वनाया हुआ।

संपार–सं. पु.—समर राजा का पुत्र, एक राजा।

संपियोड़ो–भू. का. कृ.—१ एकता रखा या किया हुआ, मेल रखा या किया हुआ. २ प्रेम किया हुआ, प्यार किया हुआ।

३ देखो 'सूंपियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संपियोड़ी)

संपीड़ण, संपीड़न–सं. स्त्री. [सं. सम्पीडनम्] १ दवाने की क्रिया।

२ निचोड़ने की क्रिया।

३ दुख देने की क्रिया या भाव।

संपुट–सं. पु.—१ पत्तों का वना दोना।

उ०—१ जल निरमल ल्यावै नदीयां तणो रे, पांन तणां संपुट करी सार रे। सरस रसाफल आंणिनै रे, तै करै कुमर तणी मनुहार रे।—वि. कु.

उ०—२ महा कलपवृक्ष उल्हस पांम्यां, आव्या मांडी क्षत्रि वराह। वाळ मात्र वट संपुट पोढ्या, लीलाती लिछमी नाह।

—रुकमणी मंगळ

२ विचारधारा, भावना, नियत।

उ०—संक्रम सुभ त्रष्टी द्रष्टी लुभलती, लंपुट संपुट लग घूंघट पट लेती। लुळकर लकुटी लै भ्रकुटी सळ लाती, भूखी वाघण सी भ्रकुटी भळकाती।—ऊ. का.

३ मुलम्मा, कलई।

उ०—श्री जी री तरफ सुं सूत सुं लपेटियो नारेळ सु सोना रा संपुट

री नारेळ हुवै । सु पछै ही जतनां सूं राखीजै कोठार मांही ।
—नैणसी

४ गोद, अंक ।

उ०—अवर स्त्री नी ओपमां तै; किस्ण ल्यावा साथी । पुत्र संपुट परइ मुंक्यउ, चांपीयौ वळिमात्र ।—रुकमणि मंगळ

५ औषध पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जाने वाला वह रूप जिसका गीली मिट्टी से मुंह बंद करके चारों तरफ मिट्टी लपेट देते हैं ।

उ०—भाग त्रगुण पंकज पर मेळै, मवइ पांन छगुण रस मेळै । पाव भाग धरि लवंग प्रमांणै, आधै भाग अगाअंक आंणै । इतरी वसत कनक घट आंणै, संपुट दियै कियै सहनांणै । बाळ जती पतिवरता वैवै, सपत निसा जाग्रण करि सेवै ।—सू. प्र.

६ अंजलि ।

७ कपाल, खोपड़ी ।

८ खड्डा, गर्त ।

९ सन्दूक, पेटी ।

१० उधार पर दिया गया धन ।

रू. भे.—संपट ।

संपुटी—सं. स्त्री. [सं. संपुट] कोई छोटी कटोरी या तश्तरी ।

संपुत्त—वि. [सं. सम्प्राप्त] सम्प्राप्त, प्राप्त ।

संपूरण—वि. [सं. संपूर्ण] १ समस्त, आदि से अन्त तक पूर्ण ।

उ०—१ कुंजर ज्यूं जै केहरी, तूं लेतौ तालीम । कळ मैं रखवाळत कवण, संपूरण वन सीम ।—बां. दा.

उ०—२ आसण गूढ़ करूं पण आसुर ज्याग विधुंसै जावै । रिख्या वाट करै जो राघव थाट संपूरण थावै ।—र. रू.

२ खत्म, समाप्त ।

उ०—१ अेड़ौ नाच तौ आज पैं'ली कदै ई नीं देख्यौ । घूघरां री छमछम कांनां में इमरत घोळती ही । नाच संपूरण व्हैतां ई कंवर जांणै नसा में व्है ज्यूं ई बोल्यौ—छौ व्ही कवूड़ी, म्हैं तौ इण सूं ई ब्याव करूं'ला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ भाई री सीख संपूरण नीं व्ही, उण पैला फुफकारा भरती नागण आई । उणरै लारै टळवळ टळवळ करता अठोत्तर बिचिया अड़थड़ता आवता हा ।—फुलवाड़ी

३ पूरा, पूर्ण ।

उ०—१ वा जिण कांम नै आपरै हाथां झाल्यौ हौ, वौ समाध रै उंचलै पगोतियै पूग्यां विनां संपूरण व्हैतौ ई नीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ आणंद अर सुख सूं चांनणी अर सूरज रा उजास में दोनां रा दिन घुळण लागा, जांणै वांरा सुख वास्तै ई चंदरमा अर सूरज ऊगै । पण सुख-दुख, हरख-विसाद, अर संजोग-विजोग री अतूट सांठौ । अेक दूजा विना कोई संपूरण नीं ।—फुलवाड़ी

४ युक्त, सहित ।

उ०—सेवक को सेवक यह स्वामी, जग सबको हैं अंतरजांमी । सोळह कळा संपूरण सकांमी, निकट निवास करहुँ घणनांमी ।
—ऊ. का.

५ व्यतीत, समाप्त ।

उ० – धणी रा अै बोल सुणियां सेठांणी धकै कीकर बात चलावती । बात तौ अधूरी ई रै'गी, पण रात नै तौ संपूरण व्हैणौ इज हौ । सेठांणी वास्तै वा रात भाखर वणगी ।—फुलवाड़ी

सं. पु.—१ विष्णु ।

२ विसर्जन ।

उ०—राज दरबार संपूरण व्हियां खवासजी पाधरा आपरी गवाड़ी आया । व्ही जकी बात बादळ नै सगळी बतायदी ।—फुलवाड़ी

३ सात स्वरों का राग बिशेष ।

रू. भे.—संमपूरण, सपूरण ।

संपूरित, संपूरिय—वि. [सं. संपूरित] पूर्ण व भरा हुआ ।

उ०—त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मंझार । दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तन संताप ।
—वि. कु.

उ०—धनदिहिं सइं हथि थापिय, वापी अ वर आरांमि । मणि कण धण संपूरिय, पूरिय द्वारका नांमि ।—जयसेखर सूरि

संपेखणौ, संपेखबौ—क्रि. सं. [सं+प्र+इक्ष्णं] १ देखना । (डिं. को.)

उ०—१ अफल रूंख अटकलै, परा उड जायै पखी । सर सूको संपेख, कोई न हुवै तरू कंखी ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ जळै सहर पुर जास, निसा ओजास निहारै । साह प्रळै संपेखि, सोच मद मोच संभारै ।—रा. रू.

उ०—३ वतीस लखण चौसट कळा, आंवेरी उत्तम सहज । कूरम संपेखै मुख कमळ, सरद इंद पावंत लज ।—गु. रू. बं.

२ विचारना, सोचना ।

उ०—१ लछीरूप सीता प्रभू रांमलीला, कवीपुत्र दाखै नहीं जेण कीला । अगै बाळमीकां जिसा गाय आया, गुणां तास संपेखि अदोख पाया ।—सू. प्र.

उ०—२ आगम संपेखै अंगद माया विसतारै । पीसोधरि अरि फेरि पूठि, सिल सभा सभारै ।—सू. प्र.

३ स्वागत करना, अगवानी करना (सम्मान करना) ।

उ०—इण दिस थी राजा 'अजन', सझ आवतां सिताब । सांम्हौ पाय संपेखवा, मिळियौ आय नवाब ।—रा. रू.

४ दर्शन करना ।

उ०—पेखियौ साह जोधांणपत, सब जण धणी संपेखियौ । वप आभ परख च्यारू वरण, लाभ नहण पण लेखियौ ।—रा. रू.

५ समझना, जानना ।

उ०—१ सहू भीमरा भीच आखाड-सिध्धं, मरण प्रव्व संपेख मंगळीक किद्धं ।—गु. रू. बं.

उ०—२ निरखं संग्राम सिव नच्चियौ, प्रथम जांम संपेखियौ। नट पड़े तुरंगम नाथ मम, हुरयां सात विसेखियौ।—रा. रू.

६ ढूंढना, खोजना।

क्रि. प्र.—७ दिखाई देना, दिखना।

उ०—ग्राइयै जाइ सागि मु चडि चढि ग्राया, तुरी लोग लै ताकि तिम। मिलह मांहि गरकाव संपेखी; जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम। —वेलि.

संपेखणहार, हारौ (हारी), संपेखणियौ—वि०।

संपेखिग्रोड़ौ, संपेखियोड़ौ, संपेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संपेखीजणौ, संपेखीजबौ—कर्म वा०; भाव वा०।

संपेखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ देखा हुग्रा. २ विचारा हुग्रा, सोचा हुग्रा. ३ स्वागत किया हुग्रा, सम्मान किया हुग्रा ४ दर्शन किया हुग्रा. ५ समझा हुग्रा. ६ ढूंढा हुग्रा, खोजा हुग्रा. ७ दिखाई दिया हुग्रा, दिखा हुग्रा।

(स्त्री. संपेखियोड़ी)

संप्रक्षाल–सं. पु. [सं.] एक ऋषि जो प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुग्रा था।

संप्रत, संप्रति, संप्रती—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धपुरादिक ठिकांणां नेमीस्वर विहारादिक जिन मंदिर संप्रति कराया गजधर, ग्रस्वघर नरधर मंडित।—वां. दा. ख्यां.

उ०—२ पहु सेव देव हलचळ प्रवळ, ग्रति मंगळ ग्रमरावती। निस ग्रगनि चरित दीठौ निजर, पड़ै न भूठौ संप्रती।—रा. रू.

उ०—३ संप्रति ए किना किना ए सुहिणौ, ग्रायौ कि हूँ ग्रमरावती। जाइ पूछियौ तिणि इमि जंपियौ, देव सु ग्रा दुग्रारामती। —वेलि

उ०—४ कमनीय करै कूंकूं चौ निज करि, कळंक घूम काढै वैकाट। संप्रति कियौ ग्राप मुख स्यांमा, नेत्र तिलक हर तिलक निलाट।—वेलि

उ०—५ पयठा हवइं पांडव ग्राज ग्राभइ, किमइ करी संप्रति सुद्धि लाभइ। तउ तेह नी ग्रोधि ज एह भाजइ, सुखिइं थिका कौरव राज छाजइ।—सालि सूरि

उ०—६ विसमिउं कटक कौरव केरउं, दैव चक्र किम कांइं फेरिउं। नारि सइरि सर संप्रति ग्रावइं, कइ ग्रगास पडतां एउ भावइ।—सालि सूरि

संप्रदांन–सं. पु. [सं. सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव।

२ उपहार, भेंट।

३ दीक्षा देने के ग्रवसर पर शिष्य को गुरु का मंत्र देना।

४ किसी की वस्तु को उसे देना या उसके पास पहुँचाना।

५ व्याकरण में एक कारक जिसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है।

७ विवाह, शादी।

८ विवाह के पूर्व ग्रदा की जाने वाली एक प्रकार की रस्म।

वि. वि.—उक्त रस्म में बरात का, 'सांभेळा', लेते समय बरात में उपस्थित दुल्हे के पिता, चाचा, नाना ग्रादि के साथ वधु पक्ष के मुख्य व्यक्ति ग्रंकमाल के रूप में मिलते हैं एवं मिलने के बाद ग्रपने सामर्थ्य के ग्रनुसार वधु पक्ष वाले वर पक्ष वालों को कुछ नकद देते हैं। इसी क्रिया को संप्रदान या पैसारा कहते हैं।

पुष्करणा ब्राह्मणों में यह रस्म ग्रदा करने के लिए वधु पक्ष वाले दुल्हे के घर जाकर वर की पूजा करते हैं एवं दोनों पक्षों के ननिहाल सहित गोत्रोचारण करने के बाद कन्या-पक्ष की ग्रोर से शास्त्रोक्त रीति से कन्या का वाकदान संकल्प किया जाता है। इस ग्रवसर पर वर पक्ष के 'दादाणी', 'नांनांणी' के मुखियाग्रों को मिलणी देते हैं।

रू. भे—संपरदांन।

संप्रदा—देखो 'संप्रदाय' (रू. भे.)

उ०—१ चार संप्रदा ठग चोरां री छार न छांणी रे। ऊमरदांन ग्यांन बिन ऊमर, ग्रंत उडांणी रे।—ऊ. का.

उ०—२ च्यार संप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यूं भांभी पाली। महिला नीर भरण नें म्हाली, खारो जळ ऊंडो तळ खाली। —ऊ. का.

संप्रवातन–स. [सं.] एक नरक का नाम।

संप्रदाय–वि. [सं. सम्प्रदाय] देने वाला।

सं. पु.—१ किसी धर्म में कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त।

२ उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालों का वर्ग या समूह।

३ कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त।

४ परिपाटी, प्रथा।

रू. भे.—संपरदाय, संप्रदा।

संप्रदायी–वि. [सं. सम्प्रदायिन्] १ देने वाला।

२ किसी धर्म, सम्प्रदाय का ग्रनुयायी।

संप्रहार–सं. पु. [सं. सम्प्रहारः] संग्राम, युद्ध। (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

संप्रापत, संप्राप्त–वि. [सं. सम्प्राप्त] प्राप्त किया हुग्रा।

उ०—सूरजमल संभ्रम राज संप्रापत, मंडत ताखत मंड ए। सिवा- सण बैस छत्र तांणी सिरि, दीपति कन्न (क) मंडए। —गु. रू. बं.

संप्रापति, संप्रापती, संप्राप्ती, संप्राप्ती–सं. स्त्री. [सं. संप्राप्ति] १ घटना ग्रादि का उपस्थित या घटित होने की क्रिया, भाव या ग्रवस्था।

२ उपस्थित होने की क्रिया।

उ०—१ तितरइ वात कहतां वार लागइ। ग्रस्त्री जन सहस चालीसकउ संघाट ग्राइ संप्राप्ती हुवउ छइ।—ग्र. वचनिका

उ०—२ इसी परि त्यां लड़तां लागतां मरतां मारतां महा ग्रस्टमी भारथ जुध मातउ थउ, त्यां दूसरी ग्रस्टमी ग्राइ संप्राप्ती हुयी।

जत्र-तत्र ग्रिद्ध मसांण करक की वाडि ।—ग्र. वचनिका

३ लगना ।

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मासरा मंगळाचार विमांहरा सुख विलास करतां सरद रित आई छै। आसोज मास आइ संप्रापति हूई छै।—रा. सा. सं.

४ उपलब्धि, प्राप्ति ।

संप्रिया—सं. स्त्री. [सं.] मगधराज की कन्या व विदूरथ राजा की पत्नी।

संप्रेक्षण—सं. पु. [सं.] १ अनुसन्धान, खोज ।

२ अन्वेषण ।

३ अवलोकन ।

संप्रेसण—सं पु. [सं. सम्प्रेषण] १ भेजने की क्रिया ।

२ सुरक्षित पहुँचाने की क्रिया ।

३ सेवाच्युत करने की क्रिया ।

संबं, संबंध—सं. पु. [सं. सम्बन्ध] १ रिश्ता, नाता ।

उ०—१ तिकां रांणा री सभा मैं जाइ समता रा संबंध रा सूचक पत्र दिया ।—वं. भा.

उ०—२ परंतु जैतौ अबही सौं मीणां री चाल छोडि रजपूतां री राह मैं रहण री लेख करि सूंपै तौ यो संबंध करण मैं आवै ।
—वं. भा.

२ घनिष्ठ मित्रता, दोस्ती ।

३ विवाह, व्याह, शादी ।

४ लगाव, सम्पर्क ।

५ सगाई ।

उ०—१ रांणै समांन वय रा बिवाह रौ नरम कीधौ सुणि कुमार चूंडै वडा प्रसभ रै प्रमांण पिता रौ संबंध करवाई आप चीतौड़ री गादी छोडण रौ लेख करि मारवाड़ां रै अधीन कीधौ। अर तिकी ही मांग पिता नूं परणाइ तटस्थ भाव धारि अपूरब जस लीधौ।
—वं. भा.

उ०—२ अठी चीतोड़ रा अधीस रांणा लाखा रा पट्टपकुमार चूंडा थी पुत्री रौ संबंध करण रै काज मंडोउर रै नरेस राठोड़ रणमाल आपरा पोळिपात्र भेजिया ।—वं. भा.

६ व्याकरण के अनुसार एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध या लगाव सूचित होता है।

७ एक साथ बंधने या जुड़ने की क्रिया ।

८ विवरण, हवाला ।

रू. भे.—संनबंध, समंध, सनबंध, सनमंद, सनमंध, सनमन, सनमुधि, सबंध, समंध, समध ।

संबंधी—वि.—१ सम्बन्ध रखने वाला, लगाव रखने वाला ।

सं. पु.—२ रिश्तेदार, नातेदार ।

उ०—१ जिण थी हाडां रा समग्र ही पांच सौ सिपाहां तिकां नूं बाढण काज आप री समस्त सेना पेलीजै तौ विस्वंभर विवाहिणि विवाही विहूं संबंधियां री वचन निबाहै ।—वं. भा.

उ०—२ अर आपां रा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता री संबंधी करण ढूका ।—वं. भा.

उ०—३ देवसिंह रौ इसडौ हुकम सुणतां ही गंवारां जांणियौ कहिया जिकां दहियादिकां रा संबंधियां जिम म्हांनूं संबंधी करण रौ राजकुमार रा मन में निस्चय थियौ तौ म्है तौ आज ही सौं मीणां री राह छोडि अधीस रा उपदेस मैं रहणौ अंगीकार कीधौ ।—वं. भा.

३ स्वजातीय बन्धु ।

उ०—साहूकार नें न मारूं साहूकार रा बेटा, पोता, सगा, संबंध्यां ने पिण न मारूं ।—भि. द्र.

रू. भे.—सनबंधी, सनमंधी, सांमधी ।

संब—सं. पु. [सं. शंब] १ इन्द्र का वज्र । (अ. मा; नां. मा.)

उ०—भुलंब अंब-खास कैं प्रबंब बंब की भरैं, प्रलंब लंब थंब पैं प्रपत्त संब सी परें ।—ऊ. का.

२ पाताललोक में रहनेवाले द्वय राक्षसों में से एक । चंडिका देवी ने इसका वध किया ।

उ०—केवडुं राज्य वासुदेव तणउं, जिहां ,समुद्र विजय प्रमुख दस दसार, परजुनप्रमुख अउठ कोडि कुमार, संब प्रमुख एक सहस्त्र दुरदात कुमार ।—व. स.

३ लोहे की नोंक वाला दस्ता ।

रू. भे.—संभू ।

४ कमर के चारों ओर पहनी जाने वाली लोह शृंखला ।

संबच्छर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

संबच्छरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संबत—देखो 'संवत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सतियास बरस संबत सत्रास । महमंत सरद आसोज मास ।—वि. सं.

उ०—२ निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी वर पाऊं। संबत छपनै रौ केवण सिरलोकौ, लौकिक लैवण नै सांभळज्यौ लोकौ ।—ऊ. का.

संबतआद—सं. पु.—मार्गशीर्षमास । (डिं. को.)

संबतसरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संबर—सं. पु. [सं. शंबर, शंवरः] १ युद्ध, संग्राम ।

उ०—मेघाडंबर ज्यूं मचै, धूंआं डंबर धियाग । रस संबर 'पातल' रचै, खित अविरळ झड़ खाग ।—जैतदान बारहठ

[सं. शवरम्] २ जल, पानी । (अ. मा.)

उ०—धोरा गैडंबर संबर बिण थाया । छपनै सूमां सा आडंबर छाया ।—ऊ. का.

३ मेघ, बादल ।

उ०—१ धुरधर असाढां अंबर घर-हरियौ । घोरा डंबर मैं संबर घर हरियौ ।—ऊ. का.

उ०—२ अंवर संवर विन संवर अकुलावै, जळहर वळियां विन उळियां जिय जावै।—ऊ. का.
४ एक प्रकार की बड़ी मछली।
५ मछली। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)
६ एक राक्षस जिसका शिव ने वध किया।
उ०—करि भारत भ्रम दक्खि, ईस नरपत्ति आडंबर। सिर संकर तोड़ियो, जांण कोपे रिपु संवर।—रा. रू.
७ एक राक्षस जो कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न द्वारा मारा गया था।
८ हिरण्याक्ष का पुत्र, एक दानव।
९ इंद्र-बलि युद्ध में बलि पक्षीय एक असुर।
१० मृग, हिरन।
११ अर्जुन नामक वृक्ष।
१२ एक पर्वत का नाम।
१३ दिवोदास, कामदेव आदि का शत्रु, एक दैत्य जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था तथा इंद्र के द्वारा मारा गया था।
[सं. शंवरारि] १४ कामदेव।
उ०—भणां गुंजहीटां अणां, संवर हतक सरांह। जैतवार ज्यांरा नयण, सरोज्हां सुथरांह।—बां. दा.
१५ पशु चौपाया।
उ०—अंवर संवर विण संवर अकुळावै, जळहर वळियां विन उळियां जिय जावै।—ऊ. का.
१६ एक पर्वत।
१७ देखो 'सांवर' (रू. भे.)
उ०—१ गरदां घर अंवर गूंधळियो, धमळागिर डूंगर धूंधुळियो। कटकां विच मीर सिकार करै, अिध नाहर संवर रीछ भरै।
—गु. रू. बं.
उ०—२ सुअर संवर ससा सीआल. फिरइं आहेडी तीह ना काल। हरिण रोझ जइ दीठउं किमइ, आगलि मरण नि पांमइं तिमइ।
—वस्तिग

संवरकंद-सं. पु.—एक प्रकार का कंद विशेष, गेंठी।
संवरत, संवरतक-सं. पु. [सं. संवर्त्त, संवर्त्तक] प्रलय। (डि. को.)
संवरनास-सं. पु. [सं. शंवरनाश] कामदेव।
उ०—ताळी लागी निणि समइ, वनि ग्या वेदव्यास। आवाहन करी आण्यउ, महिजइ संवरनास।—मा. कां. प्र.
संवरमाया-सं. स्त्री. [सं. शंवरमाया] १ इन्द्रजाल, जादू।
संवरसूदन-सं. पु. [सं. शंवरसूदन] १ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।
२ कामदेव।
संवरा-सं. पु. [सं. स्वयंम्वर] स्वयंम्वर।
उ०—सात जनम मायड़ सांभळिया, श्रीकम ताहरी तरुणी रे। संवरा मंडप सुर देखतां, सीता ल्याया परणी रे।—रुकमणि मंगळ
संवरारि-सं. पु. यौ. [सं. शंवर+अरि] १ कामदेव।
(डि. को; ह. नां. मा.)
उ०—दरपक कंदरप कांम कुसुमायुध, संवरारि रति पति तनुसार। समर मनोज अनंग पंचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार।
—वेलि
२ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।
रू. भे.—समरार।
संवरियो, संवरी—देखो 'संभरी' (रू. भे)
संवळ संवल-सं. पु. [सं. संवल] १ यात्रा में जाते समय रास्ते के लिए साथ में रखी जाने वाली खाद्यसामग्री।
उ०—१ सवि दिन सरिखा न लेखीइ, रे हई आस्यूं तूं जोइ। संवल करि न तूं हवइ, पुण्य पाप रे साथिइ होइ।
—नळदवदंती रास
उ०—२ इधन पांणी पकान्न संग्रहियां, खांडिया पीसिया सवळ सिद्ध ताडिउ —व. स.
२ भोजन।
उ०—पथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पैहुचाइ। सावज संवळ तोड़स्यइ, वेसासउ न जाइ।—ढो. मा.
३ सहारा, आश्रय।
उ०—अलिय विघन सब दूर पुलायइ, दांनइ दउलति होइ रे। इह भवि सुजस कीरति वाधइ, पर भवि संबल सोइ।—स. कु.
३ पूर्व की तेज हवा चलने से गेहूं की फसल में होने वाला रोग विशेष।
४ सेमल का वृक्ष।
वि.—बलवान, शक्तिशाली।
संवळी-वि.—१ बलवान, शक्तिशाली।
उ०—सत्र पेठा वनै मनै सक संवळी, दियै वरस इंड अेकण दोय। अगण गंजियो नह रहियो अेको, कोट छत्र तो आगळ कोय।
—राव धूहड़ रौ गीत
२ देखो 'संवळी' (रू. भे.)
उ०—अठै कतार खोसण नूं दौड़िया नै इण असवारां पचीसां ही लै ईस्वर रौ नांम संवळी गूंद म थे पड़े तिम तूट पड़ीया।
—वरसै तिलोकसी भाटी री वात
संवसादन-सं. पु [सं] केशरी नामक वानर के द्वारा मारा गया एक दैत्य।
संवाध-सं. पु [सं.] १ बाधा, अड़चन
२ भीड़, समूह।
३ संघर्ष, झगड़ा।
४ भग, योनि।
५ कष्ट, पीड़ा।
६ नरक का मार्ग।
संवारणो, संवारबो—१ स्मरण करना, याद करना।

२ भजन करना, स्तुति करना।

उ०—पकड़नीतत अनीत परहर, एहै गीत उचार। रीत विरियां चीत राघव, सीतावर संवार।—र. ज. प्र.

३ देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू भे.)

संवारणहार, हारौ (हारी), संवारणियौ—वि० ।

संवारिश्रोड़ौ संवारियोड़ौ, संवारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवारीजणौ, संवारीजबौ—कर्म वा०।

संवारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ.

२ भजन किया हुआ, स्तुति किया हुआ।

३ देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवारियोडी)

संवाहणौ, संवाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभावौ' (रू. भे.)

उ०—सू मोनूं ऊंट भेकिनें उतारै। ज्यू हूं कपड़ौ लूंगड़ौ संवाहूं काजळ टीकौ करूं।—कांवळै जोइयै नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ जिसड़ै ही रांमसिंघ जी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीति तिसड़ै ही मूरछा आइ पड़िया। तिसडै गोवलजी संवाह्या।

—द. वि.

उ०—३ इसडौ विलंद संवाहै आजा, मोटौ भाग तूझ महाराजा।

—सू. प्र.

उ०—४ आगै मरद बैठौ दीठौ। उद कटारी हाथ में थी सो संभाह भीतर आय हाथ झाल लीयौ। कह्यौ, 'तूं कुण छै? संवाहि, म्हारौ चोर छै।'—कुंवरसी सांखला री वारता

संवाहणहार, हारौ (हारी), संवाहणियौ—वि०।

संवाहिश्रोड़ौ, संवाह्यियोड़ौ, संवाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवाहीजणौ, संवाहीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।

संवाहियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवाहियोड़ी)

संवी—सं.स्त्री. [स. शिवा] फली। (डिं. को.)

संवुक—सं. पु. [सं. शंबुकः] १ घोंघा। (डिं. को.)

२ शंख।

३ हाथी के सूंड की नोक।

४ हाथी का कुंभ।

५ एक तपस्वी जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण पुत्र मर गया था। इसी पाप के कारण श्रीराम ने इसका वध किया था।

६ स्कन्द का एक सैनिक।

७ एक शिवावतार का शिष्य।

८ कश्यप एवं दिति के पुत्रों में से एक पुत्र।

रू. भे.—संवूक।

संवुकावरत—सं. पु [सं. शंवुकावर्त्त] घोंघे की भंवरी के सदृश घूमा हुआ भगंदर रोग का एक रूप।

संवुद्ध—वि. [सं.] १ जागृत २ सं.पु.—चेतन्य।

२ ज्ञानी।

३ गौतम बुद्ध।

४ जिनदेव। (जैन)

संवुद्धि—सं. स्त्री. [सं.] १ समझदारी. बुद्धिमता।

२ आह्वान, पुकार।

संवूक—देखो 'संवुक' (रू. भे.) (डिं. को.)

संवेसर—सं. पु. [सं. शंवेसरू] नींद, निद्रा, शयन। (डिं. को.)

संवोध—सं. पु. [सं.] १ पूर्ण बोध।

२ सांत्वना, ढाढस।

३ पूरी और अच्छी जानकारी।

संबोधन—सं. पु. [सं.] १ आह्वान करने या पुकारने की क्रिया।

२ ज्ञान कराने या जानकारी देने की क्रिया।

३ समझाने की क्रिया।

४ व्याकरण में एक कारक।

संबोधित—वि [सं.] १ जिसको संबोधन किया गया हो।

२ जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो।

३ जिसको बोध कराया गया हो।

संव्वाहणौ, संव्वाहबौ—देखो 'संभाणौ, संभावौ' (रू. भे.)

उ०—उड्डि महाभर कंध, भार भलपणं संव्वाहै। वेगड वांमी वहण, प्रथी प्राभौ पतिसाहे।—गु. रू. वं.

संव्वाहणहार, हारौ (हारी), संव्वाहणियौ—वि०।

संव्वाहिश्रोड़ौ, संव्वाहियोड़ौ, संव्वाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संव्वाहीजणौ, संव्वाहीजबौ—कर्म वा०।

संव्वाहियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संव्वाहियोड़ी)

संभ—सं पु. [सं. शंभ] १ प्रसन्न एवं हंसमुख पुरुष।

२ इन्द्र का वज्र।

३ शंभासुर नामक एक दैत्य।

उ०—१ कना रांम कट्टतें रसा रांमण सिर छाई, संभ सेन साळूळे कना माथै महामाई।—रा. रू.

उ०—२ कैटभ मधु कुंभ कवंध कचरिया संख संभ सारीसै। खळ अवगाढ अनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै।—र. ज. प्र.

४ सृष्टि, ससार।

उ०—उतपति कुण लहइ तो ईसर, ए मांनवियां हुवइ अचंभ। आद अनाद तणां तूं आछई, संभनाथ नीसरइ संभ।

—महादेव पारवती री वेलि

वि.—१ महान, जबरदस्त, प्रचंड।

उ०—ऊगतौ मोसरां दहायक अभावां, सीतवर सियायक गात रा संभ। 'मांन' रा वाळिया वचन वेडीमणा, खळां रा गाळिया गरब गजखंभ।—बारठ राजूरांम

२ देखो 'संभु' (रू. भे.)

उ०—रिणराज ग्रह मंभ सेस मोद भांग रेह, मेर तुरीबंध पंद तुरंग नपंगर। पंड नूत रामचंद कम्प पळी जूह पांणां, तेईसां दीरघ माग चोईसां तिलक।—राव बखतसिंघ चुवांण री गीत

संभग्न—सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

वि.—१ खंडित, टूटा हुआ।

२ पराजित।

संभजीवत—देखो 'जीवतसंभ' (रू. भे.)

उ०—भाट नाराजियां वहेतां भेलतो, जोरवर 'बुधा' री वेळ जोपै। संभजीवत हुवो साजि खळ भेफळै, ग्रवळ 'दोळो' कमळ लोह ग्रोपै।

—दौलतसिंघ हाडा री गीत

संभड़-वि.—नगण्य, तुच्छ।

उ०—करे न संका कोय, गांव धणी संभड़ गिणै। रैत बराबर होय, रोळट्ट में राजिया।—किरपाराम

संभणौ, संभबौ-क्रि. अ.—१ कटिबद्ध या तैयार होना, उद्यत होना।

उ०—१ मू राव सेतसी साथ ग्रावतो दीठो तरै ढोल दिरायौ। तरै राव प्रथीराज ग्रगैराज ही संभिया तितरै साथ उणांरो ग्रागै पाछै ग्रावतो गयो सूं ग्रै बेढ करता गया।—नैणसी

उ०—२ न्हाटता मिनख रा हाथ में नागी तरवार ही। लारो करता मिनख साव ठाली हाथ हा। रुळियारणी करतां हाथोहाथ ग्रवड़ीजगो तो लोग उणनै कूटण संभिया। तद वौ नागी तरवार लेय कायर री गळाइ भाग छूटो।—फुलवाड़ी

२ छाना, उमड़ना। (बादल)

उ०—ढळतो मास ग्रसाढ ग्रजूणो सांवण संभियो। घण रै जीवण लोभ यक्ष री हिवड़ो भरियो।—मेघ

३ सुसज्जित होना।

उ०—धारै ऊहड़ धांधलां, सांम तणै छळ सार। तेरह साखां संभ मिळै, लागां गंजणहार।—रा. रू.

४ देखो 'संभळणौ, संभळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वांणियै इसो ज्वांन कियो, सो वरस दो २ तांई तो राव गांगोजी संभ ही नहीं सकियो।—नैणसी

उ०—२ एक सेठां री चोखळां में वारो-तारो। पीढियां सूं घर संभियोड़ो।—फुलवाड़ी

संभणहार, हारौ (हारी), संभणियौ—वि०।

संभिग्रोड़ौ, संभियोड़ौ, संभ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभीजणौ, संभीजबौ—भाव वा०।

संमहणौ, संमहबौ, संमुहणौ, संमुहबौ—रू० भे०।

संभनाथ—देखो 'संभूनाथ' (रू. भे.)

उ०—उतपति कुण लहइ तो ईसर, ए मांनवियां हुवइ ग्रचंभ। ग्राद ग्रनाद तणउ तूं ग्राद्यइ, संभनाथ नीसरइ संभ।

—महादेव पारवती री वेलि

संभम-सं. पु.—१ संतति, सन्तान।

उ०—तीरणइं ग्रवसरि मथुरापुरी, ग्रवतरीउ कंसारि। वसुदेव देवकी संभम, निरुपम देव मुरारि।—धनदेव गणि

२ देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

संभर-सं. पु.—१ महादेव, शिव।

उ०—'ईंदो' इंद्र जिही पण ग्रादर, सुर सुर धरम रहावण संभर।

—रा. रू.

२ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रागैही वडे महाराज 'ग्रजमाल' सैं संभर के खेत हमारै विरादर हसनखां गिरदखां हुसैनखां नै जंग कर सच्चे दिल सैं सिर दिया।—सू. प्र.

उ०—२ ग्रासथांनोत कियां बळ ग्रसमर, धर 'धूहड़' करतै धक-चाळ। पोहे जैसांण सोनगर पहलो, रसै पेस कस संभर साळ।

—राव धूहड़ री गीत

३ देखो 'सांभरियौ' (रू भे.)

उ०—पत्र पढतां ही हड्डाधिराज रै पंचम ग्रनुज मुहकमसिंह ग्रापरा ग्रधीस ग्रग्रज रा ग्रादेस रै ग्रनुसार भावी रा भरोसा मैं भ्रम देखि प्राची रा पति सुजासाह नूं तनि ग्रापरै देस ग्राइ ग्रनुगत भाव दिखाइ संभर सिरोमणि सत्रु साल रै पगां मैं प्रणांम कीधो।

—वं. भा.

संभरण-सं. पु.—पालन-पोषण।

२ संचय, परिग्रह।

३ तैयारी।

४ सामान।

संभरणौ, संभरबौ-क्रि. स.—१ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ स्रोहर परहर ग्रवरनूं, मत संभरै ग्रयांण। तरु छंडै लागी लता, पत्थर चै गळ जांण।—ह. र.

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ ग्रणदिठा तोई। खिण खिण ग्रंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ।—ढो. मा.

उ०—३ कूंभड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिलै वर्णहि। सूती साजण संभरया द्रह भरिया नयणेहि।—ढो. मा.

२ देखो 'सांमळणौ, सांमळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रो 'गोगो' लछुसर उतरियो, स्रवणै सत्र नेड़ोय संभरियो।

—गो. रू.

उ०—३ राठोड़ विचारै ता परम, ग्राप ग्राप मत उच्चरै। 'सोनंग' 'दुरग' ग्रणसंक सो, संक न कांई संभरै।—रा रू.

संभरणहार, हारौ (हारी), संभरणियौ—वि०।

संभरिग्रोड़ौ, संभरियोड़ौ, संभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संभरीजणौ, संभरीजबौ—कर्म वा०।

संभरथळ-सं. पु.—वह स्थान जहां विश्नोई संप्रदाय का प्रवर्त्तन जांभोजी द्वारा किया गया था।

उ०—संभरथळ रळि ग्रांवणौ, जित देव तणो दीवांण। परगटियै

पगड़ौ हुवौ, निस अंधियारी भांण।—वील्हौजी

रू. भे.—संभराथळ।

संभरथळसांमी—सं. पु.—जांभाजी के लिए उनके भक्तों द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

रू. भे.—संभराथळसांमी।

संभरपुर—सं. पु.—सांभर नगर।

उ०—इम ईस्वर दुलही उभय, आयौ परणि उदार। संभरपुर कीधा सतत, वितरण रण मख वार।—वं. भा.

संभरराज—सं. पु.—चौहान वंशी क्षत्रिय।

संभरवाळ—सं. पु.—सांभर नगर का, चौहान राजपूत।

उ०—विडै चहुवांण जठै विकराळ, उजाळत संभर संभरवाळ।

—सू. प्र.

संभरा—सं. पु.—१ चौहान क्षत्रिय।

उ०—गौरां धू करैगौ मेघाडंमरां पंड रै घाव, पाटारांणी गूमरां हरेगौ पैलै पार। चम्मरां ढुळतां हाडौ गह्लां उवरेगौ चंगी, साजोत संभरा खेती तरेगौ संसार।—जसो आढौ

सं. स्त्री.—२ शाकभरी देवी।

उ०—तुही सिध आसापुरा रूप तापै, तुही अंबिका मात अंबात आपै। तुही अरबुदा अद्र आबू अग्राजे, तुही वैचरा संभरा मात वाजै।—मे. म.

संभरांणिव्रत—सं. पु. यौ.—एक व्रत विशेष।

उ०—मनुस्य तणी छइ घणी तो जाति, पाप करइ इकु दीह नइ राति संभरांणीव्रत सिम धाइ, पाछइ वली निगोदह माहि।

—वस्तिग

संभराथळ—देखौ 'संभरथळ' (रू. भे.)

उ०—खोड़ौ ऊंट भिरै जंगळ मैं, सरण आयौ संभराथळ कै। हिम्मतराय हरी गुण गावत, कट गयौ पाप रजा करकै।

—हिम्मतराय

संभराथळसांमी—देखौ 'संभरथळसांमी' (रू. भे.)

उ०—आयौ गुर 'जंभ' अचंभ अजोनी, धरम धुराऊ दाखवियौ। संभराथळसांमी अंतरजांमी, वोहनांमी हरि खेत कियौ।

—गोकळजी

संभरिय, संभरियौ, संभरी, संभरीक, संभरीनरेस—सं. पु.—चौहान वंश के क्षत्रिय (राजपूत) के लिए प्रयुक्त विशेषण शब्द।

उ०—१ चहूं छत्रधारी सुण वाखांणियां रायथांनां, हुंका वंका फटै संका उजक्कै हठेल। लेवा आयौ छाक जकै पाछौ माग लागौ, ऊभौ जेत-खंभ हुआं संभरी अठेल।—रावत जोधसिंह रौ गीत

उ०—२ भखियौ ज लूण भूपाळ रौ, घणा रिजक सांभल घणौ। कहि संभरीक ऊजळ करां, तिकौ लूण सांभर तणौ।—सू. प्र.

उ०—राजै सुरां में सुरेस रूप खगां में खगेस राजा, समाजै द्वीजेस गणां मुन्यां में मुनेस। ग्रहां में ग्रहेस छाजै वसू में गोलोक नांमी, नरां में विराजै असो संभरीनरेस।

—महाराजा भगतरांम हाडा रौ गीत

वि. वि.—सांभर प्रान्त पर प्राचीन काल से चौहानों का आधिपत्य रहने के कारण इनको संभरीनरेश तथा संभरीराव आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इनका जातीय विरुद भी 'संभरीराव' ही है। इनकी कुलदेवी शाकंबरी देवी है जिनका प्राचीन मंदिर आज भी सांभर के पास विद्यमान है।

रू. भे.—सइंभरि, सबरियौ, संबरी।

संभळणौ, संभळबौ—क्रि. अ.—१ सचेत होना, सावधान होना।

उ०—१ नर मूढ संभळै नहीं, खित पर ठोकर खाय। भुगतै दुख निसदिन भमै, इण में संसय नाय।—नारायणसिंह सांदू

उ०—२ संभळ संभळ पग दीज्यौ साधां अै मारग अवधूतां रा।

—अग्यात

उ०—३ जिण वरत रै सहारै वौ वेरा में उतरियोड़ो हो, उणनैं कियां वाढतौ। म्हैं थोड़ौ संभळनैं कह्यौ।—अमर चूंनड़ी

२ ठीक स्थिति में आना, हालत सुधरना।

३ देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

उ०—रांम सजीवण-मंत्र रट, वयणां रांम विचार। स्रवणां हर गुण संभळै, नैणां रांम निहार।—ह. र.

उ०—२ घण घणा थाट भांजण घड़ण, विस्व-ईस संभळ वयण। 'ईसरौ' कहै असरण सरण, नमौ नाथ तौ नारियण।—ह. र.

उ०—३ संभळत धवळ सर साहुळि संभळि, आळूदा ठाकुर अलळ। पिंड ब्रहरूप कि भेख पालटे, केसरिया ठाहे क्रिगल।—वेलि

उ०—४ पंडव तणउं चरीतु जो पढए जो गुणइ संभळए। पाप तणउ विणासु तसु रहइ ए हेलां होइसि ए।—सालिभद्र सूरि

संभळणहार, हारौ (हारी), संभळणियौ—वि०।

संभळिओड़ौ, संभळियोड़ौ, संभळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभळीजणौ, संभळीजबौ—भाव वा०।

संभळांमणी—१ देखो 'सुणावणी'।

२ देखो 'भोळावण'।

संभळाणौ, संभळावौ—क्रि. स.—१ सौंपना, देना।

उ०—१ नाच रौ नसौ उतरतां ई इंदर-भगवांन सोच्यौ के इत्तां में ई लार छूटी। अजेज जूंन्यौ-सरप संभळाय वींदणी री मांग पूरी।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं थनै ठाया-पतायां वताय देवूं थूं बेवतौ आ पोटली उठै संभळाय जाजै।—फुलवाड़ी

उ०—३ तीन दिन अर तीन रात तांई वै उठै ई ढबिया। धणी आवै तौ सांयड संभळाय दै। कठै ई ऊजड़ ढळगी तौ बापड़ौ विरथा डाफा खावैला। देखां मेळा में कोई धणी-धोरी आवै तौ उठै ई हाथौ हाथ सूंप दै आ सोच वै सांयड नै साथै लै ली।

—फुलवाड़ी

२ प्राप्त कराना।

उ०—डाढाळो नीं पड़ुत्तर देवै वण पै'ला ईं चौहरा हेज छळ-कावता कंवरा नागा—जलम देव पगां आपो संभळायां पछै आप दोनां रो फरजन तो पूरो व्हियो।—फुलवाड़ी

३ सुनाना।

४ कहना।

५ चोट या हानि से बचाव कराना।

६ हालत सुधारना।

७ काम का भार उठाना।

८ बतलाना, समझाना।

उ०—ब्याव रै खरचा रो सगळो हिसाब संभळाय म्हनैं तीज रै सै दिन दिसावर विणज सारू सिधावणो है।—फुलवाड़ी

संभळाणहार, हारो (हारी), संभळाणियो—वि०।

संभळायोड़ो—भू० का० कृ०।

संभळाईजणो संभळाईजबो—कर्म वा०।

संभळावणो संभळावबो—रू० भे०।

संभळावण, संभळावणि, संभळावणी-सं. स्त्री.—१ देखो 'भोळावण, भोळावणी'।

उ०—हरमा समरथ सोभी रे बाई रो संभळावण दीनी सूंप। म्हारा समरथ सोभी बाई रे सिर पर छाया रे राखियो।

—जीणमाता रो गीत

२ देखो 'सुणावणी'।

संभळावणो, संभावबो—देखो 'संभळाणो, संभळाबो' (रू. भे.)

उ०—१ घढ़णी दियो हो जकांरो पाछो घेरयो नहीं, मडणी लियो जकारो ओठो मोड़यो नहीं। ईं हाथ लियो वीं हाथ डकारयो संभळावण री सार नहीं जांणी।—दसदोख

उ०—२ सउदतार पेखी पेखी सुख लहइ मारू नइं संभळावी कहइ।—ढो. मा.

संभळावणहार, हारो (हारी), संभळावणियो—वि०।

संभळाविओड़ो, संभळावियोड़ो, संभळाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संभळावीजणो, संभळावीजबो —कर्म वा०।

संभळि—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—१ काढ्यो तुरकां कैद सूं, सेवारी कर साय। संभळि वाळो रूप सज, पूंगळ दीध पुगाय।—पदमजी बारहठ

उ०—सेगो नाई कैद सूं संभळि रूप सजाय। मेहाई कीधी मया, अवसी विरियां आय।—पदमजी बारहठ

उ०—३ जुलम ग्रह मांहि रै जकड़ जादम जुड़ै, लै कवण अमन जळ तणो लेखो। संभळो राजकर सिधू पुगा सकत, संभाळै भकत निज राव सेखो।—वालाबक्स बारहठ

संभळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ सचेत हुवा हुआ, सावधान हुवा हुआ.

२ ठीक स्थिति में आया हुआ, हालत सुधरा हुआ।

३ देखो 'सांभळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संभळियोड़ी)

संभळी—देखो संवळी' (रू. भे.)

संभव-सं. पु. [सं.] १ उत्पत्ति, आविर्भाव।

उ०—१ सिव श्रवन कन्या हूंत सभव अगनि जोति अनोप ए। सुभ द्रस्ट भूप निहारी प्रज महि अघट किरि सुख ओपए।

—रा. रू.

उ०—२ सीहा कै कुळ संभव सदीव, जोवका हेत हसि देत जीव।

—ऊ. का.

२ मुमकिन।

उ०—रचना ईस्वररी ईस्वरता रोचै, संमदम स्रद्धा विण संभव नहि सोचै।—ऊ का.

३ संयोग।

४ प्रमाण।

उ०—जठै और कोई गति न जांणियां चालुक वंस री तेवीस ही पीढियां मैं घणां रै अंकस्थ पुत्र हुवा होई इसड़ा ही संभव रा विचार थी खटावै।—वं. भा.

५ स्त्री प्रसंग, सहवास, मैथुन।

६ कारण, हेतु।

उ०—१ जिण थी स्वतंत्र संभव मैं एक आपरा आलय हूं काढि देण रो उपकार करि जिकण रा सीलणा में सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्ते वहे तिकण रो अंत इसड़ोही खटावै।

—वं. भा.

उ०—२ सातवाहन रा चरित्र नूं आदि लेर अस्थियाळ वीसळदेव वल्लभाचारय रा चरित्र परयंत इसा ही प्रमांणिकां रै लिखियो कही गई तथा कही जावसी तिण कारण करि कोई उदंत रा संभव मैं संदेह ही दीसै तथापि समरथां रो लेख बलात्कार ही खटावसी।

—वं. भा.

७ किसी काम या बात के घटित होने की अवस्था।

८ सर्व राजा का पुत्र, एक राजा।

९ शंकर का पुत्र, गजानन।

उ०—सिव संभव सिव रूप सुरेसर सिव गुण दियण प्रणांम कथै सुर।—रा. रू.

वि.—१ जो किये जा सकने के योग्य हो।

२ जिसकी संभावना हो, संभावित।

संभवणो, संभवबो-क्रि स.—संभव होना।

उ०—१ सीहां विपत न संभवै, ठाळी जाय न ठाळ। हाथळ सूं पल हेक में, सीहां हुवै सुगाळ।—बां. दा.

उ०—२ वंकचूलीया मैं कह्यो संवत अठारै तेपनैं पछै धरम रो उद्योत होसी। इण वचन रै लेखै तो तेपनां पहिली साध नहीं इम संभवै।—मि. द्र.

संभवनाथ-सं. पु.—जैन धर्म के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे

तीर्थंकर।

उ०—समय सुंदर कहै ते तीर्थंकर, संभवनाथ अनाथ को पीहर।

—स. कु.

संभा-सं. स्त्री.—शिवा, पार्वती।

संभाऊ-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

२ इस शाखा का व्यक्ति।

वि.—स्वाभाविक।

उ०—किसनूं रै घर में भूवाजी फिरियोड़ी ही। लाई लाई-खाई करती ही। भाग सूं संभाऊ आंख्यां दूखणी आयी।—वरसगांठ

संभाखण—देखो 'संभासण' (रू. भे.)

उ०—भरथ री कवसल्या जी सूं संभाखण।—र. रू.

संभाग, संभागि-सं. पु. [सं. सम्भाग] दान।

उ०—गय भवि भगतिइं अति संभागि मइ मुनि वहिराव्या। साहमीयवच्छल संघ सहित मइ गुरु पहिराव्या।—नळदवदंती रास

संभागियौ, संभागी—देखो 'सभागियौ' (रू. भे.)

उ०—भाटा तूं संभागियौ, पीछोळा री टग्ग। गुललंजा पानी भरै, ऊपर दै दै पग्ग।—अग्यात

संभाणौ, संभाबौ-क्रि. स.—१ कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, कार्य भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना, पालन करना।

उ०—राव मंडळीक तो गैहलो हुवौ। तरै 'जेसौ' मंडळीक री लोहड़ौ भाई, तिण सारी धरती रौ भार संभायौ। धरती रा सारा राजपूत लेनै भाखरै पैठौ।—नैणसी

२ लेना, उठाना।

उ०—च्यारूं ठकरांणियां पूरी सावचेत होय ऊभी ही। सिंध रा डाकियां माथै निजर पड़तां ई हाथां में कोपरिया संभाया। जोसी री वात तौ साव साची निकळी।—फुलवाड़ी

३ सम्भालना।

उ०—मोती-मांणक भाली नुं दीयां, सो संभाय उंचा राख्या। आप सिनांन कर जीमण जीमीयो। रात खींवसी जी पोढण पधारीया, खुस्याळ रहा।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ धारण करना।

उ०—हरीया कळि में आयकै, सांमीपणो संभाय। ग्यांन गरीबी ना गही, आपा अहूं उठाय।—अनुभववांणी

४ पड़ते या गिरते हुए को बीच में रोकना।

५ सुसज्जित करना।

६ सन्नद्ध करना, तैयार करना।

७ युद्धार्थ गढ या किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—इण दिस 'अजन' लियां दळ आयौ, सांभर वालै कोट संभायौ। क्यौं मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ मुड़ गयौ कोट निठ लीधौ।

—रा. रू.

संभाणहार, हारौ (हारी), संभाणियौ—वि०।

संभायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संभाईजणौ, संभाईजबौ—कर्म वा०।

संबाहणौ, संबाहबौ, सम्बाहणौ, सम्बाहबौ, संभावणौ, संभावबौ, समाणौ, समाबौ, संमावणौ, संमावबौ, संमाहणौ, संमाहबौ,

—रू० भे०।

संभायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ उत्तरदायित्व निभाया हुआ. २ लिया हुआ, उठाया हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ सुसज्जित किया हुआ. ५ तैयार किया हुआ. ६ युद्धार्थ किले आदि को सजाया हुआ, तैयार किया हुआ. ७ सम्भाला हुआ।

(स्त्री. संभायोड़ी)

संभार-सं. पु. [सं.] १ भार, वजन।

उ०—आ सुणतां ही अणहिलपुर रौ अधीस सेना रा संभार सूं मही रै मचोळा देतौ गजनवी रौ वेग झेलण रै काज जवनेस रौ राह रोकि सांभति सहर आडौ आय पड़ियौ।—वं. भा.

२ पालन-पोषण।

३ संचय, संग्रह।

४ सामग्री, सामान।

५ धन, सम्पत्ति।

६ अधिकता, बाहुल्यता।

७ समूह, ढेर।

८ देखो 'संभाळ' (रू. भे.)

उ०—१ रांमनांम निज मूळ है, और सकळ विसतार। जन हरीया फळ मुगति कूं, लीजै सार संभार।—अनुभववांणी

उ०—२ हां है तौ ही वो नहिं भूलणहार। हां है हरि सबरी करण संभार।—अग्यात

संभारणौ, संभारबौ-क्रि. स.—१ मूंदना, पलक बंद करना या झपकाना।

उ०—सारद गणेश नारद सनक भूला पलक संभारणै। रह व्योम अलह आहट रथां, कळह संपेखण कारणै।—रा. रू.

२ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आय अपति पूछी विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही। विखै अग्यांन धरम वीसारी, सूरजकुळचौ धरम संभारौ।—सू. प्र.

उ०—२ गउखै वइठा एकठा, मांळवणी नइ ढोल। अबर दीठउ ऊनयउ, तिम संभारयउ बोल।—ढो. मा.

उ०—३ संभरियां संताप, वीसारियां न वीसरइ। काळेजा बिचि काप, परहर तूं फाटइ नहीं।—ढो. मा.

उ०—४ मरण जनम चौ सळ मिटण सौ सलभ व्है संभार। जम यौ सळ भंजै जिसौ, कोसळ राज कंवार।—र. ज. प्र.

३ देखो 'संभाळणौ, संभाळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जणियां सावण हुया, धड़ि उलटी भंडार। विरह–

महाराज उमराव के ताकूं संभार ।—डो. मा.

उ०—२ दिन दिखण मेल्हिया, पीठ उतराध विचारै । सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणी संभारै ।—रा. रू.

संभारणहार, हारौ (हारी), संभारणियौ —वि० ।

संभारिओड़ौ संभारियोड़ो, संभारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

संभारीजणौ, संभारीजबौ - कर्म वा० ।

संभारियोड़ो—भू. का. कृ.—१ मूंदा हुआ, पलक बन्द किया हुआ ।

२ देखो 'समरियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो संभाळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संभारियोड़ी)

संभाळ—स. स्त्री.—१ विशेष अवसरों पर अपने संबंधियों एवं रिश्तेदारों को भेंट या उपहार-स्वरूप भेजी जाने वाली खाद्य सामग्री ।

उ०—१ मेवट वांनै मांढांणी वहीर करिया । साथै कोई संभाळ घाली नीं कोई बींदड़ी । आया ज्यूं ई पाछा नगड़िया । कोई जूतो ई मूंठ वाई सूं मिळण नै नीं आयी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सांवण री तीज अर राखी माथै छवूं बवां रै पीवर सूं भांत भांत री संभाळां आवती । ओढणा, खोपरा, नाळेर, मगद, अर मावा इत्याद । पण छोटकी बींदणी रै कोई व्है तो भेजे ·
—फुलवाड़ी

उ०—३ वो आदमी डरतो डरतो जवाब दियो के कटोरदांन में पतूंदी अर सांकळियां है । सासरै संभाळ लै जावै । तद सांप आवतो होय बोल्यो—आ संभाळ खेसला रै पल्लै बांधलै ।
—फुलवाड़ी

२ हिफाजत देखभाल ।

उ०—१ उणनै इण भांत रोवतां देखने ठाकरसा री मन ई अजेज चळ-विचळ व्हैगो । पूछ्यो—चौधरी, बात कांई व्ही । म्हारी भींवरी कुत्तो तो राजी खुसी है । म्हारै बिना उणरी संभाळ कुण करतो व्हैला ।—फुलवाड़ी

उ० –२ सह घर री संभाळ दूजां रै हाथां दिवै । भला भला भोपाळ, रुळता दीठा राजिया ।—किरपारांम

३ सुपुर्दगी ।

४ निरीक्षण, परीक्षण, जांच ।

उ०—आखी वनराय जांणै पानणै भूलण लागी । पांन-पांन अर कूंपळ-कूंपळ री सावळ संभाळ व्हैगी ।· मोटा पंखियां रै भपीड़ लागण लागा । छोटा पंछी डाळां सूं चायळ नै बैठग्या ।
—फुलवाड़ी

रू. भे.—संभार, संभाळ ।

संभाळणो, संभाळबौ—क्रि. स.—१ हिफाजत करना, देखरेख करना ।

उ०—१ आपरै हाथ सूं कतरै, रंग लगावै । टाकर चोड़ै, बूंबो देवै तथा धुवांणी सूकाइनै पूरी संभाळै है । एवड़ र लाड-कोड सूं ही राजी रै'वै अर धाप र खावै ।—दसदोख

उ०—२ दोनूं राजकंवर कह्यो—रमण-खेलण रा दिन है, जको धूळ में रमा । म्हारी मंसा तो भूंडी है कोनीं । अर गादी रो सूंप्यो राज तो कैड़ा गैला-गूंगा संभाळ लेवै । नवो राज थरपां तो मरदाई । - फुलवाड़ी

उ०—३ पण राजकंवर तो वरजतां वरजतां वहीर व्हैगो । बाप इण भांत मांदगी में तळीजै अर वो राज-काज संभाळण री बात सोचै तो इण सोचणा में धूड़ है ।— फुलवाड़ी

उ० —४ बांधउं बड़ री छांहड़ी, नीरूं नागर बेल । डांभ संभाळूं करहला, चोपीड़ सूं चंपेल ।—ढो. मा.

२ बनाये रखना, विद्यमान रखना ।

उ०—घर में घणी माल-मता तो नहीं, पण वडेरां रै जमांनै सूं चाली आवती इज्जत आबरू नें बियां, जियां-कियां संभाळ राखी ही ।—दसदोख

३ सुपर्दगी लेना ।

उ०—१ ऊमर में कदै ई माया री परस नीं करचो जको थारै गियां पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हैणो पड़चो । अबै वा ई जोखम संभाळ लै । फुलवाड़ी

उ०—२ नीतर म्हैं तो सुगनचिड़ी बणनै आ कांकड़ में उडी । संभाळो थांरो डंडकमंडळ । पछै थांमै फोड़ा पड़िया तो म्हैं नीं जांणूं ।—फुलवाड़ी

४ लेना, रखना ।

उ०—सेठांणी थूं आज सूं ई अै कूंचियां संभाळ । जरुरत वाळां वास्तै सगळा भंवारा उघाड़ दै ।—फुलवाड़ी

५ देखना, सुधि लेना ।

उ०—१ ऊपर आया तरै गांगै ठाकुरां री पालखी संभाळी तरै पालखी नहीं तरै पाछा वळिया ।—नैणसी

उ०—२ ठंडा होणै री थोड़ो-घणो ही भो नीं है, बेटी नै घड़ी-घड़ी संभाळै, मूंढो ढकै है ।—दसदोख

उ०—३ मैलो कोटण रै तळाव गयो । प्रभात हुवो ताहरां पोतो संभाळियो । देखै तो पोतो नीं ।—ऊदै ऊगमणावत री वात

उ०—४ जीवण बचावण नै कोई कोठा कोठियां में वळियो, कोई घास री बागर में घुस्यो तो कोई राली गूदड़ां में वड़ग्यो । किणै ई रैवारियां रै वाड़ां री सरण लीवी, किणै ई भीलां रा झूंपा संभाळ्या तो कोई रा पग थेट खेतां री बाजरियां में जावता ठंभिया ।—अमर चुंनड़ी

उ०—५ स्यांणा पंडित आवै झाड़ांला काजी जावै । पंडित जाप करै पूजारी माळा फेरै । जोतकी टीपणै में गिरै-गोचर संभाळै जोतकी धूप खेवतां थकां जोत करै ।—दसदोख

६ जांच पड़ताल करना, निरीक्षण करना, परखना ।

उ०—१ बादसाह कही ऐसा कोई आदमी नहीं मैं सब संभाळिया ।
—आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ ठाकरसा घोड़ा सूं हेटै उतर वेटा नै संभाळियौ तौ वा माटी। ठाकरसा नै रीस अणूंतो आई, दुख ई अणूंतो व्हियौ। अेकाअेक कंवर इण भांत धोखौ देय जावैला, अैड़ी बात तौ सपना में ई नीं जांणी ही।—फुलवाड़ी

७ प्रबंध करना, व्यवस्था करना।

८ पालन-पोषण करना।

९ ढूंढना, तलाश करना।

उ०—वेऊ फोजां जुद्ध सौं धापिनै उवै उवै कांनी ऊभी छै। वीरमदे घायल आपरा संभाळै छै।—नैणसी

१० गिरते हुए को बीच में रोकना, थामना।

११ आश्रय देना।

उ०—जामण रा रै जाया, अंबर तो पटकी नैं धरती संभाळी।

—जीणमाता रौ गीत

१२ उत्तरदायित्व लेना या वहन करना।

१३ संचालन करना, चलाना।

उ०—सीत मैं कैड़ी-कैड़ी काली बातां करै। आं नै तौ कीं चेतौई कोनीं, बेटा थारा भाय जी अबै संसार में नीं रैवैला। सगळौ धंधौ थनै संभाळणौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै टाबर मोट्यार व्हियां घर रौ धंधौ संभाळै जद वौ बांमे खोड़ां काढै, बांनै बात बात माथै टोकै।—फुलवाड़ी

१४ वृद्धि प्राप्त करना।

उ०—भला खात अर पांणी बिनांई खेत में कद साख आपौ संभाळै।—फुलवाड़ी

१५ यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नहीं।

उ०—अपनी रिद्ध संभाळ सब, करै दरवकां पीठ। आवध बंधै ठठिया, आकारीठ गरीठ।—रा. रू.

१६ अधिकार करना, कब्जा करना।

उ०—सुलै हुई सुख रूपनौ, भागी दळां दुवाळि। सीमां नींमां गढ मुलक, सगळै लिया संभाळि।—गु. रू. वं.

१७ सामाजिक व्यवहार आदि में परंपरा संबंध आदि का निर्वाह या पालन करना। बिगड़ने न देना।

उ०—सेवट वा तौ सुभट कै दियौ—थांरा घर बिचै म्हनैं म्हारौ गैं'णौ घणौ वाल्हौ लागै। थें सगळा साख नैं संभाळौ अर म्हांनै तौ न्यारा कर दो।—फुलवाड़ी

१८ रोकना, थामना।

१९ ठीक ठाक करना, ठीक करना।

उ०—चौथे प्रहरै रैण के, कूकड़ मेल्ही राळि। धण संभाळै कंचुवौ, प्री मूंछां रा वाळि।

२० देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू रावत राजा रांमका, कदै न बिसारी नांव। आतम रांम संभाळियै, तोसु वस काया गांव।—दादू बांणी

उ०—२ ए वाड़ी, ए वावड़ी, ए सर केरी पाळ। वै साजण वे दीहड़ां, रही संभाळ संभाळ।—ढो. मा.

संभाळणहार, हारौ (हारी), संभाळणियौ—वि०।

संभाळिअोड़ौ, संभाळियोड़ौ, संभाळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभाळीजणौ संभाळीजबौ—कर्म वा०।

संभारणौ, संभारबौ संमारणौ, संमारबौ, सम्हळणौ, सम्हाळवौ —रू. भे.।

संभळाय-सं. स्त्री.—नदी। (ह. नां मा.)

संभाळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हिफाजत या देखरेख किया हुआ. २ सुपुर्दगी लिया हुआ. ३ रखा हुआ, लिया हुआ. ४ देखा हुआ, सुधि लिया हुआ. ५ जांच-पड़ताल किया हुआ, परखा हुआ. ६ प्रबंध किया हुआ, व्यवस्था किया हुआ. ७ पालन-पोषण किया हुआ. ८ ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ. ९ गिरते हुए को बीच में रोका हुआ, थामा हुआ. १० उत्तरदायित्व लिया हुआ, वहन किया हुआ. ११ आश्रय दिया हुआ. १२ अधिकार या कब्जा किया हुआ. १३ वयता को प्राप्त हुवा हुआ, वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. १४ यह देखा हुआ कि कोई वस्तु जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नहीं. १५ रोका हुआ, थांमा हुआ. १६ सामाजिक व्यवहार आदि में परंपरा संबंध आदि का निर्वाह या पालन किया हुआ. १७ ठीक-ठाक किया हुआ, ठीक किया हुआ. १८ संचालन किया हुआ, चलाया हुआ. १९ बनाये रखा हुआ, विद्यमान रखा हुआ।

२० देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संभाळियोड़ी)

संभाळौ-सं. पु. [सं. संभालन, संभाल] १ संभालने की क्रिया या भाव।

२ चैतन्यता।

३ तलाशी, खोज।

४ जांच-पड़ताल।

क्रि. प्र.—देणौ, लेणौ।

संभाव-सं. पु.—चिन्ह, निशान।

उ०—प्रभात हुवौ सु गूंदळ राव रै पगां रौ जोड़ौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ नै बीजा पण माळिया रा संभाव अटकळिया। तरै सुहवदै नूं प्रथीराज कह्यौ औ जूतौ किण रौ छै।—नैणसी

संभावण, संभावणौ-वि.—१ संभालने वाला, धारण करने वाला।

उ०—मारू रायांमालहर सारू खळां अगड्ड। मोटा चींत संभावण, जे नवकोटां चड्ड।—रा. रू.

२ सहायता करने वाला, सहायक।

३ तैयार करने वाला, उद्यत करने वाला।

संभावणौ, संभावबौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद सांगैजी राव जैतसी जी नूं मदत री वीनती करी। तद राव जैतसी जी कही, 'बावा, म्हारै घर में जमीयत है सो दागीर है, पांवेर जिसो जाग्या है सूं संभावो।—द दा.

उ०—२ तरै कूंभैजी कह्यो—नानाजी ! वैसण नैं तो ठोड़ नहीं नैं राजि म्हारी वाह संभावो चीतोड़ वैसांणो तो वैसूं, नहीं तो धरती भान्यो आकास नांन्यो।—राव रिणमल री वात

उ०—३ अर मेज विछावण संभावण री खिदमत मोनूं दीजै इतरी इनायत करो।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ आह मनमाहि नरिंदो पारथि संभावइ। सइं दलि रमलि करंतउ गगातडि आवइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ अनु कठि कुसुमह माल किरि, सुं मयणि आपणि आणीइ। कोइ इंदु चदु नरिंदु सइंवरि, पहुतु इम संभावियइ।

—सालिभद्र सूरि

संभावणहार, हारो (हारी), संभावणियो—वि०।

संभाविग्रोड़ो, संभावियोड़ो, संभाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संभावीजणो, संभावीजबो—कर्म वा०।

संभावन—सं. स्त्री. [सं. संभावनं] १ कल्पना, अनुमान।

२ आदर, सम्मान।

३ मुमकिन।

संभावना—सं. स्त्री. [सं. संभावना] १ विचार, मनन।

२ कल्पना।

३ आशा।

४ सम्मान, प्रतिष्ठा।

५ मुमकिन।

६ सन्देह।

७ साहित्य में प्रयुक्त वह अलंकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है।

संभावित—वि. [सं.] १ कल्पित।

२ अनुमानित।

३ पूजित।

४ संभव, मुमकिन।

संभावियोड़ो—देखो 'संभायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संभावियोड़ी)

संभास, संभासण—सं. पु. [सं. सम्भाषणं] १ बातचीत, संभाषण।

२ कथन, वार्तालाप।

उ०—मुणि भूंडण कही—मोनूं आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ, आज तक मरद सूं संभासण नहीं कियो।

—ढाढाळा सूर री वात

रू. भे.—संभाखण।

संभासुर—सं. पु.—एक दैत्य का नाम जो दुर्गा द्वारा मारा गया था।

उ०—बध्धा चंडी चंडासुर महिख मुंडासुर वळी, बनाई निर बीजा अचि रकत बीजासुर-अली। क्रुधाग्नी निस्संभासुर भसम संभासुर कती, भई इंदु अंबा जयति जगदंबा भगवती।—मे. म.

संभाहणो, संभाहबो—देखो 'संभाणो, संभाबो' (रू. भे.)

उ०—१ सूंदालम जपै तूं खुरम, सुकरि खग्ग संभाहियो। भर भार भळावे भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियो।—गु. रू. बं.

उ०—२ कह्यो—'मा ! म्हैं हथियार यूं ही बांधां ? डंड जाट-गूजरां दाई भरां ! ताहरां मा बोली—'बेटा ! हथियार नांख नां, हथियार संभाहि।—नैणसी

संभियोड़ो—भू. का. कृ.—१ सुसज्जित हुवा हुआ। २ छाया हुआ, उमड़ा हुआ। ३ कटिबद्ध हुवा हुआ, तैयार हुवा हुआ, उद्यत हुवा हुआ। ६ देखो 'संभळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संभियोड़ी)

संभु—सं. पु. [सं. शंभुः] १ शिव, महादेव। (ना. डिं. को; डिं. को.)

उ०—गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभावसूं, संभु अपावन साज।—बां. दा.

२ एक रुद्र का नाम।

३ भैरव। (डिं. को.)

४ एक दैत्य। (रामायण)

५ ब्रह्मा, विधाता। (डिं. को.)

६ सिद्ध एवं पुज्य पुरुष।

७ ऋषि, मुनि।

८ अंबरीख महाराजा के पुत्र का नाम।

९ कश्यप एवं सुरभि का एक पुत्र।

१० तप नामक अग्नि के पुत्र का नाम।

११ कृष्ण एवं रुखमणी के पुत्रों में से एक।

१२ विष्वकसेन का मित्र, ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर का इन्द्र।

१३ शुक एवं पीवरी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१४ श्रीराम को श्राद्धविधि, शिव पूजाविधि आदि बताने वाला ऋषि।

१५ सुख देवों में से एक।

१६ सत्यदेवों में से एक।

१७ राजाज का पिता एव संह्लाद राक्षस का पुत्र एक राक्षस।

१८ विरोचन दैत्य का पुत्र।

१९ मगण तगण यगण भगण और सात गुरु वर्णों के क्रम से प्रत्येक चरण में १९ वर्णों वाले एक वृत्त का नाम।

वि.—१ आनन्ददायी, हर्षकारी।

२ श्वेत। * (डिं. को.)

३ पीला। * (डिं. को.)

रू. भे.—संभ, संभू, सिंभु, सिंभू, सिंभौ।

संभुगिरि—सं. पु. यौ. [सं. शंभुः+गिरि] कैलाश पर्वत।

संभुतेज—सं. पु. [सं. शंभु+तेज] पारद, पारा।

संभुनाथ—देखो 'संभूनाथ' (रू. भे.)

संभुबीज-सं. पु. [सं. शंभुबीज] पारद, पारा।

संभुभूसरा-सं. पु. [सं. शंभुभूषण] १ शिव का आभूषण।

२ सर्प।

३ चंद्रमा।

संभुमनु; संभुमुनी, संभूमन, संभूमूनी—देखो 'स्वयंभुव' (रू. भे.)

संभुलोक-सं. पु. [सं. शंभुलोक] कैलाश पर्वत।

संभुवा-सं. स्त्री. [सं. शंभुवा] गंधारराज सुबल की कन्या, धृतराष्ट्र की पत्नी व गांधारी की बहन।

संभुसुत-सं. पु. [सं. शंभुसुत] १ स्कन्द देव।

२ गजानन, गरोश।

संभू-सं. पु.—देखो 'संभु' (रू. भे.) (डिं. को; डिं. नां मा.)

उ०—चूका वयरा मंदार चाढतां, सुर नर साहो मांन असत्त। भोळै भाव आवियौ भूरौ, भोळा संभू तणौ भत्त।

—चतुरौ मोतीसर

संभूत-वि. (स्त्री. संभूता) १ एक साथ उत्पन्न।

२ उत्पन्न।

उ०—स्वक्रोधा सुसुक्षा धगधगित दक्षाविधप-सुता, सिलोचै संभूता धजर अवधूता अदभुता। भुलांनी भीलांनी प्रगट न पिछांनी पसुपती, अई इंदू अंबा जयति जगदंबा भगवती।—मे. म.

३ पुरांणों के अनुसार राजा पुरुकुत्स के पुत्र त्रसद्दस्यु के पुत्र का नाम।

उ०—पुरुकुसीमांन सुत वंस रूप। पुरकुस्समु तणौ संभूत भूप।

—सू. प्र.

संभूति; संभूती-सं. स्त्री. [सं. सम्भूति] १ अंगवंशीय विजय की माता व जयद्रथ की पत्नी।

२ पौर्णमास की माता एवं ब्रह्म पुत्र मरीचि की पत्नी का नाम।

३ वैराज की पत्नी व चाक्षुष मन्वन्तर के अजित, नामक अवतार की माता।

सं. पु.—वसुदा का पुत्र।

संभूनाथ-सं. पु. [सं. शभुनाथ] शिव, महादेव।

उ०—आवा लोमंच दधीच दावा उपावा बिरंच अ्रेम, संभूनाथ सुभावां सहावां जेम सेस। जंग जीतबा धावां दनेस तेज तावां जेम, वेदां सांमवेद गावां रावां 'वखतेस'।—राव बगतसिंघ री गीत

रू. भे.—संभनाथ, संभुनाथ।

संभूभेख, संभूभेस-सं. पु. [सं. शंभुभेष] दशनामी संन्यासियों द्वारा मृतक के पीछे किया जाने वाला वृहद भोज जिसमें दशनामियों के अतिरिक्त नाथ, जोगी, साधु, फकीर व ब्राह्मण भी आते हैं।

(मा. म.)

संभूम-सं. पु.—एक चक्रवर्त्ती राजा।

उ०—जोयउ चक्रवर्ती आठमउ, संभूम तउ जीव। सातमियर नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव।—स. कु.

संभूमन, संभूमनु—देखो 'स्वयंभुव' (रू. भे.)

उ०—संभूमन नृप दसरथ्थ समथ्थी, कोसल्या सतरूपा कथ्थी।

—रांमरासौ

संभेदतीरथ-सं. पु. [सं. संभेदतीर्थ] तिलोदकी व सरयू नदी के संगम पर स्थित एक तीर्थ।

संभेदन-सं. पु.—जुटाने, भिड़ाने, मिलाने की क्रिया।

संभेरी-सं. पु.—एक राजा का नाम।

उ०—सिवभूत राजा ४ री संभेरी राजा जिरा सांभर बसायौ।

—रा. वं. वि.

संभेळौ—देखो 'सांभेळौ' (रू. भे.)

उ०—उजरणीपुर आविया, संभेळौ सिरणगार वै। बांह पासावै सहु मिल्या, सगळी धरी मनवार वै।—रिसाळू री वात

संभोग-सं. पु. [सं. सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली भांति किया जाने वाला उपयोग।

२ रति-क्रीड़ा, मैथुन।

उ०—वात न कहुं प्रगट करै, संभोगे अनुकूल। जन्म न ऐड़ा पुरस रौ, प्रिया न विसरै मूळ।—वैताल पच्चीसी

३ साहित्य में शृंगार-रस का एक भेद, संयोग शृंगार।

४ वह पुरुष जो गुदा मैथुन का आदि हो गया हो।

५ व्यवहार।

उ०—पन्नां नें दीक्षा देवा री आग्या नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपां रे आहार पांणी री संभोग भेळौ नहीं।—भि. द्र.

वि. वि.—जैन साधुओं के आपस में बारह प्रकार के व्यवहार (बर्ताव) होते हैं। उनमें से एक साथ बैठकर भोजन पान करने का भी व्यवहार होता है। सो यदि 'पन्ना' के बिना आज्ञा दिक्षा दे दी गई हो तो एक साथ बैठकर भोजन करने का व्यवहार शामिल न होगा।

६ हाथी के कुम्भस्थल या मस्तिक का एक भाग।

संभोगी-वि. [सं. संभोगिन्] १ संभोग करने वाला।

२ उपभोग करने वाला।

संभोग्य-वि.—१ जो उपयोग या उपभोग के लिए हो।

२ जो संभोग किये जाने के लिए योग्य हो।

संभोज-सं. पु. [सं.] १ भोजन, खाना।

२ खाद्य सामग्री।

संभोजक-वि. [सं.] भोजन करने वाला एवं खाने वाला।

संभोजन-सं. पु. [सं.] १ भोज, दावत।

२ भोजन की सामग्री।

संभोज्य-वि. [सं.] खाने योग्य, खाने की।

संभ्रत-वि. [सं.] आश्चर्यान्वित, अचंभित।

उ०—व्रत सदन पीत पताक फरकत वरण चहुं सुखवेख। मध

जनकपुर सुर असुर मानव, पड़े संभ्रत पेख ।—र. रू.

संभ्रम–सं. पु. [सं. सम+भ्रम] १ पुत्र, लड़का ।

उ०—१ सगां झट वाहन रौद्रव सूर, सकै जुध 'भारथ' 'संभ्रम' 'सूर' । हुई दळ मुगळ चाढत हीक, महाबळ राड़ करै मछरीक।
—सू. प्र.

उ०—२ 'वाघ' 'सुत' 'गोपाळ' खेत 'चांपा' हर ओपम । लखमण संभ्रम 'प्राग' 'माल' 'सुरतांण' समोभ्रम ।—गु. रू. वं.

२ पौत्र, पोता ।

३ युद्ध, संग्राम ।

उ०—सुतन 'सुजांण' 'अनो' प्रिय संभ्रम, 'अखौ' विन्है आया जम ओपम । 'अनै' तणौ करि कोप अकारौ, 'गजन' आवियो चाळागारौ ।—रा. रू.

४ आतुरता, घबराहट ।

५ गलती, भूल । ६ मान, आदर, सम्मान ।

७ चारों ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया ।

८ भ्रम, भ्रांति ।

उ०—सोभा अति सागर तणी, जो नहीं वरणी जात । देखि भरयौ मंजार दधि, पय भोळै पी जाय । पय भोळै पी जाय, भलो इण भांत सूं । हुंसां संभ्रम होय, क्षीरसिंधु खांत सूं । वणियो ताळ विहद, 'वखत' नृप वार रो । उण पर अधिक आरांम, 'वखत' नृप वार रो ।—सिववख्स पाल्हावत

८ एक शिवगण का नाम ।

वि.—१ भ्रमित ।

उ०—उपवन मुनि मेल्है सिव इतरै, जवन सक्रोध आविया जितरै । संभ्रम दिल आस्रमां सिकारां, पीड़त मुनि कीधा अणपारां ।
—सू. प्र.

२ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

उ०—देसपति संभ्रम धणी दौलति प्रकति मति प्रघलं नखत्रैत जोध निरेहूणं वड खत्री सारिख वेहूण एकल्लं मल्ल दुभल्ल आंकल कहि कलहि अकलं ।—ल. पि.

३ तुल्य, समान, बराबर ।

रू. भे.—संभम, संमोभ्रम, संभ्रमी, सभ्रम, समभ्रम, समोभरम, समोभ्रम, समोभ्रमी ।

संभ्रमणौ, संभ्रमबौ–क्रि. स.—१ आश्चर्य करना, अचम्भा करना ।

२ गलती करना, भूल करना ।

३ भ्रम करना, शंका करना ।

४ युद्ध करना, संग्राम करना ।

क्रि. अ.—५ आश्चर्यान्वित होना, अचम्भित होना ।

उ०—कह कारखानां गिणत कुण कुण, संभ्रमें तिहुंलोक सुण सुण । विसद जग उजवाळ विरदां, सत्रा सांकड़ सूर ।—र. रू.

६ गलती होना, भूल होना ।

७ भ्रमित होना, शंकित होना ।

उ०—लोहां लोड बोड जल लागै, सूर आवरत्त संभ्रमिया । काळै थाट तणा कलमायण, काळै वार आहार किया ।—नाथौ सांदू

८ युद्ध होना, संग्राम होना ।

९ आतुर होना, घबराना ।

संभ्रमणहार, हारौ (हारी), संभ्रमणियौ – वि० ।

संभ्रमिओड़ो, संभ्रमियोड़ो संभ्रम्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संभ्रमीजणौ, संभ्रमीजबौ —कर्म वा०; भाव वा० ।

संभ्रमियोड़ो–भू. का. कृ.—१ आश्चर्य किया हुआ; अचंभा किया हुआ. २ गलती किया हुआ, भूल किया हुआ. ३ भ्रम किया हुआ, शंका किया हुआ. ४ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ५ अचंभित हुवा हुआ, आश्चर्यान्वित हुवा हुआ. ६ गलती हुवा हुआ भूल हुवा हुआ. ७ भ्रमित हुवा हुआ, शंकित हुवा हुआ. ८ युद्ध हुवा हुआ, संग्राम हुवा हुआ. ९ आतुर हुवा हुआ, घबराया हुआ ।

(स्त्री. संभ्रमियोड़ी)

संभ्रमी—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ सेतरांम संभ्रमी इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिण-छोड़, कीध वेदोगत पूजा ।—गु. रू. वं.

उ०—२ वांध नेत रिण खेत सैंद अल्ली मैंहमूंदह । हैफखांन संभ्रमी पड़ै पोरस मयंदह ।—गु. रू. वं.

संभ्रांणी–सं. स्त्री.—१ घोड़े की एक जाति विशेष ।

सं. पु.—२ उक्त जाति का घोड़ा ।

संभ्रांत–वि. [सं. सम्भ्रान्त] चारों ओर घुमाया हुआ ।

२ क्षुब्ध ।

३ सम्मानित, प्रतिष्ठित ।

संभ्रांति–सं. स्त्री.—१ संभ्रान्त होने की अवस्था या भाव ।

२ आतुरता, घबराहट ।

संमंद—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

संमध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

संम—देखो 'सम' (रू. भे.)

उ०—रचनां ईस्वर री ईस्वरता रोचै, संम दम स्रद्धा विण संभव नहीं सोचै ।—ऊ. का.

संमत, संमति, संमत्त—१ देखो 'संवत' (रू. भे.)

उ०—१ सतरै संमत पोस पैंत्रीसै, दसमी वार ब्रहस्पत दीसै । सुर-धर छत्र जिसौ महाराजा, सुरपुर गयौ लियां अद साजा ।—रा. रू.

उ०—२ इति स्री राजरूपक मैं रूपसी कुंभकरणोत कांम आयौ । संमत १७ सै ३६ छतीस चतुरथ प्रकास ।—रा. रू.

२ देखो 'समिति' (रू. भे.) (अ. मा.)

३ देखो 'सम्मत' (रू. भे.)

संमद–सं. स्त्री. [सम्मदः] १ खुशी, प्रसन्नता । (हि. को.)

उ०—'दूदा' सुणि मांनै अदेल, संमद तौ मौ साखि। मारै नहं मिळियां मुगळ, राज धरा धन राखि।—वं. भा.

२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

ऊ०—परणावौ जद फेर मनैं नोंतहार बोलाया। ज्युं क्युं ई बाई नुं वेस-वागौ मेल्हां। अर मांणक दोय, मोती च्यार दीया। सो देय संमद घरां गयौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

संमधणौ, संमधवौ—देखो 'समझणौ, समझवौ' (रू. भे.)

उ०—सतरि वरस लग संमधौ नांहीं, असियां विसंन न ध्यायौ। चलण थक्या अब जीभ चलावैं, नीवैं कही दाय न आयौ।

—परमांनंद वणियाळ

संमधणहार, हारौ (हारी), संमधणियौ—वि०।

संमधिओड़ौ, संमधियोड़ौ, संमध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमधीजणौ, संमधीजवौ—भाव वा०।

संमधि-वि.—१ सम्बन्धित।

उ०—हरिया सबद संमधि का, कह्यां सुण्यां क्या होय। जब नैंणां नहीं देखियौ, अंतर मिटै न दोय।—अनुभववांणी

२ देखो 'संमधी' (रू. भे.)

संमधियोड़ौ—देखो 'समझियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमधियोड़ी)

संमपणौ, संमपवौ—देखो 'समपणौ, समपवौ' (रू. भे.)

उ०—एक सहै दुख भूख, एक उपगार पर्यपै। एक चढ़ै सुखपाल, एक सिर भार संमपै।—सुरजनदास पूनियौ

संमपणहार, हारौ (हारी), संमपणियौ—वि०।

संमपिओड़ौ, संमपियोड़ौ, संमप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमपीजणौ, संमपीजवौ—कर्म वा०।

संमपियोड़ौ—देखो 'समपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमपियोड़ी)

संमपूरण—देखो 'संपूरण' (रू. भे.)

उ०—जैपौळ रै कोट रौ कमठौ अदुरौ थौ सौ संमपूरण करायौ। पौळ रै पठै ऊपर साळां आदम्यां रै रैवण नै कराई।

—मारवाड़ री ख्यात

संमर—देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—हेवै दळां अमंगळ हूवौ, मुवौ सेख मिरजो पण मूवौ। आसू वद वारसैं दिन आसुर, मौत अचिंत गया कर संमर।—रा. रू.

संमरणौ, संमरबौ—देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

संमरणहार, हारौ (हारी), संमरणियौ—वि०।

संमरिओड़ौ, संमरियोड़ौ, संमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमरीजणौ, संमरीजवौ—कर्म वा०।

संमरदण, संमरदन-सं. पु. [सं. सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के एक पुत्र का नाम।

संमरियोड़ौ—देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमरियोड़ी)

संमळ—देखो 'समळ' (रू. भे.)

उ०—आतसूं कै धमकै बांण की चोट, संमळ चीतळ पाठै केतै लोट पोट। ऐसी आखेट करि नौबत बाजतूं आए। दुसमणूं कूं दाह साजर के मन भाए।—सू. प्र.

३ देखो 'सांवळौ' (मह; रू. भे.)

उ०—१ ग्रीध हळवळ संमळ गळगळ पळ गळ गरां। त्रिसळ स[illegible] वळोवळ कळळ हूंकळ तुरां।—जैतसिंघ वदनोर रा धणी री बात

उ०—२ हुआ ग्रीध सममांण वाढ करिकां कूंबूअळ, नय हय ग[illegible] पळ खीण। मत्त पळ जंबू संमळ।—गु. रू. बं.

४ देखो 'सिंवल' (रू. भे.)

५ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

संमळी-सं. स्त्री.—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—ईयैं ऊपरि संमळी छाया कीधी। नाग आय माथै छ[illegible] करीयौ।—देवजी वगड़ावत री वात

संमळौ—१ देखो संवळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

संमहणौ, संमहवौ—देखो 'संभणौ, संभवौ' (रू. भे.)

उ०—पाल्हणसी पुहविहि रह्यउ अनि समह्या सरगि। तिरि[illegible] वेळा होया भरी, राइ राइ रोवण लगि।—अ. वचनिका

संमहणहार, हारौ (हारी), संमहणियौ—वि०।

संमहिओड़ौ, संमहियोड़ौ, संमह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संमहीजणौ, संमहीजवौ—भाव वा०।

संमहियोड़ौ—देखो 'संभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमहियोड़ी)

संमाद—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ आयसजी देवनाथ जी रै ऊपर संमाद कराई।

—मारवाड़ री ख्यात

संमाणौ, संमाबौ—देखो 'समाणौ, समावौ' (रू. भे.)

संमाणहार, हारौ (हारी), संमाणियौ—वि०।

संमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमाईजणौ, संमाईजवौ—भाव।

संमायोड़ौ—देखो 'समायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संमायोड़ी)

संमापित, संमापिता, संमापीत, संमापीता—देखो 'समापत' (रू. भे.)

उ०—स्रीविसनजी रा ग्रंथ ग्यांन सासत्र पुसगत नांम पोथौ संपुरण संमापीता लीखतुं परयागंद संत।—अग्यात

संमार—देखो 'संवार'(रू. भे.)

ऊ०—ताहरां भुंजाई मोहिल सारै कीवी छै। ताहरां मोहिल पांच सेर घिरत भुंजाई लागै छै। रावजी सूं कह्यौ—म्हूँ थांहरै व[illegible] संमार कीवी छै।—नैणसी

२ देखो 'संमाळ' (रू. भे.)

संमारजणी, संमारजनी-सं. स्त्री. [सं. संमार्जनी] झाड़ू, बुहारी। (डि. को.)

रू. भे.—समारजणी, समारजनी।

संमारणो, संमारवो —१ देखो 'संवारणो, संवारवो' (रू. भे.)

उ०—ताति चरंती कुंकड़ी, सर संचियउ संमार। कोइक आवर मनि वसइ, ऊभी पंख संमार।—ढो. मा.

२ देखो 'संभाळणो, संभाळवो' (रू. भे.)

उ०—ऊटे जळ में लै चल्यो, गज कूं विकटो ग्राह। तब ततकार समारियो, राधा नागर नाह।—गज-उद्धार

समारणहार, हारो (हारी), समारणियो -वि०।

संमारिग्रोड़ो, संमारियोड़ो, संमारयोड़ो—भू० का० कृ०।

संमारीजणो, संमारीजवो—कर्म वा०।

संमारियोड़ो—१ देखो 'संवारियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'संभाळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संमारियोड़ी)

संमाळ—देखो 'संभाळ' (रू. भे.)

संमावणो संमाववो—देखो 'संभावणो, संभाववो' (रू. भे.)

२ देखो 'समाणो, समावो'।

संमावणहार, हारो (हारी), संमावणियो -वि०।

संमाविग्रोड़ो, संमावियोड़ो, संमाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संमावीजणो, संमावीजवो—भाव वा०।

संमावियोडो—१ देखो 'संभावियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'समावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समावियोड़ी)

समित-सं पु. [सं.] मरुतों के छठे गण का मरुत।

संमिति-सं. पु. [सं.] उत्तम मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि।

संमिरणो, संमिरवो-क्रि. अ.—१ परस्पर टकराना, भिड़ना।

उ०—दिन राति न जांणइ दूसरी, नींद भूख त्रिस वीसरी। खंड-दाळि खीधी खरी, सेन विन्हे इम संमिरी।—ग्र. वचनिका

२ देखो 'समरणो, समरवो' (रू. भे.)

संमिरणहार, हारो (हारी), संमिरणियो -वि०।

संमिरिग्रोड़ो, समिरियोड़ो, संमिरयोड़ो—भू० का० कृ०।

संमिरीजणो, संमिरीजवो—कर्म वा, भाव वा०।

संमिरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ परस्पर टकराया हुग्रा।

२ देखो 'समरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संमिरियोड़ी)

संमिळणो, संमिळवो-क्रि. अ.—१ शामिल होना, सम्मिलित होना, मिलना।

उ०—१ दहां मिळण मुख ग्रावै दूग्रो, होळी मेल नगारो हूग्रो। मुगा डेरां वारै भड़ सारा, ग्रति बळ दळ संमिळै ग्रपारा। —रा. रू.

उ०—२ रुधिर धर रळतळी, वहु नाचइ कमंध महाबळी ग्राळू-झइ ग्रांत्रावळी। ग्रालम ग्रचळेसरि ग्रठ्यां सेन विन्हें इस संमिळी। —ग्र. वचनिका

२ मिलाप होना।

३ संम्मिश्रण होना।

संमिळणहार, हारो (हारी), संमिळणियो—वि०।

संमिळिग्रोड़ो, संमिळयोड़ो, संमिळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

संमिळीजणो, संमिळीजवो—भाव वा०।

संमिळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ शामिल हुवा हुग्रा, सम्मिलित हुवा हुग्रा, मिला हुग्रा. २ मिला हुवा हुग्रा. ३ सम्मिश्रण हुवा हुग्रा। (स्त्री. संमिळियोड़ी)

संमी—देखो 'समी' (रू. भे.)

संमीपत्य—देखो 'सांमीपत्य' (रू. भे.)

उ०—हरि को मैं उर धारि कै, भगति भंजन कर सोय। सालोक साजज सारूप, सोई संमीपत्य होय।—परमानंद वणियाळ

संमुखी-सं. पु. [सं. सम्मुखिन्] शीशा, दर्पण। (डि. को.)

संमुखीन-वि. [सं. सम्मुखीन] १ सामने का, सम्मुख का। (डि. को.)

२ ग्रामने-सामने।

क्रि. वि.—सामने, सम्मुख।

संमुद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

समुद्राव-सं. पु. [सं.] १ युद्ध में भागने की क्रिया। (डि. को.)

समुह, संमुहउ—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—जउ पहिलाउं बेटी जाई, माई बाप काल मुहां थाई, जसु घरि बेटी ग्रावी, पूठि लागि चिंता ग्रावी, बेटी घर संमुहउ पाउ चालइ दारिद्र वाट देखावइ।—व. स.

संमुहणो, संमुहवो—देखो 'संभणो, संभवो' (रू. भे.)

संमुहा—देखो 'समुहा' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं ए डूंगर संमुहा, त्यूं जइ सज्जण हुंति। चंपावड़ी भमर ज्यउं, नयण लगाइ रहंति।—ढो. मा.

संमूह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—संमूह सेन ग्रसंख सफां, ग्रिग्ग मुझ्झै मंझळी। मल्हपति फौजां मुहरि मेंगळ, सूंड डोहै सिघळी।—गु. रू. बं.

संमेहळो—देखो 'सांमेळो' (रू. भे.)

उ०—सुरति करि ग्रारती निरत नेता लीयां, सांम संमेहळै मिळै सारा। ब्रह्म वर बींदणी खैरवंटी खरी, इंद ज्यूं ग्रोवड़ै इमी धारा।—ग्रनुभववांणी

संमोभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

संमोय-सं. पु.—संयम।

उ०—काया निरमळ जल्य मांजणां, वाचा ग्रमळ सति बोलणां। मन निरमळो ग्यांन सूं होय, पांचूं इंद्री रहै संमोय।—बील्होजी

संमोवणौ, संमोववौ—१ देखो 'संवारणौ, संवारबौ'।
२ देखो 'संमोहणौ, संमोहवौ' (रू. भे.)
संमोवणहार, हारौ (हारी), संमोवणियौ—वि०।
संमोविओड़ौ, संमोवियोड़ौ, संमोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संमोवीजणौ, संमोवीजवौ—कर्म वा०।
संमोवियोड़ौ—१ देखो सवारियोड़ौ'।
२ देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. संमोवियोड़ी)
संमोहण—सं. पु. [सं. सम्मोहनः] १ कामदेव के पांच बाणों में से एक।
[सम्मोहन] १ मोहित करने की क्रिया, वशीकरण ।
संमोहणौ, संमोहवौ—क्रि. अ.—१ आकर्षित होना, मोहित होना।
क्रि. स.—२ आकर्षित करना, मोहित करना।
संमोहणहार, हारौ (हारी), संमोहणियौ—वि०।
संमोहिओड़ौ, संमोहियोड़ौ, संमोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
संमोहीजणौ, संमोहीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।
संमोवणौ, संमोववौ, समोवणौ, समोववौ, समोहणौ, समोहवौ, सम्मोहणौ, सम्मोहवौ—रू० भे०।
संमोहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आकर्षित हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ.
२ आकर्षित किया हुआ, मोहित किया हुआ।
(स्त्री. संमोहियोडी)
संमौ—देखो 'समौ' (रू. भे.)
संम्य—देखो 'सम' (रू. भे.)
उ०—दिसा विमम्य संम्य हा अगम्य गम्य है नहीं। रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं।—ऊ. का.
संम्रत—वि.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ।
२ देखो स्म्रति' (रू. भे.)
उ०—१ तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है। वोलै स्रुत,संम्रत स्यंभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है।—र. ज. प्र.
उ०—२ संम्रत पुरांन वेद आगम अनेक पढ़ै, विरद तिहारौ नाथ तारन तरन कौ। मंछ कवि कहै पुन सरन सधार व्रिद याही तै सरन लयौ रावरे चरन कौ।—र. रू.
३ देखो 'समरथ' (रू. भे.)
संम्रति, संम्रती, संम्रित—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)
उ०—१ जगत प्रसिध जैसाह, रचे वीमाह सुरंगम। स्रुति संम्रति व्रत सार, ग्रंथ पूछै निगमागम।—रा. रू.
उ०—२ संम्रित साख पुरान कु, सींख'रि भया सुजांन। हरीया अछर हेक विन, चतुराई सैं मांन।—अनुभववांणी
संम्रथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—तूं मेरे संम्रथ धणी, ग्रैसी करि धणियाप। तें करतां क्या न हुवै, जळ मैं थळ नइयाप।—अनुभववांणी

संम्हा—सं. स्त्री. [सं. संमहाः] अग्नि-ज्वाला। (डिं. को.)
संयत—वि. [सं.] १ कैद या बंद किया हुआ। (डिं. को.)
२ बंधा या जकड़ा हुआ।
२ रोका हुआ।
४ मर्यादित।
५ व्यवस्थित, नियमबद्ध।
६ हद या सीमा में रखा हुआ।
७ वह जिसने पंचेंद्रियों पर काबू पा लिया हो।
सं. पु.—१ कैद।
२ युद्ध, संग्राम।
३ योगी, संन्यासी।
४ शिव, महादेव।
संयद्वसी—स. स्त्री. [सं.] सूर्य की सात किरणों में से एक किरण का नाम।
संयम—स. पु. [सं. संयमः] १ रोक, दमन।
उ०—सरीर सरोवर रांम जळ, मांही संयम सार। दादू सहजैं सब गये, मन के मेल विकार।—दादूवांणी
२ चित्त की अनुचित वृतियों का निरोध, इंद्रिय-निग्रह।
उ०—संयम सहाय, अल अंतराय। परहरहु पीर, तुरीयाब्धि तीर। त्रहुं ताप तोर, घननाद घोर। आस्चर्य एह, दुधवि विदेह।
—ऊ. का.
३ क्रोधादि में न आने की क्रिया, शान्त रहने की क्रिया या भाव।
४ धार्मिक व्रत।
उ०—१ घड़ै चीकणै छांट, रवै ना तिसळै नीचै। घट काचै पट रचै, जंचै रंग सोणै सीचै। बाळक पण री पाठ सकळ उपदेसां सांचौ। पढ लिख सीखो संयम, बाळकां थे घट काचौ।—दसदेव
उ०—२ पइसौ पांणी में मेल्यां डूबै अनै उण ही पइसा ने ताप लगाय कूट-कूट नै बाटकी कीधी ते तिरै। उण बाटकी में पइसौ मेलै तो पइसौ पण तिरै। तिम जीव तप, संयम आदि करि आतमा हळकी कीधां तिरै।—भि. द्र.
५ स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर को हानिकारक कार्यों या बातों से बचते हुए अलग या दूर रहने की क्रिया या भाव, परहेज।
६ अनुचित कार्यों या बातों से अपने आपको रोकना।
७ धूम्राक्ष का एक पुत्र।
८ मन की एकाग्रता एवं योग के धारण, ध्यान व समाधि।
९ व्यवस्थित रूप से बांधने या बंद करने की क्रिया या भाव।
१० महाराजा अम्बरीख के सेनापति सुदेव द्वारा मारा गया एक शतमृंग नामक राक्षस।
११ राजर्षि कृशाश्व के पिता।
रू. भे.—संजम, संजमि, संजिम।
संयमन—सं. पु.—१ संयम करने की क्रिया या भाव।

२ अनुचित या बुरी बातों व कार्यों से मन को रोकने की क्रिया।

३ आसन निग्रह।

४ शृंगार में एक प्रकार का आसन।

५ दुर्योधन पक्षीय एक राजा।

संयमनी, संयिमनी—सं. स्त्री. [सं. संयमिनी] यमपुरी।

उ०—खिणि खिणि दखिण पवन ! तूं, अंगि म करइ आकूत। संयिमनी गई संचरिया, जांणे करि जिम-दूत।—मा. कां. प्र.

संयमी—वि. [सं. संयमिन्] संयम से रहने वाला, मन को वश में रखने वाला।

उ०—नय ध्वंस संयमी वक्र प्रसंसा भारी। मुख आगे छिपतै फिरतै मांसाहारी।—ऊ. का.

सं. पु.—१ तपस्वी।

२ ऋषि।

३ साधु।

वि.—जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जितेंद्रिय।

रू. भे.—संजमि, संजमी।

संयाति, संयाती—सं. पु. [सं. संयाति] १ आयु के वंशज नहुष के छः पुत्रों में से एक जो ययाति का भाई था।

२ पुरुवंशीय अहंयाति का पिता एवं प्राचिष्कन का पुत्र जो दृषद्वान की पुत्री वरांगी का पति था।

संयार, संयारड़ी—सं. स्त्री.—बढई के काम आने वाला एक औजार विशेष जो लकड़ी के छेद करने के काम आता है।

संयु—सं. पु. [सं. शंयु] १ बृहस्पति-पुत्र एक अग्नि जो धर्मदेव की पुत्री सत्या का पति था।

२ यज्ञ की विशिष्ट पद्धति के ज्ञाता एक आचार्य।

संयुक्त—सं. पु. [सं.] १ सहित।

उ०—१ लखण बत्रीस संयुक्त बाललीला माहे राजकुआरि दूलदिया रमै छइ।—वेलि. टी.

उ०—१ वाणारसी नगरी भणी नांम चार प्रिया संयुक्त प्रकांम। —वि. कु.

२ बराबर।

३ सम्मिलित, शामिल।

४ जुड़ा हुआ, संलग्न।

५ जिसका विघटन न हुआ हो।

६ साथ मिल कर काम करने वाले।

रू. भे.—संजत, संजुक्त, सजुगत, संजुगता, संजुगति, संजुगुत, संजुगुता, संजुत, संजुति, सजुंत, संजुत्ता, संजुत्तु, संजूत, संयुगत, संयुत।

संयुक्ता—सं. स्त्री. [सं.] प्रत्येक चरण में स, ज, न, ग वाला एक प्रकार का छन्द विशेष।

रू. भे.—संजुता।

संयुग—सं. पु. [सं.] १ मिलाप, संयोग।

२ भिड़न्त, टक्कर।

३ युद्ध, लड़ाई।

संयुगत, सयुत—देखो 'संयुक्त' (रू. भे.)

उ०—मणि मांणिक हीर पन्ने सोव्रन संयुगत मीने के कांम पाघ पर जंवहरी किलंगी धरी।—सू. प्र.

संयुप—सं. पु. [सं.] सूर राजा का एक पुत्र यादव।

संयोग—सं. पु. [सं.] १ मिलन, मेल।

उ०—१ गुण गंध ग्रहित गिळि गरळ ऊगळित, पवण याद ए उभय पख। स्त्रीखंड सेळ संयोग संयोगिणि, भणि विरहिणी भुयंग भख।—वेलि

उ०—२ दूसम काले दोहिलउ जी, सूधउ गुरु संयोग। परमारथ प्रीछइ नहीं जी, गडर प्रवाही लोग।—स. कु.

उ०—३ प्रगट करेवा पुरुखनइ, राइं तेडि गोग। कुण तूं ? कुण कारणि दुखि ? सरसिइ किम संयोग ?—मा. कां. प्र.

२ समागम।

३ वैशेषिक दर्शन के चौबीस गुणों में से एक गुण।

४ बराबर, समान।

५ समान उद्देश्यार्थ की गई सन्धि।

६ प्रेमी और प्रेमिका का मिलन।

७ व्याकरण में व्यञ्जनों का मेल।

८ रति क्रीड़ा, मैथुन।

९ दो ग्रहों का समागम।

१० आकस्मिक रूप से आने वाली वह स्थिति जिसमें एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो, इत्तफाक।

११ शिव, महादेव।

१२ मिलावट, मिश्रण।

१३ वैवाहिक सम्बन्ध।

१४ योग, जोड़।

रू. भे.—संजोग, संजोगी।

संयोगमंत्र—सं. पु. [सं.] वह वेद मंत्र जो विवाह के समय पढ़ा जाय।

रू. भे.—सजोगमंत्र।

संयोगविरुद्ध—सं. पु. [सं.] कुछ पदार्थ विशेष जो परस्पर मिल जाने पर यदि खाये जाय तो रोग उत्पन्न कर देते हैं।

संयोगिता—सं. स्त्री.—राजा जयचंद की पुत्री तथा हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पत्नी का नाम।

रू. भे.—संजुता, संजोगिता।

संयोगी—वि. [सं.] (स्त्री. संयोगण, संयोगणी, संयोगन, संयोगिण, संयोगिणि, संयोगिणी, संयोगिन, संयोगिनी) जिसका मिलन या मिलाप हो चुका हो।

उ०—१ संयोगिनी को वेस देखउ, तब उवेख्यउ कंत। स्रंगार

सोभित सहल अंगइ, महल दीप दीपंत।—वि. कु.

उ०—२ गुण गंध ग्रहित गिळि ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखंड सैल संयोग संयोगिणि, भणि विरहणी भुयंग भख।
—वेलि

२ विवाहित।

३ जो संयोग के फलस्वरूप हुआ हो।

रू. भे.—संजोगि, संजोगी।

अल्पा; —संजोगी

संयोजक—सं. पु. [सं] मिलाने वाला, संयोजन करने वाला।

संयोजन—स. पु. [सं] १ मेल-मिलाप।

२ संम्मिश्रण।

३ मैथुन, रतिक्रीड़ा।

४ कार्य-व्यवस्था।

संयोजित—वि. [सं.] जिसका संयोजन किया गया हो।

संयोधकंटक—सं. पु. [सं.] कुबेर के एक अनुचर का नाम।

संरंभ—स. पु. [सं.] १ क्रोध, गुस्सा।

२ आरंभ, शुरुआत।

३ उत्पात, हंगामा।

४ गर्व, घमण्ड।

५ उत्साह, उमंग।

संरक्षक—स. पु [सं.] १ आश्रय दाता।

२ पालन-पोषण करने वाला।

३ रक्षक।

४ अभिभावक।

संरक्षण—सं. पु. [सं.] १ देख-रेख, निगरानी।

२ अधिकार, कब्जा।

३ हिफाजत।

संरक्षी—वि. [सं. सरंक्षिन्] देख रेख करने वाला।

संराधन—सं. पु. [सं.] १ जय जयकार।

२ ध्यान, मग्नता।

३ पूजा, अर्चना।

संरुढ—वि. [सं.] १ अच्छी तरह चढा हुआ या जमा हुआ।

२ साथ-साथ उत्पन्न हुवा हुआ।

३ धृष्ट।

संरोध—सं. पु. [सं.] १ रोक, रुकावट।

२ बाधा, अड़चन।

३ नाकेबंधी।

४ घेरा।

संलग्न—वि. [सं.] १ सटा हुआ, जुड़ा हुआ, निकटस्थ।

२ भिड़ा हुआ।

३ लीन, मग्न।

संलपन—सं. पु.—प्रलाप।

२ गपशप, बातचीत।

संलय—सं. पु. [सं.] १ नींद, निद्रा। (डिं. को.)

२ घुलाव, लीनता।

संलाप—सं. पु. [सं.] बातचीत, वार्तालाप।

उ०—जिणारा वीरपण हूं रीझिये थके रणमस्त खांन भी उर हूं लगाइ हितरी संलाप घड़ियाँ।—वं. भा.

संलापक—सं. पु. [सं. संलापकः] १ नाटक में एक प्रकार का संवाद।

२ एक प्रकार का उपरूपक।

वि.—वार्तालाप करने वाला।

संलिप्त—वि. [सं.] १ लीन, लगा हुआ।

२ घुला-मिला हुआ।

संलीण, संलीन—वि. [सं.] १ आच्छादित, ढका हुआ।

२ अच्छी तरह लगा या सटा हुआ।

३ संकुचित, सिकुड़ित।

संलीणया—सं. स्त्री.—पचेंद्रियों को वश में करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगों को रोकने की क्रिया।

संलीयणाव्रत—सं. पु.—एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमें पचेंद्रियों को वश में करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगों को रोका जाता है।

संलेखणा, संलेहण, संलेहणा—१ संथारा के पूर्व अनशन करने की क्रिया।

उ०—संलेहण पचखांण पादपोपगमनताजी, स्वरगगमन सुभकुल उतपत्ति प्रधान हो।—वि. कु.

२ एक प्रकार की तपस्चर्या विशेष। (जैन)

३ शरीर को आगमोक्त विधि से पतला, दुर्बल व क्षीण बनाने की क्रिया।

वि. वि.—आगमोक्त विधि में तीन तरह से शरीर को पतला व दुर्बल बनाया जाता है :—

१ जघन्य—यह ६ माह तक किया जाता है।

२ मध्यम—यह एक वर्ष तक किया जाता है।

३ उत्कृष्ट—यह १२ वर्ष तक किया जाता है।

उक्त १२ वर्षों में प्रथम ४ वर्षों में घी, तेल, मिठाई आदि का त्याग कर देते हैं। दूसरे ४ वर्षों में विचित्र तप करते हैं। फिर दो वर्षों तक एकान्तर उपवास किया जाता है। फिर ६ माह तक अतिविकृष्ट तप आदि किये जाते हैं। फिर ६ माह तक वेला, तेला आदि उपवास किये जाते हैं। इस तरह बढाते-बढाते १२ वर्ष तक उपवास किया जाता है एवं अन्तिम महिने या दो महीनों तक अनशन किया जाता है।

रू. भे.—सल्लेहणा।

संलोडण—१ झकझोरना, हिलाना।

२ सटना, इधर-उधर करना।

३ उथल-पुथल करना।

संवच्छर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—संख्याता संवच्छर विगल प्रापांणी देह, सात आठ भव पंचिंद्री तिरि मणुग्रा जेह।—वृ. स्त.

संवच्छरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

उ०—संवच्छरी आयां कपूर जी कह्यो—भीखणजी ! थायां सूं बोलचाली हुइ सो खमावा ने जाऊं हूं।—भि. द्र.

संवटणौ, संवटबौ – १ देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—म्हारा बीत्योड़ा बरस तो म्हैं पाछा संवट नें म्हारै काबू कर लिया।—फुलवाड़ी

संवटणहार, हारौ (हारी), संवटणियौ—वि०।

संवटिप्रोड़ौ, संवटियोड़ौ, संवट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवटीजणौ, संवटीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

संवटियोड़ौ—१ देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवटियोड़ी)

संवत–प्रव्य. [सं. संवत्] १ ईसा से ५६ वर्ष पूर्व प्रारंभ विक्रमादित्य वर्ष।

२ वर्ष, साल।

उ०—१ हरख ग्रर उछाव रौ निवास ठारी सूं ई वत्तो हौ। संवत ग्रर तिथ सूं हिसाव लगायां जाच व्ही कै बादळ गूंगी री बेटी सूं फगत चाळीस दिन मोटौ हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पखवाड़ा दो ए प्रगट, मुणू सदा हिक मास। बारै मासां सं बळै, जांणू संवत जास।—डि. को.

३ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाली काल गणना।

उ०—१ संवत १७१५ रा वेसाख वदि १ रा राजा जैसिंघ बाहादर खांन सैंणे डेरा किया।—नैणसी

उ०—२ वरसि अचळ गुण अंग ससी सवांतं, तवियौ जस करि स्रीभरतार। करि स्रवणे दिन रात कंठ करि, पांमै स्रीफळ भगति अपार।—वेलि

उ०—३ प्रथवी तणउ ऊतारिउ भार, म्लेछ तणउ कीधउ संहार। संवत तेर भणीजइ जिसइ, अठसठउ संवत्सर तिसइ।

—कां. दे. प्र.

रू. भे.—संवत, संमत, संमत्त, संमति, समत, सम्मत।

संवतसर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

संवतसरी—देखो 'संवत्सरी' (रू. भे.)

संवत्सर–सं. पु.—१ वर्ष, साल।

उ०—प्रथवी तणउ ऊतारिउ भार, म्लेछ तणउ कीधउ संहार। संवत तेर भणीजइ जिसइ, अठसठउ संवत्सर तिसइ।

—कां. दे. प्र.

२ फलित ज्योतिष में पांच पांच वर्षों के युग में से प्रत्येक का प्रथम वर्ष जिसका देवता अग्नि होता है।

३ शिव, महादेव।

४ विष्णु।

५ विक्रमादित्य वर्ष।

६ वर्ष के अधिष्ठाता।

रू. भे.—संवच्छर, संवतसर, समंछर, समतसर, समत्सर।

संवत्सरी–सं. स्त्री. [सं.] १ आषाढ शुक्ला चतुर्दशी से भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी तक कुछ कुछ अन्तर देकर किया जाने वाला व्रत।

२ मृत्यु दिवस या दाग तिथि के पश्चात् आने वाला वार्षिक दिन या इस दिन पर किया जाने वाला श्राद्ध।

रू. भे.—संबच्छसरी, संवतसरी, सवच्छरी, संवतसरी।

संवदण, संवदन–सं. पु. [सं. संवदन] १ बातचीत, वार्तालाप

२ मंत्र द्वारा वशीभूत करने की क्रिया।

३ परीक्षा।

४ मंत्र।

संवर–सं. पु. [सं.] १ जैन धर्मानुसार इन्द्रिय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया या ढंग।

उ०—१ जीव अजीव पुन्य पाप ही आस्रव संवर धार। निरजरा बंध मोक्ष री, जांण पणो छै सार।—जयवांणी

उ०—२ इन्द्रिय पांचे आप मुराहिदा, अधिक करे उन्माद। संवर भाव न आवै सर्वथा, पड़ची जे प्रमाद।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ जद स्वांमीजी बोल्या—एक मुहूरत नो संवर कर। इम कही संवर कराय पछै उण सूं चरचा कर भिन भिन भेद बताय उण री संका मेटने पगां लगाय दियो।—भि. द्र.

वि. वि.—इसके संक्षिप्त भेद निम्न है :—

१ श्रोत्रेन्द्रिय संवर. २ चक्षुरिन्द्रिय संवर. ३ घ्राणेन्द्रिय संवर. ४ रसनेन्द्रिय संवर ५ स्पर्शनेन्द्रिय संवर ६ मनसंवर ७ वचन संवर ८ काय संवर ९ उपकरण संवर १० सूची-कुशाग्र संवर।

इसके बीस संक्षिप्त भेद निम्न है :—

(एक से पांच)	अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह उक्त पांचों व्रतों का पालन करना।
(छः से दस)	श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय उक्त पांचों इन्द्रियों को वश में रखना।
(दस से पन्द्रह)	सम्यक्त्व, प्रत्याख्यान, कषाय का त्याग, प्रमाद का त्याग व शुभयोगों की प्रवृत्ति।
(सोलह से अठारह)	मन, वचन और काया उक्त योगों को वश में रखना।

१९ भेद, उपकरणादि को यतनों से लेना रखना।

२० सूई, कुशाग्र मात्र को यतनों से लेना व रखना।

इसके विशेष भेद सत्तावन हैं जो निम्न प्रकार हैं :—

पांच समिति, तीन गुप्ति, बाईस परीखह, दस यतिधर्म बारह भावना और पांच चरित्र।

[स. संवरं] १ दुराव छिपाव।

२ सहनशील होने की अवस्था।

३ जल, पानी।

[सं. संवरः] ४ सिकुड़न।

५ पुल, सेतु।

६ एक प्रकार का हरिन।

७ एक दैत्य का नाम।

८ देखो 'संवर' (रू. भे.)

संवरण—सं. पु. [सं] कुरुक्षेत्र के पिता एवं भारतवंशीय राजा ऋक्ष के पुत्र जो सूर्य पुत्री तपती के पति थे।

संवरत—सं. पु. [सं. संवर्त्त] १ वर्ष।

२ अंगिरा ऋषि के आठ पुत्रों में से एक।

३ संसार का नैमित्तिक प्रलय।

४ धर्मशास्त्र के लेखक का नाम।

संवरतक—सं. पु. [सं. संवर्त्तक] १ प्रलयाग्नि।

२ प्रलयकालीन बादल।

३ कश्यप एवं कद्रू का पुत्र एक नाग।

४ बलराम का नाम।

५ बलराम के हल का नाम।

६ महर्षि अंगीरा के पुत्र का नाम।

७ माल्यवान पर्वत पर के अग्निदेव जो सदेव प्रज्वलित रहते है।

८ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के पुत्रों में से एक।

संवरत्तकास्य—सं. पु.—एक शास्त्र विशेष। (व. स.)

संवरद्धन—सं. पु. [सं. संवर्द्धन] १ बढने की क्रिया या अवस्था, बढोतरी।

२ बढाना या उन्नत करने का कार्य।

संवरद्धित—वि [सं. संवर्द्धित] १ बढाया हुआ।

२ पाला-पोषा हुआ।

संवरनाथ—सं. पु.—भविष्यत् काल के अट्ठारवें तीर्थंकर का नाम।

संवरणौ, संवरबौ—क्रि. अ.—१ संवारा जाना।

२ देखो 'संवराणौ, संवरावौ' (रू. भे.)

उ०—पछै पातसाह जी आपरी अंगरह थी तठै ठौड़ संवराई।

—नैणसी

३ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

उ०—साइ सारदा मनि संवरि बांधउं ग्रंथ अपार। सूरति राखउं अचल-कउ, खउंदालिम्म सिकार।

—अचलदास खीची री वचनिका

संवरणहार, हारौ (हारी), संवरणियौ—वि०।

संवरिअोड़ौ, संवरियोड़ौ, संवर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवरीजणौ, संवरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सुंवरणौ, सुंवरबौ—रू० भे०।

संवराणौ, संवराबौ—क्रि. स.—१ जीर्णोद्धार कराना, मरम्मत कराना।

उ०—१ जोधपुर गढ ऊपरं राव जोधाजी रै करायोड़ौ कोट संवरायौ।—नैणसी

उ०—२ पछै वळै महाजनं म्हेसरीयां भूतड़ै फेर संवरायौ छै।

—नैणसी

उ०—३ श्री वाराहजी री देहुरी पोकर माथै सगर संवरायौ।

—नैणसी

२ साफ कराना, समतल कराना।

३ सजाना, अलंकृत कराना।

उ०—इतरी धरती हुई-पाट स्रीजोधपुर गढ। सोह राव मालदै संवरायौ। पहली गढ सहल थौ।—राव मालदै री वात

४ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुंदर जान पड़ें।

५ सुचारु रूप से कोई कार्य सम्पन्न कराना।

संवराणहार, हारौ (हारी), संवराणियौ—वि०।

संवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवराईजणौ, संवराईजबौ—कर्म वा०।

संवरणौ, संवरबौ, संवरावणौ, संवरावबौ, समराणौ, समरावौ, सवराणौ, सवरावौ, सुंवराड़णौ, सुंवराड़बौ, सुंवराणौ, सुंवरावौ, सुंवरावणौ, सुंवरावबौ—रू० भे०।

संवरायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ जीर्णोद्धार कराया हुआ, मरम्मत कराया हुआ. २ साफ कराया हुआ. ३ सजाया हुआ. ४ ठीक ठाक कराया हुआ. ५ सुचारू रूप से सम्पन्न कराया हुआ। (स्त्री. संवरायोड़ी)

संवरावणौ, संवरावबौ—देखो 'संवराणौ, संवरावौ' (रू. भे.)

संवरावणहार, हारौ (हारी), संवरावणियौ—वि०।

संवराविअोड़ौ, संवरावियोड़ौ, संवराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संवरावीजणौ, संवरावीजबौ— कर्म वा०।

संवरावियोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. संवरावियोड़ी)

संवरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संवारा गया।

२ देखो 'संमरियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. संवरियोडी)

संवळ—सं. स्त्री.—एक प्रकार की मछली विशेष जिसमें कांटे नहीं होते है।

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सिवळ' (रू. भे.)

४ देखो 'संवळ' (रू. भे.)

उ०—संवळ सिरावण सहु करी, सुकळावड कना देवडी। सपरिवार मिन्ना सहू कोट, करहुड वळे पलांण्यठ सोइ।—ढो. मा.

संवळी-सं. स्त्री.—१ चील पक्षी।

उ०—कोई वीर पुरस री वीर स्त्री रा वचन है—संवळी प्रतै आपरो पती जुद्ध में मारीज नें पड़ियो ग्रोर आप ग्रंत री समै पती रा दरसन करण नें गई है तठै पती रा सब ऊपरै संवळी नें बैठो देख कहै है।—वी. स. टी.

रू. भे.—समळी, सांवळी।

२ देखो 'संवळो' (पु.)

३ देखो 'सांवळो' (पु.)

रू. भे.—संवळी, संभळि, संभळी, संमळ, संमळी, समळी, सवळी, सांमळी, सांवळी।

संवळो-सं. पु.—श्याम रंग का कौए से बड़ा मांसाहारी पक्षी।

वि. (स्त्री. संवळी) १ अनुकूल, पक्ष में।

उ०—नारायण भज रे नरा, ग्रंतरजांमी एक। सांई जो संवळो हुवै, ग्रवळा हुवो ग्रनेक।—ह. र.

३ सीधा, सरल।

४ उत्तम, श्रेष्ठ, वढिया।

उ०—किन्या नें वर मिळ जाय ग्रर पिंडतजी नें खासो-भलो धन मिळ जाय ग्रैड़ो हथळेवो जोड़णो हो। रवड़तां-रवड़तां पगां में पांणी पड़ग्यो, पण ग्रैड़ो संवळो जोग नीं सजियो।—फुलवाड़ी

५ सम्मुख, सामने।

उ०—मायो संवो हुतो सो फिरनें ग्रपूठो हुवो, तरै साहजादी पूरव जनम री बात कही, तरै मायो ग्रपूठो हुतो सु फिरनें संवळो हुवो। —नैणसी

रू. भे.—संमळो, समळो, संवळो।

मह.—संमळ।

६ देखो 'सांवळो' (रू. भे.)

संवह-सं. पु. [सं.] १ एक वायुमार्ग।

२ देवताओं के विमानों का चालक वायु।

३ अग्नि देव की जिह्वा का नाम।

संवाद-सं. पु. [सं.] १ वार्तालाप, बात-चीत।

उ०—दोनूं मां-बेटियां रा संवाद बादळ सुण्या तो ग्रबस पण वांनें समझ्यो कोनीं।—फुलवाड़ी

२ खबर, समाचार।

उ०—सेतपाल जी बोल्या कुसल संवाद छै पण राजा विक्रम गादी सचितो छै।—पंचदंडी री वारता

३ प्रसंग।

४ सहमति, अनुमति।

५ वहस, वाद-विवाद।

रू. भे.—संवादो, समंवाद, समवाद।

संवादक-वि. [सं.] १ संवाद करने वाला, बातचीत करने वाला।

२ समाचार देने वाला।

संवादन-सं. पु. [सं.] १ भाषण।

२ बातचीत, संवाद।

संवादी-वि. [सं.] १ सहमत होने वाला।

२ बातचीत करने वाला।

३ बराबर, सदृश।

४ समान, बराबर।

उ०—तुम पातसाहां के संवादी सूर तें सूर। तुमारी सिहाय ग्रावै मेरे मुख नूर।—रा. रू.

सं. पु.—जो स्वर राग के वादी स्वर का निर्वाह करे। (संगीत)

रू. भे.—समवादी।

संवादो-सं. पु.—१ लघु काव्य।

२ देखो 'संवाद' (रू. भे.)

संवार-सं. स्त्री.—१ कृषि योग्य भूमि को समतल करने तथा मिट्टी के ढेलों को तोड़ने के लिए लकड़ी का बना एक उपकरण विशेष, भूमि समतल करने का पाटा, हेंगा।

[सं.] २ प्रातः काल, सुबह।

उ०—१ कवेसरां मुखे वांणी कहांणी रहांणी ग्रीत, सहेनांणी जेणी सांची वाखांणीजे संवार।—नाथो बारहठ

४ संवारने की क्रिया या भाव।

५ बचत।

मुहा.—घर हुवै संवार तो भख मारो गवार=घर में लाभ होता हो तो अन्य लोगों की बदनामी से नहीं डरना चाहिए।

६ हजामत।

रू. भे.—सुंवार, सुग्रार, सुवार।

संवारण-स. स्त्री.—१ हटाने या दूर करने की क्रिया या भाव।

२ निषेध करने का भाव।

३ संवारने की क्रिया या भाव।

वि.—सुधारने वाला।

उ०—हरि पावक पावक पख जारण पारब्रह्म अघ मेटण कारण। जळ थळ वास अरि ग्रास निवारण, नाव निरुप घट घाट संवारण — ह. पु. वा.

रू. भे.—सुंवारण।

संवारणौ, संवारबौ-क्रि. स.—१ अलंकृत करना, सजाना।

उ०—१ वयानें तो रांमजी घोड़ा सिणगारो वयांनें पाखर कसिया। चुण चुण कळियां सेज संवारूं ऊपर गादी तकिया।—मीरां

उ०—२ गाल वजावै गोलणां, गोल संवारै गात। सदा नचीता संचरै, सदा सुहागण मात।—बां. दा.

उ०—३ जतन जतन कर पंथ निहारूं, पिव भावै त्यों ग्राप संवारूं। ग्रब सुख दीजै जाउं वलिहारी, कहै दादू सुन विपति

हमारी। —दादूवांणी

उ०—४ काजळ तो भरियो ए जच्चा रांणी रै कूंपलो ए बहू संण-गारं दे नैण संवारै। —लो. गी.

२ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुंदर जान पड़े।

उ०—सांपड़ि खीर समंद दुरग संवारिया। धारा फेंण कलिंद तनूंजा धारिया। —बां. दा.

३ रचना, बनाना।

उ०—स्यांमा पातळ दसण दमकणा अधरे बिंबां। झुकंती पीण कुचां धण चालै धीर नितंबां। नाभि उंडाळी छीण कटि चळ मिरगा नैंणी। विधना रूप-गुमेज संवारी पेल सेलांणी। —मेघ

४ व्यवस्थित या ठीक रूप देना।

उ०—सील की वाड़ संवार चहुं दिस, पेम की फांसी डारै रे। जनहरिरांम मारि मन मिरघा, सब ही कांम सुधारै रे।

—अनुभववांणी

५ तैयार करना, सजाना।

उ०—सोधन पीवजो साज संवारी, अब वेगि मिळो तन जाइ बनवारी। सांज स्रंगार कीया मनमांही अजहूं पीव पतीजै नांही।

—दादूवांणी

६ संभालना, ठीक करना।

उ०—१ डिग मती रे सरवंरा लांबी छोळ न देय। आपै ही उड जावसां, पंख संवारण देय। —अग्यात

उ०—२ पांख संवारै पव करै, डाळा रग भरेह। उडण वाळो हंसलो, बन बन डोय करेह। —अग्यात

७ सुधारना।

उ०—१ हुसंगसाह री सीख में कही छै रैयत व सिपाही रा कांम संवारणै में उतावळ अन्याय छै। —नी. प्र.

उ०—२ जापै में चाहे सूंठ यो सांग संवारै जीरो। सेजां में चांहे यै भोळी भावज म्हारो वीरो। —लो. गी.

उ०—३ जिको कांम बणै सो बुद्धि रा जोर सूं संवारै।

—नी. प्र.

उ०—४ आपम सूरति चह्नणं, नंह मांणा संसारै। ओको अचळ दुरगमा, वह कांम संवारै। —मालो सांदू

८ साफ करना, बुहारना।

उ०—बंधिया सील पोथी कथा, सुपह पंथ संवारियो। सीभंत आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधारियो। —वील्होजी

९ अन्त स्पर्श करना, अन्तिम रूप देना।

उ०—म्हारै गळाई टांगड़ा छीदा करनै जद वै कूंद माथै मुळेट घरनै पाउट लेवण लागा, पाउट लियां पछै संवारण लागा अर संवारियां पछै न्यारा न्यारा झेलां में वासण घरिया तो म्हनै अैडी लखायो के विरमाजी म्हारी नकल काढै है। —फुलवाड़ी

१० तेज करना, तीक्ष्ण करना।

उ०—१ खुदा तालारी कृपा सूं बीरबळ मोनूं मिळियो हो। म्हारा दिल मांहली बात बाहर आंणतो दारू ज्यूं। म्हारा सुखनवांण संवारण नूं खुरासांण हुतो। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ दुजड़ बांण जमदाढ, सेल दे बाढ संवारचा। अणियां धार उपेत, नेतबंध 'जैत' निहारचा। —मे. म.

११ ठीक करना, जीर्णोद्धार करना।

उ०—जैमल कोट फेर संवरायो सहर रो मंडांण निपट सखरो छै।

—नैणसी

१२ सुचारू रूप से किसी कार्य को करना।

१३ ठीक करना।

संवारणहार, हारौ (हारी), संवारणियौ—वि०।

संवारिओड़ौ, संवारियोड़ौ, संवारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

संवारीजणौ, संवारीजबौ—कर्म वा०।

संमारणौ, संमारबौ, संवारणौ, संवारबौ, संमारणौ, समारबौ, सवारणौ, सवारबौ, सुंवारणौ, सुंवारबौ—रू० भे०।

संवारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सजाया हुआ. २ किसी चीज को ऐसा रूप दिया हुआ कि उससे वह सुंदर व अच्छी जान पड़े. ३ रचाया हुआ, बनाया हुआ. ४ व्यवस्थित या ठीक रूप दिया हुआ. ५ संभाला हुआ, तैयार किया हुआ, ठीक किया हुआ. ६ सुधार किया हुआ. ७ साफ किया हुआ, बुहारा हुआ. ८ अन्तस्पर्श किया हुआ, अन्तिम रूप दिया हुआ. ९ तेज या तीक्ष्ण किया हुआ. १० जीर्णोद्धार किया हुआ, ठीक किया हुआ. ११ सुचारू रूप से कार्य सम्पन्न किया हुआ।

(स्त्री. संवारियोड़ी)

संवारै—अव्य. [सं. श्वः] १ आने वाला दिन।

उ०—तरै संवळसिंघ कहाड़ीयो-संवारै हूं जायनै परो काढीस।

—नैणसी

उ०—२ आथण रो वळै मूळराज सीहाजी रै डेरै आयो, वीनती घणी कीवी। संवारै मुकांम कीजै। म्हारो घर पवीत्र कीजै।

—नैणसी

उ०—३ आथणी वीसमी किसो अब अवरची, समी घर सेख रै बणी सादी। सिंध मुलतांण री सुध लै सिधाया, दूध तूं संवारै पियै दादी। —गोपीनाथ गाडण

२ प्रातः काल, तड़के।

उ०—१ चतुर होय कोई चेला चेली, ऊठ संवारै आवै। दरसण कर साधां रै दड़कै, पावां में पड़ जावै। —ऊ. का.

उ०—२ भली आकृति भाळ, घणी वणियां थुथकारै। राखै घणी धिणाय, पेट भर सांझ संवारै। —दसदेव

रू. भे.—सुंवारै, सुंवारी।

संवाळौ—देखो 'सुंवाळौ' (रू. भे.)

(स्त्री. संवाळी)

संवास-सं. पु. [सं.] १ साथ बसना या रहना।

२ पारस्परिक सम्बन्ध।

३ सभा, समाज।

४ घर, मकान।

५ जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान।

६ स्त्री संभोग, मैथुन।

संवाहक-वि. [सं.] १ ले जाने वाला।

२ पहुँचाने वाला।

संवाहन-वि.[सं.] १ चलाने की क्रिया, परिचालन।

२ ढोना, उठाकर ले चलने की क्रिया।

संविग्य-वि. [सं. संविज्ञ] पूरी तरह से जानकार।

संविग्यांन-सं. [सं. संविज्ञान] १ पूर्ण ज्ञान।

२ सहमत, समर्थन।

३ मंजूरी, स्वीकृति।

संवित-सं. स्त्री. [सं. संविद्] अंगीकार, स्वीकृत। (डि. को.)

संवीतपत्र-सं. पु.—वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिए प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो।

संवी—देखो 'समी' (रू. भे.)

उ०—माथै नाळी ऊंची राख संवी आंवळ घर दी। गुळ खोपरा अर आसां रै भेळी आंवळ नैं बूर दी।—फुलवाड़ी

उ०—२ जे आप संवी सिझ्या घर्क वहीर व्हिया तो म्हे अेक ई टुकड़ो नीं तोड़ांला।—फुलवाड़ी

उ०—३ तरै कह्यो—आंवांरी आंवली हुवो। सुवचन कहतां संवी आंवां री आंवली हुई, सु आंवली अजेस छै।—नैणसी

उ०—४ मंनसा भोजन मन संवी, हरि दीदार मिलाय। फुलो हळवी पाटो कुंवळी, वीजक इधक खिवाय।—वील्होजी

उ०—५ संवी सिझ्या फोज कूच कीधो। खंख रा गोट इण विध आभै चढ्या के ढळतो गुलावी उजास मगसो पड़ग्यो।—फुलवाड़ी

संवेग-सं. पु. [सं. संवेग] १ पूर्ण वेग, गति की तीव्रता, तेजी।

२ उत्तेजना, क्षोभ।

३ मोक्ष की अभिलाषा, इच्छा।

उ०—संवेग सुधारस नीर सबल सरवर भरया रे, पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे।—ऐ. जै. का. सं.

३ विषय वासनाओं का त्याग, निवृत्ति, संयम।

उ०—१ वाद भणी विद्या भणीजी पर रंजण उपदेस। मन संवेग धरयउ नहीं, किम संसार तरेस।—स. कु.

४ वैराग्य भाव।

उ०—१ धनउ सालिभद्र बेहुं, भगवंत आदेस ले जी हो। संवेग सुद्ध धरेइ, वैभार गिरि ऊपरि चढ्या जी हो।—स. कु.

उ०—२ नारी तजि नीवउ ऊतरयउ संवेग मारग सूधउ धरयउ। सिला ऊपरि संथारउ करयउ वेगइ सुरसुंदरि नइ वरयउ।—स. कु.

५ सम्यकत्व के पांच अंगों में से एक अंग। (जैन)

संवेगी-वि.—१ वे जैनी साधू जो प्रायः पीली धोती व पीली चादर धारण करते हैं एवं २७ दिनों से अधिक किसी एक स्थान पर नहीं ठहरते, जैनी। (मा. म.)

२ सम्यकत्व को धारण करने वाला। (जैन)

उ०—जस नांमी 'सिवचंद' जी, पावुं चिहुं खंड नांम। संवेगी सिर सेहरो, कीधा उत्तम कांम।—ऐ. जै. का. सं.

२ चरित्रवान, निष्ठावान।

३ वैरागी।

४ त्यागी।

उ०—छोडी रिद्ध छती ए संवेगी सुद्ध यती ए। पाप न लगावै रती ए।—जयवांणी

रू. भे.—समेगी

संवेटणौ, संवेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—थांरै बाप हूंड्यां लीखी, थांरै दादै हूंड्यां लिखी, पाटा पाटी थेई संवेट्या कोइ नहीं।—भि. द्र.

संवेटणहार, हारो (हारी), संवेटणियो—वि०।

संवेटिओड़ो, संवेटियोड़ो, संवेट्योड़ो—भू० का० कृ०।

संवेटीजणौ, संवेटीजबौ—कर्म वा०।

संवेटियोड़ो—देखो 'समेटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. संवेटियोड़ी)

संवेद-सं. पु. [सं.] १ सुख दुःख का बोध।

२ ज्ञान।

संवेदन-सं. पु. [सं.] १ सुख दुःख आदि का बोध, अनुभव।

२ प्रकट करने की क्रिया।

संवेदित-वि. [सं.] अनुभव या बोध कराया हुआ, बताया हुआ।

संवेद्य-वि. [सं.] १ अनुभव करने योग्य।

२ बताने योग्य।

सं. पु.—एक पुण्य स्थल।

संवेस-सं. पु. [सं. संवेश] १ पहुँचने की क्रिया।

२ प्रवेश करने या घुसने की क्रिया।

३ बैठने की क्रिया।

४ एक प्रकार का रतिबंध।

५ निद्रा, नींद।

६ स्वप्न।

संवेसक-सं. पु. वि. [सं. संवेशक] चीजों को क्रम से रखने वाला।

संवेसण-सं. स्त्री. [सं. संवेशन] शय्या। (अ. मा.)

संवेस्टण-सं. स्त्री. [सं. संवेष्टन] १ घेरने या लपेटने की क्रिया।

२ ढांकने की क्रिया।

संवो—देखो 'समो' (रू. भे.)

उ०—१ सु माथो संवौ हुंतो सो फिरनै अपूठो हुवौ तरै साहजादी पूरव जनम री वात कही।—नैणसी

उ०—२ रांवण संवौ न राजवी लंका संवौ न थांन। कही पराई जे सुणै, जां सिर नांही कांन।—मेहोजी गोदारौ

संव्रत-सं. पु.—१ वरुण का एक नाम। (डि. को.)

२ कश्यप कुल में उत्पन्न एक काद्रवेय नाग का नाम।

३ भगवान श्रीविष्णु का नाम।

संव्रति-सं. स्त्री. [सं. संवृत्ति] ब्रह्मा की सभा में रहने वाली उनकी उपासिका एक देवी।

संस-सं. पु. [सं. संशय] १ आशंका, शक।

२ शपथ।

उ०—पुनह राग्रै सव पसु अखै, सरेह कैम वन-मंस। कही तेम जिम हम करै, सो सलुक सोइ संस।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

संसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—१ संसकार स्तुतिवांण सुणि, कूरम कै सक्कार। परणावै पधरावियौ, महलै राजकंवार।—रा. रू.

उ०—२ सरीर संसकार सार नीर छीर से सनैं। विध्वंस वेरि वंस को प्रसंसनीय तै बनैं।—ऊ. का.

उ०—३ राजा जैसाह कन्यावळ को संकळप लियौ। सो वेदोकति संसकार, करि पार कियौ।—रा. रू.

संसकिरत, संसक्रत—१ देखो 'संस्क्रत' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)

उ०—१ कांनां नै सवद न भावै सुत कटु, सवदन सुधगत संसकिरत। अप्रयुक्त सुध सदन आाव्यौ, अरथ कहण असमरथ अत।

—बां. दा.

उ०—२ पढ खट भाख संसक्रत पिंगळ, सुकवि वगौ समझ गुण सांम। प्रांणी रांम नांम विण पढियां, निज पढ पसु धरायौ नांम।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'संसक्रित' (रू. भे.)

उ०—मंदिरन्तरि किया खिणन्तरि मिळिवा विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह संसक्रित करण सु तणु रति संसक्रत।

—वेलि

संसक्रती-सं. पु. [सं. संस्कृतः] १ संस्कृत भाषा का पंडित।

उ०—डिंगळियां मिळियां करै, पिंगळ तणौ प्रकास। संसक्रती व्है कपट सज, पिंगळ पढियां पास।—बां. दा.

२ देखो 'संस्क्रति' (रू. भे.)

संसक्रित-सं पु.—संस्कार-विधि।

उ०—मंदिरन्तरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत।

—वेलि

२ देखो 'संस्क्रत' (रू. भे.)

उ०—किसूं व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत, संसक्रित तणै क्यूं फिरै सागै। लाखरा ठाकरां तणा माथा लुळै। आखरां तणा गजबोह आगै।—नवलजी लाळस

संसत—१ समाज।

२ देखो 'संसद' (रू. भे.)

संसतउ-सं. पु.—शिथिल आचार।

उ०—विहुँ भेद कह्यउ संसतउ सुभ असुभ प्रकृति संपतउ।

—वि. कु.

संसतन-सं. पु. [सं. संस्तवन] यज्ञ, हवन। (अ. मा.)

संसतर-सं. पु. [सं. संस्तरः] यज्ञ, हवन। (अ. मा; ह. नां मा.)

संसति, संसती-सं. स्त्री. [सं. संशति] पवमान नामक अग्नि की पत्नी जो सभ्य एवं आवसथ्य की माता थी।

संसद-सं. स्त्री. [सं.] राजसभा, सभा।

उ०—स्वांमी संसद सुबरन समांन, जालम न कोह पै लोह जांन।

—ऊ का.

२ लोक सभा।

३ मंडली।

रू. भे.—संसत।

संसप्त-वि. [सं. संशप्त] १ शापग्रस्त।

२ वचनवद्ध।

संसप्तक-सं. पु. [सं. संशप्तकः] १ वह योद्धा जिसने विजय प्राप्त किए विना रणक्षेत्र छोड़ने की शपथ ले रखी हो।

२ वह योद्धा जिसने विपक्षी या शत्रु को मारे विना युद्धक्षेत्र से हटने की प्रतिज्ञा ली हो।

३ षड्यन्त्रकारी जिसने किसी का हनन करने का बीड़ा उठाया हो।

४ चुना हुआ योद्धा।

संसफोट—देखो 'संस्फोट' (रू. भे.) (अ. मा.)

संसमन-सं. पु. [सं. संशमन] १ शांत करने की क्रिया।

२ नष्ट करने की क्रिया।

३ दोषों को विना घटाये-बढाये शोधन करने वाली औषधि।

संसय-सं. पु. [सं. संशय] १ संदेह, शक। (डि. को.)

उ०—१ सो भूमि भइ साथरी, कहियै कारण कूण। यह संतां संसय हरौ, ऋरा करौ सुख भूण।—गोविंदगांमजी

उ०—२ मुकुंदसिंघ, मोहणसिंघ, कन्हीरांम, जूझारसिंघ च्यारि ही भाई पैलां नूं जय संसय जणाइ खागां रा खेल्ह मैं खंडविहंड होइ विमांण वैठा नारियां रै साथ गलबांह कीधां सुरलोक पूगा।

—वं. भा.

२ भ्रम।

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी वर पाऊं।—ऊ. का.

३ अनिश्चयात्मक ज्ञान ।
४ दुविधा ।
५ खतरा, संकट ।
रू. भे.—संसै ।

संशयात्मक-वि. [सं. संशयात्मक] १ जिसमें संदेह हो, संदिग्ध ।
२ अनिश्चित ।

संसयात्मा-सं. स्त्री. [सं. संशयात्मा] संदेहवादी ।

संसरग-सं. पु. [सं. संसर्गः] १ सम्पर्क, लगाव ।
२ मेल, मिलाप ।
३ मैथुन, संभोग ।
४ सहवास ।
५ निकटतम संबंध ।

संसरगदोस-सं. पु. [सं. संसर्गदोष] किसी के साथ रहने से उत्पन्न होने वाला दोष, बुराई ।

संसरगी-वि. [सं. संसर्गिन्] सम्पर्क, संसर्ग या लगाव रखने वाला ।

संसरण, संसरणौ-सं. पु. [सं. संसरणं] सांसारिक ।
उ०—धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण । अतिसय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ।—वि. कु.
२ राजपथ, राज्यमार्ग । (डि. को.)
३ नगर के समीपस्थ धर्मशाला ।
४ एक जन्म से दूसरा जन्म, पुनर्जन्म ।

संसरप-सं. पु. [सं. संसर्पः] ज्योतिष में चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक भाग जो किसी क्षय मास वाले वर्ष में पड़ता है, अधिक मास ।

संसलभ-सं. पु.—छप्पय छंद का ३१ वां भेद जिसमें ४० गुरु ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । इसे सरभ भी कहते हैं ।

संसाक्रित—देखो 'संस्क्रत' (रू. भे.)
उ०—अध्यातम परम विसतार बावन अखर, संसाक्रित प्राकृति विगति सूझै । षाड़गति गीत संगीत समझण पौहचि, बहतर कळा घट भाख बूझै —ल. पि.

संसाधक-वि. [सं.] १ सम्पन्न करने वाला ।
२ जीतने वाला ।

संसाधन-सं. पु.—१ कार्य की तैयारी, आयोजन ।
२ दमन, जीतना, दबाना ।

संसाधिनी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की विद्या विशेष ।
उ०—सगर्भिणी तमोहरणी विघातकारिणी गिरिदारणी गरुड़-वाहिनी संसाधिनी ।—व. स.

संसार-सं. पु. [सं.] १ वह जगत या दुनिया, जिसमें प्राणी आते-जाते रहते हैं, मृत्युलोक (डि. को.)
उ०—१ जनहरीया संसार में, देख-पारिख मत भूल । तेरा सजन को नहीं, राम नांम सं तूल ।—अनुभववांणी
उ०—२ संसार में वांणिया ही पैलांतर विगाड़णियां वडा माड़ा मांणस है । बोरा वांणिया तो खोटा कलम कसाई हुवै है ।
—दसदोख
उ०—३ म्हे भगवांन रा गुण बतावां छां । संसार नै मोक्ष रो मारग बतावां छां ।—भि. द्र.
२ सांसारिक झंझट, प्रपंच ।
उ०—१ जग अवतार नमो जगदीसर, अनत रूप धारण तन ईसर । तवां ज हरि अवतार तुहारा, सदगत प्रांमै छुटै संसारा ।
—ह. र.
उ०—२ जन हरीया संसार की, संगति करै न कोय । या संगति सुं उपजै, कळह कलपना दोय ।—अनुभववांणी
३ माया जाल ।
उ०—संनेही संसार को, हरि जन सेती नांहि । हरीया मकड़ी जाळ ज्यूं, मन विध्या ता मांहि ।—अनुभववांणी
४ सृष्टि, रचना ।
उ०—धरै इक पाप धरै इक धम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मझ आप ही रम्मणहार ।
—ह. र.
५ आवागमन, भव-चक्र, पुनर्जन्म ।
६ मार्ग, रास्ता ।
७ घर-गृहस्थी और उसका जीवन ।
उ०—ओऊंकार ऊपरै, काठ चाढ़ूं जळ कमळ । धरूं विसन रो ध्यांन, लेऊं परवाह गंग जळ । वसूं जाय वनवास, हाड गाळूं हेमाळै । तापूं घूमर ताप, अगन झाळां ऊनाळै । परवार सहित छोडूं परो, सारो नेह संसार रो । यण देह मिळै मोनूं अभंग, सेरसींग 'सरदार' रो ।—पहाड़खां आढो
मुहा०—१ संसार छोडणौ=संन्यासी होना, मर जाना ।
२ संसार री हवा खांणी=सांसारिक व्यवहार में अनुभव प्राप्त करना ।
३ संसार री हवा लागणी=सांसारिक रंग चढ जाना, व्यवहार में चतुर होना, छली या धूर्त होना ।
४ संसार सूं अंजळ ऊठणौ=मर जाना ।
५ संसार सूं ऊठणौ=मर जाना, समाप्त होना ।
६ संसार सूं नातौ तोड़णौ=वैराग्य धारण करना ।
७ संसारी व्हैणौ=गृहस्थ होना ।
रू. भे.—सिसार, सैंसार ।
अल्पा;—संसारो ।

संसारगुर, संसारगुरु-सं. पु. [सं. संसार-गुरु] १ जगद्गुरु ।
२ कामदेव ।

संसारचकर, संसारचक्र-सं. पु. यो. [सं. संसारचक्र] १ सांसारिक झंझट, प्रपंच ।

२ सांसारिक परिवर्तन ।

३ आवागमन का चक्र, भवचक्र ।

संसारजन, संसारजुन—देखो 'सहस्सारजुन' (रू. भे.) (अनेका)

संसारि, संसारी–वि. [सं. संसारिन्] १ संसार में आकर बार-बार जन्म लेने और मरने वाला ।

उ०—काया कोट दसूं दरवाजा, ताक भरम का भारी। कांम करम की भोगळ मारी, खसि खसि ग्या संसारी ।—अनुभववांणी

२ दुनियादार, गृहस्थी ।

उ०—१ संसारी सगळा मोसूं गया, म्हारौ कियौ हूं भोगती थी, पण तूं कठै आयौ ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ लख चौरासी बाळिद केरौ, नायक अगम अपारी । बाकी गम विरळा जन जांणै, क्या जांणत संसारी ।—अनुभववांणी

सं. पु.—जीवधारी, जीवात्मा ।

सं. स्त्री.—दुनियादारी ।

रू. भे.—सैंसारी ।

संसारिक, संसारी, संसारीक—देखो 'सांसारिक' (रू. भे.)

उ०—भांमणि सेती भोगवै होजी, जै सुख संसारिक । अवसर आपणी, सुत कारण सहु, अवगिणी होजी मांणै लछि अलीक ।
—वि. कु.

संसारौ—देखो 'संसार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ भाई मारि भूंडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी । सील राखण नारी सती, सील वड्डउ संसारौ जी ।—स. कु.

उ०—२ जस फेल्यौ सहू संसारौ सुध दांन थकी खेवौ पारौ ।
—जयवांणी

उ०—३ जेसलगिर चाढ संसारौ जांणै, सोहड तुरंगम करे सज उदयासीह भला ओहटिया, रिम गढ कटकां तणी रज ।
—महारांणा उदयसिंह रौ गीत

संसालण–सं. स्त्री—कढी से मिलता-जुलता तरल खाद्य पदार्थ ।

उ०—भागां वदन संसालणै, सालणै बांधी पालि । पीजइ पांणी परिमल निरमल वहुल विचालि ।—जयसेखर सूरि

संसि–वि. [सं. शसि] घोषणाकर्त्ता ।

संसिद्ध, संसिद्धि, संसिध संसिधि–स. स्त्री. [सं. संसिद्धि] १ स्वभाव ।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ लक्षण ।

३ प्रकृति ।

४ मदमस्त स्त्री ।

५ सम्यकपूर्ति, मोक्ष, मुक्ति ।

वि. [सं. संसिद्धि] १ पूर्णतया सम्पन्न ।

२ योगसिद्ध ।

संसीत–सं. पु.—ठंड से जमा, ठंडा ।

संसुत–सं. पु. [सं. संसुत] विश्वामित्र का एक पुत्र ।

संसुद्ध–वि. [सं. संशुद्ध] प्रायश्चित के द्वारा संशोधित ।

संसै—देखो 'संसय' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—पत्र लिखावै प्रीतसूं, आप धरम ची आंण । डर संसै यूं छेदियौ, कर कर बीच कुरांण ।—रा. रू.

संसोधक–वि. [सं. संशोधक] १ सुधार करने वाला, ठीक करने वाला ।

२ संस्कार करने वाला ।

३ दायित्वों को चुकाने वाला ।

संसोधण, संसोधन–सं. पु. [सं. संशोधन] १ त्रुटि, दोष आदि हटाने की क्रिया या भाव ।

२ सुधारने की क्रिया या भाव ।

३ शुद्ध एवं साफ करना ।

४ दायित्वों को चुकाने की क्रिया या भाव ।

संसोधनीय–वि. [सं. संशोधनीय] १ जो संशोधन करने के लिए हो ।

२ जो संशोधन के योग्य हो ।

संसोधित–वि. [सं. संशोधित] जिसमें संशोधन किया गया हो ।

संसोधी–वि. [सं. संशोधी] संशोधन करने वाला, सुधारने वाला ।

संसोभित–वि.—सुशोभित ।

उ०—दुरग चित्तोड़ संसोभित ठाई, ततखीण राय पहुंतौ जाई ।
—वी. दे.

संसोसण–सं. पु. [सं. संशोषण] सोखने या शोषण करने की क्रिया ।

संसौ—देखो 'सांसौ' (रू. भे.)

उ०—१ संका छऊं अणगार नीं मुझ मन उपनी सोय । नेम जिणंद नै पूछ नैं संसौ भांजु मोय ।—जयवांणी

उ०—जांण मती वय संसौ राजिंद, तात कहूं विध तोनूं ।
—र. रू.

उ०—३ घाट सुरंगी गोरियां, आदू कहवत ऐह । पदमणियां हम-रोट है, राख म संसौ रेह ।—बां. दा.

उ०—४ लाजाळू बागां मही, क़ायर कटकां मांहि । परसै नरक रौ पवन, सकुचौ संसौ नांहि ।—बां. दा.

उ०—५ संसा रोग'र दोख, जीप गुर गम सूं । हरिहां दास कहै हरिरांम, राज मुंहकंम सुं ।—अनुभववांणी

उ०—६ निरधन के चिंत्या जी धन की, धनवंत फिरत अधाया । या दोऊ का मिटै न संसा, जब संतोस न आया ।—अनुभववांणी

उ०—७ दादू संसा जीव का, सिख साखा का साल । दोनौं कौ भारी पड़ै, होगा कौन हवाल ।—दादूवांणी

संस्करण–सं. पु. [सं.] १ दुरुस्त या ठीक करने की क्रिया ।

२ संस्कार करने की क्रिया या भाव ।

३ पुस्तक, पत्रिका आदि की एक बार की छपाई ।

संस्कार–सं. पु. [सं.] १ सुधार, दुरुस्ती ।

२ शुद्धि, संशोधन ।

३ संगत, शिक्षा, उपदेश आदि से मन पर पड़ा प्रभाव ।

४ पूर्व जन्म की वासना ।

५ धार्मिक दृष्टि से पवित्र करने की क्रिया।

६ जन्म से लेकर मृत्यु तक द्विजातियों में होने वाले आवश्यक कृत्य।

७ मृतक की क्रिया।

८ इन्द्रियों के विषयों के ग्रहण से मन पर जमने वाला प्रभाव।

९ धार्मिक अनुष्ठान।

रू. भे.—संसकार, संहसकार, सँसकार।

संस्कारक–वि. [सं.] संस्कार करने वाला, शुद्ध करने वाला।

संस्कारहीन–वि. यौ. [सं. संस्कारहीन] वह व्यक्ति जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो।

संस्कृत–सं. स्त्री. [सं. संस्कृतं] १ आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा, देववांणी।

२ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

वि. [संस्कृत] १ संस्कार किया हुआ, परिमार्जित, परीष्कृत।

२ जो धो मांज कर शुद्ध किया गया हो, निखारा हुआ।

३ सुधारा हुआ, ठीक किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ।

४ विवाहित।

रू. भे.—संसक्रित, संसक्रत, सँसक्रत।

संस्कृतजल्प–सं. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक कला विशेष। (व. स.)

संस्क्रति, संस्क्रती–सं. पु. [सं. संस्कृति] १ संस्कार करने या संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव।

२ वे सब सामाजिक बातें जिनके द्वारा मानव जीवन तथा व्यक्तित्व को मापा जा सकता है।

वि. वि.—इसमें चिन्तन तथा कलात्मक सर्जन की वे क्रियाएँ भी सम्मिलित हैं जो मानव व्यक्तित्व व जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए भी उसे समृद्ध बनाने वाली हैं अर्थात शास्त्र, दर्शन आदि में होने वाले चिन्तन, साहित्य, चित्रांकन, एवं परहित साधन आदि नैतिक आदर्श ही संस्कृति है।

३ जयसेन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—संस्क्रती।

संस्तव–सं. पु. [सं.] १ प्रशंसा, तारीफ।

२ स्तुति, गुणगान।

३ परिचय, पहचान।

संस्तवणौ, संस्तवबौ–क्रि. स. [सं. संस्तवं] गुणगान करना, कीर्तिगान करना, स्तुति करना।

उ०—१ तीर्थंकर रे चौवीसे मैं संस्तव्या रे, हां रे रिखभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे।—स. कु.

उ०—२ प्रकरण निदांन गुरु परंपर, मुणी सहू अधिकार ए। संस्तव्यौ नाम जिणंद पाठक, धरम वरधन धार ए।—वृ. स्त

संस्तवणहार, हारौ (हारी), संस्तवणियौ—वि०।

संस्तविग्रोड़ो, संस्तवियोड़ौ, संस्तव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संस्तवीजणौ, संस्तवीजबौ—कर्म वा०।

संस्तवियोड़ौ–भू. का. कृ.—गुणगान किया हुआ, कीर्तिगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ।

(स्त्री. संस्तावियोड़ी)

संस्तूत–सं. पु.—स्तुति, गुणगान।

उ०—सुणनै हेठौ ऊतरी, करी वंदना संस्तूत। रथ बेसी वंदन गयौ, देवण मुक्ति रा सूत।—जयवांणी

संस्थांन–सं. पु. [सं. संस्थान] १ ठहरने की क्रिया या भाव।

२ ठहरने का स्थान।

३ किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से बना हुआ मंडल।

४ सभा।

संस्था–सं. स्त्री. [सं.] १ ठहरने की क्रिया या भाव।

२ सभा, मंडल।

३ व्यवस्था, मर्यादा।

४ विधि, तरीका।

संस्थापक–वि. [सं.] १ स्थापित करने वाला।

२ आरम्भ करने वाला, शुरुआत करने वाला।

संस्थापन–स. पु. [सं.] १ स्थापना करने का कार्य।

२ निर्माण, बैठाने या जमाने की क्रिया।

संस्थापित–वि. [सं.] १ जमाया हुआ, स्थापित।

२ शुरू या जारी किया हुआ।

संस्थाप्य–वि. [सं] जो संस्थापन के योग्य हो।

संस्परद्धा–सं. स्त्री. [सं. सस्पर्द्धा] १ ईर्ष्या, द्वेष।

२ किसी के बराबर या समान होने की इच्छा।

संस्परस–सं. पु. [सं. संस्पर्श] १ अच्छी तरह स्पर्श होने का भाव।

२ संगम, संयोग।

३ संसर्ग, मैथुन।

संस्थल–सं. पु.—एक प्रकार का शस्त्र। (व. स.)

संस्फोट, संस्फौट–सं. पु. [सं. संस्फोटः] युद्ध, समर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—संसफोट।

संस्मरण–सं. पु. [सं.] १ अच्छी तरह या पूरी तरह याद, स्मरण।

२ संस्कारजन्य ज्ञान।

संस्रत, संस्रति–सं. स्त्री. [सं. संसृतिः] १ जन्म। (अ. मा.)

२ आवागमन, भवचक्र।

३ आने जाने का मार्ग।

उ०—संस्रति सतम मान, पोळ दरवाजा दुकानां। मेड़ी मोड़ा मैंल मनोहर बड़ा मुकांनां।—दसदेव

४ संसार, जगत।

उ०—कायर मग मेटक करयां, बणै न सुइड़ सुभाव। सुण्यौ न संस्रति सोभतौ, गयौ पर्ने गजगाव।—रेवतसिंह भाटी

५ याददाश्त।

संस्रय-सं. पु. [सं. संश्रय] १ शरण, आश्रय।

उ०—सबळां संस्रय पायकर, आंणे मूढ अनीत। हिरणाकुस लंकापति, भवन किया भयभीत।—नारायणसिंह सांदू

२ अभिसंधि, मेल, सुलह।

३ शरणस्थल, घर।

संस्रस्ठ-सं. पु. [सं. संसृष्ट] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

संस्रस्टि-सं. स्त्री. [सं. संसृष्टि:] १ मिलावट, मिश्रण।

२ परस्पर सम्बन्ध, लगाव।

३ घनिष्ठता।

४ एक से अधिक काव्यालंकारों का ऐसा समन्वय (मेल) जिसमें सब परस्पर स्वतंत्र हों, एक दूसरे के आश्रित न हों।

संस्रुत-वि. [सं. संश्रुत] स्वीकृत, अंगीकृत। (डिं. को.)

संस्रुत्य-सं. पु. [सं. संश्रुत्य] विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक।

संहंस—देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

संहंसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कळामेर सांमंद्र लोपै न उगै संहंसकर, धू चळै प्रळै व्है जाय धरनी। सुमरियां जेज किम थाय छै सुंदरी, जाय छै विरद कर साय जननी।—भोपाळदांन सांदू

संहंसदोयचख-सं. पु. [सं. द्विसहस्रचक्षु] शेषनाग। (डिं. को.)

संहंसदोयस्रवण-सं. पु. यौ. [सं. द्विसहस्रश्रवण:] शेषनाग। (डिं. को.)

संहट-सं. पु. [सं. संघट प्रा० सहंड] बैठक।

उ०—कांमालय अट्ठमी तणी, सांभइ संहट भणेवि। राजकुंअरि नीय घरि, गई ऊलट अंग धरेवि।—हीराणंद सूरि

संहतागद-सं. पु. [सं.] ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग।

संहतापन-सं. पु. [सं.] जनमेजय के सर्पसत्र में जलमरा एक ऐरावत कुलीन नाग।

संहतासव, संहतास्व-सं. पु. [सं. संहताश्व] इक्ष्वाकुवंशीय बर्हणाश्व राजा।

संहति-सं. पु. [सं.] समूह। (डिं. को.)

संहन, संहनन-सं. पु. [सं.] मनस्यु व सौवीरी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, पुरुवंशीय एक राजा।

संहरण-सं. पु. [सं.] १ पूर्णता।

उ०—मोह तिमिर भर संहरण भा मंडल प्रभु पूठि। झग-झग तेज-कइ छबकनउए, जिम रवि जलधर बूठि।—स. कु.

२ एकत्र करना, संग्रह करना।

३ नाश, संहार।

संहरणौ संहरबौ—देखो 'संघरणौ, संघरबौ' (रू. भे.)

उ०—इंह घरि अछइ मंत्रु लाख तणउ छइ धवलहरों। माहि पउढाडउ सत्र एकसरा, सवि संहरउ।—सालिभद्र सूरि

संहरणहार हारौ (हारी), संहरणियौ—वि०।

संहरिओड़ौ, संहरियोड़ौ, संहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

संहरीजणौ, संहरीजबौ—कर्म वा०।

संहरत्ता-वि. [स. संहर्त्ता] नाश करने वाला, संहारकर्त्ता।

उ०—देवी जगत करतार भरता संहरता देवी चराचर जग्ग सब में विचरता।—देवि.

संहरस-सं. पु. [सं. संहर्ष] १ रोमाञ्च, पुलक।

२ प्रतिस्पर्धा।

३ रगड़, मसलन।

४ हर्ष, आनन्द।

संहसपात-सं. पु. [सं. सहस्र+पत्र] कमल। (डिं. को.)

संहसफण-सं. पु. [सं. सहस्र+फन] शेषनाग।

संहार-सं. पु. [सं.] १ नाश, ध्वंस।

२ प्रलय। (डिं. को.)

३ संहार करने या मारने की क्रिया।

उ०—आकासे वार किता तैं आय, विधूसे त्रिपुरा, अम्रत पाय। वेदां री वाहर केती वार, सझे जुध कीध दईत संहार।—ह. र.

४ संचय, संग्रह।

५ एक नरक का नाम।

६ एक भैरव का नाम।

वि.—१ नाश करने वाला, विध्वंसक।

उ०—नमौ कुंभेण तणां भुज काळ, नमौ कुळ राकस वंस खंगाळ। नमौ मकराख्य इन्द्रजीत मार, नमौ सब राकस वंस-संहार।

—ह. र.

रू. भे.—संघार, सिंहार, संहारु।

संहारक, संहारकारी-वि. [सं.] विध्वंस करने वाला, संहार करने वाला, नाशक।

रू. भे.—संघारक।

संहारण-सं पु. [सं.] सिंह, शेर। (ना. डिं. को.)

संहारकाळ-सं. पु. [सं. सहारकाल] सृष्टि के विनाश का समय, प्रलय-काल।

संहारणौ, संहारबौ-क्रि. स. [सं. संहारणं] १ मारना, संहार करना।

उ०—१ मत्रां दळ मूगळ सैयद सेख, बणै ग्रह बाज कबूतर बेख। सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सेल, नरां ललकारि।

—मे. म.

उ०—२ धरमीं नर ऊपर कोमळ कर धारै, पापी पुरुसां नैं सदव्रत संहारै। तदऽनुग्रह बिन हा ग्रह ग्रह तूती, जिण तिण बिग्रह में निग्रह दी जूती।—ऊ. का.

उ०—३ लोयण धूम्र लुळाय, सुंभ निसुंभ संहारचा। रकत बीज आरोगि, मुंड चंडारिक मारचा।—मे. म.

२ नाश करना, ध्वंस करना।

संहारणहार, हारौ (हारी), संहारणियौ—वि०।

संहारियोड़ो, संहारियोड़ौ, संहारयोड़ो—भू० का० कृ०।

संहारीजणो, संहारीजबो—कर्म वा०।

संघारणो, संघारबो—रू० भे०।

संहारभैरव–सं. पु. [सं.] १ भैरव के आठ रूपों में से एक रूप, काल रूप, काल भैरव।

२ चौसठ भैरव के अन्तर्गत एक भैरव।

रू. भे.—संघारभैरव।

संहारियोड़ो–भू. का. कृ.—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ।

(स्त्री. संहारियोड़ी)

संहारु–वि·—देखो 'संहार' (रू. भे.)

उ०—थलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाभइं पुण तें सवि वार।
पंच जाति जीव न लाभइं पार, अनवरतु तीहं नउ हुइ संहारु।

—जयसेखर सूरि

संहित—देखो 'सहित' (रू. भे.)

संहिता–सं. स्त्री. [सं.] १ वह प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ जिसका पाठ प्राचीन काल से चला आ रहा हो।

२ राजकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह जैसे—भारतीय दंड संहिता।

३ वेदों का वह मंत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि निश्चित हैं।

४ धृतराष्ट्र की पत्नी जो सुबल राजा की कन्या थी।

संहिताकल्प–सं. पु. [सं.] अथर्ववेद का एक संहिता विभाग।

संहितासव, संहिताश्व–सं. पु. [सं. संहिताश्व] जमदग्नि महर्षि की पत्नी रेणुका का पिता एक भृगुवंशीय राजा।

संह्लाद–सं. पु. [सं.] १ हिरण्यकशिपु व कयाधु के पुत्रों में से एक।

२ सुमालि एवं केतुमती के पुत्रों में से एक पुत्र, राक्षस।

स–सं. पु. [सं. श] १ भोजन, खाना। (एका.)

[सं. शः] २ शिव, महादेव। (,,)

३ हिमालय पर्वत। (,,)

४ रंग। (,,)

५ संदेह, शक। (,,)

६ कल्याण-मंगल। (,,)

७ तालाब, सरोवर। (,,)

८ तीर, बाण। (,,)

९ सूर्य, सूरज। (,,)

१० पैर, पद। (,,)

सं. पु. [सं. ष] १२ नाश, संहार।

१३ मोक्ष, मुक्ति।

१३ शेष, बाकी।

१४ अवसान।

१५ आकाश, नभ। (एका·)

१६ विष्णु का नाम। (,,)

१७ इंद्र। (नां. मा.)

[सं. स] १८ सर्प, सांप। (एका.)

१९ पक्षी। (एका.)

२० पवन, वायु। (,,)

२१ छन्द शास्त्र में सगण गण का सूचक शब्द।

सं. स्त्री.—२२ पार्वती, दुर्गा। (एका.)

२३ सरस्वती नदी। (,,)

२४ लक्ष्मी। (,,)

२५ शिक्षा।

२६ शिखा। (,,)

२७ वाणी। (,,)

२८ आवाज, ध्वनि। (,,)

२९ दीप्ति, चमक। (,,)

३० जीवात्मा।

सर्व.—१ उस।

२ सब।

३ वह।

उ०—१ जउ साहिब तूं नाविय‍उ, मेहां पहलइ पूर। विचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरै दूर।— ढो. मा.

उ०—२ इम भणी गुटि दिउ सारदामंत्र पच्छइ स परिणिवा चालीउ ए। मुहतानंदन परिरीय वेस मयणह मंदिरि मंदिरि आवीउ ए।—हीराणंद सूरि

उ०—३ स भणइ सुणिन प्रयोजन भोजन लीहीसइ लोक। तुझ उत्सवि ईंट आंमिख स्वांमि खपइ तउ सोक·

—जयसेखर सूरि

वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ अदृष्ट।

अव्यय—१ एक निरर्थक अव्यय जो जोर देने के लिए या पाद-पूर्ति के अर्थ में प्रयोग होता है। गाने वाले कभी कभी छंद के बीच में इसे जोड़ देते है।

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, पड़मी वाहळियांह। ओलै ओ राखियइ, सूंधा काहळियांह।—ढो. मा.

उ०—२ जेठ महीनो लागियो स ढोला।—लो. गी.

उ०—३ मारू नूं आखइ सखी, आज स कांइ उदास। कांम चित्रांम जु दिट्ठु मइं, रूप न भूलइ तास।—ढो. मा.

उ०—४ हरीया बंदा क्या करै, सांई करै स होय। जीव जिंद जिन सिरजीया, तिन्ह का कीया जोय।—अनुभववांणी

२ तक, पर्यन्त।

उ०—पिंगळ पूगळ आविय‍उ, देसै थयउ सुगाळ। तेणि न राखी

सासरइ, अजै स मारू बाळ ।—ढो. मा.

उ०—२ रीसाविउ तै मेल्हइ झाल, सिर धूणइ मुखि पडइं लाल। खूणइ पाडिउ खूंखु करइ, अजी स डोकर कहीम्रं मरइं ।—वस्तिग

३ शब्दों के आरंभ में कुछ विशिष्ट या सहित का अर्थ उत्पन्न करने के लिए आने वाला एक उपसर्ग जैसे सकाम, सवेग, सजीव सस्नेह आदि ।

सई-सं. पु. [सं. शतं] निन्यानवे के बाद आने वाली संख्या, सौ ।

उ०—१ वाहण जेहनें पांचसै, वलीय पांच सइं हाट। घर गोकुल पिण पांच सै, तितला सकट सुघाट ।—वि. कु.

उ०—२ तुरीय सहइस पचास दोय सइं महगळ मंता। रांजकुली छत्तीस सोहड भड सेव करंता ।—प. च. चौ.

सर्व.—१ सव, समस्त ।

उ०—१ इण भांति सइं सखि आयउ वरखाकाल, सउ तउ वरनत कवि सुविसाल ।—वि. कु.

उ०—२ विरह सइं पीरी अति अधीरी, डरत विरहनि जोर। उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ, करत प्रियु प्रियु जोर ।—वि कु.

२ स्वयं, खुद ।

उ०—१ आडंवर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर। स्त्रीवीर सइं हथि दीखियउ, सूधी पालइ सीख, मुनिवर ।—स. कु.

उ०—२ सांभळि सांमी अम्ह घरसूत्तौ, तुम्ह घरि अछइ गंगापूत्तौ। मइं बेटी जउ तुम्ह देवी, तउ सइं हथि दूख भरेवी ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ धनदिहिं सइं हथि थापिय, वापी अ वर आरांमि। मणि कण धण संपूरिय, पूरिय द्वारका नांमि ।—जयसेखर सूरि

उ०—४ राइं तै तिहां कंचण लही, तै लिपि मांनी साची सही। विद्याविलास कीउ परधांन, राजा सइं हथि दिइ बहु मांन।

—हीराणंद सूरि

रू. भे.—सइ ।

सइंण—देखो 'सैंण' (रू. भे.)

उ०—सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी, सांभली विनय तणा जै वयण। हूं तुझ चरणे हो आयौ ध्यायौ, हेज सुं साचौ जांणी सइंण।

—वि. कु.

सइंथु-सं पु.—सिर का आभूषण विशेष ।

उ०—सइंथु सिरि सिंदूरिउ, वांधिउ मणि बत्रीस। वयठा जांणै सूर ससि, सहस्र फूल छइ सीस ।—मा. कां. प्र.

सइंफळउ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)

सइंभरि—१ देखो 'संभरी' (रू. भे.)

२ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—गोल्हण भणइ पातिसाह सुणउ, मांनइ नहीं बोल आपणउ। सांम दांम विधि च्यारि उपाय मइ साभल्यउ सइंभरि नउराय ।

—कां. दे. प्र.

सइंवर, सइंवरि—देखो 'स्वयंवर' (रू. भे.)

उ०—१ पंडु नरेसरो सइंवरि जाइ हथिणाउपुर संचरए। राइं दलै सरिसा कूंयर लेउ तारै सुं जिम चांदुलउ ए ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ अनु कंठि कुसुमह माल किरि सुं मयणि आपणि आवीइ। कोइ इंदु चंदु नरिंदु सइंवरि पहुतु इम संभावीयइ ।

—सालिभद्र सूरि

सइंवल-सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—अंतर सइंवल कुसुम कमल दल अमृत वेल विख वेली। ईवडो अंतर हरि सिसिपालइ, भणइं पदंमीयौ तेली ।

—रुकमणी मंगळ

सइंहणौ, सइंहबौ—देखो 'सहणौ, सहवौ' (रू. भे.)

उ०—सूनी सेज विदेस पीव, दोई दुख 'नल्ह' क्यूं सइंहणां जाई।

—वी. दे.

सइ—१ देखो 'सइं' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय त तित्थयर नमेवी, फागुवंधी पहुनेमिजिणगुण गाएसउं केवी ।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तसु पुत्री ऊमा देवड़ी जांणि विधाता सइ हथि घड़ी।

—ढो. मा.

उ०—३ बीजा दिवसइ दिणयर उदइ, ध्यांन प्रभावि आव्या सइ। अछइ सोवन्नीकांवज हाथि, एकु पुरुखु आविउ छइ साथि ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—४ द्रुपदीवसन ना सइ काढ्यां, माहरा मद तणां वन वाढ्यां। पाधरै नृप तणै घरि कीधउं, कीम मूं पुरुख नांम ज दीधउं ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ मारूवणी सइ मुखि कह्या, दूहा मिसि संदेस। मन मारू मेळावा करइ, पधारउ उणि देसि ।—ढो. मा.

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—गत प्रभाथियौ ससि रयणि गळती, वर मंदा सइ वदन वरि। दीपक परजळतौ इ न दीपै, नासफरिम सूं रतनि नरि ।—वेलि

सइकौ-सं. पु.—देखो 'सईकौ' (रू. भे.)

उ०—सत्रासै सइकै संमै नर दांण काजै सिर दीयौ। मुकती पहुतौ कह केसौ, संसारि वड साकौ कियौ ।—केसौ कवि

सइड-सं. पु.—१ सांड ।

२ वैल ।

३ प्रहार, चोट ।

रू. भे.—सईड ।

सइण—देखो 'सैण' (रू. भे.)

सइद—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

सइमुक्ख, सइमुखि—क्रि. वि.—सम्मुख, सामने ।

सइयण, सइयणि-सं. स्त्री.—१ दर्जी जाति की स्त्री, दरजन ।

उ०—भणइ भीम, 'दवदंती' वच्छि नलसिउं नेह पालै। सइयणि

ग्रोचनि प्रथम जाति मालणि संग टाले ।—नळदवदंती रास

२ देखो 'सैण' (रू. भे.)

सइयद, सइयद्द—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—१ सिंध में नकारी सइयदां री मांनता विसेस है।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ मबदुल्ला ग्रारत हियै, पीड़ांणो सइयद्द । महाराजा 'ग्रजमाल' नूं, दाखै वेध दरद्द ।—रा. रू.

उ०—३ मोपत जी पातिसाह जी रै माथि । राजि साथि सइयद हासिम कासिम नूं जोधपुर दे ग्रर राजि माथि विदा किया ।

—द. वि.

सइयर—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—राई वेगइ चढि ग्रावी विलम न करो वार । सोल सइयर रुकमणी सरीखी लेज्यो साथ ।—रुकमणी मंगळ

सइर, सइरि, सइरू—देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—१ कूटियइ ए ग्रणाह पुरिट्ठी, उवली सिथिल सइर सलिट्ठी। विप्र भूपति सभा परि दिठी; देवि कीचक तणा कुळ रूठी ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहार रासि तें जाई नय वरइ । अनंत सइर तणउ करइ संहार, जीवइ जीव करइ ग्राहार।

—वस्तिग

उ०—३ सघण मूकडि सइरि सु सींचीइ, पवण पूरिहि वींजण वींजीइ । कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ ग्राफरिउ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ मिलीउ जरसिंधु जायववइरि, सह लगउं एस हुइ सइरि। दुरयोधनु ग्रति मत्सरि चडीउ, जाई जरासिंध पाए पडीउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ मोसइ सइरू महातपि, ग्रातपि रहइ गंभीर । मोह तणा जगबंधव बंध वछोडइ धीरू ।—जयसेखर सूरि

सइलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

सइस—देखो 'सईस' (रू. भे.) (डिं. को.)

सई—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रब मीरां मांन लीज्यो म्हारी हांजी थांनै सइयां बरजै मारी ।—मीरां

उ०—२ सइयां म्हांरी ए हरियाळी वरसाईजै, ग्रज वरसाइजै कल वरसाइजै, इयूं म्हांरा साजन इयूं ।—लो. गी.

उ०—३ वनडो उतरघो बाग में ए सइयां मोरी, कै मिस निरखण जाम्यां ।—लो. गी.

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

सईक-वि.—सौ के लगभग ।

सं. स्त्री.—सौ की संख्या ।

सईकड़ो—देखो 'सैकड़ो' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सईको-सं. पु.—सौवां वर्ष ।

उ०—हरीया संमत सतर से वरस सईकै जांन । तिथ तेरस ग्रासाढ वदि सतगुर परी पिछांन ।—ग्रनुभववांणी

रू. भे.—सइको, सैंको ।

सईट—देखो 'सइड़' (रू. भे.)

सईद, सईयत, सईयद-सं. पु.—१ चाकर, टहलुग्रा ।

उ०—दरबार री सईयत तुरक था तिण री डाढी सुंवरावता, कांनां में मोती घालता ।—पदमसिंहजी री वात

२ देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—ऐसै सबूंका सिरपोस सईद ग्रावद ग्रलीखांन सो ग्रावधग्रली-खांन कैसा । दिलावर खांन का फरजन दिलावर खांन जैसा ।

—सू. प्र.

सईल—देखो 'सैल' (रू. भे.) (ग्रनेका.)

सईस-सं. पु. [ग्र. साईस] घोड़े की देखभाल व सेवा करने वाला व्यक्ति जो घोड़े को घास दाना ग्रादि देता है ।

उ०—भांणू रावळै ग्राप सईस नै उण घोड़ी री पूरी पूरी भुळावण दे दी । बारै महीनां सूं घोड़ी ठांण दियो तो भांणू रै सिवाय किणी नै जाच कोनीं ही कै बछेरो सूरजमुखी है । वो उण री ग्रापरा जीव विचै ई घणो वत्तो ध्यांन राखतो ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सईस, सहीस, सांईस ।

सईह—देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, ग्रति रंग रंग ग्रनूप । जस वांणि वंदण जीह, उचरंत विरद सईह ।—रा. रू.

सउं, सउ-सर्व.—१ वह ।

उ०—१ मारू नूं ग्राखइ सखी, एह हमारी बुझ्झ । साल्हकुंवर सुहिणइ मिल्यउ सुंदरि सउ वर तुझ्झ । —ढो. मा.

उ०—२ जळ मांहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ ग्रगासि । जउ ज्यांही कइ मन वसइ, सउ त्यांही कइ पासि । —ढो. मा.

२ देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—१ चडीउ चंचलि नयणि निरखइ वयणु बोलइं सउं सही । पंच पंडव सहित पहुतु तउ पंडु नरवरू हइ सही ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ ग्रांगीए सभांमिसेण पंडव पंचइ राह सउं ए । कूडिहि ए दीजइं मान वयरिहिं मांडइ जूवटउ ए ।—सालिभद्र सूरि

३ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—१ इहां तउ सुयखंध एक ग्रति भलउ रे, एक सउ एक ग्रध्ययन उदार रे ।—वि. कु.

उ०—२ सिंधु परइ सउ जोयणां, खिवियां विजळियांह । ढोलउ नरवर सेरियां, धण पूगळ गळियांह ।—ढो. मा.

४ देखो 'सरब' (रू. भे.)

उ०—१ ते रमीया मन वसीया विनयचंद्र नइ जी, सउ मांहि मिलइ जोया एक कय दोय हो ।—वि. कु.

उ०—२ नाभिराय मरुदेवी नंदन युगलाधरम निवारण हार । सउ

वेटां नै राज सौंप करि, आप लियौ संयम व्रत धार ।—स. कु.

उ०—३ लाधा लाख तुरीय सहिस, गयमर मदिमाता। मणि मांणिक सोवन्न असंख्य, सउ गांम वसंतां ।—नळदवदंती रास

उ०—४ वलि करी राज सौ आपीऊं ए, नलराजनइं भार सउ थापीउ ए । देइ सीखांमण निरवद्य तात, 'वत्स' वीसस्यां नर वर मक्करी धात ।—नळदवदंती रास

सउकि, सउकी—देखो 'सौक' (रू. भे.)

उ०—१ कोइलि तुं काली वली, वालि म-वलतु अंग । भूंडी तूं भांखि भणु, सउकि-सरिसा भंग ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ रूक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, सउकी नउ सवल संताप जी । खमत खांमणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी ।
—स. कु.

सउच—देखो 'सौच' (रू. भे.)

उ०—१ सउच न्हांण मुख साधि सब, राचै राजस राह । क्रम वैठो संभ्या करण, दूदा कंवर दुवाह ।—वं. भा.

उ०—२ सउच करौ दंतधावन, स्नांन की तयारी । वस्त्र और पुस्पमाळ, तुलसी अति प्यारी ।—मीरां

सउण—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—चवदस वरत करई भूपाळ, सांमही छींक हणइ कपाल । चउरास्यां सहू वोलाय, सउण विचारै वीसलराय ।—बी. दे.

सउणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सउत—देखो 'सौत' (रू. भे.)

सउतेलौ—देखो 'सौतेलौ' (रू. भे.)

सउथउ-सं. पु.—स्वस्तिक ।

उ०—श्रंगार तणी वेटी दाहज्वर तणी वहिनि, साप माथइ सउथउ फाडइ, जिसी केवलिहिं हालाहलि विखि जडी हुइ, इसी ढंढ स्त्री ।
—व. स.

सउदागर—देखो 'सौदागर' (रू. भे.)

उ०—पिंगळ राजा नूं मिल्यउ, सउदागर तिणि वार । राज दुवारइ तेड़ियउ, आदर करै अपार ।—ढो. मा.

सउरी-सं. पु. [सं. शौरी, सौरी] यमराज। (अ. मा.)

सउलिय-सं. पु.—एक देश का नाम । (व. स.)

सउवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

सउहाणौ, सउहाबौ-क्रि. अ.—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

उ०—पहिरनु चोळी नवरंगी, वावन चन्दन अंग सउहाई ।
—वी. दे.

सउहायोड़ौ-भू. का. कृ.—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सउहायोड़ी)

सऊ—देखो 'साऊ' (रू. भे.)

उ०—कांधमल्लही सऊ जोध रिणमल तणौ धरि । पिडि अचल्ल अणचल्ल अणपल्ल ठल्ल गज ढाहण तणी परि ।—गु. रू. वं.

सऊकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे.)

उ०—तद इतरा सिरदार वा कांमदार वा हजूरी सागै हुआ । त्यांरी याद-काका कांधल जी, काका रूपौ जी, काका मांडणजी, काका मंडळौ जी,.........कांमदारां में वैदलाली लाखणसी कोठारी चौथमल वछावत वरसंघ प्रोहित विक्रमसी सऊकार राठी सातौ जी ।—द. दा.

सऊर-सं. पु. [अ. शऊर] १ योग्यता ।

२ ढंग, शिष्टता ।

३ बुद्धि, अक्ल ।

उ०—पण सऊर वाळौ इसौ हौ के कदै-ई मेलौ गिन्दौ को दीखतौ हौ नीं ।—वरसगांठ

रू. भे.—सहुर, सहूर ।

सऊरदार-वि.—१ योग्यता वाला ।

२ शिष्टता वाला ।

रू. भे.—सहूरदार ।

सऊवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

सओध, सओधौ-वि. १—कुलीन, उच्च कुल वाला, कुलवान ।

उ०—१ अवर सको खीची रुह अग्गै, जुध कमधां आगळ छळ जग्गै । जोध सओध वंस जोगावत, राजी देख हुवै मन रावत ।
—रा. रू.

उ०—२ त्यां डोळौ त्यारी कियौ, करै अगाऊ वात । वींद सओधां चींतियौ, जोधां हुंदौ छात ।—रा. रू.

२ खानदानी ।

उ०—इंद्रभांण दळ रूप सओधां, 'जोध' तणौ आगळ छळ जोधां 'रूपै' जिसौ इसौ रिण वेळा, भुज किर मिळै गयण चै भेळा ।
—रा. रू.

३ पद के अनुसार ।

उ०—मारू जोधां रिणमलां, भळे सओधां भार । जांण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार ।—रा. रू.

सकंद—देखो 'स्कंद' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सकंदछट—देखो 'स्कंदसस्ठी' (रू. भे.)

सकंदमाता—देखो 'स्कंदमाता' (रू. भे.)

सकंदवार, सकंदावार, सकंधवार, सकंधावार—देखो 'स्कंधावार'
(रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

सक-सं. पु. [सं. शक] १ एक प्राचीन राजवंश ।

२ एक प्राचीन राजा शालिवाहन का नाम ।

३ शालिवाहन द्वारा चलाया गया शक संवत ।

४ संवत ।

उ०—गज नव वारह अब्द गत, सक विक्रम संवंध । दिन नवमी आसाढ वदि, मीणां तेडि मदंध ।—वं. भा.

५ वर्ष ।

उ०—समहूलै मनियाम सक, धुव महमदपुर धांम। वर कवि करण वर्खाणियौ, मुसदांतणौ संग्रांम।—वि. सं.

६ वीर, योद्धा।

उ०—१ साथै नाटी सूरमां, 'सबळै' जिसा सहास। 'सबळै' जोड़ मनोज सक, 'तेजो' नारायणदास।—रा. रू.

उ०—२ 'केहर' माहां मंडणा, सक रावण कव्या। बिहु वावळ सांगां मडै, मुज डंड समव्या।—द. दा.

७ देवता।

उ०—सक कोड़ि तेतीस चरण राखै उर उपरि। लिखमी चाहै चरण परस रीजै उहिडी परि।—पी. ग्रं.

८ तातार देश का पुराना नाम।

९ तातार देश की एक प्राचीन जाति।

१० मुसलमान, यवन।

उ०—विण थाट रीठ रहै विखम, हम तम उघम हैमरां। सक फौज कीध संका सहित, जांण क लंका बंदरां।—रा. रू.

११ भय, डर।

[अ शक] १२ संदेह, भ्रम।

वि.—१ समर्थ, सामर्थ्यवान।

उ०—१ जग जनक धनक हर हरण करण जय, चत नरमळ नहचळ चरण। अकरण करण समरण अघ अणघट, सक रघुवर असरण सरण।—र. ज. प्र.

उ०—२ सक मांगळियो 'तेजसी', अन 'साहबो' अबीह। सकळ निवड़ भड आठ सौ, धावड़ ठाकुर सीह।—रा. रू.

२ साफ, निर्मल।

सर्व.—१ सब, समस्त।

उ०—१ सक भड़ वचन सुणेह, काहुळियो वीरम कमंध। मयंद तणौ सिर मेह, आवै जांण अराजियौ।—गो. रू.

उ०—२ पूरब पच्छम धरा दब पारू, दिखण तणौ खूटो वळ दारू। सक उतराध धरा तौ सारू, मछर धरै किण उपर मारू।

—चतुरो मोतीसर

रू. भे.—सक्क।

सकड़-वि.—जबरदस्त, शक्तिशाली। (नां. डि. को.)

सकज—देखो 'सकज्ज' (रू. भे.)

उ०—१ कुंअर किरणाळ सुपह ससाल विरद उजुआळ सकज कमध।—ल. पि.

उ०—२ साथै मेड़तिया सकज, 'अखैई' गोकळदास। पूरांणी हर-नाथ पिड़, पूरे साथ प्रकास।—ग. रू.

उ०—३ सकज वाहतौ सेल अणटेल नव साहसां, सेलियै खेल समवाट रो सूर। छोह लागे 'जसै' ओरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै बोह 'महसूर'।—महेसदास आढौ

उ०—४ तोरां रणताळ रै, सकज भूपाळ संवारी। खै अकाळ साटणी, काळ बाटणी कटारी।—मे. म.

उ०—५ रै रेवारी रावला, कोईक रहो सकज। घड़ी करै विजोयण, मो घण मेल्है भ्रज।—ढो. मा.

सकजापण, सकजापणौ-सं. पु.—शक्ति, पराक्रम, शौर्य।

उ०—भारथ पारथ ज्यूं भिड़ै, सकजापण री सीम। गुमर न दूजां चो गिणै, एहो स्यांम अजीम।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सकजो—देखो 'सकज्ज'।

उ०—औरां कुं सकजा गिनै, आपा होय निकज। हरीया हरिजन जांणियै, जिसी राह की रज।—अनुभववांणी

सकज्ज-सं. पु.—हाथी, गज।

वि.—१ समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—गोपाळो सिवरांम रो, साथै जोध सकज्ज। ऐ खींची ऊंची धरण, करण जतन कमधज्ज।—रा. रू.

२ कार्यकर्त्ता।

उ०—१ हाथाळो ऊहड़ 'हरी', गळ गढ हंदी लज्ज। 'इंदो' भोज महाबळी, 'सांमो' 'देद' सकज्ज।—रा. रू.

३ कुशल कार्यकर्त्ता।

उ०—१ कमधज्ज सकज्जां कारणां, कळा भुजा मापै कवण। विचित्रांण घणी इम विग्रहे, गहियो फिर पड़तो गयण।—रा. रू.

उ०—२ 'रूपो' कुंभकरन्न रो, कुंडाद्रह कमधज्ज। रहे गुढो कर सद्धरो, 'ऊदा'हरो सकज्ज।—रा. रू.

४ काम का।

उ०—लघुवेसां 'देवो' 'दलो' सुत जसकरण सकज्ज। आप भळा रण 'खेम' नै, नेम सियो धर कज्ज।—रा. रू.

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—अचळ जळंधर ध्यांन उर कर गज दांन सकज्ज। मीठा साचा वयण मुख, लाहू लोयण लज्ज।—बां. दा.

६ वीर, बहादुर।

उ०—सुत 'कुसळ' ऊद' हरवळ सकज्ज। 'अमरेस' तांम कीधी अरज्ज।—सू. प्र.

क्रि. वि.—लिए, हेतु।

उ०—१ सीहे जाइ संदेस, कथन कहियो कमधज्जां। मार लियो मारकां, किसा पूरदीप सकज्जां।—गु. रू. बं.

उ०—२ धनवंत कोड़ियधज्ज, सुजि दीप लाख सकज्ज। दुतिवंत दौलतिदार, पौसाक तास अपार।—सू. प्र.

उ०—३ वहे दहूंवै बळ पेस कबज्ज, संग्रांम दहूं बळ स्यांम सकज्ज। दहूं बळु रट्टत रांम खुदाय, पलट्टत आंत दहूं बळ पाय।—मे. म.

रू. भे.—सकज, सकजो, सकाज, सकाजो।

सकज्जाई—बहादुरी, वीरता।

उ०—थांनक-धारी बळाकारी मालहारी मद्द ए। सूरा सिपाई तुंग ताई सकज्जाई हद्द ए।—गु. रू. बं.

सकट–सं. पु. [सं. शकट] १ गाड़ी, छकड़ा। (डि. को.)

उ०—१ कोयक सकट कुसागड़ी, भार विसेस भरंत। धवळ पड–प्पण आपरै, खांवै लै निबहंत।—बां. दा.

उ०—२ कवी कहै छै—जिण दिन सूं धवळा धोरी रूपी वौ वीर पुरस मारीजियौ उणहीज दिन सूं अठारी आ धरती सूंनी होय गई अनै सकट (गाडौ) कीतरा बोझ री भरियोड़ी तथा वीरता री दातारगीरी........।—वी. स. टी.

उ०—३ धर भार अरावां अरण-धज, बेलां हमलां बारणां। धुर भार सकट कट्ठ धमळ, भार बांण भारथ रणां।—सू. प्र.

२ रथ। (डि. नां. मा.)

उ०—१ अठी वीरमदेव नूं जवनां री मारिया जांणि ग्रांम सेत्रावा हूं चलाइ राठोड़ गोगै बीरमदेवोत आपरा वापरा बाढणहार नूं बिसारि बिनांही अपराध भाजड़ मैं भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नूं जाइ हणियौ।—वं. भा.

उ०—२ करनी मुख सूं यूं कह्यौ, रख करंड सकट पर। करंड कियौ गिर मेर कह, ब्रह्मण्ड समोभर।

—ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

३ शकटासुर दैत्य का नाम जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।

४ एक प्रकार का सैनिक व्यूह।

५ एक तौल विशेष।

रू. भे.—सकट्ठ, सगट, सग्गड।

सकटव्यूह–सं. पु. [सं.] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष।

सकटभेद–सं. पु. [सं.] जन्म स्थान से छठे आठवें स्थान के पापग्रहों से सम्बंधित लग्नेश होता है तो जन्मपत्री में सकटभेद कहलाता है। यह अशुभ माना जाता है।

सकटहा–सं. पु. [सं. शकटहा] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटार–सं पु. [सं. शकटार] नंद वंश के राजा महानंद का प्रधानमंत्री जिसने चाणक्य के साथ मिलकर नंद वंश का नाश किया।

(ऐतिहासिक)

सकटारि–वि. [सं. शकटारि] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटासुर–सं. पु. [सं. शकटासुर] श्रीकृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य।

रू. भे.—संगठासुर।

सकटिका, सकटी–सं. स्त्री. [सं. शकटिका] १ छोटी गाड़ी।

२ बग्घी।

३ गाड़ी। (डि. को.)

सकट्ठ—देखो 'सकट' (रू. भे.)

उ०—१ अगै अप्रवांणी वजै खग्गवांणी, कवाड़ी सकट्ठां कटै जांण कट्ठां।—रा. रू.

उ०—२ कमाळा लदै सव्व त्यां द्रव्व कोड़ी, सकट्ठां लठां भार ज्यौं टांस जोड़ी।—रा. रू.

सकठस्थ–वि. [सं.] रथ या गाड़ी में बैठा हुआ।

सकणौ, सकबौ–क्रि. अ.—कोई कार्य करने में योग्य होना या समर्थ होना।

उ०—१ पातसाह राखै प्रसन, 'जेहा' तो घण जांण। मकै मदीनै मारगां, ताठ सकै कुण तांण।—बां. दा.

उ०—२ तथापि रहै न हूं सकूं, वकूं तिण त्रिया अनै प्रेम आतुरी। राजदूरि द्वारिका विराजौ, दिन नेंहड आइयौ दूरी।—वेलि

उ०—३ गोडा छाती मैं लियां थोड़ी निवास वापरी तौ उणां पग पाछा लांबा कर लिया। वौ सोचण लाग्यौ—इण दीवाली री'ज बात; टाबरां रै नूंवा कपड़ा ई नीं आय सक्या।—अमरचूंनड़ी

सकणहार, हारौ (हारी), सकणियौ—वि०।

सकिओड़ो, सकियोड़ौ, सक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकीजणौ, सकीजबौ—भाव वा०।

सक्कणौ, सक्कबौ, सगणौ, सगबौ, सघणौ, सघबौ—रू. भे.

सकत—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ समहर हिंदू दोय सौ, मेछ पड़ै सत च्यार। सकत गरज्जी रीझ सूं, यां वज्जी तरवार।—रा. रू.

उ०—२ जोहरी परखै जिण विध जुहार, दस चार परख विध्या उदार। बस सकत पाय ताळाविलंद, 'अवजीत' सुतन नरलोक इंद।

—वि. सं.

उ०—३ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणै संभारै।—रा. रू.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

उ०—प्रीतकर पुरहूत ऊपर, उठै रघुबर आप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटै स्राप।—र. रू.

सकतपुर – देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सकतपुरी – देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे.)

सकतमंत्र—देखो 'सक्तिमंत्र' (रू. भे.)

उ०—बूझ व्यास प्रोहितां समर सूरां गुर सिक्षा। सकतमंत्र सिव-कवच, विष्णु-पंजर हरि-रक्षा।—रा रू.

सकति—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ अनंत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति सुख विलास। अनंत वीरज अनंत धीरज, अनंत सुकल ध्यांन री।—स. कु.

उ०—२ असि खड़ग सकति तोरण उदार, आंकुसां संख चक्र सुभ अपार।—सू. प्र.

उ०—३ भांणन्दीप विगत मुण भारी विधवत सकति पूजि विस–तारी।—सू. प्र.

उ०—४ सांई छोडि सकति का हूवा, इन कुं नहीं भगति का दूवा। चाडै जीभ उतारै सीसा, यां सुं अलग रह्या जगदीसा।

—अनुभववांणी

उ०—५ कूंडै मेहा बेस करि जदै सकति को जाप। हरीया अंतर ऊतरै, नासा सीग मंडाप।—अनुभववांणी

उ०—६ सिघव मरद्ध मांझि सीरोही, सकति संभू चो करिवा सेव। अरि लोही मोकड़ां उतवग, देवै हेत कमंध हरदेव।

—प्रतापसिंघ सत्रुसालोत रो गीत

उ०—सुत प्रगट्यो तूठां सकति, भड़ नवकोटां भाग। दिल पातां जागी दसा, अमहां लागी आग।—रा. रू.

उ०—८ सिव नैं सिनहर सिलै, सकति नैं सीह चडन्नी। बांमण धनिदै वळे. वाच बळ राजा दीनी। रामचंद नैं भीच हणु मुंह मागळ कीधो। धावर नैं वारमो, अथड नं अम्रत पीधो।

—गु. रू. व.

उ०—६ जरन रीद्र वट्टाग, सिवा सत लस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु. रू. वं.

उ०—१० सिव सक्ती सम मुगती सिव मझि सकति सकति सिव मझै। आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड ब्रह्मंडी।

—गु. रू. व

उ०—११ तउ आठमइ दिवसि कन्ह मन माहि विमासइ मेल्हीउ मिल्लहि सकति कुंमरु उत्तरु रणु पाडीउ। तांम तिखंडीय तणीय बुद्धि नउ कांन्हि दिखाडीउ।—सालिभद्र सूरि

सकतिपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सकतिपुरी—देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे.)

सकतिभू—सं. पु. यौ. [सं. शक्ति+भू] कात्तिकेय, षड़ानन। (नां. मा.)

रू. भे.—सकतीभू।

सकतिवंत—वि.—शक्तिशाली, बलवान।

उ०—उलभाय तन मन आप आपमैं, विहत सीत रुखमणी वरि। वांणि अरथ जिम सकति सकतिवंत पुहप गंद गुणगुणी परि।

—वेलि

सकतिहथौ—वि.—हाथ में शक्ति (सांग) नामक अस्त्र रखने वाला।

उ०—'पातल' तणौ 'जसौ' पूंचाळौ, 'भाखर' रिदै' तणौ भुरजाळौ। 'मान' सुजाव सवाई' माह, सकतिहथौ जवनां पति साह।

—रा. रू.

सकती—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ अंध जीव गे आंम. ओळखण सकती आयां। लख पनंग मणि लाभ, पांख गति पंछी पायां।—मुरारीदांन

उ०—२ सकत्यां लावां साथ मैं, झाझ' झूल झमेल। करि साजा ईंदर कंवरि, सुहद रचावां सेल।—मे. म.

उ०—३ सागर सघू इंदरा सकती, जननी धापू जाई। चगणीसै चोसट्ठा वाली, विपरां साल वताई।—मे. म.

२ देखो 'सक्त' (रू. भे.)

उ०—सकती वांधै वीटुली, डीली मेल्है लज्ज। सरद्दी पेट न नेठियउ, मूंध व मेळउं अज्ज।—ढो. मा.

सकतीधरण, सकतीधारण, सकतीधारी—सं. पु. [सं. शक्तिधारिन्] गरुड़। (अ. मा.)

सकतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

उ०—भर सकतीपुर चै सांम आंण सुरतांण संकायो। गाजै घड़ गज रूप चीत आलम चमकायो।—नैणसी

सकतीपुरी—देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे.)

उ०—१ सकत अमाणै तोलियां, सकतीपुरा 'मुरार'। बीज झड़ंदी सारखां, कै सिवहंदी रार।—रा. रू.

उ०—२ चतुर कहै सकतीपुरी सुधरै तो बळ स्यांम। ऊखेळी वाधै इळा, भेळी लियै संग्रांम।—रा. रू.

सकतीभू—देखो 'सकतिभू' (रू. भे.)

सकत्त—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—गावै जस नित्त सकत्त गणेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह. र.

२ देखो 'सक्त'।

सकत्ति, सकत्ती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ बुझै कुण नाथ तुहाळा वंग सकत्ति रुद्र न मूरत्ति न लिंग।

—ह. र.

उ०—२ माया सारी सांवटी आपै आपांणं, संग रही अेको सकत्ति जोगमाया जांणं। —गज-उद्धार

उ०—३ मद मदिरा रस मत्ती, रत्ति आगांण अंग अहरत्ती। करत विलास सकत्ती चालराय मंढ चालकना।—किरपारांम

उ०—४ रगत पिद्ध वळि लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती। कियो संकर सिगार, रूंडमाळा गळ गत्ती।—गु. रू. वं.

उ०—५ मंत्र सकत्ती मत्र सूं, ज्यौं तीडी लै जाय। अभंग दुराह दूरंग यूं, लेगो साह धकाय।—रा. रू.

उ० —६ 'रूप' तणो जोड़ै 'रघुपत्ती', समहरि भीरी जेण सकत्ती।

—रा. रू.

सकन—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—अह्यारू' सकन वरणवुं पणि किस्या छइ जे सकन। डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा।—व. स.

सकना—सं. स्त्री.—मुसलमानों की एक जाति विशेष जो सांचौर तहसील में आबाद है।

सकनकूर—सं. पु. [अ. सकन्कूर] गोह की तरह का एक जन्तु जिसका रंग लाल या पीला होता है। इसका मांस खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेग मांही भी कहते हैं।

उ०—जंघ अलोम अनूप जुग, नाजुकपणै निवात। केळि करी कर कळभ के, सकनकूर साखात।—बां. दा.

सकपकाणौ, सकपकाबौ—क्रि. अ.—१ आश्चर्यान्वित होना।

२ हिचकिचाना।

३ शरमाना।

४ प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा करना।

सकपकाणहार, हारौ (हारी), सकपकाणियौ—वि०।

सकपकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकपकाईजणौ, सकपकाईजवौ—भाव वा०।

सकपकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ. २ हिचकिचाया हुआ. ३ शरमाया हुआ. ४ प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा किया हुआ।

(स्त्री. सकपक़ायोड़ी)

सकपकाहट—सं. स्त्री.—सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

सकबंध, सकबंधी—देखो 'साकाबंध' (रू. भे.)

उ०—१ विविध धांमपुर ग्रांम वसाहै, मांळी राजस पूरब मांहे। सेतरांम सकबंध नरेसर, इळ (ण) लग राजस पूरब अंतर।

—रा. रू.

उ०—२ सितर खांन सकबंध, कटक अनमंध छिलेकर। असपत हद सामंद, कीध ऊवंध प्रमेसर।—रा. रू.

उ०—३ 'सूर' हर सूर सकबंध साहण, समंद तधि सामंद्र असमांण तोलै। अतग अणरेण अणभंग ऊंवासिरी; वहळ खळ सार मैं छौळ वोळै।—अमरसिंघ री गीत

उ०—४ सुरसुन सुछळि दिल्लेस सकबंध सह, तेज वधि दळां हूं पैज तांणी। खाग झल खींद बळ छांडि खिसिया खळे, वर्ग जैकार सुर अखिल वांणी।—नरहरदास बारहठ

उ०—५ रिण धोधर 'वेणौ' प्रथीराज, भाटियां भुजै भाराथ लाज। अजमेर मुआै 'गोइंद' तात, सकबंधी जांणौ दीप सात।

—गु. रू. बं.

उ०—६ आल्हियौ ईखवा साह दरगह सकबंधी। है गै दळ हल्लिया मिळै अणकळ अनमंधी।—रा. रू.

उ०—७ 'सांवळ' आद खांन सकबंधी, औ ऊदा मिळिया अनमंधी।

—रा. रू.

सकमळकर—सं. पु. यौ. [सं. सकमल+कर] विष्णु।

उ०—धराधीस धांनख गिरधारी, कमळ कंत सकमळकर।

—र. ज. प्र.

सकर—१ देखो 'सक्र' (रू. भे.)

उ०—१ आकुलत व्याकुलता चलत नह आवणौ. पीव किण भांत आरांम पांमै। सुकरदै सकर चा नैंण मूंदै संची, नागणी नाग सिर घडा नांमै।—महारांणा राजसिंह री गीत

उ०—२ कळह कराळौ अजन-सर सकर वज्र अकाळौ, उडण ग्रह पंखाळौ अगनि झळ ओप। सेल रौ उलाळौ सहसमल, काळ चाळौ किनां जटाधर कोप।—सहसमल राठौड़ री गीत

२ देखो 'सक्कर' (रू. भे.)

उ०—वायक लवंग मसाला बांटै, जीभ सकर मीठम जेम। सौहड़ां कज कौड़ां 'परसां' सुत, आखर तणौ रांमरस अेम।

—आईदांन गाडण री गीत

सं. पु.—संहार, नाश।

सकरकंद—सं. पु. [सं. शर्करा+कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद जो खाने व सब्जी बनाने में काम आता है।

अल्प.;—सकरकंदी, सकरियो।

सकरकंदी—देखो 'सकरकंद' (अल्पा; रू. भे.)

सकरड़—वि.—बलवान, शक्तिशाली, योद्धा।

उ०—खीज चख चरड़ नख बरड़ अधकाव खग, भड़ां हड़वड़ ऊरड़ घाव भाराथ। भुजंग झोकायतां मुरड़ सकरड़ भंजण, पुगीयो गुरड़ समवड़ प्रथीनाथ।—सायपुरै अमरसिंह जी री गीत

सकरड़ो—देखो 'सोकरड़ो' (रू. भे.)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिड़ै कायम खां छळि भरै। सैंहम अेक दस लिया सकरड़ै, कूरम तौ न संतोख धरै।

—सादूळसिंघ सेखावत री गीत

सकरण—सं. पु.—संहार, नाश।

वि. [सं. सकर्ण] १ जिसके कान हो।

२ जो सुनने में समर्थ हो।

सकरणौ, सकरवौ—क्रि. अ.—१ मंजूर होना, स्वीकृत होना।

२ भुनना, भुगतान होना।

सकरणहार, हारौ (हारी), सकरणियौ—वि०।

सकरिओड़ो, सकरियोड़ौ, सकरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सकरीजणौ, सकरीजवौ—भाव वा०।

सकरपारौ—सं. पु. [सं. शर्करा+पार] १ एक प्रकार का व्यंजन विशेष।

उ०—१ वली सी सी वस्तु प्रीसाइ ? सकरपारा साकरीआ विणा दूधपाक कोहलापाक सेलडीपाक········।—व. स.

उ०—२ सेव झीणी, फगफगती फीणी; अधननी धारी, स्वादम्युं आहारी; साकरस्युं रूली, इसी प्रीसी तिलसांकुली; सकरपारा मांडी, कोइ न सकइ छांडी।—व. स.

वि. वि.—यह पकवान मीठा तथा नमकीन दोनों प्रकार का होता है। इसे बनाने के लिए पहले आटे को मोयन देकर दूध में सान लेते हैं और सानते समय यथारुचि मीठा या नमक मिला देते हैं। फिर मोटी रोटी वेलकर उसे छोटे चौकोर तिकोन लंबे खंडों या टुकड़ों के रूप में काट कर तेल या घी में सान लेते हैं। कोई कोई इसे सादे बनाकर चीनी में पाग लेते हैं।

२ एक प्रकार का फल जो नींबू से कुछ बड़ा होता है। इसका वृक्ष नींबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नींबू से कुछ बड़े होते हैं। फूल लाल रंग के होते हैं। फल सुगंधित और खट्टा मीठा होता है।

३ स्त्रियों के सिर पर धारण किया जाने वाला इस शकरपारा के

आकृति का एक आभूषण विशेष।

४ झंडेदार कपड़े पर की जाने वाली विशेष प्रकार की सिलाई।

सकरमक-वि. [सं. सकर्मक] कर्मकर्ता, कर्म करने वाला।

सकरमक क्रिया-सं. स्त्री. यो.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाओं में से एक जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता है।

सकरवाळ-सं. स्त्री.—राजपूत वंश की एक शाखा।

सकरांणो—१ शक्कर मिला भात।

२ देखो 'सुकराणो' (रू. भे.)

सकरांत, सकरांति—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सकराणो, सकरावो-क्रि. स.—१ भुनवाना (चैक, ड्राफ्ट, बिल, आदि विपत्र)।

२ स्वीकृत कराना।

सकराणहार, हारो (हारी), सकराणियो—वि०।

सकरायोड़ो—भू० का० कृ०।

सकराईजणो, सकराईजवो—कर्म वा०।

सकरायंत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सकरायमाता-सं. स्त्री.—एक देवी विशेष।

सकरायोड़ो-भू. का. कृ.—१ भुनाया हुआ. २ स्वीकृत कराया हुआ।

(स्त्री. सकरायोड़ी)

सकरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ स्वीकृत हुवा हुआ, मंजूर हुवा हुआ. २ भुना हुआ, भुगतान हुवा हुआ।

(स्त्री. सकरियोड़ी)

सकरियो-सं. पु.—१ स्वर्णकारों का नक्काशी करने का लोहे का एक कीला विशेष।

२ देखो 'सकरकंद' (अल्पा; रू. भे.)

सकरोड़ो—देखो 'सखरो' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—खूब तो पीयो हो कंवर जी सकरोड़ो दारू अो आलीजा।

—लो. गी.

(स्त्री. सकरोड़ी)

सकरो—१ देखो 'सखरो' (रू. भे.)

(स्त्री. सकरी)

२ देखो 'सिकरो' (रू. भे.)

सकळंक, सकलंक, सकलंकी-सं. पु. [सं. सकलंकिन्] चंद्रमा, चांद।

(अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

वि.—वह जिसके कलंक हो।

सकलंकित-वि.—कलंक सहित, कलंकित।

उ०—पिण सकलंकित चंद्र कहावइ अकलंकित मुझ स्वांमी। ते तउ अम्रत रस नइ धारइ प्रभू अनुभव रस धांमी।—वि. कु.

सकळ-सं. पु. [सं. सकल] १ निर्गुण ब्रह्म।

उ०—सब धरीया धारै मरै, मरै न एको कांम। हरीया धरीयै अधर कूं, एक सकळ विसरांम।—अनुभववांणी

२ प्रकृति।

३ घास या तृण।

[सं. शकलः] ४ खंड, टुकड़ा।

[सं. सकलः] ५ सेना, फौज। (अ. मा.)

वि.—सब, समस्त और सम्पूर्ण। (डि. को.)

उ०—१ भुजां खत्रीवट प्रगट 'चंद' सुत भळहळै, तुराटां घडै गढ विकट तोड़ै। सतर घट सरप सम हुवै चळवळ सकळ, जनेवां गुरड़ री झपट जोड़ै।—राव देवीसिंघ री गीत

उ०—२ कहै मांनवी देव अणभेव चिरतां सकळ, जांण कुण सकै गोपाळ जीको। ऊधरै संत महिमा करै ऊजळी, निंद्या कर तिरै सिसपाळ नीको।—अल्लूदास दादूपंथी

उ०—३ जन लज रखण जरूरह दसरथ सुत सकळ सुजन सुख-दायक। सिरदस घायक समहर सत वायक, रांम सरसत सुभ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ मुंड चंड महिसासुर मारै, सुंभ निसुंभ सकळ संहारै। जनमें रक्तबीज तन ज्यौं ज्यौं, तैं निरबीज किये हनि त्यौं त्यौं।

—मे. म.

क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मोटा धणी अचंभो मोटो, घट सूरापण निपट घणोह। ठावो सकळ सकळ रो ठाकर, तूं चाकर चाकरां तणोह।

—अल्लूदास दादूपंथी

रू. भे.—सवकळ, सिकळ।

सकल-सं. स्त्री. [फा. शक्ल] चेहरे की बनावट, आकृति।

मुहा.—१ सकल बणाणी=चित्र बनाना, रूप बनाना।

२ सकल बिगाड़णी=सूरत खराब करना, अत्यधिक पीटाई करना।

३ सकल उतारणी=उदास होना।

रू. भे.—सिकल।

सकळआतमा-सं. पु. यो. [सं. सकल=आत्मा] कामदेव। (अ. मा.)

सकळकळ-वि.—सोलह कला युक्त। (चन्द्रमा)

सकळजगपाळक-सं. पु. [सं. सकलजगपालक] ईश्वर, परमेश्वर।

(ह. नां. मा.)

सकळजणणी, सकळजननी-सं. स्त्री.—१ प्रकृति।

२ देवी, दुर्गा, जगदम्बा।

सकळा, सकला-वि.—कला सहित, कलायुक्त।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरूपा। वकला सकळा अजा, उपावण आप आपुपा।—देवि.

सकळाई-सं. स्त्री.—१ चमत्कार, करामात।

उ०—१ एक पीर आडो नहिं आयो, कछु नहीं सकळाई है। अला खैर सूं प्रांण ऊबरै पिछली पुन्याई है।

—हिंगलाजदांन जागावत

उ०—२ चलती ऊंट तूटतां खाती, बोल्यो आरत बांणी। करणी

काठ तणौ पग कीधौ, जग सकळाई जांणी ।—मे. म.

उ०—३ खूब जातरी आवै-जावै है। परचा उडे कोढियांरा कलंक झड़ै है। दुनियां उलट पड़ी है। सकळाई हुवै तो इसी हुवै।
—दसदोख

२ बल, शक्ति।

उ०—सोई खुड़द आज दिन सांप्रत, स्त्रीदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदांनी, सूरत हृदय समाई।—मे. म.

३ सिद्धि।

सकळात, सकलात—सं. पु.—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—अदांण करमदांण कंतरांइणी गजकरणी पइठांणी सलहिती बारवती फरोदस्ती चूडाभाति सकलात पोतु।—व. स.

२ देखो 'सकळायत' (रू. भे.)

उ०—लठा उपरांति करि नें राजांन सिलांमति अतरा मांहे तरकसांरा कुहटाऊ बीड़िया छै। सौ किण भांति रा तरकस कंदील, जिर्क मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैंण कपड़ री खोली सूं काढी, कलाबूत नीसरी सांठी, गिरमरी नीपनी, कांवड़ै गजबल रा भल,.. ...... ।—रा. सा. सं.

सकलाय—वि.—कलापूर्ण, कलायुक्त।

उ०—सदा सांमलउ रूप सकलाय सोहइ, मुख देखतां माहरूं मन मोहइ।—स. कु.

सकळायत—सं. पु.—१ एक प्रकार का बढ़िया लोह।

उ०—चीतेवांण नै हुकम हुवौ छै। चीता साथ लीजै छै, घोड़ां री पूठ तखतां ऊपर बैठा छै। आंख्यां आडी कुल्है छै। सकळायत रा पटा, रुपैरी भंवर कड़ी, रेसम री डोर।—रा सा. सं.

२ देखो 'सकळाई' (रू. भे.)

रू. भे.—सकलात।

सकळी—सं. स्त्री.—१ पूर्णमासी।

[सं. शकलिन] २ मछली।

सकळीघर, सकलीगर—देखो 'सिकळीघर' (रू. भे.)

उ०—धोबी सवणीगर न्यारा रे नाई नीलगर पीनारा, सकलीगर गांछा नै घोसी रे कल्लाल तरमां मोची।—जयवांणी

सकलीण, सकलीणौ, सकलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू. भे.)

सकळीव्रत—सं. पु. [सं. सकली+व्रत] चंद्रमा, चांद। (ना. डिं. को.)

सकव, सकवि, सकवी—देखो 'सुकवि' (रू. भे.)

उ०—१ मेंगळ तणी समापण मौजां, सकवां रयौ नहीं संसार।
—महाराजा पदमसिंह जी री गीत

उ०—२ कवि तद बोलै 'केहरी', सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण घूहड़ां. कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा. रू.

सकस—सं. पु.—१ वीर पुरुष।

उ०—१ सकसै का जैतवार अकसै का वाई। अरिदळ समुद्र आए कुंभज के भाई।—रा. रू.

उ०—२ वीर तन छोह छकड़ाळ कस वीछड़ै, रूक सूं भिड़ै असपति सारीस। सीस देवळ तणौ डिगण न दियै सकस, 'स्यांम' तण भुजा ऊपजतै सीस।—सुजांणसिंघ भोजराजौत री गीत

२ पति।

उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। स्रियजीत पति गुण परखि चखि सुख सकस पखि जिम सुंदरी।
—रा. रू.

३ देखो 'सख्स' (रू. भे.)

उ०—हजूर अमीर खड़े नांमदार सकस। कमरदोखांन दोरां नुरराबाज बगस।—रा. रू.

सकसस्त्र—सं. पु. [सं. शक्यशस्त्र] लोहा। (अ. मा.)

सकसेना—सं. स्त्री.—कायस्थ जाति की बारह शाखाओं में से एक।

सकस्सा—वि.—मजबूत, दृढ़।

सकस्सी—सं. स्त्री.—एक प्रकार का हथियार विशेष।

सकांम—वि. [सं. सकाम] १ सफल-मनोरथ।

उ०—आ बात कंवर चूंडेजी सांभळि मन में विचार करि, उमरावां सुं मिसलत पूछी ज्यौ नाळेर आयौ सौ स्रीदीवांण नै किसी तरैहीज दै तौ वडौ सकांम हुवै।—राव रिणमल री बात

२ कामनायुक्त।

उ०—अब चढहुं जेज नह होय तांम, सुण उमंग सकळ आसुर सकांम।—रा. रू.

३ मैथुन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, कामी।

४ स्वार्थ, स्वहित भावना।

उ०—लख चौरासी जोनि में, मातौ मोह सकांम। हरीया असै जीव कुं, कहां नहीं विसरांम।—अनुभववांणी

५ इच्छित, अभीष्ट।

अल्पा;—सकांमौ

सकांमी—सं. पु. [सं. सकामिन्] १ विषयी व्यक्ति।

२ देखो 'सकांम'।

सकांमौ—देखो 'सकांम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सरस रजवाट तप अघट 'सूजा' सुतन, सार झट रचै तीरथ सकांमौ। करावै भगत अणभांवति केवियां, साख खट तीस री महत 'स्यांमौ'।—स्यांमसिंघ सेखावत री गीत

सका—सं. पु. [सं. शका] १ एक देश का नाम।

२ एक जाति विशेष।

सकाकुळ—सं. पु.—१ शतावर जाति का एक कंद विशेष।

सं. स्त्री.—२ एक प्रकार की मछली विशेष।

सकाकोल—सं. पु. [सं सकाकोल:] एक नरक का नाम। (मनु)

सकाज—देखो 'सकज' (रू. भे.)

उ०—१ चांपा भुजबळ अग्गळा, कुळ अग्गळा सकाज। छत्रपति छळ अग्गळा, लियां धरत्ती लाज।—रा. रू.

उ०—२ सुर छत्रीसी सामटै, सूरां तणौ सकाज। 'वांका' रा वायक सुणै, कायरां हिये काज।—बां. दा.

उ०—३ सगर अवाड़ा एण विध, कहिया सुकवि सकाज। इण मारग बखाण मदन, राज तेज 'जसराज'।—सू. प्र.

उ०—४ विराट विहारी वंकड़ौ, जाळंधर 'नटराज'। सो राठोड़ां सेवियौ, जोड़ै सेन सकाज।—रा. रू.

उ०—५ महाराजा 'अजमाल' रै, नगर वधाई आज। नरपति मन भायौ सवौ, जादौ पुत्र सकाज।—रा. रू.

सकाजौ—देखो 'सकाज' (रू. भे.)

उ०—१ आठ मिसल उमराव, नूर आविया सकाजा। दुज मंत्री कवि दुमळ, मिळै दरगाह महाराजा।—सू. प्र.

उ०—२ सुणी सहां 'अजमाल' रां, आवौ राव चलाय। सड़ां सकाजां मारसां, सगळा गरजां आय।—रा. रू.

सकाब्द—सं. पु. [सं. शकाब्द] शालिवाहन द्वारा चलाया हुआ संवत्, शक संवत्।

सकार—सं. पु.—१ 'स' अक्षर।

२ 'स' वर्ण के समान ध्वनि।

[सं. श्यालक] ३ पत्नी का भाई, साला।

उ०—उज्जयणीपुर उण समय, प्रतपै रेणु प्रमार। तिणरौ दूजौ नांम जग, आखै करण उदार। तिण रौ एक सकार तदि, जांणिप धन वय जोर। रूपाजीवा रूपरी, सुणियौ जिण अति सोर।

—वं. भा.

वि. वि.—यह रखैल या बिना ब्याही स्त्री का भाई भी हो सकता है।

[रा.] ४ स्वार्थ, प्रयोजन।

सं. स्त्री.—५ सार्थकता।

उ०—म्हारा जीवणा मैं सकार कोई नहीं पिण म्हारौ जीव च्यार वातां मैं अटकणौ छै।—जैतसी ऊदावत री वात

६ देखो 'सिकार' (रू. भे.)

उ०—नेहनी जाल नाखी अपार, मेलै ए ग्यांनिय्यूं तै सकार। अग जिम पडै तिम राग वाह्यौ, मूढ जन मांननी रस ठमाह्यौ।

—वृद्धि विजय

रू. भे.—सककार।

सकारि—सं. पु. [सं.] १ विक्रमादित्य की उपाधि।

रू. भे.—सकारी

सकारियोड़ो—भू. का. कृ.—१ सुनाया हुआ. २ स्वीकार किया हुआ।

(स्त्री. सकारियोड़ी)

सकारी—१ देखो 'सिकारी' (रू. भे.)

उ०—मांमळी वात वीदै सकारी, दापि का जाति नियाती थारी।

—वि. सं. सा.

२ देखो 'सकारि' (रू. भे.)

सकारै—क्रि. वि. [सं. सकाल] प्रातः काल, सवेरे।

उ०—चरणांम्रित री नेम सकारै, नित उठ दरसण जास्यां।

—मीरां

सकाळ, सकालि—क्रि. वि. [सं. सकाल] प्रातः काल, तड़के।

उ०—नवभवनेहि ऊमाहिय नाहिय कुमर सकालि। सिरवरि सोवन वालिय जालिय तिलक निलाडि।—जयसेखर सूरि

सकियक—देखो 'सकीक' (रू. भे.)

उ०—भीकै भड़ धाराळ जग, भंजै पिसणां भूर। सकियक सीस-संबंध हुंत, समझै निजरा सूर।—रैवतसिंह भाटी

सकी—वि. [फा. शकी] संदेह करने वाला, संदेहशील।

रू. भे.—सक्की।

सकीयारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू. भे.)

सकुंच—वि.—संकुचित।

सकुंत—सं. पु. [सं. शकुंत] १ विश्वामित्र ऋषि के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२ एक प्रकार का पक्षी।

३ एक प्रकार का कीड़ा।

सकुंतक—सं. पु. [सं.] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सकुंतला—सं. स्त्री. [सं. शकुंतला] कण्व ऋषि के आश्रम में पली हुई राजा दुष्यंत की पत्नी तथा मेनका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री का नाम।

उ०—ई उमरै रूप वसंती मैं, ही फिरै सकुंतळा वणी ठणी। कानां मैं फूल झूमरिया हा, छाती पर आंगी तणी तणी।

—करणीदांन बारहठ

सकुच—देखो 'संकोच' (रू. भे.)

सकुचण—सं. स्त्री.—लज्जा, शर्म। (डिं. को.)

सकुचणौ, सकुचबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कोकन सिर खड़िया कटक, तै सिधराव अभंग। दिन सकुचीजै कोकनद, कोक न कोकी संग।—बां. दा.

उ०—२ सिध हसियौ अर चख सकुचांणै। आतमघात वात चित आंणै।—सू. प्र.

उ०—३ करै घुंघट पिण तिण च्यारै, सकुचै पिण नहीं किण हिक वारै रे।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ साधाँ की संगत छोड़दे रे, सखियां सब सकुचात।

—मीरां

उ०—५ सिध इम देखि नपति सकुचांणै। औ गुटको दीधो नप आंणै।—सू. प्र.

सकुचणहार, हारौ (हारी), सकुचणियौ—वि०।

सकुचिओड़ौ, सकुचियोड़ौ, सकुच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकुचीजणौ, सकुचीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सकुचन—देखो 'सकुचण' (रू. भे.)

सकुचाई-सं. स्त्री.—१ संकुचित होने का भाव, संकोच।
सकुचाणौ, सकुचाबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू. भे.)
सकुचाणहार, हारौ (हारी), सकुचाणियौ—वि०।
सकुचायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सकुचाईजणौ, सकुचाईजबौ—भाव वा०।
सकुचायोड़ौ—देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सकुचायोड़ी)
सकुचियोड़ौ—देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सकुचियोड़ी)
सकुटंब—परिवार सहित।
उ०—अन्न दिवसि वंभणु सकुटंब रल जिम विलवइ पाडइ बुंब। पूछइ भीमु करी एकंतु 'आविउं दूखु किसुं अचिंतु।
—सालिभद्र सूरि
सकुन-सं. पु. [सं. शकुन] १ पक्षी। (डिं. को.)
२ हिरण्यकशिपु का अनुचर, एक दानव।
३ पृथक देवों में से एक।
४ देखो 'सकुनि' (१२) (रू. भे.)
उ०—मिथुन लगन सोभन मिळ जोगं, सकुन करण दुख हरण संजोगं।—रा. रू.
५ देखो 'सुगन' (रू. भे.)
उ०—गांम जातां सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यूं सुणौ तै तौ वात और अनें निरजरा हेतें सुणौ तौ वात और।—भि. द्र.
सकुनग्य—देखो 'सुगनग्य' (रू. भे.)
सकुनचिड़ी—देखो 'सुगनचिड़ी' (रू. भे.)
सकुनद्वार-सं. पु. [सं. शकुनद्वार] शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के एक साथ होने वाले शकुन जो यात्रा आदि के लिए शुभ माने जाते है।
सकुनभेंट—देखो 'सुकुनभेंट' (रू. भे.)
सकुनसार-सं. पु.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।
सकुनसासतर, सकुनसास्त्र-सं. पु. [सं. शकुनशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ-अशुभ फलों का विवेचन हो।
सकुनसुद्धि-सं. पु. [सं. शुकनशुद्धि] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।
सकुनावळ, सकुनावळी-सं. पु.—शकुनशास्त्र की पुस्तक।
उ०—सावळ सुर साधक सुख सूं नह सोया, सकुनीं सकुनावळ रावळ बळरोया।—ऊ. का.
सकुनि-सं. पु. [सं. शकुनि] १ वृक का पिता तथा हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य।
२ गंधारी का भाई अर्थात् कौरवों का मामा तथा दुर्योधन का मंत्री जो सुबल राजा का पुत्र था।
३ पक्षी।
४ गिद्ध पक्षी।
५ चील पक्षी।
६ मुर्गा।
७ एक नाग का नाम।
८ इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रों में से एक।
९ दुष्यंत के पुत्र भरतवंशीय राजा भीमरथ का पुत्र।
१० एक महर्षि।
११ सुतद्वाज राजा का पुत्र एवं स्वागत राजा का पिता एक राजा।
१२ वव आदि ग्यारह करणों में से आठवां करण।
(फलित ज्योतिष)
१३ यदुवंशीय राजा दशरथ के पुत्र एवं करंभि के पिता।
१४ निर्माष्ट व दुःसह के संसर्ग से उत्पन्न आठ पुत्रों में से एक।
१५ सूर्यवंशी राजा विकुक्षि का पुत्र।
१६ देखो 'सुगनौ' (रू. भे.)
रू. भे.—सकुन, सकुनिज, सकुनी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी।
सकुनिका-सं. स्त्री. [सं. शकुनिका] कार्तिकेय की एक मातृका।
सकुनिग्रह-सं. पु. [सं. शकुनिग्रह] कार्तिकेय का एक अनुचर।
सकुनिमित्र-सं. पु. [सं. शकुनिमित्र] विपश्चित पाराशर्य ऋषि का नामान्तर।
सकुनी—१ देखो 'सकूनि' (रू. भे.)
२ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)
सकुल-सं. पु. [सं.] अच्छा कुल, ऊंचा कुल।
सकुली-सं. स्त्री. [सं] एक नदी का नाम। (पुराण)
सकुलीण, सकुलीणौ, सकुलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू. भे.)
उ०—सासू सकुलीणी संतू सुर सांनी, ऊजळ दंती नैं उर में उर लीनी।—ऊ. का.
(स्त्री. सकुलीणी, सकुलीनी)।
सकुसळ—क्रि. वि.—कुशलतापूर्वक, राजी-खुशी।
उ०—सकुसळ सबळ सदळ सिरिसांमळ पुहप बूंद लागी पड़ण।
—वेलि
सकूनत-सं. स्त्री. [अ. शकूनत] निवास स्थान।
सकूल—देखो 'स्कूल' (रू. भे.)
उ०—थांरी पौ, सकूल अर धरमसाळ जठै तांई खड़ी रैसी, खड़ी ही नहीं पड़ भी जासी, एक भाठौ ढग्गळियौ तथा एक कांकरौ ही रैसी वठै तांई थारै नांव रौ आदर हूसी।—दमदोख
सकेलणी-सं. स्त्री.—तलवार की एक जाति।
उ०—प्रहार सेल पिंजरै, उभेल खेग पेलनी। सिळाव वेग जांण मेघ, दांमणी सकेलणी।—रा. रू.
सकेलौ-सं. पु.—अच्छी किस्म का लोहा।
रू. भे. -सांकेळौ, सांकेलौ।
सकंक-क्रि. वि.—संभवतः, शायद।
उ०—१ कुसुम मौड़ केसर बसण, नेह न देह लसाय। भाभी कंत सकंक तौ, ल्योड़ी सोक बसाय।—वी. स.

उ०—२ तद लालमण वीचारी जो सकंक तो केरडा प्रणीं वावडी मांहे पांणी पीवानै पैठा सो अठै प्रणीं मांहे अलोप हुवा ।
—लालमण कुंवर री वात

रू. भे.—सकियक ।

सकोई—वि.—सब, समस्त, सब कोई ।

उ०—१ पड़ै धाक देवड़ां, बाक फाटै सीरोई । दे दे द्रब डीकरी, पगां लागीया सकोई ।—जग्गो खिड़ियौ

उ०—२ सु लसकर रा सिपाइयां सगळां कवांण दीठी पिण किण ही या कवांण चढावण री प्रासंग पड़ै नहीं । सकोई कवांण सूं खसमस परा गया ।—नैणसी

उ०—३ नदी किनारै आया रथी, लात सूं ढाय नाखी रतनमंजरी नूं लेयनै ऊभो रहियौ सकोई वधाई वधाई जय जयकार कियौ ।
—पंचदंडी री वारता

उ०—४ सकति गणेस नवं ग्रह सोई, सुर तेतीस सहाय सकोई ।
—रा. रू.

रू. भे.—सकोय

सकोडौ—वि.—१ उत्साह सहित, उमंगयुक्त ।

उ०—'सवळो' 'हैबत' सकत सवाया, आद सर्व जोधा सह आया । कुसळसिंघ 'कलियांण' सकोडै, उर 'जूंझार' 'विजो' पण ओडै ।
—रा. रू.

२ प्रसन्नता सहित ।

सकोतरी—देखो 'सिकोतरी' (रू. भे.)

सकोप—सं. पु.—क्रोध, कोप ।

वि.—क्रोध सहित, क्रोधित ।

उ०—१ राजा दूजो 'मूळरज', दिखणातां दळ लोप । अडर मळैगिर आवियो, सुरपत जेम सकोप ।—वां. दा.

उ०—२ पटाळा हठाळा महागात पूरां, सुरंगा सगाहा सकोपा सनूरां ।—रा. रू.

सकोमळ, सकोमल—वि.—१ कोमल, मुलायम ।

उ०—हिंडोळाट सुघाट हद, कंचन मणि को कांम । सेज सकोमळ सूं जुगत, भूल रहै सब ठांम ।—गज-उद्धार

२ विनम्र ।

उ०—साध सकोमळ सुख करन, दंद निवारन दूर । हरीया असै साधको, नित भेटीजै नूर ।—अनुभववांणी

सकोय—देखो 'सकोई' (रू. भे.)

उ०—हुवै प्रफुल्लत गात हद, सांभळ वात सकोय । गरक घटा उमंडी गरज, हरख सिखंडी होय ।—रा. रू.

सकोरणौ, सकोरबौ—देखो 'सिकोड़णौ, सिकोड़बौ' ।

सकोरौ—देखो 'सिकोरौ' (रू. भे.)

सक्को—सं. पु.—पानी भरने वाला भिस्ती । (मा. म.)

वि.—सब, समस्त ।

उ०—१ कपी देव असी सक्को काय कांपी, जिसो ह्वै तिसो आपरो पांण जांपी ।—सू. प्र.

उ०—२ हरी मेल धांनंख धांनंख हाथं, सक्को पांण खेंचे लियो हेक साथं ।—सू. प्र.

उ०—३ साहजादै पाराधिया, सक्को कमंधां साथ । सूर तरस्सै बोलिया, मूछ परस्सै हाथ ।—रा. रू.

उ०—४ आड़ गोळां पड़ै रीठ तरवारियां, लड़ंतै हाथ इण भांत लाया । पांचमैं महीनै कांम आयां पछै, धापरै ठीकांणै सक्को आया ।—जालमसिंघ मेड़तिया री गीत

सर्व.—१ वही, वह ।

उ०—१ सांग मूंड सहसी सक्को, समजस जहर सवाद । भड़ पीथल जीतो भलां, बैंण तुरक सूं बाद ।—महाराणा प्रताप

उ०—२ बिलूध्यो निधी नीर स्रीहाथ वांमै, पुरी मैं सक्को सीर हम्मोज पांमै । सजा हूं छुड़ायो आई राव सेखो, लाई पुत्र पित्रेस रो नोप लेखो ।—मे. म.

उ०—३ सक्को हिज आज अनेक सरूप, विधूंसत फोज सहायक भूप । तिका अग्र मो भड़ कीट पतंग, जिका जुड़ जीत सकै नेह जंग ।—मे. म.

२ उसे, उसको ।

उ०—माथै सटै महीप, सक्को मत जांणै सूंगी । मोल अस लीधी मूंगी ।—बखतावर मोतीसर

रू. भे.—सक्कौ ।

सक्क—सं. पु.—१ देखो 'सक' (रू. भे.)

उ०—अघीस पएं नख कोटि अरक्क, समत्थ सिरज्जण भांजण सक्क ।—ह. र.

२ देखो 'सक' (रू. भे.)

उ०—धांधलल भिड़ंत वाहंत धक्क । सांमरै कांम संग्रांम सक्क ।
—गु. रू. बं.

सक्कणी—देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—१ सीकोतरी सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारां । विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां ।—रा. रू.

उ०—२ हुय रौद्र हक्कं ग्रेह लक्कं जे किलक्कं जोगणी । वकां गरज्जै खड़ग वज्जै सक्ति रज्जै सक्कणी ।—रा. रू.

सक्कणौ, सक्कबौ—देखो 'सकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बोलि न सक्कूं वीहतउ, हेकज वात हुई । राजि अपूठा वाहड़इ, माळवणी मुई ।—ढो. मा.

उ०—२ आठ मिसल दिस आठ, धजां मुह कीजै धक्कै । राह वाह रुधियै, साह उकसे न सक्कै ।—रा. रू.

सक्कणहार, हारौ (हारी), सक्कणियौ—वि० ।

सक्किग्रोड़ौ, सक्कियोड़ौ, सक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सक्कीजणौ, सक्कीजबौ—भाव वा० ।

सक्कर—सं. स्त्री. [सं. शर्करा] चीनी, खांड, बूरा, शक्कर ।

उ०—काळी घणी करूप, कसतूरी कांटा तुलै । सक्कर बड़ी सरूप,

रोड़ां तुलै रै राजिया ।—किरपारांम

पर्याय.—खांड, चीणी, मधुधूळ ।

यौ.—सक्करकंद, सक्करखोरौ, सक्करपारौ ।

रू. भे.—सकर, साकर ।

सक्करखोर, सक्करखोरौ—सं. पु.—एक काल्पनिक कीटाणु ।

वि.—शक्कर खाने का शौकीन ।

रू. भे.—सकरखोर, सकरखोरौ, साकरखोर, साकरखोरौ ।

सक्करपारौ—देखो 'सकरपारौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रेकर वै खासी ग्रळगी भांय ग्रेक मेळा मैं जावण रौ मतौ करचौ । साकळियां, सक्करपारां रौ कढीयौ कढाय, निसैवार भातौ बंधाय नै पाळा ई मेळै वहीर व्हिया ।—फुलवाड़ी

सक्कळ—देखो 'सकळ' (रू. भे.)

उ०—हुवै दऊ सक्कळ हूक हमल्ल, ढहै ढैवाळ सहेता ढल्ल ।
—गु. रू. बं.

सक्कळा—देखो 'सकळा' (रू. भे.)

उ०—देवी गौर रूपां ग्ररवां नळ निद्धि, देवी सक्कळा ग्रक्कळा सव्व सिद्धि ।—देवि.

सक्कवै—सं. पु.—१ स्वर्ग, देवलोक ।

उ०—दिन ग्रायां चक्कवै, गया सक्कवै समाए । दिन ग्रायां हरचंद, गयौ वारौ बरताय ।—रा. रू.

२ समर्थ; सामर्थ्यवान व्यक्ति ।

उ०—जुग पांणिग्रहण हुइ वार जिण, सोम महूरत सक्कवै । दुलही सजोड़ लीधा दुलह, च्यारू फेरा चक्कवै ।—रा. रू.

सक्कस—वि. [फा. सरकश] १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—बंद इरादत साथै बगस, संग जैसिंघ कूरमै सक्कस ।
—रा. रू.

२ घमण्डी ।

३ देखो 'सकौ' ।

सक्कार—देखो 'सत्कार' (रू. भे.)

उ०—संसकार स्रुतिवांण सुणि, कूरम कै सक्कार । परणावै पधराविया, महलै राजकंवार ।—रा. रू.

२ देखो 'सकार' (रू. भे.)

सक्काळ—देखो 'सुकाल' (रू. भे.)

सक्कियोड़ौ—देखो 'सकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सक्कियोड़ी)

सक्की—देखो 'सकी' (रू. भे.)

सक्कौ—देखो 'सकौ' (रू. भे.)

सक्ख—देखो 'साखा' (रू. भे.)

उ०—वल्लाळ लहै बिहुँ वांह लक्ख, राठौड रूप तेरहां सक्ख ।
—गु. रू. बं.

सक्खि—सं. स्त्री.—मित्रता, दोस्ती ।

उ०—इक्क महिली पंच जण तीहं मिलिउं तुं पक्खि । ए उग्रहांगउ सच्चुकिउ 'कूडउ कूडा सक्खि' ।—सालिभद्र सूरि

सक्खर, सक्खरौ—देखो 'सखरौ' (रू. भे.)

उ०—सुभट्ट सख्ख सक्खरं लसंग लक्ख पक्खरं, धरा ग्रडोल डुल्लयं गजू निसांन खुल्लयं ।—ला. रा.

सक्त—सं. पु. [सं. शक्त] पुरुवंशीय मनस्वी के पुत्र, इसकी माता का नाम सौवीरी था ।

वि. [सं. ग्रासक्त] १ ग्रासक्त ।

उ०—तब चंद्रमा किसौ दीसै छै । जिसौ भरतार ग्रप्रमाध्यां थकां सती कौ मुख देखिज्यै । जब पिउ वै माहे सक्त छै ।—वेलि टी.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

सक्ति—सं. पु.—१ वशिष्ठ के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ ।

२ सुब्रह्मण्य का ग्रायुध ।

३ पराशर ऋषि के पिता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

४ एक शिवावतार का पिता ।

सं. स्त्री. [सं. शक्ति] ५ बल, ताक़त, जोर ।

उ०—१ ग्रदभूत रूप सक्ति ग्रकळ, प्रेत दूत पाळंतियं । गहगहै वार डमरू डहक, महमाया ग्रावंतियं ।—देवि.

उ०—२ सिधि गुलिक वेग पर सक्ति पाव, धजराज मुकट खग-राज धाव ।—रा. रू.

६ दुर्गा, भवानी ।

उ०—देवी धरम रै रूप सिव सक्ति जाया, देवी सिव सक्ति रूपै सत्त माया ।—देवि.

७ सरस्वती ।

८ गिरिजा, पार्वती ।

९ देवताग्रों की विभिन्न शक्तियों में से कोई एक शक्ति ।

वि. वि.—ये शक्तियां भिन्न-भिन्न देवताग्रों की भिन्न-भिन्न होती है । जैसे—विष्णु की कांति, कीर्ति, तुष्टि, प्रीति, शांति ग्रादि, रुद्र की खेचरी, गुणोदरी, गोमुखी, ज्वालामुखी, भंजरी, लंबोदरी, देवी की इंद्राणी, कौमारी, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी ग्रादि ।

१० दक्षकन्या सती का नाम, जो देवी पार्वती का ग्रवतार मानी जाती है ।

वि. वि.—पुराणों में शक्तियों की संख्या इक्कावन बतायी गयी है तथा इनके विभिन्न स्थानों को शक्तिपीठ कहा है । रुद्र-शिव एवं पार्वती के कथा का निर्देश उत्तरकालीन 'देवीभागवत' एवं 'कालिकापुराण' में पाया जाता है । इस कथा के ग्रनुसार, दक्षयज्ञ में ग्रपमानित होकर सती ने यज्ञकुंड में ग्रपने प्राणों की ग्राहूति दे दी । इस मृत शरीर को क्रोधित रुद्र-शिव ग्रपने कन्धे पर लेकर तीनों लोकों में नृत्य करता हुग्रा घूमने लगा । यह देख कर विष्णु ने ग्रपने चक्र से सती के मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर

गिरे। उक्त टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे वहाँ-वहाँ पर एक-एक शक्ति एवं एक-एक भैरव के रूप में अवतीर्ण हुए। यही स्थान आगे चल कर शक्ति पीठ बन गये। 'तंत्रचूड़ामणि' में प्राप्त ५२ शक्ति–पीठों, उक्त शक्तिपीठों में स्थित 'शक्तियों' तथा वहां गिरे हुए अंगों या आभूषणों के नाम निम्नलिखित हैं:—

शक्तिपीठ	शक्ति	अंग या आभूषण
१ अट्टहास	फुल्लरा	अधरोष्ठ
२ उज्जयिनी	मांगल्यचंडिका	कूर्पर
३ करतोयातट	अपर्णा	वामतल्प
४ कन्वाश्रम	शर्वाणी	पृष्ठ
५ करवीर	महिषमर्दिनी	तीनों नेत्र
६ कर्णाट	जयदुर्गा	दोनों कर्ण
७ कश्मीर	महामाया	कंठ
८ कांची	देवगर्भा	अस्थि
९ कालमाधव	काली	वामनितंब
१० कामगिरि	कामाख्या	योनि
११ कालीपीठ	कालिका	पादांगुलि
१२ कुरुक्षेत्र	सावित्री	दक्षिणगुल्फ
१३ गण्डकी	गण्डकी	दक्षिण गण्ड
१४ किरीट	विमला	किरीट
१५ गोदावरीतट	विश्वेशी	वामगण्ड
१६ चट्टल	भवानी	दक्षिण बाहु
१७ जनस्थान	भ्रामरी	चिबुक
१८ जयंती	जयंती	वामजंघ
१९ जालंधर	त्रिपुरमालिनी	वामस्तन
२० ज्वालामुखी	सिद्धिदा	जिव्हा
२१ त्रिपुरी	त्रिपुरसुंदरी	दक्षिणपाद
२२ त्रिस्रोता	भ्रामरी	वामपाद
२३ नलहारी	कालिका	उदरनलिका
२४ नन्दिपुर	नंदिनी	कंठहार
२५ नेपाल	महामाया	जानु
२६ पंचसागर	वाराही	अधोदंतपंक्ति
२७ प्रभास	चंद्रभागा	उदर
२८ प्रयाग	ललिता	हस्तांगुलि
२९ भैरवपर्वत	अवन्ती	ऊर्ध्वओष्ठ
३० मगध	सर्वानंदकरी	दक्षिणजंघ
३१ मणिवेदिका	गायत्री	मणिबंध
३२ मानस	दाक्षायणी	दक्षिणपाणि
३३ मिथिला	उमा	वामस्कंध
३४ युगाद्या	भूतधात्री	दक्षिणपदांगुष्ठ
३५ यशोर	यशोरेश्वरी	वामपाणि
३६ रामगिरि	शिवानी	दक्षिणस्तन
३७ रत्नावली	कुमारी	दक्षिणस्कंध
३८ बहुला	बहुला	वामबाहु
३९ लंका	इंद्राक्षी	नूपुर
४० वक्त्रेश्वर	महिषमर्दिनी	मन
४१ वाराणसी	विशालाक्षी	कर्णकुंडल
४२ वैद्यनाथ	जयदुर्गा	हृदय
४३ विभाष	कपालिनी	वामगुल्फ
४४ विराट	अंबिका	वामपदांगुष्ठ
४५ विरजाक्षेत्र	विमला	नाभि
४६ वृंदावन	उमा	केशकलाप
४७ श्रीपर्वत	श्रीसुंदरी	दक्षिणतल्प
४८ श्रीशैल	महालक्ष्मी	ग्रीवा
४९ शुचि	नारायणी	ऊर्ध्वदंतपंक्ति
५० शोण	शोणाक्षी	दक्षिणनितंब
५१ सुगंधा	सुनंदा	नासिका
५२ हिंगुला	कोटरी	ब्रह्मरंध्र

११ लक्ष्मी।

१२ बरछी या सांग नामक अस्त्र।

१३ तलवार, खड्ग।

१४ स्त्री की योनि।

१५ कोई बड़ा और शक्तिशाली राज्य।

१६ शाक्तों की किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी। (तंत्र)

१७ किसी देवता का बल पराक्रम।

१८ शब्दों का अर्थ बताने वाली शक्ति।

उ०—रूढ़ प्रयोजन सक्ति बिनारघ, लछ अरथ नैं पारय लेख। क्रत विरुद्ध मति विरूद्ध मति क्रत, आरोपक आरोप असेख।

—वां. दा.

१९ तांत्रिकों के मतानुसार वह सुंदर रूपवती एवं सौभाग्यवती युवती जो नटी, कपालिका, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन हो।

२० किसी पदार्थ और उसका बोध कराने वाले शब्द के बीच सम्बंध। (न्याय)

२१ प्रभाव डालने वाला बल, शक्ति।

२२ शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए राज्यों के यौद्धिक आदि साधन।

२३ शक्ति नामक शस्त्र के आकार का हथेली में होने वाला निशान, सामुद्रिक चिह्न विशेष ।
२४ एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।
२५ सामर्थ्य ।
२६ ५२ की संख्या । *
२७ देखो 'सख्ती' (रू. भे.)
रू. भे.—सकत, सकति, सकती, सकत्त, सकत्ति, सकत्ती, सत्ती, सखती, सगत, सगति, सगती, सगत्त, सगत्ति, सगत्ती ।

सक्तिग्रह-सं. पु. [सं. शक्तिग्रह] १ शिव, महादेव ।
२ कार्तिकेय ।
वि.—१ शक्ति को ग्रहण करने वाला ।
२ भालाधारी ।

सक्तिधर, सक्तिधरण, सक्तिधारी-सं. पु. [सं. शक्तिधर] १ स्वामी कार्तिकेय ।
२ शिव, महादेव ।
३ गरुड़ । (नां. मा.)
रू. भे.—सत्तीधर

सक्तिपुर-सं. पु.—१ दिल्ली का एक नाम ।
२ सिरोही नगर का एक नाम ।
रू. भे.—सकतपुर, सकतिपुर, सकतीपुर, सगतपुर, सगतीपुर ।

सक्तिपुरौ-सं. पु.—१ चौहान ।
२ दिल्ली का बादशाह ।
३ मुसलमान ।
४ दिल्ली व सिरोही का निवासी ।
रू. भे.—सकतपुरौ, सकतिपुरौ, सकतीपुरौ, सगतपुरौ, सगतिपुरौ, सगतीपुरौ ।

सक्तिपूजक-सं. पु. [सं. शक्तिपूजक] शक्ति उपासक, शाक्त ।

सक्तिपूजा-सं. स्त्री. [सं. शक्तिपूजा] शक्तिपूजन ।

सक्तिबांण-सं. पु.—एक प्रकार का बाण विशेष । (रामकथा)

सक्तिबोध-सं. पु. [सं. शक्तिबोध] शब्द शक्ति का बोध व ज्ञान ।

सक्तिमंत्र-सं. पु. [सं. शक्तिमंत्र] युद्ध में विजय प्राप्ति हेतु शक्ति की आराधना के लिए पढा जाने वाला मंत्र ।
रू. भे.—सकतमंत्र ।

सक्तिमत्ता-सं. स्त्री.—शक्तिवान होने का भाव ।

सक्तिमांन-वि. [सं. शक्तिमन्] १ पराक्रमी, शक्तिशाली ।
उ०—सरवग्य सेस आव्रति असेस, सब सक्तिमांन पूरन प्रधांन ।
—ऊ. का.
२ सामर्थ्यवान ।

सक्तिवन-सं. पु. [सं. शक्तिवन] एक वन जो तीर्थ स्थान माना जाता है । (पुराण)

सक्तिवादी-सं. पु.—शक्ति की उपासना करने वाला ।

सक्तिवीर-सं. पु.—वाममार्गी, शाक्त ।

सक्तिहसत, सक्तिहसति, सक्तिहस्त, सक्तिहस्ति-सं. पु. [सं. शक्तिहस्त]
१ जयंत के द्वारा मारा गया एक राक्षस ।
२ देखो 'सक्तिहथौ' (रू. भे.)

सक्तिहीन-सं. पु. [सं. शक्तिहीन] १ निर्बल, कमजोर ।
२ नामर्द ।
३ असमर्थ ।

सत्ती-सं. पु.—१ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं ।
२ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

सत्तीधर—देखो 'सक्तिधर' (रू. भे.)

सक्थी—देखो 'सत्थी'

सक्रंतिमेख, सक्रंतिमेखि, सक्रंतिमेखी—देखो 'मेखसंक्रांति'
उ०—मधि त्रेताजुग चैत्रमास सक्रंतिमेखि सरि ।—सू. प्र.

सक्रंदन-सं. पु. [सं. संक्रंदन] १ इन्द्र । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)
२ श्रीकृष्ण ।

सक्र-सं. पु. [सं. शक्र] १ इन्द्र ।
(अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)
२ अर्जुन वृक्ष ।
३ टगण के चौथे भेद की संज्ञा (SIIS) ।
३ ज्येष्ठा नक्षत्र ।
४ उल्लू ।
६ चौदह की संख्या । *
७ एक आदित्य का नाम ।
[सं. शुक्र] ७ वीर्य ।
रू. भे.—सकर, सक्क, सुक ।

सक्रउत्सव-सं. पु. [सं. शक्र+उत्सव] भाद्र शुक्ला द्वादशी को मनाया जाने वाला उत्सव ।

सक्रक्रीडाचळ-सं. पु. [सं. शक्रक्रीड़ाचल] सुमेरु पर्वत ।

सक्रकेत, सक्रकेतु-सं. पु. [सं. शक्र+केतु] इन्द्रध्वज ।

सक्रकोस, सक्रकोसाधिक्ष-सं. पु. [सं. शक्रकोशाधिक्ष] कुबेर ।
(अ. मा; नां. मा.)

सक्रगोप-सं. पु. [सं. शक्रगोप] वीरबहूटी नामक कीड़ा ।

सक्रघण-सं. पु [शक्र+घण] इन्द्र का वज्र । (डिं. को.)

सक्रचाप-सं. पु. [सं. शक्रचाप] इन्द्रधनुष ।

सक्रजांन, सक्रजांनु-सं. पु. [सं. शक्रजानु] रामपक्षीय एक बन्दर का नाम ।

सक्रजित-सं. पु. [सं. शक्रजित] इन्द्र को जीतने वाला, मेघनाद ।

सक्रज्योत, सक्रज्योति-सं. पु. [सं. शक्रज्योति] मरुतों के एक गण का नाम ।

सक्रतकर, सक्रतकरज-सं. पु. [सं. शक्रकरि] बछड़ा, गौ-वत्स ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

सक्र-सं. पु. [सं. शक्र] इन्द्र, पुरंदर। (ह. नां. मा.)

सक्रदिस, सक्रदिसा-सं. स्त्री. [सं. शक्रदिश] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते हैं।

सक्रदेव-सं. पु. [सं. शक्रदेव] १ देवराज इन्द्र।

२ महाभारत युद्ध में कौरवपक्षीय कलिंग राजा जो भीम द्वारा मारा गया था।

सक्रदैवत-सं. पु. [सं. शक्रदैवत] ज्येष्ठा नक्षत्र।

सक्रद्रुम-सं. पु. [सं. शक्रद्रुम] देवदारु।

सक्रधनख, सक्रधनु, सक्रधनुख, सक्रधनुस-सं. पु. [सं. शक्रधनुस्] इन्द्र-धनुष।

सक्रधुज, सक्रध्वज-सं. पु. [सं. शक्रध्वज] इन्द्रोत्सव में इन्द्र के सम्मान में स्थापित ध्वज।

सक्रनंद, सक्रनंदण, सक्रनंदन-सं. पु. [सं शक्रनंद] १ अर्जुन।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ जयंत।

सक्रनंदा, सक्रन्नंदा-सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी का नाम।

सक्रपत, सक्रपति, सक्रपती-सं. पु. [सं. शक्रपति] विष्णु।

सक्रपुर, सक्रपुरी, सक्रपुरी-सं. पु. [सं. शक्रपुर] अमरावती।

सक्रप्रस्थ-सं. पु. [सं. शक्रप्रस्थ] पांडवों द्वारा बसाया गया नगर, इंद्रप्रस्थ।

सक्रप्रिया-सं. स्त्री. [सं. शक्र+प्रिया] इंद्राणी, शची। (अ. मा.)

सक्रमात, सक्रमाता-सं. स्त्री. [सं. शक्र+मातृ] इंद्र की माता अदिति।

सक्रमित्र-सं. पु. [सं. शक्रमित्र] मांधातृ राजा का कनिष्ठ पुत्र, एक राजा।

सक्रय-सं. स्त्री.—इन्द्राणी।

उ०—आनूप रूप दुति सक्रय अंस, हालंत मधुर जिम थकित हंस।
—सू. प्र.

सक्रवापी-सं. पु. [सं. शक्रवापी] एक नाग, जो गौतम ऋषि के आश्रम के पास रहता था।

सक्रवाह, सक्रवाहण, सक्रवाहन-सं. पु. [सं. शक्रवाहन] १ इन्द्र का हाथी। (नां. मा.)

२ हाथी, गज। (नां. डि. को.)

३ बादल।

सक्रसरोवर-सं. पु. [सं. शक्र+सरोवर] वज्र में स्थित इन्द्रकुंड नामक स्थान।

सक्रसारथि-सं. पु [सं. शक्र+सारथि] इंद्र के रथ को हांकने वाला सारथि, मातलि।

सक्रसाळा-सं. पु. [सं. शक्रशाला] इन्द्र के उद्देश्य से बलि दिये जाने का यज्ञ स्थान।

सक्रसुत-सं. पु. [सं. शक्रसुत] १ इन्द्र का पुत्र अर्जुन। (डि. को.)

२ जयंत।

३ बालि।

सक्रहोम-सं. पु. [सं. शक्रहोम] यज्ञहोत्र का पुत्र एक राजा।

सक्रांयत—देखो 'संकरांत' (रू. भे.)

सक्रारि, सक्रारी-सं. पु. [सं. शक्र+अरि] मेघनाद।

उ०—देवी सक्रारी रूप हनमंत ढाळी, देवी रूप हनमंत लंका प्रजाळी।—देवि.

सक्रावरत-सं. पु. [सं. शक्रावर्त्त] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सक्रासण, सक्रासन-सं. पु. [सं. शक्रासन] इन्द्रासन।

सक्रीत-वि.—कीर्ति सहित।

उ०—पधराय जोड़ सक्रीत किय पांणिग्रहण सक्रीत। जित पवित्र पंडित चार, अणपार वेद उचार।—रा. रू.

सक्रुद्ध, सक्रोध-वि.—क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त।

उ०—१ जुरसिंध भीम तजि बाहु जुद्ध, फिर सेन बंधि जूटा सक्रुद्ध।—रा. रू.

उ०—२ उच्चरै फतै जय पाठ अति, मारू आठ मसल्लरां। बीधौ सक्रोध आसर विकट, महा जोध 'अभमाल' रां।—रा. रू.

रू. भे.—सुक्रोध।

सक्रुनिज—देखो 'सकुनि' (रू. भे.)

उ०—सुत विकुक्ष सक्रुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुत्स्थ अति हित प्रमाद।—सू. प्र.

सखंडी—देखो 'सिखंडी' (रू. भे.)

सख-सं. पु. [सं. सखि] १ मित्र, सखा।

[सं. शिष्य] २ शिष्य, चेला।

३ देखो 'साख' (रू. भे.)

उ०—१ अभपती जती गोरक्ख एम, तैं सख बारह पंथ तेम।
—वि. सं.

उ०—२ पूंज तणै तेरह सुत दिव पख, सुजि त्यां हूंत कमंध तेरह सख।—सू. प्र.

उ०—३ दीपंदा 'अभमळ' दुडंद तूं सख तेरंदा। तेंडी नाल गुमाईया, सव आलम दंदा।—सू. प्र.

सखणो, सखबो-क्रि. स.—साक्षी देना, कहना।

उ०—१ जो रघुवर गावै सब सुख पावै, निभय जिकां जम ताप नहै। सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ आद वार अट्ठार दुतीय अख, सुज तिय वार बीस चौथे सख।—र. ज. प्र.

उ०—३ वधर ह्यंध सम अरण, समह भुज नागरीज सख। सिल समांन उर समर, अयध सम स्यंध उदर अख।—र. ज. प्र.

सखणहार, हारौ (हारी), सखणियौ—वि०।

सखिओड़ौ, सखियोड़ौ, सख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सखीजणौ, सखीजबौ—भाव वा०।

सखत—देखो 'सख्त' (रू. भे.)

सखती—१ देखो 'सख्ती' (रू. भे.)

२ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—पछै दिली सुं भंडारी खीवसी जी ने वेलो पातसाही नाहर खां आया। तरै नाहरखांन सखती रा जाव किया।—रा. वं. वि.

सखमदरा-सं. पु. [सं. मदारसखा] मदार का सखा, आम। (अ. मा.)

सुखर, सुखरउ—१ देखो 'सुखरौ' (मह; रू. भे.)

उ०—१ कृपा अमूलिक कांचली रे, नेमिजी तउ सुखर महाव्रत साडी रे।—स. कु.

उ०—२ भण्या नइ हुयइ भलउ विहरावणउ. सुखर वस्त्र पहिरण ओढणउ।—स. कु.

उ०—३ सूध मन सेव गुरू देव री साचवैं सुखर समझैं अरथ सूत्र सिद्धंत। दियैं बहुदांन मन सुद्ध पालइ दया, भली नित संघ री करौ भगवंत।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ स्री धरमसी कहै सुजस सगले सुखर जतीसर जतीसर जतीसर।—ध. व. ग्रं.

उ०—५ संखै कीधउ पोसौ सुखरउ, पक्खुलि कीधी तात जी। मिच्छांमि दुक्कडं स्री महावीरै, दिवरायौ परभात जी।—स. कु.

२ देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—आज धरा दिस ऊनम्यउ, काळी घड़ सखरांह। उवा धण देसी ओळवा, कर कर लांबी बांह।—ढो. मा.

सखरण—देखो 'सिखरण' (रू. भे.)

सखराळौ—देखो सिखराळौ' (रू. भे.)

उ०—१ साळें दोधा सेहुरा वणि सखराळा विंद।—रांमरासौ

उ०—२ बीज सळाव मता वरसाळा, सर भरीया हरीया सखराळा।मद प्याला पीवण मतवाळा, वळण करौ भीमाजळ वाळा।

—किसनजी आढौ

सुखरी—१ देखो 'सखरौ' (पु.) (रू. भे.)

उ०—१ छापर द्रोणपुर अै रजपूत आया। आ ठोड़ सखरी दीठी। अर सहल हीज दीठी।—नैणसी

उ०—२ थोड़ा दिना पछै रांणी कीं जुगत विचार अेक दिन वळै कंवर नै कह्यौ—बेटा, थारी बहू नाचै तौ घणी सुखरी, पण हाथां री खांमचण कैड़ी है, आ तौ बता।—फुलवाड़ी

उ०—३ अेक दिन लाचार होय राजा बडोड़ी रांणी नै बुलाय कह्यौ कै वा नांनेरा सूं बडोड़ा राजकंवर नै बुलाय लावै तौ सुखरी बात।—फुलवाड़ी

उ०—४ थें भला मांणस छौ तौ च्यारि दिन थांहरै घरै आय रहियौ। थें राखियौ तौ सुखरी कीवी। हमैं सागेई माईत पहोंता क्योंकर छोड़सी।—पलक दरियाव री वात

२ देखो 'सिखरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

सुखरु—देखो 'सुखरौ' (रू. भे.)

सुखरौ–वि. (स्त्री. सुखरी) १ सुन्दर, मनोहर। (डिं. को.)

उ०—१ रावळिया रांमत समै, मावड़िया लौ मांग। तौ रतनां पतर तणूं, सुखरौ लावै सांग।—बां. दा.

उ०—२ तद काया हुय जोगी हुवा। मुद्रा घाती। गुजरात गया। अै प्रोहित दीदारू सुखरा पण। अर बीण आछी बजावै।

—नैणसी

२ बलवान, वीर, बहादुर।

उ०—१ सो दीवांण तौ छत्रपति छै। पण उणरा घर मांहे वी सुखरा सुखरा रजपूत छै जिके उणनै अकेलौ पैठ अर अंगो-अंग मारै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ जाहरां बाळसाद हुवै ताहरां तूं उठिनै उरहौ लेई। तूं पाळै थारौ बेटौ हुसी। सुखरौ हुसी। वैर लेसी।

—देवजी बगड़ावत री बात

३ उपजाऊ।

उ०—१ जैतारण था कोस ४, बडौ गांव। सीरवी बांणीया बांमण चारण बसै धरती हळवा २५० बरसाळी खेत सुखरा।—नैणसी

उ०—२ सींव घणी हळवा ३०० खेत सेंवज हुवै। निपट सुखरा खेत छै। अरट १० ढीबड़ा १२ चांच २० हुवै।—नैणसी

४ अच्छा, बढ़िया।

उ०—१ फरसरांम तूं फाबियौ, सुखरौ कियौ संग्रांम। हंसरांम अवतार हरि, तूं बांमण बिसरांम।—पी. ग्रं.

उ०—२ बारठ ईसर बोलिया, निकळंक साहिब नांम। किलंग दईत नां कूटतां, कीधौ सुखरौ कांम।—पी. ग्रं.

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ सांई तूं सिरदारड़ो, सुखरौ थारौ साथ। तूं देवां री दीवलौ, नव नाथां रौ नाथ।—पी. ग्रं.

उ०—२ अबै रावजी रजपूतां रौ साथ तेड़ीयौ। असवार हजार सुं चढीया। साथै सांमांन लीयौ सुखरौ महुरत साझ चालीया।

—राव रिणमल री बात

उ०—३ वैकुंठ सूं सुखरा लिखमीवर, पाव प्रवीत घणौ परमेसर। पगां सरिस सनकादिक पूजै, धरणीधर सूं पातक धूजै।—पी. ग्रं.

६ अनुकूलतम, पक्षीय।

७ स्वादिष्ट, जायकेदार।

उ०—१ पाका आंबानी कातली खाडसिऊं वादली, पाका केळा खांड सुं कीधा भेळा सुखरा करणां, ते वली पीला वरणा।

—व. स.

उ०—२ हिवइ दहीना घोळघोळ आवइ तें केहवा ? गायनां दही भइंसिनां दही सुथरा दही काठां जाम्यां दही, मधुरा दही सुखरा सजीराला सलवणा जाडा दही ना घोळ।—व. स.

उ०—३ गाय रै तौ मरतां मरतां ई समझ मैं नीं आई कै आ कांई वात व्ही। डोळा भंवाय, तड़ाचां वावती वा तौ प्रांण मुगत

होती। सिघणी रा पेट में जाय वासो लियो। सूनी सिघणी नै घरम बैन री मांन मनावतां ई सुगरी लागी।—फुलवाड़ी

उ०—४ हांसिंड मुळमुळावतां ई बाळक रै होठां अर मूंडा सूं अैड़ी ठा पड़ती के उणनै मासी बिचै मां री दूध तौ अवस सुखरो लागतो।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सुकरौ, सुक्खर, सुक्खरौ, सुखरु, सुख्खर, सक्खरौ।

अल्पा.—सुकरोड़ौ।

मह.—सुघर, सुघरउ।

सखम—देखो 'सक्षम' (रू. भे.)

उ०—१ सूतां सखम जात है, जांणै तो जागै रे। जनहरिदास आछै मतै, हरि सुमिरण लागै रे।—ह. पु. वां.

सखा—सं. पु. [सं. सखिन्] मित्र, साथी। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—सुरभियां चरावो संग लावो सखा, छैल आवो कदम तणी छांहीं। पोख हित बेन गावो चरित पेमरा, मुरळिका सुणावो पोख मांही।—बां. दा.

सखाड—सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

सखाकृस्न—सं. पु. [सं. कृष्णसखा] अर्जुन।

सखायो—सं. पु. (स्त्री. सखायण) विवाह के अवसर पर दूल्हे के साथ रहने वाला सखा, मित्र।

सखावत—सं. स्त्री. [अ.] उदारता, दानशीलता।

उ०—१ वेळावळ समी सिध में वडो दातार हुवो। समां रै जिसी सखावत किण में ही न हुयी।—बां. दा. ख्यात

उ०—२ सखावत नै अहसान सो सखावत दातारी यस निमित्त देणी।—नी. प्र.

सखाब्रख—सं. पु. [सं. शाखा+वृक्ष] बरगद, वट वृक्ष। (ह. नां. मा.)

सखासमीर—सं. स्त्री.—अग्नि, आग। (अ. मा.)

सखाहर—सं. पु. [सं. हरिसखा] इंद्र। (अ. मा.)

सखि, सखिए, सखी, सखीय—सं. स्त्री.—१ सहेली, सहचरी। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ सखी भरोसो नाह री, सूनो सदन म जांण। फूल सुगंधी फौज में, आसी भंवर उडांण।—वी. स.

उ०—२ सखीय सहित तिहिं राजकुंआरि आवी ऊलटि आपणइ ए। सांमिहं आंणीआ तुरंगम त्रिणि आंणी कोडि कंचण तणी ए। —हीराणंद सूरि

उ०—३ सखी वटियाळ अरोहित नेर, सख्यां सवताहळ माळ सुमेर। किया सरजीवत तेड़ि कबंध, बूकै पितु मात कुसी धजबंध। —मे. म.

उ०—४ मंदरंतीर किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधं तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत।—वेलि.

पर्याय.—आली, वयसा, सचैत, सध्रीची, सयण, सहचरी, सहेली, सुखदा, सुवंछक, हितू।

२ किसी नायिका के साथ रहने वाली स्त्री जिससे नायिका कोई बात न छुपावे। (साहित्य)

३ प्रत्येक चरण में १४ मात्राऐं व अंत में एक मगण या एक यगण का छंद।

[सं. शिखिन्] ४ अग्नि, आग। (डिं. को.)

वि. [फा.] ५ दानी, दातार, उदार।

रू. भे.—संइ, सइयर, सई, सयी, सहि, सहियर, सही।

सखीभाव—सं. पु.—१ भक्ति में एक प्रकार का भेद जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देव की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करते हैं।

२ वदान्यता।

उ०—'देवा' आप सूं सेवागीर यूं निसाफ दखी, सखीभाव धारै घणा देख देख सूंब। रखी बाजी कीत री भू चाहे आयसां रूप, लखी घोड़ी कीजै अखी करै लावलूंब।—नवलजी लाळस

सखेद—सं. पु.—कष्ट, पीड़ा।

वि.—दुःख व खेद सहित।

सख्ख—देखो 'साखा' (रू. भे.)

उ०—सुभट्ट सख्ख सक्खरं लसंग लक्ख पक्खरं। धरा अडोल डुल्लयं गजूं निसांन धुल्लयं।—ला. रा.

२ देखो 'साखी' (रू. भे.)

उ०—झगड़उ भागउ गोरियां, ढोलइ पूरी सख्ख। मारू रळियाइत हुई, पांमी प्रीय परख्ख।—ढो मा.

सुख्खर, सुख्खरी—१ देखो 'सुखरी' (रू. भे.)

उ०—दै सुरसत मो दांन चोजीलां अख्खरां, बाखाणूं बरहास सजीला सुख्खरा।—पे. रू.

२ देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—देवी देव जळंधरी सख दीपै, देवी कंदरै सुख्खरै वाव कूपै। —देवि.

सख्त—वि. [फा.] १ कठोर, कड़ा, मजबूत।

२ कठिन, मुश्किल।

३ दया ममता से रहित।

४ दृढ, पक्का।

रू. भे.—सकत, सकती, सकत्त, सखत, सखत।

सख्ती—सं. स्त्री. [फा.] १ कड़ापन, ज्यादती।

उ०—सगळा समाचार कहिया जै आज महाराजा सूं असी सख्ती हुई खरा उदास छै।—जयसिंघ आंमेर रा धणी री वारता

२ कठोरता, कड़ाई।

३ क्रूरता ।

रू. भे.—सक्ति, सखती ।

सख्य-सं. पु. [सं. शख्यं] १ मित्रता, दोस्ती ।

[शख्य्] २ मित्र, दोस्त ।

उ०—हाट तै जै वस्तवंत, वचन तै जै सत्यवंत, सख्य तै जै विनय-वंत ।—व. स.

सख्यात—देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—दधि कहतां समुद्र सु समुद्र सोधि । अर जु मोती लीयौ थौ । जु वरणतौ देख्यौ सख्यात ।—वेलि टी.

सख्स-सं. पु. [अ. शख्श] १ व्यक्ति, आदमी ।

२ वीर, बहादुर ।

रू. भे.—सकस, सखस, सगस ।

सगंध-वि.—१ गंध युक्त ।

२ देखो 'सुगंध' (रू. भे.)

सग-सं. पु. [फा.] कुत्ता । (डूंगरपुर)

सगग-सं. पु. [अनु.] ध्वनि विशेष ।

उ०—आ सोच उणरी आंख्या सांम्ही सगळी हरियाळी सगग सगग सिळगण लागी ।—फुलवाड़ी

सगगणौ, सगगबौ-क्रि. स.—पानी या किसी तरल पदार्थ का ध्वनि करते हुए वेग से बहना ।

सगगाट-सं. पु. [अनु.] १ एक साथ पक्षियों के उड़ने से होने वाली ध्वनि ।

२ तरल पदार्थ के उमड़ने की ध्वनि ।

३ शरीर में कंपन की अवस्था ।

सगजबांन-सं. पु. [फा.] कुत्ते के समान पतली और लम्बी जीभ वाला घोड़ा । (शा. हो.)

सगट—देखो ,सकट' (रू. भे.)

उ०—कोळू तणै कणवारियै, देवड़ वतायौ बोल । डेरै में चौड़े सगट, द्रढ गोळूयां दीढौ गोळ ।—पा. प्र.

सगडी—देखो 'सिगड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ धगधगती सगडी भरी, आंणउ अति अंगार । मांहि मूकउं मांनिनी, सटक देई सिणगार ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ सगडी मन माहरा मांहि, भटकं बळती भालि । आवउ सही समांणीउ, टाढिकि जाउ टालि ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ बावन चंदन वालि करि, सोविन सगडी आंणि । ससि-वयणी सज्जण तणां, सेवाकइ पय पांणि ।—मा. कां. प्र.

सगण-सं. पु.—प्रथम दो लघु और अंत मे एक गुरु अक्षर का छंदशास्त्र में एक गण विशेष । (।।ऽ)

सगणौ, सगबौ—देखो 'सकणौ, सकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै हांसार रै फोजदार सारंगखांन री जोर आकरौ हुवौ ताहरां उठै ठहर सगिया नहीं ।—नैणसी

उ०—२ इणरा परसंगी आया तिकां उठै हीज कुवै ऊपर दाग दियौ । बोल कोई सगीयौ नहीं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सगत—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (डि. को; डि. नां. मा.)

उ०—१ सबर राख कुसमै समै, कासूं खबर करीस । खिण खिण लै जगची खबर, जबर सगत जगदीस ।—बां. दा.

उ०—२ कुंडळ वाळी करनला, सगत वडाळी सेव । सदा रूखाळी सेवगां, डाढी वाळी सेव ।—चैनकरण सांदु

उ०—३ खतम अवसांण खैंपांणरहिया थकत, रीझियौ भांण दइवांण राजी । सिव सगत सवाड़ा अखाड़ा सेल रा, गवाड़ै प्रवाड़ा सुतन 'गाजी' ।—नाथौ सांदू

उ०—४ सारसा 'दूद' सत्रसाल परत्रह सहत, जोध रा जोध अण-पाल जुडिया । सूर पड ऊपडै सरै आंन म सगत, मुगळां थाट दह-वाट मुड़िया ।—पातौ बारहठ

उ०—५ सुतन 'गजसाह' गज-गाह बंधै समर, सगत बळ जळ हळै तेग साथै । गांजवा खळां जस करण वांका गढां, हींदवां छात रै फतै हाथै ।—महाराजा जसवंतसिंघ रौ गीत

सगतपण, सगतपणौ-सं. पु.—शक्ति, सामर्थ्य ।

उ०—सिर धड़ भेळा सांधने, सगतपणां तत सांच । देहूंए कर लोवड़ी ऊपर दीधी आंच ।—पा. प्र.

सगतपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

उ०—समर सगतपुर मंडोवर छतर धर समोसर, तकर कर वजर बर धजर तांजौ । उसर बगतर ऊअर वीरमांसर अतर,'गंग' हर कळोधर रकहर गांजौ ।—नाथौ सांदू

सगतपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू. भे.)

सगतभूत, सगतभ्रति-सं. पु. [सं. शक्तिभृत] स्वामी कार्तिकेय ।

रू. भे.—सगतिभूत, सगतिभ्रति ।

सगतसिंघोत-सं. स्त्री.—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सगतांणौ, सगतावत-सं. पु.—सीसोदिया वंश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति ।

सगति—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—हंस मीन कूरम हरी, निरझर नदी निहार । काय व्यूह निज सगति कर, तौ सेवै इकतार ।—बां. दा.

सगतिभूत, सगतिभ्रति—देखो 'सगतभूत' (रू. भे.)

सगतिविलंद-सं. पु —अर्जुन । (अ. मा.)

सगती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ लिछमण के बांण लग्यौ सगती, जौ कोइ ऐसौ होवै जौ लिछमण कौ जीवावै ।—लो. गी.

उ०—२ चांद विना किणरी सगती जकौ रात रा अंधारा नै उजाळै ।—फुलवाडी

सगतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

सगतीतुरी—देखो 'सक्तितुरी' (रू. भे.)

उ०—नग हीर कनक निछरावळां, ओवै पग पग आरती। पायो मज्याम सगतीतुरी, परणावी जोधांपती।—रा. रू.

सगत्त, सगत्ति, सगत्ती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ बाहू भळी निरम्मळी, चम बीभळी सुरत्त। आजे करनल मराळी, संगळी रूप सगत्त।—राव सेखो

उ०—२ समरो प्रथम सुगीस सगत्ती, पाछै गुण गावां छत्रपत्ती।
—रा. रू.

सगन—देखो 'सगुण' (रू. भे.)

उ०—पावस री सगन छोळां पड़ै छै।—पनां

सगपण–सं. पु.—१ सम्बंध, रिश्ता, नाता।

उ०—१ लोपै हिंदू लाज, सगपण रोपै तुरक सूं। आरज कुळ री आज, पूंजी रांण प्रतापसी।—दुरसो आढो

उ०—२ भाई बेटउ बाप पणि, सगपण माई न मित्र। राजसभा नवि धीरीइ, लिग्बी चितारइ चित्र।—मा. कां. प्र.

उ०—३ चौथै दिन जांन नै सीख दिरीजैला। अपां कनैतो दो टंक री ई गरतन कोनीं। अै गायां नीं व्है तो भूखां मरां। नीं तो इत्ता जांनियां री सरवरा व्है अर नीं ओ सगपण वेंठै।—फुलवाड़ी

२ सम्बन्ध, लगाव।

उ०—नेम न कोई नित सा, अलख समा नहीं सेल। सगपण ना कोई सबद सा, एक समी नहीं बेल।—अनुभववांणी

३ विवाह, व्याह।

उ०—१ गढ बीकांण चीतगढ सगपण, 'कलो' उदैसिंघ इळ आकास। 'जसमा' नार रायसिंघ जोड़ो, पमंग पांच सै हसत पचास।—महाराजा रायसिंह री गीत

उ०—२ बेटी इचरज भरया सुर में बोली-विरया! म्हारै ई सगपण री बात सूं म्हारो कोकर वास्तो कोनीं मां! म्हैं अै विरया दपूचा लेवूं! मां रा कांन बेटी रा अै बोल सुणण सारू नीं हा। वा आंमनो जतळावती तिड़कनै कह्यो—हां विरया, साव विरया! थनै व्याव सूं तो वास्तो है, पण व्याव री चरचा सूं कीं तल्लो मल्लो नीं।—फुलवाड़ी

४ देखो 'सगाई'।

उ०—१ अर रांमपुरै आपरो सगपण हूवो जिण रा विवाहणा में दगोर रा फौजदार नूं नीड़ै जांणि केही वार संकळप पाछौ पाड़ि तुरकां रा पेच में कैद होवण रो डर धारियौ।—वं. भा.

उ०—२ खंट देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनवंधी मारां मिळै तूझ सूं संधी, वळ दाखै किण सिर 'गजवंधी'।
—चतुरो मोतीसर

उ०—३ तद सेठ तड़कनै कह्यो—यां लुगायां रै तो व्याव, सगपण मुकळावा, अर बाळूड़ा सिवाय दुनियां में दूजी कीं बातां है ई कोनीं, पण म्हारै तो अनेकूं कांम है।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सगपण।

सगबग–वि. (अनु.) १ सराबोर, लथपथ।

२ भरा हुआ, परिपूर्ण।

क्रि. वि.—१ तेजी से, फुर्ति से।

२ झटपट, तुरन्त।

सगर–वि.—सब, समस्त।

उ०—गोमाय सगर पळचर गहणि, सार मेय नाहर समळ। अंग अंग भखै पळ आसुरां, कद पद धर तंडळ कमळ।—रा. रू.

सं. पु. [सं.] १ सूर्यवंशी राजा बाहुक के पुत्र जिनके साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये थे। इन्ही के वंश में भगीरथ हुआ था।

उ०—१ राजा सगर नामना राखण, जिगन करण पाताळ इसमेद जग। अस मेल्हियउ करै ताइ आरंभ, सरग नइ ग्रत्य पाताळ लग।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ रायधण करण अनै वळराजा, प्रीछत 'धारु' 'जगड़' पंवार। 'भीमो' 'नाहर' सगर भागीरत, सै नर अमर हुवा संसार।
—गोरधन खीची

वि. वि.—शत्रुओं द्वारा राज्य के छिन जाने पर अपनी पत्नी के साथ ये वन में चले गये और वहीं इनकी मृत्यु हो गई। इनकी सती व गर्भवती पत्नी को और्व ऋषि ने सती होने से रोका। ईर्ष्यावश सपत्नियों ने इसे गर (विष) पिलाया और गर पिलाने से बच्चे का जन्म हुआ। अतः बच्चे का नाम सगर रखा। जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर उन्हें विकलांग किया। इसको सुमती नामक पत्नी से साठ हजार व कोशिनी नामक पत्नी से एक पुत्र असमंजस प्राप्त हुआ। अश्वमेघीय यज्ञ के घोड़े के खोजाने पर इसके साठ हजार पुत्रों ने पृथ्वी को खोदा व पाताल में कपिल ऋषि के पास घोड़े को देख कर समाधिस्थ कपिल ऋषि को मारने लगे। किन्तु कपिल ऋषि के द्वारा आंख खोलते ही ये सभी भस्म हो गये। भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाकर इन सबका उद्धार किया।

२ एक चंद्रवंशी राजा।

३ राठौड़ों की उपशाखा।

रू. भे.—सग्गर, सग्र, सागर।

सगरब, सगरभ–वि. [सं. सगर्भ] १ सहोदर, सगाभाई।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सगरभा' (रू. भे.)

उ०—जांण सगरभ अबर दुख जांणै अटकण सकत नकूं मन आंणै।—रा. रू.

३ देखो 'सगरब (रू. भे.)

सगरभा–सं. स्त्री. [सं. सगर्भा] गर्भवती स्त्री।

रू. भे.—सगरभ।

वि. स्त्री.—सहोदरा। (डिं. को.)

सगरव–वि. [सं. सगर्व] १ गर्वयुक्त, गर्वीला।

२ देखो 'सगरभ' (रू. भे.) (अ. मा.)

सगरांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

उ०—१ **सगरांम** बंब बागां सुणे, अंबर भुज लागा अड़ण। उभल्या समर काळां उछब, भालां खग ढालां भिड़ण।—मे. म.

उ०—२ वांमी वंध बांधळा, सूर **सगरांम** सधीरा। तेज जेठ तावड़ा आंखि धावड़ा अंगीरा।—मे. म.

सगरि–सं. पु.—राजा सगर के पुत्र।

उ०—सगरि हिं खणीय सुरंग, विदुरि दिवारीय दूर लगइ। हुं अगारउं अंग, ईण ऊपाइं पंडवह।—सालिभद्र सूरि

सगळाई–क्रि. वि.—सभी, सारे ही।

उ०—ओलै बैठी एकली, करै सगलाइ कांमो रे। राती रस-भीनी रहै, छोडै नहीं निज ठांमो रे।—ध. व. ग्रं.

सगळीगर—देखो 'सिकळीगर' (रू. भे.) (डिं. को.)

सगळै–क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मुरधर देस मझार, सयळ धणधांन सयिद्धौ। नांमै पूंगळ नयर, पुहवि **सगळै** परसिद्धौ।—ढो. मा.

उ०—२ **सगळैइ** कांम व्हाला है, चांम व्हाला कठैई कोनीं। पण थोड़ौ घणौ कांम तौ जेठांणी जी नैं ई करणौ चाहीजै।

—अमर चूंनड़ी

वि. [सं. सकल] सब, समस्त।

उ०—क्रत करण अकरण अन्नथा करणं, **सगळै** ही थोकै ससमरथ। हालिया जाइ लगाया हूंता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि

रू. भे.—सिगळै।

सगळौ–वि. [सं. सकल] (स्त्री. सगळी) सब, समस्त। (डिं. को.)

उ०—१ खातां न लागै खांण, पांणी न लागै पीवतां। सयणां विण समसांण, जग **सगळौ** दीसै 'जसा'।—जसराज

उ०—२ तद जलाल कही—सात सौ घोड़ा कंधारी इकमोला हजारी तिकै सुनहरी रूपहरी साखत दिरायजै ओर खजानां सूं रोकड़ा दिरायजै। बीजौ साथ सांमांन **सगळौ** म्हारौ छै हीज।

—जलाल बूबना री बात

उ०—३ गजबंधी तेडावियौ, **सगळौ** साऊ सत्थ। इळि नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड समत्थ।—गु. रू. बं.

उ०—४ कोटवाल कांमातुर हुओ। पछै हकीकत पूछी नैं रजपूतांणी कांणा री **सगळी** हकीकत कही।—कांणा रजपूत री वात

रू. भे.—सघळउ, सघळू, सघळौ, सिगळउ, सिगळौ।

सगस–सं. पु.—१ भूत-प्रेत। (डिं. को.)

२ देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—रायसीह जसवंत रण, जांणे तजि कढि जांण। ले दारा क्रमिया लगस, फोजां **सगस** उफांण।—वं. भा.

३ देखो 'सख्स' (रू. भे.)

सगह–सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—१ रिमसेन **सगह** बहिया जुध रासै, रूकां पांण कनोजै राय। पळ भखती राती पिड पंखण, तगसंती राता गिर ताय।

—घोळूजी बीठू

उ०—२ तूंवर पाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह'। सांभरि सिर आयौ **सगह**, नरपति विरुद निवाह।—रा. रू.

उ०—३ विघन वार गिरधर सधर वाधियै वीररस, पह सुछळि **सगह** आलम संपेखै। मरणमंगळ जिसौ जांणियौ मोट मन, लाख खळ सबळ तिलमात लेखै।—गिरधरदास री गीत

उ०—४ विखम तवल वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां। असि धमसतां अनेक, **सगह** बहसंतां सूरां।—सू. प्र.

सगांन–वि.—१ गायन सहित।

उ०—१ रजै मलार सारगं, रितंग रंग मारगं। रसाल ताल सोरठी, **सगांन** तांन सांमठी।—रा. रू.

उ०—२ कवि नव नव कायवकथै, गायव तांन **सगांन**। वाजित्रां लोभै अमर, नर सोभै दीवांन।—रा. रू.

सगा–वि. [ब. व.] स्वयं के, खुद के।

ज्यूं—सगा हाथां सूं, सगा मूंडा सूं।

सगाई–सं. स्त्री.—१ सम्बंध, रिश्ता।

उ०—१ सबळ **सगाई** नां गिणै, नां सबळां में सीर। खूरम अठारै मारिया, कै काका कै वीर।—अग्यात

उ०—२ स्वांग **सगाई** कुछ नहीं, रांम **सगाई** सांच। दादू नाता नांमका, दूजै अंग न रांच।—दादूबांणी

उ०—३ आगै 'कमो' वधै आझाळां, चौड़ै मार लियौ कळचाळां। सांमधरम लेखवै **सगाई**, भिळियौ खळां न लेखै भाई।—रा. रू.

२ विवाह के पूर्व की वह रस्म या प्रथा जिसके अनुसार पुत्र और कन्या का सम्बंध निश्चित होता है, मंगनी।

उ०—१ वैर अमल सूं बढै, **सगाई** अमलां सांधै। अमल गळीजै अवस, ब्याह में तोरण बांधै।—ऊ. का.

उ०—२ राजबीयां नैं खाळां किसी ग्याति। कुण जाति कुण पांति। राजबीयां री **सगाई** तो राजबीयां सूं बूझै छै।—वेलि टी.

३ सम्बन्धी या रिश्तेदार होने की अवस्था या भाव।

४ विधवा व पुरुष का सम्बन्ध जो कई जातियों में विवाह ही समझा जाता है।

सगाचार–सं. पु.—१ बेटे या बेटी के ससुराल वाले, सम्बंधी।

२ रिश्ता, सम्बंध।

सगाढौ–वि.—१ मजबूत, दृढ।

उ०—गिरधर रतन दळां विच गाढां, सकजां धुज 'धनरूप' **सगाढां**।

—रा. रू.

२ वीर, बहादुर।

सगातरी-वि.—निकट, समीप।

सगातेड़ो-सं. पु.—मृत्युपरांत मृतक के पीछे किया जाने वाला एक भोज जिसमें केवल सम्बंधीजन को ही बुलाया जाता है।

सगापण, सगापणो-सं. पु.—सम्बंधी होने का भाव, आत्मीयता।

उ०—चढ जाय बूठो चंवळां, मनरस सगापण मेळ। दारुग्रां ग्रमलां दोवटां, सीसियां कमधां सेल।—पा. प्र.

सगार—देखो 'सागार' (रू. भे)

सगारत, सगारथ-सं. पु.—सगा होने का भाव।

२ रिश्तेदारी, सम्बन्ध, रिश्ता।

उ०—१ जोधपुर ग्रोर ग्रांमेर रै घर सूं तुम्हारै सगारथ किस तरह।—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ दोनूं पग ऊजळा है ग्रनै मलेछ मुसळमानां रो चाकर नहीं मुसळमानां नूं सगारथ नहीं, जिणतरै महारांणा प्रतापसींहजी ठूंगरां मैं वस नै हिंदू धरम राख दीधो।—वी. स. टी.

३ सम्बंधी।

सगाळो-सं. पु.—निकटतम रिश्तेदार, सम्बंधी।

सगायट-सं. पु.—सम्बंध, रिश्ता, नाता।

सगायळ-सं. पु.—सम्बंध, रिश्ता।

उ०—राव जी कह्यो—पातिसाह दीन दुनीरा छो, हूं पाघरियो घर रो धणी रजपूत छूं। पातिसाहां सगावळ करो रोम सूंम रा धणी छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

सगाविध-सं. पु.—१ रिश्तेदार, सम्बंधी।

उ०—रावजी कह्यो। कांनड़ दे जी विण ग्राया। जरै पातसाह जी रावजी नें घणी ग्रादर सूं सगाविध सूं वतलावण कीधी।
—वीरमदे सोनगरा री वात

२ ग्रात्मीयता।

सगाह, सगाहो-वि.—१ मजबूत, दृढ।

उ०—१ मेड़तिया मोहकमसिंघ हिम्मत सगाह, जोवा उदैभांण मांण सिंधु सा ग्रथाह।—रा. रू.

उ०—२ पम 'दूरगै' ग्रखियो, सुणतां कमंध सगाह। धरती रा जतनां करूं, पर तीरां पतसाह।—रा. रू.

उ०—३ 'दोलो' 'गोयंद' हरा दुवाहो, सुत जैसिंघ विवाद सगाहो।
—रा. रू.

२ जबरदस्त, बलवान।

उ०—१ दैचाळ दलां दाहण सगाह, भड सिहर जोध ग्राजांन-बाह। चाचरै जिकै चाडंत देग, तेजरी तीह तूटंत तेग।
—गु. रू. वं.

उ०—२ धरपति नरधीर हेल हमीर, वावन वीर दुवाह। निरमळ भूमि नूर पहुमह पूर, सांमंत सूर सगाह।—ल. पि.

३ गर्व सहित, सगर्व।

उ०—१ साह सुणे विध सोचियो, गह मोचियो सगाह। मन ठहराइ मेळ री, साह 'ग्रजीत' सलाह।—रा. रू.

उ०—२ बोलै साह सगाह महाबळ, सेना तोछ तपस्या सब्बळ। सुणे चलायो पूत सप्रांणो, ग्रकबर गंजसि को ग्रापांणो।—रा. रू.

४ ग्रादर पूर्वक, प्रतिष्ठा पूर्वक।

उ०—मास वळे ग्रासोज में, ग्रापण मोज ग्रथाह। कंवर सगाह बुलावियो, फरकसाह पतसाह।—रा. रू.

५ क्रोध पूर्वक, सक्रोध।

रू. भे.—सगस, सगह, सग्गह।

सगुड—कवचधारी (हाथी)।

उ०—सगुड हात्थीया लूडइ, रयावली ऊथालयइ मउडधा मांकड जिम सेलावइं।—व. स.

सगुण-सं. पु.—१ परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज ग्रोर तम तीनों गुणों से युक्त हो।

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

३ एक सम्प्रदाय विशेष जिसमें ईश्वर का सगुण साकार रूप मान कर पूजा की जाती है।

४ ग्रच्छे गुण, श्रेष्ठ गुण।

५ धार्मिक साधु।

६ डोरी चढ़ा हुग्रा धनुष।

वि. (स्त्री. सगुणी) १ गुणवान, चतुर।

उ०—१ सारसड़ी मोती चुणइ, चुणइ त कुरळइ कांइ। सगुण पियारा जउ मिळइ, मिळइ त विछुड़इ कांइ।—ढो. मा.

उ०—२ ग्रावै हित ग्रावै ग्रवसि, परत न खोवै प्रीत। हौं जांणूं मो ज्यों हुसी, मो सगुणी रो मीत।—र. हमीर

उ०—३ सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हांकउ कहयउ करै ज। नव मण चंदण, मण ग्रगर, माळवणी दागै ज।—ढो. मा.

उ०—४ माळव देस विछोड़िया, मारू किया वखांण। मारू सोहा-गिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण।—ढो. मा.

२ परोपकारी।

उ०—१ दादू सगुणा गुण करै, निगुणा मांनै नांहि। निगुणा मर निस्फल गया, सुगुणा साहिब मांहि।—दादूवांणी

उ०—२ सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मांनै नीच। दादू साधू सब कहै, निगुणा के सिर मीच।—दादूवांणी

३ कृतज्ञ।

उ०—१ दादू सगुणा लीजियै, निगुणा दीजै डार। सगुणा सन्मुख राखियै, निगुणा नेह निवार।—दादूवांणी

उ०—२ सगुणा गुण केतै करै, निगुणा न मांनै एक। दादू साधू सब कहै, निगुणा नरक ग्रनेक।—दादूवांणी

४ ग्रच्छी ग्रादत वाला, ग्रच्छे व्यवहार वाला।

५ सांसारिक।

९ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

रू. भे.—सगुन, सरगुण।

सगुणता–सं. स्त्री.—सगुण होने की अवस्था या भाव।

सगुन—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

२ देखो 'सगुण' (रू. भे.)

सगुनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा, रू. भे.)

सगुर–वि. [सं. सगुरु] महान, जबरदस्त।

उ०—खुरसांणी रहमांन अखूंनी, सीदी हबस राफसी सूंनी। मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुन जसथांनी ताई।—रा. रू.

सगोड़ौ—देखो 'सगौ' (अल्पा; रू. भे.)

सगोडौ, सगोढौ—[सं. सम्+गोत्र] (स्त्री. सगोड़ी, सगोढ़ी) १ निकटतम रिश्तेदार।

२ घनिष्ठ मित्र।

सगोत, सगोतरी, सगोती, सगोत्र, सगोत्री–वि. [सं. सगोत्र:] १ एक ही जाति का, सजातीय।

उ०—सगोत्री कन्या मीणा नूं देण में लग्न रौ विचार किसड़ौ कहावै।—वं. भा.

२ अपने वंश का, कुल का।

उ०—१ कुमार कहियौ मीणां तौ ठाकुर कहावणौं सहज रौ जांणि अब तौ रजपूतां री पुत्रियां नूं बरण ढूका। अर आपांरा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता रौ संबंधी करण ढूका।—वं. भा.

उ०—२ ब्राह्मण पत्नी जोय जौ, गरभवती पै जाय। गिणै न सगी सगोतरी, घोर नरक सौ पाय।—वैताळ पच्चीसी

३ सम्बंधी।

४ कुल, वंश।

५ उस वंश के जिसके साथ श्राद्ध और तर्पण का सम्बंध हो, दूर का नातेदार।

सगौ–सं. पु. (स्त्री. सगी) १ बेटी या बेटे के ससुराल का व्यक्ति।

उ०—१ कहै सगा भोळप करी, दीधी डावड़ियांह। राव सरीखै रंग ह्वै, मूंहडै मावड़ियांह।—बां. दा.

उ०—२ जै डर न होइ जांणौं जनक, प्रणत कालिह लागूं पगां। सो जै न होइ दीजै सहज, सुत अपजस असगां सगां।—वं. भा.

उ०—३ भायां रा नांम लै कुसल पूछिआ। कहै चहुआंणा रा हीज सगा हुआ हौ।—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

मुहा.—सगौ सगा री जड़ व्है=समधी समधी का सहायक व रक्षक होता है।

२ सम्बंधी, रिश्तेदार।

उ०—कोडी बिन कीमत नहीं, सगा न राखै साथ। हाजर नांणौ हाथमें, वैरी बूजै बात।—ऊ. का.

३ एक माँ के उदर से उत्पन्न, सहोदर।

उ०—१ दोनूं मास्याई भाइयां में हेत अणूंतौ। साथै रमै, कूदै, मछरां करै। अेक दूजा बिना छिण ई आवड़ै नीं। सगा भाइयां बिचै ई गाढौ हेत।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै दोनूं जणा हेटै आय पूछताछ करी। निरी ताळ तांई हाथा-जोड़ी रै उपरांत वा रोवती रोवती ई बतायौ कै दैंतराज उण री सगौ भाई हौ।—फुलवाड़ी

४ निकटतम सम्बंधी या रिश्तेदार।

५ पिता, पितामह, मातामह (नाना) के वंश का कोई सदस्य या व्यक्ति।

ज्यूं=सगौ भाई, सगी भतीजौ, सगौ काकौ, सगौ भांणजौ, सगी मासी, सगी भूवा।

६ प्यारा, दुलारा।

रू. भे.—सग्गौ।

अल्पा;—सगोड़ौ।

सग्ग—देखो 'सुक' (रू. भे.)

उ०—इखै नासिका सग्ग दीपक्क एरी, कळी चंप जांणै लळी लंप केरी।—ना. द.

२ देखो 'स्वर्ग' (रू. भे.)

उ०—त्रिणि त्रिणि चिहु दिसि दीपइं, जीपइं वारइ सग्ग। मंडप ऊंचपणि घणइं गयणंगणिहिं विलग्ग।—अग्यात

सग्गड—देखो 'सकट' (रू. भे.)

सग्गपण—देखो 'सगपण' (रू. भे.)

उ०—वयणें वदवादन कायवली, टल सिद्ध सग्गपण मांमटली।

—पा. प्र.

सग्गर—१ देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—हिलोळ जांण हूकळंक सद्द नद्द सग्गरं।—गु. रू. बं.

२ देखो 'सगर' (रू. भे.)

सग्गह—देखो 'सगाह' (रू. भे.)

उ०—ऐसौ पातिसाह कौ परगाह, सग्गहां तैं अगाह।—रा. रू.

सग्गौ—देखो 'सगौ' (रू. भे.)

सग्यांन–सं. पु. [सं. सज्ञान] १ ज्ञानी व्यक्ति।

२ बुद्धिमान पुरुष।

३ प्रौढ़, वयस्क व्यक्ति।

वि.—१ चतुर।

२ सावधान, होशियार।

सग्र—देखो 'सगर' (रू. भे.)

उ०—नमौ कपिलेसुर दिस्ट करूर, नमौ सुत सग्र जळावण सूर।

—ह. र.

सग्रांम—देखो 'संग्रांम' (रू. भे.)

उ०—१ आवत हुओ एकै घडी, हुआ सुभट्टां सत्थरा। सग्रांम चक्र वूहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा।—गु. रू. बं.

उ०—२ अंजसिया 'माल' सग्रांम 'उदा' उभै, धमळ 'गजबंध' रौ

सार पूरौ। साकरां भूत मा नव नंदा कुंनम, दियै रत दियै ग्रासीस पूरौ।—नागो गोहड़ियो

सघट-वि.—दृढ़, मजबूत।

उ०—जैं सफहलपुर पाटण ? सघट घाट करी विचत्र चित्रांमें रची धमिरांम, महलमहोछवै मलां ग्रारांम।—व. स.

सघण-सं. पु.—१ पहाड़, पर्वत। (ग्र. मा.)

२ वर्षा।

उ०—वजि गाज सकल वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरचंद किया। नेगिया हीज ग्रावै वर्णी, उण दिन तणी ग्रजोधिया।—सू. प्र.

३ मेघ, बादल। (नां. मा.)

उ०—१ रिटै जांण ग्राहुज्ज, ग्रगन धड़हड़तौ ऊपरि। सघण गाज सामळै, जांण साढ़ूळै केहरि।—गु. रू. वं.

उ०—२ सघण नीर सीतळ सु करत विज्जण समीर कर। उदभिज भार-ग्रठार, पुहुप धर परिमळ ऊपर।—ह. र.

३ समूह, झुण्ड। (ग्र. मा.)

उ०—सुहड़ सघण सुर-छभा, सुकवि जण किता सुधाकर।

—गु. रू. वं.

४ घनघटा, मेघघटा।

उ०—१ सम्मूह चढै सुरतांणरा कटक वंध कोग्रण सघण। जागियौ तांम तापी नदी, दे ग्रण-मांन ग्रायौ महण।—गु. रू. वं.

उ०—२ ग्रगट्यौ वरस पंचोतरौ, सांवण सघण मराय। साह कमंटव पंखि पर, दुसुखि रहै वस लाय —रा. रू.

वि.—१ ग्रधिक, बहुत।

उ०—१ भरै ग्रन्न भंडार, मालि गोधूम सघण घण। घ्रित तेल गुळ लूंण, लगै ग्रहिफेहण सांवण।—गु. रू. वं.

उ०—२ गजमिघज गैमर गोडिया, तीह कलेवर पंजरां। सावज सीह ब्याया सघण, रहि मोळै गिर कंदरां।—गु. रू. वं.

उ०—३ जिण समै गहरौ मुधरौ मुधरौ गाजै है, पवन सीतल मंद वाजै है, नौघण मेहरी सघण छोळां परताळां पड़ती जिकै जमी नीठ समै है। बीज ग्राभै न मावै है।—र. हमीर

२ घना, गहरा।

उ०—१ राति ज वादळ सघण घण, बीज-चमंकउ होइ। इण समईयइ है सखी, माल्ह जगाई मोइ।—ढो. मा.

उ०—२ निगरभर तरुवर स्घण छांह निसि, पुहुपित ग्रति दीपगर पढाम। मौरित ग्रव रोभ रोमंचित, हरखि विकास कमळ क्रत हास।

—वेलि

उ०—३ उपवन सघण बहार ग्रनूठी, घ्रित हरियाळी छायी। ग्रंग मरोड़ संग तरुवर व्है, लूम लता लहरायी।—लो. गी.

उ०—४ स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ। मंजुत स्यांमा सावघण, माहव स्यांम समाळ।—बां. दा.

३ स्थूल, मोटा।

उ०—सघण सूकडि सइरि सु सींचीइ, पवणपूरिहिं वींजण वींजीइ। कमल नै दलि सायर पायरिउ, मरइ कीचक मन्मथ ग्राफरिउ।

—सालिसूरि

रू. भे.—सघन।

सघणगाज-सं. पु.—भीम। (ग्र. मा.)

सघणवाह-स. पु.—इन्द्र। (ग्र. मा.)

(मि. मेघवाहन)

सघणापो-सं. पु.—१ ग्रधिकता, बाहुल्य।

२ घना होने की ग्रवस्था या भाव।

सघणो, सघवो—देखो 'सकणो, सकवो' (रू. भे.)

उ०—१ सबद मारको मारियो, रोवै सास उसास। हरीया बाहिर बोलिकै, काढि न सघै वास।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ हरीया हंसो जांह गयो, सुन्न सरोवर तीर। पंछी कोय न पी सघै, सो हंसो पीयै नीर।—ग्रनुभववांणी

सघन—देखो 'सघण' (रू. भे.)

उ०—जाळ जांगड़ो-रूंख सघन गायड़मल गाढो।—दसदेव

सघरौ-वि.—सपरिवार, कुटुम्ब सहित।

उ०—उठै एक ब्राह्मण रो घर। उठै ब्राह्मण सघरौ ही रहै।

—चौबोली

सघळउ, सघलउ, सघळू, सघलू, सघळौ, सघलौ—देखो 'सगळौ'

(रू. भे.)

उ०—१ कहीउ सघलउ तै ग्रवदात, महती हरखी निसुणी वात। सखीग्र पाहि वीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ ग्राणंद।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ वगतर तास लीयां ऊदाळी पहघउ खजांनइ हाथ। तरकस तीर चीर हथियारइ, लूसइ सघळउ साथ।—कां. दे. प्र.

उ०—३ जण जण प्रति सघलूं कहइ, जारि जीव म हरि। कठिनपणइ तै काढयू, वांह घरीनइं बाहरि।—मा. कां. प्र.

उ०—४ सघळी रावलह (लह) लहलै, साधन पोवती मोती की माळ।—बी. दे.

(स्त्री. सघळी)

सघाळो—देखो 'सिघाळो' (रू. भे.)

उ०—१ गुड़ै पांच गजराज, गुड़ै धजराज सघाळा। केताइ गुड़ै कमाल, गुड़ै रावत रवताळा।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ चाळा लाग कुरदां ठेलती नांणै नदी चाली, सघाळा ठकांणां सोमा मेलती सुथांन। भुरावाळा हता मुठ ऊभेलती भलौ भाई, जांणै मेघमाळा ग्राइ रेलती जेहांन।—महादांन मेहडू

सड़ंग-सं. पु. [सं. षड्ग] वेद में छः ग्रंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद ग्रौर ज्योतिष।

रू. भे.—सडंग।

सड़–क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—सांम्हा ल्हसकर मेलिया जाळंधर 'अगजीत'। सड़ आयौ इवरांम खां, मिळण जवन सज मीत।—रा. रू.

२ छः।

सड़क–सं. स्त्री.—१ यातायात के लिए बना मार्ग, राज्यपथ।

उ०—सहरां सुंदर लगै, वगीचां री वण सोभा। सड़क चालता मिनख, लेवता लोयण लोभा।—दसदेव

२ बोने से होने वाला नाज। (त्रिलो. अड़क)

वि.—नशे में पूर्ण तृप्त।

उ०—सराबां बोतलां पियां छक छक सड़क किया निधड़क हिया हरावळ कोप।—कविराजा बांकीदास

२ असली, वास्तविक।

क्रि. वि.—सपाट से।

उ०—कंधड़क दड़क बड़क कड़ी सिधुड़क सड़क वहै सुजड़ी।

—गो. रू.

सड़काणौ, सड़काबौ–क्रि. स.—चाबुक या छड़ी से मारना, पीटना।

उ०—१ है आली तोड़ी कांमड़ी जी सड़कायो दो'यर च्यार जाजो मरवो लै।—लो. गी.

उ०—२ राजा खुद घोड़ै चढ्यो सांप्रत आपरी निजरां राजकंवरां री निसंटापणो देख्यो तो जांणै छोर नै तिणग वताइ। चार पांचेक कांवड़ियां सड़काई। गाळियां काढी। राजकंवर न्हास गिया।

—फुलवाड़ी

सड़काणहार, हारौ (हारी), सड़काणियौ—वि०।

सड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सड़काईजणौ, सड़काईजबौ—कर्म वा०।

सड़कावणौ, सड़कावबौ—रू० भे०।

सड़कायोड़ौ–भू. का. कृ.—छड़ी या चाबुक से मारा हुआ, पीटा हुआ।
(स्त्री. सड़कायोड़ी)

सड़कावणौ, सड़कावबौ—देखो 'सड़काणौ, सड़काबौ' (रू. भे.)

सड़कावणहार, हारौ (हारी), सड़कावणियौ—वि०।

सड़काविओड़ौ, सड़कावियोड़ौ, सड़काव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सड़कावीजणौ, सड़कावीजबौ—कर्म वा०।

सड़कावियोड़ौ—देखो 'सड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सड़कावियोड़ी)

सड़गुण–सं. पु. [सं. षड्गुण] १ छः गुणों का समूह।

२ राजनीति की छः बातें—संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधी-भाव और संश्रय।

रू. भे.—सडगुण

सड़ज–सं. पु. [सं. षड्ज] संगीत के छः सप्तस्वरों में प्रथम स्वर।

रू. भे.—खड़ज, खडज, सडज।

सड़ण–सं. स्त्री.—सड़ने की क्रिया या भाव।

वि.—सड़ने वाला।

सड़णौ, सड़बौ–क्रि. अ.—१ किसी खाद्य पदार्थ एवं शरीर में विकार उत्पन्न होना जिससे उसके संयोजक तत्व अलग-अलग हो जाते हैं तथा उससे दुर्गंध आने लगती है। विकारयुक्त होना, बिगड़ जाना, खराब हो जाना।

उ०—१ रसिया री तन रोगसूं, सड़ जावै नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर लोचपलोच।—बां. दा.

उ०—२ मुड़दा मड़हट में पड़िया नह मावै, सड़िया वासै सव बिक्रंद बभकावै। आडां खाडां में भोडक अड़वड़ता, संतां आस्रम जिम तूंबा तड़भडता।—ऊ. का.

उ०—३ पतग लड़ौ कीड़ा पड़ौ, सड़ौ झड़ौ दुख संग। जग चुगलां री जीभड़ी, वायस भखौ विहंग।—बां.दा.

२ हीनावस्था में पड़े रहना।

३ द्रव्य पदार्थों में खमीर उठना।

४ बहुत ही कष्टमय व बुरी दशा बिताना।

५ व्यर्थ पड़ा रहना, अनुपयोगी होना।

सड़णहार, हारौ (हारी), सड़णियौ—वि०।

सड़िओड़ौ, सड़ियोड़ौ, सड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सड़ीजणौ, सड़ीजबौ—भाव वा०।

सडणौ, सडबौ, सिड़णौ, सिड़बौ—रू० भे०।

सड़दरसण—देखो 'खटदरसन' (रू. भे.)

सड़बौ—देखो 'सड़वौ' (रू. भे.)

उ०—हिरणां नह मावै हियै, सड़बौ दीठां स्वास। वाघ घणां मिळ वीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास।—बां. दा.

रू. भे.—सड़ौ

सड़रस—देखो 'खटरस' (रू. भे.)

सड़वड़णौ, सड़वड़बौ–क्रि. अ.—१ तेज गति से चलना।

उ०—'हाकडा' तणी सुण सुण हकाल, सड़वड़ै सत्र उर पड़ै साल।

—पे. रू.

२ भागना, दौड़ना।

उ०—हड़वड़ जोगण खेतल होय, सड़वड़ कायर पंथ सजोय।

—गो. रू.

सड़वड़ियौ–सं. पु.—१ कायर।

२ गरीब, दीन।

सड़वदन–स. पु. [सं. षडवदनः] कार्तिकेय।

रू. भे.—सडवदन।

सड़वरग–सं. पु. [सं. षडवर्ग] १ छः वस्तुओं का समूह या वर्ग।

२ ज्योतिष के अन्तर्गत क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश का समूह।

३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन छः का समूह।

रू. भे.—सडवरग

सड़्विदुनैल-सं. पु. [सं. षड्विदुनैल] सिर के दर्द दूर करने व आंख तथा दांत को लाभ पहुंचाने वाला वैद्यक का एक तेल।

रू. भे.—सटविदुनैल।

सड़्विकार-सं. पु. [सं. षड्विकार] १ प्राणी में होने वाले छः विकार उत्पत्ति, शरीर वृद्धि, बालपन, प्रौढ़ता, वृद्धत्व और मृत्यु।

२ काम-क्रोध आदि छः प्रकार के विकार।

रू. भे.—सटविकार।

सड़्वो-सं. पु.—फसल की रक्षा के लिए पशु-पक्षियों को डराने हेतु खेत में बनाया जाने वाला मानव आकृति का पुतला या उपकरण।

उ०—मोह वास मंडवै, विघन सड़वा विसतारै, कर हाका हाकंत जुरा कुनी हलकारै।—ज. खि.

रू. भे.—सड़वो।

सड़सठ – १ देखो 'सतसठ' (रू. भे.)

२ देखो 'छासठ' (रू. भे.)

सड़सठमों, सड़सठवों—देखो 'सतसठमों' (रू. भे.)

सड़ांण, सड़ांध-स. स्त्री.—१ सड़ने की क्रिया या भाव।

२ दुर्गंध, बदबू।

क्रि. प्र.—आणी, उठणी, मारणी, होणी।

सड़ाक-सं. पु. [अनु.] कोड़े या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सड़ाको-सं. पु. [अनु.] कोड़े या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

सड़ागनी-सं. स्त्री. [सं. षडग्नि] कर्मकांडियों द्वारा मानी जाने वाली छः प्रकार की अग्नियां यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।

रू. भे.—सडागनी।

सड़ाणण—देखो 'सड़ानन' (रू. भे.)

सड़ाणो, सड़ाबो-क्रि. स.—किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।

सड़ाणहार, हारो (हारी), सड़ाणियो—वि०।

सड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

सड़ाईजणो, सड़ाईजबो—कर्म वा०।

सड़ानन-सं पु. [सं. षडानन] १ कार्तिकेय।

२ संगीत के स्वर साधन की एक प्रणाली विशेष।

रू. भे.—सड़ाणण, सडानन।

सड़ायंध-सं. स्त्री.—सड़ी हुई वस्तु से निकलने वाली दूषित गंध।

सड़ाव-सं. पु.—सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़-क्रि. वि [अनु.] १ सड़-सड़ शब्द से उत्पन्न ध्वनि।

२ शीघ्र, तेज गति से।

उ०—सड़ासड़ पीजण हूकी जको ढबी ई नीं।—फुलवाड़ी

३ बिना रुके लगातार बहुत सी बातें कहते जाना, झड़ी।

उ०—प्याली भर स्यारांम जी सनै आई, मुजरां री सड़ासड़ लगाद।—दरजी मयारांम री वात

क्रि. प्र.—लगाणी, बांधणी।

सड़िंद, सड़िंदो-सं. पु. [अनु.] १ छड़ी, चाबुक आदि के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

२ प्रहार, चोट।

उ०—सड़िंदै रै सड़िंदै उणरै काळजा री दाझ ठरती ही।

—फुलवाड़ी

सड़ियल-वि.—१ सड़ा हुआ।

२ रद्दी, निकम्मा।

३ नीच, पतित।

सड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ किसी पदार्थ, प्राणी आदि में विकार उत्पन्न हुवा हो, जिससे उसके संयोजक तत्व अलग हो गये हों तो उससे दुर्गंध आने लगी हो, विकार युक्त हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. २ हीनावस्था में पड़ा हुवा हुआ. ३ द्रव्य पदार्थों में खमीर उठा हुआ. ४ कष्टमय व बुरी दशा बिताया हुआ।

(स्त्री. सड़ियोड़ी)

सड़ियो-सं. पु.—१ घास-फूस की बुनी मोटी रस्सी।

२ ऊंट के अगले पैर बांधने का चमड़े का बंधन विशेष।

(मि. लड़ियो)

सड़ी, सड़ी-स. स्त्री.—भैंस के चमड़े की रस्सी।

सड़ो, सड़ो-सं. पु.—१ वह बड़ा चौक जिसके चारों तरफ कांटों की बाड़ हो।

उ०—१ वड़ा भील बडा सड़ा माहे बैसांणिया आदमी ४०० चाकर वांगर बीजा सड़ा मांहे बैसांणिया।—नैणसी

उ०-२ कूंपो जी तुरत चढीया सु रात थकां असवार पांचसो सु पोहर दोय कुंभलमेर आया। रांणा जी रा कटक आडो सड़ो कियो थो, तिको कूंपो जी दीठो।—राव मालदे री वात

२ कुए के पास बनी कच्ची झोंपड़ी जो बैलों को सर्दी से बचाने के लिए बनाई जाती है।

३ मूली की परिपक्वावस्था की जड़ जो बेकार हो जाती है।

४ देखो 'सड़वो' (रू. भे.)

रू. भे.—सढो, सड्डो।

सचग—देखो 'सुचंग' (रू. भे.)

उ०—इण वरण रूप उमंग, ममियांन जरिय सचंग। वह कासमीर विलोर, अनि रंग छवि धर ओर।—सू. प्र.

सच—देखो 'सत्य'।

उ०—मधु बोल सच बोलणा, करणो पर उपकार। नर जीवन पायो नरां, समझो कछु भव सार।—नारायणसिंह सांदू

सचकार—देखो 'संचकार' (रू. भे.)

सचकित-वि. [स.] १ भड़का हुआ।

२ डरपोक, कायर।

३ कांपता हुआ।

सचणो, सचबो—देखो 'संचणो, संचबो' (रू. भे.)

उ०—खित हूर अपच्छर वींद खटै, किरमाळ वहै वर-माळ कटै।
निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगे सिर-माळ सचै।
—रा. रू.

सचणहार, हारौ (हारी), सचणियौ—वि०।
सचिओड़ौ, सचियोड़ौ, सच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सचीजणौ, सचीजबौ—कर्म वा०।

सचतानंद, सचदानंद—देखो सच्चिदानंद' (रू. भे.)

सचबोलो-वि. (स्त्री. सचबोली) सत्यवादी, सत्य बोलने वाला।
उ०—जिको सांमघरजी रजपूत काछ पाख निकळंक सत्यवाळो सचबोलौ जुध रे मांहे बिनां माथै तरवार वाहनैं सत्रुवां रा दळ नै वाढण वाळो श्रौर धणी री करज उतारनैं जुध में पोढै।
—वी. स. टी.

सचमुच—देखो 'साचमाच' (रू. भे.)

सचराचर, सचराचरि, सचराचरी-वि. [सं. सचराचर] स्थावर श्रौर जंगम (सभी)।
उ०—१ सुरत-तणां सुख समवडि, मीडवि जोईइ जेह। सचराचरि सरजूं नहीं, सरजणहारइ तेह।—मा. कां. प्र.
उ०—२ साहु कही नइ गयणि पहूतंउ, पंडु नराहिक हूयउ सयंतउ। अइहवि दीजइं मंगलचार, जगि सचराचरि जयजयकार।
—सालिभद्र सूरि

सं. पु.—चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

सचळ-वि.—१ चलायमान, अस्थाई।
२ गतिशील।
३ अटल, पक्का।
उ०—निज सचळ सल्हा मजकूर नर नाहरां, धर अचळ थाहरां नूर धरतै। राज रजपूत आंबेर दोइ राहरां, वचन मुख ताहरां सूत वरतै।—स्यांमसिंघ री गीत

सचळियौ—देखो 'सचळौ' (रू. भे.)
उ०—ग्रांम रै पाखती श्रेक खेजड़ी ही। उण माथै पंखेरूवां री हड़वड़ सुणीजी। वछराजसिंघ सचळियौ नीं रह्यौ। यूं ई उण दिस सांम्ही खांचनै तीर वायौ। श्रेक जंगी गिरज लडीड़ करतौ हेटै पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

सचळौ, सचळयौ-सं. पु. (स्त्री. सचळी) १ नटखट श्रौर चंचल।
२ चुप, शांत।
उ०—१ म्हैं सोच्यौ के गियां पछै श्राप लोगां नै मतै ई ठा' पड़ जावैला। पछै पैं'ला केवणा में कांई सार। पण मासी री जीभ सचळी नीं रैवै।—फुलवाड़ी
उ०—२ अंदाता घुराघुर इण पोहरा सूं कांठा श्रांती श्रायग्या। इण वास्तै म्हारी जीभ उण वेळा सचळी नीं री, श्राप थोड़ी-घणी ई कोप करचौ तौ म्हैं अपाघात करनै मर जावूंला।—फुलवाड़ी
श्रल्पा;—सचळियौ।

सचव—देखो 'सचिव' (रू. भे.)
उ०—नृप मेळै श्राया नगर, दोड़ वधाई दार। कहि विगत विध विध करै, श्रानंद भरै श्रपार। श्रानंद भरै श्रपार, श्रंतेवर श्रायनै, सुभट सचव जग साथ, सु वैण सुणायनै।—र. रू.

सचवाणौ, सचवाबौ-क्रि. स.—जड़ना, लगाना।
उ०—हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवानां हुश्रा।
—पलक दरियाव री बात
२ जांच करना।
सचवाणहार, हारौ (हारी), सचवाणियौ—वि०।
सचवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सचवाईजणौ, सचवाईजबौ—कर्म वा०।

सचवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)
उ०—हे निरलज रांड! करलै पर-पुरस सूं वात, बणजा सचवादी। गैंणौ म्हारौ है कै थारै बाप रौ।—वरसगांठ

सचवायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ जड़ा हुश्रा, लगाया हुश्रा. २ जांच कराया हुश्रा।
(स्त्री. सचवायोड़ी)

सचवायौ—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)
उ०—१ सांम्ही सेठ रौ माजनौ पाड़यौ कै बापड़ौ चोर घड़ी-घड़ी साची बात कही तौ ई वांनै भरोसौ क्यूं नीं व्हियो। श्रैड़ा सचवाया चोर नै तौ कीं न कीं बगसीस मिळणी चाहीजै।
—फुलवाड़ी
उ०—२ गरू री श्रा बात सुण रांणी वत्ती राजी व्ही। दीवांणजी रै सांम्ही देख कह्यौ—इण सचवाया चोर माथै वत्ती म्हैं जांणू जित्ती राजी व्ही। श्रै पांचूं मोती इणनै बगसीस में दे दौ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ रांणी कह्यौ—श्राज श्रापरी वातां सुणं इत्तो राजी व्ही कै किणी नै उणरौ लेखौ बतायां ई समझ में नीं श्रावै। श्राप जैड़ा सचवाया मिनख नै सजा देवण सूं वत्तौ कीं श्रन्याव नीं।
—फुलवाड़ी

सचांण, सचांन—१ देखो 'साचौ' (रू. भे.)
उ०—श्रवखै सूर कमधौ, सचांणै सोई सूर सापुरसो, जो लद्धै श्रवसांण, झल्लै खग्ग मग्ग रजवट्ट।—रा. रू.
२ देखो 'सिचांण' (रू. भे.)

सचांणी—देखो 'साचांणी' (रू. भे.)
उ०—श्रसौ हुवै माथा उपहारौ, माथै लियां सचांणी मौत। रिम श्रायां भींतां नह रहियौ, गीतां विच रहियौ गहलोत।
—बिहारीदास गहलौत री गीत

सचाई-सं. स्त्री.—सत्यता, सच्चापन।

सचाड़ौ-वि.—१ श्रेष्ठ।
२ जबरदस्त।

सचाड़णौ, सचाड़बौ-क्रि. स.—सहायता लेना ।

उ०—पाया दूत खबर मह पाई, विविध फौज लख दोय बताई । काढ़ौ 'पदम' सेन मन भाई, सांम्ही मुहड़ै मड़ै सचाई ।

—रा. रू.

सचावौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

सचाळ—देखो 'सचाळौ' (रू. भे.)

उ०—बांध माळां चोवरदा रोकियौ पाहुरां बीच, चडै इंद्र अटा हूं निरोखियौ सचाळ । भीम नाद पाग्राजतो तोकियौ सैणांग भुजां, साम्है मेंटै गयजादो रोकियौ नंगाळ ।—प्रतापसिंघ राठौड़ री गीत

सचाळी-वि.—क्रीड़ा करने वाली । (देवी)

उ०—१ खेळ रुधर मद रियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी ।—सू. प्र.

उ०—२ सबरां माह गुणां सचाळी, ताय मिळी मुक्त हेकण ताळी । 'पीथल' वाहर काछ पंचाळी, धावजै चारणि धावळियाळी ।

—प्रथीराज राठौड़

सचाळौ-वि. (स्त्री. सचाळी) १ वीर, योद्धा ।

उ०—१ सूरां सीस 'दुजौ' 'मवळावत', राजा घंसि लगायो रावत । बंधव जोड़ 'फतौ' बांहाळो, साथै मुहकमसिंघ सचाळौ ।—रा. रू.

उ०—२ हरि गयण रत्थ तांग हत्थं, वाघि कत्थं वेणियं । वाजै सचाळौ कुंभवाळौ, रक्खवाळौ रैणयं ।—रा. रू.

उ०—३ डेरै हालोहळ हुई, हुग्रा सचाळा सत्थ । आज विहांणी रहुवट, करिसो को भारत्थ ।—गु. रू. बं.

उ०—४ माग मह चढिया मछर, करवा भारत्थ कत्थ । राग धराळा वजिया, सको सचाळा सत्थ ।—वचनिका

२ तेजस्वी ।

उ०—गह निज हुकम प्रमांण, दोहू नवमै विरदाळा । सराजांम करि समर, सको मड़ मिळै सचाळा ।—सू. प्र.

३ गतिमान, चलने वाला ।

उ०—दीर्घ गंभूठांणा मचौळा अचाळा झाट सूडांडंडां, पै सचाळा देही पाळा फिरंदां प्रमांण । यूं आंवळा-झूळ गजां टोळा प्रथीनाथ आळा, मेघमाळा इंदवाळा वादळा मंडाण ।—चैनकरण सांदू

५ खुसी व उमंग सहित ।

उ०—वनां बोलिया सचाळा मोर बीजां खिवै चहुवळां । सालुळै बादळां दळां घावियो सुरेस ।—महाराजा बखतसिंघ री गीत

सं. पु.—युद्ध, संग्राम ।

सचायट-सं. स्त्री.—सच्चापन, सत्यता ।

सचाह-वि.—इच्छा सहित, इच्छुक ।

उ०—जांणक वीर जहर महारस जांणियौ, वदन निहारै नाह सचाह वखांणियौ ।—बां. दा.

सचित-वि.—१ जिसे चिंता हो, चिन्तातुर ।

उ०—इसो कहि महिला सचितौ गयौ । तिसै गहलोतणी मेहलां छै । तिणरै अनंतराय फूंको लागै छै ।

—कहवाट सरवहिया री बात

२ देखो 'सचींत' (रू. भे.)

सचि-सं. पु. [सं.] १ मित्र, दोस्त ।

२ मित्रता, दोस्ती ।

३ देखो 'सत्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

४ देखो 'सची' (रू. भे.)

उ०—कूरमी कमधज्ज सूं, ओपै वांमै अंग । रवि रांना ससि रोहणी, सुरपति सचि किर संग ।—रा. रू.

सचिक्कण-वि. [सं.] अत्यन्त चिकना, स्निग्ध ।

उ० - पतमाह सचिक्कण कुंभ पर, सघण बुंद वांणी सुजण । दुरबोध मांन रहियौ सद्रढ, कांन न कीधौ वयण कण ।—रा. रू.

सचित-वि. [सं. सचित्] जिसे ज्ञान हो या चेतना हो ।

सचितानंद —देखो 'सच्चिदानंद' (रू. भे.)

उ० —गंमकिसन हर नारियण, सचितानंद गोविंद । वासुदेव बीठळ विसन, नरहर गोकुळचंद ।—ह. र.

सचित्त-सं. स्त्री. [सं.] १ लगन वाला ।

२ बुद्धिमान, होशियार ।

सचिम्राळी-सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

सचियाई सचियाय-सं. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

२ ओसियां (जोधपुर) में स्थित एक देवी, जिसकी पूजा शाकद्वीपीय ब्राह्मण करते हैं ।

सचियार-सं. पु. [सं. सत्य] १ सच्चा, सत्य ।

उ०—सांई सचा सचियार कुडियारी दगै, धीर विचखण सेयड़ा, सै माया कुं ठगै ।—केसोदास गाडण

रू. भे.—संचियार, सचियार, सचियारौ, सचीयार, सचीयारौ ।

सचियोड़ौ—देखो 'संचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सचियोड़ी)

सचिव-सं. पु. [सं.] १ मंत्री, वजीर । (डि. को; डि. नां. मा.)

उ०—१ सदगुरु प्रणाम 'किसोर', सचिव 'अमरेस' सवाई । करै पिता जिमि क्रपा, तिकण गुण समझ बताई ।—र. रू.

उ०—२ सुणि अप सचिव मेल्हिया साचा ।—सू. प्र.

२ मित्र, दोस्त ।

३ मददगार, सहायक ।

४ किसी विभाग या संस्था के संचालकों द्वारा नियुक्त व्यक्ति जो संचालकों के आदेशानुसार कार्य करवाता है ।

रू. भे.—सचव, सचय ।

सचिवता-सं. स्त्री. मंत्री होने का भाव ।

सचिवाळ-सं. पु. [सं. सचिव+रा. प्र. आळ] १ मंत्री, सचिव ।

(हि. नां. मा.)

२ मित्र, दोस्त ।

सचिवालय-सं. पु. [सं.] मंत्रालय ।

सचींत-सं. स्त्री.—१ चिंता, क्लेश ।

उ०—यां महाराणी उच्चरै, सुहड़ां तजो सचींत । परवाहौं खग धारदै, जमणा धार प्रवीत ।—रा रू.

२ देखो 'सचित' (रू. भे.)

उ०—इसो कहि महिलां सचितो गयो । तिसै गहलोतणी मैहलां छै । तिणरै अनंतराय फूंफी लागै छै । तिका हजूर आई, पिण ऊगी नहीं । रूसै ठांसणी ढाल री दीधां बैठी घणी सचींत दीठी ।

—कहवाट सरवहिया री वात

रू. भे.—सचीत ।

सची-सं. स्त्री. [सं. शची] १ देवराज इन्द्र की पत्नी तथा दानवराज पुलोमा की पुत्री, इन्द्राणी । (अ. मा.)

उ०—१ मदोमत्त गीखां चढी हंस मोहै, सची इंदरां मिंदरां जांण सोहै ।—सू. प्र.

उ०—२ सभि आवत पदमणि भूल संग, उरवसी सची रति लजत अंग ।—सू. प्र.

उ०—३ गांणा गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजे, राजै रूप आंगणै इन्द्र सो सची रूप । सोळाही कळा सूं सोम ऊगियौ प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयो इसो भूप ।—पाबू राठौड़ री गीत

२ अप्सरा ।

रू. भे.—सचि, सच्ची ।

सचीत—देखो 'सचींत' (रू. भे.)

उ०—जतन 'अजीत' भळाय सब, उतन सचीत मिटाय । एम 'दुरगाह' मारवां, किया सुरंगै चाय ।—रा. रू.

सचीतीरथ-सं. पु. [सं. सत्यतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सचीतौ-वि.—१ चिंताग्रस्त, चिंतातुर ।

उ०—१ अरहरां घमोड़ा पाड़ धर अचीतौ, वडम भुज रचीतौ वरद बांनौ । सेल थारै कमंध दखणपत सचीतौ, महाबळ नचीतौ भूप 'मांनौ' ।—जोधसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ ज्वाळ झळ जेम अस गांव अरि जाळवा, खागजुध जहर हूं कहर खारौ । 'करण' भय सचीतौ न्याय 'ओरंग' कहै, 'सिंघ' बळ नचीतौ देस सारौ ।—महाराजा करणसिंघ जी रौ गीत

उ०—३ भींवौ जी घरे आया, पिण घणां सचीता होयनै एकण तूटा सा ढोलिया ऊपर सूता ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

२ सतर्क, सावधान ।

सचीपत, सचीपति, सचीपती-सं. पु. यौ. [सं. शची+पति] १ इन्द्र । (ना. डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ अश्विनी कुमार ।

सचीयार, सचीयारौ—देखो 'सचियार' (रू. भे.)

उ०—१ सपत चिरंजी रिख सपत सौ भी सचीयारा ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ हरीया असा को मिळै, साहिब का सचीयार । झूठ न वाकै कपट को, रंच नहीं वौहवार ।—अनुभववांणी

सचीराट-सं. पु. यौ. [सं. शची+राट्] इन्द्र । (नां. डिं. को.)

सचीस-सं पु. [सं. शचीश] इन्द्र, देवराज इन्द्र ।

उ०—अज संभ्रम दसरथ अवधि ईस, सिरताज राज सोभा सचीस ।

—सू. प्र.

सचीसुखदायक-सं. पु.—इन्द्र । (डिं. को.)

सचीसुत-सं. पु.[सं. शचीसुत] १ शची का पुत्र, जयन्त ।

२ चैतन्यदेव ।

सचीस्यांम-सं. पु. [सं. शचीस्वामी] इन्द्र । (अ. मा.)

सचूंप—वि.—१ चतुराई पूर्वक ।

उ०—तिल तिल जुध हुवौ खगां मुंह तूटौ, चूण न सकै दहूं करां सचूंप । रावत कपळ काज सिव रचियौ, सहसाअरजुन तणौ सरूप ।—रावत जगरामसिंह रौ गीत

२ सुंदर ।

उ०—१ कट तट ओप निखग कोट छिब कांम की, रूप अनूप सचूंप यसी दुति रांम की ।—र. ज. प्र.

उ०—२ सज्जंत सोल सिंगार, आभरण दूण अढार । नव जरी वेलि अनूंप, चिग नौख गोख सचूंप ।—सू. प्र.

३ कुशल, चतुर ।

४ हास्यरस युक्त ।

सं. स्त्री.—सुंदरता । (मि. चूंप)

रू. भे.—सचोप ।

सचूंपौ-वि. (स्त्री. सचूंपी) १ कुशल, निपुण ।

२ सुंदर, मनोहर ।

सचूप—देखो 'सचूंप' (रू. भे.)

सचूपौ—देखो 'सचूंपौ' (रू. भे.)

सचेत-वि. [सं. सचेतन] (स्त्री. सचेती) १ सावधान, सतर्क ।

उ०—१ जगजांमी 'जसवंत' रौ, हुयौ बडौदै हेत । प्रीत बधावण परसपर, सुपहां किया सचेत ।—ऊ. का.

उ०—२ चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत । सौ मुरदार सरीर री, लट मुख मांझत लेत ।—वां. दा.

उ०—३ वडारण धीरज बंधाय सचेत कराई ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ मूर्छा रहित, सचेतन ।

उ०—१ सो लोहां रो मैड आवै जणां तो वेचेत हुइ जावै और सचेत हुवै जद कहै हां हां मेड़तै मैं बड़ जावो ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ इतरै मैं राजा आयो । रांणी बात पूछी । राजा बात कही । रांणी धरि ढाहि पड़ी । सहेलियां सचेत की । विलाप करण लागी । राजा धीरज देन लागो हूणकार मिटै नहीं ।—चौबोली

उ०—३ और हजारां ही गेत सोधण रै समय सचेत अचेत प्राण-धारी पाजा तिकै भरत ही 'औरंग' रा आदेस रूप अनळ मैं दहिया।
—वं. भा.

उ०—४ वेस्या जांणी पडिउ गोद, भोळवीउ ए महतउ होइ। घरि आंणी जांणी संकेत, भगिजल पाई कीउ सचेत।
—हीराणंद सूरि

[सं. सचेतन्] ३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

उ०—सांचो मित्र सचेत, कह्यो कांम न करै कसो। हरि अरजण रै हेत, रथ कर हांकयो राजिया।—किरपारांम

४ संवेदनापूर्ण, दयालु,

रू. भे.—सचेति, सचेती।

सचेतन, सचेतनि—सं. पु. [सं. सचेतन्] चेतनायुक्त, विवेकयुक्त प्राणी।

उ०—तमु बंधव भवभंजन अंजनपुंज समांन, नमियइ नाथ सचेतनि चेतनि मंग प्रधान।—जयसेखर सूरि

वि.—१ चैतन्य।

२ सतर्क, सावधान।

३ समझदार, बुद्धिमान।

सचेति, सचेती—सं. स्त्री.—१ सावधानी, समझदारी।

२ चेतना।

३ बुद्धिमानी, समझदारी।

४ देखो 'सचेत' (रू. भे.)

उ०—छांटी पांणी कुमकुमइं, वीभरण वीझ्या वाइ। हुई सचेती मालवी, प्री आगलि विलळाइ।—ढो. मा.

सचेळ, सचेळो—वि.—१ शक्तिशाली, बलवान।

उ० —१ चमूं अकब्बर लोक सचेळो, भिळियो खांन तहव्वर भेळो। अांपे जांण प्रळै अहनांणी, एकठ महण थया दोय आंणी।—रा. रू.

उ०—२ मगरै 'राजड़' 'जगड़' समेळा, सांमळ नाहरखांन सचेळा। वेली जोधाहरा महाबळ, 'भीम' 'सिवो' रिण थया भुजागळ।
—रा. रू.

२ गांभीर्यपूर्ण, गंभीर।

उ०—सझि बतीस नव सात, मिळै सुकिया जुथ मेळा। वांणि कोकिल विमल, चवै चंदवदन सचेळा।—सू. प्र.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ भरां प्रीत मारियो, ग्रिट हरि कीत सचेळो। गुण मुकतेसर संग, मिळै फिर कातिक मेळो।—रा. रू.

उ०—२ चिलतह झिलम चढाय, ससत्र अंग कसै सचेळा। चढि रैवंत पमाव 'वखत' आयो जिण वेळा।—सू. प्र.

४ समर्थ, सामर्थ्यवान।

उ०—विद्या प्रथम अणी रखवाया, श्रै मद्धरीक वणी कळ आया। 'चूंडो' 'मुकन' सुजाव सचेळो, भूप तणौ छळि 'केहर' भेळो।
—रा. रू.

५ अद्भुत, अनोखा।

उ०—चमतकार जण हुवो सचेळो, भांण हुवो जांणै जळ भेळो। छत्रपत लियै कांकण इम छाजै, बड़वानळ रवि चंद्र विराजै।
—सू. प्र.

६ संख्या की दृष्टि से अधिक बड़ा।

उ०—आरंभे अजमेर, सेन असपत्त सचेळा, खुरासांण खट खंड मिळै नव खंड समेळा।—रा. रू.

७ खुश, प्रसन्न।

८ गुणों की दृष्टि से बड़ा, महान।

उ०—भ्रम आसेट न वांण अभ्यासी, अत संगीत न राग निवासी। मंत्री सुभट पंडत नह मेळा, चवै न नव रस सुकवि सचेळा।
—सू. प्र.

९ वस्त्र धारण किए हुए।

उ०—मंगळीक नंदि महा, बजै नोबति जिण वेळा। मंगळ करै चंद्रमुखी चित्र अवधाड़ सचेळा।—सू. प्र.

सचेस्ट—वि. [सं. सचेष्ट] चेष्टा वान।

उ०—वना गतीज व्योमसी रुसीत हेतु हीनसो, सदा गति सचेस्ट है रु ताप है दिनेस सो।—पा. प्र.

सचैत—स. स्त्री.—१ सखी, सहेली।

२ प्रयत्नशील।

सं. पु.—आम का वृक्ष।

सचोक—सं. पु. [सं. सत्योक] सत्य। (ह. नां. मा.)

सचोज—वि.—उत्साही, उत्साहयुक्त।

उ०—मन भमर मनोरथ विरथ मोज, चंपक यत चांपाथत सचोज।
— ऊ. का.

सचोप—१ वस्त्र विशेष।

उ०—दरीयाखानां कतनी भूंनां प्रताप सचोप पटणी कथीवुं फिरंगी कथीवु सानुबाफ जरवाफ श्रीवाफ।—वं. स.

२ देखो 'सचूंप' (रू. भे.)

उ०—असि आहड़ियो वंस उजागर, किरि रजनी प्रगटो भासंकर। सोभै दुलह रूप सचोपं, इम सब जांन परम छवि ओपं।—रा. रू.

सचोपकाजी—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुट्टहुं मवाडी चंपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाजी मूलवटणी।—व. स.

सचोळ—सं. पु.—१ झोंका।

२ तरंग, लहर।

वि.—लाल।

उ०—१ नव मुख अहण सचोळ, बिलकुलतो बाकारतो। धीब भड़ां धमरोळ, अरि दळ ढाहै हरिदउत।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ वणिया नैंण सचोळ, बोळ रंग तैं रंगांणं।—गज-उद्धार

सचोळौ-सं पु.—सुसज्जित योद्धा।

वि.—प्रसन्नचित्त।

उ०—लोभांणी नवोढा नेह नसारा कचोळा लेती. भ्यासैं अंग अचोळा सचोळा लेती भाव। करां मक्रकेत रै लचोळा लेती तूंजी-किना, नक्र रैं मचोळा लेती नाव।—र. हमीर

सचौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ सचा सांई याद करि, या विन दूजा धंध। जनहरिया साचै मतै, झूठ निवारी फंध।—अनुभववांणी

उ०—२ तिण वार वीरा रस संगम, ग्रीध चीलह नभ छाए विहं-गम। कळह का आगम सौ विखमारिख, सारका कांटा सचां पारिख।—रा. रू.

सच्च—देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ०—१ सच्च पियारा सांइया, सांई सच्च सिवाय। सच्चा अगन न जाळही, सच्चा सरप न खाय। ह. र.

उ०—२ सुणि सुंदरि सच्चउ चवां, भांजइ मन चीभ्रांति। मो मारु मिळवा तणी, खरी विलग्गी खंति।—ढो. मा.

उ०—सच्च कज्जिहिं सच्च कज्जिहिं अन्न दीहंमि, उल्लंछिउ गुरु-वयणु इंदपुत्तु वनवासि चल्लई।—सालिभद्र सूरि

सच्चरित, सच्चरितर, सच्चरित्र-वि. [सं. सच्चरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो।

२ सदाचारी।

सच्चव—देखो 'सचिव' (रू. भे.)

उ०—सब सूर सुभट सच्चव सवंध, कर सिलह चढै पमंगां कमंध। चांपा कै कूंपा बडै चीत, जोधा सवंध मिळ समर जीत।—प्रे. रू.

सच्चवई—देखो 'सत्यवती' (रू. भे.)

उ०—सच्चवई पिय माय अंबा अंवाली अंबिका कुंती मुद्री जाई वउलावेवा नंदणह।—सालिभद्र सूरि

सच्चाई-सं. स्त्री.—सत्यता, वास्तविकता, हकीकत।

उ०—वीरता सच्चाई अर डिढता तौ इणरै आगै पांणी भरै।

—फुलवाड़ी

सच्चित-सं. पु. [सं.] सत् और चित् से युक्त, ब्रह्म।

सच्चितानंद, सच्चिदानंद-स. पु. [सं.] परमेश्वर।

उ०—१ दाता वरन मोद री विराजै जिका महादेवी, 'माला' कविंद री सेवी भदोरै हमेस। आनंद री चखां वाळा सच्चिदानंद री इच्छा, आनंदी कंवारी वाळा सुंदरी आदेस।—कुंभकरण सांदू

उ०—२ सच्चिदानंद व्यापक सरब, इच्छा तिण में ऊपजै। जग-दंब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया वजै।—मे. म.

उ०—३ जगत ब्रह्म परब्रह्म माई एसैं, जैसैं पेंप सुगंधा रे। सच्चिदानंद आनंद अनंता, नहिं बंधण निरबंधा रे।

—सुखरांम जी महाराज

रू. भे.—सचतानंद, सचदानंद, सचितानंद।

सच्ची—देखो 'सची' (रू. भे.)

उ०—१ सांम रै कांम नै धसै रिण सांमहा, केवियां पछाड़ै फतै करणी। जीवता रहै तौ सुजस कानां सुणै, प्रांण छूटै तिकै सच्ची परणी।—वीर रौ गीत

उ०—२ सारधु सिखर महि-क्रन्न सुभ्र, रूप अनोपम वेरावळ रची। चहुवांण इंद्र कमधज्जरै, सांचीरी सुंदर सच्ची।

—गु. रू. वं.

२ देखो 'साची' (रू. भे.)

उ०—दिइ दांन जिवणइं करइं, साहिब्ब सेव सच्ची करइ। कुरांण न्याइं पेखि चल्लइ, सौ मुसलमांन भस्त जि वरइ।—व. स.

सच्चु—देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ०—१ वद्धावइ जणु सयलु, जीवनदांनु तइ देव दिद्धऊ। केव-लिवयणु जु सच्चु किउ, त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ करणु भणइ सच्चु कहउं पुणु छइ एकुवि नांणु। दुरयो-धन रहिं आपणा मइं कल्पा छइं प्रांण।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'साचौ' (रू. भे.)

सच्चौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—सच्च पियारा सांइयां, सांई सच्च सिवाय। सच्चा अगन जाळही, सच्चा सरप न खाय।—ह. र.

सच्छंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू. भे.)

सजंतौ-वि.—सुरक्षित।

सजकौ-वि. पु. (स्त्री. सजकी) १ सावधान, सतर्क।

उ०—रात दिन मांमला किया सजकौ रहै, दोयणां जळा भंज इळाडाटी।—महादांन मेहडू

२ चंचल, चंचलता युक्त।

३ सुरक्षित।

उ०—समापण दवाली बंध गजकांसरा, हुओ तजकां सत्रां सीस 'सांगण'हरा। पमंगां ऊडता झुकै कळां रजकां परा, धणी अजकां तणी रहै सजकी धरा।—महादांन मेहडू

सजग-वि.—१ सचेत, जाग्रत, चेतनायुक्त।

उ०—इणी भांत आत्मा सजग रैवै जितै करम-अकरम रौ ग्यांन रैवै। आत्मा मरियां पछै मिनख नै भूंडा-भला रौ चेतौ कौ रैवै नीं।—फुलवाड़ी

२ सतर्क, सावधान।

३ शीघ्र जागने वाला।

४ चालाक, होशियार।

रू. भे.—सुजग।

सजगीर-वि.—बलवान, शक्तिशाली।

सजगीस-वि.—देखो 'जगीस' (रू. भे.)

उ०—१ सुकलत ते सजगीस अनइ सुवर अेका खमौ। तपियउ

घनोसर नगाड़, मद जद्दूर जगदीन ।—प. वचनिका

उ०—२ मरा भार समगीम सहि कहि अचलेसर कहइ । वड पह कुम वर्गाति मुनिया वंग ध्रुवीस ।—प. वचनिका

सजड़-वि.—सुदृढ़, मजबूत ।

उ०—१ गाला सजड़ जड़ेह, कूंची लै कांनै थयो । कपड़सी आयेह, जड़िया म्हनी जेठवा ।—जेठवा

उ०—२ टग टग महलां जी ऊमादे रांणी ऊतरी, जड़िया है सजड़ किवाड़ ।—लो. गी.

उ०—३ ठविगी तो फळसो खोल देस रांमूड़ा कोई खोलो सजड़ किंवाड़ भ्रागळ गोन्नो जी क बीजळ सारको श्रो जी ।—लो. गी.

२ घना, सघन ।

३ जड़ युक्त, जड़ सहित ।

रू. भे.—सज्भड़ ।

सजड़ी—देखो 'सुजड़ी' (रू. भे.)

उ०—कंधड़क कड़कड़ कड़क कड़ी, संजड़क जड़कक वहै सजड़ी ।
—गो. रू.

सजण-सं. पु.—१ सेना की चढ़ाई ।

२ सजने की क्रिया या भाव । (डि. को.)

३ देखो 'सज्जण' (रू. भे.)

उ०—१ सूर सजण घर .आवियो, दीजै नांही पूठ । आगा हुय मिळजो अवस, आदर दीजै ऊठ ।—अग्यात

उ०—२ अहनिसि आनंदइ सरइ, अंगि न आवइ रोग । सजण तणी संख्या नहीं, भवि भवि पांमइ भोग ।—मा. कां. प्र.

(स्त्री. सजणी)

सजणौ, सजबौ-क्रि. अ; स.—१ मिलना, प्राप्त होना ।

उ०—१ पछै औ भरम कांई तो मूंडो अर कांई भलो । थारै जीवण में जको संजोग सजियो उणनैं गाजां-बाजां रै साथ वधाव ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ लोगां नै कंवर रै मांनण री इत्ती वेगी आस नीं ही । वानै तो जांणै सांप्रत भगवांन ई मिळग्या । जोग सजै जद यूं सजिया करै । औ तो वाई रै करमां रो परताप है ।—फुलवाड़ी

उ०—३ आ सोचनै कै अबै कदै ई अैड़ो अणचींत्यौ जोग सजियो तो वो अैड़ी कालाई नीं करैला ।—फुलवाड़ी

२ संभव होना, बन पड़ना ।

उ०—१ दुनिया थपिया पछै ई चेला-गुरु रो औ नातो तो आज पैं'ली कदै ई नीं जुड़ियो व्हैला, अै नाता तो आपांरै जैड़ा काला मिनखां नै सज आवै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ भलांई सोनां री ठोड़ रुपा री ई टको दै । जे रुपा रो ई सज नीं आवै तो तांबा रो ई दो ।—फुलवाड़ी

३ तैयार होना ।

उ०—१ कंवर री आदेस व्हैतांई हांकरनां सिकार री सगळी सरंजाम सगतम सजप हुवो । हाथी घोड़ा मार्थ साज कसीजिया ।
—फुलवाड़ी

४ असर होना ।

उ०—१ राजाजी रा दरबार में तो उणरी अकल रौ कोई पार ई नीं हो, पण इण डोकरी री गवाड़ी में तो उण री अकल सूं हींग री गरज ई नीं सजी ।—फुलवाड़ी

५ होना ।

उ०—१ पण इण सूं कांई व्है ! कंवर रै हाथां तोरण री जोग सजणो आ इज तो सबसूं लांठी खुसी री बात है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ औ तो साचांणी दूध ई निकळियो । जै कोइ लफंगो व्हैतो तो कैड़ोक माहेरो सजतौ । आज तो भगवांन नांमी विळू रह्यो । दोयती रा भाग हा ।—फुलवाड़ी

उ०—३ निजरांणा रौ औ संजोग नीं सजतौ तौ म्हैं भलां परणी-जण री बात कद मांनती ! म्हारो औ इज खण कै परणीजूंला तो इण दाळद नांव रा मोट्यार ई नै, नींतरअकन कंवारी जूंण पूरी कह'ला ।—फुलवाड़ी

६ चलना, निभना ।

उ०—कैवण लागा—यूं अनाप-सनाप खरचो करियां आ माया किता दिन सजैला ।—फुलवाड़ी

ज्यूं—घी विनां सज जावै पण अन्न विनां नीं सजै ।

७ पर्याप्त होना, चलना, उपयुक्त होना ।

ज्यूं—म्हारै दो मण बाजरी छः महीना सजै ।

८ कटिबद्ध होना, सुसज्जित होना ।

उ०—१ सुण मेछ खत्री जुध काज सजै, रस रुद्रस हासक वीर रजै ।—रा. रू.

उ०—२ चलची हिलची बाबरी, रसी तुपी रोद । अै ले अकबर आवियो, सज ऊभा सीसोद ।—वां दा.

उ०—३ तद बीकैजी रै साथ रां मांनी नहीं । तिणां पर काल करण साथ मारै सूं सज कंवर बीकोजी पर आयो । अर कंवर वीकोजी साथ मारै सूं सज सांमा गया ।—द. दा.

९ तेज करना, तीक्ष्ण करना ।

उ०—अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सजि कुंडळ खुरसांण सिरि । वळै बाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि ।
—वेलि

१० प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाना ।

११ प्रयोग करना, काम में लेना ।

उ०—सगपण चो सनम रुक्मणि सन्निधि अग मारिवा तणी आलोजि । ए अस्त्रियात जु आउधि आउध सजै रुकम हरि छेदै मोजि ।—वेलि

१२ चारजामा व अंबारी कसना (हाथी, घोड़ा, ऊंट) ।

उ०—१ सज माकुर जर साज, कमरबंध जांन कससी । हुय उंतावळ हल्ल, आया जिण पंथ उसमी ।—बख्तावर जी मोतीसर

उ०—२ चौधरी आंख्यां पाछी मींचली। उणै देख्यौ—एक वरात जाय री है। एक सज्योड़ै ऊंठ पर आगै बींद अर लारै पूनमौ नाई बेठौ है।—रातवासौ

उ०—३ रूपाळी लुगाई री भालौ विरथा गियौ तौ वा अेक नवौ चाळौ करचौ। सांयड वणनै मारग मैं चरण लागी। संज सजियोड़ी। पण माथै असवार नीं।—फुलवाड़ी

१३ धारण करना, पहनना।

उ०—१ सज्या सिणगार उतारसूं, करसूं भगवां भेस। थारै कारण वन वन डोलूं, कर जोगण रो भेस।—मीरां

उ०—२ बिजै तू सजै आहवां बाहु बीसां, सजै तू हियै हार भूभार सीसां। तुही हाथ लै सूल सादूळ हक्कै, त्रणां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म.

१४ एक शरीर को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अधिक शरीर बनाना या धारण करना।

उ०—जिण दांणव जीतिया, महा दारूण रण मंड्या। सजि नौकोड़ सरीर, वीर रणधीर विहंड्या।—मे. म.

१५ अन्य प्राणियों के रूप धारण करना, रूप परिवर्तित करना।

उ०—काढ्यौ तुरकां कैद सूं सेखां री कर साय। संभळि वाळौ रूप सज, पूंगळ दीधी पुगाय।—अग्यात

१६ रक्षार्थ धारण करना।

१७ करना।

उ०—१ परगट धर सधर मांनसर ऊपर, सगत सकळ मिल रास सजै। जिय सगत सकळ मिळ रास सजै।—अग्यात

उ०—२ छजंत भूपति छमा सलांम भूपति सजै। कपूर पांन दांन करूं राखि भूपति रजै।—सू. प्र.

१८ युद्धार्थ किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—१ नरै ही कोट नुं पोळ रै कींवाड़ कराया गढ नुं सजियौ नै नरौ राव सातल रै खोळै थौ सु सातल रै नांवै सातळमेर नवौ गढ उठै वसायौ छै।—नैणसी

उ०—२ पछै पातसा कनै सीख मांग किलांणदास जी सीवांणै आया नै किलांणदास जी किलौ सजीयौ।—नैणसी

१९ वस चलना।

२० सफल होना।

२१ शोभित होना।

उ०—चरणे चांमीकर तणा चंदांगणि, सजनूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किया पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि

२२ पूरा होना, पूर्ण होना।

ज्यूं—काम सजणौ, हाजरी सजणी।

२३ जाना, गमन करना।

२४ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

उ० —कहूं वाह थूं मत करै, सजियौ म्हैं औ सूर। वाह हुवा सूं विगड़सी, 'जींदा' आज जरूर।—पा. प्र.

सजणहार, हारौ (हारी), सजणियौ—वि०।

सजिओड़ौ, सजियोड़ौ, सज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सजीजणौ, सजीजबौ—कर्म, भाव वा०।

संजणौ, संजबौ, सज्जणौ, सज्जबौ, सज्भणौ, सज्भबौ, सभणौ, सभबौ—रू० भे०।

सजतनौ—वि. [सं. स+यत्न] सुरक्षित।

(स्त्री. सजतनी)

सजधज—सं. स्त्री.—सुसज्जित होने का भाव, सजावट।

सजन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (अनेका; डिं. को.)

उ०—१ पैली कीन्ही प्रीत भूल गयौ वाल्हा सजन। मनमैं म्हांरै मीत, जीव वसै थूं जेठवा।—जेठवा

उ०—२ सत्यवाह मोकलावीय मनरंगि धनसागर पुर जोइ। सजन विहूणउं सहूइ सूनउं सुद्धि न पूछइ कोइ।—हीराणंद सूरि

उ०—३ चारा मिणतोड़ी सजनी चित चावै, तारा गिणतोड़ी रजनी बितवावै।—ऊ. का.

(स्त्री. सजनी)

सजनता—सं. स्त्री.—सज्जन होने की अवस्था या भाव।

उ०—१ गाळी ही मैं ग्यांन है, जो टुक अंग समाय। हरीया दुरजन को नहीं, सब सजनता थाय।—अनुभववांणी

उ०—२ ऊजळ घर आछापणौ, अरु सजनता अंग। इण सूं आढा आपनै, रयण 'खेत' घण रंग।—नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—सज्जनता।

सजनी—सं. स्त्री. [सं.] सखी, सहेली।

सजप्पणौ, सजप्पबौ—देखो 'जपणौ, जपबौ' (रू. भे.)

उ०—नाग राग पेरियौ, प्रांण पैलां वसि थप्पै, दास हुकम पेरियौ, जास पति धरै सजप्पै।—रा. रू.

सजरा (रौ)—सं. पु. [अ. शजरः] १ वंश वृक्ष।

२ वृक्ष, पेड़।

३ पटवारी के खेतों का नक्शा।

सजळ, सजल—वि. [सं. स+ज्वलनम्] १ प्रकाशयुक्त, ज्योतियुक्त।

उ०—घर नीगुल दीवउ सजळ, छाजइ पुरण न माइ। मारू सूती नींद्र भरि, साल्ह जगाई आइ।—ढो. मा.

२ जाज्वल्यमान, तेजपूर्ण।

उ०—सुर नवाब दर मज्झि, जाव बोलिया अतारा। कळा प्रांण कावली, जांण सजळा अंगारा।—रा. रू.

[सं. सजल] ३ जलयुक्त।

४ आंसुओं से युक्त।

५ तरलता युक्त।

उ०—देस निवांणू सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कांमण दिखणि धर, हरि दीयइ तउ होइ।—ढो. मा.

६ [illegible]।

७ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

८ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

अल्पा; रू. भे.—सजड़ो।

सजड़ाई–सं. स्त्री. [सं. स+जलम्=रा. प्र. आई] १ नमी, आर्द्रता।

२ जल की प्रचुरता।

उ०—जिण नर्ने 'मंडलगोवर' है जिणरी सजड़ाई हूं इण में घणां सापना सुगम नरोवर है।—र हमीर

सजड़ो—देखो 'सजड़' (अल्पा; रू. भे.)

सजव–वि. [सं. सजव:] १ वेगवाले, गतिमान, तीव्रगति वाले।

उ०—१ [illegible] मातण मुकटि, रीत सजव नव रूप। किया मात महाराज रजि, [illegible] बाज अनूप।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] पाळ जन सांमरथ, रथ खगेस मारुत सजव। [illegible] भजण मुमुताज, भज रघुवर तर उदघ भव।

—र. ज. प्र.

सं. पु.—१ गरुड़ पक्षी। (अ. मा.)

२ पक्षी। (अ. मा.)

३ देखो 'सजीव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सजवना–सं. स्त्री.—सजने की क्रिया या भाव, तैयारी।

सजवाई–सं. स्त्री.—सुसज्जित करने की क्रिया।

सजवाणौ, सजवायौ—देखो 'सजाणौ, सजावौ' (रू. भे.)

सजवाणहार, हारौ (हारी), सजवाणियौ—वि०।

सजवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सजवाईजणौ, सजवाईजबौ—कर्म वा०।

सजवायोड़ौ—देखो 'सजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजवायोड़ी)

सजांण, सजांन–वि. [सं. स+फा. जान] १ जिसमें प्राण हो, प्राणयुक्त।

२ देखो सुजांन' (रू. भे.)

सजा–सं. स्त्री. [फा. सजा] १ किसी अपराध के कारण दिया जाने वाला दंड।

उ०—१ डावड़ी री बात सुणनां ई राजा तौ हावयौ-बावयौ रैग्यौ। गायी री सजा दूजा जीव नें क्यूं मिळै।—फुलवाड़ी

उ०—२ बलिभद्र जी कृस्ण जी नें कहै छै। जु या अयोग्य बात करी। तिहि नें इसी सजा दीनी।—वेलि

२ कारावास, कैद।

उ०—विलख्यौ निसी नीर मोहाय वांमै, पुगै मे सको सीर हुन्नोज पामै। सजा हूं छुड़ायौ आई राव सेगौ, लाई पुत्र विप्रेस रौ लोप लेगौ।—मे. म.

क्रि. प्र.—करणी, देणी, पाणी, भुगतणी, मिळणी, सुणाणी, होणी।

रू. भे.—सज्जा, सज्या, सद्या।

सजाई–सं. स्त्री.—१ सामग्री।

उ०—इम चित मांही विचार नै सज सोळै सिणगार। जिण वांदण जावां भली, करै सजाई त्यार।—जयवांणी

२ तैयारी।

उ०—१ जइतळदे भावळदे ऊमादे नइ कमळादे रांणी। जमहर तणी करी सजाई, बात हीया मांहि आंणी।—कां. दे. प्र.

उ०—२ अनेकि परि जे पूजा करइ, मुगति जावा नी सजाई धरइं। रास भास सांमी गुण गायंति, पंचमगति निस्चय पामंति।

—वस्तिग

उ०—३ लेख लिखांणा आयस दीधां, फिरइ दिसि ऊपह्लाणा। करी सजाई पुहर पाछिलइ, तेड्या राउत रांणा।—कां. दे. प्र.

३ चारजामा कसने की क्रिया।

उ०—मोटा मालिक सवै तेडाव्या, साहण करउ सजाई। सोनगिरासूं विग्रह मांडउ, मारूआडि मांहि जाई।—कां. दे. प्र.

४ हाथी, घोडा आदि के चारजामा के उपकरण।

उ०—तेरा बीसी री तेलियौ जाखोड़ौ, नव बीसी सजाई। म्हारो गोर बंध लूंबाळौ।—लो. गी.

वि.—सुसज्जित।

रू. भे.—सझाई।

सजाड़ौ—देखो 'सझाड़ौ' (रू भे.)

सजाणौ, सजावौ–क्रि. स.—१ किसी चीज या वस्तु को इस प्रकार लगाना या रखना की वह दिखने में सुंदर जान पड़े।

उ०—फाजल कोटड़ी बुहारी, गाभा सजाया अर सगळा वरतण भांडा भगाया।—दसदोख

२ रक्षार्थ धारण करना।

उ०—नाई भोळौ बणनैं पूछ्यौ—तौ बापजी अेकण सागै इत्ता सस्तर क्यूं सजाया। मेळा में वेचण पधारौ कांई।—फुलवाड़ी

३ व्यवस्थित करना, यथाक्रम करना।

४ सुसज्जित करना।

५ तैयार करना।

उ०—१ लिगना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजायै ठीकांणां वेहूं व्याव का सांमांन।—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—२ दिन उग्यौ, सिनांन-पाणी करया अर बींन-बींनणी रै मोड़ बांध्या। हाजरिया-हवालदार एका तांगा तथा वैल्यां री कतार सजाई।—दसदोख

६ संवारना।

७ ऊंट, घोड़े आदि का चारजामा कसना।

सजाणहार, हारौ (हारी), सजाणियौ—वि०।

सजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सजाईजणौ, सजाईजबौ—कर्म वा०।

'सजवाणौ, सजवावौ, सजावणौ, सजाववौ, सभाणौ, सभावौ —रू० भे०।

सजाती, सजातीय—वि. [सं. सजाति, सजातीय] एक ही गोत्र या जाति का।

उ०—१ चंपल चंपक कोरक चोर कहउं जि न चींति, तउ परि-हरियइं खटपदि सपदि सजाती प्रीति।—जयसेखर सूरि

उ०—२ पंली तीर आपरा सजातीय नूं जळ पीवतौ देख तिण ऊपर चालियौ।—वं. भा.

२ एक ही किस्म का।

३ एक ही जाति के माता-पिता से उत्पन्न।

सजायाफतौ, सजायापतौ—सं. पु. [फा. सजायाफ्त] वह जो सजा भुगत चुका हो।

सजायाव—वि. [फा. सज़ायाव] १ दंडनीय।

२ जिसे कानून के अनुसार सजा मिल चुकी हो।

सजायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. २ संवारा हुआ. ३ तैयार किया हुआ. ४ व्यवस्थित किया हुआ. ५ ऊँट घोड़े आदि का चारजामा कसा हुआ. ६ रक्षार्थ धारण किया हुआ।

(स्त्री. सजायोड़ी)

सजाव, सजावट—सं. स्त्री.—१ सजाने की क्रिया या भाव।

२ श्रृंगार।

उ०—नोटांरी गड्डी गैणां अर गिन्नी गाभांरै नीचै संदूकां में दिराया। सजावट री चीजां सिणगार पेटी अर तेल साबण जिसी सांमगरी रौ एक मोटौ बकसौ भरायौ।—दसदोख

३ तैयारी।

४ सजा हुआ होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—सभावट।

सजावणौ, सजाववौ—देखो 'सजाणौ, सजावौ' (रू. भे.)

उ०—जाळ गळियां मंच, जचावां उच्छव सावां। जन्मास्टमी परव सिंहासण मड्ढ सजावां।—दसदेव

सजावणहार, हारौ (हारी), सजावणियौ—वि०।

सजाविग्रोड़ौ, सजावियोड़ौ, सजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सजावीजणौ, सजावीजवौ—कर्म वा०।

सजावन—सं. पु.—सजाने या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव।

सजावार—वि.—दंडनीय, दंद का भागी।

उ०—१ तठै प्रथीराज जी मालम करी जो हजरत आप सूं वेमुख है, सु सजावार करणौ जोग्य है।—द. दा.

उ०—२ तद कुंवर रायसिंह जी नूं कोटवाळी दै दोन्ही कही जै, कोई अनीति करै तीनूं सजावार करि दै।—द. दा.

रू. भे.—सभावार, सभैवार।

सजावियोड़ौ—देखो 'सजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजावियोड़ी)

सजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ. २ संभव हुवा हुआ, बन पड़ा हुआ. ३ तैयार हुवा हुआ. ४ असर हुवा हुआ. ५ हुवा हुआ. ६ चला हुआ, निभा हुआ. ७ पर्याप्त हुवा हुआ, चला हुआ, उपयुक्त हुवा हुआ. ८ कटिबद्ध हुवा हुआ, सुसज्जित हुवा हुआ. ९ तेज किया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ. १० प्रत्यंचा पर तीर चढाया हुआ. ११ प्रयोग में लिया हुआ, काम में लिया हुआ. १२ हाथी, घोड़े, ऊंट आदि पर चारजामा कसा हुआ. १३ शोभार्थ धारण किया हुआ. १४ धारण किया हुआ, पहना हुआ. १५ एक रूप को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अनेक रूप बनाया हुआ, या धारण किया हुआ. १६ अन्य प्राणियों के रूप धारण किया हुआ, रूप परिवर्तित किया हुआ. १७ रक्षार्थ धारण किया हुआ. १८ किया हुआ. १९ युद्धार्थ कोट को तैयार किया हुआ, सजाया हुआ. २० बस चला हुआ. २१ सफल हुवा हुवा. २२ शोभित हुवा हुआ. २३ पूरा हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ।

२४ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

सजीत—वि.—विजय सहित. जीत युक्त, सविजय।

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीखम थई वतीत। गुणचाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस सजीत।—रा. रू.

सजीप, सजीपौ—वि.—१ जीतने वाला, विजयी।

उ०—१ आपकरन्न 'पिराग' तण, पड़ियौ खाग बजाड़। सुतन सजीपै 'भोज' सम, जळ भाटीपै चाड।—रा. रू.

उ०—२ मुहतौ बळ लीधां दळ समीप, जोधांण हूंत जीवण सजीप।—रा. रू.

उ०—३ टमंकि तबल्ल नफेरिय टीप, जूंभाऊ त्रंबक वाज सजीप।
—रा. रू.

सजीलौ—वि. (स्त्री. सजीली) १ चंचल, फुर्तीला।

उ०—१ सजीला भड़ां प्रांण जोडे सुहावै, बहे भंप होदां कटारां बुहावै। खगां जीतणा धावमें दांव खेलहै, मलंगे तड़ां माकड़ां पीठ मेलहै।—वं. भा.

उ०—२ हळव काचतौ देहकौ माचतौ हदोहद, साचतौ रागवागां सजीलौ। आज री वार 'संभमाल' धन आचतौ, नाचतौ दियौ दिलदार नीलौ।—महादांन मेहडू

२ विलास प्रिय, कामुक।

उ०—परम सजीलौ पीव नै, निपट रसीली नार। सहियां सराहे साथ कौ, कौ जोड़ी किरतार।—अग्यात

३ सुंदर, सुडौल।

४ धारण करने वाला।

उ०—सील सजीलौ रूप रसीलौ छैल छबीलौ छावै नील जलज तन छटा निराली, लख, लख कांम लजावै रे।—गी. रां.

५ छैल छबीला, रसिक।

६ [illegible]।

उ०—[illegible] सौं मद्दरद सुन म्यान पनेद पोरसा लाइक आजमांन [illegible] सजीली, नवीली, छबीली, रसीली, नवीली, रसीली, चटीली कटीली, छबीली, रंगीली........।—र. हमीर

सजीव-वि. [सं.] १ जिसमें जीव हो, जीवयुक्त।

२ फुर्तीला, चपल।

३ ओजस्वी।

४ पुनर्जीवित।

उ०—१ इण रीति राजा वराह रा अंग री समस्त पळ साथ तिण नूं पाछौ सजीव करि भगवति वर लेण रौ हुकम दीधौ।

—वं. भा.

उ०—२ कळिजुग रा समय में प्रांण छूटियां पछै सजीव होवा रौ अभिलाष रा मन में तौ असंभव ही आवै। वं. भा.

सं. पु.—१ प्राणी, जीवधारी व्यक्ति।

[सं. सज्ज] २ योद्धा, भट। (अ. मा.)

रू. भे.—सजव, सुजीव।

३ देखो 'सजीव' (रू. भे.)

रू. भे.—सरजीव, सरजीवत।

सजीवण-वि.—जीवित, प्राणयुक्त।

उ०—१ जद थूं जांणै वाली माटी, चीर काळजौ सूंपै। प्रांण सजीवण करै तिनस रा, भुक-भुक पगल्या चूंपै।—चेतमांनखो

उ०—२ अमर लोक सूं अम्रत लाया सतगुरु पाय दीया। भया सजीवण समय भागा, म्रतक जीव गीया।

— श्री हरिरांम जी महाराज

सं. पु.—देखो 'सजीवन' (रू. भे.)

रू. भे.—सजीवन, सरजीवण।

सजीवणमंत्र-स. पु. [सं. संजीवन+मंत्र] १ मृत मनुष्य को जिलाने वाला एक मंत्र।

२ मोक्ष देने वाला मंत्र।

उ०—नाम सजीवणमंत्र रट, वयणां रांम विचार। स्रवणां हर गुण सांभळै, नैणां रांम निहार।—ह. र.

रू. भे.—सजीवनमंत्र।

सजीवित-वि.—जीवित।

उ०—सब गुण दुजन तिणै निज काचौ, सूर धरम जांणै अप साचौ। गात सजीवित करण वताए, आप करण सनमुखि कजि आए।—सू. प्र.

सजीवता-सं. स्त्री.—सजीव होने की अवस्था या भाव।

सजीवन-वि.—१ नहीं मरने वाला, अमर।

२ जीवित करने वाला।

उ०—पाहाडै 'साहुळ' साजि चढियौ सिंदवायौ। चीतोडौ चतुरंग, 'भीम' दळ मेलै आयौ। वाळि वोलै सीसोद, मूंछ वळ घाळै मच्छरि। अर्भ-दांन आपियौ, आव पैलालि विनौ करि। सोभाग सजीवन औषधी, तिण कारण तुडि वरय भरि। अजमेर उपाहिस काइ धनड, पवँ द्रोण हणमंत परि।—गु. रू. बं.

सं. पु.—१ मुक्ति, मोक्ष।

२ जीवित, जिन्दा।

उ०—दादू नांम निमित्त रांमहि भजै, भक्ति निमित्त भज सोइ। सेवा निमित्त सांई भजै, सदा सजीवन होई।—दादूबांणी

३ देखो 'संजीवन' (रू. भे.) (अ. मा.)

४ देखो 'सजीवण' (रू. भे.)

सजीवनबूटी, सजीवन-मूळ, सजीवनी—देखो 'संजीवणी' (३) (अ. मा.)

सजीवन मंत्र—देखो 'सजीवणमंत्र' (रू. भे.)

सजीवन्न—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

उ०—लुटै साथ जांणै अमीद्वार लीधौ, किणौ वेणनादं सजीवन्न कीधौ।—ना. द.

सजुजो, सजूंझौ-वि. [सं. स+युद्ध] १ लड़ने वाला, जूझने वाला।

उ०—१ खाग सजूंझा 'प्राग' जो, 'अमरो' नाहरखांन। दिन दिन खंभै साह दळ, भुज थंभै असमांन।—रा. रू.

उ०—२ कळि वणियां 'मुकनो' कचरावत, रिण रावतां सजुझौ रावत।—रा. रू.

२ वीर, योद्धा।

उ०—१ हांम धणी हरदास रै जोड़ै रांम' दुभल्ल। 'हरी' सजूंझा माह पह, सूजा दुरजणसल्ल।—रा. रू.

उ०—२ पिड़ जुड़वा भड़ पांच सौ, रहिया अडिग अरेस। कामंध सजूंझा कांम छळ, दूजा आया देस।—रा. रू.

सजूटणौ, सजूटबौ—देखो 'जूटणौ' जूटबौ' (रू. भे.)

उ०—उमंगे रढ़ाळा छूटै सोहड़ां काकुस्थवाळा, श्रताळा सजूटे तेण सांमुहां अहील।—र. रू.

सजूटणहार, हारौ (हारी), सजूटणियौ—वि०।

सजूटिओड़ौ, सजूटियोड़ौ, सजूट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सजूटीजणौ, सजूटीजबौ—भाव वा०।

सजूटियोड़ौ—देखो 'जूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजूटियोड़ी)

सजूद-सं. स्त्री. पु. [फा.] विनय, प्रार्थना।

उ०—मौजूद खबर मावूद खबर अरवाह खबर वजूद। मकांम चै चीज हस्त दादनी सजूद।—दादूवांणी

सजेत-वि.—१ जीवित।

उ०—सिध्र सहत सकल सिधी समेत, सांमद्र माह न्हाखूं सजेत।

—सि. सु. रू.

२ विजयपूर्वक।

सजोड़, सजोड़ौ-वि.—१ सदृश, समान।

उ०—१ सुत जैदेव सजोड़, रूळां रिणछोड़ अभायौ। अंग स्रोण

द्रोण किर भारथ आयौ ।—रा. रू.

उ०—२ जैतहथां 'जैता' हरा, सांम्हा 'जैत' सजोड़। पूगा हाथी खांन रे, देता कुंत धमोड़ ।—रा. रू.

२ प्रबल ।

उ०—बूंदी ऊपर हल्लियौ, हाडौ दुरजणसल्ल । दुंद सजोड़ अरोड़ दळ, संग राठौड़ दुभल्ल ।—रा. रू.

३ साथ, पास ।

उ०—भ्रंग्र सजोड़ै दीपै, वांकड़ी कबांण नै जीपै हो । मांहो मांहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपै हो ।—वि. कु.

४ जोड़े सहित।

उ०—घणां भीलां अमल कीयौ छै। तिसै सजोड़ै जखड़ौ आवतौ दीठौ ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ हिवै वेहूं सजोड़ै निरभै थकां घोड़ा खड़ियां जायै छै। तरै चावड़ी नै कह्यौ, डावी जीमणी घास मांहै निजर राखता जावौ ।—जगदेव पंवार री वात

५ हमउम्र, समवयस्क ।

उ०—पुरी अवध परबेस सजोड़ा साथियां । चमर करै चोफेर हलै हाथियां ।—र. रू.

सं. पु.—दम्पत्ति ।

उ०—परगत इम भ्रात चहुं परणीजै, मांण किता चा मारिया। डांणां हूंत सजोड़ा डेरा, पाछा बींद पधारिया । —र. रू.

सजोड़णौ, सजोड़बौ—देखो 'जोड़णौ, जोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—करि सलांम सजोड़ि कर, इम वोलिया स वजीर । हुकम माफक होवसी, वरियांम हित चित वीर ।—सू. प्र.

सजोड़णहार, हारौ (हारी), सजोड़णियौ—वि० ।

सजोड़िओड़ौ, सजोड़ियोड़ौ, सजोड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सजोड़ीजणौ, सजोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सजोड़ियोड़ौ—देखो 'जोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री सजोड़ियोड़ी)

सजोणौ, सजोबौ—देखो 'संजोणौ, संजोबौ' (रू. भे.)

उ०—करणौ रफड़-रफड मल-मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन री दीयौ सजोयौ । – दसदोख

सजोणहार, हारौ (हारी), सजोणियौ—वि० ।

सजोयोड़ौ - भू० का० कृ० ।

सजोईजणौ, सजोईजबौ - कर्म वा० ।

सजोत—सं. स्त्री.—देखो 'साजोत' (रू. भे) (अ. मा.)

सजोम—वि —जोशपूर्ण, जोशयुक्त ।

उ० –१ अड़ै भुज बोम सजोम अपार, खड़ै भड़ धोम चखासु तुसार ।—पे. रू

उ०—२ अड़ै सिर बोम सजोम अरोड़, रिमां सूं आपड़ियौ राठौड़ ।
—गो. रू.

रू. भे.—साजोम ।

सजोयोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सजोयोड़ी)

सजोर, सजोरौ—वि. (स्त्रीं. सजोरी) १ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—१ पड़दल खां असुर गह पूरै, गयौ सिवांणै साथ गरूरै । और वळै नाहर उतपाती, महा सजोर खगै मेवाती ।—रा. रू.

उ०—२ 'जूझावत' 'सगरांम' सजोरौ, तिसड़ोई 'भगवांन' सतोरौ। 'तेजौ' 'मुकन' महाबळ तैसा, अरि दळ भांजण प्रांण अनैसा ।
—रा. रू.

२ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—१ हुवै कि हाक हक्कयं, तवै क्रतंत तक्कियं । धड़ै अनंत धारयं, सजोर घाव सारियं ।—रा. रू.

उ०—२ जाजळी फौज मुगळी सजोर, कर दिली सिलीं दस्तूर कोर । इम हले खेत सनमुख असाध, विख नदी उज्जली हूंत बाध ।— वि. स.

३ असर डालने वाली, प्रभावशाली ।

ज्यूं—छंद सजोरा है, कविता सजोरी है।

सजोवणौ, सजोवबौ—देखो 'संजोवणौ, संजोवबौ' (रू. भे.)

सजोवणहार, हारौ (हारी), सजोवणियौ—वि० ।

सजोविओड़ौ, सजोवियोड़ौ, सजोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सजोवीजणौ, सजोवीजबौ—कर्म वा० ।

सजोवियोड़ौ—देखो 'संजोयोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. सजोवियोड़ी)

सजोस—वि.—जोशयुक्त, जोशीला ।

उ०—१ समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, असुर सजोस रोस उफणावै ।
—रा. रू.

उ०—२ जिण पेख जवन सजोस, सुज गयौ तजि गढ सोस ।
—रा. रू.

उ०—३ जिण जिण सथांन फौजां सजोस, सुण खबर थया पण विण सरोस ।—रा. रू.

रू. भे.—सजोसौ ।

सजोसणियौ—वि.—कवचधारी ।

उ०—आगै मिरजै रा असवार सजोसणिया होइ अर ऊभा रहिया छै ।—द. वि.

सजोसौ - देखो 'सजोस' (रू. भे.)

उ० –१ ऊहड़ भड़ गढ ऊपरां, जोड़ 'हरी' वड जांण । मांनि सजोसौ मेलियौ, 'अभै' भरोसो आंण ।—रा. रू.

उ०—२ जीवण हरनाथोत सजोसौ, आसुर व्याधि हरण किर ओसौ ।—रा. रू.

सज्जगीस—देखो 'जग्गीस' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सज्ज समनोल, पागोत चढै गिरि गिदुर ईस ।
—सु. रू. वं.

सज्ज-वि. [सं.] १ तैयार ।
२ सज्जा किया हुआ ।
३ सजाया हुआ ।
४ हथियार आदि से लैस ।

सज्जण-सं. पु. [सं. सज्जन] १ भला व शरीफ मनुष्य, सज्जन ।
२ कुलीन वंश का व्यक्ति ।
३ स्वजन, बंधु ।
उ०—१ नर नेत्र पक्खर हिंदू तुरक, सदा हरख मन सज्जणां । कांमळ किसोर जौ ही कमंध, दुति कठोर उर दुज्जणां ।—रा रू.
उ०—२ तर मजर दळ माळा तोरण, सोहै द्वार मेळ अत सज्जण ।
—रा. रू.
उ०—३ तुरा अंत जोबन गिमै, घटै ज नवलो नेह । ओक दिहाड़ै सज्जणां, जम कम्मी जुध ग्रेह ।—प्रयात
उ०—४ नाम दुरजण करां, नो सज्जण की भेंट । रजनी रा मेरा किया, विधि का अन्दर भेट ।—प्रथीराज राठौड़
४ पति, प्रियतम ।
उ०—१ हूं बलिहारी सज्जणां, सज्जण मो बलिहार । हूं सज्जण पग पांनही, सज्जण मो गळहार ।—ढो. मा.
उ०—२ जिण दिस सज्जण वै वसौ, सोही बाजै बाव । थां लागां मुझ लागसी, सोही लाखपसाव ।—ढो. मा.
५ प्रिय, प्रेमी ।
६ मित्र, दोस्त ।
७ हितैषी, शुभचिंतक ।
८ उत्तम, श्रेष्ठ ।
९ देखो 'सजण' (रू. भे.) (डि. को.)
रू. भे.—संजण, सजन, सज्जन, साजण, साजन, सुजन ।
अल्पा, रू. भे.—सज्जणियौ, साजणियौ, साजनियौ

सज्जणियौ-देखो 'सज्जण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—सज्जणिया पहलाद थइ, मंदिर बइठी आइ । मंदिर काळउ नाग जिउ, हैलउ दै दै खाइ ।—ढो. मा.

सज्जणौ, सज्जबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हाथ करतां ही निद्रा निवारी सम्यादिक संगर री सांमग्री में सज्ज हो ।—वं. भा.
उ०—२ निज भांनें किव किसन' निरूपण, सुणो गाहा गुण दोस सुलक्खण । मान चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठे यळ जगण तदा दुज ।—र. ज. प्र.
उ०—३ ज्यांरा सोवन थाल अनांई वजिजया । 'पातल' जनम पर्यंत, सुमोरस सजिज्या ।—प्र. प्र.
उ०—४ पुव्वहु सुरजन नगं पठावन, रतन भूर न गये रढरांबन । करि बळ सज्ज मरन स्वीकृत किय, अटक गमन तन मन करि रज्जिय ।—वं. भा.
उ०—५ भरगें भाळ सिंदूर ज्यौं ज्वाळ भाळा, मुदाळी गळै हिंडुळै मुंडमाळा । फुजां भांमणा कंकणां सज्ज कीधां, लखै सूळ डैरु खड्गग्ग लीधां ।—मे. म.
उ०—६ कबहुं करे न अटक उल्लंघन, साह दाग न धरै हय संघन । वंव मुख्य तोरन लग वज्जें, अज्ज अनुगव्है संग न सज्जें ।
—वं. भा.
उ०—७ दुद्दुत्तणि डोहलऊ कूड कलहि जण झुझि गज्जइ । पुरुस वेसि गइंवरि चडई सुहड जेम मनि समरू सज्जइ ।
—सालिभद्र सूरि
उ०—८ गंगदेव रै खुरसांण खेत रौ अति वेग बाजी सुणियौ जिसड़ौ ही तुरंग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रौ व्याज करि........ ।—वं. भा.
२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)
सज्जणहार, हारौ (हारी), सज्जणियौ—वि० ।
सज्जिओड़ौ, सज्जियोड़ौ, सज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सज्जीजणौ सज्जीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

सज्जन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ गाळ न ऊठै गूमड़ौ, ऊठै भाळ अकरथ । जिण नूं सज्जन वैंण जळ, सांत करण समरत्थ ।—बां. दा.
उ०—२ बीठू सज्जन मन वस्या, जहं सूं लाग्यो चित्त । सो ही घड़ी सुकारथी, जाय मिळै जे मित्त ।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ तद उण कही वात सांची पण आंपां सज्जन तौ आज हुवा पर घर में आइयौ जणां किण रौ विस्वास भरोसौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ हा हा दुखदाई छपना हतियारा, सज्जन सुखदाई सावळ सवियारा ।—ऊ. का.

सज्जनता, सज्जनताई—देखो 'सजनता' (रू. भे.)

सज्जनौ-सं. पु.—किसी नायक या सरदार के चढ़ने का हाथी ।

सज्जळ-सं. पु.—१ हाथी, हस्ती ।
उ०—कट्या घण सज्जळ छज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समांन । मसूदित साथ समाकत सुंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड ।
—मे. म.
२ देखो 'सजळ' (रू. भे.)

सज्जा—१ देखो 'सय्या' (रू. भे.)
२ देखो 'सजा' (रू. भे.)

सज्जादानसीन-सं. पु. [अ. सज्जादा+फा. नशीन] वह जो किसी पीर या फकीर की गद्दी पर बैठा हो ।

सज्जादी, सज्जादौ-सं. पु. [अ. सज्जादः] १ मुसलमानों द्वारा नमाज पढ़ते समय बिछाने का कपड़ा, मुसल्ला ।

२ किसी पीर या फकीर की गद्दी।

सज्जाय—देखो 'सझाय' (रू. भे.)

सज्जित-सं. पु.—युद्ध के लिए सजा हाथी। (डिं. को.)

वि.—१ सुशोभित।

२ आवश्यक वस्तुओं से युक्त।

३ तैयारी।

४ कटिबद्ध।

५ अलंकृत।

सज्जियोड़ौ—१ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सज्जियोड़ी)

सज्जीखार-सं. पु.—सफेदी लिए भूरे रंग का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार, सज्जी।

सज्जीभूत-वि. [सं.] कटिबद्ध, तैयार।

उ०—१ अठी सूं म्हैं आवां जरै ही उठी सूं थैं सज्जिभूत होय सांभळि आवौ।—वं. भा.

उ०—२ राउत चडीया सनाह लीधा किस्या किस्या सनाह जहर-जीण जीवणसाल जीवरखी अंगरखी करांगी वज्रांगी लोहबद्ध लुडि समस्त सनांह लीधा सज्जीभूत हुआ।—कां. दे. प्र.

सज्झणौ, सज्झबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साह बइठा सोहिया सभा मसंदी सज्झ। चंद दिपंदा वेखिया, जांण नखत्रां मज्झ।—गु. रू. बं.

उ०—२ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि, मुळकियौ मछरि घण रोस मज्झि।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

सज्झणहार, हारौ (हारी), सज्झणियौ—वि०।

सज्झिओड़ौ, सज्झियोड़ो, सज्झ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सज्झीजणौ, सज्झीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सज्झियोड़ौ—१ देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सज्झियोड़ी)

सज्य-वि.—सह्य, सहनीय।

उ०—सहियौ नह जैसिंघ दै, सज्य असज्य प्रताप। सबळां दळ रोकन सकै, दै कोकन तज दाप।—बां. दा.

सज्या—१ देखो 'सय्या' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या क्रत सैन नांमी।—र. ज. प्र.

उ०—२ अति साच पतसाह अखांनै, खिण सज्या खिण तारत खांनै।—रा. रू.

२ देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—समझ जाय तौ भलाई, नहीं तौ सज्या तौ पावै ही पावै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघोत री वात

सज्यास-सं. पु.—विश्वास, भरोसा।

उ०—१ महाराजा 'अजमाल', मेल कूरमां दिलासा। थया दाह मेटिया, आदि 'जैसाह' सज्यासा।—रा. रू.

उ०—२ नग हीर कनक निछरावळां ओवै पग जग आरती। पायौ सज्यास सगतीपुरां, परणायौ जोधांपती।—रा. रू.

सज्यासेसू-सं. पु. [सं. शेष+शय्या] १ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

२ विष्णु।

सझंड-सं. पु.—समूह, झुंड।

सझ-वि.—सज्जिभूत, कटिबद्ध। (डिं. को.)

सझण-सं. स्त्री. [सं. सज्ज] सेना को तैयार करने की क्रिया। (डिं. को.)

सझणौ, सझबौ—१ देखो 'सजणौ, सजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुममणां फौज ऊपरै सझतौ देख वीर स्त्री पती ने सरावै है।—वी. स. टी.

उ०—२ जगत छत्रदिस लिखै जबावां, सझौ विमाह कि समर सतावां।—सू. प्र.

उ०—३ ऊगतां भांण 'अगजीत' रा, वेढक भड़ अरिघड़ वना। सांमुहा अया भारथ सझण, एक उतन रा ऊपना।—सू. प्र.

उ०—४ कोई वीर बाळक आपरै पिता रौ वैर लेण सारू सझियौ सौ उण बाळक वीर ने समझावै।—वी. स. टी.

उ०—५ सुंदरि दीठ सिंगार सोल सझि, मुरछा आय पड़े उपवन मझि।—सू. प्र.

उ०—६ दोनुं ठौड़ एकण जायगा हुवै तौ परगनौ सझ आवै।—नैणसी

उ०—७ ताहरां ईयै राजा सहर तौ उजाड़ कियौ अर कोट सझियौ।—नैणसी

उ०—८ सझिया पखराळ सझावट का, नखरा कुलटा कि नटा नटका। तरछी गति दीठ कटाक्ष तियां, मरमार बहादुर पीठ मियां।—मे. म.

२ देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तठै सबळावत सूरतसींघ, सझै खळ दंगल मोहणसिंघ।—सू. प्र.

उ०—२ कंवर सझण थित दिल्ली केरी, फुरमायौ सुज वात न फेरी।—रा. रू.

सझा—देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रैसै चरित अनंत कै, को कह सकै अनंत। दुसटन कुं दीवी सझा, साहि करेवा संत।—गज-उद्धार

उ०—२ पहिली राजाजी कन्हा सझा दिराड़ी अर लोक देखतां वीच की छुडायौ।—द. वि.

सझाई—देखो 'सजाई' (रू. भे.)

उ०—सीसमी सांनमें सागी सभाई सीधी।

—वीरमदे सोनगरा री वात

सभाड़ो-वि.—१ वह स्थान जहाँ घने वृक्ष हों।

उ०—सागर निवट सभाड़ो छै। घोहर वीर गुंदी गांगड़ी लोकस दुरस निवट सभाड़ो छै।—बां. दा. ख्यात

२ घना, सघन।

३ अधिक, बहुत।

रू. भे.—संभाड़ो, सजाड़ो।

सभाणो, सभावो—देखो 'सजाणो, सजावो' (रू. भे.)

उ०—१ गई मांझ चन्दै मसीतां महल्लं, भरोखो सभायो चढी साह पाडो।—रा. रू.

उ०—२ सीस सनाह सरीर सभायो दयानंद सुभदाई।—ऊ. का.

सभाणहार, हारो (हारी), सभाणियो—वि०।

सभायोड़ो—भू० का० कृ०।

सभाईजणो, सभाईजवो—कर्म वा०।

सभाय-सं. स्त्री [सं. स्वाध्याय] १ पढ़े हुए पाठ का पुनरपि चिन्तन व पठन करने की क्रिया।

उ०—जद स्वांमी जी पाछो फुरमायो पूंजनै सूणें ऊभा रहो। इण रीतें उत्तराध्ययन री सभाय अनेक बार कीधी।—भि. द्र.

२ स्वाध्याय।

रू. भे.—सज्झाय।

सभायोड़ो—देखो 'सजायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सभायोड़ी)

सभावट—देखो 'सजावट' (रू. भे.)

उ०—गांभया पयाराळ सभावट का नखरा कुलटा की वटा नटका।

—मे. म.

सभावार, सभैंवार—देखो 'सजावार' (रू. भे.)

उ०—१ तद मुलतांन अरज करी जो मा'राज भाटी हजार तीन आदमी जबरदस्त छै जिणनूं फौज नैं जाय सभावार जरूर करसूं पण खरच री बदोबस्त कियो चाहीजै।—द. दा.

उ०—२ सु इण दोनूं भायां मनसोभो कियो जो राजा अनूपसिंघ जी घर दखेन थां वेड़ो उठावर आया है, तिण सूं आपां इणां ऊपर हालो, सु इणां नूं सभैंवार कियां विनां अपणा इस जिलै में अमल हुवै नहीं।—द. दा.

सभोळो-वि.—बहुत, अधिक।

उ०—लायो जाद रोगहर लांगो, विलंग सहलो मुण प्रबळ। देखे जाद सीस धरि दोळा, दुरह सभोळा रांम दळ।—र. रू.

सभ्भड़ा—देखो 'सजड़' (रू. भे.)

उ०—दाजिया वेगड़ा अिरा भाजै धड़ा, ऊजडै सभ्भड़ा धूज दिल्ली धुड़ा।—सू. रू. वं.

सभ्भा—१ देखो 'सजा' (रू. भे.)

उ०—तद महाराज विचारियो के इणनूं ज्यांन सूं मारां पण पातसाह जी री सुसरो छै, सूं क्यूंईक सज्या तो जरूर देणी।—द. दा.

२ देखो 'सय्या' (रू. भे.)

सट-सं. पु. [अं. शट] १ यात्रादि में भोजन साथ ले जाने के लिए धातु का बना कई खानों का डिब्बा विशेष।

[सं. षट] २ छः की संख्या।

३ खाडव जाति की एक राग। (संगीत)

४ जटा।

वि.—मूर्ख।

उ०—कम पोढ़ां कायरां, ठहे सट ठीगा ठोळी। मैला घटा जवांन, तठै जिण सूरां टोळी।—पा. प्र.

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

उ०—जिण धांम नांम जंजाळ जै, सट मिट जाय संसाररा। तिण पर पाजां बंधियां, अै तिण नांमांतार रा।—डि. नां. मा.

२ देखो 'सटा' (रू. भे.)

सटक-सं. स्त्री.—१ सटकने की क्रिया या भाव।

२ पतली छड़ी, कोड़ा।

[सं. षटक] ३ छः की संख्या।

४ छः वस्तुओं का समूह।

क्रि. वि.—शीघ्र, फौरन, तुरन्त।

उ०—१ बाज खग झटक बेहुवै कटक विचाळा, विखम घटफूट सिर सटक वहीया। लोथ हूंता पड़ै तूट माथा लटक, रटक वज दहूं दळ अटक रहीया।—गिरवरदांन सांदू

उ०—२ धगधगती सगड़ी भरी, आणउ अति अंगार। मांहि मूंकउ मांनिनी, सटक देई सिणगार।—मा. कां. प्र.

उ०—३ परणी ने परहरै गेर सुत गोदी धारै। जोबन मद में जोर सटक सुरलोक सिधारै।—ऊ का.

सटकणो, सटकबो—क्रि अ.—१ खिसक जाना, चंपत होना, हटना।

उ०—सुख संपति के सब कोई साथी विपत परै सब सटकै।

—मीरां

२ कायरता दिखा कर भाग जाना।

उ०—भळकीयो साबळां वीर वागां भिळै, जेण विरिया घरां वळण जोवै। कांमणी नहीं वा कहूं कुकांमणी, सटकीया कंथ रै कनै सोवै।—कायर री गीत

सटकणहार, हारो (हारी), सटकणियो - वि०।

सटकिओड़ो, सटकियोड़ो, सटक्योड़ो—भू० का० कृ०।

सटकीजणो, सटकीजबो—भाव वा०।

सटकरम—देखो 'षटकरम' (रू. भे.)

सटकरमी-सं. पु. [सं. षटकर्मी] यजन, याजन आदि नियत कर्मों को करने वाला ब्राह्मण, कर्मनिष्ठ ब्राह्मण।

सटकळ-सं. पु.—एक पतला व छोटा सर्प जो उछल-उछल कर चलता

है। (शेखावाटी)
(मि. पिपोड़ी परड़)

सटकळा–सं. स्त्री. [स. षटकला] संगीत के ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।

सटक संपत्ति–सं. स्त्री.—छः प्रकार के कर्म—शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

सटकाणौ, सटकावौ–क्रि. अ.—१ सट-सट शब्द करते हुए छड़ी या कोड़े से मारा जाना।
२ छड़ी, कोड़े आदि से पीटते समय सट-सट की ध्वनि उत्पन्न होना।
सटकाणहार, हारौ (हारी), सटकाणियौ—वि०।
सटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सटकाईजणौ, सटकाईजवौ—भाव वा०।
सटकारणौ, सटकारबौ—रू० भे०।

सटकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सट-सट शब्द करते हुए कोड़े या छड़ी से मारा हुआ. २ छड़ी, कोड़े आदि से मारते वक्त सट-सट की ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।
(स्त्री. सटकायोड़ी)

सटकार–सं. पु.—१ सटकाने से उत्पन्न ध्वनि।
२ सटकाने की क्रिया।

सटकारणौ, सटकारबौ—देखो 'सटकाणौ, सटकावौ' (रू. भे.)
सटकारणहार, हारौ (हारी), सटकारणियौ—वि०।
सटकारिओड़ौ, सटकारियोड़ौ, सटकारचोड़ौ—भू० का० कृ०।
सटकारीजणौ, सटकारीजवौ—भाव वा०।

सटकारियोड़ौ—देखो 'सटकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सटकारियोड़ी)

सटकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ खिसका हुआ, चंपत हुवा हुआ, हटा हुआ. २ डर कर भागा हुआ।
(स्त्री. सटकियोड़ी)

सटकै, सटक्कै, सुटकै–क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।
उ०—१ माच क्रोध सटकै मुख मोड़े, पटकै आच पसार। पुण गुण नाच कुवाच प्रकासै. नटकौ काच निहार।—ऊ का.
उ०—२ एक बोलै करड़ा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दै खोल ए।
—जयवांणी
उ०—३ असवारै असवार अटक्कै, लल वल लुंवि लटक्कै। संभावै समसेर सटक्कै, तोड़ै तुंड तटक्कै हो।—वि. कु.

सटकोण–सं. पु. [सं. षटकोण] वह जिसके छः कोने हों।

सटको–सं. पु.—१ कुर्त्ता, कमीज आदि में बटनों की जगह सोने की जंजीर में लगाये जाने वाले 'स्वर्ण बटन'।
२ हुक्के की निगाली के स्थान पर लगाई जाने वाली लम्बी नलिका।

३ अवसर, मौका।

सटचक्र–सं. पु. [सं. षटचक्र] कुंडलिनी के ऊपर पड़ने वाले छः चक्र (योग) अनाहत, आज्ञाचक्र, ब्रह्मरंध्र, मणिपुर, मूलाधार और स्वाधिस्ठान।
२ षड़यंत्र।

सटचरण–सं. पु. [सं.] भौंरा।

सटणौ, सटबौ–क्रि. अ.—१ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिलना जिससे उसके पार्श्व आपस में लग जाय, चिपकना, सटना।
२ चिपकना, लगना।
३ मारपीट होना।
४ मैथुन करना।
सटणहार, हारौ (हारी), सटणियौ—वि०।
सटिओड़ौ, सटियोड़ौ, सट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सटीजणौ, सटीवजौ—भाव वा०।

सटताळ–सं. स्त्री. [सं. षटताल] आठ मात्राओं का मृदंग की ताल विशेष। (संगीत)

सटतिलाइगियारस, सटतिलाइग्यारस, सटतिलाएकादस, सटतिलाएकादसी–सं. स्त्री.—माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
रू. भे.—सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी।

सटपट–सं. स्त्री.—१ गुप्त मंत्रणा।
२ कान के समीप कही जाने वाली बात, कानाफूसी।
३ प्रसंग, सहवास।
क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सटपटाणौ, सटपटावौ—देखो 'सिटपिटाणौ, सिटपिटावौ' (रू. भे.)
सटपटाणहार, हारौ (हारी), सटपटाणियौ—वि०।
सटपटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सटपटाईजणौ, सटपटाईजवौ—भाव वा०।

सटपटायोड़ौ—देखो 'सिटपिटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सटपटायोड़ी)

सटपदप्रिय–सं. पु. यौ. [सं. षट्पदप्रिय] १ कमल।
२ नाग केसर का पौधा।

सटपितापुत्रक–सं. पु. [सं. षट्पितापुत्रक] संगीत के १२ मात्राओं के ताल का एक भेद।

सटमुख–सं. पु. [सं. षट्मुख] कार्तिकेय।
वि.—जिसके छः मुख हों, छः मुखों वाला।

सटरस–सं. पु. [सं. षट्रस] १ छः प्रकार के स्वाद या रस।
२ देखो 'सड़ज'।

सटराग–सं. पु.—संगीतशास्त्र के मुख्य छः राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक।

सटरिपु–सं. पु. [सं. षड्रिज] मनुष्य के छः विकार—काम, क्रोध, लोभ,

[illegible] ।

सट्टर्दसी-वि.—१ निर्लज्ज, बेशर्म ।

२ [illegible] ।

सटसास्त्र-सं. पु. [सं. षट्शास्त्र] हिन्दुओं के छः दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तरमीमांसा ।

सटसास्त्री-वि. [सं. षट्शास्त्री] हिन्दुओं के छः शास्त्रों का ज्ञाता, पंडित ।

सटांगण, सटांवण-सं. पु.—रोटी बेलते समय लोई पर लपेटने का वह सूखा आटा जिससे बेलन द्वारा रोटी फैलाने पर वह लोई या चकले पर न चिपटे ।

सटा-सं. स्त्री. [सं. सटा] १ शेर या घोड़े के गर्दन के बाल, अयाल ।

उ०—१ सटा न मावै बाग में, फलंग ग्रटा गरकाय । पेल छटा छूटी घटा, सिन्दूर घटा सवाय ।—बा. दा.

उ०—२ जाकौ धाराळ नारसिंघ री सटा रो जायो, प्रळै काळ घटा री छटा रो जायो पूत । हिमांडू उथाळो चाडी रोस री रटा रो जायो, भाखो किनां ईस री जटा रो जायो भूत ।

—सूरजमल मीसण

२ साधु-संन्यासियों के सिर के बाल । (डिं. को.)

३ बालों की चोटी ।

४ देखो 'छटा' (रू. भे.)

उ०—सटा नूंब दुम वन लता, कुस सटा चहुंकोर । उदीपण भूषण घटा, घटा मोर घण घोर ।—क. कु. बो.

रू. भे.—सट ।

सटाक-क्रि. वि. [अनु.] शीघ्र, जल्दी ।

सं. पु.—छड़ी या चाबुक से उत्पन्न शब्द या ध्वनि ।

सटाणौ, सटाबौ-क्रि. स.—१ दो वस्तुओं को इस प्रकार मिलाना जिससे वह आपस में परस्पर मिल जाय, मिलाना, चिपकाना ।

३ मार-पीट कराना ।

४ चिपकाना, लगाना ।

सटाणहार, हारौ (हारी), सटाणियौ—वि० ।

सटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सटाईजणौ, सटाईजबौ—कर्म वा० ।

सटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ. २ मैथुन कराया हुआ. ३ मारपीट कराया हुआ. ४ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिलाया हुआ होना कि वे आपस में मिल गई हों, मिलाया हुआ, चिपकाया हुआ ।

(स्त्री. सटायोड़ी)

सटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ दो वस्तुओं का इस प्रकार मिली हुई होना कि उनके पार्श्व आपस में मिल गये हों, चिपका हुआ, सटा हुआ ।

२ चिपका हुआ, लगा हुआ. ३ मैथुन या संभोग किया हुआ.

४ मारपीट हुवी हुई ।

(स्त्री. सटियोड़ी)

सटीक-वि.—व्याख्या या टीका सहित ।

सटीड़, सटीड़ौ-सं. पु. [अनु.] १ चोट, प्रहार ।

उ०—किणी भाव नीं मान्या तो म्हैं गोफण रा सटीड़ उडाया । दो असवारां रै ढिगली व्हियां पछै अे रांगै आया ।—फुलवाड़ी

२ प्रहार करते समय होने वाली ध्वनि विशेष ।

सटै-क्रि. वि.—देखो 'साटै' (रू. भे.)

उ०—१ तेण दिन गाळियौ रागां वळ तोलियो, बोलियो साच ऊजवाळ वा बोल । पाळवा वचन सिर अमर राखै प्रथी, काळची सटै वित बाळवा कोल ।—गिरवरदांन सांदू

उ०—२ प्रांण सटै ही प्रीत, जुड़ती जो दीसै जसा । आदरि रूहि रीत, मति छोडै मतवंत तूं ।—जसराज

उ०—३ ओथै तेरस ऊजळी, माह ऊजाळै पक्ख । ईदावत ईजत सटै, गो वासटै, परक्ख ।—रा. रू.

सट्टेबाज-सं. पु.—जो सट्टा और भाव की तेजी मंदी के हिसाब से मौखिक व्यापार करता है ।

सटोरियौ-सं. पु.—वह जो सट्टा खेलता हो और जो सट्टा खेलने का शौकीन हो ।

सटौ, सट्टौ-सं. पु.—१ किसी कार्य या शर्तें पूरी करने के लिए दो पक्षों में हुआ अनुबन्ध विशेष ।

२ एक प्रकार का कल्पित क्रय-विक्रय जिसमें लाभ-हानि निश्चित भाव के उतार-चढ़ाव से होता है ।

३ सौदा ।

सठु, सठ-वि. [सं. शठ] १ मूर्ख, बेवकूफ ।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सठ सनेह जीरण वसन, जतन करंतां जाय । चतर प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय ।—अग्यात

उ०—२ सठु सभा में बैठतां, पत पंडित री जाय । एकण वाड़ै किम वड़ै, रोझ गधेड़ो गाय ।—अग्यात

उ०—३ हगैया दुरमति सठ की, विड प्रांण लग होय । भावै स्यांणा वौह मिळो, सठ न समझै कोय ।—अनुभववांणी

२ पागल ।

३ आलसी ।

४ धूर्त, चालाक । (डिं. को.)

५ कपटी । (डिं. को.)

६ लुच्चा, बदमाश ।

७ दुष्ट ।

सं. पु.—१ साहित्य के पांच प्रकार के नायकों में से एक जो अपना अपराध छिपाने में चतुर हो ।

२ वसुदेव व रोहिणी का एक पुत्र ।

३ कश्यप व दनु के सौ पुत्रों में से एक ।

४ एक राक्षस जिसके घर पर हनुमान ने लंकादहन के समय

छलांग मारी थी ।

५ राम की सेना के एक बंदर का नाम ।

६ श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

७ निस्तब्धता, मौन, शांति ।

८ पंच, मध्यस्थ ।

९ कलई, रांगा । (डिं. को.)

रू. भे.—संठ ।

सठता-सं. स्त्री.—१ धूर्तता, चालाकी ।

२ बदमाशी, लुच्चाई ।

३ मूर्खता, बेवकूफी ।

वि.—१ दुखद । * (डिं. को.)

उ०—सठता धूरतता सहित छंद रचै मद छाय । निपट लियां निरलजता, कुकवी जिको कहाय ।—बां. दा.

४ पागलपन ।

५ आलसीपन ।

सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी देखो 'सटतिलाएकादसी' (रू. भे.)

सठमठ-वि.—कृपण, कंजूस ।

उ०—चुरू आतसूं के झळपट जग्गे अथाह, दूसरे **सठमठ** राजूंकै हियै परदाह ।—सू. प्र.

सठवा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की सोंठ, जिसमें तन्तु अधिक होते हैं ।

सठि—देखो 'साठ' (रू. भे.)

सठिक—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—**सठिक** अकूंण कर चह न सम्म, पै उरध-रेख जळहळ पदम्म ।—सू. प्र.

सठियाणौ, सठियावौ-क्रि. अ.—१. '६० वर्ष की उम्र प्राप्त होना ।'

२. ६० वर्ष की उम्र के बाद बुद्धि का ह्रास होना ।

उ०—१ साठ बरसां पैली ई म्हनै थारी अकल तौ **सठियाईजगी** दीसै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ साठां पछै आंरी अकल अंगेई **सठियायगी** दीसै ।

—फुलवाड़ी

सठियाणहार; हारौ (हारी), सठियाणियौ—वि० ।

सठियायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सठियाईजणौ, सठियाईजबौ—भाव वा० ।

सठियायोड़ौ-भू. का. कृ.—१. ६० वर्ष की उम्र प्राप्त हुवा हुआ. २. ६० वर्ष की उम्र के बाद बुद्धि का ह्रास हुवा हुआ ।

(स्त्री. सठियायोड़ी)

सठौ —देखो 'संठौ' (रू. भे.)

उ०—नांनकड़ी नीमड़ली **सठी** डार, अति ऊंचा चढणै री ठोड़ न सांपजी ।—किसोरसिंह

(स्त्री. सठी)

सडंग—देखो 'सड़ंग' (रू. भे.)

सडंबर—देखो 'डंबर' (रू. भे.)

उ०—१ असमांण बांण आचै लिया, सेन **सडंबर** सालळै । कोटांण कोटि कोअण कटक, आया दळ वद्दळ मिळै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ सर सरिता बहु बाग **सडंबर**, मझि तिण सिंगी कांम चित्र मंदिर ।—सू. प्र.

उ०—३ रूड़ा अति रमणीक, भला हित वाहिक भमंर । काइम अनै कपूर, सहित सिणगार **सडंबर** ।—ल. पिं.

सडगुण—देखो 'सड़गुण' (रू. भे.)

सडज—देखो 'सड़ज' (रू. भे.)

सडणौ, सडबौ—देखो 'सड़णौ, सड़बौ' (रू. भे.)

उ०—आकास धडहडइ, खोलउ खडहडइ, पंखि तडफडइ, वडां मांणस अडबडइ, कास्टखंड **सडइ** ।—व. स.

सडणहार हारौ (हारी), सडणियौ—वि० ।

सडिग्रोड़ौ, सडियोड़ौ, सड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सडीजणौ, सडीजबौ—भाव वा० ।

सडदरसन—देखो 'खटदरसण' (रू. भे.)

सडरस—देखो 'खटरस' (रू. भे.)

सडवदन—देखो 'सड़वदन' (रू. भे.)

सडवरग—देखो 'सड़वरग' (रू. भे.)

सडविदुतेल—देखो 'सड़विदुतेल' (रू. भे.)

सडविकार—देखो सड़विकार' (रू. भे.)

सडागनी—देखो 'सड़ागनी' (रू. भे.)

सडानन—देखो 'सड़ानन' (रू. भे.)

सडुक-सं. पु.—श्वान, कुत्ता । (ह. नां. मा.)

सडुौ—देखो 'सढौ' (रू. भे.)

सढांण—सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार ।

उ०—काहल कलयल ढक्क बूक त्रंबक नीसांणा । तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ **सढांणा** ।—सालिभद्र सूरि

सढौ, सढ़ौ-सं. पु.—ऊंट । (डिं. को.)

रू. भे.—सड्ढौ, सढ्ढौ ।

अल्पा;—सांढियौ ।

२ देखो 'सड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कूंभौ घोड़ै चढि नाठौ । पाछै चाचौ मेर चढियौ नै कह्यौ जांण न पावै । आगै गूजरी री एक तिण रै **सढौ** सबलौ ।

—राव रिणमल री बात

सढ्ढौ—१ देखो 'सढौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सड़ौ' (रू. भे.)

सणंक-वि.—१ साफ, स्पष्ट ।

२ निश्चित ।

सं. स्त्री.—एक प्रकार की ध्वनि विशेष ।

४ निस्पृह।

उ०—१ साट घोड़ां सदा सांम हाजर रहै, मडपति ममती घणां सम्मा रहै। जेहड़ा पर्यंक तज सलंक मुधा वहै, गावहर पागड़ै पाव रहीया रहै।—बखतराम निड़ियो

उ०—२ बंका मद मुरधर बिनै, खिलैनकै तज बंक। 'पातल' ताय नवावनै, सीधा किया सणंक।—किसनदान रतनू

रू. भे.—सणक।

सणंकणौ, सणंकबौ—१ देखो 'संणकणौ, संणकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सणंकणहार, हारौ (हारी), सणंकणियौ—वि०।

सणंकिग्रोड़ौ, सणंकियोड़ौ, सणंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणंकीजणौ, सणंकीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सणंकियोड़ौ—देखो 'संणकियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणंकियोड़ी)

सण-सं. पु.—१ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों की रस्सियां बनती है। इसके बीज खाद एवं औषधि बनाने मे काम आते है।

उ०—सणरा नीरूं वण चरै, वण नीरूं सण खाय। ग्रेहर ढीलो करहलो, जित चरजूं तित जाय।—अग्यात

२ सन की डोरी, सुतली।

३ सन का बना जाल।

रू. भे.—सिण, सिंण।

सणक-सं. स्त्री.—१ सहसा मन में उत्पन्न होने वाली कोई उमंग या भावना।

२ देखो 'सणंक' (रू. भे.)

रू. भे.—सनक, सिनक।

सणकणौ, सणकबौ—१ देखो 'संणकणौ, संणकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सणकणहार, हारौ (हारी), सणकणियौ—वि०।

सणकिग्रोड़ौ, सणकियोड़ौ, सणक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकीजणौ, सणकीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सणकार, सणकारी, सणंकारी-सं. स्त्री. [देशज] १ बैल, ऊंट, घोड़े आदि पशुओं को रास या लगाम द्वारा उसे अभिष्ट मार्ग या दिशा की ओर चलाने के लिए दिया जाने वाला झटका।

२ इशारा, संकेत।

३ बैल, घोड़े आदि पशुओं के सांस लेने से उत्पन्न ध्वनि।

रू. भे.—सनकारी।

अल्पा;—सणकारौ, सणंकारौ।

सणकारौ, सणंकारौ—देखो 'सणकारी' (अल्पा; रू. भे.)

सणकारणौ, सणकारबौ-क्रि. स.—१ इशारा करना, संकेत करना।

उ०—कुंवर सुंदरदास घरणै साथ सारै नूं सणकार कर घोड़ां चड नै धावो बोल्यो।—भाटी सुंदरदास बीकमपुरी री वारता

२ नाक से ध्वनि करना।

उ०—मूतल नायां मर नासां सणकारी, फुरणीं दूंघातां रासां फणकारी।—ऊ. का.

३ बैल, ऊंट आदि सवारी योग्य पशुओं को रस्सी का झटका देकर मुड़ने, ठहरने, चलने आदि का संकेत देना।

सणकारणहार, हारौ (हारी), सणकारणियौ—वि०।

सणकारिग्रोड़ौ, सणकारियोड़ौ, सणकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकारीजणौ, सणकारीजबौ—कर्म वा०।

सनकारणौ, सनकारबौ—रू० भे०।

सणकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ इशारा किया हुआ, संकेत किया हुआ. २ नाक से ध्वनि किया हुआ. ३ बैल, ऊंट आदि सवारी योग्य पशुओं को रस्सी का झटका देकर मुड़ने, ठहरने, चलने आदि का संकेत दिया हुआ।

(स्त्री. सणकारियोड़ी)

सणकावणौ, सणकावबौ-क्रि. अ.—सांस लेना।

उ०—सासा सणकावै नासां निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरी भररावै।—ऊ. का.

सणकावणहार, हारौ (हारी), सणकावणियौ—वि०।

सणकाविग्रोड़ौ, सणकावियोड़ौ, सणकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणकावीजणौ, सणकावीजबौ—भाव वा०।

सणकावियोड़ौ-भू. का. कृ.—सांस लिया हुआ।

(स्त्री, सणकावियोड़ी)

सणकियोड़ौ—१ देखो 'संणकियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणकियोड़ी)

सणकी-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष। (व. स.)

वि.—मन की तरंग या मौज के अनुसार कार्य करने वाला।

रू. भे.—सनकी, सिनकी।

सणगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.) (हि. को.)

उ०—चुग रण खेत मेड़तै चौसर, लाल नगां जिम पोय लियौ। वर गिरजा सणगार न वणियौ। कंठ गिरजा चद्रहार कियौ।

—महेसदास कूंपावत रो गीत

सणगारज-सं. पु—कामदेव। (डि. को.)

सणगारणौ, सणगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

सणगारणहार, हारौ (हारी), सणगारणियौ—वि०।

सणगारिग्रोड़ौ, सणगारियोड़ौ, सणगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणगारीजणौ, सणगारीजबौ—कर्म वा०।

सणगारदै—देखो 'सिणगारदै' (रू. भे.)

सणगाररस—देखो 'स्रंगाररस' (रू. भे.)

सणगारहाट-सं. स्त्री.—१ शृंगार का बाजार।

२ वेश्याओं का मुहल्ला।

सणगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सणगारियोड़ी)

सणणंकणौ, सणणंकबौ–क्रि. अ. [अनु.] सन सन की ध्वनि उत्पन्न होना।

उ०—१ सणणंकै खुरसांण, खाग धारां खणणंकै। रणणंकै रणराग, भलम पाखर झणणंकै।—वं. भा.

उ०—२ जिका सणणंकि भणणंकिय जेह, सुवा भड़भुम्मि हुआ धड़ सेह।—मे. म.

सणणंकणहार, हारौ (हारी), सणणंकणियौ—वि०।

सणणंकिओड़ौ, सणणंकियोड़ौ, सणणंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सणणंकीजणौ, सणणंकीजबौ—भाव वा०।

सणणंकियोड़ौ–भू. का. कृ.—सन-सन की ध्वनि उत्पन्न हुवौ हुई।

(स्त्री. सणणंकियोड़ी)

सणण–सं. स्त्री. [अनु.] हवा आदि के तेज चलने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ सौ राजकंवर नै पूछ्यां-ताछ्यां बिनाई वा उडण-खटोळी सीखण सारू भूवा रै अड़ौ-अड़ पाखती बैठगी। भूवा तौ बिनां पांखां अर बिनां उडण खटोळै उडण वाळी दूती ही, सौ उडण खटोळा मैं बैठ्यां पछै कांई ढील। वा तौ सणण सणण करती ऊंची चडगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण आंख्यां खुलतां ई जकौ रासौ वौ आपरी निजरां देख्यौ तौ उणरी पूतळियां अेकण ठौड़ ई चिपगी। सांम हौ जठै ई ठमग्यौ। सणण करता रूंगता ऊभा व्हैगा। पाखती रा वेली नै सांयड ऊभी बगळ बगळ मठोठै।—फुलवाड़ी

सणणाटौ–स. पु.—देखो 'सन्नाटौ' (रू. भे.)

उ०—गोटमगोट दियौ गणणाटौ सणणाटौ समसांणं।—ऊ का.

सणणाट—देखो 'सणणाहट' (रू. भे.)

सणणाणौ, सणणाबौ–क्रि. अ. [अनु.] १ ध्वनि विशेष होना।

२ सनसनाना।

सणणाहट–सं. स्त्री. [अनु.] ध्वनि विशेष।

उ०—कोतक हारां कळळ अवर सुणजै नह आहट। सणणाहट चरखियां, वीर घंटां ठणणाहट।—सू. प्र.

रू. भे.—सणणाट।

सणपद–सं. पु.—पञ्जे वाले जानवर, जैसे—सिंह, चीता, बन्दर, बिल्ली इत्यादि।

सणफ–सं. स्त्री.—वात विकार का दर्द विशेष।

सणमणौ–सं. पु.—१ रुग्ण, बीमार।

२ शून्य, जड़वत्।

सणमांण—देखो 'सनमांन' (रू. भे.)

उ०—जोग्यां-जत्यां ज्यूं निरमोही, कींरोही गुण-गाळ नीं, पण जगती तौ इसी स्यांणप अर उदारता री उळटी सणमांण आखै।

सणसणाणौ, सणसणाबौ–क्रि. अ.—ध्वनि उत्पन्न होना।

सणसणाणहार, हारौ (हारी), सणसणाणियौ—वि०।

सणसणायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सणसणाईजणौ, सणसणाईजबौ—भाव वा०।

सणसणायोड़ौ–भू. का. कृ.—ध्वनि उत्पन्न हुवौ हुई।

(स्त्री. सणसणायोड़ी)

सणसर–सं. स्त्री.—कानाफूसी।

उ०—कंस तणेइ घरि कस्ण चतुरभुज चालणहार। सणसर सांभळी सांमानइ रांमानइ करइ विचार।—चतुरभुज

सणसूत्र–सं पु. [सं. शणसूत्र] श्राद्ध, तर्पण आदि कृत्यों के समय कनिष्ठिका की बगल वाली अंगुली में पहनने को कुश की बनी हुई पवित्री।

सणांइ, सणांई—देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—जांगी ढोल अणइं सणांई, रिण काहल रिण तूर। वाजा वाजइं अंबर गाजइं, खुर रजि छायौ सूर।—रुकमणी मंगळ

सणियौ—१ देखो 'सींणौ' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सिणतरौ' (रू. भे.)

उ०—सणिया काट भरूंटा काट्या दोरौ दोरौ खेत निनांण्यौ। टीडी उड जी ए खेत परायौ।—लो. गी.

सणीओ–स. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार वस्त्र आपइ, गुडीअ ांसणीआं कस्तूरीआ, प्रतापीआ, कुसंभीआ मोलीआ।—व. स.

२ देखो 'सिणतरौ' (अल्पा; रू. भे.)

सणु–सं. पु. [सं.] एक भारतीय जनपद।

सतंग–सं. पु.—शरीर के सात अंग।

उ०—लोडा तो लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर सतंगा टूटग्या।—दसदोख

सत–सं. पु. [सं. सत्] १ ब्रह्मा, विरंचि।

उ०—सत सनंदन सुक सनक, नारद अवर असेस। ब्रह्म मारग जें ब्रह्मनु, तुंघी लहइ लवलेस।—मा. कां. प्र.

२ सत्य। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ सत हरिचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण। सुर तर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण।—र. ज. प्र.

उ०—२ समंद हूंत किरि सोम सोम हूंता सिद्धांणह। सत हूंत किरि धरम, ध्रम्म हूंता किल्यांणह।—गु. रू. बं.

उ०—३ चोट लगी सत सबद की, खुल्हा ब्रह्म कपाट। मेवा सा सब जीत कै, वस्या नगर वैराट।—अनुभववांणी

३ सतीत्त्व, पातिव्रत्य।

उ०—१ सत छोडै सीता सती, जत लिछमण सूं जावै। महा-जोध हणमंत, काळा वळ हीण कहावै।—चौथो बीठू

उ०—२ सेठ उठा सूं [illegible] उंक मळै मारियो—[illegible] सत रो [illegible] जिना दिन नलियो रैवै [illegible]।—फुलवाड़ी

उ०—३ गी री गो रंग-रूप। वा री वा निजर। वा री वा बोली। [illegible] घणी उणरै सत री परख करणी चावै।

—फुलवाड़ी

उ०—४ [illegible] कह्यो—थें तो परतख फूंफोजी। आपरा सत रा जोर सूं [illegible] नीं करै। सांप री जूण मिळी सो थारै हाथ री बात कोनी।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—रखणो, जाणो, टूटणो, राखणो लूटणो।

मुहा.—(१) सत छोडणो=सतीत्व छोड़ना।

(२) सत राखणो=सतीत्व रखना।

(३) सत लूटणो=सतीत्व लूटना।

४ सती होने के कारण आने वाला जोश, उमंग व बल।

उ०—१ सूरातन सूरां चढ़ै, सत सतियां सम होय। आडी धारां ऊतरै, तिण अनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ इण तरह कहि भूंडण अरबद सूं उतरी और विचारी—जे मोनूं तो डाडाळै री साथ बार-बार मिळै नहीं, तींसूं इब ही [illegible] थांरी साथ करणो छै। जाती वेळा तो च्यार घड़ी लागी थी, पण इब सत चढ़ी अेक ही घड़ी मांही आय पहुंची। उठै सारा साथ रा रावजी रे पासै बैठा छै। तद रजपूतां कही—रावजी भूंडण आई। रावजी कही—सावधान रहो, देखां भूंडण कासूं करै। तुरत धाय मनां घालो। इतरै में भूंडण चाली सो जठै डाडाळा नूं दाग दियो तठै टांग आई। पाखती सूरजकुंड आई, स्नान कियो, सूरजनारायण नूं प्रणाम करि, आय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नूं मुख ऊंचो कर अरघ देय कही—बार-बार डाडाळो पति पाऊं। इतरो कहि चिता मांही सरक हुई। रावजी देखनै घणी प्रसंसा करणी लागिया।

—डाडाळा सूर री बात

क्रि. प्र.—आणो, चढ़णो।

५ स्त्री द्वारा पति या पुत्र की लाश लेकर चिताहढ़ होने की क्रिया या भाव, उसके साथ सती होने की क्रिया या भाव।

उ०—१ हूं सती देख म्हारै बिनां एकलो हीज रिण मे सूतो है पण अेक री रीत नहीं छोड़ै छै सो अठै ही मेक री रीत नहीं भूलो और पीठा नूं थांम लियो तो सायत सुरग मैं अपछरा वरली तो म्हारै साथ होय आवता सो चाल सीस नें ताकीद सत कर हाजरी [illegible]।—वी. स. टी.

उ०—२ सारंग सीत लारै सेठ सती होवण आई। सत कियो हुवो।—देवजी बगड़ावत री बात

क्रि. प्र.—करणो, होणो।

६ आनन्द, मौज।

उ०—यारी काली मासी रा अंतस में हालतांई इत्तो सत है कै किणी मरियोड़ा टाबर नै खोळा में लेय मूंडै हांचळ लगावै तो वो उणी सांयत पाछो जीवतो व्है जावै।—फुलवाड़ी

७ उदारता, दयालुता।

उ०—१ जस री गत अदभूत जका, सत धारियां सुहाय। नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय।—बां. दा.

उ०—२ पीवता अमल तीजै पोहर, विरला रित तीजै वरस। सत हीण घणा देखिस नृपह, सेरसिंघ जद संभरिस।—पहाड़खां आढो

८ धैर्य, साहस, हिम्मत।

उ०—रांणा डूंगर सी गढ झालीयो। मास ८ गढ घेरियो। पछै डूंगरसी रो सत छूटो।—नैणसी

क्रि. प्र.—छूटणो, राखणो।

मुहा.—सत राखणो=हिम्मत रखना।

सत छोडणो=साहस छोडना।

१० किसी पदार्थ का सार तत्त्व। (अनेका.)

क्रि. प्र.—काढणो, निकाळणो।

११ नदी।

१२ धर्म। (अ. मा.)

१३ सतयुग।

१४ मार्ग, रास्ता। (ह. नां. मा.)

१५ तीन गुणों में से एक गुण, सतोगुण।

उ०—सत रज तम रस पांच रहत रस, ता रस सूं मन लागा।

—ह. पु. वां.

१६ जोश, उमंग।

१७ बल, शक्ति।

उ०—१ सत पराक्रम सूरमां, मत्र य हुआ उदमाद। रोस फुणिंदा रंढ भिया, हम्मीरां हठ वाद।—गु. रू. बं.

उ०—२ जा 'अगजीत' आंणीकै जो सत तेज लहै हम। पीठ पूठ ना फिरै, मेर माथै मंडै तम।—अ. वचनिका

उ०—३ पण साहरा पग घरां नै वहै नहीं साह रा सत खोळा होय गया। घरै आय सूतो पण नींद नहीं आवै।

—पलक दरियाव री बात

१८ परब्रह्म।

उ०—अतिसय अगाध, ईस्वर अराध, सत सिवर सध, अपवरग अध। मंतव्य मांन, गंतव्य ग्यांन, वेदक विधांन, धर देय ध्यांन।

—ऊ. का.

१९ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाली काल-गणना, संवत्।

उ०—ऊमर सत उगणीस मैं, वरस छतीसै वीच। फागण अथवा फरवरी, निरख्या सतगुरु नीच।—ऊ. का.

२० शौर्य, पराक्रम।

२१ वीरता, बहादुरी।

२२ ब्रह्म ।
२३ धर्मात्मा पुरुष ।
वि.—१ ठीक, सही, उचित, सच।
उ०—तद पातसाह जी हंस नै फुरमायौ—जौ तुम अरज करी सौ सत है पण तुम दोय सकस कूं दीन में लियै सै हमारा दीन क्या वडा होयगा।—द. दा.
२ सज्जन, साधु।
३ दृढ, मजबूत।
उ०—वहरी अमंख हित पंख बळ, गहै कुलंक असंक गत। 'सोनंग' 'दुरंग' अकबर सहित, सभौ एम धर नेम सत।—रा. रू.
४ विद्यमान, उपस्थित।
५ असली, सत्य।
६ प्रतिष्ठित, सम्माननीय।
७ मनोहर, सुन्दर।
८ श्रेष्ठ, उत्तम।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ वहै सौ महंत सही।
—ऊ. का.
९ अमिट, स्थायी।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही। सत पंथ वहै सौ महंत सही।
—ऊ. का.
१० विद्वान, पंडित।
११ बुद्धिमान, चतुर।
१२ धीर, धैर्यवान।
१३ अटल, स्थिर।
१४ पवित्र, निष्पाप।
उ०—कटि तक पांणी जा कूद पड़ी, ढळतै सूरज री किरण जोव। कर पदम लियां देवै अरपण, सत भावां री मूरत पिरोय।
—सकुंतला
[सं. शत्] १५ सौ।
उ०—सिंधु परइ सत जोअणै, खिवियां बीजळियांह। सुरहउ लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवड़ियांह।—ढो. मा.
[सं. सप्त] १६ सात, सप्त। (डिं. को.)
उ०—सत वार जरासंध आगळ स्रीरंग, बिमहा टीकम दीध वग। मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नांखै अळग।
—रांणा सांगा री गीत
१७ पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
उ०—मिटै दांन सनमांन, उरड़ रीझां आडंबर। मिटै लाड मांगणा, करम धरम सत क्यावर।—पहाड़खां आढो
१८ संख्या की दृष्टि से बड़ा, अधिक।
१९ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)
उ०—धमक धमचक मचे सोर गोळा घमक, वीर डक त्रंक वक तेण वेळा। साकुरां घमक सुरतांण तण सतां, सिर चमक आकास अक कहक चपळा।—अग्यात
२० देखो 'सत्य' (रू. भे.) (डिं. को.)
रू. भे.—सत्त।

सतअंगौ—सं. पु. [सं. शत+अंग:] १ रथ। (डिं. नां. मा.)
२ युद्ध का रथ।

सतअक्षी—सं. स्त्री. [सं. शताक्षी] १ देवी, दुर्गा।
२ रात्रि, रात।

सतक—सं. पु. [सं. शतक] १ सौ का समूह, शतक।
२ शताब्दी।
३ सौ श्लोकों का संग्रह।
वि.—सौ वाला।

सतकरम—स. पु. [सं. सत्कर्म] श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कार्य।

सतकरमी—वि. [सं. सत्कर्मिन्] श्रेष्ठ और पुण्य कर्म करने वाला।

सतकार—देखो 'सत्कार' (रू. भे.)
उ०—१ भाव सहित तुमनै वहरावसी असनादिक चार आहार हो। वस्त्र पात्र वंदना भाव सूं, करसी पूजा सतकार हो।
—जयवांणी
उ०—२ दिल्लीस भी राजा, नवाव रहिया तिकां नूं बुलावण रा फुरमांण दिया। अर बडा सतकार रै साथ बुलाइ सारा ही आगरै एकत्र किया।—वं. भा.

सतकारणौ, सतकारबौ—क्रि. स. [सं. सत्कारणम्] १ आदर करना।
उ०—तै सवि हरि सतकारिय धारिय जिम धूमंत। तांइ त्रोडिय कमलिनी रयलि नीसंक भ्रमंत।—जयसेखर सूरि
२ स्वीकार करना, मंजूर करना।
उ०—जद उवै कहै जी थारी वंदना म्हैं सतकारी थांनै वंदणा रो धरम होय चूकौ। कोई कहै जी कहिणी कठै चाल्यौ है।
—भि. द्र.
४ इज्जत करना।
उ०—पिता पितामह थी प्रगत, लिखि सलेम जयलाह। कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह।—वं. भा.

सतकाळी—देखो 'सातकाळी' (रू. भे.)

सतकुंभ—सं. पु. [सं. शत+कुम्भ] १ एक पर्वत विशेष जहाँ सोना पाया जाता है।
[सं. शतकुम्भम्] २ स्वर्ण, सोना।

सतकुंभा—सं. स्त्री. [सं. शतकुंभा] एक पुण्य नदी का नाम।

सतकेतु—स. पु. [सं. शतक्रतु] देवराज इन्द्र।
उ०—सुत बीस हुआ जिण रै प्रसिद्ध अनुजात गुणा सतकेतु इद्ध।
—वं. भा.

सतकेसर—सं. पु. [सं. शतकेसर] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

सतकोट, सतकोटि, सतकोटी—सं. पु. [सं. शतकोटिः] १ इन्द्र का वज्र। (अ. मा; नां. मा.)

उ०—गहा सतकोट करोट ग्रहान, थिमाग्त चेनत नेत बिहाल।
नहं मद तुटि पनी रणबोल, बिनोतन जथक कीह तंबोळ।
—मे. म.

सं. स्त्री.—२ सौ करोड़ की संख्या।

वि. [सं. शतकोटि] १ सौ धार वाला, जिसके सौ धार हों।

२ सौ करोड़।

सतक्रत—सं. पु. [सं. सत्कृतम्] १ श्रेष्ठ कार्य, उत्तम कार्य।

२ आदर, सत्कार।

[सं. शत+क्रतुः] ३ देवराज इन्द्र। (नां. मा.)

४ ध्वजा, पताका। (अ. मा.)

५ धर्म, पुण्य। (अ. मा.)

[सं. सत्कृतः] ६ शिव, महादेव।

वि. [सं. सत्कृत] १ सम्मान या आदर दिया हुआ।

२ स्वागत किया हुआ।

३ देखो 'सतक्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—सतक्रित।

सतक्रतसहल—सं. स्त्री.—ध्वजा, पताका।

सतक्रति, सतक्रती—सं. पु. [सं. सत+क्रत] १ ऋषि, मुनि। (अ. मा.)

२ यम, धर्मराज। (अ. मा.)

३ देखो 'सतक्रत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सतक्रतु—सं. पु. [सं. शतक्रतुः] सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाला, इन्द्र।

सतक्रित—देखो 'सतक्रत' (ह. नां. मा.)

सतक्रिया—सं. स्त्री. [सं.] १ पुण्य कार्य, धर्म का कार्य।

२ सम्मान करने की क्रिया।

३ नमस्कार, प्रणाम।

४ अन्त्येष्टि क्रिया।

५ प्रायश्चित का कार्य।

सतखंड—सं. पु. [सं. शतखंड] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

२ सोने की बनी हुई कोई वस्तु।

३ सौ खंड, टुकड़े।

उ०—एकि ना रण हुआं सतखंड चेलि वाही रहिया बलवंड। एकि ना रण लागा हथ आठा, तीह नां सिसु एकि नाठा।—सालिसूरि

सतखंडियो, सतखंडी—वि.—सात खण्डों या सात मंजिल वाला।

उ०—१ धारै वाई रो रोग है सौ सतखंडिया महिल थी पड्यां वाणी वाई सिरै।—भि. द्र.

उ०—२ सिदर रै मांयलो-मांय स्वामी मांद साथै श्रेक बेठी ई टापू। उण माथै सोना री सतखंडियौ महल। सूरज री किरणां री परस पाय जळ-हळ करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ तावड़ियां सोड़ी सौड़ी जाय सतखंडियै मैं'ल पूगी। कंव-रांणी नूं बधाई मांग्या बिना ई बधाई री बात सुणायदी।
—फुलवाड़ी

सतखणियो सतखणो—वि.—१ सतखंडा, सात खंडों या मंजिल वाला।

२ देखो 'सतखंडियो'

उ०—भोजन कर राजा नगर मांहे गयो छै। सो वेरै मांहे सत-खणिया रेवास छै। पन्ना मांणक जड़्या छै।—पंचदंडी री वारता

सं पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष, जिसके प्रारंभ में जांगड़ा (मतांतर से छोटा सांणोर) गीत के द्वाले होते हैं। इसके ऊपर आठ मात्राओं का पद होता है जिसके प्रारंभ में संबोधनवाची शब्द कहा जाता है। इस पद को दुहराया जाता है। इसके बाद नौ मात्राओं का पद और होता है।

रू. भे.—सातखणो।

सतगामि, सतगामी—सं. पु. [सं. शतगामिन्] जटायु के एक पुत्र का नाम।

सतगु वि. [सं. शत+गु] सौ गायें रखने वाला।

सतगुण—सं. पु. [सं. शतगुण] १ कश्यप व क्रोधा के पुत्रों में से एक।

२ देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

सतगुणौ—वि. [सं. शत+गुणित] (स्त्री. सतगुणी) १ सौगुना।

उ०—से इणां प्रीत कर जाच्या सू सतगुणी लक्ष्मी दीवी सू इणां रो नांम स्रीपरमेस्वर री वखत आवै।—द दा.

२ सातगुना।

सतगुर, सतगुरु—सं. पु. [सं. सत्+गुरु] १ सद्गुरु, श्रेष्ठ गुरु।

उ०—तौ सतगुर ताया अरथ न आया, गरथ ही व्यरथ गमंदा है। पीछै पिछताया ठीक ठगाया, भाया भूरि भमंदा है।
—ऊ. का.

२ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ हरीया जो सतगुर मिळै, जो चाहै सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्यां नहीं लेत।—अनुभववांणी

उ०—२ पराब्रह्म सतगुर प्रणम्य, पुन्य सब संत नमो। हरिरांमा सुर भवन मैं, या पद समो न को।—अनुभववांणी

सतग्रीव—सं. पु. [सं. शतग्रीव] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

सतघंटा—सं. स्त्री. [सं. शतघंटा] स्वामिकार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

सतघ्नी—सं. स्त्री. [सं. शतघ्नी] १ प्राचीन काल का एक शस्त्र विशेष।

२ गले में होने वाला रोग विशेष।

सतचंद्र—सं. पु. [सं. शतचंद्र] १ महाविष्णु का एक कवच।

१ भीमसेन द्वारा मारा गया एक कौरव-पक्षीय राजा, जो शकुनि का भाई था।

सतजित—सं. पु. [सं. शतजित] १ भरतवंशीय एक राजा जो विरज व विषूचि के सौ पुत्रों में से एक।

२ एक प्रकार का यज्ञ।

३ श्रीकृष्ण व जांबवती के एक पुत्र का नाम।

४ विष्णु का नामान्तर।

५ यदुवंशीय सहस्रजित के पुत्र का नाम।

६ आश्विन माह में सूर्य के साथ भ्रमणकर्त्ता एक यक्ष।

सतजिव्ह, सतजिव्हा, सतजिह, सतजिहा–सं. पु. [सं. सप्तजिह्वा] १ शिव, महादेव।

सं. स्त्री.—आग, अग्नि।

उ०—मिरा हेड़रा ग्रहि मत्थ हुत, करसरा सिंह कनमूळ। **सतजिह** सुलगरा सोरमें, भड़ तूं तळणी भूल।—रेवतसिंह भाटी

सतजुग–सं. पु. [सं. सत्ययुग] १ पौराणिक गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग जो १७२८००० वर्ष का माना गया है।

उ०—१ 'मुकनावत' कुळजुग नै मुकै, **सतजुग** तेथ गयौ ततसार। पूरब पंचम उदध न परसै, अनड़ परसियौ जको उदार।—बां. दा.

उ०—२ भूप कहै धनि धनि भाई, कलजुग मभ **सतजुग** अधिकाई।
—सू. प्र.

२ श्वेत, सफेद। (डि को.)

रू. भे.—सत्यजुग, सत्ययुग।

सत्यज्योति–सं. पु. [सं शतज्योति] शतज्योति के एक लाख पुत्रों में से एक।

सतजुगी–वि. [सं. सतयुगी] १ सत्य युगका, सत्ययुग सम्बन्धी।

२ सज्जन, भला।

उ०—निरधनियां धनवांन सरिसा, राखै मंदर बारणा। समता सार भाव **सतजुगी**, नीति न्याव है खारणा।—दसदेव

सतणधय–सं. पु. [सं. स्तनधय] दूध पीता बच्चा। (ह. नां. मा.)

सततत्री–सं पु. [सं शततंत्री] १ सौ तारों वाला वीणा।

२ कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ का नाम।

सतत–सं. पु. [सं.] कुशल क्षेम। (ह. नां. मा.)

वि. [सं.] सदा, सर्वदा, हमेशा, निरंतर।

उ०—पांन संकुलित डाळ, तावड़ौ किसांरा टाळै। बारै मासां **सतत**, जिनावर सरणौ भाळै।—दसदेव

२ सदैव, हमेशा।

उ०—करि उपचार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त संचय व्रप दीधौ, पौळि व्राति 'दुरसै' जिरा पाई, वढी **सतत** 'सुरतांण' वडाई।
—वं. भा.

सततगति–सं. स्त्री. [सं.] हवा, पवन।

सततरूप–सं. पु—स्वभाव, आदत। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सततज्वर–सं. पु. [सं.] लगातार बना रहने वाला ज्वर।

सततारका–सं. पु. [सं शत+तारका] सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र विशेष।

२ सोम की सत्ताईस पत्नियों में से एक।

सततौ–वि.—तेज, शीघ्रगामी।

सतदळ–सं. पु.—कमल। (डि. को.)

सतदला–सं. स्त्री. [सं. शत+दला] सफेद गुलाब। (डि. को.)

सतदुंदुभि–सं. पु. [सं. शतदुंदुभि] जंभासुर के पुत्रों में से एक।

सतदेव–सं. पु. [सं. सत्यदेव] सूर्य, सूरज।

सतद्युमन, सतद्युम्न–सं. पु. [सं. शतद्युम्न] जनकवंशीय भनुमान का पुत्र व शचि के पिता का नाम।

सतद्रंस्ट्र–सं. पु. [सं. शतद्रंष्ट्र] कश्यप एवं खशा के पुत्रों में से एक राक्षस।

सतद्रु–सं. स्त्री [सं. शतद्रु] १ सतलज नदी का नाम।

२ गंगा नदी का नाम।

सतधरम–सं. पु.—कर्तव्य परायणता, स्वामिभक्ति।

रू. भे.—सतध्रम।

सतधांमा–सं. पु. [सं. शतधामा] भगवान श्रीविष्णु का नाम।

सतधा–क्रि. वि. [सं. शतधा] १ सौ प्रकार से।

२ सौ हिस्सों में।

वि.—१ सौ गुना।

२ सौ तरह का।

सतधन्वा–सं. पु. [सं. शतधन्वा] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक योद्धा जिसने श्रीकृष्ण के श्वसुर सत्राजित् को मारा था।

२ एक प्राचीन ऋषि।

३ शैव्या नाम की स्त्री का पति, एक विष्णु भक्त राजा।

४ मौर्यवंशी राजा।

सतधार–सं. पु. [सं. शतधार] १ वज्र।

२ इन्द्र का वज्र।

वि.—सौ धारों वाला।

सतधारवन–सं. पु. [सं. शतधारवन] एक तीर्थ का नाम।

सतधारी–वि. [सं. सत्त्वधारी] १ वीर, बहादुर, शक्तिशाली।

उ०—तरै महेची कयौ—रांमदास वेरावत माहरै भाई छै, बडौ रजपूत छै, तिणनै चौरासी आखड़ी छै, उगणीस विरद छै, बडौ **सतधारी** रजपुत छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ **सतधारी** 'करनेस' का ऊवांणौ खग्गं, जूटौ वहतां गैमरां जनु केहर जग्गै।—लूणकरण कवियौ

२ उदार, दातार।

उ०—जस री गत अद्भुत जिका, **सतधारिया** सुहाय। नर जीवै नरलोक में, जस अमरापुर जाय।—बां. दा.

३ सत्य का पालन करने वाला, सत्य को धारण करने वाला।

उ०—पंचइंद्री कूं जीत न मांनत पाखंड साध मुनिंद बड़ा **सत-धारी**।—भि. द्र.

रू. भे.—सतिधारी।

४ [illegible] ।

५ सुशील, शीलवान, सच्चरित्र ।

उ०—सूरा सत सत्यागी हारे, यें तो मीनवंत सतवारी रै रांमैया रा राज में ।—ली. रा.

सं. पु. [सं. शतधार] वज्र ।

सतध्रत–सं. पु. [सं. शतधृति] १ इन्द्र । (डि. को.)

२ ब्रह्मा । (डि. को.)

३ जो सौ यज्ञ को धारण करे ।

४ ब्राह्मण ।

५ स्वर्ग, बैकुण्ठ ।

रू. भे.—सतध्रति, सतध्रती ।

सतध्रतसुत–सं. पु. यौ. [सं. शतधृति+सुत] १ नारद मुनि । (डि. को.)

२ जयंत ।

सतध्रति, सतध्रती—देखो 'सतध्रत' (रू. भे.)

सतधम—देखो 'सतधरम' (रू. भे.)

सतन–सं. पु. [सं. स्तन्य] १ दुग्ध, दूध । (अ. मा; ह. नां. मा.)

[सं. स्तन] २ कुच, स्तन । (अ. मा; ह. नां. मा.)

सतनहावण, सतनहावणौ–सं. पु.—माथुर कायस्थों में मृत्यु के पश्चात् सातवें दिन किया जाने वाला स्नान । (मा. म.)

सतनारायण—देखो 'सत्यनारायण' (रू. भे.)

सतनौ–सं. पु. [सं. स+स्तन्य] स्तन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, दूध । (ह. नां. मा.)

सतप–सं. पु. [सं.] १ गर्मी, उष्णता ।

२ तीक्ष्ण प्रकाश ।

उ०—'पूना' हरी सुवोदळ पलटै, दीपावै जांगळ वो देस । सुर-गिर मंदिर कार वध मावर, सूरज सतप भार भ्रम सेस ।

—कल्यांणमलोत री गीत

वि.—१ तापवाला, उष्णता वाला ।

२ प्रकाशमान, तेजपुंज ।

सतपण–सं. पु.—सतीत्व, सत्यव्रत ।

उ०—जो मैं मांहरी सतपण राख्यो पर ठाकुरां री बेटी गुवाळया नैं परणाई हूं ।—गांव रा धणी री वात

सतपत्र, सतपत्र–सं. पु. [सं. शतपत्र] १ कमल । (अ. मा; डि. को; ह नां. मा.)

उ०—मुख चांद सतपत्र वदन छवि, करत ध्यांन हिंगळाज दांन कवि । मैं सब पुत्र मात तू मेरी, त्राहि त्राहि सरनागत तेरी ।

—मे. म.

२ सेवती ।

३ मोर पक्षी ।

४ सारस पक्षी ।

५ तोता, ।

रू. भे.—सतपात ।

सतपत्रक–सं. पु. [सं. शतपत्रक] पुराणानुसार एक ग्रंथ का नाम ।

सतपत्रवन–सं. पु. [सं. शतपत्रवन] द्वारका के पश्चिम में सुकक्ष पर्वत के चारों ओर स्थित एक वन ।

सतपथ–सं. पु. [सं. सत्+पथ] १ अच्छा मार्ग ।

२ कर्तव्य पालन का मार्ग, सच्चाई का मार्ग ।

३ उत्तम सम्प्रदाय ।

सतपथब्राह्मण–सं. पु.—यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसके कर्त्ता याज्ञवल्क्य माने जाते हैं ।

सतपद–सं. पु [सं. शतपद] १ कनखजूरा ।

२ चिउंटी ।

सतपदचक्र–सं. पु. [सं. शतपद चक्र] सौ कोष्ठोंवाला एक प्रकार का चक्र । (ज्योतिष)

सतपदी—देखो 'सप्तपदी' (रू. भे)

सतपदम–सं. पु [सं. शत+पद्म] एक प्रकार का सफेद कमल विशेष ।

सतपरब–सं. पु [सं. शतपर्वन्] बांस । (अ. मा; ह. नां. मा)

रू. भे.—सतपरव, सतपरवा ।

सतपरबीका–सं. स्त्री. [सं. शतपरविका] दूब, दूर्वा । (डि. को.)

सतपरव, सतपरवा —१ गन्ना ।

२ दूब । ३ आश्विन मास की पूर्णिमा ।

४ शुक्राचार्य की एक पत्नी का नाम ।

५ देखो 'सतपरब' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

सतपात—देखो 'सतपात्र' (रू. भे.)

सतपुड़ौ–सं. पु.—१ एक पर्वत का नाम ।

२ हथेली या तलुवे में होने वाला एक फोड़ा विशेष ।

३ वृक्षों में रस विकार के फलस्वरूप निकलने वाला कोमल पुष्प जैसा एक पदार्थ विशेष । (क्षेत्रीय)

उ०—ग्रमल सुपारी सतपड़ां रस, ग्रमर गोळियां ग्रेवड़ा । खेजड़ां री खपत हुया है, वीर सती ग्रर स्रोंवड़ा ।—दसदेव

४ एक प्रकार का व्यंजन । (रा. सा. सं.)

सतपुठौ–सं. पु.—छकड़े के नीचे लगे मोटी लकड़ी का मजबूत डंडा ।

सतपुतर, सतपुत्र–सं. पु. [सं. सतपुत्र] सपूत, सुपात्र बेटा ।

सतपुरस–सं. पु. [सं. सत्पुरुष] १ सज्जन व्यक्ति ।

२ धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति ।

३ महान्, श्रेष्ठ ।

उ०—सतपुरसां की साख सुनि, सीखत ग्यांनी होय । हरीया गुर का सबद बिन, ग्यांनी भया न कोय ।—अनुभववांणी

४ सुशील व्यक्ति ।

रू. भे.—सतपुरुस, सत्पुरस, सत्पुरुस ।

सतपुरी–सं. स्त्री.—पति के साथ सती होने वाली स्त्रियों को प्राप्त होने

वाला लोक।

उ०—सुरलोक सतपुरी ध्रता धांमिका धरां ध्रति। इंद्रपुरी सुख अधिक, उमा उमला विमला रति।—सू. प्र.

सतपुरुस—देखो 'सतपुरस' (रू. भे.)

सतपोतक–सं. पु.—भगंदर रोग का एक भेद विशेष। (अमरत)

सतफेरा—देखो 'सप्तपदी' (रू. भे.)

सतवळ, सतबलि, सतबळी–सं. पु. [सं. शतबलि] राम की सेना का एक बंदर। (रामकथा)

उ०—जांमवंत क्रुध भल जलहळी, सुक्खेण मयदंह सतबळी।

—सू. प्र.

वि.—सात जगह से मुड़ी हुई, बल खाई हुवी।

सतवाह, सतबाहु–सं. पु. [सं. शतबाहु] एक असुर का नाम।

सतभइयौ–सं. पु.—जिसके सात भाई हों।

सतभांम, सतभांमा–सं. स्त्री. [सं. सत्यभामा] कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।

उ०—राधा रुकमण अर सतभांमा, पगल्या चांपै जी हर मिंदर में।

—लो. गी.

रू. भे.—सत्यभांमा।

सतभाव–सं. पु. [सं. सद्भाव] १ सद्विचार, अच्छे विचार।

उ०—सांई सूं सांचा रहौ, बंदा सूं सतभाव। भावै लांबा केस रख, भावै घोट मुंडाव।—अग्यात

२ विद्यमानता।

३ अच्छा भाव।

सतभिख, सतभिखा, सतभिस, सतभिसा, सतभीखा–सं. स्त्री. [सं. शतभिषा] सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र।

(अ. मा; नां. मा.)

सतभूमियौ, सतभोमियौ–सं. पु.—सात मंजिल का।

उ०—१ इण भांत देखतां देखतां राज भूवन में गया। तठै सतभूमियै अवासै चढीया।—रीसाळू री बात

उ०—२ नगर मैं गांछी रा घरां कन्है आयौ, ऊंचा महल दीठा सतभूमिया अवास छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—३ रात आधी रा पातसाह पिण सतभोमिया हेटै आयौ। हिरण पातसाहनै देख नै छिप बेठौ नै पातसाह जोवै छै।

—रीसाळू री बात

सतमंजली–सं. स्त्री.—देखो 'सतमंजलौ' (अल्पा; रू. भे.)

सतमंजलौ–सं. पु. [सं. शत+अ. मंजिल] सात मंजिल का, सात खण्डों का। (भवन)

उ०—गळी हडवळी, गडां, गुड़कै, वैर भाव सो वीसरै। खांण छोड सतमंजलां सजै, कांण धड़े में नीसरै।—दसदेव

अल्पा;—सतमंजली।

सतम–सं. पु. [फा. सितम] गजब, अनर्थ।

सतमख–सं. पु. [सं. शतमख] १ वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हों।

२ देवराज, इन्द्र।

३ उल्लू।

४ कौशिक।

सतमत–सं. पु.—सती होने का भाव।

उ०—सती सतमत साहिकै, जळी मड़ै कै साथि। हरीया मन मूवा बिनां, कछु न आवै हाथि।—अनुभववांणी

सतमन, सतमनू सतमन्यु–सं. पु. [सं. शतमन्यु] १ इन्द्र।

(नां. मा, ना. डिं. को.)

२ उल्लू।

सतमयुख–सं. पु. [सं. शतमयूख] चंद्रमा, चाँद।

सतमाय–सं. स्त्री.—सोतेली माँ।

सतमा'यौ, सतमासियौ, सतमाहियौ–सं. पु.—वह नवजाव शिशु जो गर्भधारण के नौ मास की बजाय सात मास बाद ही जन्मा हो।

सतमिण–सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी।

उ०—सांई सूं दिल दूसरा, सो सतमिण सी नारि। हरीया उर इकतार विन, वांकु ठाकुर मारि।—अनुभववांणी

२ व्यभिचारिणी, बदचलन स्त्री।

सतमुख–वि. [सं. शत्+मुख] १ सौ मुखों वाला।

२ सौ द्वारों वाला।

सं. पु.—एक असुर का नाम।

सतमेव—निश्चय ही, जरूर ही।

उ०—सरै छै कांम तियां सतमेव, दीयै सुख वंछित रिखभदेव।

—ध. व. ग्रं.

सतयुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सतरंग–सं. पु. [सं. सप्तरंग] आकाश, गगन। (ना. डिं. को.)

वि.—जिसमें सात रंग हो।

सतरंगी–सं. स्त्री. [सं. श्वेतरंगी] यश, कीर्ति।

वि.—सात रंगों वाला, सप्तरंगी।

उ०—भेळी अबकै वीज पुरदर री परी, सतरंगी पोसाक जगमग है जरी।—लो. गी.

उ०—२ हवेली सूं कड़ाजूड होय नै आया ई हा। कड़प दियोड़ी सतरंगी मोळियौ। लांबौ छिणगौ।—फुलवाड़ी

सतरंज–सं. स्त्री. [फा. शत्रंज] प्रसिद्ध भारतीय खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है, चतुरंग।

उ०—नांनेरै सगळाई उण री लाड राखता। कवड्डी, फुरणी, खत्ता दड़ी, सोळै सारी, सतरंज, चौपड़-पासा रौ बाजिदौ खिलाड़ी। तिरणा में ई साईनां-साथियां नै लारै राखतौ।—फुलवाड़ी

वि. वि.-इस खेल के उत्पत्ति स्थान को लेकर विद्वानों में विभिन्न मत हैं। कोई इसे चीन देश से निकला हुआ बतलाते हैं कोई मिश्र देश से और कुछ के मतानुसार यह यूनान की देन है। परन्तु

अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि शतरंज का प्रारम्भ सर्व प्रथम भारत में ही हुआ तथा इसकी उत्पत्ति स्थान भारत को स्वीकार करते हैं। यहीं से यह खेल फारस गया, फारस से अरब और अरब से यह खेल यूरोपीय देशों में पहुँचा। फारसी में इसे शत्रंज कहते हैं पर अरबवासी इसे शातरंज, शतरंज आदि नामों से पुकारने लगे। फारस में ऐसा प्रवाद है कि यह नौशेरवाँ के समय में हिन्दुस्तान से फारस को गया और इसका निकालने वाला दाहिर का बेटा कोई सस्सा नामक व्यक्ति था। ये दोनों नाम किसी भारतीय नाम के अपभ्रंश हैं। इसके आविष्कार का कारण फारसी पुस्तकों में यह लिखा है कि भारत का कोई युद्ध प्रिय सम्राट नौशेरवाँ का समकालीन था वह किसी रोग से अशक्त हो गया था उसके मन बहलाव के लिए मनोरंजनार्थ सस्सा नामक व्यक्ति ने चतुरंग नामक खेल का आविष्कार किया। यह प्रवाद भारतीय प्रवादों से मिलता जुलता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह खेल मंदोदरी ने अपने पति को बहुत युद्धरत देखकर निकाला। इस प्रकार यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि भारत में इस खेल का प्रचार नौशेरवाँ से बहुत पहले हो चुका था।

चतुरंग के सम्बन्ध में विभिन्न अर्थ मिलते हैं। चतुरंग पर संस्कृत में अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमें चतुरंग केरली, चतुरंग क्रीड़न, चतुरंग प्रकाश और चतुरंग विनोद मुख्य हैं। करीब सात सौ वर्ष हुए त्रिमल्लाचार्य नामक एक दक्षिणी विद्वान इस खेल में बड़ा निपुण एवं दक्ष था। उसके अनेक उपदेश इस क्रीड़ा के सम्बन्ध में हैं। इस खेल में चार रंगों का व्यवहार होता था। हाथी, घोड़ा, नौका और बट्टे (पैदल)। छठी शताब्दी में जब यह खेल फारस में पहुँचा और वहां से अरब गया तब से ऊंट और वजीर आदि बढ गये हैं। तथा खेल पद्धति में भी काफी फेर बदल हुआ है। 'तिथि तत्त्व' नामक ग्रन्थ में वेदव्यास ने युधिष्ठिर को इस खेल का जो परिचयात्मक विवरण दिया वह इस प्रकार है—चार व्यक्ति मिल कर यह खेल खेलते थे। इसका चित्रपट (बिसात) ६४ घरों का होता था जिसके चारों तरफ खेलने वाले बैठते थे। पूर्व और पश्चिम में बैठने वाले एक दल में तथा उत्तर-दक्षिण में बैठने वाले दूसरे दल में होते थे। प्रत्येक खिलाड़ी के पास एक राजा, एक हाथी, एक घोड़ा, एक नौका और एक बट्टे या पैदल होते थे। पूर्व की ओर की गोटियाँ लाल, पश्चिम की पीली, दक्षिण की हरी, उत्तर की काली होती थी। खेल पद्धति प्रायः आजकल जैसी ही थी। राजा चारों तरफ एक घर चल सकता था। बट्टा या पैदल यों तो एक घर सीधे चल सकता था पर दूसरी गोट मारने पर एक घर आगे तिरछे भी जा सकते थे। हाथी चारों ओर (तिरछे नहीं) चल सकते थे। घोड़ा तीन घर तिरछे जा सकता था। नौका दो घर तिरछे जा सकती थी। मोहरें आदि बनाने का काम वैसा ही था जैसा आजकल है। हार जीत कई प्रकार की होती थी जैसे—सिंहासन चतुराजी, अपाकस्त, षटपद, अशाक आदि।

सतरंजबाज–सं. पु. [फा. शत्रंजबाज] शतरंज का खिलाड़ी।
२ शतरंज का शौकीन।
३ शतरंज का अच्छा खिलाड़ी।

सतरंजबाजी–स. पु. [फा. शत्रंज+बाज+ई] शतरंज का खेल खेलने का कार्य या व्यसन।

सतरंजी–सं. स्त्री.—१ विभिन्न रंगों से बुनी बिछाने की दरी।
२ शतरंज खेलने की बिसात।

सतर–सं. स्त्री. [अ. सत्र] १ पंक्ति, कतार।
२ रेखा, लकीर।
३ देखो 'सतरन' (रू. भे.)
४ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)
उ०—'जेतहर' आभरण सतर घड़, जीपणां, वरै कुण घणां दिवराय वाजा।—दुरसो आढो
५ देखो 'सतरै' (रू. भे.)
उ०—१ भाव भलै भगवंत री, पूजा सतर प्रकार। परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ बार भेद तप तपइ गति पांमइ जी, संजम सतर प्रकार देवगति पांमइ जी।—स. कु.
६ देखो 'सितर' (रू. भे.)

सतरक–वि. [सं. सतर्क] १ सावधान, सचेत।
२ तर्कशील।

सतरकता–सं. स्त्री. [सं. सतर्कता] सावधानी, होशियारी।

सतरथ–सं. पु. [सं. शतरथ] यम की सभा में रहकर यम की उपासना करने वाला एक राजा।

सतरदा—देखो 'सतद्द्रा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतरन–सं. पु.—गुजरात प्रदेश का एक नाम।
उ०—दुजड़ चूर दुरवेस, देस अपणावै सतरन। रथी सेस अवनेस, बंधु 'बखतेस' सगोतर।—रा. रू.
रू. भे.—सतर, सतरि।

सतरमाळियौ–सं. पु.—आकस्मिक मृत्यु अथवा युद्ध में वीरगति प्राप्त व्यक्ति का श्राद्ध जो आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है।

सतरमौं–सं. स्त्री.—१ प्रायः साधुओं में प्रचलित किसी की मृत्यु के उद्देश्य से सत्रहवें दिन किया जाने वाला एक संस्कार विशेष। (रामस्नेही)
२ इस संस्कार के अवसर पर किया जाने वाला भोज।
रू. भे.—सतरवौं।

सतरमौं–वि.—जो क्रम से सोलह के बाद हो।
रू. भे.—सतरवौं, सत्तरमौं।

सतरवौं—देखो 'सतरमौं' (रू. भे.)

सतरवौं - देखो 'सतरमौं' (रू. भे.)

सतरांम-सं. पु.—१ शव को श्मशान भूमि में ले जाते समय की जाने वाली ध्वनि।

२ दादू मतावलंबियों द्वारा परस्पर मिलने पर किया जाने वाला अभिवादन।

उ०—छूटौ नीर चखां सतरांम ऊचरंता छेला, सरूपदास री छाती उभेला समंद। जांमी आज म्हांनै छोड अकेला कठीनै जावौ, कोयलां विरंगा हेला दें रही कमंध।—महात्मा सरूपदास

सतरात्र, सत्ररात्रि-सं. पु. [सं. शतरात्रि] एक प्रकार का यज्ञ विशेष, जो सौ रातों में पूरा होता है।

सतरि—१ देखो 'सित्तर' (रू. भे.)

उ०—सतरि खांन बहुत्तर उमराव हजूर तेड़ लिया।—रा. रू.

२ देखो सतरन' (रू. भे.)

उ०—१ नरइंद 'अभौ' नवकोट नाथ सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नगर खाटण अनूप, रसवीर प्रगट घट विकट रूप। —रा. रू.

उ०—२ महि लियण सतरि अरिमळण मांण, सज्जै पयांण गज्जै निसांण।—रा. रू.

सतरिदा—देखो 'सतह्रदा' (रू. भे.)

सतरुद्र-सं. पु. [सं. शतरुद्र] १ एक तपस्वी मुनि जो इच्छित रूप ले सकते थे। (रामकथा)

२ सौ मुंह वाला रुद्र का एक रूप।

३ एक शक्ति।

४ वेद का शतरुद्रिय प्रकरण जिसमें रुद्रदेव के १०० नामों का उल्लेख है।

सतरुघ्न—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

सतरूप-सं. पु. [स. शतरूप] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

२ शिवावतार का एक शिष्य।

सतरूपा-सं. स्त्री. [सं. शतरूपा] ब्रह्मा की मानस कन्या तथा स्वायंभुव मनु की पत्नी का नाम।

उ०—संभूमन व्रप दसरथ्थ समथ्थी, कोसळया सतरूपा कथ्थी। —र. ज. प्र.

वि. वि.—मतान्तर से ब्रह्मा से ही इसे स्वायंभुवमनु आदि सात पुत्र उत्पन्न हुए थे।

रू. भे.—सत्रूपा।

सतरे'क-वि.—सत्रह के लगभग, सत्रह के करीब।

रू. भे.—सत्तरे'क।

सतरै-वि. [सं. सप्तदशन् प्रा. सत्तरस अप. सत्तरह] सोलह और एक का योग, सत्रह।

सं. पु.—सतरह की संख्या या अंक।

रू. भे.—सतर, सत्तर, सत्रह।

सतरौ-सं. पु —सत्रह की संख्या का वर्ष या साल।

उ०—१ पांचौ आठौ दस पनरौ खूपड़िया, सतरै बीसे हय खतरै में पड़िया।—ऊ. का.

उ०—२ खळ इतरा पड़िया खगं, रिण नाड्ल तरस्स। सैंतीसे सतरै संमत, आसु सुद चवदस्स।—रा. रू.

रू. भे.—सतरौ।

सतलड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का सात लड़ों का आभूषण विशेष।

सतलड़ो-वि. (स्त्री. सतलड़ी) १ सात तह का, सात परत का।

२ सात लड़ों का।

सं. पु.—एक प्रकार का हार।

सतळज, सतळज्ज-सं. स्त्री.—पंजाब की पाँच नदियों में से एक।

उ०—देवी कावेरी तापी क्रस्ना कपीला। देवी सोण सतळज्ज भीमा सुसीला।—देवि.

सतलस, सतलस्स-सं. पु.—एक हिंसक जानवर।

उ०—जरख रींछ वड्डाख, सिवा सतलस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु. रू. वं.

सतलुंदी-सं. स्त्री.—सतलज नदी का एक नाम। (द. दा.)

सतलोक—१ देखो 'सतीलोक' (रू. भे.)

उ०—१ मुह लखि सीस तजेवा सुर-मुख, सती हुवै सतलोक लहां सुख।—सू. प्र.

उ०—२ पातरां पांच नाजर उभै, भल वाइ मीतभाइयौ। सिघवत पुरस 'अजन' सतीयां सहत, यूं सतलोक सीधाइयौ।—रा. वं. वि.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइसारौ परलोक में, सुख विलसण सतलोक, जांन सहीता जावस्यां।—रांमनाथ कवियौ

२ देखो 'सत्यलोक' (रू. भे.)

उ०—चढ विमांण चलाविया, संकौ कमधज सिरदारै। सुरलोक सतलोक, जाइ 'अमरेस' जुहारै।—सू. प्र.

सतलोचण, सतलोचन-सं. पु. [सं. शतलोचन] १ स्कन्द का एक सैनिक अनुचर।

२ एक असुर। (पुराण)

सतवंती-वि. स्त्री.—पतिव्रता, सतीत्व वाली।

उ०—१ कह्यौ—भूवाजी आप जेड़ी सीता सतवंती तौ दुनियां थपियां पछै ई नीं जलमी व्हैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ कै तौ जीवावै सीता सतवंती, कै'स जीवावै हड़मांन जती।—लो. गी.

उ०—३ पणवंती पारणी सीळवंती सतवंती, अति मुगती हालियौ, कियां साथै कुळवंती।—रा. रू.

उ०—४ सौ आपरी सतवंती लुगाई री आदेस मांन वांमण बेटियां रै सगपण सारू आपरी टपरी अर गांव छोड वहीर व्हियौ। —फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—जानकी, सीता। (डिं. को.)

सतवल्स-सं. पु. [सं. शतवल्श] एक वटवृक्ष जो कुमुद पर्वत पर स्थित है।

वि. वि.—इसकी सौ शाखाएं हैं जिनसे दूध, दही, शहद, गुड़, घी, अन्न आदि पदार्थों की नदियां, वस्त्र, शय्या, आसन, आभूषण आदि कुमुद पर्वत पर गिरते हैं, जो उक्त पर्वत के उत्तर में स्थित उत्तरकुरु प्राणियों के लिए लाभदायक है। (पुराण)

सतवन—देखो 'स्तवन' (रू. भे.) (डिं. को.)

सतवर—देखो 'सत्वर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सतवाड़ो-सं. पु. [सं. सप्त=पाटक] १ सप्ताह।

उ०—दोसती-दिलदारी मोटी चीज, कितो ही तुलावो चावै मंडी सूं माल मारवाड़ी मन सतवाड़ै हरियो हुयग्यो।—दसदोख

२ प्रसव के सातवें दिन प्रसूता स्त्री को विधिवत करवाया जाने वाला स्नान, सतोला।

क्रि. प्र.—पूजणो।

सतवादी-वि.—सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।

सं. पु.—युधिष्ठिर। (अ. मा.)

सतवादि, सतवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—१ धमसांनय जुद्ध भीमेण इसा, सतवादि जुधिस्टर द्रोण जिसा।—रा. रू.

उ०—२ राव चीकोजी वडो राज बांधियो अर वडी जमीयत रा धणी हुवा नै वडा तपस्वी हुआ। वडा दातार, वडा तरवारिया हुवा। वडा सतवादी सिरदार हुवा।—द. दा.

उ०—३ सतवादी हरिचंद सा राजा, नीच घर नीर भरै। पांच पांडू अर कुंती, द्रोपदी, हाड हिमाळै गरै।—लो. गी.

सतवार—देखो 'सत्वर' (रू. भे.)

उ०—डिकरी भाता लै भतवारां वाली, चंगी चोधरण्यां सतवारां चाली।—ऊ. का.

सतवाळ-सं. स्त्री.—चौहान वंश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सतवी-सं. स्त्री.—सूंठ। (अ. मा.)

सतवेध-सं. पु. [सं. शतवेधिन्] १ अमलवेंत।

२ चूका या चुक्रि नामक सब्जी।

सतव्रत—देखो 'सत्यव्रत' (रू. भे.)

उ०—१ अनहृदिया जांहू जाइयै, जा घरि सतव्रत होय। अधरम धरती धंगनै, हरिजन जाय न कोय।—अनुभववांणी

उ०—२ त्रिघनासुत त्रिख्यातण तपीस, सतव्रत हुवौ जिणसूं अधीस।—सू. प्र.

सतसंग, सतसंगत, सतसंगति—देखो 'सत्संग' (रू. भे.)

उ०—१ सूरां घटै नह सामतर, सेवै नह सतसंग। सुखदायक जिम सारखै, वर संतोस प्रसंग।—बां. दा.

उ०—२ गाजनै यै सतसंग्यां नै रांमायण री कथा सुणाती। चोता-चोता पद गाती। गळी-में चोखी सतसंग हुवण लागगी।
—वरसगांठ

उ०—३ कनक दांन कुरखेत, विरधि गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सतसंग, ग्यांन गुर वांणि उजागर।—रा. रू.

उ०—४ सफल जिनांदा जीवीया सदा साध सुं संग। हरीया सतसंगति बिनां, करि करि मूवा कुसंग।—अनुभववांणी

सतसंगी—देखो 'सत्संगी' (रू. भे.)

सतसंध-वि. [सं. सत्यसंध] सत्यप्रतिज्ञ, अपने वचन को पूरा करने वाला।

सं. पु.—१ रामचंद्र।

२ जनमेजय।

३ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

सतसई-स. स्त्री. [सं. सप्तशती] वह ग्रंन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों।

सतसठ-वि.—सात और साठ का योग।

रू. भे.—सड़सठ।

सतसठमों, सतसठवों-वि.—जो क्रम में छासठ के बाद हो।

रू. भे.—सड़सठमों, सड़सठवों।

सतसठेक-वि.—सड़सठ के लगभग।

सतसठो-सं. पु.—सड़सठ की सख्या का वर्ष।

उ०—सावण आगम सतसठै, आयो पुर 'अगजीत'। मुरधर थया वधामणा, सत्रहर थया सभीत।—रा. रू.

सतसत, सतसत्त-सं. पु. [सं. शतसत (तंतु)] इन्द्र।

उ०—ज्यौं जंभासुर जंग पै सतसत्त सुहाया। कै द्रोणाचळ लैनै को कविराज कहाया।—वं. भा.

सतसहस्त्र-सं. पु. [सं. शतसहस्त्र] कुरुक्षेत्र के एक पुण्य स्थान का नाम।

सतसाद-सं. [शतसाद] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक, दानव।

सतसीरस, सतसीरसा-सं. पु. [सं. शतशीर्ष, शतशीर्षा] १ मंत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

सं. स्त्री.—३ नागराज वासु की पत्नी।

सतस्रंग-सं. पु. [स. शतश्रृंग] १ पाण्डुओं का जन्मस्थान एक पर्वत।

२ पाण्डु को शाप देने वाला एक मुनि।

३ एक राक्षस का नाम।

सतह-सं. स्त्री. [फा.] किसी वस्तु का ऊपरी भाग, तल।

सतहत्तर—देखो 'सितहत्तर' (रू. भे)

सतहय-सं. पु. [सं. शतहय] तामसमनु के पुत्रों में से एक।

सतहर-सं. पु. [सं. शत्रु+हर] शत्रु का वंशज।

उ०—भारथ भीम भुजाळ, भयंकर इन भड़ां। सतहर सारि संघारि, उपाड़ण अभड़ां।—महाराजा करणसिंघ री गीत

सतहीण, सतहीणो-वि.—दुर्बल, कमजोर।

उ०—किण सरणें जाऊं रे, दीन भाख सुणाउं रे। सत हीण न थाउं मन कीज्यै खरौ रे।—प. च. चौ.

सतह्लद-सं. पु. [सं. शतह्लद] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

२ कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक।

सतह्लदा-सं. स्त्री. [सं. शतह्लदा] १ विराध नामक राक्षस की माता व जय की पत्नी का नाम।

२ दक्ष की एक कन्या जो बाहुपुत्र को व्याही थी।

३ बिजली, विद्युत।

सं. पु.—४ इन्द्र का वज्र।

रू. भे.—सतरदा।

सतांगत, सतांगति, सतांगती-सं. स्त्री. [सं. सतांगति] सत्पुरुषों को प्राप्य स्थान, मोक्ष।

सतांणमौं, सतांणवौं-सं. पु.—सन्तानवें की संख्या का वर्ष।

वि.—जो क्रम में छियानवें के बाद पड़ता है।

रू. भे.—सतांणूमौं, सतांणूवौं, सितांणमौं, सितांणवौं।

सतांणू-वि.—नब्बे और सात का योग।

रू. भे.—सितांणू।

सतांणूक-वि.—सत्तानवें के लगभग।

सतांणूमौं, सतांणूवौं-वि.—देखो 'सतांणमौ' (रू. भे.)

सतांम—देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—तौ वेग लिखि फुरमांण लेड़ौ, सूर जोध सकाज। करि त्रिण सलांम सतांम कहियौ जो हुकम महाराज।—सू. प्र.

सतांस-सं. पु. [सं. शतांश] सौवां हिस्सा।

सता-सं. पु.—१ सत्य।

२ कला।

३ भक्ति।

४ चमत्कारपूर्ण कृत्य, सिद्धि।

उ०—करामात री वात साखात कैई। सता मातरी चंद्र कूपादि सैई।—मे. म.

५ प्रकृति।

६ माया, लीला।

७ अस्तित्व।

उ०—१ ज्यूं नभ माथे रवी अरु रजनी, आवै अरु जावेरी। सम प्रकास दोनूं दिखलावै, यूं सम सता रहैरी।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—२ ज्यूं दरपण के अंतर, वाहिर मुखा भास विचारी। अंतर सूक्ष्म बाहिर स्थूला, ता मध सता हमारी।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

८ वास्तविक अस्तित्व।

९ संयोग, इत्तफाक।

उ०—जे सता थांरी कैणौ मांन जातौ तौ तिजोरी रै मूंडागै दोनूं चोरां री ढिगली कीकर व्हैती।—फुलवाड़ी

१० बल, शक्ति।

११ भगवान् श्रीविष्णु।

१२ देखो 'सत्ता' (रू. भे.)

सताईस-वि. [सं. सप्तविंशति, प्रा. सत्तवीस, अप. सत्तावीस] बीस और सात का योग।

रू. भे.—सतावीस, सत्ताईस।

सताईसमौं, सताईसवौं-वि.—जो क्रम में छाईस के बाद आता हो।

रू. भे.—सत्ताईसमौं, सत्ताईसवौं।

सताईसे'क-वि.—सत्ताईस के लगभग।

रू भे.—सत्ताईसैक।

सताईसौ-सं. पु.—सताईस की संख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सताईसौ।

२ दो हजार सातसौ की संख्या, २७००।

सताउर, सताउरी—देखो 'सतावर' (रू. भे.)

उ०—संखाहूली सताउरी, स्वस्तिवेलि नइं सोम। साथरि सारस सींगडौ, पूरीसह परि रोम।—मा. कां. प्र.

सताक्ष-सं. पु. [सं. शताक्ष] एक दानव। (पुराण)

सताक्षी-सं. स्त्री. [सं. शत+अक्षी] १ रात, रात्रि।

२ सौंफ।

३ दुर्गा देवी।

४ पार्वती।

सताड़णौ, सताड़बौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—थरकै कोट सहत पुर थांणा, भार सताड़ै पड़ै भगांणा।

—रा. रू.

सताड़णहार, हारौ (हारी), सताड़णियौ—वि०।

सताड़िओड़ौ, सताड़ियोड़ौ, सताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सताड़ीजणौ, सताड़ीजबौ—कर्म वा०।

सताड़ियोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सताड़ियोड़ी)

सताजोग—इत्तफाक।

उ०—१ सताजोग री बात के आपरी बोरगत उगावण सारू बांमण री बेटौ उणीज गांव में आयोड़ौ हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सताजोग री बात के उणी इज खेजड़ी में अेक भूत रौ वासौ।—फुलवाड़ी

सताणौ, सताबौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—गुळवाड़ गोहूं जव चिणांरी, जुवार री चरणहार छै। मयमत छै सू चर चर फरणियां आया छै। माछुरां रा सताया।

—रा. सा. सं.

सताणहार, हारौ (हारी), सताणियौ—वि०।

सतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सतानंदजी, सतानंदयो — अल्पा०।

सतानंद-सं. पु. [सं. शतानंद] १ ब्रह्मा। (डि. को.)

२ विष्णु।

३ कृष्ण का नाम।

४ जनक के पुरोहित का नाम जो गौतम के पुत्र थे।

५ विष्णु के रथ का नाम।

६ गौतम ऋषि।

७ सावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

रू. भे.—सतानंद।

सतानंदा-सं. स्त्री. [सं. शतानंदा] १ एक पौराणिक नदी का नाम।

२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

सतानन-सं. पु. [सं. शतानन] शिव का एक नाम।

सतानना-सं. स्त्री. [सं.] एक देवी का नाम।

सतानीक-सं. पु. [सं.] १ द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का पुत्र जिसे अश्वत्थामा ने मारा था।

२ चन्द्रवंशीय वृहद्रथ के पुत्र व दुर्मद के पिता का नाम।

३ एक असुर का नाम।

४ कुरुवंशीय राजर्षि का नाम।

५ राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय का पुत्र।

६ सुदास राजा के पुत्र का नाम।

७ मत्स्यनरेश विराट का भाई एवं सेनापति।

[सं. शतानीक] ८ बुड्ढा व्यक्ति।

९ ब्रह्मसावर्णि के मनु के पुत्रों में से एक।

सताब, सताबी—१ देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—१ आप सताब सवार हुइजै। तमासो तो देखो है काहू भांतई सेन सताब देखां।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ यम जेम लियो इण विध प्रियोग, भेजो सताब गुरमांण भोग।—सू. प्र.

उ०—३ भक्ति बाळक मिरपोस, नांम किताब लिखावां। साह खान दळ सबळ, मन्है भेजंत सताबां।—सू. प्र.

उ०—४ दुजन सताबी देख्या निमक धीर घर नाय। कंवरी ज दुलाल त्यार कर, मेलो चंवरयां मांय।—बख्तावर मोतीसर

उ०—५ हाथी तुरंग सबै लै हाली, साह हिजूर सताबी चाली।

—रा. रू.

उ०—६ दूत सताबी दौड़िया, लियां वधाई हाथ। सुणियो सुर बंदै जिसो, सुरधर हंदै साथ।—रा. रू.

उ०—७ पान गुरोजी मड़ा रहिया कहियो - सताबी करो पाघ देखी वांधो।—सूरे खींवै कांधलोत री वात

उ०—८ असि धावक आविया, सत्र सांजिया सताबी। मांगां मढ़िया मुक, दूत कढ़िया हद फाबी।—मे. म.

सताब्द-सं. पु.—शताब्दी, सौ वर्ष।

वि. [सं. शताब्द] सौ वर्ष का।

सताब्दी-सं. स्त्री. [सं. शताब्दी] सौ साल की अवधि की सूचक संज्ञा।

उ०—अठारवीं सताब्दी री बात। सियाळा री मौसम। प्रभात री वेळा।—अमर चूंनड़ी

सताभिधान-वि. [सं. शतावधान] सौ बातों को एक साथ याद रखकर ज्यों का त्यों वापिस उत्तर देकर बताने वाला, यथार्थ उत्तर देने वाला।

उ०—सुधा समाज ताज सैं बुधा विराजतै नहीं। सताभिधांन साद्य कै मुकाब्य साजतै नहीं।—ऊ. का.

रू. भे.—सतावधांन।

सतायु, सतायुस-वि. [सं. शतायुस्] सौ वर्ष का।

उ०—दफ्तर सब दहयूं दसो, कियो सतायु सिताब। आगो पाछो वगाक इक, जमपुर सूं कर जाब।—बां. दा.

सं. पु—१ पुरुरवा व उर्वशी के पुत्रों में से एक।

२ बुध व इला के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

सतायोड़ो—देखो 'संतापियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सतायोड़ी)

सतार-सं. पु. [सं.] १ ग्यारहवां स्वर्ग। (जैन)

२ देखो 'सितार' (रू. भे.)

सतारथ-वि. [सं. सत्यार्थ] १ सत्य, यथार्थ।

उ०—अकुटबंध तिण गीत नै, कहै सरब कवियांण। राघव जस जिण मझ रटै, वळै सतारथ वांण।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सत्यारथ' (रू. भे.)

सतारा, सुतारा-सं. पु. (ब. व.) सात सितारे जो उत्तर दिशा में उदय होते हैं, सप्तऋषि।

पहेली—सात सतारा नवलख तारा, इण धरती में दो विणजारा।

सतारो-सं. पु.—१ एक प्रकार का सुषिर वाद्य यंत्र।

वि० वि०—वह वाद्य जिसमें दो बांसुरियां होती हैं। किन्तु जो अलगोझे से भिन्न प्रकार से बजाया जाता है। इस वाद्य में एक बांसुरी के छः पैरवे या छेदों पर छहों अंगुलियां रहती है। दूसरी बांसुरी को केवल श्रुति स्वर अथवा आधार स्वर के रूप में बजाया जाता है। होठों के बीच में दोनों बांसुरियों के मुंह रहते है जिनमें से एक केवल श्रुति स्वर देता रहता है जो फूंक द्वारा निरन्तर बजाया जाता है। दूसरी बांसुरी को गीत अथवा गत के अनुसार विभिन्न फूंकों से बजाया जाता है। इस वाद्य में एक विशिष्टता यह है कि स्वरों की मूर्च्छनाओं के बदलने के लिए आधार स्वर देने वाली बांसुरी के छेदों को मोम से बंद करते रहते हैं, जिससे एक ही प्रकार से अंगुलियां चलाने से भी विभिन्न स्वरावलियां मिल जाती हैं। यह वाद्य मुख्यतया जैसलमेर की एक चरवाहे जाति-जतों द्वारा बजाया जाता है। इस जाति के पीछे इसका नाम 'जतारा' भी है। यों अन्य चरवाहों का कार्य करने वालों ने भी इस वाद्य को अपना लिया है।

२ देखो 'सितारो' (रू. भे.)

सतालंक-सं. पु. [सं. शताऽऽलक] बलराम। (ह. नां. मा.)

सतावणौ-वि. (स्त्री. सतावणी) सताने वाला, कष्ट देनेवाला।

उ०—खरै अराति खेत चेत हेत को खतावणी, सदा अगोध बोध बोध सोध को सतावणी।—ऊ. का.

सतावणौ, सतावबौ—देखो 'संतापणौ, संतापबौ' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर धीरज सुचिता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरी रिपु प्रांणी, ताहू नै कदै सतावै।—र. रू.

सतावणहार, हारौ (हारी), सतावणियौ—वि०।

सताविओड़ौ, सतावियोड़ौ, सताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सतावीजणौ, सतावीजबौ—कर्म वा०।

सतावत-सं. पु.—राठोड़ों की एक उप शाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

सतावधान—देखो 'सताभिधांन' (रू. भे.)

सतावधांनी-वि. [सं. शतावधान] शतावधान की क्रिया को साधने वाला।

सतावन-वि. [सं. सप्तपञ्चाशत, प्रा. सत्तावण्ण, अप. सत्तावन] पचास और सात का योग।

रू. भे.—सत्तावन।

सतावने'क-वि.—सत्तावन के आसपास, लगभग।

रू. भे.—सत्तावने'क।

सतावनौ-सं. पु.—सत्तावन की संख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सत्तावनौ।

वि.—जो क्रम में छप्पन के बाद पड़ता हो।

सतावर, सतावरी-सं. स्त्री. [सं. शतावरी] १ एक प्रकार की झाड़नुमा लता जिसके बीज व जड़ औषधि के काम आते हैं। शतमूली, सफेद मूसली।

वि. वि.—सतावर शीतल, कड़वी, मधुर, पित्तनाशक और रसायन कर्म में श्रेष्ठ है।

२ इन्द्राणी।

रू. भे.—सताउर, सताउरि।

सतावियोड़ौ—देखो 'संतापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सतावियोड़ी)

सतावौ—देखो 'सिताब' (रू. भे.)

उ०—साहब लिखै सुजात सूं, करै सतावौ काज। हुकम धरू सिर सांम रौ, मैं फिर करू इलाज।—रा. रू.

सतावरत-सं. पु. [स. शतावर्त] १ एक पवित्र वन का नाम।

२ शंकर, महादेव।

सतावीस—देखो 'सताईस' (रू. भे.)

उ०—गांव मांहै सतावीस वीमाह, रजपूत जाट वांणियां रै हुता सु जांनां आवती छी।—नैणसी

सतावौ-सं. पु.—प्रथमवार प्रसव देने वाली गाय के गर्भ के सातवें मास में स्तनों में होने वाला उभार।

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ

सति-क्रि.—१ अस्ति, है।

उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ धाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रनाली, सिरा हंस नीसरै सति।
—वेलि

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध रीझै इम वयण कहै सति, मझि गंगा करि धार महीपति।—सू. प्र

उ० —२ अकल वधै मंत्रिया धरा सति वधै सांमध्रम। सरस वधै अरिन साख, पांण भड़ वधै पराक्रम।—सू. प्र.

उ०—३ मुदै एह खट महल सहल भ्रत गिणै सुपावन। पड़दायत हित प्रिया अघट सति मिळौ अठावन।—रा. रू.

उ०—४ वडै बोल सति वांणि, एम चहुवांण उचारै। आज चाड आपणी, धणी सूरलोक सिधारै।—रा. रू.

सतिक्ख—अति तीक्ष्ण।

उ०—वदै रांम हूं रांम वायक विक्खं, तिकै रांम रा वांण जांणै सतिक्खं।—सू. प्र.

सतिधारी—देखो 'सतधारी' (रू. भे.)

उ०—अगन वरण जै सुत आचारी, सीघ्र नृपति जिण सुत सति-धारी।—सू. प्र.

सतियास, सतियासी—१ देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—१ जग तोप झाल असमांन जाय, उठता भमंग धर पड़ै आय। सतियास वरस संवत सत्रास, महमंत सरद आसोज मास।
—वि. सं.

उ०—२ सत्रहरस सतियास सक, ध्रुव अहमदपुर धांम। वर कवि 'करण' बखांण कर, सुभटां तणौ संग्राम।—वि. सं.

२ देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सतियौ-सं. पु.—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

सती-सं. पु.—१ कुबेर। (ह. नां. मा.)

[सं. शतिन्] २ सौ का समूह।

सं. स्त्री. [सं.] ३ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो भगवान शंकर को ब्याही गई थी।

उ०—छती तू सती भूपति दच्छछोणी, गती मत्त मातंग तू हंसगोणी। तुही चंद्रमा तुंड चामुंड चंडी, अपरणा अजा ईस्वरी तू अखंडी।—मे. म.

४ अंगिरस ऋषि की पत्नी।

५ गिरिजा, पार्वती। (अ. मा; डिं. को.)

६ विश्वामित्र ऋषि की पत्नियों में से एक।

७ सीता। (नां. मा; अ. मा.)

८ द्रौपदी। (अ. मा.)

[सं. क्षिति] ६ पृथ्वी, भूमि।

उ०—सति नृप वचन पांणी सती, मुगती की अजांमण मरण। नैनोल्नाद 'जगिवो' तवै, मरण राम असरण सरण।—ज. नि.

[सं. सती] वह स्त्री जो पातिव्रत्य का पूर्ण पालन करती हो। पतिव्रता, साध्वी। (घ. मा; डि. को.)

उ०—१ मन छोड़ै सीता सती, जत लिछमण सूं जावै। महा जोध रामहत, वडा वड हींण कहावै।—चोयो वीठू

उ०—२ म्हारै जैड़ी सती रै जोग भा वात है। आपरा सत आगे नो म्हारी परन कहो ह नीं करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ जननी तुझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय सुख बसत निमय तिहं। अस्ट सिद्धि नव निद्धि अलंछित, परम सती जुवती, सुत पंडित।—मे. म.

१२ वह स्त्री जो अपने मृतक पति या पुत्र की लाश के साथ चितारूढ़ हो भस्म होती है।

उ०—सती बळै जूंझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज। दाता माया ऊधमैं, नांम ऊबारण काज।—बां. दा.

उ०—२ सूर सती जब जाणीयै, प्राण ऊपर गेल। हरीया सूरा लड़ मरै, सती अगि तन मेल।—अनुभववांणी

उ०—३ मुह लगि सीस तजेवा सुर-सुत, सती हुवै सतलोक लहां सुत।—सू. प्र.

उ०—४ सूरातन सूरां चढै, सत सतियां सम दोय। आडी-धारां ऊतरै, गिणै अनळ नूं तोय।—बां. दा.

१३ स्त्री, महिला, औरत। (अ. मा.)

१४ जैन साध्वी स्त्री।

वि. [सं. सत्] १ सत्य, यथार्थ। (ह. नां. मा.)

२ सत्य पर अटल रहने वाला, सत्यवादी।

३ वीर, बहादुर। (मि. 'असती' (३))

उ०—हूं कंकाळी भट्ट, सती; असती नर पेखूं। सरग मरत्य पाताळ देव, नर नाग परेखूं।—जगदेव पंवार री वात

मुहा.—सौ सती नैं एक जती=एक जितेन्द्रिय व्यक्ति सौ बहादुरों के बराबर होता है।

४ दातार, दानी।

उ०—१ पाखंडी वह नग्न पंथ पर, घूमै लेकर घोटा। सती मरद होवै जो सच्चा, साथ भरादै सोटा।—ऊ. का.

उ०—२ असो सनो जोयनै धाररा मुंहता नूं रावळ सूं मिळायो। रात एकंत मिळ सको कीवी। आगला राजा सती हुता। अचढ़ां बोल ऊबारण री घणी वात मन मां रागता। तरै देवराज कांमदारा नूं कह्यो—थो वडो मुंहतो वडै दरबार रो परधांन इतरा रईतन छोडनै मोनूं जांणनै इतरी भूंय आयो, तो इणरो जरूर अरथ सारणो। तरै हाथी सो दिया। मुंहता नूं घोड़ो सिरपाव दे सीख दी।—नैणसी

मुहा.—एक सती नैं नगर सारो=एक दातार व्यक्ति सारे नगर के लोगों से अच्छा होता है।

५ निश्चल, दृढ़। ० (डि. को.)

रू. भे.—सइ, सई, सति, सतीय, सत्ती।

सतीअमावस, सतीअमावस्या-सं. स्त्री. [सं. सतीअमावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या का एक नाम। इसी दिन सावित्री व्रत भी किया जाता है।

सतीक्षण, सतीखण-वि. [सं. सतीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज।

२ नुकीला।

उ०—प्रति कांन सतीखण अणिय वंक, फिर कलम जुगल नभ करत अंक।—रा. रू.

रू. भे.—सतीखो।

सतीखो—१ विशेष, अधिक।

उ०—भट चारण गुण भणै, तिकां रीझणो सतीखो। माया ऊधांमणै सघण वरसणै सरीखो।—सू. प्र.

२ देखो 'सतीखण' (रू. भे.)

सतीचौरो-सं. पु.—सती स्त्री के सती होने की जगह पर बनाया जाने वाला चबूतरा।

सतीतफो—देखो 'इस्तिफो' (रू. भे.)

उ०—अंब नयर उथपतां थाट 'जैमाह' थपाए। देह सतीतफा दिली जेण जेजियो छुडाए।—सू. प्र.

सतीत्व-सं. पु. [सं.] सती होने की अवस्था या भाव।

सतीपुर—देखो 'सतीलोक' (रू. भे.)

उ०—'हरा' रो सती संग सतीपुर हालियो, माल्हियो 'सेर' अप्रम जोत मांहि।—पहाड़खां आढो

सतीमाता-सं. स्त्री.—१ पति या पुत्र की लाश के साथ जलने वाली वह स्त्री जो लोक देवी के रूप में पूजी जाती हो।

सतीय—देखो 'सती' (रू. भे.)

उ०—सतीय वेव छइं कसगि रही, इंद्रह आइसु तु तम्ह कही। मेल्हउ पंडव वडइ वछेदि, विणु हथियारह बांधा भेदि।

—सालिभद्र सूरि

सतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

सतीरांणी-सं. स्त्री.—एक प्रसिद्ध मारवाड़ी लोक गीत।

सतीलोक-सं. पु.—सती स्त्रियों के मृत्यु उपरांत मिलने वाला लोक, स्वर्ग।

रू. भे.—सतलोक।

सतीवरि-सं. पु. [सं. सीता+वर] सीतापति श्रीरामचंद्र।

सतीवांम-सं. स्त्री [सतीवामा] सीता, जानकी। (अ. मा.)

सतुआसंक्रांत, सतुआसंकरांति, सतुआसंकरायंत, सतुआसंकरायंति, सतुआसंक्रांति-सं. स्त्री. [सं. सक्तुकसंक्रांति] वैशाख मास में होने वाली मेष संक्रांति।

सतुआसूंठ, सतुआसोंठ-सं. स्त्री.—एक प्रकार की सोंठ जिसके अन्दर रेसे निकलते हैं।

सतुक-सं. पु.—अवसर, मौका।

उ०—तरै वचारिओ ज हैमार अेहड़ौ सतुक नहीं जौ आंटौ लीजै। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

सतुतकीरत-सं. स्त्री.—श्रुतकीर्ति जो शत्रुघ्न को व्याही गई थी। (रामकथा)

सतुर—देखो 'सत्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतुरमुरग—देखो 'सुतरमुरग' (रू. भे.)

सतुळी-सं. पु.—एक प्रकार का जांघिया, जो प्राय: घुटनों तक होता था। (प्राचीन)

सतूआरा-सं. पु.—बढई, सुथार।

उ०—१ मोची गांछा नइ सतूआरा साथइ चालइ माळी। दरजी बावर ऊड चालीया, च्यार सहस तंबोळी।—कां. दे. प्र.

उ०—२ छीपा परियटा सूई ताई तेली मोची सतूआरा वंधारा चीतारा नूतारा कोली पंचोली।—व. स.

सतूति, सतूती—देखो 'स्तुति' (रू. भे.)

उ०—हिरणाखी हंसहाली चरचा उचारै मां चरचा उचारै। सेवक पढत सतूती देवळ निज द्वारै।—मे. म.

सतूरण-सं. स्त्री.—शीघ्रता। (ह. नां. मा.)

क्रि. वि. [सं. सत्वरण] शीघ्र, तुरंत।

सतेज, सतेजौ-सं. पु.—१ वेग। (अ. मा.)

२ आग, अग्नि। (अ. मा.)

क्रि. वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—सुणियां साद सतेज, आई आगळ आवता। जगदब अवर्क जेज, करी इती तैं करनला।—अग्यात

वि.—२ वेगपूर्ण, तेजपूर्ण।

उ०—१ अत सतेज ओरियौ, मधी अण जेज मुगल्लां। सेल्ह भोक सायक्क, तेग सावळ कर तंडळा।—रा. रू.

उ०—२ छट सुंदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा।—रा. रू.

३ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—ऊंनै राव सेखा को सतेजौ लोग आयौ।—शि. वं.

(स्त्री. सतेजी)

सतोखणौ, सतोखबौ—देखो 'संतोखणौ, संतोखबौ' (रू. भे.)

सतोखणहार, हारौ (हारी), सतोखणियौ—वि०।

सतोखिओड़ौ, सतोखियोड़ौ, सतोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सतोखीजणौ, सतोखीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सतोखियोड़ौ—देखो 'संतोखियोड़ौ' (रू. भे.)

सतोगुण-सं. पु. [सं. सत्वगुण] तीन गुणों में से प्रथम गुण जो मनुष्य को सुकर्म की ओर प्रेरित करने वाला माना जाता है, सत्वगुण।

उ०—१ अग जळ नीर सींग ससियै का, ज्यूं वंझ्या का बारा। दुख सुख जरा मरण सुपनां मैं, यूं सतोगुण वरतारा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ चंमाळी चाळै गयौ, पैंताळी इण भांत। खांन सुजायत कांगलां, लिखै सतोगुण स्वांत।—रा. रू.

वि.—श्वेत, सफेद। * (डि. को.)

रू. भे.—संतोगुण, सत्वगुण।

सतोगुणी—देखो 'सत्वगुणी' (रू. भे.)

सतोतरौ-सं. पु.—सितहत्तर की संख्या का वर्ष।

उ०—संवत अटारै सतोतरै रै वदि तेरस आसाढ।—जयवांणी

सतोदर-सं. पु. [सं. शतोदर, शातोदर] १ शिव का एक नाम।

२ शिव का एक गण।

३ रामायण के अनुसार एक अस्त्र का नाम।

४ देखो 'सितोदर' (रू. भे.)

सतोदरी-सं. स्त्री. [सं. शतोदरी] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सतोम, सतोमौ—देखो 'स्तोम' (रू. भे.) (अ. मा.)

सतोरौ-वि. (स्त्री. सतोरी) पराक्रमी, बलशाली, शक्तिशाली।

उ०—'जूंझावत' 'सगरांम' सजोरौ, तिसड़ोई 'भगवांन' सतोरौ।
—रा. रू.

सतोल-वि. (स्त्री. सतोली) १ असर करने वाला, प्रभावशाली।

उ०—सुणिया वचन सतोल, तौ मुख नीसरिया तिकै। बीठू तैं बिन मोल, मोल लियौ 'बांका' म्हनै।—भोपाळदांन सांदू

२ दृढ, पक्का।

उ०—मूवां गाडै हुवै, दीनौ वचन सतोल। क्यूं पाळीस कमालदी वंधव, तणरा बोल।—नैणसी

३ भारी, वजनदार।

उ०—१ चढीरी पिलांण दुन्नाली वंदूकां कुंड अर कडावां सतोली संदूकां लोग, लोग ऐकेक लेग्या।—दसदोख

उ०—२ ब्याह री तलड़ी री पैली कडी सोनै-चांदी अर मोहरां सूं सतोल हुणी चाहीजे।—दसदोख

४ बहुत, खूब, अधिक।

उ०—हरियौ भरियौ धांन, ऊतरै सदा सतोलौ। ढिगला लगै ललांम, धोर धन देवण पोलौ।—दसदेव

५ बराबर, समान।

रू. भे.—संतोल, सत्तोल।

सतोळियौ, सतोलियौ, सतोळ्यौ, सतोल्यौ-स. पु.—एक देशी खेल।

वि० वि०—इस खेल में एक गेंद व सात पत्थर के गोलाकार चपटे टुकड़े होते हैं, जो क्रमश: (ढाल उतार) रखे जाते हैं। इसे खेलने के लिए खिलाड़ी दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। जब एक दल खेलता है तो दूसरा दल क्षेत्र-रक्षण करता है। पारी २ से यह क्रम चलता रहता है। इसमें खिलाड़ी एक निश्चित दूरी से उन

[illegible] टुकड़ों (सतोळियों) को गिराने का प्रयास करता है और ऐसा करने के लिए उसे तीन मौके दिए जाते हैं। अगर वह तीनों बार सतोळियों को नहीं गिरा सकता है या सतोळिया नहीं बना सकता है तो वह आउट घोषित कर दिया जाता है। जब वह सतोळिये गिरा देता है और सतोळिया बना देता है तो उसे फिर तीन मौके मिलते हैं और इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। खिलाड़ी जब सतोळिये को गिराने का प्रयास करता है तब प्रतिपक्ष का एक खिलाड़ी जो सतोळियों के पीछे और गेंद फेंकने वाले खिलाड़ी के सामने खड़ा रहता है, वह अगर गेंद लपक लेता है तो वह खिलाड़ी आउट हो जाता है। अगर वह एक हाथ से गेंद लपक लेता है तो गेंद फेंकने वाले खिलाड़ी का पूरा दल आउट घोषित हो जाता है।

अगर गेंद फेंकने वाला खिलाड़ी गेंद फेंक कर सतोळिये को गिराने में सफल हो जाता है और गेंद लपकी नहीं जाती है, तब प्रतिपक्षी खिलाड़ी गेंद लेकर खेलने वाले दल के खिलाड़ियों को मारने का प्रयास करते हैं। खेलने वाला दल एक तरफ तो गेंद से बचने का प्रयास करता है और दूसरी तरफ गिरे हुए सतोळियों को वापस जमाने का भी, अगर वे सतोळियों को जमा कर 'सतोळियो' की आवाज कर देते हैं तो उनका एक सतोळिया बन जाता है अगर इस बीच उनके गेंद लग जाती है या उनके पक्ष का कोई खिलाड़ी बीच में ही सतोळिया बोल देता या सतोळिया जमाने के बाद या सतोळिया बोलने के बाद वह वापस गिर जाता है तो वह खिलाड़ी जिसने सतोळिया बनाने के लिए गेंद फेंकी थी, आउट घोषित कर दिया जाता है। अगर कोई खिलाड़ी सात सतोळिये एक साथ बना लेता है तो उसे अपना पिट्ठू (किसी खिलाड़ी के रूप में या खुद पिट्ठू की जगह खेल सकता है।) बनाने का अधिकार हो जाता है। पिट्ठू जितने भी चाहे बना सकते हैं। यह खेल बच्चों का है। कहीं २ सतोळिया पत्थर का एक ही थोड़ा बड़ा टुकड़े का होता है जो जमीन पर सीधा टिका रह सके।

२ देखो '[illegible]'

सत्करता-वि. [सं. सत्कर्ता] १ सत्कर्म करने वाला।

२ आदर सत्कार करने वाला।

सत्करम-सं. पु. [सं. सत्कर्म] १ अच्छा कार्य, पुण्य कार्य।

२ [illegible] सत्कार।

३ अनुवंशीय अतिरथ का पिता व धृतव्रत का पुत्र एक राजा।

सत्कार-सं. पु. [सं.] आदर, सम्मान।

उ०—अधिक आभार राज सभा सूं सत्कार पायो अर आपरी समता ठौड़ नाम री लिखाई प्रसंसा पूरबक वरणन री समस्त प्रताप करियो।—वं. भा.

रू. भे.—सक्कार, सतकार।

सत्कीरति-सं. स्त्री. [सं. सत्कीर्ति] उत्तम कीर्ति, यश।

सत्क्रत-सं. पु.—१ आदर, सत्कार।

२ सत्कर्म।

वि. [सं. सत्कृत] १ अच्छी तरह किया हुआ।

२ जिसका आदर सत्कार किया गया हो।

सत्क्रति-सं. पु. [सं. सत्कृति] १ भगवान विष्णु का नामान्तर।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

सत्त-सं. पु. [सं. सत्त्व] १ किसी पदार्थ का सार तत्त्व।

२ देखो 'सत' (रू. भे.)

उ०—१ सीळ सत्त साहंस अंस निज वंस उजाळी, उर बिहसी उल्लसी हसी सू हत्थी ताळी।—रा. रू.

उ०—२ जत्त सत्त गरू-ग्रस्त, तजै पौरस आपांणौ। अडप छाडि अहंकार, हुए बळ-हीण निमांणौ।—गु. रू. बं.

उ०—३ तेज रोस तांमस सत्त सूरातन छोडै, सबळ-पणौ मेल्हियौ नहीं लाह थळ संकोडै।—गु. रू. बं.

३ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—माया जेथ प्रसन्न हूं, वधै घटै नह वत्त। प्रभू रासै उण पांवड़ी, सदा अमीणो सत्त।—बां. दा.

४ देखो 'सात' (रू. भे.)

उ०—झलहलीय सायर सत्त सुरगिरि, सगु सगि खडहडी। खणु एकु असरणु हूउं तिहूंयणु, राय सयल वि थरहडी।

—सालिभद्र सूरि

५ देखो 'सत्य' (रू. भे.)

उ०—देवी सत्त रै रूप हरचंद सिद्धी।—देवि.

६ देखो 'सत्रू' (रू. भे.)

उ०—खेलसी खाग खेळंत खत्त, 'गोपाळ' सुत्त गोडंत सत्त।

—गु. रू. बं.

सत्तम-वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—संस्रति सत्तम मांन, पोळ दरवाजा दुकांनां। मेड़ी, मोड़ा, मै'ल, मनोहर वडा मकांनां।—दसदेव

२ देखो 'सप्तम' (रू. भे.)

उ०—सत्तम प्रहरै दिवस कै, धण जु वाड़ियां जाइ। आंगो द्राख-बिजोरियां, धण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो. मा.

सत्तमी—देखो 'सप्तमी' (रू. भे.)

सत्तर—१ देखो 'सित्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'सतरै' (रू. भे.)

सत्तरमौ—१ देखो 'सित्तरमौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सतरमौ' (रू. भे.)

सत्तरह—देखो 'सतरै' (रू. भे.)

सत्तरि—देखो 'सितर' (रू. भे.)

सत्तरैंक—१ देखो सतरैंक' (रू. भे.)

२ देखो 'सित्तरैंक' (रू. भे.)

सत्तरी—देखो 'सतरी' (रू. भे.)

सत्तवती—देखो 'सत्यवती' (रू. भे.) (डिं. को.)

सत्तसाहिब-सं. पु —कबीर पंथियों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन। (मा. म.)

सत्ता-सं. स्त्री.—१ वह आधिपत्य या शासन-शक्ति जो शासन चलाती है, राज-सत्ता।

२ सर्वोपरि अधिकार जो कानूनों द्वारा नियन्त्रित नहीं होता, प्रभु-सत्ता।

३ देखो 'सता' (रू. भे.)

उ०—जो उपज्या सो माया बिनासी, सत सत्ता अविनासी। योई है अनुभव ग्यांन हमारा, नांम रूप नहिं पासी।
—स्री सुखरांम जी महाराज

सत्ताईस—देखो 'सताईस' (रू. भे.)

सत्ताईसमौं, सत्ताईसवौं—देखो 'सताईसमौं' (रू. भे.)

सत्ताईसे'क—देखो 'सताईसे'क' (रू. भे.)

सत्ताईसौ—देखो 'सताईसौ' (रू. भे.)

सत्ताधारी-सं. पु. [सं. सत्ताधारिन्] १ शासक वर्ग।

२ अधिकारी, अफसर।

सत्तावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सत्तावन—देखो 'सतावन' (रू. भे.)

सत्तावने'क—देखो 'सतावने'क' (रू. भे.)

सत्तावनौ—देखो 'सतावनौ' (रू. भे.)

सत्तासी—देखो 'सित्तियासी' (रू. भे.)

सत्ती-सं. स्त्री.—१ सात बूंदियों वाला ताश का पत्ता।

२ देखो 'सती' (रू. भे.)

सत्तु, सत्तू—१ देखो 'सातु' (रू. भे.)

२ देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

उ०—सैंण हुवै सहु सत्तु, फिरै जायैं मन फट्टै। सुणे सैंण धरमसीख, राखिजै रीस दबट्टै।—ध. व. ग्रं.

सत्तुकार, सत्तूकार-सं. पु. [सं. सक्तुव+अगार] वह स्थान जहां निःशुल्क भोजन व विश्राम मिलता हो।

उ०—गढ गढ मंदिर पोलि पगार, थांनकि थांनकि सत्तूकार।
—हीराणंद सूरि

सत्तौ-सं. पु.—१ स्त्री के शव के साथ जल कर भस्म होने वाला पुरुष।

२ स्त्री की मृत्यु के पश्चात उसके विरह में मरने वाला व्यक्ति।

सत्तोल—देखो 'सतोल' (रू. भे.)

उ०—सत्तोल बोल मुक्खं दक्खै, खेलेवा खत्र-धोड़। साहिजादै माथै विद्दा हुऔ, हिंदू पत्ती राठोड़।—गु. रू. बं.

सत्थ—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ सत्थ नको वळ हत्थ कै, नां जीपै छळ मत्त। जै पांमै रिप संग्रहै, जप हूंता छत्रपत्त।—रा. रू.

उ०—२ अत्थ जिकां दी आपणी, हरक गरीवां हत्थ। गवरीजै जस गीतड़ा, तात तणांकां सत्थ।—बां. दा.

उ०—३ जमडड्डां तरवारियां, सेल्ह बंदूकां सत्थ। आगै धूप उखेविया, पाछै झाली हत्थ।—रा. रू.

उ०—४ डेरै हाळौहळ हुई, हुआ सचाळा सत्थ। आज विहांणै रढुवड, करिसी को भारत्थ।—गु. रू. बं.

उ०—५ राजा कांम भळावियो, राखै विकळी सत्थ। कह्यौ वजीरां 'गजपती', तेडो साउ सत्थ।—गु रू. बं.

सत्थर-सं. पु.—सुरंग जिसमें बारूद बिछा हुआ हो।

उ०—सोर उड्यौ लग सत्थरां, उड़िया सूर अनेक। झुळस पड़्या पिण झींकवा, कग हूंत मंड्या केक।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ लगि सोर सत्थर भू थरत्थर टूट पत्थर बित्थुरै।
—सूरजमल्ल मिसण

२ देखो 'साथरवाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सत्थरां सोय सारा सुखी चवरी ढुलतां चोसरां। तन लगन तीसरां री तिकां, मंगत ध्यांन मन मोसरां।—ऊ का.

सत्थरौ—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)

उ०—आवत्त हुऔ एकै घड़ी, हुआ सुभट्टां सत्थरां। संग्रांम चक्र वूहा सत्रां, सूरसिंघ चक्रवत्तरा।—गु. रू. बं.

सत्थळ, सत्थल-सं पु.—१ शस्त्र विशेष। (व. स.)

२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)

उ०—रंगावळि सत्थळ हत्थै हत्थळ, झूलरियाळा घू टोप। जडिया लै जूसण वंधै कस्सण, सिद्धक जांणै सक्कोप।—गु. रू. बं.

सत्थवाह, सत्थवाहौ—देखो 'सारथवाह' (रू. भे.)

उ०—१ सत्थवाह जय सायर दीठउ चालंतउ तिणि वार। तिहि जाई ते पूछिउ तीणइ पहिलउं करीय जुहार।—हीराणंद सूरि

उ०—२ बली धन राईसर मांडव जाव कौटुंबी सत्थवाहो रे।
—जयवांणी

सत्थि, सत्थी—१ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—भड़ां दुवाहां वंकड़ां, हुई सनाहां सत्थि। सेध निवाहां सूरमां, राहां वेध अरत्थि।—रा. रू.

२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)

उ०—कटि जंघा सत्थी कटै हत्थी हवि हक्कै।—वं भा.

३ देखो 'साथी' (रू. भे.)

सत्थु, सत्थै, सथ्थ, सथ्थी—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ इसुं सुणी नइं धायउ पत्थु, झूझइ भीम मिलिउ भड सत्थु।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ अजमेर आयौ साहजादौ, 'करन' सत्थै आंणए। परबतां पासै लाल पंडर, गयण गूडरा तांण ए।—गु. रू. वं.

उ०—३ 'परेरज' साह सत्थै दै, कमधज लज भूडंडै। सुरतांण

[illegible] ।—गु. रू. बं.

उ०—२ [illegible] सत्ति बावीस चढी इस [illegible] ।—रा. रू.

सत्पथ-सं. पु.—१ सदाचार।

२ उत्तम सम्प्रदाय।

३ उत्तम सिद्धान्त।

४ उत्तम मार्ग, सही रास्ता।

सत्पुरस, सत्पुरुस—देखो 'सत्पुरुष' (रू. भे.)

सत्यंभरा-सं. स्त्री. [सं. सत्यम्भरा] प्लक्षद्वीप की एक नदी का नाम।

सत्यमूर्ति-सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु।

सत्य-वि. [सं.] १ ठीक, यथार्थ, वास्तविक।

उ०—जो रचना जगपती, जोतै ग्राह भ्रमै ग्रयलोकं। सोई सत्य [illegible] ।—रा. रू.

२ असली, शुद्ध, खरा।

३ ईमानदार, सच्चा।

४ पुण्यात्मा, धर्मात्मा।

५ सत् का, सत् से सम्बन्धित।

६ जो झूठ या मिथ्या से परे हो।

७ दृढ़, पक्का, अटल।

८ नहीं मिटने वाला, अमिट।

९ छल-कपट से रहित, निष्कपट।

१० अजर-अमर।

उ०—भवांनी नमो सत्य आलाप वाळा। भवांनी नमो ग्रंद विद्या विसाळा। भवांनी नमो देव हेरंभ माता। भवांनी नमो तप्रमो संत त्राता।—मे. म.

[सं. शतम्] १ सौ से बना हुआ।

२ सौ से सम्बन्धित।

३ सौ के हिसाब से ब्याज, टैक्स आदि देने वाला।

४ सौ का सूचक।

सं. पु. [सं. सत्यं] १ वास्तविक बात, यथार्थ तत्व। (डि. नां. मा.)

२ उचित पक्ष, न्याय व धर्म का पक्ष।

३ सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। (पुराण)

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

५ भगवान् रामचन्द्र का नाम।

६ पारमार्थिक सत्ता जो सदा अविकारी रहती है।

७ एक विश्वदेव का नाम।

८ [illegible]।

९ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित थे।

१० निश्च्यवन नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार की अग्नि जो निश्चय व कुलधर्म के प्रवर्तक हैं।

११ तीसरे व उत्तम मन्वन्तर के एक देव विशेष।

१२ नन्दीमुख श्राद्ध के अधिष्ठाता का नाम।

१३ पृथुवंशीय हविर्धान व हविर्धानी के पुत्रों में से एक पुत्र, राजा।

१४ वीतहव्यवंशीय एक राजा जो वितत्य राजा का पुत्र व संत का पिता था।

१५ विदर्भदेश के एक तपस्वी का नाम।

१६ भीम द्वारा मारा गया कलिंग देश का एक योद्धा।

१७ अंगिरस एवं सुरूपा के पुत्रों में से एक पुत्र देव।

१८ ब्रह्मसावर्णि के सप्तर्षियों में से एक।

१९ दक्षसावर्णि के सप्तर्षियों मे से एक।

२० सत्या के एक पुत्र का नाम जो अवतार माना जाता है।

२१ अट्ठाईस व्यासों में से एक व्यास का नाम।

२२ सुधामन्, अमिताभ, आभूतरजस्, तामसमन्वन्तर आदि देवों में से प्रत्येक का एक-एक देव का नाम।

२३ सच्चाई।

२४ भलाई।

२५ शपथ।

२६ जल, पानी।

२७ चार युगों में से प्रथम युग, स्वर्णयुग।

रू. भे.—सच, सच्च, सच्चु, सत, सांच, साच।

सत्यक-सं. पु. [सं.] १ यदुवंशीय एक राजा जो शिनि का पुत्र व सत्यकि का पिता था।

वि. वि.—इसका विवाह काशिराज की कन्या से हुआ था जिससे इसे ककुद, भजमांन, शमी एवं कंबल बर्हिष नामक पुत्र उत्पन्न हुए थे।

२ कृष्ण व भद्रा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक।

३ तामस मन्वन्तर का एक देव।

४ रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

रू. भे.—सत्यकु।

सत्यकरमा-सं. पु. [सं. सत्यकर्मन्, सत्यकर्मा] १ धृतव्रत राजा का पुत्र एवं अतिरथ या अनुरथ राजा का पिता।

२ त्रिगर्त्त राजा सुशर्मा का भाई जो अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

सत्यकांम-सं. पु. [सं. सत्यकाम] एक श्रेष्ठ महर्षि जो जाबाला के पुत्र थे।

वि. वि.—इनके पिता का नाम व गोत्र इनसे और इनकी माता से गुप्त था। ये गौतम गोत्रीय महर्षि हारिद्रुम के शिष्य थे। एक बार ये गुरु की आज्ञा से चार सौ गायें लेकर वन में गये और संकल्प किया कि जब तक ये गायें एक हजार नहीं हो जाएगी वापिस नहीं लौटूंगा। जब ये गायों के एक हजार हो जाने पर वापिस लौट रहे थे तब इन्हें ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई।

सत्यकांमा-सं. स्त्री. [सं. सत्यकामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम

जो भंगकार राजा की पुत्री थी।

सत्यकीरति, सत्यकीरती–सं. पु. [सं. सत्यकीर्त्ति] १ मंत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ देखो 'सत्यक्रता' (रू. भे.)

सत्यकु—देखो 'सत्यक' (रू. भे.)

उ०—सत्यकु छेदिउ वलिहि सीसु तसु दिणि चऊदमइ। रातिहि भूझइ विसम भूझि गुरु पड़इ कीमइ।—सालिभद्र सूरि

सत्यकेतु–सं. पु. [सं.] १ उग्रसेन राजा की पत्नी पद्मावती का हरण-कर्त्ता एक यक्ष।

२ कृष्ण के चाचा अक्रूर के गांदिनी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

३ पुरूरवा के वंश में उत्पन्न धर्मकेतु के पुत्र तथा विभु के पिता एक राजा।

सत्यजित–सं. पु.—१ द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया पांचाल के राजा द्रुपद का भाई। (पौराणिक)

२ सत्यभामा के पिता जो कृष्ण के श्वसुर थे।

३ तीसरे मन्वंन्तर के इन्द्र का नाम।

४ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र, नाग।

५ एक यक्ष जो कार्तिक माह में विष्णु के साथ भ्रमण करता है।

६ क्षेम के पिता व सुनीथ के पुत्र एक ययातिवंशीय राजा का पुत्र।

७ एक यादव राजा जो आनक एवं कंका का पुत्र था।

रू. भे.—सत्राजित।

सत्यजुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सत्यतप–सं. पु. [सं.] १ एक ऋषि जिसने अपने तप भंग करने के लिए आई हुई अप्सरा को बेर का वृक्ष बनने का शाप दिया था।

२ एक कृष्णभक्त ऋषि।

सत्यता–सं. स्त्री. [सं.] १ सत्य होने की अवस्था या भाव।

२ वास्तविकता, यथार्थता।

सत्यदेव–सं. पु. [सं.] भारतीय युद्ध में भीम द्वारा मारा गया कलिंग देश का योद्धा।

सत्यदेवी–सं. स्त्री. [सं.] वसुदेव की सात पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

सत्यद्युमन, सत्यद्युम्न–सं. पु. [सं. सत्यद्युम्न] १ जनकवंशीय समर्थ के पुत्र एवं उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ विदर्भनरेश का नाम।

सत्यधज—देखो 'सत्यध्वज' (रू. भे.)

सत्यधरम, सत्यधरमा–सं. पु. [सं. सत्यधर्मा] १ चंद्रवंशी राजा का नाम।

२ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

३ त्रिगर्तराजा सुशर्मा का भाई।

सत्यधुज—देखो 'सत्यध्वज' (रू. भे.)

सत्यध्रत, सत्यध्रति–सं. पु. [सं. सत्यधृति] १ पुरुवंशीय एक राजा जो कीर्तिमान का पुत्र था।

२ गौतम पुत्र शतानन्द के एक पुत्र का नाम जो धनुर्वेद विशारद थे।

३ पाण्डव-पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया था।

४ बलराज के एक पुत्र का नाम।

५ सत्यधृ राजा का नामान्तर।

सत्यध्वज–सं. पु. [सं.] ऊर्जवह राजा का पुत्र एवं शकुनि का पिता, विदेह देशाधिपति।

सत्यनांमी–सं. पु. [सं. सत्यनामी] वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा या इस शाखा का अनुयायी।

सत्यनारायण–सं. पु. [सं.] परमेश्वर, ईश्वर।

रू. भे.—सतनारायण।

सत्यनेत, सत्यनेतर, सत्यनेत्र–सं. पु. [सं. सत्यनेत्र] वैवस्त मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

सत्यपद–सं. पु. [सं.] एक प्रमुख तीर्थ स्थान।

सत्यपाल–सं. पु. [सं.] युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि।

सत्यभांमा—देखो 'सतभांमा' (रू. भे.)

उ०—रुक्मिणी नइ सत्यभांमा रांणी, सउकी नउ सबल संताप जी। खमत खांमणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी।

—स. कु.

सत्ययुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे.)

सत्यरता–सं. स्त्री. [सं.] अयोध्या के सत्यव्रत त्रिशंकु की पत्नी का नाम जो केकय-राजकन्या थी।

सत्यरथ–सं. पु. [सं.] १ जनकवंशीय समर्थ के पुत्र एवं उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ चित्ररथ राजा का पुत्र, एक राजा।

४ विदर्भनरेश का नाम, सत्यसंध।

५ सत्यव्रत राजा का पुत्र।

सत्यरूपा–सं. स्त्री. [सं.] एक देवी का नाम।

सत्यलोक–सं. पु. [सं.] सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा निवास करते हैं।

रू. भे.—सतलोक।

सत्यलोकईस, सत्यलोकेस–सं. पु. यौ. [सं. सत्यलोक+ईश] ब्रह्मा।

(डिं. को.)

सत्यवंत–वि. [सं.] सत्य को धारण करने वाला।

उ०—क्षमावंत सत्यवंत छे रे, चवदै पूरवधार। चउनांणी गुरु साथै मुनिवर पखरया रे, पंच सयां अणगार।—जयवांणी

सत्यवचन–सं. पु.—१ यथार्थ कथन।

२ दृढ़ता, दम।

सत्यरथ-सं. पु. [सं.] १ मालिनी के पति का नाम।

२ चन्द्रवंशीय सत्यक राजा का नाम।

३ समुद्रक राजा का पुत्र, एक राजा।

सत्यवती-वि. स्त्री.—१ पतिव्रता, सती।

२ सत्य का आचरण और पालन करने वाली।

सं. स्त्री.—१ शान्तनु राजा की पत्नी जो चित्रांगद एवं विचित्र-वीर्य की माता थी। वेदव्यास इसी के पुत्र थे। इसे काली, मत्स्य-गंधा, गंधवती, योजनगंधा, गंधकाली आदि नामों से पुकारते हैं।

उ०—१ दुर्गीय वास गयगह पडी, तउ मई लिद्ध कुमारि। सत्यवती नामि हुमिए, संतणुघर नारि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सत्यवती घर प्रवर नारि तसु नंदण दुन्नि। सवै सल-क्खण रूवंत अनु कंचणवन्नि।—सालिभद्र सूरि

२ गाधि राजा की कन्या एवं जमदग्नि ऋषि की माता जो विश्वामित्र की बहिन थी।

३ अगस्त्य पत्नी लोपामुद्रा का नामांतर।

४ मृगांकु राजा की पत्नी।

५ त्रिशंकु की पत्नी व हरिश्चन्द्र की माता केकय राजकुमारी।

६ एक प्राचीन नदी का नाम।

रू. भे.—सत्यवई, सत्तवती।

सत्यवरमा-सं. पु. [सं. सत्यवर्मा] अर्जुन के द्वारा मारा गया त्रिगर्तनरेश का भाई।

सत्यवसु-सं. पु. [सं.] दक्ष प्रजापति की कन्या विश्वा व धर्म के योग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक।

सत्यवान-सं. पु. [सं. सत्यवत्] १ सती सावित्री के पति का नाम, जो शाल्वदेशाधिपति द्युमत्सेन का पुत्र था।

२ चाक्षुष मनु और नड्वला के पुत्र का नाम।

वि. पु. [सं. सत्यवत्] सत्य बोलने वाला, सत्यवक्ता।

सत्यवाक-सं. पु. [सं.] गन्धर्व जो कश्यप एवं मनु के पुत्रों में से एक था।

सत्यवाच-सं. पु. [सं. सत्यवाच्] १ प्रतिज्ञा, वादा।

२ सत्यवचन, सत्यकथन।

३ रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

४ सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

५ सत्यव्रत नामक राजा का नामान्तर।

६ कश्यप एवं मुनि के पुत्रों में से एक।

सत्यवादिणी, सत्यवादिनी-सं. स्त्री. [सं. सत्यवादिनी] १ बोधिद्रुम की एक देवी का नाम।

वि. स्त्री.—सत्य बोलने वाली।

सत्यवादी-वि. [सं. सत्यवादिन्] (स्त्री. सत्यवादण, सत्यवादिणी, सत्यवादिनी) १ सत्य कहने वाला।

उ०—आदर पर उपगार सत्यवादी संतोषी, न करैं निंदा नेट, चलैं निज कुलवट चोखी।—ध. व. ग्रं.

२ धर्म या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला।

रू. भे.—सचवादी, सचवायो, सतवादि, सतवादी।

सत्यव्रत-सं. पु.—१ सूर्यवंश के राजा त्रिबन्धन के पुत्र जो त्रिशंकु के नाम से प्रसिद्ध हुए।

२ सातवें मनु का नाम।

३ त्रिगर्तराजा सुशर्मा के भाई का नाम।

४ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक महारथी पुत्र, सत्यसंध का नाम।

५ एक चन्द्रवंशी राजा का नाम।

६ एक महर्षि का नाम जो कोसल देश के देवदत्त ब्राह्मण के पुत्र थे।

७ एक देवगण।

८ सत्य बोलने का नियम या प्रतिज्ञा।

वि.—सत्य का पालन करने वाला।

रू. भे.—सतव्रत।

सत्यव्रता-सं. स्त्री. [सं.] गांधारराज सुबल की कन्या जो धृतराष्ट्र को ब्याही गई थी और जो गांधारी की छोटी बहन थी।

सत्यसंध-सं. पु. [सं.] १ श्री रामचंद्र का नाम। (रामायण)

२ भरत का एक नाम।

३ राजा जनमेजय का एक नाम।

४ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

५ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम जो अर्जुन के द्वारा, मतान्तर से भीम के द्वारा, मारा गया था।

६ विदर्भ नरेश सत्यरथ का नामान्तर।

७ सत्य प्रतिज्ञा पर अटल रहने वाला।

उ०—अर जीवण री आस ह्लूं तो मरणीक हुवा, सत्यसंध अग्रज रै साथ जावण री न धारो।—वं. भा.

सत्यसंधा-सं. स्त्री. [सं.] १ द्रौपदी का एक नाम।

२ देवी का विशेषण।

सत्यसिंधु-सं. पु. [सं.] ईश्वर, परमात्मा।

उ०—राज के विहीन सत्यसिंधु तैं रह्यो, भाजके अधीन दीनबन्धु के भयो।—ऊ. का.

सत्यसेन-सं. पु. [सं.] १ अंगराज कर्ण के एक पुत्र का नाम जो नकुल द्वारा मारा गया था।

२ अर्जुन द्वारा मारा गया त्रिगर्त देशाधिपति सुशर्मा के भाई का नाम।

३ तीसरे मन्वन्तर में धर्मदेव व सुनृता के पुत्र का नाम जिन्हें विष्णु का अवतार मानते हैं।

४ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था।

सत्यसेना-सं. स्त्री. [सं.] धृतराष्ट्र-पत्नी सत्यवृता का नामान्तर, जो गांधारी की कनिष्ठ बहन थी।

सत्यस्रवस-सं. पु. [सं. सत्यश्रवस्] १ वीतिहोत्र राजा का पुत्र एवं उरुश्रवस् का पिता, एक राजा।

२ अभिमन्यु द्वारा मारा गया कौरव पक्षीय एक योद्धा।

३ मार्कंडेय ऋषि का पुत्र, एक आचार्य।

सत्यहित-सं. पु. [सं.] १ पुरुवंशीय राजा ऋषयक के पुत्र एवं पुष्पवान के पिता का नाम।

२ बृहद्रथ वंशोत्पन्न एक चंद्रवंशीय राजा का नाम, जो जरासंध का परदादा था।

३ ऋक्षवंशीय सत्यधृत राजा का नाम।

४ सत्यश्रवस आचार्य का पुत्र।

सत्या-सं. स्त्री. [सं.] १ दुर्गा का एक नाम।

२ सीता का नामान्तर।

३ द्रौपदी का एक नाम।

४ सत्यभामा।

५ भारद्वाज की माता का नाम, आयु नामक अग्नि का नाम।

६ व्यासजी की माता का नाम।

७ मगध देश के बृहद्रथ राजा की पत्नी, जो जरासंध की माता थी।

८ कोसल देश के नग्नजित राजा की कन्या, जो कृष्ण की पटरानी थी।

९ भरतवंशीय राजा मन्यु की पत्नी जिसका पुत्र यौवन था।

सत्याग्रह-सं. पु. [सं.] १ किसी सत्य के लिए किया जाने वाला आग्रह।

२ किसी शासन सत्ता के निर्णय व्यवहार आदि के प्रति अपना असंतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए किया जाने वाला अहिंसात्मक आन्दोलन या कार्यवाही।

सत्याग्रही-वि. [सं.] सत्य के पालन के लिए आग्रह करने वाला।

सं. पु.—वह व्यक्ति जो सत्याग्रह करता है।

सत्यानंद—देखो 'सतानंद' (रू. भे.)

उ०—सत्यानंद नालेर दीधा समत्थं, हुकम्म पिता धारिया रांम हत्थं।—सू. प्र.

सत्यानास-सं. पु.—ध्वंस, मटियामेट, तहस-नहस।

उ०—घर में वड़ग्या तौ घर रौ सत्यानास कर देवैला। छातां माथै कोपरियां री ढिगलियां खिड़कलौ। देखतां ई बणबट बौलाजो। अैड़ी नीं व्है के हुरड़ी देय रावळां में बड़ जावै।—फुलवाड़ी

२ सर्वनाश।

उ०—सिवहरै सिवहरै सत्यानास जाएला उण हरांमी रौ, कोढ उघड़ नै रूं रूं में कीड़ा पड़ैला उण दुस्टी रै।—अमरचूंनड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, जाणौ, व्हैणौ।

मुहा०—सत्यानास जाणौ=सर्वनाश की कामना करना। (गाली)

रू. भे.—सत्यानासी, सित्यानास।

सत्यानासी-सं. स्त्री.—१ पीले रंग के फूलों वाला एक कंटीला पौधा जो प्रायः खंडहरों और उजाड़ स्थान पर होता है। इसके बीज काले रंग के होते हैं जिनसे तेल निकाला जाता है। वैद्यक में इसका तेल चर्म रोगों को मिटाने वाला माना गया है।

२ देखो 'सत्यानास' (रू. भे.)

उ०—१ सोचै बोरां सिर भरियोड़ा रीसां, सत्यानासी री देता दुरसीसां।—ऊ. का.

उ०—२ वासी नरकां रा बिदर, ग्यासी रा गैसोत। सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत।—ऊ. का.

रू. भे.—सित्यानासी।

सत्यायु-सं. पु. [सं.] पुरुरवा व उर्वशी के पुत्र, श्रुतञ्जय के पिता।

सत्यारथ, सत्यारथप्रकास-सं. पु. [सं. सत्यार्थप्रकाश] १ स्वामी दयानंद द्वारा रचित एक ग्रन्थ। (आर्यसमाजी)

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री, कुटिल कहांणी रे। सत्यारथ सुणियां बिन सांप्रत होसी हांणी रे।—ऊ. का.

२ वास्तविक अर्थ, सत्य अर्थ।

सत्यासियौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—जाळंधर जोधापुरी, नृप रहियौ सुभ नीत। सिर आयौ सत्यासियौ, ग्रीखम थई वितीत।—रा. रू.

सत्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सत्यासीक—देखो 'सितियासीक' (रू. भे.)

सत्यासीमौं—देखो 'सितियासीमौं' (रू. भे.)

सत्यासीयौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

उ०—खलक लोक सहु खलभल्या, जीवइं किम जलबहिरा। 'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, तें 'क्रतूत' सहू ताहरा।—स. कु.

सत्येयु-सं. पु. [सं.] पुरुवंशीय राजा रौद्राश्व और घृताची के पुत्रों में से एक।

सत्योत्तर, सत्योत्तरइ—१ देखो 'सितंतरौ' (रू. भे.)

उ०—१ संवत बार सत्योतरइ, पहिलो सेत्रुञ्ज जात्र। कीधी सबल पहूर सुं, ते कहियइ लव मात्र।—स. कु.

उ०—२ सद्गुरु जिनचंद सूरि जी, सघलै गुण देखि सुघाट। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण में दीधौ पाट।—ध. वं. ग्रं.

२ देखो 'सितंतर'।

सत्योपपावन-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का पेड़, जो शरदंडा नदी के पास पाया जाता है।

सत्रंघण—देखो 'सत्रघण' (रू. भे.)

उ०—भरत्थ सत्रंघणा सेस सुभेवै, त्रिण है भ्रात नालेर ब्रंदै सत्रेवै।—सू. प्र.

सत्र-सं. पु. [सं. सत्रं, सत्र] १ यज्ञ, हवन। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०— [illegible] दो ही गढ़ां रै बीच [illegible] —[illegible] अथाग देति दोही [illegible] सत्र रा [illegible] दिया।—वं. भा.

२ [illegible]।

उ०—[illegible] सूरा गह [illegible]। प्रो न सत्र जण [illegible] —ईसरदास भाटी

३ [illegible] जहाँ [illegible] व गरीबों को मुफ्त भोजन दिया जाता था।

४ [illegible], धर्म।

५ [illegible] जो १३ से १०० दिनों में पूरा होता है।

६ भेंट, [illegible]।

७ [illegible], चादर।

८ [illegible], धन, दौलत।

९ [illegible] स्थान।

१० धर्मशाला।

११ जंगल, वन।

१२ विष्णु भगवान्।

१३ देखो 'सत्रु' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ [illegible] बनावळी, हय [illegible] धीर। काय [illegible] सत्र सिर, काय [illegible] सरीर।—हा. झा.

उ०—२ सत्रां दळ ऊपर धोम [illegible], रचे जुध 'पोम' तणौ धन- [illegible]।—सू. प्र.

उ०—३ [illegible] सत्र संघरै, [illegible] पड़ि-गिरिया। जेथ भिड़ै [illegible] पड़ै, तेथ [illegible] भुज धरिया।—गु. रू. बं.

उ०—४ सत्रां दळ मुगळ [illegible], [illegible] बाज [illegible] वेस। सत्रां [illegible], लिया कर सेल नरां ललकारि।

—मे. म.

सत्रजात [illegible] देखो '[illegible]'।

सत्रकार—१ देखो 'सत्रूकार' (रू. भे.)

२ देखो 'सत्राकार' (रू. भे.)

सत्रघण, सत्रघन, सत्रघ्न, सत्रहन सत्रघ्नु—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

उ०—धन्य सत्रघण धन्य लछमण भरथ धनि जे हर भाई। धन [illegible] सुधनि [illegible] वालमीक वणाई।—सू. प्र.

सत्रड़ौ—देखो 'सत्रु' (अल्पा; रू. भे.)

सत्रव, सत्रव—देखो 'सात्रव' (रू. भे.)

उ०—जहैं सात्रवौ अकंटक अमल जमाइ नरेस भी बूंदी आइ [illegible] सुजस सत्रवां समेत दिसा दिसा सुणायौ।—वं. भा.

सत्रहू—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सत्रहरम-वि.—सत्रह को।

उ०—सत्रहरम [illegible], सुद महमदपुर धांम। वर कवि, 'करण' बतांण कर, सुभटां तणौ संग्रांम।—वि. सं.

सत्रांजीत—सं. पु. [सं. शत्रुजीत] भीम। (अ. मा.)

वि.—शत्रुओं को जीतने वाला।

सत्रांण—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

उ०—१ सत्रांण सूं भूंझर क्रोध चितै, परगेह जूत भुरय कोट प्रितै।

—पा. प्र.

उ०—२ सह सुभट्ट अविमट्ट बंधि रिणवट्ट सत्रांणां। लोह मरट्ठ विकट, दियै, किरच.........कबांणां।—गु. रू. बं.

सत्रांम—देखो 'सुत्रांमा' (रू. भे.) (ना. डि. को; नां. मा.)

सत्रांसंघार-स. पु.—लोह। (ह. नां. मा.)

सत्राकार, सत्रागार-सं. पु. [सं. सत्र=पुण्य, धर्म, यज्ञ+करण आगार] गरीबों व असहायों को मुफ्त भोजन देने का स्थान।

उ०—१........साकंटिक तणा संवाद लोकतणा प्रवाद सुविसाल पथिकसाल। निरुपवाद प्रासाद नांनाप्रकार सत्राकार तिरस्कृतत्रि-विस्टस.........।—व. स.

उ०—२ कीजइ खट दरसन विचार परमारथि आत्मग्यांन अधि-कार। चिहूँ दिसि च्यारि प्रतोलीद्वार, अनिवार सत्रागार।—सभा

उ०—३........देवकरण सभा पंडितसभा लेखकसभा भांडागां-रिक कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमंडप त्रिक चतुस्क चत्वर...... ..।—व. स.

उ०—४ तालाव आरांम गढ देहरा विहार सत्रागार कोस्टागार भांडागार।—सभा

रू. भे.—सत्रुकार, सत्रूकार।

सत्राजित, सत्राजिति, सत्राजिती—देखो 'सत्यजित' (रू. भे.)

सत्राट—देखो 'सत्रु' (मह; रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ पाथ थाटां जंग रूपी कुवांणा नवाई पांणां, सत्राटां वेढियां थाटां सवाई सौभाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

उ०—२ सत्राटां देवाळौ दाह ओज में उजाळौ सूर, लड़ंतां काळ रौ चाळौ पैलां अंत लाग। पंचाळौ भुयंग काळौ धणी री वजाळौ फतै, राव वाळौ दीसैं इसौ छड़ाळौ प्रजाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

सत्राटांकरणीसरद-सं. स्त्री. यौ.—तलवार। (डि. को.)

सत्राटौ—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

सत्राव—देखो 'सत्रु' (रू. भे.)

सत्रास-वि. [सं.] भयभीत, संकटपूर्ण, दुःखी।

उ०—१ अडलोक कीध रांमण सत्रास, सहाय करो हरि जग निवास।—सू. प्र.

उ०—२ तद समर गयौ आसुर सत्रास, जुध जैत जैत कह 'ऊभौ' जास।—शि. सु. रू.

सत्रि, सत्री-सं. पु. [सं. सत्रि] १ राजदूत।

२ हाथी, हस्ती।

वि. [सं. सत्रिन] यज्ञ करने वाला।

सत्रुंजय-सं. पु. [सं. शत्रुंजय] १ काठियावाड़ का एक पर्वत जो जैनों का तीर्थ स्थल माना जाता है। (डिं. को.)
२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था।
३ हाथी, हस्ती।
४ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो कर्ण का भाई था, जिसे अर्जुन ने मारा था।
५ परमेश्वर।
६ द्रुपद राजा का पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।
७ श्रीविष्णु।
८ कौरवपक्षीय योद्धा जो अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था।
वि.—शत्रु को जीतने वाला।

सत्रुंजया-सं. स्त्री. [सं. शत्रुंजया] स्वामी कार्त्तिकेय की एक अनुचरी का नाम।

सत्रु-सं. पु. [सं. शत्रु] १ वैरी, दुश्मन। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायौ, छिपा सत्रु सौ तेमड़ै छत्र छायौ। सकौ सोखियौ हाकड़ौ नांम सिंधू, वहंतौ थकौ रोकियौ लोकबंधू।—मे. म.
उ०—२ लखीजै असी भांति आकास लागौ, भवांनी खड़ा पांण लीधां त्रभागौ। हमेसा रहै सत्रु रौ सीस हाथैं, मुखैं रत्र रौतासळौ छत्र माथैं।—मे. म.
पर्याय.—अचित, अणवंछक, अणवंछकी, अवजात, अभभाती, अभमांनी, अभीत, अमंत्र, अयार, अरंद, अरहर, अराती, अरिंद, अरि, अरियण, अवजीत, असहन, असुहर, अहिति, कुरख, कुवादी-वाट, केवी, खळ, घातक, घातू, दसू, दुखदायक, दुजण, दुनड, दुयण, दुरंत, दुरहित, दुरी, दुसह, दुसमण, दुस्ट, दोखी, दोयण, वेखी, पंथकपंथक, पर, पिसण, प्रतपखी, प्रसण, बियौ, वैरी, रिपु, रिम, रिसाघाती, विखम, विघनकरण, विड, विपख, विरोधी, वेधी, वैरहर, वैरी, सत्र, सत्राट, सपतन, हांणक।
२ राजनैतिक प्रतिद्वन्दी।
३ नाशकर्त्ता, संहारकर्त्ता।
४ विजयी।
रू. भे.—संत्तर, सत, सत्त, सत्तु, सत्तू, सत्र, सत्रांण, सत्राव, सत्रू, सत्रौ।
मह.—सत्राट, सत्राटौ।
अल्पा;—सत्रड़ौ।

सत्रुघण-सं. पु. [सं. शत्रुघ्न] राजा दशरथ के सबसे छोटे पुत्र का नाम, शत्रुघ्न।
रू. भे.—सत्रघण, सत्रधन, सत्रवन्न, सत्रुघ्न, सत्रुहण।

सत्रुघाती-सं. पु. [सं. शत्रुघाती] शत्रुघ्न के पुत्र का नाम।
वि.—शत्रु का नाश करने वाला।

सत्रुघ्न—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.)

सत्रुजित, सत्रुजीत-सं. पु. [सं. शत्रुजित] १ भगवान् श्रीविष्णु।
२ द्रुपद-पुत्र जिसे अश्वथामा ने मारा था।
३ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो सौवीरदेशीय था।
४ ध्रुवसन्धि व लीलावती के एक पुत्र का नाम।
५ पुरुरवावंशीय दिवोदास के पुत्र द्युमन का नाम।
६ प्रतर्दन राजा का नामान्तर।
७ कुवलयाश्व राजा का नामान्तर।

सत्रुट-वि.—थोड़ा, कम, अल्प।
उ०—यदि सरस्वती संदेह न भंजयति तदा को भंजयति यदि लक्ष्मी भांडागारै द्रव्यं सत्रुट करोति तदा को पूरयिस्मति।—व. स.
रू. भे.—सत्रोट।

सत्रुतपन-सं. पु. [सं. शत्रुतपन] कश्यप ऋषि व कद्रू के पुत्रों में से एक।

सत्रुता, सत्रुताई-सं. स्त्री. [सं. शत्रुता, शत्रुता+ई. प्र.] वैरभाव, शत्रुता।
उ०—म्हारां कंवरा नूं तेड़ौ जठै सत्रुता री संका हुवै इण कारण आपरा वारहठ हरसूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि........।
—वं. भा.

सत्रुदमण, सत्रुदमन-वि. [सं. शत्रुदमन] शत्रुओं के नाशकर्त्ता।

सत्रुमरदण, सत्रुमरदन-वि. [सं. शत्रुमर्दन] शत्रुओं का नाश करने वाला।

सत्रुहण—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.) (डिं. को.)

सत्रू—देखो 'सत्रु' (रू. भे.) (डिं. को.)

सत्रूकार-वि.—१ सदाव्रत बांटने वाला।
उ०—दया धरम रा राखणहार देह-सांभणारा करणहार बैठा तप करै छै। अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतांरा करणहार........।—रा. सा. सं.
२ देखो 'सत्राकार' (रू. भे.)
उ०—१ तै नगरीमांहि सत्रूकार कण केरा बहुला कोठार चउवीस प्रकारिइ मिलइ तिहां धान्य परिपरिना अपूरवपांन।
—नळदवदंती रास
उ०—२ राजसभाथी ऊठीउ रे, जाइ नगर मझारि। चित्तिइ चिंता अति घणी रे, आविउ जिहां सत्रूकार।—नळदवदंती रास
रू. भे.—सत्रकार।

सत्रूपा—देखो 'सतरूपा' (रू. भे.)
उ०—सत्रूपा नार स्वयंभू भूप, रहिस्सं बिचार न दीठौ रूप।
—ह. र.

सत्रेख-क्रि. वि.—तीक्ष्णता के साथ, तीक्ष्णता से।
उ०—वोलै भोज महाबळी बंधव जेत सत्रेख। ईंदां आदू रौ, करां निवाह विसेख।—रा. रू.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मरण पुग्गो, जेह मज्झ नवि कोई सत्तो।

—[illegible] सूरि

सत्व—सं. पु.—१ सत्ता।

२ सार, तत्व, अंश।

३ वास्तविकता।

४ चित्त की वृत्ति।

५ प्रकृति के तीन गुणों में से एक। (सांख्य)

६ प्राणी।

७ जीवन-शक्ति।

८ बल, साहस।

९ पदार्थ धर्म।

१० भूत-प्रेत।

११ सात्विक भाव।

१२ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम।

१३ सात्वत राजा का पिता एक यादव राजा।

१४ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

सत्वगुण—देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

उ०—१ सील सतोस दया सत भक्ती स्वधरम ग्यांन वैरागी। सत्वगुण का पायक सब सार्थ, गुरु वचना का पागी।

—श्रीसुखरांम जी महाराज

उ०—२ रज तम गुण का वेग प्रचंडा सत्वगुण ग्यांन नसाया। मोह लोभ नायक रज तम के, नगर अग्यांन वसाया।

—श्रीसुखरांम जी महाराज

सत्वगुणी—वि. [सं. सत्वगुणिन्] जिसमें सतोगुण हो।

२ साधु, विवेकी।

रू. भे.—सतोगुणी।

सत्ववंत—सं. पु. [सं.] वसुदेव एवं भद्रा के पुत्रों में से एक, यादव राजकुमार।

सत्वधाम—सं. पु. [सं. सत्वधाम] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

सत्वर—क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

उ०—साथ करै सिवदत्त रो, घन चंदरा सुरधांम। गुण सीता सत्वर गई, लै सह्वांह सलांम।—वं. भा.

रू. भे.—सतवर, सतावर, सतुर।

सत्वशील—वि. [सं. सत्वशील] १ सदाचारी।

२ सात्विक प्रकृति का।

३ धर्मात्मा, पुन्यात्मा।

सत्वाधिक—वि.—बहुत, श्रेष्ठ।

उ०—तद राजा रो रूप देख नायिका मोहित हुई। हाथ जोड़ कही—महाराज! आग्या देव सो करूं। राजा कही—ई राजपूत नैं वर, नायिका कही—म्हारी प्रीत तो थांसूं छै। राजा कही—म्हारो मन राजी रालै तो इणै नूं वर। तद राजा री आग्या सेती वरियो। राजपूत नूं परणाय, महल आय, राजपूत रो मांन बढाय प्रसन्न करियो। वैताळ कही—राजा! इयां दोनूं मांही कुण सत्वाधिक हुवो?—वैताळ पचीसी

सत्संग, सत्संगति—सं. स्त्री. [सं.] १ अच्छा साथ, अच्छी सोहबत।

उ०—सद्गुरु चंदन बावना, लागै रहे भुवंग। दादू विरा छाड़ै नहीं, कहा करै सतसंग।—दादूवांणी

२ संत जनों के साथ धार्मिक चर्चा।

३ वह जनसमूह जिसमें धार्मिक चर्चा, व्याख्यान या राम-नाम का जप या पाठ होता हो।

क्रि. प्र.—करणी, व्हेणी, होणी।

रू. भे.—सतसंग, सतसंगत, सतसंगति,।

सत्संगी—वि.—१ अच्छा साथ या अच्छी सोहबत करने वाला।

२ संतजनों के साथ धार्मिक चर्चा करने वाला।

रू. भे.—सतसंगी।

सथ—सं. पु.—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ सथ ऊठ नकीवां सरळ सद्द, रवि उदय आद सझिया रवद्द।—रा. रू.

उ०—२ इतरै अस खड़ आविया, सथ वावसू सताव। अकबर कहियो आवतै, वहियो साह निवाव।—रा. रू.

उ०—३ चाहत जोबन अधिक चित्त, मदन भई ऊनमत्त। हीरां डोलत हंसगत, सुघड़ सहेली सथ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—४ 'खेम' तणै सथ दूसरो, कायथ 'चंद' 'गुलाल'। वाकै पत्र लिखिया इता, साचा जिता सवाल।—रा. रू.

सथप्पणो, सथप्पबो—क्रि. स.—१ नियुक्त करना।

उ०—सिसु उथापि इक साह, साह सिसु अवर सथप्पै। सिसु सुभड़ां हित सझै, पटै गढ देस समप्पै।—सू. प्र.

२ स्थापित करना।

सथप्पणहार, हारो (हारी), सथप्पणियो—वि०।

सथप्पिओड़ो, सथप्पियोड़ो, सथप्प्योड़ो—भू० का० कृ०।

सथप्पीजणो, सथप्पीजबो—कर्म वा०।

सथप्पियोड़ो—भू. का. कृ.—१ नियुक्त किया हुआ। २ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री. सथप्पियोड़ी)

सथर—सं. स्त्री. [सं. स्थरा] पृथ्वी, भूमि। (डि. को)

२ देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

उ०—१ परम अवतंस धन वंस 'कूपांवती', दळ सुदृढ भुजावळ गुमर दाखै। रेण थर राव राजा सथर राखीयो, राज जस गांम-ध्रम भलां राखै।—जादूरांम आढो

उ०—२ थपै दास कर सथर, रघुवर किता अरोड़। विरद पीत

'सागर' विये, मीत तणौ कुळ मोड़ ।—र. ज. प्र.

सथळ-सं. स्त्री.—१ रोमावलि। (अ. मा.)

२ देखो 'सायळ' (रू. भे.)

सथांन—देखो 'स्थांन' (रू. भे.)

उ०—१ इण कजि मूझ नवौ पुर आपौ, सिव सथांन मौ राजस थापौ।—सू. प्र.

उ०—२ रनवां सहित सिकार रमांणौ, नकट सथांन गयौ नांनांणौ।
—सू. प्र.

सथांनक, सथांनिक—देखो 'सुथांनक' (रू. भे.)

उ०—पोह निज रंगमहल पधराए, ऊप्रमि वीर सथांनक आए।
—सू. प्र.

सथाप-सं. स्त्री.—तमाचा, थप्पड़, चांटा।

उ०—अंबा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि संग प्लवंगम तेम। थावै गज कायल खाय सथाप, झुकै घट घायल आय झुत्राफ।
—मे. म.

सथापणौ, सथापबौ—देखो 'स्थापणौ, स्थापबौ' (रू. भे.)

उ०—थळवट थांन सथाप्यो कुळवट किनियांणी मा कुळवट किनियांणी। धर जंगळ धिनियांणी, जग सारौ जांणी, जय मात करनी, जय करनी अंबै मा जय करनी अंबै।—मे. म.

सथापणहार, हारौ (हारी), सथापणियौ—वि०।

सथापिग्रोड़ौ, सथापियोड़ौ, सथाप्योड़ौ—भू० का० कृ।

सथापीजणौ, सथापीजबौ—कर्म वा०।

सथापियोड़ौ—देखो 'स्थापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सथापियोड़ी)

सथिति-सं. स्त्री. [सं. स्थिति] १ धरती, भूमि, पृथ्वी। (ह. नां. मा.)

२ देखो 'स्थिति' (रू. भे.)

सथियारौ-वि.—साथ रहने वाला।

उ०—हा हा दुखदाई छपनां हतियारा, सज्जन सुखदाई सावल सथियारा।—ऊ. का.

२ कुटुंब का, कुटुंब से सम्बन्धित, कुटुंबी।

सथियौ—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—ढोला बाईजी ने वेग बुलावौ, म्हांरी चत्रसालां सथिया दिरावौ।—लो. गी.

सथिर-सं. पु.—१ हाथी। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

उ०—१ पुत्रवती सोहागवति, पतिवरता विण सोय। स्त्रीरांणी चूड़ौ सथिर, बांणी भणै सकोय।—रा. रू.

उ०—२ धन्य धन्य वह जंगळ धरनी, किल्ला जहां बनायौ करनी। सथिर नींव पाताल सपरसत, घन भुरजाळ धुजा नभ घरसत।
—मे. म.

सथी—१ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—सथी करि मेछ घणा समराथ, भटी भड़तांम पड़ै भाराथ।
—सू. प्र.

२ देखो 'साथी' (रू. भे.)

सथूळ—देखो 'स्थूल' (रू. भे.)

उ०—झडप्फड़ पंखणि सावज भूळ, गुडंत गयाघण गात्र सथूळ।
—गु. रू. ब.

सथ्थ—देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ पंथ असंदै पूगणौ, अळगो घणौ अकथ्थ। व्हे विण जांण्यो हालणौ, संबल (जा.) विण सथ्थ।—बां. दा.

उ०—२ कहि सूवा किम आवियउ, किहीक कारण कथ्थ। तु माळवणी मेल्हियउ, किनां अम्हीणइ सथ्थ।—ढो. मा.

सथ्थल-क्रि. वि.—साथ में।

उ०—पूरया हे सखी पूरचा हे सथ्थल जीहाज, बैठा हे सखी बैठा दोन्यूं राजा रंगस्यु जी।—प. च. चौ.

२ देखो 'साथळ' (रू. भे.)

सथ्थी—१ देखो 'साथी' (रू. भे.)

२ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—भवांनी नमौ जोगनी जुथ्थ सथ्थी, भवांनी नमौ भेखी वीस हथ्थी।—मे. म.

सदंका-वि.—सरल, आसान।

सदंत-वि. [सं. स+दंत] दांतयुक्त दांतों वाला।

उ०—वरस तणौ बाळक हुऔ, औ अरि हर[illegible]दंत। तद नांनी कड तेडनें सुत लै गई सदंत।—पा. प्र.

सदंभ-वि. [सं.] कपटपूर्वक।

उ०—करां जोड़ रूपकीस, सांम पाय नांम सीस, बाघ चाल महा-वीर, कूदियौ किसीस। निसाचरां काळनेम पतीलंक तणौ पेम, माग बीच वणै रह्यौ सदंभां मुनीस।—र. रू.

सद-सं. पु. [सं. सदस्] १ सभा। (डिं. को.)

२ चंद्रमा, चांद। (अ. मा; डिं. को.)

३ दान, पुण्य।

उ०—देख तमासा डरपिया, कई साध सयांणां, सूरापूरा सद किया दिल ताक खुलाणां, जो दीना सो उबरीया, औ आदु अवखाणां।
—केसवदास गाडण

४ परमेश्वर।

५ ज्ञानी।

६ ब्रह्म।

७ साधु, संत।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

९ अंगिरा एवं सुरूपा के पुत्रों में से एक।

१० सत्य, सच। (ह. नां. मा.)

सं. स्त्री.—११ प्रकृति।

१० [illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible] सद में [illegible] । [illegible]
[illegible] ।—सू. प्र.

[illegible]—१ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] । रम चादर
[illegible], सद [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] सद [illegible], [illegible] पीवो मांगि । वाली पांणी
[illegible] ।—अनुभववांणी

२ [illegible] ।

उ०—१ सद [illegible] न सूझै, [illegible] में जीव अमूजै ।
[illegible], [illegible] मारग [illegible] ।—ऊ. का.

उ०—२ [illegible] सद [illegible], [illegible] विरद धरियां अनत ।
[illegible] ।—र. रू.

३ [illegible], शुभ, मंगलमय ।

उ०—[illegible] सद [illegible], अनन्त नयो वेदांत प्रचायो ।
—ऊ. का.

४ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] राजथानां [illegible], जठै प्रोछन वगत
[illegible] । [illegible] लगोया जिकै सद करै, रद करै
[illegible] ।—जवानजी आढो

उ०—२ [illegible] री, घणी करै हित घोम । रे दण
[illegible] री, सद [illegible] ।—बां. दा.

५ [illegible] ।

उ०—[illegible], म्हांनै सद पांणीड़ो पाव ववड़िया
[illegible] ।—[illegible]

६ मनोहर, सुन्दर ।

७ न मिटने वाला, अमिट ।

८ देखो 'साद' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] सद [illegible] हिक साथ घण, [illegible] बांधि वे
[illegible] । [illegible] नवरी चढै, 'जगा' री
[illegible] ।—महाराणा राजसिंह रो गीत

उ०—२ [illegible] चढै, [illegible] । [illegible] सदं, नीसांण
नद ।—सू. रू. वं.

उ०—३ [illegible] सद [illegible], [illegible] दासरथी
[illegible] ।—र. ज. प्र.

११ देखो 'सदा' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सद [illegible], [illegible] । [illegible]
[illegible] 'वछराज' [illegible] ।—[illegible]

सदर—सं. पु.—[illegible] । (अ. मा.)

सदको—सं. पु. [अ. सदक:] १ दान, खैरात ।

उ०—१ [illegible] जवाहिर री—सदका रोजीना दांन
ठोड़ जोग करणो ।—नी. प्र.

उ०—२ सदका सिरजनहार का, केता आवै जाइ । दादू धन
मनय नहीं, बैठ सुनावै खाइ ।—दादूवांणी

२ न्योछावर, बलिहारी ।

उ०—१ भर-भर प्याला प्रेम रस, अपनै हाथ पिलाइ । सदगुरु कै
सदकै किया, दादू बळि-बळि जाइ ।—दादूवांणी

उ०—२ जिकै दुवैगे सु पातिसाह रै सिर सदकै अर जिकै तिर
निकळसी सु पातिसाह जी कै वखत तें निकलेंगे ।—द. वि.

उ०—३ तुम हो तैसी कीजियै, तो छूटेंगे जीव । हम है ऐसी जनि
करो, मैं सदकै जाऊं पीव ।—दादूवांणी

क्रि. प्र.—लेवणा, राखणा ।

३ खुशामद, चापलूसी ।

४ मान, प्रतिष्ठा ।

वि.—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—आपा मार मरै जो सदका, बिन आपै मूवा सो रदका ।
—अनुभववांणी

सदगत—सं. स्त्री. [सं. सद्गति] मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—१ सारा सुभावां मैं बडो सुभाव माता पिता नै राजी राखणो
ही वडो गुण छै, जिण सूं ई लोक में जस, परलोक में सदगत होय ।
—नी. प्र.

उ०—२ यह गुण अत अदभुत वण्यौ, आ सम अवर न कोय ।
पढै गुणै चित लायकै, ताकी सदगत होय ।—गज-उद्धार

उ०—३ तवां ज हरि अवतार तुहारा, सदगत आंमै छुटै संसारा ।
—ह. र.

रू. भे.—सदगति, सदोगति ।

सदगतनाथ—सं. पु.—१ विष्णु । (डिं. को.)

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

सदगति—देखो 'सदगत' (रू. भे.)

सदगुटको—देखो 'सिद्धगुटको' (रू. भे.)

उ०—चटपट समट वरत नट चाकत, झलट पलट भट हाकत
ईख । बहवै दुपट नभ वटका, साकुर सदगुटका सारीख ।
—देवोजी धधवाड़ियो

सदगुण—सं. पु. यौ.—१ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

२ अच्छे गुण ।

उ०—निरगुण अणविद्या छाई जग जिप्णू, विद्या बिसरगो सदगुण
वस विप्णु ।—ऊ. का.

२ उत्तम लक्षण ।

सदगुणी—वि.—१ अच्छे गुणों वाला ।

२ उत्तम लक्षणों वाला ।

सदगुरु—सं. पु.—१ उत्तम आचार्य, गुरु या शिक्षक ।

उ०—सदगुरु प्रणम 'किसोर' सचिव 'अमरेस' सवाई । करै पिता

जिमि क्रिया, तिकण गुण समझ बताई।—र. रू.

२ धर्म गुरु।

रू. भे.—सद्गुरु

सदग्रंथ-सं. पु.—उत्तम ग्रंथ।

सदघटा-सं. स्त्री.—सभा। (ह. नां. मा.)

सदणौ, सदबौ-क्रि. अ.—१ अनुकूल होना, मुआफिक होना।

उ०—न जांनांमी नांमी विहस बर बांमी वळ वदै। अनादी स्रस्टी यै सुगम यह स्रस्टी कम सदै।—ऊ. का.

२ शब्द होना, ध्वनि होना।

उ०—सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै।
—रा. रू.

४ जिम्मेवार होना, उत्तरदायित्व लेना।

४ सहन होना या करना।

ज्यूं—अचपळा टावर नै कह्यौ सदै कोनीं।

सदणहार, हारौ (हारी), सदणियौ—वि०।

सदिओड़ौ, सदियोड़ौ, सदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सदीजणौ, सदीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सधणौ, सधबौ—रू० भे०।

सदन-सं. पु. [सं.] १ घर, मकान। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ मन मूरति सूरति मदन, सुभ गुण सदन सिंगार। असवारी कजि आंणियौ, ऊपरि लूंण उतार।—रा. रू.

उ०—२ सदन संवारचौ सांतरौ, नर उद्यम कर नेक। खित पर सोभा 'खेतसी', आखै मिनख अनेक।—नारायणसिंह सांदू

उ०—३ गाडा भरिया गोलणां, सूनौ सदन सुरंग। कंथ घणां ही कायरां, जांणी जे इम जंग।—वां, दा.

२ राशि, समूह।

उ०—चहुवांण इण मीणां रै प्रधांन हुतौ। तिकण रै दोइ दुहिता रूप री सदन जांणि जैता रै पुत्र बिग्रह राज..........विवाहण री विचारी। —वं. भा.

३ जल, पानी।

४ यज्ञमण्डप।

५ यमराज का आवास-स्थान।

६ रहने का स्थान।

७ खान।

सदनांमी-सं. स्त्री.—यश, कीर्ति।

उ०—सरती सदनांमी चाहत नहिं चोरी, डरती बदनांमी गावत नहिं डोरी।—ऊ. का.

सदम-सं. पु. [सं. सद्म] घर, मकान।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

सदमौ-सं. पु. [अ. सद्म] १ मानसिक आघात।

२ धक्का, आघात, चोट।

३ हानि, नुकसान।

सदय-वि. [सं.] दयायुक्त, दयालु।

उ०—थियौ सदय सुण निज थुई, टीटभ हूंत क्रसांन। उण रा वाळ ऊबारिया, महामंत्र जस मांन।—वां. दा.

रू. भे.—सद्‌य।

सदर-वि. [अ. सद्र] १ मुख्य, खास।

उ०—दरगाह सदर दोलत दराज, ताळा बुलंद इस्लांम ताज।
—ऊ. का.

२ बड़ा, महान।

३ भययुक्त और डरा हुआ।

सं. पु. [अ. सद्र] १ छाती, वक्षःस्थल, सीना।

२ सभापति, अध्यक्ष।

३ प्रधान सभापति के बैठने का स्थान।

४ किसी उच्च पदाधिकारी का मुख्य कार्यालय।

५ केन्द्रीय स्थान।

६ मुगलकालीन शासन-व्यवस्था में एक पदाधिकारी विशेष।

वि० वि०—यह पदाधिकारी प्रान्त और केन्द्र में अलग-अलग होता था। प्रान्तीय सदर का कर्त्तव्य था कि वह केन्द्रिय सदर को उन व्यक्तियों के नाम भेजे जो वजीफे व जागीर प्राप्त करने के अधिकारी हैं। प्रायः काजी और सदर दोनों पदों के लिए एक ही अधिकारी नियुक्त कर दिया जाता था। अतः इसे काजी के अधिकार भी मिल जाते थे। काजी प्रान्तीय न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था। एवं न्याय करता था। वह जिलों व कस्बों के काजियों के कार्य का निरीक्षण करता था।

[अ. सदर] ७ आँखों की धुन्ध।

८ देखो 'सधर' (रू. भे.)

उ०—जैनगर लिखावै सदर कागज जिता, सिखावै तुंहिज अवसांण 'स्यांमा'।—स्यांमसिंघ सेखावत री गीत

रू. भे.—सद्र।

सदरआला-सं. पु. [अ. सद्र आला] अदालत में जज के नीचे का हाकिम, छोटा जज।

सदरबाजार-सं. पु. यौ. [अ. फा. सद्र+बाजार] १ खास बाजार, मुख्य बाजार।

२ छावनी के पास का बाजार।

सदरी-सं. स्त्री. [अ.] १ कमीज या चोले के ऊपर पहना जाने वाला बिना आस्तीन का वस्त्र विशेष जो रूई से भरा होता है।

उ०—पछै सेठांणी कांनी देखनै बोल्या—मंजूस मांय सूं सदरी अर बगतरी काढ दौ।—फुलवाड़ी

सदरुससदर, सदरुससुदर, सदरुस्ससदर, सदरुस्ससुदर-सं. पु. [अ. सद्रुस्सुदूर] १ शाही हरमसरा का संरक्षक, अंतःपुरिक।

२ मुख्य न्यायाधिपति।

३ मुगलकालीन शासन व्यवस्था में एक विशिष्ट मंत्री।

वि० वि०—यह मुख्य सदर होता था। उसे तीन प्रकार के कार्य सम्पन्न करने पड़ते थे—(१) सम्राट के धार्मिक सलाहकार के रूप में, (२) विभिन्न व्यक्तियों व संस्थाओं में शाही दान-पुण्य के वितरक के रूप में, एवं (३) साम्राज्य के प्रधान न्यायाधीश के रूप में। अकबर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों में उसे व्यापक अधिकार व यथेष्ट मान-प्रतिष्ठा प्राप्त थी। प्रमुख धार्मिक सलाहकार होने के नाते 'शरा' के परस्पर विरोधी निष्कर्षों पर उसे अपनी अधिकारपूर्ण आज्ञा देनी पड़ती थी। उसे यह भी देखना पड़ता था कि सम्राट व सरकार कुरान की आज्ञा-आदेशों के विरुद्ध तो आचरण नहीं कर रहे हैं और क्या इस्लाम के गौरव की रक्षा कर रहे हैं। इसका महत्वपूर्ण कर्तव्य इस्लामी विद्याओं को प्रोत्साहित करना था। उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह विद्वान-मुसलमानों से सम्पर्क रखता था तथा उन्हें वजीफे आदि देकर प्रोत्साहित करता था। प्रमुख काजी की हैसियत से इसका सम्राट के बाद न्याय-सत्ता में दूसरा दर्जा था। यह प्रान्तों, जिलों व शहरों के लिए काजियों की नियुक्ति के लिए उम्मीदवारों की सिफारिश करता था। अकबर के द्वारा अपना शासन-प्रबंध पुनर्संगठित कर लिए जाने से इसके पास सामान्य अधिकार ही रह गये थे। अब वृत्तियां प्राप्त करने के लिए अधिकारी-विद्वानों, भले आदमियों और जरूरतमंदों की केवल सिफारिश कर सकता था, इस सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय सम्राट का होता था।

रू. भे.—सद्रससदर, सद्रससुद्दूर, सद्रस्सदर, सद्रससदर, सद्रससुदर, सद्रस्ससुद्दूर, सद्रस्सुदर, सद्रुस्सुद्दूर।

सदरूप—देखो 'सदरूप' (रू. भे.)

उ०—मदमोग ग्रूह महाबळी, सदरूप मेचक सिघळी।—गु. रू. बं.

सदळ, सदल–सं. पु. [सं. सदल] १ वृक्ष, पेड़। (अ. मा.)

वि.—१ दलदार, मोटा, पुष्ट।

उ०—१ नीरनां गतपुडां ग्राजां तुरत कीधां ताजां सदला नें ताजा मोटा जांणें प्रासाद ना छाजा।—व. स.

उ०—२ मोहनी मन मोहती पूंहचउ सदल सुरंग। अंगुली मूंगुनी फळी ममग्न तीमा नग सुरंग।—रुकमणी मंगळ

२ सेना सहित।

उ०—धवळहरें धवळ दियें जग धवळित, घण नागर देखें सघण। मधुमध मयक सदळ सिरि सांमळ, पुहप बूंद लागी पड़ण।

—वेलि

३ अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

उ०—१ झळकंति कटळ गोदरी, लहरीग्रा मोती सार। मांणिक मदाम तें सदळ मोहड, उरि एकावळ हार।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ 'सुरें' पातिसा मेन सह नेत-बंधा जिकें, लगें परमळ सदळ मोर लागें। सदळ दम भरें रत पी न सकें सकनि, अलिम्रळां तणा गुंजार आगें।—नापो गोरटियो

रू. भे.—सद्ळ।

सदवरत, सदव्रत–सं. पु. [सं शतवृत्त] १ अच्छे आचरण वाला व्यक्ति।

उ०—धरमीं नर ऊपर कोमल कर धारे, पापी पुरसां नैं सदव्रत संहारै।—ऊ. का.

२ देखो 'सदावरत' (रू. भे.)

उ०—सदव्रत करतोड़ी बरणासम सेवा, काढै मरतोड़ी रेवा तट केवा।—ऊ. का.

सदस्य–सं पु. [सं.] सभासद, मेम्बर।

उ०—मा'रजा, सेवा लाईबेरी रा मिन्त्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रांम सेवा संघ रा उपाध्यक्ष अर आरयसमाज रा सदा सूं सदस्य है।—दसदोख

सदांणौ, सदोणौ—देखो 'संदीणौ' (रू. भे.)

सदांनौ—देखो 'सांदियांनौ' (रू. भे.)

उ०—चादर हौज फुंहार, जळां भरि अतर खजांनां। रचि चिग पड़दा जरी, सरब वजजवै सदांनां।—सू. प्र.

सदांम—देखो 'सुदांमो' (रू. भे.)

सदांमापुरी—देखो 'सुदांमापुरी' (रू. भे.)

सदांमौ—देखो 'सुदांमौ' (रू. भे.)

उ०—तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ, पाया बिळकुळ भरै पुसी। बिदुर तणी भगती हित बाधा, खाधा केळा छोत खुसी।

—र. ज. प्र.

सदा–क्रि. वि. [सं.] १ सदैव, नित्य, हमेशा। (डिं. को.)

उ०—१ आज गुरुजी काळी अंधारी रात है, पाळै रो घणो जोर है। सदा सूं पेल्यां घरां पधारो। - दसदोख

उ०—२ हुवै चम्मरां झाटका जोति हूवै, सदा ऊतरै आरती सांझ सूवै। तकै भादवी माह ऊगांत तिथ्यो, पड़ै मायरै पाय प्रत्यीप प्रत्यौ।—मे. म.

उ०—३ धनो धन्य मा आवड़ा धाड़ धाड़ा, अखीजे किसी जीह थारा अखाड़ा। सदा तूं रमै रास नो कोड़ साथै, महामोड़ तू कोड़ तेतीस माथै।—मे. म.

मुहा०—सदा दिवाळी संत रै आठूं पहर आणंद=संत सदा खुश रहते हैं।

२ हर समय, हर वक्त।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, ग्रौ हिंदवांण बचावो ग्रोळै।

—रा. रू.

उ०—२ उठै झाड़ कंहीर पाहाड़ अेंडा, बणें मंथरां हालणो पंथ बैंहा। खळक्कै सदा नीझरां नीर खोळा, छळै कुंड अल्लील सल्लील छोळा।—मे. म.

उ०—३ दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळां, सोहियां दळां विच वीर साजा। सदा जोरावरां तणा नव-साहसी, राह सिर ऊपरै हुम्रै राजा।—देवराज रतनू

उ०—४ रातौ रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नहीं भाय। लोक लाज काज कुळ मांही, हरि पूज्यौ न सुहाय।—अनुभववांणी

३ निरन्तर, लगातार।

रू. भे.—सद, सदाई, सदाय।

सदाई—देखो 'सदा' (रू. भे.)

उ०—१ रावत जी नुं आवणौ छै तौ वेगा कीजै असवारी। भली भांत मनवार करस्यां। अठै तौ सदाई रहै छै जिण सूं गोठ री तयारी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ कांम करै नहीं काज करै कछु सीरौ चरै सदाई।

—ऊ. का.

उ०—३ राव उदैसिंघ जी महाराज सूं कयौ—जोधपुर सदाई थांरै नहीं रहसी। —द. दा.

सदागत, सदागति-सं. पु. [सं. सदागतिः] १ पवन, हवा।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ ब्रह्म।

३ सूरज, सूर्य।

सदाचरण—देखो 'सदाचार' (रू. भे.)

उ०—पेट सूं ई री पति, साधसी सुमत्ति ल्यावै, सदाचरण री सरण संतती उत्तम पावै।—नांनूरांम

सदाचार-सं. पु. [सं.] १ भलमनसाहतता।

२ धर्म नीति आदि की दृष्टि से किया जाने वाला शुभ और उत्तम व्यवहार।

उ०—१ आई उमड़ अविद्या आंधी, च्यार वरण चडगी चक चांधी। विरचां धजा तूटगी बांधी, सदाचार री संधै न सांधी।

—ऊ. का.

उ०—२ एक रस रहबौ कठिन, कठिन सज्जनता पारन। सदाचार अति कठिन, कठिन कांमदिक जारन।—स्वांमी ईस्वराचंद गिरि

३ शिष्ट व्यवहार।

रू. भे.—सदाचरण।

सदाचारि, सदाचारी-वि. [सं. सदाचारिन्] सदाचार धारण करने वाला, सदाचार से रहने वाला।

उ०—ससांक नी दीघति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र। सुवरणवेदी अहिनांणि जांणि, सरद्वतीसूनु क्रपांणपांणि।

—सालि सूरि

सदाजित-सं. पु. [सं.] भरतवंशीय एक राजा जो कुन्ति का पुत्र एवं माहिष्मान का पिता था।

सदाणौ, सदाबौ—क्रि स.—उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाना।

सदाणहार, हारौ (हारी), सदाणियौ—वि०।

सदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सदाईजणौ, सदाईजबौ—कर्म वा०।

सदावणौ, सदावबौ—रू० भे०।

सदादान-सं. पु. [सं. सदादान] १ ऐसा हाथी जिसका मद हमेशा बहता रहता है।

२ ऐरावत।

३ गणेशजी।

सदानंद-सं. पु. [सं.] १ शिव, महादेव।

२ श्रीविष्णु।

३ ईश्वर, परमात्मा।

सदानीरा-सं. स्त्री.—१ करतोया नदी का नाम जिसे कर्मनाशा भी कहते हैं। (डिं. को.)

उ०—देवी नरमदा सारजू सदानीरा, देवी गल्लका तुंगभद्रा गंभीरा।

—देवि.

२ वह नदी जिसमें हर वक्त पानी रहता है।

सदापुसप, सदापुस्प-सं. पु. [सं. सदापुष्प] १ आक, मदार।

२ कपास।

३ रोहितक वृक्ष।

सदाफळ-सं. पु. [सं. सदाफल] १ नारियल। (अ. मा.)

उ०—वलि संतोख सदाफळ सदली, करुणा रूप सुकोमल कदली। नारंगी तै प्रभू निरागइं, जंभीरी युगतें करि जागइं।—वि. कु.

२ एक प्रकार का नींबू।

उ०—उतंग चिहुंरै ओपमा सइहइति अधिक अपार। सदाफळ जंबोर नारंगि, बीलफळ उणिहार।—रुकमणी मंगळ

३ बेल का वृक्ष।

४ गूलर का वृक्ष।

उ०—सदाफळांणि निंबुआंणि राइणी महूअड़ा। कल्हार जुंबई नारंग-रंग बाग रूअडा।—गु. रू. बं.

५ वटवृक्ष।

वि.—सदा फलने वाला।

सदाबरत—देखो 'सदावरत' (रू. भे.)

उ०—और सदाबरत भूखां निमित्त अन्न काचौ पाकौ देय तौ तिण सूं प्रताप बधै।—नी. प्र.

सदामंद, सदामद-क्रि. वि.—१ परम्परागत, परम्परा से।

उ०—१ अमरावां नूं दीवांन मुत्सद्दियां नूं सदामद सिरोपाव हुवता सो हुवा।—राजसिंघ कूंपावत री वारता

उ०—२ तरै कान्हड़दे जी कह्यौ—एक वार जैसलमेर पोहचावणी सदामद रीत छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

२ पहले से, हमेशा से।

उ०—जाट थकां पुकारै छै पुकारू आया छै मांहारै सदामद लेता सू लें छै।—नैणसी

३ सदैव के माफिक, हमेशा के अनुसार।

उ०—डावड़ी गाय दुही तद सदामद जितरौ दूध हुवौ।—नी. प्र.

सदानन्द-सं. पु. [सं. सदानन्द] भगवान श्रीविष्णु।
सदान- देखो 'सदा' (रू. भे.)
सदायोड़ो-भू. का. कृ. —उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाया हुआ।
(स्त्री. सदायोड़ी)
सदारंग —देखो 'सदारंग'।
उ०—साथी जोडी नेड़ा नै गोगा रा जीवण बाबत पूछ्यो तो वो कयो कै इण बात बाबत इता गोता खावण री कांई जरूरत। सदारंग जीवण बांरी उदू बजाय देवणो हो। - फुलवाड़ी
सदावणो, सदाववो- देखो 'सदाणो, सदाबो' (रू. भे.)
सदावणहार, हारो (हारी), सदावणियो —वि०।
सदाविप्रोड़ो, सदाविड़ोड़ो, सदाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
सदावीजणो, सदावीजबो—भाव वा०।
सदावन्त-सं. पु.—दोस्त, मित्र। (अ. मा.)
सदावरत-सं. पु. [सं. सदाव्रत] १ हमेशा भूखों और गरीबों को भोजन देने का कार्य।
उ०—वठै पुरमनी सदावरत मांडियो जिकोई आवै तेनुं सीधो दीजै।—पोगोसी
२ नित्य गरीबों को निःशुल्क बांटा जाने वाला अन्न, भोजन।
उ०—अग मानव मारग दिल धारै, सदावरत समपै जग सारै।
—सू. प्र.
३ दान।
रू. भे.—सदवरत, सदव्रत, सदाबरत, सदाव्रत।
सदावरती-वि.—सदाव्रत देने वाला।
सदाविपोड़ो—देखो 'सदायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सदावियोड़ी)
सदाव्रत—देखो 'सदावरत' (रू. भे.)
उ०—१ दत सो पछै अभै अप दीजै, कासीवास सदाव्रत कीजै।
—सू. प्र.
उ०—२ भिखुक परज भूपति मन भाए, पुर हरवास सदाव्रत पाए।—सू. प्र.
उ०—३ भनुरा चंद्रायण चरइ, करइ सदाव्रत नेम। परमेस्वर हरि-हरि जपइ, माधव ऊपरि प्रेम।—मा. कां. प्र.
सदासवागण—देखो 'सदासुवागण' (रू. भे.)
सदासिव-सं. पु. [सं. सदाशिव] शिव, महादेव। (अ. मा.)
उ०—ईसपुरी ईसांन सैं, राजत अतह अनूप। गिरजा सम गोरी सबै, पुरस सदासिव रूप।—मोपाळदांन सांदू
सदासुख-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)
सदासुखी-सं. स्त्री.—जाति विशेष।
सदासुवागण, सदासुहागण-सं. स्त्री.—वेश्या, रंडी।
वि.—जिसका सुहाग अमर हो।
रू. भे.—सदासवागण।
सदि—१ देखो 'सबद' (रू. भे.)
२ देखो 'सदी' (रू. भे.)
३ देखो 'साद' (रू. भे.)
सदियै, सुदियै-सं. पु.—१ सूर्यास्त के पूर्व का सायंकालीन समय।
उ०—वो सिञ्यां रा सदियै-सदियै ब्याळू करनै ऊंचा माथै सूतो-सूतो होको गुड़गुड़ावतो हो के घरवाळी पगांतियै ऊभी कंवण लागी—पूरी इक्कीस रातां उपरांत काल ई तो पाछा बावड़िया अर भांभरकै ई चोधरी-बावा रै बेटा री जान मैं जावण रो हूंकारो भर लियो।—फुलवाड़ी
२ प्रातः काल।
वि. [सं. सद्य] शीघ्र, जल्दी।
रू. भे.—सधियै।
सदियोड़ो-भू. का. कृ—१ अनुकूल हुवा हुआ, मुआफिक हुवा हुआ. २ शब्द हुवा हुआ, ध्वनि हुवी हुई. ३ जिम्मेवार हुवा हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ. ४ सहन हुवा या किया हुआ।
(स्त्री. सदियोड़ी)
सदी-सं. स्त्री.—१ शताब्दी।
उ०—१ उगणीसवीं सदी रै पैलां मिनख सूं मिनख रा कंठ नै आपरा सःचेला रूप मैं बोली रै सैंदरूप अळगो करण री जुगत नीं वणी ही फगत लिखावट रा आखरां रै जरियै उणरो कंठ सगळा देस मैं घूमतो फिरतो।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण सेठ (फूळचंदजी)! थांरलै कामां री होड़ कदैही नहीं हुवै। बेटां-पोतां रै पल्लै भूख नीं, अमर जस नांव है। पीढ्यां बीतसी, सदी लद जासी पण लोग थांरो नांवो सदा लेता रैसी।
—दसदोख
२ सो वर्षों का समूह।
३ सो की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००।
वि.—१ अच्छा।
उ०—बद सदी वदी नेकी निहार, देखेगै दोजख वहिस्त द्वार।
—ऊ. का.
२ सो।
उ०—१ हाडो कांनीरांम तीन सदी साठ असवार।—नैणसी
उ०—२ सत्ताबीस दी कवण संभारै, सदी स कवण वधै संग्रांम। पंच हजारी किता पड़िया, किता हजारी आया कांम।—नैणसी
उ०—३ संवत १६४२ असाढ वद १२ अकबर पातसाह टीको सात सदी रो मुनसब जोधपुर, मोजत, सीवांणो दीधो।
—महाराज सूरसिंहजी रै राज री बात
रू. भे.—सदि।
सदीठ-सं. स्त्री. [सं. सुदृष्टि] सुदृष्टि, अच्छी नजर।
सदीनो-वि.—सैकड़ों वर्षों का।
उ०—मूंगी छम लोवड़ियां लियां, विच विच चुन्नी चींवटा। खोट

मदीना खड़ा मांहै; सकड़ सदीनां मींवटा ।—दसदेव

सदीव, सदीवत—देखो 'सदैव' (रू. भे.)

उ०—१ झिलै सिंघ गिर भंगरां, सौ एकलौ सदीव । रच टोळा फिरता रहै; जठै तठै वन जीव ।—वां. दा.

उ०—२ सीहा कै कुल संभव सदीव, जीवका हेत हंसि देत जीव ।
—ऊ. का.

सदुपदेस—सं. पु. [सं. सदुपदेश] १ उत्तम उपदेश ।

२ अच्छी सलाह ।

सदू—देखो 'सधू' (रू. भे.)

उ०—मांणक सदू 'महप' हर माता सती देवड़ी सूरज साख । पनरै संमत पोह वद पांचम, पोहती परव छयाळै पाख ।—रा. रू.

सदूर—क्रि. वि.—जो नजदीक न हो, दूर ।

उ०—वाकी भूठो अविखयो, दवखण गयौ सदूर । आप वडाई आपरी, आपी साह हजूर ।—रा. रू.

सदेव, सदेवत—वि.—देव तुल्य देवसमान ।

उ०—सुण सुत समय सदेवत सूरह, पावू समर वीर रस पूरह । दूजा देव कळू प्रत दूरह, है धांधळ हाजर रा हजूरह ।—पा. प्र.

२ देखो 'सदैव' (रू. भे.)

उ०—चवदस खेलै चांनणी, सुखिया लोग सदेव । हूं तौ ऊमण दूमणी, सिवरूं साजन देव ।—अग्यात

सदेह—वि. [सं.] शरीर सहित ।

सदै—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै ।
—रा. रू.

सदैव—१ नित्य, हमेशा, सर्वदा ।

२ निरन्तर, लगातार ।

रू. भे.—सदीव, सदीवत, सदेव, सदेवत ।

सदोख—वि. [सं. सदोष] दोष पूर्ण, दोष युक्त ।

उ०—१ मन दुमह दुहूं विध माहरै, असह वार लग्गै इसी । मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूलक जिसी ।
—रा. रू.

उ० —२ हरिजस रस साहस करै हालिया, मौ पंडिता वीनती मोख । अम्हीणा तम्हीणै आया तवण, तीरथै वयण सदोख ।—वेलि

सदोगति—देखो 'सदगत' (रू. भे.)

सदोमत, सदोमत्त—वि. —१ प्रसन्नचित्त ।

उ०—चालक नै मढ हूंता चाचर, भांभरियाळ सदोमत भूलर । काछ पंचाळ लगै छै डाकर, आई आवजै व्रन संकटियै ऊपर ।
—राजबाई रौ गीत

२ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—मद गळत जूह मैंगळ मसत्त, सिणगार खडा किय सदोमत्त ।
—गु. रू. वं.

रू. भे.—सद्दोमत ।

सदोरो—वि.—मदोन्मत्त, मदमस्त, नशे में उन्मत्त ।

उ०—१ घणी महिमांनी करी, भांग, अमल, दारू, गाढा सदोरा किया । साहा री वेळा हुई ।—नैणसी

उ०—२ सहेलियां दोय बैठी पगां हाथ देवै छै अमलां मैं सदोरा छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दूजै दिन गोठ ठहराई । राव जी जोधा जी नै अमलां दारू में घणा सदोरा किया ।—राव रिड़मल री वात

सद्द—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ खेतासर रवि ऊगतां, छायौ व्योम गरद्द । वांना देठाळै भया, थया नगारै सद्द ।—रा. रू.

उ०—२ त्रिया आकुळै संभलै रांम सद्दं । जती धाय वेगौ कहै सीत जद्दं ।—सू. प्र.

उ०—३ रोड़ि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई भेर सद्द, निफेरी भेरी निनद नीसांण धुबै । पंचसद दमांम पूर, रूडै ढ्ढ रिणतूर, प्रमांण मेघ पहूर हैरांन हुवै ।—गु. रू. वं.

२ देखो 'सद' (रू. भे.)

उ०—रिति वरखा सरद्द हैमंत संसर हद, वसंत ग्रीखम सद्द सुख सगळै ।—गु. रू. वं.

३ देखो 'स्वाद' (रू. भे.)

उ०—हंसा कहै रे डेडरा, सायर लिया न सद्द । ओछै जळ मैं रेंविया, ओछी होवै बुद्ध ।—अग्यात

४ देखो 'साद' (रू. भे.)

सद्दणौ, सद्दबौ—क्रि. अ.—१ बोलना, दहाड़ना, गर्जन करना ।

उ०—१ वडै क्रोध विसतार, रींछ सांवर घर रोणा । जठै सिंघ सद्दता, तठै गरजंत बिलौणा ।—रा. रू.

उ०—२ सद्दे मेघ क पंच-सबद्दा, भेर दमांम क भाहर सद्दा ।
—गु. रू. वं.

२ देखो 'सदणौ, सदबौ' (रू. भे.)

उ०—लग्गौ सायत चाव, घाव वग्गौ निसांणां । फिर सधीर सद्दियौ, खीर सामंद मथांणां ।—रा. रू.

सद्दणहार, हारौ (हारी), सद्दणियौ—वि० ।

सद्दिग्रोड़ौ, सद्दियोड़ौ, सद्द्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सद्दीजणौ, सद्दीजबौ—भाव वा० ।

सद्दय—देखो 'सदय' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—उर कोप आंणै अप्रमांणै, सिद्ध जांणै सद्दयं । ओपै अखाड़ै गै उडाड़ै, रूक भाड़ै रद्दयं ।—रा. रू.

सद्दळ—देखो 'सदळ' (रू. भे.)

उ०—आरूहै गयंद अवदल अली, सैद महाबळ सद्दळां । हाहुळि असंख मिळि हल्लिया, जांणक वावळ वद्दळां ।—रा. रू.

[illegible] (रू. भे.)

उ०—१ [illegible], [illegible] । सद्दस्त [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] जो, सद्दूलों [illegible] । जिन [illegible] जो, जिन [illegible] ।—स. कु.

उ०—३ [illegible] ही, सद्दूलां मुक्त [illegible] । भव [illegible], जिन प्रतिमा मुं नेह ।—स. कु.

[illegible] [illegible] १ [illegible] में तीन दिन [illegible] मनाया जाने [illegible] ।

२ [illegible] दिन ।

[illegible]—[illegible] १ [illegible] हुआ, [illegible] हुआ ।

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

([illegible])

[illegible] देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] गढ़ूळ बनाया ।—वं. भा.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] पांडा [illegible] तता, सद्दोमता मूंडाळं । [illegible] ग्यांनां [illegible], [illegible] ।—सु. रू. वं.

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] किउ सद्दर, [illegible] उग्रजै [illegible] ।—सु. रू. वं.

उ०—२ [illegible] '[illegible]' [illegible] भयंकर, [illegible] '[illegible]' मत [illegible] ।—रा. रू.

उ०—३ [illegible] '[illegible]' [illegible] सद्दर, '[illegible]' '[illegible]' तणो [illegible] ।—रा. रू.

उ०—४ [illegible] री, प्रार्थी [illegible] सूर । [illegible] तणो [illegible] [illegible] ।—रा. रू.

उ०—५ [illegible] सद्दरां । [illegible] ।—रा. रू.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] । [illegible] गुडो कर सद्दरो, [illegible] ।—रा. रू.

[illegible] देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—सं. पु. [सं. [illegible]] १ घर, मकान ।

२ [illegible] ।

उ०—[illegible], देवीनागरं [illegible] ।—देवि.

३ [illegible] ।

४. [illegible]—[illegible] ।

[illegible]—सं. स्त्री. [सं.] १ बड़ा मकान ।

२ [illegible] ।

सद्य—क्रि. वि. [सं. सद्यस्] १ आज ही, अब ही ।

२ तुरन्त, शीघ्र ।

उ०—प्रतिसय अगाध, ईस्वर अराध । सत तिवर सद्य, अपवरग मद्य ।—ऊ. का.

सद्योजात—सं. पु. [सं.] भगवान शंकर का प्रथमावतार जो श्वेत लोहित-कल्प में हुआ था ।

सद्र—देखो 'सदर' (रू. भे.)

सद्रढ़, सद्रढ़ौ, सद्रढ, सद्रढौ—वि. [सं. सुदृढ] १ सुदृढ, मजबूत ।

उ०—१ गाग्री धार सद्रढो तं सुरसांण वांण कवि ईदो । थप्पै गाढ सद्रढौ थप्पं बोध वाढ विसतारं ।—रा.रू.

उ०—२ गांव महेव निकट नवगढ्ढा, दुजड तणे छळ वणे सद्रढ्ढा ।—रा. रू.

२ अविचल, अटल, स्थिर ।

उ०—१ जो रचना जगपत्ती, लोतं आळ अमं अयलोकं । सोइ सत्यं सद्रढं, रेखा सार अंक रजपत्ती ।—रा. रू.

उ०—२ पतसाह सचिनहण कुंभ पर, सपण बूंद वांणी सुजण । दुरबोध मांन रहियो सद्रढ, कांन न कीधो वयण कण ।—रा. रू.

सद्रव—सं. पु. [सं. सद्रव्य] १ धनाढ्य व्यक्ति, पूंजीपति ।

उ०—गोडि विचि सूइजै ताविजै सिगटिए, सबल सी गांहि विण सद्रव मोरा । एतिए वार में पांणती ओजगी, दोजगी भरै निस-दिस दोरा ।—ध. व. ग्रं.

२ द्रव्य, दौलत, धन । (अनेका.)

सद्रस—वि. [सं. सदृश] समान, तुल्य, बराबर ।

उ०—१ परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधांन परम्म निवारण नग्ग ।—ह. र.

उ०—२ सो समै गई सुपना सद्रस, सोबाई सच सुकवियां । विण गवणी रंग देदे अथा, कतल करो मत कुकवियां ।—ऊ का.

सद्रससदर, सद्रससुद्दर, सद्रस्सदर, सद्रस्ससदर, सद्रस्ससुदर, सद्रस्ससुद्दर, सद्रस्सुदर, सद्रस्सुद्दर—देखो 'सदरुगसदर' (रू. भे.)

सद्रि, सद्री—सं. पु. [सं. अद्रि] १ हाथी, हस्ती ।

२ बादल, मेघ ।

३ अर्जुन का नाम ।

४ बिजली ।

सद्रीची—देखो 'सध्रीची' (रू. भे.) (अ. मा.)

सद्वती—सं. स्त्री. [सं.] पुलस्त्य ऋषि की एक पुत्री का नाम जो अग्नि-देव को ब्याही गई थी ।

सधण—वि.—पत्नी-सहित, सपत्नीक ।

उ०—धवळ हरे धवळ दियै जस धवळित, धण नागर देसै सधण । मकुमळ सबळ सदळ गिरि सांमळ, पुहप बूंद लागी पड़ण ।—वेलि

सधणौ, सधबौ—क्रि. अ.—१ सिद्ध होना ।

उ०—१ बधु दस गुणी जोर बळ वधियो, सो गुण अनंत पराक्रम

थियौ। आगा हूंत खुधा त्रीखरण अति, भोजन करै दसगुरणो

ति।—सू. प्र.

।—२ सूरापरण मसलत बळ सधतौ, 'विलंद' निजांम हूंत परिण

तौ।—सू. प्र.

२ सफल होना।

उ०—१ सब विधि को सेवा सधी, आदर भयो अमाप। मांनवीय गुरु मांनियौ परतापी 'परताप'।—ऊ. का.

उ०—२ इतरी धीरज सूं अरथ सधियौ।—नी. प्र.

३ काम चलना।

४ अभ्यस्त होना, मँजना।

५ निशाना ठीक होना।

६ पूर्ण होना।

७ पालन होना।

उ०—जिरण थी म्हारा भाई काका भीम रा पुत्र नूं भेजीजे तौ सुजस रै साथ हुकम सधसी।—व. भा.

सधणहार, हारौ (हारी), **सधणियौ**—वि०।

सधिओड़ौ, सधियोड़ौ, सध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सधीजणौ, सधीजवौ—भाव वा०।

सधप-वि.—तृप्त।

उ०—तमासा सिध पइखै समर मारतुंड, उमापत **सधप** तोड़ै कमळ आप। बड बडां सत्रां अरिणयां सधप विहडंतौ, 'मांन' तरण तरणौ खग अधप अरणमाप।—राघवदास भाला री गीत

सधर-वि.—१ श्रेष्ठ, बढ़िया, उत्तम।

उ०—१ जैचंद हुप्रो दळ पांगुळौ, असि लक्ख साहरण **सधर**। छत्तीस वंस राजा कुळी, वडौ वंस राठौड हर।—गु. रू. बं.

उ०—२ **सधर** जोड हथिआर सार समरंगरिण सज्जिय, पंचसबद वाजित्र घाइ नीसांरण वज्जिअ।—व. स.

२ मजबूत।

उ०—१ गढ कैलास जिम ऊंचउ, गरूई पौलि, **सधर** कपाट, लोह मय भोगल।—व. स.

उ०—२ जोधपुर भीड़ पड़ियां थकां जोधरै, लड़रण भुज नीम उरस लागौ। रूक हथ राव 'सूर्ज' **सधर** राखियौ, भिड़ै दूजौ 'वीकम' राव भागौ।—मालौ सांदू

३ प्रबल, सशक्त।

उ०—साह तरणा सोबा **सधर**, जोधांरण अजमेर। फौजां जोड़ै रात दिन, दोड़ै वेर अवेर।—रा. रू.

४ दयालु, कृपालु।

उ०—लछवर **सधर** अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मळ। छजत वयरण पथ सरस मयरण छव, कमळ नयरण रव तरण कळ।

—र. ज. प्र.

५ दृढ, मजबूत।

उ०—रंग देऊं वां नरा **सधर** छाती रा सूरा, रंग देऊं वां नरा प्रगट वातां रा पूरा।—ऊ. का.

६ आश्रय देने वाला, शरण देने वाला।

उ०—अह मत तज भज ईसर, करणाकर **सधर** सुतन दसरथ को, यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुवर रे।

—र. ज. प्र.

७ सख्त, कठोर।

उ०—घरधर स्रंग **सधर** सुपीन पयोधर, घणौं खीरण कटि अति सुघट। पदमरिण नाभि तरिण परि, त्रिवळि त्रिवेरणी स्रोरिण तट।

—वेलि

८ जबरदस्त, शक्तिशाली, बलवान।

उ०—१ जीती जीतीय पवाडा कोडि किहांइ न आंणी खोडि, सेव करइ कर जोडि भूपत भरो। गज तुरिय न लाभइ पार, **सधर** सुहड सार, छाजाति अवनिसार तुज्झ करो।—व. स.

उ०—२ खत्रियां खत्री तिलक खेड़ेचौ, सह दन विधि असिमर **सधर**। सु करै बिरद धारिया सबळा, हरै 'दूद' जिम रांमहर।

—गोरधन चांदावत री गीत

९ प्रभावशाली, गहरा।

उ०—चलतां चेत वांम मग चाल्यौ, घाव **सधर** वेदां पर घाल्यौ। अस्वालंब गवालंब आल्यौ, झटकै गधौ सीतळा झाल्यौ।—ऊ. का.

१० तेज और जोशपूर्ण।

उ०—फबै दळ कुंजरां सीस झंडा फरक, तुरंगां हांफरड **सधर** त्रंबक त्रहक। थयौ रज तिमर दिगपाळ पवै थरक, रीस री झाळ किरण माथ कमधां अरक।—विसनदांन वारहठ

११ धैर्यवान, धैर्यशाली।

उ०—१ कायर किरकिरइं, **सधर** धारमिक हीइ धरमध्यांन धरइं........।—व. स.

उ०—२ मनसिउं तिरइं पवनमिउं चालइ। कीरति विस्तरइ, परनारी सहोदर संग्रांम **सधर**।—कां. दे. प्र.

१२ अटल, स्थिर।

उ०—१........गिरि सिखर खडहडइ लागा, **सधर** धरा पातालि प्रवेस करइं लगी; मत्स्यगिलागिलि हुइ लागी, आपोपरि थाइ लगी, असमंजस कांई नीपजइ लगु, इसउ प्रलय समांन होइं प्रस्थानउं करइं।—व. स.

उ०—२ मंत्री तहां मयरण वसंत महीपति, सिला सिंघासरण **सधर**। माथै अंब छत्र मंडारणां, चलि वाइ मंजरि ढलि चमर।—वेलि

१३ अटल, अडिग।

उ०—प्रवाड़ा जीत साकौ कर मांनपुर, **सधर** गिरमेर दीठौ सवांही।

—दळपतसिंघ सेखावत री गीत

१४ तैयार।

१५ सावधान।

उ०—[illegible] उर ग्रजर पावस सधर घर ।
[illegible], मद घजर निमगर रिण भंवर ।
—र. रू.

१६ [illegible] व सहारे सहित ।

सं. पु.—१ [illegible] ।

उ०—[illegible] गिरवर, धूवटिया घकचूल घर । 'रासै' [illegible], नमियांणुं ऊपर सधर ।—रामसिंह री गीत

२ ऊपर का [illegible] । ३ धीरज, धैर्य ।

४ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पहले तीन यगण और फिर एक जगण होता है । (र. ति.)

रू. भे.—सदर, सद्दर, सध्धर ।

सधरम-वि. [सं. सधर्म] १ समान धर्म का ।

२ समान गुणों वाला ।

३ समान जाति या सम्प्रदाय का ।

४ समान, तुल्य ।

सधराय—देखो 'सिद्धराज' (रू. भे.)

सधरो-वि. (स्त्री. सधरी) १ अटल, अडिग ।

२ दृढ़, मजबूत ।

३ वीर, बहादुर ।

४ आधार सहित, सहारे सहित ।

रू. भे.—सद्दरो ।

सधव, सधवा-सं. स्त्री. [सं. सधवा] सुहागिन औरत ।

उ०—१ कोकिल पोढ़ा आगलि करवा रे, सधव धरया सिर कूंभ । इण परि राय सिन्धो निज सुत भणी रे, चित थी टलीयो दंभ ।
—वि. कु.

उ०—२ काजल टीको बिन फीको द्रग कोरां, सधवा विधवा विच [illegible] नहीं मोरा ।—ऊ. का.

रू. भे.—सिधवा ।

सधवाद-सं. पु. [सं. साधुवाद] १ यश, कीर्ति । (ह. नां. मा.)

२ शाबासी, धन्यवाद ।

सधाणौ, सधाबौ-क्रि. स.—१ निभाना, बनाये रखना ।

उ०—[illegible] कटै पाप दुख सुख किया, साधै ज्यूंहिज सधायलूं [illegible], विधवापणूं वधायलूं ।—ऊ. का.

२ देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हुवै बेडा़र [illegible] तंदि, दकै रयां भांण [illegible] राह । पायजेम लूंदवरयां सधायो 'हरा' रा परा, [illegible] सो अथायो राहि [illegible] ।
—[illegible] नांवावत मेड़तिया अर सेरसिंघ री गीत

सधाणहार, हारौ (हारी), सधाणियौ—वि० ।

सधायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सधाईजणौ, सधाईजबौ—भाव वा० ।

सधार-सं. पु.—१ आधार, आश्रय ।

उ०—१ पूरण पुरस पुरांण प्रमेसर, सुकवि सधार वार अग्रेस्वर ।
—रा. रू.

उ०—२ सत सूरित सहन सेवा प्रथमी सिरि, बित देणां अठारह वरग । जगत सधार राजि राजां रा, रिण कटकां आडा करग ।
—राव सिवसिंघ सेखावत री गीत

२ सहायता, मदद ।

३ भरोसा, विश्वास ।

[सं. सद्धार] ४ घी, घृत । (अ. मा.)

५ देखो 'साधार' (रू. भे.)

उ०—१ सी करण जेम गिरवर सधार, असमांन छिगे तोलै अधार ।—वि. सं.

उ०—२ 'जगलू' जग जीवाड़ियो, भांजै भै भैकार । कीधो जे जैकार अन, बाखो राय सधार ।—बां. दा.

उ०—३ ओघट घाटी चूरि करि, पाया पीतम यार । हरीया जांमण मरण का, सांसा मेट सधार ।—अनुभववांणी

सधारण-वि.—उद्धार करने वाला ।

उ०—१ पहुतउ किलास तणइ जाइ परवत, माता कन्हा आगिया मांग । तप पिण ऊहिज तीरथ, जगत सधारण ऊहिज जाग ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर । सीत तणो पत रांत सधारण, चाव करे भज तूं चिन चारण ।
—र. ज. प्र.

सधारणौ, सधारबौ-देखो 'सिधाणौ, सिधाबौ' (रू. भे.)

उ०—मेरे पास साह फुरमांणो, जोधापत हाजर जोधांणो । सब घर हुवै तुमारो सागो, एक वेर अजमेर सधारो ।—रा. रू.

२ देखो 'धारणौ, धारबौ' (रू. भे.)

उ०—प्रभू पद वादं जोड़ पांण, अग्र मुकट अधारै । स्रीपति बंभी-सणह सिर, सो मुकट सधारै ।—सू. प्र.

सधवार-सं. स्त्री.—गर्भवती स्त्री को सातवें महीने में दिया जाने वाला उपहार ।

सधायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ निभाया हुआ, बनाये रखा हुआ ।

२ देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सधायोड़ी)

सधारियोड़ौ—१ देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'धारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सधारियोड़ी)

सधियं, सुधियं-देखो 'सदियं' (रू. भे.)

उ०—पछै अणछक जांणै कांई सोचने बोल्यो—म्हैं गांव रै टावरां भेळो रमण नै जावूंला । सधियं सधियं पाछो नीं आवूं तो थारी दाय पड़ै ज्यूं करज्ये ।—फुलवाड़ी

सधियोड़ो–भू. का. कृ.—१ सिद्ध हुवा हुआ. २ सफल हुवा हुआ. ३ काम चला हुआ. ४ अभ्यस्त हुवा हुआ, मंजा हुआ. ५ निशाना ठीक हुवा हुआ. ६ पूर्ण हुवा हुआ. ७ पालन हुवा हुआ। (स्त्री. सधियोड़ी)

सधींग–वि.—१ प्रबल, जबरदस्त।

उ०—तनै झोक लागै जागा छटी पराई सुधारा काजै, सभावां आथगां भार बीरदां सधींग। पंथा आचार रै सारा महीप न लागै पलै, भुरा थारा रकैवां बीजा भीमसिंग।

—रांणा भीमसिंग रौ गीत

२ वीर, साहसी।

सधीर–सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

३ पृथ्वी, भूमि। (अ. मा.)

४ घोड़ा, अश्व। (ह. नां. मा.)

५ लक्ष्मण। (अ. मा.)

वि.—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ सुज तेज देखि सधीर, अड़ियौ न कोय अमीर। सझि तांम 'अजण' सलाह, सा' थियौ दौलासाह।—सू. प्र.

उ०—२ विवांणा अच्छरां सोक बाजी हाक डाक बीरां, बींटियौ सधीरां घणां धारिया विसन। पांणी अड़ै पाथरै कुबांण बांणा रीठ पड़ै, केवांणा वागौ जुवांणां किसन।

—किसनसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—३ खोपरां खणंक्कै बांण बिछूटै अनेकां खळां, सणंक्कै अंग मैं सार बहंतां सधीर। तड़च्छै द्रोयणां टूक धड़च्छै भुजाटां तेगां, कड़क्कै खोचियां माथै रड़क्कै कंठीर।—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ जिसकी थाह न मिले, गंभीर, गहरा।

उ०—पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार सधीर। वडौ 'अमर' लहुड़ौ 'जसौ', वडौ नरवर नरवीर।—सू. प्र.

३ धैर्ययुक्त, धैर्यवान।

उ०—१ रहौ सधीरा राजवण, नैण न नांखो नीर। रंगौ मत इण रंग मैं, चंगौ भीजै चीर।—अग्यात

उ०—२ धांधळां आचार धरै पधारै सरूप धारै, धारै मनां घोड़ी काज बीचारै सधीर। आसती सगती थारै ओपमां बछेरी आछी, झांमती सांमळां साथै आवियो कंठीर।—बादरदांन दधवड़ियौ

उ०—३ वांमी बंध बांधला, सूर समरांम सधीरा। तेज जेठ तावड़ा, आंखि धावड़ा अंगीरा।—मे. म.

४ अटल, स्थिर।

उ०—डिग मती रे तरवरा, मन मैं रहै सधीर। पाव पलक री बैठणौ, घड़ी पलक री सीर।—अग्यात

५ व्यग्र, उतावला।

उ०—१ सजै साकुरां पाखरां नरां कांमरां साथै, बाजतां नगारां बधै बीराधमै वीर। मारकां हजारां सीस धावियौ अठेल मारू, 'सूर' रौ आखरां बेल आवियौ सधीर।

—किसनसिंघ राठौड़ रौ गीत

उ०—२ वांकड़ा कमंध वीर, सांकड़ा आया सधीर। तांम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव।—सू. प्र.

उ०—३ वाजतां त्रंबाळ वीर, सांमुहौ आयौ सधीर। वीर तै त्रंबाळ वाज, गोम धोम बोम गाज।—सू. प्र.

६ सुन्दर, मनोहर।

उ०—हट अटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर सधीर। हिम हीर गोरव जाळी हजार, दमकंत जोति अति जिलहदार।

—सू. प्र.

७ दक्ष; चतुर।

उ०—सास्त्र सिलप संजोय, सिलावट्टां स सधीरां। सीस असम संमेल, नीम परठी मझि नीरां।—सू. प्र.

८ उत्तम, श्रेष्ठ।

९ निरोग, स्वस्थ।

उ०—आलिंगन देई करी पूछै कुसल सरीर, माता तुझ परसाद थी, हूं थयौ आज सधीर।—स्रीपाल रास

१० दान देने वाला, दातार।

उ०—जिण लखै अवनि वह थाट जीत, कोड़ेस वगसि वहु लीध क्रीत। सलिता सिणगारी जे सधीर, वाहर सूरह री चढै वीर।

—सू. प्र.

सधीरांसधीर–वि. यौ.—महावीर।

उ०—सोवा खरीदै अपार वापौ वखांणै जीहांन सारी, धीनौ 'अना' छत्रधारी सधीरांसधीर। बातां कै अख्यातां थारी न थावै मयंद बीजा, भारी गुणां आद चाळा बीलाळा सुवीर।

—जसकरण खिड़ियौ

सधु–सं. स्त्री.—पुत्री, बेटी।

रू. भे.—सदू, सधू, सिधु।

सधुरंधर–सं. पु.—बैल। (ह. नां. मा.)

सधू—देखो 'सधु' (रू. भे.)

उ०—१ देवी थारौ दाय, राजी व्हे ज्यूं राखजै। मोटौ सरणौ माय, म्हैं लीधौ 'मेहा' सधू।—अग्यात

उ०—२ 'सागर' सधू 'इंदरा' सकती, जननी धापू जाई। उगणीसै चोसट्टा वाळी, विपरां साल वताई।—मे. म.

उ०—३ 'चंद्रभांण' सधू चंद्रा वदनि, चंद्रावत सीसोदणी। रूपक चडावण रांम-पुरी, इधक रूप चंद्रायणी।—गु. रू. बं.

सधूमवरणा–सं. स्त्री. [सं. सधूमवर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सवेस–सं. पु.—१ सिद्ध महात्मा।

उ०—मुखां भळकै सहंस भांण समीप रळकै मुद्रा, बांण में मेखळी

नह कहरैं करैन । नहरौ अग्नि नाड़ा मसून मोहणो चढो, सरीर तोपड़ी कणा न्हारैं मछेन ।—अखैदान बादरजी री गीत

२ महादेव, शिव, शंकर ।

सतार—देखो 'सतर' (रू. भे.)

उ०—उदि वैमरं मामठा तव्वरं, मुकवटां मूलरं फौज पांसाहरं ।

—गु. रू. बं.

सत्तीन-सं. पु. [सं.] मित्र, दोस्त (घ. मा.)

सधीनी-सं. स्त्री. [सं. सधीनी] सखी, सहेली । (डि. को.)

रू. भे.—सध्रीनी ।

सनंकरणौ, सनकबौ—१ देखो 'संणक्रणौ, संणक्रबौ' (रू. भे.)

उ०—गजघट ठनंकिय भेरि भनंकीय रंग रनंकीय कोचकरी । घनरांग झनंकीय बांन सनंकिय चाप तनंकिय तापपरी ।

—सूरजमल मिसण

उ०—२ गन घार सनंक्रिय नीर झनंक्रिय, प्रोय सनंकिय होफ हयं दम घंट ठनंक्रिय नह रनंक्रिय भेरि भनंक्रिय मद्द भयं ।—ला. रा.

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

सनंकणहार, हारो (हारी), सनंकणियौ—वि० ।

सनंकिओड़ौ, सनंकियोड़ौ, सनंकयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनंकीजणौ, सनंकीजबौ—कर्म वा० ।

सनंकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्रियोड़ौ' (रू भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनंकियोड़ी)

सनंद, सनंदण, सनंदन-सं. पु. [सं. सनंदन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक ।

उ०—सत सनंदन सुक सनक, नारद अवर अमेस । ब्रह्म मारग जे ग्रहनु, तुंगी लहइ लवलेस ।—मा. कां. प्र.

सन-सं. पु. [अ. सन्] संवत् ।

उ०—सन उगणीसो चालीस छोह छक छायो, इत जेठ महीनै जेठ निसर हर आयो ।—ऊ. का.

२ एक पौधा विशेष जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है ।

अव्यय.—१ तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, से ।

उ०—बरात चलंगी प्यारे नई दुलही कैंनी लावोगे, बेसक व्याहो मिनवा में राजी, मोहि सन मिलकै सिधावोगे ।

—रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'मनि' (रू. भे.)

उ०—१ राजभवन दसमैं सन राजै, छित इक छत्र करै सुख छाजै ।

—रा. रू.

उ०—२ माह मंगळ जेठ रवि, भादरवै सन होय । डंक कहै हे भडुली, विरळै जीवै कोय ।—वर्षा विज्ञान

सनक-सं. पु. [सं. सनक] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र ।

उ०—१ सत सनंदन सुक सनक, नारद अवर अमेस । ब्रह्म मारग जे ग्रहनु, तुंगी लहइ लवलेस ।—मा. कां. प्र.

२ गदर के एक पुत्र का नाम ।

३ देखो 'सणक' (रू. भे.)

सनकणौ, सनकबौ—१ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संणक्रणौ, संणक्रबौ' (रू. भे.)

सनकणहार, हारो (हारी), सनकणियौ—वि० ।

सनकिओड़ौ, सनकियोड़ौ, सनकयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनकीजणौ, सनकीजबौ—कर्म वा० ।

सनकादक, सनकादि सनकादिक-सं. पु.—१ ब्रह्मा के सनक आदि चार मानस पुत्र—सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार । (अ. मा.)

उ०—१ सिरै इता प्रवसांगु, बहुल मो बाधि भगतबळ । अय अरय लै जाय, प्राय सनकादिक ऊजळ ।—पृ. प्र.

उ०—२ कयो वैकूंठ हूंता सु विमांण, अयो सनकादिक लै अव-सांण ।—सू. प्र.

उ०—३ सुक सनकादिक तेड़ो जक्ष किनर नैं कहावो रे । देव दांणव सहु तेड़ो मंडप भीतर आवो रे ।—रुकमणी मंगळ

सनकारणौ, सनकारबौ—देखो 'सणकारणौ, सणकारबौ' (रू भे.)

सनकारणहार, हारो (हारी), सनकारणियौ—वि० ।

सनकारिओड़ौ, सनकारियोड़ौ, सनकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सनकारीजणौ, सनकारीजबौ—कर्म वा० ।

सनकारियोड़ौ—देखो 'सणकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनकारियोड़ी)

सनकारी—देखो 'सणकारी' (रू. भे.)

उ०—कूडै मन आदर करै, तेह सजाई लीध । दासी नै सनकारी सिखावी, सगलो सिधो दीध ।—ध व. ग्रं.

सनकियोड़ौ—१ देखो 'संणक्रियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सनकियोड़ी)

सनकी—देखो 'सणकी' (रू. भे.)

सनडोरयौ-सं. पु.—वह रस्सी जिससे चरस की 'सूंड' और 'पंजाली' बंधी रहती है ।

सनढ-वि.—१ वीर, योद्धा, बहादुर ।

उ०—१ जोधपुर तखत पर रायसिंघ जीवतां, समवड़ व्है सारीख सनढ । गढ गढ समा पांमिया गढवत, गढपत गात प्रमांण गढ ।

—महाराजा रायसिंघ री गीत

उ०—२ संग्रांम लोह वाहै सनढ, विपरीत घाउ ऊखळा बढ ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ कह बात सनढ भीड़ै कडांह, हयग्रीव रूप कीनी हुडांह ।

—पा. प्र.

२ सुसज्जित, कटिबद्ध, तैयार ।

उ०—हैदळ कळळ पायदळ हूंकळ, सीसोदै खड़तै सनढ। गहकै ही बीजां गढपतियां, गंजे अगंजी त्रिकूट-गढ।

—महारांणा लाखा री गीत

३ दृढ, मजबूत।

उ०—१ बनै सवळ भुज अकळ सहंस बळ, खळ दळ खेरू करण-खग। 'गजपत' सुतन सनढ गढ ढाहण, कोय न तोय सरीखौ करग।—सादूळौ खिड़ियौ

उ०—२ भिड़णि जेम भगवांन असमांन अड़ियै भ्रिगुट, भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै। दळां रा तिकै रखपाळ न्याइ दाखिजै, महरि वधि भड़ां हूं सार भेळै।—भगवांनदास राठौड़ री गीत

४ वलवान, शक्तिशाली।

उ०—मोटा जळ चाढण मंडोवरि, समहरि गज गुड़ण सनढ। 'ऊदै' खळ सौं आफळती, गढपति होवै फतै गढ।

—प्रथ्वीराज राठौड़ री गीत

५ शुभ, मंगलमय।

उ०—पनरेसै समत पनरोतड़ै, सुदी जेठ ग्यारस सनढ। अवगाढ जोध रचियौ इसौ, गाढपूर जोधांण गढ।—सू. प्र.

रू. भे.—सन्नद्ध।

सनणौ, सनबौ–क्रि. अ.—१ लथपथ होना, युक्त होना।

उ०—सरीर संसकार सार नीर छीर सै सनैं, विध्वंस बेरि वंस कौ प्रसंसनीय तै बनै।—ऊ. का.

२ भीगना, तरबतर होना।

उ०—राजा पांडवां भी आसमेधी धारि लीनां, लोही की सन्योड़ी भूमिका मैं पिंड दीनां।—शि. वं.

सनणहार, हारौ (हारी), सनणियौ—वि०।

सनिओड़ौ, सनियोड़ौ, सन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सनीजणौ, सनीजबौ—भाव वा०।

सनत–सं. पु. [सं. सनत्] ब्रह्मा। (डि. को.)

सनतक, सनतकुमार, सनत्कुमार–सं. पु. [सं. सनत्कुमार] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनत्सुजात, सनत्सुजान–सं. पु.—ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक।

सनद–सं. स्त्री. [अ.] १ प्रमाण, सावूत।

२ विश्वास।

३ प्रमाण-पत्र।

रू. भे.—सनद्द, सनध, सनध्ध, सिधन।

सनदयापता–वि. [अ. सनद+यापतः] जिसे प्रमाण-पत्र मिला हो।

सनद्द–वि.—१ ध्वनि सहित।

उ०—तुरही सुर भेर भणंकत ही (ई), जद सद्द सनद्द दमांम जई।

—रा. रू.

२ देखो 'सनद' (रू. भे.)

सनद्वाज–सं. पु. [सं.] शुचि राजा के पुत्र एवं ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनध, सनध्ध—देखो 'सनद' (रू. भे.)

उ०—इसी विचार आलमगीर करणसिंघ जी नूं बुलाय कर कयौ, 'तुम औरंगाबाद रै सूबै जावौ' अरु करणपुरौ पनवाड़ी री सनधां कर दीनी।—द. दा.

वि. [सं. सन्नद्ध] तैयार, सन्नद्ध।

सनधुज, सनध्वज–सं. पु. [सं. सनध्वज] जनकवंशीय शुचि राजा का पुत्र एवं ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनबंध, सनमंद, सनमंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—१ रांम सहोदर रांम गुर, रांम पिता सनबंध। जिण दिन रांम न जप्पियौ, वौ दिन अंधोधुंध।—ह. र.

उ०—२ तरै केल्हण कहाड़ियौ—'इसड़ी वात कदे न हुई सूं क्यूं कीजे। सवारै संसार मांहे सगा सोई सकौ हुसै। पछै कोई आंपा सूं सनमंध करै नहीं, नै राव रै बेटौ को न छै।'—नैणसी

उ०—३ सनमंध साच संसार सुख, पलट आज अणथाह पर। वरण-खट तणी तुटी वरत, 'सेर' आज पड़ियौ समर।

—पहाड़खां आढौ

उ०—४ कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमंध सगाई।—ज. खि.

सनबंधी, सनमंधी—देखो 'संबंधी' (रू. भे.)

उ०—१ खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी। सारां मिळै तूझ सूं संधी, वळ दाखै किण सिर गजबंधी'।

—चतुरौ मोतीसर

उ०—२ 'मांन' सुत अनै 'किसनेस' सुत मारका, सारका कोट अरगेज सारां। थापियां अेक छत्र अेक उथापियां, धापियां सनमंधी फूल-धारां।—रांमसिंघ हाडा नै राजसिंघ राठौड़ री गीत

सनम–सं. स्त्री.—१ इज्जत, मर्यादा।

उ०—जद रजपूत कही सेबास थारी मात-पिता सौ तैं मारी पाग री सनम राखी।—कांणै राजपूत री वात

२ प्रेमपात्र। ३ लज्जा।

सनमन, सनमन—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—१ दूजौ कह्यौ—बाई री तौ राड़ ई है अर थें बाई रै साथै सनमन री वात करौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ घरवाळी थोड़ी ताल सोच-विचारनै कह्यौ—सावौ तौ भेजणौ ई है। औ सनमन नीं छोड़ां। गायां, मगरौ वेचांला, वळै बोहरौ करांला, भाईयां सूं मदत मांगांला।—फुलवाड़ी

उ०—३ बोली—आपारै जोड़ री गवाड़ी सूं सनमन व्हियां आज औ दिन क्यूं देखणौ पड़तौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ थें निरांत सूं सोवौ म्हैं इण सनमन मैं कीं रांभौ नीं पटकूंला।—फुलवाड़ी

सनमांन, सनमांनउ–सं पु. [सं. सम्मान] १ आदर सत्कार।

उ०—१ सदा करै सनमांन, मीठा बोलै हंस मिळै। दिए घरा धन दान, जस गाटै ठाकर जिकै।—बां. दा.

उ०—२ बदमागी दीना विवध, संपत हित सनमांन। संप राखणो मोमिनी, दिर चित राजस्थांन।—क. का.

उ०—३ नित दै वातां चुगल री, मुगजै कर सनमांन। ऊमर मैं नह ऊगजै, गीड़ां गे दुय कांन।—बां. दा.

उ०—४ तेग तेडावी मेठि धनावह, ग्रांण्यु राजदुग्रारि। राजा ऊठी ग्रालिंगन दीघउ, सनमांनउ सुविचार।—हीराणंद सूरि

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ साह मिळै 'ग्रभसाह' सूं, सिरै दियो सनमांन। छात नचीतो नेग छति, जांणै वात जहांन।—रा. रू.

उ०—२ बावळ ग्रागै बीभणो, की पावै सनमांन। तूभ रीभ ग्रागै तिमो, 'देवा' जग रो दांन।—बां. दा.

उ०—३ पंचू नै निर्वै घणो ग्रादर सनमांन देनै बीजै दिन चढीया सो लग्न रै दिन जालोर ग्राया।—वीरमदे सोनगरा री वात

रू. भे.—सगमांण, सन्मांण, सन्मांन।

सनमांनणो, सनमांनबो—क्रि. स.—सम्मान करना, ग्रादर करना।

उ०—१ खत्रीवट प्रगट करि जेत चाढी खवां, कुळ तिलक काढियो कोट लियो। सपूताचार पतिसाह सनमांनियो, वाळतै पोकरण ग्रंक वळियो।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ साह कहियो म्हारा ग्रनांमय री वदेस करि ग्रावै तिकां नूं सांम्हे जाइ हूं ही समभाइ पाछा मोडि ग्राऊं। तिको भी तान री निदेस सनमांनि दारा कहियो पिता रा पधारण मैं हूं भी पाट री पुत्र प्रतिस्ठा नूं पाऊं।—वं भा.

सनमांनणहार, हारो (हारी), सनमांनणियो—वि.।

सनमांनिग्रोड़ो, सनमांनियोड़ो, सनमांन्योड़ो—भू० का० कृ०।

सनमांनीजणो, सनमांनीजबो—कर्म वा०।

सनमांनियोड़ो—भू. का. कृ.—सम्मान किया हुग्रा, ग्रादर किया हुग्रा। (स्त्री. सनमांनियोड़ी)

सनमुक्ख, सनमुख—क्रि. वि. [सं. सम्मुख] सम्मुख, सामने।

उ०—१ पै हिण सिल फेरै प्रचड, सनमुक्ख सभारै। रहिया यक ग्रंग साच रांण, मिटिया माया रै।—सू. प्र.

उ०—२ निरखंत संत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुध्यांन ग्रो ध्यांन कर।—रा. रू.

उ०—३ सनमुख ग्रत मीठा सबद, मेह समें रो मोर। नगळै विख परपूठ ग्रो, चुगल दई रो चोर।—बां. दा.

उ०—४ गजगमणि सोल सिंगार, कतकाग्म भूंव प्रकार। ग्रति रंग उच्छव गाइ, 'ग्रभमाल' सनमुख ग्राइ।—सू. प्र.

वि. वि.—सम्मुख शब्द के रू. भे. की तरह सन्मुख का प्रयोग ग्रशुद्ध है। पुरानी कविताग्रों में 'सनमुख' मिलने के कारण ही इसका प्रचलन हो गया है। शुद्ध रूप 'सम्मुख' है तथा 'सन्मुख' से इसका कोई ग्रर्थ साम्य एवं सम्बन्ध नहीं है।

रू. भे.—सन्मुख, सैंमुख, सैंमुख, सैंमुखि, सैंमुखी।

सनमुख-माला-सहण—सं. पु.—१ वीर, योद्धा।

२ सिंह, शेर। (नां. डिं. को.)

सनमुखि—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—वात सजीवत करण वताए, ग्राप करण सनमुखि कजि ग्राए। —सू. प्र.

सनवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रठतीसै ग्रासोज मैं, सित सातम सनवार। गो 'सोनगिर' धांम हरि, नांम करै संसार।—रा. रू.

उ०—२ तिथ चतुरदसी सनवार तव, तव रयण पहर वीतां ग्ररध। ग्रगजीत' ग्रेह जनम्यो 'ग्रभो', वांण वेद हरखे विवुध। —रा. रू.

सनस—सं. पु.—१ लिहाज, ख्याल, ध्यान।

उ०—१ सगपण री सनस रुखमणी सम्रिधी, ग्रण मारिवा तणो ग्रालोजि। ए ग्रखियात जु ग्राउधि ग्रायुध, सजै रुकम हरि छेदै सोजि।—वेलि

उ०—२ वरजै सनस ठांमि व्यापार, चालै ग्रपणैं कुल ग्राचार। माइतां री ग्रांण म खंडै, मोटां सेती हठ म मंडै।—ध. व. ग्रं.

२ इज्जत, मर्यादा।

उ०—वल परहरै बना वध बोलै, सनस ग्रसा राखै धरसूत। रांण तुहाली पोळ रायमल, राजधणी सेवै रजपूत। —महारांणा रायमल्ल रो गीत

३ चीज, वस्तु।

४ शंका, लज्जा।

उ०—हमैं चोपड़ खेलैं है प्रेममगन हुवा कठी री कठी सारि गोट मेलै है। बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है. प्यारी री लालड़ी प्रीतम रो हीरो, प्यारी री चूंदड़ी प्रीतम रो चीरो।—र. हमीर

५ सनद, साक्षी।

६ कीर्ति, यश।

उ०—घाट पालट करै नाट रावत घणां, मेळि ऊभा रहै क मेळा। ऊजळी सनस संसार सोहो ऊपरै, चाखियो भोज खत्रीवाट चेळा। —राव भोज हाडा रो गीत

वि.—समान, तुल्य।

उ०—भड़ां किमाड़ निरख है भुवब्वळि, सार सु दनि 'ऊदा' सनस। जुध ग्राचारि ग्रभनिमा 'जसवंत', जग दीपै ऊजळो जस। —राठौड़ प्रथ्वीराज सीमोत रो गीत

सनसनी—सं. स्त्री.—१ सन्नाटा, स्तब्धता।

२ घबराहट, खलबली।

सनसणो, सनसबो—क्रि. ग्र.—जोशयुक्त होना।

सनसणहार, हारौ (हारी), सनसणियौ—वि० ।
सनसिग्रोड़ौ, सनसियोड़ौ, सनस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सनसीजणौ, सनसीजबौ—भाव वा० ।
सनसियोड़ौ–भू. का. कृ.—जोशयुक्त हुवा हुग्रा ।
(स्त्री. सनसियोड़ी)
सनस्सणौ, सनस्सबौ—देखो 'सनसणौ, सनसबौ' (रू. भे.)
उ०—वीरम्मं वैताळं, खिळं खेतपाळं । कटक्कां कसस्सं, सुभट्टं सनस्सं ।—गु. रू. बं.
सनस्सणहार, हारौ (हारी), सनस्सणियौ—वि० ।
सनस्सिग्रोड़ौ, सनस्सियोड़ौ, सनस्स्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सनस्सीजणौ, सनस्सीजबौ – भाव वा० ।
सनस्सियोड़ौ—देखो 'सनसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सनस्सियोड़ी)
सनांण –१ देखो 'सेनांण' (रू. भे.)
उ०—सोमेस्वर ब्राह्मण घणां छै पण थांहरै किसा सोमेस्वर सूं कांम छै सो तिण री सनांण कहौ ।—पंचदंडी री वारता
२ देखो 'स्नांन' (रू. भे.)
सनांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ सनांन कै खत्री सभंत तै करंत तरपण, दुजंस दांन गाय दांन ग्राय देत ग्ररपणं ।—सू. प्र.
उ०—२ जात पांत सपनैं सम जांणूं, पाप पुण्य नहिं एक पिछांणूं। वपू तौ म्यांन समांन वखांणूं, सार सनांन जीव सेनांणूं ।
—ऊ. का.
सनांनघर—देखो 'स्नांनघर' (रू. भे.)
सनांनजात्रा, सनांनयात्रा—देखो 'स्नांनयात्रा' (रू. भे.)
सनांनी—देखो 'सिनांनी' (रू. भे.)
सनाकत, सनाखत, सनागत—देखो 'सिनाख्त' (रू. भे.)
उ०—१ बादसाह ग्रौरंगजेब सनाखत हुवौ । महाराजा ग्रनूपसिंघ जी बीकानेर रा राजा हुवा ।—महाराजा पदमसिंह री वात
उ०—२ नाई कह्यौ—हां ग्रंदाता, जिणरौ ई तौ नांम ग्रेलम । गांव वाला सनागत नीं कर सकेला कै म्हारै टाट ही ।—फुलवाड़ी
सनाढ—१ देखो 'सनढ' (रू. भे.)
उ०—ग्रतुळी बळ ग्रमर न सहियौ ग्रोकर, साहि ग्रालम ग्रागळै सनाढ । मुगळ कुबोल बोलियौ मोड़ौ, जड़ियौ तैं वेगौ जमढाढ ।
—केसोदास गाडण
२ देखो 'सनाढ्य' (रू. भे.)
सनाढ्य–सं. पु.—गौड़ों के ग्रन्तर्गत कही जाने वाली ब्राह्मणों की एक शाखा ।
रू. भे.—सनाढ।
सनातन–सं. पु. [सं.] प्राचीन काल ।
२ परम्परा ।
३ धार्मिक परम्परा ।
४ सम्बन्ध, रिश्ता ।
ज्यूं—थांरै न म्हांरै पीढियां रौ सनातन है ।
[सं. सनातनः] ५ ब्रह्मा ।
६ विष्णु ।
७ शिव, महादेव ।
८ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।
९ सनकादि ऋषियों में से एक ।
वि.—१ ग्रादि काल का, प्राचीन ।
उ०—१ वप घणस्यांम नेत्र दुंति वारज, क्रत ग्रवतार सुरांचै कारज । ध्रत त्रप उग्र सनातन धारै, वेद मजाद धरम विसतारै ।
—सू. प्र.
उ०—२ सत वात कहै जग मैं सुकवी, कथ कूर कथै ठग सो कुकवी । सत कूर सनातन दोय सही, सत पंथ वहै सो महत सही ।
—ऊ. का.
२ निरन्तर, बराबर ।
३ स्थाई, दृढ़ ।
४ दृढ़, निश्चित ।
५ ग्रनादि, ग्रनंत ।
६ नित्य, शाश्वत ।
७ परम्परागत ।
उ०—मारि सकळ इम पाइ मधु, राखि सनातन राह। धकि लीधी बूंदी धरा, 'देवै' कंवर दुवाह ।—वं. भा.
८ परम्परानिष्ठ ।
रू. भे.—सुनातन ।
सनातनधरम–सं. पु. [सं. सनातनधर्म] १ ग्रनादि या प्राचीन धर्म ।
२ परम्परागत धर्म ।
उ०—१ रीत सनातनधरम, किया ध्रम करै ग्रणंकल । राजतिलक सिर धारि, तखत बैठौ ग्रतुळीबळ ।—सू. प्र.
उ०—२ कुमार कहियौ जे प्रजा नूं पीडित करै तिकां री पूठि लागणौ तौ क्षत्रियां रौ ही सनातनधरम जांणीजै ।—वं. भा.
३ हिन्दू धर्म ।
वि० वि०—इसके मुख्य ग्रंग हैं—बहुत से देवी-देवताग्रों की उपासना, मूर्त्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण ग्रादि ।
रू. भे.—सुनातनधर्म ।
सनातनपुरस, सनातनपुरुस–सं. पु. [सं. सनातनपुरुष] विष्णु।
सनातनी–वि. [सं.] १ सनातन धर्म का, सनातन धर्म से सम्बन्धित ।
२ जो बहुत प्राचीन काल से चला ग्रा रहा हो ।
सं. पु.—१ सनातन धर्म का ग्रनुयायी ।
सं. स्त्री.—२ दुर्गा, पार्वती ।
३ सरस्वती ।

४ सदमी।

सनाती-वि.—१ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

उ०—तारत रो निज तनय, नारदो मोर सनातो। मार प्रमोलक मित्र, सदा उनरो संगाती।—ऊ. का.

२ स्वजातीय।

सनाथ-वि. [सं.] १ जिसका रक्षक या मालिक हो।

उ०—तूं छयो वो विप्र हो, जिकण लियो चित वैर। वो अनाथ सनाथ तूं, माछंदर सिर मेर।—पा. प्र.

२ कृतकृत्य।

उ०—माठा दिन मिटिया हुवै, सेवक थया सनाथ। सफळी सेवा चाकरी, आज थई प्रननाथ।—ढो. मा.

रू. भे.—सनाह, सुनात, सुनाथ।

सनाद-वि.—कुल, वंश।

उ०—अच्छा वैराट उपाया जै नमस्तै नमो आदेस्वरी, समस्तै रचाया रूप अनेकां सनाद। गणांपति सारदा ब्रह्मा विष्णु रुद्र गाया, मांया महमाया जयो सकत्ती अनाद।—चैनकरण सांदू

रू. भे.—सुनाद।

सनाभ, सनाभि-वि. [सं.] १ एक ही गर्भ का, सहोदर।

२ सजातीय।

३ अनुरूप, सदृश।

४ स्नेहान्वित।

सं. पु.—१ सहोदर, भाई।

२ नजदीक का रिश्तेदार।

सनाय-सं. स्त्री. [अ. सना] १ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियों का गुण दस्तावर होता है, सोनामुखी।

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—हाथी थट खड़ हल्लियो, सुर नोवतं सनाय। बांधपुरा मगां तुरक, मिळै लड़ंगां श्राय।—रा. रू.

सनायु—[सं. स्नायु] १ स्पर्श ज्ञान कराने या वेदना का ज्ञान एक स्थान से दूसरे स्थान या मस्तिष्क तक पहुँचाने वाली शरीर के अन्दर की वायुवाहिनी नाड़ियां।

२ नहरुप्रा नामक रोग विशेष।

सनासन-सं. पु. [अनु.] वायु के झोंके से उत्पन्न शब्द ध्वनि।

क्रि. वि.—१ लगातार, निरन्तर।

२ शीघ्रतापूर्वक, तेज गति से।

सनाह—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ वैनांणी ढीलो घड़ै, मो कंथ तणो सनाह। विकसै पोइण फूल जिम, परदळ दीठां नाह।—हा. झा.

उ०—२ लोपै नियती ची प्रजा, कोपै 'अवरंग' साह। पड़ी तुरंगै पक्खरां, अंगै जड़ी सनाह।—रा. रू.

उ०—३ मूछ कै रोम व्योम कूं उट्ठै, रांन कै श्राए जम रांन सै रुट्ठै। एक हजार मुगळ सूर तें सूर, सहजादै की सनाह निरवाह कै पूर।—रा. रू.

उ०—४ 'भगवांन' 'भांण' वैवस्र बाह, सुरतांण तणा समहर सनाह। 'रांमेण' कळोधर रूपरेण, सारखा अरज्जण भीमसेण।—गु. रू. बं.

उ०—५ अै 'करनोत' अभंग चित, आरंभ ज्यों श्रोछाह। जतन घणां साथै हुवा, 'दुरगा' तणां सनाह।—रा. रू.

उ०—६ सुत 'रांम' रूप निज दळ सनाह, 'गोरधन' तणो 'नाहर' दुगाह।—रा. रू.

२ देखो 'सनाथ' (रू. भे.)

सनाहवांन, सनाहियौ, सनाही, सनाहीयौ, सनाहै-वि.—कवच वाले, कवचधारी।

उ०—१ सनाहवांन सांघणां, घटा की ऊमड़ी घणां। लिवंत सेल सेह मैं, मिटै छटा न मेह मैं।—रा. रू.

उ०—२ सूरां सेर सनाहियां बिरदैत बाहादर।

—लूणकरण कवियो

उ०—३ स्रीकस्ण लीधी जइत रे रे. सिसपाल बोलया बोल। बिहूं दळि सूरा सुहड सनाहीया रे, बिहुं दळ बाज्या जंगी ढोल।

—रुकमणी मंगळ

उ०—४ सेल रहै भड़ मेछ सनाहै, नूरअली जैतारण माहै।

—रा. रू.

सनाह्य-सं. पु. [सं.] युद्ध के योग्य हाथी। (डिं. को.)

सनि-सं. पु. [सं. शनि] सौर जगत का सातवां ग्रह। (नां. मा.)

उ०—१ अंकुस सीस वर्ण गुण ऐसो, जग वेधियो मघा सनि जैसो।

—रा. रू.

उ०—२ आव मुमत खग सकत अमांमी, सनि गुण हुवै जगत चो सांमी।—रा. रू.

पर्याय.—अंतक, कोणस्त, क्रस्न, छनीछर, जम, पिंगल, मंद, मुनंद, रुद्र, वभ्रु पिपळा, सवरी।

मुहा.—सनि री दसा आणी=बुरे दिन आना, आफत आना।

२ शनिवार।

उ०—चांदणी चवदस रो दिन छै। सनि आदित्यवार री संघ छै।

—नैणसी

३ शिव, महादेव।

४ सूर्य व छाया का एक पुत्र।

रू. भे.—सन, सनी, सन्नि, सन्नी।

सनिकादिक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

सनिगध-सं. पु. [सं. स्निग्ध] मित्र, दोस्त। (ह. नां. मा.)

वि.—चिकना, स्निग्ध।

उ०—सपत दसह भोजन अन सनिगध। साग छतीसां वांन सध।

—सू. प्र.

सनिचकर, सनिचक्र-सं. पु.—शुभाशुभ फल जानने का मनुष्य के शरीर के आकार का एक प्रकार का चक्र। (फलित ज्योतिष)

सनिचर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

सनिचरया सनिचरिया, सनिचरचा-सं. स्त्री.—डंक ऋषि से उत्पन्न डाकोत नामक जाति विशेष।

रू. भे.—सनीचरया, सनीचरिया, सनीचरचा, सनीसरया, सनीसरिया, सनीसरचा।

सनिचरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनिद्धि, सनिध, सनिधि—देखो 'सन्निद्धि' (रू. भे.)

उ०—सनिद्धि स्वांमि कै सदा पिनिद्ध पां परचा करैं। लरैं नहीं सुलोक तैं कुलोक तैं लरचा करैं।—ऊ. का.

सनिपित, सनिपिता-सं. पु.—सूर्य, सूरज। (अ. मा; डिं. को.)

सनिप्रदोख, सनिप्रदोस-सं. पु. [सं. शनिप्रदोष] वह प्रदोष व्रत जो किसी मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के शनिवार के दिन हो।

सनिप्रसु-सं. स्त्री. [सं. शनि प्रसू] सूर्य की पत्नी और शनि की माता।

सनिबावौ, सनिम'राज, सनिमहाराज, सनिमा'राज—देखो 'सनि'।

उ०—कह्यौ के इण मिनख रौ उणियारौ तौ वे खुद पैली वार देख्यौ। इण माया री तौ थां सगळा जेड़ी म्हनै ई ठा है। म्हारौ कीं थोड़ौ-घणौ ई कसूर व्है तौ म्हनै सनिमा'राज पूगै।—फुलवाड़ी

सनियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लतपत हुवा हुआ, युक्त हुवा हुआ. २ भीगा हुआ, तरबतर हुवा हुआ।

(स्त्री. सनियोड़ी)

सनिवार-सं. पु. [सं. शनिवार] शुक्रवार के बाद तथा रविवार से पहले आने वाला दिन।

उ०—तसु आग्रह करी संवत सतर सतोतरै रे; चैत्री पूनम सनिवार। नवरस सहित सरस संबंध रच्यौ रे, निज बुद्धि कै अनुसार।—प. च. चौ.

रू. भे.—सनवार, सनिसरवार, सनीवार, सनीसरवार, सनैवार, सनैसरवार, सनैस्चरवार।

सनिव्रत-सं. पु. [सं. शनिव्रत] शनिश्चरवार को किया जाने वाला व्रत विशेष।

सनिसर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

सनिसरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

सनिसरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनिस्चर-सं. पु. [सं. शनिश्चर] १ जैनियों के ८८ ग्रहों में से चौथा ग्रह।

२ देखो 'सनेसर' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—घडीयालउं सुक्र मंत्रि वइसइ सनिस्चर पूठि पाग दइ खाट बइसइ·········।—व. स.

सनी-वि.—१ लतपत, सराबोर, युक्त।

उ०—रस माधुर पी जंभीरी बिजोरा, फुकै साख फूलां फलां भारि जोरा। सनी सी मधू दाख अनार मेवा, दियौ आंणि लंचै सुधा जांणि देवा।—रा. रू.

२ देखो 'सनि' (रू. भे.) (अ. मा.)

सनीड़-क्रि. वि.—पास, समीप। (डिं. को.)

सनीचर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

उ०—१ सुक्करवारी बादळी, रहै सनीचर छाय। डंक कहै सुण भड्डळी, बरस्या बिनां न जाय।—वर्षा विज्ञान

उ०—२ पण आप लोगां रै तौ आज सूं ई ढाई बरस रौ सनीचर लागौ।—फुलवाड़ी

सनीचरया, सनीचरिया, सनीचरचा—देखो 'सनिचरिया' (रू. भे.)

सनीचरियौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीचरी-सं. स्त्री.—शनि का एक राशि पर रहने का समय। (ज्योतिष)

रू. भे.—सनैचरी।

सनीचरौ—१ बदकिस्मत, हतभाग्य।

२ देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीतात-सं. पु.—सूर्य। (नां. मा.)

सनीपात—देखो 'सन्निपात' (रू. भे.)

उ०—जकै सूं सैः भूतणी रौ वैं'म करै है, सनीपात नैं कुण समझै? कोई जिंद बतावै, कोई चूंड़ावण रौ नांव लेवै है।—दसदोख

सनीम-सं. पु. [सं. स+नियम] नियमानुसार।

उ०—अति तच्छव कीधौ 'अजन', निरखै सुतन सनीम। 'गजन' जिहीं सूतां सगह, सरब सपूतां सीम।—रा. रू.

रू. भे.—सनेम।

सनीयास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सनीयासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—तिण ऊपर चोतरौ छै समाद री सनीयासी परसादगी रौ।—नैणसी

सनीवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—जेठ सुद ४ सनीवार मु. नैणसी दिन घड़ी ४ चढता पोकरण चालीयौ।—नैणसी

सनीसर—देखो 'सनेसर' (रू. भे.)

उ०—अब कहूं सनीसर गुण अनेक; अन्नेक तणी तत वचन एक।—सू. प्र.

सनीसरया, सनीसरिया, सनीसरचा—देखो 'सनिचरया' (रू. भे.)

सनीसरयौ, सनीसरियौ, सनीसरचौ—देखो 'सनेसरियौ' (रू. भे.)

सनीसरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—१ मुड़चौ तजि खेत पुळ्यौ प्रतमाग, खड़ी त्रप जैत' दळै करि खाग। प्रथी ग्रह पंद्रह साल पंवार, वदी सह चौथ सनीसरवार।—मे. म.

उ०—२ माह ऊजळो सपतमी, वेद सनीसरवार।—रा. रू.

सनूरो-वि. (स्त्री. सनूरी) १ सुंदर, खूबसूरत।

उ०—१ पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरंगा सगाहा सकोगा सनूरा।—रा. रू.

उ०—२ नव नव ग्रह ग्रह चित्र सनूरा, पुर सुर धाम जिसा सुख पूरा।—रा. रू.

२ अधिक, बहुत।

उ०—मचि केसर कुमकुमं कीच अंबर कसतूरी, सुभ चंदण घण सार नीर मोरंम सनूरी।—रा. रू.

३ प्रकाशपूर्ण, ज्योति सहित।

उ०—परीतै सरीकंठ मैं हीर पूरो, सुभै सूर आकास जांणै सनूरो।—रा. रू.

४ तेजस्वी, कांतिमान।

उ०—१ अठी सैं अछाया उठी खेंग आगा, नगारा निहस्सै सनूरा तरस्सै।—रा. रू.

उ०—२ तुरग भल पाखरधा सस्त्र हाथै धरघा, नाचता माचता रण सनूरा।—सीताल रास

५ जोश व उमंगपूर्ण।

रू. भे.—ससनूर, ससनूरो।

सनेगद-सं. पु. [सं. स्निग्ध] मित्र, दोस्त। (ह. नां. मा.)

सनेपत-सं. पु.—वह खेत जिसमें फसल खड़ी हो।

उ०—आप ऊभो रहघो। कनारै एक बाजरी सनेपत खेत हतौ तींयै मांहि जाइ पेठो।—कांवळो जोड़यो नै तीडी खरळ री वात

सनेपातवाय-सं. पु.—घोड़े का एक रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के पेट पर सूजन आ जाती है। (शा. हो.)

सनेपी-वि.—हितैषी, शुभचिंतक।

उ०—सुरधर ओखद मूळ, सनेपी सांचो सारो। ऊपर खारो सूब, मांय सूं मीठो न्यारो।—दमदेव

सनेम—देखो 'मनीम' (रू. भे.)

उ०—नरनाथ रमणि सनेम, परसंत कमधज प्रेम।—रा. रू.

सनेयक-सं. पु. [सं.] भद्राश्व राजा का पुत्र, एक राजा।

सनेस, सनेसड़ो—१ देखो 'संदेस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—दुख सुख के कागज लिखूं, मांहि बोत सनेस। थै तो मन मांनी नहीं, करसूं भगवां भेस।—स्रीहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'स्नेह' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—तेल तिलां सूं उतरघां खळ सूं काई सनेस।—अग्यात

सनेसर-सं. पु. [सं. शनैस्+चर] १ शनि ग्रह।

२ शनिवार।

रू. भे.—सनिचर, सनिसर, सनिस्चर, सनीचर, सनीसर।

सनेसरियो-सं. पु.—शनिश्चर की पूजा करके उनके नाम से दान लेने वाली जाति विशेष का व्यक्ति।

रू. भे.—सनिचरियो, सनिसरियो, सनीचरियो, सनीचरो, सनीसरयो, सनीसरियो, सनीसरचो।

सनेसी—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—रांम सनेसी एक रांम है, मेरै मन भाया हो। और सनेसी छोडकै, वासूं मन लाया हो।—स्रीहरिरांमजी महाराज

सनेसो—देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—मेरै प्रीतम प्यारै रांम नैं, लिख भेजूं री पाती। स्यांम सनेसो कबहु न दीनो, जांण बुझ गुझ बाती।—मीरां

उ०—२ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हो। वांणी वांणी पलटकै उण देस समायो हो।—स्रीहरिरांमजी महाराज

सनेह-सं. पु. [सं. स्नेह] १ प्रेम, प्यार। (डिं. को.)

उ०—१ बीजळियां अंबर चढी, महीज वूठा मेह। बोलण लागा दादरा, लागण लगो सनेह।—अग्यात

उ०—२ साध समागम ना कीया, नांव न किया सनेह। हरीया मरि मरि ओतरै, लख चोरासी देह।—अनुभववांणी

२ आस्था, श्रद्धा।

उ०—कोई''''''''नै छोड़नै साची सद्धा लीधी। गुरु कीधा। विण उणां रो परचो छूटै नहीं वार २ जावै। जद स्वांमी जी पूछयो यांरो परचो क्यूं रासो। जद तै बोल्यो—म्हारो आगलो सनेह है।—भि. द्र.

३ दर्शन।

४ कृपा, दया।

५ देखो 'स्नेह' (रू. भे.)

रू. भे.—नेह, संनेह, सन्नेह।

अल्पा.—नेहड़ली, नेहड़लो, नेहलड, नेहलु, नेहलो, नेहू, नेहो, सनेहड़ो, सनेहो।

६ देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—तैं विरहणि किम जीवसै, ज्यारा दूर सनेह।—ढो. मा.

सनेहड़ो—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—हरीया सहज सनेहड़ो, जन कोई जांणंत। दुनीयां लोकाचार मैं, वहि वहि बीच मरंत।—अनुभववांणी

सनेही-सं. पु. [सं. स्नेहिन्] १ मित्र, दोस्त, साथी। (डिं को.)

२ भक्त।

३ चित्रकार।

४ लेप आदि करने वाला चिकित्सक।

५ प्रेमी, प्रिय।

उ०—सुरति सुहागनी सुंदरी, दुलहो समद सुजांन। सदा सनेही ऊपरै, वारूं मन अर प्रांण।—अनुभववांणी

वि.—१ प्रेम करने वाला, प्रिय।

उ०—प्रांण छंडतै तन छंडै, तन छाडंतै जीव। जन हरीया मत छाडिजै, परम सनेही पीव।—अनुभववांणी

उ०—१ ईखै सुपन त्रिया छिब एही, सुपह दाखियौ वचन सनेही।
—सू. प्र.

उ०—२ कृपा-धांम नव कंज नयण, अभिरांम सनेही। रूचि कपोळ ग्रीवा त्रिरेख, छबि वेस अछेही।—रा. रू.

उ०—३ सुपह भड़ा कथ कहै सनेही, उतन करां राजस घर एही।
—सू. प्र.

रू. भे.—नेही, संनेही, सनेह, सनेही, सनैई, ससनेही, स्नेही।

अल्पा;—नेहौ, सनेहौ।

सनेहौ—१ प्यारा, प्रिय।

उ०—जोड़ै कुंवर अनौ पित जेहौ, सत्रां अनेंहो दळां सनेहौ।
—रा. रू.

२ सावधान, सतर्क।

३ देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—सिघल सौ कीधौ सनेहौ रे, मांन दई मूक्या तेहौ रे। समारी सहू राघव वातौ रे, जिम तिम वणी आवै धातौ रे।—प. च. चौ.

४ देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—उत्तम कुल तै पांमिस्यइ, पणि नहीं करइ सनेहौ रे।
—स. कु.

५ देखो 'सनेही' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—ईंदा आद लगै पण एहौ, सांम धरम नित रहै सनेहौ। भोज महाबल आगळ भारथ, परब परब जांणै जुध पारथ।—रा. रू.

सनै—क्रि. वि. [सं. शनैः] १ धीरे-धीरे।

उ०—१ मिळ पर नार नजारा मारण, संपत हरण सनै सनै। करतब हीण विपत रा कारण, कव चारण किम रहै कनै।
— ऊमरदांन लाळस

उ०—२ रोळ बिगाड़ै राजनूं, मोल बिगाड़ै माल। सनै सनै सिरदार री, चुगल बिगाड़ै चाल।—बां. दा.

उ०—३ सुणौ निरदई साहिवा, काहै कुं दुख देह। थोड़ै थणी सुवाद छै, सनै सनै रस लेह।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ थोड़ा-थोड़ा।

३ सिलसिलेवार, क्रमशः।

सनैई—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—तठै आवै वीछडतां आपरा सनैई कुंवरजी नै कहै छै।
—रीसालू री बात

सनैचरी—देखो 'सनीचरी' (रू. भे.)

सनैवार, सनैसरवार, सनैस्चरवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे.)

उ०—माह सुदि १३ सनैस्चरवार दीक्षा रौ मुहुरत ठहरायौ।
—भि. द्र.

सन्न—देखो 'सुन्न' (रू. भे.)

सन्नक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक सूर, अरज्जुण उद्धव श्रौ अकरूर।
—ह. र.

सन्नड्ढ, सन्नढ—देखो 'सनढ' (रू. भे.)

उ०—खंडा खुरसांणी तेगां पांणी, सींगी नेजा सन्नड्ढ।
—गु. रू. बं.

सन्नत—सं. पु.—राम की सेना का एक बंदर। (रामकथा)

वि.—१ उदास, खिन्नचित्त।

२ सिकुड़ा हुआ।

३ झुका हुआ।

सन्नति, सन्नती—सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

२ सुनीथ का पिता तथा प्रतर्दन व मदालसा के पुत्र अलर्क के पुत्र का नाम।

सं. स्त्री.—३ पुलह मुनि के पुत्र ऋतु की पत्नी एवं बालखिल्य की माता का नाम जो दक्ष की कन्या थी।

४ विनम्रता।

सन्नतेयु—सं. पु. [सं.] १ कुशवंशीय रौद्राश्व एवं घृताची के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२ पुरुवंशीय रौद्राश्व एवं मित्रकेशी के पुत्रों में से एक।

सन्नद्ध—वि. [सं.] १ तैयार, कटिबद्ध।

उ०—सोहौ स्वीकार करि प्रांमार केमास रा मंत्र रै अनुसार सन्नद्ध होय नागौर रहियौ।—वं. भा.

२ कवच धारण किया हुआ।

३ किसी वस्तु या गुण से परिपूर्ण।

४ व्याप्त।

सन्नद्धबद्ध—वि. [सं.] १ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित।

उ०........न जांणिअ आत्मदल न जांणीअ परदल न जांणीअ भूतल न जांणीअ भोमंडल, न जांणिअ रात्रि न जांणीअ दीस, न जांणीअ पूरव न जांणीअ पस्चिम, सहू एकाकार हुइं, इसिइ समय पर दलइ वरतमांनि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूरणा हुइ सुहुउ सुहडइं, सगुड हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ.........।
—व. स.

२ वीर, बहादुर।

उ०—सीमाडा सवै वस कीधा, सवै गढ लीधा, गढवइ सवि निरद्धाटिया, दुरग सवे आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आंण फेरि, निस्कंटक राज्य प्रतिपालता संग्रांम विखय कदाचित उपजइ, बि पखा व्रहत्पुरुखा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, बिहुं गमी सन्नद्धबद्ध नीपना,.........।—व. स.

३ कवच धारण किया हुआ।

सन्नांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.)

उ०—दुतिवंत करै सन्नांन दांन, विध राज रीत सासत्र विधांन।
—सू. प्र.

सन्ना—देखो 'सन्नाह' (रू. भे.)

सन्नाटो-सं. पु.—१ निस्तब्धता, नीरवता ।

२ भय या आश्चर्य के कारण व्याप्त मौन या चुप्पी ।

उ०—रांणीजी री बात सुण आखा दरबार में सन्नाटो छायगो ।
—फुलवाड़ी

३ निर्जनता ।

रू. भे.—सणणाटो ।

सन्नादन-सं. पु.—राम की सेना का एक बंदर । (रांमकथा)

सन्नादी-सं. पु. [सं.] स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, व्यंजन ।

सन्नाह-सं. पु.—१ जिरह, कवच, बख्तर ।

उ०—१ गिणगारी सन्नाह सूं, व्रिस कांमणि वरियांम । वरि आई हाला वरण, करण महा जुध कांम ।—हा. झा.

उ०—२ लीया वरियांमे 'अंबर' आंमे सूरे पूरे सन्नाह ।
—गु. रू. बं.

उ०—३ तूटै सन्नाहे तलवार उडइ तिणगा अगन सुझाळ ।
—प. च. चौ.

२ अस्त्र-शस्त्र ।

३ वीर, योद्धा ।

४ मालिक, स्वामी ।

५ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होने की क्रिया ।

६ युद्ध में जाने हेतु की गई तैयारी ।

वि.—१ सहायक, मददगार ।

२ बचाने वाला, रक्षा करने वाला, रक्षक ।

३ कवच धारण किया हुआ ।

उ०—सन्नाहे भड़ सुहड़ जिकै, असवार अचागळ । परि पक्खर पाइक सेत, बांवळ पाण दळ ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—संनाह, संनाहु, सन्न्नाह, सनाह, सन्ना ।

सन्नि—देखो 'सनि' (रू. भे.)

उ०—अघपत्ती इनि आसनां, महिपति द्रोहे सन्नि । निजर दियै नव साहसो, फिरि बारहनो सन्नि ।—गु. रू. बं.

सन्निद्धि, सन्निधि-क्रि. वि. [सं. सन्निधिः] समीप, निकट, पास ।

उ०—१ सन्निद्धि सुभट समरन समीक, इक्क तें इक्क उद्धत अनीक । दुरयोधनपुर देसक दरोळ, हे दुरगदास वेसक हरोळ ।—ऊ. का.

उ०—२ सगपण ची सनस रुखमणि सन्निधि. अण मारिवा तणी अलोजि । ए अग्निपात जु आउधि आउध, सजै रुकम हरि छेदै मोजि ।—वेलि

रू. भे.—सनिद्धि, सनिध ।

सन्निनांण-सं. स्त्री. [सं. संज्ञिज्ञान] पूर्वजन्म की स्मृति । (जैन)

सन्निपात-सं. पु. [सं. सन्निपातः] १ कफ वात और पित्त के एक साथ बिगड़ने पर उत्पन्न होने वाली अवस्था जिसमें रोगी का चित्त भ्रांत हो जाता है, वह बकने लगता है तथा उछलता-कूदता है । आयुर्वेद के अनुसार यह तेरह प्रकार का होता है ।

२ कफ, वात, पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना, त्रिदोष ।

३ प्रहार, चोट ।

उ०—अर कहियो नरसिंह देवरा सस्त्रां रां सन्निपात हूं प्रांण हीण होय पड़ता ।—वं. भा.

४ देखो 'सन्निपातज्वर' ।

उ०—ताप सन्निपात जांणी अतिसार संग्रहांणि, फीहो विध राल पांडु गोला सूल खैण है ।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—संनिपात, सनीपात ।

सन्निपातजुर, सन्निपातजुवर, सन्निपातज्वर-सं. पु. [सं सन्निपातः+ज्वरः] त्रिदोषज ज्वर ।

सन्निवास-सं. पु. [सं.] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

सन्निहीत-सं. पु. [सं.] मनु-पुत्र एक अग्नि का नाम ।

सन्नी-वि. [सं. संज्ञी] भविष्य के हित-अहित को समझने वाला, पंचेंद्रिय ।

उ०—जद स्वांमीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी । तै बोल्यो हूं सन्नी ।—भि. द्र.

सन्नेस – देखो 'संदेस' (रू. भे.)

उ०—म्हारा बिछड़्या फेर न मिळिया, भेज्या ना एक सन्नेस ।
—मीरां

सन्नेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—लाज सीळ सन्नेह, लाज पतिवरत न मूकै । लाज मांण रक्खणी, लाज अवसांण न चूकै ।—रा. रू.

सन्मांण, सन्मांन—देखो 'सनमान' (रू. भे.)

उ०—१ दायजै जिसी पुरांणी कमीणी प्रथावां री विनासकारी चुगली चेस्टावां करतो आवै । जकैसूं कसबै में घणो सन्मांन पावै ।
—दसदोख

उ०—२ निरधणियां रै आगै हो परो'र नाजम-तहसीलदार नै ही ललकार नाखै । जकां वास्तै गांव रा मिनख लाधू रो सन्मांन राखै । रांम-रमी राखै ।—दसदोख

सन्मुख—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—१ दादू जिसका साहिब जागणा, सेवक सदा सचेत । सावधांन सन्मुख रहै, गिर गिर पड़ै अचेत ।—दादूबांणी

उ०—२ पीछै कंवर बीकोजी साथ कर सिहांण जोइयै मिलक ऊपर गया, तद मिलक सन्मुख आय बीकोजी री पायनांमी हुवो ।
—द. दा.

सन्यास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सन्यासाश्रम-सं. पु. [सं. संन्यासाश्रम] मनुष्य-जीवन को चार भागों में विभाजित करने वाले चार आश्रमों में से अन्तिमाश्रम ।

सन्यासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—१ तरै कह्यो बेटी इतरी मोटी हुई, नै इण रै बर री

खबर ही नहीं। न जांणां मुवौ, किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयौ।—नैणसी

उ०—२ उदर ब्रांमणी अवतरचौ, पद सन्यासी पाय। चतुर नरां चित मैं चढ्यौ, दयानंद गुर दाय।—ऊ. का.

सत्रत—सं. पु. [सं. ऋत] सत्य। (ह. नां. मा.)

सन्हद्द—[सं. सन्नद्ध] बन्धा हुआ। (घोड़े या ऊंट गधे की पीठ पर)

उ०—दूहूं दिस सद्द सन्हद्द दमांम, उडै कळ जंत्र अनंत अमांम।

—रा. रू.

सपंखरौ—देखो 'सुपंखरौ' (रू. भे.)

सपंदण, सपंदन—देखो 'स्पंदन' (रू. भे.)

सपंपाट—वि.—नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।

सप—सं. स्त्री. [अनु.] १ शपथ, दुहाई। (डि. को.)

२ तेज या तीव्र गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सपक—क्रि. वि.—झट, शीघ्र।

उ०—छिणियां तौ छिणमिण चलै, सपक हथोड़ा साथ। एक घड़ी में काढ्या 'लोटियै', बंधव पूरा साठ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

ज्यूं—सपक सपक हालणौ।

सपक्खर—वि.—१ कवच सहित।

उ०—सिलह-पोस लख असी, पमंग असवार सपक्खर। कोड़ि तीन पायक्क, धोम धांनंख फरसधर।—सू. प्र.

२ (युद्ध में रक्षार्थ हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली) लोहे की झूल सहित।

उ०—पडै जोध जरदंत, पडै बरहास सपक्खर। पडै बांण एक लक्ख सीस 'जिहंगीर' लसक्कर।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सपख्खर (रू. भे.)

सपखाळ, सपखाळौ—वि. [सं. स्व+पक्ष] १ अपने पक्ष वाला, तरफदार।

उ०—'सुंदर' नै 'माहेस' सिधाळा, खूंमांणां सगळा सपखाळा।

—रा. रू.

२ वीर, बहादुर।

३ श्रेष्ठ एवं कुलीन।

उ०—मन मोट गाहडि कोट मांझी, चाल पह कलिचाल। सपखाळ विरद विसाळ मालिम, भड़ां किमाड़ भुजाळ।—ल. पिं.

सपख्खर—देखो 'सपक्खर' (रू. भे.)

उ०—करि जीण सपख्खर वाज कटै, दहोडै खळ एम तुरी दवटै।

—सू. प्र.

सपगाई—सं. स्त्री.—सावधानी व सतर्कता।

उ०—१ सपगाई सब वातां मैं चाहियै कांम संवारण मैं वैरी मारण मैं।—नी. प्र.

उ०—२ गप्प मारै दावा करै तिण री भरोसौ न करौ इतरै उण नूं धीरज सूं परखौ सपगाई सूं परखौ।—नी. प्र.

सपगौ, सपग्गौ—वि. (स्त्री. सपगी) १ अटल व अडिग।

उ०—१ साहजादौ मुहसन साह वेस तरवारिया छै जिण री सारै धाक छै। खेत मैं पहाड़ री ज्यूं सपगा छै।—नी. प्र.

उ०—२ सरम सांमध्रम हूंत सपग्गौ, अधरम हूंत रहै अळग्गौ।

—रा. रू.

२ दृढ़, मजबूत।

उ०—१ जिकौ वादसाहां मैं सूरौ मनगरौ होय घणी भीड पडियां पगां सपगौ रहै तिकौ प्रथ्वी वेगी जीतै।—नी. प्र.

उ०—२ मरद सपगौ ऊ छै राह रीत आपसी सूं किणी रा भय उस्वास सूं फिरै नहीं।—नी. प्र.

३ विश्वासपात्र।

क्रि. वि.—होश में, चेतनावस्था में।

उ०—तिसै दूजौ प्यालौ चावडी वळै भरियौ जांणियौ गोलौ अजै सपगां छै।—जगदेव पंवार री वात

सपड़ाणौ, सपड़ाबौ—देखो 'संपड़ावौ, संपड़ाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रावत झाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया। सपड़ाया जळ सींच, वळै चितरांम वणाया।—मे. म.

उ०—२ ढोला जी रै राहै का तेड़ावै ढोला जी सपड़ासी मोकलावौ।—लो. गी.

सपड़ाणहार, हारौ (हारी) सपड़ाणियौ—वि०।

सपड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सपड़ाईजणौ, सपड़ाईजबौ—कर्म वा०।

सपड़ायोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपड़ायोड़ी)

सपड़ावणौ, सपड़ाववौ—देखो 'संपड़ाणौ, संपड़ावौ' (रू. भे.)

सपड़ावणहार, हारौ (हारी), सपड़ावणियौ—वि०।

सपड़ाविओड़ौ, सपड़ावियोड़ौ, सपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सपड़ावीजणौ, सपड़ावीजबौ—कर्म वा०।

सपड़ावियोड़ौ—देखो 'संपड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपड़ावियोड़ी)

सपट—सं. स्त्री.—अवसर, मौका।

ज्यूं—आयोड़ी सपट चूकणी।

२ झपट, टक्कर।

ज्यूं—बतूळिया री सपट सूं पायां कण कण री व्हैगी।

३ नाश, ध्वंस।

उ०—रळिया चढता मेघ, उचक्कै पवन हिंडोळै। सपट करै चित्रांम, फुहारां रंग उजोळै।—मेघदूत

सपणि, सपणि, सपणी, सपणी—सं. स्त्री. [सं. सर्पिणी] १ नागिन, साँपिन। (डि. को.)

उ०—सुंदर सुकनीणी कोरणीं साड़ी में, चुनकां सपणीं जिम मपणी पाड़ी में।—ऊ. का.

२ पीठ या गरदन पर होने वाली रोमों की लंबी भौंरी। (ग्रमुम)

सपणो—देखो 'सपनो' (रू. भे.)

उ०—ममारी दा मगळ गेन जांणी जिम सपणां।—र. ज. प्र.

सपतंग-सं. पु.—१ राज्य के सात अंग।

उ०—मिळे सगरांम सगरांम सुध ससळियो, अजड़ बळ सांन मभार तुटो। ग्राम भजार सपतंग नै सग्बगळ, छोटियां साह महमद छुटो।—महारांणा संग्रामसिंह री गीत

२ इज्जत, प्रतिष्ठा, कीर्ति, प्रसिद्धी।

उ०—सो मरणो जीवणो तो परमेसुर जी रे हाथै छै। नाळेर फेरीया म्हारो सपतंग जासी। मुलक में फजीज होऊं।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सपत—देखो 'सप्त' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सपत कोस धनयज हूं सोहत, मदन विनोद बाग मन मोहत।—सू. प्र.

उ०—२ सपत दगह भोजन व्रत सनिग्रध, साग छतीमां वांन वांन सघ।—सू. प्र.

उ०—३ रांम धांम 'जसराज', गयौ हिंदू ध्रम ग्रागळ। मास सपत 'ग्रजमाल', मात ग्रभ वास महाबळ।—रा. रू.

२ देखो 'सपथ' (रू. भे.) (डि. को.)

३ देखो सपती' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सपततंतु—देखो 'सप्ततंतु' (रू. भे.) (डि. को.)

सपततुरंग—देखो 'सपतास'।

उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपततुरंग तांणियं सविता। वासर विसाळ लहियं. चक-वांणं मंगळ भवण।—गु. रू. वं.

सपतदीप—देखो 'सप्तदीप' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोविंद वताइया जी, जिम थरप्या ब्रह्ममंड। तीन लोक चौदह भवन जी, सपतदीप नव खंड।—रुकमणि मंगळ

सपतन-सं. पु. [सं. सपत्नः] शत्रु। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सपतपुरी—देखो 'सप्तपुरी' (रू. भे.) (अ. मा.)

सपतम—देखो 'सप्तम' (रू. भे.)

उ०—नम छठो 'सेम' धधवाड़ नहि, रांण जगत्त सेवा रहण। धधवाड़ नाम सपतम धरै, स्यांमदास 'माधव' सुतण।—सू. प्र.

सपतमी—देखो 'सप्तमी' (रू भे.)

उ०—१ सपतमी फागुण नवकोट मांम, गढ घेर दिया डेरा संग्रांम।

—रा. रू.

उ०—२ पड़िया ग्रासुर पांच सौ, घायल हुवा हजार। माह उजाळी सपतमी, वेढ मनोहर वार।—रा. रू.

सपतमों-वि. (स्त्री. सपतमी) जो क्रम में छः के बाद आता हो, सातवां।

उ०—संमत दह सपतमैं सरस पचमठै समद्दर।—रा. रू.

रू. भे.—सपतवौं, सपतो।

सपतम्मी - देखो 'सप्तमी' (रू. भे.)

उ०—मिळियौ ग्रजमाल' सूं, ग्राइ उजळ सपतम्मी।—रा. रू.

सपतरिख, सपतरिखी, सपतरिसी—देखो 'सप्तरिसी' (रू. भे.)

उ०—लाख इग्यारै जोजनां, तासूं ऊंचो ग्रोर। तांह रहै ग्रानंद सूं, सपतरिसन की ठौर।—गज-उद्धार

सपतवौं—देखो 'सपतमौं' (रू. भे.)

उ०—दध मंडोदक सस्ठमौं, लाख बत्तीस वखांन। सुधोदक कहै सपतवौं, चौसठ लाख प्रमांन।—गज-उद्धार

सपतसपती-सं. पु [सं. सप्त+सप्तीः] सूर्य, भानु। (डि. को.)

सपतसुर—देखो 'सप्तस्वर' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रागं हुवंत नट ग्रौसर, संगीत सपतसुर।—गु. रू. वं.

उ०—२ गीत संगीत सपतसुर गाए, ग्रागळि पात्र ग्रखाडौ थाए।

—गु. रू. वं.

सपतहर, सपतहरि-सं. पु. [सं. सप्त+हरि=ग्रश्व] सूर्य, भानु।

(ना. डि. को.)

सपतारचि, सपतारची -सं. स्त्री. [सं. सप्तार्चिः] ग्रग्नि, ग्राग।

(ह. नां. मा.)

सपतारिख—देखो 'सप्तरिसी'

सपताळू-स. पु.—एक प्रकार का रंग विशेष।

उ०—१ जरद कसूंबल नारंग्या सपताळू सोहंत।—पनां

उ०—२ तठा उपरांत गंगेव नीबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सब्ज सपताळू सोनेनिया नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सप्ताळू, सफताळू।

सपतास, सपतासव—देखो 'सप्तास्व' (रू. भे.)

उ०—१ विढै जुध 'धांधिल' ग्रोरि ग्रहास, पेखै हुय वाग फसै सपतास।—सू. प्र.

उ०—२ सपतास नही इण सारिखो, जोय सूर इम जांणियौ। सूरजपसाव साकति सजै, इण विध हाजर ग्रांणियौ।—सू. प्र.

उ०—३ ग्रस सपतास ग्रालमां ऊपर, खळ दळ राकस वाहै खग्ग। कमंधां घर ऊजळो कळहण, जगचख जिम पेखियो जग्ग।

—चांवंडदांन बारहठ

उ०—४ छाजां मेर ग्रंग रूप बाजां सपतास छतौ, पाजां सेतबंध बाजां दुंदभी प्रमांण।—बखतसिंघ चुवांण री गीत

उ०—५ तिलमातर भीत न बीत तणी, थंमि हालत ग्रग्रकियां हयणी। कुसमालय लेत सुवास कटां, झमकै सपतास करां झपटां।

—मे. म.

सपती, सप्ती-सं. स्त्री.—१ ग्राग, ग्रग्नि। (ग्र. मा.)

[सं. सप्तिः] २ घोड़ा, ग्रश्व। (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सपत्ती।

सपतौ, सपतौ-सं. पु. [सं. सप्ताह] १ सात दिनों का समूह।
२ सात दिन का समय।
३ सात दिन तक वांची जाने वाली कथा।
क्रि. प्र.—वंचणा, बांचणा, वैठणा, बैठाणा।

सपत्त—देखो 'सप्त' (रू. भे.)
उ०—१ सपत्त मैं खणा आंमास ओपि असमांण ए।—गु. रू. बं.
उ०—२ पडिहार भीम भुज दांन भत्त, प्रिथमी दीप जांणै सपत्त।
—गु. रू. बं.

सपत्ती—देखो 'सपती' (रू. भे.)
उ०—छक वढियौ अणछेह, पमंग चढियौ भुवपत्ती। जांण चढयौ जेठ रौ, सुरज सपतास सपत्ती।—मे. म.

सपत्तौ-वि.—कामयाब, सफल।
उ०—हुसनअली सइयद्द, छत्र थापै मद छायौ, इण दुख ईरांनियां, तपत तन मन मुख तायौ। बात घात बेखतां, दाव देखतां सपत्तौ, सैद चूक कर समर, मार लीधौ गहमत्तौ। विसतरी वात दिस दिस विदिस, क्रित अभूत पखां किया। जोधपुर दूत जैसिंघ रा, आंणी खबर अचितिया।—रा रू.
२ देखो 'सप्ताह'

सपत्नजित-सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण व सुदत्ता के पुत्रों में से एक।

सपत्नी-सं. स्त्री. [सं.] सौत, सौतिन।

सपथ-सं. पु. [सं. शपथ] १ कसम, सौगन्ध। (डि. को.)
उ०—पैला रण जिण छूटि पग, पुळियौ डेरा पाइ। जरै कहाइ जनक हूं, दूरै सपथ दिवाइ।—वं. भा.
पर्याय०—आंण, सप, समौ, सोगन।
२ वचन, कौल।
उ०—पांणि जोड़ि दै घण सपथ, पुणियौ तदि रोपाल।—वं. भा.
रू. भे. - सपत।

सपथतंतु—देखो 'सप्ततंतु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सपद, सपदि-क्रि. वि. [सं. सपदि] शीघ्र। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सपनंतर-सं. पु—स्वप्न। क्रि. वि.—स्वप्न में।
उ०—१ नाजर राखै 'नथू' प्रगट सपनंतर पायौ, नारद ईंद कुबेर हेत दाखवै सवायौ।—रा. रू.
उ०—२ आज सखी सपनंतर दीठ, राग चूरै राजा पलंगै वईठ।
—बी. दे.

सपनाअवस्था, सपनावस्था-सं. स्त्री. [सं. स्वप्नावस्था] १ वह निद्रा-वस्था जिसमें स्वप्न दिखाई देते हैं।
२ सांसारिक जीवन की अवस्था जो स्वप्न के समान अवास्तविक व निस्सार मानी गई है।

सपनौ, सपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)
उ०—१ सूता सपनै लूटसी, जागंता संदेह। जनहरीया तिह लोक में, नारी जांण न देह।—अनुभववांणी
उ०—२ कुचमादी वाळी बात अेक सपनौ ही सपनौ, आयौ ज्यूं ई पाछौ मिटग्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ सूती सपनै ओंदकी, बोली अटपट वैन। जनहरीया धरि आंगनै, सही पधारै सैन।—अनुभववांणी
उ०—४ जे तूं सपना साच है, साचा सैन मिळाय। जब नहीं देखूं नैन भरी, तब कैसे पतिआय।—अनुभववांणी
उ०—५ आप दोनां माथै सपनां मैं ई बजौ नीं आवैला। आप किणी बात री चिंता मत करौ।—फुलवाड़ी
उ०—६ भटियांणी अर काली मासी रै जलम-जलम रौ सपनौ जागती आंख्यां सूरज रै चांनणै वधतौ-वधतौ पांच बरस रौ व्हैगौ।
—फुलवाड़ी
उ०—७ कुमार मोदीज नै कैवण लागौ—पछै विरमा जी रै माथै किसौ छोगौ वांधोड़ौ है। थूं जांणै कै म्हारौ सपनौ कदै ई कूड़ौ नीं व्है।—फुलवाड़ी
उ०—८ जगत भोग सपनां सम जोऊं, हमही गाय सिंघ मैं होऊं।
—ऊ. का.
उ०—९ सत भाव कहूं जग या सपनां, अधि अंतर दाव करै अपना।—ऊ. का.

सपनदोख, सपनदोस—देखो 'स्वप्नदोस' (रू. भे.)

सपमपाट—१ समतल, सपाट।
२ नाश, संहार।

सपरदांन—देखो 'संप्रदांन' (रू. भे.)

सपरस—देखो 'स्परस' (रू. भे.)
उ०—१ नभवांणी सपरस पवन, अगन रूप रस आप।
—जेतदांन बारहठ
उ०—२ अरस लगि पड़ि निहंस अधस, सूर अदरस धूम सपरस।
—रा. रू.

सपरसणौ, सपरसबौ-क्रि. स.—छूना, स्पर्श करना।
उ०—धन्य धन्य वह जंगळ धरनी, किल्ला जहां बणायौ करनी। सथिर नींव पाताळ सपरसत, धन भूरजाळ धुजा नभ घरजत।
—मे. म.
सपरसणहार, हारौ (हारी), सपरसणियौ—वि०।
सपरसिओड़ौ, सपरसियोड़ौ, सपरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सपरसीजणौ, सपरसीजबौ—कर्म वा०।

सपरसदिसा-सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+दिशा] वह दिशा जिस ओर से (सूर्य या चंद्र) ग्रहण लगना आरम्भ हुआ हो।

सपरसन-सं. पु. [सं. स्पर्शनः] वायु, हवा। (ह. नां. मा.)
रू. भे—सुपरसन।

सपरसमणि-सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+मणि] पारस नामक कल्पित पत्थर, जिसके स्पर्श मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है।

सपरसरेखा सं. स्त्री. [सं. स्पर्श+रेखा] वृत्त की परिधि के किसी एक

बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाने वाली गणित में सीधी रेखा।

सपरसियोड़ो-भू. का. कृ.—छुवा हुवा, स्पर्श किया हुवा ।

(स्त्री. सपरसियोड़ी)

सपरस्स—देखो 'सपरस' (रू. भे.)

उ०—नीर घाग सपरस्स, किनां वडवाग भकारी । मांग हूंत मार्तंड, स्याग वरतण उर धारी ।—रा. रू.

सपरांणी—सं. स्त्री. [सं. स्पर्शनम्] लेप करना ।

उ०—सोगरेन्द मावइ वली, मरदन अंगि अपार । सपरांणी स्रीखंड नवि, सोड उतारइ सार ।—मा. कां. प्र

सपरांणु—देखो 'सपरांणो' (रू. भे.)

उ०—नलरायनी हूं छउं सुंदरी, भीमराय तर्मे जांणु । तेह तणी बेटी दवदंती, माहरु पति सपरांणु ।—नळदवदती रास

सपरांणो—वि. [सं. सप्राण+क] वीर, योद्धा ।

उ०—सपरांणा सींगिणि गुण गाजइ, तीन्हा नीर विछूटइ । जर-हजीण प्रांगा विधिनइ, अंगि सूंसरा फूटइ ।—कां. दे. प्र.

२ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—१ आवि पाद्रि सइफलउं मांडयउं, लीधा घउपट घाउ । सोर-ठिया रावत सपरांणा, न दीइ पाछा पाउ ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ पांच पांडव रह्या उम नामो, द्रुपदी रही थाईय दासी । देव दांणव न राय न रांणउ, दैव आगलि न कोइ सपरांणउ ।

—सालिसूरि

उ०—३ राज करइ जगनीक नरेसर, न्यायवंत सुविचार । सूर वीर नइ अति सपरांणउ, अरि दल गंजणहार ।—हीराणंद सूरि

रू. भे.—सपरांणु ।

सपरि—वि.—१ शुभ, मांगलिक ।

उ०—मालणि आवि मोगरा, तंबोली दिइ पांन । सपरि समप्पिउं सूंखडं, साहमुं आवइ धांन ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)

उ०—गम्भि अलीबंध मिलहट सपरि, धिखत चख गिड़कंध धांखियां । पाघड़ाबंध ओछा प्रचंड, अंध जेम उपड़ांखियां ।—सू. प्र.

सपलांणियो, सपलांणो—वि.—चारजामा कसा हुग्रा । (सवारी का ऊंट या घोड़ा)

उ०—१ चरवादार प्रत कहै, करो तुरंग तइयार । हुकम सुणी आंण्यो तुरी, सपलांणो तिण वार ।—श्रीपालरास

उ०—२ पांचळ करो सपलांणियो, दो मुझ हाथ बंदूक । अरि अवनी पर आवतां, कर देसूं दो टूक ।—नारायणसिंह सांदू

सपलाणो, सपलावो—क्रि. स. [सं. सप्लावनम्] १ स्नान करना, नहाना ।

२ देखो 'संपड़ाणो, संपड़ावो' (रू. भे.)

सपलाणहार, हारो (हारी), सपलाणियो—वि० ।

सपलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

सपलाईजणो, सपलाईजबो—कर्म वा० ।

सपलायोड़ो—भू. का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ ।

२ देखो 'संपड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सपलायोड़ी)

सपलावणो, सपलावबो—देखो 'संपड़ाणो, संपड़ाबो' (रू. भे.)

सपलावणहार, हारो (हारी), सपलावणियो—वि० ।

सपलाविप्रोड़ो, सपलावियोड़ो, सपलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सपलावीजणो, सपलावीजबो—कर्म वा० ।

सपलावियोड़ो—देखो 'संपड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सपलावियोड़ी)

सपळोटियो—सं. पु.—१ छोटा सर्प ।

उ०—डील तो रांती व्है जैड़ो तखतूळो रै उनमांन हो, पण कुवद सूं हाथी नै ई सात गुळाचां खवाड़ै जैड़ो अटकळां आल व्है जैड़ा तीखा अर मोडा मैं खड़बड़ती । फूल्योड़ो ग्रांटीली नसां आरा डील मैं सपळोटियां रै उनमांन पळेटीजियोड़ी ही ।—फुलवाड़ी

२ सर्प का बच्चा ।

उ०—सपळोटियां नै कुण डसणो सिखावै अर कागलां नै कुण टूंच मारणो । करणी रा फळ भुगतणा ई पड़ैला ।—फुलवाड़ी

वि.—सर्प के आकार का ।

सपसप—सं. स्त्री. [अनु.] १ गुपचुप, कानाफूसी ।

ज्यूं—आजकलै इण बात री गांव में सपसप सुणीजै ।

२ चलने से होने वाली ध्वनि विशेष ।

सपस्ट—वि. [सं. स्पष्ट] १ बिलकुल साफ, स्पष्ट ।

उ०—उण वेळा रावतां रा पग खरड़ै डिगण ढूक जावै हळवळ न्हासण री आगत लाग जावै नै घणा जणां वरड़ै कायरता सूं कही मारै रै मारै गळवळ बोल मूंडा मांय सपस्ट वांणी नहीं नीसरै गळवळ बोल निकळै ।—वी. स. टी.

२ साफ दिखाई देने वाला ।

उ०—जिकां जगि जोति छिपा छिप जात, इगां मग भोत सपस्ट दिखात ।—मे. म.

सपस्टक्रिया—सं. स्त्री. यौ. [सं. स्पष्टी क्रिया] ज्योतिष के अन्तर्गत किसी विशिष्ट समय में ग्रहों के किसी राशि, अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जानने की क्रिया ।

सपस्टता—सं. स्त्री. [सं. स्पष्टता] स्पष्ट होने की क्रिया या भाव ।

सपस्टवकता, सपस्टवक्ता—सं. पु. [सं. स्पष्टवक्ता] साफ-साफ एवं सत्य बात कहने वाला ।

सपस्टवादी—वि. [सं. स्पष्टवादिन्] साफ-साफ कहने वाला, स्पष्टवक्ता ।

सपस्टीकरण—सं. पु. [सं. स्पष्टीकरण] किसी बात को स्पष्ट व्यक्त करने की क्रिया ।

सपांण, सपांणो—वि.—१ सबल, शक्तिशाली ।

उ०—१ सहस तीस दळ देख सपांणै, रळी करै मन जैसिंघ रांणै ।

—रा. रू.

उ०—२ मुहकमसिंघ वळै मा'रांणो, साह तणौ दळ थयौ सपांणो।
—रा. रू.

२ देखो 'पांण'।

सपाक-क्रि. वि.—जल्दी, शीघ्रता से।

उ०—पाधरो मूठ माथै हाथ पड़ियौ। विणां में खसोलियोड़ी नागी तरवार सपाक बारै निकळी।—फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—तेज़ी से प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि।

उ०—पाधरो हाथ मूठ माथै गियौ। सपाक करती वाढाली बारै काढी।—फुलवाड़ी

सपाकौ-सं पु.—१ झटका।

उ०—१ अेक सपाका मैं बीनणी रौ माथौ कलम कर दियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कै इत्ता मैं थोरी नागी तरवार लेय हव्य करती रौ मांय वड़ियौ। अेक ही सपाका मैं पिलंग माथै पोढ्या वींदराजा रौ माथौ वाढ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी

२ तरवार के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

३ लाभप्रद, लाभदायक।

क्रि. प्र.—साझणौ।

सपाट-वि.—जो ऊबड़-खाबड़ न हो, जिसकी सतह पर कोई चीज उभरी, खड़ी या जमी हुई न हो समतल, बराबर।

उ०—खारो लालांणा सूँ लगाय वै राखी तक पांच क़ोस री भुंइ मैं फैल्योड़ी है। बिल्कुल सपाट तालर उडणा खटली रै मैदान व्है जिसौ।—रातवासौ

सपाटौ-सं. पु. [सं. सर्पण] १ चलने, उड़ने, दौड़ने आदि का वेग।

२ मस्त चाल या उससे उत्पन्न ध्वनि।

सपात-वि.—पत्र सहित।

उ०—साह तणै दळ दूत सपातां, विचित्र हुए मिळ वातोवातां।
—रा. रू.

२ सुपात्र।

सपातौ-वि.—१ अधिकारी व्यक्ति।

उ०—प्राग तणौ कुळ लाज सपातौ, तुलछीदास अगन सम तातौ।
—रा. रू.

२ रक्षा करने वाला, रक्षक।

सपापौ-वि.—पापी, दोषी।

सपाल्य, सपाल्यौ-वि. [सं. स+पालन्] १ सुरक्षा सहित, सुरक्षित।

२ बेरोकटोक, स्वतंत्र।

उ०—...... कोटि ध्वज लहलहइ जसु तणइ रूपई को लूंबहइं सोना ना मयूर ऊडइ, सा नवै फुलै राति विहाइ, सपाल्य सोना पहिरियइ......'। —व. स.

सपाह-सं. पु. [सं. सुप्रभु] राजा, नृप।

उ०—सेखराव नूं मुळतांण सपाहां; लड़ियौ सांकळ जाळी। पाछौ जिको आंणियौ पूंगळ, देवी थै दाढाळी।—बां. दा.

सपिंड-सं. पु.—धर्म-शास्त्र के अनुसार वह व्यक्ति जो एक ही कुल का हो तथा एक ही पितरों को पिण्डदान करता हो।

सपिंडी-सं. स्त्री.—किसी मृतक के संबंध में किया जाने वाला वह कर्म जिसमें वह परिवारों के मृत प्राणियों के साथ पिण्डदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण-सं. पु. [सं.] मृत रिश्तेदार के उद्देश्य के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

सपिंडीस्राद्ध-सं. पु. [सं सपिंडीश्राद्ध] पिंडदान करते हुए श्राद्ध का एक प्रकार जिससे प्रेत पितृ योनि में प्रवेश पाता है।

सपीड़, सपीड़ौ-सं. पु. [अनु.] १ दौड़ने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

२ पीटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

क्रि. प्र.—उडणौ।

वि.—दर्द सहित, दर्दपूर्ण।

सपीटी, सपीठी-वि.—चिकनी, मुलायम।

उ०—जांघड़ली मूमल री देवलियै रै थंभ ज्यौं हांजी रे, साथड़ली सपीटी पींडी पातळी रंगभीनी ए मूमल।—लो. गी.

२ मांसल।

सपीठ-वि.—१ मजबूत

उ०—नाळ-काय सिर भूण, खूड़िया भुज दो भारी। पूठी-पेट सपीठ, नीम चक नाड़ां सारी।—दसदेव

२ समतल।

अल्पा;—सपीठी।

सपीठौ—देखो 'सपीठ' (अल्पा; रू. भे.)

सपुत, सपुतर, सपुत्र, सपूत-सं. पु. [सं. सुपुत्र] १ वह पुत्र जो आज्ञाकारी हो।

उ०—१ पछै कह्यो—'भाटी च्यार बूढा म्हां कनै मेलो, राज थै भोगवो। हूं तो इण वात गाढौ राजी छूं। म्हारै थै सपूत छो। लूणकरण करमसी वै कपूत छै, सु परा गया। बळाय चूकी।—नैणसी

उ०—२ सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनै कपूत हुवै तै ऊंधा अंवला बोलै।—भि. द्र.

२ भला, सरीफ।

उ०—पटवारी सपूत स्यांणौ, ओसथ्या ही ठीक-ठीक सुणा'र किसन जी आखा देई देवता नै धोक मारी।—दसदोख

३ वीर, योद्धा।

उ०—'अजब' सुजाव गुणां अदभूतां, समहर 'नाथौ' धुजा सपूतां। वदौ दनावत वावै सूरां, हेवै दळै वरावण हूरां।—रा. रू.

त्रि.—१ योग्य, बुद्धिमान, समझदार।

उ०—'राव जी सूं कहौ, भूंडा दीसस्यौ। राठोड़ां सूं बीहता कितराइक दिन रहस्यौ? हूं मोहिल परखीस। ताहरां राव कासूं

रहै ? बेटो न रहै । दीनानाथ बेटो सपूत ।—नैणसी

उ०—पूत सपूत हो तो क्यूं धन संचै ।

पूत कपूत हो तो क्यूं धन संचै । —प्रग्यात

२ पुत्र के साथ, पुत्र सहित।

रू. भे.—सुपूत ।

सपूतपण, सपूतपणो–सं. पु.—सुपुत्र या आज्ञाकारी होने का भाव ।

सपूताचार–सं. पु.—श्रेष्ठ कर्तव्य ।

उ०—१ गवीनट प्रगट करि जैत चाडो स्वां, कुळ तिलक काढियो कोट लियो । सपूताचार पतिसाह मनमांनियो, वाळतै पोकरन अंक वळियो ।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ बारठ केसरसिंघ सूं, अवखी 'मोहण साह' । खत्रि सपूताचार री, थां हूंता निरवाह ।—रा. रू.

उ०—३ मार वारी मोसोद करणां वारां मोक लागै, सपूताचार री विद्या अपारां राजंद्र । छाजै आगी दूजां सारा सत्रां वंदूक छोगो, राजै तीरंदाजां छोगो मरा रा राजंद्र ।

—महाराजाधिराज माधोसिंह जी री गीत

सपूती–सं. स्त्री.—१ सपूत होने की अवस्था या भाव ।

उ०—१ मात पिछांणै उदर मक्त, 'पता' सपूती पाय । पिता पिछांणै पाळणै, दण सुत अंजस आय ।—जेतदांन बारहठ

उ०—२ इण ग्रंथ में छट्ठो रासि पहली निरमांण हुवो जिकण में भी प्रसंग पाट कुमार चूडा री सपूती विसेस जणाई ।—वं. भा.

उ०—३ अर निदाघ काळ रा पवन रैं प्रमांण सपूती री सुजस चौतरफ ही चलायो ।—वं. भा.

उ०—४ लेवती टेकांण वाजी सं धू पयाळ लांबी, वैनतेय खसै वेग वर्णं न विचार । क्रांमती सपूती लीधां कोळूमंड क्रीत काज, ओपै करां परांपरी बुध री आचार । —बादरदांन दधवाड़ियो

२ वह स्त्री जिसके पुत्र सपूत हों ।

उ०—१ गोरी ऐं सुसरजी लगाया म्हारा पेड़, सासू सपूती म्हांनै सींचियो ।—लो. गी.

उ०—२ पीळो तो ओढ म्हारी जच्चा महलां पधारी जी, तो कोई है सपूती नीजर लगाई गाडा मारूजी ।—लो. गी.

रू. भे.—सुपूती ।

सपूतीचार—देखो 'सपूताचार' (रू. भे.)

उ०—अड़ियो वहे असमांन सूं, इण ही भांत प्रसंग । 'तेज' सपूतीचार री, भाडो ई वळगो अंग ।—तेजसिंह सांदू

सपूर–क्रि. वि.—बलपूर्वक ।

उ०—सुण हुकम दौड़िया महासूर, पांच दस बीस भीळगा सपूर ।

—सू. प्र.

वि.—पूर्ण, पूरा, समस्त ।

उ०—सद्नाद सुर विधि सोह, व्रति अच्छर लेत विमोह । सब सस्त्र मंजुत सूर, पयदात भुंड सपूर ।—रा. रू.

सपूरण—देखो 'संपूरण' (रू. भे.)

उ०—जिग हुवै सपूरण एम जाप, प्रतेस्ट वधै अति अप प्रताप ।

—सू. प्र.

सपेखणो, सपेखबो—देखो 'सप्रेखणो, सप्रेखबो' (रू. भे.)

सपेखणहार, हारो (हारी), सपेखणियो—वि० ।

सपेखिओड़ो, सपेखियोड़ो, सपेख्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सपेखीजणो, सपेखीजबो—कर्म वा० ।

सपेखियोड़ो—देखो 'सप्रेखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सपेखियोड़ी)

सपेत—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

उ०—१ मारू मजलसिया भला, घोड़ा भला कमेत । नारी तो नियळी भली, कपड़ो भलो सपेत ।—लो. गी.

उ०—२ उतंग चंग भीत चीत, मंड चंड मंदरं । कळी सपेत जांणि सेत धार घम्मळागिरं ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सुंदर बैल वर्ण सींगाळो, काळो तुरंग सपेत करै ।

—भगतमाळ

उ०—४ भाली री मुंह उतर सपेत हुइ गयो । सो दूर जाय ऊभी रही ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ तठा उपरायत गंगेव नींबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै । कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया, नारंगिया सपेत ।—रा. सा. सं.

सपेती —देखो 'सफेदी' (रू. भे.)

उ०—१ आपड़ै दाव मत देर ओट, चापड़ै आव समसेर चोट । वर हूर गरक कर जंग बाज, आवती सपेती रंग आज ।—बि. सं.

उ०—२ जिकै सूरवां अजरायल था, त्यांरो तो रंग लाल हुवण लागो । अर जिकै स्यांणा काचा था, त्यांरो रंग सपेती पकड़ण लागो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सपेतो—देखो 'सपेदो' (रू. भे.)

उ०—म्हांनी सी एक टोपसी, माहैं घाल्यो सपेतो । जतन घणा कर राखजो, नहीं तो पड़ैला रेतो ।—मि. द्र.

सपेद—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

सपेरो–सं. पु.—सर्प पकड़ने या पालने वाला, सपेरा ।

सपेलड़ो–वि. (स्त्री. सपेलड़ी) सबसे पहले वाला, सर्वप्रथम ।

सपेलो–वि. (स्त्री. सपेली) सर्वप्रथम, सबसे पहला ।

सपोतरो–सं. पु.—१ सुपुत्र ।

२ वंशज ।

उ०—सुजांणसिंघ री पोतो राजसिंघ जिण सपोतरां रा ठिकांणा जूनिया महरू वगैरा केकड़ी री चमोळी सीमैं सुजांणसिंघोत जोधा ज्यांरा मुहड़ा आगै आद खांप रा राठौड़ है ।—बां. दा. ख्यात

सपोसय–वि.—पुष्ट ।

उ०—सरी सरी सपोसयं सुताळ मालकोसयं । मिठास आस मंजरी,

गरी गरी सगुज्जरी ।—रा. रू.

सपोड़ो-सं. पु.—१ घोड़ा, अश्व ।
२ गधा ।
३ खच्चर, टट्टू ।

सपोचो-वि. (स्त्री. सपोची) १ शक्तिशाली ।
२ साहसी ।
३ हिम्मत वाला, सामर्थ्यवान ।

सप्त-वि. [सं.] सात ।
उ०—देवी जाळंधरी सप्त दीपं, देवी कंदरं सखरं वाव कूपं ।
—देवि.
रू. भे.—सपत, सपत्त ।

सप्तक-सं. पु. [सं.] १ संगीत के अन्तर्गत सात स्वरों का समूह ।
२ सात वस्तुओं का समूह ।

सप्तकी-सं. स्त्री. [सं.] १ स्त्री की करधनी ।
२ सात लड़ों वाली करधनी ।

सप्तकेतु-सं. पु. [सं.] सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम ।

सप्तकोसी-सं. स्त्री. [सं. सप्तकोशी] नेपाल की एक नदी जो हिमालय पर्वत की एवरेस्ट चोटी के पश्चिम से निकलती है ।
वि. वि.—इसमें सात नदियों का समूह है यथा—मिलमूची, भोटेकोशी, तांवाकोशी, लिखू, दूधकोशी, अरुण और तमोर या तोमर । उक्त सातों नदियों के संगम से बनने के कारण इसका नाम सप्तकोशी पड़ा है ।

सप्तगंगा-सं. स्त्री. [सं.] एक पुण्यस्थल का नाम जहाँ स्वर्ग प्राप्ति हेतु देवताओं आदि की पूजा की जाती है ।

सप्तगोदावर-सं. पु. [सं.] एक पुण्यस्थल का नाम ।

सप्तजनाश्रम-सं. पु. [सं. सप्तजनाश्रम] वह पुण्य स्थल जहाँ सप्तजन नामक सात ऋषियों ने पानी के अन्दर शीर्षासन पर तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था ।

सप्तजित-सं. पु. [सं.] कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव ।

सप्तजिह्व, सप्तजिह्वा-सं. स्त्री. [सं] १ अग्नि की सात जिह्वाएँ ।
वि. वि.—सातों जिह्वाओं के नाम निम्न हैं ।—
काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगनी और विश्वरुचि ।
२ उक्त सात जिह्वाओं वाली अग्नि ।

सप्ततंतु-सं. पु. [सं. सप्ततंतुः] यज्ञ, हवन । (अ. मा.)
रू. भे.—सपततंतु, सपथतंतु ।

सप्ततंत्री-सं. स्त्री. [सं.] सात तारों वाला वीणा ।

सप्तदीप-सं. पु.—पृथ्वी के सात बड़े व मुख्य विभाग । (पौराणिक)
उक्त सात विभागों के नाम व विवरण निम्नलिखित हैं—
(१) जंबूद्वीप—यह आठ लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े क्षीरसागर से घिरा हुआ है । भारत इसी द्वीप में स्थित है ।
(२) प्लक्षद्वीप—यह सोलह लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े इक्षुरस से वेष्टित है ।
(३) शालभक्तिद्वीप—यह बत्तीस लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही सुरोद से घिरा हुआ ।
(४) कुसद्वीप—यह चौसठ लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े घृतसागर से घिरा हुआ है ।
(५) क्रौंचद्वीप—यह एक करोड़ अट्ठाइस लाख मील चौड़ा है व इतने ही चौड़े क्षीरसागर से घिरा हुआ है ।
(६) शाकद्वीप—यह दो करोड़ छप्पन लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े दधिमण्डोद से घिरा हुआ है ।
(७) पुष्करद्वीप—यह पाँच करोड़ बारह लाख मील चौड़ा है व इतने ही चौड़े शुद्ध जलोद से घिरा हुआ है ।
उपर्युक्त प्रत्येक द्वीप के अधिपति ने अपने पुत्रों के नाम पर द्वीप को अलग-अलग खण्डों या देशों में विभाजित किया ।
रू. भे.—सपतदीप ।

सप्तद्वीपा-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी का नाम ।

सप्तधातु-सं. पु.—१ शरीर के सात संयोजक द्रव्य—रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और वीर्य ।
२ सात प्रकार के खनिज पदार्थ—सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, सीसा, वंग और जस्ता ।

सप्तधान्य-सं. पु. [सं.] सात-नाज जो पूजा के काम आता है ।

सप्तनाग-सं. पु. [सं.] सात नागों के समूह का नाम ।
वि. वि.—उक्त समूह में अनंत, कर्क, महापद्म, पदम, शंख एवं कुलिक नाग सम्मिलित हैं ।

सप्तनाड़ीचक्र-सं. पु.—वर्षा के आगमन की सूचना देने वाला वह सात टेढी रेखाओं का चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं ।
(ज्योतिष)

सप्तपदी-सं. स्त्री. [सं.] हिंदुओं के विवाह में वर व वधू के द्वारा अग्नि के सात परिक्रमा देने की रीति या रश्म तथा उसी समय वर वधू द्वारा परस्पर प्रतिज्ञा के पढे जाने वाले सात पद ।
उ०—अर सप्तपदी रं अनंतर दांन रो उदक जांमाता पांणि में लेर पिसाच राज रै काज स्वरग रो द्वार खुलायो ।—वं. भा.
रू. भे.—सतपदी, सतफेरा ।

सप्तपदीपूजन, सप्तपदीपूजा-सं. पु.—विवाह के अवसर पर होने वाला एक पूजन विशेष ।
सं. पु.—बांस । (नां. मा.)

सप्तपरव, सप्तपाव-सं. पु. [सं. सप्तपर्वन्] बांस । (नां. मा.)

सप्तपाताळ-सं. पु.—पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

सप्तपुरी-सं. स्त्री.—सात पवित्र तीर्थ स्थान—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन और द्वारिका ।

उ०—सप्तपुरी निरखाउं, तन पावन हुंत मनकारण। उत्तम धाम पखांणा, मोटै नांम गांम पुर उत्तर।—रा. रू.

रू. भे.—पुरसत्त, पुरीसत्त, सातपुरी, सातुरी।

सप्तभुवन—देखो 'सातलोक'

सप्तभोमियो—वि.—सात मंजिल वाला, सप्तखंड का।

उ०—सप्तभोमिया वणिया आवास, नारी निसी तरणी बहु तास।
—जयवांणी

सप्तम—वि.—सातवां।

उ०—पछै मांडेरी सहर रै समीप गोचरै निमित्त वंधावता थी पछाड़ दिल्ली रा अधीस सप्तम पातसाह नासुरद्दीन महमूद रा भड़ां नूं नांखि अकूरा मालिक मुस्तुफायनी नूं मारि आपरा पिता मह रो पितामह क्रोधिराज कोल्हण सेन पढ़ियो।—वं भा.

रू. भे.—सत्तम, सतम।

सप्तमातृका, सप्तमात्रिका—सं. स्त्री.—१ देखो 'मातृका'

२ देखो 'माता'

सप्तमी—सं. स्त्री. [सं.] मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि।

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम पूजा।—देवि.

रू. भे.—सत्तमी, सपतमी, सपतम्मी।

सप्तमुख—सं. पु. [सं.] यज्ञ, हवन। (अ. मा.)

सप्तमों—वि. (स्त्री. सप्तमीं) जो क्रम में छः के बाद आता हो, सातवां।

सप्तरथा—सं. स्त्री. [सं.] कैकयवंशीय कन्या जो सत्यवादी हरिश्चन्द्र की माता व सूर्यवंशीय राजा सत्यव्रत की पत्नी थी।

सप्तरिस, सप्तरसी—सं. पु. [सं. सप्तर्षि] १ सात ऋषियों का समूह—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत में इनके नाम इस प्रकार मिलते हैं—मरिचि, अत्रि, अंगिरा पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ।

२ उत्तरी ध्रुव के सात तारों के समूह का नाम।

रू. भे.—सपतरिस, सपतरिसी, सपतरिसी, सप्तरिसी।

सप्तरिसकुंड—सं. पु. [सं. सप्तर्षिकुण्ड] कुरुक्षेत्र में स्थित एक कुण्ड।

सप्तराय—सं. पु [सं.] गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक।

सप्तरिसी—देखो 'सप्तरिस' (रू. भे.)

सप्तवध्रि—सं. पु [सं. सप्तवध्रु] प्रसिद्ध ऋषि का नाम।

सप्तवाहण, सप्तवाहन—सं. पु. [सं. सप्तवाहन] सात घोड़ों वाले या सातमुखों के घोड़े वाले भगवान् सूर्य।

सप्तशती—सं. स्त्री. [सं. सप्तशती] सात सौ पदों का समूह।

सप्तसप्तमी—सं. स्त्री. [सं.] वार आदि के योग से माघ शुक्ला सप्तमी के भेद—जया, विजया, महाजया, जयंती, अपराजिता, नंदा व भद्रा।

सप्तसागरदांन—सं. पु. [सं. सप्तसागरदान] सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मणों को देने का एक दान।

सप्तसिंधु—सं. स्त्री. [सं.] सात नदियों का समूह जो शिव जटा से गिरते ही गंगा के सात भागों से बनी थी।

सप्तसूरय—सं. पु. [सं. सप्तसूर्य] सात ग्रहों का एक समूह विशेष।

सप्तसुर, सप्तस्वर—सं. पु. [सं. सप्तस्वर] संगीत के सात स्वर—सा, रे, ग, म, प, ध, नि।

उ०—१ सप्तसुरन मुरळी बजी, कहुं कालिंदी के तीर। सवण सुणत सुध नां रही, मेरी कित गागर कित चीर।—मीरां

उ०—२ जिस वगत वेबाहुबाज गुणी जणूं नै सुरूंका अलाप किया। सप्तसुर तीन ग्रांम इकवीस मूरछना अस्ट ताल गुनचास कोटि तांनूं संजुगति छ राग छतीस रागणी का भेदन जिनूं नै वगत प्रमांण उचार कियै।—सू. प्र.

रू. भे.—सपतसुर।

सप्तात्मा—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा का नामान्तर।

सप्ताळू—देखो 'सपताळू' (रू. भे.)

सप्तास, सप्तासव, सप्तास्व—सं. पु. [सं. सप्ताश्वः] १ सूर्य, सूरज।

२ रैवत मन्वन्तर के एक सप्तर्षि का नाम।

३ सूर्य के रथ के सात घोड़ों का समूह, मतान्तर से सूर्य भगवान् का सात मुहों वाला घोड़ा।

रू. भे.—सपतास, सपतासव।

सप्ताह—सं. पु. [सं. सप्त+अहन्] १ सात दिनों की अवधि, हफ्ता।

२ कोई ऐसा कृत्य या अनुष्ठान जो सात दिन तक चलता रहे।

क्रि. प्र.—उठणो, चालणो, बैठणो, व्हैणो।

सप्तंधा—सं पु. [सं.] भगवान् विष्णु का नाम।

सप्पणी—देखो 'सरपणी' (रू. भे.)

उ०—चलण सहाई धर्म्मं, थिर संठांण अधम्म, अवगाहैं पूरण गलणैं नभ पुग्गळ धम्म। समया वलिय महुत्त दीह वख मास नैं साल, पल्योपम सागर उस्सप्पणी सप्पणी काल।—वृ. स्त.

सप्पनपाट, सप्पमपाट—वि.—१ साफ, समतल।

२ नाश, संहार।

३ दरिद्र, निर्धन।

४ मूर्ख, अज्ञानी।

सप्रद—सं. पु. [सं. क्षिप्र] वेग। (अ. मा.)

क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।

सप्रवीत—सं. पु.—एक वर्णिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम तीन रगण पश्चात् गुरु लघु होता है। (ल. पि.)

वि.—१ पवित्र, उत्तम।

२ श्रेष्ठ।

सप्रस—सं. पु.—सूर्य, सूरज। (अ. मा; नां. मा.)

सप्रसन—वि.—खुश, प्रसन्न।

सप्रांण, सप्रांणो—वि. [सं. सप्राण] बलवान, शक्तिशाली।

उ०—१ सांम धरम्मी सांम भ्रूज, सांम सनाह सप्रांण। साथी

सुभटां सीम सुज, भीम तणौ इंद्रभांण ।—रा. रू.

उ०—२ सुणै चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गंजसि को आपांणौ ।
—रा. रू.

सप्रीत-वि.—१ सस्नेह, प्रेमसहित, सप्रेम ।

उ०—सात हजारी सांम तौ, जाको नांम 'अजीत' । दाखौ फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत ।—रा. रू.

२ हर्ष, आनंद, खुशी ।

उ०—सीयाळै पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत' । अवतारी मिळियौ 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत ।—रा. रू.

सप्रेखणौ, सप्रेखबौ-क्रि. स. [सं. संप्रेक्षणम्] देखना ।

उ०—मिळ कूरम सांमुहै, पेख सुख लहै अपंपर । पधरायौ तोरण सप्रेख, दुति जेम दिनंकर ।—रा. रू.

२ निरीक्षण करना ।

सप्रेखणहार, हारौ (हारी), सप्रेखणियौ—वि० ।

सप्रेखिओड़ौ, सप्रेखियोड़ौ, सप्रेख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सप्रेखीजणौ, सप्रेखीजबौ—कर्म वा० ।

सपेखणौ, सपेखबौ—रू० भे० ।

सप्रेखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ । (स्त्री. सप्रेखियोड़ी)

सफ-सं. पु.—पंक्ति, कतार ।

उ०—संमूह सेन असंख सफां, भ्रिग मुज्झै मंझली । मल्हपति फौजां मुहर मेंगल, सूंड डोहै सिंघळी ।—गु. रू. बं.

[सं. सफः] खुर, टाप । (डिं. को.)

उ०—हयं सफ वज्र हरगिर खिज्ज, खिवें खुरतार मनौ घन विज्ज ।
—ला. रा.

सफक-सं. स्त्री. [अ. शफक] सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल में क्षितिज पर दृष्टिगोचर होने वाली लाली ।

सफकत-सं. स्त्री. [अ. शफकत] १ अनुग्रह, मेहरबानी ।

२ प्रेम, मुहब्बत ।

सफटिक, सफटीक—देखो 'स्फटिक' (रू. भे.)

सफताळू—देखो 'सपताळू' (रू. भे.)

सफर-वि.—भयंकर, घोर ।

सं. पु. [अ.] १ इस्लामी दूसरा महीना ।

सं. स्त्री.—२ यात्रा, प्रस्थान ।

३ देखो 'सफरी' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सफर चक्र भमर सावळ धजर वेल सज, पमंग जुध मेळ धर उमंग पसरां । अभनमो 'गजण' खळ खहण घण ऊमळै, 'अजण' तण महण रण वहण असुरां ।—पीथौ सांदू

सफरजंग-सं. पु.—१ भयंकर युद्ध, घोर संग्राम ।

उ०—१ आप रखी रा वरदायक हुता । सो मछ री दया वास्ते घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिया वाढिआ । सारा ही नै लोह पांण हारविआ । महा सफरजंग कीधौ । आप रै पण घणा लोह लागा । पण फतै पाई ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तकण ऊपरा हेकण दीहाड़ै सिधराय जैसिंघ री केड़ायत सोलंकी अजवसीह खड़ै ऊपर आयौ । तैण दीहाड़ै अजवसिंह रा आंगड़िआ मारिआ हुता । तकण रै आंटै, तदी महा सफरजंग हुआ । नगराज कांम आयौ ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ मुगल बादशाहों के समय में प्रचलित होने वाला शतरंज से मिलता-जुलता खेल विशेष ।

वि. वि.—शतरंज में जहां प्रत्येक पंक्ति में ८-८ घर के हिसाब से कुल ६४ घर होते हैं, वहां पर सफरजंग में १६-१६ के हिसाब से कुल २५६ घर होते हैं । शतरंज में बादशाह, वजीर, हाथी, घोड़े ऊंट और पैदल रुणे होते हैं, वहां सफरजंग में उपरोक्त रुणों के अतिरिक्त हुड़दंग और हुड़दंगी दो प्रकार के रुणे विशेष होते हैं ।

सफरनांमौ-सं. पु.—वह पुस्तक जिसमें किसी यात्रा के संस्मरणों का वर्णन हो ।

सफरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—पिंड री होती प्रतीत, साखधड़ै जांणी सरब । इण घर आई-ज रीत, 'दुरगौ' ई सफरा दागियौ ।—ठाकुर करणसिंघ

सफरारौ-सं. पु.—खिला-पिला कर बलि के निमित्त मोटा ताजा किया हुआ बलि का बकरा ।

उ०—धर लेवण वीरम धरै, बकवाद वधारा । खाधा खोसै खाजरू, साऊ सफरारा ।—वी. मा.

रू. भे.—सफरौ ।

सफरिम-सं. पु.—वीर, बहादुर ।

उ०—सेन सनाह वींटियौ सफरिम, सयल सपेखै करै सराह । भांणा जिसौ गज फौज भयंकर, नरपाळ दे जिसौ नरनाह ।
—चत्रभुज नरहरदासोत रौ गीत

सफरी-सं. स्त्री. [अ. शफरी] मछली । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सफरी पकड़ण रो सांतरो, बैठो ढब बुगलांह । कथा बुरी करबा तणी, चोखो ढब चुगलांह ।—बां. दा.

रू. भे.—सफर, सुफर ।

सफरीपति-सं. पु.—मगरमच्छ ।

सफरौ—देखो 'सफरारौ' (रू. भे.)

सफळ, सफल-सं. पु.—शस्त्र ।

वि. [सं. सफल] १ सार्थक, कामयाब ।

उ०—१ देव हरी हर दिखण मैं, पूजै परम प्रवीत । कीधौ आछो 'करन' रा, जनम सफळ जगजीत ।—बां. दा.

उ०—२ सिव सकति तणी वेलि वरणविसु, सफळ जनम करिवा संसार ।—महादेव पारवती री वेलि

२ सफलता।

३ पूर्ण।

४ फलयुक्त, फलवाला।

उ०—तरवर नमैं तिकोज, साखि फल फूलैं सफळ।—ध. व. ग्रं.

५ फैलने वाला, बढ़ने वाला।

६ धारदार, नुकीला (छुरी, तलवार आदि)।

७ आनंद पूर्वक।

उ०—न सरी सु प्रवळ सबसो नियति, दिन किताक अंतर दिया। सह विप्र बळे विलसै सफळ, कांम बयस जुव्वन किया।—वं. भा.

रू. भे.—सुफळ।

सफळणो, सफळबो—देखो 'सफलणो, सफलबो' (रू. भे.)

सफळणहार, हारो (हारी), सफळणियो—वि०।

सफळिग्रोड़ो, सफळियोड़ो, सफळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सफळीजणो, सफळीजबो—भाव वा०।

सफलणो, सफलबो-क्रि. अ.—सफल होना, सफलीभूत होना।

उ०—रांगी है सखि रांगी है अवि रंढाल, घरणी है सखि घरणी मनहरणी बगी जी। सफली है सखि सफली है पूगी आस, सफली है सखि सफली परतंग्या करीजी।—प. च. चौ.

सफलणहार, हारो (हारी), सफलणियो—वि०।

सफलिग्रोड़ो, सफलियोड़ो, सफल्योड़ो—भू० का० कृ०।

सफलीजणो, सफलीजबो—भाव वा०।

सफळता-सं. स्त्री.—१ सफल होने की अवस्था या भाव।

२ पूर्णता।

सफळाइग्यारस, सफळाएकादसी-सं. स्त्री. [सं. सफलाएकादशी] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

सफळियोड़ो, सफलियोड़ो-भू. का. कृ.—सफल या सफलीभूत हुवा हुआ।

(स्त्री. सफळियोड़ी, सफलियोड़ी)

सफळी, सफळीभूत-वि.—जिसने सफलता हासिल की हो, सफलीभूत।

सफळो, सफलो—देखो 'सफळ' (रू. भे.)

उ०—१ सोढउ हुंत तउ डांभिज्यउं, वंधियउ मूल मरूंह। जाउं ढोला रह सासरइ, सफळा मूंग चरूंह।—ढो. मा.

उ०—२ संयम भव सफलो कियो रे, तोड़या मोह ना फंद। हूं पापण किम छूट सूं रे, इम वेनड़ करै आक्रंदो रे।—जयवांणी

उ०—३ स्रीयुग प्रधांन यतीस्वर, देखतां हो हुवै सफलो दीह। नित विजयहरख वंदित दीयै, धरि आवै हो गावै धरमसीह।

—ध. व. ग्रं.

सफा-वि.—बिलकुल।

उ०—१ सफा कूड़ बोलै नकटा, वै थनैं यूं ई चिड़ावै।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ ए मा! मास्टर रै तो दाढ़ी मूंछ ई कोनीं सफा टाबर इज दीसै।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनै सफाखांना सूं छुट्टी मिळै कोनीं।—अमरचूंनड़ी

२ पवित्र, निर्मल।

३ साफ, सपष्ट।

४ साफ, स्वच्छ।

५ चिकना, बराबर।

६ खाली, रिक्त।

७ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती।

सफाई-सं. स्त्री.—१ स्वच्छता, निर्मलता।

उ०—म्हैं कह्यो देख भांणू, यूं सफाई सूं रैवणो, जिणसूं बाई थारो घणो लाड राखैला।—अमर चूंनड़ी

२ बिलकुल, कत्तई।

३ मैल या कूड़ा-करकट हटाने की क्रिया।

४ कपट या कुटिलता का अभाव।

५ स्पष्टता।

६ साफ होने की अवस्था या भाव।

सफाखांनो, सफाखांनो-सं. पु. [अ. शफा+फा. खाना] चिकित्सालय, अस्पताल।

उ०—१ बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनैं सफाखांना सूं छुट्टी मिळै कोनीं।—अमर चूंनड़ी

उ०—२ सफाखांनै गियां जोग री बात अैड़ी बणी कै म्हनै खासो मोड़ो व्हैगो।—फुलवाड़ी

सफाचट-वि.—१ एकदम स्वच्छ, बिलकुल साफ।

उ०—आभो सफाचट टाटिया री माथो व्है जिसो।—रातवासो

२ बिलकुल, खाली।

३ स्निग्ध, चिकना।

४ समतल, सपाट।

५ जिसका कुछ भी अंश शेष न रहा हो।

क्रि. प्र.—करणी, व्हेणो, होणो।

सफायो-सं. पु.—१ नाश, संहार।

उ०—हनुमत दुसटां री करदै सफायो रे, म्हारो हित करवा नै।

—गी. रां.

२ खतम, समाप्त।

सफीट, सफीठ-वि.—साफ, चिकना।

उ०—१ थूक गिटता पूछ्यो—तो पैं'ला थारो माथो साव चांमलो हो। हयाळी रै उनमांन सफीट।—फुलवाड़ी

उ०—२ आछी खुटाई। मींडका अर ऊंदरा कुदावण री सफीट ठोड़ री जबरी पोखाळी करवायी।—फुलवाड़ी

उ०—३ मिन्नी वांनै समझाइस करी। आ अेक चपटी चीज व्है। बिलकुल सफीट, गजब री सफीट, कमाल री सफीट।—फुलवाड़ी

सफील-सं. स्त्री.—परकोटा, प्राचीर।

उ०—१ जाडी किलै सफील, मांय ज नर निबळा वसै। ढूंढौ ढहतां ढील, रति न लागै राजिया।—किरपारांम

उ०—२ केइक लथोबथ हुवा थका कटारियां सुं सफीलां उपरा लोटरा कबूतर री नाई लोटता नजर आवै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—३ केइक गिरैबाज कबूतर री नांई गिरह खाता नै पळचर पंखिया ज्यूं फड़फड़ाता सफीलां सुं धरती पड़ता पहली दोय दोय तीन तीन कटारियां लगावै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ दीवार।

सफुव्वी-सं. स्त्री.—बादशाह की लड़की, शाहजादी।

सफूरति, सफूरती—देखो 'स्फूरति' (रू. भे.)

२ चंचलपन।

सफेत—देखो 'सफेद' (रू. भे.)

उ०—विरछां-वढ किरकांट विराजै, स्याह सफेत लाल रंग-साजै।

—वर्षा विज्ञान

सफेद-वि. [फा. सफ़ेद] १ श्वेत।

पर्याय.—अरजुण, अवदात, गोर, धवल, धोळ, पांडुर, पांडू, बिसद, सित, सुकळ, सुचि, सेत।

उ०—मोटी-मोटी आंख्यां सफेद-सफेद कोयां में नैंनी-नैंनी कीकियां, गालां माथै आंसूवां रा टेरा सूखोड़ा।—अमर चूंनड़ी

२ साफ, स्पष्ट।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन, निस्तेज।

४ जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा।

५ साफ, स्वच्छ।

रू. भे.—सपेत, सपेद, सफेत, सुपेत, सुपेद।

सफेदअंजनी-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा जिसके सम्पूर्ण शरीर पर एकरंग होता है किन्तु बीच बीच में सफेद धब्बे होते हैं।

सफेदचंदन-सं. पु. [सं. श्वेतचंदन] श्वेत चंदन। (अमरत)

रू. भे.—सुपेतचंदन।

सफेदपोस-वि. [फा. सफेद-पोश] स्वच्छ कपड़े पहनने वाला।

सफेदहाथी-सं. पु.—भद्र जाति का हाथी जो पवित्र समझा जाता है।

सफेदाई-सं. स्त्री.—श्वेतता, सफेदी।

रू. भे.—सुपेदाई।

सफेदी-सं. स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

२ श्वेतता, धवलता।

३ भय, आतंक आदि के कारण रंग के द्वारा पाण्डुरता पकड़ने की क्रिया।

४ कान्तिहीनता, निष्तेजता।

५ दीवार छत आदि को चूने के घोल से सफेद पोतने की क्रिया।

रू. भे.—सपेती, सुपेती, सुपेदी।

सफेदौ-सं. पु.—१ लोह, लकड़ी आदि पर रंगाई के काम आने वाला जस्ते का चूर्ण। यह दवाईयों में भी काम आता है।

२ चप्पल जूते आदि बनाने के काम आने वाला सफेद चमड़ा।

३ मकान की पुताई में काम आने वाली सफेद मिट्टी।

४ श्वेतप्रदर नामक स्त्री रोग में योनि मार्ग से बहने वाला श्वेत रंग का स्राव।

५ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो गुलाब जल में घोट कर आँख में आंजते है, आँख की दवा विशेष।

रू. भे.—सपेतौ, सुपेदौ।

सफै—१ आसूदगी, सम्पन्नता, वृद्धि।

उ०—घररा राजस करै हा। कमाई में सफै अर बरकत ही।

—दसदोख

३ तन्दुरुस्ती।

सफ्फळियौ-सं. पु.—हिंदवानी नामक फल का छोटा खंड जिसका अवशिष्ट सार भाग दाँतों से खाते हैं।

सबंगह—देखो 'सरवंगी' (रू. भे.)

उ०—असरण-सरण अभंग, ब्रहम मुरारि सबंगह। संकर पवन सकत्ति, अवनि ध्रम लच्छि अनंगह।—ह. र.

सबंध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—नहीं तो जांण पिछांण जमार, नहीं तो साख सबंध संसार।

—ह. र.

सब-वि.—१ समस्त, कुल।

उ०—१ अखिल जगत मैं सकति अखारै, तै सब है अवतार तिहारै। चारन तूझ चरन कै चेरै, तिन मैं जन्म लियै बहु तेरै।

—मे. म.

उ०—२ अस्वीन चैत्र मास पख ऊजळ, थित सब सकति होत मंडळ थळ। तांन गांन ततकार बजंत्रन, ध्वांन सिसर ततधन आंनद्धन।—मे. म.

उ०—३ पण सब सूं छोटकी रांणी रै हाल जापौ नीं व्हियौ हो। उण वास्तै उण नै बारै राखी।—फुलवाड़ी

२ अवधि, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल, सर्व।

उ०—कागां केरी चांच ज्यूं, बुगलां केरी जीह। बिसटा ज्यूं परची बुरी, चूंथै सब ही दीह।—बां. दा.

सं. स्त्री. [फा. शब] रात, रात्रि।

रू. भे.—सबै, सब्ब, सब्बा, सब्बी, सब्बै, सब्भ, सब्भै, सभ, सभी, सम्भ, सवि, सवै।

सबक-सं. पु. [फा.] १ वह अंश जो एक बार में पढाया जा सके, पाठ।

२ शिक्षा, नसीहत।

क्रि. प्र.—सीखणौ, देणौ, मिळणौ।

सवकणौ, सवकबौ-क्रि. अ.—धूप या गर्म जगह पर बंधा रहने से पशु का रोग ग्रस्त होना।

सवकणहार, हारौ (हारी), सवकणियौ—वि०।

सवकियोड़ौ, सवकियोड़ौ, सवक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सवकीजणौ, सवकीजबौ—भाव वा०।

सवकियोड़ौ-भू. का. कृ.—किसी गर्म स्थान या धूप में बंधा रहने से रोगग्रस्त हुवा हुआ। (पशु)

(स्त्री. सवकियोड़ी)

सवगौ, सुवगौ,-वि.—१ सरल, आसान।

२ छोटा।

३ उपयुक्त, अनुकूल।

४ सुगम।

५ आचरणशील।

६ समझदार, बुद्धिमान।

सवड़, सुवड़, सवड़क, सुवड़क, सवड़कौ, सुवड़कौ-सं. पु. [अनु.] १ किसी गाढ़े तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

ज्यूं—राव रोटी सूं सवड़ सवड़ जीमलै।

उ०—खदबद बोलै खीचड़ौ, सवड़क बोलै रावड़ी।—लो. गी.

२ हाथ से किसी गाढ़े तरल पदार्थ की एक ही बार में खाई जा सकने वाली मात्रा।

उ०—१ औरां नै दही रौ सवड़कौ, कोई म्हांनै दोय र चार। औरां नै दाख री टोकसी, कोई म्हांनै टोकस चार।—लो. गी.

उ०—२ ताती ताती खिचड़ी, ऊपर गावौ घी। एक सवड़कौ ऐड़ौ लियौ, जांणै म्हारौ जी।—लो. गी.

उ०—३ खीर रौ एक सवड़कौ लेयनै जद्दाव मासी बीनणियां मायै चिड़ती थकी बोली।—फुलवाड़ी

३ किसी गाढ़े तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने की क्रिया।

उ०—१ जद म्हे थाळ लगाय, खीर अक पुरसी सा जी पुरसी सा। थनै लियौ सवड़कौ मार, राब आ मीठी सा जो मीठी सा।

—लो. गी.

उ०—२ गुड़ तौ घी रा सवड़का मारै अर म्हारै सांमी लूखी खीचड़ी खिरकाय दी।—फुलवाड़ी

सवछी-सं. स्त्री. [सं. स+वत्सा] वह गाय जिसके साथ बछिया हो, बछड़े सहित।

उ०—दीधौ सोनौ सोलहौ, दीधी सुरह सवछी गाई।—वी. दे.

सवज-वि. [फा. सब्ज] १ हरा। (डिं. को.)

उ०—१ फौजां डेरां फाबिया, दीसै हद्द बिहद्द। सबज वरना स्याह वन, लाल सपेत जरद्द।—गु. रू. बं.

उ०—२ सेत सूमा, सवज सूआ, सारौ मैंनां कोइल तांतुर......।

—रा. सा. सं.

उ०—३ तठा उपरांयत गंगेव नीबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

सं. पु.—१ एक प्रकार के रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—लाखोरी सुरंग अजूब लेत, किसमसी साह ज्यांनूं कुमेत। तेलिया मुहा संदळी तुरंग, सोसनी सबज हंसा सुरंग।—सू. प्र.

सं. स्त्री.—२ भांग, भंग।

रू. भे.—सवजौ, सवज्ज, सब्ज।

सवजी—देखो 'सब्जी' (रू. भे.)

उ०—मच्छां रै जळ जीव जिम, सवजी तरां सदीव। पदतारां घन जीव इम, जस दातारां जीव।—बां. दा.

सवजीमंडी—देखो 'सब्जीमंडी' (रू. भे.)

सवजौ—देखो 'सबज' (रू. भे.)

सवज्ज—देखो 'सबज' (रू. भे.)

उ०—धज स्याह वरन्नह धम्मळियं, परिलाल सवज्जह पीयळयं।

—गु. रू. बं.

सवणीगर—देखो 'सवनीगर' (रू. भे.)

सवति, सवती—देखो 'सवती' (रू. भे.) (अ. मा.)

सवद-सं.पु. [सं. शब्द] किसी पदार्थ पर आघात करने या दोनों ओर खींच कर बांधी हुई रस्सी आदि को बीच में से पकड़ कर एक दम वापिस छोड़ने से या किसी पदार्थ के टूटने-फूटने से उत्पन्न ध्वनि, तरंग या कम्पन जो हमारे कान व श्रवणेन्द्रिय तक पहुंचती है, आवाज। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ घूघरां तणा भणणाट हुय घमाघम, वीण रा तंत्र तण-णाट वाजै। नकीबां बोल हणणाट हुय नोबतां, गयण घर सबद गणणाट गाजै।—खेतसी बारहठ

उ०—२ कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ। हुवा धनुस गुण सबद व्है, गतमद जग मदगंध।—बां. दा.

उ०—३ ढम ढम ढोल घूघरा छम छम, क्रम क्रम कदम क्रमाड़ै। भांझर सवद वजत पद भम भम, रमभम रास रचाड़ै।

—मे. म.

२ पशु-पक्षियों की बोली, आवाज।

उ०—१ जंबक सबद नचींत कर, हर कर तूं मत भाज। सादूळौ खीजै मुर्गा, जळहर हंदौ गाज।—बां. दा.

उ०—२ सिखर गिरां मोरां सबद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरां अखा पाली। आविया उमड़ घणस्यांम बीति अवध, आविया नहीं घणस्यांम आली।—बां. दा.

३ एक या अधिक वर्णों के संयोग से कंठ और तालू आदि के द्वारा उत्पन्न होने वाली स्वतंत्र व्यक्त और सार्थक ध्वनि।

उ०—१ वौ एक सबद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ संसार मैं 'मा' सवद कांई इतरौ हल्कौ व्हैग्यौ है के उरारा यूं अपमांन कियौ जावै।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ सोफी सवद सुणाय, चोर रंग देत विगाड़ै। वैरागी नै जगत, जगत नैं भेख बिगाड़ै।—ऊ. का.

उ०—४ राजगरू तौ कांनां मैं सबद पड़णा री ई छूत पाळता। उण दिन चिता रै कारण वै अजांण ई चेतौ विसरग्या कह्यौ—थैं ओछी जात वाळा आं मोटी बातां मैं नीं समझौ।—फुलवाड़ी

४ लिखा जाने वाला वर्ण जो किसी बात या भाव का बोधक हो, लफ्ज।

५ वचन।

उ०—जादमरण आद करि भेट भणिया जठै, आपरा अठै परताप आछा। ऊगिया मदां सुप्रसन्न सबदां इसां, पूगिया भवण विसरांम पाछा।—मे. म.

पर्याय—आरव, आवाज, कुण, कुणत, कुणद, घुकार, घोख, घोर, घोस, टेर, धुनि, ध्रवांन, ध्वांन, नद, नाद, निनंद, निनाद, निरावर, निसिमांन, निहकुंण, निहघोख, निरह्लाद, पुकार, विराव, रव, राव, रुत, रूंण, सुर, सुनि, सोर, स्रवसार, स्वांन ह्लाद।

६ उपदेश।

उ०—१ हरीया पासौ हाथ को, तौई न अपनै हाथि। सतगुर केरै सबद बिन, मन किन कै नहीं हाथि।—अनुभववांणी

उ०—२ सतगुर वाह्या सबद-सर, सनमुख लगा आय। हरीया सुगरा चेतसी, निगुरां गम न काय।—अनुभववांणी

७ सुयश, कीर्ति।

८ निर्गुण सम्प्रदाय के साधु महात्माओं द्वारा रचित पद आदि।

उ०—प्रेमामगन रांमरस पूरण, सारै सबद सुणावै। सनमुख हुय सरधा सूं सुमरण, सासौ सास समावै।—ऊ. का.

९ छप्पय छंद का ७१ वां भेद जिसमें १५२ लघु वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। इसका दूसरा नाम 'मुनी' भी है।

१० दो लघु के गणगण के दूसरे भेद का नाम। (डिं. को.)

रू. भे.—सद, सदि, सदै, सद्द, सद्दय, सबद्द, सब्द, सब्दु, सवद, साद।

सबदगुर, सबदगुरु—सं. पु. [सं. शब्दगुरु] वह गुरु जिसके उपदेश से प्रभावित होकर व्यक्ति उसका शिष्य बन जाय (मा. म.)

रू. भे.—सब्दगुर, सब्दगुरु।

सबदग्रह—सं. पु. [सं. शब्दग्रह] शब्दों को ग्रहण करने वाला, कान। (डिं. को.)

रू. भे.—सब्दग्रह।

सबदबेध—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.) (अ. मा.)

सबदबोध—सं. पु. [सं. शब्द+बोध] १ अक्षर-ज्ञान।

२ जबानी गवाही से प्राप्त होने वाला ज्ञान।

रू. भे.—सब्दबोध।

सबदब्रह्म—सं. पु. [सं. शब्द+ब्रह्म] १ वेद।

२ सृष्टि की रचना करने वाला, ब्रह्म।

३ ओंकार, प्रणव।

४ कुंडलिनी से ऊपर उठने वाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा में रहता है। (योगसाधना)

रू. भे.—सब्दब्रम।

सबदभेदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

सबदमहेसर, सबदमहेस्वर—सं. पु. [सं. शब्द+महेश्वर] शिव, महादेव।

रू. भे.—सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर।

सबदवेध, सबदवेधी—सं. पु. [सं. शब्दवेधी] १ अर्जुन। (अ. मा.)

२ दशरथ।

३ पृथ्वीराज चौहान।

वि.—शब्द की ध्वनि सुनकर निशाना मारने वाला।

रू. भे.—सबदवेध, सबदभेदी, सबैंदी, सब्दभेदी, सब्दवेधी, सब्द-वेधी।

सबदसकत, सबदसकति, सबदसकती, सबदसक्ति, सबदसगत, सबदसगति, सबदसगती—सं. स्त्री. [सं. सब्द+शक्ति] शब्द की वह शक्ति जो उसका अर्थ उद्घाटित करती है। यह तीन प्रकार की मानी गई है अभिधा, लक्षण और व्यंजना।

रू. भे.—सब्दसक्ति।

सबदसाधन—सं. पु. [सं. शब्द+साधन] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन किया गया हो।

रू. भे.—सब्दसाधन।

सबदसासतर, सबदसास्त्र—सं. पु. [सं. शब्दशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें भाषा के विभिन्न अंगों व रूपों का विवेचन किया जाता हो, व्याकरण।

रू. भे.—सब्दसासतर, सदब्सास्त्र।

सबदाडंबर—सं. पु. [सं. शब्दाडंबर] साधारण बात कहने के लिए जटिल एवं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग, शब्द-जाल, शब्दों का आडम्बर।

रू. भे.—सब्दाडंबर।

सबदालंकार—सं. पु. [सं. शब्दालंकार] अलंकारों के दो मुख्य भेदों में से एक जिसमे शब्द व वर्णों का चमत्कार प्रधान होता है।

रू. भे,—सब्दालंकार।

सबदावेधी—देखो 'सबदवेधी'

सबदी—सं. पु.—१ कवि।

उ०—१ 'चूंडा' हरा तुहारा चेला, वंस छत्तीस वधंतै वांन। सुरां गुर गाढां गुर सबदी, महाराजा रायां गुर मांन।

—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ सरणाई सरण वखांणै सबदी, मनजोगी जीहा अमर

रांम वदन वनांणो रांमा, हाथ वनांणो वैर-हर ।

—प्रथीराज राठौड़

उ०—३ तोय न बिरचै पंछियां तरवर, डहै होल पर भंजै डाळ । सेवग रांमै वांनै सवदी, पाटन किम बिरचै 'विजपाळ' ।

—आसो बारठ

२ यश, कीर्ति ।

३ निर्गुण आराधकों का गेय पद, भजन ।

उ०—१ सामी सवदी सीख कर, गावै सारी रात । आतम तो परस्या नहीं, करै बिरांणी बात ।—श्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ ओउं मोउं सबदी की, तीन लोक लग सोय । एक सबद ररंकार का, हरीया पार न कोय ।—अनुभववांणी

४ राजस्थानी भाषा का गेयात्मक छंद विशेष ।

सबद्—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ अमाए सबद्द बजै अप्रमांणं, कळां सोर आंण सबांण कवांण ।—रा. रू.

उ०—२ घूघरी रोळ घंटा सबद्द, मोसत्त पट्टै तळ जोड मद्द ।

—गु. रू. बं.

सबनीगर-वि.—वह जो साबुन बनाता है, साबुन बनाने वाला ।

उ०—कंकट टोपां कट्टि कै, कटि जात अघाया । ज्यौं सबनीगर मच्छु मैं, घहि तंत्र चलाया ।—वं. भा.

रू. भे.—सवणीगर, सबणीगर ।

सबब-सं. पु. [अ.] १ कारण, वजह, हेतु ।

उ०—१ जद या बोली हूं फलांणां गांम रा धणी री बैन छूं अर एक सबब सो हो ।—गांम रा धणी री बात

उ०—२ सो कोई सबब सूं चुगलां रा चित्त मैं खांत पड़ी ।

—नी. प्र.

२ द्वार ।

३ साधन ।

सबबरात-सं. स्त्री. [अ.] मुसलमानों का एक पवित्र त्योहार । इस दिन मुसलमान अपने पूर्वजों के उद्देश्य से गरीबों को भोजन, वस्त्र आदि दान में देते हैं तथा दीपक जलाकर उत्सव मनाते हैं ।

सबय-सं. पु. [सं. स+वयस] १ मित्र, दोस्त, सखा । (हि. को.)

२ शिव ।

३ हाथ ।

४ जल ।

५ मीमांसा शास्त्र के भाष्यकार ।

६ पतिव्रता, सौभाग्यवती ।

७ एक म्लेच्छ जाति जो वशिष्ठ ऋषि की गाय के मल-मूत्र से उत्पन्न हुई थी । (हि. को.)

सबर—देखो 'सब्र' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक रांखै सबर, मबर तजै मत मंद । सबर काज सुधरै सहू, सांई सबर पसंद ।—बां. दा.

उ०—२ छबर छबर आंसू धर छिड़की, उर मैं सबर न आई । जबर पयांणै गौ जगपाळक, पाछी खबर न पाई ।—ऊ. का.

उ०—३ सबर रास कुसमै समै, कासूं घबर करीस । तिण तिण लै जगची खबर, जबर सगत जगदीस ।—बां. दा.

सबरित-सं. पु. [सं. सर्वरतः] श्रीकृष्ण, गोपाल । (अ. मा.)

सबरी-सं. स्त्री. [सं. शबरी] श्रवणा नामक शबर जाति की स्त्री जो रामभक्त थी । (रामकथा)

२ शबर जाति की स्त्री ।

रू. भे.—सवरी ।

सबळ-सं. पु. [सं. शबल] १ सुमेरु पर्वत । (ह. नां. मा.)

२ वायु, पवन । (अ. मा.)

३ घोड़ा, अश्व । (ना. डि. को.)

४ बलराम, बलभद्र । (मि. बळवंत)

५ भीम, वृकोदर । (मि. किरमीर) (ह. नां मा.)

६ भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम ।

७ कश्यप द्वारा कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक नाग का नाम ।

८ दक्ष एवं पांचजन्य की कन्या असिक्नी के हजार पुत्रों में से एक ।

९ घी, घृत । (ह. नां. मा.)

१० एक श्वान जो सरमा का पुत्र एवं यम वैवस्त का अनुचर था ।

११ सप्तर्षियों में से एक का नाम ।

वि. (स्त्री. सबळा, सबळी) १ बलवान, शक्तिशाली । (हि. को.)

उ०—१ विघन वार गिरधर सघर वाधियौ वीररस, पह सुछळि सगह आलम संपेखै । मरण मंगळ जिसौ जांणियौ मोट मनि, लाल दळ सबळ तिलमात लेखै ।—गिरधरदास केसोदासोत रो गीत

उ०—२ सबळ लूंबिया आंणि दळ साहिपुर सांवठा, बळोबळ वीर-रस भड़ां बसियौ । चळविचळ हुवै मत दुरग 'मोवत' चवै, कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ ।—महोबतसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—३ सुत 'जैत' अथाह लई सबळां, खग वाह करै 'सुभसाह' खळां । धज सोभ विहारियदास धजां, गहतंत हणै असवार गजां ।

—सू. प्र.

२ पराक्रमी, वीर ।

उ०—१ झळ क्रोध 'लखावत' क्रोध भळां, सबळां चमराळ हणै सबळां । भिड़ काज सुधारत भूप तणो, तदि 'जोध' लड़ै 'जगरूप' तणो ।—सू. प्र.

उ०—२ सुत 'रांम' खत्रीवट कांम सचै, रघुनाथ समाथ भराथ रचै । सुत सांमत मेछ हणै सबळा, कमधज्ज 'जवांन' भयांन कळा ।

—सू. प्र.

उ०—३ हदहूं खगि मेछ हकां दखतौ, वधि 'सांमळ 'कत' लहै 'बखतौ' । सुत 'जोग' भयांण हणै सबळां, खग झाट 'गुमांन' अमांन खळा ।—सू. प्र.

३ वड़ा, विशाल ।
उ०—१ कळळ मांच दळ अकळ कांठळ सबळ कूंजरां, चंचळ उछळ सरळ धसळ चाळौ । जवन दळ ऊपरां खिमै विजळ ज्यंही, 'अभा' साबळ भळळ तूझ वाळौ ।—बखतौ खिड़ियौ
उ०—२ 'अभमल' जयचंद ओम, सबळ दळ लियां सकाजा । सहर नदी उपरास, मंडे डेरा महाराजा ।—सू. प्र.
४ भयंकर, भीषण ।
उ०—१ महाराज 'जैसाह' भारथ सबळ मांडतै, जुड़ किया गज कमळ उलट जोया । निमख री ठौड़ सहर विचाळै निरंतर, हमरकै जवाहर ढेर होया ।—दळपत सांदू
उ०—२ ऐ ठाकुर भांगेसर रै थांणै भूंबिया । घणां मुगळ मारिया। सबळी वेढ हुई ।—राव मालदै री बात
५ जबरदस्त, जोरदार ।
उ०—१ साह तणा खूंनी सबळ, आय बचै इण ठौड़ । श्री सातूं अकलीम मैं, थावौ गढ चितौड़ ।—बां. दा.
उ०—२ किलम उतराध दिखणाध दळ क्रोधतां, छत्र धरण रोधतां मांण छीजा । कहर खूंनी सबळ साल राखै कवण, वीर तौ विना रायसाल बीजा ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
६ प्रचंड ।
उ०—बंस उजवाळ भुज भारी सारी बसू, भिड़ै ज्यां अतुळ अन चमू भिरड़ै । तेज धर सबळ पहळाद रा तात सम, अगासुर खळां चा कंध मुरड़ै ।—नरसिंघदास सेखावत री गीत
७ गहरा, घना ।
उ०—पनरै दिन हूं जागती, प्री सूं प्रेम करंत । एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जांण निचंत ।—ढो. मा.
८ सब, समस्त ।
उ०—१ बळिहारी तूझ तणइ बहुनांमी, महि पालिग ताइ अचळ महि । वांक सबळ टाळियउ विसंभरि, सुर नर सुख भोगवइ सहि ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ वैसाखां में बिलखा वांमी, हुयगा सबळा जैन बिरांमी । आखातीजां घणी अमांमी, सिद्ध जन्मियौ संकर स्वांमी ।
—ऊ. का.
९ महान, वड़ा ।
उ०—पड गाहे पट्टण आप वळ, दोमझि भंजे कच्छ दळ । पूरब्ब हूंत आवै पछिम, सीह प्रवाडौ किय सबळ ।—गु. रू. बं.
१० गूढ़, जटिल, दुरुह ।
११ चितकबरा । (डिं. को.)
१२ बल सहित ।
१३ ज्यादा, अत्यधिक ।
उ०—विभाड़ै जादवां-कोट धर कीध वस, सबळ व्रद खाटिया भवां सारू । तप-वळी अभनमा 'माल' 'गंगेव' तौ, समारक पोकरण राव मारू ।—महाराजा जसवंतसिंह री गीत
१४ कठिन, टेढा और मुश्किल ।
१५ दृढ़, मजबूत ।
१६ तेज प्रकाश युक्त ।
उ०—भडज बादळ सबळ वीज साबळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार 'सुरतांण' दळ अकळ खूटा वरस, 'माल' हर सीस सुर-गरुंद-माळा ।—अजबौ बारहठ
१७ अच्छा, बढिया ।
रू. भे.—सब्बळ ।
अल्पा.—सबळौ, सब्बळौ ।
सबळदळगाहणौ-सं. पु.—योद्धा, सिपाही । (डिं. नां. मा.)
सबळवाय-सं. पु.—नेत्रों का रोग विशेष । (अमरत)
सबलाक्ष-सं. पु. [सं. शबलाक्ष] एक प्राचीन ऋषि ।
सबलाश्व-सं. पु. [सं. शबलाश्व] १ पंचजन्य कन्या दक्ष की पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न १०० पुत्रों का नाम ।
२ अविक्षित के पुत्र व कुरु के पौत्र का नाम ।
सबला, सबळि, सबळी-सं. स्त्री. [सं. शबली, सबलिः] १ संध्या, सायंकाल । (डिं. को.)
२ कामधेनु ।
३ चितकबरी गाय ।
उ०—बुरी सीणी सुर झीणी बतलावै, माड़ी काजळ लख प्राजळ मतळावै । अबळी सबळी नै सबळी उर आंणै, गोरी गुणवंती गोरी गुण गावै ।—ऊ. का.
२ देखो 'सबळ' (रू. भे.)
उ०—१ राठोड़ सबळा, मोहिलां री ठकुराई सबळी पण भाई बंधै मेळ घणौ काई नहीं ।—नैणसी
उ०—२ कळहेवा जिका वडा कुदरत मैं, हांम सबळि खळ वहण हियै । त्रिजडां मुहि जिकै वरै त्रिविधि घड, देखै जम मुंहि पूठ दियै ।
—गु. रू. बं.
उ०—३ पछै थां विचारियौ म्हांसू धरती छूटी । सबळी ठौड़ आंणी ।—नैणसी
सबळौ—देखो 'सबळ' (अल्पा; रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—१ कै डेरांधारी सुकव, सबळै तोल सहास । समहर सारां आगली, कै सिरदारां पास ।—रा. रू.
उ०—२ सबळौ ताळौ दीधौ सरब रहीमन हूंस ।—ध. व. ग्रं.
उ०—३ ताहरां अरजण जी कह्यौ-राज ! म्हारै पटौ सबळौ छै हूं ऊभौ रहीस ।—नैणसी
उ०—४ जौ पातसाह जी री वंदगी करां तौ घणी आछी वात है । अरु पातसाहजी री वंदगी बिना राज सबळौ होय नही ।—द. दा.
उ०—५ सबळा सत्र संघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया । जेथ भिड़ै दळ पड़ै, तेथ आडा भुज धरिया ।—गु. रू. बं.

उ०—६ राव जोधाजी 'प्रजीत' नूं मार पाछा वळिया । मंडोवर पधारिया । वाई राजा 'प्रजीत' वांसै सतो हुई । हमैं राठोड़ां नै मोहिलां मांहोमांही सबळो वेर पड़ियो ।—नैणसी

उ०—७ राठोड़ सबळा, मोहिलां री ठकुराई सबळी, पण भाई-चारै मेळ घणो काई नहीं ।—नैणसी

उ०—८ पछै रांणी भांणमती नै राजा भोज पूछी आज तो म्हांरै एक सबळो झगड़ो आयो है जणी री थें न्याव करो ।

—साहूकार री वात

उ०—९ वैसाख वदि १५ डेरो वानरवै । इण डेरै असवार २०० पाछा छै, नै मेह सबळो वूठो तळाव मैं पांणी मास ८ रो आयो ।

—नैणसी

उ०—१० देवगिरि 'अन्नै' जोगणिपुरां, सबळो भारथ सूजियो । महिरांण मह्हिकर मत्थतां, च्यार मास विग्रह कियो ।—गु. रू. वं.

उ०—११ पछै आपरो परधान हुतो तिण सूं कहियो—'एक तो सबळो सोच हुवो ।' तरै प्रधान बोलिया जो कांसूं सोच सोच हुवो ।

—गु. रू. वं.

(स्त्री. सबळी)

सबाब-सं. पु. [अ. सवाब] १ सत्कर्म करने पर परलोक में मिलने वाला पुण्यफल ।

उ०—१ ऊग गिरी घर ऊपरै, यक खांडामय आव । तूंवा मीठम होय तो, सूमां होय सबाब ।—बां. दा.

उ०—२ नीत रीत सूमां नहीं, सूमां नहीं सबाब । सूमां घरै सुगाळ में, रंधै रसोड़ै राव ।—बां. दा.

उ०—३ तद बादसाह फरमाइयो जे आ न वणै तो किण भांत सबाब हज मक्का री माया रो पाऊं ।—नी. प्र.

[फा. असबाब] १ सामान, सामग्री ।

उ०—सारो तोप सबाब, पहि फीटो पावां पड़चो । निहुरा साय नवाब, नारि छुटाई निट्ठसैं ।—ला. रा.

२ युद्ध सामग्री ।

उ०—करहुं बंध चतुरंगनो, सीसा सोर सबाब । कल वनास उत-रहि कटक, यम दिय हुकम नवाब ।—ला. रा.

[अ. शबाब] ४ युवावस्था ।

५ उठती जवानी ।

६ युवावस्था का सौंदर्य ।

७ सौन्दर्य ।

८ वास्तविकता, हकीकत ।

वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ पवित्र ।

३ सुन्दर ।

४ यथार्थ, सत्य ।

५ वास्तविक ।

६ दुरुस्त, ठीक ।

रू. भे.—सवाब, सब्बाब, सवाब ।

सबारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

सबाव—१ देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—हाथी घण घरां हीडळसी, 'सूर' हरा इसा सबाव । दूण पटा वदारा देसी, आप जिसा करसी अमराव ।—केसरीसिंह बारहठ

२ देखो 'सबाब' (रू. भे.)

उ०—सब मीरखांन मम सुणउ जाव, हुय हुस्यार रह मिळ सबाव ।

—शि. सु. रू.

सबासन-सं. पु.—डिंगल का एक छंद विशेष जिसमें चार लघु एवं भगण या फिर क्रम से नगण जगण और लघु होते हैं ।

सबाहुत्र-सं. पु. [सं.] भुजा का कवच ।

उ०—सजै ओपरा टोप सोभा सिघाळी, जिकै भीड़िया दंस नागोद जाळी । सबाहुत्र ऊरत्र जंघात्र संगी, चहै वंस चील्हा रहै एक रंगी ।

—वं. भा.

सबिका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—सजाई कीधी घणी, सबिका करि वाहन । सैन्य साथि अति घणी, तैं चालवी राजन ।—नलाख्यांन

सबी-सं. स्त्री. [अ. तसबीह] १ माला, हार ।

उ०—सुत परताप टुक जोड़ै सिर, सुकरां गूंथी अजब सबी । रुण्ड-माळ उर ऊपर रुद्रचै, फूलमाळ अद्भुत फबी ।

—पत्तो चूंडावत रो गीत

२ शक्ल, आकृति ।

उ०—१ तरै छांनै छै विडां मांहे दीठो, वाइजी रै वररी सबी दीसै छै, नाकरो डांडी, आंख्यां, निलाड़ डील रोमछर देखि सही कवर जी ही छै ।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ चाकर झाली नै आय नै कह्यो, चारण नै बाटी करनै आपज्यो । तिसै झाली मुखड़ा री सबी देख रोवण लागी । तरै मुखड़ै पूछियो वेदल क्यूं हुवै ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ शोभा, सुन्दरता ।

४ वक्षस्थल पर धारण करने का आभूषण विशेष ।

५ तस्वीर, मूर्ति ।

उ०—अर पछै आपरी सबी मंगाय दीवी, जो इण री दरसण कर-ज्यो जतरै हूं आऊं छूं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

६ देखो 'सिवि' (रू. भे.)

रू. भे.—सिव, सिवि ।

सबीता—देखो 'सविता' (रू. भे.)

सबील-सं. स्त्री.—प्यासों को धमार्थ जल पिलाने का स्थान, प्याऊ ।

सबुर्ज-सं. स्त्री.—बुर्जों सहित ।

उ०—भिरै अभित्ति भित्ति को सबुर्ज कै भवावनी । विनां प्रस्वेद वित्तकों कुरोर हां कमावनी ।—ऊ. का.

सबुध-वि.-वि.—बुद्धिमान, विद्वान् ।
उ०—ससिसुत भवन पंचमें सोहै, महा सबुध लख जगत विमोहै ।
—रा. रू.
सबूत-सं. पु. [अ. सुबूत] प्रमाण ।
उ०—सेठ कह्यौ—पाळियोड़ी मिन्नी रौ कांई सबूत ।—फुलवाड़ी
वि.—अखंड, पूरा ।
रू. भे.—साबूत ।
सबूब, सबूबौ-वि.—सुन्दर, श्रेष्ठ ।
उ०—कीमखाप तकिया कसमंदा खूब है, संजीवण की जडी क जोत सबूब है ।—बगसीरांम प्रोहित री वात
सबूरी—देखो 'सब्र' (रू. भे.)
उ०—१ सील संतोस सति दया सबूरी, घण अवसर यम कीजै । जन हरिदास सति मनसा वाचा, रसना रांम रटीजै ।—ह. पु. वां.
उ०—२ सिदक सबूरी बाहिरौ, हरीया साच न एह । मुलां बांग पुकारियां, सांई साद न देह ।—अनुभववांणी
उ०—३ बधाई री भूखी धणी नै लुकाय पैला आई, जकी तौ सखरी बात पण अबै जल्दी उणरौ उणियारौ बतावै जकी वात कर । म्हारा सूं सबूरी नीं व्है ।—फुलवाड़ी
उ०—४ दो चूंघै जित्तै च्यारूं ई लारला चूं चूं करै । घणौ ई मन तरसै पण जोर कांई करूं । ओळियाकड़ा थोड़ी घणी ई सबूरी नीं राखै ।—फुलवाड़ी
सबूरौ-सं. पु.—काठ या चमडे का वह लम्बा खंड या टुकड़ा जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रियां प्राय: अपनी कामवासना तृप्त करती हैं । (मुसलमान)
सबै—देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—१ तठै आगवो खाग हूं छाग तोड़ैं, चंडी काळिका मातरै स्रोण चोड़ै । लगावै सबै सेस बिंद्री ललाटां, करै फेर विस्रांम पाखै कपाटां ।—मे. म.
उ०—२ सबै मनोरथ पूरिया, सब्बै पूरी आस । जांण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास ।—गु. रू. बं.
उ०—३ सबै छांडि सब्बाब, नब्बाब भग्गै, सुभट्ट फतैसिंह कै लैर लग्गै ।—ला. रा.
सबैदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)
सबोड़णौ, सबोड़बौ-क्रि. स. [सं. संपुटनम्] १ किसी गाढ़े द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाना या चाटना कि सबड़-सबड़ की ध्वनि उत्पन्न हो ।
उ०—म्हैं हाथां ई चौकी माथै बोरी बिछायली । सावळ जमनै माथै बैठ्यौ जित्तै जड़ाव मासी सगळी खीर सबोड़ली । तबरा नै आंगळियां सूं पूरी चाटनै मांज्यौ ।—फुलवाड़ी
२ खाना ।
उ०—२ अस्सी नैंड़ा लिया है, दस बारै सोगरा तौ राव अर ऊंनी छा मैं चूरनै आज ई सबोड़ जाऊं ।—फुलवाड़ी
२ जिह्वा पान करना, चाटना ।
उ०—रणकारा रै समचै ई सगळा बिचिया दौड़्या आवता । लपौ-लप परातां मांयली दूध सबोड़ जाता । मन व्हैतौ जणां दूध रै मांय किलोळां करता ।—फुलवाड़ी
सबोड़णहार, हारौ (हारी), सबोड़णियौ—वि० ।
सबोड़िओड़ौ, सबोड़ियोड़ौ, सबौड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सबोड़ीजणौ, सबोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
सबोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१. किसी गाढ़े द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाया हुआ या चाटा हुआ कि उससे सबड़-सबड़ की ध्वनि उत्पन्न हुई हो. २ खाया हुआ, जिव्हा पान किया हुआ ।
(स्त्री. सबोड़ियोड़ी)
सबोझ, सबोझौ-वि.—गौरवयुक्त ।
उ०—अै भाटी दळ आगळा, खळ गंजण दळ ढाल । मिसल सबोझा मेळ सूं, यां हूंता रिणमाल ।—रा. रू.
सबोध-वि. [सं.] जानकारी युक्त ।
सं. पु.—१ उत्तम ज्ञान, बुद्धि ।
२ ज्ञान, बुद्धि ।
३ जानकारी ।
सबोधौ-वि.—१ ज्ञानी, बुद्धिमान ।
२ जानकारी रखने वाला ।
सबोल-सं. पु.—बोलबाला, दबदबा ।
उ०—लाखेरी रौ राजारांम जी, तिणरौ प्रोहित हरदेव जी छै, बाई सारू सवागो ल्याया छै । तिण ऊपरां थांनै मांहै लेसी नै अठै थांरौ सबोल होय तौ म्हारौ फूटरौ दीसै ।
—जैतसी ऊदावत री वात
सबोळौ-वि. (स्त्री. सबोळी) १ खुश, प्रसन्न ।
उ०—करतां त्याग सबोळा कीधा, सुज पातां संसार सुधार । जातै नहीं बोल जुग जातां, डेरा तूज तणां दातार ।
—भगूंत सिंघ रौ गीत
२ बहुत, अधिक, ज्यादा ।
उ०—घणी आछी रंगरळी सूं राजस कीवी । लोग सगळौ खुसहाल सबोळौ राखियौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
३ सराबोर, गरक ।
उ०—अमित गुलालां अरगजां, केसर अतर फुलेल । हुवै सबोळी मंडळी, होळी हंदा खेल ।—रा. रू.
४ महान, श्रेष्ठ ।
५ जबरदस्त, पराक्रमी ।
६ नहीं मिटने वाला, अमिट ।
उ०—आई फौज चाल तौ ऊपर, रे जसबोल सबोळा रहल्ला । साहै दळां मछरीक हमै सम, गाहै दळां खग बोट गहल्ला ।

—सूरतसिंघ चहुवांण री गीत

सब्ज—देखो 'सबज' (रू. भे.)

सब्जी-सं. स्त्री. [फा.] १ हरियाली।

२ हरी वनस्पति या तरकारी जो खाने के काम आती है।

३ पकाया हुआ साक।

रू. भे.—सबजी।

सब्जीमंडी-सं. स्त्री.—सब्जी के क्रय-विक्रय का स्थान।

रू. भे.—सबजीमंडी।

सब्द—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—१ देख सरव दहै दादुरां, सब्द कळा कर सून। पुरख असैंदो देख दहै, मावड़ियां मुख मून।—बां. दा.

उ०—२ वीरांण सब्द सुणिया विहद्द, नीसांण तूर अनहद्द नद्द। जोधणां सरीरा जोत जाग, सोधणां पार रां ध्यांन लाग।

—वि. सं.

सब्दगुर, सब्दगुरु—देखो 'सबदगुरु' (रू. भे.)

सब्दग्रह —देखो 'सबदग्रह' (रू. भे.)

सब्दबोध—देखो 'सबदबोध' (रू. भे.)

सब्दब्रह्म—देखो 'सबदब्रह्म' (रू. भे.)

सब्दभेदी —देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर—देखो 'सबदमहेसर' (रू. भे.)

सब्दलखण, सब्दलक्षण, सब्दलखण, सब्दलख्खण-सं. स्त्री. [सं. शब्द-लक्षण] ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)

सब्दवेधी, सब्ददवेधी, सब्ददावेध—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे.)

उ०—चढै सब्ददावेध तूबां निघांगां, चढै तुरमैं घातिग्रां भूल वांणं। चढै पंच हज्जारियां पंच सद्दी, चढै मल्ल पायक्क बगसी ग्रहद्दी।—गु. रू. बं.

सब्दसक्ति—देखो 'सबदसक्ति' (रू. भे.)

सब्दसाधन—देखो 'सबदसाधन' (रू. भे.)

सब्दसासतर, सब्दसास्त्र —देखो 'सबदसासतर' (रू. भे.)

सब्दाडंबर—देखो 'सबदाडंबर' (रू. भे.)

सब्दारथ-सं. पु. [सं. शब्दार्थ] शब्द का अर्थ।

उ०—दूसर द्वीहायन श्रीवाहन दोरी, सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी। इक नहि आक्रांता क्रांतातुर आडी, डाई अवतोका सोकाकुल टाडी।—ऊ. का.

सब्दालंकार—देखो 'सबदालंकार' (रू. भे.)

सब्दु—देखो 'सबद' (रू. भ.) (उ. र.)

सब्ब—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ अहंनिस भज तेनूं, आव संसार ओछी। इकदरस यम आसी, जे बिना सब्ब छोछी।—र. ज. प्र.

उ०—२ मारत एक सब्ब धात केळवै रसायणं। अगाव वैदराज राज औखदी विचारणं।—गु. रू. बं.

सब्बदयं—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—आंमना चत्र वेद ब्रहमांणयं विप्रयं, रूप जुज्जर सांम अयर वणयं जपयं। वेदी धुनि जै जै सब्बदयं वणयं, गुंजार रव भेर पडं-सदयं घणय।—गु. रू. बं.

सब्बळ—देखो 'सबळ' (रू. भे.)

उ०—१ आप आय अजमेर, मिळै दळ सब्बळ महाबळ। कागद भेजे सबळ, आय मिळळै दळ दळ सब्बळ।—सू. प्र.

उ०—२ पाड़ सब्बळ देत पाड़यौ करण अद्भुत कत्य, तो समरत्थ जी समरत्थ सारी बात हर समरत्थ।—भगतमाळ

उ०—३ बोलै साह सगाह महाबळ, सेन तोछ तपस्या सब्बळ। सुणै चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गंजसि कौ आपांणौ।—रा. रू.

उ०—४ जोड़ अरोड़ वळै 'भीमाजळ', सुत रुघनाथ पाथ जिम सब्बळ। ईसरोत 'रांमो' अतुळीबळ, करवा गढां 'विजावत' कंदळ।

—रा. रू.

उ०—५ निडर भूप नागौर, समर झोकै दळ सब्बळ। क्रोध धूप फळकळे, तूप सीचै किर मंगळ।—सू. प्र.

सब्बळो—देखो 'सबळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ देवी मंगळा बीजळा रूप मघ्घै, देवी अब्बळा सब्बळा बोग अघ्घै।—देवि.

उ०—२ गिगन गोमं गूघळां, गिरंद मेर मेखळां। वहीत सेत वंबळां, समूळ सब्बळा दळां।—गु. रू. बं.

उ०—३ ओपियै वैरकां कुजरां ऊपरै, गुड़ियं उड़ियं जांण पव्वै गिरै। सांमठो हल्लको मैंगळां सब्बळो, वाट ऊभी वहै जांण आडो वळो।—गु. रू. बं.

(स्त्री. सबळी)

सब्बा—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ सूहडां करि जुहार सब्बा ही, राज महेल राज धू मांही। राजा पधारै रळियांही, मुख हसतै राव लगन माही।—गु. रू. बं.

उ०—२ देवी जम्मघंटा वदीजै जडंबा, देवी साकणी डाकणी रुद्र सब्बा।—देवि.

सब्बाब—देखो 'सबाब' (रू. भे.)

उ०—सबै छांडि सब्बाळ नव्वाब भग्गै, सुभट्टं फतैसिंह कै लैर लग्गै।—ला. रा.

सब्बाल—देखो 'सव्वाल' (रू. भे.)

सब्बी—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—कै तुम किल्लै तोरियौ, कै मरियौ सब्बी। देखौ नब्बी क्या करै, कर नाख तसब्बी।—ला. रा.

सब्बु, सब्बुन—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—१ कंकट टोपां कढ़ि कै, कढि जात अघाया। ज्यों सबनीगर सब्बु मैं, चहि तंत्र चलाया।—वं. भा.

उ०—२ अज्ज धरम रच्छक इतै रु जवनिस्ट तै, घाट हलदी रन

भ्रमावै भट भालौं कौं। वीर दोरदंडन उदग्ग मच्छ लगनतैं, सब्बुन ज्यौं तांति चीर देत गजढालीं कौं।—बालाबक्स बारहठ

सब्बू-सं. पु.—रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल।

उ०—तिस बगीचूं कै दरम्यांन वरणूं जेतै फलफुलू का विस्तार। सब्बू कै सिरपोस अनारू का अधिकार।—सू. प्र.

सब्बै—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—सबै मनोरथ पूरिया, सब्बै पूरी आस। जांण कमोदणी सिस उदै, तन मन हुआ विकास।—गु. रू. बं.

सब्भ, सब्भै—देखो सब' (रू. भे.)

उ०—सभै अभै थंभ दै, सब्भै ही-खत्र-धोड। सब्भां ही दिन पद्धरी, सभ वंका राठौड।—गु. रू. बं.

उ०—२ सहइ कुण सब्भ री, अेक अेकप्परी। लागि लागइ खरी, ठांइ नह ठाठरी।—अ. वचनिका

सब्र-सं. स्त्री. [अ.] १ धैर्य, धीरज।

उ०—इस्क अजब अवदाळ है, दरदवंद दरवेस। दादू सिक्का सब्र है, अक्कल पीर उपदेस।—दादूबांणी

२ सन्तोष।

मुहा.—सब्र रा फळ मीठा व्है—धैर्य रखना श्रेष्ठ है।

रू. भे.—सबर, सबूरी।

सभ—देखो 'सभ्य' (रू. भे.)

उ०—प्रधांनां बात सुहांणी प्रभ, सु वेस्याराइ बुलाया सभ।

—रांमरासौ

२ देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—अेक इसिइ आविउ तिहां ऊजेणीनु वंभ। मिळया माहांमाहां बिन्है, सभयां काज सुलंभ।—मा. कां. प्र.

सभद्र-सं. पु.—१ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

२ देखो 'सुभद्रा' (रू. भे.)

सभर-वि.—१ भारी।

२ अत्यधिक।

उ०—आब अमोलक ऊजळा, सभर गुणां ततसार। त्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—बां. दा.

३ श्रेष्ठ, बढ़िया।

सभानर-सं. पु. [सं. सभानर] ययाति वंशीय अनु के पुत्र का नाम।

सभा-सं. स्त्री. [सं] १ वह स्थान जहां पर बहुत से लोग बैठते हों, परिषद, समिति, मजलिस। (उ. र.) (डिं. को.)

पर्याय.—आसता, आसथांन, गोठि, परखद, परसत, संसत, सद, सदघटा, समाज, समिजा, समिति।

२ दरबार।

उ०—१ सभा वरणनं, राय रांणा मंडलीक आखंडलीक सांमंत महासांमंत लघुसांमंत, स्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला उचितबोला........।—व. स.

उ०—२ महुतउ वेग सभा आविउ, राजा रंगइं बोलावीउ। डाहा भूलइं केती वार, तुह्म सरिखा नु किसिउ विचार।—हीराणंद सूरि

३ धर्मशाला।

उ०—१ एहवूं कहीनि नीसरयां एकि वस्त्रि लग्न, सभा सुंदर आगली आवी ऊतरया थई मग्न।—नळाख्यांन

उ०—२ थाकां भूख्यां रज-भरयां एकि वस्त्रि बेह। सभा आवि धरातलि तव सूतां दुरबल देह।—नळाख्यांन

४ किसी एक विषय पर विचार करने के लिए बहुत से व्यक्तियों के एकत्र होने का स्थान।

५ उक्त स्थान पर एकत्रित हुए व्यक्तियों का समूह।

६ अथाइ।

७ कोई विशिष्ट कार्यार्थ नियुक्त व्यक्तियों का समूह।

८ द्यूत गृह, जुआड़खाना।

९ न्यायालय।

१० घर, मकान।

सभाइ—देखो 'स्वभाव'

उ०—लुघ सतावीस वैसी लखाइ, सहि सेख लेख सुद्रणि सभाइ।

—ल. पिं.

सभाकार-वि. [सं.] १ सभा करने वाला।

२ सभा-सदस्य।

सभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे.)

उ०—१ दोळी चौकी साह री, विच दळ अकळ सभाग। सोहै किर सामुद्र मैं, ज्वाळवती बड़भाग।—रा. रू.

उ०—२ दोनां री निजर कांळिदर माथै पड़ी तौ ई वै नीं डरी अर नीं चिमकी। कांई आस, आकरसण के हरख बाकी बच्यो जकै वै मौत सूं डरै। वांरा अेड़ा सभाग कठै कै मौत आ जावै।

—फुलवाड़ी

सभागियौ, सभागी, सभागौ-सं. पु. [सं. सभाग्य] १ भाग्यशाली व्यक्ति।

उ०—वीठू वारै अप्पणै, सभागियौ करीर। उर चंपै नखवीणवै, चंपै सौ सरीर।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सम्पन्न, धनवान व्यक्ति।

मुहा.—सभागियां री जीभ नै अभागियां रा पग=सम्पन्न व्यक्तियों की आज्ञानुसार गरीब कार्य करते हैं।

वि:—१ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ कुरबक वच्छां बाड़, माधवी कुंज सुरागी। लूबै लाल असोक, भूमै वकुळ सभागी।—मेघदूत

उ०—२ क्षमावंत सबका हितकारी, कोमळ वचन अलागी। कह सुखरांम साधू लछ ऐसा वरतै संत सभागी।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ औ बींद कितरौ सभागियौ! कितरौ सुखी! भूत रा रूं रूं मैं जांणै सूळां खुबण लागी।—फुलवाड़ी

२ समाज, भीड़ ।

उ०—पारसी मोची —स्याम रो, मौत पायां बिनां कोई नीं मरै । पण हैडी सभारी मौत री मारै जोग पड़ै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संमाजिनी, संमार्गी ।

सभागार—सं. पु. [सं. सभागार] किसी सभा समिति के बैठने या अधिवेशन चलाने का स्थान ।

सभापति—सं. पु. [सं. १ किसी सभा का मुखिया, प्रधान ।

उ०—मा'राजा सेवा लार्डविगै रा मिंत्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रामसेवा संघ रा उपाध्यक्ष अर पारद-समाज रा सदा सूं सदस्य है ।—दसदोख

२ कौरवपक्षीय योद्धा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

सभामंडप—सं. पु. [सं.] १ निज मंदिर के सम्मुख देवदर्शनार्थियों के देव दर्शन हेतु बैठने का स्थान ।

२ वह स्थान जहाँ पर सभा की जाती है, सभाभवन ।

उ०—१ हमार दरबार है जठै सभामंडप री महल करायौ, गढ में । पाणी रा महल कराया जठै हमार जनांनी ड्योढी है । जठी मांयै है नै पाणी कराई थी जिण सूं पाणी रा महल बाजता था ।

—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ सभामंडप ऊपर कछवाई जी री मैल करायौ । लोहा-पोळ हेटै कोट री पाटी कांनी बुरजां तीन कराई । तिकै अधूरी रही । निरो कमठो मा'राज तखतसिंघजी सरू करायां सो पार पड़ियौ नहीं ।—मारवाड़ री ख्यात

सभाय—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया जब सीतळ भया, सब तैं एक सभाय । राग दोस अंतर नहीं, सुख संतोस सभाय ।—अनुभववांणी

उ०—२ साध न मानै आपदा, सील संतोखी थाय । हरीया राग न देखता, सब कूं एक सभाय ।—अनुभववाणी

सभाव——१ चिह्न, खोज ।

उ०—परभात हुवौ, सू सूंदळराव रै पगां री जोड़ी उठै रही सू प्रथीराज दीठी, नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया ।

—नैणसी

२ देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ दीनदयाळ छेह नहि देता, सदा अछेह सभावां । पण तज देह अछेह पधारो, एह अनेह अभावां ।—ऊ. का.

उ०—२ ज्यांरा पड़्या सभाव, जासी जीवसूं । नीम न मीठा होय, सींचो गुड़ घीव सूं ।—अग्यात

उ०—३ बादळिया नै बीजळी, यां बिच हेक सभाव । जब ही बरसै घन घणो, नवहि रहै सिव भाव ।—अग्यात

उ०—४ दिमि दिमि धींकिटि, दांमर घांमर दमइ समावि । वाजइ तूर मसाहल साह तणइ अनुभावि ।—जयसेखर सूरि

सभासाडा—सं. पु.—सभा का सदस्य सभासद । (हि. को.)

सभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू. भे.)

सभासद—सं. पु. [सं.] किसी सभा में सम्मानित होने वाला सदस्य, पार्षद ।

२ किसी सभा में भाग लेने वाला व्यक्ति ।

सभासरवण—सं. पु. [सं. सभाशिरोमणि] उदयपुर राज्यभवन अन्तर्गत वह स्थान जहाँ पर जन्मोत्सव व राज्याभिषेक के समय दरबार लगाया जाता था ।

सभिन्न—वि.—भीगा हुआ ।

उ०—सबळ जळ सभिन्न सुगंध भेट साजि, डिगमिगि पाउ वाउ श्रोघ डर हालियौ मळयाचळ हूँत हिमाचळ, कांम दूत हूर प्रसन्न कर ।—वेलि

सभी —देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—गिरधारी आया धाव वळराव का पूत, साहै वेध चाह साह्यो राज रजपूत । 'कमा' 'जैता' सांमी कांमी कूंन जांणे, जम की सहाय वंके सभी पहचांणै ।—रा. रू.

सभीड़ौ—वि —१ दुष्कर, कठिन ।

उ०—१ राजा बीड़ो आपियो, कांम सभीड़ो पेख । ग्वाळ गुवांळा क्रिसन ज्यूं, दीनो आगो देख ।—रा. रू.

उ०—ततखिण 'अजण' 'अभो' तेड़ायो, बीजै 'गजण' हजूर बुलायो । विकट मर्म बीड़ो अप वेलै, दोन्हो काज सभीड़ो देलै ।

—रा. रू.

सं. पु.—२ समूह, झुण्ड, भीड़ ।

उ०—जै वडां सिरदारां सू अरड़ै री जावतो राखजो, सुही झालियां रहो, लोग सभीड़ो देख फेर आंण पड़सी ।—हाडाळा सूअर री वात

३ दृढ, मजबूत । (कपाट के लिए)

सभीत—वि.—भयभीत, भययुक्त ।

उ०—उर आसुर तायां सबद अभायां, उभकै पायां असुहायां । सत्रु वारस बीतां उवरि सभीता, वाचै गीतां दिन बीतां ।—रा. रू.

सभूमौ, सभोमौ—वि. (स्त्री. सभूमी, सभोमी) कार्यकुशल, होशियार ।

(विलो. अभोमौ)

सभोभरम, सभोभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ समोभ्रम 'पाळ' ज नंदण, जोर महा अस आत्रस जांणे । 'कांन' उभै अह कालंग केवी, येह अरी दळ सेवर आंणै ।

—राव कनपाळ रो गीत

उ०—२ सुजड वहंता 'रयण' सभोभ्रम, अंतर किम दीसै अकळ । फुल छळ थायां हमैं केवियां, छांडैवा संग्राम छळ ।

—महम्मदजी बारहट

सभौ—वि.—भययुक्त, डर सहित । (डर के, भय के)

उ०—असपति मोच मेटण उवरि, दीसै श्रौर दूसरौ । दिल्लेस सभौ आडो दियण, एक 'अभो' 'अजपल्ल' रौ ।—रा. रू.

सभ्भ—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ तेता मारू मांहि गुरा, जेता तारा अम्भ। उच्चळचिता साजरा, कहि क्यउं दाखउं सम्भ।—ढो. मा.

उ०—२ सव्वां थी तुम्ह तुम्हां थी सम्भ।—ह. र.

सम्य–वि. [सं.] १ सभा से सम्बन्धित, सभा का।

२ उत्तम आचार-विचार वाला, सुसंस्कृत।

उ०—सुसील सम्य साच्छरं स्तुति प्रमांन सोहनै।—ऊ. का.

सं. पु.—१ पवमान अग्नि एवं संशसि के पुत्रों में से एक पुत्र अग्नि।

२ सभासद।

उ०—सिक्ख भई वलि सव भट सभ्य न, भनिय साह सुभ विधि विनु लभ्यन। तव सहाय बुंदीपति तावहु, अप्प सिविर दारा लेजावहु।—वं. भा.

सम्यता–सं. स्त्री. [सं.] सभ्य होने का भाव, शिष्टता।

सभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—'गजसाह' वडै 'गजसाह' छळि, अगनि वांरा आतस सहै। पडिहार एक पांचा सभ्रम, रायसिंघ रिरा भूंइ रहै।—गु. रू. बं.

समंक–सं. पु.—१ चन्द्रमा, सोम।

उ०—माया वादळ बीजळी, मारै चमंक चमंक। हरीया हरिजन ऊबरै, राता रैण समंक।—अनुभववांणी

१ आंकड़ों का समूह।

समंगा–सं. स्त्री. [सं.] एक पुण्य नदी जिसमें स्नान करने से अष्टावक्र ऋषि की वक्रता चली गई थी।

समंचार—देखो 'समाचार' (रू. भे.)

उ०—१ वौ सिंझ्या रा बडोड़ी बेटी रै घरै गियौ। उरारा माथा माथै हाथ फेर, सुख सांयत रा समंचार पूछ्या।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै वीरमदै समंचार कहाड़िया मालदेव जी नूं। ताहरां राव मालदेवजी रै मन मैं हुई। खबर कराई, सु अमरावां रै डेरै सवाया रुपिया हुआ।—नैरासी

समंछर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—संमत दह सपतमै, सरस पचसठै समंछर। सांवरा रित घरा सुखद, अयन रवि दक्खरा अंतर।—रा. रू.

समंजण–सं. पु.—१ नहाने की क्रिया, स्नान।

समंजणौ, समंजबौ–क्रि. स. [सं. संमार्जनम्] १ स्नान करना, नहाना।

उ०—वांरणी सुरा चहुवांरा, आंरा ऊभी रायअंगरा। सखी हूंत नव सपत, मांगि सुख आदि समंजण।—रा. रू.

२ देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

समंजणहार, हारौ (हारी), समंजणियौ—वि०।

समंजिओड़ौ, समंजियोड़ौ, समंज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समंजीजणौ, समंजीजबौ—कर्म वा०।

समंजर–वि.—मंजरी सहित, मंजरीयुक्त।

उ०—क्रै धरि दंभ सुलब्भ, अब्भ आछादि रहै धर। तर तमाळ वन तरळ, मिळै फिर डाळ समंजर।—रा. रू.

समंजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ।

२ देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समंजियोड़ी)

समंडळ–सं. पु. [सं. समण्डल] सूर्य, भानु। (ना. डिं. को.)

समंत—देखो 'सांमंत' (रू. भे.)

उ०—रथां परी जथांमाळ अवरी समंतां राळै, लुथवथां हुवै ईस मथां सूर लेरा। भारतां राखवा कथा पथा जेम वाग भूरौ, स्त्री हथां आछटै खाग दूजौ चंद्रसेरा।—पहाड़ खां आढौ

समंतपंचक–सं. पु.—कुरुक्षेत्र का एक नाम।

समंतर–सं. पु. [सं.] १ एक प्राचीन देश का नाम।

२ उक्त देश का निवासी।

समंद–सं. पु.—१ एक प्रकार का फूल। (अ. मा.)

[सं. संमद, सम्मद] २ हर्ष, आनंद (अ. मा.)

३ घोड़ा, अश्व।

४ बढ़िया घोड़ा।

५ बादामी रंग का घोड़ा जिसका अयाल, दुम, पुट्ठे आदि काले रंग के होते हैं।

६ देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (डिं. को; ना. डिं. को.)

उ०—१ फिर रघु हुकम मतै विकराळै, अंगद समंद मभि गिरंद उछाळै। कवचधार गौड़व जुध केकां, ऊडावै पखरैत अनेकां।

—सू. प्र.

उ०—२ हरीया सीप समंद मैं, यु साधु जुग मांहि। सीपां मोती नीपजै, साध साध विन नाहि।—अनुभववांणी

उ०—३ तू पारस तू कळपतर, चिंतामरा घरा चाव। 'सांमा' इंद समंद तू, 'भारहमाल' सुजाव।—वां. दां.

उ०—४ थिडै थिडंव थट्ट ऐं, समंद जांरा फट्ट ऐं। ढलक्कि ढाल गैमरां, पुऊर रोळ पक्खरां।—गु. रू. बं.

समंदकण–सं. पु. [सं. समुद्र+करणः] मोती, मुक्ता।

उ०—केम कळंक लागै कुळ निकळक, जालम तूझ तरणा रव जेम। कंदवाळा न हुवै समंदकण, हुवै न दागल अग हेम।

—चतुरभुज बारहठ

समंदफेण—देखो 'समुद्रफेरा' (रू. भे.)

समंदमेखळा–सं. स्त्री. [सं. समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

समंदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ हो म्हांरा सुखडा रा समंदर हो, हो म्हांरा दया रा दिसावर हो।—गी. रां.

उ०—२ सगळी बातां सुण्यां सेठांणी रै अंतस मैं जांणै हरख रौ समंदर थावा मारण लागौ। बोली—पिंडतजी थैं म्हारै कहै इत्ता फोड़ा भुगतिया। थांरौ औ औसांण जीवूं जित्तै नीं भूलूं।

—फुलवाड़ी

उ०—२ बेटी मांमनो समदरानी गीत गाय बोली—मन हाथें नीं पाणी री झुला धोळावा वर्नू लेवो। म्हनै गाय पूरी करो तो जिद छूटै। जिन री देग तो मिटै समंदर मैं मछियां ई नीं छोटी, जको पढ़ै जिनग री तो गांठो ई कांई।—फुलवाड़ी

समंदरी-स. स्त्री.—१ नैऋत्य कोण से ग्राने वाली वायु। (नि. कनाळ)

२ एक विशेष रंग का घोड़ा।

रूप्पा, रू. भे.—समदरियो।

समंदव्यूह—देखो 'समुद्रव्यूह' (रू. भे.)

उ०—ग्राछै जळतत काळरो समंद उलटीग्रो छै। तिण भांतिरी समदव्यूह सेन्या शीघ्रां घाणी ग्रावै छै। कांही जळजात व्यूह सेन्या लीधी छै। —रा. मा. ग.

समंदसुत, समंदसुतन-सं. पु. [सं. समुद्र+सुत] १ चंद्रमा, चांद। (ह. नां. मा.)

२ अमृत। (ह. नां. मा.)

३ समुद्र से निकाले गये चौदह रत्नों में से कोई एक।

रू. भे.—समुद्रासुतक, समुद्रासुतन।

समंदहुलास-सं. पु.—हर्ष, ग्रानंद।

समंदो, समंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ धारां तीरथ समंदो सोणी, सलिल सुरगं भरए। परि पहुत्ता सुरो, बैनं ग्रोघ उदीय हसा।—गु. रू. बं.

उ०—२ सर्ण पर्ण समवाद, नंदनंदन ग्रहि नारी। समंद्र पार समार, होय गोरद ग्रनुहारी।—ना. द.

समंध —देखो 'संबंध' (रू. भे.)

समंवाद—देखो 'संवाद' (रू. भे.)

उ०—१ रम्गमै समर्थं कह्यो समगल्लै, समंवाद गातां ग्रहे पारस रत्नै। समंवाद काळी तणो एह सारो, चवै दास दागांन सांमो विचारो।—ना. द.

उ०—२ धणी री ऊजाळां लूंण ग्राऊग्रा ग्रामोर धणी, वणीयार ज्यानु कुण पुछै समंवाद। गाज ग्रणी मरीरा ग्रग्राजै वेहु माहासूर, माफ भुग्रां ग्राजै धणी धरा री ग्रजाद।—जवांन जी ग्राढो

समसणो, समंसबो-क्रि. स.—१ चिंता करना।

२ पश्चाताप करना।

सम-वि.—समान, सदृश।

उ०—१ सुंदर तन स्यांम स्यांम वारद सम, फोटक भा रद कांम सकांम। नायक सिया दासरथ नंदण, विमळ पाय सुरराजा वंदण, रीझ वडै महराजा रांम।—र. ज. प्र.

उ०—२ सुंदर भाळ विमाळ, ग्रलक सम माळ ग्रनोपम। हित प्रणाम मदु हास, ग्ररुण वारिज मुख ग्रोपम।—रा. रू.

२ बराबर, तुल्य। (डिं. को.)

उ०—१ सूरातन सूरां चडै, सत सतियां सम दोय। ग्राडी धारां ऊतरैं, गर्ण ग्रनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ नारायण तो सम को नांही, सुर ही भवण हुकम सैं मांही।—ह. र.

३ बराबर, समान।

उ०—१ सम वय रा सुहड़ां सहित, वोळै कुंकुम बास। पग रण-लंगर पहरिया, भूखण उडुगण भास।—वं. भा.

उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि ग्रनुक्रमि सर-वरी। सिय सीत पति गुण परसि चसि सुख, सकस पति जिम सुंदरी।—रा. रू.

४ जिसका तल समतल हो।

५ जो शुरू से ग्रन्त तक एकसा चले, उतार-चढ़ाव रहित, तेजी-मन्दी रहित।

उ०—विजय रा लोभी रजपूत चाहै किण समय ग्राद सम विसम जुद्ध करै। ग्रर जनकादिक गुरुजनां नूं टाळि तिकां रै सांम्है तो ग्रनुगत भाव धरै —वं. भा.

सं. पु. [सं. शम] १ शांति।

२ मोक्ष।

३ शमन, निवृत्ति।

उ०—सिव रमणी वरी ए, छकाय रक्षा करी ए। शम दम सम धरी ए।—जयवांणी

४ वह संख्या जो समसंख्या (२, ४, ६, ८) पर पड़े या जिसमें दो का भाग पूरा-पूरा जावे।

४ तीन प्रकार की वयणसगाई (वर्णमैत्री) में से एक।

६ वर्गमूल निकालने के संकेत स्वरूप किसी ग्रंक के ऊपर दी जाने वाली सीधी रेखा। (गणित)

७ ताल के ग्रनुसार संगीत में वह निश्चित स्थान जहाँ बजाने वाले का सिर या हाथ ग्रपने ग्राप हिल जाता है। संगीत में ताल की निश्चित ग्रावृत्ति का प्रथम मात्र।

८ हाथ में रखी जाने वाली छड़ी व हाथी के दांतों की शोभा वृद्धि के लिए लगाया जाने वाला छल्ला।

उ०—जरै सब पीतर तैं सम दंत, वसी हिम के मनु भोन वसंत।

—ला. रा.

६ वर्ष, साल। (डिं. को.)

१० धर्म प्रजापति के पुत्र एवं प्राप्ति के पति, एक राजा।

११ ग्रहः नामक वसु का एक पुत्र।

१२ ग्रायु राजा के एक पुत्र का नाम।

१३ ग्रमिताव देवों में से एक।

१४ भीमसेन के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र-पुत्र।

१५ हंसध्वज राजा का पुत्र जो चंपक नगरी का राजा था।

१६ धर्मसूत्र राजा का पुत्र व शमत्सेन राजा के पिता का नाम।

१७ भगवान् विष्णु का नाम।

रू. भे.—संम, संम्य, समो, समैं।

समग्रर—देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—इण भांत लड़ै समग्रर अभंग, राठोडव खीची रुद्र रंग।
—पा. प्र.

समइ, समइयै, समइयौ, समईयइ, समईयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ बीकानेर वळै राव कल्यांणमल आइ राज विराजण लागौ। इण समइयै पातिसाह सेरसाह वरस आठ दिली राज करि अर कालिंजर गयौ हतौ।—द. वि.

उ०—२ दादुरा डहिडहै, सांवण आवण री सिध कहै, इसौ समइयौ वण रह्यौ छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ जेठ मास मांहै प्रोहित पण हैरौ करण आयौ, इसै समइयै आंवली पण फळी हुती।—नैणसी

समउण-सं. पु. [सं. समन] ब्रह्मा। (ह. नां. मा.)

समकणौ, समकबौ—देखो 'चमकणौ, चमकबौ' (रू. भे.)

उ०—बीजुळियां जाळउं मिळ्या, ढोला हूं न सहेसि। जउ आसाढि न आवियउ, सावण समकि मरेसि।—ढो. मा.

समकणहार, हारौ (हारी), समकणियौ—वि०।

समकिम्रोड़ौ, समकियोड़ौ, समक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समकीजणौ, समकीजबौ—भाव वा०।

समकत—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिणसूं समकत चारित्र एक ही नहीं।—भि. द्र.

समकारणौ, समकारबौ—क्रि. स.—बजाना।

उ०—घूघरां तणौ घमकार कर गहर सी, डाक डमकार समकार डेरूं। तावरौ सांधियौ केहरौ तवै छै, भाव रौ बांधियौ आव भेरूं।
—केसरौ

समकारणहार, हारौ (हारी), समकारणियौ—वि०।

समकारिम्रोड़ौ, समकारियोड़ौ, समकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समकारीजणौ, समकारीजबौ—कर्म वा०।

समकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—बजाया हुआ।

(स्त्री. समकारियोड़ी)

समकालीन—वि. [सं.] १ एक ही समय से सम्बन्धित।

२ उत्पत्ति आदि के हिसाब से एक ही समय में होने वाला।

समकित—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—१ आगार नै अणगारनो जी, धरम तणा दोय भेद। समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति उम्मेद।—जयवांणी

उ०—२ तिम ए धोवण उन्हो पांणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सूं वणी बणाइ ब्राह्मणी रा साथी है।—भि. द्र.

उ०—३ तीरथंकर आवै तिहां, त्रिगडो करै तयार। समकित करणी साववै, एह कहुं अधिकार।—वृस्त.

उ०—४ परभाग रंग म्रदंग गूंजइ, सत्व ताल विसाल ए। समकित तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस भाल ए।—वि. कु.

समकिती—वि.—श्रद्धान की क्रिया करने वाला, सम्यकत्व का पालन करने वाला।

उ०—१ सनत्कुमार ए समकिती इत्यादिक पावै बोल हो।
—जयवांणी

उ०—२ करै प्रसंसा समकिती, मिथ्यात्वी होवै मूक। सूरय देखै हरखै सह, घणौ अंधारै घूक।—वृस्त.

समकियोड़ौ—देखो 'चमकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समकियोड़ी)

समकोस—सं. पु. [सं. समकोष] एक प्राचीन देश का नाम।

समकौर—वि.—एक समान, बराबर।

उ०—करी समकौर करीन की पंति, उठी बरखा मनु ग्रीखम अंति।
—ला. रा.

समखणौ, समखबौ—देखो 'चमकणौ, चमकबौ' (रू. भे.)

समखणहार, हारौ (हारी), समखणियौ—वि०।

समखिम्रोड़ौ, समखियोड़ौ, समख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समखीजणौ, समखीजबौ—भाव वा०।

समखियोड़ौ—देखो 'चमकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समखियोड़ी)

समखी—सं. स्त्री—बात, तर्क-वितर्क।

उ०—कीजौ कोड़ी समखियां, सुखइ इण जोड़ न अव्व। दीनौ गोरखदांन नूं, ऊठण तणौ कुरब्ब।—रा. रू.

समग—देखो 'समिग' (रू. भे.) (अ. मा.)

समगत—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—सेंठी नहीं समगत री नींव, नहीं सरधै छहकाय जीव।
—जयवांणी

उ०—२ जद तै पाछो आय नैं बोल्यो—थांरी समगत पाछी उरही ल्यौ।—भि. द्र.

समगना—सं. स्त्री. [सं. समज्ञा] यश, कीर्ति। (ह. नां. मा.)

समगि—सं. पु. [सं. सम्यक] सत्य, सांच। (ह. नां. मा.)

समगिना—सं. स्त्री. [सं. समज्ञा] यश, कीर्ति। (ह. नां. मा.)

समग्ग, समग्र, समग्रि—वि. [सं. समग्र] तमाम, सब, समूचा, सम्पूर्ण।

उ०—१ उडै तुरंग तैं रजी, समग्ग घावती अटै। छकै छकांन छावती, छिता विछावती छटै।—ऊ. का.

उ०—२ जिण थी हाडां रा समग्र ही पांच सैं सिपाहां तिकांनूं बाढण काज आपरी समस्त ही सेना पेलोजै तो बिस्वंभर बिबाहिणि बिबाही वेहूं संबंधिया री बचन निवाहै।—वं. भा.

उ०—३ समग्रि भार धर गुणां सवायां, ओडै कंध धमळ थळ आयां।—रा. रू.

समड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

समड़णो, समड़बो-क्रि. स.—चलना ।
उ०—१ बरगा दूर गोळियां बाळै, बळियो मेघ जांण वरसाळै ।
समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, प्रमुर सजोस रोस उफणावै ।—रा. रू.
उ० —२ सिर मुजर करवा समर, 'अभो' हुवो असवार । फिर घू ऊरि मुझिहरा, समड़ै करण सिधार ।—रा. रू.
समड़णहार, हारो (हारी), समड़ियोड़ो—वि० ।
समड़ियोड़ो, समड़ियोड़ो, समड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
समड़ीजणो, समड़ीजबो—कर्म वा० ।

समड़ाणो, समड़ाबो-क्रि. स.—चलाना ।
समड़ाणहार, हारो (हारी), समड़ायोड़ो—वि० ।
समड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।
समड़ाईजणो, समड़ाईजबो —कर्म वा० ।
समड़ावणो, समड़ावबो—रू० भे० ।

समड़ायोड़ो-भू. का. कृ.—चलाया हुआ ।
(स्त्री. समड़ायोड़ी)

समड़ावणो, समड़ावबो – देखो 'समड़ाणो, समड़ाबो' (रू. भे.)
उ०—बरगा दूर गोळियां बाळै, बळियो मेघ जांण वरसाळै ।
समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, प्रमुर सजोस रोस उफणावै ।—रा. रू.
समड़ावणहार, हारो (हारी), समड़ावणियो—वि० ।
समड़ावियोड़ो, समड़ावियोड़ो, समड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
समड़ावीजणो, समड़ावीजबो—कर्म वा० ।

समड़ावियोड़ो—देखो 'समड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. समड़ावियोड़ी)

समड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—चला हुआ ।
(स्त्री. समड़ियोड़ी)

समचइ—देखो 'समचेई' (रू. भे.)
उ०—तान कई समचइ पूवरी, मांहिनी मांड़ली छोदा होइ ।
—वी. दे.

समचार—देखो 'समाचार' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ सुणि बेगम समचार, बेग पतसाह बुलायो । सांन आम-खास हूं, उठि अंतःपुर आयो ।—मे. म.
उ०—२ कटक्यो घमसांण प्रमांण किसा, दहळ्यो हिंदवांण दिसा विदिसा । त्रिदसालय चाव चढ्या तरण्यां, समचार पळी छत्रधार सुण्यां ।—मे. म.

समचेइ, समचै-वि.—सब, समस्त ।
उ०—१ दूर कराई दाड़िमां, मोहरां दे दे हाथ । माळा कंठी मोळवी, समचै एकण साथ ।—रा. रू.
उ०—२ निरजा दोनूं मेड़तै, मिळिया बंध समाथ । वण दिस यां 'दाखे' 'अमे', समचै कीधो साथ ।—रा. रू.
क्रि. वि.—१ ठीक उसी समय, तत्काल ।
उ०—१ तद सुरतसिंघ जी कह्यो—नाना हथवाही जीवतो जावै है । तारां समचेइ इणरै लारै उतरिया सू तरवार बहती रै साठै हाथ पग भेळा कर कूद गयो ।—द. दा.
उ०—२ जठै अेक दिखणी मा'राज रै बरावर हुय माथै में तरवार वाही सू कानां तांई घाव हुवो । अरु समचै मा'राज वाह करी सू उणरा दोय धड़ हुवा ।—द. दा.
उ०—३ जिसै नवाब री तरवार केसरीसिंघ जी ऊपर वूही । सू ढाल सूं टाली । समचै केसरीसिंघ जी वाही ।—द. दा.
२ एक साथ, एक ही साथ ।
३ साथ ।
उ०—१ हेला समचै आवता मां अब क्यूं करो अबेर ।
—आसकरण सांदू
उ०—२ पछै माहारै दिन वारैमो १२०० असवार जीनसाळिया करि ऊरि ढीला वागा पैहर केसरिया करनै वारै बींदा'रै माथै मोड बांधनै वारै' जांन करनै एकण समचै वारां ही प्रोळि मांही पैठा ।
—नैणसी
उ०—३ मुळक रै समचै मासी रै बोला मूंडा सूं जांणै सूरज भळकियो । मुळकती मुळकती ई बोली इत्ता दिन तो लोगां रै मूंडै सुख री फगत नांव ई सुण्यो हो ।—फुलवाड़ी
उ०—४ पण आं बोलां रै समचै काळी मासी रा रूं रूं में बांणै सिंघ गरजण लागा । दाई नै धक्को देय उण री ठौड़ बैठगी । वा तीन चार कस्टियोड़ी लुगायां रा जापा देख्योड़ी ही ।—फुलवाड़ी
उ०—५ तीर विंधणा रै समचै ई हिवड़ा विस री पोटाळी फूटगी ही ।—फुलवाड़ी
४ होते ही ।
उ०—१ पण दीया रै चांनणै अंधारा नै विणसतां कोई जेज थोड़ी ई लागै । चांनणा रै समचै ई अंधारो विणस जावै ।—फुलवाड़ी
उ०—२ नाहरसिंघ तो बात रै समचै ई म्यांन सूं पळपळाती तरवार काढी । धमधम बावड़ी री नाळ उतरयो । बाढाळी नै सात वळा पांणी में बोळी । देंत रै आवण री निसंक वाट जोवण लागो ।—फुलवाड़ी
उ०—३ राजकंवरी कागला री बोली रै समचै ई थरथर धूजती । मेंहदी लगावती वेळा वो छाजा माथै बैठ कांव कांव करतो बोल्यो—मेंहदी लगावो तो भलांई राजकंवरी है तो म्हारी ।—फुलवाड़ी
उ०—४ अंधारा री ग्रोरड़ी सूं बारै आवतांई वो सूरज तो कैं कैं करनै रोयो । उण बाळ-साद रै समचै ई गिगन में नवा अणगिण तारा जुड़्या ।—फुलवाड़ी
रू. भे.—समचइ ।

समचोरस-वि. [सं. समचतुरस्र] जिसकी चारों भुजाएं समान हों, चोकोर ।

समचो—१ सूचना, संदेश, खबर ।
उ०—१ मासी कित्ती वरजनै आई के उणरो समचो मिळियां विनां

समंचार ई किणी रै साथै पूगता नीं करै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जे कालै ई समचौ आयग्यौ तौ कांई जवाब देवांला। महारांणी जी नै जावरण सारू ओड़ौ देवै तौ गिरै', अर ओड़ौ नीं देवै तौ उण सूं ई वत्ती गिरै'।—फुलवाड़ी

उ०—३ थूं तौ गूजरी रै घरै जाय म्हारै पूगरण री समचौ देदै। म्हैं रथ में बैठ घड़ी आध घड़ी पछै आवूं। – फुलवाड़ी

उ०—४ दिन मैं सात सात वेळां अमूंझरणी आवरण लागगी। उरण समचा रै सागै ई नींद तौ पांखा लगाय रांम जांणै किरण दिस सांम्ही उडी सौ पाछी उठीनै हर ई नीं करी।—फुलवाड़ी

२ अवसर, मौका, समय।

उ०—इरण रौ काकौ भाइयां में मिळरण सारू गयौ छै इसा समचा में दुसेमण ऊपर चढ आया।—वी. स. टी.

समज—देखो 'समझ' (रू. भे.)

उ०—समज रै साथ निज धरणी री संक सूं, दवारै हरी रै चाढ दीनौ।—ऊमरदांन लाळस

समजरण–सं. पु.—समझना, मानना। (डिं. को.)

समजणौ, समजबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—१ समज तमाकू सूगली, कुत्तौ न खावै काग। ऊंट टाट खावै न आ, अपणौ जांण अभाग।—ऊ. का.

उ०—२ जब लोक कहै—भीखरण जी जगू जी समजतां बीजां नै इ दोरौ लागौ पिण खेतसीजी लुणावत नें तौ दोरौ घणौ इज लागौ।
—भि. द्र.

समजणहार, हारौ (हारी), समजरिणयौ—वि०।

समजिओड़ौ, समजियोड़ौ, समज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समजीजणौ, समजीजबौ—भाव वा०।

समजत, समजतियौ, समजती, समजत्ती–वि.—समान शक्ति या बल वाला।

उ०—आंरण आंण धुरताळ ओडविया, समजत ओछंडिया सकळ। जूना धमळ ओड भुज झूंसर, बोहळियां छांडियौ बळ।
—चतुरभुज बारहठ

२ जो वैभव तथा बल में समान हो, समानता वाला।

उ०—चडियौ 'गजन' हरौ चक्रवत्ती, संकै देस जिता समजत्ती। 'केहर' गौड़ हरख उर कीधौ, दिन जिग लगन तरणौ लिख दीधौ।
—रा. रू.

उ०—२ ज्यां आगै कर जोड़ रहै ऊभा समजत्ती। ज्यां आगै गड़ि पड़ै महा मैंमंत हसती।—ज. खि.

उ०—३ सुतन जगनाथ कहै समजतियां, उर भीड़ी वाली कर आथ। हालै साथ खरचियां हाथां, संचिया किणीं न चाली साथ।
—गोरधन खीची

३ पंडित, विद्वान।

४ उदार, दातार।

समजथा–सं. स्त्री.—डिंगल गीतों की रचना का एक नियम विशेष जिसमें जिसका प्रसंग चल रहा हो उसमें रूपक अलंकार लाया जाता है।

समजाणौ, समजावौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ केवली थया पछै राज किम करै। आ वात बांचरण वाला मैं तौ सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण थां सुणवा वालां री पिण संका पड़ै है। इम कहै समजाय दिया।—भि. द्र.

समजाणहार, हारौ (हारी), समजारिणयौ—वि०।

समजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समजाईजरणौ, समजाईजबौ—कर्म वा०।

समजायता–[सं. समज्या : सभा। (अ. मा.)

समजायस—देखो 'समझायस' (रू. भे.)

समजायोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समजायोड़ी)

समजियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समजियोड़ी)

समजोत–सं. स्त्री. [सं. सज्योति] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति। (अ. मा.)

समज्जणौ—देखो 'समझणौ' (रू. भे.)

समज्जणौ, समज्जबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—कुळ देवां जात्रा करण, मात दरस्सरण कज्जि। अरज हुई 'अजमाल' सूं, मांनी भूप समज्जि।—ज. खि.

समज्जणहार, हारौ (हारी), समज्जरिणयौ—वि०।

समज्जिओड़ौ, समज्जियोड़ौ, समज्जयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समज्जीजरणौ, समज्जीजबौ—भाव वा०।

समज्जि, समज्या—देखो 'समिजा' (रू. भे.)

उ०— गुणपती आग्या सांहणी, अस्व अरोहरण कज्जि। वाजि किया साजां विविध सिधि कररण समज्जि।—रा. रू.

समज्जियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समज्जियोड़ी)

समझ, समझण–सं. स्त्री. [सं. संबुद्धि] १ अक्ल, बुद्धि, विवेक।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ म्हारी समझ मैं थांरी बेटी दूध दही मैं'लां पुगाय दे तौ सावळ रैवैला। मां तड़कनै जबाब दियौ—भाया, थारी इण समझ नै राजमै'लां मैं ई कांम लिया कर म्हारी गवाड़ी थारी समझ कांम नीं देवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ आ समझ नीं हाट-बजारां बिकै, नीं खेतां में ऊगै अर नीं बाग-बगेच्यां फळै। म्हारी समझ कम है तौ म्हैं आपरी पगरखियां री ठोड़ बैठूं।—फुलवाड़ी

उ०—३ सहज चाल संगत समझ, वांणी सिकल वणाव। इता प्रकारां अवस है, गोलां तणौ जणाव।—वां. दा.

उ०—४ पढ़ै [illegible] कल्याण, मोर गिण मन करण।
[illegible] समझण दियण नघुवण दाव।
—रा. रू.

सं. पु.—२ बुद्धिमान, समझदार व्यक्ति।

उ०—समझण हूवै तै देवै देणो मिट्यो। पछै देणा पड़ता तो [illegible] टंटो मिट्यो।—मि. द्र.

३ [illegible]।

उ०—म्हैं म्हांरी समझ समझायां पछै ई ग्रैड़ी वात नी सुणी।
—फुलवाड़ी

४ बुद्धिमानी।

उ०—पातियां पढ़ंनी देस ग्रणदार री, लूट में वीजैसिंघ डरी लीदो। समझ रै माथ निज धणी री संक सूं, दवारै हरी रै चाढ दीदो।—ऊमरदान लाळस

रू. भे.—समज, समभि, समझ्झ।

समझणदार—देखो 'समझदार' (रू. भे.)

उ०—ग्रागर दे विण समझणदार सनेहा, नवि दाखविस्यो छेहा हो।—वि. कु.

समझणियो-वि.—समझने वाला, मानने वाला, जानने वाला।

उ०—सगळी वात सुण्यां राजकवरी तो हाक-बाक व्हैगी। कांई ग्रैड़ा ग्रमोलक हीरा-मोत्यां नै ई गिळगिचियां रै, उनमांन नाकुछ समझणिया मिनख ई इण धरती माथै वसै! सुण्यांई विस्वास नीं व्है जैड़ी वात।—फुलवाड़ी

समझणो-वि.—१ (स्त्री. समझणी) बुद्धिमान, समझदार।

उ०—१ पीवै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल। सालै निस दिन समझणां, घालै नाल कुचाल।—ऊ. का.

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या—इसा समझणा ग्रागैड हवेला। हेरो मिल्यां जिसो ज्यांन ग्राय जावै।—मि. द्र.

उ०—३ लाड मोह ग्रर प्रीत में ग्रबूझ नादांन छोटी टाबर जित्तो समझ, उत्तो ज्यांणो समझणो ग्रर लांठो मोट्यार ई नीं समझै।
—फुलवाड़ी

२ सगीर, सयाना।

उ०—उणरै गियां पछै सासू वीनणी नै पूछ्यो—ग्रांरो कांई नांव है, ग्रादमी तो ग्रणूंतो भलो ग्रर समझणो लागै।—फुलवाड़ी

रू. भे.—समजणो, समज्जणो।

समझणो, समझबो-क्रि. स.—१ जानना।

उ०—१ मारण मारग समझै मूरख, तारण लखै न तांई नै। रात दिवस हिंसा सूं राजी, कर दै मात कमाई नै।—ऊ. का.

उ०—२ देटा जी म्हनै कांई डोका चरावो, म्हैं थारी सै चालां समझूं हूं। थारा लखण तो है जैड़ा है, पण कांई करूं, थारी मां री कांण मानूं।—फुलवाड़ी

उ०—३ राजा तुरत समझग्यो। उणरी ग्रांख्यां में लारली वातां री चांनणो व्हैगो। पण ग्रबै समझ्यां कांई कारी लागै।
—फुलवाड़ी

उ०—४ भोळो ठाकर समझ्यो कै धणी रै जोखा री वात सुणनै सुलखणी नार सुध-बुध पांतरगी। पण या तो कांळिदंर री सुणा-वणी सूं बेचेत व्ही।—फुलवाड़ी

२ ध्यान में लाना।

३ सीखना।

समझणहार, हारो (हारी), समझणियो—वि०।

समझिग्रोड़ो, समझियोड़ो, समझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

समझीजणो, समझीजबो—भाव वा०।

संमझणो, संमझबो, समंजणो, समंजबो, समजणो, समजबो, समज्जणो, समज्जबो, समधणो, समधबो, समुझणो, समुझबो
—रू० भे०।

समझदार-वि.—बुद्धिमान, ग्रक्लमंद।

उ०—१ ग्रमल री ग्रास मांही उळज, समझदार निस दिन सिड़ै। ग्रा वात ग्रजब उलटी ग्रकल, बिन बिगड़्यां क्यूं बीगड़ै।
—ऊ. का.

उ०—२ सेठ कह्यो—'थूं तो खुद डोढ समझदार है, थोड़ा में समझण वाळो है।—फुलवाड़ी

उ०—३ प्रोहित निपट राजी हुवो। साथ रै लोक नुं कहण लागो, 'जो वीहा कुंवरजी रै ग्रागै ही घणा छै पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखो कोई नहीं। बड़ो सिरदार जांणियो विसेख।
—कुंवरसी सांखला री वारता

समझदारी-सं. स्त्री.—१ समझदार होने के गुण या भाव, बुद्धिमता।

उ०—१ उण नै ढावण सारू दूजोड़ो चोर एक समझदारी री वात करी —फुलवाड़ी

उ०—२ उणरै देखादेखी उणसूं दो वरस मोटी पप्पू ई जोर सूं रोवण लाग्यो ग्रर घर में जांणै महाभारत मचग्यो। म्हैं कह्यो—ए भली मिनख टाबर नै यूं मारै? ग्रा कठारी समझदारी है?
—ग्रमर चूंनड़ी

समझवांन समझवार-वि.—१ बुद्धिमान, ग्रक्लमंद।

उ०—१ राजाजी चिपतां ई पूछ्यो—दीवांण जी थै इत्ता समझ-वांन हो तो म्हनै एक वात री तो जवाव दो कै लुगायां सारू जात-पांत रा धांदा नीं व्हैता तो कैड़ो उम्दा कांम रैवतो.—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रो नैनो पूटियो तो ग्रणूंतो समझवांन है। कदैई वगत मिळै तो म्हारै गोडै वंतळ करण नै निसंक ग्राया कर।—फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रपछरा उणनै मारण री घणी ई ग्रटकळां रची पण उण री दाळ नीं गळी। कंवर ग्रणूंतो समझवांन, निडर ग्रर हीमतवार हो। मोको मिळतां ई वो नवी रांणी नै चिड़ावतो।
—फुलवाड़ी

२ कुसल, चतुर।

उ०—१ सेठ बोल्या—आं वरदांनां में म्हैं तौ समभूं कोनीं। म्हारी बींनणी अणूंती गुणवंती अर समझवांन है।—फुलवाड़ी

उ०—२ सगपण जोग व्हेतां ई सेठ अेक गरीब वांणिया री समभवांन वेटी सूं उणरौ व्याव कर दियौ।—फुलवाड़ी

३ विवेकशील।

समभांण—सं. स्त्री.—१ जानकारी।

२ संकेत, इशारा।

वि.—वुद्धिमान।

समभाइस—देखो 'समभायस' (रू. भे.)

उ०—१ दीवांण तौ राजकंवरा री वातां सुण सुणनै इचरज करतौ रह्यौ। राजकवर तौ इत्ती समभाइस करि पछै ई कुवांण छोडी नीं। दिन ऊगतां पांण राजमैं'ल सूं ढळग्या।—फुलवाड़ी

उ०—२ धणी समभाइस करी कै वा वयूं विरथा कळपै, सेवट तौ हाथां री कमाई कांम आवैला। वाप रौ लेणौ ई तौ वेटा उतारचा करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ बांझ्यौ नाग घणी ई समभाइस करी, पण नागण नीं मांनी। तद वौ मूंडौ लेय हमेसां रै वास्तै वारै जावण री वात करी तौ उणनै माडांणी माठ झेलणी पड़ी।—फुलवाड़ी

समभाणौ, समभावौ—क्रि. स.—१ शिक्षा देना, उपदेश देना।

उ०—१ इम समभायनैं चोरी नां त्याग कराया।—भि. द्र.

उ०—२ जनहरीया समभाय कै, गरू बताया भेव। रांम नांम तुल्य दूसरा, देव न कोई सेव।—अनुभववांणी

२ सिखाना, बताना।

उ०—१ हरीया हम कुं आयकैं, गुभि कहै समभाय। अैसा वंदा रांम का, जा सुं चित्त लगाय।—अनुभववांणी

उ०—२ बिनां ग्यांन गुन वूभिवौ, बिना सीख समभाय। विनां दिस्ट जांह देखवौ, हरीया ध्यांन लगाय।—अनुभववांणी

उ०—३ राजा खुद तौ ग्यांनी नीं हौ, पण ग्यांनियां रौ आदर अवस करतौ। समभायां ग्यांन री वात समभ में आय जाती।

—फुलवाड़ी

३ बोध कराना, ज्ञान कराना।

उ०—या अपती संसार कुं, वार वार समभाय। हरीया हेक न आदरै, दूजी धरै उठाय।—अनुभववांणी

४ कोई बात किसी के मन में बैठाना।

उ०—१ आडी रै अरथ री तिथ छोड ठाकर तौ कौल री भाटी अपड़ली। आखी परर्घ समभाय समभाय हार थाकी पण ठाकर अंजळ नीं लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वींदणी ज्यूं त्यूं आप रा मन नै समभाय धणी री सेवा वंदगी करण लागी। गिरस्ती रौ अरटियौ गणण गणण घूमण लागौ।—फुलवाड़ी

समभाणहार, हारौ (हारी), समभाणियौ—वि०।

समभायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समभाईजणौ, समभाईजबौ—कर्म वा०।

समजाणौ, समजावौ, समभावणौ, समभावबौ, समुभाणौ, समुभावौ, समुभावणौ, समुभावबौ—रू० भे०।

समभायत, समभायस—सं. स्त्री.—१ वुद्धी।

२ समभाने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—समजायस, समभाइस, समभास।

समभायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शिक्षा या उपदेश दिया हुआ. २ सिखाया हुआ, बताया हुआ. ३ बोध कराया हुआ. ४ कोई बात किसी के मन में वेठाई हुई।

(स्त्री. समभायोड़ी)

समभावणौ, समभावबौ—देखो 'समभाणौ, समभावौ' (रू. भे.)

उ०—१ नैंणसिंह जी कह्यौ महाराज यांनै समभावौ। जद स्वांमी जी समभावा लागा।—भि. द्र.

उ०—२ आतां ई वींदणी नैं सीख री अमोलक वातां समभावण लागी कै वा घर री इज्जत री सावळ जाब्तौ राखै।—फुलवाड़ी

उ०—३ सतगुरु सेनी में समभावै—ऊ. का.

उ०—४ खासा दिनां तांई सेठ री वीणती साव अैळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नै समभावणौ ई सावळ जांणियौ।—फुलवाड़ी

उ०—५ वींदणीं सांनीं सूं कीं समभावै उण पैं'ला ई कांमेती रै सागै आठ-दसेक आदमी उणनै साडांणी हाकां-धाकां रथी माथै थरकाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—६ बेटा, म्हैं तौ पैं'ला ई अै परवांणा जांणतौ हौ। पण थारौ मन राखण सारू ओड़ौ नीं दियौ। वापड़ी वींदणी री चूक व्है तौ उणनैं समभावूं ईं।—फुलवाड़ी

समभावणहार, हारौ (हारी), समभावणियौ—वि०।

समभाविओड़ौ, समभावियोड़ौ, समभाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समभावीजणौ, समभावीजबौ—कर्म वा०।

समभावियोड़ौ—देखो 'समभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समभावियोड़ी)

समभास—देखो 'समभायस' (रू. भे.)

उ०—अेक कोई सूरवीर री स्त्री आपरै पती नै समभास करण सारू कोई पंथी ने पूछै है।—वी. स. टी.

समभि—देखो 'समभ' (रू. भे.) (नां. मा.)

समभियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सीखा हुआ, जाना हुआ. २ समभा हुआ।

(स्त्री. समभियोड़ी)

समभीयांण, समभू—वि.—१ वुद्धिमान।

२ समभदार।

समभोतरी—सं. स्त्री.—इशारा, संकेत। (मा. म.)

समझौतो—सं. पु.—१ राजीनामा, सुलह ।

२ शर्त ।

समझ्झ—देखो 'समझ' (रू. भे.)

उ०—सज्ज सुकज्ज हुय चढ क्रमण, साहंस धरण समझ्झ । 'पता' सिंदूरर वरण पण, हेकण नको हरज्ज ।—जैतदांन बारहठ

समटणो, समटबो—१ देखो 'सिमटणो, सिमटबो' (रू. भे.)

उ०—१ मधुर मद्धी में बंस करि, भंवरो रह्यो लपटि । जन हरीया जब आंथवो, मांनो गयो समटि ।—अनुभववांणी

२ देखो 'समेटणो, समेटबो' (रू. भे.)

समटणहार, हारो (हारी), समटणियो—वि० ।

समटियोड़ो, समटियोड़ो, समट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

समटीजणो, समटीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

समटाणी, समटावणी—देखो 'समठावणी' (रू. भे.)

समठाणी, समठावणी, समठूणी, समठूणी—सं. स्त्री. [सं. समुत्थानम्] दहेज ।

उ०—१ तीसरे दिन समठूणी कर जांन नै विदा कीनी छै । हीरां नै रथ मैं बैठांण पेमरी वडारण नै साथ दीनी छै । जांन अहमदाबाद आई छै । कपूरचंद घण हेत सु वधाई छै ।

—वगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ चंवरी मांहे देखियो, धावां रा सहनांण । या समठूणी मेलियो, पांणरुखो पाग्गांण ।—नाथूसिंह महियारियो

रू. भे.—समटांणी, समटावणी ।

समठी—सं. स्त्री.—शमी वृक्ष ।

उ०—पूरवि समठी पींपली, परणावइ परि कोडि । महिला मनसिधि माधवइ, वर मागइ कर जोडि ।—मा. कां. प्र.

समण—सं. पु. [सं. श्रमण] १ जोश, उत्साह उमंग ।

उ०—समण वरद संपजै सवद तैंसा वाजंतां । मुख विरद मंगिणां इसा जे भड़ कवितां ।—रा. रू.

२ श्रद्धा या भक्ति भाव से किसी को दान देना । (ह. नां. मा.)

वि. [सं. सहमन] १ समान, बराबर ।

उ०—मागण वित्तद सरण, मरण सरणद सरणागत । मुणि सेवक फल सुरद्द, मदो मद समण जांणि मत ।—वं. भा.

२ देखो 'सुमन' (रू. भे.)

उ०—तीकम पाळगर जन देवतणो सो नत दिनां मुख नांम ररो सो । समण वास कीनास सरो सो, मारी राघवतणो भरोसो ।

—र. ज. प्र.

समणउ, समणो—देखो 'मनणो' (रू. भे.)

उ०—१ श्रेक वार नलट भरि, मा-निउ कीधी राव । कांई कूड न रानीइ, वहिव समणां ना ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ वलतु वचन माधव कहइ, श्रे तु श्रेम न होइ । सिउ समणउ सबेन सहिइ, जांण न जागिइ कोइ ।—मा. कां. प्र.

समत—सं. स्त्री. [सं. सम्मति] राय, सम्मति, सलाह ।

वि. [सं. सम्मत] समर्थित, अनुकूल ।

उ०—मेल्हि अचेत सचेत करै मन । वेद समत 'हमीर' भजै हरि ।

—पि. प्र.

२ देखो 'संवत' (रू. भे.)

समतळ—वि.—जिसकी सतह बराबर हो, समतल ।

समतसर—देखो 'संवतसर' (रू. भे.)

उ०—समतसर विक्रम छतीस कम बै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नोमी । वार सुक्कर नखत स्वांति संध्या वखत, भवांनी ओतरघा सुद्दड भोमी ।—मे. म.

समता—सं. स्त्री. [सं.] १ समानता, बराबरी, तुल्यता ।

उ०—१ तिका रांणा री सभा मैं जादू समता रा संबध रा सूचक पत्र दिया ।—व. भा.

उ०—२ चाचक देव री सूचना नूं प्रामाररा पराक्रम री समता मैं सिराहि मुहम्मद साह जाइ खेत सम्हाळियो ।—वं. भा.

२ उतथ्य ऋषि की पत्नी का नाम ।

समति—सं. स्त्री. [सं. समिति] १ सभा । (नां. मा.)

२ देखो 'सम्मति' (रू. भे.)

समतुळ—वि. [सं. समतुल्य] समकक्ष, समान, बराबर ।

उ०—१ हत्यो महरावण तेण हकारि, वध्यो महिखासुर बीर वकारि । घणा करि दाणव पत्र वधूळ, तकया चंड मुंड अणा समतुळ ।—मे. म.

उ०—२ फेर विण गुलाब री गुलजी सो फूल, इवै तो इवै दूण रै समतुळ । कांई पीळी नै कांई राती दूण री छाती नूं ओपमा दे इसो किण री छाती ।—र. हमीर

उ०—३ बांथळो विकट सादूळ वाहण बणां, डांखियो सीस समतुळ डालै । अरोहे मूळ दुस्टां तणां उखाड़ण, भाड़वया उखाळण सूळ भालै ।—मे. म.

समत्य—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ वेह समत्य वणावियो, वाघ हाथ जग वत्थ । जिण माभन लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ ।—बां. दा.

उ०—२ कहूं भटा समत्य के दया समत्य सत्य दे, समत्य अत्थ साधनै समत्य मैं समत्य जे ।—ऊ. का.

उ०—३ जगमाल महेवै जैतहत्य, 'माले' तिलवक रावळ समत्य । 'दूदा' सु-नंद दूसरो 'मेघ', राठोड़ वहे अतत्याग तेग ।

—गु. रू. बं.

उ०—४ हायळ वळ निरभै हियो, सरभर न को समत्य । सीह अकेला सचरै, सीहां केहा सत्य ।—बां. दा.

उ०—५ तन प्रथक नरां गण तुरंग तुंड, मट जेम फुटै गज कितां मुंड । रह थरकि रह्यो थकि अरक रत्य, सपेख खेक कंदळ समत्य ।

—रा. रू.

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ विसाद तोप साद मैं वहै न हत्थि हत्थ तें। इसें समत्थ कांम देय हत्थि को स्व हत्थ तें।—ऊ. का.

उ०—२ हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ, मरुधराधीस रनवास मत्थ। सो असंभावना है समत्थ, वद कांड भरत ब्रह्मांड वत्थ।

—ऊ. का.

समत्सर—देखो 'संवत्सर' (रू. भे.)

उ०—आसाढाऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख लेख। जिकै समत्सर जोधपुर, समहर थयो विसेख।—रा. रू.

समथ, समथ्थ—१ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ मथ रिण उदध मांण दसमाथका, आपण सरण भभीखण अथक। सोब्रन गढ जस ओप समथ का, क्रपा कोप आखै दसरथ का।—र. ज. प्र.

उ०—२ रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूप रा, प्रगट अनूपरा रे, भुज रघु भूप।—र. ज. प्र.

उ०—३ जोगिण जोगी सूं कहइ, सांभळि नाथ समथ्थ। का जीवाड़उ मारूवी, हूं पिण इणहिज सथ्थ।—ढो. मा.

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—पय मिथुला पथ्थं साभ समथ्थं, हण धनु हथ्थं वह पांणै। सिय परण सिधायै दुजपत आयै, गरव गमायै जग जांणै।

—र. ज. प्र.

समद—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ है थट समद जांण हिलोळ, पमगां हमस पक्खर रोळ।

—गु. रू. वं.

उ०—२ सात समद मरजाद, नहिं गिरि भार अठारा। चौरासी लख जाति, नहिं जद मडळ तारा।—ह. पु. वां.

उ०—३ चींटी कै मुख मेर समांना, मूंसै गिली मजारी। दादुर सरप समद मैं डारया, लौंकी परि असवारी।—ह. पु. वां.

समदकप, समदकफ–सं. पु.—फेन, झाग। (डिं. को.)

समदड़ा–सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा।

समदड़ो–सं. पु.—भाटी वंश की समदड़ा नामक शाखा का व्यक्ति।

समदम–सं. पु. [सं. शमदम] ऋषि। (अ. मा.)

समदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ कूवो तो हुवै तो ढोला डाक लूं जी, कोई समदर डाक्यो नां जाय।—लो. गी.

उ०—२ डूबत नाव तारि डाढाली, उदधि किरांणै आंणी। समदर नीर सीर देसांणै, सहर अजै सहनांणी।—मे. म.

समदरसी–वि. [सं. समदर्शिन्] सब को समान देखने या समझने वाला, समदर्शी।

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतियै कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

समदरसुत, समदरसुतन–सं. पु. [सं. समुद्रसुत] १ चंद्रमा, चांद।

(ह. नां. मा.)

२ मद्य, शराब (डिं. को.)

रू. भे.—समंदसुत, समदसुतन।

समदरियो–सं पु.—१ स्त्रियों के ओढ़ने की लहरदार ओढनी तथा पुरुषों के सिर की पाग विशेष।

२ देखो 'समुद्र' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरसा वीर म्हारा रै मन री बांध्योड़ी धीरज ना बंधै उभळै छै समदरियै री पाळ।—जीणमाता रो गीत

३ देखो 'समंदरी' (अल्पा; रू. भे.)

समदरी—देखो 'समंदरी' (रू. भे.)

समदसुत, समदसुतन—देखो 'समदरसुत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समदाभंवर–सं. पु.—एक प्रकार के रंग विशेष का घोड़ा।

समदाय—देखो 'समुदाय' (रू. भे.)

समदाव–सं. पु.—समृद्धि, वैभवता।

उ०—खोहण कटक मिळै 'खेतावत', साकुर सुभट इसै समदाव। लागणहार होय तो लेवै, राकस रधं मेवाड़ो, राव।

—महारांणा लाखा रो गीत

समदिस्टि, समद्रसटी, समद्रस्टी–वि. [सं. समदृष्टिन्] १ सब पर समान निगाह रखने वाला, समदृष्टा।

उ०—समदिस्टि ज्यूं सूर पवन ज्यूं लिपै न लोई। वसुधा ज्यूं मनधीर परम संगी गुर सोई।—ह. पु. वां.

सं. स्त्री. [सं. समदृष्टि] ऐसी दृष्टि जो सब को देखने में समान हो।

उ०—समद्रसटी सारा पर राखै क्या मित्र क्या द्रोही, मन रे ऐसा सतगरु जोई।—ह पु. वां.

समद्द, समद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—चतुरंग सेन असंख्यां चल्लै हेमाचळ परब्रत किरि हल्लै। दम दग्गै सेन रवद्द, किरि ऊलटिया सात समद्द।—गु. रू. वं.

उ०—२ सुरतांण दळ मेघांण वद्दळं, सपत समद्र पांणिय सयळं। उडियण रयणी गयणं, कुण संख्या मांनव करए।—गु. रू. वं.

समध—देखो 'संबंध' (रू. भे.)

उ०—कुंअर उभै कुसधज री, सत्रघन भरत समथ। सधु जनक सिरहर सुवर, लखमण राघव समध।—रांमरासो

समधणो, समधवो—देखो समझणो, समझबो' (रू. भे.)

उ०—१ पाबूजी कह्यो—रे! थें कहता सांढ खाधी। ताहरां थोरियां कह्यो—राज समधा म्हांनू राज परचो दिखायो।—नैणसी

उ०—२ तितरै पहसोनै वागै वेसूर फळसै मैं पेसतां दीठो। ताहरां समधड़ो समधो, जु डांइण भलो नहीं। समधड़ो ऊठि नै सांम्हो गयो।—पीठवै चारण री वात

उ०—३ सत्र सारत समधा सब कोई, जड़लग वह गई संग

निमोई। मुहकम रन मन आंत समाझी, सिर चनवै केवांण समाझी। —रा. रू.

उ०—४ ताहरां पीठरी समधो, ए तो मोतीसर नहीं। ताहरां पीठवै कह्यो, थें कुण छो? थैं कह्यो। —पीठवै चारण री वात

उ०—५ तद ताणो समधो। सनाथ चवरी भीतर बंधाय जांन जुहारै। सो माण रो दूसरो कुंवरसी दोळो कीयां आवै छै। बीच कुंवरसी मोड़ बान्ध्या पावै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

समधणहार, हारो (हारी), समधणियो —वि०।

समधिम्रोड़ो, समधियोड़ो. समध्योड़ो—भू० का० कृ०।

समधीजणो समधीजबो —भाव वा०।

समधरणो, समधरबो-क्रि. स.—१ मानना।

उ०—मोह बयण समधरै रटण क्रांठै हलवळ। सोहैरा सींवळी मोह ठल्लिया सहस बळ।—गु. रू. बं.

२ धारण करना।

उ०—जे नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गूजारइ। पंच वखत समधरइ धणी जे एक संभारइ।—ध. स.

समधरणहार, हारो (हारी), समधरणियो —वि०।

समधरिम्रोड़ो, समधरियोड़ो, समधरयोड़ो—भू० का० कृ०।

समधरीजणो; समधरीजबो—कर्म वा०।

समधरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ माना हुम्रा. २ धारण किया हुम्रा।

(स्त्री. समधरियोड़ी)

समधियोड़ो—देखो 'समधिम्रोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समधियोड़ी)

समधी-सं. स्त्री. [सं. समिध्] १ म्राग जलाने की लकड़ी, ईंधन।

उ०—चुण रागी चिता, काठ मळियागर केरै। पींपळ समधी प्रघळ, निच म्रगन घनेरै।—धी. दे.

सं. पु.—२ लड़के या लड़की के सगुराल वाले, सगे।

रू. भे.—समधि।

समधो-वि.—१ साधारण, मामूली।

उ०—तद वीरमदै जी कयो—रायसल रै तो घाव समधा सा लागा है, मू हमैं म्राछो तरह है।—द. दा.

२ सरल, म्रासान।

उ०—संजम जप तप सांचरत, व्रत जुत जोग विनांण। म्रांख तरच्छी इखतां, जीता समधा जांण।—बां. दा.

समन-सं. पु. [सं. शमन] १ शांति, दमन।

२ दमन।

३ काल, मृत्यु।

४ यमराज।

५ सावर्णि मनु-पुत्र।

६ दाम, कीमत।

७ चमेली का फूल।

८ यज्ञ हेतु पशु की बलि।

वि.—१ शांत।

२ जितेन्द्रिय। (डि. को.)

उ०—तन घण बरण धरण दसरथ तण, सदय समन गरवत सहज।—र. ज. प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू. भे.)

उ०—सुभ दिवस समन ससोह, मिट रयण संघ विमोह। रवि किरण म्रनुक्रम रेस, वाधंत तेज विसेस।—रा. रू.

समनो-वि.—१ उत्साह वाला, जोशीला।

उ०—रिण कोड उठो समना रवद्द, सूरमा म्रठी वड़ छुए सबद्द। सामंत रूप सामंतसीह, म्रजमाल सुछळ चांपो म्रबीह।—रा. रू.

२ म्रनुकूल, पक्षधर।

उ०—फळ नावै नेड़ो कह 'किसन', म्राव घर सुख म्रागत म्राथ। दस नांसे जैरै दन म्रदनां, नाथ थया समना रघुनाथ —र. ज. प्र.

समपण, समपणो-सं. पु.—दान। (ह. नां. मा.)

वि.—१ दानी उदार। (म्र. मा.)

२ देने वाला, समर्पित करने वाला।

उ०—सूंटाळा सुख समपणा उर में करण उजास। मंद ग्यांन मेटै सदा, परमनद रख पास।—नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—समप्पण, समाप, समापण।

समपणो, समपबो-क्रि. स.—१ प्रदान करना देना।

उ०—१ जांमण मरण मरण फिर जांमण, जग नट गोटो जांणो। सो दुख मेट म्रखै पद समपण, केसव नांम कहांणो।—र. ज. प्र.

उ०—२ नवनाथ म्रनंत सिधांणयै, भैरव म्रट्ठ संभरै। सुर वळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नांम म्रादिहू करै।—गु. रू. बं.

२ म्रर्पित करना।

३ सौंपना।

४ दान देना। (डि. को.)

समपणहार, हारो (हारी), समपणियो—वि०।

समपिम्रोड़ो, समपियोड़ो, समप्योड़ो—भू० का० कृ०।

समपीजणो, समपीजबो—कर्म वा०।

संमपणो, संमपबो, समप्पणो, समप्पबो, समापणो, समापबो, समोपणो, समोपबो—रू० भे०।

समपियोड़ो-भू. का. कृ.—१ प्रदान किया हुम्रा, दिया हुम्रा. २ म्रर्पित किया हुम्रा. ३. सौंपा हुम्रा. ४ दान दिया हुम्रा।

(स्त्री. समपियोड़ी)

समप्पण—देखो 'समपण' (रू. भे.)

उ०—नमो विध वेद समप्पण विद्ध, नमो सुर काज करै हर सिद्ध।

—हू. र.

२ देखो 'समरपण' (रू. भे.)

समप्पणो, समप्पबो—देखो 'समपणो, समपबो' (रू. भे.)

उ०—१ कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण घूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा. रू.

उ०—२ बांण अनै केवांण री, वेळ समप्पण काज। करण सनेहा सूर कुळ, तौ जेहा कवराज।—रा. रू.

समप्पणहार, हारौ (हारी), समप्पणियौ—वि०।

समप्पिओड़ौ, समप्पियोड़ौ, समप्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समप्पीजणौ, समप्पीजबौ—कर्म वा०।

समप्पियोड़ौ—देखो 'समपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समप्पियोड़ी)

समवरती, समव्रती, समव्रत्री—सं. पु. [सं. समवर्ती] यमराज, धर्मराज। (अ. मा; डिं. को; नां. मा.)

समभ्रम—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

समय—सं. पु. [सं.] १ वक्त, काल (ह. नां. मा.)

उ०—१ कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनि कैं 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुभ अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय उभट सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—वं. भा.

उ०—२ मास आसाढ सुकल पख मांही, तिथि नोमी वरताई। स्वांत नखत्र समय संध्यारी, महर करी महमाई।—मे. म.

२ अवसर, मौका।

उ०—सुणौ ठाकुरां सिरदारां, आय वणी महासूरां की वारां। औ तौ अप्रवळ थळ पायौ, वंस कै धमळ तकौ समय आयौ। —रा. रू.

३ फुर्सत।

४ मान, गर्व, अभिमान। (अ. मा; ह. नां. मा.)

५ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम।

६ अजित देवों में से एक।

७ हृदयाकाश में चक्रों का ध्यान।

रू. भे.—समइ, समइयं, समइयौ, समईयइ, समईयौ, समयौ, समां, समा, समिअं, समिय, समियं, समियौ, समीयौ, समें, समे, समैं, समैयौ, सम्मैं।

समयति, समयती—वि. स्त्री. [सं.] १ देखते ही मन में समा जाने वाली, मनमोहक; सुन्दर।

उ०—........रूपपात्र गुणपात्र प्रसिद्धपात्र सौभाग्यवती प्रसति-प्रमांण लोचन विकसित मुखकमल, निरलोम एणी जंघ, संमऊर युग्म कूरमोन्नतचरण अल्पमांम निरलोम दाक्षिण्यपर दयापर मया-पर क्षमापर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मांनयती सतीमिती अनुरक्ती सक्ती........। —व. स.

२ साध्वी स्त्री।

समया—वि.—कृपालु, दयालु।

उ०—सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओहं सोहं अखया अभया, आइ अजया विजया उमया।—देवि.

सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

समयानंद—सं. पु. [सं.] भैरव की एक मूर्ति।

समयौ—१ देखो 'समय' (रू. भे.)

२ देखो 'समौ' (रू. भे.)

उ०—कुरु पिंड वेध वसुधा, अपण मंभेण भुज्भयौ उभए। कुरखेत जुद्ध समयौ, विणसिण काळ बुद्ध विपरीती।—गु. रू. बं.

समरंगण, समरंगणि—देखो 'समरांगण' (रू. भे.)

उ०—कुच-मरदन कप्पइ अधर, लीइ चुरासी लाग। सुहड यथा समरंगणि, भडतां कोइ न भाग।—मा. कां. प्र.

समर—सं. पु. [सं. समरः] १ युद्ध, संग्राम। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर, समर जसवांन त्रप सियासांमी।—र. ज. प्र.

उ०—२ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणां नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—वां. दा.

उ०—३ सामंतां मो'र चौधार यर साजतौ, समर वागौ विनै पातसाही। मारबै राव तोखार वद मेलियौ, मार सारां गजां भार माही।—नाथौ सांदू

३ लोहारशाला।

४ बेहड़ा। (अ. मा; डिं. को.)

५ युद्ध-स्थल, रणभूमि।

उ०—सनमध साच संसार सुख, पलट आज अणथाह पर। बरन खट तणी तूटी वरत, सेर आज पड़ियौ समर।—पहाड़खां आढौ

६ भरतवंशीय राजा पृथुसैन के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

७ बल, शक्ति, सामर्थ्य।

८ वैभव, धन-दौलत।

[अ.] ९ कथा, कहानी, किस्सा।

१० फल, मेवा।

११ बदला, प्रतिकार।

१२ परिणाम, नतीजा।

१३ देखो 'स्मर' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ अलक डोर तिल चड़स वौ, निरमळ चिबुक निवांण। सींचै नित माळी समर, प्रेम वाग पहचांण।—बां. दा.

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर, समर जसवांन त्रप सियासांमी।—र. ज. प्र.

समरअभंगी—सं. पु.—बलराम। (नां. मा.)

समरइ—देखो 'स्मृति' (रू. भे.) (उ. र.)

समरक—देखो 'समर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समरतूर—स्त्री. [सं. स्मरतूर] [illegible], मन ।

समरत्थ—वि.—योद्धा, वीर ।

उ०—[illegible] समरत्थ, [illegible] विचम [illegible] ।—ना. नि.

समरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ [illegible] समरण, तन मन सूव तनावै । सोह [illegible], [illegible] ।—ऊ. का.

उ०—२ [illegible] समरण कर दिन दिन सुख [illegible] । [illegible], [illegible] ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ हरि समरण [illegible], [illegible] । [illegible] प्रांणी वंछइ त वेलि पढि ।

—वेलि.

समरणा, समरणी—सं. स्त्री. [सं. स्मरण] जपमाला, माला ।

उ०—१ [illegible] री उवी [illegible] नै देवो । हरडे १ सेर, समरणा [illegible] री छै, सो हरडे तो कारखानै रखायजो समरणा [illegible] नै देजो ।—दलक दरियाव री बात

उ०—२ [illegible] वरणी, [illegible] हाथै सघर समरणी ।

—ऐ. जै. का. सं.

समरणौ, समरबौ—क्रि. स. [सं. स्मरणम्] १ स्मरण करना, याद करना ।

उ०—१ [illegible] सकळ भर भार । 'केहर' ज्यूं [illegible], समरै [illegible] ।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] गजपती, [illegible] । तूं साह आलम [illegible] सूर ।—गु. रू. बं.

उ०—३ [illegible] ज्यूं ज्यूं संमरइ, देख्या [illegible] । झुरि झुरि [illegible], [illegible] ।—ढो. मा.

२ भजन करना ।

उ०—[illegible] दसरथ तणा, [illegible] लीधो गढ लंक । [illegible] मन माया, समरि समरि सीरांम निसंक ।

—ह. नां. मा.

२ युद्ध करना, संग्राम करना ।

समरणहार, हारो (हारी), समरणियो—वि० ।

समरिग्रोड़ो, समरियोड़ो, समरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

समरीजणो, समरीजबो—कर्म वा० ।

संमरणौ, संमरबौ, संभारणौ, संभारबौ, संमरणौ, संमरबौ, संमिरणौ, समिरबौ, संवरणौ, संवरबौ, सिवरणौ, सिवरबौ, सिमरणौ, सिमरबौ, सिवरणौ, सिवरबौ, सुंमरणौ, सुंमरबौ, सुंवरणौ, सुंवरबौ—रू० भे० ।

समरत—सं. पु.—१ एक प्रकार का रतिबंध । (कामशास्त्र)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समरति—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

समरतिकार—देखो 'स्मृतिकार' (रू. भे.)

समरती—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

उ०—प्रम्ति समरती जग की जांनी, सत ब्रह्म चित थाइ । जीवन मुक्ती ऐसी जुगती, दोऊं ग्यांन दिखाई ।—स्री सुखरांमजी महाराज

समरत्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ सतो ग्रमीणो साहिबो, सूर धीर समरत्थ । जुध मैं वांमण दंड जिम, हेली वाधै हत्थ ।—बां. दा.

उ०—२ गजपती दातार गुर, सहि कांमै समरत्थ । रिण डोहण रिणमल जिसो, जोध किसो कळिमत्थ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ नांम गोत सुण्यां लाभ घणो कह्यो रे, तिरण तारण समरत्थ ।—जयवांणी

उ०—४ सांम कांम समरत्थ, हत्थ दन बत्थ सवाई । धरि समत्थ गंजवा, पत्थ जैसो बरदाई ।—रा. रू.

उ०—५ नांम राख नव खंड, प्रसिध चाढै दहुं पखसै । साथि सांमि समरत्थ, रथै बैठो कथ रखसै ।—रा. रू.

उ०—६ प्रसण हुय प्रह्लाद ऊपर, हर दिखायै हत्थ । पाड़ सब्बळ देत्य पाड़चो, करण अदभुत कत्थ । तो समरत्थ जी समरत्थ, सारी बात हर समरत्थ ।—भगतमाळ

समरथंभ—वि. [सं. समरस्तम्भ] योद्धा, वीर ।

समरथ—सं. पु.—१ शिव, महादेव ।

२ क्षेमधि राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ मत्स्यराज विराट के एक भाई का नाम ।

वि. [सं. समर्थ] १ आर्थिक, मानसिक या शारीरिक बल पर कुछ कर सकने की योग्यता वाला, योग्य, समर्थ ।

२ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—१ समरथ सरण तुम्हारी सांइयां, सरब सुधारण काज । भव सागर संसार अपरबळ, जांमै तुम्ही जहाज ।—मीरां

उ०—२ हैदल पैदल प्रबळ हैड़तो, नीजोड़तो कितां नर नाह । समरथ कही न सकूं 'सूरावत' गुण म्हारा थारा गजगाह ।

—केसोदास गाडण

३ योग्य, सक्षम ।

उ०—थांरे लेखै नरक जावणहार थांरा गुरु ठहरचा । जब घणी कस्ट हुवी । जाब देवा समरथ नहीं ।—भि. द्र.

४ योग्य, ठीक, उचित ।

५ गूढार्थ प्रकाशक ।

६ जबरदस्त, जोरदार ।

७ दृढ़, मजबूत ।

८ वीर, बहादुर ।

९ निष्णात, योग्यता-सम्पन्न ।

१० समृद्ध, धनाढ्य ।

११ बड़ा, विशाल।

१२ सामर्थ्यवान, सक्षम।

उ०—समरथ सह बात करेबा सरखौ, मोटी देव देवतां मोड़।
संकट मौ पड़ियां नवसहसा, राज तणी ऊपर राठोड़।
—वखतौ आसियौ

सं. पु.—शक्ति, बल।

रू. भे.—संम्रत, संम्रथ, समत्थ, समथ, समथ्थ, समरत, समरत्थ, समरथीक, समरथ्थ, समराथ, समाथ, समारथ, सम्रत्थ, सम्रथ, ससमत्थ, ससमाथ, सांमरत्थ, सांमरथ, सांमरथि, सांमरथीक, सांमरथ्थ, सांमाथ, सिमरथ, सिमरथ्थ, सुसमाथ।

समरथक-वि. [सं. समर्थक] समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे।

समरथन-सं. पु. [सं. समर्थन] किसी के मत का अनुमोदन करने की क्रिया।

उ०—साची भूठी सुणां अर सहवां, पड़ै समरथन करणौ पूर।
—चंडीदांन सांदू

समरथा—देखो 'सामरथ्य'।

उ०—बासै थोरी सौ पण पांणी रै विनां तिसायां मरती हालै पोहचण री समरथा नहीं।—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ हरीया सांई एक है, सबै समरथा जांन। क जळ मांही थळ करै, थळ तांह नदी निवांन।—अनुभववांणी

उ०—३ दुनीयां दुसट बुधिता होसी, मनमुख ग्यांन समरथा।
धरता कुं करता करि जांणै, अरथुं करै अनरथा।—अनुभववांणी

समरथीक—देखो 'समरथ' (रू. भे)

उ०—अम्हैं छां बाळा-भोळा राज छो सबैं बात सयांणा, सबै बात पयांणा, सबै बात समरथीक।—अ. वचनिका

समरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—पैंदलां हैदलां हतय प्राण, गैंदलां उडावै आसमांन। त्रास पड़ असुरदळ भगय तांम, समरथ्थ सिवौ रणजीत सांम।
—शि. सु. रू.

समरद-सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

[सं. समर्द] २ युद्ध। (अ. मा.)

समरधुका-सं. स्त्री. [सं. समर्धिका] बेटी, पुत्री। (डिं. को.)

समरपण-सं. पु [सं. समर्पण] १ श्रद्धापूर्वक अर्पित करने की क्रिया या भाव।

२ आदरपूर्वक भेंट या नजर करने की क्रिया या भाव।

३ युद्ध आदि में अपने आप को विपक्षी के हाथों सौंपने की क्रिया भाव या अवस्था, हार स्वीकार करने की क्रिया।

४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि की अन्य को सौंपने की क्रिया या भाव।

५ भगवान् के विग्रह के समक्ष खड़ा करके भक्त को आचारवान् वैष्णव बनाने की क्रिया। (वैष्णव)

रू. भे.—समप्पण।

समरपणमंत्र-सं. पु. [सं. समर्पणमंत्र] गोकुलिया गोंसाईं सम्प्रदाय का प्रमुख गुरुमंत्र जो कुछ विशेष व्यक्तियों को ही सुनाया जाता है एवं जिसके अनुसार शिष्य अत्यधिक पवित्रता से अपना जीवन व्यतीत करता है।

समरपणी-वि.—गोकुलिया गोंसाईं सम्प्रदाय का 'समरपणमंत्र' सुनने वाला।

उ०—सो कासू तारीफ की जावै बडो धरमात्मा गुंसाई जी रो सिस्य समरपणी हुवो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

समरपित—१ दिया हुआ।

२ धारण किया हुआ।

उ०—स्यांमा कटि कटि मेखला समरपित, क्रिसा अंग मापित करळ। भावी सूचक थिया कि भेळा, सिघरासि ग्रहगण सकळ।
—वेलि

३ देवता को अर्पित किया हुआ।

४ समर्पण किया हुआ।

समरपणौ, समरपबौ—क्रि. स.—१ श्रद्धापूर्वक अर्पित करना।

२ आदरपूर्वक भेंट या नजर करना।

३ युद्ध आदि में अपने आप को विपक्षी के हाथों सौंपना, हार स्वीकार करना।

४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि अन्य को सौंपना।

५ भगवान के विग्रह के समक्ष खड़ा करके भक्त को आचारवान् वैष्णव बनाना।

समरपणहार, हारौ (हारी), समरपणियौ—वि०।

समरपिओड़ौ, समरपियोड़ौ, समरप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समरपीजणौ, समरपीजबौ—कर्म वा०।

समरपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ श्रद्धापूर्वक अर्पित किया हुआ. २ आदरपूर्वक भेंट या नजर किया हुआ. ३ युद्ध आदि में अपने आप को विपक्षी के हाथों सौंपा हुआ या हार स्वीकार किया हुआ. ४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि अन्य को सौंपा हुआ. ५ भगवान के विग्रह के समक्ष खड़ा कर भक्त को आचारवान् वैष्णव बनाया हुआ।

(स्त्री. समरपियोड़ी)

समरभूमि-सं. स्त्री. [सं.] युद्धस्थल।

समरम-सं. पु. [सं. सम+रमण] समान रूप से क्रीड़ा करने का भाव।

उ०—सेस कूरम जित समरम, इळा सुर भ्रम निगम आगम।
सुखि तपोअण भरम प्रभ सम, मरम निध जिम माल।—रा. रू.

समरव, समरवौ-सं. स्त्री. [सं. रव+सम] बिजली।
(ना. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—समरिव।

समरस, समरसि–वि.—समान रस वाला।

सं. पु. [सं. समरस] शांतिपूर्ण मनोभाव।

उ०—[illegible] समरसि, समर सिरोमणि भांनु। विल-सइ [illegible], संवरसुणि [illegible]।—जयसेनर सूरि

समरांगण–सं. पु. [सं. समर+अंगण] १ युद्ध, लड़ाई।

२ युद्धस्थल, रणक्षेत्र।

उ०—१ [illegible] बिन, [illegible] बांमण गाय। सम-रांगण [illegible], [illegible]।—बां. दा.

उ०—२ रहै हुवै मन संभ्रम पेम हवाल, समरांगण हेकन 'पाल'।

—पा. प्र.

रू. भे.—समरंगण, समरंगणि।

समराट—१ वीर, पराक्रमी।

उ०—[illegible] समराट [illegible] मांझण मझां, तीन [illegible] [illegible] थाट [illegible]। [illegible] नह रजवाट वट 'जोधड़ा', गणाता जमी [illegible]।—जोधसिंह रावत रो गीत

२ सम्राट।

३ राजा, नृप।

उ०—नृप देखो समराट, तोटो रोटी रो न तो। आठां पोर उचाट, जावै नह जिण री 'जसा'।—ऊ. का.

४ देखो 'सम्राट' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] हियै उचाट, रात दिवस लागी रहै। रजवट वट समराट, पाटव रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—२ समराटां [illegible] 'मोटा', तू विग्रहा गहनो रण ताळ। [illegible] भड़ां गई छी, पारस तो मातमें [illegible]।

—उम्मेद जी वारहठ रो गीत

समराणौ, समरावौ—देखो 'संवराणौ, संवरावौ' (रू. भे.)

उ०—१ पांचा दिनां पछै महलां मांहे दाढी समराइ अर बाहिर पधारिया।—द. वि.

उ०—२ [illegible] मोकै [illegible] दाढी समराई।—द. वि.

समराणहार, हारौ (हारी), समराणियौ—वि०।

समरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समराईजणौ, समराईजबौ—कर्म वा०।

समराय—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] 'मांन' [illegible] गुणग्राहक, कवि समराय इसो नहि, कोय। 'मांन' समापै [illegible] मांगणां, 'जसा' 'गजन' रा विरदां ओय।—बां. दा.

उ०—२ [illegible] मागळ साथ, निबै नहीं नर नाथ रो। सो करतब समराय, पाटै रांण 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

उ०—३ [illegible] ऊंचो हुवै, मुरह चिरमियां साथ। अप 'जसवंत' सीनो निसै, सोनै ज्यूं समराय।—ऊ. का.

उ०—४ देवै मुरति वटां [illegible], दरसण जिहाज मरे समराय। किमति करि असा वायक कएा, नितप्रत लिसै दूसरो आय।

—महाराज छत्रसिंघ रो गीत

उ०—५ सफै साग वाहे गळां समराय, नरां सिणगार 'अजावत' 'नाथ'। रिमां सिर आछट साग रंगेस, मंडै जुध 'सूर' तणो 'मुकंदेस'।—सू. प्र.

समरायोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समरायोड़ी)

समरार—देखो 'सबरारि' (रू. भे.) (अ. मा.)

समरारि–सं. पु. [सं. स्मरारि] शिव, महादेव (नां. मा.)

समरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ. २ भजन किया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ।

(स्त्री. समरियोड़ी)

समरिय—देखो 'समरथ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समरूप–वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—साहजादां समरूप, 'भोपत' सुत चढती भरण। रावजादां रो रूप, सारंग दै कंवरां सिरै।—पा. प्र.

२ समान रूप या समान चेहरे वाला।

समळ–सं. पु. [सं. श्यामलः] १ कृष्ण हरिण।

[सं. शमलं] २ मल, विष्टा। (डिं. को.)

वि. [सं. समल] १ खराब, गन्दा, मैला, अपवित्र।

उ०—समळ हुवा कपड़ा सकळ, अमळ हुवो घट भंग। कमळ बदन कुम्हलायगो, अमल न्यायगो अंग।—ऊ. का.

२ पापी, दुष्ट।

३ दोषपूर्ण।

उ०—सुपनै ही साभाय, न्यायव्रत पाय न चूकै। राज काज नित राग, माग अनि समळ अमूकै।—रा. रू.

४ देखो 'सिंवळ' (रू. भे.)

५ देखो 'सांमिळ' (रू. भे.)

उ०—साकणि डाकणी सकति, सकति चवसठी समोसरि। समळ महासिंघ सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

६ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

७ देखो 'संवळौ' (रू. भे.)

उ०—१ आपड़ नोहरां अंत सूरां, घड़ ऊडै समळ। सोहै गुड्डी डोर मूं, उड्डी जांण अनंत।—रा. रू.

उ०—२ संग्राम पडै ग्रीधणा समळ, रगत पूज रेणा चडै। 'जसवंत' समोभ्रम खाट जस, प्रिथीराज भाटी पडै।—गु. रू. बं.

उ०—३ वैताल वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आंमंख भक्ख, जंबक्क रींछ वड्डाक जक्ख।

—गु. रू. बं.

रू. भे.—संमळ।

समळा—देखो 'सम्मळा' (रू. भे.)

समळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ ग्रीभ्रणि दीयै दुड़वड़ी, समळी चंपै सीस। पंख झपेटां पिउ सुवै, हूं वळिहारी थईस।—हा. झा.

उ०—२ सींचांण समळी वळी, ग्रीध्रणि गयणि भयंति। सारसडी सायर-परि, खिणि खिणि जाइ रवंति।—मा. कां. प्र.

समळौ—१ देखो 'संवळौ' (रू. भे.)

उ०—१ मोती का आखा किया, कूं कूं चंदन पाका पांन। अमळी समळी आरती, जाइ ववेरइ दियौ मिळांण।—वी. दे.

उ०—२ उडै रजी अपार, ग्रीभ्रण समळा ग्रहग्रहै। सांमै छतीसह सार, दळ हालै 'गोगा' दिसी।—गो. रू.

उ०—३ खळदळां कंकळ सवळ खंड, वीर तंडै भुजवळी। सुज गळां समयं ग्रीध समळां, पळां भोजन परघळी।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समळी)

समवंता—वि.—समान, बराबर, तुल्य।

उ०—हरख सोक दुख सुख तहां, नाहिं सुसुप्ति समवंता। द्रस्य अद्रस्य लीन हिरदा मैं, प्राग्य जीव सायंता।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

समवड़—वि. [सं. समवृति] १ समान, बराबर। (डिं. को.)

उ०—१ राजा रीत न छांडिजे, समवड़ करौ सनेह। समवड़ सूं सुख पायजे, नीचां केही नेह।—जसमा ओडणी री वात

उ०—२ वूर पड़ि जंवूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खड़भड़। विढण धरि अड़ सुहड़, समवड़ वड़वड़ै पिंड चार।—रा. रू.

सं. स्त्री.—१ समानता, बराबरी। (डिं. को.)

२ देखो 'समोवड़ियौ' (रू. भे.)

रू. भे.—समड़, समवड़ि, समवडी, समवड, समवडी, समवण, समवळ, समावड़, समीवड़, समीवड, समं वड़, समोवड़ियौ, समोभर, समोवड़, समोवण, समोवर।

समवड़णौ, समवड़बौ—क्रि. स.—सामना करना, मुकाबला करना।

उ०—ढहै ढींचाळ रत खाळ खळकै धरा, जुड़ै घड़ पड़ै भड़दड़ जड़ालै। 'सता' विण अवर कुण साह सूं समवड़ै, पाधरै पेज मैदांन पाळै।—भरमौ आढौ

समवड़णहार, हारौ (हारी), समवड़णियौ—वि.।

समवड़िओड़ौ, समवड़ियोड़ौ, समवड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समवड़ीजणौ, समवड़ीजबौ—कर्म वा०।

समवड़ि—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए। स्रीपूज्य जिनचंद सूरि, समवड़ि अवर कोइ न दीस ए।—ऐ. जै. का. सं.

समवड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—सामना किया हुआ, मुकाबला किया हुआ।

(स्त्री. समवड़ियोड़ी)

समवड़ियौ—वि.—बराबर का; बराबर वाला। (डिं. को.)

समवड़ी—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

समवड, समवडी—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—१ अकळ तुहिज कै कोइ अवर, वोहौनांमी वूझव्व। लिखमीवर लेखै नहीं, समवड प्रांणी सव्व।—ह. र.

उ०—२ राठौड कुंअर पक्खर रवंद, कवण (भ) समवड करै। जमदाढ छोड विज्जै लई, कना राउ अरवद्द रै।—गु. रू. वं.

उ०—३ जोधार अहोनिस जाळवै, जींण-साल डीलै जडी। तिण वार हुवौ हिंदू तूरक, कोई गजसिंघ समवडी।—गु. रू. वं.

उ०—४ संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव रिसि समवडी धरइ।

—ऐ. जै. कां. सं.

समवण—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—है नह को हिंदवांण मैं, समवण तो समराथ। पाळग सजन प्रताप सी, पणधर साचौ पाथ।—ठा. मेहरदांन

समवती—सं. स्त्री.—वह घोड़ी जिसके मूंछों के स्थान पर कुछ बाल उगे हुए हों। (शा. हो.)

समवरती—देखो 'समवरती' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

समवळ—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—वधि जोर सेर विलंद दळ, साह समवळ दुंद। मन जोस लग ब्रहमंड, खग दाखि गुजर खंड।—रा. रू.

समवसरण, समवसरन—सं. पु.—जैन तीर्थंकर जिनेश्वर के उपदेश देने का स्थान, उपदेशशाला।

उ०—१ प्रभू तेरै वयण सुपियारै, सरस सुधा हुं तै सारै। समवसरण मधि सुणि मधुर, ध्वनि वूझति परसद वारै।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ समवसरण मां वइसी नइ, जिनवर नी वांणी। सांभलसुं साचै मनइ, परमारथ जांणी।—स. कु.

उ०—३ आप अरिहंत भलै आवियाजी, गावै अपछरह गंधरव्व। समवसरण रचै सुरवरा जी, संखेपै तै कहुं सरव।—वृस्त.

वि० वि०—उक्त उपदेशशाला सौधर्म इन्द्र की आज्ञानुसार कोषाध्यक्ष कुबेर ने बनवाया था। जैनमतावलंबियों के अनुसार जिनेश्वर उपदेशशाला का प्रथम कोट चाँदी का बना और कंगूरे स्वर्ण निर्मित हो। उसके भीतर १३० धनुष (४ हाथ का एक धनुष माना जाता है) की दूरी छोड़ कर दूसरा दुर्ग स्वर्णनिर्मित तथा कंगूरे रत्नजड़ित हो। इसके अन्दर १३० धनुष का फासला छोड़ कर तीसरा किला रत्नों का बनाकर कंगूरे मणि-माणिक्य के बने हो। ऐसे सुन्दर दुर्ग के मध्य भाग में ऊंची तीन कटनी वाली वेदिका (गंधकुटी) पर तीर्थंकर भगवान अष्ट प्रतिहार्य युक्त विराजते हैं। उक्त वेदिका के चारों ओर १२ विशाल कक्ष बने हैं। तीर्थंकर के ईशानकूण में १ श्रावक और दो श्राविका तथा तीन वैमानिक देव बैठते हैं। अग्निकूण में चार साधु और पांच साध्वियों तथा छः वैमानिक देव की देवियां बैठती हैं। वायुकूण में सात भुवनपति देव और वाणव्यंतर देव तथा नौ ज्योतिषी देव बैठते हैं। नैर्ऋत्यकूण में दस

भुवनपतियों की देवियां, एवं वानव्यंतर देव की देवियां और ज्योतिषी देवों की देवियां बैठती हैं। इस प्रकार १२ जाति की परिषद बैठती है उसे समवसरण कहते हैं।

रू. भे.—समोसरण।

समवार—देखो 'संवार' (रू. भे.)

उ०—समवाद रिणीहर पापरो संभारियो क, सिवा देण गाय री आधारियो सरस्स। बीजोड़ो साथ री प्रसाद हूं विचारियो क, दूजा गोविन्दास री गुणारियो दरस्स।—महियो सुरतांणियो

समवादी—देखो 'सवादी' (रू. भे.)

उ०—१ दिन दिन जोर वधै बळ दाखै, प्रांण 'ग्रजीत' तणी मुख ग्राखै। वादै सो हारै समवादी, सोवै सोवै वधै फिसादी।

—रा. रू.

उ०—२ गढ़ धरती रिणमल जिण गादी, विग्रहिया लागे सम-वादी।—रा. रू.

उ०—३ रत मथा रिण मेत मैं, गुरलड़ै समवादि।

—ग्रनुभववांणी

समवायग, समवायांग—सं. पु.—जैन धर्म के ३२ सूत्रों में से चौथे सूत्र का नाम।

उ०—१ सूत्र समवायग माहे निचोड़ए, तिण ग्रनुसारै रिख 'जय-मलजी' कीनी जोड़ ए।—जयवांणी

उ०—२ भठवउ समवायांग सुणो सोता गुणी हो लाल।

—ध. व. ग्रं.

समवायु—सं. पु. [सं. समवायः] १ समूह, समुदाय। (उ. र.)

२ घनिष्ठ सम्बन्ध।

समवेग—सं. पु.—श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम।

उ०—सुग्रीवसेन नै मेघपुहप समवेग वळाहक इसै वहन्ति।—वेलि.

समवेत—वि.—१ ग्रटूट सम्बन्ध युक्त।

उ०—ढोल री धम्मीड़ो थाळियां री कड़ाकी ग्रर चूड़ियां री खणक समवेत सुर सूं एक ग्रनोखो रस पैदा कर री ही।—रातवासो

२ बहुसंख्यक।

३ एक साथ मिला हुआ, एकत्र।

उ०—लुगायां रा समवेत सुर में ई सुसीला रो तीखो सुर छांनो नीं रह्यो। वो कांन लगाय नै सुणण लाग्यो ही।—ग्रमरचूंनड़ी

समसत, समसत्त, समसथ—देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ पाखी पातसाह सूं, साह विरत्तै वन। प्रथम ग्रकब्बर ग्रंधिया, पाछै ए समसत्त।—रा. रू.

उ०—२ जाय धरै हळवद्द सूं, राज लोग समसत्त। नाथदवारै पर-सता, ग्रावो धार वगत्त।—रा. रू.

समसमा समसमो—वि.—बराबर, समान।

उ०—१ सकुड़ित समसमा संध्या समयै, रति वांछिति रुकमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियां, कमळ पत्र सूरिज किरणि।

—वेलि.

उ०—२ राति विछियो इसी भांति नरवै रयण, समसमो मार देतो सबांही। तेण उदमादियो चंद कमधां तिलक, मांत मांदो थियो सूर मांही।—किसनो ग्राढो

समसर, समसरि—सं. पु.—महादेव, शिव। (ग्र. मा.)

वि.—बराबर, तुल्य।

उ०—१ सोभन ग्रवास सोभा सुमेर, कोटक भंडार समसर कुमेर।

—सू. प्र.

उ०—२ धरि जै सुत प्रतब्योम धुरंधर, सुत प्रतब्योम भांण राजे-स्वर। भांण सु जादव दिवा (क) तेज भर, सुत सहदेव हुवो इंद्र समसर।—सू. प्र.

उ०—३ बे हरि हर भजै ग्रताह्न वोलै, तै ग्रव भागीरथी म तूं। एक देस वाहणी न ग्रांणां, सुरसरि समसरि सूं।—वेलि.

समसांण—सं. पु. [सं. श्मशान] १ वह स्थान जहां मृत शव की ग्रंत्येष्टि क्रिया की जाती है। (डिं. को.)

उ०—१ रत घ्रति चंदण कपूर, सभै समसांण सभाई। विविध ग्रमित सुचि वसत, चेहग्नि नियमि चलाई।—रा. रू.

उ०—२ हुग्रा ग्रीध समसांण, वाढ करिकां कूंबुग्रळ। नर हय गय पळ खीण, मत्त पळ जंबू संभळ।—गु. रू. बं.

२ कब्रिस्तान।

रू. भे.—स्मसांण।

समसांणकाळिका—सं. स्त्री. [सं. श्मशानकालिका] एक देवी जिसका पूजन उपासक मांस-मछली खाकर, मद्य पीकर और नग्न होकर श्मशान में करता है। (तांत्रिक)

रू. भे.—स्मसांणकाळिका।

समसांणपति—सं. पु. यौ. [सं. श्मशानपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—स्मसांणपति।

समसांणपाळ—सं. पु. यौ [सं. श्मशानपाल] श्मशान का रक्षक, चांडाल।

रू. भे.—स्मसांणपाळ।

समसांणभैरवी—सं. स्त्री. [सं. श्मशानभैरवी] श्मशान में रहने वाली देवी। (तांत्रिक)

रू. भे.—स्मसांणभैरवी।

समसांणवासणी, समसांणवासिणी [सं. श्मशानवासिनी] काली।

रू. भे.—स्मसांणवासणी।

समसांणवासी—सं. पु. [सं. श्मशान+वासी] २ शिव, महादेव।

२ चांडाल।

रू. भे.—स्मसांणवासी।

समसिउ—सं. पु.—समस्या।

उ०—किहां घटइं पारथ रहिया ति नासी, गंगेउ बोलइ समसिउ विमासी।—सालिसूरि

समसेर—सं. स्त्री. [फा. शमशेर] तलवार, खड्ग।

(डि. को; ना. डि. को.)

उ०—१ समसेर वांण छूटै समर, आ ओपम इण नाचनै। परियांण जांण छूटै पतंग, जावै चंदण बावनै।—सू. प्र.

उ०—२ सोढा ऊमरकोटरा, सिर कटियां समसेर। बाहै हणिया वैरहर, 'वांका' भारथ वेर।—बां. दा.

उ०—३ सुभट्ट विढंत वहै समसेर, भराळ वढीवै सूळा भेर।
—गु. रू. बं.

रू. भे.—समस्ससेर, सम्मसेर।

समसेरी—सं. पु.—खड्गधारी।

उ०—हवस तिलंगा मरहटा, सूरा समसेरी। कोकनडां भडखंड, खग लग छेड़ा फेरी।—द. दा.

समस्टी—सं. स्त्री. [सं. समष्टी] सबका समूह, एक साथ।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभूताई सिख नखा। समस्टी व्यस्टी तें सजन दिव द्रस्टी रिसी।—ऊ. का.

समस्त—वि. [सं.] १ सब, कुल, समग्र।

उ०—१ तीरथ जात समस्त, सकळ साधां मिळ संगा। रास तमासा रमैं, हुलस नाचै हुड़दंगा।—ऊ. का.

उ०—२ मुहकम री अनुज लालसिंह मद्रदेस मैं आप री अमल जमाय महीस हुवौ जिणरी संतति समस्त माद्रेचा चहुवांण कहीजै।
—वं. भा.

२ समास द्वारा मिलाया गया, संयुक्त।

रू. भे.—समत्थ, समथ, समथ्व, समसत, समसत्त, समसथ।

समस्नु—सं. स्त्री. [सं. शमश्नु] मूंछ।

उ०—भ्रमैं प्रत्यूह व्यूह पैं, समस्नु भ्रूह लौं भिरी। क्रमैं प्रत्यूह ओपमा, दुरूह दंत ली किरी।—ऊ. का.

समस्या—सं. स्त्री. [सं.] १ सलाह, मशविरा, विचार।

उ०—१ ताहरां थोरियां आ समस्या कीवी जु 'औ छोकरौ ऊभौ छै, आपां आ सांढ लै जावां, तौ आपां आजरी वळ करां।'
—नैणसी

उ०—२ अै समंचार सुण ठाकुरसी जी साथ सारै सूं चढिया। सू तेली रै घर दिसा आया नै समस्या करी।—द. दा.

२ कठिन व विकट प्रसंग, उलझन।

उ०—बीतां पहर कंवर विग्रहियौ, करि वह रुदन हेक भ्रत कहियौ। घरपति सुणि तिल सोच न धारै, विध करि पांण समस्या वारै।
—सू. प्र.

३ छंद बनाने के लिए दिया जाने वाला एक पद जिसके आधार पर पूरे छंद का निर्माण किया जाता है।

४ संकेत, इशारा।

उ०—१ राक्षस अद्रस्ट हुवौ आयौ सेवा मांहे बैठौ तहां राजकुंवरि राजा नूं समस्या कीवी।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ थै राजा रै पाइगह रा घोड़ा २ जय विजय नांम छै सु लै मरदांनो वाणौ पहर खरची लै नै बाग मैं आयौ। मुरिखै नूं मेलिह समस्या कराविज्यौ।—चौबोली

उ०—३ तहां कुळ की मरजादा छोडि लाज सौं बाहर होय, सीळ किनारै धर, समस्या कर संकेत स्थांन कहियौ।—बैताळ पच्चीसी

उ०—४ प्रधांन रा पुत्र नूं कहियौ—तैं दीठी? उवै कहियौ—दीठी पण थांसूं कै समस्या कर गई। राजपुत्र कही—अेक कमळ हाथ हतौ सु माथै लगाइ, कांनै लगाय, दांतै लगाइ, पगै लगाय फेर हियै थापियौ।—बैताळ पच्चीसी

समस्सेर—देखो 'समसेर' (रू. भे.)

उ०—लुब्धा सिघांणी काळ बांणी पंख वांणी बोळ ए। परवत्त मेरं जुध पेरं समस्सेरं तोल ए।—गु. रू. बं.

समहदी—वि.—सीमा का, सरहद का।

उ०—हूरम्मजि केची मुकरांणी, खंधार हरेवी खुरसांणी। आरव्वी रूमी उजवक्का, समहदी संभर-कंदक्का।—गु. रू. बं.

समहर, समहरि—सं. पु.—१ तलवार। (ना. डि. को.)

उ०—केई वार निकल्यौ कंवारी घड़ामैं काढि। समहर भड़ां सूं वढि।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ देखो 'समर' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, औ हिंदवांण वचावौ ओलै समहर मौ दळ लियौ समेळा, 'भीम' सहत खूमांण भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ रांम प्रधांनौ राजिरौ, रांमण नह धारै, समहर मांडौ सूरिमां, इम वयण उचारै।—सू. प्र.

समहौ—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—असुर कहै मिळवा नह आवां, पड़ै आप समहौ निज पावां।
—सू. प्र.

समां—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—आयौ घणौ ऊंताळ, सरियादै हेला समां। वणे ठा हेकम बाळ, मिनड़ी जायां मोतिया।—रायसिंह सांदू

२ देखो 'समौ' (रू. भे.)

समांजोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

समांण—१ देखो 'समांन' (रू. भे.)

उ०—१ 'जगपत्ती' उण जोस मैं, रत्ती आग समांण। वनसपत्ती खळ जाळवा, कर तत्ती केवांण।—रा. रू.

उ०—२ सेजां मैं घर घर सखी, आंणै धजर अजांण। धारां मैं राखै धजर, सौ कुण कंत समांण।—वी. स.

उ०—३ धर जंगळ ऊपर फौज धिकी, जमरांण जमात समांण जिकी। असमांणक मेह घटा उनइ, दधि जांणक छोड मजाद दई।
—मे. म.

उ०—४ हद डांण अगां अभिमांण हरै, प्रळंवी कुरवांण उडांण परै। घट सुंदर ग्रीव कवांण घटी, पवमांण विमांण समांण पटी।

—मे. म.

२ देखो 'समांन' (रू. भे.)

समांणी-स. स्त्री. वि.—१ हमउम्र, समवयस्क।

उ०—१ सखी समांणी साथि करि, मंदिरकूं मलहवंत। सउदागर जेही बहू, दुनिया [illegible]।—ढो. मा.

उ०—२ [illegible] मनि मदिरै [illegible] दीरर, सुनी समांणियां माहि [illegible]। [illegible] करी [illegible] उन मानै, मनि लाजती सुहाग सुन।

—वेलि

उ०—३ रमा मारुवी हे सखी [illegible] देखा, [illegible] बाना लहै कोण लेखा। [illegible] सखी मोठ दुरै समांणी, [illegible] [illegible] दो वट्ट-[illegible]।—ना. द.

उ०—४ [illegible] सखी मोठ [illegible] तेम समांणी, देखि तही पदिमणी दरि। [illegible] राजकुंअरि रायव्रगण, उडीयण वीरज चंद हरि।

—वेलि

२ समान, बराबर, तुल्य।

उ०—सेना मोटी मोल, मांणसनै मरवा तणी। बीजी छै लख कोड, पै समांणी सेरो नहीं।—ढो मा.

३ पूरा, सम्पूर्ण।

रू. भे.—सांमिण, सामिणी।

समांन-सं. पु. [सं. समानः] नाभिस्थित शरीर के अन्तर्गत दस वायुओं में से एक जो नाभि के पास रहती है।

वि. [सं. समान] १ बराबर, तुल्य। (डि. को.)

उ०—१ कोई थाहू पावही, देही थाहू दांन। सुणिया ऊनड़ सूघ कवि, सुकवि उदार समांन।—बां. दा.

उ०—२ साहिब सुगन समांन है, सो दज बुरी सुणंत। [illegible] [illegible] होत सम, [illegible] लोक भणंत।—बां. दा.

उ०—३ सूरां नाहि न सारिवै, सूरां मिटी समांन। जनहरिया मन सारिवै, पंतर [illegible] गुमांन।—अनुभववांणी

उ०—४ हाथ जोड़'र बीन रै बाप सूं बोल्यो—[illegible] [illegible] री दिन दरा है, मैं दिन समांन नीं हुवै।—दसदोख

उ०—५ मगत समांन कांन्ह कूं मारयौ, उदनवांन जळजांन उथा-रयौ। [illegible] [illegible] बीकांण नरेसुर, पुनि देसांण बसायो निजपुर।

—मे. म.

२ अनुसार, मुताबिक।

उ०—पछै हुवै साहजादै मुजफ्फर री पहली री सूचना समांन दिल्ली रै अभिमुख प्रयांण कीधो।—व. भा.

३ जैसा, समान, अनुरूप।

उ०—१ द्वितीय पुत्र महाराजकुंवार श्रीविरजीवो घू आयु र बळ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रतापीक स्रीनृरप समांन कुंवर [illegible] जी री जनम हुवौ।—द. वि.

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मांन, गिरगिर कज्जळ कूट समांन। समुदित साप समाकत सुंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।

—मे. म.

क्रि. वि.—१ ही।

उ०—इसरा मांही सारां री नजर काळ-रूप दीठो। देखतां समांन कायरां रा प्रांण छूटगी लागिया।—डाढाळा सूर री बात

२ देखो 'सम्मांन' (रू. भे.)

३ देखो 'सांमांन' (रू. भे.)

उ०—मारग में बात करी, पूजा री समांन दूमां री सम्मांण अर कळस भळै इकीस तथा इग्यारै घालसी।—दसदोख

रू. भे.—समांण।

समांनता-सं. स्त्री. [सं. समानता] समान होने का भाव, समानता।

समांनाधिकरण-स. पु. [सं. समानाधिकरण] किसी वाक्यांश में किसी समानार्थी शब्द को स्पष्ट करने के लिए आने वाला शब्द।

(व्याकरण)

समांनासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक आसन विशेष, जिसमें स्वस्तिकासन की तरह बैठ कर दोनों हाथों की तर्जनी और अंगूठे के बीच में प्रदेश से कटि को दबाना होता है और तर्जनियों के अग्र भाग में नाभिप्रदेश को जोर से दबाना पड़ता है। इससे समानवायु बलवान होता है।

समांनिका-सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण, एक जगण तथा अन्त में एक गुरु होता है।

समांनोदरज-सं. पु. [सं. समानः+उदर्यः] सगा भ्राता, सहोदर।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

समांम-सं. स्त्री. [अ. शमाम] सुगंध, महक।

समांमी-सं. स्त्री. [सं. सामान्य] वैभव, एश्वर्य।

उ०—जोड़यो दूलजी लखनी जंगळ में रहै। सारी वस्ती कन्हे रहै वडी समांमी रो सरदार।—दूलजी जोड़या री वारता

समांमो-वि. (स्त्री. समांमी) १ वीर, बहादुर।

उ०—नरां नाह पतसाह छोडाड सकियो नहीं, समांमो कमंध जोध नमांमी सिंध। आपरां वडेरां खाटिया अखाड़ा, 'करण' ग्यो प्रवाहा बांधिया कंध।—करणसिंघजी री गीत

२ बढिया, उत्तम।

उ०—१ सफ्फै समांमा सूर वे, साज बाज संग्रांम। आयो भेटै हरि भजै, हरीया भेटै रांम।—अनुभववांणी

उ०—२ सुत 'जगहथ' अजाति समांम, रिमां खग फाग रमै मण 'रांम'। वर्ध हरिनाथ समोभ्रम 'वांन', खळां खग भाटत साहिब-खांन।—सू. प्र.

३ अनुकूल, पसीद।

उ०—बांदि बांदि फुरमांण, सिलह पाखर करि सांमा। आय सबै उमराव, सूर वह मिळै समांमां।—सू. प्र.

४ मिलनसार।

उ०—घरणौ हरख खुस्याली सुं सोकां सुं इसी सुख लीयां हालै सु कोई इव न जांणै जो ऊंचा बोलजै। जो कही री छोकरी-सहेली क्युं टुरटुराटी करै तौ आप डेरै जाय ललोपती मुनहारां कर आवै। मन-खांत कही सुं पड़ न देवै। ऐसी स्यांणी समांमी सौ सारौ राहणौ राजी।—कुंवरसी सांखला री वारता

४ अनुरूप, समान।

उ०—जांमौ दोयसै हाथरौ अंगा सौ हाथरौ पायजांमौ; समांमौ त्रिखग घेटौ लपेटौ सकाज। आफाळियौ राळियौ सांकड़ै तुरी सदा न चालै, उजाळियौ वांकड़ै वांकड़ापणौ आज।—करणीदांन कवियौ

५ समान प्रतिष्ठा वाला।

उ०—दहुवै दळां वाजिया दमांमा, सूर समांमा वै सुभट। रामां'रा माथै सरिस रण, 'परसा' रा माथै प्रगट।

—मदनसिंघ नैं सूरसिंघ रौ गीत

समा—सं. स्त्री. [फा. शमा] १ मोमबत्ती।

२ लहंगा जाति की एक शाखा जो पहले यादववंशीय क्षत्रिय थे। प्राचीन समय में इनका राज्य जामनगर, भुज आदि प्रदेशों में था।

३ यादववंश (भाटीवंश) की एक शाखा।

सं. पु. [अ.] ४ आकाश, गगन।

५ दृश्य, नजारा।

क्रि. वि—१ ही।

उ०—१ समाचार सुणतां समा, उर अति जोस अमीर। दिया नगारा सांमुहा, सर्फ अकारा मीर।—रा. रू.

उ०—२ चडतां अपति समा भड़चडिया, जोपै रूप सनाहां जड़िया। खह रुकि गरद वधे अस खड़िया, नीरधबंध जांणि नीमड़िया।

—रा. रू.

२ देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—समा बिगड़सी सेंग, नीत बिगड़सी न्यारी। देस बिगड़सी, दसा, क्यारी सूं पीगी क्यारी।—ऊ. का.

समाइ, समाई—वि. [सं. समाधि] समाधिस्थ, ध्यानमग्न। (जैन)

सं. स्त्री. [सं. सामायिक] १ समाधिस्थ या ध्यानमग्न होने की क्रिया।

२ वह क्रिया जिसके द्वारा आत्मा में सम भाव रखा जाय।

उ०—१ एक गोचरी महाजनां री करावै। सो स्वांमीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै बंदोबस्ती, भीखणजी नैं एक रोटी देवै तौ इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पांणी री जोगवाइ पूछचां कहै म्है तौ थांनक मांह समाइ करां।—भि. द्र.

उ०—२ सो स्वांमीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै बंदोबस्ती, भीखणजी नैं एक रोटी देवै तौ इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पांणी री जोगवाइ पूछचां कहै म्है तौ थांनक मांहै समाइ करां।—भि. द्र.

३ क्षमा करने की क्रिया।

उ०—दादू बहुत बुरा किया, तुम्हैं न करना रोख। साहिब समाई का धनी, बंदे को सब दोख।—दादूवांणी

रू. भे.—समाही।

समाक—सं. पु. [अ.] वह अत्यन्त कठोर पत्थर जिसकी खरल बनाई जाती है।

समाक्रत—वि. [सं. समाकृति] १ समान आकृति का।

उ०—कट्या घण सजळ छजळ कांन, सिरोगिर कज्जळ कूट समांन। ससूदित साप समाक्रत सूंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।—मे. म.

२ एक समान, अनुरूप।

समागम—सं. पु. [सं.] १ आगमन, मिलन।

२ मुठभेड़, भिड़ंत।

उ०—गढ जंगम जंग समागम का, जुलमी अतिकाय धका जमका। सुघटा घट घाट घटा सरसै, रसतारव डांण पटा बरसै।—मे. म.

३ मैथुन, संभोग।

उ०—१ तहां भुंइ गोरी छै। कहां ठैं पांणी झलकै छै। जैसैं प्रथम समागम कै विखै। नाइका का वस्त्र उतारि लिया हुइ।—वेलि

उ०—२ निहसै वूठौ घण विण नीळांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधे किरि ग्रहणा लसइ।

—वेलि

उ०—३ छेहड़ै री राति गांठि छूटी छै। सु जांणै मन री गांठि छूटी छै। राजांन कुमार घणै हरख सूं आणंद सूं उछाह सूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझ री वात उहां हीज जांणी पिण बीजौ उण सुख उण वातां कुण जांणै।—रा. सा. सं.

३ अवसर, संयोग।

उ०—तठां उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति वीमाह रै समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिळण रौ कोड रंगरळी वधांमणा कीजै छै। रंग महलैं धवळहरै पधरावीजे छै।—रा सा. सं.

४ मिलन।

५ सत्संगत।

६ बहुत से लोगों के एकत्र होने की क्रिया।

समाचरण, समाचार—सं. पु. [सं. समचरणं, समाचारः] १ भली भांति आचरण करना।

२ संदेश, खबर। (डिं. को.)

उ०—१ पण नंदलाल गै'णौ गळा लेणैरौ समाचार खुदौ खुद सुणा देवै, जद सेठां रै जी में जी आवै है अर केवै—वांणिया रै वेटां री आ ही बात।—दसदोख

उ०—२ तै किम भैंस व्यायां एक महिनां तांइ दूध, दही, वावर देवै पिण विलोवै नहीं। तै देवी रै टांणै पधारज्यौ। जद स्वांमीजी कह्यौ—थांरै कद भैंस व्यावै नैं कद देवी हुवै। म्हांनै कद समाचार हुवै नै म्हैं आवां।—भि. द्र.

उ०—२ [illegible] एम कहि।
[illegible] समाचार [illegible] —वेलि

२ [illegible]। (हि. को.)

३ [illegible]।

उ०—[illegible] गयी हुवौ। [illegible] घणौ उपकार कीधौ। [illegible] में समा-चार [illegible]। —नि. द.

रू. भे.—[illegible], [illegible], समिचार, सामाचार।

समाचारपत्र-सं. पु. [सं.] वह पत्र जिसमें समाचार प्रकाशित होते हों। अखबार।

समाज, समाजि-सं. पु. [सं. समाजः] १ बहुत से लोगों का समूह या झुंड। (अ. मा.)

उ०—[illegible] मानव समाज में दर्द सूं कोई नहीं बच सकैलो। [illegible] —दसदोख

२ एक जगह रहकर एक प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समुदाय।

उ०—[illegible] समाज [illegible] —ऊ. का.

३ समूह, दल।

उ०—१ [illegible] पिसाच समाज। पावन [illegible] साज। —बां. दा.

उ०—२ [illegible] मोट, हरी रंग साज मैं। दुहिया [illegible] समाज मैं। —बां. दा.

उ०—३ [illegible] निसुंभ विदारि, [illegible]। [illegible] पीर समाज, रजा जिण सीस धरी [illegible]। —मे. म.

३ साथी, संगी।

उ०—[illegible] समाज पायी, [illegible] संसार। —बादरदांन दधवाड़ियौ

४ हस्ती, हाथी। (डि. नां. मा.)

उ०—[illegible] कीनी मोक्ष समाज। मीरां [illegible] महाराज। —मीरां

५ सभा। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

६ सामान, सामग्री।

उ०—[illegible] ठिकांणै पुगी, पायी मोटां घरै [illegible]। [illegible] रो समाज [illegible]।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

७ [illegible]।

उ०—[illegible] 'जोग' [illegible] विलसियौ, करि गुणवांनां कदर हियै घण हुलसियौ। संपत राज समाज विसेस वधावियौ, अलवर गढ़ आंमेर जिसै छक छावियौ। —सिववगस पाल्हावत

रू. भे.—सांमाज।

समाजोग-स. पु.—१ मेल, मिलाप।

२ संसर्ग, सम्बन्ध।

३ शुभ योग।

४ कोई आकस्मिक घटना।

५ किसी कार्य के लिए कुछ लोगों का होने वाला मेल-मिलाप।

६ समय का ऐसा योग जिसमें कोई एक या एक से अधिक घटना साथ-साथ घटित हो, संयोग, इत्तिफाक।

उ०—१ इण भांत छमरक छमरक झमरक झमरक डोकरी रा दिन सुख सूं रळकता हा कै समाजोगरी बात श्रैड़ी वणी कै श्रेक दिन श्रेक राजकंवर डोकरी री उण टपरी रै गळाकर सिकार करण सारू निकळियौ तौ टपरी रै मांय किणी नै बोलतौ सुण वो श्रणछक ढब्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी नै मारग काटणौ भारी व्हैगौ। बिसाई खावती खावती टुळक टुळक पग ठिरड़ती चालती ही। समाजोग री वात कै श्रेक असवार घोड़ै चढ्यां उण इज मारग थकै निकळियौ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ इकदा समाजोग रै विखै एक गायां रै एवाळौ आयनै पुकार घाली—जो माहार गायां चरावा जावां, जिण रोही मैं सूर एक हाल्यो छै, सू गायां नै दुख देवै छै, तीण रौ जावतौ कीजो, ज्यूं गायांन सुख होवै। —रीसालू री वात

७ भीड़, जनसमूह।

८ दैवयोग।

उ०—श्रेक दिन समाजोग री वात श्रैड़ी वणी कै आधी ढळियां चार बावरी वां इज सेठां री हवेली चोरी करण सारू आया।

—फुलवाड़ी

९ दोस्ती, मैत्री।

१० कारण, हेतु।

११ सम्भावना।

१२ अवसर, मौका।

उ०—१ हिवै हिरण इकदा समाजोग्रै अगलो नै कुंवरजी वातां करता अगलो बोलियौ—श्रीमहाराजकुंवार ! म्हारा जतन आप घणा करो छो, म्हांण दांणा री कुंमी काई न छै।

—रीसालू री वात

उ०—२ ताहरां एक दिन रो समाजोग छै। राव चवंडो गाथ कर नै नागोर माहे जाय पैठो। रोज आवतो। अपरचो कोई न हुंतो। जायनै खोखर नूं मारियौ। —नैणसी

उ०—३ यूं रहतां थकां, एक दिन री समाजोग। सांवत संढायच चारण थटै रै पातसाह रै घोड़ै दरियाई ऊपर चरवादार हुंतो। एक दिन सांवत घोड़ो लेनै नीसरियौ। —नैणसी

१३ भाग्य, तकदीर।

उ०—१ पण अेक दिन समाजोग री वात अैड़ी बणी कै किणी अेक मूंजी रै खूंटै घणा दिनां तांई फगत राहड़ी रा जोर माथै गाय बंध्योड़ी नीं री। पेट री भूख री खूंटा री राहड़ी सूं करार वत्तौ हौ। खाली ठांण सूं कित्ताक दिन तांई माथौ फोड़ती। हूचटौ देय खूंटै बंधी राहड़ी तोड़ न्हाकी। पूंछड़ौ पाधरौ करनै दीठ री सोय सोकड़ मनाई जकौ पाछौ खाली ठांण सांम्ही मुड़नै ई नीं जोयौ। जोग री वात कै न्हाटी न्हाटी इण इज विकट जंगळ मैं आय वाजी। अनाप चरणोई। अनाप चारौ। गाय रै भाग रो तौ भग-वांन तूठौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बांमणी इण विध कूकती कूकती ऊजड़ निंदरोही मैं मन करै उठीनै ई दौड़ती जावती। समाजोग री बात कै गिगन मैं उण वगत संकर पारवती उड्या जावता हा।—फुलवाड़ी

रू. भे.—समायोग, समेजोग।

समाणौ, समाबौ—क्रि. अ.—१ अवसान होना, मृत्यु होना।

उ०—१ महाराज गजसिंघजी समाया सौ मरती वार उमराव मुत्सद्दियां नूं जसवंत सिंघ जी री भोळावण दीन्ही।

—अमरसिंघ री वात

उ०—२ पीछै करमचंद तौ समायौ। तद महाराज फेर मातम-पोसी नूं उणांरी हवेली पधारिया। तथा लखमीचंद, भागचंद नूं वडी खातरी फुरमायी। अर पाछा डेरां पधारिया।—द. दा.

२ व्याप्त होना, विद्यमान होना।

उ०—१ सुसुती मैं सुख घर करलै, सुंन बिच सहज समायगा रे। त्वं पद तत पद असी पद ऊपरै, वां कोई विरळा जायगा रे।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ पण उण असैंधी ठौड़ मैं ई जांणै जलम जलम री पिछांण घुळियोड़ी है। पांणी मैं जिण भांत निवास अर ठंडक समायोड़ी रैवै उणी भांत सासरा रा नाता रिस्ता मैं उमंग, कोड अर हरख अेक-मेक समायोड़ा रैवै।—फुलवाड़ी

३ व्याप्त होना, फैलना।

उ०—प्रथी अंबु तेज वायु आकास समाणी प्रभा, बडाबडी कहांणी अनंता प्रळै वार। रुद्रांणी ब्रह्मांणी महारांणी स्री जांनकी राधा, देवी त्रिहूं लोक प्रांणी बाधा माया द्वार।—मालौ सांदू

४ फैलना।

उ०—इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कपावण काळ विक-राळ केवी। सुकर प्रतमाळ किरमाळ जग समांणी, दिपै डाढाळ घटियाळ देवी।—खेतसी बारहठ

५ एक रूप होना।

उ०—१ दादू मीठा रांम रस, एक घूंट कर जाउं। पुणग न पीछै को रहै, सब हिरदै मांहि समाउं।—दादूवांणी

उ०—२ समांणौ तूझ महीं घणस्यांम, राघव्व अम्हीणो आतम-रांम। सेवग्ग पर्यंप तेजस मो ह, विसंस रखै हिव थाय विछोह।

—ह. र.

६ मिलना, विलीन होना।

उ०—सम माई क्रिया सब थांकी, ज्यूं सलीता सिंधु समाई। पांच पचीस लीन कर सबही, साक्षी स्वरूप रहाई।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

७ विलीन होना।

उ०—पित पौत्र पितामह पाधरि, मित देवळ ऊतरिया मरि मरि। पोत्रै धज चाढीतां ऊपरि, सुजहरि जोत समांणा समहरि।

—अखैसिंह चांपावत रो गीत

८ समाहित होना।

९ धंसना, गढ़ना।

उ०—लुहारी थारा पीव रा हाथ नहीं पूजूं, नहीं बखांणूं। वगतर इसौ काठौ घड़ियौ सौ जुध्ध री समै पती पहरियौ सो काठौ हुवौ नै टोपरी कड़ी समांणी बैस गई।—वी. स. टी.

१० मिल जाना।

उ०—१ हरीया हेरत हेरतौ, हेरत ही रह्यौ हेर। बूंद समांणी समंद मैं, हेरी जाहि न फेर।—अनुभववांणी

उ०—२ पांणी तैं पाळा हूवा, पाळा फिर पांणी। यूं सिव हु तैं जीव हुय, जीव सीव समांणी।—अनुभववांणी

११ अदृश्य होना, ओझल होना, लुप्त होना।

उ०—हरख रा ढोल घुरीजण लागा अर निछरावळां व्ही जित्तै बीज रो चांद धरती मैं उंडो समायग्यौ।—फुलवाड़ी

१२ लीन होना।

उ०—१ दादू भावैं भाव समाइ लै, भक्तैं भक्ति समांन प्रेमैं प्रेम समाइ लै, प्रीतैं प्रीति रस पांन।—दादूवांणी

उ०—२ जहां रांम तहं मन गया, मन तहं नैना जाइ। जहं नैना तहं आतमा, दादू सहज समाइ।—दादूवांणी

१३ समाधिस्थ होना, अन्तर्ध्यान होना।

उ०—पउढिया पांन प्रियाग तणइ प्रभु, कोळी यतरउ रूप कर। जुग केतै एकै जागविया, धुरा समाया ध्यांन धर।

—महादेव पारवती री वेलि

१४ स्थित होना।

उ०—ऊजळै अदरसणि निसि उजुयाळी, घणूं किसूं वाखांण घणैं। सोळह कळा समाइ गयौ ससि, ऊजासहि आप आपणैं।

—वेलि

१५ धारण करना।

उ०—लिछमन जती सीलव्रत लेकै, सांम्रत अंग समाई। वरख चतुर दस वन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई।—ऊ. का.

१६ मिटना, अंत होना।

१७ स्थिर होना।

उ०—[illegible] समाए रहे, घन बेनहु की बेन । मन हीं सों [illegible], घन बेनहु की बेन ।—दादूवांणी

१८ [illegible] ।

१९ [illegible] ।

उ०—[illegible] लाज बिन सांवत, सीदुरगा सकळाई । सूरत [illegible] समाई ।—मे. म.

२० [illegible] ।

उ०—[illegible] में [illegible] निवास पर ठंडक समागोड़ी रैवै उणी [illegible] नाना-विध्या में [illegible], कोइ पर हरग अेक-मेक समायोड़ा रैं ।—फुलवाड़ी

२१ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] मासी मोड़ी सूती ही । दो-तीन घड़ी दिन [illegible] । जितै बादळ रा मन मांयं उणरै उणि-यारा री [illegible] । मांचा मायं सूती जकी बाळ-अपछरा उणरै [illegible] में समावणी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] में केसर घोळियोड़ो दूध पावती । खुद उणरै [illegible] दूध पावती । मिन्या री अंधारी व्हेनांई उण [illegible] में समाय जाती ।—फुलवाड़ी

२२ देखो 'समाणो, समावो' (रू. भे.)

२३ देखो 'मावणो, मावबो' (रू. भे.)

उ०—१ हूं [illegible] कहूं, घर में बाघ समाय । हाको सुणतां [illegible], मरणो कोण न माय ।—वी. स.

उ०—२ प्यारा नै दिन बीत था, विच न समातो हार । अबतो मिळवो [illegible] है, पड़े ज बीच पहार ।—अग्यात

उ०—३ [illegible] नड बाजिया, सघण गाजियो गुहिर सदि । जळनिधि ही मामाइ नहीं जळ, जळवाळा न समाइ जळदि ।
—वेलि

समाणहार, हारो (हारी), समाणियो—वि० ।
समायोड़ो—भू० का० कृ० ।
समाईजणो, समाईजबो—भाव वा० ।
समाणो, समावो, संमावणो, संमावबो, समावणो, समावबो
—रू० भे० ।

समानार-सं. पु.—सदस्य, सभासद । (डि. को.)

समाय-वि.—१ ऊपर लिये हुए, उठाए हुए ।

उ०—[illegible] वीर [illegible] वीर गेत, मांझी दत्ता [illegible] । उभै भेक मतां हूं समाय हाथ कियां [illegible], [illegible] रो पाथ राव अेका अेक बीच ।
—उमेदसिंघ हाडा रो गीत

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] समाय । सांम [illegible] कि पाय ।—रा. रू.

उ०—२ कळह पणां ही कटक नूं, सुद्रम गिणै समाय । नवहत्था वाळी नरां, है छाती सो हाय ।—बां. दा.

उ०—३ दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ, सकज सूर समाय । रिणतेत भंजण सकुळ रांवण, नेतबंध रघुनाथ ।—र. ज. प्र.

उ०—४ चंपा चौरंग अग्गळा, कांन्ह अनै हरनाथ । सोजत ऊपर हल्लिया, बांधै फौज समाय ।—रा. रू.

उ०—५ नरइंद अभो नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाय । अहमंद नगर साटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप ।—रा. रू.

उ०—६ मांनसिंघ कमधज्ज, मऊ सीतापति साथै । चंद्रावत गोपाळ, राव भड़ लियै समाथै ।—रा. रू.

समाद—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—देवी चांवंड रै थांन आगै जरव छै सु राजा सूरसिंघजी री वार में सोनारै चिणाई । तिण ऊपर चोतरो छै समाद रो सनी-यासी परसाद गिरी रो पंचोळी नैना रा घर आगै सं. १६६० करायो ।—मारवाड़ री ख्यात

समादांन-सं. पु. [फा. शमादान] १ प्रायः धातु या शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है ।

[सं. शमऽऽदान] २ जैनियों का आह्निक कृत्य विशेष । (जैन)

३ क्षमादान ।

समादियो—देखो 'समाधियो' (रू. भे.)

उ०—ताहरां लिखमी निसासो मूंकियो । ताहरां नरो बोलियो—मा ! निसासो क्यूं मूकियो ? थांहरै बाघै नरै सरीखा बेटा, अर रावजी पण समादिया । थां रांणीपदो पायो ।—नैणसी

समाध-वि.—स्वस्थ, तन्दुरस्त ।

उ०—उठै कंवर गजसिंघ नूं सीतळा नीसरी । कंवरजी रो डील रूडो नहीं, तरै भाटी गोयंददास मोहणदास नूं कंवरजी ऊपर वारियो । कंवरजी रै डील समाध हुई, मोहणदास रांम कह्यो ।
—नैणसी

सं. स्त्री.—१ तन्दुरुस्ती, स्वस्थता ।

२ देखो 'समाधियो' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ माठा पांव देतो आयो बावरैल टाळामयो, जांठो भू समाध लेतो जगायो जोगंद । दुवारै जमायो प्यालो जवांनी जोमैल दौला, मांटीपणै वातळायो गोमैल मयंद ।—दौलतसिंघ हाडा रो गीत

उ०—२ भूवा रै सांमी घरनै कैवण लागी—कारीगर किसा अेक सारीखा व्हे । फगत अेक जीव री खांमी है । फूफोजी तो अेड़ा लागै के जांणै अतुट समाध में विराजिया ।—फुलवाड़ी

उ०—३ जलमता बाळक री रोवणी दुनियां री सगळी हूंसी री मार, उणरो बीज रूप । हाव मांयला टाबर री कैं कैं सुणतां ई मासी री समाध तूटी ।—फुलवाड़ी

समाधांन-सं. पु. [सं. समाधान] १ चित्त को एकाग्र कर ब्रह्म में लगाने की क्रिया या भाव । (डिं. को.)

२ किसी प्रश्नकर्त्ता को ऐसा उत्तर देने की क्रिया जिससे उसकी जिज्ञासा पूर्ण रूप से हल हो सके ।

३ वह युक्ति जिससे किसी समस्या को हल किया जा सके ।

४ संतोष, धैर्य ।

उ०—अर गुजरात छूटां केड़ै सोलंखियां री केही पीढी अजमेरा मैं रहियां पछै उणां रै पाटवी गोइंदराज इण ही समय रै समीप टोडा रा अधीस गोळवाळ चहूवांण सातू पातू दो ही भाइयां नूं मारि टोडा रौ राजा हुवौ।

जिकण नूं मीणां रा मारण री निस्चय जणाइ उणरौ बडौ पुत्र कुंभराज तिणहूं छोटौ कन्हड़ यां दो ही बंधवा नूं बडी बरात रै साथ वरण नूं बुलाई मीणां रै मावण जिसड़ौ एक बाड़ौ जुदौ ही बणायौ ।

गोईंदराज कहाई म्है गोळवाळां नूं मारि टोडौ लीधौ अर आप गोळवाळ री पुत्रियां नूं बिवाहण रै काज म्हारा कंवरां नूं तेड़ो जठै सत्रुता री संका हुवै इण कारण आपरा बारहठ हरसूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि उण रा धरम रौ वचन दिवाइ आपरी पुत्रियां करि बिवाही जरै बरात आवे ।

सोही स्वीकार करि कुंभराज, कन्हड़ दो ही कुमरा नूं बुलाया जांणि जसराज भी याही अरज कीधी जठै कुमार कहियौ मीणां ही प्रसभ पूरबक बळ ही सौं बर बणता जिण बीच टोडा रा राजा समता रा संबंधी सोलंखी रा सुत सत्रु भी उचित खटावै । इसडी कहि अंत्यजां रै उचित बाडा मैं बारूद बिछाइ जिकण मैं बरात हूं एक प्रहर पहली संबंधियां समेत समग्र ही मीणां नूं बुलाइ आसव मैं अति मत्त कीधा ।

अर बरात न पूगै जिण पहली बारूद मैं दमंग देर उडाइ दीधा ।

बरात रा **समाधांन** पर आपरा सुभट सचिव राखि तत्काळ ही बूंदी आइ अमल कीधौ ।

जठै आपरौ थांणौ राखि पाछौ ऊमर थूणैं जाइ आसाढ क्रस्ण नवमी कुज वार रा लग्न पर गौळवाळ री दो ही पुत्रियां री विवाह चालुकराज रा दो ही कंवरा रै सार्थे कर दीधौ ।—वं. भा.

५ संयोग ।

उ०—१ सातल जोधावत जोधपुर रहै । एक दिन रौ **समाधांन** छै, सातल मंडोहर रीयां वाड़ीयां गयौ । तठै माळी कह्यौ, 'राज, अजांण वाड़ी मांहि मतां वड़ौ । औरां वाड़ीयां जावौ ।

—सातल जोधावत री वात

उ०—२ एक दिन रौ **समाधांन** छै । चेजौ कर दोनै पाछियां आवै छै । वीच पांणी रौ वाहळौ छै । सु नाहरी तौ डाक मार पार हुई । अगी जिजकाय अर उभी रही ।

—नाहरी हरणी धरमैंकै सांवता री वात

समाधायौ—देखो 'समाधियौ' (रू. भे.)

उ०—तितरै दिन ऊगौ । लाखोजी बैठा छै । मनभोळियै आइ आसीस दीधी । लाखोजी कहै, 'मनभोळिया', **समाधायौ** छै रे ? कह्यौ, 'जी जीवै लाखौ लाखवरीस ।—लाखौ फुलांणी री वात

समाधि-सं. पु.—१ देवि भक्त एक वैश्य का नाम ।

सं. स्त्री. [सं. समाधिः] २ योग के आठ अंगों में से एक मुख्य अंग जो योग का चरम फल माना जाता है । इसके चार भेद माने गये हैं—संप्रज्ञात, सुवितर्क, सविचार और सानन्द ।

उ०—सुतण सुरथ न्रप सुमित्र सरूपति, तपसी हुवौ राज तजि भूपति । आसणि गलिका तीर अधारै, ध्यांन **समाधि** जोगमय धारै ।—सू. प्र.

३ वह स्थान जहाँ शव या अस्थियाँ दफनाई गई हों ।

४ साधु-संन्यासियों को दफनाने की क्रिया विशेष ।

५ किसी साधु विशेष का जीवितावस्था में ध्यानावस्थित होकर भूमिगत होने की क्रिया ।

क्रि. प्र.—लेवणी ।

६ चित्त को एकाग्र करने की क्रिया ।

उ०-१ पूरव अर पछिम मिळै, मिळै उत्तर दिखणाधि । हरीया इन ऊपर मिळै, जीव सीव **समाधि** ।—अनुभववांणी

उ०—२ हुं छुं अपराधी, मइं सेव लाधी तुम्ह तणी । करउ सहज **समाधि**, कीरति वाधी अति घणी ।—वि. कु.

७ कुशलक्षेम पूछने की क्रिया ।

उ०—१ कथाकार मैं आंण्यौ एहवौ रे, रखै जीवेलो करी उपाय रे । सुख **समाधि** पूछण नै मिसै राजा नै गलै टूंपो दीधौ जायरे ।

—जयवांणी

उ०—२ आप कहियौ—आवौ नहीं रीड़ा । कहियौ रावजी **समाधि** पूछावै कहौ । कहियौ गाढा सहौराहां ।

—प्रतापमल देवड़ा री वात

उ०—३ अर सीपो मुंहतौ तिणहीज आथुणि जीमि, वागौ पहिर मोचड़ी अर कुंवरजी री **समाधि** पूछण आवै हुतौ ।—द. वि.

८ पूर्णता ।

उ०—विहंडियौ सिवर मगरूर वाधि, ससि नांम आदि अंतरिख **समाधि** । जुड़ि करै नास मेवास जंग, ईडरगढ लीधौ इम अभंग ।

—सू. प्र.

९ ध्यान ।

उ०—१ सिरि वंदि पगतळि धरिउ, सेठ **समाधि** म चूक । पाडउ श्री पदमिनि-तणउ, धन आपी तिहां ढूक ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ चढि आभ छड़ाल चमंक चुभी, खुरताळ धमंक पताळ खुभी । वढि हाक त्रमागळ डाक वजी, त्रिपुरासुर सत्रु **समाधि** तजी ।—मे. म.

१० श्रुत चारित्र रूप धर्म । (जैन)

उ०—सातसै वरस सह्या असातारा इंद्र वखांण्यौ वळै दृढ आचारा ।

हूर करै सेन करै मनुधारा, साधु समाधि करन तुम सारा।
—ध. व. ग्रं.

११ दर्शन, सामान।

उ०—बहु गजदंत बोनाविया, सोधना नोड़ि उपाय। बावना मदन सारीना, पड़ि तड रै समाधि न माय।—स. कु.

१२.—स्वस्थ, ठीक।

उ०—१ पछि स्यान तेजसी वहो वैद छै, प्राज धनंतर छै, तिण कना मूढ़ तेर तेर औषद्या रागा स्वारि दिराळीजै तो समाधि हुवै।—द. वि.

उ०—२ रोगी मयो नट प्रांटियट रे कांइ, कुमगी थईय समाधि रे। ग्रहै रे पालन मोड़ि नै रे कांइ, दूर गई सहु व्याधि रे।
—वि. कु.

११ देखो 'समाधिजिन'। (जैन)

रू. भे.—समाद, संमाधि, समाद, समाध, समाधी।

समाधिक्षेत्र—सं. पु. [सं.] १ वह स्थान जहां योगी, साधु, संन्यासी आदि के शव को जलाया या दफनाया जाता है एवं जिस पर चबूतरा बना दिया जाता है।

२ उस स्थान पर बनाया गया चबूतरा।

समाधिजिन—सं. पु. [सं.] जैनधर्मानुसार भविष्यकाल में होने वाले सतरवें तीर्थंकर का नाम, श्रीसमाधि।

समाधिदसा—सं. स्त्री. [सं. समाधिदशा] समाधिस्थ होने की दशा।

समाधियो—वि.—१ सम्बन्धि, रिश्तेदार।

उ०—शंवराल जी नूं घणो आदर सनमांन दोनूं कहियो थें सदा रा समाधिया छो।—पंच दंडी री वारता

२ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—१ पछि केसवराय जी रख्या करि समाधिया हीज रहिया।
—द. वि.

उ०—२ महै थें हालो जाहरां श्रीपतिजी समाधियो होइसी ताहरां पधारसी।—द. वि.

३ समाधिस्थ।

रू. भे.—समादियो, समाधायो।

समाधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—१ सुरत निरत सूं पाव धरोरी, पल पल हिरदा मांही। अगध ग्रगध बिच प्रेम भरत है, रोम रोम एक जाई समाधी अखंड लगाई।—श्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ पछै साह रे समाधी हुवां केई दारासाह नै अधिकार रो काम भी सांपि दीधो।—व. भा.

उ०—३ देवी धारता देव ता वंस नमिया, देवी नवै खंड त्रिभुवन तुझ नमिया। देवी वन में समाधी सुरत अमी, देवी पूजतै आसपूरणा अमती ,—देवि.

समानोदरज—सं. पु. [समानः+उदरंः] सगाभाई, भ्राता, सहोदर।

(प्र. मा; ह. नां. मा.)

समाप—सं. पु. [सं. समर्पण] १ उत्सर्ग, दान। (हि. को.)

२ समर्पण।

समापक—वि. [सं.] (स्त्री. समापिका) १ समाप्त करने वाला।

२ पूर्ण करने वाला।

३ समर्पण करने वाला।

समापण—१ देखो 'समपण, समपणो' (रू. भे.)

उ०—१ मन रा महरांण समापण मोजां, कापण दीनां तणा कुरंद। दीजै किसो समोवड़ दूजो, पेखे चक्रत रहै पुरंद।
—र. रू.

उ०—२ वीत समापण श्रीत तणो वर, ढाहण फौज अरी दळ ढुको। 'नाथ' तणो 'सुरतेस' अर्भ-नर, चीत नथी ठकरीत न चुको।
—सुरतांण सिंघ चवांण

समापणो, समापबो—१ देखो 'समपणो, समपबो' (रू. भे.)

उ०—१ जरीतारां जगीवाफां नीलकां जड़ाव मांमां, दांमां पार पावै नको देतो चित्त दत्ति। कहां खोटी वार बिचै मोटी रीझां 'सेवो' करै, सामणां सोव्रन्नां कड़ा समापै हसत्ति।—नाथो बारहठ

उ०—२ कूच थयो पाछै ततकाळै, सांभर फिर मारोठ संभाळै। थांणा दहूं ठिकांणां थापै, सीख देस दिस वियां समापै।—रा. रू.

उ०—३ जगत सुरराय सो समापो ईसरी, गुण परमेस्वरी सुजस गावै। भदोरै विराजै भुजाई बीसरी, आप आदेसरी मढ आवै।
—बख्तीरांम

उ०—४ महाराज नूं राज रीझै समाप्यो, थिर राज रो राज देसांण थाप्यो। जठै झाड़ियां खंड स्रीखंड जेही, नगां पुंजरी मंजरी रूप तेही।—मे म.

समापणहार, हारो (हारी), समापणियो—वि०।

समापिग्रोड़ो, समापियोड़ो, समाप्योड़ो—भू० का० कृ०।

समापीजणो, समापीजबो—कर्म वा०।

समापत—वि. [सं. समाप्त] जो सम्पूर्ण हो गया हो, खत्म हो गया हो।

उ०—नियम मंगळाचरण नह, काव्य समापत काज। काव्य उचारण कुकवि सूं, करै महाकवराज।—वां. दा.

क्रि. प्र.—करणो, होणो।

रू. भे.—संमापित, संमापीत, समापित, समाप्त।

समापिका—सं. स्त्री.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाओं में से एक जो कार्य के समाप्त हो जाने को सूचित करती है।

समापित—देखो 'समापत' (रू. भे.)

उ०—दस मास समापित गरभ दीध रितु, मन व्याकुळ मधुकर मुणणंति। कांठण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वधंति।—वेलि

समाप्त—देखो 'समापत' (रू. भे.)

समाप्ति—सं. स्त्री.—किसी कार्य के समाप्त होने की क्रिया या भाव।

समायोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रौ **समायोग** छै। बलसीसर तळाव सिखरै उगमणावत गोठ कीवी छै। —उदै उगमणावत री वात

समायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अवसान हुवा हुआ, मृत हुवा हुआ. २ व्याप्त हुवा हुआ, विद्यमान हुवा हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ४ फैला हुआ, विस्तीर्ण हुवा हुआ. ५ एकरूप हुवा हुआ. ६ मिला हुआ, विलीन हुवा हुआ. ७ विलीन हुवा हुआ. ८ समाहित हुवा हुआ. ९ धंसा हुआ, गढ़ा हुआ. १० मिला हुआ हुआ. ११ अदृश्य हुवा हुआ, ओझल हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ. १२ लीन हुवा हुआ. १३ समाधिस्थ हुवा हुआ, अन्तर्ध्यान हुवा हुआ. १४ स्थित हुवा हुआ. १५ धारण किया हुआ. १६ मिटा हुआ, अन्त हुवा हुआ. १७ स्थिर हुवा हुआ. १८ निवास हुवा हुआ. १९ प्रविष्ट हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ अनुरक्त हुवा हुआ।

२२ देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

२३ देखो 'मावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समायोड़ी)

समार–सं. पु.—१ अधिकार, कब्जा।

उ०—जाळोर रै कांकड़ सींवै गांव सीरोही रा डोढोयाळा रै पड़गनै रा पांच-दस गांव राव तीडै री फौज राव तीडौ आय पड़ियौ। सु इतरा गांव **समार** कीधा। सो वन मोर उडीयौ। कटके-कटक धाया। —तीडै छाडावत री वात

वि.—२ घावों से परिपूर्ण।

उ०—घावां वडौ धरम छै और म्हारौ सरीर सूं **समार** छै। काल्ह पगपसार थें-म्है मरीस तौ अगत जायसै, मौने अगत होयसी, थांनूं बडी महणौ होसी।—डाढाळा सूर री वात

समारक—देखो 'स्मारक' (रू. भे.)

समारजणी, समारजनी—देखो 'संमारजनी' (रू. भे.)

समारणौ, समारबौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुख भंजन तूं दाखि मुझ, नहीं तरि छंडसि देह। अगि कि अबळा अेह घरि, सेजि **समारइ** वेह।—मा. कां. प्र.

उ०—२ तीरां गोळीयां रै मारक पड़तै जिनावर पांख **समारण** न पावै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ उतमंग किरि अंबर आधौ, अधि मांग **समारि** कुंआर मग। —वेलि

उ०—४ ऊडण पंख **समारि** रहै, अलि कंठ **समारि** रहे कळकंठ। —वेलि

उ०—५ पार पखै असवार पाइदळ, पंख **समारिक** चल्लै मेहळ। —गु. रू. बं.

उ०—६ सोळा सोहिता धांधुसी पुलाव चकतालौ जळचर मांस, थळचर मांस, उडणां पंखिआं रा मांस, भांति भांति रां जुदा जुदा **समार समार** नै वणाया छै। प्याला मांहि परुसीजै छै। हाजर कीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—७ इण भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूखण विराजिया छै। जाणै इंदलोक री अपछरा, रूपरी रंभा, आसमांन सूं ऊतर पड़ी। चित्रांम री पूतळी, विधाता हाथ सूं **समारी**।—रा. सा. सं.

समारणहार, हारौ (हारी), समारणियौ—वि०।

समारिओड़ौ, समारियोड़ौ, समारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समारीजणौ, समारीजबौ—कर्म वा०।

समारत–सं. पु. [सं. स्मार्त] स्मृतियों में लिखे अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति।

समारथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समारियोड़ौ—देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समारियोड़ी)

समारोह–सं. पु.—कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमें चहल-पहल तथा धूमधाम हो, उत्सव।

समाळिया–सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

समाळियौ–सं. पु.—राठौड़ वंश की समाळिया उपशाखा का व्यक्ति।

समालोचक–सं. पु.—समालोचना करने वाला व्यक्ति।

समालोचना–सं. स्त्री. [सं.] १ अच्छी तरह देखना, परखना।

२ किसी कृति के गुण-दोषों का किया जाने वाला विवेचन।

३ साहित्य में किसी कृति के गुण-दोषों के सम्बन्ध में किसीने अपने विचार प्रकट किए हो।

४ साहित्यिक कृतियों के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

समालोची—देखो 'समालोचक' (रू. भे.)

समावंत–वि. [सं. समा+वंत] समयानुसार या ठीक समय पर होने वाले।

उ०—सांभळउ—वन तै वणवीइ जै व्रक्षवंत, नदी तै जे नीरवंत, कटक तै जै वीरवंत, सरोवर तै जै कमळवंत, मेघ तै जै **समावंत**, महात्मा तै जै क्षमावंत, प्रसाद तै जै धजावंत, धरमी तै जै दयावंत आदि।—रा. सा. सं.

समावड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डि. को.)

समावण–सं. पु.—१ मृत्यु, नाश। (डि. को.)

२ मृत्युसंदेश। (डि. को.)

समावणौ, समावबौ—१ देखो 'समाणौ, समावौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हो। खांणी पांणी पलटकै, उण देस **समावै** हो।—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ मागइ मात व धांमणी, धव धव धाया लोक। ताहरू माधव आवीउ, आज **समाविन** सोक।—मा. कां. प्र.

उ०—३ वरखारितु लागी, विरहणी जागी। आभा झरहरै, वीजां आवास करे। नदी डेवां खावै, समुद्रै न **समावै**।—रा. सा. सं.

उ०—४ इण वात सूं, जो महीनां रा नांई खांना रानिया, नहीं तो कुमाई रे पेट में इणरी वात समावे ? पहले दिन जाहर कर सिर चढ़ाई ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ अरे महीनो, सु राव मालदे री छाती माहे मेड़तो पाधरो पर समावै नहीं । राव मालदे प्राव घणो ही करै विण राव जैता कूंपा राव रुणो राव भींवो इण वात माहे पावै नहीं ।—नैणसी

उ०—६ सु समुद्र माहे पांणी समावै नहीं । इतरो वळ हुआ छै । प्रांसूडी मगरा माहे समावै नहीं छै । सहरां बाहरि कच कबाट करि रही छै ।—वेलि टी.

उ०—७ ज्यां हदा कज जोय, दोजग नहं वासो दियो । तै न्हावै नुद तोय, जोत समावै जहांनमी ।—बां. दा.

२ देखो 'संभाणी, संभावो' (रू. भे.)

उ०—इतु रजपूती छै तो तरवार समावो । आ वात सुणतांइ कवर गीरमदे में इसो जोम चढ्यो जांणे दारु रा गंज में आग रो तुन पड्यो ।—पनां

समावणहार, हारो (हारी), समावणियो—वि० ।

समाविग्रोड़ो, समावियोड़ो, समाय्योड़ो—भू० का० कृ० ।

समावीजणो, समावीजवो—भाव वा० ।

समावरत—देखो 'समाव्रत' (रू. भे.)

समावियोड़ो—१ देखो 'मावियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'संभायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'समायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समावियोड़ी)

समावेस-सं. पु. [सं. समावेश] एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अन्तर्गत होना, समाविष्ट होना ।

समाव्रत-सं. पु. [सं. समावर्त] भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

वि.—आवृत, घिरा हुआ, आवेष्टित ।

उ०—मंदिरंतरि किया चित्रांतरि मिळिया, विचित्रै मणिए समाव्रत । कीधै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संस-क्त ।—वेलि

समास-सं. पु. [सं. समासः] १ धैर्य ।

उ०—१ समरत थोड़ो अप्पियो, उर अप्पियो समास । विदा कियो वरसान में, प्रगटी वात प्रकास ।—रा. रू.

२ सम या थोड़ा होने का भाव ।

उ०—एको समद इसो ओल्हरियो, सात समंद जग हुवा समास । देखो तो आसीस घणा दिन, सूरज देव तणो सपनास ।

—महाराणा राजसिंह रो गीत

[सं. समाश्रय] ३ वर्षाकाल ।

उ०—साहजादा तो पाउसकाळ माळव में ही कीधो तिकां समास रै उतर थोड़ा थोड़ा कूच करि आप आपरा अनीकां नूं आगे आवण रो आदेस दीधो ।—वं. भा.

४ संक्षिप्त । (हि. को.)

उ०—रनिवहे मारंभी रचना नहि, वल समास पुनरात विचार । संपूरण कर फेर सराहे, परधांतरै कवचक उचार ।—बां. दा.

५ व्याकरण के कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार शब्दों का आपस में मिल कर एक होना, दो या अधिक शब्दों का योग ।

[सं. समाश्वन] ६ सांत्वना, तसल्ली ।

उ०—भूप हुकम 'भगवांन' तण, मुहतो जीवणदास । दिल्ली रहियो साह दळ, साहां करण समास ।—रा. रू.

समासम-वि.—१ समान, बराबर का ।

उ०—समासम मेल धमाधम सेल, अनातम आतम ठेल उठेल ।

—रा. रू.

समास्रित-वि. [सं. समाश्रित] जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो, भली प्रकार आश्रित ।

उ०—ऊभी सहु सखिए प्रसंसिता प्रति, किलारथी प्री मिळण कृत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, स्तुति देहरि घरि समास्रित ।

—वेलि

समाहणो, समाहवो—देखो 'संभाणो, संभावो' (रू. भे.)

उ०—जोध वळै 'राजांन' रो भळै खवां कुळ भार । आभ समाहै कंडळै, दीठै दळै करार ।—रा. रू.

समाहार-सं. पु. [सं.] १ संग्रह ।

२ समूह, राशि ।

३ मिलाप, मिलन ।

समाहित-वि. [सं.] १ समाधिस्थ ।

२ स्थिर, अटल ।

३ शांत ।

उ०—अर जम नियम आसण प्रांणायांम प्रत्याहार धारणा ध्यांन सातूं ही अंगां रो जप करि अस्टम अंग समाहित भाव में निस्चळ होय आप ही रो रूप धार लीधो ।—वं. भा.

४ सावधान, निरूपाधिक ध्येय ।

समाही—देखो 'समाई' (रू. भे.)

समाह्वा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास जिसे वनगोभी कहते है ।

समिश्रै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—तकण समिश्रै तरवार बूही ।—मारवाड़ री ख्यात

समिउ-वि.—शान्त । (उ. र.)

समिग-वि. [सं. सम्यक्] सत्य, असल । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—समग ।

समिचार—देखो 'समाचार' (रू. भे)

समिज्जा-सं. स्त्री. [सं. समज्या] सभा । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—समज्जि, समज्या ।

समित-सं. पु. [सं. समित्] युद्ध, लड़ाई । (ह. नां. मा.)

समितिजय-सं. पु. [सं.] १ कृपाचार्य का शिष्य जो धनुर्वेदाचार्य, वीर

था।

२ युद्ध में विजयी व्यक्ति।

समिति-सं. स्त्री. [सं.] १ सभा। (ह. नां. मा.)

२ मजलिस।

३ युद्ध, समर।

रू. भे.—संमत।

समिद्धउ, समिद्धह, समिद्धौ-वि. [सं. समृद्ध] समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली।

उ०—मरुधर देस मझार, सयळ धरा धांन समिद्धौ। नांमै पूगळ नयर, पुहवि सगळै परिसद्धौ।—ढो. मा.

समिध, समिधा, समिधि-सं. स्त्री. [सं. समिध्] १ यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी। (डिं. को.)

[सं. समीधः] २ आग, अग्नि।

समिय—देखो 'समय' (रू. भे.)

समियांण, समियांणौ, समियांन, समियांनौ-सं. पु—मारवाड़ के सिवाना नामक कस्बे का किला।

रू. भे.—समीयांण, समीयांणौ।

२ देखो 'सांमियांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिसड़ै समियांणौ उठायौ। ताहरां समियांणै री झालरि नदरि पड़ी।—द. वि.

उ०—२ सजै इसी सुख रास जिलह अरु जाळियां, कंचन कळस पताक महल अरू माळियां। समियांन साइवांन क वेस विछायत्यां, गदरा गंज गिलम्म मांझ महलायत्यां।—सिवबख्स पाल्हावत

समियौ—१ देखो 'समय' (रू. भे.)

२ देखो 'समौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—गोल तणौ कहियौ गुणी, संपूरण समियौ।—पा. प्र.

समींक-सं. पु. [सं. समिकं] १ भाला, बरछा, वल्लम।

उ०—सन्निद्धि सुभट समरन समींक, डक्कतैं डक्क उद्धत अनीक। दुरयोधन देसक दरोळ, हैं दुरगदास बेसक हरोळ।—ऊ. का.

२ देखो 'समीक' (रू. भे.)

समी-सं. स्त्री. [सं. शमि; शमी] १ राजस्थान, गुजरात और पंजाब में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला वृक्ष विशेष। इसके पत्ते ऊंट, भेड़, बकरियों आदि पशुओं को चराने के काम आते हैं।

उ०—वट तमाळ पींपळ विरख, अरुजन समी अपार। ईढ तजै पत्र एक री, सुरत पांचेई सार।—रा. रू.

[सं. शमी, शमि] २ फली। (डिं. को.)

क्रि. वि.—१ होते ही।

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनैं समी सांझ मनुख मूंया तै दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै।—भि. द्र.

२ ही।

उ०—सवखड़ा सिन्धू कांनो चवै, जेण सुजस छायौ जमी। विरवड़ी ये पातां वळां, सूरज ऊगंतां समी।—कांनूजी

३ देखो 'सम' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—राजा तूझ समी अन राजां, होड़ कियां अप विया हसै। पांणी-हंड पहरै दोहुं पासां, नासा नार जिहुंइ नकसै।

—सांइयौ झूलो

४ देखो 'समोवड़ियौ' (डिं. को.)

५ देखो 'समौ' (रू. भे.)

रू. भे.—संमी, संवी।

समीक-सं. पु. [सं. शमीक] १ एक प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ और दयालू ऋषि।

२ शूर राजा एवं मारिषा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो सुदामिनी का पति एवं प्रतिक्षत्र राजा का पिता था।

३ कौरव पक्षीय एक यादव जो द्रौपदी के स्वयंवर में शामिल था।

४ एक ऋषि जो शक्र-सभा में उपस्थित था।

[सं. समीकं] ५ युद्ध, संग्राम। (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—समींक।

समीकरण-सं. पु. [सं.] १ दर्शन शास्त्र की सांख्य पद्धति।

२ असम को सम करना।

३ बीज गणित में अनजानी संख्याओं को जानने के लिए प्रक्रिया विशेष।

समीक्षक-वि. [सं.] समीक्षा करने वाला, समालोचक।

उ०—सत वक्ता सद्धासील समीक्षक सूरौ, पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरौ। दुरव्यसन दुराग्रह दूसण सौं द्रढ दूरौ, अनभंग उतंग उमंग न अंग अधूरौ।—ऊ. का.

समीक्षा-सं. स्त्री. [सं.] १ समालोचना।

२ दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीगरभ, समीग्रब, समीग्रभ, समीग्रभब, समीग्रभवा-सं. स्त्री. [सं. शमीगर्भः] १ अग्नि, आग। (अ. मा; डिं. को; ना. डिं. को; ह. ना. मा.)

२ अग्निहोत्री ब्राह्मण।

समीची-सं. स्त्री. [सं.] वर्गा नामक अप्सरा की सखी, यम सभा की एक अप्सरा।

समीचीन-वि. [सं. समीचीनः] १ उचित, ठीक। (ह. नां. मा.)

२ न्यायसंगत।

सं. पु. [सं. समीचीनम्] ३ सत्य, सच्चो।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

समीत-सं. पु. [सं. समित] १ युद्ध, दंगल। (ह. नां. मा.)

२ सभा, गोष्ठी।

समीप-क्रि. वि. [सं.] १ निकट, नजदीक, आस-पास।

(अ. मा; डिं. को.)

उ०—मिळि पधराय सवाय हित, डेरा दिया समीप। छत्रपति छाजै ऊधरै, राजै जोड़ महीप।—रा. रू.

२ पास, नजदीक।

उ०—मुन [illegible] मनुहार, [illegible] भांत भांत प्रकार। मेल्हिया 'प्रसी' नजीक, पाविया 'मल्लु' समीप।—सू. प्र.

३ पास।

उ०—पर जयसेन रा आगम रै निमित्त प्रथीराज कुमार पिता सूं प्रस्ताव पायरो दरियाव कैमावरै समीप भेजि गुरसांण री फौजां [illegible] री निवेस कहियौ।—वं. भा.

पर्याय.—अब्दूर, अन, ढिग, तट, नजीक, निकट, नेड़ौ, पारसव, पास।

रू. भे.—समीपि, समीपी, सांमीप।

समीपता-स. स्त्री.—समीप होने का भाव, निकटता।

समीपमुक्ति—देखो 'सांमीपमुकति' (रू. भे.)

उ०—वंदै पग नन्दि महेस विसन्न। समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। धर्मी प्रणमी जस एम अथाग। भूग धनि तुझ तणौ अत भाग।

—सू. प्र.

समीपि, समीपी-सं. पु. [सं. समीप+ई] १ निकटवर्ती, नजदीकी।

उ०—१ पद मैं बैठो के निघात बाज कीनां। मुगतज्जां खांन का समीपी मार लीनां।—वि. वं.

उ०—२ सीमा रा समीपी नरेसां हूं उपहार लेर तिकांनूं आपरै अधीन बणाट मुवादारी री अनादर करि पातसाही पद नूं वहण ढूका।

—वं. भा.

वि.—२ समीपवर्त्ती, निकट का, समीप का।

३ देखो 'समीप' (रू. भे.)

समीम-सं. पु. [अ. शमीम] सुगन्धित पदार्थ।

समीयांण, समीयांणो—१ देखो 'समियांणो' (रू. भे.)

२ देखो 'सांमियांनो' (रू. भे.)

समीयै, समीयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ एक समीयै विजै मनमैं जांणियो जू नाहूल वडी जायगा पर नाहूल वढ़ै चोरी न की।—चोबोली

उ०—२ एकै समीयै दरियाव गाज्यो। नरै अनंतराय भायां-भतीजां रै बिचै दरबार बैठो।—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—३ तिको रात आधी रो समीयो थो, तिमैं चोकीदार चोकी देता थाद निकलिया।—जगदेव पंवार री बात

समीर, समीरण, समीरन-सं. पु. [सं. समीरः, समीरणः] १ वायु, हवा।

(अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ बन बाहर नाहर बसै, बाहर थाट विहार। तरवर गुलम समीर तिण, नको नमावणहार।—बां. दा.

उ०—२ मनरूपै फिर गिर चढि हेमाळै, चंद्रकुमार गेल्ह नह चाळै। तिण उववनि भोनै नदि तीरां, सीतळ मंद सुगंध समीरां।

—सू. प्र.

उ०—३ पाळ तळाइ कामिणि बसी, गरळ तणा गुण लेय। [illegible] समीरण न्हा-धिको, [illegible] मल्हार देय।—मा. कां. प्र.

उ०—४ वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नै मंद। गगन वस्त्र जास कहियै, तजै तिमिरनो फंद।—वि. कु.

२ भगवान् विष्णु।

रू. भे.—सांमीर।

समीवड़, समीवड—देखो 'समवड़' (रू. भे.)

उ०—१ इंद्र प्रभत इंद्रह विभो, इंद्र छभा अंनांण। इंद्र समीवड रट्टवट, हिंदूवै सुरतांण।—गु. रू. बं.

उ०—२ दड-दूड सीस पडंत दडाक, वडीयण बंध असंध बडाक। समीवड आहुडिया सुरतांण, खुटै रार-हूंड तणा खुरसांण।

—गु. रू. बं.

समीसर-स. स्त्री.—बराबरी, समानता।

उ०—लीण हीण ज्यां सौं गज लागै, ए कोड बळ सादूळै आगै। सेवै छत्रपति छोड समीसर, ओपै धजा जगत चै ऊपर।—रा. रू.

वि.—समान, तुल्य।

उ०—रवि समान खद्योत सेम जळ साप समीसर।—पा. प्र.

रू. भे.—समोसर, समोसरि।

समीह-सं. स्त्री. [सं. समीहा] श्रेष्ठ अभिलाषा, सुकामना।

उ०—जीतै रण पै'ला जरे, सुरपुर वसण समीह। किम सेवा वणणी कहौ, दासी विण चउ दीह।—वं. भा.

समुंद, समुंदर, समुंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ दिनकर बाहण देह, पाहण फूटै पोड़ सूं। 'जेहल' साहण जेह, माहण समुंद समपिया।—बां. दा.

उ०—२ मेवै तो पाव समुंदर सात, निरंजन गात नमो निरगात।

—ह. र.

उ०—३ पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पौहच्याइ। जोबन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ।—ढो. मा.

समुंदो—पूरा, समस्त।

उ०—वसी समुंदो रजपूत वांणीया वसै।—नैणसी

समु—देखो 'समो' (रू. भे.) (उ. र.)

समुक्ख, समुख, समुखी-क्रि. वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ हुय हक्क किलक्क समुक्ख हलां, भयकार घड़ी वण वार भलां। सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग ढंढेहड़ फाग जदै।—रा. रू.

उ०—२ अर प्रामारां रा वैर माथै अब चहुवाणां री चक्र अरवुदा-चळ री सरणी रै समुख पाधरो ही धकावै छै।—वं. भा.

सं. स्त्री.—२ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु और तीन सगण अथवा एक नगण दो जगण और लघु गुरु का क्रम होता है।

समुचित-वि. [सं.] १ वाजिब, उचित।

उ०—विड दहण जिण थी त्रिया, मावी प्रथम भलो न। है समुचित मावी हुवां, सही विफळ व्है सो न।—वं. भा.

२ उपयुक्त, योग्य ।

समुच्चय-सं. पु. [सं.] १ समूह, राशि, ढेर। (डिं. को.)

२ साहित्य का एक अलंकार विशेष जहाँ अनेक पदार्थों का समूह एक समय में एक साथ होना वर्णित हो।

समुच्चयबोधक-सं. पु.—व्याकरण के अन्तर्गत अव्यय का एक भेद जो दो शब्दों या उपवाक्यों को जोड़ता है।

समुझणौ, समुझबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—किता हुआ दिग्गज कवि, समुझणहार सु असेस ।
—अग्यात

समुझणहार, हारौ (हारी), समुझणियौ –वि० ।

समुझिओड़ौ, समुझियोड़ौ, समुझ्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

समुझीजणौ, समुझीजबौ—कर्म वा० ।

समुझाणौ, समुझाबौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—फेर आहीज स्त्री आपरै पती नै समुझाय नै कहै छै ।
—वी. स. टी.

समुझाणहार हारौ (हारी), समुझाणियौ—वि० ।

समुझायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समुझाईजणौ, समुझाईजबौ—कर्म वा० ।

समुझायोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझायोड़ी)

समुझावणौ, समुझावबौ—देखो 'समझाणौ, समझावौ' (रू. भे.)

उ०—प्राची मैं पुत्र नूं भेजि आवाची कूं आवतां दो ही पुत्रां नूं समुझावण सांम्हैं जावता पातसाह नूं पेलि तिण रौ वडौ पुत्र साहस रै सहाय पहली कहिया कटक रै साथ दरकूंचां दक्खिण रै अभिमुख चलायौ ।—वं. भा.

समुझावणहार, हारौ (हारी), समुझावणियौ—वि० ।

समुझाविओड़ौ, समुझावियोड़ौ, समुझाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समुझावीजणौ, समुझावीजबौ—कर्म वा० ।

समुझावियोड़ौ—देखो 'समझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझावियोड़ी)

समुझियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समुझियोड़ी)

समुदय, समुदाय-सं. पु. [सं. समुदयः, समुदायः] १ समूह, झुंड ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ गया स्राद्ध तीरथ ग्रहण, सरव परब समुदाय । है सारा इण हाथ मैं, हलै तौ हाथ हलाय ।—ऊ. का.

उ०—२ जग मैं बांछै जीवणौ, सब प्रांणी समुदाय । हर कर नर उणनूं हरै, जुलम कह्यौ नहीं जाय ।—बां. दा.

२ युद्ध, संग्राम । (ह. नां. मा.)

समुद्द, समुद्र-सं. पु. [सं. समुद्रः] १ पृथ्वी पर स्थल भाग को घेरने वाली विशाल जल राशि, समुद्र, सागर । (ड. र.)

उ०—१ सजण गुणां समुद्द तूं, तर तर थकी तेण, अवगुण एक न सांभरइ, रहूं विलंबी जेण ।—ढो. मा.

उ०—२ अकबर समुद्र पर आवियौ, साह सहूंसां आठ सिर । जीपणौ पांण जगपत्तरै, और मांण सोई अथिर ।—रा. रू.

उ०—३ मणुयजनमि सावयकुल सार, भव समुद्द जिणि लाभइ पार ।—जयसेखर सूरि

पर्याय०—अंब, अंबधि, अंबहर, अकुपार, अचळ, अणथाग, अण-थाह, अतहर, अतेरुद्रववण, अतीर, अथग, अमोघ, अरणव, अळियळ, अलील, अहिलोळ, आच, उदधि, उधारणकमळ, खीर-दधि, गंभीर, गौडीरव, चड़वत, जळधि, जळनिधि, जळपति, जळराट जादपति, दरियाव, नदीईसवर, निधूवर, नीरोवर, पतिजळ, पदमापित, पदमालय, पयध, पयोधर, पयोनध, पाथोद, पारावार, बानरधी, बारध, वारहर, बोहत, मकराकर, मगरघर, मछपति, मथण, महण, महरांण, महासर, महोदर, रतनकर, रतनागर, रेणायर, लखमीतात, लवणोद, लहरीरव, वारनिधि, वेळावळ, व्याकुळ, सफरीभंडार, सर, सरतअधीस, सरवर, सरसवांन, सरि-तापति, सागर, सिंधू, स्रोतपत, हीलोहळ ।

रू. भे.—संमंद, संमद, संमुद्र, समंद, समंदर, समंदो, समंद्र, समद, समदर, समद्ध, समद्र, समुंद, समुंद्र, समुदर, समुद्र, सम्मद, सांमंद, सामंद्र ।

अल्पा.—समदरियौ, समुदरियौ ।

२ शुभ रंग का घोड़ा ।

समुद्रक-सं. पु.—शृंगार में एक आसन विशेष ।

समुद्रकांता-सं. स्त्री. [सं] नदी, सरिता ।

समुद्रचुलुक-सं. पु. [सं.] अगस्त्य ऋषि का नाम ।

समुद्रजा-सं. स्त्री. [सं.] लक्ष्मी ।

समुद्रजात्रा-सं. स्त्री. [सं. समुद्रयात्रा] समुद्र मार्ग से जहाज द्वारा किया जाने वाला आवागमन ।

समुद्रनेमि-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी ।

समुद्रफीण, समुद्रफेण, समुद्रफेन-सं. पु.—समुद्र की लहरों का भाग जो औषधि में काम लाया जाता है । (अमरत)

रू. भे.—समंदफेण ।

समुद्रमथन-सं. पु. [सं.] एक दानव का नाम । (पुराण)

समुद्रमेखळा-सं. स्त्री. [सं. यौ. समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि ।

समुद्रलवण-सं. पु.—समुद्र के जल से तैयार किया जाने वाला करकच नामक लवण ।

समुद्रवेग-सं. पु. [सं.] स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

समुद्रव्यूह-सं. पु.—सेना का एक प्रकार का व्यूह ।

रू. भे.—समंदव्यूह ।

समुद्रसुत, समुद्रसुतन-सं. पु. [सं.] १ चंद्रमा, चाँद ।

२ अमृत ।

३ [illegible] ।

रू. भे.—[illegible] ।

समुद्रसेन, समुद्रसेन—सं. पु. [सं. समुद्रसेन] १ पांडववंशीय एक राजा जो चंद्रसेन नामक राजा का पिता था ।

२ कौरव पक्षीय एक राजा जो कालेय नामक दैत्य का वंशज था ।

समुद्रस्थली—सं. पु. [सं. समुद्रस्थली] समुद्रतट पर स्थित एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

समुद्राभिसारणी, समुद्राभिसारिणी—सं. स्त्री. [सं. समुद्राभिसारिणी] समुद्र की सहचरी एक देवबाला ।

समुद्राव—[सं. समुद्राव] युद्ध से पलायन, लड़ाई से भागने का भाव या क्रिया । (हि. को.)

समुद्रोन्मादन—सं. पु. [सं.] स्वामी कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

समुल्लसन—सं. पु. [सं.] सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं से उल्लास प्रकट करने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

उ०—सीन क्रमण समुल्लसन त्रिपदी आस्फालन बाहुसंस्फोट गलि गर्जित साहसिक, रणरसिक ससरंभ मोच्छेद्रक ।—व. स.

समुह, समुहा, समुहे—क्रि. वि. [सं. सम्मुख] १ सामने, सम्मुख । (डि. को.)

उ०—१ ससकर सां हदपात सा, नौरंगखांन पठांण । एता समुहा आविया, चिमनी आद जवांण ।—रा. रू.

उ०—२ कठठो वे पटा करे, काळाहणि समुहे आंमहो सामुहे । जोगिणि धार्या आटण जांणे, वरसे रत वेपुड़ी वहे ।—वेलि

२ देखो 'समूह' (रू. भे.)

समूंचो, समूंचो वि. (स्त्री. समूंची, समूंची) १ पूरा, समस्त, कुल ।

उ०—१ अरण भांजू गज गिळूं, समूंचो वो लुवार । घोड़ो पाड़ू पाखरचो, मूं वगड़ी असवार ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ रायांसान राजा के समूंचा पूत बारा, ना ओलाद रैगा पांच भातां का पसारा ।—शि. वं.

उ०—३ मरे स्याम सामलरे सूरम, सह तो वाला लखण समूंचा । यां सम हिमें जेम नह पावें, कठठ मही आवे दर कूचां ।—र. रू.

उ०—४ सूवा बादिसाही का समूंचा भोग दीनी । दोनूं दीन राह माल दीनी मो न लीनी ।—शि. वं.

उ०—५ सगळ गैहणा तोड़ै चावड़ां विण दीधा । सो महाराजा जिणनै समूधा दीधा नै म्हारा बेटा नै एक ही रीझ दीधी नहीं ।

—जगदेव पंवार री बात

समूंह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

समूनी—सं. स्त्री. [सं. सीमन्तिनी] स्त्री । (अ. मा.)

समूरत, समूरतो, समूरथ, समूरथो—सं. पु. [सं. स + मुहूर्त + रा. प्र. ओ.] श्रेष्ठ मुहूर्त, अच्छा समय ।

उ०—१ जिण दिन डोरो जी रैं चढण रो समूरतो हो टळगयो नर कंवरजी महल पधारिया ।—डो. मा.

उ०—२ विरध वधाई नांव, समूरथ सास सगाई । व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई ।—दसदेव

समूळ, समूल—वि. [सं. समूल] १ सब, समस्त ।

उ०—१ सूरज किरणां चाव में, फूटी कळी समूळ । सूआं दीसी सामनै, लागी हिवड़ै सूळ ।—लू

उ०—२ बावरैल बाजूपुरी सोनेरी सादूळ, (और) केसरी ऊंठिया मिल पटैत (समूळ) ।—अ. मा.

२ पूरा, अखंड ।

वि.—१ जड़ सहित, जड़मूल सहित ।

उ०—१ अद्द भू मद्द समूळ उपाडता, भद्रजाती गुडै सूंड भंगाडता ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ जिहं घर निंदा साधकी, सो 'घर गये' समूळ । तिनकी नींव न पाइयै, नांम न ठांव न धूळ ।—दादूवांणी

उ०—३ कावलीए आताळीया अनंगे ग्रेराकी, अख समूळा ऊपड़ै कुछ रहे न बाकी ।—माली सांदू

२ कारण सहित ।

३ सब का, सभी का ।

रू. भे.—सम्मूळ ।

मह;—समूळो ।

समूळो—देखो 'समूळ' (मह; रू. भे)

उ०—१ आ बात कैय सेठ वळै जोर सूं हंसिया । जांणै इण बोला मूंडा रै पांण तो समूळा सूरज नै ई गपाक करता गिट जावैला ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ भूम चाळ दिसां भाळ, महावणी दीपमाळ, समूलो उठाय वह्यो, ओसधी समेत ।—र. रू.

उ० – ३ रूंख समूळो काटीयो, काट कियो निरलंग । हरीया इन अपराधीयै, कसक न आंनी अंग ।—अनुभववांणी

उ०—४ पछै थोड़ो आपो संभाळ वा आपरै पगां में लुटता बाळ कन्हैया नै देख्यो तो दुनिया रो वो समूळो सुख अर हरख कांनां रो सरणो छोड़, आंख्यां रै सरणै आयो ।—फुलवाड़ी

उ० – ५ चोमासा रो भरपूर आड़ंग । जांणै समूळी धरती किणी लांठी भट्टी माथै उकळै ।—फुलवाड़ी

उ० —६ मूठ तो अजगर रै आंटां री गळाई उणरी समूळी देह माथै पळेटीजग्यो ।—फुलवाड़ी

उ०—७ दाळद घणो ई नट्यो पण राजा नीं मांन्यो सो नीं मांन्यो । कह्यो कै अैड़ी राजकंवरी रै हथळेवै समूळो राज सूंपै तो ई थोड़ो ।

—फुलवाड़ी

(स्त्री. समूळी)

समूह, समूहु—सं. पु. [सं. समूह] १ सेना, फौज, दल ।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ समूहं सुभट्टं गुढै गज्ज थट्टं, दळाकार दौडं तुरां वाज

पोडं ।—गु. रू. बं.

उ०—२ जिकौ सुणि सांखलै वीरमदेव आपरा स्वामी नूं पयादौ जांणि चांमुडराज सिंहदेव प्रमुख सांमंतां री समूह रोकण रै काज आडौ आय वाजी रा वेग री चक्रवाळ तांणियौ ।—वं. भा.

२ ढेर, राशि । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—अर अरबुद रा दुरग रै माथै संगर री सांमग्री री समूह चाढियौ ।—वं. भा.

३ झुंड । (अ. मा; उ. र; डिं. को.)

उ०—तुरां उखरंब, उडंत दिडंब, अंधार उधोळ, धारा धमरोळ । कटक्क कांधार, समूह सेलार, पयांण करंत, मेल्हांण दियंत ।

—गु. रू. बं.

४ बाहुल्य, आधिक्य ।

उ०—लखमी जु रुखमणी जी स्रीक्रस्ण जी का हरख आणंद का समूह माहै मगन होय रहै छै ।—वेलि टी.

५ सनातन विश्वदेव का नाम ।

पर्याय.—अनंत, अपार, औघ, कंदळ, कटक, कदंब, कनिचय, कलाप, कुरंभ, कुल, गण, ग्रांम, घणां, चक्र, चय, जाळ, जूथ, जूह, झुंड, झूळ, झूल, तोम, थाट, थोक, निकरंब, निकर, पटळ, पटल, पूग, पूर, प्रकर, प्रकार, फतूह, बहु, बहू, बौहळ, ब्रज, विध, व्यूह, व्रज, संघात, संचय, संदोह, संहति, सघण, समाज, समुदय ।

रू. भे.—संमुह, संमूह, समुह, समुहै, समुहौ, समूंह, सम्मूह ।

समें, समे—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ तिण कालै नै तिण समें रे पारस्व संतानिया साध ।

—जयवांणी

उ०—२ तैण समै सोक घणां आदर सुंनमान सूं मळै, सांछा सा समीचार पूछिआ ।—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

समेगी—देखो 'संवेगी' (रू. भे.)

समेजोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रै समेजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुरांणिक आयौ बडा बडा ग्रंथा री समुद्र सौ पार दरसायौ ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

समेटणौ, समेटबौ—क्रि. स.—१ मारना, संहार करना ।

उ०—आयौ गढ हूंतां अमर, सत्र हूंर करै सिंघार । सात हजार समेटिया, घायल आठ हजार ।—रा. रू.

२ कम करना, थोड़ा करना ।

उ०—लखि अचरज्जै कोप व्रप, वरण कुवेर सुरिंद । लाज समेटै सोर की, आज मुरद्धर इंद ।—रा. रू.

३ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना । (उ. र.)

४ क्रम या तरतीब से लगाना ।

५ काम पूरा या समाप्त करना ।

समेटणहार, हारौ (हारी), समेटणियौ—वि० ।

समेटिओड़ौ, समेटियोड़ौ, समेट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समेटीजणौ, समेटीजबौ—कर्म वा० ।

संवटणौ, संवटबौ, संवेटणौ, संवेटबौ, समटणौ, समटबौ, सांमटणौ, सांमटबौ, सांवटणौ, सांवटबौ, सिमटणौ, सिमटबौ—रू० भे० ।

समेटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ कम किया हुआ, थोड़ा किया हुआ. ३ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा किया हुआ. ४ क्रम या तरतीब से लगाया हुआ. ५ काम पूरा या समाप्त किया हुआ ।

(स्त्री. समेटियोड़ी)

समेडी—सं. स्त्री.—स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

समेत, समेति, समेती—सं. पु. [सं. समेत] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

वि.—१ संयुक्त ।

२ साथ, सहित ।

उ०—१ सेठां सूं तौ पाछौ चुस्कारौ ई नीं व्हियौ । लप बिछावणां समेत गांठड़ी करनै खाडाबूच कर दियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ होय कै निकासी बनौ बंधवां समेत हल्यौ, ऊभल्यौ सांमुद्र सेनां हलीतौ उदार ।—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ टूंक समेती भूमि गढ लूटन का दाया, करि समझासि नवाब को सबनै समझाया ।—ला. रा.

उ०—४ सो उठारै अधीस दलै नांमै जोइयै आपरा वैभव समेत आधी अवंनी दै ।—वं. भा.

उ०—५ अर अनामय पूछण री व्याज करि पिता नूं बडा भाई दो समेत मारि साह होण री संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरंग चमू चलाई ।—वं. भा.

समेध—सं. पु. [सं.] मेरु पर्वत का एक भाग ।

समेर—देखो सुमेर' (रू. भे.)

उ०—रसविलास का यंद, वचन का हरचंद, समेर का भार, कुमेर का भंडार ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

समेळ—वि.—१ मिश्रित ।

२ युक्त, सहित ।

उ०—जवनां समेळ दळ तुरंग जुंग, तिण वार मिळै नह टळै तुंग ।

—रा. रू.

३ साथ ।

४ एकत्रित ।

५ देखो 'सिंवळ' (रू. भे.)

समेळण—देखो 'सम्मेलन' (रू. भे.)

समेळौ—वि.—१ साथ, शामिल ।

उ०—१ मगरै 'राजड़' 'जगड़' समेळा, 'सांमळ' नाहरखांन सचेळा ।—रा. रू.

उ०—२ साख साख सुर असुर समेळा, अवधगिर साहै अडर ।

सिर मनमत सिरा गमायत, सूगो सागर समर घर।

—महाराजा करणसिंघ

३ एकत्रित इकट्ठा।

उ०—इस मनमत सूरो मदूलायो, महि जांणे कूकळ तक मायो। निडिया वांक सुरा सिम मेळा, मोर मगन फिर घणा समेळा।

—रा. रू.

३ मेळ रखने वाला, मित्रता रखने वाला।

उ०—१ है दमन गज मस्त सुभट रण रत्त समेळा, देस देस देसोत साथ कमधज समेळा।—रा. रू.

उ०—२ घटी लाज घांघल संग्रांम वेळा, महाराज रै काज सीची समेळा। हूमां राड़ खागे वधे पाडिहारं, वधारे संभारे घणो वार दारं।—रा. रू.

उ०—३ माटी विण आया दळ मेळा, मांण घणा चहुवांण समेळा। गरसो जोर हुवो पतसाहै, मंद विगो पड़ियो घर मांहै।—रा. रू.

४ मुक्त, सहित।

उ०—नगनर घर नायरां, मिळे पायकां समेळा। मेवा जेसळ मिळे, ठर कपा समेळा।—सू. प्र.

५ बराबर, तुल्य।

६ देखो 'सांमेळो' (रू. भे.)

समै—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ तिण समै पंवारे गायां लीवी। तरै पड़िहार गोहिल मेळा हुय बाहर चढ़िया।—नैणसी

उ०—२ गींगड़ियां ऊगण समै, बाछड़ुवां री वंक। खवर पड़ै घुर गोतगी, औ तो मारै ग्रंक।—बां. दा.

उ०—३ आधी रात री समै हुती।—नैणसी

उ०—४ संध्या समै रावजी महिलां पधारिया तरै अपछरा मुजरो करनै सीख मांगी।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—५ मनछा परब्रह्म हिंगोळ माता, समै सात पोरां रमै दीप माता। जंबू दीप मैं जांम एको जिकांरो, दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारो।—मे. म.

२ देखो 'सम' (रू. भे.)

उ०—कंठ पोत कपोत कि पहुं नीळकंठ, वहगिरि काळिंद्री वळी। समै भाग किरि संत संमघर, एकणि ग्रहियो ग्रंगुळी।—वेलि

समैरत-वि.—एकत्रित।

उ०—विध विध महेली बाडियां छाजै छै। आंबा, खजूरि, केळा नारेळ राजै छै। विमना सूहारा दाख बिदांमां समैरत की छै।

—बगनीरांम प्रोहित री वात

समैचो—देखो 'ममद' (रू. भे.)

उ०—हाको म्हारो महिलां ए जांनोजी रा मेळा मैं। आज री समैचो म्हारा जमैसर रो मेळे घालो।—लो. गी.

समोद-वि.—सर्व सहित।

रू. भे.—सम्मोद।

समोदनी-सं. स्त्री. [सं. समुदायिनी] सेना, फौज (ह. नां. मा.)

समोपणो, समोपबो—१ देखो समपणो, समपबो' (रू. भे.)

उ०—१ एक स्थाल विसाल वाटुली सीप कचोलां भृंगारादिक भाजन सरवे समोपइ...... ..।—व. स.

उ०—२ पुत्ति भतारिहि देवी प्रति घणु ं मनावी, पूत्तु समोपीउ सप आपणि नवि आवी।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हारु समोपीउ नरवरह्न सतीय रेसि ग्रनु कमलु लिद्धऊ।

—सालिभद्र सूरि

समोपणहार, हारो (हारी), समोपणियो—वि०।

समोपिओड़ो, समोपियोड़ो समोप्योड़ो—भू० का० कृ०।

समोपीजणो, समोपीजबो—कर्म वा०।

समोपियोड़ो—देखो 'समपियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समोपियोड़ी)

समोबड़, समोबड़यो, समोभर—१ देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—मन महरांण समापण मोजां, कापण दीनां चा कुरंद। दीजै किसो समोवड़ दूजां, पेखे चकत रहै पुरंद।—र. रू.

२ देखो 'समोवड़ियो' (रू. भे.)

उ०—करनी मुख सूं यूं कह्यो, रख करंड सकट पर। करंड कियो गिर भेरू कह ब्रह्मांड समोभर।—जुझारसिंह मेड़तियो

समोभरम, समोभ्रम, समोभ्रमी—देखो 'संभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ 'सेग' समोभ्रम 'थांनसी', भंडारी 'विजराज'। सकत-सिंघ 'चांपा'हरो, कमधज मुदै सकाज।—रा. रू.

उ०—२ मांनसिंघ धिन धिन मेवाड़ा, अत प्रब भीम तणो अव-सांण। जोळा हुवै घणा नर जीवा, भेळो हुवो समोभ्रम 'भांण'।

—दुरसो आढो

उ०—३ धारू जळ 'जोध' समोभ्रम धींग, सूरां तळ पूर करै रायसींव।—सू. प्र.

उ०—४ दांनै लख कोडी दियण, जुडि जीपण रिण जंग। सूरज-सिंघ समोभ्रमी, दूजो 'गंग' अभंग।—गु. रू. बं.

उ०—५ मरद पवसाख भूसण कड़ा मूंदड़ी, कंठ डोरो मुरति लवंग कांनां। तेमड़ा समोभ्रम खुद्द गेढा तणो, थांन जाहर थयो राज थांनां।—मे. म.

समोयोड़ो—देखो 'संमोहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. समोयोड़ी)

समोवड़—देखो 'समवड़' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ तां मैं एक गयंद है, मेर समोवड़ गात। रिण वेळा रावत विहद, गिणै अरि तिलमात।—गज-उद्धार

उ०—२ सूर समोवड़ सूर री, सकै न कर संभार। तू न कटै समहर तिया, नगन परजळै लार।—रेंवतसिंह भाटी

२ देखो 'समोवड़ियो' (रू. भे.)

समोवड़ियौ—वि.—१ समानता वाला. बराबर का। (डि. को.)
२ देखो 'समवड़' (रू भे.)
रू. भे.—समोवड़ियौ, समवड।

समोवण, समोवर—देखो 'समवड़' (रू. भे.)
उ०—१ कोड तेतीस सुर श्राय केळां करै, श्रमिरा मारमैं फुल श्राणंद। सोहियौ गाज करतौ श्रसौ राजसर; समोवण हुश्रा जण सात सांमंद।—जोगीदास कवारियौ
उ०—२ इंद्र समोवर जांणीयै, रिद्धि करी राजांनौ रे। गुनह खमैं निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै वांनौ रे।—वि. कु.

समोवणौ, समोवबौ—देखो 'संमोहणौ, संमोहबौ' (रू. भे.)
समोवणहार, हारौ (हारी), समोवणियौ—वि०।
समोविश्रोड़ौ, समोवियोड़ौ, समोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समोवीजणौ, समोवीजबौ—कर्म वा०।

समोवियोड़ौ—देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समोवियोड़ी)

समोवसरण—देखो 'समवसरण' (रू. भे.)
उ०—धन कृतारथ ते नर नारि, जे वरतइं जिणधरम मझारि। समोवसरणि प्रभ करइं वखांण, तीह नी प्रसंसा महाविदे जांण।
—वस्तिग

समोसर, समोसरि—सं. पु.—१ श्रेष्ठ श्रवसर, मांगलिक श्रवसर।
उ०—सुंडादंड श्रहेस. राग रीझेस समोसर। वणि सिंदूर चित्रवेस, धार मदवेस पडै धर।—सू. प्र.
२ देखो 'समीसर' (रू. भे.)
उ०—१ श्रयौ रथ वैसि समोसर इंद, वसै सुरधांम श्रपच्छर वींद।
—सू. प्र.
उ०—२ चांपावत 'रांम' 'हरी' घर चोख, समोसर नाहरखांन सरोख।—रा. रू.
उ०—३ सहस तेर श्रसवार, सीह सादूळ समोसर। बीस गयंद वेछाड़, निहंस पावस गिर नीझर।—सू. प्र.
उ०—४ सांकणी डाकणी सकति, सकति चवसठी समोसरि। समळ महासिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

समोसरणौ, समोसरबौ—क्रि. श्र.—श्राना, पधारना।
उ०—१ 'वीत-भय' पाटण समोसरै, भगवंत स्रीमहावीर। भाव सहित सेवा करूं, रहूं जिणां रै तीर।—जयवांणी
उ०—२ नेमि जिणिंद समोसरचा, वांदिवौ गयउ वासुदेवौ जी। दंढण कुमर साथि गयउ, सहुवांदी करइ सेवौ जी।—स. कु.
उ०—३ समोसरचा स्वांमी सेत्रुंज गिरि, जिनवर पूरव निवांणु वार। समयसुंदर कहै प्रथम तीरथंकर, श्रादि नाथ सेवौ सुखकार।
—स. कु.
उ०—४ इण प्रस्तावै समोसरचा केवलधार मुणिंद।—वि. कु.
उ०—५ नगर नै समीपै वन मैं समोसरचा रे, हो साधु सहित भरपूर।—वि. कु.
समोसरणहार, हारौ (हारी), समोसरणियौ—वि०।
समोसरिश्रोड़ौ, समोसरियोड़ौ, समोसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
समोसरीजणौ, समोसरीजबौ—भाव वा०।

समोसरियोड़ौ—भू. का. कृ.—श्राया हुश्रा, पधारा हुश्रा।
(स्त्री. समोसरियोड़ी)

समोसी—सं. स्त्री.—बलवती।
उ०—जपै जनम गुण पूरण जोसी, सुर पुजा हुव थई समोसी।
—रा. रू.

समोसौ—सं. पु.—१ मैदे की रोटी छुने हुए मांस के छोटे टुकड़ों को मसालों के साथ डालकर तेल में तल कर बनाया जाने वाला मांस जो नमकीन एवं स्वादिष्ट होता है।
उ०—१ सावडदी समोसा मांस सूळा भांति न्यारी, दारू पीय बैठा थाळ श्राबा की तयारी।—शि. वं.
उ०—२ नांन्हो छुनियौ मांस मंदी श्रांच कढाई मैं तळजै छै। वेसवार मसाला घात उहां मांडां मैं घातजै छै। तठा पछै मांडा गूंथ समोसा वणाय तळजै छै।—रा. सा. सं.
२ मैदे की छोटी पतली रोटी में मसालों के साथ प्याज श्रालू श्रादि डाल कर बनाया जाने वाला त्रिकोणात्मक नमकीन खाद्य पदार्थ।

समोह—सं. पु. [सं.] युद्ध, संग्राम।
वि.—१ मोहित।
२ मूर्छित,।
उ०—घडी बिच्यारी घणउं दल, थोभ्यउं वीर वावरइ लोह। तुरक बचा मूंगल कर कटीया, ऊपर पड्या समोह।—कां. दे. प्र.
रू भे.—सम्मोह।

समोहणौ, समोहबौ—देखो 'संमोहणौ, संमोहबौ' (रू. भे.)
समोहणहार, हारौ (हारी), समोहणियौ—वि०।
समोहिश्रोड़ौ, समोहियोड़ौ, समोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समोहीजणौ, समोहीजबौ—कर्म वा०।

समोहा—सं. पु.—एक वर्णिक व्रत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पांच गुरु वर्ण होते हैं।

समोहियोड़ौ—देखो 'संमोहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. समोहियोड़ी)

समौ—सं. पु. [सं. समा] १ वर्ष, साल।
उ०—१ नमो देस मारू धरा कोट नोवां, नमौ द्रंग गेढां कलां खुरद दोवां। प्रणम्मो समौ च्यार छै नौ पहोमी, नमौ मास श्रासाढ री सुक्ल नोमि।—मे. म.
उ०—२ सक चन्द्रदह सत्र हूं समा, लागौ इम जय लेर। मारि खळां लीधी महू, दळां पराभव देर।—वं. भा.
२ श्रध्याय, प्रकरण।

३ [illegible]।
४ [illegible] (मन्दी) बंदर की मना [illegible] का स्वरित।
५ [illegible], मौना।
उ०—मई पावरी वात मांड रही। नै देवराज रा हुजदार तिण [illegible] हुआ तिण मत्तो समो जोय नै धार रा मुहता नूं [illegible] नूं [illegible]।—नैंणसी
वि. (स्त्री समी) १ समान, तुल्य, बराबर।
उ०—१ सांसी समो न ऊजळो, चनण समो न काठ। देवी समो न देवता, गीता समो न पाठ। —ग्रग्यात
उ०—२ पग-नखि पद्म-प्रभा करि, रत्न कमल परि रंग। नग [illegible] पाहनी समो, प्रंगुली पै मम नंग।—मा. कां. प्र.
उ०—३ जग मैं बन उप गुण जोई, कत रवि वंस समो नह कोई।
—रा. रू.

२ सीधा, सरल।
उ०—सीग सो नाग न हुवें समा, मोटी जड रा गूंठीया। पारकी निंद करता प्रगट, धरमी किहां सी ढूंढिया।—ध. व. ग्रं.
३ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल।
उ०—अई सघु वेम ग्रादेम तो ग्रागळी, मन समो क्यां ग्रप राखवै मेळा।—द्वारकादास दधवाड़ियो
४ जैसा।
उ०—सरव जगत रा जीव मारघां एक समो संसार वधै नहीं। सरव जीव नी दया पाल्यां एक समो संसार घटै नहीं।—मि. द्र.
५ जिसमें फेर या घुमाव न हो, अवक्र, सीधा।
उ०—महज मिटै न सदीव, टेव यो जाद न टलीयें। स्वांन पूंछ न रहै समो, नित भरि राखो नलीयें।—ध. व. ग्रं.
क्रि. वि.—१ होते ही।
उ०—१ कर हाक रीठ देतो कहर, वीर डाक वगां समो। ग्रण-भंग जोम रयड़ियो ग्रनड़, कूद बीच पड़ियो 'कमो'।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ वूठो क ग्रमण रुठो संकर, सीह विछूटो हुक समो। फूटो क सिंघु तुटो गयण, कोट कूद जूटो 'कमो'।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ ऊपर, पर।
उ०—तादरा रामचंद दूदै कहियो—तूं म्हारै माथै समो है तूं भवाई नूं दाव।—नैणसी
३ में, पर।
उ०—१ ग्रावर सूं मिळतां समो कहियो तहवर खांन। ग्राज न को जग ग्रापरै, 'सांगण' 'दुरग' समान।—रा. रू.
उ०—२ उणरै मांहै तीतर उनर ग्रो बोलीयो, सु ग्राकरो बोलीयो। बोलतां समो कह्यो, 'कायजो मतां डाळो। तीतर कठै बोलीयो छै [illegible] करो।'—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
उ०—३ ननमांन प्रथम मिळतां समो, ग्रौर गिरां कुण ग्रप्पियो। ग्रसानी गात परसै 'ग्रभो', सब गुजरात समप्पियो।—रा. रू.
उ०—४ इम कहतां समो रायपाल कह्यो, 'ठाकुरै ग्रमल करो'।
—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
४ तक, पर्यन्त।
उ०—ऊ सेजड़ो मरद री ताळ समो छै।—नैणसी
५ सामने, सम्मुख।
उ०—जदुनाथ काळी समो बाथ जोडै, धणी भोम घाली घड़ी वात धोडै।—ना. द.
६ ज्यों ही।
उ०—मिळै चोट सामो समी दोट माथै, हुइ दुज्ञ मल्लां तणी हेल हाथै।—ना. द.
७ देखो 'समय' (रू. भे.)
उ०—१ इणी समै तिको रात ग्राधी रो समो छै तिको राजा रै कांन सुर पड्यो। - जगदेव पंवार री वात
उ०—२ ग्रठै समो फिर ग्रंतक पायो। याघ ग्रचित किणहि वत-ळायो।—रा. रू.
रू. भे.—संमो, संवो, समां, समु, सुंवो।
ग्रल्पा.—समयो, समियो।
सम्म–वि. [सं. श्याम] काला, श्याम।
उ०—विनै जड़ाव बाजुबंध, सम्म पाट सोहिया। त्रिखंड साति जांणि स्रप्प, मैंण धार मोहिया।—सू. प्र.
सम्मत–स. पु. [सं. सम्मत] १ इकरारनामा, कौल, करार।
२ राय, सम्मति।
उ०—१ स्वांमी रा सम्मत विहूण भी जोईयां तिकण नूं मारण चढ़ै।—वं. भा.
उ०—२ सो स्वांमी रै सम्मत हुवां तो इसड़ो कवण सो मोनूं जाति रै बहिरगत करै इण कारण एक ग्रापरो ही ग्रातंक ग्रांण डरूं।—वं. भा.
३ विचार।
उ०—इसड़ो सम्मत करि काळ रा खेंचियां प्रेतपति री पुरी रा पाहुणां होइ हुकम रै प्रमांण तत्काळ ही लेख करि मिलाई दीधो।
—वं. भा.
सम्मति–सं. स्त्री.—१ सलाह, राय।
२ अनुमति।
३ अभिप्राय।
रू. भे.—समति।
सम्मद–सं. पु. [सं.] १ एक बहुत बड़ा मत्स्य रत्न जो अपने विशाल परिवार सहित जल में रहता था। इसी पारिवारिक सुख को देख कर सोमरि ऋषी विवाह करने के लिए उत्सुक हुए थे।
२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—पित्थल इम आयौ परणि सम्मद पायौ साम ।—रा. रू.

सम्मन–सं. पु. [अ. समन] एक प्रलेख जिसमें न्यायालय किसी व्यक्ति के नाम आदेश जारी करता है कि वह न्यायालय में उपस्थित हो ।

क्रि. प्र.—आणौ, भेजणौ, मिळणौ ।

रू. भे.—समन ।

सम्मर–सं. पु.—१ वैभव, ऐश्वर्य ।

उ०—वप सोच कंप सम्मर विरह, करै संकोच फकीर रौ । कारण अथाह वरणै कमण, उर दुख दाह अमीर रौ ।—रा. रू.

२ देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—१ असुरां दिस लिख एम, करै दळ सबळ भयंकर । पवंग पूर पाखरां, सूर सिलहां बळ सम्मर ।—सू. प्र.

उ०—२ देवौ सेवै सकति दिनंकर, सांमि कांमि चाहंतां सम्मर ।
—रा. रू.

३ देखो 'स्मर' (रू. भे.)

सम्मरदण, सम्मरदन–सं. पु. [सं. सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के पुत्रों में से एक ।

सम्मळा–सं. स्त्री.—देवी विशेष ।

उ०—देवी कालिका कूबजा कांम कांमा, देवी रेणुका सम्मळा रांम रामा ।—देवि.

२ चील ।

उ०—जंबक जख प्रघळ मिळिया सम्मळ, होऊं हूकळ रत हिळै । डाइणि भख डळ डळ चूंपै चळवळ, पळ भैरव वळ वळ भूत भिळै ।
—गु. रू. बं.

३ यमुना ।

वि.—श्यामवर्ण का ।

रू. भे.—समळा ।

सम्मवणौ, सम्मवबौ—देखो 'समाणौ, समाबौ' (रू. भे.)

उ०—काळउ कोटा कारणइ, विढिवा वीरति वाइ । ससमथ जरदि न सम्मवइ, असुराइ थट्टि न माइ ।—रा. ज. सी.

सम्मसेर—देखो 'समसेर' (रू. भे.)

उ०—वहै सम्मसेरं, झरै झट्ट फेरं । कटै आच ओणं, रडै रत्त सोणं ।—गु. रू. बं.

सम्मांण, सम्मांन–सं. पु. [सं. सम्मान] आदर, प्रतिष्ठा ।

रू. भे.—समांण, समांन ।

सम्मा–वि.—१ समान, तुल्य ।

उ०—देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साच तणा मेळिया जोग सम्मा ।—देवि.

२ देखो 'समा' (रू. भे.)

सम्मास–वि. [अ. शम्मास] सूर्य के पुजारी, सूर्य-पूजक ।

सम्मुख, सम्मुह–वि. [सं. सम्मुख]सम्मुख, समक्ष ।

उ०—१ बीरां सम्मुह वेग, पूंछ पटकै मंडळ मित । एकण खीची आइ सबळ, कीधा खळ संकित ।—वं. भा.

उ०—२ बंधव विजौ पलटि खळ वणियौ, अकवरदळ, सम्मुह ऊफणियौ । सो 'सुरतांण' हणै फौजां सह, अव्वू विदित कियौ रण आग्रह ।—वं. भा.

सम्मूढ–वि. [सं.] १ मोह युक्त ।

२ टूटा हुआ, भग्न ।

३ ढेर लगा हुआ ।

सम्मूळ—देखो 'समूळ' (रू. भे.)

उ०—हुवै हैमरां हूह सम्मूळ हल्लै, चली फौज गै-जूह पाहाड चल्लै ।
—गु. रू. बं.

सम्मूह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—वाराह धडक्कै दाढ खडक्कै, कंध कडक्कै कूरम्मं । सम्मूह सळक्कै कूंत वळक्कै, खैंग खळक्कै कंजम्मं ।—गु. रू. बं.

सम्मेटणौ, सम्मेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—दियौ कंत वेगौ हवै वेण दीधौ, काळौ नागरि नारि उच्छाह कीधौ । आगै नागणी भेट सम्मेट आंणी, जदूनाथ लीजै जकौ राज जांणी ।—ना. द.

सम्मेलन–सं. पु. [सं.] १ किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने हेतु एकत्र होने वाला मनुष्यों का समूह ।

२ मिलाप, संगम ।

३ जमाव, जमघट ।

४ कोई बहुत बड़ी संस्था ।

ज्यूं—हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

सम्मै —देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—वडा अमीर बुलाय, साह भेजे तिण सम्मै । 'अजा' 'जसा' दिस असुर, मुहम नहं को आंगम्मै ।—सू. प्र.

सम्मोद—देखो 'समोद' (रू. भे.)

सम्मोह—देखो 'समोह' (रू. भे.)

सम्मोहणौ, सम्मोहबौ—देखो 'समोहणौ, समोहबौ' (रू. भे.)

सम्मोहणहार, हारौ (हारी), सम्मोहणियौ—वि० ।

सम्मोहिओड़ौ, सम्मोहियोड़ौ, सम्मोह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सम्मोहीजणौ, सम्मोहीजबौ—कर्म वा० ।

सम्मोहियोड़ौ—देखो 'समोहणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सम्मोहियोड़ी)

सम्मोहण, सम्मोहन–सं. पु. [सं. सम्मोहन] कामदेव के पांच बाणों में से एक ।

सम्मौ—देखो 'समौ' (रू. भे.)

उ०—नमो सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ । महालक्ष्मी मात धापां नमांमी, नमो मात रौ तात सामुद्र नांमी ।—मे. म.

सम्यक–वि. [सं. सम्यक्] १ पूरा, समस्त ।

२ सदाचार, विनम्र ।

उ०—तुम्हे मान मिटाय के पालक पायन सम्यक भाव प्रनेगे ।

—ध. व. ग्रं.

सम्यक्चारित्र-सं. पु. यौ. [सं.] सम्यक् शुद्धतापूर्वक व धर्म के अनुसार आचरण । (जैन)

सम्यक्ज्ञान-सं. पु. यौ. [सं. सम्यक्ज्ञान] जैनियों के धर्मरत्न में से एक । (जैन)

सम्यक्दरसण, सम्यक्दरसन-सं. पु. यौ. [सं. सम्यक्दर्शन] सातों तत्वों एवं धारना आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना । (जैन)

सम्यक्दरसी-सं. पु. यौ. [सं. सम्यक्दर्शिन] वह व्यक्ति जिसे 'सम्यक-दर्शन' प्राप्त हो । (जैन)

सम्यक्संबुद्ध-सं. पु. [सं. सम्यक्संबुद्ध] १ वह व्यक्ति जिसे सब बातों का ठीक व पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो । (जैन)

२ गौतमबुद्ध का एक नाम ।

सम्यक्त्व-सं. पु. [सं.] १ नव तत्व और छः द्रव्यों में दृढ श्रद्धा होने का भाव । (जैन)

उ०—१ त्रिविध धर्मः, अहिंसालक्षण, सत्याधिष्ठित, स्तेनरहित ब्रह्मचर्य गुप्त, संतोपपरम एवं विध, अथवा यथाशक्ति दान दीजिइ, शील पालीयई, तप तपियइ, भावना भवियइ, सम्यकत्व परिपालियं देव पूजियइ.........। —व. स.

उ०—२ जब स्वामीजी अगर बताय दिया अनें बोल्या : गूजरमलजी थारे सम्यक्त्व रहणी कठिण है आसता कची तिण सूं ।—भि. द्र.

उ०—३ कीड़ी नें कीड़ी सरधे सो सम्यकत्व के कीड़ी सम्यकत्व जद ते बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी सरधे ते सम्यकत्व ।—भि. द्र.

रू. भे.—समकत, समकित, समगत ।

सम्यो—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—घर आटो ल्याय रोटा सीधा गोल ल्याया घरत ल्यायो । अर रात रो सम्यो थो । जो ओगळी माहे ठंड सूं कर साप आय बैठो ।

—पंचमार री वात

सम्रत—१ देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

उ०—भाखे वेद पुरांण भल, अरु सम्रत की साख । पावै हरिगुण पार कुण, पच पच हारै लाख ।—गज-उद्धार

२ देखो 'समरथ' ।

सम्रतवेता—देखो 'स्मृतिवेता' (रू. भे.)

उ०—वीधा माजी न्याव किम, जग मांभल जेताह । काजी सुंण छिन छिन करै, विप्र सम्रतवेताह ।—बां. दा.

सम्रति—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

सम्रतीधर-सं. पु.—रवि । (अ. मा.)

सम्रतिवेता, सम्रतीवेता—देखो 'स्मृतिवेता' (रू. भे.)

सम्रथ, सम्रथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ छत्तीस वर्ग नव कोटि छतर, सम्रथ गिरजगण मांडण रुद्र ।—ह. र.

उ०—२ कही कथ राव धके कवराज, सबै कर सम्रथ सोध समाज ।—पा. प्र.

उ०—३ हरीया गुर सम्रथ मिळै, तो सिख ही सम्रथ होय । सांम खड़ै यु सूरिवा, भाजि न जावै कोय ।—अनुभववांणी

सम्रद्ध-सं. पु. [सं. समृद्ध] सर्पसत्र में दग्ध धृतराष्ट्र के कुल में उत्पन्न एक नाग ।

वि.—सम्पन्न, वैभवशाली ।

सम्रद्धि, सम्रद्धी-सं. स्त्री. [सं. समृद्धि] अत्यधिक सम्पन्नता ।

उ०—वैरागवद्धि सुख बळ सम्रद्धि, निरभय निसांन निरधन निधांन ।—ऊ. का.

सम्रधीक-वि.—समृद्धिशाली, वैभवशाली ।

उ०—कांति ग्रहांपति कळा अमीधार तणी कहे, ओप सेस भार पणां बीर कोध आरीख । वांणां कोवंतेस जेम रूकां सत्रसाल बळी, सिध डांण सम्रधीक कुबेर सारीख ।—भगतरांम हाडा रो गीत

सम्राणी, सम्राग्यी-सं. स्त्री. [सं. सम्राज्ञी] सम्राट की पत्नी ।

सम्राज-सं. पु. [सं.] १ चक्रवर्ति राजा की उपाधि या चक्रवर्ति राजा ।

२ चित्ररथ एव ऊर्णा का पुत्र एक राजा जो मरीची का पिता व उत्कला का पति था ।

सम्राट-सं. पु. [सं. सम्राट] १ वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन कई छोटे बड़े राजा-महाराजा हो ।

२ भरतवंशीय राजा चित्ररथ एवं ऊर्णा का पुत्र, उत्कला का पति एवं मरीचि के पिता का नाम ।

रू. भे.—समराट, सांमराट ।

सम्रिति—देखो स्म्रति' (रू. भे.)

सम्रत्यमुद्रा-क्रि. वि. [सं. समृत्यमुद्रा] मृत्यु की मुद्रा के साथ, मृत्यु की निशानी सहित ।

उ०—इसिउं विमासी मनि पारथ निद्रा, मेल्हि नरेंद्रे सु सम्रत्य-मुद्रा । निद्रा ति घूमिइं हथियार छांडइ, कोई किही सिउं नवि भूझ मांडइ ।—सालि सूरि

सम्स-सं. पु. [सं. शम्स] १ रोशनदान ।

२ सूरज, सूर्य ।

सम्हाळणौ, सम्हाळबौ—देखो 'संभाळणौ, संभाळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ महाराजा सूरसींघ री दखण में जांणौ तथा महाराज कुमार गजसिंघ री सासण भार सम्हाळणौ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ मगसर ठंड बहोंती पड़ै, मोहि वेग सम्हाळो हो ।

—मीरां

उ०—३ बूंदी आइ सम्हाळि बळ, सावधांन करि सरब । दूदी मुड़ि रह्यौ दुसह, पावण रण जस परब ।—वं. भा.

सयंकळ—देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—गरज्जंत नाग किरै गयणाग । सयंकळ तोड करै तळ-जोट ।

—गु. रू. बं.

सयंगार—देखो 'सिणगार' (रू. भे.)

उ०—तीजें घरि घरि मंगळचार, चहुं दिसी कांमनी करई हो सयंगार।—वी. दे.

सयंतउ-वि. [सं. सचिंतक] उतावला, उत्तेजक, व्याकुल।

उ०—एहु न कोईय करउ विचार, द्रूपदरांणीय पच भतार। साहु कही नइ गयणि पहूतउ, पंडु नराहिवु हूयउ सयंतउ।

—सालिभद्र सूरि

सयंद-सं. पु.—१ स्वर्ण, सोना।

२ शयन।

सयंवर, सयंवर, सयंवरु—देखो 'स्वयंवर' (रू. भे.)

उ०—१ धरियौ पण जनक इसी मन धारै, धनक पिनांक चढाय धरै। महपत आय सयंवर मांहैं, वसुदा कुमरी तिको वरै।

—र. रू.

उ०—२ सयंवर मंडप मंडाउं, सहु देसाधिप तेडाउं। इण सरिखौ जो वर पाउं तो बेटी ने परणाउं हो लाल।—श्रीपालरास

उ०—३ परिणावेवा तींह वाल सयंवरु मंडाविउ। गंगानंदणु चडीउ रोसि अणतेडिउ आव्यौ।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

उ०—जिणि जगि जीतउ समरसि अमर सिरोमणि कांसु। विलसइ सिद्ध सयंवर संवरगुणि अभिरांमु।—जयसेखर सूरि

सयंमी-वि. [सं. संयमिन्] १ मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय।

सं. पु.—२ बुरी व हानिकारक वस्तुओं से परहेज रखने वाला, साधु, संन्यासी।

सयंभू—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

सय-सं. पु. [सं. शयः] १ हाथ। (डिं. को.)

उ०—१ यों मद्दल भुजबंध सों सय सज्ज सुहाया।—वं. भा.

उ०—२ कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत वेधत पांनि कै बुधतनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अतिरच अजय खयकर अखय जय अग्र उभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—वं. भा.

२ निद्रा, नींद।

३ शय्या, सेज, खाट।

४ सांप विशेष।

वि.—१ सब, समस्त।

२ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—१ पनरम धरम तयालीस गणि चौसठ हजार। साहु साहुणी वासठ सहस अनैं सय चार।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ चउथउ हूइ एक कोडाकोडि, वइतालीस वरस नी त्रोटि। पंच सय धनुस देह परिमांण, दूख कोडि आउखउं जांणि।

—वस्तिग

३ देखो 'सै' (रू. भे.)

४ देखो 'स्वयं' (रू. भे.)

उ०—१ पांचमइ दूसमि वरती आंण वरिस तै एकवीस जांणि। सात हाथ देह सुकुमाल सय वरिस माहिं पहचइ काल।—वस्तिग

उ०—२ थांनकि थ्या सांमी नितु ध्याइं, सहस पल्योपम करम खजी जाइं। जे नर नारि अभिग्रह लिति, सय गुण पापकरम खिपंति।

—वस्तिग

सयगहीदोस—ग्रहस्थी के घर से अपने आप उठाकर आहार लेने से होने वाला पाप। (जैन)

सयण-सं. स्त्री.—१ सखी, सहेली। (अ. मा.)

२ देखो 'सयन' (रू. भे.)

उ०—वणि वंगळा बहु केल्यां, कुसुम लता कितान। मानहु मदन महीप रा, तणिया सयण बितान।—सिवबख्स पाल्हावत

३ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—१ पर भोम पंचायण सयणां रौ सेहरौ, दुसमणां रौ नाटसाळ, वडौ झोकाइत।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ छोटी चीख न आंपड़ां, लांबी लाज मरेह। सयण वटाऊ वाळरै, लंबउ साद करेह।—ढो. मा.

उ०—३ धिन दीहाड़ौ धिन घड़ी, धिन वेळा धिन वास। नयणे सयण निहाग्यिा, पूरी मन री आस।—अग्यात

उ०—४ मांन गहेली मांननी, विरुग्रउ बोल्यौ वयण। विण आदर न रहै कदै, सिंह सूर नै सयण।—प. च. चौ.

उ०—५ साचा रा सयण हुवै घणा ए, साचा रै न बंधै वैर कै। छल छिद्र नहीं हुवै ए, सांच सूं उतरै जहर कै।—जयवांणी

उ०—६ मनड़ौ आज उमाहियौ, देख घटा घनघोर। सयणां सांई दे मिळू, अलजौ जंसा सजोर।—जसराज

सयणआरती—देखो 'सयनआरती' (रू. भे.)

सयणबोधिनी—देखो 'सयनबोधिनी' (रू. भे.)

सयणमंदिर—देखो 'सयनमंदिर' (रू. भे.)

सयणाचार-सं. पु. [सं. स्वजनाचार] १ अपनों का सा व्यवहार।

(उ. र.)

२ भला व शिष्ट व्यवहार।

सयणी—देखो 'सैणी' (रू. भे.)

सयद—देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—सयद पठांणां सिरै पमंग झोकूं पखराळौ।—सू. प्र.

सयधण—देखो 'सायधण' (रू. भे.)

सयन-सं. पु. [सं. सयन] विश्वामित्र के पुत्र तथा गाधि के पौत्र का नाम।

सं. स्त्री. [सं. शयनं] १ निद्रा, नींद। (डिं. को.)

२ शय्या, सेज। (अ. मा; डिं. को.)

२ समंतात, चेतुर।

रू. भे.—सइन, सैन।

सयनआरती-सं. स्त्री. यौ. [सं. शयनआरती] वह आरती जो रात्रि के समय देवताओं को सुलाने के लिए की जाती है।

रू. भे.—सैनआरती।

सयनग्रह-सं. पु. यौ. [सं. शयनगृह] शयनागार।

सयनपुन्य-सं. पु. [सं. शयन+पुण्य] खाट, पलंग आदि के दान से होने वाला पुण्य। (जैन)

सयनबोधिनी-सं. स्त्री. यौ. [सं. शयनबोधिनी] मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रू. भे.—सैनबोधिनी।

सयनमंदिर-सं. पु. यौ. [सं. शयनमंदिर] सोने का स्थान, शयनगृह।

रू. भे.—सैनमंदिर।

सयना-सं. स्त्री.—अग्नि, आग। (नां. मा.)

सयनागार-सं. पु. यौ. [सं. शयनागार] शयनगृह।

सयनीय-सं. स्त्री.—शय्या, सेज। (अ. मा.)

सयनैकादसी-सं. स्त्री. [शयनैकादशी] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

वि. वि.—इस दिन से भगवान् विष्णु सोते हैं एवं हरिप्रबोधिनि एकादशी को पुनः उठते है।

सयमंत-सं. पु. [सं. स्यमंतक] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि।

सयमंतपंचक-सं. पु. [सं. स्यमंतपंचक] भागवत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

सयमुखि-क्रि. वि.—सम्मुख, प्रत्यक्ष।

उ०—सयमुखि करता करइ बखांण, जीवित जनम आज परियांण

—ढो. मा.

सयरइ, सयर, सयरि, सयद—१ देखो 'सिर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—कुणहू हुन्त गेहि सयर ठाउ फेडी धन ऊपारजइ, कुणहू हाट मांही पावणउं सर साहि द्रव्य... ..... ।—व. स.

२ देखो 'सरीर' (रू. भे)

उ०—१ निरंतर जु रमइ, आपणउ सयर दमइ। सकल धन गमइ, भीख भमइ।—व. स.

उ०—२ देवि सूरयवर साधउ आगइ, देवि सयर तिणि दैवति जागइ।—सालिसूरि

उ०—३ कवण काजि विनडिउ तइ सयर, कवण भूपति सिउं तुझ वयर।—सालिसूरि

उ०—४ छोडि छीणु मइ भीतरु भाला, वीर ना सयर केसर-वाला।—सालिसूरि

उ०—५ समद पखाळं सम मांन ज्यां, सयरि विछूटी स्वेद। जळ पाणी झळगां ज्यां, सांमइ पड़िया सुमेद।—मा. कां. प्र.

सयल-वि. [सं. सकल] १ सब, समस्त।

उ०—१ सासू दादी सासुआं, राजी सयल रहंत। माजी नूं मीरां कहै, मोटा संत महंत।—बां. दा.

उ०—२ चिंता बांध्यौ सयळ जग, चिंता किणहि न बध्ध। जे नर चिंता वस करइ, तें मांणस नहि सिध्ध।—ढो. मा.

उ०—३ गिळै गूंद मादडी, सयळ सावज मन रंजै। कोलर तोडि करंक, गूह गरजी मत भंजै।—गु. रू. बं.

उ०—४ कटकां विध दाखै राव कमधज, पौरिस सळ ईडगरां प्रमांण। सयळ वखांण करै नव सहंसा, कित घिन घिन अभनिमा 'कल्यांण'।—प्रथ्वीराज ऊदावत रौ गीत

२ संसार।

उ०—विजमल तुझ दीठै वीसरिया, सयळ तणां भूपति सिगळेय। दूजां तीह भजै किम डूंगर, निरख्यौ ज्यां सुरगिरि नयणेह।

—ईसरदास बारहठ

३ देखो 'सैल' (रू. भे.)

उ०—१ किता दिवस रहनै करुणाकर, इल सिवगी चौकरै उधार। सयळ सयळ वन जोवण सीता, हालै आगळ फेर हरि।—र. रू.

उ०—२ जिण सयल तणां नदी नीर जिम जीता सेन असंख जिण। लखधीर तणौ सुरतांण लग, ताप न खिम्मै रोद्र तण।

— मालो आसियो

उ०—३ सा पुरसां संतोखियां, खाणौ जवहर खांण। बेलां चित्रां वेलड़ी, पारस सयळ पखांण।—बां. दा.

सयांण, सयांणउ—देखो 'सयांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांम कहतां रे ह्निदा. सहजां होय सयांण। जे तूं गुण जांणै नहीं, पूछव बेद पुरांण।—ह. र.

उ०—२ सखि किम रहै सयांण, दाहक रूपी दरसवै। पावस पीव पयांण, हुवौ सकार ककार हिय।—र. हमीर

सयांणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—१ कांम क्रोध तृस्णा तजो, त्रिविध ताप गुण देह। सांई का सुमरण करो, परम सयांणप श्रेह।—ह. पु. वां.

उ०—२ लाख सयांणप कोइ बुध, कर देखो सह कोय। अणहूंणी व्हैणी नहीं, हूंणी ह्वै सो होय।—राव रिणमल री वात

उ०—३ सयांणप थी सो सब गई, जदि जीय उपज्यो पेम। लाज मिटी निरभै भयो, मनसा वाचा नेम।—परमानंदजी वणियाळ

सयांणौ-वि. (स्त्री. सयांणी) १ तत्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

उ०—देख तमासा डरपिया कई साध सयांणा —केसोदास गाडण

२ समझदार, बुद्धिमान।

उ०—१ गुण समझै कोई सुघड़ सयांणौ भोंदू सुण भम जावै।

—ऊ. का.

उ०—२ वयण सुणी रावत्त रोस, करि खरा रीसांणा। दोय चढ़िया अति कोप, दोय अति चतुर सयांणा।—प. च. चौ.

उ०—३ समझावै बहुधीत सयांणां, वाचकनीत विनीत। संत मेत

ह्वं रीत सदारी, पांडुर पीत प्रतीत ।—ऊ. का.

३ चतुर, होशियार ।

उ०—१ सखी सयांणी मोरी हंसत है; हंस हंस देवै ताळी ग्रे माय ।

—लो. गी.

उ०—२ सो एक दिन बादसाह रै दादी पोती बेगम थी सो पण सयांणी थी वादसाह री महरवांनगी थी ।

—जयसिंह ग्रांमेर रा धणी री बात

४ सरल स्वभाव वाला, सीधा ।

उ०—इतरै में सेखावत करणसिंह महाराज रै चाकर थो भलो सयांणौठाकुर सो हजूर में बैठो थो ।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

५ कपटी, धूर्त ।

६ पूर्णयुवा, वयस्क ।

उ०—बादसाह दोनां री बात सुणी थी तींसू कही—छोटी हमारै होवै तो ग्राछी । तरै काजी ग्ररज करी—जलाल सुघड़ छैल छै नै बूबना पण सयांणी छै ।—जलाल बूबना री बात

७ जानकार, विज्ञ ।

उ०—जोधपुर रै धणी री वडो वेटो, फेर ग्राप बातां सयांणो सो ग्राछी तरह सूं रहै । नकदी खरची पावै ।

—राठौड़ ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

८ जादू टोने जानने वाला ।

९ चिकित्सक, वैद्य ।

१० वृद्ध, बूढा ।

रू. भे.—सयांण, सयांणउ, सयांनो, स्यांणो ।

सयांनक-सं. पु.—गिरगिट । (डिं. को.)

सयांनप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—दादू एक सूं लै लीन होना, सबै सयांनप येह । सद्गुरु साधू कहत है, परम तत्व जप लेह ।—दादूबांणी

सयांनो—देखो 'सयांणो' (रू. भे.)

सयी—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—उवो कोई सैण मिलावै सयां जो मारूड़ो देवै मिळाय ।

—रसीलैराज

सय्या-सं. स्त्री. [सं. शय्या] १ पलंग पर बिछा हुग्रा बिछौना (डिं. को.)

२ पलंग, चारपाई ।

रू. भे.—सइया, सज्जा, सज्या, सझ्या, सयण, सयन, सिज्या, सिजिया, सेइया, सेज, सेझ ।

सय्यातर-सं. पु. [सं.] वह व्यक्ति जो जैन महात्माग्रों व मुनियों को ग्रपने यहाँ ठहरने का स्थान देता है ।

रू. भे.—सिज्यातर, सिज्यातरी, सेज्यातर ।

सय्यातर-पिंड-सं. पु. [सं.] वह ग्राहार जो जैन मुनियों को ग्रपने यहाँ ठहराने वाला व्यक्ति ही उन्हें भोजन-रूप में देता है जो कि मुनियों के लेने योग्य नहीं है । (जैन)

उ०—सय्यातरपिंड न खाय, मांचदिक नहीं वेसाय घर ग्रही तणै ए, वैसै नहीं सुपनै ए ।—जयवांणी

सय्यापाळ-सं. पु. [सं. शय्यापाल] राजा के शयनागर का प्रबन्धक ।

सरंगौ—१ देखो 'सुरंगौ' (रू. भे.)

उ०—गुलजार बोज ग्रबलक्ख गात, सिंदळी ग्रनै सरंगा सुभात ।

—सू. प्र.

२ देखो 'सारंग' (रू. भे.)

सरंजाम—देखो 'सराजांम' (रू. भे.)

उ०—ग्ररु पातसाह जी गुनामाफ कर फेर मुनसब दियो । तथा मुहीम का हुकम दिया सूं सरंजाम हुवो नहीं ।—द. दा.

सरंभर-वि.—सराबोर, तरवतर ।

सर-सं. पु. [सं. शरः, सरः] १ बाण, तीर ।

(ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ ताळ चरंती कूंझड़ी, सर संधियउ गंमार । कोइक ग्राखर मनि वस्यउ, उडी पंख समार ।—ढो. मा.

उ०—२ पछै कुंवर स्त्री दळपतजी ग्रापरै हाथ सर मारिया । ताहरां कुंवर स्त्रीबाळक हुता तिण सर ग्रंगुळ च्यार मार की ।

—द. वि.

उ०—३ ग्ररजुनु पूठि सिखंडडीयाह वइसी सर मूंकइ, पडीउ पीयामहु समर माहि किम ग्ररजुनु चूकइ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ चिहु पखै ग्ररजन वांण छूटइ, सन्नाह माहिइ सर सीघ्र फूटइ ।—सालिसूरि

२ दुग्ध, दूध । (डिं. को.)

३ दूध की मलाई ।

४ पांच की संख्या । * (डिं. को.)

५ लड़ियों वाला हार, माला, कंठी ।

उ०—चंपा केरी पांखड़ी, गूंथूं नव सर हार । जउ गळ पहरूं पीव विन, तउ लागै ग्रंगार ।—ढो. मा.

६ गति, गमन ।

७ जुलाब लगाने वाला पदार्थ ।

८ सिरा, छोर ।

९ सामुद्रिक शास्त्र के ग्रनुसार व्यक्ति की हथेली में होने वाला तीर का सा निशान जो शुभ फल का सूचक होता है ।

[सं. शरं, सरं] १० समुद्र, सागर । (डिं. को.)

उ०—१ सर गिरवर तारै पदम ग्रठारै, सेन उतारै जगत सखै । भिड़ रांवण भंजै गढह्रिम गंजै, ग्रमरां रंजै ब्रहम ग्रखै ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ ग्राथां भरै वाथां हाथां भोज ज्यूं लुटावै इळा, ठावी सरां सातांइ कीरती घटा येट । बातां ग्रे न जावै बापी भरै बैठां

दाता मच्छ मारवीसी दीनाणा पाईन्ह ।

—सूरसिंघ करमसोत री गीत

११ तालाब, जलाशय । (ह. ना; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ पूंघट मोकळी नहीं, बोलती निक बैग । मजपत जावै गोरियां, मार्व सर नह नैगु ।—बां. दा.

उ०—२ मार्व सर पाणी मरै, गोरी गात पनूत । ज्यां मागे पांणी मरै, इंग पनोरिक मन ।—बां. दा.

१२ पानी, जल । (ह. नां. मा.)

१३ कूप, कुग्रा ।

उ०—पेट्ट पर मंवर ऊठा सर पागे, पांरै माळागर मूंछा रै ग्रागे । मागी घीनम है करियोड़ा मारे, हीमत भरियोड़ा हीमत नह हारै ।

—ऊ. का.

१४ मात की संख्या । ● (डि. को.)

१५ जलप्रपात, झरना ।

१६ वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का जल इकट्ठा हो जाता हो व सूखने पर ऐसी भूमि पर प्राय: गेहूं, ज्वार, चने ग्रादि बोये जाते हों।

उ०—इण तरफ गांव केरिया, एक माग, गेती-बाजरी री, मूंग, मोठ, तिल । कूवै पांणी पुरस २० मीठो । बीजी तरफ कुछ दिसा, घरणी कामार, तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहूं ।—नैणसी

१७ पत्र । (मि. पत्रो)

१८ सरपत की जाति का एक पौधा विशेष जिसमें गांठ वाली छड़ी होती है, सरकंडा । (डि. को.)

१९ दो मात्रा के दो लघु का नाम । (डि. को.)

२० छप्पय छंद का ३५ वां भेद जिसमें ३६ गुरु और ८० लघु से ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं ।

२१ प्रश्नात्मक काव्य । (सर काव्य)

[फा. सर] २२ सिर, मस्तक । (डि. को.)

उ०—१ गलनइ मुसरमा ब्रुत्ति ढोल वाजइं, जांणे ग्रासाढ़ू किरि मेह गाजइ । होया ग्र सूकइं सर सेम सूकइं, मय बीहता कायर जीव मूंकइ ।—मा.-निगुरि

उ०—२ मरम करम इनका है संगी, जे कोई दूरि विडारै रे । निसदिन नांव रतन रसवाळो, ग्यान ध्यांन सर धारै रे ।

—ग्रनुभववांणी

उ०—३ सूनळ नायां सर नामां सणकारी, फुरणी दुयालां गामां फळकारी । झूमर घायां गळ ग्रावड़ कड़ झांगै, नम नम मावड़ नै नायां कम नागै ।—ऊ. का.

२३ एक प्रकार ग्रस्त्र विशेष ।

२४ निशान, पाया ।

उ०—दीनन पखिर पर चीतळ कर परसै, बेहद महितळ सिर सीतळ सर बरसै । मळ मळ मावण नै ग्रणनिर ग्रळ मेघै, बावळ बरसांती तरफां सूं देवै ।—ऊ. का.

२५ ताश के खेल में ऐसे रंग का पत्ता जो काट माना जाता हो ।

सं. स्त्री.—२६ उक्त खेल में जीती जाने वाले बाजी ।

ज्यूं—म्हारी सात सरां बणी (बण्या) है ।

२७ रस्सी, डोरी ।

२८ जीत, विजय ।

उ०—१ तरै रावळ वजीर लाहक नूं कह्यो—बीजूं तो सर पायां नहीं, तूं बूढो पण हुवो छै । तूं मरण तेवड़ नै संगार नूं मारै तो पोहचां।

—नैणसी

उ०—२ जद जलाल कही—सरंजांम पाऊं सो सर कर ग्रांण मुजरो करूं के कागदां में ही लपेटियो ग्राऊं ।

—जलाल बूबना री बात

[ग्रं.] २९ ब्रिटिश सरकार की एक सम्मानित उपाधि । महाशय, महोदय ।

ज्यूं—सर प्रताप ।

वि.—१ दबाया हुग्रा ।

उ०—कपट कोठारियां तणां इम किताई, जिकै सारा कया नहीं जावै । इणांनै सर करे जिसा जग ग्राज दिन, ग्राप बिन ग्रौर नह निजर ग्रावै ।—ऊमरदांन लाळस

२ हराया हुग्रा, पराजित ।

उ०—काळे सार वडे कारीगर, जीजरियां रण जुवा जुग्रा । पर लोहार किया सर पाधर, हालै साम्रव जेर हुवा ।—तेजसी सांदू

३ जीता हुग्रा, विजित ।

४ विजय प्राप्त किया हुग्रा, जीता हुग्रा ।

५ प्रमुख, प्रधान ।

६ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—बाल ग्रवस्था बुध कछु नाई, चंचळ ग्रति मलीना । सारासर सर गोसर न जांणै, पराधीन बळहीना ।—स्रीसुखरांम महाराज

७ तीक्ष्ण, तीखा । ● (डि. को.)

८ समाप्त किया हुग्रा ।

प्रत्यय—१ एक प्रकार का प्रत्यय जो कुछ शब्दों के ग्रन्त में लगकर ग्रनुसार, मुताबिक, पर, ऊपर, सा, से ग्रर्थ प्रकट करता है ।

उ०—मारण वाळै दुस्टी टावर रै सरीर माथै सूं तीव री तीव उतार लीवी ही । कायदेसर पुलिस नैं इतला देवणी पड़ी । लाग रो पोस्ट-मारटम हुयो ग्रर तीजै दिन जावतां लास नैं दाग पड़चो।

—ग्रमरचूंनड़ी

ज्यूं—धंधसेर, कांमसर, नौकरीसर, वगतसर, ढंगसर, ठीकसर ।

२ पूर्व कालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला शब्द ।

उ०—तद चाकरयां भड़ाकदेसर घोड़े सूं उतर ग्राप रै बेटै री हाथ झालि पकड़ घोड़े ऊपर चढ़ियो ।—ठाकुर जैतसी री वारता

३ देखो 'स्वर' (रू. भे.)

उ०—१ डींभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वांणि । ढोला,

एही मारुई, जेहा हुंभ निवांणि ।—ढो. मा.

उ०—२ वग रिखि राजांन सु पावसि बैठा; सुर. सूता थिउ मोर सर । चातक रटै बलाहकि चंचळ, हरि सिणगारै अंबहर ।

—वेलि

सरअंगना—सं. स्त्री.—द्रौपदी । (अ. मा.)

सरअजीत—सं. पु.—अर्जुन । (अ. मा.)

सरक—सं. पु.—१ सरकंडा ।

उ०—टोटै सरकां भींतड़ा, घातै ऊपर घास । वारीजै भड़ भूंपड़ा अधपतियां आवास ।—वी. स.

२ शराब की प्याली, चुसकी । (डि. को.)

३ युद्ध के समय योद्धाओं के मस्तक पर पहने जाने वाले टोप का ऊपरी व नुकीला भाग ।

उ०—दंतादंति, मुस्टामुस्टि, एक अंगी लोहमइ आंगी करी, मस्तकि सरक करी हरुआ युद्धोद्यत ।—व. स.

सरकड—सं. पु. [सं. शरः+काण्डः] १ नरकुल ।

२ बाण की लकड़ी । (उ. र.)

सरकडि—सं. स्त्री.—सरकंडा ।

उ०—सेवंत्री संघेसरा सूकडि सरकडि साय । सीमंतक सोहइ भला सरव सदाफल खाय ।—मा. कां. प्र.

सरकणौ, सरकबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बस्ती पांत रौही सुहांमणी लागै कुदरत रा सिणगार नैं आंख्यां फाड़-फाड नै देखताइज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है । मन ठालौ भूलौ धापै इज नीं । उठा सूं सरकण री मंसा ई नीं व्है ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ कर सूं ऐन दियौ किलौ, ऊभा पगां अभंग । किलौ लियौ विणहूं कठै, सरकूं लसकर संग ।—वां. दा.

उ०—३ उण छिण पछै दिन नीठ धकै सरकिया, जांणै किणी अदीठ खूंटै पेंखड़ीजग्या व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—४ मरियां पछै जचै ज्यूं व्हौ पण हाल तौ दो च्यार नैं मार नैं मरूंला । इण बोल रैं सागै वांरौ हाथ चाल्यौ अर सांम्हां ऊभा टणकचंद आगा सरक्या ।—अमरचूंनड़ी

उ०—५ लागी रहती लोयणां, करतां काज अकाज । सरकी समर समाज मैं, लाज न राखी लाज ।—र. हमीर

उ०—६ इम सुण वावेचा तौ सरक गया ।—भि. द्र.

उ०—७ नांम लियां थी मांनवां सरकै कलुस विसाळ । मह जैसे मेटै तिमिर, रसम परस किरमाळ ।—र. रू.

सरकणहार, हारौ (हारी), सरकणियौ—वि० ।

सरकिओड़ौ, सरकियोड़ौ, सरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरकीजणौ, सरकीजबौ—भाव वा० ।

सरकर—सं. स्त्री. [सं. शर्करा] १ बालू रेत । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—पड़ती पुल पुंल पर भुल भुल भरभूंजै, सरकर सर सोखत गिरवर दर गूंजै ।—ऊ. का.

२ शक्कर ।

३ सूर्य, भानु । (अ. मा; नां. मा.)

सरकरा—सं. स्त्री.—शक्कर ।

सरकराचळ—सं. पु. [सं. शर्कराचल] दान करने के लिए बनाया जाने वाला शक्कर का पहाड़नुमा ढेर जिसका पुराणों में महत्व माना जाता है ।

सरकराचूरण—सं. पु. [सं. शर्कराचूर्ण] आयुर्वेदिक औषधि विशेष ।

सरकराधेनु—सं. स्त्री. [सं. शर्कराधेनु] दान के लिए बनाई जाने वाली शक्कर की गाय । (पौराणिक)

सरकराप्रभात—सं. पु. [सं. शर्कराप्रभा] जैन मतानुसार एक नरक का नाम ।

सरकराप्रमेह—सं. पु. [सं. शर्कराप्रमेह] एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर आने लगती है, मधुमेह ।

सरकरासप्तमी—सं. स्त्री. [सं. शर्करासप्तमी] वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी ।

सरकस—सं. पु. [अं. सर्कस] वह खेल या तमाशा जिसमें तरह तरह की कलाबाजियाँ और जानवरों के करतब दिखाये जाते है ।

२ मनुष्यों की वह मण्डली जो जानवरों के साथ साहसपूर्ण कलाबाजियों का प्रदर्शन करते हैं ।

३ वह स्थान जहाँ जानवरों व मनुष्यों की नाना प्रकार की कलाबाजियों का प्रदर्शन किया जाता है ।

[फा. सरकश] ४ बागी, डाकू ।

वि.—१ विद्रोही ।

२ अशिष्ट ।

३ स्वेच्छाचारी ।

४ खुदराय ।

५ अवज्ञाकारी ।

६ मुंहफट ।

७ देखो 'सिरकस' (रू. भे.)

सरकसी—सं. स्त्री. [फा. सरकशी] १ उद्‌दंडता ।

२ बागी होने का भाव ।

सरकाणौ, सरकाबौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकाबौ' (रू. भे.)

सरकाणहार, हारौ (हारी), सरकाणियौ—वि० ।

सरकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरकाईजणौ, सरकाईजबौ—कर्म वा० ।

सरकायल—वि.—आवारा घूमने वाला, निठल्ला ।

उ०—कैणी मांनै ना सीख सुवावै, ब्या'री नीची-नीची निजू निगै करै अर खुली फिरै है । सींगायल तथा सरकायल, सौ सौ जागा रचै है, बाजेगारी अर तेरातालौ नौ नौ ताल नाचै है । बाप नैं मोकळी सोचै लागै, मूळी रै वर रौ कठै भाग जागै है ।—दसदोख

सरकायोड़ो—देखो 'सिरकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सरकायोड़ी)

सरकार-सं. स्त्री. [फा.] १ राज्यसत्ता, शासनसत्ता।

२ राज्यसभा, दरबार।

३ रियासत।

सं. पु.—४ ईश्वर, प्रभु।

५ मालिक, स्वामी।

६ बड़े व प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए संबोधन का आदर सूचक शब्द।

रू. भे.—सिरकार।

सरकारी-सं. स्त्री.—१ शासन सम्बन्धी, राजकीय।

२ सरकार सम्बन्धी।

सरकावणौ, सरकावबौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकावौ' (रू. भे.)

सरकावणहार, हारो (हारी), सरकावणियो—वि०।

सरकावियोड़ो—भू० का० कृ०।

सरकावीजणौ, सरकावीजबौ—कर्म वा०।

सरकियोड़ो—देखो 'सिरकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सरकियोड़ी)

सरकिल-सं. पु. [अं.] कई गांव कस्बों आदि का क्षेत्र।

ज्यूं—जोधपुर सरकिल।

सरकेस-वि.—१ खिसकने वाला।

२ डरपोक, कायर।

३ सनकी।

४ जिद्दी, हठी।

५ उद्दंड।

सरको-सं. पु.—लज्जित होने की बात।

उ०—प्रथम मुवो भरतार सुत एक मरगो पछै, संक तज चोज री करै सरका। चोज री छोड़ विदरां करै लाजविम, जोजरी हमेसां लिदै जरका।—बांकीदास आसियो

सरक्कणौ, सरक्कबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीस कोस दिस बांम, बीस दाहणी तरक्कै। जाळंधर सांमहो करै बेमुहो सरक्कै।—रा. रू.

उ०—२ कड़ै लोहां सूर मल, सूर न जाय सरक्क। चढै गजां दांतू सझां, रण रीझवै अरक्क।—बां. दा.

सरक्कणहार, हारो (हारी), सरक्कणियो—वि०।

सरक्किप्रोड़ो, सरक्कियोड़ो सरक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।

सरक्कीजणौ, सरक्कीजबौ—भाव वा०।

सरक्कियोड़ो—देखो 'सिरकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सरक्कियोड़ी)

सरक्यूलर-सं. पु. [अं.] सब जगह घुमाया जाने वाला प्रपत्र।

सरख, सरखउ—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—प्राप पराइउ सरखउ गिणइ, साचुं बोइं समतुं भणइ।

—स. कु.

सरखरू-क्रि. वि.—सामने, सम्मुख।

उ०—तीन गुण नाप मन वचन निरदोस रहि, सांम सुं सरखरू संत साचै।—अनुभववांणी

सरखो—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—१ जइ मझ सरखी सोलह नारि आपु आंणी भलै तिणगारि तु हुं जि राउ जिमाडेसु रंगि नव नव भोजन नव नव भंगि।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ बिनै सबळ भुज अबळ सहंस बळ, खळ दळ गेरू करण खग। 'गजपत' सुतन सनढ गढ गाहण, कोय न तो सरखो करग।—सादूळजी खिड़ियो

सरग-सं. पु. [सं. सर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति। (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ किसी ग्रंथ का अध्याय, सर्ग।

३ शिव का एक नाम।

४ बाण, तीर। (अनेका)

५ देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सो रूप री एसी, जैसी प्रथी मैं नहीं सरग री परी, आभै री बीज, मांनसरोवर रो हंस।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जां चढ सती माता जोवियो, हरजी सूं हेत लग्यो। वायां! सरग नेड़ो घर दूर, हरजी सूं हेत लग्यो।—लो. गी.

उ०—३ मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटां हत्य। वेही क्रपण कपाट नूं. ऊघाड़ण असमत्थ।—बां. दा.

सरगट-सं. पु.—घूंघट।

उ०—फरगट मारै फूटरा, कर सूं सरगट काढ। सठ दाखै भाळो सरस, गिनका वाळो गाढ।—बां. दा.

सरगणो-सं. पु. [फा. सर्गनः] १ सरदार, अगुआ। (डूंगरपुर)

२ डींग हांकना, शेखी बघारना।

सरगतरंगण-सं. स्त्री. [सं. स्वर्ग+तरंगणी] गंगा। (अ. मा.)

सरगदुवार, सरगदुवारो-स. पु.—स्वर्ग-द्वार, वैकुण्ठ का रास्ता।

सरगनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू. भे.)

सरगपत, सरगपति, सरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू. भे.)

उ०—सिंघासणो वा इंद्रासणो वा, प्रिथीपती वा सरगपती वा।

—गु. रू. बं.

सरगपुर, सरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू. भे.)

सरगपूज-सं. पु. [सं. स्वर्गपूज्य] बृहस्पति। (अ. मा.)

सरगम-सं. पु. [सं.] १ संगीत में सात स्वरों का एक समूह, थाट जो प्रत्येक राग के लिए अलग अलग होता है। इसमें षड्ज से निषाद तक के स्वर होते हैं।

२ वह प्रणाली जिससे उक्त स्वरों को साधा जाता है।

३ गीत, तान या राग में लगने वाले स्वरों का क्रमिक गायन।

रू. भे.—सरग्गम।

सरगरा-सं. स्त्री.—एक अनुसूचित जाति विशेष ।

सरगराजान-सं. पु. [सं. स्वर्ग+राज] स्वर्ग का राजा, इन्द्र । (ह. नां. मा.)

सरगरौ-सं. पु (स्त्री. सरगरी) सरगरा जाति का व्यक्ति।

सरगळ-वि.—तरवतर, शराबोर ।

उ०—हाथां रै राच्योड़ी मैंदी हींगळू री टीकी, गज गज लांबा वांसवाळी सूं सरगळ वाल ।—दसदोख

सरगलोक—देखो 'स्वर्गलोक' (रू. भे.)

उ०—१ प्रिथु वेलि कि पंचविध प्रसिध प्रणाली, आगम निगम कजि अखिळ। मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरगलोक सोपांन इळ । —वेलि

उ०—२ राउ पहूतउ सरगलोकि गंगेय कुमारि, तउ लघु बंधवु ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि ।—सालिभद्र सूरि

सरगवट-सं. पु. यौ. [सं. स्वर्ग+वाट:] स्वर्ग का मार्ग, वैकुण्ठ का मार्ग ।

सरगवास—देखो 'स्वर्गवास' (रू. भे.)

सरगाजळ-सं. पु.—स्वर्ग ।

सरगापर, सरगापुर, सरगापुरि, सरगापुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू. भे.)

उ०—१ आभपरै थी उछल्या, जळ मा दीधौ झोक । सरगापर नै चोक, भेळा थासुं भांणना ।—जेठवा

उ०—२ मिटसी न धोखोय जूंझ मुऐं, जावसां सरगापुर पंथ जुऐं ।—पा. प्र.

उ०—३ जयजयकार हूउ सरगापुरि वडसी गयउ विमांनि । —कां. दे. प्र.

उ०—४ धरमी कूं बैठे तहां, धरमराज दरसाय । धरै देह कीधौ धरम, सौ सरगापुर जाय ।—गज-उद्धार

सरगि—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

उ०—१ सुत नेह पंडु पहुंतै सरगि, पिंड राखै लालचपणै । रिध काज साथ कूंता रहिय, जिण हूंता धिक जीवणै ।—रा. रू.

उ०—२ चहुवांण न ओसर चूकता, ऐं जुगतौ जगि थयौ । बालोत 'पंचाइण' 'सोनगिरि' चढै सरगि ऊतरि गयौ ।—गु. रू. वं.

उ०—३ सुख जिकै इंद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख सत्र भोगवै । —गु. रू. वं.

उ०—४ प्रीय पासि पहुचउ मद मेल्ही, जाइसिइ सरगि मइं पगि ठेली । प्रीय आगलि किमइ जइ जाऊं, माहरा प्रीय तउ हउं सुहाऊं । —सालिसूरि

सरगिका-सं. स्त्री.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण और सगण के क्रम से कुल नौ वर्ण होते हैं।

सरगुजस्त, सरगुजस्थ-सं. स्त्री. [फा. सर+गुजश्त] १ स्वयं पर बीती हुई बात ।

२ जीवन-चरित्र ।

३ वर्णन ।

सरगुण—देखो 'सगुण' (रू. भे.)

उ०—निरगुण थी सरगुण हुआ क्या जांणै रंडा । —केसोदास गाडण

सरगुणियौ-वि.—सगुण ब्रह्म-उपासक ।

सरगुणौ - १ देखो 'सगुण' (रू. भे.)

२ देखो 'सगणौ' (रू. भे.)

सरगुलम, सरगुल्म-सं. पु. [सं. शरगुल्म] राम-रावण युद्ध में राम की सेना का एक सेनानायक बन्दर ।

सरगूड़ौ-सं. पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते पीपल के पत्तों से मिलते-जुलते होते हैं। यह प्रायः तीन प्रकार का पाया जाता है—कड़ुआ, खारा और मीठा । इसका उपयोग औषधियों में किया जाता है।

सरगोसी-सं. स्त्री. [फा. सरगोशी] १ कान में बात करने की क्रिया, कानाफूसी ।

उ०—सेजां जाय निसंक पत सोसी, जो निज रूप नीजर भर जोसी । गात भीड़ उर मैं सरगोसी, हेली वौ मौसर कद होसी । —अग्यात

२ पीठ पीछे शिकायत या आलोचना करने की क्रिया ।

सरगौ-सं. पु.—शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

सरग्ग—देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—यह तन जारी मसि करूं, धूआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो. मा.

सरग्गम—देखो 'सरगम' (रू. भे.)

उ०—अछै पग छांह जिसा कुळ सात, प्रेणम्मै पग्ग सरग्गम सात । —ह. र.

सरग्गो—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

सरग्रह, सरघर-सं. पु. यौ. [सं. सर+गृह] १ जल, पानी । (अ. मा.)

[सं. शर+गृह] २ तूणीर, तरकस ।

सरघा-सं. स्त्री. [सं.] १ मधुमक्खी । (डिं. को.)

२ भौंरा ।

सरघात-सं. पु. [सं. शर:+घात:] तीरंदाजी ।

सरड़-सं. स्त्री.—पतली बेंत से पीटने पर उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

क्रि. वि.—शीघ्र, झट ।

रू. भे.—सुरड़ ।

सरड़को-सं. पु.—१ किन्हीं दो वस्तुओं, अंगों या अंग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण, स्पर्श ।

२ उक्त घर्षण से पड़ने वाला निशान, चिन्ह ।

३ ऊंट की चाल विशेष ।

उ०—सो दो पोहर दिन पाछलै थकां उठा सूं नीसरिया सो ऊंचै सरड़कै ऊंठ नूं उडायां वहै छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

४ पानी तेज से दौड़ने पर उत्पन्न ध्वनि ।

सरड़ाट, सरड़ाटो-सं. पु.—१ तेजी से दौड़ने या गतिमान होने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—१ म्हारा मूं एक मोटर सरड़ाट करती आई अर चौधरी रा कमरा सामने रुक गी ।—रातवासौ

उ०—२ दरबारी अर सरदार राजा नूं बैठो देखण सारू अर जिनां नूं निजरां गो इनाम वास्तै पैक ई सरड़ाटै घोड़ा भागै हो ।—फुलवाड़ी

२ मुंह या नाक से वायु को अन्दर खींचने की क्रिया ।

उ०—किसी तो सौरम रा चार सरड़ाटा खांचिया अर मस्त होगी ।—फुलवाड़ी

३ मुंह या नाक से वायु को अन्दर खींचने से उत्पन्न ध्वनि ।

सरचणौ, सरचबौ-क्रि. अ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए राजी होना, सौदा पटना ।

२ जंचना ।

क्रि. स.—३ पीटना, सजा देना ।

सरचणहार, हारौ (हारी), सरचणियौ—वि० ।

सरचिग्रोड़ौ, सरचियोड़ौ, सरच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरचीजणौ, सरचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरचाणौ, सरचाबौ-क्रि. स.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत करना, सौदा पटाना ।

२ जंचाना, निपटाना ।

उ०—पूगळ रा गांवां रा वंट करणलिय जो कराय सरचाया ।

—द. दा.

३ पीटाना, सजा दिलाना ।

सरचाणहार, हारौ (हारी), सरचाणियौ—वि० ।

सरचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरचाईजणौ, सरचाईजबौ—कर्म वा० ।

सरचायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत किया हुआ, सौदा पटाया हुआ. २ जंचाया हुआ, निपटाया हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ ।

(स्त्री. सरचायोड़ी)

सरचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत हुवा हुआ, सौदा पटाया हुआ. २ जंचा हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ ।

(स्त्री. सरचियोड़ी)

सरच्चंद, सरच्चंद्रमा-सं. पु. [सं. शरच्चन्द्र, शरच्चन्द्रमा] शरत् ऋतु का या शरत् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ।

सरज-सं. पु.—१ एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

[सं. सर्ज] २ मक्खन नवनीत । (डि. को; ह. नां. मा.)

३ शाल नामक वृक्ष ।

सं. स्त्री.—४ माला ।

वि.—सृजन करने वाला ।

सरजक-सं. पु. [सं. सर्जक] मठा डाल कर फाड़ा हुआ दूध ।

सरजण-सं. पु. [सं. सृजण] १ सृष्टि, रचना, निर्माण ।

[अं. सर्जन] २ ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत शल्य चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, जर्राह ।

सं. स्त्री.—३ सृष्टि करने की क्रिया, रचना करने की क्रिया ।

रू. भे.—सिरजण, सिरज्जण ।

सरजणहार-वि. [सं. सृजणम्] १ सृजन करने वाला ।

२ ईश्वर, विधाता ।

उ०—१ खींचो खींचणहार, मन घोळो रागो मती । समर्थ सरजणहार, सही बजाजी सांवरो ।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सोहइ सहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार । नर नारी सहु विलविलइ, हय हय सरजणहार ।—ढो. मा.

रू. भे.—सिरजणहार, सिरजणहारो, सिरजनहार ।

सरजणौ, सरजबौ-क्रि. स. [सं. सृज] १ सृष्टि करना, सृजन करना ।

(उ. र.)

उ०—१ जिण हर सरजत नर जनम, सुजदी रसण समाथ । कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ देव किसी उपमा देऊं, तें सिरज्या सहुकोय । तूं सरीखो तुंहि ज तूं, अवर न दूजो कोय ।—ह. र.

२ तय करना, निश्चित करना ।

उ०—बीच बजारां वांणिया, भांजै सरजै भाय । पाथां रा लेखा करै, दावां रा दरयाव ।—वां. दा.

३ बनाना, निर्मित करना ।

उ०—पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत कंकण होय । सरज्या नहीं अमनमा 'सलखा', दो पासा नासां नग दोय ।

—सांयौ झूलो

सरजणहार, हारौ (हारी), सरजणियौ—वि० ।

सरजिग्रोड़ौ, सरजियोड़ौ, सरज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरजीजणौ, सरजीजबौ—कर्म वा० ।

सरज्जणौ, सरज्जबौ, सिरजणौ, सिरजबौ, सिरज्जणौ, सिरज्जबौ, स्रजणौ, स्रजबौ—रू० भे० ।

सरजया-सं. स्त्री.—डिंगल का एक अलंकार विशेष जिसमें यथा संख्यालंकार का युक्ति से शृंखलायुक्त वर्णन किया जाता है ।

सरजनमा, सरजन्म-सं. पु. [सं. सरजन्म] १ कमल ।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

[सं. शरजन्मन्] २ कार्तिकेय, स्कन्द ।

सरजळ-सं पु—१ तीरों का जाल ।

२ माया जाल ।

३ देखो 'सजळ' (रू. भे.)

सरजळाइग्यारस-सं. स्त्री.—आषाढ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
रू. भे.—सिरजळाइग्यारस।

सरजस, सरजसका-सं. स्त्री. [सं. सरजस्, सरजस्का] रजस्वला स्त्री।

सरजांम—देखो 'सराजांम' (रू. भे.)
उ०—घर मैं जाय'र देखैतो पांच सेर आटै री सरजांम नहीं।
—दसदोख

सरजा-सं. पु. [फा. शरजाह] १ श्रेष्ठ व्यक्ति।
२ सरदार।
३ सिंह, शेर।
सं. स्त्री. [सं.] ४ ऋतुमती स्त्री।

सरजित, सरजित्त, सरजीत-वि.—१ सरस, हराभरा।
२ आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश।
उ०—डील ऊकळै वभकी उठै, मरद त्रंवाळा आ गिरै। जाळ झाली देय वुलावै, सुखद छांय सरजित करै।—दसदेव
३ सजीवित।
उ०—१ पहुर हुवउ ज पधारियां, मौ चाहंती चित्त। डेडरिया खिण-मइ हुमइ, घण वूठइ सरजित्त।—ढो. मा.
उ०—२ गुडियंत जूह गडाड ए, सरजीत जांणि पहाड ए।
—गु. रू. बं.
उ०—३ मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि आया। हाडा मुकुंदसिंह सारीखा। गौड़ अरजन सारीखा सीसोदिया सुजांणसिंघ सारीखा। झाला दळथंभ सारीखा। ग्रौर ही छत्रीस वंस हिंदू सरजीत कीजै।—र. वचनिका
४ रचित।
उ०—वांणि अनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजित्त। गाहां करई वर रसाउला, दूहा छंद कवित्त।—गु. रू. बं.
५ विजयी।
उ०—'केसव' अजीत सरजीत कोट, 'वाघउत' वरण अरि घड अबोट।—गु. रू. बं.
६ सचेतन।
उ०—ताहरां जमलै कह्यौ 'ठाकुरै जै कंही रै वडकुमार बेटी हवै तौ भेळी सुत्रांणो ऊवैरी वाफ सूं सरजीत हवैं।
—लाखै फूलांणी री बात
रू. भे.—सिरजीत।

सरजीव—देखो 'सजीव' (रू. भे.)
उ०—१ थळ कज्जळ सरजीव, कना असताचळ अग्रज। कना सेव फारणै देव सुत, आया दिग्गज। —रा. रू.
उ०—२ सूर धरम परखण ग्रह साखै, इक सरजीव करण नह ग्राखै।—सू. प्र.

सरजीवण—देखो 'सजीवण' (रू. भे.)
उ०—तैंहीज कीधा सात दीप, नवखंड प्रथमी। तैंहीज कीधा विविध विख, सरजीवण ग्रांमी।—राज-उद्धार

सरजीवत—देखो 'सजीव' (रू. भे.)
उ०—१ सात वीस सांवला करूं पाछा सरजीवत। तोनूं केसर चाढ देवूं रिध सिध दोनूं दत।—पा. प्र.
उ०—२ सिरी घटियाल ग्ररोहित सेर, सख्यां मवताहल माळ सुमेर। किया सरजीवत तेड़ि कबंध, वूभै पितु मात कुसी धजबंध।
—मे. म.

सरजीवन—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

सरजु, सरजू, सरज्यु—देखो 'सरयू' (रू. भे.) (ग्र. मा.)
उ०—त्रिय कोटि कोटि इम सरजु तीर, नग झटित भरत घट हेम नीर। चत्र वर बजार चित्रकांम चार, दुतिवंत वेलि गुल-रंगदार।
—सू. प्र.

सरजोड़, सरजोर—देखो 'सिरजोर' (रू. भे.)
उ०—१ राजा जोधपुर का सांथि सावल राठोड़। ऊंनै वंस कूरम की फोज सरजोड़।—शि. वं.
उ०—२ साकुरा मेळसी इसौ सरजोर रो, नजर आवै इसो नाथ बदनोर।—महादांन मेहडू

सरजोरी—देखो 'सिरजोरी' (रू. भे.)

सरज्जणौ, सरज्जबौ—देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—सरज्जै आप त्रिधा संतार, हुवौ मभ आप ही रम्मणहार।
—ह. र.
सरज्जणहार, हारौ (हारी), सरज्जणियौ—वि०।
सरज्जिग्रोड़ौ, सरज्जियोड़ौ, सरज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरज्जीजणौ, सरज्जीजबौ—कर्म वा०।

सरज्जियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरज्जियोड़ी)

सरट-सं. पु [सं. शरटः] २ गिरगिट। (डिं. को.)
२ कुसुम।
सं. स्त्री.—३ निशाना लगाने की क्रिया या भाव।
४ वायु, पवन।
५ धागा।
६ देखो 'सरठ' (रू. भे.)

सरटि, सरटौ-सं. पु [सं. सरटिः] १ पवन, हवा।
२ बादल, मेघ।
३ छिपकली।
सं. स्त्री.—४ लाजवंती स्त्री।

सरटिफिकेट-सं. पु. [ग्रं.] प्रमाण-पत्र, सनद।

सरठ-सं. पु. यौ.—१ अनाज का सरकार द्वारा निश्चित किया हुग्रा भाव।
२ माल क्रय या विक्रय की निश्चित अवधि का वह नियम जिसके अनुसार अगर माल ग्राहक को पसन्द न आया तो उस निश्चित

कट्टि के भीतर खरीदा हुआ माल वापिस दिया जा सकता है।

३ [illegible], [illegible]।

रू. भे.—सरट्ट।

सरट्टबंदियौ, सरट्टबंदियो-वि.—१ राज्य सरकार द्वारा निश्चित भाव पर बिकने वाला सामान।

२ 'कंट्रोल रेट' से क्रय-विक्रय होने वाली वस्तुएँ।

सरठौ, सरडौ-सं. पु. (स्त्री. सरठी, सरडी) ऊंट। (अ. मा.)

उ०—सुणि ढोला करहउ कहइ, सांमि तणउ मो काज। सरठौ देह न छिंडिवउ, मुंध न मेल्हूं आज।—ढो. मा.

सरण-सं. स्त्री. [सं. शरण] १ आश्रय, पनाह।

उ०—१ सिव संभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणम कथै सूर। पति लघु लिखो सरण तक आवै, पाव गुणं सुज वदवण पावै।—रा. रू.

उ०—२ त्रिभुवण मांहि न तोसूं तोळै, सरण रास मो 'ईसर' वोरै।—ह. र.

उ०—३ किणीई रैबारियां रै वाड़ां री सरण लीवी, किणीई भीलां रा भूंपा संभाळ्या तो कोई रा पग घेट भेतां री बाजरियां में जावता ठमिया।—अमर चूंनड़ी

२ ओट, आड़।

उ०—वालंभ दीवक पवन भय, अंचळ-सरण पयट्ठ। कर हीणउ घूंघट कमळ, जांण पयोहर दिट्ठ।—ढो. मा.

३ सहारा।

४ वात-विकार के कारण शरीर में विशेषतः हाथों-पैरों में होने वाला रोग विशेष।

उ०—१ पींडियां में सरणां चालै, सीयाळै पाहळियां में चटीड़ा उठै।—फुलवाड़ी

उ०—२ कड़ियां चीस, पगां सरणां मतवाय ऊबका, उचाटां, रूं रूं तूटतौ घर हाडकां रौ कुळणौ।—फुलवाड़ी

५ घर, मकान। (अ. मा.)

६ रास्ता, पथ।

७ आश्रयस्थल, बचावस्थान।

८ विश्रामस्थान।

९ कोठरी, कमरा।

१० भगवान् विष्णु का नाम।

[सं. सरणं] ११ आगे गमन करने की क्रिया।

१२ लोहे का जंग।

वि.—१ शरण में आया हुआ, शरणागत।

उ०—१ धणी मूंगां सरण मरण संक धारियां, लाज मन धरै 'सिमाल' मट लारियां।—जसो आढो

उ०—२ सेरसाह दिल्ली तखत, बैठो बळ निज बाह। उमरांणै नर आविनौ, सरण हुमाऊं साह।—बां. दा.

२ गमन करने वाला, गतिशील।

रू. भे.—सरणि, सरणी, सरन, सरिण।

सरणईसाधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

सरणमंत्र-सं. पु.—गोकुलियां गोसाई संप्रदाय का गुरु मंत्र जो प्रायः सर्व साधारण को भी सुनाया जा सकता है।

सरणसधार, सरणसाधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

उ०—१ जनपाळ सीदयाळ सुलख जियगत जांमी, सरणसधार बिरदधार हणूंमांन सांमी।—र. ज. प्र.

उ०—२ विध त्रिपुरार रित पाय वंद, सरणसधार करण सानंद। कह गुण गाथ 'किसन' कविंद, नाथ अनाथ दसरथनंद।
—र. ज. प्र.

उ०—३ धनुस धरण अवगुण नंह धारै, सरणसधार कहै जग सारै।—र. रू.

उ०—४ आदि लगि सरणसाधार लाला हिमैं, भलो सतसाल दूण भलां भावां। मांगि पातसाह मा मांग मुध मीरजां, आव मैदांन मैदांन आवां।—जांम सत्ता रौ गीत

सरणांट—देखो 'सरणाट' (रू. भे.)

उ०—सर्मे सरणांट तुपकां सरां है खुरां, वीजड़ भड़ै ऊपाटां पाट वूठो। पांव विमुहां सड़ै धड़हड़ै असुर पिंड, राव अहराव रै भाव रूठो।—भीमसिंघ हाडा रौ गीत

सरणाई-वि.—१ शरणागत, शरण में आने वाला।

उ०—१ केहरि केस भमंग मणि, सरणाई सुहडांह। सती पयोहर क्रपण धन, पड़सी हाथ मुवांह।—हा. झा.

उ०—२ थांन सवाई थापिवा, मांन अरज महाराज। चढ़ियौ फज सरणाइयां, सझि दळ प्रबळ समाज।—रा. रू.

उ०—३ वस्यौ लिलाट राह विग्रहतै, संकर मयंक न राखि सकेह। सरणाई 'खेता' सीसोदा, 'लाल' केणी नह कीयौ लेह।
—लाला हाडा रौ गीत

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—अलंब नेजा, माहामरातप ढोल, ददांमां नीसांण सरणाई रणतूर रणकाहल नफेरी तबल।—व. स.

सरणाईराय-वि.—राजा, महाराजाओं को शरण देने वाला।

उ०—सरणाई साधार सरणाईराय विजै पंजर रूपका अनंग आजांनबाह। खटव्रन सुरतर हिंदुसथांन का पातिसाह।—सू. प्र.

सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड़, सरणाईसोहड—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

उ०—१ वीराधि वीर, आजांनबाह, सरणाईसधीर नरां रौ नाह।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दूदो कवर सरणाईसाधार सुणतां ही सहाइ देर लार हुवो। जिकण आपरा अनादर रै आंटै अकबर जिसड़ा पातसाह थी तोड़ी तिण रो प्रतीकार दिखावण रै काज केवल वीरभाव रो जग

चाहियो ।— वं. भा.

उ०—३ सरणाईसाधार सरणाईराय विजै पंजर रूप का अनंग आजानबाह , खटव्रन सुरतर हिंदुसथांन का पातिसाह ।—सू प्र.

उ०—४ पांचमो परनारी सहोदर । छठो चरुचुगाळ । सातमो सुखी । आठमो सरणाईसोहड । नवमो विरद अणभंग ।
—रा. सा. सं.

सरणागत–सं. पु. [सं. शरणागत] शरण में आया हुआ जीव या व्यक्ति ।

उ०—१ अवधि नगर रै ईसरा, एहा हाथ उदार । यण सरणागत वासतै, दीध लंक सुदतार ।—र. ज. प्र.

उ०—२ समैं कुसमैं सुर सारत सार, पुकारत आरत वंत पुकार । सुखी करिये अति आप समांन, दुखी सरणागत ऊमरदांन ।
—ऊ. का.

उ०—३ सरणागत सुख करन कुं, तुमरो विड़द विराज । अपनो ही जन जांन कें, क्रपा करो महाराज ।—परमानंद वणियाळ

रू. भे.—सरणागति, सरणागती, सरणाय, सरणायत, सरनांगत ।

सरणागति, सरणागती–सं. स्त्री. [सं. शरणागति] १ शरणागत होने का भाव ।

२ देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—चित रहै जां मन रहै कहर, कहर हाथि वोह मांण करि । एकळा पिसण लागू अवर, हूं सरणागति नांव हरि ।
—सुरजनदास पूनियो

सरणाट–सं. पु.—फूंक वाद्यों (शुषिर) से उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

२ तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि, सनसनाहट ।

३ बेंत, कामड़ी आदि लचीली छड़ी के प्रहार और आघात से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—बेंता रा सरणाट उडै सड़ंद सड़ंद ।—रातवासौ

४ अस्त्रों के तीव्र वेग से चलने व छूटने पर होने वाली ध्वनि ।

उ०—गोफणियां रा सरणाट उड़ै । सूंतमी चांमडपोस गोफण गोळ गोळ एक माप रा गोफणिया अर चौधरी रै बाहुड़ां रो करार ।
— अमर चूंनड़ी

५ पक्षियों के तेज उड़ने से होने वाली ध्वनि ।

क्रि. वि.—तीव्रता से, वेग से ।

उ०—१ पांचूं साथी मांय जावण सारू त्यार व्हिया इज हा कै वांरै माथाकर सूंसाड़ करतो गोफणियो सरणाट नीसरियो ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ पही सरणाट बहनां रथां पूर रथ, गिरद गरणाट पड़ साद गाजै । निहंग छणणाट बाजै पगां नूपरां, विमांणां घाट भणणाट वाजै ।—भोपाळदांन सांदू

रू. भे.—सरणांट ।

सरणाटै–क्रि. वि —तेजी से, वेग से ।

उ०—घांटी तो सरणाटै बधती ई गी । जांणै आभा सूं तारो तूटो ।—फुलवाड़ी

सरणाटो–सं. पु. [सं. सनष्ट] १ निस्तब्धता, सुनसान व शान्त वातावरण, सन्नाटा ।

उ०—१ अंधारी रा सरणाटा मैं जिण वेळा दुनियां सुख री नींद सोवै, नाथू किसन जी रै घर रै च्यारूं मेर आंटा देवतो ।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ सोपो पड़ग्यो सरणाटो छायो । वत्ती काटी, लोटियो बुझायो ।—दसदोख

उ०—३ राजकंवर कमेड़ी री घांटी मरोड़ी तो देंतराज है जठै ई लांबो व्हैगो । थोड़ी ताळ तांई लटपट करनै मरग्यो । उणरै मरतां ई समंदर रो तूफांन मिटग्यो । सरणाटो छायग्यो ।—फुलवाड़ी

२ पवनाघात ।

उ०—१ कंवर सूरज-मुखी घोड़ा माथै पवन सूं होड़ लेतो उडियो घड़ीक तो जांणै आकास मैं उड़ जावूं घड़ीक जांणै पाताळ मैं बड़ जावूं । सरणाटा रा थपीड़ सूं आंख्यां मैं फुहारा छूटण लागा ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ ए सगळी आवाजां आंधी रा सरणाटा मैं सुणीजै ज्यूं गांम रा इण खूंणां सूं उण खूंणां तांई एक सरीखो सुणीजै ।
—अमर चूंनड़ी

२ मानसिक उत्तेजना या चित्त के क्षोभ के कारण होने वाली व्यग्रता या उत्कंठा का भाव, जोश ।

उ०—१ दो घड़ी दिन चढ्यां हणहणाट करतो घोड़ो हींसियो । मां रा आखा डील मैं सरणाटो दौड़ग्यो । दुवारी छोड भचकै ऊभी व्ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बेटी री नस नस मैं सरणाटो दौड़ग्यो । डील ठाडो हेम पड़ग्यो । ठाडा धूजता सुर में बोली—मां, वा बात याद नीं दिरावो तो सावळ ! याद करतां ई अबार बेचेतै व्हूं जेड़ी बात है ।—फुलवाड़ी

३ तेज वायु की ध्वनि ।

उ०—नीचो नैणां सूं धोवां जळ धावै, ऊंचो ईखण रो अभलेखो आवै । गाढी गयणांगण रज लै गरणांटा, सावण सूकोगो देतो सरणाटा ।—ऊ. का.

सरणाणौ, सरणाबौ–क्रि. स.—तेज ध्वनि व आवाज करना ।

उ०—कंवर री अेक साथी घोड़ा रै अेडी लगाय खेत री माठ लाघी ई ही कै हवा रा रेसा चीर सरणातो अेक गोफणियो उणरै सांम्ही लिलाड़ वटीड़ करतो उडियो ।—फुलवाड़ी

सरणाय, सरणायत—देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ० —१ जुड़हाथ माथ नमाय जंपै, गुणां 'किसनो' गाथ । सरणाय लंक समाथ समपण, निमो स्रीरघुनाथ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ दांम काचा न दे पाल मगवै परियां रे । वालै छूटा उतन

सिरै सरणागत उबारै ।—रा. प्र.

२ देखो 'सरणाई' (रू. भे.)

उ०—सरणाद-साद नीमोन सर, कूंनियै दोजां रच दिया । सूटती राग सरणाई-सर्णू, जगमाल बगाविदा ।—जगमाल री गीत

सरणागतसाधार, सरणागतसोहड़, सरणायांसोहड़-वि.—सरणागत वत्सल, शरणागत की रक्षा करने वाला ।

उ०—१ जिगणिगा कूंवाहरो, सरणायांसाधार । कर आदर सरणै लियो, धर्म कियो निग धार ।—रा. रू.

उ०—२ दल प्रसार रांणो भीम, कौरनि को कोम, मोजताळा बिद, नित को समंद, आचार को ईंद, सरणायांसाधार, हींदुपति पातस्याह, कळंक को अवतार महिमा अपार ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

रू. भे.—सरणाईसाधार, सरणसधार, सरणसाधर, सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड़, सरणाईसोहड, सरणासधार ।

सरणारथी-वि. [सं. शरणार्थिन्] जो किसी का आश्रय या शरण चाहता हो या जो किसी की शरण में हो ।

सरणासधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू. भे.)

उ०—दसरथ कुमार धनुबांण धार, जुध असुर जार सरणासधार ।

—र. ज. प्र.

सरनि, सरणी-वि.—शरणार्थी ।

उ०—गरभ तणी दुक्ख नहीं कोइ सरणि, अहूठ कोडि सउ कीजइ प्राणिवरण ।—वस्तिग

२ शरण देने वाला ।

उ०—आनी बोकड़ गाडर जंति, खाटकी नै गइ छइं कांपंति । पारखा तै पांमइं मरण, नींह बापडां नही कोइ सरणि ।

—वस्तिग

सं. स्त्री. [सं. सरनिः, सरणीः] १ दो पर्वत श्रेणियों के बीच का तंग संकरा मार्ग, घाटी ।

उ०—अर प्रांमारां रा वैर मावै अर चहुवांणां रो चक्र अरबुदाचळ री सरणी रै ममुन पाघरो ही धकावै छै ।—वं. भा.

२ मार्ग, रास्ता । (डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वेद पुरांण कायदां बरणी, अघ हरणी जरणी अजर । केवल जो चाहे सुग सरणी, करणी करणी याद कर ।

—बगतावर मोतीसर

उ०—२ मरुद्ध राजधांनी सुरम उदार भार भलाई । कहियो कुळ सरणी कंवर, मननो नम न चलाइ ।—वं. भा.

३ सीधी रेखा ।

४ घोड़े का रोग विशेष ।

५ ढंग, तौर, तरीका ।

६ भूमि, जमीन ।

७ देखो 'सरण' (रू. भे.)

उ०—१ यों सांभरि साहां 'अजन', कांण न रखै काय । बेटी चूड़ांमणि तणी, आयो सरणि नलाय ।—रा. रू.

उ०—२ जेती भुंइं राम्रो तेतो तूं सरणि, मुझ मनु कां इम दूमइ जीवहु मरणि ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हूं युधिस्ठर विप्र, तूं युधिस्ठर नरेस्वर मित्र । पांच पांडव वनांतरि नाठा, ताहरइं सरणि तु अम्हे पयठा ।—सालिसूरि

सरणो-सं पु.—आश्रय, शरण ।

उ०—दांमोदर दीजै मतो, कायर कांठै वास । सरणै रहो सूर रे तेथ न व्यापै त्रास ।—वां. दा.

उ०—२ छूटा सरणै पीर रै, मीर सबै तिण वार । मेल दियो परचंड पण, डंड दियो अणपार ।—रा. रू.

उ०—३ खेत मैं पग दियो तो थें थांरी जांणो । म्हारै खेत मैं सरणै आया सूवर रै सांम्ही करड़ी निजर सूं ई जोयो तो आंख्यां रा कोया फोड़ न्हाकूंला ।—फुलवाड़ी

उ०—४ कह्यो—म्हारी मुगती अबै आपरै हाथ है । म्हारै हीयै अणचींत्यो वैराग री गोटो ऊठियो—अबै आपरै सरणै हूं ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सरनो ।

सरणौदेवी-सं. स्त्री.—बागड़िया शाखा के चौहानों की कुलदेवी का नाम ।

सरणो, सरबो, सुरणो, सुरबो-क्रि. अ.—१ सिद्ध होना, सफल होना ।

(उ. र.)

उ०—१ साहिब आया हे सखी, कज्जा सहु सरियाह । पूनिम केरै चंद ज्यूं, दिसि च्यारै फळियाह ।—ढो. मा.

उ०—२ सात दीप नवखंड फिरै, कारिज सरै न कोय । जनहरीया कारज सरै, उलटि आप मैं होय ।—अनुभववांणी

२ बनना, पूर्ण होना ।

उ०—१ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून । ऊबांणो सायद भरै, सो गोलां घर सून ।—वां. दा.

उ०—२ यूं म्हारी मायो सूंप दै तो बातां रै साथै ओ कांम ई सर जावै । नींतर म्हनै घरै जांणो पड़ैला ।—फुलवाड़ी

३ पार पड़ना ।

उ०—१ अमीरां रै तो कांई कोनीं, पण गरीबां रो जीवणो हराम व्हे जावैला । बस्ती सूं टळियां नीं सरै । जित्तोई माया री टरको व्हो, खांधिया भाड़े नीं आवैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लियां दियां बिनां कैड़ा ई मोटा सेठ रै सरै कोनी । सगळा ई लोग उणरी आदत जांणता हा । चौवळा मैं उण रै नांम री माळा ही ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मां रै लारै दौड़ बळै पूछ्यो—कांई, लुगाई रै वास्तै ब्याव करणो जरूरी है । जे ब्याव करियां बिना सर जावै तो ।

—फुलवाड़ी

उ०—४ बोल्यौ—आ ई कदै व्है कै म्हैं आवूं कोनी। राजाजी नै खोटी करियां सरै भलां! सात समंदरां परली पंचायती निवेड़नै सीधौ आयौ हूं।—फुलवाड़ी

४ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना।

ज्यूं—म्हाऊं सरै जित्तौ चंदौ म्हैं ई देवूं।

५ कार्य आदि का निर्वाह होना, पूरा होना।

ज्यूं—हजार रिपियां सूं ब्याव रौ कांम तौ सरगी, आगै फेर देखां।

उ०—वांरी भोळप अर काली बातां सूं केई स्वारथी लोगां रौ मतलब सरतौ हो। घर वाळा आपरै नाता रै कारण साथै रेवणौ चावता अर कुलालची आपरै लालच सारू।—फुलवाड़ी

६ लक्ष्य सिद्ध होना।

ज्यूं—दोय झगड़ै जणां तीजा रौ कारज सरै।

उ०—आ तौ अबारूं देखतां देखतां वहीर व्है जावैला। पछै नीं लाग्यां सरै अर नीं छोड्यां मन पतीजै। अेड़ी तौ कदैई नीं पजी। तौ कांई वींद नै लाग जावूं।—फुलवाड़ी

७ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना।

८ पर्याप्त होना, काफी होना।

उ०—कह्यौ जी, माहरै तौ नव कोड़ चाहीजै अेकै कोड़ न सरै।

—सयणी देवी री बात

ज्यूं—दस रिपिया सूं म्हारौ घर कोनीं सरै।

९ संभव होना।

१० होना।

उ०—पावासर री पाज, हंसा हेरण हालिया। कोई न सरियौ काज, जागा सूंनी जेठवा।—जेठवा

११ आकार-प्रकार, रूप रंग, गुणादि में शिशु संतान का किसी के अनुरूप या अनुसार होना।

१२ चलना, निभना, निभाव होना।

उ०—मां रै गळा सूं मतै ई बोल रळक पड़्या—नीं सरै, वेटी, नीं सरै। भगतण रा जमारा विचै ई अण व्याही लुगाई रौ जमारौ कावळ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण तौ ई आ दूजी वात ई इण सूं कम साची नीं है कै मिनख बिना लुगाई रौ जमारौ साव अकारथ अर बिरथा है। नीं मिनख रै लुगाई बिना अेक पल ई सरै अरनीं लुगाई रै मिनख विना अेक पल ई सरै।—फुलवाड़ी

उ०—३ थांकी जसां सरीखी उठै लाखां परणां, मांकी सोभा मैं कांइ वरणा, मांनै तौ अनेका न्यौरा करै छै मांरै यण विन कांई नहीं सरै छै।—मयारांम दरजी री वात

१३ घूमना-फिरना, विचरित होना।

उ०—माधव! मनि मा हारि तू, जै नर जांणइ तोलि तै। नर तिम सघलइ सरइ, वंभ! म वाली बोलि।—मा. कां. प्र.

१४ व्यतीत होना, बीतना।

उ०—तौ ई थारै जचगी है तौ इण नाकुछ बात सारू क्यूं बेराजी करूं। थूं कोई फूटरौ नांव बताय देजे। राख लूंला। पच्चीस बरस तौ 'लट्टूरा' नांव सूं सरग्या धकला बरस दूजा नांव सूं धकाय लूंला।—फुलवाड़ी

१५ पड़ना, विवश होना।

उ०—१ हथळेवा वाळौ छळ-छंद अबै जावतां सुभट व्हियौ। सुभट व्हियां घणौ वत्तौ अळूझगी। इण भांत कपट रचण री कांई जरूरत ही। अबै तौ झूठ नै साच अर साच नै झूठ मांन्यां सरैला।

—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हनै कह्यौ अर भाटा नै कह्यौ बिरोबर है। पण पिरसूं म्हनै ठा नीं पड़ी तौ आपनै बतायां ई सरैला, पैला कै दूं।

—फुलवाड़ी

१६ रहना, पड़ना।

उ०—१ बाप आछा अचंभा अर आधी रीस मैं कह्यौ—डीकरी थूं कठैई त्रिकाळ काली नीं व्हैगी। भूंपै आया भाग रै ठोकर मारै। जोड़ी रौ रूपाळौ वर है। लाखां मैं टाळकौ। फेर बीकांणै रौ राजकंवर। अेकर सीताजी नै ई ईसकौ व्हियां सरै। थूं हाल टाबर है।—फुलवाड़ी

उ०—२ हाथ माथै हाथ धरनै बैठ जावौ, करमां मैं कमाई लिखी है जकौ तौ व्हियां सरैला। पछै क्यूं माया जोड़ण सारू कूड़-साच करौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सगळा अेक दूजा रै मूंडा सांम्ही देखता रह्या अर महारांणी धम-धम करती मेड़ी चढगी। इण घर री लाज तौ अबै भावी रै हाथां हैं। लिखी है जकौ तौ व्हियां ई सरेला।

—फुलवाड़ी

सरणहार, हारौ (हारी), सरणियौ—वि०।

सरिओड़ौ, सरियोड़ौ, सरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरीजणौ, सरीजबौ—भाव वा०।

सरण्य—वि. [सं.] १ शरणागत की रक्षा करने करने वाला।

२ जिसके भाग्य खराब हों, अभागा।

सं. पु. [सं. शरण्यं] १ आश्रयस्थल, आश्रयस्थान।

२ रक्षा करने वाला व्यक्ति।

३ रक्षा, सुरक्षा।

४ अनिष्ट, अपकार।

[सं. शरण्यः] ६ शिव, महादेव।

सरण्या—सं. स्त्री. [सं. शरण्या] दुर्गा देवी का नाम।

सरण्यु—सं. पु. [सं. शरण्युः, सरण्युः] १ रक्षा करने वाला व्यक्ति।

२ बादल, मेघ।

३ पवन, हवा।

४ बसन्त ऋतु।

२ [illegible] ।

६ [illegible] ।

७ [illegible] ।

सं. स्त्री.—८ मुर्ग-पक्षी का नाम ।

सरतन, सरतंत—देखो 'सरतन' (रू. भे.)

उ०—१ सूत कपास री सेर बेचै, पायां बणावै, 'जसो' बारीक काते घर में घाती सरतंत ।—जैसी नाय तैसी बुद्धी उपजै री बात

उ०—२ सो राजा सरच री सरतंत करै मांणस एक लारै दक्षिणी नको गेलियो घो सो उणरी वाट जोवै ।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—३ महाराज सोगजसिंह जी बीकानेर पधार खरच बरच री सरतंत कियो ।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—४ तद कही—थें जावो, गांवां री उतारो कर सताव मेलज्यो, जिण माफिक लोगां नूं पटो मेल देस्यां, सो सारो सरतंत कर दियो । घाली जमीरत कीवी ।—ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

सरत—सं. पु. [सं. शरद] १ संवत्, वर्ष, साल । (डि. को.)

[सं. शर] २ तीर, बाण ।

उ०—सुर सरत घर सिर भरत सत, पळ चरत फळचर ग्रघत ग्रत । मिळ ग्रहर हरगत चित महत, पग निरख वीरत वरत रत ।

—र. रू.

३ सरोवर, तालाब ।

उ०—नरत झरत सूकत सरत दादर गरत दुरंत । प्रीतम घर नन पेगसां, वैरण वणी वसंत ।—ग्रग्यात

सं. स्त्री.—४ किसी काम या बात की सिद्धी के लिए ग्रपेक्षित बातें, शर्तें ।

उ०—कह्यो—जु, धरती दीवी । ग्रर सरत री वेढ करो । ग्रा वात दीवाण रा परधानां कबूल कीवी ।—नैणसी

५ दाव-पेंच, बाजी ।

६ किसी बात, घटना ग्रादि की सत्यता, ग्रसत्यता ग्रादि के सम्बन्ध में दो पक्षों द्वारा दांव पर लगाया जाने वाला धन ।

७ कर्तव्य ।

उ०—धाक पहल धाड़िया, जुड़ण चोगांन जमींरां । ग्रवै कोट लै ग्रोट, पेह नह सरत ग्रमीरां ।—सू. प्र.

८ देखो 'सरिता' (रू. भे.) (ग्र. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—दर मेल ग्रमोड़ै वेळ एम, जरदैत टहै तर सरत जेम । कळळै नहं नज तुरंग एक, वामूळै पूळां सूं विसेस ।—रा. रू.

सरतग्रधीस—सं. पु. यौ. [सं. सरिता+ग्रधीश] समुद्र । (डि. को.)

सरतकाळ—देखो 'सरदकाळ' (रू. भे.) (उ. र.)

सरतचंद, सरतचंद्र—सं. पु. [सं. शरत्चंद्र] शरत्कालीन चन्द्र जो सुंदर व शीतल होता है ।

सरतत—देखो 'सरताज' (रू. भे.)

सरतन, सुरतन—सं. पु.—१ इंतजाम, बंदोबस्त, प्रबन्ध ।

उ०—१ रांड रो ग्रो जलम तो बिगड़ियो जको बिगड़ियो ई, ग्रगलो बिगाड़ण रो ई सगळो सरतन कर लियो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दोनूं एक ई मारग वहीर व्हेगा तो रोट्यां रो सरतन दोरो सजेला ।—फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रबै भूख लागी है खाणे-पीणे रो सरतन करो ।

—वरसगांठ

२ सामान, सामग्री ।

उ०—कंवर रो ग्रादेस व्हेतां ई हांकरता सिकार रो सगळो सरजांम सरतन सजण ढूको ।—फुलवाड़ी

३ साधन, उपाय ।

उ०—१ घेड़ बीस पचीस हाथ ऊंडो । गोळगट्ट । फोडी री जात चिकणो, माखी पितळै । चढण रो तो कीं सरतन नीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ठिकांणा री रया वणरी जबराई ग्रागे कळपळै चढगी तो ई ठाया रो खूंटो छोडनै जावै तो ई कठै ! उण ठिकांणे जीवण री दारू मोत सूं ई वत्ती ही । मरियां बिना दुख, संताप ग्रर विखा रो फंद काटण गे कीं सरतन नीं हो ।—फुलवाड़ी

४ वैभव, ग्रार्थिक स्थिति ।

ज्यूं—चौधरी रै घर रो सरतन ठीक हो ।

५ ऐसा ग्राचरण, बर्ताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त बनता हो, तालमेल ।

उ०—म्हैं जात री नाग, देख्यां डरै, खायां मरै । ग्रर थूं जात री लुगाई । घरवास रो कीं सरतन ई तो नीं जुड़ै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सरतंग, सरतंत ।

सरतनाह, सरतपत, सरसपति, सरसपती—सं. पु. यौ. [सं. सरिता+नाथ, सरिता+पति] समुद्र, सागर ।

उ०—१ सथ ऊठ नकीवां सरळ सद्द, रवि उदय ग्राद सभिया रवद्द । ग्रायुद्ध बांध ग्रालम्मसाह, नव ऊत फिर पूनम सरतनाह ।

—रा. रू.

उ०—३ वमु मांस कादम मचै, ग्रसत परवत वणै, रुधिर मिळ सरतपत हुग्रो रातो । ग्रजोध्यानाथ दस-माथ रावण ग्रडग, महा वेहू ग्रोर भाराथ मातो ।—र. रू.

सरतपूनम, सरतपूरणिमा—देखो 'सरदपूरणिमा' (रू. भे.)

सरतर—सं. पु यौ. [सं. सुरतरु] १ कल्पवृक्ष । (ग्र. मा; नां. मा.)

[सं.] २ सरोवर, तालाव ।

उ०—तरवर वन सिखर जोवतां सरतर, कर सारंग तुग्रीर कर ।

—र. रू.

सरतवरा—देखो 'सरितवरा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सरतांपत, सरतांपति, सरतापती—देखो 'सरतपति' (रू. भे.)

सरता—सं. पु. [सं. सर्तृ] १ घोड़ा, ग्रश्व । (डि. को.)

सं. स्त्री. [सं. शरता] २ बाण-विद्या ।

३ देखो 'सरिता' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरताज-वि. [फा. सर+अ. ताज] १ श्रेष्ठ, शिरोमणि ।

उ०—१ सुहड़ां लिग्रा सकाज, दळ 'खुसाल' दरयाव तट । सोनगरो सरताज, आयो वध ग्रेहड़ी अभंग ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ ततो झालियां बेग खगराज वाळी तरह, घाव माठा नरां आज घालै । कंवर सरताज जग चंदनांमौ कीयो, लियो जस दियो गगराज लालै ।—जवांनजी आढो

२ मुकुट, छत्र ।

रू. भे.—सरतज, सिरताज ।

सरति—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—रांम समांन न कोई राजा, सरति न काइ सुरसरी समांन । सती न काइ समोवड सीता, गीता समोवड़ न को गिनांन ।

—ह. नां. मा.

सरतिया-क्रि. वि. [सं. शर्तिया] अवश्य ही ।

सरतिवरा—देखो 'सरितिवरा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सरती—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

सरत्काळ—देखो 'सरदकाळ' (रू. भे.) (उ. र.)

सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा—देखो 'सरदपूरणिमा' (रू. भे.)

सरथ-स. पु. [सं.] एक ही रथ पर सवार योद्धा ।

सरदंड-सं. पु. [सं. शरदंड] १ चाबुक ।

२ सरकंडा ।

सरद-सं. स्त्री. [सं. शरद] १ शरद ऋतु, शरद का मौसम । (डिं. को.)

उ०—१ सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस अटा बिलंद । नगर थटा रुख निरखियां, स्वरग छटां व्है मंद ।—बां. दा.

उ०—२ ग्रीखम पावस सरद गहाई, ए च्यारू कळियुग में आई ।

—ऊ. का.

२ तरवार । (डिं. को.)

सं. पु.—३ तालाब, जलाशय ।

४ वर्ष, साल ।

[सं. सरदू] ५ पवन, वायु ।

६ बादल, मेघ ।

७ छिपकली ।

८ मधुमक्खी ।

वि.—१ आधीन, विजित, अधिकार में ।

उ०—१ 'सूरसाह' माहाराज घर 'करनेस' कहाया । सोळै सै इठियासियै, पुन टीका पाया । सरब जमी कीनी सरद इक हुकम मनाया ।—महेसदास सांदू

उ०—२ कुसल हरराज रै कांवळघां तणै कज, अरज कर फिर तलवां उठाई । स्यांमगढ चांग चीतार खेड़ै सहत, तिण कियो सरद मेवाड़ तांई ।—जोधजी सांदू

२ शीतल, ठंडा ।

उ०—सोनै रा, रूपैरा, बिदरी, खाखोळ ठाढा पांणी सूं भरिजै छै । नीचै सुथरा बिछायजै छै । ऊपर हुका मेल्हजै छै । नमचा सरद कीजै छै ।—रा. सा. सं.

३ नपुंसक, नामर्द ।

४ धीमा, मंद ।

५ सुस्त ।

६ छोटा खेमा ?

उ०—तांण सरद चवतरफ, करै तजवीज कनातां । कनक झळाहळ कळस, वणै बंगळा वनातां ।—सू. प्र.

५ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ०—विग्रह चाळा वधै, खसै खुरसांणह धायो । दखण दमंगळ करै, सरद साहिजादो आयो ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—सरद्द ।

सरदकांमी-सं. पु. [सं. शरद्+कामिन्] कुत्ता, श्वान ।

सरदकाळ-सं. पु. [सं. शरद्+काल:] शरद ऋतु, शरतकालीन वातावरण ।

उ०—जु इह आकास छै, कि चंद्रमा छै । सरदकाळ की इसी रात्रि उजळ छै ।—वेलि. टी.

रू. भे.—सरतकाळ, सरत्काळ ।

सरदणी, सरदबौ-क्रि. अ.—१ सर्दी, नमी या आर्द्रतायुक्त होना ।

२ देखो 'सरधणी, सरधबौ' (रू. भे.)

उ०—वांणी सुण सतगुरु तणी, कुमर जोड़चा दोनूं हाथ । वचन तुम्हारा सरदह्या, रूड़ा कह्या कृपानाथ ।—जयवांणी

सरदणहार, हारौ (हारी), सरदणियौ —वि० ।

सरदिग्रोड़ौ, सरदियोड़ौ, सरदचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरदीजणौ, सरदीजबौ—कर्म वा० ।

सरदपदम, सरदपद्म-सं. पु. [सं. शरद्+पद्म] सफेद कमल ।

सरदपूनम, सरदपूरणिमा-सं. स्त्री. [सं. शरदपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा ।

उ०—सरदपूनम री रात चांदणी चांदणी चांदो उगो वाल्होजी ।

—लो. गी.

रू. भे.—सरतपूनम, सरतपूरणिमा, सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा ।

सरदमिजाज-वि. [सं. सर्दमिजाज] १ शील, संकोच रहित ।

२ ठंडे स्वभाव का ।

सरदरित, सरदरितु-सं. स्त्री. [सं. शरदऋतु] आश्विन व कार्तिक महीनों की ऋतु ।

उ०—पूनम थावर वार सरदरित है पालट्टी । वीर खेत पूरब्ब, रित्त हेमंत प्रघट्टी ।—गु. रू. बं.

सरदळ, सरदल-सं. पु.—मकान के दरवाजे के ऊपर आड़ा लगा हुआ पत्थर । (ढूंढाड़)

सरदवा, सरदवाई-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का वात रोग।

२ घोड़ों का एक रोग विशेष जिसमें उसके पैर जकड़ जाते हैं।

सरदा—सं. स्त्री. [सं.] १ शरद ऋतु।

२ वर्ष, साल।

३ देखो 'सरधा' (रू. भे.)

उ०—निज सिवज दीन दियौ वरधा, सगतां विट मुज्ज नथी सरदा।—पा. प्र.

सरदाई, सरदाई-सं. स्त्री.—१ शीतलता, ठंडक।

उ०—घन सरिसं तन पवन दियै परजन सरवाई। सुधा पाय ससि करै, जेम बलराव सवाई।—रा. रू.

२ आर्द्रता, नमी।

उ०—मैं सूती पिया अपने म्हेल में, सालूड़ा में आई सरदाई। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख निरख गुण गाई।—मीरां

सरदावौ-सं. पु. [सं. सर्दाव:] १ ठंडे जल से किया जाने वाला स्नान।

२ नहाना।

३ समाधिस्थल।

सरदार-वि.—उदार, दातार, दयालु।

सं. पु. [फा.] १ किसी मंडली का मुखिया, नायक।

२ अमीर, उमराव।

३ पति।

४ प्रेमी, प्रियतम।

५ मिरदा जाति का व्यक्ति।

७ वीर, योद्धा।

८ राजपूत जाति का व्यक्ति।

८ मालिक, स्वामी।

रू. भे.—सिरदार।

अल्पा.—सरदारड़ौ, सिरदारड़ौ।

सरदारड़ौ—देखो 'सरदार' (अल्पा; रू. भे.)

सरदारी-सं. स्त्री. [फा.] १ अध्यक्षता, स्वामित्व।

उ०—१ सरदारी नूं निवड़ाई कियामत सूं बेखबर होय।

—नी. प्र.

उ०—२ जिको जीव नूं प्यारो रामं छै तिण नूं सरदारी देस दनियत सूं कांई काम छै।—नी. प्र.

२ सरदार होने का भाव।

रू. भे.—सिरदारि, सिरदारी।

सरदिंदुमुखी-सं. स्त्री. [सं. शरदिंदुमुखी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

सरदि—देखो 'सरदी' (रू. भे.)

सरदियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आर्द्रता या नमी युक्त हुवा हुआ।

२ देखो 'सरधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरदियोड़ी)

सरदी-सं. स्त्री. [फा. सर्दी] १ शरद ऋतु।

२ ठंडक।

उ०—१ पौ मिगसर पाळौ पड़े, सूरौ तरू तमाम। सूतां ऊंडी साळ में, सरदी लागै स्यांम।—नारायणसिंह सांदू

उ०—२ सरदी में सह सूकगा, आक धतूरा नीम।—अग्यात

३ जुकाम नामक रोग।

रू. भे.—सरदि।

सरदू, सरदौ-सं. पु. [फा. सर्द:] १ एक जलचर पक्षी विशेष।

उ०—कमळां रो घणो सांघणो मेळ है। तठै राजहंस कळहंस री इधकी केळ है। बतक सरदा घरट हंजा मुरगा पयां भट्टिया तरै है। सारसां रा टोळ जकै भंगोर करै है।—र. हमीर

२ एक प्रकार का लम्बोतरा खरबूजा जो काबुल में अधिक होता है।

उ०—अंजीरूं के दरख्त नागलता के वेलि। अंगूर सरदूं सैफळी अनेक वेलि।—सू. प्र.

३ राजपूत एवं चारण जाति में स्त्रियों द्वारा अपने पति को किया जाने वाला सम्मानसूचक अभिवादन।

उ०—१ स्री स्री १०५ स्री कंवर जी साहिब रसिया बालम चंद्रगढ़ सूं सदा हुकमी खिजमतदार बांदी रौ सरदौ मालम आलीजा अलबेला अंगां रा उदार आपरै डील सारे मुदार।

—र. हमीर

उ०—२ चांचां लिख दी ओळवां पावां सरदौ जवार। कागद अनवी राजा नै लिख भेजो राज।—लो. गी.

४ नमस्कार, प्रणाम।

रू. भे.—सिरदौ।

सरद्द-सं. पु.—१ एक वृक्ष विशेष। (सभा)

२ देखो 'सरद' (रू. भे.)

३ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

सरद्दहणा—देखो 'सरधणा' (रू. भे.)

उ०—मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सरद्दहणा मन धारी। हिंसा दुरगति ना दुख खाणी, जीव दया साची करि जांणी।

—स. कु.

सरद्वत-सं. पु. [सं. शरद्वत] १ सेतु राजा का पुत्र एक राजा।

२ सावर्णि मन्वन्तर में सप्तर्षियों में से एक।

३ गौतम ऋषि का नामान्तर।

सरद्वतसुत, सरद्वतिसुत, सरद्वतिसूनु, सरद्वतीसूनु-सं. पु. [सं. शारद्वतसूनु] शारद्वत का पुत्र, कृप।

उ०—ससांक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र। सुवरण्णवेदी अहिनाणि जांणि, सरद्वतीसूनु कृपांणपांणि।

—सालिसूरि

सरद्वान-सं. पु. [सं. शरद्वान] गौतम पुत्र एक मुनि जिन्होंने तपस्या कर

अनेक दिव्यास्त्र प्राप्त किये थे। इनकी तपस्या जानपति या जानपदी नामक अप्सरा ने भंग की। इससे कृप और कृपी का जन्म हुआ।

सरध-सं. पु. [सं. शर्धः] १ दल, समूह।
२ बल, ताकत।
३ अपानवायु का त्याग।

सरधणा-सं. पु. [सं. श्रद्धान्] मान्यता, दृष्टिकोण।
उ०—इण लेखै **सरधणा** तो एक। अनैं चोथा पांचमां वाला हिंसा करै है अनैं साधु रैं हिंसा रा त्याग है। ए फरसणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं।—भि. द्र.
रू. भे.—सरद्दणा।

सरधणौ, सरधबौ-क्रि. स.—१ मानना, स्वीकार करना।
उ०—१ हिवै स्वामीजी गुलाब रिसी नैं पूछ्यो—सीतल जी रा टोळा रा साधां नैं साध **सरधो** के असाध? जद तै बोल्यौ असाध सरधूं छूं।—भि. द्र.
उ०—२ सांभल चित हरख्यो घणो, **सरध्या** तुमरा बेंण। भवि जीवां नां तारका, थें साचा मिलिया सेंण।—जयवांणी
उ०—३ थें म्हारा वचन **सरधिया** प्रतीतिया रुचिया जिण सूं त्याग करो हो का म्हांनें भांडवा नैं त्याग करो हो।—भि. द्र.
२ विश्वास करना।
उ०—१ जद बोहत जी कह्यो—उणां मैं तो किहां थी हूंतो मो मेंई न **सरधूं**।—भि. द्र.
उ०—२ ज्यूं सूत्र रो वचन साधां रो वचन **सरध्यां**, मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्या बिना कोरो सुणीया न जाय।—भि. द्र.
३ पूजना, आराधना करना।
४ मान्यता देना।
उ०—जीव खवाया पुन **सरधै**। सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिण सूं समकत चारित्र एक ही नहीं।—भि. द्र.
सरधणहार, हारौ (हारी), सरधणियौ—वि०।
सरधिग्रोड़ौ, सरधियोड़ौ, सरध्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरधीजणौ, सरधीजबौ—कर्म वा०।
सरदणौ सरदबौ—रू० भे०।

सरधनुधार, सरधनुधारी-सं. पु. [सं. शर+धनुष+धारी] अर्जुन। (अ. मा.)

सरधर-वि.—१ धनुर्धारी।
२ अर्जुन।
३ तरकस।
४ देखो 'सिरधर' (रू. भे.)
रू. भे.—सरध्धर।

सरधा-सं. स्त्री.—१ कोई कार्य सम्पादित करने की योग्यता, शक्ति, सामर्थ्य, यथाशक्ति।
उ०—ढोली ढोल घुरावण लागो। **सरधा** जोग झूंपा मैं ब्याव री त्यारियां होवण लागी।—फुलवाड़ी
२ बल, शक्ति।
उ०—१ **सरधा** बांकी सूं झांकी सुखसेरी, ढूंढी ढूंढाहड़ हाडोती हेरी। जांणी जीवण नैं जिण तिण मिस जुळिया, पांणी पीवन नैं पूरब दिस पुळिया।—ऊ. का.
उ०—२ **सरधा** घटगी सेंग, बेग विरधापण वळियो। निकळण रो रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियो।—ऊ. का.
उ०—३ बोल गळा मैं फंसग्या व्है ज्यूं कैवण लागो—रांणी, म्हारी तो मिंदर तांई पूगै जित्ती **सरधा** कोनीं। अर पूग्यां सार ई कांई।—फुलवाड़ी
३ हैसियत, औकात, बिसात।
उ०—१ पण **सरधा** सूं ऊपर-कर कांम तो नहीं करणो जोयीजै।
—वरसगांठ
उ०—२ कोई तो देवै रांमजी! साल-दुसाला; मेरी **सरधा** अेक गोछाकी। म्हांनैं रांमजी मिल्या वनरावन मैं, म्हांनै किसनजी मिल्या वनरावन मैं।—लो. गी.
उ०—३ अपनी **सरधा** सम अवर, दांन देत सुदतार। इळ ऊपर होवै अमर, साख भरै संसार।—ऊ. का.
उ०—४ बापड़ो दूध री आस करै तो मन मैं क्यूं राखां। दूजो कीं भलो करण जोग वांरी **सरधा** ई नीं ही। दूध री कांइ, जांणै अेक गाय पावसी ई नीं।—फुलवाड़ी
ज्यूं—**सरधा** मुजब कांम करणो चाहीजै।
४ हिम्मत, साहस।
उ०—१ हरीया पंखी पंख विन, पड़ै रसातळि आय। ऊडण की **सरधा** नही, जीवत म्रितग थाय।—अनुभववांणी
उ० —२ हरीया बोलण वकण की, **सरधा** नही लगार।
—अनुभववांणी
मुहा.—सरधा सारू भगती=यथा शक्ति।
सं. पु.—५ प्रियव्रतवंशीय बिंदुमत राजा का नाम।
६ देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)
उ०—१ प्रेमामगन रांमरस पूरण, सागै सबद सुणावै। सनमुख हुय **सरधा** सूं सुमरण, सासो सास समावै।—ऊ. का.
उ०—२ **सरधा** इण री छै इसी जुदा मांनै जीव नैं काया रे।
—जयवांणी
उ०—३ स्वांमी जी कह्यो—जेसो सिरोइना रावनो पालखो जिसो यां नवो साधपणो पचख्यो है। पिण **सरधा** खोटी। जीव खवाया पुन सरदो।—भि. द्र.
उ०—४ भेखधारी चरचा करतां आचार **सरधा** री न्याय री चरचा छोडनै जीव बचावा रो वेदो घालै।—भि. द्र.
उ०—५ चोथा तेरमां गुणठांणावाली री **सरधा** एक छै। तेरमां

[illegible] री [illegible] सूं फरक पड़ग्या चोखा गुणठांणा री पहनें [illegible] [illegible] ।—बि. ड.

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]—१ [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ०—[illegible] पातां-पातां मेठांणी सरमाहीण व्हैगी ही ।

—फुलवाड़ी

सरधि-सं. पु. [सं. शरधि] भाथा, तरकस । (हि. कों.)

सरधियोड़ो-भू. का. कृ.—१ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ. २ विश्वास किया हुआ. ३ पूजा किया हुआ, आराधना किया हुआ. ४ मान्यता दिया हुआ ।

(स्त्री. सरधियोड़ी)

सरध्धर—देखो 'सरधर' (रू. भे.)

उ०—तेग वर्णं जिण बाहु पख्खर, धींग भुजां निज चाप सरध्धर ।

—र. ज. प्र.

सरनंद-सं. पु. [सं.] कमल । (अ. मा.)

सरन—देखो 'सरण' (रू. भे.)

सरनागत—देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—मैं तव पुत्र मात तूं मेरी, त्राहि त्राहि सरनागत तेरी ।

—मे. म.

सरनाम, सरनांमो-वि.—१ प्रसिद्ध, विख्यात ।

२ श्रेष्ठ, मुख्य ।

सं. पु.—पत्र के ऊपरी भाग का लेख, शीर्षक, पता ।

रू. भे—सिरनांमो ।

सरनो—देखो 'सरणो' (रू. भे.)

सरपंख, सरपंखो-सं. पु. [सं. शरपुंखा] एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते, फूल आदि औषधियों के प्रयोग में लाये जाते हैं, शरपुंखा । (अमरत)

रू. भे.—सरपुंखा ।

सरपंच-सं. पु. [सं. शर+पंच] कामदेव । (अ. मा)

२ पंचायत का सभापति ।

उ०—कुटबवाळ सरपंच आपरा पारका गिणै । गांव में पूरो भेद भाव पाळै ।—दसदोख

रू. भे.—सिरपंच, सिरैपंच ।

सरप-सं. पु. [सं. सर्प] १ सांप, नाग । (अ. मा; हि. को; ह. नां. मा.)

२ शेषनाग ।

उ०—रिड़मल हुरा राळतै रैवंत, साम्रव घड़ा विदुर स जगीस । दवणां तणै धरा चळै पावां, सरप पयाळ थरहरै सीस ।

—गेहो मीसण

उ०—२ तद थोथोड़ो पाणी पडूतर दियो कै इण टावी पगरखी में हुसी सरप पाथळ नें गूंचळो मार बैठो हो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ कंवरांणी रै माथा में अणगिण सरप फुफकारा भरण लागा । राजकंवर सूं तो सपना में ई मिळण रा फोड़ा पड़ैला ।

—फुलवाड़ी

३ ज्योतिष में एक बुरा व अशुभ योग ।

४ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।

५ नागकेसर ।

६ त्वष्टा के एक पुत्र का नाम ।

७ कश्यप व सुरभि के पुत्रों में से एक ।

८ अबुद काद्रवेय नामक ऋषि ।

९ बह्मधान-पुत्र एक राक्षस ।

१० पृथ्वी, भूमि । (अ. मा.)

११ पक्षी ।

१२ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम ऽ।ऽ। (डिं. को,)

१३ देखो 'सरपि' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू. भे.—सरपक, सरपो, सरप्पो, स्रप, स्रप्प ।

अल्पा;—सरपड़ो ।

सरपअरि-सं. पु. यौ. [सं. सर्प+अरि] १ गरुड़ । (अ. मा.)

२ मयूर, मोर ।

३ नेवला, न्योला ।

सरपक—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—डोहंत सूंडाडंड ए, स्रीखंड सरपक हिंहए ।—गु. रू. बं.

सरपकाळ, सरपकाल-स. पु. यौ. [सं. सर्प+काल] १ गरुड़ ।

२ मोर, मयूर ।

४ नेवला, न्योला ।

सरपख (ह)—देखो 'सरपिख' (रू. भे.)

सरपगंधा-सं. स्त्री. [सं. सर्पगंधा] नागदवन नामक एक जड़ी ।

(वैद्यक)

सरपगत, सरपगति, सरपगती-सं. स्त्री. [सं. सर्पगति] १ सांप के समान चाल, कपट की चाल ।

२ कुटिल प्रकृति ।

वि.—१ उक्त प्रकार की चाल चलने वाला ।

२ कुटिल प्रकृति का ।

सरपड़ो—देखो 'सरप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आड आरती करै, बतख बिड़दावळ बांचै । भैंग भजन गुण फूंक, सरपड़ा स्रोता राचै ।—दसदेव

सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग—देखो 'सरपयग्य' (रू. भे.)

सरपजीह-सं. स्त्री. [सं. सर्पजिह्वा] १ एक प्रकार की कटार ।

(हि. नां. मा.)

२ कटार ।

सरपट-सं. स्त्री.—अगले दोनों पैरों को साथ साथ आगे फेंकने की घोड़े की एक बहुत तेज चाल ।

उ०—सरपट आवता घोड़ा नै देख नें सूर तारा री गळाई सांम्ही

तूटी।—अमर चूंनड़ी

क्रि. वि.—बहुत तेज, शीघ्रता से (केवल चलने या दौड़ने के लिए)।

उ०—लांपी देवण री जेज के अेक काळिंदर पवन रै वेग सरपट दौड़ती आयौ नै चिता में बड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

सरपणी-सं. स्त्री. [सं. सर्पिणी] नागिन, सांपिन। (डि. को.)

रू. भे.—सपणी, सप्पणी, सरपिणि।

सरपदंस्ट्र-सं. पु. [सं. सर्पदंष्ट्र] १ सांप का विष दंत।

२ उक्त दांत से लगने वाला घाव।

सरपदेवी-सं. पु. [सं. सर्पदेवी] कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ स्थान का नाम।

सरपपति-सं. पु. [सं. सर्प+पति] शेषनाग। (डि. को.)

सरपप्रिय-सं. पु. [सं. सर्प+प्रिय] चंदन। (डि. को.)

सरपमाळी-सं. पु. [सं. सर्पमालिन्] १ शिव, महादेव। (नां. मा.)

२ एक महर्षि।

रू. भे.—सरपिमाळी।

सरपबगड़ तेज-सं. पु.—चिपटे नाक का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है। (शा. हो.)

सरपभुज-सं. पु. [सं. सर्प+भुज] १ मयूर, मोर।

२ सारस।

३ बड़ा सर्प।

सरपयग्य-सं. पु. [सं. सर्पयज्ञ] जनमेजय द्वारा सर्पों के नाश हेतु किया गया यज्ञ।

रू. भे.—सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग।

सरपराज-सं. पु. [सं. सर्पराज] १ शेषनाग।

२ वासुकी। (डि. को.)

सरपविद्या-सं. स्त्री. [सं. सर्पविद्या] सर्प को वश में करने या पकड़ने की विद्या।

सरपव्यूह-सं. पु. [सं. सर्पव्यूह] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना।

सरपाकसी, सरपाक्षी, सरपाखी-सं. स्त्री. [सं. सर्पाक्षी] गधनाकुली, सरहंटी, श्वेत अपराजिता। (अमरत)

सरपारि, सरपारी-सं. पु. [सं. सर्पारि] १ गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

सरपाव—देखो 'सिरपाव' (रू. भे.)

उ०—अर म्होकमसिंघ सुण नै पहरिया बैठौ थौ सौ सरपाव अर घोड़ौ घणौ धन खवरदार नूं दीधौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सरपासण, सरपासन-सं. पु. [सं. सर्प+आशन्] १ गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

[सं. सर्प+आशन] विष्णु भगवान्।

सरपासय, सरपास्य-सं. पु. [सं. सर्पास्य] खर राक्षस का सेनापति जो भगवान् श्रीराम के द्वारा मारा गया था।

सरपाहार-सं. पु. [सं. सर्प+आहार] १ नेवला। (डि. को.)

२ मयूर, मोर।

३ गरुड़।

[सं. सर्पाहार] ४ शिव, महादेव (डि. को.)

सरपि, सरपिख, सरपिखि, सरपिखी-सं. पु. [सं. सर्पिष] घी, घृत। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरप, सरपख(ह)।

सरपिणी—देखो 'सरपणी' (रू. भे.)

सरपिमाळी—देखो 'सरपमाळी' (रू. भे.)

सरपुंख—देखो 'सरपंख' (रू. भे.)

सरपेच—देखो 'सिरपेच' (रू. भे.)

उ०—सुभ खिल्लत पंच वसन सुरंगी, असि खंजर सरपेच किलंगी।

—रा. रू.

सरपोस-सं. पु. [फा. सर+पोश] थाल आदि ढकने का कपड़ा।

सरपौ, सरप्प—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—१ अरधंगि हेम पुत्री: सरपौ कंठेणि वाहणौ सांडौ। सिखा नेत भाल चंदौ: तस्मै रुद्राय नमौ।—गु. रू. बं.

उ०—२ करंत एक राग रंग, मोहिए सरप्प ए।—गु. रू. बं.

सरफ-सं. पु. [अ. शरफ] १ बड़ाई।

२ सौभाग्य।

३ महत्व।

४ कपड़े धोने का एक प्रकार का पाउडर विशेष।

सरफणौ, सरफबौ-क्रि, अ.—हवा में फहराना, वायु में इधर उधर हिलना।

उ०—जरदोजनि हेम ध्वजा सरफै, तड़िता घन बीच मनौ तरफै।

—ला. रा.

सरफणहार, हारौ (हारी), सरफणियौ – वि०।

सरफिओड़ौ, सरफियोड़ौ, सरफ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरफीजणौ, सरफीजबौ—भाव वा०।

सरफल-सं. पु. [सं. शरः+फलं] तीर की पैनी नोंक जहां नुकीला लोहा लगा होता है।

सरफास-सं. स्त्री.—घासफूस तथा डंठल आदि का महीनतम नोंकदार तीक्ष्ण भाग। (शेखावाटी)

सरफियोड़ौ-भू. का. कृ.—हवा में फहराया हुआ, वायु में इधर उधर हिला हुआ।

(स्त्री. सरफियोड़ी)

सरफौ-स. पु.—१ औषधि के प्रयोग में आने वाला एक छोटा पौधा।

[सं. सर्फ] २ खर्च, व्यय।

३ निःस्वार्थता।

सरबंग-सं. पु. [सं. सर्वांग] १ सब देह, सब अंग।

उ०—१ सरबंग उदर सुर नर सकळ, चत्रवदन रचै किर परम धुन।—रा रू.

उ०—२ सुणा साप सरबंग, मारनै चित्राम अंग। अंतरिक्ष वहै कोह, छप म्हे पासै कोइ।—गु. रू. बं.

२ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण जगण और ह्रस्व गुरु सहित आठ वर्ण होते हैं। (ल. पि.)

३ संगमरमर या काले पत्थर का बना घोटा जो दवाईयों को कूटने या घोटने के काम आता है।

४ एक प्रकार का पत्थर विशेष जिसमें उक्त घोटा बनाया जाता है।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति तंजारै री वाड़ी री नीलमी, नीली घणूं पाकी, पुरांणी, आगै बखांणी तिण भांति री भांति घणी एलची, मिरचा, पान, जावत्री रै मेळ सूं पाखांण री कूंडीयां सरबंग रा घोटा सूं ऊजळा आवां री घमोड़ी घणूं ऊजळै मिसरी रै मेळ ऊजळा गरणां सूं आरोजै छै।—रा. सा. सं.

क्रि. वि.—१ सर्वथा, पूर्ण रूप से।

२ देखो 'सरसंग' (रू. भे.)

सरबंगी-वि.—साम, दाम, दण्ड, भेद नीति के सब अंगों को जानने वाला।

उ०—मेळ तणो कज मेलियो, व्रत रज गत बुधिवांन। सरबंगी मेलो सुमति, चेलो नाहरखांन।—रा. रू.

२ देखो 'सरभंगी' (रू. भे.)

उ०—एको पानिम जांणिया, से सरबंगी साध। हरीया प्रातिम रांम बिन, सोई आंन उपाध।—अनुभववांणी

सरबंद, सरबंध-सं. पु. [सं. शरबंध] १ सिर पर बांधा जाने वाला वस्त्र विशेष, साफा, पगड़ी।

उ०—तनुबंध, सरबंध कमरबंध सगवनां कमलवनां।—व. स.

२ सिर पर धारण करने का स्त्रियों का एक आभूषण।

रू. भे.—सिरबंद, सिरबंध।

सरब—१ देखो 'सरम' (रू. भे.) (अ. मा, ह. नां. मा.)

२ देखो 'सरव' (रू. भे.) (डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ घट घो सरब तूफ कजि घटियो, राजा आव वीर इम रटियो।—सू. प्र.

उ०—२ कुळ सरब यळ बै कांम, रखवाळ सीतारांम।—रा. रू.

उ०—३ उणरी तो रग रग मैं कदेई नीं बुभरण वाळी लाय लाग्योड़ी ही। बोल्यो—बै माया मैं ई मिनख रा सरब सुख बसै तो घर मैं इती माया व्हेतां थकां ई म्हारा मन में सुख उपजियो तो कोनी।—फुलवाड़ी

उ०—४ मिंदर वाळी डूंगरी माथै कंवर सीजोड़ी पांग फेरी तो सरब डूंगर सोना रो बणग्यो। संकर भगवांन रो मिंदर ई सोना रो बणग्यो।—फुलवाड़ी

सरबगळ-वि.—१ सब को हजम करने वाला।

२ सब को स्वाहा करने वाला।

३ देखो 'सरवग्रास'।

उ०—हठी रणखेत सगरांम 'कुंभा' हरै, घडा दांणव तणी सफै रण घाय। घणो तो सूर ससि ग्रहण हूं दुयघड़ी, पण उभै सरबगळ कीध पतसाय।—महाराणा संग्रामसिंहजी बडा रो गीत

सरबग्यांनी, सरबजांण—देखो 'सरवग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—मां बोली—आ थारी भोळप है जको म्हनै सरबग्यांनी मांनै।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै मींयै आपरी तरवार काढिनै मेली नै कह्यो आप सरबजांण छो।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

सरबजीत-वि. [सं. सर्वजित्] सब को जीतने वाला, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

सं पु.—१ काल या मृत्यु जो सबको जीत लेती है।

२. २१ वां संवत्सर।

३ एक प्रकार का यज्ञ।

सरबजीव-सं. पु. [सं. सर्वजीव] ब्रह्मा का एक नाम।

सरबत-सं. पु. [अ. शर्बत] १ गाढा रस जो चीनी आदि से पका कर तैयार किया गया होता है।

उ०—भरि कोठा परठा करि भारी, संभ्रम विहारी जुड़ण असींग। सांम्हां अमल तिजारा सरबत, सत दळ मोकळिया गजसींग।

—गजसिंघ नाथावत कछवाहा रो गीत

२ उक्त रस पानी में मिला कर बनाया गया पेय पदार्थ।

३ वह पेय पदार्थ जो चीनी या फलों का रस मिला कर बनाया गया हो।

४ मुसलमानों में सगाई की एक रस्म विशेष जिसमें विवाहोपरांत कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष वालों को शर्बत पिलाई जाती है।

५ उक्त अवसर पर वर पक्ष वालों को कन्या पक्ष वालों की ओर से दिया जाने वाला धन।

सरबती-सं. पु.—१ पीलापन लिए लालरंग का एक नगीना।

२ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

३ एक प्रकार का नींबू, जंबीरी नींबू।

४ एक प्रकार का आम।

५ एक प्रकार का बढिया कपड़ा।

वि.—१ शरबत सम्बन्धी।

२ साधारण ललाई लिए हलके पीले रंग का।

सरबतीनींबू, सरबतीनीबू-सं. पु.—जंबीरी नींबू, मीठा नींबू।

सरबया—देखो 'सरवया' (रू. भे.)

उ०—अर ऊणां रा बिवाहण रा लोभी अंतपजां नूं एकठा बुलाइ सरबया ही मारूं।—वं. भा.

उ०—२ हूं आखू साची हमैं, तिण मैं झूठ न तार। सूर नहीं है सरबथा, अपत उठै काय नार।—पा. प्र.

सरबदा—देखो 'सरवदा' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—हथळेवै भेळी हुई, नह होसी न्यारीह। सोढी रहसी सरबदा, साथै सुपियारीह।—पा. प्र.

सरबनास—देखो 'सरवनास' (रू. भे.)

सरबमंगळा—स. स्त्री. [सं. सर्वमंगला] तांत्रिकों की एक देवी का नाम।

उ०—बीरबळ पूछी—तूं कुण छै, कींसूं दुखी थकी रोवै छै? उवा बोली—इं सुद्रसेण राजा री राजलक्ष्मी छूं। मैं राजा रै आसरै बहुत दिन विस्रांम लियौ अब इयै रौ राज भंग हुसी। इयै रै घर सूं विजोग थाय जासूं, तींसूं रोवूं छूं। तठै बीरबळ कहियौ किणी प्रकार राज भंग न हुवै जीं सूं थारौ रहणौ होय। तद लक्ष्मी कही—अेक बात बड़ी कठिण छै। तूं आपरा पुत्र री भगवती सरबमंगळा नै बळि दे दै तौ राज थिर रहै।

—बैताळ पच्चीसी

सरबमुख—देखो 'सरवमुख' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सरबय्या—सं. स्त्री.—यादव वंश के अन्तर्गत एक शाखा।

सरबर—देखो 'सरोवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सरोवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबरस—सं. पु. [सं. सर्व+रसः] ज्ञान।

वि. [सं. सर्व+रसं] खारा। (डिं. को.)

रू. भे.—सरवरस।

सरबरा, सरबराह—सं. स्त्री. [फा. सरबराह] १ खातिर, आवभगत।

उ०—१ म्हारी बेटी नै घरै आयोड़ा री सरबरा रौ ध्यांन है इज घणौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण रांभा मैं सेठजी जांन सारू नीं तौ कीं जीमण बणायौ अर नीं कीं दूजी ई सरबरा करी। कोई मिस लाध्यां चूकण री रात वै जलमिया ई कोनी हा।—फुलवाड़ी

उ०—३ बांध्यौ वीर मूंडा सूं इमरत बरसावतौ बोल्यौ—बाई री थोड़ा दिनां ताई सरबरा करूंला। डरण री जरूरत कोनीं, म्हारै लारै री लारै निसंक वांबी में वड़ जाजै।—फुलवाड़ी

२ आवभगत करने की सामग्री।

उ०—सौ रांणौ बांच सुण खुस्याळ हुवौ। तुरत ओठी नूं पाछी सीख दीवी, कागद लिख दियौ—जौ थै कुंवर नूं हर भांत टिकावज्यौ। म्है सारी सरबरा लेय आवां छां।

—कुंवरसी सांखला री वारता

३ प्रबन्ध, इन्तजाम।

उ०—उण दिन सारी सरबरा कराय बखतसिंहजी महाराज गजसिंहजी रा डेरां पाछलै पहर पधारिया।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

४ सजा, दण्ड आदि देने का भाव।

वि.—१ प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

२ आवभगत करने वाला।

३ मजदूरों आदि का सरदार, मुखिया।

रू. भे.—सरभरा, सरभरि, सरभरी, सरवरा।

सरबराकार—सं. पु. [फा. सरबराह] व्यवस्थापक, प्रबंधकर्त्ता।

सरबरित—सं. पु. [सं. सर्वरतः] १ शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

३ ईश्वर। (नां. मा.)

रू. भे.—सरवरत, सरवरित।

सरबरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबलील—वि.—सब पदार्थ खाने वाला, सर्वभक्षी। (मा. म.)

सरबस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—१ दाता जग मातापिता, दाता सांप्रत देव। दाता सरबस दांन दै, ऊत्तर एक अदेह।—वां. दा.

उ०—२ सूतां सरबस जात है, जागि 'र करौ बिचार। हरि परम सनेही परमसुख, अगमवार नहीं पार।—ह. पु. वा.

सरबसहा—देखो 'सरवसहा' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

सरबसुख—सं. पु. यौ. [सं. सर्व+सुख] १ पानी, जल। (ह. नां. मा.)

सरबसुहागण—सं. स्त्री.—सधवा, सौभाग्यवती।

उ०—एक भरचौ ऍ वतूळौ आवौ, विनायक विणजारा कै वैल ज्यूं। एक मांड्यौ चूंड्यौ आवौ, सरबसुहागण कै सीस ज्यूं।

—लो. गी.

सरबस्व—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—बळी दीनबंधू घरै बंसबांनां, अकूपार गंभीर रोळै अरांना। दियै मेय राधेय सरबस्व दांनी, महाकस्ट भी मांगवै भूप मांनी।

—वं. भा.

सरबांणी—देखो 'सरवांणी' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरबूद—सं. पु.—खेमा, तम्बू।

उ०—तांणियौ आज सरबूद ताय जांणियौ आज अरबूद जाय। कदमां लग निजर सलांम कीध, डमडोळ राव 'ऊमेद' दीध।

—वि. सं.

सरबेण, सरबेत—वि. [सं. सर्व] सब, सम्पूर्ण, समस्त।

सरबेस, सरबेसर, सरबेस्वर—देखो 'सरवेस्वर' (रू. भे.)

सरबोर—देखो 'सराबोर' (रू. भे.)

सरब्ब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—अधकारी असुरां तणां, सुव धूजिया सरब्ब। अप चौ सोच निवारियौ, उर धारियौ गरब्ब।—रा. रू.

सरभंग—सं. पु. [सं. शरभंग] १ श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त एक महर्षि जिन्हें इन्द्र ने ब्रह्मलोक ले जाना चाहा मगर वे श्रीराम के दर्शनाकांक्षी होने के कारण उस समय ब्रह्मलोक न जाकर दर्शनोपरान्त गये थे।

२ एक वर्णसंकर जाति विशेष।

[सं. सरभङ्ग] ३ अघोर पंथ का नाम।

रू. भे.—सरबंग।

सरभंगाश्रम, सरभंगास्रम—सं. पु. [शरभंगाश्रम] शरभंग ऋषि का आश्रम।

सरभंगी-वि. [सं. सरभंगी] अघोर पंथ का, अघोर पंथ से सम्बन्धित।

सं. पु.—अघोर पंथ का व्यक्ति।

रू. भे.—सरबंगी।

सरभ-सं. पु. [सं. शरभः] १ राम की सेना का एक बन्दर। (रामकथा)

२ कश्यप एवं दनु के संसर्ग से उत्पन्न एक दानव।

३ चेदी नरेश धृष्टकेतु के एक भाई का नाम।

४ दनुज के एक पुत्र का नाम।

५ शिव की आद्यमूर्ति, वीरभद्र।

६ कृष्ण-रुक्मिणी के एक पुत्र का नाम।

७ यम के पाँच पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

८ ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग।

९ गान्धारराज सुबल के एक पुत्र का नाम।

१० भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

११ हाथी का बच्चा। (डि. को.)

१२ ऊंट।

१३ एक विशेष प्रकार का मृग।

उ०—गाज सुणंता पांण, सरभ घट फाळां आवै। भांगै डील भड़ज्ज, लांघवा जोर जतावै।—मेघ

१४ सिंह, शेर। (ह. नां. मा.)

१५ आठ पैरों वाला एक प्रकार का जन्तु विशेष, जो शेर से बढ़ कर बलवान् व शक्तिशाली होता है। (डि. को)

उ०—१ सीह किसी साराह सरभ रव सुणै सळक्कै, एकळ की औसाण लड़ै लागै घह लुक्कै। सूर आग संग्रहै सुवपि संनाह सुधारै, अप्र ढाल ओडवै पीठ वेलियां पचारै।—रा. रू.

उ०—२ धैं धैं सद्द उचार ढाक डमरू कर वाजै, मोर हंस अग-राज चढी मगराज गरज्जै। एक हस्ति आरुही वृखभ अस उस्ट्र चिगत्ती, सरभ चील सादूळ गीद्ध वंदर तर रत्ती। अदभूत रूप आकत अगम, किलवक हुवक रसणा करै। अण जैत कहै सुत आसुरां, जैत कमंधां उच्चरै।—रा. रू.

१६ टिड्डी।

१७ पतंगा, शलभ।

१८ एक प्रकार का वृत्त (वार्णिक छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।

१९ बीस गुरु और आठ लघु मात्राओं के दोहे का एक भेद विशेष।

२० आर्यागीति या संधाण (स्कंधक) नामक गाथा या गाहा का भेद विशेष।

२१ छप्पय छंद का ३१ वां भेद विशेष जिसमें ४० गुरु और ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र. ज. प्र.)

२२ पीत, पीला। * (डि. को.)

रू. भे.—सरब।

सरभखड़ो-सं. पु.—अघोरी, औघड़।

सरभर-स. स्त्री.—बराबरी, समानता।

उ०—हाथळ बळ निरभै हियो, सरभर नको समत्थ। सीह अकेला संचरै, सीहां केहा सत्थ।—बां. दा.

वि.—समान, तुल्य, बराबर। (डि. को.)

उ०—१ कायथ 'लाल' विसाल कुळ, सरभर बालकिसन्न। औ वधिया तीखै अणी, पेसै घणी प्रसन्न।—रा. रू.

उ०—२ अंग सकोमळ पेम सरभर, चूंप सभै चतरंग चितारो। साध सती जत राग रसांयन, सूर लिख्या कवि दास दतारो।

—अनुभववाणी

उ०—३ कंज सरभर समुख कोमळ, कांन भगमग हरि कुंडळ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ म्हांरी सास सपूती सैं म्हे सरभर रहस्यां, जीभ के गुण आगलां। म्हांरी देरांण्यां जेठाण्यां बरोबर रहस्यां, कांम के गुण आगलां।—लो. गी.

सरभरा—देखो 'सरबरा' (रू. भे.)

उ०—तद सरभरा करण नूं बाघोड 'तेजै' नूं मेलियो।—द. दा.

सरभरि, सरभरी—१ देखो 'सरबरा' (रू. भे.)

उ०—चाइमल्ल मेघ इं छोड़ाया, मांन भंग करी कढवाया। तपला कहइं सरभरि कीजइं, दुरि (इ) भेरि हुकम इन्ह दीजइ।

—ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'सरबरी' (रू. भे.)

सरभि—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

उ०—सरभि समीरण वायइ वाअ, पाडल फूल खिरइ जलमाहि। तीरइ तीरइ सारंग फिरइ, सरोवर पांणी इह कांकरइ।

—प्राचीन फागु-संग्रह

सरभू-सं. पु. [सं. शरभूः] स्वामी कार्तिकेय।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा)

सरभेस, सरभेसर, सरभेस्वर-सं. पु. [सं. शरभेस्वर] एक शिव लिंग का नाम।

सरमंदगी-सं. स्त्री. [फा. शर्मंदगी] १ लज्जा, शर्म।

उ०—घणां काचा अपणा नै तो न उपजै चाव। उलटी पड़ै सर-मंदगी रै डाव।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ पश्चाताप, पछतावा।

सरमंदो-वि.—लज्जित, शर्मिंदा।

उ०—जांण्या हम जैसा, कहियै कैसा, कुछीयक मन सरमंदा।
—अनुभववांणी

सरम–सं. स्त्री. [फा. शर्म] १ लज्जा, शर्म। (डिं. को.)

उ०—१ कूरम कहै अमर नर काया, पुळबा कारिण हुवा पोहो। मोह बांधियां न जायै मरणि, सरम बांधिया मरै सोहो।
—सुजांणसिंघ जगन्नाथोत री गीत

उ०—२ रजस्वला नारीह, कथा गोप किण सूं कहूं। समझी हरि सारीह, सरम मरम री सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—३ खांड अर घी मांगतां सरम को आवै नीं! घर मैं कमावू तौ थारै जैड़ौ मोल्यौ भरतार है। घी खांड सूं मूंणां भरी है।
—फुलवाड़ी

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, औ हिंदवांण वचावौ ओलै। समहर मौ दळ लियौ समेळा, भीम सह खूमांणा भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ जांणौ किसौ अजांण, तीन लोक तारण तरण। होवै द्रोपद हांण, सरम धरम री सांवरा।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ सूर सरम संग्रहै, भरम छंडै कमधज्जां। मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सांमंत सकज्जां।—रा. रू.

उ०—३ कियां सनाह किसन कूंभावत, वधै हरख जिण कळह विसावत। आया निजर धणी चै एहा, सांमि धरम कुळ सरम सनेहा।—रा. रू.

३ संकोच।

[सं. शर्मन्] ४ हर्ष, आनन्द। (डिं. को.)

५ घर, मकान।

६ सुख।

७ विष्णु।

८ देखो 'स्रम' (रू. भे.)

रू. भे.—सरम्म।

सरमणौ, सरमबौ–क्रि. स.—१ युद्ध करना, झगड़ा करना।

२ प्रतियोगिता करना।

३ बहस करना।

४ प्रयत्न करना, कोशिश करना।

उ०—पहिलुं सरमई धरमह पूत्रौ, जेह रहइं नवि कोई सत्रौ। ऊठिउ भीमु गदा फेरंतउ, तउ दुरयोधन भिडइ तुरंतउ।
—सालिभद्र सूरि

सरमणहार, हारौ (हारी), सरमणियौ—वि०।

सरमिओड़ौ, सरमियोड़ौ, सरम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमीजणौ, सरमीजबौ—कर्म वा०।

सरमधारी–वि.—शर्म को धारण करने वाला, शर्मीला।

उ०—देसपति संभ्रम दमण ऊदम, अंगमगम हींदुआं ओपम। सरमधारी करण सुधरम, ब्रहम वाचा दांनि विक्रम।—ल. पिं.

सरमर–सं. पु. [सं. शर्मरः] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

सरमल्ल–सं. पु. [सं. शरमल्लः] १ शारिका पक्षी, मैना।

२ तीर चलाने में दक्ष व्यक्ति, धनुर्धर।

सरमसार–वि. [फा.] १ लज्जाशील, लज्जावान।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

सरमांण–सं. पु. [सं. शरमाण] हिरण्यकशिपु का भतीजा एक सैंहिकेय असुर।

सरमांन—देखो 'मांनसरोवर'।

उ०—जांणै हंस मलपीयौ, सरमांन मझारां। हाथी जांण क हालीयौ, मद पीध बजारां।—मयारांम दरजी री बात

सरमा–सं. स्त्री. [सं.] १ देवताओं की एक कुतिया।

२ कुतिया।

३ दक्ष की एक कन्या व कश्यप ऋषी की पत्नी का नाम।

४ विभीषण की एक पत्नी।

सं. पु. [सं. शर्म्मन] ब्राह्मणों की एक उपाधि।

सरमाणौ, सरमाबौ–क्रि. अ., स.—१ लज्जित होना, शरमाना।

उ०—सांकड़ै मारगियै सरमाय, घूंघटै ओळूंड़ी अटकाय। गई धण सरवरियै री तीर, झुकी झट काळी लट छिटकाय।—सांझ

२ संकोच करना।

उ०—औरां कै पिया परदेस वसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती। मेरा पिया मेरै निकट बसत है, कह न सकूं सरमाती।—मीरां

३ खिसियाना।

उ०—भांमण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकंदा है। चेली रा चेला अजक अकेला, वेला बास बसंदा है।—ऊ. का.

४ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना।

सरमाणहार, हारौ (हारी), सरमाणियौ—वि०।

सरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमाईजणौ, सरमाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सरमावणौ, सरमावबौ, सरमाहणौ, सरमाहबौ—रू० भे०।

सरमायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शरमाया हुआ, लज्जित हुवा हुआ. २ संकोच किया हुआ. ३ खिसियाया हुआ. ४ शर्मिन्दा किया हुआ, लज्जित किया हुआ।

(स्त्री. सरमायोड़ी)

सरमाळू, सरमालू–वि.—लज्जा व शर्म रखने वाला।

सरमावणौ, सरमावबौ—देखो 'सरमाणौ, सरमाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जीमण नै थै निति जावौ, विधवांवां घर वारियां। साव होय मन नह सरमावौ, जग मैं करि करि जारियां।
—ऊ. का.

उ०—२ मतवाळौ उठ मोद सूं, लप गोदी में लीन। सरमावै धण सेज मैं, खिन खिन चित व्है खीन।—नारायणसिंह सांदू

उ०—३ [illegible] सरमावै, [illegible] मावै ।
[illegible] जग नर नारी गावै, [illegible] री———।—[illegible]
उ०—४ [illegible] सरमावै [illegible] ज्यावै, पग मांय पट सांम जप
[illegible] । [illegible] ज्यावै तो हूंस ज्यांवै, जद बिदन गुदगुदी बिल-
[illegible] ।—[illegible] बारहठ

सरमावणहार, हारौ (हारी), सरमावणियौ—वि० ।
सरमायोड़ौ, सरमाड़ियोड़ौ, सरमाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सरमाईजणौ, सरमाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरमाड़ियोड़ौ—देखो 'सरमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरमाड़ियोड़ी)

सरमासरमी–सं. स्त्री.—परस्पर लज्जा करने का भाव ।

सरमाहणौ, सरमाहबौ—देखो 'सरमाणौ, सरमाणौ' (रू. भे.)
उ०—प्राणी सबर तिम्रौ भणचाहै, सगन नवाब सोच सरमाहै ।
बीधी फौज वहै कमधज्जां, नृपर मोघण आंगा सकज्जां ।
—रा. रू.

सरमाहणहार, हारौ (हारी), सरमाहणियौ—वि० ।
सरमाहियोड़ौ, सरमाहियोड़ौ, सरमाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सरमाहीजणौ, सरमाहीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

सरमाहियोड़ौ—देखो 'सरमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरमाहियोड़ी)

सरमिंदगी–सं. स्त्री.—१ निंदा, बदनामी ।
उ०—किणी कांम गरमी हळकाई सूं आदरै तो सहीग्रा छै । अरथ नहीं सुधरै आगलै दुख रौ कारण होय संसार सूं सरमिंदगी होय ।
—नी. प्र.

२ लज्जा, शर्म ।
उ०—फेर कदै ही उवौ रसोईदार इण सरमिंदगी रै कारण सूं कोई चलनी नहीं कीवी ।—नी. प्र.

सरमिंदौ–वि.—जिसे शर्म आती हो, लज्जित ।
उ०—सु पाप रै ठाकुरै नीठ यूं कर नै पाछा मांगिया । सु प्रिथीराज जी तो घणा सरमिंदा हुआ ।—राव मालदे री बात
रू. भे.—सरम्मिंदौ ।

सरमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, झगड़ा किया हुआ. २ प्रतियोगिता किया हुआ. ३ बहस किया हुआ. ४ प्रयत्न किया हुआ, कोशिश किया हुआ ।
(स्त्री. सरमियोड़ी)

सरमिस्टा–सं. स्त्री. [सं. शर्मिष्ठा] असुरराज वृषपर्वा की पुत्री जो ययाति की पत्नी एवं शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी ।
वि. वि. — एक बार देवयानी और शर्मिष्ठा में साधारण सी बात पर झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठा ने देवयानि को कुए में ढकेल दिया । राजा ययाति ने देवयानि को कुए से बाहर निकाला तथा उसी के साथ विवाह भी कर लिया । वृषपर्वा ने देवयानि के साथ शर्मिष्ठा को दासी बना कर साथ भेज दी । ययाति से शर्मिष्ठा का सम्बन्ध हो गया और उससे उसे द्रह्यु, अणु व पुरु तीन पुत्र हुए । शर्मिष्ठा से सम्बन्ध कर लेने के कारण शुक्राचार्य ने क्रुद्ध होकर ययाति को शीघ्र बूढ़ा होने का शाप दिया ।

सरमीलौ–वि.—लज्जालु, लज्जावान ।

सरमु–सं. पु. [सं. श्रम] १ युद्ध ।
उ०—केवि दिखाडइं खांडा सरमु, केवि तुरंगम जांणइ मरमु ।
चक्र छुरी किवि सावल भालइं, किवि हथीयार पडंता झालइ ।
—सालिभद्र सूरि

२ वाद बहस ।
३ प्रतियोगिता ।
४ प्रयत्न, कोशिश ।

सरम्म— देखो 'सरम' (रू. भे.)
उ०—१ मारू कांम अडोल मन, सारू सांम धरम्म । इही सहरणां घूंघ कर, एवां गही सरम्म ।—रा. रू.
उ०—२ खंध न फेरै घुर वहै, धवळा राह धरम्म । राघव ज्यांरी राखही, सींगां तणी सरम्म ।—बां. दा.

सरम्मिंदौ—देखो 'सरमिंदौ' (रू. भे.)

सरया–सं. स्त्री. [सं. शर्या] १ रात्रि, रात ।
२ अंगुली ।

सरयणात–सं. पु [सं. शर्यणायत्] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सरयाति–सं. पु. [सं. शर्याति] १ वैवस्तमनु एवं श्रद्धा के संसर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक जो च्यवन महर्षि की पत्नी सुकन्या के पिता थे ।
२ प्राचीन्वत् राजा का पुत्र व अहंयति राजा का पिता एक पुरु-वंशीय राजा का नाम ।

सरयु, सरयू–सं. स्त्री. [सं. शरयु, शरयू] १ एक प्रसिद्ध नदी जिसके तट पर अयोध्या नगरी बसी है ।
[सं. सरयुः] २ पवन, वायु, हवा ।
३ वीर नामक अग्नि की पत्नी का नाम जिसके गर्भ से सिद्धी नामक पुत्र का जन्म हुआ था ।
रू. भे.—सरजु, सरजू, सारजू ।

सरर–सं. स्त्री.—१ ध्वनि विशेष ।
सं. पु.—२ जुलाहों द्वारा ताना ठीक करने हेतु लगाई जाने वाली बांस की छड़ी, सथिया ।

सरराज–सं. पु. [सं.] समुद्र, सागर ।
उ०—वाजराज अत वेव, करै नटराज तणी कळ । गजां राज घण गरज, गाज सरराज मदग्गळ ।—सू. प्र.

सरराटौ–सं. पु.—हवा, मनुष्यादि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि ।

सरराणौ, सरराबौ–क्रि. अ.—वायु के तेज बहने या तीर, गोली,

पत्थर आदि के तीव्र गति से छूटने से ध्वनि उत्पन्न होना।
सरळ, सरल-सं. पु. [सं. सरल] १ बाल, केस। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ सरळ सच्चिकण स्यांम कच, मुकता मंग मभार।
तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार।
—सिववक्स पाल्हावत
उ०—२ अंग भळकै आरसी, सरळ करळ सारसी।—पनां
उ०—३ ससि वदनी ती सिर सरळ, मेचक केस म जांण। हिय कांम पावक हुवै, जास धुंग्रां मन जांण।—बां. दा.
२ चीड़ का वृक्ष।
३ एक प्रकार का पक्षी।
४ आग, अग्नि।
५ भाला।
उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकतां, प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगौ। धुब्बै मुगळ अकळ कांठळां सरळधर, अरळ सावळ भरळ करळ ऊगौ।—नाथौ सांदू
६ बिजली, विद्युत।
वि.—१ जो टेढा या वक्र न हो, सीधा।
२ तेज, तीव्र।
उ०—१ सथ ऊठ नकीबां सरळ सद्ध, रवि उदय आद सभिया रवद्ध।—रा. रू.
उ०—२ नीमरयौ पटम सारै कुटम, करै साद सरळा तरणि। रुघनाथ साथ वासै रह्यौ, अनाथनाथ असरणि सरणि।
—सुरजनदास पूनियौ
३ सहज, आसान।
उ०—सुपह छतीसी दूहड़ा, सुपहां तणां छतीस। सरळ बणाया समभचित, 'वांकै' बिसवावीस।—बां. दा.
४ छल, कपट आदि से रहित सीधा, भला।
उ०—१ सरळ तन सहज दन मुकत दायक सुमत, गजगमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है।—र. जं. प्र.
उ०—परठीसि हवि पांचमा, अंग तणउ अधिकार। सरस अनइ सरला वचन, सारप आपै सार।—मा. कां. प्र.
५ ईमानदार।
सरलउ-वि.—१ दीर्घ। (उ. र.)
२ प्रलम्ब। (उ. र.)
सरळक-सं. पु.—१ एक प्रकार का सर्प विशेष।
[सं. शरलकं] २ जल, पानी।
सरलगतजथा-सं. स्त्री.—डिंगल गीतों की रचना का वह नियम जिसमें दृष्टांत अलंकार युक्त मालोपमा होता है।
सरळता, सरलता-सं. स्त्री.—१ टेढा न होने की अवस्था, गुण या भाव, सीधापन।
२ निष्कपटता, भलाई।
३ सुगमता, सरलता।
४ ईमानदारी, सच्चाई।
सरळधर, सरलधर-सं. पु. [सं. सरलधर] बादल।
उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकतां, प्रबळ भुजबळ सरळ तरळ पूगौ। धुब्बै मुगळ अकळ कांठळी सरळधर, अरळ सावळ भरळ करळ ऊगौ।—नाथौ सांदू
सरळा, सरला-सं. स्त्री. [सं. सरला] १ काली तुलसी।
२ चीड़ का वृक्ष।
३ घोड़ों की एक नस्ल।
वि.—१ एक-दम सीधा।
उ०—तरु ताल पत्र ऊंचा तड़ि तरळा, सरळा परसंता सरगि।
—वेलि
२ सहज एवं सुगम।
३ छल कपट रहित, निष्कपट, निष्छल।
सरली-सं. स्त्री.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।
सरलोक—देखो 'स्लोक' (रू. भे.)
उ०—खत गीता तै सरलोक खांत, भागवत सलोकी चतुर भांत।
—वि. सं.
सरलोकौ—देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)
सरलोमा-सं. पु.—एक प्राचीन ऋषि।
सरव-सं. पु. [सं. शर्वः, सर्वः] १ शिव, महादेव।
१ विष्णु।
२ श्रीकृष्ण का एक नाम।
४ ग्यारह रुद्रों में से एक।
वि. [सं. सर्व] सब, समस्त।
रू. भे.—सउ, सब, सरब, सरब्ब, सव, स्रव, स्रब्ब, स्रव।
सरवइया-सं. स्त्री.—यादव वंश की एक शाखा।
रू. भे.—सरवहिया।
सरवइयौ-सं. पु.—यादवों की सरवइया शाखा का व्यक्ति।
रू. भे.—सरवहियौ।
सरवकरणी-सं. स्त्री.—पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।
सरवकरता-सं. पु. [सं. सर्वकर्त्ता] ब्रह्मा। (नां. मा.)
सरवकरमा-सं. पु.—१ एक सूर्य-वंशी राजा का नाम।
उ०—सनुदासतास पुत्र तप सधेज, तै पुत्र सरवकरमा सतेज।
—सू. प्र.
२ कल्माषपाद के पुत्र का नाम जो अनरण्य का पिता था।
सरवकांम-सं. पु. [सं. सर्वकाम] सूर्यवंशीय ऋतुपर्ण के पुत्र एवं सुदास के पिता का नाम।
सरवकांमद-सं. पु. [सं. सर्वकामद] भगवान् विष्णु।
सरवकांमदुका-सं. स्त्री. [सं. सर्वकामदुका] कामधेनु।
सरवकाळ-सं.पु. [सं. सर्वकाल] यमराज।

क्रि. वि.—हर समय, सर्वदा, सदैव ।

सरवगंध-सं. पु. [सं. सर्वगंध] १ इलायची ।
२ कपूर ।
३ केसर ।
४ दालचीनी ।
५ अगर ।
६ नागकेसर ।
७ सिलारस ।
८ लौंग ।

सरवगत-वि.—जिसकी गति सब जगह हो ।
सं. पु. [सं. सर्वग] १ भीमसेन के एक पुत्र का नाम ।
२ धर्मसावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।
३ देखो 'सरवग्य' (रू. भे.)

सरवसरणि-वि.—जो सब को शरण व आश्रय देता हो, परमेश्वर ।

सरवगळ-सं. पु.—१ सग्रास ।
वि.—२ पूर्ण रूप से ग्रस्त ।
उ०—सिळै सगरांम सगरांम जुध समळियो, अजड बळ खांन संघार लूटो । गाम भंडार सपतंग लै सरवगळ, छोडियां साह मरमंद छूटो ।—महारांणा संग्रामसिंह री गीत

सरवग्य-वि. [सं. सर्वज्ञ] सर्वज्ञ ।
उ०—१ वाता विसतारै घणी, सठ आगै सरवग्य (सरवज्ञ) । मून गहै आछै मसर, तीखो मिळिया तग्य (तज्ञ) ।—बां. दा.
उ०—२ मनइच्छा सोई ब्रम्ह स्वरूपी, सरवग्य सकल पसारा । पाप पुन्य दुख सुख नहीं दरसै, नहीं कोई जीतण हारा ।
—साधु जगदीसरांम
सं. पु.—१ ईश्वर ।
२ शिव, महादेव ।
३ चौसठ भैरवों के अन्तर्गत एक भैरव ।
४ देवता ।
रू. भे.—सरवग ।

सरवग्यता-सं. स्त्री. [सं. सर्वज्ञता] सर्वज्ञ होने का भाव या अवस्था ।

सरवग्यानी-सं. पु. [सं. सर्वज्ञानी] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता ।
रू. भे.—सरवग्यांनी, सरवजांण ।

सरवग्याता-सं. पु. [सं. सर्वज्ञाता] १ सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता ।
२ ईश्वर ।
३ शिव, महादेव ।

सरवग्यात्मा-सं. पु. यौ. [सं. सर्वज्ञ+आत्मा] ईश्वर ।
उ०—नमो नमो सरवेसा विस्व तव सेसाक्षर नमो । नमो सरवग्यात्मा परम परमात्मा पर नमो ।—ऊ. का.

सरवग्यांनी—देखो 'सरवग्यानी' (रू. भे.)

सरवग्रास-सं. पु. [सं. सर्वग्रास] वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्र मंडल पूर्ण रूप से छिप जाता है ।

सरवड़िया-सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा । (व. भा.)

सरवड़ियो-सं. पु.—पंवार वंश की सरवड़िया शाखा का व्यक्ति ।

सरवड़ो-वि.—मूसलाधार ।
उ०—१ सावण वरसइ सरवड़ै, नयन न खंचइ धार । तिणइ तणाउं ताग-विण, स्वांमी सि न करि सार ।—मा. कां. प्र.
उ०—२ सावण वरसइ सरवड़ै, वडे वडेरै बूंद । वपु-पंजर माधव गुणै, वेधी करिउं छछूंद ।—मा. कां. प्र.

सरवचारी-वि. [सं. सर्वचारिन्] सब में विचरण करने वाला या रमने वाला ।
स. पु.—शिव, महादेव ।

सरवचूड़-स. पु. [सं. सर्वचूड़] महादेव का चूड़, चंद्रमा ।
उ०—रच्या रांम रा दोय चित्रांम रूड़ा, चखां सरव एको बियो सरवचूड़ा ।—मे. म.

सरवजित-सं. पु. [सं. सर्वजित] १. २१ वां संवत्सर का नाम ।
२ कश्यप मुनि के एक पुत्र का नाम ।

सरवण-स. पु. [सं. शरवण] १ एक वन जहां स्कन्ददेव का जन्म हुआ था ।
२ एक प्रकार की घास ।
३ देखो 'स्रवण' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ मोचाखांना वेल सजि, वटां कहार वहाय । कायह सरवण धारि कंध, जांणै तीरथ जाय ।—सू. प्र.
उ०—२ सरवण न हुवै हियो सिळावण, हियो जळावण कंस हुवै । थोथै कांम कूटीजै थाळी, कळजुग राळी भांग हुवै ।
—हिंगळाजदांन कवियो
उ०—३ सरवणां री ओर ओपमा न वणसी, सीपमां नूं स्वांति बूंद भेली छै । जको मोती जणसी ।—पनां
उ०—४ सरवण नैणि जिह नासिका, सीख करि सैणा सथै । घात हुई निरघात, वात हुई विड़ हथै ।—सुरजनदास पूनियौ

सरवणति-सं. स्त्री.—वह स्त्री जो अपने सास ससुर की खूब सेवा करती हो ।
उ०—म्हांरी अै ववड़िया सरवणती, आ सासड़ रै हुकमां मैं हाले ववड़िया सरणवती ।—लो. गी.

सरवणो, सरववो-क्रि. अ. [सं. श्रवति] १ टपकना, चूवना ।
(उ. र.)
उ०—कामधेनु करतार है, अम्रत सरवै सोय । दादू बछरा दूध कौं, पीवै तौ सुख होय ।—दादूवांणी
२ तेजगति से दौड़ना, भागना ।
उ०—इतरै मांहे प्रयागदास भैराको चढियो थको आयो । घोड़ो सरवरतां थको हौज 'जैमलजी' नूं सलांम कीधी ।—नैणसी
३ शाप देना ।

उ०—इम करि कंकण फोडए, त्रोडए नवसर हार। अंगि निरंतर सरवती करवती जिम जल धार।—जयसेखर सूरि

सरवणहार, हारौ (हारी), सरवणियौ—वि०।

सरविओड़ौ, सरवियोड़ौ, सरव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरवीजणौ, सरवीजबौ—भाव वा०।

सरवतापन-स. पु. [सं. सर्वतापन] १ सूर्य, सूरज।
२ कामदेव।

सरवतेज-सं. पु. [सं. सर्वतेजस्] व्युष्ट व पुष्करिणी के पुत्र एवं चाक्षुष मनु के पिता का नाम।

सरवतोभद्र-सं. पु. [सं. सर्वतोभद्र] १ विष्णु के रथ का नाम।
२ चारों ओर से खुला प्रासाद या भवन जिसकी परिक्रमा की जा जा सकती हो।
३ युद्ध में एक प्रकार का व्यूह।
४ योग के अनुसार एक आसन या मुद्रा।
५ चित्रकाव्य का एक प्रकार।
६ नीम का पेड़।
७ बाँस।
८ जल के अधिष्ठाता वरुण का निवास स्थान।

सरवतोमुख-सं स्त्री. [सं. सर्वतोमुख] एक प्रकार की व्यूह रचना।
सं. पु.—१ शिव, महादेव।
२ अग्नि, आग।
३ जल, पानी।
४ ब्रह्मा।
५ स्वर्ग।
६ आकाश।

सरवत्र-क्रि. वि. [सं. सर्वत्र] १ हर जगह, सब जगह, हर स्थान पर।
उ०—वरिखा ज्यौं सरवत्र वरसै। भर चात्रिग मैं न चाहै त्यां वसंत रै विखै कोई भूख्यौ तिस्यौ न रहै छै।—वेलि टी.
२ हर समय।

सरवत्रग-सं. पु. [सं. सर्वत्रग] १ वायु, पवन।
२ एक मनु-पुत्र का नाम।
३ भीम व वलंधारा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

सरवत्रगामी-सं. पु. [सं. सर्वत्रगामी] वायु, पवन।

सरवथा-क्रि. वि. [सं. सर्वथा] १ सब प्रकार से, हर तरह से।
२ बिल्कुल, निरा।
३ सर्वत्र।
रू. भे.—सरवथा।

सरवदमन-सं. पु. [सं. सर्वदमन] दुष्यंत व शकुन्तला के संसर्ग से उत्पन्न भरत का बचपन का नाम।

सरवदेवमयरथ-सं. पु. [सं. सर्वदेवमयरथ] विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया एक सुवर्णरथ विशेष जिसे त्रिपुरनाश करने के समय शिव ने बनवाया था।
वि. वि.—इस रथ के दाहिने चक्र में सूर्य और वामचक्र में चन्द्रमा तथा २७ नक्षत्र विराजते थे। दाहिनें पहिये में १२ अरे थे जिनमें बारहों सूर्य तथा वामचक्र में १६ अरे थे जिनमें चन्द्रमा की सोलहों कलाएँ थी। छहों ऋतुएँ दोनों पहियों की नेमि, अन्तरिक्ष रथ का अग्र भाग बना और मंदराचल ने रथ की बैठक का स्थान लिया। अस्ताचल और उदयाचल रथ के कूबर, महामेरु अधि-ष्ठान और शाखापर्वत आश्रय स्थान बने। संवत्सर रथ का वेग, उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों लोहधारक, मुहूर्त वन्धुर (रस्सा) और चौसठ कलाएं कीलें हुई। काष्ठाएँ रथ के नासिकारूप अग्र-भाग, क्षण अक्षदण्ड, निमेष अनुकर्ष (नीचे का काठ) और लव ईषादण्ड, हुए। द्युलोक इस रथ का बरूथ (ऊपरी पर्दा), स्वर्ग और मोक्ष धजाएँ। ऐरावत की पत्नी अभ्रमु तथा कामधेनु जुए के अन्तिम छोर पर स्थापित की गयीं। अव्यक्त (प्रकृति) ईषादण्ड बुद्धि नड्वल, अहंकार कोना और पंचमहाभूत उसका बल। इन्द्रियां उसे चारों ओर से विभूषित कर रही थी और श्रद्धा रथ की चाल थी। वेद में छहों अंग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दः-शास्त्र और ज्योतिष) उसके भूषण। पुराण, न्याय, मिमांसा और धर्मशास्त्र उपभूषण हुए। शेषनाग बन्धनरज्जु दिशाएँ और उप-दिशाएं रथ के पाद बनी। तीर्थों ने पताका का स्थान लिया और समुद्र आच्छादन वस्त्र बने। गंगादि नदियां उपचारिका, सातों वायु सोपान बने, मानस आदि सरोवर बाहरी विषम स्थान हुए। ब्रह्मा सारथि, ऊंकार चाबुक, अकार छत्र, हिमालय धनुष, शेषनाग प्रत्यंचा, सरस्वती देवी धनुष की घटा, विष्णु बाण, अग्नि उस बाण की नोंक। चारों वेद रथ के चार घोड़े, वायु बाजा बजाने वाला आदि-आदि संसार की सब वस्तुएं उस रथ में थी। (मत्स्य १३१. १५-४६)

सरवदेवेस-सं. पु.—१ चौसठ भैरवों में से एक।

सरवधारी-सं. पु. [सं. सर्वधारी] १ शिव, महादेव।
२ साठ संवत्सरों में बाइसवां संवत्सर।

सरवनांम-सं. पु. [सं. सर्वनाम] संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला व्याकरण का शब्द।

सरवनास-सं. पु. [सं. सर्वनाश] विध्वंस, सत्यानाश।

सरवनासक-वि. [सं. सर्वनाशक] सर्वनाश करने वाला।

सरवनासी-वि. [सं. सर्वनाशी] विध्वंसकारी, सर्वनाश करने वाला।

सरवनियंता-वि. [सं. सर्वनियन्तृ] सब को वश में करने वाला।

सरवप-सं. [सं. सर्वपः] १ राई।
२ सरसों।
३ एक तोल विशेष।
४ एक प्रकार का विष विशेष।

सरवपत्नी-सं. स्त्री. [सं. शर्वपत्नी] १ लक्ष्मी।

२ पार्वती।

[illegible]-सं. पु. [सं. सर्वपर्वत] एक पर्वत।

सरवथा-अव्य. [सं. सर्वथा] १ सब तरह से।

२ बिल्कुल।

३ [illegible]।

४ सर्वत्र, सब जगह। (ड. र.)

[illegible]-सं. स्त्री. [सं. [illegible]] शनि की पत्नी का नाम।

सरवपित्रीअमावस-सं. स्त्री.—आश्विनी मास की अमावस्या।

सरवपित्रीसराध-सं. पु. यौ.—आश्विन मास की अमावस्या को किया जाने वाला श्राद्ध।

सरवप्रिय-वि. [सं. सर्वप्रिय] जो सबको प्रिय लगता हो।

सरवभखा, सरवमता-सं. स्त्री. [सं. सर्वमदा] १ बकरी।

२ अग्नि, आग।

सरवभूतहृदय-सं. पु. [सं. सर्वभूतहृदय] चौसठ भैरवों में से एक।

सरवमंगला-सं. स्त्री. [सं. सर्वमंगला] १ चौसठ योगनियों में से एक योगिनी।

२ पार्वती।

३ देखो 'सरवमंगळा'।

वि.—सब का कल्याण करने वाली।

सरवमुख-सं. पु. [सं. सर्वतोमुखम्] पानी, जल। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरवमुख।

सरवर-सं. पु. [सं. शर्वर] १ अंधकार, अंधियारा।

[सं. शर्वरः] २ कामदेव, मनोज।

३ देखो 'सरोवर' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ टगरो सिव मंदिर तठै, निरमळ नीर निराट। भादळपुर सरवर भलो, घणां मनोहर घाट।—घनदान लाळस

उ०—२ आवड़ रूप पधारया अंबा, वणि मांमड़ रा बाई। सरवर सोख रोकियो सूरज, मान कियो निजमाई।—मे. म.

सरवरत—देखो 'सरवरित' (रू. भे.)

सरवरग—देखो 'सरवग्ग' (रू. भे.)

सरवरा—देखो 'सरवरा' (रू. भे.)

सरवन—देखो 'सरवन्न' (रू. भे.)

सरवरि—१ देखो 'सरवरी' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—वधिया तनि सरवरि वेस वधंतो, जोवण तणो तणो जळ जोर। [illegible] करण सु वांग काम रा, दोर सु वरुण तणा किरि दोर।—वेलि.

२ देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

उ०—पनि नदरि घराघरि तरि तरि सरवरि पुरस नारि नासिका पवि।—वेलि.

सरवरित—देखो 'सरवरित' (रू. भे.)

सरवरियो—देखो 'सरोवर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—डीगो रे सरवरिया थारी पाळ। पाळ चढूं नै पाछी उतरूं।
—लो. गी.

सरवरी-सं. स्त्री. [सं. शर्वरी] १ रात्रि, निशा।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। सिय जीत पति गुण परखि चखि सुख, सकस पखि जिम सुंदरी।
—रा. रू.

२ दोष नामक वसु की पत्नी।

३ वृहस्पति के साठ संवत्सरों में से चौतीसवां संवत्सर।

४ हल्दी।

५ स्त्री, औरत।

रू. भे.—सरवरी, सरवरि, सरव्वरी, सव्वरिय, सव्वरी।

सरवरीकर-सं. पु. [सं. शर्वरीकर] विष्णु।

सरवरीदीप, सरवरीदीपक-सं. पु. [सं. शर्वरीदीपक] चन्द्रमा, चांद।

सरवरीपत, सरवरीपति, सरवरीपती-सं. पु. [सं. शर्वरीपति] १ शिव, महादेव।

२ चन्द्रमा, चांद।

सरवरीस-सं. पु. [सं. शर्वरीश] चन्द्रमा, चांद।

सरवरूप-वि. [सं. सर्वरूप] सर्वस्वरूप।

सरवलोकेस-सं. पु. [सं. सर्वलोकेश] १ ब्रह्मा।

२ शिव।

३ विष्णु।

४ कृष्ण।

सरवलोह-सं. पु [सं. सर्वलोह] तांबा, ताम्र।

सरववरति-सं. स्त्री.—हिंसा आदि का सम्पूर्ण त्याग। (जैन)

सरववलभा, सरववल्लभा-सं. स्त्री. [सं. सर्ववल्लभा] १ वैश्या।

२ कुलटानारी।

सरवविद-सं. पु. [सं. सर्व+विद्] १ शिव, महादेव।

२ बुद्धदेव।

वि.—सर्वज्ञ, सब जानने वाला।

सरवव्यापक-वि. [सं. सर्वव्यापक] सर्वव्यापी, परब्रह्म।

सरवव्यापी-सं. पु. [सं. सर्वव्यापिन्] १ ईश्वर, परमेश्वर।

२ शिव, महादेव, शंकर।

३ विष्णु।

वि.—जो हरेक में एवं हर जगह व्याप्त हो।

रू. भे.—सव्वबियापी।

सरवसंहार-सं. पु. यौ. [सं. सर्व+संहार] काल, मृत्यु।

सरवस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—१ दे सरवस आसान न दिल में।—चण्डीदांन सांदू

उ०—२ ऊजेणी नट जीजी राजा लेई सरवस राज। इण विर बाप तणां हूं सारिसु, मनवंछित सवि काज।—हीराणंद सूरि

२ देखो 'सरवसहा' (रू. भे.) (नां. मा.)
सरवसक्तिमांन-सं. पु. [सं. सर्वशक्तिमान] १ ईश्वर।
वि.—२ जिसमें सब कुछ करने की सामर्थ्य हो।
सरवसह, सरवसहा-सं. स्त्री. [सं. सर्वसह, सर्वसहा] भूमि, धरा। (डिं. नां. मा.)
रू. भे.—सरवस्हा।
सरवसाक्षी, सरवसाखी-सं. पु. [सं. सर्वसाक्षिन्] १ ईश्वर, परमात्मा।
२ अग्नि, आग।
३ वायु, पवन, हवा।
सरवसाधन-सं. पु. [सं. सर्वसाधन] १ सोना, स्वर्ण।
२ शिव, महादेव।
३ धन-दौलत।
सरवसारंग-स. पु. [सं. सर्वसारंग] धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।
सरवसिद्धा-सं. स्त्री. [सं. सर्वसिद्धा] ये तीन तिथियां—चतुर्थी, नवमी, और चतुर्दशी। मतांतर से ये तीन तिथियां भी मानी जाती है—तृतीया, नवमी और त्रयोदशी।
सरवसिद्धि-सं. स्त्री. [स. सर्वसिद्धि] सब इच्छाओं एवं कार्यों के पूरा होने की अवस्था या भाव।
सरवसेन-सं. पु. [सं. सर्वसेन] ब्रह्मदत्त राजा का पुत्र एवं भरत-पत्नी सुनंदा का पिता एक काशीनरेश।
सरवसौग्य-सं. पु. [सं. सर्वसौज्ञ] ग्यारह रुद्रों में से एक।
सरवस्री-सं. पु. [सं. सर्वश्री] एक आदरसूचक विशेषण। जब अनेक व्यक्तियों का नामोल्लेख किया जाए तब सब के आगे श्री न लगा कर पहले व्यक्ति के आगे यह लगा दिया जाता है।
सरवस्रेस्ठ-वि [सं. सर्वश्रेष्ठ] सबसे उत्तम।
सरवस्व-सं. पु. [सं. सर्वस्व] १ सब कुछ।
२ किसी की दृष्टि में वह सारी सम्पत्ति जिसका वह स्वामी हो।
ज्यूं—लड़के री पढाई में उण सर्वस्व गँवा दियो।
३ अमूल्य तथा महत्वपूर्ण पदार्थ जैसे—औही लड़कौ बुढ़िया रौ सर्वस्व हौ।
रू. भे.—सरबस, सरबस्व, सरवस।
सरवस्वी-सं. पु. [सं. सर्वस्वी] (स्त्री. सर्विस्वनी) गोप माता-पिता की संतान।
सरवहर-वि. [सं. सर्वहर] सर्वस्व हर लेने वाला।
सं. पु.—१ शिव, महादेव।
२ अग्नि, आग।
३ काल, मृत्यु।
४ धर्मराज, यमराज
सरवहार-सं. पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।
उ० —हस्तकलिका पादसंकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक **सरवहार** मध्यनायक कृष्णनायक नीलनायक......।—व. स.
सरवहिया—देखो 'सरवेइया' (रू. भे.)
सरवहियौ—देखो 'सरवेइयौ' (रू. भे.)
सरवांग-सं. पु. [सं. सर्वांग] १ सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव।
२ शिव, महादेव।
सरवांगासन-सं. पु. [सं. सर्वाङ्गासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें सर्वप्रथम शवासन की तरह सोना चाहिए, फिर दोनों हाथों की कोहनियों को भूमि पर टिका कर हाथों के पंजों के आधार से पीठ को ऊपर करना और दोनों पैरों को आकाश की तरफ सीधा ऊँचा करके स्कंध और गरदन पर बोझ डाला जाता है।
हलासन नामक आसन इसका एक अवांतर भेद है।
सरवांगीण-वि. [सं सर्वांगीण] १ सम्पूर्ण, पूरा।
२ जो सभी अंगों से युक्त हो।
३ सभी अंगों से सम्बन्ध रखने या उनमें व्याप्त रहने वाला।
सरवांणी-सं. पु. [सं. शरः+वाणि] १ तीर का सिरा।
२ धनुर्धर, तीरंदाज।
३ तीर बनाने वाला।
४ पैदल सिपाही।
सं. स्त्री. [सं. शर्वाणी] ५ पार्वती, उमा। (अ. मा; ह. नां. मा.)
६ दुर्गा, देवी।
रू. भे.—सरवांणी।
सरवाक-सं. पु. [सं. शरावक] १ प्याला।
२ दीपक।
सरवाक्ष-सं. पु. [स. शर्वाक्ष] १ रुद्राक्ष। २ शिव।
सरवातीत-वि. [सं. सर्व+अतीत] सबसे परे, बाहर, दूर।
उ०—कहां ब्रह्म कहां ईस है, कहां जीव संसार। **सरवातीत** निरवांण में, निरमाया सुखसार।—स्रीसुखरांमजी महाराज
सरवात्मा-सं. पु. [सं. सर्वात्मा] १ शिव का एक नाम।
२ सब की आत्मा।
३ ईश्वर, परमात्मा।
सरवाधिक-वि. [सं. सर्वाधिक] सबसे अधिक।
सरवाधिकार-सं. पु. [सं. सर्वाधिकार] १ सब कुछ करने का अधिकार।
२ समस्त अधिकार।
सरवाधिकारी-वि. [सं. सर्वाधिकारी] १ जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।
२ सर्वाधिकार रखने वाला।
सरवानुभूति-सं. पु.—भूतकाल के छठे तीर्थंकर का नाम। (जैन)
सरवानुवाद-सं. पु. [स. सर्वानुवाद] सम्पूर्ण अनुवाद।
उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद **सरवानुवाद** पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं वाद लिइ।—व. स.

सरवारक-सं. स्त्री. [सं. शरवारक] वह ढाल जिससे तीरों की बोछार रोकी जाती हो।

सरवासिहिद्रत-सं. पु. [सं. सर्वासिहिरव्रत] फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को किया जाने वाला व्रत। इस दिन सुप्रभात से सूर्योदय से सूर्यास्त तक लगातार सूर्य के सम्मुख खड़ा रहा जाता है व सूर्यास्त होने के बाद भगवान का पूजन निराहार रखा जाता है व दूसरे दिन भोजन किया जाता है।

सरवारथ-सं. पु. [सं. सर्वार्थ] १ एक प्रकार का मुहूर्त। (ज्योतिष)
 २ पदार्थ व भोग के विषय।

सरवारथसिद्धि-सं. पु. [सं. सर्वार्थसिद्धि] सबसे ऊपर का लोक, सर्वोच्च देवस्थान। (जैन)
 उ०—ग्यांनमाहि केवल ग्यान, विमानमाहि सरवारथसिद्धि रिद्धि माहि शालिभद्रनी रिद्धि, सुर ग्रामाहि गगन, पवित्रमाहि पवन ....।—व. स.
 २ गौतम बुद्ध।
 ३ समस्त अर्थों की सिद्धि।
 ४ सर्वार्थ सूत्र की टीका का नाम।

सरवाल, सरवाली-सं. स्त्री.—हरड़, हरीतकी।
 (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सरवासि-सं. पु.—बाण, तीर।

सरवाछै, सरवानै-क्रि. वि.—अंत में, आखिर में।

सरवावसु-सं. पु. [सं. सर्वावसु] सूर्य की एक किरण का नाम।

सरविद्या-सं. स्त्री.—धनुर्विद्या।

सरविंधोड़ौ-भू. का. कृ.—१ टपका हुआ, चूता हुआ. २ तेज गति से दौड़ा हुआ, भागा हुआ. ३ शाप दिया हुआ।
 (स्त्री. सरविंधोड़ी)

सरविस, सरवीस-सं. स्त्री. [अं.] १ नौकरी, सेवा।
 २ मरम्मत।

सरवेत-वि. [सं. सर्वः] १ सब, समस्त।
 २ सर्वस्व।

सरवेस, सरवेस्वर-सं. पु. [सं. सर्वेश, सर्वेश्वर] १ ब्रह्मा। (नां. मा.)
 २ ईश्वर।
 ३ शिव, महादेव।
 ४ विष्णु।
 ५ जो सबका स्वामी हो।
 उ०—सूरज तेज पुंज सरवेस्वर, जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर। जग स्यांमाह जगत रौ जांमी, सुर नर दुस्ट कस्ट रौ सांमी।—रा. रू.
 रू. भे.—सरवेस, सरवेसर, सरवेस्वर।

सरवेसरवा-वि. [सं. सर्वेसर्वा] जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।

सरवोड़ौ-सं. पु.—आवाज दाकल देने वाला।
 उ०—सुरी पुराणी नाद, सारियै पाणी मोलै। वजै वेड़ियो बंब, सुणें सरवोड़ौ बोलै।—दसदेव

सरवोपरि-वि. [सं. सर्वोपरि] सर्वोच्च। (उ. र.)

सरवो-सं. पु. [सं. स्रुवा] १ लकड़ी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिसे हवनादि में घी की आहुती देने के लिए प्रयोग किया जाता है।
 २ मटकी से पानी लेने के लिए पीतल, तांबे आदि का बना पात्र।
 वि. [स्त्री. सरवी] शीघ्र सुनने वाला।

सरव्य-सं. पु. [सं. शरव्यं] १ लक्ष्य, निशाना।
 २ तीरंदाज।

सरव्वर—देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

सरव्वरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.)
 उ०—ढंचाळां सिर ढल्ल ढळक्कं दुहरी। सेहा मझिम दुदिद क चंद सरव्वरी।—गु. रू. वं.

सरस-सं. पु. [सं.] १ तालाब, जलाशय।
 २ सिरस का वृक्ष विशेष।
 [रा.] ३ रीति, रस्म।
 ४ छप्पय छंद का ३५ वां भेद जिसमें ३६ गुरु ८० लघु कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएं होती है।
 ५ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन सगण एवं लघु गुरु सहित ११ वर्ण होते हैं।
 ६ एक मात्रिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती है एवं सात मात्राओं पर विश्राम होता है। इसे मोहणी भी कहते हैं।
 वि.—१ रसपूर्ण, रसीला।
 उ०—परढीसि हवि पांचमा, अंग-तणउ अधिकार। सरस अनइ सरला वचन सारद आपे सार।—मा. कां. प्र.
 २ समान, तुल्य।
 उ०—१ सिध सरस रायसिंघ रै, रहियौ भूभै रांम। आडौ सर-वहियौ अछै, कळह तणौ धरि कांम।—हा. भा.
 उ०—२ इंद्र हू सरस राजस अमास, प्रिय जूथ सात सै गुर पचास।—सू. प्र.
 उ०—३ श्रीकम सरस लगावण ताळी, एकण ध्यांन रहउ पग एक। रहण इसा जोगेन्द्र रहंता, आछी जुग वउळिया अनेक।
 —महादेव पारवती री वेलि
 ३ जोशपूर्ण, जोशीला।
 उ०—१ आया वसिया आपणी, श्रीखम थई वतीत। गुणचाळी लागी वरस, चाळौ सरस सजीत।—रा. रू.
 उ०—२ सरस आप खग, तप सरसांणै। 'मुदफर' दळ भाण मुगलांणै।—सू. प्र.
 ४ प्रीति सहित, प्रेमपूर्ण।
 उ०—बोल नवाब सरस द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ संधै।

—रा. रू.

५ पल्लवित, हरा-भरा।

उ०—पतळी केळू कांमड़ी है; सरस सुवांणी डाळियां। छांट छोल लै'रां लपेटां, करड़ पटोली बाळियां।—दसदेव

६ किसी की तुलना में अपेक्षाकृत अच्छा, बढ़कर।

उ०—१ ऊससै कमंध लागै उरसि, राजा चढियौ वीररस। उण वार लोह मुंहगौ हुवौ, सोना ही हूंता सरस।—सू. प्र.

उ०—२ असिवर कै तेज पुंज 'मधकर' कै पोतै, प्रांण तें सरस पायौ अवसांण जोतै।—रा. रू.

७ सुंदर, मनोहर।

उ०—पतिव्रता नेह अपार, सझि सोल सरस सिंगार। वह कळा लछ्ण बतीस, सझि आभरण खटतीस।—सू. प्र.

८ गीला, सजल।

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

उ०—१ वीडां दीजइ वलि वलि, सुविमल सरस कपूरि। करइं जि आलस तै सवि, केसवि कीजइ दूरि।—जयसेखर सूरि

उ०—२ वडबोरां रा वोर, जूनोड़ा जांमफळ है। छोटकिया छिव-जोर, सरस ज्यूं इमीफळ है।—दसदेव

९ उत्तम, पवित्र।

उ०—सरस पुरांणां बीच सुणी थी, किसन सुदांमा तणी कथ। दतदेतै साख्यात दिखावी, सौ विध नवसहंसा समथ।—बां. दा.

१० ताजा।

११ मधुर, मीठा।

उ०—धोळी सुघड़ बत्तीसी, जांणै पळकता मोती ई खराद उत-रया। सरस सुहांणी बोली, जांणै गळा सूं बोलां रै बदळै फूल निसर निसर नै विकसै।—फुलवाड़ी

१२ भावपूर्ण।

१३ श्रेष्ठ, उत्कृष्ट।

१४ गुणदायक, लाभप्रद।

उ०—धनि ओह गुर साचै गुर कूं धनि, जीणि बूंटी सरस वताई रे। वा बूंटी जां संतां साधी, अंगि भई सितळाई रे।—बील्होजी

१५ आनन्दपूर्वक, प्रेमसहित।

उ०—हुआ धमळमंगळ हरिख, वधिया नेह नवल्ल। सूर 'रतन' सतिआं सरस, मिळिया जाइ महल्ल।—र. वचनिका

१६ आनन्ददायक।

उ०—१ चोथ चिहूं दिस ऊनम्यौ, मेह रह्यौ झड़ लाय। प्रीतम प्यारी रंग रमै, सेझां सरस बणाय।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सरवर खेलै कांमणी, वादळ खेलै बीज। प्यारी खेली पीव संग, सरस सांवण री तीज।—कुंवरसी सांखला री वारता

१७ वहुत अधिक, अत्यधिक।

उ०—१ ताव अलाजां तरस, सरस रण चाव सलाजां। बणें न राजां वहिर, गहिर तोपां घण गाजां।—वं. भा.

उ०—२ लखि वेणी नागणि लजी, धुकि धर मांहि धसंत। सखी अंग सोभा सरस, बिलखी देख बसंत।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सात्यूं सरस सनेह सूं, मोहल बुलाई पीव। कर पकड़ै सेझां लई, कांपण लागौ जीव।—कुंवरसी सांखला री वारता

१८ देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—रमतां जगदीसर तणी रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महै। सरसै रुखमणी तणी सहचरी, कहिया थूं मैं तेम कहै।

—वेलि

रू. भे.—सरस्स।

सरसइ, सरसई—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—पणमिय पासजिणंद पय, अनु सरसइ समरेवी। थूलिभद्द मुणिवइ भणिसु, फागुबंधि गुण केवी।—जिनपद्मसूरि

सरसउ—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.) (उ. र.)

सरसज्या-सं. स्त्री. [सं. शर+शय्या] तीरों की शय्या, सेज।

रू. भे.—सरसया, सरसय्या, सरसेज्या, सरसैजा।

सरसणौ, सरसबौ-क्रि. अ.—१ होना।

२ हराभरा होना।

३ रसपूर्ण होना, रसयुक्त होना।

४ प्रवाहित होना।

५ बरसना।

६ आनन्दित होना, प्रफुल्लित होना।

७ गुणदायक होना, लाभदायक होना।

उ०—पता समझ हिम्मत पखै, जस कह थकै जीह। इधकै सूं सरसै इधक, दरसै दीहो दीह।—जेतदांन बारहठ

सरसणहार, हारौ (हारी), सरसणियौ—वि०।

सरसिओड़ौ, सरसियोड़ौ, सरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरसीजणौ, सरसीजबौ—भाव वा०।

सरसवणौ, सरसवबौ—रू० भे०।

सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्ति, सरसत्ती—देखो 'सरस्वती'

(रू. भे.) (अ. मा; उ. र.)

उ०—१ आज दांन ऊमणौ, आज सरसत दुचत्ती। आज तजै, अहवात, हार कांकण कीरत्ती।—पहाड़खां आढौ

उ०—२ हिवड़ौ सांचै ढाळियौ, सायर उदर गंभीर। केहरि लंकी कांमणी, मन की सरसत नीर।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अंनपूरणा, भाखै लोक भलाह।—बां. दा.

उ०—४ परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु प्रणवि त्रणे ततसार।—वेलि

उ०—५ सरसति जमना गंग त्रवेणी, त्रहुवें उलटी वदै त्रिवेणी।

—सू. प्र.

उ०—६ देवी महलां मधूनी मीन मूजा, देवी नोच चोदस्स पूनम पूजा। देवी सरस्सी नवनमी महाकाळी, देवी कन्त विस्नु महमा कमाळी।—देवि.

सरस्वतीशयन-सं. पु.—आश्विन माह के शुक्ल में मूल नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र के पर्यंत की अवधि, समय।

सरसयन, सरसयन-सं. स्त्री. [सं. शरशयन] भीष्म द्वारा कुरुक्षेत्र में शरशय्या पर लेटने की क्रिया।

सरसय्या, सरसय्या—देखो 'सरसज्या' (रू. भे.)

सरसर, सरसराट-सं. पु [अनु.] १ वायु के मंदगति से चलने पर उत्पन्न ध्वनि।

२ सर्प छिपकली आदि जंतुओं के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे।

उ०—दिन दिख सोहै छांटकल्या री छोळ, सूरज किरणां सरसर उतरै।—मो. गी.

रू. भे.—सरसराहट।

सरसराणौ, सरसराबौ-क्रि. अ.—१ सर-सर की ध्वनि होना।

२ सनसनाना।

सरसराहट—देखो 'सरसराट' (रू. भे.)

सरसरी-क्रि. वि. [फा. सरासरी] १ जल्दी।

२ साधारण ढंग से, मोटे तौर पर।

सं. स्त्री. [सं. सुरसरी] गंगा।

सरसव, सरसवि—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—१ किहां मुत्ताहल गुंज किहां, किहां सरसव किहां मेर। साधव जोतां मांनिनी, महीपति प्रेतु फेर।—मा. कां. प्र.

उ०—२ फल मैं पहिलो फेर, मेर सरसव जिम मोटो। स्वाति बिंदु सीप मैं, आई पड्यो अग मोटो।—ध. व. ग्रं.

सरसवणौ, सरसवबौ—देखो 'सरसणौ, सरसबौ' (रू. भे.)

उ०—जोरावर परजुग जिसो, सत्रां नर नर साल। सुपह प्रथू ज्यों सरसवै, दंतजांम इकबाल।—सिवबक्स पाल्हावत

सरसवणहार, हारौ (हारी), सरसवणियौ—वि०।

सरसवियोड़ौ, सरसवियोड़ौ, सरसव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरसवीजणौ, सरसवीजबौ—भाव वा०।

सरसांन-सं. पु.—समुद्र, सागर। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सरसावियोड़ौ—देखो 'सरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरसावियोड़ी)

सरसवैल-सं. पु. [सं. सर्षपतैलम्] सरसों का तेल। (अ. र.)

सरसाणौ - देखो 'सरसावणौ' (रू. भे)

उ०—सरसै मिळै संग सग डोलै, वचन रचै सरसाणा रे। हिय हरसै चरणे चट पंकज, हरि रै हाथ बिकांणा रे।—गी. रा.

सरसा-वि.—१ स्वादिष्ट, रसपूर्ण।

उ०—नवरट सत परवांन, पाक चटनीस प्रमांणं। सरसा साग बतीस, जिमां संख्या बहु जांणं।—सू. प्र.

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सिवदांन 'अजन' सामंतसीह इळ भए भूर सरसा अवीह।—रा. रू.

सरसाणौ, सरसाबौ-क्रि. अ.—१ हराभरा होना।

उ०—पवन फिरै छूटै परवाई, ऊठै घटा घटा चढि आई। धर छोळां गिरमेर धपाई, सगळा नाज हुवै सरसाई।—वर्षा विज्ञान

२ शोभित होना।

उ०—१ अस्त्र गुलाब अबीर उड़ायो, सस्त्र पिचरका छिब सरसायो। वीर नाद सोइ चग बजायो, रंग फाग सम जंग रचायो।—ऊ. का.

उ०—२ दुनियां दातारां जूझारां देवै, लिपळा लोकां नै लेरो कुण लेवै। दत्तब करसत्र मैं दोढा दरसाता, सारी प्रथ्वी सिर सोढा सरसाता।—ऊ. का.

३ मालूम होना, प्रतीत होना।

उ०—सांमूं सियाळो साकी सरसायो, बाकी बंनियां नी डाकी दरसायो।—ऊ. का.

४ खुश होना, प्रफुल्लित होना।

उ०—१ तहक नीसांण गिरवांण हरखांण तन, चितां सरसांण रंभगांण चाळे। निडर रिखरांण गणपांण बीणा नचै, भांण रथ-तांण घमसांण भाळे।—र. रू.

उ०—२ निज नारयां अनुकूल नर, सदा रहै सरसाय। इण पण-घट पर आवियां, ज्यांरो पणघट जाय।—सिवबक्स पाल्हावत

५ बढ़ना, फैलना।

उ०—सूजावेग उतारो पायो, दळ अजमेर सफीखां आयो। सैताळे चाळी सरसांणो, सत्रां अमावो हियै सिवांणो—रा. रू.

६ होना।

उ०—१ सुर झालर घंटा सरसाया, महजीतां सुरबांग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई। मीर पीर त्यां पूज मिटाई।—रा. रू.

उ०—३ दारा दुरद्दिन दुति दुगणित दरसाई, स्रावण आवण मैं गावण सरसाई। निकसी तीजणियां बणियां घड़व्हाळी, उपमां घड़टाळी बरछी खड़वाळी।—ऊ का.

क्रि. स.—७ फैलाना, बढ़ाना।

उ०—१ अंत अमाड़ दयानंद आयो, छोणी ग्यांन घुमट घण छायो। सावण हरि कर सुख सरसायो, भादो अम्म्रत झड़ बरसायो।—ऊ का.

उ०—२ अंग लाजती उमंगती, चलती चसम चुराय। नेह भरी यूं निरखती, रही रंग सरसाय।—अग्यात

८ दिखाना, प्रकट करना, बतलाना।

उ०—पख रवि तेज अरक सम आंमै, नर नखत्र अनमी त्यां नांमै।

सनि गुण आव तणी सरसाई, थिति वस रहै लहै सरसाई ।
—रा. रू.

६ बजाना, ध्वनि करना ।

उ०—सुर झालर घटा सरसाया, महजीतां सुरबांग मिटाया । सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्यां पूज मिटाई ।—रा. रू.

सरसाणहार, हारौ (हारी), सरसाणियौ—वि० ।

सरसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरसाईजणौ, सरसाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरसावणौ, सरसावबौ—रू० भे० ।

सरसायन–सं. पु.—भक्तिरस ।

सरसायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हरा-भरा हुवा हुआ. २ शोभित हुवा हुआ. ३ मालुम हुवा हुआ, प्रतीत हुवा हुआ. ४. बढा हुआ, फैला हुआ. ५ हुवा हुआ. ६ खुश हुवा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ. ७ फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ. ८ दिखाया हुआ. ९ बजाया हुआ, ध्वनि किया हुआ ।

(स्त्री. सरसायोड़ी)

सरसाळ–वि.—१ महत्वपूर्ण, महत्व की ।

उ०—तात हूंत इंधकी परतिग्या, सांभळ बात कहूं सरसाळ । तन मन धार भाल दसरथ तण, मैं गळ राळ दई वरमाळ ।—र. रू.

२ फायदे की, फायदेमन्द, लाभप्रद ।

३ रसपूर्ण, रसयुक्त ।

४ आनन्ददायक ।

सरसावणौ–वि. (स्त्री. सरसावणी) १ रसिक, रसीला ।

उ०—सरब त्रिया सुहांमणी, सरसावणी सदाह । है रसिका दिलरी हरण, वा क्यूही और अदाह ।—र. हमीर

२ प्रकटित ।

३ शोभित ।

४ आनन्दा यक।

५ मधुर, मीठा।

६ प्रकट करने वाला ।

उ०—आय सांवणी तीज, अब सरसावणी सनेह। ऊठि घटा उतराध सूं, छूटि घटा अणछेह ।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—सरसांणौ ।

सरसावणौ, सरसावबौ—देखो 'सरसाणौ, सरसावौ' रू. भे.)

उ०—१ अवसांण आए छत्री पोरस सरसावै, यह लोक जीप परलोक मोख पावै ।—रा. रू.

उ०—२ अभरी थावै आथ सूं, चित सरसावै चाव । जावै दाता द्वार जै, पावै पांच पसाव ।—वां. दा.

उ०—३ महावीर महासूर तेज सरसावै, मंडण ज्यां जोस वंस मंडण कहावै ।—रा. रू.

उ०—४ सिखर गिरां मोरां सवद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरां त्रखा पाली । आविया उमड़ घणस्यांम बीती अवध, आविया नहीं घणस्यांम आली ।—बां. दा.

उ०—५ इम लिखै साह दिस ऊंबरां, सुणि भूपति सरसाविया । 'अमरेस' मिळण कागद दिया, उदियापुर दिस आविया ।—सू. प्र.

उ०—६ रामांनुज रिद गुपत रखावै, सड़ियौ नीर वास सरसावै ।
—ऊ. का.

उ०—७ आपणी आपणी जोस सरसावै, पातसाह की निजर सेर सै आवै ।—रा. रू.

सरसावणहार, हारौ (हारी), सरसावणियौ—वि० ।

सरसाविओड़ौ सरसावियोड़ौ, सरसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सरसावीजणौ, सरसावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

सरसावियोड़ौ—देखो 'सरसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सरसावियोड़ी)

सरसि–वि.—मीठा, मधुर, रसपूर्ण ।

उ०—खड़ग रिखभ गंधार, मद्धि पंचहम निखादह । सरसि कंठ सुर-सपत, गीत संगीत अलापह ।—गु. रू. बं.

२ सुसज्जित ।

उ०—जुध सराजांम सझि सझि व्रजागि । लोह मैं सरसि भुज उरसि लाग ।—सू. प्र.

सरसिज–वि.—१ ललाई लिए श्वेत रंग का ।

२ जो ताल में होता हो ।

३ काला, श्याम । * (डिं. को.)

४ रक्त, लाल । * (डिं. को.)

सं. पु.—कमल ।

रू. भे.—सरसीय, सिरजिस ।

सरसिजजोनि–सं. पु. यौ. [सं. सरसिजयोनि] कमल से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा ।

रू. भे.—सरसिजयोनि ।

सरसिजयोनि—देखो 'सरसिजजोनि' (रू. भे.)

सरसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हुवा हुआ. २ हरा भरा हुवा हुआ. ३ रसपूर्ण हुवा हुआ. ४ प्रवाहित हुवा हुआ. ५ बरसा हुआ. ६ आनन्दित हुवा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ. ७ गुणदायक हुवा हुआ, लाभदायक हुवा हुआ ।

(स्त्री. सरसियोड़ी)

सरसिव—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—१ जेवडउ अंतर नेऊ अनइं सरसिव, जेवडउ अंतरयांम अनइं परिभव ।—व. स.

उ०—२ किहां सरसिव किहां मेरुगिरि, किहां खर किहां केकांण । किहां जादर, किहां खासरू, किहां मूरख किहां जांण ।
—हीराणंद सूरि

सरसी, सरसीऊ–सं. स्त्री. [सं. सरसी] तालाव, जलाशय ।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ [illegible] लगी संग पतंग मतंग सहै। [illegible] सुन पानर प द तरै सरसो।
—मे. म.

उ०—२ [illegible] हिमदग्ग जिसी कमलिनी सूकती। [illegible]......।—व. स.

उ०—३ [illegible] सरसी [illegible], सीतनि लामारांमि। नीरंगु नेमि [illegible] नामि।—जयसेखर सूरि

उ०—४ [illegible] तर तर [illegible] ए तरुवर डालि। उज्ज-[illegible] सरसीय लेयइ बाल।—जयसेखर सूरि

[illegible]—समान, बराबर।

उ०—१ [illegible] सरसी [illegible] न कीजइ, नियकुल मांनि गरवु वही-[illegible]। [illegible] तणुं प्रमाणुं।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ [illegible] मगति सरसी [illegible]। [illegible] सरसी भमइ।
—सालिभद्र सूरि

सरसीय-वि.—१ समान, सदृश्य।

उ० [illegible] वनवासु जु [illegible] ए। पडव [illegible] सरसीय [illegible]।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'सरसिज' (रू. भे.)

उ०—फल फूल तर तर ओढए मोडइ ए तरुवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीअ, सरसीय लेयइं बाल।—जयसेखर सूरि

सरसीरुह, सरसीरुह-सं. पु. [सं. सरसीरुह] १ कमल।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ कर्नाटकी पद्धति का राग। (संगीत)

सरसुति, सरसुती, सरसुत्ति, सरसुत्ती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)
(अ. मा.)

उ०—१ मंत्र वसीकर मानवै, बांणी रस बरसंत। सरसुति वीणा [illegible] सुर कोमल नाज करंत। बां. दा.

उ०—२ मदाकल-भांगा-नंदा वहु मंद, वहै सरसुति प्रवाह बलंद।
—मे. म.

सरसूं-सं. स्त्री. [सं. सर्षप] १ एक प्रकार का छोटा गोल बीजों वाला तिलहन। (डिं. को.)

रू. भे.—सरसव, सरसवि, सरसिव, सरसौं, सरस्यूं, सरिसव, सिरसूं, सिरस्यूं।

सरसूंपरा—देखो 'सूंघरा' (नं. २)

उ०—सरसूंपरा पर्गा मोजा हथयार सरव बांधा छै। माथै घूघी टोर छै।—मालम जोबावत री बात

सरसैरजा, सरसैंजा—देखो 'सरसरजा' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सूरा रजपुतां, जुध रै रथ धोरी होय जूतो। [illegible] सरसैंजा [illegible] सूतो।
—वरजू बाई

सरसेरो-वि.—अधिक, ज्यादा।

उ०—१ सेर हजारां जोड़ै सेरो, सिरदारो ति कोपि सरसेरो। जुध अधव सूरजमल जोड़ै, अचळ जिड़ी बळ लातां ओड़ै।
—रा. रू.

उ०—२ सुण पतसाह कोप सरसेरो, अजन मिलण चढियो आंबेरो। हूंत नगीनै अजमल हालै, चतुरंगी सेन्या संग चालै।
—रा. रू.

सरसैं-वि.—समान, तुल्य, सदृश्य।

उ०—हाथी भड ऊठाडइ आगला ति पाडइ, सरसैं जंपउ ढाढइ राउत रूंसाडइ। बेटउ रूदु करंतउ जांणी, तातणि आवी गंगाराणी।—सालिभद्र सूरि

सरसैयो-सं. पु.—ऊंट।

सरसौं—देखो 'सरसूं' (रू. भे)

सरसो-वि. [सं. सदृश्] (स्त्री. सरसी) समान, तुल्य।

सरस्तंव-सं. पु. [स. शरस्तंव] एक प्राचीन तीर्थस्थान का नाम।

सरस्यूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सरस्वत-वि. [सं. सरस्वत्] १ रसदार, रसीला।

२ सुन्दर, मनोहर।

३ भावपूर्ण।

सं. पु—१ समुद्र, सागर।

२ झील।

३ नदी, सरिता।

४ वायु, पवन।

सरस्वती-सं. स्त्री. [सं.] १ सत्वगुणों से सम्पन्न, वाणी एवं ज्ञान की अधिष्ठात्री, एक देवी जो ब्रह्मा के मुंह से निकली थी।
(ह. नां. मा.)

उ०—१ उर भरम छेर लैणो अगम, असकत उद्यम उवकती। कर भाव पार गुण सर करण, साचो नांम सरस्वती।—रा. रू.

उ०—२·········विस्वकरम्मा संगार करावइं, तेंतीस कोडि देव अस्यांनिउ लगइं, गंगा यमुना चमर ढालइं, तुंबर गाइ, नारद नाद करइ, सरस्वती वीणा वाइ, रंभा नाचइ, ब्रहस्पति पुस्तक वांचइ, इंद्र माली, ब्रह्मा पुरोहित·········।—व. स.

उ०—३ सालि किसिउं खांडीइ, चोल किसिउं रंगीइ, गंगा किसिउं पवित्रीइ, मयूर किसिउं चित्रीइ, सरस्वती किसिउं पाढीइ, अम्रत किसिउं कढीइ सं किसिउं घउलीइ·········।—व. स.

उ०—४ सारदा सरस्वती वरणावू. पणि कमी एक छइ जे सारदा सरस्वती? कमल भू ब्रह्मा तणी बेटी, कमलमुखी, राजहंसवाहिनी, अनेक वेद वेदांक सास्त्र धरती, आयुरवेद धनुरवेद सांमवेद अथर-विणवेद विद्या अलंकार छंद जोतिकसास्त्र,·········।—व. स.

पर्याय०—उजळ, कसमीरी, गिरा, गी, गो, धमळागिरी, निघवांणी,

वच, वचन, वांणी, बाकवांणी, बागेसुरी, बुधदा, वेधाधी, ब्रह्म-सुता, ब्रह्मांणी, ब्राह्मी, भाखा, भारती, मयूरासणी, रंगी, रूप-वदार वरदात, वरदायणी, वच वांणी, वाक, सारदा, सिंहवाहिनी, सुवांणी, सुरमाया, हंसबाहणी, हंसवाहनी, हंसासणी।

वि० वि०—इसे ब्रह्मा की पुत्री एवं पत्नी दोनों ही मानते हैं। मतान्तर से यह स्वायंभुव मनु की माता थी। कहीं-कहीं इसे प्रजापति की पुत्री भी मानते हैं।

इसके हाथ में वीणा व पुस्तक होती है। इसका वाहन हंस है। मतान्तर से इसका वाहन मयूर या बकरा है। बौद्ध इसे सिंहवाहिनी मानते हैं।

अन्य मतानुसार यह विष्णु की पत्नी है। इसमें व लक्ष्मी में सौतों का जगत्प्रसिद्ध बैर है। एक-दूसरी के उपासकों पर इन दोनों की कृपा नहीं होती है।

इसकी उपासना वैदिक धर्मावलम्बी हिन्दुओं के अतिरिक्त जैन, बौद्ध, चीनी आदि भी करते हैं। सत्यलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, राजलक्ष्मी, मोक्षलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी ये नौ लक्ष्मियां इसकी सहचरियां है।

इसे शिवसहोदरी भी माना गया है।

२ वाणी, गिरा।

उ०—पाछै सूं वडाह भी उठै ही पूगी जठै आकास सरस्वती कहियौ, अवंती रै अधीस विक्रम विभाकर थारौ दुख निरस्त कीधौ।
—वं. भा.

३ भाषा।

उ०—जिम लवणहीण रसवती, व्याकरणरहित सरस्वति, गंधरहित चंदन, घ्रतरहित भोजन, खांडरहित पकवांन, मांनरहित दांन, छंदरहित कवित, तेजरहित रवि, विवेकरहित मनुस्य, वेदरहित ब्राह्मण... .....।—व. स.

४ भारत में बहने वाली एक प्रसिद्ध व प्राचीन नदी जो बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर पश्चिम के समुद्र में जाकर गिरती थी।
(उ. र.)

उ०—१ जै इम किम यै रांणियां, इम किम आव्यो न जाय। आड़ी ए राणियां आडा तो गंगा जमना सरस्वती।—लो. गी.

उ०—२ मुगतफळ मांणिकूं की कंठी सोभै माळा का विसतार। सो कैसै, मांनू मिळ चली सरस्वती गंगा की धार। और भी भांति भांति कै सासत्र गाए जैसै राजूं का वणाव। जोति कै जहूंर दिनकर का दरसाव।—सू. प्र.

वि. वि.—नदी के रूप में सरस्वती की पहचान विवादास्पद बन गयी है। प्राचीन साहित्य में बिखरे विवरणों से प्रतीत होता है कि यह हिमालय में बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर ब्रह्मावर्त और कुरुक्षेत्र आदि प्रदेशों को सींचती हुई विनशन नामक स्थान पर समुद्र में मिलती थी तथा वैदिककाल की प्रसिद्ध पांच अथवा सात नदियों में एक थी। शतपथ (१/४/१/१०-१७) तथा पुराणों में सरस्वती के सोतों को नष्ट होने अथवा अदृष्ट हो जाने के विवरण मिलते हैं, यद्यपि महाभारत काल में इसका उल्लेख वनयात्रा के समय, श्रीकृष्ण के उसके तट पर किये गये यज्ञानुष्ठान दधीची ऋषि के आश्रम का तटवर्ती होना एवं श्रीकृष्ण की १६,००० पत्नियों द्वारा इसमें डूब कर प्राणत्याग करना, आदि का विवरण मिलता है। उस समय की प्रसिद्ध सरस्वती का पर्यवसन पश्चिमी समुद्र में ही होता था।

(शल्य पर्व ३६-३३) जहां सोमनाथ और प्रभास क्षेत्र अवस्थित हैं (शल्य० ३५-७७)। यों तो ऐरेकोसिमा प्रान्त की एक नदी 'हैल्मद' अथवा अवेस्ता में वर्णित अफगानिस्तान की 'हरकैती' या हरह्वैती नदी के भी सरस्वती के पर्याय होने के अनुमान विद्वानों ने लगाए हैं तथापि उक्त नदियों के विवरणों से सरस्वती क ासाम्य न होने से ये मत मान्य नहीं हो सकते।

इसी प्रकार 'सरस्वती' शब्द को केवल सूर्य-किरणों का वाचक मात्र मान लेना भी अनुपयुक्त ही माना जा सकता है क्योंकि उस नाम वाली नदी के तट पर सम्पन्न, यज्ञयागादि एवं सत्रों का विपुल वर्णन साहित्य में सुरक्षित है।

हां, यह भौगोलिक सत्य अवश्य है कि भारत उपमहाद्वीप में अनेक भूवैज्ञानिक रूपान्तरण होते रहे हैं। फलस्वरूप प्राग्-ऐतिहासिक युग में पश्चिमी समुद्र की स्थिति तथा सरस्वती का प्रवाह प्रदेश का अभी सही-सही निर्णय किया जाना संभव नहीं हो सका है। फिर भी इतना तो उक्त विवरणों से स्पष्ट हो ही जाता है कि वर्तमान प्रयाग की त्रिवेणी की कल्पना में गंगा और यमुना के साथ सरस्वती की भौतिक विद्यमानता को स्वीकारना असंगत है। सम्भवतः घग्घर नदी भी सरस्वती का अवशिष्ट मार्ग नहीं है। प्राचीन काल का विपुल महिमामण्डित वर्णन सरस्वती के स्वरूप की भावुक उपकल्पना के प्रयासों के कारण ही प्रतीत होता है कि भारत में तथा संभवतः भारतेतर प्रांतों में अनेक सरिताओं अथवा सरोवरों में स्वयं सरस्वती के अथवा उसके सम्बन्धों के होने की मान्यता की गई है। फलतः अनेक स्थल भ्रामक रूप से 'सारस्वत' हो गए और मूल सरस्वती इतिहास और भूगोल की एक उलझी और जटिल प्रहेलिका बन कर रह गयी।

५ एक नदी जो गुजरात में अंबाभवानी के समीप कोटेश्वर के पर्वत से निकल कर कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

६ एक नदी जो सौराष्ट्र प्रदेश में गिरनार के जंगलों से निकल कर सोमनाथ या प्रभास क्षेत्र में गिरती है।

७ लूनी नदी के पूर्वोत्तर नदी का नाम जो नाग पहाड़ से निकल कर गोविन्दगढ़ के पास सागरमति से संगम करके मारवाड़ में लूनी के नाम से बहती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

८ साबरमती नदी का नाम।

उ०—[illegible] आज दोय [illegible], [illegible] ।—सू. प्र.

९ गौ, गाय ।

१० स्वामी शंकर के शिष्य पृथ्वीधर के अनुयायी दशनामी संन्या-सियों की एक शाखा ।

११ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति ।

१२ सोलह मातृकाओं के अन्तर्गत चालीसवीं योगिनी ।

१३ हठयोग में सुषुम्ना नाड़ी ।

१४ सोमलता ।

१५ दुर्गादेवी का नाम ।

१६ नदी, सरिता ।

१७ उत्तमा स्त्री ।

१८ बौद्धों की एक देवी ।

१९ पुरुवंशीय प्रतीनार राजा की पत्नी का नाम ।

२० दधीचि ऋषि की पत्नी व सारस्वत की माता का नाम ।

२१ रन्ति राजा की पत्नी ।

२२ आदित्य की पत्नी व दनु एवं दिति की माता का नाम ।

२३ कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (संगीत)

२४ एक प्रकार की संकर रागिनी विशेष । (संगीत)

रू. भे.—सरस, सरसद, सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्त, सरसत्ति, सरसत्ती, सरसुत, सरसुति, सरसुती, सरसुत्त, सरसुत्ति, सरसुत्ती, सरस्वत्या, सुरसत, सुरसति, सुरसती, सुरसत्त, सुरसत्ति, सुरसत्ती ।

सरस्वतीकंठाभरण-सं. पु. [सं.] १ ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक ।

२ वस्तुपाल का एक विरुद ।

३ एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला जो धारनरेश भोज द्वारा स्थापित की हुई थी ।

सरस्वतीपांचम—देखो 'बसंतपंचमी' ।

सरस्वतीपूजा-सं. स्त्री. [सं.] १ प्रायः बसंतपंचमी के दिन मनाया जाने वाला उत्सव । कुछ लोग इसे आश्विन मास में मनाते हैं ।

२ सरस्वती-पूजन का दिन, बसंतपंचमी ।

३ सरस्वती-पूजन ।

सरस्वतीसंगम-सं. पु. [सं.] एक पुण्य तीर्थ-स्थान ।

वि. वि.—यहां ब्रह्मा आदि देवता, महर्षि व पुण्यात्मा-भक्त भगवान केशव की पूजा करते हैं। चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को यहां के लिए की जाने वाली यात्रा विशेष महत्व की मानी जाती है ।

सरस्वतीआवाहनसप्तमी, सरस्वतीआवाहनसप्तमी-सं. स्त्री. यौ. [सं. सरस्वती-आवाहनसप्तमी] आश्विन शुक्ला ७ से ९ तक का समय जिसमें सरस्वती का आवाहन करते हैं ।

वि. वि.—आश्विन शुक्ला सप्तमी को पुस्तक आदि का पूजन कर सरस्वती का शयन कराते हैं तथा इसी दिन से पठन-पाठन बंद रखते हैं तथा फिर दशमी को पूजन करते हैं ।

सरस्वतीसागरसंगम-सं. पु. यौ. [सं.] एक तीर्थ-स्थल ।

वि. वि.—यहां सरस्वती सागर संगम हुआ था। यहीं पर रह कर चन्द्रमा ने महादेवजी की आराधना करके अपनी खोई हुई कांति पुनः प्राप्त की थी ।

सरस्वत्या—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

सरस्स—देखो 'सरस' (रू. भे.)

उ०—१ सजी तुटतैं बूंद ए ही सरस्स. पहाड़ां सुणी घोर यहो परस्सं ।—सू. प्र.

उ०—२ 'इंद्रभांण' 'मुकनेस' रो, ग्रह केयांण तरस्स । आसमांन छिब आखियो, भाई, 'भांण' सरस्स ।—रा. रू.

उ०—३ आयौ जाळंधर 'अजौ', सुत ऊजनौ सरस्स । सुज तिण ऊजर संपनौ, पंचावनौ वरस्स ।—रा. रू.

सरहंग-सं. पु. [फा.] १ सेनापति ।

२ पैदल सिपाही ।

३ चोबदार ।

४ कोतवाल ।

५ पहलवान, मल्ल ।

सरह-सं. स्त्री. [अ. शरह] १ किसी बात या वर्णन को स्पष्ट करने के लिए की जाने वाली टीका, व्याख्या ।

२ दर, भाव ।

३ ऋतु विशेष में उत्पन्न फलों का रसास्वादन ।

मि. सरा (२) ।

४ मौसम, समय ।

ज्यूं—अबार होळां री सरह है ।

५ स्थिर, अचल ।

उ०—कौण स विनसै कौण सरह है, कौण अस्थांन मस उलटा जाय ।—ह. पु. वा.

६ देखो 'सरभ' (रू. भे.)

७ देखो 'सरेव' (रू. भे.)

८ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ० - उगवण नुं खेत कंवळा उनवड़ी री सरह हळवा ५० धरती आछी, मोठ-बाजरी रा खेत छै ।—नैणसी

९ देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

उ०—मूंकयां नव नव परि सालणां, मूंकयां सरहां घी अति घणां । मूंकी मांडी मुरकी सेव, मूंकी खीर खांड घ्रत हेव ।

—हीराणंद सूरि

रू. भे.—सरै ।

सरहद-सं. स्त्री. [अ.] १ किसी देश, राज्य आदि की सीमा ।

उ०—हूं मांबी साधूं नैं सरहद बांधू ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ उक्त सीमा के समीपस्थ प्रदेश।

रू. भे.—सरद, सरद्ध, सरह।

सरहदी–वि. [अ.] १ सीमा का, सीमा सम्बन्धी।

२ सीमा पर रहने वाला, सीमा रक्षक।

रू. भे.—सलद्धी।

सरहर, सरहरउ—देखो 'सिरहर' (रू. भे.)

उ०—गति गंगा मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ। महिलां सरहर मारुई, अवर न दूजी काइ।—ढो. मा.

सरहरति, सरहरी–वि. स्त्री.—लगातार समान व सीधी बहने वाली।

उ०—१ बाखड़ी गाय नौ गिरत, सरहरति धार, संतोखियै जीमण हार।—व. स.

उ०—२ सरहरी धार, प्रीणइ जिमणहार, सौभाग्य अजेय नासा-पटु पेउ।—व. स.

सरहौं–सं. पु.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १४ लघु और अन्त में एक गुरु कुल १५ वर्ण होते हैं।

सराई–सं. स्त्री.—विवाह में काम आने वाला मिट्टी का पात्र जो 'ढीबसियै' से बड़ा होता है।

सरांणौ—देखो 'सिरहांणौ' (रू. भे.)

सरांपती–सं पु. [सं. सर+पति] १ समुद्र, सागर। (हिं. को.)

२ तालाब।

सरांराज–सं. पु.—महासागर।

उ०—सरांराज माथै ररा अंक सारै, तरां पत्र जेही गिरां जुत्थ तारै।—सू. प्र.

सरा–सं. स्त्री.—१ प्रशंसा, आनन्द।

२ किसी विशेष फल-फूल या फसलों का मौसम अथवा इस मौसम में उत्पन्न फल-फूलों आदि का रसास्वादन।

३ भू-भाग।

ज्यूं—काले एवड़ उतरादी सरा में जावैला।

४ किला, दुर्ग।

५ महल, प्रासाद।

६ सराय।

सराइ, सराई–सं. स्त्री.—१ बलोच कौम के अन्तर्गत एक मुसलमान जाति जिसके व्यक्ति प्राय: मारवाड़ में प्राचीन काल में लूट-मार किया करते थे।

२ देखो 'सराय' (रू. भे.)

उ०—एक चलै एक आवही संसार सराइ।—केसोदास गाडण

सराग, सरागी–वि.—१ राग सहित।

२ मधुर आवाज।

उ०—अत परमळ पसर :पसरिया आंबा; सुक पिक बोलै सुखद सराग। रतिपति तांणै धनुस जठै रुच; बरसांणै देखण ज्यूं बाग।—बां. दा.

३ रसपूर्ण, प्रेमसहित, सप्रेम।

उ०—कहइ सराग कथा कदै नहीं, स्त्री सुं एकांत रे। बीजी बाड़ ए एम बोली, मांनइ लोक महांत रे।—स. कु.

४ स्नेह करने वाला, प्रेमी।

उ०—थयौ परम सरागी मिलिवा मनि जागी, ऊठाड़ी नै आपणै मंदिर लियौ।—वि. कु.

सराड़, सराड़ौ–सं. पु.—१ तेज गति से भागने की क्रिया या भाव।

उ०—दत्त सराड़ा दोय, कीरत रा किनां 'कमैं'। हमैं न दूसर होय माग न भेलै 'मूळियौ'।—अग्यात

२ तेज दौड़।

३ घोड़े के तेज भागने की क्रिया।

४ तेज गति से दौड़ने पर उत्पन्न ध्वनि विशेष।

रू. भे.—सिराड़ौ।

सराजांम–सं. पु. [फा. सरंजाम] १ व्यवस्था, बंदोबस्त।

उ०—ताहरां रावजी कह्यौ—दूदा जा मत, हूं सराजांम करि देस्यूं। यूं आगै मेघौ सींधल छै।—दूदै जोधावत री वात

२ तैयारी।

उ०—१ पह निज हुकम प्रमांण, दीह नवमै विरदाळा। सराजांम करि समर, सको भड़ मिळै सचाळा।—सू. प्र.

उ०—२ जुध सराजांम सझि सझि अजागि, लोह मैं सरसि भुज उरसि लागि।—सू. प्र.

३ सामान, सामग्री।

उ०—१ जगूं कै साज छत्तीस कारखांनूं के हवालगीरूं नै सब जगूंका सराजांम हाजर किया।—सू. प्र.

उ०—२ हमैं तौ ताकीदी करतां रात पड़ जासी। हमार सारौ सराजांम तयार कर छोडसां।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ परभात उठि निछरावळ सारी भेळी कर ब्राह्मणां नूं भोजन रौ सराजांम करायौ। बीजौ कारखांनै सूं देयं रुपीयौ एक दिखणा दिराई।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ देस सूबा लिख दियौ, कथन स्रीमुखां कहै इम। सराजांम जंग सझै, किला, राखी दहूं कायम।—सू. प्र.

४ वैभव।

उ०—हिवै मीयां बुढण जालोर राज करै, पांच हजारी रौ मनसोबौ छै। साथ सराजांम बीजौ घणौ छै।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सरंजांम, सरजांम।

सरांणिया–सं. स्त्री.—एक जाति विशेष।

सराणौ, सरावौ–क्रि. स.—१ प्रशंसा करना, सराहना करना।

उ०—१ ज्यूं चीजां जसवंत री, चुण चुण चित सूं चाय। लोभी जस तज लै गयौ, 'सज्जन' रांणै सराय।—ऊ. का.

उ०—२ कौसल्या दसरण नी कांता महिमा घर रांम तणी माता संसार सराई सीलवती।—जयवांणी

उ०—३ सिरा सोम सुजुत बड़ हूंतां, घटै प्रावरै लोह घणौ।
सरा सूं पखाळियो सगाहूं, तेगु गह रिड़मलोत तणो।
—नांना राठौड़ रो गीत

कहा.—सराई मोठड़ी दांतां रै बिरै=अधिक तारीफ करने से व्यक्ति बिगड़ जाता है।

२ समर्पित करना। (पिंड, श्राद्ध आदि)

३ भोजन करना।

४ तीर्थ स्थानों में अस्थि विसर्जन करना।

सराणहार, हारो (हारी), सराणियो—वि०।

सरायोड़ो—भू० का० कृ०।

सराईजणो, सराईजबो—कर्म वा०।

सरावणो, सरावबो; सराहणो, सराहबो, सिराणो, सिराबो
—रू० भे०।

सराद—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

सरादपख, सरादपक्ष—देखो 'स्राद्धपख' (रू. भे.)

सरादपूनम—देखो 'स्राद्धपूनम' (रू. भे.)

सराध—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

उ०—वांनियां री धरम वधावै अर बिरमपुरी सराध खावै।
—दसदोख

सराधपख, सराधपख—देखो 'स्राद्धपख' (रू. भे.)

सरापंजर-सं. पु.—तीरों से बनने वाला घेरा, शरकोटा। (वितान)

उ०—पूर सोक पंगाळ अग्स छायो आयंतरि। सरापंज किर पंथ जांन गंडी-वन ऊरि।—गु. रू. बं.

सराप-सं. पु. [सं. शापः] १ अहित कामनासूचक शब्द, शाप, बददुआ।

उ०—तेरै सोभत दौड़ दंड दयाओ. कह्यो—थारी आ कुण जायगा आवण री। हूं सराप देउ, तेनूं बाळ देईस।—नैणसी

उ०—२ अवही मली हेकलो, करही करइ कळाप। कहियउ लोपां मांणि-रउ, मुंदरी लहां सराप।—ढो. मा.

२ शपथ।

३ गाली।

४ निंदा, भर्त्सना।

५ दोष, कलंक।

उ०—मरणो लाजम मांमनै, धार अणी चढ धाप। पडणो सांकळ पीजरै, मिटा वडो सराप।—बां. दा.

६ देखो 'सराफ' (रू. भे.)

उ०—परिपूर सचिद्द प्रताप, सुजि सुरत हाट सराप।—सू. प्र.

रू. भे.—सरापु, साप, श्राप।

सरापणो, सरापबो-क्रि. स.—१ शाप देना, बददुआ देना।

२ धिक्कारना, निन्दा या भर्त्सना करना।

सरापणहार, हारो (हारी), सरापणियो—वि०।

सरापियोड़ो, सरापियोड़ो, सराप्योड़ो—भू० का० कृ०।

सरापीजणो, सरापीजबो—भाव वा०।

स्रापणो, स्रापबो—रू० भे०।

सरापाबजार—देखो 'सराफाबजार' (रू. भे.)

सरापियोड़ो-भू. का. कृ.—१ शाप दिया हुआ, बददुआ दिया हुआ।
(स्त्री. सरापियोड़ी)

सरापु—देखो 'सराप' (रू. भे.)

उ०—इम भणी ए दियइ सरापु, र हुजे तुं कुलि सऊं ए, कुपीउ ए काढवी चीरु अट्ठोत्तर सउ साड़ीय ए।—सालिभद्र सूरि

सराफ-सं. पु. [अ. सर्राफ] वह व्यक्ति जो सोना-चांदी या सोना-चांदी के बने आभूषणों का व्यापार करता हो।

उ०—खोटो दियै सराफां हाथि, करै ठगाई साहां साथि। पड़ियां ठगण मत गिवार, फिटा फिटा हुवै सुवार।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—सराप, सराफी।

सराफत-सं. स्त्री. [अ. शराफत] १ कुलीन होने की अवस्था या भाव, कुलीनता।

२ सुशील होने की अवस्था या भाव।

३ सज्जनोचित व्यवहार।

४ शरीफ होने की अवस्था या भाव।

सराफा-सं. पु.—१ सोने-चांदी का व्यापार।

२ वह स्थान जहां इस प्रकार का व्यापार होता हो।

सराफाबाजार-सं. पु.—वह स्थान जहां पर सोने-चांदी के व्यापारियों की दुकानें अधिक हो।

रू. भे.—सरापाबजार।

सराफी-वि.—१ सोना-चांदी या सोना-चांदी के गहनों का क्रय-विक्रय करने का व्यवसाय।

उ०—काची परख सराफी खोटी, तातैं परदुख सहसीवै। रांमनांम निज भेद न जांण्यो काळ चटा तै गहसीवै।—ह. पु. वां.

२ देखो 'सराफ' (रू. भे.)

उ०—१ बजाज हुवो सराफी रे, दुव्यहारैं पूंजी आपी रे।
—जयवांणी

उ०—२ हीरा परखै जूंहरी, सुरति निज ही होय। सुधि सराफी बाहरचो, पारिख लहैं न कोय।—वील्होजी

सराब-सं. पु. [अ. शराब] १ मदिरा, मद्य।

उ०—दसबीस सहस जुध भांज दीध, प्यालै खग पांन सराब पीध।
—वि. सं.

सराबखानों-सं. पु.—वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो, मदखाना।

सराबखार—देखो 'सरावख्वार' (रू. भे.)

सराबखोरी-सं. स्त्री. [फा. शराबखोरी] शराब पीने का व्यसन।

सराबखोरो-सं. पु.—वह व्यक्ति जो शराबी हो, शराब पीने का व्यसनी हो।

सराबख्वार-सं. पु. [फा. शराबख्वार] मदिरा पीने वाला, शराबी।

रू. भे.—सरावखार।

सरावी-वि.—शराब पीने वाला, मद्यप।

सरावोर-वि.—१ तरबतर, लथपथ।

२ व्याप्त।

उ०—लुगाई री ओ रूप तौ दीवांणजी माथै अैड़ी कांमण करचौ कै वांरी रूं-रूं नसा मैं सरावोर व्हैगी।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सरबोर।

सराय-सं. स्त्री. [फा.] १ मुसाफिरों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला, मुसाफिरखाना।

उ०—राति बसै दिन ऊठि चलै, यौ संसार सराय —ह. पु. वा.

२ ठहरने का स्थान।

रू. भे.—सराइ, सराई।

सरायचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)

उ०—सो कुंवरसी री साथ चढियौ। सो सर.दिन एक मेहलां आयौ। अर भरमल डेरौ करै जठै रथ सरायचा भीतर राखै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सरायत-सं. पु.—मुखिया, प्रधान।

[अ.] प्रवेश करने, घुसने की क्रिया।

रू. भे.—सिरायत।

सरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ प्रशंसा किया हुआ, सराहना किया हुआ. २ सम्पादित किया हुआ (पिंड, श्राद्ध आदि). ३ भोजन किया हुआ. ४ तीर्थ स्थानों में अस्थि विसर्जन किया हुआ।

(स्त्री. सरायोड़ी)

सरारत-सं. स्त्री. [अ. शरारत] १ दुष्टता, पाजीपन।

२ बदमाशी।

सरारती-वि.—शरारत करने वाला।

सरारि, सरारी-सं. पु.—१ राम की सेना का एक यूथपति बंदर।

२ टिटहरी नामक पक्षी।

सरारोप-सं. पु.—धनुष, कमान।

सरारौ-वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम। (डि. को.)

२ बराबर, समान।

सरालउ-वि.—पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण।

उ०—इ कु अरजुनु आगलऊ, अनइ करणु हीयइ हरालउ। गुर-कूवइं विणयह लगइ घणुहवेदु दीधउ सरालउ।—सालिभद्र सूरि

सराव-सं. पु. [सं. शराव] १ मिट्टी का बना एक प्रकार का मद्यपात्र।

२ कटोरा।

३ दीपक।

अल्पा; रू. भे.—सरावौ।

सरावगी-सं. पु. [सं. श्रावक] १ जैन धर्म के अन्तर्गत एक जाति विशेष।

२ इस जाति का व्यक्ति।

सरावणौ, सराववौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साध सरावै सो सती, जती जोखता जांण। 'रज्जब' सांचे सूरका, बेरी करै बखांण।—रज्जब

उ०—२ साथणियां उणरा भाग नै सरावती थाकती ई नीं। साथै दायजा में चालण सारु ई ताखड़ा तोड़ती ही।—फुलवाड़ी

उ० —३ जद धीरजी कह्यौ—न करावौ तौ उणां नैं सरावौ क्यूं।

—भि. द्र.

उ०—४ खोपर ढकणी खिडा, वीर वनड़ौ वन ज्यावै। माटी मंगळकार, निरंतर काज सरावै।—दसदेव

सरावणहार, हारौ (हारी), सरावणियौ—वि०।

सराविओड़ौ, सरावियोड़ौ, सरात्र्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरावीजणौ, सरावीजवौ —कर्म वा०।

सरावती-सं. स्त्री. [सं. शरावती] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन नदी का नाम।

२ लव की राजधानी का नाम।

सरावर, सरावरण-सं. पु. [स. शरावर] १ ढाल।

२ कवच। (डि. को.)

सरावसंपुट-सं. पु. [सं. शराव+संपुट] मिट्टी के दो सकोरों का मुंह मिला कर बनाया हुआ एक बर्तन जो रसौषध-फूंकने के काम आता है।

रू. भे.—सरावासंपुट।

सरावाप-सं. स्त्री. [सं. शर+आवाप=थांवला] धनुष, कमान।

सरावौ—देखो 'सराव' (अल्पा; रू. भे.)

सरास, सरासण, सरासन-सं. पु. [सं. शरासन] १ धनुष, कमान।

(अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ तरै बांण बांदे गयौ देखि तासं, सुरांराज झल्लै न हल्लै सरासं।—सू. प्र.

उ०—२ अतुळ सरासण भंग लख, वधै अत उमंग उर। गहर दिन मुहूरत सतानंद पूछ गुर।—र रू.

२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—सारासण, सारासन, सारासुन।

सरासर-अव्यय. [फा.] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सर्वत्र।

२ पूर्णतया, बिलकुल।

उ०—अदालतां सूं होय आगती, पिरजा रोय पुकारी रे। सूंक दुकानां मंडी सरासर, धोळै दिवस अंधारी रे।—ऊ. का.

३ साक्षात, प्रत्यक्ष।

रू. भे.—सरासरी।

सरासरी-सं. स्त्री.—१ शीघ्रता, तीव्रता।

२ स्थूलरूप से, अनुमानतः।

३ देखो 'सरासर' (रू. भे.)

सरासुन—देखो 'सरासन' (रू. भे.)

सराह-सं. स्त्री.—१ प्रशंसा, सराहना, तारीफ।

उ०—१ पूर्विन पावो, 'पजन' सिर्के गंग जदसाह। हुई रीत अनुसार में, सुर तिन करै सराह।—रा. रू.

उ०—२ सेन सनाह बीटियो सदग्रिम, सधन संदेसे करै सराह। 'भाला' किमो दल फोज मयकर, नगराठई जिसो नरनाह।

—चत्रभुज चांपावत री गीत

२ कीर्ति, यश।

३ सराद, धर्मशाला।

रू. भे.—सागाह, सिराह।

सराहणौ, सराहबौ—देखो 'सराणौ, सरावौ' (रू. भे.)

उ०—१ सरोभम 'नाथ' नई समराध, हुवै जुध भांण सराहत हाथ।—सू. प्र.

उ०—२ सभी गांव में साथ, तर्क तोई हूंस तिवारी। साध सराहै सती, निरदक रहै विधवा नारी।—ऊ. का.

उ०—३ कोटै सोहै कांगरा, भींतं सोहै चीत। रावळ देवळ टाल्य कै, कांय सराहौ मीत।—मेहोजी गोदारो थापन

सराहणहार, हारौ (हारी), सराहणियौ - वि०।

सराहिप्रोड़ौ, सराहियोड़ौ, सराह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सराहीजणौ, सराहीजबौ—कर्म वा०।

सराहियोड़ौ—देखो 'सरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सराहियोड़ी)

सरि-सं. पु.—१ आर्यागीति या खंधाण (स्कंधक) नामक गाहा का भेद विशेष। (पि. प्र.)

२ ललाट पर सिंदूर, कुंकुमादि से की जाने वाली सीधी खड़ी रेखा, तिलक।

उ०—ललवटि करइ सरि सींदूर, ऊगटि केसर नइ कपूर। करणी वेलि अंबोडा भरइ, भमर गूंजारव सरवर करइ।

| प्राचीन-फागु संग्रह

सं. स्त्री, [सं. सरि:] २ नदी, सरिता।

उ०—१ सरि-धारां बहणा सको, नहलै नरकां जाय। चढ धारां चहुंआण री, सुरा सरग सिधाय।—रैवतसिह भाटी

उ०—२ त्रिभुवी सरु न्हावियइ, सरि गंगा आंणी। कउतिगु दामीर खउरवांह, पीउ पायु पांणी।—सालिभद्र सूरि

वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—१ ईसै दिस मान एरिमा अवयव, विमळ विचार करै श्रीनाह। सुन्दर सूर मीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूभै नाह।—वेलि

उ०—२ मावीत प्रसाद मेटि बोलै मुनि, मुवरन की सिसुपाळ सरि। अति अंबु कोपि कुंवर ऊफणियौ, वरमाळू वाहळा वरि।

—वेलि

२ देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—मुरधर यया वधांमणा, गो सरि तार विकार। खटरस भोजन बांमणां, घर घर मंगळाचार।—रा. रू.

३ देखो 'सर' (रू. भे.)

उ०—१ सुंपु भराविउ जाइ कुसमि कसतूरी सारी. सीमंतइ सिंदू-रेह मोती सरि सारि।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तउ कुमर निच्छयं जणणि जांणेवि, ढणहण नयणि नीर झरंती। करिन तं वच्छ जं तुज्झ मण भावए, अज्जए गद-गद सरि भणती।—एं. जै. का. सं.

उ०—३ राति सखि इणि ताल मइं, काइज कुरळी पंखि। उवै सरि हूं घटि आपणइ, बिहूं न मेळी अखि।—ढो. मा.

उ०—४ हरिणाखी कठ अंतरिख हूंती, बिंब रूप प्रगटी बहिरि। कळ मोतियां सु सरि हरि कीरति, कंठ सरी सरसती किरि।

—वेलि

उ०—५ नरइद 'अभो' नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमंद नयर लाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा. रू.

रू. भे.—सरी, सरीस।

सरिका-सं. स्त्री. [सं.] १ मुक्ता, मोती।

२ मोतियों की माला।

३ रत्न।

४ ताल-तलैया।

सरिखउ, सरिखुं, सरिखौ—देखो 'सारीसौ' (रू. भे.)

उ०—१ निंदक सरिखउ पापीयउ, मुंइ उकोइ न दीठ। वलि चंडाल समउ कह्यउ नंदक मुख अदीठ।—स. कु.

उ०—२ सरिखां सूं बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तांइज भंजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि.

सरिग—१ देखो 'सरग' (रू. भे.)

२ देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

सरिण—देखो 'सरण' (रू. भे.)

उ०—आयुत पराक्रम आपरै, सतपुरखां राखि सरिण। मांगी न मल्ल वर्म मयण, सुर मुरधर वरत रिण।—राय मालदेव री वात

सरित—देखो 'सरिता' (रू. भे.) (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ नाजुक नवस निराट, उभै दिसि ओपवै। करण दरस अप काज लाज कुळ लोपवै। लखि छबि जो ललचात, चकोरी चंद ज्यौं। रही उमंग लखि रूप क, सरित समंद ज्यौं।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—२ किनां बियौ कैलास, अनड़ इण भांत रा। बारह मास वणाव, बणै बरसात रा। पाहण पाहण पूर, झरै गिर नीझरां। सोह सोह खरळाट, सरित पूगै सरां।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—३ मर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ भंवर ओपयं। किरि सुबुधि वधि सतसंग कारण, लुबुध होत विलोपयं।

—रा. रू.

सरितपत, सरितपति, सरितपती–सं. पु. [सं. सरित्+पति] सागर, समुद्र।

रू. भे.—सरतापत, सरतापति, सरतापती, सरितांपति, सरितापत, सरितापति, सरितापती, सरित्पत, सरित्पति, सरित्पती।

सरितवरा, सरितवरा—देखो 'सरितिवरा' (रू. भे.)

(अ. मा; डि. को.)

सरिता–सं. स्त्री. [सं. सरित्] नदी, धारा।

उ०—१ धुरधर असाढां अंबर धरहरीयौ, धोरा डंबर मैं संबर धरहरियौ। साई सर सरिता आई इकरारा, धोळा जळधर सूं धाई जळ धारा।—ऊ. का.

उ०—२ हे सरिता रा हंसला थें महर करौ, सीता नैं बेग बताय श्रौ उपकार करौ।—गी. रां.

रू. भे.—सरत, सरता, सरति, सरती, सरित, सरिति, सलत, सळत, सलता, सलिता, सलीता।

सरितांपति, सरितापत, सरितापति, सरितापती—देखो 'सरितपति' (रू. भे.) (डि. नां. मा.)

सरिति—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—मरजाद सर सर सरिति अनुमिति, छुटि जात अछेहयं। पड़ि खाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप अखेहयं।—रा. रू.

सरितिवरा–सं. स्त्री. [सं. सरतवरा, सरितावरा] गंगा नदी।

(ह. नां. मा.)

रू. भे.—सरतवरा, सरतिवरा, सरितवरा, सरितवरा।

सरित्पत, सरित्पति, सरित्पती—देखो 'सरितपति' (रू. भे.)

सरित्सुत–सं. पु. [सं.] भीष्म, गांगेय।

सरिदिही–सं. स्त्री. [फा.] राजा महाराजाओं को दिया जाने वाला नजराना।

सरिद्वरा–सं. स्त्री. [सं.] पवित्र नदी, गंगा।

सरियंद–सं. पु. [सं. सुरेन्द्र] इंद्र, सुरेश।

सरियउ—देखो 'सरियौ' (रू. भे.)

उ०—अरणी नउ सरियउ घसि लाकड़इ अगनि पाड़ी तत्काली जी।—स. कु.

सरियत, सरियत्त–सं. पु. [अ.] १ ईश्वरीय नियम, धार्मिक कानून।

उ०—१ सौ वा रीत सरियत छै तिण रीत री स्थापना प्रभू री आग्या सूं होय।—नी. प्र.

उ०—२ सरियत अक्ल री आछै जै सक्ति भर देव प्रकृति नूं जोर पकड़ावै।—नी. प्र.

२ धर्मशास्त्र। (मुस्लिम)

उ०—एक साइयां कै एह, दिल अवर न धरी देह। सरियत्त निमख सिपाह, सो गिणी नह पतसाह।—सू. प्र.

३ मार्ग, रास्ता।

उ०—जंग झोंकि जंगमां, असह खग वरंग उडावां। तै सरियत्त कुळ तणी, करै कुळ विरद कहावां।—सू. प्र.

४ एवज, बदौलत।

उ०—जिल दिलावरखांन नैं कल्हकै रोज दक्षन कै दरम्यांन निजांमन मुलकसेती जंग किया। च्यार हजार दुसमन कूं मार समसेरूं की धारसेती जंग किया निमककी सरियत पर दिया।—सू. प्र.

५ वफादारी, स्वामीधर्म।

६ चौड़ा रास्ता, राज-मार्ग।

रू. भे.—सरीअत, सरीत, सरीती, सरीयत।

सरियाई–सं. स्त्री.—राम की अनन्य भक्त कुम्हारी।

सरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सिद्ध हुवा हुआ, सफल हुवा हुआ. २ बना हुआ, पूर्ण हुवा हुआ.. ३ पार पड़ा हुआ. ४ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार हुवा हुआ. ५ कार्यादि का निर्वाह हुवा हुआ, पूरा हुवा हुआ. ६ लक्ष्य सिद्ध हुवा हुआ. ७ परिपूर्ण हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ. ८ पर्याप्त हुवा हुआ, काफी हुवा हुआ. ९ सम्भव हुवा हुआ. १० अनिवार्य या निश्चित रूप से हुवा हुआ. ११ आकार-प्रकार रूप-रंग गुणादि में शिशु संतान का किसी के अनुरूप या अनुसार हुवा हुआ. १२ चला हुआ, निभा हुआ, निभाव हुवा हुआ. १३ पूर्ण रूप से हुवा हुआ. १४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, विचरित हुवा हुआ. १५ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ. १६ पड़ा हुआ, विवश हुवा हुआ।

(स्त्री. सरियोड़ी)

सरियौ–सं. पु.—१ सरकंडे का पुआल जिसे कूट कूट कर मूंज बनाई जाती है एवं ये झोंपडी आदि छाजने के काम आते है।

२ लोहे की बनी लम्बी छड़।

३ देखो 'सर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—दर न जुड़ावौ भुरज दर, दुय री गळै न दाळ। भिद सरिया तन भातड़ा, भाभी लीज्यौ भाळ।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सरियउ, सिरियौ।

सरिवरि–सं. स्त्री.—१ समानता, बराबरी।

२ पक्ष, विपक्ष।

ज्यूं—फलांणौ आपरौ कांम करै कोई री सरिवरि मैं कोनीं।

सरिस, सरिसउ, सरिसि–क्रि. वि.—साथ में, साथ।

उ०—१ वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कंपित चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पांणिग्रहण।—वेलि

उ०—२ जुद करि पट्टांणां सरिसि गढ जाळंधर लीय। 'गजपति' आयौ जोधपुर, मंगळ धमळ हरीय।—गु. रू. बं.

उ०—३ अतरी वात कुण आंगमइ, काउण जम्म सरिसउ जुड़इ।

—अ. वचनिका

उ०—४ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरौ, करणिहिं सरिसउ माडइ वयरौ।—सालिभद्र

२ देखो 'सारिखौ' (रू. भे.)

उ०—१ सूरज सरिमड साथड चालो, गंदु महड जिम रमग मचालो।—रामसिंह सूरि

उ०—२ पड़ं कंठ सताड़, गलो उक मारग सूहो। सोमोरां कंठ पुर सरिस मारोता हुवो।—सू. म. द.

उ०—३ मारग चाली सरिस चोवई मही तोवई कोई। करमोनि मोटा माप अजरड घरणि रंभा होई।—करमणि मंगळ

सरिमड —देखो 'सरमूं' (रू. भे.) (ज. र.)

सरिसु, सरिसो—देखो 'सारिसो' (रू. भे.)

उ०—१ ऊपरि पुराउनि हार, सरिसु मोती तणु हार, भूमणां तणु भमकार।—व. स.

उ०—२ मेर सरिसु हट नवि मांडीइ कीजइ मेळ वेढि छांडीइ। एतु वचन कहिऊं सुरनाणि, मड समीनांगड लीधउ प्रांणि।

कां. दे. प्र.

उ०—३ सरमनि न सूभै ताई तूं सोकै, बाउवा हूवो कि बाउळो। मन सरिसो छायलो मूढ मन, पहि किम पूजे पांगुळो।—वेलि.

उ०—४ तेहवां मांहि ताहरी, वेस्या सरिसी वात। कपट लिखंता कोडि करि, मावर मूढड सात।—मा. कां. प्र.

सरिस्ता-सं. पु. [फा.] किसी कार्यालय का विभाग, महकमा।

सरिस्तेदार-सं. पु. [फा.] १ शासन के किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी।

२ अदालतों में वह व्यक्ति या कर्मचारी जो देशी भाषा में मिसलें लिखता है।

सरी-सं. स्त्री.—१ पानी की वह नाली जिससे एक तरफ से क्यारियों में सिंचाई होती है। (कृषि)

२ एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्य के अन्त में आकर ये अर्थ देते हैं —

अधिक नहीं तो इतना अवश्य।

उदा.—आप जोधपुर पधारो तो सरी, आप पधारजो तो सरी, थोड़ी खाई पर गई तो सरी।

३ कुछ असंभावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना।

उदा.—तोई यूं उठै गयो तो सरी।

४ देखो 'सीं' (रू. भे.)

५ देखो 'सरि' (रू. भे.)

उ०—१ देवी सरसती जम्मनां सरी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी तार रद्धा।—देवि.

उ०—२ अर्जुन सो विनोदयं, कल्याण केक मोदयं। संभायची पटं-तयं, दई सरी विहंमयं।—रा. रू.

उ०—३ सरी नोसरै हार मोती संजोया। पड़ै मेणता हीणता पुरु पोया।—रा. रू.

उ०—४ देवी सरसती जम्मनां सरी सिद्धा। देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी तार रद्धा।—देवि.

५ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

उ०—सांम हूइ तणी मांगे सरी एवा जो तोने अपें। जद काग हुवोड़ो आंणजै जळ सिद्ध गोरख जपै।—पा. प्र.

रू. भे.—सरु, सरीस, सिरि।

सरीअत—देखो 'सरियत' (रू. भे.)

सरीकंठ-सं. पु. [सं. श्रीकंठ] गले का आभूषण, कंठी।

उ०—परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरो, सुभै सुर आकास जांणै सनूरो।

—रा. रू.

सरीक-सं. पु. [अ. शरीक] १ हिस्सेदार, साझीदार।

२ साथी, दोस्त, सगो।

३ सहायक, मददगार।

वि.—१ शामिल, सम्मिलित।

उ०—कीधो विदा विराट सूं, पुर पुगो मछरीक। कमध सगै चाकर किया, ठाकुर जिता सरीक।—रा. रू.

२ देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीठू जाय कुंवर नूं कही "जो महाराज फुरमावै छै, श्री नाळेर पाछो देवो, बीजा वीठा सूं जोग छै तो एक दोय करो।" तद कुंवर कह्यो "वीठू नूं अरज करै जो म्हारै तो पण छै सरीक रो नाळेर आयो पाछो न फेरू'।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सो रूप गुणाकर निपट अवल पण आंख्यां संजम गोठी-याबंध। सो कुंवारी बेटी घर मांहे। तिण नुं सरीक तो कोई लेवै नहीं अर बीजै नुं देवै नहीं। सो रांणो नुं खरो फिकर।

—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सरीख।

सरीकत, सरीकता-सं. स्त्री [अ. शरीकत] १ शरीक होने का भाव।

उ०—माघ वडै हालियो सुंणि मितर, सूधो गुवरा वितावो सति। विच मांहे न लियो विसरांमू, गिणियो नहीं सरीकत गति।

—सूरजनदास पूनियो

२ साझा, हिस्सा।

रू. भे.—सरीखत, सरीगत।

सरीको-वि.—१ साथ रहने वाला, साथी।

उ०—१ तीजो मलक सूं पण अहंकार आपरा सरीकियां सूं छै।

—नी. प्र.

उ०—२ प्रथम अहंकार बादसाहां नूं आपरै सरीकियां सूं।

—नी. प्र.

२ रिश्तेदार, सम्बन्धी।

सरीको—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

सरीख—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—तैं सुतन सीह दन खाग तीख, साभाव सुाह जैचंद सरीख।
—सू. प्र.

२ देखो 'सरीक' (रू. भे.)

उ०—१ तुं रहिजे इण थांनकै, मुझ नै दे हिव सीख। तदनंतर कुमरी वदै, हुं छुं तुझ सरीख।—वि. कु.

उ०—२ तै विण स्रेणिक राय नइ, तइं कीधा स्वांमी आप सरीख।—स. कु.

सरीखइ, सरीखउ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा देस सुहांमणउ, जै मूं सासरवाड़ि। आंब सरीखउ आक गिण, जाळि करीरां झाड़ि।—ढो. मा.

उ०—२ भयण सरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाख। वली विटंबन तूं करइ, वारु भई वैसाख।—मा. कां. प्र.

सरीखत—देखो 'सरीकत' (रू. भे.)

सरीखु, सरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ रांम बिनां किस कांम का, नहिं कौड़ी का जीव। सांई सरीखा व्है गया, दादू परसैं पीव।—दादूबांणी

उ०—२ चांदी रा ठांव डोकरी रै धकै करतौ बोल्यौ—जद सगळा मिनख एक सरीखा नीं व्है तौ थें सगळा नें एक सरीखा दूध सूं कीकर सल्टावौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सांई सरीखा सुमरिण कीजै, सांई सरीखा गावै। सांई सरीखी सेवा कीजै, तब सेवक सुख पावै।—दादूबांणी

उ०—४ सातूं भैंस्यां रै एक सरीखी रूपाळी पाडियां। कुत्ता जांणै सिंघणियां रा इज बिचिया। भिड़तां ई ऊभनाळियां आवै। सगळा अेक इ सांचै ढळियोड़ा। सरीखा डीगा, सरीखा लांबा, सरीखै उणियारां।—फुलवाड़ी

उ०—५ जद स्वांमीजी बोल्या—थांरै लेखै थांरी मां नै वैस्या सरीखी गिणी कांई।—भि. द्र.

उ०—६ पग पग लगै सरीखो पायल, हाथ हाथ प्रत कांकण होय। सरज्या नहीं अभनमा 'सलखा', दी पासा नासा नग दोय
—सांइयौ-झूलौ

उ०—७ थिरु मूरती सूर रै नूरथाई, तिका स्वप्न रै मांहि पिंडा चताई। सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आंक भ्रु बांकड़ा नेत तीखा।—मे. म.

(स्त्री. सरीखी)

सरीगत—देखो 'सरीकत' (रू. भे.)

उ०—१ काकियां जनमियां जिकां चाळा किया, टूट रजवट तिका हूंत दाखी। अवरके रचै रणजीत फोजां धणी, रजकरी सरीगत धणी राखी।—वां. दा.

उ०—२ करै सरब नजर रसद चालै किलै, धार सिर पर धणी मांण धूनो। लूणरी सरीगत वहै कुळवट लियां, जूदो न होवसी कमंध जूनो।—महेसदास कूंपावत रो गीत

सरीगतनांमौ—सं. पु.—वह पत्र जिस पर साझे आदि की शर्तें लिखी जाय, शिर्कतनामा।

सरीत, सरीतौ—क्रि. वि.—१ नियमानुसार, रीति से।

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जुटै रण सरीत।
—वि. सं.

२ देखो 'सरीयत' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं कोई बुराई आपणी स्त्रियां रै नरमी करै सो अक्ल मैं सरीत मैं भूंडी छै। मुरीत मैं पण भली नहीं।—नी. प्र.

उ०—२ 'हाजरधा' नैं आपा दिखलाया, गलव के साथ बाहर को आया। हाजरधा ने जांन झोका, आफताव नै विमांन रोका। निमक की सरीतौ पै सिर दिया, हूर कै विमांन वैठि आसमांन को गया।—ला. रा.

उ०—३ आवियौ खांन नाहर अडर, साझण दाव सरीत नूं। मगरूर सरा दरबार मझि, जाय मिळै 'अगजीत' नूं।—सू. प्र.

उ०—४ गजां नेजां तूट तेण ताप सूं अयास गाज, जनेवां सरीत बाज बीती घोर जांम। 'हरा' वाळै राह भांण रामसिंघ ग्रह्यौ हूंतो, सेरसिंघ माथा साटै उग्राह्यौ संग्रांम।—करणीदांन कवियौ

सरीपाळ—सं. पु. [सं. सरीसृप+पाल] चंदन। (अ. मा.)

सरीफ—सं. पु. [अ. शरीफ] १ भला आदमी, शिष्ट व्यक्ति।

२ कुलीन आदमी।

वि.—पवित्र, उत्तम।

(यौ. कुरानसरीफ, मिजाजसरीफ)

सरीफौ—सं. पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके फल खाने के काम आते हैं। इस वृक्ष की लकड़ी कुछ मटमैलापन लिए सफेद रंग की होती है। तथा छाल पतली व खाकी रंग की होती है।

सरीयत—देखो 'सरियत' (रू. भे.)

उ०—१ तद आलमगीर केसरीसिंघ जी वगैरै हाडां नूं और सारांई नूं कयौ—हमारा स्यांम धरम अरु लूणरी सरीयत रखतै हो तो या वखत है।—द. दा.

उ०—२ खावंद के हुकम पर जयसेती जंग करै। निमख की सरीयत पर ज्यांन कुरबांन करै।—सू. प्र.

उ०—३ तमांम न्याय री रीति मैं विसेस फरयादी रा बचन सुणनैं री सरीयत छै।—नी. प्र.

सरीर—सं. पु. [सं. शरीर] १ किसी प्राणी के समस्त अंगों का समूह, देह, काया। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ ओछै पांणी मछळी, किसी जिंद की आस। हरीया सास सरीर मैं, वसै किता दिन वास।—अनुभववांणी

उ०—२ नमौ सनकादिक स्यांम सरीर, नमौ वय-पंच अखै चत्र-बीर।—ह. र

पर्याय.—अंग, अंगी, आतमजा, आतमा, करण, कलेवर, काया, गात, घट, डील, तनु, देह, देही, धूधर, पयगुण, पिंजर, पिंड, पींजरो, पुदगल, पुर, बांध, बप, बिग्रह, वेर, मंड, मूरत, मूरति,

बहु. बदल, मनर।

२ शव, मुर्दा शरीर।

३ शारीरिक शक्ति।

मुहा.—शरीर छूटणो=मरना।

रू. भे.—शड़र, सड़रि, सड़ह, सरर, सपरू, सरि।

शरीरक-सं. पु. [सं. शरीरक] १ देह, शरीर।

२ छोटा शरीर।

[सं. शरीरक:] ३ जीवात्मा।

शरीरज-सं. पु. [सं. शरीरज] १ कामदेव, मनोज।

२ रोग, बीमारी।

३ पुत्र, बेटा।

सं. स्त्री.—४ विषयवासना, कामुकता।

शरीरभृत-सं. पु. [सं. शरीरभृत] १ विष्णु भगवान् का नाम।

२ जो शरीर धारण किये हुए हो, जीवात्मा।

शरीररक्षक-वि. [सं. शरीररक्षक] वह जो शरीर की रक्षा करता हो, अंगरक्षक।

शरीरवृति,-सं. स्त्री. [सं. शरीरवृत्ति] जीवन-यापन करने की वृत्ति, जीविका।

शरीरशास्त्र-सं. पु. यौ. [सं. शरीरशास्त्र] वह शास्त्र जो शरीर के अवयवों, नाड़ियों आदि का विवेचन करता हो।

शरीरशोधन-सं. पु. यौ. [सं. शरीरशोधन] कुपित मल पित्त तथा कफ को हटाकर ऊर्ध्व व अधोमार्ग से निकालने वाली औषधि।

शरीरसंस्कार-सं. पु. यौ. [सं. शरीरसंस्कार] १ गर्भाधान से लगा कर शरीर की अंत्येष्टि तक के वेद विहित सोलह संस्कार।

२ शरीर को स्वच्छ करने की क्रिया।

शरीरांत-स. पु. यौ. [सं. शरीरांत] १ शरीर का अंत, मृत्यु, देहांत।

शरीस —१ देखो 'सरेस' (रू. भे.)

उ०—१ नागां कुमुम सरीस वत, ज्यांरै पड़ै सरोट। हद नाजक हिरणाखियां, है साभल हमरोट।—बां. दा.

उ०—२ मरबूजा सहजण जायरै, सो असोक अमर सदै। सींमल सरीस नज आम गुल, दाख रामफळ मेव दै।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सरी' (रू. भे.)

उ०—सरीस मोतियां सधार, कोर भाल केसरी। कला तमंस बीच बीच, चद जाणि चंदरी।—सू. प्र.

३ देखो 'सरीखौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सारीसो' (रू. भे.)

उ०—१ सजि किया इंद्र धानस सरीस, सिंदूर जंगाळां तिलक सीस।—सू. प्र.

उ०—२ तिहां की माया पावै मानवी रे, सुण तुम पुण्य सरीस।
—ध. व. ग्रं.

५ देखो 'सरि' (रू. भे.)

उ०—घूमांणा सोनिगरां कर ऊधरा सरीस। माद पमारां सांम छळ, माया वंस छतीस।—रा. रू.

सरीसप-सं. पु. [सं. सरीसृप] सर्प, सांप। (ह. नां. मा.)

सरी-सरी—संगीत के सात स्वरों के आलाप का अनुकरण।

उ०—सरी-सरी सपोसयं, सुताळ मालकोसयं। मिठास आस मंजरी, गरीगरी स गुज्जरी।—रा. रू.

सरीसौ—देखो 'सारीसौ' (रू. भे.)

उ०—१ काळी कांठळ सारसो, चपळ दांमनी जेम। मेर सरीसो गात में, कहो बतांणुं केम।—गज-उद्धार

उ०—२ रमे पग-छांह मधुकर रिक्ख। तवै पग नाग सरीसा तक्ख।—ह. र.

उ०—३ देवर जी सरीसो डीघो पातळो ऐ म्हांरा सासुजी, नणदल बाईसा रै उणियार वाला जी।—लो. गी.

उ०—४ भीम भांण सारीख, करन सिवदास सरीसा। जोधां दळ जोधांण, बोल दळ वेळ वरीसा।—रा. रू.

सरु-क्रि. वि. [अ. शुरूअ] आरम्भ, शुरू, प्रारम्भ।

उ०—१ बिना मिरच मुसालां रै ई बात सरु करुं, पनै मुसाला घणा ई लगावणा आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सोवनलाल सांवण री तीज सूं पैली ही सासरै आ वेठ्यो मालम पड़यो जद घर में गीत सरु हुआ।—दसदोख

उ०—३ सुणि एम कीध नोबत सरु इम जवाब लिखिया उतर।
—सू. प्र.

उ०—४ हांकरतां दौड़ सरु व्हैगी।—अमरचूंनड़ी

सं. पु. [सं. शरु] १ वज्र।

२ तीर, बांण।

३ अस्त्र, शस्त्र।

४ क्रोध, गुस्सा।

५ एक देव गंधर्व का नाम।

सं. स्त्री. [सं. शरु:] ६ तलवार की मूठ।

वि.—१ वास्तविक, यथार्थ, सही।

उ०—महाराज अभै मंडोवरै, सकळ लाज परखै सरु। दृढ बात नेम लखि रखियो, खूंद थांन 'सिमंगरू'।—रा. रू.

२ देखो 'सरी' (रू. भे.)

उ०—'पदमसिंघजी' मा'राज तो दातार है कोऊ निरधन जाय हाथ मांडै तिणनूं निहाल करै जो तूं जातो सरु।—द. दा.

३ देखो 'सारु' (रू. भे.)

उ०—१ मुर्दे 'अमर' 'सिमगरु', जिकण सरु सत्र ज्याम। वात करण मुरतांण सूं अरि घरि करण अज्यास।—रा. रू.

उ०—२ दसड़ा पंचवीस किरोड़ मढंगा, भ्रुक सरु रीता जीतसा।
—र. रू.

रू. भे.—सिरु, सुरु, सुरू।

सरूठ-वि.—क्रोधपूर्ण, सक्रोध।

उ०—मद पूठ सरूठ नवाव महा, क्रत कोपित काळिय नाग कहा।
—रा. रू.

सरूप-सं. पु. [सं. स्वरूप] १ नाथ सम्प्रदाय के जोगियों द्वारा कानों में पहिना जाने वाला कुंडल नामक आभूषण विशेष।

२ हाल, वृतान्त।

उ०—पणि ए ग्रह छै केहनौ, केण करायौ कूप। वलि तूं व्रद्धा कवण छै, तै सहु दाखि सरूप।—वि. कु.

३ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—भूपाळ बीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै। माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै।
—जगन्नाथ सांदू

वि.—१ सुन्दर, मनोहर। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ इसडी वा कन्या छै सु काठ भखण करै छै, सरूप छै, गुणवंती छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ घाटां रूप मैं सरूप जिकै बाटां सूंबां सीध घालै, थाटां घणां बीच सोभा विरच्ची अथाह। दळां रौ दुबाह जोध नरां नाह 'सेवौ' दाखां, पाकेटां पमंगां चंगां मांडियौ प्रवाह।—नाथौ बारहठ

२ समान, तुल्य।

उ०—१ झाळा धोम तेज झळहळियौ, अगन सरूप पनंग ऊछ-ळियौ। जभकै नहीं भयांणक जांणै, पनंग जिकौ ग्रहियौ ब्रप पांणै।—सू. प्र.

उ०—२ माया आगि सरूप है, जोग जुगति सु राखि। नहीं तौ तन जोखा घणां, हरीया हरिजन आखि।—अनुभववांणी

उ०—३ केस कळप तजियौ सकळ, भजियौ कजियौ भूप। वजियौ इण गुण व्रद्धवय, सजियौ तरुण सरूप।—वं. भा.

उ०—४ सखियां रै साथ इसी सोवै, ज्यूं चिरम्यां मैं मोती अनूप। होठां पर हास इसौ मोहै, ज्यूं तारा री जोती सरूप।
—करणीदांन बारहठ

३ एक ही रूप का, समान शकल का।

४ देखो 'स्वरूप' (रू. भे.)

(अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ किलनूं कळ कलनूं कळ कहै, रिख रूप री रूप। ब्रिगड़ै कुकवि रसरा वस. सबदां तणौ सरूप।—वां. दा.

उ०—२ उणनै पोता री वौ फोटू याद आयौ जिकौ उणै ब्याव रै दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यूं भेळा ऊभ नैं खेंचायौ हौ। उण वखत सुसीला रौ किसौक फूटरौ सरूप हौ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ इह सरूप जंगळ धर आई, महा सकति दुरगा मेहाई। मसक समांन 'कांन्ह' कूं मारचौ, उदनवांन जळजांन उबारचौ।
—मे. म.

उ०—४ गजां प्राहार हाथळां सिंह छूटौ 'कुसळेस' गाज, कायरां पराजै बोल भांहरै करूप। अमांमौ जोधार खेत उछाह रै साजि आयौ, सूर रांमसिंघ सांमौ राह रै सरूप।—करणीदांन कवियौ

उ०—५ मरजाद सर सर सरिति अनुमिति, छूटि जात अछेहयं। पड़ि खाळ थाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप अखेहयं।
—रा. रू.

उ०—६ सीसड़ली मूमल री सरूप नारेळ ज्यूं, हां जी रे केसड़ला माडेंची रा वासग नाग ज्यूं, म्हांजी जुग वाल्ही मूमल! हालै नीं ऐ अमरांणै रै देस।—लो. गी.

रू. भे.—सरूपी, सारूप।

सरूपमांन, सरूपवांन—देखो 'स्वरूपवांन' (रू. भे.)

उ०—१ ओड़ौ सरूपवांन मोट्यार इण भांत विडरूप कीकर बणग्यौ। देखणवाळा लोगां री आंख्यां काळजा रै मांय वड़गी।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वींदणी तौ जांणै कोई सपनौ देखै। ज्यूं कह्यौ—त्यूं करचौ। सातवीं टीकी देवतांई धरती धूजी, बीजळियां किड़की, आभौ हिलियौ। देखतां देखतां काळिंदर तौ पच्चीस बरसां रौ सरूपवांन मोट्यार बणग्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ फगत एक भंवारौ बाकी बच्यौ। वै हीमत करनै मांय वड़ी। उठै एक अजब ई नजारौ निगै आयौ। सूळां री सेज माथै एक सरूपवांन मोट्यार सूतौ।—फुलवाड़ी

सरूपसाही-सं. पु.—महाराणा सरूपसिंह द्वारा चलाया हुआ मेवाड़ का एक सिक्का विशेष जो चांदी और स्वर्ण दोनों का अलग-अलग होता था।

सरूपसी-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सरूपांत, सरूपात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

उ०—सरूपांत मैं ठाकर दारू नै पियौ बीच मैं दारू दारू नै पीयौ, अर अबै दारू ठाकर नै पीवतौ हौ।—रातवासौ

सरूपा-सं. स्त्री.—भूत ऋषी की पत्नी जो असंख्य रुद्रों की माता मानी जाती है।

सरूपाचारय-सं. पु. [सं. स्वरूपाचार्य] शंकर स्वामी का एक शिष्य जिन्होंने पश्चिम में शारदा मठ की स्थापना की थी।

सरूपियौ—देखो 'सरूप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिवइ रितिराउ कहतां वसंत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नांना प्रकार गुणानतिमति सहित यौ परिग्रह लै आयौ।
—वेलि

सरूपी—देखो 'स्वरूपी' (रू. भे.)

उ०—१ अकल सरूपी तूं गुरु जीयउ एह अचंभौ थाई।—स. कु.

उ०—२ जनहरीया चढी ग्यांन गज, जाजम अधर बिछाय। जगत सरूपी कूकरा, भूसलि मरौ भसि जाय।—अनुभववांणी

२ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

उ०—जिन वनिता जिन होत सरूपी पीतै जिनज प्रसूती। सेवै तै सुत सर्वोत्तम सूरी, सरूपी ए जरूजी।—ध. व. ग्रं.

सरूपोत-क्रि. वि.—१ प्रारम्भ में।

उ०—१ म्हांरै मन में सोचण लागो कै इण भांत रा सरूपोत ई यूंड़ा माठड़ा उथळिया तो पछै अंत में रांम जांणै कांई व्हैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सरूपोत नीं बोलण रै कारण म्हैं आ समझण री भूल करी कै थूं दिखावो करै है।—फुलवाड़ी

२ पहले-पहल, सर्वप्रथम।

उ०—१ कुण री जांणकारी राखतो थको आपरै गवाड़ में माड़ी रीत रिवाजां मिटावण नै जुवानां रो संगठण करै है अर करड़ा विचार रियां आपरै घर सूं ही तोड़ण री सरूपोत मतो करै है।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सरूपोत दूध-दही रै मिस उठै बुलावण री जाळ रचियो, सगळा दूध री माई करण री दातारी दरसाई।—फुलवाड़ी

३ पहल, शुरूआत।

ज्यूं—ई कांम री सरूपोत तो म्हूं ई करूंला।

रू. भे.—सरूपांत, सरूपात, सरूवात, सिरंपोत, सुरूपात, सुरूवात।

सरूपो-सं. पु.—१ नजारा, आश्चर्यजनक बात।

उ०—धोरां पड़ियो घर धणी, सोचै केही सरूपो रे। नर-नारी कुण नीकळ्या, अदभुत रूप अनूपो रे।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

सरूभो—देखो 'सलूभो' (रू. भे.)

उ०—अळै देण दुसहां पयण पैण तीरां पड़ै, स्यांमरख वैंण वीरां सरूभो। निसा कौतक लगी रैण जुध निरखवा, अैण रथ रोक चंद्र गैण ऊभो।—हुकमीचंद खिड़ियो

सरूवात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

सरेखंडो-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा (शा. हो.)

सरेज-वि.—श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—हलकार भड़ां ललकार हुवै, चगयां मुख तेज सरेज चुवै।
—रा. रू.

सं. पु. [सं. शरज] स्वामी कार्तिकेय।

सरेबजार—देखो 'सिरैबाजार' (रू. भे.)

सरेह-सं. स्त्री.—प्रथा, रीति-रिवाज।

रू. भे.—सरह।

सरेस-सं. पु. [सं. शिरीष] १ एक वृक्ष विशेष।

२ एक लसदार पदार्थ जो लकड़ी चिपकाने के काम आता है।

रू. भे.—सरीस, सिरस।

सरै—१ देखो 'सिरै' (रू. भे.)

उ०—दीन्हा कर सोभत दहूं, तोरा बडै कुल तांस। सह सतियां पेमां सरै, वसै अमरपुर वास।—रा. प्र.

२ देखो 'सरह' (रू. भे.)

उ०—असवार पचास कन्है रहै सो रिपियो आधो घोड़ै री सरै पावै।—अमरसिंघ गजसिंघोत री वात

सरैबजार, सरैबाजार—देखो 'सिरैबाजार' (रू. भे.)

सरोकार-सं. पु. [फा.] १ लगाव, मतलब।

२ परस्पर का सम्बन्ध।

सरोकारी-वि. [फा.] १ सरोकार रखने वाला।

२ जिससे सरोकार रखा जाय।

सरोख—देखो 'सरोस' (रू. भे.)

उ०—१ चाहता जादम रिण चाळो, दुयणां तणो हुयो देठाळो। असुर सरोख डांखिया आया, आगै जादम राड़ अघाया।
—रा. रू.

उ०—२ जगि सुमति आपत जांणि गुरजण रटत वयण सरोख।
—रा. रू.

उ०—३ चांपावत 'रांम' 'हरी' घर चोख, समोसर नाहरखांन सरोख।—रा. रू.

सरोगय-सं. पु.—एक असुर जिसने भीमसेन को भी परास्त कर दिया था।

सरोड़-वि.—सीधा-सादा, भला।

उ०—मा'रजा सूधी भोळी सरोड़ अर स्यांणी मांणस, कांम वेगी ढेढ-थोरी नै ही नटै नीं।—दसदोख

सरोज-सं. पु. [सं.] १ कमल। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—स्रीपत चरण सरोज री, गंगाजळ मकरंद। अळियळ ज्यूं कर पांन अव, अधिकावण आणंद।—बां. दा.

२ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)

३ लाल रक्त। * (डि. को.)

सरोजमुखी-वि. [सं.] कमल के समान मुख वाला।

सरोजिनी-सं. स्त्री. [सं.] वह तालाब जिसमें कमल हो।

वि [सं.] कमल का, कमल से सम्बन्धित।

सं. पु.—१ ब्रह्मा।

२ गौतम बुद्ध।

सरोत—देखो 'स्रोत' (रू. भे.)

सरोतर, सरोतरि, सरोतरी-वि.—समान, बराबर।

उ०—१ राह भवन धन धन सुख राखै। दुनी कुबेर सरोतर दाखै।—रा. रू.

उ०—२ रवि मेस अवनेस बंधु 'बखतेस' सरोतर।—रा. रू.

उ०—३ सुलतांण सरोतरि बिलंद सेर, जिण भांण हरण जुड़ि करण जेर।—रा. रू.

सरोतो-सं. पु.—१ सुपारी व केरी (कच्चा आम) काटने का एक उपकरण विशेष।

वि. वि.—सुपारी काटने का सरोता आकार में केरी काटने के

सरोते से छोटा होता है एवं केरी काटने के सरोते में नीचे लकड़ी का मोटा तख्ता लगा होता है।

वि.—समान, बराबर।

रू. भे.—सरोतौ।

सरोद-वि.—१ एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ देखो 'सरोदौ' (मह; रू. भे.)

उ०—सिखंति केक भेदसोंग साधनं सरोद रा। महामंत्रेस अग्गम, मही अभ्यास मोद रा।—सू. प्र.

सरोदौ, सरोधौ-स. पु. [सं. स्वरोदय] दायिने और बाएं नथुने से निकलते हुए श्वासों को देखकर शुभ और अशुभ फल की भविष्यवाणी करने की विद्या।

उ०—१ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देला रे। चंद्र सूर रा लिया सरोदा, सुखमण सीर चडेला रे।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ ग्यांन को उपास नांह, सरोधा अभ्यास नांह। परम को ग्यांन नाह न जांनू पंचतंत कूं।—ऊदोजी अड़ीग

रू. भे.—सरोद।

सरोवर, सरोवार-वि.—१ तरबतर।

२ समान, सदृश।

३ देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

रू. भे.—सरबर।

सरोभर-वि.—समान, तुल्य।

उ०—१ राज द्वार उद्धार, इंद्र आगार सरोभर।—ला. रा.

उ०—२ उजां पिंड आकाय धर भुजां पौरस अफर, वीरवर निडर चित धीर बाधै। हेरतां निजर भर मुरद्धर कूंपहर, सरोभर अवर नर कवंण साधै।—जैतदांन बारहठ

सरोमण, सरोमणि, सरोमणी—देखो 'सिरोमणी' (रू. भे.)

सरोरूह-सं. पु [सं. सरोरुह] कमल।

उ०—पतपच्छी जुग पांण, सरोरूह पल्लवां। नगजुत बलय अमोल दिया जै निध नवां।—बां. दा.

सरोवर-सं. पु. [सं. सर+वर] १ सागर, समुद्र। (उ. र.)

२ तालाब, जलाशय। (डिं. को.)

उ०—१ 'सेरं' भूखां माळवौ, 'सेर' प्यासियौ सरोवर।

—पहाड़खां आढौ

उ०—२ सोवन मिरघ सरोवरां, सती फिरंती दीठ। असड़ा मिरघ न मारही, लखण कमावैं भूठ।—मेहोजी गोदारौ थापन

३ झील।

वि.—समान, तुल्य, बराबर।

उ०—कटारयां सरांलग सेल खंजर करद, अंग कट जरद पडिया अथांहां। जोध सुर असुर वै सरोवर जूटिया, बरोवर करै सरीख बांहां।—र. रू.

क्रि. वि.—साथ-साथ; परस्पर।

रू. भे.—सरबर, सरवर, सरवरि, सरव्वर, सरीवर।

अल्पा.—सरवरियौ।

सरोस-सं. पु.—१ जोश, उमंग।

उ०—जिण जिण सथांन फौजां सजोस। सुण खबर थया पण, विण सरोस।—रा. रू.

२ आवेग।

उ०—बडै सरोस जोस मैं भरोस अत्यनै वहै। रसा अरोस कोसलौ भरोस ओर कै रहै।—ऊ. का.

३ तेज।

उ०—अत कोप मुखां चख रोस अड़ै, झळ आग लगी फिर दूंग झड़ै। जपतै रसणां रूख वांण जुई, हित बादळ वीज सरोस हुई।

—रा. रू.

वि.—४ जोशपूर्ण।

उ०—तोलै आभ भुजां वळी बोलै सूर सरोस।—रा. रू.

५ नाराज।

६ गुस्से से युक्त, क्रोधित।

रू. भे.—सरोख।

सरोसरि, सरोसरी-वि.—एक समान, बराबर।

उ०—पीठ प्रिथी सिरि सुन्दर जैंपुर, रंग बजार हजार बराबरि। सोभत चोपड़ बंध सरोसरि, गौरव अटा महलां घड़ कंगरि।

—जैंपुर नगर रो वरणन

सरौ, सुरौ-सं. पु.—१ कृषि उपकरण दंताली का वह अग्र भाग जिसमें कंघे के आकार के दांते लगे होते हैं।

२ प्रथा, परिपाटी।

उ०—पग तोकर हाकल मांड पगं, विण छौत मिटै नह सूर वगं। सुप्रवीत महाजत सूर सरौ, कमवेस पड़ै अप्रवीत करौ।—पा. प्र.

वि.—३ सही, सत्य।

उ०—पहलोक अंधेरी प्रिथमी, साठां राहां भागौ सरौ। 'सुरजन' सुमत गुण ऊचरै, घरै नहीं वड राजा गजसाह रौ।

—सुरजनदास पूनियौ

सरौतौ—देखो 'सरोतौ' (रू. भे.)

सरौवर—देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

उ०—आया पौहकर नेमलै, 'मधकर' हर कुळमौड़। देवळ सीवाराह रै, मुगत सरौवर ठौड़।—रा. रू.

सलंभ-सं. पु.—शामियाना खड़ा करने का खम्भा।

उ०—भूंडा भोज न जांणज्यै, मंदोवरि रा मंभ। सुंदरि सोहे आंगणै, लंबी जिसि सलंभ।—मेहौजी गोदारौ

सळ, सल, सळ-सं. पु.—१ किसी समतल तथा कोमल तल या पदार्थ के मुड़ने, दबने, सूखने या पिचकने के कारण उसमें उभरने वाली रेखाएं जो उसकी समतलता नष्ट करती है। यह वृद्धावस्था,

धमनीन, फफेन, कोढ़ आदि के कारण भी पड़ जाते हैं। सिकुड़न, सिलवट, सिकुड़न।

उ०—१ नागी मलाळो नी महारल पाल दियो सो बंदूक मेंनी री केड़ मूं गोळी री गळी मैं मरीज गयो थो।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ म्हारा बोरां जैड़ी छोटी आंख्यां, लिलाड़ मायै सातेक घाटा सळ, मूंडा मायै मस री ठोड़ कांनी कांनी तुणियां ऊगोड़ी।
—फुलवाड़ी

उ०—३ मूंगी नकौड़ी लिलाड़ मैं सळ पड़ियोड़ा, अर पागड़ी रा आंटा ढीला पड़ियोड़ा।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ ठेक गर देवर ! सेजां में लै चाल, वैरो तो पाड़ां अो देवरिया ! नागी मरद रो। नारी होय तो फूल जावै मुरझाय, मरद मूंछाळा री सेजां अो देवरिया ! सळ ना पड़ै।—लो. गी.

उ०—५ सूरज पांसळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पंक। कायर नटरा कळण दळ, कुळवी सभा कलंक।—बां. दा.

२ अटक, बंधन।

उ०—मरण जनमनो सळ मिटण सो सलभ व्है संभार। जंम यो मळ भंजै जिको, कोसल राजकंवार।—र. ज. प्र.

३ खलिहान में पड़े गेहूं की कटी फसल का ढेर।

४ नाश, संहार।

उ०—वही अोरि केकांण मेल असुरांण करूं सळ। चीथहरी हृदवीस अोक पाऊं रत उजळ।—सू. प्र.

५ दुस्मनी, शत्रुता।

[सं. शल] ६ ऊंट। (डि. को.)

७ भाला, बर्छी।

८ कंस का एक अमात्य एवं मल्ल का नाम जो कृष्ण व बलराम से मल्लयुद्ध करते हुए मारा गया था।

९ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक।

१० वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग।

११ विप्रचित्ति एवं सिंहिका के पुत्रों में से एक असुर जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

[सं. शल्य] १२ मद्र देश का राजा जो नकुल सहदेव का मामा था। यह महाभारत के युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया।

१३ भृंगी नामक शिव गण।

१४ कष्ट, शल्य, पीड़ा।

[सं. शव] १५ ब्रह्मा।

वि.—१ सीधा, सरल।

२ नोकदार, नुकीला, तीखा।

३ मारने वाला, वध करने वाला।

रू. भे.—सल्ल, सल्य।

सळइ-सं. पु. [सं. शल्लकी] शल्लकी नामक वृक्ष।

सळकणो, सळकबो-क्रि. अ.—१ खिसकना, भागना, चुपके से भाग जाना।

उ०—१ छळ न वळै सो अकसो छोडै, ईरानी नह फौ बळ अोडै। अरज 'अजीत' हूत गुदराई, सळक गयो जैसींघ सवाई।—रा. रू.

उ०—२ सळकिया कलह मझ झाट देखै सको, लोहड़ां नह कीधो लोह भिळतो। एक 'माहेस' जिमा हुता ऊमरा, भूप रो कदै नह देस भिळतो।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—३ जीम्यो अरोग्यो जरै, सबरी करी न सेवा रे। सिव पारबती सळकिया, दोमूं हरतिख देवो रे।—ध. व. ग्रं.

२ चमकना, दमकना। (बिजली आदि)

३ हिलना, चल-विचल होना।

उ०—१ दल दस देस तणां मिळि, घडीयालइ टमकारो। सळक्यो मेर समुद्र झळहळियो, अहि डोलयो महि भारो।—रुकमणि मंगळ

उ०—२ सळकै सेंस न ऊगै सूर।—अग्यात

४ बल खाते हुए चलना, वक्रगति से चलना।

सळकणहार, हारो (हारी), सळकणियो—वि०।

सळकिओड़ौ, सळकियोड़ौ, सळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळकीजणो, सळकीजबो—भाव वा०।

सळक्कणो, सळक्कबो, सिळकणो, सिळकबो—रू० भे०।

सलकर-सं. पु. [सं. शलकर] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग।

सळकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ खिसका हुआ, भागा हुआ, चला गया हुआ. २ चमका हुआ, दमका हुआ (बिजली आदि). ३ हिला हुआ, चल-विचल हुवा हुआ. ४ बल खाते हुए चला हुआ, वक्रगति से चला हुआ।

(स्त्री. सळकियोड़ी)

सळकी, सळकीजा-सं. स्त्री.—मछली। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

सळक्कणो, सळक्कबो—देखो 'सळकणो, सळकबो' (रू. भे.)

उ०—आखियो हुकम ऊखेळ रो, असपत मेळ अटक्कियो। घर दिखण सीस अोछाह घर, साह सगाह सळक्कियो।—रा. रू.

सळक्षण, सलक्षण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सलखणोत-सं. स्त्री.—१ गहलोत क्षत्रियों की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का एक व्यक्ति।

सलखणो—देखो 'सुलक्षणो' (रू. भे.)

(स्त्री. सलखणी)

सळगणो, सळगबो—देखो 'सिळगणो, सिळगबो' (रू. भे.)

सळगणहार, हारो (हारी), सळगणियो—वि०।

सळगिओड़ो, सळगियोड़ो, सळग्योड़ो—भू० का० कृ०।

सळगीजणो, सळगीजबो—भाव वा०।

सळगाणो, सळगाबो—देखो 'सिळगाणो, सिळगाबो' (रू. भे.)

उ०—नारद होय वहीर, रति नगरी में आया। जैसे सेल बजार, गोट आंवा सळगाया।—अरजुणजी बारहठ

सळगाणहार, हारौ, (हारी), सळगाणियौ—वि०।

सळगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सळगाईजणौ, सळगाईजबौ—कर्म वा०।

सळगणौ, सळगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

उ०—उर लग्गी ज्वाळा विरह, जांण सळग्गी लाय। भोम निहारै गयण तजि, वयण उचारै हाय।—रा. रू.

सळग्गणहार, हारौ (हारी), सळग्गणियौ—वि०।

सळग्गिओड़ौ, सळग्गियोड़ौ, सळग्ग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळग्गीजणौ, सळग्गीजबौ—भाव वा०।

सलज—वि. [सं. सलज्ज] लज्जाशील, सुशील।

रू. भे.—सलज्ज।

सलजणौ, सलजबौ—क्रि. अ.—१ लज्जित होना, शर्माना।

२ संकुचित होना, नीचा देखना।

सलजणहार, हारौ (हारी), सलजणियौ—वि०।

सलजिओड़ौ, सलजियोड़ौ, सलज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलजीजणौ, सलजीजबौ—भाव वा०।

सलज्जणौ, सलज्जबौ—रू० भे०।

सलजम—सं. पु. [फा. शलजम] प्रायः सारे भारत में सर्दी के दिनों में होने वाला एक प्रकार का कंदमूल विशेष।

सलजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लज्जित हुवा हुआ, शर्माया हुआ. २ नीचा देखा हुआ, संकुचित हुवा हुआ।

(स्त्री. सलजियोड़ी)

सलज्ज—देखो 'सलज' (रू. भे.)

उ०—कन्या कमंधा रावरी, सूरज कंवर सलज्ज। सेवा तो इसरी करी, कीजै आदर कज्ज।—रा. रू.

सलज्जणौ, सलज्जबौ—देखो 'सलजणौ, सलजबौ' (रू. भे.)

उ०—भोग्य चित भजे, ग्रीधणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहड़ै सलज्जै —रा. रू.

सलज्जियोड़ौ—देखो 'सलजियोड़ौ' (रू. भे.)

सलटणौ, सलटबौ—क्रि. अ.—१ समस्या की जटिलता पेंचीदगी आदि का दूर होना, सुलझना, हल होना।

उ०—१ तद राव 'सूरजजी' आपरी माजी नूं कयो, 'माजी, थें वाभैजी वीकैजी खनै जावौ नै थां गयां वात सलटसी।—द. दा.

उ०—२ केई जणां गादी रौ हक जमायौ। सेवट रांभो किणी भांत नी सलटियौ तौ सगळा दीवांण मिळनै अेक सला विचारी।

—फुलवाड़ी

उ०—३ पण अकल री ठौड़ अकल इज कांम आवै। अकल री बातां रंघड़पणां सूं नीं सलटै।—फुलवाड़ी

उ०—४ वात तौ कराड़ां वारै व्हैगी। अबै कीकर सलटणी आवै। कुण जाणै कुण दाव-घाव करघौ।—फुलवाड़ी

२ निपटना।

उ०—१ दूजा गांव में किसा ठाकर नीं है कांई। अबै तो बांणिया वाळी अकल सूं ई सलटणौ पड़ैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ आखा ठिकांणा री रया नै एक साथ सलटण री जोरावरी व्हैतां थकां ई खुदोखुद कंवरसा सूं कीकर सलटीजै।

—फुलवाड़ी

उ०—३ थूक उछाळता कैवण लागा—म्हांरै घर री बात है, मतै ई सलट लेस्यां। बस्ती वाळा क्यूं पंचायती करै।—फुलवाड़ी

उ०—४ घणकरौ डंड जूतां रै पांण ई सलट जातौ। बात बात में जूता अर पावंडै पावंडै जरबा। जूतौ ई उण ठिकांणै सिरै कांनून अर जूतौ ई सिरै न्याव हौ।—फुलवाड़ी

३ होना, निकलना।

उ०—१ मांदा मिनख नैं तौ बतावै सौ ई ओखद जचै। पछै अेक राजा रै तौ हुकम सूं सगळा कांम सलटै, उणनै हुकम देवतां कांई जोर पड़ै।—फुलवाड़ी

उ०—२ कदै ई कदै ई छोटा मिनख जको कांम सार सकै, वो मोटा मिनखां सूं नीं सलटै।—फुलवाड़ी

उ०—३ पण पुटिया बिनां उठै पंचायती सलटै कोनीं कांई।

—फुलवाड़ी

४ छुटकारा पाना, मुक्त होना।

उ०—सणण करता रूंगता ऊभा व्हैगा। पाखती रा वेली नै सांयड ऊभी बगळ बगळ मठोठै। फगत माथौ माथौ बच्यौ। करै तौ कांई करै। इण अणचींती माया सूं कीकर सलटणौ आवै।

—फुलवाड़ी

सलटणहार, हारौ (हारी), सलटणियौ—वि०।

सलटिओड़ौ, सलटियोड़ौ, सलट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलटीजणौ, सलटीजबौ—भाव वा०।

सलटाणौ, सलटाबौ—क्रि. स.—१ निपटाना।

उ०—१ फूलचंदजी वेगराजजी रै घर री पूरी खोज खबर लीनी। मांगतोड़ां नै आंख दिखाळी। आघै-परघै नै सलटाया।—दसदोख

उ०—२ मासी अेकली ई गवाड़ी री कांम कणां सलटाय देती, जिणरी कीं पतौ ई नीं पड़तौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ जापा रै पांच महीनां पछै भटियांणी नै कांम करण री ना तौ नीं ही, पण मासी घणकरौ कांम खुद ई सलटाय देती।

—फुलवाड़ी

२ सुलझाना।

३ सुधारना।

४ करना, निकालना। (काम)

५ मुक्ति दिलाना, छुटकारा दिलाना।

सलटाणहार, हारौ, (हारी), सलटाणियौ—वि०।

सलटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सलटाईजणौ, सलटाईजबौ—कर्म वा०।

सलटाड़णौ, सलटाड़बौ—प्रे० रू०।

सलटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ निपटाया हुआ. २ सुलझाया हुआ. ३ समाप्त हुआ. ४ निपटा हुआ, निकाला हुआ. (काम) ५ मुक्ति दिलाया हुआ, छुटकारा दिलाया हुआ।

(स्त्री. सलटायोड़ी)

सलटावणौ, सलटावबौ—देखो 'सलटाणौ, सलटाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नवाब साब फेर मारजी, धणी कांई सुझावण देवूं। अबै ई आगो, आपैं केई जणां री बात सलटावणी है।—फुलवाड़ी

उ०—२ जणी रो सांपू कुछलावतां या इन बात करी—अंदाता [illegible] पार पचावनी सलटावण नै गियो है। आतो [illegible]। कोडी ताळ मटाव रागो।—फुलवाड़ी

उ०—३ मांग चोवटा री नो माड़ी पाळी परवारी। कोई दुयणी [illegible] न्याव सलटावणियो लाधो ई नीं। हवां हवां पाधरा [illegible] कोई नहीर होगा।—फुलवाड़ी

सलटावणहार, हारौ (हारी), सलटावणियौ—वि०।

सलटाविप्रोड़ौ, सलटावियोड़ौ, सलटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलटावीजणौ, सलटावीजबौ—कर्म वा०।

सलटाविप्रोड़ौ—देखो 'सलटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सलटावियोड़ी)

सलटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का हल निकला हुआ. २ निपटा हुआ. ३ हुवा हुआ, निकला हुआ. ४ सुलझा हुआ. ५ छुटकारा पाया हुआ, मुक्त हुवा हुआ।

(स्त्री. सलटियोड़ी)

सळणौ, सळबौ—देखो 'सुळणौ, सुळबौ' (रू. भे.)

सळणहार, हारौ (हारी), सळणियौ—वि०।

सळिप्रोड़ौ, सळियोड़ौ, सळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळीजणौ, सळीजबौ—भाव वा०।

सलत—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

सलतनत-सं. स्त्री. [अ.] १ सुलतान के अधीन रहने वाला राज्य, बादशाहत।

२ शासन, हुकूमत।

रू. भे.—सल्तनत।

सलता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—मगनि भाव भादू नदी, सभी उठी पहराय। सळता सोई जांणिजै, नेठ मास ठहराय।—प्रयात

सळताळ—सं. स्त्री.—चमक-दमक।

उ०—नभि [illegible] पड़ै सळताळ पटा, घण जोर वरै थळ सीस घटा।

—पा. प्र.

सलदी, सलद्दी—देखो 'सरहदी' (रू. भे.)

उ०—तरिवन मांन पटांण, सेख अलियार सलद्दी। मिळै सेख मुबराह, मुगळ धाणा सुलमद्दी।—सू. प्र.

सलप-वि.—अल्प, थोड़ा।

सळपळाट, सुळपळाट, सुळपळाहट, सळपळाहट, सळफळाट, सुळफळाट, सळफळाहट, सुळफळाहट-स. पु.—१ पौधों के समूह पर हवा के झोंकों से उत्पन्न गति, ध्वनि, कम्पन।

उ०—रात पौन सूं खिल-खिलै रोलै, रात दिन रूखाळी गांणै भेलै। धांन धूजै, सळपळाट करै तथा बेळां, चिया-फूळां सागै झूला झुलै है।—दसदोख

२ खिन्नचित्त होने की अवस्था या भाव।

सलबै-क्रि. वि.—पास, निकट।

उ०—१ मिनख रो रूप धारणां आ मौत तो साव सलबै आयगी दीसै।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण भांत हरियळ धरती अर जच्चा-रांणी रै वधावां रा मीठा गीत सुणती सुणती काली गासी गांव रै सलबै पूगगी।

—फुलवाड़ी

उ०—३ खेत रै सलबै पुगतां ई सगळा भाचरिया उणरै ओळा-दोळा व्हैगा।—फुलवाड़ी

सलबौ-वि. (स्त्री. सलबी) पास, करीब।

उ०—सलेबौ आयर सायधण, चित पिय लीनौ चोर। लोयण लागा निरखवा, (ज्यूं) चंदा दिसै चकोर।—नारायणसिंह सांदू

रू. भे.—सलभौ,

सलभौ-वि.—१ लाभान्वित, लाभ प्राप्त।

उ०—आवै केइक चीतिया, अणचीतिया अनेक। वळै सलभा होय सब उर अदतारां छेक।—बां. दा.

२ देखो 'सलबौ' (रू. भे.)

सलभ-सं. पु. [सं. शलभः] १ टिड्डी। (डिं. को.)

उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क। सलभ मुआं सिर संक्रमै, कोड़ी जेम कटक्क।—बां. दा.

२ पतंगा। (डिं. को.)

उ०—आसाढ मनहु बरखा समय, संमुख आनि सलभा गिरत।

—ला. रा.

३ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक।

४ पाण्डवपक्षीय योद्धा जो कर्ण द्वारा मारा गया।

५ छप्पय का एक भेद जिसमें ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण १५२ मात्राएँ होती है।

६ देखो 'सुलभ' (रू. भे.)

उ०—संसार माहि छइ सहू सलभ, जिण सासण एक छइ दुर-लभ।—वस्तिग

सलभा-सं. स्त्री. [सं. शलभा] अत्रि ऋषि की पत्नी का नाम।

सलभासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक आसन जिसमें औंधा सोकर दोनों हाथों की हथेली छाती के नीचे दबाकर मुख को पृथ्वी से ऊंचा रखना होता है।

सलभी-सं. स्त्री. [सं. शलभी] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

सलभौ—देखो 'सलवौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सलभी)

सलमलदीप-सं. पु. [सं. शाल्मलिद्वीप] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात खण्डों में से एक खण्ड।

सलमौ-सं. पु.—टोपी, साड़ी आदि में बेल-बूटे बनाने के काम आने वाला सोने या चांदी का तार।

सलल—देखो 'सलिल' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—सिघ अजा सांमल सलल, पीवै इक थाळा। तसकर दवे उलूक ज्यूं, ऊगां किरणाला।—र. रू.

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)
उ०—बिहु छेह बांणावळी, सर पुडंग सळळी। अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी।—अ. वचनिका
सललणहार, हारी (हारी), सललणियौ—वि०।
सललिओड़ौ, सललियोड़ौ, सलल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सललीजणौ, सललीजबौ—भाव वा०।

सलळियोड़ौ, सललियोड़ौ—देखो 'सालुळियोड़ौ' (रू. भे.)

सळवट-सं. स्त्री.—१ शिकन, सिकुड़न, सिलवट।
उ०—नारी होय तौ फूल जावै मुरझाय मरद मुंछाळै री सेजां श्रो देवरिया सळवट ना पड़ै।—लो. गी.
२ चाबुक, कोड़ा।
रू. भे.—सिलवट।

सळवळ-सं. स्त्री.—१ रेंगने वाले जीवों के चलने की क्रिया या चलने पर शरीर की बनावट।
उ०—अेड़ौ लखावै कै म्हारा माथा में दस-बीस कांनसळाव अठी-उठी सळवळ सळवळ करै है।—फुलवाड़ी
२ आहट, ध्वनि।
उ०—भींडी डाकनै चोरां रै आवण री सळवळ सुणी तौ दोनूं ई जांणां जित्ता डरिया।—फुलवाड़ी
३ जनरव, कोलाहल।
उ०—खोड़ा रै ओळूं-दोळूं अड़थड़िया मिनख राजाजी रै पधारण री सळवळ सुणतां ई असवाड़ै पसवाड़ै ऊभग्या।—फूलवाड़ी
४ अफवाह।
५ स्फुरन, हलचल।
उ०—रूप रौ कोरौ हाकौ इज तौ नीं हौ। निजरां देख्यां सावळ जाच व्है। राजाजी रा मन मैं ई थोड़ी सळवळ माची।
—फुलवाड़ी
६ खातर, बंदगी, सेवा।
उ०—ऊभा पगां अनेक, केता नर सळवळ करै। पड़ियां पूठी पेख, पत तूं राखै 'पातला'।—ऊकजी बोगसौ

सळवळणौ, सळवळबौ, सळवळणौ, सळवळबौ—क्रि. अ.—१ रेंगना।
उ०—१ सळवळता कालिंदर नै ठाकर री आ वात खारी लागी।
—फुलवाड़ी
उ०—२ काळिंदर रै ई आ जुगत दाय आई। वौ सळवळतौ पिलंग सूं हेटै उतरचौ।—फुलवाड़ी
२ पैदा होना, उत्पन्न होना।
उ०—१ मूंडा मैं रांम-नांम रै बदळै लाळां सळवळण लागी। ठाकुरजी रौ औ परसाद तौ दैणौं संता रै हाथ हो।—फुलवाड़ी
उ०—२ अघोरी-बाबा रै मूंडै वांनै खावण सारू लाळां सळवळण लागी ई ही कै कंवर खूंजिया मांय सूं कागद काढनै सांम्ही करचौ।
—फुलवाड़ी
३ गतिमान होना, हिलना-डुलना।
उ०—आज ई वौ उण चितरांम रौ अणछक आणंद लूटतौ हौ कै मांचा रै नीचै कांई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूंनड़ी
४ कम्पायमान होना।
उ०—धर धसकीय सलवलीय, सेस गिरिवर टलटलीया।
—सालिभद्र सूरि
सळवळणहार, हारौ (हारी), सळवळणियौ—वि०।
सळवळिओड़ौ, सळवळियोड़ौ, सळवळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सळवळीजणौ, सळवळीजबौ—भाव वा०।

सळवळाट-सं. पु.—१ ध्वनि, आवाज।
उ०—आज ई वौ उण चितरांम रौ अणछक आणंद लूटतौ हौ कै मांचा रै नीचै कांई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूंनड़ी
२ रेंगने का ढंग।
३ विद्युत चमक।
(मि. सिळाव)

सळवळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ रेंगा हुआ. २ पैदा हुवा हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ. ३ गतिमान हुवा हुआ, हिला-डुला हुआ. ४ कम्पायमान हुवा हुआ।
(स्त्री सळवळियोड़ी)

सळवाट—देखो 'सिलावट' (रू. भे.)
उ०—लख समपै जु तै मांडिया लाखा, घाट सुकवि सळवाट घड़ै प्रसिध तणा प्रासाद न पड़ही, पाखांणिवा प्रसाद पड़ै।
—लाखां फूलांणी री गीत

सलवार, सलवार-सं. स्त्री.—१ पाजामे की तरह पहना जाने वाला एक वस्त्र, जिसके नीचे का हिस्सा बहुत संकरा होता है तथा कमर का हिस्सा बहुत बड़ा होता है। पहनने पर इसमें बहुत सिलवटें रहती है।
२ वह मादा ऊंट जिसके साथ उसका छोटा बच्चा भी होता है।
ज्यूं—आ सायंड सलवार है।

[illegible]—[illegible] भेद जिसकी [illegible] नहीं गई हो।

[illegible]—१ [illegible], [illegible], [illegible]।

२ [illegible], ढोला।

उ०—[illegible] हरिदास गोविंद बिहुन, तिन सिरि जम का हाथ। [illegible] सुंदर [illegible], [illegible] मनवा साथ।—ह. पु. वा.

३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] ओंमिन वानां गुणं घी। तिसा सळवा बैठा छै।
—जगदेव पंवार री बात

सळसळणौ, सळसळबौ, सलसलणौ, सलसलवौ–क्रि. अ.—१ हिलना-डुलना, हरकत करना।

उ०—१ मारवि [illegible] भाळि, सुंदरी काइ न सळसळइ। बोलाइ नहीं जा बाद्द, घण घणूणी ओटयउ।—ढो. मा.

उ०—२ सळसळिया आवी सहज, तन नींद मिटांणं। मन में मनवा [illegible], [illegible] मंडांणं।—गज-उद्धार

२ लचकना, डोलना।

उ०—१ सळसळै कमठ पीठ फण लचक सेसरा, दहल पड़ कंक [illegible] देस रा। पांण तज संक अनमी भरै पेसरा.......[illegible] सीस बंध कमर 'सगतेस'रा।—रांमलाल बारहठ

उ०—२ हयदळ गयदल पयदल मिलियो, चालंतां अहिपति सल-सलियो। सात सायर नो जल झलफलीयो, जायै किण ही नहीं [illegible]।—श्रीपालरास

३ तरंगित होना।

उ०—[illegible] साहणि चालतै हूंतै समुद्र सलिल सलसल्यां घाट घमघमी पाघरयाल वाजी।—व. स.

४ ढीला होना, पोला होना।

उ०—जलचर जीव आवी अहवणि वाजइं, सुकांणना बंध सलसल्यां [illegible] पूर, कुआथंभउ डोलइ।—व. स.

सळसळणहार, हारौ (हारी), सळसळणियौ—वि०।

सळसळिग्रोड़ौ, सळसळियोड़ौ सळसळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळसळीजणौ, सळसळीजबौ—भाव वा०।

सळसळियोड़ौ, सलसलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हिला डुला हुआ, हरकत किया हुआ. २ लचका हुआ, डोला हुआ. ३ तरंगित हुवा हुआ. ४ ढीला हुवा हुआ, पोलला हुवा हुआ।

(स्त्री. सळसळियोड़ी, सलसलियोड़ी)

सलसूत्र–सं. पु.—सलाह-सूत।

उ०—[illegible] व्यवहारिए वचन प्रतिष्ठासिउं कीजइ, दाणीसिउं [illegible] सलसूत्र साचवीइ.........।—व. स.

सलह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ सलह [illegible] गज अस पलांणां, 'जालण' जोगंद्र कीध [illegible]। [illegible] तणै पहना घन आंणां, वांका ढोवा घाट विनांणं।
—राव जलणसी री गीत

उ०—२ महवेचा वखौ करंतां 'मधकर', मछर तणां गढ मवली मांण। सोहड़ां गळै न ऊतरै सलहां, पमंगां नह ऊतरै पलांण।
—माधौसिंह महेचा री गीत

उ०—३ धस-पंख घमळ धीर धारण, निहंग तो डर केळ वारण। दुखळ-पंखी गुरड़ दारण, सलह साग सधीर।
—महाराजा गजसिंह री गीत

सलहटी—देखो 'सिलहटी' (रू. भे.)

उ०—पीतल लोह दांतरा जड़िया लाल सलहटी गदरा बिछाया थका।—रा. सा. सं.

सलहदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे.)

सलहपुर, सलहपूर—देखो 'सिलहपूर' (रू. भे.)

सलहिदार, सलहीदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे.)

उ०—सलहिदार हथियार लेइ आगई अवधारीय। संभाले सवि सेल मांहि भेजै चित धारीय।—प. च. चौ.

सलांम–सं. पु. [अ. सलाम] १ वंदना, नमस्कार, अभिवादन।

उ०—१ एवड़ छेवड़ ओलभा सरै विच सात सलांम।—लो. गी.

उ०—२ पंथी एक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलांम। जब थी हम तुम बीछड़ै; नयणां नींद हरांम।—ढो. मा.

क्रि. प्र.—करणी, लेणी।

मुहा.—१ सलांम सट्टै मियांजी नै नाराज क्यूं करणा=छोटी-मोटी साधारण बातों से ही अगर कोई खुश रहता हो तो उसे नाराज क्यों किया जाय।

२ सलांम करणौ=नमस्कार करना।

रू. भे. सिलांम, सीलांम

सलांम कराई–सं. स्त्री.—कन्या-पक्ष द्वारा वर पक्ष के लोगों को मिलन के समय दिया जाने वाला धन। (मुसलमांन)

सलांमड़ी—देखो 'सलांम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—अरक तेल छोडिया छोला, हरख नीम दे चामड़ी। मुरधर दानी देव थांनै, वरसां सात सलांमड़ी।—दसदेव

सलांमत–वि.—१ मांगलिक सम्बोधन।

उ०—१ पातसाह सलांमत! मोनूं नदी मांहे सूं वूडती नूं एकै सिसोदियै राणा रै भाई काढी छै।—नैणसी

उ०—२ तद नापै अरज करी—दीवांण सलांमत, राठोड़ां रै वैर रौ मांमलौ खरौ जोरावर छै। अर वळै वैर ही राव रिणमल रौ।—नैणसी

२ जो कुशल पूर्वक हो।

३ सुरक्षित।

४ जीवित, जिन्दा।

उ०—मात सलांमत पित मुआ, आवै नह आपांण। धांम धूम मिजनूं घटा, जै मावड़िया जांण।—बां. दा.

५ पूर्ण, पूरा।

६ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

सं. स्त्री.—७ मौजूदगी, उपस्थिति ।

रू. भे.—सलांमति, सलाबत, सलाबति, सलावती, सिलांमति, सिलांमती ।

सलांमति-सं. स्त्री.—१ सलामत होने की अवस्था या भाव ।

२ अच्छी तन्दुरुस्ती, उत्तम स्वास्थ्य ।

३ देखो 'सलांमत' (रू. भे.)

उ०—१ बीजै ठाकुरै वात विचारि अर राव भोज मेलियौ। कहाड़ियौ जु राजि पातिसाह जी सलांमति रावळौ साथ आइ आपड़ियौ छै। पर पहुँचण दीजै।—द. वि.

उ०—२ इण नूं ज्यूं कपड़ा पहिरावां त्यूं चहवचै मांहै गिरि पड़ै। ताहरां इण रौ मांमूं कहै रमण दियौ इण नूं। हमारा दोस नहीं। पातिसाही सलांमति मांमू आवण दिए नहीं।—द. वि.

रू. भे.—सलाबति, सलावती, सिलांमति ।

सलांमी-सं. स्त्री [अ. सलम+ई] १ प्रणाम या नमस्कार करने की क्रिया ।

उ०—अठाहूं असवार हुआ सौ विचमैं जिकै भोमिया हुता सरब सलांमी करी।—नैणसी

२ सैनिक प्रणाली से अस्त्र-शस्त्रों से अभिवादन करने की क्रिया ।

३ नित्य सेवा-चाकरी करने वाला ।

४ किसी बड़े माननीय व्यक्ति के आगमन पर बंदूकें या तोपें दागने की क्रिया या भाव ।

रू. भे. सिलांमी

सला'—देखो 'सलाह' (रू. भे.)

उ०—१ इण वात सारू नीं तौ कीं सला' लेवणी अर नीं इण माथै कीं विचार करणौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दीवांण जी तो पीहरै चळ्या, किण सूं सला' लेवै ।

—फुलवाड़ी

सलाई, सळाई-सं. स्त्री. [सं. शलाका] १ किसी धातु की बनी हुई कोई पतली छड़ ।

२ कपड़ा, जरसी आदि बुनने का उपकरण ।

३ दियासलाई की तीली ।

४ सालने की मजदूरी ।

५ पत्नी की बहिन, साली ।

उ०—लंबा गला री डावड़ी ढोला पड़ी जाजम रै मांय। ग्यांन हो तो ग्यांन करो ढोला नहीं तो सलाइयां नै करो सलांम ।

—लो. गी.

६ स्वर्णकारों का लोहे का बना औजार जिससे सोने के आभूषणों पर छनने का काम होता है।

रू. भे.—सिलाई ।

सळाउत-सं. पु.—१ पंवार वंश की एक शाखा ।

२ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति ।

सळाक, सलाक-सं. पु. [फा. सलाख] १ बाण, तीर ।

२ सर्प की गति के समान बिजली की चमक ।

उ०—१ सळाकां बीज मंगळा झळा सारिखौ, कहर जोगणिपुरां पड़ै कूटौ। बूकड़ा मंजर हंस काळिजा वेहरतौ, फोड़ि कुंवर पंजर सेल फूटौ।—करण महेचा रो गीत

उ०—२ भड़ै सनाहां भड़ालां भांण उगा व्है भळांका भाला। तसां वीजूंजळाका सळांका बीज तेम ।

— रावत हिम्मतसिंह रौ गीत

३ मांस लगी वह हड्डी का टुकड़ा जो मांस के साथ ही पकाया जाता है। (रा. सा. सं.)

४ सुरमा डालने की सलाई।

५ तिनका, तृण ।

६ रेखा, लकीर ।

रू. भे.—सलाख, सिळाक, सिलाक ।

सलाको-सं. पु. [सं. शलाका] १ लोहे की या लकड़ी की सलाई।

२ सुरमा लगाने की सीसे की सलाई ।

३ तीर, बांण ।

३ बर्छी, भाला।

५ छाता की तीली ।

६ नली की हड्डी ।

७ कोयल ।

८ दांत साफ करने की कूंची ।

९ जूआ खेलने का पांसा ।

सलाख—देखो 'सलाक' (रू. भे.)

सलाड़णौ, सलाड़बौ-क्रि. स.—१ मारना, पीटना ।

२ देखो 'सिलाड़णौ, सिलाड़बौ' (रू. भे.)

सलाड़णहार, हारौ (हारी), सलाड़णियौ—वि० ।

सलाड़िओड़ौ, सलाड़ियोड़ौ, सलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सलाड़ीजणौ, सलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सलाड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मारा पीटा हुआ ।

२ देखो 'सिलाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सलाड़ियोड़ी)

सलाज-वि.—लज्जावान, लजालु ।

उ०—१ पाजां छलि ढळ प्रघळ, सघळ बरसाल समाजां। ताव अलाजां तरस, सरस रण चाव सलाजां।—वं. भा.

उ०—२ वार वार ईम पूछतां, कुमारी थई सलाज। मुख मुलकी कहै तातनें, पूछण सुं स्यो काज।—श्रीपालरास

सलाजीत—देखो 'सिलाजीत' (रू. भे.)

उ०—तेल साहब लगावै, वंग सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तौ ही बुढापौ-वैरी लुक्यौ नीं चावै ।—दसदोख

सलाट, सलाड़, सलाठ-सं. पु. [सं. शिलापट्ट] १ दकन या जलाशे [illegible] या कोई इमारत ।

२ [illegible] (उ. र.)

उ०—[illegible] सलाट । माहीरा प्रतिग्रण [illegible] ।—[illegible]

३ [illegible] का नाम । (डि. को.)

४ [illegible] । (डि. को.)

[illegible]-सं. स्त्री.—बिजली री चमक ।

[illegible]-सं. पु. [सं. [illegible]] एक प्राचीन ऋषि ।

सलाबत—देखो 'सलामत' (रू. भे.)

सलाबति, सलाबती—१ देखो 'सलामत' (रू. भे.)

उ०—[illegible] राह उचारियो । [illegible] सलाबति मझि ऊमर, मीर सलाबत मारियो ।—सू. प्र.

२ देखो 'सलामति' (रू. भे.)

सला'वाज—देखो 'सलाहवाज' (रू. भे.)

सला'वाजी—देखो 'सलाहबाजी' (रू. भे.)

सलाभोलि-सं. पु. [सं. शलाभोलि] ऊंट । (डि. को.)

सलावरा—देखो 'साळाहेली' (रू. भे.)

सलाव—देखो 'सिळाव' (रू. भे.)

उ०—१ आभ विलूंबै धरण सूं, बीज सळाया लेह । कंथो कंकट दूर रह्यो, घण बरसंतै मेह ।—अग्यात

उ०—२ जठै स्याम धाराधर री लहर लेती संपा रा सळावां री सोभा पावण लागी ।—वं. भा.

उ०—३ पळादळ करती बीजळियां सळाया मारण लागी ।
—फुलवाड़ी

सलासूत-सं. पु. यौ.—१ राय, सलाह ।

उ०—१ पचां रा आदमी भेळा बैठ माहोमाह सलासूत विचारण लागा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ तठा उपरांत मरजी रा खास खवास सूं सलासूत विचा-रनै राजाजी दरबार में आया ।—फुलवाड़ी

उ०—३ अेक दिन चोवटा रा बांणिया भेळा होय सला-सूत विचारी ।—फुलवाड़ी

२ विचार-विमर्श ।

रू. भे.—सलाहसूत ।

सलाह-सं. स्त्री. [अ.] १ राय, सम्मति ।

उ०—१ सागे साथ लेय वहता राह करो सो आपरी सलाह कासूं छै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ जे आवै तो दूणो रिजक देऊं नहीं तो सलाह लेय फौज ऊपर चढ़नै मारूं ।—जयसिंह आंमेर रा धणी री वात

उ०—३ [illegible] धारनै म्हारी सलाह मं उणनै कोलेज [illegible] दी ।—अमरचूंनड़ी

क्रि. प्र.—लेवणी, देवणी, पूछणी, बताणी ।

२ विचार-विमर्श ।

उ०—सयाणा ज होय सो सलाह करे छै ।—नी. प्र.

[सं. श्लाघा] ३ प्रशंसा, सराहना । (उ. र.)

४ आत्माभिमान । (उ. र.)

५ चापलूसी । (उ. र.)

६ कामना, अभिलाषा । (उ. र.)

७ सेवा, परिचर्या । (उ. र.)

वि.—१ लाभ सहित, सलाभ ।

उ०—१ खानाणी खंडे खडग बळ खाधो, लाधो ओ ग्रद आज सलाह । कांधल कहे रुधियां केहर, साथ किसो तांइ किसो सनाह ।
—राव कांधल रो गीत

उ०—२ गो दिल्ली दूजो 'गजन', 'अजन' हुकम 'अभसाह' । उच्छव मुरधर ऊपजे, सब पुर हुए सलाह ।—रा. रू.

२ सुन्दर, अच्छा ।

रू. भे.—सला', सल्ला' ।

सलाहकार-सं. पु. [अ. सलाह+फा. कार] परामर्शदाता, सलाह देने वाला ।

सलाहवाज-सं. पु.—सलाहकार, परामर्शदाता ।

रू. भे.—सला'वाज ।

सलाहबाजी-सं. स्त्री.—सलाह देने का कार्य, परामर्श ।

रू. भे.—सला'बाजी ।

सलाहसूत—देखो 'सलासूत' (रू. भे.)

उ०—किला रै मांयनै सलाहसूत व्ही । तै व्हियो के एक माथो वढेला ज्यूं तीन ई भेळा वढेला, कांइ फरक पड़ै सो तीनूं नै ई आवण दो । तीनूं जणां किला रै मांयनै पूग्या ।—अमरचूंनड़ी

सलिता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—१ सुरग पतालि समंद सलिता रो, सिध तो हुकम मांहि जळ सारो ।—सू. प्र.

उ०—२ सलिता सिणगारी जे सधीर, वाहर सूरज री चढै वीर ।
—सू. प्र.

सलिताकंत-सं. पु. यौ—समुद्र ।

उ०—सायर गुणं गहीरं लहरि सुत लसत उजलं नीरं । मभि जळ जीव अनंत नमो, नमो सलिताकंतं ।—ऊमरदांन लाळस

सलिमुख—देखो 'सिलीमुख' (रू. भे.)

सळियळ-वि.—१ सम्पूर्ण, पूर्णरूपेण ।

उ०—कळियळ कूंपळ सारसी, नाजुक अळियळ नार । ऊभी फळि-यळ अंब तळि, सळियळ अंग सवार ।—पनां

२ देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—ऐसे बगीचूं कै बीच मैं सळियळ सरोवर कैसे । महाराजा बसंत की, फौज कै नीसांण जैसे ।—सू. प्र.

सळियोड़ौ—देखो 'सुळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सळियोड़ी)

सळियौ, सळियौ (स्त्री. सळी) १ घास फूस कंकर-पत्थर आदि से साफ किया हुआ।
२ सीधा, सरल।

सलिल-सं. पु. [सं.] जल, पानी। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—धारा तीरथ समंदौ, स्रोणी सलिल सुरंभ भरए।
—गु. रू. बं.
रू. भे.—सलल, सल्लील, सळियळ, सलिल, सळीयळ, सिलल।

सलिलचर-सं. पु [सं.] जल में विचरण करने वाले प्राणी, जलचर।

सलिलज-स. पु. [सं.] कमल।

सलिलजन्मा-सं. पु. यौ. [सं. सलिलजन्मन्] १ कमल, जलज।
२ जलचर।
३ कीचड़।
४ सिंघोड़ा।

सलिलनिध, सलिलनिधि-सं. पु. [सं. सलिलनिधिः] समुद्र, सागर।
उ०—उलट धरि द्यै तं तजै, सलिलनिधि संसार।—वि. कु.

सलिलपत, सलिलपति, सलिलपती, सलिलराज-सं. पु. [सं. सलिल-पति] १ समुद्र, सागर।
२ जल के देवता वरुण।

सलिलस्थलचर-सं. पु. यौ [सं.] जल व स्थल पर विचरण करने वाले जन्तु।

सलिलि—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

सलिलह्रद, सलिलह्रदय-सं. पु. [सं. सलिलह्रद] एक पुण्य तीर्थस्थान का नाम।

सलिलेंदर, सलिलेंद्र-सं. पु. [सं. सलिल+इन्द्र] १ जल के देवता, वरूण।

सलिलेस, सलिलेसर, सलिलेसुर, सलिलेस्वर-सं. पु. [सं. सलिल+ईश या ईश्वर] १ जल के देवता, वरूण।
२ समुद्र, सागर।

सलिवण-सं. स्त्री—एक प्रकार का पौधा जो डलिया बनाने के काम में अधिक प्रयुक्त होता है।

सळी, सळी-सं. स्त्री.—१ साही नामक जन्तु जिसके शरीर पर काँटे होते है।
२ घास, बांस अदि की नुकीली फांस।
उ०—सारा डेरां मैं भुरट रा कांटा खिंडता तिण सूं गुरज-बरदार दोरा होवता। सळी लागती सौ पाकती तिणसूं दुखी होय तुरक विदा होवता।—महाराजा पदम सिंह री वात
३ देखो 'सिळी' (रू. भे.)
उ०—सार की सळियां दो सूवा पींजरौ बणाऊं रे। पींजरां मैं आव सुवा हाथ सूं खिलाऊं रे।—लो. गी.
४ देखो 'सळो' (पु.)
ज्यूं—आ बाजरी सळी है।

सलीकाबंद, सलीकामंद-वि.—शिष्ट, सभ्य।

सळीकौ-सं. पु.—सहसा तथा रह-रहकर उठने वाली वह पीड़ा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई सी जान पड़े, टीस, चीस।
उ०—१ जच्चा रै पेट मैं सळीका हालता हा।—फुलवाड़ी
उ०—२ सळवळता काळिंदर नैं ठाकर री आ बात खारी लागी देह रै मांय सळीकौ उठ्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ उणरा बोल जांणै विस बुझ्या तीर। सुणतां ई काळजा मैं सळीका ऊठण लाग जाता। छवूं रांणियां उणरी छींयां देख्यांई थर-थर धूजती।—फुलवाड़ी

सलीकौ-सं. पु. [अ. सलीकः] १ शिष्टता, सभ्यता।
२ हुनर, लियाकत।
३ प्रबंध, व्यवस्था।
४ संधि, सुलह, समझौता।
५ आचरण, व्यवहार।
६ शऊर, तमीज।

सलीचौ—देखो 'सल्लीचौ' (रू. भे.)

सळींटौ, सळीटौ-सं. पु.—रेंग कर चलने वाला जन्तु विशेष।
उ०—१ सूर, खचर, खर, स्याळ, टोळ कुवां टट्टूड़ा। कांग, कोचरी कुरझ, गिरझ, गुरसां गग्घूड़ा। चील, चिड़ी, चमचेड़, ऊंदरा, सांप सळीटा। चक चूंदरियां चुळक, पियै जळ चंचळ चीटा।
—दसदेव
उ०—२ रात्री प्रचुर आरोग्य परिमळ, सोयां पुळसूं पावणी। सांप सळींटा विच्छु कांटा, माछर डंकी न आवणी।—दसदेव

सलीण-वि.—मुग्ध, मोहित।
उ०—वीण अलापी देख ससि, रयणी नाद सलीण। ससहर-म्रग-रथ मोहियौ, तिम हंस मेल्ही वीण।—ढो. मा.

सलीता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)
उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यूं सलीता सिंधु समाई।
—सुखरांमजी महाराज

सलीतौ-स. पु.—ऊंट पर सामान लादने के लिए जूट का बना लम्बा बड़ा थेला।
उ०—१ सलीतां कन्है भेंकवै प्रांण साहै, लियां हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै।—रा. रू.
उ०—२ सिलहैखांनौ सारौ गांठां कर सलीतां मैं घात लीयौ। सो खेलता करता सत्तासर आया।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ सलीतै वडुं, लदं ऊंट चलाए गिडुं। लारीलार कतारां हल्ली, काती जांण कुरज्झां चल्ली।—गु. रू. बं.

सलीपर-सं. पु. [अं स्लीपर] १ वह हल्के चप्पल जिनसे केवल पंजा ढका रहता है व ऐड़ी खुली रहती है।

२ [illegible] का बड़ा [illegible]।

३ [illegible] के नीचे बिछाया जाने वाला लकड़ी का लम्बा [illegible]।

सलीम-वि. [अ.] १ [illegible], [illegible]।

२ [illegible], [illegible]।

सलीमकोट-सं. पु.—वह स्थान जहां प्रतिष्ठित सामंतों को नजरबन्द रखा जाता था। (जोधपुर)

रू. भे.—[illegible], [illegible], सलेमकोट।

सलीमुल—देखो 'सिलीमुख' (रू. भे.)

सलीवट—देखो 'सलित' (रू. भे.)

सलीस-वि. [अ.] १ सिपाही।

२ [illegible], बहादुर।

सलुक—देखो 'सलूक' (रू. भे.)

उ०—[illegible] राखै सब पसु मरवं, मरेह केम तन-मंस। कहो तेम [illegible] करै, सो सलुक गोद संग।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

सलुणी—देखो 'सलूणी' (रू. भे.)

उ०—बिना वचन सुनि बोलै बैनां, सुभि सलुणं अपनै सैनां।

—अनुभववांणी

सलुळणी, सलुळबी—देखो 'सालुळणी, सालुळबी' (रू. भे.)

सलुळणहार, हारो (हारी), सलुळणियो—वि०।

सलुळियोड़ो, सलुळियोड़ो, सलुळयोड़ो—भू० का० कृ०।

सलुळीजणो, सलुळीजबो—भाव वा०।

सलुळियोड़ो—देखो 'सालुळियोड़ो' (रू. भे.)

सलूंभणो, सलूंभबो-क्रि, अ.—१ झूमना, लटकना।

उ०—[illegible] बिरद धकै नावां सुदि पळ गया, भड़ां घट छेक भड़वा सलूंभे।—मोतीराम आसियो

सलूंभणहार, हारो (हारी), सलूंभणियो—वि०।

सलूंभियोड़ो, सलूंभियोड़ो, सलूंभ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सलूंभीजणो, सलूंभीजबो—भाव वा०।

सलूंभियोड़ो-भू. का. कृ.—झूमा हुआ, लटका हुआ।

(स्त्री. सलूंभियोड़ी)

सलूंभो-वि.—[illegible], [illegible]।

उ०—'जसवंत' मरण 'तेजसी' जुटै, लूटै बोल सलूंभो। बाजी 'सोरठ' [illegible] दुवोई, 'ग्रजन' धणी कर 'ऊमो'।

—नवलजी लाळस

सलू-सं. पु.—१ [illegible], जो घास आदि की बालि के ऊपर होने वाले तीक्ष्ण तिनके, बाल।

२ कोई नुकीले घास का तिनका।

३ कांटा।

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] वचन सब, प्रजळ पीव हूं प्रांण। मां जाई करजे मतो, साळू सळू समांण।—रेवतसिंह भाटी

४ देखो 'साळू' (रू. भे.)

सलूक-सं. पु. [अ.] १ लोगों के साथ रखा जाने वाला मेल-मिलाप।

उ०—बांका राखै बांणियो, सारां हूंत सलूक। कदियक खीजै तो करै, वयण विलोणे चूक।—बां. दा.

२ व्यवहार, वर्ताव।

उ०—१ म्हारो कांम वैरी सूं लड़ाई रो बणै तो किण भांत सलूक करूं। किण तरह ग्रमल कर लड़णै री करूं।—नी. प्र.

उ०—२ तहकीक मोनूं मित्र प्रकट भाव सें तो इणां सूं कांई सलूक करूं।—नी. प्र.

३ शिष्टता, सभ्यता, अदब।

उ०—तदै जगदेव दरबार ग्रायो तिको वो सदुक रो बागो पहिरणै छै रूपीया १) री पाघ माथै छै कांनां हाथां मांहे कड़ा सु इसै सलूक सूं मुजरो कियो।—जगदेव पंवार री वात

४ विचार।

उ०—चांचल्य चित्त सिद्धांत चूक, सब सेखसली के है सलूक।

—ऊ का.

५ निभने या पार पड़ने का ढंग।

उ०—तरै जैतसी जी नीसासो मेल नै कह्यो—वहूजी साहिब काको सेखोजी कांम ग्राया तरै राजा सूंडा री वैर पहिरियो थो। सो दसराहो विण दिन २० में ग्रायो नै बोलरो सलूक दीसै नहीं छै। भायां में हासो होसी।—जैतसी ऊदावत री बात

६ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—धरती री वडो सलूक कियो। ग्रापरी जमीयत खरी कीधी।

—नैणसी

७ ढंग, तौर-तरीका।

रू. भे.—सलुक।

सळूझणो, सळूझबो—देखो 'सुळझणो, सुळझबो' (रू. भे.)

उ०—पाप क पांच एक रस रोकै, गोरख झड़ी सळूझै। जरणां झड़ी जोग जत, जांणै, सो या ग्ररथ ही बूझै।—ह. पु. वां.

सळूझणहार, हारो (हारी), सळूझणियो—वि०।

सळूझिग्रोड़ो, सळूझियोड़ो, सळूझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सळूझीजणो, सळूझीजबो—भाव वा०।

सळूझाड़—देखो 'सुळझाड़' (रू. भे.)

सळूझाड़ो—देखो 'सुळझाड़ो' (रू. भे)

सळूझाणो, सळूझाबो—देखो 'सुळझाणो, सुळझाबो' (रू. भे.)

सळूझाणहार, हारो (हारी), सळूझाणियो—वि०।

सळूझायोड़ो—भू० का० कृ०।

सळूझाईजणो, सळूझाईजबो—कर्म वा०।

सळूझायोड़ो—देखो 'सुळझायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सळूझायोड़ी)

सळूझावणौ, सळूझाववौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू. भे.)
सळूझावणहार, हारौ (हारी), सळूझावणियौ—वि०।
सळूझाविग्रोड़ौ, सळूझावियोड़ौ, सळूझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सळूझावीजणौ, सळूझावीजवौ—कर्म वा०।

सळूझावियोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सळूझावियोड़ी)

सळूझियोड़ौ—देखो 'सुळझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सळूझियोड़ी)

सलूणउ, सलूणड़ौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)
उ०—१ पंचसंद हुइ पेखणां ए, नाचइ नाटिक पात्र। गीत संगीत सलूणडा ए, सुणीइ स्वर सात।—कां. दे. प्र.
उ०—२ नयण सलूणउ लउसडंतु जउ वीवाह मनाविउ।
—राजसेखर सूरि

सलूणापण, सलूणापणौ-सं. पु.—सुंदर होने का भाव, मनोहरता, लावण्यता।

सलूणौ-वि. (स्त्री. सलूणी) १ नमक सहित।
उ०—हूं बलिहारी राणियां, जाया वंस छतीस। चून सलूणौ सेर लै, मोल समर्पं सीस।—वी. स.
२ सुन्दर, मनोहर, सलोना।
उ०—१ ऐक ऐक तै आगळी, निपट सलूणी नार। उदयापुर मैं सब यसी, अपछर कौ उणियार।—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ गळ वैजंतीमाळ, पीतांबर कट काछनी। हाथ लकुटिया लाल, सांम सलूंणा सांवरा।—ऊदोजी अड़ींग
उ०—३ जनहरिरांम सलूंणा साजन, देखुं दिल भीतर दीदारी।
—अनुभववाणी
३ अधिक, ज्यादा।
उ०—कमधज कछवाहां घरै, आयो अप 'अभसाह'। कोड सलूणा कूरमै, उर दूणा ओछाह।—रा. रू.
४ कान्तिमय, आभायुक्त।
उ०—खेतसीयोत 'विजो' जुध खागै, सूर सांमळौ दीठां सागै। 'लूणा' हर मुख जोस सलूंणै, देवावत 'अमरौ' बळ दूणै।—रा. रू.
५ स्वादिष्ट, जायकेदार।
६ प्रेमपूर्ण, प्यारयुक्त।
उ०—की व्है आगा कियां, हेत विहूणा हात। नैण सलूणा न मिळै, बाळ अलूणी वात।—अग्यात
७ मोहित करने वाला, मोहक।
उ०—१ रांम बनूं छै रूपाळौ नैण सलूणा झांकत ज्योढी, विच काजळ अणियाळौ। वय किसोर सब भांत सुहावै, सहज सलूणौ काळौ।—समांन बाई
उ०—२ लाग्यौ थांरै नैणां रै सलूंणौ, रंग लाग्यौ महाराज।
—मीरां
८ आसक्त, लीन।
९ सम्पूर्ण, समस्त, पूरा।
उ०—भद्रसाल लक्षण करि राजतउ भेटयां भव दुख जाय सलूणा।
—वि. कु.
१० पवित्र।
उ०—सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी सुमनस सेवित पाय सलूणा।
—वि. कु.
रू. भे.—सलुणौ, सलूंणउ, सलूणड़ौ, सलूनौ, सलोणौ, सलोनौ।

सलूधणौ, सलूधबौ-क्रि. अ.—समझना।
उ०—बाबा सिख मिलै बाथां सूं, थळ जाता सं हरख थुवौ। सिख बातां सूं नहीं सलूधा, हाथां सूं परमोद हुवौ।—बांकीदास वीठू
सलूधणहार, हारौ (हारी), सलूधणियौ—वि०।
सलूधिग्रोड़ौ, सलूधियोड़ौ, सलूध्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सलूधीजणौ, सलूधीजबौ—भाव वा०।

सलूधियोड़ौ—भू. का. कृ.—समझा हुआ।
(स्त्री. सलूधियोड़ी)

सलूधौ-वि.—समझवान, ज्ञानी।
उ०—लागा चित सूं कोई साध सलूधा।—केसोदास गाडण

सलूनौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

सलूभौ-वि.—लालायित, इच्छुक।
उ०—खांगीबंध खळ गयंद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ। सीह लड़ाकी लड़ण सलूभौ, डाकी ढह ऊभौ डाढाळ।
—महादांन मेहड़ू
रू. भे.—सरूभौ।

सलूर-सं. पु. [सं. सालूर] मेंढक।
उ०—जलासय नाद सलूरन जोर, मही पर गावत नाचत मोर।
—हिंगलाजदांन

सलेक-सं. पु. [सं.] एक आदित्य।

सलेदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे.)
उ०—खान खोजा मलिक मीरू बरा मलांणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमांन।—व. स.

सलेमकोट—देखो 'सलीमकोट' (रू. भे.)

सलेस-सं. पु. [सं. श्लेष] १ साहित्य का शब्दालंकार जिसमें ऐसे शब्दों की रचना होती है जिनके अर्थ एक से अधिक होते हैं।
२ मिलन, आलिंगन।

सलेसमा-सं. पु. [सं. श्लेष्मा] शरीर का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओं में से एक माना गया है।

सलेसी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

सलै'—१ देखो 'सिलह' (रू. भे.)
उ०—तिण काज आज बाहर तिकां, साजै थांसाहर सलै'। गैमरां खुलै झंडा गयण, घोड़ां पर पाखर घलै।—मे. म.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हुई गुण [illegible], [illegible]। मीनां नीनां [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]।—[illegible]

सलोर—देखो '[illegible]' (रू. भे.) ([illegible])

सलोतरा-सं. स्त्री. [सं.] पांच प्रकार के घोड़ों में से एक।

सलोरी-वि.—[illegible] युक्त, [illegible]।

उ०—[illegible] सीता नै [illegible] [illegible], भागवत सलोकी चतुर सांत। —चि. स.

सलोनो-वि.—१ [illegible], लूणीला।

२ [illegible]।

उ०—[illegible] [illegible] लीधा भाग नाळा मड़े, घुरं घड़े कछी रै [illegible] गिवै पूर। मंडै रांन लागां पाय वैवै बुरछी रै माथै, सलोणा तकै भागां मद्यी रै सम्प।—महादांन मेहडू

३ सुन्दर, मनोहर।

सं. पु.—घोड़े के साजसामान का एक उपकरण।

सलोनो, सलोनो-सं. पु.—१ श्रावण की पूनिमा को होने वाला पर्व, रक्षाबंधन।

२ देखो 'सलूणो' (रू. भे.)

उ०—इसो पिय जांण न दीनो है। स्यांम सलोणां लोयणां, मुख देख्यां जीजो है।—मीरां

सलोतर-सं. पु. [शालिहोत्री] घोड़ों की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक, शालिहोत्री।

सलोभी-वि.—१ लालच करने वाला, लालची।

२ इच्छुक, लालायित, इच्छावाला।

उ०—१ [illegible] जोन सोभा मढां मैं सलोभा, सदा सेत प्रांमै गैहलोत सोभा। सवै मंत्री व्यास प्रोहित गावै, हकारे कवी वाहता भाग हूंणै।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] [illegible] रण विरद सलोभा, सोभावत भाया दळ सोभा। 'दसो' भलो रिण लियो 'दयालो', वाघै रिण 'रंणायर' वालो।—रा. रू.

३ सरस, सुन्दर।

उ०—नाम सुणीजै नांम वत, नांम सलोभो कांम। एको अधकार [illegible], [illegible] सीरांम।—ह. र.

सलोमधि-सं. पु. [सं.] चंद्रवंशी राजा का पुत्र, एक राजा।

सल्क, सल्कल-सं. पु. [सं. शल्क, शल्कल] १ मछली का कांटा।

२ [illegible]।

३ भाग, टुकड़ा।

सल्तनत—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] [illegible] सुथांन, सल्तनत मुगल हुइ सावधांन। [illegible] सहर दौलत दराज, नाळा [illegible] इस्लाम नाज।—क. का.

सल्य-सं. पु. [सं. शल्य] १ मद्रदेश का एक राजा जो माद्री का भाई व नकुल का मामा था। (महाभारत)

२ कंटीली झाड़ी।

३ शस्त्रचिकित्सा।

४ सीमा।

५ एक प्रकार की मछली विशेष।

[सं. शल्यं] ६ कांटा।

७ कील, खूंटी।

८ हड्डी, अस्थि।

९ संकट, विपत्ती।

१० पाप, जुर्म।

११ जहर, विष।

१२ छप्पय छंद का ५८ वां भेद जिसमें १३ गुरु और १२६ लघु से १३९ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है, मतान्तर से।

१३ छप्पय छंद का ५६ वां भेद जिसमें १५ गुरु और १२२ लघु अर्थात् १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।

१४ देखो, 'सल' (रू. भे.)

सल्यअरी-सं. पु. यौ. [सं. शल्य+अरि] १ युधिष्ठिर। (डिं. को.)

२ भीम। (डिं. को.)

सल्यकार-वि. [सं. शल्यकार] १ शल्य चिकित्सा का अच्छा जानकार।

२ शल्य चिकित्सा करने वाला।

सल्यकी-सं. स्त्री.—वृक्ष लतादि। (सभा)

सल्यसुद्धि-सं. स्त्री.—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

उ०—जलतरण देहकरण सल्यसुद्धि सकुनसुद्धि रसायनचंदना कालवंचना।—व. स.

सल्ल-सं. पु.—१ घाव, जख्म।

२ चोट, प्रहार।

उ०—सेल घमोड़ां सल्ल, पड़ै मल्लां प्रति मल्लां। भल्लां भल्ला भणै, ऊगतां भड़ां अमल्लां।—ऊ. का.

३ फोड़े-फुन्सी या घाव आदि के ठीक होकर सूखने पर जमने वाली पपड़ी, खुरंट।

उ०—सिंधु परद्द सउ जोअणौं, नीची खिवइ निहल्ल। उर भेदंती सज्जणां, ऊचेड़ंती सल्ल।—ढो. मा.

४ दुर्विचार, दुष्ट विचार।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। चिंता तणी विण चिंता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल।

—ध. व. ग्रं.

५ छप्पय छंद का ५६ वां भेद जिसमें १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।

६ एक प्रकार का तीर।

७ पीड़ा, कसक, दुःख।

८ छाल।

६ मेंढक।

वि.—१ क्षत-विक्षत।

उ०—मत्ता जूझ लत्थी वत्थां धारा धोम गोम मंच्चै, धीर वाज खच्चै बींद नच्चै रुद्र धाड़। धाय सल्लां हौदां व्है छडाळां हूंत वीर घूमैं, रायसल्लां रौदां व्है हमल्ला हल्ला राड़।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ देखो 'सल' (रू. भे.)

उ०—१ नमौ मुर-मेघ मरद्दण मल्ल, कंसासुर काळ संखासुर सल्ल।—ह. र.

उ०—२ ढोलइ चलतां परिठव्यउ, अंगणि मोजां सल्ल। ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, सुया मनावण चल्ल।—ढो. मा.

उ०—३ सुदतारां भावै सदा, सुदतारां री गल्ल। अदतारा भावै नहीं, सुणियां व्है उर सल्ल।—बां. दा.

उ०—४ दूंद सुणै मगरै दिसा, सैद तणौ अत सल्ल। नूरमली जोधांण सूं, चढियौ भीड़ कगल्ल।—रा. रू.

सल्लकी-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

सल्लणौ, सल्लबौ-क्रि. अ.—१ क्षत-विक्षत होना।

२ देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुंझड़िया कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निस भर सज्जण सल्लिया, नयणे वूहा नीर।—ढो. मा.

उ०—२ दुरजणसाल नांम ही, ज्यां दुरजन कूं सल्लै। भाटी वीर अखाड़े मैं, मुराड़े सैं भल्लै।—रा. रू.

सल्लणहार, हारौ (हारी), सल्लणियौ—वि०।

सल्लिओड़ौ, सल्लियोड़ौ, सल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सल्लीजणौ, सल्लीजबौ—भाव वा०।

सल्लळणौ, सल्लळबौ-क्रि. अ.—१ सालना, खटकना, दर्द होना, कसकना।

२ निकलना।

उ०—हुई दौड़ हेमरां नरां ऊधरां करारां, सेख ज्वाळ सल्लळी कनां सिव चक्ख विकारां।—रा. रू.

३ लूटना, उजाड़ना।

उ०—सहंस ग्रांम सल्लळै, जळै परजळै प्रलै जिम। धूम व्योम धूंधळौ, तरणि भ्रम तोम सोम तिम।—रा. रू.

४ चलना, प्रस्थान करना।

उ०—१ आग्या पाय 'अजीत' री, लग्गा सूर धियागि। सिरि डेरा दळ सल्लळै, जळै प्रळै किरि आगि।—रा. रू.

उ०—२ मेड़तिया महाराज दळ, किया मुदै करतार। दूंद अमंदी सल्लळै, ज्यां हंदी तरवार।—रा. रू.

५ फैलना, व्याप्त होना।

उ०—वग्गा भड़ मेवाड़ रा, सीसोद्यां ग्रह सार। आठूं दिस कळ सल्लळी, चळाचळी संसार।—रा. रू.

६ छाना, मंडराना।

उ०—गुडै गयंद भल्ल ए, पहाड जांण चल्ल ऐ। हसत्त जूथ हींडळै क मेघ माळ सल्लळै।—गु. रू. बं.

सल्लळणहार, हारौ (हारी), सल्लळणियौ—वि०।

सल्लळिओड़ौ, सल्लळियोड़ौ, सल्लळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सल्लळीजणौ, सल्लळीजबौ—भाव वा०।

सल्लणौ, सल्लबौ, सल्हिणौ, सल्हिबौ—रू० भे०।

सल्लय-सं. पु.—वृक्ष विशेष। (सभा)

सल्लळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ साला हुआ, खटका हुआ, दर्द हुवा हुआ, कसका हुआ. २ प्रव्रत हुवा हुआ, निकला हुआ. ३ लूटा हुआ उजाड़ा हुआ. ४ चला हुआ, प्रस्थान किया हुआ. ५ फैला हुआ, व्याप्त हुवा हुआ. ६ छाया हुआ, मंडराया हुआ।

(स्त्री. सल्लळियोड़ी)

सल्ला'—देखो 'सलाह' (रू. भे.)

उ०—सल्ला स्यांम जायां ने, दीनी बलरांम। कासली खंडेलो भूमि, कांकड़ पै गांम।—शि. वं.

सल्लियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्षत-विक्षत हुवा हुआ।

२ देखो 'सल्लळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सल्लळियोड़ी)

सल्लीचौ-सं. पु.—सैनिक, घुड़सवार।

उ०—पब्बै वज्रपात जेम पोढियौ गैमरां पांच, सल्लीचौ हजार पोढै हेमरां समाथ। सतारा उमीरां सात हजार पोढाय सत्रां, 'भाराथ' री वीरभोम पोढियौ भाराथ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

रू. भे.—सलीचौ।

सल्लील—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—खळक्कै सदा नीझरां नीर खोळां, छळै कुंड अल्लील सल्लील छोळां।—मे. म.

सल्लै'—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सल्लेहणा—देखो 'संलेखणा' (रू. भे.)

सल्व-सं. पु. [सं. शल्वः] शाल्व देश का नाम।

सल्हिणौ, सल्हिबौ—देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू. भे.)

उ०—कूंझड़ियां कुरळाइयां, ओलइ बइसि करीर। सारहली जिउ सल्हिया, सज्जण मंझ सरीर।—ढो. मा.

सवं—देखो 'स्वयं' (रू. भे.)

सवंकति-वि.—वक्रतायुक्त, टेढी।

उ०—अतिकंध सवंकति याल अंग, सिव त्रिपुर मृतकि धनु व्याळ संग।—रा. रू.

सव-सं. पु. [सं. सवः] १ धन, द्रव्य। (अ. मा; ह. नां. मा.)

[सं. शव] २ लाश, मृतदेह।

उ०—आप अंत री समै पति रा दरसण करण नैं गई है तठै पति रा सव ऊपरै संवळी नै बैठी देख कहै है।—वी. स. टी.

[illegible]

[illegible] बात थारी मरजा, सो।

[illegible] ४०० [illegible] ४ [illegible] गोठी १

[illegible]

[illegible] हुवै रै

[illegible]

—[illegible] चोर री बात

[illegible]

[illegible] (ग्र. मा; हि. को.)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

११ [illegible], धोवार।

[illegible] [सं. [illegible]] १ [illegible]

उ०—[illegible] वरियउ प्राणि। सब जोवण [illegible] —ढो. मा.

२ [illegible]

उ०—[illegible], त्रिया [illegible] सिणगार। जिरा हिया [illegible] —ढो. मा.

३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१........[illegible] कोठार घातो उलगइं कि [illegible] सवं बसि कीधा, [illegible] सवै टालिया रिपु सवै [illegible]........ ।—व. स.

उ०—२ [illegible] सब [illegible]। [illegible] केहि : [illegible] —[illegible]

उ०—३ [illegible] सवै ही [illegible] री [illegible] बठै गयो [illegible] ठकुरै [illegible] घरै गयो।

—ठकुरै [illegible] री बात

उ०—४ [illegible] सवेपुन, जग चां सिमि [illegible] [illegible] सिमि [illegible]

[illegible]

[illegible]—[illegible]

[illegible]—क्रि. वि.—[illegible] (ह. र.)

[illegible]—सं. पु.—[illegible] नाम [illegible] एक [illegible]।

[illegible]

उ० [illegible] —ग. स.

[illegible]—सं. पु. [सं. [illegible]] [illegible] (हि. को.)

[illegible] (रू. भे.)

सवरा—१ देखो 'सुवरा' (रू. भे.)

उ०—१ श्राप असवार २०० सूं चढ़ चढ़िया। नीव नाहरां ४ नार री सवरा हुवौ।—नैरासी

उ०—२ ताहरां पाबूजी कह्यौ—सवरा किसा लेस्यां।—नैरासी

उ०—३ तद मारग में जावतां नूं सवण हुवा।—नैरासी

२ देखो 'स्वरा' (रू. भे.)

सवणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां सवणियां कह्यौ—जु थां घा बुरी कीधी, श्रोळ गणी।—नैणसी

उ०—२ तिसै जेसलमेर रो धणी भाटी राव लाखणसी एक दिन गोखै बेठो थो। तिसै सवणी बोलियो।

—बीरमदे सोनगरा री बात

उ०—३ तरै नींबै सवणी नूं पूछियो तरै सवणी कह्यौ—श्रो सवण यूं कहे छै।—नैणसी

सवणीगर—देखो 'सवनीगर' (रू. भे.)

उ०—धोबी सवणीगर न्यारारे नाई नीलगर पीनारा।—जगलाणी

सवणौ, सववौ—क्रि. स.—जन्म देना, उत्पन्न करना।

सवती-सं. स्त्री.—माता, जननी।

रू. भे.—सवती।

सवत्स-वि.—बछे वाली, जिसके साथ बच्चा हो।

उ०—जिमणी भइरव कलकलइ, डाबी दुरगा होइ। गो सवत्स साहमी मिलइ, गुहवि जाती सोइ।—मा. कां प्र.

सवद—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन सवद सति श्ररथ विचारै, गावस मन का मेल उतारै। सुरति संवाहि वसै निरधावै, सांच न छाड़ै झूठ न भावै।

—ह. पु. वा.

सवन-सं. पु. [सं.] १ स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत व बर्हिष्मती के एक पुत्र का नाम।

२ भृगु के सात पुत्रों में से एक।

३ वसिष्ठ ऋषि के एक पुत्र का नाम।

४ अग्निदेव का नाम।

५ रोहित मन्वन्तर के महर्षियों में से एक।

६ सूर्य, सूरज।

७ दक्ष सावर्णि मन्वन्तर के महर्षियों में से एक।

सवपुरी—देखो 'सिवपुरी' (रू. भे.)

सवमंदिर-सं. पु यौ. [सं. शव+मंदिर] १ श्मशान घाट।

२ समाधि।

३ देखो 'सिवमंदिर' (रू. भे.)

सवय-सं. पु. [सं. सवयस्] साथी, मित्र। (ग्र. मा; हि. को.)

वि.—समान उम्र का।

सवयती-सं. स्त्री. [सं. सवित्री] माता, जननी। (ग्र. मा.)

सवयस, सवयस्क, सवयस्य–सं. पु. [सं. सवयस्] १ सखा, मित्र । (अ. मा.)

२ सहयोगी ।

वि.—एक ही उम्र का, हमउम्र ।

सवयांन सं. पु. [सं. शवयान] शव ले जाने वाली अरथी, टिकटी ।

सवर–सं. पु. [सं.] १ दानवीर राजा शिवि ।

२ पड़िहार वंश की एक शाखा ।

३ धन, दौलत ।

[सं. सवरः] ४ शिव, महादेव ।

५ जल, पानी ।

६ देखो 'सबर' (रू. भे.) (डि. को.)

सवरण–वि. [सं. सवर्ण] १ समान वर्ण या जाति का ।

२ समान रंग का ।

३ समान रूप का।

४ देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

सवरणा–सं. स्त्री.—१ सूर्य की पत्नी का नाम ।

२ सागर एवं वेला के संसर्ग से उत्पन्न कन्या का नाम जो 'पचेतस' की माता थी ।

३ इन्द्रिय योगों आदि की अशुभ प्रवृत्तियों से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया ।

उ०—त्रूटी नाड़ि न की काज सरणा, करि सकइ तउ करि पहिली सवरणा। मरण तणा मत आंणै डरणा, ए जायइ देखि लघु वृद्ध तरणा ।—स. कु.

सवराणौ, सवराबौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सवराणहार, हारौ (हारी), सवराणियौ—वि० ।

सवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सवराईजणौ, सवराईजबौ—कर्म वा० ।

सवरायोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सवरायोड़ी)

सवरी–सं. पु. [सं. सौरि] १ शनैश्चर । (अ. मा.)

२ देखो 'सबरी' (रू. भे.)

सवळ–सं. पु. [सं. श्यामल] अंधेरा, अन्धकार । (अ. मा.)

वि.—१ सबल, जबरदस्त, जोरदार।

२ भयंकर।

उ०—सुरतांण प्रिथीराज अमरौ ए भेळा हुसी। भाटी मंडळी ही रामसिंघ जी साथि भेळौ हुसी। ताहरां वेढ सवळ होसी ।

—द. वि.

३ बहुत, अधिक ।

सवळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—वाहू चळी निरम्मळी, चख बींभळी सुरत्त। आजै करनल अक्कळी, सवळी रूप सगत ।—राव सेखौ

सवळौ–वि. (स्त्री. सवळी) १ पूरा, पूर्ण, समस्त ।

उ०—कोस तीन बीच पांणी सूं भरीजै, तद दस पनरै बांस पांणी चढै । पांणी निकळणरी ठौड़ को नहीं । सवळौ भरीजै तद हासळ इजाफा हुवै ।—नैणसी

२ देखो 'संवळौ' (रू. भे.)

सवसांन–सं. पु. [सं. शवसानः] १ यात्री, पथिक ।

२ मार्ग, रास्ता ।

[सं. शवसानं] ३ श्मशान ।

सवसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू. भे.) (अ. मा.)

सवसाधन–सं. पु. [सं. शवसाधन] श्मशान में किसी व्यक्ति के शव पर बैठकर अथवा उसे सामने रखकर किया जाने वाला साधन । (तांत्रिक)

सवहेक–वि.—सौ के करीब, लगभग सौ ।

उ०—१ दस दिनां रौ पीलू आसरौ छै। अर खरळां रा कुंवर असवार सवहेक घरां सूं चढीया ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ घोड़ौ जिकौ ४०० सौरौ छै, तिकैरा मांडै ४० छै । हजार रौ छै तेरौ सवहेक मांडै छै ।—नैणसी

सवांण–सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध बिना कठिनाई के प्रत्येक व्यक्ति निकाल सके । (विलो. कुठार)

वि.—भला, सीधा ।

उ०—हाट बसै भूखौ हसै, हाथ धरै कण हांण । कमर कसै जर केवटण, नंह तर सैज सवांण ।—बां. दा.

सवांणी—१ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सवाणी' (रू. भे.)

सवा–सं. पु.—१ डिंगल का एक गीत विशेष । (क. कु. बो.)

२ सम्पूर्ण और एक के चतुर्थांश का योग ।

वि.—सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश ।

उ० —१ टाबर-टोळी सवा रूपियौ रोकड़ौ अर नाळेर लेय-लेय नै हाजर व्हिया ।—अमर चूंनड़ी

उ०—२ जेठ अर देवर मिळ नै म्हारा सवा पुरस लांबा केस उपाड़िया तौ ई म्हैं नांव रौ भेद परगट नीं करियौ।—फुलवाड़ी

सवाई–सं. पु.—१ पुत्र, बेटा ।

उ०—'दूदा' हरौ 'विसन' वरदाई, समहर 'सूरजमाल' सवाई । चांपै सकतावत कळि चा'ळा, 'अभै' जतन आया आभाळा ।—रा. रू.

२ जयपुर महाराजाओं की उपाधि विशेष ।

३ किसानों को बुवाई के लिए अनाज देने की वह रीति या प्रथा जिसमें फसल पकने पर सवाया अनाज वापिस कर के रूप में देते हैं, ऊप ।

वि.—१ एक और चतुर्थांश के योग के समान, सवाया ।

उ०—१ अघोरी बाबा रौ अनूठौ गसकौ देख दोनूं जणां इचरज

नं बोरान नाला । बड़ा नीर मूं डे सवाई नांवी । जमीं मावै टिरै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ मिलो न देही केरि मिनावै, सौरि दूणी सवाई । वांगी वरं न मावै मून, दाऊद को थोह मुरझाई ।—ऊदो नैण

२ बहादुर, विजेता ।

उ०—१ मोरीमरि मग तेन सवाई, हुवै जियां हणमान हुवाई ।

—सू. प्र.

उ०—२ नगर सेठ मन ई मन माळा फेरण लागा के दीवांण जी में ना मूं डै सवाई धीतै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ रांणी ग्रेक कठी देखनै दूजी देखे —ग्रेक ग्रेक मूं सवाई । उनरज घर हूण री छेह नीं रह्यौ ।—फुलवाड़ी

उ०—४ जिकण नांम जैसींघ सवाई सोहियौ, निज द्विज रूप नगांम देस वीनित दियौ । पाळक प्रजा प्रवीप जनमनांई जांणियौ, पर महिमा नव लाग करज माफी कियौ ।—सिवबगस पाल्हावत

३ अधिक, विशेष ।

उ०—१ बांवळियां रै सोनल वरणा पीळा फूलां सूं गवाड़ी री छिब सवाई वधगी ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रानकरण घड़ै मांभी नगत ऊघरै, सांगड़ो चैन वाजी सवाई । कलोड़ा कपूतां तणां घट केवटै, भलोड़ा सपूतां तणा भाई ।—नैनकरण सांदू रो गीत

रू. भे.—सिवाई ।

सवाए—देखो 'सवायौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिण रांणी चवदै सुत जाए, सो पित हूंत तेज सवाए।

—सू. प्र

उ०—२ वरजतोत उरजन से अरि दळ के भ्राए । सूरसिंघ महा-सूर सिंघ तें सवाए ।—रा. रू.

सवारीन-सं. पु —परद्वीप नाम । (ममा)

सवाग सुवाग—देखो 'सुहाग' (रू. भे)

सवागण, सुवागण —देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—थैं तो ग्रोढो नी सवागण भागण नार. लायो छूं चोरंग चूंदड़ी ।—लो. गी.

सवागथाळ, सुवागथाळ —देखो 'सुहागथाळ' (रू. भे.)

सवागौ, सुवागौ—देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै म्हांनै सांमदांन कह्यौ—थै बाई सूं विगर मिळियां जावो मती, ग्रबै सवागा री सांमांन मेलियौ छै ।—जैतसी री वात

उ०—२ ग्रास्यां नूं सिरपाव सवागा दे नै राजलोक विदा कीधी ।

—स्यांमसुंदर री वात

सवाड़, सवाड़—देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सवाड़ौ, सवाडउ, सवाडौ-वि. [सं. सानुकूल:] १ अनुकूल । (उ. र.)

उ०— १ हुवै सवाड़ा सांइयां सब होय सवाद ।—केसोदास गाडण

उ०—२ सन्त-सिद्ध नव निध हुग्रा दह नवेंद सवाडा । मैं साजै-

परठि, सदा साजा दीहाडा ।—पृ. रू. वं.

२ देखो 'सवायौ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ उथापे दलो ऊमेद थापे यळा, सवाड़ा पवाड़ा भाग साथै । भ्रागि बूंदी घरां लिवंतां ऊपड़ी, सुराड़ा भड़ै ग्रांमेर माथै ।

—दुरजणसाल हाडा रो गीत

उ०—२ गजां ढाल पाड़ै जुड़ै गवाड़ै सवाड़ा गीत, रूकड़ा विभाड़ै रोदां ग्रखाड़ै ।—सारंगदेव रो गीत

उ०—३ सतम ग्रवसांण संपांण रहिया पकत, रीभियौ भांण दइवांण राजी । सिव सगत सवाडा ग्रखाड़ा सेल रा, गवाड़ै ग्रवाड़ा सुतन 'गाजी' ।—नाथौ सांदू

सवाणी-सं. स्त्री.—स्वर्णकारों का उपकरण विशेष ।

रू. भे.—सवांणी ।

सवाणौ, सवाणौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

उ०—वा'ला लागो हो जंवाई म्हांनै घणाई सवावै हो । ग्रो म्हारी कंवर बाई सा रा स्यांम जंवाई म्हांनै प्यारा लागो सा ।—लो. गी.

सवाणहार, हारौ (हारी), सवाणियौ – वि० ।

सवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सवाईजणौ, सवाईजबौ—भाव वा० ।

सवाद—देखो 'स्वाद' (रू. भे.) (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ हिंसा न करणी जीव री, तजवौ ग्रळा-वाद । ग्रणदीधी वस्तु लेवै नहीं, तजणा सरस सवाद ।—जयवांणी

उ०—२ मुरकी नै लाडू भला, पदडा सखर सवाद । ताजा ताजा देखतां, हरइं क्षुधित विखवाद ।—वि. कु.

उ०—३ वित जिम वांटै तिम वधै, है रीत ग्रनाद । कूवा हूं जळ काढियां, सौरां वधै सवाद ।—वां दा.

उ०—४ तरै रांणी पण दीठो, वात मांहे सवाद को नहीं । तरै रांणी कह्यौ—भली वात म्हारै वेर वाळण सूं हीज कांम हुतौ ।

—नैणसी

उ०—५ ग्रीं कहणौ यात ऊघरा करणां समभण रूवण गुणां सवाद । ग्रोठमजण 'वळवंत' ग्रापरो, ग्रघळो जस कीतै ग्रपवाद ।

—महाराजा वळवंतसिंह रो गीत

उ०—६ बावहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरगइ साद । प्रिय तिण रुति ग्राळिग रह्यां, ताह सूं किसउ सवाद ।—ढो. मा.

उ०—७ थांनै दोसण नीं दूं । ग्रो सेजां री सवाद ग्रैड़ो ई व्हिया करै । म्है ई इण सारू कळपूं ग्रर इण खातर ई थांरा पग पाछा पाछा पड़ै ।—फुलवाड़ी

उ०—८ कलंग परज कन्हड़ां, सुरां सवाद सुघड़ां । निवास गात नाळियं, विग्रांम मूळ ताळियं ।—रा. रू.

उ०—९ कांम कै घुघर जैसे जंत्र कै तार । पिनाकं का परवेज रखो मंडळं का सवाद । रंग की वरखा ग्रनगोजूं की नाद ।

—सू. प्र.

सवादक-सं. पु. [सं. स्वादक] १ दूध। (ह. नां. मा.)
२ अमृत। (ह. नां. मा.)
वि.—१ वह जो स्वाद लेता हो।
२ स्वादपूर्ण।
रू. भे.—स्वादक।

सवादी—देखो 'स्वादो' (रू. भे.)
उ०—१ सुणी कीरती छाकवाळै सवादी, बिनां नारि हालै नथी कील वादि।—वं भा.
उ०—२ मस्त महीनौ आवियौ रे जला, अब तौ खबर म्हारी लेह। तौ बिन घड़िय न आवड़ै रे, छैला जीव उठै इत देह। जलौ म्हांरी जोड़ रौ सेजां रौ सवादी रे।—लो. गी.
उ०—३ पांचू भोजन जूजवा चाहै, पांचं पांच सवादी। निळजी नारी कह्यौ न मांनै, अवरति आप मुरादी।—वील्होजी

सवादौ—देखो 'स्वाद' (रू. भे.)
उ०—विढतां घणी लगाई वेळा, समहर सूर सवादा। सुरभीयां साद करै सांगावत, रथी आवौ रायजादा।
—जैसिंघ नरूका रौ गीत

सवाब—देखो 'सबाब' (रू. भे.)
उ०—संसार मैं आवणौ जावणौ रौ बारणौ पड़चौ छै सही सवाब हुज रौ उण सूं मोल लै लेवौ।—नी. प्र.

सवामोतीदाम-सं. पु.—एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में पांच जगण होते हैं। (ल. पिं.)

सवाय—१ देखो 'सवायौ' (रू. भे.)
उ०—१ दळ मारू मेवाड़ दळ, ज्वाळा सेस सवाय। खबर तहव्वर खांन नूं, दी हलकारै जाय।—रा. रू.
उ०—२ म्हारी मोहरां गी, म्हारी मोबी बेटौ गियौ अर म्हैं झूठी बाजी जकौ सवाय मैं।—फुलवाड़ी
उ०—३ बस्ती अर कांकड़ मैं वौ आपरै हाथां हजारूं रूंखड़ा लगाय दिया। थांणा बणाय वगत माथै सगळा रूंखां नै पांणी पावणौ मांमूली बात नीं ही। रूंख रूंख रौ जाब्तौ अर रुखाळी सवाय मैं।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सिवाय' (रू. भे.)

सवायक-सं. पु.—सखा, मित्र। (अ. मा.)
वि.—अधिक, बढकर।
उ०—वियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघबाह वडौ वरदायक।
—र. रू.

सवायोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सवायोड़ी)

सवायौ-वि.—१ अधिक, विशेष।
उ०—१ सखी री अब मिगसर महीनौ आयौ, सबही कौ नेह सवायौ।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ सभै अचड़ां दळ सवायौ इण विध जेसांण आयौ। सभै तोरण चित्र साजा, जैत आगम महाराजा।—सू. प्र.
उ०—३ दोनां री आंख्यां तारा तारा रौ उजास सवायौ बधग्यौ।
—फुलवाड़ी
२ एक और चतुर्थांश के योग के बराबर।
उ०—नगरी को राजा हासल लेसी, कर गयौ कूंत सवायौ। टीडी! उडज्या ए खेत परायौ।—लो. गी.
३ विशेष, बढकर।
उ०—१ वा लुगाई झिरोखा रै सांम्ही मूंडौ करनै ऊभी तौ राजाजी री आंख्यां चूंधीजगी। बीजळी सूं ई सवायौ पळकौ पड़चौ। पछै राजाजी सूं उठै बैठणी नीं आयौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ अर उठी जांन रै डेरै अर मांडा मैं खुसियां री घमरोळ माची ही। जैंड़ी बींदणी बैंड़ौ ई बींद। दोनूं अेक दूजा सूं सवाया रूपाळा।—फुलवाड़ी
सं. पु.—१ सवाये का पहाड़ा। (गणित)
२ एक एवं चतुर्थांश का योग।
रू. भे.—सवाए, सवाय।
अल्पा;—सवाड़ौ, सवाडौ।

सवार-सं. पु.—१ वह व्यक्ति जो सवारी करने में दक्ष हो।
२ बचत।
उ०—महलां भुंजाई घी मण १२ लागतौ मोहिलणी घी सं २ तथा ३ मैं भुंजाई आंणी। एक दिन राव नुं कह्यौ—म्हैं थांहरै इतरी सवार कीधी।—राव रिणमल री वात
३ सैनिक, घुड़सवार।
उ०—१ जोय कटक अप जैत, सहर दैसांण सिधायौ। साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमां आयौ।—मे. म.
उ०—२ पड़चा रण जूझि सवार पचीस। वेळा उण आभ अड़चा भुज बीस।—मे. म.
४ वह जो किसी वस्तु पर बैठा हो।
[सं श्वः] ५ प्रातः, सुबह।
उ०—१ सुथार रौ बेटौ सूंगी दुकांनदारी रै अलावा अेक कांम वळै करतौ कै सवार सिझ्या दुकांन रौ सगळौ फूस बाईदी भेळौ करनै मूंणा मैं घाल माथै खांम देय देतौ।—फुलवाडी
उ०—२ सवार सिंझ्यां उणरी आरती करै।—फुलवाड़ी
उ०—३ बीजै दिन बेपोहर तांइ वेढ हुई। तिण दिन सवार रा वाजिया थासु दिन घड़ी ४ रह्यौ तोही पाछा न वळै।—नैणसी
उ०—४ सवार हुवौ तरै रावळ आपरौ साथ हलकनै टूट पड़ियौ।
—नैणसी
६ डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।
७ हेंगा, पटेला। (मि. चावर)

सवारणौ, सवारबौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—कूंता सवारण कर पर्छ, ढहिया सवारै ।—केसोदास गाडण

सवारणहार हारौ (हारी), सवारणियौ —वि० ।

सवारिग्रोड़ौ, सवारियोड़ौ, सवारयोड़ौ —भू० का० कृ० ।

सवारीजणौ, सवारीजबौ—कर्म वा० ।

सवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—१ नाज बिहूणा लोग्ग, नीच निगुण निसनेह । ग्राप सवारथ साधिनैं, निस्चय दीधौ छेह ।—वि. कु.

उ०—२ परमारथ को सब किया, ग्राप सवारथ मांहि । परमेस्वर परमारथी, कै साधू कलि मांहि ।—दादूबांणी

सवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू. भे.)

उ०—रासा बिनै विकार सूं, ग्राप सवारथी पर हुतौ । 'ग्रील्ह' कहै एक वीनती, विमन टाळि वेदांती ।—वील्होजी

सवारियोड़ौ—देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सवारियोड़ी)

सवारी-सं. स्त्री.—१ सवार होने का साधन या पशु ।

२ उक्त साधन पर सवार होने वाला व्यक्ति ।

३ सवार होने की अवस्था या भाव ।

४ यात्री, मुसाफिर ।

५ ऐसा जुलूस जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर कहीं ले जाई जाती हो ।

क्रि. प्र.—ग्रावणी, करणी, काढणी, निकळणी, होणी ।

५ कुश्ती में विपक्षी को गिरा कर उसकी पीठ पर बैठने की क्रिया या दांव ।

६ मैथुन के लिए स्त्री पर चढना । (बाजारू)

७ देखो 'सवारै' (रू. भे.)

उ०—च्यार घड़ी कै तड़कै मैं उठी ग्रै, पीस्यौ घड़ी दोय चून । सासड़ ग्राय विसराइयौ, बहुवड़ ! ग्रौ कांई पीस्यौ चून । ऊठ सवारी दळियौ दळै, सासू सूधली लड़ै, फोग ग्रालड़ौ बळै ।

—लो. गी.

सवारै, सवारै-क्रि. वि. [सं. श्वः] १ ग्राज के बाद ग्राने वाला दिन ।

उ०—१ तितरै सहसा रै खबर ग्राई कह्यौ—सवारै दिन ऊगतां पैहली वीरमदे थां ऊपर ग्रावै छै ।—राव मालदे री वात

उ०—२ तद मीयसी जी कह्यौ—जो सवारै ग्रायौ, थां मोनैं बोनायौ, तौ वात साची छै । नहीं तौ थाहरां लुगायां रा चिरत छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सवेरे, प्रातः ।

रू. भे.—सवारी, सवेरै ।

सवारौ, सुवारौ —देखो 'सवेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ सवौ हो सवारौ वीसलराय, भोज कुंवर हर्द चित लगाय ।—वी. दे.

उ०—२ दध पाजा टळी कना छिळियौ दळ, ताजा भड़ साजा है तंत । राजा ग्राज सवारा रहिया, बाजा कै ऊपर 'जसवंत' ।

—रघौ मुहतौ

सवाल-सं. पु. [ग्र.] १ वह जो कुछ पूछा जाय, प्रश्न ।

उ०—१ ग्रेड़ा नांढ सवाल पूछणियां नै पाछा इण भांत कई सवाल करूं तौ वै जवाब दे सकै कांई ।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई वळै सवाल करयौ—तौ बाप जी, ग्राप रात रा इत्ता सस्तर पाती सजाय सिध पधारता ।—फुलवाड़ी

उ०—३ कंवर ही जकी बात बताय दी । पण वौ तपसी तौ खोद खोदनै सवालां माथै सवाल पूछण लागौ कै राजा इण रांणी सूं कद परणीजियौ, कैड़ी है ।—फुलवाड़ी

२ पूछने की क्रिया ।

३ दरखास्त, मांग ।

४ निवेदन, प्रार्थना ।

५ हल करने के लिए दिया गया गणितीय प्रश्न ।

रू. भे.—सुग्राल, स्वाल ।

सवाळक, सवालख, सवाळख-सं. पु. [सं. सपादलक्ष] १ एक प्रदेश का नाम ।

वि. वि.—प्राचीन समय में वह प्रदेश जो चौहान वंशी क्षत्रियों के अधिकार में था । इसके ग्रन्तर्गत नागौर का प्रदेश, जयपुर का शेखावटी से लगाकर रणथम्भोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमें कोटा विभाग का उत्तरी भाग भी है, मेवाड़ का मांडलगढ से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बूंदी जिले का पश्चिमी ग्रंश किशनगढ का राज्य तथा ग्रजमेर का सारा प्रदेश था । ग्राधुनिक समय में प्रायः नागौर प्रदेश को ही सवाळख कहते है ।

२ नागौर प्रदेश ।

उ०—१ लड़वा चाव कमधजां लागौ, भूप सवाळख चौड़ै भागौ ।

—रा. रू.

उ०—२ ग्रति हित बोलायौ 'ग्रभौ', तुरत ग्रनुज 'बखतेस' । कमंधां पति ग्रादर कियौ, दियौ सवाळख देस ।—रा. रू.

२ सवालाख की संख्या ।

उ०—ग्रपणी खाटी संपति जगत कूं खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै ।—सू. प्र.

रू. भे.—सवालाख, सुवाळख, स्वाळक ।

सवाळख-पट्टी—सं. स्त्री. [सं. सपादलक्षपाटकः] प्राचीन काल का प्रसिद्ध चौहान राज्य ।

२ ग्रर्वाचीन नागौर प्रदेश का नाम ।

रू. भे.—सुवाळखपट्टी, स्वाळकपट्टी, स्वाळखपट्टी ।

सवाल-जवाब, सवाल-जवाब-सं. पु. [ग्र.] विवाद, बहस, तर्क-वितर्क ।

सवालाख—देखो 'सवालख' (रू. भे.)

उ०—म्हारी सवालाख री लूंब गम गई ईढांणी । इण ईढांणी रै

कारणं म्हारी जेठ कूटै पेट, गम गई ईढांणी । —लो. गी.

सवावड़—देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

उ०—सवावड़ तणी झूठी सरस, कूड़ी ग्राळ न कीजियै । कर जोड़ अरज थांसूं करां, लेखां बिनां न लीजियै ।—रमण प्रकाश

सवास—वि.—१ सिर से पांव तक, सिरोपाव । (वस्त्र)

उ०—सौ हजार द्रब थेलियां, मोती कड़ा सवास । गांम सवायो सांसणी, पायो गोरखदास ।—रा. रू.

२ देखो 'सुवास' (रू. भे.)

उ०—सुगंध गंधसार एणसार मेघसार ए । सवास अंबरं लुबान डंबरं निसार ए ।—रा. रू.

सवासक—सं. पु.—एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार लघु और एक भगण सहित कुल सात वर्ण होते हैं । (र. ज. प्र.)

सवासण, सवासन—सं. पु. [सं. शवासन] योग के चौरासी आसनों में से एक आसन जिसमें दोनों हाथों को सीधे पावों से सटाकर सीधे आकाश की तरफ मुंह करके सोना होता है । इसका दूसरा नाम मृतासन भी है । इससे श्रम दूर होकर विश्रांति प्राप्त होती है ।

सवासणी—सं. स्त्री. [सं. सुवासनी, स्व+वासिनी] १ अपने पिता के घर रहने वाली विवाहिता या अविवाता स्त्री ।

उ०—जठै वडां नै बडाई देसी दूणी सौ मांन सवासण्यां । जठै कुळ बहुवां नै आदर देसी, सासू नणद गुण मांनसी ।—लो. गी.

२ वह अविवाहित लड़की जिसकी उम्र १०-११ वर्ष से कम हो ।

वि. वि.—राजस्थान में ये अत्यन्त पवित्र एवं आदरणीय मानी जाती हैं तथा कई मांगलिक कार्यों पर इनकी उपस्थिति शुभ एवं मंगलदायक समझी जाती है ।

उ०—१ आरती होवै । आरती री मोहर सवासणी नूं दीजै । पछै सगळा मांणसां नुं पगां लगावै ।—नैणसी

उ०—२ पछै स्रीनागणेचीयांजी रै पांय लागै, आरती री मौर १ अेक सवासणी नै दीजै ।—नैणसी

३ पुत्री, बेटी ।

४ पुत्री की पुत्री, नवासी ।

५ बड़े भाई की लड़की, भतीजी ।

६ बहन की लड़की, भाणजी ।

मुहा.—थूं किसी दूबळी सवासणी है=अत्यन्त दुर्बल एवं निर्धन ।

रू. भे.—सव्वासणी, सवांणी, साउवांणी, सुग्रासणि, सुग्रासणी, सुग्रासिणि, सुग्रासिणी, सुवासणी, सुवासिणी, स्वासणी ।

सवासणो—सं. पु. (स्त्री. सवासणी) बहन-बेटी का पति या पुत्र ।

रू. भे.—सुग्रासणो ।

सवासो—सं. पु.—गणित में एक सौ पच्चीस की संख्या ।

उ०—नंदसाल जे गैणा वेच नांखतो तो सौ-सवासो रै लालच मैं दोनवां री इज्जत जांवती ।—दसदोख

सवि—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ भाद्रवडइं सवि सर भरिया, अेक निरंतर नीर । अह निसि अेकड़ली डरूं, धीर न दीइ को धरि ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ सुर नर पन्नग पणि वलो, लक्ष चउरासी लोय । ब्रह्मा हरि हर कुसुम-सरि, जिणि जीत्या सवि कोय ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ मंत्र तंत्र मणि ग्रोखधि, देव धरम गुरु सेव । भाव बिना तं सुवि व्रथा, भाव फलइ नित मेव ।—स. कु.

२ देखो 'सव' (४) (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सविकल्प—सं. पु.—१ किसी आलंबन की सहायता से की जाने वाली एक प्रकार की समाधि ।

२ ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान । (वेदान्त)

वि.—१ ऐच्छिक, पसंद का ।

२ संदिग्ध ।

३ वैकल्पिक ।

सविकार—वि. [सं. स+विकार] विकार सहित, दोषपूर्ण ।

उ०—ऐ संसार अनित्य, आदि सविकार उचारै, काळ अंत वस करै, धीर बळवंत न धारै ।—रा. रू.

सविचार—वि.—विचारपूर्वक, विचार सहित ।

उ०—वंदन अंग उपासकै, बलि ठाणांग मझार अग्यांनी । रायपसेणी मई कह्यउ, सूरीयांम सविचार अग्यांनी ।—वि. कु.

सवित—देखो 'सविता' (रू. भे.)

उ०—सांमत सहस सहंस किरण, तेज पुंज पौरसि प्रभित । गजसिंघ तेथ तत्तो थयो, जेथ थाय सीतळ सवित ।—गु. रू. बं.

सविता, सविताव, सवित्ता—सं. पु. [सं. सवितृ] १ सूर्य, सूरज ।

उ०—१ विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरंग तांणियं सविता । वासर विसाळ लहियं, चक-वांणं मंगळ भवण ।—गु. रू. बं.

उ०—२ वैरागवृद्धि, सूख बळ समृद्धि, निरभय निसांन, निरधन निधांन । देवादिदेव, सुर असुर सैव, राजाधिराज, सविता समाज ।—ऊ. का.

२ बारह की संख्या । * (डिं. को.)

३ पिता । (अ. मा; ह. नां. मा.)

४ विष्णु-भगवान् ।

५ बारह आदित्यों में से एक ।

सं. स्त्री.—६ पृश्नि की पत्नी का नाम ।

वि.—उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, उत्पादक ।

सवितापुत, सवितापुतर, सवितापुत्र—सं. पु. [सं. सवितापुत्र] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज एवं राजा कर्ण ।

सवितासुत—सं. पु. [सं.] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज, एवं राजा कर्ण ।

सवित्रि, सवित्री—सं. स्त्री. [सं. सवित्री] १ मां, माता ।

उ०—ब्रह्म हत्या रा बिलसणहार आपरा पुत्र नूं केड़ै करि म्हारा तो मत मैं स्वांमी री सवित्री रौ ही सासन समस्त रै सीस प्रमांणीजै ।—वं. भा.

[illegible]

सं. पु. [सं. सवितृ] १ सूर्य, सूरज।

४ शिव, [illegible]।

[illegible]।

[illegible]।

सवितानंदन-सं. पु. [सं. सवितृनंदन] सूर्य-पुत्र हरिणवाणिका का नाम।

सवित्रीदैवत-सं. पु. [सं. सवितृदैवत] जिसका स्वामी सूर्य है, हस्त नक्षत्र।

सविध-वि. [सं.] १ पास, समीप। (डिं. को.)

२ एक ही प्रकार का, एक ही तरह का।

सविभास-सं. पु. [सं.] सूर्य, सूरज।

सवियोड़ी-वि. स्त्री.—जिसने बच्चे को जन्म दिया हो।

सविवार, सविवारू-क्रि. वि. [सं. सर्व+वार] हर दिन, हर समय।

उ०—१ जलचर जीव वसइं जल मांहि, तै नवि छूटइं धीवर पाइ। जलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाभइं पुण तै सविवार।

उ०—२ पांणग पोखण महइं अपारू, अणि परि करम लिपइं सविवार। इम दृस्टांत वयण विचारि, आवइ कि नाखउं मनुस्य मझारि।—वस्तिग

उ०—३ परिग्रह भनीइ सइगह धारू, पुण्यवंत पालइं सविवारू। महाव्रत नउ न धरइं भार, बारव्रत नउ करउ अंगीकार।

—वस्तिग

सवियाण-सं. पु.—सिवाने का प्रदेश जो आजकल बाड़मेर जिले के अन्तर्गत है। (ऐतिहासिक)

सविसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू. भे.)

सविस्तर, सविस्तार-क्रि. वि. [सं. सविस्तार] विस्तारपूर्वक, विस्तार में।

उ०—समाचार सविस्तर कह्या, पिंगळराय हीय गह गह्या। छांना नितु पूछइ परधांन, रळियात थ्या चिति परधांन।—ढो. मा.

सविहूं-अव्यय. [सं. सर्वतस्] १ सब ओर से, सब तरफ से। (उ. र.)

२ सर्वत्र, चारों ओर। (उ. र.)

३ सम्पूर्णतः। (उ. र.)

सवीर—देखो 'वीर' (४७)

उ०—वाळां वांण वाजै गोळा चोसठा सवीर वकै, वाहा हरां भील भाजै छाजै धनां बोल। जठी जठी मार पड़ै मीरजां ओहटै जठी, नटी-नटी राजा आडो ओडजै मतोल।—अमरदास बारठ

सवेगौ-वि.—१ जल्दी, शीघ्र।

वि. वि.—इसका प्रयोग प्रायः शत्रु से बदला लेने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।

उ०—१ वेर सवेगौ वाळियौ, कमधज जेज न कीन। मेड़ अपत अड़ मांजरे, चांरी चारण कीन।—रा. प्र.

उ०—२ नापर करौ सवेगा चालौ।—रांमरासौ

२ तेज गति वाला, स्फूर्ती वाला।

उ०—तुरंगां सवेगां नरां जोस तैसौ, जगै नाग रूठै प्रळै आगि जैसौ।—रा. रू.

क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।

उ०—पेख इसौ अवसर पदमसिंह वर साधारै। इसा सवेगा उठिया मनु आसमांन उभारै।—गोरधन चारण

सवेध—देखो 'सुवेध' (रू. भे.)

उ०—रसीया रसि वेध्या रहि, भमर भमी रस लेइ। रसक सवेध न जांणता, तै नर जीवइं कांई।—प्राचीन फागु-संग्रह

सवेर, सवेर-अव्य.—प्रातः काल, सवेरे।

उ०—१ आगं देवलियै तणौ, थो ग्रहियो नाळेर। परणेवा जोग्रा-पति, मांगी सीख सवेर।—रा. रू.

उ०—२ सभ आयौ दर कूच सूं, असपत्ती अजमेर। गज गाजै नौबत गहर, वाजै संझ सवेर।—रा. रू.

सवेरियां-क्रि. वि.—१ ठीक समय पर, समय पर।

उ०—पिसंण पुहुंता आय इसकूं, कीजै चित सवेरियां। कांम रूप कुलछमी, पीव तोउ साथ ज तेरियां।—वाजिदजी

२ प्रातः होते ही, सवेरा होते ही।

उ०—थेह पुरांणां छोडि अयांणां, बाळदि लादि सवेरियां। जंगी आए पकड़ि चलाए, बारी पूणी तेरियां।—रैदास धतरवाळ

सवेरी-सं. स्त्री. [सं. स्वयंवृता] वह स्त्री जो पति की जीवितावस्था में किसी के फुसलाने या बहकाने से किसी अन्य पुरुष के साथ चली जाय।

सवेरै-क्रि. वि.—१ प्रातः काल।

२ देखो 'सवारै' (रू. भे.)

सवेरोराग-सं. पु. [सं. सवीरोराग] १ सिंधु राग।

उ०—ईख नरां नींदवां बचायो जीव दुहु ओरां, बारंगां बींदवां घोरां बचायी वीरांण। राटणी तवल्लां सोरां रचायो सवेरोराग, पाटणी हिंदवां गोरां मचायो पीठांण।—दुरगादत्त बारहठ

सवेरौ-सं. पु.—१ प्रातः काल, सवेरा।

उ०—१ अमल री विक लागी अटल, सुख लूटै वै सुलखणां। सवेरा सांझ दोनूं समै कांभकंभनै फुलखणां।—ऊ. का.

उ०—२ निरखण रो मोहे चाव घणां री, कब मुख देखूं तेरा। पिया मिळण कूं हुई हूं उदासी, मिळवूं मित सवेरा।—मीरां

२ ऊषाकाल।

रू. भे.—सवारौ, सवेर, सवेळू, सवेळौ।

सवेळू, सवेळौ-वि.—१ ठीक समय पर आने वाला।

२ देखो 'सवेरौ' (रू. भे.)

उ०—तुरंग सवेळा तंडियौ, हूं जांण्यो जळ-हेत। पुरण न रूतां परणियौ, मुणियो बंध सचेत।—रैंवतसिंह भाटी

सवेव–क्रि. वि.—वेग सहित, तेजी से ।
उ०—सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव ।
—रा. वं. वि.

सवै—देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—दुरग सवै आपणा कीधा, समुद्रलीग आपणी आंण फेरि ।
—व. स.

सवैइयौ, सवैयौ–सं. पु.—१ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में इकतीस मात्राएं होती हैं । चरण के अन्त में भगण होता है ।
२ डिंगल का एक गीत जिसमें दो-दो सगण के चार पद होते हैं तथा पांचवां पद सोलह मात्राओं का होता है । तुक पांचों पदों (चरण) में मिलती है ।
३ एक प्रकार का पिंगल या व्रज भाषा का वर्णिक छंद विशेष ।
४ गणित में सवाया का पहाड़ा ।

सवोळी–वि.—श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—सोभै मुरधर वार सवोळी हुवौ वसंत जोधपुर होळी ।
—रा. रू.

सव्य–सं. पु. [सं.] १ चंद्रग्रहण या सूर्यग्रहण का एक प्रकार का ग्रास ।
२ बांया ।
३ अगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि ।
[सं. सव्यं] ४ बांए कंधे पर रखा हुआ यज्ञोपवीत ।
५ विष्णु ।
वि.—१ बांया ।
२ दक्षिणी, दक्षिण का ।
३ उलटा, विपरीत ।

सव्यचारी–सं. पु. [सं.] अर्जुन का एक नाम ।

सव्यभिचार–स. पु. [सं. सव्यभिचार:] न्यायदर्शन के पांच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक ।

सव्यसाची–सं. पु. [सं. सव्यसाचिन्] अर्जुन का एक नाम ।
(ह. नां. मा.)
वि. वि.—दोनों हाथों से समान रूप से बाण चलाने के कारण अर्जुन का यह नाम पड़ा ।
रू. भे.—सवसाची, सविसाची ।

सव्यसिव्य–सं. पु. [सं.] विप्रचित्ति एवं सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न एक सैंहिकेय राक्षस ।

सव्याज–वि. [सं.] चालाक, धूर्त ।

सव्यासव्य–वि.—बांये-दाये ।

सव्येस्ट–सं. पु. [सं. सव्येष्ट्] सारथी ।

सव्व—देखो 'सरव' (रू. भे.)
उ०—१ सव्वे भला मासड़ा, पण वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रुंखड़ा, तीह माथइ फुल्ल ।—वाग्विलास
उ०—२ अनूप भूप चुंप धारि आइ पाइ लग्गए । पहू बहू सुकित्ति नित्त सव्व, सोभा लायक ।—ध. व. ग्रं.

सव्वरिय, सव्वरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे.)
उ०—रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नहु निसहि । जिणेसर नं दिन दोसा समय बलि न सव्वरिय विसरूह ।—ए. जै. का. सं.

सव्वाल–सं. पु. [सं. शव्वाल] १ अरबी महीनों में दसवां महीना ।
२ देखो 'सवाल' (रू. भे.)
रू. भे.—सव्वाल ।

सव्वासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

सव्वोसही, सव्वोसहीलब्धि, सव्वोसहीलब्धी–सं. स्त्री. [सं. सर्व] वह शक्ति जिसके धारणकर्ता के समस्त अंगोपांग ओपधि-स्वरूप होकर संसारोपयोगी हो जाते हैं ।
उ०—केसनखरोम सहु अंग फरसै सही, रहै नहीं रोग सव्वोसही तै कही ।—वृस्त.

ससंक–सं. पु.—रोग, बिमारी । (अ. मा.)
वि. [सं. सशंक] १ भयकारी ।
२ भयावह, डरावना ।
३ देखो 'ससांक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

ससंकणौ, ससंकबौ–क्रि. अ.—शंकित होना, भयभीत होना, डरना ।
ससंकणहार, हारौ (हारी), ससंकणियौ—वि० ।
ससंकिओड़ौ, ससंकियोड़ौ, ससंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
ससंकीजणौ, ससंकीजबौ—भाव वा० ।

ससंकियोड़ौ–भू. का. कृ.—शंकित हुवा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ ।
(स्त्री. ससंकियोड़ी)

सस, ससउ–सं. पु. [सं. शश] १ खरगोश । (डिं. को.)
उ०—१ सस सिकार तीतर सुभट, कुरजां चिड़ी कबूतरा । भार्या सुं नित उठ भिड़ै, परम धरम रजपूत रा ।—ऊ. का.
उ०—२ दव तौ लागौ छै राजाजी वन मधै, हिरण ससादिक बळै माय । ऊला माला रौ हो पंखी देखनै, मन मांहे हरसित थाय ।—जयवांणी
उ०—३ आडै फट वट पड़ै अपारां, आगै पाछै पार न आरां । अग मूझै सांभर सस माहै, सिध न जाय सकै वळ साहै ।
—रा. रू.
रू. भे.—ससौ, सस्सौ ।
अल्पा;—ससलौ, ससियौ, ससिलउ, सुसकल्यौ, सुसलौ, सुसल्यौ, सुसियौ ।
२ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक भेद ।
३ कुशलक्षेम । (ह. नां. मा.)
४ चन्द्रकलंक ।
५ लोध्र वृक्ष ।
६ गन्धरस ।

७ छः की संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—६।

वि.—१ अनुकूल, पक्षीय, पक्ष का।

उ०—इण तरह जबाब सवाल घणां हुवा सो सगळा मुत्सद्दियां बैठा सुणी पण सस रुख किण री न कीवी, सारा डेरां आइया।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ छः।

३ देखो 'सस्य' (रू. भे.)

उ०—घणि-सस जणि-यण घण वलय, हणै सुहड़ कर हांम। चौरंग मैं चंद्रहास री, विरथ होय वदनांम।—रैंवतसिंह भाटी

४ देखो 'ससि' (रू भे.) (डि. को.)

उ०—१ उं अंतरजांमी वार नमांमी, स्वांमी जय साधार। जोड़ी निरंजीव पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार।—र. ज. प्र.

उ०—२ वर्णं दसण तेज ब्रहमांणं, आतस नेत्र वर्णं सस भांणं। गंज्या तेज मुंहारा सोहै, मारुत तेज स्रवण मन मोहै।
—मा. वचनिका

५ देखो 'सीसौ'

उ०—रथ रथ पोहर थकत होय रहियौ, नमौ नमौ चतरंग नरेस। जुगां न जाय नांम सस जड़ियौ, पडियौ तौ चडियौ पंडवेस।
—महारांणा वडा अडसी री गीत

ससइ—सं. स्त्री. [सं. श्वसिति] १ सांस लेने की क्रिया। (उ. र.)

२ आह भरने की क्रिया। (उ. र.)

ससक—सं. पु. [सं. शशक] खरगोश।

ससकणौ—वि. [सं. श्वासक्रांत] (स्त्री. ससकणी) श्वास रोग से पीड़ित।

ससकणौ, ससकबौ—क्रि. अ. [सं श्वासक्रान्त] १ तेजगति से सांस लेना, हांफना।

उ०—पे तरफ भड़ वेढिग रा, जूटा हंगामी जंगरा। धम मसक धरणी कसक क्रूरम, ससक नासा सेस।—र. रू.

२ तरसना, आह भरना।

३ असह्य वेदना या पीड़ा के कारण मुंह से आह निकलना, कराहना।

उ०—१ दादू तळफै पीड़ सौं, विरही जन तेरा। ससकै सांई कारणैं, मिळ साहिब मेरा।—दादूवांणी

उ०—२ आगै आई देखै तो घोड़ा कायजै कियां फिरै छै अर असवार नहीं। जणा जणा ससकता लाधा।—नैणसी

उ०—३ सेमी जो सेत में ससकै छै।—नैणसी

४ श्वास रोग के कारण तेज श्वास लेना।

५ गहरी धूप के कारण जानवरों द्वारा जल्दी-जल्दी सांस लेना, हांफना।

६ विरहावस्था में सिसकना।

७ आनन्द या रति-क्रिड़ा के समय मुंह से सांस खींचना।

ससकणहार, हारौ (हारी), ससकणियौ—वि०।

ससकिओड़ौ, ससकियोड़ौ, ससक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ससकीजणौ, ससकीजबौ—भाव वा०।

ससक्कणौ, ससक्कबौ, सिसकणौ, सिसकबौ—रू० भे०।

ससकारौ—देखो 'सिसकारौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—दस दस पास खवासी दासी, चंगै वदन ओढियां चीर। सस-वदनी नांखै ससकारा, मीरां कहां हमारा मीर।—सुंदरदास बिहू

ससक्कणौ, ससक्कबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)

उ०—ससक्कै नगारबंध लटक्कै नागरा सीस, भांगरा अंगार तोपां भटक्कै अवाज।—भीमसिंघ चूंडावत री गीत

ससक्कियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ससक्कियोड़ी)

ससगांणी—सं. पु. [फा. शश] चांदी का एक सिक्का जो फिरोजशाह के समय में प्रचलित था।

ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतौ—देखो 'ससिगोति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—गज केवांण वड़ा ससगोती, रिध सांसण बगसै भुजराज।
—क. कु. बो.

ससटम, ससटमौं—वि. [सं. षष्ठम] छठा।

उ०—काळ पंचमौ जांन, वटै ससटमौं वखांणै। सुरी सपत मैं थांन, असट काळंजर जांणै।—गज-उद्धार

ससणौ—सं. पु. [सं. श्वासक्रांत] (स्त्री. ससणी) श्वास रोग से पीड़ित।

उ०—हांसी बांसी सी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वै दसणी सारै।—ऊ. का.

ससणौ, ससबौ—क्रि. अ. [सं. श्वसिति] १ श्वास लेना। (उ. र.)

२ आह भरना। (उ. र.)

ससणहार, हारौ (हारी), ससणियौ—वि०।

ससिओड़ौ, ससियोड़ौ, सस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ससीजणौ, ससीजबौ—भाव वा०।

ससत—क्रि. वि.—१ निःसंदेह, सत्य ही।

उ०—दधि विणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति किसुक मुख भाग-वत।—वेलि

२ कुशल, खैरियत। (ह. नां. मा.)

ससतर—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ पछै रावळजी ससतर सझ आदमी हजार पांच सूं गांव राजोवाई राव जी सीलूणकरण जी रा डेरां पर आया।—द. दा.

उ०—२ थांनै माहरी दुआइती है सो थांरा ससतर भलांई वाहलो अनैं औ हूं एकली थांरै सांमनै आयनै खड़ी हूं।—बी. स. टी.

ससतरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे.)

ससतौ—देखो 'सस्तौ (रू. भे.)

उ०—१ मारवाड़ मलांणी मगरै, खोखो चोखो मेवड़ो। सूकौ

ससती देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवड़ौ।—दसदेव

उ०—२ ससती मिळै पुनसूं पड़ै, देव वितरण करावणा। चिर-याचित अभिमत प्रसादी, मुरधर बाळक ल्यावणा।—दसदेव

(स्त्र. ससती)

ससत्र—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.) (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सालुळै विदळ कंदळ ससत्र, रंगसेल खगे न मिटै रगत्र। —रा. रू.

उ०—२ स्रंगार साजि मंगै ससत्र महाराज मंडोवरै।—रा. रू.

उ०—३ चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखध मंत्र तंत्र सुवि। काया कजि उपचार करंता, हुए वेलि जपंती हुवि। —वेलि.

ससत्रअतोल—सं. पु.—वज्र। (अ. मा.)

ससत्रक—देखो 'सस्त्रक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

ससत्तरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे.)

ससदळ—सं. पु.—अर्द्ध चँद्रमा।

उ०—चंदवदण अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाळ।—ढो. मा.

वि. वि.—प्राय: इसकी उपमा ललाट से दी जाती है।

ससधर—सं. पु. [सं. शशधर] १ चँद्रमा, चाँद। (डिं. को.)

२ कपूर। (डिं. को.)

रू. भे.—ससहर, ससियर, ससियळ, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सस्सिहर।

ससनूर, ससनूरौ—देखो 'सनूरौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभूना गुण प्रबल पडूर रे कहै विनय चंद्र ससनूरि। —वि. कु.

उ०—२ योगि ध्यावै युक्ति सूं, भक्ति कर भरपूर। संपै तेहनै व्यक्ति गुण, सक्ति सहित ससनूर।—वि. कु.

ससनेह—वि.—स्नेह-पूर्वक, प्रेमपूर्वक।

उ०—१ तै सुख विलसै दंपती, विविध परै ससनेह। मास घड़ी सम लेखवै, जिम दोगंधक देह।—वि. कु.

उ०—२ हिव तास प्रसंगइ जेह, तै पिण कहीयइ ससनेह। उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अंत पणइ व्यभचार।—वि. कु.

ससनेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—१ ससनेही समदां परै, बसत जु हियै मझार! कुसनेही घर आंगणै, जांण समदां पार।—अग्यात

उ०—२ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रहै रस लाइ। चिहु पहरे चटकउ कियउ, बैरण गई बिहाइ।—अग्यात

ससपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

ससप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.) (अ. मा.)

ससविंद, ससविंदु—सं. पु. [सं. शशबिन्दु] १ भगवान् विष्णु।

२ यदुवंशीय राजा चित्ररथ के पुत्र का नाम जिनके पास दस हजार पत्नियां व चौदह अमूल्य रत्न थे। इनकी पुत्री विंदुमती से अयोध्यापति मांधाता का विवाह हुआ था।

ससभ्रत—सं. पु. [सं. शशभ्रत] १ चन्द्रमा, चाँद।

२ कपूर।

ससमत्थ, ससमाथ—१ देखो 'ससिमाथ' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ क्रत करण अकरण अन्नथां करण, सगळै ही थोकै ससमत्थ। हालिया जाइ लगाया हूंता, हरि सालै सिरि थापै हत्थ। —वेलि.

उ०—२ मिळ 'जोधा' 'ऊदा' कमध, मेड़तिया ससमाथ। 'करनौता' चांपां कनै, भल कूंपा भाराथ।—रा. रू.

उ०—३ मुगल तुंग चढ़ै ससमाथां, सेन हड़व्वड़ एकण साथां। —रा. रू.

उ०—४ सुंदर तणौ साहिबौ साथै, मांगळियौ आगळ ससमाथै। —रा. रू.

ससमाद, ससमादचक, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाधचक, ससमाधचकर, ससमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)

ससमौ—वि. (स्त्री. ससमी) १ कटिबद्ध, सन्नद्ध या तैयार।

उ०—१ कह्यौ—अठा आगै नहीं जावां। फोज सूं लड़ाई करस्यां ताहरां साथ अपूठौ घिरियौ। राजपूत ससमा हुआ।—नैणसी

उ०—२ सुत नाथ समाथ धुजा ससमां, करगां वळ 'ऊदळ' रूप कमां।—रा. रू.

२ सहानुभूति।

३ देखो चसमौ' (रू. भे.)

ससमौलि—सं. पु. [सं. शशिमौलि] शिव, महादेव।

ससरंग—सं. पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं। (क. कु. बौ)

ससर, ससरत, ससरित—१ देखो 'सिसिर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—अजर जरण रण असह दन जद ससर सम वडरह। लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथध कह।—र. ज. प्र.

२ देखो 'ससि' (रू. भे.) (अनेका.)

ससरम, ससरमा—देखो 'सुसरमा' (रू. भे.)

ससरौ—देखो 'ससुर' (रू. भे.)

ससलौ—देखो 'सस' (अल्पा; रू. भे.)

ससवापण, ससवापणौ, ससवापणौ—सं. पु.—१ कान्ति, ओज, आभा।

उ०—धीरै-धीरै हळकी ललाई अर ससवापणौ पाछौ उणियारै ऊपर आयौ।—वरसगांठ

२ स्वस्थता।

३ वैभवता।

ससविंद, ससविंदु—सं. पु. [सं. शश:+बिन्दु:] १ चन्द्रमा, चाँद।

२ विष्णु।

[illegible]—१ [illegible], निर्भीक।

२ [illegible]।

[illegible] पु.—[illegible]। (डि. को.)

([illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.) (अ. मा.)

[illegible] पु.—[illegible], [illegible]। (अनेका.)

[illegible] स्त्री. [सं. [illegible]] गंगा और यमुना के मध्य का [illegible]।

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] नाम [illegible], [illegible] सभा मक्क बैठो आवे।

—लो. गी.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—[illegible] भुजंग, कटि [illegible] सम खीण। मुख [illegible] कंठ चोज।—अग्यात

ससांक-सं. पु. [सं. शशांक] १ चन्द्रमा।

उ०—[illegible] करत निगम निज, [illegible] करत प्रवेस। आतुर [illegible] ससांक ज्यों, [illegible] हुँस।—ना. रा.

२ कपूर।

रू. भे.—ससंक।

ससांकज-सं. पु. [सं. शशांकज] चन्द्रमा का पुत्र, बुध।

ससांकसेखर-सं. पु. [सं. शशांक शेखर] शिव, महादेव।

ससांकसुत-सं. पु. [सं. शशांकसुत] चन्द्रमा का पुत्र, बुध।

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

ससांम्हो-क्रि. वि.—सम्मुख, सामने।

उ०—केई तो [illegible] नूं कहै—दारिया कपूत अजूं ससांम्हा नहीं [illegible], [illegible] नहीं आवता पीठे गया छै।

—प्रतापमल देवड़ा री वात

ससा-सं. स्त्री [सं. स्वसा] बहिन, भगिनि।

उ०—[illegible] ससा [illegible] रमे, निरलज सुपनखा [illegible]।—र. रू.

रू. भे.—सिस।

ससाद-सं. पु.—[illegible]। (अ. मा.)

ससादन-सं. पु. [सं. [illegible]] १ श्येन पक्षी, बाज। (डि. को.)

२ [illegible] के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

ससि-सं. पु. [सं. शशिन्] १ चन्द्रमा, चांद।

(अ. मा; ना. मा; डि. को.)

उ०—१ [illegible], प्रीतम बिन [illegible] खीण। वीण [illegible], [illegible] बीण।—अग्यात

उ०—२ [illegible] जाय [illegible] छबि जोन। निस [illegible] भोन।

—[illegible]

२ कपूर।

३ टगण को छः मात्रा के दसवें भेद का नाम ।।ऽ।। (डि. को.)

४ टगण के छः मात्रा के दूसरे भेद का नाम ।ऽऽ (पिंगल)

५ आर्यागीति या खंधाण (स्कंध) गाहा का भेद।

६ झरना, स्रोत। (डि. को.)

७ पंथी, राही। (अनेका.)

८ मोती।

९ छप्पय का ५६ वां भेद जिसमें १५ गुरु १२२ लघु से १३७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

१० छप्पय छंद का ५४ वां भेद जिसमें १७ गुरु और ११८ लघु अर्थात कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।

११ एक की संख्या सूचक शब्द। * (डि. को.)

१२ शीतल, ठंडा। * (डि. को.)

१३ यादववंशीय शुची राजा का नाम।

१४ देखो 'सिसु' (रू. भे.)

उ०—बीता इम केइक वरस, अति आणंद अवधेस। ऊगमणे रवि रूप अंग, वर्ण कुंवर ससि वेस।—सू. प्र.

१५ देखो 'सस' (रू. भे.)

उ०—बंधन देख ससि अग सूकर सोक रसंत।—जयसेखर सूरि

रू. भे.—सस, ससी, सिसि।

ससिकंत-सं. पु.—देखो 'ससिकांत' (रू. भे.)

उ०—सोम सरीखो कथ थूं, हुम ससिकंत समान। गिरा लागा बिळ ससि, हुंस नै मूकी मांण।—अग्यात

ससिकर-सं. पु. [सं. शशिकर] १ चन्द्रमा, चांद।

उ०—बांणक ढुळै चमरां, बस इम बाखांणजै। जगमग गूर सीस जहर ससिकर जांणजै।—बां. दा.

२ चन्द्रमा की किरण।

ससिकळा-सं. स्त्री. [सं. शशिकला] १ चन्द्रमा की कला।

२ अयोध्यानरेश सुदर्शन की पत्नी एवं काशिराज सुबाहु की कन्या का नाम।

३ एक प्रकार का वर्ण वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।

ससिकांत-सं. पु. [सं. शशिकांत] चन्द्रकांतमणि।

रू. भे.—ससिकंत।

ससिकुळ-सं. पु. [सं. शशिकुल] चन्द्रवंश।

ससिखंड-सं. पु. [सं. शशिखंड] १ चन्द्रमा की किरण।

२ शिव, महादेव।

ससिगोत, ससिगोति, ससिगोती-सं. पु. [सं. शशिगोतिन्] मोती, मुक्तक। (नां. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतो, सिसगोत, सिसगोति, सिसगोती, सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती।

ससिज-सं. पु. [सं. शशिन्+जः] बुधग्रह ।
ससितिथ, ससितिथि-सं. स्त्री. [सं. शशितिथि] पूर्णमासी ।
ससिदेव-सं. पु. [सं. शशिदेव] मृगशिरा नक्षत्र ।
ससिधर-सं. पु. [सं.] १ शिव, महादेव ।
रू. भे.—ससहर, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सिस्सिहर ।
२ देखो 'ससधर' (रू. भे.)
उ०—तेजै करि जांणं सूर ससिधर परि सीतल पूर ।—वि. कु.
ससिनंदण-सं. पु. [सं. शशिनंद] बुध ।
उ०—निरखै छठे रिपु ग्रह ससिनंदण, कुळ मातुळ सुख अरीनिकंदण ।—रा. रू.
ससिनांम-सं. पु.—यश, कीर्ति ।
उ०—विहंडियौ सिवर मगरूर वाधि । ससिनांम आदि अंतरिख समाधि ।—सू. प्र.
ससिपख-सं. पु. [सं. शशि+पक्ष] शुक्ल पक्ष ।
ससिपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)
ससिपुत, ससिपुतर, ससिपुत्र-सं. पु. [सं. शशि+पुत्र] बुध ।
ससिपोसक-सं. पु. यौ. [सं. शशिपोषक] चन्द्रमा का पोषण करने वाला, शुक्ल पक्ष ।
ससिप्रकासी-सं. स्त्री. [सं. शशिप्रकाशी] एक प्रकार की रागिनी विशेष। (संगीत)
ससिप्रभ-सं. पु. [सं. शशिप्रभ] १ जिसकी प्रभा चन्द्र के समान हो, मोती, मुक्ता ।
२ कुमुद ।
ससिप्रभा-सं. स्त्री. [सं. शशिप्रभा] चाँदनी, ज्योत्सना ।
ससिप्रिय-सं. पु. [सं. शशिप्रिय] मोती ।
ससिप्रिया-सं. स्त्री [सं. शशिप्रिया] रात्रि, निशा ।
रू. भे.—ससप्रिया, ससीप्रिया, सिसप्रिया ।
ससिबांम-सं. स्त्री. [सं. शशिवाम] निशा, रात्रि । (डिं. को.)
रू. भे.—ससिवांम ।
ससिभाळ-सं. पु. [सं. शशि-भाळ] शिव, महादेव । (डिं. को.)
ससिभूसण-सं. पु. [सं. शशिभूषण] १ शिव, महादेव ।
२ चौसठ भैरवों में से एक ।
ससिभ्रत-सं. पु. [सं. शशिभ्रत] शिव, महादेव ।
ससिमंडळ-सं. पु. [सं. शशिमंडल] चन्द्रमा का घेरा, चन्द्रमंडल ।
ससिमण, ससिमणि, ससिमणी-सं. स्त्री. [सं शशिमणि] चन्द्रकांतमणि ।
ससिमत्थ, ससिमथ, ससिमाथ-सं. पु. [सं. शशि+मस्तक] महादेव, शिव ।
उ०—ग्रंथां जतियां लखमण गीता, मुनि विहंगां तारक ससिमाथ । सतियां नांम रांम सूं सीता, नरपतियां ओपम रघुनाथ ।—र. रू.
रू. भे.—ससमत्थ, ससमाथ, सिसमत्थ, सिसमथ, सिसमाथ ।
ससिमादचक, ससिमादचकर, ससिमारचक्र, ससिमारचकर, ससिमारचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)
ससियर, ससियळ-सं. पु.—चन्द्रमा ।
उ०—पावै ससियर पीड़, नभमंडळ तारा न को । सुख दुख हुवै सरीर, मोटा पुरखां मोतिया ।—रायसिंह सांदू
ससियौ, ससिलउ—देखो 'सस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ नहीं हुवै पग नागरै, हिरण न थिरता होत । ससिया रै नहीं सींग ज्यूं, गोला रै नह गोत ।—बां. दा.
उ०—२ गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार स्रेणिक नइ घरि अवतरयउ, अंगज मेघकुमार । —स. कु.
ससिर—देखो 'सिसिर' (रू. भे.)
उ०—१ सैसव जु बालकपणौ सोई तो ससिर रिति हुई ।
—वेलि टी.
उ०—२ हमैं ससिर रितरा वणाव कीजै छै ।—रा. सा. सं.
ससिरस-सं. पु. [सं. शशिरस] अम्रत ।
ससिरेखा, ससिलेखा-सं स्त्री. [सं. शशिरेखा, शशिलेखा] चन्द्रमा की एक कला का नाम ।
ससिवदना-सं. स्त्री.—१ एक वर्णिक वृत जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक सगण होता है ।
२ चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री ।
ससिवदनी-वि. [सं. शशिवदनी] चन्द्रमुखी ।
रू. भे.—सिसिवदनी, सिसुवदनी ।
ससिवांम—देखो 'ससिबांम' (रू. भे.)
ससिवेस-सं. पु. [सं. शिशुवयस्] बाल्यावस्था ।
उ०—१ ताप वधियौ 'अभमल' तणौ, इल ससिवेस अभंग । तपधर मुगलांणां तणौ, आथमियौ 'अवरंग' ।—सू. प्र.
उ०—२ वणि ससिवेस रमै मांझल वन वै वलहती वेल ओबन ।
—सू. प्र.
ससिसुत-सं. पु. [सं. शशिसुत] बुध । (अनेका.)
उ०—ससिसुत भवन पंचमै सोहै, महा सबुध लख जगत विमोहै ।
—रा. रू.
ससिसेखर-सं. पु. [सं. शशिशेखर] शिव, महादेव ।
उ०—करता हरता स्री हींकारी, काळी काळयण कौमारी । ससिसेखरा सिधेसर नारी, जग नीमण जयौ जड़ धारी ।—देवि
रू. भे.—ससिसेखर ।
ससिसोसक-सं. पु. [सं. शशिशोषक] चन्द्रमा को क्षीण करने वाला, कृष्ण पक्ष ।
ससिहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)
उ०—वीण अलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण । ससिहर म्रग रथ मोहिया, तिण हसि मेल्ही वीण ।—अग्यात
२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.)
ससी-सं. पु.—१ एक वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण

होती है। (ड. र. ज.)

२ एक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण होता है।

३ देखो 'शशि' (रू. भे.) (ध. मा.)

ससीकर-सं. स्त्री. [सं. शशिकर] चन्द्रकिरण।

ससीप्रिया—देखो 'शशिप्रिया' (रू. भे.)

ससीवार, ससीवासर-सं. पु. [सं. शशिवार] सोमवार।

उ०—संमत १६०० रा ग्रासोज वद तीज ससीवार। करमरांमजी तन त्यागियो बैठ्यां विमल दवार।—संतवांणी

ससीवती-सं. स्त्री. [सं. शशीवती] नरस राजा की पत्नी का नाम।

ससीस-सं. पु. [सं. शशीश] १ शिव, महादेव।

२ स्वामी कार्तिकेय।

ससीहर—१ देखो 'ससघर' (रू. भे.) (डि. को.)

२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.) (डि. को.)

ससुर-सं. पु. [सं. श्वसुर] १ पति या पत्नी का पिता।

उ०—ससुर नहीं कोइ साम, ग्रंध सभा ग्रप ग्रंधरी। होणहार उद्दाम, देखो भीसम द्रोण री।—रांमनाथ कवियो

रू. भे.—ससरो, ससुरो, सुसरो।

२ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

उ०—बाजत ससुर बधावा बाजै, नरपत मंगण जणां निवाजै।

—रा. रू.

ससुराळ, ससुरान—देखो 'सासरो' (रू. भे.)

ससुरो—देखो 'ससुर' (रू. भे.)

ससुवाद-वि.—स्वादिष्ट, मीठा।

उ०—सुप निज्ञां तैं निरमि नै रे, जल पूरत ससुवाद सजन जी।

—वि. कु.

ससूक, ससूग-वि. [सं. सशूक:] तीक्ष्णता सहित, तीक्ष्ण। (उ. र.)

ससूत-वि.—ग्रत्यधिक, बहुत ग्रधिक।

उ०—वहि गनि साची बात सो, सरगल रूप ग्रनूप। देखै मुख कै चहन सब, सो मन हरण ससूत।—कुंवरसी सांखला री वारता

ससूदित-वि.—१ मारा हुग्रा।

२ काटा हुग्रा।

उ०—झटक्कां घण सज्जळ ख्रज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समांन। ससूदित सार समाहत सूंड, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।

—मे म.

ससोकित-वि.—शोकाकुल, शोकपूर्ण।

उ०—सोच सहंमद साह नूं, सोच थयो मन मद्ध। प्रात ससोकित ज्यूं दिवह, राति ग्रनंद रवद्ध।—रा. रू.

ससोभ-वि.—शोभापूर्वक, शोभासहित।

उ०—१ ससोभ भूखणं सुतं, बणै जड़ाव बांमरा। विराजमांन जालि बीच, भार बांधि कांमरा।—सू. प्र.

उ०—२ सझंत कै विरद्द साज, सुंदरां ससोभ रा। करंत कै मुकेस कांम, भार कार चौमरा।—सू. प्र.

रू. भे.—ससोह।

ससोभित—देखो 'सुसोभित' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

ससोलूकमुखी-सं. स्त्री. [सं. शशोलूकमुखी] कुमार कार्तिकेय की ग्रनुचरी एक मातृका का नाम।

ससोह—देखो 'ससोभ' (रू. भे.)

उ०—वरगो राग खंभायची, लगगो केसर बोह। व्रंदावन वैराग पर, सोहै जांन ससोह।—रा. रू.

सस्सौ-सं. पु.—१ 'स' वर्ण।

२ देखो 'सस' (रू. भे.)

उ०—१ ज्योंकि कै सुत जागि, सिंघ वन मांही मारघा। महको करै मलार, ससै फिर स्वांन संगारघा।—ह. पु. वां.

उ०—२ सुग्रर संबर ससा सीग्राल, फिरइं ग्राहेडी तीहना काल।

—वसित

उ०—३ घेरैं सिकार मांहि ससा लुंकड़ी सीह रोझ स्याळ रींछ ग्रनेक हिरण ग्रादि देग्रर भेळा हुग्रा छै।—द. वि.

सस्कुली-सं. स्त्री. [सं. शष्कुली] १ कान का छेद।

२ पूरी, पकवान ग्रादि।

३ कान का रोग।

सस्ट, सस्ठ, सस्ठम-वि. [सं. षष्ठ] जो क्रम में पांचवें के बाद ग्राता हो छठा।

उ०—पंचम क्रोंच स जांणियो, सस्टम सक बखांण। नांम स सप्तम दीप को, पुस्कर जांण प्रमांण।—गज-उद्धार

सस्त-वि. [सं. शस्त] १ प्रशसित, सराहा हुग्रा।

२ मंगलकारी।

३ घायल।

सं. पु. [स. शस्तं] १ प्रसन्नता, खुशी।

२ शरीर।

सस्तर—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.)

उ०—१ घर में सस्तर रै नांम पर फगत एक तरवार री खापटी ही। वै चुपचाप तरवार ले'र निकळता ईज हा कै उणां री बैंन देख लिया।—रातवासो

उ०—२ ग्रनैं थें कहो कै थूं वाह कर तो म्हारो सस्तर लागां पछै दूजी वेळा पाछो वार करण री विवेक थांनै होसी नहीं।

—वी. स. टी.

सस्तरपाटी, सस्तरपाती-सं. स्त्री.—१ ग्रस्त्र-शस्त्र।

उ०—जमदूत ठाकर रै बिलकुल सांमनै ऊभा हा—सस्तरपाटी सूं लैस-मूंडारै बुकांनी दियोड़ा ग्रर हाथां में नागी तरवारां लियोड़ा।

—रातवासो

२ काम करने के उपकरण, ग्रौजार।

उ०— कांम करतां-करतां बी छब बनी। मजूरां ग्राप रा सस्त-

रपाती सांभणां सरू किया ।—वरसगांठ

रू. भे.—ससतरपाती, ससत्तरपाती, सस्त्रपाती ।

सस्तीवाड़ौ-सं. पु.—१ सस्तापन ।

२ वह समय जब वस्तुएँ सस्ती मिलती हो ।

सस्तै-वि.—समान, तुल्य ।

उ०—१ वैं तौ इणनै खेल सस्तै ई जांण्यौ । खांधै तीर कबांण लटकाय पागड़ै पग देय टप घोड़ा माथै बैठगा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ अैड़ौ अेकई मोती सात पीढी रौ दळिद्दर बुहार दै इणरी भखारी मैं कांकरा सस्तै पड़्या । साचांणी आंरौ मोल नीं जांण्या तौ ऐ कांकरा सस्तै कांकरा ई है ।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—लिए, तरफ से ।

ज्यूं—रांमौ तुळछै नै कह्यौ कै थारै सस्तै तौ खेत सूंनौ इज है ।

सस्तौ-वि. [स्त्री. सस्ती] १ जो मंहगा न हो ।

मुहा.—सस्तौ भाड़ौ पोकर जात=कम पैसों में उत्तम या अधिक काम, कम परिश्रम अधिक लाभ ।

२ जिसका भाव, मूल्य कम हो गया हो ।

मुहा.—सस्तौ छूटणौ, सस्तौ निवड़णौ=जिस काम में अधिक व्यय और परिश्रम न हो, आसानी से छूट जाना ।

३ सहज में प्राप्त होने वाला ।

४ साधारण, घटिया ।

मुहा.—मूंगौ रोवै एक बार, सस्तौ रोवै बार बार=सस्तापन देख कर घटिया वस्तु खरीदने की अपेक्षा बढिया वस्तु अधिक पैसे देकर खरीदना अच्छा है ।

रू. भे.—ससतौ ।

सस्त्र-सं. पु. [सं. शस्त्र] १ हाथ से चलाया जाने वाला हथियार, शस्त्र ।

उ०—सस्त्र बांध हरि सुमर, देह धर प्रीत अदावै । समै तेण साहंस, जेण मापियौ न जावै ।—रा. रू.

पर्याय.—आयुध, आवध, प्रहरण, लोह, ससत्र, हथियार ।

२ लोहा ।

३ फौलाद ।

४ शल्य-चिकित्सा ।

रू. भे.—ससतर, ससत्र, सस्तर ।

सस्त्रअज-सं. पु.—तीर, बांण । (अ. मा.)

सस्त्रक-सं. पु. [सं. शस्त्रक] १ लोहा ।

२ इस्पात ।

रू. भे.—ससत्रक ।

सस्त्रघर-सं. पु यौ. [सं. शस्त्रगृह] १ जहाँ शस्त्र आदि रखे जाते हैं, सिलहखाना ।

२ तलवार की म्यान । (डिं. को.)

सस्त्रधर, सस्त्रधारी-सं. पु. यौ. [सं. शस्त्रधर] १ शस्त्र धारण करने वाला, योद्धा, वीर ।

२ सिपाही ।

सस्त्रपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे.)

सस्त्रबंध—१ शस्त्रों से सुसज्जित ।

उ०—बळ दाख दुहुं दिस सस्त्रबंध, किलवांण पेख वळिया कमंध ।

—रा. रू.

२ योद्धा, वीर ।

उ०—१ सस्त्रबंध अनिबंध सगाहां, सूरां पूरां धरी सनाही ।

—रा. रू.

उ०—२ धर हरि अंस हुवै धरपत्ती, सस्त्रबंध सामर्थ सकत्ती ।

—रा. रू.

सस्त्रभ्रत-सं. पु. [सं. शस्त्रभृत] १ शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रधारी ।

२ हथियारबंध ।

सस्त्रविद्या-सं. स्त्री. [सं. शस्त्रविद्या] शस्त्र या हथियार चलाने की विद्या ।

उ०—सस्त्रविद्या के आचारज, जळ रूप क्षत्रियां के वारज ।

—रा. रू.

सस्त्रव्रति, सस्त्रव्रत्ति-सं स्त्री. यौ. [सं. शस्त्र+वृत्ति] शस्त्रों पर किया जाने वाला जीवन निर्वाह, सैनिक वृत्ति ।

सं. पु.—शस्त्र चलाकर निर्वाह करने वाला, योद्धा, वीर ।

सस्त्रसाळा, सस्त्रसाला-सं. स्त्री. [सं. शस्त्रशाला] वह स्थान जहाँ शस्त्र रखे जाते हों, शस्त्रागार ।

सस्त्रसास्त्तर, सस्त्रसास्त्र-सं पु. [सं. शस्त्रशास्त्र] १ हथियार चलाने आदि के विवेचन या निरूपण का एक शास्त्र विशेष ।

२ शस्त्र चलाने की विद्या ।

सस्त्रहतचतुरदसी, सस्त्रहतचौथ-सं. स्त्री. [सं. शस्त्रहत+चतुर्दशी] कार्तिक मास व आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी । इस दिन शस्त्र द्वारा मारे गये व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है ।

सस्त्रागार-सं. पु. [सं. शस्त्रागार] १ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि रखे जाते हैं, शस्त्रशाला, सिलहखाना ।

२ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि प्रदर्शित किये जाते हैं ।

सस्त्राजीव-सं. पु. [सं. शस्त्राजीव] योद्धा, सैनिक ।

सस्त्रायस-सं. पु. [सं. शस्त्रायस] शस्त्र बनाने का लोहा ।

सस्त्रालय-सं. पु. [सं. शस्त्रालय] वह स्थान जहाँ शस्त्रादि सुरक्षित रखे या प्रदर्शित किये जाते हैं ।

सस्त्री-सं. पु. [सं. शस्त्री] छोटा शस्त्र ।

वि.—१ शस्त्रादि चलाने का जानकार ।

२ शस्त्रधारी ।

सस्त्रीकरण-सं. पु. [सं. शस्त्रीकरण] सुरक्षा की दृष्टि से शस्त्रादि से सुसज्जित करना या होना ।

सस्प-सं. पु.—घास । (डिं. नां. मा.)

सस्पर्षी, सस्पंजी-सं. पु.—[illegible] । (ध. मा.)

सस्य-सं. पु. [सं. सस्य] १ सद्गुण ।

२ धनाज ।

३ किसी वृक्ष का फल ।

४ अन्न, हरियाली ।

५ नई घास, कोमल तृण ।

उ०—[illegible] कीना महा, केवड़ा मरवा वाळी । बरसाळे बंगाळ, सस्य स्यामल हरियाळी ।—दसदेव

रू. भे.—सस ।

सस्यक-वि [सं.] १ सद्गुणी ।

२ समान ।

[सं. सस्यकः] १ एक प्रकार का रत्न विशेष ।

२ हथियार ।

३ तलवार ।

सस्वत-अव्य. [सं. शश्वत्] १ सदैव, हमेशा ।

२ लगातार, बारम्बार ।

सस्वेदा-सं. स्त्री. [सं.] वह लड़की जिसका कौमार्य हाल ही में नष्ट किया गया हो ।

सस्स—देखो 'ससो' 'स्वास' (रू. भे.)

उ०—गयो कुमर तज गुमर, समर छोडै इक ससै । खियो प्रांण गुण सहरि, कियो लसकर परवस्सै ।—रा. रू.

रू. भे.—सस ।

सस्सु, सस्सू—देखो 'सासु' (रू. भे.)

उ०—बाल्हा बीरा कहू सस्सू बतळाती, धमूपाती हा छाती भरि धाती ।—ऊ. का.

सस्सो-सं. पु.—१ 'स' वर्ण ।

२ देखो 'सस' (रू. भे.)

सहंकारी—देखो 'सहकारी' (रू. भे.)

सहंटो, सहंठो—देखो 'संठो' (रू. भे.)

उ०—मांहि मन सहंठो करो, करहो मूझ निसंक ।—गज-उद्धार

सहंडुक-सं. पु.—एक प्रकार के मांस का शोरबा ।

सहंदो—देखो संदो' (रू. भे.)

सहंस—देखो 'सहस' (रू. भे.)

उ०—१ मरवर लखमां ऊवरां, कीधां साथ कमंध । साह सहंसा साह सूं, सीस धयाह निसंध ।—रा. रू.

उ०—२ ऊपर बीस सहंस धाताड़े, पांच सहंस हूं बाग उपाड़े ।

—सू. प्र.

सहंसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—[illegible] सामंद नोरै न उगै सहंसकर, धू चळै अचळै व्है जाय धरती । सुमरियां तेज किम धाय छै सुंदरी, जाद छै विरद कर साय जननी ।—मोबाळदांन सांदू

सहंसकरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

सहंसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कमधजां वंस मझि सहंसकिर, निडर भूप अनुमांनमो । 'अजमल' ग्रेह जनमै 'अभो', यह अवतार पचीसमों ।—सू. प्र.

सहंसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—मिणधरफण कीधा चित मोहे, सहंसकिरण बारह पण मोहे ।—सू. प्र.

सहंसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—चतुर सखी छै त्यां मिळिकै विवाह रो सहंसकार समस्त पूरण कीयो ।—वेलि टी.

सहंसपतर, सहंसपत्र, सहंसपात—देखो 'सहस्रपत्र' (रू. भे.) (डिं. को.)

सहंसफण, सहंसफुण—देखो 'सहस्रफण' (रू. भे.)

उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेज मन, ताइधर रजधर 'सींध'तण । पूंगीं दळ पतसाह पेरतां, फेरै कमळ न सहंसफण ।

—महाराणा प्रतापसिंह रो गीत

सहंसबळ, सहंसबळी—वि.—बलवान, पराक्रमी ।

उ०—१ भ्रिय सहंस तावीन, दीध महाराज पायदळ । उभै सहंस उमराव, बंधव जत्तनेत सहंसबळ ।—सू. प्र.

उ०—२ निमो साहिब खेड नरेस, आसति मति आदेस, पर राठां हूंत पेस, मेल्है मंडळी । गढ जोधांण इसो गहन, कुमर दूसरो करन, सूरजिमाल सुतन सहंसबळी ।—गु. रू. बं.

सहंसा—देखो 'साहंसाह (रू. भे.)

सहंसादस—देखो 'दससहंस' (रू. भे.)

उ०—रज रज हुवो 'जगो' भरियो रज, भिळवा मुकत जांणियो भेव । सहंसादस वाळा धू सारू, दस सत करग वांधिया देव ।

—महादांन मेहडू

सहंसाह—देखो 'साहंसाह' (रू. भे.)

सहंसाही—देखो 'साहंसाही' (रू. भे.)

सह-वि.—१ सब, समस्त ।

उ०—१ सह बोलिया सकाज मतो करै, विहुंवै मिसल । मेन वांछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती ।—सू. प्र.

उ०—२ भूपती सकल नमै डंड भरे, कुळ खट ग्रीस सेव सह करै ।

—सू. प्र.

उ०—३ करै सह संक असंक न कोय ।—रांमरासो

२ पूर्वक, सहित ।

उ०—१ कवि कौं असन कराइ, हल्लु अविलय सह सपथ । जुद्ध मरहि कै जाइ, कै मंडोउर निज करहि ।—वं. भा.

उ०—२ आदर सह डेरा तिन्ह दिवाइ, प्राघुन सनमांनैं मोद पाइ । बनि मुनि सता हु सगपन विचार, करि विजन मंत्र संगत कुमार ।

—वं. भा.

३ पूर्ण, पूरा ।
४ सहित, युक्त ।
उ०—सौ कहियत धारहु सवन, सभ्रन सह नरनाह । जिहिं रन प्रभुकुल मूळ जिम, लहिय सता दिवलाह ।—वं. भा.
सं. पु. [सं. सहः] १ मार्गशीर्ष का महीना । (डिं. को.)
उ०—प्रथी ग्रह पंद्रह साल पंवार, बदी सह चौथ सनीसरवार ।
—मे. म.

२ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम ।
३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।
४ भाई । (अ. मा.)
५ धन ।
उ०—अधिप कही जदि हालि अब, सुत तूं म्हारै साथ । मिळि पाछी लै मह महर, अकबर सूं सह साथ ।—वं. भा.
६ [फा.] शतरंज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहां से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो ।
क्रि. प्र.—दैणी, पड़णी ।
७ ताकत, शक्ति ।
८ गुप्त रूप से भड़काने का भाव, उत्तेजित करने की क्रिया ।
क्रि. प्र.—देवणी, राखणी ।
९ पतंग आदि को ढील देकर धीरे-धीरे आगे बढाने की क्रिया ।
१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।
११ कृष्ण व लक्ष्मणा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र का नाम ।
१२ एक अग्नि जो समुद्र में छिप गया था ।
१३ उत्तम मनु के पुत्रों में से एक ।
१४ स्वायंभुवमनु के पुत्रों में से एक ।
क्रि. वि.—१ साथ ।
उ०—१ किकहिसु तासु जासु अहि थाको कहि, नारायण निरगुण निरलेप । कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नांम संपेख ।—वेलि
उ०—२ ह्वै जेर बळै सह हालिहूं, कपट विलंब न खिण करूं । नरनाह टाळिजै इम नहीं, तोतौ दळ नडुौ तरूं ।—वं. भा.
२ देखो 'साह' (रू. भे.)
रू. भे.—से, से', सैं ।
सहकार-सं. पु.—१ आम । (अ. मा; डिं. को)
२ आम का वृक्ष ।
उ०—१ जिम मधुकर नइं केतकी, जिम कोइल सहकार । मारवणी मन हरखियउ, तिम ढोलइ भरतार ।—ढो. मा.
उ०—२ केळी कदंब करंना असोक, सहकार बकुल लाख मिटंत सोक । जातीफळ जावूं नाळ केर, वट पीपर महि व्है हरत हेर ।
—मयारांम दरजी री बात

३ सहयोग ।
४ गाने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति ।
रू. भे.—सहिकार ।
सहकारी-वि. [सं. सहकारिन्] १ साथ कार्य करने वाला, सहयोगी ।
२ सहायक, मददगार ।
सं. पु.—मित्र, दोस्त । (ह. नां. मा.)
सहक्रतव-सं. पु. [सं. सहकृत्वन्] सखा, मित्र । (अ. मा; ह. नां. मा.)
सहक्रमण, सहगति-सं. पु.—सहगमन ।
उ०—१ अमरलोक पूगौ अठी, संभर त्रप संग्रांम । कीधौ राधा सहक्रमण, नव खंडां करि नांम ।—वं. भा.
उ०—२ पाय समय तजियौ प्रथित, ईस्वर त्रप निज अंग । नवनंदा रुचिरा निपुण, सहगति कीधौ संग ।—वं. भा.
सहगमण, सहगमन-सं. पु. [सं. सहगमन] १ साथ पलायन करने की क्रिया ।
२ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने की क्रिया, अवस्था या भाव ।
उ०—कंत कहंता सहगमण, कीधां रहवौ साथ । छोडौ अच्छर छेहड़ौ, सो धण झालै हाथ ।—वी. स.
३ संभोग, मैथुन ।
उ०—ईसतणी अणहाल विजोगण सेज सुवंती, पूरब दिस री चंद्र किरण सी खीण हुवंती । सहगमणं ढळंती रात पलां मैं कोढ करंतां, आज कटै जुग मांन कपोळां नीर ढळंतां ।—मेघ
सहगांमणी, सहगांमिणी-सं. स्त्री.—१ पति के साथ सती होने वाली स्त्री, सहगमन करने वाली ।
२ सहचरी, साथिन ।
सहगांमी-सं. पु.—१ जो साथ चले, साथी ।
२ अनुयायी ।
सहगुरु, सहगुरू—देखो 'सदगुरु' (रू. भे.)
उ०—धन नगरी नइ धन देस, जहां सहगुरु करै निवेस ।
—वि. कु.
सहड़-सं. पु.—१ हाथी । (ना. डिं. को.)
२ देखो 'सुभट' (रू. भे.)
उ०—सहड़ां तन पोरस सालुळिया, विडंगा दिस जीण लए वळिया ।—पा. प्र.
सहचर-सं. पु.—१ मित्र, दोस्त । (अ. मा; ह. नां. मा.)
२ सहायता करने वाला, सहायक ।
३ सेवक, नौकर ।
४ सलाह देने वाला ।
वि. [स्त्री. सहचरी] १ साथ-साथ चलने वाला ।
२ हर समय साथ रहने वाला, साथी ।
३ देखो 'सहचरी' (रू. भे.)
उ०—एम गढ निज प्रौळ आवै, गांन सहचर भूल गावै । कुंभ

कनकनग निकट कीधो, मनैं ग्रनति गांठ लीधो ।—सू. प्र.

सहचरी, सहच्चरी-सं. स्त्री.—१ सखी, सहेली । (ग्र. मा.)

उ०—१ सहचरी चतुर चकोर, मिळ रचत उच्छव मोह । वरत वरत पोत समाय, करि कुंमकुमां छिड़काव ।—सू. प्र.

उ०—२ मदन के विनोद्दं, महा उछाह मगळं । सके इसी सहच्चरी, उरवसी न सुन्दरी ।—सू. प्र.

२ पत्नी, भार्या ।

रू. भे.—सहचर ।

सहचार-सं. पु. [सं.] १ सहचारी होने की अवस्था या भाव, साहचर्य ।

२ अनुकूल होने की अवस्था या भाव, अनुकूलता ।

सहज-सं. पु. [सं.] १ भाई, भ्राता, सहोदर । (ह. नां. मा.)

२ प्रकृति, स्वभाव । (डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सहज पकड़उ सुभ ग्राकरउ जी, न गमइ भूंडी बात । परनिंदा करतां सदा जी, जायइ दिन नइ रात ।—स. कु.

उ०—२ साहिब दिस्ट न मुस्ट में, रूप न रेखा नांहि । हरीया साई सहज में, रैन पाणि दिन मांहि ।—अनुभववांणी

३ फलित ज्योतिष में, जन्म लग्न से तृतीय स्थान जिसमें भाइयों, बहनों, मित्रों आदि का विचार किया जाता है ।

४ तत्व ।

५ ज्ञान ।

उ०—१ हरीया मांगै सहज कु, सहजां सब कुछि होय । सहजां सांई पाईयै, सहजां विनिया सोय ।—अनुभववांणी

उ०—२ सहजां सुधि बुधि ऊपनी, हीरो चढियो हाथि । हरियो सां कौन कुं, घट में पाई पाथि ।—अनुभववांणी

उ०—३ साध यान निकळंक, भेस की लजया राखै । सहज सील संतोख, जांणि सुख असत न भाखै ।—सुरजनदास पूनियो

उ०—४ सहजां ताळा खूल्ही, सहजां कूंची लाय । हरिया ग्रैसै सहज कु, सहजां विनां न पाय ।—अनुभववांणी

६ ब्रह्मतत्व ।

उ०—सहजां ताळा खूल्ही, सहजां कूंची लाय । हरीया ग्रैसै सहज कु, सहजां विना न पाय ।—अनुभववांणी

७ स्मरण, याद ।

उ०—सहजां ताळा खुल्ही, सहजां कूंची लाय । हरीया ग्रैसै सहज कु, सहजां विनां न पाय ।—अनुभववांणी

८ परब्रह्म, ब्रह्म ।

उ०—१ नमो साहिब नमो सहजां, नमो काळ निकंदनं । दास हरिया नमो दाता, नमो सब निरदंदनं ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरिया ग्रैसा को मिळै, सहजां रहै समाय । बाहरि बाजा बचन चोट, चित न विनसै जाय ।—अनुभववांणी

उ०—३ ग्रति उजिल निरमल सहज, नाभ कंवळ ग्रसथांन । रोम रोम ररंकार हुए, नाद वडै का ज्ञांन ।—अनुभववांणी

९ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—१ हरीया हक पिछांणीयै, ग्रनहक सुं क्या कांम । जो कुछि सहजां देत है, रिजक रोटियां रांम ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया सहज सनेहड़ो, जन कोई जांणंत । दुनियां लोहा-धार में, वहि वहि बीच मरंत ।—अनुभववांणी

उ०—३ सहज बिना कोई सरै न काजा, रांम नांम की बंधो पाजा । एक नांव तैं पांहन तिरिया, एक नांव तें गज ऊबरिया ।

—अनुभववांणी

१० अनहदनाद ।

उ०—१ ममंकार का पाट सुत, उर ग्रंतर ररंकार । हरीया सहज उचारतां, नांम भयै निरकार ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया सहजां रांम रटि, रसनां चटपट मांहि । घट छूटंतै प्रांण लग, हटकि राखियै नांहि ।—अनुभववांणी

उ०—३ ढोल बजायां बजई, विण वायां ग्रटकंत । हरीया रसनां सबद कुं, सहजांई सिवरंत ।—अनुभववांणी

११ ब्रह्मसुख ।

उ०—रोम रोम ररंकार की, महमा कही न जाय । जनहरीया सुख सहज कुं, भाग विनां नहीं पाय ।—अनुभववांणी

१२ अजपाजाप ।

उ०—हठ पचि मरणा जोगिया, यु तो जोग न होय । हरीया सहजां सबद बिन, पारि न पहुंचे कोय ।—अनुभववांणी

१३ स्वर्गलोक, वैकुंठ ।

उ०—१ सहजां सुख दे बस्य कीया, मन मोहादिक कांम । जनहरीया गोरख जती, सहज कीया विसरांम ।—अनुभववांणी

उ०—२ सहजां मारग सहज का, सहज कीया विसरांम । हरीया जीव'र सीव का, भया एक ही ठांम ।—अनुभववांणी

१४ मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—१ इला पिंगला बीच में, सुखमणि हंदा घाट । हरीया ब्रह्म समाधि की, सहजां पाई बाट ।—अनुभववांणी

उ०—२ धिज धरखत विरकत दसा, ध्यांन ग्रधर का लाय । जनहरीया उन रूख का, जब सहजां फळ पाय ।—अनुभववांणी

१५ केवलज्ञान ।

उ०—सो मैं केवल सहजां पाया, जब ही तैं तन मन पतिग्राया । केवल कीया न केवल यारा, वेद कतेब सकल सुं न्यारा ।

—अनुभववांणी

१६ ध्यानावस्था, समाधि ।

उ०—महारस मीठा पीजियै, ग्रवगत ग्रलख ग्रनंत । दादू निरमळ देखियै, सहजै सदा झरंत ।—दादूवांणी

१७ वास्तविकता ।

उ०—जनहरीया सुख सहज में, लोक दिखाया नांहि । पढ़पच कीयां न पाईयै, सांई सहजां मांहि ।—अनुभववांणी

सर्व.—अपने-आप, स्वतः।
उ०—१ रसनां रग रग वीच मैं, सहजां सिवरन होय। जनहरीया सब जीव का, संसा रह्या न कोय।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया माया जो भली, वांटै रांम निवंत। आवै जावै सहज सुं, रहै निरासावंत।—अनुभववांणी
उ०—३ मन इंद्री कुं मारनैं, मतैं करौ वेखास। हरीया सहजां होत है, कांम कलपना नास।—अनुभववांणी
वि.—१ अखण्ड।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रही घर छाय। जांह सहजां सांई रहै, लिव ता मांहि समाय।—अनुभववांणी
२ स्वतः सिद्ध।
उ०—मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहत्थौ करै फिर रीझ। अम लोगां ऊपरा न रावै, खूंदाळमां हिलाई खीज।—चतुरौ मोतीसर
३ सरल, सुगम, आसान।
उ०—१ परउपगारी गुर मिल्या, भगति वताया भेव। यौ ही सिवरन हरि कथा, यौ ही सहजां सेव।—अनुभववांणी
उ०—२ जै कोई चीन्है सहज कुं, सहजां आतम रांम। जनहरीया सहजां भया, मन इंद्री विसरांम।—अनुभववांणी
उ०—३ दादू सदगुरु सहज मैं, किया बहुत उपकार। निरधन धनवंत कर लिया, गुरु मिळिया दातार।—दादूबांणी
उ०—४ कुमार कहियौ मीणां तौ ठाकुर कहावणौं सहज री जांणि अब तौ रजपूतां री पुत्रियां नूं बरण ढूका। अर आपांरा सगोत्र गोळवाळ जसराज नूं समता री संबंधी करण ढूका।—वं. भा.
४ परिपूर्ण।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रही घर छाय। जांह सहजां सांई रहै, लिव ता मांहि समाय।—अनुभववांणी
५ अव्यक्त, अस्पष्ट।
उ०—ओउं सोउं सबद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररंकार का राज।—अनुभववांणी
६ वास्तविक।
७ अनोखा, अद्भुत।
उ०—अगम काटि गम कीयहु, हौ रमैया रांम। सहज कियहु वेपार, हौ रमैया रांम।—कबीरबीजक
८ व्यर्थ, वेकार।
उ०—सहज विचारै मूळ गंवाई, लाभ तैं हानि होय रै भाई।
—कबीरबीजक
९ सरल, सीधा।
उ०—सुन्न सहज मन सुमिरतैं, प्रगट भई एक जोति। ताहिपुर वलिहारि मैं, निरालंब जो होत।—कबीरबीजक
१० विना यत्न, बिना परिश्रम।
उ०—हरीया पूरा गुर मिळै, अगम दाखवै ग्यांन। पढियां गुणियां बाहिरौ, सहज धराया ध्यांन।—अनुभववांणी
११ प्राकृतिक, स्वाभाविक।
उ०—१ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमैं नायणी, जावक दै मिळ जाय।—अग्यात
उ०—२ दादू सब्द अनाहत हम सुन्या, नख सिख सकल सरीर। सब घट हरि हरि होत हैं, सहजैं ही मन थीर।—दादूबांणी
उ०—३ सहज चाल संगत समझ, वांणी सिकल वणाव। इता प्रकारां अवस है, गोलां तणौं जणाव।—बां दा.
१२ जो हर दृष्टि से ठीक और आदर्शमय हो।
उ०—रंभ वरु सराहै हाथ रवि, अर पग सारा है उरगि। जोगेस कठण पावै जिकौ, सहज तिकौ पाऊं सरगि।—सू. प्र.
१३ यथार्थ, सत्य।
उ०—१ मन पवनां मिळ एकठा, सुरित सबद सुं लाय। हरीया ब्रह्म समाधि का, जब सहजां घर पाय।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया ब्रह्म समाधि कौ, सहजां सुख अनंत। कांम कठण सुधि जांणिबौ, विध विरळा बूझंत।—अनुभववांणी
१४ जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने वाला।
उ०—१ लोयण चंचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डंड। महकै सहज सुबास बप, किर लायौ स्रीखंड।—बां. दा.
उ०—२ औं सबद गुरु सुरत चेला, पांच तत्वर मैं है अकेला। सहजै जोगी सुन वास, पांच तत्त मैं लियौ प्रकास।—वि. सं. सा.
१५ मामूली, साधारण।
१६ परम्परागत, पुश्तैनी।
क्रि. वि.—१ धीरे-धीरे।
उ०—१ वे गुर परसादि पीवांहि, हींडोळै पणि वैसि कै। सहज सहज हिंडाय, 'ऊदौ' बोलै वीनती, आवा गुवणि चुकाय।
—ऊदौ नैण
उ०—२ हरीया जांणै सहज कु, सहजां सब कुछि होय। सहजां सांई पाईयै, सहजां विखिया खोय।—अनुभववांणी
२ स्वभावतः।
उ०—हरीया जांणै सहज कु, सहजां सब कुछि होय। सहजां सांई पाईयै, सहजां विखिया खोय।—अनुभववांणी
३ अनायास, शीघ्र।
उ०—१ 'सुंदर' सतगुरु यूं कहै, मुक्ति सहज ही होई।
—सुंदरदास
उ०—२ दादू सदगुरु सूं सहजैं मिल्या, लीया कंठ लगाइ। दया भई दयाळ की, तब दीपक दिया जगाइ।—दादूबांणी
उ०—३ साचा सहजैं लै मिळै, सब्द गुरु का ग्यांन। दादू हमकूं लै चल्या, जहं प्रीतम का स्थान।—दादूबांणी
उ०—४ दादू भक्ति निरंजन रांम की, अविचळ अविनासी। सदा सजीवन आतमा, सहजैं परकासी।—दादूबांणी

४ सहजता से, आसानी से ।

उ०—१ सब अखर सहजां पढ़ै, पढ़ि पढ़ि किह्या सनेह । एक सबद इकार हुन, हरिया परम सनेह ।—अनुभववांणी

उ०—२ आगै चालतां एक नाळ बारह हाथ की चौडी घणी ऊंडी आई आयौ जठै कुमार कूदौ तौ सहज में सांवळिया नै फांगड नाळ रै वार पार जातो ऊपाड सांम्हौ गड़ो रहियो ।—वं. भा.

उ०—३ जै डर न होइ जांगी जनक, प्रगत कालिह लागूं पगां । सो जै न होइ दीजै सहज, सुत अवजस असगां सगां ।—वं. भा.

५ निरन्तर, लगातार ।

उ०—सहजां साईं सिवरियै, आलस अंग न आंनि । जनहरिया तन देवळो, ज्यूं जळ पंजर जांनि ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सहिज, सहेज, सेज, सेझ, सेहज, सैहज, सैज, सैझ ।

सहजणौ-सं. पु.—एक प्रकार का मध्य आकार का वृक्ष विशेष, सहिजन ।

सहजन्य-सं. पु. [सं.] एक यक्ष का नाम जो आषाढ मास में सूर्य के साथ भ्रमण करता है ।

सहजन्या-सं. स्त्री. [सं.] विख्यात दस अप्सराओं में से एक जिसने अर्जुन के जन्मोत्सव पर गायन किया था ।

सहजपंथ, सहजपथ-सं. पु. [सं.] १ आसान रास्ता, सुगम रास्ता ।

२ आसान तरीका ।

सं. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा ।

रू. भे.—सेजपथ, सेजपथ ।

सहजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहजादी)

सहजिन्यु-सं. स्त्री.—हिरण्यकशिपु की प्रिय अप्सराओं में से एक ।

सहटौ—१ देखो 'संठौ' (रू. भे.)

उ०—१ आसन गढ़ै आय सूरणसर सहटा एकै पासै भीमसेन । एकै केवाण सहटा दोनां री फोजां देख चद भाट कह्यौ ।

—हाहुल हमीर री वात

उ०—२ नट बछुती करि निहंग, धरै अंगरखा बहादर । जमदाढक तज वाप, करै सहटौ कर कायर ।—सू. प्र.

२ देखो 'साटौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहटी)

सहटुणौ, सहटुबौ-क्रि. अ.—सम्मिलित, सहित ।

उ०—इम दिल्ली उनमान, वात विपरीत प्रगट्टै । आई सबर अतीत, मेद दळ प्रबळ सहट्टै ।—रा. रू.

सहड-सं. पु.—हाथी । (ना. डि. को.)

सहण-सं. पु.—१ मिट्टी का बना भोजन पात्र ।

(मि. सिहनक)

२ एक प्रकार का शस्त्र, परशु । (डि. नां. मा.)

३ [illegible] ।

उ०—परिद न सकै पहुंच, अनड़ इण भांत रो, रहियो फुकि जिण रीत बदळ बरसात रो । सहण पूरण सामांन गुमर रिम गंज रो, प्रलय मदन आसेर प्रभू रो पंजरो ।—सिवबगस पाल्हावत

४ सहनशीलता ।

उ०—वळि दाहकता पावक वसै, साधु जण सोहे सहण । ईसरो भणै त्यूं ही अवनि, मो मन वसियो महमहण ।—ह. र.

५ देखो 'सहन' (रू. भे.)

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ पलाय । मायड़ गाय दिखाय पण, धण पण वलय बताय । —वी. स.

६ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—पछै बादसाह आपरै हजूरी सहणां सूं सलाह पूछी ।

—नी. प्र.

सहणक—देखो 'सहनक' (रू. भे.)

सहणी-सं. स्त्री.—१ सहन करने की क्रिया, सहन करने की शक्ति ।

उ०—१ रहणी में जोगेस्वर वहणी में जगदीस, गहणी में सिव-नेत्र सहणी में अहीस ।—बी. स.

उ०—२ सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह । दूध लजाणो पूत सम, वलय लजांणो नाह ।—वी. स.

२ सहन करने वाली ।

वि.—सहनीय ।

सहणौ-वि. [स्त्री. सहणी] १ सहन करने वाला, सहनशील ।

२ सहनीय ।

सहणौ, सहबौ-क्रि. स.—१ बरदास्त करना, सहन करना । (व. र.)

उ०—१ सादूळौ आपा समो बियो न कोय गिणंत । हाक बिडांणी किम सहै, घण गाजियै मरंत —हा. झा.

उ०—२ तद बूबना कही—जी हजरत सलांमत मेरा बहनोई है । बहन को दुख होयगा सो मुझ सें क्यों सहा जायगा ।

—जलाल बूबना री वात

उ०—३ जावो हमे तकसीर माफ करी, खूब कांम किया, सिपाही इसी नहीं सह सकै ।—जलाल बूबना री वात

उ०—४ उद्यम री आसा करै, सहै नहीं घणराव । घात करै गैंवर घड़ा, सीहां जात सभाव ।—बां. दा.

उ०—५ जरै स्वांमी रा सम्मत विहूंणा भी जोद्धया जिकण नूं मारण चलाया जठै जठै ही दलं उण री उपकार चींताड़ रोकिया । केई आपरो जांमात मारि लीधो तौ भी समस्त हूं सहणी री भाखी —वं. भा.

२ परिणाम भोगना, फल भोगना ।

३ भुगतना ।

४ झेलना ।

५ किसी उत्तरदायित्व का निर्वाह वहन करना ।

६ मज्जीभूत होना, मजना, तैयारी करना ।

उ०—अर तिकौ भी यौ विसाळापुरी रौ कजियौ जीति आगरा मार्थं आवण रा आरंभ मैं सहियौ।—वं. भा.

सहणहार, हारौ (हारी), सहणियौ—वि०।

सहिओड़ौ, सहियोड़ौ, सह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहीजणौ, सहीजबौ—कर्म वा०।

सइहणौ, सइहबौ, सहिणौ, सहिबौ, सेवणौ, सेवबौ, सैंवणौ, सैंवबौ, सै'णौ, सै'बौ—रू० भे०।

सहत—१ देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०-१ सहत नगारै मीरखां, सौ घोड़ां नीसांण। मारु राव 'तेजल' 'मुकन', वाघौ रवळ बळवांण।—रा. रू.

उ०—२ सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चंपकला हरत चित्त, जुत भमरावळि जांण।—अग्यात

उ०—३ अकवर लेख प्रमांणं, तहवर सहत राज लोभांणं। आवी चिंत अचीती, विणसण गा(का)ळ बुद्धि विपरीति।—रा. रू.

२ देखो 'सहद' (रू. भे.) (डिं. को.)

सहतखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सहता—सं. स्त्री. [सं.] एक होने का भाव, एकता, मेलजोल।

सहतार—सं. पु.—एक प्रकार का तारवाद्य विशेष।

उ०—१ छत्रधारी उर छोग वधै जिण वार मैं, गहकै सारंग गांन तांन सहतार मैं। मधुर सुर मिरदंग क बीणा बाजवै, इंद्र अखाड़ै अछर लखैं छबि लाजवै।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ गोरवां करवै गोठ बाग निज निज बिचै, सहनाइयां सहतार मलारां हद मचै।—सिवबक्स पाल्हावत

सहति, सहती—१ देखो 'सहित' (रू. भे.)

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

सहतीर—सं. पु. [फा. शहतीर] १ लकड़ी का बड़ा लम्बा लट्ठा।

२ प्रायः छत के नीचे लगाया जाने वाला पत्थर, लोहे या लकड़ी का शहतीर।

रू. भे.—संतीर, सेंतीर, स'तीर, सेंहतीर, सैंतीर, स'तीर, सेंहतीर।

सहतूत—सं. पु. [फा. शहतूत] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल लंबी लट के समान होता है। इस वृक्ष के पत्तों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। (अ. मा.)

२ उक्त पेड़ का फल।

३ देववृक्ष। (अ. मा.)

रू. भे.—सेतूत, सेहतूत, सैंतूत।

सहतौ—देखो 'सहित' (रू. भे)

उ०—वूकड़ां बटक गूंधा गटक लिए वळ, सह कटक आचमैं गजां सहतौ।—अग्यात

सहद—सं. पु. [अ. शहद] विशेषत: मधुमक्खियों के छत्तों में पाया जाने वाला मीठा एवं गाढा तरल पदार्थ।

पर्याय.—मधु।

रू. भे.—सहत, सहति, सहती, सहेद, सेत, से'त, सैंत, सैंद।

सहदार—वि. [सं.] १ पत्नी सहित।

२ विवाहित।

सहदेई—सं. स्त्री. [सं. सहदेवा] पहाड़ी भूमि में अधिक उपजने वाली क्षुप जाति की एक वनौषधि।

रू. भे.—सहदेवा, सहदेवी, सहदोई।

सहदेव—सं. पु. [सं.] १ माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के संयोग से उत्पन्न पांडु के पांच पुत्रों में से सबसे छोटा पुत्र। (डिं. को.)

उ०—सीळ गंगेव, दुरजोधन अहमेव, जुजठळ ज्यूं साच, दुरवासा वाच, ग्यांन रौ गोरख, सहदेव ज्यूं सारी वात समरथ, अरजुन ज्यूं बांण, करण ज्यूं दांन,........।—रा. सा. सं.

२ ऐसा महात्मा जिसके वचनों में सिद्धि हो।

३ पुररवावंशीय हर्यधन के पुत्र का नाम।

४ इक्ष्वाकुवंशीय दिवाकर के पुत्र व बृहदस्व के पिता का नाम।

५ जरासंध के एक पुत्र का नाम।

६ सुदास राजा का पुत्र व सोम का पिता एक राजा।

७ वसुदेव व ताम्रा के पुत्रों में से एक।

वि.—भविष्यवक्ता।

रू. भे.—सेदेव, से'देव, स'देव, सैंदेव, सैं'देव, स'देव।

सहदेवा, सहदेवी, सहदोई—सं. स्त्री.—१ वसुदेव की पत्नी तथा देवक राजा की कन्या।

२ देखो 'सहदेई' (रू. भे.)

सहन—सं. पु.—१ क्षमा।

२ शांति।

३ आज्ञा पालन करने की क्रिया।

४ बरदास्त करने की क्रिया, सहिष्णुता।

५ देखो 'सहनक' (रू. भे.)

रू. भे.—सहण।

सहनक—सं. पु.—मिट्टी की बनी एक प्रकार की छिछली रकाबी। (मुसलण)

उ०—सहनक तणां सुजांण, पारीसा पातल तणां। तैं राहविया रांण, एकण हूंता 'ऊदवत'।—सूरायच टापरचौ

रू. भे.—सहणक।

सहनता—सं. स्त्री.—सहनशीलता।

उ०—इणनै सहनता कहै—सो डाकी ठाकुर तौ सहनता कर रजपूतां रा माथा लेवै। वा प्रांण लेवै।—वी. स. टी

सहनसील—वि. [सं. सहनशील] १ सहिष्णु, बरदास्त करने वाला।

२ सब्र करने वाला, संतोषी।

रू. भे.—सैं'नसील।

सहनसीलता—सं. स्त्री. [सं. सहनशीलता] १ सहनशील होने की अवस्था या भाव।

२ [illegible]।

रू. भे.—[illegible]।

सहनांण—देखो 'सैनांण' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ [illegible] मूं मिळ बातां करि, ठावा समाचार लाया [illegible] सहनांण लाया [illegible]।—[illegible] दरियाव री बात

उ०—२ [illegible] कह्यौ—'तूं बात मानै [illegible], [illegible] सहनांण छूं।—नैणसी

उ०—३ [illegible] निरखिया, चित सूं करै बखांण। लक [illegible], [illegible] सहनांण।—मेहोजी गोदारो

उ०—४ [illegible] करजि करि, मुरह माच करणि कहै। सहनांण [illegible] सुणो, प्रगट कहै।—वील्होजी

सहनांणी—देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] राजा मृत्यु लोक में जाय नै उठै चौपड़ रमता वै नूं सहनांणी दिखावै।—पंचदंडी

सहनाइन, सहनाई, सहनाय-सं. स्त्री. [फा. शहनाई] एक प्रकार का बाजा, नफीरी बाजा।

उ०—१ [illegible] सवाई, सुर [illegible] सहनाई। द्वार [illegible] दिखाई, [illegible] वधाई।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] सहनाय वजै सुरजी, [illegible] बोलत मोर घणू [illegible]।—पा. प्र.

उ०—३ सहनायची सहनायां मांहे सारंग वगायो छै।

—रा. सा. सं

रू. भे.—[illegible], सणाई, सनाय, सरणाई, सरणाय, सुरणा, [illegible], सुरणाई, सुरणाय, सुरणो।

सहनायची-सं. पु.—शहनाई बजाने वाला।

उ०—सहनायची सहनायां मांहे सारंग वगायो छै।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सैनायची।

सहपाठी-वि.—जो साथ पढ़ा हो।

रू. भे.—सैपाठी।

सहवास—१ देखो 'सहवास' (रू. भे.)

उ०—[illegible] राजावां रै ऊंची भावै इसा प्रबंध मूं तो घणां [illegible] सहवास है।—वं. भा.

२ देखो 'सावास' (रू. भे.)

सहभोज, सहभोजन-सं. पु.—एक साथ भोजन करने की क्रिया।

सहभोजी-वि.—साथ बैठ कर भोजन करने वाला।

सहम-सं. पु.—१ डर, भय।

उ०—[illegible], [illegible] काज। सहम [illegible] [illegible] महाराज।—रा. रू.

[फा. सहम] २ [illegible]। (हि. नां. मा.)

३ [illegible]।

४ [illegible]।

उ०—औदरै मंदोदरि तास भै, सवनंतर आया सहम। कोविया रांम रांवण मरिग, दलै सलिस गमिस्तं सहम।—मल्लूजी कवियो

सहमणौ, सहमबौ-क्रि. अ. [फा. सहम+रा. प्र. णौ] १ भयभीत होना, डरना।

२ चौंकना।

सहमणहार, हारौ (हारी), सहमणियौ—वि०।

सहमिओड़ौ, सहमियोड़ौ, सहम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहमीजणौ सहमीजबौ—भाव वा०।

सहमत-वि. [सं] जिसका मत दूसरे से मिलता हो, एकमत।

सहमति-सं. स्त्री. [सं.] सहमत होने की अवस्था या भाव।

सहमरण-सं. पु.—पति के साथ मरने या जलने की क्रिया, सती होने की क्रिया।

सहमियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. २ चौंका हुआ।

(स्त्री. सहमियोड़ी)

सहयोग-सं पु.—१ साथ, संग।

२ सहायता, मदद।

रू. भे.—सैयोग।

सहयोगी-सं. पु.—१ मददगार, सहायक।

२ साथी।

रू. भे.—सैयोगी।

वि.—समकालीन।

सहर-सं पु. [अ. शहर] १ मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कस्बे से बड़ी हो तथा जहाँ पक्की इमारतें और बड़ा बाजार हो, नगर।

(डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सहर अजेंपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न। पूठ अकब्बर बाहरां यणी बिखधर मन्न।—रा. रू.

उ०—२ हूंकळै तुरां धींधिगरां द्वारहर, सहर पाधर करण काज साका। पाथरां घरर 'गजबंध' रा पाटवत, थरर गढपत गढां पांण थाका।—सेतसी लाळस

रू. भे.—सहैर, सैर, सैं'र।

अल्पा;—सेरड़ी।

[अ.] २ प्रातःकाल, प्रभात।

३ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—करै राड अग्रीयांमणी 'अभै' जोगी कियां, जकै गढ सांमणी तीज जांणी। दमकती दांमणी देख सहरां दिसा, याद कर कांमणी मोच आंणी।—बख्तो खिड़ियो

सहरकोट—देखो 'सहरपनाह'

सहरपना', सहरपनाह-सं. पु.—शहर की रक्षार्थ शहर के चारों ओर बनी दीवार।

वि.—शहर की रक्षा करने वाला।

उ०—गढ द्रढ परकोटी गहर, परखा सहरपनाह। सुख रासी वासी सरव, सुद्रव सचेला साही।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—सैरपनाह, सैरपना', सैरपनौ'।

सहरवांद-सं. पु.—कैदी।

उ०—गांगो वरजांगोत। कूंपाजी रै वास थौ। पछै सूर पातसाह कनै परधांन कूंपैजी मेलियौ। पछै पातसाह सहरवांद थको हीज आप कनै राखियौ थौ।—नैणसी

सहरि, सहरी-वि.—१ शहर का, शहर सम्बन्धी।

२ सदृश, समान।

उ०—ज्यूं सहरी भ्रूण नयण भ्रग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वेलि.

३ देखो 'सरग्रही'।

रू. भे.—सैरियौ, सैरी।

सहरुण-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहरौ-वि. (स्त्री. सहरी) शीघ्र सुनने वाला।

उ०—कहरी सुण कूक ऊवाड़ै कोयण, नहरी जूंनी बात नइ। सुंदर मात हुती तूं सहरी, हमकै बहरी केम हुइ।

—देवी सुंदरबाई रौ गीत

सहल-सं. पु.—१ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव, परिभ्रमण।

उ०—१ हालिया फेर गजनेर करबा सहल, देखिया कोठियां महल देवी। भालि दोनूं सहर आय पूठा भलै, सहर देसांण दीवांण सेवी।—मे. म.

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयंद कुरंग नह जूटै। मझि जळ क्रीड़ न सहल विमोहै, अस सिबका गज रथ न अरोहै।

—सू. प्र.

२ क्रीड़ा, खेल।

उ०—दूसरा 'माल' संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊवारै। रण-चडां सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमतां पड़ै दहल सारै।—कल्यांणदास महड़ू

३ आनन्द, मस्ती, मौज।

उ०—रंगधण कहैज राठवड़, मांन पिया मनवार। सहल करीजै सासरै, चहरी चित दिन चार।—बख्तावर मोतीसर

४ काम, क्रीड़ा।

उ०—रसियौ नित सहलां रमै, महलां मारै मौज। छबी अनूप छत्र धार री, मांनहु रूप मनोज।—सिवबक्स पाल्हावत

५ काठ की मोगरी जो ऊपर से पतली तथा नीचे से मोटी होती है जिससे चूड़े के पातों का बल निकाला जाता है।

वि.—१ सरल, आसान, सुगम, सहज, सीधा।

उ०—१ खड़गधार पर कांम, चालै तौ चलबौ सहल। मुसकल जग रै माय, नेह निभावण नागजी।—नागजी नगवंती री वात

उ०—२ औ जठा तांई जैसळमेर री धरती मैं छै, तितरै म्हांनूं धरती री आस काई नहीं। तरै जगमाल कह्यौ—'इणां नूं मारण सहल छै, पण इणां सूं रावळजी मया करै छै। तरै घड़सी दिलगीर हुवौ।—नैणसी

उ०—३ दूसरा 'माल' संग लियां चतुरंग दळ, यर हरां मार सेणां ऊवारै। रण-चंडा सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमतां पडै दहल सारै।—कल्यांणदास महड़ू

२ साधारण, मामूली।

उ०—वदै महल छतीस राजवंस, कमध नगारा त्रहळ कियै। दहल पड़ै अवरां देसोतां, थारै सहल सिकार थियै।—रुघौ मुहतौ

३ साक्षात, प्रत्यक्ष।

उ०—लुगाई नै कूख मंडियां पैली टाबर रै जलम री जित्ती कोड नेह हरख मोद अर उछाव व्है उत्तौ टाबर व्हियां नीं व्है। वा उण वेळा हरख अर उछाव री इज सहल पूतळी बण जावै।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सहल्ल, सैल।

अल्पा;—सहलड़ी।

सहलड़ी—१ देखो 'सेलड़ी' (रू. भे.)

उ०—आगै अठै कुवौ थौ, तठै गांव थौ, बाग थौ, नरा री छत्र उठै छै। सहलड़ी हुवै। आंबा आगै था।—नैणसी

२ देखो 'सहल' (अल्पा; रू. भे.)

सहलणौ, सहलबौ-क्रि. स.—१ सहलाना।

उ०—भोग कियां मौ हाथ, सहलता जिण जंघा नै। कदळी रूंख समांण, फड़कसी थां पूगां नै।—मेघ

२ परिभ्रमण, सहल करना, घूमना।

३ देखो 'सेलणौ, सेलबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

सहलसौ-वि.—साधारण, मामूली।

उ०—राव राजसिंघ देवड़ौ भैरवदास समरावत नुं डूंगरोत नूं सहलसौ पटौ दे इणरै हीज आंटै राखियौ हुतौ।—नैणसी

सहलांणी—देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

उ०—आ भाइजी रा हाथ री सहलांणी है। जद लोगां जांण्यौ औ पूरौ मूरख है।—भि. द्र.

सहलाणौ, सहलाबौ-क्रि. स.—१ सहलाना।

२ परिभ्रमण कराना, घूमाना।

सहलियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सहलाया हुआ. २ परिभ्रमण किया हुआ।

३ देखो 'सेलियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सहलियोड़ी)

सहलौ-वि.—आसान, सरल।

(स्त्री. सहली)

सहळौ—देखो 'सैळौ' (रू. भे.)

सहलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

उ०—सो सीराण धरा नै सांधै, वज्र मेटियो जु हूता बांधै। केराई मात सांनाथन कोटां, लूटै देस किया सहलोटां।—रा. रू.

सहल—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—प्रात पचक्खर साद नै, गिण दुरपंथ सहल्ल। साथ लियां वड़ पागड़ा, सहल्या सिलमल्ल।—रा. रू.

सहल्लै-क्रि. वि.—आसानी से, सरलता से।

उ०—पनै राजकुमार पितानो, सामरा पाय सहल्लै। रावण महत पत्नी भक्त रावण, दातण देन दहल्लै।—र. रू.

सहवयस, सहवयस-सं. पु. [सं. सहवयस्] सखा, मित्र। (अ. मा.)

सहवर-सं. पु.—१ वीर, योद्धा।

उ०—सेन सुरतांन रा साथ सहवर सयळ, सुभट विमना सुनह सीतवी सोर।—राव चंद्रसेण री गीत

२ सगा भाई।

उ०—दक्ख मेळे जगमाल पीह हमीर पहारै, विह लिखियो घर वेध नाम सहवर संघारै।—मालो आसियो

सहवात-सं. पु.—सौभाग्य, सुहाग।

उ०—ए सायण आज रो वाहर रो ढोल सुहावणो छै—पण म्हारा सहवात नै दाह देणवाळो छै।—वी. स. टी.

सहवाद-सं. पु.—वाद-विवाद, तर्क-वितर्क।

सहवास-सं. पु.—१ एक साथ रहने की क्रिया।

२ संभोग, मैथुन।

उ०—अस्त्री पीहर नर सासरै, संजमीया सहवास। एता होए अलखामणा, जो मांडै घरवास।—डो. मा.

३ मित्र, दोस्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—संवास, सहवास।

सहवासी-वि.—साथ रहने वाला।

सहव्रता-सं. स्त्री. [सं.] पत्नी, भार्या।

सहस-सं. पु. [सं. सहस्] १ मार्गशीर्ष मास।

२ शरद ऋतु।

३ शक्ति, ताकत।

४ प्रचण्डता, उग्रता।

५ विजय, जीत।

६ चमक, कांति।

७ देखो 'सहस्र' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ सहस इसा भड़ लीधा साथै, मेट्ह करार भार रयां माथै। —रा. रू.

उ०—२ जितां नाम विद्राम न लागै, विगत जिका नह व्यापै। धाही पिता देस अवरां री, सहसां मास समपै।—र. रू.

उ०—३ समर उजैण रचै नव सहसो, सूर सहस भेदै नव थान। अराली चकर जहीं खेडेचै, अरक रथां भेदै असमान।

—जगन्नाथ सांदू

८ देखो 'सहसा' (रू. भे.) (अ. मा.)

सहसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

(अ. मा; नां. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—क्हर करांमत 'जसा' हिंदवाण चा सहसकर, भूझ कुण घातधर अवर झालै। तेज सुजडां तणै ताप सम 'गजण' तण, हेम-अनड़ां ज्यूं ही गळै हालै।—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

सहसकरण - देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

सहसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—अर अब सहसकार सास्त्र किया। वर कन्यां तहां बेठाहि सब विधि कीधि।—वेलि टी.

सहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

सहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.) (नां. डिं. को; नां. मा.)

उ०—सहसकिरण सर सुधि करि, देही वधारिसि दाहि। सूर धरइ नहीं सूर को अबला-ऊपरि आहि।—मा. कां. प्र.

सहसक्कर, सहसक्किर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—देखि 'अभैमल' तेज जिकै दिन, आलम एह कथै कथ उच्चर। सूरजवंस 'अजीत' तणौ सुत, सूरजवंस तणौ सहसक्किर।

—सू. प्र.

सहसचक्ष, सहसचक्षु, सहसचख-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+चक्षु] देवराज इन्द्र। (नां. डिं. को.)

सहसजीभ-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+जिह्वा] शेषनाग।

सहसदळ-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+दल] कमल। (ह. नां. मा.)

सहसदुजीह-सं. पु. [सं. सहस्र+द्विजिह्वा] शेषनाग।

उ०—फण सहस सेस नागं सहसदुजीह जोग सोभागं।—गु. रू. बं.

सहसद्रग-सं. पु. यौ [सं. सहस्र+दृग] देवराज इन्द्र। (अ. मा.)

सहसनयण-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+नयन] इन्द्र।

सहसनांम-सं. पु. यौ. [सं. सहस्रनाम] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

रू. भे.—सहस्रनांम।

सहसनांमी-सं. पु. यौ. [सं. सहस्रनामिन्] वह जिसके हजार नाम हो, विष्णु, शिव आदि।

रू. भे.—सहस्रनांमी।

सहसनेत, सहसनेत्र-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+नेत्र] इन्द्र।

(नां. मा; ह. नां. मा.)

सहसनैण-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+नयन] इन्द्र, देवराज। (नां. मा.)

सहसपत्र—देखो 'सहस्रपत्र' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

सहसफण, सहसफणि, सहसफणी-सं. पु. यौ. [सं. सहस्रफण] शेषनाग।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ मणिधर छत्रधर अवर ढुळै मन, ताई धर रज धर 'सीध'

तणा। फणीधर पतसाह फेरतां, फिरै कमळ तन सहसफण।
—रांणा प्रतापसिंघ री गीत

उ०—२ मांडि रहै चंद्रवा तर्णमिसि, फण सहसेई सहसफणि।
—वेलि

रू. भे.—फणसहस फुणसहस, सहंसफण, सहंसफुण, सहसफिण, सहस्रफण सहस्रफुण।

सहसफणधर, सहसफणधार, सहसफणधारी–सं. पु. [सं. सहस्रफनधारिन्] शेषनाग।

रू. भे.—फणसहसधार, सहसफिणधर, सहसफिणधार, संहसफिण-धारि, सहसफिणधारी।

सहसफिण—देखो 'सहसफण' (रू. भे।

सहसफिणधार, सहसफिणधारि, सहसफिणधारी—देखो 'सहसफणधारी' (रू. भे.)

सहसफूल—देखो 'सीसफूल' (रू. भे.)

उ०–बहिइ बाध्या बहिरखा, करि मुद्रडी झलकंति। सहसफूल नइ चुकडा, पदकडी चाक भजंति। —नळदवदंति रास

सहसबदन–सं. पु. यौ. [सं. सहस्रवदन] वह जिसके हजार मुख हो, शेष-नाग।

रू. भे.—सहसवदन।

सहसबळ–सं. पु. [सं. सहस्रबल[१ जिसमें हजार व्यक्तियों का बल हो।

२ सूर्य, सूरज।

सहसबवणि–सं. पु. [सं. सहस्राभ्रवन] वह स्थान जहाँ पर नेमिनाथजी ने दीक्षा ली थी।

उ०—अरै रेवइया गिरि सहसबवणि जात न लागइ वार।
—समुधर

सहसबाह, सहसबाहु—देखो 'सहस्रबाहु' रू. भे.)

सहसभग–सं. पु.—इन्द्र।

सहसभाव–सं. स्त्री.—१ सहिष्णुता।

२ क्षमा।

सहसमालोत—राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सहसमुख–वि. [सं. सहस्र+मुखं] वह जिसके हजार मुंह हो, हजार मुंह वाला।

सं. पु.—शेषनाग।

रू. भे.—सहसमुखौ।

सहसमुखी–सं. स्त्री. [सं. सहस्रमुखा] १ गंगा। (ह. नां. मा.)

२ एक प्रकार का कंद विशेष।

उ०–सिगमंडी सीदूंरिया, तिहां तूंबिणि पालि। सहसमुखी संजीवनी, वच्छनाग वेच्छाळ।—मा. कां. प्र.

सहसमुखौ—देखो 'सहसमुख' (रू. भे.)

सहसमौं–वि. [सं. सहस्रतमः] क्रम में हजारवां, क्रम में ९९९ के ठीक बाद आने वाला।

रू. भे.—सहसवौं।

सहसवदन—देखो 'सहसबदन' (रू. भे.)

सहसवौं—देखो 'सहसमौं' (रू. भे.)

सहसांन–सं. पु. [सं. सहसानः] १ मोर, मयूर।

२ नैवेद्य, भेंट।

३ यज्ञ, हवन।

सहसा–अव्यय. [सं.] १ अकस्मात, अचानक। (ह. नां. मा.)

उ०—किलम गयंद चढियौ हलकारै, अठी 'जगड़' भड़ धीर उचारै। खागां डळै पड़ै हुय खेड़ा, अकस धसै सहसां ऊरेड़ा।—रा. रू.

२ बलपूर्वक, जबरदस्ती।

३ अविचारता पूर्वक।

रू. भे.—सहस, सहसी।

सहसाअजण, सहसाअजणि, सहसाअरजण, सहसाअरजन, सहसाअरजुण, सहसाअरजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे.)

उ०—१ इक वाधौ सहसाअजणि, जळक्रीड़ मझारै। बांमणि गदा विहंडियौ, दूजौ बळि द्वारै।—सू. प्र.

उ०—२ तिल तिल जुध हुआै खगां मुंह तूटौ, चूण न सकै दहूं करां सचूंप। रावत कमळ काज सिव रचियौ, सहसाअरजुन तणौ सरूप।—महादांन महड़ू

सहसात—देखो 'साक्षात' (रू. भे)

सहसातकार–अव्यय—१ सम्मुख, सामने, समक्ष।

उ०—१ वचन तणा दूखण दसै जी, जांणउ एणि प्रकार। कुवचन वोलइ लोकनइ जी, थइ दोस सहसातकार।—स. कु.

उ०—२ सहसातकार कलंक थइ, वलि आप छदइ बोल ए। संखेप सूत्र कहइ आलावउ, करइ कलह निटोल ए।—स. कु.

२ देखो 'साक्षात्कार' (रू. भे.)

सहसाबाहु—देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे.)

सहसाह–सं. पु.—परशुराम के सारथि का नाम।

सहसी—देखो 'सहसा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सहसेई–सं. पु.—शेषनाग।

सहस्य–सं. पु. [सं. सहस्यः] पोष मास का नाम। (डि. को.)

सहस्र–सं. पु. [सं.] १ एक हजार की संख्या।

२ उक्त संख्या का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है १०००।

वि.—हजार।

उ०—देवी सहस्र लखं कोटीक साथै, देवी मंडणी जुध मेवास माथै।—देवि

रू. भे.—संहंस, सहंस, सहस, सहस्स, सैंस, सैंस, संहस।

सहस्रकर, सहस्रकिर–सं. पु. [सं. सहस्रकर] १ सूरज, सूर्य।

२ सहस्र हाथों वाला, सहस्रार्जुन।

३ बाणासुर।

रू. भे.—सहँसकर, सहँसकर, सहँसकिर, सहसकर, सहसकिर, सह-स्रकर, सहस्रकिर, सहस्रकर, सहस्रकिर, सेंहसकर, सेंहसकिर।
सहस्रकिरण-सं. पु. [सं. सहस्रकिरण] सूरज, सूर्य।
रू. भे.—सहँसकिरण, सहसकिरण, सहिसकिरण, सेंहसकिरण।
सहस्रगु, सहस्रगो-सं. पु. [सं. सहस्रगो] सूरज, सूर्य।
सहस्रनख, सहस्रचख, सहस्रचख—देखो 'सहस्राक्ष'।
सहस्रचरण-सं. पु. [सं.] विष्णु।
सहस्रजित-सं. पु. [सं.] १ विष्णु।
२ कस्तूरी।
३ जांबवती व कृष्ण के संसर्ग से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
४ केकय नरेश का नाम।
सहस्रजी-सं. पु. [सं.] जो हजार रथियों की रक्षा कर सके, भीष्म।
सहस्रत-वि. बहु.—हजारों।
उ०—सहस्रत जगत व्यापत सख्य, दुवादस अंगुळ गात दुअख्य।
—ह. र.
सहस्रदखण, सहस्रदखिण, सहस्रदख्खण, सहस्रदख्खिण-सं. पु. यौ. [सं. सहस्र+दक्षिण] एक प्रकार का यज्ञ विशेष जिसमें हजार गायें दान में दी जाती थी।
सहस्रधार, सहस्रधारा-सं. स्त्री. [सं. सहस्रधारः] १ हजार छेदों वाला एक पात्र विशेष जिसमें पानी भरने पर छिद्रों से निकलने वाले जल से देवताओं को स्नान कराया जाता है।
२ विष्णु भगवान् का चक्र।
३ अयोध्या में स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
सहस्रनयण-सं. पु. [सं. सहस्रनयन] १ भगवान् विष्णु।
२ देवराज इन्द्र।
सहस्रनाम—देखो 'सहसनाम' (रू. भे.)
उ०—दांतण कर संपाड़ो कर साह ठाकुरद्वारै जाय साथै दरसण किया, भेंट कीवी, परदक्षणा दीवी। देवीदास सहस्रनाम रो पाठ कियो।—पनक दरियाव री वात
सहस्रनामी—देखो 'सहसनामी' (रू. भे.)
सहस्रपत्र-सं. पु. [सं.] कमल, पंकज।
रू. भे.—सहँसपत्तर, सहँसपत्र, सहसपत्र, सहसपात।
सहस्रपाद-सं. पु. [सं.] १ विष्णु।
२ शिव, महादेव।
३ सूर्य, सूरज।
सहस्रफण, सहस्रफुण—देखो 'सहसफण' (रू. भे.)
सहस्रबाहु, सहस्रबाहु-सं. पु. [सं. सहस्रबाहु] १ कृतवीर्य नामक क्षत्रीय राजा का एक पुत्र जिसका दूसरा नाम हैहय था। यह रावण का समकालीन था। परशुराम ने इसका वध किया था।
(मि. सहस्रारजुण)
२ बाणासुर।
३ शिव।
४ विष्णु।
५ राजा बलि का ज्येष्ठ पुत्र।
६ कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।
रू. भे.—सहसबाह, सहसबाहु, सहसाबाहु, सहस्राबाहु, सहस्राबाहु।
सहस्रभुजा-सं. स्त्री.—देवी का नाम। (मार्कंड. पु.)
सहस्ररस्मि-सं. पु. [सं. सहस्ररश्मि] सूरज, सूर्य।
सहस्ररोमा-सं. स्त्री. [सं. सहस्र+रोमन्] कम्बल।
सहस्रवाक-सं. पु. [सं. सहस्रवाक्] धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक।
सहस्रवीरया-स. स्त्री. [सं. सहस्र+वीर्या] हींग।
सहस्रसिखर-सं. पु. [सं. सहस्र+शिखरः] विन्ध्याचल पर्वत।
सहस्रहरयस्व-स. पु. [सं. सहस्रहर्यश्व] इन्द्र के रथ का नाम।
सहस्रांक-सं. पु. [सं.] सूरज, सूर्य।
सहस्राजुण, सहस्राजुन—१ देखो 'सहस्रबाहु'।
२ देखो 'सहस्रारजुण' (रू. भे.)
सहस्राक्ष-वि. [सं. सहस्र+अक्ष] १ जिसके हजार आँखें हो।
वि. वि.—महाभारत के अनुसार इन्द्र ने गौतम की पत्नी अहिल्या के साथ धोखे से गौतम ऋषि का रूप धारण करके उनके साथ रति प्रसंग किया था किन्तु गौतम के आ जाने पर इनका असली रूप प्रगट हुआ। इस पर गौतम ऋषि के शाप के कारण इन्द्र के शरीर पर सहस्र योनि के चिन्ह हो गए थे किन्तु बाद में इन्द्र के गिड़गिड़ाने पर गौतम ऋषि ने उन योनियों को आँखों में परिवर्तित कर दिया जिससे इनका नाम सहस्राक्ष हुआ।
२ देवी भागवत के अनुसार एक पीठ स्थान।
सं. पु [सं. सहस्र+अक्षः] १ इन्द्र, देवराज।
२ पुरुष।
३ विष्णु।
सहस्राक्षी-सं. स्त्री. [सं.] चौसठ योगिनियों के अन्तर्गत पच्चीसवीं योगिनी।
सहस्रात्मा-सं. पु. [सं.] ब्रह्मा।
सहस्राबाहु, सहस्राबाहु—देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे.)
उ०—आयौ केई वार फरसस उभार, सहस्राबाहू सैन संघार।
—ह. र.
सहस्रास्व-सं. पु. [सं. सहस्राश्व] अहिनग राजा का पुत्र व चंद्राव-लोक का पिता एक राजा।
सहस्रारजुण, सहस्रारजुन-सं. पु. [सं. सहस्रार्जुन] कृतवीर्य नामक राजा का पुत्र जिसका दूसरा नाम हैहय था।
वि. वि.—इसकी राजधानी महिष्मती थी। इसे हैहयवंशीय मानते हैं। दत्तात्रेय ने इसे सहस्रबाहु व अपराजेय होने का वरदान दिया था। इसने ८५००० वर्षों तक राज्य किया था। इसने

रावण को भी युद्ध में पराजित कर कैद किया था। एक बार इसने जमदग्नि के आश्रम से कामधेनु को लेना चाहा इसलिए परशुराम-जी ने इसका वध किया।

रू. भे.—संसारजुण, संसारजुन, सहसाग्रजणि, सहसाग्ररजण, सहसाग्ररजन, सहसाग्ररजुण, सहसाग्ररजुन, सहस्राजुण, सहस्रा-जुन।

सहस्रिन-वि. [सं. सहस्रिन] १ हजारपती, हजार वाला।

२ हजार के करीब।

सं. पु.—१ हजार आदमियों का समूह।

२ हजारों का अफसर, हजारी।

सहस्स—देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—हाडी आडी हल्लणी, बूंदी हूंत अकस्स। सो आयौ राठोड़ तक, घोड़ां जोड़ सहस्स।—रा. रू.

सहस्सकर, सहस्सकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—कामित संपय करणं, तम भर हरणं सहस्सकर किरणं। —ध. व. ग्रं.

सहांणा-सं. पु.—फरोदस्त और कान्हड़ा को मिलाकर बनाया गया सम्पूर्ण जाति का राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सहांणी—देखो 'साहणी' (रू. भे.)

उ०—१ तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहांणी घोड़ां री पायगा विचै बैठा छै। तिण सूं रांम रांम कीधी। —जगदेव पंवार री वात

उ०—२ हिचै असि और खगां पडिहार, सहांणिय रांमति मंडत सार।—सू. प्र.

सहा-सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, भूमि।

२ मेंहदी।

३ अगहन मास।

४ हेमन्त ऋतु।

५ सर्पिणी।

६ ग्वारपाठा।

७ सत्यनाशी।

८ अर्जुन के स्वागतोत्सव में इन्द्र-भवन में नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम।

सहाइ, सहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ कंवर सरणाई साधार सुणता ही सहाई देर लार हुवौ। —वं. भा.

उ०—२ जिणि दीहै पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति वुढी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ।—ढो. मा.

उ०—३ अरजुन पगां की तरफ आइ बैठौ। जागतां ही पहिलै द्रस्टि पड़ियौ। तव अरजुन का सहाइ हुआ।—वेलि टी.

उ०—४ गिरवांणां सहाई मनोज धेनु ग्यांनगोभा, नाराज वरीस सोभा इसी प्रथीनाथ।—र. रू.

उ०—५ तपस्या ठकुराई छीन थाई मिट दुहाई देस ए। चाकर दुजाई पाप माई सुद्ध आई वेस ए। करुणा वढाई पुनि वुलाई जन सहाई आज ए।—करुणासागर

सहाज—देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—साजो हुवौ जद खेत काव्यौ। सहाज देणवाला नैं विण पाप लागौ।—भि. द्र.

सहाजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

सहादत-सं. स्त्री. [अ. शहादत] गवाह, साक्षी।

सहानंदी-सं. पु. [सं.] मगधनरेश महानंदी का नामान्तर।

सहानुभूति-सं. स्त्री. [सं.] हमदर्दी।

सहाब-सं. पु. [फा. शहाब] १ एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

२ किसी व्यक्ति के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

३ देखो 'साहिब' (रू. भे.)

सहाबी-वि. [सं. शहाबी] लाल रंग का।

सहाय-सं. पु. [सं. सहायः] १ सेना, फौज।

उ०—आपरा घायलां रा जीवण रा जतन कराइ दक्खिन रा सहाय सहित दो ही साहजादां अवंती रै उपकंठ ही मुकांम किया। —वं. भा.

२ रक्षा।

उ०—केतै संत निवाजियै, कहौ न मोपै जाय। मोहि छुटावौ ग्राह सूं, वेगी करौ सहाय।—गज-उद्धार

३ सहायता, मदद।

उ०—१ जिकौ दुस्कर देखि परै ही रुकियै थकै जवन नांम पूछियौ जरै कुमार भी आपरा सहाय देण रौ सारौ ही उदत अभिधांन सहित कहियौ।—वं. भा.

उ०—२ सोढ सारंगदेव देवड़ै देव वाढेल वीरदेव प्रामारसिंह देव गाजी नृसिंह इत्यादिक वीरां भी आय सहाय दियौ।—वं. भा.

४ वल, शक्ति।

उ०—प्राची मैं पुत्र नूं भेजि आवाची कूं आवता दो ही पुत्रां नूं समुझावण सांम्हैं जावता पातसाह नूं पेलि तिण री वडौ पुत्र साहस रै सहाय पहिली कहिया कटक रै साथ दरकूंचां दक्खिण रै अभिमुख चलायौ।—वं. भा.

वि—१ सहायता करने वाला, मददगार।

उ०—१ दातार सूर सील कै निवास, दीन कै सहाय द्विज गऊ कै दास।—सू. प्र.

उ०—२ तनि दरसांणी सीतळा, जुगरांणी जगमाय। सरम ग्रही देवासुरां, सुख काज धरम सहाय।—रा. रू.

२ रक्षक।

रू. भे.—सहाइ, सहाई, सहाव, साय, सिहाय, स्याय।

सहायक-वि. [सं.] १ मददगार, सहायक।

उ०—१ गजी हिंद पात अनेक सरूप, विवूंसत फौज सहायक भूप।—मे. म.

उ०—२ मेड़तिया 'मधकर' हर मेड़तै सहायक, साहस कै सादूळ गंम के नायक।—रा. रू.

उ०—३ सुरजन सुत बूंदी सदन, मंग्या दुरजणसाल। व्याहण हूं मछरद नूं, हुवौ सहायक हाल।—वं. भा.

२ मित्र, दोस्त। (ग्र. मा.)

३ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—१ घण मांग्र ववंतांव भीड़ घणी, तनभांण सहायक प्रांण तणी।—रा. रू.

उ०—२ ब्रह्मांड आकर जंतु चराचर, एक अनेक सहायक ईस्वर।

—रा. रू.

उ०—३ गरण सहायक बिरदसिर, पहली ही कुळपांण। अकबर हूं मुड़ियौ अवै, असत करूं तुरकांण।—वं. भा.

४ अनुगामी।

५ चाकर, नौकर।

६ शिव, महादेव।

रू. भे.—सहायत, सायक, सिहायक।

सहायत—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—१ समहर गजबोळ रोळिग्रं सावळ, वेमर वेसर तोलतौ वळ। दिली सहायत 'अचळ' दूसरौ, 'दूद' विरोळै दिखण दळ।

—दूदा नगराजोत रौ गीत

उ०—२ रायांराय साथि रुपवत्ती, भंडारी मति सागर भत्ती। मूंहतां मैं गोपाळ मुदायत, मुत कल्यांण मव भड़ा सहायत।

—रा. रू.

सहायता-सं. स्त्री.—कोई कार्य सम्पादन में किसी को शारीरिक, आर्थिक या मानसिक किसी प्रकार का दिया जाने वाला योग, मदद।

रू. भे.—सायता।

सहारण-वि.—१ सहायता करने वाला।

२ उद्धार करने वाला।

उ०—कव रामचंद हरि नांव लीजै अंत चित रही जोय। जीवड़े सहारण विस्व सिळियौ, मूघि धीरज कीजीय।—वि. सं. मा.

सहारौ-सं. पु.—१ मदद, सहायता।

उ०—अब कळदार लियौ अवतारा, सब कळजुग कौ देण सहारा। नूतन रेल अर तार टतारा, एक करन सबको आचारा।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—मिळणौ, देणौ, लगाणौ।

२ आश्रय, अवलम्ब।

उ०—ग्राह गह्यौ गजराज उबारयौ, बूड न दियौ छै जांन। मीरां दासी अरज करत है, नहिं औ सहारौ आंन।—मीरां

रू. भे.—साहरौ, सैंयारौ।

सहालग-सं. पु.—१ हिन्दु ज्योतिषियों के अनुसार शुभ माना जाने वाला वर्ष।

२ वे दिन या मास जब व्याह-शादी के मुहूर्त अधिक हों।

सहाव-सं. पु. [सं. स्वभाव प्रा. सहाव रा. सभाव] आदत, स्वभाव।

उ०—बाबहियउ नइ विरहिणी, दुहुवां एक सहाव। जब ही बरसइ घण घणउ, तब कहई प्री आव।—ढो. मा.

वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—हरराज हुवौ अरजुन सहाव, कळिजुग जिण कीरति चिर कहाव।—वं. भा.

२ देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—अरजण अर दुरजोधन सहाय मांगिव कै काजि मीकरण कन्है आया।—वेलि टी.

सहावणौ, सहावबौ-क्रि. स.—पकड़ाना।

उ०—झालै भेलै झालिया, ठावै गहै दवाव। (लखौ) झलाया झेलिया, साहै (फेर) सहाव।—डि. को.

सहावणहार, हारौ (हारी), सहावणियौ—वि०।

सहाविग्रोड़ौ, सहावियोड़ौ, सहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहावीजणौ, सहावीजबौ—कर्म वा०।

सहावळ—देखो 'स्यावळ' (रू. भे.)

सहावियोड़ौ-भू. का. कृ.—पकड़ाया हुआ।

(स्त्री. सहावियोड़ी)

सहावौ-वि.—१ धारण करने वाला या सहन करने वाला।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांणां, पूरजटी तावां ऊंच भावां मेर धींग। आवा लोभ रिखी रांम तम्मी ज्यूं दधीच हाड ऊंच, सांमवेद वेदांगां बीरावी संभूसिंग।

—रावत संभूसिंघ गोगावत रौ गीत

२ देखो 'सावौ' (रू. भे.)

सहास-वि.—साहसपूर्वक।

उ०—१ के डेरांधारी सुकव, सवळै तोल सहास। समहर सारां आगळी, कै सिरदारां पास।—रा. रू.

उ०—२ चारण कारण अग्गळा, सांदू जोगीदास। मीसण 'सूरा' भारमल, 'आसल' 'घना' सहास।—रा. रू.

क्रि. वि.—१ खुशी से, हंस कर, हर्षपूर्वक।

उ०—१ खगवाही रिण खेतसी, भाटी जीवणदास। दुजड़ां हथ हरदास ज्यौं, साथै हुवा सहास।—रा. रू.

उ०—२ मचायौ सोण री कीच द्रोण सौ दिखायौ मांनूं, तेगां सूं रचायौ ख्याल अनोखौ तमास। छकै छाक लोहां पूर आरवां विमाणां छायौ, हैकम्पै भूलोक आयौ मुनिंद्रां सहास।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ देखो 'साहस' (रू. भे.)

सहासवंत—देखो 'साहसवंत' (रू. भे.)

सहि-वि.—सब, समस्त।

उ०—१ बीजा लोक सहि आइ मिळिया। – द. वि.

उ०—२ ताहरां अठै बीजा ठाकुरां माहां बीकानेर कोई न हुतौ। सहि सिमांणै हुता। अठै कुंवर स्रीदलपतजी बीकानेर हुता।

—द. वि.

सं. स्त्री.—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)

२ देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—वसुदेव देवकी सूं ब्राहमणै, कही परसपर एम कहि। हुए हरण हथळेवौ हुओ, संस संसकार हुवइ सहि।—वेलि.

सहिउ—वि. [सं. सोढः] सहन किया हुआ। (उ. र.)

सहिकार—देखो 'सहकार' (रू. भे.)

उ०—नालिकेर नीला भला, हाथी हरेवी द्राख। कदळी-फल सहिकार नी, करी कातळी लाख।—मा. कां. प्र.

सहिज—देखो 'सहज' (रू. भे)

उ०—तब एक अदभुत भए तमासा, आत्म जोत हो गई अकासा। वहुरि क्रस्ण के मांहि समाई, साजोत-मुक्त सहिज तिन पाई।

—हरचंद डोहोकियौ

सहिजन—सं. पु. [सं. शोभाजन] भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में पाया जाने वाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

सहिजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—एकाज टूंस आडी नदी नेडौ सहिजादौ खुरम। अणकियै जुद्ध आपां अप्रिय, महाजुद्ध कीयौ धरम।—गु. रू. वं.

सहिणौ, सहिबौ—देखो 'सहणौ, सहबौ' (रू. भे)

उ०—तैं कस्ट सहिण री समरथाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पड़िलेहीण भोगवै छै।—भि. द्र.

सहिणहार, हारौ (हारी), सहिणियौ—वि०।

सहिओड़ौ, सहियोड़ौ, सह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहीजणौ, सहीजबौ—कर्म वा०।

सहित—सं. पु. [सं.] जैनियों के ८८ ग्रहों में से तेरहवां ग्रह।

अव्यय.—साथ, युक्त, समेत।

उ०—१ सठता धूरतता सहित, छंद रचै मद छाय। निपट लियां निरलज्जता, कुकवी जिकौ कहाय।—बां. दा.

उ०—२ आजै अब तिण वार सजै सुर राज राज सौं, सुभट दुजि सचिव समाज सौ। भरिया हौदां वहुत क गहर गुलाल सौं, होवै सहद हंगाम खूब इण ख्याल सौ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ मारु-घुंघटि दिट्ठ मइं, एता सहित पुणिंद। कीर भमर कोकिल कमळ, चंद मयंद गयंद।—ढो. मा.

क्रि. वि.—साथ-साथ, साथ में।

रू. भे.—संहित, सउं, सउ, सहत, सहति, सहती, सहतौ, सह्थ्यहि, सहीत, सहीतौ, सहेत, सहेती, सहेतौ।

सहिनांण—देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जण ज्यूं ज्यूं संभरइ, देख्यां आहीठांण। झुरि झुरि नइ पंजर हुई, समर समर सहिनांण।—ढो. मा.

उ०—२ हूं तेड़ाऊं ताहरां आवै, तीरां री सहिनांण मेल्हीस, तीन भळका मेल्हूं ताहरां इयै सहिनांण आयै, भीवौं कोटड़ियौ मेल्हीस।

—ऊमादे भटियांणी री वात

सहियर—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ सहियर चाली साथइ करी, मारुवणी आधी संचरी। पंखी हुवइ तौ उडी मिळइ, मारुवणी प्रीतम संभरइ।—ढो. मा.

उ०—२ सहियर हे सहियर आवौ मिलौ है उतावली सुंदर करि सिणगार।—ध. व. ग्रं.

सहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बरदास्त किया हुआ, सहन किया हुआ. २ परिणाम भोगा हुआ, फल भोगा हुआ. ३ भुगता हुआ. ४ सज्जीभूत हुवा हुआ, सजा हुआ, तैयारी किया हुआ।

(स्त्री. सहियोड़ी)

सहिलाळी—देखो 'सोलाळी' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

सहिसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—सहिसकिरण सिर संचरइ, सहू सरया सर जेम। रानिललवर रुडुं नहीं, अवळा पीडइ प्रेम।—मा. कां. प्र.

सहिसभुज, सहिसभुजा—देखो 'सहस्रबाहु'।

सहिस्णु—वि. [सं. सहिष्णु] सह लेने वाला, बरदाश्त कर लेने वाला, सहनशील।

सं. पु.—१ विष्णु।

२ प्रजापति पुलह व गति के एक पुत्र का नाम।

सहिस्णुता, सहिस्णुत्व—सं. स्त्री. [सं. सहिष्णुता, सहिष्णुत्व] १ सहन करने की शक्ति।

२ सहन करने की क्रिया।

३ सब्र, धैर्य।

सहिस्रभुज, सहिस्रभुजा, सहिस्राभुज—देखो 'सहस्रबाहु'।

उ०—किधौं सहिस्राभुज पै दुजरांम, किधौं हनमंत असोक अरांम।

—ला. रा.

सही—वि. [अ. सहीह] १ जिसमें त्रुटि, दोष या भूल न हो, बिल्कुल ठीक।

उ०—१ वौ दरबारियां नै नवा नवा सवाल पूछतौ। सही जवाब मिळियां मूंडै मांग्यौ इनांम देवतौ। सोचण सारू मोलगत देवतौ। अर मोलगत पछै सही जवाब नीं मिळियां पूजतौ डंड देतौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ करता करै स तुं सही, मेरा किया न तूझ।

—अनुभववांणी

उ०—३ कोई ऊंचै घराणां रौ आदमी हिंदुस्तांन देखण नै आयौ दीसै। सेठ रौ अंदाज सोळूं आना सही निकळयौ।—अमर-चूंनड़ी

२ यथार्थ, वास्तविक।

उ०—मन कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहे सो महंत सही।
—ऊ. का.

३ सत्य, सच।

उ०—१ मन कूर सनातन दोय सही, सत पंथ बहे सो महंत सही।
—ऊ. का.

उ०—२ अब केवल नांम सही है, वो मोटो रांम सही है। जित्तो तन में उतरया, वित्तो ही कांम सही है।—करणीदांन बारहठ

४ सब, समस्त।

उ०—१ सरकै जुड़ भांभर मेघ सही, जुध में धुजरेण पताल नहीं।—रा. रू.

उ०—२ हिय मां करड वधांमणां, सही त सीधा काज। जे सुपनंतर दीसता, नयणे मिळिया आज।—ढो. मा.

स. पु.—१ किसी बात वचन की सत्यता एवं यथार्थता के लिए साक्षी के रूप में किये जाने वाले हस्ताक्षर।

२ प्रामाणिकता एवं मान्यता सूचक शब्द।

ज्यूं—गैर की कोनीं थे मानो ज्यूं ई सही।

क्रि. वि.—१ अवश्य ही, निश्चय ही।

उ०—१ सत्र हरां नारि नहं नींद भरि सोवसी, हल चलां सही हालां परे होवसी।—हा. झा.

उ०—२ हीया फूट हठ न करो हूरां, नर हिंदू छै तुरक नहीं। बांधीबंध केसरियें बागे, सूर गुहड़ राठौड़ सही।
—हठीसिंघ जोगावत री गीत

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरउ, सही पड़ेसी सीह। वालंभ घरि किम छंडियइ, जां नित चंगा दीह।—ढो. मा.

२ वास्तव में।

उ०—नाक री डांडी, आंख्यां, निलाड़ टील रोमछर देखि सही कंवरजी ही छै।—जगदेव पंवार री वात

३ देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ सही समांणी साथि करि, मंदिर कूं मल्हापंत। सउदागर नेड़ी वहइ, सुणियां प्रीतम वत्त।—ढो. मा.

उ०—२ सही भणइ सुणि सामिणी ए किम होइ गमार। माय बाप विछोउ, अंदोह करइ अपार।—हीराणंद सूरि

अव्यय—१ एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्यों के अन्त में आकर ये अर्थ देता है।

(क) अधिक नहीं तो इतना अवश्य।

ज्यूं—आप अठै पधारजो तो सही।

(ख) कोई असम्भावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रगट करना।

ज्यूं—तोई थूं वठै गयो तो सही।

रू. भे.—सइ, सईह, सहि।

सहीग्रड़-सं. स्त्री.—सहेली या सखी मानने की क्रिया।

उ०—सारसडी सोहइ नहीं, खीजडी बईठी खेव। ईस तिजीनर को करइ, सहीग्रड केरी सेव।—मा. कां. प्र.

सहीक-अव्यय—अवश्य ही, निश्चय ही।

उ०—घुड़ला रुधिर झिकोळिया, ढीला हुआ सनाह। रावतियां मुख भांखणां, सहीक मिळियो नाह।—हा. झा.

सहीत, सहीतौ—देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—१ महादिय मांन करी गुह मीत, तारै सह फौर कुटंब सहीत।—ह. र.

उ०—२ उनमन नेजा फहरै, अनहुंदै घुरै नीसांण। सहीत भोम्यां उपरै, चढियो सबद दीवांण।—वि. सं. सा.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइसारो परलोक में। सुणविलसण सतलोक, जांन सहीता जावस्यां।—रामनाथ कवियौ

सहीतोड़ोतरो-सं. पु.—एक प्रकार का कर विशेष।

उ०—संमत १७०८ राजा जसवंतसिंघजी सहीतोड़ोतरा छूट किया, वाकी सहीतोड़ोतरा वाजै रकमां सरड़ां री साख वदै गांव।
—नैणसी

सहीद-सं. पु. [अ. शहीद] वह व्यक्ति जो देश, धर्म या किसी लोकहित के लिए बलिदान होता हो।

सहीदी-वि.—जो शहीद होने के लिए तैयार हो।

सं. पु.—शहीद का पद, कार्य।

उ०—मोत सूं कोई इलाज नहीं छै। पण चाहीजै जीव म्हारो किणी कांम लागतो तो सहीदी पावतो।—नी. प्र.

सहीनांण—देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

उ०—तठै कुंवरजी आपरा हाथ री सवालाख री मूंदड़ी सहीनांण वासतै रीझ दीवी।—रीसालू री वारता

सहीप—देखो 'सही' (रू. भे.)

उ०—अड़ोवड़ी आग वूढां धकावै वीरांण आघा, महावीर क्रोध चाळै लागा तो महीप। किदीठी कराळो रीत जैद्रथी मिटाया कोप्यो, सत्रवां भुजाटां करी भीम ज्यूं सहीप।—पावूजी रो गीत

सहीली—देखो 'सहेली' (रू. भे.)

उ०—सहीली तेडीनि आवी, सूति करूं प्रणांम। कर जोडी करि वीनती, आग्या द्यु सूं कांम।—नळाख्यांन

सहीस—देखो 'सईस' (रू. भे.)

सहीसलांमत-वि.—१ स्वस्थ, भला चंगा।

२ दोष रहित।

३ अनुरूप।

सहुंगौ-वि.—१ सस्तो।

२ बिना या कम परिश्रम का।

सहु, सहुआं, सहुए-वि.—सब, समस्त, सभी।

उ०—१ सती दीयै आसीस सहु परवार सुहावै। तो उभै गढ चंगी कमण वळ वीयो कहावै।—अ. वचनिका

उ०—२ तारण तरण नहीं को तो सारीखो, पुहवि सहु सोभि नै ए लह्यो पारिखो।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ फिरियौ पछि वाउ ऊनर फरहरियौ, सहुए सूहव उर सरग।—वेलि

रू. भे.—सहू।

सहुरा—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

सहुर—देखो 'सऊर' (रू भे.)

उ०—झाली वडी ठकुरांणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी वात मैं सुघड़। सौ खींवसी घणौ राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सहू—देखो 'सहु' (रू. भे.)

उ०—१ छरा भयंकर छोह चख, डाढ भयंकर डाच। दीसै नाहर देखियां, सहू प्रवाड़ा साच।—वां. दा.

उ०—२ राजा तुम्ह रुडुं हजो, इम माहरी आसीस। परिकर सहू परिवार-सिउं जीवै कोडि वरीस।—मा. कां. प्र.

सहूर—देखो 'सऊर' (रू भे.)

उ०—तरै अग तमायची बादशाह महरवांन होय मनसब दियौ। पण जलाल क्यूं ही सहूर मैं निजर अव्वल आइयौ।

—जलाल बूबना री बात

सहूरदार—देखो 'सऊरदार' (रू. भे.)

उ०—तद ऊदै जी घणां राजी हुवा कही—छै तो बाळक सहूरदार।

—सूरै खींवै कांधलोत री बात

सहूलियत—सं. स्त्री. [फा.] १ आसानी, सुगमता।

२ कायदा, अदब।

३ सुविधा।

सहूवर—देखो 'सहवर' (रू. भे.)

उ०—धणी करै वाखांण सत्त करै मंगळ धमळ, सहूवर साथ अणवर सहोधा। मांडवै परणजै कमंध गोपाळमल, जांनिया साथ रिड़माल जोधा।—दुरसौ आढौ

सहेज—देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—तिहि गंग हिलोलैह जाय, सतगुर चीन्है सहेजै न्हाय।

—वि. स. सा.

सहेट—सं. स्त्री.—संकेत-स्थल।

उ०—पूजा रै मिसि अंबिका रै देहरै नगर बाहिरि हूं आवुं छूं। इतनी सहेट बताई।—वेलि टी.

सहेत, सहेती, सहेतौ—देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—१ नमौ हैग्रीव निगम्म सहेत, नमौ खळ मार हयांनन खेत।

—ह र.

उ०—२ सतियां आंन सहेत, दाग वेदोगति दीधा। केसरिया कमधजां, करै व्रत उछव कीधा।—सू. प्र.

उ०—३ कुटंबां सहेला हुती नाव कीर, वळे पाय रेणा तरी रघु-वीर।—सू. प्र.

सहेद—देखो 'सहद' (रू. भे.)

सहेरउ, सहेरौ—देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—तसु बंधव डूंगरसी ते पण दीपतउ रे भागचंद कुलभांण। विनयवंत गुणवंत सुभागी सहेरउ रे वड़दाता गुण जांण।

—प. च. चौ.

सहेल—सं. पु—चौक।

(मि चौवटौ)

सहेलड़ी, सहेली—सं. स्त्री.—१ सखी, संगिनी। (अ. मा.)

उ०—१ सात सहेल्यां, रै झूलरै औ पणिहारी औ लो, पांणीड़ै नै चाली रे तळाव वालो जी।—लो. गी.

उ०—२ नणद भोजाई सरवर न्है गयी, सात सहेली म्हांरै साथ।

—लो. गी.

उ०—३ संग री सहेली म्हारी रचणी लगावै, कंइयां लगाऊं सायेबां! थारै रे बिना? तीजां आयी ढोलौ नहीं आयौ, पल पल झूरूं मेरा सायेबा! थारै रे बिना।—लो. गी.

उ०—४ दोळी फिरी दसेक कुसुम कर कांमठी, जोवत गहळी जीव सहेली सांमठी। निज निज मुख सां नांम कहावत कंथ रौ, बढि इम हांस विलास मदन महमंत रौ।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—५ सावण री बड़ तीज, रुखमण झूलण चाली ओ। और सहेल्यां झूलै इरां-तीरां रुखमण बीच पधारी ओ।—लो. गी.

उ०—६ विदर सहेल्यां बीच मैं, हंस हंस मारै होड। चेली सूं चूकै नहीं, मौको लागां मोड।—ऊ. का.

२ अनुचरी, दासी।

उ०—सांखलां कही, वैहल छोड देवौ, आफै चली आसी। तर खरळां वहलवांन नुं उतार रथ ऊपर सहेली नूं चाढि वहीर कीवी वहलां भारवरदारी सारी रथ रै पेडै लगाय दीया। ऊभा देखण लागा।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सहीली।

सहेलौ—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—माल्हंतौ घरि आंगणै, सखी सहेलौ कांमि। जो जांणूं पिय माल्हणौ, जै मल्है संग्रांमि।—हा. झा.

सहैंभर—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—पछै राव मालदै दिन-दिन जोर चढतौ गयौ। अजमेर राठौड़ महेस घड़सीहोत नुं पटै दियौ। डीडवांणौ लीयौ। डीडवांणौ राठौड़ कूंपै महैराजोत नुं पटै दीयौ। सहैंभर लीवी। रांव रा कांमदार आय-आय सांभर बैठा।—नैणसी

सहैर—देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—मेड़तौ गांव सोह पड़ायौ, रावळा घरां रा खेत कीया। सहैर नाडी दीरांणी कन्है वासवांणौ कीयौ थौ कहै छै वईक ढुंढा हुवा था। सहैर रौ नांव नवौ नगर दीयौ थौ।—नैणसी

सहोक्ति, सहोक्ति—सं. स्त्री. [सं. सहोक्ति] 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों के व्यवहार से होने वाला एक प्रकार का काव्यालंकार विशेष।

सहोढ़-सं. पु. [सं.] अविवाहित कन्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

सहोदर-वि. [सं.] (स्त्री. सहोदरा) जो एक ही माता के उदर से उत्पन्न हुआ हो।

सं. पु.—सगा भाई, भाई। (डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ कुंवरपदा में भायरा [illegible] सहोदर नूं जाळोर रो दुरग दीधौ। [illegible] भंडागार [illegible] मोतिराज नै पुरस्वा प्रियव्रत रै [illegible] कीधौ।—वं. भा.

उ०—२ जहां नहीं माता नहीं पिता, नहीं कुटंब सहोदरं। जै नर [illegible] जाती [illegible], [illegible] पाप दोन [illegible] जायंतै।—वि. सं. सा.

रू. भे.—सोदर, सोदरज।

सहोदरलखण, सहोदरलखन, सहोदरलछमण-सं. पु. [सं. सहोदर+लक्ष्मण] १ श्रीराम भगवान।

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

सहोधी-वि.—१ कुलीन, अच्छे कुल का।

उ०—[illegible] सहूयर साथ पण-धर सहोधा। मांडवै परणजे कमंध गोपाळमल, जानिया साथ [illegible] जोधा।—दुरगो आढौ

२ ओहदेधारी, पदाधिकारी।

सहोर-वि. [सं.] श्रेष्ठ, उत्तम।

सं. पु. [सं. सहोरा] ऋषि, मुनि।

सह्य-वि. [सं.] १ सहन करने योग्य, सहनीय।

२ मजबूत, ताकतवर।

सं. पु. [सं. साह्य] १ तंदुरस्ती, स्वास्थ्य।

२ सहायता, मदद।

३ योग्यता।

[सं. सह्यः] ४ सह्याद्रि नामक पर्वत।

सह्याद्रु-सं. पु.—श्याम रंग के तने का एक पौधा विशेष जिसकी जड़ को निरगुंडी कहते हैं।

सह्याद्रि--सं. पु.—बम्बई प्रान्त का एक प्रसिद्ध पर्वत।

सहृदय-वि. [सं. सहृदय] १ कृपालु, दयालु, सुहृदय।

२ [illegible]।

वि. [सं. सहृदयः] १ विद्वान।

२ गुणग्राही।

३ सज्जन।

४ रसिक।

सां-सं. स्त्री.—[illegible], सौगंध।

रू. भे.—सौं।

उ०—[illegible] मां बर दिन [illegible] सेरी, [illegible] मेल्ही फेरी। सोगि यात मंनि हउं लाजउं, सैन्य कौरव तणौं नवि भाजउं।

—सालिसूरि

अव्यय—सम्बन्धसूचक अव्यय, से।

उ०—१ ग्यांन गंभीर गंभीर सो, उरळो कोड़ि अनेक। पावक सां उन्हो अपघळ, कोड़ि थोक प्रभ एक।—पी. ग्रं.

उ०—२ हरि मिळिया बह हेत सां, सतगुरु नांमै सीस। उरा पधारो एथियै, आवै बारह ईस।—पी. ग्रं.

उ०—३ धरणीधर मोटो धिणी, मोटां सां मोटोह। तूं नान्हा सां नान्हड़ो, दै दईतां दोटोह।—पी. ग्रं.

सांइड—देखो 'सांढ' (रू. भे.)

सांइणियो-वि. [सं. शाकुनिक] शकुनशास्त्र का जानकार, शकुन बताने वाला।

सं. पु.—१ शकुन बताने वाला व्यक्ति।

२ शकुन बताने वाला पक्षी।

सांइणो, सांइणो, सांइनो, सांइनो-वि. [सं. सहायन] (स्त्री. सांइणी) १ समवयस्क, हमउम्र।

उ०—१ कुंवरसी नांव दियो। सो मोटो हुवो। बडो तिरदार, कुंवरपदो करै। लोक आप सांइना तावै कर दिया। सो उहां नूं कपड़े पाड़ै पोसाख आछी राखै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ धनै सेठ वै नूं कहियौ तूं इण बात रै खयाल मत पड़। परणीजै तो थारी सांइणी देख परण।—पंचदंडी री वारता

२ साथी, दोस्त, मित्र।

उ०—१ म्हांरा मदवा मारू आया वे, रैण रा उनींदा म्हांरै महैलां। संग सांईनां रै सिकारां रमतां, वन वन फरता सैलां।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ साजन आया हे सखी, संग सांइणां लेर। पाई नवनिध नार अब, नगर बधाई फेर।—अग्यात

३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

रू. भे.—सांइणो, सांइणो, सांईनो, सांमीणो, सांमीनो, सांयीनो, सांयीनो, सांइनो, सांइनो।

सांइ, सांई-सं. स्त्री. [सं. स्वागतम्] १ मिलने-भेंटने की क्रिया।

उ०—१ निरमल साधु तणा मन सरीखूं, सीतल सुत नूं सांई। जल जोई राजा मनि कल्पि, नयी ओरम कांई।—नळाख्यांन

उ०—२ अजिउ व्याघ्रिसिउं क्रीडा कीजइ, अजिउ सरप्पसिउं सांई दीजइ, अजिउ हालाहल पीजइ, अजिउ महाविसनउ कवल लीजइ, अजिउ अग्निमध्य प्रवेस कीजइ, अजीउ सत्रुसिउं वसीइ, पुण प्रमाद न कीजइ।—व. स.

सं. पु. [सं. स्वामी] २ मुसलमान फकीर। (सूफी) (मा. म.)

उ०—स्यांम ताज कफनी कमंडळ मैं नीर, राखी भुगत मेल सुधरण सरीर। मोकळ राव आनो देसि माया कौ नचायो, सांई ग्यो मुरांनी मेमनांमी पंथ पायो।—सि. वं.

३ सिन्धियों के लिए आदरसूचक सम्बोधन।
४ सिन्धियों के लिए आदरपूर्ण सम्बोधनसूचक शब्द।
५ देखो 'सांमी' (रू. भे.)
उ०—१ दादू तौ पिव पाइयै, कर सांई की सेव। काया मांहि लखाइसी, घट ही भीतर देव।—दादूबांणी
उ०—२ समझाऊं सौ वार, समज रौ घाटौ सांई। जगत कमावण जाय, मुरड़ बैठे घर मांई।—ऊ. का.
उ०—३ धू ग्रह आस बाळपण धारै, सांई त्यां ततकाळ संभारै। —र. रू.
उ०—४ रति छह मेह अण छेह दूजो 'रयण', तेह राखण जुगां चार तांई। धरा बर दीयौ बग मिलयौ हवै धरती, सुरपति जिसौ अधपती सांई।—छतरसिंघ हाडा रौ गीत
उ०—५ सांई सूं दिल दूसरा, सौ सतमिण सी नारि। हरिया उर इकतार बिन, वांकु ठाकुर मारि।—अनुभववांणी
उ०—६ कंवळौ सगळां साथ, नहीं करड़ौ किण तांई। वरसां मैं वण मौन, समाधी लेवै सांई।—दसदेव
उ०—७ सांई एहा भीचड़ा, मोलि महूंगे वासि। ज्यां आछन्ना दूरि भी, दूरि थकां भी पासि।—हा. झा.
रू भे.—सांइ।

सांईआर, सांईआर—सं. पु.—१ बधिया, खसी। (बैल)
२ बधिया करने की क्रिया।
रू. भे.—संईयार, सांईयार, सांईयार, सांईवार, सांईवार, सांईसार, सांयार।

सांईणौ, सांईणौ, सांईनौ—देखो 'सांइणौ' (रू. भे.)
उ०—१ चैत महीनौ चैन रौ, हुवा ज हालणहार। तंग खेंचौ तुरियां तणां, सांईणां सिरदार।—अग्यात
उ०—२ तेज पुंज नृप सुतण, हुवौ जस वेस झळाहळ। सांईनां साथियां, मिळ खेलै मझि मंडळ।—सू. प्र.
उ०—३ पुत्र रौ नांम जीमूतबाहन थरपियौ। जीमूतवाहन नूं देख प्रजा खुस हुई। वडौ सांईणौ रिसी रौ पुत्र मधूकर तियै रै साथ खेलतां रमतां घोड़ै चढि मलयाचळ गया।—वैताळ पच्चीसी
उ०—४ सादर सांईनी आदर उमगाई, उड़ती परियां सी बरियां घर आई। गोरी गज गांमणि हंसां गति हालै, चंपा डाळी सी राळी भुजचाळै —ऊ. का.
(स्त्री. सांईणी, सांईणी, सांईनी)

सांईयार, सांईयार, सांईवार, सांईवार, सांईसार—देखो 'सांईआर' (रू. भे.)

सांऊ—सं. पु. [सं. श्यामक] कांगनी या चने की जाति का एक प्रकार का घटिया अन्न। (डिं. को.)

सांक—देखो 'संका' (रू. भे.)
उ०—१ साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरइं पूठि। सांक न राखै केहनौ, दूरि किया जिण दूठि।—वि. कु.
उ०—२ पुण्य क्रतूत किया अति परिघल, सुरपति सबल पड़ी मन सांक। पहुंतउ सोम इंद्र परिचावा, वरस्यूं मुगति नहीं तुझ वांक। —स. कु.
२ देखो 'संकौ' (रू. भे.)
उ०—१ छात ढलतैं जसू हुइ नाका छिली। सांक तज साह सूं करै साका। दाव पाका कीया सुजस डाका दिया, जोध बांका करै नांम जाका।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ सेल जमदाढ खाग बेबै धारी वाही सही, सजै झै दाई हरा रौ अजारै खाई सांक। अमी रेल अमीराई पाई सौ दिखाई आछी, अड़ी राई धीठाई वळियौ आड़ै आंक। —करणीदांन कवियौ
उ०—३ गुण तीन दास पतिसाह गाह, वेचिया प्रभु थारा विकाह। राजिया केई दीवांण रांक, सुर कोडि तीस सुर करै सांक। —पी. ग्रं.

सांकड़—सं. पु [सं. संकट] संकट, विपदा।
वि.—१ संकीर्ण, तंग।
२ कष्टमय, दुखमय।

सांकड़णौ, सांकड़बौ—क्रि. अ.—१ संकीर्ण होना, संकुचित होना।
क्रि. स.—२ संकुचित करना, संकीर्ण करना।
३ बंद करना। (दरवाजा)
४ आक्रमण करना, हमला करना।
सांकड़णहार, हारौ (हारी), सांकड़णियौ—वि०।
सांकड़िओड़ौ, सांकड़ियोड़ौ, सांकड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांकड़ीजणौ, सांकड़ीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सांकड़भीड़, सांकड़भीड़ौ—सं. पु.—संकरापन, तंगी।
उ०—गुड़िया ढाहै मदधगज, ताता चाळ तुरंग। सांकड़भीड़ौ सुरग व्है, जिकौ कहीजै जंग।—बां. दा.

सांकड़ाई—देखो 'सांकड़ीलौ' (रू. भे.)

सांकड़ाणौ, सांकड़ाबौ—क्रि. स.—१ संकुचित करवाना, संकीर्ण करवाना।
२ बन्द करवाना। (दरवाजा)
३ आक्रमण करवाना, हमला करवाना।
सांकड़ाणहार, हारौ (हारी), सांकड़ाणियौ—वि०।
सांकड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सांकड़ाईजणौ, सांकड़ाईजबौ—कर्म वा०।

सांकड़ायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकुचित करवाया हुआ, संकीर्ण करवाया हुआ. २ बन्द करवाया हुआ (दरवाजा). ३ आक्रमण करवाया हुआ, हमला करवाया हुआ।
(स्त्री. सांकड़ायोड़ी)

सांकड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकीर्ण हुवा हुआ, संकुचित हुवा हुआ.

[illegible] किया हुआ, [illegible] किया हुआ, ३ बन्द किया हुआ ([illegible]) ४ [illegible] किया हुआ, [illegible] किया हुआ।
([illegible])

सांकड़ीणौ, सांकड़ीणी-सं. पु.—१ [illegible], तंगी, [illegible]।
२ कमी, [illegible]।
३ [illegible]।
४ [illegible]।
५ [illegible]।
रू. भे.—[illegible], सांकड़ाई, सांकड़ेवौ।

सांकड़ै-क्रि. वि.—१ संकट में, आपत्ति में।
उ०—१ जिणरी श्री रत्नी मारी धना तो धनेकां पेगै, देगै देस [illegible] प्रदेसां मांयं देस। करै गोग प्रेत-वाळी सांकड़ै ऊबेल करै, [illegible] दाळो [illegible] दूसरी न देस।—बादरदांन दधवाड़ियौ
उ०—२ [illegible] सांकड़ै उबेल करै, सेंग मुलां [illegible]। धानधांनां 'धन' कहै सदा दिपै जोत धागै, [illegible] छत्रधारी मेवाड़ै म्हाराज।—पदमजी बारहठ
मुहा.—सांकड़ै पावणौ, सांकड़ै लेणौ=मुसीबत या संकट में [illegible]।
२ अचानक, अकस्मात।
उ०—[illegible] पाहुनां सांकड़ै ही आय पूगा।—वं. भा.
३ पास में, नजदीक, समीप।
उ०—१ दोनों वीर सांकड़ै भिड़िया दाव करता बनता हाडोती कै [illegible] बहिया आवै। इर ओर भी दो ही तरफ रा प्रवीर जुदा-जुदा युद्ध करता था वै ही महावीरां रै पाछै रहिया आवै।
—वं. भा.
उ०—२ ज्यूं ज्यूं दिन सांकड़ै आवा मामी रो काळजो धुक धुक करण लागौ। जे की अणहोणी कै अजोगती वात व्हैगी तो......। [illegible] माथा मैं सूरज टूटनै गिर जावैला।—फुलवाड़ी
उ०—३ [illegible] पैसा करतां, अधिक सांकड़ै आयो। कै वेळा [illegible] रखी, बीकानेर बचायो।—बां. दा.
रू. भे.—सांकड़ै।

सांकड़ैल-वि.—जबरदस्त, जोरदार, शक्तिशाली, बलवान्।
उ०—[illegible] पर्व [illegible], सांकड़ैल बड़ा [illegible]। [illegible] तीन न था बीजां, [illegible] कड़ीर।—करणौ महियारियौ

सांकड़ौ-वि. [सं. संकट] (स्त्री. सांकड़ी) १ निकट, पास, समीप।
उ०—[illegible] सांकड़ौ, [illegible] घर रै दोळ। आभी देखण [illegible], [illegible] रो घमरोळ।—बी. स.
२ संकरा, तंग, [illegible]।
उ०—१ [illegible] विचार जोड़ी जोरावर दोन्यौ सांकड़ौ।
—सो. नी.

उ०—२ किस बिध आऊं ए मेरी मां की जाई जांमण री जाई। हम घर मंदी सांकड़ी राज बुलाऊं रे वीरा बेजारो बुलाऊं।
—लो. गी.

३ संकुचित।
उ०—१ संजोग सूं ई अेक सांकड़ा दायरा मैं अवांनै जीवण जीवणौ पड़ै। आंरै जीवण री अडीठ में जका लोग बसै अर पांतरी जीवण सांचरै, वांरा सूं मिळाप नीं व्हैणौ—ओ ई तो संजोग री बात है।—फुलवाड़ी
उ०—२ थारी मासी री ग्यांन माथ ई सांकड़ी है बेटी! म्हारी सीख मांनै तो श्रेकर इण अण नै तो पार पटकणो इ है। श्रो श्रण पूरो व्हियां ई थारै म्हारै बदळा री बात रौ जोग सजैला।
—फुलवाड़ी
उ०—३ गुमांनजी री साध पेमजी, हेमजी स्वांमी नै बोल्यो—हेमजी तीन तूंबड़ा बधता हुंता ते आज फोड़ न्हाख्या। जद हेमजी स्वांमी कह्यो—उणा मांहि थीं नीकलनै नवो साधपणो पचख्या नै तो घना दिन थया, अनें तीन तूंबड़ा बधता परठ्या कह्यो ते किण कारण? जद पेमजी कह्यो—ढीला पड्या था सो सांकड़ा हुंतां हुंतां हुस्यां। पछै हेमजी स्वांमी भीखणजी स्वांमी नै कह्यो—महाराज! आज पेमजी इसी बात कही—ढीला पड्या सो सांकड़ा हुंता हुंता हुस्यां। जद स्वांमीजी बोल्या—थे यूं क्यूं नहीं कह्यो। किणही जावजीव सील श्रादरयो। छव महिना पछै बोल्यो-एक स्त्री म्हैं आज छोड़ी। जद किण ही कह्यो—थे आदरयां नें तो घणां महिना थया है नीं! जद तै बोल्यो—ढीला पड्या हा सो सांकड़ा हुंता हुंता हुस्यां।—भि. द्र.
४ कठिन, दुष्कर।
उ०—१ किणही पूछ्यो आवरो इसो सांकड़ो मारग किताक वरस चालतो दीसै है।—भि. द्र.
५ भयभीत, डरयुक्त।
उ०—मासी रै मूंडा री वात संपूरण व्हियां पैली ई छवूं बीनरा न्यारा न्यारा होय भीड़ रै लारै मलावता गिया परा। लोग घणं ई सांकड़ा होय बोला बोला डरता धूजता गळियारा सांम्ही वहीर होवण लागा।—फुलवाड़ी
६ विकट, विषम।
उ०—ऊंचड़ी जरद्दां कड़ी मड़ी चंडी गेल ढींगे, रयां चड़ी भड़ी भड़ी वरै सूरां रंभ। सांकड़ी वणांता घड़ी वांकड़ी बजायं मार, गळां बड़ी बड़ी कीधी भालै अडीखंभ।—रांनसिंह भाला रौ गीत
७ संक्षिप्त, छोटा।
उ०—कुसलो तिलोक संकड़ाट मैं नावबा लागा। अनें मन मैं जांणै भीखणजी रा श्रावकां नें फेरां। पचखाणां सांकड़ी करबा लागा।—भि. द्र.
८ कमी और अभाव युक्त।

उ०—जद रुघनाथजी बोल्या—म्हैं तौ साध हां। म्हारै कठै कहणौ है रे ? म्हारै तौ मून है। जद रांमचंद बोल्यौ—थांरै नहिं कहणौ तौ उवै किम कहसी ? थां विचै तौ उवै सांकड़ा चालै। मोटा होयनै कांइ लोकां नै लगावौ हौ। चरचा करणी व्है तौ न्याव री चरचा करौ।—भि. द्र.

सं. पु.—१ कष्ट, संकट, आपत्ति।

उ०—१ कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां, सुकर खग दांन जेहांन ऊंचासरा। सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा, वाह रघुनाथ लंका लियण वांकड़ा।—र. ज. प्र.

उ०—२ असपत इंद्र अवनि आहुडियां, धारा झड़ियां सहै धका। धण पड़ियां सांकड़ियां घड़ियां, ना धीहुडियां पढी नका।

—दुरसौ आढौ

२ संकट, भय।

रू. भे.—संकड़ौ, संकडौ।

सांकडउ, सांकडौ—देखो 'सांकड़ौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांकणौ, सांकबौ—देखो 'संकणौ, संकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांकिया राज रांणा सकळ, अकळ पांण छिलियौ असुर। लहरीस जांण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा. रू.

उ०—२ हणियौ तैं जमदाढ हथ, रौद सलावत रेस। साहजहां री सांकियौ, आंवखास 'अमरेस'।—वां. दा.

उ०—३ सूरा रण सांकै नहीं, हुवै न काटल हेम। टूक करै तन आपणौ, काच कटोरा जेम।—वां. दा.

उ०—४ डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणी करंत। सौ लगाय मुख सांकतौ, मावड़ियौ कुचरंत।—वां. दा.

उ०—५ वधियौ व्याज, सच सांकियौ, खुरासांण हुतां खड़ौ। तेत्रीस कोड़ चाडौ तुरै, चंचळ सेत ऊपर चड़ौ।—पी. ग्रं.

सांकणहार, हारौ (हारी), सांकणियौ—वि०।

सांकिओड़ौ, सांकियोड़ौ, सांक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांकीजणौ, सांकीजबौ—भाव वा०।

सांकर-वि. [सं. शांकर] १ शंकर से सम्बन्धित।

२ शंकराचार्य से सम्बन्धित।

सांकरि, सांकरी-सं. पु. [सं. शांकरि] १ शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामी कार्त्तिकेय।

३ अग्नि, आग।

४ एक मुनि।

५ शमीवृक्ष।

[सं. शांकरी] ६ शिव द्वारा निर्धारित अक्षरों का क्रम, शिवसूत्र।

सांकरय-सं. स्त्री. [सं. सांकर्य] मिश्रण, मिलावट।

सांकळ, सांकळ, सांकल-सं. स्त्री. [सं. शृंखला] १ जंजीर, शृंखला।

(डिं. को.)

उ०—१ मारियौ घणा मिळ सीह मंडोवरौ, लाज सांकळ सबळ पाय लागा। हाल सौ (ह) दिली उमराव आंकल हुआ, ऊवरै राव जम राव आगा।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ जांणी बल्लभ जीवणौ, कायर नांणौ कोह। लोपै सांकळ लोह री, लख रण नागौ लोह।—वां. दा.

उ०—३ अथ मदावर लोह नी सांकल त्रोडि, आलांनस्तंभ मोडि, हस्तिसाल भाजि, पउतार गाजइ, कमाड फाडइं, मठ मंदिर पाडिइ हस्तिनी यूथ स्मरइ, व्यंध्य मनमाहि धरइ, वन मांहि सांचरइ।

—व. स.

२ शरीर की हड्डियों का ढाँचा, अस्थिपंजर।

३ दरवाजे में लगाने की सिकड़ी।

४ एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि. वि.—यह कंठ, पैर और हाथ में धारण करने का विभिन्न प्रकार की बनावट का होता है।

५ फोग की गंठीली लकड़ी।

उ०—१ निकळै मिरड़ां लार, गंटेली सूकी सांकळ। धर कोटां रै ध्येय, पड़ी लद लकड़ चां वाखळ।—दसदेव

६ छप्पय का एक प्रकार का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में किसी शब्द की तीन बार आवृत्ति होती है।

रू. भे.—संकळ, संकळि, संकलिक, संकली, सयंकळ, सांकळी, सांकळी, सिकुल।

सांकळउ, सांकलउ—देखो 'सांकळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांकळणौ, सांकलबौ-क्रि. स. [सं. शृंखलनम्] सांकल से बांधना।

उ०—१ गुडळियौ तोई गंग जळ, खांखळियौ तोई दीह। खरौ विखायत 'खींमड़ौ', सांकळियौ तोई सींह।

—आवळ खींमजी री वात

उ०—२ जौ नथियौ तोई नाग, लियौ दरसण तोइ संकर। सांकळियौ तोइ सींह, वाघ पींजरै भयंकर।—मालौ आसियौ

उ०—३ तद फौजदार कही सगळा थारा सांकळिया छै, सौ तूं मन मनाय।—ठाकुर जैतसी री वारता

सांकळणहार, हारौ (हारी), सांकळणियौ—वि०।

सांकळिओड़ौ, सांकळियोड़ौ, सांकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांकळीजणौ, सांकळीजबौ—कर्म वा०।

सांकळियोडौ-भू. का. कृ.—सांकल से बांधा हुआ।

(स्त्री. सांकळियोड़ी)

सांकळियौ-सं. पु.—१ वह दोहा जिसकी तुकबन्दी प्रथम चरण से अन्तिम चरण में मिलती है। इसका दूसरा नाम 'अंतमेल' है।

२ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'संखियौ' (रू. भे.)

सांकळी, सांकळी, सांकली-सं. स्त्री.—१ कान में पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

२ वह आभूषण जो स्त्रियां 'बोरले' के नीचे तथा कनपटी के ऊपर

[illegible] है।

उ०—[illegible] देस री मंनाळ गिणियां-गोरड़ां री मनुहार! साळघां नै [illegible] पर [illegible] नै मून सांकळी, डाढी-डोल्यां नै साफा [illegible], [illegible]-मायां नै दस-दस रा बंध्या नोट।—दसदोख

३ हाथ में पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—१ [illegible] कर [illegible] आरसी, अनमद तिलक बणावइ रे। [illegible] सांकळी [illegible], कड़ [illegible] मनावड़ रे।—मालदेव

उ०—२ [illegible] री काळी होगी सदा तण्योड़ी रेवती अर काजळ री [illegible] पाती में सांकळी में पोयोड़ी डावा मांथा पर मूं छाती पर [illegible] [illegible]।—[illegible]

४ पैर में पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—[illegible] मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीरविलय अंगद [illegible] मुंदरी हृदमांगली पगनी सांकली प्रमुख पहिराया।

—व. स.

५ स्त्रियों द्वारा कार्तिक मास में किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—यह दो प्रकार का होता है—(१) कृष्ण सांकली और (२) राम सांकली। इस व्रत में महिलाएँ पहले दिन निराहार उपवास तदन्तर दो दिन तक एक समय भोजन करती है। इसी क्रम में चतुर्दशी तक करती है एवं पूर्णिमा स्नान की समाप्ति पर निराहार उपवास करती है।

६ [सं. संकलिका] संग्रह।

७ जोट, योग। (उ. र.)

८ देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] उपरांत पत्राणां मूं बादळा छोडजै छै। मू किण भांत रा बादळा छै? हळवदरा, मोरवी रा, अंजार रा, भरवछरा, हालोर रा छै। [illegible] री टूंटी सांकळो लागो छै।—रा. सा. सं.

९ देखो 'सांकळो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] उदरि धांम माहि, सांकळिया री सोक। जुगति [illegible] [illegible], सुण ना बोलै फोक।—[illegible]

सांकळी-सं. पु.—१ पैरों में पहिनने का एक आभूषण विशेष।

२ कंठ में धारण करने का एक आभूषण विशेष।

३ बड़ा व मजबूत शृंखला।

रू. भे.—सांकळी, सांकळड़, सांकलड़।

सांकल्यो—१ देखो 'संक' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सांकियो' (रू. भे.)

सांकाश्न-सं. पु [सं. [illegible]] १ यम की सभा में रहने वाला यम का उपासक एक राजा।

२ देखो 'सांकाश्य' (रू. भे.)

सांकाश्या-सं. स्त्री.—जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी।

रू. भे.—सांकाश्न।

सांकाहूळी, सांकाहूली—देखो 'सांखाहूळी' (रू. भे.)

सांकियोड़ी—देखो 'संकियोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री. सांकियोड़ी)

सांकीचर-सं. पु.—विषपेयी, शिव।

उ०—सांकीचर सहसकर वंभीग्रर सांभळो, राव कमंध भांजै साय रहियो। दइत दळ आप दळ नरो हर तर दातियो, कैरड़े पंडवे नको कहियो।—दुरसो आढो

सांकुड़णो, सांकुड़बो—देखो 'संकुड़णो, संकुडबो' (रू. भे.)

सांकुड़णहार, हारौ (हारी), सांकुड़णियो—वि०।

सांकुड़िओड़ो सांकुड़ियोड़ो, सांकुड़चोड़ो—भू० का० कृ०।

सांकुड़ीजणो, सांकुड़ीजबो—भाव वा०।

सांकुड़ियोड़ो—देखो 'संकुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांकुड़ियोड़ी)

सांकुड़णो, सांकुड़बो—देखो 'संकुड़णो, संकुड़बो' (रू. भे.)

उ०—१ कपोलविच्छाया नायका निस्वास मेल्हइं, नेत्र सांकुड़ां, नयन सजल हुआं, ओस्ठ मिलांणा, चित्त चवल हूउं, चंद्रमांनी कला जिसी राहुइं ग्रसी हुइ, व्याघ्राकांता अगी हुइ जिसी, दवि दाझती वनलता......... ।—व. स.

उ०—२ ....प्रलयकाल तउ नीपनी हुई, बोछीना आंकडानी परि वाकुडी, कूड कपट करी सांकुडी, कुलखाण तणी आंकुडी, इसि सरवाधम स्त्रीजाति जांणवी, आवरत संसयांनांमविनय।

—व. स.

उ०—३ ....दारिद्री लोक सीतइं कांपइं, सकल लोक अंगीठे तापयइं, टाढि हुडवां खडइं राति गरि जिम सांकुडइं स्वांननी परि कुणइं, हाथ पाय आंगुली चणमणइं, हेमंते दधिदुग्ध-सरपिरसना।—व. स.

सांकुडणहार हारौ (हारी), सांकुडणियो—वि०।

सांकुडिओड़ो, सांकुडियोडो, सांकुड़चोड़ो—भू० का० कृ०।

सांकुडीजणो, सांकुडीजबो—भाव वा०।

सांकुडियोड़ो—देखो 'संकुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांकुडियोड़ी)

सांकुल्यो, सांकुल्यो, सांकूल्यो, सांकूल्यो—१ देखो 'संक' (अल्पा; रू. भे.)

मुहा.—गया तो गंगाजी अर लाया सांकूल्यो=उपयुक्त स्थान पर जाकर भी उपयोगी वस्तु नहीं लाना।

२ देखो 'संगियो' (रू. भे.)

सांकेतिक-वि. [सं.] संकेत या इशारे से सम्बन्धित।

सांकेळी, सांकेलो—देखो 'सकेळो' (रू. भे.)

उ०—अस नालव घमण जागवी अहरण, सांजन कर अगमर कर साप। मात्रव लोह तार सांकेलो, तें काढिया मूं हेकण ताप।—तेजसी सांदू

सांकौ—देखो 'संकौ' (रू. भे.)

उ०—पछै रांणौ कूंभौ, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया। ताहरां भीतरलां पण सांकौ राखियौ। ताहरां महिपै पमार नूं वां कह्यौ—हमैं म्हां सूं राखियौ न जावैं।—नैणसी

सांक्रति, सांक्रती—सं. पु. [सं. सांकृति] १ यम सभा में उपस्थित यम का एक उपासक।

२ अत्रिवंशीय एक ऋषि जिन्होंने अपने शिष्यों को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया था।

३ विश्वामित्र ऋषि की पत्नी का नाम।

सांखडि, सांखडी—वि. [सं. संस्कृतिः] परिमार्जित, शुद्ध, साफ। (उ. र.)

सांखला—सं. स्त्री.—पंवार वंश की एक शाखा।

सांखलौ—सं. पु.—पंवार वंश की सांखला शाखा का व्यक्ति।

सांखहड़ौ—सं. पु.—चौहटा। (सभा)

सांखायन—सं. पु, [सं. शांखायन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिसने सांखायन ब्राह्मण की रचना की थी।

रू. भे.—सांख्यायन।

सांखाहुली, सांखाहोळी—देखो 'संखाहुळी' (रू. भे.)

सांखिक—वि. [सं. शांखिक] १ शंख सम्बन्धी।

२ शंख का बना हुआ।

३ शंख बजाने वाला।

४ शंख बेचने वाला।

सांखूल्यौ, सांखूल्यौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'संखियौ' (रू. भे.)

सांखोटा—१ देखो 'संख'।

२ देखो 'संखियौ'।

सांखौ—सं. पु.—चारपाई की बनावट में बान की लड़ियों का वह समूह जिसके मध्य में होकर बुनावट के लिए लड़ी को खींचा जाता है।

उ०—घरां जाय लुगाई नै कहि, अजैगाळ गोटा च्यार-पांच लेय खाधा। झांझरकै झड़ लागौ सू मांचै माहैं ही ज मैदांनां बैठौ सांखौ फाड़ राखियौ।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

सांख्य—सं. पु. [सं] १ महर्षि कपिल द्वारा प्रतिपादित हिन्दुओं के छः दर्शनों में से एक। इसमें प्रकृति को ही जगत का मूल कारण माना गया है।

उ०—कूवौ दरसण ग्यांन, योग भक्ति है वारी। सांख्य नाळ गंभीर, निरीस्वर संखेस्वर भारी।—दसदेव

२ अत्रि नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का एक नाम।

३ संख्याएं आदि गिनने की क्रिया।

वि.—१ संख्याओं से सम्बन्धित।

२ शंख सम्बन्धी, शंख का।

सांख्यजोग, सांख्ययोग—सं. पु. [सं. सांख्ययोग] ऐसा सांख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

उ०—सांख्यजोग निज ग्यांन कहीजै, सार असार पिछांणै। मिथ्या त्याग सत्त की संग्रह, श्री विहंग राह निरवांणै।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

सांख्यायन—सं. पु. [सं.] १ सनत्कुमार ऋषि का शिष्य व पाराशर व बृहस्पति के गुरु का नाम।

२ गायत्री नामक वैदिक सूक्त द्रष्टी का पूर्वज एक ऋषि।

३ देखो 'सांखायान' (रू. भे.)

सांख्यिक—वि. [सं.] संख्या या गिनती से सम्बन्धित।

सांख्यिकी—सं. स्त्री [सं.] १ एकत्रित संख्याओं के आधार पर निष्कर्ष निकालने की विद्या।

२ उक्त प्रकार का शास्त्र।

३ एकत्रित संख्याएं।

सांग—वि. [सं.] १ अंगों व अवयवों सहित।

२ परिपूर्ण।

सं. पु.—१ हविर्धानि वंशीय गय नरेश का एक नाम।

सं. स्त्री. [सं. शक्ति] २ भाले से मिलता-जुलता एक प्रकार का शस्त्र विशेष जो फेंक कर काम में लाया जाता है, शक्ति।

(ना. डिं. को.)

३ एक प्रकार का भाला विशेष जो ६ फुट ४ इंच लंबा होता है यह जोड़ रहित शुद्ध फौलाद का बना होता है। इसके ऊपरी भाग का नुकीला हिस्सा ९ इंच लम्बा व १½ इंच चौड़ा होता है।

(डिं. को.)

उ०—१ औरां रा कर औरठै, पड़िया पाड़ै वांग। जीव पखै ऊभा जठै, सखी धणी री सांग।—वी. स.

उ०—२ इतरै इकौ घोडौ हजार पांच सुं चढीयौ आयौ। हाथ में सांग मण एकरी लीयां थकां आंण पोहतौ।—रा. सा. सं.

४ लोहे की मोटी छड़ जो भार उठाने या पत्थर की भारी पट्टी को उथलने के काम आती है।

उ०—सांग हूंत सरकाय मर, भाटी सौ मण भार। हस्ती किम नह डोलणी, सांग लेय सिरदार।—रेंवतसिंह भाटी

५ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (अ. मा.)

६ देखो स्वांग' (रू. भे.)

उ०—१ रावळियां रांमत रांमत समै, मावड़ियौ लै मांग। तौ रतना पातर तणौ, सखरी लावै सांग।—बां. दा.

उ०—२ जिकै अलवेला ठाकुर जुवांन तिकै केसरिया वागा पहिरै बैठा था त्यांह वेगिदै संघळां ही वगतर पहिरचा। ताकौ द्रस्टांत जैसै बहुरूपिया सांग बदळै। त्यै सें सांग बदळि गया।

—वेलि टी.

अल्पा; रू. भे.—सांगड़ौ।

क्रि. प्र.—करणौ, बणणौ, सजणौ।

मु०—१ सांग करणो=[illegible] करना, पाखंड करना।

२ सांग बणाणो=[illegible] बनाना, मजाक उड़ाना।

३ सांग साजणो=१ धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।

२ मनोरंजन हेतु किसी की नकल करना।

रू. भे.—संग, संगि, सांगि, सांगी।

सांगड़ी-सं. स्त्री.—बड़े पत्थर उठाने वाले संवानियों का डंडा।

सांगड़ो-सं. पु.—१ गाड़ी का वह मजबूत डंडा जिसके बल बैलगाड़ी का [illegible] खड़ा करके उसकी धुरी में घी तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है।

२ देखो 'सांग' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—[illegible] मन चीर सर सबीजै, ताप पड़ सांगड़ा लंक नांई। सर [illegible] सांगड़ा दवण घायो उछज, नागध्रह सांगड़ा वीर नांई।—[illegible]

सांगणी-सं स्त्री.—[illegible] के पौधों की फली।

रू. भे.- मूंगणी, मूंगनी, मूंघणी, मूंगनी।

सांगणो-सं. पु. (स्त्री. सांगणी) १ शकुन शास्त्रानुसार तितर आदि पक्षियों का दाहिनी ओर बोलना एवं हिरण आदि जानवरों का दाहिनी तरफ होना।

२ दाहिनी ओर।

उ०—दामियां दोड़ आगू दर्गे, साथ विराजो सांगणे। कणडोर डोर पूजा करण, पाव पधारो आंगणे।—पा. प्र.

३ देखो 'सागणो' (रू. भे.)

सांगतिक-वि [सं.] १ संगति का, संगति सम्बन्धी।

२ समाज का, सामाजिक।

सं. पु. [सं. सांगतिकः] १ अतिथि, महमान।

२ अजनबी।

सांगम—देखो 'संगम' (रू. भे.)

सांगर-सं. पु.—१ शमी वृक्ष।

२ देखो 'सांगरी' (मह; रू. भे.)

सांगरी-सं. स्त्री. [सं. शमर] शमी वृक्ष की फली जिसे उबाल कर प्रायः साग बनाया जाता है।

उ०—१ [illegible] समनीद सांगरी, लोग नवै कोडायता। ओयणा, [illegible], रहै रंगीला रायता।—दसदेव

उ०—२ कूमी [illegible]। कूमी सिदगोड़ी। जाडी [illegible]। जाडी [illegible] सांगरियां। कठै खीचणी? कठै वगण ग टावर नैण? कठै [illegible] उजियाली? कठै उण रा गुलाबी होठ?

—फुलवाड़ी

अल्पा; रू. भे.—सांगर।

सांगळणो, सांगळबो-क्रि. अ. [सं. सांकल्यम्] १ जखम का भरना, ठीक होना।

२ कुए में 'सीर' द्वारा पानी का आगमन होना।

३ रुपये-पैसों की आमदनी होना।

सांगळणहार, हारो (हारी), सांगळणियो—वि०।

सांगळियोड़ो, सांगळियोड़ो, सांगळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांगळीजणो, सांगळीजबो—भाव वा०।

सांगळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ जख्म या घाव ठीक हुवा हुआ. २ कुए में 'सीर' द्वारा पानी का आगमन हुवा हुआ. ३ रुपये-पैसों की आमदनी हुई हुई।

(स्त्री. सांगळियोड़ी)

सांगवणो—देखो 'सांगणो' (रू. भे.)

उ०—जीमणो हाथ कांनी सूं डावा हाथ कांनी आवै सावदू नै सांगवणो कहीजै इण तरह सावदू ऊभेडा सांगवणा गाळाळा जांणीजै।—रा. व वि.

सांगवो-सं. पु.—रथ, तांगा आदि सवारी पर रखी जाने वाली मसनद को गुड़कने व पड़ने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला उपकरण।

उ०—चरखा पीढा सांगवा भल पेई पिलांण पाचरा। हळवै भरपा कड़ाव हालै, ओग भूर री आचरा।—दसदेव

सांगि, सांगी-वि.—१ स्वांग लाने वाला, स्वांगी।

२ ढोंग व पाखण्ड रचने वाला, ढोंगी, पाखण्डी।

उ०—जनहरीया सांगी घणा, छाप तिल सिर केस। मसतग मूंडां मूंडीयां, तन बदलाया वेस।—अनुभववांणी

३ बैलगाड़ी, रथ, तांगा आदि में वह छींका जिसमें छोटी-छोटी वस्तुएं रखी जाती हैं।

४ बैलगाड़ी, रथ, तांगा आदि में गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

५ देखो 'सांग' (रू. भे.)

उ०—परठइ सांगि लागि लोहडांनी, प्रांण करेवा लागइ। हलहल करि विहु पखि विलगई, मोटी मूरति नागइ।—कां. दे. प्र.

सांगीआई—देखो 'सांगीयाई' (रू. भे.)

सांगीत—देखो 'संगीत' (रू. भे.)

उ०—रजा ब्रह्म री रूप अन्नेक रम्मं, घणां वाजणां घूवरा धम्म धम्मं। घटा भद्द ज्यों नद्द आनद्द घोरं, धुवै ताळ कंसाळ सांगीत घोरं।—मे. म.

सांगीयाई-सं. स्त्री.—१ भाटियों द्वारा गले में धारण की जाने वाली सोने या चांदी की मूर्ति जो उनकी ईष्टदेवी की छः बहिनों व एक भाई सहित है।

२ आवड़ माता का नाम।

वि. वि.—यह भाटियों की ईष्टदेवी है। भाटी आवड़ माता की, छः बहिनों व एक भाई सहित, सोने या चांदी की मूर्ति गले में धारण करते हैं।

काठियावाड़ के वल्लभीपुर नामक नगर के गाउवा शाखा के

चारण मादा के पुत्र मम्मट (मामड़) की यह पुत्री थी। इसकी छः छोटी बहनों के नाम निम्नलिखित हैं—
इच्छा (आछी), चर्चिका (चाची), हुली (होल), रेप्पली (रेपलो), गुली (गहूली) और लछी (लांगी या खोड़ियार)।

सिन्ध के अन्तिम राजा ऊमर सूमरा के अत्याचारी, धर्मभ्रष्ट व दुराचारी होने के कारण उसके वध हेतु आवड़ माता ने जाम लखियार की सेना के आगे सांग (शक्ति) लेकर युद्ध किया था। अतः इसका नाम 'सांगीयाई' पड़ा।

रू. भे.—सांगीआई।

सांगुस्ट, सांगुस्ठ-सं. पु. [सं. सांगुष्ठ] अंगूठे सहित हाथ का पूरा पंजा।

उ०—आगळै प्रिया प्री चौथै आरंभि, फेरा त्रिण्हि इण भांति फिरि। कर सांगुस्ट ग्रहण कर सूं करि, करि कमळ चांपियौ किरि।
—वेलि.

सांगूणौ—१ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)

उ०—बाहर पधारतां नेकाल घणी सखरी मनमांनी माल्हाळी हुई। ऊपरां तुरत लाभ री सांगूणी हुई। पहलै डेरै सुंई-सांझ ठावा बोलिया। झांझरकै निवासी बोलिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'सांघणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांगूणी)

सांगेळ, सांगेळौ-सं. पु. [सं. साकल्यम्] बाहुल्यता, आधिक्य।

सांगोपांग-वि. [सं. साङ्गोपाङ्ग] १ सभी अंगों और उपांगों सहित, पूर्ण, पूरा।

उ०—सांगोपांग हि स्वर सहित, अक्षर सुद्ध उचार। स्रोत स्मारत सुधार किये, आरयावरत उधार।—ऊ. का.

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—उदरि थिकी उतपति करी, सांगोपांग सरीर। उदरि थिकां पायू अमी, आदि ऊपायुं खीर।—मा. कां. प्र.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

४ भीड़-भड़ाकै सहित।

उ०—सेवट झोड़-झपाट करतां करतां मोची ई साथै टुळग्यौ। बादळ तौ सांगोपांग मेळा रै साथै राज-दरबार मैं जावणौ चावतौ हौ। उणरै तौ भरै पड़ती इज गी।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—भली प्रकार से, अच्छी तरह से।

उ०—सावळ गढ रै च्यांनणां मैं सेठ-साहूकारां री माल-मता री सत्ता सरूप सांगोपांग ठा'पड़ रैयौ हौ। हाट बजार री अर सुनारां री हटड़ै री सोभा देख'र वगता री आंख्यां खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

सांगौ—देखो 'सागौ' (रू. भे.)

उ०—झटपट छोड़ जगत का कांमा, लटपट चरणां लागौ। सिर पर तीर लांघियौ चावौ, तौ कर सतगुरु जी रौ सांगौ।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

सांघणी—देखो 'सांगणी' (रू. भे.)

उ०—ठाकरां सेर तिल खा ज्यावौ कांई? तौ कै सांघण्या समेत कै कोरा।—अग्यात

सांघणौ-वि. [सं. सघन] (स्त्री. सांघणी) १ सघन, घना, गहरा।

उ०—इसी सांघणी वनसपती मिळनै रही छै। जांणै दूसरी घटा छै। दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै। सुवा केळ करै छै। तूती बोल रही छै लाल हाक मार रह्यौ छै।—रा. सा. सं.

२ समीप, पास।

उ०—जका लोथियां रा पगथिया कर कर घणा हेतू भाई भतीजा बाप बेटा उपरां पग धरता अर घणौ हरख करता कोट मैं पड़ण नुं धावै छै। त्यां ऊपरां आछरां रा विमांण घणां सांघणा अड़-बड़ै छै।—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

३ अधिक, ज्यादा।

उ०—१ भड़ पूंतारै आपरा, धारै सांमधरम्म। 'भांण' तणौ अस भेळियां, दळ सांघणौ दुगम्म।—रा. रू.

उ०—२ दळां विच हुवौ होळी खळां निरदळै, सीस भांजै वहै सांघणां सार। तेणि जुधिवार झूझार 'दूजण' तणौ, भड़ अपड़ सौहियौ आवरै भार।—सेखा दुरजणसालोत रौ गीत

४ एक साथ, इकट्ठा।

उ०—१ साथ घणै सांघणै, अणी जीमणै जवन्नां। उतमातौ भाराथ, जांणि पाराथ करन्नां।—रा. रू.

उ०—२ सिरी गंग रौ नीर सन्नांन सारू, दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आसावरी धूप हूमै, घणां सांघणां दीप सांमीप घूमै।—मे. म.

५ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ इसै जोस अणभंग दुहूं तरफां दईवांणां। सजै मार सांघणी, वाडि असमरां उडांणा।—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

उ०—२ अणी फूल ऊपरां, झोकि ऊडंड झळाहळ। सझूंराड़ सांघणी, वाहि सांबल वीजूजळ।—सू. प्र.

क्रि. वि.—६ आदरपूर्वक, सम्मान के साथ।

ज्यूं—अठै तौ रांमौ सावळ बोलै पण घरै गयां सांघणौ नीं मिळियौ।

७ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सांगूणौ, सांघुलौ, साघणौ।

सांघुलौ—१ देखो 'सांघणौ' (रू. भे)

उ०—मोटइ सत महि माहि अचलेसर आयइ हुवइ। सींघण हरि हुइ सांघुली, बहुवां ति करि विवाहि।—अ. वचनिका

२ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)

सांच - देखो 'सत्य' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ तिण नूं मुवा री उपाव छै। तहां गुरु कहियौ सो सांच

ई।—सतारी री वारता

उ०—२ लिछ तुम्ही पात, पाळ घनादी पालटै। लाजै कुळरी लाज, सांच रमावणी सांचरा।—रामनाथ कवियो

उ०—३ सदा सुगत मांनी नई युं, सवळ सक्ति सिरमौड़ है। नमां मनो सांच वखांणसी, नारी सांच निचोड़ है।—नानूराम संस्करता

सांचभड़तर, सांचभूड़तर-सं. पु. यौ.—व्यापार, वाणिज्य।

(डिं. को.)

सांचणौ, सांचबौ-क्रि. स.—१ सांचे बनाना।

२ सांचे में कोई वस्तु ढालना।

३ देखो 'संचणौ, संचबौ' (रू. भे.)

उ०—.........परीक्षामुद रत्नजाति लीजइं, परदेसी वस्तुना श्राय पुरीइं, तांबूलना नेमना टीपणां संभालीइं, प्रवेसकारिणी वासण सांचीइं, सेत्र विधीइं,......... ।—व. स.

सांचणहार, हारौ (हारी), सांचणियौ—वि०।

सांचियोड़ौ, सांचियोड़ौ, सांच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांचीजणौ, सांचीजबौ—कर्म वा०।

सांचरणौ सांचरबौ—देखो 'संचरणौ, संचरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वर जोड़ां अगाहर हस वरियौ, सिवमाळा गेचरि रत सरियौ। 'ग्रामा'रौ सुरां आचरियौ, सुज हरि जोत मुगति सांचरियौ।—गोकुल राठौड़ रौ गीत

उ०—२ चांदा थारी निरमळ रात सइयां म्हारी हो, चांदा थारी निरमळ रात नणदल नै भोजाइ सैलां सांचरी।—लो. गी.

उ०—३ काळा निरजीव अर सुरंगा कोयलां में वासदी रौ परस पातां ई जिण भांत जीवण सांचरै, वै जगामग करण लागै, उणी भांत वानी मासी इण बाळ कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग करण लागी।—फुलवाड़ी

उ०—४ थारी देह रौ रगत पीव, नौ महीना कूख में लुटियौ, उण साख प्रेहर ई दया कै नेह नीं सांचरियौ। थूं इत्ती निरमोही कीकर व्हैगी।—फुलवाड़ी

उ०—५ सूरज रौ पंथ उजाळण साह आखी दुनियां में मधरौ मधरौ उजास सांचरियौ अर बादळ रौ पंथ उजासण उगुण दिसा सूं दरवड़ाौ सूरज ऊगियौ।—फुलवाड़ी

सांचलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—आ सांचला नीं आसी तो ई ठीक रैवती। इण सांचली बात मात आवण सूं तो म्हारा संदेसड़ा ई चोखा हा।

—तिरसंकु

सांचव, सांचवट-सं. स्त्री.—सच्चाई, सत्यता।

उ०—मर गां देखनै कहियो। सोळौ री तौ न देणी। इण सोट री ओ मजूरी देवणी। सांचवट सूं अंगी-अंग वाकार नै मारणौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सांचांणी—देखो 'साचांणी' (रू. भे.)

उ०—१ सायणियां खिलखिलाहट सूं चांवटा नै भर दियो पर वा सांचांणी झेंपगी। एक सायण हंसती हंसती बोली—किण नै पाछौ भेजियौ थैं धापू।—रातवासौ

उ०—२ सेसनाग रौ बेटौ बींनणी री बात सुण नै अगूं तो राजी व्हियौ। कह्यौ—बींनणी री समझ तौ सांचाणी दुनियां में वखांणौ जैड़ी ई है।—फुलवाड़ी

सांचाई—देखो 'सत्यता' (रू. भे.)

उ०—निस्कपटता स्रद्धा, सरलता अर सांचाई। विनयी सांत सुभाव, धीर वर अध्यवसाई।—टावर सईकड़ौ

सांचारिक, सांचारी-वि. [सं. सांचारिक] १ संचार सम्बन्धी।

२ संचार करने वाला।

सांचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ संचे बनाया हुआ. २ संचे में ढाल कर कोई वस्तु बनाया हुआ. ३ देखो 'संचियोड़ौ' (रू. भे.)।

(स्त्री. सांचियोड़ी)

सांचियौ-सं. पु.—१ सांचे बनाने वाला कारीगर।

२ सांचे में ढालकर वस्तुएं बनाने वाला कारीगर।

सांचिलौ—देखो 'सांचौ' (रू. भे.)

सांचेलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेठ इण वरदांन रौ सांचेलौ सार नीं समझ सक्या तौ ई सेसनाग रै बेटा रा मूंडा सूं आ बात सुणनै वै मनोमनां विचार करियौ कै म्हनै इण में जोखौ ई कांई।—फुलवाड़ी

उ०—२ दलाल कैयौ—हूं जागती जांणसी कै सांचेलौ मौवत अर हिरदै री हेत इसौ हुवै। आप अबै न्हावौ-धोवौ करल्यौ। फुरती सूं तेल-फुलेल लगायल्यौ। गैणा-गाभा पैरल्यौ अर वेगा सा नीचा पधारौ।—दसदोख

उ०—३ सांचेलौ गुरु धणी, दूसरा ठग पाखंडी। साधु महंत फकीर, वेस धर धाप धमडी।—नारी सईकड़ौ

(स्त्री. सांचेली)

सांचोड़ौ—देखो 'सांचौ' (अल्पा; रू. भे.)

(स्त्री. सांचोड़ी)

सांचोट-सं. स्त्री.—सच्चाई, सत्यता।

उ०—घणी भाजा-दौड़ी करी, पण मामलै री जीत तौ भुगाने री सांचोट में रैयी।—दसदोख

सांचोरा-सं. पु.—१ एक जाति विशेष जो अधिकतर सांचोर में निवास करती है तथा अपने को पंचद्राविड़ के अन्तर्गत ब्राह्मण कहती है।

२ चौहान वंश की एक शाखा।

सांचोरी—देखो 'साचोरी' (रू. भे.)

सांचोरौ-सं. पु.—सांचोरा जाति का व्यक्ति।

सांचौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तक लीधो सोना तिको, पानरवाळो प्रेम। ज्यां सांचौ कर जांणियौ, कह्यौ न दे धन केम।—बां. दा.

उ०—२ गाहै सोदै ग्राहकां, ढाहै जै गज ढल्ल। लाहौ लोटै वांणियौ, श्रा है सांची गल्ल।—बां. दा.

(स्त्री. सांची)

२ देखो 'संचौ' (रू. भे.)

उ०—वेलण वेली बांह, लाल होठां रंग भीनौ। सांचै ढळियौ हीव, कंवळ चुण कर मैं लीनौ।—नारी सईकड़ौ

सांज, सांजड़ली—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—१ दळ बादळ बिच चमकै जी तारा सांज पड़ै पिव लागै प्यारा। कांई रे जबाब करूं रसिया कांई रे मिजाज करूं रसिया।—लो. गी.

उ०—२ दिन दिन लेखण हाथ म्हारी सुंदर गोरी रे, सांजड़ली पड़ी रे रोकड़ सारता हो राज।—लो. गी.

सांजउ-वि.—संयत। (उ. र)

सांजणी-सं. स्त्री. [सं. सांग्रही, सयवनिता] वह गाय या भैंस जो दूध देती हो किन्तु किसी कारणवश उसका दूध न निकाला गया हो।

रू. भे.—सांझणी, सांदणी, सांधणी, सैंनणी।

सांजत, सांजति, सांजती—देखो 'साजत' (रू. भे.)

उ०—१ श्रस चालव धमण जागवी श्रहरण, सांजत कर श्रसमर कर साप। सात्रव लोह तांण सांकेलौ, तै काटिया सूं हैकण ताप।—तेजसी सांदू

उ०—२ सांजत समहर डाव संडासी, चख धिखतां थहिया रंग चौळ। श्रहरण श्रकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजड़ां बाहै घमरोळ।—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—३ ताहरां दरबार श्रागै रूंख वाढण लागा, बुहरावण लागा। बिछावणां मोकळा मेल्हि मंडना देखी कुंवरजी गुमांन कियौ। इतरी डेरा री सांजति घणी सी क्यूं।—द. वि.

सांजवण-सं. स्त्री. [सं. संयवन] १ परिवार, कुटुम्ब।

(वि. वि. देखो 'कबीलो')

२ रसोईघर।

सांझ—देखो 'संध्या' (रू. भे.) (श्र. मां; उ. र; डिं को.)

उ०—१ श्रमल री पिक लागी श्रटल, सुख लूटै वै सुलखणा। सवेरा सांझ दोनूं समै, काझकंझ नै कुलखणा।—ऊ. का.

उ०—२ हुवै चम्मरां झाटका जोति हूबै, सदा ऊतरै श्रारती सांझ सूवै।—मे. म.

सांझड़ली, सांझड़ी—देखो 'संध्या' (श्रल्पा; रू. भे.)

सांझणी—देखो 'सांजणी' (रू. भे.)

सांझनट-सं. पु. [सं. संध्यानाटी] शिव, महादेव।

सांझि, सांझी-सं. स्त्री.—१ विवाह के श्रवसर पर घी पिलाने की रश्म से लेकर विनायक पूजा की रश्म तक नित्य संध्याकाल में गाये जाने वाले विवाह के गीत।

उ०—जैन बांग मचिया वडजोरां, गहरै सुर श्राई गिणगोरां। छित पर मिळमिळ छोरयां छोरां, करदी सांझी च्यारूं कोरां।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—लेणी।

२ मांगलिक पर्व के कुछ दिन पूर्व नित्य संध्या के समय गाये जाने वाले मांगलिक गीत।

उ०—सांझी रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया रंगरोल रे। संघ सहु की हरखियउ, वारू दीधा नवल तंबोल रे।—स. कु.

३ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—धरलीली धण पुंडरी, घरि गहु गहई गमार। मारू देस सुहांमणउ, सांवणी सांझी वार।—ढो. मा.

४ देखो 'साझी' (रू. भे.)

सांझेदार—देखो 'साझेदार' (रू. भे.)

सांझेदारी—देखो 'साझेदारी' (रू. भे.)

सांझै—देखो संध्या' (रू. भे.)

उ०—सांझै भूखा सोई, करै परभात चळोवळ। हाथऊं कूंत उगाड़ि, मार ढाहै मोताहळ।—राव रिणमल री वात

सांझौ—देखो 'साझौ' (रू. भे.)

उ०—दुख-सुख सांझौ राख, साख सांची भखावै। विमळ वुवारां वणी, धणी री धाक लखावै।—नारी सईकड़ौ

सांट—देखो 'साट' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया कैसै मिळै, रांम नांम की सांट। गरु धजाली बाहिरौ, होय न सोदौ हाट।—श्रनुभववांणी

सांटगांठ—देखो 'सांठगांठ' (रू. भे.)

सांटै—देखो 'साटै' (रू. भे.)

उ०—१ पांचू ही प्रमारां सीस रै सांटै दुरग दीधौ।—वं. भा.

उ०—२ सांम रै साथ सत्कार हूं मिळायौ थकौ सीस रै सांटै स्वांमी रौ ही सासण प्रमांणै।—वं. भा.

सांटौ—१ देखो 'सांठौ' (रू. भे.)

२ देखो 'साटौ' (रू. भे.)

सांठ—देखो 'साट' (रू. भे.)

सांठगांठ-सं. स्त्री.—गुप्त एवं दूषित सम्बन्ध युक्त षड़यन्त्रकारी मेल मिलाप।

मुहा.—सांठगांठ करणी=गुप्त एवं गूढ उद्देश्यपूर्ण मेल जोल करना।

रू. भे.—सांटगांठ।

सांठि, सांठी-सं. स्त्री.—१ तीर की डंडी जहाँ तीर लगा रहता है।

उ०—१ सुश्रर घणा तीर बरछियां सूं पूर हुवौ। बरछियां रा फळ मांहै टूट रहिया। तीरां री सांठी टूटी, भालां री गांस मांही रही सो लोहां सूं पूर हुवौ थकौ पार होय जा बरड़ी ऊपर खड़ौ रहियौ।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ हरीया सांठी सूरति की, सबद भळका संध। तक धीरज करि तांणीयै, तांह मूकै मनबंध।—श्रनुभववांणी

उ०—३ मारयौ बांण सरीर मैं, विण सांठी विव भालि। जन–

भीतर मन भरि रह्यौ, रंग भयौ नर हांनि ।—अनुभववांणी

२ मान ।

उ०—हरि हीरा मन जौहरी, हरीदा हिरदै गांठि । गाहक मिळीयां सू मिळै, नहि हीरां री सांठि ।—अनुभववांणी

३ गांठि ।

उ०—है आठंगबंध मैं मन पवनां की गांठि । हरीया मिळै गुरान मैं, सुरति सबद की सांठि ।—अनुभववांणी

सांठौ, सांटौ-सं. पु. [सं. षाष्टिक] १ ईख, गन्ना ।

उ०—अेक रात गेहुआं रा खेत अोर सांठां री वाड़ में रहियौ ।

—डाढाला सूर री बात

२ ज्वार के पौधे का डंठल ।

३ ईख का डंठल ।

मुहा.—सांठै सांठै चावणौ—अन्तिम स्थिति तक अनुभव करना ।

४ देखो 'सैंठौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सहठौ, सांटौ, सेंटौ, सैंठौ ।

सांड-सं. पु. [सं. षण्ड] १ वह बछड़ा जो नस्ल सुधार करने के उद्देश्य से बिना बधी रखा गया हो । (उ. र.)

उ०—वाह वाह बारठजी भली कही । मन री लही । हुकम किया । जांगड़िये वडा राग माहे दूहा दिया । परिजाऊ दूहा । पेगड़ा सांड धवळ रा दूहा । अेकलगिड़ वाराह रा दूहा ।

—र. वचनिका

२ वह बछड़ा जो हिंदुओं में किसी मृतक की स्मृति में गरुड़ पुराण की समाप्ति पर दाग (चिन्हित) कर यों ही छोड़ दिया जाता है । वृषोत्सर्ग वाला बैल ।

उ०—समुद्रखारउ, वादल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, मुरख भसणउ, ससउ नासणउ, रांणउ लेणउ, स्त्रीस्वभाव लाडणउ, सांड आडणउ, कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट, स्वजन मिस्ट, प्राणि नाठी, घाहु राती ।—व. स.

पर्याय.—आंखल, जेगड़ौ, तरण, नौपत, मदक ।

मुहा.—१ सांड सौ कोस जाय तोई आंक धणी रौ=मालिक की वस्तु मालिक से कितनी ही दूर क्यों न हो उसका सम्बन्ध नहीं मिटता है ।

२ सांड किसा गोरां में रेवै=शूरवीर छिपे नहीं रहते ।

३ सांडां री लड़ाई में बाड़ा रा खोगाळ=शक्तिशाली या समर्थ व्यक्तियों के झगड़ों में गरीबों का नुकसान होता है ।

४ नाहरां क्यूं कै सांड हां, पोठा क्यूं करां कै गउ रा जाया हां=ढोंगी ढींगें हांकने वालों के प्रति व्यंगात्मक कथन ।

५ वह घोड़ा जो नस्ल-सुधार के लिए रखा जाता है ।

वि.—१ हृष्टपुष्ट, मोटाताजा ।

उ०—सांडां ज्यूं ए साथड़ा, भांडां ज्यूं कर भेस । रांडां में रोता फिरै, सान न आवै सेस ।—ऊ. का.

२ वीर, बहादुर ।

उ०—सांड सीमाड़ जग जेठ ऊंवासिरौ, आवळै घाटि 'दूदा' उजाळौ । वळा सौ ऊजळा वेध 'वीठळ' हारै, करै ऊगै समां भेळ काळौ ।—वनमालीदास रौ गीत

३ उन्मत्त, पागल ।

उ०—वेद न सुणियौ विमळ, सेद पाई तन खोयौ । सांड हुय रह्यौ सदा, रांड रांड हि कर रोयौ । न्याय न जांणै नितुर, निलज जांणौ नहि नीती । निज नारी व्रत नेम, रूगड आंणी नहि रीती ।

—ऊ का.

४ बलवान, शक्तिशाली । (डिं. को.)

५ शिव-वाहन, नंदी ।

६ देखो 'सांढ' (रू. भे.)

उ०—सांड्यां रै भाई जलदी सांड पिलांण वेग पधारो रांणी सीकरी रे देसमें जो म्हारा राज ।—लो. गी.

७ देखो 'सांडौ' (मह; रू. भे.)

रू. भे.—संड ।

अल्पा;—सांडियौ, सांढियौ, सांढीउ, सांढीयौ ।

सां'ड—देखो 'सांढ' (रू. भे.)

सांडइकोसी-सं. स्त्री.—लड़की को दहेज में दिया जाने वाला एक सांड सहित बीस गायों का समूह ।

सांडघेरौ-सं. पु.—गेहूं, बाजरी, ज्वार आदि की फसल का वह भाग जो सांड के लिए खेत के मध्य में फसल काटते समय छोड़ दिया जाता है ।

सांडणी—देखो 'सांढ' (रू. भे.)

सांडसउ-सं. पु. [सं. सन्दशः, सन्दशकः] १ चिमटा, संडासी ।

(उ. र.)

२ जर्राही का एक औजार ।

३ एक नरक का नाम ।

सांडाई-सं. स्त्री.—अक्खड़पन, जबरदस्ती, जोरावरी ।

उ०—भुगानै री सगळी सांडाई उतरगी । आखी अकड़ाई निकळगी । सीधौ गजबरगौ हुयग्यौ अर मिनख नै मिनख सो जांणण लागग्यौ । बीस पांवडा आंतरै सूं रांम-रांम करै ।—दसदोख

रू. भे.—संडाई ।

सांडियौ-सं. पु.—१ संदेशवाहक, हरकारा ।

२ मादा ऊंट की सवारी करने वाला ।

३ देखो 'सांड' (अल्पा; रू. भे.)

रू. भे.—सांड्यौ, सांढियौ, सांढीउ, सांढीयौ ।

सांडिल—देखो 'सांडिल्य' (रू. भे.)

सांडिली-सं. स्त्री. [सं. शांडिली] १ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो धर्म ऋषि की पत्नी व अग्नि की माता थी ।

२ कौशिक ऋषि की पत्नी दीर्घिका का एक नाम ।

३ शांडिल्य ऋषि की स्वयंप्रभा नामक तपस्विनी कन्या।

वि. वि.—एक बार इसके आश्रम में अतिथि स्वरूप गालव ऋषि एवं पक्षिराज गरुड़ आये। इसने उनका यथोचित आदर सत्कार किया। सोते समय गरुड़ ने मन में विचार किया कि इस तपस्विनी को अपने पंखों पर बिठा कर विष्णुलोक ले जाना अति उत्तम रहेगा। इसी विचार के कारण एक ही रात में गरुड़ के पंख गिर गये। तत्पश्चात दोनों इसकी शरण में आये तो इसने अनेक वर दिये।

सांडिल्य-सं. पु. [सं. शांडिल्य] १ एक देश का नाम।

२ शांडिल्य ऋषि के वंशज।

३ विल्ववृक्ष, विल्वपत्र।

४ अग्नि का एक नाम।

५ एक ऋषि जिन्होंने भक्ति एवं विधि शास्त्र को बनाया था।

६ कश्यपवंशीय महर्षि देवल के पुत्र एक ऋषि जो अग्नि के पिता थे।

७ एक ऋषि जिसे अवैदिक मार्ग से विष्णु की उपासना करने के कारण नर्कवास की शिक्षा भुगतनी पड़ी थी।

८ अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र एवं कश्यप का ज्येष्ठ भ्राता।

९ ब्रह्मदेव के सारथि का नाम।

१० एक शिव भक्त राजा जो युवावस्था प्राप्ति के पश्चात् काम-वासना में लिप्त हो कर अनेक स्त्रियों के साथ अत्याचार करने लगा था अतः शिव ने इसे एक हजार वर्ष तक कछुआ बनने का शाप दिया था।

रू. भे.—सांडिल।

सांडौ-सं. पु. [सं. शांडिक, प्रा. सांडिअ] १ गोधा की आकृति का एक जंगली जंतु जिसका मांस पौष्टिक एवं स्वादिष्ट माना जाता है। इसकी चर्बी औषधियों में काम आती है। इसका तेल भी निकाला जाता है।

उ०—१ धरती खारी जे'र निजर पूगै जितरै कठैई भाड़-बोटकै नै घास-फूस रौ नांम ई नी। इण धरती मैं सांडा अर पीपूड़ी परड़ां घणी मिळै। वरसात रा दिनां में अठै पांणी भरीज जावै।

—रातवासौ

उ०—२ रांम नांम नहीं जांणियौ, कीया और कळाप। हरीया जै घरि संपदा, होसी सांडा आप।—अनुभववांणी

२ संग, साथ।

३ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामूहिक रूप से कार्य संलग्न व्यक्तियों को मजदूरी के साथ खिलाया जाने वाला भोजन।

४ देखो 'सांड' (रू. भे.)

उ०—अरधंगी हेम-पुत्री, सरपौ कंठेखि वाहणौ सांडौ। सिखा-नेत भाल चंदौ, तस्मै रुद्राय नमौ।—गु. रू. वं.

रू. भे.—संडौ, सांढौ।

सांड्यौ—देखो सांडियौ' (रू. भे.)

उ०—सांड्या रै भाई जलदी सांड पिलांण वेग पधारां, रांणी सीकरी रै देस मैं जी म्हारा राज।—लो. गी.

सांढ, सांढ, सांढि-सं. स्त्री.—मादा ऊंट, ऊंटनी।

उ०—१ रावजी सलांमत सवा पोहर दिन चढियां सोनिगरा कांन्हड़दे नै विस होसी। इसौ सांभळै नै राव लाखणसी कागद लिखनै वीरा राइका नै कह्यौ। वोलाई सांढ ताती छै। तिण चढनै जालोर जा। सवा पोहर दिन चढियां मोहर जाए। तोनै सावास देसां।—वीरमदै सोनिगरा री वात

उ०—२ सौ इहां रै गाय भैंस सांढां रा वरग घणां। सौ सांढा रै लारै रैबारी रहै। सौ अति अटावरा रहै, अपजोरा हालै। कही नुं खातर मैं न आंणै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दिन दस-वीस आडा घात सैल-सिकार रौ नांव लै सत्ता-सर आया, असवार हजार-एक सुहडां सूं। हेरा दोय मेलिया, जौ खबर ल्यावौ वरग सांढां री कठै छै?

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ एथ अमरै कल्यांणमलोत पातसाही सांढि ली हुती। ताहरां कुंवर स्री दळपतजी नूं राजाजी कहाड़ि मेल्हियौ जु अै सांढि घेराए।—द. वि.

रू. भे.—संढ, सांइंड, सांड, सांईणी, सां'ढ, सांयंड, सांयंढ।

सांढियौ, सांढीउ, सांढीयौ—१ देखो 'संढौ' (अल्पा; रू. भे.)

(डि. को.)

२ देखो 'सांड' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सांडियो' (रू. भे.)

उ०—१ तरां सांढियै उपरणी रौ फररौ कीयां आवतौ विरमदेजी री नीजर आयौ। तरै कह्यौ। ठाकुरै कोई ओठी ताती सांढ खड़ियां आवै छै। तिसै सांढीयौ पिण आय पोहतौ।

—वीरमदै सोनिगरा री वात

उ०—२ नितु नितु नवला सांढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ण काजि।—ढो मा.

सांढौ सांढौ—देखो 'सांडौ' (रू. भे.)

उ०—आंणंद अर सुख सूं चांनणी अर सूरज रा उजास मैं दोनां रा दिन घुळण लागा, जांणै वांरा सुख वास्तै ई चंदरमा अर सूरज ऊगै। पण सुख-दुख, हरख-बिसाद अर संजोग-विजोग रौ अतूट सांढौ। अेक दूजा बिना कोई संपूरण नीं।—फुलवाड़ी

सांण-वि. [सं. शाण] सन या पटसन का।

सं. पु. [सं. श्राणा, मांडी, कांजी] १ भोजन। (अ. मा.)

२ कमल।

३ धनुष।

उ०—मोर मुगट सिर जास कांन केरढी कुंडळ, वसन पीत तन स्यांम गळै माळा गुंजाहळ। भुज मुरळी चत्रभुज संख सांण चक्र-

रू, गोरंग्घन ऊजरग्गु वमह लोचन नंदन नंद ।—ज. खि.

[सं. शाणं] ४ सन का बना मोटा कपड़ा ।

[सं. शाण] ५ कसौटी का पत्थर ।

६ दाग ।

७ चार माशे के बराबर तोल विशेष ।

सं. स्त्री. [सं. शाण] ८ शस्त्रों की धार पैनी करने का एक प्रकार का उपकरण विशेष ।

उ०—घणि धावक आविया, सस्त्र सांजिया सतावी । सांणां चाढिया सुज, ढल जड़िया हद फाबी ।—मे. म.

९ उत्तेजित करने वाले शब्द ।

उ०—अर च्यारि ही भायां समेत 'माधांणी' हाडो मुकुंदसिंह, गौड़ अरजुनसिंघ, राठौड़ रतनसिंघ जिसड़ा जोधार काली रा कळस अणगळियार तोड़ हाथियां रै माथै हाथ करता साथियां रै सांण लगावता साहजादा रै समीप हालिया ।—वं. भा.

मुहा.—सांण लगावणी=उत्तेजित करना, जोशयुक्त करना ।

१० गर्जन, ध्वनि ।

उ०—घण घरी गरज बाजणी पायल, नै प्रांचइ आगळी नद । गोरीरव मारवइ तणी गति, मेहगं ऊपरि सांण सद ।

—महादेव पारवती री वेलि

११ देखो 'सांन' (रू. भे.)

सांणग्रह, सांणघर-सं. पु. [सं. शान+गृह] १ वह स्थान जहां शस्त्रों की धार पैनी की जाती है ।

२ देखो स्नानघर (रू. भे.)

सांणजी, सांणजीव-सं. पु [सं. शान+जीव] सिकलीगर । (डिं. को.)

सांणत –देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सांणि-सं. पु. [सं. शाणि:] सन या पटसन ।

सांणी, सांणो-सं. पु. [सं. साधनिक:] १ घोड़ों की देख-रेख करने वाला, तबेले का प्रबंधक ।

उ०—उणरो रावळै मांहे आवो, सो आगै सांणी था होज, तिणै घोड़ां तिणांरै मांहे सवार हुवा । राजा मुंहतो दोनूं असवार हुवा ।

—द. दा.

मुहा.—सांणां रा बगस्या किसा घोड़ा बगसीजै=कोई अधिकार से बाहर चीज कैसे दे सकता है या अनधिकृत व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता ।

२ घोड़ों को शिक्षित करने वाला ।

उ०—......सतवान के सहोदर, जहां तूंबा में प्रयाग, तिल-आप रै तीनै त्यारै तवनूं री दाद, सांणियां नै भली विध सीरै त्यार रै तुरग साज सिज तिनकं गुजराज, धजराजू की समाज अन आप रै दोर सज......।—र. रू.

सं. स्त्री. [सं. शाणी] १ कसौटी ।

२ कपड़े का तंबू ।

३ छोटी कनात या तम्बू ।

४ फटा कपड़ा ।

५ शान का पत्थर ।

रू. भे.—सांहणी, साहणी, साहांणी, सोणी ।

सांणोर-सं. पु.—डिंगल का एक मात्रिक (छंद) गीत विशेष ।

वि. वि.—उक्त गीत के कई प्रकार के भेद होते हैं । जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं :—वडो सांणोर, छोटो सांणोर, सुद्ध सांणोर, प्रहास सांणोर, वेलियो सांणोर, सुइद सांणोर आदि ।

उक्त सभी प्रकार के गीतों से सम्बन्धित विस्तृत विवरण यथा-स्थान वर्णानुक्रम में देखें ।

सांणो, सांणो-सं. पु.—१ नाज की कोठी से नाज निकालने का छेद, मोरी ।

२ उक्त मुंह को बंद करने का उपकरण ।

सांत-वि. [सं. शांत[१ जो दबा दिया गया हो, दबाया हुआ ।

२ मरा हुआ ।

३ जिसका पूर्णतः अन्त हो चुका हो ।

मुहा.—शांत होणौ=मृत्यु को प्राप्त होना ।

४ सन्तुष्ट, अघाया हुआ ।

५ जिसमें जोश या क्रोधादि वेग न रह गया हो, स्थिर ।

उ०—१ सील सांत, कांत सुर मीठी, गायड़ री मन भावणी । हंसी अर असलील आवतां, टाबर टग अणखावणी ।

—नारी सईकड़ो

उ०—२ निस्कपटता सद्धा, सरलता अर सांचाई । विनयी सांत सुभाव, धीर वर अध्यवसाई ।—टाबर सईकड़ो

६ कोई मानसिक आवेग, रोग आदि का मिटना ।

उ०—गाळ न ऊठै गूमड़ो, ऊठै भाळ अकरय । जिणनूं सज्जन सैण जळ, सांत करण समरत्थ ।—बां. दा.

७ शिथिल, ढीला ।

८ अप्रभावित ।

९ शुभ, मंगलकारी ।

१० जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, जितेन्द्रिय ।

(डिं. को.)

११ चुप, मौन ।

१२ उत्साह, उमंगादि से रहित ।

१३ निस्तब्ध, निरव ।

उ०—दरवाजो ओटाळग्यो । होस्टल रा लांबा बरांमदा मांय गूं, जांण-बूझ'र निकळ्यो । सगळा कमरा सांत पड़्या हा ।

—तिरसंकू

[सं. श्रान्त] १४ थका हुआ, श्रान्त ।

१५ सौम्य, गम्भीर ।

उ०—अद्भुत अमद सोभा समंद, स्रुति सकल सार बरजित विकार ।

अज अमर ईस सब लोक सीस, सुभ सांत सुद्ध पालक प्रबुद्ध।
—ऊ. का.

१६ जिसका ताप व उष्णता नष्ट हो चुकी हो।
सं. पु. [सं.] १ सुख, आनन्द, हर्ष। (डि.को.)
२ आप नामक वसु के चार पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।
३ प्लक्षद्वीप का एक वर्ष।
४ उक्त वर्ष पर शासक एक राजा जो प्रियव्रतपुत्र इध्मजिह्व राजा का पुत्र था।
५ आयु राजा के एक पुत्र का नाम।
६ तामस मनु के एक पुत्र का नाम।
७ दुर्दम राजा की पत्नी सुभद्रा का पिता, एक राजा।
८ काव्य के नौ रसों में से एक रस, जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् काम, क्रोध आदि वेगों का शमन माना गया है।
(डि. को)

वि. वि.—चूंकि नाटक में केवल अभिनय ही प्रमुख है अतः शान्त रस को जिसमें क्रिया, मनोविकार आदि की शांति रहती है, नाटक में स्थान नहीं दिया गया है। अतः नाटक में केवल आठ रस ही माने जाते हैं।

सांतकरण, सांतकरणि—सं. पु. [सं. शान्तकर्ण] शांतकर्णि नामक एक राजा।

सांतकुंभ—देखो 'सातकुंभ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सांतनव—सं. पु. [सं. शांतनव] शांतनु के पुत्र भीष्म का नाम।
(डि. को.)

सांतनु—सं. पु. [सं. शान्तनु] चन्द्रवंशीय इक्कीसवां राजा, जो प्रतीप एवं सुनन्दा के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—भागवत के अनुसार इनके हस्तस्पर्श मात्र से वृद्ध व्यक्ति यौवनावस्था को प्राप्त करता था। इनकी पत्नी गंगा से भीष्म नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। वसुराज नामक धीवर की सत्यवती (मत्स्यगंधा) नामक कन्या इनकी दूसरी पत्नी थी। इसी विवाह हेतु भीष्मपितामह ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी। दूसरी पत्नी सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद व विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए थे।

रू. भे.—संतण, संतणु, संतन, संतनु।

सांतनुसुत—सं. पु. [सं. शांतनु+सुत] १ भीष्मपितामह।
२ शांतनु के पुत्रों का नाम।
रू. भे.—संतनसुत, सतनुसुतन।

सांतपन—वि. [सं.] दो दिन में पूरा होने वाला।
सं. पु.—१ एक प्रकार का उपवास जो छः रात्रि तक किया जाता है।
२ पहले दिन सिर्फ पंचगव्य पीकर दूसरे दिन किया जाने वाला उपवास।

सांतपनकृच्छ, सांतपनकृछ—सं. पु. [सं. सांतपनकृच्छ] एक प्रकार का व्रत विशेष।

वि. वि.—इस व्रत में पहले दिन कुछ पीया जाता है व दूसरे दिन उपवास किया जाता है। इसमें पहले दिन गोमूत्र पीकर दूसरे दिन उपवास, फिर पहले दिन गोमय पीकर दूसरे दिन उपवास इसी क्रम से दूध, दही, घी, कुशोदक आदि पीकर प्रत्येक के दूसरे दिन उपवास किया जाता है।

सांतर, सांतर—सं. स्त्री.—सामग्री, सामान।
उ०—हीलाकर हिणके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहिं लाधा। ढालां ढालांतर सांतर ढळियोड़ा, बैठा नीरांतर आंतर बळियोड़ा।—ऊ. का.
वि.—जिसमें बीच में अवकाश हो।

सांतरज—सं. पु. [सं. शान्तरज] एक काशीनरेश का नाम।

सांतरय—सं. पु. [सं. शान्तरय] पुरुरवा वंशीय धर्मसारथि के पुत्र का नाम।

सांतरस—देखो 'सांत' (८) (रू. भे.)
उ०—नव रस कहि दिखाइ। सरस वीरै वीररस किआ। रौद्रै रौद्ररस किआ। अपछरा सिंगारस किआ। नारद हासरस किआ। काइ रै भैरस वीभच्छरस किआ। सुरै सांतरस अदभुतरस किआ।
—र. वचनिका

सांतरौ, सांतरौ—वि. [सं. सत्तरम्] (स्त्री. सांतरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया।
उ०—१ रे जाया इण मैं मत कर ढील, पडै मत आंतरौ के हां। रे जाया रांम सिया जी रौ संग, सारां सूं ही सांतरौ के हां।
—गी. रां.
उ०—२ पण माया तौ दिन दूणी रात चौगणी बध्योड़ी इज घणी आछी। बांणियां रौ सिरै धरम बिणज ब्यौपार। हाल तौ माया घणी बधावणी है। अंड़ौ सांतरौ मौरत टाळबौ कीकर पोसावै।—फुलवाड़ी
२ अच्छा, ठीक।
उ०—१ थनै छोड कोई उपाव सोधणा चिचै तौ इण मारग री सोय नीं व्हैणी ई सांतरी है।—फुलवाड़ी
उ०—२ कदै ई तौ आ बात सांतरी लागै अर कदै ई वा बात आछी लागै।—फुलवाड़ी
३ स्वादिष्ट, जायकेदार।
४ स्वस्थ, रोगमुक्त।
उ०—किणही खेत बायौ। खेत पाकौ इतलै धणी रै बाळौ दुखणी आयौ। जद किणही ओखद देइ सांतरौ कीधौ।—भि. द्र.
५ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।
६ उचित, वाजिब, उपयुक्त।
उ०—उणनै सावळ समझावता कैवण लागा—मां अबै आं भाईजी

री नहीं करा। धारणी श्रोर घर इन धार्गै किसी री सांतरी घात [illegible] नांखी।—दुरगादी

७ उत्कृष्ट, बढ़िया।

उ०—[illegible] सांतरी, बैठी इव मुगताह। क्या बुगी करवा [illegible] इव मुगताह।—बां. दा.

८ तेज, तीक्ष्ण।

उ०—[illegible] हाथ बांणस [illegible], [illegible] जोग रोको वनास। सांतरा [illegible] तेल, तारका झबकवै इसड़ तेल।—वि. सं.

९ तीव्र, [illegible]।

उ०—घोड़ा मारां नूं दाणा दियो। ताजा करो। हथियार सारा सांतरा करण लागा। बगतर, झिलम, जिरह-मूषण, जिरै जूता घोड़ां री पाखरां कराईजै छै, सुधारजै छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

१० सुन्दर, खूबसूरत।

उ०—थारै हाथ री [illegible] सांतरी लागै।

सांता-सं. स्त्री. [सं. शांता] १ राजा दशरथ की कन्या जो महर्षि ऋष्यशृंग को ब्याही गयी थी।

२ रेणुका।

३ शमी।

४ एक श्रुति। (संगीत)

५ दूब, दूर्वा।

६ देवी का नाम।

७ भारद्वाज ऋषि की माता का नाम।

रू. भे.—सायंता।

सांताकारी-वि. [सं. शांतिकारिन्, शांतिकारी] शांति प्रदान करने वाला।

उ०—नमो सांताकारी श्रपार श्रघहारी हरी नमो।—ऊ. का.

सांति-सं. स्त्री. [सं. शान्ति] १ वेग, क्षोभ, चिन्ता, दुख श्रादि से रहित श्रवस्था, शान्त होने की श्रवस्था।

उ०—दान सील तप दंम, ग्यांन, स्वाध्याय सरळता। सत्य श्रहिंसा त्याग, सांति [illegible], खमा [illegible]।—टावर सईकड़ौ

२ स्थिरता, श्रपरिवर्तनीयता।

३ श्राराम, चैन।

४ वह सामाजिक श्रवस्था जिसमें मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा, उत्पात श्रादि का श्रभाव हो।

५ नीरवता, निस्तब्धता।

६ मृत्यु, मौत।

७ धीरज, धैर्य।

८ निश्चेष्ट होने की श्रवस्था।

९ वासनाश्रों से मुक्ति, विराग।

१० सौभाग्य।

११ बचाव।

१२ श्रनिष्ट या श्रशुभ का निवारण।

१३ पीड़ा, रोग श्रादि से मुक्ति।

१४ युद्ध की समाप्ती।

१५ मेल, मिलाप।

१६ श्रघाने की श्रवस्था, सन्तुष्टी।

१७ दुर्गा देवी का नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म ऋषि की पत्नी का नाम।

१९ कर्दम प्रजापति एवं देवहूति के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रियों में से एक, जो श्रथर्वन ऋषि की पत्नी थी।

सं. पु.—२० श्रीकृष्ण श्रौर कालिन्दी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२१ वारुणि श्रांगिरस ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२२ शिविवंशीय राजा श्रजमीढ के पौत्र का नाम जो सुशान्ति का पिता था।

२३ तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

२४ ब्रह्मसावर्णि के इन्द्र का नाम।

२५ भगवान् यज्ञ एवं दक्षिणा के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—संति, संती, सांती, सांयत, सांयति।

सांतिक-वि. [सं. शान्तिक] शान्ति से सम्बन्धित।

सं. पु.—शान्ति के कारण होने वाला परिणाम।

सांतिकर-वि. [सं. शांतिकर] शांति करने वाला।

सांतिकरम-सं. पु. [सं. शांतिकर्म] प्रेत-बाधा, पाप, बुरे ग्रह श्रादि द्वारा श्रनिष्ट या श्रमंगल की संभावना के निवारण का उपचार।

सांतिकुंभ—देखो 'सातकुंभ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सांतिगह, सांतिग्रह, सांतिघर-सं. पु. [सं. शांतिगृह] वह स्नानागार जहां यज्ञ के श्रन्त में पाप तथा श्रशुभ श्रादि की शांति के लिए स्नान किया जाय।

सांतिजिन-सं. पु.—वर्तमान काल के सोलहवें जैन तीर्थंकर, श्री शांतिजिन।

सांतिद, सांतिदाता सांतिदायक, सांतिदायी-वि. [सं. शांतिदातृ] १ शांति देने वाला।

२ विष्णु भगवान्।

सांतिदेवा, सांतिदेवी-सं. स्त्री. [सं. शांतिदेवा, शांतिदेवी] देवक राजा की कन्या का नाम जो वसुदेव की पत्नी थी।

सांतिनाथ—देखो 'सांतिजिन'।

सांतिपंचमी-सं. स्त्री. [सं. शांतिपंचमी] श्राश्विन शुक्ला पंचमी।

वि. वि.—इस दिन इंद्राणी व कुश के बने १२ नागों की पूजा की जाती है। इससे नागों का भय जाता रहता है।

रू. भे.—सांतिपांचम।

सांतिपरव-सं. पु. [सं. शांतिपर्व] महाभारत का बारहवां पर्व जो सब

पर्वों में सबसे बड़ा है। इसमें युधिष्ठिर के चित्त की शांति के लिए बहुत से उपदेश व ज्ञान चर्चा लिखी गई है।

सांतिपांचम—देखो 'सांतिपंचमी' (रू. भे.)

सांतिपात, सांतिपातर, सांतिपात्र-सं. पु. [सं. शांतिपात्र] ग्रह, पाप आदि की शांति के लिए जल रखने का पात्र।

सांतिप्रद-वि. [सं. शांतिप्रद] शांति देने वाला।

सांतिवाचन-सं. पु. [सं. शांतिवाचन] वह मंत्र पाठ जो प्रेत बाधा पाप आदि के अमंगल को दूर करने के लिए किया जाय।

सांती—देखो 'सांति' (रू. भे.)

उ०—प्रभू आग्या दीनीं ग्रहन कर लीनी स्तुति पढी, विखै सांती सांती कव उमर सांती हियै वढी। नभै सोती जागी लगन धुन लागी जक नहीं, स्वयंभू ध्याऊं मैं परमपद पाऊं सक नहीं।

—ऊ. का.

सांतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—निकमाळै री रतां, कमनीय किरवा काढां। साळ तिवारां सफां, माथ सांतीरां चाढां।—दसदेव

सांतोम, सांतोमि—देखो 'स्तोम' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सांतौ, सांतौ-सं पु.—चोरी के उद्देश्य से दीवार में लगाई जाने वाली सेंध।

उ०—सांतौ देवतां घर रौ धणी जागै तो चोर उणनै मन ई मन गाळियां काढै। चोर, ठग, धाड़वी, ठाकर, साहूकार अर राजा आं सगळां री सुख दूजां रै दुख अर संताप मैं।—फुलवाड़ी

२ मोट की सिंचाई के सब उपकरणों का समूह।

रू. भे.—सांथौ।

सांथर, सांथरउ—देखो 'सांथरौ' (रू. भे.)

सांथरवाड़ौ—देखो 'साथरवाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सांथरवाड़ै सी वाडै मैं सोती, आंनन अंभोरू रंभोरू रोती। दोळै दूधाळू गळियोड़ी गेरी, ढोळै ढळियोड़ी रतनां री ढेरी।

—ऊ. का.

सांथरौ—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)

उ०—१ भाग लल्ला प्रथ्वीराज आयौ, सिंह कै सांथरै स्याळ व्यायौ।—अग्यात

उ०—२ सुभट अणगिणत सूता घणां सांथरै, भगा खळ तज विया खेत भाराथ रै। मना नहचै लखी धरण दसमाथ रै, निज मरण आवियौ हाथ रघुनाथ रै।—र. रू.

सांथळ—देखो 'साथळ' (रू. भे.)

उ०—गोळा दोय चैनसिंह रै लागिया सौ एक तौ सांथळ रा पेड़ रै सांधै लागियौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सांथी-सं. स्त्री.—१ ताने के तारों को ठीक रखने हेतु करघे के ऊपर लगी लकड़ी।

२ बुनाई के समय ताने के सूतों के नीचे गिरने व ऊपर उठने की क्रिया।

सांथूओ-सं. पु.—चौहटे का नाम। (सभा)

सांथौ—देखो 'सांतौ' (रू. भे.)

उ०—धाड़ी पाड़ण सघुणा वैणां, ताकि जलावै तांद। सांथौ देतां रात सरावै, चोर बुरावै चांद।—ऊ. का.

सांथ्यौ-सं. पु.—स्वस्तिक।

उ०—कुहाडि अढंढ स्त्री बोलंती छउड ऊतारइ, द्रस्टि देखती मनुस्य मारइ, सरप माथइ सांथ्या फाडइ, चालती चुइहि फाडइ, नवधायां तिर पाडइ, वालि वांधि आहणइ, आकास अहुता पंखिया गणइ,........।—व. स.

सांदणी—देखो 'सांजणी' (रू. भे.)

सांदीपन, सांदीपनि, सांदीपनी—सं. पु. [सं सान्दीपनिः] श्री कृष्ण एवं बलराम के गुरु एक प्रसिद्ध ऋषि जो धनुर्विद्या में प्रवीण एवं सकल शास्त्रों के ज्ञाता थे।

वि. वि.-इनका आश्रम उज्जयिनी में था। यहां सुदामा ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। यहां केवल ६४ दिनों में श्री कृष्ण व बलराम ने अस्त्रमंत्रोपनिषत्, अस्त्र-प्रयोग सहित सम्पूर्ण धनुर्वेद आदि विद्याएँ सीख ली थी। शिक्षा प्राप्ति के बाद इसने श्रीकृष्ण बलराम से गुरुदक्षिणा-स्वरूप अपने मृत पुत्र को मांगा। पंचजन असुर ऋषि के पुत्र को चुराकर पाताल में ले गया था। अतः श्रीकृष्ण ने पाताल में जाकर उक्त असुर को मारकर गुरु को पुत्र ला दिया व राक्षस की हड्डियों से कृष्ण का 'पंचजन्य' नामक शंख बनाया गया था।

सांदौ—१ देखो 'सांधौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)

सांद्र-वि. [सं.] १ गंभीर, गहरा।

२ घना, घोर।

३ स्निग्ध, चिकना।

३ मृदु, मधुर।

५ मनोहर, सुन्दर।

६ विपुल, अत्यधिक।

सं. पु.—गुच्छा।

सांद्रता-सं पु.—सांद्र होने की अवस्था या भाव।

सांद्रप्रसाद-स. पु. [सं.] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें मूत्र का कुछ अंस गाढ़ा व कुछ अंश पतला निकलता है।

सांध—१ देखो सौंधौ (रू. भे.)

२ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—१ हमैं बरखा रित मांहै साका नै भाद्रवै री सांध वरखा रित मंडी। देह वीजां झड़ लायौ। डाल-डाल अंवर चमकिओ छै। सेहरां पाखर पड़ी।—रा. सा. सं.

उ०—२ वीक विदेसज चालियौ, विजड़ हयौ वळ वांध। मूळै तोड़ी

[illegible], [illegible] मांझ।—नैणसी

उ०—२ सूर धीर मार्तंड तीर लै मोहे, कायर नर करै सांध कूं [illegible]। श्री महाराज की [illegible] देखी निजर पाजी, जांणै रोहिणी की संग [illegible] बाजी।—रा. रू.

सांधण-स स्त्री. [सं. संधि] जोड़, मेल। (डि. को.)

सांधणी—देखो 'सांधणी' (रू. भे.)

सांधणौ, सांधबौ-क्रि. स. [सं. साधन] १ निशाना लगाना, संधान करना, तीर कमान पर चढ़ाना।

उ०—१ समसमा बांणज सांधबौ मैला अमर गुडाया।

—केसोदास गाडण

उ०—२ पामागाव नाडळ सिकार रमतौ हुतौ सु वडौ दूठ राजवी हुतौ, तिणनूं देखी खोड़ाहरण लागौ सु पामराव पीछै नहीं नै बांण [illegible] नूं सांधियौ हुतौ सु वाह्यौ, वरै देखी गुम हुई।—नैणसी

उ०—३ काया कमान सभान कर, सार सबद कर तीर। दादू यह सर सांध कर, मारै मोटे मीर।—दादूवांणी

२ कपड़े आदि में जोड़ या टांका लगाना।

३ मेल करना, जोड़ना।

उ०—१ मिळ चोरा कीधी मुदै, 'ऊदौ' 'धीर' सुवस। बांधी फौज कमद्धजां, सांधी प्रीत 'प्रकस'।—रा. रू.

उ०—२ हरि चलिणि हुति गया हुई, माचां मां हिति सांधतौ। मु ध्राव ध्राव वाधौ त्रिगुण, बळिराजा नां बांधतौ।—पी. ग्रं.

उ०—३ जांणै तोड़ जहान सु, सांध न जांणै मीह। निज बळ सु [illegible] तोमर्जै, उगै सूर श्रबीह।—बां. दा.

४ संधि करना, समझौता करना।

उ०—सबळां सळ सूं सांधियां, निबळ जाय सळ नास। मूंसो मेळ मंजार कर, वचियौ विपत विलास।—बां. दा.

५ चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिण्ड के रूप में करना।

उ०—मूंद रै मार्ग पूरबी विदांमां न्हाक मेवरण सांधे दळिया लाडू मांध्या, धांणां रै मार्ग कायफळ, कमरकस, काचा गोळा, काळी मिरचां रळाय लाडू बांध्या।—फुलवाड़ी

६ जोड़ना।

उ०—१ दिल मैं पीड़ दबाय, हाट टूटोड़ा सांधै। बूढी बाळक बणी, टोर बच्चा नै गावै।—दसदेव

उ०—२ आई उमट मढियां आंधी, च्यार वरण चहणी नम सांधी। जिनां धजा तूटणी बांधी, मदापार री संधि न सांधी।

— ऊ. का.

७ टूटी हुई रस्सी, मूर्ति आदि को जोड़ना।

८ शामिल करना, विजय करना।

उ०—[illegible] मांन छुड़ि नाटणां तुमरै, सार रै जोर दोड़ धरा सांधी। बाहांवहि निज पाधेहि मढ बंधाणी, बांहांवहि मढै मेवाड़ बांधि।—राव राजा शत्रुसिंह हाड़ा रो गीत

९ तैयार करना।

उ०—सुत रांम रूप निज दळ सनाह, गोरधन तणी नाहर दुगाह। सुण एता 'ऊदा' महाबाह, सांधिया वेग सूं पातसाह।—रा. रू.

१० बनाना, करना (बात कहावत आदि)।

उ०—पीसणियां पीसै, रांधणियां रांधै, बगतसर न्हावो-धोवो घर सिट्यां सीमरी बातां सांधै।—दसदोख

११ पौष्टिक पदार्थ तैयार करना, बनाना।

उ०—पछै काली मासी तो ग्रगूंती उमाई होय पावरा हाथ सूं सुवावड़ सांधी।—फुलवाड़ी

१२ देखो 'साधणौ, साधबौ' (रू. भे.)

सांधणहार, हारौ (हारी), सांधणियौ—वि०।

सांधिग्रोड़ौ, सांधियोड़ौ, सांध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांधीजणौ, सांधीजबौ—भाव वा०।

संधणौ, संधबौ —रू० भे०।

सांधाखांनौ—देखो 'सौंधाखांनौ' (रू. भे.)

उ०—बागा रा बणाव कीजै छै। सांधाखांनै सूं पांणी सांधा हाजर कीजै छै। भांति भांति रा सांधा लगाड़ीजै छै। सभा मजलिस कीजै छै।—रा. सा. सं.

सांधांणी-सं. स्त्री.—कपड़ा बुनते समय ताने के धागों के टूटने पर जोड़ने की विधि, क्रिया।

सांधि—देखो 'संधि' (रू. भे.)

सांधिक-वि. [सं. सान्धिक] १ शराब बनाने वाला।

२ संधि कराने वाला।

सांधिकै, सांधिकौ—१ संधि स्थान।

२ सीध।

सांधै-सं. पु.—संधि स्थान, जोड़।

उ०—१ सोजत था कोस ६ दिखण नरक रै सांधै। सीरवी जाट बांणीया वसै।—नैणसी

उ०—२ सोजत थी कोस १० उगीण ईसांन रै सांधै। मेर वसै।

—नैणसी

सांधौ-सं पु.—१ आपस में होने वाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता संसर्ग व सम्पर्क।

उ०—उवा रितुमती हुई। स्नांन करणै घर ऊपर चढ़ी। एक ब्राह्मण जवांन दीठौ। सो मां नूं बुलाय दिखाड़यौ अर मां नूं कही—इयै सूं म्हारौ मन छै। तूं इयै सूं सांधौ जोड़।—बैताळ पचीसी

२ जोड़, संधि।

उ०—जच्चा-रांणी रै हळद तेल सुजी रै आटा री पीठी करनै ग्रासौ होल मसळियौ। बाटां उतारी। हाडका सुळाया। सांधौ सांधौ दबायौ।—फुलवाड़ी

मुहा.—१ सांधौ सांधौ तूटणौ=प्रत्येक अंग में दर्द होना।

२ सांधौ सांधौ खुलणौ=प्रत्येक अंग टूट जाना।

३ वश, उपाय।
उ०—१ अवै खुद री कड़ियां भाग्यां रै पछै कळझळ करियां अर कूकणा सूं कांई सांधौ लागै।—फुलवाड़ी
उ०—२ अर जे वाई रा भाग मैं ई वर री जोग ई नीं है तौ पछै अस्टपौर तरळा तोड़्यां ई कीं सांधौ लागैला नीं।—फुलवाड़ी
४ सहारा।
उ०—सेवट तौ वांरी कमाई सूं ईं पार पड़ैला, किणी रै दियां लियां सूं की सांधौ नीं लागै।—फुलवाड़ी
५ देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)
उ०—१ उवै कांमणी घणै क्रिसनागर कस्तूरी अंबर अंतर सांध सूं गरकाब हुई थकी उवां राजां रा मलूकजादां रा मन राखती थकी लोटपोट हुई रही छै।—रा. सा. सं.
उ०—२ हमांमै गरम पांणी सूं नाहीजै छै। अंगोछी कीजै छै। वागां रा वणाव कीजै छै। सांधाखांनै सूं आंणी सांधा हाजर कीजै छै। भांति भांति रा सांधा लगाड़ीजै छै।—रा. सा. सं.
रू. भे.—संधौ, सांदौ।

सांन—सं. स्त्री. [अ. शान] १ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।
उ०—१ म्हानै तौ विस्वास नीं व्है कै इत्ती सांन गमियां पछै अै लोग निसंडा री गळाई जीवता वैठा।—फुलवाड़ी
उ०—२ दांत काढनै कैवण लागा—जै सांन रा साचांणी ई टका व्हैता व्है तौ चाहीजै ई कांई।—फुलवाड़ी
४ ठाट-बाट, तड़क-भड़क।
उ०—भीड़ रै विचाळै राजाजी रौ घोड़ौ सांन सूं चालतौ हौ। परधै रा मौतबिर लारै खाकां पिदावता खुचखुचियै चालता हा।—फुलवाड़ी
५ वात रोग, लकवा।
उ०—पछै उठा थी छाडियौ। कौ दिन सींधलै जाय कवळै रह्यौ। सांन रौ झोलौ हुवौ।—नैणसी
[सं. संज्ञा] ६ पागलपन बावलापन। (उ र.)
उ०—पहिली तौ दारू पीवौ अर पछै सांनांया करौ अर नास जावौ।—बूढी ठग राजा री वात
७ निशान, झण्डा।
८ बुद्धि।
उ०—तेणि दिन बहुधन हारयूं, गई रांनी सांन। वाणी न सकि कांमिनी, तु अवरि किन परधांन।—नळाख्यांन
९ सन के रेशे से बना हुआ वस्त्र।
वि.—१ तीक्ष्ण, तेज। (अनेका.)
२ देखो 'सांण' (रू. भे.)
उ०—झंडै वाहिर गड्डिकै, धुज डंड झुकाया। फूल झराया सांन पै, असि वाढ चिराया।—वं. भा.
रू. भे.—स्यांन।

सांनणौ, सांनबौ—क्रि स.—१ भिगोना, गीला करना।
उ०—घायल असाद्धि डोलै न घुम्मि, सांनीन स्रोण तै रंग भूम्मि।—ला. रा.
२ पागलपन करना, बावलापन करना।

सांनदार—वि. [अ. शान+फा. दार] १ ठाट-बाट वाला।
२ प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठावान।
३ सुंदर, मनमोहक, मनोहर।
४ चमकदार, तेज।

सांनपद, सांनपाद—सं. पु. [सं. शानपाद] चंदन घिसने का पत्थर।

सांनवाफ—सं. पु.—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

सांनमांन—देखो 'सांनुमांन' (रू. भे.) (अ. मा; डिं: को; नां. मा.)

सांनसौकत—सं. पु. [अ. शानशौकत] ठाट-बाट, सजावट।

सांनिज—देखो 'सांनुज' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

सांनिद्ध, सांनिध, सांनिधि, सांनिध्य—सं. पु. [सं. सान्निध्य] १ सामीप्य।
उ०—१ अधिकै भावे यात्री आवै, गुण जिनवर ना गावै। रांगै बहु विधि पूज रचावै, प्रभु सांनिध सुख पावै।—ध व. ग्रं.
उ०—२ हूंसि हूं वाही, हो वाहला, कही तह्यारी प्रीति। वैस्वांनर सांनिधि जै वोल्यूं कां वीसारयूं स्वांमीति।—नळाख्यांन
२ मंगल, अमन-चैन।
उ०—१ प्रसिद्ध जिण चंद पाटै खरतर, गुरु सोभा खाटै हो। सांनिध करण सदाई, वड नांमी गुरु वरदाई हो।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ सुलसा सखरी स्राविका, निंदै पूरव करम निदांन कि। सीलै सुर सांनिध करै, सुंपै आंणि जीवत संतान कि।—ध. व. ग्रं.

सांनियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ भीगोया हुआ, गीला किया हुआ. २ पागलपन किया हुआ, बावलापन किया हुआ।
(स्त्री. सांनियोड़ी)

सांनियौ—वि.—१ पागल, बावला।
२ चित्तभ्रम।
उ०—तूं गहलौ तूं सांनियौ, तूं भोळौ भंवराळ। मूळ मघा मैं तूं हुऔ, तातै सरस लवाळ।—गज-उद्धार

सांनी, सांनो—सं. स्त्री.—इशारा, संकेत।
उ०—दूजां नूं सांनी दियै, एक तणै वस अंक। किण किण नह दीधा कदम पातर रै परजंक।—वां. दा.
वि. [अ. शानी] समान, तुल्य।
उ०—जपै सुकर जबांनी, कुदरत कौन दी, बंदु परवर सांनी सीता सांइयां।—र. ज. प्र.

सांनु—सं. पु. [सं.] १ पर्वत की चोटी, शिखर।
२ जंगल, वन।
३ पर्वत के ऊपर की चौरस भूमि।
रू. भे.—सांनू।

सांतुम–अ. पु. [अ. सानूम] गभार, पाप, बदनि। (प. मा.)

रू. भे.—सांतम।

सांतूनाम, सांतूमाम–अ. पु. [अ. सानुमत्] पर्वत, पहाड़।

(हि. को; ह. ना. मा.)

रू. भे.—सोनमान।

सांतु—देखो 'सांतु' (रू. भे.) (हि. को.)

सांतुमाट–अ. पु. [सं. सानु+धातुम्] पर्वत, पहाड़। (हि. को.)

सांद—देखो 'सांद' (रू. भे.) (हि. को.)

उ०—सूनी पड़ी चान्दां रातड़, तिरमिरावै अर तारा गिणै। पड़ी पड़ी उठै अर नाड़ा छोड करै है। नैनां मैं घट नीं पड़ै। मोर मरै नाठो नी टूटै जिसो दाव अर उपाव सोचै है।—दसदोत

सांवड़–सं. पु.—१ स्नान, मज्जन।

२ कच्चे मकान (झोंपड़ियों आदि) की लकड़ियों को मजबूत करने के लिए लगाया जाने वाला पतली लकड़ियों का बन्ध।

सांवड़णो, सांवड़बो—देखो 'संवड़णो, संवड़बो' (रू. भे.)

उ०—छांट सू छांट टकरीजण लागी। परनाळां पांणी ओसरियो कुदरत सांवड़ै। उण रो रूं रूं धुरक्यो। नाळां-खाळां पांणी बहण लागो। जळबंब ई जळबंब।—फुलवाड़ी

सांवड़णहारो हारो (हारी), सांवड़णियो—वि०।

सांवड़िग्रोड़ो, सांवड़ियोड़ो, सांवड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांवड़ीजणो, सांवड़ीजबो—कर्म वा०।

सांवड़ाणो, सांवड़ाबो—देखो 'संवड़ाणो, संवड़ाबो' (रू. भे.)

सांवड़ाणहार, हारो (हारी), सांवड़ाणियो—वि०।

सांवड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

सांवड़ाईजणो, सांवड़ाईजबो—कर्म वा०।

सांवड़ायोड़ो—देखो 'संवड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवड़ायोड़ी)

सांवड़ावणो, सांवड़ावबो—देखो 'संवड़ाणो, संवड़ाबो' (रू. भे.)

सांवड़ावणहार, हारो (हारी), सांवड़ावणियो—वि०।

सांवड़ाविग्रोड़ो, सांवड़ावियोड़ो, सांवड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांवड़ावीजणो, सांवड़ावीजबो—कर्म वा०।

सांवड़ावियोड़ो—देखो 'संवड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री सांवड़ावियोड़ी)

सांवड़ियोड़ो–भू. का. कृ.—१ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ।

२ देखो 'संवड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवड़ियोड़ी)

सांवजणो सांवजबो—देखो 'संवजणो, संवजबो' (रू. भे.)

उ०—मन थोड़ै थोड़ नहीं सांवजै, बीमर मनी धनोणी बात।
[illegible] पी सावन पीवै, प्रात पियां नरपतियां प्रात।

—बां. दा.

उ०—२ [illegible] नहीं मासवर, मेवै नहीं मनमग। [illegible] जिम सांपजै उर संतोख सभंग।—बां. दा.

सांपजणहार हारो (हारी), सांपजणियो—वि०।

सांपजिग्रोड़ो, सांपजियोड़ो, सांपज्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांपजीजणो, सांपजीजबो—भाव वा०।

सांपजियोड़ो—देखो 'संपजियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांपजियोड़ी)

सांपण, सांपणी—देखो 'सापणी' (रू. भे.)

सांपणो, सांपबो—देखो 'सूंपणो, सूंपबो' (रू. भे.)

उ०—१ उण राजा हून नै मो मिळाई हुती, सु मोनूं तीस पह मोहरां रा भरिया सांपिया छै।—नैणसी

उ०—२ पातिसाह फते करि नै किलपतान नूं सूरति सांपिनै सीकरी फतेपुर नूं कूच कियो।—द. वि.

सांपणहार, हारो (हारी), सांपणियो—वि०।

सांपिग्रोड़ो, सांपियोड़ो, सांप्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांपीजणो, सांपीजबो—कर्म वा०।

सांपनणो, सांपनबो–क्रि. अ. [सं. 'संपदनम्' या सम्प्रापण] १ प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ 'पदम' 'कुसळ' अवसांण सांपनै, हिचियो लागो ताइण हय। कांमण सदा जिका कम कहतो, कोध जिका हिज साच कय।

—कुसळसिंघ कछवाह रो गीत

उ०—२ जिम जैमाल अभिनमो जैमल, हालियै दलिदळ थंभ हुवो। कोदण्ड जळ चाढै नवकोटै, मोटै प्रवि सांपनै मुवो।

—अरजुनसिंह गोपाळदासोत रो गीत

उ०—३ विसरि गहगड़ै तुर सूरां चढै धीर रसि, अच्छर वरिया करै चित उमेखा। सांगि छळ देस छळ वेस छळ सांमठां, सांपना सांहुटै भागि सेखा। —सेखा दुरजनसालोत पातावत रो गीत

२ उत्पन्न होना, पैदा होना।

३ पूरा होना, सम्पन्न होना।

उ०—सैंदां उच्छव सांपना, मुगळां थदन मलीण। दिल्ली प्रति चालो दरस, पुर सोचिया प्रवीण। —रा. रू.

सांपनणहार, हारो (हारी), सांपनणियो—वि०।

सांपनिग्रोड़ो, सांपनियोड़ो, सांपन्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांपनीजणो, सांपनीजबो—भाव वा०।

सांपन्नणो, सांपन्नबो—रू० भे०।

सांपनियोड़ो–भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. ३ पूरा हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ।

(स्त्री. सांपनियोड़ी)

सांपन्नणो, सांपन्नबो—देखो 'सांपनणो, सांपनबो' (रू. भे.)

सांपन्नणहार, हारो (हारी), सांपन्नणियो—वि०।

सांपन्निग्रोड़ो सांपन्नियोड़ो, सांपन्नयोड़ो—भू० का० कृ०।

सांपन्नीजणो, सांपन्नीजबो—भाव वा०।

सांपन्नियोड़ो—देखो 'सांपनियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपन्नियोड़ी)

सांपरत, सांपरत—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)
उ०—१ सहज ललाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दै मिळ जाय।—अग्यात
उ०—२ चंद ढेभै जिसा परत मन धारै चंगा सांपरत गिणै तन कांच सीसी। आवळाभूल पड़ै रण आविढा, वढै संग सांवळा सात वीसी।—गिरवरदांन सांदू
उ०—३ बातां गई विलाय, सुपनो होकै सांपरत। कैतां कई न जाय, जिय री जिय जांणै 'जसा'।—ऊ. का.
उ०—४ संजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग बिनांण। आंखि तरच्छी ईखतां, जीता समधा जांण।—बां. दा.

सांपरतक, सांपरतैक, सांपरथ—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)
उ०—१ कंई करो रे उस्तादां ! सांपरतैक आंख्या मींच'र अंधारो किया तो मत बैठा रैवो।—वरसगांठ
उ०—२ तद मांणस बोली थें मोनै सांपरतक कह्यो थो सो तू ठाकरां नैं तेडै लै आवो।—राजा रा गुर रा वेटा री वात

सांपराय—सं. पु. [सं. साम्परायं, साम्परायः] युद्ध। (ह. नां. मा.)

सांपरायक, सांपरायिक, सांपरायिकी—वि. [सं.] १ युद्ध में काम आने वाला।
२ परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक।
३ विपत्तिजनक।
सं. पु. [सं. सांपरायिकं] १ युद्ध, समर। (ह. नां. मा.)
[सं. सांपरायिकः] २ युद्ध का रथ।

सांपरीछतरी—सं. स्त्री.—प्रायः वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला एक पौधा जिसके डंठल के ऊपर छतरी सी होती है।

सांप री मासी—सं. पु.—एक जंतु विशेष।
उ०—जिण दिन लीली जळै जवासी, मांडै राड़ सांप री मासी। बादळ रहै रात रा बासी, यूं जांणै चौकस मेह आसी।
—वर्षा विज्ञांन

सांपाड़ौ—देखो 'संपाड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ दोनूं दिसा गया। पाछा घरै आया। दांतण कर सांपाड़ौ कर साह ठाकुर द्वारै जाय साथै दरसण किया।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ तद भरमल उठ मुजरौ कर हुकम माथै चाढ लीयो। सो हमैं सांपाड़ै रै वखत वडारण दूध लै जाय आरोगायै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सांपियोड़ौ—देखो 'सूंपियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपियोड़ी)

सांपोळौ—सं. पु.—नशे में मस्त होकर झूमने या डगमगाने की क्रिया।
उ०—जठै अवकाई भीलां रो भूल लीयां त्यूं हीज बैठो छै। अमल गलणीयै वढियो छै। कसूंभा बत्तीसा नीकळै छै। कैइक भाई अमलां री झोकां खायनै रह्या छै। कैइक सांपोळा करै छै। क्यां इक अमल चिमठिए चढियो छै।—जखड़ै मुखड़ै भाटी री बात

सांपौ, सांपौ—सं. पु.—गायों का समूह, झुण्ड।

सांप्रत, सांप्रत—अव्यय.—प्रत्यक्ष, सम्मुख। (उ. र.)
उ०—१ वींदणी रै काळजै तो वींद री चित्रांम हूबोहूब कुरग्यो। आंख्यां मींचनै ई वा सांप्रत धणी रो उणियारो निरख सकती।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जीव-जिनावर धोज्या जंगळ रो वासो करै, पण सांप्रत मौत रो धीजो किणनै व्है।—फुलवाड़ी
उ०—३ कुकड़ा रो गुण कांम, काक गुण भक्षण कीन्हो। जुध करण रो जोध, स्वांन गुण सांप्रत लीन्हो।—ऊ. का.
२ साक्षात, हूबहू।
उ०—१ सोई खुड़द आज दिन सांप्रत, खीदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदांनूं, सूरत ह्रदय समाई।—मे. म.
उ०—२ अेक दिन पाड़ौसण यूं ई वातां-वातां में गीगली रै रूप री प्रस्ताव बात करी कै सेठां री गीगली तो सांप्रत चांद रै उणियार है।—फुलवाड़ी
उ०—३ बापजी, कदै ई म्हारै घरै जीमण री मया करौ तो म्हैं जांणूंला कै सांप्रत भगवांन म्हारै घरै पधारिया।—फुलवाड़ी
३ सचमुच।
उ०—चुगली विसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत। सो मुरदार सरीर री, लट मुख मांझल लेत।—बां. दा.
४ इस समय, अभी।
५ फिर, पुनः।
६ उचित, उपयुक्त।
७ वास्तव में, हकीकत में।
उ०—१ उणनै तो विस्वास ई नीं व्हियो कै साचांणी औ किणी लुगाई री परतख सांप्रत उणियारो है।—फुलवाड़ी
उ०—२ सांप्रत कुबांण छोडै न सठ, पात कुलक्षण पालसी। संसार मांहि अवगुण सरब, होकी ही सांमळ हालसी।—ऊ. का.
८ उस समय।
उ०—वैरण रसणां बस असणां तन ताई, आभा आंगण री अन मांगण आई। सांप्रत पूछी नह किण ही कुसळाता, अंन अंन कर-तोड़ी मरगी अनदाता।—ऊ. का.
रू. भे.—संप्रत, संप्रति, संप्रती, सांपरत, सांपरत, सांपरतक, सांपरतैक, सांपरथ, सांप्रति, सांप्रती, सैंप्रत, सैंप्रत्त।

सांप्रति, सांप्रती—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)
उ०—१ हुं तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी बात। तै सांप्रति साची थई जी, दुरजण खेली छात।—वि. कु.
उ०—२ नितर नो नेह जिण सूं हुवै जी, वीछड्यां दुख न खमाय।

[illegible] सांफळ [illegible] सांफळै जो, [illegible] जीतण प्रार।—वि. कु.

उ०—२ [illegible] सांफळि [illegible], बरणी [illegible] विचार। सांवति [illegible] गै, [illegible] विसतार।—बां. दा.

सांप्रदायिक-वि. [सं.] सम्प्रदाय का, सम्प्रदाय सम्बन्धी।

सांप्रदायिकता-सं. स्त्री [सं.] साम्प्रदायिक होने की अवस्था या भाव।

सांफळ-सं. पु.—युद्ध, लड़ाई, झगड़ा।

उ०—१ [illegible] हुवो रहै—मेवां जी! आपां परत री वेढ करस्यां, [illegible] सूं [illegible] ? [illegible] हुवो मेवै, [illegible] मेघो हुवै। आपां हीज सांफळ हुवां।—नैणसी

उ०—२ [illegible] सांफळै वहो, गुड़ै [illegible] कुराक के नाराज। लड़ै बहादरेस पूत मूंहड़ा गैणाग [illegible] वागो [illegible] नाराज।—प्रभुदान मोतीसर

सांफळउ—देखो 'सांफळो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] बाहड़ गांडाधार। सात-[illegible] सांफळउ जीतूं. मारिया म्लेछ प्रपार।—कां. दे. प्र.

सांफळणौ, सांफळबौ-क्रि. स.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना, संग्राम करना।

उ०—१ [illegible] सांफळियौ, भिड़ूं लोकै हैकार तवै। [illegible] वहतां, रावन पड़ै न लड़ै रिवै।

—जगतसिंघ सगतावत रो गीत

उ०—२ [illegible] जिण दिन सांफळिया, आफळिया तिण दिन [illegible]। गोड़ां धणी तणां अंब गुड़िया, गोड़ां बिहुं तणै गज-[illegible]।—मदनसिंघ नै सूरसिंघ गोड़ री गीत

२ टक्कर लेना, भिड़ना।

उ०—[illegible] नाळां भळहळै, रिड़ै वहाळां रत्त। समहर जुड़ै 'सुमेर' रा, भड़ खाटण प्रभत्त। भड़ खाटण प्रभत्त, सकोहा सांफळै। [illegible] परलोक [illegible] रांफळै।—किसोरदांन बारहठ

सांफळणहार, हारौ (हारी), सांफळणियौ—वि०।

सांफळियोड़ो, सांफळियोड़ो, सांफळयोड़ो—भू० का० कृ०।

सांफळीजणौ, सांफळीजबौ—कर्म वा०।

सांफळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, भिड़ा हुआ।

(स्त्री. सांफळियोड़ी)

सांफळौ-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई, संग्राम।

उ०—[illegible] लागै [illegible]। आगै असवार दीठा। सात [illegible] सूं सांफळो वागो। राजड़ीयो [illegible] काम आयो।—[illegible] री वात

२ मोर्चा।

उ०—[illegible] बादसाह [illegible] दो मो [illegible] मूं लड़ाई [illegible]। [illegible] सांफळा बांधियो।—नी. प्र.

३ [illegible]।

उ०—१ आसकरण चढियो हुतो, सु नरबद जी आडुव आया। सु आसकरण सौ सींघळां सांफळौ हुवौ।—नैणसी

उ०—२ सो दूहो कह्यो। ताहरां मळ उपाड़ नै मूळवै सो सांफळो हुवो। ताहरां मूळवै घोड़ो तातो कर नै बरछी री बूठी सो मन नूं मार रातीयो।—मूळवै सांगावत री वात

वि.—१ कटिबद्ध, तैयार।

२ अस्त्र-शस्त्र सहित।

उ०—इम बात कहतां वार लागै, आय सांफळा हीज वाजीया। ताहरां वरसै रायपाल नूं कह्यो, 'ओठी १ घरै मेलो, घरै खबर देवै।'—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

रू. भे.—सांफळउ।

सांब-सं. पु. [सं.] १ शिव का नामान्तर।

२ जाम्बवती एवं कृष्ण के संसर्ग से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

वि. वि.—मतान्तर से यह कृष्ण एवं रुक्मणी के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था। यह अत्यन्त पराक्रमी था। इसने कई युद्ध किए थे। दुर्योधन-कन्या लक्ष्मणा व अजनाभ-कन्या प्रभावती का इसने हरण किया था। रुक्मफलक कन्या वसुन्धरा भी इसकी पत्नी थी। इसी के पेट से उत्पन्न लोहे के मूसल से ही समस्त यादवों का संहार हुआ था। यह अत्यन्त सुन्दर था अतः कृष्ण की कई पत्नियां इस पर अनुरक्त थी। इसकी सूचना कृष्ण को मिलने पर कृष्ण ने इसे कुष्ट रोगी होने का व पत्नियों को उनका चोरों द्वारा अपहरण किये जाने का शाप दिया। नारद की सलाह से इसने सूर्योपासना की। इससे यह कुष्ट रोग से मुक्त हुआ।

३ चक्रपाणि राजा के प्रधान का नाम।

[सं. सांब] ४ आप नामक वसु के एक पुत्र का नाम।

५ देखो 'सांम' (११) (रू. भे.)

उ०—.........खुरसांण रा उतारिया माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपै रा सांबां छै, पीतळ तांबै रा छला छै, दांत री चोकड़ी छै, तिलीर रा पंगारा छै, दांत रा मुफाळा छै। सोनैरी हळ लिपी छै, ललमूठ रा तीर छै।—रा. सा. सं.

सांबण—देखो 'साबण' (रू. भे.)

उ०—भरै अन्न भंडार, मालि गोधूम सबण घणा। अिन तेल गुळ लूण, लगै अहि फेणड सांबण।—गु. रू. बं.

सांबपुर-सं. पु. [सं. साम्बपुर] आधुनिक मुल्तान (पंजाब) नगर का प्राचीन नाम। इसे श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने बसाया था।

सांबपुराण-सं. पु. [सं. साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

सांबर—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—सांबर सुर बाघ दरसांणा, बहुसै तियां संघारै बांणा। प्रेतायुध माया भळ पेखै, लखि आनसवाजी सम लेखै।—सू. प्र.

सांबरी—देखो 'सांबरी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जमदाढ वांमै अंग भीड़ जड़ी, सुज ऊपर पेटीय सांवरड़ी। घण वजर काळ लुहार घड़ी, जंगजीत बांमै अंग रूक जड़ी।—गो. रू.

सांवरणी-सं. स्त्री,—अधिकार, कब्जा।

सांवरथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

सांवरी-सं. स्त्री. [सं. शाम्बरी] १ माया, इंद्रजाल, बाजीगरी। (डिं. को.)

[सं. शांबरी, शांबरिन्] २ मायाविनी।

३ मूषाकानी नामक लता।

४ एक प्रकार का चंदन।

५ देखो 'सांबरी' (पु.) (रू. भे.)

उ०—वरस दीहां की सेवलो, घी घणौ खाज्यो पगाह परांण। पायै पांणही सांबरी, चउघड्यां मांह दीई-मिलांण।—बी. दे.

सांवरोट-सं. पु.—सांभर प्रदेश का भू भाग या भूमि।

उ०—सांवरोट धर दाब, प्रांण जळ खाग पखाळै। गूंगा गैहला गाळ, वचन देवळ रा वाळै।—पा. प्र.

सांवरौ-वि.—१ सांभर नामक पशु का।

२ सांभर नामक पशु के चमड़े का।

उ०.........घणी पीतळ नै घणी दांत मांहै गरकाव हुआ थका, रेसमी पटाटां, सांबरा उकटां, तंगै अंग भीड़िआं थका, इण भांति रा सौ ऊंटां ऊपर सौ पलांणां मंडिआ छै।—रा. सा. सं.

अल्पा;—सांवरड़ी, सांबरी।

सांवळ, सांवळउ—देखो 'सांवळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांवळणौ, सांवळबौ—देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

सांवळणहार, हारौ (हारी), सांवळणियौ—वि०।

सांवळिओड़ौ, सांवळियोडौ, सांवळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांवळीजणौ, सांवळीजबौ—कर्म वा०।

सांवळियोड़ौ—देखो 'सांभळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवळियोड़ी)

सांवविक-सं. पु. [सं. शाम्बविकः] शंख वेचने वाला व्यक्ति।

सांवहणौ, सांवहवौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—धन सवरी रौ धरम, प्रभु महाराज पधारै। वाळि बांण सांवहै, साध सुग्रीव सुधारै।—पी. ग्रं.

सांवहणहार, हारौ (हारी), सांवहणियौ—वि०।

सांवहिओड़ौ सांवहियोड़ौ, सांवह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांवहीजणौ, सांवहीजवौ—कर्म वा०।

सांवहियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवहियोड़ी)

सांवियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवियोड़ी)

सांवीलौ-सं. पु. [सं. शंवल] १ धानादि कूटने का एक प्रकार का उपकरण, मूसल।

२ एक प्रकार का हथियार विशेष।

सांभणौ, सांभवौ—देखो 'संभाणौ, संभाबौ' (रू. भे.)

उ०—जांमण रा रे जाया, अंबर तौ पटकी धरती सांभ ली। —लो. गी.

सांभणहार, हारौ (हारी), सांभणियौ—वि०।

सांभिओड़ौ, सांभियोड़ौ, सांभ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांभीजणौ, सांभीजवौ—कर्म वा०।

सांभर-सं. पु.—१ एक झील का नाम जिसके पानी से नमक वनाया जाता है।

२ राजस्थान का एक कस्बा जो प्राचीन समय में सपादलक्ष कहलाता था। इसमें सांभर नामक झील होने के कारण इसे भी सांभर कहने लगे।

मुहा०—१ सांभर मैं लूण री टोटी=किसी वस्तु के विशाल भण्डार के स्थान पर भी उस वस्तु की कमी अनुभव करना।

२ सांभर मैं जाय अलूणी खाय=किसी स्थान या वस्तु की उपयोगिता की आवश्यकता पड़ने पर भी उपयोग न करना।

(मि.—तालाव री तीर तिरसौ रैंणौ)

३ सांभर मैं पड़ै सौ लूण=संगत से भला भी बुरा हो जाता है।

३ उक्त झील के पानी से वनाया गया नमक।

४ सांभर का सींग।

५ भारतीय मृग की एक जाति विशेष।

६ उक्त जाति का मृग, वारहसिंघा।

रू. भे.—संबर, सूंवर, संभर, सूंभर, सइंभरि, सहैंभर, सांवर, सांमर, सांमरू, सांमरौ, सैंभर।

सांभरणौ, सांभरवौ—१ देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—हंसा सर सांभरियाह रे, तैं जन धरै मुगति नी चाह रे। तिहां दीसइ रतन घणाह रे, जांणै नंवल ममोला वाह रे। —स. कु.

२ देखो 'सांभळणौ, सांभळवौ, (रू. भे.)

उ०—सज्जण सुणै समुद्द तूं, तर तर थकी तेण। अवगुण अेक न सांभरइ, रहूं विलूंबी जेण।—ढो. मा.

सांभरणहार, हारौ (हारी), सांभरणियौ—वि०।

सांभरिओड़ौ, सांभरियोड़ौ, सांभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सांभरीजणौ, सांभरीजवौ—कर्म वा०।

सांभरमति, सांभरमती—देखो 'साबरमती' (रू. भे.)

उ०—झाली मारग मैं आवती विचारियौ जै खावंद परमेस्वर समांन छै। सौ पण आछौ छै। तौ हूं अे कांमण लै जाय माथै करम क्यूं वांधूं। तद कांमण री गांठ थी सौ नदी सांभरमती मैं नांख दी।—कुंवरसी सांखला री वारता

सांभरियोड़ौ—देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सांभळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांभरियोड़ी)

सांभरियौ, सांभरौ-सं. पु.—१ सांभर झील का नमक।

२ चौहान शाखा का व्यक्ति।

उ०—राव सींभरांणो रतन, सांभरियौ समराथ। सो सांभरां मान रा, सुर मुगट नै माथ।—केहर प्रकास

वि.—सांभर का, सांभर वाला।

रू. भे.—संभर, सांभरणौ, सांमरियौ, सांमरघौ, सेंभर, सेंभरियौ, सेंभरौ।

सांभरीलूण-सं. पु. यौ.—सांभर झील का नमक। (ग्रमरत)

सांभरघौ—देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

सांभळण-सं. पु.—कान, श्रवण। (ध. मा; ह. नां. मा.)

सांभळणौ, सांभळबौ-क्रि. स.—१ सुनना। (उ. र.)

उ०—१ थांरा मेहाजळ न वीसरै, संकट हरै सांभळै साद। गढ-गाढा गढ फौजै गाजै, गढरै पोळै गढां ग्रजाद।—चां. दा.

उ०—२ कहो - तु भाई! कोई घोड़ियां मैं हुवै तो सांभळजयौ। सोजी नूं मदै रै पातसाह रो दरियाई घोड़ौ लागौ छै।—नैणसी

उ०—३ सांभळि ग्रनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वंछती वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिणि वंदै गवरि हर।—वेलि

२ ध्यान देना।

उ०—१ जोगीण जोगी सूं कहइ, सांभळो नाथ समथ्य। का जीवाड़उ मारवी, हूं विण दुण हिज सथ्थ।—ढो. मा.

३ समझना, जानना।

उ०—सारंग सिखीमुख साधि सारथि, प्रोहित जांणणहार पथ। दापक सो तनराळ क्रपानिधि, रथ बैठा सांभळि ग्ररथ।—वेलि

सांभळणहार, हारौ (हारी), सांभळणियौ—वि०।

सांभळिग्रोड़ौ, सांभळियोड़ौ, सांभळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सांभळीजणौ, सांभळीजबौ—कर्म वा०।

संभरणौ, संभरबौ, संभळणौ, संभळबौ, सांवळणौ, सांवळबौ, सांभरणौ, सांभरबौ सांन्हळणौ, सांन्हळबौ, सांम्हळणौ, सांम्हळबौ —रू० भे०।

सांभळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सुना हुग्रा. २ ध्यान दिया हुग्रा. ३ समझा हुग्रा, जाना हुग्रा।

(स्त्री. सांभळियोड़ी)

सांभव-वि. [सं. शांभव] शिव का, शिव से सम्बन्धित।

सं. पु. [सं. शांभवं] १ देवदारु वृक्ष।

[सं. शांभवः] २ शिव-भक्त, शिव-उपासक।

३ कपूर।

४ शिव पुत्र।

५ विष, जहर।

सांभवी-सं. स्त्री. [सं. शांभवी] १ पार्वती, दुर्गा।

२ दूब।

सांमियोड़ौ—देखो 'संभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांमियोड़ी)

सांमेळौ—देखो 'सांमेळौ' (रू. भे.)

सांम्हळणौ, सांम्हळबौ—देखो 'सांभळणौ, सांभळबौ' (रू. भे.)

सांम्हळणहार, हारौ (हारी), सांम्हळणियौ—वि०।

सांम्हळिग्रोड़ौ, सांम्हळियोड़ौ, सांम्हळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांम्हळीजणौ, सांम्हळीजबौ—कर्म वा०।

सांम्हळियोड़ौ—देखो 'सांभळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांम्हळियोड़ी)

सांमंत-सं. पु. [सं. सामंत] १ योद्धा। (डि. नां. मा.)

उ०—पखरैतां व्रज पूर, सिलह ससत्रां रिण राजा। सर्भ सहंग ग्रावरा, साथ सांमंत सकाजा।—सू. प्र.

२ बड़ा सरदार, बड़ा ग्रमीर।

उ०—१ ग्रठी दूजा साहजादा नूं ग्रापरै ऊपर चलायौ जांणि तिकण नूं पाछौ फेरण रै काज कुमार दारासाह रौ कुमार सुलेमसाह विदा कियौ। तिकण रै साथ कछवाह जयसिंह, गौड़ ग्रनिरुद्धसिंह, नवाब दलेलखां तीन ही मुख्य सांमंत देर ग्राप री उद्धत ग्रनीक दियौ।—वं. भा.

उ०—२ जिकै रजपूत कैसा, जंग मैं मजबूत, प्रथीराज का सांमंत जैसा, ग्राकास की बीज, कना जमराज की खीज, ग्रापका सीस पर रेलैं, पडता ग्रासमांन कूं झेलैं।—बगसीरांम प्रोहित री वात

३ छोटा राजा जो कर देता है।

उ०—घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै, जोध सांमंत मैं थाट जोपै। चमर ढळतै त्रिगति ग्रभिनमौ 'पोंडरज', 'ग्रमर' मेघाडंबर सीस ग्रोपै।—केसोदास गाडण

४ वीर, बहादुर। (डि. को.)

५ देवराज इन्द्र। (नां. डि. को.)

६ समीपवर्ती, पड़ौसी।

७ सार्वजनिक।

८ पड़ौसी राजा।

९ पंवार वंश की एक शाखा।

१० उक्त शाखा का व्यक्ति।

११ पड़ौस।

१२ देखो 'संवत' (रू. भे.)

उ०—उतर दिखण पुरब पछिम, कोई पांण न दाखवै। सांमंत एक एकांणवै, वापो समो न चक्कवै।—नैणसी

रू. भे.—समंत, सांव, सांवत, सावंत।

सांमंतसारंती-सं. स्त्री. [सं. सामंतसारंती] एक प्रकार का राग विशेष जो कि मल्लार व सारंग के मेल से बनता है। (संगीत)

सांमंद-सं. पु.—१ बैलों की जोड़ी। (मेवाड़)

२ देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (ना. डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सु वरा राखि मुलक न सांमंद, दळ सांमंद मोड़ै दरबार। 'अभमळ' उभळ दळा सभि आयौ, नर सिंणगार जोगणी नगर।
—सू. प्र.

उ०—२ अैसा वंस छत्रीस दरग्गह उंबरा, सांमंद चंद दड़िदक आरिख इंद रा। जोधां रा विवि जोध विराजै ज्यारका, परिहां खांगीबंध कमंध मधाउत मारका।—र. वचनिका

सांमंदर, सांमंद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ इता देस पुर ज तूं दबावै, इतै मरी दुरभख नह आवै। इम वर पाय सभै दळ अेहा, जळ सांमंद्र ऊंभळिया जेहा।
—सू. प्र.

उ०—२ हयं रत्थ गैंजूह पायक्क हल्लें, इळा जांणी सांमंद्र सातै उभल्लै। जिकै वार स्रीरांम री जांन जोई, कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू. प्र.

सांम—सं. पु. [सं. सामन्] १ प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाये जाने वाले वेद मंत्र।

२ चार वेदों में से तीसरा वेद, सामवेद। (डिं. को.)

उ०—पढंत जोतकी पुरांण, तारकेस कै तवै। रघुंस सांम जुभ अथ, च्यार वेद कै चवै।—सू. प्र.

३ राजनीति के चार अंगों में से एक।

उ०—सांम दांम दंड भेद आदि नूं सांम रै साथ आइ मिळण मैं अनेक लाभ जणाया।—वं. भा.

४ प्रशंसात्मक गान या छन्द।

५ कोमलता, मृदुता।

६ मैत्री, दोस्ती।

[फा. शाम] ७ सायंकाल, संध्या।

उ०—स्रीनारायणजी प्रतिग्या राखौ। हमैं कासूं होसी? आपकी राखी प्रतिग्या रहसी। बहोत अजीज करुणा कीवी। इण तरह सांम हुई।—पलक दरियाव री वात

८ हाथ में रखने की लकड़ियों या हथियारों के मध्य भाग या दस्ते में लगाया जाने वाला धातु का बंध विशेष।

[फा. साम] ९ मृत्यु, मरण, मौत।

१० दर्द, पीड़ा।

११ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ सबळ भीड़ संभळो, भूंभ ग्रहियौ भूंभारै। सांम कांम हणमंत, कमध कुळ मग संभारै।—गु. रू. बं.

उ०—२ नमसकार सूरां नरां, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजाळै सांम रौ, पाळै सांमध्रम्म।—बां. दा.

उ०—३ मेरै सांम सुहाग का, छांनां रहै न नूर। विलखै वदन दुहागिनी, हरिया ऊगं सूर।—अनुभववांणी

उ०—४ होतब सा जोतब नहीं, अरथुं सा न गरथ। वन न कौ वेहद सा' सांम सा न समरथ।—अनुभववांणी

उ०—५ सैंणां सेती रोसणी, असेणां सूं गूंभ। सांम सनेही ना किया, ओरां रह्या अळूभ।—अनुभववांणी

१२ देखो 'स्यांम' (रू. भे.)

उ०—अट्ठारसौ अठंतरौ, चैत बीज पख सांम। 'बांकै' ग्रंथ वणा-वियौ, नीत मंजरी नांम।—बां. दा.

१३ देखो 'स्यांमक' (रू. भे.) (उ. र.)

रू. भे.—सांव,।

सांमक—वि. [सं. सामक] सामवेद सम्बन्धी।

सं. पु.—सामवेद का अच्छा ज्ञाता।

सांमकरण—देखो 'स्यांमकरण' (रू. भे.)

सांमख—वि.—१ पूरा, सम्पूर्ण।

उ०—आ सांमख रात अर आ अेकली लिखमी! कणं ओ बापड़ी पग दाबती तौ कणं ओ सरीर देखती कै ताव कितो'क है।
—वरसगांठ

२ लम्बा, बड़ा।

सांमखोर, सांमखोरौ—वि.—१ स्वामी भक्त।

२ स्वामी के प्रति धर्म।

सांमग—सं. पु. [सं. सामन्+गः] १ वह ब्राह्मण जो सामवेद का गान कर सके।

२ भगवान् विष्णु का नाम।

सांमगरी, सांमगिरी, सांमग्री—सं. स्त्री. [सं. सामग्री] १ किसी कार्य में सामूहिक रूप से प्रयोग में आने वाली चीजें।

उ०—१ कयौ—मा, मा! तूं मा होय'र पखपात कियां करण लागगी। कठै ई सांमगरी री ठाठ अर कठै ई सांसौ निराठ।
—वरसगांठ

उ०—२ सांमगरी अग्र धरै सुचारा, साजै सब साधन सेवा रा। हर पूजियां पछै अप चित हित; खड़ग-पात्र जळ पूर धरै खित।
—सू. प्र.

उ०—३ म्हारै पण कन्या नहीं जिण थी म्हांरो धन लगाई भाई जसराज री पुत्रियां रा कन्यादांन रौ फळ लेण री म्है हीज बिचारी। अर बूंदी रा ही अमल मैं जैतौ कहै जिण ठांम सांमग्री रा संचय करि बरात बुलावण री धारी।—व. भा.

उ०—५ आपरी पुत्रियां रै समांन धन भूखण बस्त्र दास दासी गज वाजि सिविका रथ प्रमुख सांमग्री देर चौथै दिन बरात नूं विदा करि फेर बूंदी आयौ।—वं. भा.

२ घर-गृहस्थी का सामान।

३ सामान, साधन।

४ सामान, असबाब।

सांमज—देखो 'स्यांमज' (रू. भे.) (डिं. को; ह. नां. मा.)

सांमटणौ, सांमटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सांमद्रै, [illegible] । हुवै [illegible],
[illegible] ।—[illegible]

सांमदरुत्तर, हुणौ (हारो), सांमदहियौ—वि० ।
सांमद्रिरोहो, सांमद्रिरोही, सांमद्रोहो—भू० का० कृ० ।
सांमद्रोहणी, सांमद्रोहबौ—कर्म वा० ।

सांमद्रिरोही—देखो 'समद्रिरोही' (रू. भे.)
(स्त्री सांमद्रिरोही)

सांमठौ—देखो 'सांमठौ' (रू. भे.)
उ०—१ सांमठा [illegible] सूर, हरतंत वरै बहु रंभ हूर । पड़ि [illegible] मंगार, करकुक नाग करकूक कटार ।—सू. प्र.
उ०—२ 'ध्रममान' [illegible] दुम्रन दम, जगचल मुणि मुणि [illegible] । सांमठा सिघ नरसिघ रै, आगळ जांणै ओविया ।
—सू. प्र.
उ०—३ [illegible] वडिहारी [illegible], रोदरण घटां । मेन रायसिघ रा, सांमठा [illegible] ।—हा. का.
उ०—४ [illegible] गड़गड़ै तूर सूरां घडै वीर रमि, अच्छर वरिवा करै [illegible] । [illegible] देस [illegible] सांमठां. सांपना तांहरै [illegible] ।—सेना दुरजनसालोत पातावत रौ गीत

सांमण-सं. स्त्री.—१ देवी रा एक नाम ।
२ दसनामी संन्यासियों की वह स्त्री जो गृहस्थी हो ।
३ स्वामिनी, मालकिन ।
उ०—सरसति सांमण वीनवूं, मांगू एकज सार । एक जीभै हु किम [illegible], [illegible] तर नो नहीं पार ।—म. कु.
४ देखो 'सावण' (रू. भे.)
उ०—जसिया [illegible] छै. आपनै भी उघारै जतियक छै । पाति-साणी री [illegible], [illegible] बिनळ । सूमलिया नैणां की, अमरत मा [illegible] । [illegible] की ममोलो, वादळा की बीज, होळी की झाळ सांमण की तीज ।—मयाराम दरजी री वात

सांमणी-सं. स्त्री. [सं. स्वामिनी] १ स्वामिनी, मालकिन ।
उ०—१ सरसति सांमणी तूं जग जोण, हंस चढी लटकावै वीण । [illegible] भमरां भमदं, [illegible] मुख मंडणी माइ ।—बी. दे.
२ श्रावण मास की तृतीया ।
उ०—[illegible] बनवण, [illegible] सांमणी री दीहाड़ो [illegible] । [illegible] राजी कीधी । तरै [illegible] राजा रा बीड़ा [illegible] नहीं । [illegible] राज रै तो वडो [illegible] । वडी रजपूतांणी नूं दरम श्रेक हूमो छै । रजपूत [illegible] छै ।—[illegible] री वात
३ [illegible], [illegible] ।
उ०—[illegible] बिजकाती, मुमड़ो मुमकाती जोरो [illegible] । [illegible] कोर्ड [illegible] तुमियो, [illegible] सांमणियां [illegible] ।—[illegible]

वि.—१ श्रावण मास की, श्रावण मास से सम्बन्धित ।
उ०—करै राड़ भ्रतीयांमणी 'भ्रमै' जोगी किया, जकै नह सांमणी तीज जांणै । दमकती दांमणी देस सहरां दिसा, श्राद कर कामणी सोच मांणै ।—प्रथीराज सांदू
२ भयंकर, विनाशकारी, ध्वंस करने वाला ।
उ०—दांमणी मेह प्रगटै दरवां, अधिक देह अधिपांमणी । सांमणी कोट किला सको, गैवर दिल्ला गांमणी ।—मे. म.
रू. भे.—सांमिण, सांमिणी, सांमिनी, स्यांमणी ।

सांमणूं, सांमणू—देखो 'सांवणू' (रू. भे.)

सांमतसी-सं. स्त्री.—१ भाटीवंश की एक शाखा ।
सं. पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सांमद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

सांमद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)
उ०—अमरसी रीत 'अवरंग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी पातू तजी चाल । सांमद्रोहां हुआ रांणवाळा सुपह, रांण पाराथियो बियो रिड़माल ।—दुरगादास राठोड़ रो गीत

सांमद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

सांमधरम, सांमधरमाई—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे)
उ०—१ आगै कमो बरै आभाळां, चोड़ै मार लियो कळचाळां । सांमधरम लेखवै सगाई, भिळियो खळां न लेतै भाई ।—रा. रू.
उ०—२ याकूब फुरमायो तू बघारणै लायक छै । स्याबास थारी सांमधरमाई नूं पछै उण नूं बघार मोटो कियो ।—नी. प्र.
उ०—३ जोगणियां हंस हंस बोली, बरस ४८ रै राज रो बर दै'नै सीख दीधी । जगदै चारू सूं घरै पधारिया । राजा श्री सत सांम-धरमाई देखि नै निपट राजी हुवो । महिल आया, पोढिया । धन्य जगदेव ४८ बरस रो राज दिरायो ।—जगदेव पंवार री वात
उ०—४ इण मैं प्रयोजन श्रो छै धणी री तो बीरपणो विनां सिर (कबंध) होय लड़णो, घोड़ा रो सांमधरमो रजपूतां नै उपदेस पगू चारो खांण वाळै ही सांमधरम पाळियो ।—वी. स. टी.

सांमधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)
उ०—१ कारी न हिंदुस्तांन न खुरासांण मांहे सुणी न दीठी । मूंछी रै पासेडि कारी की । जितरा सांमधरमी हुता तियां रा जीव दोहरा हुवै हुता । अर हरांमखोरै पूरी कारी की । आपरो मन मनायो ।
—द. वि.
उ०—२ जिको आदमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नै ई देस-निकाळो देय सकै, उणनै मुकनसिंह रो मायो वढावता कांई जेज लागै । दोनूं जणा आपसरी मैं सलाह कीवी । सास भरोसा रा आदमी साथै लिया । अर रघ जोनाथ नै रातूंरात पाली कानी रवांनै किया ।—अमरचूंनड़ी

सांमधरमो—१ देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)
उ०—इण मैं प्रयोजन श्रो छै, धणी री तो बीरपणो विनां सिर

(कवंध) होय लड़णौ, घोडा रा सांमधरमौ रजपूतां नैं उपदेस पसू चारी खाणवाळै ही सांमधरम पाळियौ ।—वी. स. टी.

२ देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

सांमधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—नमसकार सूरां नरां, बिरद नरेस वरम्म । रिजक उजाळै सांम रौ, पाळै **सांमधरम्म** ।—बां. दा.

सांमधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—१ बोलै 'भांण' 'मुकन्न' तणा, जोधौ भड़ां समेत । **सांमधरम्मी** जूंझ मैं, कमी न राखी खेत ।—रा. रू.

उ०—२ **सांमधरम्मी** सांम छळ, दळ गंजै तुड़तांण । गौ 'रैणायर' जोतहर, कर दिल्ली घमसांण ।—रा. रू.

सांमधी—देखो 'संबंधी' (रू. भे.)

उ०—पुर पाटण थी चाल्यौ राव, बीसलपुर जाई दियौ मीलांण । कोटी कोटी कोठी **सांमधी**, पाली परिगह अंत न पार ।—बी. दे.

सांमध्रम, सांमध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखै मिण **सांमध्रम**, रीझै सिंधू राग ।—बां. दा.

उ०—२ घोड़ां वीरत प्यार घण, साच प्यार इनसाफ । प्यार **सांमध्रम** धरण पुन, प्यार सुजस 'परताप' ।—जैतदांन बारहठ

सांमध्रमी, सांमध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—छळै ऊंवरा बिहुंवै कुंत बांण हुं केवांण छौळां, ठहै तोप दोळां चोळां दळां वै ताठौड़ । धरा थंभ मुरधरा बरापूर **सांमध्रमी**, राड़िगारा भलै वभै अनमी राठौड़ ।

—कुसळसिंघ चांपावत अर सेरसिंघ मेड़तिया री गीत

सांमनै-क्रि. वि.—१ सम्मुख, अगाड़ी ।

२ प्रत्यक्ष ।

३ विरुद्ध ।

सांमनौ, सांमनौ-स. पु.—१ मुकावला, भिड़ंत ।

उ०—१ धाड़ेती आ बात आछी तरै सूं जांणौ हा कै गांव मैं लारै रह्योड़ा मिनख बौदा है अर इणां मैं सूं कोई उणां री **सांमनौ** करण नै नहीं आवैला ।—रातवासौ

उ०—२ कुचमादी रै घड़ी घड़ी दौड़ण सूं राजाजी री हीमत बंधी । है तौ साव डरकण सुभाव री । सूरवीर व्हैतौ तौ **सांमनौ** करतौ । राजाजी लारौ करै अर वौ चापळ जावै । राजाजी री हूंस मांय री मांय वथाला खावण लागी ।—फुलवाड़ी

२ किसी के विरुद्ध या विपक्ष में खड़े होने की अवस्था या भाव ।

३ किसी पदार्थ के आगे का भाग ।

४ भेंट, मुलाकात ।

५ प्रतियोगिता ।

सांमपण, सांमपणौ-सं. पु.—स्वामित्व ।

उ०—धांधळ उदैकरण हित धारै, करतौ गयंद मतै करारै । सांमळ 'विजौ' **सांमपण** सद्धर, 'नरहर' 'आणंद' तणौ निभै नर ।

—रा. रू.

सांमवेद—देखो 'सांम' (२) (रू. भे.)

सांमर—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

सांमरत, सांमरत्थ, सांमरथ, सांमरथि—१ देखो 'सांमरथ्य' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—तूं म्हनै म्हारी जात कोनी पूछी । तूं म्हारी समाज मांय किण तरियां री हालत है अर रुपिया-पीसां री **सांमरथ** किसीक है औ बातां भी नईं पूछी ।—तिरसंकू

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ संध्योपासन तजि बांग साज, निस दिवस वुजू रोजा निवाज । **सांमरत्थ** सिंह हम नहिं स्रगाळ, गौ मांस नांम पै देत गाळ ।—ऊ. का.

उ०—२ हजूर आप वड़ा हौ, **सांमरथ** हौ, इणनै कियांई बचाय दौ, म्हारौ एका एक छोरौ है । म्हूं आपरी हर तरै सूं सेवा करण नै तैयार हूं । अबै मरण वाळौ तौ मरग्यौ, वौ तौ पाछौ आवै नीं अर एक हत्या फेर व्है जाएला ।—अमरचूंनड़ी

सांमरथीक—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा **सांमरथीक** कुण । जाइ जांणिया तिसा मैं जंपिया, गोविंद रांणी तणां गुण ।—वेलि.

सांमरथ्थ—१ देखो 'सांमरथ्य' (रू. भे.)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

सांमरथ्य-सं. पु. [सं. सामर्थ्य] १ समर्थ होने की अवस्था या भाव ।

२ किसी कार्य को सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता ।

३ शब्द की व्यंजना शक्ति । (साहित्य)

४ शब्दों का पारस्परिक सम्बन्ध ।

५ धन, दौलत ।

६ शक्ति, बल ।

रू. भे.—सांमरत, सांमरत्थ, सांमरथ, सांमरथि, सांमरथ्थ, सांम्रत, सांम्रथ ।

सांमराट—देखो 'सम्राट' (रू. भे.)

उ०—वाढ फोजां डमरां कटांणौ हटै सींगवाळौ, **सांमराटां** नांम रटांणौ गुमरां सवाय । सौभाग रटांणौ जमी चमरां ढुळतां सीस, मारु राव थटांणौ अमरां लोक माय ।—जवांनजी आढौ

सांमरात-सं. पु.—युद्ध, संग्राम । (डिं. को.)

सांमराथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ नरेस अनाथ नाथ, अनाथियां घरै आथ । करै तूं सुधारै काथ, रटां **सांमराथ** ।—र. ज. प्र.

उ०—२ दुनि पाळ इंद्र ढाळ, विरदाळ जै दयाळ । गुणी साथ **सांमराथ**, रटै कीत गाथ ।—र. ज. प्र.

सांमरियौ—देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

सामरी-स. स्त्री.—फूल व पत्तों से रहित एक प्रकार की बेल विशेष। (अमरत)

सामरू—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—इसे अनन्तर एकनसिंह वराह द्वाए, इतें मैं केतेक सिरगोस सिन सामरू के झुंड धाए। तिन पर तिनु कूतूका धाव। सीह-गाह कैं ढाव। [illegible] में गिरतें हैं। मोहरा जड़ाव करते हैं।—सू. प्र.

सामरोर-स. पु.—ऊमरकोट के दक्षिण की ओर की भूमि जहां पर प्राचीन काल में समा यादवों का राज्य था। (पा. प्र.)

सामरो—देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—सिंह व्याघ्र रख रीछ वांनरा, सूअरा सांमरा घोर रे। पाखंडी ज्यों पश्चिम पाखि, म्लेच्छ भयंकर घोर रे।—नवाख्यांन

सामरयो—देखो 'सामरियो' (रू. भे.)

उ०—गरब धरि ऊभो छत्र सांमरघो राव, मो सरीखा नहीं ऊर भूपाल। म्हां धरि सांभर उगहड, चिहू दिस थांण जेसलमेर। नाग पुरो पावर पइट, राजिकठ थानिक गढ अजमेर।—बी. दे.

सामळ, सामल-सं. पु.—१ सूर्य, सूरज। (ना. डि. को.)

२ देखो 'सांवळो' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ गज गजे रै गह गंजे, भिड़ जंग वडा गाळ भजे। सीधां सामळ दीध पलांगळ, मंगळ गावति मंडे।—र. ज. प्र.

उ०—२ ओरण सलाम सलांम अनेक, सतगुर सेज बलिभद्र सेख। देवाधि सामळ देव दुगम, अईयो अनरज सकज अगम।—पी. ग्रं.

उ०—३ अनमंति नाग अनेक पीर, माहिवी नमो सामळ सरीर। दर करै देव दूणां दईव, जोनियां दियैं इनेक जीव।—पी. ग्रं.

३ देखो 'सांमिळ' (रू. भे.)

उ०—१ एकण री बळ घणो एकां री थोड़ो ओ थोड़ा बळ वाळा रै सामळ सो दळ मैं भागणो तथा छळ कर घणां बळ वाळां सूं मिळ जाणो इणमैं फायदो पण न्यांमधरम और वीरपणो नहीं।

—वी. स. टी.

उ०—२ तरै पड़िहारां कह्यो—थांरै बेटो पदमणी वूट छै, तिका परणायो तो म्हां सामळ हुवां।—नैणसी

उ०—३ महाराज जसवंतसिंहजी जोधपुर ऊपर आया जद मैं पण उणां रै सामल था।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सामलात, सामलाति, सामलाती-वि.—शामिल, सम्मिलित।

उ०—१ फोजां की तयारी साधि मेला साथ आयो, सांमूं राव सेतो चंदसेणोत सौं न आयो। मोजाबादि कांनी सूं नह का फौज सजायो, सो भी राव सेतो सामलाती फेरि आयो।—सि. वं.

उ०—२ हौरा गांव भूमि मावका ने जो बताया, भेरूंसिंघ सारा सामलाती सौं रचाया।—सि. वं.

रू. भे.—सामिलात।

सामळो—देखो 'सांवळो' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ समरै न जिकै नर सांमळियो, कतग्रंत जिकां सिर काहुळियो। कतग्रंत करै की काहुळियो, समरत जिकै नर सांम-ळियो।—र. ज. प्र.

उ०—२ गाफिल आळ जंजाळ न गावै, भुग सांमळियो सरम भळावै। 'किसन' कह जमहूंत म कंपै, जंपे रे मन राघव जंपै।

—र. ज. प्र.

सांमळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.)

उ०—सड़पफै वीजू जळां हास मोहा वड़पफै सूर, सीसहार भड़पफै पड़क्खै नथी संभ। ग्रीधणी हड़पफै पळां सांमळी हड़पफै गूंद, हंह कई अड़पफै पड़पफै वरा रंभ।—बद्रीदांन लिखियो

सांमळू, सांमळो—देखो 'सांवळो' (रू. भे.)

उ०—१ माथइ मोर पीछनी घडी, कांनै लोळि रतन सूं जडी। देव तणउं सांमळू सरीर, कटि मेखळा सबद गंभीर।—कां. दे. प्र.

उ०—२ विराजै नगां ओप सूं रूप वीठो, दळां नाथ स्रीनाग रो रूप दीठो। वणै सांमळै गात झीणै वसन्नै, तिसी भूखणै जोत मोती रतन्नै।—रा. रू.

उ०—३ ओपै गज सांमळा अनैसा, जपि गुण डोळ तिमंगळ जेसा। अरुण अंबाड़ी झूळ अरोहै, सांवण कि अंबुद सोहै।—रा. रू.

उ०—४ भरे मांग सिंदूर, मारग भाळै, वहे सांमळो ग्रज हेरो विचाळै।—ना. द.

उ०—५ ऐसैं वराहूं के ऊपर बीजूजळां का घाव। सो कैसैं सांमळै वदळूं पर वीजूजळा का सिलाव।—सू. प्र.

उ०—६ किसन अनै लखमण कहै, करां महा जुध कांम। सीता वाहर सांमळो, रोस घणै मां रांम।—पी. ग्रं.

उ०—७ जगदीस जनक रै ज्याग मां, आयो ऊतांमळो। भांजियो धनख रघनाथ भीड़, सीत परणियो सांमळो।—पी. ग्रं.

सांमलो-वि. (स्त्री. सांमली) १ आगे का, सामने का।

उ०—१ असवार कह्यो—म्हैं तो इण सांमला मगरा सूं ई दूजै मारग टळ जावूंला। अंठै ई जरूरी कांम है। अबै तो ओ थारो भार थनै ई उखणणो पड़सी।—फुलवाड़ी

उ०—२ जरै गोहरी अरज कीधी, कह्यो—रावजी सलांमत! मोरचा तो भुरज भुरज टणका छै। तिण मैं सांमलो भुरज दीसै तिका नाहरी भुरज कहीजै छै। तठै नाहरी बांधी रहै छै।

—राव रिणमल री वात

२ प्रतिद्वन्दी, प्रतियोगी।

३ आने वाला।

उ०—कदेही म्हैं भी आं दारू भागवांनी मैं टोरा अर टिल्ला लगा-वतो। सांमलै परसंगी मैं टंटबै कर लेतो अर टको व्याज चवा-वतो। पण मैंगै पर मरचो। अम्मींणी सूं डरचो। जैर पीयो अर वेर लियो—दमदोल

ज्यूं—सांमली गाडी कणांक आवैली।

सांमला वरात किसीक लावैला ।

रू. भे.—सांमहलौ, सांमहौ, सांम्हलौ ।

सांमवेद—देखो सांम (२) (रू. भे.)

सांमहणौ, सांमहवौ—देखो 'संभणौ, संभवौ' (रू. भे.)

उ०—१ वीरग्रदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, ग्रह-ग्रहतै त्रंबक तणै ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं, भेरि भुंगल तणै भुभूयाटि भूकिइं भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कांन कमकम्या,.........।—व. स.

उ०—२ ....कातर डहडहइं, चिंध लहलहइं, मयराल गुड्या, तुरंगम पाखरया, सूरा सांमहल्या, लगि वाजइं, हस्ति मांचइं, कवंध नाचइं, प्रहरण झलहलइं, वीर खलभलइं, प्रहारि उरज्जर कुंजर पडइं, सूनासणा तुरंगस लडफडइं, रथ धडहडइं ।—व. स.

सांमहणहार, हारौ (हारी), सांमहणियौ — वि० ।

सांमहिग्रोड़ौ, सांमहियोड़ौ, सांमह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांमहीजणौ, सांमहीजबौ—भाव वा० ।

सांमहलौ—देखो 'सांमलौ' (रू. भे.)

उ०—सांझी वेळा सांमहलि, कंठळि थई अगासि । ढोलइ करइ कंवाइयउ, आयउ पूगळ पासि ।—ढो. मा.

(स्त्री. सांमहली)

सांमहियोड़ौ—देखो 'संभियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांमहियोड़ी)

सांमहौ—देखो 'सांमलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ अमराव अमीरळ बळ अथाह, सांमहा मेलिया पातसाह । जिण करै सलांमां दास जेम, आदाब वजायै साह एम ।—वि. सं.

उ०—२ वदन तेज झळपंत रौ वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पौरस अमांमौ । मंडांणौ हेक राजा घणै मछर सूं, साहजादां दुहूं तणै सांमहौ ।—रूपौ मुहतौ

उ०—३ दोत घरि आव्यौ वीसलराई, राई भतीजो सांमहौ जाई । तुरीय पलांराय राव का, चाल्या चौरास्यौ अरु परधांन ।—वी. दे.

उ०—४ दाखां तूझ नां निमौ नरसिंघ देहं, निमौ ताहरौ कोप लिखमी सनेहं । किसन तूझनां साद पहिलाद कीधौ, दीनानाथ तैं सांमहौ साद दीधौ ।—पी. ग्रं.

(स्त्री. सांमही)

सांमहु—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांमांन—सं. पु. [फा. सामान] १ कार्य-साधन की आवश्यक वस्तुएं,

उ०—१ वैसाख वदि ९ डेरौ सलावास हुवौ, सु जीमनै आथण रा जोधपुर जाय रह्या । दिन ४ मु. नैणसी जोधपुर रह्यौ, नै सुल सांमांन कटक रौ कीयौ । चारूं तरफ साथ नुं छड़ौ चढीयौ वैसाख वदि १३ डेरौ नैणसी चैनपुरै कीयौ ।—नैणसी

२ प्रबन्ध, व्यवस्था ।

३ वस्तुएं सामग्री ।

उ०—लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नको लीधौ, सजायै ठीकांणां वेहूं ब्याव का सांमांन । हुंगांमां होकबा राग रंग रा हमेस हुवैं, अठी जांनवाळी सोभा बणावैं आजांन ।—बादरदांन दधवाड़ियौ

४ युद्ध-सामग्री, युद्ध का सामान ।

उ०—१ तरै रावजी मेवाड़ रा अमरावां नै कागद परवांना सीदीवांण रा नांम मोहर सुं मेलिया । जिण मैं लिखियौ—जिण ही नै कुंभा रा आटा रा पटा री चाहि होवै तिको वेगौ आइ भेळौ होज्यौ तिको चाचा मेरा रा आटा री चाह करै तिको घरां वैठा रहज्यौ तथा चाचा कनै जावज्यौ, म्हे पिण चाचा सुं मिळण आवां हीज छां । तरै मोटा मोटा मेवाड़ मैं उमराव था तिकै आप आपणौ सांमांन साथ लै नै कुंभाजी रै पगै लागा ।—राव रिड़मल री बात

उ०—२ तरै उमरावां नै घोड़ा, हाथी, सिरपाव दे दे नै कह्यौ—थांहरै खोळै धरती नै कुंभौ छै । चाचौ मेरौ ढांकणीयै गढ सांमांन करनै वैठौ छै । आपरा साथ सुं सीदीवांण तो चीतौड़ नै सिधाया, मेवाड़ मैं कुंभा री आंण फेरी ।—राव रिणमल री बात

५ गृहस्थी की उपयोगिता की वस्तुएं ।

७ धन, द्रव्य, दौलत ।

उ०—स्यांम सुतन अभिनवां सवाई, दिन दिन पढियौ हैक ददै । गुण सांमांन मिळवै गढ़वां सूं, किलौ भिळै नह हला कदै ।

—रांणा कुसळसिंघ स्यांमसिंघोत रौ गीत

रू. भे.—समांन, सेमांन ।

सांमांन्य—वि. [सं. सामान्य] १ साधारण, मामूली ।

२ सार्वजनिक, आम ।

३ सब या बहुतों से सम्बन्धित ।

वि.—समान होने की अवस्था या भाव ।

सांमांन्यतया—क्रि. वि. [सं. सामान्यतया] सामान्य रूप से, सामान्यतः ।

सांमांन्यता—सं. स्त्री. [सं. सामान्यता] सामान्य होने की अवस्था या भाव ।

सांमांन्यभविस्यत—सं. पु. यौ. [सं. सामान्य भविष्यत्] एक प्रकार का भविष्यकाल विशेष जिससे भविष्य की घटनाओं का पता चलता है । (व्याकरण)

सांमांन्यभूत—सं. पु. यौ. [सं. सामान्य भूत] एक प्रकार की भूतकालिक क्रिया, जिसमें किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है । (व्याकरण)

सांमांन्यवरतमांण, सांमांन्यवरतमांन—सं. पु. यौ. [सं. सामान्य वर्तमान] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई करते रहना सूचित होता है । (व्याकरण)

सांमांन्यविध, सांमांन्यविधि—सं. स्त्री. यौ. [सं. सामान्य विधि] साधारण आज्ञा, आम हुक्म ।

वि. वि.—सर्व साधारण के लिए सामान्य रूप से दिये गये आदेश

इनमें सन्निहित रहती है। यथा—सदा सत्य बोलो, दूसरों की भलाई करो इत्यादि। किन्तु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ में हिंसा की जा सकती है, किसी की प्राण रक्षा के लिए झूठ बोल सकते हो, तो इस तरह की विधि विशेष विधि होगी। यह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होती है।

सांमान्या-सं. स्त्री. [सं. सामान्या] १ सर्वसाधारण को उपलब्ध स्त्री।

२ धन लेकर किसी से प्रेम करने वाली नायिका। (साहित्य)

सांमा-सं. स्त्री.—१ विवाह के दिन होने वाली प्रातः कालीन एक रस्म विशेष जिसमें जनवासे में वर के मजधज के बैठने पर वधू-पक्षीय जन पुरोहित सहित आकर तिलक आदि लगाते हैं। (श्रीमाली)

२ भाटी एवं यादव वंशीय क्षत्रियों की एक शाखा।

सांमाइय, सांमाई—देखो 'सांमयिक' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—.........सम्यक्त्व परिपालियं, देव पूजियइ, गुरु परगुरस्ति कीजइ, सिद्धांत सांभलियइ, तत्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ, पोसहसाला जाईई, वंदन कीजइ, सांमाइक लीजइ, पूरवाधीत सास्त्र गुणियइ,.........।—व. स.

सांमाचार, सांमाचारी—देखो 'समाचार' (रू. भे.)

उ०—.........विनय रुचिया सरूप तेह प्रति गुरुड प्राय, संसार समुद्र प्रति प्रवहण प्राय, जिन प्रवचनालंकार, उग्रविहार, पंचविधाचारपाल सैंक पंचानन, दसविध चक्रवाल सांमाचारी प्रगल्भ......।

—व. स.

सांमाज—१ देखो 'समाज' (रू. भे.)

२ देखो 'स्यांमज' (रू. भे.)

उ०—सार भरमार गुळजार पळ गूद सम, अलल गुंजार गोळा अनीजै। साज धर जरद सांमाज धर सांतरा, राजधर नरेसुर सुजन रीझै।—महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

सांमाजिक-सं. पु. [सं. सामाजिकः] १ सभा का सदस्य, सभासद।

(डिं. को.)

२ वह व्यक्ति जो तरह तरह के तमाशे करके धनोपार्जन से जीविका निर्वाह करता हो।

३ उक्त तमाशों को देखने हेतु एकत्रित जनसमूह।

४ काव्य एवं संगीत का अच्छा ज्ञाता। (साहित्य)

वि. [सं. सामाजिक] १ समाज का, समाज सम्बन्धी।

उ०—आछी सांमाजिक नाटकां-चेटकां में ही घराऊ भाग लेवै अर आप साथी घणी, पारट करै। काळू री नाटकसाळा री तौ जनक जांणीजै।—दसदोख

२ सुन्दर।

सांमाजिकौ-सं. पु—१ समाज में रहने वाले सदस्य। (हि. को.)

२ सभा के सदस्य, सभासद।

सांमाद—देखो 'समाद' (रू. भे.)

उ०—१ अवस ना सजी रिण मीर भजण अमह, मीर संमां तणी निकूं लोरै, भणै किव भेद मैं। तई सांमाद प्रभ बंधु दोनां तणा, अनायां नाद भुज विरद ओरै, वणै कथ वेद मैं।—र. ज. प्र.

उ०—२ सांमाद तूं सुरनाथ तूं, रिमघात तूं रघुनाथ। रघुनाथ तूं दसमाथ रांमण, भांजवा भाराथ।—र. ज. प्र.

सांमाधि, सांमांधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं गेलणा सहज पासा। सहज सब जांनना सूब भाई, सहज सांमाधि सहजै मिळाई।

—अनुभववांणी

सांमायक, सांमायिक-सं. स्त्री.—जैन मतानुसार वह एक घड़ी का समय जब समस्त सांसारिक क्रिया-कलापों को छोड़ कर प्रभु-स्मरण करते हैं।

उ०—१ दिवस प्रतै कोई दियइ सुजांण, सोना री कंडी लाग प्रयांण। तेहनउ पुण्य जेतलउ, सांमायक लीधै तेतलउ।—स. कु.

उ०—२ ढूंढार मैं एक भाया रै वीरभांणजी री संका पड़ी। पछै स्वांमीजी कनै आयौ। सांमायक नौं उपदेस दियौ। जद तै बोल्यौ—सांमायक तौ न करूं कदायच सांमायक मैं थांनै स्वांमीजी महाराज कहिणौ आय जावै तौ मोनैं दोख लागै।—भि. द्र.

उ०—३ सांमायिक पोसह करै, वलै पड़िकमणौ विसेखो रे। पांचू पद समावतां, सिद्ध 'उदाई' सूं देखो रे।—जयवांणी

सांमि—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ ऊहड़ बळ दूणौ 'अभौ', दळ 'भीमोत' दुरंग। मांगळिया 'ऊदौ' 'रतन', सांमि कमंध अभंग।—रा. रू.

उ०—२ एक अचंभम परखणौं, अति छति उकति अजेव। ज्यौं मनि आवि कै सांमि कै, पाय दिखावै वेव।—रा. रू.

उ०—३ अवसांण मरण खगधारा, सांमि कांमि भंजियै देहा। सोचत चित नित नित्तं, आंमीजै पुत्ररेहा ई।—र. वचनिका

उ०—४ नांम लियंतां नांम, सांमि सूझै सहि सूझै। रांम तणै रस मांहि, सेस बूझै सिवि बूझै।—पी. ग्रं.

उ०—५ सांमि रै रूपम साळा काळा काळा जिकै कांन्ह, संघारै मिघाळा भाई कंसवाळा सेख। दीसता दीनदयाळा निरिताळा निमो देव, अकव्वर आळा भिळै तमासा अलेख।—पी. ग्रं.

सांमिण, सांमिणी—१ देखो 'सांइणी' (पु.)

उ०—संमेळै सघण सहर नर साहण, सांमिण सहवर चाढि सभीत। आरंभ कर अजमेर आवियौ, वरसाळ किनां विक्रमादीत।

—विक्रमादीत राठौड़ री गीत

२ देखो 'सांमणी' (रू. भे)

उ०—सकळ सुरासुर सांमिणी, सुण माता सरसत। विनय करै नै विनवूं, मुझ दो अवरळ मत्त।—ढो. मा.

३ देखो 'समांणी' (रू. भे.)

सांमिधरम, सांमिधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—मुहता जोड़ै मेर अजादा, जुध जुध ईदगरां सूं ज्यादा।

गोकळ सांमिधरम पण ग्राहै, सुंदर सुत आयो व्रत साहै ।—रा. रू.

सांमिधरमी, सांमिधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—सांमिधरम्मी सांम तरा, सुणि परा गुरां सपूत । मिळिया तैं आथोमणां, राव तणां रजपूत ।—रा. रू.

सांमिधेनी-सं. स्त्री. [सं. सामिधेनी] १ होम की अग्नि प्रज्वलित करते समय या अग्नि में समिधाएँ छोड़ते समय बोला जाने वाला ऋवमंत्र ।

२ समिधा, ईंधन ।

सांमिध्रम, सांमिध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—१ चंद सूर लग नांम चढावै, करि जस सभंदां तरा कड़ै । सूरां मरण सांमिध्रम साटै, वसुधा दीन्ही ध्रिगुट वड़ै ।

—महेस सांखला रौ गीत

उ०—२ तिणि वेळा नौबति नीसांण तोग झंडा सांमिध्रम सोवा हिंदुस्थांन री सरम भुजैं आई । तिणि वेळा रा आइयौ काळा पहाड़ सोभा वरणी न जाई ।—र. वचनिका

सांमिनी—१ देखो 'सांइणौ' (पु.) (रू. भे.)

२ देखो 'सांमणी' (रू. भे.)

सांमिप्य—देखो 'सांमीप्य' (रू. भे.)

सांमिय—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—जदूकुळ-नायक सांमिय जग्ग, पदम्म-पताक अलंकृत पग्ग ।

—ह. र.

सांमियांणौ, सांमियांनौ-सं. पु. [फा. शामियानः] एक प्रकार का तम्बू जिसमें ऊपर का कपड़ा बांसों पर रस्सियों की सहायता से तना रहता है ।

रू. भे.—संमियांणौ, समियांण, समियांणो, समीयांण, समीयांणौ, साइवांन, साईवांन, सायीवांन ।

सांमियौ—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—दीह कितराइ लड़ियौ निमौ देवता, सबळ हरिणाख जिसा किसै भव सेवता । भगत रा सांमियै असुर कद रा भगत, राकसां न मारत घणौ तुनां रगत ।—पी. ग्रं.

सांमिळ, सांमिल-वि. [फा. शामिल] १ साथ, शामिल, सम्मिलित ।

उ०—फौज सांमिल हुवौ मुदायत फौज रा, प्रांण तन जुदायत ठीक पुगौ । भाग सुध तणौ सिरायत मेड़तै, अचड़ कथ उदायत भांण ऊगौ ।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

रू. भे.—समळ, सांमळ, सांमिळि ।

सांमिलात, सांमिलाति, सांमिलायत, सांमिलायती—देखो 'सांमलात' (रू. भे.)

सांमिलि—देखो 'सांमिल' (रू. भे.)

उ०—असि वर वाद अनाद अकांपा, चूरण खळ आया सांमिलि चांपा । सकतसिंघ निज दळां सहाई, दांन सुजांन भुजां वरदाई ।

—रा. रू.

सांमी, सांमी-सं. पु. [सं. स्वामी] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—१ निरकार निरद्वार दईतां संघार निमौ, आदेस अपार पार अवतार अंस । साधुआं सुधार सांमी आविस्यैं निजारसाह, काइयौ नंदकुआर कंस मार कंस ।—पी. ग्रं.

उ०—२ सास सासि विखैं थारौ जस वास करां सांमी, तनांई न जांणै जास तिकां थारी तास । अभवास टाळै परा जमवाळा प्रास ग्यांन, आपरा पगां री राखै पीरदास आस ।—पी. ग्रं.

२ भगवान विष्णु । (डि. को.)

३ शिव, महादेव । (ह. नां. मा.)

४ स्वामिकात्तिकेय ।

५ पक्षिराज गरुड़ ।

६ राजा, नृप । (ह नां. मा.)

७ स्वामी, मालिक ।

उ०—१ सूरज तेज पुंज सरवेस्वर, जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर । जग रखवाळ जगत चौ जांमी, सुर नर इस्ट स्रस्ट चौ सांमी ।

—रा. रू.

उ०—२ महदीप छंद तेरहै दस मत पय जांणौ, यण जोड़ सुजस रांम श्रपत उर मझ्झ आंणौ । जनपाळ स्रीदयाळ सुलख जियगत जांमी । सरण सधार विरदधार हणूमांन सांमी ।—र. ज. प्र.

८ पति, स्वामी ।

९ घर का प्रधान व्यक्ति ।

१० सेनानायक, सेनापति ।

११ श्याम देश का निवासी ।

उ०—सांमी रूमी संजरी, गोरी कासगरीह । ईरांनी, यमनी अडर, सीराजी रण सीह ।—बां. दा.

१२ स्वामी शंकर के अनुयायी, दशनामी ।

उ०—१ सांमी मडी मडाय कै, मन विखिया कै मांहि । सिख साखा धन बौहत की, खुधिया भाजै नांहि ।—अनुभववांणी

उ०—२ सांमी सेवग बारणैं, कथा सुणावै नित । अरथ दिखावै और कुं, आप ठगाई चित ।—अनुभववांणी

१३ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी ।

१४ साधु, संन्यासी ।

उ०—तद कुंवरसी कह्यौ—'जौ मोनूं फेर वरजियौ तौ हूं पेट मैं मार कटारी मरीस, का राख घात सांमी हुय जाईस ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा.—१ सामी कीसा सांड मारै=साधु किसी को तकलीफ या हानि नहीं पहूँचाते ।

२ सांमीजी संसार कैड़ौ कै दिल जांणै जेड़ौ=अपने व्यवहार के अनुसार दूसरों का व्यवहार होगा । (मि.—आप भलौ तो जुग भलौ ।)

३ सांमीजी काड़ा निजर है, मूंगा करड़ै=चरित्र सम्बन्धी आवरणी का दया कार में मनता है।

४ सेंठी सांमी मूंढ़ रो सांड़ियो=पति परिवार में प्रतिष्ठा नहीं रखी।

(नि. पति परिवार में होता है परंतु अनादर भाव)

५ बावाजी बाछड़ा वाळ्तो, कै बाछड़ा वाळ्ता तो सामी नहुं होता=साधु परिश्रम नहीं करते, अगर कार्य करने की क्षमता या इच्छा होती तो साधु क्यों होते।

१५ देखो 'साहबी' (रू. भे.)

उ०—१ थवे थें मेंती करो जी मेंती सामी आई तो आपी धांन पेन पोळी नांगा।—पंचमार री बात

उ०—२ नीवर नीरवो-डोडवो आंगणो, सूरज सांमी पोळी जी। पोळी मांय मुजरोड़ी बैठ्या, पान नोधर री चोकी जी।

—लो. गी.

उ०—३ पूतां री नूं पूत, कमाई सांमो मूंझै। आंती वातां आड़, धीवड़पां नै भुगा सूझै।—नारी सईकड़ो

उ०—४ धणकरा बहादुरां नै हर देस मांय, दुसमण रै सांमीं समरपण करणै रै पाछै भी, उण देस रा सब सूं ऊंचा मांन सनमांन रा पदक मिलै है। समरपण सूं साहस अर बहादरी री कहांणी नम नीं समझी जा सकै।—तिरसंकू

उ०—५ घणै सनेह सूं गदगद होय'र म्हैं कयो—तूं महांन है मेंत, म्हैं थारै सांमीं बहोत छोटो जीव हूं। तूं अठै निस्चित हो नै रात भर आरांम कर।—तिरसंकू

१६ देखो 'सांम' (रू. भे.)

रू. भे.—सई, सांइ, साईं, सांमि, सांमिय, सांम्य, सांयी, साइ, साईं, साहमी, सुआंमी, स्वांम, स्यांमी, स्वांमि, स्वांमी।

अल्पा.—सांमियो, सांमीड़ो, सांमीड़ो, स्यांमीड़ो।

सांमीकबाब-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का कबाब विशेष।

सांमीकारतिक, सांमीकारतिकेय, सांमीकारतीक, सांमीकारतीकेय—देखो 'स्वांमीकारतिकेय' (रू. भे.)

सांमीड़ो, सांमीड़ो—देखो 'सांमी' (अल्पा; रू. भे.)

सांमीद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

सांमीद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

सांमीधरम, सांमीधरम्म, सांमीध्रम, सांमीध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

सांमीनो—देखो 'सांइणो' (रू. भे.)

उ०—रोमीना सागै छाती कूटी भाड़-बुहार, पांणी-चूंणी, पीसणो-पोवणो, रोवणो-दिरोवणो अर धोवणो-धावणो। सरीसी सांमीनो सायलिया मिळै तो घरी-दस'क मन राजी व्है जाए।

—अमर चूंनड़ी

(स्त्री. सांमीनी)

सांमीप—१ देखो 'समीप' (रू. भे.)

उ०—१ सिरी गंग री नीर संनांन सारू, दसत्तूर सिंदूर कपूर दारू। हुवै होम आसावरी धूप हूंमै, घणां सांपणा दीठ सांमीप घूंमै।—मे. म.

उ०—२ गयंद वहतो ताजी जाट जड़ तोड़णी, चंदसिखर जोट सांमीप चहतो। गरब पण छोड जहुंवार सहतो गयो, कथा रिण छोड रिण छोड़ कहतो —हुकमीचंद खिड़ियो

२ देखो 'सांमीप्य' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मुकत ही पांच प्रकार की, सालोक ही सांमीप। सारूप हुंता जांणियै, को पोहचै भव जीव।—गज-उद्धार

उ०—२ वरै न रहियो अपछरै, निज सूर मंडळ नीसरै। सांमीप प्रांमै समसरै, भरपूर मुकति ज भरै।—मांनसिंघ सगतावत रो गीत

सांमीपत्य, सांमीपमुकति, सांमीपमुक्ति, सांमीपमुक्ति, सांमीप्य, सांमीप्यमुक्ति-सं. स्त्री. [सं. सामीप्यं, सामीप्य] १ मुक्ति के पांच भेदों में से एक मुक्ति का नाम, जिसमें मुक्तात्मा ईश्वर के सामीप्य का अनुभव करता है। (अ. मा.)

उ०—सालोक्य संगति रहै, सांमीप्य सन्मुख सोई। सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होई।—दादूवांणी

रू. भे.—समीपत्य, समीपमुकुत्ति, सांमिप्य, सांमीप।

२ निकटता, समीपता।

सांमीर—देखो 'समीर' (रू. भे.) (डिं. को.)

सांमीरजायौ-सं. पु.—१ पवनसुत, हनुमान।

उ०—सभै सोड मैंडांण ऊडांण सारां, पयोधार हूंता न को होय पारां। पुणै तांम अज्जे कपी भेद पाया, जतूं काय बोलै न सांमीरजाया।—सू. प्र.

२ भीम, वृकोदर।

सांमीवच्छल, सांमीवछळ-सं. पु. [सं. साधर्म्यवात्सल्य, प्रा. साहम्मिवच्छळ] जैन सम्प्रदाय में समान धर्मियों का भोजनादि द्वारा किया जाने वाला आदर-सत्कार।

सांमुद, सांमुदर, सांमुद्र-वि. [सं. सामुद्र] १ समुद्र में उत्पन्न।

२ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी।

सं. पु.—१ समुद्री नमक।

२ समुद्री फेन।

३ शारीरिक दाग या चिन्ह।

४ आनन्द, हर्ष। (ह. नां. मा.)

५ देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

सांमुद्रक, सांमुद्रिक-सं. पु. [सं. सामुद्रिक] १ मनुष्य के शरीर के चिन्ह जिनके द्वारा शुभाशुभ फल बताये जाते हैं।

२ मनुष्य के शरीर के चिन्हों या लक्षणों आदि के शुभाशुभ फलों के विवेचन का ग्रन्थ। (फलित ज्योतिष)

३ मनुष्य के शरीर के चिन्ह या लक्षणों द्वारा शुभाशुभ फल बताने

वाला व्यक्ति।

वि.—१ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी।

२ समुद्र में उत्पन्न।

सांमुद्रिकतीरथ-सं. पु. [सं. सामुद्रिकतीर्थ] अरुन्धतीवट के समीपस्त एक पवित्र तीर्थ का नाम।

वि. वि.—इस तीर्थ में स्नान कर तीन रात तक ब्रह्मचर्यपालन पूर्वक उपवास करने से अश्वमेध यज्ञ एवं सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है।

सांमुह, सांमुहउ, सांमुहु, सांमुहौ, सांमू—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी रीठ। दोंहागिण घट सांमुहउ, सोहागिण री पीठ।—ढो. मा.

उ०—२ मूक्या लिखि 'दाराव' उतांमळ 'खांनाखांन' सांमुहा कागळ। हुवा कटक्कै दखणी हाऊ, ब्राहनपुर आया वाहाऊ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ सहिजादां बिऊं सांमुहौ, अेक 'जसौ' अणभंग। मांडण असपति मांडिओ, जोध कळोधर जंग।—र. वचनिका

उ०—४ गुज्जर तण गरूर, ताइ मिळै दिखणी तणा। सेंन उजेणी सांमुहा, सालुळिया दळसूर।—र. वचनिका

उ०—५ काठी कुरळातां काती निस काळी, होळी हीये में दांतां दीवाळी। सांमु सीयाळी साकी सरसायौ, बाकी वंचियां नै डाकी दरसायौ।—ऊ. का.

उ०—६ फौजां की तयारी साथि सेखा सीस आयौ, सांमूं राव सेखौ चंद्रसेण चलायौ।—शि. व.

(स्त्री. सांमुही)

सांमूळ—देखो 'समूळ' (रू. भे.)

सांमूसांम—देखो 'सांम्हौसांम' (रू. भे.)

उ०—सोनै रौ पींजरौ, मखमल री खोळी, रतन बाटकां मैं दाड़म 'र दाख, सिखावै सूवटै नै बोल मिट्ठू राधेस्यांम। सांमूसांम गळी मैं बैठौ भूखौ सूरदास छोड़ दिया पिरांण रट रट'र नांम।

—लीलटांस

सांमेजा-सं. पु.—भाटी सिंधियों का एक भेद जो पहिले भाटी राजपूत थे।

सांमेळौ-सं. स्त्री. [सं सामेयी] १ कन्या पक्ष वालों द्वारा नगर या गांव के प्रांगण अथवा सीमा पर दुल्हे एवं बारातियों का किया जाने वाला स्वागत, अगुवानी।

उ०—१ उमरावं केसरिया वागा वणाया। मंडोवर परणीजण ने पधारिया तरै बारह कोस सांम्है आया। घणी जलूस सांमेळा री देख मेवाड़ा हैरांन रह्या।—राव रिणमल री वात

उ०—२ तारां नाळेर झालिया। परधांन नै सीख दीधी। लगन जोयनै जांन चढी। तरां सोढी कहियौ। सांमेळौ सोढां री वखांणज्यौ। हयळेवौ सोढी रौ वखांणज्यौ।

—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—३ गांव रौ लोक तमासगीर देखण नुं गयौ। प्रोहित नुं खरळां मेल्हियौ, 'जौ ऊतरौ, कुंवारी भात भेळा, आरोगौ। जितरै सांमेळौ आसी। वीहा री तयारी छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

मुहा.—सांमेळा में ई गधा=श्री गणेश ही अशुभ।

(मि. सिधसी में ई खोट=सर्वप्रथम अपशकुन।)

२ सौभाग्यवती स्त्रियों या कन्याओं द्वारा सिर पर कलश तथा उसमें नीम की टहनियां लगाकर राजा, दुल्हा, एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों का किया जाने वाला आदर, सत्कार।

रू. भे.—संभेळौ, समेहळौ समेळौ, सांभेळौ, सांमेहळौ, सांम्हेळौ, सांम्हेलौ।

सांमेव-सं. पु. [सं. सायुज्य] अभेद के साथ मिलकर एक हो जाना, मुक्ति के पांच भेदों में से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिलकर एक हो जाता है।

सांमेहळौ—देखो 'सांमेळौ' (रू. भे.)

उ०—सांमेहळौ पिण आयौ सांम्हां। इतरै मैं जेळू पिण दीठौ। भोज बांवळी घोडी चढियौ दीठौ। ईयां साथ दीठो ताहरां जेळू कहै। हु भोजै नुं परणीजीस।—देवजी बगड़ावतां री वात

सांमै—देखो 'सांम्है' (रू. भे.)

उ०—१ दाधी दुखड़ै री फिरतोड़ी दोरी, गोरै मुखड़ै री गिरतोड़ी गोरी। चांमीकर घांमै फांमी कर चोड़ै, जांमी जांमी कर सांमै कर जोड़ै।—ऊ. का.

उ०—२ आडौ अवळौ क्यूं फिरै, धवळौ वापूकार। ओहिज पार उतारही, थळ सांमै ओ भार।—बां. दा.

सांमैरी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रागिणी विशेष जो दिन के तीसरे प्रहर में गाया जाता है।

उ०—ब्रह्म-मूहूरत समै लाखौ फूलांणी गवीजै। दोय घड़ी दिन चढियां धनासरी मैं बाघौ कोटड़ियौ, तीसरे पोर सांमैरी मैं रिड़मल, रात रौ सोढौ महंदरौ गीत गवीजै।—बां. दा. ख्यात

सांमोद-वि—हर्ष एवं प्रसन्नता युक्त।

सांमोर-सं. स्त्री.—१ पड़िहार वंशीय एक शाखा।

सं. पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सांमौ सांमौ-देखो सांम्हौ' (रू भे.)

उ०—१ 'गोगौ' मोगौ होय 'गोरंधा' गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पड़ि तेजौ लै तिरियौ। पीरां पतधीरां पेली धर धायौ, उण दिन 'रांमौ' डर सांमौ नहि आयौ।—ऊ. का.

उ०—२ इसा मैं परमेस्वरजी री अेसी आग्या हुई, जो भरमल री आंख्यां रा पडळ दूर हुय गया। जिसी निरधूम दीया हुवै, जिसी

आज मूल नहीं। मौ मारो सांमो जोव कुंवरसी सांमो दीठौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ तारा ऊर्ग पर काढै गळी-म्हूं निसरे रै सावै नहीं आगा, मोटमी। हाथी, मखूडा आया। जिणरै पूनो उठै सांमो मनी। - नैणसी

(स्त्री. सांमी)

सांमोसांम—देखो 'सांम्होसांम' (रू. भे.)

उ०—नगरना ढोंठ रै वनवाडै मुंछयां रा सांमुची सेनाण। म्हा रै सांमोसांम नाठी भेद। सिलाड़ रै माथै आधी हथाळी जितो सोगिया रो सेनाण। कानां री दोनूं लोळा फाट्योड़ी। – फुलवाड़ी

सांम्मुनी-सं. स्त्री. [सं. साम्मुखी] वह तिथि जो सायंकाल तक रहती हो।

साम्य-सं पु [सं. साम्य] १ समानता।

२ देखो 'स्याम' (रू. भे.)

उ०—१ सधार सकल सुधारै तूं सुकरत सांवड़ियां। मोई दरसण रा रै साम्य को, देनूं सांवड़ियां। — आलमजी

उ०—२ के मुवो के मारियो, के मुवनै आयो साम्य। नो रांम रो सुंदरो, कुंण रन यां ल्यायो रांम।— मेहोजी गोदारो

३ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

साम्यवाद-सं. पु. [सं. साम्यवाद] कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एवं लेनिन से सम्बन्धित एक विचारधारा।

वि. वि.—इसका उद्देश्य व्यक्ति के बदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबंध व उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना एवं हर संभव प्रयासों से शोषित वर्ग को मजबूत बनाना है।

साम्यावस्था-सं. स्त्री. [सं साम्यावस्था] किसी प्रकार के विकार या संदभ से रहित वह अवस्था जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों प्रकृति।

साम्रत, साम्रथ—१ देखो समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ साम्रथ सहूं संसार में ,करणीगर सब विध करण। महाराज 'धवण' विनती करै, तूं केसव असरणसरण।

—गज-उद्धार

उ०—२ सुन 'सारंग' साम्रथ बात सहूं, दसजे सिर सारंग हाथ दहूं।—पा. प्र.

२ देखो 'सामरथ' (रू. भे.)

साम्राज्य-सं. पु. [सं. साम्राज्य] एक ही शासनसत्ता द्वारा शासित अनेक राज्य, प्रदेश या राष्ट्र, सल्तनत।

साम्राज्यवाद-सं. पु. [सं. साम्राज्यवाद] वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अपने अधिकृत क्षेत्रों की रक्षा के साथ-साथ वृद्धि की जाती है।

साम्राज्यवादी-वि. [सं. साम्राज्यवादी] साम्राज्यवाद के सिद्धान्त का अनुयायी एवं अन्य सम्बन्धित तथ्य।

सांम्हउ—देखो 'सांम्हो' (रू. भे.) (उ. र.)

सांम्हनै—देखो 'सांमनै' (रू. भे.)

उ०—पांण लग 'प्रजा' रै सांम्हनै पसेला, तो नसेला पतंग पड़ दीव म्हाळै।—रांमलाल ग्रासियो

सांम्हळणो सांम्हळबो—देखो 'सांभळणो, सांभळबो' (रू. भे.)

उ०—महाराज बखतसिंह जी रा डेरा लाडपुरै हुवा रा समाचार सांम्हळ महाराज भी ताकीद सूं कूच कियो।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

सांम्हळणहार, हारो (हारी), सांम्हळणियो—वि०।

सांम्हळिग्रोड़ो, सांम्हळियोड़ो, सांम्हळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सांम्हळीजणो, सांम्हळीजबो—कर्म वा०।

सांम्हळियोड़ो—देखो 'सांभळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांम्हळियोड़ी)

सांम्हलो—देखो 'सांमलो' (रू. भे.)

उ०—सांम्हली सीट माथै एक बाबू सा' ब विराज्या हा। करड़ा लट्ठ ब्हियोड़ा बंदूक री गोळी ब्है जिसो काठो मोरी रो पेंट, ऊंचो-ऊंचो बुसरट, दिलिपकट बाल अर तलवारकट मूंछां।

—ग्रमरचूंनड़ी

(स्त्री. सांम्हली)

सांम्हो-क्रि. वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ ताहरां गांगै नूं जोसिगै कह्यो-राज सवारै तो जोगणी ग्रापा नूं सांम्हो छै उवांनू पूठ छै। - नैणसी

उ०—२ इणनै ग्राप पूरव भव रा संस्कार समझो ग्रथवा कोई संजोग री बात कै सूरज म्हारा सूं थोड़ी दबतो जरूर हो। उणरी फनरणी री गळाई चालण वाळी जीभ म्हारै सांम्हो ग्रावतै थोड़ी रुक जावती।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ कबर रै सांम्हो वद वद नै प्रण करियो जको तो पार पटकणो ई है। सांचांणी किणी रांणी री कूख सूं जलम लेवणो तो सराप है। इण जलम में तो ग्रो सराप नीं फळियो।

—फुलवाड़ी

२ उलटा, विपरीत।

उ०—१ नाई री तो ग्रो दाव ई खाली गियो। भूठ मूठ डरावण री बात तो सांम्हो गळै बंधगी। पाछो बदळणो ई सारै बात नीं री।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई बोल्यो-ग्रंदाता, ग्रापरै धारण करणा सूं तो मुगट ग्रर नौलखा हार री छिब ई निखरगी। सांम्हो ग्रै घणा फूठरा दीसै।—फुलवाड़ी

३ सामने।

उ०—१ कोई रै मोटर में बेठनै ग्रागै जावणो व्हैला तो कोई किणी रै ई सांम्हो ग्रायो व्हैला।—ग्रमरचूनड़ी

उ०—२ दीवांण तौ खुद अैड़ाई आदेस री वाट न्हाळतौ हौ। काळा घोड़ा, काळोई संज अर काळा गाभा देय चरवादार नैं सांम्ही भेज्यौ। सगळी वातां समझाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—३ सासरा री मगरी ढळतां ई उणनैं मड़ौ सांम्ही धकियौ। सुगन तौ भला व्हिया। वेल सूं हेटैं उतर वा मुड़दा नैं हाथ जोड़िया। अेक खांधिया नैं होळैं सीक पूछ्यौ—वीरा कुण चलियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ वींदणी री रथ कोट रै गळाकर निकळियौ तौ सांम्ही झिरोखा मैं बैठा कंवरसा माथै उण री अणछक मीट पड़ी। नस नस मैं सरणाटौ दौड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

४ ओर, तरफ।

उ०—१ थोड़ी भांय गियां उणनैं अेक मिनख आपरै सांम्ही न्हाटतौ निगै आयौ। आठ-दसेक आदमी उणरी लारौ करता हा।
—फुलवाड़ी

उ०—२ नाच री वेळा टळ्यां इंदर भगवांन अणूंतौ कोप करैला। पैला ई नींठ मांन्या। अबै तौ म्रितलोक सांम्ही झांकण ई नीं देवैला। भूंडी कळा पजी।—फुलवाड़ी

उ०—३ पण अबकै पुजारी री रट सुणनैं दौ अेक आघड़क लुगायां एक दूजी रै सांम्ही देखनैं हंसण लागी। वां सूं पुजारी रौ चरित्तर ई छांनौ कोनीं हौ।—अमरचूंनड़ी

५ अनुकूल, पक्ष में।

६ तुलना में, अपेक्षाकृत।

उ०—१ नाचती-नाचती ई बोली—देवण रौ अैड़ौ ई गुमेज है तौ म्हनैं जूंन्यो-सरप बगसावौ। उणरै सांम्ही आपरौ इंदरलोक ई म्हनैं फुतरका जित्तौ लागै।—फुलवाड़ी

उ०—२ मुळकनैं बोल्या—थूं कांई गुमेज मैं आंटी-आंटी चालै, म्हारी वींदणी री आटी थारा सूं वत्तौ लांबी अर वत्ती चीकणी। थारौ सांवळौ रंग तौ उणरी आटी सांम्ही साव मगसौ लागै।
—फुलवाड़ी

७ समक्ष, अगाड़ी।

उ०—१ अै दोनूं चीजां पिंडतजी रै सांम्ही धरनैं बोली—दारू, मांस अरोग्यां आपनैं अै पच्चीस मोहरां सीख मैं मिलैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ राजी व्हैगा तौ सेठांणी ई अणूंती राजी व्हैगी। अेका अेक बेटौ आंख्यां रै सांम्ही रैवैला। अर कमाई री ठोड़ कमाई रौ जुगाड़ ई व्हैगौ।—फुलवाड़ी

८ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

९ प्रतिकूल होना।

मुहा.—सांम्ही होणौ=(१) गाय, भैंस आदि का गर्भ धारण करना। (२) अनुकूल होना। (३) परिपक्वावस्था में होना।
(खेती, फसल)

सांम्हु—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.) (उ. र.)

सांम्हेई-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

उ०—सुभराज करै तनां सुर सांमिणी, ताहरै नांम सांम्हेई तरां। जयौ निमौ तुंनां जग जांमिणी, कतियांणी आदेस करां।—पी. ग्रं.

सांम्हेळौ—देखो 'सांमेळौ' (रू. भे.)

उ०—१ कनक रतन तोरण सुभकारी, सुंदर चित्र पौळि सिणगारी। सुभ छवि मांडह नयर सचेळौ, सुर व्रति मिळण थयौ सांम्हेळौ।—रा. रू.

उ०—२ तद पदमावती परणीज नुं तयार हुई। बैठी झरोखै मांहै देखै छै। इतरौ जांन रौ सांम्हेळौ कर वींद नूं तोरण लै आया। तद पदमावती वर देख राजी हुई।—ठकुरै साह री वात

उ०—३ सूनम रै परभात आभै मैं सोना रौ सूरज ऊगियौ अर धरती माथै उण गांव रै गोरवै जांन सूं सांम्हेळौ व्हियौ।
—फुलवाड़ी

सांम्हेलौ—देखो 'सांमलौ' (रू. भे.)

सांम्है-क्रि वि.—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ गोळां नाळ गुणजीन गावै, लसकर ऊमर जांनिया लार। 'मांडण' हरौ दिपंतौ मिळियौ, सांम्है लै बीड़ौ घणसार।
—बलू चांपावत री गीत

उ०—२ भींतर पधारिया जठै सूं महाराज नजर पड़िया। तठै सूं कुंवर तसलीम करतौ-करतौ जाजम रै छेहड़ै गयौ। ताहरां राजा सांम्है आयौ। कुंवर जाय पांवां मैं सिर दियौ।
—पलक दरियाव री वात

उ०—३ जठा हूं दोइ हजार असवारां सुरथपुर आइ कुमार वेढियौ। अर दूदै भी अंबारा अरचन रै अनंतर आपरा साथियां समेत सांम्है आइ घोर घमसांण कियौ।—वं. भा.

उ०—४ अर दिल्लीस भी घणा साहस थी आपरा जावण मैं आडौ होइ चलायौ। इसड़ा बडा कुमार दारा नूं सांम्है पूगण रौ निदेस देर बिदा कीधौ। जतरै तापी नूं लांघि नरमदा नदी रै नजीक आया।—वं भा.

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, बोलणौ, हालणौ, होणौ।

मुहा.—(१) सांम्है आणौ=आगे आना, प्रकट होना, अवरोध डालना, मदद करना, संकटकालीन परिस्थिति में सहायता या स्वागतार्थ आगे आना, नजरों में आना। (२) सांम्है करणौ=रूबरू करना, आगे करना, चुनाव, झगड़ा आदि में विरुद्ध खड़ा करना। (३) सांम्है खड़ौ होणौ=चुनाव, झगड़ा आदि में विरोध में खड़ा होना। (४) सांम्है बोलणौ=विरोध में बोलना, अवज्ञा करना।

२ ओर, तरफ।

उ०—इसड़ी समय बादसाह मारवाड़ रा अमरावां सांम्है देख फरमाई।—गर्जसिंह री वारता

३ उल्टा, विपरीत।

४ अनुकूल, पक्ष में।
रू. भे.—साम्है।

सांम्हो-क्रि. वि. (सं. संमुख) १ सामने, सम्मुख।
उ०—१ दान हजारां दान, घड़ां जठि हुवै जमंघर। मुख सांम्हा 'दत्तर' रै, नहीं पावै नर-नाहर।—सू. प्र.
उ०—२ तठै रावजी नागौर रो कोट छोडनै बाहिर आया। सांम्हो री फौज आई—ताहरां रावजी सांम्हा जायनै लड़िया। रावजी काम आया।—नैणसी
उ०—३ सीधा मुंहड़ा आपां री राड़ ई सो भली तरह सांम्हां आयो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—४ पछै जसवंतजी केइक दिन उठै रह्या। पछै ईडर रै राव घणो आदर कर तेडाया। रावळ सांम्हो आयनै लै गयो। चौवीस गांव सूं सतो पटो दीयो।—राव मालदेव री वात
मुहा०—१. सांम्हो आणो=आगे आना, मदद करना, ध्यान में आना, स्वागत करना या अगवानी हेतु सामने आना। २. सांम्हो जाणो=सम्मान के लिए सामने जाना। ३. सांम्हो देखणो (जोवणो)=दया करना, ध्यान देना। ४. सांम्हो थिरणो, फुरणो=मुकाबला करना। ५. सांम्हो बोलणो=झगड़ा करना, जिद, हठ आदि करना, सामने बोलना।
२ तरफ, ओर।
उ०—१ अेक रात गेहूंआं रा खेत और सांठां री बाड़ में रहियो। घणा दिनां री भूख भाड घास नै अरवद सांम्हो हालियो। तीसरै दिन अरवद जा पहुंचियो।—ढाढाळा सूर री वात
उ०—२ इतरो कहि आप तिड़की रै मारग हुयो बजार मांहि कर नै नैराळ महर सूं होई, तळाव रो मारग लियो। आगै राजा री माय पन मारग सांम्हो जोय रह्यो थो, जितरै आवतो नजर पड़ियो।—पलक दरियाव री वात
३ उल्टा, विपरीत।
उ०—१ ध्यामजी कह्यो—दिन कोई नहीं जावै-सांम्हो आपां पांच मालुम कारा करस्यां, पछै बादशाह कन्है मदत लेस्यां।
—अमरसिंह राठौड़ गजसिंघोत री वात
उ०—२ ताहरां मो राजा अठै लड़ियो सु वरस दो अथवा तीन लड़ियो पण कोट मिळै नहीं। ताहरां रांणा मेतरांमजी नूं कह्यो—कोट तो मिळै नहीं पर सांम्हो लोक री पयांन हां छै।—नैणसी
४ अनुकूल, पक्ष में।
रू. भे.—सम्हो सांम्हू, सांमहो, सांमुहउ, सांमुह, सांमुहो, सांमु, सांहो, सांमो, सांम्हउ, सांम्हू, सांह्मो, साह्मु, साह्मो, सांह्मो, सांम्हो।

सांम्होसांम-क्रि. वि.—बिलकुल सामने, आमने-सामने।
उ०—१ शिखर रै सांम्होसांम ऊभी मांय माथै अेक बैठी ई टापू। उण माथै सोना रो मसरांडियो महल। सूरज री किरणां रो परस पाय पळक पळक करै।—फुलवाड़ी
उ०—२ भटियांणी बाय भरनै गोपटा रा पूळा लेय नीरण नै जावती ही कै मासी सांम्ही धकी। टळण रो मतो करयो तो मासी आडी फिरनै सांम्हीसांम अड़ोअड़ ऊभगी।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सांमूसांम, सांमोसांम।

सांयंकाळ—देखो 'सायंकाळ' (रू. भे.)
उ०—पाछा आवतां राजा रा काका सारंगदेव रा बडा पुत्र प्रताप सिंह अरिसिंह दो ही सहोदर एक नदी रै तीर उचित जळ देनि सांयंकाळ री विधेयकरम करण पाळा ही चलाया।—वं. भा.

सांयंड, सांयंठ, सांयंड, सांयंढ—देखो 'सांढ' (रू. भे.)
उ०—१ सांयंड भेरावै सेढां रै साख, घेरै बेढाकर हेरै हथवाह। भैंस्यां रिड़कै रिड़ गायां रंभावै, प्रांणी तिरसातुर पांणी कुण पावै।—ऊ का.
उ०—२ दिन बधग्यो तो वै मारग में ई रातवासो लियो। सांयंढ नै नागर बेल री चारो चारयो।—फुलवाड़ी

सांय-सं. स्त्री.—१ तीर, गोली आदि के चलने से या उड़ते समय पक्षियों के पंखों से उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की ध्वनि विशेष।
उ०—झरणै री तळाई रै च्यारूंमेर चमगादड़ां हमलो बोल दियो अर उणां री चांमड़ी री बड़ी पांखां सूं सांय सांय री डरावणी आवाज सगळी घाटी मांय फैलगी।—तिरसंकू
२ सुनसान जगह में वायु से या तेज वायु से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—म्हनै लखायो कै उण काळी रात में काळी ऊंची-ऊंची डूंगरयां रै बीच सांय सांय करतै सूनै जंगळ में उणनै किण री ईज डर कोनी हो। उण रै अंग-अंग मांय मतवाळै जोबन री उमंग नाच रयी ही।—तिरसंकू

सांयकाळ—देखो 'सायंकाळ' (रू. भे.)

सांयत-सं. स्त्री.—१ समय, वक्त।
उ०—फेर अवाज हुई जै आ भगवांन री वात किणी नैं कही तो विण सांयत थांहरी देह छूटसी, तैं सूं खबरदार रहै। इतरो सुण देवीदास दोपहरां रा घरै आइयो।—पलक दरियाव री वात
२ देखो 'सांति' (रू. भे.)
उ०—१ आंख्यां री पीड़ रै कारण राजा रो जीव तरतर छीजतो रह्यो। नीं तो मौत आवै अर नीं अेक छिण सांयत ई मिळै। राजकाज में अेकदम हळियारो मचग्यो।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण बेटी, वगत आयां आ सोजन ई मिट जावैला। म्हारा जीव नै तो कठैई सांयत कोनीं।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सांइत, सायंत।

सांयति, सांयती—देखो 'सांति' (रू. भे.)
उ०—होम्डल रै च्यारूंमेर घूम्यो, कठै कोई भी कोनी हो। मन रै मांय सुरग री सांयती ज्यूं भरगी। पुलिस नै खेल री कांई खबर कोनी लागी है। किसीक साहसी है आ सैन। अबार तांणी

खवातां उण सूं 'क्रांतिदळ' रै कारचक्रम री वातां पूछूंला।
—तिरसंकू

सांयरौ-सं. पु.—किसी रास्ते को रोकने के लिए कांटेदार झाड़ी का बनाया जाने वाला अवरोध।

सांयार—देखो 'सांईग्रार' (रू. भे.)

सांयी—१ देखो 'सांमी' (रू. भे.) (डिं. को.)

२ देखो 'सांई' (रू. भे.)

सांयीनौ, सांयीनौ—देखो 'सांइणौ' (रू. भे.)

उ०—भीनौ रंग जळ भीजतां, सांयीनौ सिरदार। तैं लीनौ धन मन तिया, वस कीनौ इण वार।—वां. दा.

(स्त्री. सांयीनी, सांयीनी)

सांरंग—देखो 'सारंग' (रू. भे.)

सांर, सांर-सं. पु.—गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

सांव—देखो 'सांमत' (रू. भे.)

उ०—हाथ आवाहतो सिधु रागां थिया, सहै झूझा थयां बळि 'जसा'रा साथियां। साथि 'जसवंत' रै सांव बहु सम चड़ी, गाविजै नेतड़ै रोहड़ै गांगड़ौ।—हा. झा.

सांवटणौ, सांवटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ उणरै पगां कनै अेक कागद उडतौ आयौ तौ वौ सुथराई सूं सांवट नै पोत्या रा आंटा मैं खसोल लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै थोड़ा दिनां मैं परवार गयौ। पाटा पाटी सांवट लिया।—भि. द्र.

सांवटणहार, हारौ (हारी), सांवटणियौ—वि०।

सांवटिओड़ौ, सांवटियोड़ौ, सांवट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सांवटीजणौ, सांवटीजबौ—कर्म वा०।

सांवटियोड़ौ—देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवटियोड़ी)

सांवटौ, सांवटौ, सांवठौ, सांवठौ-सं. पु.—ऊंचा स्थान, चबूतरा।

उ०—१ घुघीदार चकमो उढीयो छै। सांवठै उपर आप उभी छै। दूध रा कळस भरीया मुहड़ै आगै पड़ीया छै। निजर आपरी कुंवरसी रै मारग सांम्ही छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अर भरमल सांवठै सूं उतर वडारण नुं साथ लै सांम्ही ऊतरी, सौ चोकी रै नीचै जाय मुजरौ कियौ। एक दोय लटका जमी सौं हाथ लगाय कीया।—कुंवरसी सांखला री वारता

वि. (स्त्री. सांवठी) १ अधिक, बहुत।

उ०—१ जीहौ यादव नारी सांवटी, लाला आवै गावै गीत। जीहौ चौक पुराणै मांडणां लाला साचवियै सुमरीत।—जयवांणी

उ०—२ सू महिनावां पचास सब सांवठी ही लागी छै। जांणै जेठ री दोपहरी खुलियो छै। इण भांत रै चांदणै मैं जीमण ही होंस मांणजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ गेहूं बाजर मोठ मुंग, तुंवर मटर चिणेह। साळ नीपजै सांवठी, ओरूं मसूर अछेह।—गज-उद्धार

२ जबरदस्त, शक्तिशाली।

उ०—पगि पगि पउलि पउलि हिस्ती की गजघटा, ती ऊपरि सात सात सइ धनक धर सांवठा।—अ. वचनिका

रू. भे.—सांमठौ।

सांवण-सं. पु. [सं. श्रावण] १ हिन्दी वर्ष का पांचवां मास जो आषाढ मास के बाद तथा भाद्रपद के पहले आता है। (डिं. को.)

उ०—१ सांवण आयौ सायबा, बांधौ पाग सुरंग। घर बैठा राजस करो. घास चरेला तुरंग।—अग्यात

उ०—२ सांवण आयौ सायबा, लुळ लुळ बरसै लूर। गोख उडी-कै गोरड़ी, जोबन मैं भरपूर।—नारायणसिंह सांदू

मुहा.—सांवण रा आंधा नै हरयौ ई हरयौ सूझै=सावन में अंधे हुए व्यक्ति को सदा हरा ही हरा दिखाई देता है। (मूर्ख एवं अनुभवहीन व्यक्तियों के लिए)

२ एक प्रसिद्ध लोकगीत।

३ वर्षा ऋतु में गाये जाने वाले लोकगीत।

उ०—'जसवंत' नै गिणगौर ज्यूं, मेलै तीरथ मंझार। आया सांवण गावता, सांभरिया सिरदार।—दलौ मेहड़ू

रू. भे.—सवण, सांमण, सांवणि, सांवन, सावण, स्रांमण, स्रांवण, स्रावण।

अल्पा;—सांवणियौ, सावणियौ।

४ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—१ आथण री पोहर १ दिन लै चालीया भुहरी कनै आवतां सांवण री पाल हुई। जेठ सुद ७ सोमवार जोधपुर आय स्रीकंवर-जी रै पांवै लागा।—नैणसी

उ०—२ चौबिस तौ आपरा राजपूत, पचवीसमौं राघवदे नै छवीसमा आप चढिया। तिकै आछा सांवण मांग्या। तरै हिरण मालाळा हुआ।—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—३ रजपूतां कह्यौ, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सांवण सखरा लेनै पधारौ नै स्रीमाताजी करै तौ पठांणां नै भूंडा दिखाय नै घोड़ियां ल्यावां नै खुरी करां।—जखड़ै मुखड़ै भाटी री बात

सांवणडाढ, सांवणदाढ-सं. पु.—भाला। (डिं. को.)

सांवण री डोकरी-सं. स्त्री.—वर्षा ऋतु में होने वाला गहरे मखमली लालरंग का एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहूटी।

वि. वि.—देखो 'ममोलियौ'।

सांवणि, सांवणिक—१ देखो 'सांवणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सांवण' (रू. भे.)

उ०—धर नीली धण पुंडरी, घरि गहगहइ गमार। मारू देस सुहांमणउ, सांवणि सांझी वार।—ढो. मा.

सांवणियौ—१ देखो 'सांवण' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सांवणियां री रैण अंधेरी, चंदो बी छिप्यो मुरझाय।

कुण सावण रै मैं मेह ज्यान ज्यो, ज्यूं सावण सूखो जाय।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ सावण मैं पधारो छिंकेलाड़, छोटी सी सावण घण रा पीव।

सो सांवळियो उमड़ रह्यो छै, हरि नै मोहै छै दिन दिन सीव।

—रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'सूरमी' (रू. भे.)

सांवणी–सं. पु.—वे वस्त्र या खाद्य पदार्थ जो सावन मास में वर पक्ष के वधू के यहां भेजे जाते हैं।

वि [सं. श्रावणी] १ श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।

२ देखो 'सूरमी' (रू. भे.)

उ०—नगर सांवळियां सावन वेस्या नै कह्यो थां सांवणां सूरानंद रो राजा नो हाथ चढ़ै नै पाती मांहे कुसळ वरतै नै वेड रो मांमलो छै।—जैतसी ऊदावत री वात

३ देखो 'सावणी' (रू. भे.)

रू. भे.—सावणि, सांवणिक।

सांवणीतीज–सं. पु. यौ.—१ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जिस दिन कई सुहागिन स्त्रियां व्रत रखती हैं।

२ उक्त तिथि को स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव।

सांवणीपूनम–सं. स्त्री.—श्रावण मास की पूर्णिमा, इसी दिन रक्षाबंधन का प्रसिद्ध त्यौहार होता है।

सांवणूं, सांवणू–सं. स्त्री.—खरीफ की फसल।

वि.—श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।

रू. भे.—सावणूं, सांवणू, सावणू।

सांवणूधार–सं. पु.—खरीफ की फसल पर प्रजा से लिया जाने वाला कर।

सांवणूसाह–सं. पु.—खरीफ की फसल पर किसानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर।

सांवत–सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की मुसलमान वेश्या, रंडी।

(मा. म.)

२ देखो 'सांमत' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सोमदा सूं मालम हुई। जो फलांणा रै एक रजपूत आयो छै। जो वडो सांवत छै।—पंचमार री वात

उ०—२ समपेस दई वडकांमतनै, सगनां री मोळावण सांवत नै।—पा. प्र.

सांवतई–सं. पु.—एक लोकगीत विशेष।

सांवन–सं. पु.—१ एक प्रकार की राग विशेष। (संगीत)

२ देखो 'सांवण' (रू. भे.)

सांवनकल्यांण–सं. पु. यौ.—एक प्रकार की राग विशेष। (संगीत)

सांवरणौ, सांवरवौ—देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—......दाढि वहइ, जेहे दीठे दुरजन नै होए त्रासक पड़इं, हाटइपाट, घोडा तणा थाट कोपानाहि माट, सांवरिया दीपइं, परसैन्य पइसइं, भालै ताडइं, सेर पाडइं, मुहि मारइं, राउत वखारइं......।—व. स.

सांवरणहार, हारौ (हारी), सांवरणियौ—वि०।

सांवरिओड़ौ, सांवरियोड़ौ, सांवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सांवरीजणौ, सांवरीजबौ—कर्म वा०।

सांवरियोड़ौ—देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सांवरियोड़ी)

सांवरियौ—देखो 'सांवळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—कांई रेल रेल करै है बेटी रा बाप। अबकै सांवरियै राजी-खुसी राख्या तो भादवा में जरूर रांमदे बाबा रै जावणो है।

—रातवासो

सांवरौ—देखो 'सांवळौ' (रू. भे.)

उ०—१ धरती पड़ग्यो छिंगास, अंबर सूं अंबर अड़ग्यो। आयो पूरण आस, सही वजाजी सांवरौ।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सांवरौ वसै मेरो परदेस, सखी होरी का संग मेलूं। विरह बिथा जोबन की कथा को, सब दुख तन पर भेलूं।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—३ सांवरौ छोड चल्यो मोरै रांम, रसराज आगै तो बाहिर सूं जांणती, अब तो जांणत मैं अंतर को वो स्यांम।

—रसीलै राज रा गीत

सांवळ—देखो 'सांवळौ' (रू. भे) (डि. को.)

उ०—सांवळ वरण सरीर विराजै, एक सहस्र आठ लक्षण छाजै। दिन दिन अधिकी ज्योत विराजै, दरसन दीठां दारिद्रय भाजै।

—जयवांणी

सांवळड़ौ – देखो 'सांवळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सांवळड़ा री सोगन म्हे देस्यां, सखियां पूछै मिळ कर सात। कह्यो नै रसराज राधिकै, कांई कांई हुवै छी बात।

—रसीलै राज रा गीत

उ० –२ गोरै गात कसूंबी अंगियां, सांवळड़ी सिर सारी। निरट छबीली थांरी तय्यारी, अलबेलिया री रिझवारी।

—रसीलै राज रा गीत

उ० —३ आजो म्हांरै सांवळड़ा थे मिजमांन आज।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ कै गोरी बांमण बाप को, कै सांवळड़ौ सरीर।

—लो. गी.

सांवळताई–सं. स्त्री.—श्यामवर्ण होने का भाव, श्यामलता।

सांवळपक्ख, सांवळपख, सांवलपख–सं. पु. यौ. [सं. श्यामल+पक्ष] मास का वह पक्ष जिसमें चन्द्रमा की कलाएं क्रमशः घटती जाती हों, कृष्णपक्ष।

उ०—१ आयां वरस पद्धोतरै, सांवण सांवळपक्ख। आयो घर मार 'अजो', गुज्जर थांणा लक्ख।—रा. रू.

उ०—२ नरहर डूंगरसीह रै, खळ भागा बळ दक्ख। चाळीसै वैसाख मैं, पांचम सांवळपक्ख।—रा. रू.

सांवळियौ—देखो 'सांवळौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ दरद की मारी बन बन डोलूं, वेद मिळया नहिं कोय। मीरां की प्रभू पीड़ मिटेगी, वैद सांवळियौ होय।—मीरां

उ०—२ जाती तौ आवै थांरै दूर का, सांवळिया मोट्यार। बाबा बजरंगजी को बंगळौ हद बण्यौ।—लो. गी.

उ०—३ सिधां तीन लोकां सांवळियौ, सूर कुळां छोगौ सांवळियौ। साहै चाप रांम सांवळियौ, सीतावर सांमी सांवळियौ।—र. ज. प्र.

उ०—४ कान्ह कंवर सौ वीरौ मांगां, राई सी भोजाई। सांवळियौ बहनोई मांगां, सुभद्रा सी बहनड़ मांगां।—लो. गी.

उ०—५ लांबीजी डीघौ सांवळियौ सिरदार।—लो. गी.

सांवळी—देखो 'संवळी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सांवळी हुय देवळ आय चढी, महि ऊड रजी पुड गैण मढी।—पा. प्र.

उ०—२ उवै बिन्है सांवळ्या हुई नै उडीयां। उड़त्यां उड़त्यां ऊवै गांम आया जेथ स्यांमसुंदर परणीज नै रह्यौ तौ, तेथ तियै घर ऊपरि आय बैठ्यां।—स्यांदसुंदर री वात

सांवळीसाड़ी—सं. स्त्री.—देव मन्दिर जाने पर दुल्हा व दुल्हन को गाया जाने वाला एक लोकगीत।

सांवळौ, सांवलौ—सं. पु. [सं. श्यामल] १ श्री कृष्ण।

२ अर्जुन।

३ श्रीराम।

उ०—१ हृद भाळ सुसबद भळहळा, निज कदंम समहर नहचळा। साधार सेवग सांवळा, नृपराज दसरथ नंद।—र. ज. प्र.

उ०—२ अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा। विसतार जस चहूंवै वळा, साधार सेवग सांवळा।—र. ज. प्र.

४ परमेश्वर, ईश्वर।

५ विष्णु भगवान्। (डिं. को.)

उ०—त्यांह न आवै ताप, हरजी चौ दरसण हुवौ। जनम जनम रा पाप, सारै मेटै सांवळौ।—गज-उद्धार

६ बादल, मेघ।

७ काला रंग।

८ एक मांसाहारी पक्षी।

उ०—रमंत जोम सांवळा, भ्रमंत भूल रातडा। भराय नै कसाय कंठ, पीठ सोर भातड़ा।—पा. प्र.

९ शिकार करने वाला, शिकारी। (डिं. को.)

१० भील।

उ०—चंद ढांमै जिसा परत मन धारै चंगा सांपरत गिणै तन कांच सीसी। आवळा भूळ पड़ै रण आविढा, वढै संग सांवळा सातवीसी।

—गिरवरदांन सांदू

११ श्याम रंग का हिरण, कृष्ण मृग।

१२ अफीम, अमल। (डिं. को.)

वि. (स्त्री. सांवळी) १ श्याम रंग का, कृष्ण, काला।

उ०—सांवण रौ महीनौ सौ बाजरी निनांण आयोड़ी। नीली कच, सांवळी भंवर, डाफळ पांनी। खेत जांणै उफण आयोड़ौ। सूरियौ वायरौ पूंगी बजावै अर बाजरी लै'रां लेवै।—रातवासौ

२ नीला, काला। * (डिं. को.)

रू. भे.—संमळ, संमळौ, संवळ, संवळौ, समळ, समळौ; सांबळ, सांमळ, सांमल, सांमळू, सांमळौ, सांवरौ, सांवळ।

अल्पा;—सांमळियौ, सांवरियौ, सांवळड़ौ, सांवळियौ।

सांवीणौ—देखो 'सांईणौ' (रू. भे.)

उ०—सांवीणा जोडी सारीखी, वरदळ रउ ल्यात रौ विचार। हुसत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

(स्त्री. सांवीणी)

सांवौ, सांवौ—सं. पु. [सं. श्यामक] १ प्रायः सारे भारत में बोये जाने वाले चने की जाति का अनाज विशेष जो चावल की भांति उबाल-कर खाया जाता है।

उ०—मकी जवारी कोदरा, सांवौ उड़द कपास। चंवळा तिल चीणौ घणौ, अन सह निपजै जास।—गज-उद्धार

२ घुटनों तक लम्बा घास जो जल में अधिक होता है।

३ देखो 'संवौ' (रू. भे.)

उ०—खोड़ा रै पाखती राजाजी री घोड़ी आवतां ई अेक असवार नैं हाथ री सांनी करी तौ वौ कुचमादी रै माथै ओढायोड़ौ कांबळौ झटको देय आगी ली। ऊंधौ पड़या कुचमादी नै थाल देय सांवौ करचौ तौ वौ जोर सूं टसकियौ।—फुलवाड़ी

सांस—१ देखो 'सास' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सांस छतै जीवै सकळ, ऊमर रै आधार। जस सूं जीवै जगत मैं, सांस पखै सुदतार।—बां. दा.

उ०—२ साजन फूल गुलाब रौ, म्हे फूलन की बास। साजन म्हारा काळजा, म्हैं साजन री सास।—अग्यात

२ देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—तद सारां कही आहीज वात छै तौ सांस करौ तद सारां मिळ सांस कवल किया।—गजसिंह कूंपावत री वारता

सांसउ—१ देखो 'सांसौ' (रू. भे.)

उ०—१ तुझ मुरति ही देखतां प्राय की, समोवसरण मुझ सांभरइ। जिन प्रतिमा ही जिन सारिखी जांणकी, पुरखि जै सांसउ वरइ।—स. कु.

उ०—२ अंतेउर परिजालज्यौ जी, स्रेणिक दियउ रे आदेस। भगवंत सांसउ भांगियउजी, चमक्यउ चित्त नरेस।—स. कु.

सांसण—१ देखो 'सासन' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ [illegible] हुवो नु मांवत नीमोड़ रै रांणूं नूं नै जायनै [illegible] । [illegible] मोतनी नै गांम १ सांसण दियो ।
—नैणसी

उ०—२ [illegible] कूंजर, हेतवां घन दै दाळद हरै । [illegible] राजा, सांसणां मांद सांसण सिरै ।
—मालो सांदू

उ०—३ [illegible] देर मार गजांनै मरीयो । नागफणी फर [illegible] सांमत [illegible] ।—मालो सांदू

२ देखो 'सांसी' (रू.)

सांसणी, सांसणीक—सं. पु.—१ वह व्यक्ति जिसको शासन की ओर से दान की भूमि मिली हुई हो ।

सं. स्त्री.—२ भाट जाति की एक शाखा विशेष । (मा. म.)

रू. भे.—सासनी ।

सांसणो—सं. पु.—१ दमा रोग से पीड़ित पशु ।

२ देखो 'सासन' (मह; रू. भे.)

उ०—सो हजार द्रव देनियां, मोती कड़ा सवास । गांम सवायो सांसणो, पायो गोरखदास ।—रा. रू.

सांसणो, सांसबो—क्रि. स.—१ अभिलाषा करना, इच्छा करना ।

२ शासन करना, हुकूमत करना ।

क्रि. अ.—३ तरसना, बिलखना ।

उ०—बाळक बरळावे आसा अभिलासै, भू-भू बू-बू बिन भाखा नहि भासै । मूंघे सीरावण ब्याळू लै बासै, बेळा ब्याळू री सीरावण सांसै ।—ऊ. का.

४ सहना, सहा जाना ।

उ०—संमद सां न तूं सांसही, निमणि करै नवनाथ । इंदि उतारे आरती, सकति हुई समराथ ।—पी. ग्रं.

५ ठहरना, रुकना ।

उ०—घई सांसतां माता परनि, दमयंति कहि वांणी । जु जांणु जे पुत्री जीवि, प्रीउ सोधावु जांणी ।—नळाख्यान

सांसणहार, हारो (हारी), सांसणियो—वि० ।

सांसियोड़ो, सांसियोड़ो, सांस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सांसीजणो, सांसीजबो—कर्म वा०, भाव वा० ।

सांसड़णो सांसड़बो—रू० भे० ।

सांसर—सं. पु.—पशुधन ।

उ०—१ वो एवड़ रै मारगै घर-बार, लुगाई-टाबर अर दूजे धन सांसर ने कदा ही भूल बैठ्यो । रात पड़तै ही गांव मूं बारै ऊंचै धोरै माथै एवड़ बैठाय'र सारै आप ही बैठ जावै । एवड़ सूं घळणो हाली गो बीरो औ ही नी करै ।—दसदोख

उ०—२ [illegible] धन-सांसर ने कुण संभाळै पीसै बिना सून रा मांमला किया दवै ।
—दसदोख

सांसारिक, सांसारी—वि. [सं. सांसारिक] १ जिसका सम्बन्ध इस संसार के क्रिया-कलापों से हो, लौकिक ।

२ जिसका सम्बन्ध जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं, विषय-भोगों आदि से हो ।

रू. भे.—ससारिक, संसारीक ।

सांसियोड़ो—भू. का. कृ.—१ अभिलाषा किया हुआ, इच्छा किया हुआ. २ शासन किया हुआ, हुकुमत किया हुआ. ३ तरसा हुआ, बिलखा हुआ. ४ सहा हुआ, सहा गया ।

(स्त्री. सांसियोड़ी)

सांसि, सांसी—सं. पु. (स्त्री. सांसण) १ सदा इधर-उधर घूमने वाली राजस्थान की एक घुमक्कड़ जाति या उक्त जाति का व्यक्ति ।
(मा. म.)

उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पांमर सांसी परतिया । अप-लिया देस भागी अधम, होका धारी हरलिया ।—ऊ. का.

उ०—२ डूबगी बात सब देस री, सूम असुभगुण साटियो । पांन री ध्यांन घरियां पछै, सांसी गिणै न साटियो ।—ऊ. का.

वि० वि०—ये अक्सर घूमते रहते हैं । हरिजन लोग इन्हें नीच समझते हैं और इनको छूते भी नहीं हैं । हरिजन इनके जजमान हैं । इनके झगड़े आदि भी हरिजन ही सुलझाते हैं । ये धोबी को अपने से नीचा समझते हैं ।

२ देखो 'संचय' (रू. भे.)

उ०—वचन सुणी नल चिंता पांम्यु हईडा सूं विमासि । सूं, भै, साचूं के ए जूठूं, राजा पड़ियु सांसि ।—नळाख्यान

रू. भे.—सैंसी ।

सांसु—१ देखो 'सासू' (रू. भे.)

२ देखो 'सास' (रू. भे.)

उ०—कांम की जो दक्षिण दिसा हुती त्रिविध पवन सीतमंद सुगंध प्रगटै छै । त्यौं चतुर को नांम दक्षण कहावै छै । तो रुकमणीजी छै सु चतुर छै । तिन रउ जु ऊरध सांसु उहै पवन हुयो ।
—वेलि टी.

३ देखो 'संसय' (रू. भे.)

सांसो—सं. पु. [सं संशय] १ संदेह, शक, भ्रम । (हिं. को)

उ०—१ बाजारै बिच बिच थई, रथ पवन वेग चलाय । रांणी सांसो मांजवा नेम जिणंद पै जाय ।—जयवांणी

उ०—२ सिंगार मंजरी कहियो राजा, थांहरा मन मैं सांसो रहियो छै ।—पंचदंडी री वारता

उ०—३ कांम न कांई कलपना, सांसा गया नसाय । नेह लगया रहमांन सूं, दिल और न आवै दाय ।—अनुभववांणी

उ०—४ सो आप कहो हूं कांम आवूं नहीं जद म्हारो मळण

बळणो सती होवणो एकलो सूं कीकर वणै ओ जीव मैं संसय सांसो छै।—वी. स. टी.

२ सोच, फिक्र, चिन्ता।

उ०—१ सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार। वो ही सारै जगत का, सांसा मेटणहार।—अग्यात

उ०—२ आंण मिळ्यो अनुरागी जोगियो, आंण मिळ्यो अनुरागी। सांसो सोच अंग नहिं अब तो तिस्ना दुबध्या त्यागी।—मीरां

उ०—३ सांभळ आत मतीकर सांसो. जोवत हुयग्या असुर जुवा। हेकण घाव विट्टक सदा हवै, अेकण घाव छट्टक हुआ।

—पदमसिंघ री गीत

उ०—४ नागो ग्यो निरधार, तागो रह्यो न तेण रै। लेगी वीसल लार, माया सांसो मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ दुःख।

उ०—१ राजा मन मैं चितवै, एहवो खून न कोय। साध मरण मन ऊपनो, ए सांसो छै मोय।—जयवांणी

उ०—२ आका-वाका भूलग्या, आफत मैं भूलग्या। सिपाईड़ा ज्यूं ही रायफलां मैं रींझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यूं ही सांसै मैं सागीड़ा सिक्या अर सीझ्या। हथकड़ी देखतां ही आकळ-वाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—३ करो केसव अरज हुता, ज्यूं गत म्हारी होय। सरग वसूं सुचितो थको, रहै न सांसो कोय।—गज-उद्धार

४ डर, भय।

उ०—१ मन सांसो जिण मरण री, सूण गिणै सो स्यांम। मांनै रण मरणो मंगळ, वोहि वीर वरियांम।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ जिकै जपै हरि जाप, जिकै वैकूंठ सिधावै। जिकै जपै हरि जाप, उदर फिर कदै न आवै। जिकै जपै हरि जाप, जियां मन सांसो भागै। जिकै जपै हरि जाप, जियां मन लत्त न लग्गै। क्रमबंध पाप जावै कटै, उर परम धरतां अगा। ऐतो प्रताप हरि जाप रो, जाय जनि भूलै 'जगा'।—ज. खि.

उ०—३ धन सूं आवै मोद, विसै सूं विपता आवै। मोटा सूं वोहार, घणा दिन नहीं खटावै। मौत बचै कद मिनख, मंगतां नै कुण चावै। दुसटां रै सैवास, दुखां रो सांसो छावै।

—नारी सईकड़ो

उ०—४ करण मुरड़ियो कहै पतसा का सूं करस, समर चित धारियो विना सांसै। सरम मो खत्र-ध्रम खाग आगै सदा, वीकपुर 'अना' रै भुजा वांसै।—करणसिंघ री गीत

५ सम्भावना, आशंका।

६ चक्कर।

उ०—ओघट घांटि चूरि करि, पाया पीतम यार। हरीया जनम मरण का, सांसा मेट सधार।—अनुभववांणी

७ कमी, अभाव।

उ०—१ गोधळूक वेळा हुई। हीरू लिखमीजी रो पूजन करण वेठो। कयो—मा, मा! तूं मा हो'र पखपात कियां करण लागगी? कठै ई सांमगरी रो ठाठ अर कठै ई सांसो निराठ?—वरसगांठ

उ०—२ रांमजी घण देवाळ है। बाजरी-मिसी भांवती नीं जकांनै भगर रा ही सांसा पड़ग्या।—वरसगांठ

उ०—३ चूला पाछै रीती हांडी अन रा जी पड़ रया सांसा, हो भगवान! थारी माया। दूध दही तो घणा वुहेला, छाछिया नै तरसाया, हो भगवान! थारी माया।—लो. गी.

८ रौब, आतंक।

उ०—तदि हुवो 'मांनहर' अडिग 'माहव' तणो, साह सेना तदि पड़ै सांसो। कछव कछवाह वांसै पलट करै किम, वसुह चो माड बिहू भडां वांसै।—पूरो महियारियो

९ धारणा।

उ०—सोची मन मैं आ जोगी, ओ कूड़ो जग रो वासो। पड़स्यां पत्ता ज्यूं जग मैं, ओ भूठो सुख रो सांसो।—करणीदांन वारहठ

१० संकट, विपत्ति।

उ०—१ तड़ उभै वदै 'नींबा' हरा त्रिभंतण, सबळ खळ घातिया भलां सांसै। दुनिपत तणै वांसै बहै सही दुनी, वहै दुनियांण पति तूंझ वांसै।—दुरगादास राठोड़ री गीत

उ०—२ धोबां धोवां धूड़ वगावो अमलां बांसै, मती लगावो मैल सैल मन धरो न सांसै। मिळे कटै मनवार किनारी भेलो काठो, ओ तो महा अभाग भाग मैं लो मत भाटो।—ऊ. का.

११ भंभट, उलभन।

उ०—सुलटां कूं सांसा घणा, पेम न ऊपजै प्यास। अंदर चालै उलटि कै, हरीया हरी का दास।—अनुभववांणी

रू. भे.—संसो, सांसउ।

सांहगणो, सांहगरणो—१ अनुकूल।

२ देखो 'सांगणो' (रू. भे.)

उ०—जोवै वाटां जोय, साठां कोसां सांहगणा। देखण रा अंग दोय, मन चित एको मोतिया।—रायसिंह सांदू

सांहण—देखो 'साहण' (रू. भे.)

उ०—१ कमधज्ज कहै केवियां काळ, सांहणी आंण सांहण उजाळ। सर वेग जंग सरवेग चंग, तेगागळ चंचळ 'जै' तुरंग।

—गु. रू. बं.

उ०—२ सांहण संख न को सूंडाळै, नेजै संख न को नेजाळै। खुरम प्रगट्टो जडण जड़ाळै, आग न दव्वी रहै पराळै।—गु. रू. बं.

सांहणी—देखो 'सां'णी' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीगंगाजळ सरसि आदि मंजण ओपावै, पट अंगुछि घट परखि, वेद भट वदन वचावै। अगर धूप ऊखेवि। जंत्र रक्षा गळि धारै। साजि करै सांहणी, लूंण ऊपरि ऊतारै।—रा. रू.

उ०—२ रांमसिंहजी रा डेरा सोढावास जोधपुर आडा आय हुइया,

[illegible] सांहली री [illegible] नूं बात उठाई ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ [illegible] चोड़ो सांहली [illegible] मूं [illegible] करि [illegible] हथियार बांधि नै [illegible] चलाया । तिकै दिन ऊगतै [illegible] बात [illegible] रही ।—नगड़ै मुगड़ै री बात

उ०—४ ......[illegible] गुजराती [illegible] करतो ईसर सांहली [illegible] कन्है राखिया ।—द. वि.

सांहळो—१ देखो 'सांकळो' (रू. भे.)

२ देखो 'साहळो' (रू. भे.)

सांहणी, सांहबो—देखो 'साहणी, साहबो' (रू. भे.)

उ०—परमोत सूंमे जिकै भाव प्रांण, यहु जुद रा बंध जांणे विनांण । हरां मारि पाड़ै पंगी बोम हुंता, सांहे पाळि सूं जागवै श्राड़ सूता ।—वचनिका

सांहणहार, हारो (हारी), सांहणियो—वि० ।

सांहियोड़ो, सांहियोड़ो, सांह्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सांहीजणो, सांहीजबो—कर्म वा० ।

सांहमो—देखो 'सांम्हो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांहमी)

सांहस—देखो 'साहस' (रू. भे.)

उ०—मेड़तिया 'मधुकर' हर मेड़तै सहायक, सांहस के सादूळ वंस के नायक । जाकी रीत को प्रमांण द्वापुर दरसावै, कहतै मैं विसमैसी देखै बन आवै ।—रा. रू.

सांहसी, सांहसीक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

सांहस्स—देखो 'साहस' (रू. भे.)

उ०—ऊपर-साखां आवतां, सुण सारा ग्रयदस । कोइ सळां दळ प्रगटवा, कोइ जिमो सांहस्स ।—रा. रू.

सांहांमो—देखो 'सांम्हो' (रू. भे.)

उ०—पहरइ वस्त्री मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीर विलय अंगद बहिरखा नवग्रही मुंद्रड़ी कंदोर हथसांकळी पग नी सांकली, प्रमुख पहिरावा । एहवी कुटब सांहांमो ग्यातिनी भगति कीधी सिद्धारथ राजाइं ।—व. स.

(स्त्री. सांहांमी)

सांहियोड़ो—देखो 'साहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सांहियोड़ी)

सा, सा'—सं. पु.—१ ईस्वर, परमेस्वर ।

२ मित्र, दोस्त ।

३ वर्ष, साल । (एका.)

४ स्वाद, जायका ।

५ संगीत में षड्ज स्वर का सूचक शब्द या संक्षिप्त रूप ।

ज्यूं—सा, रे, ग, म, प ।

सं. स्त्री.—६ स्त्री, औरत । (एका.)

७ रज, धूल । (एका.)

८ लाछी । (,,)

९ लक्ष्मी, रमा । (,,)

१० गुफा । (,,)

११ टिड्डी । (,,)

१२ रेखा, पंक्ति । (,,)

१३ पार्वती । (,,)

वि.—१ समान, तुल्य ।

उ०—१ गरु गारड़ु कोय मिळावै, मेरे तन की तपति बुझावै । सतगुर सा सम्रथ नहीं कोई, विसीया लहरि मिटावै सोई ।

—अनुभववांणी

उ०—२ सतगुरु सोई जांणीयै, कहै कहावै रांम । हरीया गुरु गोविंद सा, और न को विसरांम ।—अनुभववांणी

उ०—३ अइयो मोज जकां नुं आपै, साधां नै कविळास समापै । अनंत भगत तूं सा उधरिया, तुझ तणै ऊपरि सा तरिया ।

—पी. ग्रं.

२ अच्छा, भला ।

उ०—सा पुरसां संतोखियां, साणां जवहर लांण । बेलां चिना बेलड़ी, पारस सयल पखांण ।—बां. दा.

३ साथ ।

सर्व. स्त्री.—यह ।

उ०—१ ढाढी एक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ । सा धण बळि कुइळा भई, भसम ढंढोळिसि आइ ।—ढो. मा.

उ०—२ पुनरपि पधरावी कन्है प्रांणपति, सहित लाज भय प्रीति सा । मुगतकेस श्रूटी मुगतावळि, कस छूटी छुद्रघंटिका ।—वेलि

उ०—३ सा धण ऋंभि वचाह ज्यउं, लंबी थई तुं कंध । जोता-रंती सज्जणां, नीहाळंती मग्ग ।—ढो. मा.

अव्यय—एक सम्बन्ध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कहीं क्रिया विशेषण की तरह और कहीं विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है :—

१ समान, तुल्य, सदृश ।

२ समान होने पर भी किसी प्रकार की थोड़ी न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए ।

उ०—परमान बाहर आया सो उदास सा रह्या । माली तो नां दांतण, ना सिनांन कीवी, न जीमी । रात घड़ी च्यार गयां समुद्र आयो । तद माली श्रीयसीजी नुं बोलाया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

ज्यूं—वो मेला सा कपड़ा पेर्यां ऊबी ही ।

बाळदिया कन्है तो मड़ा सा बळद है ।

३ किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए ।

ज्यूं—थोड़ा सा चोर दोड्यो, थोड़ा सा आदमी आयो ।

४ देखो 'साहिब' (रू. भे.)

५ देखो 'साह' (रू. भे.)

उ०—सुज तेज देखि सधीर, अड़ियौ न कोय अमीर। सभि तांम अजरा सलाह, सा' थियौ दौलासाह।—सू. प्र.

रू. भे.—स्या।

सा—१ देखो 'सास' (रू. भे.)

२ देखो 'हा' (४) (रू. भे.)

साअंता—देखो 'सांता' (रू. भे.)

उ०—साअंता कुमरि मांगि समथ, दई रिखी आंणि सध्र दसरथ।
—रांमरासौ

साइ-सर्व. स्त्री.—१ वह।

२ देखो 'सांई' (रू. भे.)

३ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—साइ सारदा मनि संवरि, बांधउं ग्रंथ अपार। सूरति राखउं 'अचळ' कउ, खउंदालिम्म सिकार।—अ. वचनिका

साइक—१ देखो 'सायक' (रू. भे.)

उ०—१ लघु लघु घांनख साइक लघु।—रांमरासौ

उ०—२ बाळै घाव जांगियां कुरांण बाच लगा वोम, रोस भीनां दोवड़ा चळळा ऊडै रीठ। साइकां छड़ाळां धारां कटारां जवनां सेती, ताखा भड़ां बापूकारै मेलिया नतीठ।—बगतौ खिड़ियौ

२ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

साइकल, साइकिल-सं. स्त्री. [अं. साइकिल] दो पहियों वाली गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है, बाइसिकल।

उ०—चारेक खेलवा तांई तौ मांमूली छांटा छिड़का व्हिया पण पछै तौ हरड़ाट माचग्यौ। म्हैं बरसात मैं ई साइकल दाबतौ रह्यौ।
—फुलवाड़ी

साइक्क—देखो 'सायक' (रू. भे.)

साइजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साइजादी)

साइणि, साइणी—१ देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—बावन वीर किये अपनै वस, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सांइणी' (पु.)

साइत—१ देखो 'सामंत' (रू. भे.)

२ देखो 'सायत' (रू. भे.)

उ०—जै कोई बुद्धी उपाय सूं जलाल नूं मारणौ। सौ उण साइत मजकूर करि नै कहियौ—बडौ डेरौ हमारै झरोखै सांम्हौ खड़ौ करौ ग्रौर तणाव ढीलौ राखौ।—जलाल बूबना री वात

३ देखो 'सायद' (रू. भे.)

साइदार—देखो 'साईदार' (रू. भे.)

उ०—ब्राह्मण नें साइदार थाप्यौ। तै पिण बोल्यौ फाक जांणौ पछै रुघनाथ जी आचारंग काढ्यौ। जद खंति विजय रुघनाथजी कनें सूं पांनौ खोस नें फाड़ न्हाख्यौ।—भि. द्र.

साइधण—देखो 'सायधण' (रू. भे.)

उ०—१ मारू देस उपन्निया, नड़ जिम नीसरियांह। साइधण ढोला एहवी, सरि जिम मध्धारियांह।—ढो. मा.

उ०—२ साइधण हल्लण सांभळइ, ऊभी आंगण छेह। काजळ जळ भेळा करी, नांखी नांख भरेह।—ढो. मा.

साइनौ, साइनौ—देखो 'सांइणौ' (रू. भे.)

उ०—१ कठोड़ै कहीजै कलाळी री पोळ ग्रौ साइना सिरदारां, कांई रे ऐनांणां कलाळी री ग्रांगणौ, हौ म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ परणी-पांती साईनी साथणियां नै ब्याव धणी ग्रर सासरा री केई बातां पूछी, जकौ वा माईतां सूं नीं पूछ सकै। सहेलियां री बातां सुणनै उणरौ कोड तर-तर परसण लागौ।—फुलवाड़ी

(स्त्री. साइनी, साइनी)

साइर—१ देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—१ हठि चल्यउ सुरतांण, खंणवि धरणि तलि पिल्लउं। वेगि ल्यावी पदमिणी, सेन सवि साइर घल्लउं।—प. च. चौ.

उ०—२ पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर। करउ मंत्र चेतन्न, कटक लंघीइ रिणायर।—प. च. चौ.

२ देखो 'सायर' (रू. भे.)

साइवांण, साइवांन—१ देखो 'सांमियांनौ' (रू. भे.)

उ०—अंबाडी गज्जां धज्जां नेजां, घोडै घत्ते पल्लांण। कोठारं भारं ऊंठा पूठी, डेरा तंबू साइवांण।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साईवांन' (रू. भे.)

उ०—हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकंत जोति अति जिलह-दार। जर तार चिगा साइवांन जास, परगटै जांण बहु रवि प्रकास।—सू. प्र.

साइस्तगी-सं. स्त्री. [फा. शाइस्तगी] शिष्टता, सभ्यता।

साई, साई-सं. स्त्री.—१ कीमत की रकम का वह अंश जो किसी वस्तु की खरीद के पहले सौदा तय करते समय वस्तु को सुरक्षित रखने हेतु लिया या दिया या जाय, पेशगी।

उ०—सरूपोत दूध दही रै मिस उठै बुलावण री जाळ रचियौ, सगळा दूध री साई करण री दातारी दरसाई, पछै भैंस्या देखण रै मिस ग्रठै ग्रावण री जुगत विचारी।—फुलवाड़ी

वि० वि०—यह रकम पूरी रकम देते समय विक्रय मूल्य में से कम कर दी जाती है। यह रकम देने से सौदा तय हो जाता है। निश्चित समय में क्रेता द्वारा वस्तु नहीं खरीदी जाने पर पर यह रकम क्रेता वापिस प्राप्त करने का अधिकारी नहीं होता है।

क्रि. प्र.—करणी, दैणी, लैणी।

मुहा०—१. सतरा सायां नै तेरै बधायां=जो काम कम करता है

[illegible] होकर [illegible] उसके लिए प्रयुक्त कथन. २. [illegible] होना, [illegible] मार कर रोना. ३. साई माई [illegible] होने पर पेशगी रकम वापिस प्राप्त करने का [illegible] होना ।

२ [illegible], [illegible] का [illegible] ।

उ०—साई [illegible], [illegible] परि [illegible] । उरि ऊपरि मांर [illegible], [illegible] नूंन ।—डो. मा.

३ [illegible] ।

उ०—[illegible] घर हरीयो, घोरा डंबर में संवर घर [illegible] । साई सर सरिता पाई इकरारा, धोळा जळधर सूं घाई [illegible] ।—[illegible]

४ [illegible], [illegible] ।

उ०—१ [illegible] उमाहियो, देगि घटा घनघोर । सयणां साई [illegible], घनजा 'जमा' जमोर ।—जमराज

उ०—२ [illegible] ज पंगिया, म्हांकड फल्लड करेह । साई [illegible], म्हा [illegible] ।—डो. मा.

५ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] बाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई [illegible] । [illegible] उजाळ नमो [illegible] विसाळ जूनां, [illegible] ससिपाळ [illegible] ।—पी. ग्रं.

[illegible]—देखो 'साहजादो' (रू. भे.)

(स्त्री. साईजादी)

साईदार, साईदार-सं. पु.—साखी, गवाही ।

वि.—१ साखी देने वाला ।

उ०—जद साहूकार हुवै तै तो पंतो बतावै साईदार भरावै अमकड़ियै बजाज कनै सीधी अमकड़ियै रंगरेज कनै रंगाई । अनै चोर नै [illegible] हुवै तिण सूं पंतो बतावणी आवै नहीं थोड़ा में अटक जावै ।—भि. द्र.

२ पेशगी देने वाला ।

रू. भे.—साइदार ।

[illegible], साईनो—देखो 'सांइणो' (रू. भे.)

(स्त्री. साईनी)

[illegible], साईवान—१ छज्जा, छाजन ।

उ०—१ साईवान [illegible] जरी तार सोहै, मंढै झालरी मोतियां [illegible] । जड़ी हीरपन्नां नगां हेम जाळी, सकै चित्र कारीगरां [illegible] ।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] के [illegible] का नाव । [illegible] की पाव [illegible] का नाव । [illegible] के बीच में [illegible] के जाव । [illegible] का हुनर साईवांनु का काम, जरदम के बगीचै लगै टांम [illegible] ।—सू. प्र.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

रू. भे.—साइवांण, साइवांन ।

साईस—देखो 'सईस' (रू. भे.)

साउ-सं. पु.—१ स्वाद, जायका ।

२ देखो 'साऊ' (रू. भे.)

साउचेती—देखो 'सावचेती' (रू. भे.)

उ०—ग्रौर सारी तरै मजबूती जो बणाई, साउचेती राखण नै या छपाई जो सुणाई ।—केहर प्रकास

साउळ, साउल-सं. पु.—१ बढ़ई का एक प्रकार का ग्रौजार विशेष ।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—चीर दुरयोधन खांचीया, पांचाली सुं करीय उपाय कि । सो ग्रट्ठोतर साउला प्रगट्यां, नवभव सील पसाय कि ।—ध. व. ग्रं.

३ एक प्रकार की साड़ी ।

४ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

साउवांणी-सं. स्त्री,—१ महारानी, रानी ।

उ०—सो संवत १६१६ फातीवद १२ रावजी दिली मांहे काळ कीयो । सती हुई तिण री बिगत, ६ साउवांणी १० खवास पातां ४ डावड़ियां ३ छोकरियां सरब २३ हुई ।—रा. वं. वि.

२ ठकुरानी, सामंत की पत्नी ।

३ बेटी, पुत्री ।

उ०—इतरी लारै सती हुई—भटियांणी धनराजोत ग्रजबदे जैसलमेरी सिणगारदे, बिकुंपुर री कोडमदे, मलणवासी मनसुख दे...... तंवर साहब दे सरुपसिंघ केसोदासोत री साउवांणी ।—द. दा.

४ देखो 'सवासणी' (रू भे.)

रू. भे.—सउवांणी, सऊवांणी, साऊवांणी, साहुणि, साहुणी, साहुवांणी ।

साऊ-सं. पु.—सुभट, सामंत, योद्धा ।

उ०—१ राजा कांम भोळावियो, राखै विकळो कत्थ । कह्यो वजीरां 'गजपति', तेड़ो साऊ सत्थ ।—गु. रू. ब.

वि—१ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—सिरी सीस कुंमा मणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जड़ाऊ । उभै घंट भासां दुपासां ग्ररोहे, ससी सूर रै बीच ज्यूं मेर सोहे ।—वं. भा.

२ उत्तम, ठीक ।

रू. भे.—साउ ।

साऊ—देखो 'सासु' (रू. भे.)

साऊजम-वि.—कार्यरत, उद्यमशील ।

उ०—सुणि ग्रागम नगर सहू साऊजम, रुखमिणि ऋसन बधावण रेसि । लहरिउं लियै जांणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेसि ।

—वेलि.

साऊवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

उ०—ग्रकळ घाट ग्रासमांन ग्रर ऊपरै ग्रांणियां, हूहरी कुंमरै डाळ

ढळकांणियां। सिखर भुरजां चढी सखी साळवांणियां, रायसिंघ संपेखें नंदगिर रांणियां।—रायसिंह री गीत

साकंप-वि.—कम्पनसहित, कम्पनयुक्त।

उ०—१ जसवंत विनां जहांन, पांन चळ जांणें पवनै। कनां केतु साकंप, यथांमन हिंद सथांनै।—रा. रू.

उ०—२ मिट आग तप मिट जाय, साकंप सीत सवाय। द्रढ पोत खेवट दांम, तट धरी गुदरी तांम —रा. रू.

साकंब, साकंबरी, साकंभ, साकंभरी-सं. स्त्री. [सं. शाकंभरी] १ दुर्गा देवी का नाम।

२ अपने शरीर से उत्पन्न शाकों से समस्त संसार का भरण-पोषण करने वाली एक देवी का नाम। (पुराण)

३ चौसठ योगिनियों के अंतर्गत तीसरी योगिनी का नाम।

४ सांभर झील के आस-पास का प्रदेश।

५ इस प्रदेश में स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

६ सांभर का एक नाम।

साकंबरीपूनम-सं. स्त्री.—पोह सुद पूर्णिमा।

साक-सं. पु. [सं. शाक] १ एक वृक्ष जो शाकद्वीप पर पाया जाता है। इसी पेड़ के कारण उक्त द्वीप शाकद्वीप के नाम से पुकारा जाने लगा।

२ देखो 'साग' (रू. भे.)

उ०—तीन दिनां सूं साक मिळै तोई धोको हियै न धारौ।

—ऊ. का.

३ देखो 'सक' (३) (रू. भे.)

उ०—सोलसै साक चववीस तास, मधि हिमरित वद अघण मास। सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिघजोग प्रगट उच्छब समाज।

—सू. प्र.

साकट-सं. पु. [सं. शाक्त] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी।

२ रथ, शकट।

[सं. शाकट:] ३ बैल।

उ०—साकट कह कह बेसमझ, दीन हटावै दूर। साकट वेहिज समझणा, सींग बिना बेसूर।—ऊ. का.

वि.—१ दुष्ट, पाजी।

उ०—१ हरीया कबू न कीजियै, साकट केरौ संग। एता मिळ बैसै नहीं, गाय गदहड़ौ अंग।—अनुभववांणी

उ०—२ जन हरीया साकट सभा, साध न बैसै जांण।

—अनुभववांणी

२ विधर्मी।

उ०—सतगुरु विन सौदा किया, जनहरिया वेकांम। साकट ज्यूंई सूकरा, हांडै घर घर जांम।—अनुभववांणी

३ मूर्ख, नासमझ।

रू. भे.—साकत, साकति, साक्ति, साखत, सागट।

साकटायण, साकटायन-सं. पु. [सं. शाकटायन] एक प्राचीन व्याकरण रचयिता मुनि, एक प्राचीन वैयाकरण।

साकणि साकणी-सं. स्त्री. [सं. शाकिनी] १ दुर्गादेवी की एक सहचरी का नाम।

२ युद्धप्रिय चंडी।

उ०—१ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमंख भक्ख, जंबक्ख रींछ वडांक जक्ख।

—गु. रू. बं.

उ०—२ जरख रींछ वडाख, सिवा सत लख्ख मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु. रू. बं.

३ ६४ योगिनियों में से ४५ वीं योगिनी का नाम।

उ०—१ देवी चंद्रघंटा महम्माय चंडी, देवी वीहळा अम्रळा वड्डु वड्डी। देवी जम्मघटा वदीजै जडंवा, देवी साकणी डाकणी रूढ सद्दा।—देवि.

उ०—२ वीरै डाक वाया, विमांणै वोम छाया। साकणी डाकणी मिळि मंगळ गाया। नौबति नीसांण रिणतूर वागा। देवासुर देखवा लागा।—र. वचनिका

४ पिशाचिनी।

उ०—तुही अज्जया अम्भया अव्विलंबा, तुही अज्जरा अम्मरा अख्खिलंबा। तुंही साकणी डाकणी बाकसाळी, तुंही भूचरी खेचरी भद्रकाळी।—मे. म.

५ प्रेतिनी।

उ०—सुभगा सिवा जया स्त्री अंबा, परिया परंपार पालंबा। पिसाचणि साकणि प्रेतिबंबा, अथ आराधिजै अवलंबा।—देवि.

रू. भे.—सक्कणी, साइणि, साइणी, साकिणी।

साकत, साकति, साक्ति—१ देखो 'साखत' (रू. भे.)

उ०—१ बिलाला लीलौ लावजै, बंधियौ न राखै टार। साकत मांडै सोवनी, राव हुवै असवार।—लो. गी.

उ०—२ सपतास नहीं इण सारिखौ, जोय सूर इम जांणियौ। सूरजपसाव साकति सजै, इण विध हाजर आंणियौ।—सू. प्र.

उ०—३ सिणगारै सरब हैम मैं साकति, गळै गज्जगाह बंध ए। वेगागळ वाजराज वाहण, या दीपत सरल कंध ए।—गु. रू. बं.

२ देखो 'साकट' (रू. भे.)

उ०—१ दादू सभा संत की, सुमति उपजै आय। साकत की सभा बैसतां, ग्यांन काया मैं जाय।—दादूवांणी

उ०—२ दादू माया दासी संत की, साकत की सिरताज। साकत सेती मांड नी, संतौ सेती लाज।—दादूवांणी

साकतिक-सं. पु. [सं. शाक्तिक] शाक्त मत का व्यक्ति या अनुयायी, शाक्त। (मा. म.)

साकदीप-सं. पु. [सं. शाकद्वीप] १ पुराणानुसार सात द्वीपों में

[illegible] से घिरा हुआ है। यहाँ कुकुमारी व [illegible] नदियाँ है।

३ [illegible] और तुर्किस्तान के बीच पड़ने वाला प्रदेश।

रू. भे.—साकद्वीप।

साकद्वीपी, साकद्वीपीय–सं. पु. [सं. शाकद्वीपीय] १ शाक द्वीप का निवासी।

२ ब्राह्मणों का एक भेद।

वि.—शाकद्वीप का, शाकद्वीप से सम्बन्धित।

रू. भे.—साकद्वीपी।

साकद्वीप—देखो 'साकदीप' (रू. भे.)

साकद्वीपी, साकद्वीपीय—देखो 'साकदीपीय' (रू. भे.)

साकर—१ देखो 'सक्कर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ [illegible] दाणरपड, सूर सिहादति ग्रावरपड, पंचां-[illegible] पड़इ, महादान माग्रह घड़इ दूध मांहि साकर पड़ई।
—ग्र. वचनिका

उ०—२ [illegible] निहाली, सुरनर सगला मोहइ। तिण [illegible] राज, साकर दूध तणी परइ।—वि. कु.

२ देखो 'साकार' (रू. भे.)

उ०—[illegible] साकर [illegible] अंत, भलो मन माग भजे भगवंत। [illegible] नहिं [illegible] भगवांन, सही नर सूकर स्वांन समांन।
—ऊ. का.

३ देखो 'साहूर' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

साकरखोर, साकरखोरो—देखो 'सक्करखोरो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] साकरखोर रै, मंग न साकर सूण। सब दिन पूरै [illegible], [illegible] दई गो मूंग।—बां. दा.

साकरलिंगा-सं. पु.—शक्कर या मिश्री से बनी लिंगाकार व कुंजाकार [illegible]।

उ०—बीज [illegible] बदामनां, [illegible] तणु न पार। [illegible] नई [illegible], साकरलिंगा सार।—मा. कां. प्र.

साकरियो–सं. पु. [सं.] १ घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष जिसके कारण घोड़े के [illegible] या जबड़े के नीचे ग्रंथियाँ हो जाती है तथा [illegible] में ग्राता है। (शा. हो.)

२ [illegible]।

साकरियो डोरो–सं. पु.—मजबूत-धागा।

उ०—[illegible] घर घर गो [illegible] करावं है। पाली हाळा पेम, [illegible] गो [illegible]। साकरियं डोरं री नाक में नाथ घालली। कद [illegible] रो सिर [illegible]।—दसदोख

साकलसाखा–सं. स्त्री. [सं. शाकलशाखा] शाकल्य ऋषि के गोत्रजों से चलने वाली ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता।

साकळी–सं. स्त्री. [सं. शाकुली] १ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

वि. वि०—यह प्रायः होली या शीतलाष्टमी पर बनाया जाता है। यह मीठा व नमकीन दोनों तरह का होता है। मीठा पदार्थ म्राटे व गुड़ के पानी के मिश्रण से पूड़ी के ग्राकार का बनाकर तेल में तल कर बनाया जाता है एवं नमकीन पदार्थ बेसन में नमक मिर्च, हलदी, धाणा, जीरा ग्रादि मिला कर पानी से गूंद कर पूड़ी के ग्राकार का तेल में तलकर बनाया जाता है।

२ देखो 'सांकळी' (रू. भे.)

साकळे–ग्रव्यय. [सं. सुकल्य] सुबह, प्रातःकाल।

उ०—म्हारै दुवारी री वेळा टळै, दो घड़ी दिन चढ्यां वहीर होवाला। ग्रापनै की पूछताछ करणी है तो धकै ग्राखी रात पड़ी है। म्है तो साकळे दो घड़ी दिन चढ्यां वहीर होवांला।
—फुलवाड़ी

साकल्य–सं. पु. [सं. शाकल्य] १ ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक प्रसिद्ध ऋषि।

२ एक प्राचीनकालीन वैयाकरण।

(मि. साकलसाखा)

साकवक्त्र–सं. पु. [सं. शाकवक्त्र] कुमार कार्तिकेय के एक सैनिक ग्रनुचर का नाम।

साकवर–सं. पु. [सं. शाक्वर] बैल, वृषभ। (डि. को.)

साकसप्तमी–सं. पु. [सं. शाकसप्तमी] एक प्रकार का व्रत विशेष जो कि कार्तिक शुक्ला सप्तमी को किया जाता है।

साकाबंद, साकाबंध, साकाबंधी–सं. पु.—१ युद्ध के इच्छुक, सुभट योद्धा।

उ०—१ धनि ग्राखे सारी धरा, मनि कांपै महमंद। साकाबंध कमंध रा, वाका हद्दि समंद।—रा. रू.

उ०—२ नित कहतो सुज बोल निवाहे, लोह घड़ै जस घणो लियो। साकाबंध कांमण सांभळियो, कंथ सुरां बिच वास कियो।
—महाराजा पदमसिंघजी री वात

२ यशस्वी, प्रतापी।

३ ऐतिहासिक।

उ०—सु तीसरो सज महाभारत ग्रागम कहता उजेणि मेत। ग्रगनि सोर गाजसी। पवन वाजसी, गजवध छत्रबंध गजराज गड़सी · हिंदू ग्रसुराइण लड़सी। विकातो वात साकाबंध ग्राइ सिरै पडी।—र. वचनिका

रू. भे.—सकबंध, सकबंधी।

साकामिस–सं. पु.—कई प्रकार के शाक-सब्जियों का एक साथ सम्मिश्रण। (मेवाड़)

साकायत–वि.—१ युद्ध करने वाला।

२ प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला।

३ भयावह, डरावना।

साकायन, साकायनि–सं. पु. [सं. शाकायन] १ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

२ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

साकार-वि.—१ जिसका कोई आकार हो, स्थूल।

२ ईश्वर का आकारयुक्त रूप।

साकारणौ, साकारबौ-क्रि. स.—दाह-संस्कार करना।

उ०—ताहरां ऊदौ बोलियौ, कह्यौ—ठाकुरां! आ मेळाजी री पाघ छै, मेळोजी कांम आया। सिखरैजी रै हाथ रा घावां ठाकुर कांम आयौ छै, साकारिया छै म्हां।—नैणसी

साकारणहार, हारौ (हारी), साकारणियौ—वि०।

साकारिश्रोड़ौ, साकारियोड़ौ, साकारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

साकारीजणौ, साकारीजबौ—कर्म वा०।

साकारता-सं. स्त्री.—साकार होने का भाव।

साकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—दाह-संस्कार किया हुआ, जलाया हुआ। (स्त्री. साकारियोड़ी)

साकारी—देखो 'साकाहारी' (रू. भे.)

साकारोपासना-सं. स्त्री.—ईश्वर का आकार या मूर्ति मानकर की जाने वाली उपासना।

साकास्टका-सं. स्त्री. [सं. शाकाष्टका] फाल्गुनकृष्णा अष्टमी, जिस दिन पितरों के लिए शाकदान किया जाता है।

साकाहार-सं. पु. [सं. शाकाहार] मांस-रहित भोजन, अन्न या फल-फूलादि का भोजन।

साकाहारी-वि. [सं. शाकाहारिन्] शाकाहार खाने वाला, मांस न खाने वाला, निरामिषभोजी।

साकिणि, साकिणी—देखो 'साकणी' (रू. भे.)

उ०—मणि मंत्र तंत्र बळ जंत्र अमंगळ, थळि जळि नभसि न कोइ छळंति। डाकिणी साकिणी भूत प्रेत डर, भाजै उपद्रव वेलि भणंति।—वेलि

साकिन-वि. [अ.] १ निवासी, रहने वाला।

२ जिसमें हरकत न हो, स्थिर।

साकिनी-सं. स्त्री. [सं. शाकिनी] १ दुर्गादेवी की परिचारिका का एक नाम।

२ शाक-सब्जी का खेत।

३ देखो 'साकणी' (रू. भे.)

साकी-सं. पु. [अ.] १ शराब पिलाने वाला।

२ जिसके साथ प्रेम किया जाय, माशूक, प्रेमी।

३ शिकायत करने वाला।

४ चुगली करने वाला, चुगलखोर।

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—काठी कुरळातां काती निस काळी, होळी हीयै मैं दांतां दीवाळी। सांमूं सीयाळी साकी सरसायौ, वाकी वंचियां नै डाकी दरसायौ।—ऊ. का.

साकुंतल-सं. पु. [सं. साकुंतलं] १ अभिज्ञान शकुन्तला नामक नाटक जो कि कालीदास द्वारा रचित है।

[सं. शाकुंतलः] २ शकुन्तला-पुत्र भरत।

साकुन-वि. [सं. शाकुन] १ शकुन सम्बन्धी।

२ शुभ।

३ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

साकुनि, साकुनी-सं. पु. [सं. शाकुनि] १ मधुवनवासी एक ऋषि जो नौ पुत्रों का पिता था।

वि. वि.—नौ पुत्रों के नाम हैं—ध्रुव, शील, बुध, तार, ज्योतिष्मत्, निर्मोह, जितकाम, ध्यानकेश एवं गुणाधीक। इनमें से पहले पांच गृहस्थाश्रमी व अग्निहोत्री थे तथा दूसरे चार विरक्त एवं संन्यस्त प्रवृत्ति के थे।

२ देखो 'सकुनि' (रू. भे.)

साकुर-सं. पु.—घोड़ा, अश्व। (डि. को.)

उ०—१ छळ मारू वाघै बळ छीजै, लीजै झड़प किता लूटीजै। मीरां गयौ डहोळी मांहे, साकुर पगां तणौ बळ साहे।—रा. रू.

उ०—२ दाखै तांम 'कुसळजी' दूजौ सिरदारोत महाभड़ 'सूजौ'। साकुर पहल ओरकूं, सारां धमरोळू हरवळ चौधारां।—सू. प्र.

रू. भे.—साकर।

साकुळी, साकुली-सं. स्त्री. [सं. शष्कुली] पूरी, पकवान आदि। (उ. र.)

उ०—......फगफगां फीणां, दुग्धवरण्ण दहीथरां घ्रतवरण्ण घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नही भाकुली अखंड मांडी,......।—व. स.

साकूतरौ, साकूतौ-सं. पु. (स्त्री. साकूतरी, साकूती) सपत्नी-पुत्र।

रू. भे.—सौकूतरौ, सौकूतौ।

साकेत-सं. पु.—अयोध्या नगरी का एक नाम। (डि. को.)

उ०—साकेत नगर सुखकंद रे, सहदेवी माता नंद रे। गढ मांहे कीधउ फंदरे सुकोसलउ बाल नरिंद रे।—स. कु.

साकेती-वि.—अयोध्या से सम्बन्धी।

सं. पु.—अयोध्यावासी।

साकौ-सं. पु.—१ महायुद्ध।

उ०—१ 'दळथंभ' हरौ थयौ दुसासण, गहण अरिंदा सारगह। मोटापण वाळौ महाराजा, मोटौ साकौ कियौ मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ दुसमणां री फौज गढ घेरियौ तठै गढ री धणी साकौ कर मरण री विचारी।—वी. स. टी.

२ यश, कीर्ति, प्रसिद्धि।

उ०—१ पर भोम लई समंदां लगै, राठौड़ा साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिलां तणौ, वेड खडग ग्रहि संग्रहै।—गु. रू. बं.

उ०—२ पाकौ भत्तौ परठियौ, काकौ पासि कंठीर। साकौ राखण जग सिरै, वर्णं वीर भद्र वीर।—विनयरासो

३ अवसर, मौका।

४ [illegible] किसी [illegible] की कीर्ति हो।

५ [illegible]।

६ [illegible]।

शाक्त–सं. पु. [सं. शाक्त] शक्ति का उपासक, शाक्त मत रो अनुयायी।

वि.—१ शक्ति सम्बन्धी, बल सम्बन्धी।

२ [illegible] सम्बन्धी।

शाक्तिक–वि. [सं. शाक्तिक] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी।

२ भाला धारी।

शाक्तेय–वि. [सं. शाक्तेय] शक्ति का उपासक, शाक्त मत का अनुयायी।

शाक्य–सं. पु. [सं. शाक्य] १ नेपाल की तराई में बसने वाली एक प्राचीन जाति। (ऐतिहासिक)

२ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो सञ्जय राजा का पुत्र एवं शुद्धोद राजा का पिता था।

शाक्यमुनि–सं. पु. [सं. शाक्यमुनि] १ गौतम बुद्ध का नाम।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—[illegible] रघुकुल तारण, शाक्य सजय सुत दुसह [illegible]। [illegible] शाक्य रु शुद्धोद सकाजा, राजै जं सुत लायक राजा। —सू. प्र.

शाक्र–वि. [सं. शाक्र] इन्द्र का, इन्द्र सम्बन्धी।

सं. पु.—ज्येष्ठा नक्षत्र।

शाक्री–सं. स्त्री. [सं. शाक्री] १ शची, इन्द्राणी।

२ दुर्गा [illegible]।

शाक्वर–सं. पु. [सं. शाक्वर] १ इन्द्र, देवराज।

२ इन्द्र का वज्र।

३ सांड, बैल।

साक्षर–वि.—१—जिसे अक्षर-बोध हो, शिक्षित।

२ पंडित, ज्ञाता।

रू. भे.—साखर।

साक्षात–वि.—साकार, मूर्तिमान।

क्रि.वि.—१ सामने, प्रत्यक्ष।

उ०—[illegible] लोढ़ो [illegible] रा हाथ मूं [illegible] बहि[illegible]। [illegible] बोल्या—भीखणजी मंका पड़ी। जद [illegible] बोल्या—साक्षात अनुजतो देख बहिरयो। इण में फेर [illegible]। —भि. द्र.

२ [illegible]।

उ०—१ [illegible] विवाह की प्रारंभ भयो। ब्राह्मण विवाह करण नैं [illegible] वैठा छै जिसा साक्षात मूर्तिवंतवेद। वेदी छै सु [illegible] छै। [illegible] छै। —वेलि टी.

उ०—२ [illegible] साक्षात [illegible] इण रा कपड़ा रंगतां पा पामत करज नै पोसाक मंगावसी जद म्हांरा दाळद्र गमाय देसी।

—वी. स. टी.

रू. भे.—सत्यात, सहसात, साखात, साखिग्रात, साखियात, साख्यात।

साक्षातकार—देखो 'साक्षात्कार' (रू. भे.)

साक्षातकारी–सं. पु. [सं. साक्षात्कारिन्] भेंट या मुलाकात करने वाला।

साक्षात्कार–सं. पु. [सं.] १ भेंट, मुलाकात।

२ इन्द्रियों द्वारा होने वाला पदार्थों का ज्ञान।

रू. भे.—सहसातकार, साक्षातकार।

साक्षि, साक्षी–सं. पु. [सं. साक्षिन्] वह व्यक्ति जिसने कोई घटना अपनी आंखों से देखी हो, चश्मदीद गवाह।

रू. भे.—सख्ख, साखि, साखिग्रात, साखियात, साखी।

अल्पा;—साखियो।

साख–सं. स्त्री.—१ साक्षी, गवाही।

उ०—१ इण मुख मांहे तो जिसा, केई मावै लाख। मूठ म जाणै झूठ तूं, सूरज चंदो साख। —गज-उद्धार

उ०—२ जो कोई खून हुवै मुझ अंदर, तो दूं साख भराई। विण कहो जुग में न्याय करै कुण, जो हुवै राय अन्याई। —जयवांणी

क्रि. प्र.—घालणी, देणी, भरणी।

मुहा.—स्याळ री साख लांकी भरै=बदमाश या अपराधी की गवाही अपराधी ही देता है।

२ बाजार में वह प्रतिष्ठा जिसके कारण उसका लेन देन तथा व्यापार कार्य अच्छा चलता हो, व्यापारिक ख्याति, प्रसिद्धि।

उ०—चौखळा में उण रै नांव री साख ही। हजारूं रिपिया वणनै विना खाता रै मिळ जाता अर वो खुद तो किणी नै लिखा-पढी री बात रिपिया देवतो वगत करतो ई नीं हो। —फुलवाड़ी

३ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—२ बात सुणनै सेठ बोल्यो—गै'णो तो उणनै सूंपणो ई पड़ैला मात पीढियां री साख जावै। जायनै सावळ समझा। यूं मोळप री बातां करियां घर री साख खोकर रेवैला। —फुलवाड़ी

४ आदर, सम्मान।

५ कीर्ति, यश।

उ०—वण जोहर री राख, साख राखी जग ऊंचै। रजपूती भगती, बंधी वद कुळ रै पूंचै। —नागो सईकड़ो

६ भाग, हिस्सा।

७ रश्मी, किरण।

उ०—१ धोरो रै ग्वाळा धोरा धीरज नू लेय, सूरज री साखां में जाम्यूं, रंग री कोटड़ी। —लो. गी.

उ०—२ जै बींदणियां रै मत नळो है तो आप सती करावो। रोळो न हुवै। यो कांम आप रै जिम्मै है। सगळी बींदणियां री

मन राखौ। सूरज री साख सती करायद्यौ।—नैणसी री ख्यात

८ नाता, सम्बन्ध, रिश्ता।

उ०—अर गढ री जोम होवै तौ फेर सांमांन करौ। म्हांरी फौज आवै छै। जिण सूं हाथ जोड़ज्यौ। अबरकै तौ छोडिया छै। जंमीदारां की साख सूं हर अबरकै चूकस्यौ तौ मार हीज नांखस्यूं।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ जाटां माथै मैं'र, रोटी-बेटी री साख पाळै, रूखाळी करै। जाटणी रै जायै नै हेल नीं आणदवै। हर वखत हिमरा चढतौ फिरै। लूंठा नै लोढै पर गरीबां रै मोढै लाग्यो रेवै।—दसदोख

मुहा.—(१) साख धोयां थोड़ा ई धुपै=रिश्ता मिटाने से नहीं मिटता है। (२) समझै ज्यांरी साख नीतर कीं न कांई=माने उसके लिए सम्बन्ध अन्यथा कुछ नहीं। (३) समझणां सूं साख सगळा काढै=बुद्धिमान और समझदार व्यक्तियों से प्रायः सभी रिश्ता जतलाने के इच्छुक होते हैं एवं रिश्ता निकाल लेते हैं।

९ शिक्षा, उपदेश।

उ०—सतपुरसां री साख सुण, सीखत ग्यांनी होय। हरीया गुर सबद विन, ग्यांनी भया न कोय।—अनुभववांणी

१० फसल, उपज, पैदावार।

उ०—१ दावौ पड़ग्योड़ी कै भोलौ लाग्योड़ी साख लुगथुकी पड़ै ज्यूं 'बादळ' री डील लूखौ पड़ग्यौ। दीप दीप करतौ उणियारौ साव मगसौ पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ झुकै घर हैमर सूर झूंझार, भयै किर साख तिडां दळ भार। इसी सरसोक नक्यूं अटकाय, आयौ 'अभपत्तिय' बाज उडाय।—सू. प्र.

११ विवाह, शादी।

१२ सगाई, मंगनी।

उ०—छोटू मारजा रै तीन बेट्यां, जकां मैं सूं बडोड़ी री साख डूंगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिस्तरी रै दसवीं पास बेटै सूं मंड्यौ है।—दसदोख

उ०—कैयौ—थांरै घरांणै री नांमून सुण'र आपरी बाई री साख करण नै पधारया है। थानै कुंवरजी बणावणा चावै है। मैरबांनी करावौ।—दसदोख

१३ पैठी।

उ०—अबार छोडूं तौ पचास रिपिया तौ म्हारी दुकान री साख रा ई आ जावै।—फुलवाड़ी

वि. वि.—देखो 'पेंठी' (२)

[सं. शाखा] १४ वंश, गोत्र, शाखा।

उ०—१ मालदै नूं मुवां थोड़ा दिन हुवा था सु चंद्रसेन कन्है साख साख रा सवळा रजपूत था।—राव चंद्रसेण री वात

उ०—२ अमर सुजस दत खगि अधिकाई, साख 'पदम' री वधै सवाई।—सू. प्र.

उ०—३ तुरक घडा नव तेरही, तेरह साख कमंध। इळ धूकळ कळि ऊपजै, ज्यां कपि दळ दसकंध।—रा. रू.

१५ दरवाजे में कपाट के दोनों किनारों पर लगाई जाने वाली सीधी (खड़ी) लकड़ी।

१६ एक साल की आयु वाला बैल।

१७ किसी बड़ी जलधारा से निकली छोटी जलधारा।

१८ अग्निशिखा।

उ०—संपेख अगनग साख सी, रत रोस मारग राखसी। तिहू नाक पांण विछेद ताडै, बांण इक रघुबीर।—र. रू.

१९ घोड़े के चारजामे का एक भाग।

उ०—घोड़ा लोह चाब रह्या छै, जीणां री साखां जनाखां ऊंची नांखीजै छै। तंग खोळा कीजै छै।—रा. सा. सं.

२० प्रमाण, सबूत।

उ०—१ कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै सुजांण। मांडै कायब माघ मधौ, पंडित माघ प्रमांण।—सू. प्र.

उ०—२ ऐसी भांति सैं खटि भाखा कहि बताई। चातुरी कळा की भांति भांति चतुराई। जिसकी साख प्रथम भाखा संसक्रत सौं तौ अनुभूति कृत्य सारस्वत सौ पाई।—सू. प्र.

२१ स्वामी कार्तिकेय।

२२ अनलवसु का पुत्र जो कार्तिकेय का छोटा भाई था।

२३ देखो 'साखा' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—तुंही भारती भाखणी सख भाखा, तुही सरब दातार मंदार साखा। हमाऊ परां तोकरां छांह हेको, नको पार ओतार थारा अनेको।—मे. म.

रू. भे.—साक, साखि।

अल्पा;—साखड़ी।

साखइत—वि.—उच्च कुल का, कुलीन।

उ०—हेमाचळ नारद नूं हसिया, कुंवरी आविया गोद कियइ। वर कोइ एक साखइत वतावउ, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।—महादेव पारवती री वेलि

साखड़ी—देखो 'साख' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आगी वाबौ फूटरा है, भळै लगायां राखड़ी। पावस रुत कूवौ सेवतां, उजड़ै उणरी साखड़ी।—दसदेव

साखणौ, साखबौ—क्रि. स.—१ साक्षी देना, गवाही देना।

उ०—१ छत्रपत अनी मांण छंडै, खत्र रख हर चाप खंडै, जांनकी-वर जेण। रायहर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै, मुणै जस प्रथमेण।—र. ज. प्र.

उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ, अति रीझै छत्रपति ऊमहियौ। सूर धरम परखण त्रा साखै, इक सरजीव करण नह आखै।—सू. प्र.

२ प्रमाण देना, सबूत देना।

३ [illegible] देना, उत्तेजित देना ।
४ [illegible] का [illegible] करना ।
साखतणहार, हारौ (हारी), साखतियौ—वि० ।
साखतियोड़ौ, साखतीयोड़ौ, साखत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
साखतीजणौ, साखतीजबौ—कर्म वा० ।
साखत, साखति, साखती–सं. स्त्री.—१ घोड़े का साजसामान व उसकी सजावट की सामग्री ।
उ०—१ सावण घण उलटां, घुड़ साखत पमगाळी । श्रावण हुळस [illegible], नाग पाखर नगराळी ।—मे. म.
उ०—२ [illegible] अनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै । साखत जीण [illegible] छै । जिकै जीण किण भांत रा छै—गुजराती, कसमीरी, रूमी, मारवाड़ी, दखणी, मिरजाई, भटनेरी........।
—रा. सा. सं.
२ वह घोड़ा जो पूर्ण सजाया हुआ हो, सजावटयुक्त ।
३ चाबुक ।
उ०—साखत साटू मूंज की, भीनो करै मरोड़ । हरीया गुर बिन [illegible], [illegible] नाग करोड़ ।—अनुभववांणी
४ [illegible] वर्ग ।
उ०—एक साध घर साध की, और साखती लोग । जनहरीया धिन [illegible], भाव भगती को जोग ।—अनुभववांणी
वि.—१ सजावटयुक्त, सजावटसहित ।
उ०—पछै साखत रा घोड़ा चार और वागा देय विदा किया ।
—ठाकुर जेतसिंह री वारता
२ [illegible], बहुमूल्य ।
उ०—हरिजन कै सिर कंबळी, काळी कुटल कुरंग । हरीया तुलै न दूसरा, साखत चीर सुरंग ।—अनुभववांणी
सं. पु.—सजावट ।
उ०—मैली चिहर माळिया, साखत कर परवार । हरीया हरि की भगति बिन, जगती नरकद्वार ।—अनुभववांणी
रू. भे.—साकत, साकति, साकती, साखित, साखत ।
साखदार–वि. [फा. शाखदार] १ जिसकी अनेक शाखाएँ हो ।
२ साखी, गवाह ।
३ श्रेष्ठ वंश का, कुलीन ।
उ०—तरै बादसाहजी हेत नै फुरमान कियो—हफतहजारी मनसब [illegible] छै । तरै जलाल जागीर में आदमी भेज्या । भला [illegible], साखदार ठांर-ठांर रा राखिया । हमेसां सुखा में गरकाब रहै ।—जलाल बूबना री वात
साखनिरत, साखनिरघ साखम्रग—देखो 'साखाम्रग' (रू. भे.)
साखर—देखो 'साकर' (रू. भे.)
उ०—[illegible] साखर । [illegible] साखर ।—ध. व. ग्रं.
साखसिणगार–सं. पु. यौ.—वंश में श्रेष्ठ, कुलश्रेष्ठ ।
साखसोर–सं. पु यौ.—रिश्ता, सम्बन्ध ।
उ०—निबाब लाचार हुवण मैं कमी राखी नहीं । अर वीदावत उदैकरण रै नै सेखावत रायमल रै साखसोर हो तिण सूं उदैकरण रायमल सूं जाय मिळियौ ।—द. दा.
साखा–सं. स्त्री. [सं. शाखा] १ वृक्ष की टहनी, डाल-डाली ।
(डि. को.)
उ०—सु गोरता ऊपरि स्यांमता किसी सोभै छै । जैसैं मणी मैं हींडोळै मन धरि हींडै छै । मणि को हीडोळौ बांध्यौ छै । मणिधर सरप हींडै छै । अर स्रीखंड चंदन की साखा हींडोळौ बांध्यौ छै ।
—वेलि टी.
२ बांह, बाजू ।
३ विभाग ।
४ हाथ-पैर ।
५ हाथ-पैरों की अंगुलियां ।
६ वंश, कुल ।
उ०—साखा वियौ 'मयंक' पह सुभ्रम, मन श्रणवंछत तूझ मण । कलम कुरांण पांण तज कूंभा, बांचण लागा हर बयण ।
—महाराणा कूंभा रो गीत
७ वटवृक्ष की भखड़ा जड़, शाखाशिफा ।
उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति दारू री तूंगा लागी सूं श्रोछाड़िम्रां घणै ठंडै ठांणी छांटि छांटि नै वडां री साखां सूं नागली थकी झूलै छै । पवन री हुवा सूं टिप्पा खाइ नै रही छै ।
—रा. सा. सं.
८ किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद, हिस्से ।
९ किसी शास्त्र विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद ।
१० ऋषियों द्वारा अपने गोत्र या शिष्य परम्परा में चलाये गये वेद की संहिताओं के पाठ और क्रम भेद ।
११ किसी विषय या सिद्धान्त के बारे में एक ही तरह के विचार या मत रखने वाले लोग, सम्प्रदाय, अनुयायी ।
उ०—१ ऊंच नीच फिर मंगै अगवा, संग लीयां रहै अपनी साखा । मांग भीख अर बंधै पोटा, खालिक दिसीया खाया टोटा ।
—अनुभववांणी
उ०—२ सांमी मंडी मढाप कौं, मन विलीया कै मांहि । तिस साखा धन बोहत की, सुधीया भाजै नांहि ।—अनुभववांणी
रू. भे.—सक्ख, सख, सखा, साख ।
साखात – देखो 'साक्षात' (रू. भे.)
उ०—१ जंघ अलोम अनूप जुग, नाजुक घणै निपात । केळि करीवर कलभ कै, सुकनकूर साखात ।—बां. दा.
उ०—२ मोनूं सुगंध सोनूं मिल्या, बळिहारी इण बातरी । साखात सकति 'इन्दर' सुणै, महिमा करनल मातरी ।—मे. म.

साखाम्रग, साखाम्रिग-सं. पु. यौ. [सं. शाखामृग] बंदर, वानर।
(डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ राखस ग्रख सूतौ नर रंक, साखाम्रग रांवण कै ही संक।—रांमरासौ

उ०—२ किधू प्रेत वक्करचौ ताप मंत्रादिक तच्यौ। परचौ प्रपंचय हत्थ मनहु साखाम्रिग नच्यौ।—ला. रा.

रू. भे.—साखमिरघ, साखम्रिग।

साखावात-सं. पु. यौ. [सं. शाखावात] हाथ-पैर में होने वाला एक प्रकार का वात रोग विशेष।

साखाव्रक्ख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख—देखो 'साखीव्रख' (रू. भे.)

साखासिफा-सं. पु. यौ. [सं. शाखाशिफा] किसी वृक्ष की वह टहनी जो नीचे की ग्रोर झुक कर पृथ्वी में जड़ पकड़ले तथा एक ग्रलग वृक्ष के तने के रूप में हो जाय।

साखि—१ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

उ०—पोह जिण साख नांम प्रगटाए, कमध ग्रहरहूं ग्रहर कहाए। इणची साखि रीत धरि ग्रादव, जदु व्रप हुँ वागा जिम जादव।
—सू. प्र.

२ देखो 'साख' (रू. भे.)

साखिग्रात, साखियात—१ देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—१ सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटै कि सस्त्र सरव वज्र-पात। सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव।
—रा. रू.

उ०—२ दधि वीणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा ग्रग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भाग-वत।—वेलि

२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

साखित—देखो 'साखत' (रू. भे.)

उ०—प्रेम प्रीत का पागड़ा, लिव की करूं लगाम। हरीया साखित सूरति की, कीया कीरत मुकांम।—ग्रनुभववांणी

साखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ साक्षी दिया हुग्रा, गवाह दिया हुग्रा. २ शिक्षा दिया हुग्रा, उपदेश दिया हुग्रा. ३ प्रमाण दिया हुग्रा, सबूत दिया हुग्रा. ४ नाता या रिश्ता किया हुग्रा।
(स्त्री. साखियोड़ी)

साखियौ—१ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—राती धोळी लीक, वारणां कूंट कूंटाळी। पोळ साखिया गोळ, विजोरां जांनां जाळी।—दसदेव

२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

उ०—१ ताइ सांमंतां मुहर ग्राडै तण भुज वळ तियै साखियौ भांण। पाखर रवद वळाउत पर भड, पतसाहै पूजिजै प्रमांण।
—प्रथ्वीराज राठौड़

उ०—२ कूरमां लाज उज्जळ करूं सूर करूं व्रत साखियौ। सुजि-लाज न भूलूं ग्राज सति, इम सेखावत ग्राखियौ।—रा. रू.

साखी-सं. पु. [सं. शाखिन्] १ वृक्ष, पेड़।
(ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ वेद।

सं. स्त्री. [सं. शाखिन्] ३ महात्माग्रों द्वारा रचित भक्ति एवं ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद।

उ०—साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात। ग्रातम तौ परच्या नहीं, करै विरांणी बात।—स्रीहरिरांमजी महाराज

वि.—१ शाखाग्रों सहित।

२ शाखा से सम्बन्धित।

३ देखो 'साक्षी' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ ग्राखी मुख राजा 'ग्रजन', साखी तिण संसार। ग्रव-तरियौ म्हारै 'ग्रभौ', भौ भंजण ग्रवतार।—रा. रू.

उ०—२ बीज उजाळी कारतिक, ग्रड़तीसै कुज वार। ग्रचळ कथा राखी 'ग्रजै', साखी कियौ संसार।—रा. रू.

साखीगोपाळ-सं. पु.—एक तीर्थ स्थान का नाम।

साखीचर-सं. पु. [सं. शाखिन्+चर्] बन्दर, वानर।
(ग्र. मा; नां. मा.)

साखीजणौ, साखीजबौ-क्रि. ग्र.—गाय द्वारा गर्भ धारण किया जाना।

साखीजियोड़ी-वि. स्त्री.—गर्भवती गाय।

साखीणौ-सं. पु. (स्त्री. साखीणी) सम्बन्धी, रिश्तेदार।

उ०—सासा नोळी मैं ग्रटकायां सांसै, बाळक झोळी मैं लटकायां वांसै। माथै ग्रोडी घर साखीणां मांडै, छपनै लाखीणां ग्रपणां घर छांडै।—ऊ. का.

मुहा.—टका देय साखीणी क्यूं लाणी=रुपये खर्च करके ग्रपयश का भागी न बनना।

साखीय-वि. [सं. शाखीय] शाखा का, शाखा सम्बन्धी।

साखीव्रख, साखीव्रखी-सं. पु. [सं. शाखीवृक्ष] वटवृक्ष।
(ग्र. मा; नां. मा.)

रू. भे.—साखाव्रक्ख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख।

साखेत, साखेतौ, साखैतौ-वि.—कुलीन, श्रेष्ठ वंश का।

उ०—१ चढ़ि ग्राया सांमहा, सुहड साखेत भुजाळा। कियौ सनमुख जुहार, ग्राप ग्रापै ग्रंकमाळा।—गु. रू. बं.

उ०—२ चढै रावतां राउला राव रांणा, चढै सुहड साखेत जोधा जुवांणा। चढै मीरजां-मीर मौयां किलक्कं, चढ़ै खांन निव्वाब खाडा खाइक्कं।—गु. रू. बं.

उ०—३ सात ग्रठी पड़िया साखैता, मारु जुध जीता नांमेता। लूटै गांम वित्त धन लीधा, दिस च्यारुं पासरणा दीधा।
—रा. रू.

सं. पु.—घोड़ा, ग्रश्व।

साखोचार, साखोचारन, साखोच्चार, साखोच्चारन-सं. पु. [सं. शाखो-

[illegible] ३ [illegible], गीतादि का [illegible] ।

२ [illegible] की क्रिया ।

(स्वांग)

[illegible] पु.—[illegible] विशेष । (अमरत)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible], बगसीराम की असवारी [illegible] । [illegible] मारवाड़ [illegible] ।

—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ मारवाड़ देसा [illegible] मुलमणी [illegible] सरसती [illegible] विराजमान हुआ छै ।—रा. सा. सं.

साग—सं. पु. [सं. शाक] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, जड़, डंठल, फल—[illegible] आदि पका कर भोजन के साथ खाने के काम ली जाती हो, [illegible] । (ड. र.)

उ०—१ [illegible] एकली बैठी साग बनारती ही, उण नै [illegible] पड़ी, [illegible] सूती रहैला ।

—अमरचूनड़ी

उ०—२ [illegible] भोजन [illegible], साग [illegible] वांन वांन [illegible] ।—सू. प्र.

२ [illegible] पकाकर भोजन के साथ खाने योग्य बनाई हुई [illegible] आदि सूखी सब्जी ।

उ०—[illegible] मेथी-सोगर अर प्याज पावड़ां रा साग ल्हसण रै [illegible] सूं [illegible] जीमै है ।—दसदोख

३ [illegible] का पेड़ । (अ. मा.)

उ०—[illegible] प्रथम पीपळ साग [illegible] पधिरार ।—रुकमणी मंगळ

४ [illegible] । (अ. मा.)

रू. भे.—साक ।

सागडी—सं. पु.—वनस्पति, पत्तों आदि से मण्डप, कुटीया आदि बनाने वाला [illegible] ।

उ०—[illegible], प्रासाद [illegible] राजकुल देवकुल [illegible] राजमारगि [illegible] तांबू- [illegible] सागडी [illegible].........।—व. स.

सागड़—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—२ राजा [illegible] हाथ आया । [illegible] सागड़ [illegible] हाथ [illegible] ।

—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

सागड़पंती—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ तिण रै एक सौ एक भाई-भतीजा हा । तिका भेळा [illegible] रहै । [illegible] चाकरी करै । त्यां कनै असवारी नै घोड़ी [illegible] एक नै सागड़दपंता रा आदमी ब्यार कनै रहै ।

—महाराट सरवहियै री वात

उ०—२ श्रीमहाराजाजी नै श्रीरांणीजी बीजो हिसा री भेट [illegible] मांणस उमराव खवास पासवान कांमदार सागड़दपंती बणाव करै, नै दूसरो सोजो री तरफ सूं पावै-बाघो [illegible] आवै । बणाव नूं बागा दो ।—मारवाड़ री ख्यात

सागड़ी—स. पु. [सं. शाकटिक, प्रा. सागडिय] १ गाड़ी, रथ, हल आदि को हाँकने वाला, चलाने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ चतुर वेसांणबी सागड़ी, ए ग्रहस्थ नो आगार । सोधी सार्थं सहेलियां, रांणी चाली मज्झ बाजार ।—जयवांणी

उ०—२ बड़कै ओधण बधिया, पैसै पई पताळ । सोच करै वह सागड़ी, धवळ तणी दिस भाळ ।—बां. दा.

उ०—३ जो घण दीही सागड़ी, हूं बिरदावणहार । धीगाळो बळ सोगुणो, जांणावै जिण वार ।—बां. दा.

२ कृषक के पास कृषि सम्बन्धी कार्य करने वाला नोकर ।

३ पति, स्वामी । (किसान)

रू. भे.—सागडी ।

सागड़ौ—सं. पु.—वह हल जिसके केवल एक ही फाल हो ।

सागट—देखो 'साकट' (रू. भे.)

सागडी—देखो 'सागड़ी' (रू. भे.) (ड. र.)

सागण—वि.—१ वास्तविक, असली ।

उ०—तौ बोली—कांइ तीं रै वीरा, मन जांणी यूं ई कियां ई व्हैग्यो । सोचवो यूं रोज वीरो मवावै पण कुण जांणै, सागण कांम पड़सी जद म्हूं रैस्यूं कै नी ।—अमरचूंनड़ी

२ वही ।

उ०—१ औ तो सागण उण दिन खेत मे आयो जिको इज आदमी । चौधरी रा घैं छिलग्या । मंवळ सी आवण लागी ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ उणरै हाथ में ना सागण छुरी ही, जिकरा सूं नरपत री सूत करणो चावै हो । भाठा सूं भाठो आफळै ज्यूं टकर हुई अर छुरी ठेठ डांडा ताई सूर रै पेट में घुसगी ।—अमरचूंनड़ी

३ पच भौतिक ।

४ तदर्थक, ऊपरलिखित ।

५ अपरिवर्तित ।

क्रि. वि.—एक ही ।

उ०—बरस दोय-तीन वितीत हुआ और जांण, बेरसी मोटो हुवो । आपरै मतै घोड़ा नदरां लागिया । सागण वार मैं सिकार मेलै । रीझ बगसीस करै ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

सागत—देखो 'सागन' (रू. भे.)

उ०—जिकै घोडा सोनै री सागत रा। रूपै री साजां मैं मंडिया छै। आंवळा पेच नांखियां थकां। वावळा असवार चढिया छै। चोगांन मैं घोडा दोड़ै छै।—पनां

सागमंडी-सं. स्त्री. [सं. शाक+राज. मंडी] वह स्थान जहाँ पर शाक व हरी तरकारी का क्रय-विक्रय होता है।

सागर-सं. पु [सं. सागरः] १ समुद्र, सरोवर। (अ. मा; डिं. को; ना. डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। वेळ निजर विदुसां, असह कवि भ्रमर अकारण।—रा. रू.

उ०—२ इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर।—रा. रू.

२ झील, जलाशय। (अ. मा; डिं. को.)

३ एक प्रकार का मृग विशेष।

४ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

५ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

६ अतीतकाल के तृतीय तीर्थंकर का नाम। (जैन)

७ शालि नामक ऋषि का पैतृक नाम।

८ डिंगल में एक प्रकार का गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम तीन सगण तथा फिर दो गुरु होते हैं। (क. कु. बो.)

९ चार की संख्या। * (डिं. को.)

१० सात की संख्या। * (डिं. को.)

११ देखो 'सगर' (रू. भे.)

१२ देखो 'सागरी' (रू. भे.)

उ०—रैबारियां री बासणी। कसबै मांहे रनियाकुवा तीरै सोभत था कोस २ कोहर सागर छै। माळी कलाळ खेत खड़ै।—नैणसी

१३ देखो 'सागरोपम' (रू. भे.)

उ०—१ सूसम सूसम आरउ विचारि, कोडाकोडि सागर हुइ च्यारि। त्रिणि गाऊ पणि ऊचडं देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह।—वस्तिग

उ०—२ बीजउ आरउ सूसम जोइ, त्रिणि कोडाकोडि सागर होइ। अरध जोयण देह ऊचउं जांणि, बिहु पल्योपमि आउखाहांणि। —वस्तिग

रू. भे.—सग्गर, साइर, सागरु सायर।

सागरअंबेर—देखो 'सागरांवरा' (रू. भे.) (डिं.नां. मा.)

सागरक-सं. पु.—सागर जनपद का एक राजा जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भेंट सहित उपस्थित हुआ था।

सागरगांमिण, सागरगांमिणी, सागरगांमिन, सागरगांमिनी-सं. स्त्री.—[सं सागरगामिनी] १ गंगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरगा-सं. स्त्री.—१ गंगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरद—देखो 'सागिरद' (रू. भे.)

उ०—तठै पाटण मांहै पातरां रा पांचसै घर छै। तिण मांहै एक जांबवंती पात्र छै। तिण रै सागरद सहेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। माल री धणियांणी छै। तिण रै कोटवाळ रो वेटो आवै। तिण री सागरद सूं रमै।—जगदेव पंवार री बात

सागरदपेसौ—देखो 'सागिरदपेसौ' (रू. भे.)

सागरधज, सागरधुज, सागरध्वज-सं. पु. [सं. सागरध्वज] पांड्यनरेश का नाम जो अस्त्र विद्या मैं परशुराम, भीष्मादि का शिष्य था।

वि. वि.—इसके पिता व भाई को कृष्ण ने मारा था। महाभारत युद्ध में यह पांडव-पक्ष में था।

सागरनीमी सागरनेमि, सागरनेमी-सं. स्त्री. [सं. सागरनेमि] धरती, पृथ्वी। (अ. मा; नां मा; ह. नां. मा.)

सागरमति, सागरमती-सं. स्त्री. [सं. सागरमती] एक नदी का नाम जो अजमेर की परिक्रमा करती हुई गोविंदगढ़ के निकट सरस्वती से संगम करती हुई मारवाड़ में लूनी नाम से प्रख्यात होकर कच्छ की खाड़ी में गिरती है।

सागरमुदरा. सागरमुद्रा-सं. स्त्री. यौ. [सं. सागरमुद्रा] ध्यान लगाने या आराधना के समय धारण की जाने वाली एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखळा-सं. स्त्री. [सं. सागरमेखला] भूमि, पृथ्वी।

सागरवासी-वि. [सं. सागरवासिन्] समुद्र में या समुद्र के किनारे रहने वाला।

सं. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ जलचर।

३ वरुणदेव।

सागरांबरा-सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी, भूमि, धरती।

रू. भे.—सागरअंबेर।

सागरालय-सं. पु. [सं.] वरुणदेव का नामान्तर।

सागरी-सं. पु. [सं. सागरः] बहुत गहरा कुआ।

उ०—१ सगर खिणायौ सागरी, पय बंधायौ पाल। वित्त पायौ सरवेगडै, देवळ तणौ दुकाल।—पा. प्र.

उ०—२ सोभत था कोस २ दिखण मांहै, रनीया कुवा कनै। कसबा मांहै खड़ीजै। कोहर सागरी छै। माळी कलाळ खेत खड़ै। —नैणसी

वि वि.—कहा जाता है कि राजा सगर के साठ हजार पुत्र नित्य नया कुआ खोद कर पिता के पास जल पहुंचाया करते थे। ऐसा कुआ बहुत गहरा होता था तथा पानी भी खूब होता था। इसलिए गहरे कुए को भी प्रायः इसी नाम से पुकारते हैं।

सागरु, सागरू—देखो 'सागर' (रू. भे.)

उ०—करुण दया तणा सागरुजी, दियौ रे छ कायां नै अभयदांन।

[illegible] —जलवांणी

सागोदर-सं. पु. [सं.] सहोदर ।

सागोदरन-सं. पु.—एक डिंगल गीत [illegible] का प्रकार ।

उ०—१ [illegible] मिलिक साक । [illegible] महाई ।

—वसिलग

वि. वि.—देखो 'सगोदर' ।

रू. भे.—सागर ।

सागौन-सं. पु.—एक प्रसिद्ध वृक्ष का नाम जिसकी लकड़ी सुन्दर व मजबूत होती है ।

वि. वि.—यह वृक्ष हिमालय पर्वत पर सतलज से आसाम तक, मध्यभारत के पूर्वी भाग, पश्चिमी बंगाल की पहाड़ियों पर व छोटा नागपुर के जंगलों में पाया जाता है । इसकी लकड़ी का इमारती सामान बनाने में अधिक प्रयोग होता है ।

सागार-सं. पु. [सं. शाकाहार] उपवास के दिन अन्न एवं नमक रहित लिया जाने वाला फलाहार ।

सागारकम्मंतादोस, सागारयपंतादोस-सं. पु. यौ.—जैन साधु द्वारा गृहस्थ को काम करने का वचन देकर आहार आदि भोजन सामग्री लेने पर साधु को लगने वाला दोष । (जैन)

सागारियनिस्सीयादोस, सागारीयनिस्सीयादोस-सं. पु.—जैन साधु द्वारा गृहस्थी के सहारे से आहार, पानी आदि प्राप्त करने पर लगने वाला दोष । (जैन)

सागारी संथारो-सं. पु.—छूट सहित संथारा, रियायती संथारा ।

उ०—जद साधु बोल्या—सागारीसंथारा कर दे । इण उपसरग सूं बचो जद तो बात न्यारी, नहीं तो च्यारूं इ आहार न त्याग । इम सागारी संथारो कराय नवकार सिखायो च्यारूं सरणां दीधा परिणाम चोखा रखाया ।—भि. द्र.

सागि—देखो 'सागै' (रू. भे.)

उ०—रिखिनाथ बोल्यो, तुम दोनूं सागि जावो । पीहर मित्रसेणी दोउ, सागि गेह पावो ।—जि. व.

सागिरद-सं. पु. [फा. शागिर्द] १ कोई कला या विद्या सीखने वाला शिष्य, विद्यार्थी ।

उ०—१ साहजी रै चोरासी सागिरद ज्यां मांहि तारकीनजी सिरोमणि सारां सूं छोटा ।—बा. दा. ख्यात

उ०—२ सो भेद पाय साहजी सुलतान तारकीन नूं कह्यो—तुम हमको कहते सो हमकूं आपका सागिरद न किया तो आप हमारे सागिरद होव ।—बा. दा. ख्यात

रू. भे.—सागड़द, सागरद ।

सागिरदपेसौ-सं. पु. [फा. शागिर्दपेशः] सेवक, टहलुआ ।

उ०—१ सिलाहिसा री हिसाब कर, सागिरदपेसा री हिसाब करा, दरा देव, पारखी लिखाई । पछै दीवांण बांणियां री हिसाब कर, टरा देव उणसूं फारखती लिखाई ।—महाराजा पदमसिंघ री वात

उ०—२ दूसरै महीनां मांहो राव बीसळदै महलां सूं बाहर आयो । अमरावां, हजूरियां, ओमदारां, सागिरदपेसै सगळा आण मुजरो कियो । घोड़ा, हाथी, हवालदारां आय नजर गुदराया ।

—ढाढाळै सूर री वात

सागिरदी-सं. स्त्री. [सं. शागिर्दी] शागिर्द होने की अवस्था या भाव ।

सागी—देखो 'सागै' (रू. भे.)

उ०—१ भाली नुं कही, 'श्री कासुं विरतांत ?' तद भाली पर मा री वात सागी खींवसीजी नुं कहि दीवी—जिण तरै मा कोमण कराया, इण नदी में नाखिया, सो सरब मालम कीवी ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ कुसळसिंह कही थां सरीसा भाई राजपूत उणरै ही घणा छै । तिका सारा ही नुं छोड सागी आपही जै मोनूं बतळायो तिण सूं मोनूं ही जै जावणो छै ।—मारवाड़ रै अमरावां री वारता

उ०—३ पण जंवाई तो पिलांण ही हेठो नीं उतारै, सागी पगां ही पाछो मुड़णो चावै है । बेटी आंसूड़ा ढळकावै, मांनै कळाति देख'र कुढै है ।—दसदोख

उ०—४ हुं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण सुवास । भेद न राखइ हो भावइ कवियण भावसुं, 'विनयचंद' सुविलास ।—वि. कु.

उ०—५ सांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो । विनयचंद्र रागी हो लाल, जयो तुं वड़भागी हो ।—वि. कु.

उ०—६ पति रा पती है वडा, सास सुसरा दिक सारा । सागी सेवा पूज, धणी वाळी ही धारा ।—नारी सईकड़ो

उ०—७ चोथो रेढो फिरियो सो इसो आकरो आय फोज सूं भिळियो सो सागी कुंअर कन्हां गयो । घोड़ी सवारी में छै तिण रै तूंड री दीवी सो उलट कर सवार घोड़ै समेत गिरियो ।

—ढाढाळै सूर री वात

उ०—८ ऊंट जिका नह ढूकता, पांणी पर दिन च्यार । सागी सूमां राज में, तीनां चलतां त्यार ।—लू

उ०—९ तन तो भंवर वास वन वन का, मैं कोड़ा मद मागी । तो सूं लाग भया म्हैं तमगा, अब सागी का सागी ।—अनुभववांणी

उ०—१० रात पड़ची जद आंतरी, भूल्यो सारा दोस । पीळापण मुख रो गयो, सूरज सागी रोस ।—लू

सागीड़ी—देखो 'सागीड़ो' (रू. भे.)

उ०—१ विडत दिवत अर साधू साधू दुवै जद सागीड़ा पड़ै भगड़ै । पण कैदी भाई जेळ में कदै ही नीं रड़भड़ै ।—दसदोख

उ०—२ मनसा पूरण होगी जद तो केणो ही के ? ठाकर सागीड़ा भाळादोळा है, मन मांयली काढसी । रिगिया कांकरै अर कूंवै दांई कर देसी ।—दसदोख

उ०—३ बेमारी में वैद, हुवो सागीड़ो नारी । ओखद अर परहेज,

चिकित्सा कर परवारी।—नारी सईकड़ी

(स्त्री. सागीड़ी)

सागुटिश्रा, सागुटिया, सागुटीश्रा–सं. स्त्री.—एक जाति विशेष।

सागुटियौ, सागुटीश्रौ, सागुटीयौ–सं. पु.—सागुटिया जाति का व्यक्ति।

उ०—चूंनीवेचा चूडघर, श्रागरिया गमार। सागुटीश्रा संख्या नहीं, कंदोई कुण पार।—मा. कां. प्र.

सागेड़ौ, सागेड़ौ–वि. (स्त्री. सागेड़ी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

२ अपार, अत्यधिक।

उ०—दीवांणजी सोचश्रौ कै श्रबै खोड़ा वाळी बात री घांदौ मेट श्रजेज मन री रळी पूरां तौ श्राज रै पोहरा री सागेड़ौ श्रांणंद श्रावै। वै दूजी वेळा फेर खोड़ा मैं पग घाल्यौ।—फुलवाड़ी

३ अच्छा, बढ़िया, ठाटदार।

उ०—सेठांणी विचाळै ई बोली—वा, सागेड़ौ उच्छब मनीजग्यौ। थूकौ थांरा मूंडा सूं। जेड़ौ फूटरौ डोळ व्हैड़ी ई बात करी।

—फुलवाड़ी

४ रोचक, मनोरंजक।

उ०—सिनोमा? सिनोमा फेर कांई व्है? अचूंभा सूं चौधरण बोली। हाथ सूं कुचमाद करतौ चौधरी बोल्यौ - सिनोमा तौ सागेड़ौ घणौ व्है है श्रै गेली।—रातवासौ

५ स्वादिष्ट, जायकेदार।

ज्यूं—दाळ सागेड़ी बणी है।

६ लाभप्रद, हितकर।

ज्यूं—वेदराजजी री दवा सागेड़ी देवै है।

७ मजबूत।

उ०—घर सूं सागेड़ौ नोड़ियौ काढनै चौधरी घड़ी दिन चढ्यां वहीर व्हियौ। श्रणूं तौ खाथौ खाथौ हालियौ। सिंझ्या रा कड़कड़ाट करती भूख लागी।—फुलवाड़ी

८ सुन्दर, आकर्षक।

९ खूब, अच्छी तरह।

उ०—१ कोई श्राध घडी रै उपरांत नाड़ देखतौ-देखतौ वेदराज डोकरिया रा माथा मैं श्रंवेस लिखरा री जंतराई। पछै हाथ मांयला चिटिया सूं सागेड़ौ भांग्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ कारण कै चोवटियौ तौ दौ-तीन वार गांम मैं वाड़ कूदतौ पकड़ीज्यौ जद कांनजी इण नै भाल नै सागेड़ौ बजायौ हौ श्रर पुजारीजी महाराज ई कई वार लपेटा मैं श्राया हा श्रर दांतां तिरणा लेय नैं छूटा हा।—श्रमरचूंनड़ी

रू. भे.—सागीड़ौ, सागोड़ौ।

सागेजा–सं. स्त्री.—भाटी वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

सागेजौ–सं. पु.—भाटी वंश की 'सागेजा' शाखा का व्यक्ति।

सागेस्वर–सं. पु. [सं. सागेश्वर] एक तीर्थस्थान का नाम।

सागै–वि. (स्त्री. सागण) १ वास्तविक, असली।

उ०—प्रेमागमन रांमरस पूरण, सागै सबद सुणावै। सनमुख हुय सरधा सूं सुमरण, सासौसास समावै।—ऊ. का.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—सांम्रत मिळ्यां मिळै सुख सागै, धुनि मैं ध्यांन धरावै। कुलवै लगै गुरां की कूंचो, खट ताळा खुल जावै।—ऊ. का.

३ पूर्ववत् वही।

४ साक्षात, हूबहू।

५ साथ।

उ०—१ वौ घोड़ां रै पाखती श्रायौ तौ च्यारूं सिरदार श्रेकण सागै भाला धकै करचा। बोल्या—श्रागै श्रेक पांवडौ ई दियौ तौ भालां मैं पोय न्हाकांला।—फुलवाड़ी

उ०—२ चांदणी रै सागै चांद ठारी वरसावणी चालू कर दी। मटकियां मैं पांणी जम जातौ। पांनां माथै पड़ी श्रोस री कणीरियौ बण जातौ।—फुलवाड़ी

सर्व.—वही, उसी।

क्रि. वि.—१ साथ में, संग में।

उ०—१ भोगै सागै भांम, श्रम्रत लागै ऊंमरा। श्रकबर तळ श्रारांम, पेखै जहर 'प्रतापसी'।—दुरसौ श्राढौ

उ०—२ वा रूस'र कमरै मांय चली गई। सागै खाणौ भी कोनी खायौ। खाणौ तौ पछै छोटा ठाकुर कुंवरांणी श्रापरै सागै खायौ हौ।—तिरसंकू

२ साक्षात, वास्तव में।

३ मार्फत।

उ०—म्हारै सागै श्रौ भरोसौ भी दिरवायौ कै श्रब लीना बैजू रै सागै सुच्छंद घूम-फिर सकै है।—तिरसंकू

रू. भे.—सागि, सागी।

सागौ–सं. पु.—साथ, संग।

उ०—श्रौ तौ थै चार सरदार कजियौ हाथ संभाळ खड़ा रहौ छौ। तिण सूं थां सांमळ ऊभौ रहस्यूं नहीं तौ पण मोसूं इण खाविंद रो सागो छूटै।—श्रमरसिंह री बात

रू. भे.—सांगौ।

सागौन–सं. पु.—शालवृक्ष या उक्त वृक्ष की लकड़ी जो बहुत मजबूत व सुन्दर होती है।

सागौसाग–वि.—वास्तविक, हूबहू।

साघणौ—देखो 'सांघणौ' (रू. भे.)

उ०—तिसै भौंवैजी रांम रांम कहि नै कह्यौ, म्हां चाकर ऊपरै इतरी इतराजी फुरमाई, हूं तौ निपट ऊंडौ, साघणौ जमारीक भेळा रहण रौ प्यार करण मतूं छूं, मोनै चाकर करौ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

साड़–सं. पु.—सड़ा हुश्रा पदार्थ या गन्दगी।

उ०—रात दिन पडी-पड़ी खल्लू-खल्लू करै। थूक-थूक नैं सगळौ

[illegible] निकळै।

—[illegible]

[illegible]—सं. पु. [सं. [illegible]] एक [illegible] राग विशेष जिसमें [illegible] स्वर [illegible]।

[illegible], [illegible]-सं. पु.—१ जाट, विश्नोई, कुम्हार आदि जातियों [illegible] के [illegible] 'बरी' के साथ दिया जाने वाला मोटे [illegible] जो विवाहित लड़की शादी के बाद साधारण दिनों [illegible]। [illegible] यह परिधान नहीं पहनती।

(बीकानेर)

२ देखो '[illegible]' (अल्पा; रू. भे.)

साडी, साड़ी-सं. स्त्री. [सं. शाटिका] १ स्त्रियों के पहनने-ओढ़ने की धोती।

उ०—१ [illegible] देखतां। साड़ी पहला [illegible]।—[illegible] कवियो

उ०—२ [illegible] मोल, पाव [illegible] आयो नहीं। साड़ो रो [illegible] मोल विरुद रो [illegible]।—[illegible] कवियो

२ [illegible] ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

३ [illegible] (मवाली) के मध्य भाग में लपेटे हुए सूत के धागे।

(बुनकर)

४ [illegible] द्वारा विवाह के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक [illegible] विशेष।

(मि. साड़ीचंवरी)

[सं. [illegible]] ५ जैन साध्वियों के पहनने का वस्त्र विशेष, [illegible]।

६ देखो 'साड़ौ' (अल्पा; रू. भे.)

साड़ो, साड़ौ-सं. पु.—१ प्रायः जाट, कुम्हार आदि जातियों की स्त्रियों द्वारा [illegible] के स्थान पर पहनने का सूती या ऊनी घाघरा विशेष।

उ०—[illegible] में साड़ो [illegible], [illegible] लटकंतो साड़ो फूंदाळो। [illegible] पैरै, सूरत [illegible] सी बन [illegible] वैरै।

—ठ. का.

२ [illegible]।

[illegible]; रू. भे.—साड़ियो, साड़ो, साडलो।

साच, साचइ-सं. पु.—सारवान या पौष्टिक वस्तु।

[illegible] वि.—१ सचमुच।

उ०—[illegible], नटियो साच निराट। साहै हठ [illegible] '[illegible]', [illegible] पाट।—वं. भा.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] सुवद [illegible] री बात तो व्हैगी साच अर [illegible] री बात व्हैगी [illegible]। किणी दूजा रै मूंडागै [illegible] बात करतो नहीं, [illegible]।—[illegible]

उ०—२ [illegible] बांध्यो, [illegible] कानीं गां वेद प्रांधो। अठा ताईंरर पहिलड़ो साच कीधो, अठा [illegible] सिरै कोर कीधो।—पो. ग्रं.

मुहा.—१. साच कहणी सुनी रहणी=सत्य बोलने वाला हमेशा सुखी रहता है। २. साच नै आंच कोनी=सत्यभाषी को कोई डर नहीं होता है। ३. साच कवै जणी नां ई माथै में देवै=खरी एवं सही कहने पर सभी नाराज होते हैं। ४. साच कूड़ में चार आंगळ रो फरक है=आंखों से देखी हुई बात सत्य एवं कानों से सुनी हुई बात प्रायः झूठी हो सकती है।

साचउ—देखो 'साचो' (रू. भे.)

उ०—घणी मलांमण तेहनइ कही, तूं साचउ मित्र माहरउ सही।

—ढो. मा.

साचक—विवाह की एक रस्म या प्रथा जिसके अनुसार वर पक्ष द्वारा कन्या पक्ष के यहां मेंहदी, मेवे फल आदि भेजे जाते हैं।

(मुसलमान)

साचण-सं. पु.—सत्य।

साचमई-वि. स्त्री.—सत्यमयी।

उ०—जय जय राघव देत जई, महपत सूरत साचमई। हरण अनेक विघन हरी, कमळ करं प्रतपाळ करी।—र. ज. प्र.

साचमाच-क्रि. वि.—सचमुच में, वास्तव में।

रू. भे.—सचमुच।

साचरी-सं. स्त्री.—भैरव राग की पत्नी एक रागिनी। (संगीत)

साचलो, साचल्लो—देखो 'साचो' (रू. भे.)

उ०—तो उण सुख सूं थारी आंख्यां बंद क्यूं होयगी। साचल्लो सुख जद सांपरत थारी बांह्यां मांय परस रो आनंद देय रयो हो तो थारो मन किण नैं ढूंढ रयो हो।—तिरसंकू

(स्त्री. साचली, साचल्ली)

साचवणी, साचवबो-क्रि. स.—१ मारना, पीटना, प्रहार करना।

उ०—१ जमडाढां साचवै हकालै वळा जोध, नीहसै बांणगा वाढ गाजियो निहाव। अथायो उमेद रोळै गाढ थंभ रहै ऊभो, रोळै धार हालियो गाढै माल्ह राव।—हरदांन भादो

उ०—२ वह छूटै कँवर सोक नलीसर, सींधणि संघर साचवियं। वुधि जांण धराहर सालुळि, मेहर मेव महाभर मानवियं।

—गु. रू. बं.

२ धारण करना।

उ०—१ इक नीरोगी अंग, वळै गुण बुद्धि वखांणी। वळि साचविजै विनय, अधिक गुण उत्तम आंणी।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ ....इसी परि जलमारग स्थलमारग तणउ विहुं स्थांनकि नाव्या व्यवसाय व्यवहारिए वचन प्रतिस्टाविउं कीजइ, दांणीसिउ पाठि सत्रसूत्र साचवीइ, पाठ वणीया पाठवी आपतरा मार्गीई।—व. स.

३ सुरक्षित रखना।

उ०—वाहुक वलतु वांणी वदि, गद गद कंठ दुख अति रदि। सती साचवि सील सुजात, कस्ट पडि करि सी वात।—नळाख्यांन

४ करना।

उ०—सूध मन सेव गुरुदेव री साचवै, सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धंत। दिये बहुदांन मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित संघ रौ करौ भगवंत।—ध. व. ग्रं.

५ पालन करना, मानना।

उ०—१ ध्यांन जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे खट करम। ईति उपद्रव दहवटै जौ, जेम छाया घन करम।—वि. कु.

उ०—२ दिली रा भर भारथ भुजै दिश्रा। कमधज मुदै किश्रा। वेद सासत्र वतोया सु श्रवसांण आया। तजेणि खेतधारा तीरथ धणी री कांम खिश्री री धरम साचवीजै।—र. वचनिका

साचवणहार, हारौ (हारी), साचवणियौ—वि०।

साचविश्रोड़ौ, साचवियोड़ौ, साचव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साचवीजणौ, साचवीजबौ—कर्म वा०।

साचवियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, पीटा हुआ, प्रहार किया हुआ. २ धारण किया हुआ. ३ सुरक्षित रखा हुआ. ४ किया हुआ. ५ पालन किया हुआ, माना हुआ।

(स्त्री. साचवियोड़ी)

साचांणी, सा्चांणी—क्रि. वि.—सचमुच में, वास्तव में।

उ०—१ क्यूं कै भागणौ आपरौ सुहावै नहीं जौ आप कहौ साचांणी कायर वणूं तौ वै दिन दोय दिन म्हनै पीहर मेल दौ।—वी. स. टी.

उ०—२ चाकरी पर जावती बखत सोढी मोटी-मोटी आंख्यां मैं आंसूड़ा भर'र कह्यौ हौ पाछा वेगा पधारज्यौ। अर ठाकर साचांणी पनरवै दिन ईज चाकरी छोड'र घरां आयग्यौ हौ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सचांणी, सांचांणी।

साची, सा्ची—वि. स्त्री.—१ शुद्ध, विशुद्ध।

ज्यूं—साची चीज।

२ पवित्र, निष्कपट।

ज्यूं—साची सेवा।

३ पतिव्रता, निष्कलंक।

४ वढ़िया, श्रेष्ठ।

ज्यूं—साची किताब।

रू. भे.—सच्ची।

साचूं—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—प्रसन्न करीनि मन आपणूं, सुणौ युधिस्ठिर साचूं। सुख दुख देहि साथि सरज्यां छि, चित न कीजि काचूं।—नळाख्यांन

साचेलौ, सा्चेलौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—१ अबूझ आदमी आपरी वै-अकली रै कारण दुख अर चिंता री वात नै ई साचेलौ सुख जांणै।—फुलवाड़ी

उ०—२ कोई बाळलियां तौ घड़ीजै भुरजाळा रै साचैला हेमरी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—३ जलमणा मैं तौ दौ बरसां री लोड़-बड़ाई, पण मरिया साथै। साचेला हित्यारा झूठ बोल नै आज दिन तांई मौज मांणी है। बेटां रै मरियां पछै नित अेक वेळा तौ म्हनै आ बात सुणणी ई पड़ै।—फुलवाड़ी

(स्त्री. साचेली, सा्चेली)

साचोड़ौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—सीसड़ी मूमल री लूंबड़ियौ नारेळ, हांजी रे वैणी तौ मूमल री बासग नाग ज्यूं म्हारी साचोड़ी ए मूमल हाली नीं अमरांणै रै देस।—लो. गी.

(स्त्री. साचोड़ी)

साचोरा—सं. पु.—१ ब्राह्मणों की एक जाति।

२ राजपूतों में चौहान वंश की एक शाखा।

रू. भे.—साचौरा।

साचोरी—सं. स्त्री.—गायों की एक नस्ल जो राजस्थान के साचोर इलाके में होती है।

वि.—साचोर का, साचोर सम्बन्धी।

साचोरौ—सं. पु. (स्त्री. साचोरी) १ साचोरा जाति का ब्राह्मण।

२ चौहानवंशीय साचोरी शाखा का व्यक्ति।

रू. भे.—साचौरौ।

साचौ, सा्चौ—वि. [स. सत्य] (स्त्री. साची) १ सत्य, सच्च, यथार्थ।

२ कर्त्तव्यपरायण।

उ०—ना कीजौ सैणां नरां, काचौ बीजौ कांम। राखै लाजा संत री, राजा साचौ रांम।—र. ज. प्र.

३ सत्यवादी।

उ०—साचा हरचंद अंबरीख गा उतरै पारा।—केसोदास गाडण

४ दृढ़, पक्का, अटल।

उ०—धड़ सीस पग धरि खग धरै, कमधज्ज साचौ पण करै। तन पड़ै दुं हुवै खळ तठै, जळ दीध मोकल नूं जठै।—सू. प्र.

५ सही, वास्तविक।

उ०—१ सौ सवद सतगुर कह्या, सोई साचौ वाच। जनहरिया लीजै नहीं, कंचन बदळै काच।—अनुभववांणी

उ०—२ लक्खी विणजारौ तौ वां गिळगिचियां रौ साचौ मोल जांणतौ हौ। दाळद नै पोटावण में कीं जोर पड़्यौ नीं। जवार री सौ गूंणतियां साटै काढ्योड़ा सगळा गिळगिचिया, वच्योड़ा मतीरा अर सगळी काकड़ियां लक्खी विणजारा नै राजी-राजी संभळाय दी।—फुलवाड़ी

६ घनिष्ठ।

उ०—साचौ मित सचेत, कयौ कांम न करै किसौ। हरि अरजन रै हेत, रथ कर हांक्यौ राजिया।—किरपारांम

७ जिसमें कोई कसर या खराबी न हो, निर्दोष, दोषरहित।

उ०—१ [illegible] री प्रीत तीवै [illegible] साची प्रीत [illegible] —[illegible]

उ०—२ [illegible], मानै मन सूं धारि। [illegible] —हनुमतवांणी

८ शुद्ध, पवित्र।

ज्यूं—[illegible] री साची दोहंता।

९ [illegible]।

ज्यूं—[illegible] री सांची दोड़ में साची दोड़ी।

१० बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर।

ज्यूं—या चीज तौ साची है।

११ पक्का, दृढ़, मजबूत, प्रमाणी।

उ०—कोई बाळकां नी पराबी साचोड़ा हेम री म्हारा लोटण [illegible]।—[illegible]

१२ [illegible] मजबूत।

ज्यूं—साचो किनो।

१३ कुशल, निपुण, दक्ष।

१४ सही, ठीक।

उ०—जनम न हवो जोधपुर, 'पातल' समर उछाह। अब साचो कुळ समझणो, रजपुती री राह।—कविराजा मुरारीदांन

१५ साधन।

उ०—हे गढ़ की हिरवांगु में, समवड़ तौ समराय। पाळण गजन 'प्रतापसी', परधर साचो पाय।—मेहरदांन

१६ सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।

रू. भे.—सचाण, सचांन, सचाणो, सच्चो, सांचलो, सांचिलो, सांचेरो, साचोड़ो, सांचो, साचउ, साचवो, साचल्लो, साचूं, सा[illegible]रो, साचोड़ो।

साचोट-प स्त्री.—दक्षता, निपुणता।

उ०—[illegible] पठांणां रै बेटां मायं तिरंदाजी सीखै। सावंदाज [illegible] री साचोट सराई सीखै, सो कागड़ो तीर सूं पांन मैं [illegible] रै आवरै आदमी जिनावर उठाय लेतो नै पिउसंधी हजार [illegible] चोट करै, तिका जांणीजै पांवड़ां दस सूं कीधी।

—जगड़ा मुषड़ा भाटी री वात

साचोरा—देखो 'साचोरा' (रू. भे.)

उ०—[illegible] रा मनोरथ श्रीमहाराज पूरै। अभिप्राति ऊबरै। [illegible] रा मूंहड़ा आगै लड़ा। हूक हूक टूर पड़ां। इनरा माहै साचोरा [illegible]। —र. वचनिका

साचोरो—देखो 'साचोरो' (रू. भे.)

(स्त्री. साचोरी)

साछ्टर, साछर—देखो 'साछर' (रू. भे.)

उ०—सुसील सम्र साचद्दर सुति प्रमांन सोहनें।—ऊ. का.

साज, साज-सं. [फा. साज] १ उपकरण, सामान।

उ०—साज लोहा रा सांतरा, ताळा कर तयार। जिसवो सारो कांम रो, लीजै इसो लवार।—रमणप्रकास

ज्यूं—हळ रा साज, कुळी रा साज, लड़ाई रा साज, संगीत रा साज आदि।

२ वह साधन, सामग्री या उपकरण जिन्हें किसी वस्तु को पूर्णता देने के लिए उससे सम्बद्ध किये जाते हैं।

उ०—१ जवह(र) कै साज सूं जमदढ राग कसी। बुलगार की उदागर चौतरफ कूं बसी।—सू. प्र.

उ०—२ घणी सोनै रूपै मैं जड़ी थकी, घणी बुलगार रै साज मैं लपेटी थकी उण होज ढालां रा गड़गदां मैं बेलजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—३ भीड़ ससत्र भळहळां, साज बुलगार सकाजा। भ्राण वाहर अभंग, मसत गज महाराजा।—सू. प्र.

३ सामान, सामग्री, साधन।

उ०—१ साचा सदगुरु जे मिळै, सब साज संवारै। दादू नाव चढाय कर, लै पार उतारै।—दादूवांणी

उ०—२ गळ मुंडमाळ मसांण ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभाव सूं, संभू अपावन साज।—बां. दा.

उ०—३ लाजै पीहर सासरो, श्रौर लाजै म्हारो साज। गोपीचंदण तुलसी की माळा, भीख मांगण रो साज।—मीरां

उ०—४ इसा इसा अंधविसवासां रा कांड देस-देस'र म्हारै तो डील रा रूंकोटा खड़ा हुय ज्यावै है कै—जको मायड़ जात आपरै तप त्याग रै बळ-बूतै माथै फूमरै भूंगड़ै मैं गुरग रा साज सजा देवै है।—दसदोख

५ हाथी की अंबारी तथा घोड़े व ऊंट के चारजामे का सामान।

उ०—१ तदि वर्ण साज गयंदां तुरां वीर अंबाळा द्रीह वजि सुरतांण साह मुदफर दिसी, सूर चढै दळ पूरि सजि।—सू. प्र.

उ०—२ भळहळ साजां गज भिड़ज, सफा इका सुखपाळ। घोड़-वहळ खासा घणा, दरगह मुहर दुझाळ।—सू. प्र.

उ०—३ करि पोसाक ससत्र कसि, साजां तुरंग सिगार। इम चढि चढि भड़ आविया, दळ वह राजदुवार।—सू. प्र.

उ०—४ उब अठै सरळ तौ तयारी करण लागा अर अठै कुंवरसी घोड़ां रा साज संभाळ नवा कराया। घोड़ां सारां नुं रातब कर दीयो, ताजा करो। हथियार सारा सांतरा करण लागा।

—कुंवरसी सांखला री वारता

६ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ जकड़ि छुरा खंजरा, कसै वह साज बंदूकां। ढळक अमी-बंध ढाल, अरण सुप वखिक अचूकां।—सू. प्र.

उ०—२ बुगलार भीड़ वाढो बहसि, जमदढ सग साजां जकड़ि।

भूयांण कसै मुह मूंछ भिड़ि, पांण तांण सांकळ पकड़ि।—सू. प्र.

७ युद्ध सामग्री।

उ०—पखरैतां ध्वज पूर, सिलह ससत्रां रिण साजा। उभै सहंस ग्रापरा, साथि सांमंत सकाजा।—सू. प्र.

८ घोड़े की काठी, जीन।

उ०—१ लोह डाच धरि लीण, मळै हाथळ दुसमाळां। फिरंग साज झड़फियौ, पंडव छोडियां ग्रपालां।—सू. प्र.

उ०—२ तहदार गादियां धरै तांम, जग जोतिम दाखल जूळ जांम। कळवूत रजत सोव्रन सकाज, सिकळात मुखम्मल फिरंग साज।

—सू. प्र.

९ सजावट, सजाने के उपकरण।

उ०—१ इम निसि सुकळ वाग व्रप ग्राए, विमळ चंद्रका साज वणाए।—सू. प्र.

उ०—२ सभै तोरण चित्र साजा, जैत ग्रागम महाराजा।

—सू. प्र.

१० शृंगार के उपकरण।

उ०—ग्राठम हुग्रा ज ग्राठ दिन, पिव बिन सूना साज। ग्रांण हुवै जै पाहुंणा, नजर कळेजौ ग्राज।—ग्रग्यात

११ वेशभूषा, पहनावा।

उ०—१ लाजै मीरां पीहर सासरौ, ग्रौर लाजै म्हारौ साज। गोपीचंदण तुलसी की माळा, भीख मांगण री साज।—मीरां

उ०—२ तुररौस धारि ग्रोरं तुरंग, हुई सेल खागां हणै। सुभराज करूं महाराज सूं, वीर साज इण विध वणै।—सू. प्र.

१२ ग्राभूषण, गहने। (डिं. को.)

१३ चमड़ा, चर्म।

१४ वाद्य यन्त्र, बाजा।

उ०—गीत, संगीत, ताळबंध, म्रदंग, वीणा, सारंगी, तंबूरा रा साज लागि नें रहिग्रा छै। इण भांति री ग्राखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणि सोलै सिणगार किग्रां थकां कांन रा झांझर वाजि नै रहिग्रा छै।—रा. सा. सं.

१५ व्यवस्था, प्रबन्ध।

१६ ग्राधार, ग्रवलंब।

उ०—रावळि होय कै किन रै जाऊं, तुम ही हिवड़ा को साज। मीरां कै प्रभू ग्रौर न कोई, राखौ ग्रब की लाज।—मीरां

१७ कार्य, काम।

उ०—पड़ती सांझ दिवलौ संजोयौ, सह कर राख्या छै साज। रसीलाराज जोरी जुगळ किसोर की, लिखी छै विधाता लिलाट।

—रसीलै राज रा गीत

१८ तैयारी।

उ०—तेड्या प्रथ्वीपति तै घणा, ग्राव्या साज करी ग्रापणा। राजि राजांनी मंडली, मुख जांणै उडुमाला म्यळी।—नळाख्यांन

वि.—बनाने वाला, ठीक करने वाला।

ज्यूं—घड़ीसाज, जिल्दसाज।

(यौ. साजवाज)

रू. भे.—संज, संझ, सहाज, साजि, साझ।

साजज—देखो 'सायुज्य' (रू. भे.)

उ०—हरि कौ भै उर धारि कै, भगती भजन कर सोय। सालोक साजज सारूप, सोई संमीपत्य होय।—परमानंद वणियाळ

साजण—देखो 'सज्जण' (रू. भे.)

उ०—१ तेता मारू मांही गुण, जेता तारा ग्रभ्भ। उज्जळ चित्ता साजणां, कहि क्यउं दाखउ सभ्भ।—ढो. मा.

उ०—२ कूंझड़ियां करवळ कियउ, घरि पाछिलै वणेहि। सूती साजण संभरया, द्रह भरिया नयणेहि।—ढो. मा.

साजणियौ—देखो 'सज्जण' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—काळी पीळी बादळी, वरसत भीज्यौ गात। ताजणिया लागा तिका, साजणिया बिन साथ।—ग्रग्यात

साजणी-सं. स्त्री.—१ बढई का एक ग्रौजार जिससे वह लकड़ी की समतलता देखता है।

२ दीवार बनाते समय उसकी सीधाई तथा समानता देखने का एक उपकरण विशेष।

रू. भे.—साधनी।

साजणौ—देखो 'साझणौ' (रू. भे.)

साजणौ, साजबौ-क्रि. स.—१ मारना, संहार करना।

उ०—१ कीधौ तैं कोप साजियौ 'कांनौ', रिड़मल नै दीधौ तैं राज। चारणवाड़ां तणी चारणी, लोक मही तूं राखै लाज।

—बां. दा.

उ०—२ सैद मुगळ साजतां, ग्रमी महमंद वचाए। रांण मंत्री कर ग्ररज दरस वड प्राग कराए।—सू. प्र.

२ तैयार करना, संवारना।

३ परिवर्तित करना।

उ०—बिरछां चढ किरकांट बिराजै, स्याह सफेद लाल रंग साजै। बिजनस वाव सूरियौ वाजै, घड़ी पलक मांय मेहा गाजै।

—वर्षा विज्ञान

४ धारण करना।

उ०—सौ थिर राखणा काज, क भूसण साजिया। जड़िया रच्छ्यां जंत्र, मनोज मुनी दिया।—बां. दा.

५ ग्रस्त्र-शस्त्र धारण करना।

उ०—१ सादूळ सीह गाजइ, कायर ना हिया भाजई। सूरा हथियार साजइ, उद्दंड वाय वाजइ।—सभा

उ०—२ साजै सार छत्रीस सिपाई, त्यार हुया रण मंडण ताई। पाखर तुरां गयंदां पाखर, भूम परां सम जांणै भाखर।—रा. रू.

६ व्यवस्था करना, देना। (रुपये)

उ०—[illegible] हाथ लगाना [illegible] पण [illegible]। [illegible] बाळा कैता हा [illegible]। पन मोती ऊपर [illegible] —[illegible]

६ [illegible]।

उ०—[illegible] साजी, सारी [illegible] घर में [illegible]। [illegible] नै हुकमी निवनाया, दासी वेस्यां रा [illegible]।—[illegible]

७ [illegible]।

उ०—[illegible] जाग्यो। पोहरा री बारी [illegible]। [illegible] मौत घर उणरा रगत सूं बिरचा ओदयां नीं [illegible], उण वास्तै [illegible] तरफै सगळी बात दतावण री [illegible]।—फुलवाड़ी

८ करना।

उ०—१ [illegible] 'दइन' बोलियो, प्रगन पोरस ऊपाड़े। साजूं जुध [illegible], [illegible]।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] कंवर रै माथै न्यारी रैवण लागी। [illegible] साजन [illegible] दावड़ी ही।—फुलवाड़ी

मुहा०—[illegible] साजणौ—सेवा करना, कार्य करना।

९ [illegible] करना, विचार बनाना।

१० मारना, पीटना।

उदा०—[illegible] नै दो-तीनेक थप्पड़ साज दीज्यै।

११ सजा देना, दण्डित करना।

१२ प्राप्त करना।

उ०—[illegible] पोढ़ियो, काळो भमां कहाय। जस जोबण माथै 'ऊगो', [illegible] फौज [illegible]।—हा. भा.

१३ बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

उ०—[illegible] निज वावरै, ज्वर लियो जम जीत।

—नारायणसिंह सांदू

मुहा.—[illegible] साजणौ—बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

१४ [illegible] का [illegible] करना।

उदा.—[illegible] साजणौ—[illegible] का प्रयास करना।

१५ [illegible] करना।

१६ बनाना, [illegible]।

उदा.—[illegible] कांम साज्या है।

१७ [illegible], [illegible]।

उ०—[illegible] दिन वांनै नवी [illegible] कुवद सूझी। [illegible] सूं [illegible] रा घड़ां माथै [illegible] नै [illegible] साजना।—फुलवाड़ी

१८ [illegible] करना।

उ०—[illegible] मति [illegible]। [illegible] साह

तैमूर, आइ दिल्ली जय आग्रह।—वं. भा.

क्रि. अ.—१६ उपस्थित होना, हाजिर होना।

उ०—भगतां री भाजी संगत साजी, बाबाजी बोलंदा है। रथ में सूं राळी बेवण वाळी, हाळी रथ हाकंदा है।—ऊ. का.

ज्यूं – म्हनैं घणां व्याव साजणा है।

मुहा.—मौरत साजणौ—अवसर पर उपस्थित होना।

२० होना।

२१ सुसज्जित होना।

साजणहार, हारौ (हारी), साजणियौ—वि०।

साजिओड़ौ, साजियोड़ौ, साज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साजीजणौ, साजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सजणौ, सजबौ, सज्जणौ, सज्जबौ, सझणौ, सझबौ, साजवणौ, साजवबौ, साझणौ, साझबौ—रू० भे०।

साजत, साजति, साजति–सं. स्त्री.—१ सजावट, सज्जा।

उ०—तिसै दासी फूल लेती-लेती असवार दीठौ। घोड़ौ रुपया हजार दो-तीन रै मोल रौ दीसै छै। पिलांण साजत ऊंची दीठी।

—जगदेव पंवार री वात

२ तैयारी।

उ०—१ तुंजियां जेब कीजै तई, घांनखी चिल्ला धरै। इण भांत थटां 'अभमाल' रा, कुळ छतीस साजत करै।—सू. प्र.

उ०—२ वह कांमेतियां जी हुकम सह कारखांना होय, अवर जेतियां जी साजत कीजियौ सहकोय।—र. रू.

रू. भे.—सांजत, सांजति, सांजती।

साजन—देखो 'सज्जण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ साजन साजन हूं करूं, साजन जीव जड़ीह। साजन लिखलूं चुड़लै, निरखूं घड़ी घड़ीह।—अग्यात

उ०—२ साजन सेरी सांकड़ी, सांम्हा मिळिया सैण। वतळायां बोल्या नहीं, नीचा करग्या नैण।—अग्यात

साजनियौ—देखो 'सज्जण' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ साजनिया थांसू लगी या चटकीली आंख। निस दिन पंथ निहारतां, रही झरोखै झांख।—अग्यात

उ०—२ आ नित दीसै साजना, रीस रखूं की रोक। साजनिया मानै नहीं, सानै ल्होड़ी सोक।—अग्यात

साजबाज–सं. पु. यौ.—१ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ सकै समांमा सूरवै, साजबाज संग्रांम। आपो मेटै हरि भजै, हरीया भेटै रांम।—अनुभववांणी

उ०—२ रागरंग हुवै छै, छड़बड़ा विलवत रा साथ सुं बैठा छै तिण समै चाचो मेर आपरो साथ लै साजबाज सुं चढ़ीया।

—राव रिणमल री वात

२ संगीत के वाद्ययंत्र।

३ सजावट की सामग्री।

४ हाथी की अंबारी तथा घोड़े, ऊंट आदि के चारजामे के उप-करण।

५ ठाट-बाट, वैभव।

साजवणौ—देखो 'साभणौ' (रू. भे.)

साजवणौ, साजववौ—देखो 'साजणौ, साजवौ' (रू. भे.)

साजवणहार, हारौ (हारी), साजवणियौ—वि०।

साजविप्रोड़ौ, साजवियोड़ौ, साजव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साजवीजणौ, साजवीजवौ—कर्म वा०।

साजवियोड़ौ—देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साजवियोड़ी)

साजस—देखो 'साजिस' (रू. भे.)

उ०—१ जै खोजौ नाजर देख लेसी तौ बादसाह नूं कर देसी तौ फिसाद होयसी। बादसाहां रा मांणस देखीजै छै इसी साजस कीवी।—जलाल बूबना री वात

उ०—२ पछै पताई रावळ रै साळौ सइयौ बांकलियौ तिकै रौ वडौ मांमलौ वडौ इतवार गढ री कूंची वस तद पातसाह सूं साजस कीवी जू मनैं सगळा ऊपर करौ कूंची देवौ।

—पताइ रावळ री बात

उ०—३ बेटौ मनोहरदास रै न थौ। तरै राजलोग सूं साजस करनै, कै भाटी पण भीर करनै एक वार टीकौ लियौ। सु सीहड़ रुघनाथ भांणोत तिण वेळा हाजर न हुंतौ।—नैणसी

उ०—४ सांमधरम्मी सेव मैं, कै मेवासां प्रांण। केतां साजस साह सूं, राजस रांणौ रांण।—रा. रू.

साजसींग—सं. पु. यौ.—बंदूक चलाने के काम आने वाली सामग्री, उप-करण।

साजा—सं. पु.—चन्द्र, चांद। (डिं. को.)

साजांणी, सा'जांणी, साजांनी—सं. पु.—बादशाह द्वारा चलाया गया एक तोल विशेष।

रू. भे.—साहजांनी।

साजादौ सा'जादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ, वेगनां धसै पड़दै विचाळ।—वि. सं.

साजाबोल—सं. पु यौ.—अपने वचन का सच्चा, सत्यवादी।

उ०—किसनसिंघ नाथावत पोकर की राड़, 'राजड़' सूं आगै वगग नग्गी खाग भाड़। चंद कै गरव राखै सूर चंद साखी, राजा छळ कांम आया साजाबोल साखी।—रा. रू.

साजारी—सं. स्त्री.—रहट के पानी को फैलने या छितर जाने से रोकने के लिए लकड़ी या पत्थर की आड़।

साजि—देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—नितु नितु नवला सांढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़ण काजि।—ढो. मा.

साजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ तैयार किया हुआ, संवारा हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ अस्त्र-शस्त्र धारण किया हुआ. ५ व्यवस्था किया हुआ. ६ दिया हुआ. ७ निकाला हुआ. ८ किया हुआ. ९ विचार किया हुआ, विचार बनाया हुआ. १० मारा हुआ, पीटा हुआ. ११ सजा दिया हुआ, दण्डित किया हुआ. १२ प्राप्त किया हुआ. १३ बदला लिया हुआ, प्रतिशोध लिया हुआ. १४ दम या सांस रोकने का प्रयास किया हुआ. १५ योगसाधना किया हुआ. १६ बनाया हुआ, निकाला हुआ. १७ साधा हुआ, लगाया हुआ. १८ तैयार किया हुआ. १९ उप-स्थित हुवा हुआ, हाजर हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ सुसज्जित हुवा हुआ।

(स्त्री. साजियोड़ी)

साजिस—सं. स्त्री. [फा. साजिश] १ षड़यन्त्र, कुचक्र।

२ विचार-विमर्श।

३ मेल-मिलाप।

रू. भे.—साजस, स्याजस।

साजी, साज़ी—सं. स्त्री. [सं. सर्जिका] १ जवासे से मिलता-जुलता कुछ बड़ा और बिना कांटों का क्षुप या पौधा विशेष।

उ०—जिकौ थै किसा नहीं जांणौ हौ फोग है जिती धरती थांरी है, अरु साजी वा लई है जिती धरती म्हारी है, तथा इण सोतर री धरती मैं आगै हुवा है तिणरा नांम कह्या।—द दा.

२ एक प्रकार का क्षार विशेष जो अधिकतर पापड़ बनाने के काम आता है एवं यह औषधि में भी काम आता है।

वि. वि.—इसका एक क्षुप होता है जिसकी टहनियां कोमल होती है, पत्ते छोटे-छोटे और तिकोने होते हैं। इसी क्षुप के डंठलों व पत्तों को एक खड्डे में जला कर दबा दिया जाता है इससे जो कोयले बनते हैं वह सज्जी या साजी होती है। इस सज्जी को जमीन में बनी किसी कुंडी या पात्र में डाल कर गर्म किया जाता है। इससे सफेद रसनुमा एक तरल पदार्थ तैयार हो जाता है जिसे उक्त कुंडी या पात्र में सूराख करके किसी दूसरे पात्र में ले लिया जाता है तदन्तर जम कर जो क्षार तैयार होता है उसे चौवा साजी कहते हैं। इसको पापड़ बनाने के काम में लिया जाता है। यह साजी कपड़े धोने या साबुन बनाने के काम भी आती है।

मतान्तर से—शालिग्राम निघंटु में साजी तैयार करने की अन्य विधि बताई है उसके अनुसार—मालाबार प्रान्त में वृक्षों के पंचांगों के टुकड़े करके एक बड़ी खाई में भर दिये जाते हैं और फिर उसमें आग लगादी जाती है। बाद में वह जलकर स्वत: जम जाते हैं और साजी या खारी तैयार हो जाती है।

साजीखार—सं. पु. यौ. [सं. सज्जीक्षार] सज्जी के पौधे से निकला सार।

साजीग्रौ, साजीयौ—सं. पु.—साजी मिला कर बनाया हुआ खाद्य

[illegible]

उ० — ....[illegible] साजौ, [illegible] साजौ, मददनौ भाजौ, [illegible] पातर, [illegible] पातर, [illegible] पातर, चोमानी पातरी, जारिनी पातरी, [illegible] पातरी, [illegible] साजौमा ।—व. स.

[illegible], साजौतमुक्त, साजोतमुक्ति, साजोतमुक्त, साजोतमुक्ति, साजो[illegible] साजोतमुक्ति—देखो 'सायुज्य' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] भए तमासा, घातम जोत हो गई प्रकासा। [illegible] मांहि समाई, साजोतमुक्त सहित [illegible] पाई।

—हरचंद डोहोकियो

उ०—२ साजोतमुगतं, [illegible] जुगतं, प्रभु मेलं पावंदा है। गण [illegible], हरि गुन गावै, वीणा सरंग बजंदा है।—गज-उद्धार

साजोत, साजोति, साजोती-वि. [सं. स+ज्योतिः] ज्योति सहित, देदीप्यमान।

उ०—१ [illegible] धर्मं भीड़ माचै, रैणा हीर मोती झड़ै [illegible]। [illegible] जोति [illegible] हूंता प्रकारा, तिकै जांण साजोत रै [illegible] तारा।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] जवाहर [illegible], रवि सिर किर साजोति [illegible]।—सू. प्र.

स. पु.—१ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—[illegible] समन [illegible], वाप पढणोत रै वेद [illegible]। [illegible] भाग [illegible] तणै गोतरै, कळा साजोत रै रूप [illegible]।—[illegible] बारहट

२ [illegible], [illegible]। (कोश)

उ०—१ गोरा धू करैणो मेघाडंबरा पंड रै घाव, पाट रांणी गूमरां [illegible] पार। [illegible] हाडी [illegible] उधरैणो चंगी, साजोत 'भंवरां' [illegible] संसार।—जगो खाडो

उ०—२ [illegible] भड़ं सूर [illegible] लगावै नेह, छेह पेलै केही सूर [illegible] न होत। देह त्यागै केही सूर जोरणां वसत्रां दाय, [illegible] वैठै जावै कै साजोत।—बद्रीदास खिड़ियो

३ पांच प्रकार री मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति विशेष।

रू. भे.—सजोत।

साजोम—देखो 'सजोम' (रू. भे.)

उ०—साजोम [illegible] [illegible] भोम परायणां। अणसोम [illegible] करन मांम [illegible]।—रा. रू.

साजौ-वि. (स्त्री. साजी) १ स्वस्थ, निरोग।

उ०—१ [illegible] नूं मानसिंघजी काढ़ियो—आयो जु इण नूं जोवां। [illegible] साजौ हुवै सो घाव बांधो।—द. वि.

उ०—२ [illegible] देट सांतरो कीधो। साजौ हुवो जद [illegible]। [illegible] ने [illegible] पार [illegible]। ज्यूं पाणी रै [illegible] मूं।—भि. द.

२ [illegible], [illegible]।

उ०—बैसण नाहिं बुलावणी, नहीं वचन रो साजो रे। मारो घावां की राखी नहीं, हूं दीन दुखी को राजो रे।—जयवाणी

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—भादवो मास वसंत रै रसीया रो राजा, सुख रो साजा तन होई ताजा। जेहनै तूठां रै मोज लहीजियै रे, अधिकपण घोरंत रे, मदन तणो रै मित्र कहीजियै रे।—वि. कु.

४ अनुकूल, लाभदायक।

उ०—प्रमेसर बांधिसै पाजा, लोपसै दधि तणी लाजा। सायुधा रा दोह, साजा वजाडो वाजा।—पी. ग्रं.

उ०—२ 'अजन' विराजै जोधपुर, दिन साजै कमधज्ज। अन राजा लाजै अकस, धू सम राजै धज्ज।—रा. रू.

५ ठीक, कुशल, अच्छा।

६ साधारण, सामान्य।

७ पूर्ण, अखण्ड, बिना टूटा हुआ।

उ०—१ ....एकी अंगि वाई, ऊपरि गुलरेख लाई, जिसी अम्रत तणी, पुणि टलवाडइ घणां हप्योज्वल, काबिलउ घाट, जिसउं ढांकइ आद, इसां साजां सातपुडां खाजां, परनारि परीतइ, जइ लीला विलास तूतइ।—व. स.

८ प्रवल, शक्तिशाली।

उ०—सुतन 'भीम' 'पातल' पति साथै, भीम 'अजन' जांगल भाराथै। 'राजड़' 'किसन' तणो संग राजै, साझण सबळ लियै दळ साजै।—रा. रू.

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

साझ—देखो 'साज' (रू. भे.)

साझणौ-वि.—१ मारने वाला, संहार करने वाला।

उ०—अरि परदेरां साझणौ अतरवणौ अपार। विण चांपा विण भाटिया, भुज कुण झेलै भार।—रा. रू.

२ देने वाला, प्रदान करने वाला।

रू. भे.—साजणौ, साजवणौ।

साझणौ, साझबौ—देखो 'साजणौ, साजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सारो कुटंब सधीर, दारौ तोनूं नित 'दळा'। यळै अपाजै बीर, सकज जवाई साझियो।—गो रू.

उ०—२ ऊठै वै दळ जोघ अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गंगा तन मंजन कीधा, दांन विनांन मांन करि दीधा।

—रा. रू.

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति देवळां री पायगी धरमसाळा, दांनसाळा मंडीजै छै। मांहे जोगेसर पवन रा साझणहार त्रिकुटी रा चढावणहार धूम्र पांनरा करणहार उरधबाहू ठाडेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास मुनी।—रा. सा. सं.

उ०—४ जड़भरत अतीत समरस रा छाकिआ रांमरस प्याले रा पीअणहार दया धरम रा पाळणहार करमसाळ रा भोदणहार

तापस अस्टांग जोग रा साझणहार सांतरस मांहे गलतांण होइ नै रहिग्रा छै।—रा. सा. सं.

उ०—५ मैं कव लुघ दीरघता जांनि, का मुझि मांन वडाई ठांनि। मैं कव साझै असट जोग, मैं कव नांना करत भोग।

—अनुभववांणी

उ०—६ 'करनाजळ' कांकळ पेखि करां, प्रगटी रिख ग्रांमिय सिघु परां। करनौत 'अभौ' तिण वार किसौ, जवनांदळ साझण काळ जिसौ।—रा. रू.

उ०—७ पति इण सत्रु (पाहुंणां) री पांत फौज मैं परूसणी करायोड़ी है पांत फौज मैं सौ दुभांत सूं भूलै नहीं अरथात किण विनां लोहां रहण दै नहीं अरथात सारां नै साझ लेसी।

—वी. स. टी.

उ०—८ गहकंत इसौ 'लाखौ' गरूर, सीहौ इज साझै महासूर। जात्रा सझि दारण जिपै जंग, आवियौ नयर कनवज अभंग।

—सू. प्र.

उ०—९ भेत गुणां गाथ भेव, आभड़ै न अहमेव। ईदसा सुरा अजेव, साझ तास सेव।—र. ज. प्र.

उ—१० उरस छिवै रस वीर उछाहां, साझण काज दिली पतिसाहां। तपत बांण कीधौ हर तांणिक, बांमीवंध एरसै वांणिक।

—सू. प्र.

उ०—११ प्रजळै उर पतिसाह दाह अौ रिस अति दाझै। मनै न हुकम अमीर साह मनसूबा साझै।—सू. प्र.

उ०—१२ हुय विदा सझै दळ हालियौ, साझण कज सुरतांण रौ। जोधांण अयौ जोधांणपति, जगै भाग जोधांण रौ।—सू प्र.

उ०—१३ सु दुदै तिलोकसी रै साको करण री मन मैं हुती जिण सूं दूदै तिलोकसी गढ साझियौ।—नैणसी

साझणहार, हारौ (हारी), साझणियौ—वि०।

साझिओड़ौ, साझियोड़ौ, साझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साझीजणौ, साझीजबौ—कर्म वा०।

साझियोड़ौ—देखो 'साजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साझियोड़ी)

साझी-सं. पु.—हिस्सेदार, साझेदार।

रू. भे.—सांझि, सांझी।

साझेदार-सं पु.—हिस्सेदार, साझी।

रू. भे —सांझेदार।

साझेदारी-सं. स्त्री.—साझेदार होने की अवस्था या भाव, हिस्सेदारी।

रू. भे.—सांझेदारी।

साझौ-सं. पु.—१ हिस्सा, भाग।

२ साझे के लिए हुआ समझौता।

३ हिस्सेदारी, भागीदारी।

मुहा.—१. साझौ तौ वाद रौ ई खोटौ=साझे का व्यापार अच्छा नहीं होता। २ साझै री हांडी चौराए फूटै=सामुहिक उत्तरदायित्व में कोई भी उत्तरदायी नहीं होता।

रू. भे.—सांझौ।

साट-सं. स्त्री.—१ सूअर की चर्बी जिसे पका कर खाने के काम में लेते हैं।

उ०—दासी फिरै उतावळी, साटां लेवणहार। गोखां बैठी गोरड़ी, बांटै सिल वेसवार।—ढाढाळा सूर री बात

२ सोने या चांदी के तारों का गूंथा हुआ स्त्री के पैर का आभूषण विशेष। (मा. म.)

उ०—बाजूबंद मूंदड़ी अंगुली, नखसिख गहणौ साटां। पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जब जमुना के घाटां।—मीरां

३ चाबुक।

उ०—१ पहिली तुरक तणी ऊठवणी, रणि वाउला विछूटा। घोड़ै साट देई हींदूनी, फौज मांहि जई फूटा।—कां. दे. प्र.

उ०—२ तेजवंत नवि मांनइ साट, वाहर चालइ ऊवट वाट। दल दीपंतां घणा असवार, पायदळ तणउ न जांणउं पार।

—कां. दे. प्र.

४ छिलका, भूसी।

सं. पु.—५ स्वर्ण या रौप्य की चपटी पत्ती पर वेल की खुदाई करने का एक औजार।

६ झुंड, समूह।

७ खेत में चिड़ियों को उड़ाने का रस्सा विशेष जिसे घुमा कर शब्द उत्पन्न किया जा सकता है। (शेखावाटी)

८ इस प्रकार से चिड़ियों को उड़ाने की क्रिया। (मि. टाट)

९ अपेक्षा, वास्ता।

उ०—निज थाट खोय फीटा निलज, साट न बूजै सार री। आट वाट भागै अकल, चाट लगै विभचार री।—ऊ. का.

१० एवज, बदला।

उ०—चटडा हाट हाट चुगलालां, साट खडग ताय सोचरिया। वहियौ नहीं वै न तत वहिया, अनंत कह्यौ तै ऊगरिया।

—महाराणा कुंभा री गीत

१२ घोड़े के कान में बालों की बनी आकृति जो पैर में पहनने के गहने के आकार की होती है।

उ०—.........जेहै दीठै दुरजन नै हीए त्रासक पडइं, छांडइ घाट, घोडा तणा कांनसोरा माहि साट सांवरियां दीसइं, परसैन्य पइसइं, भाले ताडइं सेर पाडइं, मुहि मारइं, राउत पचारइ......।

—व. स.

१३ सम्बन्ध।

उ०—अैसी संगती साधकी, ज्युं वौपारी हाट। जनहरीया जब गाहकु, सबद मिळावै साट।—अनुभववांणी

१४ ज्ञान, व्यवहार।

उ०—[illegible] मोइ मांनजी, नेत मोइदे हाट। हरीया हरि मोहै [illegible], [illegible] मांनै मार।—ग्रनुभववांणी

१६ [illegible], रुचि।

उ०—[illegible] हरि नाम री, तणी मनाई साट। बूठै ऊपरि [illegible], [illegible] निर्जीव मार।—ग्रनुभववांणी

१६ ग्रकार, कमी।

उ०—[illegible] री [illegible] साट, साट नह है [illegible] री। [illegible] मेळो चलै, [illegible] [illegible] [illegible] री।—ग्रनुभववांणी

१७ विक्री, [illegible]।

१८ [illegible]।

१९ देखो 'साटी' (रू. भे.)

रू. भे.—सांट।

साटई-क्रि. वि.—बदले में, एवज में।

साटक-सं. पु.—१ एक प्रकार का छंद विशेष।

२ पुराणों की [illegible] कलाग्रों में से एक।

३ भूसी, छिलका।

४ प्राकृत में रचा एक छोटा नाटक, रूपक। (व. स.)

साटकी-सं. स्त्री.—छड़ी, बेंत।

उ०—१ देवरियो छिनगारो तोडूं सोवन साटकी जी राज।

—लो. गी.

उ०—२ [illegible] साटक्यां [illegible] छै हर नाव लीरायै छै। हींडै [illegible] [illegible] [illegible] में कवायो छो पीए में हि कवायस्यां साटकी [illegible] [illegible]।—पना

साटको-सं. पु.—१ चाबुक।

२ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएं होती है ग्रादि व ग्रन्त में गुरु होता है तथा प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं ग्रौर क्रमशः ११, ७, ७, व ५ मात्रा पर यति होती है।

३ प्रहार, चोट।

क्रि. वि.—चलाणी, बावनी।

साटण-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र विशेष।

२ साटिया जाति की ग्रौरत।

३ [illegible], हमला।

उ०—[illegible] ग्रमरसिंघ जी कयो कै ग्रै सिरदार जोधपुर री उमेद [illegible] [illegible] रा सू पैहली साटण मारया गया।—द. दा.

साटमार-सं. पु. बी.—वे ग्रादमी जो हाथों में भाले लिए हुए मस्त हाथी के ग्रागे तरह चलते है।

वि.—१ चाबुक मारने वाला।

२ चाबुकधारी।

साटवो, साटबौ-क्रि. स.—१ विनिमय करना।

२ खरीदना, क्रय करना।

उ०—[illegible] मांगे साटविसु, परिघळ मांगुं देसि। घरि बटटा ही प्रीतमा, पटोळा पहिरेसि।—ढो. मा.

साटणहार, हारौ (हारी), साटवणियो—वि०।

साटविग्रोड़ो, साटवियोड़ो, साटय्योड़ो—भू० का० कृ०।

साटीजणो, साटीजबो—कर्म वा०।

साटवियोड़ो-भू. का. कृ.—१ विनिमय किया हुआ. २ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ।

(स्त्री. साटवियोड़ी)

साटिका-सं. स्त्री. [सं.] साड़ी। (डि. को.)

साटिया-सं. स्त्री.—राजस्थान की ग्रनुसूचित जाति जो खेतों का सोधा करती है।

साटियो-सं. पु. (स्त्री. साटण) साटिया जाति का व्यक्ति।

साठी, साटी-सं स्त्री.—१ जमीन पर फैलने वाला क्षुप विशेष इसके चार भेद होते हैं।

वि. वि.—इसकी चार जातियां होती हैं, फूल लाल, सफेद ग्रादि भिन्न-भिन्न रंग के होते हैं। इन में श्वेत रंग के फूल वाले को विषखपरा कहते हैं ग्रौर लाल रंग के फूल वाले को गदहपूर्णा कहते हैं। यह ग्रोषधियों में प्रयुक्त होती है।

२ एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसका तना सफेद ग्रौर पत्ते गोल एवं छोटे होते हैं। फूल इसके फलीनुमा होते हैं जो दस्ते बंद करने के लिए काम में लिए जाते हैं।

साटूक-सं. पु.—एक प्रकार का सस्ता मोटा कपड़ा।

उ०—तदै जगदेव दरबार ग्रायो, तिको यो साटूक रो बागो पहिरयां छै, रुपीया १) री पाघ माथै छै, कानां हाथां मांहे कण। सु इसै सलूक सूं मुजरो कियो।—जगदेव पंवार री बात

साटै-क्रि. वि.—१ बदले में, एवज में।

उ०—१ इसा तो मेड़तिया नहीं छै जै वातां साटै घोड़ै कनां बैठ रहै।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री बात

उ०—२ देवराज नांमसाद इसड़ो जु सको जांणे मुंहडा बारै काढी छै तो करसी विण वयूं सो, सो हाथी वातां साटै दिया जाय नहीं।

—नैणसी

२ साथ।

उ०—सुणतां ही बूबनां रो जीव हुकारै साटै निसर गयो। ऊभी थी सो ढह पड़ी। नेत्रां सवाम नै बीजी सारी सखियां सहेलियां रोवणै लागी।—जलाल बूबनां री बात

रू. भे.—सटै, सांटै।

साटी-सं पु.—१ पुनर्नवा से मिलता-जुलता एक प्रकार का क्षुप जो जमीन पर फैलता है।

२ सुगंधित सफेद फूलों वाला पौधा जो बगीचों में लगाया जाता है।

३ ग्रदला-बदली।

उ०—पछै दूजी रांमत वळै मांडी तठै राजा ग्रगरजीत बोलीयो—

तठै सीरपाव री साटौ कीयौ। तठै वळै कुंवरजी हारीया।

—रीसाळू री बात

४ वह वैवाहिक व्यवस्था जिसमें पुत्र के लिए वधू प्राप्त करने हेतु बदले में वधू पक्ष वालों के पुत्र के लिए कन्या देने की व्यवस्था हो।

रू. भे.—सटौ, सट्टौ, साट।

साठ, साठ—वि. [सं. षष्ठि, अप. सट्ठि] पचास व दस के योग के समान।

सं. पु.—१ पचास व दस का योग।

२ उक्त की सूचक संख्या।

उ०—पहिरण ओढण कंबळा, साठै पुरसै नीर। आपण लोक उभांखरा, गाडर छाळी खीर।—ढो. मा.

३ इस प्रकार लिखी जाने वाली संख्या—६०।

रू. भे.—सठि, सांटौ।

साठमौं, साठवौं—वि.—जो क्रम में ६० वें स्थान पर आता हो या ६० वें स्थान पर हो।

साठि, साठी, साठी—सं. पु.—१ चांवलों की एक प्रकार की किस्म विशेष।

२ साठ की संख्या।

उ०—साठि वरस वावरतां पुहुचइ, धांन तणा कोठार। समीयांणौ 'सांतल' सपरांणउ, मांहि भला भूभार।—कां. दे. प्र.

३ साठ वर्ष की आयु का व्यक्ति।

साठि'क, साठिहेक—देखो 'साठेक' (रू. भे.)

उ०—......वीदौ, भांनौ, सादूळियौ, वीठलौ, दूदौ धावड़, पालिह्यौ थोरी वीजा ही सगडिदपेसै समेत सहि लांवां भला आदमी साठिहेक उठा खड़ि अर राजड़वाळै आइ ऊतरिया।—द. वि.

साठीक, साठीकड़—वि.—साठ वर्ष की आयु का।

वि.—साठ पुरुष गहरा।

साठीकौ, साठीकौ—सं. पु.—साठ पुरुष गहरा कुआ।

उ०—१ लूआं थां लारौ लियौ, छांणी सा घर आय। सीतळता लीधी सरण, साठीकां मैं जाय।—लू

उ०—२—......कूंटा काढिआं, भूखै मयंद ज्यौं हूकार करतां, मद वहता, हाथी ज्यौं जोहां खातां भाद्रवै री गाज ज्यौं आवाज करता, साठीक रै भमण ज्यूं चसळका करता, भागै गाडै ज्यौं वठठाट करता,......इण भांति रा सौ ऊंठां ऊपर सौ पलांणा मंडिआ छै।

—रा. सा. सं.

मुहा०—साठीकौ किसौ चाख नै खोदै=किसी कार्य का परिणाम पहले मालुम थोड़े ही होता है।

साठेक, साठे'क, साठेक—वि.—साठ के लगभग, करीब साठ के योग के बराबर।

रू. भे.—साठि'क, साठिहेक।

साठै, साठौ—सं. पु.—१ साठवां वर्ष।

२ साठ की संख्या।

वि.—१ साठवां।

२ साठ गुना।

उ०—सवळौ भरीजै तद हासल इजाफा हुवै। काठा गेहूं मण १५००० बीज बावै तिकै साठा निपजै।—नैणसी

साड—सं. स्त्री.—१ शब्द, ध्वनि, आवाज।

उ०—गढ लियंत गहलोत प्रांणगुर, सांइयै सोगत पख सह। बाया वळण अवळणां बाया, गोविंद गोविंद साड गह।

—महारांणा कुंभा री गीत

२ देखो 'आसाढ' (रू. भे.)

उ०—साड उतरियौ रै सावण लाग्यौ, काळी काळी घटा उमड़ आयी। रुत आयी रै पपइया, तेरै बोलण की रुत आयी।

—लो. गी.

साडलउ, साडलौ—देखो 'साड़ी' (मह; रू. भे.)

उ०—चीर दुरयोधन खांचिया, पांचाली सुं करीय उपाय कि। सौ अठ्ठोत्तर साडला, प्रगट्या नवनव सीस पसाय कि।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'साड़ौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०........मांकुण मांचां भिरिया, जु भरियां गोदडां, कांन मिलि भरियां, रालडां फुहुडा, पग भरिउ साडलउ, घरसाला भरिउं घुंटण, हाथि पांणी नही, पग पांणी नहीं, मलमलिन सरीर, दोठइ ओकारां आवइ, इसी फुहडी सूगांमणी घरनारि कालिकालि घणी।

—व. स.

साडा—देखो 'साढौ'(२) (रू. भे.)

साडी—सं. स्त्री.—१ रबि की फसल।

२ देखो 'साड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'साढी' (रू. भे.)

साडू—देखो 'साढू' (रू. भे.)

साडै—देखो 'साढौ'(२) (रू. भे.)

उ०—मैंनेजर घणौ मोटौ मूंडौ करनै बोल्यौ—'तीन, साडै छै, अर साडै नौ वज्यां रा सो मांय बिना नागा करचां आवणौ पड़ैलौ।

—तिरसंकू

साडौ—देखो 'साड़ौ' (रू. भे.)

उ०—टोकणी, लोटी, थाळो, वाटली सरब वासण मंगाया। सीधौ मंगायौ। साडौ मगायौ। आप सनांन करि साडौ पहिर रसोई वणाई। पाक तयार हूवौ आप जीमी। भद्रा नुं, छोकरी नुं जीमाया।—स्यांमसुंदर री बात

साढ—देखो 'आसाढ' (रू. भे.)

उ०—१ जेठ न आवै साढ न आवै सावण अलवत आई रे, सूरचा वीर बदळी ल्याइ रे।—लो. गी.

उ०—२ जेठ उतरियौ साढ उतरियौ तौ सांवण उतरियौ, मारूजी रै खेतां जावौ वदळी।—लो. गी.

२ देखो 'साद' (रू. भे.)

[illegible] रा साग
[illegible] मारियौ दै ।
[illegible] (२) (रू. भे.)
उ०—[illegible] किसिउ
[illegible] किसिउं [illegible], तुहि तिसी चोवडाई
[illegible] किसिउ [illegible], सुमांग्रम तिसउं सीग-
[illegible] ?—व. स.

[illegible]—सं. स्त्री.—१ शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े [illegible] दिन की दशा विशेष जिसका फल बहुत [illegible] होता है । (फलित ज्योतिष)
वि. वि.—देखो '[illegible]' ।
रू. भे.—[illegible] ।

साडा—सं. स्त्री.—१ [illegible] राजपूतों की एक शाखा ।
२ देखो 'साढ़ी' (२) (रू. भे.)
उ०—[illegible], गुण-मणि गणित न थाइ । साडा [illegible], [illegible] ।—मा. कां. प्र.

साडासितोतर, साडाचोतर, साडाचोमोतर, साडाचोहत्तर, साडाचोहोत्तर—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—[illegible] लिखियो । कागज सांवटि नै मार्थ [illegible] कागद सांवटि दियौ ।
—मत री बांधी [illegible] री बात

साड़ाणी—सं. स्त्री.—देवी ।
वि० वि०—साड़ी (लोवड़ी) नामक ऊन का श्याम वस्त्र ओढ़ने के कारण इनका यह नाम पड़ गया है ।

साडामारी—देखो 'साडमती' (रू. भे.)

साढ़ी—सं. स्त्री.—१ दूध के ऊपर जमने वाली मलाई ।
२ तीन और तीन से अधिक समस्त संख्यावाची शब्दों के आगे लगने वाला शब्द जिसका अर्थ आधा होता है ।
रू. भे.—साढा, साढो, साढ़ै, साढ, साढा, साढ़ै ।

साढू—सं. पु. [सं. [illegible]+[illegible], स्याली+ऊढा] पत्नी की बहिन का पति साली का पति ।

साढ़ै—देखो 'साढ़ी'(२) (रू. भे.)

साढ़ैचोतर, साढ़ैचोमोतर, साढ़ैचोहुतर—सं. पु.—विशेष अर्थ प्रकट करने [illegible] ।
वि० वि०—किसी गुप्त पत्र या आलेख पर लगाया जाने वाला [illegible] जिसका अर्थ है कि यह गुप्त है । अनधिकृत व्यक्ति द्वारा पढ़े जाने पर पढ़ने वाले को पाप लगेगा । ऐसी जनश्रुति है कि अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध चित्तौड़-युद्ध में इतने हिन्दू मारे गये कि उनकी जनेऊ का तौल [illegible] मन हुआ । इसी आधार पर इस संख्या का विशिष्ट अर्थ हो गया जिसके अनुसार अनधिकृत [illegible] द्वारा पढ़े जाने पर इन [illegible] मन जनेऊ वालों की हत्या के बराबर पाप उसे लगेगा ।
रू. भे.—साढानिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोतर, साढाचोहोतर ।

साढौ—सं. पु.—१ सत्तर पांजेसूत के धागों का समूह (एक पांजो पांच धागों का होता है), वुलकर ।
२ देखो 'साढ़ी' (रू. भे.)
उ०—तठै राजा साह री बेटी पूछियो, कही, 'थारो सपेत साढो परणी थी, तिको मंगाय ।' तद भो साढो मंगाय देवै तो कासूं ? भो दूहो मांडियो छै ।—ठकुरै साह री बात

सात—सं. पु. [सं. सप्त] १ पांच और दो का योग ।
२ पांच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७
उ०—दोय प्रकार का काव्य रूप च्यार प्रकार की बांणी । सात प्रकार का सर च्यार सूं लेकै चढावै । आठमैं सरको झपट पर यं चोरासी बंध रूपकों के सरिजणहार ।—सू. प्र.
वि.—१ पांच और दो के योग के समान ।
२ सत्य, सच ।
उ०—धरण एक धारणा, पार परमोद अपंपर । सात वाच संजमी, बांहन करै भागलपर ।—पा. प्र.
रू. भे.—सत्त ।

सातकाळी—सं. स्त्री. यौ.—वे सात वर्ष जिसमें निरंतर दुर्भिक्ष रहा हो ।
रू. भे.—सतकाळी ।

सातकुंभ—सं. पु. यौ [सं. शात+कुंभ] स्वर्ण, सोना । (अ. मा.)
रू. भे.— सांतकुंभ, सांतिकुंभ ।

सातकुळ—सं. पु. यौ.—पर्वतों के सात कुल जो निम्न माने जाते हैं—(१) हिमालय, (२) विषध या पार्श्वनाथ, (३) विंध्याचल, (४) माल्यवांन (पूर्वीघाट), (५) परियात्रिक (अरावली), (७) गंधमादन (पश्चिमी घाट) और (७) हेमकूट (सतपुड़ा) ।

सातखणो—देखो 'सतखणो' (रू. भे.)

सातणो, सातबो—क्रि. स.—१ स्वीकार करना, लेना ।
उ०—१...........जउ मुक्ताफल तणी मोट बाधी तु निणठली किसिउं कीजसिइ लाधी, इंद्रनीलमणि पांमइ तु काच कवण सातइ, जइ अमृतपांन पीजइ तु कांजीइ किसिउं कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ सहू कवण नउ वीसरइ ?—व. स.
उ०—.........गोरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ; नारद हैरउं करइ, नव खंडि फिरइ, धनद यक्ष भंडारउं करइं, इसिउ रावण नरेस्वर ।—व. स.
२ आदर करना, सत्कार करना ।
सातणहार, हारो (हारी), सातणियो—वि० ।
सातिओड़ो, सातियोड़ो, सात्योड़ो—भू० का० कृ० ।
सातीजणो, सातीजबो—कर्म वा० ।

सातरवाड़ो—देखो 'साथरवाड़ो' (रू. भे.)

उ०—छुटभाई रा सातरवाड़ा मैं ई ठाकर खोड़ीलायां करयां बिनां नीं मान्यो।—फुलवाड़ी

सातळमेर-सं. पु.—नरावत राठौड़ों का बनवाया हुआ पोकरण नगर का प्राचीन गढ जिसको राव मालदेव ने गिरवा दिया था।

सातळियो-सं. पु.—वह बैल जिसके सात दांत आ गये हो। (अशुभ)

सातळो-सं. पु. [सं· सप्तला] एक प्रकार का थूहर जिसके डालों से पीले रंग का दूध निकलता है।

सातवत-स. पु.—श्रीबलराम का एक नाम। (नां. मा.)

सातवाहण, सातवाहन-सं. पु. [सं. शातवाहन] शालिवाहन के राजा का एक नाम।

सातवौं—देखो 'सप्तमौं' (रू. भे)

सातसती-सं. स्त्री. यौ.—सात प्रसिद्ध सतियां—सीता, कुंती, द्रौपदी, अनुसुया, अहिल्या, तारा और मंदोदरी।

सातहजारी—देखो 'हप्तहजारी'।

उ०—सातहजारी सांम ती, जाको नांम 'अजीत'। दाखो फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत।—रा. रू.

साता-सं. स्त्री.—१ परिस्थिति, स्थिति, दशा।

उ०—सम्मन साता पुरस री, रहै न एकी सार। तिल डूबै पथ्थर तिरैं, अपणी अपणी वार।—सम्मन

२ आराम, सुख, आनन्द।

उ०—१ सांई तेरी सेवा सच्ची, दूजी काया मायकच्ची। साता दाता माता भ्राता, तूं हीं दूजा दंभा है।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ जन मीरां कूं गिरधर मिळिया, दुख मेटण सुख दै री। रूम रूम साता भई उर मैं, मिटि गई फेरा फेरी।—मीरां

३ रक्षा, सुरक्षा।

उ०—रेणायर मथण मथण रेणायर, भर धर टाळण समर भर। कर जन साता जगत अभै कर, वरदाता जांनकी वर।

—र. ज. प्र.

४ दिनदशा, दिनमान।

उ०—पण म्हारो आज दिन पळट्योड़ो है। सोनैं नैं हाथ घाल्यां लो' हुवै। मोरड़ी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है जद सोनैं री आस क्यूं राखूं।—दसदोख

५ भला, कल्याण।

उ०—१ खेत पाको इतलै धणी रै बाळो दुखणो आयो। जद किण ही औखद देइ सांतरो कीधो। साजो हुवो जद खेत काट्यो। सहाज देणवाळा नैं पिण पाप लागो। ज्यूं पापी रै साता कीधां धरम कठा सूं।—भि. द्र.

उ०—२ जस री पग तुल पग दै ललका लै जावै, हीरा मांणक सब हळका ह्वै जावै। धिन धिन दाता जग साता मग धाया, जननी जसधारी वारी जिण जाया।—ऊ. का.

६ कुशलक्षेम।

उ०—कुदरत री कण कण उण री साता पूछती जद डोकरी मुळकनैं कैवती कै अबै उणरै सुख रो कांई पार, वा इण दुनियां मैं सब सूं सुखी है। घड़ी घड़ी कांई साता पूछो।—फुलवाड़ी

७ धन, दौलत, वैभव।

उ०—लाखां लोकां रो लाखां भर लीनी, दुरलभ वेला मैं चेळा भरि दीनी। धिन धिन दातारां साता रा धणियां, आगळ खुलियोड़ी तुलियोड़ी अणियां।—ऊ. का.

८ सुपारी, सिंघोड़ा, खारक आदि की पांच-पांच अथवा सात-सात की संख्या, जो विवाह के समय कन्या या वर पक्ष में दी, ली जाती है।

सातादूतौ-वि. (स्त्री. सातादूती) चुगलखोर।

सातिक, सातिग—देखो 'सात्विक' (रू. भे.)

उ०—पांणी ल्यावै डोर करि, हाथैं भात पचाय। राजस तांमस रचि रह्यो, सातिग नावै दाय।—अनुभववांणी

सातिम—देखो 'सातम' (रू. भे.)

सातियोड़ो-भू. का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ, लिया हुआ. २ आदर-सत्कार किया हुआ।

(स्त्री. सातियोड़ी)

सातू, सातू-सं. पु. [सं. सक्तुक] १ गेहूं, चना, चावल आदि के आटे का बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

२ भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया (कजलीतीज) पर बनाया जाने वाला एक मिष्ठान जो चावल, गेहूं, चने आदि के आटे को घी में भून कर शक्कर मिला कर बनाया जाता है।

३ जौ, चावल, चने, आदि का भूना हुआ चूर्ण, आटा।

रू. भे.—सत्तु, सत्तू।

साते'क, साते'क—सात के लगभग।

रू. भे.—स्यांतेक, स्याते'क।

सातौ, सातौ-सं. पु.—१ सात का अंक।

२ सात की संख्या का वर्ष।

सात्यकि, सात्यकी-सं. पु.—यदुवंशी राजा सत्यक का पुत्र, जिसका दूसरा नाम युयुधान भी था। यह बड़ा वीर एवं पराक्रमी था। कुरुक्षेत्र में यह पांडवों के पक्ष में लड़ा था।

सात्यदूत-सं. पु. [सं.] देवी-देवताओं को प्रसन्न रखने के लिए किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

सात्यरथि, सात्यरथी-सं. पु.—सत्यरथ राजा का पुत्र एक राजा।

सात्यवत-सं. पु. [सं.] सत्यवती-पुत्र वेदव्यास।

सात्यहव्य-सं. पु. [सं.] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

सात्यूं—देखो 'सातम' (रू. भे.)

सात्रव-सं. पु. [सं. शात्रवः] १ शत्रु, दुश्मन।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ [illegible] —वं. भा.

उ०—२ [illegible] गज मदा- [illegible] —वं. भा.

उ०—[illegible] सात्वयां। वाहे साहै [illegible] —र. हमीरा

सात्राजित-सं. पु. [सं.] सत्राजित् के वंशज राजा शतानीक का नाम।

सात्राजिती-सं. पु. [सं.] सत्राजित्-पुत्री सत्यभामा का एक नामान्तर।

सात्तूर, सात्तूरं—देखो 'सातर'।

उ०—[illegible] सातूर, सूर पराक्रम मेर। 'प्रथरंग' साह अव- [illegible] —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सात्वत—१ देखो 'सात्विक' (रू. भे.)

२ देखो 'सात्वति' (रू. भे.)

सात्वत-सं. पु. [सं.] १ भगवान् विष्णु का एक पार्षद।

२ यादववंशीय एक राजा जो सत्व राजा का पुत्र था।

३ भगवान् श्रीकृष्ण का नाम।

४ बलराम, बलभद्र।

सात्वति, सात्वती-सं. स्त्री. [सं. सात्वती] १ शिशुपाल की माता का नाम जो वसुदेव की बहन थी।

२ बलभद्र की सहोदरा सुभद्रा का नाम जो कि पाण्डव-पुत्र अर्जुन की पत्नी थी।

सात्विक, सात्विक-वि. [सं. सात्विकः] १ सतोगुणी, सत्वगुणी।

उ०—दादू राजस कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल। तामस कर परलै करै, निगुण कौतिक हार।—दादूवाणी

२ सत्वगुण से सम्बन्ध रखने वाला।

३ प्राकृतिक, वास्तविक।

सं. पु.—१ सात्विक भावों को प्रदर्शित करने के चार प्रकार के अभिनयों में से एक।

२ विष्णु भगवान्। ३ ब्रह्मा।

रू. भे.—सातिग, सात्वक।

सात्विकभाव-सं. पु.—१ तीन लघु के तगण के तृतीय भेद का नाम। (डिं. को.)

२ शुद्ध एवं पवित्र भाव।

साथ-सं. पु.—१ संग रहने का भाव, संगत, सहचार। (डिं. को.)

उ०—[illegible] वन वन परवत टांम। मन थिर राखु, हूं सूं तुझिसौं साथ तणा [illegible] स्वामि।—नळ दवांन

क्रि. प्र.—करणौ, रायणौ, होणौ।

मुहा०—१ साथ छूटणौ=अलग होना, जुदा होना। २ साथ देणौ=मदद करना, सहायता करना। ३ साथ सोवणौ=संभोग करना।

२ संग रहने वाला, साथी।

उ०—साथ रो [illegible] हुवौ छै। कंवर वीरमदे सवजीदान सवास नै नै पनां के म्हेल आयो।—पनां

३ परिग्रह।

उ०—१ साथ फुरै 'जसवंत' सह, दुती अनाथ दयाळ। हाथ न आवै हे हरी, फमग्रां नाथ कपाळ।—ऊ. का.

उ०—२ आइ नै रांणेजी रो मुजरो कियो। सु ईयै भांत आया सुं राणा रो साथ छिप गयो नजर आवै नहीं।

—देवजी बगड़ावत री वात

४ सेना, फौज। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ हाडा अलैराज समेत अल्प साथ सूं राजा भीम रै साथै प्रस्थान कियो।—वं. भा.

उ०—२ रा: राजसिंघ सुरजमलोत मुः नैणसी रा: सबळसिंघ प्रागदासोत नूं पोकरण री मदत वासतै घणां साथ सूं विदा किया।

—नैणसी

उ०—३ जांमरा घोड़ा हजार १०००० आजमखांन करै निपट सबळो साथ।—नैणसी

उ०—४ उठै सारंग खांन नूं मारियो और ही सारंग खांन रो घणो साथ मारियो।—नैणसी

५ समूह, झुण्ड।

उ०—१ रोधो साथां रेणवां, जस गाथा जेहल्ल। भारांणी थाथां भरै, आथां दिए अपल्ल।—बां. दा.

उ०—२ सुचि नांमि विणजारो बोलि, चेदि रायनि देस। साथ सहू ए विणजि जाति, सुबाहु यांहां नरेस।—नळाख्यांन

६ संग, साथ।

उ०—१ आठ हजार फौज साथ लीन्ही भलो चुणायो साथ सागै लियो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ लूंबां झड़ नदियां लहर, बक पंगत भर बाथ। गोरी सोर ममोळियां, सांवण लायो साथ।—बां. दा.

७ संरक्षकता, मदद।

उ०—विस रो प्यालो रांणाजी भेज्यो, दीज्यो मेड़तणी रै हाथ। कर चरणाम्रत पी गई, म्हांरै सबळ धणी रो साथ।—मीरां

८ घनिष्ठता, मेल-मिलाप।

९ वंश, जाति।

वि.—१ सहित, पूर्वक।

उ०—१ नवाब कासिमखांन, करीमखांन प्रमुख आपरा मुख्य सांमंत सहायक करि बहा बरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारा साह नूं औरंग, मुराद रै सांम्हो विदा कीधो।—वं. भा.

उ०—२ भाटी समुद्रसिंह आपरी सीमा मैं बसी रा लोकां सहित मीमणां नूं गोळ दिवाइ गिनायतां नूं आदर रै साथ राखिया।

—वं. भा.

२ शामिल, सम्मिलित, शरीक।

उ०—मुहम्मदसाह बादसाह पठांण सांम्हो चढियो कमरुद्दीन खां

नुं लेय चढियौ जद ईस्वरीसिंह जयसिंहजी री पण साथ थौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

रू. भे.—सत्त, सत्थ, सत्थि, सत्थी, सत्थु, सत्थै, सथ, सथी, सथ्थ, सथ्थी।

मह;—साथौ।

साथइ—क्रि. वि.—साथ में, संग में।

उ०—साथइ सुंदरी जोगणी, मारवणी सूं प्यार। तिण जोगी ओळखिया, ढोलउ मारू नार।—ढो. मा.

साथगत, साथगति, साथगती—देखो 'सहगमन'।

साथड़ली—देखो 'साथळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हां जी रे साथड़ली सपीठी पींडी पातळी, हां जी जाड़ेची मूमल हालै नी ए रसीलै रै देस।—लो गी.

साथण—सं. स्त्री.—१ सखी, सहेली।

उ०—१ फजरां हथणी सी दधि मथणी फुरती, माटां घर घर मैं घणहरसी घुरती। खूली आथणियां साथणियां खाती, फूली-फूली फिर फूंद्याळी गाती।—ऊ. का.

उ०—२ ठमकै जांझर रणकार साथण देखै, म्हारा घणा हेताळू सरदार सलगत आछी लागै सा।—लो. गी.

उ०—३ चालो ए साथणिया आपां कांमड़ियां नै जावां, ऐ तौ कांमड़ियां चोखी म्हारी सूंडकियौ गूंथाऊं।—लो गी.

२ साथ रहने वाली, संग रहने वाली।

रू. भे.—साथणी।

साथणकिरोध, साथणक्रोध—सं. स्त्री. यौ.—अग्नि, आग।
(ना. डिं. को.)

साथणसमीर—सं. स्त्री यौ.—अग्नि, आग। (ना. डिं. को)
(मि. वायुसखा)

साथणी—देखो 'साथण' (रू. भे.)

साथरउ—देखो साथरौ' (रू. भे.)

उ०—जइ नाचिवा पइठी तउ घूघटउ कांइ, जइ आंखि कांणी तउ काजल कांइ, जइ भीख तउ भूख कांइ, जइ साथरउ तउ सांकडउ कांइ, जइ भिखिवा पइठा तउ लाज कांइ, जइ संयम लीजइ तउ विलंब कांइ?—व. स.

साथरवाड़ौ—सं. पु. [सं. संस्तर-वंत, सस्तर-वाट] १ किसी की मृत्यु के उपरांत समवेदना प्रकट करने के लिए जाने का स्थान या उस स्थान पर बिछाया जाने वाला बिछौना।

उ०—१ साथरवाड़ौ सुणै, जठै ऊठ बेगा जावै। खूब देर तक बैठ, खाती उबास्यां खावै।—धनदांन लाळस

उ०—२ ताकत डोलै तीसरा, साथरवाड़ा सोद। पैलां घर पटकी पड़े, माखां रै मन मोद।—ऊ. का.

२ उपर्युक्त स्थान पर समवेदना निमित्त बैठने की क्रिया या भाव।

उ०—ताहरां कुंवर स्री दळपतजी खुसी सूं वधाई लै अर डेरै पधारिया। आगै आइ देखै तौ कुंवरजी रा परधांन मदनै रै डेरै साथरवाड़ै घातियै बैठा छै।—द. वि.

३ मृत्यु के पश्चात् द्वादशी क्रिया तक मृतक के सम्बन्धियों का जमीन पर शयन करने की क्रिया।

रू. भे.—सत्थर, सांथरवाड़ौ।

साथरि, साथरी—सं. स्त्री.—१ घास का छिछला (छोटा सा) ढेर।

२ बिश्नोई सम्प्रदाय का पीठ।

वि. वि.—जाम्भोजी ने उनके साथ वाले आदमियों सहित जहां कहीं ठहर कर कई दिनों तक ज्ञानोपदेश दिया, वे सभी स्थान 'साथरी' कहलाये। वैसे 'साथरी' शब्द में साथ के आदमी, स्थान विशेष व सेज तीनों का भाव निहित है।

३ देखो 'साथरौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ घणौ हेत पित मात, रह्या घरि बैसि मया करि। सुखम सेझ परहरी, आय सूतौ तिणि साथरि।—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ परहरै सेझ पाटंबरी, साथरि सूळ न अडियै। संपजै गंग अमळ सुवळ, छार नीर घर छडियै।—सुरजनदास पूनियौ

साथरौ—सं. पु. [सं. संस्तर:] १ बिस्तर, बिछौना।

उ०—१ सो मरणै रै समय पछतावै सूं आंसू नाखै थौ अर कहै थौ कि इतरी लड़ाइयां मैं मांटीपणौ कियौ। कितरा घाव सहिया पण हमार तौ साथरै ऊपर बूढी रांड दाई मरूं छूं।—नी. प्र.

उ०—२ जोगायत वडो प्रळै दातार हुवौ। वडा-वडा दांन दिया। पछै साथरै री मौत मुंवौ।—नैणसी

२ विशेषत: कुश की बनी चटाई, तृण-शय्या।

उ०—१ 'केहर' राजा 'करण' कै, निरधन किया निहाल। सो सोवंता साथरा, तै पोढै सुखपाळ।—कुंभकरण सांदू

उ०—२ मरस नीरस आहार, करणी वछ पातरै। ए सुख सेज्या छोड़, सूवणो साथरै।—जयवांणी

३ नाश, संहार, खातमा।

उ०—१ इतरौ पिउसंधी सांभळि नै कह्यौ, अब खबरदार हुवो, यौ मेरा तीर आवता है। तिण तीर सूं पठांण १०/२० वींध्या नै मुदी पाड़ियौ। इसा तीर वेळा ५/७ बाह्या, पठांण सौ-दोढ़ सौ साथरौ हुवौ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ कलौ वीदावत कांम आयौ। ५० रजपूतां सूं मांडण रौ साथ कांम आयौ। मांडण घावै पड़ियौ। रजपूतां हेठै कर लियौ इसौ रजपूतां रौ साथरौ हुवौ उवै साबता ऊभा छै।—नैणसी

४ ढेर, राशि, समूह।

उ०—१ खालिकि ऊभौ खेत मां, सबळा दईत संघार। सतगुरु कीधौ साथरौ, मोटा दांणव मार।—पी. ग्रं.

उ०—२ मेछांण करि घांण हुआ छै। चाळीस कोस रिण साथरै पंजा हजार पड़िया छै। करकां री बाड़ि हुइ नै रही छै। विणजारां

[illegible] मांहि [illegible] हाथीयां रा [illegible] पड़ीया [illegible]

२ [illegible], मंजार, [illegible] आदि को [illegible] कर या [illegible] हुआ [illegible] ।

उ०—[illegible] जाडि में ऊपर पड़िया तिकै [illegible] सांथरा कीना नै राजा अनंतराय [illegible] ओकरो पकड़ लीधो ।

—महराट सरवहियै री बात

३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

४ देखो '[illegible]' ।

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], सांथर, सांथरो, साथरउ, [illegible], [illegible] ।

साथळ-सं. स्त्री. [सं. सक्थि] जांघ, ऊरु । (हि. को.)

उ०—[illegible] मही । माटी नै जोईया राठोड़ा सूं वाजिया । [illegible] पड़िया । साथळां ऊंचे वही । वेटी ऊठी पण पग-[illegible] पड़ियो ।—नैणसी

मुहा.—साथळ उघाड़ियां घर री लाज जावै=अपने घर की बात बाहर बताने से घर की इज्जत जाती है ।

रू. भे.—[illegible], [illegible], सथि, [illegible], सथ्थळ, सांथळ ।

अल्पा.—साथळड़ी, साथळड़ी ।

साथळड़ी-देखो 'साथळ' (अल्पा; रू. भे.)

साथाणी-वि. (स्त्री. साथाणी) साथ में रहने वाला, साथ वाला, साथी ।

साथि—१ देखो 'साथी' (रू. भे.)

२ देखो 'साथ' (रू. भे.)

उ०—१ सारथ मिळीयुग साथि सारथी, प्रोहित जांणणहार [illegible] । [illegible] कपानिधि, रथ बैठा सांभळ अरथ ।

—वेलि

उ०—२ [illegible] 'हरि', करि मोमूं [illegible] । 'गोइंद' [illegible] साथि [illegible] ।—गु. रू. बं.

उ०—३ [illegible] अधिकु [illegible] मन साथि दीठूं । [illegible] आवि, [illegible] अग्रन मीठूं ।

—नळाख्यांन

साथियो—१ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—१ साथियो सुंदर [illegible], सोहै सगलां मन । संसार [illegible], [illegible] ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ [illegible] डाबड़ा, [illegible] कपूर तणा साथिया, [illegible] पूरिया,......।—व. स.

२ देखो 'साथी' (अल्पा; रू. भे.)

साथी-सं. पु. [सं. साथीं] (स्त्री. साथण) १ मित्र, दोस्त । (हि. को.)

उ०—साथी [illegible], [illegible] । विरहि प्रांण छोडसि, त्याहारि अबला पासि रोसि ।—नळाख्यांन

२ साथ रहने वाला, संगी ।

३ हमउम्र, हमजोली ।

४ सहायक, मददगार ।

उ०—१ कंता फिरज्यो एकला, किसा विडांणा साथ । थारा साथी तीन जण, हियो कटारी हाथ ।—अज्ञात

उ०—२ रहिस निरालंब एकलो, तज काया मझ वास । साथी तै दिन संतधर, सुरग तणो पथ सास ।—ह. र.

५ प्रेमी ।

उ०—१ तुम देख्यां बिन कळ न परत है, हियो फटत मोरी छाती । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, पूरब जनम के साथी ।—मीरां

उ०—२ म्यांनी तन गोरा ठोरम-ठोरा, चादर में चिलकंदा है । है मदवा हाथी सावण साथी, साथी चाल चलंदा है ।—ऊ. का.

रू. भे.—सतिय, सत्थी, साथी, सथ्थी, साथि ।

अल्पा;—साथियो, साथीड़ो ।

साथीड़ो—देखो 'साथी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ साथीड़ा रा डेरा हरिया बाग, जंवाई रा डेरा मोतीमहल में । साथीड़ा रै दांतण बोर जवाई रै काची केळ रौ ।—लो. गी.

उ०—२ जावा दो छिणगारी नार जावा दो नां ए । म्हारा साथीड़ा ऊभा दरबार, जावा दो ना ए ।—लो. गी.

उ०—३ किसाक है ओ सरदार ? किसाक है इणरा साथीड़ा ? ऐ च्यार घोड़ां माथै निडर हुया इण जंगळ में रमता फिरता हा । जियां ओ सगळो जंगळ वां रो राज हुवै ।—तिरसंकू

साथीपो, साथीपो-सं. पु.—मित्रता, दोस्ती ।

साथै-सं. पु.—वह अवस्था जिसमें दो या अधिक जीव एक दूसरे के निकट सम्पर्क में रहते हों । (हि. को.)

ज्यूं—म्हैं अर सेतजी एक साल तांई बोडिंग में साथै रह्या ।

क्रि. वि.—१ एक सम्बन्ध सूचक अव्यय जो प्रायः सहचार या संग रहने का भाव या स्थिति सूचित करता है ।

ज्यूं—थूं सेतजी रै साथै जा ।

२ प्रति, से ।

ज्यूं—टाबरां साथै कोगतो करणो ठीक नीं व्है ।

क्रि. वि.—साथ में, संग में ।

उ०—१ जोगो आसावत जोधपुर गढ आसा साथै कांम आयो ।

—नैणसी

उ०—२ औरंगसाह छत्रीसं आयो, उर राव रांण लगो अगहायो । मंग्या विण लीधां दळ साथै, मारग पड़ै पहाड़ां माथै ।—रा. रू.

साथो—देखो 'साथ' (मह; रू. भे.)

साद, साद-सं. पु. [सं. शब्द] १ त्राही-त्राही की आवाज, पुकार ।

उ०—१ तपसी रो रूप धरै अतताई, अडंग कुटी गढ सीत उठाई । मिथळ पुकारी साद गुणीजे, कीजै हो हरि वाहर कीजै ।—रा. रू.

उ०—२ सहियौ पलौ सुकर दुसासण, ऊपर न ह्वै भीम अरि-जण। किसन प्रकार करूं विये किण, संत द्रौपदी तणी साद सुण।
—द्रौपदी री पुकार रौ गीत

२ शब्द।

उ०—सिर्ध निर्ध अठं नवं स, सच्चयं धरं घरे। इकौ-स नांम आखतं, अनेक साद उच्चरे।—सू. प्र.

३ आवाज पुकार।

उ०—वांसै फौज आई। लड़ाई हुई। कितराएक ठाकुर कांम आया। चरड़ौ चंद्रावत कांम आयौ। सिवराज, पूनौ, ईंदौ, भाटी, विजौ। चरड़ै साद कियौ।——नैणसी

४ बोली, आवाज। (ह. नां. मा.)

उ०—ताहरां कांधळ एकल असवारै घोड़ै पावतां नूं वतळायौ। ताहरां जोधै कांधळ री साद ओळखियौ। ताहरां जोधै कांधल नूं बोलायौ। बेऊं भाई एकठा हुआ।—नैणसी

५ आवाज, ध्वनि।

उ०—१ हुइ साद नकीब सिताब हलां, इम होदाय जीण वर्ण अललां। मिळ अंग बगत्तर पक्खर मैं, सज सार खड़ा लख इक्क समैं।—रा. रू.

उ०—२ कई जातरा तत्र पत्राळ कूंजै, गहक्कै सिवा साद सादूळ गूंजै। जिकां दाकलै जातरी पीढ जावै, गुसाईं रहै जागता राग गावै।—मे. म.

मुहा.—साद बैठणौ=गला बैठना, आवाज खराब होना।

६ बात, यश, कीर्ति।

उ०—घणां दिन आवसी असुरां घरै, राज मैं घणां दिन साद रहसी। वाद कीधां बिनां सयदि क्यूं करि वहै, वाद कीधां थकां सयद वहसी।—कुंवर नरपाळ देवळ री गीत

७ आज्ञा, आदेश, हुक्म।

उ०—पुस्करि साद पडावियु, यै नलसूं करसि वात। आस्रम देसि रहिवांनि, हूं करीस तेहनु घात।—नळाख्यांन

८ देखो 'स्वाद' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

९ देखो 'साध' (रू. भे.)

रू. भे.—सद, सद्दि, सद्द, साढ।

१० देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

११ देखो 'साधु' (रू. भे.)

सादगी-सं. स्त्री.—सादा होने का भाव या अवस्था, सीधापन, सरलता।

उ०—१ नरेस भी दूदा रा आवण री जणाइ रणमस्त खां बुलायौ तिण भी आइ दूदौ सादगी रै साथ न पहिचांणियौ।—व. भा.

उ०—२ इण वास्तै म्हारै कमरै मैं म्हांरी बिना फांनूस री नागी छात म्हनै सादगी आळी अर सोवणी लागती। उण माथै म्हैं छत-पंखौ भी कोनी लगवायौ हौ।—तिरसंकू

सादणौ, सादबौ—क्रि. स.—१ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना।

२ पुकार करना, आर्तनाद करना।

उ०—सह रांचै जन सादियां, मत बहरौ कर मांन। कीड़ी नग नेवर भणक, भणक सुणै भगवांन।—र. ज. प्र.

३ शब्द करना, ध्वनि करना।

४ आवाज देना, पुकारना।

५ आज्ञा देना, आदेश देना।

सादणहार, हारौ (हारी), सादणियौ—वि०।

सादिओड़ौ, सादियोड़ौ, सादयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सादीजणौ, सादीजबौ—कर्म वा०।

सादवणौ, सादवबौ—रू० भे०।

सादत—देखो 'सहादत' (रू. भे.)

साददेव—देखो 'स्राद्धदेव' (रू. भे.)

सादपख—देखो 'स्राद्धपख' (रू. भे.)

सादर—आदर सहित, सम्मानपूर्वक।

उ०—१ विधिजा सारद वीनवूं, सादर करौ पसाय। पावाडौ पनगां सिरै, जदुपति कीनौ जाय।—ना. द.

उ०—२ सादर सांईनी आदर उमगाई, उडती परियां सी बरियां घर आई।—ऊ. का.

सादळ, सादल-वि.—१ वीरहाक करने वाला।

उ०—१ घोडा हाथी ऊंट पोठिया, सवि ऊदाली लीधा। सादळ सीह मलिक वि मोटा, बंदि जीवता कीधा।—कां. दे. प्र.

उ०—२ सादळ सीह मलिक जै हता, प्रांणइ बंदि करया जीवता। दीठउं इस्यूं अम्हार इ नेत्रि, सादी मलिक पडिउ रिणखेत्रि।
—कां. दे. प्र.

२ दल सहित।

३ देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

सादवणौ, सादवबौ—देखो 'सादणौ, सादबौ' (रू. भे.)

उ०—समरथ विरुद लोक नहुं सांमी, पुणां भांमी समथ्थपणौ। जन सादवियां अंतरजांमी, घणनांमी आसनौ घणौ।—र. ज. प्र.

सादवणहार, हारौ (हारी), सादवणियौ—वि०।

सादविओड़ौ, सादवियोड़ौ, सादव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सादवीजणौ, सादवीजबौ—कर्म वा०।

सादवियोड़ौ—देखो 'सादियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सादवियोड़ी)

सादापण, सादापणौ-सं. पु.—सादगी, सरलता।

सादाळौ-सं. पु. [सं. स्यंदनः] रथ। (डि. नां. मा.)

सादिन-सं. पु. [फा. शादिन] १ पशु, जानवर।

उ०—घुवी चराकां हा दिन धोळै, मादिन सोर मचायौ। नाद सुवाद्यन पत्ति निसा दिन, सादिन नहीं सुवायौ।—ऊ. का.

२ मृग-शावक, हिरन का बच्चा।

सादियांन, सादियांनो, सादियानो-सं. पु. [फा. शादियानः] मांगलिक उत्सवों व आनन्द मंगल के समय बजने वाले वाद्य, बाजे।

उ०—१ [illegible] हुवो सादियांना वजाया सताब हजूर [illegible] जो बात [illegible] कीवी।

—महाराजा जयसिंह आमेर रा धणी री बात

उ०—२ [illegible] री फौज भागी। बादसाह रै सादियांना बाजा। [illegible] जाहिर नहीं हुवो।

—महाराजा पदमसिंघ री वारता

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], सैंदांण, सैदांणो, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

सादिरीयो-भू. का. कृ.—१ [illegible] लिया हुआ जिम्मेदारी लिया हुआ. २ [illegible] किया हुआ, [illegible] किया हुआ. ३ [illegible] किया हुआ, [illegible] किया हुआ. ४ आवाज दिया हुआ, पुकारा हुआ. ५ आज्ञा दिया हुआ, आदेश दिया हुआ।

(स्त्री. सादिरीयोड़ी)

सादी-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की छोटी चिड़िया का नाम।

[फा. शादी] २ ब्याह, विवाह।

३ [illegible]।

४ शिकार करने वाला व्यक्ति, शिकारी।

५ सवारी करने वाला व्यक्ति, सवार। (हि. को.)

६ देखो 'सादो' (पु.) (रू. भे.)

उ०—[illegible] रै बांह नै उठै [illegible] कीवो। उठै सादी सी आपरै [illegible]।—नैणसी

सादीत-सं. पु.—[illegible]।

उ०—अति सुंदर [illegible] माढ़िया [illegible], सोभा अति पांमइ सादीत चंद्रवदनी मुख दिखइ चाहतां, [illegible] वारह सादीत।

—महादेव पारवती री वेलि

सादुळ, सादुळउ, सादूर, सादूळ, सादूळउ, सादूळो—देखो 'सारदूळ' (रू. भे.) (हि. को; ना. डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ [illegible], [illegible] तरमूळ। जागे नह यह [illegible], [illegible] सादूळ।—बां. दा.

उ०—२ सादूळउ [illegible], घूमर [illegible] फेरतउ घंस। [illegible], [illegible] हंस।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सादूळो [illegible], [illegible] न कोय गिणंत। हाक [illegible] [illegible], [illegible] मरंत।—हा. झा.

उ०—४ [illegible] गयंदां। सादूळो [illegible], [illegible]।—सू. प्र.

सादो-वि. [फा. सादः] (स्त्री. सादी) १ जिसमें एक ही प्रकार के [illegible]।

२ जिसमें किसी प्रकार का घुमाव या उलझन न हो, सरल, सीधा।

३ जिस पर किसी प्रकार के बेल-बूंटे, सजावट आदि का काम किया हुआ न हो, किसी प्रकार के अंकन रहित।

४ छल-कपट से रहित, सीधा, सरल, भला।

५ मूर्ख, बेवकूफ।

६ निर्मल, बेदाग।

७ बिना मिलावट का, मिश्रण रहित।

८ समझने में सरल, आसान।

९ सफेद, श्वेत।

१० जिसकी बनावट में कोई विशेष कौशल न हो।

११ जिसमें कोई विशेषता न हो।

१२ तड़क-भड़क रहित।

सं. पु.—१ एक प्रकार का हाथी विशेष।

२ कागज, कपड़ा आदि, जिस पर बेल-बूंटे, सजावट आदि न हो।

सादो सरोपाव-सं. पु.—एक प्रकार का सरोपाव (पुरस्कार)।

वि. वि.—इस सरोपाव के प्रथम दर्जे में साधारण समय पर १४० रुपये और विवाह आदि के समय पर २४० रुपये दिये जाते थे। परन्तु दूसरे दर्जे में १०० रुपये और तीसरे दर्जे में ७१ रुपये दिये जाते थे।

साद्यस्क-सं. पु [सं] एक ही दिन पूर्ण हो जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ विशेष।

साध-सं. स्त्री. [सं. श्रद्धा] १ इच्छा, अभिलाषा।

उ०—१ मेली तदि साध सुरमण कोक मनि, रमण कोक मनि साध रही। फूलें छंडी वास प्फूले, ग्रहणें सीतळना इ ग्रही।

—वेलि

उ०—२ धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा' पड़ी कै भाभी तो मरीजगी गजब व्हैग्या। ठकरांणी नें कीकर मूंडो बतावांला? उण री अमरचूंनड़ी वाळी साध नें कींकर पूरी करांला?

—अमरचूंनड़ी

मुहा.—साध पुरणी, साध पूराणी=गर्भाधान से सातवें महीने में गर्भिणी स्त्री की 'दोहद सम्बन्धित' इच्छाओं की पूर्ति करना।

२ देखो 'साधु' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ तेत्रीसइ वलि वादी भट्ट, सातसइ आचारिज गह गट्ट। इग्यारह सइ दिगंबर साध, एकवीस सेतंबर वाध।—ग. कु.

उ०—२ साध सुमारग ना लिया, फस्या जगत कै मांहि। जन हरीया उन जीवका, करम न का जांहि।—अनुभववांणी

उ०—३ रांम रांम रमना रटैं, सोई जुग मैं साध। हरीया सिवरन सहज का, वाका मता अगाध।—अनुभववांणी

उ०—४ धन सवरी रो धरम, प्रभु महाराज पधारै। वाळि बांण सांवहे, साध सुग्रीव सुधारै।—पी. ग्रं.

३ देखो 'साद' (रू. भे.)
४ देखो 'साद्ध' (रू. भे.)
रू. भे.—साध्र।

साधक–सं. पु —१ साधना करने वाला योगी, तपस्वी।
उ०—१ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमंद। सबर काज सुधरै सहु, सांई सबर पसंद।—बां. दा.
उ०—२ देवी काळिका मा नमौ भद्रकाळी, देवी दुरगा लाघवं चारिताळी। देवी दांनवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणां सिधं सेवी।—देवि.
२ भूत, प्रेत आदि को वश में करने वाला व्यक्ति।
३ पांच प्रकार के पित्तों में से एक।
४ सहयोगी व्यक्ति।
उ०—आयउ राजांन सिंहासण ऊतर, सिध साधक तेडिया सिध। पारंभ कीध कुंवरि परणावण, वेह्र बांधी भली विधि।
—महादेव पारवती री वेलि
५ हिरण्याक्ष से हुए देवासुर युद्ध में वायु के द्वारा मारा गया एक राक्षस।
रू. भे.—साधिक।

साधका–सं. स्त्री.—दुर्गा देवी का एक नाम।

साधणौ, साधबौ–क्रि. स.—१ ठीक एवं निश्चित समय पर कार्य को पूर्ण करना, पूरा करना।
उ०—१ नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच। 'कन्ह' कवरी लाल सुकनी, आपी 'खेतल' आच।—वं. भा.
उ०—२ जेठां सब मंडप रचियौ थौ तहां बर बैठै लगन साधियौ।
—पंचदंडी री वारता
मुहा.—१ मो'रत साधणौ=ठीक व सुनिश्चित समय पर कार्य करना. २ अवसांण साधणौ=अवसर का लाभ उठाना।
२ करना।
उ०—१ उण ही दिन पाछौ गागरोणि जाइ देह री नित्यचरचा साधै तिकण नै सुणतां ही मीणा ओद्राव धरै —वं. भा.
उ०—२ तीरथराज राजवेता तत, सुख निज राज करै धरियां सत। सिध मुनिराव सेव इम साधै, इम रितराज समै आराधै।
—सू. प्र.
उ०—३ सीसु सिखंडी तणऊं तांमु छेदीउ छलु साधीउ। पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि
उ०—४ प्रिय विण चंगि नारंग, रंग न आवइं आजु। हिव मइं हत्या साधवी, माधवी वेलि न काजु।—जयसेखर सूरि
३ सहज व स्वाभाविक रूप से कार्य को करने के लिए अभ्यास करना।
ज्यूं—दम साधणौ।
४ किसी कार्य में सिद्ध व पारंगत होने के लिए विशेष परिश्रम व प्रयत्न करना।
उ०—मोसूं कोई मोह मत करौ। मैं जोग मंत्र साधिया। मोसूं इसड़ौ भाव राखियौ। इतरौ कहि फेर सौ जोगी पास गयौ। जाय गुरु सूं नमस्कार कर. अग्नि-प्रवेस कियौ। विद्या साधी अरु जक्षिणी रौ अराधन कियौ।—वैताळ पच्चीसी
मुहा.—देखत सीखत साधै जोग, छीजत काया बढत रोग=बिना सोचे विचारे किसी की नकल करने पर दुःख व कष्ट होता है।
५ किसी वस्तु को ठीक व संतुलित रूप से अपने स्थान पर रह कर पूरा कार्य करने योग्य बनाने हेतु उपयुक्त स्थिति में लाना।
उ०—'चेंबर मांय छै कारतूस घाल दिया है। औ देखौ 'लॉक' अठै है, अठीनै घुमातां ई 'रिलीज' हुवै है।' म्हैं बंदूक कांधै माथै साध'र देखी।—तिरसंकू
६ निशाना लगाना, संधान करना।
उ०—१ 'निसांणौ तौ साधणौ आवै है?' 'जी, हां।' 'कठै सीख्यौ?' 'रायफल क्लब मैं इमरजेंसी कोरस कियौ है।'
—तिरसंकू
उ०—२ वा ईज बोली—निसांनौ साधणै री इसौ मोकौ सब नैं कोनी मिळै पवन! रांम धनुस इण वास्तै तोड़ सक्यौ, क्यूं कै सीता सांमीं खड़ी उण रै मन मांय उमंग भर रयी ही।
—तिरसंकू
उ०—३ जळै आप रै रोस असा जुअन्नं, त्रिणा मात्र जांणै घणौ कांमि तन्नं। सबद्दां जिकै वेध धानंख साधी, वळट्टी हुणै बंगड़ी बाळ बांधी।—र. वचनिका
७ मारना, वध करना।
उ०—सुत बगसी साधियौ, आप सुत सुणै डरायौ। मण हजार सोर मैं, जांणि सुरमुक्ख जगायौ।—सू. प्र.
८ उपासना करना, साधना करना।
९ भरना, मारना। (छलांग)
उ०—ठोडी आळी ठौड़ मैं, गोडी सांमी पाळ। अब किण विध पाछौ फिरै, किण विध साधै छाळ।—लू
१० शिक्षित करना, सीखाना।
उ०—इसड़ी कहाइ दूजै ही दिन कुमार दुरजणसाल आखेट रा रमणाहूं परभारौ ही घोड़ा रा चाकरां नूं बरजाइ दोड़ां रा साधिया घोडां रा पचास ही छड़ा असवार साथ लेर पिता रै पगै लागण नूं दिल्ली री फौज रै समीप आयौ।—वं. भा.
११ सीखना, अभ्यास करना।
उ०—उरां धारि बंदूक मोती उतारै, सरां मारि जाता खगां गैण सारै। बळी तोमरां दावकै चाव बाधै, समग्रां गुणां खग्ग रा मग्ग साधै।—वं. भा.
१२ पूर्ण करना पूरा करना।
उ०—भाईय वयणिहिं राधावेधु. नखर साधइ सवि भला ए।

[illegible] मारीज [illegible] पाणि, परन्तु ऊठर [illegible] ए।
—शालिभद्र सूरि

१३ [illegible] करना, सुधारना।

उ०—ई [illegible] तो तिणु केंदी पातसाह वा केंदी स्याहजादा रो [illegible]। हूं सीची मार्यू नै मरहूद बांधू। तिणरी दोडी पर [illegible] न मराई। घडै तो केई तरै का ढुवाव सा'स पावै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

मि. प्र.—१४ विशेष परिश्रम व प्रयत्न से किसी कार्य में सिद्धहस्त होना, [illegible] होना।

१५ निकलना, निर्गत होना।

उ०—जिन वहै पाव तुम सुन रिवां, सार्थे ज्यूं हिज सधायलूं। [illegible] हूं पद है पवन, विग्रवापणूं वधायलूं।—ऊ. का.

१६ निकलना, भाग जाना।

उ०—१ मारीज [illegible], भीमि पुरोहितु लागहरं, मेल्हीउ दीधु [illegible] पासी पुतु मिनए।—शालिभद्र सूरि

उ०—२ [illegible] मेहो स्याळ विल, गिर त्रिय बांमण गाय। सम-[illegible] साधला, पाहै चित चलाय।—बां. दा.

साधणहार, हारो (हारी), साधणियो—वि०।

साधियोड़ो, साधियोड़ो, साध्योड़ो—भू० का० कृ०।

साधीजणो, साधीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

संधणो, संधबो, सांधणो, सांधबो—रू० भे०।

साधदेव—देखो 'साहदेव' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा; ह नां. मा.)

साधन-सं. पु. [सं.] १ किसी कार्य को पूरा करने की क्रिया।

२ कार्य को पूरा करने का माध्यम, सहायक उपकरण।

उ०—[illegible] ऊरध, मग जगत मूरध, साधन समग्र अखिलेस [illegible]। [illegible] मीम, अनुभव अगीम, सिद्धांत सार, निज निरा-धार —ऊ. का.

३ किसी वस्तु को तैयार करने मे प्रयुक्त होने वाला सामान, सामग्री।

४ किसी कार्य को सम्पादित करने में प्रयुक्त होने वाला, सामान, सामग्री।

यदू—[illegible] तो कराओ पण साधन है कै नीं।

५ [illegible], त्रुटि, दोष आदि दूर करने वाली बात, उपचार।

६ कोई तत्व या वस्तु जिसकी सहायता से कार्य पूरा होता है।

७ जिसकी सहायता से युद्ध हो।

८ सेना, फौज। (ह. नां. मा.)

९ उपाय, तरकीब।

१० उपासना, साधना।

११ मदद, सहायता।

१२ धन-दौलत।

१३ [illegible]।

वि.—धनाढ्य, मालदार।

उ०—झाड उन्हाल री झाड हूं झासरा, जल तजै पाणि पाताळ जावै। साधन बैठा पिये मालिए सरबतां, निधन नह विन नीर हाथ नावै।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—साहण।

साधना-सं. स्त्री. [सं.] १ किसी कार्य को सम्पन्न करने की क्रिया।

२ आराधना या उपासना।

साधनो—देखो 'साजणी' (रू. भे.)

साधवाद—देखो 'साधुवाद' (रू. भे.)

साधवी-सं. स्त्री. [सं. साध्वी] १ भली तथा शुद्ध आचरण वाली स्त्री।

उ०—अद्धघणूं, माता माहारी बाल साधवी नारी। बेहूनूं जीवन तो हूं छूं, मूकावी मोरारी।—नळाख्यांन

२ पतिव्रता, पतिपरायण स्त्री।

उ०—सती स्यांम सेती सुरग जै, उतम गुण अमरां सजै। जुग जुग जगत साधवी वजै, सपनै ना पर नर भजै।—नारी लाईकड़ो

३ साधु स्त्री, आर्या।

उ०—१ प्रीतम पुत्र, तिन रिध तजी जी, मुझ नै किसो घरवास। दीक्षा लै व्रत आदरूं जी, हूं जासूं साधवियां कै पास।—जयवांणी

उ०—२ साहू इकलख वंदी भवियां, त्रिण लख वीस सहस साध-वियां।—ध. व. ग्रं

रू. भे.—साध्वी, साहुणि, साहुणी।

साधस-सं. पु. [सं. साध्वस] भय, डर। (ह. नां. मा.)

साधार-वि.—१ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा। विस-तार जस चहूंवळा, साधार सेवग सांवळा।—र. ज. प्र.

उ०—२ तरां किलराहेक तो विचार सोच कीधो। अर म्होकमसिंघ सुणनै पहरिया बैठो थो सो सरपाव अर घोडो घणो धन लवरदार नूं दीधो सो ओ तो म्होकमसिंघ उधारा आंटां रो लेणहार। सरणै आयां रो साधार।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ पनाह व आश्रय देने वाला।

उ०—सरणायां साधार, 'दला' जिसो न दूसरो। वीरम रा भण-पार, जबर गुना जिण जारिया।—वी. मा.

३ आधार, सहारा।

उ०—१ अलख तूं हीज आदेस, अमर नर-नाग उपावण। संत जती साधार, धार ही खांणि चलावण।—ह. र.

उ०—२ वणक सहोदर परत्रिया, वणक राय साधार। धोरंग चितामण वणक, वेढम वयावर वार।—बां. दा.

४ भरण-पोषण करने वाला, पालन-पोषणकर्त्ता।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति तीसरै हुकम हुआ अरज कीधी जु राजांन राजेस री तपतेज परमेसर परब्रम, अजनम, निरंजण, निराकार, संसार सिरोमणि, संसार साधार, ईस्वर

अवतार।—रा. सा. सं.

५ सहायक, मददगार।

उ०—मिलियो दुखियां साधार रे, जो आय चढै घर बार उतरे। सफल गिणुं अवतार रे, थायै मन मांहि करार रे।—वि. कु.

६ करने वाला, देने वाला।

उ०—जै अंतरजामी वार नमांमी, स्वांमी जय साधार। जोड़ी चिरंजीव पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सधार।

साधारण-वि. [सं.] १ जिसमें कोई विशेषता न हो, सामान्य।

२ जो सर्वसाधारण के समझने योग्य हो, सरल, सहज।

३ रक्षक, आश्रयदाता।

उ०—१ धर अंबर ढक्कियण, वेद ब्रह्मा विसतारण। त्रिभुवन तारण तरण, सरण असरण साधारण।—ह. र.

उ०—२ राज भभीखण लाज राखण, सरणागत साधारण। धनंख सायक भुजां धारण, मह असुर खळ मारण।—र. ज. प्र.

४ रुद्रवीसी का चौथा वर्ष। (ज्योतिष)

साधारणगांधार-सं. पु.—वज्रिका नामक श्रुति से आरम्भ होने वाला एक प्रकार का विकृत स्वर।

साधारणत, साधारणतया-क्रि. वि. [सं. साधारणतः, साधारणतया] सामान्य रूप से, साधारण तौर पर, सामान्यतः।

साधारणता-सं. स्त्री.—साधारण होने का भाव या अवस्था।

साधारणधरम-सं. पु. यौ. [सं. साधारणधर्म] १ वह धर्म जो एक ही प्रकार के सब पदार्थों में पाया जाय।

२ सार्वजनिक धर्म।

साधारणी-सं. स्त्री. [सं.] एक अप्सरा।

साधारणौ, साधारबौ-क्रि. स. [सं. साऽऽधारम्, साऽऽधारीकरणम्]

१ बचाना, रक्षा करना।

२ आश्रय देना, शरण देना।

३ सहायता करना, मदद करना।

४ भरण-पोषण या पालन-पोषण करना।

साधारणहार, हारौ (हारी), साधारणियौ —वि०।

साधारिश्रोड़ौ, साधारियोड़ौ, साधारयोड़ौ —भू० का० कृ०।

साधारीजणौ, साधारीजबौ —कर्म वा०।

साधारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बचाया हुआ, रक्षा किया हुआ. २ शरण दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ. ३ सहायता दिया हुआ, मदद किया हुआ. ४ भरण-पोषण या पालन-पोषण किया हुआ।

(स्त्री साधारियोड़ी)

साधि—देखो 'साध्य' (रू. भे.)

उ०—येहनि मरण जरा नि व्याधि, एकै सुख नहीं तां साधि। करम तणै वसिथी जै भमि, तै मांनव मूरख निगमि।

—नळाख्यांन

साधिक—देखो 'साधक' (रू. भे.)

उ०—तिण समै कोई कहै छै। रजपूती रा साधिक नै इस्ट रा अराधिक ठाकुरै पहली कही थकी तो और सी लागै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

साधिका-सं. स्त्री. [सं.] दुर्गादेवी का एक नाम।

साधित-वि [सं. साधित] १ सिद्ध किया हुआ।

२ तैयार किया हुआ।

३ प्राप्त किया हुआ।

४ धुला हुआ। (डि. को.)

साधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ठीक एवं निश्चित समय पर कार्य को पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. २ किया हुआ. ३ सहज एवं स्वाभाविक रूप से कार्य करने के लिए अभ्यास किया हुआ. ४ किसी कार्य में सिद्ध व पारंगत होने के लिए विशेष परिश्रम किया हुआ, प्रयत्न किया हुआ. ५ किसी वस्तु को ठीक व संतुलित रूप से अपने स्थान पर रह कर पूरा कार्य करने योग्य बनाने हेतु उपयुक्त स्थिति में लाया हुआ. ६ निशाना लगाया हुआ, संधान किया हुआ. ७ मारा हुआ, वध किया हुआ. ८ उपासना किया हुआ. साधना किया हुआ. ९ भरा हुआ, मारा हुआ (छलांग). १० शिक्षित किया हुआ, सीखाया हुआ. ११ सीखा हुआ, अभ्यास किया हुआ. १२ पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. १३ विशेष परिश्रम व प्रयत्न से किसी कार्य में सिद्धहस्त हुवा हुआ. १४ निभा हुआ, निभाव हुवा हुआ. १५ निकला हुआ, भागा हुआ. १६ व्यवस्थित किया हुआ, सुधारा हुआ।

(स्त्री. साधियोड़ी)

साधु-सं. पु. [सं.] १ श्रेष्ठ कुल का व्यक्ति, कुलीन व्यक्ति।

२ सज्जन व्यक्ति।

३ संत, महात्मा।

उ०—हरीया हरि दरगाह, जांह साधु जन संचरै। और न जांणै राह, पाव विहूंणौ चालिबौ।—अनुभववांणी

४ धार्मिक, परोपकारी या सद्गुणी पुरुष।

५ वह जो सांसारिक प्रपंच छोड़ कर विरक्त हो गया हो, वैरागी।

६ व्यापारी, वणिक।

७ एक वैश्य का नाम जिसका वर्णन 'सत्यनारायण-व्रत कथा' में मिलता है।

८ जैन यति, साधु।

९ भक्त।

उ०—साधुआं सुधारी सही पापियां विसारै परा, संभारै चीतारै तिकां तारै सिरताज। जवनां उधारै मारै जुध मांन हारै जद, पसारै समंद माथै परवारै पाज।—पी. ग्रं.

१० जिसकी साधना पूरी हो गयी हो।

वि—१ सुंदर, मनोहर। (ह. नां. मा.)

२ [illegible] ।
३ [illegible] ।
४ [illegible], साधार, साधू, साधो ।
[illegible] —साधुड़ो ।
साधुड़ो—देखो 'साधु' (अल्पा; रू. भे.)
साधुता-सं. स्त्री.—१ साधु होने का भाव ।
२ [illegible] ।
३ [illegible] साधुओं जैसा आचरण ।
साधुधर्म-सं. पु. यौ. [सं. साधु+धर्म] साधुओं का धर्म, यति धर्म (जैन)
साधुमति, साधुमती-सं. स्त्री.—तांत्रिकों की एक देवी ।
साधुर—देखो 'साधु' (रू. भे.)
उ०—[illegible] गोकुळ वाळ, निमावंत साधुर दुस्ट संगाळ । [illegible] जगातक काळ न व्यापै जम्म । —ह. र.
साधुवाद-सं. पु. [सं. साधुवादः] १ उत्तम कार्य करने पर किसी की 'साधु साधु' कहते हुए प्रशंसा करने की क्रिया, धन्यवाद ।
२ [illegible] में की हुई प्रशंसा या बात ।
३ [illegible], प्रशंसा (श. सा.)
रू. भे.—साधवाद ।
साधू, साधो—देखो 'साधु' (रू. भे.)
उ०—[illegible] साधू कौन साधू, मिट मरजादू काढ [illegible] जन कह्यौ [illegible] साधू, [illegible] साढ ए ।—करुणासागर
साध्य-सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार के गण देवता जिनकी संख्या बारह है—मन, मंता, प्राण, नर, अपान्, वीर्यवान, विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष और प्रभुव ।
वि. वि.—पुराणानुसार ये दक्ष प्रजापति की पुत्री साध्या व धर्म के संयोग से उत्पन्न हुए थे ।
२ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक । (ज्योतिष)
३ एक गण जिसमें तीन नेत्रों वाले ८४ करोड़ रुद्रोपासक समाविष्ट थे ।
४ गुरु से लिए जाने वाले चार प्रकार के मंत्रों में से एक । (तंत्र)
५ देवता ।
६ चाक्षुष मनु के पुत्रों में से एक ।
वि.—१ सिद्ध करने योग्य ।
२ जिसकी चिकित्सा की जा सके ।
३ सहज, सरल ।
४ [illegible] साधि ।
साध्यता-सं. स्त्री. [सं.] साध्य होने की अवस्था या भाव ।
साध्या-सं. स्त्री. [सं.] दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी ।

साध्र—देखो 'साध' (रू. भे.)
उ०—मेली तदि साध सुमरण कोक मनि, रमण कोक मनि साध्र रही । फूलै छंडी वास प्रफुलै, ग्रहणै सीतळता द ग्रही ।—वेलि
साध्वी—देखो 'साधवी' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ कामी कूड़ प्रपंच घणांकर, भूड़ करै तन भेर । ऊ साध्वी दिस धूड़ उडायर, कूड़ बतावै फेर ।—ऊ. का.
उ०—२ मुगधा मध्यांनै मोडा मिळ जावै, पढ पढ प्रारथना प्रोझ दिन जावै । हीयागम भ्रागम उलटा पण होवै, साध्वी दुख देतै कुलटा सुख सोवै ।—ऊ. का.
सानंद-वि.—आनन्दपूर्वक, आनन्द सहित ।
उ०—परा केतकी केवड़ा वास पावै, अनेकां जांण दूर सोरंभ आवै । लसै अंद सानंद कुंदं गुलाबं, निरखै हुवै इंद्रवाड़ी निराबं ।
—रा. रू.
साप-सं. पु. [सं. सर्प प्रा. सप्प] (स्त्री. सापण, सापणी) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला विषैला जन्तु, नाग, सर्प ।
उ०—१ साप नां नाथि आयौ घरै छोकरा, दही रौ दांण लै नंद रा डीकरा । तै हीज कंस राऊ रा दईत सहि ओढ़िया, छालि रै काजि छीका घणा छोडिया ।—पी. ग्रं.
उ०—२ कट्या घण सज्जळ छज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समांन । ससूदित साप समाक्रत सुंड, दतूसळ मूसळ रूप दुरंड ।
—मे. म.
पर्याय.—अहि, आसीविख, उरग, कंचुकी, काकोदर, काळ, काळिंदर, कुंडळी, कुंभीनस, क्रतकाळ, गरळग, गूढपग, गूढपद, चक्री, चखस्रवा, चील, जिह्मग, जैहरी, दंदसूक, दरवीकर, दीरघरिस्ट, धंधींगर, नसदरवी, नाग, पनंग, पवनासण, पवनासनी, प्रदाक, फणारी, फणी, भमंग, भुजंग, भुजीस, भोगी, लेलहांन, वक्रगति, विखधर, विखहर, विलेसय, विलेसरी, विसधर, व्याळ, सरीस्रप, सारंग ।
मुहा.—१ छाती माथै साप फिरणौ=सदमा बैठना, अत्यधिक दुख होना. २ बंबी में वहतां तौ साप ही सीधौ व्है=समय आने पर धूर्त व कपटी को भी सरल व सीधा होना पड़ता है. ३ मोळायोड़ो तौ साप ई नीं खावै=जिम्मेदारी का पालन करने के लिए त्याग करना पड़ता है. ४ मरयौ साप गळा में घाल्यां फिरणौ=किसी बात को व्यर्थ में पकड़े रहना. ५ साप अंगूठा याळो मेळ व्हैणौ, साप आंगळी आळो मेळ व्हैणौ=संयोगवश होना. ६ साप ई मर जाय अर लाठी ई नीं भागै=बिना हानि या नुकसान के कार्य सफल होना. ७ साप कद बिल खोदै=बलवान लोग गरीब व निर्बल का माल हड़पते हैं. ८ साप सायो नै पुरवाई चाली=कठिन कार्य में और कठिनाइयां आना. ९ साप खाया नै अदीतवार कद आवै=उचित समय पर किसी चीज का न मिलना. १० साप गयां लीक कूटणी=परम्परावादी होना,

रूढ़ीवादी होना. ११ साप छछूंदर री गत व्हैणी=दुविधा में पड़ना. १२ साप नैं दूध पावणौ=दुष्ट व शत्रु का पालन करना. १३ साप रा पग पेट में व्है=बुरे व्यक्ति को बुराइयां गुप्त होती है. १४ साप रा मूंडा मैं पड़णौ=खतरे में पड़ना. १५ साप री चाल चालणी=कपटपूर्ण व्यवहार करना. १६ साप रौ कांई छोटौ अर कांई बड़ौ=दुश्मन चाहे छोटा या दुर्बल हो उसकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये. १७ साप रौ खायोड़ौ बिछुंवां सूं कांई डरैं=बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना किया हुआ व्यक्ति छोटी मुसीबतों से नहीं डरता. १८ साप सळीट्या तौ केई देख्या पण इजगर तौ अबै इज देख्या=कई साधारण दुष्टों से सामना होने के बाद किसी भयंकर दुष्ट से सामना होना. १९ साप सूं रमणौ=खतरनाक व्यक्ति से सम्पर्क करना, अत्यन्त खतरे का कार्य करना. २० सापां रै किसी सैंद अर ठगां किसी मितराई=दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता वह तो हर किसी के साथ दुष्टता ही करता हैं. २१ सापां रा ब्याव में जीभां रा लपळका=अभावग्रस्त से कुछ प्राप्त करने की उम्मीद करना. २२ सापां रै किसा साख=दुष्ट व्यक्ति रिश्ते का लिहाज नहीं करते।

वि.—१ काला, श्याम। * (डिं. को.)

२ क्रूर। * (डिं. को.)

३ देखो 'सराप' (रू. भे.)

रू. भे.—संप, सांप।

अल्पा;—सपळोटियौ।

सापग्रसत सापग्रस्त—वि. [सं. शापग्रस्त] १ शाप से पीड़ित या जिसे शाप दिया गया हो।

[सं. सर्पग्रस्त] २ सांप का काटा हुआ, सर्पदंस।

सापचेत देखो 'सावचेत' (रू. भे.)

उ०—सिधराव नै कह्यौ, उठ बैठा हुवौ नै भैरू सूं दाकळ कीधी। पर-घर पैंसण चोरटा, सापचेत हुइ, हूं जगदेव आयौ। तिसै भैरू नै जगदेव बथोबथ हुवा।—जगदेव पंवार री बात

सापण, सापणी, सापिण, सापिणी—सं. स्त्री.—१ आग, अग्नि।

२ नागिन, सर्पिनी।

३ बरछी, भाला। (ना. डिं. को.)

४ देखो 'नागण' (४, ५)

रू. भे.—सांपण, सांपणी।

सापणौ, सापबौ—क्रि. स.—शाप देना, बददुआ देना।

उ०—सिवि संकर ना सापियौ, दीयौ ब्रह्म नां दांन। नांम तुहारी नारीयण, भुजण दीयौ भगवांन।—पी ग्रं.

सापणहार, हारौ (हारी), सापणियौ—वि०।

सापिग्रोड़ौ, सापियोड़ौ, साप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सापीजणौ, सापीजबौ—कर्म वा०।

सापतेयक—सं. पु. [सं. स्वापतेयक] धन-दौलत। (ह. नां. मा.)

सापतौ—देखो 'सावतौ' (रू. भे.)

उ०—जणां च्यार तौ हमीर आपरै माथै सापता पाड़ीया, पांचवैं इकै बाहदर हमीर नुं वाही। वडौ बाहदर रै हाथ री, तिकौ सांमंत रै हाथ री लागी, तिकौ हमीर रौ माथौ वढीयौ।

—अरजन हमीर भीमौत री बात

साप री छतरी, साप री ढाल—सं. स्त्री. यौ.—प्राय: वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का जंगली पौधा, जिसमें केवल डंठल होता है तथा डंठल के ऊपर छतरी सी होती है।

साप री मासी—सं. स्त्री. यौ.—एक प्रकार का जन्तु विशेष।

सापियोड़ौ—भू. का. कृ.—शाप दिया हुआ, बददुआ दिया हुआ।

(स्त्री. सापियोड़ी)

सापुरख, सापुरस—सं. पु. [सं. सत्पुरुष] सत्पुरुष, सज्जन।

उ०—१ बिरतंत सहु कमरै कह्यौ, जिम थयौ धुर थी मांडि। सापुरस झूठ कहै नहीं, नेह न नांखै छांडि।—वि. कु.

उ०—२ जेह काचा हुवै तन तणा जी, बात मांनै नहि साच। पिण तुमै सगुण सापुरस छौ जी, मांनज्यौ अवचल वाच।

—वि. कु.

२ वीर एवं बहादुर पुरुष।

उ०—१ मरदां मरणौ हक्क है, ऊबरसी गल्लांह। सापुरसां रा जीवणां, थोड़ा ही भल्लाह।—हा. झा.

उ०—२ अंग न छूटै आखड़ी, सीहां सापुरसांह। आखड़ियां अळगी रहै, कुतरा कापुरसांह।—बां. दा.

३ भला, सज्जन।

उ०—१ लाखां धन दै लोक नैं, म मरोड़ै मूंछ। सापुरसां रै सींग नहि, पांमर रै नहि पूंछ।—ऊ. का.

उ०—२ पियै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल। सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।—ऊ. का.

सापुरसाई—सं. स्त्री.—१ सज्जनता, भलमानसता।

२ वीरता, बहादुरी।

सापूर—देखो 'सेंपूर' (रू. भे.)

उ०—वधै लूर सापूर फौजां वखांणै, जळानिद्धि उच्छेदियौ बंध जांणै। महाराज सेन्या वहै राज मग्गं, वधै बाजुवां लोल हिल्लोल वग्गं।—रा. रू.

सापेक्ष—वि. [सं.] १ किसी अन्य तत्व, विचार, दृष्टिकोण आदि से सम्बद्ध होने के कारण उसकी अपेक्षा रखने वाला।

२ किसी की अपेक्षा करने वाला।

३ अपेक्षित, अपेक्षा रखने वाला।

सापेक्षता—सं. स्त्री.—१ सापेक्ष होने की अवस्था या भाव।

२ सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक आइन्स्टीन का सिद्धान्त जिसमें विश्व सम्बन्धी पुराने गुरुत्वाकर्षण आदि के सिद्धान्तों का खण्डन करके यह सिद्ध किया गया है कि विश्व की सारी गति सापेक्ष है।

[illegible] म्हूं [illegible] दूजै [illegible] कुमार रातै । ई नै ई 'न्यूटन' [illegible] पर 'आइन्स्टीन' वां नै सापेखता कैवै है ।
—तिरसंकू

साफो-सं.पु.—१ सूतक के दौरान भूमि पर बारह दिन तक सोने की एक रस्म विशेष ।
(वि. [illegible])
२ देखो 'साफो' (रू. भे.)

साफ-वि. [अ.] १ मलरहित, स्वच्छ, निर्मल ।
उ०—[illegible] सूरज रा धन, साफ जळ सूं कर धोवै । घर मा दांतण [illegible], [illegible] मोनल न मरोवै ।—दावर सईरड़ो
ज्यूं—साफ कपड़ो ।
२ दोष, विकार आदि से रहित ।
ज्यूं—वो साफ दिल रो आदमी है ।
३ शुद्ध, खालिस ।
ज्यूं—साफ सोनो ।
४ जिसका तल ऊबड़-खाबड़, गांठ या गाभा से रहित हो ।
ज्यूं—खेत साफ है ।
५ जिसकी रचना में दोष, त्रुटि आदि न हो ।
ज्यूं—थां री लिखावट साफ है ।
६ नैतिक दृष्टि से बिलकुल ठीक, शुद्ध, छल-कपट से रहित ।
ज्यूं—वो साफ नीति रो आदमी है ।
७ जिसमें किसी प्रकार का अंधकार या धुन्धलापन न हो, देखने में निर्मल, स्वच्छ ।
ज्यूं—१ रोसनदांन सूं घर में साफ रोसनी आवै । २ बिरखा पछै आभो साफ [illegible] ।
८ स्पष्ट ।
उ०—१ नाहर आगळ न्हासता, सुणता वातां साफ [illegible] [illegible], तो आगळ 'परताप' ।—महादांन वणसूर
उ०—२ सुणियो कांनां साफ, पारस किणी न पेखियो ।
—महादांन वणसूर
उ०—३ यूं बड़ो जोर जतावतो कैवण लागो—सेठ होय यूं डरो [illegible] ! [illegible] है । पण म्हनै बाच में दीसै ज्यूं साफ दीसै है कै थांरै [illegible] आवैला ।—फुलवाड़ी
मुहा.—(१) साफ कैणो=स्पष्ट कहना । (२) साफ छूटणो, साफ बचणो=निर्दोष प्रमाणित होकर बच जाना । (३) साफ साफ कैणो, साफ साफ सुणाणो= खरी खरी कहना, स्पष्ट कहना ।
९ समाप्त, खतम ।
ज्यूं—माल साफ कर दियो ।
मुहा.—साफ करणो=नष्ट करना, मारना, वध करना, खतम करना, तमाम करना ।

१० चुकाया हुआ, चुकता ।
ज्यूं—उणरो हिसाब साफ कर दियो ।
११ जिसमें किसी प्रकार की बाधा या विघ्न न हो, सहज, सरल, निर्विघ्न ।
उ०—म्हैं खुस हो नै बोल्यो—लीना, तूं म्हारो भार हळको कर दियो । एक बात जिकी मन मांय व्याधा बण रई ही वा साफ होयगी । ठीक है, म्हैं थोड़ो भर गांठड़ी काले दोनूं पुगा दूंला ।
—तिरसंकू
१२ जो अनुचित या नियम विरुद्ध न हो । (कार्य)
ज्यूं—उण री खेल साफ ही ।
१३ जिसके सुनने या समझने में कठिनाई न हो ।
ज्यूं—बी० बी० सी० री खबरां साफ आवै ।
१४ जिस पर कुछ अंकित न हो, कोरा ।
ज्यूं—साफ कागद ।
१५ बिलकुल ।
उ०—१ म्हैं भी साफ रूखो जवाब दियो—मैनेजर री इजाजत लियावो । अब तांणी म्हैं सोफै सूं उठ'र दरवाजै कनै ऊभो हो ।
—तिरसंकू
उ०—२ मां, इण रांमत सूं तो म्हारो जीव साफ फाटग्यो । थारै आगै म्हारो बस नीं चालै, नींतर म्हैं तो कदेई न्हाय छूटती ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ जै अळगै दिसावर ग्रैड़ो जोगो टावर साथै चालै परो तो कैड़ो नांमी कांम बणै । सेठ कुमार नै आपरै मन री बात दरसाई । पैला तो कुमार साफ नटग्यो ।—फुलवाड़ी
उ०—४ म्हैं दूजी कांनी मूंडो फेर लियो पण आडी निजर सूं देख्यो तो वै दोन्यूं जणां म्हारै कांनी ईज आवता हा । एक जणो साफ नजीक आय'र बोल्यो—बाबू तुमी इकड़े रहणार आए ।
—रातवासो

साफ-चट-वि.—बिलकुल साफ, पूर्ण साफ ।
ज्यूं—थाळी नै चाट'र साफचट कर दी ।

साफळ—देखो 'सफल' (रू. भे.)
उ०—असमेध कोट कीधां इसा, भव्य जनम साफळ भया । जग कही कथा वेदै 'जगा', गया गयां प्रेता गया ।—ज. खि.

साफल्य-सं. स्त्री.—सफलता ।
उ०—साफल्य स्वप्न संपति समांन, पांनी मंथन मैं घ्रत प्रमांन । चांचल्य चित्त सिद्धांत चूक, सब सेखसली कै हैं सलूक ।—ऊ. का.

साफी-सं. स्त्री.—१ 'चिलम' से धूम्रपान करते समय 'चिलम' के नीचे लपेटा जाने वाला वस्त्र का टुकड़ा ।
२ भांग छानने का कपड़ा ।
३ मुंह का स्वाद, जायका ।
४ सफाई का भाव, सफाई ।

क्रि. प्र.—देणी।

सं. पु.—५ वह बैल जिसकी जिह्वा सफेद हो।

रू. भे.—स्याफी।

साफीरंदी-सं. पु. यौ.—लकड़ी को साफ व समल करने का एक औजार विशेष।

साफौ-सं. पु—सिर पर लपेट कर बांधने का एक प्रकार का वस्त्र जो पगड़ी से ज्यादा चौड़ा व कम लम्बा होता है।

उ०—१ करणी आंटै पगां री धाखड़ जुवांन। माथै ऊपर गोळ साफौ, दाड़ी माथै कस्योड़ी जाड़ियाळौ काठौ धाटौ। चौड़ौ चपाट मूंढौ, लांबौ लिलाड़ ज्यूं कूंडौ।—दसदोख

उ०—२ पूरी मरदांनी औरत ही। वा कह्या करती कै साफौ बांधै जितरा सगळाई आदमी नीं व्है अर ओरणौ ओढै जितरी सगळी ई लुगायां नीं व्है।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सापौ।

सा'व, साव—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकर सा'व थोड़ी दूर सैल करण गया तौ सरी पण मन विना ही। जी डगूं-पचूं करै। मनसा पाछी फुरै। पग-पग माथै घोड़ी नै ठांमै अर लारनै झांकै है।—दसदोख

उ०—२ सिपाई नीचै चक्कर काटनै आयग्यौ अर बोल्यौ, 'मैनेजर घरां चल्यौ गयौ साव। इंस्पेक्टर झूंझळ खा'र म्हनै बोल्यौ—दरवाजै सै परै हटे हे कै धक्कौ मारनै तनै दूर करूं'।—तिरसंकू

सावक-वि.—सब, समस्त।

उ०—सावक राज देसां मैं दुहाई सूं जमाया, पाछै राव सेखापाट, थानक फेरि आया।—शि. वं.

सावकियौ—देखो 'सावकौ' (अल्पा; रू. भे.)

सावकै-वि.—साधारण, मामूली।

उ०—घडै सावकै जोर सूं खाग धारां, हुवै चोट वारी हजारै हजारां। वडा वीर वीराध वाकार वाहै, सु तौ सामुहै चाचरै वाहि साहै।—रा. रू.

सावकौ-सं. पु.—चाबुक, कोड़ा।

अल्पा;—सावकियौ, सावटियौ।

मह;—सावक।

सावज—देखो 'सावक' (रू. भे.)

सावटियौ—देखो 'सावकौ' (अल्पा; रू. भे.)

सावण, सावण—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—१ सौच सदा निमट नर आवै, हाथ साफ सारा करै। ऊजळां छोरां धूड़ आगै, सावण तौ पांणी भरै।—दसदेव

उ०—२ तेल-फुलेल, अतर-सेंट रा कंटर अर सावण-सोढै रा गोडै-गोडै सूणा सिंदूक राजा-मा'राजा रा सा पड़चा दीखै। पटवारी है, कै तैसीलदार? किसनजी कीं कूंत नीं सक्यौ।—दसदोख

उ०—३ खुटै जरदैत जिकै इम खांति, तुट्टै तिम सावण दावण तांति। मंडै कट तेग हुवै मसतांन, खंडै अंगरेज रू नाहरखांन।

—सू. प्र.

सावणघर—देखो 'साबुनघर' (रू. भे.)

सावत, सावतौ-वि. [फा. साबित] (स्त्री. सावती) १ स्थिर, कायम।

उ०—१ सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तलक तुलसी नरजण जाप। राह हींदू धरम तणौ सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप।—महाराजा जसवंतसिंह प्रथम रौ गीत

उ०—२ नाव तिरै नहं नीर मैं, निबळां नावड़ियांह। राजस नंह सावत रहै, मिनखां मावड़ियांह।—बां. दा.

उ०—३ अजै सूर झळहळै, अजै प्राजळै हुतासण, अजै गंग खळहळै, अजै सावत इंद्रासण।—कमौ नाई

२ सही सलामत, अखण्डित।

उ०—१ आदमी पचास था तिकां मांही अेक ही नहीं नीसरियौ। पुरजो-पुरजो होय पड़िया। घोडा सारां रा वढ गया। सावतौ अेक नहीं रहियौ।—सूरै खींवै कांधलोत री वात

उ०—२ मूंछ नाक सिर रौ मुकुट, ससतर सांम सनाह। सावत लायौ समर सूं, कै नंह लायौ नाह।—बां. दा.

३ जिसका क्रम बीच में न टूटे, निरन्तर चलने वाला।

उ०—१ तिण ऊपर स्वांमी जी द्रस्टांत दियौ—एक जणै तौ तीन एकासणा किया। एकेक टंक मैं छै-छै रोटी खाधी। एक जणौ तेलौ करनै आधी आधी रोटी खाधी। यां मे भागल कुण नै सावत कुण? तेला वालौ भागल खोटौ अनै एकासणा वालौ सावत चोखौ।—भि. द्र.

४ पूर्ण एक इकाई।

उ०—१ हरीया रोटी सावती, चाहै चोपड़ीयांह। चोपड़ियां चाळौ करै, सारी भठि पड़ीयांह।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया रोटी अरस की, आधी मिळै हसाब। जो चाहै लौ सावती, तौ तुझि नहीं सबाब।—अनुभववांणी

५ पूरा, समस्त, सब।

उ०—जो नरसिंघजी की वाजी सावूत रहसी, थें सावता लोकां नूं लै नीसरसौ तौ। पठांण नु वेगौ धकौ देसां। विवंत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवंत देख लड़ै, तिकां घरती रहै।

—राजा नरसिंघ री बात

६ दुरुस्त, ठीक।

उ०—१ जोम छरा सावत जितै, सावत गात सुभाव। इळ पुड़ भल जीवौ इतै, वादीला वनराव।—बां. दा.

उ०—२ हरीया घाव न एक, सब तन सारा सावता। अंदर छेंक अनेक, चोट सबद की वह गई।—अनुभववांणी

७ प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणित।

उ०—ई रे सागै चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकौ म्हैं अगर-

[illegible] री बर्कें सो हूं निकर करतो पर मनै दोमी [illegible] ।—[illegible]

[illegible] न हुया हो, प्रभव, प्रभव्ड, [illegible] ।

उ०—१ [illegible] मैं तो नोनूं पान पानी हुती तिण तूं [illegible] माबनो गर्न ।

—देवजी वगड़ावत री वात

उ०—२ [illegible] सीस नवीठ, देतो नाक दड़ फिरै [illegible] । [illegible] प्रहै नमि हाथ मझै पतिसाह ।

—मे. म.

२ [illegible] ।

रू. भे.—[illegible], साबित, साबुत, साबतो ।

साबतकदम—वि. यौ. [अ. साबित + फा. कदम, फा. साबितकदम] दृढ़निश्चय, [illegible] ।

उ०—[illegible] सावतकदम आगै जाय जाय कोट सूं लागा छै । [illegible] और किवाड़ै दे देखो ताला गड़ो हर कोट मैं जाय पड़ो ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

साबन—१ देखो 'साबांन' (रू. भे.)

२ देखो 'साबुन' (रू. भे.)

साबर, साबरमंत्र—सं. पु. यौ. [सं. शाबरमन्त्र] शिव कृत माना जाने वाला एक प्रसिद्ध मंत्र । (अमरत)

रू. भे.—साबर, साबरमंत्र, साबरीमन्त्र ।

साबरमती—सं. स्त्री.—१ इडर की एक नदी का नाम जो मेवाड़ के पहाड़ों से निकल कर उत्तर की तरफ बहने के बाद दक्षिण को आती है और [illegible] रियासत की सीमा बनाती है ।

(वीरविनोद ।

रू. भे.—साभरमती, साबरी, साभरमती ।

साबळ—सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का भाला । (डिं. को; ना. डिं. को.)

उ०—१ [illegible] मुगल्लां । [illegible] —रा. रू.

उ०—२ [illegible] साबळी बाहां-प्रलंब, जोवतो मूरमा [illegible] । [illegible] मधुकर [illegible] ।—नाथो [illegible]

उ०—३ [illegible] साबळ [illegible] । [illegible] ।—नाथो सांदू

२ देखो 'सांद' (रू. भे.)

साबळी—देखो 'सबळी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] साबळी हुवो । [illegible] राजासर [illegible] ।—द. दा.

सावस्त—सं. पु. [सं. श्रावस्त] युवनाश्व राजा का पुत्र व वृहदश्व राजा का पिता एक राजा, जिसने श्रावस्ती नगर बसाया था ।

सावांण—सं. पु.—१ छोटा तम्बू, खेमा ।

उ०—ठामि ठामि सावांण सिराचा, दहिली नइ एक चोई । ऊंचे पांमें बारगइ दीधी, तेह तणी परि जोई ।—कां. दे. प्र.

२ देखो 'साबांन' (रू. भे.)

सावांणी—वि.—साबुन का, साबुन सम्बन्धी ।

सावांन—सं. पु. [अ. शाबान] १ इस्लामी आठवाँ महीना ।

२ देखो 'सावांण (रू. भे.)

सावात—सं. स्त्री.—१ बारूद की सुरंग ।

उ०—१ संमत १६१८ रा फागण वद ७ कोट घेरीयो छै । भुरज एक तिण सावात था उडीयो छै । सु राठौड़ देवीदास मुगळ था बात करनै निसरीया छै ।—नैणसी

उ०—२ भुरज नूं सावात लागी तरै सुणीजै छै, तीन जणा रहिया । तिणां तरवार उडतां काढी, सु तिकां मैं एक उरजन ।

—नैणसी

उ०—३ घटा काळ सी डंकाळ सी तोपां यो सावात धवकी, मेगळां है खुरां जम्मी मचक्की प्रेमांण । वीर घंटा लीधा साथ चंड़का किलक्की चक्की, आमेरनाथ री सेना यौं हुक्की आरांण ।

—सिवदांन कवियो

२ बारूद का भण्डार ।

उ०—जुड़ै थडां जाडावाळी धोम जाळा री सावात जागी, खंडां आडावाळा री लागी हाला री खुलास । जोम गाडावाळी प्रळय काळा री रनागी जठै, वागी हाडावाळी नराताळी री वांणास ।

—दुरगादत्त वारहठ

३ शत्रुओं द्वारा किले की दीवार तक पहुँचने हेतु किले की दीवार से भी ऊंचा, किन्तु ढका हुआ, बनाया गया एक प्रकार का मार्ग विशेष, जिसमें किले के भीतर वालों की मार से सुरक्षित रह कर हमलेवर किले के पास पहुंच जाते है ।

वि. वि.—चित्तोड़-विजय के समय अकबर ने ऐसे ही दो रास्ते बनवाये थे जो बादशाही डेरे के सामने थे । ये रास्ते इतने चौड़े थे कि उनमें दो हाथी व दो घोड़े साथ-साथ चले जा सकते थे एवं ऊंचे इतने थे कि हाथी पर बैठा हुआ आदमी भाला खड़ा किये इसके अन्दर से जा सकता था । सावात बनाते समय राणा के सात-आठ हजार सैनिकों व कई गोलंदाजों ने इन पर हमला किया था । कारीगरों की सुरक्षा हेतु गाय-भैंस के मोटे चमड़े की छावन थी तो भी वे इतने मरे कि ईंटों एवं पत्थरों की जगह शवों को चुना गया था । बादशाह ने कारीगरों को प्रचुर मात्रा में मजदूरी दी । किसी से किसी प्रकार की बेगार नहीं ली गई बल्कि मजदूरों में रुपयों पैसों की वर्षा कर दी । एक रास्ता किले की दीवार तक पहुँच गया और वह इतना ऊंचा था कि दीवार उसमें नीचे दिखाई देती थी । इस

रास्ते की चमड़े से बनी छत पर पर बादशाह की बैठक थी जिस पर बैठ कर बादशाह अपने वीरों का करतब देखता एवं स्वयं भी बन्दूक लेकर बैठता था एवं युद्ध में भाग लेता था। इधर सुरंग लगाई जा रही थी और किले की दीवारों के पत्थर काट-काट कर सेंध लग रही थी।

किले के दोनों ओर पांच हजार कारीगर व खातियों द्वारा सावात बनाये जा रहे थे। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि सावात एक प्रकार का दीवार मार्ग था जो किले से गोली की मार की दूरी पर खड़ी की जाती थी और उसके तखते बिना कमाये चमड़े से ढके होते थे। उनकी रक्षा में किले तक कूचा सा बन जाता था। फिर दीवारों को तोपों से उड़ाते हैं और सेंध लगने पर बहादुर भीतर घुस जाते हैं।

मतान्तर से यह ऊंची टेकरी का सा भी होता था जिस पर से किले पर गरगज (ऊंचे स्थान) की तरह मार की जा सकती थी।

साबास—सं. पु. [फा. शाबास] एक प्रशंसा सूचक शब्द, वाह-वाह।

उ०—१ खुसी रहौ सुख भोगवौ, बसौ खेरवै बास। यूं कै ठाकर तेजसी, सारंगां साबास।—तेजसी सांदू

उ०—२ बोलाई सांढ ताती छै। तिण चढ नै जालोर जा। सवा पोहर दिन चढियां मोहल जाए। तोनै साबास देसां।

—वीरमदे सोनगरा री बात

उ०—३ हाजीखांन तेजसी नूं कह्यौ—साबास तोनूं भलीभांत आयो, हिमैं हुं ई आऊ छुं, बुरौ मत बोल। तरां पछै हाजीखांन पिण हाथी उतरियौ नै घोड़ै चढियौ।—राव मालदेव री बात

रू. भे.—छैबास, सहबास, सैबास, स्याबास।

साबासणौ, साबासबौ—क्रि. स.—शाबासी देना।

साबासणहार, हारौ (हारी), साबासणियौ—वि०।

साबासिग्रोड़ौ, साबासियोड़ौ साबास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साबासीजणौ, साबासीजबौ—कर्म वा०।

स्याबासणौ, स्याबासबौ—रू० भे०।

साबासियोड़ौ—भू. का. कृ.—शाबासी दिया हुआ।

(स्त्री. साबासियोड़ी)

साबासी—सं. स्त्री. [फा. शाबासी] वाह-वाही, शाबासी।

उ०—१ रावजी रेढा च्यारूं देख बड़ा राजी हुवा। कुंग्रर नूं घणी साबासी दाद दीवी। निवाजस कीवी। कुंवर री साथ और लोग रजपूत थौ तिण नूं अलग-अलग दिलासा दीवी।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ पछै सरब कांम आय चूका अर सरब आग मांहै पड़िया, तद पातसाह सइयै वांकलियै नूं साबासी दीवी।

—पताई रावळ री बात

रू. भे —छैबासी, सैबासी, स्याबासी।

साबिण—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—संग्रांम खडग्ग वाहंत सनड्ढ, वपै पळ तंडळ ऊखळ वड्ढ। वढै जरदैत जडाळ वहंति, तुटंत गडा किरि साबिण तंति।

—गु. रू. बं.

साबित—देखो 'साबत' (रू. भे.)

उ०—फेर धीरैसीक म्हारै माथै हंस'र बोल्या—'वैल पवन, इण गरीबी रै कारणां मांय सूं कांई साबित करणी चावै है कै इण मांय सूं किसौ फेक्टर कारखांनौ लगावण मैं मदद देवैलौ।—तिरसंकू

साबियांणी—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—मांगळियांणी वीरमा घण ऊभी पलै, आज पड़पण आपरै धण लीधा दलै। समाध नखै पखरी चंगी केकांणी, वीरम पहरै धोयें साबियांणी।—वी. मा.

साबी—सं. स्त्री.—जयपुर रियासत में जैतगढ और मनोहरपुर के पास की पहाड़ियों में से निकल कर नाभा रियासत में दाखिल होने वाली नदी। (वीर विनोद)

२ अलवर की मशहूर नदी जो रेतीले भूभाग से गुजरती है। इसकी कोई खास उपज नहीं होती। (वीर विनोद)

साबु, साबु, साबुण, साबुन—सं. पु. [पु.] रासायनिक क्रिया द्वारा बनाया हुआ एक पदार्थ जो वस्त्र, शरीर आदि को स्वच्छ करने के काम आता है।

रू. भे.—सब्बु, सब्बुन, साबण, साबन, साबिण, साबियांणी, साबू, साबू।

साबुणघर, साबुनघर—सं. पु.—१ वह स्थान जहां साबुन बनाया या रखा जाता है।

२ प्लास्टिक की बनी डब्बी जिसमें साबुन रखा जाता है।

रू. भे.—साबणघर, साबूगर, साबूघर।

साबू, साबू—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

साबूगर—साबुन बनाने वाला।

साबूणी—देखो 'साबूनी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांम सिलांमति भांति-भांति रा मांस जाति-जाति रा पकवांन जिलेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरौ, पूरी, साबूणी, खेरां, पंचाम्रत।—रा. सा. सं.

साबूत—१ देखो साबत' (रू. भे.)

उ०—१ राज री हकीकत हुई, सु तौ सही पण लोक आजूं ताई साबूत छै। जौ नरसिंघजी की वाजी साबूत रहसी।

—राजा नरसिंघ री बात

उ०—२ इम करतां जैत सामधीयौ हूवौ। ताहरां वैदां आय गुदरायौ, 'महाराज जैत साबूत हूवौ छै।—जैतमाल पुमार री बात

उ०—३ चूंडा भोक थारी आडी लोह री बाखांण चवां, ताई होय गया तारा दीह रा ताबूत। रघू अवीहरा पणै रांणैराव वाळौ राज, सीहरा बणाव जेम राखियौ साबूत।—भीमसिंह चूंडावत री गीत

२ देखो 'सबूत' (रू. भे.)

[illegible] —[illegible] के बने का चूरा जो [illegible] मे मूला किया जाता है, साबूदाना ।

[illegible] —[illegible] प्रकार की मिठाई ।

उ०—१ [illegible] साबूनी करैमै नवी, भांति भांति मिसरकी भांति [illegible] मैदे की और नमक री दाल, करवा सूंदा करार जीमै [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] सुद मोदा रे, नान साबूनी मुनार । [illegible] पान, रोटी दाल मसूर ।—जयवांणी

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.) (म. मा.)

उ०—·········[illegible] एक भला कूंया, जै दीठड हुइ मनोहर, [illegible] भला-भला सरोवर, जै दीठड पांमीद उहलास, तुरया भला [illegible] सामरमती नम् नीर········· ।—व. स.

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] सामात, स्वामव्रत नाय न चूकै । राज काज [illegible], [illegible] प्रमुकै ।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] सामाय सुपह जैचंद [illegible] । [illegible] सीहौ [illegible], [illegible] चलै पूर दळवळ [illegible] ।—सू. प्र.

सायंकाळ-सं. पु. [सं. सायंकाल] संध्या, शाम । (ग. मा.)

उ०—१ [illegible] विस्रामं, विती प्रस्यात प्रात मद्यायं । सायंकाळ निमीनं, रतं भूर नृप मदनायं ।—रा. रू.

उ०—२ सिकार रा रसणा में पांच ही दिन बिताद एक एक [illegible] सायंकाळ रै समय बूंदी [illegible] ।—व. भा.

रू. भे.—सांयंकाळ, सांयकाळ ।

सायंत—देखो 'सांमंत' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सायंत, [illegible] दाखियो [illegible] । एक वार [illegible] दीजै, दोटां पछै ईस सिर दीजै ।

—सू. प्र.

सायंसंध्यादेवता-सं. स्त्री. [सं.] सरस्वती देवी का नाम ।

साय-सं. पु. [सं. साय.] १ दिन का अन्त, सन्ध्याकाल । (डि. को.)

२ [illegible], [illegible], वार ।

उ०—[illegible] भलो, [illegible] भलो मनाय । [illegible] आगै वया [illegible] ।—अनुभववांणी

३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] निवेदणौ [illegible] रै हाथ है, [illegible] साख [illegible] रै हाथ है । [illegible] सूं जवार काई वांधनै । [illegible] करै, [illegible] मारै कोनी ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] रखियो दाव, [illegible] देसवा । अब तो वेगो आव, साय करण नै सांवरा ।—रामनाथ कवियो

४ देखो 'साह' (रू. भे.)

सायक, सायक्क-सं. पु. [सं. सायकः] १ बाण, तीर ।

(अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ धनु सायक पांण सुभायक धारै, रघुनायक सायक संत सु तारै ।—र. ज. प्र.

उ०—धर सुकर सायक धांनुखं, लड़ समर रहचण लागं । दुजराज गरब विभंज दरसतं, सरब जग सरणं ।—र. ज. प्र.

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

३ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

रू. भे.—साइक, साइक्क ।

सायगवेसण-वि.—सुख की गवेषणा करने वाला । (जैन)

सायजद्दौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—तूझ भरोसै केहरी, ओवम राजंदां । राजा जसवंत सिंघ सूं, दहुँवै सायजद्दां ।—लूणकरण कवियो

सायजादापण, सायजादापणौ-सं. पु.—शौकीन रहने का भाव, अमीरता ।

सायजादी-सं स्त्री. [फा.] १ बादशाह की पुत्री ।

२ शाहजादे की वेगम ।

उ०—१ भूरै रै अग-नैणी भूलर, मेह तणी परि मोरां । जोगण पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरां ।

—अमरसिंह राठौड़ रो गीत

उ०—२ हूरम सायजादी चे हिंदू रो घोड्यो कोनी देव । दिल पयांनी वेगम चुग चुग तो ढाया यें मिहर देवरा ।—लो. गी.

सायजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—१ सायजादां हूतां सरस कर सैफळ, मिटी राखी भुजां जांण माजा । साज सकिया नहीं खळां दळां साजता, रण अकळ जीवतांसंभ राजा ।—नाथो सांदू

उ०—२ वाहतां तेग अनमंघ कांध वीछड़ै, हुसत वंध हुसत दोय टूक होवै । सायजादा दळै हिंदवा-पातसाह, 'जसा' अवसर अच्छर तूझ जोवै ।—महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

(स्त्री. सायजादी)

सायज्यादौ - देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—पातसाह साजिहांनजी रै आगै ए सायज्यादा च्यारू ई हाजर था ।—द. दा.

सायटू-क्रि. वि.—बांयी ओर । (शकुन)

(मि. मालाळी)

सायण-सं. पु.—१ वेदों का उत्तम भाष्य लिखने वाले एक प्रसिद्ध आचार्य ।

२ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—आहि भाय कुकमी, मयण सायण गुन नारी । काया हूमी

अकज, सवै माया दुपियारी ।—ज. खि.

सायणवाद-सं. पु.—सायण का सिद्धान्त या मत ।

सायत-सं. स्त्री.—१ समय, वक्त।

उ०—१ जिणां दिनां गुजरात रै सोवै मैं गांव हजार सतर री मालक अमदसाय छो, पाय-तखत अमदाबाद रहै। सू फौज री कूच हुवो । जिण सायत री गीत ।—द. दा.

उ०—२ जिस सायत परदल के बिगारू निज दल के किवाड जंगू कै जैतवार अंगू कै ओनाड ।—र. रू.

२ थोड़ा समय, क्षण, घड़ी ।

उ०—१ विखे कै तुम नायक और सब के मुदायत । सो जंग की ढील मैं बरस जैसी सायत ।—रा. रू.

उ०—२ बड़ा कही छै एक सायत न्याय री बादसाह नूं तोल मैं साठ वर्ष री वंदगी जूं खरी छै।—नी. प्र.

३ देखो 'सायद' (रू. भे.)

उ०—१ म्हनै सत करणो है सो उण वेळा री नाळेर सायत मिळै क नहीं मिळै इण सारू गहणां रै भेळो नाळेर राखियो ।

—वी. स. टी.

उ०—२ उठ दासी कस ढोलियो, गहरा दीपक जोय दड़बड़ । माची देहरां, सायत साजन होय ।—लो. गी.

रू. भे.—साइत ।

सायता—देखो 'सहायता' (रू. भे.)

उ०—दुसट तथा दंःणोगै मिनख नै मार देणै री संः लोग सला देवै पण मारचां पछै कोई ही सैय अर सायता नीं करै। पैली बैः बिहाल की बातनै डाढी चोखी बतावै, जिका ही पछै बीं बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै ।—दसदोख

सायतो—देखो 'सासतो' (रू. भे.)

उ०—नवाब री बेटी एक वरसां पनरै सोळै री बाहर रमण नै सायतो आवै सु अखैराज भदावत रजपूत दूजा ही हुता तिकै तो सारां कह्यो—अठै तो जवाब नहीं, आपां हालो परा जावां ।

—नैणसी

सायद-सं. स्त्री.—साक्षी, सबूत ।

उ०—१ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून । ऊवांणी सायद भरै, सो गोलां घर सून ।—बां. दा.

उ०—२ बांका वेद पुरांण बिच, सायद आ छै सून । सुख संतोस सराहियो, आपदत्त अबधूंत ।—बां. दा.

अव्यय—कदाचित, सम्भवत ।

उ०—१ सरदार सायद आपरी बडाई सूं पिघळग्यो । म्हनै उम्मीद कोनी ही इसी बात बोल्या—तनैं घणा-घणा धिनवाद है । तूं मोरचो छोडनै म्हारै कनै आ सकै है।—तिरसंकू

उ०—२ असली सिद्धांत उणांनै नौकरी देवणिया वांनै समझावै भी कोनी । समझा देवै तो सायद इणां मांयला घणकरा लिख्या पढ्या बगावत कर देवै ।—तिरसंकू

रू. भे.—साइत, सायत ।

सायदांणो, सायदांनो—देखो 'सादियांनो' (रू. भे.)

उ०—कुंवर विचित्र परणीज घरां आइयो । गाजै बाजै सायदांना बजावतां बधाय भीतर लियो । घणो हरख राजा रै पचास बरस सूं हुवो ।—पलक दरियाव री बात

सायदी-वि.—साक्षी देने वाला, साक्षी । (डिं. को.)

सायधण-सं. स्त्री.—१ पत्नी, सहधर्मिणी।

उ०—१ पंचम पहरै दिवस कै, सायधण करै बुहार। रिमझिम रिमझिम हुय रही, पायल री झणकार ।—अग्यात

उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नंह संग । गिनका सूं राखै गुसट, रसिया तोनूं रंग ।—बां. दा.

उ०—३ साच कहूं तो सायधण, महळ छोड मिजाज । सजण प्रमोदण सेज मैं, करी लाज बेकाज ।—नारायणसिंह सांदू

२ प्रेयसी, प्रेमिका ।

उ०—स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ । संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ ।—बां. दा.

रू. भे.—सयधण, साइधण ।

सायब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ हलकार भडां थट 'पाल' हसै, कमरांबंध मांझिय साथ कसै । 'अमरांण' मैं वाजिय डाक अड़ै, सुपियारी री सायब आज चढै ।—पा. प्र.

उ०—२ महपाळ सिधां कुळ मितारो, पह पाळक संतां पीसारो । जग जाय जमारो जीतारो; सुज संभर साधव सीतारो ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ भूधर तूं ही हारियां भीरू, आपण तूंही अनाथां नाथ । केसव तूंही साथ कुसाथां, सायब तूंही न साथां साथ ।

—ओपो आढो

उ०—४ मैं जपती नाव मेरै सायब का, आंण मिळो नंदलाल रे ।

—मीरां

उ०—५ सायबां फिरंगां धकै जंगळ सोहड़, घात नज दुख पवै सोच गाढै । जुडै मुसायब जैपुर तणां जिला सूं, किला सूं मांन माहराज काढै ।—बां. दा.

उ०—६ सायब लोक बखांणै सारा, दाद दुनी सह दीधी । 'चिमनै' जिसी मरण जुध सूरां, किणी अचड़ नह कीधी ।

—बुधजी आसियो

(स्त्री. सायबणी, सायबांणी)

सायवणी, सायवांणी-सं. स्त्री.—पत्नी ।

उ०—१ महलां मांयलो दिवलो वो कंत तुम्हारो जी राज दिवला री जोत सायबणी ।—लो. गी.

उ०—२ ज्यां री मायड़ सिर री मेवरो, सायबांणी म्हैं तो मेजां री निजरार।—लो. गी.

सायबी—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

उ०—१ उणरी मांनतो हुवो। जिकण दिन सूं होज कर्नै री सायबी जुट गई। नाहरां सींवड़ां सूं वेड़ करी तद 'कलो' पनरै बरस रो हुवो।—नैणसी

उ०—२ जद अणरां महर मांहै हुवेली लेनै रो सीधो अबै घणा फजदा करावा। घणा नेहणा करावा है। यौं सायबी करै छै।
—पंचमार री बात

उ०—३ पीछै वीरमदेजी उठै सूं सोरा कर विदा हुवा सू गांव झूझाली लीवी। नै वणहटो बरवारो लियो। नै पठै बैस रया। तद राव मालदे मुणी कै वीरमदे री सायबी उघणी हुई।
—द. दा.

उ०—४ 'नांगाहरो' सांमहो छै आवतो घोड़, जीवतो नागलो नागां लेर। जोध 'सब्छेव' रो पावतो फतै जाडा थंडा, खाय जातो श्रमीरां देतो सायबी बिगेर।—नवलजी लाळस

उ०—५ इण तरै मलूकदास रै तो मास्तरी फाचरै आई पण धाई। कठै तो वै बी. डी. श्रो. रा ऐंठा-चेंठा वासण मांजनै लूखा-सूखा टुकड़ा गारता अर कठै आ सायबी भोगणी।—अमरचूनडी

सायबो—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सांवण आयो सायबा, लुळ लुळ वरसै लूर। गोव उदर्कै गोरड़ी, जोवन में भरपूर।—नारायणसिंह मांदू

उ०—२ गह घूमी लूंबी घटा, पावस उलट्या पूर। सांवण महीनै सायबा, वर्दे न गम्यूं दूर।—अज्ञात

सायर—सं. पु. [फा. शायरी] १ कविता रचने वाला, कवि।

[अ. सायर] २ जगात विभाग, कस्टम विभाग।

३ वह भूमि जिस पर किसी प्रकार का कर न हो।

वि.—१ सज्जन, भला सीधा।

उ०—१ स्वांम मिळै जै सूर, कांमणी रवै न कायर। कायर कर्य हणी, वणी गुणवळ सायर।—नाथी सईकड़ो

उ०—२ सायरां सानी केयी है जै सो दिन नहीं आवै।
— दसदोष

उ०—३ सायर गुरग्यानी प्यारा यवलेखा आवै थारा।
—लो. गी

२ समझदार, बुद्धिमान।

३ गम्भीर।

४ जो चंचल न हो।

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—विन वसनी सौ मोव, पाप ईमीं परमातां। विमळ विकासां दवै, छवै सायर गुण ग्यातां।—डावर सईकड़ो

६ देखो 'सागर' (रू. भे.)

रू. भे.—साइर।

सायरकण—सं. पु. [सं. सागर+कण] मोती, मुक्ता।

उ०—जेहवा बिरद तुहाळा 'जालम' सायरकण कुणण सारीस।
—चतुरभुज बारहठ

सायरसोढो—सं. पु.—दामाद के आने पर गाया जाने वाला एक प्रसिद्ध लोक गीत।

सायरी—सं. स्त्री. [अ. शायरी] १ कविता बनाने का कार्य, काव्य रचना।

२ कविता।

सायरो—देखो 'सहारो' (रू. भे.)

उ०—१ लारै छोटा-छोटा कीड़ा है, हूं लुगाई रो मालम हूं। चारा कांनी तिणखै रो ई सायरो को है नीं।—वरसगांठ

उ०—२ कई रो थोड़ो सायरो हो तो गोवन रो, जको वै नै पुचकारतो, लाड करतो अर गोदी में बैठावतो।—वरसगांठ

सायळ सायल—सं. पु. [अ. सायल] प्रश्नकर्त्ता।

२ भिखारी, भीख मांगने वाला।

उ०—जो सायल मांगणे वाळो उण री पोळ सूं निरास जाय तो मोटा मन में सरम खाय।—नी. प्र.

३ प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

४ उम्मीदवार, आवेदनकर्त्ता।

५ पीतल तथा लोह का बना भारी लट्टू जिसमें ऊपर की ओर रस्सी बांधी रहती है जो ईंट पत्थर व दीवार की सीध देखने में काम आता है।

सायस्या—सं. पु.—पंवार वंश के क्षत्रियों की एक शाखा।

साया—वि. [अ. शाया] १ प्रकट, जाहिर।

२ प्रकाशित।

३ छाया, प्रतिबिम्ब।

सायाबंदी—सं. स्त्री.—विवाह के अवसर पर मण्डप बनाने की क्रिया।
(मुसलमान)

सायीबांन—देखो 'सांमियानो' (रू. भे) (हि. को.)

सायीसेस, सायीसेस—सं. पु. [सं. शय्याशेष] भगवान् विष्णु।

उ०—नमो सिव सागर सायीसेस, नमो व्रज बाळ नमो नट वेस। नमो गोविंद नमो गोपाळ, नमो गिरधारिय नंद गवाळ।—ह. र.

सायुज, सायुज्य—सं. पु. [सं. सायुज्यं] १ पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति या मोक्ष। इसमें जीवात्मा का परमात्मा में लीना माना जाता है।

उ०—सालोक्य संगति रहै, सांमीप्य सन्मुख सोइ। सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होइ।—दादूवांणी

२ किसी में इस प्रकार मिलने की क्रिया कि भेद न रहे।

३ समानता, सादृश्यता।

रू. भे.—साजज, साजुज्य, साजोजमुकत, साजोजमुकति, साजोज-मुक्त, साजोजमुक्ति, साजोजमुगत, साजोजमुगति।

सायुज्यता-सं. स्त्री.—सायुज्य का गुण या भाव, सायुज्यत्व।

सायो-सं. पु. [फा. साय:] प्रभाव, असर।

उ०—दूजो बादसाह देस मैं जीव जोखै छै। जद आपरो सायो रैयत रै माथां सूं अळगो होय तरै फिसंद होय। संसार मैं खराबी होय।—नी. प्र.

२ सहारा, मदद।

उ०—महाराजा गजसिंहजी कन्है मूमारखी बधाई मेली और कहियो काम सारो आपरै सायै सूं पेस चढियो छै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ वड़ां कही छै बादसाह नूं अदल सायो प्रभू कृपा रो छै।

—नी. प्र.

३ प्रतिबिम्ब, छाया।

४ आश्रय, शरण।

सारंग-सं. पु. [सं.] १ हंस। (डिं. को.)

२ सर्प, सांप। (डिं. को.)

उ०—सारंग लै सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय। जै सारंग सारंग कहै, तो मुख रो सारंग जाय।—अग्यात

३ वीणा। (डिं. को.)

४ हरिण, मृग। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—१ सारंग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारंग पुचकारै सारंग को।—अग्यात

उ०—२ सारंग हण आया अवधेसर, सेस हूंता पूछै राजेस्वर। किण विध न दीसै सीत सूनी कुटी।—र. ज. प्र.

५ मोती, मुक्ता। (डिं. को.)

६ मयूर, मोर। (अ. मा; डिं. को; नां मा; ह. नां. मा.)

उ०—सारंग लै सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय। जै सारंग सारंग कहै, तो मुख रो सारंग जाय।—अग्यात

७ बन्दर, वानर। (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

८ शीशा। (अ. मा; डिं. को.)

९ नाद, ध्वनि। (डिं. को.)

उ०—सारंग लै सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय। जै सारंग सारंग कहै, तो मुख रो सारंग जाय।—अग्यात

१० आकाश, गगन। (डिं. को.)

११ तोता, सुक। (डिं. को.)

१२ कोयल, कोकिल। (डिं. को.)

उ०—सारंग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारंग पुचकारै सारंग को।—अग्यात

१३ कमल, वारिज। (डिं. को.)

१४ वस्त्र। (,,)

१५ वृक्ष, पेड़। (डिं. को.)

१६ नारियल। (,,)

१७ केसर। (,,)

१८ मेह, वर्षा। (,,)

१९ सिंह, शेर। (डिं. को; ना. डिं. को.)

२० चन्द्रमा, चांद। (अ. मा; डिं. को.)

२१ सूरज, सूर्य। (डिं. को.)

२२ तलवार, खड्ग। (,,)

२३ दीपक, दीया। (अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सारंग लै सारंग चली, दै सारंग री ओट। सारंग सांम्ही आवियो, सारंग करगो चोट।—अग्यात

उ०—२ सारंग नैना सारंग बैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारंग पुचकारै सारंग को।—अग्यात

२४ पर्वत, पहाड़ (डिं. को.)

२५ हस्ती, हाथी। (अ. मा; डिं. को; ना. डिं. को; ह. नां. मा.)

२६ पक्षी। (डिं. को.)

२७ चन्दन। (,,)

२८ चिन्ह, निशान। (,,)

२९ अग्नि, आग। (,,)

३० जल, पानी। (,,)

उ०—सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग धरयो, सारंग सारंग माय।—अग्यात

३१ बादल, मेघ। (डिं. को.)

उ०—१ सारंग पांण वांण तन सारंग, धरणसुता धन खग धरण। वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण।

—र. ज. प्र.

उ०—२ सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग धरयो, सारंग सारंग मांय।—अग्यात

३२ भ्रमर, भौंरा। (अ. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

३३ धनुष। (डिं. को.)

उ०—१ कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां, सुकर खग दांन जेहांन ऊंचासरा। सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा, वाह रघुनाथ लंका लियण बांकड़ा।—र. ज. प्र.

उ०—२ सारंग पांण बांण तन सारंग, धरण सुता धव खग धरण। वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण।—र. ज. प्र.

३४ प्रकाश, ज्योति। (अ. मा; डिं. को.)

३५ स्वर्ण, सोना। (डिं. को.)

३६ गरुड़। (,,)

३७ शंख। (,,)

३८ चातक, पपहिया। (अ. मा; डिं. को.)

३९ घोड़ा, अश्व। (डि. को.)
४० एक प्रकार का घोड़ा।
४१ विष्णु के धनुष का नाम।
उ०—१ गरज सुत रथ बेद-वांणां, मघर पांणां साहणो। सारंग बांनी, सुध सनाणी, धन सुड़ांणां पूठ।—र. ज. प्र.
उ०—२ सारंग सिंह्रीमुख साथि सारथी, प्रोहित जांणणहार पद। कामझ घी ततकाळ कृपानिधि, रथ बैठा सांभळि अरथ।
—वेलि.

४२ विष्णु भगवान्।
४३ कामदेव।
४४ शिव, महादेव।
४५ श्रीकृष्ण का एक नाम।
४६ विद्युत, बिजली।
४७ समुद्र, सागर।
४८ भूमि, जमीन।
४९ कबूतर।
५० तालाब, जलाशय।
उ०—सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग घरचो' सारंग सारंग माय।—अग्यात
५१ बाज, श्येन।
५२ कोयल।
५३ मेंढक।
५४ आभूषण, गहने।
५५ दिन, दिवस।
५६ रात, रात्रि।
५७ कपूर।
५८ हाथ, हस्त।
५९ कुच, स्तन।
६० हल।
६१ काजल।
६२ छाता।
६३ सिर के बाल।
६४ नक्षत्र, ग्रह।
६५ सखा।
६६ शोभा, सुन्दरता।
६७ चीतल हिरन।
६८ बारहसिंगा।
६९ बगुला, बक।
७० तिनका, तृण।
७१ सारंगी नामक वाद्य।
७२ एक प्रकार की मधुमक्खी।
७३ चितकबरा रंग।
७४ कान्ति, दीप्ति।
७५ ईश्वर, भगवान्।
७६ परब्रह्म।
७७ घड़ा, कुम्भ।
उ०—सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग घरचो, सारंग सारंग मांय।—अग्यात
७८ वायु, पवन।
उ०—१ पहाड़ां पाणर पड़ी, घटा ऊमड़ी। मोर सोर मंडै, इंद्रधार न खंडै। आभो गाजै, सारंग वाजै। द्वादस मेघ नै दुखो हुवो, सू दुखियारी री आंव हुवो।—रा. सा. सं.
उ०—२ सारंग लै सारंग चली, दै सारंग की ओट। सारंग सांम्हो आवियो, सारंग करगो चोट।—अग्यात
७९ वस्त्र, कपड़ा।
उ०—सारंग लै सारंग चली, दै सारंग की ओट। सारंग सांम्हो आवियो सारंग करगो चोट।—अग्यात
८० सोनचिड़ी, खंजन।
८१ स्त्री, औरत।
उ०—१ सारंग लै सारंग चली, दै सारंग की ओट। सारंग सांम्हो आवियो, सारंग करगो चोट।—अग्यात
उ०—२ सारंग नैना सारंग वैना, सारंग लै चली सारंग को। सारंग नै झकझोर दियो, सारंग पुचकारै सारंग को।—अग्यात
उ०—३ सारंग लै सारंग चली, सारंग पौंहच्यो आय। सारंग मैं सारंग घरचो, सारंग सारंग मांय।—अग्यात
८२ लक्ष्मी, रमा।
८३ शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)
उ०—तठा उपरांयत जांगड़ियां नै हुकम हुवो छै। सू भजन ख्याल गावै छै। माता हाथी गजराज घटाभर ज्यूं झोला खावै छै। सहनायां मांहे सारंग वणायो छै।—रा. सा. सं.
८४ दर्पण, काच। (डि. को.)
८५ पुष्प, फूल।
८६ आर्या गीतिका या खंधाण का एक भेद।
८७ चार तगण के योग से बनने वाला छंद विशेष। (डि. को.)
८८ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार तगण होते हैं। (रि. सि.)
८९ छप्पय छन्द का २६ वां भेद जिसमें ४५ गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु व ५८ लघु वर्ण सहित कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।
वि.—१ रंगीन, चमकदार।
२ सुन्दर, सुहावना।
३ रसीला, सरस।

रू. भे.—सारंग।
अल्पा;—सारंगड़ो।
सारंगक—सं. पु. [सं.] दर्पण, शीशा।
सारंगका—सं. पु.—एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १५ गुरु वर्ण होते हैं।
सारंगड़ो—देखो 'सारंग' (अल्पा; रू. भे.)
सारंगदेश्रोत—सं. पु.—सीसोदिया वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
सारंगधर, सारंगधरण—सं. पु. [सं.] १ विष्णु भगवान। (डि. को.)
उ०—भला तूझ उवारण जयो, जगदीस जुरारी। नरहर गुरु हरनाथ निमो, निकळंक त्रिजारी। कन्हैया कान्हुश्रा निमो निकळक नरेसर, ग्वाळ निमो ग्वाळिया साच साथै **सारंगधर**।—पी. ग्रं.
२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)
३ श्रीकृष्ण।
वि.—सारंग को धारण करने वाला।
सारंगनट—सं. पु.—सारंग व नट के योग से बना एक प्रकार का संकर राग विशेष। (संगीत)
सारंगपांण, सारंगपांणि, सारंगपांणी, सारंगपांनि—वि. [सं. सारंगपाणि]
१ जिसके हाथ में धनुष हो।
२ जिसके हाथ में शंख हो।
सं. पु.—विष्णु-ईश्वर।
उ०—१ रिध सिध दियण कोयला रांणी, बाळा बीजमंत्र ब्रहमांणी। बयण दियै यो अविरळ वांणी, पूरण क्रीत जिम **सारंगपांणी**।
—ह. र.
उ०—२ रिधू गोत कनवज्ज रहायो, आप चमू संग दरसण आयो। प्रसन करै जिण **सारंगपांणी**, एकण छत्र धरा पर आंणी।
—रा. रू.
३ रामचंद्र।
उ०—सीता सी रांणी, वेद वखांणी, **सारंगपांणी** सांम। मीढ न मघवांणी बल ब्रहमांणी, नहि रुद्रांणी रांम।—र. ज. प्र.
४ श्री कृष्ण।
सारंगभरत, सारंगभ्रत—सं. पु. [सं. सारंगभृत] विष्णु भगवान् का नाम।
सारंगभ्रमरी—सं. स्त्री.—कर्नाटक पद्धति की एक प्रकार की रागिनी विशेष। (संगीत)
सारंगा—सं. स्त्री.—अप्सरा। (नां. मा.)
२ संगीत में एक प्रकार की रागिनी विशेष। (संगीत)
सारंगिक—सं. पु. [सं. सारंगिक] १ बहेलिया, चिड़ीमार।
२ एक प्रकार का वृत विशेष।
सारंगिया—सं. पु.—राजस्थान में निवास करने वाली एक जाति विशेष।
सारंगियो—सं. पु.—१ उक्त जाति का व्यक्ति।
२ सारंगी बजाने वाला।
सारंगी—सं. स्त्री. [सं. सारंग] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध तार वाद्य जिसका स्वर बहुत ही मधुर एवं प्रिय होता है।
२ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा; ह. नां. मा.)
३ विष्णु। (डि. को.)
४ धनुष। (अ. मा.)
५ पाँच भगण से बनने वाला एक प्रकार छंद विशेष।
सार—सं पु. [सं. सारः] १ तत्व, सत्त, मुख्य तत्व।
उ०—१ परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु, प्रणवि त्रिण्हे तत **सार**। मंगळरूप गाइजै माहव, चार सु ही मंगळचार।
—वेलि
उ०—२ तूं जुग नारी जुग री सोभा, जुग री आभा जुग धरम **सार**। जुग जुग स्यूं जागी अटळ जोत, मां, बहन नार री अमर प्यार।—करणीदांन बारहठ
उ०—३ तत्वर सास्त्र अमरथिवा रे, **सार** अनेक विचार। वली कलिदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार।—वि. कु.
क्रि. प्र.—काढणी, खोजणी, निकाळणी।
२ महत्व, महत्ता।
उ०—१ नायकां सूं नेह, मुसळमांनां सूं मेळ, मींट भावनां री **सार** नीं जांणी अर पांणी-पीसणी करावै है। नूंवा-पुरांणा गाभा अर सबर-साबर अड़ोई देवै-घालै है।—दसदोख
उ०—२ हरि हीरा तन हेटड़ी, निज मन परखणहार। जनहरीया जब जांणसी, तोल मोल की **सार**।—अनुभववांणी
३ आवश्यकता, जरूरत।
उ०—घड़णी दियो ही जकां री पाछौ फेरचो नहीं, मढणो लियो जकां रो ओठो मोड़चो नहीं। ईं हाथ लियो वीं हाथ डकारचो। संभळावण री **सार** नहीं जांणी।—दसदोख
४ तथ्य, सच्चाई, यथार्थ।
उ०—१ हरीया जुग जांणै नहीं, सत सबदन की **सार**। पूजै पांहण पूतळी, का आचार विचार।—अनुभववांणी
उ०—२ गवाड़ी आय धणी नै सगळी बात बताई। कह्यो—साचांणी नांव मैं तौ कीं **सार** नीं। अबै तौ थांरो नांव म्हनै मिसरी ज्यूं मीठो लागै।—फुलवाड़ी
५ कीमत, मूल्य।
उ०—हरीया हीरो हाथ करि, गए बटावण हार। पारिख बिना ना पाइयै, हरि हीरां की **सार**।—अनुभववांणी
६ हिफाजत, देखभाल, देखरेख।
उ०—१ कुंभ काचो काया कारवी, जिण री करतो **सार**। जतन करंतां जावसी, विणसत नांही वार।—दीन मंहमंद
उ०—२ इणनै तपस्या थोड़ी करावजो, घणी कीजो **सार** संभाळो

रे। [illegible] माता पावनै, एवो देवे मीन रखाड़ो रे।
—जयवांणी

७ [illegible]-पोषण, [illegible]-पोषण।

उ०—१ [illegible] बिना मन [illegible], [illegible] दुखी नर होय। जनहरीया [illegible], सार करेता सोय।—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] कर जोड़िनै, भाखै विनय वसेण। सार [illegible], [illegible] अवसर ऐण।—श्रीपालरास

८ [illegible], [illegible]।

उ०—सार [illegible] देनो रे प्रांणी, पाप सब दुख होई रे। हीणा [illegible] दुखना, सार न पूछै कोई रे।—जयवांणी

९ [illegible], [illegible]।

उ०—१ तूं पम गज्ज तणो आधार, करिजै माता पिता नी सार। [illegible] कहि केम, पहुंचो तूं परदेसे जेण।—वि कु.

उ०—२ सोम रहित जे मुनिवरा रे, निरमम निरहंकार। बाल वृद्ध [illegible] नो रे, वेयावच करै सार।—वि. कु.

१० सुधि, खबर।

उ०—१ जनहरिया सुंदरि कहै, करो हमारी सार। तौ बिन [illegible], जीवूं किन परकार।—अनुभववांणी

उ०—२ वाल्ही [illegible] हमारी आस माथै रहावो गाळ्यो अर [illegible] पर्णा वाल्ही री आ दुरगत व्ही। अबै तो सांवरियो सार करै तो गोळियो छूटै।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ परतख कुदरत नार, जगत री सार संभाळै। पैदा करणी आप, ताप सूं पाळै गाळै।—नारी सईकड़ो

क्रि. प्र.—करणी, राखणी, लेणी।

११ रक्षा, सहायता।

उ०—१ हर बिण असी कुण करै, तुरत सांकड़ै सार। निरधन [illegible] राम है, निरधारां आधार।—गज-उद्धार

उ०—२ ऊंचै हाथि धाहि पोकारइ, बोलायइ किरतार। श्रांणीयार [illegible], करइ अम्हारी सार।—कां. दे. प्र.

उ०—३ [illegible] तूं जरि जगदाधार। जपतां [illegible]।—कां. प्र.

[illegible]

[सं.] १३ पानी, जल।

[सं.] १४ कुश।

[illegible]

१६ [illegible]।

१७ [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२१ चन्दन। (अ. मा.)

२२ वीर्य, बीज,

२३ धैर्य, धीरज।

२४ धर्म।

२५ सत्य।

२६ जुआ खेलने का पासा।

२७ धन, दौलत। (अनेका; डिं. को; ना. मा; ह. ना. मा.)

२८ लोह, भस्म। (अमरत)

२९ घी।

३० युद्ध, संग्राम।

३१ पीपल का वृक्ष।

३२ सजीवन नामक बूंटी, संजीवनी। (अ. मा.)

३३ कटार। (डिं. ना. मा.)

३४ भूमि, जमीन। (अ. मा.)

३५ जल के देवता, वरुण। (अनेका.)

३६ तलवार, खड्ग।

(अ. मा; डिं. को.; डिं. ना. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ कीध तैं तिका राव जांणै कमध, रहावण बात सिर दूवै राहां। 'जसा' अविभ्रात भैं साहि सूं जूटतां, सार बळ लूटतां पातसाहां।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ रण आंगागळ रोहि, जोहि अछरां गठजोड़ां। सेल धमोड़ां सार, मार मुगळां दळ मोड़ां।—मे. म.

उ०—३ झालियां सार मोसर झलै, झूझ भार भुज झालियो। भूपाळ 'जैत' उणहीज भुज, हय कंध थापल हालियो।—मे. म.

उ०—४ एक महूरत सार झड़, माती ताती बांण। खगां हुबी भगवणी, यां वगां आरांण।—रा. रू.

३६ अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

उ०—१ सार छत्रीस छडी साहियां, जोत असी जिण अजर जरै। 'पाताल' तणां रूप संपेखै, केवी तणा आदेश करै।
—गोपीनाथ रो गीत

उ०—२ सुरातन सुजळ सार करि सावू, धोवण लागो तिको सधीर। सिड भुंई सिला ऊपरै पटकै, मरै हरै घट काटै मीर।
—सिवा सीसोदिया रो गीत

उ०—३ भुज चोळ चखां सो पांच भिड़ै, जम रूपीय सार छत्रीस जड़ै।—गो. रू.

३८ आध्यात्मिक साधकों के अनुसार भाषा या वाणी के चार भेदों में से एक [illegible] करने वाली तथा सरल एवं स्पष्ट होती है। [illegible]

उ०—१ परटी मि हुवि पांचमां, [illegible] अविकार। सरस [illegible]

उ०—२ गणपति गिरा निवासी सुरगण, मंगळ करण [illegible]

मेटण, करौ दया मौ सीस ज्याकर, आपौ सार चार गुण अर कर।
—रा. रू.

३९ अनार का वृक्ष।

उ०—आस पास सायर तणै, आंबा केळि अपार। चंपा ताड खिजूरियां, सीसुंम चंदण सार।—गज-उद्धार

४० लोह। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ हरीया अपनी इस्ट मैं, सब कोई हुसीयार। इस्ट इस्ट मैं आंतरौ, युं पारस अर सार।—अनुभववांणी

उ०—२ बीहतइ इंद्र कविल रइ अस वाधउ, अंतर आप रह्यौ ग्रह ओट। छोडण सह आविया छछोहा, कळहण जिकै सार रा कोट।—महादेव पारवती री वेलि

४१ अन्तर, भेद या भिन्नता।

उ०—एकण चाक उतारीया, एकण ही कूंभार। हरीया माटी हेक है, फेर न कोई सार।—अनुभववाणी

४२ वीरता, बहादुरी।

उ०—सो इणां री तौ सार नै आचार घणी घणी तिका कठा तांई कह्यौ जावै। जिण रा प्रवाड़ा रौ कुण पार पावै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

४३ बढ़ई का छेद करने का एक औजार विशेष, वर्मा।
(डिं. को.)

४४ बैल हांकने के डंडे के नीचे लगी हुई लोह की महीनतम नोक।

रू. भे.—संयार, सारि, सीयार, स्यार।

अल्पा;—सांयारंइ।

४५ पिंगल का एक मात्रिक समछंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राऐं होती हैं। अन्त में दो गुरु होते हैं तथा १६, १२ मात्राओं पर यति होती है।

४६ पिंगल में एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु और एक लघु क्रम से आठ वर्ण होते हैं।

४७ शतरंज चौपड़ आदि की गोट या मोहरा।

उ०—म्हैं चौपड़ थें सार, अेकण जाजम ढाळिया। हाजर पासौ हाथ, खेलौ क्यूं नीं खींवजी।—अग्यात

४८ लाभ, फायदा।

उ०—१ पण अबै जकी वात हाथ सूं निकळगी, उणरी सोच करणा मैं कांई सार।—फुलवाड़ी

उ०—२ वींदणी आंसू राळती बोली—तौ अबै म्हारा जीवणा मैं ई कीं सार नीं। मरचां कीं सार निगै आवै तौ ध्यांन राखजौ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ बिछावणा करनै है क्यूं ई गाडी माथै सुवांण दां। अबै घणौ अबेळौ करणा में कीं सार नीं।—फुलवाड़ी

४९ मतलब।

उ०—१ खासा दिनां तांई सेठ री बीणती साव अेळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नै समझावणौ ई सावळ जांणियौ। जणां जणां री हाजरी साजियां कांई सार।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वौ साळस भतीजौ तौ सोनौ लेय सीधौ आपरै गांव ढळियौ। पछै उठै ढबणा मैं सार ई कांई। घर मैं सोनौ आवतां ई सै बातां रा ठाट व्हैगा।—फुलवाड़ी

५० सार्थकता।

उ०—१ अेक बांणियां रै मीठौ पांणी पीयां सरै भलां, खरच री अैड़ी आदत पड़िया पछै जीवण में ई कांई सार।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजा रै मूंडै ओसौ लावण री बात सुणी तौ छोटकी रांणी घणा ई कळझळ करचा पण कंवर तुरत मांनग्यौ। बाप रौ कंणौ नीं मानै तौ जीवणा मैं सार ई कांई।—फुलवाड़ी

५१ निष्कर्ष, परिणाम।

उ०—१ तद कांमदार कह्यौ—जुम्मा! दाई सूं पेट लुकायां कीं सार निकळै नीं म्हनै तौ व्हौ जकी साची बात वता।—फुलवाड़ी

वि.—१ मुख्य, प्रमुख, प्रधान।

उ०—१ गौरी नंदन गणपती, सकळ देव मां सार।—धरमंपत्र

उ०—२ एक सवद मैं कहि समझाऊं, सुणि हौ सब संसारा। रांम नांम सौ सार सवद है, और कथन है छारा।—अनुभववांणी

उ०—३ ऊदा जुध आधिया, वाध विढियां वरदाई। मांझी भारमलोत, सार गोयंद सवाई।—रा. रू.

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ चितातुर थयौ तात निहालि नै जी, केहनै ए दीजै कन्या सार हो। ए सरिखौ रूपै गुण विद्या आगलौ जी, पुण्यै लहियै एहवौ वर सार हो।—वि. कु.

उ०—२ कनक सिंहासन सुर रचिय, प्रभु बइसण अति सार। धरम प्रकासइ पास जिण, बइठी परखदा बार।—स. कु.

३ सब, समस्त, समग्र।

उ०—विरहन मारी विरह की, सुध बुध विसरी सार। हरीया सिर सूं डारिया, हीर चीर सिणगार।—अनुभववांणी

४ उत्तम, बढ़िया।

रू. भे.—स्यार।

सा'र, सा'रै—देखो 'सहारै' (रू. भे.)

उ०—अचाणचकां ही गांव रा ठाकर सैल वेगी जावतां, घोड़ी चढ्या सा'र कर नीकळणं लाग्या।—दसदोख

सारउ—देखो 'सारौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदरियौ सारउ नहीं, कुंअर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाड़ियउ, जिम केकांणा वग्ग।—ढो. मा.

सारकौ, सारखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ रांवण गुणां सुरार, हार सारखौ बभीखण। अमी बंट

[illegible], सोर घर रनी सुरतरग्ग।—रा. रू.

उ०—३ सो बादसाह पोगनीत सारनौ दियोग पण जगसिह [illegible] जवार।—पातैर गा धमी री वात

उ०—४ मानुस [illegible] दाम दाया मिनेस कहण सारसी कोई नहीं।—कुबरसी सांखला री वारता

उ०—५ सारनी [illegible] संग्रा श्री बाई सारिणी उणिहार। साथै [illegible] पारणी श्री, वाई सारिनी तपधार।—जयवांणी

(स्त्री. सारीनी)

सारगंध-सं. पु. १ चन्दन। (नां. मा.)

उ०—[illegible] प्राग्राण सारगंध किसनागर, कमतूरी उपट्ट ए। सोरंभ घणीर कनकमी केसर, परिमळ जांगक हट्ट ए।—गु. रू. बं.

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक द्वाले में ३२ वर्ण होते हैं।

सारगत-सं. स्त्री.—घोड़े की चाल विशेष।

सारघण-सं. पु.—कपूर।

उ०—मृगमद संबर सारघण, गंघसार अगरेल। कुमकुमादि केसर अगर, विहति सुगंधी रेल।—रा. रू.

सारड़, सारड़ो—देखो 'सारी' (अल्पा; रू. भे.)

सारड़ो-सं. पु.—लट्टू।

वि. वि.—देखो 'लट्टू'।

सारज-सं. पु.—१ मक्खन। (ह. नां. मा.)

[सं. सार] २ सुदर्शन चक्र। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सारजत-सं पु.—चांदी, रौप्य। (ह. नां. मा.)

सारजाळी, सारजाली-सं. स्त्री.—कवच।

उ०—सिरै जंबघार झाळी सिधो वज्रजाळी सूटै, सारजाळी तूटै सिध तूटै लोग मीर। 'जालमो' अतूटै सेध ऊमे वेध लागो जूटै, वांनांमा सितूटै घाट छूटै नदी वीर।—हुकमीचंद खिड़ियो

सारजू—देखो 'सरजू' (रू. भे.)

उ०—देवी सिधु गोदावरी मही संग, देवी गोमती घम्मळा, बांग गंगा। देवी नरमदा सारजू मदा नीरा, देवी गल्लका तुंगभद्रा गंभीरा।—देवि.

सारझकोळ, सारझकोळी-सं. पु.—युद्ध, संग्राम। (अ. मा.)

सारटिफिकट, सारटिफिकेट, सारटीफिकट, सारटीफिकेट—देखो 'सरटिफिकेट' (रू. भे.)

उ०—'सोरी' आवी री भगवांन बणायौ है। उण री सुमरण, आदमी नै समाज मांय, बिरादरी मांय, जंगळ मांय, मूनेड़ मांय, सगळी जगा ऊंची बिरादरी मांय बेठण जोगा करण री सारटी-फिकट है।—निरमदू

सारण-सं. पु [सं. सारणम्=बहाने वाला] १ कुए पर चरस खींचने वाले बैलों द्वारा चरस खींचते समय चलने हेतु बना हुआ ढलुआं मार्ग।

उ०—मोरणं बड़ विरस सदीनो, जूंतां जबरो सुख जिणा। सारण तोरै टूंडी सुदी, बैल दड़के दम बिणा।—दसदेव

२ चरसे के नीचे की लम्बी लकड़ी, जिसके एक तरफ 'तलगड़ी' व दूसरी तरफ 'पाटड़ी' रहती है।

३ पारा आदि रसों का संस्कार।

४ रोग, बीमारी।

उ०—देखि जेठांणी लागी छइ जेठ, मुखी कुंमलांणी परि सूकइ छइ होठ। सनेहा सारण वहई, धरती पाई न देणउं जाई।

—बी. दे.

५ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

६ तालाब से निकली हुई छोटी नहर। (मेवाड़)

७ खेत की क्यारियों तक पानी पहुँचाने की नाली। (डिं. को.)

८ रावण के एक मंत्री एवं गुप्तचर का नाम।

९ वसुदेवजी व रोहिणी के संसर्ग से उत्पन्न बलराम आदि आठ पुत्रों में से एक।

१० मणिवर एवं देवजनी के पुत्रों में से एक पुत्र, यक्ष।

वि.—१ पूर्ण करने वाला, पूरा करने वाला।

२ सफलता प्राप्त, सफल।

३ सिद्ध।

सारणि, सारणी-सं. स्त्री. [सं.] १ नाला या छोटी नहर।

२ छोटी नदी।

३ तलहटी।

उ०—डूंगर तें पसु ऊतरै, सारणि दोड़ै आय। जनहरिदास नारी मतै, मिळै स खोटा खाय।—ह. पु. वा.

४ बड़ा भोज।

यौ.—सैर-सारणी।

५ मंत्र-तंत्रों से खींचने वाली स्त्री।

ज्यूं—सारणी घी सार लियौ।

सारणेसर, सारणेसुर, सारणेस्वर-सं. पु.—आबू पर्वत पर स्थित शिव की एक मूर्ति व मन्दिर।

रू. भे.—सारनेसर, सारनेसुर, सारनेस्वर।

सारणौ-सं. पु.—१ मांस, सब्जी आदि।

उ०—मूसा केरा सारणा, अद्रक श्रोर प्याज। टुकियक नींबू डालदो, क्या दिल्ली का राज।—अग्यात

२ व्यंजन, पकवान।

वि.—१ सफल करने वाला, सिद्ध करने वाला।

उ०—सीवर साराणौ जी केतां निवळ संतां कांम। महपत मारणौ जी मह जुध फरसधर सां मांम।—र. ज. प्र.

२ करने वाला।

सारणौ, सारबौ-क्रि. स.—१ पूर्ण करना, पूरा करना।

उ०—१ गरज सारणां आप बिन कवण सारै गरज, तदै यम अरज

भांणेज तोरा। सूण कहूं बात आगालगू साख, गुण कहूं तिकण सुण आव गोरा।—केसरीजी

उ०—२ हाथ-वसू देह विना फगत रूप रा कोरा बखांण कांई गरज सारै। ठाकरसा नै थोड़ी भळकी आयगी। डावड़ी नै आडै हाथां लेवता वोल्या—कोरा-मोरा बखांण सूं म्हनै कीं तल्लौ-मल्लौ नीं।
—फुलवाड़ी

उ०—३ तद देवराज कांमदारां नूं कह्यौ—ओ वडो मुंहतौ वडै दरवार रौ परधांन इतरा राईतनां नै छोड मोनूं जांण नै इतरी भूंय आयौ तो इणरौ जरूर अरथ सारणौ।—नैणसी

२ सिद्ध करना, सफल करना।

उ०—१ तुहीं वध डूबतां जिहाजां तारिया, धारिया बिलंद ब्रद तुरत धाई। पूत रिड़माल रै भाग पधारिया, अनेकां सारिया काज आई।—खेतसी बारहठ

उ०—२ प्रभू विराजै परमपद, तहां आपणौ धांम। लखमीवर लखमी सहित, सारै संतां कांम।—गज-उद्धार

उ०—३ वरण नाग नतुवौ हुवौ, चढियौ रण संग्रांमी रे। सल्य काढी नै सैंठौ हुवौ, सारचा आतम कांमौ रे।—जयवांणी

३ खींचना, कसना।

उ०—तद कांधळजी आपरां वेटां नूं अरू साथ सारैई नूं कयौ कै थै फौज रौ मूंडौ भालौ जितरै हूं तंग सारलूं। तद कांधळजी तंग सारण नूं घोड़ै सूं ऊतरिया।—द. दा.

४ खींचना।

उ०—तव वलतौ हरि भुवियौ रे, सारचौ 'नेम' नौ हाथौ। हिंडोला जिम हींचियौ रे, गोप्यां तणौ इज नाथौ।—जयवांणी

५ (आंखों में काजल, सुरमा आदि) लगाना।

उ०—१ इसड़ी आंखड़ियांह, किया अग वारणै, सर मनमथ गा हारि क' अंजण सारणै। खूबी न रही काय खतंगां खंजनां, नेही हूं मुनिराज विसारि निरंजनां।—बां. दा.

उ०—२ इण भांति री तूंजी, हलका ज्यौं लचकती, रतनाळा लोचनां, अणिआळा काजळ सारीजै छै। जोहर कांचूं जड़िजै छै। भमर लंक, भीण लंक ऊपरा चालहरा घाघरा वासिजै छै।
—रा. सा. सं.

६ करना, पार पटकना।

उ०—१ वेलियां बापूकारतौ आधारतौ भुजै आभ, वाकारतौ वैरीहरां साभतौ सनाह। वारणां घड़ां वारतौ मारतौ मसंद मेछां साह रा कांम सारतौ राजा 'करणसाह'।—दूदौ वीठू

उ०—२ करहा तौ वेसासड़उ, मो विण सारचा काज। अंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज।—ढो. मा.

उ०—३ लोग तौ भगतरांम रा बारा मैं अठा तक चरचावां करता कै भगवांन उण रा बस मैं है। वौ जिण कांम वास्तै हठ भेललै, वौ कांम तौ भगवांन नै सारणौ ई पड़ै।—फुलवाड़ी

७ करना।

उ०—१ सर पहर अठ जुध सारियौ, मेघनाद लछमण मारियौ। सभि असंख दळ बळ सबळ दससिर, आवियौ अवनाड़।—सू. प्र.

उ०—२ साहपुर राज महाराज ऊमेदसी, समापण बाज रीझां सकोनै। त्रहूं ही नरेसां काज सारण तूंही, त्रिहूं देसां तणी लाज तोनै।—उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

८ बनाना, निकालना।

उ०—वा ई राजगरू री मेहतरांणी ही। मुळक री सांन चढावती वोली—कंवळ कादा मैं इज विकसै। कदै ई कदै ई छोटा मिनख जको कांम सार सकै, वो मोटा मिनखां सूं नीं सलटै।—फुलवाड़ी

९ सुन्दर बनाना, सजाना, सुशोभित करना।

१० भेजना, प्रेषित करना।

उ०—विस्वामित्र तणां सुण वैणां, आनंद अंग उमंगै। महपत वंदै पांव मुनी रा, सार दिया सुत संगै।—र. रू.

११ पिरोना।

उ०—१ पछै ऊमांजी सोळै सिणगार करनै वैठा छै। बाळ बाळ मोती सार नैं इण जुगत महल पधारिया।
—लाली मेवाड़ी री बात

उ०—२ तठै आगै बखांणी तिण भांति री रायजादी गोरंगीआं सोल सिणगार ठवियां बाळ बाळ मोती सारियां तोरण कळस वंदावै छै। मोतियै वधावै छै। पांखै छै।—रा. सा. सं.

१२ शतरंज या चौसर में गोटी रखना।

१३ सुधारना, पार लगाना।

१४ देखरेख करना।

१५ मंत्र-तंत्र द्वारा खींचना, प्राप्त करना, लेना।

ज्यूं—घी सारणौ।

१६ साफ करना, निर्मल करना।

१७ चलाना, सवारी करना (फेरना)।

१८ सहायता करना, मदद करना।

१९ धारण करना।

२० अनुभव करना।

२१ उत्पन्न करना, पैदा करना।

उ०—ईडौ कनक अछेह, देह धरि हरि तिण द्वारै। रचै नाभ नोरज्ज, रज्ज अज प्रज गुण सारै।—रा. रू.

२२ प्रशिक्षित करना (ऊंट, घोड़ा आदि)।

उ०—अठै पिउसंधी कागड़ै री असवारी रौ घोड़ौ तिण ऊपर घोड़ा री असवारी सीखै। बरस एक मांहै घोड़ौ सारियौ नै पक्की असवार हुई।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

२३ काटना।

उ०—सहजै जीव जिद कुं छाडै, ता कुं कहत हरामां। काजी करद गऊ सिर सारै, बिना दोस वेकांमां।—अनुभववांणी

२४ स्वाद लेना, चूसना।
उ०—पारी पधारो पुन्न नल, रे निव पाछी रात। मुणी न कोई मारनो विरह न भूरी रात।—मदूमा नरमाळ री वात
२५ निभाना।
उ०—दिन दिन लेगण हाथ म्हारी सुंदर गोरी रे, सांजड़ली पडी रे गोरा सारना री रात।—लो. गी.
२६ तिरना, तैरना करना।
२७ मारना, संहार करना।
उ०—उगां घारि बदूक गोली उतारैं, सगां मारि जाता खगां गैण मारैं। चढ्यो तोमरां दान के नाम चावै, समयां गुणां खग्ग रा मग्ग मांगै।—वं. भा.
२८ छोड़ना (बारूद, बांण, चरखी ग्रादि)।
उ०—एक चित्त ऊजळा नर्तैं सुभ गीत रसत्तैं एक तुंग छुलवांन गहे गोलाहल मत्तै। एक मोर सारत्ति घोर धूंवा रचि डंबर, ज्यौं नावलि बादळ विसाळ ग्रोपै मग अंबर।—रा. रू.
सारणहार, हारौ (हारी), सारणियौ—वि०।
सारिग्रोड़ौ, सारियोड़ौ, सारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सारीजणौ, सारीजबौ—कर्म वा०।
सारत, सारत्त—सं. स्त्री.—१ किसी कार्य के करने से पूर्व उसके बारे में गुप्त बातचीत, समझौता।
उ०—१ कोट नीचै जाय ऊभी रह्यौ। तेनी सूं सारत हुती। तद तेनी हेठै लाव नांखी। तद ठाकुरसी सारा साथ सूं ऊपर चढियौ। भीतर गयौ। लड़ाई हुई। पीरोज कांम आयौ।—नैणसी
उ०—२ ग्राधी रात रा भटनेर जाय पहुंचिया उठै तेलां रै आदमी सेत सारत कराई।—ठाकुर जैतसी री वात
उ०—३ ग्रै ही गैला उपरै ऊभा छै। सारत विलाग रहे छै। मनमाहे सोचनी जाग रही छै।—पना
२ चोटें की तेज चाल।
उ०—घन वन वरत लियौ पति आरत, माथै पंथ हुवा धरि सारत। छत्रपति तुंग गमागम छूटा, तिकरि गयण सूं नाखत्र तूटा।—रा. रू.
वि.—लाल, रक्तवर्ण।
उ०—वीर महारस वयण, नयण सारत वरणं। जांणि कमळ दळ ओट, धणं जळ जावण लग्गं।—रा. रू.
सारत्ति, सारत्ती—सं. स्त्री.—आसक्ति।
उ०—ग्रदं फूल सुगंध वंनं, सारत्ति पांन मादिकं। रत्त चक्खं महानं, आसारं पानि रमणीयं।—रा. रू.
सारतृण, सारत्रिण—सं. पु. [सं. सार+तृण] बांस। (ह. नां. मा.)
सारथक—वि. [सं. सार्थ+रा. प्र. सार्थक] १ सफल, सिद्ध।
उ०—१ नांद रै हनमांन पळकनो हणियारो। ग्रापरै ग्रागै इण रा नै पळकाय दुनियां रो सगळो अंधारो सारथक व्हियो।—फुलवाड़ी
उ०—२ भूत रो जमारो सारथक व्हियो। वींदणी नै नाकत री विचार आतां ई भूत नै पाछो चेतो व्हियो। सायां तो घर तुरत पावेला। अंड़ा रूप नै दुख देवणी कोकर ग्रावे।—फुलवाड़ी
२ लाभदायक, उपयोगी।
उ०—ग्रां प्रकरणियां सूं बदळो लियां बिना विरहा री प्रीत रो ई सार नीं। उण रै बिछोव री की ग्ररथ नीं। बदळो लियां ई उण री प्रीत फळेला, बिछोव सारथक व्हैला।—फुलवाड़ी
सारथकता—सं. स्त्री.—१ सार्थक होने का भाव।
२ उपयोगिता, लाभदायकता।
उ०—मिनख रै मन रा तोल उठावण मैं ई बांई पुगाई रै जमारा री सारथकता है कै ग्रापरै मन री हाजरी साजणी उण रो धरम है।—फुलवाड़ी
सारथवाह, सारथवाही—सं. पु.—१ कुबेर।
२ धनाढ्य व्यक्ति।
३ व्यापारी, साहुकार।
रू. भे.—सत्थवाह, सत्थवाहो।
सारथि, सारथी—वि. [सं. सारथि] रथ चलाने वाला।
सं. पु.—रथ चलाने वाला व्यक्ति।
उ०—१ सारंग सिलीमुख साथि सारथी, प्रोहित जांणणहार पथ। कागळ चो ततकाळ कृपानिधि, रथ बैठा सांभळि ग्ररथ।—वेलि
उ०—२ रथ थांभि सारथी विप्र छांडि रथ, ग्रो पुर हरि बोलिया इम। ग्रायौ कहि कहि नाम ग्रम्हीणो, जा सुख दे स्यांमा नै जिम।—वेलि
उ०—३ इण रीति रतळांम रै राजा राठोड़ रतनसिंह सारथी समेत तरणी नूं तमासै लगाइ केही गजदंतां सहित सुंडादंड सूना करि दीठा दोयणां रै सोणित भद्रकाळि रो खप्पर भराइ और वेताळां नूं गूद रा गाळा जिमाइ बिनां माथै भी साहजादां नूं संकाइ लोहछक घूमता गजां री घड़ा मैं सूरसज्जा सूतै इच्छा रै अनुसार परलोक लियौ।—वं. भा.
रू. भे.—सारही, स्वारथी।
सारदंडायनि, सारदंडायनी—सं. पु. [सं. शारदंडायनि] कुंती की बहन श्रुतसेना का पति एक केकय राजा का नाम।
सारद—वि. [सं. शारदः] १ शरद ऋतु का।
उ०—१ इण रीति देवी रा वरदांन जिसड़ी दुरलभ चीज ग्राह्मण नूं दिवाय हरि रो अनुज उज्जैणि ग्रायौ। ग्रर सारद सगी री चंद्रिका नूं ग्रापरी छाया रो करणहार चौतरफ चाक जस चलायौ।—वं. भा.
उ०—२ सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध। ग्रवसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.

उ०—३ नरपति पेखि गुणांगं, उच्छत्र इयजेण तेण कांमित्तं। रयणी सारद महणी, पूरण निसीत परखि चंद्रेण।—रा. रू.

२ दोषरहित, निर्दूषण, निर्दोष।

उ०—सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.

सं. पु.—१ चन्द्रमा, चांद।

उ०—१ सारद वदन सोहांमणो, ह्रदय कमल सोभंत है। रूपं मदन थकी रूयड़ो, गोर वरण गुणवंत है।—वि. कु.

२ छप्पय छन्द का ३६ वां भेद जिसमें ३२ गुरु ८८ लघु से १२० वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।

३ देखो 'सारदा' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकंति, करण विसारद बुद्ध।—रा. रू.

उ०—२ इसांणंद गुरु चित्त मां आंणां, वेद व्यास नां पछै वखांणां। समरां प्रथिमि प्रथिमि सारद नां, निमिस्कार ब्रह्मा नारद नां।—पी. ग्रं.

सारदा-सं. स्त्री. [सं. शारदा] १ सरस्वती। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ थई जै इसा रूप अन्नेक थारा, सकौ सारदा कै सकै नांहि सारा। जपूं जीह सोभाग मो भाग जागो, लुळै आय सीमाय रै पाय लागो।—मे. म.

उ०—२ सारदा सरस्वती वरणवू, पणि कसी एक छइ जे सारदा सरस्वती ? कमलभू ब्रह्मा तणी बेटी, कमलमुखी, राजहंसवाहिनी, अनेक वेदवेदांकसास्त्र धरती,.........।—व. स.

२ एक नदी का नाम।

उ०—........ सहिसलयंग सरोवर, खांन सरोवर, असिइ माहाकाव्यि करी, कीरतिथभि करी, सारदा सरस्वती नदी ए करी, देसदेसाउर वदी तूं विक्षातमांन छइ,.........।—व. स.

३ देवी का नाम।

उ०—१ तुही सारदा नारदा कासमेरी, तुही कालिका भास मद्रास केरी। क्रपाळी तुही किल्लकत्तै किल्लक्कै, जिलै उत्तराखंड तू ज्वाळ जक्कै।—मे. म.

उ०—२ सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओहं सोहं अखया अभया, आई अजया विजया उमया।—देवि.

४ पार्वती देवी का नामान्तर।

५ प्राचीन समय की एक लिपि।

६ श्रीरामकृष्ण परमहंस की पत्नी का नाम।

७ सफेद रंग, श्वेत रंग। *

वि.—१ अभिष्ट फल देने वाली।

२ श्वेत, सफेद। * (डिं. को.)

रू. भे.—सारद।

सारदातीरथ-सं. पु. यौ.—एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सारदाभरण-सं. पु. [सं. शारदाभरण] कर्नाटकी पद्धति का एक राग। (संगीत)

सारदासुंदरी-सं. स्त्र. यौ—दुर्गा देवी का एक नाम।

सारदूळ-सं. पु. [सं. शार्दूल] १ सिंह, शेर। (अ. मा; डिं. को.)

उ०—चखचोळ मूंछ भूंहां चढी, तांमस उठी तमोगुणी। मेहरी गाज जांणे मरद, सारदूळ कांनां सुणी।—मे. म.

२ बब्बर शेर, केसरी सिंह।

३ बाघ।

४ रावणपक्षीय एक गुप्तचर दल का प्रमुख एक राक्षस।

५ दोहे का एक भेद जिसमें ६ गुरु और ३६ लघु मात्रायें होती हैं।

६ छप्पय छन्द का १७ वां भेद जिसमें ५४ गुरु ४४ लघु से ९८ वर्ण या १५२ मात्राएें होती हैं।

वि.—श्रेष्ठ।

रू. भे.—सद्दूळ, सादळ, सादुळ, सादुळउ, सादूर, सादूळ, सादूळउ, सादूळो, सारदूळो।

सारदूलकरण-सं. पु [सं. शार्दूलकर्ण] त्रिशंकु नामक एक महाराजा।

सारदूलललित-सं. पु. [सं. शार्दूलललित] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पद में अठारह अक्षर होते हैं।

सारदूलवाहण, सारदूलवाहन-सं. पु. यौ. [सं. शार्दूलवाहन] १ जैन मतानुसार पच्चीस पूर्व जिनों में से एक जिन।

२ दुर्गा, देवी।

सारदूळसटा-सं. पु. यौ—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण सगण जगण सगण दो तगण और अंत में एक गुरु होता है तथा १२ व ७ पर यति होती है। (र. ज. प्र.)

सारदूली-सं. स्त्री. [सं. शार्दूली] कश्यप एवं क्रोधा की कन्या का नाम।

सारदूळो—देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

सारद्वती-सं. स्त्री. [सं. शारद्वती] १ अर्जुन के जन्मोत्सव पर उपस्थित एक अप्सरा का नाम।

२ शरद्वत गौतम ऋषि की पुत्री व द्रोणाचार्य की पत्नी कृपी का नामान्तर।

सारधार-सं. पु.—१ खड्गधारी।

उ०—फड़क्कै फींफरा रैणां, धड़क्कै केवियां फौज। धकै त्राट भाजै, उरां घणां सारधार।—बुधसिंह सिढ़ायच

२ तलवार।

उ०—वगतरां ऊपरां तरवारीआं रा वांड भूटि नै रहीआं छै। जांणे वादळां मांहे वीजळिआं रा सिळावा, उपड़िया पाखरां ऊपरै सारधारां फूलधारां वाजी (तु)ठणणणण जांणे परभात री झालर ठंणकी।—रा. सा. सं.

सारधु-सं. स्त्री.—सत्कीर्ति। (डिं. को.)

उ०—१ सूरत पत सेगिन सारमू. मची मची सिहूं भुवन मणी। का कैरवा नगी न लियो ग्रम, नी जेही पाडवां तणी।

—गोरधन बोगसो

उ०—२ राम्रँ सा मोहन करूँ, हूं बाहू सुरतांण। सूरजमल रो सारमू, सो पूर्ठै पमरांण।—पा. प्र.

उ०—३ सूं अमजद्दां सेन, जोट चौधार वदक्कर। सहित 'भांण' सारमू, मोह निमगार निरंतर।—गु. रू. बं.

सारनाल, सारनालो—स. पु.—बिना सिलाई किया हुआ वस्त्र।

उ०—पाट गरज, देवदूष्य, चीनांसुक''''''सिलहटी कपूरीयां चउ-कडीदां पोसिमां मकरोटा नागवटां सारनालां मासटां आगिहिल कशोन मंजरांनां महवी फूलपगरीया मागीपो''''''।—व. स.

सारनी—सं. स्त्री—गायिका।

उ०—सदा प्रियासु प्रीति रीति गीत सारनो नहीं। निसास रोज ग्रांननी उरोज धारनी नहीं।—ऊ. का.

सारनेसर, सारनेसुर सारनेस्वर—देखो 'सारणेस्वर' (रू. भे.)

सारबमू, सारबभूम, सारबभोम—देखो 'सारवभोम' (रू. भे.)

सारबांड—सं. स्त्री.—१ तलवार।

२ देखो 'सारभांड' (रू. भे.)

सारबांण, सारबांन—देखो सारवांन' (रू. भे.) (ग्राइने अकबरी)

सारबापरो—वि. यो.—तत्वरहित, निरर्थक।

(मि. तंतबापरो)

सारभांड—सं. पु.—१ व्यापार की दृष्टि से कीमती वस्तु।

२ देखो 'सारबाड' (रू. भे.)

सारभाटो—सं. पु.—ज्वारभाटा से बिलकुल विपरीत अवस्था अर्थात् ज्वार आने के बाद की स्थिति जब कि पानी वापिस लौटने लगता है।

सारमणी, सारमणो—सं. स्त्री. पु.—बुहारी, झाड़ू।

रू. भे.—सारवणी।

सारमय—सं. पु. [सं.] १ श्वफल्क व गांदिनी के संसर्ग से उत्पन्न अक्रूरादि तेरह पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२ कश्यप ऋषि एवं सरमा के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

सारमरण—सं. पु. यौ.—तलवार के प्रहार से वीरगति पाने की क्रिया।

उ०—'पीथल' तणो स करि दुरा पछि पछि, दिट गा तजि करि छोह दुरा। ग्रा रीत रह ग्रणां घरि ग्राणें, सारमरण घण घणो सुरा। —प्रिथीराज जैतावत रो गीत

वि.—तलवार के प्रहार से वीरगति पाने वाला।

सारमति, सारमती—स. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

(संगीत)

सारमेय—सं. पु. [सं. सारमेय.] १ श्वान, कुत्ता।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—गोमाय मगर पळचर गहनि, सारमेय नाहर समळ। अंग-अंग भखें दळ आसुरां, बर बर धर तंदळ बमळ।—रा. रू.

सारमेयादन—सं. पु. [सं.] २८ प्रकार के नरकों में से एक नरक का नाम।

सारमोजा—सं. पु. यौ.—लोहे के बने दस्ताने, मोजे जो युद्ध करते समय तीर-तलवार आदि के प्रहार से बचने हेतु पहने जाते थे।

उ०—१ पहरै नरांमा पंचठामा अंग जांमा ओप ए। सोहै सकाजा सीस ताजां सारमोजां जोप ए।—गु. रू. बं.

उ०—२ झालरी टोप सिर झळहळेय, किरि भांण उदै गिरि कळ-कळेय। बळवंत जड़ै हाथांळां बेय, पहरिया सारमोजा पगेय।

—गु. रू. बं.

सारवंग—सं. पु.—घोड़ा, अश्व।

उ०—तुरी त्यार कीग्रा कसे जीण तंगं। वणावै सिरी पाखरां सारवंगं। सर्भ वंस छत्रीस हिंदू समत्थं करेवा महासुर भारथ कत्थं।—र. वचनिका

सारवट—सं. पु.—१ लोह की जंजीरनुमा मोजा।

उ०—१ वण टोंप सिरै पग सारवटं, घट मेघ कि मेघ उतार घटं। कड़ियां खग खंजर तूण कसै, तद पांण कबांण लई तरसै।

—रा. रू.

२ जंजीरनुमा युद्ध मे धारण करने का पायजामा।

उ०—सारवट सूथण मोजा सार, जुड़ै छकड़ा लकड़ा जोधार।

—गो रू.

सारवणी—देखो 'सारमणी' (रू. भे.)

सारवणो, सारवबो—देखो 'सारणो, सारबो' (रू. भे.)

उ०—१ सत्र ग्राठ अनें दस सारविया।—पा. प्र.

उ०—२ बोल ज वापी काह, हमीरै वसीया हीयै। तैं सारवीपू साच, मार्ग कांधै भीमवुत।—हमीर भीमोत री बात

सारवणहार, हारौ (हारी), सारवणियौ वि०।

सारविग्रोड़ो, सारवियोड़ो, सारव्योड़ो—भू० का० कृ०।

सारवीजणो, सारवीजबो—कर्म वा०।

सारवति, सारवती—सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु सहित कुल १० वर्ण होते हैं।

सारवमू सारवमूम—वि. [सं. सार्वभौम] समस्त भूमि सम्बन्धी, सम्पूर्ण भूमि का।

सारवभोम—सं. पु [सं. सार्वभौमः] १ चक्रवती राजा, सम्राट।

२ अहंयाति के भानुमती के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र जो सुनन्दा का पति व जयत्सेन का पिता था।

३ विदूरथ का पुत्र।

४ आठ दिग्विजयों में से एक।

रू. भे.—सारवमू, सारवभूम, सारवमोम।

सारवभौतिक—वि.—जो सब भूतों से सम्बन्धित हो।

सारवभौमव्रत-सं. पु. [सं. सार्वभौमव्रत] कार्तिक शुक्ला दशमी को किया जाने वाला व्रत विशेष।

सारवरी-सं स्त्री. [सं. शार्वरी] १ रात, रात्रि।
२ विष्णुवीसी का चौदहवां वर्ष। (ज्योतिष)

सारवांण, सारवांन-सं. पु.—ऊंट सवार, सुतर सवार।
उ०—घिखतै श्रारण सै लोयण जमराज सै असवार काळीनाग ज्यूं करतै फुरणू का फूंकार ऐसै सारवांन कै हाकल सै बिमरीर वाघूं परि धाए।—सू. प्र.
उ०—१ घसलकै जेम लावां चडस, जिकै अपारां जूंगलां। कज भार सारवांनां कठठ, ग्रहियां मुखतां गुंगलां।—वखतौ खिड़ियौ
उ०—२ सिर वंदि हुकम तिण हिज समै, दिया कारखांना दुवा। कत्तार भार वरदार कजि, हुकम सारवांनां हुवा।—सू. प्र.
उ०—३ महारोस रोसा इळा ताव मांनै, वडा जुंग त्यारी किया सारवांनै।—रा. रू.
वि.—१ सार या तत्व से युक्त।
२ ऊंट रखने वाला।
३ उंट पर सवारी करने वाला।
४ ऊंटों को चराने वाला।
रू. भे.—सारवांण, सारवांन।

सारविद-सं. पु. [सं.] शिव, महादेव। (डिं. नां. मा.)

सारविद्या-सं. स्त्री. [सं.] अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या।

सारवियोड़ौ—देखो 'सारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सारवियोड़ी)

सारसंगीत—देखो 'वडोसांणोर' (र. ज. प्र.)

सारस-सं. पु. [सं.] (स्त्री. सारसणी) १ एक सुंदर पक्षी जो क्रौंच से बड़ा एवं सदैव जोड़े से रहता है। इसकी गर्दन लम्बी होती है। इसकी आवाज बड़ी तेज होती है।
उ०—सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी आ लोय, जग में रहसी जेठवा।—जेठवा
२ गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक।
३ यदु राजा के एक पुत्र का नाम।
४ चन्द्रमा, चांद।
५ छप्पय छन्द का ३८ वां (मतान्तर से ३० वां) भेद जिसमें ३३ गुरु और ८६ लघु सहित ११९ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र)
६ २४ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द विशेष जिसमें १२, १२ पर यति होती है।
अल्पा; रू. भे.—सारसड़ौ, सारसणौ।

सारसड़ौ—देखो 'सारस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सारसड़ी मोती चुगै, चुगै तौ कुरळै काय। सगुण पियारा जै मिळै, मिळै तौ विछुड़ै काय।—अग्यात
उ०—२ सारस मरतौ जोय, सारसणी मरसी सही। लाखीणी आ लोय, जग मैं रहसी जेठवा।—जेठवा
(स्त्री. सारसड़ी, सारसणी)

सारसत, सारसत्त—१ देखो 'सारस्वत' (रू. भे.)
२ देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)
उ०—देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धन दाता वरी। चहुवांणां वंस रूपक चवां, सारसत्त भुवनेस्वरी।—मालौ आसियौ

सारसप्रिय-सं. पु.—कर्नाटकी पद्धति का एक राग। (संगीत)

सारससीस-वि.—लाल, रक्तवर्ण। * (डिं. को.)

सारस्रियाळ-सं. पु.—सिंह, शेर।

सारसौ-सं. स्त्री.—१ शेर, हाथी, ऊंट आदि की मस्ती।
उ०—१ छिन्नता पहाड पहाड पाखती, अधर भरंता चरण धरइ। अंब तणा ग्रख लुंब आविया, कुंजर विच सारसी करइ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२.........भमण मथा सांलीग्रै सिंह ज्यौ सारसै करता सींघोडा सा, कूंटा काढिग्रां, भूखे मयंद ज्यौं हूकार करता, मद वहता, हाथी ज्यौं जोहां खातां, भाद्रवै री गाज ज्यौं आवाज करतां,.........।—रा. सा. सं.
उ०—३ ....इसु मूरतिमंतउ ऋतांतु, महाकाय परवतप्राय, सप्तांग मदप्रतिस्ठितु, देवताधिस्ठतु, त्रिदंडगलितु, सारसी करतु, मदप्रवाह भरंतु हस्तिराजु निरव्याजु, क्रणवरणु.........।
—व. स.
२ मस्त हाथी द्वारा चिंघाड़ते हुए सूंड को ऊपर-नीचे करने की क्रिया।
उ०—१ ....मदवारि भरता, तिहां भमरा रणभणता, सारसी मूंकता, कल्लोल करता, इस्या एक जात्य हस्ती,.........।
—व. स.
उ०—२ हस्तिवरणनं, फोफलवरणं घ्राणवद्धकरणं, उज्जवल-दंत, युद्धपात्र, निरमलगात्र, आसणि ऊंचा, नेत्रि नीचा, दरप्पि दलइं कोपि ज्वलइं, मदि रेलइं, सारसी मेल्हइं, मूंक्या मांडइं, ..।
—व. स.
उ०—३ डग वेड़ियां दुलडु लगां चहुवां पग लंगर। आकासी सारसी करै अग्राज भभंकर।—सू. प्र.
क्रि. प्र.—करणी।
३ अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद विशेष जिसके मध्य में तीन बार यमक की आवृत्ति होती है तथा चरण के अंत में दीर्घ होता हैं। इसमें १६, १४ पर यति होती है।
४ आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिलाकर ५ गुरु और ४७ लघु सहित ५२ वर्ण या ५७ मात्राएं हों।

सारसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ मन्न पनमंद पनूरी मूरै, दीह रान सारसो डर। कोटां दूं गिनै रात कलपत, नेना पेन निदंन नर।—मु. रू. वं.

उ०—२ 'पनरै' 'मरनै' सारसा, 'हेरी' जिसा हणवंत। साथ मझोया माम दर, पै जोधा वऊवंत।—रा. रू.

उ०—३ मंदमागम मी सारसी, राज छूं लंबी राय। कोइक पुर री सांकली, गानैवी विलमाय।—पनां

(स्त्री. सारसी)

सारष्टि, सारष्टिता–सं. स्त्री. [सं. सार्ष्टि, सार्ष्टिता] पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें उपासक पद या अधिकार में ईश्वर के समान होता है।

सारस्वत–वि. [सं.] १ सरस्वती का, सरस्वती से सम्बन्धी।

२ सरस्वती नदी का, सरस्वती नदी से सम्बन्धी।

३ सारस्वत देश से सम्बन्धी।

सं. पु.—१ सरस्वती नदी के तट पर बसा प्रदेश।

२ दधिचि ऋषि व सरस्वती नदी के गर्भ से उत्पन्न एक ऋषि।

३ अधिकांशत: पंजाब में मिलने वाले पञ्चविध गौड़ ब्राह्मण जो पहले सरस्वती नदी के आसपास के देश में रहते थे।

४ एक व्याकरण।

उ०—ऐसी भांति सैं सदि भाखा कहि बताई। चातुरी कला की भांति भांति चतुराई। जिनकी सास प्रथम भाखा संसकृत सी तो अनुभूति सरस्य सारस्वत मो पाई।—सू. प्र.

५ रविवार या प्रत्येक पंचमी को किया जाने वाला सरस्वती माता का व्रत विशेष जिसको करने वाला व्यक्ति भाग्यवान व विद्वान बन जाता है।

रू. भे.—सारसत, सारसत्त।

सारस्वती–सं. स्त्री [सं.] लूनी नदी का एक नाम जो उसके उद्गम से कुछ दूरी पर गोविंदगढ़ के पास पुकारा जाता है। (वीरविनोद)

सारस्वतोत्सव–सं. पु [सं.] बसन्तपंचमी को किया जाने वाला सरस्वती-पूजन।

सारहटा–सं. पु.—शस्त्र-प्रहार।

सारहनी–सं. स्त्री.—१ लकड़ी में छेद करने का बढ़ई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ मादा ऊँट।

३ देखो 'सार'।

उ०—तन ढोलिया पर्दै डूंगर तणा, सूतै नींद जु तै संभुवै। सार-हणी निहूं टोड़ सामवी, हेरण जिण वाम्हांण हुवै।

—प्रिथीराज राठौड़

सारही—देखो 'सारसी' (रू. भे.)

उ०—नदी धरावलि ऊपर मागूं रोमि चडवड चहुप्रांण। सांतल सरद सारही लेइउ, नेह न सूकइ वांण।—कां. दे. प्र.

सारहोदरोस, सारहोदरोस–सं. पु.—जैन मतानुसार सचित वस्तुओं के मध्य रखी अचित वस्तु को लेने पर होने वाला दोष।

सारांस–सं. पु. [सं. सारांश] १ संक्षेप, सार, निचोड़।

२ अभिप्राय, तात्पर्य।

३ परिणाम, नतीजा।

४ उपसंहार।

सारावती–सं. स्त्री.—एक प्रकार का छंद विशेष।

सारासण, सारासन–सं. पु.—१ परशुराम के समकालीन एक प्राचीन ऋषि। (मा. म.)

२ देखो 'सरासन' (रू. भे.)

सारासार–सं. पु.—१ सत्यासत्य का विवेचन।

२ सार-असार की व्याख्या।

साराह—देखो 'सराह' (रू. भे.)

उ०—१ रवां हूंत अती वाधू तरणि, अगन कंत हित प्रोयवै। साराह तेम दीठां सती, सीह वराह न सूरमै।—रा. रू.

उ०—२ एकोतर वंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै। साराह जिकां जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै।—र. ज. प्र.

साराहणी, साराहवी—देखो 'सराणी, सरावौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाहि चौधार अरि ढोहिया पार विण, रूक साराहियौ दहूं राहां। गवाड़ै पवाड़ा 'जैसौ' घरियां घुमर, समर गाजै वडी पातसाहां।—सूजो

उ०—२ जमा गोरजा घणी साराहियौ, अलल ना भलाई भला साराहियौ। पौरि रासै धिणी पाटि बैठा परम, धरिणि नीली हुई घणौ वधियौ धरम।—पी. ग्रं.

सारि—१ देखो 'सारी' (रू. भे.)

उ०—हमैं चौवड़ खेलै है प्रेममगन हुवा कठी री कठी सारि गोट मेलै है। वाजी बुलावै है, सनस खुलावै है प्यारी री लीलड़ी प्रीतम री हीरो, प्यारी री चूंनड़ी प्रीतम री चीरो।—र. हमीर

२ देखो 'सार' (रू. भे.)

उ०—चौवाह करण तेथ बैठा ब्राह्मण, समधा अगिनि सीचतः सारि। नवग्रह दस दिग्पाळ निजीको, अथवा वरइ करइ आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

सारिक–सं. पु. [सं.] युधिष्ठिर की सभा में विराजित एक ऋषि का नाम।

सारिका–सं. स्त्री. [सं. शारिका] १ मैना पक्षी। (हि. को.)

उ०—और सुर सुंदरी आवास थकी आपरी पाळतू मदनमंजरी सारिका, तीनूं पुछियौ कै तूं जांणै तो बताय मो लायक वींद कुण होसी ? सारिका कही—भोगवती नगरी रो राजा रूपसेन, सो तोन सकळ गुण जांण अति सरूप सो थारे भरतार होसी।

—बैताळ पच्चीसी

२ अप्सरा, रंभा।

सारिकाकवच–सं. पु. यौ. [सं. शारिकाकवच] दुर्गा का एक कवच

(स्तोत्र) जो रुद्रयामल तंत्र में है।

सारिख, सारिखउ, सारिखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ कृपा करै सरजीवत करसी, विध इण कीत सुंदरी वरसी। इम दिन व्रती सु सारिख आंणी, जिम सब कियौ कहै जिखयांणी।

—सू. प्र.

उ०—२ आलोच करै परवार आखियउ, अवर नको राजांन इसउ। वींद नको सारिखउ विसंभर, सिहर नको कैलास जिसउ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ साहू कुलीखांन बीजौ अग्रहदी सु विहांण कुली सारिखा नइ खंजरी सारिखा घणा मांणिस पंच-भइया मनसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा मांणस साथै दिया।—द. वि.

उ०—४ सक सीनाड़ सांड नवसहसा, वै विधि अजुवाळण कुळ-वाट। वप वाडिम सारिखौ बेगड़, मांन कळोधर लोह मराट।

—ईसरदास बारहठ

उ०—५ सेर्फ़ रंभा सारिखी रे, दासी ग्रह नै कांम। माता नी परै नेहलो, पालै टालै दुख ठांम।—वि. कु.

(स्त्री. सारीखी)

सारित-सं. पु.—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।

सारिमेजय-सं. पु.—द्रोपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा का नाम।

सारियोड़ौ-भू. का कृ.—१ पूर्ण किया हुआ, पूरा किया हुआ. २ सिद्ध किया हुआ, सफल किया हुआ. ३ खींचा हुआ, कसा हुआ. ४ खींचा हुआ. ५ (आंखों में काजल, सुरमा आदि) लगाया हुआ. ६ किया हुआ, पार पटका हुआ. ७ किया हुआ. ८ बनाया हुआ, निकाला हुआ. ९ सुन्दर बनाया हुआ, सजाया हुआ, सुशोभित किया हुआ. १० भेजा हुआ, प्रेषित किया हुआ. ११ पिरोया हुआ. १२ शतरंज या चौसर में गोटी रखा हुआ. १३ सुधारा हुआ, पार लगाया हुआ. १४ देखरेख किया हुआ. १५ मंत्र तंत्र द्वारा खींचा हुआ, प्राप्त किया हुआ, लिया हुआ. १६ साफ किया हुआ, निर्मल किया हुआ. १७ चलाया हुआ, सवारी किया हुआ (फेरा हुआ). १८ सहायता किया हुआ, मदद किया हुआ. १९ धारण किया हुआ. २० अनुभव किया हुआ. २१ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ. २२ शिक्षित किया हुआ (ऊंट, घोड़ा आदि) २३ काटा हुआ. २४ ध्यान दिया हुआ, सुना हुआ. २५ मिलाया हुआ. २६ छेदा हुआ, छेदन किया हुआ. २७ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २८ छोड़ा हुआ (बांण, चरखी, बारूद आदि)।

(स्त्री. सारियोड़ी)

सारिवा-सं. पु.—जवासा, धमासा नामक पौधा।

रू. भे.—सारीवा।

सारिसूकत, सारिसूक्त-सं. पु. [सं. सारिसुक्त] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सारिसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—हितू न सतगुर सारिसा, ताहि दीया गुफ़ि ग्यांन। मन की मैं तैं मेट करि, अधर धराया ध्यांन।—अनुभववांणी

(स्त्री. सारिसी)

सारी, सारी-सं. स्त्री.—१ रहट के चक्र को खड़ा रखने में सहारा देने वाले लम्बे लट्टू को अपने स्थान पर स्थिर रखने के लिये काम में लाया जाने वाला वह लकड़ी का डंडा जो चक्र के बाहरी किनारे पर खड़ा किया जाता है।

२ एक प्रकार का पक्षी, मैना।

उ०—सारी सुक रव करै जी म्हारा रांम, हांजी रांम जी प्रगट्यो प्रेम प्रभाव स्वांमीजी री स्तव करैजी म्हारा रांम। हांजी रांमजी। सरवर किया है सिनांन।—गी. रां.

३ चौसर, कैरम आदि खेलने की गोटी।

उ०—पुरस नारि मैं तैं मती, नहिं पासा नहिं सारी। डाव नहीं चौपड़ नहीं, नहीं जीति नहिं हारी।—ह. पु. वां.

४ दांव या शर्त के साथ आदि से अन्त तक पूरा खेल, बाजी।

उ०—काया बन राखिबा वारी, सील सन्तोस लै पहरै जागिबा। गगन अस्थांन मिलि खेलिबा सारी।—ह. पु. वां.

वि. स्त्री.—१ प्रत्येक, हरेक।

उ०—भाली बडी ठकुरांणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी बात मैं सुघड़, सो खींवसी घणी राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सम्पूर्ण, सब, तमाम।

उ०—१ बोकांण पाट वाळी बळू, घंटाळी वेड़ी घणी कहि अति बात सारी कथा, तवी राव सेखा तणी।—मे. म.

उ०—२ राव मालदे पाखती री धरती सारी लीवी बवली, मलांणी सुधी हद कीवी। रायधनपुर सुधी गुजरात दिसली।

—नैणसी

उ०—३ सिरहर भायां वादि सिधायो, उदियो भांण हजूर रहायो। सुणै नबाब इनायत सारी, औरंग दिस लिख अरज अफारी।

—रा. रू.

३ देखो 'स्यारी' (रू. भे.)

रू. भे.—सारि।

अल्पा;—सारड़ि, सारड़ी।

सारीक, सारीख, सारीखउ, सारीखौ-वि. [सं. सदृश] (स्त्री. सारीखी) १ समान, सदृश।

उ०—१ धज चमर छत्र कर रेख धत्र, चक्रवती तणा साचा चह्न। उजळंग आरकत छिब अनंग, ऊगता भांण सारीख अंग।

—सू. प्र.

उ०—२ दाखै 'कांन' तणो यम दूजां, आंमेरो अै वड आरीख। प्रसिधि तणा भूखण जोहो पहरै, सोवन ज्यां दूखण सारीख।

—गोरधन कल्यांणोत री गीत

उ०—३ नदगांनी प्रतिपाळ, नीन सहिजे सारीखे। मुद हरखणी मात. घाट ग्रम मांनै ईसें।—पी. ग्रं.

२ बराबरी वाला, समानता वाला, बराबर का।

उ०—१ बिना निरमेर री हारबो जीतबो, सारीखां तणी करतार मारे। हारिकां तणी तो जीत मारे नहीं, मारिकां तणी तो हार मारे।—धीरतसिंह खीची री गीत

उ०—२ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, नवग्रह कन्है मनावांनाग। मेई जोसी देखनां बराबर, हथळेवइ लै दीधउ हाथ।

महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सांवीणा जोड़ी सारीखी, वरदळ रउ न्यात री विचार। हूवत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ राजी हुयां कांम में रगड़ै, नराजियां करै नुकसांण। छोटरियां मोटोड़ां छोडो, मिळो सारीखां चाहो मांण।

—चंडीदांन सांदू

३ जो आकार, तोल, मात्रा, माप, परिणाम आदि में बराबर हो, समान।

उ०—१ धमनां रै वांटणहार नै कह्यो—सारीखो भांगो करै अर धमल नूं मायो मत को धूणो, महादेवजी बुरो मांनसी।

—प्रतापसिंह देवड़ा री बात

उ०—२ ज्यूं ग्रहस्थ लियां व्रत चोखा पाळै तै तो एकासणावाला सारीखो अनै साधुरणी नेहनै दोस सेवै तै तेला में रोटी खाधी तै सरीखो।—भि. द्र.

उ०—३ एर ढाल सारीख घोड़ा ग्रलल्ला, भिड़वजां बाहू जंघ वै पवन भल्ला। पुड़च्छी जिग्रां तोछ पै कंध पूरा, संग्रांमं विसै हांम पूरंत सूरा।—र. वचनिका

४ जो निरन्तर चलता रहे, निरन्तर चलने वाला।

उ०—तुरकै गेढ़ सहर घेरियो गोहिल पिण तद जोर था दिन चार सारीखो बेढ हुई।—नैणसी

५ जैसा।

उ०—१ बाहुरां राव मानदेजी जोधपुर सौं पहाड़ियो। जैमल नूं कह्यो—थो सारीखा थारै दुसमण छै, अर तूं चाकरां नूं सोह पड़तो मतो दै। थं तुं ही पालनै ही राव।—नैणसी

उ०—२ तरै जिनरोहेड़ साथ बांमै बाहर चढियो। सु सांढ बाहर धरड़ावणु सारीखो नहीं।—नैणसी

उ०—३ पंगरन प्रीत वसदेव पूत, ममिल काहि में जगस्यै पूत। कमळ रा नैण कमळाकंत, सुरजेठ ग्राप सागीस मंत।—पी. ग्रं.

उ०—४ उण बगत भुंजाई में छप्पन भोग, छत्तीस व्यंजन सगळो साद षेक सारीखो भोजन हुवै। जिणनूं कठै ही मिळै नहीं सो उण वगत भुंजाई में जलाल री रसुवास पावै सो मनमांनिया भोजन जीमै।—जलाल बूबना री बात

उ०—५ जग सारो जांणै जोधपुरा, चौरंग तणो थार मजबूर। जुड़ता लाख दोयणां जाळै, रुद्रकड़ां सारीखो रूक।

—जगनाथ सांदू

रू. भे.—सरख, सरखउ, सरखो, सरिको, सरिखउ, सरिखु, सरिखो सरिस, सरिसउ, सरिसो, सरिसु, सरिखो, सरीक, सरीको, सरीख, सरीखउ, सरीखु, सरीखो, सरीस, सरीसो, सारको, सारखो, सारिख, सारिखउ, सारिखो, सारिसो, सारीस, सारीसो, सिरखो, सिरखो, सिरीखो, सिरीसो, सीरखो।

सारीबारी-क्रि. वि.—बारी-अनुसार।

उ०—तद राईको सारी-बारी दोनां रा मूंडा निरख्या। सागै पेट ई उणियारै। हुवा जित्तो ई फरक नीं। अचपळी वेमाता ई कांई कुबद करी।—फुलवाड़ी

सारीमेर-क्रि. वि.—चारों तरफ, सर्वत्र।

उ०—सु किण ही कारीगर सूं गोळी चढै नहीं, राजा सासतो मोहरत थापै, आपरै मन कोई कारीगर मांनै नहीं, तरै मोहरत थाथा वैलं सु आ वात सारीमेर ही हुई रही छै।—नैणसी

सारीरकभास्य, सारीरिकभास्य-सं. पु. यौ. [सं. शारीरिकभाष्य] शंकराचार्य द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

सारीवा—देखो 'सारिवा' (रू. भे.)

सारीस-वि.—१ क्रोधपूर्ण, क्रोधसहित।

उ०—धीरतन छोह छकड़ाल कस वीछड़ै, एक सूं भिड़ै ग्रसपति सारीस। सीस देवळ तणो डिगण न दियै सकस, स्यांम तण भुजा ऊपजतै रीस।—सुजांणसिंघ सेखावत री गीत

२ देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—विढंतां वर्ण द्रुमची केसवाळी, भडां भूप राजी हुवै ग्रर भाळी। जंगम्मं पसम्भं सुवमह्न जेही, दिपै जांणि ग्रारीस सारीस देही।—र. वचनिक

सारीसो—देखो 'सारीखो' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ ग्रांबेर ग्रमरसर रा सदा दांई ग्रांट, सारीसो सवाई करै दिखाई ग्रसंभ। राजां दळां भांजतो अछूनी फतै पाई राव, गाजां पांण मेदनी दबाई जेतखंभ।

—नाथूसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ जोगणपुर सारीसो जांमो, बखियो नौरंगजेब बणाव। दूजा 'मांन' हाथि करि दीधो, सारां सिरि ऊपर सरपाव।

—राजा जयसिंघ कछवाह री गीत

उ०—३ समर सिरै चढियां सारीसो, ग्राज कंकण रैहो ग्रागीसो।

—सू. प्र.

(स्त्री. सारीखी)

सारू, सारु-सं. स्त्री.—मैना। (डिं. को.)

क्रि. वि.—१ लिए, वास्ते।

उ०—१ घट घीव्हां ग्रीधण्यां, कमळ संकर उपकार। हूंस परथां

पति होण, सोण चंडी पत्र साह ।—मे. म.

उ०—२ राजा रै तवेला रा घोड़ां साह चिणा दळै । तीन दिनां तांई उणरी इज बारी । घर मैं अेकाअेक कंवारौ बेटौ । पछै दूजो कुण वेगार काढै । जात री भांवण ।—फुलवाड़ी

२ अनुसार, मुताबिक ।

उ०—१ मो मत साह मैं कियौ, आरंभ गावण ईस । सरसत गणपत समर कै, चरण नवावूं सीस ।—गज-उद्धार

उ०—२ बूडा जै कर कर जस बूंबां, सूंमां ऊपर सारौ । बुध साह गायौ सीतावर, जीता जिकै जमारौ ।—र. ज. प्र.

उ०—३ मांमौ खुसी हूवौ कह्यौ—तूठौ भांणेज क्यूं मांग म्हैं म्हांरा घर साह दां ।—नैणसी

३ वशीभूत, अधिकृत ।

उ०—१ ढोलोजी ऊमर री पाखती जाजम ऊपरै जाय बैठा । तारै ऊमर जांणियौ ढोलोजी हिवै मांहरै साह छै ।—ढो. मा.

उ०—२ पूरब पछम धरा दध पारू, दिखण तणौ खूटौ बळ दारू । एक उतराध धरा तौ साह, मछर धरै किण ऊपर मारू ।
—चतुरौ मोतीसर

उ०—३ विवनै 'वाघ' धरै मूंछां बळ, बैठौ गादी 'गंग' महाबळ । 'माल' 'गंग' गादी राव मारू, सबळा किया आपरै साह ।
—रा. रू.

४ पर ।

उ०—अर म्है तौ उठा सौ रांमजी माथै घात चढियां छां । पेहलौ कै तौ म्हारौ ऊपर सोलंखियां कयौ छै । हेडोकी बाजी थां साह छै । इम कहि नै सींधळां कन्है नरसंघ आदमी मेलियौ ।

रू. भे.—सरू, साहरू ।

साह्यार, साह्यारु, साह्यार, साह्याह—वि.—बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर ।

उ०—१ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाईए, पोइणिनै पांनि छाइउ, कंकू ना छाबडा, मोती ना चउक, तेहमाहि साह्यार घाट, मेल्हाव्या पाट, चाउरि चाकुला,........।
—व. स.

उ०—२ ......साह्यारु घाट, नीपनु पाट, गाइ तणि गोमइ, गंगा तणि नीरि, अहिवु स्त्री पांहइ गूहली देवरावु, ऊपरि मोती तणू चुक पूरावु, अह्म वरराजेंद्र आव थिकां हूंतां इस्या मांगलिक वरताउ, अह्मो सीआलक बोलि ।—व. स.

उ०—३ ....मालवी गोधूम हाथि मल्या, धोई दल्या, एनी पडसूधी, खइ सविवार सूधी, आलै वालइ वाकु, अहिठांणउ आंकु, तीणइं वाली, माहि थूली टाली, घीइं मोई, डाहीयारइं जोई, एकल्ल पाट साह्यार घाट,........।—व. स.

साह्रप—१ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

उ०—कनक करग धातां हिम करगां, रीति-पति गरुड़ खगां साह्रप । दधां विधांता दुजां खीर-दध, भूपां सिधां जांनुकी भूप ।
—र. ज. प्र.

२ देखो 'स्वरूप' (रू. भे.)

३ देखो 'साह्रप्य' (रू. भे.)

उ०—भाग तणां भांमणा, ल्यां भूधर दुख भंजण । विट्ठलां ना वीठला, मुगिति साह्रप समपण ।—पी. प्र.

साह्रपता—सं. स्त्री.—साह्रप्य होने की अवस्था या भाव ।

साह्रप्य—सं. पु. [सं. साह्रप्यं] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति विशेष, जिसमें उपासक अपने उपास्य देव के रूप में रहता है अन्त में उसी उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है ।

उ०—सालोक्य संगति रहै, सांमीप्य सन्मुख सोइ । साह्रप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होइ ।—दादूबांणी

रू. भे.—साह्रप ।

सारै, स्'रै—क्रि. वि.—अधिकार में, वश में ।

उ०—दुवारी रै सागै किणी नै दूध घालणौ थारै सारै है कै नीं । जै सारै व्है तौ औ गोवणियौ भर दै ।—फुलवाड़ी

सा'रै, सा'रै—देखो 'सहारै' (रू. भे.)

उ०—रात पड़तै ही गांव सूं बारै ऊंचै धोरै माथै एवड़ बैठाय'र सा'रै आप ही बैठ जावै । एवड़ सूं अळगौ होणै रो वींरो जी ही नीं करै । एवड़ बिनां जियारी कठै ?—दसदोख

उ०—२ सूकी सुदरांणी झाड़ां रे सा'रै, लाधी बिदरांणी बाड़ां रै लारै । सदव्रत करतोड़ी वरणास्रम सेवा, काढै मरतोड़ी रेवा तट केवा ।—ऊ. का.

सारोखणौ, सारोखबौ—क्रि. अ. [सं. स+रोष] क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—उर लागी असुहांवणी, फिर दांमणी सिळाव । सुण वांणी सारोखियौ, जोगांणी जमराव ।—रा. रू.

सारोखणहार, हारौ (हारी), सारोखणियौ—वि० ।

सारोखिओड़ौ, सारोखियोड़ौ, सारोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सारोखीजणौ, सारोखीजबौ—भाव वा० ।

सारोखियोड़ौ—भू. का. कृ.—क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ ।
(स्त्री. सारोखियोड़ी)

सारोड़ौ—देखो 'सारौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रमिया तो भंवर जी सारोड़ी रात औ कोडीला कंवर जी, कोई सेजां मैं रमिया सायबा हो म्हारा राज ।—लो. गी.
(स्त्री. सारोड़ी)

सारोट—सं. पु.—कवच, बख्तर ।

उ०—झिलम काट ओडणा, कटै सारोट ईजारा । तिलक लूट छकड़ौ, लूट ससतरा सिगारा ।—बखतौ खिड़ियौ

सारोपा—सं. स्त्री.—साहित्य के अन्तर्गत एक लक्षणा ।

वि. वि.—यह उस स्थान पर होती है जहां एक पदार्थ में दूसरे

रा सार्थक होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है।

सारो सारौ–स पु –१ हुक्म, आज्ञा।

उ०—स गिरा रे नहि सारो सारौ, बधा बळी जम ग्रासे वारौ। ऐसी बात बनारसि थारी, कालिमा मुना पारि उतारी।

—पी. ग्रं.

२ वश, चलन।

उ०—१ सेठाणी नै जितो राजी व्हैणो हो, व्हैगी। इण सूं घणें मन री सारौ ई नाई हो। पण अबै सेठजी नै सगळी बाता बखाण में सार्दे घर।—फुलवाड़ी

उ०—२ थानू टळकावणी ठकराणी कंवण लागी—वै घटै थानस्या सो तो म्हारै ई सारै री बात कोनी। पण हीमत हारयां थांरी-म्हारी प्रीत नीं निभै।—फुलवाड़ी

उ०—३ तद मा'राज कयौ—हजरत, आपरी तपस्या जोरावर है, आदमी रो कांई सारो है। पीछै महाराज सीख कर डेरां आया।

—द. दा.

३ जोर, शक्ति।

उ०—१ क्रोध कियो नरक पड़ै, जिहां तो दुख आपरो रे। छेदन भेदन वेदना, तिहां नहीं किण रो सारो रे।—जयवांणी

उ०—२ सेठांणी अर बेटी माह भी अंड़ो ई विखो हो। पण अणहोणी, अणचींती, अजोगती अर निजोरी बात सूं पड़पणो किसी सारै री बात।—फुलवाड़ी

४ अधिकार, आधिपत्य।

उ०—मेरै नाम साह फुरमांणो, जोधांतत हाजर जोधांणो। सव धर हुवै तुमारो सारौ, एक वेर अजमेर सधारो।—रा. रू.

(स्त्री. सारी) १ समस्त, सब। (हि को.)

उ०—१ परम तणो रस पीवै, सदा सिनिकादिक सारा। ब्रह्म तणो रस ब्रह्म, लहै के ब्रह्म विचारा।—पी ग्रं.

उ०—२ ढळी सांथै कमर बांधी, सोवीनाई नैं घोमा-घड़ी सूं साधी। भोमी अर मैं'तर तांई सागै विना नहीं छोड्या। अधेरै-चवां-नणै गांव रा सारा दवारा जा देख्या।—दसदोख

उ०—३ सुरतांण नूं खबर हुई नहीं ता पैहली नवाब नूं खबर हुई। उणी दिनी हीदू मारियो। नवाब आप चढ उठै आयौ। सारो मुश रो साथ चढ आयो।—नैणसी

२ पूरा, तमाम।

उ०—१ तद दै पुरमता गया अर गोरखनाथजी जीमता गया। तद सारो ही जीमियो। तद देपाळ पूछियो—आयसजी धापिया। तद गोरख कही—बाबा प्रतीत का कया धापेगा।

—देपाळ धंध री बात

उ०—२ अर सारो पढि धाक, पुर तर गिर धीजै पहट। हैकंप डर नाहिड हुवा, चक च्यारुं चढि चाक।—र. वचनिका

१ पूरा, पूर्ण, सम्पूर्ण।

उ० – १ तद्याव महाराजा स्री जसवंतसिंघजी री वार में सांभी फाजुलातांजी रा कांम में सह हुवी थी सो सारौ सुदियो नहीं।

—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ मोकळी चोरी अर सागोड़ी मांण। गांम में काठा अर बाता में ढांण। सारो दिन घड़ै, पणां नारी अर सागै-सागै आयां-गयां री रोळ-रिगटोळी तथा छि-छि ही करतां नीं संकै।—दसदोख

उ०—३ यई जै इसा रूप अनेक धारा, सको सारदा कै सकै नाहि सारा। जपूं जीह सोभाग सोभाग जागो, तुळै ग्राव सीसाय रै पाव लागो।—मे. म.

उ०—४ अठी नवाब कासिमखांन दारासाह रै साथ दरकूंचा सालेरी रै दरै कढि आगरै आयौ। अर साह री हुजूर आय भी वणियो उदत सारो ही सुणायो।—वं. भा.

रू. भे.—सारउ साहरू, साहरो।

अल्पा;—सारोड़ो।

सा'रो, सा'रौ—१ देखो सहारो' (रू. भे)

उ०—पीहर पतळां रा सैणां रा प्यारा, तारक तुरां रा नैणां रा तारा। सीरी सिटियां रा सूल्हां रा सा'रा, भोड़ी भूतां रा फूलां रा भारा।—ऊ. का.

२ देखो 'सासरो' (रू. भे.)

सारो-वारो–सं. पु.—१ वश, चलन।

२ प्राथमिकता।

उ०—म्हांण धोण सूं निमट, पाठ न घणो चितारो। पढ़णी विद्या आंण, मदरसै सारो-वारो।—टाबर गईकढ़ी

सालंक–सं पु.—एक प्रकार का राग विशेष, जो बिलकुल शुद्ध हो एवं जिसमें किसी और राग का मेल न हो, फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो। (संगीत)

सालंकायन–सं. पु [सं. शालंकायन] विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

सालंकायनजा सं. स्त्री. [सं. शालंकायनजा] शालंकायन ऋषि की पुत्री व जमदग्नि की माता का नाम, सत्यवती

साळ–सं. स्त्री. [सं. शाला] १ मकान के अन्दर का वह कमरा जिसमें रोशनदान, खिड़की आदि न हो, यह मकान में सबसे बड़ा कमरा होता है।

उ०—१ सिडत जी रा बोल सुणतां ई अजेज पाछल फोर सेठां रो ध्यांन पासती साळ रै मांय गो।—फुलवाड़ी

उ०—२ मां साळ रै मांय बड़ आडो जड़ दियो।—फुलवाड़ी

२ मकान का वह कमरा जिसके दरवाजे एक से अधिक दिशाओं में खुलते हो।

३ चड़स खींचने के लिए बैलों के चलने का मार्ग।

४ हाथ से कपड़ा बुनने वाले के लिए कपड़ा बुनते समय बैठने का स्थान व उस स्थान पर बना खड्डा।

वि. वि.—प्राचीन समय में कुर्सियों के अभाव में आंगन में

खड्डा खोद लिया जाता था उसी में पैर लटका कर कपड़ा बुनने वाला, कपड़ा बुनते समय बैठ जाता था। इस खड्डे को 'साळ' कहते थे।

५ मुख्य दरवाजे पर बना हुआ खुला कमरा।

रू. भे.—साल, साळि, सालि।

अल्पा;—साळकी।

साल—सं. पु. [फा. शाल] १ बारह महिनों का समय, वर्ष।

उ०—१ दाखी अरज 'दुरग' यां, सब खळ करां संघार। साहब मन खुसियाळ सूं, जीवै साल हजार।—रा. रू.

उ०—२ अठी-उठी सोध-सोधाय नवलखो हार लेयनै आयो। सेठ देखतां ई विछांणग्या। आपरै हाथां परार री साल ई ओ हार बणवायो हो। तीनूं चीजां सागै री सागै।—फुलवाड़ी

उ०—३ तूं बहोत भूंडो करचो, छोटा ठाकुर। साल भर सूं जंगळ छांणतां-छांणतां मोको हाथ लाग्यो हो। तूं सब चोपट कर दियो। —तिरसंकू

२ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (अ. मा.)

वि. वि.—इसके बड़े-बड़े वृक्ष होते हैं। इसके पत्ते भी बड़े होते हैं व फूल कुमखों में आते हैं। इसके गोंद को राल कहते हैं। अश्वकर्ण, अजकर्ण आदि इसके भेद हैं।

३ वृक्ष, पेड़। (डि. को.)

४ अश्वकर्ण नामक वृक्ष।

उ०—ताल साल मालिका, बकुल कुवजक खरजूरी। बोलसरी माधुरी, निगर भर हरी सनूरी।—रा. रू.

५ एक प्रकार का पुष्प, फूल। (अ. मा.)

६ वह स्थान जहां सिक्के ढाले जाते हैं, टकसाल।

उ०—एक सिको इक साल को, घड़ियो एकण घाट। हरिया कहिवै पारखु, जैसो पेट'र थाट।—अनुभववांणी

[सं. शल्य] ७ दुःख, दर्द।

उ०—१ पियै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल। सालै निसदिन समभणां, चालै चाल कुचाल।—ऊ. का.

उ०—२ लांबी कांब चटक्कड़ा, गय लंबावइ जाळ। ढोलउ अजे न बाहुड़इ, प्रीतम मो मन साल।—ढो मा.

उ०—३ रजनी तुं जाजे निज थांनक, दिवसै करिस्यां ख्याल। ताहरै मिलियो माहरा मन नो, टलियो सबलो साल।—वि. कु.

८ शल्य, कांटा।

उ०—१ तें तो प्रेमनें कीया निरास, नांखंतां दिन जाय नीसास। सास तणीपरि आवै चीति, साल तणी परि सालै प्रीति। —वि कु.

उ०—२ केई फेरा पियै तुंहिज इमिरिति कुम्रो,' हेक दइतां तणै साल तूं हिज हुम्रो। घणो वळ तुझ मांह कहां कायं घणो, तूं हीज दसरथ तण दईत दईतां तणो।—पी. ग्रं.

उ०—३ सत्रु रो साल काढि आवता कुमार नूं मीणां सहित बूंदी रै लोक बधावणौ करि आंणियो। अर आप-आप रै उचित उपदारी भेट करि राडि रो रसिक जोरदार रक्षक जांणियो।—वं. भा.

९ प्रहार, घाव।

उ०—अठी पांचमौ भाई किसोरसिंघ केही हाथियां नूं हठाइ बरबीर नूं अग्रजां रा तथा आपरा साथी बणाइ धरा रो कंवाड़ होण करवाळ रूप ककचां मैं अंग रा फाचरा उडाइ सेलां रा सालां करि पाछो जुड़ाइ खेत पड़ियो।—वं. भा.

१० घाटा, हानि, नुकसान।

उ०—बोल कै कुबोल भगो टोल तू भयो, माल तोल ब्याज साल पोल मैं सह्यो। राजकै विहीन सत्यसिंधु तै रह्यो, भाजकै अधीन दीनबंधु कै भयो।—ऊ. का.

११ पलंग, खाट आदि के 'पाये' के वे छेद जिनमें 'पाटी' लगायी जाती है व उन छेदों के अन्दर रहने वाले 'पाटी' के भाग।

उ०—जीयै घडी उदैराव रो जनम हूवो तीयै घड़ी प्रोळि रा कांगरा गिड पड्या। ढोलियै रा साल भागा। ताहरां रांणी पूछियो। औ किसो उपद्रव।—देवजी बगड़ावतां री बात

१२ स्वर्ण, सोना। (अ. मा.)

[सं. शाल] १३ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७७ वां ग्रह।

सं. स्त्री.—१४ एक प्राचीन नदी का नाम जिसके कंकरों की पूजा विष्णु के रूप में की जाती है।

१५ अस्त्र-चिकित्सा।

[फा. शाल] १६ एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर।

उ०—१ एक साल लो आप, आठ दस अवर लिरावो। भळै लिरावो बीस, तीस चाळीस ढळावो।—रमण प्रकास

उ०—२ पाग सुरंगी पीव री, साल प्रिया सुरंग। केसर भीनां कुमकुमैं, पसवां भरचो पिलंग।—अग्यात

१७ देखो 'सगाळ' (रू. भे.)

उ०—किहां सायर किहां छिल्लरू, किहां केसरि किहां साल। किहां कायर किहां वर सुहड, किहां वण किहां सुरसाल। —हीराणंद सूरि

१८ देखो 'साली' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ पसवाड़ै साल रा खेत छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ महिपत मुंहतो तेड़ियो ओडां नूं अन देह। औरां ज्वारी बाजरो, जसमल साल सूं प्रेह।—जसमा ओडणी री बात

उ०—३ गेहूं बाजर मोठ मूंग, तुंवर मटर चिणेह। साल नीपजै सांवठी, ओरू मसूर अछेह।—गज-उद्धार

१९ देखो 'साळ' (रू. भे.)

उ०—१ पएसी राजा हिवै, मोटी साल कराय। असनादिक निपजाय नै, दुरबल दांन दिराय।—जयवांणी

उ०—२ माहण स्रमण सार्वयादिकै, मांडी मोटी साल। असनादिक निपजाय नै, दांन देऊं द्रग चाल।—जयवांणी

२. देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] पातसाह या केंदी स्याह-[illegible] दस्तूर छै। हूं मोवो माथूं नै सरहद बांधू। तिणरी दोढी [illegible] न गटावं. [illegible] तो केई तरे का जुवाब सा'ल आवै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ पनां अर अपछरा जुवाब सा'ल करै छै। पनां कहै छै—[illegible] नै तो मैं वरयो, तूं अबै क्यूं वरै छै। जठै अपछरा दूसरी बोली। [illegible] नै वरवा के वास्तै अपछरा सारी ही ताकै छै।
—पनां

साळउ—देखो 'साळो' (रू. भे.)

उ०—साळउ दह हाथ तपै तप ताकर, ब्रह्म तियइ रउ करइ विचार। बीजी दुनी रामची वांधइ, संभूनाथ अचळ संसार।
—महादेव पारवती री वेलि

सालकंटक-सं. पु.—घटोत्कच द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस।
(महाभारत)

सालर-सं. पु.—१ एक प्रकार का मेवा विशेष जो तालाबों में जमीन के नीचे होता है। (आईने-अकबरी)

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सालकटंकटा-सं. स्त्री. [सं.] विद्युत्केश की पुत्री एवं सुकेशी की माता एक राक्षसी।

साळकटार, साळकटारी-सं. स्त्री.—विवाह में अग्नि की परिक्रमा करने के पश्चात् दुल्हिन के भाई द्वारा दूल्हे से लिया जाने वाला एक नेग जो तलवार अथवा कटारी पकड़ कर लिया जाता है।
(चारण, राजपूत)

उ०—तद कुंवर कहो, 'राणजी आयां थात देखां, किसै ढाळै उतरै? जो हिरणां छै त्यूं रम रह्यौ तो ऊ घोड़ो साळकटारी में माग लेईस।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—साळकटारी, साळाकटार, साळाकटारी, साळाकटारो।

साळकटारो—देखो 'साळकटारी' (रू. भे.)

साळकी—देखो 'साळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—[illegible] नै साळकी में नाखियो। छोकरी पूरा पहला [illegible] लागी। नीठ दो-तीन सेर आटो लाधियो जिको बड़ै जतन सूं गोदड़ी में घाल लियो।—वरसगांठ

साळगणौ, साळगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

साळगणहार, हारौ (हारी), साळगणियौ—वि०।

साळगिओड़ौ, साळगियोड़ौ, साळग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साळगीजणौ, साळगीजबौ—भाव वा०।

सालगणौ, सालगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

सालगणहार, हारौ (हारी), सालगणियौ—वि०।

सालगिओड़ौ, सालगियोड़ौ, सालग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सालगीजणौ, सालगीजबौ—भाव वा०।

साळगरांम, सालगरांम-सं. पु. [सं. शालग्राम] १ गंडक (शाल) नदी में मिलने वाले गोलाकार पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े जिनको विष्णु का प्रतीक मान कर पूजा जाता है।

उ०—कर सोहत कुकड कंहमयं, मसतूल रोमावळ बंधमयं। पथ साळगरांम सुलछणसी, छवि पूंछ मयोर कि पुछन सी।
—वगसीरांम प्रोहित री वात

२ गंडक नदी के किनारे का वन जहां शाल के वृक्ष अधिक होते हैं।

रू. भे.—सालगारांम, सालग्रांम, साळिगरांम, सालिग्रांम।

सालगाणौ, सालगाबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

सालगाणहार, हारौ (हारी), सालगाणियौ—वि०।

सालगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सालगाईजणौ, सालगाईजबौ—कर्म वा०।

सालगायोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालगायोड़ी)

साळगारांम—देखो 'साळगरांम' (रू. भे.)

उ०—अंजुळी नीर पीवै स आय, मुतकळी सुघट ताकै महाय। आंगियां ओप पावै अनूप, साळगारांम सरसै सरूप।—पे. रू.

साळगियोड़ौ, सालगियोड़ौ—देखो 'सिळगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री साळगियोड़ी, सालगियोड़ी)

सालगिरह, सालगिरै-सं. पु. [फा. सालगिरह] वर्षगांठ, जन्मदिन।

उ०—संवत १७१० रा माह वदि १३ पातसाहजी सालगिरै रै दिन महाराजा रो खिताव दीयो साहजहांनजी, मुनसब छव हजारी जात, असवार हजार ६ तांमै हजार पांच दो सर्प नै एक हजार इक सर्प।
—नैणसी

सालग्रांम—देखो 'सालगरांम' (रू. भे.)

सालग्रांमक्षेत्र-सं. पु. [सं.] पुलह ऋषि का आश्रम।

सालग्रांमगिर, सालग्रांमगिरि-सं. पु. यौ. [सं. शालग्रामगिरि] एक पर्वत का नाम जहां शालग्राम की मूर्तियां मिलती है। (भागवत)

सालग्रांमि, सालग्रांमी-सं. स्त्री.—१ गंडक नदी का एक नाम।

२ उक्त नदी के निर्गम स्थान के निकट का एक पुण्य स्थल।

सालण-सं. स्त्री.—१ पंवार वंशोत्पन्न एक देवी का नाम।

२ एक प्रकार का तरल खाद्य पदार्थ।

उ०—१ मूंकयां नव नव परि सालणां, मूंकयां सरहां घी प्रतिघणां। मूंकी मांडी मुरकी सेव, मूंकी खीर खांड घ्रत हेव।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ जरै जीमण नै पंचधारी लापसी मोकळी मंगळीक कीधी। घणा दाळभात बणाया। घणा वेसवारां रांधिया सालणा बणाया। जीमण तयार हूवौ।—जैतसी ऊदावत री वात

३ मसालेदार साग-सब्जी, मांस आदि नमकीन खाद्य पदार्थ।

उ०—........पछी चारु पुरसिया सालणां, तै कीसा कीसा ? मुंगिया केरडा वाहलोल, काचा केला, चोलांनि फली, नीला चीणां, अंबोल काचली, वावलिया करेला, वळी सूंठ नीं पलेव, हिंग वघारी कढी, पातला तलियां पापड़, तलीया नागवेलना पांन जीमता बीमणा भावै घांन ।—व. स.

उ०—१ तीखां तमतमां राईतां, मीठा मद्धुरां गल्यां तल्यां मच-मचां इस्यां सालणा तणी युगति, सुगंधी दालि तणा चोखा, विहू ग्रांणी ए आखा,......... ।—व. स.

सालणि, सालणी–सं. स्त्री.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक मगण, दो तगण तथा दो दो गुरु सहित ग्यारह वर्ण होते है। (पिं. प्र.)

वि.—चावल का ।

उ०—खलखंती ज चूडी, लहिकतइ ज हाथि, खांड ग्रीसती ज वादइ, जमु सहूं को सवादि, भलभलां भावतां भीनां वडां, सालणि सालेवडां,......... ।—व स.

सालणौ, सालबौ–क्रि. अ; स.—१ खटकना, कसकना ।

उ०—१ गोरी पींडी पर ऊपड़ता गोडा, लंबी बीखां दै लेतोड़ी लोडा । सेणां साजनियां ऊमर भर सालै, घूमर देतोड़ी केता घर घालै ।—ऊ. का.

उ०—२ पियै तमाखू कापुरस, सापुरसां हिय साल । सालै निस-दिन समझणां, चालै चाल कुचाल ।—ऊ. का.

उ०—३ पण मार खाय-खाय नें ज्यांरा डील सूज्योड़ा हां वांरै मन मैं तौ ग्रौ भी तीर री गळाई सालतौ हौ कै जै खूनी री पतौ नीं लाग्यौ तौ सगळां नें ई पाछौ थांणै जावणौ पड़ैला ।

—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—४ वाचा साच न दक्खै वांणी, पै बीसार मंगावै पांणी । घट सोचे डाढौ कर घाले, 'सोनंग' 'दुरंग' तणौ छळ सालै ।

—रा. रू.

२ दुखदाई होना, दर्दयुक्त होना ।

उ०—१ दुरभिख निकटासण किणनें नह दीधौ, नकटै नकटापण झपणासय कीधौ । मिळगा धूळी ज्यूं जेस्टासम जूनां, सालै सूली ज्यूं स्रेस्टासम सूनां ।—ऊ. का.

उ०—२ आविउ वसंत, हूउ जीवलोक कांतिमंत, संवहइं मलय-मारुत, उच्छलइं कोकिलारुत, मउरीइं सहकारवन, सालइं विर-हिणी तणां मन महमहइं बकुल विचकिल मालती कुरबक पाडला-वन, खिल्लइ.........।—व. स.

उ०—२ विरह खट्कौ रेण दिन, हरिया सालै मोय । का तुझ मिळियां भाजसी, का मुझ मिळिया तोय ।—ग्रनुभववांणी

३ पलंग, खाट आदि के पाये में पाटी डालने के उद्देश्य से पायों में छेद किया जाना ।

४ तपना ।

उ०—अंजळ करि रतन कांबळी आडी, आदिया सकति ग्रनाथां-नाथ । सालइ सनमुख होइ अगन सूं, हाथ तपै तप दीन्हा हाथ ।

—महादेव पारवती री वेलि

५ आकर्षित करना ।

उ०—खिण पालणइ गोद लीजइ खण, चवर ढुळइ चिहुं दिसै सुचंग । बाळक तणइ बांधिया बंधण, ऐकीका सइ सालै ग्रंग ।

—महादेव पारवती री वेलि

सालणहार, हारौ हारी), सालणियौ—वि० ।

सालिग्रोड़ौ, सालियोड़ौ, साल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सालीजणौ, सालीजबौ—भाव वा० ।

सहलणौ ,सहलबौ, सालवणौ, सालवबौ, सेलणौ, सेलबौ

—रू० भे० ।

सालदोज–सं. पु [फा.] वह जो शाल के किनारे बेल-बूंटे आदि बनाता हो ।

सालपरण, सालपरणि, सालपरणी–सं. स्त्री. [सं. शालपर्णी] १ साल-विन नामक वृक्ष। (ग्रमरत)

२ वह छोटा क्षुप जिसकी प्रत्येक डंडी में तीन-तीन पत्ते व फलियां लगती है।

सालबाफ–सं. पु. [फा. शालबाफ] १ कपड़ा बुनने वाला व्यक्ति ।

२ एक प्रकार का लाल व रेशमी कपड़ा ।

साळवाव, सालवाव–सं. पु.—कपड़ा बुनने वालों से वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का राजकीय कर । (मा. म.)

सालमली–सं. पु. [सं. शालमलीस्थ] १ गरुड़ ।

(नां, मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सालमली' (रू. भे.)

रू. भे.—सालमिली ।

सालमसाही–सं. पु.—प्रतापगढ राज्यान्तर्गत प्रचलित प्राचीन सिक्का ।

सालमिली —१ देखो 'सालमली' (रू. भे.)

२ देखो 'सालमली' (रू. भे.)

सालमिसरी, सालमिस्री–सं. स्त्री. [ग्रं. सालब+मिस्री] प्रायः हिमालय एवं तिब्बत के पहाड़ों में पाया जाने वाला क्षुप, सुधामूली, वीर-कंदा ।

वि. वि.—इसका कंद कसेरू के समान किन्तु चपटा; सफेद और पीले रंग का तथा कड़ा होता है। इसकी गंध वीर्य्य के समान होती है। यह अत्यन्त पौष्टिक होती है।

सालमुख–सं. पुं. [सं. शल्यमुख] युद्ध, संग्राम । (ग्र. मा.)

सालर–सं. पु. [सं. शल्लकी] १ एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पानी से शीघ्र खराब होती है। इसकी : वैद्यक में काम आती है ।

२ उक्त पेड़ की लकड़ी या जड़

सालरचर–सं. पु.—हाथी, हस्ती ।

उ०—सुर नर असुरै किणी न सुणियौ, बापा रै सांगै कज बोम ।

अंगी त्याग कियौ सीसोद्, हुवै हुवा सालरचर होम ।

—महाराणा सांगा री गीत

सालणौ, सालबौ—देखो 'सालुणौ, सालुबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुणि चहुवांण कटक सालछिया, महिसिर किर बारह घर सिछिया । जदि घंग सिनह सस्त्र अंग जकड़े, वसै तंडीर सवोला वरडै ।—सू. प्र.

उ०—२ प्रजाड़े सरस भड़ै हुय पग, लड़ै जांण भारा घरं लाठ लाग । मुड़ै सालळै सालळै पै मुडकै, भड़ां ओझड़ां सांड ज्यौ मार भूरकै ।—रा. रू.

उ०—३ घड़ै होल कंमाळ घग ग्रहमंड घड़वकै, सुरणायं सालळै गाय मीढू घोर हरकै ।—रांमरासौ

उ०—४ घणी रै हुकम सां वहत मादल घुवै, हुआ वरघू सबद देव दांनव हुवै । सालळै गीधूणो राग सरणाईयां, भलाई आज भारथ करौ भाईयां ।—पी ग्रं.

सालळणहार हारौ (हारी) सालळणियौ वि० ।

सालळिग्रोड़ौ सालळियोड़ौ, सालळ्योड़ौ भू० का० कृ० ।

सालळीजणौ, सालळीजबौ—भाव वा० ।

सालळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालळियोड़ी)

साळवणौ, साळवबौ-क्रि. स.—शस्त्र चलाना, प्रहार करना ।

उ०—'सादवां' छादन घमसांण मझ साळवी, चवत हिंदवांण असुरांण नमकी । दाद 'भोपाळ' अजरेळ वेरियां दळण, दुत कमर मैं हूत दमकी ।—भोपाळदांन सांदू री गीत

साळवणहार, हारौ (हारी), साळवणियौ - वि० ।

साळविग्रोड़ौ साळावयोड़ौ साळव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

साळवीजणौ, साळवीजबौ—कर्म वा० ।

सालवणौ, सालवबौ—देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

उ०—साम थयौ प्रारम रे, घण जिसारै तरवर पालवै रे । दुखियां नै दुरलंभ रे, विरही लोका रै होयड़ै सालवै रे ।—वि. कु.

सालवणहार, हारौ (हारी), सालवणियौ——वि० ।

सालविग्रोड़ौ, सालवियोड़ौ सालव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सालवीजणौ, सालवीजबौ—भाव वा० ।

सालवदन-सं. पु. [सं. शालवदन] शालवदन या शृगालवदन राक्षस का नाम । (पौराणिक)

सालवोनक-सं. पु [सं.] एक देश का नाम । (पुराण)

सालसागर-सं. पु.—एक प्रकार का सागर विशेष जो कि घोड़े को घाव लगने से बचाता है ।

सालवियोड़ौ—देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालवियोड़ी)

साळवियोड़ौ-भू० का० कृ०—शस्त्र चलाया हुआ, प्रहार किया हुआ ।

(स्त्री. साळवियोड़ी)

साळवी, सालवी-सं. पु.—एक जाति विशेष जिसके व्यक्ति प्रायः करघे पर कपड़े बुनने का व्यवसाय करते हैं ।

उ०—नगरि मांडवी वारू पीठ, आछी सेरा चोळ मजीठ । पाडसूत पटूआ सालवी, कुहरइ वस्त अणावइ नवी ।—कां. दे. प्र.

सालसंचउ-सं. पु.—उपकरण ।

उ०.........करुणानिधि, वात्सल्यसमुद्र, नसांजाल व्यक्त दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढलहलता, जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि काठ मेलिउं सालसंचउ ठगठगतउ मेलिउं हुइ जिसिउ,—व. स.

साळस, सालस-वि.—१ सज्जन, भला ।

उ०—दो दिनां पछै सेठांणी साव साजी-सूरी व्हैगी। तो ई कुमार माडांणी वांनै ढाबिया । कुमार रै उण सालस बेटा रै माथै सेठ अणूतां राजी व्हिया । पेट सूं जायोड़ा ई अंड़ा हीड़ा नीं कर सकै ।—फुलवाड़ी

२ सुशील ।

उ०—इदक रूपाळी । सीळ सुभाव । सालस, धीमी अर सुलखणी। हाथ री खांमचण । सात्यूं भाई परण्यां पांत्या । बींदणियां रूपाळी अेकाअेक नणंद री अणूंतो लाड राखै ।—फुलवाड़ी

३ होशियार, बुद्धिमान, चतुर ।

उ०—१ वौ सालस भतीजौ तौ सोनौ लेय सीधौ आपरै गांव ढळियौ । पछै उठै ढबणा मैं सार ई कांई । घर मैं सोनौ आवतां ई सै बातां रा ठाट व्हैगा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हालतां-हालतां अेक लांठौ नगर आयौ । उठै रात-वासौ लियौ । अेक लखपति सेठ सालस अर समझणौ मोट्यार जांण वणनै पड़चूनी दुकांन माथै चाकर राख लियौ ।—फुलवाड़ी

सालसि, सालसी-सं. स्त्री.—साले की स्त्री, सलहज । (शेखावाटी)

सालहोतर, सालहोत्र—देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—नासां रा फरड़का वाजि नै रहिग्रा छै। वेपस सूध जिकै सालहोतर मां वखांणिया तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूंदणहार, खुरतालां रा अग्रखुरां सूं धरती धमकि नै रही छै।

—रा. सा. सं.

साला-सं. स्त्री. [सं. शाला] १ गृह, मकान ।

२ कमरा, बड़ा कमरा ।

३ वृक्ष का तना ।

वि.—साल का, वर्ष सम्बन्धी ।

सालाना-वि.—वार्षिक ।

साळाकटार, साळाकटारी, साळाकटारौ—देखो 'साळकटारी' (रू. भे.)

सालावय-सं. पु. [सं. शालावय] आयुर्वेद के अन्तर्गत आठ प्रकार के तंत्रों में से एक प्रकार का तंत्र विशेष ।

सालाक्ष-सं. पु. [सं. शालाक्ष] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

सालाग्रक—देखो 'साळाग्रख' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

साळायली—देखो 'साळाहेली' (रू. भे.)

साळाळी-सं. स्त्री.—कटार, कटारी। (ना. डि. को.)
सालावती-सं. स्त्री. [सं. शालावती] विश्वमित्र मुनि की एक पुत्री का नाम।
साळाव्रक, साळाव्रख-सं. पु. [सं. शालावृक] १ कुत्ता, श्वान।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ भेड़िया।
३ शृगाल।
४ बंदर।
५ बिल्ली।
रू. भे.—सालाव्रक, सूळाव्रक, सूळाव्रख।

साळासेली, साळाहेली-सं. स्त्री.—पत्नी के भाई की पत्नी, साले की पत्नी।

उ०—१ आप भंवरजी करवा पलांणिया मिरगानैंणी नैं बैल जुपाय। साळाहेळी वगड़ बुहारती, नणदोई नैं लटक जुहार।
—लो. गी.

उ०—२ रथ ऊतर ऊभा राय अंगण, हरि ग्रहियइ हरि रइ ताइ हाथ। साळाहेली अनइ सासवां, निरखइ नयण अनाथांनाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सळायली, साळायली।

साळि, सालि—देखो 'साळी' (रू. भे.)

उ०—१ उड़िद पीस आटा किया, चावल की भई दाळि। हरिया रुचि कर जीमिया, सब तें मीठी साळि।—अनुभववांणी

उ०—२ सालि दालि घ्रत घोलसुं, भला पेट काठा भरया। 'समयसुंदर' कहइ अव्यासिया, साध तउ अजे न सांभरचा।
—स. कु.

उ०—३ करपूरवासी बि आगुली सालि, मंडोर तणा मग तणी दालि, सोना तणइ स्थालि, सालणा तणी पालि, सुरहा घी तणी नालि, बि पहर तणई कालि, परीसइ आंखडियालि, इसिउं पुण्य विणु न प्रांमीयइं।—व स.

२ देखो 'साळ' (रू भे.)

उ०—आज सांपड़तां झखेरो आयो थो ज्यूं आयो। जरैं आप। दौड़ि सालि मैं गई, नै हूं रंजी सूं भरांणी।
—वीरमदे सोनगरा री बात

सालिक—देखो 'स्यालक' (रू. भे.)

उ०—डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा, डावा लाली जिमणी मलाली, तंदल भरु भांणां, नीर भरि बहिढूं सवछी गाइ, सपलांणु घोडु रासु धोरी। एतनि प्रकारैं करी अम्हारा सकन वरणवीता सोभड, अहो सालिक बोलि।— व. स.

सालिकर-सं. पु.—छंदशास्त्र में टगण के तेरहवें भेद का नाम।
(डि. को.)

सालिगरांम, सालिग्रांन—देखो 'साळगरांम' (रू. भे.)

उ०—१ अम्ह कजि तुम्ह छंडि अवर वर आंणौ, ऐठित किरि होमैं अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।
—वेलि

उ०—२ हुआ हेक-मोनूं महाजुद्ध हांम, गळमाळ तुळछी अनैं साळिग्रांम। सहू भीमरा भीच आखाडसिध्धं, मरण प्रब्ब संपेख मंगळीक किद्धं।—गु. रू. बं.

सालिणी, सालिनी-सं. स्त्री. [सं. शालिनी] १ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त विशेष जिसमें क्रमशः एक मगण, दो तगण और अंत में दो गुरु होते हैं। मतान्तर से इसमें क्रमशः चार गुरु, दो रगण एवं एक गुरु होता है।

२ वार्षिक।

सालिपिंड-सं. पु. [सं. शालिपिण्ड] कश्यप एवं कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक काद्रवेण नाग का नाम।

सालिभद्र-सं. पु.—१ एक राजा का नाम। (जैन)

२ महावीर स्वामी के समय का एक धनाढ्य सेठ जिसके ३२ पत्नियां थी।

वि. वि.—एक बार कोई दुपट्टे (साल) बेचने वाला आया। उसके साल इतने महगे थे कि उस देश का राजा भी नहीं खरीद सका। उन्हीं दुपट्टों को इसने खरीदे एवं खरीदने के एक दिन बाद ही अपने लायक न समझ कर बाहर फेंक दिये जिन्हें ओढ़ कर हरिजनों की स्त्रियां राजमहल में सफाई हेतु गई। वहां रानी ने देखा और पूछने पर पता चला कि अमुख सेठ के घर से ये प्राप्त हुए हैं। तब राजा ऐसे सेठ से मिलने आया। उस समय यह अपनी रानियों के पास था। इसकी मां ने कहलवाया कि बेटा स्वामी मिलने आये हैं। तब इसने सोचा कि क्या मेरा भी कोई स्वामी है? यह विचार आते ही इसे संसार से विरक्ति हो गई और इसने प्रतिदिन अपनी एक पत्नी को छोड़ना शुरु कर दिया तब इसके साले ने आकर इसे कायर बताया और कहा कि संयम ही धारण करना है तो एक साथ सभी पत्नियों को छोड़ो। तब इसने अपनी ३२ पत्नियों को एवं साले ने अपनी आठों पत्नियों को छोड़ कर संयम धारण कर लिया।

साळिम, सालिम—वि. [अ.] १ पूर्ण, पूरा।

२ स्वस्थ, निरोग।

३ निरापद, सज्जन।

उ०—सुयण लाखौ सदा सालिम, जगत जांणै वडौ जालिम। लहण भेदां गुणां लाइक, निवड दाता नरां नाइक।—ल. पिं.

रू. भे.—साल्यम।

सालियांणौ, सालियांनौ-सं. पु.—गौड़ वंश के अन्तर्गत एक क्षत्रिय वंश।

वि.—वार्षिक, सालाना।

सालियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ खटका हुआ, कसका हुआ. २ दुखदाई हुवा हुआ, दर्दयुक्त हुवा हुआ. ३ पलंग, खाट आदि के पाये में

[illegible] हुआ. ५ वार्णित किया हुआ।

[illegible])

[illegible]–रू. पु.—१ [illegible] के प्रस्थान को पूर्वी [illegible] के प्रस्थान में बाने जाने वाले [illegible]।

[illegible]

२ [illegible] (रू. भे.)

[illegible]–सं. पु. [सं. शालिवाहन] शक संवत् को [illegible] एक प्रसिद्ध राजा।

[illegible]–सं. पु. [सं. शालिशिरा] कश्यप एवं उनकी पत्नी मुनि के [illegible] एक पुत्र देवगन्धर्व।

[illegible], सालिसूरच–सं. पु. [सं. शालिसूर्य] कुरुक्षेत्र का एक पुण्य-[illegible] था।

[illegible], सालिहोत्र–सं. पु. [सं. शालिहोत्र] १ प्राचीन ऋषि का [illegible], जिन्होंने [illegible] (शास्त्र) की रचना की थी।

२ [illegible] विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा एवं उनके [illegible] वर्णन होता है।

३ घोड़ा, [illegible]।

रू. भे.—[illegible], सालहोत्र, सालिहोतरी, सालिहोत्रि, सालि-[illegible]।

[illegible], सालिहोत्रि, सालीहोत्री–सं. पु. [सं. शालिहोत्री] १ घोड़े के [illegible] एवं उनकी तथा अन्य पशुओं की चिकित्सा [illegible] पूरी तरह जानकार व्यक्ति।

२ देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—[illegible]। [illegible]। [illegible]। गंगे-[illegible]। [illegible]। [illegible]। कथम्यां फोगणां। चपल चरण [illegible]। सालिहोत्रि [illegible]। [illegible] करइ। मनस्यूं [illegible]।—हा. दे. प्र.

रू. भे.—[illegible], [illegible]।

[illegible]–सं. स्त्री. [सं. श्यालो] १ पत्नी की बहिन।

उ०—१ [illegible], [illegible] गीत कहइ। [illegible] वहइ।

—[illegible] री वेलि

उ०—२ [illegible]। [illegible] रो [illegible]।—[illegible] कवियो

[illegible]—उचित व्यक्ति से [illegible] जिससे साथ मजाक [illegible] हो।

[illegible] २ [illegible]।

रू. भे.—साल, सालि, सालि।

सालीणौ–वि. (स्त्री. सालीणी) वार्षिक।

सालुळणौ, सालुळबौ–क्रि. स.—१ विनय करना, प्रार्थना करना, स्तुति-गान करना।

उ०—नेम धारियौ नरेस, यहां न को चढ़ै पेस, देस कहूं सको देस ग्यो बीज गयो सेस। लहै वेण इतो लेस, तांण भूंह करै तेस, सालुळै अगेस सेस, राघवेस राघवेस।—र. रू.

२ युद्धार्थ प्रस्थान करना, गमन करना।

उ०—१ लगि तोरां सालुळी, पुळी पलटण्यां पटैतां। संगीनां साब्ळां, आभ छायो असड़ैतां।—मे. म.

उ०—२ गुज्जर तणा गहर, ताइ मिळै दिखणी तणां। सेन उजेणी सांमुहा, सालुळिया दळसूर।—र. वचनिका

३ आक्रमण करना, हमला करना।

उ०—धाड़ै पुकार पड़ लागि धाड़, रवि उदय अस्त लगयंत राड़। सालुळै विदळ कंदळ समथ, रंग सेल सगे न मिटै रवथ।—रा. रू.

क्रि. अ.—४ प्रारम्भ होना, शुरु होना।

उ०—१ वळ चहुवै कळ सालुळी, चळ चळ पुर हलचल्ल। आया वार निदांन री, बीस हजार मुगल्ल।—रा. रू.

उ०—२ राड़ो सालुळै अरथगां वेध वधै सोवां रायजादां, सतारा उछाजां जूह उमंडै सजीत। घोर वेळा प्रथम्मी आंणतां सूत हेक घाटै, आसमान फाटै थंभ लगायो 'अजीत'।

—अजीतसिंह चूंडावत रो गीत

५ चलना।

उ०—१ समर वाजियां खाग फोजां डंमर सालुळी, ओप भर गुमर पोरस अमांमी। उरड़ पड़ियो अविधि घड़ा ऊपर अतर, सार धारां बिचै भंमर सांमी।—चांदसिंघ रो गीत

उ०—२ दांतूसळां माबळां डंमर, लंगर लाज खळहळै लार। सालुळ अरा लख खळां संघारै, पटहथ जेहा विरद पगार।

—ऊकी बोगसी

उ०—३ मेड़तिया महाराज दळ, किया मुदै करतार। दूंद अमंदी सालुळे, त्यां हूंदी तरवार।—रा. रू.

६ उमड़ना।

उ०—१ लंका लेवण लगरी, कप फोजा इधकात। अळै करण जांणै अथी, सालुळिया दध सात।—र. रू.

उ०—२ आंण तै नीर पाताळ उबेड़िया, कमठ वाराह ना मांण वळिया। सेस जळिया गुमर गंगजळ सालुळै, महण परवाह परवाह मिळिया।—जोगीदास कवियो

७ प्रज्वलित होना, जलना।

उ०—है फरहास सुदाय हमारै, थांन रांम जिम पूहड़ धारै। सुणै वचन विक वीर सियाळा, जांणै जेठ सालुळी ज्वाळा।—गो. रू.

८ झुकना।

उ०—वह छूटं कंवर सोक नलीसर सींधणि संघर साचवियं। धुवि जांण धराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचवियं।—गु. रू. बं.

९ वाद्य यंत्रों का बजना।

उ०—केई ढोल कंसाळ, धरा व्रहमंड धड़क्कै। सुरणायं सालुळै, राग सींधूग्रौ रड़क्कै।—पी. ग्रं.

१० उलटना। (डिं. को.)

११ होना।

उ०—गाज त्रंबाळ पड़ रोल गैणाइयां, सालुळै सिंधुयै राग सरणाइयां। कूद ग्या कायरां वाजती काहली, वीर आकासमां सूरमां वलकुली।—रुखमणी हरण

१२ गाया जाना।

सालुळणहार, हारौ (हारी), सालुळणियौ—वि०।

सालुळिग्रोड़ौ, सालुळियोड़ौ, सालुळचोड़ौ—भू० का० कृ०।

सालुळीजणौ, सालुळाजबौ—कर्म वा; भाव वा०।

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललबौ, सलुळणौ, सलुळबौ, सालळणौ, सालळबौ, सालूळणौ, सालूळबौ—रू० भे०।

सालुळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, स्तुतिगान किया हुआ. २ युद्धार्थ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ. ४ प्रारम्भ हुवा हुआ, शुरू हुवा हुआ. ५ चला हुआ. ६ उमड़ा हुआ. ७ प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ. ८ झुका हुआ. ९ वाद्य यन्त्र बजा हुआ. १० उलटा हुआ. ११ हुवा हुआ. १२ गाया हुआ।

(स्त्री. सालुळियोड़ी)

साळू-सं. पु.—१ मांगलिक कार्यों पर काम में लाया जाने वाला लाल कपड़ा।

२ सधवा स्त्रियों के ओढ़ने का सुंदर एवं कीमती वस्त्र, साड़ी। (डिं. को.)

उ०—१ बाळ बाळ लख वचन अव, प्रजळ जीव दूं प्रांण। मां जाई करजे मती, साळू सळू समांण।—रेंवतसिंह भाटी

उ०—२ पाग सुरंगी पीव री, साळू त्रिया सुरंग। केसर भीनां कुंमकुंमै, पुसवां भरचा पिलंग।—अग्यात

उ०—३ सिर साळू रंग चूंनड़ीवर, भल दिखणी रौ चीर है। अल्लै-पल्लै मोर पपिया, बिच मैं चांदो कीर है।—नारी सईकड़ौ

३ विवाह के समय में ओढ़ाई जाने वाली लाल ओढ़नी। (मा. म.)

४ किसान स्त्रियों के ओढ़ने का लाल रंग का वस्त्र विशेष।

उ०—डोरा डिगमगता आटी खुल डुळती, तिरछी झांकणियां बरछी सी तुळती। दुरबळ लाजाळू साळू मैं दीखै, भांमण भूखाळू ब्याळू बिन बीखै।—ऊ. का.

५ रहट के उस लट्ठे का सिरा जो खड़े चक्र और पानी लाने वाली माळ को ऊपर लाने में सहारा देने वाले घेरे से जुड़ा रहता है।

६ शीतकाल में मस्ती में आए हुए ऊंट के मुंह से बाहर निकलने वाली गलसूंडी।

(मि. गुल्ली)

रू. भे.—सळू, सिळू।

अल्पा;—साळूड़ौ।

सालूकिनी-सं. पु. [सं. शालूकिनी] कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थस्थान।

साळूड़ौ—देखो 'साळू' (रू. भे.)

उ०—नौसर तोड़चौ नवलखौ, वेसर घाल्यौ वंक। साळूड़ौ संकुचायगौ, निरख्यौ इसौ निसंक।—अग्यात

सालूर-सं. पु. [सं. शालूर] १ मेंढक।

उ०—१ जिम सालूरां सरवरां, जिम धरणी अर मेह। चंपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह।—ढो. मा.

उ०—२ अंब तजै नहि कोइलां, सरवर सालूरांह। राज हिवइ मा पांतरउ, आ धण घड अवरांह।—ढो. मा.

२ डिंगल का एक मात्रिक (छन्द) गीत विशेष जिसके विषम पद में १६ तथा सम पद में १२ मात्राएँ होती है किन्तु आदि के पदों में १८ मात्राएँ होती हैं। प्रथम एवं तीसरे तथा दूसरे व चौथे चरण का तुक मिलता है। (र. ज. प्र.)

३ डिंगल का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक पद में प्रथम दो गुरु तथा २४ लघु और अन्त में एक सगण होता है। मतान्तर से इसके प्रत्येक पद में क्रमशः तगण, आठ नगण एवं लघु गुरु होते हैं। इसे सालूर गीत भी कहते हैं। (र. ज. प्र.)

सालूळणौ, सालूळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे.)

सालूळणहार, हारौ (हारी), सालूळणियौ—वि०।

सालूळिग्रोड़ौ, सालूळियोड़ौ, सालूळचोड़ौ—भू० का० कृ०।

सालूळीजणौ, सालूळीजबौ—भाव वा०।

सालूळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सालूळियोड़ी)

साळेवड़ौ, सालेवडौ, साळेवड़ौ-सं. पु.—चांवल के आटे का बना एवं पापड़ की तरह तल कर खाया जाने वाला पदार्थ विशेष।

उ०—प्रीसइ नारि पातली, ललकती ज वेणी, खलखंती ज चूड़ी, लहिकतइ ज हाथि, खांड प्रीसती ज वादइ, जमु सहूं की सवादि, भलभलां भावतां भीनां वडां, सालणि सालेवडां,.......।—व. स.

साळै, सालै-क्रि. वि.—पास, निकट, समीप।

साळैड़ी, सालैड़ी-सं. स्त्री.—साले की पत्नी, पत्नी की भाभी।

सालोक, सालोक्य-सं. पु. [सं. सालोक्य] १ पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति विशेष, जिसमें जीवात्मा भगवान के साथ अथवा उसके अन्य आराध्यदेव के साथ एक ही लोक में वास करता है।

उ०—१ मुकत ही पांच प्रकार की, सालोक ही सांमीप। सारूप

[illegible] ओ [illegible] मत [illegible] ।—[illegible]

[illegible] विराजत [illegible] सात, [illegible] मन [illegible] जात ।
[illegible] सालोक सामीप सामिप ।

—ह. र.

[illegible] सालोक [illegible] सामीप [illegible] होई । सारूप्य [illegible] होई ।—दादूवांणी

[illegible] —चार प्रकार की मुक्तियों के नाम निम्नलिखित हैं—
[illegible], [illegible], [illegible], सार्ष्टि (सार्ष्टिता) और सायुज्य ।

[illegible] —देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible], [illegible] पदारथ । ऊनमणा आरिणां, [illegible] सालोकर ।—पृ. प्र.

उ०—२ सालोकर [illegible], [illegible] निरमल । आवध भेद '[illegible]', [illegible] परमत ।—ल. कु. बो.

[illegible] —देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—क्रि. वि.—[illegible] वर्ष, हर साल ।

उ०—[illegible] की [illegible] नवी-नोठी घर नाग्रा आदम रै [illegible] । [illegible] सालोसाल नील जम-जम नै [illegible] ।—रातवासो

[illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. [illegible]] पत्नी का भाई ।

उ०—१ [illegible] गो माळो जाणियो । देरी नो घोड़ी छै । [illegible] ऊडेओ रो । ताहरां ऊठनै घोड़ी पकड़ी दीठो— [illegible] ।—नैणसी

उ०—२ [illegible] माळा काळा काळा जिकै कांन्ह, संघारै [illegible] । दीसता दीनदयाळा चिरिताळा [illegible], [illegible] तमामा [illegible] ।—पीरदान लाळस

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], साल्हु ।

[illegible], [illegible]—देखो 'साळो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] ना कचोला, तिहां, बेठा [illegible] मुंश्राला, केई जमाइ [illegible] ।—व. स.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. शाल्मलि] १ सेमल का वृक्ष ।

२ [illegible] (एक) द्वीप से दूसरा एक द्वीप का नाम जो कि उतने [illegible] । (पौराणिक)

वि. वि.—इसी द्वीप पर शाल्मलि वृक्ष है जिस पर गरुड़ भगवान [illegible] । [illegible] द्वारा अपने सात पुत्रों [illegible] सात [illegible] में विभक्त किया था । इस पर मनुष्य [illegible] —[illegible], [illegible], वसुंधर व [illegible] निवास [illegible] । [illegible], [illegible], कुंद, मुकुंद आदि पर्वत व [illegible], [illegible], [illegible], नंदा आदि नदियां हैं ।

[illegible] ।

४ एक चंद्रवंशी राजा जो कुरु का पौत्र व अविक्षित का पुत्र था ।

५ एक प्रकार का नरक ।

रू. भे.—सालमली, सालमिली ।

साल्मलीकंद-सं. पु.—सेमल के वृक्ष की जड़ । (आयुर्वेद)

साल्व-सं. पु.—अंगदेश का नाम । (महाभारत)

साल्यम—देखो 'सालिम' (रू. भे.)

उ०—बालम बिछुरत हे सखी, कालम लागी एह । जालम जंम के वस्य भई, साल्यम रही न देह ।—परमानंद वणियाळ

साळ्यो, साळ्यो—देखो 'स्याळ' (अल्पा; रू. भे.)

साल्व-सं. पु. [सं. शाल्व] १ सौभ राज्य का एक राजा जिसने काशीराज की कन्याओं के हरण के समय भीष्म से युद्ध किया था ।

२ एक देश का नाम । (डि. को.)

३ विष्णु द्वारा मारा गया एक राक्षस ।

४ दुर्योधन का सहायक एक म्लेच्छ राजा ।

५ चेदी नरेश शिशुपाल-मित्र एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था ।

६ व्युतापिताश्व की पत्नी भद्रा का अग्नि से उत्पन्न एक पुत्र ।

साल्हइ, साल्हउ, साल्हु—देखो 'साळो' (रू. भे.)

उ०—१ एकवीस ऊथिला सपरांणा, लखण सेभटइ दीधा । साल्हइ सोभित अति सपरांणी, घाउ घणा सुं लीधा ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ तिणइ दिवस अमावस हूंती, खुडलीइं तिणि कालि । लखण सेभटउ साल्हउ सोभित, रह्या सरोवर पालि ।—कां. दे. प्र.

उ०—३ साल्हु सोभतु तै समरंगणि, लखण सेभटउ बीजउ । रिण-वटि रहिउ अजेसी माल्हण, मांहि मूलिगउ त्रीजउ ।—कां. दे. प्र.

सावंत-सं. पु. [सं. शावन्त] १ पृथुवंशीय युवनाश्व का पुत्र व बृहदश्व के पिता एक राजा का नाम ।

२ मुसलमान वेश्या । (मा. म.)

३ देखो 'सामंत' (रू. भे.)

सावंतरी, सावंत्री—सं. स्त्री. [सं. सवित्री] १ माता, जननी ।

(ह नां. मा.)

२ गाय, गौ ।

३ देखो 'सावित्री' (रू. भे.)

उ०—नांम नै चरण छोडै नहीं, गंग गोरि सावंतरी । अहिल्या अनै तारा तवै, सीत मात सावंतरी ।—पी. ग्रं.

साव, साव-सं. पु. [सं. शाव:] १ बच्चा, विशेष कर पशु का ।

(अ. मा; डि. को.)

उ०—नागण जाया चीटला, सीहण जाया साव । रांणी जाया नह हर्के, सौ कुळवाट सुभाव ।—वी. स.

२ बालक, बच्चा । ३ पुत्र, बेटा । (डिं. को; ह. नां. मा.)

सं. स्त्री. [सं. स्राव] ४ नदी, सरिता । (ह. नां. मा.)

क्रि. वि.—१ बिल्कुल, नितांत ।

उ०—१ सेठ कह्यौ—श्रै वातां साव कूड़ी। श्रा माया माडै नीं उळीचीजै। घकला ज्यूं कह्यौ त्यूं करण सारू त्यार। वत्ता गच-ळका भवै ई नीं काढूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ तद जुम्मा नै झूठ कँवणौ पड़्यौ कै वा खुद श्रापरै हाथां कंवरसा सार्थं घात करची। इण कूड़ी वात नै कांमेती साव साची मांनली। तठा उपरांत वौ जुम्मा रै सार्थं उणरै घर तांई गियौ। —फुलवाड़ी

२ देखो 'स्वाद' (रू. भे.)

उ०—१ मन दुख दाधा डोल मत, साधां जग तज साव। मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव।—र. ज. प्र.

उ०—२ पर घर रीझण करहला, नीवरिया घर श्राव। बीजां श्रेक भवूकड़ा, वेलां श्रेकी साव।—जलाल-बूबना री वात

सावक-सं. पु. [सं शावक] १ बच्चा, बालक।

उ०—बहुरि दूसरौ द्रस्टांत। कि इह तेज करि रतन हइ। वीजौ द्रस्टांत। कि तार कहतां रूपौ हइ। किना इह तारा छै। कइ हरि-हंस कहतां सूरच कै ताक कै ससि कहतां चंद्रमा। सावक कहतां वचा छै। कै ए हीरा छै।—वेलि टी.

२ हंस।

उ०—'गजबंघी' हंस श्रभिनमै 'गांगै', सुज निज हेत खेध करि साथ। जळ जिम खळ मूंकौ साहिजादौ, भीम दूध भखियौ भाराथ। सावक सूरजसिंघ समोभ्रम, श्रेम वरजांणै सु प्रमांण। नीर टाळि जंहगीर सुनंदन, खीर जंही भखियौ खुमांण। —गजसिंह राठौड़ रौ गीत

३ देखो सावक' (रू. भे.)

रू. भे.—सावज, सावग।

सावकश्रडळ, सावकश्रडल-सं. पु.—डिंगल का एक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक चरण में, श्रन्त में, चौकल सहित सोलह मात्राएें होती हैं एवं जो शब्द प्रथम चरण के श्रन्त में श्राता है वही चारों चरणों के श्रंत में भी श्राता है। (र. रू.)

उ०—लै चहुं पद सांणोर लख, विखम तिकण मैं धीर। इक सवदौ चोकल श्रगर, सावकश्रडल सधीर।—र. रू.

वि. वि.—इसके द्वितीय भेद में प्रत्येक चरण में, श्रन्त में, त्रिकल सहित पन्द्रह मात्राएें होती है। इसमें भी जो शब्द प्रथम चरण के श्रन्त में श्राता है वही चारों चरणों के श्रन्त में भी श्राता है।

इसके द्वितीय भेद में चार द्वाले होते हैं। यदि इसका एक ही द्वाला रखा जाय तो यही 'गाहा चौसर' गीत हो जाता है।

सावकरण-सं. पु. [सं. श्यामकर्ण] १ घोड़ा, श्रश्व। (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'स्यांमकरण' (रू. भे.)

सावकी, सावकी-सं. स्त्री.—सौतेली।

उ०—कै है रे सासू थारै सावकी ए पणिहारी ऐ लौ, कै थारौ पीयरियौ परदेस वा'ला जौ।—लो. गी.

सावकु, सावकुत, सावकौ, सावकौ-सं. पु. (स्त्री. सावकी) सौतेला।

उ०—१ पसायत गाडण री बेटी नांम मेली श्राढा नूं परणायी, मेली री सावकुत बेटौ ही जिणनुं मार पसायत रा वेटां श्राढां री जमी श्रपणाय गाडणां वसायी वाय कनै।—वां. दा. ख्यात

उ०—२ श्रर राज रै सावका बेटा-बेटियां री राजा खुद जिम्मौ संभाळियौ। डूंडी पिटायदी कै कोई दुमात सावका टाबरां नै दुख दियौ तौ जीवतां दाग दिरीजैला।—फुलवाड़ी

सावग—१ देखो 'स्रावक' (रू. भे.)

२ देखो 'सावक' (रू. भे.)

सावगी—१ देखो स्रावगी' (रू. भे.)

२ देखो 'सावकी' (रू. भे.)

सावड़—देखो 'सावढ़' (रू. भे.)

२ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

सावचेत, सावचेत-वि.—१ सतर्क, सावधान।

उ०—१ राजकंवर तौ खुद तल्लै-मल्लै सावचेत हौ। कमेड़ी री श्रेक टांग तोड़नै श्रळगी वगाई तौ देंतराज री टांग साथळ मांय सूं तूटनै खिरगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ कामेनी री श्रांख्यां मैं श्रेक दिन रगत री झांई देखी तौ वींदणीं कंवरसा नै सावचेत करचा कै श्रौ दुस्टी श्रवस घात करैला —फुलवाड़ी

२ होश में लाने की क्रिया, सचेत, सजग।

उ०—१ श्ररु बूंदी रा राव राजा छत्रसाल जी घावां पूर हुवा पड़िया है जिसै श्रालमगीर गया। सू मूंहड़ै ऊपर हाथ फेरियौ। श्ररु पांणी पायौ सावचेत कर श्रमल दियौ।—द. दा.

उ०—२ इतरी सुण भरमल श्रति उदास हुई। विरह सूं डील पसीज गयौ। नैणां मांह परवाह छूट पड़िया। सौ नीठ जीव नुं थांमियौ। वडारण घणी धीरज दीनी। छोकरचां पवन करण लागी। सावचेत करी।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ होशियार।

रू. भे.—सापचेत।

सावचेतगी, सावचेती सावचेती-सं. स्त्री.—१ चतुराई, होशियारी।

उ०—१ तौ ई पूछणौ छोकौ। सावचेती श्रापरी है किणी रै वाप री कोनी।—फुलवाड़ी

उ०—२ वां भला मिनखां सारू म्हनै श्रेक पोथी लिखणी पड़ै जका कै श्रापरा छळ कपट नै सावचेती सूं दरसावै।—फुलवाड़ी

उ०—३ मासी तुरत समझगी कै बातड़ी खासी निंवाई है। खिखरां में टाळै जैड़ी कोनीं। वोली—थूं भली-भांत जांणै कै श्रा सावचेती तौ म्हैं नींद रै मांय ई नीं पांतरू।—फुलवाड़ी

२ सावधानी, सतर्कता।

उ०—१ लोग जीवण वास्तै सौ भांत रा कळाप करैला, पण श्रपांनै श्रपां री घर तौ रूखाळणौ ई पड़ै। सावचेती नीं वरतां तौ

[illegible] दुमर [illegible] ।—[illegible]

[illegible] सौ [illegible] मे नूंकड़ो रै नासै मोरचो [illegible], [illegible] रो [illegible] करक लिया, [illegible] कुटी लांबो-चोड़ो [illegible] री [illegible] ।—[illegible]

रू. भे.—[illegible]।

[illegible]—१ सिंह, शेर।

उ०—[illegible] मे [illegible] बैठी छूं। पीछै पांवडा १०० [illegible] री नावड़ी रै निजर आयो। तरै कह्यो, [illegible], सावज बैठ्यो छै।—जगदेव पंवार री वात

२ बाघ, [illegible]। (ना. डि. को.)

उ०—[illegible] सिकार मांहि मगा, [illegible], रोझ, स्याळ, रींछ [illegible] आदि देवर भेळा हुया छै। नान्हां जीवां पडेरा मांहे [illegible] छै। पर [illegible], सावज, रोझ-कोलां रै तिहुं रै आंतर [illegible]।—द. वि.

३ [illegible] का बच्चा।

उ०—[illegible] री [illegible] लोहै री ढाल, [illegible] की सावजूं [illegible]। [illegible] असमाण जिनूं के देखैसै [illegible]।—सू. प्र.

४ [illegible], [illegible] आदि वन्य पशु जिनका शिकार किया जाता है।

उ०—[illegible] सावज [illegible] कमाई [illegible]। टुकड़ां साटै टेगड़ा, [illegible]।—रेवतसिंह भाटी

५ [illegible] पक्षी।

उ०—[illegible] मरग्गद [illegible], [illegible] रैण [illegible]। [illegible] सावज [illegible], [illegible] गात्र सथूळ।

—गु. रू. बं.

६ योद्धा, वीर।

उ०—[illegible] 'जोध' [illegible], सावज कुळ पेंतीस [illegible]। [illegible] सवै [illegible], गाजियो रांवण मेर-गिरै।

—बिसनो आढो

७ देखो '[illegible]' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

रू. भे.—[illegible]।

[illegible]-वि. [सं. [illegible]] [illegible], निंद्य, तिरस्करणीय।

उ०—[illegible], [illegible] घांम, [illegible] फार, अद्यवण [illegible]। [illegible], सावजन [illegible], निद्रा-[illegible]।—[illegible]

[illegible]-सं. पु.—[illegible]। (ना. डि. को.)

रू. भे.—[illegible]।

[illegible]-सं. पु.—[illegible] का एक गीत (छन्द) जिसके प्रथम द्वाले के [illegible] में २३ मात्राएं होती हैं तथा अन्य तीन चरणों में २०, [illegible] मात्राएं होती हैं एवं चारों चरणों में तुकांत मिलते हैं।

(र. रू.)

सावझळ—देखो 'सावजळ' (रू. भे.)

सावट्ट-सं. पु.—१ सूर्योदय के समय भेड़िये द्वारा राह पर बांयी ओर से आकर दाहिनी ओर जाने की क्रिया। (अपशकुन)

उ०—'पाल' तणो परधांन तूं, तूं नायक बोहजांण। सूरज [illegible] सावट्ट, सो किसडो चंद्रभांण।—पा. प्र.

२ श्रेष्ठ कपड़ों की पोशाक।

उ०—१ रांणै उदयसिंघ री पुत्री परणि, घणो उच्छव करि, मंगित जणां री घणी आसीस लै करि, करह केकांण सोना सावट्ट महुरां घणी दे चित्रोड़ रो मेघ कहाई।—द. वि.

उ०—२ चोवलई फेरइ डाईवौ, पल्यंग सावट्ट सोडि। कुंमरि कर मेल्हावणई, दीया भाव भूखण कोडि।—रुकमणी मंगळ

उ०—३ सावलोह भाला नइ सांगि, लीइ हथियार सवे मनरंगि। नवा सावट्ट ठेसइ पाय, उलगीइ कांन्हड़दे राय।—कां. दे. प्र.

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—१ अलूखांनि जूजूआ दिवारचां, तेह सविहुंनइ अनांग। सोनां रूपां अनइ सावट्ट तोरी आप्या ग्रांम।—कां. दे. प्र.

उ०—२ सोना कळश सावट्ट साकुर, गिण देवरत न मनि गहिया। पुर्ण दीह सांगार प्रिथी-पुड़, कहतै हरि चारण कहिया।

—सांगार सोढा रो गीत

४ तोता, सुग्गा।

वि.—१ नया, नवीन।

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

रू. भे.—सावट्ट।

सावडदी-सं. पु.—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

उ०—खाटो खीच फलका मांस, दाळ बाटी ज्वारी। सावडदी समोसा मूंग, चावळ की तयारी।—शि. वं.

सावट्ट—देखो 'सावट्ट' (रू. भे.)

उ०—जीमणा हाथ कांनी सूं डावा हाथ कांनी आवै सावट्ट नै सांगवणो कहीजै इण तरह सावट्ट ऊबेड़ा सांगवणा मालाळा जांणीजै।

—शकुन शास्त्र

सावढ-सं. स्त्री.—१ कृषि की अधिष्ठात्री एक देवी जिसे कृषक हल जोतने व बीज बोने से पहले नमस्कार करते हैं।

उ०—सूतल नाथा सर नासां सणकारी, फुरणीं घूंघाता रासां फणकारी। भूसर घायां गल आवढ कठ भांजै, नम नम सावढ नै नायां, कण नांखै।—ऊ. का.

२ फसल काटने के पश्चात सांड आदि के लिए छोड़ी जाने वाली कुछ फसल।

३ मातृभूमि।

रू. भे.—सावड़, सेवड़, सेवढ, स्यावड़।

सावढमाता—देखो 'सावढ' (१)।

सावण—देखो 'सांवण' (रू. भे.)

सावणिक-सं. पु. [सं. श्रावणिकः] श्रावण मास। (डिं. को)

वि. [सं. श्रावणिक] श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।

सावणियौ—देखो 'सांवण' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सावणियै रा दिनड़ा च्यार, जंवाईड़ो लै जासी जी लै जासी। वा उडसी पांख पसार, सूवटियौ लै जासी जी लै जासी।
—लो. गी.

उ०—२ सोढौ रांणौ सावणियै री मेह, मूमल आभा बीजळी। वरसण लाग्यो मेह, झबूकण लागी बीजळी।—लो. गी.

सावणूं—देखो 'सांवणू' (रू. भे.)

सावतरी—देखो 'सावित्रि' (रू. भे.)

उ०—१ जड़ धारिन जांणी प्रचळ पुरांणी, अधिकि हुई किमि करि इतरी। पारवती निमो हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी।—पी. ग्रं.

उ०—२ आखां पाछै आप खावै, त्याग राग जग जांणनी। सीता सावतरी, दमयंती, द्रौपत दाय पिछांणनी।—नारी सईकड़ौ

उ०—३ सावतरी रै सांच, मरचोड़ौ पति जियाळौ। सकुंतळा री साध, वीर बाळक बेताळौ।—नारी सईकड़ौ

सावतौ—देखो 'सावतौ' (रू. भे.)

उ०—आंपणां जु वेली कहतां साथी था तांहनै बळिभद्रजी पचारचा। कहीयौ जु देखां अजैलग सत्रां री साथ सावतौ ऊभौ छै। वूठै उपरि वाह देण री इहै वेळा छै। सेई जीपसी जु हाथ वाहसी।
—वेलि टी.

सावत्री देखो 'सावित्रि' (रू. भे.)

उ०—१ सावत्री सरसती गवरी गंगा गोमत्ती, मिळै सतियां धरि महरि करै इण पर कीरत्ति।—रा. रू.

उ०—२ इम्या लेसै उवारण, तूं आतिम आधार। सावत्री साराहियौ, श्री निकळंक अवतार।—पी. ग्रं.

सावत्रीईस, सावत्रीईसर, सावत्रीईसुर, सावत्रीईस्वर-सं. पु. यौ. [सं. सावित्री+ईश, सावित्री+ईश्वर] ब्रह्मा, विरंचि। (डिं. को)

सावद्य-सं. पु. [सं.] योग में एक प्रकार की सिद्धि का नाम।

वि. वि.—योग में तीन प्रकार की सिद्धियां होती हैं। यथा—सावद्य, निवद्य और सूक्ष्म।

वि.—जिसमें किसी प्रकार का पाप या दोष हो, पाप या दोषयुक्त।

यौ.—सावध्यअनुकंपा, सावध्यक्रिया, सावध्यदया, सावध्यदांन।

सावद्यअनुकंपा-सं. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया।

उ०—वखांण वांणी देवै सूत्र सिद्धांत बांचै छेहड़ै जीव खुवायां पुन्य मिस्र परूपै सावध्यअनुकंपा मैं धरम कहै।—भि. द्र.

सावद्यक्रिया-सं. स्त्री. यौ.—पापयुक्त क्रिया।

उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ—हे बाई थांरी करम बंधवा री सावद्य-क्रिया ही तूं नहि छोडै तौ रोटी रै वासतै म्हारी साची क्रिया हूं किम छोडूं।—भि. द्र.

सावद्यदया-सं. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया।

उ०—वायां रात्रि मैं संसार लेखै चोखा चोखा गीत गावै अनै छेहड़ै जातां मोरची मारू गावै। ज्यूं........पहिलां तौ वखांण मैं अनेक बातां कहै पिण छेहड़ै सावद्यदया सावद्यदांन मैं पुण्य मिस्र परूपै।—भि. द्र.

सावद्यदांन-सं. पु. यौ.—पापयुक्त दान।

उ०—१ जीव खवायां पुन सरधै। सावद्यदांन मैं पुन सरधै तिणसूं समकत चरित्र एक ही नहीं।—भि. द्र.

उ०—२ केइ कहै सावद्यदांन मैं भगवांन मूक कही है सो वरतमांन काल विना पिण मून राखणी। पुण्य पाप न कहिणी।—भि. द्र.

सावधांन-वि.—१ खबरदार, चौकन्ना।

उ०—१ सो कुंवर रंग देख कहण लागो—जो थै इतरा असवार तो अठै रहौ अर इतरा म्हैं आगै-आगै जावां छां। कजियै री कांम छै। कदास केई उरै ही आंण फेरै तो थै अठै सावधांन रहज्यौ। घणी खबरदारी राखज्यौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ लूंकड़ी नै देख नै बारा-बोर री बंदूक सम्हाळ लेवण आळी सावधांन मन। जै अबार वो पाछो आवै तो मनैं सरवर रै कनै देखनै कांई कैवेलो।—तिरसंकू

२ सचेत, सतर्क, होशियार।

उ०—१ वुंदी आइ सम्हाळि बळ, सावधांन करि सरब। दूदौ मुड़ि रहियौ दुसह, पावण जस रण परब।—वं. भा.

उ०—२ वरधमांन नंद इंद्र अगजीत का मंत्री, सरव सावधांन जैसै थांन थांन जंत्री। रायांचद दीपावत दीप सा उजाळा, जाकी वुध अरि पतंग जाळवै कूं ज्वाळा।—रा. रू.

३ चतुर, बुद्धिमान।

४ जागरूक, सचेत।

उ०—आय अगति पूछी विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही। विखै अग्यांन धरम वीसारौ, सूरज कुळ चौ धरम संभारौ।
—सू. प्र.

सावधांनी-सं. स्त्री.—सावधान होने की अवस्था या भाव, होशियारी, सतर्कता, जागरूकता, चतुराई।

उ०—जैंकी सावधांनी सब लोगां जांणि लीनी, जैपुर की अजंटी सूं लिखावटि भेजि दीनी।—शि. वं.

सावन—देखो 'सांवण' (रू. भे.)

सावर-सं. पु. [सं. शावर] १ तांबा, ताम्र। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सं. स्त्री. [सं. सा+वर] २ सुन्दर स्त्री।

उ०—ढोला ढोली हर मुक्ख, दीठउ घणौ जरोह। चोळ वरन्नै कप्पड़ै, सावर धन अंगेह।—ढो. मा.

३ देखो 'सावरमंत्र' (रू. भे.)

सावरणि, सावरणी-सं. स्त्री. [सं. सम्मार्जनी] १ जैन यतियों द्वारा सदेव साथ रखा जाने वाला एक प्रकार का झाड़ू।

[illegible]

[illegible] ३ विश्वकर्मा व [illegible] का पुत्र, पाठवां मनु।

४ [illegible] का नाम।

[illegible]—वि.—लाल, रक्तवर्ण, रक्तरंजित। (ध. मा)

उ०—१ [illegible] नित [illegible], मेटै कटक तणी पुर- [illegible]। [illegible] 'तातन', नग सावरत रहै मूमांण।

—प्रथीराज राठौड़

उ०—२ [illegible] मोड़ै पुरै। [illegible] सावरत, [illegible] पुरै।—गु. रू. बं.

उ०—३ [illegible] मुत्त नग सावरत्त। [illegible] निघट, [illegible] पहं परिहरां घाट।

—गु. रू. बं.

[illegible]—[illegible]। (ध. मा; ह. नां. मा.)

[illegible] वि.—दोनों ओर, दोनों तरफ। (डि. को.)

[illegible] सावरीमंत्र—देखो 'सावरमंत्र' (रू. भे.)

[illegible] सावन—सं. स्त्री.—१ दुःख या संकट के समय की जाने वाली देवी-देवताओं व ईश्वर की प्रार्थना।

उ०—१ सावळ [illegible] तणी गुण सांमी, दळवळ सहज न धारै [illegible]। [illegible] तणो [illegible], वड दरबारां तणो वकील।

—ओपो आढो

उ०—२ [illegible] रोकियो चावळां, दियै लप चावळा त्रास [illegible]। [illegible] दीध [illegible], सावळा करी जद राव [illegible]।—[illegible] बारहठ

२ [illegible] (जाट नामक) की जाति के अनुसार वह वस्तु जो खेत में सबसे पहले तोड़ कर किसी बहन या बेटी को दी जाय।

(मा. म.)

३ [illegible] का एक औजार विशेष जो सीध ई मापने के काम आता है।

वि.—१ उचित, ठीक।

उ०—१ [illegible] सेठ री [illegible] ग्रैंठी [illegible] आपरा मन नैं समझावणी ई सावळ [illegible]।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] बात [illegible] रावळै [illegible] रा दरसण [illegible] घड़ी दो घड़ी वास्तै [illegible] तो सावळ [illegible]। [illegible] आज [illegible] दीठ [illegible] दुख नी [illegible]।—फुलवाड़ी

२ [illegible], बुरा।

उ०—[illegible] सावळ [illegible] वाणजी [illegible] नी है। [illegible] कामिनी [illegible] रा पुरा पारवाड़ [illegible]—फुलवाड़ी

३ ध्यानपूर्वक।

उ०—सावळ मोती री मोती बुहारनै भंवारा में भर दे। सावळ सावचेती सूं, ग्रैड़ी नीं व्है कै ग्रेक ई मोती लारै रै जावै। सो पचास मोती तो म्हैं ई गिट जावूं।—फुलवाड़ी

४ स्पष्ट, साफ।

उ०—१ मंगतो बकाई रावतो भप्प भप्प की बोल्यो तो उणनै सावळ जांच नीं पड़ी। दूजी वार वळै पूछयो। ग्रबै नांव सुगट सुणीजियो—धनियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई राजाजी री सुभाव आछी तरै जांणतो हो। हाथ जोड़ बोल्यो—अंदाता, सूरज रा उजास में चांद रै ऊगण री सावळ जांच नीं पड़ै। म्हैं रात रा मतै ई विचांण करनै बधाई दे दूंला।

—फुलवाड़ी

५ अच्छा, अनुकूल।

उ०—पण भाग सावळ था तींसूं पचास सवार रहिया। बाकी रा भगल-बगल आगै गया। खींवौ पाघ बांधणी रुकियो थो। तींनूं नोन री फतह हुई छै। प्रवाड़ो हाथ आयो।

—सूरै खींवै कांघलोत री बात

६ बढ़कर, बहतर।

उ०—थींदणी तो ई नीं मांनी—थारै जैड़ा दुस्ट री मूंडो देखणा बिचै तो आडा दियोड़ा ई सावळ है। इण अकरम री बदळो लियां छोडूला।—फुलवाड़ी

ज्यूं—तूं म्हारे बिचै तो सावळ है।

७ लाभप्रद, हितकर।

उ०—भोळा बामण रैं हीयैं मतै ई आ समझ बापरगी कै साची बात बताया वळै राड़ बधैला, इण वास्तै घरवाळी सूं चोज राखणी ई सावळ।—फुलवाड़ी

ज्यूं—रोगीला मिनख नै दिनूंगा दूध पायोड़ी सावळ व्है।

८ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—१ महीना दोय डाढाळो भूंडण चोल्हरां सूधां जब गुळवाणी चरतो नूं हुवा सो मोटा-ताजा, बळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री जड़ी-बूंटी खाधी थी तिण सूं जबम सावळ हुआ।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ देख थूं तो समझणी है नीं मांगू। बाई कितरा दिन घरै मांदी पड़ी री, अबै दवा नी करावै तो सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हैताई म्हूं उणनै लेयनैं आवूंला।—अमरचूंनड़ी

९ सीधा।

उ०—इक चलै मुंह अदोळतां, अध ऊरध सावळ अविळ। तम मुमट विछोड़ो जांणि तिम, दिखण वहै करि ढंग वळि।—रा. रू.

ज्यूं—सावळ बैठो।

क्रि. वि.—१ अच्छी तरह, भली प्रकार से।

उ०—१ थांनै आज वळै कैयूं, सावळ याद राखजो कै थो देवाळो

अपांरी अणगिण माया बचावैला । अलेखूं मण नेपं अपांरै कोठां-कोठां लाय भरैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ फूंदी व्हे ज्यूं कैर-कैर उडती फिरी । थोड़ी ताळ मैं राता-चुट्ट ढाळुवां सूं खोळो भरनै पाछी आयगी । बुगती रा पांणी सूं वांनै सावळ धोया । ठारचा ।—फुलवाड़ी

२ आराम से, चैन से ।

उ०—१ सेठांणी बोली—लांपो लागै इण गैणा गांठा रै । सावळ सूवण ई नीं दो । ओ धन सुख रै वास्तै है कै कोई दुख रै वास्तै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कैवण लागी—देखो थांरी सिग्या परवारी है । हाल तो थांरी ऊमर ई कांई व्ही । चाळीस रै मांय हो, पण साठ बरसां रा व्हे ज्यूं दीसो । रात रा सावळ नींद आवै नीं ।—फुलवाड़ी

३ सीधे तरीके से, शिष्ट व्यवहार से ।

ज्यूं—सावळ कैवणा सूं वो रिपिया नीं देवेला ।

रू. भे.—साउळ, साउल, सावड़, स्यावळ, स्यावल ।

सावळायार—देखो 'सावळियार' (रू. भे.)

सावळयारी—देखो 'सावळियारी' (रू. भे.)

सावळियार–वि.—१ भला, सज्जन ।

२ सीधा, सयाना ।

रू. भे.—सावळयार ।

सावळियारी–सं. स्त्री.—१ भलमानसता, शराफत ।

२ सज्जनता ।

रू. भे.—सावळयारी ।

सावसादी अमावस–सं. स्त्री यौ.—आश्विन मास की अमावस्या, सर्व-पितृ अमावस्या ।

वि. वि.—श्राद्ध पक्ष मे अगर किसी का श्राद्ध किसी कारणवश न हुआ हो तो इस दिन उसका श्राद्ध किया जा सकता है ।

सावस्त–सं. पु. [सं. शावस्त] इक्ष्वाकुवंशीय युवनाश्व (द्वितीय) का पुत्र एक राजा का नाम ।

सावित्र–सं. पु. [सं. सावित्रः] १ शिव, महादेव ।

२ सूरज, सूरय ।

३ यज्ञोपवीत संस्कार ।

४ एकादश रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।

५ आठ वसुओं में से एक ।

६ सुमेरु पर्वत के एक शिखर का नाम ।

७ कर्ण का नामान्तर ।

८ गर्भ ।

[सं. सावित्र] ९ यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत ।

सावित्री–सं. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की स्त्री जो सूर्य की पुत्री थी ।

उ०—भला वधाई आज कुंता वधायो, भला सावित्री गौरिज्या गीत गायो । भला सावित्री सूरज्या सती सीता, भला त्यांन आदेस उणिहारि गीता ।—पी. ग्रं.

२ सूर्य की किरण ।

३ ऋग्वेद का स्वनाम ख्यात मंत्र विशेष, गायत्री मंत्र ।

उ०—सावित्री जप इक सहंस रस भक्ति रचाया ।—वं. भा.

४ उपनयन के समय का एक संस्कार विशेष ।

६ सल्व देशाधिपति सत्यवान की पत्नी व मद्र देशाधिपति अश्वपति की पुत्री का नाम जो पतिव्रताओं में शिरोमणि मानी जाती है ।

७ पार्वती, उमा ।

८ सरस्वती ।

९ सरस्वती नदी ।

१० पुष्कर तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी ।

११ यमुना ।

१२ सधवा स्त्री ।

१३ प्लक्षद्वीप की एक नदी ।

१४ धर्म की पत्नी का नाम जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या थी ।

१५ चौसठ योगिनियों के अन्तर्गत चौदहवीं योगिनी ।

रू. भे.—सावंतरी, सावंत्री, सावतरी, सावत्री ।

सावित्रीतीरथ–सं. पु. यौ. [सं. सावित्री+तीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ ।

सावित्रीवरत, सावित्रीव्रत–सं. पु. यौ. [सं. सावित्री+व्रत] पति की दीर्घायु की कामना हेतु ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी या अमावस्या के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत ।

सावित्रीसूत्र–सं. पु. यौ. [सं.] १ गायत्री मंत्र की दीक्षा के समय धारण किया जाने वाला यज्ञोपवीत ।

२ यज्ञोपवीत ।

सावुं–सं. पु.—१ एक प्रकार का घास विशेष ।

वि. वि.—अकालावस्था या अत्यन्त गरीबी की अवस्था में लोग प्रायः इसकी रोटी बनाकर खाते हैं ।

२ देखो 'सावो' (रू. भे.)

सावो–सं. पु.—१ विवाह का शुभ मुहूर्त्त ।

उ०—१ इतरै मैं रावळ अखैसिहजी रा मांणस व्याह रै पगां आइया जद आप फरमायो थै तयारी करो माह मैं सावो सखरो छै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ भगवांन उणरो ई खोळो भर दियो होवतो तो किसोक नांमी रैवतो । गांम मैं उणरै सावै जितरी ई छोरियां परणीजी सैंगां रै ई खोळा मैं नैंना टाबर है ।—अमरचूंनड़ी

२ पाणिग्रहण संस्कार की तिथि निश्चित करने की सूचना-पत्रिका, जो कि वधू पक्ष वालों की ओर से वर पक्ष वालों को भेजी जाती है ।

उ०—१ अणछक इण हवेली रो नाळेर आयो । म्हारा बडभाग कै माईत सावो कबूल कर लियो । आ हवेली नीं होय कोई दूजी

[illegible] सांसो [illegible] तो [illegible] मिनखणो पड़तो ।

— फुलवाड़ी

उ०—३ [illegible] मार्ग [illegible] सासो भेज्यो । जद मीडो [illegible] करसो नहीं बोल्यो—सासो भेजो तो [illegible] म्हारो ।—फुलवाड़ी

३ [illegible] ।

उ०—अरु दिन मैं दोय [illegible] मारे ही लोग नूं दरबार सूं मौजं । [illegible] ऊपर [illegible] मैं पर दूजो होळी री परभात फागण [illegible] । [illegible] जिकी मैं सरदार रजपूत री अजांण नैं [illegible] सो [illegible] सूं साहिबी करै ।

—सूरै खींवं कांधलोत री वात

रू. भे.—सहायो, सासु, सासो, सांहो ।

सासकार-वि.—[illegible] से सम्बन्धित कार्य करने वाला ।

उ०—...... आगमकार शास्त्रकार मंत्रकार सूत्रकार उद्दीसकार [illegible] [illegible] करणीकार रसकार क्षीरकार सत्यकार [illegible] [illegible] पुंगार अस्त्रशिक्षाकार रथकार साध्यकार [illegible] [illegible] । ......—व. स.

सास-सं. पु. [सं. श्वास] १ प्राणियों द्वारा नाक या मुंह से अन्दर ली व बाहर निकाली जाने वाली प्राणवायु, श्वास, दम ।

उ०—१ [illegible] है सगो, सूनां करै प्रवास । गळै न पांणी [illegible], [illegible] न [illegible] सास ।—बो. भा.

उ०—२ [illegible] सास [illegible] आंणी, [illegible] पूंनारिया [illegible] । [illegible] [illegible] नीठ गजं, [illegible] फेरै करै [illegible] ।—र. वचनिका

क्रि. प्र.—आणो, जाणो, लेणो ।

मुहा.—१ सास घटणो, सास अटकणो=मरते समय सांस रुकना, घबराना. २ सास [illegible]=जी घबराना. ३ सास आणो=किसी [illegible] या मुसीबत से छुटकारा मिलना, जिन्दा होना. ४ सास [illegible]=शरीर में से प्राण निकलना, मरना. ५ सास ऊंचो [illegible]=देखो 'सास चढणो'. ६ सास ऊठणो=दम चढ़ना, दम [illegible], दम का दौरा पड़ना. ७ सास खांचणो=सांस ऊपर [illegible], सांस खींचना, मृतप्राय होना. ८ सास खाणो=अधिक [illegible] के बाद विश्राम करना, सांस लेना. ९ सास छूटणो=मृत्यु को प्राप्त होना, मरना. १० सास गळा में आणो=संकट में [illegible]. ११ सास फिरणो=[illegible] के बाद सांस का पुनरागमन होना. १२ सास घुटणो=हवा की कमी या दुर्गन्ध के कारण सांस लेने में कठिनाई होना, घबराना. १३ सास चढणो=अधिक [illegible] के कारण सांस की गति तेज होना, हांफना. १४ सास [illegible]=देखो 'सास [illegible]'. १५ सास छूटणो=मरना. १७ सास [illegible]=श्वास [illegible], सांस बन्द हो जाना, सांस लेने की [illegible] कुछ समय के लिए रुकना, रोगी आदि का रुक-रुक कर सांस लेना. १८ सास निकळणो=मृत्यु को प्राप्त होना, प्राण निक[ल] जाना. १९ सास बावड़णो=देखो 'सास फिरणो'. २० सास भरणो=अधिक परिश्रम के कारण थकना, हांफना. २१ सास मारणो=देखो 'सास खाणो' २२ सास में सास आणो=चिन्ता, भय, घबराहट आदि से मुक्त होना. २३ सास रुकणो=मृत्यु को प्राप्त होना या मृत्यु के करीब होना. २४ सास रोकणो=प्राणायाम के समय अथवा यों ही वायु को अन्दर खींचकर उसे कुछ समय के लिये रोके रखना. २५ सास सूकणो=अधिक भय, संकट आदि के कारण घबरा जाना ।

२ प्राण, जीव ।

उ०—१ होसी जग मैं हास, ओरद नाणी देखतां । साही पैली सास, सटकै लेलै सांवरा ।—रांमनाथ कवियो

उ०—२ सांमी सब तूं सब तूं सब सासं, अलिल भूत तूं अेक तूं अविणासं । गरुड ऊपरा चढे वैकुंठ ग्रांमी, निमस्कार तोनूं निमो सहसनांमी ।—पी. ग्रं.

३ देखो 'सासू' (रू. भे.)

उ०—१ गोरी ए सुसरो जी बैठेला म्हांरी छांय सास सपूती काते फातणो ।—लो. गी.

उ०—२ रथ ऊपर ऊभा राय अंगण, हरि प्रहियइ हरि रह साह हाथ । साळाहेली अनइ सासवां, निरखइ नयण अनाथांनाथ ।

—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सांस, सांसु, सा., स्वास ।

सासक-सं. पु. [सं. शासक] १ शासन करने वाला व्यक्ति ।

२ स्वामी, पति ।

उ०—पंचम रांणी अति प्रिया सूरजकंवरि सनांम । निज सासक कहियो निसा, इम सासक अभिरांम ।—वं. भा.

सासघर-सं. पु.—ससुराल ।

सासड़, सासड़ी—देखो 'सासू' (अल्पा; रू भे.)

उ०—म्हांरी अे ववड़िया सरवणती, आ सासड़ रै हुकमां मैं हालै ववड़िया सरवणती ।—लो. गी.

सासण—देखो 'सासन' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ केविआं दळ तंडळ जेणि किआ, दन सासण लखण अजिद दिआ । कमधज्ज करणगिरि राज करै, विधि अेणि गयो अग कीति वरै ।—र. वचनिका

उ०—२ अर सांम रै साथ सरकार हूं मिळायो थको सीस रै साटै स्वांमी रो ही सासण प्रमांणै ।—वं. भा.

सासणपतर, सासणपत्र—देखो 'सासनपत्र' (रू. भे.)

सासत-वि. [सं. शाश्वत] १ हमेशा रहने वाला, अमर ।

२ देखो 'शास्त्र' (रू. भे.)

उ०—माघी मट सासत गहूं वेदा, रांम नांम सा ओर न भेदा ।

—अनुभववांणी

रू. भे.—शाश्वत ।

सासतर-सं. पु. [सं. शास्त्र] १ रस्म, रीति ।
उ०—तरै रांणांगदे री वैर कह्यौ-घरचारी री सासतर करो । तरै राव केल्हण कह्यौ—आज तौ रावाई रा सासतर रौ मोहरत छै, सवारै बीजो सासतर करस्यां । सु पैहलै दिन बाजोट मांडनै रावाई रौ टीकौ कढायौ, सासतर कियौ ।—नैणसी
२ देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)
उ०—१ आळौणौ हरनांम, जांण अजांण जपै जो जीहा । सासतर वेद पुरांण, सरव महीं तत्-अक्खर सारम् ।—ह. र.
उ०—२ सुरह दुजदेव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तलक तुळसी नरंजण जाप । राह हिंदूधरम तणौ साबत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप ।—महाराजा जसवंतसिंह प्रथम

सासतराथ, सासतरारथ—देखो 'सास्त्रारथ' (रू. भे)
सासती-वि. स्त्री.—आवश्यकतानुसार, जरुरतमुताबिक ।
उ०—उवै दिली राठौड़ आदभाव घणौ कीयौ । भली भांत बसत सासती दी । इण वेसास पकड़ियौ । साथ थौ तिण नुं सीख दी ।
—नैणसी

सासतीक, सासतीकौ-वि. (स्त्री. सासतीकी) १ शास्त्र का, शास्त्र सम्बन्धी ।
२ स्थायी ।
उ०—साढा तीन हजार री मुनसब तो सासतीक, पांच सो कच्छी सौ इतरा परगना सासतीक रहिता—सरसौ, भटनेर, वांहणीवाळ, पुनिय सिवरांण, तोसांम, फतियाबाद, अहिखो, रतियौ अै सारा गांव ठाकुर लोगां नूं पट्टै मैं दिया था ।
—महाराजा पदमसिंघ री बात
रू. भे.—सासत्रीक, सास्तिक ।

सासतौ-क्रि. वि. (स्त्री. सासती) १ नित्य, हमेश ।
उ०—१ आंणी मन सूधी आसता, देव जुहारूं सासता । पारस्वनाथ मुझ वंछित पूरि, चिंतामणि म्हारी चिंता चूरि ।—स. कु.
उ०—२ नै खाडाळ मांहे विजैराव रहै सु भाटियां री साथ वरिहां हां रा सासता विगाड़ करै, सु इणां नुं जोर खारा लागै तरै दीठो बीजो तौ पौहचां नहीं, नै दाव करां ।—नैणसी
उ०—३ अठै सांखलां री वैरां पांणी नै जाय सु दहियां रा कंवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिकै वैहड़ां नूं गिलोलां वाहे छै सासता वेहड़ा फोड़ै छै ।—नैणसी
२ निरन्तर, लगातार ।
उ०—१ राव मालदे रा सासता कागळ पत्र देवीदास नूं आवै छै थै तो आपरी नांव करो छौ, मांहां री ठाकुराई खोवो छौ ।
—नैणसी
उ०—२ सेठां रै डीकरा रै काळजै जांणै स्यार रा सासता तावोड़ा लाग्या । अैड़ी वातां वो कदै सोची ई नीं ही । सोचण री मोकौ ई कद मिळ्यौ हो । आज मोकौ ई मिळ्यौ तो इण टांणै ।
—फुलवाड़ी
वि.—१ स्थायी ।
उ०—१ साता दीजो साधां भणी ए, तन मन चित्त उल्लास । आग्या मती उथापज्यो ए, ज्यूं पांमो सासतो वास ।—जयवांणी
उ०—२ संसार सार परतिख समै, सिद्धि रिद्धि दायक सासता । घरि ग्यांन घ्यांन धरमसीह धुरै, अधिक इणरी आसता ।
—ध. व. ग्रं.
२ अक्षय, अटल ।
उ०—करम कठिन दल चूरता जी, पूरता जगत नी आस । जिनवर देव इहां भासता जी, सासता अरथ सुविलास ।—वि. कु.
रू. भे.—सायतौ, सास्तौ ।

सासत्र—देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)
उ०—१ वेद सासत्र बताया सु अवसांण आया । उजेणि खेत धारा तीरथ धणी रौ कांम खित्री रौ धरम साचवीजै । लोहां रा बोह सेलां रा धमंका लीजै ।—र. वचनिका
उ०—२ अराध वीर मंत्र एक, साधनं सधीत रा । सिखंत भेद कोक सार, सासत्रं संगीत रा ।—सू. प्र.

सासत्रीक—देखो 'सासतीक' (रू. भे.)
उ०—अर कठै ही म्हाभारत भी वांच रह्या छै । केई केईक सासत्रीक विधांन अवसांण समैया रै ऊपरै तिरकुरा हुआ थका बिह्म सिव इस्ट अरचा करै छै ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री बात

सासद—देखो 'संसद' (रू. भे.)
सासन-सं. पु. [सं. शासन] १ आज्ञा, आदेश ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)
२ राजा द्वारा दान या पुरुस्कार में दी हुई भूमि या जागीर ।
३ लिखित प्रतिज्ञा, पट्टा ।
४ किसी देश, प्रान्त या स्थान आदि की हुकूमत ।
५ वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी को अधिकार दिया गया हो ।
५ प्रबलता ।
उ०—परिस्थिति जठै इसड़ी सुणि बिहत्तर वरस रा वय में हाडा नरेस हालू रा विवाहण री बात समय रा सासन करि अत्यंत ही असंभव जांणि ।—वं. भा.
रू. भे.—सांसण, सासण ।
मह;—सांसणौ ।

सासनधर-स. पु. [सं. शासनधर] १ शासक ।
२ राजदूत ।

सासनपतर, सासनपत्र-सं. पु. [सं. शासनपत्र] १ वह ताम्रपत्र या शिला, जिस पर कोई राज्यादेश जारी किया गया हो ।
रू. भे.—सासणपत्र ।

[illegible]

उ०—२ मरुडा मिनख घर बसो रो तुमार जोवां पर्छ ई रहै [illegible] धन मार्थ डाम महाय राखी ही । बेटी ! बिधना रो सासरो, पीहर, माईत घर भगवान फगत मन दुज है ।—फुलवाड़ी

मुहा.—१ गेयी सासरै जावै नी घर जं जावै तो पाछी आवै नी=ऐसे व्यक्ति के प्रति उक्ति जो किसी कार्य को करता ही नहीं, अगर करता है तो उसे बारम्म छोड़ता ही नहीं. २ सासरो सुग वासो=ससुराल सुग का स्थान है. ३ सासरै जावतो नै छिनाळ कुण कै ई=घरकी जगह जाने वाले को बुरा कोई नहीं कहता है।

रू. भे.—ससराळ, ससुराळ, सा'रो, सासर, सासरड़, सासरउ, सासरवाड़, सासरवासो, सासुरो, सुसराळ ।

अल्पा;—सासरियो ।

सासाहिति, सासाहिवी–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०– सिरोसाव भैरव पोतार कमखी महमूदी फूलगार तनजेब सासाहिवी तरै-तरै रै कपड़ै रा थाणा छै। सु उतार-उतार उणा हीज दरगतां री साखां ऊपर उरळा कीजै छै ।—रा. सा. सं.

सासित्र, सासित्रि, सासित्रो—देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)

उ०—गांभळि प्ररथ पराक्रत सासित्रि, अकलि प्रमांणै कियो उचार ।—ह. नां. मा.

सासिव–सं. पु. [सं. साशिव] एक देश का नाम जिसे अर्जुन ने जीता था ।

सासीदाढी, सासीदाढ़ी–सं. स्त्री.—जवानी में मूंछों व दाढ़ी के निकलते हुए घने व मुलायम बाल ।

उ०—सू रबारी ऊंठां जावै छै। किण भांत रा रबारी छै। हीया लांबा जुवांन दीसता राजांन, बांकी मूंछां, राता नैण, सासीदाढी, मोटा वैण, जाडा पूंहचा लांबा हाथ, भूरी सिघ नै घातै बाण ।

—रा. सा. सं.

सासु, सासु–सं. स्त्री. [सं. श्वश्रु] पति या पत्नी की मां, सास ।

उ०—वच्छं ! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेगड़, जेठ नीगउ देगड़, वर पुण लड़ड़, देवर नड़ड़, जेठांणी कुगड़, देवरांणी हगड़, नणंद नरनरावड़, सासु कांम करावड़ ।—व. स.

मुहा.—१ जवाई रै घरै घोड़ो नै सासु मरगाट करै=किसी संबंधी के धन-वैभव पर अन्य द्वारा गर्व किया जाना. २ सासु आगली बहू होणी=किसी के मातहती में रहना. ३ साळी नै छोड़ सासु सूं मसखरी=किसी उचित व्यक्ति को छोड़ कर ऐसे व्यक्ति से मजाक करना जिससे साथ मजाक करना अनुचित हो. ४ सासु सूं वैर नै पाड़ोसण सूं नातो=अपने से विरोध व परायों से प्रेम करना ।

रू. भे.—सस्सु, सस्सू, सांस, सास, साऊ, सासु, सासू ।

अल्पा;—सासड़, सासड़ी, सासूड़ी ।

सासुरो—देखो 'सासरो' (रू. भे.)

उ०—१ वच्छं ! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवे-

खड़, जेठ नीचउं देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्ररांणी हसइ, नणंद नरनरावइ, सासु कांम करावइ।—व. स.

उ०—२ सीतकालि दिवसिइ गोधूमवृद्धि थाइ, वेटी ग्रापणे सासुरै जायइं, पास रंग मुहुवा थाइं, कंवलि जोइ, तीन लाभइ घरै फलसां वापरइं, तपोधन विहारकरम करइं, स्रीमंत घरमाहि पइसी सूयइं,— — .।—व. स.

सासू—देखो 'सासु' (रू. भे.)

उ०—१ जै सासू जणतीह, सुसरा रै एकज सुतन। तौ मूछां तण-तीह, साड़ी न तणती सांवरा।—हिंगळाजदांन कवियौ

उ०—२ सासू मंत्र ज साज, पूत जण्यां सह पारका। इण री पारख ग्राज, सांची पड़गी सांवरा।—हिंगळाजदांन कवियौ

सासूड़ी—देखो 'सासु' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सासूछाबड़ौ, सासूवाड़ौ-सं. पु. यौ.—१ दहेज के समय कन्या पक्ष की ग्रोर से कन्या की सास के लिए दिया जाने वाला पहनावा, पोशाक।

२ वह छबड़ा जिसमें उक्त पहनावा रखा होता है।

रू. भे.—सासूसाड़ौ।

सासूसळी, सासूसली, सासूसळी-सं. पु.—एक प्रकार का ग्राभूषण विशेष।

उ०—सासूसली ग्रापु सोवनकेरी, हवडां नहीं लीजइ बीजी ग्रनेरी वे करी जोडी वरराज मागइ, सासूसली ग्रापतां वार न लागइ, ग्रहो सीग्रालक वोलि।—व. स.

सासूसाड़ौ—देखो 'सासूछाबड़ौ' (रू. भे.)

सास्टांग-वि. [सं. साष्टांग] हाथ, चरण, घुटने, वक्षस्थल, शिर, नेत्र, मन व वाणी, उक्त ग्राठों ग्रंगों सहित।

सं. पु.—उक्त ग्राठों ग्रंगों सहित किया गया प्रणाम।

सास्तर—देखो 'सास्त्र' (रू. भे.)

उ०—१ जग सास्तर कहिया जिता, सुभ सुभ चहन संसार। रांम सकि 'ग्रभमल' रमै, कमधज राजकुमार।—सू. प्र.

उ०—२ राजगरू सागै दिन सूं ई सास्तरां रा पांनां फिरोळण लागौ। मोटा-मोटा ग्रंथ वांचण लागौ। मिळतौ जका नै ई इण सवाल रौ म्यांनौ पूछतौ। यूं छांणबीण करतां करतां पूरौ पखवाड़ौ बीतग्यौ पण सही पडूतर हाथ नीं लागौ।—फुलवाड़ी

सास्तिक—देखो 'सासतीक' (रू. भे.)

उ०—ग्रास्तिक बिन इंदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखंदा है। तज धरम त्रिदंडी ग्रधिक ग्रफंडी, पाखंडी पोखंदा है।—ऊ. का.

सास्तौ—देखो 'सासतौ' (रू. भे.)

उ०—१ पण इण लोक रौ कांई सास्ता परलोक रा मैदान मुलक लेण नूं मनसा करणी।—नी. प्र.

उ०—२ सौ दांन चलतौ मसीत वंदगी री ठौड़ नै फकीरां री उतरणै री ठौड़ सारा ही मारग मैं होय कुवा पुल तिण री सास्तौ पुण्य छै सौ करणै वाळा रा जीव सूं पहोंचै।—नी. प्र.

सास्त्र-सं. पु. [सं. शास्त्र] १ लोगों द्वारा पवित्र माना जाने वाला ऐसा धार्मिक ग्रन्थ जिसमें ग्राचार, नीति ग्रादि के नियमों का विधान किया गया हो।

२ नियमानुसार ग्राचरणादि करने हेतु दिये गये ग्रादेश, निर्देश।

३ किसी विशिष्ट विषय या पदार्थ के सम्बन्ध में समस्त ज्ञान।

४ वह विवेचनात्मक ग्रन्थ जिसमें किसी कला, विद्या या विशिष्ट विषय से सम्बन्धित ग्रंगों, उपांगों ग्रादि का विश्लेषण हो।

५ वे सब बातें जिनका ज्ञान पढ़ या सीख कर प्राप्त किया जा सके।

६ किसी गम्भीर विषय के सम्बन्ध में प्रतिपादित सिद्धान्त।

७ पुस्तक।

रू. भे.—सासत, सासतर, सासत्र, सासित्र, सासित्रि, सास्तर।

सास्त्रकार-सं. पु. यौ. [सं. शास्त्रकार] जिसने शास्त्रों की रचना की हो, ऋषि, मुनि।

सास्त्रग, सास्त्रग्य-सं पु. यौ. [सं. शास्त्रज्ञ] १ शास्त्रों का जानकार।

२ धर्म शास्त्रों के ग्राचार्य।

सास्त्रवकता, सास्त्रवक्ता-सं. पु. यौ. [सं. शास्त्र+वक्ता] शास्त्रों का उपदेश देने वाला।

सास्त्रसारा-सं. स्त्री यौ. [सं. शास्त्र+सारा] शास्त्रों की साररूपा देवी।

सास्त्रारथ-सं. पु. [सं. शास्त्रार्थ] १ किसी सिद्धान्त या विषय का सार व तथ्य निकालने हेतु शास्त्रों की युक्ति व दलीलों द्वारा की जाने वाली बहस।

२ शास्त्र का ग्रर्थ।

२ तात्विक वाद-विवाद।

रू. भे.—सासतरारथ।

सास्त्री-सं. पु. [सं. शास्त्री] १ शास्त्रों का ज्ञाता।

२ धर्मशास्त्र का ज्ञाता।

३ कुछ विश्वविद्यालयों में इसी नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर दी जाने वाली उपाधि।

[सं. शास्तृ] ४ कश्यप एवं सुरभि के पुत्रों में से एक।

सास्त्रोक्त-वि. [सं. शास्त्रोक्त] जो शास्त्र में लिखी या कही गई हो।

सास्व-सं. पु. [सं. शाश्व] यम का उपासक एक नरेश का नाम।

सास्वत-वि. [सं. शाश्वत] १ नित्य, ग्रमिट।

उ०—१ नम सच्चिदानंद भक्तवत्सल भयहरता। सास्वत ग्रसरण सरण करण कारण जगकरता।—ऊ. का.

उ०—२ जठै भगवांन मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखां रौ कदेई विरहौ पड़ै ईज नहीं।—भिक्खु

सं. पु.—२ सनातन।

३ विदेह नरेश श्रुत राजा का नाम।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]—स्त्री. [सं. [illegible]] १ [illegible] देवी।

[illegible]

सासादन—सं. पु. [सं.] [illegible] में से एक। (जैन)

उ०—[illegible] पुञ्जाणी। [illegible] सासादन मन [illegible]। [illegible] परिरतिनाम कहाणी। [illegible] विजागुं।—वृन्द.

सासादन गुणस्थान—सं. पु.—१४ गुणस्थानों में से दूसरा गुणस्थान। (जैन)

साहंस—देखो 'साहस' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] मद [illegible], साहंस [illegible]। [illegible] [illegible]।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] निर्वेदिया, साहंस [illegible]। जोधहरां [illegible]।—रा. रू.

साहंसाह—सं. पु. [फा. शाहंशाह] सम्राट, बादशाह।

रू. भे.—[illegible], [illegible], साहनसाह, [illegible]।

साहंसाही—सं. स्त्री. [फा. शाहंशाही] १ शाहंशाह का कार्य या पद।

२ बादशाही, [illegible]।

वि.—१ शाहंशाह सम्बन्धी।

२ [illegible] शाहंशाह जैसा।

रू. भे.—[illegible], [illegible], साहनसाही।

साहणी, साहंगीर—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] साहंगीर [illegible] जागियो [illegible] [illegible]।—[illegible] रो गीत

उ०—२ [illegible] 'ऊदांणी' [illegible]। [illegible] हेक [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]।—[illegible]

साह—सं. पु. [फा. शाह] १ [illegible] सम्राट। (डि. को.)

उ०—१ [illegible], दियो [illegible] [illegible]। [illegible] साह [illegible] [illegible]।—[illegible]

उ०—२ [illegible], [illegible] मयो [illegible]। [illegible] [illegible]।—रा. रू.

[illegible] २ [illegible] (डि. को.)

उ०—१ [illegible], [illegible]। [illegible] साह [illegible] [illegible]।—[illegible]

उ०—२ रहा फागण की बूंद, जुगल सूं किसी भलाई। किसो चोर सूं संग, साह सूं किसी ठगाई।—सुरजनदास पूनियो

३ राजा, नृप।

उ०—पड़ै जांगियां घरांमी रोळ विसमी नीहाव पड़ै, रैण धोम लागी व्योम रुकै पंग राह। तेड़ै रग गिरंमां रा रंभा रा सईव तूटै, साहां वेहूं सीस जूटै बळावंध साह।

—सबळसाल हाडा रो गीत

४ शाहजादा।

उ०—१ पाड़ै धजां गय्मरां सु पखरां पंडमां पाड़ै, नरां गिरां पाड़ै करां ऊधड़ां निराट। पाड़ै धूळ बंगाळां भड़ाळां दळां भूप पाड़ै, साहां वेहूं सीस पाड़ै भीड़ फाड़ै बाट।

—सबळसाल हाडा रो गीत

उ०—२ गमागम भ्रातम गडड साह दोय गाजिया, टळण गिणतूर लै केहीक टाळो। 'करमो' दै गैठ काळो सबां कोपियो, 'करमां' माथै पड़ै गैठ काळो।—करमां पड़िहार रो गीत

५ मुसलमान फकीर की एक उपाधि।

६ धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति।

[फा. स्याह] ७ काले रंग का घोड़ा।

उ०—लाखोरी सुरंग भजूब लेत, रिसमसी साह ज्यांनूं कुमेत। तेलिया मुहा सदळी तुरंग, सोसनी सबज हुआ सुरंग।—सू. प्र.

८ बादशाह, राजा आदि द्वारा बनियों को दी जाने वाली उपाधि।

वि.—१ सज्जन, भला।

२ उदार, दानी।

३ महान, श्रेष्ठ।

रू. भे.—सह, सा', साय, साहि, साह, साहू।

साहइणी, साहइयो—देखो 'साहणी, साहयो' (रू. भे.)

उ०—ढोलउ मन चळपत थयउ, ऊभउ साहइ साज। सांम्हउ तीतू आवियउ, भाइ कियउ सुभराज।—ढो. मा.

साहजांनी—१ देखो 'साहंसाही' (रू. भे.)

२ देखो 'सा'जांनी' (रू. भे.)

उ०—१ सात तागड़ी साहजांनी तोल री गूंन भूंगण रै डील मांही रहियो। तठा पाछै सारो ही साथ भोलस बैठ रहियो।

—दादाळा सूर री वात

उ०—२ तीन पहर रात गई। माथै सात मण साहजांनी पक्के तोल री नोट आदाळै रै डील मांही रहियो। महाभारत जीत सूपर भयो रहियो।—दादाळा सूर री वात

साहजादो—सं. पु. [फा. शाहजादा] (स्त्री. शाहजादी) बादशाह का लड़का, राजकुमार।

उ०—१ साहजादो गुरम दिवाण नूं जातो हुतो।—नैणसी

उ०—२ नवरि योगिनि मुसळमान, अै साहजादा मोटा मांन।

ताहरइ चिति गमइ वर जेह, करउं वीवाह भ्रणावउं तेह ।
—कां. दे. प्र.

उ०—३ गोड़ अरजुनसिंघ राठोड़ रतनसिंह जिसड़ा जोधार काली रा कळस रणगळियार होइ हाथियां रै माथै हाथ करता साथियां रै सूरता री सांण लगावता साहजादां रै समीप हालिया ।
—वं. भा.

रू. भे.—सहाजादौ, साहिजादौ, सा'जादौ, साइजादौ, साईजादौ, सायजद्दौ, सायजादौ, सायज्यादौ, साहबजादौ, साहिजादौ, साहिबजादौ, स्याहजादौ ।

साहण-वि.—संहार करने वाला, नाश करने वाला ।

सं. पु. [सं. साधन] १ घोड़ा, अश्व ।

उ०—१ कुढता उडता कूदता, ओद्रकता वप आप । जेहौ तोखै जाचणां, साहण इसा समाप ।—बां. दा.

उ०—२ मणि वाहण साहण मुकटि, रीत सजत्र नव रूप । किया साज महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप ।—रा. रू.

२ सेना, फौज ।

उ०—१ आउळे थाटि साहण समंद्र आठमौ, करै गरकाब खळ दळां कोपै । चमर चौमर ढळै सेत पासै चहूं, आतपत्र प्रिथीपति सिरिह ओपै ।—रूपसिंह राठोड़ री गीत

उ०—२ सुतन कलियांण साहण दध समचड़ै, उरमियां थाट लेहार वण ऊपड़ै । कटक अरवद तणै आय चढिया कड़ै, दहूं दिस त्रास कीधा मड़ै देवड़ै ।—महाराजा रायसिंह बीकानेर री गीत

उ०—३ सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुरताणह । कणगु कोस लीध हरि हिंदू, तु रणमल्ल इक्क नह बंदू ।
—रणमल्ल छंद

३ साथी, संगी ।

४ देखो 'साधन' (रू. भे.)

उ०—१ इसी ताइ देवी । धन साहण पूत परिवार, उदउ उछाह देवणहार । तास गुण नमो चलणाइ ।—अ. वचनिका

उ०—२ परिवार पूत पोत्रै, अरु साहण भंडार इम । जण रुखमिणि हरि वेलि जपतां, जग पुड़ि वाधै वेलि जिम ।—वेलि.

रू. भे.—सांहण ।

साहणवइ-सं. पु.—सेनापति ।

उ०—सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुरताणह । कणगुरु कोस लीध हरि हिंदू, तू रणमल्ल इक्क नह बंदू ।
—रणमल्ल छद

साहणी-सं. स्त्री.—१ साह की स्त्री, सेठानी ।

उ०—मुं देखनै साह साहणी साम्हौ जोयौ । साहणी साह साम्हौ जोयौन जोयनै किवाड़ खोल्या ।—चौबोली

२ देखो 'सां'णी' (रू. भे.)

उ०—१ सु भाटी देईदास नै साहणी लालौ मेहावत कांम आया । नै उरजन ऊहड़ नै भींवौ साहणी किसनसिंघजी नूं लै नीसरिया ।
—नैणसी

उ०—२ गुणपति आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि । वाजि किया साजां विविध, सिधि रण करण समज्जि ।—रा. रू.

रू. भे.—सहांणी ।

साहणौ-वि. (स्त्री. साहणी) धारण करने वाला ।

उ०—१ सुज ब्रद साहणौ रे, निबळ निबाहणौ । चित दिस चाहणौ रे, गज थट गाहणौ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ वदत सुज कथ वेद वांणां सघर पांणां साहणौ, सारंग बांणां, जुध सभांणौ पण मुड़ांणां पूठ ।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सांहणौ ।

साहणौ, साहबौ-क्रि. स.—१ पकड़ना, ग्रहण करना, झेलना ।
(डिं. को.)

उ०—१ दुखीवंत भू बंदरां रंध्र देखै, पंखी उडुता चकवा हंस पेखै । सुरंगी घसै हाथ हूं हाथ साहै, महा हेमरा धांम आरांम माहै ।—सू. प्र.

उ०—२ किता अग्र पाछै किता चक्र कुंडै, तरक्कै किता साहता वाह तुंडै । भिदै सार सेलै कटारी झलक्कै, हिलोळां कि सांमुंद्र वेळा हलक्कै ।—रा. रू.

उ०—३ बळिबंध समरथि रथ लै बैसारी, स्यांमा कर साहै सु करि । बाहर रे वाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि ।

२ धारण करना ।

उ०—१ महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तूं, सबळ धड़ कंडतळां घणा सन्नाह सूं ।—हा. झा.

उ०—२ सती सतमत साहकै, जळै मड़ै कै साथि । हरीया मन मूंवां विनां, कछु न आवै हाथि ।—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया कहसी रांम कुं, विसीया मेट विकार । सूरा तन कूं साहि कै, झूझै बिन हथियार ।—अनुभववांणी

३ शस्त्र आदि का उठाना, लेना ।

उ०—१ पहल मिळै घण पूछियौ, किण कीधा किण हत्थ । बीजड़ साहै बोलियौ, इण डाकण भू अत्थ ।—वो. स.

उ०—२ खळां भांजतौ मांण केवांण साहै खवां, सुहांणै आपरै मांण सेतौ । आवियौ 'करण' अवसांन छिबतौ अफर, दिली दीवांण मझ डांण देतौ —महाराजा करणसिंघ बीकानेर री गीत

उ०—३ सिण तिण वार पनांग साहियइ, बंगाळी दाखवइ बळ । उण वेळा सिव रइ मुहं आगळ, दूजा कुण नेठवइ बळ ।
—महादेव पारवती री वेलि

४ सहन करना, झेलना ।

उ०—समंद फाळ कूदै हणू जहर जारै संकर, सेस ही भुजां धर भार साहै । 'करण' रै 'पदम' जिम साहरै कटेड़ै, वदूं जो कोई तरवार वाहै ।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

५ थामना, रोकना।

उ०—१ सत्रां गाहतो गैजूहां ढाहतो वाहतो सार, महाचंडी भ्रूकळां साहतो आसमांण। चत्रबाहां आरोहतो चाहतो अचूंडा चोज, ऊ भायो जवांनीसिंघ घाहतो आरांण।

—जवांनीसिंघ पालड़ी रो गीत

उ०—२ समत्या इसा ऊंडळां आभ साहै, गजां दंत तोड़ै रिमां थाट गाहै।—अ. वचनिका

६ उद्धार करना, मोक्ष करना।

उ०—अजामेळ सा घोर अधम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी। असरण दीन अनाथ अथाहे, साहे रे माधव कर साहै।

—र. ज. प्र.

७ धरना, रखना।

उ०—निरवळां नेकां कीध केकां, साहि हाथ सुनाथ। गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ।—र. ज. प्र.

८ संभालना।

उ०—सूरां शिहूं काटि खग साही, वदै पहन चूडामणि वाही। लागण न दी ढाल परि लीधी, दूजी भांण झाट खग दीधी।

—सू. प्र.

९ मारना, वध करना।

उ०—१ धज बिलंद बोरिया स्यांमध्रम धारियां, कूरमां तणां दळ बीच अहंकारियां। बाहतां साहतां वोसरां बारियां, अखाड़ै बुढापो बूर तरवारियां।—उदयसिंह, नरसिंह और लखधीर रो गीत

उ०—२ घण अहिरण घण घाउ, साम्है चाचरि सात्रवां। वाहै साहै वीठलो, खांडो खांडेराउ।—अ. वचनिका

१० लेना।

उ०—रथ छांडि राजन उतरचा, रुखमण्यो साहिउ वथ। दड़ दोट वाजइ कोट भाजइ, वेग वाळया हथ।—रुखमणी मंगळ

११ सहन करना।

उ०—हाथी तरवरखांन रो, गो सो धांनख भज्ज। धको न साहै मीरजां, वाहै सार गरज्ज।—रा. रू.

१२ धारण करना, झेलना।

उ०—१ भागीरथ भजि रै मोळी चक्रवरत्त, आगा लगइ जोवतां अथाह। संकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंगा तणा प्रवाह।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मांडिया उतवंग जियइ द्रू मायइ, नांम जपंत एक निमंत। संकर देव पखउ कुण साहइ, पड़ती गंगा तणा झट पंख।

—महादेव पारवती री वेलि

१३ रक्षा करना।

उ०—१ असंख सेन आई सहू आसिया अेकठा, साथ विरळा सुहड़ धीत सूधै। चंद गह साहता निमो अहंकार चित, राखतां निमो नेठाह रुधै।—राव चंद्रसेण रो गीत

उ०—२ गत पंथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे हरणखंड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे।—र. ज. प्र.

१४ संधान करना, चढ़ाना।

उ०—मन कूं मारै ताकि करि, साहि सबद का बांण। जनहरिया चूकै नहीं, सांम कांम अवसांण।—अनुभववांणी

१५ युद्ध करना।

उ०—सारिखां सूं वलभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तोईज भंजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि

साहणहार, हारो (हारी), साहणियो—वि०।

साहिओड़ो, साहियोड़ो, साह्योड़ो—भू० का० कृ०।

साहीजणो, साहीजबो—कर्म वा०।

सांहणो, सांहबो—रू० भे०।

साहनसाह—देखो 'साहंसाह' (रू. भे.)

साहनसाही—देखो 'साहंसाही' (रू. भे.)

साहनिजार-सं. पु.—एक महात्मा का नाम, निजारशाह।

उ०—जीवां रो पति जीमिसै, करिजो वेग कंसार। मेघ तणो घर माल्हिसै, निरखो साहनिजार।—पी. ग्रं.

साहपण, साहपणो-सं. पु.—१ 'शाह' की उपाधि।

२ साहूकार होने का भाव।

साहब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—१ साहब नांम समारतां क्या लागै नांणा।

—केसोदास गाडण

उ०—२ एतै पर दूत बोलै साहब सुन लीजै, पातस्याही सेना को प्रमांण कौन कीजै।—रा. रू.

उ०—३ भांमणियां सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय। जांण नाळ जळ जातरा, कांम पताका जाय।—वां. दा.

उ०—४ सबळां सूं बाद न कीजै साहब, है सारीखां वाद सही। कह्यो म्हारो जो मांनै कंता, 'राजड़' सूं डरपतो रही।

—राजसिंघ भाखरोत कछवाहा रो गीत

उ०—५ वाजियो भलो भरतपुर वाळो, गाजे गजर धजरनभ गोम। पहलां सिर साहब रो पड़ियो, भड ऊभां नह दीधो भोम।

—कविराजा वांकीदास

साहबजादो—देखो 'साहजादो' (रू. भे.)

उ०—जिणां दिनां मैं जिहांनगीरजी रो साहबजादो खुरम विराजी हुयनै दिली सूं नीसरियो। सू कितांईक दिनां सूं दिखण मैं जाहर हुवो। वा मुलक मैं दंगो करण लागो।—द. दा.

साहबाज-सं. पु. [फा. शाहबाज] एक प्रकार का शिकारी पक्षी जिसका रंग सफेद होता है।

साहबियो—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

साहबी—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

उ०—१ वगां विचाळै काढिया हुड़ जिम पग भल्लै, ऊभी मेल्ही साहबी गढ गोख महल्लै।—केसोदास गाडण

उ०—२ रावळ नूं मामै काठियां कह्यो जु-लाखै री तो अकल गई, और हमीर थांहरै घरै आयो, परो कूट मारो, डावड़ा नांना छै, उड जासी काछ री साहबी परमेसर थांनूं दी।—नैणसी

उ०—३ तरै हालां नूं कहाड़ियो—धोघां री मदत कांई करो? हूं छूं तो आंपणै घरै साहबी छै। थैं धरती दाबी छै सु थांहरी, नै म्हां हेठै छै सु माहरी छै, इणं वात री सील-काल करो।

—नैणसी

उ०—४ इणां नूं मारियां सुणो, तरै थैं साथ करनै जाजो थांहरै वासै मांहरा हाथ छै। साहबी आसांन हाथ आवसी। थां आगै कोई टिकसी नही।—नैणसी

उ०—५ रिणधीर भली भांत साहबी चलावै छै।—नैणसी

उ०—६ साहबी वधी।—नैणसी

साहबौ—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—निसचर! अमरत म्हारो साहबौ, रावण! तू हळाहळ जेर। निसचर! सूरज म्हारो साहबौ, रावण! तू तो घोर अंधार।

—गी. रां.

साहमणि, साहमणी—देखो 'समठावणी'।

उ०—रंग हे सखि रंगै घालै वरमाळ, घालै हे सखि घालै है जयमुत उचरै जी। सिघल हे सखि सिंघल भूप सनेह, रूड़ी हे सखि रूड़ी है साहमणि करै जी।—प. च. चौ.

साहमी-वि.—१ समान धर्म वाला, स्वधर्मी।

उ०—१ गौतम नामइ नाणुं मुकीयइ रे, सम्यग ग्यांन उदय होइ जेम रे। कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे, भगति जुगति मन आंणी प्रेम रे।—वि. कु.

उ०—२ नीरस आहारै किया, तप आंबिल मन लाय। साहमी नैं संतोखिया, पडिलाभ्या मुनिराय।—वि. कु.

२ देखो 'सांमी' (रू. भे.)

३ देखो 'सांम्ही' (रू. भे.)

उ०—जव साहमी ऊठी कूंयरी, ततखिण आडी परीयछ धरी। बोलइ वात कूंयरी घणी, वीती छइ जमारा तणी।—कां. दे. प्र.

साहमीवच्छळ, साहमीवच्छल, साहमीवछल—देखो 'सामीवच्छळ' (रू. भे.)

साहमु, साहमौ—देखो सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ सो आंपे घोड़ा चढणो पछै किसा दिन सारू सीखिया घोड़ां चढ साहमां हाल जुद्ध करण सारू घोड़ां री वागां उठावो जुद्ध करसां वैरी निदव तै न जास सकै।—वी. स. टी.

उ०—२ घणो गौ-घ्रत नैं कपूर री आहूति दीजै छै। वेद ध्वनि कीजै छै। दूलह नैं दूलहनी सेहरा बांधिआ पुरव साहमा वेसांणिआ छै। सेहरा दीजै छै। चार फेरा-फेरीजै छै। वीमाह कीजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—३ तुरक चडी गढ साहमा, आवइ ऊठवणी असवार। सांम्हा सींगिणि तीर विछूटइ, निरता वहइ नलीयार।—कां. दे. प्र.

(स्त्री. साहमी)

साहय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—कलियुग द्वापर परति वदि, क्रोध न जाइ माहारि रिदि। तूं साहय माहारै आवेस, पासा मंधि करै प्रवेस।—नळाख्यांन

साहरिय, साहरियदोख, साहरियदोस—सं. पु. [सं. संहृत] एषणा समिति के ४७ दोषों में से ३७ वां दोष। (जैन)

साहरू—१ देखो 'सारू' (रू. भे.)

उ०—जाहरू बात मन री सरब जांणगर, देख अद माहरू मदत देगी। सीह आरोहणी काज तव साहरू, वाहरू बरन री आव वेगी।

—बालाबख्स बारहठ

२ देखो 'सारौ' (रू. भे.)

साहरौ—१ देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सारौ' (रू. भे.)

साहल—स. पु.—१ सिंह, शेर। (ना. डिं. को.)

सं. स्त्री.—२ देवी-देवताओं को की जाने वाली आर्त्त पुकार, विनय।

उ०—स्रवणं साहल सुणा सचाळी, ताय मिळी मुभ हेकण ताळी। 'पीथळ' वाहर काछ पंचाळी, धावजे चारण धावळवाळी।

—प्रथीराज राठौड़ बीकानेर

रू. भे.—साहुळि, साहुलि।

साहलोतर—देखो सालिहोत्र' (रू. भे.)

साहलोतरी—देखो 'सालिहोत्री' (रू. भे.)

साहवौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ०—माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वांमी रै छ काया हणवारा त्याग हुंता अनै न्यातिला कह्यौ फागुण बदि दूज रै साहवै बहिन नैं परणाय दीक्षा दीज्यो।—भि. द्र.

साहस—सं. पु. [सं.] १ हिम्मत, जुरंत।

उ०—१ हरि जस रस साहस करै हालिया, मी पंडिता वीनती मोख। अम्हीणा तम्हीणे आया, स्रवण तीरथै वयण सदोख।

—वेलि

उ०—२ सुणी कमंधां ऊधरां, उत मेवाड़ां वत्त। साथै साहस झलियौ, घातै हाथ परत्त।—रा. रू.

उ०—३ तवियां तप बारह वरस लग तिण, निर आहार रह्यव विण नीर। भखियउ पवन गुभारइ भीतर, सत साहस जोवतां सधीर।—महादेव पारवती री वेलि

२ हठ, आग्रह।

उ०—बय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड दुकूळ। धळै तरुण भड़

घरहिया, मंडे साहस मूठ ।—वं. भा.

३ जबरदस्ती, बरजोरी।

४ बेरहमी, नृशसता ।

५ जोश, उमंग ।

उ०—१ तिणि वार त्रिया 'रतनेस' तणी, विधि साहस सोळ सिंगार बणी। पग हाथ मलूकज पंकजयं, गुणि छत्रिम गात बिन्है गजयं।
—र. वचनिका

उ०—२ धरमी करै धरम, भवी नै साहस दीकै। मन राखीजै भाव, मुख्यौ सुवचन बोलीजै।—वील्होजी

६ देखो 'साहसी' (रू. भे.)

उ०—'भ्रजन' साथि भड़ साहस ऐसा, तोलै श्राभ-एक भुज तेजा।
—रा. रू.

रू. भे.—सहास, सांहस, सांहस्स।

साहसणौ, साहसबौ—क्रि. स.—साहस करना, हिम्मत करना।

उ०—भिधा-मुत गंग भ्रणभंग साहसियां, भुज 'भ्रजन' सिधा थर नसियां साथ। हर दियै श्राव थट सिधां भ्राहंसियां, निपट रवि-वंसियां श्राव रघुनाथ।—र. ज. प्र.

साहसणहार, हारौ, (हारी), साहसणियौ—वि०।

साहसिश्रोड़ौ, साहसियोड़ौ, साहस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साहसीजणौ, साहसीजबौ—कर्म वा०।

साहसवंध—देखो 'साहसी'।

उ०—वीटू 'कान्है' सारखा, नेम श्रछांनै सध। साथ हुवा देता छळां, एता साहसबंध।—रा. रू.

साहसवंत—वि.—हिम्मतवर, पराक्रमी।

उ०—सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवंत। सुजड़ै लागै सांम छळ, बाधै तेज श्रनंत।—रा. रू.

रू. भे.—सहासवंत।

साहसि, साहसिक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

साहसियोड़ौ—भू. का. कृ.—साहस किया हुश्रा, हिम्मत किया हुश्रा।
(स्त्री. साहसियोड़ी)

साहसी, साहसीक—सं. पु.—वालि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था।

वि. [सं. साहसिन्, साहसिक, साहसिकः] १ साहस सम्बन्धी, साहस का।

२ निडर, निर्भीक।

उ०—पैली मुलाकात मैं म्हैं पवन मैं श्रड़ियल श्रर घमंडी समझ्यौ, पण लीना थारी परख सांची निकळी। पवन सुसील, निस्वारथ श्रर साहसी है—विरसंकू

३ हिम्मतवर, पराक्रमी।

उ०—१ मुगल महाभड़ साहसी, मूकै दोय दोय बांणां रे। लालचंद पतिसाह स्यु पूजै, केहौ किम पांणां रे।—प. च. चौ.

उ०—२ वडा बरूथ रै साथ जूमरण रा साहसी कुमार दारासाह नूं श्रौरंग श्रौर मुराद रै सांम्हौ बिदा कीधौ।—वं. भा.

उ०—३ रीछ तणां समुदाय, चरू तणां घाट, साहसीक तणा हृदय कंपइ, कातर कोइ उभउ न रहइ।—सभा.

रू. भे.—सांहसी, सांहसीक, साहंसी, साहंसीक, साहसि, साहसिक।

साहसक—सं. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ स्थान।

साहांणी—देखो 'सांणी' (रू. भे.)

उ०—पीछै वीकमसी पाछौ श्रायौ, तद कंवर सीवीकंजी देस मैं खेड़ै साह श्रोठी मेलिया। सू ठौड़-ठौड़ ताकीदी हुई है, श्रर साहांणी वेलंजी नूं सिहांण मिलकै जोइयै खनै मेलिया।—द. दा.

साहांणौ—वि. [फा.] राजसी, शाही।

साहांमू, साहांमौ—देखो 'सांम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ साहांमू तै जुइ नहीं, श्राव्या नगर ना लोक। दरसन करवा कारणि, मनि पांमता श्रति सोक।—नळाख्यांन

उ०—२ भेल्यइ नगर रह्या गढ थोभी, साहांमा तीर विछूटइ। माधव भणइ करण जा नामी, कांई भरइ श्रखूटइ।—कां. दे. प्र.

उ०—६ एक जि ऊंचै जी चढ़ै, जोता जोता जाइ। साहांमा साहमैं सींगड़इ, भइंसा तणइ भराइ।—मा. कां. प्र.

साहांसाह—देखो 'सहंसाह' (रू. भे.)

उ०—जठै श्रकब्बर जनमियौ, जांणै दुहूंवै राह। हुवौ हिंद श्रकलीम मैं, साहिब साहांसाह।—बां. दा.

साहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ धिन मात पिता कुळ जात धिन, सत श्रवदात महासती। साहाय थकी निज सांमि संग, वसी श्राय श्रमरावती।—रा. रू.

उ०—२ श्रसि गयंद श्रज्या नरमेद श्रपूरव, सुण्या हुवा जग चहूं साहाय। नुंवौ जिगन जिम करै नरावत, रांण किणहिं न होमिया राय।—राव सूरजमल हाडा रौ गीत

उ०—३ विघ वयण क्रोध विचारियौ, मिळ रांण मोकळ मारियौ। थट सहित 'कूंभौ' थरहरै, साहाय मांमौ संभरै।—सू. प्र.

साहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

साहि—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—ऐसै चरित श्रनंत कै, को कह सकै श्रनंत। दुसटन कूं दीनी सजा, साहि करेवा संत।—गज-उद्धार

उ०—२ मैं दुरबळ बळहीन मैं, निरधन निपट निकाज। श्राइ लियै मो जात है, साहि करो महाराज।—गज-उद्धार

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

उ०—१ छळि साहि तणै ग्रहि खाग छरा, धूंसै चढि लीध बसद्ध धरा। सनमांन करै सुरितांण सई, जाळोर पटै गढ दीध जई।
—र. वचनिका

उ०—२ 'जसौ' हालियौ श्रागरा हूंति ज्यारां, लिश्रां साहि रा उंबरां सव्व लारां। कमंधां वडां कूरिमां साथि कीधां, लखाधंम

सीसोदियां लारि लीधां ।—र. वचनिका

३ देखो 'साही' (रू. भे.)

उ०—हाथ धोय बैठा साहि नैं, साराइ खोइ सनेही । होय अनूप राव हुयगी वा, दोय घड़ी मैं देही ।—ऊ. का.

साहिक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—खल खायक साहिक जनां, दीनबंधु देवाधि । धाल बाळ सरणागती, तुमसैं पति हम व्याधि ।—करुणासागर

साहिजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—१ चलंता इसा मीर तीरं चलावै, पंखी जीवता भ्रिग्ग जांणं न पावै । माथै साहिजादां बिन्हां राव मारू, सभै चालिश्रो श्रेम उज्जेणि सारू ।—र. वचनिका

उ०—२ तिण समय दिली पातिसाह श्रोसेरसाह राज करै छै । तिण रै पुत्र सलेमलाह साहिजादौ वडौ अदली हुयौ । तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै ।—द. वि.

साहित—देखो 'साहित्य' (रू. भे.)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै । कहै मंछ भलां रूपक करो, एं दस दोस निवारनै ।—र. रू.

उ०—२ राजस्थांन रै रजवाड़ा'र राजवंसा री छत्तर-छींया मैं कळा अर साहित नैं आसरौ मिळियौ ।—चितरांम

साहितकार—देखो 'साहित्यकार' (रू. भे.)

उ०—अेक जोधाबाई माथै अणूतो सिग्गो होण सूं बापड़ां माथै कांई कांई नी बीती । साहितकारां अर सिनेमाम्राळां रै पांण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी । काळजौ कळपै है अर विखां रा भारा लीयां फिरै ।—चितरांम

साहितिक—देखो 'साहित्यिक' (रू. भे.)

उ०—राज समाज साहितिक सभा, भाग जांण जुग लेवणी । निस नभ भाज यांन गुसवर, सर तिर उपवण भेवणी ।—नारी सईकड़ी

साहित्य-सं. पु. [सं.] १ शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव सार्थक शब्द मात्र ।

२ ज्ञान राशि का संचित कोश ।

३ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनिक हित सम्बन्धी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वाङ्मय ।

रू. भे.—साहित ।

साहित्यकार-वि. [सं.] साहित्य-सृजन करने वाला ।

रू. भे.—साहितकार ।

साहित्यिक-वि.—साहित्य सम्बन्धी, साहित्य का ।

रू. भे.—साहितिक ।

साहिब-सं. पु. [फा.] १ भगवान, ईश्वर ।

उ०—१ वेरै बैस न भरकियै, मन मैं रहो सधीर । हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर ।—अनुभववांणी

उ०—२ साहिब सब सूं गुपत है, जे कोई परगट जांण । हरीया दीसै दिस्ट मैं, ताहि न जांणि पिछांण ।—अनुभववांणी

२ स्वामी, मालिक ।

उ०—१ साहिब चुगल समांन ह्वै, सो इज बुरो सुणंत । स्रोता बकता होत सम, भणिया लोक भणंत ।—बां. दा.

उ०—२ लाखां सठ दे लीजिए, पंडित गुण भरपूर । कायर लाखां वेच कर, साहिब लीजै सूर ।—बां. दा.

उ०—३ जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सो लो लागी । आंण मिल्यौ अनुरागी जोगी, आंण मिल्यौ अनुरागी ।—मीरां

३ पति, खाविंद । (डि. को.)

उ०—१ आज हुआ विल्लांण सह, आज हसंदा मुक्ख । आप पधारै आंगणै, साहिब दीनां सुक्ख ।—गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरां भरमल जांणियो, जो कुंवरजी छै । तद बोली—जो साहिब, आधा पधारीजै । अठै दूजो कोई नहीं । हूं रावळी चाकर खड़ी वाट जोऊं छूं ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ प्रेमी, यार ।

५ नाम के साथ व्यवहार में प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द ।

६ उच्च अधिकारी या कर्मचारी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

७ अंग्रेजों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

उ०—अमावड़ वनां मैं हुई लोथां अनंत, चढै घोड़ां वात दिगंत चाली । साथरा दिराणा हजारां साहिबां, खुरसियां हजारां हुई खाली ।—कविराजा बांकीदास

रू. भे.—सहाब, सा, साब, सा'ब, सायब, साहब, साहिब्ब, साहेब ।

अल्पा;—सायबियो सायबो, साहबियो, साहबो, साहिबियो, साहिबो ।

साहिबजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—विध रांवण सिर विलंद, उहिज चित धरै इरादो । जुड़ै पहल इंद्रजीत, जेण विध साहिबजादौ ।—सू. प्र.

साहिबि—देखो 'साहिबी' (रू. भे.)

साहिबियौ—देखो 'साहब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—राजुल कहै सजनी सुनो रे लाल, रजनी केम विहाय हे सहेली । अरज करी आंणी इहां रे लाल, साहिबियो समझाय हे सहेली ।—ध. व. ग्रं.

साहिबी-सं. स्त्री. [फा.] १ हुकूमत, शासन ।

उ०—१ तरै गुर भीम री थाळी मांहै सूं उरो लियो, लै नै आपरा पत्तर मांहै घालियो, पांणी भेळो नांई नै पी गयो । नै भींव नूं कह्यो—खीच तैं खाधो हुतो तो तूं अमर हुवतो म्हैं तोनूं इण धरती री साहिबी दी ।—नैणसी

उ०—२ माथै हाथ दियो । कह्यो—काछ री साहिबी म्हे तोनूं दी,

पण जोगियां री सेवा घणी करीजै, ज्यूं घणा दिन राज रहै।
—नैणसी

२ वैभव, ठाट-बाट, ऐश्वर्य।

उ०—१ पछै रिणमल जी रै तीन वार मूंजाई होवै। कड़ाह थाट रहै। आठ-पोहर सिकार खेलै। वडी साहिबी।—नैणसी

उ०—२ ताहरां मालदेजी नूं खबर हुई। कह्यो—वीरमदेजी रै अधिकी साहिबी हुई। ताहरां वळै फोजां विदा कीवी वीरमदेजी ऊपर।—नैणसी

३ दरबार।

उ०—हिवै वसंत की साहिबी वरणै छै। वसंत महीपति कहतां राजा हुग्रो। कांमदेव मंत्री प्रधांन हुग्रो। परवतां की सिला आछी सुंदर रहि गई छै। यही सिंघासण हुग्रो। आंब जांह की बराबरि साखा मिळी छै। छत्राकारि जु हुइ रह्या छै। एही मांनों माथै छत्र धरै है। वायका झकोळचा। आंबा का मजर गिरि गिरि पड़ै छै। एही मांनू चमर हुग्रा।—वेलि टी.

४ राज्य।

उ०—दोयसै गावां री साहिबी। वडा तरवारिया, वडा दातार। सो खरळ वेणीदास राज करै। वडा भोमीया। सो इहां रो लोक सारो आप मुरादो वहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

५ दल, साथ।

उ०—तद रैबारियां कही—साहिबी कुंवरसी सांखलै री छै। तिण कहीं, म्हांरो रजपूत थां पल्लू मैं मारियो। तेरै वैर मैं लै जावां छां घर थांनुं मारां छां।—कुंवरसी सांखला री वारता

६ साहब होने का भाव।

७ आनन्द, हर्ष, मौज।

रू. भे.—सायबी, साहबी, साहिबि, साहेबी।

साहिबो—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, वोह जूंझो वळवंड। सो थांभै भुजदंड सूं, खड़हड़तो ब्रहमंड।—बां. दा.

उ०—२ सादूळो वन साहिबो, खाटै पग पग खून। कायरड़ा इण कांम नूं, जंबक कहै जवून।—बां. दा.

उ०—३ दुलहो बनड़ो देखतां, ऊलही उर बिच आग। संगम देखो साहिबो, कीनो हंस र काग।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—४ आठम आज सहेलियां, ओ पख ओळो जाय। हियै खटूकै साहिबो, कांटो ओही मांय।—अग्यात

उ०—५ साहिबा रै सीह थारो सारो, वडा धिणी जम त्रासै वारो। खोटो वात संसारीइ खारो; प्रातिमा मुंना पारि उतारो।
—पी. ग्रं.

साहिब्ब—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

उ०—दिन दांन जिमणइ करइं, साहिब्ब सेव सच्ची करइ। कुरांण न्याइं पंथि चल्लइ, सो मुसलमांन भस्त जि वरइ।—व. स.

साहियोड़ो-भू. का. कृ.—१ पकड़ा हुग्रा, ग्रहण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. २ धारण किया हुग्रा. ३ शस्त्रादि उठाया हुग्रा, लिया हुग्रा. ४ सहन किया हुग्रा, झेला हुग्रा. ५ थामा हुग्रा, रोका हुग्रा. ६ उद्धार किया हुग्रा, मोक्ष किया हुग्रा. ७ धरा हुग्रा, रखा हुग्रा. ८ संभाला हुग्रा. ९ मारा हुग्रा, वध किया हुग्रा. १० लिया हुग्रा. ११ सहन किया हुग्रा. १२ धारण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. १३ रक्षा किया हुग्रा, १४ संधान किया हुग्रा, चढ़ाया हुग्रा।

(स्त्री. साहियोड़ी)

साहिय, साहियौ—देखो 'साह'।

उ०—साहिया लोक वंभ नइ बालक, नारी वरण अढार। आलै ग्राघ हालरां कीधां, बांन न लाभइ पार।—कां. दे. प्र.

साही-सं. स्त्री. [फा. शाही] १ बादशाह का शासन या राज्यकाल।

२ किसी प्रकार का अधिकारिक प्रकार, व्यवहार।

ज्यूं—तानासाही, नादिरसाही, नोकरसाही, हिटलरसाही।

वि.—१ राजसी, बादशाही।

२ शाह का, शाह सम्बन्धी।

३ शाहों जैसा।

४ देखो 'सेही' (रू. भे.)

रू. भे.—साहि।

साहीवांन-सं. पु.—शामियाना, तम्बू।

साहु—१ देखो 'साह' (रू. भे.)

२ देखो 'साहू' (रू. भे.)

उ०—१ जुध धिणी जगत केरिण भांति जीतो, विळै खाफर जिसो दइत वीतो। अला साहु लै सिधि वाळै सुणीजै, अला कलंकी तणो अवतार कीजै।—पी. ग्रं.

उ०—२ हिव संभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै बलि दोय। दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार।
—ध. व. ग्रं.

(स्त्री. साहुणी)

साहुकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे.)

उ०—किण ही मेस्री नीं हाटै साधु उतरचा। रात्रै चोर आया। हाट खोली। साधू बोल्या—थे कुण हो जब तै बोल्या—म्हें चोर छां। साहुकार हजार रुपइयां री थेली मांहे मैली है सो म्हें परही लै जास्यां।—भि. द्र.

साहुणि, साहुणी—१ देखो 'साधवी' (रू. भे.)

उ०—हिव संभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै बलि दोय। दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'सावणी' (रू. भे.)

साहुळि, साहुलि—देखो 'साहल' (रू. भे.)

उ०—१ ढोल मती करिजो घणी, वैगा सांवळियाह। बारठ

वाहुड़ियौ वहत, साहुलि सांमळियाह ।—पी. ग्रं.

उ०—२ संभळत धवळ सर साहुळि संभळि, ग्राळूदा ठाकुर ग्रलल । पिंड वहुरूप कि भेख पालटै, केसरिया ठाहै क्रिगल ।—वेलि

साहुवांणि, साहुवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

साहू-सं. पु.—१ साधु, मुनि ।

उ०—ग्रजितनाथ बीजौ मन ग्रांणु, प्रणमीजै गणधर पंचांणु । साहू इकलख वंदौ भवियां, त्रिण लख वीस सहस साधवीयां ।
—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

रू. भे.—साहु ।

साहूकार-सं. पु.—१ कोई बड़ा व्यापारी, महाजन, सेठ, वैश्य ।
(डिं. को.)

उ०—१ कितरा एक दिन हूवा, उवै चोर गुजरात गया । ताहरां गुजरात मैं साहूकार रो वेटौ परणीज नै परदेस व्यापार गयौ हूतो, सू वरसं १० ग्रायौ ।—स्यांमसुंदर री वात

उ०—२ ग्रेक चोर कह्यौ—कुदरत वणावणिया भगवांन नैं ई चोरां री जात ईवै कोनीं । ग्रो ई साहूकारां रै पखै वंध्योड़ो । ग्रेड़ी कांई जरूरत ही उणनै रेत ग्रर चांद वणावण री ।—फुलवाड़ी

२ वह व्यक्ति जो रुपयों के लेन-देन का कार्य करता हो ।

उ०—सतगुर साहूकार है, सिख सौदागर जांनि । जनहरीया राखै नहीं, काय न ग्रंतर कांनि ।—ग्रनुभववांणी

वि.—ईनामदार ।

उ०—रुघनाथजी कंयौ—चोर जको चोर ग्रर साहूकार है जको सोळह ग्रांनां साहूकार । राज तेज मैं मोकळी पूछ-ताछ रैवती ।
—दसदोख

रू. भे.—साऊकार, साहुकार ।

साहूकारी-सं. स्त्री.—१ साहूकार होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूकारौ-सं. पु.—१ रुपयों के लेन-देन का कार्य या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूवांणी—देखो 'साउवांणी' (रू. भे.)

साहेत—देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—सको राकसां एकणी हाथ साहै, मेलुं लंक साहेत पाताळ माहे । जपै वैण ऐहा हणूमांन ज्यारां, तेडै मांन वभीखणां भ्रात त्यारां ।—सू. प्र.

साहेव—देखो 'साहिव' (रू. भे.)

साहेवी—देखो 'साहिवी' (रू. भे.)

उ०—सांखलो खींवसी 'चरमुकाळे' जांगळ राज करै । वडौ साहेवी तडो सिरदार । सौ खींवसी हळोद भालै परणीया । वडो विहा हुवौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

साहेलो—देखो 'सहेली' (रू. भे.)

उ०—जड़ाऊ नगां मिंदरां हेम जाळी, सभै सेज साहेलियां चित्रसाळी । वणै ऊजळी सेज एही विराजै, लखै खीर सांमंदरा फेण लाजै ।—सू. प्र.

साहोगम-सं. पु.—ब्रह्मा, विधाता । (डिं. नां. मा.)

साहौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ०—१ निरखै ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण । सगळै दोख विवरजित साहौ, हूंतौ जई हूग्रौ हरण ।
—वेलि

उ०—२ तरै ग्रापरै नांवै तौ विजैराव न भालियौ नै देवराज वरसं ५ मैं वेटो हुतौ, तिण रै नांवै नाळेर भालियौ नै साहौ थापियौ ।—नैणसी

उ०—३ ताहरां चारण कह्यौ—फोफाणंदजी परणीजै तौ परणावां । ताहरां कह्यौ जी ग्राज रौ साहौ दयौ तौ परणीजां ।
—फोफाणंद री वात

सिकुल—देखो 'सांकळ' (रू. भे.)

उ०—हम जियत ही हनुमंतसी पर, हत्थ म्लेच्छन कौ परचौ । यह वत्त हुव ग्रनरत्थ सी, सादूळ सिकुल तै जरचौ ।—ला. रा.

सिख्या—देखो 'संख्या' (रू. भे.)

उ०—पाहीवाळ री ग्रतरी भैंस घोड़ी ऊंठ हाथ ग्रावै तिकां री सिख्या कांई नहीं ।—खोखर छाडावत री बात

सिंग-सं. पु. [सं. शृंग] १ शिखर, चोटी ।

२ देखो 'संग' (रू. भे.)

उ०—राजांन ग्रनेक तीयइ सिंग रमतउ, धरियइ गिर चिटी ग्राधार । मुरळी ग्रधर भालियइ माहव, ग्राया गरुड़ तणा ग्रसवार ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'सींग' (रू. भे.)

सिंगड़ो—देखो 'सींग' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सिंगणी—देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ०—सौ किण भांत री कवांणां, थेट विलाती, सींगरी सिंगणी तूंजी हळकी, ग्रठारै टांक चिलै री खाऊणहार ।—रा. सा. सं.

सिंगरफ-सं. पु. [फा. शिंगरफ] ईंगुर, हिंगुल ।

सिंगरफी-वि. [फा. शिंगरफी] १ हिंगुल के समान रंग का, हिंगुल जैसा ।

२ लाल ।

सिंगराज-सं. पु. [देश.] एक प्रकार का चिकना सफेद पत्थर जिसे पीसकर चूने के साथ मिलाया जाता है । (क्षेत्रीय)
(मि. मारवणियौ-भाटौ)

सिंगरौर-सं. पु. [सं. शृंगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर कोण में स्थित एक तीर्थ जहां निषादराज गुह की राजधानी होना मानी गई है ।

सिंगल-सं. पु. [ग्रं.] १ रेल की पटरी के किनारे ऊंचे खम्भे पर लगी लोह की वह पट्टी जो रेल के ग्राने व जाने की सूचना देती है ।

उ०—परधर पग नहीं मेलणो, विनां मांन मनवार। इंम्रन आवत देस कर, सिगल री सतकार।—अग्यात

२ देखो 'सिहल' (रू. भे.)

उ०—मनय सिगल कोसल नइ अंब्य, स्रीपरवत द्राविड नइ वध्य। वंरोट तापी लाञी धार, स्रोवंदरम पाटल अविसार।

—नळदवदंती रास

रू. भे.—सींघल।

सिगलदीप, सिगलद्वीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

सिगसट, सिगसठ, सिगसत, सिगसत्य, सिगसथ—सं पु. [सं. सिंहस्थ] सिंह राशि स्थित गुरु का समय जो १३ मास का होता है। इस अवधि में विवाह संस्कार निषिद्ध माना गया है।

उ०—माह एक पर्छ सिगसत लागसी सो महिना तेरह रहसी।

—व. भा.

रू. भे.—सिंहसत, सिहसत, सींघसट, सींघसठ, सींघसत, सींघसथ।

सिगाड़ो, सिगाड़ौ—देखो 'सिगोटी' (रू. भे.)

उ०—मुगट सिगाड़ी साकवर।—व. भा

सिगार-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

२ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—१ रगत पिद्ध बळि लिद्ध, जपं जेकार सकत्ती। कियौ संकर सिगार, रुंडमाळा गळ घत्तो।—गु. रू. वं.

उ०—२ मांगणहा'रा सीख दें, ढोलइ तिण हिज ताळ। सोवन जड़ित सिगार दे, नांख्यउ दळिद उलाळ।—ढो. मा.

उ०—३ श्री वरणण पहिलो कीजौ तिणि, गूंथियौ जेणि सिगार ग्रंथ।—वेलि

सिगारक-सं. पु [सं. श्रृंगारक] कामदेव, मदन। (अ. मा.)

सिगारचोकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे.)

उ०—आवियो वादि तोरण 'अजो', पह सिगारचौकी परे। तदि मिळे लोक मुरधर तणा, कोड दरब निजरां करे।—सू. प्र.

सिगारणी, सिगारबो—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबो' (रू. भे.)

उ०—१ धर बुगलांण तेज छत्रधारी, समै हेत चंद्रिका सिगारी।

—सू. प्र.

उ०—२ रजधांनी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूंघे महल सिगारिया, सोरंभी महरांण।—रा. रू.

उ०—३ तळिया तोरण बाधा हाट सिगारी पोळि सिगारी घरि घरि गूडी ऊछळी।—ढ. वि.

सिगारणहार, हारौ (हारी), सिगारणियौ—वि०।

सिगारिओड़ो, सिगारियोड़ौ, सिगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिगारीजणौ, सिगारीजबौ—कर्म वा०।

सिगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिगारियोडी)

सिगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

उ०—असिया रह्या पग्ग आफळता, मदभर खळहळता मैमंत। बहळो धणी सिगासण वाळो, पाळो होय हालियो पंथ।

—प्रथ्वीराज राठौड़

सिगियौ—सं. पु. [सं. श्रृंगिक] एक प्रकार का स्थावर विष।

वि. वि.—इसको गाय के सींग के बांध देने पर गाय का दूध लाल उतरने लगता है। इसका पौधा हल्दी या अदरक के समान होता है, जड़ सींग के आकार की होती है।

सिगी—सं. स्त्री. [सं. श्रृंगी] १ तुरही नामक बाजा।

उ०—सर सरिता बहु बाग सडंबर, मांझ तिण सिगी कांम चित्र मंदिर।—सू. प्र.

२ योगियों द्वारा फूंक कर बजाने का सींग का बाजा।

३ घोड़ों का एक अशुभ लक्षण।

रू भे.—सींघी।

४ देखो 'स्रंगी' (रू. भे.)

५ देखो 'सिघवी' (रू. भे)

सिगीमलकाछबौ—सं. पु.—एक प्रकार का कछुआ।

उ०—ओसीसा गींडवा कैसा विराजे छै। जांणे सिगीमलकाछबौ समुद्र में केळ करै छै।—रा. सा. सं.

सिगीमूरो, सिगीमूहरो, सिगीमोहरौ—सं. पु.—एक प्रकार का पत्थर विशेष।

रू भे.—सींगीमुहरो।

सिगीय, सिगीया—सं. स्त्री [सं श्रृंगिका, प्रा. सिंगिय] पिचकारी।

उ०—अरे कांहडु अन्नइ नेमिजिणु, खंडोखलि मिलि जाइं। अरे सिगीय जलभरै छांटियइ, एसिय रमलि कराइं।—समुधर

सिगोड़ो—देखो 'सिघोड़ो' (रू. भे.)

सिगोटी—सं. स्त्री.—१ बैलों के सींगों पर पहनाया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण।

२ सींगों की आकृति या बनावट।

३ एक मध्ययुगीन सरकारी टेक्स।

रू. भे.—सिगाड़ी, सिगाड़ो, सींगाड़ी, सींगोटी।

सिगौ—स पु. [सं. श्रृंग] १ फूंक कर बजाया जाने वाला एक बाजा विशेष, नरसिंहा।

२ देखो 'स्रींगो' (रू. भे.)

३ देखो 'सींग' (रू भे.)

सिग्या—देखो 'संग्या' (रू. भे.)

सिग्याहीण—देखो 'संग्याहीण' (रू. भे.)

उ०—टापू माथै सिग्याहीण खत बध्योड़ो, अेक काळो मिनख तांगियां खावतो अठी ऊठी भंवतो हो।—फुलवाड़ी

सिघ—स. पु. [सं. सिंह] (स्त्री. सिघण, सिघणी) १ सिंह, शेर।

(डिं. को; नां. मा; ना. डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ अेक विकराळ नोहरथी सिघणी रै कारण जंगळ मैं सून्याड़ व्हैगी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ सिघ सरस रायसिघ रै, रहियो भूझै रांम। आड़ो सरवहियो अछै, कळह तणो घरि कांम।—हा. भा.

उ०—३ वाघ सिघ चितर घणा, भुंइ बीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रत घणु ए।—नळदवदंती रास

पर्याय.—अभंग, अमल, अस्टपाद, आवद्धनख, एकवळा, कंकाळ, कंठीर, कंठीरव, करछिप, करीमार, काळ, केसरी, खिणकर, गजराज-अरि, गजरिपु, गहपूर, ग्रह, ग्रीठ, चोळचख, छटाधाव, जंगी, जीवजख्र, डारण, ढुंढराव, दाढाळह, दीरघछळ, दुगम, दुछर, नखआवध, नखी, नहराळ, नाहर, पंचमुख, पचसिख, पंचायण, पळपक्ष, पारंद, बनराज, बाघ, भुभारव, भूपवन, मंग, मंजारछळ, मतंगरिपु, मयंद, मरगराज, महाताव, महानाद, म्रगपत, मग्रमरद, म्रगमारण, म्रगयंद, म्रगराज, म्रगेस, लंकाळ, लोहलाठ, वनपती, वांण, विकराळ, संहारण, सधीर, सरभ, सादूल, सारंग, साहल, सिघळी, सूर, सूरसेत, हर, हरि, हरीजख।

२ वीरता या श्रेष्ठता सूचक शब्द जो प्रत्यय रूप में किसी के नाम के पीछे लगता है।

३ वास्तुविद्या में प्रासाद का एक भेद।

४ एक राग का नाम।

५ ज्योतिष में बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। (नां. मा.)

६ छप्पय छन्द का १६ वां भेद जिसमें ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

रू. भे.—संघ, सिंह, सींह, सीह।

सिघण—सं. पु.—पंवार राजपूत वंश की एक शाखा।

सिघनाद—देखो 'सिंहनाद' (रू. भे.)

उ०—१ वीरारस हेक न मेल्है वाद, निहसै हेक करै सिघनाद।
—गु. रू. बं.

उ०—२ गजसिघ कियो गज केसरी, सिघनाद मेवाड़ सिरि।
—गु. रू. बं.

सिघपोळ—सं. पु.—वह मुख्य द्वार जिस पर सिंह की मूर्ति स्थापित हो।

सिघरास, सिघरासी—देखो 'सिंहरासी' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)

सिघळ, सिघळदीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

उ०—की कठियांणी कायथण, पुंगळ प्रसू प्रथीप। अमरांणी धर ऊपनी, दूजै सिघळदीप।—पा. प्र.

सिघळी—सं. पु.—१ हाथी। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—डोहत सूंड सिघळी घटा विराज सांमळी।—गु. रू. बं.

२ सिंह।

उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति बडा सिकारी सिघळी सादूळ पटाला केहरी नरहथां कंठीरआं।.........।
—रा. सा. सं.

३ पुत्र, लड़का, औलाद।

उ०—सिवा रा सिघळी मुरधरा सहायक, कूंप रा पोतरा उग्रकारी। अंजसै गोत रा आपसूं आज दिन, धजावंध चिरंजी छत्रधारी।—आसोप ठाकुर चैनसिंह रो गीत

वि.—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ मुहर भूप वित मुहर, गुमर घर कुंवर 'गुमांनो'। 'सादूळो' सिघळी, एम बोलियो 'अमांनो'।—सू. प्र.

उ०—२ केई वारां तोखारां हरोळां ओरै फतै किधी। केई फोजां मार दीधी सिघळी कमंध।—किरपारांम

२ वंशज।

३ जबरदस्त।

रू. भे.—सींगळी, सींघळी।

सिघवाऊ—सं. पु.—१ घोड़े का एक रोग जिससे घोड़े के पेट में पीले रंग के कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। (शा. हो.)

२ सिंह के शरीर से उत्पन्न होने वाली गन्ध।

सिंघवाहणी, सिघवाहनी—सं. स्त्री. [सं. सिंह+वाहिनी] १ गिरिजा, पार्वती। (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ दुर्गा, भवानी।

३ रणचंडी।

रू. भे.—संघवाहणी, सिंहवाहणी।

सिघविलोक—देखो 'सिंहावलोकन' (रू. भे.)

सिंघवी—सं. पु.—ओसवालों की एक प्रमुख शाखा व इस शाखा का व्यक्ति जो संघी या संघवी के नाम से पुकारे जाते हैं।

वि वि.—पहले नन्दवाणा बोहरा (ब्राह्मण) जाति में देवजी नामक प्रतापी पुरुष के पुत्र को सांप ने काट लिया जिसे एक जैन मुनि ने जीवित कर दिया था। उसी समय से इनका इस्ट पुण्डरिक नागदेव हुआ। लगभग २३ पीढ़ियों तक ये नदवाणा बोहरा ही रहे। तत्पश्चात् बोहरावंशीय आसानन्दजी के पुत्र विजयानन्दजी ने सुप्रख्यात जैनाचार्य जिनवल्लभ सूरि के उपदेश से जैन धर्म को स्वीकार किया। इन विजयानन्दजी से कुछ पीढ़ियों के बाद श्रीधरजी के पुत्र सोनपालजी ने शत्रुञ्जय का बड़ा भारी संघ निकाला। इनके बाद भी इनके वंशजों ने बाद के कई संघों का नेतृत्व करते रहे। अतः ये संघी या संघवी कहलाये।

मतान्तर स ओसवालों की एक शाखा विशेष जो सिंघी या सिघवी नाम से पुकारी जाती हैं। सिंघी या सिघवी शब्द की व्युत्पत्ति सिंह शब्द से मानी जाती है। इनके पूर्वज देशी राज्यों में दीवान, प्रधान, मन्त्री, सेनापति, फौजबख्शी व अन्य सैनिक तथा प्रशासनिक पदों पर कार्य करते रहे और इसीलिए इनके नामों के साथ सिंह (सिंघ) व सिंहवी (उच्चारण—सिंघवी, अर्थ—सिंहों में प्रमुख या श्रेष्ठ) का प्रयोग होता रहा है। ये जैनी होने के नाते जैन धर्म व विशेष रूप से सनातन धर्म को मानते हैं।

रू. भे.—संगवी, संघवी, सिंगी, सिंघी ।

सिंघनादूळ—देखो 'सान्दूळ' (रू. भे.)

सिंघसेन-सं. पु. [सं. सिंह-सेन] एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—तदा नाभिकमळ थै ब्रह्मा नीपनो। ब्रह्मा रो अत्री। अत्रि रो कस्यप, कस्यप रो सूरज तिण वंस उतपन्न राजा सिंघसेन।
—द. वि.

सिंघार—देखो 'संहार' (रू. भे.)

उ०—१ सिंघार हुवै असवार सूर, हर हार करै वर रंभ हूर। गळ भार लियै पळचार ग्रीध, पत भार सगत भर रुघर पीध।
—वि. सं.

उ०—सोहै तू डाहुल दंत सिंघार, निमो नरकासुर खोसण नार।
—पी. ग्रं.

२ देखो 'सस्त्र' (रू. भे.)

उ०—असटंग विभूत सनाह उपावै, सोह छतीस सिंघार लियं। सिघ बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप कियं।
—गु. रू. बं.

सिंघारणौ, सिंघारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संहारणौ, सहारबौ' (रू. भे.)

उ०—धनुधारै रे धनुधारै, तार एका बाळ सिंघारै। महाराजधिराज सुग्रीव मनां रा, सारा कारज सारै।—र. रू.

सिंघारियोड़ौ - देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिंघारियोड़ी)

सिंघाळ—देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहुवांण 'चाळ' चम्मर वंबाळ, सूरमौ सीह सामंत सिंघाळ।—गु. रू. बं.

उ०—२ करता कूक कराळ, आया फरियादू असुर। सुणजै 'दला' सिंघाळ, वीरम फगास वधावियौ।—गो. रू.

उ०—३ सेखावत वाहत खाग सिंघाळ, चाढै जळपूर चवद्द चाळ।—सू. प्र.

२ देखो 'सिंघळौ' (रू. भे.)

उ०—घाजै जसवास वीरघंट वळवळ, सिर आंकुस प्रम लीयां सिंघाळ। खग पोगर खळ रूंख उखाळै, छावौ मद आयौ 'छाताळ'।—महाराज छत्रसिंघ रौ गीत

सिंघाळी-सं. स्त्री.—जो सिंह की सवारी करे, दुर्गा।

उ०—सिंघाळी तुही सीमिका होल सैणी, ध्रिदाळी तुही गूंगिका नाग वेणी। खगाळी तुही विव्वड़ा चहखड़ाई, मुदाळी तुही आवड़ा मांमडाइ।—मे. म.

सिंघाळौ-वि.—१ योद्धा।

उ०—१ 'सावळ' तणा ऊपर जे सारा, घूमै 'अवरंग' साह घड़। ग्राळै मरण सिंघाळै कीधौ, उदयापुर वाळ अनड़।
—उगरसिंह राठौड़ रौ गीत

२ पराक्रमी, बलवान।

उ०—सुणै वचन धिक वीर सिंघाळा, जांणै जेठ सालुळी ज्वाळा।
—गो. रू.

३ सींगो वाला।

उ०—मोडला मांण पण मेलियां, सिंघाळा बळ कर समथ। निरवाह तुंही नव साहुंसा, रेण कळता राज रथ।—अनोपसिंह सांदु

४ श्रेष्ठ, अग्रणी।

सं. पु.—हाथी, गज।

रू. भे.—संघाळौ, सघाळौ, सिंघाळौ, सींगाळौ, सींघाळौ।

सिंघावलोकण, सिंघाविलोकण—देखो 'सिंहावलोकन' (रू. भे.)

उ०—कहू प्रहास सांणोर किव, अख विखम सम आद। तुक सिंघाविलोकण तिय, मुकताग्रह मुरजाद।—र. ज. प्र.

सिंघासण—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजपोळ सूं बारै जको ई पैलो मांनखो मिळै, वो ई उजीण रै सिंघासण रौ धणी।—फुलवाड़ी

उ०—२ मत्री तहां मयण वसंत महिपति, सिळा सिंघासण घर सघर।—वेलि

सिंघासणचक्र – देखो 'सिंहासनचक्र' (रू. भे.)

सिंघी—१ देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

३ देखो 'सिंही' (रू. भे.)

४ देखो 'सिंगियौ'।

उ० – बीछड़तां ही सज्जणां, क्यांही कहण न लध्ध। तिण वेळा कंठ रोकियउ, जांणक सिंघी खध्ध।—अज्ञात

५ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

सिंघेस्वरी-सं. स्त्री. [सं. सिंहेश्वरी] १ दुर्गा।

२ पार्वती।

सिंघोड़ौ-सं. पु.—१ तालाब के पानी के ऊपर फैलने वाली लता के लगने वाला एक तिकोना फल। (अमरत)

२ तिकोनी सिलाई या बेल-बूटे जो सिंघाडे के आकार के होते हैं।

३ सिंघाडे के समान तिकोना समोसा नामक एक नमकीन पकवान।

४ एक प्रकार की आतिशबाजी।

५ ऊंट के चारजामा के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी।

रू. भे.—सींघोड़ौ।

सिंघोदरी—वि. स्त्री. [सं. सिंहोदरी] १ जिसका उदर सिंह के समान हो।

२ सिंह के समान पतली कमर वाली।

सिंचणियौ—देखो 'सींचणियौ' (रू. भे.)

सिंचणौ, सिंचबौ—देखो 'सींचणौ, सींचबौ' (रू. भे.)

उ०—लाधइ सार सुधा रसिका रसि तें सिचंति । अग धरीयें अगलोचना लोच ना रंग चूकंति ।—जयसेखर सूरि
सिचणहार, हारौ (हारी), सिचणियौ—वि० ।
सिचिग्रोड़ौ, सिचियोड़ौ, सिच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिचीजणौ, सिचीजबौ—कर्म वा० ।

सिचन-सं. स्त्री.—सिचाई करने की क्रिया या भाव, सिचाई ।

सिचय-सं. पु. [सं.] १ वस्त्र, कपड़ा । (डि. को.)
उ०—ग्रंत्रावळि ग्रलगरद्ध रूप संचय संचारै । जळनिधि निभ सिचय जाळ इत तिरत अपारै ।—वं. भा.
२ आवरण ।
३ देखो 'संचय' (रू. भे.)

सिचांण, सिचांणौ-सं. पु.—१ एक शिकारी पक्षी जो बाज की अपेक्षा छोटा होता है ।
उ०—१ पाए पवंग पोडए, धरा धमस धोड ए । हमरस असी हुंश ए, सिचांण जांण पंख ए ।—गु. रू. बं.
उ०—२ सांई नांव संभाळि लै, क्या सोवै नर नींद । काळ सिचांणौ सिर खड़ौ, ज्यौं तोरण आयौ बींद ।
—परमानंद बणियाळ
२ दोहा नामक छन्द का चतुर्थ भेद, जिसमें १६ गुरु और १० लघु होते हैं ।
रू. भे.—संचांण, संचांणौ, संचांन, सचांण, सचांन, सिचांण, सिच्चांन, सींचांण, सींचांणौ ।

सिचाई-सं. स्त्री.—१ सिचाई करने की क्रिया या भाव ।
२ सिचाई का कर या लगान ।
३ सिचाई का पारिश्रमिक या मजदूरी ।

सिचाणौ, सिचाबौ—देखो 'सींचाणौ, सींचाबौ' (रू. भे.)
सिचाणहार, हारौ (हारी), सिचाणियौ—वि० ।
सिचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिचाईजणौ सिचाईजबौ—कर्म वा० ।

सिचायोड़ौ—देखो 'सींचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचायोड़ी)

सिचावणौ, सिचावबौ—देखो 'सींचाणौ, सींचाबौ' (रू. भे.)
उ०—क्यां रे वधावां नीमड़लौ री पाळ हजारी ढोला । क्यां रे सिचावां ए हरियै रूख नै जी म्हारा राज ।—लो. गी.
सिचावणहार, हारौ (हारी), सिचावणियौ—वि० ।
सिचाविग्रोड़ौ, सिचावियोड़ौ, सिचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिचावीजणौ, सिचावीजबौ—कर्म वा० ।

सिचावियोड़ौ—देखो 'सींचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचावियोड़ी)

सिचियोड़ौ—देखो 'सींचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिचियोड़ी)

सिजनी-स. स्त्री. [सं. शिञ्जनी] पैरों का आभूषण, पायजेब, पैंजनी ।
उ०—धिमिद्ध मिद्ध ऊद्धनी न सिजनी सुनी नहीं ।—ऊ. का.
२ धनुष की डोर, प्रत्यंचा ।
३ कटि मेखला के नूपुर, घुंघुरु ।

सिजारौ, सिंजारौ—देखो 'सिझारौ' (रू. भे.)

सिज्या, सिंज्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)

सिज्यारौ, सिंज्यारौ—१ देखो 'सिझारौ' (रू. भे.)
२ देखो 'संजीरौ' (रू. भे.)

सिझ, सिझया, सिझा, सिझ्य, सिंझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)
उ०—१ आजक काल्हे रांम राय सिझ सवेरै । तुझि निरास मुझि आस नवेरै ।—अनुभववांणी
उ०—२ चौखड़ आंथूणियै राजस्थान री घणीं चावी रम्मत है । सिझ्यां पड़चां मोटियार रम्मण ठौड़ भेळा व्है जावै । चौखड़ रम्मण री ठौड़ थोड़ी मोकळास आळी व्है ।—चितरांम

सिझारौ-स. पु.—१ गौर व सावण मास की कृष्ण तृतीया को कन्या व वधु के लिए उसके पीहर व ससुराल वालों द्वारा भेजी जाने वाली सामग्री ।
वि. वि.—उक्त सामग्री में मिठाई, फल, मेवा, वस्त्र एवं शृंगारिक वस्तुएं सम्मिलित होती हैं । यह सामग्री, जब कन्या ससुराल होती है तब उसके पीहर वालों द्वारा व जब वह पीहर होती है तब ससुराल वालों द्वारा भेजी जाती है ।
२ वह दिन जिस दिन उक्त सामग्री भेजी जाने की प्रथा है ।
रू. भे.—सिजारौ, सिज्यारौ, सिंज्यारौ, सिंदारौ ।

सिंझ्झा, सिंझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे.)
उ०—१ दूजै दिन सिंझ्या री वेळा दौड़तौ दौड़तौ घोड़ौ अणछक ढब्यौ, जांणै च्यारूं पगां नै कोई अपड़ लिया व्है ।—फुलवाड़ी
उ०—२ सिंझ्या रा ठाकर रंगमैं'ल में पधारचा उण वगत वौ ई सांप रै रस वाळौ दीवौ झुप्योड़ौ हौ ।—फुलवाड़ी

सिण—देखो 'सण' (रू. भे.)

सिणगार—देखो 'सिंगार' (रू. भे.)
उ०—१ राजांन कुमार सोळै सिणगार विराजमांन हुआ छै । सु प्रथम मरदरा सोळै सिणगार तिकै किण भांति रा कहीजै ।
—रा. सा. सं.
उ०—२ सजि सिणगार पधारत अंबा, गांव खुड़द गढवाड़ै ।
—मे. म.
उ०—३ हास हसंता रह्या धोळहर, सुंदर सझती रही सिणगार । लाखां धणी पयांणै लांबै, जातां ही न कियौ जुहार ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

सिणगारचौकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे.)
उ०—सिणगारचौकी आगै सूरसिंघजी कराई तिका सादै भाटै री

गो, जिका म्हाराज बखतसिंघजी मकरांणा री नवी कराई ।

—मारवाड़ री ख्यात

सिणगारणी-सं. स्त्री.—शृंगार की सामग्री ।

वि. स्त्री.—शृंगार करवाने वाली ।

उ०—तांह बडारणा महेलियां आगै ४ पात्रां सिणगारणी ख्वास्यां रहै छै । १ गुणमाळा, २ फूलमाळा, ३ विजैमाळा, ४ दीपमाळा ।

—रा. सा. सं.

सिणगारणो, सिणगारवो—देखो 'सिणगारणो, सिणगारबो' (रू. भे.)

सिणगारियोड़ो—देखो 'सिणगारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सिणगारियोड़ी)

सिणतरो, सितरो—देखो 'सिणियो' (रू. भे.)

सिदड़ो—देखो 'सींदड़ो' (रू. भे.)

उ०—कहै दास सगरांम, जितै साजी है जिंदड़ी । करो भजन दिन रात, काच री है या सिंदड़ी ।—सगरांमदास

सिंदण, सिंदन—१ देखो 'स्यंदन' (रू. भे.)

उ०—खाड़ैत्यां खोलिया, खिड़क खासा रथखांना । सिणगारया सिंदणां, मिळण सांमां मिजमांना ।—मे. म.

२ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

३ देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंदळी-सं. पु.—शुभ रंग का घोड़ा ।

उ०—१ गुलजार बोज अबलक्ख गात, सिंदळी अनै सरंगा सुभात ।

—सू. प्र.

उ०—२ ढाल सिंदळी ऊपर छै सो आगै होय कटारी मांहै छुरी थी सो काढी ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सिंदवी-स. स्त्री.—एक रागिनी विशेप ।

उ०—उण वेळा कवर कनै सिंदवी आसावरी गाइजै । रस रा डंका लगत ।—पनां

सिंदारो—देखो 'सिंझारो' (रू. भे.)

सिंदिया-सं. पु.—१ सिंधिया ।

२ देखो 'संध्या' (रू. भे.)

सिंदुरिया-वि.—सिंदूर के रंग जैसा ।

सिंदुरियो-सं. पु.—सिंदूरी रंग का पौधा ।

वि.—सिंदूर के रंग का, सिंदूर रंग सम्बन्धी ।

रू. भे.—सींदूरियो ।

सिंदूक—देखो 'संदूक' (रू. भे.)

सिंदूर-सं. पु. [सं.] १ सौभाग्यवती स्त्रियों के मांग में भरने का एक लाल रंग का चूर्ण जो ईंगुर को पीस कर तैयार किया जाता है ।

(हि. को.)

वि. वि.—हनुमान, गणेश आदि देवताओं की मूर्तियों पर यह घी या तेल मिला कर चढ़ाया जाता है ।

उ०—१ दाढी रंग उज्जळ भाळ सिंदूर, प्यालां मतवाळ नसौ भरपूर ।—मे. म.

उ०—२ जिकां काट मांजिया, छांट उजळ जळ छोळां । रचि सिंदूर चितरांम, चरचि आंनन रंग चोळां ।—मे. म.

२ देखो 'सिंधुर' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

रू. भे.—संदूर, सींदूर, स्यंदूर ।

सिंदूरतिलक, सिंदूरतिलका-सं. पु.—१ हाथी ।

सं. स्त्री.—२ सधवा स्त्री ।

रू. भे.—संदूरतलका, संदूरतिलका ।

सिंदूरदांन-सं. पु. [सं. सिंदूर+फा. दान] विवाह में वर द्वारा कन्या के मांग मे सिंदूर डालने की एक रस्म ।

सिंदूरिया, सिंदूरी-सं. स्त्री.—सिंदूर रखने की डिबिया ।

वि.—सिंदूर के रंग का ।

रू. भे.—सींदूरियो ।

सिंदूवार-सं. पु.—१ वृक्ष विशेष । (सभा)

सिंध-सं. पु. [सं. सिंधुः] १ पाकिस्तान के दक्षिण पश्चिम का एक प्रदेश ।

२ पश्चिमी पाकिस्तान की प्रमुख नदी ।

३ मालवा की एक नदी ।

४ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ मांगी सीख नरिंद सूं, दीन्ही सीख कुंवार । जांणे बंध पलट्टियो, सिंध प्रळै री वार ।—रा. रू.

उ०—२ आतस बाजो गाडियां, आरावा अनमंध । गडडै गोळी नाळियां, किरि लहरी रव सिंध ।—गु. रू. बं.

उ०—३ नर नाग सुरासुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी मुर कीट मधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघवदासरथी ।

—र. ज. प्र.

सिंधक-सं. पु. [सं. संध्यक] पुष्प, फूल । (अ. मा.)

सिंधचारी, सिंधचोरी—देखो 'सिंधुचरी' (रू. भे.)

((अ. मा; ह. नां. मा.)

सिंधण—देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंधन—१ देखो 'सनद' (रू. भे.)

उ०—चंडाळां थांरी वात री कीं सिंधन व्है तो थें भूत क्यूं बाजो ।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंधपीण-सं. पु. [सं. सिंधु+रा. पीणो] अगस्त्य मुनि ।

वि. वि.—ये ऋग्वेद की कई ऋचाओं के रचयिता थे । देवासुर संग्राम में जब दानव सागर में जाकर छिप गये और खुद सागर ने भी इन्हें क्षुब्ध कर दिया था, तो ये सागर को ही पी गये और इसी कारण समुद्रचुलुक या सिंधपीण कहलाये ।

सिंधभैरव-सं. स्त्री.—एक राग विशेप ।

सिंघळ-सं. पु.—राठौड़ क्षत्रियों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—वालीसा नइ सीसोदिया, सोढा नइ सिंघल आवीया । तें पंचास सहस असवार, राउल भेटी करचउ जुहार ।—कां. दे. प्र.

सिंघलावटी, सिंघळावटी-स. स्त्री.—वह प्रदेश जहाँ सिंघल शाखा के राठौड़ों का आधिपत्य रहा था ।

सिंधव—१ देखो 'सैंधव' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—घण वाण कोहक वांणां गहक, दुगम घोर सिंधव डकां । कमधजां खाग ऊनंग करैं, वाग ऊपाड़ी वेढकां । —सू. प्र.

सिंधवराग, सिंधवा—देखो सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—रुड़ै दळ वेहुँय सिंधवराग, धजावंध वेहुं लाग धियाग ।

—गो. रू.

सिंधवी-सं. स्त्री.—आभारी और आसावरी के मेल से बनने वाली एक रागिनी विशेष ।

वि.—सागर का, समुद्र सम्बन्धी ।

सिंधवीराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—लागा सिंधवीराग रा पांना साकुरां भडाळा लीधां, अभागां छडाळां आभ छवंतो ताठौड़ ।—विसनसिंह राठौड़ रौ गीत

सिंधसागरी-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

सिंधी-सं. पु. (स्त्री. सिंधण) १ सिन्ध प्रदेश का निवासी ।

२ सिन्ध प्रदेश के निवासी जो अब भारत में यत्र-तत्र बस गये ।

३ मुसलमानों की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

४ सिन्ध प्रदेश का घोड़ा जो अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है ।

सं. स्त्री.—४ सिंध प्रदेश की भाषा या बोली ।

६ शीतकाल में पश्चिमोत्तर से चलने वाली हवा जो रबी की फसल के लिए हानिकारक होती है ।

(मि. सूरियौ)

७ एक प्रकार की बन्दूक ।

८ एक प्रकार की तलवार की मूठ विशेष ।

सिंधु-सं. पु. [सं. सिंधुः] १ समुद्र, सागर ।

उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यूं सलीता सिंधु समाई । पांच पचीस लीन कर सब ही, साक्षी स्वरूप रहाई ।

—सुखरांमजी महाराज

२ सिंधुनद जो पंजाब के पश्चिम से होता हुआ सिंध देश के समुद्र में मिलता है ।

३ उक्त नद के आसपास का प्रदेश ।

५ हाथी के सूंड से निकला हुआ पानी ।

६ हाथी का मद ।

७ हाथी ।

८ ऊंट ।

उ०—मजबूत थूंभ डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा । झोखियां सिंधु नुखतां झटकि, अंध कंध राकस इसा ।—सू. प्र.

९ वरुण देवता ।

१० गंधर्वों के राजा का नाम ।

११ पुराण प्रसिद्ध एक देश, जिसका राजा जयद्रथ था ।

१२ एक सम्पूर्ण जाति का वीररस पूर्ण राग । (संगीत) (डिं. को.)

उ०—भाभी जांगड़ आपणी, छिपै न लाखां गांन । सुनै घर सिंधु थयौ, आंपां रा मिजमांन ।—वी. स.

१३ बिल्कुल श्वेत सुहागा ।

सं. स्त्री.—१४ बड़ी नदी, नद ।

१५ नदी, सरिता । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—चिंत प्रथम चेत, उल्लू अचेत । यह तन अग्यांन, न स्थिर निदांन । बचि है न बीर; तरु सिंधु तीर । इक दिवस यार, है गिरन हार ।—ऊ. का.

१६ सात की संख्या । * (डिं. को.)

वि.—सुन्दर । (ह नां. मा.)

रू. भे.—संध, संधव, संधवौ, संधु, सिंध, सींधु, सींधू, सींधू, स्यंध ।

अल्पा; —सिंधुड़क, सिंधुड़ौ ।

सिंधुओ-सं. पु.—१ सिंधुदेशोत्पन्न घोड़ा । (कां. दे. प्र.)

२ देखो 'सिंधु' (अल्पा; रू, भे.)

सिंधुकन्या-सं. स्त्री. [सं.] लक्ष्मी ।

सिंधुकुला, सिंधुकुल्या-सं. स्त्री.[सं. सिंधुकुल्या] नदी । (अ. मा.)

सिंधुड़क, सिंधुड़ौ—१ देखो 'सिंधु' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सिंधी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मालांणी रै सिंधुड़ै गोरबंध गूंथ्यौ । बीकांणै रै राइकै पोयौ, म्हारौ गोरबंद लूंबाळौ ।—लो. गी.

सिंधुचरी-सं. स्त्री. [सं.] मछली । (अ. मा.)

रू. भे.—सिंधचारी, सिंधचीरी ।

सिंधुज, सिंधुजन्मौ-सं. पु. [सं. सिंधुज, सिंधुजन्मा] १ चंद्रमा, शशि ।

२ सेंधा नमक ।

वि.—१ समुद्र से उत्पन्न ।

२ नदी से उत्पन्न ।

३ सिंधु देश से उत्पन्न ।

सिंधुजा-सं. पु. [सं.] लक्ष्मी ।

सिंधुजात-सं. पु. [सं.] १ घोड़ा, अश्व । (डिं. को; डिं. नां. मा.)

२ सागर मंथन से उत्पन्न चौदह रत्नों में से कोई एक रत्न ।

३ शराब, मदिरा ।

सिंधुदीप-सं. पु. [सं. सिंधुद्वीप] १ राजा भगीरथ के वंशज एक राजा ।

२ अंबरीष के पुत्र का नाम ।

सिंधुदेस—देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—पर सिंधुदेस रा सूबादार जवन करीमखांन जिसा अनेक ।
—वं. भा.

सिंधुदेसभव-स. पु. [सं. सिंधुदेशभव] सेंधानमक । (डि. को.)

सिंधुप-सं. पु. [सं.] अगस्त्य ऋषि का एक नाम ।

सिंधुपुत्र, सिंधुप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ. मा.)

सिंधुर-सं. पु. [सं.] १ हाथी, गज ।
(अ. मा; डि. को; ना. डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ जिण समय अरसिव गदा री आघात देर दूजा सिंधुर री सीस चौफाड़ि करि पटकियौ ।—वं. भा.

उ०—२ बेउ बंधव बळ बंधुर, सिंधुर जिम वनतीरि। खेलइं विपुल महोखली, ओखली पाडती नीरि ।—जयसेखर सूरि

सं. स्त्री.—२ नदी ।

उ०—भाई वै भेळा हुवा, असुर नदी सिर आय । सिंधुर घोड़ै सूकड़ी, मेल न मापी जाय । —रा. रू.

३ आठ की संख्या । ⁕ (डि. को.)

रू. भे.—संधुर, संधूर, सिंदुर, सींदुर ।

सिंधुरवर-सं. पु.—श्रेष्ठ नर ।

उ०—सिंधुरवर वावर भूंडण कर सांवै, वांमा वीजळ नै थावर गळ वांवै ।—ऊ. का.

सिंधुरमणि-स. पु. यौ. [सं.] गज-मुक्ता ।

सिंधुरवदन-सं. पु. यौ [सं.] गणेश, गजानन ।

सिंधुराग-सं. पु.—वीररस पूर्ण राग ।

उ०—गढवी गांगौ गावीजै, स्यांम न मेलै साथ । ओढण अनि-सारां नरां, हालां रा पण हाथ । हाथ आवाहतौ सिंधुरागां थियां, सही भूफा थयां वळि 'जसा' रा सथियां ।—हा. झा.

(मि. सिंधु (८)

रू. भे.—संधव, संधवौ, सिंधवराग, सिंधूराग ।

सिंधुवौ-सं. पु —युद्ध का वाद्य, वीररस का वाद्य ।

उ०—उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखांन । इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमांन ।—रा. रू.

सिंधुसुत-सं. पु. यौ. [सं.] १ चौदह रत्नों में से कोई एक ।

२ चन्द्रमा ।

३ शिव द्वारा मारा जाने वाला जलंधर नामक एक राक्षस ।

सिंधुसुता-सं. स्त्री. यौ—१ लक्ष्मी ।

उ०—लोक माता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा ।
—वेलि

२ सीप ।

सिंधू—देखो 'सिंधु' (रू. भे.) (डि. नां. मा)

उ०—१ सकौ गोतियौ हाकड़ौ नांम सिंधू, वहंतौ थकौ रोकियौ लोरबंधू ।—मे. म.

उ०—२ गोपाळां नांमी नेक नांमी, सेव पाय सुरेस । सुज दया सिंधू दीनबंधू, अखै क्रीत अहेस ।—र. ज. प्र.

सिंधूप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ. मा.)

सिंधूभव-सं. पु. [सं. सिंधुभव] १ सेंधा नमक । (डि. को.)

२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नों में से एक ।

सिंधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—गत व्रत करि सिंधूराग वडाळा, लयवथ भारत घणा लोह ।
—महादेव पारवती री वेलि

सिंधूरी-सं. पु.— हिंडोल राग की पुत्रवधू माने जाने वाली एक रागिनी।
(संगीत)

सिंधूसुवन-सं. पु. [सं. सिंधु+सूनुः] १ चन्द्रमा, चांद । (अ. मा.)

२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नों में से कोई एक ।

सिंध्या —देखो 'संध्या' (रू. भे.)

उ०—कंवरजी स्री बीकोजी जोधपुर सूं विदा हुआ सु सिंध्या रा मंडोवर आया ।—द. दा.

सिंनेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—संसार एह असगौ सगौ, दईवि आप वासौ दियौ । कलिमांहि दुख सिंनेह थया, कूड़ कूड़ साचौ कियौ ।—पी. ग्रं.

सिंन्यास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

उ०—कया मैं करत सिंन्यास क्रम, का कुळ मारग लोक क्रम।
—अनुभववांणी

सिंपा—देखो 'संपा' (रू. भे.)

उ०—मूखमलू से मुलायम वरवागूं कै सांचै पंखराउ सी धाय खुरतालु कै झमकै सत सिंपा कै सिलाव......... ।—र. रू.

सिंबन-सं. स्त्री.—फली ।

उ०—परंड अरणी अगथीउ अखोड़ ताड़ असोख । खजूरि खारिक कूड़ौ सालर, सिंबन सइंबल मोख ।—रुकमणी मंगळ

सिंबी-सं. स्त्री. [सं. शिम्बा या शिम्बिका] फली । (डि. को.)

सिंबेण—देखो 'संभु' (रू. भे.)

सिंभ—देखो 'संभु' (रू. भे.)

उ०—१ भुजां सजोर भंजणा, चढाय सिंभ चाप ।—र. ज. प्र.

उ०—२ उभै साचा अखर कहै रिख सिंभ अज । हरिभज हरिभज हरिभज हरिभज ।—र. ज. प्र.

सिंभजियत, सिंभजीत, सिंभजीवत—देखो 'जीवतसंभ' (रू. भे.)

उ०—१ 'केहर' जसावंत कहै, घणां मुगळां खग घाऊं । काय आऊं जुध कांम, किवै सिंभजियत कहाऊं ।—सू. प्र.

उ०—२ व्हां अमर काय सिंभजीत व्हां, विखम 'विलंद' फौजां विहृरि ।—सू. प्र.

उ०—३ वर अपछर जग क्रीत वधाऊं, का सिंभजीवत विरद कहाऊं ।—सू. प्र.

सिंभरि-सं. पु.—सांभर ।

उ०—कइ अम्ह आवी करइ सिलांम, कइ प्रांणइ छंडाविसुं ठांम ।

ग्या प्रधान सिरि धरीय पसाउ, जई भेटिउ सिभरि नउ राउ।
—कां. दे. प्र.

सिंभु, सिंभू, सिंभौ—देखो 'संभु' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)

उ०—१ थया स्रंद नाखत्र, कं चद्र साथं, कना सोभियौ, सिंभु जीखेस माथं।—रा. रू.

उ०—२ सुगंधां करं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिंभू विमोहै।—रा. रू.

२ देखो 'संब' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिम्रत—१ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

२ देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सिंम्रत—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

उ०—रांम वखांनै वेद, रांम कुं दाखि पुरांनै। रांम साख सिंम्रित, रांम सासत्र सु जांनै।—अनुभववाणी

सियातर-स. स्त्री.—कृषकों की इष्ट देवी।

(मि. सावढ)

सियारौ-स. पु.—लोहे की मोटी लम्बी नुकीली छड़।

(मि. सरियो)

सियाळ-स. पु.—क्यारी के उस ओर की मेढ जिधर से पानी भरा नहीं जाता अपितु रोका जाता है। (कृषि)

२ देखो 'स्रगाल' (रू. भे.)

सिंवटणौ, सिंवटबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

उ०—तड़कै घड़ाघड़ आडो भचेड़चां दोनां री सुधबुध वापरी। दीवा रो उजास बाटां मैं सिंवटग्यौ हो। फूलां हळफळाई होय आडो खोलै जित्तै जित्तै माईत खथावळ करता चूळियौ उतार मेड़ी रै मांय वड़ता इज निगै आया।—फुलवाड़ी

सिंवटणहार, हारौ (हारी), सिंवटणियौ—वि०।

सिंवटिओड़ौ, सिंवटियोड़ौ, सिंवट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिंवटीजणौ, सिंवटीजबौ—भाव वा०।

सिंवटियोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिंवटियोड़ी)

सिंवरणौ, सिंवरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेवट हीमतहार अेक दिन पै'लीवार वां रांमजी नै सिंवरचा कै किणी जीव जीनावर रौ ई बिसरांम दै।—फुलवाड़ी

उ०—२ आं देवी देवतावां रे भरोसै राज री खजांनौ ई खाली कर दियौ, सिंवरता सिंवरतां म्हारी तौ जीभ ई घिसगी।
—फुलवाड़ी

सिंवरियोड़ौ—देखो 'सुमरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिंवरियोड़ी)

सिंवरी-सं. स्त्री.—झड़बेरी के कांटों का उतना गोलाकार ढेर जितना एक बैलगाड़ी में समा सकें।

रू. भे.—सिमरी।

सिंवल-सं. स्त्री.—१ लकड़ी की वह खूंटी या गुल्ली, जो जुए के कंधावर भाग के छोर पर लगी रहती है। इसी से जोत की रस्सी बांधी जाती है।

रू. भे.—संमळ, संवळ, समळ, समेळ, सिमल।

सिंवसंगिया-सं. स्त्री.—घोड़े के गर्दन के दाहिनी ओर की (मतांतर से पीठ पर की) भौंरी जो शुभ मानी जाती है। (शा. हो.)

सिंवाई-सं. स्त्री.—१ कपड़े सीने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी, सिलाई।

२ कपड़े आदि की सिलाई का व्यवसाय या कार्य।

सिंवाड़, सिंवाड़ौ—देखो 'सीमाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—पाड़ पतसाह् घड़ सिंवाड़ां पौढियौ, देव मंडळ सरी नकौ दूजो।—सुजांणसिंघ कछवाहा रो गीत

सिंवाळ-सं. पु. [सं. शैवाल] १ बालों के लच्छों की तरह पानी पर पसरने, फैलने वाला एक घास।

उ०—सोहै अंगिया ओट, हरी रंग साज मैं। दुड़िया चकवा दोय सिंवाळ समाज मैं।—बां. दा.

२ फफूंदी।

रू. भे.—सिवाळ, सींवाळ।

सिंसपौ-सं. पु. [सं. शिशपा] १ शीशम का वृक्ष।

२ अशोक वृक्ष।

सिंसार—देखो 'संसार' (रू. भे.)

उ०—राजन मैं राजा वड़ौ, इंद्र तणौ अवतार। तिण ऊपर रज नाखियै, साराहै न सिंसार।—पंचदंडी री वारता

सिंसुमा-[सं. शिशुमा] श्रीकृष्ण की रानी सुकेशी का एक नामान्तर।

सिंसुमार-सं. पु. [सं. शिशुमार] एक प्रकार का जल जंतु जिसे सूंस भी कहते हैं।

सिंहंड—देखो 'सिहंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिंह-सं. पु. [सं.] १ राजा। (डि. नां. मा.)

२ हवा, पवन। (ना. डि. को.)

३ सिंह, शेर, बाघ।

वि.—१ योद्धा, वीर। (डि. नां. मा.)

२ श्वेत। * (डि. को.)

३ श्याम। * (डि. को.)

४ धुंधला। * (डि. को.)

५ देखो 'सिंघ' (रू. भे.)

रू. भे.—सींह, स्यंघ।

मह.—सिंहांण।

सिंहकेतु-सं. पु. [सं.] चेदि देश का एक राजकुमार जो महाभारत में कर्ण द्वारा मारा गया था।

सिंहकेसर-सं. पु.—सिंह की गर्दन के बाल।

सिंहगुहा-सं. स्त्री.—सिंह की गुफा।

उ०—सिहगुहा पइसी कवण थाइ निःसंक, सरप खांधि घालिउ कवण थाइ निरवधान।—व. स.

सिहगोस-स. पु.—एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष जिसकी उपमा घोड़े के कान को दी जाती है।

उ०- सिहगोस जिसा बेहूं कांन सही, पग पींड पघा सुद्रिढ पही।
—मा. वचनिका

सिहचंद्र-सं. पु. [सं.] पांचाल देश का एक राजा जो युधिष्ठिर का मित्र एवं समर्थक था।

सिहचलोनिसांणी-स. स्त्री.—निसांणी छन्द का एक भेद जिसमें 'प्रौढ़-गीत' का सिंहावलोकन किया गया हो।

वि. वि.—देखो 'प्रौढगीत'।

सिहचलो, सिहचालो-सं. पु.—डिंगल का एक गीत जिसके प्रथम चरण में १६, दूसरे में १३ तीसरे में १६ और चतुर्थ चरण में १३ मात्रा व तुकांत में रगण होता है।

सिहड—देखो सिहंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिहणी-सं. स्त्री.—१ आर्या या गाहा छंद का एक भेद जिसके चारों चरणों में ३ गुरु व ५१ लघु मात्रा से कुल ५७ मात्राएँ होती है।
२ सिंह या शेर की मादा।

रू. भे.—सिंही।

सिहदवार, सिहदुवार, सिहद्वार-सं. पु. [सं. सिंहद्वार] मुख्य द्वार, तोरण द्वार।

रू. भे.—सीहद्वार, सीहद्वारो।

सिहनखो—देखो 'वाघनखो'।

सिहनाद-सं. स्त्री [सं] १ सिंह की दहाड़, सिंह की गर्जना।

उ०- घ्रळिआळ गाज करंत नह, गयंद कपोळां गांन। सिहनाद मद मुकियो औ कोजे अनुमांन।—बां. दा.

२ वीरों की हुंकार।

सं. पु.—३ रावण का एक पुत्र। (रामायण)

रू. भे.—सिघनाद।

सिहनिकोलिऊ-सं. स्त्री.—एक प्रकार की तपस्या या प्रायश्चित।

उ०—मुकतावलि तपु साहू चउ थऊ ए सिहनिकोलिऊ ए। पांचमु आंबिल वरध मांनु तपु तपो ए अणुत्तरि सवि गिया ए।
—सालिभद्र सूरि

सिहफलंग-सं. पु.—डिंगल का एक गीत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं।

सिहरासि, सिहरासी-सं. स्त्री. [सं. सिंहराशि] ज्योतिष में बारह राशियों के अन्तर्गत एक राशि विशेष।

सिहल, सिहलदिव, सिहलदीव, सिहलद्वीप-सं. पु.—भारत के दक्षिण में स्थित एक प्राचीन जनपद या द्वीप जो मतान्तर से आधुनिक लंका ही माना जाता है।

उ०—१ सिहलदिव-उ हार, वावर कूलनी गजवडि........।
—व. स.

उ०—२ सिहल देस में गांधरव सेन नांव रो राजा हो। गांधरवसेन री फूटरी-फररी कंवरी पदमणी रै हीरांमण नांव रो मिठू हो जिको अेकर उड गयो।—चितरांम

रू. भे.—संघल, संघलदीप, संघलद्वीप, संघलि, संघलिदीप, संघलिद्वीप, संघली, संघलीदीप, संघलीद्वीप, सिंगल, सिंगलदीप, सिंगलद्वीप, सिंघलदीप, स्यंघल, स्यंघलदीप, स्यंघलद्वीप।

सिहळी-सं पु.—शृंगाल।

उ०—सादूळउ एक अनेक सिहळी, घूमर कियइ फेरतउ घंस।
—महादेव पारवती री वेलि

सिहलोक-सं पु. सिंह समुदाय।

उ०- म्रिग मणधर की मशाल मोढंतां, सिंहलोक ओपमा किसी। अच्छर जिसूं सकत रइ आगइ, जग अचरिज जोवतां जिसी।
—महादेव पारवती री वेलि

सिहवाहणी—देखो सिंघवाहणी' (रू भे.) (डि. को.)

सिहविक्रम, सिंहविक्रमांक-सं. पु. [सं. सिंहविक्रम] घोड़ा, अश्व।
(डि. को.)

सिहविक्रांत-१ सिंह की चाल।
२ घोड़ा।

सिहसत, सिंहस्थ—देखो 'सिंगसट' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पुरोहित अरज कीवी—मास अेक पछै सिंहसत लागसी सो महिनां तेरह रहसी तो पछै साहो करस्यां।
—पलक दरियाव री बात

सिंहसेन-सं पु.—पांडव पक्ष का एक योद्धा जिसका वध द्रोणाचार्य के हाथों से हुआ था।

सिंहांण—देखो 'सिंह' (मह; रू. भे.)

उ०—सिंहांण चढै करवी सहाय, राखजै पीठ नागांण राय।
—पा. प्र.

सिंहार—देखो 'संहार' (रू. भे) (डिं. को.)

सिंहारणी, सिंहारवौ—देखो 'संहारणी, संहारवौ' (रू. भे.)

उ०—बे कर जोडी करी बीनती, आसापुरी अवधारि। सांतल भणइ भांजि तू संकट, असुर सवे सिंहारि।—कां. दे. प्र.

सिंहारियोड़ौ—देखो 'संहारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिंहारियोडी)

सिंहालय-सं. पु. यौ. [सं. सिंह+आलय] सिंह की मांद, सिंह की गुफा।

उ०—तुरकन कै आगम तदन, कर गहि ऐंचै काळ। आयै जुत्थ पै जुत्थ मनु, सिंहालय सं'गाळ।—ला. रा.

सिंहावलोकण, सिंहावलोकन-सं. पु.—१ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना।

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं। (पिं. प्र.)

३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार चौकल सहित अन्त में सगण होता है। (र. ज. प्र.)

रू. भे.—सिंघविलोक।

सिंहासण, सिंहासन—सं. पु. [सं. सिंहासन] एक विशेष प्रकार का आसन जो राजाओं, महाराजाओं एवं बादशाहों के बैठने या देवमूर्तियों की स्थापना के लिए चौकी के आकार का बना होता है, जो बहुमूल्य रत्न, मणिकों आदि से सुशोभित होता है एवं इसके दोनों तरफ सिंह के मुख की आकृति बनी होती है।

उ०—१ आवियौ सिंहासण राज इंद्र, व्राजियौ सिंघासण क्रीत बींद।—सू. प्र.

उ०—२ देव सेज्जा सिंहासण जांणी रे, ज्योत ऊगां दह दिस भांणी रे।—जयवांणी

उ०—३ राजरिद्धि दीठी निरमली, राय तणू सिंहासन वली।—कां. दे. प्र.

२ योग के चौरासी आसनों में से एक, जिसमें वृषण के नीचे सींवनी के दांये भाग में बांये पैर की एड़ी रखना होता है। तत्पश्चात जांघ के ऊपर दोनों हाथों के पंजे की अंगुलियां फैलाकर छाती निकालकर, मुंह फाड, जिह्वा को अच्छी प्रकार से बाहर निकाल कर नासिका के अग्रभाग को देखता हुआ स्थिर होकर बैठा रहना पड़ता है। इससे शरीर में बल की वृद्धि होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

३ काम-शास्त्र में सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक।

४ देखो 'सिंहासनचक्र'।

रू. भे.—संघासण, सिंगासण, सिंघासण, सींगासण, सींघासण, स्यंगासण, स्यंगासन, स्यंघासण, स्यंघासन।

सिंहासनचक्र सं पु.—मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठों का एक चक्र जिसमें नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं। (फलित ज्योतिष)

सिंहिका—सं. स्त्री.—राहु की माता जो लंका के समीप समुद्र में रहती थी। लंका जाते समय हनुमान ने इसे मारा था।

रू. भे.—सिंघका।

सिंही—१ आर्या (गाथा) छंद का एक भेद विशेष जिसमें तीन गुरु ५१ लघु से कुल ५४ अक्षर तथा ५७ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

२ देखो सिंहणी' (रू. भे.)

सि—सं. पु. [सं. शि.] १ शिव, महादेव। २ शिखर, चोटी।

३ सुक, तोता।

४ सुख। (एका.)

५ शुभ।

६ सौभाग्य।

७ शील।

सं. स्त्री.—८ शिखा।

९ अग्नि।

१० आशीष।

११ स्वस्थता।

१२ शान्ति।

वि.—हितैषी, शुभचिंतक।

सिआर—देखो 'स्याळ' (रू. भे.)

सिआल, सिआलक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सिआळौ—देखो 'सियाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ तोही तद रिणमलां रै घरै इसड़ो वडावड हुतौ। लखा-यची सिआळै जैताजी री मेलीयौ पहरता।—राव मालदेव री बात

उ०—२ ऊंनाळौ आछौ नहीं, बरसाळौ महमंत। सिआळै मत संचरौ, कांमण बरजै कंत।—अग्यात

सिउं—देखो 'स्यूं' (रू. भे.)

उ०—१ वणि रुलतां अम्ह रहइं अजीय सत्र सिउं सिउं करेसिइं। राजरिद्धि अम्ह तणी लईय जेण हिव सिउं हरेसिउं।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ कूडउं बोलइ धरमपूतु, हथीयार छंडावइ। छेदिउं मस्तकु द्रस्टद्युमनि, क्रमु सिउं न करावइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ आज जीवी कहु सिउं कीजइ। ताहरइ नयरि गौ हरि लीजइ।—सालि सूरि

उ०—४ महासती सिउं कुणि हास्य कीजइ। तु जीविवा कीचक नीर दीजइ।—सालिसूरि

सिकंजौ—सं. पु. [फा. शिकंज:] १ किसी वस्तु को कसकर दबाने का एक यंत्र विशेष।

२ जिल्दसाजी का एक छोटा यंत्र जिसमें किताब या कागजों को दबाकर किनारे काटे जाते हैं या गोलाई निकाली जाती है।

३ प्राचीन काल का एक काष्ठ का यंत्र जिसमें अपराधियों के पैर कस कर यंत्रणा दी जाती थी।

४ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बंद बनाते हैं।

५ रुई की गांठ बांधते समय दबाव देने का यंत्र, पेच।

६ ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू।

सिकंदर—सं. पु. [फा.] विश्व प्रसिद्ध एक यूनानी सम्राट जो मक्दूनिया के राजा फैलकूस का बेटा था और अरस्तू का शिष्य था।

उ०—कलाकार नीतिग्य पंडित, बुद्ध सिकंदर नापड़ा। माटी रा अवतार मारा, खिड खंघेड़ै जापड़ा।—दसदेव

वि.—१ तीव्र, तेज।

२ महान्।

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—मुसाफरां फेर इस्टदेवां री सिवरण करयौ, पण आज सित्र-रण अक्ष्यारथ लखावण लागग्यौ, फेर भी हाल तगदीर सिकंदर

हो, मर ममंदर सिंवांमी लेयर मधरी पड़ग्यो।

—एक वीनणी दो वीन

सिक—देखो 'सिग' (रू. भे.)

उ०—नांनग सरवर भरियो नीको, फुर्क लोग पीवण दे फीको। टगराजी गादी री ठोको, फेर सिकां कर दीनो फीको।—ऊ. का.

सिकटासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे.)

उ०—ताड ब्रख ग्रमूल्या कांन्हड, सिकटासुर संघारया। नड कूवड नड भंजण कराव्या, ग्वड ग्वड लंबक मारया।—रुक्मणी मंगळ

सिकणौ, सिकबौ-क्रि अ.—१ रोटी आदि खाद्य पदार्थ का अंगारे या ताप पर पकना।

उ०—बापड़ै सा'ब रो कसूर यो हो नीं सोगरो व्है ई ग्रैड़ो खीरां मायं सिकयोड़ो कै सा'ब जै उण नै पलेट समझ गिया तो वणां रो घणो कसूर को हो नीं।—चितरांम

ज्यूं—रोटी सिकणी, चीणा सिकणा।

२ घी, तेल आदि डाल कर किसी पदार्थ का आंच पर भुनना।

ज्यूं—सॅतळ सिकणी, आटो सिकणो।

३ तेज धूप, आग या अत्यन्त गर्म वातावरण में गरमी पाना, तपना।

उ०—१ चमकंता डागल गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता।—ऊ. का.

उ०—२ बिरखा री घणी ग्रोळूं आवती तो घोड़ा माथै बैठ बिना मतलब कांकड़ मैं कुदड़का मारतो। रंजी सूं भखभूर व्हैतो। तावड़ा मैं सिकतो।—फुलवाड़ी

४ तपना, गर्म होना।

उ०—सिकती सिकता सेवळै, मार ग्रनोखी मार। तेल छिड़क ताती तजण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

सिकणहार, हारौ (हारी), सिकणियौ—वि०।

सिकिग्रोड़ौ, सिकियोड़ौ, सिकयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकीजणौ, सिकीजबौ—भाव वा०।

सिकता-सं. स्त्री. [सं.] १ बालू रेत धूलि।

(ग्र. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ चमकंता डागळ गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता।—ऊ. का.

उ०—२ सिकती सिकता सेवळै, मार ग्रनोखी मार। तेल छिड़क ताती तजण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

२ रेतीली भूमि।

सिकताव-सं. पु.—शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म वस्तु, गर्म पानी या बिजली द्वारा किया जाने वाला सेक।

उ०—लूण रा सिकताव सूं कोई बिखरतो नीं दीस्यो तो नेगड रा पांन एक लूट कर वांरो सेक करयो।—फुलवाड़ी

सिकदार-सं. पु. [फा. सिकदार] १ किसी क्षेत्र विशेष का पदाधिकारी।

वि. वि.—मुगलकाल में सिकदार, परगने के चार अधिकारियों में से एक प्रमुख अधिकारी होता था। वह परगने में सामान्य प्रशासन के लिए उत्तरदायी होता था। परगने में शान्ति एवं सुव्यवस्था बनाये रखने के अतिरिक्त काश्तकारों द्वारा लायी गयी मालगुजारी की रकम का भी ध्यान रखता था। खजाने के कर्मचारियों की निगरानी रखने के साथ साथ वह फौजदारी के मामले भी निपटाया करता था। किन्तु मजिस्ट्रेट के रूप में उसके अधिकार बहुत ही सीमित थे।

२ राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास राज्य की मुद्रा या मोहर रहती हो, टकसाल का अधिकारी।

३ कोतवाल।

उ०—१ गोयंद भगवांनो फतो, अै धांधल्ल उदार। रैणायर प्रोहित रिधू, चालदास सिकदार।—रा. रू.

उ०—२ पांच पचीसुं ग्रोळीया, छठो मन सिकदार। जनहरीया सुन्य सहर का, चेतन चोकीदार।—अनुभववांणी

रू. भे.—सिकादार, सीकदार।

सिकदारी-सं. स्त्री.—१ सिकदार का पद व कार्य।

उ०—घट मैं अजपा जाप जपेसां, धरिस्यां ध्यांन सदारी। प्याला भरि भरि पीया रांमरस, घरि आई सिकदारी —अनुभववांणी

२ एक प्रकार का कर विशेष।

रू. भे.—सीकदारी।

सिकम-सं. पु. [फा. शिकम] उदर, पेट। (बां. दा. ख्यात)

सिकमी-वि —१ पेट सम्बन्धी।

२ जन्म सम्बन्धी, पैदाईशी।

३ भीतरी, आंतरिक।

सिकमीकास्तकार-सं. पु. यौ. [फा. शिकमीकाश्तकार] अन्य काश्तकार का खेत जोतने वाला कृषक।

सिकर—देखो 'सिखर' (रू. भे.)

सिकरवार-सं. पु.—क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकरौ-सं. पु [फा. शिकरा] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

उ०—कुत्तो मिन्नियां नै मारतां विचार करै नी, मिन्नियां ऊंदरा नै मारतां विचार करै नीं, बाज अर सिकरा पंछियां नै मारतां विचार करै नीं।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सकरो।

सिकल—देखो 'सकल' (रू. भे)

उ०—१ रांम सूं विमुख गेवण रसा, धूम्रवांन मुख मैं धरै। तूं देख सिकल होकै तणी, क्यूंरि अकल हांणी करै।—ऊ. का.

उ०—२ सहज चाल संगत समझ, वांणी सिकल वणाव। इता प्रकारां अवस है, गोलां तणो जणाव।—बां. दा.

सिकलात-सं. पु.—बहुमूल्य ऊनी वस्त्र की बनी बनात।

उ०—१ लाल हरी सिकलात जिलह जाळियां अजोदां। रसां कसै

रेसमां, हेम रूपी हरि हींदां ।—सू. प्र.

उ०—ज्या मभि तखत नयंद जमातां, सबज जियां ऊपरि सिकलातां ।—सू. प्र.

उ०—३ इण आणंद निंद्रा तदि आवै, अरुण झीण सिकलाति उठावै ।—सू. प्र.

सिकळी—सं. स्त्री. [अ. सैकल] धारदार हथियारों को मांजने और उन पर सान चढाने की क्रिया ।

सिकळीगर, सिकळीघर—सं. पु – १ वह व्यक्ति जो धारदार हथियार को मांजने और उन पर सान चढाने का कार्य करता है ।

उ०—१ इयनूं साथ लेय सिकळीगर और मणियार वसै जठै जावो अो मांटी होसो तो हतियार लावसी वैर हुवै तो मणिहारी वस्तुवां जोयसी आ परीक्षा छै ।—रायधण री बात

उ०—२ काया लागो काट, सिकळीघर सुधरै नहीं । निरमळ होय निराट, भेंट्यां तुझ भागीरथी ।—प्रथ्वीराज राठौड़

२ हिन्दु लुहारों का एक भेद विशेष । (मा. म.)

(मि. खेरगिया)

रू. भे.—सकळीगर, सकळीघर ।

सिकसा—देखो 'सिक्षा' (रू. भे.) (डि. को.)

सिकस्त—सं. स्त्री. [फा. शिकस्त] हार, पराजय ।

उ०—१ तठै वेढ हुई, तिण मैं पठांणां री फौज सिकस्त पाय भाज नीसरी ।—द. दा.

उ०—२ मेर मींणा नै सिकस्त देतां ही पाछै सूं प्रथ्वी री पुड़ झुकावतौ वडै वेग आयौ ।—वं. भा.

सिकादार—देखो 'सिकदार' (रू. भे.)

सिकायत—सं. स्त्री [अ. शिकायत] १ अपराधपूर्ण या अनियमित कार्यों की रोकथाम हेतु सम्बन्धित विभाग या अधिकारी के पास भेजी जाने वाली सूचना, कम्पलेण्ट, रिपोर्ट ।

उ०—राजा कांन रा काचा हुवै है । वै सिकायत री तह मैं कदे ई कोनी जावै ।—नैणसी री साको

२ उद्दण्ड, अन्याय या शरारत के विरुद्ध उठाई जाने वाली आवाज आपत्ति, असंतोष ।

उ०—कोई पण बात री हद व्हिया करै । सेवट सूरज री सिकायत प्रिंसीपल कनैं अर उण रा बाप कनै पूगी । प्रिंसीपल री तरफ सूं उणनैं ठबक मिळी अर सेठजी कांनी सूं म्हनैं कागज मिळ्यौ ।
—अमर चूंनड़ी

३ चुगली ।

उ०—आप तौ उणनैं दीवांना बणायौ है अर वौ जिण हांडी मैं खावै उणनै इज फोड़ै । मारवाड सूं नित रोज आपरी साची झूठी सिकायतां दिल्ली पूगावै ।—अमर चूंनड़ी

४ निंदा, बुराई ।

५ उपालंभ, उलाहना ।

६ शरीर में उत्पन्न होने वाली कोई बीमारी या उसका कष्ट ।

सिकार—सं. पु. [फा. शिकार] १ किसी पशु-पक्षी आदि को मारने का कार्य, आखेट ।

उ०—१ समाजोग री बात कै एक दिन उठारो राजा सिकार नै निकळ्यौ । आगूंणा भाखर री ढाळ मैं झाड़ी आयोड़ी ।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ लावां तीतर लार, कर हाका भागे किता । सिंघां तणी सिकार, रमणी मुसकल राजिया ।—किरपारांम

उ०—३ म्हांरो मारूड़ो रमै छै सिकार ।—रसीलै राज री गीत

पर्याय.—आखेट, आछोटण, पापकरण, म्रगया ।

क्रि. प्र.—आणी, करणी, खेलणी, फंसणी, रमणी, होणी ।

२ उक्त प्रकार से मारा हुआ जानवर या पक्षी ।

३ मांसाहार ।

मुहा.—सिकार व्हेणी=अधिकार में होना, प्रेम में फंसना ।

रू. भे.—सकार ।

सिकारखांनौ—सं. पु.—देशी राज्यों का वह विभाग जो शिकार किये जाने वाले जानवरों की रक्षा एवं देख-भाल का कार्य करता था ।

सिकारगाह—सं. स्त्री.—वह स्थान जहाँ शिकार किया या खेला जाता है ।

सिकारणौ, सिकारबौ—क्रि. स.—स्वीकार करना । (हूँडी)

सिकारपुरी—सं. पु.—१ घोड़ों की एक जाति विशेष ।

२ इस जाति या नस्ल का घोड़ा ।

सिकारबंद—सं. पु. [फा. शिकारबंद] घोड़े की दुम के पास चारजामें के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बांधने के लिए लगाया जाने वाला तस्मा ।

सिकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—स्वीकारा हुआ ।

(स्त्री. सिकारियोड़ी)

सिकारी—वि. [फा. शिकारी] शिकार करने वाला, आहेरी, आखेटक ।

उ०—एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनैं झाड़ी रै मांयनै घुसिया तौ घुमतां पांण डाकी वांनैं कागद रै ज्यूं चरड़ करता चीर नै थूंड सूं वारै उछाळ दिया ।—अमर चूंनड़ी

उ०—२ नाहर 'करन' तणो नर नाहर, अवनां गजां सिकारी जाहर ।—रा. रू.

सं. पु.—१ वधिक, बहेलिया ।

२ शिकार करने वाला व्यक्ति ।

सं. स्त्री.—३ एक प्रकार की तलवार विशेष ।

रू. भे.—सकारी ।

सिकाल—सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा जिसका अगला दाहिना तथा पिछला बांया पैर सफेद होता है ।

सिकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ अंगारे या ताप पर पका हुआ । (रोटी-बना) २ घी, तेल आदि डाल कर भुना हुआ. ३. तेज धूप या

आग में तपाया हुवा, तपा हुआ. ४ तपा हुआ, गर्म हुवा हुआ।

(स्त्री सिकियोड़ी)

सिकिरि—देखो 'सिगर' (रू. भे.)

उ०—चमर चिंध सिकिरि झमालु, गयणंगणु छायउ। सिविदिवि नंदणु दंसणत्थु दस दिसि जणु धायउ।—जयसिंह सूरि

सिकुड़ण—सं. स्त्री.—१ संकोच, आकुंचन।

२ खिन्न-चित्त या उदास होने की क्रिया या भाव।

३ कम होने या घटने की क्रिया या भाव, संकुचन।

४ सिकन, सिलवट।

५ एकत्रीकरण।

रू. भे.—संकुड़ण।

सिकुड़णौ, सिकुड़बौ—क्रि. अ.—१ संकुचित होना, तंग होना, छोटा होना।

२ कम होना, घटना।

३ संकोचयुक्त होना, शर्माना।

४ खिन्न-चित्त या उदास होना।

५ सिकन पड़ना, सिलवट पड़ना।

६ एकत्र होना।

७ सिमटना।

सिकुड़णहार, हारौ (हारी), सिकुड़णियौ—वि०।

सिकुड़िओड़ौ, सिकुड़ियोड़ौ, सिकुड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकुड़ीजणौ, सिकुड़ीजबौ—भाव वा०।

संकुड़णौ, संकुड़बौ, संकुडणौ, संकुडबौ, सुकड़णौ सुकड़बौ, सुकुड़णौ, सुकुड़बौ—रू० भे०।

सिकुड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकुचित हुवा हुआ, तंग हुवा हुआ. २ कम हुवा हुआ, घटा हुआ. ३ संकुचित या शर्माया हुआ. ४ खिन्न या उदास. ५ सिकन या सिलवट पड़ा हुआ. ६ एकत्र हुवा हुआ. ७ सिमटा हुआ।

(स्त्री. सिकुड़ियोड़ी)

सिकोड़णौ, सिकोड़बौ—क्रि. स.—१ संकुचित करना, तंग करना, छोटा करना।

२ कम करना, घटाना।

३ संकोच कराना, शर्म कराना।

४ खिन्न या उदास करना।

५ सिकन या सिलवट पटकना।

६ एकत्र करना।

७ समेटना।

सिकोड़णहार, हारौ (हारी), सिकोड़णियौ—वि०।

सिकोड़िओड़ौ, सिकोड़ियोड़ौ, सिकोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकोड़ीजणौ, सिकोड़ीजबौ—कर्म वा०।

सिकोड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संकुचित किया हुआ, तंग किया हुआ, छोटा किया हुआ. २ कम किया हुआ, घटाया हुआ. ३ संकोच कराया हुआ. ४ खिन्न या उदास किया हुआ. ५ सिकन या सिलवट पटका हुआ. ६ एकत्र किया हुआ. ७ समेटा हुआ।

(स्त्री. सिकोड़ियोड़ी)

सिकोतरी—सं. स्त्री.—१ पिशाचिनी, चुड़ैल।

उ०—सूर वीरां रा काळजा वास्तै डाकणी सिकोतरी आवै छै। जिकै राजहंस हुवै हुवै रिझावै छै।—पत्नां

२ दूती।

३ दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—जिकै ठौड़ सूं कूदियौ हुंतौ, तिकण ठोड रौ नांम पाखंड कहीजै छै। पछै गयौ। पछै महीपै नूं सिकोतरी रौ वर हुवौ।

—नैणसी

सिकोरौ—सं. पु.—मिट्टी का बना कटोरानुमा पात्र विशेष।

उ०—पंछी जळ पय पियै, ठींगळां ठंडी कोरां। वासै वाड़ी विकै, दूध अर साग सिकोरां।—दसदेव

सिको—सं. पु.—[अ. सक्का] १ मशक से पानी भरने का व्यवसाय करने वाला मुसलमान, भिश्ती।

उ०—१ तरै गुढा रा लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घांची, मोची, सिको महेस जी सं गिलो करै जै बीजो साथ रावजी रा तो घांची हीडागर कस करै।—राव चंद्रसेन री वात

उ०—२ हमें मूळवौ रोजीनां पांणी पावै सिको हुय, रोज रो काढण रो इलाज करै पण दाव लागै नहीं।

—मूळवै सांगावत री वात

२ देखो 'पक्को' (रू. भे.)

उ०—एक सिको इक साल को, घड़ीयो एकण घाट। हूरीया कहि छै पारखु, जैसो पेट'र याट।—अनुभववांणी

३ देखो 'सको' (रू. भे.)

उ०—सुर जेठ अनै संकर सिको, अहि अमर मांनव डरा। परमेस निभो थारी पहुंचि, परा परा सिगळां परा।—पी. ग्रं.

सिक्कावबात—सं. स्त्री.—राजाओं द्वारा महत्वपूर्ण पट्टों, परवानों आदि पर लगाई जाने वाली मुहर, मुद्रा।

सिक्को—सं. पु. [अ. सिक्कः] १ निर्दिष्ट मूल्य की कोई धातु मुद्रा जो वस्तुओं के क्रय-विक्रय या लेन देन में विनिमय के साधन के रूप में काम आती हो।

२ किसी व्यक्ति का रौब या प्रभाव।

मुहा.—सिक्को जमणौ=प्रभाव जमना, असर होना, रौब पड़ना।

३ मुहर, छाप।

५ देखो 'सिकौ' (रू. भे.)

उ०—पखाळां भरै जम्म भैंसौ सप्राजै, सुरां राव सिक्को छिड़क्काव साजै।—सू. प्र.

रू. भे.—सिको।

६ सत्यनामी साधुओं में एक साथ पंक्तिबद्ध करने के बाद उठने का सम्बोधन।

सिक्ख—१ देखो 'सिख' (रू. भे.)

२ देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

उ०—तिण अवसर तिण कालौ जी, वड सिक्ख विसालौ जी।

—जयवांणी

३ देखो 'सीख' (रू. भे.)

उ०—दुज्जोहण घर घरणि सांमि सिक्ख रडतीय मग्गइ। धम्मपुत्र वयणेण पुरा इंदपुत्तु तिणि मग्गि लग्गई।—सालिभद्र सूरि

सिक्षक-सं. पु. [सं. शिक्षकः] १ शिक्षा देने वाला, पढ़ाने का कार्य करने वाला, गुरु, अध्यापक।

उ०—सामरथ स्रेस्ठ, जग सकळ जेस्ठ। आ उदय अस्त, सिक्षक समस्त।—ऊ. का.

२ कुमार कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

सिक्षण-सं. स्त्री. [सं. शिक्षण] शिक्षा देने का कार्य, तालीम।

सिक्षा-सं. स्त्री. [सं. शिक्षा] १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया।

२ गुरु के पास विद्याभ्यास या विद्याध्ययन।

उ०—म्हनें गुणीस करोड़ भूखा-नागा मिनख सतावण लागग्या, जिका विना रोटी-रोजी, बिना घरबार, बिना सिक्षा रोज दिनुग्यां उठै अर रात नैं भूखै पेट सोवण री जतन करै है।—तिरसकू

३ उपदेश, सलाह।

क्रि. प्र.—दैणी, लैणी, मिळणी, पावणी।

४ छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण या विवेचन है।

५ किसी अनुचित कार्य का बुरा नतीजा, दण्ड, सबक।

रू. भे.—सिकस, सिख्या, सिच्छ, सिच्छा।

सिक्षागुरु-सं. पु. यौ. [सं. शिक्षागुरु] विद्या पढ़ाने वाला गुरु।

सिक्षापद-सं. पु. [सं. शिक्षापद] १ उपदेश।

२ विनयपिटक का एक प्रकरण (बौद्ध)।

सिक्षारथी-सं. पु. [सं. शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति, विद्यार्थी।

सिक्षालय-[सं. शिक्षालय] वह स्थान जहां शिक्षा दी जाती हो, विद्यालय।

सिक्षाविभाग-सं. पु. यौ. [सं. शिक्षाविभाग] विद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक कार्यों की व्यवस्था एवं नियंत्रण रखने वाला सरकारी विभाग।

सिक्षित-वि. [सं. शिक्षित] १ विद्वान, पंडित।

२ चतुर, दक्ष।

३ साक्षर।

रू. भे.—सिच्छित।

सिखंड-सं. पु. [सं. शिखंड] १ मोर की पूंछ।

२ चोटी, शिखा।

३ मुकुट।

उ०—अखंड ब्रह्मचरज कै सिखंड खंड अज्ज कै। सधीर ही हमीर सै गंभीर भीर गज्जतै।—ऊ. का.

४ देखो 'सिखंडी' (रू. भे.)

सिखंडणी, सिखंडनी, सिखंडिनी—देखो 'सिखंडी' (रू. भे.)

सिखंडी-सं. पु. [सं. शिखंडिन्] १ मोर, मयूर।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

२ मुर्गा।

३ बांण, तीर।

४ पांचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र जो पहले 'शिखंडिनी' नामक कन्या के रूप में उत्पन्न हुआ था, तत्पश्चात शिवजी की कृपा से उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

उ०—सीसु सिखंडी तणउं तांमु छेदीउ छलु साधीउ। पाय पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि

वि. वि.—देखो 'अंबा'।

५ विष्णु का एक नामान्तर।

६ शिव।

७ एक शिवावतार जो हिमालय पर्वत के शिखंडिन् नामक शिखर पर हुआ था।

८ कृष्ण का एक नामान्तर।

९ यतीश्वर।

१० स्वामि कार्त्तिकेय। (ह. नां. मा.)

११ राम की सेना का एक बंदर।

सं. स्त्री.—१२ मयूर की पुच्छ।

१३ पीली जुही।

वि.—१ शिखा वाला, कलंगीदार।

२ नपुंसक।

३ कायर, डरपोक।

सिख-सं. पु. [सं. शिष्य] १ गुरु नानक व गोविन्दसिंह आदि दश गुरुओं का सम्प्रदाय एवं इस सम्प्रदाय का अनुयायी, पंजाबी-सरदार।

[सं. शिखिन्] २ मस्तक, सिर।

३ शेर, सिंह। (ना. डिं. को.)

सं. स्त्री.—४ पतंग। (अनेका)

५ देखो 'सिखा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुख सिख संधि तिलक रतन मैं मंडित, गयौ जु हुंतौ पूठि गळि।—वेलि

उ०—२ सिख दीप सवण मुख बीज ससि, चूर स्यांम मूरति

...म । मुगराज चाल उर दाल सम, पतंग याल मुखमल पसम ।

—सू. प्र.

६ देखो 'सीग' (रू. भे.)

उ०—सिंग दिढं मुनिराया जी ।—धरम पत्र

७ देखो 'सिख' (रू. भे.)

उ०—कपट न भावे भगति में, यु आंखिन में तुस । हरीया सिख सतगुरु बिना, हुवो बिन अंकुस ।—अनुभववांणी

सिखंडी—सं. पु.—एक जाति विशेष का घोड़ा । (शा. हो.)

सिखजनम—सं. पु. यौ. [सं. शिखा-जन्म] १ दीपक । (अ. मा.)

२ ज्योति, प्रकाश ।

सिखदीपन—सं. पु. यौ.—केसर । (ह. नां. मा.)

सिखनख—देखो 'नखसिख' ।

उ०—भामणि स्त्री व्रजराज घणां हित सूं भजे । सिखनख वरणूं जास क बुद्धि समापजे ।—बां दा.

सिखर—सं. पु. [सं. शिखर] १ पहाड़ की चोटी या सब से ऊपरी भाग, शृंग । (डि. को.)

उ०—काळा निमंगळ किता वरण गुण दोस विचारक । पर्व सिखर सम गुरत, किता गुण औगुण कारक ।—रा. रू.

पर्याय.—कूट, सानू, स्रिंग ।

२ ऊपरी भाग, ऊंचा स्थान ।

उ०—दिस मार खुरसांण तणा दळ, वाघै जांण प्रळै चा वद्दळ । घण, तर, पळां, सिखर सुं तूटै, फौजां धमां परव्वत फूटै ।

—रा. रू.

३ किसी प्रासाद या मंदिर आदि का सब से ऊंचा भाग, गुम्बद या कलश ।

उ०—मंदिरे गोख सु पदमराग मैं, सिखर सिखि रमै मंदिर सिर ।

—वेलि

४ मण्डप, गुम्बद ।

५ कंगुरा, कलश ।

६ वृक्ष की फुनगी ।

७ चुटिया, शिखा ।

८ तलवार की धार, बाढ़ ।

९ सिरा, अग्रभाग, नोक ।

१० बगल ।

११ रोमांच ।

१२ चुन्नी की तरह का एक रत्न ।

१३ ध्वजा या स्तूप ।

१४ प्राचीन काल का एक अस्त्र ।

१५ जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ ।

१६ तांत्रिक पूजन में बनाई जाने वाली अंगुलियों की एक मुद्रा ।

१७ गोश । (अनेका.)

वि.—शिर पर्यन्त, ऊंचा, ऊपर ।

उ०—मन पौंणा मिळ लियो लाटो, सिखर आई साख । ग्यांन की भरि गूण गांही, लदै वाळद लाख ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सखर, सखरउ, सक्खर, सिखिर ।

सिखरण, सिखरणी—सं. स्त्री. [सं. शिखरिणी] १ दही व चीनी के योग से बनाया हुआ एक गाढ़ा पेय पदार्थ जिसमें केसर, कपूर, मेवे आदि भी डाले जाते हैं । मतान्तर से—भैंस या गाय के दही को मथ कर उसमें मिश्री इलायची, काली मिर्च और भीमसेनी कपूर मिलाकर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ । (अमरत सागर)

उ०—१ तठा पछै सिखरण रै पगां दही बाधौ थो तेरी गळणी खुलै छै । मांहे बूरो घात, अबोतरै रूमाल सूं छांणजै छै. मसाला मांहे लांग इलायची मिरच घातजै छै । इण भांत रो सिखरण कर माटकी भरीजै छै ।—रा सा. सं.

उ०—२ जीमण सिखरण भाव जिमावै, मेवा नूंत अनेक मिळावै ।

—सू. प्र.

उ०—३ बदांमी साबूनी सरेसं जुड़ी, भांति भांति सिखरणी भांति भाति पुड़ी ।—सू. प्र.

२ देखो 'सिखरिणी' (रू. भे.)

रू. भे.—सखरण ।

सिखरबंद, सिखरबंध—सं. पु. [सं. शिखरबंध] वह मन्दिर या देवालय जिसके ऊपर शिखर बना हुआ हो ।

उ०—बोहरै संतन १ देहुरो सिखरबंध स्रीठाकुरां रो करायो नै बावड़ी १ बंधाई छै ।—नैणसी

वि.—शिखर वाला, शिखरदार ।

सिखरवासणी, सिखरवासिणी—सं. स्त्री. [सं. शिखरवासिनी] पर्वत पर निवास करने वाली दुर्गा या पार्वती ।

वि. स्त्री.—पर्वत वासिनी ।

सिखरा—सं. स्त्री. [सं. शिखरा] १ मरोड़ फली ।

२ विश्वामित्र द्वारा दी हुई राम को एक गदा विशेष ।

सिखराळ, सिखराळो—वि. [सं. शिखरिन् या शिखर+आलुच्] १ शिखर वाला, शृंगवाला, चोटी वाला ।

उ०—प्रळै काळ का पावस, आतसूं का उक भुरजाळ । सिखराळ दुरंगूं के भड़, भिड़ज भूक काळ ।—सू. प्र.

२ शिखा वाला, किलंगीदार ।

३ नुकीला, तीक्ष्ण ।

४ अग्रगण्य, अग्रणी ।

उ०—सो जगरांम विजावत सारै, मार लियो पुर सहर मझारै । सांदण वद चवदस सिखराळै, गह जवनां भागो गुणच ळै ।

—रा. रू.

५ शिरोमणि, श्रेष्ठ ।

६ वीर, बहादुर ।

७ दीर्घ, बड़ा। (अ. मा.)

सं. पु.—१ गढ, दुर्ग।

२ पहाड़, पर्वत।

३ वृक्ष, पेड़।

४ शिखरी नामक पक्षी।

५ मुर्गा।

६ मोर, मयूर।

रू. भे.—सखराळी।

सिखरावत-सं. पु.—गहलोत वंशीय क्षत्रियों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

सिखरिणी-सं. स्त्री. [सं. शिखरिणी] १ उत्तम स्त्री।

२ रोमावली।

३ सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके छठे व ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है।

सिखरी-सं. पु. [सं. शिखरिन्] १ पर्वत, पहाड़।

(अ. मा; डि. को; नां. मा.)

२ वृक्ष, पेड़। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

३ दुर्ग, किला।

सं. स्त्री.—४ एक राग विशेष। (कां. दे. प्र.)

रू. भे.—सखरी।

सिखरीस-सं. पु. यौ. [सं. शिखर+ईश] पर्वत, पहाड़। (ह. नां. मा.)

सिखवांन-सं. स्त्री. [सं. शिखावती] १ द्रोपदी। (अ. मा.)

[सं. शिखावत्] २ अग्नि, आग। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सिखवाळ-सं. पु.—ब्राह्मणों का एक वर्ग विशेष। (मा. म.)

सिखसार-सं. स्त्री. [सं. शिखासार] अग्नि, आग। (अ. मा.)

सिखा-सं. स्त्री. [सं. शिखा] १ दीपक की लौ, ज्योति।

२ प्रकाश की किरण।

३ अग्नि, आग। (अ. मा.)

४ सिर की चोटी, शिखा।

५ मोर, मुर्गा आदि पक्षियों के सिर की किलंगी।

६ वेणी।

७ डाली, टहनी, शाखा। (डि. को.)

८ शस्त्र की धार या बाढ़।

९ वस्त्र की किनार।

१० केसर (अ. मा.)

११ तुलसी।

१२ मूर्वा, मरोड़ फली।

१३ जटामासी।

१४ बाल छड़।

१५ बच।

१६ शिफा।

सं. पु.—१७ दीपक। (नां. मा.)

१८ मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

१९ शिखर, शृंग।

२० मित्र, दोस्त। (अनेका.)

२१ अंगारा।

२२ किसी वस्तु का नुकीला सिरा या छोर।

२३ चूड़ाकर्ण के समय मस्तक के बीच में छोड़ा जाने वाला केशों का गुच्छा, जो हिन्दुओं का जातीय व धार्मिक चिन्ह माना जाता है।

२४ एक वर्ण वृत्त जिसके विषम पदों में २८ लघु मात्राऐं और अंत में एक गुरु होता है तथा सम पदों में ३० लघु मात्राऐं और अंत में एक गुरु होता है।

वि —१ प्रधान, मुख्य।

२ रक्त वर्ण, लाल। * (डि. को.)

रू. भे.—सिख, सीखा।

सिखाई-सं. स्त्री.—१ शिक्षा देने की क्रिया या भाव।

२ शिक्षक का पारिश्रमिक।

सिखाओजस-सं. पु. [शिखा+उज्ज्वल] दीपक। (ह. नां. मा.)

सिखाजोत-सं. स्त्री. [सं. शिखाज्योति] १ दीपक। (अ. मा.)

२ ज्योति, ज्वाला की लौ।

सिखाणौ, सिखाबौ-क्रि. स. ['सीखणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ किसी प्रकार की विद्या, शिक्षा, कला या कार्य के लिये शिक्षित करना, प्रशिक्षित करना, सिखाना।

उ०—इम कही नै समभाय स्वांमीजी नै मांही लै जाय नै वहिरायौ ए कला विण भायां नै स्वांमीजी सिखाई दिसै।—भि. द्र.

२ नियमित अभ्यास कराना।

३ कंठस्थ कराना, याद कराना, रटाना।

उ०—डावड़ी नैं तौ जवाब सिखायोड़ौ इज हौ।—फुलवाड़ी

ज्यूं—औ गीत मैं खेतजी नै एक दिन मैं सिखायौ।

४ किसी को अपने उद्देश्य साधन के लिये अपने पक्ष की बात समझा कर तैयार करना।

उ०—राजा रौ सिखायौ कसाई वांनै पटाया।—फुलवाड़ी

सिखाणहार, हारौ (हारी), सिखाणियौ—वि०।

सिखायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिखाईजणौ, सिखाईजबौ—कर्म वा०।

सिखावणौ, सिखावबौ—रू० भे०।

सिखाधर-सं. पु. यौ. [सं. शिखाधर] १ मयूर, मोर।

२ हिन्दू।

३ ब्राह्मण।

३ मुर्गा।

सिखाबंधण-सं. पु. यौ.—सिर के बालों को मिलाकर बांधने की क्रिया,

चोटी गूंदना।

सिखावळ-सं. पु. [सं. शिखावलः] मोर, मयूर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिखावळो।

सिखामांण-सं. पु.—विरोचन। (अनेका.)

सिखामण-सं. स्त्री.—शिक्षा, उपदेश।

उ०—१ कैसी समण आयां पछै, इण नै किसी सिखामण दीध रे लाल।—जयवांणी

उ०—२ साधु देवै सखरी सिखामण तब तूं तिण सूं खीजै रे।
—जयवांणी

रू. भे.—सिखावण, सिखावन।

सिखायोड़ो-भू. का. कृ.—१ सिखाया हुआ, शिक्षित किया हुआ, प्रशिक्षित. २ कंठस्थ कराया हुआ, रटाया हुआ, याद कराया हुआ. ३ नियमित अभ्यास कराया हुआ. ४ समझाया हुआ, समझा कर तैयार किया हुआ।

(स्त्री. सिखायोड़ी)

सिखावण—देखो 'सिखामण' (रू. भे.)

उ०—१ वां रांणियां री बळिहारी जांण (गरभ) मैं हीज वां बाळकां नै कांई तरै सिखावण देवै है सो दाई रा हाथ री नाळो री छुरी नै साव (जनमतौ) हीज बाळक झपटै।—वी. स. टी.

उ०—२ हिवै रांणी सिखावण दै इसी, घणो पराक्रम फोड़ तप कीजो रे।—जयवांणी

सिखावणो, सिखावबो—देखो 'सिखाणो, सिखावो' (रू. भे.)

उ०—रांम-लखण, प्रह्लाद ध्रू री, स्रवण, बुद्ध, मा'वीर री। वर प्रताप सिवा गांधी गुण, सीख सिखावो धीर री।—टावर-सईकड़ो

सिखावत-सं. स्त्री. [सं. शिखावत] १ आग, अग्नि। (ह. नां. मा.)

२ देखो 'सिखामण' (रू. भे.)

सिखावळो—देखो 'सिखावळ' (रू. भे.) (अ. मा; नां. मा.)

सिखाधांन-सं. स्त्री. [सं. शिखिन्] १ आग, अग्नि।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ द्रोपदी। (अ. मा.)

सं. पु.—३ युधिष्ठिर की सभा में विराजने वाले एक ऋषि।

वि.—जिसके शिखा हो, शिखा वाला।

सिखि-सं. पु. [सं. शिखिन्] १ मोर, मयूर। (अनेका.)

उ०—मंदिरै गोख सु पदमराग मैं, सिखरि सिखि रमै मंदिर सिर।—वेलि

२ अग्नि।

३ कामदेव।

४ तीन की संख्या।

रू. भे.—सीखी।

सिखिध्वज-सं. पु. [सं. शिखिध्वजः] १ धूंआ, धूम।

२ कार्तिकेय।

३ वह जिस पर अग्नि या मोर का चिन्ह बना हो।

४ मयूरध्वज राजा का एक नामान्तर।

५ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सिखिर, सिखिरि, सिखिरी-सं. पु. [सं. शिखरिन्] पर्वत, पहाड़।
(डि. नां. मा.)

सिखिवाह, सिखिवाहण(न)-सं. पु. [सं. शिखिवाहन] स्वामि कार्तिकेय। (डि. को.)

सिखी-सं. पु. [सं. शिखिन्] १ घोड़ा, अश्व।

२ मुर्गा।

३ दीपक।

४ पर्वत।

५ वृक्ष।

६ ब्राह्मण।

७ वाण।

८ जटाधारी साधु।

९ आग, अग्नि।

१० मोर, मयूर। (अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—कीध वैरि वढ कंत री, सह हसमां सेलोट। तूल भुंड जिम सिखी तुर, दपट उडावै दोट।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सीखी।

सिख्खर—देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—सूंवो सिख्खर दिन आवैं जद कठै ही जेळ मैं पूरो सूरज दीखै।—दसदोख

सिख्या—देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ कीरत कुळ कालेज, देज आयूणी सिख्या। लीला तितली रूप, ओखदां मांगै भिख्या।—नारी-सईकड़ो

उ०—२ नारदु पहुतउ सिख्या देवि, पंडव बइठा घ्यांनु धरेवि।
—सालिभद्र सूरि

सिग-सं. पु. [सं. शिखर] १ किसी पात्र में कोई वस्तु किनारों से ऊपर उठाकर शिखर के आकार की भरने की क्रिया या ढंग।

मुहा.—सिग चाढणो=पूर्ण करना, ऊपर उठाना।

२ उक्त प्रकार का भराव।

३ ऊपर उठने की क्रिया।

उ०—सूवा रे दिवलो बळै नै लोळां सिग चढै। मोतीड़ां री लागी लड़ाभूंम, सैंया ए उखरड़ी बधावो म्हांरै आवियो।—लो. गी.

४ शिखर।

उ०—परठीत हुआ सिग चढ तीयइ प्रव, लागी सद गूंजीया जग। ईसर किया कवीसुर ईसर, उमयावर दई तइ उदग।
—महादेव पारवती री वेलि

वि.—पूर्ण भरा हुआ।

रू. भे.—सिग्ग।

सिगड़ि, सिगड़ी-सं. स्त्री. [सं. शकटी] १ भोजनादि बनाने के लिए मिट्टी या लोहे का बना चूल्हा, अंगीठी। (डिं. को.)

उ०—दारू री फ़ैल घणी सुहायी, रोसनी आतसबाजी री नूर, जहूर निजर आयौ। सूळां री गजक प्यालां री छल पायबौ, सिगड़ी री तप फुलेल रौ मुसलायबौ।—पनां

रू. भे.—सगड़ी।

सिगरत, सिगरी-वि. [सं. सकल] १ सब, समस्त।

उ०—म्हैं थांनै कागद श्रो गाढा मारू मोकळया आज्यौ सांवणिया री तीज। कंवर बाई रा ढोला नैं कहज्यौ जी सुसरा जी रै आवै सिगरत पांवणा।—लो. गी.

२ सकुटुम्ब, सपरिवार।

सिगरेट-सं. स्त्री.—तम्बाकू के बुरादे को कागज की छोटी नलिका में भर कर तैयार की गई धूम्र-दण्डिका।

सिगळइ, सिगळई, सिगळउ, सिगलउ-क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

२ देखो 'सगळौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेवक नइ समरथउ छइ सादा, जग सिगलउ जंपइ जस-वादा।—स. कु.

उ०—२ कहइ सती प्रभू रूप प्रगट करि, सिगळउ ही देखइ ससार।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ हेमाचळ खेलता हसंता, हसत दियउ मिना रइ हाथ। टूंक कोइ आवी टूंका, सिगळइ लिवइ अंतेवर साथ।

—महादेव पारवती री वेलि

सिगळै सिगळैय—देखो 'सगळै' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत रु. १५०००) रजपूत मुसलमांन खालसै रा सिगळै देस रा आवै।—नैणसी

उ०—२ विजमल तुझ दीठे वीसरिया, सयळ तणां भूपति सिग-ळैय।—ईसरदास बारहठ

उ०—३ ताहरां बीजाणंद ईडर बागड़, चांपानेर कछ सिगळै ही फिरियौ।—सयणी री वात

सिगळौ—देखो 'सगळौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा कहै—खबर करौ जु कुंण मरद हुतौ। ताहरां सिगळां नुं खबर हुती जु सीह एक हररांम चहवांण मारीयौ हुतौ।—देवजी बगड़ावत री बात

उ०—२ राव केल्हण पूगळ विकूपुर वरसलपुर मीटासर हापासर सिगळी आ धरती भोगवतौ। पछै राव सेखौ हुवौ तिण रै पेट धरती इण भांत वंटाणी।—नैणसी

उ०—३ देव कहै सिगळा दियौ, ईसाणंद आसीस। किलंग न जीतौ काविरिस, जुध जीतौ जगदीस।—पी. ग्रं.

(स्त्री. सिगळी)

सिगाळौ—देखो 'सिघाळौ' (रू. भे.)

सिग्ग—देखो 'सिग' (रू. भे.)

उ०—पटवारी जी री ब्याह सिग्ग चल्यौ, मूळी पटवारण वणी।

—दसदोख

सिघर—देखो 'सीघ्र' (रू. भे.)

उ०—महाराज तणी चिंता मिटै, विध इण आज विचारियां। सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकंवर पाधारियां।—रा. रू.

सिघळौ—देखो 'सगळौ' (रू. भे.)

उ०—सिघळी ही सेना सहित। इसा स्रीक्रस्णजी आया देखि ऊपरि पुहप व्रस्टि होय छै।—वेलि टी.

(स्त्री. सिघळी)

सिघाळ, सिघाळौ—देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ भाटी जोधां मुहर भुजाळौ, 'सकतौ' 'भगवानोत' सिघाळौ।—रा. रू.

उ०—२ सूरां 'उरजण' हरां सिघाळौ, पिड़ सूजो जादम प्रचाळौ।

—रा. रू.

उ०—३ चांपा करण मुदै कळ चाळा, साथ वळै राठौड़ सिघाळा।

—रा. रू.

सिघ्र—देखो 'सीघ्र'।

सिघ्रधाव-सं. पु.—हरिन। (अ. मा.)

वि.—तेज धावक, तीव्र गति वाला।

सिड़-सं. स्त्री.—१ सनक, पागलपन।

२ धुन।

३ सड़ने की क्रिया या भाव, सड़ांध।

सिड़णौ, सिड़बौ—देखो 'सड़णौ, सड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोग हटावण सधौ, सोग मैं पड़िया सिड़स्यौ। लोक रीत सूं लधौ, लोक सूं चिड़स्यौ लड़स्यौ।—ऊ. का.

उ०—२ अमल री आस मांही उळझ, समझदार निसदिन सिड़ौ। आ बात अजब उलटी अकल, बिन बिगड़्यां क्यूं बीगड़ौ।

—ऊ. का.

उ०—३ म्हारै आ इत्ती माया भेळी व्हियोड़ी सिड़ै है अर पाड़ो-सियां, रै पेट भरणा रा ई जांदा पड़ै।—फुलवाड़ी

सिड़सट-वि. [सं. सप्तषष्टि, प्रा. सत्तसट्ठि] साठ और सात के योग के बराबर, सड़सठ।

रू. भे.—सिड़सठ।

सिड़सटमौं-वि.—जो क्रम से छियांसठ के बाद पड़ता हो।

रू. भे.—सिड़सठमौं।

सिड़सटेक-वि.—सड़सठ के लगभग।

रू. भे.—सिड़सठेक।

सिड़सटौ-सं. पु.—६७ की संख्या का वर्ष।

रू. भे.—सिड़सठौ।

सिड़सठ—देखो 'सिड़सट' (रू. भे.)

सिड़सठमौं—देखो 'सिड़सटमौं' (रू. भे.)

सिड़सठेक—देखो 'सिड़सटेक' (रू. भे.)

सिड़मड़ो — देखो 'सिड़मड़ो' (रू. भे.)

सिड़ियोड़ो, सिड़ियो — देखो 'सड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सिड़ियोड़ी)

सिड़ी-वि.— १ सनकी।

२ पागल।

३ दीवाना।

४ देखो 'सिरड़ी' (रू. भे.)

सिचाण, सिचान — देखो 'सिचाण' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—दाणिया थांण किना सिचांण री नाई तूटा।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सिचाणो, सिचाबो — देखो 'सिचाणो, सिचाबो' (रू. भे.)

सिचाणहार, हारो (हारी), सिचाणियो — वि०।

सिचायोड़ो — भू० का० कृ०।

सिचाईजणो, सिचाईजबो — कर्म वा०।

सिचियामाता-सं. स्त्री. यौ.— पवारो की इष्टदेवी। (मा. म.)

सिच्छान — देखो 'सिचाण' (रू. भे.)

सिच्छ, सिच्छा — देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)

उ०—स्वच्छ सिच्छ सूर वै अनिच्छ ऊवतै नहीं। मरै न तै कुमोनि तै सुमोति सूंघनै नहीं।—ऊ. का.

सिच्छित — देखो 'सिक्षित' (रू. भे.) (डि. को.)

सिजदा-सं. स्त्री. [अ. सिज्द:] १ ईश्वर के लिए शिर झुकाना, नमाज पढ़ते वक्त जमीन पर सिर झुकाना या रखना।

२ उक्त प्रकार से शिर झुका कर की जाने वाली प्रार्थना।

उ०—किबला सिजदा करै, किलम उच्चरै कुरांणी। जांणि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसांणी।—सू. प्र.

सिजळज — देखो 'सजळज' (रू. भे.) (द. दा.)

सिजवाळो — देखो 'सेजवाळो' (रू. भे.)

उ०—हाथी घोड़ा सिजवाळा छोकरयां घणो दायजो दे अर हलाया।—चोबोली

सिजाणो, सिजाबो — देखो 'सीझाणो, सीझाबो' (रू. भे.)

सिजाणहार, हारो (हारी), सिजाणियो — वि०।

सिजायोड़ो — भू० का० कृ०।

सिजाईजणो, सिजाईजबो — कर्म वा०।

सिजायोड़ो — देखो 'सीझायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सिजायोड़ी)

सिजावणो, सिजावबो — देखो 'सीझाणो, सीझाबो' (रू. भे.)

उ०—सींझ उबेड़ो गोट, पीळती माटी माबो। गोबर रै गुण खात, ढीगळै घोट सिजाबो।—दसदोख

सिजावणहार, हारो (हारी), सिजावणियो — वि०।

सिजाविओड़ो, सिजावियोड़ो, सिजाव्योड़ो — भू० का० कृ०।

सिजावीजणो, सिजावीजबो — कर्म वा०।

सिजावियोड़ो — देखो 'सीझायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सिजावियोड़ी)

सिजिया — देखो 'सय्या' (रू. भे.)

उ०—विजय सेठ नारी विजया जिणै सील पाल्यो एकण सिजिया।

—जयवांणी

सिज्झणो, सिज्झबो — देखो 'सजणो, सजबो' (रू. भे.)

उ०—राउ भणइ तां खमउ मुझ वयणु जां अवधि पुज्जई। पंचाली रोसवसि अवसि अंनि अम्ह काज सिज्झई।—सालिभद्र सूरि

सिज्झणहार, हारो (हारी), सिज्झणियो — वि०।

सिज्झिओड़ो, सिज्झियोड़ो, सिज्झ्योड़ो — भू० का० कृ०।

सिज्झीजणो, सिज्झीजबो — भाव वा०।

सिज्झाय-सं. पु. [स. स्वाध्याय] स्वाध्याय। (जैन)

उ०—पाठक हरस निधानजी सहेली हे ग्यांन तिलक सुपसाय कि। 'विनयचंद्र' कहइ मइं करि सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय।

—वि. कु.

सिज्झियोड़ो — देखो 'सजियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सिज्झियोड़ी)

सिज्या — देखो 'सय्या' (रू. भे.)

उ०—ऐसै द्वारि अर सेज विचि पधारिबौ करै छै। वार वार फिरै छै। कब जु सिज्या आय बैसै छै।—वेलि

सिज्यातर, सिज्यातरी — देखो 'सय्यातर' (रू. भे.)

उ०—रुघनाथजी सिज्यातर नै घणोई कह्यो—थे जागां क्यूं दीधी।

—भि. द्र.

सिटणो, सिटबो-क्रि. अ.— १ निर्बल होना, कमजोर होना।

उ०—पीहर पतळां रा सैणां रा प्यारा, तारक तूटां रा नैणां रा तारा। सीरी सिटियां रा सूल्हां रा सारा, भीड़ी भूखां रा फूलां रा भारा।—ऊ. का.

२ पस्तहिम्मत होना।

उ०—भीखम मात अभाव, मात गंग कीकर मनै। सो पखहीण सभाव, सेवट सिटग्यो सांवरा।—रांमनाथ कवियो

२ लज्जित होना।

सिटणहार, हारो (हारी), सिटणियो — वि०।

सिटिओड़ो, सिटियोड़ो, सिट्योड़ो — भू० का० कृ०।

सिटीजणो, सिटीजबो — भाव वा०।

सिटाणो, सिटाबो — रू० भे०।

सिटपिटाणो, सिटपिटाबो-क्रि अ.— १ किंकर्तव्यविमूढ होना।

२ असमंजस में पड़ना।

३ दब जाना।

४ घबरा जाना।

सिटपिटाणहार, हारौ (हारी), सिटपिटाणियौ—वि०।
सिटपिटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिटपिटाईजणौ, सिटपिटाईजवौ—भाव वा०।
सटपटाणौ, सटपटावौ—रू० भे०।

सिटळ सिटळौ-वि. (स्त्री. सिटळी) १ पथभ्रष्ट, पतित।
उ०—रुळचा खुळचा रजपूत, बिरांमण मिळगा बिटळा। वैस्य मिळग्या विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा।—ऊ. का.
२ अविश्वनीय।
३ निर्लज्ज।
४ अपनी बात पर कायम न रहने वाला।

सिटाणौ, सिटाबौ-क्रि. स.—१ पराजित करना।
२ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना।
३ दबाव डालना दबाना।
४ देखो 'सिटणौ, सिटबौ' (रू. भे.)
उ०—लेतां तिरिया लाज, पति बोदौ ई आडौ पड़ै। ऐ नर बैठा आज, सिंघ सिटाया स्याळ सा।—रांमनाथ कवियौ
५ देखो 'सटाणौ, सटाबौ' (रू. भे.)
सिटाणहार, हारौ (हारी), सिटाणियौ—वि०।
सिटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिटाईजणौ, सिटाईजवौ—कर्म वा०।

सिटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ लज्जित किया हुआ. २ पराजित किया हुआ. ३ दबाया हुआ।
४ देखो 'सिटियोड़ौ' (रू. भे.)
५ देखो 'सटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिटायोड़ी)

सिटावणौ, सिटावबौ—देखो 'सिटाणौ, सिटाबौ' (रू. भे.)
उ०—इसा रंग भू डूंगरा अट्ट ऊंचा, सिटावै जिका हेट पंखी समूंचा।—वं. भा.
सिटावणहार, हारौ (हारी), सिटावणियौ—वि०।
सिटाविओड़ौ, सिटावियोड़ौ, सिटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिटावीजणौ, सिटावीजवौ—कर्म वा०।

सिटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ. २ लज्जित हुवा हुआ. ३ हिम्मतपस्त हुवा हुआ. ४ दबा हुआ।
(स्त्री. सिटियोड़ी)

सिटी—१ देखो 'सीटी' (रू. भे.)
२ देखो 'सिटौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—'ला' री वेळा जिण अपणायत सूं सगळा गांव वाळा नाठ-नाठ अर 'ला' करण वाळे रै सूड़, निनांण, सिटियां चूंटण मैं अर लाटै री वेळा बिना किणी लालच रै कांम करावै, देखण जोग व्है।—चितरांम

सिटेबाज-वि.—१ धोखेबाज, कपटी।
२ बढ़-बढ़ कर व्यर्थ की बातें करने वाला।

सिटौ, सिट्टौ-सं. पु. [सं. षष्टिक] १ बाजरी, ज्वार आदि का भुट्टा।
उ०—१ सांवण खेती भंवरजी थें करीजै हांजी ढोला भादुड़ै करची जी नीनांण। सिटां री रुत छाया भंवरजी परदेस मैं जी, ओ जी म्हारा घण कमाऊ।—लो. गी.
उ०—२ फळी फळीजै मोठ, पड़ै घड़ सिट्टा सोवै। ग्वारफळ्यां रा गोट, तिलां मन फूली मोवै।—दसदेव
रू. भे.—सिरटौ।
अल्पा;—सिटी, सिरटी।
२ धोखा, झांसा।

सिडवांणी-सं. स्त्री.—लकड़ी का वह डंडा जिसके बल बैलगाड़ी या छकड़े को खड़ा करके उसकी धुरी में तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है।

सिणंकणौ, सिणंकवौ—देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे.)
सिणंकणहार, हारौ (हारी), सिणंकणियौ—वि०।
सिणंकिओड़ौ, सिणंकियोड़ौ, सिणंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिणंकीजणौ, सिणंकीजवौ—कर्म वा०।

सिणंकियोड़ौ—देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिणंकियोड़ी)

सिणकणौ, सिणकवौ-क्रि. स.—नाक साफ करने के लिए नाक में से दबाव के साथ वायु निकालना जिससे नाक का मल निकल जाय।
सिणकणहार, हारौ (हारी), सिणकणियौ—वि०।
सिणकिओड़ौ, सिणकियोड़ौ, सिणक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिणकीजणौ, सिणकीजवौ—कर्म वा०।
संणकणौ, संणकवौ, संणक्कणौ, संणक्कवौ, सणंकणौ, सणंकवौ, सणकणौ, सणकवौ, सनंकणौ, सनंकवौ, सनकणौ, सनकवौ, सिणंकणौ, सिणंकवौ—रू० भे०।

सिणकियोड़ौ-भू. का. कृ.—नाक साफ करने के लिए नाक में से तेज गति व दबाव के साथ वायु निकाला हुआ।
(स्त्री. सिणकियोड़ी)

सिण-सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

सिणगार-सं. पु. [सं. शृंगार] १ वस्त्र, कपड़ा। (ह. नां. मा.)
२ आभूषण, गहना। (अ. मा.)
३ एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण और अन्त में दो दीर्घ वर्ण होते हैं।
४ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)
उ०—माया पास रही मुळकंती, सजि सुंदरि कीधां सिणगार। बहु परिवार कुटंब चौ बाधौ, हरि विण गयौ जमारौ हार।
—प्रथ्वीराज राठौड़
उ०—२ गंगा तट कमळ खटां गज-बंधी, थाहर थाहर गंज थिया।

देखइ देखइ हार हीयाई, कामी निव सिणगार किया ।

—किसनो आढ़ो

उ०—३ वातां री फगत जीभ रौ बणाव । होठां रौ सिणगार । मायां री मिठास । पण मन रौ तौ भेद ई अगम । अगोचर ।

—फुलवाड़ी

उ०—४ इसी पांत रौही सुहांमणी लागै कुदरत रा सिणगार नै आंख्यां फाड़ फाड़ नै देखता इज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—५ ओढ़ नख्या छा भंवरजी वाछड़ी जी, हां जी ढोला होय गई सुरही गाय । दूध पीवण री रुत चाल्या चाकरी जी, हां जी म्हारा सेजां रा सिणगार । मत नां सिधावौ पूरब री चाकरी ।

—लो. गी.

सिणगारचौकी—सं. स्त्री.—१ प्रायः राजभवनों, किलों, गढ़ों आदि के अन्दर की वह चौकी जहां पर राज्याभिषेक के समय राजा श्रृंगार कर सिंहासन पर बैठता था ।

२ राजप्रासाद में वह स्थान जहां राजदरबार के समय राजा बैठता था । ३ श्रृंगार करने का स्थान ।

रू. भे.—सिंगारचौकी, सिणगारचौकी ।

सिणगारण—वि.—श्रृंगार करने वाली ।

सिणगारणौ, सिणगारबौ—क्रि. स. [सं. श्रृंगारणम्] १ सुशोभित करना, सजाना ।

उ०—१ आगै सहर रा घर वाट, बजार-हाट भली प्रकार सिण-गारिया । गुवाड़-गुवाड़ घर-घर ऊपर लुगायां वधाई रा बधावा मांगळीक गावै छै ।—पनजी दरियाव री वात

उ०—२ गाडियां खोलिया, छिड़क खासा रथ खानां । सिण-गारघा सिवरां, मिळण सांमा मिजमानां ।—मे. म.

उ०—३ कनक रतन तोरण सुभ लागी, सुंदर चित्र पौळि सिण-गारी ।—रा. रू.

२ अस्त्र-शस्त्र युक्त करना, शस्त्रों से सुसज्जित करना ।

उ०—१ तरै लालांजी नूं वांह दीन्ही । देनै पछै घणौ साथ लेनै फौज सिणगारी नै रजपूत सिणगारी नै केसर गुलाब सूंघा मांहे गरकाव हुय नै जांन करै नै चढिया ।—लाली मेवाड़ी री वात

उ०—२ सिणगारी सन्नाह सूं, विस धांमणी वरियांम । वरि आई रावा वरन, करण महाजुध कांम ।—हा. झा.

३ श्रृंगार करना, श्रृंगारना ।

सिणगारणहार, हारौ (हारी), सिणगारणियौ—वि० ।

सिणगारिओड़ौ, सिणगारियोड़ौ, सिणगारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिणगारीजणौ, सिणगारीजबौ—कर्म वा० ।

संगारणौ, संगारबौ, सणगारणौ, सणगारबौ, सिंगारणौ, सिंगारबौ, स्रंगारणौ, स्रंगारबौ—रू० भे० ।

सिणगारदे—सं. स्त्री. [सं. श्रृंगारदेवी] लोकगीत में सुहागिन स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—ए जठै नैं बहु सिणगारदे पोढिया, ऐ बांरी दासी ढोळै चैं वाव । ए म्हांनै घणी ए सुहावै जच्चा पीपळी ।—लो. गी.

रू. भे.—सणगारदे ।

सिणगारपटी—सं. स्त्री. [सं. श्रृंगारपट्टिका] सिर का आभूषण विशेष ।

सिणगारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सुशोभित किया हुआ, सजाया हुआ. २ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित किया हुआ. ३ श्रृंगारा हुआ ।

(स्त्री. सिणगारियोड़ी)

सिणतर सिणतरी—सं. स्त्री.—धरती पर छितरने वाली एक घास विशेष जिसके फूल सफेद होते हैं ।

सिणतरौ—सं. पु. -राजस्थान में पाया जाने वाला तंतुदार जंगली क्षुप, जो छप्पर, झोंपड़ी आदि की छाजन में काम आता है । इसकी रस्सी भी बनाई जाती है ।

उ०—१ चालतां रेत माथै खोज नीं उघड़ै इण जाब्ता सारु चोरां रै पगां सिणतरा बांधोड़ा हा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सु रबारी जुवांन सिणतरा री डोळ कीवी छै । उठै भीड़ सो काठी कसी छै । लांबीयां कांबां हाथ छै ।

—सातल जोधावत री वात

रू. भे. - संणियौ, सणिओ, सणियौ, सिणियौ ।

सिणफिण—सं. स्त्री.— अविरल गति से धीरे धीरे होने वाली वर्षा ।

उ०—चांदणी चवदस री दिन छै । सनि आदित्यवार री संघ छै । ऊपर झड़ मंडियौ छै । सिणफिण मेह वरसै छै ।—नैणसी

सिणमिणौ, सिणमिणौ—वि. (स्त्री. सिणमिणी) उदास, खिन्न चित्त ।

उ०—१ घरै धणी नै सिणमणौ देख जोधावाई पुचावण ढूकी कै बतावौ तौ खरी आपरै हीये किसी दोराई है ।—चितरांम

उ०—२ उठै महाराजा रांमसिंहजी अणूंती खातरी करी, अर अछन खमा करता । पण 'सर' रौ जीव तौ मारवाड़ में अटकियोड़ौ । 'सर' नै सिणमिणौ देख रांमसिंहजी सिकार री मनादी उठवाय अंग्रेज पांवणा नै सिकार करावण रौ कांम 'सर' रै खांदे नाख दियौ ।

—जहूरखां मेहर

सिणियौ—देखो 'सिणतरौ' (रू. भे.)

सितं—देखो 'सित' (रू. भे.) (नां. मा.)

सितंग—सं. पु.—पागलपन ।

सितंगियौ—वि.—पागल, मूर्ख ।

उ०—अठै री राजा अर अठै रा लोग तौ म्हनै साव सितंगिया ई दीस्या । काला मिनखां रै माथै छोगा बंधियोड़ा तौ नीं व्है ।

—फुलवाड़ी

२ सनकी ।

उ०—पछै वौ सितंगियौ राजकंवर भाई री बाथ छुडाय होकरी नै मारग मारु ताचकियौ ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सीतंगियौ ।

सितंतर-वि. [सं. सप्तसप्तति, पा. सत्तसत्तरि; प्रा. सत्तहत्तरि, अप. सत्तत्तरि] सत्तर और सात के योग के बराबर या समान।
सं. पु.—सत्तर व सात के योग से बनने वाली संख्या, ७७।
रू. भे.—सत्योत्तर, सत्योतरइ, सितहतर।

सितंतरमौं-वि.—जो क्रम में छिहत्तर के बाद पड़ता हो।
सितंतरे'क-वि.—जो सतहत्तर के लगभग हो।
सितंतरो-सं. पु.—सितहत्तर की संख्या का वर्ष।
सितंवर-सं. पु. [अं.] ईस्वी सन् का नौवां मास जो तीस दिन का होता है।
सित-वि. [सं. सित] १ श्वेत, सफेद। (डिं. को; नां. मा.)
उ०—सित कुसुमां गूंथी सुखद, वेणी सहियां व्रंद। नागणि जांणे नीसरी, सांपड़ खीर समंद।—बां. दा.
२ निर्मल, स्वच्छ।
उ०—चुरासी चहुटांनी हटस्रेणी, मांहइ वस्त संपूरण वरतइ सित द्रव्य, सहिस्र द्रव्य......... ।—व. स.
३ बंधा हुआ। (डिं. को.)
४ सम्पूर्ण, पूर्ण।
[सं. शित] ५ तीक्ष्ण, तेज।
उ०—तिक्ख कड्च्छा सज्ज यौं सित भल्ल सजाया।—वं. भा.
सं. पु. [सं. सितः] १ शुक्ल पक्ष।
उ०—अठतीसो आसोज मैं, सित सातम सनवार। गौ 'सोनागिर' धांम हरि, नांम करै संसार।—रा. रू.
[सं. सित] २ शुक्रग्रह।
३ शुक्राचार्य।
४ वासुकी।
५ किरण।
६ रजत, चांदी। (अ. मा; नां. मा.)
७ पंडित। (ह. नां. मा.)
रू. भे.—सिति।

सितकंठ-सं. पु. [सं. शितिकंठ] शिव, महादेव।
वि.—सफेद कंठ या गर्दन वाला।
रू. भे.—सितिकंठ।

सितछद-सं. पु. [सं. सितच्छद] हंस। (डिं. को.)
सिततुरंग-सं. पु. यौ. [सं. श्वेततुरंगः] अर्जुन।
सितपक्ख, सितपक्खि, सितपक्ष, सितपख-सं. पु. यौ. [सं. सितपक्ष] शुक्लपक्ष।
उ०—सतरै समत छयासियैं, चैत दसमि सितपक्खि। गुज्जर सिर दूजो 'गजन', आसहियो अमरक्खि।—रा. रू.

सितपत्र-सं. पु. [सं. श्वेतपत्र] श्वेत कमल। (डिं. को.)
सितम-वि. [फा.] जोरदार, गजब, अद्भुत।
उ०—की करै जोर लाचार कवि, आदत तजै न आलसी। सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ खिलालसी।—ऊ. का.
सं. पु.—१ अत्याचार, जुल्म।
२ अनीति।

सितमगर-सं. पु. [फा.] जालिम, अत्याचारी।
सितमणि-सं. स्त्री. [सं.] स्फटिक मणी, बिल्लौर।
सितरंग-सं. स्त्री.—रामबेलि नामक बेल। (अ. मा.)
सितर, सित्तर—देखो 'सित्तर' (रू. भे.)
उ०—सेना सितर हजार सूं, विचित्र अमित्र बळवांन। कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वर खांन।—रा. रू.

सितरमौं—देखो 'सित्तरमौं' (रू. भे.)
सितरे'क—देखो 'सित्तरे'क' (रू. भे.)
सितरौ—देखो 'सित्तरौ' (रू. भे.)
सितवादी—देखो 'सतवादी' (रू. भे.)
सितहतर—देखो 'सितंतर' (रू. भे.)
सितांणमौं, सितांणवौ—देखो 'सतांणमौ' (रू. भे.)
सितांणू—देखो 'सतांणू' (रू. भे.)
सितांबर—देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)
सितांबरी—देखो 'स्वेतांबरी' (रू. भे.)
सितांसु-सं. पु. [सं. सितांशु] १ चन्द्रमा।
२ कपूर।
रू. भे.—सीतअंसु, सीतंसु, सीतंसू, सीतांसु।

सिता-सं. स्त्री. [सं.] १ मिस्त्री। (डिं. को.)
२ चीनी, शक्कर।
३ शराब, मदिरा।
४ सफेद दूब।
५ रोशनी, प्रकाश।
६ जुन्हाई।
७ सुन्दरी, स्त्री।

सिताब, सिताबी-वि.—तीव्र, तेज।
क्रि. वि. [फा. शिताब] शीघ्र, जल्दी।
उ०—१ हुइ साद नकीब सिताब हला, इभ होदाय जीण वणे अलला।—रा. रू.
उ०—२ इण दिस थी राजा 'अजन', सभ आवतां सिताब। सांम्हो पाय संपेखवां, मिळियौ आय नवाब।—रा. रू.
उ०—३ वहत सिताबी राड़वर, दूत दरक्कां खेड़ि। गया बुलावण जतन गढ, त्यां सूं बूझी तेड़ि।—रा. रू.
रू. भे.—संताम, सताब, सताबी, सतावी।

सितार-सं. पु. [फा. सेहतार] तारों को उंगुलियों से झनकारने से बजने वाला एक प्रसिद्ध तार वाद्य।

रू. भे.—सतार।

सितारवाज, सितारवादक-वि.—१ वह जो सितार बजाता हो।

२ सितार बजाने में निपुण।

सितारपेशांनी-सं. पु. [फा. सितारःपेशानी] वह घोड़ा जिसके माथे पर सफेद छोटा चिन्ह हो। यह अशुभ माना जाता है।

सितारियो-सं. पु.—वह व्यक्ति जो सितार बजाता हो।

सितारेहिंद-सं. पु. यौ. [फा.] ब्रिटिशकाल में अंग्रेजी सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि।

सितारो-सं. पु. [फा. सितारः] १ तारा।

२ नक्षत्र।

३ भाग्य, किस्मत।

उ०—थांणा में नवो थांणादार आवतौ जरै करैई एक रौ पलड़ौ भारी रैवतौ तौ करैई दूजा रौ। अबार फौजा रौ सितारौ तेज हौ। वौ थांणादार री मूंछ रौ वाळ बण्योड़ौ हौ।

—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सतारौ।

सितावड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

सितासित-सं. पु. [स. सित+असित] बलराम। (अ. मा; नां. मा.) (मि. निलांबर)

रू. भे.—सीतासित।

सितास्व-सं. पु. [सं. सिताश्व] १ अर्जुन का एक नाम।

२ चन्द्रमा।

सिति—देखो 'सित' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सितिकंठ—देखो 'सितकंठ' (रू. भे.)

सितियासिमौं-वि.—जो क्रम से छियासी के बाद आता हो।

रू. भे.—सत्यासीमौं, सित्यासिमौं।

सितियासियो-सं. पु.—सत्तासी की संख्या का वर्ष या साल।

रू. भे.—सतियास, सतियासियौ, सतियासौ, सत्यासियौ, सत्यासीयो, सित्यासियौ।

सितियासी, सितियासी-वि. [सं. सप्ताशीति, प्रा. सत्तासई, अ. सत्तासी] अस्सी और सात के योग के समान।

रू. भे.—सतियास, सतियासी, सत्यासी।

सितियासीक-वि.—सत्तासी के लगभग।

रू. भे.—सत्यासीक।

सितिरि—देखो 'सत्तर' (रू. भे.)

उ०—साभरमती तणू नीर, सितिरि खांन, बुहुतिरि ऊवरा अनि मीर।—व. स.

सितोदर-सं. पु.—कुबेर का एक नाम। (डि. को; ह. नां. मा.)

वि.—जिसका पेट सफेद हो।

रू. भे.—सतोदर।

सितोपळा-सं. स्त्री. [सं. सितोपला] मिश्री।

सित्तर, सित्तर-वि. [सं. सप्तति, प्रा. सत्तरि] साठ और दस के योग के समान, सत्तर।

रू. भे.—सतरि, सत्तर, सत्तरि, सितर, सितिरि।

सित्तरमौं-वि.—जो क्रम से उनसित्तर के बाद पड़ता हो, ७० वां।

रू. भे.—सत्तरमौं, सितरमौं।

सं. पु.—७० वां वर्ष।

सित्तरेक-वि.—सत्तर के लगभग।

रू. भे.—सितरे'क, सितरेक।

सित्तरौ-सं. पु.—सत्तर की संख्या का वर्ष।

रू भे.—सितरौ।

सित्या-सं. स्त्री.—१ बल, शक्ति।

उ०—लोडा तौ लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर सतंगा टूटग्या।—दसदोख

२ बुद्धि, अक्ल।

उ०—हूंसी ढवियां हाथां रा लटका करती कैवण लागी—देखौ राख उडियां री कैंड़ी सित्या निकळी जकौ अंडी कुलळी डूंडी रौ आदेस करियौ।—फुलवाड़ी

सित्यानास—देखो 'सत्यानास' (रू. भे.)

उ०—१ टावरां रा पग बढग्या, गवाड़ौ मूंघौ मारीजग्यौ, सित्यानास हुयग्यौ। एक भाई होलात में आयौ, दूजौ बेटौ जेळ गयौ।

—दसदोख

उ०—२ रोवती रोवती बोली—बापजी, म्हारी सगळी दाळ लेयग्यौ। सित्यानास जावै इण रौ।—फुलवाड़ी

सित्यानासी—देखो 'सत्यानासी' (रू. भे.)

उ०—सब सित्यानासी ऊठ उदासी हांसी मुख हिलकंदा है।

—ऊ. का.

सित्यासिमौं—देखो 'सितियासिमौं' (रू. भे.)

सित्यासियौ—देखो 'सितियासियौ' (रू. भे.)

सित्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सित्यासीमौं—देखो 'सितियासीमौं' (रू. भे.)

सियर—देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

उ०—संसार कौ न रहसी सियर, समा वहण रिण सार री। जावसी नहीं जाता जुगां, ऐ वातां ईण वार री।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सियळ, सियल-सं. पु. [सं. शिथिल] राजा वाल का पुत्र, एक राजा।

उ०—वाल सुतन नृप सियल उवंवर, वज्रनाभ जिण सुतण भुपं वर।—सू. प्र.

वि.—१ जिसमें खिंचाव न हो, ढीला।

उ०—सळ पड़ियोड़ा सियळ, गोळ भुज है गळियोड़ा। गळियोड़ा छिक गुंमर, गिरै ढूंगा गळियोड़ा।—ऊ. का.

२ मंद, धीमा।

उ०—१ तपसी रो रूप धरै अतताई, अडंग कुटी गह सीत उठाई। सियळ पुकारी साद सुणीजै, कीजै हो हरि वाहर कीजै।
—र. रू.

उ०—२ तळप परहर अतुर चढ तुक, चकरधर मग सधर संचर। सियळ पर घर जांण ईसर, छांड नगधर धरण दूछर।
—र. ज. प्र.

३ सुस्त, थकित, आलसी।
४ कमजोर, निर्बल।
५ जिसका पालन कड़ाई से न हो। (काम या बात)
रू. भे.—सिथिळ।

सिथिर—देखो 'सियर' (रू. भे.)

सिथिळ—देखो 'सिथळ' (रू. भे.)
उ०—तेह पुरस जरजर हुवौ जी, सिथिळ पड़ी छै जी काय। लीलरी पड़ै सरीर मैं जी, चांमड़ी हाड विटाय।—जयवांणी

सिथिळता-सं. स्त्री. [सं. शिथिलता] १ आलस्य, सुस्ती।
२ ढीलापन।
३ थकावट।
४ मंदता, धीमापन।
५ कमजोरी, निर्बलता।

सिदक-सं. स्त्री. [अ. सिद्क] १ सच्चाई, सत्यता।
उ०—ज्यौ तुम भावै त्यौं खुसी, हम राजी उस बात। दादू कै दिल सिदक सौं, भावै दिन कौ रात।—दादूवांणी
२ निश्छलता।
उ०—दादू सिदक सबूरी सांच गह, साबित राख यकीन। साहिब सौ दिल लाइ रहु, मुरदा व्है मिस्कीन।—दादूवांणी
३ शुद्धता, निर्मलता।
उ०—हरीया हरिजन जांणीयै, अंतर गरबा तंन। दास बिंदगी दीनता, सिदक सबूरी मंन।—अनुभववांणी
४ वास्तविकता, यथार्थता।
वि.—सच्चा, वास्तविक।
रू. भे.—सिदिक।

सिदरी-सं. स्त्री. [फा. सेहदरी] तीन ओर से खुला हुआ या तीन दरवाजों वाला कक्ष, बरामदा।

सिदाई—१ देखो 'सीधाई' (रू. भे.)
२ देखो 'सिधाई' (रू. भे.)

सिदिक—देखो 'सिदक' (रू. भे.)

सिदुर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

सिदौ—देखो 'सिद्धो' (रू. भे.)

सिद्धंत—देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)
उ०—१ अनभय कथणी रहिणी करणी अति आठुंइ करम जीपै अधिकारी। गुणवंत अनंत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौंहोच विद्या पुण भारी।—भि. द्र.
उ०—२ साधवा मुक्ति का वास बंदा सहु भिक्खम स्वांम सिद्धंत है भारी।—भि. द्र.

सिद्ध-सं. पु. [सं.] १ वायु पुराणानुसार एक प्रकार के देवता गण जिनकी संख्या ८८००० मानी गई है। सूर्य के उत्तर तथा सप्तर्षियों के दक्षिण अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) में इनका वास लिखा है। ये एक कल्प भर के लिये अमर माने गये है।
उ०—१ धरत ध्यांन चारन विद्याधर, करत गांन गुन अप्छर किन्नर। गुह्यक यक्ष रक्ष गंधरब्ब, सिद्ध पिसाच भजत तव सरब्ब।
—मे. म.
उ०—२ आचारजै सुर जक्ष, किन्नर अछरांगि सिद्ध गंधरव। गण वेताळ मुनिंद्रौ, कितं चवसट्ठि पत्र पांणेयं।—रा. रू.
उ०—३ सैदेही स्रग गयौ, रायरायां उथपै। अंतरीख लै अप्रत, सिद्ध विण आधौ कीन्हौ।—नैणसी
२ तपस्या, त्याग व योग साधना द्वारा प्राप्त किसी अलौकिक शक्ति से सम्पन्न कोई ऋषि, तपस्वी, महात्मा पुरुष, दैवी शक्ति सिद्ध किया हुआ कोई करामाती साधु।
उ०—१ द्रढ वंर्ष 'सोनंग' 'दुरंग' तेरह साख कमंध। या मैं साहस अधियौ, ज्यां तट कुंभज सिद्ध।—रा. रू.
उ०—२ सीत वात आतप सहीयइ, एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थितै धरम कहियइ; एतदरथस्य करम, धरंमक हियइ सुक्ल ध्यांन धरिउं, अनंतर मरिउ, मुक्ति पयसारिउ इणि परि सिद्ध होयइ।
—व. स.
उ०—३ सिद्धां सिद्धाई धरणी मैं धसगी, भोपां भोपाई फांफां मैं फंसगी। झूठा जोतसियां जोतिस की झूठी, करसा कल्पाया बरसा नह वूठी।—ऊ. का.
३ वेद, पुराण आदि शास्त्रों का मर्मज्ञ एवं आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च माना जाने वाला ऋषि, मुनि, महात्मा।
उ०—आखा तीजां घणी अमांमी, सिद्ध जनमियौ संकर स्वांमी।
—ऊ. का.
४ नाथ सम्प्रदाय के योगी जिनकी संख्या ८४ मानी गई है।
ज्यूं—नौ नाथ अर सिद्ध चौरासी।
५ नाथ सम्प्रदाय एवं हिन्दू योगियों से बौद्धयोगी।
६ देवदूत, फरिश्ता।
७ ऐन्द्रजालिक, जादूगर।
८ अभियोग, मुकद्दमा।
९ गुड़। (नां. मा.)
१० समुद्री नमक।
११ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक।

१२ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक योग।
(ज्योतिष बालावबोध)

१३ एक युद्धप्रिय देवता।

उ०—भूत प्रेत पिसाच, बहुत नेड़ा वह वेंतर। वीर सिद्ध वेताळ, निसाचर भूचर खेचर।—गु. रू. बं.

१४ शिव, महादेव।

उ०—गुर्लं सिद्धां तारियां रूप रा नाच वीर खेळा, रचै गांन चाळियां धूप रा रसांराज। चमंकै झालियां बीच भूप रा हाथियां चली, नाळियां ऊपरा प्रळय काळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ

१५ वह पुरुष जिसका वचन सत्य हो।

१६ पूजनीय व्यक्ति, महापुरुष।

१७ जसनाथ द्वारा प्रवर्तित जाटों का एक सम्प्रदाय एवं इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।

१८ एक देवगण जो हिमालय के समीप कण्वाश्रम के समीप निवास करता था।

१९ कश्यप एवं प्राधा के पुत्रों में से एक।

२० एक मुनि जिसने कश्यप ऋषि से चर्चा की थी।

२१ सार्थकता।

२२ सूचना, सन्देश।

२३ आर्या-गीति या खंधांण (स्कंधक) का भेद विशेष।

२४ छप्पय छन्द का २३ वां भेद जिसमें २८ गुरु व ९६ लघु सहित १२४ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं। (र. ज. प्र.)

वि.—१ जो साधना द्वारा सफल कर लिया गया हो, जिसकी साधना पूरी हो चुकी हो, साधा हुआ।

उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सूं जाचकां सूं देण काज राजा बहादुर नदा ही सुबरण रासि सिद्ध कीधी।—वं. भा.

२ सफल, पूर्ण।

उ०—१ नर नाथ जांण राखं निजर, बांण बखांणां विसतरै। व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै।—रा. रू.

उ०—२ दहूं बांह जोरै कहूं बुद्धि दीजै। कृपाळी कवी लालसा सिद्ध कीजै।—मे. म.

३ प्राप्त, उपलब्ध।

३ जो पूर्णतया सम्पादित हो गया हो।

५ स्थापित, बसा हुआ।

६ दृढ़, पक्का।

७ सत्य माना हुआ, प्रमाणित।

८ निर्णीत, निर्धारित।

९ पकाया हुआ।

उ०—१ सो लै जावण सदन, पुरां मीसण वाटी प्रति। वठै सिद्ध पळ पग्ह, संगि जीमण चहियै मति।—वं. भा.

उ०—२ अरु उचित अंगां रो सिद्ध पळ चंडिका नूं चलाय प्रसन्न कीधी।—वं. भा.

१० अदा किया हुआ, चुकाया हुआ।

११ वशीभूत किया हुआ।

१२ निपुण, दक्ष।

१३ तैयार किया हुआ।

१४ दमन किया हुआ।

१५ प्रायश्चित द्वारा पवित्र किया हुआ।

१६ अधीनता से मुक्त किया हुआ, मुक्त।

१७ अलौकिक शक्ति सम्पन्न।

१८ पवित्र, शुद्ध, निष्पाप।

उ०—जिको धोकवा काज जावै जमातां, अपा पाप थायै बजै सिद्ध आतां।—मे. म.

१९ ठीक, उचित।

२० मुक्ति या निर्वाण प्राप्त।

२१ दैविक।

२२ अनादि, अविनाशी, सनातन।

२३ प्रसिद्ध, प्रख्यात।

२४ चमकीला, प्रकाशमान।

२५ स्थापित, बसा हुआ।

२६ मीठा। (नां. मा.)

२७ जो सर्व कर्मों का क्षय करके संसार से मुक्त हो चुका हो।
(जैन)

रू. भे.—सिध, सिध्ध।

सिद्धआपगा–सं. स्त्री. [सं.] गंगा नदी। (डिं. को.)

सिद्धकणेरी–सं. पु.—नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नव नाथों में से एक, कृष्णपाद।

सिद्धकांमेस्वरी–सं. स्त्री. [सं. सिद्धकामेश्वरी] दुर्गा की पंच मूर्तियों में से प्रथम, कामख्या।

सिद्धकारी–वि. [सं. सिद्धकारिन्] १ जो धर्मशास्त्र का अनुसरण करता हो।

२ सिद्ध करने वाला।

सिद्धकूप–सं. पु. [सं.] कार्तिकेय की शक्ति द्वारा प्रलंब दैत्य के वध के समय किया गया पृथ्वी का छेद, जो बाद में पाताल गंगा के पानी से भर गया।

सिद्धगुटको–सं. पु.—एक काल्पनिक मंत्र-सिद्ध गुटकी जिसे मुंह में रखने से अदृश्य होने की शक्ति आ जाती है।

रू. भे.—सदगुटको, सिधगुटको।

सिद्धक्षेत्र–सं. पु.—दण्डक वन का एक भाग।

उ०—चउवीस जिणालउ अस्टापदनउं, सिद्धक्षेत्र विमलगिरिनउं सास्त्र विरचना हरि भद्रसूरिनी......... ।—व. स.

सिद्धजोग—देखो 'सिद्धयोग' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धजोग रवि जोग, सुद्ध दिनमांन सह सिसि। दिसा सूळ थयो पूठि, वळै जोगणि वांमी दिसि।—गु. रू. बं.

उ०—२ एकम छट इग्यार, वार सुकर वरतीजै। बारस सातम बीज, लेर बुद्ध मौरत लीजै। तेरस आठम तीज, होवै मंगळ सुभकारी। चौथ नवमी चवदस्स, वळै सनि विघनविडारी। पंचमी दसम अरु पूरणमा, आवै जो सुरगुर प्रवळ। सुभ होय घरां मल चालियै, सिद्धजोग रा कारज सफळ।—अग्यात

सिद्धजोगी-सं. पु. यौ. [सं. सिद्धयोगी] १ शिव, महादेव।

२ कोई सिद्ध पुरुष, योगी, महात्मा।

सिद्धता-सं. स्त्री.—१ सिद्धि प्राप्त कर लेने की अवस्था, क्रिया या भाव, सिद्धि, सिद्धत्व।

२ तपस्या व साधना से प्राप्त की हुई अलौकिक शक्ति।

३ सफलता, पूर्णता।

४ दृढ़ता।

५ प्रसिद्धि।

६ मुक्ति।

सिद्धदेव, सिद्धनाथ-सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

सिद्धपक्ख, सिद्धपक्ष, सिद्धपख-सं. पु. [सं. सिद्धपक्ष] प्रमाणित बात।

सिद्धपुर-सं. पु.—१ एक कल्पित नगर जिसे कोई पृथ्वी के उत्तरी छोर में बताते हैं और मतान्तर से पाताल में भी। (ज्योतिष)

२ गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

रू. भे.—सिधपुर।

सिद्धमात्रका-सं. स्त्री. यौ. [सं. सिद्धमातृका] एक प्रकार की लिपि।

सिद्धयोग-सं. पु. [सं.] मुहूर्त्त का एक शुभ योग जिसमें निर्दिष्ट तिथि तथा वारों में शुभ कार्य का समारम्भ किया जाना श्रेष्ठ माना जाता है।

वि. वि.—निम्नलिखित तिथियों व वारों के योग से बनने वाला योग शुभ व सिद्धिदायक माना जाता है—शुक्रवार को नन्दा अर्थात प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, बुधवार को भद्रा अर्थात् द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी, मंगलवार को जया अर्थात् तृतीया, अष्टमी व त्रयोदशी, शनिश्चरवार को रिक्ता अर्थात चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी और गुरुवार को पूर्णा अर्थात पञ्चमी, दशमी और पूर्णिमा तिथि।

रू. भे.—सिद्धजोग।

सिद्धयोगनी-स. स्त्री. [स. सिद्धयोगिनी] एक योगिनी का नाम।

सिद्धर-सं. पु. [सं.] एक ब्राह्मण का नाम जो मथुरापति कंस की आज्ञानुसार श्रीकृष्ण को मारने गया था पर असफल रहा।

सिद्धरसायण-सं. पु. यौ. [सं. सिद्धरसायन] दीर्घ जीवन और प्रभुत्व शक्ति प्राप्त कराने की एक रसौषध विशेष।

सिद्धराज, सिद्धराव-सं. पु. [सं. सिद्धराज] १ शिव, महादेव।

२ गोरखनाथ।

रू. भे.—सधराय, सिधराज, सिधराव।

सिद्धविचारनाथ-सं. पु.—राजा भर्तृहरि का उस समय का नाम जब उसने संन्यास ले लिया था। (मा. म.)

सिद्धसाधक-सं. पु.—१ सब इच्छाएं पूर्ण करने वाला।

२ सिद्ध व उसका साधक।

सिद्धस्री-सं. स्त्री. [सं. सिद्ध+श्री] १ शुभारम्भ।

मुहा.—सिद्धस्री में ही खोट=आरम्भ में ही त्रुटि।

(मि.—सामेळा में ही गधा)

२ पत्र आदि लिखते समय सर्वप्रथम लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—सिद्धस्री सूरजगढ सुभ स्थांन सरब ओपमा साधक महा स्रेस्ठ उपमा लाइक ब्राजमान—सिर रा सेहरा हियारा हार आंख्या रा अंजण आतम रा आधार, गुणां रा गंभीर उकत्यां रा आगर बहत्तर कळायें विचित्र सुबुध रा सागर........।
—र. हमीर

रू. भे.—सिधसिरी।

सिद्धस्थाली-सं. स्त्री. [सं.] एक बटलोई (धातु का बना पात्र) विशेष, जो बनवास के समय व्यासजी से द्रौपदी को मिली थी। इसमें से इच्छानुकूल भोजन निकाला जा सकता था।

सिद्धहस्त-वि. [सं.] कार्यकुशल, निपुण, दक्ष।

सिद्धांजन-सं. पु. [सं.] एक कल्पित अंजन जिसे आंख में लगा देने से भूमिगत वस्तुएं भी स्पष्ट दिखाई देती है।

सिद्धांत-सं. पु. [सं.] १ कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के सम्बन्ध में कोई मूल बात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जो अन्य लोगों द्वारा मान्य हो। (Theory)

उ०—१ जिण रा सिद्धांत प्रमांणिक पंडितां रा रचिया प्रबंध मैं इण रीति पुणीजै जिको पण वळाविध रा अधीस रांम भूपाळ अंगउपांग सहित सुणीजै।—वं. भा.

उ०—२ गुरु परचु पास्ति कीजइ, सिद्धांत सांभलियइ, तत्त्व अभ्यसीइ, विचार पुछियइ।—व. स.

२ भलीभांत सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत, उसूल।
(Aim, Object)

उ०—१ वा बोली—पवन स्वारथ रै बस में होय'र 'हत्या' करीजै सिद्धांत नै कायम राखण रै वास्तै वध।—तिरसंकू

उ०—२ घर घरणि गालि गाटौ करै, पुन्य धरम नह पाळणू। अमलियां तणौ सिद्धांत औ, गळै जठा लग गाळणू।—ऊ. का.

३ किसी बात या विषय का सारांश, तत्व की बात।

४ वह बात जो विद्वानों द्वारा सत्य मानी जाती हो।

५ शास्त्र।

उ०—१ सिव सक्ति सीम, अनुभव असीम। सिद्धांत सार, नित निराकार।—ऊ. का.

उ०—२ नउनरवो पोमन वखाउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि। हरि-भद्र सूरि विवरउ कीयो जी, बावीस सहस्त्री सार।—स. कु.

उ०—३ बनांण वांणी देवे सूत्र सिद्धांत वांचे छेहडे जीव खुवायां पुन्य मिस्र परूपे सावद्य अनुकंपा में धरम कहे तिण उपर स्वांमीजी द्रस्टांत दियो।—भि. द्र.

६ बहत्तर प्रकार की पुरुषों की कलाओं में से एक।

रू. भे.—सिद्धंत, सिधांत।

सिद्धांती-वि. [सं. सिद्धान्तिक] १ शास्त्र के तत्व का ज्ञाता।

२ अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाला।

३ तार्किक।

४ सिद्धान्त का, सिद्धान्त सम्बन्धी।

सिद्धा-सं. स्त्री.—आर्या छंद का एक भेद जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई-सं. स्त्री.—१ सिद्ध होने की अवस्था या भाव, सिद्धि।

२ चतुराई।

उ०—सिद्धाई वाळा री वण आयी। जागां जागां ठगाई रा तप्पड़ विछा'र ठगारो जमायां बैठा।—वरसगांठ

३ पांडित्य, विद्वता।

४ सिद्ध करने की शक्ति।

५ सिद्धत्व।

उ०—सिद्धां सिद्धाई धरणी में धसगी, भोपां भोपाई फांफां में फंसगी।—ऊ. का.

६ विशेषता, खासियत।

रू. भे.—सिधाई।

सिद्धाचळ, सिद्धाचल-सं. पु. [सं. सिद्धाचलः] काठियावाड़ में स्थित जैनियों का एक तीर्थ स्थान।

उ०—१ सिद्धाचल सीमै जी यात्रा करि जीमै। निस्चय इन नीमैजी भमय न भव भीमइ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ करम आठ मेटै कियौ, पंचम गुण परवेस। थिर सिद्धा-चळ थापना, आदीस्वर आदेस।—वां. दा.

सिद्धारथ-सं. पु. [सं. सिद्धार्थ] १ गौतम बुद्ध का नाम।

उ०—एहवी कुटंब सांहांमी ग्यातिनी भगति कीवी सिद्धारथ राजा-ग्रहै।—व. स.

२ दसरथ के एक मंत्री का नाम। (रामायण)

३ कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

४ रुद्रवीसी का चौदहवां वर्ष। (ज्योतिष)

सिद्धासण-सं. पु.—१ योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें, बांये पांव की ऐडी को सीवनी में रखकर दक्षिण पैर की ऐडी को लिंग पर रखा जाता है। फिर गरदन नीची करके ठुड्डी को हृदय के समीप अर्थात् हृदय के ऊपर चार अंगुल ऊंची रखते हुए दृष्टि को त्रिकुटी के (भ्रूमध्य में) स्थिर करके नेत्रों को अर्धउन्मिलित रख के नाभि के पास बांये हाथ की हथेली में दाहिने हाथ को सीधा रखना होता है। इसके तीन भेद होते हैं—(१) वज्रासण(न)—इसमें दाहिने पैर की ऐडी को सीवनी एवं बांये पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(२) मुक्तासण(न)—इसमें बांये पैर की ऐडी को सीवनी एवं दाहिने पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(३) गुप्तासण(न)—बांये पैर की ऐडी लिंग पर रख कर उसी पैर के पंजे पर दाहिने पैर की ऐडी को जमाकर पूर्ववत बैठा जाता है।

यह आसन प्राणवाही नाड़ियों के सर्व मलों को दूर करता है तथा सहज मे उन्मनीकला को उत्पन्न करता है और तीन प्रकार के जो बंध है इनको अनायास सिद्ध करता है।

सिद्धि-सं. स्त्री. [सं.] १ अलौकिक शक्तियों से युक्त आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

उ०—अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती सुत पंडित।—मे. म.

वि. वि.—आठ प्रकार की सिद्धियों का विवरण:—अंजन, गुटका पादुका, धातुभेद, बेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। योग की आठ सिद्धियां इस प्रकार से हैं:—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

२ ऐन्द्रजालिक विद्या द्वारा किसी चमत्कारिक शक्ति की प्राप्ति।

३ किसी प्रकार की साधना या तपस्या की पूर्णता, इससे मिलने वाली सफलता।

४ परिश्रम का फल या सफलता।

५ मुक्ति, मोक्ष।

६ निपुणता, दक्षता, प्रवीणता।

७ संस्थापना, प्रतिष्ठा।

८ शुद्धता, पवित्रता।

९ वास्तविकता, सच्चाई।

१० खाद्य पदार्थ की पकने की अवस्था, पकावट।

११ तत्परता, सावधानी।

१२ वृद्धि।

१३ अन्तर्ध्यान होने की क्रिया।

१४ समृद्धि, सुख।

१५ विजय, सफलता।

उ०—समरथ सूर तोगां वदिरसुत, अहिमद आणंदि मिलई। दुत्थिय दुक्ख आरति टलइ, सयल सिद्धि वंछित फलई।—व. स.

१६ विजिया, भांग।

१७ दुर्गा का एक नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की पुत्री व धर्मदेव की पत्नी का नाम।

१९ गणेश की दो पत्नियों में से एक का नाम जो 'क्षेम' की माता थी।

उ०—नव नेनन मैं नव निद्धि वहै । सब हाजर रिद्धिय सिद्धि रहै ।
—ऊ. का.

२० एक देवी का नाम जो कुन्ती के रूप में प्रगट हुई ।
२१ जनक की पुत्रवधु व लक्ष्मीनिधि की पत्नी का नाम ।
(रामायण)

सं. पु.—२२ वीर नामक अग्नि के पुत्र नाम, इस की माता का नाम सरयू था ।
२३ सुफल, अच्छा फल ।
२४ निवास, आवास ।
२५ निर्विवाद परिणाम, निर्णय ।
२६ निर्णय, निश्चय ।
२७ फैसला, निपटारा ।
२८ भुगतान, चुकारा ।
२९ प्रभाव ।
३० वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से उन्नीसवां योग । (ज्योतिष)
३१ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में कुल मिलाकर १३ गुरु और ३१ लघु सहित ५७ मात्राएँ होती हैं । (ल. पिं; र. ज. प्र.)
३२ देखो 'सुधि' (रू. भे.)

उ०—एह कस्ट भोगवी अहींइ रहूं न लही कंतनी सिद्धि । तै मन मोहन जु मझ मिलइ, तु एतलइ नव निधि ।—नलदवदंती रास
रू. भे.—सिद्धी, सिध, सिधि, सिध्धि ।

सिद्धिदाता-सं. पु.—गणेश, गजानन ।
वि.—सिद्धि प्रदान करने वाला ।

सिद्धदातिथि-सं स्त्री.—फलित ज्योतिष के अनुसार वार एवं तिथि सम्बन्धी बनने वाले योगों में से प्रथम योग ।

सिद्धिदात्री-सं. स्त्री.—नवदुर्गा के अन्तर्गत एक दुर्गा जो सिद्धि प्रदान करने वाली मानी जाती है ।

सिद्धिनायक-सं. पु. [सं.] गजानन, गणेश । (ह. नां. मा.)

सिद्धिप्रद-वि.—सिद्धि देने योग्य ।

सिद्धिसू, सिद्धिभूमि-सं. स्त्री.—वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता है ।

सिद्धी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

सिद्धेस्वर-सं. पु. यौ [सं. सिद्धेश्वर] १ कोई बड़ा योगी, सिद्ध ।
उ०—साथ थारै सदा, 'पाल' नव ही जोगेस्वर । साथ थारै सदा, चार असी सिद्धेस्वर ।—पा. प्र.

२ जालंधरनाथ का एक नाम । (मा. म.)
३ शिव, महादेव ।
रू. भे.—सद्धेसर, सद्धेसुर, सद्धेस्वर, सिधेसर, सिधेसुर ।

सिद्धोदक-सं. पु. [सं.] १ एक समुद्र विशेष ।
२ एक प्राचीन तीर्थ स्थान ।

सिद्धौ-सं. पु. [सं. सिद्धः] १ वर्णों का अभ्यास कराने की प्राचीन पद्धति, जो व्याकरण युक्त होती थी ।

अपभ्रंश—

सिद्धौ वरणा । समामनाया ।
चत्रू चत्रू दासा । दऊ सवारा ।
दसै समाना । दुध्यावरणौ ।
न सीस वरणौ । पुरबौ हंसवा ।
पारौ दिरगा । सारौ वरणा ।
विणज्यौ नामी । इकरादेणी ।
संघ कराणी । कादी नाऊ ।
विणज्यौ नामी । तै विरघा पंचा पचा ।
विरघानाऊ प्रथम द्वितिया ।
संपोसाइचा । घोषा घोष पितोरणी ।
अनुनारा नासिक । निनाणुनामा ।
अनता संता । जै रै लवा ।
रुकमण सबोसासा ।
आयती विसारजुनिया ।
कायती जिह्वामूलिया ।
पायती पदमानीया ।
आयौ आयौ रतन सवारौ ।

मतान्तर से—

सिधौ वरण समामनाया,
त्रै त्रै चतुरक दसिया
दौं सवेरा, दशै समाना,
तेरनु दुधवा, वरणो
वरणो, नाशि सवरणो,
पुरवो रसवा, पारो दरधा,
सारो वरणो, विणजे नामि,
इकरादेणी, संध्यकराणि,
कादी नाउं विणजे नामो
तै वरगा पंचो पंचिग्रा,
वरगां णाउं, प्रथमे दिवटिग्रा
श्री शंखो सारांशिया,
गोरवा गोरव, वतोरणो,
अनुसार शंखा. निनांणिनम,
अंथा संथा, जेरै लव्वा,
उर वमण शंखोषाहा ।

संस्कृत —

सिद्धो वर्णसमाम्नाय:। सिद्ध: खलु वर्णानां समाम्नायो वेदितव्य: ते के। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ। क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व। श ष स ह। इति।

तत्रादौ चतुर्दश स्वरा:। तस्मिन् वर्णसमाम्नाये आदौ ये चतुर्दशवर्णा: ते के। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ।

दश समाना:। तस्मिन् वर्ण समाम्नाये आदौ ये दश वर्णास्ते समानसंज्ञा भवन्ति। ते के। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ इति।

तेषां द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ। तेषां समानानां मध्ये द्वौ द्वौ वर्णौ अन्योन्यस्य परस्परं सवर्ण संज्ञौ भवत:। अ आ। इ ई। उ ऊ। ऋ ॠ। ऌ ॡ।

पूर्वो ह्रस्व:। तयो: सवर्ण संज्ञयोर्मध्ये पूर्वो वर्णो ह्रस्वसंज्ञो भवति। अ इ उ ऋ ऌ।

परो दीर्घ:। तयो: सवर्णयोर्मध्ये परो वर्णो दीर्घ संज्ञो भवति। आ ई ऊ ॠ ॡ।

स्वरोऽवर्णवर्जो नामि। अवर्ण वर्ज: स्वरो नामि संज्ञो भवति। इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ।

एकारादीनि संध्यक्षराणि। एकारादीनि स्वरनामानि संध्यक्षरसंज्ञानि भवन्ति। तानि कानि। ए ऐ ओ औ।

कादीनि व्यंजनानि। ककारादीनि हकारपर्यन्तान्यक्षराणि व्यंजनसंज्ञानि भवन्ति।

ते वर्गा: पञ्च पञ्च पञ्च। ते ककारादयो मावसाना वर्णा: पञ्च पञ्च भूत्वा पञ्चैव वर्ग संज्ञा भवन्ति।

वर्गाणां प्रथमद्वितीय शषसाश्चाघोषा:। कख चछ टठ तथ पफ श ष स एते अघोषा:।

घोषवन्तोऽन्ये। अघोषेभ्योऽन्ये तृतीय चतुर्थ पंचमवर्णा य र ल व हाश्च घोषवत्संज्ञा भवन्ति। ग घ ङ। ज झ ञ। ड ढ ण। द ध न। ब भ म। य र ल व ह—इमे घोषा:।

अनुनासिका ङ ञ ण न मा:।

अन्तस्था य र ल वा:।

ऊष्माण: श ष स ह:।

अ: इति विसर्जनीय:।

क $\stackrel{\vee}{\wedge}$ इति जिह्वामूलीय:।

प $\stackrel{\vee}{\wedge}$ इत्युपध्मानीय:।

अं इत्यनुस्वार:।

हिन्दी —

वर्णों के समूह को सिद्ध समझना चाहिये। वर्ण ऊपर देखिये। ऊपर दिये हुए वर्णों में से पहले १४ वर्णों की स्वर संज्ञा है। ये १४ वर्ण संस्कृत रूप के साथ दिये गये हैं। १४ स्वरों में से पहले १० वर्णों की समान संज्ञा है। समान स्वरों में से दो दो की परस्पर सवर्ण संज्ञा है। यथा—अ आ परस्पर सवर्ण कहलाते हैं: इसी प्रकार इ ई, उ ऊ, ऌ ॡ के लिये समझिये। सवर्ण स्वरों में पहला वर्ण ह्रस्व कहलाता है अर्थात् अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व वर्ण हैं। आगे का वर्ण दीर्घ होता है। यथा—आ ई ऊ ॠ ॡ दीर्घ स्वर हैं। अ वर्ण को छोड़ कर स्वरों की 'नामि' संज्ञा है। ए ऐ ओ औ—संध्यक्षर कहलाते हैं।

'क' से लेकर 'ह' तक के वर्ण व्यंजन कहलाते हैं। 'क' से 'म' तक के २५ वर्ण २५ वर्गों में विभक्त हैं। यथा—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग। इन वर्गों के प्रथम दो अक्षर तथा श ष स अघोष कहलाते हैं तथा वर्गों के शेष तीन तीन वर्ण तथा य र ल व ह घोष वर्ण हैं।

'ङ, ञ, ण, न, म' अनुनासिक हैं।

य र ल व अन्तस्थ हैं। 'श ष स ह' ऊष्म कहलाते हैं। अ: विसर्जनीय है।

क $\stackrel{\vee}{\wedge}$ जिह्वामूलीय है। 'अं' अनुस्वार है।

प $\stackrel{\vee}{\wedge}$ इत्युपध्मानीय है।

निम्नलिखित अपभ्रंश स्फुट रूप से और भी हैं।

पूरवो फल्यो रथो रथो

पातारु पद पद।

विणज्यो नामी सरु वरु वरणानेतु

नेत कर मैया राम साल की जेतू।

लषो(खो) पचा ईड़ा दुर्गण संधि।

एती संती सूत्रता।

प्रथमी पाटी शुभ करती।

ये कातन्त्र व्याकरण पर आधारित है।

२ देखो 'सीधौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सिदौ, सिधौ, सीदौ।

सिधंत-सं. पु.—१ यमराज। (अनेका.)

२ देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

सिध-सं. स्त्री.—१ सफलता विजय।

उ०—आहव छोड फतैखां आसुर, घरम दुवार गयौ छोडै घर। पुर लुटियौ वडी सिध पाई, संभिया सुज मारिया सिपाई।

—रा. रू.

२ संकेत।

३ लक्षण, चिन्ह।

उ०—मोर सोर मंडै, इंद्र धार न खंडै। आभो गाजै, सारंग वाजै, द्वादस मेघ नै दुवौ हुवौ, सू दुखियारी री आंख हुवौ। झड़ लागो, प्रथी री दळद्र भागो। दादुरा डहिडहै, सावण आंणवै री सिध कहै।—रा. सा. सं.

वि.—१ उपयुक्त।

उ०—सुत मायां अंजस सयण, आयां सिध अवसांण। पितु मनसा

पुराविियां, ज्यां जायां धिन जांण ।—जैतदांन बारहठ

२ सफल ।

उ०—आया सिवपुरी हुआै कारिज सिध, परम पुरु चा ग्रहिया पगि । माहोमाहि करइ वातां मिळि, जनम सुकियारथ हुवौ जगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ देवी शक्ति वाली, चमत्कारपूर्ण, चमत्कारिक ।

उ०—ज्वाळानळ जळेन मरइ मारियौ, धणीज दीन्हउ खडग सिध । भड अन जीए जुडंता भारथ, वाहइ आविधि किसी विध ।
—महादेव पारवती री वेलि

अव्यय—१ कहाँ, किधर ।

उ०—लोगां पूछ्यौ—सेठां इत्ता दिन देख्या कोनीं, सिध गिया ।
—फुलवाड़ी

वि. वि.—राजस्थान में 'थूं कठै जावै' ऐसा कहना अशुभ मानते हैं। इसलिए 'थूं कठै जावै' न कह कर 'थूं सिध जावै' या 'थूं सिधारू जावै' कहेंगे, यद्यपि दोनों का अर्थ एक ही है।

२ देखो 'सीध' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी बोल री सिध हालियौ आवै छे ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ हरीया कड़वी वेल का, कड़वाई फळ किध । जब वेलौ तैं वीछड़, होय नांव की सिध ।—अनुभववांणी

उ०—२ सिधां सावतां सहेतो आखाड़ै सोहियौ, राग सिंधू बजै खाग रीठौ । समर भूपाळ आदेस करतां सहूं, दळां माहेस माहेस दीठौ ।—राव महेसदास राठौड़ रो गीत

उ०—३ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमंद । सबर काज सुधरै सहू, सांई सबर पसंद ।—बां. दा.

उ०—४ सुरां सिधां मैं महेस जेम बांणावळी पाथ सिध, मांण मैं द्रजोण सिधां वदां महाबाहु । दांन मैं करण सिध धरापती सकौ दाखां, रूकां सिधां बाध नैं वखांणां दहूं राह ।—पदमो खिड़ियो

४ देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ परम सनेही पेम रस, सो इतनौ निरबाहि । हरीया रिध सिध मुगति की, और सकल कुं चाहि ।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया रिध सिध क्या करै, रांम नांम धन पास । लाहा तोटा जोव का, गया दूरि दिस नासि ।—अनुभववांणी

सिधक-सं पु.—सिद्ध पुरुष ।

सिधकर-सं. पु.—एक देव जाति । (अ. मा.)

सिधकांम-सं. पु.—मिर्च । (अ. मा.)

सिधगुटकौ—देखो 'सिद्धगुटकौ' (रू. भे.)

उ०—पवन रा कुटकै वेग पांण, उडुंड सिधगुटका जिम उडांण ।
—सू. प्र.

सिधजोग—देखो 'सिद्धजोग' (रू. भे.)

उ०—सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिधजोग प्रगट उच्छह समाज ।—सू. प्र.

सिधदेव-सं. पु.—प्रतिज्ञावीर पाबू राठौड़ का एक नाम । (पा. प्र.)

सिधनायक-वि. [सं. सिद्धिनायक] सिद्धि प्रदान करने वाला ।

सं. पु.—गजानन, गणेश ।

सिधपुर—देखो 'सिद्धपुर' (रू. भे.)

उ०—हैनाळ चहट गिर तर हुवा, चढै गटां रज परचंडै । सरसती नदी तट सिधपुर, महिपती डेरा मंडै ।—सू. प्र.

सिधमल, सिधमल्ल-सं. पु.—महादेव, शिव ।

उ०—अंग वरंग ऊछळै, किलम विहुरंग खग कमळ । सुरंग रंग सांपड़ै, जांण सिधमल्ल गंग जळ ।—सू. प्र.

सिधराज—देखो 'सिद्धराज' (रू. भे.)

उ०—माकड़ा झाड़ आखाड़मल चाढयां मसती चालिया । सिधराज जांण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया ।—मे. म.

सिधव—देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

सिधवा—देखो 'सधवा' (रू. भे.)

उ०—सिधवा लख धीरज सैं निकसै, विधवा लख वारज सैं विकसै ।
—ऊ. का.

२ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—सब काज भया जग मैं सधवा, बड भागण तूंज भई विधवा ।
—ऊ. का.

सिधवाह-सं. पु.—वह शस्त्र जो अपने लक्ष्य से चूकता न हो, अचूक शस्त्र ।

सिधवुधवायक-सं. पु. यौ. [सं. सिद्धि+बुद्ध+वाक्य] गणेश, गजानन ।
(अ. मा.)

सिधसिरी—देखो 'सिद्धसी' (रू. भे.)

सिधांत—देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

उ०—चिलमियां करण चित चाव सूं, टळणहार नहीं टाळणौ । अमलियां तणा सिधांत एह, बळै जठा लग बाळणौ ।—ऊ. का.

सिधाई-सं. स्त्री.—१ सरलता, सीधापन ।

२ देखो 'सिद्धाई' (रू. भे.)

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—दिल्ली आगरा मैं तो गायां कटै । इण बात मैं कांई सिधाई । सूत्र भण्या हवै तो कहो ।—भि. द्र.

सिधाणौ, सिधाबौ-क्रि. अ. [सं. सिद्धः] प्रस्थान करना, गमन करना, जाना, रवाना होना । (शुभ)

उ०—१ राजरै सिधायां अै नवलख तारा म्हारा रूं रूं मैं भाला री अणियां ज्यूं खुबै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सिव ब्रहम विसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत संगि पाय ।—सू. प्र.

उ०—३ राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकुंठ सिधायौ ।—द. वि.

उ०—४ जोय कटक नृप जेत, सहर देसांण सिधायौ । साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमां आयौ ।—मे. म.

सिधाणहार, हारौ (हारी), सिधाणियौ—वि० ।

सिधायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिधाईजणौ, सिधाईजवौ—भाव वा० ।

सधारणौ, सधारबौ, सधारणौ, सधारवौ, सिधारणौ, सिधारवौ, सिधारणौ, सिधारबौ—रू० भे० ।

सिधायोड़ौ-भू० का० कृ०—गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ ।

(स्त्री० सिधायोड़ी)

सिधार-सं० पु०—प्रस्थान या गमन करने का भाव । (डि. को.)

सिधारणौ सिधारवौ—देखो 'सिधाणौ, सिधावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मांमौ बैठां भांणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूंणी बात गिणीजै सो 'धनजी' दरवाजौ तोड़ण नै तैयार व्हियौ ।

—अमरचंनड़ी

उ०—२ बंधिया सील पोथी कथा, सपह पंथ संवारियौ । सीभत आठ माका किया, बील्ह वैकुंठ सिधारियौ ।—बील्होजी

सिधारणहार, हारौ (हारी), सिधारणियौ—वि० ।

सिधारिओड़ौ, सिधारियोड़ौ, सिधारघोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिधारीजणौ, सिधारीजवौ—भाव वा० ।

सिधारियोड़ौ-देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिधारियोड़ी)

सिधाऊ—क्रि. वि.—कहां, किधर ।

उ०—गोवाळजी सिधाऊ जावै ।

सिधावणौ, सिधाववौ—देखो 'सिधाणौ, सिधावौ' (रू. भे.)

उ०—१ पातरां पांच नाजर उभै, भल भाई अन भावियौ । 'जसवंत' सुतन सतियां सहित, यौं स्वरलोक सिधावियौ—रा. रू.

उ०—२ ठाकर चाकरी सिधावण सारू आखता व्हिया । गोडां रळकती काळी भंवर आटी रो फटकारौ देय ठकरांणी भचकै आडी फिरी ।—फुलवाड़ी

सिधावणहार, हारौ (हारी), सिधावणियौ—वि० ।

सिधाविओड़ौ, सिधावियोड़ौ सिधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिधावीजणौ, सिधावीजवौ—भाव वा० ।

सिधावियोड़ौ—देखो 'सिधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिधावियोड़ी)

सिधासण—देखो 'सिद्धासण' (रू. भे.)

सिधि, सिधी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ गुणपति आग्या सांहणी, अस्व अरोहण कज्जि । वाजि किया म.जा विविध, सिधि रण करण समज्जि । -रा. रू.

उ०—२ रिधि सिधि, सबही दासी, जोड़ैं हाथ खड़ी । इनकै रंग राचै नहिं कबहूं, आतम आंण जुड़ी ।—सुखरांमजी महाराज

उ०—३ एतला याद दळ मिळ अथाह, दुोद अडर करण सिधि महाव ह ।—रा. रू.

सिधु—देखो 'सधु' (रू. भे.)

सिधेसर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे) (अ. मा.)

सिधेसरनारी-सं. पु. यौ. [सं. सिद्धेश्वर+नारी] पार्वती, उमा ।

सिधेसुर, सिधेस्वर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिधोअंजन—देखो 'सिद्धांजन' (रू. भे.)

सिधोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू. भे.)

सिधौ—१ देखो 'सिद्धौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सीधौ' (रू. भे.)

उ०—दासी नै सनकारि सिखावी, सगळौ सिधौ दीध । भोजन पांन सजाई, करतां वेला कीध ।—ध. व. ग्रं.

सिद्धु—देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—किसुं न हुइ गुर भगति लगइ, माटि नउ गुरु किद्ध । अह-निसि गुरु आराधतउ, एकलव्यु हूउ सिद्धु ।—सालिभद्र सूरि

सिध्ध—देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—चिंता बंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न बध्ध । जे नर चिंता वस करइ, ते मांणस नहि सिध्ध ।—ढो. मा.

सिध्धसिला-सं. स्त्री. [सं. सिद्धः+शिला] १ स्थान या लोक विशेष जहाँ मृत्युपरान्त मोक्ष प्राप्त आत्माएँ अपने वास्तविक स्वरूप में रहती हैं। (जैन)

उ०—चऊद राज ऊपरि विस्तारि, सिध्धसिला छइ छत्राकारि। अनेक सुख छइं सिद्ध विलसंत, सुखह तणउ तै पार न लहंति ।

—वस्तिग

२ पृथ्वी विशेष । (जैन)

सिध्धि—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

सिध्म-स. पु. [सं सिध्मं] १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग विशेष ।

(अमरत)

२ कोढ़ का दाग ।

सिन-सं. पु.—जाळ नामक वृक्ष का फल, पीलू । (डि. को.)

सिनक—देखो सणक' (रू. भे.)

सिनकी—देखो 'सणकी' (रू. भे.)

सिनकादिक—देखो 'सनकादिक' (रू. भे.)

उ०—दे नारद उपदेस, नांव सिनकादिक जांण्यौ, गुर ते जनक वदेह, पीव उर मांहि पिछांण्यौ ।—अनुभववांणी

सिनगारपट्टी - देखो 'सिणगारपटी' (रू. भे.)

सिनांण-सं. पु.—१ मस्तक, सिर ।

उ०—धर्म तोपां जिसूं अहिराट रा सिनांण धूजै, रोक जंगां लै खांहौ ओघाट रा रकत । थैं मुदेत थाट रा फड़ाया भुजां आभ थांभै, लाट रा लिखाया मेदपाट रा लिखत ।—राघौदांस सांदू

२ देखो 'स्नांन' (रू. भे)

सिनांन—देखो 'स्नांन' (रू. भे.)

उ०—१ करि सिनांन वंदन करि, ध्यांन चित्त धरै चक्रधर । सिलह कसै कसि सस्त्र, पमंग साकति सक्ति पक्खर ।—सू. प्र.

उ०—२ विदा हुए पाधारियौ, पुहकर मुरधर पत्त । दान सिनांन

विधांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रक्रत्त ।—रा. रू.

सिनांनघर—देखो 'स्नांनघर' (रू. भे.)

उ०—सिनांनघर मांय घुसग्यौ। न्हाय-धोय नै नुंवौ पजांमौ-कुड़तौ पैर'र जांणै नुंवी ताजगी आयगी ।—तिरसंकू

सिनांनी-सं. पु.—१ विश्नोई जाति का आदर सूचक सम्बोधन ।

२ विश्नोई जाति का व्यक्ति ।

उ०—सातिळ सनमुखि आय, सुचील जित हुवौ सिनांनी। सांग रांण सुणि सीख, जका गुर कही स जांनी ।—वील्होजी

वि.—नित्य स्नान करने वाला, नित्य स्नान का नियम रखने वाला ।

रू. भे.—सनांनी ।

सिनाख्त-सं. स्त्री. [फा. शिनाख्त] १ पहचान ।

२ पहचान का चिन्ह ।

रू. भे.—सनाकत, सनाखत, सनागत ।

सिनावड़ी-सं. स्त्री.—छितराने वाला घास जो वर्षा ऋतु में होता है ।

सिनि-सं. पु. [सं. शिनि] १ गर्ग ऋषि का एक पुत्र ।

२ एक यादव वीर का नाम जिसने देवकी हरण के समय सोमदत्त से भयंकर युद्ध किया था ।

सिनिबाहु-सं. पु. [सं. शिनिबाहु] वायु पुराण के अनुसार एक नदी ।

सिनिया—देखो 'सेना' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिनियास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सिनियासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—सजै जमात नवा सिनियासी, करवा जुध आया कहर। 'बाघ' हरा वाळौ दाटक विख, लागौ ज्यूं बागी लहर ।

—ऊकौ बोगसौ

सिनिमाघर, सिनीमाघर, सिनेमाघर-सं. पु.—जिसमें चलचित्र दिखाए जाएं ।

उ०—म्हैं नई जाणती ही कै तूं इतरौ डरपोक लड़कौ होसी। सिनेमाघर माथै तौ तूं घणौ साहस अर वहादरी रौ कांम कर नै आयौ है ।—तिरसंकू

सिनीमौ, सिनेमौ, सिनेमौ-सं. पु [अं. सिनेमा] १ चलचित्र ।

उ०—१ साळां अस्पताळां भूंडी, नारी पर क्यूं रीस कर। कथा कीरत थांन तीरथां, खेल सिनेमा दोस नर ।—नारी सईकड़ो

उ०—२ अेक जोधाबाई माथै अणूतौ सिप्पौ होणां सूं बापड़ां माथै कांई कांई नी बीती। साहितकारां अर सिनेमा आळां रै पांण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी ।—जहूरखां मेहर

२ वह स्थान जहां चलचित्र दिखाए जाते हैं ।

सिनेह—देखो 'स्नेह' (रू. भे.)

सिन्नांन—देखो 'स्नान' (रू. भे.)

उ०—१ सिन्नांन घात मधि संधियास, उचरत मंत्र गायत्रि अभ्यास ।—सू. प्र.

उ०—२ राजलोक रिख दूंण, वीस पड़दायत प्यारी। संग सहेली च्यार, अगन सिन्नांन उचारी ।—रा. रू.

सिन्यास—देखो 'संन्यास' (रू. भे.)

सिन्यासी—देखो 'संन्यासी' (रू. भे.)

उ०—सिन्यासी कहीयां क्या होई, जब तै अपना करम न खोई ।

—अनुभववांणी

सिपत—देखो 'सिफत' (रू. भे.)

उ०—अरजी लिखी सौ बादशाह सुण नै घणौ ही रजावंद हुयौ। जलाल री सिपत तारीफ बहोत-बहोत करी ।

—जलाल बूबना री बात

सिपर-सं. स्त्री. [फा.] १ ढाल ।

२ कवच ।

रू. भे.—सपरि, सिफर ।

सिपरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे.)

सिपहसालार-सं. पु.—सेनापति, सेनानायक ।

उ०—सिपहसालार औ खिताब खांनाखांन नै अकबर दियौ ।

—बां. दा. ख्यात

सिपाई—देखो 'सिपाही' (रू. भे.)

उ०—१ साह द्वार सकबंध गयौ 'गजबंध' सवाई। हरखवंत सुण हुवा, सकौ सामंत सिपाई ।—रा. रू.

उ०—२ लाखां सूं बंधड़ लड़ाई, सार प्रथम साभ्रिआ सिपाई ।

—रा. रू.

सिपाईगिरी, सिपागारी-सं. स्त्री.—सिपाही का कार्य या पेशा ।

उ०—जरै पातिसाहजी पूठि थापली नै कह्यौ—तुम्ह सेर जुवांन ऐसैं हीज हौ, पिण आगै जायगा विखम छा। तुम तुम्हारी नौकरी सिपागारी आछी करियौ ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

रू. भे.—सिपाहगिरी, सिपाहीगिरी सिपाहीगीरी ।

सिपाय—देखो 'सिपाही' (रू. भे.)

सिपारस—देखो 'सिफारिस' (रू. भे.)

सिपारसी—देखो 'सिफारसी' (रू. भे.)

सिपारौ-सं. पु. [फा. सिपारा] कुरान के तीस भागों में से एक ।

सिपाह-सं. स्त्री. [फा.] १ सेना, फौज ।

२ देखो 'सिपाही' (रू. भे.)

उ०—१ जवदल लिखै जवाब, 'गजण' दिस एम धरै गहि। सौ नाहि असल सिपाह, मांण तजि मिळै दियै महि ।—सू. प्र.

उ०—२ जरै पैलांरा प्रवळ प्रहार हूं पड़ियौ कै पुळियार हुवौ जांणै साहरी सेनारा सिपाहां मतै मतै मारग लागण रौ आरंभ करियौ ।

—वं. भा.

रू. भे.—सिप्पाह ।

सिपाहगिरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

सिपाही-सं. पु. [फा.] १ सैनिक, योद्धा । (डिं. को.)

पर्याय.—पायदवाळौ, पावदौ ।

२ पुलिस का सबसे नीचे का कर्मचारी जो पहरे आदि का कार्य करता है, कांस्टेबुल ।

उ०—सिपाहियां नीचो उतार दियो। थांणादार नेड़ै आवतां ई वगरै मूंडा मायै एक ठोकर जमाई।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सिपाई ।

अल्पा;—सिपाईड़ौ ।

सिपाहीगिरी, सिपाहीगीरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

उ०—बहरांम गोरी अरब देस में नांमोन मंजर कन्है आपरै बापरी पायगा मूं सिपाहीगिरी सीखै थी ।—नी. प्र.

सिप्पाह—देखो 'सिपाह' (रू. भे.)

उ०—सिप्पाह वसं कमंध बावीस हसती बंध । निज नारनोलह नांम, धुर तेग-बंदां धांम ।—सू. प्र.

सिप्पौ-सं. पु.—१ निशान, चिन्ह ।

२ रोब, प्रभाव ।

उ०—ग्रेक जोधाबाई मायै अगूंतो सिप्पो होण सुं बापड़ां माथै काई कांई नीं बीती। साहितकारां अर सिनेमा आळां रै पांण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी ।—चितरांम

सिप्रा-सं. स्त्री.—उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी ।

रू. भे.—सफरा, सिपरा, सिफरा, सीप्रा ।

सिफत-सं. स्त्री. [अ. सिफ़त] हस्त लाघवता, निपुणता ।

उ०—राघव सिफत वखांणी सच्चै सायरां, आफताव दुनियांणी दीद नगाहए ।—र. ज. प्र.

२ कोई विशिष्ट गुण, विशेषता ।

३ उत्तमता, उम्दगी ।

४ प्रशंसा, तारीफ ।

रू. भे.—सिपत ।

सिफर-सं. पु. [अ. साइफर] १ शून्य, बिन्दी ।

२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)

उ०—गूजमाळा खंजर सिफर किलंगी केवांणां, माही तोग मुरातवा नोबत नीसांणा ।—अनोपसिंह सांदू

सिफा-सं. स्त्री. [सं. शिफा] १ जड़ । (डिं. को.)

२ वृक्ष विशेष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनाये जाते थे ।

सिफाईड़ौ—देखो 'सिपाही' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सिफाईडा ज्यूं ही रायफलां मैं रीड़्या, भुगांनै रा एकला भाई त्यूं ही मामै मैं मागीड़ा सिवया अर सीड़्या ।—दसदोख

सिफारस—देखो 'सिफारिस' (रू. भे.)

उ०—विदतिया गुरांजी नै मागै नेर'र डिपटी कनै गैया अर आपरी सिफारस सही करवाई ।—दसदोख

सिफारसी-वि. [फा सिफारिशी] जिसकी सिफारिश की गई हो ।

रू. भे.—सिपारसी, सुपारसी ।

सिफारिस-सं. स्त्री. [फा. सिफारिश] १ किसी से कही जाने वाली ऐसी बात जिससे अपना या दूसरों का भला होता हो ।

२ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध माफ कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय ।

३ नोकरी दिलवाने के लिए कही जाने वाली प्रशंसा या बात ।

४ प्रशंसा, तारीफ ।

यौ.—सिफारसी टट्टू ।

रू. भे.—सपारस, सफारस, सिपारस, सिफारस, सुपारस, सुपारिस, सुफारस ।

सिब—१ देखो 'सबी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिबी' (रू. भे.)

सिबका, सिबिका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—आपरी पुत्रियां रै समांन धन भूसण वस्त्र दास दासी गज बाजि सिबिका रथ प्रमुख सांमग्री दे'र चौथै दिन वरात नूं बिदा करि फेर बूंदी आयौ ।—वं. भा.

सिबिर—देखो 'सिविर' (रू. भे.)

उ०—मंडप रा प्राघुणकां प्रांमारराज री तरफ सूं वरात रै सिबिर जाय दुल्लह नूं मारीच चढाय.........तोरण पधरावियौ ।

—वं. भा.

सिबी-सं. स्त्री. [सं. शिबा] १ मूंग आदि की फली ।

उ०—उंब सिबी अंगुली बहु सेकि बटक्कै, खाजै पूरी खल्लकै ताजै करि तक्कै ।—वं. भा.

२ देखो 'सबी' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं अपूठो दीठो ज्यूं बीजाणंद री सिबी दीठी। ताहरां कह्यौ—तूं बीजाणंद चारण हुवै ।—सयणी री बात

रू. भे.—सिब ।

सिमंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ो वेटो मिडल फेल हो, वो जिला मैं एक सेठ री हिस्सादारी मैं सिमंट रो होल-सेल डीलर बणग्यो ।—अमरचूंनड़ी

सिमक-सं. स्त्री.—ऊँट का एक रोग जिसमे उसका पिछला पैर पतला पड जाता है तथा वह लंगड़ा हो जाता है ।

सिमटणौ, सिमटबौ-क्रि. अ.—१ दूर तक बिखरी या फैली चीजों का खिचकर थोड़े स्थान में आना, समेटा जाना, सीमित होना ।

उ०—दूर ऊगुणा परवतां री रीहरावळ रै लारै सूं परभात रो गैरो कसुमल पल्लो अबार तांई अंधारै मांय सिमट्यौ पड़्यौ हो ।

—तिरसंकू

२ इकट्ठा होना, एकत्र होना ।

३ क्रम या तरतीब से लगना ।

४ काम पूरा होना, समाप्त होना ।

५ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पड़ना, सिकुड़ना ।

६ डर, लज्जा आदि के कारण संकुचित होना।
७ देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)
सिमटणहार, हारौ (हारी), सिमटणियौ—वि०।
सिमटिय्रोड़ौ, सिमटियोड़ो, सिमटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिमटीजणौ, सिमटीजबौ—भाव वा०।
संवटणौ, संवटबौ, समटणौ, समटबौ, सिवटणौ, सिवटबौ, सिमटाणौ, सिमटावौ, सिमिटणौ, सिमिटबौ—रू० भे०।

सिमटाणौ, सिमटाबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमटायोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमटायोड़ी)

सिमटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रम या तरतीब से लगा हुआ. २ काम पूरा हुवा हुआ. ३ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पड़ी हुई. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ समेटा गया, सीमित हुवा हुआ. ६ डर, लज्जा आदि से संकुचित हुवा हुआ।
(स्त्री. सिमटियोड़ी)

सिमणौ, सिमबौ—देखो 'सींवणौ, सींवबौ' (रू. भे.)
उ०—दमड़ो लै म्हैं दरजी कै चाली, दरजीड़ा सौदौ कर लै रे। म्हनै तौ आंगी म्हारा बाईजी नै चोळी मारूजी नै कुड़तौ सिम दै रे।—लो. गी.

सिमरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.)
उ०—आछी बातां दोय इळ, सब जांणत संसार। कै सिमरण करतार रौ, सिमरण कै सुदतार।—ऊ. का.

सिमरणौ, सिमरबौ—देखो समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)
उ०—सिमरण सास उसास का, सुरती सिमरी जेए। अग्र अणी चित्त आंणकै, प्रीतम रस पीजेए।—स्रीसुखरांमजी महाराज
उ०—२ बांजड़ियां पुत्र देय भवांनी, आद भवांनी सकल भवांनी। चारू देस मैं चारू कूंट मैं, वखांणी सिमरूए आद भवांनी।
लो. गी.
उ०—३ जोग ध्यांन सिमरै सिव ज्यांनूं, औ अति भार फवै नह ज्यांनू।—सू. प्र.
उ०—४ कमळ नयन मंगळकरन, स्रीराधा घनस्यांम। कवि-भ्रमभमर म सोच कर, सिमरि नांम अभिरांम।—रा. रू.
सिमरणहार, हारौ (हारी), सिमरणियौ—वि०।
सिमरिय्रोड़ौ, सिमरियोड़ौ, सिमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिमरीजणौ, सिमरीजबौ—कर्म वा०।

सिमरत्थ, सिमरथ, सिमरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—१ सिमरथ हमकूं भेद लखाया, अनुभव तत्त बताई। सहज समाधी लागी घट भीतर, जीवन मुक्ति आनंद दिखाई।
—स्रीहरीरांमजी महाराज
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुत, 'सिवौ' अभंग सिमरथ्थ। दाह दिळेसां उर दयण, भू विजई भारथ्थ।—द. दा.

सिमरि—देखो 'समीर' (रू. भे.)
उ०—सांभरपुर नौबत निहुंसतां, वड सुख हिमरित सिमरि वहंतां।
—रा. रू.

सिमरिव-सं. स्त्री.—बिजली। (ह. नां. मा.)

सिमरी—देखो 'सिंवरी' (रू. भे.)

सिमल—देखो 'सिंवल' (रू. भे.)

सिमांनौ—देखो 'सांमियानौ' (रू. भे.)
उ०—१ सोव्रन जवाहर अति सरूप, घरि जड़ित जवाहर पाणि धूप। जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव, तै रूप मेख रेसम तणाव।
उ०—२ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन वितांन वणाए।—सू. प्र.

सिमाड़—देखो 'सीमाड़' (रू. भे.)
उ०—तुडतांण जिसौ चउवांण तपै, कर वेढ सिमाड़ मैं वास कपै।
—पा. प्र.

सिमाणौ, सिमाबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवावौ' (रू. भे.)
उ०—दादासा री लाड, सिमाया कपड़ा नूंवा। नूंवा कपड़ा पै'राय, लाड सूं बैठायौ खूंवा।—सांतिलाल देवेरा

सिमायोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमायोड़ी)

सिमाळीबांमण—देखो 'स्रीमाळीबांमण' (रू. भे.)

सिमावणौ, सिमावबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवावौ' (रू. भे.)
उ०—नवलख तारा रे ईसर, चमकि रह्या तै की मख अंगिया सिमाव।—लो. गी.

सिमावियोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमावियोड़ी)

सिमिटणौ, सिमिटबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमिटियोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमिटियोड़ी)

सिमेंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

सिमेटणौ, सिमेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

सिम्रती—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सियंभू—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

सिय—देखो 'सीता' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—धरि गुर वचन, वचन पित धारै, प्रभू सिय जुत, वनवास पधारै।—सू. प्र.

सियरौ-वि.—शीतल, ठंडा।

सियल—देखो 'सील' (रू. भे.)
उ०—१ धरम आराधियै ए, धरम ना चार प्रकार। ग्यांनी देवां इम कह्यो, दांन सियल तप भाव।—जयवांणी
उ०—२ गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया मांहि धूरा रे। तप बारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे।—स. कु.

पर्याय.—मावळवाळौ, मावधी ।

२ पुलिस का सबसे नीचे का कर्मचारी जो पहरे आदि का कार्य करता है, कांसटेबुल ।

उ०—सिपाहियां नीचौ उतार दियौ । थांणादार नेड़ै आवतां ई नगरै मूंडा मार्थ एक ठोकर जमाई।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सिपाई ।

अल्पा;—सिफाईड़ौ ।

सिपाहीगिरी, सिपाहीगीरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

उ०—बहरांम गोरो अरब देस में नांमीन मंजर कन्है आपरै बापरी मारग्या सूं सिपाहीगिरी सीखै थौ ।—नी. प्र.

सिप्पाह—देखो 'सिपाह' (रू. भे.)

उ०—सिप्पाह वर्ग कमंध बावीस हसती बंध । निज नारनौलह नांम, धुर तेग-वंदां धांम ।—सू. प्र.

सिप्पौ-सं. पु.—१ निशान, चिन्ह ।

२ रोब, प्रभाव ।

उ०—अेक जोधाबाई मार्थ अगूंतौ सिप्पौ होण सुं बापड़ां मार्थ कांई कांई नीं बीती । साहितकारां अर सिनेमा आळां रै पांण आज ई लाई रै जीव में सोराई कोयनी ।—वितरांम

सिप्रा-सं. स्त्री.—उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी ।

रू. भे.—सफरा, सिपरा, सिफरा, सीप्रा ।

सिफत-सं. स्त्री. [अ. सिफ़त] हस्त लाघवता, निपुणता ।

उ०—राघव सिफत वखांणी सच्चै सायरां, आफताव दुनियांणी दीद नगाहए ।—र. ज. प्र.

२ कोई विशिष्ट गुण, विशेषता ।

३ उत्तमता, उम्दगी ।

४ प्रशंसा, तारीफ ।

रू. भे.—सिपत ।

सिफर-सं. पु. [अ. साइफर] १ शून्य, बिन्दी ।

२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)

उ०—सूजमाळा खंजर सिफर किलंगी केवांणां, माही तोग मुरातबा नौबत नीसांणा ।—अनोपसिंह सांदू

सिफा-सं. स्त्री. [सं. शिफा] १ जड़ । (डि. को.)

२ वृक्ष विशेष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनाये जाते थे ।

सिफाईड़ौ—देखो 'सिपाही' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सिफाईड़ा ज्यूं ही रायफलां में रीझ्या, भुगांनै रा एकला भाई त्यूं ही सांसै में मागीडा सिवया अर सीझ्या ।—दसदोख

सिफारस—देखो 'सिफारिस' (रू. भे.)

उ०—विद्दतिया गुरांजी नै सागै लेर'र डिपटी कनै गैया अर आपरी सिफारस सही करवाई ।—दसदोख

सिफारसी-वि. [फा. सिफारिशी] जिसकी सिफारिश की गई हो ।

रू. भे.—सिपारसी, सुपारसी ।

सिफारिस-सं. स्त्री. [फा. सिफारिश] १ किसी से कही जाने वाली ऐसी बात जिससे अपना या दूसरों का भला होता हो ।

२ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध माफ कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय ।

३ नौकरी दिलवाने के लिए कही जाने वाली प्रशंसा या बात ।

४ प्रशंसा, तारीफ ।

यौ.—सिफारसी टट्टू ।

रू. भे.—सपारस, सफारस, सिपारस, सिफारस, सुपारस, सुपारिस, सुफारस ।

सिब—१ देखो 'सबी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिबी' (रू. भे.)

सिबका, सिबिका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—आपरी पुत्रियां रै समांन धन भूसण वस्त्र दास दासी गज बाजि सिबिका रथ प्रमुख सांमग्री दे'र चौथै दिन बरात नूं बिदा करि फेर बूंदी आयौ ।—वं. भा.

सिबिर—देखो 'सिविर' (रू. भे.)

उ०—मंडप रा प्राघुणकां प्रमारराज री तरफ सूं बरात रै सिबिर जाय दुल्लह नूं मारीच चढाय........तोरण पधरावियौ ।

—वं. भा.

सिबी-सं. स्त्री. [सं. शिबा] १ मूंग आदि की फली ।

उ०—उंव सिबी अंगुली बहु सेकि बटक्कै, खाजै पुरी खल्लकै ताजै करि तक्कै ।—वं. भा.

२ देखो 'सबी' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं अपूठौ दीठौ ज्यूं बीजाणंद री सिबी दीठी । ताहरां कह्यौ—तूं बीजाणंद चारण हुवै ।—सयणी री बात

रू. भे.—सिब ।

सिमंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ौ बेटो मिडल फेल हौ, वौ जिला में एक सेठ री हिस्सादारी में सिमंट रौ होल-सेल डीलर बणग्यौ ।—अमरचूंनड़ी

सिमक-सं. स्त्री.—ऊँट का एक रोग जिसमे उसका पिछला पैर पतला पड़ जाता है तथा वह लंगड़ा हो जाता है ।

सिमटणौ, सिमटबौ-क्रि. अ.—१ दूर तक बिखरी या फैली चीजों का खिचकर थोड़े स्थान में आना, समेटा जाना, सीमित होना ।

उ०—दूर ऊगुणा परवतां री रीहरावळ रै लारै सूं परभात री गैरी कसुमल पल्लौ अवार तांई अंधारै मांय सिमट्यौ पड़्यौ हौ ।

—तिरसंकू

२ इकट्ठा होना, एकत्र होना ।

३ क्रम या तरतीब से लगना ।

४ काम पूरा होना, समाप्त होना ।

५ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पड़ना, सिकुड़ना ।

६ डर, लज्जा आदि के कारण संकुचित होना।
७ देखो 'समेटणौ, समेटवौ' (रू. भे.)
सिमटणहार, हारौ (हारी), सिमटणियौ—वि०।
सिमटिश्रोड़ौ, सिमटियोड़ो, सिमटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिमटीजणौ, सिमटीजवौ—भाव वा०।
संवटणौ, संवटवो, समटणौ, समटबौ, सिवटणौ, सिवटवौ, सिमटाणौ, सिमटावौ, सिमिटणौ, सिमिटबौ—रू० भे०।

सिमटाणौ, सिमटावौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमटायोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमटायोड़ी)

सिमटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रम या तरतीब से लगा हुआ. २ काम पूरा हुवा हुआ. ३ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पड़ी हुई. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ समेटा गया, सीमित हुवा हुआ. ६ डर, लज्जा आदि से संकुचित हुवा हुआ।
(स्त्री. सिमटियोड़ी)

सिमणौ, सिमवौ—देखो 'सींवणौ, सींववौ' (रू. भे.)
उ०—दमड़ी लै म्हैं दरजी कै चाली, दरजीड़ा सौदौ कर लै रे। म्हनै तौ आंगी म्हारा बाईजी नै चोळी माव्जी नै कुड़तौ सिम दै रे।—लो. गी.

सिमरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.)
उ०—आछी वातां दोय इळ, सब जांणत संसार। कै सिमरण करतार रौ, सिमरण कै सुदतार।—ऊ. का.

सिमरणौ, सिमरबौ—देखो समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)
उ०—सिमरण सास उसास का, सुरती सिमरी जेए। अग्र अणी चित्त आंणकै, प्रीतम रस पीजेए।—स्रीसुखरांमजी महाराज
उ०—२ बांजड़ियां पुत्र देय भवांनी, आद भवांनी सकल भवांनी। चारू देस मैं चारू कूंट मैं, वखांणी सिमरू ए आद भवांनी।
लो. गी.
उ०—३ जोग ध्यांन सिमरै सिव ज्यांनूं, श्रो अति भार फवै नह ज्यांनू।—सू. प्र.
उ०—४ कमळ नयन मंगळकरन, स्रीराधा घनस्यांम। कवि-भ्रम-भमर म सोच कर, सिमरि नांम अभिरांम।—रा. रू.
सिमरणहार, हारौ (हारी); सिमरणियौ—वि०।
सिमरिश्रोड़ौ, सिमरियोड़ौ, सिमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सिमरीजणौ, सिमरीजवौ—कर्म वा०।

सिमरत्थ, सिमरथ, सिमरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—१ सिमरथ हमकूं भेद लखाया, अनुभव तत्व बताई। सहज समाधी लागी घट भीतर, जीवन मुक्ति आनंद दिखाई।
—स्रीहरीरांमजी महाराज
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुत, 'सिवौ' अभंग सिमरथ्थ। दाह दिळेसां उर दयण, भू विजई भारथ्थ।—द. दा.

सिमरि—देखो 'समीर' (रू. भे.)
उ०—सांभरपुर नौबत निहंसतां, वड सुख हिमरित सिमरि वहंतां।
—रा. रू.

सिमरिव-सं. स्त्री.—बिजली। (ह. नां. मा.)

सिमरी—देखो 'सिंवरी' (रू. भे.)

सिमल—देखो 'सिंवल' (रू. भे.)

सिमांनौ—देखो 'सांमियानौ' (रू. भे.)
उ०—१ सोव्रन जवाहर अति सरूप, घरि जड़ित जवाहर पांणि धूप। जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव, तै रूप मेख रेसम तणाव।
उ०—२ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन वितांन वणाए।—सू. प्र.

सिमाड़—देखो 'सीमाड़' (रू. भे.)
उ०—तुडतांण जिसौ चउवांण तपै, कर वेढ सिमाड़ मैं वास कपै।
—पा. प्र.

सिमाणौ, सिमाबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवाबौ' (रू. भे.)
उ०—दादासा री लाड, सिमाया कपड़ा नूंवा। नूंवा कपड़ा पै'राय, लाड सूं बैठायौ खूंवा।—सांतिलाल देवेरा

सिमायोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमायोड़ी)

सिमाळीबांमण—देखो 'स्रीमाळीबांमण' (रू. भे.)

सिमावणौ, सिमावबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवावौ' (रू. भे.)
उ०—नवलख तारा रे ईसर, चमकि रह्या तै की मख अंगिया सिमाव।—लो. गी.

सिमावियोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमावियोड़ी)

सिमिटणौ, सिमिटबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू. भे.)

सिमिटियोड़ौ—देखो 'सिमटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिमिटियोड़ी)

सिमेंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

सिमेटणौ, सिमेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटवौ' (रू. भे.)

सिम्रती—देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

सियंभू—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

सिय—देखो 'सीता' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—धरि गुर वचन, वचन पित धारै, प्रभू सिय जुत, वनवास पधारै।—सू. प्र.

सियरौ-वि.—शीतल, ठंडा।

सियल—देखो 'सील' (रू. भे.)
उ०—१ धरम आराधियै ए, धरम ना चार प्रकार। ग्यांनी देवां इम कह्यौ, दांन सियल तप भाव।—जयवांणी
उ०—२ गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया मांहि धुरा रे। तप बारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे।—स. कु.

सियलो–वि.—ठण्डी, शीतल।

उ०—वाड़ी रा वड़ रळियांमणा ए, सियली वड़ री छाय। नागा-दही नाई मरी ए, झिलती झालर वाव।—लो. गी.

सियवाद—देखो 'स्यादवाद' (रू. भे.)

सियान—देखो 'सांन' (रू. भे.)

सिया–सं. पु [अ. शीया] १ मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो हजरत अली को पैगम्बर का ठीक उत्तराधिकारी मानते हैं।

२ टोलियों की एक शाखा। (मा. म.)

३ देखो 'सीता' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ वणी चत्र धाए रचें पतिव्रता, सिया मंडवी उरमिळा सत्यव्रता।—सू प्र.

उ०—२ सिया ऊभी भाबोसा री पोळ, रांम रथ हांक दियो। सिया मांगे सोही मांग पीछ्‌ं रथ हक जासी।—लो. गी.

सियाइ–वि.—शीलवती।

उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण एही संपजइ, तउ जिम ठल्लउ जाइ।—ढो. मा.

सियाकरो—देखो 'सिहाकरो' (रू. भे.)

सियापत, सियापति, सियापती—देखो 'सीतापति' (रू. भे.) (अ. मा.)

सियार–सं. स्त्री.—१ छेद करने का बढई का एक औजार।

२ देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

सियारो–सं. पु.—१ वह बैल जिसकी मूत्रेन्द्रिय पर पेशाब करने की जगह भौंरी हो। (अशुभ)

२ देखो 'सीरावो' (रू. भे.)

सियाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सूकर स्वांन सियाळ सिंह, सरप रहै घट मांहि। कुंजर कीड़ी जीव सब, पांडे जानैं नांहि।—दादूवांणी

उ०—२ सीहणी हेकौ सीह जणि, छापर मडै आळि। दूध विटाळण का पुरस, बोहळा जणै सियाळि।—हा. झा.

(स्त्री. सियाळण, सियाळकी, सियालणी, सियाळी)

सियाल, सियालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सियाळसींगी—देखो 'स्याळसींगी' (रू. भे.)

सियाळियो—देखो 'स्रगाळ' (अल्पा; रू. भे.)

सियाळी–सं स्त्री.—१ एक प्रकार का मेवा विशेष जो गाजर की शक्ल का होता है। यह बेल की जड़ में लगता है।

२ मादा सियार।

सियाळू—देखो 'सीयाळू' (रू. भे.)

उ०—वातां रा व्याळ सरब सियाळू, ऊनाळू ऊंगंदा है। जूता जतळायां मन मत लाया, बतळायां बीखंदा है।—ऊ का.

सियाळो—देखो 'सीयाळो' (रू. भे.)

उ०—१ सियाळा री ठाढी हेम रातां अंतस खीरा उकराळती ही। आमण-दूमणी आपो विसरायोड़ी ठकरांणी पाछो हींगळू ढोल्या माथै सूयगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ हमकै ओळंग हंजा मारू देवरजी नै मेल्ह, अबकै सियाळै मद छकया घरै वसो जी म्हारा राज।—लो. गी.

सियाळ्यो—देखो 'स्रगाल' (अल्पा; रू. भे.)

सियावर–सं. पु. [सं. सीतावर] रामचन्द्र।

उ०—१ कोयक दिन सेवा इम करतां, ध्यांन नरेस सियावर धरतां।—सू. प्र.

उ०—२ हेली नेण निजर भर निरखो, सियावर बींद बण्यो जोबण सरको।—समान बाई

रू. भे.—सियावर।

सियासांमी—देखो 'सीतास्वांमी' (रू. भे.)

उ०—सुतण दासरथ रूप लसवांन कोटक समर जसवांन अप सियासांमी।—र. ज. प्र.

सियाहगोस–सं. पु.—वनबिलाव।

सियो–सं. पु.—सीसा। (डि. को.)

सिरंग, सिरंगो—देखो सरंग' (रू. भे.)

उ०—१ परसै त्यां पिनाकी उरंगां हार लोक पावै, वळै घांन किनाकी विरंगा भूलै वाट। जांहनमी ताहरी तरंगा बीच भूलै जिका, पेमैर सिरंगा खुलै मोख री कपाट।—संकरदांन सांदू

उ०—२ अनंग रंग तरंग घग सिरंग कांठळ उपंग। जंग पतंग निहंग ढंग खतंग जानो।—कुंभकरण सांदू

उ०—३ पाहाड सिरंगै पंथ पवंगै गोम निहंगै गूघोळं।—गु. रू. बं.

सिरंम—देखो 'सीरम' (रू. भे)

उ०—१ सिरंमां साट हुवै हय थाट, धरा रज-धूळ मुडै अब मूळ।—गु. रू. बं.

उ०—२ कटकां रा सूर पड़िनै रहीआ छै। हाथी लड़ावीजै छै। पाइक सिरंम साझै छै। फूलहाथ फेरीजै छै। भांति भांति रा तमासा लागनै रहीआ छै।—रा. सा. सं.

सिर–सं पु. [स. शिरस्] १ शरीर के ऊपर का वह गोल भाग जिसमें मस्तिष्क रहता है, कपाल।

२ शरीर का वह भाग जो गर्दन द्वारा धड़ से जुड़ा रहता है। (अ. मा.)

(मि. माथो)

उ०—धरणी तळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियो, सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो।—ऊ. का.

मुहा.—सिर रो सेवरो=सर्वश्रेष्ठ, आदरणीय।

३ मस्तिष्क की विचार शक्ति, बुद्धि।

४ शिरा, नस। (अमरत)

५ सेना का अग्र भाग।

६ किसी वस्तु का सबसे ऊंचा भाग या अंग, शृंग।

उ०—भवि भवसउ तै बोलइं बोलइं गिरि सिर टोल ।
—जयसेखर सूरि

७ धान की बालि ।
उ०—बिजड़ां मुहै वेड़तौ बळभद्र सिरां पुंज कीधा समरि ।
—वेलि

८ ललाट, भाल ।
उ०—सूरज री उगाळी सुनार सांमो मिळै लोग मूढो फेरै सांमे सिर सळ घालै वै'म करै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै ।—दसदोख
क्रि. वि.—१ पर, ऊपर ।
उ०—१ मुरधर थया वधावणा, हरखै तेरह साख । ज्यूं वन पाळै पीड़ियां, सिर आयौ वैसाख ।—रा. रू.
उ०—२ मंदिरै गौरव सु पदम रागमैं, सिखरि सिखि रमैं मंदिर सिर ।—वेलि
उ०—३ खंड देवड़ा भरै डंड खंधी, सगपण कर भाटी सनबंधी । सारां मिळे तूझ सूं संधी, बळ दाखै किण सिर 'गजबंधी' ।
—चतुरी मोतीसर

२ अतिनिकट, नजदीक ।
३ देखो 'सर' (११) (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
रू. भे.—सिरि, सिरी ।

सिरक-सं. स्त्री. [सं. शीत+रक्षक] सर्दी से बचने के लिए रात्रि में ओढने का खोला जिसमें रूई भरी हुई होती है, लिहाफ ।
उ०—सेठांणी दौ तीन वळा पींजारी नै ओसीसा अर सिरक-पथरणा भरावण सारू बुलाई तौई वा नौळी रै रिपियां री बात नीं करी ।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सिरख, सीरक, सीरख ।

सिरकण-सं. स्त्री.—१ खिसकना, हटना या जाने की क्रिया या भाव ।
२ देखो 'सिरकी' (रू. भे.)
उ०—१ पाल्है डेरा परठिया; मारग मध्यै आय । सिरकण तांणै तांतियां, डेरा किया वणाय ।—जसमा ओडणी री बात
उ०—२ राव कहे जसमल सुणो, महलां देखण आव । महलां दीठां बीहिजै, म्हां सिरकणां रौ साव ।—जसमा ओडणी री बात

सिरकणौ, सिरकबौ-क्रि. अ.—१ बीतना, व्यतीत होना, गुजरना ।
उ०—ओ जवाब सुणियां मां धकै कीं बात नीं चलाई । दिन सिरकता गिया । अेक पखवाड़ौ सिरकग्यौ ।—फुलवाड़ी
२ हटना, खिसकना ।
उ०—१ टाळ्या सिरदार हेटा लुळ नाई रै पगां हाथ लगावण वाळा हा कै वो लप आगो सिरकग्यौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ राजकंवर नै आपरी जीत माथै तौ अडिग विस्वास हौ इज । पछै होड करणा मैं क्यूं पाछौ सिरकतौ । पण घणा तेरू री रांड व्है ।—फुलवाड़ी

३ चलना, जाना ।
उ०—१ बोली—आपरी गाळियां तौ आसीस री गरज सारै । आप कित्ती ई गाळियां काढौ तौ ई जीमियां बिना आपनै अठा सूं सिरकण नीं दूं ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जड़ाव मासी कह्यौ—थूं तौ होठां आयोड़ी बात नै पूरी बारै पटकायां ई रंवै । डौळ दीखै कै सुणियां बिनां नीं सिरकैला ।
—फुलवाड़ी

४ आगे बढना, पास आना ।
उ०—१ सीढी काढियौ कणाकलौ आगो सिरकै अर माथै माथै पड़ै । म्हैं जांणनै गम खाई कै बापड़ौ साधु है, भीड़ मैं दोरौ बैठो है, जावण दौ, धूड़ बाळौ ।—अमरचूंनड़ी
उ०—२ कूंपौजी बोल्या—म्हां थकां बैरचां री कटक एक पावंडौ ई धकै सिरकजाय तौ म्हैं कूंभीपाक भागी व्हूंला । इण रा सूरज भगवान साखी है ।—कूंपा राठौड़ री वारता
५ खिसकना ।
उ०—१ ज्यूं ज्यूं अंधारौ पाथरतौ गियौ चांद री धोळौ रंग पीळौ पड़तौ गियौ । अर वो तर तर नीचै सिरकतौ गियौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ सेवट हिम्मत कर नै एक जणां नै होळैसी'क कह्यौ—भाई जी राज थोड़ा आगा सिरकज्यौ म्हूं ई गोडीवाळ लूं ।
—अमरचूंनड़ी

६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हट जाना ।
ज्यूं—थांभा रौ सिरकणौ, बाड़ या भींत सिरकणी ।
७ चुपचाप कहीं से चले जाना ।
८ मिटना, नाश होना ।
९ चूतड़ के बल धीरे धीरे किसी ओर बढना, रेंगना ।
१० सांप, छिपकली आदि जन्तुओं का रगड़ खाते पेट के बल चलना, रेंगना ।
११ कार्य निकलना या पूरा होना ।
ज्यूं—थूं रिपिया दै दिया जणै म्हारौ कांम सिरकग्यौ ।
१२ स्थगित होना, आगे बढ़ना ।
ज्यूं—वीं री परीक्षा अर ब्याव दोन्यूं आगे सिरकग्या ।
सिरकणहार, हारौ (हारी), सिरकणियौ—वि० ।
सिरकिओड़ौ, सिरकियोड़ौ, सिरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिरकीजणौ, सिरकीजबौ—भाव वा० ।
सरकणौ, सरकबौ, सरक्कणौ, सरक्कबौ—रू० भे० ।

सिरकस-सं. पु.—१ श्रेष्ठ, शिरमौर ।
उ०—बारहट केसरी भीम का भीम, सूरां तैं सिरकस कविराजां की सीम । —रा. रू.
२ देखो 'सरकस' (रू. भे.)

सिरकाणौ, सिरकाबौ-क्रि. स.—१ रखना, धरना ।
उ०—१ बांणियौ अेक कवौ लियौ तौ उणनै खीचड़ी फीकी अर

बिना घी री लागी। वो कह्यो—डांगरां रै सांमी बांटो सिरकावै ज्यूं सिरकाय दी।—फुलवाड़ी

उ०—२ गुद तौ दिन-रात माल-मलींदा उडातौ रैवै। अर म्हारै सांमी सात दिनां रा वासी टुकड़ा सिरकाय देवै।—फुलवाड़ी

२ खिसकाना।

३ धकेलना।

४ हटाना, दूर करना।

५ मिटाना, खत्म करना।

६ बढ़ाना।

७ व्यतीत करना, गुजारना।

८ कार्य आदि निकालना, पूरा करना।

ज्यूं—थूं मनै रिपिया दे'र म्हारो कांम सिरका दियो।

९ स्थगित करना, अवधि बढ़ाना।

ज्यूं—थारी परीक्षा आगे सिरका दी।

सिरकाणहार, हारौ (हारी), सिरकाणियौ—वि०।

सिरकायोड़ो—भू० का० कृ०।

सिरकाईजणौ, सिरकाईजबौ—कर्म वा०।

सरकाणौ, सरकावौ, सरकावणौ, सरकाववौ—रू० भे०।

सिरकापासो—सं. स्त्री.—रस्सी में लगने वाली वह गांठ जो रस्सी का एक छोर खींचने पर सरक कर कड़ी व दृढ हो जाती है।

सिरकायोड़ो—भू. का. कृ.—१ रखा हुआ, धरा हुआ. २ खिसकाया हुआ. ३ धकेला हुआ. ४ हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ. ६ बढ़ाया हुआ. ७ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ. ८ कार्य आदि निकाला हुआ, पूरा किया हुआ. ९ स्थगित किया हुआ. अवधि बढ़ाया हुआ।

(स्त्री. सिरकायोड़ी)

सिरकार—देखो 'सरकार' (रू. भे.)

उ०—१ आप झरोखां बैठता, अळवळिया सरदार। हाजर रहती गोरड़ी, सज सोळै सिणगार। जो सिरकार आपरी सूरत प्यारी लागै म्हांरा राज।—लो. गी.

उ०—२ चांदी को एक वाटको जीं मैं बूरा भात। हुकम होय सिरकार को दोन्यूं जीमां साथ।—लो. गी.

सिरकारी—देखो 'सरकारी' (रू. भे.)

सिरकियोड़ो—भू. का. कृ.—१ बीता हुआ, व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ. २ हटा हुआ, खिसका हुआ. ३ चला हुआ, गया हुआ. ४ आगे बढ़ा हुआ, पास आया हुआ. ५ खिसका हुआ. ६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हटा हुआ. ७ चुपचाप कहीं से गया हुआ. ८ मिटा हुआ, नाश हुवा हुआ. ९ चूतड़ के बल धीरे-धीरे किसी ओर बढ़ा हुआ, रेंगा हुआ. १० सांप आदि का रगड़ खाते हुए पेट के बल चला हुआ. ११ कार्यादि निकला हुआ, पूरा हुवा हुआ. १२ स्थगित हुवा हुआ, अवधि बढ़ाया हुआ।

(स्त्री. सिरकियोड़ी)

सिरकी—सं. स्त्री.—पतली तीलियों की या सरकंडे की बनी हुई टट्टी।

उ०—पीचका बेरा रै पाखती अेक रूपाळी लुगाई सिरकी तांण वासो करियौ। साथै फगत अेक डावड़ी अर अेक कुत्तौ।—फुलवाड़ी

सिरख—देखो 'सिरक' (रू. भे.)

उ०—उठो म्हारा मारू बनड़ा करी नीं पोढणियो, हिंगळू तो ढोल्यो बनड़ा सिरख पथरणा, इसड़ा पोढणिया थांरा दासी जी करावै।—लो. गी.

सिरख-सोड़ियौ—सं. पु. यौ.—हेमंत ऋतु में रात्रि में ओढने का लिहाफ व चादर।

उ०—पीस पोयकर त्यार, मलीदा पाटै ल्यावै। सिरख-सोड़िया सीड़, ढोलिया ढाळ बिछावै।—नारी सईकड़ो

वि. वि.—देखो 'मसोड़'।

सिरखुली निसांणी—सं. स्त्री.—निसाणी नामक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक पद में प्रथम १२ मात्रा पर यति और तुकबन्दी होती है तथा फिर नौ मात्राएं और होती हैं। इस प्रकार कुल २१ मात्राएं होती हैं।

सिरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ बंधव इक लखमण तूं बीजो, तो सिरखो बंधव नह तीजो।—सू. प्र.

उ०—२ बलता मात पिता कहै रे, सिरखी वयनी तो नार।—जयवांणी

उ०—३ रजपूतांणी रुच सींचाणी सिरखी, नैणां जळ भरखी सैणां थळ निरखी।—ऊ. का.

(स्त्री. सिरखी)

सिरग—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

सिरगा—सं. पु.—घोड़े की एक जाति।

सिरगिर—स्रीगिरि' (रू. भे.)

उ०—कस्या घण सज्जळ छज्जळ कांन, सिरगिर कज्जळ कूट समांन।—मे. म.

सिरड़—सं. स्त्री.—१ एकाएक या सहसा आने वाली क्रोध की तरंग।

२ किसी कार्य के प्रति सहसा होने वाला उत्साह, धुन।

३ बुरी लत, कुटेव।

उ०—मिंदर तीरथ मंत्र व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिंड नख दरसण घत निजलापण, फिर क्यों सिरड़ फंसाई।—ऊ. का.

सिरड़ि, सिरड़ी—सं. स्त्री.—तीव्र आवाज।

उ०—१ पछै कांन मैं आंगळी खसोल, ऊंचो मूंडो करनै डूंडी वाळो जोर सूं सिरड़ी देय कैवण लागो।—फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी झिड़क नै कह्यो—रांम मारचा, क्यूं बिरथा कांन खावै। अठै दूजो कुण ऊभो है जको इत्तो जोर सूं सिरड़ियां करै,

म्हैं तौ होळै बोलै तौ ई सुण लेवूंला ।—फुलवाड़ी
वि.—१ सनकी, तुनक मिजाज ।
२ पागल, बेवकूफ ।
उ०—गळि ग्रमलदार तिरणूं गिणै, मरणूं डूबि सुमांणसां । खळ भ्राति सिरड़ि मन मैं खिटै, मिटै न टिरड़ि कुमांणसां ।—ऊ. का.
३ हठी, जिद्दी ।

सिरचंद-सं. पु.—हाथी के मस्तक पर पहनाया जाने वाला एक अर्द्ध चंद्राकार आभूषण ।

सिरजंदौ, सिरजंन, सिरजक, सिरजण-वि.—१ सृजन करने वाला, बनाने वाला ।
उ०—पण लुगाई तौ दुनियां रौ सिरजण करण वाळी मां है, उणरी कूख मैं साच रौ पोसण व्है ।—फुलवाड़ी
२ ईश्वर, परमेश्वर ।
उ०—जप तप तीरथ बोह कीया, वन वन डोल्या तन । जनहरीया मन थिर भया, जब सिवरचा सिरजंन ।—अनुभववांणी

सिरजणहार, सिरजणहारौ—देखो 'सरजणहार' (रू. भे.)
उ०—१ मानवी को कहा रे बावली हौ । तेतीस कोड़ि देवता सहित सिरजणहार, त्यउ तुहारइ कउतिग देखणहार ।
—अ. वचनिका
उ०—२ सिरजणहारौ सिवरियै, सकळ संवारै काज ।—डेल्हजी
उ०—३ हरीया सांई एक है, सबका सिरजणहार । मैं पिंडत कूं कहि रह्या, सुधि जांणै सार ।—अनुभववांणी
उ०—४ बेटी, दुनिया रौ खिलकौ तौ देख कै इण अकल अर इण पोच रा धणी ई थारै म्हारै भाग रा सिरजणहार है ।—फुलवाड़ी

सिरजणौ, सिरजबौ—देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हजूर बुलाइ अर कह्यौ भोपति का खुदाइ अैसा ही सिरजिया हुता ।—द. वि.
उ०—२ सींगण कांइ न सिरजियां, प्रीतम हाथ करंत । काठी साहंत मूठि मां, कोडी कासी संत ।—ढो. मा.
उ०—३ होणीं सौ होई थिर नह थिर कोई, सिरजणहारै सिरजी सिर सोई ।—ऊ. का.
सिरजणहार, हारौ (हारी), सिरजणियौ—वि० ।
सिरजिग्रोड़ौ, सिरजियोड़ौ, सिरज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिरजीजणौ, सिरजीजबौ—कर्म वा० ।

सिरजथा-सं. स्त्री.—डिंगलगीत रचना का नियम विशेष जिसके अनुसार गीत के प्रथम द्वाले में जो वर्णन किया जाय वह क्रमशः अंत तक एकसा ही रहता है ।

सिरजनहार—देखो 'सरजणहार' (रू. भे.)

सिरजळाइग्यारस—देखो 'सरजळाइग्यारस' (रू. भे.)

सिरजित, सिरजीत—१ प्रारब्ध, पूर्व लेख ।
उ०—सिरजित मेट न को सकै, करौ कोडि विधि कोई । एहवी द्विज बुद्धि उपजै, होणहार जिम होई ।—ध. व. ग्रं.
२ देखो 'सरजीत' (रू. भे.)

सिरजियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिरजियोड़ी)

सिरजीलौ-वि.—सृजन करने वाला, बनाने वाला, निर्माता ।
उ०—उरध ढाकिलै तिसूळू ग्रादि ग्रनादि तौ हूंम रचीलौ हूमैं सिरजीलौ स कवण ।—वि. सं. सा.

सिरजोर-वि. [फा. सरजोर] १ जबरदस्त, प्रचण्ड ।
उ०—१ अठी एम पह उभै, दळां पारंभ दरसाया । सयद उठी सिरजोर, अगन झळ जिम दळ आया ।—सू. प्र.
उ०—२ जुलफकार खां मारियौ, मुगळ थया निरजोर । माह महीनै जेठ ज्यौ, सेद वहै सिरजोर ।—रा. रू.
२ प्रबल ।
उ०—१ मिळिया दळ कमंधां अणमापै, अन सिरजोर गिणै नहि ग्रापै ।—रा. रू.
उ०—२ जवन पेख सिरजोर, दियौ छत्रपति छिपाए । भसम जांण भारियौ, अगन कण जतन उपाए ।—रा. रू.
३ बलवान, शक्तिशाली ।
४ बागी, विद्रोही ।
५ उदंड, बदमाश ।
रू. भे.—सरजोर ।

सिरजोरी-सं. स्त्री. [फा. सरजोरी] १ जबरदस्ती ।
उ०—लड़थड़ गळ लंजा हतरस हंजा, मनमथ कांम मयंदा है । जारी कर जोरी सठ सिरजोरी, कोरी हाय कथंदा है ।—ऊ. का.
२ उद्दंडता, सरकशी, बदमाशी ।
रू. भे.—सरजोरी ।

सिरज्जण—देखो 'सरजण' (रू. भे.)

सिरज्जणौ, सिरज्जबौ—देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे.)

सिरज्जियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिरज्जियोड़ी)

सिरटौ—देखो 'सिटौ' (अल्पा; रू. भे.)

सिरटौ—देखो 'सिटौ' (रू. भे)
उ०—१ बाजरियां सांगै-पांग पाकोडी । बांस-बांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दांणा देखौ तौ जांणै परड़ा रा डोळा ।
—अमरचूंनड़ी
उ०—२ ओळी तीन देपाळदै खंचायी हुती सू तियै मैं जुवार रा घाड़ छै तियां रा सिरटा नीसरिया नहीं, मकी रै सिरटै दाई निसरिया ।—देपाळदै री वात

सिरताज—देखो 'सरताज' (रू. भे.)
उ०—१ वर पंच वासै, सत्र नासै, राज कज सुरराज । खर खेत खंडै, थूर थंडै, सूर कुळ सिरताज ।—र. ज. प्र.

उ०—२ वर तिलक कीजै वार, ग्रविवेक राज उदार। लोकमळ पवि सिरताज, लीधनुज ग्रखित सकाज।—सू. प्र.

सिरत्रांण-सं. पु [सं. शिरस्त्राणम्] सिर की रक्षा के लिए युद्ध ग्रादि में पहना जाने वाला लोह का बना टोप, भिलमटोप। (डि. को.)

सिरथंभ-सं. पु. यौ. [सं. शिर+स्तंभ] गर्दन। (ग्र. मा.)

सिरदार—देखो 'सरदार' (रू. भे.)

उ०—१ स्वरण रखै जे ग्रब सकै, दे किम पहरेदार। सिर राखै सिरदार नहि, सिर दे सो सिरदार।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ मायव सुघड़ सुजांण, रसक रिझवार हो। हो म्हारा सिरदार, हिया रा हार हो।—र. हमीर

उ०—३ सैवट एक दिन तो सगळां नै मरणो इज है, पण सिरदारां री मौत री तो कीं पतियारी इज नीं।—फुनवाड़ी

उ०—४ रजपूती रैई नहीं, पूगी समदां पार। पातरियां रा पाद में, मोज गया सिरदार।—ऊ. का.

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागो—जो वीहा कुंवरजी रै ग्रागै ही घणा छै पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखो कोई नहीं वडी सिरदार जांणीयां विसेख।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ तद प्रोहित ग्ररज कीवी—कुंवरजी साहिब लाडीजी मुजरो मालम करवायो छै। वडी सिरदार तारीफ कासुं करूं।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—७ ग्रापणो वारलो वरसाळो मैं एक ताजीमी सिरदार वैठांण पर्ना'र ग्रायो हूं।—दसदोख

सिरदारगी-सं. स्त्री.—१ सरदार होने का भाव, सरदारगी।

२ सम्पन्नता।

३ ग्रमीरी।

सिरदारड़ो—देखो 'सरदार' (ग्रल्पा; रू. भे.)

सिरदारि, सिरदारी—देखो 'सरदारी' (रू. भे.)

सिरदुग्राळी-सं. स्त्री.—घोड़े का एक साज जो चमड़े का बना होता है ग्रोर लगाम के कड़ों में लगकर कानों तक होता है।

सिरदौ—देखो 'सरदो' (रू. भे.)

उ०—१ परहरै ग्रांन साकार पति, साहै गति साहै चडी। सिर चाडि हाथि सिरदौ करण, ग्रवर देव मुझ ग्राखड़ी

—सुरजनदास पूनियो

उ०—२ पथर देव देहरा पथर, पथर कळस वणाया। पूरव पीठि पद्म दिस सिरदा, हिंदू धरम गुमाया।—सुरजनदास पूनियो

सिरघणी-सं. पु.—मालिक, स्वामी।

उ०—म्हाकै तो थें पातसाहजी का सायजादा च्याहूं बराबर सिरघणी छौ।—द. दा.

वि.—सिरमौर, श्रेष्ठ।

सिरघर-सं. पु.—१ मकानों के स्तम्भ के ऊपर का पत्थर।

२ दरवाजे के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर या काष्ठ का बना उपकरण विशेष।

उ०—खूंटा खड़ा, वळा डूंचिया, हालां सूं हळ ठाटिया। सिरधर ग्रर सैंतीर साळां, खूड़, भूण, थम, पाटिया।—दसदेव

रू. भे.—सरघर।

सिरघा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—उण मैं लिख्यो हो—दूजां नै तो कांई लिखूं पण ग्राप नै लिख्यां बिना रैय नीं सकूं कारण कै ग्रापरो तो उण नालायक माथै थोड़ो घणो ग्रसर पड़ै है, वोई ग्रापनै सिरघा री निजर सूं देखै है।

—ग्रमरचूंनड़ी

सिरधारि, सिरधारी-सं. पु.—सिरों को धारण करने वाला, महादेव।

उ०—सिरधारी तो जटधार सदा रा, करधारी वणिया ग्रब केम। उमा हूंत धुरजटी ग्राखै, जंग भू थई ग्राहुवै जेम।

—मोहबत बारहठ

२ मालिक, स्वामी।

सिरनांमी-सं. पु.—स्वामी, मालिक।

उ०—१ वीनति सुणौ रे म्हांरा वाल्हाराजि मरुदेवा रांणी ना लाल, राजि थांरा चरण नमुं सिरनांमी।—वि. कु.

उ०—२ वर त्यागी नै वैराग्य लियौ, इंद्रा दीक्षा महोत्सव कियौ। गया ठिकांणै सिरनांमी, सुमरौ स्रीसीमंधर स्वांमी।—जयवांणी

सिरनांमौ—देखो 'सरनांमौ' (रू. भे.)

उ०—राजा दोनूं रोहड़ां, रीझ किया कविराज। गण दामां गांमां गजां, सिरनांमां सिरताज।—रा. रू.

सिरपंच—देखो 'सरपंच' (रू. भे.)

सिरपाउ, सिरपाव-सं. पु—१ सिर से पैर तक पहनने के वस्त्रादि जो बादशाह, राजा, महाराजा द्वारा किसी को सम्मानार्थ दिये जाते थे।

उ०—१ उठै राजि स्रीकल्यांणमलजी नूं सिरपाव देइ हाथी घोड़ा देइनै बीकानेर नूं विदा किया।—द. वि.

उ०—२ फेर महाराजा जसवंतसिंहजी रै सांवू कूंभो मालावत चारण ग्रायो सो घणा दिन रहियो। महाराज घोड़ो कड़ा मोती सिरपाव देय रहिया उद विरावतै सूं गयो।

—महाराजा पदमसिंहजी री वात

२ कपड़ा, वस्त्र।

उ०—कंवरजी दरीखांनै ग्राया छै ईसा सुण ढाढीयां सिरपाव पहरीया वीण सरू कर मुजरा नै चालीया।—ढो. मा.

४ विवाह ग्रादि मांगलिक ग्रवसरों पर ग्रपने सगे सम्बन्धियों को सम्मान के रूप में दिये जाने वाले वस्त्र ग्रादि।

उ०—मांन घणो ई राखियो, जातां दिया सिरपाव। ब्याह करियो मन हरख सूं, राख्यो कोड ग्रर चाव।—सांतिलाल देवेरा

रू. भे.—सरपाव, सिरोपाव।

सिरपेच-सं. पु. यौ. [सं. शिर+रा. पेच] पगड़ी या साफे पर बांधा

जाने वाला एक आभूषण विशेष। (अ. मा.)

उ०—१ दोय भाई सांवळा दोय ऊजळा घणा, सारां मैं सिरदार राघीरांम जी वनां सीस पै सिरपेच सोहै सेवरा घणा, मोतियां री लूम लागी हीरां जी पनां।—लो. गी.

उ०—२ साहब नौबत सुद्रब, वसन जरकस्स जवाहर। रतन जड़त सिरपेच, माळ मुगताहळ सुंदर।—रा. रू.

उ०—३ जिस वखत स्रीमहाराजा केसरिया ऊंच पौसाक पहरि खांधी पाघ पेच वणवाय। जंवहर कै सिरपेच सिर सोबा जगजोति जगाय।—सू. प्र.

रू. भे.—सरपेच।

सिरपोस—सं. पु.—दीपक या पीलजोतों की लौ से उठने वाले धूंए को ऊपर उठने से रोकने के लिए उस के ऊपर लगाया जाने वाला टोप।

२ बंदूक के ऊपर का कपड़ा या गिलाफ।

३ सिर का आवरण।

वि.—१ शिरोमणि, श्रेष्ठ।

उ०—१ निडर 'चंडावळ' नाथ, रूप ग्रीखम रवि रावत। उदैभांण बोलियौ, फौज सिरपोस फतावत।—सू. प्र.

उ०—२ रहै अवर कथ 'रयण', सूर स्रंगार संपेखै। सरब धरम सिरपोस, स्यांमध्रम ध्रम संदेखै।—सू. प्र.

२ देखो 'सिरत्रांण'।

उ०—सझि बाळक सिरपोस, नांम किताब निवाबां। साह बाळ दळ सबळ, सझै भेजंत सताबां।—सू. प्र.

सिरफ—वि. [अ. सिर्फ] १ केवल, मात्र।

उ०—म्हैं बोल्यौ—थारा साथ्यां सूं घिर जांणौ पैली म्हनैं सिरफ च्यार गोळ्यां चलांणी पड़ैली सरदार।—तिरसंकू

२ अकेला, ऐकाकी।

सिरफूल—देखो 'सीसफूल'।

उ०—मांगफूल सिरफूल, जड़ाऊ मंडिया। खिण खिण निरखै नाह हिए दुख खंडिया।—बां. दा.

सिरवंद, सिरवंध—देखो 'सरवंद, सरवंध' (रू. भे.)

सिरवंधण—सं. पु.—किसी पात्र आदि के मुंह पर लपेट कर बांधी जाने वाली रस्सी।

सिरवंधी—सं. पु.—मोर्चावंधी।

उ०—१ वगसी बाळकिसन्न, कहै जरदैतां कापूं। सिरबंधी रातळां, अमख जवनां तिण आपूं।—सू. प्र.

उ०—२ अर जितरौ सिरबंधी रौ लोक छै, इतरौ सरव मेवाड़ी दरवाजै पासै उभौ राखजै।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—३ रांणी गढ संवाहि उभी रही। और सिरबंधी लोक लै राव दखणाधै पासै जाय उभौ रह्यौ दरवाजै। सहर रै लोक नं खबर नहीं।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—४ जरै भींवंजी अरज कीधी, म्हारै कनै पातिसाहां री सुखी निजर सूं हजार तीन असवार छः वळै सिरबंधी रा घोड़ा साथ राखनै हुंई जावुं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

सिरभेदी भालौ—सं. पु.—एक प्रकार का भाला विशेष।

सिरमंड—सं. पु. [सं. शिर+मंड] १ बाल, केश। (अ. मा.)

२ सिर का आभूषण। (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिरिमंड।

सिरमणि, सिरमणी—सं. पु. [सं. शिरमणि] १ शेषनाग।

२ वह सर्प जिसके शिर में मणि हो।

३ सरप, सांप।

उ०—तेज गरुड़ गोरा हठै तिण ताळ रा, तन जगै भाळ रा दवंग तातै। सिरमणि भाळ रा जेम हिंदू सरब, मांन चंद्रभाळ रा भुजां माथै।—कविराजा बांकीदास

वि.—शिरोमणि।

सिरमाळ, सिरमाळा—सं. स्त्री. [सं. शिरमाला] मुंडमाल।

उ०—१ चौसठि पियै भरि पत्र चंड, सिरमाळ सभै आरोह संड।—सू. प्र.

उ०—२ निरख सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ संचै।—रा. रू.

सिरमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू. भे.)

सिरमाळी सुनार—सं. पु.—सुनारों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

सिरमुंडाई—सं. स्त्री.—१ सिर मूंडने की क्रिया या भाव।

२ मुण्डन संस्कार।

३ सिर मुंडवाने का पारिश्रमिक।

सिरमौड़, सिरमौर—सं. पु.—१ सर्वश्रेष्ठ अंग, सर्वोतम अंग या भाग।

उ०—म्हैं तौ कैवूं कै किणी रौ दुस्टी मर भलाई जावै पण उण रा माथै मैं टाट नीं व्है। माथौ तौ देह रौ सिरमौड़।—फुलवाड़ी

२ शिरोभूषण, मुकुट।

३ पति, खाविंद।

४ मालिक, स्वामी।

वि.—१ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोतम।

उ०—१ मीरां जनमी मेड़तै परणाई चित्तौड़। रांम भजन परताप सूं सकळ सिस्ट सिरमौड़।—सगरांम

उ०—२ सुण आवाज सूरमां, एम धज राज उठाया। मौर जीत सिरमौर, जांण पर जोर कि आया।—रा. रू.

उ०—३ सांगरियां रै साग, सती सिरमौड़ सुरांणी। खा सांगरियां साग, नरां पर पीड़ विछांणी।—दसदेव

२ प्रधान, मुख्य।

सिरलोक सिरलोकौ—१ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)

उ०—संवत छपनै रौ केवण सिरलोकौ। लौकिक लेवण नै सांभ-

-ऊगो नांरो। —ऊ. का.

२ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

सिरखो-वि.—१ समान, बराबर।

२ देखो 'सिलो' (रू. भे.)

सिरखी-सं. स्त्री.—स्वच्छ आकाश में कहीं-कहीं पर दिखाई देने वाले बादल के छोटे-छोटे टुकड़े। (क्षेत्रीय)

सिरवाळै-क्रि. वि.—अन्त में, आखिर में।

सिरवाह-सं. स्त्री.—सिर पर किया जाने वाला प्रहार।

सिरस—देखो 'सरेस' (रू. भे.)

उ०—ऊंची डूंगरी पर चढ़ी म्हारी हवेली आंम अर सिरस रा बूढा रूंखां मांय सूं दूर सूं ई दीखण लागगी।—तिरसकू

सिरसतो-सं. पु.—सलाह, मशविरा।

उ०—नित्य सिकार चढै मारै तो हेक हिरण पिण सारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नहीं। तद हिरणां वैस अर सिरसतो कीयो।—बूढी ठग राजा री वात

सिरसद-वि.—घायल।

उ०—साहणियां अरज कीवी—महारावजी घोड़ा जौ कठै चरै, हाथी बाड़ कठै चरै। जवां मांही नै बाड़ मांही तौ जिकी बलाय आय बह दीवी छै सो आदमी सो-सवासो राव रा कांम आया। घोड़ा पचास सिरसद कै हुइया। जवां रै वास्तै साहणी सागिरद पेसे रा लोग पहलां गया तिका सै बेहवाल हुइया।

—डाढाळा सूर री बात

सिरसव—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

उ०—फाग फाग पण सरिखा नहीं, छासि धोळी नइ दूध धोलु सही। जेवडउ अंतर मेरू सिरसव इ, तिम जिलगुण अवर कथा कवयइ।—कल्यांण

सिरसाळो-वि.—बढ़िया, उत्तम।

उ०—बद सास बिकारी एव उघारी, इधकारी ओढंदा है। साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगला कर ऊगंदा है।—ऊ. का.

सिरसिज-सं. पु—१ बाल, केश।

२ देखो 'सरसिज' (रू. भे.) (प्रा. फा. सं.)

सिरसूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सिरसूत-सं पु.—पगड़ी, साफा।

सिरसो—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—१ सो कमरसिंह सिरसौ बडो भाई बिगोई बादसाह री हजूर रहवै छै तीनूं रोवै छै।........—द वि.

उ०—२ जाळ जांगड़ां कांख सघन गायड़मल गाढो, बोल सरेसा बडो गजूरां सिरसौ टाढो।—दसदेव

सिरस्यूं—देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

सिरहर-सं. पु. [सं. सरोवर] १ तालाब। (ह. नां. मा.)

२ सिखर, शृंग।

वि.—१ श्रेष्ठ, शिरोमणि, सरताज।

उ०—१ जंग दतांणी जीतणो, करणां कोड़ पसाव। सोढ हुओ तूं भांण सुत, रावां सिरहर राव।—बां. दा.

उ०—२ गति गंगा मति गोमती, सीता सील सुभाय। महिलां सिरहर मारवी, अवर न दूजी काय।—ढो. मा.

२ समान, तुल्य।

रू. भे.—सरहर, सरहरउ।

सिरहांणो-सं. पु.—पलंग, खाट आदि का वह भाग जिधर सोते समय सिर रहता है।

उ०—स्रीक्रस्ण जी पौढ्या था। दुरजोधन पहिलौ ही सिरहांणा दिसि आइ बैठो।—वेलि टी.

२ सोते समय सिर के नीचे लगाने का तकिया।

रू. भे.—सरांणो, सिरांणो, सिरांतियो।

सिरहार-सं. पु.—मुंडमाल।

उ०—१ काळिका चंडिका पतर भरसी। सदा सिव जिकौ सिरहार करसी। नारद रूयाल जोवसी।—पनां

उ०—२ करै सिरहार हर नचै नारद कहर, खितो पुड़ मचै चहुवै दसा खेद। जंगां अछरा क्रत हूंत नरसै जितै, अतै अजको रहै भूप 'उमेद'।—उम्मेदसिंह सिसोदिया रो गीत

सिरांणो, सिरांतियौ, सिरांतो—देखो 'सिरहांणो' (रू. भे.)

उ०—१ तूं क्यूं सूतो नींद भरि, भजन बिना बेकाज। जमहरीया जोरो करै, खड़ौ सिरांणै बाज।—अनुभववांणी

उ०—२ वीर पतनी (वीर स्त्री) रा वचन है कै बळती छाया देख भाग गया तौ रात रा सोवतां सिरांणै गोदवी तकियौ रहसी पण धण तौ कहै म्हारी बांह रो सिरांणो नहीं हुसी अरथात भागण तो आपसूं घरवास राखूंला नहीं।—वी. स. टी.

उ०—३ सेठ आपरा हरख मैं ई मगन हा कै सेठांणी सिरांतियै आयनै बैठगी।—फुलवाड़ी

उ०—४ पारवतियां बिहू सिरांतो पगांती, पढिया भड धड़ आप प्रमांण। समहर अजर जरि सूतो, साथरि अरि पाथरि 'सुरतांण'।

—सुरतांण मांनावत रो गीत

सिरांमण, सिरांवण-सं. पु. [सं. शीतलामन या सं. शिशिराऽसन]

१ नाश्ता, कलेवा।

उ०—१ ऊतरिया। दांतण कुरळा कीया· सिरांवण किया। सेजवाळो जीतराय दियो।—देपाळदै री वात

उ०—२ ताहरां छोकरी कह्यौ—प्रांचणा सिगळां ही रौ सिरांवण कियो। ताहरां सारा ही ठाकर अबोला रह्या।—नैणसी

२ संबल, पाथेय।

३ स्वल्पाहार।

रू. भे.—सिरांमणी, सिरांवणी, सींरावण, सीरांमण, सीरांमणी, सीरांवण, सीरांवणी।

सिरांमणी, सिरांवणी—सं.स्त्री.—देखो 'सिरांमण' (रू. भे.)

उ०—पिरमी एक वेस एक जनांनी अवल। रुपीया सव इतरा प्रोहित नुं विदा रा मेलिया। मण एक सिरांवणी मारग री मेली।—कुंवरसी सांखला री वारता

सिरा—सं. स्त्री. [सं. शिरा] १ रक्त वाहिनी नाड़ी, खून की छोटी नली, धमनी, रग। (डि. को.)

उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हंस नीसरै सति।
—वेलि

वि. वि.—प्राणी के शरीर में रक्त शिराएं जाल के समान गुंथी हुई होती है। मानव शरीर में आठ रक्त शिराएं प्रमुख मानी जाती है जिन्हें आठों दिशाओं के स्वामियों के नाम से जाना जाता है यथा—आग्नेयी, ऐन्द्री, महाशिरा इत्यादि।

२ नलिका, नाली।

सिराइचौ, सिराईचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तंबू तांण सिराइचा, सहु छाया वनखंड। इळ पुड़ ईंडा मेल्हिया, किरि व्यायौ ब्रहमंड।—गु. रू. बं.

उ०—२ असपका खड़ी हुई छै। तंबू समीआंण सिराइचा रावटी वाडि समेत करणाटी गूडर तांणीया छै।—रा. सा. सं.

सिराका—सं. स्त्री. [सं. शंका] भ्रम, सदेह, शंका।

उ०—दांनि धरमी एक वीर विचारै, सइं नरेंद्र न वलइ अणमारै। हेम नी गजवडिइं पताका, करण जांणिन किसिउं सिराका।
—सालिसूरि

सिराड़ौ—देखो 'सराड़ौ' (रू. भे.)

उ०—तरै साह कह्यौ इणां घोडां री धाव कोस च्यार तांई एकै सिराड़ै देस्यौ, तरै इणां री हांम पूरी पोचसी, तिणसूं महाराज सिराड़ौ साथै दिरावौ।—कहवाट सरवहियै री वात

सिराचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे.)

उ०—लाल सिराचा तरकस जिहां, मलिक मसूरति वइसइ तिहां।
—कां. दे. प्र.

सिराज—वि.—श्रेष्ठ।

उ०—१ सिद्धराज मेह किनियौ सिराज, प्रतपाळ करन जस धरम पांन।—करणी प्रकास

उ०—२ धिन भाग वंस किनिया धिराज, सवं बीस साख उप्रवट सिराज।—करणी प्रकास

सिराजौ—सं. पु.—रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ संजाव संदली सीहा चकवा अवलख सिराजी फेर ही अनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै।—रा. सा. सं.

सिराणौ, सिराबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

सिराणहार, हारौ (हारी), सिराणियौ—वि०।

सिरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिराईजणौ, सिराईजबौ—कर्म वा०।

सिरायचौ—सं. पु.—छोटा तंबू, खेमा।

उ०—तंबू सिरायचा साथ सारू मांणस असवार कीया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सरायचौ, सिराइचौ, सिराईचौ, सिराचौ।

सिरायत—सं. पु.—राजवंश का बड़ा जागीरदार।

वि.—१ हिस्सेदार, भागीदार।

उ०—म्हैं आप सिरायतां सूं घणा सुखी हां।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सरायत' (रू. भे.)

सिरायोड़ौ—देखो 'सरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिरायोड़ी)

सिरारौ—क्रि. वि.—तरफ का, ओर का।

सिरावण—देखो 'सिरांवण' (रू. भे.)

उ०—१ रणछोड़ै रांमा-सांमा करनै चिलम आघी करतां पूछ्यौ—सेठां सिरावण करौ तौ थोड़ी माखण नै सोगरौ लाय दूं।
—रातवासौ

उ०—२ खांवण मैं थळी री उपज बाजरी अर ज्वार, मोठ व कठै'क गेहूं कांम आवै। कड़ी मेनत करण सूं भोजन दिन मैं चार वेळा व्है—सिरावण या कलेवौ, रोटी, बैकारौ अर व्याळू।
—जहूरखां मेहर

सिरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू. भे.)

उ०—कुंभार सिरावा सोनारो रे, हुवौ नायक भार लदारौ।
—जयवांणी

सिराव्रत—सं. पु [सं. सिरावृत्त] सीसा नामक धातु, रांगा।

सिराह—देखो 'सराह' (रू. भे.)

उ०—ग्रीव न मोड़ै देखणी, करणौ संभु सिराह। परणंता धण पेखियौ, ओछौ ऊमर नाह।—वी. स.

सिराहणौ, सिराहबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—अर बार बार सिराहि भोगां मैं आसक्त आळसी। और अवनीसां रा आसय मैं सूतौ वीररस जगायौ।—वं. भा.

सिराही—सं. पु.—सिंध प्रदेश की एक प्राचीन लुटेरा जाति व इस जाति का व्यक्ति।

सिरि—१ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

२ देखो 'सिर' (रू भे.)

उ०—१ वाहै सत्रां सिरि खाग विहंडै, मार लियै थांणां वळ मंडै।—रा. रू.

उ०—२ अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सनि कुंडळ सुरसांण सिरि।—वेलि

३ देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

उ०—दीठउ सुरगिरि खीरहरी, सुमिणइ सिरि रवि चंद ।
—सालिभद्र सूरि

४ देखो 'स्वर'।

उ०—भरर भरर सिरि भेरिग्र साद, पायडीउ श्रालवीउ नाद ।
—होराणद सूरि

५ देखो 'सरी' (रू. भे.)

उ०—मउ महसै एकोतरै, सिरि मोती हरि सुध्ध । नदी निवासउ उत्तरइ, थांगू एक ग्रविध ।—ढो. मा.

सिरिमंड—देखो 'सिरमंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिरिया—सं. पु. [सं. शिरस्] सिर, मस्तक । (ह. नां. मा.)

सिरियाई—सं. स्त्री.—कुम्भार जाति की एक भक्त स्त्री जिसने प्रह्लाद को ज्ञान दिया था ।

उ०—सिरियादे धाया करी सहाया, मिनडी जाया मंभ श्राया ।
—भगतमाळ

सिरियारी—सं. स्त्री.—श्रौषधि में काम आने वाली एक जंगली बूंटी ।

सिरियौ—देखो 'सरियौ' (रू. भे.)

उ०—तीखा तीखा लोखड रा सिरिया रूपी दांत लियां वौ हाथियां सूं ड्रकीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तौ मिनख बापड़ा री कांई जिनात सौ उणरै सांम्हौ देख ई सकै ।—ग्रमरचूंनड़ी

सिरिस्ता—देखो 'सरिस्ता' (रू. भे.)

सिरिस्तेदार—देखो 'सरिस्तेदार' (रू. भे.)

सिरिस्तेदारी—सं. स्त्री. [फा.] सरिस्तेदार का कार्य या पद ।

सिरी—सं. स्त्री. [सं. शिरस्] १ बकरे के सिर का गोश्त जो भून कर या पका कर खाया जाता है ।

[सं. शिरि:] २ तलवार, खड्ग ।

[सं. शिर:] ३ एक प्रकार का बड़ा सर्प ।

४ सर्प, नाग । (ग्र. मा.)

५ बकरे, हिरण, खरगोश आदि शिकार के जानवरों के सिर ।

६ देखो 'श्री' (रू. भे.)

उ०—१ सिरी घंटियाळ ग्ररोहित सेर, सह्यां मवताहळ माळ सुमेर ।—मे. म.

उ०—२ कसै रेसमी लाल कंठा कलावा, किनां वेढ़िया राहु दे भांण काया । सिरी सीस कुंभा तणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जड़ाऊ ।—वं. भा.

७ देखो 'सीरो' (रू. भे.)

उ०—म्हे नौ रिपिया मांगण री सिरी हूं पण कोई जोगौ श्रादमी नीं मिळै नौ वै रिपिया सगळा ग्रकारथ जावै ।—फुलवाड़ी

८ देखो 'सरि' (रू. भे.)

सिरीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू. भे.)

उ०—१ हरमदेवै री कहीजै जच्चा रांणी वैनड़ी ए केसरिया सिरीकिसनजी री नार । ए म्हांनै घणी ए सुहावै जच्चा पीपळी ।
—लो. गी.

सिरीख, सिरीखउ, सिरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—१ श्री राज सिरीखौ दीसै छै । तैसुं मैं तो श्रापनुं होज जांणीया ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ माफ करण मा बाप, खून कियोड़ा खलक नं । श्राप सिरीखा श्राप, जग मांही दूजा 'जसा' ।—ऊ. का.

(स्त्री. सिरीखी)

सिरीभरण—सं. पु. [सं. श्रीभरण:] श्रीविष्णु ।

सिरीमुख—देखो 'स्रीमुख' (रू. भे.)

सिरीवर—देखो 'स्रीवर' (रू. भे.)

सिरीसाप—देखो 'स्रीसाप' (रू. भे.)

उ०—सू किण भांत रा वागा छै । सिरीसाप, भैरव, चौतार, कसबी महमूदी फलगार ।—र. सा. सं.

सिरीसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिरीसी)

सिरीस्रप—सं. पु. [सं. सरीसृप:] १ सर्प, नाग । (ह. नां. मा.)

२ रेंगने वाला जानवर ।

सिरूं, सिरू—वि.—१ शीघ्र स्वाहा न होने वाला ।

२ पर्याप्त, पूर्ण ।

३ बरकत ।

उ०—घर मैं ग्रस्टपौर दांता-कसी । बांमण रै तौ खायी-पीयी ग्रंग नीं लागती । श्रैड़ा भगड़ा मैं लिछमी कद वसै । ग्रर यूं ई मांगण सिवाय बांमण रै दूजौ कोई हलीलौ ई नीं हौ । मांग्या दांणां री कांई सिरूं व्हैती ।—फुलवाड़ी

४ देखो 'सरसूं' (रू. भे.)

५ देखो 'सरू' (रू. भे.)

सिरे, सिरै—वि.—श्रेष्ठ, बढ़िया ।

उ०—१ ग्रथग ग्रचळ घिन 'जोध' ग्रभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै । हरि मेलियौ मथै हौलोहळ, गांजियौ रांवण मेर-गिरै ।
—किसनौ श्राढ़ौ

उ०—२ छोटकी बीनणी सगळी वहुवां मूं सिरै है । नैड़ा नैड़ा चौखळा मैं ई इणरै जोड़ री दूजी बीनणी नीं लाधै ।—फुलवाड़ी

२ मुख्य, प्रधान, खास ।

उ०—१ मांमै गढ री दरवाजौ ढावियौ तौ भांणेज सिरै ड्योढी मैं डेरा किया ।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ मिनख रै वास्तै जीभ सूं कीं बोलणी ई तौ सिरै बात नीं है । मिनख री खास पिछांण तौ उणरै करतवां सूं व्है ।
—फुलवाड़ी

३ सिद्ध, सफल ।

उ०—राखवा राज पतसाह रौ, यौं समाज भड़ उच्चरै । रस थयां

वेळ महाराजरी, सकळ काज चढसी सिरै ।—रा. रू.

क्रि. वि.—पर, ऊपर, सर्वोपरि ।

उ०—१ इम जीपं आवियौ 'गंग' वाजतां नगारां, सुजस वधै धर सिरै, उछक छक वर्व अपारां ।—सू. प्र.

उ०—२ अला लाछिवर पहिलड़ौ साच लीधौ, अला किसौ मेघां सिरै कोप कीधौ ।—पी. ग्रं.

सिरैपंच—देखो 'सरपंच' (रू. भे.)

सिरैपंचो—सं. स्त्री.—सरपंच का कार्य या पद ।

सिरैपोत—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

उ०—वा देत री बेटी तौ सिरैपोत औ इज सवाल करचौ—सांप्रत मौत रे मूंडै थें कांई सोचनै आया ।—फुलवाड़ी

सिरैबाजार—देखो 'सदरबाजार' ।

सिरै री कुरब—सं. पु.—जोधपुर महाराजा द्वारा अपने सामंतों को दिया जाने वाला सम्मान, ताजीम ।

वि. वि.—यह कुछ चुने हुए सरदारों को मिलता था जो राजदरबार के समय अन्य सामन्तों से ऊपर बैठते थे ।

सिरोगुहा—सं. स्त्री. [सं. शिरोगुहा] शरीर के तीन घटों में से एक जिसमें सुषुम्ना नाड़ी का सिरा रहता है ।

सिरोग्रह—सं. पु [सं. शिरोग्रह] १ शिर का एक वात रोग । (अमरत)

२ सब से ऊपर वाला कमरा या कक्ष ।

सिरोतर—वि.—समान तुल्य ।

उ०—कछ धर तणौ कमेत, ताव खगराज सिरोतर । परी भाव पेखजै, वीजळ डक अतर भर । कुरंग ताछ कूदतौ, दुरंग फग्हर तौ डांणां, सरस जलूंमा साज, वाज सिद गुटक वखांणां ।—पनां

सिरोधर, सिरोधरि—सं. स्त्री. [सं. शिरोधरा:] गला, गर्दन ।

(ह. नां. मा.)

सिरोपाव—देखो 'सिरपाव' (रू. भे.)

सिरोवर—वि.—बरावर, समान ।

सिरोभूसण—सं. पु. [सं. शिरोभूषण] सिर पर धारण करने का गहना ।

सिरोमण—देखो 'सिरोमणि' (रू. भे.)

उ०—१ रतन गदज सिरताज, सरब गजराज सिरोमण ।

—रा. रू.

उ०—२ नितजय ग्यांन निवास, पती गणनायकां । लंबोदर हरनंद, सिरोमण लायकां ।—बां. दा.

सिरोमणराय—सं. पु. [सं. शिरोमणि+राज] १ परमेश्वर, ईश्वर ।

(ह. नां. मा.)

२ चक्रवर्ती, सम्राट ।

सिरोमणि, सिरोमणी—वि. [सं. शिरोमणि] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्व प्रमुख ।

उ०—१ अर सामंतां मैं सिरोमणि जांणि जैत कुमार सहित प्रांमार राज सलख नूं आपरै कनै राखण काज अजमेर बुलावियौ ।

—वं. भा.

उ०—२ सरब सिरोमणी होवण सारू, लागा करण लड़ाई । मोक्ष गियोड़ा रिसि मुनियां मैं, अध बिच टांग लड़ाई ।—ऊ. का.

२ जिसके सिर पर मणि हो ।

रू. भे.—सरोमण, सरोमणि, सरोमणी, सिरोमण ।

सिरोमरमा—सं. पु. [सं. शिरोमर्मन्] सूकर, सूअर ।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

सिरोमाळी—सं. पु. [सं. शिरोमालिन्] शिव, महादेव ।

सिरोरुह, सिरोरूह—सं. पु. [सं. शिरोरुह] १ शिर के बाल, केश ।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सिरोरूह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आंक भूं वांकड़ां नेत तीखा ।—मे. म.

२ देखो 'सरोरुह' (रू. भे.)

सिरोळी, सिरोळी—सं. स्त्री.—१ आमों की एक प्रकार की किस्म या जाति या इस जाति का आम ।

२ देखो 'सिरोळौ' (पु.) (रू. भे.)

सिरोळौ, सिरोळौ—वि. (स्त्री. सिरोळी) जिसमें एक से अधिक व्यक्तियों की साझेदारी हो, सामूहिक ।

मुहा.—१ सिरोळचां री मां नै स्याळ खावै=साझेदारी अच्छी नहीं होती. २ पिरथी माळ सिरोळी है=धरती पर उत्पन्न पदार्थ पर सबका हक होता है ।

सिरोही—वि. स्त्री.—सिरोही नगर की बनी । (तलवार)

उ०—ठाकर व्है वह जांण क समझै अखवरां, सिरोही तरवार खणंक्कै बक्करां ।—अग्यात

सं. पु.—१ एक प्रकार का बढ़िया लोह, जिसकी तलवारें बनती हैं ।

सं. स्त्री.—२ तलवार ।

उ०—१ तेरा नांम सादा तौ अभी लौ चोट झेलौ, पंजै जोर पाया तौ सिरोही दाव खेलौ ।—शि. वं.

उ०—२ अर इणारै माथै घणौ अमांमी सिरोहियां री फूल धारां री बाढ झड़सी ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री बात

वि. वि.—यह दो प्रकार की होती है—पत्राशाई और मानाशाई ।

३ राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा ।

रू. भे.—सीरोही ।

सिरौ—सं. पु.—१ लम्बाई का अन्त, लम्बाई का छोर, शिरा ।

२ ऊपर का शीर्ष भाग ।

३ नोक, अणी ।

४ अग्र भाग ।

५ पंक्ति, कतार ।

६ शुरू का भाग ।

७ बाजरी के सिरटे के आकार के सिट्टे वाला एक प्रकार का पौधा जिसके सिरटे को पीसकर फोड़े-फुंसियों पर लगाते हैं ।

(मि. पनी)

८ देखो 'मिरटी' (रू. भे.)

उ०—पड़ मीस बिना नीठै पठांण, फिर ज्वार सिरै ढुका क्रिसांण।
—रा. रू.

६ देखो 'सिरी' (५) (रू. भे.)

उ०—मिनखो जी मूळै री बोटी आप ही खावै अर भूत नूं ही हेक-हेक दै। इसी भांत बकरो खाधो। बांसै बाकरा री सिरी रह्यौ।
—नैणसी

सिलंग-सं. पु.—रहँट पर बैलों के घूमने के चक्र में खुदे हुए गड्ढे के किनारे पर उस चक्र की ओर लगाया जाने वाला लकड़ी का पाट।

सिल—देखो 'सिला' (रू. भे.) (हि. को.)

उ०—१ तो पै धूळी सिल लग्गी, वारी सारै हि.........। ऊं ही गाधो तरगि उडै छै रयो साकी स कुळ छुडै।—र. ज. प्र.

उ०—२ जनहरीया जुग अंधरा, आंख्यां बिच अंधार। भेद न जांणै भगति को, सिल पूजै संसार।—अनुभववांणी

सिळकणो, सिळकबो—देखो 'सळकणो, सळकबो' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं मिनख री किड़वा हुई त्यूं सरप सिळक नै रूंख मांहै पैस गयो।—नैणसी

उ०—२ करै तदबीर गोरा चढण कांगुरां, तिलंग फररै फुरत फैल ताळी। छूट पिसतोळ पड़ हौल सांपर छिलक, कराबीण सिळक किलक काळी।—कविराजा बांकीदास जी

सिळगणो, सिळगबो, सिळग्गणो, सिळग्गबो-क्रि. अ.—१ किसी चीज का इस प्रकार धुक-धुक कर जलना कि आग की लपटों की बजाय धूंआ ही निकले।

ज्यूं—बीड़ी, सिगरेट या चिलम रो सिळगणो।

२ जलना।

उ०—१ आप अबै सोच करता नीं डरया तो म्हैं सगळा सूवटा सिळग नै मरजावांला।—फुलवाड़ी

उ०—२ वा खुद कैड़ा होण पुन्या गांजरा बाप सूं जलमी अर आपरी कूख मैं कैड़ा अकरमी अर ओछा घणा री अस धारधी—आ सोच उणरी आंख्यां सांम्ही सगळी हरियाली सगग सगग सिळगण लागी।—फुलवाड़ी

३ प्रज्वलित होना, धधकना।

उ०—१ वानै जोत वाळी बात बताय नै कह्यौ—पैलका अंदाता री गळाई म्हां अंदाता रै माथा मैं ई जोत री झाळां सिळगै है।
—फुलवाड़ी

उ०—२ धगळ धपळ नाडी री पाळ रयी सिळगण लागी जांणै धरती री कोई नवौ सूरज सिळगै।—फुलवाड़ी

उ०—३ मिय चै नयण की आग सिळग्गो, ज्वाळा सेस फणै किर जग्गी।—रा. रू.

४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान होना, चमकना।

उ०—१ राजकंवर मगन होय कुदरत रो रूप निरखतो रह्यौ। के अणछक राजकंवर नै अंधारा रौ एक खुणो सिळगतो ज्यूं लखायो। तर गुलाबी झाळां री गोट ज्यूं भळकियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ आथूणा मैं सिळगता सूरज री उजास मिगसो पड़ण लागगो।—फुलवाड़ी

५ उत्तेजित होना, भड़कना।

उ०—अदाता तो ज्यूं हाथ जोड़िया त्यूं तरतर काठा पड़ता गिया वांरो कोप सिळगतो गियो।—फुलवाड़ी

६ लाक्षणिक अर्थ में ईर्ष्या-क्रोध आदि के कारण मन ही मन जलना, कुढ़ना।

७ पेड़ पौधों आदि का अंकुरित होना।

८ असह्य वेदना होना।

६ झुलसना।

उ०—बींद मुळकनै कह्यौ—म्हैं तो थानै पैला ई कै दियो कै औ ढालू तो गिवारां री खांण। अपां बडभागियां नै आछा नीं लागै। सेवट नीं खावणो आया तो थांनै ई बगावणा पड़चा। बळती लाय मैं सिळगिया जको सवाय मै।—फुलवाड़ी

सिळगणहार, हारो (हारी), सिळगणियो—वि०।

सिळगिओड़ो सिळगियोड़ो, सिळग्योड़ो—भू० का० कृ०।

सिळगीजणो सिळगीजबो—भाव वा०।

सळगणो, सळगबो, सळग्गणो, सळग्गबो, साळगणो, साळगबो, सिल्लगणो, सिल्लगबो, सुळगणो, सुळगबो—रू० भे०।

सिळगाणो, सिळगाबो-क्रि. स. ['सिळगणो' क्रि. का प्रे. रू.] १ धुका धुका कर जलाना, धुकाना।

२ प्रकाशमान करना, चमकाना।

३ प्रज्वलित करना, सुलगाना।

उ०—१ सुधि बुधि बंदूक साही, बचन गोळी बाहि। जांमगो सुळगाय जतनां ढिग दूंदर ढाहि।—अनुभववांणी

उ०—२ सिळगाया दीवा री बाट जगांमग करै ज्यूं जच्चा रै डील री आब पळापळ करण लागी।—फुलवाड़ी

४ जलाना, भस्म करना।

उ०—ऐड़ा रूप नै सिळगाय देणो सांतरो पण जुगां री रीत नै यूं अणछक कीकर मेटणो आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ गांव मैं तोरण बांदियो इण वास्तै गम खावूं नींतर ऊभो सिळगाय देतो।—फुलवाड़ी

५ उत्तेजित करना, भड़काना।

६ मन ही मन जलाना, कुढ़ाना।

७ पेड़ पौधों आदि को अंकुरित करना।

८ असह्य वेदना देना।

सिळगाणहार, हारो (हारी), सिळगाणियो—वि०।

सिळगायोड़ो—भू० का० कृ०।

सिळगाईजणो, सिळगाईजबो—कर्म वा०।

सळगाणौ, सळगावौ, साळगाणौ, साळगावौ, सिळगावणौ, सिळगाववौ—रू० भे०।

सिळगायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ धुका-धुका कर जलाया हुआ, धुकाया हुआ. २ प्रकाशमान किया हुआ, चमकाया हुआ. ३ प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ. ४ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ. ५ उत्तेजित किया हुआ, भड़काया हुआ. ६ मन ही मन जलाया हुआ, कुढाया हुआ. ७ असह्य वेदना दिया हुआ. ८ अंकुरित किया हुआ। (स्त्री. सिळगायोड़ी)

सिळगावणौ, सिळगाववौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगावौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै फेर इणी भांत वगदौ देवणौ अर वासदी सिळगावणौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वावौ वोवा मूंडा मैं भिलियोड़ी बीड़ी सिळगावतौ हौ।—फुलवाड़ी

सिळगावणहार, हारौ (हारी), सिळगावणियौ—वि०।

सिळगाविओड़ौ, सिळगावियोड़ौ, सिळगाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिळगावीजणौ सिळगावीजवौ—कर्म वा०।

सिळगावियोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. सिळगावियोड़ी)

सिळगियोड़ौ सिळगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ धुका हुआ, लगा हुआ. २ जला हुआ. ३ प्रज्वलित हुवा हुआ, धधका हुआ. ४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान हुवा हुआ, चमका हुआ. ५ उत्तेजित या भड़का हुआ. ६ ईर्ष्या, क्रोधादि से मन ही मन जला हुआ, कुढा हुआ. ७ अंकुरित हुवा हुआ. ८ भुलसा हुआ। (स्त्री. सिळगियोड़ी सिळगियोड़ी)

सिलड़ौ—देखो 'सिला' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सुथार, सोनी, राछ पला रै, खांण सिलड़ियां हरखतां। कसौटी कस सोणौ सोनौ, जंवरी गैं'णौ परखता।—दसदेव

सिलड़ौ—देखो 'सिला' (मह; रू. भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुवारै सिलड़ा सारा। जाळी जथिया खुणै, वेल समदर नद तारा।—दसदेव

सिलट—देखो 'सिलहट' (रू. भे.)

उ०—मरण वेळां श्री तीतरीयौ इम कहै, कोय न मांनौ कूड़। अमल करौ सिलट करौ, भटके पड़सी भूड़।—वरसैं तिलोकसी भाटी री वात

सिळणौ, सिळवौ, सिळणौ, सिळवौ—क्रि. अ.—छुपना।

ज्यूं—कांई चोर ज्यूं सिळतौ फिरै।

सिळणहार, हारौ (हारी), सिळणियौ—वि०।

सिळिओड़ौ, सिळियोड़ौ, सिळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिळीजणौ, सिळीजवौ—भाव वा०।

सिलता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—१ सरवर कह रस भर जळ सिलता, तरवर खपसर ऊत सर त्यार।—मयारांम दरजी री वात

उ०—२ नकौ सिंध सिलता नकौ ढार भारू, नकौ तीन लोकां नकौ जुग च्यारू।—अनुववांणी

उ०—३ सिलता समावै समद मां, रहै न सिलता नांव। यौं जीव समावै सीव मां, जदि नीर सिधि कौ नांव।—परमानंद वणियाळ

सिलदर, सिलधर—सं. स्त्री.—पत्थर की आयताकार पट्टी जो दरवाजे के ऊपर लगाई जाती है।

सिलप—देखो 'सिल्प' (रू. भे.) (डिं. को.)

सिलपट, सिलपट्टी—सं. स्त्री.—१ जनानी चप्पल जो प्रायः रब्बर की होती है।

२ ऐड़ी की तरफ से खुली जूती।

३ लकड़ी का लम्बा एवं चौकोर लट्ठा जिससे इमारती सामान बनता है तथा जो रेल की पटरी के नीचे भी बिछाया जाता है।

४ एक प्रकार का पत्थर जिससे सलेट पर लिखने की कलमें बनाई जाती है।

सिलपकर, सिलपकार—देखो 'सिलपकार' (रू. भे.) (नां. मा.)

सिलपसासतरी, सिलपसास्त्री—सं. पु. [शिल्पशास्त्री] दक्ष एवं कुशल शिल्पकार।

सिलपी, सिलप्पी—देखो 'सिल्पी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सिलप्पी रचायै जे रूपकां असी चार सोभै, विणायै रतन्नां विधा कांगरा वुवाह।—म्होकमसिंघ रूपावत री गीत

सिलल—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—सिलल धार जळधर लगौ सुंड आकत स्रवण; चर्मक्रियौ लोक वळ कमण चालै।—वां. दा.

सिळवट—देखो 'सळवट' (रू. भे.)

सिलवाड़—सं. स्त्री.—लकड़ी का वह टुकड़ा जिसमें रहट को उलटा घूमने से रोकने वाली लकड़ी फंसाई जाती है।

सिलवाणौ, सिलवावौ—क्रि. स.—सिलाई करवाना, सिलाना।

सिलवायोड़ौ—भू. का. कृ.—सिलवाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ। (स्त्री. सिलवायोड़ी)

सिलसिलावंदी—सं. स्त्री.—कतारवंदी, क्रम।

सिलसिलेवार—वि.—यथाक्रम, क्रमानुसार, क्रमशः।

सिलह, सिलहक्क—सं. पु. [अ. सिलह] कवच, बख्तर।

उ०—१ जिण सिर वाहै खग वळ, देव सराहै जोय। सिलह अटक्का मोम सम, हुवै बटक्का दोय।—रा. रू.

उ०—२ आरोही अत रोस अकब्बर अंग सिलह तुरंगै पक्खर।—रा. रू.

उ०—३ गज हैमर पक्खरै, सिलह सुहड़ां पहरावै।—गु. रू. बं.

उ०—४ कटै सिलहक्क कड़ा कसणक्क, भभक्क डबक्क स्रोणक्क भभक्क।—सू. प्र.

२ अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

उ०—१ सिलह सद्रूक मचीतै वहुं, लद्दै ऊंट चलाए गडुं ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ उज्जळ वस कळ सिलह जड़ ऊजळौ, वजळा विरद सोहै जीनू पग । चोळ वळ किर्यां चोळ ग्रस चकवतौ, गयण छिवतौ वहै ग्रमननौ गंग' ।—माली सांदू

३ युद्ध सामग्री ।

उ०—बारह ऊंठालां माथै सिलह लदियोड़ी हुतो । ग्रर पांचसै ५०० ग्रसवार सूं नरौ चढ़ियो ग्रायो ।—नैणसी

रू. भे.—सलह, सलै, सल्लै, सिलेह, सिलै, सिल्ह, सिल्है ।

सिलहखांनो–सं. पु.—ग्रस्त्र-शस्त्र रखने का कमरा, शस्त्रागार ।

उ०—ग्रण कण कनात डेरा तबू, तिका पीठ ऊंठां तुल्या । जुत म्होर तूट ताळा सजड़, लूट सिलहखांना खुल्या ।—मे. म.

२ ग्रस्त्र-शस्त्र ।

उ०—एक दिन टिक दूजै दिन सिलहखांनो वांटियौ । मारा हुय जोगंद्र घोड़ां पांच सव ऊपर पाखरां घात तयार हुग्रा ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सिल्हखांनो, सीलैखांनो, सील्हेखांनो ।

सिलहट–सं. पु.—१ ईरान का बना एक प्रकार का मजबूत कपड़ा जो ढाल, बादले ग्रादि बनाने के काम ग्राता है ।

उ०—सभि ग्रलीवंघ सिलहट सपरि, खिख चख गिड़कंघ ग्रांखिया । पाघड़ा वंघ ग्रोळा प्रचंड, ग्रंघ जेम उपड़ांखिया ।—सू. प्र.

२ कवच, वगतर ।

रू. भे.—सिलट ।

३ देखो 'सिलहटो' (रू. भे.)

सिलहटो–वि.—सिलहट के कपड़े का बना हुग्रा ।

उ०—१ तठा उपरांयंत पताखां सूं बादळां छोडजै छै । सू किण भांत रा बादळा छै । हळवद रा मोरवी रा.........हालोर रा छै । रूपै री टूंटी सांकळी लागी छै । घणी सिलहटी ग्रटायण मैं चोटिया थका, ऊपरा वेवड़ी-तेवड़ी झालरी मे गरकाब किया थका छै ।—रा. सा. सं.

उ०—तठा उपरांयंत ढालां रा ग्रलीवंध खुलै छै सू ढालां किण भांत री छै । सिलहटी छै । सुध गैंडा ग्रारणां री छै ।
—रा. सा. सं.

रू. भे.—सलहटी, सिलहट, सिलेहट, सिलेहटी ।

सिलहडगळी–स. स्त्री. यौ.—धड़ पर पहना जाने वाला छोटा कवच, धड़ कवच ।

उ०—इणां री मूल ग्रटकळियौ । सिलहडगळिया पहरियां वरछीयां रा मूल भाग, नोरड़ै री डांडी माथै कोई नहीं ।
—राव मालदे री बात

सिलहदार–वि. [ग्र.] १ ग्रस्त्र-शस्त्र धारी ।

२ योद्धा, वीर ।

३ शस्त्रागार का ग्रधिकारी ।

४ ग्रस्त्र-शस्त्रों का व्यापारी ।

रू. भे.—सलहदार, सलहिदार, सलहीदार, सलेदार ।

सिलहपूर–वि.—ग्रस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित ।

रू. भे.—सलहपुर, सलहपूर ।

सिलहपोस–सं. पु.—१ कवचधारी, वस्तरबंद ।

उ०—१ मदां ग्राठ पाटां सिलहपोस थाटां मसत, खाग भाटां ग्रभैसिंघ खहियौ । जवन घड़ सीस गज पड़ै भेळा जठै, कठै गण-पत सगत ईस कहियौ ।—पीथौ सांदू

उ०—२ वरियांम सिलहपोसां विचै, भुजां ग्रभै नभ भेटियौ । तदि जांणि भांण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ ।—सू. प्र.

२ शस्त्रधारी ।

सिलहबंध–वि.—कवच शस्त्र ग्रादि धारण करने वाला, वीर योद्धा ।

उ०—१ किलम सिलहबंध खांडूं जस कर, प्रचंड किसन चांगूर तणी पर ।—सू. प्र.

उ०—२ धख करि फूलं ग्रणि ग्रसि धारूं, मुगळ सिलहबंध खग झट मारूं ।—सू. प्र.

उ०—३ पछट्टत बीजळि 'केहर' पांणि, सिलहबंध हेक करै घम-सांणि ।—सू. प्र.

रू. भे.—सिल्हैबंध ।

सिलहेत, सिलहैत–वि.—१ ग्रस्त्र-शस्त्र युक्त ।

उ०—सिलहैत ढहै इम वहै सार ऊघड़ै फड़ी बगतर ग्रपार ।
—रा. रू.

२ वीर, योद्धा या कवचधारी ।

सिलांम—देखो 'सलांम' (रू. भे.)

उ०—विगत साभळ सकळ विदा हुय वीरवर, घणी सज सिलांमा घणी छक ग्राया घर ।—रा. रू.

सिलांमत, सिलांमति—१ देखो 'सलांमत' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलांमति मेळवणी जोळी जोळी मगाड़ीजै छै ।—रा. सा. सं.

२ देखो 'सलांमति' (रू. भे.)

सिलांमी—देखो 'सलांमी' (रू. भे.)

उ०—ग्रह खारवारै ठाकर तेजमाल नूं माजी कहायो जो भाटी छौ जिणसूं तो थे म्हारा सिलांमी छौ, सू म्है इतरा रहसां तो थेई रहसौ ।—द. दा.

सिला–सं. स्त्री. [सं. शिला] १ पाषाण, प्रस्तर खंड ।
(ग्र. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सिला रा किला द्वार चित्रांम सोहै, विभूसा ग्रलोकीक लोकां विमोहै ।—मे. म.

उ०—२ सिला तखत केसर चमर, ग्रनड़ दरी ग्रावास । प्रगट लियां म्रगराज पण, सादूळा स्यावास ।—वां. दा.

२ चट्टान ।
३ प्रस्तर पट्टिका ।
उ०—विद्या जोवा तीणं पलासि, पहिलुं सिला रची आकासि ।
—सालिभद्र सूरि
४ पत्थर की चौड़ी लम्बी एवं समतल पटिया जिस पर प्रायः स्नान आदि करते हैं ।
५ पत्थर की वह पटिया जिस पर ठंडाई, मसाला आदि बांटे जाते हैं ।
उ०—रोटां वास्तै आटौ गूंदीजियौ, साग-भाजी री त्यारी होवण लागी अर मसालौ पीसतां सिला लोडी बाजण लागी ।
—अमरचूंनड़ी
६ मैनसिल । (डिं. को.)
रू. भे.—सिल ।
७ देखो 'सिलह' (रू. भे.)
उ०—घोड़ां घात पाखरां कर पूरीया सिला लगाय तरगस री कूटा अर घाटी गया ।—वरसं तिलोकसी भाटी री वात
अल्पा;—सिलड़ि, सिलाड़ी ।
मह;—सिलड़ौ ।
सिलाई-सं. स्त्री.—१ सीने का कार्य या ढंग ।
२ इस कार्य की मजदूरी ।
३ देखो 'सलाई' (रू. भे.)
सिळाउ, सिलाउ-सं. स्त्री.—१ बिजली, विद्युत ।
उ०—घड़ि घड़ि धबकि धार धारूजळ सिहरि सिहरि समखै सिळाउ ।—वेलि
२ बिजली की चमक ।
उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन वितांन वणाए । चिग पड़दारू चमंकै, दांमण जांण सिलाउ दमंकै ।—सू. प्र.
उ०—२ वाजंति नाळ निहाउ, किरि कूत वीज सिळाउ । ऊडुंति आगि दवंग, नाखत्र जांणि निहंग ।—गु. रू. बं.
३ तोप के छूटने की आवाज, शब्द ।
४ शलाका, सलाई ।
रू. भे.—सलाव, सिळाव, सिलाव ।
सिळाक, सिलाक—देखो 'सळाक, सलाक' (रू. भे.)
उ०—आंवा री सिलाक हुए तिण भांति रा, बारां वारां बरसां रा डाउडां रा कांन वींधीजै ।—रा. सा. सं.
सिलाड़-सं. पु.—१ दो पशुओं को गर्दन से एक साथ बांधने की रस्सी ।
२ वे दो पशु जो एक ही रस्सी से एक साथ बांधे गये हों ।
३ समान जाति के दो पशु ।
४ युग्म, जोड़ा । (पशुओं का)
रू. भे.—सिल्हाड़ ।
सिलाड़णौ, सिलाड़बौ-क्रि. स.—१ दो पशुओं को गर्दन से एक साथ एक ही रस्सी से बांधना ।
२ देखो 'सिलाणौ, सिलावौ' (रू. भे.)
सिलाड़णहार, हारौ (हारी), सिलाड़णियौ—वि० ।
सिलाड़िओड़ौ, सिलाड़ियोड़ौ, सिलाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिलाड़ीजणौ, सिलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
सलाड़णौ, सलाड़बौ—रू० भे० ।
सिलाड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ एक ही रस्सी से बांधा हुआ ।
२ देखो 'सिलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिलाड़ियोड़ी)
सिलाड़ी—देखो 'सिला' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—पेच मुदियाड़ पर 'बादरौ' पीलाड़ी, कंवर रै लीलाड़ी मांय करकै । हारगा बियां सूं हलै ना हिलाड़ी, सिलाड़ी तौ बिनां नांय सरकै ।—ऊमरदांन लाळस
सिलाड़ीबाब-सं. पु.—राज्य द्वारा लिया जाने वाला एक प्राचीन कर जो जूते बनाने वालों से लिया जाता था । (मा. म.)
सिलाजतु, सिलाजीत-सं. पु. [सं. शिलाजतु] वह लसदार पसेव जो बड़ी बड़ी चट्टानों या पहाड़ों से निकलता है और जो बड़ा पौष्टिक एवं ताकतवर माना जाता है, शलाजीत । (डिं. को.)
उ०—आळा अर अलमारयां में ताकत वेगी लायोड़ी वंग सिलाजीत री सीस्यां जचाई पड़ी है ।—दसदोख
पर्याय.—असमज, गिरिज ।
रू. भे.—सलाजीत, सिलाजतु, सीलाजीत ।
सिलाट—देखो 'सिलावट' (रू. भे.)
उ०—आगळि उड समारइ बाट, बार सहस सूतार सिलाट । माळी तंबोळी सोनार, चालइ घाट घाट घडा लोहार ।—कां. दे. प्र.
सिलाणौ, सिलाणौ-क्रि. स.—१ ठण्डा करना ।
उ०—सासूजी दूध सिलाइयौ स रे भरचौ कटोरै दूध । दूधौ ठंडौ होत है बहू ! वेग जगावौ म्हारौ पूत ।—लो. गी.
२ क्षतिपूर्ति करना ।
३ देखो 'सींवाणौ, सींवावौ' (रू. भे.)
सिलाणहार, हारौ (हारी), सिलाणियौ—वि० ।
सिलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिलाईजणौ, सिलाईजबौ—कर्म वा० ।
सिलादांन-स. पु.—ब्राह्मणों को शालिग्राम की मूर्ति का दिया जाने वाला दान ।
सिलामयी-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम । (बां. दा. ख्यात)
सिलायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ठण्डा किया हुआ. २ क्षतिपूर्ति किया हुआ ।
३ देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सिलायोड़ी)
सिलार-सं. पु.—१ मुसलमान ।

२ देखो 'सिलारी' (रू. भे.)

उ०—घोड़ै नूं नचवां मुबारिजखां सौ हाथ चालीस पचास ऊपर जाय नांखी। बरछी सिलार छै, सौ बरछ सारा देखता रह्या।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सिलारस-सं. पु.—१ रूमी पेड़ का गोंद जिसका रंग पीला होता है।

२ देखो 'सिलाजीत'।

सिलारी-सं. पु.—घोड़े की रकाब पर बना वह स्थान जिस पर बरछी का निचला भाग (बूड़ी) टिका रहता है।

उ०—ताहरां रिणमल जी जांणियौ—बरछी सिलारै सूं काढि मन मैं आंणी ज्युं हाथी ऊपर जाऊं। सु पातसाह मांहे वैठै रिणमल जी रौ द्रोह जांणियौ।—नैणसी

रू. भे.—सिलार, सेलार।

सिलाळ-सं. पु.—पाबू राठौड़ का एक नाम।

वि.—भाला धारण करने वाला।

सिलालेख-सं. पु. [सं. शिलालेख:] पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

सिळाव, सिलाव-स. पु.—१ आधार, साधन, स्रोत।

उ०—१ विरह री बीज, कांम री कळी, रंग री बूंटी, जीवण री जड़ी अर सुख री सिलाव।—फुलवाड़ी

उ०—२ काम री केळि, विरह री बीज सुख री सिलाव, सोना री कांब हुए तिण भांति री सकली, नख मांस मांहै ऊलाळी आकासि जाएं, चावळ री चांवी खाएं, साख्यात पदमणी।—रा. सा. सं.

२ देखो 'सिळाउ' (रू. भे.)

उ०—१ वधि वेल घमाघम सेल वहै, गुणि खीज की बीज सिळाव वहै।—रा. रू.

उ०—२ उर लागी असुहांवणी किर दांमणी सिळाव। सुण वांणी मारोमियां 'जोगांणी' जमराव।—रा. रू.

उ०—३ गजराजं की हळवळ वाजराजूं की कळहळ। नाळ का निहाव, सावळूं का सिळाव।—सू. प्र.

सिलावट-सं. स्त्री.—१ भवन निर्माण एवं पत्थर की घड़ाई-कटाई करने वाली जाति।

उ०—पथ राउ सिलावट अखर कवाड़ा, मोटी नीम घरै मन मोट। 'अनरध' किया जगत ऊपरवट, कीरत तणा पड़े नह कोट।

—राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ री गीत

२ देखो 'सिलावटौ' (मह; रू. भे.)

रू. भे.—सलवाट, सिलाट।

सिलावटियौ—देखो 'सिलावटौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुथार सिलड़ा सारा। जाळी जथिया गुणी वेळ, समदर नद तारा।—दसदेव

सिलावटौ-सं. पु.—भवन निर्माण एवं पत्थर की घड़ाई-कटाई करने वाला कारीगर, संगतराश, शिल्पी।

अल्पा; रू. भे.—सिलावटियौ।

मह;—सिलावट।

सिलावणौ, सिलावबौ—१ देखो 'सींवाणौ, सींवाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलाणौ, सिलाबौ' (रू. भे.)

सिलावणहार, हारौ (हारी), सिलावणियौ—वि०।

सिलाविश्रोड़ौ, सिलावियोड़ौ, सिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिलावीजणौ, सिलावीजबौ—कर्म वा०।

सिलावियोड़ौ—१ देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिलावियोड़ी)

सिलासार-सं. पु. [सं. शिलासार] लोहा।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—विध विध आभूखण जवाहर, लखवगसै जस सुद्रढ लियौ। सिलासार पलटै अंग सुकवि, कमधज रुकमकर रूकम कियौ।

—मांनजी लाळस

सिलास्वेद-सं. स्त्री. [सं.] शिलाजीत। (डिं. को.)

सिलाह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिलाहखांनौ—देखो 'सिलहखांनौ' (रू. भे.)

सिलिंग-सं. स्त्री. [अं. शिलिंग] १ इंगलैण्ड का चाँदी का एक सिक्का विशेष, इंगलैण्ड की मुद्रा।

२ एक कानून जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति एक निश्चित मात्रा से ज्यादा जमीन नहीं रख सकता। यह मात्रा जमीन की उपज पर निर्भर करती है।

सिळिया-वि.—अश्लील, बेहूदा।

उ०—मोडा सूं मिळिया भीतर भिळिया, सिळिया रस सोधदा है। मुख तैं रट रामा दिल बिच दांमां, बांमां घट बोधंदा है।

—ऊ. का.

सिळियार-सं. पु. [सं. शीलचार] युधिष्ठिर का एक नाम।

(ह. नां. मा.)

सिळियोड़ौ, सिळियोड़ौ-भू. का. कृ.—छुपा हुआ।

(स्त्री. सिळियोड़ी)

सिळी-सं स्त्री.—१ बाण या भाले की नोक।

२ शलाका, सलाई।

उ०—वळै वाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि।

—वेलि

३ एक प्रकार के पत्थर का टुकड़ा जिस पर अस्त्र तेज किये जाते हैं, शाण।

उ०—वळै वाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि।

—वेलि

४ छोटा तृण, फांस, फूस, 'भुरट' आदि की फांस।

उ०—१ सिळियां तिणकलां री सांतरी पींजरी वणाय टपरी मैं टेर दियो। तपतो तो हवा करतो।—फुलवाड़ी

उ०—२ खाटी सो दाटी घर खोदै, साथ न चाली हेक सिळी।
—प्रथ्वीराज राठौड़

५ बंदूक के कान में फेरने की लोहे की कील।

रू. भे.—सळी।

सिळीमुख, सिलीमुख–सं. पु. [सं. शिलीमुख] १ भ्रमर, भौंरा।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—अनोखो सिलीमुख साह दळ ऊपरै, क्रमै कूरम जहीं कमर कुंतां। लागियां समो बांणास मोह खांचि लै, हंस मकरंद घट फूल हुंतां।—तेजसिंघ सेखावत रो गीत

२ तीर, बांण। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सिथळ सुकंठ देख अवधेसर, ऊपर करण उमायो। सारंग तांण आंण स्रुति सूधो, बीर सिलीमुख वायो।—र. रू.

उ०—२ चाप सिलीमुख पांन विमोह सु वांम विभाग सिया जुत है।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सलीमुख।

सिळू–सं. पु.—ऊंट के मुंह का एक रोग विशेष।

सिलूप–सं. पु.—नारियल। (अ. मा.)

सिलेट—देखो 'स्लेट' (रू. भे.)

सिलेटिया–सं. स्त्री.—रामावत साधुओं की एक शाखा। (मा. म.)

सिलेटियो–सं. पु.—१ रामावत साधुओं की 'सिलेटिया' शाखा का व्यक्ति।

२ एक प्रकार रंग।

वि.—स्लेट के समान रंग का।

सिलेह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिलेहट—देखो 'सिलहट' (रू. भे.)

उ०—सौ ढालां पातसाह जी सिलेहट री ढालां री परदड़ी मैं पटा घालनै ढाल छांनै मेली।—रा. वं. वि.

सिलेहटी—देखो 'सिलहटी' (रू. भे.)

उ०—सु किण भांत रा वादळा छै? हळवद रा मौरवी रा अंजार रा भरवछ रा हालोर रा छै। रूपै री टूंटी सांकळी लागी छै। घणी सिलेहटी अटायण मैं बींटिया थकां।—रा. सा. सं.

सिलै—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ अरु सिलै री पूजा दसरावै नूं ए करावै।—द. वि.

उ०—२ सिलै अंग साथै कटै छै।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

उ०—३ चलै सर वेधि सिलै घट चोळ, भिणं पट जांणि समीर भकोळ।—सू. प्र.

सिलोक—देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—सो पिंडतराज स्रीमहाराजा की कीरति प्रताप का वरणण का सिलोक पढतै हैं।—सू. प्र.

२ देखो 'सिलोको' (रू. भे.)

सिलोको–सं. पु.—बीस मात्राओं का एक प्रकार का पद्य बंध वचनिका।

रू. भे.—सरलोको, सलोक, सिरलोक, सिरलोको, सिलोक।

सिलोच, सिलोचय, सिलोचै–सं. पु. [सं. शिलोचयः] पहाड़, पर्वत।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सिलोच समांन लगै कइ आंन, वडै विरदाळ वडै बळवांन।—नारायणसिंह सांदू

उ०—सेस हिमालय स्रंग, सुरगय हय नय पय दरस। रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लंकवरीस जस।—बां. दा.

उ०—३ स्व क्रोधा समुक्षा धगधगित दक्षाधिप सुत्ता। सिलोचै संभूता धजर अवधुता अदभुता।—मे. म.

सिलोटी–सं. स्त्री.—१ पथरीला और समचौरस भूमि का मार्ग।
(मेवाड़)

सिलोप–वि. [अं. स्लॉप] १ ढलुवां।

२ तिरछा।

सिळो–वि. (स्त्री. सिळी) शीतल, ठण्डा।

उ०—जळै चंद्र सिळो थाई जगचख, रेणायर सांसतो रहै। जयमालउत जाइ छांडै जुध, वेणी जळ उपरांठ वहै।
—रांमदास राठौड़ मेड़तिया रो गीत

सिलो, सिलो–सं. पु.—१ फसल की कटाई के बाद दूसरी अन्तिम कटाई की क्रिया।

२ गेहूं, चावल, चना आदि की फसल काटने के पश्चात गिरा-बिखरा अनाज जिसे प्रायः बच्चे व गरीब लोग चुगा करते हैं।

उ०—साजन सिलो न खाइयै, जं सौनै की वाळ। बात रहै दिन जावसी, समै पलट ज्यां काळ।—अग्यात

३ बाजरी की पकी हुई बालों को काट लेने के पश्चात पुनः कोपलें फूट कर आने वाली बालें।

रू. भे.—सिरलो।

सिल्प–सं. स्त्री. [सं. शिल्पम्] १ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने की कला, दस्तकारी, कारीगरी।

२ पत्थर पर घड़ाई करने की कला।

रू. भे.—सिलप।

सिल्पकला–सं. स्त्री. [सं. शिल्पकला] १ हस्तकला।

२ पत्थर पर घड़ाई करने की कला।

सिल्पकार–सं. पु. [सं. शिल्पकार] १ कारीगर, शिल्पी।

२ पत्थर का कारीगर।

सिल्पकारी–सं. स्त्री. [सं. शिल्प+कृ] १ शिल्पकार का कार्य, कारीगरी।

२ घड़ाई, खुदाई; पत्थर आदि पर कलात्मक खुदाई।

सिल्पगेह, सिल्पग्रह–सं. पु. [सं. शिल्पगृह] १ वह स्थान जहाँ पर शिल्प सम्बन्धी कार्य होता हो, कारखाना।

२ शिल्पी का घर।

सिल्पप्रजापत, सिल्पप्रजापति, सिल्पप्रजापती-सं. पु. [सं. शिल्पप्रजापति] विश्वकर्मा का एक नाम।

सिल्पमत-अव्यय.—कारीगरी से, व्यवस्थित ढंग से।

सिल्पलिप, सिल्पलिपि-सं. पु. स्त्री. [सं. शिल्पलिपि] १ पत्थर या धातु पर प्रकार खोदने की विद्या या कला।

२ पत्थर पर खुदी हुई इबारत।

सिल्पवत-क्रि. वि. [सं. शिल्प+वत्] शिल्पशास्त्र के अनुसार। (मा. म.)

सिल्पविद्या-सं. स्त्री. यौ. [सं. शिल्पविद्या] हाथ से सुन्दर चीजें बनाने की विद्या।

सिल्पसाळा-सं. स्त्री. [सं. शिल्पशाला] वह स्थान जहाँ पर बहुत से शिल्पी मिलकर कलात्मक चीजें बनाते हों।

सिल्पसास्त्र-सं. पु. यौ. [सं. शिल्पशास्त्र] वह शास्त्र जिसमें हाथ से तरह-तरह की वस्तुएं बनाने का विधान निरूपण हो, वास्तुशास्त्र।

सिल्पी-सं. पु. [सं. शिल्पिन्] शिल्पकार, कारीगर।

रू. भे.—सिलपी।

सिल्लगणौ, सिल्लगवौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगवौ' (रू. भे.)

सिल्लगियोड़ौ—देखो 'सिळगियोड़ौ'

(स्त्री. सिल्लगियोड़ी)

सिल्लह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

उ०—चढी नह सिल्लह अंग बचाव, सादोहीज तांम कहै सिरपाव।

—सू. प्र.

सिल्लांम—देखो 'सलांम' (रू. भे.)

उ०—हेत नजर करि हरख, कहै ऊचरै हुकम्मां। दै असीस विरदाय, करै सिल्लांम कदम्मां।—सू. प्र.

सिल्लावटौ—१ देखो 'सिलावटौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलावट' (मह; रू. भे.)

सिल्लार—देखो 'सिलियार' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिल्ली-सं. स्त्री.—हथियार अथवा नाई के उस्तरे आदि की धार तेज करने का पत्थर विशेष का खंड।

सिल्लौ—देखो 'सिलौ' (रू. भे.)

सिल्ह—देखो 'सिलह' (रू. भे.)

सिल्हखांनौ—देखो 'सिलहखांनौ' (रू. भे.)

सिल्हाड़—देखो 'सिलाड़' (रू. भे.)

उ०—जांणै पाखर री हंस मोती चुगण चालियौ छै। दोय-दोय बाकरां री सिल्हाड़ नै ठरका हुवै छै।—रा. सा. सं.

सिल्है—सिलह' (रू. भे.)

उ०—१ सिल्है खग वाढत खांन सरीर, समोभ्रम 'सूर' वावत सधीर।—सू. प्र.

उ०—२ घोड़ा हाथी सुभट पायक रथ सिल्है स जोयत बाजा छतीस वाजै छै।—पंचदंडी री वारता

सिल्हैखांनौ—देखो 'सिलहखांनौ' (रू. भे.)

उ०—इव करतां देव ऊढणी इग्यारस नजदीक आई। तद असवार हजार डोढ सूं सैंल सारू असवार हुयौ। कही नूं जतायौ नहीं। सिल्हैखांनौ सारौ गोठ कर सलीतां में घात लियौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सिल्हैबंध—देखो 'सिलहबंध' (रू. भे.)

उ०—धमोड़त सेल सिल्हैबंध धींग, समोभ्रम 'स्यांम' महोकमसींघ।

—सू. प्र.

सिव-सं. पु. [सं. शिवः, शिवं] १ सनातन धर्म के त्रिमूर्ति देव में से अन्तिम देव, महादेव।

(अ. मा; डिं. नां. मा; ना. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सिवा सिव कारण झेलत सीसु, उभेलत पत्र उमा कज ईस।—मे. म.

उ०—२ निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ संचै।—रा. रू.

पर्याय.—अंधकार, अंब, अकळ, अचळेसर, अज, अनंत, अस्टमूरति, अहिग्रीव, ईस, उग्र, उरघलिंग, एकलिंग, कज, कपरदी, कपाळव्रत, कपाळी, कमाळी, कैलासपत, कोटेसर, क्रतधुंसी, क्रसांनद्रग, क्रसांनरेता, खाकी, गंगधर, गणनाथ, गहीर, गिरजापत, गिरीस, गौरपती, ग्लो-भाळ, चंद्रसेखर, जख्यंपति, जटधारी, जटी, जहरजर, जोग, जोगांण, जोगिंद, जोगी, जोगेसर, डगंबर, डमरूकर, तपस, तापस, त्रिनयण, त्रिपुरारी, त्रिबंक, त्रिलोचन, त्रिसूळधर, त्रिह्नलोचन, दिगवामा, धमळ-आरोहण, धूरजटी, नागांपति, नीलकंठ, पंचमुख, पचानन, परब्रह्म, परम, परमगुर, पसुपति, पिनाकी, प्रमथांपति, बांणपति, बिहारी, ब्रखव-धुज, ब्रह्म, ब्रह्मा, भंगअहारी, भडग, भव, भवेस, भारग, भाळचंद्र, भीम, भूतनाथ, भूतेस, भैरव, भोळानाथ, महादेव, महेस, महेस्वर, मुंडमाळी, मुरनैण, म्रड, म्रत्युंजय, म्रिड, रुद्र, लोहितभाळ, लोदंग, वरद, वामदेव, वांमसुर, विरूपाक्ष, विसाळद्रग, विस्वनाथ, वोमकेस, व्रखभधुज, संकर, संध्यापति, संभु, सदासिव, समराथ, समरारि, सरब, सरवरित, सांमी, सारविद, सिधराव, सिवेसुर, सिसमत्थ, सुछांन, सूलपांण, सूळहथ, सूळी, सीकंठ, हर।

२ सत्य, सांच। (अ. मा.)

३ वेद।

४ देव, वसु।

५ मोक्ष।

६ सियार, गीदड़।

७ खूंटा।

८ परमेस्वर, भगवान, ब्रह्म।

९ पारा।

१० लोहा। (डिं. को; ह. नां. मा.)
११ समुद्री नमक।
१२ लिंग, जननेन्द्रिय।
१३ जल, पानी। (अनेका.)
१४ एक प्रकार का घोड़ा जिसके गले में भौंरी होती है। यह अशुभ माना जाता है। (शा. हो.)
१५ कुशल, मंगल। (अ. मा; ह. नां. मा.)
१६ विष्कंभादि सत्ताईस योगों के बीसवें योग का नाम। (ज्योतिष)
१७ आर्या गीति या खंधांण (स्कंधक) का भेद विशेष।
१८ टगण के प्रथम भेद का नाम SSS। (डिं. को.)
१९ शुद्ध, सुहागा।
२० एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ५ और ६ के विराम से ११ मात्राएँ और अन्त में सगण, रगण, नगण में से कोई एक होता है तथा तीसरी छठी व नवीं मात्रायें लघु होती है।
वि. [सं. शिव] श्वेत, उज्जवल। (अ. मा.)
२ श्वेत पीत। * (डिं. को.)
३ ग्यारह। *
उ०—१ कीनें दूहौ प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय। तिथ रिव तिथ सिव तिथ, सुपय रड्ड छद कहाय।—र. ज. प्र.
उ०—२ चव लघु सिव मत चरण, वळ खट पय तिण वरण। —र. ज. प्र.
४ शुभ, कल्याणकारी। (अनेका.)
उ०—उर करवत वहि आपर्र, साठ भड़ां सप्रमांण। वीकम सिव मारग वहै, लै दीनां मोजांण।—नैणसी
५ मांगलिक।
६ स्वस्थ, सुखी।
७ भाग्यवान।
रू. भे.—सीव।
सिवकर-सं. पु. [सं. शिवकर] अतीतकालीन चौबीस जिनों के अन्तर्गत एक जिन का नाम। (जैन)
वि. [सं. शिवंकर] मंगलकारी, आनन्ददायी।
सिवकरणी-सं. स्त्री. [सं. शिवकर्णी] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।
सिवकवच-सं. पु. [सं. शिवकवच] शरीर के अंगों की रक्षार्थ जप किया जाने वाला शिवस्तोत्र।
उ०—वूझ व्यास प्रोहितां, समर सूरां गुर सिक्षा। सकल-मंत्र सिवकवच विस्णुपंजर हरिरक्षा।—रा. रू.
सिवकांता-सं. स्त्री. [सं. शिवकांता] १ शिव की पत्नी उमा।
२ दुर्गा।
सिवका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—पोहचि तठै सिवका पोढांणौं, इम पण पूर भरथ अग्र आंणौं। —सू. प्र.
सिवकाई-सं. स्त्री.—सेवा करने का भाव, सेवकाई।
उ०—वरख चतुरदस बन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई। सील व्रत भीखम नें साध्यौ, वरणी व्यास बडाई।—ऊ. का.
सिवकारी-वि. [सं. शिवकारिन्] मंगलकारी, कल्याणकारी।
सिवकीरतण, सिवकीरत्तण-सं. पु. [सं. शिवकीर्त्तनः] भंगी का नाम।
सिवकुमार-सं. पु. यौ. [सं. शिव+कुमार] स्वामिकार्तिकेय। (अ. मा.)
२ गजानन।
सिवगत, सिवगति, सिवगती-सं. पु. [सं. शिवगति] १ भूतकाल के चौहदवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)
२ मोक्ष, मुक्ति।
वि.—१ समृद्ध, सम्पन्न।
२ हर्षित, खुश।
सिवगांमी-वि. [सं. शिवगामिन्] मोक्ष जाने वाला, मोक्ष प्राप्त करने वाला।
सिवगिर, सिवगिरि, सिवगिरी-सं. पु. यौ. [सं. शिवगिरि] कैलाश पर्वत।
सिवगुर, सिवगुरु-सं. पु. [सं. शिवगुरु] विद्याधिराज के पुत्र व शंकराचार्य के पिता का नाम।
सिवड़-सं. पु.—१ श्वेताम्बर, जैन।
२ देखो 'सेवड़' (रू. भे.)
सिवढांण- सं. स्त्री.—१ श्मशान भूमि।
उ०—मार जुध सार मय सिवपुरी मनायै, ईखतां अवर कोई ठौड़ ओढै। सुख करै सोड पोढै नकूं सिवपुरी, पांण तज सोड सिवढांण पोढै।—दुरसौ आढौ
२ कन्दरा, गुफा।
सिवण-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का पौष्टिक घास।
२ शिव, महादेव।
सिवतिलक-सं. पु. [सं. शिवतिलक] १ स्वर्ण का वह आभूषण जो स्त्रियां ललाट पर धारण करती हैं।
उ०—चारुबंध चूंदड़ी, आटियां मांग सवारी। लियौ वांध सिवतिलक, भाल विंदली भंवारी।—रमण प्रकास
२ चांद, चंद्रमा।
सिवतीरथ-सं. पु. [सं. शिवतीर्थ] शंकर का प्रधान तीर्थस्थान काशी का एक नाम।
सिवदूतिका, सिवदूती-सं. स्त्री. [सं. शिवदूतिका] १ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
२ आठ योगनियों में से अंतिम योगिनी।
३ दुर्गा।

सिवदेवी-सं. स्त्री.—चारण वंशोत्पन्न एक देवी।

सिवधांम-सं. पु. [सं. शिवधाम] १ शिव का निवास स्थान, कैलाश-पर्वत।

२ श्मशान भूमि।

३ राजस्थान के सिरोही प्रदेश का नाम।

उ०—राठौड़ सिवधांम रहाया, भूप तणा व्रत जतन भळाया।

—रा. रू.

सिवनंद, सिवनंदण-सं. पु. यौ. [सं. शिवनंदन] शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवनाथ-सं. पु. [सं.] शिव, महादेव।

सिवनाभ, सिवनाभि-सं. पु. [सं. शिवनाभि] एक सर्वश्रेष्ठ शिवलिंग का नाम।

सिवनारायणी-सं. पु. यौ. [सं. शिवनारायणी] हिन्दुओं का एक सम्प्रदाय।

सिवपद-सं. पु.—[सं. शिवपद] मोक्ष, मुक्ति।

उ०—हिंसा सूं दुरगति में जासी, दया सूं सिवपद पासी रे।

—जयवांणी

सिवपुर-सं. पु. [स. शिवपुर] १ मुक्ति स्थान, स्वर्ग। (जैन)

उ०—१ सुमति पदम 'सुपासनी' पहुंता सिवपुर ठांम।—जयवांणी

उ०—२ तं सिवपुर वासउ वसं रे, हूं तउ मांनव गण मइ जोय रे।—वि. कु.

२ काशी।

३ भगवान शिव का निवास स्थान, कैलाश।

उ०—मंगळाचार सिवपुरी मांहे गूडी उछळी देव गति।

—महादेव पारवती री वेलि

सिवपुरांण-सं. पु. [सं. शिवपुराण] अठारह महापुराणों में से एक पुराण जिसमें शिवमहिमा का वर्णन है।

सिवपुरि, सिवपुरी-सं. स्त्री. [सं. शिवपुरी] १ काशी या वाराणसी का एक नाम।

२ राजस्थान के सिरोही नगर का एक नाम।

३ परमपद, मोक्ष।

उ०—चवीयला तुम्हि हूआ पंचइ ए भवि ए, सिवपुरि पांमियउ ए।—सालिभद्र सूरि

४ स्वर्ग। (जैन)

५ श्मशान।

रू. भे.—सवपुरी।

सिवपुरो-सं. पु.—चौहान वंश का क्षत्रिय।

सिवप्रिय-सं. पु. [सं. शिवप्रिय] १ रुद्राक्ष।

२ भांग।

३ धतूरा।

४ स्फटिक।

सिवप्रिया-सं. स्त्री. [सं. शिवप्रिया] १ भांग।

२ पार्वती, गिरिजा।

३ दुर्गा।

सिवब्रह्मपोता-सं. पु.—कछवाह वंश के क्षत्रियों की एक शाखा।

(बां. दा. ख्यात)

सिवभंडारी-सं. पु. [सं. शिवभंडारी] कुबेर। (नां. मा.)

सिवभाळी-सं. पु.—चंद्रमा। (अ. मा.)

सिवमंडळी-सं. स्त्री. [सं. शिव+मंडल+रा. प्रा. ई.] नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियों का वह समूह या मंडल जो मृत्युभोज के लिए एकत्रित होता है। (मा. म.)

सिवमंदिर-सं. पु. [सं. शिवमंदिर] १ शिवालय, शिवमंदिर।

२ श्मशान, मरघट।

रू. भे.—सवमंदिर।

सिवमाळ, सिवमाळा-सं. स्त्री. [सं. शिवमाला] महादेव के गले की मुंडमाल।

उ०—धर मूंड अमां सिवमाळ धरू, कछ देसिय देव प्रणाम करूं।

—पा. प्र.

सिवरण—देखो 'सुमरण' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया जो सतगुर मिळै, जो चाहै सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्या नहीं लेत।—अनुभववांणी

उ०—२ सासा सोहूं सबद है, लख चोरासी मांहि। रांम नांम नर देह विन, हरीया सिवरण नांहि।—अनुभववांणी

सिवरणौ, सिवरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू. भे.)

उ०—माया का नर म्हैंनती, रांम न जांणै नांम। हरीया वांटण सिवरणौ, पूर नखत का कांम।—अनुभववांणी

सिवरणहार, हारौ (हारी), सिवरणियौ—वि०।

सिवरिओड़ौ, सिवरियोड़ौ, सिवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिवरीजणौ, सिवरीजबौ—कर्म वा०।

सिवरांणी-सं. स्त्री. [सं. शिवराज्ञी] उमा, पार्वती।

सिवराजोत-सं. पु.—राठौड क्षत्रियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सिवरात, सिवरातरी, सिवरात्रि, सिवरात्री-सं. स्त्री. [सं. शिवरात्रि] १ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। इस दिन शिव की पूजा करते हैं, रात्रि को जागरण देते हैं तथा व्रत रखते हैं।

उ०—सिवरात्री में सिव दरसण गयौ सुकेरौ, अवलोकै आखू सिव जव हुओ उजेरौ।—ऊ. का.

वि. वि.—इस दिन शिव-पार्वती का विवाह हुआ माना जाता है। यदि यह चतुर्दशी तिथि त्रिस्पृशा (सूर्योदय, प्रदोष और निशीथ व्यापिनी) हो तो अत्युत्तम होती है और मंगलवार हो तो शिवयोग होता है। यह पर्व चारों वर्ण व स्त्री, पुरुष, बच्चों व वृद्धों द्वारा मनाया जा सकता है। ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण

चतुर्दशी को हुआ था अतः इसे महाशिवरात्रि कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ से ब्रह्मा ने रुद्ररूपी शिव को उत्पन्न किया था और रुद्र के अवतीर्ण होने का दिन व तिथि भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ही थी। इसी दिन शिव ने ताण्डव नृत्य किया था तथा अपने डमरू के निनाद से सारे वायुमण्डल में ज्ञान-विज्ञान को सूक्ष्मसूत्ररूपेण व्याप्त कर दिया था।

इस पर्व के प्रधान अंग निराहार व्रत व रात्रि जागरण है। सामवेदी व ऋग्वेदीय पद्धति से स्वस्तिवाचन व पूजन के बाद चार बार प्रत्येक प्रहर में शिवपूजन का विधान है। प्रथम प्रहर में दुग्ध से शिव की ईशान मूर्ति को, द्वितीय प्रहर में अघोर मूर्ति को दधि से, शिव की वामदेव मूर्ति को तृतीय प्रहर में घृत से और चतुर्थ प्रहर में सद्योजात मूर्ति को मधु से स्नान करा कर पूजन करने का विधान है। दूसरे दिन अमावस्या को व्रत-कथा सुन कर पारण किया जा सकता है। इस दिन शिवलिंग पर जल; बिल्वपत्र, आक, धतूरा, गाजर, बेर आदि अर्पण करने का विधान है।

२ प्रत्येक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी एवं इस दिन किया जाने वाला व्रत।

३ माघ कृष्णा चतुर्दशी।

उ०—अहे हीरडा तइ हरी पूजीउ, कि जाग्गु सिवराति। गोरी कंठ न ऊतरि, सारी देह न राति।—गुणचंद सूरि

सिवरियोड़ी—देखो 'सुमरियोड़ी' (रू. भे.)
(स्त्री. सिवरियोड़ी)

सिवळ—देखो 'सिवल' (रू. भे.)

सिवलिंग—सं. पु. [सं. शिवलिङ्ग] महादेव की पिंडी, लिंग मूर्ति, इसकी शिव-भक्त पूजा करते हैं।

सिवलिंगी—सं. स्त्री. [सं. शिवलिङ्ग+रा. प्र. ई.] वर्षाकाल में जंगलों और झाड़ियों में बहुत अधिकता से मिलने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। (अमरत)

सिवलोक—सं. पु. यौ. [सं. शिवलोक] शिवजी का लोक, कैलाश।

सिवलोकवासी—वि. [सं. शिवलोकवासी] १ कैलाश पर्वत पर निवास करने वाला।
२ मोक्ष प्राप्त, परम पद प्राप्त।
सं. पु. यौ—शिव, महादेव।

सिववल्लभा—सं. स्त्री. [सं. शिववल्लभा] १ दुर्गा।
२ पार्वती।

सिववाड़ियौ—सं. पु.—शिववाड़ी नामक स्थान का ऊंट।
उ०—सूं ऊंठ कुण कुण दिसावररा छै काछो बोदला छपरी जालोरी वगरू बलोची सिववाड़िया खाडालिया।—रा. सा. सं.

सिववाहण—सं. पु. यौ. [सं. शिववाहन] १ शिव का वाहन, नंदी बैल।
२ बैल, वृषभ।

सिववृखभ—सं. पु. [सं. शिव+वृषभ] शिवजी की सवारी का बैल, नंदी।

सिवसंकरी—सं. स्त्री. [सं.शिवशंकरी] देवी की एक मूर्ति का नाम।

सिवसंगिया—सं. स्त्री. यौ.—घोड़े के दाहिने गले की ओर की भौंरी जो शुभ मानी जाती है। (शा. हो.)

सिवसंभव—सं. पु. यौ. [सं. शिवसंभव] १ शिव का पुत्र, गजानन।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसखा, सिवसिख—सं. पु. यौ [सं. शिवसखा] कुबेर।
(अ. मा; नां. मा.)

सिवसुंदरी—सं. स्त्री. [सं. शिवसुंदरी] दुर्गा।

सिवसुत—सं. पु. यौ. [सं. शिवसुत] १ गणेश।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसेखर—सं. पु. यौ. [सं. शिवशेखर] १ शिव का मस्तक।
२ धतूरा।
३ चन्द्रमा, चांद।

सिवा—सं. स्त्री. [सं. शिवा] १ पार्वती, गिरिजा।
(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)
उ०—सिवा सिव कारण झेलत सीस, उझेलत पत्र उमा कज ईस।
—मे. म.
२ दुर्गा।
३ हरें, हरीतकी। (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)
४ मादा सियार, शृगाली।
उ०—घुमंडी नभ ग्रीधणि चील्ह घणीं, गहकाय अवाज सिवा गवणीं।—मे. म.
उ०—२ भयंकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग।—मे. म.
अव्यय.—अलावा, अतिरिक्त।
उ०—म्हैं बापड़ी सुसीला नैं जमारा मैं दुख रै सिवा कांई सुख दियौ।—अमरचूंनड़ी

सिवाई—देखो 'सवाई' (रू. भे.) (डिं. को.)

सिवाड़ौ—देखो 'सीमाड़ौ' (रू. भे.)

सिवाणौ, सिवाबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवाबौ' (रू. भे.)

सिवाबळि—सं. पु. [सं. शिवबलि] रात्रि के समय देवी के सामने रखा जाने वाला वह नैवद्य जिसमें मांस की प्रधानता होती है।
(तांत्रिक)

सिवाय—वि.—१ विशेष।
उ०—१ सच्च पियारा सांइया, सांई सच्च सिवाय। सच्चां अगन न जाळ ही, सच्चां सरप न खाय।—ह. र.
उ०—२ ऊंदा धरती आधिया, आहव आध सिवाय। चाळौ बाधै सांम छळ, ज्यां ऊन्हाळे लाय।—रा. रू.
क्रि. वि.—अलावा, अतिरिक्त।

उ०—१ दो बातां सिवाय वांनै कीं चैनो नीं हो—कमाई अर करणी।—फुलवाड़ी

उ०—२ उण बात री बिरखा झोड़ में थूक उछाळणा रे सिवाय की मार नीं दीस्यौ तो मेठांणी माईं ई माठ झेली।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सवाय।

सिवायोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिवायोड़ी)

सिवाराति-सं. पु. [सं. शिवाराति] सियारिन का शत्रु, कुत्ता।

सिवाळ—देखो 'सियाळ' (रू. भे.)

उ०—टीकी फीकी भंवर जी पड गई जी हांजी ढोला हींगळू कै चढ गया सियाळ अब घर आवौ जी।—लो. गी.

सिवाळौ, सिवालय-सं. पु. [सं. शिवालय] शिव का मन्दिर।

उ०—१ दूजोड़ै दिन अठीनै तो ठाकर पूजा सूं निवड़नै सिवाळा सूं बारै निकळ्यौ अर उठीनै दरबार सूं हलकारौ परवांणौ लेयनै हाजर व्हियौ।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ धरमादै अमसाळ, मुफत मठ गटा सिवालय। सरवर भीलां घाट, बावड़ी पाठ विद्यालय।—दसदेव

सिवाळौ-सं. पु. [सं. शैवाल] कुछ हल्के रंग वाला एक प्रकार का मरकत या पन्ना।

सिवि-सं. पु. [सं. शिवि] ययाति का दौहित्र तथा राजा उशीनर का पुत्र एक राजा जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था।

वि. [सं. सर्व] १ सब, समस्त।

उ०—चदवदनी तं सिवि सहि लालड, रमइ रंग रसि अवला बालि। तडकस कंचू उर वरि हार, रेणि रंगि रीझवइ भरतार।

—प्रा. फा. सं.

२ देखो 'सिवि' (रू. भे.)

३ देखो 'सवी' (रू. भे.)

रू. भे.—सिविहि, सिवी।

सिविका-सं. स्त्री. [सं. शिविका] पालकी, डोली।

उ०—उण समय सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उपवन में आय निसरिया।—वां. दा. ख्यात

रू. भे.—सबिका, सिबिका, सिवका, सीविका।

सिविता—देखो 'सविता' (रू. भे.)

उ०—सिविता रवि सूर पतंग सही, रकतंवर अंबर ज्योत रही।

—पा. प्र.

सिविर-सं. पु. [सं. शिविर] १ डेरा, खेमा। (डिं. को.)

२ सेना का पड़ाव, छावनी। (डिं. को.)

३ किला, कोट।

सिविल-वि. [अं.] १ नगर सम्बन्धी, नागरिकी।

२ सभ्य, शिष्ट।

३ दीवानी।

सिविहि, सिवी—देखो 'सिवि' (रू. भे.)

उ०—इंद्रसभा जई ऊसर करइं चरण उकडच्छी पखवाउज धरइं। सिविहि दीह तीह ए व्यापार, परवसि थिया कइं तै सवि वार।

—वसितग

सिवोभवेद, सिवोम्देद-सं. पु. [सं. शिवोभ्देद] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जहां सरस्वती नदी का दर्शन होता है, जहां पर स्नान करने वाले मनुष्य को सहस्त्र गौदान का फल प्राप्त होता है।

सिसंक—देखो 'ससांक' (रू. भे.)

सिस—देखो 'ससि' (रू. भे.)

उ०—१ अंग छबि रवि सिस कोटि उदोतां, जोगी ध्यांन तजै तिण जोतां।—सू. प्र.

उ०—२ उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं —रा. रू.

२ देखो 'सिसु' (रू. भे.)

उ०— सिस वेस पहल उपवल सजेव, भालियो साह 'अवरंग' जेव।

—वि. सं.

३ देखो 'ससा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

४ देखो 'सीसा' (रू. भे.) (डिं. को.)

४ देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

सिसकणौ, सिसकबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बिरही सिसकै पीड़ सौं, ज्यौं घाइल रण मांहि। प्रीतम मारै बांण जद, दादू जीवै नांहि।—दादूबांणी

उ०—२ रोगली टींगर रै मूढै में झाग आयग्या, आंख्यां तिरादी अर सिसकण लागगी।—दसदोख

सिसकणहार, हारौ (हारी), सिसकणियौ—वि०।

सिसकिओड़ौ, सिसकियोड़ौ, सिसक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिसकीजणौ, सिसकीजबौ – भाव वा०।

सिसकांनी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की बंदूक।

सिसकार—देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)

उ०—पीव उमायो प्रेम री, ली धण कंठ लगाय। सुंदर मुख सिसकार हुय, झांझर पग झणणाय।—नारायणसिंह सांदू

सिसकारणौ, सिसकारबौ-क्रि. अ.—१ किसी प्रकार की वेदना, पीड़ा या अत्यधिक सर्दी के कारण मुंह से बार बार 'सी' 'सी' करना।

२ रति क्रिया के समय नायिका (स्त्री) द्वारा सीत्कार करना।

३ मुंह से निश्वास छोड़ना।

४ किसी को ताड़ना देते या चुपके से बुलाने के लिये मुंह से 'सी' 'सी' शब्द करना।

५ इसी प्रकार पशुओं को भी संकेत देना।

सिसकारणहार, हारौ (हारी), सिसकारणियौ—वि०।

सिसकारिओड़ौ, सिसकारियोड़ौ, सिसकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिसकारीजणौ, सिसकारीजवौ—कर्म वा० ।

सिसकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पीड़ा, कष्ट या शीत के कारण मुंह से 'सी' 'सी' शब्द किया हुआ. २ सीत्कार किया हुआ. ३ निश्वास छोड़ा हुआ. ४ 'सी' करके इशारा किया हुआ. ५ इसी प्रकार पशुग्रों को संकेत किया हुआ ।

(स्त्री. सिसकारियोड़ी)

सिसकारी–सं. स्त्री.—१ अधिक दुख, कष्ट या आनन्द के समय मुंह से निकलने वाली 'सी' 'सी' की ध्वनि ।

उ०—१ राजाजी रै तकलीफ री पार नीं ही। हथाळियां रा छाळा नै देखता अर सिसकारियां न्हाकता।—फुलवाड़ी

उ०—२ थर थर धूजता सिसकारियां भरता नागा-तड़ंग रावळां कांनी वहीर व्हीया।—फुलवाड़ी

२ प्रायः रतिक्रीड़ा के समय मुंह से होने वाली आह-आह, ऊह ऊह की ध्वनि, नायिका का सीत्कार ।

३ निश्वास, सीत्कार ।

४ भेड़, बकरी आदि पशुग्रों को इकट्ठा करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।

५ ताड़ना या बुलाने के लिये किया जाने वाला इशारा ।

रू. भे—सिसकार ।

अल्पा;—ससकारौ, सिसकारौ ।

सिसकारौ—देखो 'सिसकारी' (अल्पा; रू भे.)

उ०—१ गांव गांव मुकांम, हुवै वित वेस अपारां। सिसकारा हुव सवद, पोट लादै अणपारां।—रमण प्रकास

उ०—२ हाथ भरै चूड़ी तिड़ै, रे मूरख मणियार। वे सिसकारा प्रेम रा, तो संग नहीं गिंवार।—अग्यात

उ०—३ लखू सिसकारा भरती बोली—वरसां सूं म्हारै ओ मोटो रोग लाग्योड़ो। खाज आगै जीव जावै।—फुलवाड़ी

उ०—४ भूखी की जीमैं सिसकारा भरती, नांखै निसकारा धीमैं पग धरती।—ऊ. का.

सिसकियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिसकियोड़ी)

सिसकी–सं. स्त्री.—१ रुक रुक कर रोने की क्रिया, भाव, गिग्गी ।

२ देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)

सिसखांनौ—देखो 'सिसकांनौ' (रू. भे.)

सिसगोत, सिसगोति—देखो 'ससिगोति' (रू. भे.)

सिसट—१ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां चरित अनूप रूप कुंण लभै माया। सिसट उपाया संकरी, नवनाथ निपाया।—गज-उद्धार

उ०—२ सिरजनहारा सिसट का, करता कहीयै कोय। हरीया करता दुसरा, कहन सुनन का होय।—अनुभववांणी

२ देखो 'सिस्ट' (रू. भे.)

सिसटाचार—देखो 'सिस्टाचार' (रू. भे.)

उ०—पछै दीवांण नरबदजी रै डेरै पधारिया, वडौ सिसटाचार पड़वज कीयौ।—नैणसी

सिसटी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

सिसदा–सं. पु.—पक्षी विशेष ।

उ०—अटकंत पंथ जळ जोर अत, सिसदा कैकी सादवै। जिण रित 'कुसाळ' जीवराज संग, भवन चली तज भादवै।

—अरजुणजी बारहठ

सिसधर–सं. पु. [सं. शशधरः] १ चन्द्रमा ।

२ कपूर ।

सिसन—देखो 'सिस्न' (रू. भे.)

सिसपत, सिसपति, सिसपती–सं. पु. [सं. शशिपति] शिव, महादेव ।

सिसपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

उ०—दांणौ मार दफै किया, नासियौ सिसपाळ। नहचै तै कारज सरचौ, जीतौ स्रीगोपाळ।—पदमभगत

सिसप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिसबीज–सं. पु.—शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा ।

सिसमत्थ, सिसमथ सिसमाथ—देखो 'ससिमाथ'

(रू. भे.) (ना. डिं. को.)

सिसमाद, सिसमादचक्र, सिसमाध, सिसमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र'

(रू. भे.)

उ०—१ तारागण तेताह सौ बाधा सिसमाद रै। जग राजा जेताह आंमेरा तौ आसरै।—अग्यात

उ०—२ सिसमाध बीच पेरै कितेक।—पांडव यसेंदु चंद्रिका

सिसमार–सं. पु. [सं. शिशुमार] १ सूस नामक एक जल जन्तु ।

२ श्रीकृष्ण ।

३ देखो सिसमारचक्र' ।

रू. भे.—सिसुमार ।

सिसमारचक्र–सं. पु. यौ. [सं. शिशुमारचक्र] समस्त ग्रह, नक्षत्र, तारा मण्डल सहित सूर्य मंडल, सौर जगत ।

उ०—असत विण आंगमै, कवण सांमंद्र पयाळै। अणसंका विण हणू, कवण लंका परजाळै। कवण अखैवड़ विगर, प्रळै सागर सिरसोभै। कवण विनां सुखदेव, देव माया नह लोभै। सिसमारचक्र ध्रुव विण सुतो, भजै न कुण सिसि गण भ्रमण। अंगमैं साह अवरंग सूं, कमंधां विण चाळौ कवण।—रा. रू.

रू. भे.—ससमाद, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाध, ससमाधचकर, ससमाधचक्र, सिसमाद, सिसमादचक्र, सिस[illegible], सिसमाधचक्र, सिसुमार, सिसुमारचक्र ।

सिसवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू. भे.)

उ०—दस दस पास खवासी दासी, चंपक वरण ओढियां चीर ।

सिसवदनी नांनें सिसकारा, मीरां कहां हमारा मीर ।

—रुघो मुहतो

सिसर—देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

उ०—प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसिर घन ।—मे. म.

उ०—२ तान गांन ततकार बजंत्रन, इवांन सिसर तत घन आनद्धन ।—मे. म.

२ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)

उ०—१ हेम सिसर रित मेड़तै, रहियो कमधां राव । संभ विहांणै ऊगगै, दिन दिन दूणो चाव ।—रा. रू.

उ०—२ एगइ अवसरि आवीउ रे, मनोहर मास वसत । सिसर सनु दुख देई करी रे, ठारवा जे जगि संत ।—कल्यांण

सिसलो-सं. पु.—खरगोश ।

उ०—इक दिन नळ राजा तिहां, चढ्यो सिकार प्रभात । रमतां सिसलो नीसरघो, दीनो घोडो दे लात ।—ढो. मा.

सिसहर, सिसहरि, सिसहरी—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.)

उ०—१ अब घट मेरे भया अणदा, सिसहर घर सूर, सूर घर चंदा ।—अनुभववांणी

उ०—२ वदन कला सोळह सिसहर वरि, कोमळ वध वरन्नी केसरि ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)

उ०—हिम तैं सिसहर रितू बिहाई, दह्यौ बसंत वात दुखदाई ।

—ऊ. का.

सिसहूर-सं. पु.—शंख, कंबु । (ह. नां. मा.)

सिसि—देखो 'ससि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—सिसा पडतां भूंझीयो जुनें-अनड़ां नडण । जवन दळ सिर सवळ दाखि जमरा । सिसि करैं जेण उदमाद नव-साहंसा, अरक छोभी करैं जेण 'अमरा' ।—किसनो आढो

सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती—देखो 'ससिगोती' (रू. भे.)

(ह. नां. मा.)

सिसिन—देखो 'सिस्न' (रू. भे.)

सिसियो—देखो 'सस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सिसियो पाळियो लाकड़ी साख भर दी । काल सूं थारै पापै पुन्नै लाग जावा ।—वरसगांठ

सिसिर, सिसिरि—सं. स्त्री. [सं. शिशिर] १ माघ व फाल्गुन मास में होने वाली एक ऋतु, षटऋतुओं में से एक ।

उ०—१ सैसव सु जु सिसिर वितीत थयो सहु, गुणगति मति अति गहे गिनि । आव तणी परिग्रह नैं आयो, तरणापो रितुराउ तिणि ।

—वेलि

उ०—२ प्रगटै मधु कोक संगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि ।—वेलि

२ शीतकाल, जाड़ा । (डि. को.)

रू. भे.—ससर, ससरत, ससरित, ससिर, सिसर, सिसहर ।

सिसिवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू. भे.)

उ०—सरद हिमं तह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग । धूना मिंदर धोहरै, सिसिवदनी संजोग ।—गु. रू. बं.

सिसिवौ-वि.—१ धनाढ्य, पैसों वाला ।

२ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू. भे.—ससवौ ।

सिसिसहोदर, सिसिसहोवर-सं. पु. यौ. [सं. शशि+सहोदर] शंख ।

(ह. नां. मा.)

सिसिहर—देखो 'ससधर' (रू. भे.)

उ०—दंड कलस धज मंडित, खंडित सिसिहर कंति ।

—प्रा. फा. सं.

सिसी—देखो 'ससि' (रू. भे.)

सिसीगोत्री—देखो 'ससिगोती' (रू. भे.)

सिसीहर—१ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)

२ देखो 'ससधर' (रू. भे.)

सिसु-सं. पु. [सं. शिशु] छोटा बच्चा । (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—सिसु उथापि इक साह, साह सिसु अवर सथप्पै । सिसु सुभड़ां हित सभैं, पटै गढ देस समप्पै ।—सू. प्र.

रू. भे.—ससि ।

सिसुचांद्रायण-सं. पु. यौ [सं. शिशुचांद्रायण] चांद्रायण नाम का एक प्रकार का व्रत जिसमें प्रातःकाल चार ग्रास और सायंकाल चार ग्रास भोजन किया जाता है ।

सिसुता, सिसुताई-सं. स्त्री.—बचपन ।

सिसुनांमौ-सं. पु.—ऊंट ।

सिसुनाग-सं. पु.—एक राक्षस का नाम ।

सिसुपाळ-सं पु. [सं. शिशुपाल] कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा ।

रू. भे.—ससपाळ, ससिपाळ, सिसपाळ ।

सिसुमार-सं. पु.—जलमानस । (डि. को.)

२ देखो 'सिसमार' (रू. भे.)

सिसुमारचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे.)

सिसुमारमुखी-सं. पु. यौ. [सं. शिशुमारमुखी] स्वांमी कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

सिसू-सं. पु.—पौत । (अनेका.)

सिसोदिया-सं. स्त्री.—गहलोत क्षत्रियों की एक शाखा ।

रू. भे.—सीसोदिया ।

सिसोदियौ-सं. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सिसोदौ-सं. पु.—सिसोदिया वंश का क्षत्रिय ।

सिस्ट-वि. [सं. शिष्ट] १ वह जो सभ्यतापूर्ण व्यवहार करता हो,

शिक्षित एवं सभ्य।

उ०—नमौ इस्ट निज देव नमौ सब सिस्ट गुसांई।—ऊदोजी नैण

२ बुद्धिमान।

३ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

रू. भे.—सिसट।

सिस्टता-सं. स्त्री. [सं. शिष्टता] १ सभ्य व शिष्ट होने का गुण या भाव।

२ शिष्ट आचरण।

रू. भे.—सिसटता।

सिस्टसभा-सं. स्त्री. [सं. शिष्ट-सभा] राजसभा, शिष्टसभा।

सिस्टा-सं. पु. [सं. सृष्टा] ब्रह्मा। (नां. मा.)

सिस्टाचार-सं. पु. [सं. शिष्टाचार] १ सभ्य व शिष्ट पुरुषों द्वारा किया जाने वाले व्यवहार, आचरण।

उ०—कागद की लिखवौ किसौ, कागद सिस्टाचार। वौ दिन भलौ ज ऊगसी, मिलसां बांह पसार।—अग्यात

२ सभ्य व्यवहार, नम्रता।

३ आदर, सम्मान।

उ०—दोनूं महाराजा जाय गादी पर विराजिया सिस्टाचार निराट अव्वल तरह सूं कियौ हाथी एक बांकै राव, घोड़ा दोय, तुररा च्यार दिया। घणी घणी मनुहारां करी।

—मारवाड़ रा उमरावां री वारता

सिस्टी—देखो 'स्रष्टि' (रू. भे.)

उ०—सावत्री पति वीनवाजी, आदि ब्रंम अवतार। सकळ स्रिस्टी ब्रह्मा रचीजी, पंथ चलावण हार।—रुकमणी मंगळ

सिस्त-सं. स्त्री. [फा. शिस्त] लक्ष्य, निशाना।

रू. भे.—सिस्ति।

सिस्तबाज-वि. [फा. शिस्त+बाज] निशाने बाज, लक्ष्य साधने वाला।

सिस्ति—देखो 'सिस्त' (रू. भे.)

उ०—रुखमइयां का बांण काटिवा की तांई। सिस्ति बांधी। अणी मूठि द्रिढि एक सिस्ति की।—वेलि टी.

सिस्न, सिस्नु-सं. पु. [सं. शिश्न] पुरुष लिंग, लिंग, जननेंद्रिय।

(डिं. को.)

रू. भे.—सिसन, सिसिन।

सिस्य-सं. पु. [सं. शिष्य:] शिष्य, शागिर्द, चेला।

उ०—द्रव्य पूजा सिस्यादिकां नुं मांहरा पुत्र पोता राज नु घणी देसी।—रा. वं. वि.

२ विद्यार्थी।

३ क्रोध, रोष।

रू. भे.—सिक्ख, सिख, सिस, सीसय।

सिस्समत्थ, सिस्तमथ, सिस्समथ्थ—देखो 'ससिमाथ' (रू. भे.)

सिस्सिहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.)

२ देखो 'ससिधर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सिहंड-सं. पु. [सं. शिखंड] मोर, मयूर।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सिहुंड, सिहड।

सिहड-सं. पु.—मल्हार नामक एक राग। (संगीत)

सिहण-सं. स्त्री.—१ मादा शेर, शेरनी, सिंहनी।

सं. पु. [सं. स्तन] २ स्तन, कुच।

उ०—सरल तरल भुयवल्लरिय, सिहण पीण घण तुंग। उदर देसि लंकाउली य, सोहइ तिवल तुरंगु।—राजसेखर सूरि

सिहर-सं. पु. [सं. शिर] १ सिर, मस्तक।

[सं. शिखर] २ हाथी, गज। (ना. डिं. को.)

३ पर्वत, पहाड़।

उ०—भल दीसइ फाबियउ विसंभर, सिहरां छायउ मांनसर।

—महादेव पारवती री वेलि

४ पर्वत-शिखर, चोटी, शृंग।

उ०—१ मदन तणा सिहर चड़ माथइ, बारइ तेज तपइ बांणाध।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ अंबर राव हतउ ओभाडइ, सिहरां रा सींग सहिनांण।

—महादेव पारवती री वेलि

५ बादल, मेघ।

उ०—१ अनेक रंग-रंग रा जु सिहर उठै छै। सूरज मेघ मांनु आपणा घर संवारै छै।—वेलि टी.

उ०—२ मिळिया जांणै सिहर बीजळी, मांहै कळा चढंती रूप।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खेडपति धूणियौ कूंत खीज, वळकी किरि काळै सिहर बीज।—गु. रू. बं.

६ श्रेष्ठ वीर।

७ देखो 'सहर' (रू. भे.)

रू. भे.—सिहरि।

सिहरसिलाव-सं. स्त्री.—बिजली की चमक।

सिहसांन-सं. पु. [सं. सिहसान] एक सूर्यवंशी राजा जो मर्षण का पुत्र था।

उ०—मरखण सुत सिहसांन भूप मणि। भूप विस्वासा ह्वै तै सुत भणि।—सू. प्र.

सिहसत—देखो 'सिगसट' (रू. भे.)

सिहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ रांम भजीजै भौड तजीजै लाभ सदेही वेद वदेहो, संत सिहाई राघवराई वौ हरि गावौ पै उध पावौ।—र. ज. प्र.

उ०—२ संतो सतगुर करण सिहाई।—अनुभववांणी

सिहाखरौ-सं. पु.—मस्तक, सिर।

उ०—जपियौ विदरां जाय यम जायल पत आगलै, काळी हुड़

कै साव समो जरण सिहावरो ।—पा. प्र.

सिहाव—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ धर सिहाय क्रम न्याय धुरंधर, कवि दुज गौ प्रज तपी दया कर ।—रा. रू.

उ०—२ धार दर्जेन्द्र आवियौ, माप जकै असमांन। वै सिहाय सिहाग्विां, मेलै मुकरवगांन ।—रा. रू.

सिहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—१ ततपर धरम सरम प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर संघारण ।—रा. रू.

उ०—२ चन्द्रवत चाउ दिए चुनरावत, रिण रावतां सिहायक रावत ।—रा. रू.

सिहायत, सिहायता—देखो 'सहायता' (रू. भे.)

उ०—१ दळ रमवाळो खांनइनायत, आसतखां अजमेर सिहायत।
—रा. रू.

उ०—२ गहे ग्रब सुद्रसण भांज सुरतांण गह, कीध नर सुरां सिहायतनि केहौ। आवियौ संकट गज सुपह ऊवेळियौ, जंगळ चै नाथ रघनाथ जेहौ ।—ठाकरसी सिढायच

सिहारौ—देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

सिहि-वि.—सब समस्त।

सिहोर—१ देखो 'सिमर' (रू. भे.)

२ देखो 'सिहर' (रू. भे.)

सींक—देखो 'सीक' (रू. भे.)

उ०—१ पवन री मारी सींक ठाहरै इण भांतरी मांग काढ तयार कीजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ उदैपुर सोळै उमरावां नूं सात सींक री बीडो दिरीजै। देस निकाळो दै जिणनूं तीन सींक री बीड़ी दे ।—बां. दा. ख्यात

सींकलौ, सींतलो-सं. पु.—लकड़ी या लोहे का बना एक उपकरण जिसके अन्दर मथानी को फसाकर दही मथा जाता है। इसके लगाने का उद्देश्य मथानी व पात्र की सम्भावित टक्कर को बचाना है।

सींग-सं. पु. [सं. शृंग] १ खुर वाले पशुओं के सिर पर दोनों ओर उठे हुए कठोर एवं नोकदार वह अवयव जिनसे पशु अपनी रक्षा एवं दूसरों पर आक्रमण करता है, पशु शृंग। (डि. को.)

उ०—प्रति सींग प्रजालव बंग घणइ घट, जाडइ कंध सूं बाधि सिहाज ।—महादेव पारवती री वेलि

मुहा.—१ सींग निकळणा=जानवरों का युवा होना।

२ सींग री कसर पूंछ में निकळी=एक स्थान की कमी दूसरे स्थान में पूरी होना।

३ सींगां में डोरणी=मर्म वचन कहना, कमजोरी पर चोट करना।

कहा.—भैंस रा सींगड़ा भैंस नै भारी, आपां नै चाइजै दही री धारी=किसी के अवगुणों को छोड़ उसके गुणों का लाभ उठाना।

२ बंदूक का बारूद रखने का एक उपकरण। (पा. प्र.)

३ फूंक दे कर बजाया जाने वाला एक बाजा।

४ सींग की बनी एक नली।

वि. वि.—गांव के जर्राह प्रायः इस नली को शरीर से विकृत खून चूसकर बाहर निकालने के काम में लेते हैं।

अल्पा;—सींगड़ी, सींगडौ सींगटो।

सींगड़ी, सींगड़ौ—१ देखो 'सींग' (रू. भे.) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिरणां लांबी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव। सूरां छोटी दांतळी, दै घणा थट्टां घाव।—हा. झा.

सींगटौ—देखो 'सींग' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सूकां तगरां सींगटी, लपट पड़चा ओटाळ, जी लूआं लै नीसरी आयौ हिरणां काळ ।—लू

सींगण, सींगणि, सींगणी-सं. पु [सं. शृंग] धनुष।

उ०—सींगण कांई न सिरजिया, प्रीतम हाथ करंत। काठी साहंत मूठि मां, कोडी कासी संत ।—ढो. मा.

२ एक विशेष प्रकार का धनुष जो सींग का बना होता है।
(रा. सा. सं.)

उ०—१ अंगा टोप रंगाउळि खांडां, खेडां पटा कटारी। सींगणि जोड भली तरुयारी, लीजइ सार बिसारी ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ कीधी सांन खांनि मूंगलनइ, सींगणि परठ्यउ तीर। तांणी गयणि पंखिणी वीधी, पेलइ मोटा मीर ।—कां. दे. प्र.

उ०—३ परठ ओढण पटी खाग नाजा खंजर, गुरज गुपती गदा सांग सींगण सूपर ।—रुखमणी हरण

३ अशुभ लक्षणों वाला घोड़ा। (शा. हो.)

रू. भे.—सिंगण, सींघण, सीगणि, स्रंगणि, स्रंगणी।

सींगलदीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

उ०—दिन दुलहां मांणीगरां, इण गढ रा धणियांह। आंणी सींगलदीप सूं, पेखै पदमणियांह ।—बां. दा.

सींगळी—देखो 'सिघळी' (रू. भे.)

उ०—१ ऊजळा दांत गय सांभळा आगळी, सुंड उळळता हींडळै सींगळी ।—गु. रू. बं.

उ०—२ सींगळी गज्ज गरजंत साद। नभ जांण दवादस मेघनाद।
—गु. रू. बं.

सींगसट, सींगसठ—देखो 'सिंगसट' (रू. भे.)

सींगसाज-सं. पु. यौ.—सींग का बना बारूद रखने का एक पात्र।
(मा. म.)

सींगाड़ी, सींगाड़ौ—देखो 'सिंगोटी' (रू. भे.)

उ०—सुगट सींगाड़ी साकवर, आछी ऊजळ अंग। भारतवाळो भीम पर, नसल नागौरी रंग ।—नारायणसिंह सांदू

सींगायल-वि.—अवारा।

उ०—सींगायल तथा सरकायल सो सौ रचै है, बाजेगारी अर तेरा-

तालो नौ नौ ताल नांचै है ।—दसदोख

सींगाळ—देखो 'सींगाळी' (मह; रू. भे.) (डि. नां. मा.)

सींगाळी-सं. स्त्री.—१ सींगों वाला मादा पशु ।

२ गाय । (डि. को.)

सींगाळौ-सं. पु. [सं. शृंगी] (स्त्री. सींगाळी) १ सींग वाला जानवर शृंगी पशु ।

उ०—हुर्‌रे हुर्‌रे कर देता हलकार, लांवा सींगाळां देता लल-कारा ।—ऊ. का.

२ बैल, वृषभ ।

उ०—जो घणदोहो सागड़ी, व्है विरदावणहार । सींगाळौ बळ सो गुणौ, जांणावै जिणवार ।—बां. दा.

३ वीर, बहादुर ।

उ०—सींगाळौ अवखल्लणौ, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुरांणी वाड़ जिम, जिण जिण मत्थै पाय ।—हा. झा.

सींगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

सींगी—१ देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

उ०—भाव भगति का खाणा पीणा, सील संतोखी पतरा । सुरत निरत की सेली सींगी, लीया लगोटा जतरा ।—अनुभववांणी

२ देखो 'सिंगण' (रू. भे.)

उ०—गुरजां चकमारां अंग अयारां डावै पट्टां जमदड्डं । खंडा खुरसांणी तेगां पांणी सींगी नेजा सन्नड्ढं ।—गु. रू. बं.

सींगीबंद, सींगीबंध-सं. पु.—वह तालाव या वापिका जो चारों ओर से पत्थर एवं चूने की पक्की चुनाई से बांधा हो ।

उ०—तळाव १ कोट माहै, तळाव १ काचो पाको कोट रा पट्टा हेठै खाई री ठौड़ छै । कोहर ४ कोट मांहै सींगीबद पांणी मीठो । वडो कोट हुवौ ।—नैणसी

रू. भे.—सीगीबंद, सीगीबंध ।

सींगीमुहरौ—देखो 'सिंगीमुहरौ' (रू. भे.)

उ०—तमाल पत्र सींगीमुहरा धतूरो भूटंटो एक खांन इहमदा वादी खांन........।—रा. सा. सं.

सींगीरिख, सौंगीरिखी, सींगीरिसी—देखो 'स्रंगीरिसी' (रू. भे.)

उ०—तप कै गुमांन सींगीरिख मारि हारिखाई, वेद कै गुमांन तै ब्रंभ हूं उठायौ है ।—सुरजनदास पूनियौ

सींगोटी—देखो 'सिंगोटी' (रू भे.)

सींगौ-सं. पु.—सींग के आकार का लकड़ी का डंडा जो 'चौसंगी' या 'जई' के छोर पर लगाया जाता है ।

वि. वि.—देखो 'चौसंगी' ।

रू. भे.—सिंगौ ।

सींघण, सींघणि, सींघणी-सं. पु.—घोड़े के सिर पर होने वाला एक टीका जिसमें दो या अधिक भौंरियां होती हैं । (शा. हो.)

२ देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ०—१ गुण बांण सींघणि गाढ, वाहंति तांणक वाढ ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ वह छूटं कंबर सोक नलीसर सींघणि सघर साचवियं ।
—गु. रू. वं.

सींघल—१ देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंगल' (रू. भे.)

सींघळी—देखो 'सिंघळी' (रू. भे.)

उ०—१ सीहं वयण समधरै, खडग उपाडै हत्थळ । सीहै रा सींघळी, सींह ऊठिया सहस बळ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ जांणीया ईस विण जहर कुण जीरवै, जोगणी विवर कुण पैस जांणै । सकज सबळौ तखत मा'ल रा सींघळी, अगम दरीयाव सु तुहीज आंणै ।—मालौ सांदू

उ०—३ पछे लोह सांकळ रा प्रास नांखि नै हाथी पकड़ीजै. छै । इणी भांत रा सींघळी गजराज वैसास नै आंणिआ छै ।
—रा. सा. सं.

सींघसट, सींघसठ, सींघसत, सींघसथ—देखो 'सिंगसठ' (रू. भे.)

सींघाळौ—१ देखो 'सिंघाळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सींगाळौ' (रू. भे.)

सींघासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

सींघोड़ौ—देखो 'सिंघोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—भूरो मेवाती अरोड़ी अमल आगराई मिसरो अहिफीण अनै वासंग नागरै मुंहड़ै रा झाग हुऐ तिण भांति रौ नेस सींघोड़ा भज किया ।—रा. सा. सं.

सींचणियौ-सं. पु.—१ कुए से पानी निकालने के पात्र के बांधा जाने वाला रस्सा ।

२ कूऐ से पानी निकालने का पात्र ।

३ कूऐ से पानी निकालने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—सिंचणियौ ।

सींचणौ, सींचबौ-क्रि. स. [सं. सिचन्] १ खेत में फसल या बाग-बगीचे में पेड़-पौधों आदि को कूऐ से निकालकर पानी देना, पानी पिलाना, सिंचन करना ।

उ०—१ बांवळिया कुण रै लगाया थारौ पेड़, बांवळिया कुण रे सपूती थांनै सींचियौ ।—लो. गी.

उ०—२ बाईजी सींचै रे आंमूलौ कोई म्है सींचौ म्हारौ नीम-नीमोळीड़ा ।—लो. गी.

२ पानी छिड़कना, नमी देना ।

३ उड़ेलना, डालना ।

उ०—१ रावत झाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया । सपड़ाया जळ सींच, बळै चितरांम वणाया ।—मे. म.

उ०—२ सुणै सयद ऊससै अडर, वाहर पुर वाळा । अगनि कुंड ऊछळै, जांणि सींची घ्रत ज्वाळा ।—सू. प्र.

४ [illegible] दैना ।

उ०—[illegible] ममता घगिनि सींचतइ [illegible] सिलीसी, ममता वरद करइ ग्रानार।

—महादेव पारवती री वेलि

५ कुएं मे पानी निकालना ।

उ०—[illegible], वर कुंग्रारि रहेसि । हाथि कचोळउ [illegible], सींचनी [illegible] ।—ढो. मा.

६ (चींटियों के बिल पर अनाज) ग्रादि छिड़कना, छितराना, [illegible] ।

उ०—[illegible] रा पाप रै बदळै काले मूं [illegible] दो वेळा [illegible] सींची ।—फुलवाड़ी

सींचणहार, हारौ (हारी), सींचणियौ—वि० ।

सींचियोड़ौ, सींचियोड़ौ, सींच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सींचीजणौ, सींचीजबौ—कर्म वा० ।

सींचाण, सींचाणउ—देखो 'सिचांण' (रू भे.)

उ०—[illegible], ऊकठियइ [illegible] । कामणि काम [illegible], इस लागइ सींचाण ।—ढो. मा.

सींचाणी-सं. स्त्री. [सं. शची] इन्द्राणी, शची ।

उ०—[illegible] सींचांणी सिरखी, नैणांजळ भरती सैणा [illegible] सिरखी ।—ऊ. का.

सींचांणू, सींचांणौ—देखो 'सिचांणू' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सींचांणू मत ग्रसदांणू, पुळत न जांणू पव्वांणू ।

—भगतमाळ

सींचाणौ, सींचाबौ-क्रि. स. ['सींचणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ कुएं से पानी निकलवा कर फसल ग्रथवा पेड़ पौधों को पिलवाना, पानी दिराना, सिंचाई कराना ।

२ पानी छिड़कवाना, नमी दिराना ।

३ उंडेलवाना, ढलवाना ।

४ कुएं से पानी निकलवाना ।

५ (चींटियों के बिल पर ग्रनाजादि) छिड़कवाना, छितरवाना ।

सींचाणहार, हारौ (हारी), सींचाणियौ—वि० ।

सींचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सींचाईजणौ, सींचाईजबौ—कर्म वा० ।

सिंचाणौ, सिंचाबौ, सिंचावणौ, सिंचावबौ—रू० भे० ।

सींचायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पानी दिराया हुग्रा, सिंचाई कराया हुग्रा. २ पानी छिड़कवाया हुग्रा, नमी दिराया हुग्रा. ३ उंडेलवाया हुग्रा, ढलवाया हुग्रा. ४ कुएं से निकलवाया हुग्रा (पानी). ५ चींटियों के बिल पर ग्रनाजादि छिड़कवाया हुग्रा, छितराया हुग्रा ।

(स्त्री. सींचायोड़ी)

सींचारौ-सं. पु.—वह व्यक्ति जो कुएं से जल सींचने का काम करता है ।

उ०—ताप दियौ तद ईसरौ, घट एक रह्यौ घर । सींचारे पड़ते सबद, कीधौ मक्क कोहर ।—जुझारसिंह मेड़तियौ

२ सींचाई करने वाला व्यक्ति ।

सींचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सिंचित, सींचा हुग्रा, पानी दिया हुग्रा. २ कुएं से पानी खींचा हुग्रा, निकाला हुग्रा. ३ जल, घी ग्रादि उड़ेला हुग्रा, डाला हुग्रा. ४ छिड़का हुग्रा, नमी दिया हुग्रा. ५ चींटियोंके बिल पर ग्रन्न डाला हुग्रा, छिड़का हुग्रा, छितराया हुग्रा. ६ यज्ञ या होम में ग्राहुति दिया हुग्रा ।

(स्त्री. सींचियोड़ी)

सींचौ, सींचौ-सं. पु.—१ शौच से निवृत होकर मलद्वार की जल से की जाने वाली शुद्धि, ग्राबदस्त । मलद्वार स्वच्छ करने की क्रिया या भाव ।

२ ग्रशौच मिटाने के लिए शुद्ध जल का छींटा देने या लेने की क्रिया ।

सींठ, सींठ-सं. पु.—१ गुप्तेन्दिय के ग्रासपास उगने वाले वाल, झांट ।

उ०—कपड़ा काळा कीट, नीठ उठ ऊठ निरोधै । मींट ग्रमल रै मांय, सींठ कुवरै जूं सोवै ।—ऊ. का.

२ गुप्तेंद्रिय, जननेंद्रिय ।

सींठाणौ, सींठाबौ-क्रि. स.—बहकाना, फुसलाना ।

सींठायोड़ौ-भू. का. कृ.—फुसलाया हुग्रा ।

(स्त्री. सींठायोड़ी)

सींणगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—जदी गांम धणी री ग्रसतरी सींणगार करै ग्राय सलांम कीवी ।—गांम रा धणी री बात

सींणियौ, सींणौ-वि.—सफेद लेकिन हलके कालेपन का ।

रू. भे.—सणियौ, सणीग्रौ, सिणियौ, सीणौ ।

सींतरी, सींतरी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का घास विशेष ।

उ०—ग्रर्खा डाळां भांत भतीली, फूल महक ग्रणमींतरी । ऊभ एक पग साजत सजै, जो'ड़ा स्वागत सींतरी ।—दसदेव

रू. भे.—सणतरी ।

सींयाल-सं. पु.—वह बड़ा चौड़ा पत्थर जो किसी जलाशय के किनारे कपड़े धोने व नहाने के लिए रख दिया गया हो ।

सींदड़ी, सींदरी-सं. स्त्री.—१ ससुराल जाते समय कन्या के साथ डाली जाने वाली तेल, इत्र ग्रादि की शीशी ।

२ कुएं से पानी निकालने की रस्सी ।

३ पतली रस्सी का टुकड़ा ।

रू. भे.—सिंदड़ी ।

सींदल—देखो 'सिंधल' (रू. भे.)

सींदवौ—देखो 'सींधवौ' (रू. भे.)

सींदुर—देखो 'सिंदुर' (रू. भे.)

सींदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस। पवंग सींदूर व्रन चाढतां पटहथां, सूरै सूर मंडळ नांमियौ सीस।—मालौ सांदू

सींदूरियौ—उषाकाल।

उ०—दुत गैण उदै सींदूरियौ, लाग वाग पाटण लियौ।—पा. प्र.

२ देखो 'सिंदुरियौ' (रू. भे.)

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ कियां, सेल सींदूरियौ सजै जगीस। पवंग सींदूर व्रन चाढतां पटहथां, 'सूरै' सूर-मंडळ नांमियौ सीस।—मालौ सांदू

सींधड़ौ-सं. पु.—१ ऊंट के चमड़े का बना तेल या घी डालने का पात्र।

२ ऊंट।

रू. भे.—सीदड़ौ।

सींधण—देखो 'सिंधी' (स्त्री.) (रू. भे.)

सींधल—देखो 'सिंघल' (रू. भे.)

उ०—सू वालौत देवळा (ड़ा) सींधल, दवि बोड़ा बाळीसा देवळ। —रा. रू.

रू. भे.—सींदल।

सींधलावटी—देखो 'सिंधलावटी' (रू. भे.)

उ०—तितरै सीहैण गुढा डोडियाल नूं जावै छै। सींधलावटी छाडी छै।—नैणसी

सींधवा, सींधवाळ—देखो 'सीधवौ' (रू. भे.)

सींधवी, सींधवीनाद, सींधवौ, सींधवौराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—१ ऊठि अढंगा बोलणौ, कांमणि आखै कंत। अै हल्ला तौ ऊपरां, हूंकळ कळळ हुवंत। हूंकळै सींधवौ वीर कळकळ हुवै, वरण कजि अपछरां सूरिमा वहवुवै।—हा. झा.

उ०—२ ऊठि अचूकां बोलणौ, नारि पयंपै नाह, घोड़ां पाखर धमधमी, सींधूराग हुवाह। हुवौ अति सींधवौराग, वागी हकां, थाट आया पिसण घाट लागै थकां।—हा. झा.

उ०—३ रुड़ै सींधवौराग गुड़ै हल्लां गज ढल्लां। खळां उथल्लां खाग, बणै बगतर बरघल्लां।—ऊ. का.

सींधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

उ०—सींधूर दळ बळ सबळ, पूर पैदल अणपारां। नदि सर टूटै निवांण, भांण ढंकै रज भारां।—सू. प्र.

सींधू—१ देखो 'सिंधुराग'।

उ०—आळस जांणै ऐस मैं, वपु ढीलै विकसंत। सींधू सुणियां सौ गुणौ, कवच न मावै कंत।—वी. स.

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

सींधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे.)

उ०—ऊठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपै नाह। घोड़ां पाखर धमधमी, सींधूराग हुवाह।—हा. झा.

सींप—देखो 'सीप' (रू. भे.) (डि. को.)

सींबल—देखो 'सिंबल' (रू. भे.)

सींम—देखो 'सीमा' (रू. भे.)

सींमल—१ देखो 'सेमल' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंबल' (रू. भे.)

सींव—१ देखो 'सीमा' (रू. भे.)

उ०—१ जैसलमेर थी कोस ७० सोढां री ऊमरकोट छै तिण मांहे कोस ३५ आघोफरै दाग जाळ छै तठै ऊमरकोट जैसलमेर सींव छै।—नैणसी

उ०—२ दिल्ली री सींव रै कांकड़ मैं आयां तोपां रा धड़िंदा उडण लागा। म्है तौ पाछौ लारै फिरनै ई नीं जोयौ। मरता खपता ठेट आय पूगा।—चितरांम

२ देखो 'सीम' (रू. भे.)

उ०—१ बडौ गांव नदी सूं रेलीजै सारी सींव मैं गेहूं हुवै। —नैणसी

उ०—२ वूझ्यौ सजनां गायां री गवाळ, सींव बताहौ रे भाईड़ा। हाडै राव री।—लो. गी.

सींवण, सींवणी-सं. स्त्री. [सं. सीवनी] १ अण्ड कोश के मध्य की रेखा जो सीली हुई सी प्रतीत होती है।

२ सिलाई की क्रिया या भाव।

३ सुई। (डि. को.)

सींवणौ-सं. पु. [सं. सीवनम्] १ सिलाई करने की क्रिया या भाव।

२ सिलाई का व्यवसाय या कार्य।

उ०—सींव सींव सींवणौ, नैण आंधा हुयग्या न्यारा।—ऊ. का.

३ सिलाई के लिये लाये जाने वाले वस्त्र।

क्रि. प्र.—आणौ, करणौ, दैणौ, लाणौ, सीखणौ।

रू. भे.—सीवणौ।

सींवणौ, सींवबौ-क्रि. स. [सं. सीवनम्] सिलाई करना, कपड़े सीना।

उ०—बोदा कपडा बहुत रंग, सींवणहार कुढंग। धड़ धड़ टांका ऊधड़ै, घण मोड़ंतां अंग।—जलाल वूबना री वात

सींवणहार, हारौ (हारी), सींवणियौ—वि०।

सींविओड़ौ, सींवियोड़ौ, सींव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सींवीजणौ, सींवीजबौ—कर्म वा०।

सीवणौ, सीवबौ—रू० भे०।

सींवाणौ, सींवावौ-क्रि. स. [सं. 'सींवणौ' क्रिया का प्रे. रू.] सिलाई कराना या सिलाई करने में प्रवृत्त करना।

सींवाणहार, हारौ (हारी), सींवाणियौ—वि०।

सींवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सींवाईजणौ, सींवाईजबौ—कर्म वा०।

सिमाणौ, सिमावौ, सिमावणौ, सिमावबौ, सिलाणौ, सिलावौ, सीमाणौ, सीमावौ—रू० भे०।

सीवायोड़ो-भू. का. कृ.—सिलाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ ।
(स्त्री. सीवायोड़ी)

सीवाळ—देखो 'सिवाळ' (रू. भे.)
उ०—[illegible] मन जीतिया, मोर पंकज सींवाळ । पड़ही लहरां [illegible], ज्यां हूंदा [illegible] ।—बां. दा.

सीस—१ देखो 'सिर' (रू. भे.)
२ देखो 'सिव' (रू. भे.)

सी-सं. पु. [सं. शीत, प्रा. सीग्र] १ सर्दी, ठंड, शीत । (डि. को.)
उ०—सीयाळइ तउ सी पड़इ, उन्हाळइ लू वाइ । वरसाळइ भुइ [illegible], चालण गति न काइ ।—ढो. मा.
पर्याय.—जाड़ो, ठंड, तुसार, सिसिर, सीत, सुसीम, हिव ।
२ सिर, शेर ।
३ डर, भय । (डि. को)
४ जल, पानी । (ना. डि. को.)
५ [illegible] ।
६ सीत्कार ।
७ शोभा । (ह. नां. मा.)
८ समानता व तुल्यता सूचक प्रत्यय ।
उ०—तरै नागही सारा सोरठ रा लसकर नूं नांमी सी कोठी मांही सूं सीधो दियो ।—नैणसी
वि. स्त्री.—१ समान, तुल्य ।
उ०—मारू सी देखी नहीं, ग्रणमुख दोय नयणांह । थोड़ी सी भोळै पड़इ, दमवर लगंताह ।—ढो. मा.
सर्व.—१ क्या ।
उ०—१ इम जांणी नइ प्रत्युपकार करंता, राखो छो सी चिंता जी ।—वि. कु.
उ०—२ तूं तुझ ग्रागल सी कहूं कन्हैया बीतक दुख री वात रे ।
—जयवांणी
२ कैसी ।
उ०—नेह बिना सी प्रीतड़ी, कंठ बिना स्यउ गांन । लूण बिना सी रसवंती, प्रतिमा विण स्यउ ध्यांन ।—वि. कु.
क्रि. वि.—१ करीब, लगभग ।
उ०—१ बी. ए. री परीक्षा देय नै म्हे चिन्ही सी सोरी सांस ली ही ।—[illegible]
उ०—२ सिरदार ढोलियै पर विराजै है ग्रर सुपियारदे नेड़ै सी [illegible] गादी पर बैठै है ।—नैणसी रो साको
२ [illegible] ।
उ०—ग्रोर म्हारे ग्रावण रो कारण ई कांइ है ? म्हारी दावड़ी [illegible] सी पूरी बात सुण'र म्हांनै खबर दीनी है ।
—नैणसी रो साको
३ देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—ग्रत चोप सी-वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर ।
—र. ज. प्र.
४ देखो 'स्री' (रू. भे.)
५ देखो 'ही' (रू. भे.)
उ०—सो ग्रठै तो ग्रै बडी सी उडीक करै ग्रर उठै कुंवर नुं इण तरै बिलमाय राखियो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सीग्रा-सं. पु. [ग्र. शीग्रा] १ इस्लाम धर्म का एक सम्प्रदाय जो हजरत ग्रली के सिवाय ग्रन्य खलीफों को नहीं मानता है ।
२ उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी ।
३ देखो 'सीता' (रू. भे.)

सीग्राल, सीग्रालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)
उ०—१ चंदन भरी कचोली (भरी) यनि रंगि रोली, ग्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पांन कुली, पहिरणि पीत पटुली, कांचली कांनीग्राली, उढणि नवरंग फाली, रूप नी चित्रसाली, ग्रहो सीग्रालक बोलि ।—व. स.
उ०—२ सासूसली ग्रापु सोवनकेरी, हवड़ां नही लीजइ बीजी ग्रनेरी, वै कर जोड़ी वरराज मागइ, सासूसली ग्रापतां वार ना लागइ, ग्रहो सीग्रालक बोलि ।—व. स.

सीए-सं. पु.—ठंड, सर्दी । (जैन)

सीग्रोदग-सं. पु. [सं. शीतोदक] कच्चा पानी । (जैन)

सीग्रो, सीग्रोताव-सं पु. यौ. [सं. शीत+ताप] शीत लगकर ग्राने वाला विषमज्वर, मलेरिया ।
रू. भे.—सीयउ ।

सीकंत—देखो 'स्रीकंत' (रू. भे.)
उ०—कह बुद्ध किळंकी ईस ग्रसंकी कळ पूरण सीकंता है ।
—र. ज. प्र.

सीतकंठ-सं. पु. [सं. शितिकंठः] शिव, महादेव । (ह. नां. मा.)

सीकंपी सीकंपौ-सं. स्त्री.—सर्दी के कारण होने वाली कंपकंपी, कंपन ।

सीक-सं. स्त्री. [सं. इषीका] १ तीक्ष्ण ग्रौर पतली द्रव पदार्थ की धार ।
उ० —रुधर री धारां सरीर मांय सूं प्रवाळ री सीकां वह नै रही है ।—द. दा.
२ लोहे की सलाई पर लपेट कर पकाया जाने वाला मांस ।
उ०—१ रोगांन मसाले सै सूलूं की सीक वणावै । ग्रनेक भांति के साग तिसका पार न पावै ।—सू. प्र.
उ०—२ सीकां पासै वर्ण छै । ग्राडा डोरा घी रा दीजै छै । मांस रभर्तै री खसबोय फूट रही छै ।—रा. सा. सं.
३ पतली सलाई, तूलिका ।
४ जलकण, बूंद ।
५ पतली सलाई के शिरे पर लपेटी हुई रुई जो कि इत्र से भिगोई

हुई होती है।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

२ देखो 'सी' (वि.) (रू. भे.)

उ०—म्हारै कांन में धीरै सीक कांनाफूसी मांय बोली।—तिरसंकू

रू. भे.—सींक।

सीकदार—देखो 'सिकदार' (रू. भे.)

सीकदारी—देखो 'सिकदारी' (रू. भे.)

सीकर-सं. पु. [सं. शीकरः] १ जलकण, पानी की बूंद।

उ०—१ केवड़ा कुसुम कुंद तरणा केतकी, स्रम सीकर निरझर स्रवति।—वेलि

उ०—२ अरांनां हसै डूंगरां रैण आंटै, छदीजै करां सीकरां गैण छांटै।—वं. भा.

२ वायु द्वारा उत्क्षिप्त जल बिंदु, वर्षा की फुआर।

३ स्वेद, पसीना।

सीकल-सं. पु. [अ. सैकल] १ हथियार पर लगे जंग को छुड़ाने की क्रिया।

उ०—तांडळां दळां डूंगळां टूंक रूंडळां रुळां सीकळां रूक।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'सकल' (रू. भे.)

सीकाळ-सं. पु.—शीतकाल।

उ०—जळ खूटै सीकाळ, रंग मूंगी पड़ ज्यावै। ज्यू घोड्योड़ी भांग दूर सूं वरण दिखावै।—दसदेव

सीकिरि—एक विशेष प्रकार का छाता।

उ०—दिसि दिसि सीकिरि डांमर चांमर ढलइ सभावि। वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभावि।—जयसेखर सूरि

सीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू. भे.)

उ०—करै चित खांत निस दिवस रटरै 'किसन'। सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन।—र. ज. प्र.

सीकोट-सं. पु.—१ शीतऋतु में पश्चिमी क्षितिज पर दृष्टिदोष के कारण दिखाई पड़ने वाला नगर, मकानात आदि का मिथ्याभास जो सूर्य के कुछ ऊपर चढ़ने पर मिट जाता है, गंधर्वनगर।

उ०—१ भुरजां रा कोसीस नै धमळहर धसळगिर पहाड़ ज्यां वादळां रा किरण सारिखा उजळा सीकोट सी नीनरि आवै छै।

—रा. सां. सं.

उ०—२ तू भासंकर भाळियळ, वरै घडां अणबोट। भाणां जो वड भाखरां, सर हंदा सीकोट।—गु. रू. बं.

२ वायु प्रवाह के कारण पानी, मिट्टी या धुंऐं का उठने वाला समूह।

उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपड़िया सीकोट। काय दहेसी पोयणी, काय कुंवारा घोट।—ढो. मा.

३ तेज गति के कारण उत्पन्न ध्वनि।

सीकोतर, सीकोतरि, सीकोतरी-सं. स्त्री.—कलह प्रिय स्त्री।

उ०—घन उमरांणी घाट घर, पदमणियां विण पार। सह नारी सीकोतरी, धरती सिध धिकार।—बां. दा.

२ प्रेतनी।

३ एक युद्ध प्रिय देवी, रणचंडी।

उ०—१ सीकोतरी सककणी, प्रेत डककणी अपारां, विविध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां।—रा. रू.

उ०—२ वैताळ वीर मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद।—गु. रू. बं.

२ पिशाचिनी।

उ०—लख लख नाव महिख धड़ लाधै, सीकोतरी तिण व्रत साधै।

—सू. प्र.

सीखंड—देखो 'स्रीखंड' (रू. भे.)

सीख-सं. पु.—१ शिक्षा, उपदेश।

उ०—१ विकथा तनै वल्लभ लागै, धरम कथा सुण खीजै रे। हिंसा कर कर हुवै तूं राजो, किसी सीख तोय दीजै रे।

—जयवांणी

उ०—२ पण म्हारी सीख भळामण ई उणरै माथै मसांणिया वैराग वाळो असर जरूर कियौ पण चिकणा घड़ा माथै छांट नीं लागी।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ नीं वांनै आपरै हीया री उपजती अर नीं वै किणी दूजा री सीख मांनता।—फुलवाड़ी

२ युक्ति, उपाय।

३ परामर्श, सलाह, राय।

उ०—मासी वात नै मरोड़तां थकै कैवण लागी—बिरथा भिझाळ रै लारै धोबां धोबां धूड़, अबै थनै लाख रीपियां री सीख बतावूं। विसराजै मती।—फुलवाड़ी

४ किसी को परिश्रम व मेहनत के फलस्वरूप दिया जाने वाला उपहार, इनाम।

उ०—१ जळवा रै दूजै दिन ई इक्कीस मोहरां झलाय दायण मां नै सीख दे दी।—फुलवाड़ी

५ याचकों को रवानगी के समय दिया जाने वाला द्रव्य।

क्रि. प्र.—देणी, लेणी।

६ एक लोकगीत जो लड़की को ससुराल विदा करते समय उसके पीहर की औरतें गाया करती हैं।

७ मांगलिक अवसरों पर अपने रिश्तेदारों या अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेंट स्वरूप दिया जाने वाला उपहार।

उ०—बोली पिंडतजी थें म्हारै कहै इत्ता फोड़ा भुगतिया। थांरो औ ओसांण जीवूं जित्तै नीं भूलूं। बाई री सीख पछै थांरी सीख मैं कमी-वेसी रै जावै तो म्हनै कैजो।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—देणी।

८ उत्सव व त्यौहारों की विदाई के समय दी जाने वाली भेंट।

९ वस्त्र, बेटी आदि को ससुराल भेजते समय दिया जाने वाला धन, विदाई आदि।

१० अनुमति, इजाजत, आज्ञा।

उ०—१ सीख दई सिव नन्दा, घर आया निज बार। मेल्हि गयो नेरलिया, माल मालमद्दार।—डो. मा.

उ०—२ आपनै तीन म्हीना री फौज रै वास्तै रुपिया इण पोथी मांय मान नै लाय रयौ हूं। पै रुपिया जद कदेई थारै कनै हुवैला थर म्हनै जरूरत पड़ी तो लै लूं लो। किणी तरियां री ख्याल मत करजै। पोथी जरूर पढजै। अन्यथा सीख मांगू हूं।—तिरसंकू

११ प्रस्थान, रवानगी।

उ०—पछै मोटमदे जी उण सूं सीख कीवी।—नैणसी

१२ विदाई।

उ०—१ थोनी सिख जी थे म्हारै कहे दत्ता फोड़ा भुगतिया। थारी घो थांमांण औद जिसै नीं भूलूं। वाई री सीख पछै थांरी सीख में कमी-बेसी रै जावै तो म्हनै कैजो।—फुलवाड़ी

उ०—२ पीछै किरा नैणरी वगत स्रोकरनीजी मुलतांन पधार राव सेखै जी नूं लाया। अन कंवर वीकैजी नूं परणाया पीछै जांन नूं सीख दी।—द. दा.

रू. भे.—सिक्ख, सिख।

अल्पा;—सीखड़ली।

सीखड़ली—देखो 'सीख' (रू. भे.)

उ०—१ सीखड़ली हूंजा मारू दीवी रे नीं जाय। छाती भरीजे हिवड़ो ढबकै जी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ मेंडी सूं नीचा पधारी भाभी म्हारी ओ सीखड़ली देवो नी, नेजल तो उभायो जावै सामरै।—लो. गी.

सीखचो—सं. पु. [फा. सीखच] १ लोहे की वह सलाख जिस पर मांस लपेट कर भूनते हैं।

२ लोहे की छोटी सलाखा।

सीखणौ, सीखबौ—क्रि. स. [सं. शिक्षणम्, प्रा. सिक्खण] १ किसी से कोई कला, विद्या आदि के ज्ञान की तालीम लेना।

उ०—१ सो राजकंवर नै पूछ्यां-ताछ्यां बिना ई वा टटण-घटोनो सीखण सारू सूवा रै पाखती बैठगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ जग सीख वांणी सीखे जवन, पढ़ै ब्रहम मुख पारसी। हिन्द देस भेद भाषा हुआ, कांई लागां आरसी।—रा. रू.

२ शिक्षा, नसीहत आदि लेना।

३ स्मरण करना, याद करना, कंठस्थ करना।

४ ग्रहण करना, स्वीकार करना।

उ०—जग मुनिया जग सीखिया, जगा कहै करीयां ध्यांन। जन-हरीदा हरि पाईयै, छूटै अतर ध्यांन।—अनुभववांणी

५ आसक्त एवं मग्न होना।

ज्यूं—नरपत जो अर म्हैं सीखीजनै आया।

सीखणहार, हारौ (हारी), सीखणियौ—वि०।

सीखिओड़ौ, सीखियोड़ौ, सीख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सीखीजणौ, सीखीजबौ—कर्म वा०।

सीखत—सं. स्त्री.—१ सीखने की शक्ति या गति।

२ सीखने की क्रिया।

३ स्मरण शक्ति, याददास्त।

सीखांमण—सं. स्त्री.—१ सिखाने की क्रिया या भाव।

२ शिक्षा, नसीहत।

उ०—१ मांन्यउ बोल देई सीखांमण, इम कान्हडदे राइ। पइसी प्रांणि अपुर मारेज्यौ, रखे हुंसारथ थाइ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ दीइ सीखांमण सांम्हउ जाइ, बीजउ भाट मोकलिउ राइ। ऊतारी सुंदरला तीर, आव्या तिहां राय नइ बीर।

—कां. दे. प्र.

उ०—३ इम सीखांमण दीधी घणी ए, आगा चाल्या लकड़ता भणी ए। लारै नींद तणै वस थाय ए, जितरै गई आग बुझाय ए।—जयवांणी

३ सलाह, राय।

सीखा—देखो 'सिखा' (रू. भे.)

उ०—लकड़ी तणा घोचा देई नै, ए देही हूंती गोरी रे। बाला सजन संगातै हूंता, जिण पहिली सीखा फोडी रे।—जयवांणी

२ देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)

सीख्या—सं. स्त्री.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु वर्ण होते हैं।

२ देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)

सीगणि, सीगणी—देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ०—प्रीठ तोउ चाल्यौ तुरीय पलांण, सीगणि जोड़ लीयां करि-वांण।—वी. दे.

सीगी—देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

उ०—सेली सीगी मेखला, कांनि मुदरका घालि। हरीया जोगी जुगति बिन, पंच न सबै पालि।—अनुभववांणी

उ०—२ बावै सीगी पूरै नादा, अनहद का नहीं जांणै स्वादा।

—अनुभववांणी

सीघ्र—वि. [सं. शीघ्र] १ अविलम्ब, तुरंत, जल्द, चटपट।

क्रि. वि.—२ जल्दी से, फुरती से, तुरंत।

सं. पु.—१ पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानों से ग्रहों को देखने में आने वाला अन्तर।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (सू. प्र.)

सीघ्रकारी—वि. [सं. शीघ्रकारिन्] १ शीघ्रता करने वाला।

२ फुर्तीला।

३ शीघ्र प्रभाव करने वाला।

सीघ्रकोपी-वि. [सं. शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी-जल्दी क्रोध करने वाला।
२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला।
सीघ्रगामी-वि. [सं. शीघ्रगामिन्] तेज चलने वाला, द्रुतगामी।
सीघ्रता, सीघ्रताई-सं. स्त्री. [सं. शीघ्रता] जल्दबाजी, उतावली, शीघ्रता, तीव्रगति।
उ०—तुहो पच्छ तारच्छ मैं सीघ्रताई. रती मूरती मैं तुंही सुंदराई।
—मे. म.
सीघ्रपतन-सं. पु. यौ. [शीघ्रपतन] संभोग या मैथुन में वीर्य्य के शीघ्र स्खलित हो जाने की अवस्था, स्तंभन शक्ति का अभाव।
सीड़-सं. स्त्री.—१ बकरियों के बालों या सूत आदि से बुनी पतली रस्सी जिससे बोरियें आदि सीते हैं।
सं. पु.—२ सांड, बैल। (क्षेत्रिय)
सीचांण(न)—देखो 'सिचांणौ' (रू. भे.)
सीचांणौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)
२ देखो 'सिचांणौ' (रू. भे.)
सीजणौ, सीजबौ—देखो 'सीझणौ, सीझबौ' (रू. भे.)
उ०—१ रजपूती रंई नहीं, पुगी समदां पार। पातरियां रा पाद मैं, सीज गया सिरदार।—ऊ. का.
उ०—२ दस सेर चावळां री चरू चूला ऊपर चढायां ऊपरला चोखा सीज्या हाथ सूं देख्या।—भि. द्र.
उ०—३ खदबद खीचड, खीर, रावड़ी, रोटी रळीजै। जिनवां सैजळ तणां, सलूणी सोरौ सीजै।—दसदेव
सीजियोड़ौ—देखो 'सीझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सीजियोड़ी)
सीझणौ, सीझबौ-क्रि. अ. [सं. सिद्ध] १ आग की आंच पर पकना, परिपक्व होना।
उ०—पण ढकणा रै मांय सीझै सो सिरै।—फुलवाड़ी
२ तपस्या करना, तपना।
उ०—बंधिया सील पोयी कथा, सुपह पंथ संचारियो। सीझत आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधावियो।—वील्हो
३ सिद्ध होना, सफल होना।
उ०—१ कारज कौ सीझै नहीं, मीठा बोलै वीर। दादू सांचै सब्द बिन, कटै न तन की पीर।—दादूवांणी
उ०—२ कहै कहै का होत है, कहै न सीझै कांम। कहै कहै का पाइये, जब लग हिरदय न आवै रांम।—दादूवांणी
उ०—३ दया थकी दौलत हुवै ए, सीझै सगळा कांम। दसमैं अंगै कह्या ए, साठ दया तणां नांम।—जयवांणी
उ०—४ जिणंदराय दरसण दीजौ आज, जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज।—वि. कु.
४ जलना, भस्म होना।
५ कमजोर होना, बलहीन होना।
६ कष्ट, दुःख आदि सहन किया जाना।
७ झुलसना।
सीझणहार, हारौ (हारी), सीझणियौ—वि०।
सीझिओड़ौ, सीझियोड़ौ, सीझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सीझीजणौ, सीझीजबौ—भाव वा०।
सिजणौ, सिजबौ, सीजणौ, सीजबौ—रू० भे०।
सीझाणौ, सीझाबौ-क्रि. स. ['सीझणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ पकाना; परिपक्व करना/कराना।
२ तपस्या करने के लिये प्रेरित करना।
३ सिद्ध करना, सफल करना।
४ जलाना, भस्म करना।
५ कष्ट देना।
६ झुलसाना।
सीझाणहार, हारौ (हारी), सीझाणियौ—वि०।
सीझायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सीझाईजणौ, सीझाईजबौ—कर्म वा०।
सीझातर—देखो 'सय्यातर' (रू. भे.)
सीझायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पकाया हुआ, परिपक्व किया हुआ. २ तपस्या के लिये प्रेरित कया हुआ. ३ सिद्ध या सफल किया हुआ. ४ जलाया या भस्म किया हुआ. ५ कष्ट दिया हुआ, त्रासित। ६ झुलसाया हुआ।
(स्त्री. सीझायोड़ी)
सीझियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पका हुआ, परिपक्व हुवा हुआ. २ तपस्या किया हुआ, तपा हुआ. ३ सिद्ध, सफल हुवा हुआ. ४ जला हुआ, भस्म हुवा हुआ. ५ कमजोर या बलहीन हुवा हुआ. ६ कष्ट या दुःख उठाया हुआ. ७ झुलसा हुआ।
(स्त्री. सीझियोड़ी)
सीट-सं. स्त्री. [अं.] १ बैठने का स्थान, जगह।
उ०—म्हैं सीट सूं उठ खड़्यौ हुयौ।—तिरसंकू
२ आसन, गद्दी।
सीटकी-सं. स्त्री.—पतली टहनी।
उ०—नणद बाइ तोड़े नींबड़ली रा पांन, पन्ना मारू, देवरियो छिनगारौ तोड़ै सीटकी जी म्हारा राज।—लो. गी.
सीटी-सं. स्त्री. [सं. शीतृ] १ वह पतली और महीन ध्वनि जो होठ और जीभ को सिकोड़ कर मुंह से हवा बाहर फेंकने पर उत्पन्न होती है।
क्रि प्र.—देणी, लगाणी, बजाणी, मारणी।
२ वह बाजा या खिलौना जिससे उक्त प्रकार की आवाज निकले।
३ किसी विशिष्ट क्रिया द्वारा उत्पन्न होने वाली उक्त प्रकार की ध्वनि।
४ निर्धारित समय पर नियमित रूप से होने वाली किसी भोंपू की

मकान ।

[सं.] २ नगर, शहर।

रू. भे.—सिटि, सिटी।

सीढ़ी, सीढ़ी-स. स्त्री. [सं. निश्रेणी] १ मकान की छत या किसी ऊंचे स्थान पर चढ़ने के लिए पत्थर या लकड़ी का बना जीना, सोपान, निसेनी, पैड़ियां।

उ०—१ नमधर कीन कियो फिलवांणे, आरोह्यो सीढी पग आगें।—रा. रू.

उ०—२ जिस मकान की सीढियूं के ऊपर रंगदार सबजूं पसमीन पायंदाज राजै।—सू. प्र.

पर्याय—अवरोह, आरोह, आरोहण, निसेणी, सोपांन।

२ बांस का बना लम्बा ढांचा, जिस पर मृतक के शव को श्मशान ले जाया जाता है, अर्थी।

उ०—१ जीवता सेठां री सीढी बारै निकळतांई सेठांणी अरडां पाड़ां रोवण लूगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ ठाकुरां महर रै दरवाजे चच आढै नूं सीढी मैं लै अर काधीया नीसरीया।—लाखा फूलांणी री वात

३ लाक्षणिक अर्थ में क्रमशः विकसित करने वाली अवस्थाएं, उन्नति के रास्ते।

रू. भे.—सेढी।

सीणौ-स. पु.—१ कपड़े सीने का कार्य।

उ०—चाकी चूला पोत, छांणनी, पोणौ। तीज तिवार मनाय, मांजणौ, सीणौ, धोणौ।—संज सूझ

२ देखो 'सींणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सीणी)

सीतंग, सीतंग—देखो 'सितग' (रू. भे.)

सीतंगियौ, सीतंगी—देखो 'सितंगियौ' (रू. भे.)

सीतंसु, सीतंसू—देखो 'सितांसू' (अ. मा.)

सीत-सं. पु.—१ पागलपन, सनक।

उ०—१ यां रै मूंडा सूं बाप रै चेता री वात सुणनै राजी व्है जातौ पर वांरै सीत री वात सुणनै अणूंतौ विलखौ व्है जातौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मेट ताप म्हाराज, भाव मेटौ भरणाटै। मेटौ करजुर जोर, सीत मेटौ सरणाटै।—अग्यात

२ सन्निपात।

उ०—१ सेठ तौ सीत मैं बकै ज्यूं अगळ-विगळ बकण लागा। —फुलवाड़ी

उ०—२ बंधन लागी—म्हारी काची बातां री कोई मथारौ थोड़ौ ई है। म्हैं तौ सीत मैं बेलै ज्यूं अण्टपोर बेलूं।—फुलवाड़ी

३ जाड़ा, सर्दी। (हि. को.)

उ०—१ अरक देस फिर उदौ, मिटै तम तारामंडळ। गयौ सीत भैभीत, जांणि पेसै जाळांनळ।—गु. रू. बं.

उ०—२ घोड़ै घावै घन करै, सहै घांम सिर सीत। जनहरीया नर छाडियौ, खाटि खटाउ मीत।—अनुभववांणी

४ शरद ऋतु, शीतकाल।

५ लताओं का कुंज। (अ. मा.)

वि.—१ ठंडा, शीतल। ॐ (डि. को.)

३ मुफ्त, निःशुल्क।

उ०—यौ सिर सौंहगौ सीत कौ, पेम अमोलिक थाय। हरीया पीजै पेम कुं, जो सिर साटै पाय।—अनुभववांणी

४ देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै तैं वार किता इंद्रजीत, संहार दइतां वाळी सीत। —ह. र.

सीतअंसु—देखो 'सीतांसु' (रू. भे.) (नां. मा.)

सीतकटिबंध-सं. पु. [सं. शीतकटिबंध] पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण के कल्पित रेखाओं द्वारा विभाजित वे भूखंड जो २३½ डिग्री के बाद माने जाते हैं। (भूगोल)

सीतकर-सं. पु. [सं. शीतकर] जिसकी किरणे शीतल हो, चंद्रमा।

वि.—१ ठंडा करने वाला।

२ ठंडदायक, शीतल।

सीतकसाय-सं. पु. यौ. [सं. शीतकषाय] किसी काष्ठौषध आदि का वह कषाय या रस जो उससे छः गुने ठंडे पानी में रात भर भिगोने पर तैयार होता है।

सीतकाळ-सं. पु. [स. शीतकाल] १ सर्दी का मौसम, हेमंत ऋतु।

उ०—वहतै सीतकाळ वोळायौ, औ वैसाख अजेगढ आयौ। —रा. रू.

सीतकिरण-सं. पु. [सं. शीतकिरण] जिसकी किरणे शीतल हो, चंद्रमा।

सीतकोट—देखो 'सीकोट' (रू. भे.)

सीतजुर, सीतजुवर, सीतज्वर-सं. पु. [सं. शीतज्वर] जूड़ी लग कर आने वाला बुखार, ठंडा ज्वर, मलेरिया। (अमरत)

सीतता-सं. स्त्री. [सं. शीत+रा. प्र. ता] शीतलता, ठंडक।

उ०—सगंधता तौ भार ही मांझ हुई। स्रव हूओ छै। एही सीतता हुई। अर घणौ भार कांवै लीयौ छै। —वेलि टी.

सीतनाथ—देखो 'सीतानाथ' (रू. भे.)

उ०—निवाह सीतनाथ वाह संत चा नेहड़ा।—र. ज. प्र.

सीतपत, सीतपति, सीतपती—देखो 'सीतापति' (रू. भे.)

उ०—सीतपत अनंत छै पण भेद न पाया।—रांमरासौ

२ देखो 'सीतपित्त' (रू. भे.)

सीतपित, सीतपित्त-सं. पु. [सं. शीतपित्त] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें खुजली, पीड़ायुक्त वमन, ज्वर एवं दाह सहित त्वचा में चकते से पड़ जाते हैं और वायु की अधिकता होती है।

रू. भे.—सीतपत, सीतपति, सीतपती ।

सीतप्रसाद-सं. पु.—साधु महात्माओं का उच्छिष्ट (जूठा) प्रसाद ।

उ०—कांम करै नहीं काज करै कछु, सीरो चरै सदाई। सीतप्रसाद नांम घर सौंधा, खूबहि ऐंठ खवाई ।—ऊ. का.

रू. भे.—सीतळप्रसाद, सीळप्रसाद ।

सीतमांण, सीतभांन, सीतमांनु-सं. पु. [सं. शीतभानु] चंद्रमा का एक नाम ।

सीतरित, सीतरितु-सं. स्त्री. [सं. शीतऋतु] हेमन्त ऋतु ।

उ०—ऊठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै वणि सोंभ सभाई ।—रा. रू.

सीतरूंख, सीतरूख-सं. पु.—चंदन । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सीतळ, सीतल-सं. पु. [सं. शीतल] १ चन्दन ।

२ मोती ।

३ चन्द्रमा ।

४ कपूर ।

५ पद्मकाठ ।

६ पीत चदन ।

७ बर्फ ।

८ एक प्रकार का व्रत । (जैन)

वि.—१ शीतलता प्रदान करने वाला, ठंडा । (डिं. को.)

उ०—१ थळ जेथी ऊंचा घणा, नीर न लब्भै कोय। सीतळ निरमळ ईख सम, जहां प्रगट जळ होय ।—गज-उद्धार

उ०—२ अग जातै भायौ मनै, आयौ पोस अवन्न । पसरंतां उत्तर पवन, घर सीतळ रवि धन्न ।—रा. रू.

उ०—३ सांई गहरा रूंखड़ा, सदा'ज सीतळ छांह । हरीया पंछी बापडा, ता विच केळ करांह ।—अनुभववांणी

१ जिसमें जोश न हो, शांत ।

उ०—मोड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनैं सीतल सतवाळी ।—ऊ. का.

३ प्रसन्न, खुश, आनंदमय ।

उ०—है जांह जोति सदा तन सीतळ, ताप न तिन कुं लागै । तिल विन तेल दीया विन वातो, एक अखंडत जागै ।—अनुभववांणी

४ संतुष्ट ।

उ०—हरीया जब सीतल भया, सब तैं एक सभाय । राग दोस अंतर नहीं, सुख संतोस समाय ।—अनुभववांणी

५ देखो 'सीतलनाथ' ।

उ०—सीतल दसम इठ्यासी गणधर मुनि लख एक । साहुणी पिण इक लख हीज, अधिकी छए विवेक ।—ध. व. ग्रं.

सीतळचीणी-सं. स्त्री.[सं. शीतल+हि. चीनी]—कबाब चीनी ।

सीतळता, सीवळताई-सं. स्त्री. [सं. शीतलता] १ ठंडक, शैत्य, तरी, नमी ।

उ०—१ लूआं थां लारी लियौ, छांणी सा घर आय । सीतळता लीधी सरण, साठीकां मैं जाय ।—लू

उ०—२ फूल जु संकुच्या था । अर वास नैं ग्रही रहीया था । त्यांह तौ वास छोडी । विकस्या । अर ग्रहणा हुता तेहै सीतळता ग्रही ठंढा हुआ ।—वेलि टी.

२ शांति, संतोष ।

उ०—१ गहौ एक मधि अंगुली, सुख सीतळता थाय । जनहरीया दुह अंगुली, गहीयां आग लगाय ।—अनुभववांणी

उ०—२ अहूं आगि जा घट वसै, पेम जिगासा नांहि । हरीया वासा पेम का, मन सीतळता मांहि ।—अनुभववांणी

३ जड़ता ।

सीतलनाथ-स. पु. [सं. शीतलनाथ] जैनियों के वर्तमानकालीन दसवें तीर्थंकर का नाम । (स. कु.)

सीतळपुहण-सं. पु. [सं. शीतला+प्रवहणम्] १ रासभ गधा । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सीतळप्रुहण ।

सीतळप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू. भे.)

उ०—बकतौ मैं बाद बाद, बूझत करतौ विवाद । सीतळप्रसाद सरब जात कौ जिमाता ।—ऊ. का.

सीतळप्रुहण, सीतळप्रूहण—देखो 'सीतळपुहण' (रू. भे.)

सीतळबाह, सीतळबाहण—देखो 'सीतळावाहण' (रू. भे.)

सीतळमुद्रा-सं. स्त्री. [सं. शीत+मुद्रा] शरीर के किसी अंग पर केसर की लगाई जाने वाली शंख, चक्र, गदा, पद्म की छाप, मुद्रा । (मा. म.)

सीतळरूख-सं. पु. यौ. [सं. शीतल+वृक्ष] चंदन वृक्ष । (नां. मा.)

सीतळा-सं. स्त्री. [सं. शीतला] विस्फोटक रोग विशेष, चेचक ।

उ०—१ पछै बुधसिंघ नैं कहै छै, सीतळा नीसरी थी, तिण मैं विस हुवौ ।—नैणसी

उ०—२ तनि दरसांणी सीतळा, जुगरांणी जगमाय । सरम ग्रही देवासुरां, सुख कज धरम सहाय ।—रा. रू.

क्रि. प्र.—ढळणी, दरसणी, निकळणी ।

२ उक्त रोग की अधिष्ठात्री देवी ।

उ०—अस्वालंब गवालंब आल्यौ, झटकै गधौ सीतळा झाल्यौ ।—ऊ. का.

३ नीली दूब ।

सीतळावाह, सीतळावाहण-सं. पु. [सं. शीतला+वाहनं] शीतला देवी का वाहन, गधा । (डिं. को.)

रू. भे.—सीतळवाह, सीतळबाहण ।

सीतळासातम—देखो 'सीळसातम' (रू. भे.)

सीतलास्टमी-सं. स्त्री. [सं. शीतलाष्टमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष को अष्टमी जिस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है ।

रू. भे.—सीळआठम ।

सीतवीरज-स. पु. [सं. शीतवीर्य] १ पाषाणभेद ।
२ [illegible] ।
३ सीली दूब ।
४ वह जो खाने में ठंडा हो ।
सीतसिव-सं. पु. यौ. [सं. शीतशिव] सेंधा नमक । (डि. को.)
सीतकर-सं. पु. [सं. शीतकर] १ चन्द्रमा, चांद । (अ. मा.)
[सं. शीतहर] २ सूर्य, सूरज । (अ. मा.)
[सं. सीताहरण] ३ रावण ।
सीतहरन-सं. पु.—[illegible] । (ना. डि. को.)
सीतांसु—देखो 'सितांसु' (रू. भे.)
सीता-सं. स्त्री. [सं.] १ विदेहराज जनक (सीरध्वज) की पुत्री तथा श्रीराम दासरथी की धर्मपत्नी । (अ. मा.)
पर्याय—जगदंबा, जानकी, भूजा, महमाया, महिजा, मैथली, वैदेही, सतवंती, सती, श्री, हरिवांम ।
२ जमीन जोतते समय हल की फाल से बनने वाली रेखा ।
३ जोती हुई जमीन ।
४ एक देवी जो इन्द्र की पत्नी मानी जाती है ।
५ लक्ष्मी का एक नामान्तर ।
६ उमा का एक नाम ।
७ आकाश गंगा की चार धाराओं में से एक ।
८ मदिरा, शराब ।
रू. भे.—सिय, सिया, सी, सीत, सीय ।
सीताकुंड-सं. पु. [सं.] सीतादेवी से सम्बन्धित वे कुंड जो पवित्र माने जाते हैं ।
सीतानम, सीतानमी-सं. स्त्री.—वैशाख शुक्ला नवमी ।
सीतानाथ-सं. पु. [सं.] १ श्रीरामचन्द्र ।
२ श्रीविष्णु । (डि. को.)
रू. भे.—सीतनाथ ।
सीतापत, सीतापति, सीतापती-सं. पु. [सं. सीतापति] १ श्रीरामचंद्र । (नां. मा)
उ०—सीतापत समर सुज अहनिस ।—र. ज. प्र.
२ परमेश्वर, ईश्वर । (नां. मा; ह. नां. मा.)
रू. भे.—सीतपत, सीतपती ।
सीताफळ-सं. पु. [सं. सीताफल] १ कुम्हड़े का वृक्ष ।
२ उक्त वृक्ष का फल ।
३ सुरवृक्ष । (अ. मा.)
सीताबर—देखो 'सीतावर' (रू. भे.)
सीतारमण-सं. पु. [सं. सीता+रमण] श्री रामचन्द्र ।
सीताराम-सं. पु. यौ. [सं. सीता+राम] सीता एवं राम का युग्म । (डि. को.)
सीतारामी-सं. पु.—स्त्रियों के कंठ का एक प्रकार का स्वर्णहार विशेष ।
सीतावट-सं. पु.—चित्रकूट और प्रयाग के बीच का ऐक स्थान जहां वनवास काल में श्रीराम ने सीता के साथ निवास किया था ।
सीतावर-सं. पु. [सं.] श्रीरामचन्द्र ।
उ०—चित करणी भला दिसी न चाहे, आप विरद चा पता उमाहे । पतित खीण कुळ हीण अपारे, तारै रे सीतावर तारै ।
—र. ज. प्र.
रू. भे.—सियावर, सीतावर ।
सीतासित—देखो 'सितासित' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
सीतासुत-सं. पु. [सं.] लव और कुश । (अनेका.)
सीतास्टमी-सं. स्त्री. [सं. सीताष्टमी] फाल्गुन मास की अष्टमी ।
सीतास्वांमी-सं. पु. [स. सीतास्वामी] श्री रामचन्द्र ।
रू. भे.—सियास्वांमी ।
सीतोदक-सं. पु. [सं. शीतोदक] एक नरक का नाम ।
सीताहरण-सं. पु. [सं.] रावण । (नां. मा.)
सीथट्ट-सं. पु. [सं. शीतटम्] जल, पानी । (ना. डि. को.)
सीदड़ौ—देखो 'सींधड़ौ' (रू. भे.)
सीदवंत-वि.—सिद्धियुक्त ।
सीदी-सं. पु. [अ. शीदी] हबश की रहने वाली हब्शी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।
सीदोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू. भे.)
सीदौ—देखो 'सीधौ' (रू. भे.)
उ०—मन में सोच्यो कै अेक सीदौ लेवण सारू पांच सौ कोस रा कुण गोता खावेला ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सिद्धौ' (रू. भे.)
सीध-सं. स्त्री.—१ किसी निश्चित लक्ष्य की दिशा ।
उ०—राजकंवर तौ आगै कीं बात सुणी ई कोनीं । उणी बाग री सीध में घोडौ बदगड़ायौ ।—फुलवाड़ी
२ ठीक सामने की दिशा, जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो ।
उ०—सीध बांध सांमणी चालै, कदै तकै ध्रुव तारियौ । कूवे बीच मुंह दे बोलै, भलौ सुवावै वारियौ ।—दसदेव
३ समान्तर दिशा या स्थान ।
४ पंक्तिबद्ध, शृंखलाबद्ध ।
ज्यूं—अै तीनूं घर एक सीध में है ।
५ प्रस्थान, रवानगी ।
उ०—घर की धणी भोळावण दीध, सेठ तिहां थी कीधी सीध । प्रोहित आवै संभाल, न सकै कर बांको बाल ।—ध. व. ग्रं.
६ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)
उ०—अोघा नै वलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीध । किरिया समकित बाहरी जीवा, एको काज न सीध ।—जयवांणी

सीधका-सं. स्त्री.—पड़िहार वंश की एक शाखा।

सीधाई-सं. स्त्री.—१ सीधा, सरल या सहज होने की अवस्था या भाव।

२ समानतर या सपाट होने की दशा।

रू. भे.—सिदाई।

सीधापण, सीधापणौ-सं. पु.—१ सीधा होने का भाव, सरलता।

२ भोलापन।

३ सादगी।

४ छल, कपट आदि से रहित।

सीधी-सं. स्त्री.—१ ऊंट की गति या एक चाल विशेष।

२ देखो 'सीधौ' (स्त्री. रू. भे.)

उ०—**सीधी** सैणीं सी मैणी सुण माल्है, वैमक पुरबसणौं हसणौ तजि हालै।—ऊ. का.

सीधु, सीधू-सं. पु. [स. शीधु] गुड़ या ईख के रस से बनी मदिरा, शराब।

उ०—तिका सुधा रूप **सीधु** रा छाकिया नंदनवन रै निवास सु-धरमा सभा मैं वैठि सूरां रै साथ विलास कीधा।—वं. भा.

[illegible], **सीधोरौ**-सं. पु.—श्रीमाली ब्राह्मणों में व्याह से एक दिन पूर्व होने वाली एक रश्म जिसमें वधु पक्ष की कुछ औरतें वर के घर जाकर उसके मुंह के दही लगाती है। उनके जाने के पश्चात् कुछ व्यक्ति रसोई (खाद्य सामग्री) का सामान लेकर वर के यहां आते है।

रू. भे.—सिधोरौ, सीदोरौ।

सीधौ-सं. पु.—१ ब्राह्मणों को भोजन के निमित्त दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री जिसमें प्राय: घी, आटा, मिर्च, नमक, दाल आदि अनिवार्य होते हैं।

उ०—१ गाढा बांमण मांगै **सीधौ** नै बांमणी मांगै ठोर। बाईसा रौ वीरौ म्हारी नथडी रौ चोर।—लो. गी.

उ०—२ ठाकर कैयौ—चोखी वात गुलाब री मां। घरां चालौ, **सीधौ** भेज रह्यौ हूं।—दसदोख

२ भोजन-सामग्री, खाद्य पदार्थ।

उ०—१ गढ मैं वसण री तयारी कीवी। गाडा ३०१ **सीधा** रा भर चलाया सू जाय गढ पोहता, सु बारहठ रतनू चद्रव माला रौ विखायत थकौ महेवै रह्यौ थौ।—नैणसी

उ०—२ तठा पछै मडळीक नागहीरै घरै आयौ। तरै नागही सारा सोरठ रा लसकर नूं नांनी सी कोठी मांहि सूं **सीधौ** दियौ।

—नैणसी

उ०—३ ताहरां पीठवै ईयां नूं डेरौ दिरायौ। हाट सूं **सीधौ** मुगतौ दिराय दीयौ। हिवै दुंनै वखतै मुजरौ करै।

—पीठवै चारण री वात

३ देवताओं को चढाया जाने वाला प्रसाद।

उ०—१ वोल्या—गिलपिली, हाजरिया थै दोनूं जणां एकर अठीनै आवौ। भंडारै सूं पूजणी रौ पूरौ **सीधौ** लै लेवौ अर गुलाब री मां रै घरै चढा आवौ।—दसदोख

उ०—२ ठाकरां रै घर सूं देवां रौ **सीधौ** आयौ देख'र गुलाब री मां रौ माथौ ठिणक उठ्यौ।—दसदोख

४ रसोई, भोजन आदि का कार्य।

ज्यूं—सीधौ करणौ रह्यौ है।

वि. (स्त्री. सीधी) १ जिसमें फेर या घुमाव न हो, अवक्र, समतल एवं समानान्तर।

ज्यूं—सीधौ मारग, सीधी सड़क, सीधी लकड़ी।

२ जो किसी ओर ठीक प्रवृत हो, ठीक लक्ष्य, लक्ष्य के अनुसार ठीक।

ज्यूं—खेतजी रौ निसांणौ सीधौ लागौ।

३ जो कुटिल या कपटी न हो, सरल, सहज।

उ०—सुज बीजै नर पकां मनह **सीधौ**।—र. ज. प्र.

४ शांत, सुशील, शिष्ट।

उ०—जग मांही 'जसवंत' रौ, **सीधौ** हुतौ सभाव। दिन उज्जळ नहीं वदळतौ, रंक मिळौ चाहै राव।—ऊ. का.

५ जिसका करना कठिन न हो, आसान, सुगम।

६ जो जल्दी समझ में आवे, जो दुर्बोध न हो।

७ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल।

८ उल्टे का विपर्याय, मुख्य बनावट को ऊपर या सामने रखते हुए।

ज्यूं—सीधौ कमीज, सीधी कमीज।

९ ऊपर की ओर मुंह किये हुए, चित्त।

उ०—**सीधौ** सुवांण परौ'र करणै री आंख्यां मीचावै है।

—दसदोख

१० स्पष्ट, सही, सत्य।

ज्यूं—गुचळक्यां मत खा, **सीधी** बात बतादै।

११ उद्दण्डता रहित, चुपचाप, शान्त।

ज्यूं—**सीधौ** सीधौ जाई परौ नी'तर मार खावेला।

१२ उचित, ठीक।

१३ अपनी ओर।

ज्यूं—फाटक सीधौ खींचण सूं खुलेला।

१४ विना डेधर-उधर मुड़ै गन्तव्य की ओर।

उ०—पण तौ ई जूंझळ रै उपरांत देवळी तौ पूगणौ हौ इज। **सीधौ** साइकल वाळा री दुकांन माथै गियौ।—फुलवाड़ी

१५ बेरोक-टोक, बेहिचक।

उ०—१ फौजी बूंटांमैं पांमोजा पैरयां ही **सीधौ** साळ मैं आ धमक्यौ।—दसदोख

उ०—२ आडौ खुलतां ई कंवर तौ **सीधा** जुम्मा माथै हुळसता

उज निगै आया। जुम्मां वांनै बाथ भरनै वोली ऊपर पधारी जिनां ई म्हटाव कोनी।—फुलवाड़ी

१६ शान्ति से, सभ्यता से।

ज्यूं—पैंली तो सीधी तरह समझाय दो।

१७ प्रत्यक्ष में।

उ०—शायद वो पूछणो चा'तो हो—अठवारी किण मूंडै सूं जाऊं नो कांई मायनो, पण उण म्हनै सीधो पूछ्यो कोनी।—तिरसंकू

१८ देखो 'सैंधो' (रू. भे.)

१९ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ हियमां करड़ बधांमणा, सही त सीधा काज। जं सुपनं-तर दीखता, नयणं सिद्धिया आज।—ढो. मा.

उ०—२ प्रेमिका सूं मिळणो रा मीठा मनसूवा वांधै अर मंतर सीधा होणै री अवधी नै आंख्यां फाड़्यां अडीकै है।—दसदोख

२० देखो 'सिद्धौ' (रू. भे.)

सीनरी–सं. स्त्री. [अ.] दृश्य, नजारा।

उ०—राम रंगीला रचै, चांदनी रातां चिलकै। विच-विच डांडा विरख, सीनरी झूमख झिलकै।—दसदोख

सीनांन—देखो 'स्नान' (रू. भे.)

उ०—घट मैं गंगा गोमती, ता बिच कीया सीनांन। जनहरीया मन रिमझीया, ऊंचा घर असमांन।—अनुभववांणी

सीनाजोरी–सं. स्त्री. [फा. सीनः+जोरी] १ जबरदस्ती, उद्दंडता।

२ चोरी करके ऊपर से की जाने वाली हुज्जत, बहस।

सीनाबंद–सं. पु.—१ अगले पैर से लगड़ाने वाला घोड़ा। (शा. हो.)

२ घोड़े का एक रोग विशेष।

३ अंगिया, चोली।

सीनावड़ी–सं. स्त्री.—जमीन पर छितरने, फैलने वाला पौधा विशेष।

उ०—हरी सीनावड़ी पड़िया हाथ। तोऊ न रह पूरब की साथ।

—वील्हो

सीनो–सं. पु. [फा. सीनः] १ छाती, वक्षस्थल।

२ कुच, स्तन।

सीप–सं. स्त्री. [सं. शुक्ति, प्रा. सुत्ति] १ एक कठोर आवरण वाला जल जन्तु जो छोटे तालाब, झील और बड़े समुद्रों में पाया जाता है, मुक्तागृह।

उ०—१ बैरागर हीरा हुए, कुळवंतिया सपूत। सीपं मोती नीपजै, सब अम्मा रा सूत।—बां. दा.

उ०—२ कदळी सीप सीप पिक केरी, सपति प्रजादि आस बहु-तेरी।—रा. रू.

२ इस जन्तु का सफेद चमकीला आवरण जो बटन, चाकू, दस्ते आदि बनाने के काम आता है।

३ अंगुलियों के ऊपर के पोरों पर सीप की आकृतिमय रेखाओं के चिन्ह विशेष। (सामुद्रिक)

४ सीप का वह संपुट जो चम्मच के रूप में प्रयोग किया जाता है।

५ एक पात्र विशेष जिसमें तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।

६ श्वेत, सफेद। * (डिं. को.)

रू. भे.—सीपी।

अल्पा;—सीपड़ी।

सीपड़ी—देखो 'सीप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरीया हंसो जीव है, सुन्य सागर विसरांम। सुरति हमारी सीपड़ी, निज कण मोती नांम।—अनुभववांणी

सीपज–सं. पु. [सं. शुक्ति+ज] मुक्ता, मोती।

रू. भे.—सीपिज।

सीपत, सीपति, सीपती—देखो 'श्रीपति' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सीपनी–सं. स्त्री. [सं. शिप्र] १ दरियाई नारियल का संपुटनुमा भिक्षा पात्र जो प्रायः संन्यासी रखते हैं।

२ सीप का वह संपुट जो चम्मच के रूप में काम आता है।

सीपर—देखो 'सिपर' (रू. भे.)

सीपसुत, सीपसुतण, सीपसुतन–सं. पु. [सं. शुक्ति+सुतन्] मोती, मुक्ता। (अ. मा.)

सीपारौ–सं. पु. [फा. सिपारः] कुरान का अध्याय।

उ०—उजबका मुसलमांन आकीनदार त्रीस सीपारा रा पढणहार, पांच बखत रा निवाज रा करणहार।—रा. सा. सं.

सीपिज—देखो 'सीपज' (रू. भे.)

सीपी—देखो 'सीप' (रू. भे.)

सीप्रा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे.)

उ०—वहै नदी सीप्रा विस्तार कूप सरोवर वावि अपार।

—प. च. चौ.

सीबंध, सीबंधव, सीबंधु—देखो 'श्रीबंधु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सीबी—देखो 'सवी' (रू. भे.)

उ०—फूटरी लुगाई री सीबी हरवगत आंख्यां आगै फिरै है।

—दसदोख

सीव्रख, सीव्रक्ष, सीव्रख—देखो 'श्रीव्रक्ष' (रू. भे.)

सीमंग–सं. पु.—चन्द्रमा। (ना. डिं. को.)

सीमंट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

सीमंत–सं. पु. [सं.] १ सिर के बालों की मांग।

उ०—सोभा सिर सीमंत यों ग्रों टोप लगाय।—वं. भा.

२ सीमा रेखा या चिन्ह।

३ देखो 'सीमोंतन्नयन'।

सीमंतक–सं. पु. [सं.] १ स्त्रियों के सिर में मांग निकालने की क्रिया।

२ वह सिंदूर जो स्त्रियों की मांग में डालते हैं।

३ एक नरक का नाम। (जैन)

४ जैनियों के सात नरकों में से एक नरक का अधिपति।

५ नरक विशेष का रहने वाला।

सीमंतनी—सं. स्त्री. [स. सीमंतिनी] महिला, स्त्री। (ह. नां. मा.)

सीमंतोन्नयन—सं. पु. [सं.] हिंदुओं के दस संस्कारों में से तृतीय संस्कार जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें मास में होता है।

सीमंधर—सं. पु.—प्रथम विरहमान जिनेश्वर का नाम। (जैन)

उ०—१ म्हारी संका तौ **सीमंधर** स्वांम मेटसी। पंद्रह दिन आमरै संथारौ आयौ आऊखौ पूरौ लियौ।—भि. द्र.

उ०—२ श्री **सीमंधर** सुंदर साहिवा मंदरगिरि संमश्रीर सलूणा। —वि. कु.

सीम—स. स्त्री. [सं.] १ जंगल, वन।

२ वेला, समय। (ह. नां. मा.)

३ देखो 'सीमा' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ बैठी सूर तखत गजबंधी, **सीम** जितै सामंद्रां संधी। —रा. रू.

उ०—२ बारहट केसरी भीम का भीम, सूरां तै सिरकस कविराजां की **सीम**।—रा. रू.

रू. भे.—सींव।

क्रि. वि.—तक, पर्यन्त।

उ०—१ छम्मास **सीम** आंविल किया रे, राख्युं सील रतन्न रे। पाछी आंणी वलि पांडवै रे, परणि स्त्रीक्रस्ण जतन्न रे।—स. कु.

उ०—२ आदीस्वर आहार न पांम्यउ, वरस **सीम** कहिवाय जी। खातां पीतां दांन देवतां, मत कौ करउ अंतराय जी।—स. कु.

सीमट—देखो 'सीमेंट' (रू. भे.)

सीमण—सं. स्त्री.—एक प्रकार का घास।

सीमति, सीमती—देखो 'स्त्रीमति' (रू. भे.)

उ०—नेहइं नव भव वींधिय दीधिय उग्रसेन राय। कुंअरि भलीय राजीमति **सीमति** तिहुयण माहि।—जयसेखर सूरि

सीमांत—सं. पु.—जहाँ सीमा का अन्त होता हो, सरहद।

सीमा—सं. स्त्री. [सं.] १ किसी प्रदेश या स्थान के विस्तार का अंतिम छोर किनारा सरहद। (डि. को.)

उ०—१ इत्यादिक अपसकुन तजी, गयौ सनमुख ताम। **सीमा** सेढै उतरयौ, वीरसेन उल्लास।—वि. कु.

उ०—२ सलै हुई सुख ऊपनौ, भागी दळां दुवाळि। **सीमां** नीमां गढ मुलक, सगळै लिया संभाळि।—गु. रू. वं.

उ०—३ अठी भांणपुर रा खींची भरत सेण रै पोतै जयमल्ल तौ आपरी तरफ री **सीमा** रा खेड़ी रत्नगढ़ प्रमुख वंववदारा गढ गंजि भैंसरोड़ सूधी आई अमल जमायौ।—वं. भा.

२ सरहद का पत्थर, सीमा-चिह्न।

३ मर्यादा।

उ०—अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुंण दियण अनुग्रह **सीमा**। —रा. रू.

४ तट, किनारा।

५ जोड़।

६ अन्तरिक्ष।

७ खेत, क्षेत्र।

८ गर्दन का पिछला भाग।

९ विभाजक रेखा।

१० अण्डकोश।

रू. भे.—सींव, सीम।

अल्पा;—सीमाड़ौ।

सीमाड़—सं. पु.—सीमावर्ती राज्य, पड़ौसी राज्य।

उ०—१ अर अठी सत्रुमंडळ रा **सीमाड़ां** वंवावदारा नरेस धीरदेव १८४ रा देस दावणं रौ निवाह कीधौ।—वं. भा.

उ०—२ सालौ **सीमाड़ां** सोयणां आलौ भांण रौ कणोठी सोहै, दकाळौ काळ रौ भेरवांण रौ डचाक। विलाला पांण रौ दूत नाथ री हाक वाळौ, भालौ स्त्रीरांण री भूतनाथ रौ भचाक। —सूरजमल मीसण

उ०—३ जाजनेरां सांवरा नूं लूटिया जेहांन जांणै, सारा जोम हीण होय छूटिया **सीमाड़**।—चांवंडदांन महडू

वि.—सीमा पर रहने वाला, पड़ौसी।

उ०—सांड **सीमाड़** जग जेठ ऊंचासिरौ, आवळै थाट 'दूदां' उजाळौ।—अग्यात

क्रि. वि.—सीमा पर।

उ०—अर वडा वडा देस पति **सीमाड़** जिणं रा प्रस्थांन सूं आतंक धरै।—वं. भा.

२ देखो 'सीमा' (रू. भे.)

रू. भे.—सिमाड़।

सीमाड़ी—वि.—सीमा का, सीमा सम्वन्धी।

उ०—गंजै दुरंग अढंगांण मेलासां अंका गिरंद, तंजै डेर **सीमाड़ी** धरा ताजा। महाकाळी त्रजड़ खळां सोणत मजै, रंजै नह धूकळां विना राजा।—हुकमीचंद खिड़ियौ

सीमाड़ौ—देखो 'सीमा' (अल्पा; रू. भे.)

सीमाणौ, सीमाबौ—देखो 'सींवाणौ, सींवावौ' (रू. भे.)

उ०—दरजी कै नै वेग बुलाय, हरजी सूं हेत लग्यौ। रांणी मां सती री पोसाक **सीमाय** हरजी सूं हेत लग्यौ।—लो. गी.

सीमाणहार, हारौ (हारी), सीमाणियौ—वि०।

सीमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सीमाईजणौ, सीमाईजबौ—कर्म वा०।

सीमायोड़ौ—देखो 'सींवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सीमायोड़ी)

सीमार—सं. पु.—वढ़ई का एक औजार।

सीमावरोध—सं. पु.—१ सीमा निरधारण, हदवंदी।

२ सीमा पर होने वाला अवरोध ।

सीमिका—सं. स्त्री.—चारणकुलोत्पन्न एक देवी का नाम ।

सीमीतमुख—सं. पु. [सं. सीमितमुख] नासमझ, मूर्ख । (ह. नां. मा.)

सीमेंट—सं. स्त्री. [अं.] मकान आदि की चुनाई में काम आने वाला एक प्रकार का महीन चूर्ण जिसमें बालू बजरी मिलाने पर गारा बनता है जो पत्थरों की जुड़ाई एवं प्लास्तर आदि की मजबूती के लिए प्रयोग में लाया जाता है ।

रू. भे.—सिमंट, सीमंट, सीमट ।

सीमेल—सं. स्त्री.—१ सीमा, सरहद ।

२ मर्यादा ।

३ वन, जंगल ।

सीय—सं. पु. [सं. शीत] १ शीत, सर्दी, जाड़ा ।

उ०—१ उत्तर आज स वज्जियउ, **सीय** पड़ेसी पूर । दहिसी गात निरद्धणां, धण चंगी घर दूर ।—ढो. मा.

उ०—२ माह मास **सीय** पड़ै अति मार, रांमजती घन अखय कुमारि ।—वी. दे.

२ देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—उसवर **सीय** चढ़ै रथ ऊपर, तहक सारथी खड़ै तुरंग ।

—र. रू.

सीयउ—देखो 'सीऔ' (रू. भे.)

उ०—एकंतर ताप **सीयउ** दाह उखद विण जायइ थइ साहू ।

—स. कु.

सीयमाळ—सं. पु.—शृगाल, स्याल ।

उ०—आडी आवज्यो इधणहार, बूड मल्हालौ वा **सीयमाळ** । चाल्यौ राजा जाई भोवाळ ।—वी. दे.

सीयल—सं. पु.—१ शीतलनाथ स्वामी का एक नाम ।

२ देखो 'सील' (रू. भे.)

३ देखो 'सीतल' (रू. भे.)

४ देखो 'सीतळा' (रू. भे.)

उ०—पछै गाव उदैसिंघ **सीयल** सूं मूवौ ।—नैणसी

सीयळौ—वि. (स्त्री. सीयळी) १ शीतल, ठंडा ।

उ०—नहीं ताता नहि **सीयळा** न ऊंडा पगारा ।—केसवदास गाडण

२ देखो 'सीयाळौ' (रू. भे.)

सीया—देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—१ अंबका पूजण नै आयी **सीया** बाग में, पूजण नै पूजापौ लाई थाल लाइ हाथ में, संग में सहेल्यां लाई निरखै रघुनाथ नै ।

—लो. गी.

उ०—२ **सीया** ऊभी भावोसा री पोळ रांम रथ हांक दियौ । सीया मांगै मोई मांग पीछै रथ हक जासी ।—लो. गी.

सीयायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

सीयार—१ देखो 'सार' (३८) (रू. भे.)

२ देखो 'सियार' (रू. भे.)

३ देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

सीयाळ, सीयाल—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

उ०—वळ थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । वांनर वाघ विणासियौ, एकलड़इ **सीयाल** ।—प. च. चौ.

सीयाळइ, सीयालवी—क्रि. वि.—शीतकाल में, सर्दी में ।

उ०—आज **सीयाळइ** सी पड़ै, रात्यूं कूकै स्याळ । ज्यांरा साजन घर नहीं, व्हांरा बुरा हाल ।—अग्यात

वि.—शीतल, ठंडी ।

सीयाल, सीयालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सीयाळू, सीयाळू—सं. पु.—१ खरीफ की फसल ।

२ शीतकाल में उत्तर दिशा से बहने वाली ठंडी हवा ।

वि.—१ शीतकाल सम्बन्धी, हेमंत ऋतु का ।

२ शीतकाल में पकने वाली ।

रू. भे.—सियाळू, स्याळू ।

सीयाळौ—सं. पु. [स. शीतकाल, प्रा. सीअआल, रा. सीयाल+रा. प्र. औ.] शीतकाल, शीत ऋतु, हेमंत ऋतु ।

उ०—१ सी **सीयाळा** मैं राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिण सूं जका रै तावण नै तपणी लाया है । - वी. स. टी.

उ० २ **सीयाळै** पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत' । अवतारी मिळियौ 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत । — रा. रू.

उ०—३ उनाळौ आछौ नहीं, वरसाळौ महमंत । **सीयाळै** मत संचरौ, कांमण बरजै कंत ।—अग्यात

रू. भे.—स्याळौ, सियाळौ, सीयळौ ।

सीयौ—देखो 'सीऔ' (रू. भे.)

सीयौदाउ—सं. पु.—प्रथम जाड़ा लगकर बाद में उष्णता उत्पन्न करने वाला ज्वर ।

सीर—सं. पु.—१ साझा, हिस्सा, साझेदारी, हिस्सेदारी ।

उ०—१ उणनै पक्की विस्वास हौ कै घरवाळा किसै मूंडै नटैला । नटण री तौ गुंजाइस ई कोनीं । कमाई मैं वंट लेवणिया, करमां मैं ई **सीर** राखैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारै साथै वौपार मैं इणरी थोड़ी घणी **सीर** राख देवूंला ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—काढणौ, घालणौ ।

मुहा.—सीर रौ धन स्याळ खावै =साझेदारी अच्छी नहीं होती ।

२ हिस्सा, भाग ।

३ लाभ ।

उ०—भारांणी दुख भंजणौ, गुण रंजणौ गहीर । जाम खजांनै जगत रौ, साहिब कीधौ **सीर** । – बां. दा.

सं. स्त्री. [सं. शिरा] ४ कुओं में आने वाली वह झिरी या जलधारा जो भूमि के मध्य तल में अविरल गति से निरंतर बहती है, स्रोत ।

उ०—वित जिम वांटै तिम वधै, श्रा है रीत श्रनाद। कुवा सूं जळ काढियै, सीरां वधै सवाद।—वां. दा.

४ स्रोत, धारा, प्रवाह।

उ०—धरम धीर री धजा, मरम री सीर पुरांणी। माखण मोटै मनां, जुलम सूं श्रळगी जांणी।—नारी सईकड़ौ

मुहा.—सीर खुलणी=निरंतर श्राय का जरिया उत्पन्न होना।

५ हल, लांगुल।

६ प्रवाह, धारा।

उ०—१ वाहै विस की क्यारियां, ढोरै श्रम्रत नीर। जनहरीया क्या जांणसी, हरि रस हंदी सीर।—श्रनुभववांणी

उ०—२ तट त्रिवेणी नीर की, चलै सीर चहुं श्रोर। जनहरीया सौ चखीया, चख्य न रखी कोर।—श्रनुभववांणी

उ०—३ सीरां छूटी चहुं दिसा, श्रंत न कोई पार। जनहरीया पी मगनीया, तन कि सुधि न सार।—श्रनुभववांणी

७ नस, शिरा।

८ साथ, संग। (श्रमरत)

उ०—१ डिग मती रै तरवरा, मन मैं रैह सधीर। पाव पलक रौ बैठणौ, घड़ी पलक रौ सीर।—ढो. मा.

उ०—२ जिण दक्खिण धर रौ जरै, श्ररि हूंतौ 'श्रवरंग'। सोभी लै श्रव सीर मैं, जुड़ण चलायौ जंग।—वं. भा.

९ संगत, सोहवत।

उ०—नित करस्यां समकित निरमलौ, निरमल जिम गंगा नीर। तजस्यां संगति निगुणां तणी, सुगणां सुं करिस्यां सीर।

—ध. व. ग्रं.

१० सम्बन्ध, तालुक, मेल-मिलाप।

उ०—१ श्रहल्या पद रेण उधरी, कियौ निरभै कीर। विभीखण कूं लंक वगसी, साथ राखण सीर।—भगतमाळ

उ०—२ सदा क्षणभंगुर जांण सरीर, सखा सुखसागर कूं कर सीर।—ऊ. का.

११ संगम, समागम।

उ०—जिण दीहै पावस भरै, नदी खळक्कै नीर। तिन दिन कीजै 'जसा', साजणियां सुं सीर।—जसराज

१२ स्तनों की वह नसे जिसमें से दूध उतरता है।

सीरख—सं. पु. [सं. शीत+रक्षक, प्रा. सी+रखश्र] १ सूर्य।

(नां. मा.) (क. कु. बो.)

[सं. शीर्ष] २ सिर, मस्तक। (श्र. मा; ह. नां. मा.)

उ०—नमै सीरख चरण नीरज, धरै नहचौ करै धीरज। वाळ मरसी एण वांणां, भरम सह भागै।—र. रू.

३ देखो 'सिरक' (रू. भे.)

उ०—१ पिलंग पथरणौ पौढतै, लै लै सीरख सौड़ि। मोवै सीड़ी माथरै, दौड़ि मर्घं तौ दौड़ि।—श्रनुभववांणी

उ०—२ ताहरां सीरख समेत दागियां। काढै तौ हाड संकळि एक एक जूई हुवै तिण वासतै सीरख समेत दागिया।—द. वि.

सीरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

उ०—सीहै श्राप सीरखा, जोध जाया कांधोधर। श्रासथांन श्रणभंग 'श्रज्ज' 'मोनंग' दुनै कर।—गु. रू. वं.

सीरख्ख—देखो 'सिरक' (रू. भे.)

सीरख्यौ—देखो 'सिरक' (रू. भे.)

उ०—म्हारी सासू नै यू कह्यौ, वहू पोळ मैं दीवौ मेलजै, हूं भोळी नै यूं सुण्यौ, वहू सोड़ मैं दीवौ मेलजै, सोड़बळै सीरख्या वळै, सासू बुझावा जाव हौ।—लो. गी.

सीरण—वि. [सं. शीर्ण] १ फटा-पुराना, जीर्ण।

२ मुरझाया हुश्रा।

३ देखो 'सीरी'।

सीरणकम, सीरणक्रम—सं. पु. [सं. शीर्णक्रम] यमराज।

(श्र. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सीरणी—सं. स्त्री.—१ किसी को प्रभू या गुरु मानकर चढाया जाने वाला प्रसाद, नेवैद्य।

उ०—१ छिड़की देवै, पूजणी करावै, सीरणी वांटै धजा टंगावै।

—दसदोख

उ०—२ रसोई वणाई चूरमौ चूरची श्रर भूत देवता री जगां लै जा'र चढायौ। पोसाक लीनी श्रर गांव भर मैं सीरणी दीनी।

—दसदोख

[सं. शीतलिनी, प्रा. सियरणी] २ मिठाई।

उ०—१ जीहौं वांध्या तोरण वांटै सीरणी लाला, चंदन केसर हाथां दिराय।—जयवांणी

उ०—२ कदै न ल्याया भंवरजी सीरणी जी, हांजी ढोला कदै न करी मनुवार, कदेय न पूछी मनड़ै री वारता जी श्रौ जी म्हारी लाल नणद रा श्रौ वीर थां विन गोरी नै पलक न श्रावड़ै जी।

—लो. गी.

उ०—३ थिरमौ एक वेस श्रव्वल एक रूपयै सौ प्रोहित नूं दिराय एक मण सीरणी मारग नूं दीवी।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ मनौती, संकल्प।

उ०—तद वादसाह सूं श्ररज कराई जै म्हैं स्रीसदासिवजी नूं सीरणी कवूली थी कै हजरत रै कदमां लागूं तौ सीरणी करूं सौ हुकम हुवै तौ करूं।—जयसिंह श्रामेर रा धणी री वारता

४ नजराना।

उ०—तारां फौज हजार तीन लेर वनमाळीदास वीकानेर श्रायौ श्ररु पुराणै कोट कनै डेरौ कियौ। वा नवाव साथै हुतौ तिणनूं रुपिया श्रेक हजार सीरणी रा वा मुझमांनी रा दिया दरवार री तरफ सूं तथा सिस्टाचार श्रवल तरै हुवौ।—द. दा.

सीरदार—वि.—१ साझेदार, हिस्सेदार।

२ देखो 'सरदार' (रू. भे.)

सीरधर—सं. पु. [सं.] हल धारण करने वाला, बलराम।

सीरध्वज—सं. पु. [सं.] १ बलराम का एक नाम।

२ सीता के पिता विदेहराज जनक का एक नाम।

सीरपांण, सीरपांणी—सं. पु. [सं. सीरपाणि] बलराम का एक नाम।
(नां. मा; ह. नां. मा.)

सीरपौ, सीरपौ—सं. पु.—१ भागीदारी, हिस्सेदारी।

२ लाभ।

३ भाग्य का लेख।

सीरबंधी—सं. स्त्री.—हिस्सेदारी, साझेदारी।

सीरमा—सं. स्त्री.—वह भूमि जिसमें बिना सिंचाई के रवी की फसल होती हो।

सीरवाळ, सीरवाळी—स. पु. (स्त्री. सीरवाळण, सीरवाळणी) हिस्सेदार, भागीदार।

सीरवीरंज—सं. स्त्री. [अ. शीविरञ्ज] एक प्रकार की खीर विशेष जिसमें १० सेर दूध, १ सेर चावल, १ सेर मिश्री, १ दाम नमक डाला जाता है इससे पाँच रकावियां भर जाती है।

सीरवी—सं. पु.—१ एक कृषक जाति जो अपना उद्‌गम राजपूतों से बताते हैं।

उ०—बीलाड़ै रा चौधरीयां दाखल भेळा सीरवी कुमार वसै, अरट हीवड़ा सीरवी करै।—नैणसी

३ देखो 'सीरी' (रू. भे.)

उ०—१ जु रावळै रिजक रा सीरवी थ्रौ हुसी।—नैणसी

उ०—२ साजण संग सीरवी सुखरा, जीव हेकलौ जासी।
—भीखजी रतनू

सीरस—सं. पु. [स. शीर्ष] १ सिर, मस्तक।

उ०—१ पड़ै कटि सीरस वीर पठांण, मद्राचळ चक्र चमू मह-रांण।—मे. म.

उ०—सीरस सिन वाहै सदा, सत्रां दळ समसेर।
—नारायणसिंह सांदू

२ एक प्रकार का वृक्ष जो अरावली पहाड़ की तलहटी में पाया जाता है।

३ काला अजगर।

४ सिर का रोग।

सीरसक—सं. पु. [सं. शीर्षक] १ किसी विषय का वह परिचयात्मक संक्षिप्त नाम, शब्द या वाक्य जो बहुधा लेखादि के ऊपर लिखा जाता है।

२ सिरा, चोटी। ३ खोपड़ी।

४ मस्तक, सिर।

५ युद्ध के समय सिर पर धारण किया जाने वाला टोप।
(डि. को.)

६ पगड़ी, साफा।

७ फैसला, परिणाम।

८ राहु।

सीरसोदय—सं. पु. [सं. शीर्षोदय] शिर से उदय होने वाली मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशियों का सामूहिक नाम। (ज्योतिष)

सीरांमण, सीरांमणी, सीरांवण, सीरांवणी—देखो 'सिरांमण'
(रू. भे.)

उ०—१ सीरांवण जीमण दोपैरौ सारी, पीसण पोवण नै आरो पछलारौ।—ऊ. का.

उ०—२ साथै फौज छै। तठै जेठ रा दिन हुंता। सीरांवणी रो कठोरौ माथै छै।—बूढी ठग राजा री वात

उ०—३ पहिरांमणी सीरांमणी नई करै चलावौ साथ। वीवाह कीधौ सुजस लीधौ तेड़ौ कुंअरिनउ तात।—रुकमणी मंगळ

सीराज—सं. पु. [फा. शीराजः] १ किताबों की सिलाई के छोर पर लगाया जाने वाला फीता जो पुस्तक की सुन्दरता एवं मजबूती के लिए लगाया जाता है।

२ प्रबंध, इन्तजाम।

३ क्रम, सिलसिला।

४ ईरान का एक प्राचीन नगर।

सिराफिणी—सं. स्त्री.—शिर का एक आभूषण विशेष।

सीरावणी, सीराववौ—देखो 'सराणी, सरावौ' (रू. भे.)

उ०—सीरौ सीरावै ध्रम धीरावै निरदावै नीरंदा है, लपसी लप-कावै तपसी तावै, आपा सीच उठंदा है।-ऊ. का.

सीरावा—सं. पु.—एक जाति विशेष जो कूऐ खोदने का कार्य करती थी।

सीरावाविदया—सं. स्त्री.—भूगर्भ में पानी का पता लगाने की विद्या, कला।

सीरावियोड़ौ—देखो 'सरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सीरावियोड़ी)

सीरावौ—सं. पु. [सं. शिरावाह] १ वह व्यक्ति जो भूगर्भ में पानी का पता लगा कर उसकी मात्रा एवं मीठा या खारा होने की पूर्व जानकारी देता हो।

उ०—पैंसठ हाथ रै पछै रेळी कारण वेरी खुदणौ दूभर व्हैगौ तौ म्हैं अेक वाजिदा सीरावा री सोय मैं निकळियौ।—फुलवाड़ी

२ सीरावा जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—सियारी, सिरावौ, सेरावौ।

सीरी—वि. (स्त्री. सीरण) १ हिस्सेदार, साझेदार, भागीदार।

उ०—१ विरद जात कुळ विना, वात कुळवंत विचारी। मुख री सीरण कीया, बैठ रहै सोक तयारी।—अरजुणजी वारहठ

उ०—२ सीरी सिटियां रा मून्हां रा गारा, भीड़ी भूगां रा फूलां

रा भारा। - ऊ. का.

२ उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाला, उतराधिकारी।

३ साथी, संगाती।

उ०—१ हां ए म्हारी सोक कलाळी म्हारौ हार नौलखौ राख यै आवेलौ मदमातौ मारू म्हारौ सेजां रो **सीरी** जीनैं थोड़ी थोड़ी दीजै ए दारूड़ी दाखां री।—लो. गी.

उ०—ए तीनौ सौ मेल छै। इसु अै म्हारी देही छै। वेळा बुरी रा **सीरी** छै। जितरै म्हाराज मया छै इतरै थै सरव म्हारा छौ। —चौवोली

४ हक पाने का अधिकारी।

५ मददगार, सहायक।

उ०—घट घट दादू कह समझावै, जैसा करै सौ तैसा पावै। कौ काहू का **सीरी** नांही, साहिब देखै सब घट मांही।—दादूवांणी

उ०—२ सती आपनौ घर कियौ, मड़ा मसांनां मांहि। हरीया हरि विन दूसरा, मूंवा **सीरी** नांहि।—अनुभववांणी

स. पु.—१ बलराम।

२ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

उ०—हडोई रा मांस पासै चरवां मैं घातजै छै। **सीरी** होसनाक सुधारै छै।—रा. सा. सं.

३ देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

सीरीमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू. भे.)

सीरियस—वि. [अं.] १ खराब, नाजुक।

ज्यूं—उण री तबियत कंड़ीक है? हाल तौ **सीरियस** है।

२ गम्भीर।

उ०—छोरचां सूं तौ उणां रा हसवेंड भी कदै ई **सीरियस** वातां कोनीं करै। लवरस रौ तौ **सीरियस** होवण रौ सुवाल ईज कोनीं। जमानौ कितरौ बदळग्यौ है पवन! छोरचां आजक्ल डेटिंग भी **सीरियस** कोनीं लेवै।—तिरसंकू

सीरूखौ - देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)

सीरोइयौ—सं. पु. - चौहान वंश का क्षत्रिय।

सीरोळौ—वि. (स्त्री. सीरोळी) १ साझेदारी का, सामूहिक।

२ जिसके बहुत से व्यक्ति हकदार हों।

सीरोही देखो 'सिरोही' (रू. भे.)

उ०—वाकरां नूं बरकौ करण रै पगां अळवळिया मोस्यारां नूं हुकम कीजै छै। सू असीलां **सीरोहियां** लेनै ऊठिया छै। —रा. सा. सं.

सीरौ—सं. पु. [फा. शीर] १ मैदे, आटे, वेसन, सूजी, दाल, गाजर, आलू अदि को घी में भूनकर उसमें शक्कर, मेवा आदि पदार्थ मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध व्यञ्जन विशेष, हलुआ।

उ०—१ थोड़ी सी हळदी रौ पुट देय गुळ रौ झरझरतौ **सीरौ** खवाड़ती। तीन दिन अर तीन रातां आंख मैं कस ई नीं लियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ आगै घणौ **सीरौ** पुड़ी देवजी रोटौ तयार हुवौ छै। —नैणसी

मुहा.—सीरौ खातां दांत घसीजै तौ छौ घसीजता=बड़े लाभ में किंचित हानि हो तो कोई चिंता की बात नहीं।

२ सीरौ बादी करणौ=दुर्भाग्यपूर्ण दशा होना।

३ विगड़चौ तोई सीरौ राब सूं वत्तौ है=अच्छी वस्तु विगड़ने पर भी कुछ तो काम की होती है।

४ सीरौ गरमी करणौ=देखो 'सीरौ बादी करणौ'।

सीळ—देखो 'सीतळा' (रू. भे.)

उ०—पछै स्रीजी रौ कूच दिली नै हुवौ। संवत १७८२ माह मैं परबतसर स्रीजी नुं **सीळ** तुठी।—रा. वं. वि.

सीळ, सील—सं. पु. [सं. शील] १ सद् आचारण, सदाचार।

उ०—१ चकडोळ लगै इणि भांति सुं चाळी, मति तैं वाखांणण न मूं। सखी समूह मांहि इम स्यांमा, **सीळ** आवरित लाज सूं। —वेलि

उ०—२ स्यांम कै सहाय मुरधर कै किंवाड़। पिंड कै प्रचंड पौरस के पहाड़। दातार सूर **सील** कै निवास। दीन कै सहाय द्विज गऊ कै दास।...सू. प्र.

२ नैष्टिक-ब्रह्मचर्य।

उ०—१ हनूमांन नैं **सीळ** मई हुय, चूक न द्रस्टि चलाई। मारचौ मांन असुर की गरज्यौ, जब ही लंक जराई।—ऊ. का.

उ०—२ **सील** का गंगेव भारथ का पाथ, नरू का जंबहरी जोधांण का नाथ।—सू. प्र.

उ०—३ कोटन रिसी **सील** कै कारण, परम मुक्ति जिन पाई। ऊमरदांन अब **सील** अराधत, परहर नार पराई।—ऊ. का.

उ०—४ धुर तैं **सील** फरस धर धारचौ, विसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, बार इकीस बनाई।—ऊ. का.

३ संयम।

उ०—१ कांम रिपू कूं **सील** सूं मारचा, लोभ कूं मारचा त्याग। क्रोध कूं आय संतोख झपेट्या, मोह कूं लै वैराग। —सुखरांमजी महाराज

उ०—२ साध न आंणै आपदा, **सील** संतोसी थाय। हरीया राग न धेसता, सब सुं एक समाय।—अनुभववांणी

४ पतिव्रत धर्म, पातिव्रत्य।

उ०—१ इम धायां उच्चरै, सुणौ बायां सतवंती। उभै बंस ऊजळी, **सील** निरमळी सकत्ती।—रा. रू.

उ०—२ ऊजळीदंती आभ, मनेतण चीतालंकी। नाजकड़ी पदमणी, **सीळ** सतवंती संकी।—नारी सईकड़ो

५ लज्जा, संकोच, शर्म।

उ०—सोढै धारूसग साजिया, सुभ लछ सील सुभाव। भलां पयारी भड़ग्गां, पलकां देती पाव।—रमण प्रकास

६ चरित्र, आचरण, चाल-चलन, नैतिक स्तर।

उ०—सील प्रताप सकळ ही संपत अंगरेजा घर आई।—ऊ. का.

७ स्वभाव, आदत, बान। (अ. मा; डि. को; ह. नां. मा.)

८ गुण, लक्षण।

९ सम्मान, आदर, भुकाव।

१० अनुशासन।

उ०—१ सील संवार रूस री सेना, लेती फिरत लराई। करकै फतै तुरक लोकन की, हिम्मत खूब हराई।—ऊ. का.

उ०—२ सील सहित सिवराज सितारै, खोस लूट घर खाई।
—ऊ. का.

सं. स्त्री. [सं. शीतल] ११ आर्द्रता, नमी।

उ०—म्हाराज तळाव कोट रै नेड़ी घणो है। कोट री नींव में सील जावसी।—नैणसी री ख्यात

१२ गाय के ऋतुमति की अवस्था।

[अं] १३ छाप, मुहर।

१४ वादा, वचन, प्रतिज्ञा।

उ०—१ तिरै हालां नै भीम माहोमांही सील कोल कियो। देवी आसापुरा विचै दीवी।—नैणसी

उ०—२ सु फौज राव कल्ला री ऊभी थी। तिण मांहै सातां असवारां सु आय पड़ीयौ। डगा मार लीयौ। सूली दीयौ। तरै सुगलां रा परधांन आय वरस दिन रा सील कोल किया।
— राव चंद्रसेन री वात

वि.—१ प्रवृत्त, तत्पर।

२ स्वभावयुक्त।

३ धैर्य।

४ विनम्र, शिष्ट।

५ पवित्र, निर्मल।

उ०—सति सता सति सोमती, सीता सील सुभाय। सहिलां सिरहर सारखी, अवर न दूजी काय।—दो. मा.

रू. भे.—सियल।

सीळआठम—देखो 'सीतळाम्टमी' (रू. भे.)

सीलणौ—सं. पु. १ एवज, बदला।

उ०—१ रांगि सोवळ चून री, कमी दिखावो काय। औरां पहली सीलणौ, म्हारा री सिर जाय।—वी. स.

उ०—२ सहलां लूटण धाड़वी, झूंपड़ियां न सुहाय। झूंपड़ियां री लूट में, जीव सीलणो जाय।—वी. स.

२ प्रत्युपकार।

उ०—जिण री स्वतंत्र संभव में एक आपरा आलय हूं काढि देण री उपकार रति जिलग रा सीलणा में सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्तै वहै तिकण री अंत तौ इसड़ौ सटावै।
—वं. भा.

३ प्रतिकार, बदला।

४ क्षतिपूर्ति, हरजाना।

उ०—डरणै री कुणसी बात छै कोई जै हिसाब मांगसी तो सीलणौ करस्यूं।—ठा. जेतसी री वारता

रू. भे.—सिलवणौ, सीलांणौ।

सीलणौ, सीलबौ—क्रि, स. [सं. शील=समाधौ, सीलनम्] १ किसी वस्तु के एवज में अन्य वस्तु देना, प्रत्युपकार करना।

उ०—खांवंद कवा खवाड़िया, मीठा ले ले मोल। सहंस गुणां मैं सीलिया, बोलै मीठा बोल।—बां. दा.

२ चुकाना, देना।

उ०—है बाभीजी सा आपरा गोखड़ा सूं आपरा देवर री हथवाह तरवार वहती देख लेराओ। बाभीसा आप खरच गिणता हा वो म्हारी पती सीलै छै।—बी. स. टी.

३ वसूल करना, लेना।

उ० अजमेर हुवा नर एतला, नवलक्खी उग्रह लिया। सीलंत पांण सुरतांण सूं, कंदळ सुरतांणी किया। मालो आसियो

४ आर्द्र करना, नमीयुक्त करना, ठंडा करना।

उ०—मधुर मोवणी राग, रीझवै आभो राजा। भीणी छांटां झिलै, सीलवै माळू गाजा।—दसदेव

५ बन्द करना, मुहरबंद करना।

सीलणहार, हारौ (हारी), सीलणियौ—वि०।

सीलिओड़ौ, सीलियोड़ौ, सील्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सीलीजणौ, सीलीजबौ—कर्म वा०।

सीलवणौ, सीलवबौ—रू० भे०।

सीळता—स. स्त्री. [सं. शीलत्व] शील धारण करने की अवस्था या भाव।

उ०—उछाही सत्यनिस्ठ, सीळता साहसधारी। समुचित अणंद उदार, आंण सूं आग्याकारी।—टाबर सईकड़ौ

सीलप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू. भे.)

सीळवरत, सीलव्रत—देखो 'सीळव्रत' (रू. भे.)

उ०—१ कंठी तिलक दोवड़ी माळा, सीळवरत सिणगारो। और सिंगार मोहै नहीं रांणा जी, यो गुर ग्यांन हमारो।—मीरां

उ०—२ पण सेठां रो मन तौ सेठां रै बस हौ, वै तौ उण दिन सूं ई कोडाया होय सीलव्रत धारण कर लियो।—फुलवाड़ी

सीलवंत—देखो 'सीलवांन' (रू. भे.)

उ०—१ एक साहिब रै गुलांम थो सो सीलवंत प्रभू सूं डर करण वाळो थो।—नी. प्र.

उ०—२ नायक देस मैं सोतविर सवळा मेलै जिका भला आदमी

भली चाल रौ होय अर सांचौ **सीलवंत** निरलोभी होय।
—नी. प्र.

सीलवंती, सीलवती—वि. [सं. शीलवती] १ पतिव्रता।

उ०—१ पणवंती पारणी **सीळवंती** सतवंती, अति मुगती हालियौ कियां साथै कुळवंती।—रा. रू.

उ०—२ पिण हूं **सीलवंती** सती रे हां, केम विटालुं देह।
—वि. कु.

उ०—३ कौसल्या दसरथ नी कांता महिमा घर रांम तणी माता संसार सराई **सीलवती**।—जयवांणी

२ ब्रह्मचारिणी।

३ अच्छे आचरण वाली।

४ शील धारण करने वाली।

सीलवणौ - देखो 'सीलणौ' (रू. भे.)

उ०—मन सुध हुय मोनूं'ह, तैं दीधी केमर तुरग। बांधव बाई नूं'ह, **सीलवणौ** कद सील सूं।—पा. प्र.

सीलवणौ, सीलवबौ—देखो 'सीलणौ, सीलबौ' (रू. भे.)

सीलवांन—वि. (स्त्री. सीलवंती) १ सदाचारी।

२ ब्रह्मचारी।

३ अच्छे स्वभाव व आचरण वाला।

४ शील को धारण करने वाला।

रू. भे.—सीलवंत।

सीळव्रत, सीलव्रत—सं. पु. यौ. [सं. शील+व्रत] जैन धर्म के पाँच अणुव्रतों में से एक जिसमें श्रावक कुछ निश्चित समय या सदा के लिए विषय-वासना, मैथुन आदि को त्याग देता है।

उ०—सेठांणी वीस बरसां तांई मांय री मांय धुकती री। पण अेक दिन अणूंती गोटीजनै सेवट वा होठ खोल्या इज। कह्यौ—थं तौ **सीलव्रत** धारचौ सौ घणी आछी बात। म्हैं तौ दादफरियाद नीं करी, पण कंवारी धीवड़ी नै सील-व्रत मत लिरावौ।
—फुलवाड़ी

२ ब्रह्मचर्य व्रत।

३ पातिव्रत धर्म।

उ०—पदमणी पाल्यौ **सीलव्रत**, बादळ गौरा वीर। सील वीर गावत सदा, खांड मली घ्रत खीर।—प. च. चौ.

सीलसमजथा—सं. स्त्री.—डिंगल काव्य शास्त्र में गीत रचना का एक नियम विशेष। (क. कु. बो.)

सीळसातम—सं. स्त्री. [सं. शीतलासप्तमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी जिस दिन शीतला देवी की पूजा की जाती है।

रू. भे.—सीतळासातम।

सीलांगौ—वि.—आलसी, सुस्त।

सीलांणौ—देखो 'सीलणौ' (रू. भे.)

सीलांम—देखो 'सलांम' (रू. भे.)

सीला—वालु प्रभा नामक नरक। (जैन)

सीलाणौ, सीलावौ—क्रि. स. ['सीलणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ हरजाना वसूल करवाना।

उ०—बाघ विधूंसै बाहरां, आरण छरा उपाड़। **सीलाबा** मुगिआ नहीं, बाघां करै बिगाड़।—बां. दा.

२ प्रतिकार करवाना।

३ ठंडा करना।

सीलाधु—सं. स्त्री.—वह कल्पित पाषाण शिला जहाँ नौ लाख देवियाँ एकत्र होकर नृत्य करती है।

उ०—ऊमै रूप धारायणी साचेली जेहांन आखै, तारायणी **सीलाधु** नाचेली निरत्याद। पारायणी प्रवाड़ा आछेली दसा देंगा पातां, नारायणी रूप नमौ काछेली अनाद।—नवळजी लाळस

सीलायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हरजाना वसूल करवाया हुआ. २ प्रतिकार करवाया हुआ. ३ ठण्डा करवाया हुआ।

(स्त्री. सीलायोड़ी)

सीलावणौ, सीलाववौ—देखो 'सीलाणौ, सीलावौ' (रू. भे.)

उ०—दूध **सीळावत** दाझिया, हरजी सूं हेत लग्यौ।—लो. गी.

सीलियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ऐवजी में दिया हुआ, चुकाया हुआ. २ वसूल किया हुआ, लिया हुआ. ३ आर्द्र या नम किया हुआ, ठंडा किया हुआ. ४ बन्द या मुहरबन्द किया हुआ।

(स्त्री. सीलियोड़ी)

सीळी, सीली—सं. स्त्री.—१ बांस, घास आदि का पतला व्रण, फांस।

२ एक प्रकार के पत्थर का टुकड़ा जिस पर उस्तरा तेज किया जाता है।

उ०—कुवध कतरणी विसै पाछणा; कांम कळी जांह तांही। सांसौ **सीली** चमोठौ लालच, मोह नहरणी माही।—अनुभववांणी

मुहा.—सीली लगाणी=उत्तेजित करना, उकसाना।

३ भूमि की नमी, आर्द्रता।

४ एक वैवाहिक रश्म जो दूल्हे द्वारा विवाह के दूसरे दिन प्रातः ससुराल में पूरी की जाती है। (मा. म.)

वि.—१ ठंडी, शीतल।

उ०—१ काळी पीळी सह **सीली** ककुभाळी, कांठळ कावळती वावळ बळ वाळी।—ऊ. का.

उ०—२ ओझक ओली मैं आवेस अलूझै, **सीळी** रेळी मैं चीसळियां सूझै।—ऊ. का.

२ देखो 'सीलवती'।

उ०—किसीयक **सीली** सास मेरी माय! किसोयक गढपत मेरौ सुसरौ? कवसल्या सी सास मेरी माय! दसरथ सौ गढपत सुसरौ।
—लो. गी.

सीलैखांनौ—देखो 'सिलहखांनौ' (रू. भे.)

सीलोनी—सं. स्त्री.—एक प्रकार की तलवार विशेष, जिसकी मूठ के

ऊपर सिर की आकृति होती है तथा नीचे का हिस्सा मुड़ा हुआ होता है।

सीझोग—सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा।

सीळो, सीलो—वि. (स्त्री. सीळी) १ ठंडा, शीतल।

उ०—१ रहे राम के आसरै, सिर परि मेलै दाव। हरीया लगै न दाग कुं, तना **सीळा** बाव। - अनुभववाणी

उ०—२ परभातै गह डंबरां, सांझै **सीळा** वाव। डंक कहै सुण भड्डली, काळां तणां सभाव।—अग्यात

२ कायर, कातर।

उ०—राठौड़ां री कुळत्रिया, **सीळा** ग्रभ न धरंत। ज्यां भरतार न भंजणा, सै भंजणां न जगांत।—कैवाट री वात

३ आर्द्र, नम।

सीलहैलांनो—देखो 'सिलहखांनो' (रू. भे.)

उ०—उठै घोड़ा ऊंठ था सौ सारा खोल लिया। बीजी वस्तु गजांना **सीलहैलांनां** संभाळ लीन्हा।—सूरै खींवै कांधलोत री वात

सीव—सं. पु. [सं. सीमा] १ ईश्वर।

उ०—हरीया हरिजन हेक है, जीव **सीव** नहीं दोय। ज्यूं नीर मिळांणा नीर में, फिर न्यारा नहीं होय।—अनुभववांणी

२ परब्रह्म।

उ०—१ जीव अर **सीव** करि एक जांणी, मिल्या सिंध में सिंध ज्यूं बूंद पांणी।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया माया मोहनी, जा सुं बंधै जीव। ता सुं तांती तोड़ि करि, सहज मिळेगें **सीव**।—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया छाया विरख की, वधै घटै वहि जाय। मेळा जीव'र **सीव** का, न्यारा कदू न थाय।—अनुभववांणी

३ देखो 'सिव' (रू. भे.)

उ०—देवी नाद तूं बिंद नव्व निध्धि, देवी **सीव** तूं सव्व सिध्धि।

—देवि.

४ देखो 'सीमा' (रू. भे.)

सीवण—देखो 'सेंवण' (रू. भे.)

२ देखो 'सींवण' (रू. भे.)

सीवणौ—देखो 'सींवणौ' (रू. भे.)

सीवणौ, सीववौ—देखो 'सींवणौ, सींववौ' (रू. भे.)

सीवन—सं. स्त्री.—१ सिलाई का कार्य, सिलाई।

२ सिलाई का जोड़।

३ सीमा, मर्यादा।

उ०—सह नामन **सीवन** सोध करै, वह आमत जीवन वोध करै।

—ऊ. का.

४ देखो 'सीवनी' (रू. भे.)

सीवनी—सं. स्त्री. [सं.] लिंग के नीचे से गुदा तक जाने वाली रेखा।

रू. भे.—सीवन।

सीवर—देखो 'स्रीवर' (रू. भे.)

उ०—१ अत चोप भजन **सीवर** उचर, ध्यांन ह्रदय जुत चोप धर।

—र. ज. प्र.

उ०—२ **सीवर** सारणौ जी केतां निवळ संतां कांम।

—र. ज. प्र.

सीवळ—सं. पु. [सं. शीतला] चेचक का रोग, शीतला रोग।

उ०—सै'र में **सीवळ** री रौळाटी फैलियौ। घर घर में छोटां वडां रै **सीवळ** निकळै।—वरसगांठ

सीवाड़ौ—देखो 'सीमाड़ौ' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—रावां सिरहर राव, राजसिर हर रजवाड़ां। मथ मथ हर हैजमां, संक थक थरहर **सीवाड़ां**।—पनां

सीविका—देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—महोमच्छव जमाली नी परै, करि मोटै मंडांणौ रे। **सीविका** मां बेसांणनै दाखै जै जै वांणौ रे।—जयवांणी

सीव्रख, सीव्रक्ष, सीवख—देखो 'स्रीव्रक्ष' (रू. भे.)

सीस—सं. पु. [सं. शीर्षम्] १ मस्तक, सिर।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ रास रांमत रमै समै नवरातरी, नमौ कही जातरी **सीस** नांमै। मातरी घणी वातां करामात री, पात री जीभ किम पार पांमै।—मे. म.

उ०—२ न लाभत सावत **सीस** नत्रीठ, देतौ चक्र दंड फिरै अण-दीठ।—मे. म.

२ ललाट, भाल।

उ० प्रेम प्रीत पतर पावोड़ी, **सीस** तिलक तत सारी रे। जन हरिरांम लहै निज मन कुं, द्यै अपना घर जारी रे।

—अनुभववांणी

३ खोपड़ी, कपाल।

अल्पा;—सीसड़लौ, सीसड़ौ।

[सं. शिष्य] ४ शिष्य, चेला, सागिर्द।

उ०—१ विद्या निधि वाचक भला रे, मेघ विजय तसु **सीस**। तस मतीरथ्य वाचक वरू रे, हरस कुसल सुजगीस।—वि. कु.

उ०—२ स्रीजिनचंद सूरीस, सकलचंद तसु **सीस**। तेह तणउ सुपसायइ, समयसुंदर गुण गायइ।—स. कु.

क्रि. वि.—पर, ऊपर।

उ०—१ डंड विहारी राठवड़, आया सोजत **सीस**। थिर जोधांणौ घेरियौ, किर त्रकुटाचळ कीस।—रा. रू.

उ०—२ बोल खवास तास कट बंधै, कर डाढी धर **सीस** कमंधै।

—रा. रू.

सीसकणौ, सीसकवौ—देखो 'सिसकणौ, सिसकवौ' (रू. भे.)

उ०—चांद चढ्यौ गिगनार गौरी रा वना घरै रे पधार। पड़ी पलंग पै **सीसकै** कर कर वालम री याद, अरे गौरी रा वना घरै रे

पधार ।—लो. गी.

सीसड़लौ, सीसड़ौ—देखो 'सीस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—**सीसड़लौ** मूमल वागड़ियौ नारेळ, हांजी रे आटी तौ मूमल री वासग नाग ज्यूं ।—लो. गी.

सीसढाळ—सं. स्त्री.—एक वाद्य यंत्र विशेष ।

उ०—तिसा वैंण स्रीमंडळ जंत्र ताळं, सहनाय वंसी अनै **सीसढाळं** ।
—रा. रू.

सीसतांण—सं. पु.—फारस और अफगानिस्तान के बीच का प्रदेश, सीस्तान ।

सीसत्रांण—सं. पु. [सं. शीर्षत्राण] १ टोप ।

२ टोपी, पगड़ी या साफा ।

सीसपत्र—सं. पु. [सं.] १ सीसा नामक धातु । (डिं. को.)

२ उक्त धातु की चद्दर या पत्र ।

सीसपाळ देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

सीसफूल—सं. पु.—१ औरतों द्वारा सिर पर धारण करने का स्वर्ण आभूषण विशेष जो फूल के आकार का होता है ।

उ०—१ वंधै **सीसफूल** बिंदली सुवेस, सोहाग भाग मूरत सुदेस ।
—रमण प्रकास

उ०—२ **सीसफूल** तारा भलारै, अरध चंद सम भाग रे रंग । बिंदी जांणै मणी धरी रे, पीवत अम्रत नाग रे रंग ।
—प. च. चौ.

रू. भे.—सहसफूल, सिरफूल ।

सीसम—सं. पु. [फा. शीशम] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कार्यों के काम आती है । यह लकड़ी दो प्रकार की होती है - एक कुछ श्यामता और ललाई लिए भूरे रंग की तथा दूसरी काले रंग की ।

उ०—भांत भांत रा घेरघुमेर रूंख-आंम, आंमली, कदंव, खिरणी, नींव, चन्नण, असोक........बड़ला, वांवळ, सरेस, गूलर, गूंदी, देवदार अर **सीसम** ।—फुलवाड़ी

२ उक्त वृक्ष की लकड़ी ।

सीसमेहल, सीसमे'ल—सं. पु. [फा. शीश+अ. महल] वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों में चारों तरफ शीशे जड़े हो ।

सीसय—देखो 'सिस्य' (रू. भे.)

उ०—गच्छराय जिनचंद सूरि **सीसय**, सकलचंद्र मुणीस रौ । तसु सीस पभणइ समयसुंदर, हवउ जिन मुह सुह करौ ।—स. कु.

सीसवद—सं. पु.—सीसोदिया वंश का व्यक्ति ।

उ०—देखै अंजस दीह, मुळकैलौ मन ही मनां । दंभी गढ दिल्लीह, सीस नमंतां **सीसवद** ।—ठाकुर केसरीसिंह सौदा

सीसांणी—सं. स्त्री. तोप ।

उ०—चंड हाक वांणी व्है **सीसांणी** वाल्हा खांणी चल्लै, घमंता ऊभल्लै गोळा गजांणी घड़ाक । महासूर अगी-पांणी ऊवांणी वांणमां मेळै, लोहै घांणी घड़ा वीच 'सेखांणी' लड़ाक ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

सीसागर—सं. पु.—१ काच की चूड़ियां वनाने वाला कारीगर ।

२ शीशा वनाने वाला कारीगर ।

सीसागरी—सं. स्त्री.—१ माँस खाने के उद्देश्य से मारे गये वकरे के सिर का माँस ।

[फा.] २ सीसागर का कार्य या हूनर ।

सीसाड़णौ, सीसाड़बौ, सीसाणौ, सीसाबौ—क्रि. स.—मुँह से 'सी सी' की ध्वनि करते हुए शिशु को टट्टी जाने के लिए प्रवृत्त करना ।

सीसिक—सं. पु.—१ काच, दर्पण ।

[सं. सीसकं] २ रांगा नामक धातु ।

३ सिर, मस्तक ।

सीसी—सं. स्त्री. [फा. शीशी] तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम आने वाला शीशे (काच) का पात्र विशेष ।

उ०—१ समहर सैद काच री **सीसी**, साथै चतुरंगणि वावीसी ।
—रा. रू.

उ०—२ कांचै सवज ए जी ए रूमाल । हाथां मैं **सीसी** प्यालौ प्रेम रौ जी ।—लो. गी.

मुहा.—सीसी मैं उतारणौ=गुमराह करना, फुसलाना, वेवकूफ वनाना, वश में करना ।

सीसोद—सं. पु. सीसोदिया वंश का व्यक्ति ।

उ०—**सीसोद** कमंधा सैफला, वहि सेल झळहळ वीजळा ।
—सू. प्र.

वि. सीसोदिया वंश का ।

सीसोदणी—सं. स्त्री.—सीसोदिया वंश की कन्या ।

सीसोदिया—देखो 'सिसोदिया' (रू. भे.)

सीसोदियौ—देखो 'सिसोदियौ' (रू. भे.)

सीसौ—सं. पु. [सं. सीसकं] १ वहुत भारी और नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु जो अत्यधिक सख्त एवं मजवूत होती है ।
(अ. मा; डिं. को.)

उ० **सीसा** जामंग सोर, भार गाडा वांणां भर । चव हजार सुत्रनाळ, हवस उसताज वहादर ।—सू. प्र.

पर्याय.—कथीर, गंडूपदभव, त्रपु, नाग, सीसपत्र, सुत्ररणारि, हेमअरि ।

रू. भे.—सम ।

२ वालु या खारी मिट्टी को आग में गलाने से वनने वाली एक एक प्रकार की मिश्र धातु जो पारदर्शक होती हैं ।

३ दर्पण ।

४ तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम में आने वाला शीशी से वड़ा काच का वना एक लंवोतरा पात्र, वोतल ।

सीह—१ देखो 'सिंघ' (रू. भे.) (डिं. को; नां. डिं. को.)

उ० —१ येरै सिकार मांहि स्सा तुकड़ी सीह रोभ स्याळ रीछ पनेरा हिरन आदि दै पर भेळा हुया छै ।—द. वि.

उ०—२ इम सजे साज सुत करि अरस, जांणै सीह हकालिया । सुत वक्र बयाग करि कुज कमत्र, चढ्ढग महावत चालिया ।

—सू. प्र.

उ० —३ सीहणि हेको सीह जणै, छापर मंडै आळि । दूध विटाळण सापुरस, वीहरा जणै सियाळी । · हा. भा.

(स्त्री. सीहण, सीहणि, सीहणी)

२ देखो 'सींत' (रू. भे.)

उ० —उनर आज स उनरड, मही पडेसी सीह । वालम घरि किम छूटियइ, जां निन चा।। दीह । ढो. मा.

सीहगोस—सं पु. - काले कानों वाला एक प्रकार का जंतु विशेष ।

उ० —तिस पर चिय्रू कूंतूं का धाव सीहगोसूं के दाव । - सू. प्र.

सीहड़—सं. पु. —भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहदुआर, सीहदुवार, सीहद्वारी—देखो 'सिंहद्वार' (रू. भे.)

उ०—१ सोहद्वारि जइ स्वांमी नइं, पूछया प्रछन कुमार । कवण देस कवण गढ राजा, ए कहौ कवण विचार ।—रुकमणी मंगळ

उ० · २ माय पंडित बोलै तिण ठाई, चाउघड़यच वाजइ सीह-दुवारि ।—वी. दे.

(मि. सिंघपोळ)

सीहमलोत—सं. पु. राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहरू—सं. पु.—शेर, सिंह ।

उ० सीहां थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होण । कांम 'पता' कमधज्ज रा, गुणण लगच्चै त्रोण ।—किसोरदांन बारहठ

सीहलोर—सं. पु. —डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

वि. वि. देखो 'पुंगियो' ।

सीहलौ—सं. पु. —१ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

२ देखो 'सिंह' (अल्पा; रू. भे.)

सीहवणी—स. पु. डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

वि. वि. - देखो 'सोहणों' ।

सीहवाग—सं. पु. एक क्षत्रिय वंश ।

उ० —एकण पासै जोईयां रो राज । एकण पासै सीहवाग खीचीयां रा राज । एकण पासै पाहूवां रो राज ।

— कुंवरसी सांखला री वारता

सीहाणौ, सीहाबौ—क्रि. स.—प्रशंसा करना, सराहना ।

उ० - पडित भी राजी होय आसीरवाद दीयौ । मन मांहि घणौ सीहायौ ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सीहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

सीहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

सीहायत—१ देखो 'सहायता' (रू. भे.)

२ देखो 'सहायक' (रू. भे.)

सीहायता—देखो 'सहायता' (रू. भे.)

सीहायोड़ौ—भू. का. कृ.—प्रशंसा किया हुआ, सराहा हुआ ।

(स्त्री. सीहायोड़ी)

सीहु, सीहू—देखो 'सिंघ' (रू. भे.)

उ० काली चऊदसि दीहु, तुम्है रुडइं जोइजउ । एउ दुरयोधणु सीहु, आइ उपाइं मारिसिए । —सालिभद्र सूरि

सीहौ—सं. पु. —एक रंग विशेष का घोड़ा । (रा. सा. सं.)

उ०—सुरड सीहा सुलाल, चीतळा चौरंगी चाल । कविळा काळा केकांण, कमेत पंचकिल्यांण । —सु. रू. बं.

सुं—सर्व. —१ उसका ।

उ० वाळूं, ढोला, देसड़उ, जइं पांणी कूंवेण । कूं कूं वरणा हथ्थड़ा, नहीं सुं धाढा जेण । —ढो. मा.

२ क्या ।

उ० —राजा रूपै रीझियौ रे लाल, रागै कहै इण रीत । मुंतौ सुं मुझ आगलै रे लाल, मुझ नैं करतुं मीत ।—ध. व. ग्रं.

३ करण व अपादान का चिह्न ।

क्रि. वि.—१ से ।

उ० —१ चकडोळ लगै इणि भांति सुं चाली, मति तै वाखांणण ना मूं सखी समूह मांहि इम स्यांम, सीळ आवरित लाज सू ।

—वेलि

उ० - २ बाबहिय पिउ पिउ करइ, कोयल सुरंगइ साद । प्रिय तिण रुति अळिग रह्यां, ताह सुं किसउ सवाद ।—ढो. मा.

उ०—३ जैसौ ई दातार बडौ रजपूत । सौ श्री भोपीचारी करै । परखंडां रा माल लै आवै । तठै गांम मांहै लै नै खावै खरचै । गांम मांहै वडी गढी बळवंत । सुं देपाळ अठै ईयै भांत सुं रहै ।

— देपाळ धंध री वात

२ द्वारा, मार्फत ।

३ अपेक्षा में ।

४ आरम्भ से ।

५ पर ।

६ से, को ।

उ०—सउदागर राजा सुं कह, सुणउ हमारी कथ्थ । मारवणी छांनी रही, से माळवणी तथ्थ ।—ढो. मा.

७ के द्वारा ।

उ०—हरीया सरवां सौ भली, सूरातन सुं होय । कायर भागा काळ का, जाकौ मुंह कुण जोय ।—अनुभववांणी

८ के साथ, सहित ।

उ०—तरै झालां रै बीहा हुवौ, सौ झाली नुं आंणी आयौ । झाली पीहर आई तरै लाजसैं सुं हलाई । सौ पीहर पोहती । पीहर रा

भली तरै राखी। झाली री मां झाली सुं वातां कीवी सोकां री वातां पूछी।—कुंवरसी सांखला री वारता

१० क्यों, क्योंकर।

वि.—१ पूर्वक, सहित।

उ०—इतरौ कहि लाखौजी चढि नै घरै आया। लाखौ सुख सुं राज करै छै।—लाखै फूलांणी री वात

२ देखो 'सु' (रू. भे.)

उ०—जैसौ ई दातार वडौ रजपूत। सौ औ भोमीचारौ करै। परखंडां रा माल लै आवै। तठै गांम मांहै लै नै खावै खरचै। गांम मांहै वडी गढी बळवंत। सुं देपाळ अठै ईयै भांत सुं रहै।

—देपाळ धंध री वात

रू. भे.—सूं, सों।

सुंग्राळ—सं. स्त्री.—१ चिकना होने की अवस्था, चिकनाहट, स्निग्धता।

२ देखो 'सुंवाळौ' (मह; रू. भे.) (मा. म.)

रू. भे.—सुंवाळ, सुंहाळ।

सुंखड़ौ—सं. पु.—बादाम, दाख आदि स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

उ०—चोली मइ चरणा चीर सखरा, **सुंखड़ा** सुसवाद ए। रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, जांणइ जेठ प्रसाद ए।—स. कु.

सुंखणी, सुंखनी, सुंखिणी, सुंखिनी—देखो 'संखणी' (रू. भे.)

उ० **सुंखिनी** सवै सुरतांण घरि, कोप हूउ वेजन कसइ। लावत मारि खोजा निसुणि, पातिसाह मुरकै हसइ।—प. च. चौ.

सुंग—सं. पु. [सं. शुंग] १ मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवंश।

२ जौ, गेहूं, चावल आदि अनाजों के पौधे की बाल या भुट्टा।

(क्षेत्रीय)

३ बरगद, वटवृक्ष।

४ आंवला।

५ पाकड़ वृक्ष।

सुंगण—१ देखो 'सुगंध' (रू. भे.)

उ०—थाट भड़ अगै नर सुरगवासी थिया, रांडिया कुपाती लूंड लारै रिया। कथन वड लोक रा आद माचा किया, लिरावै नाक कर फूल **सुंगण** लिया।—स्यांमजी बारहठ

२ देखो 'सकुन' (रू. भे.)

सुंगवंस—स. पु. [सं. शुंगवंश] मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवंश।

सुंगा—सं. स्त्री. [सं. शुंगा] १ फूल की कलियों के नीचे का कोष।

२ गेहूं, जौ, चावल आदि अनाजों के पौधों की बाल।

सुंघणी, सुंघनी—१ देखो 'सूंघणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सांगणी' (रू. भे.)

सुंघाणौ, सुंघावौ—क्रि. स. [सूंघणी क्रिया का प्रे. रू.] सूंघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित करना।

सुंघाणहार, हारौ (हारी), सुंघाणियौ—वि०।

सुंघायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुंघाईजणौ, सुंघाईजबौ—कर्म वा०।

सुंघायोड़ौ—भू. का. कृ.—सूंघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. सुंघायोड़ी)

सुंज—सं. स्त्री.—तैयारी।

उ०—कजि उदकंजळि **सुंज** कराए, जमण सिनांन कियौ नृप जाए। वेदोकत मंत्रां सुण वांणी, जळ अंजळि आपी जग जांणी।

—रा. रू.

सुंठ, सुंठि, सुंठी—देखो 'सूंठ' (रू. भे.)

सुंड—सं. पु. [सं. शुण्ड] १ मदमाते हाथी की कनपुटी से बहने वाला मद।

२ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

उ०—१ वहै लास छूटां तुरां नास वाजै, वडै मेघ ज्यौं सोक धारा विराजै। वणै सिंधुरां कुंडळी **सुंड** वाळी, करै चाळ जांणै फणां नाग काळी।—रा. रू.

उ०—२ मगरूर धतांधत मत्त मदां, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदां। फवि हाटक दंड धुना कहरै, कुंडळी जिम झाटक **सुंड** करै।

—मे. म.

उ०—३ कस्या घण सजळ छजळ कांन, सिरगिर कजळ कूट समांन। ससूदित साप समाकृत **सुंड**, दंतूसळ मूसळ रूप दुरंड।

—मे. म.

सुंडडंड, सुंडदंड—देखो 'सूंडादंड' (रू. भे.)

सुंडभुसंड, सुंडभुसंडि, सुंडभुसंडी, सुंडभुसुंड, सुंडभुसुंडि, सुंडभुसुंडी—सं. पु. [सं. शुंडभुशंडि] हाथी, हस्ती।

वि.—मस्त, उन्मत्त।

सुंडमुंड, सुंडमुंडी, सुंडमुस्टंड, सुंडमुस्तंड—वि.—हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ।

उ०—१ नटालि दै भटालि की जटालि ऐंचतै अभै, अरीन मुच्छ मुच्छ दै स्वमुच्छ खेंचतै अभै। चलाक रूठ पूठ कै अंगूठ चांपतै चलै, हरांमखोर **सुंडमुंड** झुंड कंपतै चलै।—ऊ. का.

उ०—२ अेकर अेक गांव मैं अेक अैड़ौ ई भेखधारी महातमा चारमासा री धूणी जगाई। साथै **सुंडमुस्तंड** चेलां री टोळी। अणपढ, अबूझ अर अग्यांनी लोग अर पछै धरम, भगवांन, आतमा, परमातमा अर मुगती मैं अमिट आस्था! ठगण सारू अैड़ौ ठोट मांनखौ दुनिया मैं वळै कठै मिळै।—फुलवाड़ी

रू. भे.—संडमुसड, संडमुसंडी, संडमुस्टंड, संडमुस्तंड।

सुंडा—सं. स्त्री. [सं. शुण्डा] १ हाथी की सूंड। (डिं. को.)

उ०—१ जंघा **सुंडा** करि वणी रे, उलटौ कदली खंभ रे। सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दंभ रे।—प. च. चौ.

उ०—२ नदी नाळिया बाह सूं गह चल्ली. हलाई धजां कै गजां दलि हल्ली। नमी ग्राल जंगाळ सिंदूर सुंडा. डरां में धमै धाव रा गाव डरा।—व. भा.

२ सेना नदी।

३ मदिरा, शराब। (डिं. को.)

४ पुरानी स्त्री।

सुंडादंड, सुंडादंडू—देखो 'सूंडादंड' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

उ०—१ जठै जादवराम रै संबधी भ्राता जादवदेव रा किवांग रोग चालुक्यराज रा गज री सुंडादंड बाहिरथ देस सूं बिछूटि भरियो।—व. भा.

उ०—२ हाथियो कै हलकै सभूठांग तै खोलै ग्ररापत कै साथी भद्र जाती कै थोकै ग्रत देह कै दिग्गज विंध्याचळ कै सुजाव रंग रंग गिरै सुंडादंडू कै बगाव भूल की जलूसै वीरघंटू कै ठणकै बादली की जगमगाट भरै भौरी की भकी भंणकै,.........।—र. रू.

सुंडादंधर—सं. पु.—१ हाथी, गज।

२ गणेश, गजानन।

उ०—रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण करीनइं, विस्न तणौ वीवाह। सुंडादंधर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मंगळ

सुंडादंड—देखो 'सूंडादंड' (रू. भे.)

उ०—प्रतापसिंह नौ साहण सिणगार रै सीस चंद्रहास रौ प्रहार कियौ जिण सूं दोही दातां समेत सुंडादंड झड़ि पड़ियौ।—वं. भा.

उ०—२ हाथी मद पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै। सुंडादंड सबल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हो।—वि. कु.

सुंडार—सं. पु. [सं. शुण्डार] १ हाथी की सूंड।

२ साठ वर्ष की ग्रायु का हाथी। (डिं. को.)

३ देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

सुंडाळ, सुंडाळरौ, सुंडाळौ, सुंडालौ—देखो सूंडाळ' (रू. भे.)

(ग्र मा; डि नां. मा; ना डि को; ह. नां. मा.)

उ० १ सुंडाळ भिड़िया ग्रावि ग्रड़िया, मुहड़ ग्रंगांग्रगि। नर सीस विहसई वदन विगसई मेल्ह वाहई संगि।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ मैंद महाचळ सुर कुळ, यौ वरणा रण ताळ। जुड़ै ग्रछाया सोम ज्यां, मद ग्राया सुंडाळ। रा. रू.

उ०—३ सोहै सुवसुरनां पैनाग बना सुंडाळका, प्रथी माठां भाळ राळ साट पैलै पार। काळा ग्रगा नगजै फाळका वै वै तड़ा कूदै, नवेलां टाटरा भूरी बरीसै नोखार।—जवांनजी ग्राढौ

उ०—४ सुंडाळा सुमेर सा सजिया, ग्रमर विमांणसी ग्रंबारी रे। नवनव हय चितचाळ चुवावण, नाचै मोर मनोहारी रे।—गी. रां.

उ०—५ वाजळ किरकै तनु काळा, सबळा परचंड सुंडाला। सिंदूरधा सीस सलूकै, जलधर में बीज भबूकै।—ध. व. ग्रं.

सुंडावत—सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश। (रा. वं. वि.)

सुंडाहळ, सुंडाहळौ—देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

उ०—१ वदै रांम वरियांम संसार रजपूत वट, लोह पागार सुंडाहळा लोध। ऊरड़ी सांमां ग्रणी ऊपरै प्रिसण उरि, ग्रड़ै जमदाढ़ तूं ग्रभिनमा 'जोध'।—रांमसिंह राठौड़ री गीत

सुंडी—सं. स्त्री. [सं. शौंडिन्] १ पिप्पली नामक लता या उसका फल। (ग्र. मा.)

२ देखो 'सूंडी' (रू. भे.)

सुंणणौ, सुंणबौ—देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू. भे.)

उ०—ढोला, खील्यौ री कहइ, सुंणै कुढंगा वैण। माह म्हांजी गोठणी, सैं मारू दा सैण।—ढो. मा.

सुंणणहार, हारौ (हारी), सुंणणियौ—वि०।

सुंणिग्रोड़ौ, सुंणियोड़ौ, सुंण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुंणीजणौ, सुंणीजबौ—भाव वा०।

सुंणियोड़ौ—देखो 'सुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंणियोड़ी)

सुंद—सं. पु. [सं.] एक राक्षस जो निकुंभ का पुत्र ग्रोर उपसुंद का भाई था। इसकी पत्नी का नाम ताड़का था, जिससे इसके मारीच व सुबाहु नामक दो पुत्र हुए थे।

सुंदर—वि. [सं.] १ जो दिखने में ग्रच्छा लगता हो, मनमोहक, चित्ताकर्षक। (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सुभ चित्र मंदिर चौक सुंदर, ग्रोपि रुचि राय ग्रंगणौ। तन मदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणौ।

—रा. रू.

उ०—२ ग्रति सुंदर कवळ मांडिया ऊपर, सोभा ग्रति पांमइ सादीत। चंदवदनी मुख दिसउ चाहतां, ऊगा किरि बारह ग्रादीत।

—महादेव पारवती री वेलि

२ जो रंग, रूप व वर्ण से ग्राकर्षक लगता हो, रूपवान्, खूबसूरत।

उ०—सुंदर सोभत घणस्यांम, तड़िता पट-पीत छवि तांम। वांमै ग्रंग सीता वांम, रूप ग्रनंग कोटिग रांम।—र. ज. प्र.

३ ग्रच्छा, भला, बढ़िया। (डिं. को.)

४ ठीक, सही।

५ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उ०—दासरथी सुखदाई सुंदर, नमै पगां सुर नर ग्रानूप। नरकां मिट जन तारै नकां, भाख पयोध प्रभाकर भूप।—र. ज. प्र.

६ सुघट, सुघड़ित।

७ उत्तम, पवित्र, स्वच्छ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, ग्रमळ ग्रंबर ग्रोपयं। किरि सुबुधि वधि सत संग कारण, लुबुध होत विलोपयं। रा. रू.

८ जिसके नख शिख व ग्रंग-प्रत्यंग सौन्दर्य के मापदण्ड के ग्रनुसार हो।

उ०—ग्रगनयणी, ग्रगपति मुखि, ग्रगमद तिलक निलाट। ग्रगरिपु-कटि सुंदर वणी, माह ग्रहट्ट घाट।—ढो. मा.

९ जिसे पाने से, देखने से या अनुभव करने से आनन्दानुभूति होती हो।

१० कला की दृष्टि से जिसकी रचना अत्यन्त उच्च कोटि की हो।

पर्याय.—अभिरांम, कमन, कमनीय, दरसणी, दीपन, पेसल, प्रीय, मंजु, मंजुल, मधुर, मनहर, मनोगिन, मनोरम, मनोहर, रमण, रमणीय, रुच, रुचिर, ललित, वर, वांम, सरूप, माधु, सुखम, सुभग, सुलखण, सोभित।

सं. पु.—१ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा; ह. नां. मा.)

२ वालक, बच्चा। (अ. मा.)

३ कामदेव, मनोज। (ह. नां. मा.)

४ लंका में स्थित एक पर्वत।

५ एक प्रकार का वृक्ष।

६ लकड़ी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

उ०—१ चल **सुंदर** मंदिर चलं, तुम विण चल्यौ न जाय। मात चलाती लाड मैं, सौ दिन पहुंच्या आय।—अग्यात

उ०—२ चल **सुंदर** मंदिर चलं, तुम हौ जीवजड़ी। हम हुतैं तुम न हुतैं, जद थी आणंद घड़ी।—अग्यात

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें एक लघु एवं एक दीर्घ के क्रम से पच्चीस मात्राएँ व १६ वर्ण होते हैं।

उ०—सोलह आखर पय सखर, मात्र पचीस मलूक। कहि गुण लखपती कुंअर, **सुंदर** छंद सलूक।—ल पिं.

८ डिंगल के वेलियां सांणोर छंद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५२ लघु, ६ गुरु, कुल ६४ मात्राऐं होती हैं तथा शेष द्वालों में ५२ लघु, ५ गुरु, कुल ६२ मात्राऐं होती हैं। (पिं. प्र.)

सं. स्त्री.—९ पृथ्वी, भूमि।

(डिं. को; डिं. नां. मा; ना. डिं. को.)

१० देखो 'सुंदरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ कुण मांड्या, अै सुवागण, थारा हाथ, पेम रस महंदी राचणी। राच्या राच्या, अै **सुंदर**, थारा हाथ, पेम रस महंदी राचणी।—लो. गी.

उ०—२ **सुंदर** सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर पाळ। चंद मुळक्यउ, जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ।—ढो. मा.

उ०—३ प्रह फूटी, दिसि पुंडरी, हणहणिया हय थट्ट। ढोलइ धण ढंढोळियउ, सीतळ **सुंदर**-घट्ट।—ढो. मा.

उ०—४ सांम्हउ जिण कळस आंणियउ **सुंदर**, वंदायउ कर भली विधि। जनम जनम वैकुंठ पांमिस्यइ, वळै वंदावइतां नवै निधि।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—५ उदमाद घणइ जगि चढती वांनी, करि निरखती फोरती कंध। सांई मिळण कारणै **सुंदर**, वंधिया चोळी तणाज वंध।

—महादेव पारवती री वेलि

अल्पा; रू. भे.—सुंदरु, सुंदरू।

सुंदरता, सुंदरताई—सं. स्त्री. [सं. सुन्दर+ता प्र.] १ सुन्दर होने की अवस्था या भाव।

२ सौन्दर्य, शोभा, झलक।

रू. भे.—सुंदराई, सुंदरापौ।

सुंदरबाई—सं. स्त्री.—बेला चारण की पुत्री एक देवी विशेष जिसने महाराणा संग्रामसिंह को राज्यप्राप्ति का वरदान दिया था।

रू. भे.—सुंदराई।

सुंदराई—१ देखो 'सुंदरता' (रू. भे.)

उ०—हरीवच्छ स्रीलच्छ तू वींसहत्थी, तुही पन्नगाधीस रै सीस प्रत्थी। तुही पच्छ तारच्छ मैं सीघ्रताई, रती मूरती मैं तुही **सुंदराई**।—मे. म.

२ देखो 'सुंदरबाई' (रू. भे.)

सुंदरापौ—सं. पु. देखो 'सुंदरता' (रू. भे.)

सुंदरि, सुंदरी—वि. स्त्री. [सं. सुन्दरी] १ सुंदर, रूपवती।

२ प्यारी, प्रियतमा, वल्लभा।

उ०—सेझां आवौ **सुंदरी**, ज्यौं सोभा दै सेझ। तौ विन सेझ विरंगिया, कही न लागै जेह।—कुंवरसी सांखला री वारता

स. स्त्री.—१ सुन्दर एवं खूबसूरत स्त्री।

उ०—१ गुणदांणा इसा अमोलक गाढा, मोती ताइ आंवळा प्रमांण। **सुंदरि** हार तिसउ उर सोहइ, बीजी गंग प्रगट की वांण।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, संरकि अनुक्रमि सरवरी। त्रिय जीत तनि गुण परखि चखि, सुख सकस पखि जिम **सुंदरी**।—रा. रू.

उ०—३ भाखा सस्क्रत प्राक्रत भणंता, मूझ भारंती ए मरम। रम दायिनी **सुंदरी** रमतां, सेज अंतरिख भूमि सम।—वेलि

उ० ४ **सुंदरि** चोरै संग्रही, सब लीनां सिणगार। नकफूली लीधी नहीं, कहि सखि कवण विचार।—ढो. मा.

२ स्त्री, पत्नी। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ सुणि **सुंदरि**, सच्चउ चवां, भांजइ मनची भ्रांति। मौ मारू मिळिवा तणी, खरी विलग्गी खंति।—ढो. मा.

उ०—२ माया पास रही मुळकंती, सजि **सुंदरी** कीधां सिणगार। बहु परिवार कुटुंब चौ बाधौ, हरि विण गयौ जमारौ हार।

—प्रथ्वीराज राठौड़

३ देवी, दुर्गा, पार्वती।

उ०—भवांनी नमौ स्वच्छ स्रंगार अंगा, भवांनी नमौ **सुंदरी** सिभु संगा। भवांनी नमौ कासरिद्रारि हंता, भवांनी नमौ आसि आभा अनंता।—मे. म.

४ रुक्मिणी।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि, **सुंदरी** द्वारि

[illegible] । —वेलि

४ त्रिपुर सुन्दरी देवी ।

५ एक योगिनी ।

६ नर्मदा नामक गन्धर्वी की कन्या एवं माल्यवान राक्षस की पत्नी का नाम ।

८ हल्दी ।

९ नाव आदि बनाने के काम आने वाली लकड़ी का वृक्ष ।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

११ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसमें प्रत्येक चरण में प्रथम एक नगण फिर दो भगण व अन्त में एक रगण इस प्रकार कुल ग्यारह वर्ण होते हैं ।

उ०—नगण त्रि भगण रगण निरधारि, पाठ **सुंदरी** छंद पिछांण । रगण दु आद म घाटिन वाधि, अनंत अजोध्या नाम अराधि ।

—पि. प्र.

१२ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसमें प्रत्येक चरण में प्रथम दो सगण फिर भगण फिर सगण और अन्त में एक तगण, दो जगण व एक लघु एव एक एक गुरु, कुल २३ वर्ण होते हैं ।

उ०—छाजै त्रि सगण भगण चरण विगता छाता, सगण तगण दुइ जगण लघु गुरु सोभाता । सहि त्रिह अगाल बीस वरण सब सोभणा, **सुंदरि** आ गुण जांणि सुचव सुहांमणा । —पि. प्र.

रू. भे.—सुंदर, सुंदरि, सूंदरी ।

सुंदरू, सूंदरू—देखो 'सुंदर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सगला अगज **सुंदरू** जी, इंद्रिय नहीं कोई हीण । प्रथम वय लाली कला जी, चतुर घणा प्रवीण ।—जयवाणी

सुंदळो—सं. पु.—१ छत की सुन्दरता व चिकनाहट बढ़ाने के लिए विधि से किया गया लेप । इससे चूने की उम्र भी बढ़ जाती है ।

२ चूना ।

३ देखो 'सदळो' (रू. भे.)

सुंदसण—देखो 'सुदरसण' (रू. भे.)

सुंदुस—सं. पु. [सं.] अत्यन्त महीन एवं बहुमूल्य रेशमी कपड़ा ।

सुंदूक—देखो 'संदूक' (रू. भे.)

सुंदोपसुंद—सं. पु. [सं.] सुंद एवं उपसुंद नामक दो भाई जो राक्षस थे ।

वि. वि.—इन दोनों को वरदान प्राप्त था कि जब तक ये दोनों आपस में एक दूसरे को नहीं मारें तब तक नहीं मरेंगे । अतः इन्द्र ने तिलोत्तमा नामक अप्सरा को इस तरह की स्थिति उपस्थित करने हेतु भेजा । ये दोनों तिलोत्तमा की प्राप्ति हेतु आपस में लड़ मरे ।

सुंधासांणी, सुंधासांनी—देखो 'सोधासांणी' (रू. भे.)

सुंधो—देखो 'ऊंधो' (रू. भे.)

उ०—भली भांति मंजार्ट जीमिया । ऊपर पांन रा बीड़ा दिया, पछै **सुंधै** री मनवार हुई । डेरै नूं सीख दीवी । नाहरां राजा वीरभांण जवांई नै खमा-खमा कह्यो, हाथ झालिया, छाती नूं लगाय कह्यो—बाबा, कासूं कारज छै ।—पलक दरियाव री बात

सुंन, सुंन्य—१ देखो 'सुन्न' (रू. भे.)

२ देखो 'सून्य' (रू. भे.)

उ०—१ **सुंन** महा सुंन नहीं धुंधूकारा, नहीं होता नूर विलासा । ज्या दिनका जोगी करो नी विचारा, किस विध रच्या संसारा ।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ कोण देस मैं गुरुजी मंडी वणाऊं, काहां लगाऊं आसारै लोय । **सुंन** सिखर मैं चेला बंधावो, अगम लगावो आसारै लोय ।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—३ **सुंन** सरवर चहुं फेर मैं, सुख सीतल तासीर । हरिया एक अखंड मैं, ध्यांन धरूं ता तीर ।—अनुभववांणी

उ०—४ जनहरीया मन जांह किया, **सुंन्य** सरवर मैं वास । नहीं न जांमण मरण की, धरै न हंसो आय । अनुभववांणी

सुंपणौ, सुंपवौ—देखो 'सूंपणौ, सूंपवौ' (रू. भे.)

उ०—नागोरी दरवाजा बारै नाजर हरकरण हस्तै वेरो १ खीणी-जियो नै चौबीसी हुवी तीको हमार चांपावत सुलतांनसिंघजी नै **सुंपीजियो** । तथा दिरीजियो ।—मारवाड़ री ख्यात

सुंपणहार, हारौ (हारी), सुंपणियौ—वि० ।

सुंपिओड़ौ, सुंपियोड़ौ, सुंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंपीजणौ, सुंपीजवौ—कर्म वा० ।

सुंपियोड़ौ—देखो 'सूंपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंपियोड़ी)

सुंब—सं. पु. [फा. सुंबः] १ लोहे में छेद करने का औजार ।

२ लकड़ी में छेद करने का औजार ।

३ पृथ्वी खोदने का एक प्रकार का औजार ।

सं. स्त्री. [सं. शुल्ब] ४ डोरी, रस्सी ।

५ देखो 'सुम' (रू. भे.) .

६ देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—१ धंधै करि करि जोड़ि धन, संचै राखै **सुंब** । भाग बसैं केइ भोगवै, वलै न बाहर बुंब ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ **सुंबै** गात प्रियां रै साम्ही, गिणि पूरबलो वैर गिनो । पूज नठै तिण धरता पगला, न सकै रहि तिण ठांम न नों ।

—ध. व. ग्रं.

सुंबड़ौ—१ देखो 'सुम' (रू. भे.)

२ देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—'वभुतौ' खीच धाड़ा करै वहु वळ, **सुंबड़ां** प्रजाळण नहीं सुधौ । सौतन कव छोड़ कम जाय सुरधर अगर, राठवड़ रतन पुर पंथ रूधौ ।—खेतजी बारहठ

सुंबुक—सं. स्त्री. [फा.] बड़ी नाव के साथ रहने वाली छोटी नाव ।

सुंबुल—सं. स्त्री. १ गेहूं या जौ की बाल ।

२ एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि विशेष ।

३ बारह प्रकार की राशियों में से कन्या राशि ।

४ बालों की लटी, जुल्फ, अलक ।

सुंवौ–सं.पु. [देश.] १ तोप की नाल को साफ करने का गज ।

२ तोप की नाल को ठण्डा रखने के लिए नाल पर फैलाया या फेरा जाने वाला गीला कपड़ा ।

३ एक औजार विशेष जो लोहे में छेद करने के काम आता है ।

सुंभ–सं. पु. [सं. शुम्भ] देवी दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला एक असुर विशेष ।

उ०—१ देवी धूमलोचन हूंकार धोंस्यौ, देवी जाडवा मैं रकत बीज सोख्यौ । देवी मोडियौ माथ नीसुंभ मोडै, देवी फोडियौ **सुंभ** जी कुंभ फोडै ।—देवि.

उ०—२ लोयण-धूम्र लुलाय, **सुंभ** निसुंभ संहारचा । रकत बीज आरोगि, मुंड चंडादिक मारचा ।—मे. म.

उ०—३ दिती सुत **सुंभ** निसुंभ विदारि, कई रतवीज गई अड-कारि । मुणी जिण कीरत पीर समाज, रजा जिण सीस धरी जमराज ।—मे. म.

सुंभघातण, सुंभघातणी, सुंभघातनी, सुंभघातिण, सुंभघातिणी, सुंभ-घातिनी–सं.स्त्री. [सं. शुंभ+घातिन्+ई रा. प्र.] शुंभ नामक असुर का वध करने वाली देवी, दुर्गा ।

सुंभनिसुंभभांजणी–सं. स्त्री. [सं. शुंभ+निसुंभ+भञ्जो] १ दुर्गा ।

२ पार्वती । (डि. को.)

सुंभपुरी–सं. स्त्री. [सं. शुंभपुरी] शुंभ नामक राक्षस की पुरी ।

सुंभभांजणी–सं. स्त्री. [सं. शुंभ+भांजणी रा.] शुंभ नामक राक्षस का वध करने वाली देवी । (डि. को.)

सुंभमरदणी, सुंभमरदनी, सुंभमरदिणी, सुंभमरदिनी–सं. स्त्री. [सं. शुंभ+मर्दिनी] शुंभ नामक राक्षस को मारने वाली देवी, दुर्गा ।

सुंमड़ौ—१ देखो 'सुम' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—कीठै आया छौ जावौ छौ कीठै पोळ मैं धसौ छौ क्युंजी, कौ जी म्हांनै म्हांकै धणी बैठाया की काज । चारणां भाटां नै आधा जावादचां जी चाल्या चाल्या, न दै म्हांनै **सुंमड़ौ** खावानै सेर नाज ।—सुरतौ बोगसौ

सुंमरणौ, सुंमरबौ—देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

सुंमरणहार, हारौ (हारी), सुंमरणियौ—वि० ।

सुंमरिओड़ौ, सुंमरियोड़ौ, सुंमरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंमरीजणौ, सुंमरीजबौ—कर्म वा० ।

सुंमरियोड़ौ—देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंमरियोड़ी)

सुंवरणौ, सुंवरबौ—१ देखो 'संवरणौ, संवरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे.)

सुंवरणहार, हारौ (हारी), सुंवरणियौ—वि० ।

सुंवरिओड़ौ, सुंवरियोड़ौ, सुंवरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंवरीजणौ, सुंवरीजबौ कर्म वा०, भाव वा० ।

सुंवराड़णौ, सुंवराड़बौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सुंवराड़णहार, हारौ, (हारी), सुंवराड़णियौ—वि० ।

सुंवराड़िओड़ौ, सुंवराड़ियोड़ौ, सुंवराड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंवराड़ीजणौ, सुंवराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सुंवराड़ियोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंवराड़ियोड़ी)

सुंवराणौ, सुंवराबौ—देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सुंवराणहार, हारौ (हारी) सुंवराणियौ—वि० ।

सुंवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंवराईजणौ, सुंवराईजबौ—कर्म वा० ।

सुंवरायोड़ौ—देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंवरायोड़ी)

सुंवरावणौ, सुंवरावबौ–क्रि. स.—१ हजामत करवाना, दाढी बनाना, बाल मुंडवाना ।

उ०—परभात रा तुरक रौ मुंहडौ नहीं देखता । दरबार री सईयत तुरक था तिणारी डाढी **सुंवरावता** कांनां मैं मोती घालता । बाद-साह चाकरी बदलै अहदी मेलिया सौ भली तरह जापतौ करावता, खावण नै मोकळौ देता, पांणी खारौ पावतौ ।

—महाराजा स्रोपदमसिंह री बात

२ देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सुंवरावणहार, हारौ (हारी), सुंवरावणियौ—वि० ।

सुंवराविओड़ौ, सुंवरावियोड़ौ, सुंवराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुंवरावीजणौ, सुंवरावीजबौ—कर्म वा० ।

सुंवरावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हजामत आदि बनवाया हुआ, दाढ़ी बनाया हुआ, बाल मुंडवाया हुआ ।

२ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंवरावियोड़ी)

सुंवरियोड़ौ—१ देखो 'संवरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'समरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री सुंवरियोड़ी)

सुंवार—देखो 'संवार' (रू.भे.)

उ०—करणौ रफड़-रफड़, मल-मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणौ खातर मन रौ दीयौ सजोयौ । **सुंवार** कराई, साफ कपड़ा पैरचा अर फाजल रै कैयां मुजब डील रै तेल-फलेल लगायौ । कांनां मैं सैंट रा फोवा टांग्या, हाथां रै मैंदी मांडी अर रोजौ राख्यौ ।

—दसदोख

सुंवारण—देखो 'संवारण' (रू. भे.)

सुंवारणौ, सुंवारबौ—देखो 'संवारणौ, सवारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायंत पाछलै पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजै छै। देसौत सिरदार जाजम मां पधारै छै। केस सुंवारै छै। मोगरै री वेल केवड़ै रै तेल सूं केस मुथरी कीजै छै। दांत रा दांतां रा नठगा रा चमड़ी रा कांगसियां सूं केस सुंवारजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ ताहरा घोड़ै नूं चुरी करावै। वायळजी घोड़ो चुरी करावता ताहरां सदा तंग, पुस्तंग, दुमची, आगवंध तूट जावता, मु तूट गया। ताहरां टीकरा राजी, सूरी, नीबी, बीजी ही साथ हुतौ तैनूं कह्यो के –थैं फोज री मुहडी भाली, जितरै हूं तंग सुंवार ल्यां सु साथ ठैहराय न सक्यों।—नैणसी

उ०—३ नैना चांटी नाल सुंवारै, दास भाव नहीं कोय दुवारै। लाभ लोभ राखै मन मांही, दया धरम्म कु पालै नांही।

—अनुभववांणी

उ०—४ अवहा वहि अग मिळता मिरम्यां, मुखमिण सेझ सुंवारी। मेल करू आतम कै परचै, दूजा दाव निवारी।

—अनुभववांणी

उ०—५ आहत एक करत मन नाई, मैं तैं घसै पलारै। सब ही दुनियांदार आहतु, विण कर मूंड सुंवारै।—अनुभववांणी

उ०—६ भाख फाटी। ताहरां वडारण आंण जगाया। सौ दोनुं टीलै अग जागिया। भरमल री कपड़ी पोमाख वडारण सुंवार डेरै लै हाली। सौ अमलां री खुमार सु पग ठाह न पड़ै छै। नीठ मोहल मैं लै गई। –कुंवरसी सांखला री वारता

सुंवारणहार, हारौ (हारी), सुंवारणियौ—वि०।

सुंवारिओड़ो, सुंवारियोड़ो, सुंवारयोड़ो भू० का० कृ०।

सुंवारीजणौ, सुंवारीजबौ –कर्म वा०।

सुंवारियोड़ो देखो 'संवारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सुंवारियोड़ी)

सुंवारै, सुंवारौ - देखो 'संवारै' (रू. भे.)

उ० —१ नापो कही भली बात सुंवारै अरज करस्यूं।

—नापै सांखलै री वारता

उ०—२ उहां रा कही रै लोग सूं रमतै रै लोग सुंवारै एक दोय कजियो कर कर सही जीत हुई आवै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ इसी तरै सारै राजलोक री हुई। पाछै सारी आप-आप रै डेरै गई। कुंवरसी भरमल रै मोहल पोढियो। परभात सुंवारौ उठि नितकरम कर रावजी रौ मुजरौ कीयौ।

– कुंवरसी सांखला री वारता

सुंवाळ—१ देखो 'सुंवाळो' (मह; रू. भे.)

२ देखो 'सुंग्राळ' (रू. भे.)

सुंवाळो–वि. (स्त्री. सुंवाळी) १ कोमल, मुलायम।

मुहा.—सुंवाळो सेजड़ी माथै मैं चढै=सीधे एवं सयाने को सभी सताते हैं, कमजोर को सभी दबाते है।

२ चिकना, स्निग्ध।

सं. पु.–लेप लगाये हुए ताने को साफ करने का एक ब्रुश जैसा जुलाहों का औजार जो सिवण घास की जड़ का बनाया जाता है।

रू. भे.—सुंग्राळो, सुंहाळो, सूंवारो, सूंवालो।

मह;—सुंग्राळ, सुंवाळ, सुंहाळ।

सुंवौ देखो 'समो' (रू. भे.)

उ०—१ तिको तळाव किण भांत रो छै। राती वरडी रो। पांडरो नीर। पवन रो मारियो फीण आछंटतौ थकौ झोला खाय रह्यो छै। लहरां लियै छै। अथग डोव छै। कड़ियां सुंवै पांणी मैं पैठां पगां रा नख झाखै छै। दूध रै भौळावै बिलाव वासीजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ आपणी फौज निवळी देखूं छुं। आ फौज सवळी छै। आपां रा लोक घाव लागत सुंवा धरती पड़ै, उवै पूरा लोहा लागा विढै छै। उवै फौज रो धणी माहै ऊभो। ई वास्तै का तो राजा नूं चोट पोहचावौ, नहीं तो म्हे कांम आसां। फोज आपणी भाजसी।

—हाहुल हमीर री वात

सुंस - देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ० - १ करि सास्त्र साखि धरमसी कहै, भार अढार वनसपती। विण लीयां सुंस खाधां विगर, छहु रितु मैं हिंसा छती।—ध.व.ग्रं.

उ० - २ करौ सुंस जेतै कहै, बोल वंध सवि साच। हम मुसाफ उपारि है, विचलां नहिं वाच। प. च. चौ.

सुंसाड़ौ – देखो 'सूंसाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सुंसाड़ा करंता रे, सुर सेस धरंता रे। दस दिन का भूखा रे, खावण नै ढूका रे। कुकारौ पाड़ै कहै देव छोडावजो रे।

– जयवांणी

सुंह - देखो 'सूंस' (रू. भे.)

सुंहगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)

उ०—१ इम करतां जो को मारइ, तउ जगि कीरति होई रे भाई। कन्या माटइ पांमता, सुंहगी कीरति सोई रे मारै।

– प. च. चौ.

उ०—२ बाजरी चउंला मउठ, के कै धांन सुंहगा कीधा। सुंहगा-मूंहगा सरव, लोक तै आंणी लीधा।—स. कु.

उ०—३ अठयासीयउ अन्न आंणि, करइ वलि सुंहगा कांई। लागी लत्यापत्थि, किस्युं थास्यइ ही मांइ।—स. कु.

(स्त्री. सुंहगी)

सुंहाळ—१ देखो 'सुंग्राळ' (रू. भे.)

२ देखो 'सुंवाळो' (मह; रू. भे.)

सुंहालो–सं. स्त्री.–एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

उ०—सीरा फीणी सुंहालियां रे लाल, साबूनी सुखकार। इंद्रसा नै दहीवडा रे लाल, इम पकवांन अपार।—प. च. चौ.

सुंहाळी—देखो 'सुंवाळी' (रू. भे.)

उ०—पंचरंग दीधा ढोलिया, पुतळी पागे जांण। सेझ सुंहाळी अति भली, रेसम वणियौ वांण।—ढो. मा.

(स्त्री. सुंहाळी)

सुंहिणौ, सुंहीणौ—देखो 'सुहिणौ' (रू. भे.)

उ०—संदक सूती सुंहिणौ लाधौ, लंका लाखण आयौ। लाखण आयौ लंका लीवी, सायर सेत बंधायौ।—मेहोजी गोदारो

सु—सं. पु. [सं. शु] १ पल। (एका.)

२ पलास। (,,)

३ चांद, चन्द्रमा। (,,)

४ शुक, तोता। (,,)

५ पत्थर, पाषाण। (,,)

६ कैलाश पर्वत। (,,)

सं. पु.—७ घोड़ा, अश्व। (,,)

८ नख, नाखून। (,,)

९ गधा। (,,)

१० समूह, झुण्ड। (,,)

११ मोर की तेज आवाज, कौहक। (,,)

[सं. सु] १२ रवि, सूर्य। (,,)

१३ ध्वनि, आवाज। (,,)

१४ कुल्हाड़ी, कुठार। (,,)

१५ छेदन। (,,)

१६ परशु। (,,)

१७ सुथार, बढ़ई। (,,)

१८ सुन्दरता, खूबसूरती।

१९ उन्नति, प्रगति।

२० आनन्द, प्रसन्नता।

२१ समृद्धि।

२२ पूजा, अर्चना।

२३ कष्ट, तकलीफ।

२४ अनुमति, आज्ञा, सहमति।

वि.—१ अच्छा, भला।

२ अच्छा, बढ़िया।

३ श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ।

४ उत्तम, पवित्र।

५ सुन्दर, खूबसूरत।

६ सहज, सरल, आसान।

७ उचित, उपयुक्त।

८ अधिक, अत्यधिक, खूब।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेड़चा मांगणहार। जे भेदक गीतां तणा, बात करइ सु विचार।—ढो. मा.

सर्व.—१ स्व, अपना।

उ०—वळिबंध समरथि रथ लै बैसारि, स्यांमा कर साहे सु करि। बाहर रै बाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि।—वेलि

२ उन, उन्हें, उन्होंने।

उ०—१ धरती जेहा भरखसा, नमणा जेहि केळि। मज्जीठां जिम रच्चणां, दई, सु सज्जण मेळि।—ढो. मा.

उ०—२ मारूराव 'मुकन्न' रै, खीची साथ 'मुकन्न'। सु तौ अजंगढ खांन सूं, मिळ पूछिया प्रसन्न।—रा. रू.

३ वह, वे, सो।

उ०—सैसव सु जु सिसिर वितीत थयौ सहु, गुण गति मति अति गिणि। आप तणौ परिग्रह लै आयौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि।—वेलि

उ०—२ रावळ दूदौ जसहड़ रौ। जसहड़ पाल्हण रौ। पाल्हण काल्हण रौ पोतरौ। तिण आयनै जेसळमेर सूनौ पड़ियौ हुतौ सु लै नै टीकै बैठौ। वरस १० दिन ७ राज कियौ।—नैणसी

उ०—३ आरोपित हार घणौ थियौ अंतर, उरस्थळ कुंभस्थळ आज। सु जु मोती लहि न लहै सोभा, रज तिणि सिर नांखै गजराज।—वेलि

उ०—४ सखी सु सज्जण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह। सूका था सु पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह।—ढो.मा.

क्रि.वि.—एक अव्यय शब्द जो संज्ञावाची शब्दों के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में एवं विशेषणवाची व क्रिया विशेषणवाची शब्दों के साथ व्यवहृत किया जाता है। इसके निम्नाङ्कित अर्थ होते हैं:—

१ भली-भाँति, अच्छी तरह।

२ सरलतापूर्वक, सरलता से।

३ इसलिए।

उ०—तरै चीवै सांवतसी कह्यौ आहेडिए सूअर दोय हेरिया था तठै गयौ, हमार आवै छै। सु यूं करतां आथण हुवौ, तरै रांणै वळै मांनसिंघ नुं याद कीयौ।—नैणसी

४ ही।

उ०—१ इणि परि ऊमा देवड़ी, जांणी मारूवत्त। सु प्रभाति कहिवा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त।—ढो.मा.

उ०—२ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ-पळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि।—वेलि

उ०—३ वधिया तनि सरवरि वेस वधंती, जोवण तणौ तणौ जळ जोर। कांमणि करण सु बांण कांम रा, दोर सु वरुण तणा किरि डोर।—वेलि

अव्य०—१ पादपूरक वर्ण।

उ०—१ इहां सु पंजर मन उहां, जय जांणइला लोइ। नयणा

पाछा थीक वन, मनह न आवइ कोइ ।—ढो.मा.

उ०—२ मऊ भूरा, वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ । गुणे सुगंधी मालवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो.मा.

रू.भे.—सु

२ देखो 'सु' (रू.भे.)

३ देखो 'स्वु' (रू.भे.)

उ०—उणिइ विमासी मनि पारथ निद्रा, मेल्हि नरेंद्र सु गअस्वमुआ । निद्रा ति घूमिइ हथियार छांडइ, कोई किही सिउं नीय भूख माटइ ।—सालिसूरि

सुअटी—देखो 'सूवटी' (रू.भे.)

सुअणौ, सुअबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू.भे.)

उ०—सहि सुइ घट मास प्रात जळ मंजै, आप अपरस अरु जित इंद्री । प्रागै वेलि पढ़तां नित प्रति, त्री वंछित [illegible] वंछित त्री ।

—वेलि

सुअणहार, हारौ (हारी), सुअणियौ—वि० ।

सुयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुईजणौ, सुईजबौ—भाव वा० ।

सुअन—सं.पु. [सं. सूनु] पुत्र, बेटा ।

सुअर—देखो 'सूवर' (रू.भे.)

उ०—उठै डोळै कन्है खादरियां पगां सूं खैरू कियौ । खग संख सूं लगावणी लागियौ । मारा ठाकुर सूअर ऊपर आ घिरिया । इतरै सूअर बळै फौज सूं भिळियां मां सारी फौज फरोळतौ-रूंदळतौ फिरै छै ।—ढाढाळा सूर री वात

सुअरड़ौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू.भे.)

सुअरदंतौ—सं.पु.—एक प्रकार का वह हाथी जिसके दांत पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं । (गिवी)

सुअवसर—सं.पु. [सं.] अच्छा मौका, अच्छा अवसर ।

सुआंन—देखो 'स्वांन' (रू.भे.)

सुआंमी—देखो 'स्वामी' (रू.भे.)

सुआग—देखो 'सुहाग' (रू.भे.)

सुआगत—देखो 'स्वागत' (रू.भे.)

सुआगौ—देखो 'सुहागौ' (रू.भे.)

सुआड़—देखो 'सुआवड़' (रू.भे.)

सुआड़ौ—देखो 'सुवाड़ौ' (रू.भे.)

सुआद—देखो 'स्वाद' (रू.भे.)

सुआर—सं.पु. १ नापित, नाई ।

उ०—आप तिपै पुर में अनूर, निस डर धार विचार । छांना मेंणा छेड़िया, संगि नेड़िया सुआर ।—रा.रू.

२ देखो 'सवार' (रू.भे.)

सुआरथ—देखो 'स्वारथ' (रू.भे.)

सुआरथी—देखो 'स्वारथी' (रू.भे.)

उ०—आप सुआरथी मरो आदमी, सत छोडै सो मरो सती । भणीयो नहीं सो मरी ब्राह्मण, जंत्र-मंत्र विण मरो जती ।

—अग्यात

सुआरव—वि.—मीठे व मधुर शब्द करने या बोलने वाला ।

सुआल—सं.पु. [अ.] १ खांसी ।

२ देखो 'सवाल' (रू.भे.)

सुआवड़—देखो 'सुवावड़' (रू.भे.)

उ०—हर दो बरस री छेटी सूं तीजां, चौथकी, पांचकी, आयचुकी, धापुड़ी, पप्पू अर मुनियो धड़ाधड़ जनमता इज गया । हरेक सुआवड़ इण रै वास्तै मौत री घाटी बण नै आई पण भगवान इज लाज राखी नीं तो रांम जांणै म्हारी कांई हालत व्हैती ।—अमर चूंनड़ी

सुआवत—देखो 'सूआवत' (रू.भे.)

सुआसण, सुआसणी—देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआसणौ—देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआसन—सं.पु. [स.] १ बैठने के लिए सुन्दर आसन ।

२ देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआसिण, सुआसिणी—देखो 'सवासणी' (रू.भे.)

सुआहित—सं.पु. [सं.] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ, तलवार का एक प्रकार का दाव ।

सुइ—१ देखो 'सूई' (रू.भे.)

२ देखो 'सुचि' (रू.भे.)

३ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुइच्छा—सं. स्त्री. [सं.] १ अच्छी भावना, सद्भावना ।

उ०—सिच्छा स्वय सिच्छा सिच्छा दीनी सेन सिच्छा सयू, इच्छा स्वय इच्छा की सुइच्छा अभिलाखी तैं । सत्य मैं प्रमत्त सूर दूर ह्वौ असत्य देख, सत्य सत्य साखी भयौ राजी सत्य साखी तैं ।

—ऊ.का.

२ स्व-इच्छा, अपनी इच्छा ।

उ०—औ तरसत इच्छा विचरत सुइच्छा जन विखै, लखै द्रस्टि करम परमेस्टी पुनि लिखै । तुही सरजै पाळै हनि पुनि संभाळै उतपती, अई इंदू अबा जयति जगदंबा भगवती ।—मे.म.

सुइणौ, सुइबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू.भे.)

उ०—१ अभिग्रह लीधा हो कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ जांम । सुइबौ हो धरती निरती चूंप सुं, जपती रहुं प्रिय नांम ।

—वि.कु.

उ०—२ कर मुंकावण अवसरै रे, कांइ अरधो दीधौ राज रे । वलि ग्रह निज पुत्री तणौ रे, कांइ दीधौ सुइवा काज रे ।

—वि.कु.

सुइणहार, हारौ (हारी), सुइणियौ—वि० ।

सुइयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुईजणौ, सुईजवौ —भाव वा० ।

सुइयोड़ौ—देखो 'सूवियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुइयोड़ी)

सुइयौ—देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

सुई—१ देखो 'सूई' (रू.भे.)
उ०—१ आंख्यां मैं **सुइयां** सहूं, सूली सहूं पचास । औ दुखड़ौ कैसैं सहूं, पिव औरां कै पास ।—अग्यात
उ०—२ खुद तौ गुरुजी बेंगण खावै, दूजां नैं परमोद बतावै । खैरणी सुई नै हंसै, तवौ हांडी नै काळी बतावै ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सुचि' (रू.भे.)
३ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुऐंन—सं.पु.—सूर्य, रवि, सूरज । (नां.मा.)

सुऔ—देखो 'सूवौ' (रू.भे.)
उ०—भंवारै हौ भंवरौ गवरल है फिरौ, होजी वैरौ लिलवट आंगळ च्यार । आंखड़ियां रतनै जड़ी, होजी वैरी नाक **सुआ** री चोंच ।—लो.गी.

सुऔरोग—स.पु.—सूतिका रोग ।

सुकंट,सुकंठ—सं.पु. [सं. सुकंठः] किष्किधा नरेश वाली का भाई सुग्रीव ।
उ० —१ गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या क्रत सैन नांमी । है जग वागां दसमाथ हंता, माहेस वाछल्य '**सुकंठ**' मीता ।
—र.ज.प्र.
उ०—२ अत हेत अहेस **सुकंठ** अनैं, करुणानिध स्री रघुवीर कनैं । दिल मोद महादिल आयर दोई, भेद सकोई भाखियौ ।—र.रू.
२ सुरीली आवाज, मधुर ध्वनि ।
रू.भे. - सुकठी ।

सुकंठी वि.स्त्री. १ मधुर कंठ वाली, सुरीली आवाज़ वाली ।
उ०—कोकिल कठ **सुकंठी** कामिणी, गुणवती उतिम गज गामिणी । मुख ससिहर जोवण मदमत्ती सोव्रन मैं आभूखण सोहै, म्रिघलोचनी रा मन मोहै ।—ल.पि.
२ देखो 'सुकंठ' (रू.भे.)
उ० - मिळ कपि हणुमंत **सुकंठी** म्यंता, चौपट मारै वाळ अचंता । दांन भभीखण लंक दीयंता, वध पाज जळवांनूंदा ।—र ज.प्र.

सुक—सं.पु. [सं. शुकः] (स्त्री. सुकी) १ तोता, कीर, सुग्गा ।
(अ.मां;डि.को.)
उ०—१ वणै कोकिला मोर चाकोर वांणी, **सुकं** सारिकायं सुवायं सुहांणी । सुखै वैण कारंडवं कोक सद्दै, वळै जीह सूं ग्रीय बाबीय वंदै । - रा.रू.
उ०—२ नासिका **सुक** चंच सरिखी, मुगतफळ संजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणीमंगळ
२ रावण का एक अमात्य जो अपने सारण नामक मित्र के साथ उसके गुप्तचर का काम भी निभाता था ।
३ सोच, फ़िक्र । (डिं.को.)
४ कई सुगन्धित पदार्थों का मिश्रण ।
५ फ़लित ज्योतिष के २८ योगों में से एक योग ।
(ज्योतिष बालबोध)
रू.भे.—सुक्र, सुग्ग, स्रुक ।
६ देखो 'सक्र' (रू.भे.)
उ०—वडपुरी **सुकं** कवि लघु अकल वांणि ।—रांमरासौ
७ देखो 'सुकदेव' (रू.भे.)
उ०—१ कहि सिक सनकाद ध्रू प्रहलाद, अहयत आद जेण जपै । **सुक** नारद व्यासं जळ कहि जास, फिर कर तासं दास थपै ।
—र.ज.प्र.
उ०—२ दधि वीणि लियौ जाई वणतौ दीणौ, साखियात गुण मैं ससत । नासा अग्रि मुताहळ विदिसति, भजति कि **सुक** मुख भागवत । - वेलि
८ देखो 'सुक्र' (रू.भे.)
९ देखो 'सुख' (रू.भे.)

सुकड़णौ, सुकड़बौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू.भे.)
उ०—म्हैं अबार तांणी उठै ईज **सुकड़नै** बैठग्यौ ।—तिरसंकू
सुकड़णहार, हारौ (हारी), सुकड़णियौ—वि० ।
सुकड़िओड़ौ, सुकड़ियोड़ौ, सुकड़्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
सुकड़ीजणौ, सुकड़ीजबौ—भाव वा० ।

सुकड़ाणौ, सुकड़ाबौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू.भे.)
सुकड़ाणहार, हारौ (हारी), सुकड़ाणियौ—वि० ।
सुकड़ायोड़ौ - भू०का०कृ० ।
सुकड़ाईजणौ, सुकड़ाईजबौ—भाव वा० ।

सुकड़ायोड़ौ—देखो 'सिकुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुकुड़ायोड़ी)

सुकड़ावणौ, सुकड़ावबौ—देखो 'सिकुड़णौ, सिकुड़बौ' (रू.भे.)
सुकड़ावणहार, हारौ (हारी), सुकड़ावणियौ—वि० ।
सुकड़ाविओड़ौ, सुकड़ावियोड़ौ, सुकड़ाव्योड़ौ—भू०का०कृ०
सुकड़ावीजणौ, सुकड़ावीजबौ—भाव वा० ।

सुकड़ावियोड़ौ – देखो 'सिकुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुकड़ावियोड़ी)

सुकड़ियोड़ौ—देखो 'सिकुड़ियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुकड़ियोड़ी)

सुकचण—देखो 'संकुचण' (रू.भे.) (डिं.को.)

सुकचाणौ, सुकचाबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू.भे.)
सुकचाणहार, हारौ (हारी), सुकचाणियौ—वि० ।
सुकचायोड़ौ - भू०का०कृ० ।
सुकचाईजणौ, सुकचाईजबौ—भाव वा० ।

सुकचायोड़ौ देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकजायोड़ी)

सुकच्छ, सुकछ—वि. स्त्री. [सं. सु+कच] १ अच्छे केशों वाली।

उ०—नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी सु सुकच्छ। गोरी गंगानीर ज्यूं, मन गरवी, तन अच्छ।—ढो.मा.

[सं. सु+कक्ष] २ सुन्दर कक्ष वाली।

३ सुन्दर वक्षों वाली।

सुकजाणौ, सुकजाबौ—देखो 'संकुचणौ, संकुचबौ' (रू.भे.)

सुकजाणहार, हारौ (हारी), सुकजाणियौ - वि०।

सुकजायोड़ौ – भू०का०कृ०।

सुकजाईजणौ, सुकजाईजबौ —भाव वा०।

सुकजायोड़ौ देखो 'संकुचियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री सुकजायोड़ी)

सुकटि—वि.स्त्री [सं.] जिसकी कमर सुन्दर हो, अच्छी कमर वाली।

सं.स्त्री १ अच्छी कमर, सुन्दर कमर।

२ सुन्दर कमर वाली स्त्री।

सुकतज, सुकतिज – देखो 'सुक्तिज' (रू.भे.) (अ मा; डि.को.)

सुकतंड, सुकतुंड–सं.पु. [सं. शुकतुंड] १ तोते की चोंच।

२ तांत्रिक पूजन में बनाई जाने वाली हाथ की एक मुद्रा विशेप।

वि.–तोते की चोंच के समान सुन्दर नाक वाला।

सुकथ, सुकथन–सं.पु. [सं. सुकथन] १ गुण-कथन, कीर्तिगान।

२ कीर्ति, यश।

उ०—धना हाथ कमंधजां महाभडां सूरधीरां, किया पाथ जेम हुइ भारथा कहाय। सुकथां रहावै इळा चौकूंठ रा सूरां साह, रंभ सथा रथै बैठा दुनै मारु-राव।—चतुरी खिड़ियौ

३ अच्छी बात या चर्चा।

४ कहने का सुन्दर तरीका, ढग या प्रणाली।

सुकथा—सं.स्त्री. १ अच्छी बात, चर्चा या प्रसंग।

२ कोई प्रेरणाप्रद कथानक।

सुकदायक—देखो 'सुखदायक' (रू.भे.)

उ०—मोरां मेह मछां जळ मानै, करै नहीं विहंगा वछ कानै। 'साता' ज्यां सुरज सकवांनै, सुकदायक आदू सकव्यां नै।

—भभूतसिहजी रौ गीत

सुकदेव–सं.पु.–पुराणों के भारी वक्ता एवं ज्ञानी एक मुनि जो कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र थे।

उ०—१ अहो निस कागभुसुंड आराध, पढै तौ नांम सदा प्रहळाद। जपै सुकदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह.र.

उ०—२ सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक तै एक संथ। श्री दरबार पहिलौ कीजै तिणि, गूंथियै जेणि सिगार ग्रंथ।

—वेलि

रू.भे.–सुकदे सुगदेव।

सुकन—वि. [सं. सु+कर्ण] जिसके कान सुन्दर हो।

सं.पु.–१ अच्छे कान।

२ देखो 'सुगन' (रू.भे.)

उ०—१ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—वां.दा.

उ०—२ राजि उठा हुंती भलै मुहूरत खड़िया छै, पातिसाहजी सूं घणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै। ताहरां मुंहतै रै पालियै राजि पगै लागण न पधारिया।—द.वि.

सुकनभेंट—देखो 'सुकुनभेंट' (रू.भे.)

सुकनाई—देखो 'सुगन' (रू.भे.)

उ०—आगम काग उडाय, सदा लेती सुकनाई। रुकम चंच पर रजत, बोल वरदाती बाई। आगम काग उडाय, नित तुम वाट निहारी। वर 'जीवा' वासतै, राधै जिम कुंज विहारी।

—अरजुणजी बारहठ

सुकनाधिप, सुकनाधिपत, सुकनाधिपति, सुकनाधिपती–सं.पु. [सं. शकुनः+अधिपति] पक्षिराज गरुड़।

उ०—वाळमीक पुळिंद रिखी वाणौ, कीधौ गुरु सुकनाधिप काणौ। भख अेंठित बोर करां कर भीलण, अेम घणां पद अप्पिया।

— र.ज.प्र.

सुकनासी - वि. [सं. शुक+नासिका] तोते की चोंच तुल्य नाक वाला, सुन्दर नाक वाला।

सं.पु.–तोते की चोंच तुल्य नाक।

सुकन्नी सं.स्त्री. [सं. सुकन्या] १ पुत्री, कन्या।

उ०—नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच। कन्ह कंवरि लाल सुकनी, आपी 'खेतळ' आच।—वं.भा

२ देखो 'सकुनि' (रू.भे.) (अ.मा.)

३ देखो 'सुगनी' (रू.भे.)

सुकन्या—सं.स्त्री. [सं.] १ च्यवन ऋषि की पत्नी और शर्याति राजा की कन्या।

२ अच्छी कन्या, शुभ गुणों वाली कन्या।

सुकपिच्छक—सं.पु. [सं. शुकपिच्छकः] गन्धक। (डि.को.)

सुकप्रिय, सुकप्रिया—सं.स्त्री. [सं. शुकप्रिय] अनार, दाड़म। (अ.मा.)

सुकमळाकारी—सं.पु.–एक प्रकार का शुभ लक्षणों वाला घोड़ा। (शा.हो.)

सुकमार—देखो 'सुकुमार' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

उ०—भांमणि रा सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय। जाण नाळ जळजात रा, कांम पताका काय।—वां.दा.

सुकमारता—देखो 'सुकुमारता' (रू.भे.)

उ०—अधर प्रवाळ सरीखा वणिया, दंत जांणै हीरां री कणियां। बांह जिकै तौ चंपा री डाळ, हात पग री सुकमारता जांणै कमळनाळ।—र. हमीर

सुकमाळ, सुकमाल—देखो 'सुकोमळ' (रू.भे.)

उ०—१ चंदवदण, अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ गरभ **सुकमाळ**।—ढो.मा.

उ०—२ कोईक कांमण मुख सूं इम कहै रे, दीसै नान्हड़ियौ **सुकमाल** रे। कुटुंब कबीलो किण विध छोडियौ रे, किण विध तोड़्यौ माया जाल रे।—जयवांणी

उ०—३ सोवन भारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल। लै आवै भावै घणै रे लाल, कांमणि अति **सुकमाल**। —प.च.चौ.

उ०—४ धनख ज्यूं ही भुंहरां री खंच, नासिका जि सूवा री ही चंच। अधर प्रवाली जिसा वणियां, दांत जांणै हीरां री कणियां। वांह तौ चंपा री डाल हाथ पग जिकै कमळ सूं ही **सुकमाल**।

—र. हमीर

सुकमाळी, सुकमाली—देखो 'सुकोमळ' (रू.भे.)

उ०—ए मदिर मालिया रे, ए **सुकमाली** सेज रे। कुंकुम वरणी मां सुंदरी रे, मति मूकौ अवला सूं हेज रे।—जयवांणी

सुकमुख—वि. [सं. शुक+मुखं] १ जिसका तोते के समान मुख हो।

२ टेढ़ा, कुटिल।* (डि.को.)

सं.पु.—तोते का मुख।

सुकर—सं.पु.—१ वरछी, भाला। (ना.डि.को.)

२ हाथ, कर। (डि.को.)

उ०—१ **सुकरै** गिर साहै सीस संवाहै. राखि व्रजं ब्रजराज। सुरलोकि सराहै मौ मन माहै, ताइ प्रभू सिरताज।—पि.प्र.

उ०—२ आकुळत व्याकुळत चलत नह आंवणौ, पीव किण भांत आरांम पांमै। **सुकर** दै सकरचा नैण मूंदै सची, नागणी नाग सिर घडा नांमै।—महारांणा राजसिंहजी रौ गीत

उ०—३ इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावण, कंपावण काळ विकराळ कै केवी। **सुकर** प्रतमाळ किरमाळ जुग सम्हणी, दिपै डाढाळ घटियाळ देवी।—खेतसी वारहठ

उ०—४ काळ गिरद अथहां कळोधर, प्रतपाळा बंधन महाराज। सुरियंद भूप 'अमर' निज **सुकरां**, भांजै कुरंद विया भाराथ।

—महारांणा अमरसिंहजी री गीत

वि.—१ सहज, सरल।

२ सहज साध्य।

३ देखो 'सुक्र' (रू.भे.)

उ०—१ आराधी ईसरि मंदै महेसरि, पैठिसै कीरति परमेसर। जंप सै जोगेसर **सुकर** सैनीछर, सस रुसेसर नै ससिहर।—पी.ग्रं.

उ०—२ वळि राजा छत्रिया वहनांमी, निविळै सै दोइ विख नाखि। एक कीयै तै इंदरै ऊपर, एक **सुकर** री काढी आंखि।

—पी.ग्रं.

उ०—३ **सुकर** छाई वादळी, रही सनेसर छाय। डंक कहै भडळी वा, वरस्यां विना न जाय। दीवा वीती पंचमी, सोम **सुकर** गुरु मूळ। डंक कहै है भडळी, निपजै सातू तूळ। सोमां **सुकरां** सुर गुरां, जै चंदौ ऊगंत। डंक कहै है भडळी, जळ थळ एक करंत।

—वर्षा विज्ञान

४ देखो 'सूवर' (रू.भे.)

रू.भे.—सुकरि।

सुकरणी—सं.पु. [सं. सु—कर्मन्] अच्छे कर्म, अच्छे कार्य, शुभ कार्य।

उ०—करौ कथ केवळी, करौ सत सील **सुकरणी**। करौ जीभ जीकार, करौ उदिया घट करणी।—सुरजनदास पूनियौ

सुकरत—देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

उ०—१ अवनी मैं जिकै भलाई आया, करै सदा **सुकरत** रा कांम। दांन सदा वित साह देवै, नित रसणा लेवै हरिनांम।

—र.ह.

उ०—२ निसचर! पाप कियां जै सुख हुवै, रावण! **सुकरत** करै न कोय। अभिमांनी कुमती रे, निसचर कुमती, म्हारा प्रांणा रा प्रीतम सूं, म्हारा सुखड़ा रा सागर सूं विछवौ थैं कीयौ।

—गी.रां.

उ०—३ नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर। **सुकरत** करण सदीवत, सोहत श्री करत सत पुरस।

—र.ज.प्र.

सुकरतळ—सं.पु.—छप्पय छन्द का ४५वां भेद जिसमें २६ गुरु, १०० लघु से १२६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र.ज.प्र.)

सुकरति, सुकरती—देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

उ०—धीरम, धरिया ही रह्या, का पुरसां का माल। **सुकरति** सोदा कर गया, जै साई का लाल।—अग्यात

सुकरम—सं.पु. [सं. सुकर्मन्] अच्छा कार्य, सत्कर्म।

सुकरमा—सं.पु. [सं.वि. सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला, पुण्य-कार्यकर्त्ता व्यक्ति।

२ विषकभ आदि सत्ताईस योगों में से सातवां योग। (ज्योतिष)

३ विश्वकर्मा।

४ विश्वामित्र।

सुकरमी—वि. [सं. सुकर्मी या सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला।

२ पुण्यवंत कार्य करने वाला, पुण्यात्मा।

३ सदाचार का पालन करने वाला, सदाचारी।

रू.भे.—सुक्रमी।

सुकरवार—देखो 'सुक्र' (रू.भे.)

सुकरांणौ—सं.पु.—१ किसी कार्य के सम्पन्न होने पर कार्य-सम्पादन में सहायकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के शब्द।

२ उक्त कृतज्ञता या धन्यवाद के रूप में दिया जाने वाला धन।

३ राजाओं या जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष।

वि.वि.—यह कर आवादी की भूमि का पट्टा (अधिकार-पत्र) करने

पर राजा या जागीरदार द्वारा भूमि-क्रेता से वसूल किया जाता था, जो प्रायः विक्रय-मूल्य के दसवे भाग के बराबर होता था।

रू.भे.—सरगाणी।

सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारी, सुकराचारज—देखो 'सुक्राचारज' (रू.भे.)

सुकरि—क्रि.वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

२ देखो 'सुकर' (रू.भे.)

सुकरियप्रसट—सं.पु.—सूर्य, भानु (अ.मा.)

सुकरिया—देखो 'सुक्रिया' (रू.भे.)

सुकलंबर, सुकलंबरा—देखो 'सुक्लांबर' (रू.भे.)

सुकळ, सुकल—वि. [सं. सुकल] १ अपने धन का सद्व्यय करने वाला।

२ कोमल, मधुर एवं अस्फुट स्वर करने वाला।

[सं. शुक्ल] ३ साफ, स्वच्छ, उज्ज्वल। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—बोलति मुहुरमुह विरह गमै बै, तिमी सुकळ निमि सरद तणी। हमणी नै न पामै देखै हंस, हंस न देखै हंसणी।

—वेलि

४ श्वेत, सफेद, धवल। (डिं.को; ह.नां.मा.)

५ चमकीला, चमकयुक्त।

६ सत्व गुणों से सम्बन्धित, सात्विक।

७ दोषरहित, निर्दोष।

८ शुभ, लाभकर।

९ पवित्र, उत्तम।

उ०—अनंत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति सुख विलास। अनंत वीरज अनत धीरज, अनंत सुकल ध्यांन री।

—म.कु.

१० प्रकाशमान, प्रकाशयुक्त।

स.पु.—१ ब्राह्मणों की एक पदवी।

२ देखो 'सुकळपख' (रू.भे.)

उ०—चिन्है पख क्रम्मा सुकल निधांन, चिन्है वपु अंग सुदक्षिण वांम। ब्रह्मा दक्षण अग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।

—रा. वंसावळी

३ घोड़े के तालु कण्ठ में होने वाली भंवरी (चक्र) जो कि अति शुभ व कीर्ति प्रदीपनी मानी गई है। (शा.हो.)

रू.भे.—सुक्र।

सुकळपंग, सुकळपांग—देखो 'सुक्लांग' (रू.भे.) (नां.मा.)

सुकळपक्ष, सुकळपख, सुकळपख्य—सं.पु. [सं. शुक्ल पक्ष] प्रत्येक पक्ष का उत्तरार्द्ध भाग, सुद पक्ष, इसमें प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का समय होता है। एवं चन्द्रमा की कलायें प्रतिदिन बढ़ती रहती है।

उ०—माह मास ऋतमांन, अरक बैठो उत्तराइण। सुकलपख्य तिथि सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि।—रा.रू.

रू.भे.—सुकळ, सुक्ल, सुक्लपक्ष, सुक्लपख।

सुकळांग, सुकलांग—वि. [सं. शुक्ल+अंग] १ गौर वर्ण।

उ०—निकाळण वंक जरमन तणौ नीह थी, बवर अणसंक पतसाहचे बैल। अपत सुकलांग कोमंड सर नीछटण, उवह पत लंदन तै रूप ऊभेल।—किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'सुक्लांग' (रू.भे.)

सुकळांवर, सुकळांबरा, सुकळा अंबर—देखो 'सुक्लांबर' (रू.भे.)

उ०—वीणाप सक्त हात वीसाळो, सुकळा अंबर आणंद सीदी। मुकतागळ जयै उजळ माळौ, सारद तुज नीमांमी नमस्तै।

—रांमदांन लाळस

सुकळापंग, सुकळापांग देखो 'सुक्लांग' (रू.भे.) (अ.मा; नां.मा.)

सुकळी—सं.स्त्री. [सं. शकुलिन्] मछी, मछली। (अ.मा.)

सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणौ, सुकलीणौ, सुकलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू.भे.)

उ०—१ जै सुकलीण साहसी, सुवां न मूकै मांण। सगतक उपराठौ हुग्री, तणौ विसंलहू आंण।—बां.दा. ख्यात

उ०—२ प्रसणां घर धुसतै 'पतावत', सवळ बरद लीधा सुकळीण। 'जोधा' रहै वगतरां जड़िया, जड़ीया रहै व्रहासां जीण।

—माधोसींघ री गीत

उ०—३ अणदीधौ लीजै नणौ, तौ ही अदत्तादांन रे। एम विचारी परि हरै सुकलीणौ कुमर सुजांण रे।—वि.कु.

उ०—४ धन दिहाड़ौ धन घड़ी, धन मुहरत धन वार। सुकळीणी सुंदर तणी, सायव पूछी सार।—अग्यात

उ०—५ मोल सणगार सभि करी, सुकलीणी सुविलासौ रे। जांणै भळकी वीजली, आवी प्रीउ नै पासौ रे।—प.च.चौ.

(स्त्री. सुकळीणी, सुकलीणी, सुकलिनी)

सुकळीपांग—देखो 'सुक्लांग' (रू.भे.)

सुकळौ, सुकलौ—देखो 'सुकुळीण'।

उ०—पांहण कुं पूजै दुनी, करि करि कुळ का देव। हरिया सुकळा छाडिकै, करि निकुला की सेव।—अनुभववांणी

सुकव—देखो 'सुकवि' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—मथांण्यौ भाग धिन क्रपा फुरमावियौ, तोर वाधवियौ सुकव ताई। मांम्हळै वीनती धावियो सुरांणी, बैठ रथ आविया उठै वाई।—खेतसी बारहठ

सुकवाह, सुकवाहण, सुकवाहन—स.पु. [स. शुकवाहन] तोते पर सवारी करने वाला, कामदेव।

सुकवि, सुकवी सं.पु. [सं. सुकवि] १ उत्तम काव्यकर्त्ता, अच्छा कवि। (डिं.को.)

२ चारण।

उ० १ केईथोक निहीं नन पार कोड, मरव भ्रात माची मिहीं। किमि करि प्रणांम कीजै सुकवि, नरहर रै इतरी निहीं।—पी.ग्रं.

उ०—२ मारूधर देस रै मांही, सुकव्यां सुड़द बसाई। रतनू साख

लाख रंग लागै, कुळ मैं कसर न काई।—मे.म.

उ०—३ अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह सीमा। पूरण उरस पुरांण प्रमेसर, सुकवि सधार वार अग्रेस्वर।

—रा.रू.

३ पण्डित। (ह.नां.मा)

रू.भे.—सकव, सकवि, सकवी, सुकव।

सुकसार—सं.स्त्री.—मछी, मछली। (अ.मा.)

सुकसारकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापन—सं.पु. [सं. शुक सारिका प्रलापनः] १ तोता-मैना को पढ़ाने की क्रिया।

२ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

सुकाज—सं.पु. [सं. सुकार्य] १ भलाई, उपकार।

उ०—१ मासी कह्यौ—थूं म्हनै अैड़ी अबूझ जांणै है कांई। किंणी दूजा रै भरोसै म्हैं थनै आ सीख नीं दी। म्हनै सपना मैं ई औ पतियारौ नीं हौ कै म्हारौ धन **सुकाज** सारू वरतीजैला।

—फुलवाड़ी

२ यश, कीर्ति। (अ.मा.)

३ अच्छा कार्य।

क्रि.वि.—लिए, हेतु।

उ०—महा दिय मांन करि गुह मीत, तारै सह कीर कुटुम्ब सहीत। करै कपि मित्र सुग्रीव **सुकाज**, रहच्चै वाळि दियौ कपि राज।

—ह.र.

रू.भे.—सुकारज।

सुकाणौ, सुकावौ देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू.भे.)

उ०—भीना चीर **सुकायवा**, रईय गुफा मैं राजुल रंग कि। रहनै मैं काउसंग रह्यौ, अवलोकी कह्यौ सुंदर अंग कि।—ध.व.ग्रं.

सुकाणहार, हारौ (हारी), सुकाणियौ—वि०।

सुकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुकाईजणौ, सुकाईजबौ—कर्म वा०।

सुकात—वि.—नष्ट होने वाला, नश्वर।

उ०—काळ हैं कराळ औ कराळ भाभरचौं, दूसरै मरै विहाल हूं ढरचौं। यादि तैं **सुकात** गात जात जी जरचौं, पाहि मां अचाहि आहि आपनां मरचौं।—ऊ.का.

सुकातज, सुकातिज—सं.पु. [सं. शुक्तिज] मोती।

सुकाय—वि.—१ बड़े आकार का, दीर्घकाय।

२ सुन्दर व श्रेष्ठ शरीर वाला।

३ दृढ़, मज़बूत, सशक्त।

उ०—नमौ प्रहळाद उवारण प्रम्म, नमौ अग कासव मारण भ्रम्म। नमौ कमठाधर रूप **सुकाय**, नमौ मंदराचळ पीठ भ्रमाय।

—ह.र.

सुकायोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकायोड़ी)

सुकारज—देखो 'सुकाज' (रू.भे.)

सुकारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

सुकारथौ—देखो 'सुक्यारथौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकारथी)

सुकाळ, सुकाल—सं.पु. [सं. सुकाल] १ दुष्काल का उलटा, सुभिक्ष।

उ०—अभै नद त्रास न आस निरास, वस्यौ हरिरांम अभै पद वास। दुरासद मारन त्रास दुकाळ, सुधा झड़ि बारह मास **सुकाळ**।

—ऊ.का.

२ वह समय जो अन्न आदि की उपज की दृष्टि से उत्तम व अनुकूल हो।

उ०—पोकरण **सुकाळ** हुवै नै सखरी नीपजै तौ रुपिया १५०००) ऊपजै नै पातसाही तरफ मुनसब मैं दांम लाख ८००००००) में छै। तिण रा रुपिया २०००० हुवै।—मारवाड़ री ख्यात

३ प्रचुरता, बहुतायत।

रू.भे.—सक्काळ, सुगाळ।

सुकावणौ, सुकावबौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू.भे.)

सुकावहार, हारौ (हारी), सुकावणियौ—वि०।

सुकाविप्रोड़ौ, सकावियोड़ौ सुकाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुकावीजणौ सुकावीजबौ—कर्म वा०।

सुकावियोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकावियोड़ी)

सुकित्ति—देखो 'सुकीरति' (रू.भे.)

उ०—गुमांन मोड़ि हत्थ जोड़ि देव कोड़ि वग्ग ए, अनूप भूप चूंप धारि आइ पाइ लग्ग ए। पहू बहू **सुकित्ति** नित्त सव्व सोभ लायकं, प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायकं।—ध.व.ग्रं.

सुकिय—देखो 'स्वकीय' (रू.भे.) (डिं.को.)

सुकिया—देखो 'स्वकीया' (रू.भे.) (डिं.को.)

उ०—१ **सुकिया** मिळ जूथ अनेक करै सुख, रवि नांम नरंद सुरच्छंद तणी रुख। चत्र जांम वितीत उदोत जगाचख, सझि रीझ विदा किय तीस छहै सख।—सू.प्र.

उ०—२ सझि बत्तीस नव सात, मिळै **सुकिया** जुथ मेळा। वांणी कोकिळ विमळ, चवै चंदवदन सचेळा।—सू.प्र.

उ०—३ **सुकिया** समूंह मिळ नेह सुख, व्रत गायन आणंद मैं। सुरराज जेम नरराज सुख, 'अभमाल' राजस इंद मैं।

—सू.प्र.

उ०—४ वाजंत्र वजत विसाळ, रस रागरग रसाळ। मिळ भूळ **सुकिया** वांम, क्रत रूप रति जिम कांम।—सू.प्र.

सुकियाग्ररथ, सुकियारथ, सुकियारथौ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

उ०—१ जिण दिन रघुवर जंपै, **सुकियाग्ररथ** दिवस सोय नर संभळ। दखै न राघव जिण दिन, जांणै सोय आळजंजाळ।

—र

उ०—२ ... जनम सुकियारथउ रै, भेट्यां नीजिनराय। प्रभु ... ... न थाय।—वि.कु.

उ०—३ ... ... कामिज मिध, परमगुरु चा ग्रहिया ...। ... ... मिळि, जनम सुकियारथ हूत्रौ जगि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ ... ... भुंग उपरि भुवियां घणां। सुकियारथा ..., ... देवजी।—वील्होजी

उ०—५ ... गयो सुकियारथो, उणि सुंदरि अरथाय। सीस ... ..., सीत महे सिर जाय।—मेहोजी गोदारो

(स्त्री. सुकियारथी)

सुकिरत, सुकिरति सुकिरित सुकिरिति—देखो 'सकीरति' (रू.भे.)

उ०—... होवें तो सुकिरिति करिया, जरणा रैं वातां सहि ...। ... ... ममता थी ..., श्रीकम सां कितराई तरिया।
—पी.ग्रं.

सुकीय—देखो 'स्वकीय' (रू.भे.)

सुकीया—देखो 'स्वकीया' (रू.भे.)

उ०—... ... सुकीया सुंदरीया, चँवँ कवर परगह सुचोख। ... ... नर अवरां, दीठा तियां वळागो दोख।
—तेजसी खिड़ियो

सुकीरत, सुकीरति, सुकीरती—स.स्त्री. [स. सुकीर्त्ति] १ सुयश, यश, कीर्त्ति।

२ तारीफ़, बड़ाई, सराहना।

उ०—सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध ... पाज रे। जनां निवाह लाज रे, रहै अधार राज रे।—र.ज.प्र.

रू.भे.—सुकित्ति, सुकिरत, सुकिरति, सुकिरित, सुकिरिति।

सुकुंडल—सं.पु. [स.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र।

सुकुड़णो, सुकुड़बो—देखो 'सिकुड़णो, सिकुड़बो' (रू.भे.)

सुकुड़णहार, हारो (हारी), सुकुड़णियो—वि०।

सुकुड़िओड़ो, सुकुड़ियोड़ो सुकुड़्योड़ो—भू०का०कृ०।

सुकुड़ीजणो, सुकुड़ीजबो—भाव वा०।

सुकुड़ाणो, सुकुड़ाबो—देखो 'सिकुड़णो, सिकुड़बो' (रू.भे.)

सुकुड़ाणहार, हारो (हारी), सुकुड़ाणियो—वि०।

सुकुड़ायोड़ो—भू०का०कृ०।

सुकुड़ाईजणो, सुकुड़ाईजबो—भाव वा०।

सुकुड़ायोड़ो—देखो 'सिकुड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकुड़ायोड़ी)

सुकुड़ावणो, सुकुड़ावबो—देखो 'सिकुड़णो, सिकुड़बो' (रू.भे.)

सुकुड़ावणहार, हारो (हारी), सुकुड़ावणियो—वि०।

सुकुड़ाविओड़ो, सुकुड़ावियोड़ो, सुकुड़ाव्योड़ो—भू०का०कृ०।

सुकुड़ावीजणो, सुकुड़ावीजबो—भाव वा०।

सुकुड़ावियोड़ो—देखो 'सिकुड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकुड़ावियोड़ी)

सुकुड़ियोड़ो—देखो 'सिकुड़ियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुकुड़ियोड़ी)

सुकुति—देखो 'सुक्ति' (रू.भे.)

सुकुनभेंट—सं.पु.—१ एक प्रकार का सरकारी कर विशेष जो अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर शुभ शकुनों के रूप में लिया जाता था।

२ रस्मीतौर पर शकुन के रूप में दी जाने वाली वस्तु या धन।

रू.भे.—सकुनभेंट, सुकनभेंट।

सुकुनि, सुकुनी—१ देखो 'सकुनि' (रू.भे.) (डिं.को.)

२ देखो 'सुगनि' (रू.भे.)

सुकुमार—वि. [सं.] १ कोमल, नाज़ुक।

उ०—मैं सुकुमार खड़ी कांपत हौं, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरै चरणकमळ बळिहारी रे।—मीरां

२ सुन्दर।

३ चिकना, स्निग्ध।

स.पु.—१ नाज़ुक लड़का या बाल।

२ युवा पुरुष, जवान।

३ मेरु पर्वत के नीचे का वन।

४ स्वामी कार्त्तिकेय का नाम। (अ.मा.)

५ ईख।

६ शाकद्वीप के जलधार पर्वत के निकट का एक वर्ष।

७ काव्य का एक गुण।

८ चम्पा का वृक्ष या फूल। (अ.मा.)

रू.भे.—सुकमार, सुकुमाल।

सुकुमारता—सं.स्त्री. [सं.] १ सुकुमार होने का गुण, अवस्था या भाव।

२ कोमलता, नाज़ुकता।

रू.भे.—सुकमारता।

सुकुमारवन—सं.पु. [सं.] सुमेरु के निकटस्थ का एक वन जो शङ्कर-पार्वती का क्रीड़ा-स्थल माना जाता है।

सुकुमारी—सं.स्त्री. [सं.] १ पुत्री, बेटी।

२ सुन्दर कन्या, सुन्दर लड़की।

३ कुमारी कन्या।

४ कोमल व नाज़ुक अङ्गों वाली युवती।

५ चमेली।

६ ईख।

७ शङ्खिनी नामक औषधि।

८ नारद की पत्नी व सृञ्जय राजा की पुत्री का नाम।

९ परीक्षित-पुत्र राजा भीमसेन की पत्नी का नाम।

१० शाकद्वीपीय अनुतप्ता नामक नदी का नामान्तर।

वि.—जिसके अङ्ग कोमल हों, कोमलाङ्गी।

सुकुमाल—देखो 'सुकुमार' (रू.भे.)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ **सुकुमाल** रे। आज सहइ तै परिसहा, भूख त्रसा नित काल रे।—स.कु.

सुकुळ—सं.पु. [सं. सुकुल] १ उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश।

२ अच्छा घराना, प्रतिष्ठित परिवार।

३ उत्तम जाति, उच्च वर्ण।

सुकुलीण, सुकुळीणौ, सुकुलीणौ, सुकुलीन—वि. [स. सुकुलीन] (स्त्री. सुकुलीणी, सुकुलीनी, सुकुलीणी) १ श्रेष्ठ कुल या उत्तम वंश में जन्मा, उच्च कुल का, कुलीन।

उ०—१ सुंदर **सुकुलीणी** भीणीं साड़ी मैं, जुलफां सपणीं, जिम अपणी आड़ी मैं।—ऊ.का.

उ०—२ मूंछ केस खंडत नहीं, नाक न खंडत कोर। पड़ी पुळंतां पाघड़ी, **सुकुळीणी** तज सोर।—बां.दा.

उ०—३ राजुल चाली रंग सुं रे लाल, यदुपति वंदण जाइ **सुकुलीणी** रे। मेह सु भीनी मारगै रे लाल, ऊभी गुफा मांहै आइ सुकुलीणी रे।—स.कु.

२ अच्छे नस्ल का, नस्ली।

रू.भे.—सकलीण, सकलीणौ, सकलीन, सकुलीण, सकुलीणौ, सकुलीन, सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणौ, सुकलीणौ, सुकलीन, सुकळौ, सुकलौ।

सुकुसुमा—सं.स्त्री. [सं.] स्कंद की एक मातृका।

सुकुसुमाकर—सं.पु.—छप्पय छंद का ६७वाँ भेद जिसमें ४ गुरु, १४४ लघु से १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। इसको कुसुम भी कहते हैं। (र.ज.प्र.)

सुकेड़ो—देखो 'सुखेड़ी' (रू.भे.)

सुकेतु—सं.पु. [सं.] १ ताड़का नामक राक्षसी का पिता एक असुर।

२ पाण्डव पक्षीय एक राजा जो चित्रकेतु राजा का पुत्र था व कृपाचार्य के साथ युद्ध करते हुवे मारा गया था।

३ ताड़का राक्षसी का पुत्र व सुबाहु राक्षस का भाई एक राक्षस का नाम।

४ कपिल ऋषि के शाप से बचा हुआ एक सगर-पुत्र।

५ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक पुत्र दानव।

सुकेस—सं.पु. [सं. सुकेश] विद्युत्केश व सालकंटका के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र राक्षस जो राक्षस होते हुवे भी पवित्र जीवन जीता था व धर्मनिष्ठ थे।

सुकेसि, सुकेसी—सं.पु. [सं. सुकेशि] एक राक्षस जो विद्युत्केशि नामक राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान, सुमाली व माली नामक राक्षसों का पिता था।

सं.स्त्री. [सं. सुकेशी] १ लम्बे, घने एवं सुन्दर केशों वाली स्त्री।

२ विराट नरेश की पत्नी का नाम।

३ अलकापुरी की एक अप्सरा जिसने अष्टावक्र के स्वागत में नृत्य किया था।

४ कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

५ परी, अप्सरा। (अ.मा; डिं.नां.मा; नां.मा.)

६ मगध-नरेश केतुवीर्य की पुत्री व मरुत्त (तृतीय) की पत्नी का नाम।

वि.स्त्री.—सुन्दर व सुकोमल बालों वाली।

सुकोमळ, सुकोमल—वि. [सं. सु कोमल] (स्त्री. सुकोमळी, सुकोमली)

१ अत्यन्त सुन्दर, कोमल, नाजुक, मनोहर।

उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, **सुकोमळी** जु सुकच्छ। गोरी गंगा नीर ज्यूं, मन गरवी तन अच्छ।—ढो.मा.

२ मुलायम, नरम।

३ धीमा, मन्द।

४ प्रिय, मधुर।

रू.भे.—सुकमाळ, सुकमाल, सुकमाळी, सुकमाली।

सुक्क—१ देखो 'सुक' (रू.भे.)

२ देखो 'सुक्र' (रू.भे.)

उ०—होळी **सुक्क** सनीचरी, मंगळवारी होय। चाक चहोड़ै मेदनी, विरळा जीवै कोय।—अग्यात

सुक्कर—१ देखो 'सुक्र' (रू.भे)

उ०—समत सर विक्रम छत्तीस कम वै सहस, मास आसाढ़ तिथि सुकल नौमी। वार **सुक्कर** नखत स्वांति संध्या वखत, भवांनी ओतस्या खुड़द भोमी।—मे.म.

२ देखो सुक्र' (५) (रू.भे.)

३ देखो 'सुकर' (रू.भे.)

सुक्करवार—देखो 'सुक्रवार' (रू.भे.)

उ०—उजवाळी वैसाख री, छठी गुर **सुक्करवार**। मुहकमसिंघ 'कल्यांण' तणा, रिण जीपौ वड वार।—रा.रू.

सुक्किया—देखो 'स्वकीया' (रू.भे.)

उ०—रमै हसै नरिंदरं, मझार राज मिंदरं। करै उछाह **सुक्किया**, पचास सातसै प्रिया।—सू.प्र.

सुक्ख—देखो 'सुख' (रू.भे.)

उ० – क्षुल्लक रिखि बोल्यउ खरउ, दीक्षा मांहि दीठा दुक्ख रे। आज आधउ राज लेईनइ, संसार ना भोगवुं **सुक्ख** रे।—स.कु.

सुक्खम—देखो 'सुक्षम' (रू.भे.)

उ०—नहीं तू बाळ न ब्रद्ध न मूळ, नहीं तू थावर **सुक्खम** थूळ।
—ह.र.

सुक्खेण—देखो 'सुखेण' (रू.भे.)

उ०—कपी बीस कीड़ेक **सुक्खेण** कीधा, दिसा पाछिम सोधिवा लार दीधा।—सू प्र.

सुक्खौ—देखो 'सुख' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—गज ना गाज हठा नहीं,तुच्छ छड नेहना सुक्ती जी। भेदन भिन्न तृष्णा, नर तणां बहु दुखी जी।—स.कु.

सुक्त—सं.पु.—मोती (नां.मा.)

सुक्तज—देखो 'सुक्तिज' (रू.भे.)

सुक्ति, सुक्ती—सं.स्त्री. [सं. शुक्ति] १ सीप। (डि.को.)

२ शंख।

३ घोंघा।

४ खोपड़ी का भाग विशेष।

५ घोड़े की गर्दन या छाती की भौरी।

६ गन्ध द्रव्य।

रू.भे.—सुकुति।

सुक्तिज—सं.पु. [सं. शुक्तिजं] मोती, मुक्ता।

रू.भे. सुकतज, सुकतिज, सुक्तज।

सुक्यारथ—क्रि.वि. [स. सु-कार्यार्थे] १ किसी उत्तम कार्य के लिए, शुभ कार्य हेतु, सद् उद्देश्य से।

उ०—बिहु तजै जळ धरा, तजै संसार सुक्यारथ। मरणौ मंगळ जांण, जाण जीवणौ अकारथ।—साहिबो सुरतांणियौ

वि.—२ सार्थक, सफल।

उ०—१ विधवा राजपूतांणी री उण बेटी नै सोळवौ वरस कांई लागौ, जांणै विरमाजी री सिरजण सुक्यारथ व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थकै कैवण लागौ—पण थांरै माईतां रौ गुण म्हैं जीवूं जित्तै नीं विसरूंला। जै थांरा माईत थांरै सागै औ आंटौ नीं साजता तौ म्हारी जूंण कीकर सुक्यारथ व्हेती।—फुलवाड़ी

३ सद् उपयोग।

रू.भे.-सुकारथ, सुकियाअरथ, सुकियारथ, सुकीयारथ, सुक्यारत, सुक्यारथ, सुक्रियथ।

सुक्यारथौ—वि. [स. सु-कार्यार्थी] (स्त्री. सुक्यारथी) १ जो सद्-उद्देश्य से कोई कार्य करता हो, शुभ कार्य करने वाला, उत्तम कार्य करने वाला।

२ सार्थक, सफल।

उ० —१ बीठू सज्जन मन वस्या, ज्यासुं लागो चित्त। सोई घड़ी सुक्यारथी, जाय मिळीजै मित्त।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ० —२ रांम नांम सदा वाणी, रांम नांम सदा कथा। रांम नाम सदा सब्दं, तैं सबद सुक्यारथा।—ह.र

३ सद्-उपयोग करने वाला।

रू.भे.—सुकारथ, सुकारथौ, सुकियाअरथ, सुकियारथ, सुकारथी, सुकियारथी, सुकियारथौ।

सुक्र—स.पु. [स. शुक्र.] १ अग्नि देव का एक नाम।

(डि.को; ह.ना.मा.)

२ आग, अग्नि।

उ०—अग्नि थावक आविया,सस्त्र साजिया सतावी। माणा चढ़िया सुक्र, फूल झड़िया हद फावी।—मे.म.

३ सौर मण्डल के नवग्रहों में से एक ग्रह, जो सूर्य के सबसे अधिक निकट है, शुक्र ग्रह। (अ.मा.)

उ०—१ मंगळ बुद्ध मयंक, वळै सनि सुक्र ब्रहस्पति। राहु केत रिख अरुण, नवै ग्रह सांति करै नित।—ह.र.

उ०—२ सुकीर नासिक सरूप, वेस रीत राजियै। सुरू गुरू र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू.प्र.

उ०—३ पांचमैं भवन ससि सुक्र पेखि। दाखै कवि जातक-भरण देखि।—सू.प्र.

४ शुक्राचार्य ऋषि जो दैत्यों के गुरू थे। शिव से इन्होंने मृत-संजीवनी विद्या प्राप्त की थी। वामन अवतार के समय दैत्यराज बलि के द्वार पर इन्होंने अपनी एक आंख खो दी थी।

उ०—१ चक्री-पीवणौं पाय भाई बचायौ, क्षुधाळी हणैं हेक हेरंब खायौ। चढी ज्यां थकै तेमड़ो सुक्र चेलो, भुजां झोक कीधो पित्रांलोक भेळौ।—मे.म.

उ०—२ तुही हाथ लै सूळ सादूळ हक्कै, अगां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे.म.

पर्याय०—उसना, कवि, चखएक, दनुप्रोहिता, भारगव, विद्या-सजीवण, हिरणगरभ।

५ सात वारों में से एक वार जो गुरुवार के बाद तथा शनिवार के पहले पड़ता है।

उ० - दत्त माहाराज जसवंतसिंघजी रौ कुंवर प्रथीसिंघ री वारैट नाथा रतनसीयोत रोहड़ीया नुं। संमत १७१५ रा फागण सुद ७ सुक्र दीयौ। - नैणसी

६ जैनियों के ८८ ग्रहों में से बयालीसवां ग्रह।

७ ज्येष्ठ मास का एक नाम।

[सं. शुक्रम्] ८ पुरुष का वीर्य या धातु। (डि.को.)

उ०— असुच अपवित्र सूगावणा है. मनुस्य तणा कांम भोग। वाय पित्त श्लेसमाए, सुक्र सोणित स्रवै रोग।—जयवांणी

९ किसी वस्तु का सार, तत्व, सत। (डि.को.)

१० रस।

११ निष्कर्ष, परिणाम।

[अ.] १२ धन्यवाद, आभार, कृतज्ञता।

उ०— हे दरवेस मैं सुक्र करतौ थौ तौं सूं थारै जवाब री गफलत हुई।—नी.प्र.

वि. [सं. शुक्रः] १ चमकीला, चमकदार।

२ उज्ज्वल, स्वच्छ।

३ एकाक्षी, काना।

४ श्वेत। (डि.को.)

रू.भे.—सुकर, सुक्क, सुक्कर, सूकर।

सुक्रकर—सं.पु. [सं. शुक्रकरः] मज्जा (डि.को.)

सुक्रगुजार—वि. [अ. शुक्र+फा. गुजार] आभार मानने वाला, कृतज्ञ, धन्यवाद देने वाला।

सुक्रत—सं.पु. [सं. सु-कृतं] १ दान, पुण्य, धर्म आदि सत्कर्म, पुण्य-कार्य। (अ.मा; डिं.को.)

उ०—१ सुक्रत लगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन सुख रासी। सनमुख संपत लगत अग्नि सी, पराधीन दुख पासी।—ऊ.का.

उ०—२ पिंड पड़ैं पुन ना पड़ैं, परळै पतित न होय। रज्जब, संगी जीवका, सुक्रत सिवाय न कोय।—रज्जब वांणी

उ०—३ जगतसिंह वडौ दातार विवेकी ठाकुर हुवौ. कळजुग मांहै वडा वडा सुक्रत कीया। वडा वडा दांन कीया।—नैणसी

[सं. सुकृत] २ परोपकार, भलाई।

३ इन्द्रासन। (नां.मा.)

वि. [सं. सुकृत्] १ भाग्यवान।

२ धर्मशील, धर्मात्मा।

३ परोपकार, भलाई करने वाला, परहितैषी।

४ दानशील।

[सं. सुकृत] भली-भाँति किया हुआ, भली-भाँति बनाया हुआ।

रू.भे.—सुकरत, सुकरति, सुकरती, सुक्रती, सुक्रत्य, सुक्रित, सुक्रिथ।

सुक्रतकरम—सं.पु. [सं. सुकृत-कर्म] १ दान, पुण्य, धर्म, भलाई, परोपकार आदि सत्कर्म।

२ शुभ कार्य, उत्तम कार्य।

सुक्रति, सुक्रती—१ देखो 'सुक्रत' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

२ देखो 'सुक्रत्य' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुक्रतु—सं.पु. [सं. सुक्रतुः] १ अग्नि, आग।

२ शिव, महादेव।

३ इन्द्र।

४ मित्र, वरुण, सूर्य, सूरज।

सुक्रत्य—सं.पु.—१ ऋषि, तपस्वी, मुनि। (अ.मा.)

२ देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

सुक्रमण—सं.पु.—दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य। (अ.मा.)

सुक्रमी—देखो 'सुकरमी' (रू.भे.)

सुक्रवार—सं.पु. [सं. शुक्र-वार, वासर] सप्ताह का एक दिन जो वृहस्पतिवार के बाद तथा शनिवार के पहले पड़ता है।

रू.भे.—सुक्करवार।

सुक्रसिख, सुक्रसिस—सं.पु. [सं. शुक्र-शिष्य] शुक्राचार्य के शिष्य दैत्य, असुर। (अ.मा; डिं.को; नां.मा.)

सुक्रांम—सं पु.—इन्द्र। (अ.मा; नां.मा.)

सुक्राचारज, सुक्राचारी, सुक्राचारय्य, सुक्राचारच—सं.पु. [सं. शुक्राचार्य] दैत्यों व असुरों के गुरु शुक्राचार्य जो महर्षि भृगु के पुत्र थे। (अनेका.)

रू.भे.—सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारच।

सुक्रित, सुक्रिथ—देखो 'सुक्रत' (रू.भे.)

उ०—१ क्रन रा भोज सुक्रित रा क्यावर, वित व्रवण अछत रा वीर। दत रा करण रजत रा दाता, खित रा रूप प्रक्रत रा खीर।—आईदांन पाल्हावत

उ०—२ जीव गयौ दहवाट, कारिज कौ सरीयौ नही। जनहरीया हरि हाट, सुक्रिथ सौदा नां कीया।—अनुभववांणी

सुक्रियथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

उ०—मांडै पूजा तूझ महणमथ, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।—ह.र.

सुक्रिया—सं.पु. [अ. शुक्रिया] आभार प्रदर्शन, धन्यवाद देने की क्रिया।

रू.भे.—सुकरिया।

सुक्रीड़ा—सं.स्त्री. [सं.] १ एक अप्सरा का नाम।

२ अच्छा खेल।

सुक्रीत—वि. [सं. सुकीर्ति] जिसका सुयश हो, वीर, बहादुर। (अ.मा.)

सुक्रोध—देखो 'सक्रोध' (रू.भे.)

उ०—'जुंझार' सुतन 'उमेद' जोध, कोपियौ प्रळय पावक सुक्रोध।—शि.रू.

सुक्ल—सं.पु. [सं. शुक्ल] १ ब्रह्मावीसी का तीसरा वर्ष। (ज्योतिष)

२ देखो 'सुकलपख' (रू.भे.)

उ०—प्रणम्मौ समौ च्यार छै नौ पहोमी। नमौ मास आसाढ री सुक्ल नोमी।—मे.म.

सुक्लता—सं.स्त्री. [सं. शुक्ल-ता] १ शुक्ल होने की अवस्था या भाव।

२ सफेदी, श्वेतता।

३ उज्ज्वलता, स्वच्छता।

४ चमक, आभा।

सुक्लपक्ख, सुक्लपक्ष, सुक्लपख—देखो 'सुकळपंख' (रू.भे.)

सुक्लमास—सं.पु.—ज्योतिष के २७ योगों में से एक योग। (ज्यो. वा. बो.)

सुक्लांग—सं.पु. [सं. शुक्ल+अंग या अपांग] मोर, मयूर।

रू.भे.—सुकळंपंग, सुकलपांग, सुकळांग, सुकलांग, सुकळापंग, सुकळापांग, सुकळीपांग, सुक्लापांग, सुखलापांग।

सुक्लांबर, सुक्लांबरा—सं.स्त्री. [सं. शुक्ल-अंबरा] सरस्वती, शारदा।

रू.भे.—सुकल अंबर, सुकलंबरा, सुकलांबर, सुकलांबरा।

सुक्लापांग—देखो 'सुक्लांग' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुक्षम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

सुखंकरी—सं.स्त्री.—जीवंती, डोडी।

सुखंडज—सं.पु. [सं. शिखंडज] वृहस्पति। (अ.मा.)

सुखंद—देखो 'सुखद' (रू.भे.)

सुखंम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—तणौ हेत चित मात, रह्या घरि बैसि मया करि। सुखंम सेन्न दरहरी, ग्राव नुतौ तिणि सायरि।—वि.सं.सा.

सुख—सं.पु. [सं.] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति, जिसमें वह मानसिक व शारीरिक कष्टों से मुक्त रहकर उत्साहित व संतुष्ट रहता है और इस दशा के बराबर बने रहने की आशा करता है। शान्ति, आराम, दुःख का विपर्याय। (डि.को.)

उ०—१ सोळैई थांन अचळ इंद्रीसुर, अति सुख उदै कियो अतरि उर। दिसन ब्रह्म सिव अरक बखांणो, जळपति ससि दिस मारुत जांणी। रा.रू.

उ०—२ सोय सुहागिन सूंदरि, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया बिन इकतार।—अनुभववांणी

उ०—३ सुख लाधै केलि स्यांम स्यांमा संगि, सखिए मन रखिए मघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट।

—वेलि

पर्याय०—आनन्द, निरव्रती, मोद।

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, दैणौ, पाणौ, भोगणौ, मिळणौ, व्हैणौ।

मुहा०—१ सुख आणौ=सुख के दिन आना, आराम मिलना। २ सुख करणौ=आनन्द करना, मौज-मस्ती करनी, क्रीड़ा करना, रति क्रीड़ा करना। ३ सुख खोणौ=आफ़त, परेशानी या कोई झंझट गले लगाना। ४ सुख पाणौ=आराम पाना, किसी कार्य में कम परेशानी या परिश्रम होना। ५ सुख मांणणौ= मौज-मस्ती करना, प्रसन्न रहना, आनन्द करना। ६ सुख री नींद सोणौ=चैन से दिन काटना, निश्चित होकर रहना। ७ सुख लूटणौ=आनन्द करना, सुख-साधनों का उपभोग करना। ८ सुख व्हैणौ=कोई परेशानी या कष्ट समाप्त हो जाना, सुख होना।

[सं. सुखम्] २ हर्ष, खुशी, आनन्द।

उ०—१ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'धीर' तणौ आयौ व्रतधारी। रांणी जळती 'ऊदै' राखी, सुख नव कोट किया जग साखी।

—रा.रू.

उ०—२ अंधै कुं लोयन दीयां ऐसैं मन फूलाय। जन हरीया ज्युं विरहनी, रांम मिल्या सुख थाय।—अनुभववांणी

उ०—३ एकंत उचित क्रीड़ा चौ आरभ दीठौ सु न किहि देव दुजि। अदिठ अस्रुत किम कहणौ आवै, सुख तै जांणणहार सुजि।

—वेलि

३ भय, चिन्ता या कष्टों से मुक्तावस्था, निश्चितता, चैन, शान्ति, आराम।

उ०—१ इणी भांति भरमल अरजा कर रजावध कर रीझाय लीयौ। सुख सु पोढ रह्या।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सूतौ थाहर नींद सुख, माढूळौ बळवंत। वन कांठै मारग वहै, पग पग होल पड़ंत।—बां.दा.

४ प्रेम, प्रीति, स्नेह। (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—मिळिया वंका राठवड़, चित हित दाख वचाव। सुख जाडो कीधो सगै, रीधौ हाडौ राव।—रा.रू.

५ दोस्ती, मित्रता।

उ०—राव वीरमदै दूदावत धरती वाहिरो काढीयौ थौ सुं सहसै नैं राठौड़ वेरसी रांणी अखैराजोत रै सुख हुतौ।

—राव मालदेव री वात

६ सुविधा, आराम।

उ०—उर त्रास पार न वार, चित डरत करत विचार। जग धिनी पंखी जात, सुख पंख जेण सु गात।—रा.रू.

७ समृद्धि, सम्पन्नता।

उ०—१ सुख संपत्ति कै सब कोई साथी, विपति परै सब सटकै।

—मीरां

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख संपति, व्यापत नांहि विपत्ति।—मे.म.

८ कल्याण, मङ्गल। (अनेका.)

९ ध्यावस, तसल्ली, ढाढस।

उ०—१ आयां मन विगसै नहीं, गयां न होवै दुख। जनहरीया हरि भगति की, कैसैं उपजै सुख।—अनुभववांणी

उ०—२ रथ थंभि सारथी विप्र छंडि रथ, श्री पुर हरि बोलिया इम। आयौ कहि कहि नांम अम्हीणौ, जा सुख दै स्यांमा नैं जिम।

—वेलि

१० सन्तोष, सब्र।

उ०—आसा तिसना छाडि, निरासा हुय रहै। हरिहां दास कहै हरिरांम, सांम सुख जब लहै।—अनुभववांणी

११ उमंग, उत्साह।

उ०—सुरख सरोरुह खंड लियां सुख साजही। कै अरुणोदय कांति रही मिळि राजही।—बां.दा.

१२ निरोगता, स्वस्थता, आरोग्यता।

१३ खामोशी, शान्ति।

१४ सरलता, आसानी।

१५ सन्धि, सुलह।

१६ उपयुक्त, ठीक, उचित।

१७ जल, पानी। (अनेका.)

१८ स्वर्ग।

वि.—१ प्रिय, मधुर, मनोहर।

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।

३ सरल, करने योग्य।

४ आरामदायक।

उ०—वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थांणौ प्रिथुदास मुख। मूळ ताल जड़ अरथ मंडहे, सुथिर करणि चढ़ि छांह सुख।—वेलि

५ भला, अच्छा।

अव्यय–१ सहर्ष, आनन्द से।

२ आराम से।

३ आसानी से।

४ राजी या रजामन्दी से।

५ चुपचाप, शान्ति से।

रू.भे.—सुक, सुक्ख, सुख्ख, सूख।

अल्पा.—सुक्खौ, सुखड़ौ।

सुख आसन—देखो 'सुखासण' (रू.भे.)

सुखकंद–वि. [सं.] सुख देने वाला, आनन्ददायक।

उ०—तूं उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सबै **सुखकंदा**।
—ध.व.ग्रं.

सं.पु.–सुख का मूल।

सुखकर, सुखकरण–वि. [सं.] आनन्ददायक, हर्षप्रद, सुख देने वाला।

उ०—'ऊमर' हंदौ दूसरौ, हूंतौ नांम 'हमीर'। तै हमरोट कहावही, **सुखकर** नीर समीर।—बां.दा.

सं.पु.–वैकुण्ठ, स्वर्ग। (नां.मा.)

रू.भे.—सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ।

सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ—देखो 'सुखकर' (रू.भे.)

उ०–१ प्रथ्वी मांहै परराड़ौ, सिवीयणौ गढ **सुखकार** रे लाल। जेलागर मंत्री जेहां, नांमै जयतरू नारि रे लाल।–ध.व.ग्रं.

उ०—२ सभि करि सोल सिंगार, अधर बिंब निज नारियां जी। आवी आणंद पूर धवल मंगल करती **सुखकारी** यां जी।
—प.च.चौ.

उ०–३ गोखै बैठी गौरड़ी, अपछर नै अनुहारी रे। केलि करै मन मेलि नै, सहियर सूं **सुखकारौ** रे।—वि.कु.

उ०–४ हुकम हुवौ सुसराजी सा' रौ, वरस चतुरदस वनचारी। प्रांण प्रियाजी म्हारा बन मैं पधारै हौ, पति सेवा ही **सुखकारी**।
—गी.रां.

सुखगंध–वि.–जिसकी महक आनन्द देने वाली हो, सुगन्धित।

सुखग–वि.–आराम से चलने या जाने वाला।

सुखड़ी–सं.स्त्री.–१ एक प्रकार का मीठा खाद्य पदार्थ जो गेहूँ के सेंके हुए आटे में घी व गुड़ मिलाकर बनाया जाता है।

२ मिठाई।

३ दस्तूरी, हक़।

रू.भे.—सुखडी।

सुखड़ौ–सं.पु.–१ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

उ०—तांबौ, कांसी, पीतळ, जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, हींग, **सुखड़ौ**, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा वसतै दुगांणी ८ मण १ लागै।—नैणसी

२ देखो 'सुख' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—१ औ तौ, नेह-नीत नागर घणौ, औ तौ, **सुखड़ा** रौ सागर स्यांम।—गी.रां.

उ०—२ दूधां न्हासी, पुतरां फळसी, विपता वढी, **सुखड़ै** रळसी।
—दसदोख

सुखचतुरथी, सुखचौथ–सं.स्त्री. [सं. सुखचतुर्थी] माघ, वैसाख, भाद्रपद व पौष मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को, यदि उस दिन मङ्गलवार हो, किया जाने वाला व्रत विशेष।

सुखचार–सं.पु.–बढ़िया घोड़ा। (शा.हो.)

सुखजनक–वि. [सं.] जिससे सुख उत्पन्न हो, सुखप्रद।

सुखजननी–वि.स्त्री. [सं.] आनन्ददायिनी, सुखप्रद।

सुखडी–सं.स्त्री.–देखो 'सुखड़ी' (रू.भे.)

उ० पीरसवा मांडी **सुखडी** सारी।—वरमपंत्र

सुखण–सं.पु.–१ परशु, फरसा। (डिं.नां.मा.)

२ गंडासा।

सुखणी–वि.स्त्री.–सुखी।

उ०–वूढापै **सुखणी** हुस्यूंजी, होती मोटी रे आस। घर सूनौ करि जाय छै रे, माता मूकी नीरास।—जयवांणी

सुखत्रिय–सं.पु. [सं. सुख=शोभा, सुन्दरता+स्त्री.] काजल। (अ.मा.)

सुखत्री–सं.पु. [सं. सुक्षत्रिय] श्रेष्ठ क्षत्रिय, ऐसा क्षत्रिय जिसका चरित्र उज्ज्वल हो।

सुखद–वि. [सं.] १ आरामदेह, आरामदायक, सुविधाजनक।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद।

उ०—आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। सोभंतु जंतु अनंत सुखमय, **सुखद** संपति सार ए।—रा.रू.

३ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ सुच्छम रोमावळि **सुखद**, वरणी उकति विचार। सांप्रति रस सिणगार री, बेल कियौ बिसतार।—बां.दा.

उ०—२ सित कुसुमां गूंथी **सुखद**, वेणी सहियां व्रंद। नागणि जांणौ नीसरी, सांपड़ि खीरसमंद।—बां.दा.

४ प्रिय, मधुर।

उ०—अत परमळ पमर पसरिया आंबा, सुक पिक बोलै **सुखद** सराग।—बां.दा.

सं.पु.–१ विष्णु का आसन।

२ विष्णु।

३ मित्र, दोस्त। (अ.मा;ह.नां.मा.)

४ भोजन, खाना। (ह.नां.मा.)

रू.भे.—सुखंद।

सुखदांन, सुखदांनी–वि.–सुख देने वाला।

उ०—१ सुपनै ही इण देमड़ै, स्रवण रसण **सुखदांन**। नर नह सुणै खायै नहीं, पिकवांणी पकवांन।—कविराज बांकीदास

उ०—२ दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, तलफ तलफ मुरझांनी।

मोरा री नन्दलाल की चेरी, कृपा लीजो सुखदांनी ।—मीरां

सुखदा–सं.स्त्री. [सं.] १ इन्द्र की एक अप्सरा ।

२ स्वामि कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

३ गङ्गा नदी ।

४ लक्ष्मी । (अ.मा.)

५ हरिनखी, हरें, हड़ । (अ.मा.)

वि.स्त्री.–सुखदायक ।

सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाईक—देखो 'सुखदायक' (रू.भे.)

उ०—१ पाल्यौ छ खंड को राज जिणे, जिन राय भयौ पदवी दु पाइ । सेवहु भाव भलै 'धरमसी' कहै 'सांति' जिणंद सदै सुखदाइ ।

—ध.व.ग्रं.

उ०—२ साखी पद वद गाय गुणावै, साथ संग सुखदाई । साध ठिकांणै थै ठग सारा, दोहूं लोक दुखदाई ।—ऊ.का.

उ—३ हीरी नितही निरभी नचिता, आतम दरसी सदा सुखदाई । नहिं कोई मित अमिता ।—श्री सुखरांमजी महाराज

उ०—४ दादू चंदन बावना, बसै बटाऊ आई । सुखदाई सीतळ किये, तीन्यों ताप नसाई ।—दादूवांणी

उ०—५ दसरथ 'अजन' घरै सुखदाई, रूप 'अभी' प्रगट्यौ रघुराई ।

—रा.रू.

उ०—६ जियारांम गुरु साहब साचा, निरवांनी अरज चितलाई । जन सुखरांम साधु की संगत, सदा रहौ सुखदाई ।

—श्री सुखरांमजी महाराज

सुखदात, सुखदाता–वि. [सं. सुख-दातृ] १ आनन्ददायक, सुख देने वाला ।

२ आराम देने वाला ।

सुखदाप्रांण–वि.–प्राणों को सुख देने वाला ।

स.पु.–मित्र, दोस्त । (अ.मा.)

सुखदाय, सुखदायक, सुखदायी, सुखदायौ–वि. [स. सुखदायक] (स्त्री. सुखदायण, सुखदायणी, सुखदायिनी) १ आनन्ददायक, हर्षप्रद ।

उ०—काय अमावस रैण प्रसना कीजहीं, दीवाळी सुखदाय प्रभा दरसीजही ।—बां दा.

२ सुख पहुँचाने वाला, आरामदायक, भला ।

उ०—१ जग नायक जिनवर पुहवी मांहे प्रत्यक्ष, सोलम 'सतीसर' सुखदायक कल्पव्रक्ष ।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग । सुखदायक किम नीपजै, उर संतोख अभंग ।—बां.दा.

उ०—३ नै वा अचित खूबसूरत, इती छोखी, इती सुवावणी, इती मनहरणी, इती सुखदायी. अर इती लुभावणी लागै कै वात छोडो ।—फुलवाड़ी

उ०—४ थांरी कंचन वरणी काया, राजि थांरट रूप सकल सुखदाया ।—वि.कु

३ संतुष्ट ।

४ हितकर, भला करने वाला, हितैषी ।

उ०—दसरथ नंद मुकत रा दाता, असुर जुधां घाता प्रसेस । निजकुळ मुकुट जांनकीनायक, सुखदायक सेवगां सही ।

—र.ज.प्र.

रू.भे.—सुकदायक, सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाई, सुखखदाई ।

सुखदे, सुखदेव—देखो 'सुकदेव' (रू.भे.)

उ०—१ सोई पीयाला पी रिख नारद, सो सिनकादिक व्यास । सोई पीयाला जनक वदेही, सोई सुखदे व्यास ।—अनुभववांणी

उ०—२ सौ कैसै बाळ वय विद्या बुधि सनकादिकू जैसे । सुखदेव तरुण अधि सौ वेद व्यास तैसै ।—सू.प्र.

उ०—३ विमळ कवेसर विलै साधु सुखदेव सरीखा । बालमीक जैदेव नांम नरहर कवि नीका ।—पी.ग्रं.

सुखधांम–सं.पु. [सं. सुख+धाम] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ । (अ.मा.)

२ सुख का घर, स्थान ।

सुखधांमी–सं.पु. [सं. सुख+धाम+ई रा.प्र.] १ विष्णु ।

२ इन्द्र ।

३ स्वर्ग का निवासी ।

वि.–१ सुख के घर में वास करने वाला ।

२ सुखी ।

सुखनवांण–सं.पु. [फा. सुखन+वाण] शब्द वांण, शब्द, ध्वनि ।

उ०—वीरवळ मारांणी जद पातह खांना खांन नूं खत इनायत कियौ । अकबर जिणमें लिखियौ म्हारी सभा नु नजरलागी जिणसूं म्हारी सभा री जेब वीरबळ मारांणी । हूं वीरबळ री लोथ कांधै लै बाळतो तो उण री चाकरी सूं उरण होतो । खुदा ताळा री क्रपा सूं वीरबळ मौ नूं मिळियौ हौ । म्हारा दिल मांहली वात बाहर आंणतो दारू ज्यूं । म्हारा सुखनवांण संवारण नूं खुरसांण हुतौ ।—वां.दा. ख्यात

सुखपत, सुखपति, सुखपती—देखो 'सुसुप्ति' (रू.भे.)

उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति । वेस संधि सुहिणा सु वरि, हिव पल पल चढ़ती जि होइसै । प्रथम ग्यांत एहवी परि ।—वेलि

उ०—२ न को सुपन जागै न को सुखपती, न को पद तुरीया न को मोख मुगती ।—अनुभववांणी

सुखपात–सं.पु –सुख के पात्र ।

उ०—अणघड़ आप अविगत सरूपी, अर्खे अगाध सुखपात । ग्यांन ध्यांन पोथी नहिं पुस्तक, स्याई कलम नहिं हात ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

सुखपाळ, सुखपाल–सं.स्त्री.–१ एक प्रकार का वाहन जिसे आदमी उठाकर चलते थे, पालकी, डोली ।

उ०—१सुखपाळ चढ़ण चाळीस साठ, असवार हाथियां तणा

आठ।—वि.सं.

उ०—२ ताहरां प्रभात नरसंघ नुं **सुखपाळ** बैसांण सरव लोक भेळौ करनै चालीया।—राजा नरसिंघ री वात

२ स्वर्ण निर्मित एक प्रकार का बढ़िया पलङ्ग।

उ०—पणधारी राजा 'पदम', निरधन किया निहाल। सै सूवंता साथरै, सै पौढै **सुखपाळ**।—द.दा.

सुखपूरवक–क्रि.वि. [सं. सुख-पूर्वक] १ सुख से, आराम से।

२ आनन्द से, हर्ष सहित।

सुखपोस–वि.–जो सुखपूर्वक पाला-पोपा गया हो, जिसका पोषण सुखमय स्थिति में हुआ हो।

उ०—आथ अटूट अखूट अन, प्रजा घणौ **सुखपोस**। धन 'वांका' ऊ धंगड़ौ, साहिब जै संतोस।—वां.दा.

सुखप्रद–वि. [सं.] १ सुखद, सुखदायक, आरामदेह।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद।

सुखवास–सं.पु. [सं. सुख-वास] १ सुखपूर्वक रहने की जगह। कुछ दिन या समय के लिए आराम से रहने की जगह।

२ कष्ट या अभाव का समय व्यतीत करने के लिए किसी स्थान पर किया जाने वाला निवास।

रू.भे.—सुखवास।

सुखवासी–वि.–१ 'सुखवास' करने वाला।

२ आनन्द एवं सुख से रहने वाला।

रू.भे.—सुखवासी।

सुखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.) (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—१ थावर जंगम **सुखम** थूळ।—केसोदास गाडण

उ०—२ त्रिण कोडा कोडि सागर **सुखम** बीय अरौ, देह दौ कोस दोई पल्ल आयु धरौ। बोर परिणांम आहार बीजै दिनै, युगलीया मांनवी एह कहिया जिणै।—ध.व.ग्रं.

रू.भे.—सुख्खम।

देखो 'सुसमा' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुखमगां–क्रि.वि.–सीधे रास्ते से, सुगमता से।

उ०—आवै संघण अचींत, जेम वनि अगनि सिळग्गां। सरप विक्ख सोखवा, मंत्र आवै **सुखमगां**।—रा.रू.

सुखमण, सुखमणा, सुखमणि–सं.स्त्री. [सं. सुषुम्णा] १ शरीरस्थ तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो इड़ा और पिंगला के बीच में रहती है। (योग)

उ०—१ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग दैला रै। चंद्र सूर रा लिया सरोदा, **सुखमण** सीर चडैला रै।

—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ इळा अर पिंगळा वीच है **सुखमणा**, होय तांह त्रिगुटी घाट मेळा। अगम का पंथ जांह और पुहचै नहीं, हंस परिहंस मिळ करत केळा।—अनुभववांणी

उ०—३ इळा चंद रवि पंगळा, विच **सुखमणि** कौ घाट। हरीया गुर परताप तैं, खुल्हा सइज कपाट।—अनुभववांणी

२ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में स्थित है और जिससे अन्य सब नाड़ियाँ लिपटी हुई होती हैं।

[सं. सुषुम्णः] ३ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक का नाम।

रू.भे.—सुखमन, सुखमना, सुखमनि, सुखमल, सुखमिण।

सुखम-दुखम–सं.पु.यौ. [सं. सुखं+दुखं] जैन मतानुसार काल के प्रमुख छः भागों में से अवसर्पिणी काल तथा उत्सर्पिणी काल का तृतीय काल विभाग, जिसमें प्रथम सुख तथा पश्चात् दुःख हो।

सुखमन, सुखमना, सुखमनि—देखो 'सुखमण' (रू.भे.)

उ०—१ कांम धेनु दुहि पीजियै, अलख रूप आनंद। दादू पीवै हेत सौं, **सुखमन** लागा बंद।—दादूवांणी

उ०—२ जाकै विच **सुखमना** जागी, नांव निरंतर ताळी लागी। जुरा मरण काळ नहीं ग्रासै, मनवा मिल्या रांम इक रासै।

—अनुभववांणी

उ०—३ सकळ समीपी सकळ सुहावा, तीनि लोक त्रिभुवन पतिरावा। **सुखमनि** उलटि गगन मैं आंणी, मुनि मंडल मैं खेलै प्रांणी।—ह.पु.वां.

सुखममारग—देखो 'सुखममारग' (रू.भे) (अ.वां.)

सुखमय–क्रि.वि. [सं.] सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक।

उ०—आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। सोभंतु जंतु अनंत **सुखमय**, सुखद संपति सार ए।

—रा.रू.

वि.—सुखी।

रू.भे.—सुखंम।

सुखमल—देखो 'सुखमण' (रू.भे.)

उ०—इळा पिंगळा पूरि कै, मन **सुखमल** कै मांहि। जनहरीया सुख सहज की, इन सेती गम नांहि।—अनुभववांणी

सुखम-सुख–सं.पु.यौ. [सं. सुखम्] जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का प्रथम काल विभाग तथा उत्सर्पिणी काल का छठवां काल विभाग, जिसमें केवल सुख ही सुख हो।

सुखमा–सं.स्त्री. [सं. सुषमा] १ आभा, कान्ति, दीप्ति, शोभा, छवि। (अ.मा; नां.मा.)

२ खूबसूरती, सुन्दरता।

[सं. शुष्मा] ३ ज्योति, प्रकाश।

४ शक्ति, पराक्रम।

५ तेज।

६ सूर्य, रवि।

७ महिमा।

उ०—**सुखमां** वरणूं सुखसागर की, अपनी रुख भेख उजागर की।

निस नाह उछाह पखा सुणियै, सब संत समाज कथा सुणियै ।
—ऊ.का.

८ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, यगण, भगण तथा अन्त में गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं । (र.ज.प्र.)

९ पक्षी ।

१० देखो 'सुखमा' (रू.भे.) (अ.मा.)

११ देखो 'सुखमरणा' ।

उ०—सास हमारी सुखमा नारी, ससुरो परम संतोख । जेठ जुगत कर जांणियां रे, वाल्हा पीव रह्यो निरदोख ।—मीरां

सुखमादसद—सं.पु. [सुषमाऽदर्शद] परम शोभा का दर्पण, चन्द्रमा ।
(अ.मा.)

सुखमिरण—देखो 'सुखमरणा' (रू.भे.)

उ०—चंद सूर सुखमिरण जांह मेला, नादै विंद समाई । उलटि धरिण गिगन में गरजै, विन बादर भर लाई ।—अनुभववांणी

सुखरम—सं.पु. [सं. सु+ख+रम] सूर्य, भानु ।

उ०—निमो दिव मंम विचार ब्रह्म । निमो किरनाळ निमो सुखरम ।—सूरज स्तुति

सुखरात, सुखराति, सुखरात्रि—सं.स्त्री. [सं. सुखरात्रि] कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि ।

सुखरास, सुखरासि, सुखरासी—वि. [सं. सुखराशि] सर्वथा सुखमय, सुखों का समूह ।

उ०—१ सुक्रत लगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन सुखरासी । सनमुख संपत लगत अगिनसी, पराधीन दुख पासी ।—ऊ.का.

उ०—२ गोकुळ की नारी देखत, आनंद सुखरासी । एक गावत एक नाचत, एक करत हासी ।—मीरां

उ०—३ रवि रिपु भवन जकां सुखरासी । अरि अरण कुळ बळ करण उदासी ।—रा.रू.

सुखलापांग—देखो 'सुक्रांग' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुखलिणी—देखो 'सुकुलीणी' (रू.भे.)

उ०—नाडी अलियर नीर, भूल्यां जल भागै नहीं । सुखलिणी रे सरीर, वक्र लगागी काछवी ।—अग्यात

सुखलोया—सं.पु.—घोड़ों का एक रोग जिससे पीड़ित होने वाला घोड़ा दुबला हो जाता है और उसकी त्वचा खराब हो जाती है ।
(शा हो.)

सुखवंत, सुखवत—वि. [सं. सुखवत्] सुखी, प्रसन्न, खुश ।

सुखवाणी, सुखवावी—देखो 'सुखाणी, सुखावी' (रू.भे.)

सुखवायोड़ो—देखो 'सुखायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुखवायोड़ी)

सुखवास—देखो 'सुखवास' (रू.भे.)

उ०—१ तासै सुरग सुखवास, गुर फुरमाई चाली । वीसंन जपो ससारि, हुआ हर कारि चाली ।—वि.सं.मा.

उ०—२ हुं आव्यो हो ताहरै पास, वात कही मैं माहरी । हिव दीजै हो मुझ सुखवास, उलट मन मांहि धरी ।—वि.कु.

सुखवासी—देखो 'सुखबासी' (रू.भे.)

उ०—बाहड़मेर रै कांकड़ चारण सुखवासी वसै । रावळ भारमल महेसदास नै पटै ।—नैणसी

सुखसज्या—देखो 'सुखसेज्या' (रू.भे.)

उ०—मांणत पदमणि महल मैं, रसियौ बगसीरांम । सुखसज्या मैं सांभळी, केहर तंडव तांम ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

सुखसागर—सं.पु. [सं.] १ ईश्वर, परमेश्वर । (नां.मा.)

उ०—१ हंसा जांनि दुखी सरवर विन, जुग जीवन सुखसागर धरि धरि ।—अनुभववांणी

उ०—२ सदा क्षणभंगुर जांण सरीर, सखा सुखसागर सूं कर सीर । हियै धर नांम अमोलक हीर, विस्वंभर संवर बांधव वीर ।
—ऊ.का.

२ भागवत के अनुवाद का नाम ।

सुखसाजा—सं.पु.—सुख का सामान ।

उ०—संपज 'अजन' सदन सुखसाजा । रांम जनम जिय दसरथ राजा ।—रा.रू.

सुखसाता—सं.स्त्री. [सं. सुख-शांति] १ सुख की उपलब्धि, प्राप्ति, आनंद, मङ्गल, खैरियत, कुशल-क्षेम ।

उ०—१ वांनै जोसीजी माथै सोळै आंनां भरोसो व्हैगो । सुखसाता बूझी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाळ उतरतां काळजौ होठां लाय बोल्यौ—म्हनै एकर साळ रै मांय जावण दौ । मां-बेटी री सुखसाता तौ पूछ लूं ।
—फुलवाड़ी

२ आरोग्यता, स्वस्थता ।

उ०—१ कनै बैठी समाचार छै । साहजी डीलां में कीसायक है ? सुखसाता है ?—भि.द्र.

उ०—२ दौलति द्यौ सुखसाता, सहुजन मन्न सुहाता राज । जै दिन राता तुझ गुण गाता, तै रहै राता माता राज ।—ध.व.ग्रं.

सुखसार—सं.पु.—१ सुख का सार ।

उ०—रित वसंत सोभंत अंब तर मंजर ओपै । गुल गुलाब सुखसार हार चौसर आरोपै ।—रा.रू.

२ अटारी, अट्टालिका । (अ.मा.)

सुखसेज, सुखसेज्जा, सुखसेज्या, सुखसेझ—सं.स्त्री. [सं. सुख-शय्या] १ किसी की मृत्यु के अनन्तर मृतक के उद्देश्य से उसके संबंधियों द्वारा ब्राह्मणादि को दिया जाने वाला शय्यादान, जिसमें चारपाई, बिस्तर, छाता व कपड़े होते हैं ।

२ आरामदायक शय्या ।

उ०—पिंड प्रांण छूटसी, नाड़ तूटसी करसा । धरा सेझ धारसी, करै सुखसेझ अळगा ।—ज.खि.

२ आरामदायक शय्या।

रू.मे.—सुखसज्या।

सुखसोरठ—सं.पु.—एक राग विशेष। (मीरां)

सुखस्यायक—सं.पु.—कल्पवृक्ष। (नां.मा.)

सुखहारी—वि.—सुख को हरण करने वाला।

उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी। खर भूकै रव खैंग, स्वांन कूकै **सुखहारी**।—रा.रू.

सुखांछक—सं.पु.—चन्द्रमा, चाँद। (नां.मा.)

सुखांत—वि. [सं.] जिसका अन्त सुखमय हो।

उ०—सुखी वियोग सैं मुखी, दुखी भ्रमैं दिगंत मैं। मुखांत कांत म्लौमुखी, दुखांत तें **सुखांत** मैं।—ऊ.का.

सुखाकर—वि.—सुखकर, सुखदायक।

उ०—पल्ल त्रिभाग विना त्रिक सागर, सोलम सांति जिणंद **सुखाकर**।—ध.व.ग्रं.

सुखाणौ, सुखाबौ—क्रि.स. ['सूखणौ' क्रि. का प्रे.रू.] १ किसी गीले वस्त्र, कागज़ या किसी गीली वस्तु को धूप या हवा में, गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए फैलाकर रखना।

२ किसी प्रकार से ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से किसी पदार्थ की आर्द्रता दूर करना।

३ सूखने के लिए डाल देना।

४ पानी सोखने के लिए प्रेरित करना।

५ दुर्बल या क्षीण कर देना।

सुखाणहार, हारौ (हारी), सुखाणियौ—वि०।

सुखायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुखाईजणौ, सुखाईजबौ—कर्म वा०।

सुकाणौ, सुकाबौ, सुकावणौ, सुकावबौ, सुखवाणौ, सुखवाबौ, सूखाणौ, सूखाबौ, सूखावणौ, सूखावयौ—रू०भे०।

सुखायल—सं.पु. [सं.] प्रशिक्षित, सधा हुआ तथा शीघ्र वश में आने वाला घोड़ा।

सुखायोड़ौ—भू.का.कृ.—१ गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए खुली हवा या धूप में फैलाया हुआ। २ ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से आर्द्रता दूर किया हुआ। ३ सूखने के लिए डाला हुआ। ४ पानी सोखने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. सुखायोड़ी)

सुखारथी—वि. [सं. सुखार्थी] सुख की इच्छा या कामना करने वाला।

उ०—**सुखारथी** स्वारथी जै स्वसुख, दुख प्रारथी वच सदै। वढै जी विद्यारथी विसद, परमारथी वच वदै। ऊ.का.

सुखाळा—वि.—१ प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज़।

२ सुखी।

सुखाळी—सं.स्त्री.—१ सुख की अवस्था या भाव।

२ आराम, चैन, खैरियत।

सुखाळौ—वि. (स्त्री. सुखाळी) प्रसन्न, सुखी।

उ०—हंस **सुखाळौ** मांनसर, चुगि मोताहळ खाय। हरीया दूजा ना भखै, लांघणीयौ रहि जाय।—अनुभववांणी

सुखावणौ, सुखाववौ—देखो 'सुखाणौ, सुखाबौ' (रू.भे.)

उ०—म्हारा जीवण मैं सुख री आ एक ई हिलोळ आई, इणनै ई थूं **सुखावणी** चावै।—फुलवाड़ी

सुखावणहार, हारौ (हारी), सुखावणियौ—वि०।

सुखाविप्रोड़ौ, सुखावियोड़ौ, सुखाव्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुखावीजणौ, सुखावीजबौ—कर्म वा०।

सुखावियोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुखावियोड़ी)

सुखावेस, सुखावेसु, सुखावेसू—क्रि.वि.—सुखपूर्वक।

उ०—कहा देस देसू रम प्रदेसू है परमेसू संग ए, दुस्टी विचेसू करि अनेसू खोंस लेसू कंग ए, सोई मरेसू जन निरभेसू **सुखावेसू** आज ए।

—करुणा सागर

सुखासण, सुखासन, सुखासनि—सं.पु.—१ पालकी, डोली, सुखपाल।

उ०—१ हरि हरि उचार नर पुर हुए हेर वार विसमी हुई। उण वार रथी त्रप ऊपड़े आप **सुखासण** आरुही।—रा.रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति घणां घोड़ा हाथी **सुखासण** रथ पायक जवहर हीरा मोती मांणक सोना रूपा दाइजै दीजै छै।—रा.सा.सं.

उ०—३ दैत्य दमनी हारी राजा जीतियौ, **सुखासण** वैठ दैत्य दमनी घरै आई।—पंचदंडी री वारता

उ०—४ आवइ सकल कलापति व्यापति मांडइ कोडि। वइठा स्वजन **सुखासनि** वासगि धन दिइं कोडि।

—जयसेखर सूरि

२ आरामदायक आसन।

३ पलथी, पालथी।

रू.भे.—सुख-आसन।

सुखि—क्रि.वि.—१ सुखपूर्वक, आराम से।

उ०—मोटउ नगर लोग **सुखि** वसइ, चावउ कुंवर कुळ छइ चिहुं दिसइ। आठ सहस हयवर तसु मिळइ, पंच सहस पायदळ तसु जुडइ।—ढो.मा.

२ देखो 'सुखी' (रू.भे.)

सुखिओ—देखो 'सुखियौ' (रू.भे.)

सुखिणी—वि.स्त्री.—देखो 'सुखी' (रू.भे.)

उ०—हूं जांणू **सुखिणी** करूं रे, परणावूं वर सार रे।

—स्रीपाल रास

सुखिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—सींगी रिख **सूखिम** होय सोख्या, नारद रूप फिराया। संकर

का मन मांही पैठी, नाना भांति नचाया ।—ह.पु.वां.

सुखियारी-वि. (स्त्री. सुखियारी) सुखी ।

उ०—सुख नूं सुखी थी विरजा सुखियारी, दुस्टी आतां ही करदी दुखियारी ।—ऊ.का.

सुखियो-वि.—सुखी ।

उ० —१ सदा वास करि पोढै सुखिया, विसन समंद जांमात वखांण ।—ह.नां.मा.

उ०—२ माहरा सहू इण राज में, थें ही जो दुखिया होय । तो कहो इण संसार में, सुखियो न दीसै कोय ।— जयवांणी

क्रि.वि. —सुखपूर्वक, आराम से ।

उ० —१ साठ कोड़ घर बाहिरै जी, मांहे बहोतर कोड़ । लोग सहु सुखिया वसै जी, रांम क्रस्ण री जोड़ ।—जयवांणी

उ०—२ सखरै महिलै राखवो सुखियो, सखरी भगति सजाई । स्वारथ विण जै करणी सेवा, भलां तणीय भलाई ।

—घ.व.ग्रं.

रू.भे. —सुखिग्रो, सुखीग्रो ।

सुखी-वि. [सं. सुखिन्] १ जिसको किसी प्रकार का दुःख, कष्ट, परेशानी या अभाव न हो, कष्ट व अभाव से सर्वथा मुक्त ।

उ० —१ बळती लू चाली है अर सुखी जीवण में फोड़ी पड़ रै'यो है । —दसदोख

उ०—२ वहेजु वाट वाट में पिता पिता महा वहैं । सुखी सुवाट तैं सदा दुखी दुवाट में दहैं । —ऊ.का.

२ आनन्दित, हर्षित, खुश ।

उ० – प्यारो पंजर भीतरें, ताहि न जांणै कोय । जन हरीया सो जांणिसी, सुखी सुहागिन होय ।—अनुभववांणी

३ संतुष्ट ।

रू.भे. —सुखि ।

सुखीग्रो, सुखीयो—देखो 'सुखियो' (रू.भे.)

उ०—१ जीव जिकै सुखीग्रा हूवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह । तै जिणवर ना धरम थी रे, मति को करज्यो संदेहो रे ।—स.कु.

उ०—२ तांउ ऊपाडिउ घालिउ पाइ पूछिउं कुमुलु युधिस्टिरि राई । भगइ दुरयोधनु अतिग्र सुखीया तुम्ह पाय जउ मइं पणमीया —सालिभद्र सूरि

सुखुपती, सुखुप्ती—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे.)

उ०—१ जाग्रत स्वप्न सुखुपती तुरीया, इनतें अलग रहाया । तीन गुणां जहां उत्पति नाही, पांच भूत नहि काया ।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ जाग्रत काया खड़ बड़, सुपनही डोर हलाय । सुखुप्ती मांचेट मैन दे, तो सब परळै होय जाय ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

सुखेरी, सुखेड़ी—स.स्त्री.—हरी सब्जी जिसे उबाले या बिना उबाले सुखा-कर शाक बनाया जाता है ।

वि.वि.—ये सब्जियां है : काचरा, मतीरा, ग्वारफली, टींडसी, सांगरी, केर, पांसा, गाजर इत्यादि ।

रू.भे.—सुकेड़ी ।

सुखेण, सुखेन—सं.पु. [सं. सुषेणः] १ एक वानर जो बालि का श्वसुर व धर्म नामक वानर का पुत्र था । राम-रावण-युद्ध में वह राम-पक्ष में था । यह युद्ध-विशारद के साथ ही वैद्यक शास्त्रज्ञ भी था ।

उ०—सुखेणां नळं नील सुग्रीव साथां । हणूं आदि आए मिळै जोड़ि हाथां ।—सू.प्र.

२ एक राजा जो अविक्षित्-पुत्र परिक्षित् राजा का पुत्र था ।

३ विष्णु का एक नामान्तर ।

४ जमदग्नि एवं रेणु के पुत्रों में से एक ।

५ कर्ण का एक पुत्र ।

६ दूसरे मनु का एक पुत्र ।

७ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन द्वारा मारा गया था ।

८ श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

९ देवकी का एक पुत्र जो कंस के द्वारा मारा गया था ।

सुखोपति—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे.)

उ०—जाग्रत सुपन सुखोपति, पांच ग्यांन यंद्री पचीस प्रक्रत लोई ।

—ह.पु.वां.

सुख्ख देखो 'सुख' (रू.भे.)

उ०—१ काया झबकइ कनक जिम, सुंदर केहै सुख्ख । तेह सुरंगा किम हुवइं, जिण वेहा वहु दुख्ख ।—ढो.मा.

उ०—२ कहा घाट वाटू सुख्ख ठाटू मुज वेराटू रांम ए । गुण रांमदासू चरित गासूं नित निवांसूं नांम ए ।—करुणा सागर

सुख्खदाई—देखो 'सुखदायी' (रू.भे.)

उ० —नमो नमांमी अंतरयांमी सरव स्वांमी स्रस्टि ए । वंदौं सदाई सुख्खदाई चित्त आई इस्ट ए ।—करुणा सागर

सुख्खम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

सुख्याति—सं.स्त्री. [सं.] १ कीर्ति, यश, प्रशंसा ।

२ प्रतिष्ठा ।

सुख्यारत, सुख्यारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे.)

सुगंद, सुगंध—सं.स्त्री. [सं. सुगंधः] १ अच्छी और प्रिय गंध, महक, खुशबू ।

उ०—१ सोनूं सुगंध सोनूं मिळचा, बळिहारी इण वात री । साखात सकति 'इंदर' सुणं, महिमा 'करनळ' मात री ।—मे.म.

उ०— २ नाहर जो गाजिस नहीं, ऐ गज वहता ईस । सर सर कमळ सुगंध री, भमर न मांगिस भीख ।—वां.दा.

पर्याय०—कसबोय, गंध, डमर, वगर, वास, वासना, वासावळी, महक ।

२ गंधक ।

[सं. सुगंधं] ३ चन्दन ।
४ जीरा ।
५ नीलकमल ।
६ गंधेज नामक घास, गन्ध-तृण ।
७ ख़ुशबूदार चीज़ ।
८ चना ।
९ मरुवा ।
१० माधवी-लता ।
११ सफ़ेद ज्वार ।
१२ केवड़ा ।
१३ राल ।
१४ व्यापारी ।
१५ रुसा घास ।
१६ शिला-रस ।
१७ देखो 'सुगंधित' (रू.भे.)
उ०—व्रक्ष वल्ली का परस तैं **सुगंध** हुऔ । लतां कां मन मांहै संकोच छै ।—वेलि टी.
रू.भे.—सगंध, सुंगण, सुगंधि, सुगंधउ, सुगंधी, सूगंध ।

सुगंधउ—देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
उ०—तंती नाद तंबोळ रस, सुरहि **सुगंधउ** जांह । आसण तुरी घरि गोरड़ी, किसउ दिसाउर त्यांह ।—ढो.मा.

सुगंध उर—सं.पु.–१ हिरन, मृग । (अ.मा.)
२ कस्तूरिया हिरण ।

सुगंधक—सं.पु. [सं. सुगंधकः] १ चन्दन । (नां.मा; ह.नां.मा.)
२ लाल तुलसी ।
३ पुष्प, फूल । (अ.मा; नां.मा; ह.नां.मा.)
४ नारंगी ।
५ गन्धक ।
वि.—जिसमें ख़ुशबू हो, ख़ुशबूदार ।
उ०—तद मीट लखंत धनंतर री, उड घांण **सुगंधक** अंतर री ।
—पा.प्र.
रू.भे.—सुगंधिक, सुगंधीक ।

सुगंधका—सं.स्त्री.–सोनजुही, कस्तूरी । (अ.मा.)
रू.भे.—सुगंधिका ।

सुगंधता—सं.स्त्री.–फूल आदि ख़ुशबूदार वस्तुओं का गुण-धर्म, महक ।
उ०—केवड़ा केतकी कुंद । यां का वास कौ भार लीयौ छै । **सुगंधता** तौ भार ही मांझ हुई । स्रम हुऔ छै । एही सीतता हुई ।
—वेलि टी.

सुगंधधर—सं.पु.–केसर । (अ.मा.)
वि.—सुगंध को धारण करने वाला, महक़दार ।

सुगंधमल्यका—सं.स्त्री. [सं. सुगंधमल्लिका] मालती । (अ.मा.)

सुगंधा—सं.स्त्री. [सं.] १ तुलसी ।
२ सौंफ़ ।
३ रुद्रजटा ।
४ विजौरा नींबू ।
५ माधवी लता ।
६ काला जीरा ।

सुगंधाई—सं.स्त्री–सुगंध, महक़, ख़ुशबू ।
उ०—तठै रूप **सुगंधाई** सूं काळौ भैरू जाड़ेची रै महल हमेसा आवै ।—जगदेव पंवार री वात

सुगंधाकर, सुगंधाकार—वि.–सुगंध से भरपूर, अत्यन्त सुगंधित ।
उ०—**सुगंधाकरं** सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिंभू विमोहै ।
—रा.रू.

सुगंधि—वि. [सं.] १ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।
२ ख़ुशबूदार, महक़दार ।
३ मधुर ।
सं.पु. [सं. सुगंधिः] १ परब्रह्म, परमात्मा ।
२ मधुर सुगंधियुक्त आम ।
[सं. सुगंधि] ३ पिपरा मूल ।
४ वन तुलसी ।
५ चन्दर ।
६ देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
रू.भे.—सुगंधी ।

सुगंधिक—सं.पु. [सं. सुगंधिकः] १ चन्दन ।
२ धूप ।
३ गन्धक ।
४ चावल विशेष ।
[सं. सुगंधिकम्] ५ सफ़ेद कमल ।
६ देखो 'सुगंधक' (रू.भे.)

सुगंधिका—देखो 'सुगंधका' (रू.भे.)

सुगंधित—वि. [सं.] सुगंध फैलाने वाला, जिसमें से सुगंध फूट रही हो, महक़दार, सुवासित, सुगंधदार ।
रू.भे.—सुगंध ।

सुगंधी—१ देखो 'सुगंधि' (रू.भे.)
उ०—मोती-जड़ी ज हाथि, सुरह **सुगंधी** वाटली । सूती मांझिम राति, जांणूं ढोलूं जागवी ।—ढो.मा.
२ देखो 'सुगंध' (रू.भे.)
उ०—थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ । गुणै **सुगंधी** मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो.मा.

सुगंधीक—देखो 'सुगंधक' (रू.भे.)

सुगड़, सुगड़ौ—देखो 'सुघड़' (रू.भे.)
उ०—सौ त्यूं उठाय नै फौज में पाछा नांखिया ज्यूं बघूळियै आयां

सुगड़ा गांव धास ज्यूं तिणका उड जावै त्यूं सारी लोग विखर गयौ।
—डाढाळा सूर री वात

सुगट्ट—देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

सुगढ़—सं.पु.—अच्छा गढ़, मजबूत गढ़ या किला।
वि.—दृढ़, पक्का।
उ०—थांका म्हांका अलग नहीं, राखौ थां निज पास। म्हां तौ थारै आसरै, पायौ सुगढ निवास।—गौड़ गोपाळदास री वारता

सुगण—सं.पु.—१ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा, शङ्खण या शङ्खनाभ।
उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तै सुत विध्रत नरेस उग्र तप।
—सू.प्र.
२ देखो 'सुगन' (रू.भे.)
उ०—जिण दिन सुगण लैण नूं नापोजी नरोजी गया, सू अवार माहाराज रायसिंहजी गढ घातियौ तठै आया।—द.दा.
३ देखो 'सुगुणी' (रू.भे.)
उ०—इम रहतां सुख सुं सदा, जे हूश्री छै विरतंत। सुणयौ चित्त देइ सुगण, मन थिर करी एकंत।—प.च.चौ.
४ देखो 'सुगुण' (रू.भे.)

सुगणी—वि.स्त्री.—१ शुभ लक्षणा, गुणवंती, गुणवान।
उ०—१ हां ऐ थारो विछड्यौ कंथ मिळावां, सुगणी म्हांनै देस बतायौ ऐ।—लो.गी.
उ०—२ श्रामी है उदमादीयौ, रजीरजोवण कंत। मौ सुगणी रो साहिवौ, मद मातौ मैमंत।—पनां
उ०—३ वावौ छोड्यौ जलम कौ, छोडी सुगणी माय। भाई छोड्या मेलता, सात सख्यां रो साय।—लो.गी.
२ सुन्दरी, रूपसी।
वि.स्त्री.—३ देखो 'सुगुणी' (रू.भे)
सं.स्त्री.—१ सुन्दर स्त्री, शुभ लक्षणों वाली स्त्री।
२ पुत्री।
रू.भे.—सुगुणी।

सुगणौ—देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)
उ०—१ कछु इक श्रोगुण काढौ म्हांमें, म्हे भी कांनां सुणां। मैं तो दासी थांरी जनम जनम की. थे माहिब सुगणां।—मीरां
उ०—२ नित करस्यां समकित निरमलो, निरमल जिम गंगा नीर। नजस्यां संगति निगुणां तणी, सुगणां सुं करस्यां सीर।
—ध.व.ग्रं.
उ०—३ हंसा नै सरवर घणा, सुगणां घणा ज मित। जाय पड़या परदेस में, साजन आया चित।—अग्यात
(स्त्री. सुगणी)

सुगत—सं पु. [सं. सुगतः] १ बुद्धदेव का नाम।
२ पांडु-पुत्र अर्जुन। (ह.नां.मा.)
३ हंस। (अ.मा.)
वि. [सं. सुगत] १ भली प्रकार बीता हुआ, अच्छी तरह गुजरा हुआ।
२ भली-भाँति दिया हुआ।
३ देखो 'सुगति' (रू.भे.)
उ०—सुदतारां भल दांन द्यौ, चित माझल कर चाव। सुगत दांन दीधां मिळै, स्वरग किसूं सुख साव।—बां.दा.

सुगति, सुगती—सं.स्त्री. [सं. सुगति] १ किसी प्राणी की मृत्यु के उपरांत जीव को मिलने वाली उत्तम गति, मोक्ष।
२ अच्छी दशा, अच्छी हालत।
उ०—चौरी पकड़ी चौहट, दूती पूगी दाव। सुगति विदर कपूर्त मैं, विदरै न सिर पाव।—वि.सं.सा.
३ चलने का सुन्दर ढंग, सुन्दर चाल।
उ० - ब्रति चलति सुगति दुति अभित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध।—रा.रू.
४ बढ़िया रफ़्तार, अपेक्षित गति।
५ सदाचार।
६ शक्ति।
७ सीप।
८ एक प्रकार का सात मात्रा का मात्रिक छन्द, जिसके अन्त में गुरु व लघु का कोई नियम नहीं होता है। (र.ज.प्र.)
रू.भे.—सुगत।

सुगन—सं.पु. [सं. शकुन] १ यात्रा की शुरुआत या किसी कार्य के प्रारम्भ में या किसी घटना के सम्बन्ध में परिवेश में दिखाई देने वाले या प्रगट होने वाले लक्षण या चिन्ह, जो उस कार्य के सम्बन्ध में शुभ या अशुभ की सूचना देते हैं; सगुन, शकुन।
उ०—१ हरभूजी कही राव जोधौ पाहुणौ आज आय सै सुगन अहड़ा होवै छै।—नापै सांखलै री वारता
उ०—२ कह म्हारी चिड़िया सुगन री बातां, कद आवैला म्हारा स्यांम धणी।—मीरां
२ विभिन्न अवसरों पर शुभ मानी जाने वाली वस्तुएँ।
उ०—आदू तिवार मैं सुगन श्रौ देख अमल विन दोघड़ा। श्रा रसम फँसाई अमलियां, तार न सोचै टोघड़ा।—ऊ.का.
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, छोडणौ, मांनणौ, लैणौ, होणौ।
मुहा०—१ सुगन देखणौ, सुगन विचारणौ=ज्योतिष या सगुन-शास्त्र में वर्णित आधारों से किसी कार्य के प्रति शुभ-अशुभ का विचार करना, भविष्य के लिए शुभाशुभ का विचार करना। २ सुगन लैणा = अच्छे लक्षण देखकर कार्य प्रारम्भ करना, शुभ-वेला व शुभ माने जाने वाले प्राणियों का सामना करके प्रस्थान करना। ३ सुगन होणा = अच्छे लक्षण दिखाई देना, अच्छा कार्य होना।
३ विवाह का दस्तूर। (राजा-महाराजा)

४ शुभ मुहुर्त्त।

५ उक्त मुहुर्त्त में सम्पादित कार्य।

६ ऐसा माङ्गलिक कार्य जो शकुन के रूप में ही किया जाता है।

७ माङ्गलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत।

८ गिद्ध पक्षी।

६ चील।

रू.भे.—सउण, सकन, सकुन, सकूंण, सगुण, सगुन, सघुण, सवण, सहुण, सांवण, सुकन, सुकनाई, सुगण, सुगुन, सूंण, सूण, सोण, सौंण।

सुगनग्य—सं.पु. [सं. शकुनज्ञ] सगुनों का जानकार, शकुन शास्त्री।

रू.भे.—सकुनग्य।

सुगनचिड़ी—सं.स्त्री.—एक प्रकार की चिड़िया जिसका रंग सफ़ेद, किन्तु परों में कुछ श्यामता होती है। इसके बैठने व बोलने की दिशा में शकुन माने जाते हैं।

उ०—**सुगनचिड़ी** सात दिनां तांई उण नै सुगन नीं दिया। वौ निरणौ-तिरसौ उठै ई ऊभौ रह्यौ।—फुलवाड़ी

रू.भे.—सकुनचिड़ी।

सुगनावळी—सं.स्त्री.—शकुन-शास्त्र की पुस्तक जिसमें विभिन्न प्रकार के शकुनों का उल्लेख होता है।

वि.—शकुनों के बारे में जानने वाला, शकुन-शास्त्री।

सुगनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा; रू.भे.)

सुगनी—वि. [सं. शकुन+ई प्रत्यय] शकुन-शास्त्र को जानने वाला, शकुन बताने वाला।

उ०—तद **सुगनियां** इसी कही कै दरवाजौ खोदियौ सू आछौ कांम नहीं कियौ।—द.दा.

सं.स्त्री.—१ श्यामा पक्षी।

२ गौरैया पक्षी।

सं.पु. [सं. शकुनी] ३ सुश्रुत के अनुसार एक बालग्रह का नाम।

४ अर्जुन।

५ गाड़ी के अगाड़ी का नोंकदार वह हिस्सा जिस पर जुआ कसा जाता है। (अलवर)

६ देखो 'सुगणी' (रू.भे.)

वि.स्त्री.—७ देखो 'सुगुणी' (रू.भे.)

रू.भे.—सउणी, सकुनि, सकुनी, सवणी, सांवणी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी।

अल्पा.—सगुनियौ, सुगनियौ, सौंणी।

सुगनौ—देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

उ०—मारी चाहै छांडौ राणा, नाहिं रहूं मैं वरजी। **सुगनां** साहिब सुमरतां रे, मैं थारै कोठै खटकी।—मीरां

सुगम—वि. [सं.] १ जहां आसानी से चल कर जाया जा सके; सहज में जाने योग्य, सहज गम्य।

उ०—हैमरां हींस नर लसकरां क्रह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वेंडा। आहाडा खंड रज-मंडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर **सुगम** पेंडा।—गु.रू.बं.

२ सहज, सरल, आसान।

उ०—१ राजाजी आपरौ सुभाव बदळ, वांरै वास्तै साव **सुगम** मारग बणाय दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ अमंगळ काळ आणंद सम ईखियौ, सेन दूभर **सुगम** कीध सारै।—वं.भा.

३ बोध गम्य।

४ जो सहज ही प्राप्त किया जा सके।

उ०—आग्या मांगूं अगम की, अगम **सुगम** यूं होय। हरिदास जन यूं कहै, भूलि पडौ मति कोय।—ह.पु.वां.

क्रि.वि.—सरलता से, आसानी से।

उ०—दास तन भजन विन तौ सबी दासरथ, थिरू वस कौड़ बातै न थावै। देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणु मन सेवगां **सुगम** आवै।—र.ज.प्र.

सुगमता—सं.स्त्री.—१ सुगम होने की दशा या भाव।

२ सरलता, आसानी।

३ स्पष्टता।

सुगर—१ देखो 'सुघर' (रू.भे.)

२ देखो 'सुगुरु' (रू.भे.)

उ०—१ **सुगर** सीलवंत होय, सुगर मन्य सदा संतोखी। सुगर सहज्य सुख, लील सुगर पर जीवां पोखी। सुगर सुमारग दाखव, जण तारण आयौ तरण।—वील्होजी

उ०—२ मुकताहळ जै चवै, तां नरां मुकति ही दीजै। अलख जोति भेंटियै, गोठि सुगर सिधां कीजै।—वि.सं.सा.

३ देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

४ देखो 'सुगरौ' (रू.भे.)

सुगरथ—वि.—१ सद्गुणी, गुणवान।

उ०—मारचा तौ मारचा छै ए चारण, ऊदौ-दूदौ था रा ग्वाळ। गायां रै मूंड मारचौ ए, **सुगरथ** था रा स्यांम नै।—लो.गी.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

सुगरापणौ—सं.पु.—१ 'सुगरा' होने की अवस्था या भाव।

२ कृतज्ञता।

उ०—जंभू भूला तेरा बिसनोई, भूला तेरा साधू। **सुगरापणौ** साधै नह कोई, थोथा करै उपाधु।—वि.सं.सा.

३ कृतज्ञता मानने का गुण।

४ लिहाज, मुलाहिजा।

सुगरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

उ०—१ इयै पिंड मांहि नहीं अपराध, सही **सुगरीव** वडौ कोई साध। नमौ हणमंत तणौ कहि नांम, वडौ भड़ संत तणौ

विस्राम ।—पी.प्र.

उ०—२ राम कहै सुगरीव नै, लंका केती दूर? आळसियां अळघी घणी, उद्दम हाथ हजूर ।—अग्यात

सुगरौ-वि. [सं. स+गुरु] १ एहसान मानने वाला, कृतज्ञ ।

उ०—१ कैवण लागी—श्री काळिंदर तो व्हियौ सुगरौ अर उण नै मारण वाळो धणी व्हियो नुगरो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ कोण देस में गुरुजी अमी झरत है, कोणजू पीवण वाळा रे नांय । गगन मडळ में चेली अमी झरत है, सुगरा पीवण वाळा रे नांय ।—श्री हरिरांमजी महाराज

२ श्रद्धा रखने वाला, आस्था रखने वाला, विश्वास रखने वाला ।

उ०—१ सबद गुरु का वांण, सहै कोई सुगरा । ग्यांन ध्यांन गलतांन, न संगी नुगरा ।—अनुभववांणी

उ०—२ सत् की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसंग सुगरा पाई । निरमळ संत समझ को मारग, हिळमिळ नाव चलाई ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

३ विनम्र, विनीत ।

४ भला ।

५ जिसके गुरु हो । (मा.म.)

सं.पु.—१ किसी चीज़ को मजबूती से पकड़ने का लोहे का एक औज़ार ।

२ काष्ठ के दो टुकड़ों में पेच फिट करके तैयार किया गया एक उपकरण जो छाप, मीनाकारी आदि में काम आता है । इसमें किसी चीज को फंसाकर इसके तारों में बल दे देने पर वह चीज़ हिलती-डुलती नहीं है ।

रू.भे.—सुगर, सुगुरो ।

सुगळ-सं.पु.—पवन, वायु । (ना.डि.को.)

सुगह-सं.पु.—१ अच्छी तरह कुचलने, पछाड़ने, झकझोरने की क्रिया या भाव, रौंदन, मथन, गाहटन ।

उ०—रिण गाहटतै राम रवणा रिण, थिर निज चरण स मेढि थिया । फिरि चढियै संघार फेरतां, केकांणां पाइ सुगह किया ।

—वेलि

२ कूट कर भूसे से निकाला हुआ, अनाज ।

वि.—१ धुना हुआ ।

२ मथा हुआ, कुचला हुआ ।

सुगांन-सं.पु. [सं. सुगान] अच्छा गीत, अच्छा गायन ।

उ०—वाजै द्वार वधावणा, सोभावणा सुगांन । वेर अवेरां वांधिया, डेरां डेरां दांन ।—रा.रू.

सुगाणौ, सुगाबौ-क्रि.स.—१ नफ़रत करना, घृणा करना ।

२ किसी के केवल अवगुण ही जताना ।

३ न्यून या हेय समझना ।

सुगाणहार, हारौ (हारी), सुगाणियौ—वि० ।

सुगायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुगाईजणौ, सुगाईजबौ—कर्म वा० ।

सुगावणौ, सुगाववौ—रू०भे० ।

सुगात, सुगात्र, सुगाथ-सं.पु. [सं. सु-गात्र] १ सुन्दर शरीर ।

उ०—भज रे मन रांम सियावर भूपत, अंग घणाघण सोभ अनूप । नीरज जात सुगाथ निरूपित, कौटिक कांम सकांम ।

—र.ज.प्र.

२ चरित्र या गुणकथन ।

उ०—किसौ वाद रिख सुं करौ, सांभळि जनक सुगात्र ।

—रांम रासौ

वि.—सुन्दर शरीर वाला, सुकुमार ।

उ०—माल्ह कुंमार विलसइ सदा, कांमिण सुगुण सुगात । माळवणी नूं एक निस, मारवणी दुइ रात ।—ढो.मा.

सुगायोड़ौ-भू.का.कृ.—१ नफ़रत किया हुआ, घृणित । २ अवगुण जताया हुआ । ३ न्यून या हेय समझा हुआ ।

(स्त्री. सुगायोड़ी)

सुगार-सं.पु.—गीत, गायन । (डि.को.)

सुगारि, सुगारी-सं.स्त्री.—दीवार या कच्चा आंगन लीपने (लेपन करने) के लिये बनाया हुआ मिट्टी या गोबर का मिश्रण, गारा ।

उ०—ग्रिह ग्रिह प्रति भींति सुगारि हींगळू, ईंट फिटक मै चुणी अचंभ । चंदण पाट कपाट ई चंदण, खुंभी पनां प्रवाळी खंभ ।

—वेलि

सुगाळ, सुगाल—देखो 'सुकाळ' (रू.भे.)

उ०—१ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसै थयउ सुगाळ । तेणि न राखी सासरइ, अजै स मारू बाळ ।—ढो.मा.

उ०—२ सगलइ हुवउ सुगाल, अन्न चिहुं दिसि थी आयउ । आप आपणइ व्यापारी, सको अधिकारइ लायउ ।—स.कु.

उ०—३ सीहां विपत न संभवै, टाली जाय न टाळ । हाथळ मूं पळ हेक मै, सीहां हुवै सुगाळ ।—बां.दा.

सुगाळी-वि.—अच्छे समय में जीवन विताने वाला ।

सं.स्त्री.—एक देवी का नाम ।

उ०—आउवा रा नाथ तौ सुगाळी पूजै ओ, झगड़ौ आदरियौ ।

—लो.गी.

सुगावणौ, सुगाववौ—देखो 'सुगाणौ, सुगाबौ' (रू.भे.)

उ०—आरती में भिळियां पछै प्रसाद नै सुगावणियां काला भगवांन अर बांमण रै सागै ई भक्ता नें ई आप रा वैरी बिणायलै ।

—जहूरखां मेहर

सुगावणहार, हारौ (हारी), सुगावणियौ—वि० ।

सुगाविओड़ौ, सुगावियोड़ौ, सुगाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुगावीजणौ, सुगावीजबौ—भाव वा० ।

सुगावियोड़ौ—देखो 'सुगायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुगावियोड़ी)

सुगिरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

सुगीणी—देखो 'सांगणी' (रू.भे.)

उ०—वाहर नीसरती काळ घणी सखरी मालाळी हुई उपरां तुरत लाभ री **सुगीणी** हुई।—कुंवरसी सांखला री वारता

सुगुण—सं.पु. [सं.] १ अच्छा गुण, श्रेष्ठ गुण।

उ०—कवि कहै छै। जि मुनै उपायौ। जै परमेस्वर **सुगुणां** की निधि छै। जाकै गुण कौ पार कोई न पावै।—वेलि टी.

२ अच्छा व्यवहार, अच्छी आदत।

रू.भे.—सुगण, सुगुन।

३ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

उ०—१ साल्हकुमर बिलसइ सदा, कांमिणी **सुगुण** सुगात। माळवणीनूं एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो.मा.

उ०—२ सु एक वडौ **सुगुण** मा'तमां। तैरी पोसाळ भेळा भणै। तद इहां री उठै आपस मांहै नजर लागी।

—वीजड़ वीजोगण री वात

उ०—३ इम कहि लेइ सीख सनेह सुं, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि। **सुगुण** नर एकलड़ौ पिण स्यौ उर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि।

—वि.कु.

सुगुणी—वि.स्त्री.—१ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुगणी' (रू.भे.)

सुगुणौ—वि. (स्त्री. सुगुणी) १ श्रेष्ठ एवं उत्तम गुणों वाला, गुणवान, गुणी।

उ०—हंसा नै सरवर घणा, कुसुम घणा भमरांह। **सुगुणा** नै सजण घणा, देस विदेस गयांह।—प.च.चौ.

२ शुभ लक्षणा।

उ०—रूप अनूपम मारुवी, **सुगुणी** नयण सुचंग। साधण इण परि राखिजइ, जिम सिव-मसतक गंग।—ढो.मा.

३ भाग्यशाली।

४ जो किसी विशेष कला का माहिर हो।

रू.भे.—सुगण, सुगणी, सुगणौ, सुगनी, सुगनौ, सुगुण, सुगुणी, सुगुन।

सुगुन—१ देखो 'सुगन' (रू.भे.)

उ०—वासी नरकां रां विदर, ग्यासी रा गैसोत। सत्यानासी रा **सुगुन**, दासी रा दैसोत।—ऊ.का.

२ देखो 'सुगुण' (रू.भे.)

३ देखो 'सुगुणौ' (रू.भे.)

सुगुर, सुगुरु, सुगुरू—सं.पु. [सं. सुगुरु] उत्तम या श्रेष्ठ गुरु जो अपने शिष्य को अच्छा ज्ञान सिखाये और सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करे।

उ०—१ सत्य गुरु कहि **सुगुर** रा, प्रणमुं मन सुद्ध पाय। हुता मूढ तै पिण हुआ, पंडित जासु पसाय।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै। सहनांण **सुगुर** तणा सुरता सुणौ, प्रमन की प्रगट कहै।

—वि.सं.सा.

उ०—३ **सुगुरु** साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहांइ न वीसमिया।—जयसेखर सूरि

सुगुरौ—वि.—१ अच्छे गुरु से मंत्र लेने वाला।

२ देखो 'सुगरौ' (रू.भे.)

सुग्गीव—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

सुग्घड़ी—देखो 'सुघड़ी' (रू.भे.)

सुग्घड़ौ—देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

उ०—कलंग परज कन्हड़ां, सुरां सवाद **सुग्घड़ां**। निवास सात नाळियं, त्रिग्रांम मूळ ताळियं।—रा.रू.

सुग्यांन—वि. [सं. सुज्ञान] १ उच्च कोटि का ज्ञान, श्रेष्ठ ज्ञान।

२ अच्छी बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि।

३ चतुराई, बुद्धिमानी।

४ अच्छी जानकारी, सब प्रकार की जानकारी।

५ एक प्रकार का सांम।

६ देखो 'सुग्यांनी' (रू.भे.)

उ०—वप रूप ओम नव घन वरण, हरण पाप-भय-ताप-हरि। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि **सुग्यांन** ओ ध्यांन करि।

—रा.रू.

सुग्यांनी—वि. [सं. सुज्ञानी] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ।

२ समझदार, ज्ञानवान, दूरदर्शी, विवेकी।

उ०—ताहरां कुंवर री मां नै तौ कह्यौ—थें तौ **सुग्यांनी** छौ। इतरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी तें मैं इतरौ ही हठ सुणियौ छै? यूं कहि रांणी रौ हठ छुडायौ।—पलक दरियाव री बात

३ चतुर, दक्ष, निपुण।

रू.भे.—सुग्यांन।

सुग्रह—सं.पु. [सं.] १ फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह।

[सं. सुगृह] २ अच्छा घर।

[सं. स्व-गृह] ३ अपना घर, स्वगृह।

उ०—भजंति **सुग्रह** हेमंति सीत भै, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्रै कोइ कंमळि, जण भारियौ रहंति जगि।

—वेलि

सुग्रही—सं.पु. [सं. सुगृह] घर।

सुग्री, सुग्रीव—सं.पु. [सं. सुग्रीव] १ वानर राज वालि का छोटा भाई जिसने श्रीराम से मित्रता करके अपने भाई वालि को मरवाया था। बाद में इसने सीता की खोज व रावण को मारने में श्रीराम की ससैन्य सहायता की थी। (डिं.को.)

उ०—१ सत्र हणै बळ समराथ रा, रिण लड़ै भड़ रुघनाथ रा। तदि लखण अंगद **सुग्री** हणवंत, नील नळ नर नाह।—सू.प्र.

उ०—२ सुग्रीवां नलं नील सुग्रीव मायां, हणू आदि आए मिळै जोड़ि हाथा।—सू.प्र.

पर्याय.—मुकठ, सूरजनुन।

२ हंस।

३ बहादुर, योद्धा।

४ एक हथियार विशेष।

वि.—अच्छी गर्दन वाला।

रू.भे.—सुगरीव, सुगिरीव, सुग्रीव, सुग्रीवेस।

सुग्रीवसेन—सं.पु.—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

उ०—सुग्रीवसेन नै मेघपुहप सम, वेग बळाहक इसै वहंति। गति लागौ त्रिभुवनपति खेड़ै, धर गिरि पुर सांम्हा धावंति।

—वेलि

सुग्रीवा—सं.स्त्री. [सं.] १ एक अप्सरा का नाम।

२ सुन्दर गर्दन।

सुग्रीवी—सं.स्त्री. [सं.] घोड़े, ऊँट और गधों की जननी कही जाने वाली कश्यप की पत्नी तथा दक्ष की एक पुत्री।

सुग्रीवेस—देखो 'सुग्रीव' (रू.भे.)

उ०—अखै नांम ऊभौ सुग्रीवेस आगै, लखै रांम जोवा कपी पाय लागै।—सू.प्र.

सुघड़—वि. [सं. सुघट] १ चतुर, निपुण, होशियार, बुद्धिमान।

उ०—१ भाली बडी ठकुरांणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही महुर, जिसी ही मारी वात मैं सुघड़। सौ खींवसी घणौ राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पांन पदारथ सुघड़ नर, अण तोल्या विकाय। जिम जिम पर भूयं संचरै, (तिम) तिम मोल मुहुंगा थाय।—प.च.चौ.

२ समझदार, विचारवान, विवेकी।

उ०—१ जोई जुगत करम री कीरत जपी न मुख सूं जावै। सुघड़ सुगां साथां री सुजस ऊमरदांन उडावै।—ऊ.का.

उ०—२ ताहरां वडारण महा चतुर सुघड़ थी, सौ दोनां ही री हेत देख रूप वय देख खुस्याल हुई।

—कुंवरसी सांखला री वारता

३ अच्छा, बढ़िया।

उ०—महा कपूत मुलक रै मांही, लैण सपूत लड़ाई नैं। पोल मांय ऊमर पद पढ़ियौ, सुघड़ लेख सुघड़ाई नैं।—ऊ.का.

४ जिसकी बनावट सुन्दर हो, सुनिर्मित, कलात्मक।

उ०—ग्रांटा खावती हंवाळी। लांबी भुजावां। धोळी सुघड़ दांतांनी, जांणै पळकता मोती ई खराद उतरया।—फुलवाड़ी

५ मधुर, प्रिय।

उ०—१ विविध बजंत्री वीण बजावै, सुघड़ झीण सुर सार। तिको कहे वीण वहै वंचक, हीण बजावण हार।—ऊ.का.

उ०—२ सुघड़ उठै बोली या नवेली, महल मारै ही सिधावज्यौ। पण बाग वन सरोवर, कदै भी मत जावज्यौ।—रा.सा.सं.

६ स्वरूपवान, सुन्दर।

उ०—जहां अंब नहीं बाग नहीं, फूलै न फुलवाई। राग रंग जहां नहीं, नहीं जहां सुघड़ लुगाई।—दूलजी जोइयै री वारता

७ जिसकी स्मरण-शक्ति तीव्र हो।

८ सुशिक्षित।

सं.पु.—लखपत पिंगल के अनुसार राजस्थानी का एक छन्द विशेष।

रू.भे.—सुगड़, सुगड़ौ, सुगठ्ठ, सुगर, सुग्घड़ौ, सुघड़ौ, सुघड, सुघर।

सुघड़इ, सुघड़ई—देखो 'सुघड़ाई' (रू.भे.)

सुघड़ता—देखो 'सुघड़ाई'।

सुघड़पण, सुघड़पणौ—सं.पु.—१ 'सुघड़' होने की अवस्था या भाव।

२ चतुरता, निपुणता, होशियारी, बुद्धिमानी।

३ सुन्दरता, खूबसूरती।

४ समझदारी, दूरदर्शिता।

५ निर्माण-कला की विशेषता।

६ माधुर्य।

रू.भे.—सुघड़ापण, सुघड़ापणौ, सुघड़ापौ।

सुघड़राई कांन्हड़ा—सं.स्त्री.यौ.—सब शुद्ध स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक राग।

सुघड़राई टोडी—सं.स्त्री.यौ.—सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

सुघड़ाइ, सुघड़ाई—सं.स्त्री.—१ चतुराई, निपुणता, होशियारी, बुद्धिमानी।

उ०—१ धोडाव्या नर रात्रिचर स्यूं, करि नै सबल लड़ाई। सांप्रत पांणी परगट कीधउ, ससु जांणें सुघड़ाई।—वि.कु.

उ०—२ सौ कमळसी भरमल री कुंवरसी रूप रंग तौ देखियौ ही थौ पण स्वभाव अर सुघड़ाई उण वखत करता दीठी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ कांम मैं इत्ती ई फुरती अर उत्तीई सुघड़ाई। देख देख भांणजी री तौ अकल ई कह्यौ नीं करती।—फुलवाड़ी

२ समझदारी, दूरदर्शिता।

३ सुन्दरता, खूबसूरती।

४ सुघड़ होने की अवस्था या भाव।

५ निर्माण-कला की विशेषता।

६ माधुर्य।

७ वर्ण्य विषय।

उ०—महा कपूत मुलक रै मांही, लैण सपूत लड़ाई नैं। पोल मांय ऊमर पद पढ़ियौ, सुघड़ लेख सुघड़ाई नैं।—ऊ.का.

रू.भे.—सुघड़इ, सुघड़ई, सुघडाई, सुघराइ, सुघराई।

सुघड़ापण, सुघड़ापणौ, सुघड़ापौ—देखो 'सुघड़पणौ' (रू.भे.)

सुघड़ी—सं.स्त्री. [सं. सुघटिका] १ अच्छा समय, अच्छी घड़ी, शुभ

घड़ी, शुभ वेला।

२ वह समय जब कोई अच्छा कार्य हो।

वि.स्त्री.—१ चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान।

२ सुन्दर, मनोरम।

३ अच्छी, श्रेष्ठ, उत्तम।

रू.भे.—सुग्घड़ी।

सुघड़ौ—देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

उ०—आनंद रौ आगार, आली है म्हांरौ **सुघड़ां** रौ सरदार। हां हे औ तौ निरधारां आधार, हां हे औ तौ निरधन रौ धन सार।
—गी.रां.

सुघट—वि. [सं.] १ सुन्दर, सुडौल।

उ०—१ धर धर कहावै सुमेरु सु ए रुखमणीजी का स्तन छै। सुमेरु का स्रिंग करि वरणाया छै। कटि छै सु घणी खीण छै अरु अति ही **सुघट** छै।—वेलि टी.

उ०—२ मुख निकट प्रकासित नास मंज। क्रित उलट प्रगट किरि **सुघट** कंज।—रा रू.

उ०—३ हार डोर **सुघट** सोहई, भरचा मांग स्यंदूर।
—रुकमणी मंगळ

२ सहज, आसान।

उ०—मारवाड़ सगळी यह महाराजा रै साथ। तिण सूं थां सामल हुवौ **सुघट वणै** वौ पाथ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ मजबूत, दृढ़।

४ अच्छी तरह बना हुआ।

सं.पु.—१ सुन्दर व सुडौल शरीर।

उ०—कंथ नै कांमणी सीख इणी विध कीयै, लागवा तणौं नह नांव लीजै। घाव लागै जठै दीसबै बुरौ घट, कंथ घट **सुघट** क्यूं कुघट कीजै।—कायर स्त्री रौ गीत

२ अच्छा पात्र।

रू.भे.—सुघट्ट, सुघाट।

अल्पा.—सुघाटौ।

सुघटित—वि. [सं.] १ सुन्दर, सुडौल।

२ सुगठित।

३ दृढ़, मजबूत।

सुघट्ट—देखो 'सुघट' (रू.भे.)

उ०—कटं पीत पट्टं, सुबंधं **सुघट्टं**। गतं पंचमुखं, चलै चाप रुखं।
—र.ज.प्र.

सुघड—देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

उ०—चाहत जोबन अधिक चित, मदन भई ऊनमत। हीरां डोलत हंसगत, **सुघड** सहेली सथ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

सुघडाई—देखो 'सुघड़ाई' (रू.भे.)

सुघर—सं.पु. [सं. सुगृह] १ अच्छा घर, श्रेष्ठ घर।

२ बया नामक पक्षी।

३ देखो 'सुघड़' (रू.भे.)

सुघराइ, सुघराई—देखो 'सुघड़ाई' (रू.भे.)

उ०—ईण सु विरोध नहुं बोलिजइ। नावी म साहणी **सुघराई** मांन।—वी.दे.

सुघाट—देखो 'सुघट' (रू.भे.)

उ०—१ धुरा **सुघाट** घाट कै कपाट छत्ति कै धरं। घनं प्रतच्छ तच्छ कै प्रदच्छ स्कच्छ कै घरं।—ऊ.का.

उ०—२ सब लोक वसै धनवंत सुपह, सोहै रूप **सुघाट** रौ। गहतंत विकट जोधांण गढ, वणौ मुकट वैराट रौ।—सू.प्र.

उ०—३ वज्र कपाट **सुघाट** विराजत, लखि दृढ दुरग स्वरग गढ लाजत। मठ अंदर सुंदर मूरत्ती, स्रीकरनी जय जयति सकत्ती।
—मे.म.

उ०—४ सदगुरु जिनचंद सूरिजी, सघलै गुणै देखि **सुघाट** रे लाल। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण मैं दीधौ पाट रे लाल।
—ध.व.ग्रं.

सुघाटौ—देखो 'सुघट' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—कहै सुपह फरहास कटायौ, घणौ **सुघाटौ** ढोल घड़ायौ।
—गो.रू.

सुघोर—सं.पु.—तीव्र आवाज, जोर का शब्द।

उ०—घसी अकास धूसरी, कि वात सेन विस्थुरी। निसांण पांण नद्दयं, **सुघोर** जोर सद्दयं।—रा.रू.

सुघोस—सं.पु. [सं. सुघोष] १ नकुल के शङ्ख का नाम।

२ एक बुद्ध का नाम।

वि.—१ जिसका स्वर सुन्दर हो।

२ अच्छी आवाज, अच्छा स्वर, अच्छा शब्द।

सुड़णौ, सुड़बौ—क्रि.स.—१ आनन्द के नगाड़े बजाना।

२ बेंत या छड़ी से बुरी तरह पीटना।

उ०—आप सूं फोरा मड़कलां माथै नाथावती कर उणां नै गळटूंपा दे'र घी पिलायोड़की रगाबग हुयोड़ी पेंसलां खोसणियां नै गुरांसा आप कसाई कैय सड़ासड़ लीली कांमड़ी सू **सुड़ता**।—चितरांम

३ चाटकर खा जाना।

४ रगड़कर इकट्ठा करना।

सुड़णहार, हारौ (हारी), सुड़णियौ—वि०।

सुड़िओड़ौ, सुड़ियोड़ौ, सुड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुड़ीजणौ, सुड़ीजबौ—कर्म वा०।

सुड़प—देखो 'सुड़फ' (रू.भे.)

सुड़पी—सं.पु—स्वर्ण तथा चाँदी का एक आभूषण विशेष जो पुरुषों के पैर के टखनों के नीचे धारण किया जाता है।

रू.भे.—सुरपी।

सुड़फ, सुड़फ—सं.स्त्री.—वात-विकार के कारण शरीर या शरीर के किसी

भग में रह-रह कर चलने वाली टीस।

उ०—सुड़को चालै सदा दाव दाव फिर दावूं। पाळै वैरी पास दाव दाव फिर दावू।—ऊ.का.

रू.भे.—सुड़ट।

सुड़कड़ाट, सुड़कुड़—सं.स्त्री.—फुसफुसाहट, कानाफूसी।

सुचंग—वि. [सं. सुचङ्ग] १ सुडौल, सुगठित।

उ०—१ नीलभमर जै कन्ह नरनारि घणउ काल छइं तै नरग मभारि। आगि वग्ग पूतनि सुचंग महइं दुक्ख नै नव नव भंगि।
—वस्तिग

उ०—२ अहिल्या नेम दियो तैं अंग, सरीर कुबज्जा कीध सुचंग।
—ह.र.

२ अत्यन्त सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ रूप अनूपम मारवी, सुगुणी नयण सुचंग। साधण इण परि राखिजइ, जिम सिवमसतक गंग।—ढो.मा.

उ०—२ तिहां किण सकल सभा मिली, त्रिप बैठौ मन रंग। छत्र विराजै मस्तकै, चांमर ढलै सुचंग।—वि.कु.

उ०—३ देखी (ताइ) चत्र विहगम दहलइ, रेखा संकति अनोपम रग। भरी किणही (कइ) विचित्र भरावी, संचउ करि नासिका सुचंग।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ आभूखण सोहै अंग अंग, सिर पाग वादळाई सुचंग।
—सु.रु.वं.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ पद्मनाभ पंडित सुकवि, वांणी वचन सुरंग। कीरति सोनिगिरा तणी, तिणि उच्चरी सुचंग।—कां.दे.प्र.

उ०—२ उमग अंग मैं उठै, सुचंग सत्य संगतै। प्रलापमांन अंग नीच, कीच कै प्रसंग तै।—ऊ.का.

४ शक्तिशाली, बलवान, बलिष्ठ।

उ०—१ पैदल प्रबल रथां द्विदपगी, चतुरंगी अनफौज सुचंग।
—र.रू.

उ०—२ नागरवेली नित चरइ, पांणी पीवइ गंग। ढोला, रयबारी कहइ, करहउ एक सुचंग।—ढो.मा.

५ शुद्ध, पवित्र, निर्मल।

उ०—१ निज अंग लगाय सुचंग कियौ नह, नीर सुचंग कियौ जन रे।—भगतमाळ

उ०—२ जगपावन त्रिपथा जाह्नवी, सुरगनदी सुरनदी (सुचंग)।
—ह.नां.मा.

६ ओज व कान्तिपूर्ण।

उ०—झळवळ भैवै झळकता, सुथरै डील सुचंग। भारतवाळी भौम पर, ससत नागोरी रंग।—नाहरसिंह सांदू

७ स्वस्थ, चंगा।

सं.पु.—१ घोड़ा, अश्व। (डि.को.)

२ सात भगण व अन्तिम दीर्घ का एक छन्द विशेष।

उ०—उगण साठि सौ पांच उचारि, सतरह लाख रूप गणि सार। सात भगण गुर अंत संभारि, नांम सुचंग छंद निरधारि।—ल.पि.

रू.भे.—सचंग, सूचंगी।

सुचंगौ—देखो 'सुचंग' (रू.भे.)

उ०—पावडियां सहत नरम पद पंकज, नूपुर हाटक परम पुनीत। छक कडवंध सुचंगा छाजै, पट अंगा राजै पुण पीत।—र.रू.

(स्त्री. सुचंगी)

सुच—वि. [सं. शुचि] १ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, साफ़।

उ०—१ खलक मही वै खोजणां, सुच प्रसन्न सुख संत। धार जिकै संतोख धन, विण परवाह वसंत।—बां.दा.

उ०—२ कदि जाट जीकारथौ, सुच सिनांन सुभाख्या। कहर करोध कुवांणि, वरजि करणि तीन्यौ राख्या।—वि.सं.मा.

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।

३ ईमानदार, निष्कपट, सच्चा।

४ चमकीला, चमकदार।

५ श्वेत, सफ़ेद।

६ ठीक, सही, उचित।

सं.पु. [सं. शुच] १ दुःख, शोक, सन्ताप।

२ पीड़ा, दर्द।

३ खेद, अफ़सोस।

४ देखो 'सुचि' (रू.भे.) (अ.मा.)

सुचक्कर—सं.पु. [सं. सु-चक्र] सुदर्शन-चक्र।

सुचत—सं.पु.—कवि। (अ.मा.)

सुचतौ—वि.—प्रसन्न, सन्तुष्ट।

उ०—तरै परधांनां कह्यौ—औ खोटौ आदमी छै नै गरज सारी छै, आज धरती सारी री मदार इण माथै छै इण नुं हर भांत कर सुचतौ कीजै।—नैणसी

सुचमुखौ—वि.—देखो 'सूचिमुख' (रू.भे.)

उ०—कूंण नईरत में पुरी, राकस वसै विसाळ। सुचमुखा सुगड़ कना, वडा रूप विकराळ।—गज-उद्धार

सुचरित, सुचरित्र—वि. [सं. सुचरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो, चरित्रवान।

२ जिसका आचरण व व्यवहार उत्तम हो।

सं.पु.—१ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र।

२ अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार।

सुचरुच, सुचरूप—सं.स्त्री.—पतिव्रता, सती। (अ.मा.)

सुचळ, सुचळि—वि.—१ अस्थिर, चञ्चल।

उ०—चळ वैभव संपत सुचळ, चळ जोवण चळ देह।—अज्ञात

२ अस्थायी।

सं.पु.—हंस। (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—अस पांखां आवर 'अजवावत', वावर जुध आवध विखम ।
ढूंढाहड़ा सतोल जळज ढिग, जै खळ भखिया सुचळ गत ।
—कोटा राव री गीत

सुचवणौ, सुचववौ–क्रि.स.–कहना, बोलना ।

सुचवन–सं.स्त्री. [सं. सुच्यवन] अग्नि, आग । (अ.मा.)

सुचवियोड़ौ–भू.का.कृ.–कहा हुआ, बोला हुआ ।
(स्त्री. सुचवियोड़ी)

सुचहिय–वि. [सं. शुचि-हृदय] शुद्ध हृदय वाला ।
सं.स्त्री.–सती । (अ.मा.)

सुचांणक – देखो 'सिचांण' (रू.भे.)
उ०—डाकर भर घसळां कुरंघ उडांणक, प्रथी वखांणक पेलै पार ।
सुलटी वागां झपट सुचांणक, धज मांणक वळवंत चत्र धार ।
—देवोजी दधवाड़ियौ

सुचार–वि.–१ शुद्ध, पवित्र ।
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।
३ सदाचारी, चरित्रवान ।
सं.स्त्री.–१ अच्छी चाल-चलन, अच्छा आचरण ।
२ देखो 'सुचारु' (रू.भे.)

सुचारा–वि.स्त्री.–१ शुद्ध, पवित्र ।
उ०—सांमगरी अग्र धरै सुचारा, साजै सव साधन सेवा रा ।
—सू.प्र.
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सुचारु, सुचारू–सं.पु. [सं. सुचारु] श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।
वि.–१ अत्यन्त सुन्दर, खूबसूरत, अतिशय मनोहर ।
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।
३ ठीक, उचित ।
रू.भे.—सुचार ।

सुचाल–सं.स्त्री.–१ अच्छी चाल, अच्छी गति ।
२ उत्तम आचरण, सदाचार ।
उ०—सुचाल चाल चाल कै, कुचाल चाल व्हैं कदा । अरी विचाल चाल व्हैं, अचाल चाल व्हैं अदा । —ऊ.का.
३ अच्छा रहन-सहन ।

सुचाळी–सं.स्त्री.–पृथ्वी, धरती । (डि.को.)
वि.–१ उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी ।
२ अच्छे रहन-सहन वाला ।
३ सुशील ।
४ अच्छी चाल या गति वाला ।

सुचि–सं.स्त्री. [सं. शुचिः] १ पवित्रता, विशुद्धता, स्वच्छता, सफ़ाई ।
उ०—१ नहीं मोती माळा, नहिन छक हाला सुचि नहीं । नहीं नारी प्यारी, वचन छिदगारी रुचि नहीं ।—ऊ.का.
उ०—२ कागां कुत्तां कुमांणसां, तिहवां एकौ रुचि । ऐसा खाणा खाईयै, जैसी उपजै सुचि ।—अनुभववांणी
उ०—३ हरीया खाणा अंन का, पीणा जळ का होय । भोजन माखी भखीयौ, सुचि कहां तैं होय ।—अनुभववांणी
२ ईमानदारी, सच्चाई ।
३ भलाई, सज्जनता ।
४ अग्नि, आग । (डि.को.)
उ०—बहरक चमक खुर सुचि झमक चकमक किलक डक लगि अजक चउ ।—वं.भा.
५ ग्रीष्म ऋतु, गरमी ।
६ आसाढ़ मास की वायु ।
७ कश्यप की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या ।
[सं. शुचिस्] ८ किरण, रश्मि । (नां.मा; ह.नां.मा.)
९ चमक, कांति, आभा ।
सं.पु.–१० पुण्य, धर्म ।
११ ब्रह्मचर्य ।
१२ पवित्रजन ।
१३ ब्राह्मण ।
१४ ईमानदार व सच्चा मित्र ।
१५ सूर्य, रवि ।
१६ चन्द्रमा, शशि ।
१७ शुक्र-ग्रह ।
१८ शृङ्गार-रस ।
१९ चित्रक वृक्ष ।
२० आसाढ़ मास का नाम । (डि.को.)
उ०—सुचि नवमी कुज असित भांन वसि चउ तेरह मत ।
—वं.भा.
२१ ज्येष्ठ मास का नाम । (डि.को.)
वि. [शुचि] १ शुद्ध; पवित्र ।
उ०—१ तुं तन सुचि कियां सुचि होई, तौ पांडै और असुचि नहीं कोई ।—अनुभववांणी
उ०—२ ब्रह्म विचार अपार, अजित अरि लगै न नरहरि । अखिल अथिर सुचि सुथिर, गया भजतां भै थरहरि ।
—ह. पु. वां.
उ०—३ रुत प्रांत चंदण कपूर; सझै समसांण सझाई । विविध अमित सुचि वसत, चेहग्नि निमति चलाई ।
—रा. रू.
२ श्वेत, सफ़ेद ।* (डि.को.)(ह.नां.मा.)
३ उज्ज्वल, स्वच्छ । (नां.मा.)
रू.भे.—सुइ, सुई, सुच, सुची ।

सुचित–सं.पु. [सं.] १ अच्छी बुद्धि, अच्छा ज्ञान ।

२ शुद्ध मन, पवित्र मन।

३ निश्चिन्तता, बेफिक्री, मस्ती।

४ मन की स्थिरता, एकाग्रता।

वि.—१ स्थिर मन, एकाग्रचित्त।

उ०—१ सु मनरह हिजु कारणइ, आगिलउ राजा सभा सहित सुचित हुइ सुणाइ, नउ सु-कवि कु-कवि की पारिखा जणाइ।
—अ. वचनिका

उ०—२ सुचितां होय भजो साहब नैं, पांमै सदगत प्रांणी। वेद पुराण कहै पर वांमां, नरकां तणी निसांणी।
—र. रू.

२ प्रसन्न, खुश।

उ०—आभ थोभै भुजै 'माल' हर आभरण, वधै आधक छत्रां निमोवा-चीस। दुचित विलखै तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस।—गु.रू.व.

रू.भे.—सुचीत, सुचील।

सुचितई—सं.स्त्री.—१ सुचित्त होने की अवस्था या भाव।

२ एकाग्रता, स्थिरता।

३ शुद्धता, पवित्रता।

सुचिता, सुचिताई—सं.स्त्री.—पवित्रता, स्वच्छता।

उ०—पहरण मैला पंगरण, सुचिता सूं सौ कोस। पांणी आवै दीवड़ां, होका चमड़पोस।—बांकीदास

सुचितौ—वि.—खुश, प्रसन्न।

उ०—जेठी घोड़ौ छै सु सिखरै उगमणावत नूं देई। अर रजपूत दुचिता छै सु तूं सुचिता करै।—नैणसी

सुचित्त—वि.—जिसका चित्त स्थिर हो, शान्त, निश्चिंत।

सुचिमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू.भे.)

सुची—देखो 'सुचि' (रू भे.) (ह.नां.मा.)

उ०—देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला, देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला। देवी गोम गंगा देवी वोम गंगा, देवी गुप्त गंगा सुची रूप अंगा।—देवि.

सुचीत—वि.—१ सुन्दर, सुहावना, मनोहर।

उ०—दमराहा लग भी रहइ, माळवणी री प्रीत। बरिखा रुति पाछी वळी, आवौ मरद सुचीत।—ढो.मा.

२ शुद्ध, निर्मल।

३ देखो 'सुचित' (रू.भे.)

सुचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू भे.) (ह.ना.मा.)

सुचील—देखो 'सुचित' (रू.भे.)

उ०—१ जिह नगरी धरंम दिढाव, मत सिवरंग नर सूरा। सभै सुचील सिनांन, जुगति जरणां पंग पूरा। वि.सं.मा.

उ०—२ मातिछ मनमुखि आय, सुचील जित हुवौ सिनांनी। 'गांग' गंग मुखि सीख, जका गुर कही स मांनी।—वील्हौजी

सुचेत—देखो 'सचेत' (रू.भे.)

सुचेतन—सं.पु.—१ विष्णु। (डि.को.)

२ देखो 'सचेतन' (रू.भे.)

सुच्छंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू.भे.)

उ०—अबार तांई सरदार इणी ख्याल में हौ कै लीना उण सूं ई हेत करै है। जद ई तौ उण घोड़ी अर सोनै री गांठड़ी लीना नैं सूंपणै री वादौ म्हारै सूं करवायौ। म्हारै सागै औ भरोसौ भी दिरवायौ कै अब लीना वैजू रै सागै सुच्छंद घूम-फिर सकै है।—तिरसंकू

सुच्छ—देखो 'स्वच्छ' (रू.भे.)

उ०—कुवळ नयण कुळ सुच्छ, अगनयणी मनांसमी। मुंहडै आगळ मुच्छ, जम क्यूं जासी जेठवा।—जेठवौ

सुच्छता—देखो 'स्वच्छता' (रू.भे.)

सुच्छम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—१ सुच्छम रोमावळि सुखद, बरणी उकति विचार। सांप्रति रस सिणगार री, वेल कियौ विसतार।
—बां. दा.

उ०—२ म्हनैं रोज सुणाई देवण आळा सुच्छम संदेसड़ला सूं कितरी ई घणी सांपरत, परस, गंध, संवरण अर सुवाद रै सगळै गुणां सूं छळकती, सीतळ, फूटरी, नसीली, सुरीली वा म्हनैं आप री मीठी वांथां मांय भरनै चली गई।—तिरसंकू

सुच्छमता—देखो 'सूक्ष्मता' (रू.भे.)

उ० कटि सुच्छमता हूंत लजांणौ केहरी, हररी अणिमा सिद्धि बरावर देहरी।—बां.दा.

सुछंद—देखो 'स्वच्छंद' (रू.भे.)

उ०—उण आपरा सुरगां मैं पूग्योड़ा घोड़ां नैं जिकौ सनमांन दियौ अर हमेस रै वास्तै वैजू नै सुछंद घूमण रौ जिकौ वचन दियौ वै सब वातां वर-वर मैं म्हनैं याद आय रयी ही अर साचै बहादुर री कहांणी सी म्हारा कानां मांय गूंज रयी ही।—तिरसकू

सुछम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ वरतुल सुछम कपोळ रसीली आंमरा, किया तयारी वेह दरप्पण कांमरा।—बां.दा.

उ०—२ निरालंब निरलेप अनंत, ईसर अविनासी। थावर जंगम थूळ, सुछम जग निखिल निवासी।—ह.र.

सुछळ, सुछळि—देखो 'छळ' (रू.भे.)

उ०—१ कहै प्रोहित 'केहरी', अम्हां घरवट अधिकाई। गांम सुछळ सब वाहि; वडा जुध तरै वडाई।—सू.प्र.

उ०—२ सुतन 'वीरांच' जिम मांगता 'अजन' सुत, कायवां पुरांण कथ कहांणी। परम कमधज सुछळ सूपातां, पांण ओदवळीयौ दांन

पांणी ।—सवाईसिंह री गीत

उ०—३ तीन पहर रवि तपै, जियां ऊपर जग जांणै। स्यांम सुछळि अ्रत सभिजण, अधिक उच्छब चित आंणै।—सू.प्र.

उ०—४ रिण कोड उठी समना रवद्द,सूरमा अठी वड छड सबद्द। सांमंत रूप सांमंत सीह। 'अजमाल' सुछळ चांपौ अवीह।

—रा.रू.

उ०—५ राजा छळ खीची कुळ राहै, सांम धरम ऊभा व्रत साहै। धांधळ 'पाल' हरा पण धारी, ऐ 'अगजीत' सुछळ अहंकारी।

—रा.रू.

उ०—६ 'चतुरेस' महाबळ चाहुवांण, महाराज सुछळ बळ अप्रमांण। 'अखमाळ' कमंधै वळ अथाह, गंजवा खळां 'बालौ' सगाह।—रा.रू.

उ०—७ अनि घणा कीध जुध सुछळि आप। पह जिकौ आज कीजै प्रताप।—रा.रू.

सुछांन—सं.पु.—शिव, शङ्कर। (अ.मा; नां.मा.)

सुछिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे.)

उ०—अवरण वरण करम नहिं काया, सुछिम ब्रह्म सूं सीतळ छाया।—ह.पु वां.

सुजंग—सं.पु.—युद्ध।

उ०—हत छांह देख उडता विहंग, जौ कर ही काळ हुंता सुजंग।

—शि.रू.

सुज—सर्व.—१ वह, वे।

उ०—१ आहव छोड फतैखां आसुर, धरम दुवार गयौ छोडै धर। पुर लूटियौ वडी सिध पाई, संभिया सुज मारिया सिपाई।

— रा.रू.

उ०—२ साहू मंत्री मेळ(सी) सकाजा, मिळणै आ हूंता महाराजा। कर जोड़ै अरजां सुज करसी,धणी जेम निजरां द्रब धरसी।—सू.प्र.

२ उसके।

उ०—रूप भाग गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण।

—रा.रू.

३ उस।

उ०—१ जमदाढ वांमी अंग भीड़ जड़ी, सुज ऊपर पेटीय सावरड़ी।

—गो.रू.

उ०—२ सुज कंत अंत अमरां सुपुरि, चौओड़ी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह 'चंदू' छडी, सेखावत व्रत संभरै।—रा रू.

३ वही।

उ० —१ हरि चाहै सुज हुअै. लेख साहै मुरलोयी। भूमंडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी।—रा.रू.

उ०—२ प्रथम करो यां रै सुज पल्लै, झल्लौ बाज चिड़ी जिम झल्लै। यांनै पकड़ निजर मौ आंणौ, रिण गुण पछै संभाळू रांणौ।

—रा.रू.

सं.पु.—मस्तिष्क, सिर।

वि.—१ शुभ।

२ शुद्ध।

क्रि.वि.—१ मानो।

उ०—पिलवांणां आंकस पांण धरै, सुज दांमणि जांणि खिवै सिहरै। धज स्याह वरन्नह धम्मळियं, परि लाल सवज्जह पीयळयं।

—गु.रू.वं.

२ पुनः, फिर।

३ और।

उ०—रांम पाट कुस भूप विराजै, सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजै। संभ्रम अतिथ निखधि त्रप सोहत, राजा निखध पाटि नभ राजत।—सू.प्र.

रू.भे.—सुजि।

सुजगीस—क्रि.वि.—शुद्ध भावना से।

उ०—१ हम ऊपरि करुणा तइं कीनी, जग जीवन जगदीस। तोरण थी रथ फेरि सिधारै, जोग ग्रह्यौ सुजगीस।—स.कु.

उ०—२ अतिसय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निसदीस। सहजानंद नंदन वनइ रे, केलि करइ सुजगीस।—वि.कु.

सुजड़—सं.स्त्री.—१ तलवार। (डि.को.)

उ०—१ घड़ उब्भै घड़ियाल ज्यूं, घट घट वग्गा घाव। रज रज हुयगौ 'रूपसी', सुजड़ां 'कुंभ' सुजाव।—रा.रू.

उ०—२ साहवै मंझ हौद ताल सिर, सारंगखां माथै सुजड़। पंचमुख साथ घणा पाधोरै, पांच खांन पाड़ै अपड़।

—द.दा.

उ०—३ कीधौ विसेख करतै कळह, तरसि तूंग 'चांदै' तणौ। वणियौक चंद' संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणौ।

—गु. रू. वं.

उ०—४ एक घड़ी वग्गी सुजड़, धड़ कड़ लग्गी धार। पिसण थया विमुहा पगां, गहि वग्गां तोखार।—रा.रू.

२ कटार।

उ०—१ मल्हपियौ रूप अभियांमणौ, बहसतौ बंबाड़तौ। उरड़तौ सुजड़ जड़तौ असुर, पांच हजारी पाड़तौ।

— सू. प्र.

उ०—२ केहर रै हाथळ करी, कीधी दांत वराह। सूर काज कीधी सुजड़, विध करतापण वाह।—बां.दा

उ०—३ नग-जड़ित सुजड़ नराज, वडवडा मदफर वाज। पौसाक ऊंच अपार, भळि लुटै द्रव्य भंडार।

— सू. प्र.

उ०—४ स्रीहथां साह सिरपाव, सजि असि गज अवि स्रीनग अथां। स्रीहथां खाग खंजर सहित, सुजड़ बंधाए स्रीहथां।

— सू. प्र.

स.पु.—३ भाला।

उ०—साम्हे सद्द सुजड़ जम सरियें, कळकळ कोप किये कमळ। दाळावत महल नह पावै, गुण वानै पतसाह गळ।

—महाराणा सांगा री गीत

रू.भे.—सुजड़ौ, सुजड़, सुजड़।

सुजड़हत, सुजड़हथ, सुजड़ाहथ, सुजड़ाहथौ – वि. – जिसके हाथ में तलवार, कटारी या भाला हो, शस्त्रधारी।

उ०—सुजड़ाहथौ भदावत 'सांमळ', 'भीम' हरी छळ धणी भुजाळ। 'सांभळ' जोड़ जोध 'मादावत', रिण पड़िहार सजूंभौ रावत। रा.रू.

स.पु.—शस्त्रधारी योद्धा, वीर।

सुजड़ी—स.स्त्री.—देखो 'सुजड़' (रू.भे.)

उ०—१ जुध वाळियौ किसन जोधपुरा, निहसै वंसि चाढियौ नीर। जम देवळ रचयौ सुजड़ी जड़ी, वढि ढाहै देवळ वणवीर।

—अमरसिंह राठौड़ री गीत

उ०—२ गाहि सांम्हरि-नयर ढोळि फौजां गजां, ताळ सर दीलड़ी ढाळि तांणी। विजायौ 'मांन' सजितां सुजड़ी विगत, जगतचग नाति वांणाम जांणी।

— सवाई जयसिंह री गीत

सुजन—१ देखो 'स्वजन' (रू.भे.)

उ० — अपराध कोट जावै अलग, तरै स्रग पांमै तिकै। सुजन रा इमा फळ संपजै, 'जगा' आग न्हावै जिकै।

—ज.खि.

२ देखो 'सज्जण' (रू.भे.)

उ०—भगवती प्रसन्न हुई कही—थारौ पुत्र चिरंजी रहसी। महाधरमात्मा होयसी। राजा प्रजा पुत्र जन्म रौ महोत्सव मनायौ। लोगां रा मन फिरिया। क्रपण था सौ दातार हुआ। दुरजण सुजन हुआ। चोरां चोरी छोडी।

—वैताळ पचीसी

सुजनता—देखो 'सज्जनता' (रू.भे.)

सुजनी—सं.स्त्री.—एक प्रकार का बहुमूल्य मखमली वस्त्र जिस पर जरी व कारचोब का काम किया हुआ होता है। यह रईसों के बैठने के गद्दी आदि पर बिछाया जाता है।

उ०—१ विट्ठलदास होलिया सूं उतर नै सुजनी बिछवाई, तकिया न्हाया ग्रार नीना बैठिया।

— गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ सदा दरगावंत जाजमां गिलमां रा बिछावणा हुवतै रह्या छै। ऊपरा गदरा चादरां बिछायजै छै। तै ऊपर सुजनी ढाळजै छै. सू किण भांत री छै? भड़ोछी वाफतैरी, पसी कलाबत्तू रेसम रै कारचोभी रै कांम री, …लान रै कारीगर री दीवी छै।—रा.सा.सं.

सुजळ—सं.पु. [सं. सुजल] १ पवित्र जल, उत्तम जल।

उ०—१ अधम न जा तीरथ अवर, तु जा सुरसरी तीर। दीरध लहसी तीन द्रग, सुजळ पखाळ सरीर।—बां.दा.

उ०—२ माळी ग्रीखम मांह, पोख सुजळ द्रुम पाळियौ। जिण रो जस किम जाय, अत घण बूठां ही 'अजा'।—बां.दा.

२ यश, कीर्ति, बड़ाई।

उ०—सुजळ वरद चाढण धर संभर, अणभंग आप वंस अजुआळ। रूकां जीत अखाड़ै रावत, रांणा तणा धरा रखवाळ।

—रावत बुद्धसिंह चौहांण री गीत

३ आभा, कान्ती, दीप्ति।

उ०—चविजै 'वीर' पाटि राव 'चौंडौ', चहुंवै जकां करण जस 'चौंडौ'। चाढण सुजळ उभै कुळ 'चौंडौ', चरसुकाळ विरदां धर 'चौंडौ'।—सू.प्र.

४ देखो 'सजळ' (रू.भे.)

सुजस—सं.पु. [सं. सुयश] १ यश, कीर्ति।

(अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सिव सुमरौ वाहण सदन, तिलक हार सिर तोय। जेहल री यां जेहड़ौ, कहै सुजस सह कोय।—बां.दा.

उ० —२ इम जीपै आवियौ, 'गंग' वाजतां नगारां। सुजस वधै धर सिरै, उछक छक वधै अपारां।—सू.प्र.

२ प्रशंसा, तारीफ, वाहवाही।

उ०—मंगण लारै मंडिया, आगै भागौ जाय। सुजस कुजस नह संभळै, जंबुक सूंब कहाय।—बां.दा.

३ ख्याति, बड़ाई, नामवरी।

उ०—साह कळि सेन लूटै तखत साह चा, वजाड़ै 'जोध' हर जैतवाजा। दीपिया ऊजळा प्रवाडा दुवै दुहुं, राज रा भुज सुजस महाराजा।—नरहरदास बारहठ

रू.भे.—सुजसउ।

सुजसउ—१ देखो 'सुजस' (रू.भे.)

२ देखो 'सुजसौ' (रू.भे.)

उ०—वग्यिांम जिकौ विकराळ वडाळड, हद वेहद हद करण हद। तीजी जटा काढियउ ताहरां, भडताड सुजसउ वीरभद।

—महादेव पारवती री वेलि

सुजसवांन—वि.—कीर्तिमान, यशस्वी।

उ०—गजराज सौहायक जीउं गोपाळ, पह तणी करनला करी पाळ। थापीयौ सिखर पुगळ सुथांन, वड परचौ करनी सुजसवांन।

—रांमदांन लाळस

सुजसा—सं.स्त्री. [सं. सुयशा] १ एक अप्सरा का नाम।

२ परीक्षित की एक रानी का नाम।

सुजसौ—वि.—यशस्वी।

उ०—सुजसा वट गरट मेलिया ईसर, आवै महल मनाळा आप।

लाडा तरा इजि दरसरा लाधइ, प्रिथी तरा खाइजस्यइ पाप।
—महादेव पारवती री वेलि

रू.भे.—सुजसउ।

सुजांण—वि. [सं. सज्ञान] १ चतुर, बुद्धिमान।

उ०—१ मा मोरी, सूत्याग्रक भंवर **सुजांण**। वाईजी रै वीरै मुख पर दुपटौ राखियौ।—लो.गी.

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री, वदजइ किसा किसा वाखांण। वरी घणइ (ताइ) उछाह ल्याया, जांनी ईसर तणा **सुजांण**।
—महादेव पारवती री वेलि

२ दक्ष, निपुण, माहिर।

उ०—१ ढोलउ-मारू पउढिया, रसमइं चतुर **सुजांण**। च्यारै दिसि चउकी फिरइ, सोहड़ भूप जुवांण।—ढो.मा.

उ०—२ ताई देख धाई ताड़का सांम्ही रांम **सुजांण**।—रांमरासौ

उ०—३ बेऊं चतुर **सुजांण**, पेम-रंग-रस पिया। बरखा रुति घण वरख, जांणि कु हरखिया।—ढो.मा.

उ०—४ कवाडउ रतन गारि कुंदण री, युगति सिलावट चुणी **सुजांण**। तेज खमइ कुण देख तियां रउ, भुवण भुवण जिहां ऊगइ भांण।—महादेव पारवती री वेलि

३ समझदार, विचारवान, सज्ञान।

उ०—१ वायस वीजउ नांम, तैं आगळि लक्ष्यउ ठवइ। जइ तूं हुई **सुजांण**, तउ तूं वहिलउ मोकळै।—ढो.मा.

उ०—२ ज्योतिखी तेड़ै राव **सुजांण**, पूछै जिण पंडित वेद पुरांण।
—रांमरासौ

उ०—३ जांणै जिकै **सुजांण** नर, ना जांणै सौ बोक। जमीं'र असमांना विचै, अरवद तीजौ लोक।—डाढाळा सूर री वात

४ पंडित, विद्वान्।

उ०—कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै **सुजांण**। मांडै कायव 'माघ' मधि, पंडित 'माघ' प्रमांण।—सू.प्र.

५ प्रियतम, प्रेमी।

उ०—१ म्हारौ मन मोह्यौ, छै जी स्यांम **सुजांण**। माधुरी मूरत सुंदरी सूरत, जांणैं कोटिक भान।—मीरां

उ०—२ दोउ मयमंत **सुजांण**, सेज दिसि वाहुड़इ। जांणै धरती-काज, असप्पति आहुड़ई।—ढो.मा.

६ सज्जन।

सं.पु.—पति, ख़ाविंद।

२ परमात्मा।

उ०—मथै तैं वार किता महरांण, सुरां लै दीध अम्रत्त **सुजांण**।
—ह.र.

३ राजा, नृप।

उ०—सहनक तणां **सुजांण**, पारीसा 'पातल' तणा। तैं राहवियां रांण, एकण हूंता 'ऊदवत'।—सूरायच टापरचौ

रू.भे.—सजांण, सजांन, सुजांणा, सुजांणी, सुजांन, सुयांण, सूजांण।

सुजांणी—देखो 'सुजांण' (रू.भे.)

उ०—लागी प्रीत मोहि भई पूरांणी, भावै जांणी मजांणी। लोक लखी सैं कौंण कांम है, सुंदरी सांम **सुजांणी**।—अनुभववांणी

सुजांन—सं.पु.—१ पँवारवंश की एक शाखा। (वं.भा.)

२ देखो 'सुजांण' (रू.भे.)

उ०—१ संम्रित साख पुरांन कु, सीख'रि भया **सुजांन**। हरीया अछर हेक विन, चतुराई सै मांन।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया दळ ऊमटि घटा, तवल घुरै निसांन। दहल पड़ै सिर दोखियां, आयै सूर **सुजांन**।—अनुभववांणी

सुजाक—देखो 'सूजाक' (रू.भे.)

उ०—गरमी, सोज, **सुजाक**, पांव पुरसां रै होवै। मस्सा, नस-नासूर, भगंदर भारी रोवै।—नारी सईकड़ौ

सुजाग—१ देखो 'सजग' (रू.भे.)

उ०—१ औ नवमौ उत्तरण वाळौ। वींदणी आखै दिन मेड़ी मैं ईं सूती रैवै। तीन तीन दायां हाजरी मैं। अस्टपौर **सुजाग** रैवै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ हाथियां रै गळै झूलता वीरकंठ, ऊंटां रै गोडां लूमती नेवरियां, घोड़ां रै पगां खणकतां आंवळां री गमक सूं कांकड़ रौ कण कण जांणै **सुजाग** व्हैगौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सूजाक' (रू.भे.)

सुजागर—वि.—१ जो देखने में अत्यन्त सुन्दर लगे, मनोहर।

२ प्रकाशमान।

सुजाणौ, सुजाबौ—देखो 'सूजाणौ, सूजाबौ' (रू.भे.)

उ०—वौ पुटिया रै आळै दूजा पंछियां रै साथै नीं गियौ। मूंडौ **सुजायोड़ौ** उणी ठौड़ बैठौ रह्यौ।—फुलवाड़ी

सुजाणहार, हारौ (हारी), सुजाणियौ—वि०।

सुजायोड़ौ भू०का०कृ०।

सुजाईजणौ, सुजाईजबौ—कर्म वा०।

सुजात—वि. [सं.] जिसका जन्म उत्तम विधि से हुआ हो, जो विवाहित स्त्री-पुरुषों की संतान हो।

स.पु.—जैनियों के बीस विहरमानों में से पाँचवाँ विहरमान।

उ०—विहरमांन जिणवीसै वंदीयै, महाविदेह विख्यात। सीमंधर १ युगमंधर २ वाहुजी ३ स्रीसुवाहु ४ **सुजात** ५।—वृ.स्त.

उ०—२ **सुजात** तीर्थंकर ताहरी, हुयइ देव किण होड़ि रे। देव बीजै तउ दूखण घणां, तुं मइ नहीं तिल खोड़ि रे।—स.कु.

सुजाति—सं.स्त्री. [सं.] उत्तम जाति या कुल।

वि.—१ उत्तम कुल या जाति का, कुलीन।

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—वेद व्यास सींगी रिख वासिट, विस्वामित्र अजाति अगसत

यत्नमीत कुन गोतम, हरि भज होय **सुजाति** ।—अनुभववांणी

सुजाव—देखो 'सुजाव' (रू.भे.)

उ०—'करन' सुजाव वर्दै तौ करणां, कळहंता गम अगम किया ।
चाहै भूमंडळ चीनोड़ा, वू धारक जिम ब्रहमधिया ।
— महारांणा जगतसिंह री गीत

सुजायत—वि.—जो अच्छी सलाह दे, उत्तम सलाहकार ।

सं.स्त्री [अ. शुजाअ+रा.प्र. आयत] वीरता, शौर्य ।

उ०—सुजायत मांटी पणौ मोटौ गुण छै ।—नी.प्र.

सुजायोड़ौ—देखो 'सूजायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुजायोड़ी)

सुजाळ—सं.पु.—चमड़े या सूत की बनी एक रस्सी या तस्मा जो बैलों को गाड़ी या हल में जोतते समय गले में बांधकर जूए से बांधी जाती है ।

सुजाव—सं.पु. [सं. सुजातः] १ पुत्र, बेटा । (डिं.को.)

उ०—१ तास **सुजाव** प्रसेन जीन तत्र, जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ जत्र ।—सू.प्र.

उ०—२ हाथियां कै हलकै खंभूठांणा तै खोळै एरापत कै साथी भद्रजाती कै टोळै अत देहुकै दिग्गज विंध्याचळ कै **सुजाव** रंग रंग चियै.........!—र.रू.

उ०—३ घड़ उडभै घड़ियाळ ज्यूं, घट घट वग्गा घाव । रज रज हुयगौ 'रूपसी', सुजड़ां 'कुंभ' **सुजाव** ।— रा.रू.

२ शत्रुघ्न का एक नाम । (डिं.को.)

३ देखो 'सुझाव' (रू.भे)

रू.भे.—सुजाव, सूजाउ, सूजाव ।

सुजावणौ, सुजावबौ—१ देखो 'सूजाणौ, सूजाबौ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुझाणौ, सुझाबौ' (रू.भे.)

सुजावणहार, हारौ (हारी), सुजावणियौ—वि० ।

सुजाविग्रोड़ौ, सुजावियोड़ौ, सुजाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुजावीजणौ, सुजावीजबौ—कर्म वा० ।

सुजावियोड़ौ—१ देखो 'सूजायोड़ौ' (रू.भे.)

२ देखो 'सुझायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुजावियोड़ी)

सुजि—देखो 'सुज' (रू.भे.)

उ०—१ ध्रिक मांमी किया गुण वीसरै, गुणधिकार विण हरि तरणि । **सुजि** ध्रिक तरणि पिय अंत मुणि, घर तक्कै मोटां घरणि ।
—रा.रू.

उ०—२ पांन प्रयाग वड़ तणौ पोढ़ियौ, **सुजि** हरि समरि ऊवर करि सोध । —ह.नां.मा.

उ०—३ **सुजि** जळ पियै जरन विण सुरनि, मगरपचीस हुवै दिव सुरनि ।—सू.प्र.

उ०—४ मीनादि सखी रांणी आगै **सुजि**, गांगी पूछै रुखमणी । आज कहौ तौ आप जाइ आवूं अंब जात्र अंबिका तणी ।—वेलि

उ०—५ संसक्रत है सुरभाख, आदि पहिला उचारूं । **सुजि** भासा दूसरी, सेस दूजै विसतारूं ।—सू.प्र.

सुजीव—सं.पु. [सं. सुजव] घोड़ा, अश्व । (ह.नां.मा.)

सुजीवण—देखो 'सजीवण' (रू.भे.)

उ०—रिदा न भूलै नांव रस, ओही **सुजीवण** मंत । अनंति नांएं एक नांव, एकणि नांय अनंत ।—सुरजनदास पूनियौ

सुजोग—सं.पु. [सं. सुयोग] १ अच्छा योग, सुयोग ।

२ संयोग, योग, अवसर ।

सुजोधन—सं.पु. [सं. सुयोधन] दुर्योधन का एक नाम ।

सुजोर—वि.—१ पक्का, दृढ़, मजबूत ।

२ बलवान, शक्तिशाली ।

सुज्जड—देखो 'सुजड़' (रू.भे.)

सुझणौ, सुझबौ—देखो 'सूझणौ, सूझबौ' (रू.भे)

उ०—जद पट उळझै तौ पग सुळझै, मद मत्त मनां में हास सुझै ।
—सकुंतळा

सुझतौ—देखो 'सूझतौ' (रू.भे.)

उ०—स्वांमीजी लोकां नै कह्यौ—थै **सुझता** तौ गहणौ गमायौ अनै आंधा कनां सूं कढावौ सौ गहणौ कठा सूं आसी ।—भि.द्र.

सुझाड़—सं.पु.—१ चंदन । (नां.मा; ह.नां.मा.)

२ वृक्ष । (नां.मा.)

सुझाणौ, सुझावौ—क्रि.स. ['सूझणौ' क्रिया का प्रे.रू.] १ सुझाव देना, प्रस्ताव करना ।

२ दिखलाना, बतलाना, ध्यान दिलाना ।

३ मार्ग-दर्शन करना, रास्ता बताना ।

४ देखने के लिए प्रेरित करना ।

५ युक्तियाँ प्रस्तुत करना ।

सुझाणहार, हारौ (हारी), सुझाणियौ—वि० ।

सुझायोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुझाईजणौ, सुझाईजबौ—कर्म वा० ।

सुजावणौ, सुजावबौ, सूझाणौ, सूझाबौ, सूझावणौ, सूझावबौ
—रू०भे० ।

सुझायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सुझाव दिया हुआ, प्रस्ताव किया हुआ । २ दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ, ध्यान दिलाया हुआ । ३ मार्ग-दर्शन किया हुआ, रास्ता बताया हुआ । ४ देखने के लिए प्रेरित किया हुआ ।

(स्त्री. सुझायोड़ी)

सुझाव—सं.पु.—१ प्रस्ताव ।

२ सलाह, राय, मशविरा ।

३ तजवीज, तरकीब ।

रू.भे.—सुजाव ।

सुझियोड़ौ—देखो 'सूझियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुझियोड़ी)

सुट्ट—वि. [सं. सुप्] १ स्तम्भित, हत-प्रभ, भौंचक्का।
उ०—पछै राजकंवर मांडनै सगळी वात सुणाई। सुणण वाळां रै कांनां रा कीड़ा झड़ग्या। **सुट्ट** होय पाखांण री पूतळियां रै उनमांन सगळी वारता सुणता रह्या।—फुलवाड़ी
२ निश्चल, स्थिर।
३ किंकर्त्तव्यविमूढ़, जड़-बुद्धि।
उ०—केई जणा तौ इण भांत **सुट्ट** व्हैगा, जांणै सगळी सुध-बुध माथै वांण व्हैगौ।—फुलवाड़ी
४ अचेत, वेहोश।
५ तल्लीन, एकाग्रचित्त।
उ०—म्हैं सगळा ई **सुट्ट** व्हियोड़ा बाबा रै मूंडा सूं निकळता बोल सुणता हा।—फुलवाड़ी

सुठांम—सं. पु. [सं. सुस्थान] १ अच्छा स्थान, अच्छी जगह, उत्तम
उ०—ऊंच-पणै सहु जोयण बहुत्तर, सोजोयण आया मारै। पिहुल पणैं पचास जोयण ना, प्रभु प्रासाद **सुठांमा**।—वृ.स्त.
२ उत्तम एवं सुन्दर पात्र।

सुठि, सुठौ—वि. [सं. सुष्ठु] (स्त्री. सुठि) १ सुन्दर, मनोहर।
उ०—ईसर उठ भग्गा, घोमर अग्गा, बै नै पग्ग, लग वग्गा। **सुठि** नारि सुहग्गा, मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रच दग्गा।
—भगतमाळ
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—स्राव्य सुभावत है सुकवी **सुठि**, काव्य कपूतन भावत कैसै। वंध किलौरन कंधन कै विधि, अंधन आरसि ओपत ऐसै।
—ऊ.का.

सुड—वि.—अच्छा, वढ़िया।

सुडभक—क्रि.वि.—अच्छे ढंग से।
उ०—ताहरां राजा चारण नूं पूछै छै। 'जु तै सारीखौ मोटौ आदमी तौ दरवार आवै सु तौ कपड़ै-लतै भली भांत **सुडभक** रहनै हजूर आवै।—मूळवै सांगावत री वात

सुडांडड—देखो 'सूंडाडंड' (रू.भे.)

सुडौळ—वि.—१ जिसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों की वनावट सुन्दर हो, सुन्दर, मनोहर, खूवसूरत।
२ अच्छे डील-डौल वाला।
३ जिसकी वनावट कलात्मक हो।

सुढंग—सं.पु.—१ अच्छा ढंग, अच्छा तरीका।
२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण।
क्रि.वि.—अच्छे ढंग से।
उ०—अति ऊंचा तियरै उरज, वणिया विसवा वीस। जोड़ै लागै जगत मैं, गिर गज कुंभ गिरीस। गिर गज कुंभ गिरीस, प्रवीणां गाविया। सुबरण वरण **सुढंग**, कठोर सुहाविया।—वां.दा.

सुढाळ, सुढाल—सं.स्त्री.—१ अच्छी ढाल, उत्तम ढाल।
२ सुन्दर लय या तर्ज।
वि.—१ रक्षक, सहायक।
२ सुन्दर।
उ०—सुभ घाट पिट्ठ उर तट विसाळ, सुख पीठ दीठ जग तिण **सुढाळ**।—रा.रू.

सुढाळौ, सुढालौ—वि.—१ रक्षक, सहायक।
उ०—१ मेर मांझी मछराळौ, सुयण मांणिक सप्पखाळौ। सुकवि ऊपरि **सुढाळौ**, कुंअर गुंण किरणाळ।—ल.पिं.
२ सुन्दर, सुडौल।

सुणअ—सं.पु. [सं. शुनक] श्वान, कुत्ता। (जैन)

सुणघड़ियौ—सं.पु.—स्वर्णकार, सुनार। (जैन)

सुणण—सं.स्त्री.—सुनने की क्रिया या भाव।
उ०—१ कहण **सुणण** हय चढ क्रमण, साहंस धरण समझ्झ। 'पता' छिहंतर वरस पणं, हेकण न कौ हरज्ज।—जैतदांन बारहठ
उ०—२ म्हनैं वीरौ **सुणण** रौ अर वाई नैं वीरौ गावण री कितरौ कोड हौ, जिणरौ कोई पार नीं।—अमर चूनड़ी

सुणणौ—सं.पु.—सुनने का कार्य।
उ०—रूप री आ छिव नीं तौ किणी री आंख्यां मैं आज पैं'ली देखण मैं आई अर नीं किणी रै कांनां मैं **सुणणा** मैं आई।
—फुलवाड़ी

सुणणौ, सुणबौ—क्रि.स. [सं. श्रवण] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान करना, किसी प्रकार की बोली या आवाज का अनुभव करना, सुनना।
उ०—१ ऊपड़ी रजी मझि अरक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसंति। सद नीहस नीसांण न **सुणिजै**, वरहासां वाजंति।
— वेलि
उ०—२ वावहिया निल पंखिया, मगरि ज काळी रेंह। मति पावस **सुणि** विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह।—ढो.मा.
उ०—३ हरीया अनहद सबद की, तार न कवहु तुटि। घोर **सुणत** है गिगन मैं, सुर वाहरि नहिं फूटि।—अनुभववांणी
२ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनते रहना, ऐसे सुनने का अभ्यस्त होना।
उ०—धुनि वेद **सुणति** कहुं सुणति संख घुनि, नद झल्लरि नीसांण नद। हेका कह हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद।—वेलि
३ किसी बात या घटना की जानकारी प्राप्त करना, सूचना प्राप्त करना।
उ०—राठौड़ा पण झल्लियौ, नृप 'अगजीत' निमत्त। **सुण** तहवर उर छीजियौ, अत खीजियौ दुरत्त।—रा.रू.

४ किसी की कही बात को ठीक समझ लेना, ध्यान देकर सुन लेना, बात का मर्म जान लेना, ध्यान देना, गौर करना।

उ०—१ सुण सुणिणों गांभळै, सूरां तणी सकाज। 'बांका' रा नागा सुणै, कायरड़ा किण काज।—बां.दा.

उ०—२ पायो म्हारो ईडूंगी को चोर, सुणज्यो व्रज के वासी लोग।—मीरां

उ०—३ सउदागर राजासुं कह, सुणउ हमारी कथ्थ। मारवणी छानी रही, सै माळवणी तथ्थ।—ढो.मा.

उ०—४ वो नारसिंगो दीवांण तो पांच पांच घड़ी तांई अेकलो मिनखा रै ग्यांन री ऊंची वातां सुणतो।—फुलवाड़ी

५ किसी चर्चा विशेष या बात विशेष को विभिन्न तरह से सुनना, विचार-विमर्श करना।

उ०—वसुदेव कुमार तणी सुख वीखै, पुणै सुणै जण आप पर। श्रो रुखमणी तणी वर आयो, हर'म करी अनि रायहर।—वेलि

६ किसी घटना विशेष या बात विशेष को आद्योपान्त विस्तार से समझना।

उ०—१ राजाजी विगतवार आखी बात सुणणी चावता हा। पूछ्यो—नारला गोळै वरसां में कांई व्हियो सौ म्हनै सब बता।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कीरत छपनैं री गुणियै कविराजा, महिमा छपनैं री सुणियै महाराजा।—ऊ.का.

७ किसी की विनती या पुकार की ओर ध्यान देना, ग्रहण करना, मान लेना, स्वीकार कर लेना।

उ०—१ राज दिया 'बीका' 'रिड़मल' नैं, मा करनल मेहाई। प्रगत पुकार सुणत पीयळ री, राजड़ लाज रखाई।—मे.म.

उ०—२ बस्ती रा हैरांन। खामां दिनां तांई वळै सबर राखी। गेवट हाथ जोड़ फरियाद करणी पड़ी। सुणतां ई राजा रै झाळ झाळ ऊठगी।—फुलवाड़ी

८ कारणवश कठोर शब्द या फटकार सहन करना, बरदाश्त करना।

उ०—घरवाळां रा भाग समझो कै इत्ता थोक सुणियां पछै ई म्हैं थांनै जीवता छोड़ दिया। म्है गलती नांव आ इज करूं कै इण कमसल जात नै जीवती छोड़ूं।—फुलवाड़ी

सुणणहार, हारो (हारी), सुणणियो—वि०।

सुणिओड़ो, सुणियोड़ो, सुण्योड़ो—भू०का०कृ०।

सुणीजणो, सुणीजबो—कर्म वा०।

सुंणणो, सुंणबो, सुनणो, सुनबो—रू०भे०।

सुणयोड़ो—देखो 'सुणियोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुणयोड़ी)

सुणवाई-सं.स्त्री.—१ सुनने की क्रिया या भाव।

२ कही जाने वाली बात की ओर दिया जाने वाला ध्यान।

उ०—वो घणो ई कूकियो पण कीं सुणवाई व्ही नीं।—फुलवाड़ी

३ न्यायालय में किसी मुकद्दमें का वृत्तान्त या तर्कों को न्यायाधीश द्वारा सुनने की क्रिया।

४ किसी की फ़रियाद या विनती मान लेने की क्रिया।

रू.भे.—सुणाई।

सुणांमणी-सं.स्त्री.—किसी की मृत्यु के समाचार, मृत्यु-सन्देश।

रू.भे.—सुणावण, सुणावणी।

सुणांमणौ, सुणांमबौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू.भे.)

उ० - राव रंक हिंदू खद, गोलां सगळां गेह। सागै जात सुणांमियां, छुद्र दिखावै छेह।—बां.दा.

सुणांमियोड़ो—देखो 'सुणायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री. सुणांमियोड़ी)

सुणाई—देखो 'सुणवाई' (रू.भे.)

सुणाणौ, सुणाबौ-क्रि स. ['सुणणौ' क्रिया का प्रे.रू.,] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान कराना, किसी प्रकार की बोली या आवाज़ का अनुभव कराना, सुनने के लिए प्रेरित करना।

२ किसी बात या घटना की जानकारी देना या कराना, सूचना देना, सूचित करना।

उ०—१ असह खबर जोधांणै आयी, सती महाव्रत लियां सुणायी।
—रा.रू.

उ०—२ सूवा एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुझ्झ। प्रीतम वांसइ जाइ नइं, मुई सुणावै मुझ्झ।—ढो.मा.

उ०—३ कंवरांणी सूं वधाई मांग्यां विना ई वधाई री बात सुणाय दी।—फुलवाड़ी

३ नियमित रूप से चलने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनाते रहना, ऐसा सुनने के लिए अभ्यस्त करना।

४ कोई वृत्तान्त या इतिहास या पूर्व घटित घटना को विस्तार से कहना, बताना।

उ०—१ पछै राजकंवर मांडनै सगळी बात सुणाई।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी. सोळै वरसां री विखो दो चार घड़ी में नीं सुणाइजै।—फुलवाड़ी

उ०—३ बांझ्यां सरप रै कैतां ई छोटकी बहू रोवती ढबगी। पीहर अर सासरा री सगळी विखो सुणायो।—फुलवाड़ी

५ गुप्त भेद या रहस्य खोलना, भेद की बात बताना, वास्तविकता प्रगट करना।

उ०—१ बैन रा नेह अर दुख माथै दिवला री मां नै दया आई। पछै वा उण सूं कीं चोज नीं राख्यो। आप रै बेटा सागै ठकरांणी री प्रीत री सगळी खातो उघाड़नै सुणाय दियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण नंदलाल गैणो गळा लेणै री समाचार गुदागुद सुणा देवै, जद सेठां रै जी में जी आवै है।—दसदोख

६ निकट भविष्य में होने वाली घटना की पूर्व सूचना देना, आगाह कर देना।

७ कुछ पढ़कर या गाकर सुनाना, पढ़ना, गाना।

उ०—१ चांद वणाय रावळी चिरजा, सनमुख गाय **सुणाई**। दीजै भगति मुकति जगदंवा, कीजै जेज न काई।—मे.म.

उ०—२ इण उपरांत ई हंसनै वोल्या—वौ रोज गावौ जिकी चाकरी वाळौ गीत तौ एकर **सुणाय** दौ नीं लाडू आज तौ म्हूं साचांणी चाकरी माथै वहीर व्हियौ हूं।—अमर चूनड़ी

८ किसी विषय या वात को समझाकर कहना, विषय की व्याख्या करना, वर्णन करना।

उ०—ग्यांन चरित गुण गाइ, पाइ लागै परमेसर। ग्यांन वोध **सुणाइ**, मोख पांमै नर अमर।—पी.ग्रं.

९ निवेदन करना, प्रार्थना करना, विनती सुनाना।

१० कठोर शब्द कहना, खरी-खरी सुनाना, कटु सत्य कहना।

उ०—एक दिन मूंडै मूंड दोसा-मोसा करती सुभट **सुणाय** दियौ कै ओळियाकड़ा वेटा नै घर सूं नीं तगड़ियौ तौ वा घर छोडनै जावैला परी।—फुलवाड़ी

सुणाणहार, हारौ (हारी), सुणाणियौ—वि०।

सुणायोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुणाईजणौ, सुणाईजबौ—कर्म वा०।

सुणांमणौ, सुणांमवौ, सुणावणौ, सुणाववौ—रू०भे०।

सुणायोड़ौ—भू.का.कृ.—१ किसी शब्द, आवाज़ या ध्वनि का श्रवणेन्द्रिय द्वारा ज्ञान कराया हुआ, वोली या आवाज़ का अनुभव कराया हुआ, सुनने के लिए प्रेरित किया हुआ, सुनवाया हुआ। २ किसी वात या घटना की जानकारी दिया हुआ, सूचना दिया हुआ, सूचित कराया हुआ। ३ नियमित चलने वाली कोई आवाज़, शब्द या चर्चा को सुनने के लिए अभ्यस्त किया हुआ। ४ विस्तार से कहा हुआ, आद्योपान्त वताया हुआ (कोई इतिहास या घटना)। ५ गुप्त भेद या रहस्य खोला हुआ, भेद की वात वताया हुआ, वास्तविकता प्रगट किया हुआ। ६ निकट भविष्य की घटना की पूर्व सूचना दिया हुआ, आगाह किया हुआ। ७ पढ़कर या गाकर सुनाया हुआ, पढ़ा हुआ, गाया हुआ। ८ समझाकर कहा हुआ, व्याख्या किया हुआ, वर्णित। ९ विनती सुनाया हुआ, निवेदन या प्रार्थना किया हुआ। १० कठोर शब्द या कटु सत्य कहा हुआ, खरी-खरी सुनाया हुआ।

(स्त्री. सुणायोड़ी)

सुणावण—वि.—१ सुनाने वाला।

उ०—नमौ विध वेद समप्पण विद्ध, नमौ सुर-काज करै हर सिद्ध। नमौ तन हंस त्रिलोकी-तात, नमौ विध ग्यांन **सुणावण** वात।—ह.र.

२ देखो 'सुणांमणी' (रू.भे.)

सुणावणी—देखो 'सुणांमणी' (रू.भे.)

उ०—१ जिसै जैसिंघजी री माजी री **सुणावणी** आयी। तद पातसाहजी सूं मालम कर राजा लारै रया।—द.दा.

उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यौ—परदेस मैं चल्यां री **सुणावणी** आयां सोच तौ घणाइ करै, पिण लांवी कांचळी तौ एक जणी पहरै।—भि.द्र.

सुणावणौ, सुणाववौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू.भे.)

उ०—१ खुद नै वातां सुणणा मैं कीं जोर नीं पड़ै तौ जांणै कै वात **सुणावणा** मैं ई कीं जोर नीं आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ स्लोकां धुणी पाठ दुरगा **सुणावै**, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै।—मे.म.

उ०—३ प्रोहत नुं कह्यौ, 'तू नाळेर लै जाय कुंवरसी सांखळै नुं दै। पण कही नुं **सुणावै** मतां।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ कहै **सुणावै** और कुं, वाचै वेद पुरांन। हरीया पिंडत की कथा, नांव विनां हैरांन।—अनुभववांणी

सुणावियोड़ौ—देखो 'सुणायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुणावियोड़ी)

सुणियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज़ या ध्वनि का ज्ञान किया हुआ, किसी प्रकार की वोली या आवाज़ का अनुभव किया हुआ, सुना हुआ। २ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनने का अभ्यस्त हुवा हुआ। ३ किसी वात या घटना की जानकारी प्राप्त किया हुआ, सूचना प्राप्त किया हुआ। ४ किसी वात को ठीक समझा हुआ, ध्यान देकर सुना हुआ, वात का मर्म जाना हुआ, ग़ौर किया हुआ। ५ किसी चर्चा या वात को विभिन्न तरह से सुना हुआ, विचार-विमर्श किया। ६ किसी घटना विशेष या वात विशेष को आद्योपान्त विस्तार से समझा हुआ। ७ विनती या पुकार की ओर ध्यान दिया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ। ८ कठोर शब्द या फ़टकार सहन किया हुआ, वरदाश्त किया हुआ।

(स्त्री. सुणियोड़ी)

सुणी—क्रि.वि.—१ पर्यन्त, तक।

२ देखो 'सुनी' (रू.भे.)

उ०—जहां **सुणी** पइकन्नी।—जै.त.प्र.

सुणीक—सं.पु.—सुनना का निश्चयार्थक रूप।

सुणैर—सं.पु.—शयनागार, शयन-कक्ष।

उ०—एक दिन आपरी आगली **सुणैर** मांहै छै, पोढै तठै संपाड़ौ करै छै।—वीरमदै सोनगरा री वात

सुतंतर—देखो 'स्वतंत्र' (रू.भे.)

उ०—१ ११८४ ई. रा परमाल रा लेख महोवा अर कालिंजर सूं मिळिया है जिणां सूं ठा' पड़ै कै इण वेळा वौ किणरोई दवैल कौ हौ नीं अर **सुतंतर** रूप सूं राज करतौ हौ।—चितरांम

उ०—२ अकबर रो साल ११६४ ई. रै मंदावर जुद्ध सू खतम हुी। पछै चित्तौड़गढ जीतणी रौहर। जै यो जीततो तो जिम्मी अमर थावतो राजा-राणा नै नेत गालगियो, परमाल नै जीवतो, पर सुरक्षार नै सुतंतर रौहर छोड़तो।—चितगांम

सुतंत्रता — देखो 'स्वतंत्रता' (रू.भे.)

सुतंत्री—वि. [सं. स्वतन्त्र] १ स्वाधीन, मुक्त, आजाद।

२ देखो 'सुतंत्रि' (रू.भे.)

सुतंत्र— देखो 'स्वतंत्र' (रू.भे.)

सुतंत्रता—देखो 'स्वतंत्रता' (रू.भे.)

सुतंत्रि—सं.पु. [सं.] तार-वाद्य बजाने में प्रवीण व्यक्ति, वादक।

रू.भे. — सुतंत्री।

सुत—सं.पु. [सं. सुत.] १ पुत्र, बेटा, वत्स। (डि.को.)

उ०—१ बोल नवाब मरम दृढ़ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ गंधै। —रा.रू.

उ०—२ जै माता सुत जनमीयो, बिनां भगति बसवास। हरीया जिन अर क्या कीयो, भारि मुई दस मास।—अनुभववांणी

२ जन्म-कुण्डली में लग्न से पांचवां घर। (ज्योतिष)

३ राजा, नृप।

रू.भे.—सुति, सुत्त।

४ देखो 'सूत' (रू.भे.)

उ०—१ भागीरथ संभ्रम सुत भुवाळ, नाभग हुवौ सूत सुत नराळ।—सू.प्र.

उ०—२ जननी तुझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय सुख बसत निरत तिहं। अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती सुत पंडित।—मे.म.

सुतअरक—सं.पु. [सं. अर्क+सुत:] १ शनिश्चर। (डि.को.)

उ०—अगा चपळ नैण लघु जांम अत्ति, संगि अहूं विदिस चेतन सकत्ति। दीपंत जुगळ वळ अमळ दंत, सुतअरक पांगि लग्गि जांगि संत।—रा.रू.

२ कर्ण।

३ यम, यमराज।

सुतकस्यप—सं.पु. [कस्यप+सुत] कश्यप ऋषि का पुत्र, सूर्य।

सुतकीरति, सुतकिरता—सं.स्त्री. [सं. श्रुतकीर्ति] राजा जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री व श्रीराम के छोटे भाई शत्रुघ्न की पत्नी, श्रुतिकीर्ति।

उ०—सरवा सील उरमळा सुतकिरता स्वरूप।—रांमरासौ

सुतगिलका—सं.स्त्री.—शालिग्राम की मूर्ति।

उ०—कर तट सिनान अन धरम कीन, जळ गंग आचमन सब नवीन। तट दीठा तिढ हर कर प्रणांम, सुतगिलका कंठ सु बंध स्याम।—सि.सु.रू.

सुतन, सुतनय—सं.पु. [सं. सु-तनय] १ पुत्र, बेटा। (ह.नां.मा.)

उ०—१ इंद्रसिंघ दक्खण थी आयौ, साथ लियौ कर तोल सवायौ। रांण सुतण विरदै समरार्थ, संग थयौ पहुंचावण सार्थ।—रा.रू.

उ०—२ अंत दीरघ सगण भमण फल पत अनल, सुतण करवाप रयणां स्यांम रंग सोय।—र.रू.

उ०—३ दुभ्रळ राघव सुतण दसरथ, लियण भुजबळ लंक।
—र.ज.प्र.

रू.भे. – सुतन, सुतांण, सुतांन।

सुतदीप—सं.पु.—काजल।

सुतदेवकी—सं.पु.—देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण। (अ.मा.)

सुतधर—स.स्त्री.—रज, धूलि। (अ.मा.)

सुतन—सं.पु. [सं. सुतनु] १ स्वस्थ एवं सुन्दर तन, देह, अच्छा शरीर।

उ०—जाळी मगि चढि चढि पंथी जोवै, भुवणि सुतन मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, मसि काजळ आंसू मिळित।—वेलि

रू.भे.—सुतनु, सुतन्न।

२ देखो 'सुतण' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ ओपै आय अनत वळ, सुतन पियारू साथ। फिर सिव ऊपर आवियो, जाळंधर भाराथ।—रा.रू.

उ०—२ आसउत तणी आकाय देखै अकळ, साहजहां सुतन पटकै घणो सीस। रीस सुज हुती मन 'नींब' हर ऊपरां, रौद रौदां सरस काढवी रीस।—सवळी सांदू

सुतनउमा—सं.पु. [सं. उमा-सुत] १ पार्वती के पुत्र, स्वामी कार्त्तिकेय।
(ह.नां.मा.)

२ गणेश, गजानन।

सुतनी—वि.स्त्री.—सुन्दर शरीर वाली, सुन्दरी।

उ०—सभै खोडस स्रंगार सुतनी, वएसा भूल चली रिख वनि।
—रांमरासौ

सं.स्त्री.—पुत्री, लड़की।

सुतनु—देखो 'सुतन' (रू.भे.)

उ०—मळयाचळ सुतनु मळै मन मौरै, कळी कि कांम अंकूर कुच। तणी दखिणादिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध सास समीर उच।
—वेलि

सुतनेह—सं.पु. [सं. सुत-स्नेह] काजल, अञ्जन। (अ.मा.)

सुतन्न—१ देखो 'सुतण' (रू.भे.)

उ०—१ रिणवत्तां रत्ता रहै, सकता वीर सुतन्न। जोड़ै सांम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न।— रा.रू.

उ०—२ सवासण देव सुतन्न सरीन, तिसा सिव नेत्र 'लूण' हर तीन।—सू.प्र.

उ०—३ 'सूरउत' अनै 'अमरा' सुतन्न, कुरखेत जांण अरजन करन्न।—गु.रू.बं.

२ देखो 'सुतन' (रू.भे.)

सुतपंड-सं.पु.-धृतराष्ट्र के छोटे भाई पांडु के पाँचों पुत्र। यथा—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

सुतपवण, सुतपवन-सं.पु. [सं. पवन-सुत] १ पवन पुत्र हनुमान।

उ०—समंद सुतन, **सुतपवण**, भिरग-सुत, ओखिद म्रित आपौ ऊदार। ऊभौ करौ वियारै आवै, सुत विजमल खट वरन सधार। —ईसरदास वारहट

२ पाण्डुपुत्र भीम।

सुतपस्वी-सं.पु. [सं. सुतपस्विन्] कोई बड़ा तपस्वी, तपधारी।

सुतपा-सं.पु. [सं. सुतपस्] १ विष्णु।

वि.वि.-बद्रिकाश्रम में नर-नारायण रूप से सुन्दर तप करने के कारण उक्त नाम विष्णु को प्राप्त हुआ था।

२ सूर्य।

३ एक मुनि का नाम।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो राजा अन्तरिक्ष का पुत्र था, इसका दूसरा नाम सुपर्ण भी था। (सू.प्र.)

सुतपाभगत-सं.पु [सं. सुतपाभक्त] इन्द्र। (ना.डि.को.)

सुतपावाहण, सुतपावाहन-सं.पु. [सं. सुतपावाहन] गरुड़, खगराज। (ना.डि.को.)

सुतर-सं.पु. [फा. शुतुर] ऊँट, उष्ट्र।

उ०—फौजां विलोक नह लीध फेट, भाटियां कीध असि **सुतर** भेट। —सू.प्र.

सुतरखांनौ-सं.पु. [फा. शुतुर+खानः] वह स्थान या कक्ष जहाँ ऊँट बाँधे जाते हैं, उष्ट्रशाला।

उ०—फीलखांना रौ दरोगौ, **सुतरखांना** रौ दरोगौ। —नैणसी

रू.भे.—सुत्तरखांनौ।

सुतरनाळ, सुतरनाळी-सं.स्त्री. [फा. शुतुर+सं. नालीः] एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊँट पर रखकर चलाई जाती थी।

उ०—तद हजार सात आठ पखरैत तबळ वंध, सेर-जुवांन सीपाही राखिया। कदेक वारै चढै, तद ५०० घोड़ची **सुतरनाळ** रांमचंगी लियां चढै। - जगमाल मालावत री वात

रू.भे.—सुत्रनाळ।

सुतरमुरग-सं. पु. [फा. शुतुरमुर्ग] अमेरिका, अफ्रिका एवं अरब के रेगिस्तानों में होने वाला एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट के समान लम्बी होती है। इसकी ऊँचाई प्रायः तीन ग़ज़ होती है। यह दूब व पत्थर खाता है।

उ०—पसू पणौ पंखी पणू, **सुतरमुरग** रै संग। मरद पणौ महिला पणौ, मावड़ियां रै अंग। —बां.दा.

रू.भे.—सतुरमुरग, सुतुरमुरग।

सुतराकस-सं.पु. [सं. राक्षस-सुत] ऊँट।

सुतरु-सं.पु. [सं.] १ अत्यन्त सघन एवं सुन्दर वृक्ष।

उ०—**सुतरु** छांह तदि दीध जगत सिरि, सूर राह किय जगत सिरि। —वेलि

२ उत्तम एवं श्रेष्ठ माना जाने वाला वृक्ष।

सुतब्रम-सं.पु. [सं. ब्रह्म-सुत] कामदेव। (अ.मा.)

सुतळ-सं.पु. [सं. सुतल] सप्त अधो-लोकों में से एक।

सुतस्थांन-सं.पु.-जन्म-कुण्डली में लग्न से पाँचवाँ स्थान। (फलित ज्योतिष)

सुतांण, सुतांन—देखो 'सुतण' (रू.भे.)

उ०—१ पहला गुण सारा पणूं, भूतेस **सुतांणा**। लंबोदर फरसी धरण, मुख मैं करदांणा। —द.दा.

उ०—२ कुंभ गेर सेत जूजी गंग गौर भ्रम क्रन, त्रहूं सतां वेमेक सौ छाताळ **सुतांन**। —भगतरांम हाडा रौ गीत

सुता-सं.पु. [सं.] १ पुत्री, बेटी, लड़की।

उ०—१ तिकण रा कटिया सीस नूं थाळ मैं मंगाय जवनराज री **सुता** वरमाळ पटकण रौ विचार कियौ। —वं.भा.

उ०—२ गोतम **सुता** तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्रांणी, ताह न कदै सतावै। —र.रू.

२ क़ुदरत, प्रकृति।

३ देखो 'सत्ता' (रू.भे.)

४ देखो 'स्वतः' (रू.भे.)

सुतार—देखो 'सुथार' (रू.भे.)

उ०—१ जैतारण था कोस २ पिछम नुं था डावौ। सीरवी बांणीया **सुतार** कुंभार वसै। वास १ चारणां रौ जुदौ छै। —नैणसी

उ०—२ सोनी, गांधी, दोसी, नेस्ती साहब, साह, सेठि, सोणावई, पडसूत्रीआ, कंसारिआ, बीजउरीआ, खजूरिआ, कणसरा, भणसरा, मयारा, मणीयरा, **सुतार**, सूत्रधार। —सभा

(स्त्री. सुतारी)

सुति—देखो 'सुत' (रू.भे.)

सुतियाग—देखो 'सुत्याग' (रू.भे.)

सुतियागी—देखो 'सुत्यागी' (रू.भे.)

उ०—परठी आभ गयण लग पूंहत, कीरत बाडी मोर कळी। **सुतियागी** आरत कर सींची, फळ किव वयण सुफळ फळी। —रांणा हमीरसिंह रौ गीत

सुतीक्षण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रू.भे.)

सुतीक्षण-खड़ग-सं.पु.यौ.-एक प्रकार की तलवार जिसके नीचे का भाग पैना एवं चन्द्राकार होता है।

सुतीक्ष्ण - सं. पु. [सं.] एक ऋषि जो अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे। श्रीरामचन्द्र के वनवासकाल में ये उनसे मिले थे। (रांमरासौ)

वि.-जो बहुत तीक्ष्ण या पैना हो।

रू.भे.—सुतीक्षण, सुत्रिछण।

सुतीरथ-सं.पु. [सं. सु-तीर्थ] उत्तम या पावन तीर्थ।

उ०—नांम **सुतीरथ** नांम व्रत, नांम सलोभौ कांम। एको अक्खर तंतफळ, जंप जीहां स्रीरांम। —ह.र.

सुतुक–सं.पु. [सं.] [illegible]। (ज्योतिष)

सुतुंगाल–सं.पु. [सं.] [illegible] जंतु।

सुतुरमुरग--देखो 'सुतरमुरग' (रू.भे.)

सुतेई--देखो 'स्वतः' (रू.भे.)

उ०—[illegible] प्रेम परलोकं, सुद्ध मना निरवामी। सुतेई फोरक फुरी मना मूं नाम प्रकास घरामी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

सुतेज–सं.पु. [सं.] १ तीव्र प्रकाश, अच्छा प्रकाश।

२ आभा, कान्ति।

३ जैनियों के अतीतकालीन दसवें तीर्थङ्कर का नाम।

उ०—[illegible] भूमि [illegible] दत्त नामी, दामोदर स्त्री सुतेज स्वामी।

—स.कु.

सुतेसुभाव – क्रि. वि. [सं. स्वतः-स्वभाव] १ कुदरतन, संयोग से, स्वयमेव।

उ०—पीछै सुतेसुभाव चांपावत हाथीसिंघ गोपाळदासोत सासरै जावतां आदमियां २०० सूं अजमेर आयो।—द.दा.

२ अचानक, अकस्मात्।

सुतै—देखो 'स्वतः' (रू.भे.)

सुतैसिद्ध–वि. [सं. स्वतस्-सिद्ध] जो अपने आप ही सिद्ध हो, स्वयं-सिद्ध।

सुत्त—देखो 'सुत' (रू.भे.)

उ०—नदै ताल पाहाड़ चलतौ पहाड़, वरंम्मघरै सुत्त फौजां विभाड़।—सु.रू.वं.

सुत्तग–सं.पु. [सं. सूत्रक] कटिसूत्र, मेखला।

सुत्तरखांनौ—देखो 'सुतरखांनौ' (रू.भे.)

उ०—मदझरतां धुरता मगन, करता दंत कठीठ। सुत्तरखांनै मोहिया, धुर दमड़ा गय धीठ।—पे.रू.

सुत्तरुइ–सं.स्त्री.–सूत्र सुनने की रुचि। (जैन)

सुत्तसंपया–सं.स्त्री.–१ सूत्र-संपदा। (जैन)

२ शास्त्रज्ञ। (जैन)

सुत्याग–सं.पु. [सं.] अच्छा त्याग, श्रेष्ठ त्याग।

रू.भे.—सुतियाग।

सुत्यागी–वि.–अच्छा त्याग करने वाला, श्रेष्ठ त्यागी।

रू.भे.—सुतियागी।

सुत्र—देखो 'सूत्र' (रू.भे.)

उ०—निगोद वस्त्र [illegible] धारिय धुजंवरं, सुसोभित मिस्रा स सूत्र मेखल तिसरं।—सू.प्र.

सुत्रनाळ - देखो 'सुतरनाळ' (रू.भे.)

उ०—[illegible] सोर, भार गाडा बांणां भर। चव हजार सुत्रनाळ, [illegible] बहादर।—सू.प्र.

सुत्रांमा–सं.पु. [सं. सुत्रामन्] १ पुराणानुसार एक मनु का नाम।

२ इन्द्र। (ह.नां.मा.)

रू.भे.—सत्रांम, सूत्रांम।

सुत्रिछण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रू.भे.)

सुत्री–सं.स्त्री. [सं. सुता] १ पुत्री, बेटी।

[सं. सु-स्त्री] २ सुन्दर स्त्री।

उ० –१ कोकिळ निसुर प्रसेद प्रोसकण, सुरति ग्रंति सुख जिम सुत्री।—वेलि

उ० - २ सुनेत्र विनांण सुत्री सिणगार।—रांमरासौ

सुथंभणौ, सुथंभबौ – क्रि. स. [सं. स्तम्भनम्] १ रोकना, ठहराना, थामना।

२ पकड़कर रखना, पकड़ना।

३ देखभाल करना, सम्हालना।

सुथंभियोड़ौ–भू. का. कृ. – १ रोका हुआ, ठहराया हुआ, थामा हुआ।

२ पकड़कर रखा हुआ, पकड़ा हुआ। ३ देखभाल किया हुआ, सम्हाला हुआ।

(स्त्री. सुथंभियोड़ी)

सुथण—देखो 'सूथण' (रू.भे.)

उ०—तिण सूं थे डूंगरसीजी नूं परणावौ तो म्है वैर भांजां। तरां उणां परधांनां कह्यौ—डूंगरसीजी ८० वरस रा हुवा, सुथण रौ नाड़ौ ही चाकर वांधै छै। थे इसड़ी बात कांई कही?—द वि.

सुथर–वि. [सं. सुस्थिर] १ दृढ़, अडिग, अटल।

उ०—रांण दळ पलटतां सुथर झालौ रहै, भांण ग्रस रोक ग्रारांण भाळै। राज रै कंठ भूखांण उण चौसरां, रंभ चौसरन को सीस राळै।—कल्यांणसिंह झाला रौ गीत

२ मजबूत, पक्का।

सं.स्त्री–१ पृथ्वी, भूमि। (ना.डि.को.)

रू.भे.—सुथिर।

२ देखो 'सुथार' (रू.भे.)

सुथरसाही—देखो 'सुथरेसाही' (रू.भे.)

सुथराई–सं.स्त्री.–१ सफ़ाई, स्वच्छता।

उ०—भाख फाटतांई वौ सीधौ गूजरी रै घरै गियौ। जावतांई खापाचेक होय कैवण लागौ—सुथराई सूं फूस-वाईंदौ काढनै बाड़ौ ग्रर गवाड़ी नै देवता रमै जैड़ा करदौ।—फुलवाड़ी

२ चतुराई, निपुणता।

उ०—१ मिझ्या रा कड़ाई मैं दूध रडाय वा सुथराई सूं परातां मैं राळयौ। परात परात मूं वाफां रा न्यारा न्यारा गोट ऊठता।

—फुलवाड़ी

उ०—२ सुथराई ग्रर खांमचीपणौ तौ मामी सूं लारै हौ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ नाई पींडियां नै सुथराई सूं दबावतौ बोल्यौ – नी बापजी, ग्रौ नौ वे'म इज म्हारै माथै मत करौ। फुलवाड़ी

३ पवित्रता, शुद्धता।

उ०—सती उण वगत मूंन धारचां कुत्ता री आरती करती ही। थोड़ी ताळ पछै वा सुथराई सूं पुरसंगारी करनै लाई। पण कुत्तौ मूंडौ फेर लियौ।—फुलवाड़ी

सुथरापण, सुथरापणौ—सं.पु.—१ सफ़ाई, स्वच्छता।

२ पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता।

३ चतुराई, दक्षता, निपुणता।

सुथरासाही, सुथरेसाही—सं.पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष जो गुरु नानक के पुत्र सुथराशाह द्वारा चलाया गया है।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रू.भे.—सुथरसाही।

सुथरौ—वि. [सं. सुस्तर] (स्त्री. सुथरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

२ उम्दा, बढ़िया।

उ०—दुरगादासजी रथ एक सैं जूतै अव्वल बीजौ कपड़ौ सुथरौ मेलियौ।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

३ छोटा आसन, बिछौना।

उ० —किण भांत रा हुका छै? सोनै रा; रूपै रा, विदरी, खांखोळ ठाढा पांणी सूं भरजै छै। नीचै सुथरा बिछायजै छै। ऊपर हुका मेल्हजै छै।—रा.सा.सं.

३ पवित्र, शुद्ध।

४ साफ़, स्वच्छ, निष्कंटक।

उ०—जै आप हुकम फरमावौ तौ उवौ हंमाळ उण ठोर सूं पत्थर उठावै मारग सुथरौ करै उवौ वै मनसब दीसै छै।—नी.प्र.

५ उज्ज्वल, शुभ्र।

६ सुन्दर।

उ० - झखां खंजरीटां अगां, सबर हतक सरांह। जैतवार ज्यांरा नयण, सरोरुहां सुथरांह।—बां.दा.

७ सुगंधित।

उ०—मोगरै री वेल केवड़ै रौ तेल सूं केस सुथरौ कीजै छै।

—रा.सा.सं.

८ स्वादिष्ट।

उ०—म्रित पूरित रस जेण घण, अन मिस्ठांन्न अपार। तरकारी सुथरी अतर, अतिसुंदर आचार। रा.रू.

९ साफ़, स्वच्छ, निर्मल।

उ०—कांई सैल इण गुन्नीस करोड़ नें रोटी पुगा देली? कांई वा उणा रा उघाड़ा डील ऊजळा सुथरा गाभां सूं ढक देली? वां नै स्कूल मदरसै भेज देली?—तिरसंकू

सुथळ—सं.पु.—१ प्रत्येक चरण में २२ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द विशेष।

उ०—दीसै मात्रा वीस दुइ, पायै एक प्रमांण। सुथळ छंद सोभा सहित, वदि लखपत्ति वखांण।—ल.पिं.

[सं. सुस्थल] २ अच्छा स्थान, शुभ स्थान।

३ कोई श्रेष्ठ भाव।

क्रि.वि.—उचित, ठीक।

रू.भे.—सुथाळ।

सुथांणौ—सं.पु. [सं. सुस्थानः] ठहरने की जगह, स्थान।

उ०—आवै थकै सुथांणौ ऊठै, पिसणां चमू चढै नह पूठै।

— रा. रू.

सुथांन—सं.पु. [सं. सु-स्थानः] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्थान, जगह।

उ०—१ पुहकर सुथांन काती सुप्रव, जास जात्र अंहि नर जुड़ै। वाराह देव दीठां वदन, महा आघ दाळद मुड़ै।—ज.खि.

उ०—२ निज सुथांन द्रुम अरु लता, डाळ फूल फळ पात। अतै आवंत चित्त सब, न्यारी न्यारी भांत।—गज-उद्धार

२ उपयुक्त स्थान।

उ०—'काळ दुकाळी ना मरै, बांमण बकरी ऊंट'। पण सुथांन वासौ ही तौ चाहीजै।—दसदोख

रू.भे.—सुथांनौ।

सुथांनक, सुथांनिक—सं.पु. [सं. सुरस्थानः] १ सुमेरु पर्वत।

(नां.मा; ह.नां.मा.)

२ घर, गृह। (अ.मा.)

रू.भे. सथांनक, सथांनिक।

सुथांनौ—देखो 'सुथांन' (रू.भे.)

उ०—चेत्र सुदै १ पोथौ संपुरण लीख्यौ छ वार बुधवारि वचनारथी कांन्हा गांव रासीसर सुभ सुथांनै दांम जी री थापनां।

—वि.सं.सा.

सुथार—सं.पु. [सं सूत्रकार] (स्त्री. सुथारण, सुथारी) १ बढ़ई नामक जाति।

उ०—तंबोळी सुथार ठीक भैसात ठंठारू, नव नारू इण नांम कहै हिव पांचै कारू।—ध.व.ग्रं.

२ उक्त जाति का व्यक्ति, बढ़ई।

उ०—साई री हजार मोहरां दी जद सुथार हांमळ भरी। आखा राज मैं उडण-खटोळा घड़णिया फगत एक-दौ ई कारीगर है।

—फुलवाड़ी

३ एक प्रकार की चिड़िया।

रू.भे.—सुतार, सुथर।

सुथारखांनौ—सं.पु.—लकड़ी का सामान बनाने का कारखाना, जहाँ बढ़ई लोग काम करते हैं।

सुथाळ—देखो 'सुथळ' (रू.भे.)

उ०—पाई फतै रोळै पाव ढूंढाड़ दराया पाछा, दुठ वाही ववाही न भूलौ घाव दाव। ऊवांवरै 'पता' मार भालां धरा आपणाई, सुथाळां जणी नै पाछी वठाई सुजाव।—गोपाळदांन

सुथिर—सं.पु.—१ एक मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में

[illegible] होती है।

उ०—[illegible] पावै निमत, मास एक पय माहि। हड़ी विधि [illegible], सुषिर [illegible] माहि।—ल.पि.

२ देखो 'सुसिर' (रू.भे.) (डि.नां.मा.)

उ०—[illegible] सुषिर करणि चढि छांह सुख। —वेलि

सुषिरवास-सं.पु.-किसी श्रेष्ठ, उत्तम या रमणीक स्थान पर किया जाने वाला निवास।

सुदंत, सुदंती-सं.पु. [सं. सुदंती] हाथी, गज।

वि.-जिसके दांत सुन्दर हो। (स्त्री. सुदंतणी, सुदंती)

रू.भे.—सुदती।

सुद-सं.पु. [सं. सुदि] १ मास का शुक्ल पक्ष, जब चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती रहती है।

उ०—१ छत्तीसै सुद भादवै, एकादसी वरत्त। 'राजोधर' एतां लियां, सो हरि धाम सुगत्त।—रा.रू.

उ०—२ सुद आई अर वद गई। इण वात नैं छ महीना बीतग्या। सेठ नगीनदास री ताकड़ी हमी निजर गिरांकां नैं तोलती री' पण इसौ ताजौ गिराक फेरूं नीं आयौ।—अमरचूनड़ी

उ०—३ अट्ठारासै अठंतरै सोजी फागण मास। सुद तेरस संतोस गुण, वरणं बांकीदास।—बां.दा.

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—बहती सीत झाळिया वांदर, झटक उतार राळिया झांझर। कहियौ एह संदेसौ कीजो, दीजो रे प्रभु नूं सुद दीजो।—र.रू.

३ देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)

रू.भे.—सुदि, सुधि।

सुदक्खणा, सुदक्खिणा, सुदक्षणा, सुदक्षिणा-सं स्त्री. [सं. सुदक्षिणा]

१ राजा दिलीप (प्रथम) की पत्नी।

२ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। (पौराणिक)

३ अच्छी दक्षिणा।

सुदत—देखो 'सुदत्त' (रू.भे.)

उ०—१ जो अरथी दस दिन मझि जावै, समयै तेणि सुदत चित लावै।—सू.प्र.

उ०—२ सतरा हरचंद सुमन रा सागर, चित रा बिलंद सुदत रा भार। [illegible] प्रभन रा बाधण, सतरा तार सुक्रत रा साव। —र.ज.प्र.

सुदतपण, सुदतपणौ-सं.पु.-दानशीलता, दानवीरता।

उ०—[illegible] जोधांण कै वरस लग, सुदतपण प्रगट कर चीत सासर।—र.रा.

सुदता-वि.-दातार, दानी। (अ.मा.)

सुदतापण, सुदतापणौ—देखो 'सुदतपण' (रू.भे.)

सुदतार—देखो 'सुदातार' (रू.भे.)

उ०—१ सुदतारां भल दांन द्यौ, चित माझळ कर चाव। सुगत दांन दीधां मिळै, स्वरग किसूं सुख पाव।—बां.दा.

उ०—२ सांमा तू सुदतार, घर मांगण आयां घणां। वित वगसण वडवार, हरख घणौ तौ उर हुवै।—बां.दा.

उ०—३ अपणी सरधा सम अवर, दांन देत सुदतार। छळ ऊपर होवै अमर, साख भरै संसार।—ऊ.का.

सुदतारी—देखो 'सुदातारी' (रू.भे.)

सुदती—देखो 'सुदंती' (रू.भे.)

सुदतौ-वि.-श्रेष्ठ दानी, दानवीर। (अ.मा.)

उ०—रजधारी राठौड़ रे, इसड़ा भड़ मदअंध। रिण वरियां रूप चखरता, सुदता वेळ समंद।—पे.रू.

सुदत्त-सं.पु.-श्रेष्ठ एवं उत्तम दान।

रू.भे.—सुदत।

सुदन-सं.पु.-१ दानी, दातार। (अ.मा.)

२ देखो 'सुदिन' (रू.भे.)

उ०—प्रगत अपति राका वर पायौ, भणै सुदन आवै मन भायौ। —सू.प्र.

सुदपक्ष, सुदपख-सं.पु. [सं. सुदि-पक्ष] किसी मास का शुक्ल पक्ष।

सुदवक-क्रि.वि.-अच्छी तरह ढक कर (माँस या किसी खाद्य पदार्थ को पकाने के बाद किसी पात्र में) रखने की क्रिया। इस प्रकार रखने से वह खाद्य पदार्थ अन्दर की भाप से अच्छी तरह पककर रसीज जाता है और स्वादिष्ट हो जाता है।

उ०—मिरच धांणां सूंठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै। दही री रजवी दीजै छै। लकड़ी री कठौती में सुदवक राखजै छै। —रा.सा.सं.

सुदभाव-सं.पु. [सं. शुद्ध-भाव] १ मन की उत्तम एवं पवित्र विचार-धारा, प्रवृत्ति, मनोदशा।

२ ऐसी भावना जिसमें स्वार्थ एवं कपट न हो, निष्कपट व निःस्वार्थ भाव, सहज व सरल वृत्ति।

उ०—सु किणहीक परधांन रै बेटै सुदभाव मांहै वात करता जणायौ, तरै जोगियां पूछियौ—'वा बारी कठीनै छै' तरै उण बताई फलांणी ठोड़ छै।—नैणसी

सुदयाळ, सुदयाल, सुदयाळौ, सुदयालौ-वि.-दयावान, दयालु।

उ०—राज करै नगरी तणौ, मकरध्वज भूपालौ रे। सूरवीर अति साहसी, न्याय नीत सुदयालौ रे।—वि.कु.

सुदर—देखो 'सूद्र' (रू.भे.)

उ०—बांमन खत्री कौंन है, कुंन सुदर कुंन वैईस। हरीया आतम हेक है, दूजा कोय न दीस।—अनुभववांणी

सुदरस, सुदरसण-सं.पु. [सं. सुदर्शनः] १ विष्णु भगवान् का सुदर्शन चक्र।

उ०—१ एक वर्ष मन वेग सूं, अति धावत केकांण। चक्र सुदरसण

गुरुड तिण, करत वखांण प्रमांण ।—रा.रू.

उ०—२ मंद लख वाह सुपरण तजै माग मैं, चरण ऊवांहणौ धरण चालै। हरण नक्रण वहै **सुदरसण** हरोळी, पाय तंता गरण छिद अपाळै ।—र.ज.प्र.

२ शिवजी का नाम ।

३ गीध, गिद्ध ।

[सं. सुदर्शनम्] ४ जम्बू द्वीप ।

५ सुमेरु पर्वत का नाम ।

उ०—पहिलौ जंबूद्वीप समइ विधि थाल आकार, लांबउ पिहलउ इक लख जोइण नैं विस्तार । मोटौ तेहणौ मध्य **सुदरसण** नांमै मेर, तिण थी दस विदिसांनी गिणती च्यारैं फेर ।—ध.व.ग्रं.

६ शुभ दर्शन, महापुरुषों का साक्षात्कार ।

उ०—पूछत पूछत ग्यौ अंतहपुरि,हुऔ **सुदरसण** तणौ हरि ।—वेलि

७ एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—पुक्ष संभ्रम ध्रुव संधि प्रथीपति, सुत **सुदरसण** उदारह दति सति ।—सू.प्र.

८ ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि जो अत्यन्त खारी होती है ।

वि.—१ खूबसूरत, सुन्दर ।

२ जो सहज में देखा जा सके ।

रू.भे.—सुंदरसण, सुदरसेण, सुदस्सण, सुद्रसण ।

सुदरसणचक्र—सं.पु.यौ. [सं. सुदर्शन-चक्र] १ भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला चक्र, एक अस्त्र ।

उ०—साह विरत्तौ मारवां, ग्राह जही गज वार । जठै **सुदरसणचक्र** ज्यां, रिणमल्लां पण धार ।—रा.रू.

२ श्वेत, सफ़ेद ।* (डि.को.)

रू.भे.—सुद्रसण-चक्र ।

सुदरसणचूरण—सं.पु.यौ. [सं. सुदर्शन-चूर्ण] ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि। (वैद्यक)

रू.भे.—सुद्रसणचूरण ।

सुदरसणद्वीप—सं.पु.यौ. [सं. सुदर्शन-द्वीप] जम्बू-द्वीप का एक नाम ।

सुदरसेण—देखो 'सुदरसण' (रू.भे.) (नां.मा.)

सुदरांणी, सुदरांनी—देखो 'सूद्रणी' (रू.भे.)

उ०—सूकी **सुदरांणी** झाडां रै सा'रै, लाधी विदरांणी वाडां रै लारै ।—ऊ.का.

सुदस्सण—देखो 'सुदरसण' (रू.भे.)

उ०—भेळी हीज आवड़ वाहर भूप, रु नाहर चक्र **सुदस्सण** रूप । —मे.म.

सुदांन—सं.पु. [सं. सुदान] अच्छा दान, श्रेष्ठ दान ।

उ०—जोजनां उलाळै घड़ी अड़ै आसमांन जातौ, जोयां घणा मोद मांनै सराहै जीहांन । जमी री करोत जांणु पंछी हाल छैकै जिसौ, दूजा 'वाघ' जुंग अेहो तुंही दै **सुदांन** ।—जीवणसिंह रौ गीत

सुदांनौ—सं.पु.—देखो 'सादियांणौ' (रू.भे.)

उ०—फजर हुवां फतै रौ, **सुदांनौ** जौ घुरायौ । तखत लाख पच्चास रौ, कवजा मैं करायौ ।—केहरप्रकास

सुदांम—सं.पु. [सं. सुदामन्] १ कृष्ण का सखा, एक गोप ।

सं.स्त्री.—२ सुदामापुरी ।

उ०—सुख धांम नांम परखै सकळ, हित **सुदांम** विस्रांम हरि । नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि ।—रा.रू.

सुदांमा—सं.स्त्री. [सं. सुदामा] १ स्कंध की एक मातृका ।

२ एक पौराणिक नदी ।

सुदांमानगरी, सुदांमापुरी – सं.स्त्री. – कृष्ण-सखा सुदामा की नगरी जो श्रीकृष्ण ने वसाई थी ।

रू.भे.—सदांमापुरी ।

सुदांमौ—सं.पु. [सं. सुदामन्] श्रीकृष्ण का सहपाठी एवं परम सखा एक गरीब ब्राह्मण ।

उ०—१ बाळ पणैं का मित **सुदांमा,** अब क्यौं दूर बसै । कहा भावज नै भेट पठाई, तांदुल तीन पसै ।—मीरां

उ०—२ संत ज **सुदांमा** सारसां, कोड़ी धज कियाह ।—ह.र.

२ इन्द्र का हाथी ऐरावत ।

३ बादल ।

४ समुद्र ।

५ पहाड़ ।

रू.भे.—सदांम, सदांमौ ।

सुदात, सुदातार—वि.—१ दातार, दानी । (अ.मा.)

२ उदार ।

रू.भे.—सुदतार, सुदतारी ।

सुदातारी—सं.स्त्री.—दातारी, उदारता ।

रू.भे.—सुदतारी ।

सुदाय—सं.स्त्री. [सं. सुदायः] १ ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत-संस्कार के समय दी जाने वाली भिक्षा ।

२ पर्व विशेष पर दिया जाने वाला दान ।

३ दहेज ।

४ शुभ भेंट ।

सुदास – सं. पु. [सं.] १ च्यवन राजा का पुत्र एवं सहदेव राजा का पिता ।

२ एक कुरुवंशीय राजा ।

३ अयोध्या का राजा जो आर्तपर्णि (सर्वकाम) राजा का पुत्र था, ऋतुपर्ण राजा इसका पितामह था ।

उ०—पुत्र तासि रितुपरण बुधि प्रकास, सुत जासु रितुपरण रै **सुदास** ।—सू.प्र.

४ दिवोदास का पुत्र एक प्राचीन राजा ।

सुदि—१ देखो 'सुद' (रू.भे.)

उ०—दीसैं न न्याव मोगवि दसा, पड़ची सुदि वदि पन्नरो । देखै नै मान सार्ग नी, गांडो वांदी ए मरी ।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

सुदिट्ठ—देखो 'सुदीठ' (रू.भे.)

सुदिट्ठी—देखो 'सुद्रस्टी' (रू.भे.)

सुदिन, सुदिन्न—सं.पु. [सं. सुदिन] १ कोई पर्व का दिन, शुभ दिन।

२ खुशी या आनन्द का दिन।

उ०—बळता तौ दीपक भला, ढळता भला विघन्न। गळता तौ वेरी भला, वळता भला सुदिन्न।—अग्यात

३ शुभ अवसर, सुनहरा मौक़ा।

रू.भे.—सुदन।

सुदी—देखो 'सुद' (रू.भे.)

उ०—१ पनरैसै समत (१५१५) पनरोतड़ै, सुदी जेठ ग्यारस सनड। अवगाढ़ 'जोध' रचियौ इसौ, गाढपूर जोधांण गढ।
—सू. प्र.

उ०—२ सु राजा सूरजसिंघ संमत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही।—नैणसी

सुदीठ—सं.स्त्री. [सं. सु+दृष्टि] १ शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि।

उ०—१ अब हरि मेरी ओर कूं, क्यूं न करौ सुदीठ।
—गज-उद्धार

उ०—२ अनेक संत आसरै, वसै सहीव वासरै। प्रथीप रांम पोसणा; अमी सुदीठ अंग।—र.ज.प्र.

२ अच्छी तरह से देखने की क्रिया या भाव।

रू.भे.—सुदिट्ठ।

सुदीस—सं.पु. [सं. सु-दिवस] शुभ दिवस।

उ०—लौकिक विधि सहु कीध, तेहनी स्यूं कहीयै हो लोक जांणै सहू। आव्यौ लगन सुदीस, आरिंभ कारिंभ कीधा तिहां वहू।
—श्रीपाळरास

सुदुमन—सं. पु. [सं. सुदुम्न] वैवस्त मनु का पुत्र जो इड़ नाम से प्रसिद्ध है।

सुदुर, सुदूर—वि. [सं. सुदूर] बहुत दूर।

उ०—साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कं पांव। मयणै घाटा घत्तळिया, वइरि जु हूआ वाव।—ढो.मा.

सुदेव—सं.पु. [सं.] १ उत्तम देवता।

२ भीम एवं सुरथ के पिता विदर्भ नरेश।

३ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो चञ्चुराय का पुत्र था।

उ०—रोहितास तणैं छिन चंचुराय, तप सुत सुदेव तप भांण ताय।
—सू.प्र.

४ देवक राजा का पुत्र एक राजा।

५ स्वारोचिष मन्वन्तर का एक देवगण।

६ अरंदम-पुत्र आविक्षित राजा की पत्नी गौरी का पिता एक राजा।

७ एक वैदिक यज्ञकर्ता।

८ नाभाग राजा की पत्नी सुप्रभा का पिता, एक राजा।

सुदेस—सं.पु. [सं. स्वदेश] १ अपना देश, स्वदेश।

[सं. सुदेश] २ अच्छा देश।

सुदेसी—वि. [सं. स्वदेशी] १ अपने देश का, स्वदेशी।

२ अपने देश का बना।

सुदेह—सं.स्त्री. [सं.] सुन्दर शरीर।

सुदैव—सं.पु. [सं.] १ शुभ संयोग, अच्छा अवसर।

२ सौभाग्य, अच्छा भाग्य।

सुदौ, सुद्दौ—वि. (स्त्री. सुदी) सहित, साथ।

उ०—१ आदमी जांणी, जै जगायस्यां तौ सोर करसै तीसूं मांचा सुदा ही उठाय लीन्हा अर लेय कर हालिया।
—सांई री पलक मैं खलक री वात

उ०—२ सौ सुंदरदास नूं स्वपनै मैं दरिद्र कही जै तूं मोनूं चोट लगाई तौ थारौ घर जड़ा मूल सुद्दौ उपाड़ नाखस्यूं।
—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

क्रि.वि.—तक, पर्यन्त।

उ०—गोपाळपोळ सुं लगाय फतैपोळ सुद्दौ कोट, नै फतैपोळ खास मा'राज जाळोर सूं पधारिया तदै १७७४ कमठी करायौ चहोतरै।
—मारवाड़ री ख्यात

रू.भे.—सुधौ, सूदौ।

सुद्ध—वि. [सं. शुद्ध] १ जो भाषा, व्याकरण, उच्चारण व लिखावट की दृष्टि से सही हो, ठीक, शुद्ध, जिसमें कोई ग़लती न हो।

उ०—१ सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध। अद सारद पारद उकति, करण विसारद वुद्ध।—रा.रू.

उ०—२ कुवचन मुख कहणौ नहीं, सुवचन कहणौ सुद्ध। वचन विवेक पचीसिका, इम आखै अविरुद्ध। वां.दा.

२ पवित्र, शुद्ध, विशुद्ध।

उ०—१ नवौ जन्म लै कुंड कंडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है सुद्ध मांनू नमावै।—मे.म.

उ०—२ जद ब्राह्मण वोल्या—हे पापणी! म्हांनै भ्रस्ट किया। अबै गंगाजी जाय स्नांन पांणी रा लेप करी सुद्ध थास्यां।—भि.द्र.

३ जिसमें कोई कमी या ख़ामी न हो, उचित, ठीक।

४ युक्ति-युक्त, ठीक, सही।

उ०—जव घणौ कस्ट हुवौ सुद्ध जाव देवा असमरथ।—भि.द्र.

५ निर्दोष, वेदाग़, दोष-रहित।

६ निर्मल, साफ़, स्वच्छ।

७ विना किसी मिलावट का, अमिश्रित, ख़ालिस।

८ अद्वितीय, असमान।

९ चमकीला, उज्ज्वल।

१० सफ़ेद, श्वेत।

११ सीधा-सादा, भोला-भाला।

१२ केवल, सिर्फ़, मात्र।

सं.पु. [सं. शुद्धं] १ शिव, महादेव।

२ सेंधा नमक।

३ काली मिर्च।

४ शुद्ध वस्तु।

५ संगीत में राग का एक भेद।

६ चौदहवें मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक।

रू.भे.—सुद।

७ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—१ होणी होकर ही रहै, विसर जात है सुद्ध। जाकी जस भवतव्यता, ताकी तैसी बुद्ध।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सुद्ध जमाई नी लहुं, तौ तेहनै देई राज। हुं पिण संजम आदरुं, सारूं उत्तम काज।—वि.कु.

सुद्धकुंडळियौ—सं.पु.यौ.—'कुंडळिया' छन्द का एक भेद।

वि.वि.—देखो 'कुंडळियौ'।

सुद्धता—सं.स्त्री. [सं. शुद्ध+ता प्र.] शुद्ध होने की अवस्था या भाव।

२ पवित्रता, निर्मलता।

३ सफ़ाई, स्वच्छता।

४ सही होने की अवस्था या भाव।

५ निर्दोषिता।

६ ख़ालिसपना।

७ उज्ज्वलता, चमक।

८ सफ़ेदी।

९ सादगी, सरलता।

सुद्धन—सं.पु. [सं.] एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—संभूत सुतण सुद्धन स्रिताज, सुधना सुत त्रिधना त्रप सकाज।—सू.प्र.

सुद्धनीर—सं.पु.—सात प्रकार के समुद्रों में से एक।

उ०—दहकि दहकि दौलेप राज किरि राज पुकारै, लवणोदक सौं सुद्धनीर लग बढन विथारै। बळ सूदन सौं वांमदेव लग अजग उसारै, बड़वां मुख सौं ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारै।—वं.भा.

सुद्धनिसांणी, सुद्धनीसांणी—सं.स्त्री.—एक प्रकार का 'निसांणी' नामक छन्द जिसके प्रत्येक पद में प्रथम तेरह फिर दस इस प्रकार २३ मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में दो गुरु होते हैं।

उ०—कळ तेरह फिर दस कळा, दै मोहरै गुर दोय। कळी एक तेवीस कळ, सुद्धनिसांणी होय।—र.रू.

सुद्धमति—वि.—जिसका मन व भावनाएँ शुद्ध हो।

सं.पु.—जैनियों के अतीतकालीन इक्कीसवें तीर्थङ्कर का नाम। (स. कु.)

उ०—क्रितारथ जिनेस्वर सुद्धमति सिवकर, स्यंदन संप्रति चौवीसै तीरथंकर।—स.कु.

सुद्धमन, सुद्धमन्न—वि. [सं. शुद्ध-मन] जिसका मन एवं भावनाएँ शुद्ध हों, पवित्र हों, निष्कपट।

उ०—यां आद विखै 'चांपा' अनूप, भुज गयण धरै पण वयण भूप। 'करनोत' धरा छळ खींवकन्न, महाराज 'अजन' छळ सुद्धमन्न।—रा.रू.

सुद्धसांणोर, सुद्धसंणोर—देखो 'सुधसांणोर' (रू.भे.)

सुद्धांत—सं.पु. [सं. शुद्धांतः] १ अन्तःपुर, रनिवास, जनानख़ाना।

उ०—१ रांणी तौ कळिजुग री रूप एहा अभिरूप अवनीस री तिरस्कार करि सुद्धांत रै आस्त्रित अनेक जन रहे जिकां मैं कोई दौ ही लोक री खोवणहार ठाळियौ।—वं.भा.

उ०—२ अर जैत कुमार जुक्त सव सुद्धांत परिकर सहित प्रांमाराज सळख चाहुवांण कुमार सूं स्वकीय सुता री संबंध करण अजमेर द्रंग चलायौ।—वं.भा.

सुद्धाद्वैत, सुद्धाधीत—सं.पु. [सं. शुद्धाद्वैत] वल्लभाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वैदान्तिक सम्प्रदाय, जिसमें मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है।

सुद्धापह्नुति—सं.स्त्री. [सं. शुद्धापह्नुति] अपह्नुति अलङ्कार का एक भेद जिसमें वास्तविक (सत्य) उपमेय को निषेधपूर्वक छिपाकर उसके सहधर्मी उपमान का आरोप (स्थापन) किया जाता है।

सुद्धि, सुद्धी—सं.स्त्री [सं. शुद्धिः] १ शुद्ध या पवित्र करने या होने की क्रिया या भाव।

२ शुद्धता, सफ़ाई, स्वच्छता।

३ एक प्रकार की वैदिक क्रिया या संस्कार जो किसी अशुद्ध व्यक्ति या पदार्थ को शुद्ध करने के लिए किया जाता है।

क्रि वि.—१ शुद्धता से।

उ०—मन सुद्धि जपंतां रुखमिणि मंगळ, निधि संपति थाइ कुसळ नित।—वेलि

रू भे.-सुधि।

२ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—१ जिण थी आपरौ सिविर ऊंचास्थळ पर होई तौ कुपुत्र नु आदाव राखण री सुद्धि रहे।—वं.भा.

उ०—२ जिण लागां हुय जाय, बुद्धि वाळी वेबुद्धी। जिण लागां हुय जाय, सुद्धि वाळौ वेसुद्धी।—ऊ.का.

उ०—३ नहीं तौ सार नहीं तौ सुद्धि, नहीं तौ खोट नहीं तौ बुद्धि।—ह.र.

३ देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊं, परहर संसय भय बुद्धी वर पाऊं।—ऊ.का.

सुद्र—देखो 'सूद्र' (रू.भे)

उ०—वांचै चत्र वेद विरंच वखांण, प्रकासै व्यास अठार पुरांण।

हमीं तुम ऐम मना सुद्र गोज, हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज ।
—ह. र.

सुद्रणि, सुद्रणी – देखो 'सुद्रणी, सुद्रा' (रू.भे.)

उ०—१ मनाथीम लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई ।
—र.ज.प्र.

उ०—२ पीन कुरुक्र वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्याम वसन गण । गोरे वरण विश्रणी गाहा, चंपक वरण खिश्रणी चाहा ।—र.ज.प्र.

सुद्रब, सुद्रव्य–सं.पु. [सं. सुद्रव्य] शुभ सम्पत्ति, अच्छा द्रव्य ।

उ०—१ साद्रव नौबत सुद्रब, वसन जरकस्स जवाहर । रतन जड़त सिणगार, माळ मुगताहळ सुंदर ।—रा.रू.

उ०—२ छांहीं ग्रनां सुद्रव्य छेलिया, प्रिथी प्रमांणइ धरइ पगि । खियण नगाउ ईसर धणदांनी, जगहथ वाधउ तरइ जगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

सुद्रसण - देखो 'सुदरसण' (रू.भे.)

उ०—सहै ग्रव सुद्रसण भांज सुरतांण गह, कीध नर सुरां सिहायनति केही ।—द.दा.

सुद्रसणचक्र—देखो 'सुदरसणचक्र' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

सुद्रसणचूरण – देखो 'सुदरसणचूरण' (रू.भे.)

सुद्रस्ट–वि. [सं. सुदृष्ट] कृपालु, दयालु ।

सुद्रस्टि, सुद्रस्टी–सं.स्त्री. [सं. सुदृष्टि] शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि ।

रू.भे.—सुदिट्ठी ।

सुद्रह–सं.पु. [सं.] समुद्र, सागर ।

उ०—वेह रहई कन्हु जाणवि सुद्रह, ए माहि वारडी ए । आंणीय थानुकी पडि देवीय, ए अरि वसि घालीया ए ।—सालिभद्र सूरि

सुध–सं.स्त्री. [सं. शुद्ध] १ चेतना, संज्ञा, होश ।

उ० - १ मारी मार मचायां मनवौ, आप एक घर आवै । एक ठाड थायां सूं अनुभव, बस सुध बुध विसरावै । - ऊ.का.

उ०—२ उसाकाळ उठणियां बाळक, विद्या विकास पावसी । सुध बुध विमळ सरीर सिरमूं, गीत नीत रा गावसी ।—टावर सईकड़ौ

२ बुद्धि, ज्ञान । (ग्र.मा.)

३ ध्यान, खयाल, विचार ।

४ खबर, पता, जानकारी ।

उ०—१ बाप नै मैं बातां री सुध ही । इण वास्तै वौ बेटी नै ससरालिया साम्हे आयौ कै मोट्यार री रूप नीं देखीजै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जोड़ी एक पच्छिम दिसा जयसलमेर थटौ मुलतान सूं लाहोर मांही कर आया पण घोड़ी री कठै ही सुध नहीं हुई ।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

५ याददास्त, स्मृति, स्मरण ।

उ०—विरहां वेला पर चढणौ बुधि नाही । उग्में अलवेलां वेलण सुध आई ।—ऊ.का.

६ देख-भाल, सार-सम्हाल, खोज-खबर ।

उ०—भौसागर में वही जात हूं, वेग म्हारी सुध लीज्यौ जी ।
—मीरां

७ नीयत ।

८ राह, मार्ग ।

उ०—आथणी वीसमी किसौ अब अवरचौ, समी घर सेख रै वणी सादी । सिंध मुलतांण री सुध ले सिधाया, दूध तू संवारै पियै दादी ।—गोपीनाथ गाडण

९ डिंगल का एक छन्द विशेष ।

रू.भे.—सुद, सुदि, सुद्धि, सुद्धी, सुधि, सुधी ।

१० देखो 'सुद्ध' (रू.भे.)

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव, विमळ विचार करै वीवाह । सुंदर सूर सील कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह ।—वेलि

उ०—२ सु किण भांति री ढालां सुध गैंडौ घणां री मारी बधै, मुहरतोली रंग लागै ।—रा.सा.सं.

सुधउ—देखो 'सुधौ' (रू.भे.)

उ०—परदेशी राजा प्रतिबोध्यउ, कसी गुरु स्रावक कियौ सुधउ ।
—स.कु.

सुधकर–सं.स्त्री. [सं. शुद्ध-कर] काली मिर्च । (अ.मा.)

सुधजथा – सं. स्त्री. – १ डिंगल गीतों की रचना की एक परिपाटी या नियम जिसमें गीत के प्रथम द्वाले में जो वर्णन किया जाता है, वही वर्णन अन्त तक के द्वालों में होता है ।

२ इस प्रकार से रचा हुआ गीत ।

सुधधर—देखो 'सुधाधर' (रू.भे.)

सुधनु–सं.पु. [सं. सुधनुस्] राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।

सुधन्न, सुधन्वा–वि. [सं. सुधन्वन्] अच्छा धनुर्धर, तीर-अंदाज ।

उ० – ससोभ्रम देव 'करन्न' सुधन्न, करै खग झाटक खींवकरन्न ।
—सू.प्र.

सं.पु.—१ विष्णु ।

२ एक राजा जो मान्धाता द्वारा परास्त किया गया था ।

सुधपिंड–सं.पु.—बहेड़ा । (अ.मा.)

सुधबायरौ–वि. (स्त्री. सुधबायरी) १ जिसके होश-हवास ठिकाने न हों, बदहवास, घबराया हुआ ।

उ०—पांन खड़क्कयां जावता, कोसां छाळोछाळ । वैसागी सुधबायरा, आया जोडां पाळ ।—लू

२ अचेत, बेहोश ।

३ विक्षिप्त, पागल ।

४ मदहोश, मदमत्त, नशे में चूर ।

सुधबुध–सं.स्त्री. [सं. शुद्धि-बुद्धि] १ होश-हवास, सावचेती, सावधानी, विवेक ।

उ०—१ अकबरसाह गाफल गुमांन सूं भारचौ, तहवरखांन हाथ सब राज बोझ वारचौ। निवाब निदांन पाए सुधबुध बिसराई, और सूं और विचार बावळै की नांई।—रा.रू.

उ०—२ मारौ मार मचायां मनवौ, आप एक घर आवै। एक ठोड आयां सूं अनुभव, बस सुधबुध बिसरावै।—ऊ.का.

उ०—३ सेठां री औ घसकौ देख्यौ तौ सेठांणी खुद सुधबुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

२ चेतना, संज्ञा, होश।

उ०—१ भेरां सूं वाथेड़ौ करतां करतां सेवट राजाजी नै अगाढ़ ऊंर आयगी। चिरणां री ढिगली रै माथै गुड़ग्या। नीं कीं चेतौ रह्यौ अर नीं कीं सुधबुध।—फुलवाड़ी

उ०—२ ठकरांणी बेचेत होय गुड़गी। ठाकर नै मोद व्हियौ कै ठकरांणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी। धणी रै जोखा री बात सुणतां ई सुधबुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

३ ध्यान, खयाल, विचार।

उ०—नीं किणी चीज रौ कोड अर नीं किणी चीज री घिन। धकै आई सौ कबूल। जांणै नटणा री सुधबुध ई नीं व्है।—फुलवाड़ी

४ बुद्धि, ज्ञान।

उ०—देखण वाळा लोगां री आंख्यां काळजा रै मांय बड़गी। केई जणा तौ इण भांत सुट्ट व्हैगा, जांणै सगळी सुधबुध माथै वांग व्हैगौ व्है।—फुलवाड़ी

५ पता, खबर, जानकारी।

६ याददाश्त, स्मृति, स्मरण।

सुधभाव—सं.पु. [सं. शुद्ध-भाव] शुद्ध विचार।

सुधमन, सुधमनौ – वि. [सं. शुद्ध-मन] १ जिसका मन शुद्ध हो, शुद्धमना।

२ जो होश-हवास में हो, सचेत।

सुधमांण—वि. [सं. शुद्धि-मान्] बुद्धिमान।

उ०—पयोधर पार पय ऊतरै अवध पत, पाजबंध चारसै कोस पैरा। हूल असुरांड पड भूल सुधमांण हट, फिरै चित्त डूल जिम चाक फेरा।—र.रू.

सुधरणौ, सुधरबौ—क्रि.अ. [सं. सुध् या शोधनं] १ किसी कार्य या बात का बिगड़ने से रहना, बनना, बात बन जाना।

२ बिगड़े हुए में सुधार होना, कमियाँ या गलतियाँ दूर होना, ठीक होना।

उ०—आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दै धोक। सठ मंन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां.दा.

३ बीमारी की दशा में सुधार होना, फ़ायदा होना, स्वस्थता की स्थिति होने लगना।

४ आर्थिक दृष्टि से अच्छी हालत होना, तरक्की होना।

उ०—माईतां री जमारौ कोई सुधरियोड़ौ नीं हो, पण तौ ई वै छोरां रौ जमारौ बिगड़ण रौ सोच करता।—फुलवाड़ी

५ बिगड़े हुए आचरण का ठीक होना।

६ सफ़ल होना, सद्गति होना।

उ०—१ आ बात कंय वै थोड़ा हंसिया। नाई कह्यौ—अंदाता, म्हारौ तौ जलम सुधरग्यौ अर आप मिसखरियां करौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थां सगळां रै हाथां म्हां दोनां नै भेळौ दाग दिरीज जावै तौ औ जमारौ सुधरै।—फुलवाड़ी

उ०—३ मिनखा देही पाय कर, जांण्यौ नहीं जगदीस। दीन कहै सुधरै नहीं, बिगडी बीसवा-वीस।—वि.सं.सा.

७ वातावरण का तनाव कम होना।

सुधरणहार, हारौ (हारी), सुधरणियौ—वि०।

सुधरिओड़ौ, सुधरियोड़ौ, सुधरचोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुधरीजणौ, सुधरीजबौ—भाव वा०।

सुधरम—सं.पु. [सं. सुधर्म] १ उत्तम व श्रेष्ठ धर्म।

उ०—हरि सुधरम हारै कांय हासै, या नरदेह नही उदरि दरि दरि।—अनुभववांणी

२ पुण्य, दान।

३ परोपकार।

४ अच्छा आचरण।

५ महावीर स्वामी का एक शिष्य।

६ देखो 'सुधरमा'।

उ०—दिन दिन दीपै देहरा, जिहां स्रीपास जिणंदौ रे। साथै लै सुधरम सभा, आयौ जांणै इंदौ रे।—ध.व.ग्रं.

सुधरमा—सं.स्त्री. [सं. सुधर्म्मन्] १ इन्द्र की सभा, देव-सभा। (अ.मा.)

२ इन्द्र के सभा-भवन का नाम।

उ०—तिकां सुधारूप सींधु छाकियां नंदन वन रै निवास सुधरमा सभा मैं बैठि सुरा रै साथ विलास कीधा।—वं.भा.

३ दृढ़नेमि के एक पुत्र का नाम।

४ जैनों के एक गणाधिपति।

वि.—अपने धर्म पर अटल रहने वाला, स्वधर्मी।

सुधराई—सं स्त्री.–१ सुधरने की क्रिया या भाव।

२ किसी कार्य में किया जाने वाला सुधार।

३ सुधार कार्य की मजदूरी।

सुधरियोड़ी—भू.का.कृ.–१ बिगड़ने से रहा हुआ, बना हुआ (कोई कार्य)।

२ कमियाँ, गलतियाँ आदि दूर होकर ठीक हुवा हुआ, सधार हुवा हुआ। ३ स्वस्थता की स्थिति में आया हुआ, इस दृष्टि से सुधरा हुआ। ४ अच्छी हालत में हुवा हुआ, उन्नत दशा में आया हुआ। ५ आचरण ठीक हुवा हुआ। ६ सफ़ल हुवा हुआ, सद्गति पाया हुआ। ७ तनाव घटा हुआ।

(स्त्री. सुधरियोड़ी)

सुधरी–सं.स्त्री.–१ सुधरी हालत, सम्पन्नावस्था।

उ०—सुधरी में सौ वार, मदद करै मन-माछियां। बिगड़ी में इक वार, कोई न दीवै किसनिया।—अज्ञात

२ सम्पन्नता।

सुधरटी, सुधरट्टी–सं.स्त्री.–सलवार। (ना.डिं.को.)

सुधसांणोर–सं.पु.–डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रथम और तृतीय चरण में २०-२० मात्राएँ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में १८-१८ मात्राएँ होती है, लेकिन द्वाले के प्रथम पद में २३ मात्राएँ होती है।

रू.भे.—सुद्धसांणोर, सुद्धसंणोर।

सुधहीण–वि.–१ चेतना, संज्ञा व होश-हवास से रहित, अचेत, बेहोश।

२ जिसको अपने भले बुरे का ज्ञान न हो।

उ०—नट नाग गयौ नग नाग तणौ, सुधहीण अकव्वर राग सुणै।
—रा.रू.

सुधांग–सं.पु. [सं.] चन्द्रमा, शशि।

सुधांम–सं.पु. [सं. सुधामन्] १ कोई श्रेष्ठ या उत्तम धाम, तीर्थ।

२ घर।

३ चन्द्रमा।

सुधांसु–सं.पु. [सं. सुधा-अंशु] १ चन्द्रमा, शशि। (ह.नां.मा.)

२ कपूर।

सुधा–सं.स्त्री. [सं.] १ अमृत। (अ.मा.)

उ०—१ हुवै सुवां बिन मुकत नहं, भै बिन हुवै न प्रीति। सुधा पियां बिन अमरपद, व्है न दियां बिन कीति।—बां.दा.

उ०—२ आज फल्यौ सुर की तरु अंगण, आज चिंतामणि सौ कर आयौ। कांम कौ कुंभ धरयौ निज धांम, सुधा मनुं पांन कराइ धरायौ।—ध.व.ग्रं.

उ०—३ सब ही मृतक देखियै, किहिं विधि जीवैं जीव। साधु सुधा रस आंन कर, दादू बरसै पीव।—दादूवांणी

उ०—४ नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सरण। भगत बिछळ मन महण सुभायक, निमौ सुधा रायक नरण।—र.ज.प्र.

२ पुष्पों का रस, पुष्पों का शहद।

३ मदिरा, शराब।

उ०—तरै जलाल जागीर में आदमी भेज्या। भला सिपाही साव-धान [illegible] रा राखिया। हमेसां सुधा में गरकाव रहै।
—जलाल बूबना री वात

४ जल, पानी।

५ [illegible] का नाम।

६ पृथ्वी, धरती।

७ [illegible]।

८ [illegible]।

९ ईंट।

१० सफ़ेदी।

११ थूहर।

१२ दूध।

१३ जहर।

वि.–श्वेत, सफ़ेद।※ (डिं.को.)

क्रि.वि.–१ तक, पर्यन्त।

२ सहित।

उ०—१ संवारै दिन पोहर चढ़तां आप रै घरै पाटण गाहै गुळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा मोहौला में लै गया।—नैणसी

उ०—२ पाठै कन्है आया हुंता, तिकै दरवाजै आय ठहकीया। अठै ईंहां उपर सिरदार भाखरसी सुधा तरवार री डीक दीनी।
—राजा नरसिंघ री वात

सुधाई–सं.स्त्री.–सीधापन, सरलता।

सुधाकर–सं.पु. [सं.] चन्द्रमा, शशि। (नां.मा.)

उ०—मधुकर भ्रमत सुवास मद, भाल सुधाकर भास। मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यांन निवास।—बां.दा.

सुधाकुंडळी–सं.स्त्री.–एक वाद्य विशेष।

उ०—सुधाकुंडळी खंजरी चंग सोहे, वजै चंग मिरदंग सोभा विमोहै।—रा.रू.

सुधागेह–सं.पु. [सं. सुधा+गृह] चन्द्रमा, शशि।

सुधाचरण–सं.पु.–गरुड़। (अ.मा.)

सुधातमा–वि. [सं. शुद्ध-आत्मा] जिसकी आत्मा शुद्ध हो, पवित्र विचारों वाला।

सं.पु.–ईश्वर, परमात्मा।

उ०—निरालंब निरवांण निरंतर, सब प्रकासी वोई। सोई सुख-रांम सुधातमा, चेतन मत बुध लखै न कोई।
—श्री सुखरांमजी महाराज

सुधधर, सुधाधरण, सुधाधांम, सुधाधार–सं.पु.–चन्द्रमा।
(डिं.को; नां.मा.)

रू.भे.—सुधधर।

सुधाभुज, सुधाभुजीस, सुधाभुजू–सं.पु.–देवता, सुर। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—धजराजू कै समाज अत जातू कै अनेक सज, रथू कै घमसांण जिसकूं देख लजावै सुधाभुंजू कै विमांण।—र.रू.

सुधामद—देखो 'सुधारस'।

उ० दुनिया में सुख देख, तार आवेला तीखी। सतगुरु की परसाद, सुधामद घूंटन सीखी।—ऊ.का.

सुधार–सं.पु.–१ सुधरने की क्रिया या भाव।

२ किसी बढ़िया या बेहतर अवस्था में होने, आने या करने की क्रिया, तरक्की, उन्नति।

उ०—कर सुधार सबवाट कुळ, रखी अवट रखवाळ। हुक बेहक

तोड़ बाळहट, 'पता' पिता प्रतपाळ ।—जैतदांन वारहठ

३ बुराइयाँ, विकार, दोष आदि दूर करने की क्रिया ।

उ०—कोर कौ **सुधार** ग्यांनी, गोर तैं कियौ । आपनौ उधार पांनी, धोर तैं पियौ ।—ऊ.का.

४ संशोधन, संस्कार ।

५ अच्छाई ।

६ उपयुक्तता ।

उ०—दरजी फाड़ दुकूल नूं, सींवै लिए **सुधार** । इण विध री रचना अठै, जांणै जांणणहार ।—वां.दा.

७ परिवर्तन ।

८ फ़ायदा, लाभ ।

९ घृत, घी । (अ.मा.)

रू.भे.—सुधारौ ।

सुधारक–वि.–१ सुधार करने वाला ।

२ समाजसेवी ।

३ धर्म, समाज व राजनीति में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए आन्दोलन करने वाला, क्रान्तिकारी ।

उ०—चौवटै जावता दो-तीन पंचां नै लोगां पूछियौ—सुणीक नहीं? **सुधारक** लोग माईतां री पुरांणी परणलका तोड़ै है ।—वरसगांठ

४ संशोधन या संस्कार करने वाला ।

५ परोपकारी ।

उ०—उधारक धारक लोक असेस, **सुधारक** तारक सेस विसेस ।
—ऊ.का.

सुधारण–वि.–सुधारने वाला ।

उ०—नमौ गज तारण मारण ग्राह, नमौ व्रज-काज **सुधारण** नाह ।
—ह.र.

क्रि.वि.–सुधारने के लिए ।

उ०—मोटी माफी मांग, अमलदारां सूं अड़स्यां । देस **सुधारण** दसा, लाख विध थासूं लड़स्यां ।—ऊ.का.

सं.स्त्री.–सुधारने की क्रिया या भाव ।

सुधारणौ, सुधारबौ–क्रि.स. ['सुधरणौ' क्रि. का प्रे.रू.] १ किसी कार्य या वात को विगड़ते हुए से वचाना, वात वनाना, कार्य सुधारना ।

उ०—१ समरथ सरण तुम्हारी सांइयां, सरव **सुधारण** काज ।
—मीरां

उ०—२ कांम **सुधारै** काज कुं, कांम ही करै अकाज । जन हरीया निहकांमना, सौ संतां सिरताज ।—अनुभववांणी

उ०—३ आप कळा सम अवतरण, मतौ कियौ महाराज । असुरां हद राखण इळा, सुरां **सुधारण** काज ।—रा.रू.

२ व्यवस्थित करना, जमाना, वैठाना, सुधारना ।

उ०—वै दरवार नै चौखी सलाह देवणी चावै, राज काज रौ ढंग **सुधारणौ** चावै पण कोई वात भरै नीं पड़ै ।—अमरचूनड़ी

३ विगड़े हुए को ठीक करना, कमियाँ, ग़ल्तियाँ, दोष, विकार आदि दूर करना ।

उ०—१ पंथ **सुधारण** कारणै वील्हजु जंभगुर आयुस आविया । रांमड़ास समाद लै वील्ह वैकुंठ सीधाविया ।—वि.सं.सा.

उ०—२ ध्यांन विद्या धरै, घ्यांन नहीं देस **सुधारै** । धरम ध्यांन नहिं धरै, अलवता ध्यांन उधारै ।—ऊ.का.

४ लक्ष्य-सिद्धि करना, उद्देश्य पूरा करना, पूर्ण करना ।

उ०—लाखां काज **सुधारणा**, लाखां सूधी वात । लाखां रीझै आंवणौ, तैं क्यूं कटियै हाथ ।—जलाल वूवना री वात

५ तरक्की कराना ।

६ आदतें ठीक करना, आचरण ठीक करना ।

७ सफ़ल वनाना, सद्गति देना या प्राप्त कराना ।

उ०—१ हां हे म्हांरौ जनम **सुधारण** हार, हां हे म्हांरौ मरण-मिटावण हार ।—मी.रां.

उ०—२ पास आए की लाज, कुळ काज विचारौ । मेरा रण मरणा, कै जीवणा **सुधारौ** ।—रा.रू.

८ काम में लेने के लिए तैयार करना, साफ़ करना ।

उ०—पत्र **सुधारै** जोगणी, माळ सुधारै रंभ । थंभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ ।—रा.रू.

९ सजाना, सँवारना ।

उ०—आहव चांपावत अखै, लड़ कूंपावत लाल । कीधौ हार **सुधारतां**, सिव तिण वार खुसाल ।—रा.रू.

१० वातावरण का तनाव कम करना, कम कराना ।

११ सफ़ाई करना, साफ़ करना ।

उ०—सीड़ै कातै वर्णै, जोस सूं जगां **सुधारै** । करड़ा दोरा कांम, सांम घर विपत निवारै ।—नारी सईकड़ौ

सुधारणहार, हारौ (हारी), सुधारणियौ—वि० ।

सुधारिओड़ौ, सुधारियोड़ौ, सुधारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुधारीजणौ, सुधारीजबौ—कर्म वा० ।

सुधरणौ, सुधरबौ—अक० रू० ।

सुधारस–सं.पु.–१ अमृत ।

उ०—काज सहौ विसराय, सुणीबौ कीजिए । प्याला स्रवणां पूर, **सुधारस** पीजिए ।—वां.दा.

२ कमल । (ह.नां.मा.)

सुधारसम–सं.पु. [सं. सुधारश्मि] चन्द्रमा । (अ.मा.)

सुधारियोड़ौ – भू.का.कृ. – १ किसी कार्य या वात को विगड़ते हुए से वचाया हुआ, वात वनाया हुआ, कार्य सुधारा हुआ । २ व्यवस्थित किया हुआ, जमाया हुआ, वैठाया हुआ, सुधारा हुआ । ३ विगड़े हुए को ठीक किया हुआ, कमियाँ, दोष, विकार आदि दूर किया हुआ । ४ लक्ष्यसिद्धि या उद्देश्यपूर्ति किया हुआ । ५ तरक्की कराया हुआ । ६ आदतें सुधारा हुआ, आचरण ठीक किया हुआ ।

[illegible] हुआ, सद्गति किया हुआ, प्राप्त कराया हुआ। [illegible] हुआ। ६ सजाया हुआ, संवारा हुआ। १० [illegible] हुआ। ११ सफाई किया हुआ, साफ़ किया हुआ।

(स्त्री. [illegible])

सुधारक-वि.-सुधार करने वाला, सुधारक।

सुधारो-सं.पु.-१ मृतक के पीछे किए जाने वाले वे कर्म जिससे मृतक की [illegible] या मोक्ष प्राप्त हो जाय।

२ देखो 'सुधार' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] सूरत गुलवाई तौ इण वास्तै ही कै [illegible] हुसियार वर्णला अर गांम री सुधारी [illegible]। [illegible] जबरौ सुधारौ व्हियौ।—अमरचूनड़ी

उ०—२ [illegible] अविकारा, अब नही जाऊं लैन उधारा। [illegible] सुधारा, महारि जूं करती झनकारा।—ऊ.का.

सुधासार-सं.पु. [सं.] अमृत।

उ०—[illegible] दंत, सूर प्रलैरसम्मां मरोस सुधासार। [illegible] पंकता चगी, किरमाळां [illegible]।—र.रू.

सुधासुत-सं.पु. [सं.] १ चन्द्रमा। (ह.नां.मा.)

२ [illegible]।

सुधासुती-सं.पु. [सं. सुधा-सुती] चन्द्रमा। (अ.मा.)

सुधास्रव-सं.पु. [सं. सुधा-स्रव] चन्द्रमा। (नां.मा.)

उ०—प्रभा [illegible] नूं वधै उण री प्रभा, तूझ सूं वधै रव प्रभा [illegible]। सुधास्रव अमर कियौ नह सांभल्यौ, किया तैं अमर ज्या रीत [illegible]।—र.रू.

सुधि-[illegible] १ देखो 'सुध' (रू.भे.)

उ०—१ [illegible] यौवन अवस्था हुई। अेक तौ रूप हतौ बीजौ यौवन [illegible], [illegible] सिणगार कर बैठी सो उवै नूं देख सेठ री सुधि [illegible]।—बैताळ पचीसी

उ०—२ [illegible] सुधि बुधि ऊजनी, हीरौ चडीयौ हाथि। हूरीयो [illegible], [illegible] आथि।—अनुभववांणी

उ०—३ [illegible] बेहाल भई, तन की सुधि बुधि गई। तन मन [illegible] प्रेम; [illegible] है।—अनुभववांणी

२ देखो 'सुधी' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

३ देखो 'सुद्धि' (रू.भे.)

उ०—[illegible], [illegible] घोल। मुख सुधि करइं [illegible], [illegible] संयोग।—जयसेखर सूरि

४ देखो 'सुद' (रू.भे.)

उ०—[illegible] सिराव रा, सुधि मात्र बीज मिळाव रा, धर [illegible], हुवै पड़ असमान गड़हड़।—रा.रू.

सुधिक्क-[illegible]-[illegible], धिक्कार।

सुधी-वि. [सं. सुधी:] १ पण्डित, विद्वान्। (अ.मा; डिं.को.)

२ बुद्धिमान, चतुर।

३ धार्मिक।

सं.पु.—१ शिक्षक।

२ कवि। (अ.मा.)

क्रि.वि.—१ सहित, साथ।

उ०—पीपळ ऊपर चढ़नै मंत्र पढ़ियौ, पीपळ जड़ां सुधी उड़ियौ।—पंचदंडी री वारता

२ तक, पर्यन्त।

उ०—१ पगां सुधी खाल, तौ ही रह्या संयम मां लाल, सुकोमल साध।—जयवांणी

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या—एक कांनी नदी कड़ियां तांई अनै एक कांनी गोडां सुधी। एक कांनी सुकी तौ म्है सुकी ऊतरां।—भि.द्र.

३ देखो 'सुद' (रू.भे.)

४ देखो 'सुद्धि' (रू.भे.)

उ०—गायां नै गिरमास, ठिकांणै चौड़ै ठायौ। सूवै सूतक सुधी, तळै छिगास विसायौ।—द.दे.

५ देखो 'सुध' (रू.भे.)

सुधीर-वि. [सं.] धैर्यवान, विवेकवान।

सुधीव, सुधू, सुधया-सं.स्त्री.—सुपुत्री, सुन्दर कन्या।

उ०—१ माळवगढ़ राजा सुधू, कुंवरी माळवणीह। ढोलड़तिण वहु प्रीति छइ, अति रंग नेह घणीह।—ढो.मा.

उ०—२ नळवर नयर निरिंदौ, नळराय सुउ सल्हकुमर वरौ। पिंगळराय सुधूया वनिता मा(र)वणि वरणविमु।—ढो.मा.

सुधोदक-सं.पु.—सप्त समुद्रों में से एक।

उ० - दध मंडोदक सस्ठमौ, लाख वतीस वखांन। सुधोदक यहै सपतवौं,. चोसठ लाख प्रमांन।—गज-उद्धार

सुधौ-सं.पु (स्त्री. सुधी) १ सीधा-सादा, सरल, भला, शरीफ़, सज्जन।

२ देखो 'सुदौ' (रू.भे.)

उ० — १ राव वीरमदे दिन ४ पहली मेड़तौ ऊभी मेल नीसरीयौ। अजमेर मांणसां वसी सुधौ गयौ।—नैणसी

उ०—२ पछै संमत १६६१ रा. कांन्हीदास रौ ही आध राजा सूरजसिंघ नु अकवर पातसाह दीयौ। तिकौ राजा सुरजसिंघजी जीवीया तठा सुधौ मेड़तौ रह्यौ।—नैणसी

३ देखो 'सूंधौ' (रू.भे.)

उ०—आंख्यां काजळ वालसी फूलां रा हार पहरसी सुधौ लगावसी।—पंचदंडी री वारता

(स्त्री. सुधी)

रू.भे.—सुधउ।

सुनंग-सं.पु.—देखो 'सुनग' (रू.भे.) (अ.मा; ह.नां.मा.)

सुनंद-सं.पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण का एक पार्षद ।
२ एक देव-पुत्र ।
३ बलरामजी के मूसल का नाम ।
वि.-आनन्ददायक ।
सुनंदन-सं.पु.-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
सुनंदा-सं.स्त्री. [सं.] १ उमा, गौरी ।
२ कृष्ण की एक पत्नी ।
३ दुष्यन्त के पुत्र सम्राट् भरत की पत्नी ।
४ चेदिनरेश सुबाहु की बहिन जो दमयन्ती की मौसेरी बहन थी ।
५ ऋषभदेव की एक पत्नी का नाम ।
उ०-आदि प्रथम ओंकार, ओंकार पुत्र ब्रमा, ब्रमा पुत्र कासिब; पुत्र सूरथ, सूरथ पुत्र आत्रैय, पुत्र मनुरिख, पुत्र देवभूत, पुत्र आकूति, पुत्र प्रसूति, पुत्र प्रीयवरत्ति, पुत्र अग्निध्वज, पुत्र नाभि-राजा, मोरादै भारया पुत्र रिखभदेव । रिखभदेव भारया दो-**सुनंदा**१, सुमंगळा२ ।-राठौड़ां री वंसावळी
६ स्त्री, नारी ।
७ सुबुद्धि ।
सुन-१ देखो 'सून्य' (रू.भे.)
उ०-**सुन** सुभर मैं बाळक जाया, तुचा हाड़ नहीं मासुं । जाति न पांति वरण नहीं वाकै, नांव न धरीयै कासुं ।-अनुभववांणी
२ देखो 'सुनक' (रू.भे.) (डिं.को.)
सुनक-सं.स्त्री. [सं. शुनक] १ कुत्ता, श्वान । (अ.मा; डिं.को.)
२ दोहा-छंद का एक भेद विशेष जिसमें ४४ लघु, २ गुरु कुल ४६ वर्ण तथा ४८ मात्राएँ होती है । (र.ज.प्र)
३ भृगुवंशीय एक ऋषि का नाम ।
रू.भे.-सुन ।
सुनक्षत्र-सं.पु. [सं.] १ उत्तम नक्षत्र ।
२ मरुदेव राजा के उत्तराधिकारी राजा का नाम ।
उ०-सुत जै न्रप मरुदेव वयण सति, पुत्र जास **सुनक्षत्र** प्रथमि पति ।-सू.प्र.
रू.भे.-सुनिखत्र ।
सुनक्षत्रा-सं.स्त्री. [सं.] स्कन्द की एक मातृका ।
सुनखी-सं.स्त्री.-चील ।
सुनग-सं.पु. [सं.] चन्दन । (नां.मा.)
उ०-निस-दीह न थाकै वयुंहि नांखतौ, अस गज कनक **सुनग** अतर ।-नैणसी
सुनजर-सं.स्त्री.-कृपा-दृष्टि, दया-दृष्टि ।
वि.-दयालु, कृपालु ।
रू.भे.-सुनिजर ।
सुनणौ, सुनबौ-देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू.भे.)
उ०-१ न कौ सुनत्त काजी, न कौ बंग न्वाजा । न कौ दिन रोजा, मका नांहि ख्वाजा ।-अनुभववांणी
उ०-२ पढ़त छंद बंदत पद पुनि पुनि, स्रवनानंद बढ़त धुनि **सुनि** सुनि ।-मे.म.
सुनणहार, हारौ (हारी), सुनणियौ-वि० ।
सुनिग्रोड़ौ, सुनियोड़ौ, सुन्योड़ौ-भू०का०कृ० ।
सुनीजणौ, सुनीजबौ-भाव वा० ।
सुनत-देखो 'सुन्नत' (रू.भे.)
सुनफा-सं.स्त्री.-ज्योतिष का एक योग जो चन्द्रमा से एक स्थान में चाहे पूर्व, चाहे उत्तरार्द्ध में शुभ ग्रह होने पर होता है ।
सुनमंडळ-देखो 'सून्यमंडळ' (रू.भे.)
सुनमांन-देखो 'सनमांन' (रू.भे.)
उ०-तठै हेक रखी तापता हुंता । तठै आय पागड़ौ छांड, नमसकार कीधौ । रखी **सुनमांन** दीवी । तरै आप रुजक पगै मेलिग्रौ ।
-कल्यांणसिंघ वाढेल री वात
सुनमित-वि.-विनम्र, नत-मस्तक ।
उ०-सुसमित **सुनमित** निज वदन सुव्रीड़ित, पुंडरीकाख थिया प्रसन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन ।
-वेलि
सुनयणा, सुनयना-सं.स्त्री. [सं. सुनयना] १ राजा जनक की पत्नी व सीता की माता का नाम ।
२ नारी, स्त्री ।
३ अच्छे नैत्रों वाली स्त्री ।
सुनर-सं.पु. [सं. सु-नर] १ अर्जुन । (अ.मा; डिं.को; ह.नां.मा.)
२ सुन्दर एवं वीर पुरुष ।
सुनसांन-वि. [सं. शून्य+स्थान] १ निर्जन, वीरान, शून्य ।
उ०-सारै वदन मैं छुटै कंपी कंपी, भीजै सारी देह । मारूजी **सुनसांन** जंगळ मैं; रात अंधेरी थां री चालीवौ ।-लो.गी.
२ जहाँ कोई न हो, एकान्त ।
३ उजाड़, उजड़ा हुआ ।
सुनहरालौ-सं.पु.-वह घोड़ा जिसके पैर सफेद हो और पैरों के अन्दर लाल चकते हो, मतान्तर से वह घोड़ा जिसके सुमों के अन्दर चकते हों । (शा.हो.)
सुनहरी, सुनहरौ-वि. [सं. स्वर्णिम] १ स्वर्ण का, स्वर्ण सम्बन्धी, स्वर्णिम ।
२ जिसमें स्वर्ण का काम किया हुआ हो, स्वर्ण-जड़ित ।
उ०-१ स्रीसापका मंगस खांना । खडा करि **सुनहरी** की चौकी धरि । तिम परि भोजन पूर कनक थाळ विराजमान करि । खिजमत गारू नै अरज कीवी भौजाई की तयारी ।-सू.प्र.
उ०-२ तद जलाल कही-सात सौ घोड़ा कंधारी, इकमोला हजारी तिकी **सुनहरी** रूपहरी साखत दिरायजै और खजांना सूं रोकड़ दिरायजै ।-जलाल बूबना री वात

[illegible]
[illegible] मौनें के [illegible]
[illegible] पंछी महूंत [illegible] —[illegible]
[illegible] मे मे [illegible] सोनार। [illegible]
[illegible] (श.मा.)
[illegible] (डि.को.)
[illegible] विराजनों, समात तो सुनात तू [illegible]
[illegible] (रू.भे.)
[illegible] मन वंछत करे [illegible] सुनातन धरम [illegible]
[illegible] (रू.भे.)
[illegible] मेरे सिर [illegible] —गज-उद्धार
[illegible] मारवाड़ की सदाड़ [illegible] सुनायण कीजे।
—मयाराम दरजी री बात
[illegible] सुनाय [illegible] दळ चाप [illegible] काम भलो भज रांम [illegible]
[illegible]
[illegible] जाति या वर्ग [illegible] आभूषण बनाने का कार्य करता [illegible]
[illegible] —अमरचूनड़ी
[illegible]
[illegible] सुनार [illegible] री दुकांन [illegible]

हवाले किया।—नैणसी

उ०—२ उठीनें धाड़ितियां चांवटा रै सैं बीच ऊंठ भोकिया, नांनरा मांयै आजन ढाळी, कपड़ै री दुकांन फोड़'र मोठड़ा भुकाया, तवां माथै नूंवा गेग राळिया पर सब सूं पे'ली सुनार री दुकांन लूट'र मोहरत कियो।—अमर चूनड़ी

रू.भे.—सोनार।

अल्पा.—सोनारड़ो, सोनिड़ो, सोनीड़ो।

सुनासीर, सुनासीरी-सं.पु. [सं. शुनाशीरः, शुनासीरः] १ इन्द्र।
(अ.मा; डिं.को; ना.डिं.को; ह.नां.मा.)

२ देवता।

३ उल्लू।

रू.भे.—सुनीसीर।

सुनि—१ देखो 'सून्य' (रू.भे.)

उ०—अछती मांही छति है, छति मांही अछती। वसती मांही सुनि है, सुनि मांही वसती।—अनुभववांणी

२ देखो 'सूनी' (स्त्री.)

उ०—ब्रह्म वदेही वालमा, जीव नीयारो नांहि। एक अखंडी रम रया, सुनि मेभ्ळीयां मांहि।—अनुभववांणी

३ देखो 'सुनी' (रू.भे.)

सुनिखत्र—देखो 'सुनक्षत्र' (रू.भे.)

उ०—पुत्र सुनिखत्र पाप रै अप पुह्नळ।—सू प्र.

सुनिजर—देखो 'सुनजर' (रू.भे.)

उ०—सुनिजर ताहरी देखिनइ रे जिनजी, सफल थई मुझ आस।
—वि.कु.

सुनिभ-सं.स्त्री.-आभा कान्ति, प्रभा।

उ०— रवि सुनिभ राजही, सुकर धनु साजही। सुकव धर सीसजी, अवधपुर ईसजी।— र.ज.प्र.

सुनिमंडळ—देखो 'सून्यमंडळ' (रू.भे.)

उ० – तन पाटण तहां वास हमारा, नौ दरवार जड़ाया। सुनिमंडळ, मैं जोति चमकै, उलटा पवन चडाया।—ह.पु वां.

सुनिरूप—देखो 'सून्यरूप' (रू.भे.)

सुनिहार, सुनिहाल-सं.स्त्री.–१ गम्भीरता से देखने, समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।

उ०—पांम्यो जनम मनुष्य नो आग्जि कुल सुनिहाल। रयण रागि कवड़ी सटै, कांई गमावौ आलि।—वि.कु.

२ अच्छी तरह देखने की क्रिया या भाव।

सुनी-सं.स्त्री [सं. स्वर्णा] नदी। (अ.मा.)

रू.भे.—सुणी, सुनि।

सुनीत, सुनीति, सुनीती-सं.स्त्री. [सं. सुनीति] १ वह श्रेष्ठ एवं उत्तम नीति जिसके माध्यम से देश व राज्य का हित हो, अच्छी राजनीति।

२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण।

३ बुद्धिमत्ता, समझदारी।

४ अच्छी नीयत, अच्छा उद्देश्य।

५ अच्छी युक्ति, अच्छा उपाय।

६ ध्रुव की माता का नाम।

सुनीसीर—देखो 'सुनासीर' (रू.भे.) (नां.मा.)

सुनु-सं.पु.-सुत, पुत्र। (डि.को.)

सुनूं—देखो 'सूनौ' (रू.भे.)

उ०—पिया बिन **सुनूं** सारौ देस, जतन करी हे आली हे। —मीरां

सुनूर-सं.पु. [सं. सु+फा. नूर] सौन्दर्य।

वि.-सुन्दर।

उ०—**सुनूर** सूर संभकै, निसंभ सै हसै नचै। क्रिपाळि काळिका अगेन, वाळि बाळिका बचै। - ऊ.का.

सुनेर-सं.पु.-सोलंकी राजपूतवंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बां.दा. ख्यात)

सुनेरि, सुनेरी-सं.पु.-१ बंगाली शेर।

उ०—प्राक्रम निज जै परखणौ, सावज सूं भिड़ सार। साजणौ **सुनेरि** हुंत समर, केहर! पड़ै न पार।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'सुनहरी' (रू.भे.)

सुनोची-सं.पु.-एक प्रकार का घोड़ा। (शा.हो.)

सुन्न-सं.पु. [सं. शून्य] १ शरीर के किसी अङ्ग में रक्त-सञ्चार वन्द हो जाने की अवस्था या दशा।

२ स्तब्ध एवं किंकर्त्तव्य-विमूढ़ावस्था।

वि.-१ जिसमें कोई हरकत, हलचल या चेतना अथवा स्पन्दन न हो, निश्चल, निश्चेष्ट, जड़।

२ किंकर्त्तव्य-विमूढ़, स्तब्ध।

उ०—लेट्यां-लेट्यां दोय पळ भी कोनी बीत्या होसी कै कोई दरवाजै नैं धीरेसीक खटखटायौ। म्हैं सोच भी कोनी सक्यौ, कुण हौ सकै है! रोसनी करी अर दरवाजौ खोल्यौ। दरवाजौ खोलतां ई **सुन्न** होग्यौ।—तिरसंकू

३ निर्जीव।

रू.भे.—सन्न, सुंन, सुंन्य।

४ देखो 'सून्य' (रू.भे.)

उ०—१ संकर नां सुरजेठ नां, आस तुहारी आस। सावतरी थारौ सघर, वडौ **सुन्न** घर वास।—पी.ग्रं.

उ०—२ **सुन्न** सिखर कै द्वारै आकै, मोहि मिळै अविनासी। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी।—मीरां

उ०—३ **सुन्न** महल मैं सुरत जमाऊं, सुख की सेज बिछाऊं री। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, वार वार वळि जाऊं री।—मीरां

उ०—४ पिया गुरु जियारांम मेरा, किया जिन **सुन्न** मैं सेरा। कह सुखरांम सिमरथ दासा, ब्रह्म हळाबोळ प्रकासा। —श्री सुखरांमजी महाराज

सुन्नगार—देखो 'सून्यागार' (रू.भे.)

सुन्नत-सं. स्त्री. [अ.] एक मुसलमानी रस्म जिसमें छोटे बच्चे की लिङ्गेन्द्रिय के अग्रभाग की चमड़ी को काटकर सुपारी को नंगी कर दिया जाता है, खतना।

रू.भे.—सुनत।

सुन्नागार—देखो 'सून्यागार' (रू.भे.)

सुन्नाळ—देखो 'सून्याड़' (रू.भे.)

उ०—गोदारां रै वास मैं सफा **सुन्नाळ** पड़ी है। गंडकड़ा भूसै, बाकी चिड़ी ही चूंकै नहीं है।—दसदोख

सुन्नी-सं.पु. [अ.] १ मुसलमानों का एक वर्ग जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। इसी वर्ग के मुसलमानों में सुन्नत की रस्म की जाती है।

२ उक्त वर्ग का मुसलमान।

सुन्य—देखो 'सून्य' (रू.भे.) (अ.मा.)

उ०—१ वळै तं नमौ इंद्रवाई, तुही **सुन्य** रै मांहि चैतन्य ताई। —मे.म.

उ०—२ हरीया बाळ न ब्रिधउ, नां तरणापौ तंन। निरालंब **सुन्य** मैं रमै, निराकार निरजंन।—अनुभववांणी

सुन्हरियौ—देखो 'सुनहरौ' (रू.भे.)

सुन्हली—देखो 'सुनहरी' (रू.भे.)

उ०—इण भांत झालौ ठाकुरसिंह ऊभौ ऊभौ विसूरणा करै छै। हाथ मसळै छै। घोड़लौ आपरी सवारी री **सुन्हली** साखत सूं खेत मांही पड़ियौ छै।—डाढाळा सूर री वात

सुपंख-वि.-१ सुन्दर तीरों वाला।

२ सुन्दर परों वाला।

सं पु -अच्छे पंख।

सुपंखरौ-सं.पु.-डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके विषम चरणों में सोलह एवं समचरणों में चौदह वर्ण होते हैं, किन्तु गीत के सबसे प्रथम चरण में अठारह वर्ण होते हैं, तुकांत में गुरु लघु होते हैं। (र.ज.प्र.)

रू.भे.—सपंखरौ।

सुपंथ-सं.पु. [सं. सु-पथ] १ अच्छा रहन-सहन, अच्छा चाल-चलन, अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार जिससे जीवन में खुद का भी भला हो और अन्य सम्पर्क में आने वालों का भी हित हो सन्मार्ग, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग।

उ० मोक्ष मारग नी खप करै रे लाल, चालै सूत्र **सुपंथ** सुविचारी रे।—जयवांणी

२ उत्तम पंथ या सम्प्रदाय।

रू.भे.—सुपथ।

सुपख—देखो '[illegible]' (रू.भे.)

उ०—[illegible] सुपंख नैन । [illegible] सांचै [illegible] ।—[illegible] वंशभास्कर?

सुपच्छ-वि.—जो पक्षी [illegible] हो ।

सुपक्ष, सुपख—सं.पु. [सं. सुपक्ष] १ अच्छा पक्ष, दृढ़ और मजबूत पक्ष ।

२ अच्छा वंश या कुल, श्रेष्ठ कुल ।

३ सुन्दर पक्ष ।

वि.—सुन्दर पक्षों वाला ।

सुपखाळ, सुपखाळौ—सं.पु.—१ श्रेष्ठ या उत्तम वंश का, कुलीन ।

उ०—१ [illegible] सुपखाळ, सुत सुतहां जोहियां सहत । लख [illegible], [illegible] देसाण दांनियां ।—गो.रू.

उ०—२ [illegible] सजन सुवौ अड़पाळौ, सुणियौ जेम 'फतौ' सुपखाळौ ।—[illegible] री गीत

उ०—३ [illegible] राजस करौ, प्रथमी 'बूठौ' 'पाल' । भूप उभै [illegible], [illegible] सुपखाळ । —पा.प्र.

सुपड़कंना-वि.—चौड़े-चौड़े कानों वाला ।

उ०—[illegible] नईरत में पुरी, राकस वसै विसाळ । मुचमुखा सुपड़कना, [illegible] विकराळ ।—गज-उद्धार

सुपच-वि.—जो पाचक हो, आसानी से पचने वाला, सुपाच्य ।

उ०—[illegible] माता श्रवण पत, रांधै सुपच अनाज । वायस मंचियौ [illegible], [illegible] मैं नावै काज ।—बां.दा.

सं.पु.—१ सुपथ्य, पथ्य ।

[सं. श्वपच] २ भंगी, डोम ।

सुपट्ट-वि.—१ सुपाठ्य, सुवाच्य ।

२ स्पष्ट, साफ ।

सुपण, सुपणौ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—माई म्हानै सुपणा मां परण्या दीनानाथ ।—मीरां

सुपतळ, सुपत्तळ-वि.—पतला, क्षीण ।

उ०—[illegible] सुपत्तळ [illegible] कुंभळ, [illegible] लंब प्रलंब । ढोला ऐही [illegible], [illegible] कव ।—ढो.मा.

सुपतास, सुपतास्व—सं.पु. [सं. सप्ताश्व] जिसके रथ में सात घोड़े जुते रहते हैं, सूर्य ।

सुपतिक—सं.पु.—रात को डाला जाने वाला डाका । (डिं.को.)

सुपतिट्ठ—वि.—प्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध ।

उ०—[illegible] सुपतिट्ठ, सूधै मद्यीसमै मतमट्ठि । चौथौ [illegible] सुपात्र, [illegible] श्लोक प्रमांण ।—ध.व.ग्रं.

सुपत्र-वि.—१ सुन्दर पत्तों से युक्त, सुन्दर पत्तों वाला ।

२ सुन्दर पत्तों वाला ।

सं.पु.—सुन्दर पत्ता ।

सुपत्री—सं.स्त्री. [सं.] एक प्रकार का पौधा, [illegible] ।

सुपथ—१ देखो 'सुपथ्य' (रू.भे.)

२ देखो 'सुपस्य' (रू.भे.)

सुपथ्य—सं.पु. [सं.] वह आहार या खाद्य पदार्थ जो सुपाच्य होने के साथ ही स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो, पथ्य ।

रू.भे.—सुपथ ।

सुपनंतर, सुपनंतरि—क्रि.वि. [सं. स्वप्न-अनन्तर] १ स्वप्न में, स्वप्न के समय, स्वप्न के दौरान ।

उ०—१ जिम सुपनंतर पांमियउ, तिम परतख पांमेसि । सज्जन मोतीहार ज्यूं, कंठा ग्रहण करेमि ।—ढो.मा.

उ०—२ हियमां करइ वधांमणां, सहीत सीधा काज । जै सुपनंतर दीखता, नयणे मिळिया आज ।—ढो.मा.

उ०—३ वासर चित्त न वीसरइ, निमिभरि अवर न कोइ । जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ सुपनंतरि सोइ । - ढो.मा.

उ०—४ निम पीढी 'अगजीत' ग्रह, पटरांणी चहुवांण । सुपनंतर सुख संभळै, जै जै वंदन वांण ।—रा.रू.

२ स्वप्न के बाद, स्वप्न के अनन्तर ।

सुपन—१ देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—१ आळस न कर अजांण, निज मन हरख भजन रघुनाथं । सुपन रूप संसार, विण संतां देहनां वारं ।—र.ज.प्र.

उ०—२ सोभा नांम रूप विसतारा, सुपन चिह्न कहिया घण सारा ।

—सू.प्र.

२ देखो 'सुपनक' (डिं.को.)

सुपनउ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

सुपनक-वि. [सं. स्वप्नक] १ निद्राशील, निद्रालु, उनिंदा । (डिं.को.)

रू.भे.—सुपन ।

२ देखो 'सपनौ' (रू.भे.)

सुपनखा—सं.स्त्री. [सं. शूर्पणखा] रावण की बहन एक राक्षसी, राम के वनवास के समय लक्ष्मण ने दण्डकारण्य में इसके नाक-कान काटे थे ।

उ०—१ सुणे सुपनखां वेंण चढ हांकिया साकुरां, खर दूसर त्रिमर ग्रळ झाळ खांगा, पूर तन पहरिया ।—र.रू.

उ०—२ नाक रांम छेदन सुपनखा, रद मेटण रांमण रखरांण ।

—ह.नां.मा.

वि.—जिसके नाखून सूप-जैसे हों ।

सुपनदोख, सुपनदोस—सं.पु.—देखो 'स्वप्नदोस' (रू.भे.)

सुपनूं, सुपनू—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—गैली यै मीरां भई बावरी सुपनूं छै आळ जंजाळ ।—मीरां

सुपने, सुपनै—क्रि.वि.—स्वप्न में ।

उ०—१ जिणनूं सुपनै देखती, प्रगट भए प्रिव आइ । डरती आंख न मूंदही, मत सुपनउ हुय जाइ ।—ढो.मा.

उ०—२ कै मुवौ कै मारियौ, कै सुपनै आयौ मांम्य । स्री रांम रो मूंदड़ी, कुंण रंन मां ल्यायौ रांम ।—मेहोजी गोदारी

उ०—३ दिल्ली हूंत रहै चित दावै, उर सुपनै ही भरम न ग्रावै ।
—रा.रू.

सुपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू.भे.)

उ०—१ माई म्हांनै सुपना मैं परणी गुपाळ, राती पीरी चूनर पहरी, मंहदी पांन रसाळ ।—मीरां

उ०—२ मनमैं ग्रकबर मोद, कलमां विच धारै न कुट । सुपना मैं सीसोद, पलै न रांणा प्रतापसी ।—दुरसौ ग्राढौ

सुपवीत—देखो 'सुपवीत' (रू.भे.)

सुपरकास—सं.पु.—सूर्य की रोशनी, धूप । (डिं.को.)

सुपरडंट, सुपरडेंट—सं.पु [ग्रं. सुपरिनटेन्डेन्ट] १ ग्रधीक्षक का पद ।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला ग्रधिकारी ।

उ०—थांणैदार नै थावस, सिपायां नै सावस, गिरदावळ नै घी, ग्रर सुपरडेंट नै दूजती गाय पौंचावै है ।—दसदोख

सुपरण, सुपरणक—सं.पु. [सं. सुपर्णकः] १ गरुड़, खगराज ।
(ग्र.मा; डिं.को; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—मंद लख वाह सुपरण तजै माग मैं, चरण उवांहणै धरण चालै ।—र.ज.प्र.

२ पक्षी ।

३ विष्णु ।

४ घोड़ा, ग्रश्व । (डिं.को.)

५ एक देव योनि विशेष ।

६ सूर्य की किरण ।

७ मुर्गा ।

८ एक सूर्यवंशी राजा जो ग्रन्तरिक्ष का पुत्र ।

वि.—सुन्दर पत्तों वाला ।

रू.भे.—सुपरणेय ।

सुपरणा, सुपरणी—सं.स्त्री. [सं. सुपर्णा, सुपर्णी] १ गरुड़ की माता का नाम ।

२ पद्मनी ।

३ कमल-समूह ।

४ वह तालाब जिसमें कमलों की बहुतायत हो ।

सुपरणेय—सं.पु. [सं. सुपर्णेय] गरुड़ । (ग्र.मा; ह.नां.मा.)

सुपरवांण, सुपरवांण—सं.पु [सुपर्वाणः] १ देवता, सुर ।
(डिं.को; नां.मा.)

उ०—घुमडै सुपरवांणा घोर किय उतसव घणौ, तन मन जांणियौ प्रसतांन ग्रत दससिर तणौ ।—र.रू.

२ वांस ।

३ तीर ।

४ धूम्र, धुंग्रा ।

सुपरवाइजर—सं.पु. [ग्रं.] कार्य की निगरानी या देखभाल करने वाला, निरीक्षक ।

सुपरस—देखो 'स्परस' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

सुपरसन—देखो 'सपरस' (रू.भे.) (ग्र.मा.)

सुपरि—वि. [सं. सु+परि] १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ वड़ी ।

क्रि.वि.—ग्रच्छी तरह से, चतुराई से ।

उ०—१ देवड़ी नांम ऊभा घरणि, मारुवणी तसु घू कुमरि । चौसठि कळा सुंदरि कुंमरि, चतुर कथा कहिस्युं सुपरि ।—ढो.मा.

उ०—२ मधुर करंबक ऊपरि, सुपरि परीसइं घोल । मुखसुधि करइं ति करविय, करविय करइं तंबोल ।—जयसेखर सूरि

सुपरौ—वि.—शुभ ।

उ०—सूवा सुपरा बोलिए, विपरा बोलौ कांय । छंदा जहां रा छाइए, जिण रै वसिए गांव ।—परसरांम

सुपवित्त—देखो 'सुपवीत' (रू.भे.)

उ०—सूत सुणतां ग्रति दोहिलौ, राखै तिण मां चित्त । सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त ।—वि.कु.

सुपवौ—वि.—दृढ़, मजबूत ।

उ०—सू ऊंठ किण भांत रा छै ? थापवी तलीरा, सुपवी नळीरा, नाळेरा गोडां रा, बीळफळ इरकीरा...... —रा.सा.सं.

सुपवीत—वि. [सं. सु-पवित्र] विशुद्ध, पवित्र ।

उ०—१ पण परि देखी वाप परा भव, धन सागर सुपवीत । मांन धरी मन माहि नीसरिउ, नयर वाहरि चलचींत ।
— हीराणंद सूरि

उ०—ग्रहविहसी पूरव दिसै, उदय थयौ ग्रादीत । मांनुं मयणा सुंदरी, देखवा सुपवीत ।—स्रीपालरास

रू.भे.—सुपवीत, सुपवित्त ।

सुपसाइ, सुपसाउ, सुपसाय—सं.पु. [सं. सुप्रसाद, प्रा. सुपसाग्र] पूर्ण कृपा, ग्रनुग्रह ।

उ०—१ सुपसाइं स्री गुरु तणै, लब्धोदय गणि भाखै रे । प्रथम खंड पूरौ कियौ, धरम तणौ ग्रभिलाखै रे ।—प.चं.चौ.

उ०—२ स्री जिणचंद सूरीसरु हो, स्री जिनसिंघ सूरीस । सकलचंद सुपसाउ लइ हो, समय सुंदर भणइ सीस ।—स.कु

उ०—३ ग्यांन तिलक गुरु नइ सुपसाय इ, विनयचंद्र गुण गाया जी ।—वि.कु.

वि.—ग्रत्यन्त शुभ, ग्रच्छा, ठीक ।

उ०—जांण हार हुं इ तिहां ग्रछउं, मझ मनि लागउ ढाउ । तुम्ह साथिइं ग्रावउं जउ , तेडउ घणउ करी सुपसाउ ।
— हीराणंद सूरि

सुपह, सुपहि, सुपहु—सं.पु. [सं. सुप्रभु] १ श्रेष्ठ नृप, उत्तम राजा, वड़ा राजा ।

उ०—१ हा मां बाप हमीर हीडाऊ, सुपहां दाप सवाया ।
— ऊ. का.

उ०—२ [illegible] कीयाण, [illegible] निग हुंत कहाए। [illegible] सुपह वरै [illegible] कीरति सुंदरि।
—सू.प्र.

उ०—३ [illegible] जिनक, मल्ल जेम जीपग तळह। [illegible] राजा सुपह।—गु.रू.बं.

२ [illegible]।

उ०—१ [illegible] सुरहां तणा छतीस। मरळ वणाया [illegible], वाहै विसवा वीस।—बां.दा.

उ०—२ [illegible] विरचै, सुरतर सुपह विन्है सारीक। [illegible] सुधी कन्हीं मछरीक।
—नांदण बारहट

२ राजा, नृप। (डिं.को.)

उ०—१ [illegible] लंका री सुपह वभीख थपै थिर संत।
—र.रू.

उ०—२ [illegible] आयौ जैनगर, निज उर हरख निवास। सुपह [illegible], [illegible] गांवण गाम।—रा.रू.

उ०—३ [illegible] एक अनेक जोवनां, नर सुर वडा नागिंद्र। वडइ सुपहि [illegible] आया जुडै अठारह उद्र।
—महादेव पारवती री वेलि

३ स्वामी, मालिक।

उ०—प्रथम विदा कीधी सुपह, चांपावत 'मुकनेस'। 'आसावत' [illegible], 'दुरग' रहे निज देस।—रा.रू.

४ पति, स्वामी।

उ०—यौ नृवर उचरै, आज अवसांण सु उजळ। सुपह माथि गण [illegible], महा कौतूहळ मंगळ।—रा.रू.

५ योद्धा, सुभट। (डिं.को.)

उ०—१ 'अमरसी' गीत 'अवरंग' तणी आदरी, चित्रगढ तणी [illegible] नाल। [illegible] हुआ रांण वाळा सुपह, रांण [illegible]।—दुरगादास राठौड़ री गीत

उ०—२ [illegible] हुवा हाजर नांम, वड वडा सव वरियांम। तळि [illegible] सुपह सलांम।—सू.प्र.

६ ईश्वर, प्रभु।

उ०—[illegible] सुपह [illegible] ग्रह संग्रह, गिणि तिणि बीज पंचमी [illegible]। [illegible] निदा मनि, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि।
—वेलि

७ देखो 'सुपथ' (रू.भे.)

उ०—[illegible] सुपह [illegible], नाम्यौ सुपह छाडिर हौ छांनै।
—ह.पु.वां.

सुपाण-सं.पु. [सं. सुपाणि] सुन्दर हस्त।

सुपाच्य-वि. [सं.] जो आसानी से पच जाय, अच्छी तरह पचने वाला, [illegible]।

सं.पु.—नरम भोजन।

रू.भे.—सुपच।

सुपात, सुपातर, सुपात्र—सं.पु. [सं. सुपात्र] १ कवि। (अ.मा.)

उ०—दिल्ली जैत सुबोल सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिम राह। 'सुभ' दातार जूझार सुपातां, दांन च्यारि वकसिया दुवाह।
—सुभरांम गौड़ रौ गीत

२ चारण कवि।

उ०—१ सुणां सौभाग सुछत्री मेदपाटां रा अमीरां मांझी, केता दळां मठां रा आचार ढांकै काथ। विना दीध रांणै आघाहटां रा कायदा वाधै, प्रथीनाथ तेड़ै दधां तटां रा सुपात।—डूंगजी गाडण

उ०—२ जोड़ावै हात, हात नह जोड़ै, विण आंकस गज निसंक वहै। ऐहवा फैज सुपातां वाळा, सुदत 'भीम' विण कवण सहै।
—भीमसिंघ रौ गीत

३ अच्छा पात्र, उत्तम एवं सुन्दर वर्तन।

वि.-१ सुयोग्य, योग्य।

उ०—नहीं बेटा ! एक अंगरेजी री छठी अर बीजी सातवीं किलास मैं भणै है, सुपातर है।—वरसगांठ

२ सज्जन, भला, सुपात्र।

उ०—१ वेहती वेला मैं धरम कीजौ, दांन सुपातर दीजौ रे।
—जयवांणी

उ०—२ बारमां व्रत मैं दांन देवै घणौ, साधां नै निरदोसी जी। चवदै प्रकारै हरख घणौ करी, रह्यौ सुपातर नै पोसी जी।
—जयवांणी

सुपारस, सुपारसि, सुपारिस—सं.स्त्री.-१ यश, प्रशंसा, कीर्ति, तारीफ़। (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—नागोर आया, सारा सुपारस कीवी, टका दिया, जवांन दिया—उजाड़-विगाड़ रा।—अमरसिंघ राठौड़ री वात

२ देखो 'सिफारिस' (रू.भे.)

उ०—१ तद नवाब माहावत खांन राजाजी री घणी सुपारस करनै हजारी जात हजार असवार ईजाफै करायौ।—नैणसी

उ०—२ दिन दिन सुरधर देस मैं, वात वधै विसतार। हुई सुपारस 'दुरग' री, औरंगसाह दुवार।—रा.रू.

उ०—३ लिखै सुपारस साह नूं, अत आरत उर जांण। थेली साठ हजार री, मेल्ही पायै आंण।—रा.रू.

उ०—४ फुरमास सुपारसि मोकळी, दिढ राजा दळथंभ नूं। जागीर दीध जोगणि पुरै, कणियागिर सांचौर सूं।—गु.रू.बं.

उ०—५ राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस सांभळै, की फत्तै सरहद्द।—गु.रू.बं.

सुपारस, सुपारस्व, सुपारसनाथ, सुपारस्वनाथ—सं. पु. [सं. सुपार्श्वनाथ]

१ जैनियों के वर्तमानकाल के सातवें तीर्थङ्कर का नाम।

२ जैनियों के भविष्यकाल के तीसरे तीर्थङ्कर का नाम।

सुपालग्र, सुपालक–वि. [सं. सुपालक] अच्छी तरह पालन-पोषण करने वाला ।

सुपास—देखो 'सुपारस्वनाथ' ।

उ०—हुं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिब सुगुण **सुपास** ।
—वि.कु.

सुपारी–सं.स्त्री. [सं. सुप्रिय] १ नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसकी ऊँचाई चालीस से सौ फुट तक की होती है ।

२ उक्त पेड़ का फल जो १½ या २ इन्च का गोलाकार या अण्डाकार होता है । इसको काटकर पान में डालकर खाया जाता है ।

उ० पान-**सुपारी** चाट, हाट रा ओगण हेटा । मेळा-डोळां डोळ, फिरण फागड़दां फेटा ।—नारी सईकड़ौ

३ इसी जाति का अन्य प्रकार का पेड़ व उसका फल जिसको काटकर भोजन के बाद मुख-शुद्धि के लिए खाया जाता है । यह अत्यन्त स्वादिष्ट एवं पौष्टिक होता है । यह औषध में भी काम आता है । चिकनी सुपारी ।

उ०—ना होकौ ना चिलम, पांन-बीड़ी न **सुपारी** । ना सुलफौ ना भांग, कदै ना वणूं जुवारी ।—नारी सईकड़ौ

पर्याय.–क्रमुक, गूवाक, पूग ।

४ सुपारी के आकार का पुरुष-लिङ्गेन्द्रिय का अग्रभाग । (अमरत)

रू.भे.—सोपारी ।

सुपारीपाक–सं.पु.यौ.–सुपारी से बनने वाली एक पौष्टिक औषधि ।
(टॉनिक)

वि.वि.–आठ टके भर चिकनी सुपारी को कूट, कपड़-छान कर आठ टके भर गौ-घृत में मिलाया जाता है तत्पश्चात् उसको तीन बार गाय के दूध में डालकर धीमी-धीमी आँच पर पकाकर खोवा बनाया जाता है । फ़िर वंग, नाग केसर, नागर-मोथा, चन्दन, सौंठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के बीज, जायफल, धनिया, चिरौंजी, तज-पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, वंश लोचन, दोनों प्रकार का ज़ीरा (प्रत्येक पाँच-पाँच टंक) आदि दवाओं का चूर्ण बनाकर उक्त खोवे में मिला दिया जाता है । फ़िर ५० टंक भर मिश्री की चासनी में मिलाकर इसकी एक-एक टके भर की गोली बना ली जाती है । इसके सेवन से शुक्र-दोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण-ज्वर, अम्लपित्त, मंदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है ।

सुपियार–सं.पु.–१ स्नेह, प्रेम, अनुराग, आदर्श-प्रेम ।

२ लाड-दुलार, प्यार ।

३ देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)

उ०—सिहांण चढै करवी सहाय, राखजै पीठ नागांण राय । **सुपियार** तणा सायब सधीर, व्रन पाळ करण नव लाख वीर ।
—पा.प्र.

रू.भे.—सुपीयार, सुप्यारौ ।

सुपियारौ–वि. (स्त्री. सुपियारी) जो अत्यन्त प्रिय हो, प्यारा, प्रिय, वल्लभ ।

उ०—संगत तेसुं कीजियै **सुपियारा** हौ, जल सरिखा हुवै जेह नेम सुपियारा हौ ।—स.कु.

सं पु.–प्रेमी, प्रियतम, पति ।

रू.भे.—सुपीयारौ, सुप्यारौ ।

सुपीत–सं.पु. [सं.] १ ज्योतिष में पाँचवें मुहुर्त्त का नाम ।

२ पीला वस्त्र, पीताम्बर ।

वि.–बिलकुल पीला, पीत ।

उ०—नमौ पंच-व्रन्न-पवित्र **सुपीत,** सु स्यांम, सु नील, सु रत्त, सु सीत ।—ह.र.

सुपीयारौ—देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)
(स्त्री. सुपीयारी)

सुपीहरी–वि.स्त्री.–अच्छे पीहर वाली, जिसका पीहर उत्तम हो ।

उ०—रूडौ घर देखाडिजै रे हां, चलिजै चतुर आचार । **सुपीहरी** कहराविजै रे हां, करिजै सहूनी सार ।—स्रीपाल रास

सुपुण्ण–सं.पु. [सं. सुपण्य] शुभ कार्य, पुण्य या पुनीत कर्म, दान ।

उ० पोस मास वदि दसमी तणइ, दिन जायउ जिण **सुपुण्ण** दिनइ । जय जयकार मुखइ पभणइ, सेवइ दिसि कुमरी हरखि घणइ ।—स.कु.

सुपुत्र–सं.पु. (स्त्री. सुपुत्री) गुणवान, योग्य एवं सुन्दर पुत्र ।

उ०—पंच पुत्र ताइ छठी **सुपुत्री,** कुंअर रुकम कहि विमळ कथ ।
—वेलि

सुपुर–सं.पु.–सुन्दर नगर ।

रू.भे.—सुपुरि ।

सुपुरस–सं.पु. [सं. सु-पुरुष] भला एवं सज्जन व्यक्ति, साधु पुरुष ।

उ०—सिंह-संगम, **सुपुरस** वचन, कदळि फळै इक सार । तिरिया तेल 'हमीर' हठ, चढै न दूजी वार ।—अग्यात

रू.भे.—सुपुरुस ।

सुपुरि—देखो 'सुपुर' (रू.भे.)

उ०—सुज कंत अंत अमरां **सुपुरि,** चौग्रौड़ि हरि उच्चरै । छत्रपती सनेह 'चंद्र' छडी, सेखावत व्रत संभरै ।—रा.रू.

सुपुरुस—देखो 'सुपुरस' (रू.भे.)

सुपुहप–सं.पु. [सं. सुपुष्प] १ सुन्दर पुष्प ।

उ०—पकवांनै पांनै फळै **सुपुहपै,** सुरंगै वसत्रै दरव स्रव । पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव ।—वेलि

२ लवंग, लौंग ।

३ स्त्रियों का रज ।

सुपूत—देखो 'सपूत' (रू.भे.)

सुपूती—देखो 'सपूती' (रू.भे.)

उ०—मात पिछांणै उदर, मझ 'पता' **सुपूती** पाय । पिता पिछांणै

सारणी, उस मुख सजन ग्राय।—जैतदांन बारहठ

सुपेखणौ, सुपेखबौ-क्रि.स.-देखना।

उ०-सुपेख्यौ स्वामी मोवन भार, नमौ निज नाथ जकौ निराकार। सवारीन निरख हरै मन साव, निछांम्यौ दूद परस्या पाव।
—वि.सं.मा

सुपेखणहार, हारौ (हारी), सुपेखणियौ—वि०।

सुपेखिग्रोड़ौ, सुपेखियोड़ौ, सुपेख्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुपेखीजणौ, सुपेखीजबौ—कर्म वा०।

सुपेखियोड़ौ-भू.का.कृ.-देखा हुआ।

(स्त्री सुपेखियोड़ी)

सुपेत-देखो 'सफेद' (रू.भे.)

उ०-स्याम ताज कफनी, कमंडळ में नीर। डाढी **सुपेत** 'सेख', सुरंगा सरीर।—शि.व.

सुपेतवदन—देखो 'सफेदवदन' (रू.भे.)

सुपेती—देखो 'सफेदी' (रू.भे.)

उ०—हलै थाट दरगाह लग टल तोपां हसत, खसत मद मींढरा तरा गागा। मरट निगवार राखी विकट मोसरां, **सुपेती** चौसरां तणी 'नागा'।—रावत सग्रामसिंह री गीत

सुपेद—देखो 'सफेद' (रू.भे.)

सुपेदवंसन—देखो 'सफेदवदन' (रू.भे.)

सुपेदाई—देखो 'सफेदाई' (रू.भे.)

सुपेदी—देखो 'सफेदी' (रू.भे.)

सुपेस-सं.स्त्री.-सुन्दर भेंट।

उ०—सब लोक नजर **सुपेस**, निज हाथ लीध नरेस। धुर थाळ प्रोहित धारि, किय आरती अधिकारी।—सू.प्र.

सुपेहा-सं.पु.-राठौड़ राजपूतवंश की एक उप-शाखा।
(बां.दा. ख्यात)

सुप्यार—१ देखो 'सुपियार' (रू.भे.)

उ०—मेवा कळा **सुप्यार** बोली, नाजौ राजी गोरड़ी। चकर चूलचुली हिवड़ै चुनी, कंवळ कळी मन मोरड़ी।—नारी सईकड़ी

२ देखो 'सुपियारौ'।

सुप्यारी—देखो 'सुपियारी' (रू.भे.)

सुप्यारौ—देखो 'सुपियारौ' (रू.भे.)

सुप्रज्ञ-वि. [सं. सुप्रज्ञ] १ बुद्धिमान, चतुर।

२ पण्डित, विद्वान्।

सुप्रतिस्ठ-वि. [सं. सुप्रतिष्ठित] जिसकी बहुत प्रतिष्ठा हो, सुविख्यात, मशहूर।

सुप्रतिस्ठा-सं.स्त्री. [सं. सुप्रतिष्ठा] १ यश, कीर्ति, प्रशंसा, तारीफ़।

२ स्कन्द की एक मातृका का नाम।

३ किसी प्रतिमा, मन्दिर आदि का स्थापना समारोह, उत्सव।

४ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं, जिसमें पहला, दूसरा व चौथा वर्ण लघु तथा तीसरा व पाँचवां वर्ण गुरु होता है।

सुप्रतीक-वि. [सं.] सुन्दर, मनोहर।

सं.पु. [सं. सुप्रतीकः] १ ईशान कोण का दिग्गज जिसके वंश में नागराज, ऐरावत, वामन, कुमुद, अञ्जन आदि की उत्पत्ति हुई मानी जाती है।

उ०—बुंदी जैपुर उलटि वीर आयै ति अखारैं। गायक सिंधू तार ग्रांम आलाप उचारै। भुम्मि मचक्कै कटक भार फन नाग पसारै। ऐरावत तैं **सुप्रतीक** लग चीट चिकारैं।—वं.भा.

२ इक्ष्वाकुवंशी प्रतीताश्व के पुत्र तथा मरुदेव के पिता का नाम।

उ०—प्रतीकास जिए सुत वीह पौरस, जेण सुतरा **सुप्रतीक** उजळ-जस। सुत जै त्रप मरुदेव वयरा सति, पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति।—सू.प्र.

३ कामदेव का नाम।

४ शिव, महादेव।

सुप्रभ-सं.पु. [सं.] शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष। (पौराणिक)

वि.-आभा, कान्ति या प्रभा से युक्त।

सुप्रभा-सं.स्त्री. [सं.] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

२ स्कंद की एक मातृका।

३ सात सरस्वतियों में से एक।

४ आभा, चमक, कान्ति।

सुप्रभात-सं.पु. [सं.] १ मङ्गलमय प्रातःकाल, शुभ प्रभात।

२ बड़ा सवेरा, तड़का, अर्द्ध रात्रि के बाद का समय।

सुप्रवीण-वि.-बहुत ही चतुर व दक्ष।

उ०—धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण। अति-सय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण **सुप्रवीण**।—वि.कु.

सुप्रवीत-वि.-अत्यन्त पवित्र एवं शुद्ध।

सुप्रसण, सुप्रसन, सुप्रसन्न-वि. [सं. सुप्रसन्न] बहुत खुश, आह्लादित।

उ०—१ सुरराय **सुप्रसण** हुयै, दीजै मौ वरदांन। सुजस गाळ 'भारथ' सुत, दळ नायक सिवदांन।—शि.रू.

उ०—२ पहला दळ पेसोर थी, खड़ आया लाहौर। जनम हुवौ अगजीत रौ, **सुप्रसन** संकर गौर।—रा.रू.

उ०—३ जादमण आद करि भेट भणिया जठै, आगरा अठै परताप आछा। ऊगिया मदां **सुप्रसन्न** सवदां इसां, पूगिया भवण विसरांम पाछा।—मे.म.

सं.पु.—गरुड़, खगराज। (अ.मा.)

सुप्रसिद्ध-वि. [सं.] बहुत प्रसिद्ध, मशहूर, सुविख्यात।

सुप्री-सं.स्त्री. [सं. सुप्रिया] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्त्री, सुन्दर स्त्री।

२ प्रेयसी, प्रेमिका, प्रिया।

सुप्रीमकोरट-सं.पु.[अ.]देश का सर्वोच्च न्यायालय, उच्चतम न्यायालय।

सुफर—देखो 'सफरी' (रू.भे.)

उ० – अथग सीतळ अचळ छौळ कर उपट्टां, वेळ ऊजळ अनम पाळ कुळ वेस। **सुफर** चख चकोरां देव मोरां सुकबि, संध सोम समेर सक्र नंद-भगतेस।—सनमांनसिंघ हाडा री गीत

सुफळ, सुफल – सं. पु. [सं. सुफल] १ वह अस्त्र या शस्त्र जिसका फल अच्छा हो, सुन्दर फल वाला।

२ अच्छा परिणाम, इच्छानुकूल नतीजा।

उ०—सेठ नौ महीनां तांई बेटा-बेटा री माळा फेरी तौई **सुफळ** नीं पड़ी। – फुलवाड़ी

[सं. सुफल] ३ अनार का पेड़।

४ बेरी का पेड़।

५ मूंग।

वि.–१ बहुत फलने वाला।

२ बहुत उपजाऊ।

३ देखो 'सफळ' (रू.भे.)

उ० —१ बिसरि गई दुख निरखि पिया कूं, **सुफळ** मनोरथ कांम। मीरां कै सुखसागर स्वांमी, भवन गवन कियौ रांम।—मीरां

उ०— २ सेजां कुम्हाळायोड़ा फूलां री पाछी कळी कळी खिलगी। मेड़ी री चांनणी **सुफळ** व्हियी। मेड़ी री अंधारी सुफळ व्हियौ।
—फुलवाड़ी

सुफलक–सं.पु. [सं.] अक्रूर के पिता एक यादव। (महाभारत)

सुफला–सं.स्त्री. [सं.] १ मुनक्का दाख, द्राक्षा।

२ तलवार जिसका फल सुन्दर हो।

सुफाळौ–सं.पु.–तीर का अव्यव विशेष।

उ० –तिलौर रा पंखारा छै, दांत रा **सुफाळा** छै, सोन्है री हळ लिखी छै, नव मूठ रा तीर छै।—रा.सा.सं.

सुफील–सं.पु. [सं. सुपील] श्रेष्ठ एवं बड़ा हाथी।

उ०—नदी जळनील **सुफील** निसांण, उभेलत छीलर ढीलन आंण। बगत्तर भीवर जाळ बहंत, आवै नंह माळ रगत्तर अंत।—मे.म.

सुफेर–वि.–१ बुद्धिमान, समझदार।

२ सज्जन, सुशील।

सुफ्फी–सं.स्त्री.–छोटी कोटड़ी। (शेखावटी)

सुब—देखो 'सुभ' (रू.भे.)

सुबत्त— देखो 'सोवत' (रू.भे.)

उ० —सुख बीच पड़ै महाराज सूं, समरौ लाज **सुबत्तियां**। कुळ तणै नहीं बांटै किणी, बांटै सत पण खत्तियां। – रा.रू.

सुबध—देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे.)

उ०—सुरसत मौ दीजै **सुबध**, बरणूं ग्रंथ विचार। सिवदांनौ सझियौ समर, (सौ) कहूं बुध अनुसार।—शि.रू.

सुबधी–सं.पु.–१ कवि। (अ.मा.)

२ देखो 'सुबुद्धि' (रू.भे.)

सुबनजर—देखो 'सुभनजर' (रू.भे.)

सुबर–सं.स्त्री.–१ गर्भवती घोड़ी।

२ गर्भवती ऊंटनी।

रू.भे.—सुभर।

३ देखो 'सुवर' (रू.भे.)

उ०—मांडियौ ज्याग कमधां घरै मांढही, लिखत वर **सुबर** ईसवर लिखायौ।—कमौ नाई

सुबरण—देखो 'सुवरण' (रू.भे.)

उ०—१ **सुबरण** परवत सौ उड्यौ रे औ तौ ज्यूं रघुवर री बांण, हनु०। – गी.रां.

उ०—२ अति ऊंचा तियरै उरज, बणिया बिसवा बीस। जोड़ै लागै जगत मैं, गिर गज कुंभ गिरीस। गिर गज कुंभ गिरीस, प्रवीणां गाविया। **सुबरण** वरण सुढंग, कठोर सुहाविया।
—बां.दा.

सुबरणरासि–सं.पु.–स्वर्ण का ढेर, सोने का ढेर।

उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सूं जाचकां नूं देण काज राजा बडाहर सदा ही **सुबरण रासि** सिद्ध कीधौ। – वं.भा.

सुबह–सं.पु. [अ. सुबुह] १ प्रात:काल, सवेरा।

उ०—इक रखोगै मुख बचन याद, सब चक्खोगै सनमुख सवाद। सिर कूटोगै फिर **सुबह** सांम, तोबा कर छूटोगै तमांम।
—ऊ.का.

२ ईश्वर का एक नाम।

वि.–अत्यन्त पाक, पवित्र।

क्रि.वि.–प्रात:काल के समय, सवेरे।

रू.भे.—सुवह, सुबै।

सुबहांन–सं.पु. [अ. सुबुह+आन] १ ऊषा वेला, प्रात:कालीन समय, सवेरा।

२ भजन, सुमिरन का समय, ईश्वर-भजन का समय।

३ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ आव आतस अरस कुरसी, सूरतै **सुबहांन**। सरर सिफत करद बूद, मारफत मकांम।—दादूबांणी

उ०—२ काळा मुंह कर करद का, दिल थैं दूर निवार। सब सूरत **सुबहांन** की, मुल्ला मुग्ध ! न मार।—दादूबांणी

वि.–१ पवित्र, पाक, शुद्ध।

उ०—काया कतेब बोलियै, लिख राखूं रहमांन। मनवा मुल्ला बोलियै, स्रोता है **सुबहांन**।—दादूवांणी

२ महान्, श्रेष्ठ।

क्रि.वि.—वाह-वाह, धन्य-धन्य, साधु-साधु।

रू.भे.—सुभांन।

सुबहांनअल्ला–अव्यय [अ.] वाह-वाह, साधु-साधु, धन्य-धन्य।

सं.पु.–१ किसी की वाह-वाही या साधुवाद में बोला जाने वाला शब्द।

२ [illegible] हृदय में ईश्वर-स्मरण करने की क्रिया ।

सुवहू—सं.स्त्री. [सं. सु+वधू] १ सुन्दर एवं शुभ लक्षणों वाली वधू ।

उ०—वसुदेव पिता सुत पिता वासुदे, प्रदुमन सुत पित जंगतपति । सास देवकी रांमा सुवहू, रांमा सासू वहू रति ।—वेलि

२ देखो 'सुवहू' (रू.भे.)

सुवांण, सुवांणी—देखो 'सुवाणी' (रू.भे.) (ह नां.मा.)

उ०—तीन दस कड़ै धनुधार रै सायकां, हेर कप भाळ अणपार हरसी । वनू सारी सुजस पयंपै सुवांणां, विमांणां वैठ सुर सुमन वरसी ।—र रू.

सुवायत—सं पु —सूबेदार ।

उ०—तौ ही अजमेर री सुवायत वैस रहो । तिण समै राव सातळ नै कवर वरसिंघ अवरात हुई ।—नैणसी

सुवाळ, सुवाल—सं.स्त्री.—१ सुन्दर वाला, सुन्दर युवती ।

उ०—छटा विमाळ साळतं छवी घटा छपै नहीं, दिवाळपै सुवाळ दीपमाळसी दिपै नहीं ।—ऊ.का.

सं.पु.—२ सुन्दर वालक ।

सुवाव—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.)

सुवास—देखो 'सुवास' (रू.भे)

उ०—सोयण चंचळ स्रवण लग, नांवा वेणी डंड । महकै सहज सुवास वप, किर लायौ स्रीखंड ।—वां.दा.

सुवासना—देखो 'सुवास' (रू भे)

सुवाह, सुवाहु—सं पु. [सं. सुवाहु] १ एक राक्षस जो मारीच का वड़ा भाई था और ताड़का का पुत्र था ।

उ०—वाद सुवाह जिगन रखवाळै, महण वीच डालै मारीच । ताई विमद करै अप ताखा, विरदाई जांनकी वरी ।—र.ज.प्र.

२ कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

३ चेदि का एक राजा जो वीरवाहु का पुत्र और सुनन्दा का भाई था ।

४ राम की सेना का एक वानर ।

५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

६ जैनियों के एक तीर्थङ्कर ।

उ०—नलिनावरत्त चउवीसमी पश्चिम विदेह वखांण, वीतसोका नयरी तिहां चौथी सुवाहु सुजांण ।—ध.व ग्र.

सं.स्त्री.—७ एक अप्सरा जो दक्षपुत्री प्राधा के गर्भ से महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न हुई थी ।

वि.—१ सुन्दर एवं दृढ़ वांहों वाला ।

२ आजानवाहु ।

सुवियांण—देखो 'सुमियांण' (रू.भे.)

उ०—'जोदौ' गढ 'जोदांण' हुवौ राठोड़ हटाळौ, 'जोदा' रै जगजीत समंद 'सूजौ' वळ चाळौ। 'सुजा' रै सुवियांण प्रगट 'ऊदौ' खत्रीयां-पण, सरवां पादर सींदळां जेण लीदी जैतारण ।—अग्यात

सुवीनौ—देखो 'सुभीनौ' (रू.भे.)

सुवीर—सं.पु.—१ रवड़ी ।

२ छाछ की वनी रावड़ी ।

वि वि.—देखो 'रावड़ी' ।

३ देखो 'सुवीर' (रू.भे.)

सुवुक-रंदौ—सं.पु यौ.—१ वरतनों की कोर आदि छीलने का एक औजार विशेष ।

२ वढ़इयों का एक औजार जिससे लकड़ी को छील कर साफ़ किया जाता है ।

सुवुदी, सुवुद्दी, सुवुद्ध, सुवुद्धि—सं स्त्री. [सं. सुवुद्धि] १ उत्तम एवं श्रेष्ठ वुद्धि वाला, वुद्धिमान, दूरदर्शी ।

उ०—हुती थेट क्रपा मौ पै जिहूं ही ते जणाई हातां, जुगां जातां जावै नहीं वातां क्रीत जोड़ । सुवुदी 'अनोप' मारू चीरंजी हजार सालां, रीज रा वीलाला राजा अगंजी राठौड़ ।

—अनोपसिंह राठौड़ रौ गीत

२ जो वुद्धि हमेशा अच्छे कार्यों की ओर प्रवृत्त होती हो, सुमति ।

३ चतुर, निपुण, दक्ष ।

४ कवि, पण्डित, विद्वान् । (अ.मा.)

५ प्रत्युत्पन्न मति वाला, हाज़र-जवाव ।

सं स्त्री.—१ श्रेष्ठ एवं उत्तम वुद्धि ।

२ वुद्धि, अक्ल, समझ, होश, ज्ञान, मति । (डिं.को; ह.नां.मा.)

रू.भे.—सुवध, सुवधी, सुवुध, सुवुधि, सुवुधी ।

सुवुध—वि. [सं] १ वुद्धिमान ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ देखो 'सुवुद्धि' (रू.भे)

उ०—कनक दांन कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर । सुवुध वधै सतसग, ग्यांन गुर वांणि उजागर ।—रा.रू.

सुवुधि, सुवुधी—देखो 'सुवुद्धि' (रू.भे.)

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंवर ओपयं । किरि सुवुधि वधि सतसंग, कारण लुवुध होत विलोपयं ।—रा रू.

सुवुद्धिनाथ, सुवुधिनाथ—सं.पु. [सं. सुवुद्धिनाथ] जैनियों के वर्तमानकाल के नवमें तीर्थङ्कर का नाम । (स.कु.)

सुवेल—देखो 'सुवेल' (रू.भे.)

सुवेस—वि.—१ वयस्क, वालिग ।

२ देखो 'सुवेस' (रू.भे.)

सुवेसांणी—क्रि.वि —वड़े सवेरे, ऐन सुवह, प्रातःकाल के समय ।

रू.भे.—सुवैसांणी ।

सुवै—देखो 'सुवह' (रू.भे.)

उ०—जकै दवावी चीज, घणी री अूंची आवै । आथण छिपणी भांण, सुवै लाली वरसावै ।—नारी सईकड़ी

सुवैण—सं.पु. [स. सु-वचन] १ अच्छे एवं शुभ वचन ।

२ मित्रता, दोस्ती ।

सं.स्त्री. [सं. सु-वेरिण] ३ स्त्रियों की सुन्दर वेणी, चोटी।

उ०—अही सुवैंण अग नैंण दीप नासका भणू।—पा.प्र.

सुवैसांणी—देखो 'सुवेसांणी' (रू.भे.)

सुवोध-सं पु. [सं.] १ अच्छा ज्ञान, अच्छा वोध, अच्छी जानकारी।

२ अच्छी सलाह, अच्छा मशविरा।

३ श्रेष्ठ ज्ञान।

उ०—हाडा ग्रंथ निदांन है सौ सब मुख्य **सुवोध**।—वं.भा.

वि-१ जिसे वोध हो, जो अवोध न हो।

२ जो सहज ही जाना जा सके।

सुवोल-सं पु [स.] १ सुन्दर वचन, उत्तम एवं मधुर वचन।

उ०—जिन सासन राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल। समझायउ स्री पातिसाह, सदगुरु दाख्यउ तइं **सुबोल**।—स.कु.

२ यश, कीर्ति।

उ०—दिल्ली जैत **सुवोल** सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिम राह। सुभ दातार जूझ सुपातां, दांन च्यारि वकसिया दुवाह।

—सुभरांम गौड़ रौ गीत

सुवौ—देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

सुब्भ—देखो 'सुभ' (रू.भे.)

उ०—प्राचीन करम **सुब्भ** ए, पुरखा पाइत उत्तमा महिला। कुळ-दीप पुत्र जिणयै, कुळ धू विनै रुप संजुगता।—गु रू.वं.

सुब्भजोग— देखो 'सुभयोग' (रू.भे.)

उ०— सुभ वासर **सुब्भजोग** वेळा, तिल्लक्क निलाट तांण ए। सोळह मुखि कळा चंद संपूरण, द्वादस ऊगति भांण ए।— गु.रू.वं.

सुब्भट—देखो 'सुभट' (रू.भे.)

उ० - उड्डि वैसन्नरं, सांमठां सध्धरं। **सुब्भटां** भूलरं, फौज घांसाहरं।—गु.रू.वं.

सुभ्र - देखो 'सुभ्र' (रू.भे.)

सुब्रह्मण्य-क्षेत्र-स.पु.यौ. [सं.] मद्रास-क्षेत्र के दक्षिण में कनाड़ा जिले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

सुव्रीड़ित-वि. [सं. सुव्रीडित] लज्जित, सङ्कोचयुक्त।

उ० —सुसमित सुनमित निज वदन **सुव्रीड़ित**, पुंडरीकाख थिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन।

—वेलि

सुभंकर-सं.पु.—१ छप्पय छन्द का १४वाँ भेद जिसमें ५७ गुरु व ३८ लघु से ९५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र.ज.प्र.)

२ देखो 'सुभकारी' (रू.भे.)

सुभंकरी-सं.स्त्री. [सं. शुभङ्करी] पार्वती, दुर्गा।

वि.स्त्री.—कल्याण करने वाली, मङ्गल करने वाली।

सुभंग-सं.पु. [सं. सुभङ्ग] १ देव-वृक्ष। (अ.मा.)

२ नारियल का वृक्ष। (अ.मा.)

वि.—१ सुन्दर व खूबसूरत।

२ योद्धा, वीर।

उ०—कळ मूळ 'करन' हर खळां काळ, जवनां वन दाहण सेख ज्वाळ। 'भगवांन' 'हरी' 'चांपै' **सुभंग**, 'ऊदळौ' 'विजौ' 'अचळौ' अभंग।—रा.रू.

सुभ-वि. [सं. शुभ] १ कल्याणकारी, मङ्गलमय।

उ०—१ पधराविया **सुभ** प्रात, छळ हूंत मुरधर छात। दळ कमंध साह दवार, अन रहै सांम उवार।— रा.रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति तोरण वांधीजै छै। घणां गज डंवर पेसारा करि मंडोवर महलै पधराया छै। **सुभ** दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमांन किआ छै।—रा.सा.सं.

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—१ पेखै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मंगळ ग्रह एक वगि। एणि कवण **सुभ** क्रम आचरतां, जांणियै वेलि जपंति जगि।

—वेलि

उ० २ आदि पक्ख अस्टमी मास नभ **सुभ** गुण मंडित। सपति-पुरी मणि मुकट, छेत्र मधुपुरी अखंडित।—रा.रू.

उ० – ३ अविनासी अविकार असीमा, **सुभ** गुण दियण अनुग्रह सीमा। – रा.रू.

३ मनपसन्द, सुखप्रद, आनन्ददायी।

उ०—१ डावड़ी रै मूंडै वधाई रा ऐ **सुभ** समाचार सुणतां ई ठकरांणी री आंख्यां सांम्ही धूंवा रा गोट ऊठण लागा।

—फुलवाड़ी

उ० —२ दीवांणजी राजाजी नै **सुभ** समंचार देवण सारू घोड़ा माथै वैठ न्हाटा।—फुलवाड़ी

उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कांन कंवार विहरि गली व्रज कुंजरी, **सुभ** रली कीजियै लाडली साथ।—वां.दा.

४ भाग्यवान, भाग्यशाली।

५ नेक, धर्मात्मा।

६ सुन्दर, खूबसूरत।

७ चमकदार, चमकीला।

८ सुखी।

९ पवित्र, शुद्ध।

क्रि.वि.—अच्छी तरह; भली प्रकार से।

उ०—नहं तीरथ जणणीं समौ, जणणीं समौ न देव। इण कारण कीजै अवस, **सुभ** जणणी री सेव।—वां.दा.

सं.पु.—१ विन्दु, शून्य, सिफ़र, जीरो, विन्दी का चिह्न।

उ०—१ असपतियां सिर ऊपरै, हेकै नव **सुभ** होय। सां देसां केरा तुरी, जेहल समयै जोय।—वां.दा.

उ०—२ सतरै सै सांमंत, आंक आठै **सुभ** अगगळ। सुकळ पक्ष

आसाढ़ उतर गंठ सेरस मंगळ।—रा.रू.

२ सात प्रकार के चौघड़ियों में से पांचवां चौघड़िया।

रू.भे.—'चौघड़ियौ'।

३ विष्कम्भादि सत्ताईस योगों में से तेवीसवें योग का नाम।

(फलित ज्योतिष, ज्यो. बा. बो.)

४ वार व नक्षत्रों-सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से बीसवां योग।

५ एक राग विशेष।

रू.भे.—सुब, सुब्भ।

सुभकंद—सं.पु.—गणेश, गजानन। (अ.मा.)

सुभकर—वि. [सं. शुभकर] कल्याण करने वाला, मङ्गल करने वाला।

सुभकरी—सं.स्त्री.—पार्वती।

सुभकांम—सं.पु. [सं. शुभ-कर्मन्] अच्छा व श्रेष्ठ कार्य, पुण्य का काम।

सुभकांमफर—सं.पु. [सं. शुभकामफर] नारियल। (अ.मा.)

सुभकांमी—वि.[सं. शुभकामिन्] शुभकामना करने वाला, शुभेच्छु, हितैषी।

उ०—सब री हित् धरम री धोरी, संतां री **सुभकांमी** रे।

—गी रां.

सुभकार—सं.पु. [सं. शुभ-कार्य] शुभ कार्य, माङ्गलिक कार्य।

उ०—ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सूं लै आवै। वेदी जिगां विवाह, साज **सुभकार** सजावै।—द.दे.

सुभकारक, सुभकारि, सुभकारी—वि. [सं. शुभ-कारिन्] १ कल्याण करने वाला, माङ्गलिक।

उ०—रूप भाग गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण। गुरु पंचम थांनक **सुभकारी**, कंवर हुवै सुज आग्याकारी।

—रा.रू.

२ पवित्र, शुद्ध।

३ शुभकामना करने वाला, शुभेच्छु।

उ०—वानैता असवार गयद सिणगारिया, हुआ मंगळचार कवी **सुभकारिया**।—गु.रू.बं.

४ शुभ वाणी बोलने वाला।

५ उत्तम व श्रेष्ठ फलदायक।

उ०—निरखै सात प्रभात निस, निरमळ दिवस सनूर। ईखै छत्र-धारी 'अजौ', **सुभकारी** ससि सूर।—रा.रू.

रू.भे.—सुभकर।

सुभकूट—सं.पु. [सं. शुभकूट] लङ्का का एक प्रसिद्ध पर्वत जिस पर चरण-चिह्न बने हुए हैं।

सुभक्रत, सुभक्रित—सं.पु. [सं. शुभकृत] बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ... का सोलहवां वर्ष।

(ज्योतिष)

सुभग—वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर। (अ.मा; ह.नां.मा)

उ०—१ भरत अरिहा लछण भ्रात अग्रज **सुभग** महा। मन हरण घण रूप तन स्यांम है।—र.ज.प्र.

उ०—२ मन मेरै परसि हरि कै चरन। **सुभग** सीतळ कमळ कोमळ, त्रिविध ज्वाळा-हरन।—मीरां

२ मधुर, प्रिय।

३ भाग्यवान, समृद्धिशाली।

४ प्रेम-पात्र, प्यारा।

५ प्रसिद्ध।

सं.पु.—१ चन्दन।

२ सुहागा।

३ अशोक का वृक्ष।

४ चम्पक वृक्ष।

५ लाल कटसरैया।

सं.स्त्री.—सुन्दर योनि।

रू.भे.—सुभग्ग, सोहग।

सुभगा—सं.स्त्री. [सं.] १ वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत प्यार करता हो, प्रियतमा पत्नी।

२ पूज्या माता।

३ हल्दी।

४ तुलसी।

५ पांच वर्ष की कुमारी कन्या।

६ स्कन्द की एक मातृका।

वि.स्त्री.—१ सुन्दरी, मनोहारी।

उ०—**सुभगा** सिवा जया स्री अंबा, परिया परंपार पालंबा।

—देवि.

२, सौभाग्यवती, सुहागन।

सुभग्ग—वि.—१ सौभाग्यशाली।

उ०—अभगि अगि कै अगै **सुभग्ग** भगतै सुनैं। उदग्ग पग्ग विग्गि आसु पग्ग लग्गतै उनैं।—ऊ.का.

२ देखो 'सुभग' (रू.भे.)

उ०—हिरनमै पत्र हीरै जडित्त, सांकळा करग्गै सुशोभित। मुद्रका सुकर-साखा **सुभग्ग**, मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग।—गु.रू.बं.

सुभग्रह—सं.पु. [सं. शुभ-ग्रह] सौम्य और शुभ माने जाने वाले बृहस्पति व शुक्र-ग्रह। (फलित ज्योतिष)

सुभड़—देखो 'सुभट' (रू.भे.) (डि.को.)

उ०—१ हे **सुभड़ां** थैं तरवार उण वीर पुरस री नांम लेनै बांधौ सौ तांह री कठै ही हार न होवै।—वी.स.टी.

उ०—२ जिकौ सिकार गयौ **सुभड़ां** जुत, सोभावती पंवारतणौ सुत।—सू.प्र.

सुभचरित—सं.पु. [सं. शुभ-चरित्र] १ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र।

२ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति।

सुभचरिता—वि.स्त्री. [सं. शुभ-चरित्रा] १ शुद्ध चरित्र वाली, चरित्रवान।

२ साध्वी, पतिव्रता।

सं.स्त्री.—१ चरित्रवान व साध्वी स्त्री।

२ पतिव्रता स्त्री।

सुभचित, सुभचिंतक—वि. [सं. शुभ-चिंतक] भलाई या मङ्गल की कामना करने वाला, शुभ चाहने वाला, शुभेच्छु, हितैषी।

उ०—१ पूछै व्यास पवित्र, तांम महाराज 'अजण' तरण। स्यांम ध्रमी बुध सरस, घणू सुभचित देखि घरण।—सू.प्र.

उ०—२ एतै कवि वीरता कै अग्रकारी, स्री महाराज कै सुभचितक विद्या जस कै व्यौपारी।—रा.रू.

सुभट—सं.पु. [सं.] १ योद्धा, भट, वीर। (अ.मा; ह.नां.मा.)

उ०—१ इक चलै सूंड आंदोळतां, अध ऊरध सावळ अविळ। तम सुभट विछोही जांणि तिम, दिवस वहै करि डंग वळि।—रा.रू.

उ०—२सती वळै जूझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज। दाता माया ऊधमैं, नांम उवारण काज।—बां.दा.

२ सैनिक, सिपाही।

३ अर्जुन। (अ.मा; ह.नां.मा.)

वि.—१ पराक्रमी, बहादुर।

उ०—सस सिकार तीतर सुभट, कुरजां चिड़ी कबूतरा। भायां सूं नित उठ भिड़ै, परम धरम रजपूत रा।—ऊ.का.

२ रक्षा करने वाला, रक्षक।

३ चतुर, दक्ष।

उ०—जठै आपरा सुभट मंत्रियां एकत्र होइ अरज कीधी इण समय वेधम हालियां तौ बूंदी घरै रहण मैं द्वापुर हिसावै।—वं.भा.

रू.भे.—सहड़, सुभड़, सुहड, सोहड़, सौहड़।

४ सुगम, सहज, सरल।

उ०—बीनणी नै घणौ ई समझावूं पण उण रै तौ आ साव सुभट वात ई समझ मैं नीं आवै।—फुलवाड़ी

५ स्पष्ट, साफ़।

उ०—१ बाई वारणै ऊभी सगळी वातां सुभट सुणी। उण सूं कीं जबाव देवणी नीं आयौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बादळ रै सांम्ही देख बोली—वीरा, थूं कह्यौ सौ ई वात व्ही। वै तौ सगळा ई सुभट नटग्या।—फुलवाड़ी

क्रि.वि.—१ ठीक तरह से, अच्छी तरह।

उ०—१ राजकंवर सगळा जांनियां नै न्यारा न्यारा सुभट समझाय दिया कै वै घरै जाय किणी नै ई औ भेद परगट नीं करै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ मासी जबाव दियौ—म्हैं हाल थारी वात नै सुभट समझी कोनीं कै थूं कांई जांणणी चावै। भांणजी कह्यौ—तौ पछै म्हनै सुभट ई समझावणौ पड़ैला।—फुलवाड़ी

२ प्रगट, चौड़े।

उ०—हथळेवा वाळौ छळ-छंद अवै जावतां सुभट व्हियौ सुभट व्हियां घणौ वत्तौ अळूझग्यौ।—फुलवाड़ी

३ पूर्णतया, पूर्ण रूप से।

उ०—पण चार वरसां सूं प्रीत रै खोळियै उणरी अंतस वदळग्यौ। झूठ बोलणी चायौ तौ ई उण सूं बोलीजियौ कोनीं। सुभट साच ई कैवै तौ कीकर कैवै?—फुलवाड़ी

रू.भे.—सुब्भट, सुभट्ट।

सुभट्ट—देखो 'सुभट' (रू.भे.)

उ०—१ कवि तद बोलै 'केहरी', सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण धूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा.रू.

उ०—२ मिळ थट्ट बगट्ट सुभट्ट मिळं, दुजड़ाहत 'पाल' भड़ैं दुजळं।
—पा.प्र.

सुभत्ती—वि.स्त्री.—शुभ, अच्छी।

उ०—तौ पूठै वरजांग साख जैसांण सुभत्ती। पहचौंरी परणतां चढै नह कौ चकवती।—रा.रू.

सुभदंता—सं.स्त्री.—पुष्पदंत नामक हाथी की हथिनी। (पौराणिक)

सुभदरसण, सुभदरसन—वि. [सं. शुभ-दर्शन] १ जिसके दर्शन से कोई शुभ या मङ्गलकारी काम होता हो।

२ सुन्दर, खूबसूरत।

सुभद्र—सं.पु. [सं.] १ कुशल-क्षेम, खुशहाली। (अ.मा.)

२ विष्णु का एक नाम।

वि.—१ भाग्यवान, भाग्यशाली।

२ अत्यन्त प्रसन्न, खुश।

सुभद्रा, सुभद्रिका—सं.स्त्री. [सं.] १ श्रीकृष्ण की बहन व अर्जुन की पत्नी।

२ दुर्गा का एक नाम।

रू.भे.—सभद्रा।

सुभद्रेस—सं.पु. [सं. सुभद्रेश] सुभद्रा का पति अर्जुन।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

सुभनजर—सं.स्त्री.—शुभ दृष्टि, कृपा दृष्टि।

रू.भे.—सुबनजर।

सुभनांमा—सं.स्त्री. [सं. शुभनामा] १ शुक्ल पक्ष की पञ्चमी।

२ दशमी या पूर्णिमा तिथि।

सुभप्रद—वि. [सं. शुभप्रद] शुभ या मङ्गल करने वाला, शुभकारी, मङ्गलकारी।

सुभम—सं.पु. [सं. शुभं] १ फूल, पुष्प। (अ.मा.)

२ जल, पानी।

सुभमोहरत, सुभमौरत—सं.पु. [सं. शुभ-मुहूर्त्त] १ शुभ घड़ी, शुभ लग्न।

उ०—ब्याव रै खरचा रौ सगळौ हिसाव संभळाय म्हनै तीज रै सैं दिन दिसावर विणज सारू सिधावणौ है। ऐड़ौ सुभ-मौरत धकला सात वरसां मैं ई कोनीं।—फुलवाड़ी

सुभयांणी—देखो 'सुभियांण' (रू.भे.)

सुभजोग—सं.पु.—शुभ संयोग।
रू.भे.—सुभसंजोग, सुभजोग।

सुभर—[illegible] समान।
उ०—सुन सुभर में बाळक जाया, नुचा हाड़ नहीं मासूं। जाति न पांति वरण नहीं वाकै, नांव न धरीयै कासुं।—अनुभववांणी
२ देखो 'सूभर' (रू.भे.)

सुभराज—सं.पु.—१ अभिवादन, शुभराज।
उ०—१ ढोलउ मन चत्रान थयउ, ऊभउ साहइ लाज। सांम्हउ सीहू साविय उ, आय कियउ सुभराज।—ढो.मा.
उ०—२ गंगा कुंभी राठमल, मेहां हरि भम पीर। मिगळां नां सुभराज छै, पावू गोगा पीर।—पी.ग्रं.
उ०—३ मामा तौ सुभराज, ऊगै दन ऊनड़ हरा। जेहा धरम जिहाज, कीरत राज दधीच क्रन।—बां.दा.
२ आशीर्वचन या आशीर्वाद में कहा जाने वाला शब्द।
उ०—१ ज्यूं ज्यूं मिंदर ऊंचौ आयौ, गुलाब री मां रै पेट स्यांव नीं मायौ। उणां हम सुभराज करै जकी कैवत चौड़ै कर नाखी।
—दमदोख
उ०—२ आप महारांणी रै पासती आतां ई सुभराज करी। हाथ जोड़ नै कह्यौ—अदाता, अठै आवण री तौ आपनै ठा' इज व्हैला।
—फुलवाड़ी
उ०—३ एक बूढी चवदार खम्मा घणी करनै सुभराज करी। पछै गुणिया सूदा हाथ जोड़नै कह्यौ अंदाता, औ दुस्टी राज रै तबेला री घोड़ी री माथौ वाढ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी
रू.भे.—सुभराजू।

सुभराजू—देखो 'सुभराज' (रू.भे.)
उ०—अवगत्य तुं प्रगट आजूं, कोड़्यां तारण काजूं। महि मंडण माहराजूं, सोह साम्य सुभराजूं।—वि सं.सा.

सुभरासी—सं.पु. [सं. शुभ-राशि] चन्द्रमा, शशि। (अ.मा; नां मा.)

सुभव्रत—सं.पु. [सं. शुभ-व्रत] कार्तिक शुक्ला पञ्चमी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत।

सुभसांत—सं.पु.—शान्त वातावरण, अनुकूल परिस्थिति।
उ०—रजपूत हिमार जगमाल रौ मेड़तै वससी, सुभसांत हुआं औ पटा रै गावै वरस १ पछै जाय वससी।—नैणसी

सुभसूचक—वि. [सं. शुभसूचक] माङ्गलिक।
उ०—गाया चंद भाग चत्रावली, भाग लिलत सुसीलै। सुभसूचक सुरंग पट सिर धरि, अब थोर जब ही लै।—मीरां

सुभांगी—सं.पु. [सं. शुभ-अङ्गी] १ कामदेव की पत्नी, रति।
२ कुबेर की पत्नी का नाम।
३ राजा कुरु की पत्नी जिसके पुत्र का नाम विदूरथ था।
४ सुन्दर स्त्री।
वि.स्त्री.—सुन्दर अङ्ग वाली, सुन्दरी।

सुभांन—सं.पु. [सं. शुभान] १ ब्रह्मवीसी का सत्रहवां वर्ष। (ज्योतिष)
२ देखो 'सुवहांन' (रू.भे.)

सुभा—सं.स्त्री. [सं. शुभा] १ आभा, कान्ति।
२ सौन्दर्य, शोभा।
३ कामना, अभिलाषा।
४ दूर्वा, दूब।
५ प्रियंगुलता।
६ देवताओं की सभा।
७ शमी वृक्ष।
८ गोरोचन।

सुभाइ, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.)
उ०—गति गंगा मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ। महिलां सरहर-मारुई, अवर न दूजी काइ।—ढो.मा.

सुभाग—स.पु. [सं. सौभाग्य] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।
वि.—१ भाग्यशाली।
२ देखो 'सुहाग' (रू.भे.)

सुभागण—देखो 'सुहागण' (रू.भे.)

सुभागी—वि.—सौभाग्यशाली, भाग्यवान।
उ०—१ अपणां पिया संग हिळमिळ खेलूं, अधर सुधारस पागी। मीरां गिरधर कै मन मांनी, अब मैं भई सुभागी।—मीरां
उ०—२ दस वसु खट आठं इक पद, पाठं सौ पदमावती छंद सही। सौ सुकव सुभागी हरि अनुरागी, मत लागी जस रांम मही।
—र.ज.प्र.
उ०—३ तसु बंधव डुंगरसी तै पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भांण। विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जांण।
—वि.कु.

सुभाग्य—सं.पु. [सं.] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।
वि.—भाग्यशाली, भाग्यवान।

सुभाय—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.)
उ०—अडोळ पायरा सीह सुभाय रा आसतीक, सिहायरा जनां अोधराय रा सुजाव।—र.ज.प्र.

सुभायक—वि.—रुचिकर, मन-भावता, अच्छा लगने वाला, सुहावना।
उ०—१ भीनै रंग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक।—र.ज.प्र.
उ०—२ सौ नित गाव 'किसन' सुभायक, नाथ अनाथ धणी रघुनायक।—र.ज.प्र.

सुभारजा, सुभारिजा, सुभारिया—सं.स्त्री. [सं. सुभार्या] श्रेष्ठ स्त्री, श्रेष्ठ पत्नी।
उ०—ग्यांन राजा कियौ मंत्र्य विचार, बंधवां, चेतंन तांहरी वार। सुमंति सुभारिजा सूं कहै वात, उप उपगार करै दियां हाथ।
—वि.सं.सा.

सुभाव—देखो 'स्वभाव' (रू.भे.) (अ मा.)

उ०—१ इसड़ी अधकी बोलणी भलौ नहीं थौ पण हेक थां विहुणी नहीं छै, मारवाड़ मैं घणा छै पण थारौ औ ही जै **सुभाव** छै।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ उद्दम री आसा करै, सहै नहीं घणराव। घात करै गैंवर घड़ा, सीहां जात **सुभाव**।—वां.दा.

उ०—३ सूळी दार **सुभाव,** त्रिसूळ दार तैयारी। मरज दार होय मांग, आंणी कहुं दार उधारी।—ऊ.का.

उ०—४ सेठ रै वेटा री बोली-चाली अर उणरै **सुभाव** री चाइजती सोय करनै वौ तौ दूजै मारग टळग्यौ।—फुलवाड़ी

सुभावत—वि.—प्यारा लगने वाला, मनचाहा, सुहावना।

उ०—वखतौ लड़ण खळां रस वायौ, अधपति निजर **सुभावत** आयौ। 'अमर' तणौ जांमळ वळ ऐसौ, जोड़ै भीम अरजण जैसौ।
—रा.रू.

सुभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू.भे.)

उ०—झवैरी वजार री भीड़ लिछमी री रेळ-पेळ मैं आपरी **सुभाविक** गति सूं चालती री......।—अमरचूनड़ी

सुभासण—सं. पु. [सं. सु-भाषण] १ सुन्दर भाषण, कर्णप्रिय भाषण।

[सं. शुभ+आसन] २ सुन्दर आसन।

सुभासित—वि. [सं. सुभाषित] जो सुन्दर ढंग से या अच्छी तरह कहा गया हो।

सुभिक्ष, सुभिख—सं.पु. [सं. सुभिक्ष] वह समय जब अन्न की पैदावार खूब हुई हो और अन्य फसलें भी अच्छी हुई हो, दुर्भिक्ष का विपरीत, सुकाल।

उ०—न पड़इ दुरभिक्ष दुकाल कदा, सुभ व्रिस्टि **सुभिक्ष** सुगाल सदा। ततखिन तुम्हँ असुभ करम तोड़उ, नितनांम जपउ स्री नाकउड़उ।—स.कु.

सुभियांण, सुभियांन—वि. [सं. शुभ+रा.प्र. यांण] १ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—१ धुर मात्रा तेवीस धर, वाकी वीस वखांण। मुहरा सम च्यारूं मिळै, सावझड़ां **सुभियांण**।—डि.को.

उ०—२ वोह दिन हुवा पौढिया, न जगै निरवांण। चिंता नहीं लिगार मन, साहिव **सुभियांण**।—गज-उद्धार

२ प्रमुख, मुख्य, खास।

उ०—गुणां भरपूर परसिध रण गिणीजै, तेज दरियर घणौ वधै तुड़-तांण। वेख वळवांन कपिराव विण कुंण वियौ, अडर 'चांदावतां' वणौ **सुभियांण**।—रुघनाथसिंह चांदावत रौ गीत

३ योद्धा।

उ०—१ चळवळीया रावत चंगा, अळवळिया **सुभियांण**। भळ-हळीया सांवळ भूजा, कळहळिया केकांण।—पनां

उ०—२ सत्रांदिस वीरमदै **सुभियांण**, कमंधज ढीलवीया केकांण।
—गो.रू.

४ शुभ, माङ्गलिक।

रू.भे.—सुवियांण, सुवियांणी, सुभीयांण, सुभीयांणी, सुभीयांन।

सुभीतौ—सं.पु.—आराम, सुभीता, आसानी, सुविधा।

उ०—१ थें मत चालौ काका! चालता तौ रास्तौ ढूंढण मैं **सुभीतौ** रैवतौ। थांरौ जिसौ निसांणौ भी म्हारौ थोड़ौ ईज है?
—तिरसंकू

उ०—२ मैंनेजर आपरी बोली मांय घणी पीड़ भर'र वोल्यौ—कठै तूं है पवन, कितणी करड़ी हालतां मांय पढ रयौ है अर कठै म्हारा वेटी-वेटा है! सव तरियां रौ **सुभीतौ** होतां थकां हायर-सैकंडरी भी पास कोनी कर सक्या।—तिरसंकू

सुभीमा—सं.स्त्री. [सं.] श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

सुभीयांण, सुभीयांणी, सुभीयांन—देखो 'सुभियांण' (रू.भे.)

उ०—१ तू स्रव बीज अबीज सांई **सुभीयांणी**।
—केसोदास गाडण

उ०—२ उण समै ईडर मैं राव रायभांणजी राज्य करै। वडां **सुभीयांन**। परखज प्रमांण। आचार रौ करण।—पनां

सुभीयागत—देखो 'सुभ्यागत' (रू.भे.)

उ०—जौ पुंन अठसठ जी भाई तीरथौ, गुर **सुभीयागत** म्हारौ। देह दियावौ जी भाई मोमिणौ, देत न करौ उधारौ।—वि.सं.सा.

सुभूखण, सुभूसण—सं. पु. [सं. सु-भूषण] सुन्दर आभूषण, अच्छे अलङ्कार।

वि.—अच्छे आभूषणों से अलंकृत।

सुभूसित—वि. [सं. सु-भूषित] १ अच्छे अलंकारों से अलंकृत।

२ सुसज्जित।

सुभेइ—वि.—रहस्य जानने वाला, भेदिया।

सुभेय—सं.पु.—चम्पा का वृक्ष। (अ.मा.)

सुभेवौ—वि.—रहस्यपूर्ण?

उ०—जड़कूं सेल जैतसंभ जेहै, असि असवार कहै चित्र एहै। 'भूप' कहै सुत 'देव' **सुभेवौ**, कांढूं देव दांणवां केवौ।—सू.प्र.

सुभै—वि.—सुन्दर।

उ०—वांणी सा थिर हा जुगळ चरण, कुचभाव उठै वैठै थिरकै। कल्पना करां मैं कमळ चारू, आ कविता ज्यूं साकार **सुभै**।
—सकुंतला

सुभोम, सुभोमि, सुभौम—सं.स्त्री. [सं. सु-भूमि] १ अच्छी भूमि, उपजाऊ भूमि।

उ०—संगति करीयै साधकी, हरि सुं धरीयै हेत। हरीया खाली नां गमै, वीज **सुभोमि** खेत।—अनुभववांणी

सं. पु.—२ कार्त्तवीर्य्य का पुत्र व जैनियों का एक चक्रवर्ती राजा जिसने वड़े होने पर परशुराम से अपने पिता के वध का वदला लेने

[illegible] — [illegible] कृपी [illegible] सुन्न किया ।

(जैन हरिवंश)

[illegible] — देखो 'सुभ्र' (रू.भे.)

२ [illegible] (रू.भे.)

[illegible]–[illegible] सौभाग्यशाली, भाग्यशाली ।

उ०—[illegible] सुभागियो, उत्तम सारी जान । मौं कोमां साजन [illegible], [illegible] ।—[illegible]

[illegible]–वि.–सौभाग्यशाली, भाग्यवान ।

उ० —[illegible] सतगुरु [illegible] सवणें सांभळो, पाल्य क्रिया दया आंणि [illegible] । [illegible] सुन्यागतां आपणां, प्यारी सोय सरचियै [illegible] ।—[illegible]

रू.भे.— सुभागियत ।

सुभ्र–वि. [सं. शुभ्र] १ श्वेत, सफ़ेद । (अ मा; नां.मा.)

२ उज्ज्वल, साफ़, शुभ्र । (अ.मा.)

उ०—[illegible] सुमति सदन सुभ्र, कळुस सघन वन दहन [illegible] ।—[illegible]

३ चमकीला, [illegible], द्युतिमान, आभा-युक्त ।

४ स्वच्छ, निर्मल, पवित्र ।

सं.पु.–१ चन्दन ।

२ सफेद रंग ।

३ चांदी, रजत ।

४ [illegible] नमक ।

५ [illegible] ।

६ [illegible] ।

रू.भे.—सुभ्भ, सुभ्भ, [illegible], सुभ्र ।

सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सुभ्रकिरण–सं.पु. [सं. शुभ्र-कर, किरण] चन्द्रमा, [illegible] । (अ मा; नां.मा; ह.नां.मा.)

सुभ्रतटी–सं पु.–क्षीरसागर ।

उ०—नदी [illegible] थावां सुभ्रतटी जेम, गैणवटी तावां ऊंच [illegible] । [illegible] पुरेंद्र चावां चंद्र ज्यूं नखत्र चावां, नरां [illegible] 'रिणनेणसद' ।—हुकमीचंद खिड़ियो

सुभ्रद्युति–सं.पु [सं. शुभ्र-द्युति] इन्द्र का हाथी । (नां.मा.)

सुभ्रम–सं पु.–पुत्र, बेटा ।

उ०—१ [illegible] कुंडळ सारीसा, आंख आंख प्रत अंजन [illegible] । सुभ्रम 'सूर' [illegible], जुई नहीं नक बेसर जेम ।

—सांदयो भूलो

उ०—२ [illegible] अजमल बांगपत, मर दम लेवण [illegible] । [illegible] 'हमाऊं' सुभ्रम, अकबर साह कसी [illegible] ।—[illegible]

[illegible] ।

[illegible] । [illegible]] १ [illegible], [illegible] ।

२ वंश-लोचन ।

३ स्फटिक, फिटकरी ।

सुभ्रि–सं.पु. [सं. शुभ्रिः] ब्रह्मा, विरञ्चि ।

सुभ्रू, सुभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुमंगळ–सं.पु. [सं. सुमंगलं] कुशल-क्षेम, ख़ुशहाली, ख़ुशी ।

वि.–१ अत्यन्त शुभ ।

२ कल्याणकारी ।

उ०—सदा सुमंगळ हरण सकल भ्रम, ब्रहमानंद विराजै । जन हरिरांम सुरति कीया वासा, अधर महल कै छाजै ।

—अनुभववांणी

सुमंगळा–सं.स्त्री. [सं. सुमंगला] १ स्कन्द की एक मातृका ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

सुमंगळी–सं.स्त्री. [सं. सुमगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा ।

सुमंत–सं.पु. [सं. सु-मित्र] १ सूर्य, भानु, रवि । (अ.मा.)

२ देखो 'सुमंत्र' (रू.भे.)

वि.–अत्यन्त बुद्धिमान ।

सुमंत्र–सं.पु. [सं.] राजा दशरथ का मन्त्री सुमंत ।

रू.भे.—सुमंत ।

सुमंत्रक–सं.पु. [स.] कल्कि का बड़ा भाई ।

सुमंत्रसुत [सं. सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण व शत्रुघ्न ।

(अ.मा.)

सुमंदर—देखो 'समुद्र' (रू.भे.)

सुम–सं.पु. [फा.] १ घोड़े, गधे आदि पशुओं के पैरों के बिना फटे हुए खुर, टाप (पोड़) ।

[सं. सुमं, सुमः] २ सुमन, पुष्प, फूल ।

(डिं.को; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनिकैं, बुध तनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुम अलय अतिसय विसय चय भुव वलभ विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नय निलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय अभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार ।

—वं.भा.

३ चन्द्रमा ।

४ कपूर ।

५ आकाश ।

६ देवता ।

७ पण्डित ।

८ देखो 'सूम' (रू.भे.)

९ देखो 'सून्य' (रू.भे.)

रू.भे.—सूंम ।

सुमखारौ – सं. पु. – वह घोड़ा जिसकी एक आँख की पुतली बेकार हो गई हो।

सुमध्य, सुमज्झ–क्रि.वि.–मध्य में, मध्य।

उ०—अक्खी सकळ अजीत सूं, मोती वाग **सुमज्झ**। देखेवा दरगाह जरण, साह दरस्सरण कज्ज।—रा.रू.

सुमण – सं.पु. – १ छप्पय छन्द का ४८वाँ भेद जिसमें २३ गुरु, १०६ लघु से १२९ वर्ण तथा १५२ मात्राएँ होती है। (र.ज.प्र.)

२ कौस्तुभमरिण।

उ०—विमळांनन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी **सुमण**। भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हरण।—र.ज.प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू.भे.)

उ०—वरण रंभ क्रत **सुमण** वरखण, मिटण दुख ग्रह बंधरण मोखण।—सू.प्र.

सुमत–सं.स्त्री.–१ इन्द्र की सभा। (अ.मा.)

२ देखो 'सुमति'।

उ०—१ सरल तन सहज दन मुकत दायक **सुमत**, गज गमरणी जांनकी भांम गुरण ग्रांम है।—र.ज.प्र.

उ०—२ राज भवन दसमै सन राजै, छित इक छत्र करै सुख छाजै। आव **सुमत** खग सकत अमांमी, सनि गुरण हुवै जगत चौ सांमी।—रा.रू.

उ०—३ जाळंधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'अभौ' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजरणां, सयरणां **सुमत** अपार।—रा.रू.

उ०—४ ओढन लज्जा चीर धीरज कौ घाघरौ, छिमता कांकण हात **सुमत** की मूंदरौ।—मीरां

सुमतरास–सं.पु.–घोड़े के नाखून या सूम काटने का औजार।

सुमतिजय–सं.पु. [सं.] विष्णु।

सुमति–वि. [सं.] श्रेष्ठ बुद्धि वाला, बुद्धिमान।

उ०—स्रीपति कुण **सुमति** तूझ गुण जु तवति। तारू कवरण जु समुद्र तरै।—वेलि

सं.स्त्री–१ श्रेष्ठ मति, अच्छी बुद्धि, सुबुद्धि, सद्बुद्धि।

उ०—१ लाभ नहीं अहलोक, नहीं परलोकह निरभय। **सुमति** नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय।—र.ज.प्र.

उ०—२ विमळती वेद रघु वंचती, आणंदति हरत्ती कुमति। 'अभपती' गुणां गावण उकति, सरस्वती दीजै **सुमति**।

—सू.प्र.

उ०—३ मन अडोळ द्रढ वोल, मेर सम तोल अमापै। अत सग्यांन ऊधरां, **सुमति** ऊंवरां समापै।—रा.रू.

२ अच्छी भावना, सद्भावना।

उ०—१ भूठा जब ही जांणीयै, करै साच कुं भूठ। जन हरीया उंन जीव कै, **सुमति** न हिरदै ऊठ।—अनुभववांणी

उ०—२ मांहौं मांहि वातां कर हेतु युक्ति सीख **सुमति** आछी तरै दरसन देई पाछा कंटालीयै पधार जाता।—भि.द्र.

३ कृपालुता, दयालुता, सहृदयता।

उ०—१ पापोघ हरत अत जन चितवत, तिन हरख करत दुख हरत हरी। सीतावर जसधर **सुमति** सदन सुभ्र, कळुख सघन वन दहन करी।—र.ज.प्र.

उ०—२ विखै विकारी जीव कुं, **सुमति** न उपजै काय। हरीया मिनख मलीन कै, भली न आवै दाय।—अनुभववांणी

४ दया, आशीर्वाद।

उ०—पलक एक हुई **सुमति** मति आई, मतौ कियौ पंरिण लात न वाही। मंनसा फेरी वात वीवांसै, वाद रूप होय बेठौ पासै।

—वि.सं.सा.

५ देवताओं का अनुग्रह।

६ प्रार्थना।

७ अभिलाषा, इच्छा।

८ मैत्री, दोस्ती।

९ सगर की भार्या जो ६० हजार पुत्रों की माता थी।

१० कल्कि की माता और विष्णुयश की पत्नी।

११ देखो 'सुमतिजिन'।

रू.भे.—सुमत, सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती।

सुमतिजिन, सुमतिनाथ – सं.पु. – १ जैनियों के वर्तमानकाल के पाँचवें तीर्थङ्कर का नाम। (स.कु.)

२ जैनियों के भूतकाल के तेहरवें तीर्थङ्कर का नाम। (स.कु.)

रू.भे.—सुमत्ति।

सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती—१ देखो 'सुमति' (रू.भे.)

उ०—१ गरणपति मोहि **सुमत्ति** दै, सुभ अख्यर ततसार। मौ मत सारू वरणवूं, हरि गुरण ग्रंथ अपार।—गज-उद्धार

उ०—२ जिता हितू जवनेसरा, सुज गिरिण खरा **सुमत्ति**। सेर तणौ दुख संभरै, एनां सूं असपत्ति।—रा.रू.

उ०—३ कहै तांम कमधज्ज, सुणौ साहिब छत्रपत्ती। विध विचार धारियौ, सकौ तिरण आर **सुमत्ती**।—रा.रू.

२ देखो 'सुमतिजिन'।

सुमत्तौ–सं.पु.–इरादा, नेक इरादा, इच्छा।

उ०—करै कूच इतकाद, साह दरगाह सपत्तौ। गुदरायौ धर गुंभ, महासुख सुंभ **सुमत्तौ**।—रा.रू.

सुमन–सं.पु. [सं. सुमनः] १ पुष्प, फूल। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—१ असुर प्रळय करि जय करि आई, व्रंदारकन व्रिंद विरदाई। वरखिय **सुमन** घुरिय नववत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।

—मे.म.

उ०—२ सुर करै हरख वरखै **सुमन**, अमर तरणि धिन उच्चरै। नर भुवण हूंत सतियां नपति, सुरपुर मारग संचरै।—रा.रू.

२ गेहूँ। (डिं.को.)

[illegible] ।
[illegible] ४ [illegible] । (ए.मा.)
[illegible] नहीं [illegible] सुमना, सुमन नहीं मनचा [illegible] ।
[illegible], नहीं [illegible] नहीं रघुनाथ ।—र.रू.
[illegible] सीता [illegible], [illegible] जन लीता अवन [illegible] । [illegible], [illegible] मारै सुमन सरै ।
—र.ज.प्र.
[illegible] ।
[illegible] । ([illegible])
[illegible]] [illegible] । (ना.मा.)
[illegible] ।
[illegible] [सं. सुमनस्] १ दयालु, कृपालु ।
[illegible] मन वाला, सहृदय, भावुक ।
उ०—[illegible] जामुणां जिणवार । सूरातन रत्ता सुमन, [illegible] ।—रा.रू.
[सं. सुमन] ३ सुन्दर, खूबसूरत ।
४ देखो 'सुमन' (रू.भे.)
रू.भे.—[illegible], सुमन्न ।
सुमनचाप–सं.पु. [सं.] १ फूलों का धनुष ।
२ उस धनुष को धारण करने वाला, कामदेव ।
सुमनस–सं.पु [सं सुमनस्] १ गेहूं ।
२ नीम का पेड़ ।
३ देवता । (डि.को; ना.मा; ह.नां मा.)
उ०—[illegible] सुमनस, सुमनस सेवै सुरप सुवेस ।
—र.रू.
४ [illegible] ।
५ [illegible] ।
६ [illegible], [illegible] ।
७ [illegible] । (अ.मा; डि.को; ह.नां.मा.)
उ०—[illegible] मृदंग [illegible], [illegible] विमाल ए । समकित [illegible], सुमति सुमनस माल ए ।—वि.कु.
८ [illegible] शुद्ध मन ।
सुमनरस–सं.पु.–फूलों का रस, पराग ।
सुमनध्वज–सं.पु. [सं. सुमनस्+ध्वज] कामदेव । (डि.को.)
सुमना–सं.स्त्री. [सं.] १ नमेली, जाती पुष्प ।
२ [illegible] ।
३ [illegible] ।
४ [illegible] । (ना मा.)
५ [illegible] । (अ मा.)
[illegible] ।
[illegible] हुवा छै । वनी गाडा एकठा कर रिणमलजी ढूंढाड़नूं नै हालिया । रजपूत सारा सुमना किया । जेठी घोड़ी सिखरै नूं दियो ।—नैणसी

सुमनौकस–सं.पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुमन्न—देखो 'सुमन' (रू.भे.)

उ०—रिस्ट रतन सगवीसै मुनिपदे, सतसठि एकावन्न । सितरनै पंचास उलास सुं, मुगता सेस सुमन्न ।—श्रीपालरास

सुमफटो – सं.पु. – घोड़ों का एक रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलुवे तक होता है । (शा.हो.)

सुमरण—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—१ दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठौं यांम । मीरां कै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमळ विसरांम ।—मीरां

उ०—२ रांम नांम की चुड़लो पहरौं, सुमरण काजळ सार । माळा ल्यौ हरिनांव की, उतरि चलो पैली पार ।—मीरां

सुमरणी – सं.स्त्री. – १ नाम जपने की माला, इसमें प्राय: १०८ मणियें होते हैं ।

उ०—१ मैं जपती नांव मेरै सायब का, आंण मिळौ नंदलाला रे । हाथ सुमरणी कांख कूबड़ी, ओढ रही अगछाळा रे ।—मीरां

उ०—२ इतरा मैं उण तरवार वाही सो माथै ऊपर पड़ी । पाघ रा पेच वढ सुमरणी जै वाढी ।—पदमसिंघजी री वात

२ सत्ताईस दानों (मणिकों) की नाम जपने की छोटी माला ।

रू.भे.—सुमरिणी, सुमरिनी, सुमिरणी ।

सुमरणौ, सुमरबौ–क्रि.स. [सं. स्मरणम्] १ ईश्वर या अपने ईष्टदेव के नाम का बार-बार उच्चारण करना, नाम जपना, माला जपना, भजन करना ।

उ०—मनुआ बावा रै सुमर लै सीतारांम । बडै बडै भूपति सुल्तांन, उनकै डेरै भयै मैदांन । - मीरां

२ किसी कार्य के प्रारम्भ में या यात्रा के प्रारम्भ में अपने ईष्टदेव का ध्यान करना, याद करना, स्मरण करना ।

उ०—१ प्रथम सुमर इण विध परमेस्वर, पूरण ब्रह्म प्रताप अपंपर ।—रा.रू.

उ० –२ सो भवांनी नैं सुमर, लै खांडा हाथ मैं अर मांमो भांणेज जोधांण रा किला कांनी रवांनै व्हिया ।—अमरचूनड़ी

उ०—३ सस्त्र बांध हरि, सुमर देह धर प्रीत अदावै । समै तेण साहंस, जेण मापियो न जावै ।—रा.रू.

३ पूर्व की कोई बात या घटना याद करना ।

उ०—अकथ कहांणी प्रेम की, किण सूं कही न जाइ । गूंगा का सपना भया, सुमर सुमर पिछताइ ।—ढो.मा.

४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास करना, सोचना, विचारना ।

सुमरणहार, हारौ (हारी), सुमरणियौ—वि० ।

सुमरिओड़ौ, सुमरियोड़ौ, सुमरचोड़ौ — भू०का०कृ० ।

सुमरीजणौ, सुमरीजवौ—कर्म वा० ।

सुमिरणौ, सुमिरवौ—रू०भे० ।

सुमरन—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—दोऊ दयत महादुख दीनौं, कमळयोनि तव **सुमरन** कीन्हौ ।
—मे.म.

सुमरिणी, सुमरिनी—देखो 'सुमरणी' (रू.भे.)

उ०—अनंत धणी कै सरणैं आई, हाथ **सुमरिणी** धारी । जोग लियौ जव वाद तजी री, गुर पाया निज भारी ।—मीरां

सुमरियोड़ौ—भू.का.कृ.—१ ईश्वर या अपने ईष्टदेव के नाम का वार-वार उच्चारण किया हुआ, नाम जपा हुआ, माला जपा हुआ, भजन किया हुआ । २ किसी कार्य या यात्रा के प्रारम्भ में अपने ईष्टदेव का ध्यान किया हुआ, याद किया हुआ, स्मरण किया हुआ । ३ पूर्व की कोई बात या घटना को याद किया हुआ । ४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास किया हुआ, सोचा हुआ, विचारा हुआ ।

(स्त्री. सुमरियोड़ी)

सुमसायक—सं.पु. [सं. सुमन+सायक] रति-पति, कामदेव । (डि.को.)

सुमसुखड़ौ—सं.पु.—१ वह घोड़ा जिसके सुम सूखकर सिकुड़ गये हों ।

२ उक्त प्रकार का घोड़ों का एक रोग । (शा.हो.)

सुमांण, सुमांणस—सं.पु. [सं. सु+मानस] भला एवं सज्जन पुरुष ।

उ०—१ गलि अमलदार तिरणूं गिणैं, मरणूं डूबि **सुमांणसां** । खळ भांति सिरड़ि मन मैं खिटै, मिटै न टिरड़ि कुमांणसां ।
—ऊ.का.

उ०—२ राजा मित्र म जांणौ रंग, **सुमांणस** रौ करिजै संग । काया रखत तपस्या कीजै, दांन वळै धन सारु दीजै ।—ध.व.ग्रं.

सुमांनी—वि. [सं. सुमांनिन्] स्वाभिमानी ।

सुमाग—देखो 'सुमारग' (रू.भे.)

उ०—चित **सुमाग** खरचियौ, चित्त लीणौं हर पाए । जिसौ वेद वाचियौ, तिसी परसिद्धी पाए ।—नैणसी

सुमात—सं.स्त्री.—श्रेष्ठ माता, पार्वती । (अ.मा.)

सुमात्रा—सं.पु.—वोर्निया के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम में स्थित इण्डोनेशिया द्वीप-समूहों में से एक द्वीप ।

सुमाद्रेय—सं.पु. [सं. माद्रेय] पाण्डु-पुत्र नकुल व सहदेव का एक नामांतर जो उनकी माता माद्री के नाम के आधार पर हुआ ।

सुमार—सं.पु. [फा. शुमार] १ गणना, गिनती, संख्या ।

उ०—१ करै **सुमार** भलाई कितरां, जेट तुमार जमाडी । और खुमार चढी नहीं अंतर, एक दुमार अगाडी ।—ऊ.का.

उ०—२ खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ रौ रिमां घू खंगै, पांखियौ नागेंद्र फतै पाव रौ प्रभाव । लेवाळ अंत रौ गजां धाव रौ **सुमार** लागै, सेल मारू राव रौ क्रतांत रौ सुजाव ।
—राजा वळूतसिंघ रै भाला रौ गीत

२ लेखा-जोखा, हिसाव-किताव, नाप-तोल ।

३ सीमा, हद, पार, पारावार ।

उ०—१ साह रै धन घणौ । विणज रौ **सुमार** नहीं । जहाज हालै ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ जैपुर तैं बगरू कै खेत खूर आया, कूरम की सेनि का **सुमार** हू न पाया ।—शि.वं.

४ अदद, नग ।

५ चोट, प्रहार ।

उ०—केहकां रै **सुमार** लागी छै । जिकां मैं बोलण री तौ वकाय रही नहीं पण मूछां हाथ फेर फेर साथियां नुं कोट मैं पड़ण री सैंन करै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ नाश, संहार, ध्वंस ।

सुमारग—सं.पु. [सं. सु-मार्ग] श्रेष्ठ व उत्तम मार्ग, सन्मार्ग ।

उ०—कुण असली कुण कमसली, तास पटंतर एह । कमसल चलै कुमारगी, असलि **सुमारग** लेह ।—अनुभववांणी

रू.भे.—सुमाग ।

सुमारणौ, सुमारवौ—क्रि.स.—१ गणना या गिनती करना, गिनना ।

२ लेखा-जोखा करना, हिसाव करना ।

३ वर्गीकरण करना, श्रेणी बनाना ।

४ सीमा या हद निर्धारित करना ।

५ चोट या प्रहार करना ।

सुमारणहार, हारौ (हारी), सुमारणियौ—वि० ।

सुमारियोड़ौ—भू०का०कृ० ।

सुमारीजणौ, सुमारीजवौ—कर्म वा० ।

सुमाळी, सुमाली—सं.पु. [सं. अंशुमाली] १ सूर्य, रवि ।
(अ.मा; नां.मा.)

[सं. सुमाली] २ एक राक्षस जो सुकेश राक्षस का पुत्र तथा रावण का नाना था ।

३ एक वानर का नाम ।

सुमित, सुमित्र—देखो 'सुमित्र' (रू.भे.)

सुमिट्ठउ—वि. [सं. सुमिष्ठम्] मधुर ।

उ०—साह आलिम एक वयण, विप्र उच्चरइ **सुमिट्ठउ** । लोयण तैं हेतम कीय, जेणि परि रमणि मुह दिट्ठउ ।—प.च.चौ.

सुमिणइ, सुमिणौ—सं.पु. [सं. स्वप्न, प्रा. सुमिण, सुविण] स्वप्न, सपना ।

उ०—१ रोपीउ पवणिहिं कलपतरौ **सुमिणइ** कुंतिदूयारि, पवणह नंदणु वजमओ भीमुसु भूयण मझारि ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ धनुखु चडावीउ भूयणि भमउं इच्छा छइ मन माहि । वइठउ दीठउ हाथिणीयं सुरवइ **सुमिणा** माहि ।—सालिभद्र सूरि

सुमितरा—देखो 'सुमित्रा' (रू.भे.)

उ०—**सुमितरा**, कौसल्या दुरगा, विद्वतमा वर केकयी । गौरव गाथा घणा नमूना, मदालसा अर मैत्रयी ।—नारी सईकड़ौ

सुमित—देखो 'सुमित्र' (रू.भे.)

सुमिति—१ देखो 'सुमतिजिन'।

२ देखो 'सुमति' (रू.भे.)

सुमित्र—सं.पु. [सं.] १ श्रेष्ठ व अच्छा मित्र।

उ०—चरित्र में विचित्र ज्यूं, पवित्र में पवित्र जै। अमित्र कै अमित्र त्यूं, सुमित्र कै सुमित्र जै।—ऊ.का.

२ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

३ अभिमन्यु के सारथि का नाम।

४ इक्ष्वाकुवंशीय राजा सुरथ का पुत्र।

उ०—सुतरा सुरथ नृप सुमित्र सत्पति, तपसी हुवौ राज तजि भ्रांति।—सू.प्र.

५ विक्रमादित्य के समसामयिक सौराष्ट्र के अन्तिम राजा का नाम। (कर्नल टॉड)

६ देखो 'सुमित्रा' (रू.भे.)

उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण अरि, धरै सेस अवतार धुरंधर।—र.रू.

रू.भे.—सुमित, सुमित्त, सुमित्त।

सुमित्रा—सं.स्त्री. [सं.] १ मगध देशाधिपति सूर राजा की कन्या, जो इक्ष्वाकुवंशीय राजा दशरथ की तीन पत्नियों में से एक थी। लक्ष्मण और शत्रुघ्न इसके पुत्र थे।

उ०—निज कौसल्य केकइ सुमित्रा नांम, वरियांम तरा अति हेत वांम।—सू.प्र.

२ श्रीकृष्ण की एक रानी।

३ मार्कण्डेय ऋषि की माता।

रू.भे.—सुमितरा, सुमित्र।

सुमित्रानंदन—सं.पु. [सं.] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

सुमित्रासुत, सुमित्रासुतन—सं.पु. [सं. सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।

सुमियांणो—सं.पु.—मारवाड़ राज्यान्तर्गत सिवाना नामक कस्बे का गढ़ या किला।

सुमिरण—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—१ राजा विक्रमादित्य आगिया वैताल री सुमिरण कियौ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ ज्वांन अवस्था जोर वहीत, विण जारिया सकैतौ जोर निवारि वै। हरि सुमिरण हिरदै धरौ, विण जारिया चालौ देखि विचारि नै।—ह.पु.वां.

उ०—३ तन सौं सुमिरण सब करैं, आतम सुमिरण एक। आतम आगै एक रस, दादू बड़ा विवेक।—दादूवांणी

सुमिरणी—देखो 'सुमरणी' (रू.भे.)

उ०—हाथ में मोटै मोटै मिणियां री सुमिरणी थी।—पदमसिंहजी री बात

सुमिरणी, सुमिरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू.भे.)

उ०—१ रसणां रटै तौ रांम रट, आंमय लगै न अंग। जै सुख चाहै जीव रौ, सुमिर सुमिर स्रीरंग।—ह.र.

उ०—२ अपनी जांणै आप गति, और न जांणै कोइ। सुमिर सुमिर रस पीजियै, दादू आनंद होइ।—दादूवांणी

सुमिरन—देखो 'स्मरण' (रू.भे.)

उ०—थोड़ा धीरज रखौ भगत, संसार असार है अर सुख-दुख का जोड़ा है। साधु संत की सोहब्बत तकदीर वालै कौ मिळती है। सौ मालिक का सुमिरन करौ और प्रेम सैं सीधै खड़े रहौ बेटां।—अमरचूंनड़ी

सुमुख—सं.पु. [सं. सुमुख] १ गणेश, गजानन।

उ०—सुकवि सुमुख पग नाय सिर, हिय थिर आंण हुलास। कुकवि बतीसी ग्रंथ कवि, दाखै बांकीदास।—बां.दा.

२ शिव, महादेव।

३ गरुड़।

४ पंडितजन।

[सं. सुमुखं] ५ नाखून की खरोंच।

वि. [सं. सुमुख] (स्त्री. सुमुखा, सुमुखी) १ मनोहर, सुंदर।

२ आनन्दकर, सुखप्रद।

३ आतुर, उत्सुक।

४ सुंदर मुख वाला।

सुमुखा, सुमुखी—वि.स्त्री. [सं.] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।

सं. स्त्री.—१ सुन्दर स्त्री।

२ एक अप्सरा।

३ संगीत में एक मूर्छना।

सुमुखौ—वि. [सं. सुमुख] (स्त्री. सुमुखी) सुन्दर मुख वाला।

सं.पु.—आइना, कांच, शीशा।

सुमेधा—सं.पु. [सं. सुमेधस्] १ पितरों का एक गण या भेद।

सं.स्त्री.—२ मालकंगनी।

सुमेर, सुमेरगिर, सुमेरु, सुमेरू—सं.पु. [सं. सुमेरुः] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो स्वर्ण का कहा गया है। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—१ देतौ अड़व पसाव दत, वीर गोड़ वछराज। गढ अजमेर सुमेर सूं, ऊंचौ दीसौ आज।—बां.दा.

उ०—२ हिंदू मुसलमांन सलांम कर ठाढै, एक तैं एक सुमेर सै गाढै।—रा.रू.

उ०—३ देवी रथ्थ रेवंत सांरग राजै, देवी विमांणं पालखी पीठ ब्राजै। देवी प्रेत आरुढ पद्मं, देवी सागरं सुमेरु गूढ सद्मं।—देवि.

पर्याय.—अचल, आरकगिर, कंचनगिर, कांचनअचळ, गरमेर, गिरपति, देवगर, पंचरूपी, माहव, रतनसांन, मवळ, सुथांनिक, सुरगिर, हेमगिर।

२ माला के सिरे पर रहने वाला बड़ा मनका।

३ शिवजी का नाम।

रू.भे.—मेर, मेरु, समेर, सूंमेर।

सुमोज—सं.पु.—उत्सर्ग, दान। (डिं.को.)

सुमोद—सं.पु. [सं. सु+मोदः] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।

सुमौरत—सं.पु. [सं. सु+मुहूर्त्त] श्रेष्ठ व उत्तम मुहूर्त्त।

उ०—ज्यांरा सोवन थाळ भलांई वजिया, 'पातल' जनम पखैत **सुमौरत** सजिया।—किसोरदांन बारहट

सुयं—देखो 'स्वयं' (रू.भे.)

उ०—**सुयं** विष्णु रुघवंसी राजा, वरण आस्रम ध्रम वांधी पाजा। —वि.सं.सा.

सुयंबर, सुयंवर—देखो 'स्वयंवर' (रू.भे.) (डिं.को.)

सुय—सं.पु. [सं. सूत्र] १ जिनेन्द्र की वाणी या सूत्र।

२ देखो 'स्रुत' (रू.भे.) (जैन)

सुयकरण—सं.पु. [सं. श्रुतकरण] व्याकरण, दूसरी कलाओं आदि का ज्ञान रूप, अवस्था विशेष। (जैन)

सुयक्खंध, सुयखंध—स.पु. [सं. श्रुति-स्कद] वेदों का एक विभाग।

उ०—१ **सुयक्खंध** अध्ययन उद्देसादिक भला हो लाल, संख्यायइं एक एक प्रत्येकइ गुण निला हो लाल।—वि.कु.

उ०—२ एक **सुयखंध** इणि अंग नउजी, वरग छइ आठ अभिरांम। आठ उद्देसा छइ वलीजी, सख्याता सहस पद ठांम।—वि.कु.

सुयगडांग—सं.पु.—'क्रताङ्ग' नामक सूत्र। (जैन)

उ०—स्री आचारांग पहिलौ अग, सहस अढी ए सूत्र सुचंग। **सुयगडांग** बीजौ स्रीकार (सुविचार), संख्या इकवीससै सुविचार। —ध.व.ग्रं.

सुयण—देखो 'सैण' (रू.भे.)

उ०—१ **सुयण** लाखौ सदा सालिम, जगत जांणै वडौ जालिम। लहण भेदां गुणां लाइक, निवड दाता नरां नाइक।—ल.पि.

उ०—२ सिघ भूंभार नरसिंघ रा सींघळी, सूरवट **सुयण** वट भुजै सोहै।—जूंभारसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—३ दंवु न गिणई दैवु, न गिणई पुण्यु नइ पावु। संतापु **सुयण**-ह करई, पुण्यहीन जिम राय रोलई।—सालिभद्र सूरि

सुयस—सं.पु. [सं. सुयश] कीर्ति, यश, बड़ाई, तारीफ़, सुख्याति।

उ०—नाग देव नर तोहि मनावत, पढि पढि **सुयस** पार नहीं पावत। गावत निगम अगम तव गत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे.म.

सुयसा—सं.स्त्री. [सं. सुयशा] १ परीक्षित की एक पत्नी।

२ एक अप्सरा।

३ दिवोदास की पत्नी व काशीराज भीमरथ की पुत्र-वधु।

सुयांण—देखो 'सुजांण' (रू.भे.)

उ०—प्रोहित तांम परिछवै, सुणि दसरथ **सुयांण**।—रांमरासौ

सुयुद्ध—सं.पु. [सं.] न्याय-सम्मत-युद्ध, धर्म-युद्ध।

सुयोग—सं.पु. [सं.] १ अच्छा योग, शुभ संयोग, शुभ अवसर या मौक़ा।

२ देखो 'सुयोग्य' (रू.भे.)

सुयोगता—सं.स्त्री. [सं. सु-योग्यता] योग्यता, सुयोग्यता।

उ०—अयोग कौ **सुयोगता**, दई प्रयोग दौ नहीं। लबार कै पुकार की, लगारसी रलौ नहीं।—ऊ.का.

सुयोग्य—सं.पु. [सं.] बहुत योग्य, क़ाबिल, लायक।

रू.भे.—सुजोग, सुयोग।

सुयोधन, सुयोधनि—सं.पु. [सं. सुयोधनः] दुर्योधन का एक नामान्तर।

उ०—१ एहिज परिथई भीरि कजि आयां, धनंजय अनै **सुयोधन**। —वेलि

उ०—२ मरचौ **सुयोधन** गौ भक मारत, आर्य्यवरत्त कौ करगौ आरत।—ऊ.का.

उ०—३ एहु तु पुरोचन नांमि, पुरोहितु दुरयोधनह। तुम्हि वीनविया सांमि, राय **सुयोधनि** पय नमीय।—सालिभद्र सूरि

सुयौ—१ देखो 'सुवौ' (रू.भे.)

उ०—ढोलइ चलतां परिठव्यउ, अगणि मोजां सल्ल। ढोलउ गयउ न वाहुड़इ, **सुया** मनावण चल्ल।—ढो.मा.

२ देखो 'सूवौ' (रू.भे.)

सुरं—१ देखो 'स्वर' (रू.भे.)

२ देखो 'सुर' (रू.भे.)

सुरंग—सं.स्त्री. [सं.] १ किसी मकान, किले या गढ़ के अन्दर से या किसी दीवार के अन्दर से ज़मीन के नीचे-नीचे बनाया हुआ तंग रास्ता जो आपात्-स्थिति में गुप्त रूप से भाग कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के काम आता है, गुप्त मार्ग, चोर-रास्ता।

उ०—सगरिहिं खणीय **सुरंग** विदुरि दिवारीय दूर लगइ, हुं ऊगारउं अंग ईण ऊपाइं पंडवह।—सालिभद्र सूरि

२ किले की दीवार को उड़ाने के लिए बनाया जाने वाला बड़ा गड्ढा या छेद जिसमें बारूद भर कर पलीता लगाया जाता है।

उ०—१ नीसरणी लागै नहीं, लागै नहीं **सुरंग**। लड़ नहिं लीधां जाय औ, दीधौ जाय दुरंग।—बां.दा.

उ०—२ गढ नै घणी ही खसीया वार दोय **सुरंग** लगाई सु दखल गढ नुं पोहोतौ, पिण गढ नहीं आयौ।—नैणसी

३ चोरी करने के लिए मकान की दीवार में किया जाने वाला बड़ा छेद, सेंध।

४ खान (पहाड़) से पत्थर निकालने के लिए विस्फ़ोट करने बावत किया जाने वाला छोटा गड्ढा जिसमें बारूद भर कर धमाका किया जाता है।

उ०—ओदी उघरै मिनख, खोदवै ख्यारां भारी। कोलै कंवळी रेत, खांणरी **सुरंगां** सारी।—दसदेव

५ पहाड़ की गुफ़ा, गिरि-कन्दरा।

उ०—सुरंगां तणी हाल हूं आव माहें, महा हेमरा धाम आराम माहें।
—सू.प्र.

६ रेल आदि के लिए पहाड़ को फोड़कर बनाया हुआ रास्ता।

न.पु.—७ अच्छा रंग, अच्छा वर्ण।

उ०—भरिया रंग सुरंग भाठवड, लंबीया ताड़ अवर लगस। अहर उलगा ओपिया अनोपम, रमगा जुडीया तबोळ रस।
—महादेव पारवती री वेलि

८ सूर्य के रथ का सारथी, अरुण।

उ०—अनगीन मग उरस चंचळ, मातहमुख चालै। सुरंग पंग सारथी, हेक चक्रह रथ हालै।—सू.प्र.

९ (लाल) रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—१ मोती सुरंग कमेत, लखी अबलख फुलवारी। रंग जड़ाव हमरंग, हरी मनहरी हजारी।—सू.प्र.

उ०—२ मेटिया केइक पीळा पमंग, मोन रै कइक धूसर सुरंग। अरा थाग वेग केई भंवर अंग, रेसमी पोत किरमची रंग।—पे.रू.

१० घोड़ा, अश्व। (ना.डि.को.)

उ०—जमावत सूर 'सुभै' अजरंग, मझै जुध बीच गरक्क सुरंग।
—सू.प्र.

११ प्रत्येक चरण में २८ मात्राओं का एक छन्द विशेष।

उ०—दाखा मात्र अठार दस, एक चरण री अंग। ब्रनवां लाखो वीरवर, मधरां छंद सुरंग।—ल.पिं.

१२ आनन्द, सुख।

उ०—निरधारचा नै थै आधार, भवसायर ऊतारै पार। आरती यांनी आरत भंग, धरै ध्यांन तै लहै सुरंग।—वृ.स्त.

वि. (स्त्री. सुरंगी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—वळती मारवणी कहइ, मारू देस सुरंग। बीजा तउ सगळा भला, माळव देस विरंग।—ढो.मा.

२ अच्छा, बढ़िया।

उ०—१ ताय सुरंग वान कहिवै, तगी दोग त्रिरंगी दहन री। उर जेज धरी स करी उरड़, ऊनी तेज अगन्न री।—रा.रू.

उ०—२ तप ऊजमणै रजतपालणां, सोवन पूतली चंग। मोदक थाल देहरै मूंकी, जिनवर स्नात्र सुरंग।—वृ.स्त.

३ सुन्दर, सुडौल।

उ०—१ जिण मुखि नागरबेलड़ी, करहउ एह सुरंग। मांगळोर वाड़ी चरइ, पांणी पीवइ गंग।—ढो.मा.

उ०—२ रजंग ब्रप अंग सुरंग चतुरंग, सीन संग करि खतंग सारंग।—सू.प्र.

४ अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का।

५ जोशपूर्ण, जोशीला।

उ०—तेरैई सास्त्र कमंध मिळ, सुत्र सीनंग 'दुरंग'। मीर कमंधां धीर मिळ, थया सधीर सुरंग।—रा.रू.

६ रक्ताभ, लाल।

उ०—१ निज अंग झळक दीप फानूसां, सुरंग जरी पोसाप झळूसां।—सू.प्र.

उ०—२ केवी भूप रायसिंघ कोपीवै, जुड़ लागां मुह कीध जुवा। रातळ सुरंग हुई भखती रत, हाली भाखर सुरंग हुवा।
—द.दा.

उ०—३ बाहां वाधै राठवड़, विगर सनाहां अंग। वागा केसर भारिया, हुयगा स्रोण सुरंग।—रा.रू.

६ सुन्दर, सुहावना।

उ०—१ सझ पोसाक सुरंग दळ साजा, राज पटण आए चंद राजा।—सू प्र.

उ०—२ जरै गजारुढ प्रांमार सिंह उरग, असि चलाय आपरा। सुरंग हौदा रै बरब्बर कढती, दहिया रौ तुरंग दळियौ।—वं.भा.

७ स्वच्छ, साफ़।

८ अनूठी, उक्तिवाला।

९ शुभ।

उ०—सुरंग महूरत सुभ घड़ी, इळ प्रगट्यौ 'अजमाल'। आगम दरसण आवियौ, हाडौ दुरजण साळ।—रा.रू.

१० मधुर, मीठा।

सुरंगइ, सुरंगई, सुरंगउ, सुरंगलौ—देखो 'सुरंगी' (रू.भे.)

उ०—१ बावहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरंगइ साद। प्रिय तिण रुति आळिंग रह्यां, ताह सुं किसउ सवाद।—ढो.मा.

उ०—२ देस सुरंगउ भुइं निजळ, न दियां दोस थळांह। घरी घरी चंद-वदनियां, नीर चढइ कमळांह।—ढो.मा.

उ०—३ सांवणियौ सुरंगलौ रै लाल, आसी वीरी कन्हैयालाल पांवणौ।—लो गी.

सुरंगियौ—देखो 'सुरंगौ' (अल्पा; रू.भे)

सुरंगी—वि.स्त्री.—१ हंसी-खुशी, उत्साह-उमङ्ग से भरपूर, आनन्दमय।

उ०—१ औरां रै तीज सुरंगी होसी, म्हांरै घर रहसी रंग कानी।
—लो गी.

उ०—२ माल मता अर जगां सेठाई रै पगां, सदा सुरंगी रैती आई ही।—दसदोख

२ हरी-भरी।

उ०—१ उण वगत वौ किरियौ तौ बीकानेर सूं घांटी रौ फटकारौ देतौ अर अेकरण ठौड़ बैठौ ई नित मंडोवर री सुरंगी वाड़ी चर जातौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ देखि सुरंगी डाळि, जांणूं जाइ विलगुं जसा। आस करूं हूं आलि, करम विना मिलवौ किसौ।—जसराज

३ सुन्दर, आकर्षक।

उ०—१ मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूं मल्हपंति। सखी सुरंगी साथ करि, गयंगयणी गय गंति।—ढो.मा.

उ०—२ सदा सुरंगी कांमणी, वरसां सदा जवार। जुग जुगंतर जावतां, कुंवरां वरस अठार।—वि.सं.सा.

४ आरामदायक, सुखदायक।

उ०—इसड़ी वधावौ म्हांरी सेजा मैं राखां, सेज सुरंगी ढोल्यौ नित नवौ।—लो.गी.

५ अच्छे रंग वाली, सुन्दर रंग की।

उ०—१ पेच सुरंगी पाग रा, ढांकै मत धर ढाल। काछी चढ आछी कहूं, हंजा भीजण हाल।—बां.दा.

उ०—२ हालतां हालतां मारग मैं मोचीं री हाट आई। चौवा री सुरंगी मोचड़ियां देखी तौ बादळ रौ मन डुळियौ।—फुलवाड़ी

६ देखो 'सुरगौ' (रू.भे.)

सुरंगीयौ—देखो 'सुरंगौ' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—भूलूं नह कुळवाट सुभाए, असी सुरंगीयै खग आए।

—सू.प्र.

सुरंगौ—वि. [सं. सुरंग] (स्त्री. सुरंगी) १ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ छत्रा रूप छवि परख, सरब चख वदन सुरंगै। यौं लग्गै रमरुप, आखिर फिर कागद अग्गै।—रा.रू.

उ०—२ टूंच अर पंजां मैं रंग भर-भरनै चित्रांम मांडणा चालू करचा, सौ छात, आंगणौ, छाजा, मोड़ा अर गुमटियां माथै सगळै सुरंगा मांडणा मांड दिया।—फुलवाड़ी

उ०—३ उर धण हुळसण हरख मन, रीझण खीजण रूप। लाज सुरंगा लोयणां, राजै अंग अनूप।—अग्यात

२ आनन्दमय, सुखमय।

उ०—१ नरपति आयौ 'जैनगर', निज उर हरख निवास। सुपह सुरंगौ सासरै, लग्गौ सांवण मास।—रा.रू.

उ०—२ वा डुसकिया भर-भर नै रोवण लागी। आंख्यां रै डोळां मैं कुरचोड़ा सुरंगा सपना खारौ पांणी वणनै ढळग्या। पण मासी री आंख्यां मैं वस्योड़ा सोनळ सपना हाल मगसा नीं पड़चा।

—फुलवाड़ी

३ उत्साह, जोश व उमङ्ग से पूर्ण, उत्साह-युक्त।

उ०—धन्य कह्यौ सब ऊमरां, साहंस देख प्रचंड। हुवा सुरंगा वांण सुण, भुज लागा ब्रहमंड।—रा.रू.

४ रक्ताभ, लाल।

उ०—१ वसुधा स्रोण सुरंगी तुरियां, धसळ विथुरी रैंण। आदू चपळ सहावौ हुइ. रत्ती हुइ अणरतह।—गु.रू.बं.

उ०—२ कळ रोद्रां वळ दाख कमंधां, कीधा खग्ग सुरंगा कंधां।

—रा.रू.

उ०—३ भिड़ै रत्थ चांचा नखां भांजि भारौ, सुरंगौ कियौ रांण रौ गात सारौ।—सू.प्र.

५ अच्छे रंगों का सुन्दर रंगों का।

उ०—१ पकवांनै पांनै फळै सुपुहपै, सुरंगै वसत्रै दरव स्रव। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव।

—वेलि

उ०—२ नाभी गुलाब रा फूल ज्युं दरसी, रति जांणै अनंग री निजर करसी। सुरंगा चीर मै चूड़ौ झमकै छै। जांणै झींणा बादल मैं वीजळी चमकै छै।—पनां

६ प्रफुल्लित, प्रसन्न।

उ०—काया झवकइ कनक जिम, सुंदर केहै सुख्ख। तेह सुरंगा किम हुवइं, जिण वेहा बहु दुख्ख।—ढो.मा.

७ शुभ।

उ०—कर क्रपांण मोरत किसूं, आखै सूर अवीह। रण मर स्वरग सिधावणौ, सुतौ सुरंगौ दीह।—बां.दा.

८ श्रेष्ठ, उत्तम।

९ अच्छा, बढ़िया।

उ०—चोखौ केलू हेरै तौ ध्यांन तौ सुरंगै रंग रौ इज ठहरचौ—इम कहिनै समझायां समझ गया।—भि.द्र.

१० स्वच्छ; साफ़।

११ मधुर, प्रिय।

१२ रसिक।

१३ सुशोभित।

उ०—१ धाट सुरंगौ गोरियां, आदू कहवत एह। पदमणियां हमरोट व्है, राख म संसौ रेह।—बां.दा.

उ०—२ इसड़ौ वधावौ म्हारै घूंघट पर राखां, घूंघट सुरंगौ चूनड़ नित नवी।—लो.गी.

१४ हरा-भरा।

रू.भे.—सरंगौ, सुरंगइ, सुरंगई, सुरंगउ सुरंगलौ।

अल्पा;—सुरंगियौ, सुरंगीयौ।

सुरंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—१ महा मदंध आसुरां, सुरंद चाउ मारणा। त्रिलोक नाथ गोह, ग्राह ग्रीध आद तारणा।—र.ज.प्र.

उ०—२ हीरां कौ रूप देख, सुरंद मन मैं जांणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस (जु) इं नारिनै महल मैं मांणै छै।

—वगसीरांम प्रोहित री बात

सुरंपत, सुरंपति—देखो 'सुरपति' (रू.भे.).

उ०—रावळ वापा जसौ रायगुर, रीझ खीज सुरंपत री रूस।

—वारुजी सोदौ

सुरंभ—देखो 'सौरभ' (रू.भे.)

उ०—वाजै सीतल वाय रै र०, लहरी आवै रै सुरंभ तणी घणी रै। कहतां न वणै काय रै र०, सबली रे सोभा वन मांहै वणी रे।

—वि.कु.

सुरंभी—देखो 'सुरभि' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुर—सं.पु [सं.] १ देवता, देवगण।

उ०—१ सगी ससीला कत री, पूरी एह प्रतीत। कै जासी सुर अंतरै, कै पासी रस जीत।—बां.दा.

उ०—२ सिव संभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दियण प्रणांम सदै सुर।—ना.द.

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ सूर्य, रवि।

४ आकाश।

५ विद्‌वजन, पंडित।

६ हिन्दू, आर्य।

उ०—१ हट छोड़ी हर मत करो हूरां, नर हिंदू छै तुरक नहीं। वासीवध केसरी वागी, सुर सोहड़ राठौड़ सही।

—हठीसिंह जोधा री गीत

उ०—२ लड़थड़ै पड़ै कै धर लड़ै, एम असुर सुर आथड़ै।

—सू.प्र.

उ०—३ आराव साथ वह सुर असुर, फबै गजां धज फरहरां। आगरा हूंत चढियो 'जसो', कीधां विकटां लसकरां।—सू.प्र.

उ०—४ राठौड़ मौड हिंदुवांण सिरि, महा द्रुग्ग गढ जोधपुर। गजसिंघ कुवर घप सूरसिंघ, सहुवै पंदै सुर असुर।—गु.रू.बं.

७ परमार राजपूतों की एक शाखा। (बां.दा.ख्यात)

८ ठगण के प्रथम लघु मात्रा का नाम। (डि को.)

९ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (र.ज.प्र.)

१० तैतीस की संख्या। (डि.को.)

११ राग,धुन।

उ०—गत ग्रत करि मिथू सुर गावै, वयंड सूंडची भेर वजावै।

—सू.प्र.

१२ देखो 'स्वर' (रू.भे.) (डि को; ह.नां.मा.)

उ०—१ हिरण रहै थिर होय, वीणा सुर सूं वांकला। जिण कारण सूं जोय, पारधियां पांनै पड़ै।—बां.दा.

उ०—२ गहकै आरंगपुर, सारंग सुर गावै। वांणिक दीठांई नीठां, वणि आवै।—ऊ.का.

उ०—३ भूं भुहरा सुर कोकला, कंठ कपोत ठार। खंजन चपळा टगह पर, ए पंखी लक्षण च्यार।—हो.मा.

उ०—४ राग-रंग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवंत खड़ा हुवा छै। सात सुर तीन ग्रांम री भेद वणियां छै।

—रा.सा सं.

सुरश्रंगना—सं.स्त्री. [सं.] अप्सरा।

सुरआळ, सुरआळय—सं.पु. [सं. सुर+आलय] देवताओं का निवास स्थान, स्वर्ग। (अ.मा; नां.मा.)

उ०—चारू चोहटा चार दिस, वणिया हाट विसाळ। मणिमंडत कंचन मई, सबै जिसै सुरआळ।—गज-उद्धार

—देखो 'सुरेंद्र' (रू.भे.)

उ०—वरै रंभ वैसि रथां रण विद, अघो-अघ राज लियै सुरइंद।

—सू.प्र.

सुरईस—देखो 'सुरेस' (रू.भे.) (डि.को; ना.डि.को.)

सुरश्रोक—सं.पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ। (डि.को.)

सुरकंत—सं.पु. [सं. सुरकांत] इन्द्र। (डि.को.)

सुरक—सं.पु. [सं. स्वर्ग] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

उ०—सरव लघु नगण आयुस द्रवण सुर सुरक। तात विध सावित्री कनक रंग तैण।—र.रू.

२ घबराने या डरने की क्रिया या भाव, डर, घबराहट।

उ०—१ लोगां रै हीयै अस्टपौर मासी रै घर.री सोरकी रैवती। मन सुरक सुरक करतौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै चोरी नीं करनै इज्जत सूं ठायो अपड़लां तौ सावळ! जीव अस्टपोर सुरक सुरक करै।—फुलवाड़ी

३ चिंता, फ़िक्र।

उ०—थूं क्यूं सुरक-सुरक करै, म्हारी अकल माथै थनै भरोसौ कोनीं।—फुलवाड़ी

४ धड़कने या फड़कने की क्रिया या भाव।

उ०—बाप री तौ हाड हाड कुळतौ हो। वो तौ ऐड़ी डरचो कै काळजो सुरक-सुरक करण लागो।—फुलवाड़ी

५ सुड़क-सुड़क कर पानी पीने की क्रिया।

६ देखो 'सुरख' (रू.भे.)

उ०—फजर ऊगा समा गजां नैजा फरक, येळा उड रजी असमांन ढकियो अरक। सुर सब अछर वेताळ नारद हरक, सुतन 'अजमल' कठी नयण कीधा सुरक।—मेघराज आढौ

सुरकणौ, सुरकबौ—क्रि.अ.—१ डरना, घबराना।

२ धड़कना, फड़कना।

३ चिंता होना, सोच करना।

४ सुड़क-सुड़क कर धीरे-धीरे पीना।

५ ऊपर की ओर हवा के साथ धीरे-धीरे खिंचना।

सुरकणहार, हारौ (हारी), सुरकणियौ—वि०।

सुरकिश्रोड़ौ, सुरकियोड़ौ, सुरक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

सुरकीजणौ, सुरकीजबौ—भाव वा०।

सुरकन्या—सं.स्त्री. [सं.] १ देवबाला, देव कन्या।

२ अप्सरा।

सुरकरिप्रसठ—सं.पु. [सं. सुरकरिप्रष्ठ] सूर्य, भानु। (अ.मा.)

सुरकरी—सं.पु. [सं. सुरकरिन्] १ इन्द्र का हाथी।

२ दिग्गज।

सुरकली—सं.स्त्री.—एक रागिनी का नाम। (संगीत)

सुरकांनन—सं.पु. [सं. सुर+कानन] देवताओं का वन, नन्दन वन।

सुरकांमणी, सुरकांमिणी—सं.स्त्री. [सं. सुर+कामिनी] अप्सरा।

उ०—केवी मुद्दर पूठि सुर-कांमिणी, जडाधार पासै व्योम

जोगिणी।—गोकुल राठौड़ री गीत

सुरका-दुरकी–सं.स्त्री.–किसी बात को इधर उधर करने की क्रिया, दौत्य कर्म, चुगली।

उ०—खिलवत हास खुसांमदी, **सुरकादुरकी** सांग। किसव लियां ए कुकवियां, माहव हूता मांग।—बां.दा.

सुरकियोड़ौ–भू.का.कृ.–१ डरा हुआ, घबराया हुआ। २ धड़का हुआ, फड़का हुआ। ३ चिंता या सोच-फ़िक्र किया हुआ। ४ सुड़क-सुड़क कर पीया हुआ। ५ हवा के साथ धीरे-धीरे ऊपर की ओर खिंचा हुआ।

(स्त्री. सुरकियोड़ी)

सुरकी–सं.पु.–सोलंकी राजपूतों की एक शाखा।

सुरकुंभ–सं.पु. [सं.] देवताओं का कलस, देव-घट।

उ०—पूरें प्रभु आस सदा परतख, वदां **सुरकुंभ** किना सुरवक्ष।
—ध.व.ग्रं.

सुरकेतु–सं.पु. [सं.] १ इन्द्र।

२ देवताओं की ध्वजा।

सुरक्ष–सं.पु [सं.] १ एक मुनि।

२ एक पौराणिक पर्वत।

वि.–रक्षित, सुरक्षित।

सुरक्षा–सं.स्त्री. [सं.] १ रक्षा, हिफ़ाज़त।

२ देखभाल, संभाल।

सुरखंडनिका–सं.स्त्री. [सं.] एक प्रकार की वीणा।

सुरख–वि. [फा. सुर्ख] १ लाल, रक्ताभ।

उ०—१ किरमजी रेसम कै तणाव दियैं, जोतिकै वीचतैं **सुरख** डोरि कैसी खुली। तारा मंडळ तैं और धार सुरसती की चली।
—सू.प्र.

उ०—२ वोलीयौ **सुरख** चख कीयां चांपौ वयण, भड़ां पग मांड जोस धर दीण री भुयण। लाभ छत्री धरम वहोससत्रां लयण, गाज नाळं धरर धुवां ढकीयौ गयण।—रिवदांन बारहठ

उ०—३ **सुरख** सरोरुह खंडळियां सुख साजही, कै अरुणोदय कांति रही मिळी राजही।—बां.दा.

२ क्रोध पूर्ण, रोशपूर्ण।

सं.पु–१ तांबा। (अ.मा.)

२ एक प्रकार का शुभ रङ्ग का घोड़ा। (शा.हो.)

रू.भे.—सुरक।

अल्पा;—सुरखौ।

सुरखरू–वि. [फा.] १ सफल, क़ामयाब।

२ सम्मानित।

उ०—लोकां सूं ठीक कीयौ, परदेसै माल विकीयौ। नांणों आयौ। सिगळां सुं **सुरखरू** हूवौ, सरब थोक घरै हुवा।
—सतरी वांधी लिखमी री वात

सुरखांनी–वि.–रक्ताभ, लाल।

उ०—कमळा रेसमी नारंगी पैवंदूका हूंनर अदभूत, रोसनी हमरांनी **सुरखांनी** सहतूत।—सू.प्र.

सुरखाब–सं.पु. [फा. सुर्खाब] १ चकवा नामक पक्षी।

२ लाल परों का पक्षी विशेष।

वि.–लाल।

उ०—नदि नांम अगैं कहता निलाव, **सुरखाब** होय उभळै सताव।
—सू.प्र.

३ ब्राह्मणी बलख।

सुरखिया बगलौ, सुरखिया बुगलौ–सं.पु.–बुगले का भेद विशेष।

सुरखी–सं.स्त्री. [फा. सुर्खी] १ अरुणिमा, लालिमा।

उ०—लड़वा भुज अंबर जाय लगा, जिणवार फुणावण सेस जगा। **सुरखी** मुख मूंछ बुहार चली, किरदंत वराह खड़ी कंवली।
—पा.प्र.

२ नाराज़गी, गुस्सा।

उ०—तद कुंवर क्यूं **सुरखी** कर कही जै हूं पूछूं उवा तौ वात बोलौ नहीं।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ इमारत आदि बनाने में काम आने वाला ईंटों का महीन चूरा।

उ०—पकै ढूंढ़ियां ईंट चूनौ, **सुरखी** हळकी फूल घुट। ठंठेरा लुहारा सारा, लोह चढावै लाल चुट।—दसदेव

सं.पु. [फा. सुर्ख] १ वह घोड़ा जिसकी दुम लाल हो।

२ वह घोड़ा जिसका रङ्ग सफ़ेदी या भूरापन लिये काला हो।

सुरखौ–सं.पु. [फा. सुर्ख] १ लाल रङ्ग का कबूतर।

२ देखो 'सुरख' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—सुत कल्यांण साहि भुज सुजड़ां, अर समहर साझै औनाड़। चुगती चोळ थई चांचाळी, पसरी **सुरखा** हुआ पहाड़।
—धोळूजी बीठू

सुरग—देखो 'स्वरग' (रू.भे.)

उ०—१ भागीरथ सुत जिण तप अभंग, गौ **सुरग** अहुति जिण आंणि गंग।—सू.प्र.

उ०—२ जाजुल गोळा ज्वाळ, गरज जिण काळ उगल्लै। त्रासै **सुरग** पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे.म.

उ०—३ तौ सुरसरी तरंग, कूंची **सुरग** कपाट री। ऐथ पखाळै अंग, जग मैं धिन मांनख जिकै।—बां.दा.

सुरगज–सं.पु. [सं.] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रू.भे.—सुरगय।

सुरगण–सं.पु. [सं.] १ देवगण, देवतागण। (अ.मा.)

२ देखो 'सगुण' (रू.भे.)

उ०—भुख न भागी भेन गयौ, तिण चर तिण तहां जाय। **सुरगण** तिण सुख छाडि करि, यस निरगुण का गुण गाय।—ह.पु.वां.

रू.भे.—सुरियण।

सुरगति–सं.स्त्री. [सं.] १ देवयोनि, दैवीगति ।
 उ०—सती सती सगस लियो रे, पांच मैं सिरदार । चोखी पाली सुरगति सही रे, करसी सेवी पाती रे ।—जयवांणी
 २ भाग्य ।

सुरगनदी–देखो 'स्वरगनदी' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू.भे.) (डि.को; ह.नां.मा.)

सुरगपहाड़–सं.पु. [सं. स्वर्ग-पहाड़] सुमेरु पर्वत ।

सुरगपाताळी–सं.पु.–वह सींग वाला पशु जिसका एक सींग आकाश की ओर तथा दूसरा सींग भूमि की ओर झुका हुआ हो । (अशुभ)

सुरगपुर, सुरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू.भे.)

सुरगबाळी–सं.स्त्री.–कान का एक आभूषण ।

सुरगवेसां, सुरगवेस्या–सं.स्त्री. [सं. स्वर्गवेश्या] अप्सरा ।

सुरगमंदाकनी, सुरगमंदाकिनी—देखो 'स्वरगमंदाकिनी' (रू.भे.)

सुरगय—देखो 'सुरराज' (रू.भे.)
 उ०—सेस हिमालय संग, सुरगय हय नय पय दरस । रुद्र सिलोचय रंग, जय जय लखवरीस जस ।—बां.दा.

सुरगरंद–सं.पु [सं. सुर-गिरि] सुमेरु पर्वत ।

सुरगरंद-माळा–सं.स्त्री. [सं. सुर-गिरी-माला] सुमेरु पर्वत की श्रेणी ।
 उ०—भड़ज बादळ सबळ बीज साबळ झळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार सुरतांण दळ अकळ खूटा वरस, 'माल' हर सीस सुर-गरंद-माळा ।—अजवी बारहठ

सुरगर—१ देखो 'सुरगुरु' (रू.भे.)
 २ देखो 'सुरगिरि' (रू.भे.)

सुरगलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू.भे.)

सुरगवधू—देखो 'स्वरगवधू' (रू.भे.)

सुरगवास—देखो 'स्वरगवास' (रू.भे.)
 उ०—दोनूं बेटा परण्या-पांत्या हा, माईतां री **सुरगवास** व्हियां जणा थाट सूं लारै औसर-मौसर करचा ।—फुलवाड़ी

सुरगवासी—देखो 'स्वरगवासी' (रू.भे.)

सुरगविहारी—देखो 'स्वरगविहारी' (रू.भे.)

सुरगसार–सं.पु. [सं. स्वर्गसार] चतुर्दश ताल के चौदह भेदों में से एक । (संगीत)

सुरगाह–सं.पु.–तोता, कीर । (अ.मा.)
 रू.भे.—सुरगाह ।

सुरगांम–सं.पु. [सं. स्वर-ग्राम] स्वर-ग्राम ।
 उ० अंबपुर नाथ सूं बैठ सनमुख अडर, प्रगट **सुरगांम** उतपति सिधांणी ।—सिवनाथसिंह मेड़तिया री गीत

सुरगादि–सं.पु (ब.व) [सं. स्वर्ग-आदि] स्वर्ग-लोक-समूह ।
 उ०—सप्त पाताळ जीव जंत सुरगादि मैं, सकळ ही देखीया है तांन भागे ।—अनुभववांणी

सुरगापगा–सं.स्त्री. [सं. स्वर्गापगा] स्वर्गगंगा, मंदाकिनी, गंगानदी ।

सुरगापुर, सुरगापुरि–सं.पु. [सं. स्वर्ग-पुर] स्वर्ग धाम, वैकुण्ठ धाम ।
 उ०—१ पार गिराएं झंभराय वस; **सुरगापुर** सुहांवणौ । —वि.सं.सा.
 उ०—२ वीर वटाऊ भाइया, म्हांनै पीहर पंथ वताय । डावी डांडी परहरौ, जीवणौ **सुरगापुरि** जाय ।—वि.सं.सा.

सुरगायक–सं.पु. [सं.] देवताओं के गायक, गंधर्व ।

सुरगायत–सं.पु.–स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुरगारोहण–सं.पु. [सं. स्वर्गारोहण] स्वर्ग या वैकुंठ की ओर किया जाने वाला गमन ।

सुरगाह–सं.पु. [सं. सुर+गाथा] १ देवताओं की कथा ।
 २ देखो 'सुरगह' (रू.भे.)

सुरगि—देखो 'स्वरग' (रू.भे.)
 उ०—रतंन काया **सुरगि** सोहै, छोडि जीव संसार नै । हंसि मिळी मौ मिण करौ इकांयत, मेल्यसी करतार नै ।—वि.सं.सा.

सुरगिर, सुरगिरि, सुरगिरी–सं.पु. [सं. सुरगिरि] सुमेरु पर्वत । (अ.मा; नां.मा; ह.नां.मा)
 उ०—दीठउ **सुरगिरि** क्षीरहरौ, सुमिणइ सिरि रवि चंद । जनमि युधिष्ठिरराय तणइ, मिलीया सुखइ विंद ।—सालिभद्र सूरि
 वि.–पीला ।* (डि.को.)

सुरगी–वि. [सं. स्वर्गीय] स्वर्ग का, स्वर्ग सम्बन्धी ।
 सं.पु.–१ स्वर्ग का निवासी, देवता, सुर । (डि.को.)
 २ देखो 'स्वरग' (रू.भे.)

सुरगीनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू.भे.) डि.को.)

सुरगुण, सुरगुन—देखो 'सगुण' (रू.भे.)
 उ०—१ त्रिगुण न्यारौ नांव है, **सुरगुण** विनां न पाय । किस कुं नदीयै वंदीयै, हरीया पिता'र माय ।—अनुभववांणी
 उ०—२ मन कै भोळै तन गहै, गोविंद भोळै ध्यांन । निरगुन के भोळै करै, हरीया **सुरगुन** ध्यांन ।—अनुभववांणी

सुरगुर, सुरगुरु, सुरगुरू–सं.पु. [सं. सुर-गुरु] १ देवताओं के गुरु, बृहस्पति । (अ.मा.)
 २ बृहस्पति नामक ग्रह । (अ.मा.)
 उ०—१ अनग्रह भवन करूरै आवै,दसमै जो **सुरगुर** दरसावै । दुसह तोड ग्रह जोर न दाखै, रक्षा जीव परख डर राखै ।—रा.रू.
 उ०—२ निरख छठै रिपु ग्रह ससिनंदण, कुळ मातुळ सुख अरी निकंदण । राज भवन **सुरगुर** सुभ राजै, विसव छत्र आंण विराजै । —रा.रू.
 ३ बृहस्पतिवार, गुरुवार ।
 उ०—सोमां सुकरां **सुरगुरां**,जो चंदौ उगंत । डंक कहै सुण भड्डळी, जळ थळ एक करंत ।—वर्षा विज्ञान
 ४ पीतवर्ण, पीला ।* (डि.को.)

रू.भे.—सुरगर, सुरगरि, सुरगुरु, सुरगुरू।

सुरग्यांन, सुरग्यांनी—देखो 'सुग्यांनी' (रू.भे.)

उ०—१ जमुना कै नीरै तीरै, धेनु चरावै सब ही कै **सुरग्यांन**। वंसी वजा मेरौ मन हर लीन्हौ, मार बिरह का बांन।—मीरां

उ०—२ यूं मूजरौ मांनौ प्यारी कौ, संग छोडौ परनारी कौ। सायर **सुरग्यांनी** प्यारा, अवलेखा आवै थारा।—लो.गी.

उ०—३ जद हट बोल्यौ रै दिल्ली कौ बादस्या; कोठै हूं चाल'र आई लोय। **सुरग्यांनण** हूरम कुरणसी कूंटा का यै पड़ चंदा पड़ै।—लो.गी.

(स्त्री. सुरग्यांनण)

सुरग्रह, सुरग्राह–सं.पु. [सं. स्वर+ग्रह] १ वीणा। (अ.मा.)

२ श्रवणेन्द्रिय, कान।

सुरघंट–सं.पु.–वीरघंट।

उ०—अंकुस सीस वणै गुण ऐसौ, जग वेधियौ मघा सनि जैसौ। अनुहरतां **सुरघंट** अपारै, दीपै किरि भल्लरि हरि द्वारै। रा.रू.

सुरघण–सं पु –मेघनाद, इन्द्रजित।

उ०—रिण कुंभ **सुरघण** मार रांवण, कठण खळ जण कीध कण कण।—र.ज प्र.

सुरघाती–सं.पु.–दैत्य, असुर, राक्षस। (अ.मा.)

वि.–देवताओं का नाश करने वाला।

सुरड़—देखो 'सरड़' (रू.भे.)

सुरड़णौ, सुरड़बौ–क्रि.स.–१ कांटेदार छड़ी, बेंत या चाबुक से बुरी तरह पीटना।

उ०—१ विरखा रा विछोव पछै उण माथै कांई-कांई विखौ पड़चौ, किण भांत उणरौ सुभाव बदळियौ, वौ पिणियारचां नै छेड़तौ, घड़ा बेवड़ा फोड़तौ, पछै कीकर मां एक दिन उणनै कांवड़ियां सूं **सुरड़ियौ**।—फुलवाड़ी

उ०—२ मतै ई वोहरा रा मोर सड़िद सड़िद **सुरड़ीजण** लागा कै वौ जोर सूं डाढियौ। चौधरी री वेटौ जाग्यौ जित्तै जित्तै वोहरा रौ आखौ डील वींधीजग्यौ। भाटी तौ उणी भांत सड़िद सड़िद बाजती री।—फुलवाड़ी

२ किसी पौधे या पेड़ की टहनी को हाथ या मुंह (जानवरों द्वारा) में पकड़कर इस प्रकार खींचना कि उसके समस्त फल, फूल या पत्ते एक साथ तोड़ लिये जावें, टहनी को नङ्गा कर देना, सूंतना।

उ०—१ इण निम भरने **सुरड़**, बुरड़ भेळी कर राखै। लरड़ लाय सा भाळ, साल भर सागां नाखै।—दसदेव

उ०—२ खोड़ै खील्हैरी रा चारिया, फुरणियां रा वैसणहार। कूमटै कंकेड़ै रा **सुरड़णहार**, आयवैरा चरणहार।—रा.सा.सं.

३ अनर्गल बोलना।

उ०—सेठां री हूंस हाल मिटी नीं ही। मुधरा मुधरा मुळकता बोल्या—गीगला री मां थांमैं औ इज तौ मोटौ औगण कै बोलता ढवौ ई नीं, **सुरड़ता** ई जावौ।—फुलवाड़ी

४ चाटकर खाना।

५ सञ्चय करना, सञ्चित करना।

क्रि.अ.–खरोंचना या खरोंचें आना।

उ०—दौ च्यारैक धकै आया जियां रा मूंडा तौ **सुरड़ीज्योड़ा** गोडां अर खुणियां सूं लोई चिकै पण घणा खारा घाव नीं लागोड़ा।—चितरांम

सुरड़णहार, हारौ (हारी), सुरड़णियौ—वि०।

सुरड़िओड़ौ, सुरड़ियोड़ौ, सुरड़चोड़ौ—भू०का०कृ०।

सुरड़ीजणौ, सुरड़ीजबौ—कर्म वा०।

सुरड़ियोड़ौ–भू.का.कृ.–१ कांटेदार छड़ी, बेंत या चाबुक से पीटा हुआ।

२ हाथ या मुंह में पकड़कर, सूंतकर फल, फूल या पत्ते तोड़ा हुआ (पेड़, पौधा या टहनी)। ३ अनर्गल बोला हुआ। ४ चाटकर खाया हुआ। ५ सञ्चय किया हुआ, सञ्चित। ६ खरोंचा हुआ या खरोंचें आई हुई।

(स्त्री. सुरड़ियोड़ी)

सुरड़ी–वि.स्त्री.–नाक कटी हुई।

सुरड़ी-बुरड़ी–वि.स्त्री.–नाक-कान कटी हुई, 'बूंची'।

सुरड़ौ–वि. (स्त्री. सुरड़ी) १ नाक-कान कटा हुआ, बूंचा।

२ निर्लज्ज, बेशर्म ?

उ०—संकर सागर हुयगौ **सुरड़ा**, करण मिलै नहीं पांणी कुरड़ा। चोभ मांय ठहरै नहि चुरड़ा, जिण री पाळ पड़ै दस दुरड़ा।—ऊ.क.

सुरचक्र–सं.पु.–सुदर्शनचक्र। (अ.मा.)

सुरचाप–सं.पु. [सं.] इन्द्रधनुष।

सुरचाह–सं.स्त्री.–अग्नि, आग। (अ.मा.)

सुरच्छा—देखो 'सुरक्षा' (रू.भे.)

सुरज–सं.पु –१ एक देव-जाति। (अ.मा.)

२ देखो 'सूरज' (रू.भे.)

उ०—छक बढियौ अणछेह, पमंग चढियौ भुबपत्ती। जांण चढ्यौ जेठ रौ, **सुरज** सपतास सपत्ती।—मे.म.

सुरजण - देखो 'सुरजन' (रू.भे.)

सुरजणौ–सं.पु. [सं. सुरञ्जनः] सुपारी का पेड़।

उ०—आंब आंवळौ **सुरजणौ** मौरसळी भड़ जाय।—रुखमणी मंगळ

सुरजन–सं.पु. [सं.] १ देवगण, देवता लोग, सुरगण।

२ सज्जन, भला।

३ चतुर, बुद्धिमान।

रू.भे.—सुरजण, सुरज्जण।

सुरजमुखी – देखो 'सूरजमुखी' (रू.भे.)

सुरजरठ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू.भे.)

सुरजवंसी—देखो 'सूरजवंसी' (रू.भे.)

सुरजांण-सं.पु.-१ विष्णु ।

२ श्री कृष्ण ।

३ इन्द्र ।

सुरजा-सं.स्त्री. [सं.] १ एक अप्सरा ।

२ पुराणोक्त एक नदी ।

उ०—जगंनाथ गंगासागर हैं, साखी गुपाल व्रजवासी । सेतुबंध रांमेस्वर ईस्वर, मूळ वटी सुरजा सी ।—मीरां

सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू.भे.) (डि.को; नां.मा; ह.नां.मा.)

उ०—१ उमा सहित गण ईस, लच्छि जगदीस पधारै । सावत्री सुरजेठ जती, जंगम अण पारै ।—रा.रू.

उ०—२ हमैं नठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति ग्रीष्म रित मांहे जिकै राजांनां ठाकुरनां सुख जेठ मांहे कहीग्रा तिकै सुख सुरजेठ कहतां इंद्र री ठकुराई पिण नही ऊग्रां राजां रा सुख कहीजै छै । —रा.सा सं.

सुरज्जण—देखो 'सुरजन' (रू.भे.)

उ०—रांवण गुणी मुरार, हार सारखो बभीखण । अमी बंट आसुरां, जोर अत कमी सुरज्जण ।—रा.रू.

सुरज्येस्ट, सुरज्येस्ठ-सं.पु. [सं सुर-ज्येष्ठ] १ ब्रह्मा, विधाता । (नां. मा.)

२ विष्णु ।

३ श्री कृष्ण ।

४ इन्द्र, जो देवताओं में बड़े माने गए हैं ।

रू भे.—सुरजरठ, सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ ।

सुरझणौ, सुरझवौ -देखो 'सुळझणौ, सुळझवौ' (रू.भे.)

उ०—१ दादू सब्दैं ही मुक्ता भया, सब्दैं समझै प्रांण । सब्दैं ही सूझै सबै, सब्दैं सुरझै जांण ।—दादूवांणी

उ०—२ जब समझा तब सुरझिया, उलट समांना सोइ । कछु कहावै जब लगै, तब लग समझ न होइ ।—दादूवांणी

सुरझाणौ, सुरझावौ -देखो 'सुळझाणौ, सुळझावौ' (रू.भे.)

सुरझायोड़ौ -देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुरझायोड़ी)

सुरझावणौ, सुरझाववौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझावौ' (रू.भे.)

उ०—हमनै कहा सुरझावण रांणा, तुम जातै उरझाय रांम । हमनै कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय रांम ।—मीरां

सुरझावियोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुरझावियोड़ी)

सुरझियोड़ौ—देखो 'सुळझियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. सुरझियोड़ी)

सुरटीप-सं.स्त्री. [सं. स्वर+रा. टीप] गायन में स्वरालाप, आलाप; टीप । (संगीत)

सुरण-सं.स्त्री.-१ वह रस्सी जो कुएँ से पानी खींचने वाले पात्र के साथ बँधी हुई हो, नेज, लाव । (शेखावटी)

२ देखो 'सूरण' (रू.भे.)

सुरणा, सुरणाइ, सुरणाई, सुरणाय, सुरणौ—देखो 'शहनाई' (रू.भे.)

उ०—१ तरै भाटी भीमदै आसकरणोत, आसकरण जसहड़ोतरै, भेद दियौ । नै कोई कहै छै, सुरणाई वजाई, तिण में काई वात जणाई ।—नैणसी

उ०—२ सबदां आगै छत्रीस वाजां रा नांम कहै छै । ढोल ६, दमांमा ७, भेरि ८, भूंगळि ९, नफेरी १०, मदन-भेरि ११, सुरणाई १२, झांझ १३........।—रा.सा.सं.

सुरणौ, सुरवौ-क्रि.अ.-अपान वायु का निसरना, पाद आना ।

सुरतंर—देखो 'सुरतर' (रू.भे.)

सुरत-सं.स्त्री. [सं. सु+रतं] १ स्त्री-सम्भोग, रति-क्रीड़ा, सम्भोग ।

उ०—१ पति पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित, सुरत अंत केहवी स्त्री । गजेंद्र क्रीडता सु विगळित गति, नीरासइ परि कमळिनी । —वेलि

उ०—२ जैसै निधवन कहतां सुरत सु भोग कै विखै अस्त्री की लाज सरव सरीर छोडि कै नैत्रां माहै जाय रहै छै । तैसें प्रथी छांडि तळावां पांणी जाय रह्यौ छै ।—वेलि टी.

उ०—३ जिण समैं रा रस कौ किसो छेह, जठै धण जिका धरती मदवौ जिको सांवण रौ मेह, इण भांत सुरत जंग जूटा धाय हुय छूटा ।—र. हमीर

२ लहर, ऊर्मी, तरङ्ग ।

३ अत्यन्त हर्ष, आनन्द या आह्लाद ।

४ न्याय-दर्शन के अनुसार चित्त व शरीर के छः प्रकार के क्लेश यथा भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, लोभ और मोह ।

उ०—एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण दख । च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख ।—र.ज.प्र.

५ पुष्प-गुच्छ जो सिर पर धारण किया जाय ।

[सं. सुरत] ६ अच्छा खिलाड़ी ।

७ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

उ०—१ ध्रुव वन सिधारचौ वचन मारचौ, ध्यांन धारचौ एक ए । तजि पांन नीरु महाधीरु, परा पीरु पेख ए । सव ब्रह्म मंजु उर समंजू, सुरत रंजू तांम ए । ऐसा गोविंदू क्रपासिंधू, दीन बंधू रांम ए ।—करुणासागर

उ०—२ रांणी भारी पगां हीं । रांणी नै किणी सुरत मांनतां नीं देख डांवड़ी रा मन में एक उपाव सूझियौ ।—फुलवाड़ी

रू.भे.—सुरती, सुरत्त, सुरित ।

८ देखो 'स्मृति' (रू.भे.) (अ.मा.)

९ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—१ म्हांरी आद भवांनी यै ! टेर लगाई यै हरकै नांव की

सुरत लगाई यै हरकै ध्यांन की ।—लो.गी.

उ०—२ भजन, यजन कर पिता थांनै पाया । अमर अराध्यां अवनी पै आप आया । सौ सुरत करौ सुर-काज सुधारौ ।—गी.रां.

उ०—३ सुरत सब्द रांमत रची, सुंन सहर घर माय । गेबी आवाजां साधां होय रही, झिळमिळ जोत जगाय ।

—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—४ वा पातसाह आलमगीर हाथी असवार कुरांन मैं सुरत लगाय रयौ है । लारै खवासी मैं मुखनस बैठौ मोरछड़ करै है ।

—द.दा.

सुरतग्रही—सं.पु. [सं.] नाक । (अ.मा.)

सुरतजंग—सं.पु.—रति-क्रिया में होने वाला सङ्घर्ष, रति-क्रीड़ा ।

सुरतटी—सं.स्त्री.—गङ्गा नदी ।

उ०—लाखीकां ऊपरा, चढै भड़ लक्ख सचेळै । जांण जटी चल्लिया, कुंभ सुरतटी समेळै ।—रा.रू.

सुरतपाक—वि.—जिसका चेहरा पवित्र एवं शुद्ध हो ।

सुरतर—सं.पु. [सं. सुरतरु] देव-वृक्ष, कल्प-वृक्ष, मंदार, पारिजात ।

(अ.मा; नां.मा.)

उ०—१ कारण विण जगसूं करै, आठ पोहर उपगार । जांणीजै सुरतर जिकै, मांनव लोक मझार ।—वां.दा.

उ०—२ सत हरचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण । सुरतर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण ।—र.ज.प्र.

रू.भे.—सुरंतर, सुरतरु, सुरतरुवर, सुरांतर ।

सुरतरण—सं.स्त्री. [सं. सुर+तरुणी] अप्सरा ।

उ०—किरण-पत आवियौ, कहै सुण सुरतरण । थियै मत गमजा घिरै थारै ।—द.दा.

सुरतरु, सुरतरुवर—देखो 'सुरतर' (रू.भे.)

सुरतांण—देखो 'सुलतांण' (रू.भे.)

उ०—१ आवै जौ अकलीम, सात हेक सुरतांण रै । नहीं जिका दै नीम, ईछै लेवा आठमी ।—वां.दा.

उ०—२ आयी ऊपर ऊपरा, सुणी खबर सुरतांण । उर अकुळाय पटक्कियौ, सीस खुदाय कुरांण ।—रा.रू.

उ०—३ मेदपाट खुरसांण, आदि बकवाद संभारै । सहि कीध फुरमांण, खांन सुरतांण हकारै ।—गु.रु.वं.

सुरतांणी—देखो 'सुलतांणी' (रू.भे.)

उ०—१ करण भारथ महा महाराजा कमंध, मिळै ... भड तांमगयणि मेळै । चींत सुरतांणी आगळि 'चौंडरज', चैन सुरितांण तिम न कौ चेलै ।—केसोदास गाडण

उ०—२ भागां झाड वीड थीउ पाधर, कादव कीधां पांणी । डूंगर तणां सिखर जिम चालइ, तिम हाथी सुरतांणी ।—का.दे.प्र.

सुरतांणोत—सं.पु.—१ कछवाहा राजपूत-वंश की एक उप-शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२ मेड़तिया राठौड़-वंश की एक उप-शाखा व इसका व्यक्ति ।

सुरतांणौ—देखो 'सुलतांण' (अल्पा; रू.भे.)

उ०—मंडी आस मळेछं, खट्टण खंड द्रुग्ग चितंगौ । कित्ती खंड विहंड, जित्ती हार धार सुरतांणौ ।—रा.रू.

सुरतांत—क्रि.वि. [सं. सुरत=सम्भोग+अन्त] सम्भोग के पश्चात्, मैथुन के पश्चात् ।

उ०—तठा उपरांति करि राजांन सिलांमत रंगमहल मैं प्रेम झड़ लागिनै रही छै । सुरतांत समय हुवौ छै ।—रा.सा.सं.

सुरता—सं.स्त्री.—१ चित्तवृत्ति, बुद्धि ।

उ०—१ पुनि पुन्य उदै भेए पूरब कै, उघरै उर अंक अपूरब कै । सुरता विकसी सरसायन मैं, परि प्रेम पयोनिधि पायन मैं ।

—ऊ.का.

उ०—२ सिली सुरता घस सिद्धि संमद्ध, पिली प्रभुता वस बुद्धि प्रवंद्ध । हिली जुगती जस वार हजार, मिळी मुगती दस द्वार मंझार ।—ऊ.का.

उ०—३ तूं तौ समझि सुहागण सुरता, नारि पलक मेरी रांम सू लगी ।—मीरां

२ आत्मा ।

उ०—कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै । सेहनांण सुगुर तणा सुरता सुणौ, प्रमन की प्रगट कहै ।—वि.सं.सा.

३ लगन, ध्यान ।

४ याद, स्मृति ।

५ देखो 'स्रोता' (रू.भे.)

उ०—१ सुरता अर बकता बौह ग्यांनी, विन गुर गम आतम नहीं जांनी ।—अनुभववांणी

उ०—२ सकळ प्रताप सुरसरी, हरि पद रुद्र सहित । सुरता रांम सुमित्र सुत, वकता विसवामित्र ।—रांमरासौ

६ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

७ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

८ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

सुरतात—सं.पु. [सं.] १ देवताओं के पिता कश्यप ।

२ देवताओं के अधिपति इन्द्र ।

सुरताभीलणी—सं.स्त्री.—एक राजस्थानी लोक-गीत ।

सुरति—सं.स्त्री. [सं. सु+रति] १ जमकर या छककर किया जाने वाला उपभोग, अच्छा भोग ।

२ तसल्ली, सन्तोष ।

३ अप्सरा, देवाङ्गना । (नां.मा.)

४ याद, स्मरण ।

उ०—१ तद घर थी नीसर विलाप करण लागियौ—हा हा प्रियै! केथी गई मोनूं वांणी देय । है प्रियै ! थारा जोवन री सुरति कर जीवूं छूं ।—वैताळ पच्चीसी

उ०—२ हरीया हंसी जीव है, सुन्य सागर विसरांम। सुरति समारी सीपड़ी, निज कन मोती नांम।—अनुभववांणी

५ ध्यान, लगन।

उ०—१ ध्यांन विहूंणा गुर मिळ्या, सुरति विहूंणा सिख। जन-हरीया गुर सिख का, सका मिथ्या न चिख।—अनुभववांणी

उ०—२ लगी सुरति मत सबद सुं, कबहूं खंडै नांहि। जनहरीया मन मिळ रह्या, आर पार पद मांहि।—अनुभववांणी

६ चित्तवृत्ति, बुद्धि।

उ०—सुरति चली आकास कुं, दै जाळंधर बंध। जनहरीया जांह जागीयै, हदि वेहद की संध।—अनुभववांणी

७ आत्मा।

उ०—बंधन तैं निबंध भया, मिळ्या सुन्य घरि जाय। हरीया सुरति'र सबद का, त्रिभैं ध्यांन लगाय।—अनुभववांणी

८ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—जन हरिरांम कहै घट परचा, अखंड एक रांम की चिरचा। घट मैं रांम-नांम लिव लावै, जब तैं सुरति निरत घर पावैं।

—अनुभववांणी

९ ज्ञान।

उ०—अरध उरध कै बीच मैं, हरीया भिळमिळ जोत। सुरति सबद परचा भया, मिळै ओत अर पोत।—अनुभववांणी

१० भावना।

उ०—नर नारी को रूप धरि, नाचै करैं निरत। जनहरीया नारी नहीं, कांमी कांम सुरति।—अनुभववांणी

११ शब्द, ध्वनि, स्वर।

उ०—हरीया पांव न पख बिन, सुरति चढी असमांन। नांव निरंजन पाईयां, न्यारा वेद पुरांन।—अनुभववांणी

१२ परमपद, परमधाम।

उ०—१ उलटा मन असमांण कुं, मिलै त्रिवेणी तट। जनहरीयै जांह मंडीया, सुरति सबद का मट।—अनुभववांणी

उ०—२ सुरति सबद कै मट की, है अजरायल वाटि। जनहरीयै जांह घर कीया, लोक वेद सु फाटि।—अनुभववांणी

१३ प्राण या प्राण-वायु।

उ०—जाळधर बंधा उरधै कंधा, मन अरु पवन मिळंदा है। उलटया है आसण पलटया वासण, सुरति सबद परसंदा है।

—अनुभववांणी

१४ देखो 'स्रुति' (रू.भे.) (ह.नां.मा.)

१५ देखो 'सूरत'।

उ०—१ ओढ़ं लज्या चीर, धीरजि कौ घाघरो। ममता कांकण हाथ, सुरति की मूंदड़ी।—मीरां

उ०—२ महांसूर सुरति निळै अरटै 'सहसमल', मारकां तौ जिसां मिळै जुध मेच। जड़ळतां करै विचि गळै ठहरै जकै, परीवरमाळ जिम हिंडुळै पेच।—सहसमल राठौड़ रौ गीत

१६ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

रू.भे.—सुरत, सुरती, सुरत्त, सुरित।

सुरतिगोपणा, सुरतिगोपना—सं.स्त्री. [सं. सुरतिगोपना] वह नायिका जो रति-क्रीड़ा करके आई हो, परन्तु अपनी सखियों से यह बात छिपाती हो।

सुरतिय—सं.स्त्री. [सुरस्त्री] अप्सरा।

सुरतिवंत—वि. [सं. सुरतिवत्, सुरतिमान्] कामातुर।

सुरती—सं.स्त्री.—१ तम्बाखू के पत्तों का चूरा जो चूना मिलाकर या पान में डालकर खाया जाता है।

२ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

३ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

४ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—१ होटल माई खाणी हिळतां, बिटळां बुरी विचारी रे। मांनव धरम सास्त्र री महिमां, सुरती नहीं संभाळी रे।

— ऊ.का.

उ०—२ अथिर सुख संसार ना जी, कांय अळूजी जी जाळ। वचन सुणी सत गुरु तणा जी; चेतो सुरती संभाळ।—जयवांणी

५ देखो 'सुरता' (रू.भे.)

६ देखो 'स्रुति' (रू.भे.)

सुरत्त—१ देखो 'सूरत' (रू.भे.)

उ०—१ वाहू चळी निरम्मळी, चरव बींभळी सुरत्त। आजै 'करनळ' अक्कळी, (तूं) संवळी रूप सगत्त।—राव सेखो

उ०—२ विदर बुराई बींटिया, विदर वड़ा वाचाळ। विदर पटा लावै सुरत्त, छोगाळा चिरताळ।—वां.दा.

२ देखो 'सुरति' (रू.भे.)

उ०—पही भमंतउ जउ मिळइ, कहै अम्हीणी वत्त। धण कंणयर री कंब ज्यउं, सूकी तोइ सुरत्त।—ढो.मा.

३ देखो 'सुरत' (रू.भे.)

सुरत्थ, सुरत्थी—देखो 'सुरथ' (रू.भे.)

उ०—थंडै काहुळा बिरमीनाद तंडैबै बीरांण थूंथ, मंडकै धुरंदी जोध मट्टां छंडै मांण। सुरत्थां समत्थां जुत्थां खासा भंडां होदां सीस। करी मुंडां तूभ वाळी उमडै केवांण।

—भगतरांम हाडा रौ गीत

सुरत्रिय, सुरत्रिया, सुरत्री—सं.स्त्री. [सं.] अप्सरा, परी, देवाङ्गना।

उ०—१ मिळ सची संग सुरत्रिय समाज, 'जोध' हर वधाया हरख साज।—शि.सु.रू.

उ०—२ सदन कज फरैं अहियां फलां सुरत्रियां। वदन कज वहा सिध फरैं वांसैं।—माहसिंह रावत रौ गीत

उ०—३ हुवै दिव्य देहा, सुरत्री सनेहा। विवांण विराजै, गयं अग्गि गाजै।—सू.प्र.

सुरथ-सं. पु. [सं.] १ पुराणानुसार स्वारोचिष मनवन्तर का एक राजा जिसने सर्वप्रथम दुर्गा की आराधना की थी।
उ०—देवी गाजता दैत ता वंस गमिया, देवी नवै खंड त्रिभुवन तूझ नमिया। देवी वन्न मैं समाधी सुरथ व्रन्नी, देवी पूजतै आस पुरणा प्रसन्नी।—देवि.
२ राजा द्रुपद का एक पुत्र।
३ जनमेजय का एक पुत्र।
४ हंसध्वज का एक पुत्र जो चंपकपुरी का राजा था।
५ सुरथ नामक द्वीप का राजा।
६ एक द्वीप का नाम।
७ सूर्यवंश में रणक नामक राजा का पुत्र, एक सूर्यवंशी राजा।
उ०—तास सुनाव प्रसेनजित तत्र। जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ जत्र। खुद्रक सुतण रिणक्क दहण खळ। हुवौ सुरथ जिण सुत झाळाहळ।—सू. प्र.
८ शस्त्रों से सज्जित सुन्दर रथ।
उ०—लखि फौज तुंग लड़ंग, ऊबंध किर दधि अंग। वणि सुरथ पायक व्रंद, जग जांण दळ जयचंद।—रा. रू.
९ उक्त प्रकार के रथ पर चढ़ने वाला वड़ा योद्धा।
रू. भे.—सुरत्थ, सुरत्थी, सुरथि।

सुरथांण, सुरथांन-सं. पु. [सं. सुर+स्थान] १ देवालय, देव मन्दिर।
उ०—जितै 'जसौ' पह जीवियौ, थिर रहियौ सुरथांण। आंगळ ही अवरंग सूं, पड़ियौ नह पाखांण।—वां. दा.
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
उ०—रिघ नेह वैस पटरांणियां, देह न गाळी दुक्ख मैं। सुरथांन काजि महाराज संगि, मिळी एम सुरमुक्ख मैं।—रा. रू.
रू. भे.—सुरथांनक, सुरांथान, सुरांथांनि।

सुरथांनक-सं. पु.—१ सुमेरु पर्वत। (अ. मा.)
२ देखो 'सुरथांण' (रू. भे.)

सुरथि—देखो 'सुरथ' (रू. भे.)

सुरदारू-सं. पु. [सं.] देवदारू का वृक्ष।

सुरदुंदुभि-सं. स्त्री. [सं.] देवताओं का नगाड़ा।

सुरदेव-सं. पु. [सं.] जैनियों के भविष्यकाल के दूसरे तीर्थंकर का नाम। (स. कु.)
रू. भे.—सूरदेव।

सुरदेवि, सुरदेवी-सं. स्त्री. [सं. सुरदेवी] यशोदा के गर्भ से अवतार लेने वाली योगमाया जो, कंस द्वारा पछाड़ी जाते समय उसके हाथ से छूटकर आकाश में चली गई थी।

सुरदेस-सं. पु. [सं. सुरदेश] स्वर्ग।

सुरदोखी-सं. पु. [सं. सुर+द्वेपिन्] देवताओं का दुश्मन दैत्य, दानव, असुर। (अ. मा.)

सुरद्रुम, सुरद्रुमी-सं. पु. यौ. [सं. सुरद्रुम] देववृक्ष, कल्पवृक्ष।

सुरद्रोही-सं. पु. यौ. [सं.] १ असुर, दैत्य, दानव, राक्षस। (अ. मा.)
२ रावण, दशानन। (अ. मा.)
३ यवन, मुसलमान।
उ०—सुरद्रोही जाग्रत सुपन, प्रगट लखै उतपात। वार सुरंगी वीच तै, करै विरंगी वात।—रा. रू.
रू. भे.—सुरध्रोही।

सुरद्वार-सं. पु. यौ. [सं.] स्वर्ग-द्वार।
उ०—देवारी सुरद्वार, अडियौ अकवरियौ असुर। लड़ियौ भड़ ललकार, पोळां खोल 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढ़ौ

सुरद्विप-सं. पु. यौ. [सं.] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
२ देवताओं का हाथी।

सुरधनुख, सुरधनुस-सं. पु. यौ. [सं. सुर+धनुष] इन्द्रधनुष।

सुरधरम-सं. पु. [सं. सुर+धर्मी] वृहस्पति। (अ. मा.)

सुरधांम-सं. पु. [सं. सुरधामन्] स्वर्ग।
उ०—परी वर होय विमांण पधारि। मिळै सुरधांम आरांम मझारि।—सू. प्र.

सुरधि-सं. स्त्री.—१ सफाई, स्वच्छता, शुद्धि।
२ अशुद्ध को शुद्ध करने का भाव, शुद्धि।
उ०—उच लगन लखि रिखि अरधि। सब कूंण प्राचिय सुरधि।—रा. रू.

सुरधुनी-सं. स्त्री. [सं. सुर+ध्वनी] गंगा नदी।

सुरधेन, सुरधेनु-सं. स्त्री. [सं. सुर+धेनु] १ इच्छित फल देने वाली देवताओं की वह गाय जो समुद्र मंथन से निकलने वाले १४ रत्नों में से एक थी, कामधेनु।
उ०—१ राजा तिण नगरी तणौ होजी, मछरालौ महसेन। मांनी महिपति अछै सभा दौ सुभमती होजी, दायक जिम सुरधेन।—वि. कु.
उ०—२ धेन पूज सुरधेन, विमधु चरणांम्रत वंदां। धनुख मांण न्रप कळप, संख जस मद्द विरद्दां।—रा. रू.
२ वशिष्ट मुनि की शवला नामक (नंदिनी) गाय जिसके लिये विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

सुरध्रमरिम-सं. पु. [सं. सुर+धर्म+रिपु] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस। (नां. मा.)

सुरध्रोही—देखो 'सुरद्रोही' (रू. भे.) (नां. मा.)

सुरनगर-सं. पु. [सं.] स्वर्ग।

सुरनद, सूरनदि, सुरनदी-सं. स्त्री. [सं. सुरनदी] १ गंगा नदी। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—पोसप्प पांन कपूर प्रिथवी, वणात जण धन वांन ए। इधकार तीरथ जात उद्दम, आदि सुरनदि आंन ए।—रा. रू.
२ आकाश गंगा।

सुरनयर—देखो 'सुरनगर' (रू. भे.)

उ०—'असनाह' नृप दुख हरण आयां, जोधपुर सुख जांणियै।
सुरनयर की कविलास सोभा, वाधि तास वखांणियै।—रा. रू.

सुरनरजयकारी–सं. पु. यौ.—वह घोड़ा जिसका समस्त शरीर श्वेत हो और एक कान श्यामवर्ण का हो। ऐसा माना जाता है कि ऐसे घोड़े के स्वामी में देवताओं को जीतने की भी शक्ति आ जाती है। (शा. हो.)

सुरनाथ–सं. पु. [सं.] इंद्र, सुरपति।
उ०—१ सुरनाथ त्रितापुर साखियात। प्रगटै कि सस्त्र रव वज्रपात।—रा. रू.
उ०—२ माथ पगां सुहनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै।
—र. ज. प्र.
रू. भे.—सुरनाह।

सुरनाथरथ–सं. पु. [सं.] इंद्र का हाथी, ऐरावत। (अ. मा.)

सुरनायक–सं. पु. [सं.] १ ईश्वर, परमात्मा। (ह. नां. मा.)
२ विष्णु। (नां. मा.)
उ०—सुनरायक सेव्य समृद्धि वहै, बळ वायक तैं वंज व्रिद्धि वहै।
नव नैनन मैं नव निद्धि वहै, सब हाजर रिद्धिय सिद्धि वहै।
—ऊ. का.

सुरनारी–सं. स्त्री. [सं.] देवबाला, देवांगना, अप्सरा।

सुरनाह—देखो 'सुरनाथ' (रू. भे.)

सुरनैज–सं. पु. [सं सुर+नदी+ज] पितामह भीष्म, गांगेय।
उ०—धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सौ सूरां सिर सेहरौ, नर पुंगव सुर-नैज।—बां. दा.

सुरप, सुरपत, सुरपति, सुरपती–सं. पु. [सं. सुरप, सुरपति] १ देवताओं का राजा इन्द्र, सुरराज। (अ. मा; डि. को.)
उ०—१ लहर हेक दीधी लछीस यांनक लंकसा। सुज पय नमै अविच्ळ सीस सुरप असंकसा।—र. ज. प्र.
उ०—२ सेवैं पुरुख सुपह पह सुमनस, सुमनस सेवैं सुरप सुवेस। सेवैं सुरपतादि उर ईसर, ईसर तौ सेवै अवधेस।—र. रू.
उ०—३ रट नर अधिका राज, राजां अधिका सुर रटैं। सुरां अधिक सुरराज, अवधेसर सुरपत अधिक।—र. ज. प्र.
उ०—४ ब्रह्मा बिसन सेस सिव नारद, नर सुरपति लै आदि। गिरही रिखवदेव औतारा, और की कौन मुनादि।—अनुभववांणी
२ विष्णु।
३ दुर्गा, देवी। (क. कु. बो.)
४ पार्वती। (,,)
५ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (डि. को.)
६ टगण के द्वितीय भेद का नाम। (र. ज. प्र.)
७ आदि गुरु त्रिकळ मात्रा का एक नाम।
रू. भे.—सुरंपति, सुरपती, सुरपत्ती, सुरांपत, सुरांपति, सुरापत सुरापति, सुरापती।

सुरपतगुरु, सुरपतिगुरु–सं. पु. यौ. [सं. सुरपतिगुरु] बृहस्पति।

सुरपतिचाप–सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रधनुष।

सुरपतितनय–सं. पु. [सं.] १ इन्द्र का पुत्र, जयंत।
२ अर्जुन।

सुरपतिपाट–सं. पु.—इन्द्रासन। (नां. मा.)

सुरपती, सुरपत्ती—देखो 'सुरपति' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ चालेवौ चक्रवती, निजर सुरपती निहारै। भाग धन्य भूपती, एम सोभाग उचारै।—रा. रू.
उ०—२ तिलोतमा मैणका सची, उरवसी सरोतरि। सुरपत्ती सेवतां, ईढ न धरै तिण औसरि।—रा. रू.

सुरपथ–सं. पु. [सं.] आकाश, आसमान। (अ. मा.)

सुरपरवत–सं. पु. [सं. सुर+पर्वत] सुमेरु पर्वत।

सुरपाज, सुरपाजा–सं. पु.—श्रीरामचन्द्र, श्रीराम। (नां. मा.)

सुरपादप–सं. पु [सं] कल्पवृक्ष, देववृक्ष।

सुरपाळ, सुरपाळक, सुरपालक–सं. पु. [सं. सुरपाल, सुरपालक] १ इन्द्र, सुरराज।
२ पीतवर्ण। (डि. को.)
वि.—देवताओं की रक्षा या पालन करने वाला।
उ०—देवी दांनवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिधं सेवी।—देवि

सुरपीर—देखो 'सुड़पी' (रू भे.)

सुरपी–रसं. पु.—देवताओं के पूजनीय, देव पूज्य।
उ०—वळि वळ वळी महावतां, आराधे सुरपीर। छरिति मंदोपति छोडिया, किरि गिरि अट्ठ सरीर।—रा. रू.

सुरपुर–सं. पु. [सं.] १ अमरावती, स्वर्ग, वैकुण्ठ।
उ०—१ सुरपुर तूं गयौ अभिनवा 'सेखा' सुजस राखि वर स्यांम सनाह।—बां. दा.
उ०—२ सुर करैं हरख वरखै सुमन, अमर तरणि धिन उच्चरै। नर भुवण हूंत सतियां नृपति, सुरपुर मारग संचरै।—रा. रू.
२ किसी विषय, घटना या बात की गुप्त रूप से या दबी जबान से चलने वाली चर्चा, जिक्र, गुप्त वार्ता।
उ०—१ इण बात री सुरपुर वांणियै सुणी तौ बौ मांय रावळा मैं सीधौ ठकरांणीसा' रै पाखती गियौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ कालै थारै भाग रौ म्हैं निपटनै पाछौ आवतौ हौ कै एक वांटका लारै म्हैं दो लुगायां री सुरपुर सुणी।—फुलवाड़ी
३ गुप्त मंत्रणा।
उ०—पछै घड़ी भर तांई दोनूं लोग लुगाई सुरपुर करता रह्या।
—फुलवाड़ी
४ फुसफुसाहट, अस्पष्ट आवाज।
उ०— बरसाळी मैं ऊभा चोर साळ मैं सुरपुर सुणी तौ किंवाड़ रै पाखती कांन लगाय ब्यांनै नूं सुणण लागा।—फुलवाड़ी

५ भनक।

उ०—उण देस री राजा अदल न्यायी हौ। इण सौदा री **सुरपुर** ई सुणली तौ पीढियां री कमाई तक खोस लेवैला।—फुलवाड़ी

६ खवर।

उ० च्यारू टाट्या सिरदारां री गत विगड़ी उण सूं चौगणी **सुरपुर** उण रै कांनां पूगगी ही।—फुलवाड़ी

७ उड़ती खवर, अफवाह।

उ०—इण गवाड़ी राजाजी री ढूक नीं व्ही जित्तै कित्ता मिनख प्रीत करण री स्वांग रचियौ, पण राजाजी री **सुरपुर** सुणतां ई एक ई इण गवाड़ी साम्ही मूंडौ नीं करियौ।—फुलवाड़ी

८ चक-चक।

उ०—जांनियां रै डेरा सूं ठौड़ ठौड़ **सुरपुर** सळवळण लागी कै वींदराजा नै किणी काळजीभा री निजर लागगी। तपास करनै उणरी जीभ डांभौ।—फुलवाड़ी

९ चर्चा, वात, जिक्र।

उ०—मेड़ी रै वारणै ऊभा धणी नै अबै जावतां चेतौ व्हियौ पण चेतौ वावड़तां ई जकी **सुरपुर** कांनां सुणीजी तौ जांणै काळजा मैं अणचीती सुरंग छूटी।—फुलवाड़ी

१० विचार-विमर्श, सलाह।

उ०—खिलकौ जोवण सारू गांव रा सगळा बूढा-ठाडा चोवटै अेकठ होय **सुरपुर** करण लागा।—फुलवाड़ी

सुरपुरनाथ, सुरपुरनाह—सं. पु. यौ. [सं. सुरपुरनाथ] इन्द्र। (अ. मा.)

सुरपुरी—सं. स्त्री. [सं.] देवताओं की पुरी, स्वर्ग, वैंकुण्ठ।

सुरपोढणी—सं. स्त्री.—आसाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। यह दिवस भगवान के शयन करने का माना जाता है।

सुरप्रिय—सं. पु. [सं.] १ इन्द्र का एक नामान्तर।

२ वृहस्पति का एक नामान्तर।

वि.—जो देवों को प्रिय हो।

सुरफांकताल—सं. स्त्री.—मृदंग की एक ताल।

सुरवंधु—सं. पु. [सं.] दैत्य, दानव। (डिं. को)

सुरबांग—सं. स्त्री. [सं. स्वर+फा. बांग] अजान की आवाज।

उ०— सुर झालर घटां सरसाया। महजीतां **सुरबांग** मिटाया।
—रा. रू.

सुरवांणी—सं. स्त्री. [सं. सुर+वाणी] देव भाषा, संस्कृत।

उ०—साच वाच संभळै, सोचि वोलै **सुरबांणी**। जीहा जपि जीकार, कथा ध्रम सिध कहांणी।—वि. सं. सा.

सुरवाळ, सुरवाळा—सं. स्त्री. [सं. सुरवाला] देवांगना, अप्सरा।

उ०—वरै सुज हिंदु वरै **सुरवाळ**। चलै सुख हूर धरै चुंगलाळ।
—रा. रू.

रू. भे.—सुरवाळी।

सुरवाळी—सं. स्त्री.— १ पृथ्वी, धरती। (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'सुरबाळ' (रू. भे.)

सुरभंग—सं. पु. [सं. स्वर+भंग] १ एक प्रकार का रोग जिसके कारण स्वर बैठ जाता है और भर्राई हुई आवाज निकलती है।

२ उच्चारण में होने वाली बाधा।

३ साहित्य में एक सात्विक अनुभाव जिसमें हर्ष, भय, क्रोध आदि के कारण स्वर में रूपान्तरण हो जाता है।

सुरभख—देखो 'सुरभिक्ष' (रू. भे.)

उ०—मेटै दुरभक मुरधरा, **सुरभख** चारू चाळ। रायपाळ पायौ विरद, महींरेलण घणमाळ।—पा. प्र.

सुरभमण, सुरभवन—सं. पु. [सं. सुर+भवन] १ स्वर्ग, वैकुण्ड।

२ देवस्थान, मंदिर, देवालय।

रू. भे.—सुरभुयण, सुरभुवण।

सुरभाका, सुरभाख, सुरभाखा—सं. स्त्री. [सं. सुर+भाषा] संस्कृत भाषा, देववाणी। (अ. मा.)

उ०—१ संसक्रत है **सुरभाख**, आदि पहिला उच्चारू। सुजि भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारू।—सू. प्र.

उ०—२ भाखा व्रज मारू **सुरभाखा**, भाखा प्राक्रत जांन भर। पायौ रचण रूपगां पैंडौ, 'मेहाही' थारी महर।—वां. दा.

सुरभि—सं. स्त्री [सं. सुरभिः] १ वसंत ऋतु।

२ महक, सुगंध, खुशवू।

उ०— पुहप **सुरभि** पांचैवरण, वरखा करण विसेख।—ध. व. ग्रं.

३ गौ, गाय।

उ०— **सुरभि** रसा नूं स्यांम मौ, खंड खगट खाटेह। स्रोण साड़िदै सावरत, विप्रां नित वांटेह।—रैंवतसिंह भाटी

४ पृथ्वी, धरती। ५ शराब, मदिरा।

६ अष्ट मातृकाओं में से एक।

७ वन तुलसी।

८ एक प्रकार की सुगंधित घास।

९ साल वृक्ष की राल।

१० गंधक।

११ कस्तूरी।

१२ हरीतकी, हर्रे।

सं. पु.—१३ चैत्र मास, मधुमास।

१४ चंदन।

१५ पुष्पहार।

१६ नारियल।

१७ चपक वृक्ष।

१८ समी वृक्ष।

१९ कदंव वृक्ष।

२० जातिफल, जायफल।

२१ मोतिया बेला ।

२२ सुवर्ण ।

वि. [सं. सुरभि] १ महकदार, खुशबूदार, सुगंधित ।

उ०—१ छट्ठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुस्पमाल । गुण गुंथी धापी गलें, जेम टलें दुख जाल ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नै मंद । गगन वस्त्र जाम कहीयै, तजै तिमिर नो फंद ।—वि. कु.

२ मनोहर, सुन्दर ।

३ ग्रानन्ददायक, प्रिय ।

४ चमकदार, चमकीला ।

५ प्रेम पात्र ।

६ प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित ।

७ बुद्धिमान, पंडित, विद्वान ।

८ पुण्यात्मा, नेक ।

९ जवान, युवा ।

रू. भे.—सरभि, सुरभि, सुरभी, सुरभेई, सुरम्भी, सुरह, सुरहि, सुरही, सुरिहि, सोरभेई ।

सुरभिक्ष, सुरिभख–सं. पु. [सं. सुरभिक्ष] १ वह समय जब वर्षा अच्छी होने के कारण अन्नादि की फसल अच्छी होती है, दुरभिक्ष का उल्टा, सुकाल ।

२ अधिक वर्षा ।

रू. भे.—सुरभख ।

सुरभिगंध–सं. स्त्री. [सं.] सुगंध, खुशबू ।

सुरभितनय–सं. पु. [सं.] १ बैल ।

२ सांड ।

३ बछड़ा ।

सुरभितन्या–सं. स्त्री. [सं.] १ गाय, गौ ।

२ गाय की बछिया ।

सुरभिमास–सं. पु. [सं.] चैत्रमास, मधुमास ।

सुरभी—देखो 'सुरभि' (रू भे.)

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.) (अनेका.)

उ०—१ सुरभी गोवर पाक, करै ग्रोखर चहुंग्रारां । काया पाक किम कहां, भोत मळ भरी विकारां ।—वि. सं. सा.

उ०—२ सुरभियां चरावौ संग लावौ सखा, छैल ग्रावौ कदम तणी छांहीं । पोख हित वेल गावौ चरित पेम रा, मुरलिका सुणावौ घोख मांहीं ।—बां. दा.

सुरभुवण, सुरभुवण—देखो 'सुरभवन' (रू. भे.)

सुरभूखण—देखो 'सुरभूसण' (रू. भे.)

सुरभूप–सं. पु. [सं.] इन्द्र, सुरेश ।

२ विष्णु ।

सुरभूसण–सं. पु. [सुर+भूसण] देवताओं के पहनने का एक मोतियों का हार जो एक हजार दानों का चार हाथ लम्बा होता है ।

रू. भे.—सुरभूखण ।

सुरभेई, सुरम्भी—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (अ. मा.)

सुरमंडप–सं. पु. [सं.] देवालय, मंदिर । (अ. मा.)

सुरमंडळ–सं. पु. [सं. सुरमंडल] १ देवसमाज, देवगण ।

२ देवताओं की सभा, मण्डली या गोष्ठी ।

३ मिजराव से बजाया जाने वाला एक तार वाद्य ।

सुरमंत्री–सं. पु. [सं. सुरमंत्रिन्] बृहस्पति ।

सुरमंदिर–सं. पु. [सं.] देवालय, देवस्थान ।

सुरम–सं. स्त्री.—घोड़े की ललाट पर होने वाली एक भंवरी (चक्र) जो शुभ मानी जाती है । (शा. हो.)

२ देखो 'सुरम्य' (रू. भे.)

सुरमण–सं. स्त्री. [सं. सुरमणम्] रतिक्रीड़ा ।

उ०—मैली तदि साथ सुरमण कोक मनि । रमण कोक मनि सीघ्र रही ।— वेलि.

सुरमणि, सुरमणी–सं. स्त्री. [सं.] चिंतामणि ।

सुरमांनी–वि. [सं. सुरमानिन्] अपने को देवता समझने वाला ।

सुरमाग–सं. पु. [सं. सुर+मार्ग] देवताओं का मार्ग, आकाश, गगन ।

उ०—घिरी घर ग्रीधांणि चील्ह अघाय, अंत्रावळि नाड़ि नखां उळझाय । माळा उड जोत लसी सुरमाग, चसी रण ग्रांगण जोत-चराग ।—मे. म.

रू. भे.—सुरमारग ।

सुरमाता, सुरमात्ता–सं. स्त्री. [सं. सुरमातृ] सरस्वती, शारदा ।

(अ. मा.)

सुरमादांनी–सं. स्त्री.—धातु या लकड़ी की डिबिया जिसमें सुरमा रखा जाता है, सुरमे की शीशी ।

सुरमारग—देखो 'सुरमाग' (रू. भे.)

सुरमुक्ख, सुरमुख, सुरमूख–सं. पु. [सं. सुरमुख] अग्नि, आग ।

उ०—१ सुरमुख करै सनांन, पंथ सुरपुर कै हालो । दियो नहीं जमवाद, खांवंद संग कियो 'खुसाली' ।—अरजुन जी बारहठ

उ०—२ रिमां दळ बीच 'जसौ' इण रूख । समूद्रह बीच जिसौ सुरमुक्ख ।—सू. प्र.

उ०—३ रवि नेह बैस पटरांणियां । देह न गाळी दुक्ख मैं । सुरथांन कान्ह महाराज संगि, मिळी एम सुरमुक्ख मैं ।—रा. रू.

उ०—४ विप्र वेद मंत्र विधवत विचार । ग्राहुत वेद सुरमुख अपार ।—सू. प्र.

उ०—५ दया धरम दी वेल, वाट गुर ग्यांन बणावै । रांम चरण चित राख, जाप सुरमूख जगावै ।— जगो खिड़ियो

रू. भे.—सुरांमुख, सुरासुख

सुरमो–सं. पु. [फा. सुर्मः] एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आंखों में अंजन की तरह डाला जाता है ।

उ०—१ और सहेली म्हांरी मैंहंदी मांडी। नैणां सुरमौ सारचौ।
—लो. गी.

उ०—२ वडी वडी आखियां भीणा भीणा सुरमा ज्योत सी ज्योत मिळाइ लेती।—मीरां

उ०—३ चौथै फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपियां, सुरमा री डवियां, काजळ री कूंपळियां, स्नोपाउडर री डवियां...।
—अमरचूंनड़ी

सुरम्य—वि. [सं.] अत्यन्त मनोरम, सुन्दर, रमणीक।

रू. भे.—सुरम।

सुरयंद, सुरयंद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

उ०—सुकिया मिळ जूथ अनेक करै सुख। रविनांम नरंद सुरयंद तणी रुख।—सू. प्र.

सुरयांन—सं. पु. [सं. सुरयान] देवताओं का रथ।

सुरयिंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

सुरयौ—सं. पु.—वछड़ा, बच्छ। (अ. मा.)

सुररंग—सं. पु.—फूल, पुष्प। (अ. मा.)

सुररख्खव—सं. पु. [स. सुरर्षभ] इन्द्र। (नां. मा.)

रू. भे.—सुररिखभ, सुररिखव।

सुररांण, सुररांणी—सं. स्त्री. [सं. सुर+राज्ञी] १ पार्वती, गिरिजा।
(अ. मा.)

२ दुर्गा, देवी।

उ०—१ रीझ एम कहियौ सुररांणी। भूपति वर मांगौ मन भांणी।—सू. प्र.

उ०—२ रांणमरी वाजी रहै, जद भव जीतौ जांण। धोळां रौ रखसी धरम, 'सचियादै' सुररांण।—पा. प्र.

३ इन्द्राणी, शची।

उ०—आय वइठा माथा तणइ आगळि, भरिया थाळ रतन वहु भांति। सनमुख हुए कहउ सुररांणी, अवचळ गवरि तणउ अहवाति।—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सुरांण, सुरांणी, सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुरांराव।

सुरराइ, सुरराई, सुरराज—सं. पु. [सं. सुर+राजा] १ देवताओं का राजा, इन्द्र।

उ०—१ भूप रूप रतिराज, प्रांण अगराज प्रकासण। कौरवराज धन करण, विमळ सुरराज विलासण।—सू. प्र.

उ०—२ हिय लोभ धरौ धख पुन्य धरौ। क्रत ऊंच करौ सुरराज सरौ।—र. ज. प्र.

२ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—घट घट घणनांमी स्वांमी सुरराई। अंतरजांमी हुय ओळज न आई।—ऊ. का.

सं. स्त्री.—३ देवी, दुर्गा, पार्वती।

४ पूर्व दिशा।

५ श्यामापक्षी।

६ भैरवी (कोचरी पक्षी)

वि.—१ श्वेत। ꕥ

२ श्याम। ꕥ

रू. भे.—सुरराजा, सुरराय, सुरराव, सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुरांराव।

सुरराजगज—सं. पु. यौ. [सं.] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

२ श्वेत। ꕥ (डिं. को.)

३ कृष्णा, श्याम। ꕥ (डिं. को.)

सुरराजगुरु—सं. पु. यौ.—१ वृहस्पति।

२ पीत, पीला। ꕥ (डिं. को.)

सुरराजा, सुरराय, सुरराव सुरांराय—देखो 'सुरराइ' (रू. भे.)

उ०—१ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकत वांम सुरराय, सोम दाहिणै संभारै।—रा. रू.

उ०—२ राखियौ निजपुर राय, सुरराय जेण सुहाय। जग कमण फेरै जाव, कळ अकळ 'सेर' नवाव।—रा. रू.

उ०—३ कई सुरराय डकाय कंठीर, वणै छवि छूटक मूंठ अवीर।
—मे. म.

उ०—४ धुरा तू सुरांराय नौ नांम वेई।—मे. म.

सुररास—सं. पु. [सं. स्वरराशि] मुख, मुंह। (अ. मा.)

सुररिखभ,—देखो 'सुररख्खव' (रू. भे.)

सुररिखभवन—सं. पु. यौ. [सं सुरर्षभवनं] स्वर्ग। (ह. नां. मा.)

सुररिखव—देखो 'सुररख्खव' (रू. भे.) (अ. मा.)

सुररिप, सुररिपु—सं. पु. [सं. सुररिपु] देवताओं का शत्रु, दैत्य, दानव असुर, राक्षस। (नां. मा.)

सुररूंख—सं. पु. [सं. सुरवृक्ष] कल्पवक्ष।

सुररिसी—सं. पु. [सं. सुर+ऋषि] देवर्षि।

सुरळक—देखो 'सीवल' (शेखावाटी)

सुरललिता—सं. स्त्री.—श्वेत, सफेद। ꕥ (डिं. को.)

सुरळा—सं. पु.—थूंक।

ज्यूं—संख वजै नै सुरळा उडै।

सुरळियांमणा—वि. [सं. स्वर+रा.+रळियांमण] १ कर्णप्रिय, मधुर मीठा।

उ०—गावइ गीत सुरळियांमणा, जिणवर ना लीजइ भांमणा।
—स. कु

२ मनोहर, सुन्दर।

सुरळियौ—सं. पु.—१ एक आभूषण विशेष।

उ०—वीनणी आवै रांमलौ कदैई वैरौ वोरियौ तौ कदैई सुरळियै पार कर देवै।—वरसगांठ

२ कान का आभूषण विशेष।

सुरलोक, सुरलोकि—सं. पु. [सं. सुरलोक] स्वर्ग, वैकुण्ठ। (नां. मा.

उ०—१ दग हीज वंस में भटनेरपुर रै अधीस जसराज सोनगिरै कही वार जवनां री जोरदार कटक भांजियौ और अंतरै समय आप री पत्नी री मस्तक गळै बांधि धारा चढि टूक टूक होय सुरलोक में निवास कीधौ।—वं. भा.

उ०—२ झळहळ सेड़ि विवांण झोकां। सुर हुय इम जाऊं सुरलोकां।—सू. प्र.

रू. भे.—सुरांलोक।

सुरवइ–सं. पु. [सं. सुरपति, प्रा. सुरवइ] १ इन्द्र।

उ०—दीठउ सुरगिरी क्षीर हरी, सुमिणइ सिरि रवि चंद। जनमि युधिष्टरराय तणइ, मिनीया सुरवई विंद।—सालिभद्र सूरि

२ देवता।

उ०—धनुष्य चडावीउ भूयगणि भमडं, इच्छा छइ मन माहि। वइ-ठउ दीठउ हाथिणीयं, सुरवइ सुमिणा माहि।—सालिभद्र सूरि

सुरवधू–सं. स्त्री. [सं.] देवांगना, अप्सरा।

सुररिखभवन–सं. पु. [सं. सुर+ऋषभ=श्रेष्ठ+वन=आवासस्थान]

१ स्वर्ग, वैकुण्ठ। (ह. नां. मा.)

२ नन्दन-वन।

सुरवर, सुरवरि–सं. पु. [सं. सुरवर] देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र।

उ०—धूलि मिलीय झलमलीय, सयल दिसि दिणयरु छाइउ। गयणी दूंदुभि द्रमद्रमीय, सुरवरि जसु गाईउ।—सालिभद्र सूरि

सुरवल्लभा–सं. स्त्री. [सं.] १ सफेद दूब।

२ देवांगना, अप्सरा।

सुरवल्ली–सं. स्त्री. [सं.] तुलसी।

सुरवां–सं. पु. [सं. स्वर] आवाज, कोलाहल, शोर।

उ०—कैसो लगै सुवावणो, धुरवां धुरवां कंत। जळ झुरवां सुरवां करै, मुरवां-गण महमंत।—अग्यात

सुरवांणी–सं. स्त्री. [सं. सुरवाणी] १ देव वाणी।

२ संस्कृत भाषा।

उ०—कर सेचां तांणी चूंदी कांणी, सुरवांणी सोकंदा है।

—ऊ. का.

सुरवांम, सुरवांमा–सं. स्त्री. [सं. सुर+वामा] देवांगना, अप्सरा।

उ०—द्रुति ज्यां विघन करण तप दांमा। विदा कीध सुरपति सुरवांमा।—सू. प्र.

सुरवास–सं. पु. [सं.] स्वर्ग वैकुण्ठ।

सुरविटप–सं. पु. [सं.] कल्पवृक्ष।

सुरवीण, सुरवीणू–सं. स्त्री. [सं. स्वर+वीणा] एक प्रकार का तार वाद्य।

उ०—देवनूं कै मन भूलतै डोलतै है अदगूं कै परन धौलकूं कै टिकोर। सुरवीणूं कै झणहण तंबूरूं कै घोर।—सू. प्र.

सुरवीथी–सं. स्त्री. [सं.] नक्षत्रों का मार्ग।

सुरवीर–सं. पु. [सं.] १ इन्द्र।

२ देखो 'सूरवीर' (रू. भे.)

सुरवेस्म–सं. पु. [सं. सुरवेश्मन्] स्वर्ग, देवलोक।

सुरवेस्या–सं. स्त्री. [सं. सुरवेश्या] अप्सरा। (डिं. नां. मा.)

सुरवैरी–सं. पु. [सं. सुर वैरिन्] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस।

सुरव्रक्ष, सुरव्रख–सं. पु. [सं. सुर+वृक्ष] कल्पतरु। (अ. मा.)

उ०—पूरै प्रभु आस सदा परतख, वदां सुरकुंभ किना सुरव्रक्ष।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—सुरव्रिक्ष, सुरव्रिख, सुरव्रिछ।

सुरव्रतक–सं. स्त्री. [सं. सुरवृतक] अग्नि, आग। (डिं. को.)

सुरव्रिक्ष, सुरव्रिख, सुरव्रिछ—देखो 'सुरव्रक्ष' (रू. भे.)

सुरव्रिति–सं. स्त्री. [सं. सुर+वृति] देव-पूजन, गणेश-पूजा।

उ०—सुभ छवि मांडह नयर सचेळी। सुरव्रिति मिळण थयो सांम्हेळी।—रा. रू.

सुरसंत—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

सुरसंपति, सुरसंपती–सं. स्त्री. [सं. सुरसम्पति] कल्पवृक्ष। (अ. मा.)

सुरस–वि. [सं.] १ रसीला, रसदार।

२ मधुर, मीठा।

३ सुन्दर, मनोहर।

४ स्वादिष्ट, सरस।

सुरसख–सं. पु.—देवताओं का सखा, इन्द्र।

सुरसत—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ मासी री जीभ माथै जांणै सुरसत ई आय बिराजगी व्है। उण रा एक एक बोल मैं इमरत घुळियोड़ो हो।—फुलवाड़ी

उ०—२ मांमै गढ री दरवाजौ ढावियौ तौ भांणेज सिरै ड्योढी में डेरा किया। कवियां री वांणी माथै सुरसत आय विराजी।

—अमरचूंनड़ी

सुरसतजनक–सं. पु. यौ.—ब्रह्मा। (डिं. को.)

सुरसती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—१ ससतगि ओऊंकार, वेद लिखि उवरि मेळा। गंग जमनां सुरसती, वीणी नाद विदं का मेळा।—वि. सं. सा.

उ०—२ जोति कै बीच तै सुरख डोरि कैसी खुली। तारा मंडळ तै और धार सुरसती की चली।—सू. प्र.

सुरसत्रु–सं. पु. [सं सुर+शत्रु] असुर, दैत्य, दानव, राक्षस।

सुरसदन–सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुरसद्म–सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुरसर, सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता, सुरसरी–सं. स्त्री. [सं. सुर-सरित्] गंगा नदी। (डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ सुरसर सुजळ न्रमळ, संजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दंद।—र. ज. प्र.

उ०—२ अत सीतळ उतराद सूं, ऐथ वहोड़ो आय। जळ सुरसरि अघ जाळतो, करै विलंब न काय।—बां. दा.

उ०—३ 'सूर' तणौ सुरसरी तणौ सर, मानव विहंडिया वजावै मार ।—किसनौ आढौ

रू. भे.—सुरसुर, सुरसुरी ।

सुरसांम–सं. पु. [सं. सुर+स्वामी] १ इन्द्र ।

उ०—रमा कंत ची वंक वे भ्रूह रंजी । लखै कांम **सुरसांम** ची चाप लजी ।—रा. रू.

२ विष्णु ।

३ महादेव ।

४ ईश्वर ।

सुरसांमणी, सुरसांमिणी–सं. स्त्री. [सं. सुर+स्वामिनी] पार्वति, दुर्गा ।

उ०—सुभराज करै तनां **सुरसांमिणी**, ताहरै नांम सांम्हेई तरां । जयौ निमी तुंनां जग जांमिणी, कतियांणी आदेस करां ।—पी. ग्रं.

रू. भे.—सुरस्यांमण, सुरस्यांमणी ।

सुरसा–सं. स्त्री. [सं.] नागों की माता जिसने समुद्र पार करते समय श्रीहनुमान का रास्ता रोका था ।

२ एक अप्सरा ।

३ तुलसी ।

४ ब्राह्मी ।

५ दुर्गा ।

रू. भे.—सुरस्सा ।

सुरसाइ, सुरसाई–सं. पु. [सं. सुर+स्वामिन्] १ इन्द्र ।

२ स्वर्ग में ले जाने का प्रथम दिया जाने वाला द्रव्य या दान ।

उ०—कमधै फतमालौत 'किसोरौ', जिण दीठां खळदळा निजोरौ सोहै 'माहव' तणौ सवाई, रिण जिण खड़ग वसै **सुरसाई** ।—रा. रू.

३ देखो 'सूरसाही' (रू. भे.)

उ०—तरै उमराव दरवार आया, तरै ढाल देखण रै मिस लीनी । तरै परदडी मांह सुं पटा लीना नै मोदीयां री हाटां सूं मोहरां **सुरसाइ** आइ ।—रा. वं. वि.

सुरसाखी–सं. पु. [सं. सुर+शाखिन्] कल्पवृक्ष ।

सुरसाज–सं. पु.—वृहस्पति । (अ. मा.)

सुरसाल–सं. पु. [सं. सु+रसाल] अच्छे व मीठे आमों का वृक्ष ।

उ०—किहां सायर किहां छिल्लरू, किहां केसरि किहां साल । किहां कायर किहां वर सुहड, किहां वण किहां **सुरसाल** ।—हीराणंद सूरि

सुरसालु, सुरसालू–वि. [सं. सुर+शल्य] देवताओं को सताने वाला, असुर, राक्षस ।

सुरसिंधु–सं. पु. [सं.] गंगा नदी ।

सुरसुंदरी–सं. स्त्री. [सं.] १ देवकन्या, देवांगना, अप्सरा ।

२ दुर्गा, पार्वती ।

सुरसुर–सं. स्त्री.—१ फुसफुसाहट, सुरसुराहट ।

२ देखो 'सुरसरी' (रू. भे.)

उ०—चाव धणौ कर चेत, सांपड़ता थारै सुं-जळ । **सुरसुर** पाप समेत, ताप मिटै जीवां तणां ।—बां. दा.

सुरसुरभि, सुरसुरभी–सं. स्त्री [सं.] देवताओं की गाय, कामधेनु ।

सुरसुराट, सुरसुराहट–सं. स्त्री.—१ खुजलाहट ।

२ गुदगुदी ।

३ फुसफुसाहट ।

सुरसुरी—देखो 'सुरसरी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जग अघ हरण **सुरसूरी** जांमी । राज तणा चरणां रघुराज ।—र. ज. प्र.

सुरसेनप–सं. पु. [सं. सुरसेनपः] देवताओं का सेनापति, कार्त्तिकेय ।

सुरसेना–सं. स्त्री.—देवताओं की सेना ।

रू. भे.—सेनसुर ।

सुरस्थांन–सं. पु. [सं. सुरस्थान] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ, स्वर्गलोक ।

२ देवालय, मंदिर ।

सुरस्यांम—देखो 'सुरस्वांमी' (रू. भे.)

उ०—नटणी ज्यूं मुगती नचै, सदावास **सुरस्यांम** ।—ह. नां. मा.

सुरस्यांमण, सुरस्यांमणी— देखो 'सुरसांमणी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुरस्यांमी, सुरस्वांमी–सं. पु. [सं. सुरस्वामिन्] १ विष्णु ।

२ ईश्वर ।

३ इन्द्र, सुरेन्द्र ।

रू. भे.—सुरस्यांम ।

सुरस्सती—देखो 'सरस्वती' (रू. भे.)

उ०—**सुरस्सती** द्वारमती विचि सूर । पयौ अतस 'रैण' वडै ध्रूम पूर ।—सू. प्र.

सुरस्सा—देखो 'सुरसा' (रू. भे.)

उ०—**सुरस्सा** असी जोजनां डाव साहै । थमांऊ निवै जोजनां है अथा है ।—सू. प्र.

सुरह—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मोती-जड़ी ज हाथि, **सुरह** सुगंधी वाटली । सूती मांझिम राति, जांणू ढोलूं जागवी ।—ढो. मा.

उ०—२ **सुरह** दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसी निरंजण जाप ।—नरहरदास वारहठ

उ०—३ सूर वार्हर चढै चारणां **सुरह** री, इतै जस जितै गिरनार आवू ।—बांकीदास आसियौ

सुरहउ, सुरहर, सुरहरि, सुरहरी, सुरहळ— देखो 'सुरभि' ।

उ०—१ सिंधु परइ सत जोअणौ, खिवियां वीजळियांह । **सुरहउ** लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवड़ियांह ।—ढो. मा.

उ०—२ **सुरहळ** रे तेरी खेद्यां जाय, वारी, म्हारा गूगा भल रही वौ ।—लो. गी.

सुरहि, सुरही–सं. स्त्री.—गाड़ी जो वैलों द्वारा खींची जाती है ।

उ०—[illegible] वैल मंवरजी ! मैं वणूंजी, हांजी ढोला ! वण [illegible] सुरही रा वैन हार लगै जद मारूजी वैठ ल्योजी, ओजी म्हांरी सेजां रा सिणगार !—लो. गी.

२ देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

उ०—१ तै थप्पै सुर धरम धरम उसरां ऊथप्पै । देवळ तीरथदेव सुरही उपकार समप्पै ।—रा. रू.

उ०—२ मांनि अगनि दोय गरब्रगत, प्रकट परम पद हाथि । कांमधेनि सुरही सवै, सोतो कांमधेनि तहां साथि ।—ह. पु. वां.

उ०—३ छोड चल्या मंवर जी वाछड़ी जी, हांजी ढोला हो गई सुरही गाय । दूध पीवण री रुत चाल्या चाकरी, हां जी म्हारी सेजां रा सिणगार ।—लो. गी.

सुरहो-वि. [सं. सुरभि+रा. प्र. ओ] १ गाय का ।

उ०—१ इण भांतिरा सूअरां बाकरां रा सूळा रजवै रा मारिया घणै सुरहे घीरा झारिआ, आडीआं पोटळिआं ऊपरि झरराट करिनै रहिआ छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ मूंग मोठ तूअर वणी रे लाल, राती दाल मसूर । उड़द चिणां उपरी घणा रे लाल सुरहा घ्रत भरपूर ।—प. ब. चौ.

उ०—३ जद इण गवांरी जाड़ी रोटियां कर मांहि सुरहो घी घाल्यौ ।—भि. द्र.

२ सुरभि संबंधी, सुरभि का ।

सुरांचर-सं. पु. [सं. सुर+चरणम्] आकाश नभ । (ना. डि. को.)

सुरांण-सं. पु. ब. व. [सं. सुर] १ देव गण, सुरगण । (ना. डि. को.)

उ०—सुख वर सुरांणां गो दुजांणां माघवांणां सुख मिळै ।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'सुररांण' (रू. भे.)

सुरांणी—देखो 'सुररांण' (रू. भे.)

उ०—सांगरियां रै साग सती सिरमोड़ सुरांणी । खा सांगरियां साग, नरां पर पीड़ पिछांणी ।—दसदेव

सुरांतर—देखो 'सुरतर' (रू. भे.)

उ०—'पातल' सूं अंजसै प्रथी, नवकोट नरांतर । काळ भयंकर केवियां, सेवियां सुरांतर ।—मोडजी आसियौ

सुरांयांण, सुरांयांणी, सुरांयांन, सुरायांनि—देखो 'सुरयांन' (रू. भे.)

उ०—पाट छळि ऊपरै वंस विरदां प्रगट, वरै अछरां सुरांयांनि वसियौ ।—विहारीदास राठौड़ रौ गीत

सुरांपत, सुरांपति, सुरांपती—देखो 'सुरपति' (रू. भे.)

उ०—१ 'जगा' तण राज सांमुद्र जग जांणियौ, वयण वाखांणियौ येह वारूं । 'करन' हर तमासै हेल माटै कियौ, सुरांपत विमासै वेन सारूं ।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ इंद्र पूछिया तरइ ब्रह्मादिक, मेद्ध कीयइ रइ हाय मरइ । देव अनड महांत दूहवइ, तिण कहर सुरांपति भेद करइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

सुरांमुख—देखो 'सुरमुख' (रू. भे.) (ना. डि. को; ह. नां. मा.)

सुरांरांण, सुरांराज, सुरांराय, सुराराव—१ देखो 'सुरराज' (रू. भे.)

उ०—१ साज पांण चाप वांण खळां खांण घमसांण । सुरांरांण भुजांपांण जै कियौ असंक ।—र. ज. प्र.

उ०—२ तरै वांण वांदे गयौ देखि तासं । सरांराज झल्लै न हल्लै सरासं ।—सू. प्र.

उ०—३ पखाळां भरै जम्म भैंसों संप्राजै । सुरांराव सिक्को छिड़क्काव साजै ।—सू. प्र.

२ देखो 'सुररांण' (रू. भे.)

उ०—चउद चाळ उजाळ वड चिति करैं कवि नव खंडे कीरति । पाट पती वह दीह प्रतपै सुरांराथ सहाय ।—ल. पि.

सुरांलोक—देखो 'सुरलोक' (रू. भे.)

उ०—विरद वांकम तणा स्रीकमळ वांधियौ, वींद वांकम सुरांलोक वसियौ ।—द. दा.

सुरा-सं. स्त्री. [सं.] १ शराब, मदिरा । (अ. मा.)

उ०—१ सुरा अमी तिलवट वलि साधै । आधी निस भैरव आराधै ।

—सू. प्र.

उ०—२ विखम खीज जिण वार, 'जैत' भूपति उर जग्गी । सुरा घिरत संजोग, ज्वाळ जांणै जगमग्गी ।—मे. म.

२ अंगूरी शराब ।

३ अप्सरा, देवांगना ।

उ०—तिकां सुधा रूप सींधु रा छाकियां नदन वन रै निवास सुधरमा सभा मैं वैठि सुरा रै साथ विलास कीधा ।—वं. भा.

४ पानी, जल ।

५ पान पात्र ।

६ सर्प ।

सुराई—१ देखो 'सुराही' (रू. भे.)

उ०—सात हमायचा भांग, सात सुराई सराव की, सात सीकां जमनाजळ री हळवांन पींडा सात, वीटवा सूळा सराव वस्त भाव मांहे घात उभो छै ।—तिमरलिंग पातसाह री वात

२ देखो 'सूराई' (रू. भे.)

सुराक, सुराख—देखो 'सूराख' (रू. भे.)

उ०—काढै नाहर काळजा, छक मां अचरज छाक । केस जास लग काळजे, साले करै सुराक ।—वां. दा.

सुराग-सं. पु. [सं. सु+राग] १ अत्यन्त गाढ़ा प्रेम ।

उ०—यौं घ्रिताची यो प्रयाग सुराग रचाया ।—वं. भा.

[तु+सुराग] २ किसी गुप्त वात, रहस्य या किसी की वास्तविकता को जानने का सूत्र, इशारा, संकेत ।

उ०—उण गवाड़ी रौ भेद जांणण सारू मांय रा मांय घणाई तड़फा तोड़ता पण भेद रौ सुराग लगावण सारू डरता घणा ।

—फुलवाड़ी

३ पांव का चिन्ह, खोज, निशान।
४ पता, खबर, ठिकाना।
५ तलाश, अनुसंधान।
६ जिज्ञासा।
७ देखो 'सूराख' (रू. भे.)

सुरागाय—देखो 'सुरेगाय' (रू. भे.)

सुरागार–सं. पु. [सं. सुरा+आगार] जहां मद्य बिकता हो, शराब-खाना।

सुरागी–वि.—अनुरक्त, आशक्त।

सुराचार–सं. पु. [सं. सुर+आचार] १ देवताओं के आचार-विचार।
२ रीति, ढंग।
उ०—**सुराचार** घंटारवं तार साजै। वर्णौं नौबती सोभती रीत वाजै।—रा. रू.

सुराचारज–सं. पु. [सं. सुर+आचार्य] देवताओं के गुरु बृहस्पति। (अ. मा.)

सुराज–सं. पु. [सं] १ श्रेष्ठ राजा द्वारा शासित देश, अच्छे राजा वाला देश।
२ देखो 'सुराज्य' (रू. भे.)
उ०—१ मलयानिळ वाजि **सुराज** थिया महि, भई निसंकित अंकभरि।—वेली
उ०—२ कुंडळिय्यां उदिय्यापुर की छब अधिक संपति नगर समाज। घर घर परजा लखपती रांणौ 'भीम' **सुराज**।
—वगसीरांम प्रोहित री बात

सुराजा–सं. पु. [सं.] श्रेष्ठ राजा जो प्रजा पालन एवं शासन व्यवस्था ठीक रखता हो।

सुराजीव–स. पु. [सं.] विष्णु।

सुराज्य–सं पु. [सं.] ऐसा राज्य जिसमें प्रजा के हितों की रक्षा की जाती है और शासन का प्रबंध अच्छा रखा जाता हो।
रू. भे.—सुराज।

सुराट–सं पु. [सं.] सुरराज, इन्द्र सुरपति। (ह. नां. मा.)

सुराडौ–सं. पु. [देश] खाद्य पदार्थ के स्वाद पर ध्यान न देकर उदर पूर्ति करने वाला पशु या व्यक्ति।

सुराति—देखो 'सूरता' (रू. भे)
उ०—दुरजोण मांण, अरजण्ह वांण। भुजबळी भीम **सुराति** सीम।—वचनिका

सुराद–सं. [सं. सुराध्य] सूर्य रवि।
उ०—निमौ जग आसाय पूरणजंद, निमौ विस्वनाद **सुराद** सुरंद।
—सूरजनारायण री अस्तुति

सुराद्रि–सं. पु. [सं.] सुमेरु पर्वत।

सुराधिप–सं. पु. [सं. सुर+अधिप] इन्द्र, सुरराज।

सुराधीस–सं. पु. [सं. सुर+अधीश्वर] इन्द्र, सुरपति।

सुरानक–सं. पु. [सं.] देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक–सं. स्त्री. [सं] देवताओं की सेना।

सुरापगा–सं. स्त्री. [सं] गंगा नदी।

सुरापत, सुरापति, सुरापती–देखो 'सुरपति' (रू. भे.)

सुरापांन–सं. पु. [सं. सुरापान] १ मद्यपान की क्रिया या भाव, मद्यपान।
उ०—**सुरापांन** आंमुख सैहैत, करी गोठ तिण ठौड। रात सरोवर पर रह्यौ, राजंसी राठौड।—पा. प्र.
२ शराब, मदिरा।
उ०—पीं जाय भठी इक **सुरापांन**। भख जाय अरद्ध भैंसा भयं न।
—वि. सं.
३ शराब के साथ खाये जाने वाले चटपटे पदार्थ।

सुरापात्र–सं. पु.—१ मदिरा रखने का पात्र।
२ मदिरा पीने का पात्र।

सुराब्धि–सं. पु. [सं.] सुरा का समुद्र, मदिरा सागर।

सुरामुख—देखो 'सुरमुख' (रू. भे.)
उ०—**सुरामुख** हूतौ नै वळै घ्रत सींचियौ।—दूदौ आसियौ

सुरायण–सं. पु.—बहादुर दल, योद्धा-समूह।
उ०—**सुरायण** पूर किया रिणसाज। विढै देविचंद अनै बछराज।
—सू. प्र.

सुरार, सुरारि, सुरारी–सं. पु. [सं. सुर+अरि] १ देवताओं का शत्रु, असुर, दैत्य, दानव, राक्षस।
उ०—रावण गुणै सुरार, हार सारखौ बभीखण, अमी बंट आसुरां, जोर अत कमी सुरज्जण।—रा. रू.
२ एक प्रकार की बरसाती घास।

सुराळ–सं. पु.—देवता।
उ०—**सुराळ** नराळ व्याळ आळ पाळ ढाळ सक्र। सिघाळ अकाळ काळ टाळ वेद साख।—र. ज. प्र.

सुरालय–सं. पु. [सं.] १ देवताओं के रहने का स्थान, मंदिर, देवालय।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
३ सुमेरु पर्वत।
४ शराब-खाना।

सुराळी—देखो 'सुरावळी' (रू. भे.)

सुराव–सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का घोड़ा।
२ उत्तम ध्वनि।

सुरावट–सं. स्त्री. [सं. शूरत्व] बहादुरी, शूरता।

सुरावती, सुरावनि–सं. स्त्री.—कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता अदिति।

सुरावळि, सुरावळी–सं. स्त्री. [सं. स्वरावली] १ गायन में स्वरों का थाट, स्वर पंक्ति।

उ०—गायन भौन सुरावळि मैं गहि, ज्यूं ववियादर वीन वजाई।
—ऊ. का.

[सं. सुर+अवलि] २ देवताओं की पंक्ति।

रू. भे.—सुराळी।

सुरावाहि-सं. पु. [सं.] सुरा-समुद्र, शराब का समुद्र।

सुरावास-सं. पु.—सुमेरु पर्वत।

सुरासण-सं. पु.—इन्द्रासण। (नां. मा.)

सुरासमुद्र-सं. पु. [सं.] मदिरासागर।

सुरासुर-सं. पु. [सं.] देवता व दानव।

सुरासुरगुर, सुरासुरगुरु-सं. पु. [सं. सुर+असुर+गुरु] १ शिव।

२ कश्यप।

३ वृहस्पति और शुक्राचार्य।

सुरास्ट्र-देखो 'स्वराष्ट्र' (रू. भे.)

सुराश्रय-सं. पु. [सं. सुर+आश्रय] सुमेरु।

सुराही-सं. स्त्री. [अ.] १ प्रायः मिट्टी या धातु का बना जल पात्र जिसका पेट गोलाकार कुछ बड़ा होता है तथा मुंह नलिका की तरह लम्बा होता है।

२ अच्छा गहगीर।

रू. भे.—सुराई।

सुराहीदार-वि. [अ.] सुराई के आकार-प्रकार का।

सुरिंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ दीवांण तणी तन कळा देखनइ, सिगळा सचरिज रह्या सुरिंद। जोती जुड़ी कर तियइ जोवतां, चंदवाही किनां ऊगउ चंद।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सुरिंद सबळा त्रिरिद साहणौं, चउद विदि आचरस चाहणौं।—ल. पि.

उ०—३ वदै मुख दीन सुरिंद वचन।—रांमरासौ

सुरिंदौ-सं. पु.—सारंगी के प्रकार का एक तार (गज) वाद्य।

वि. वि.—वाद्य में तवली की शकल अन्य प्रकार की होती है। वह नीचे से छोटी बीच में एक दम पतली एवं ऊपर से पेट खुला रहता है। इस वाद्य को गज से बजाया जाता है। गज पर घुंघरू बंधे रहते हैं। इसके तीन तारों पर गज चलता है। बाज का तार लोहे का होता है। जो तार षड़ज पर मिला होता है उसके साथ ही दूसरा जोड़े का तार तांत का होता है, वह मध्य षड़ज पर मिला होता है। अंत में लोहे का तार होता है, जो मध्य सप्तक के पंचम पर मिलता है। पंचम एवं तार षड़ज दोनों स्वर के तार बजाते समय काम में लिये जाते हैं। सारंगी में नख के स्पर्श से स्वर निकाले जाते हैं किन्तु सुरिंदे में तार को अंगुली के पैरवे से दबाया जाता है, किन्तु इस दबाव से तार सुरिंदे की लकड़ी पर नहीं लगता। यह वाद्य मुख्यतया सुषिर वाद्यों की संगत में बजाया जाता है। विशेष कर पूंगीनुमा एक मुरली वाद्य के साथ इसके बजाने वाले मुख्यतः लंगा जाति के लोग होते हैं जो जैसलमेर क्षेत्र के निवासी हैं।

सुरिंद्र, सुरिइंद, सुरिइंद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ सुरिइंद्र मिळे ब्रह्मदेव साथ। हरि अग्र रहै सह जोड़ि हाथ।—सू. प्र.

उ०—२ वरूं अपच्छर चढि कनक विवांणां। इम जाऊं सुरिइंद आयांणां।—सू. प्र.

सुरिज, सुरिजि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—प्रगटियौ उदैगिरि जोधपुर, कमळ सुकवि प्रफुलित करै। गह धार पाट वरणियौ 'गजरण', सुरिज सूरिजसिंघ रै।—सू. प्र. ए.

सुरित-सं. स्त्री. [सं. सु+ऋतु] १ अच्छी ऋतु।

२ देखो 'सुरति' (रू. भे.)

उ०—१ है ज.लंधरबंध मैं, मन पवनां की गांठि। हरीया मिळै उतांन मैं, सुरित सबद की सांठि।—अनुभववांणी

उ०—२ हीरां केरां गाहकु, हीरां हाट खुलाय। सुरित निरत सुं निरखलै, सोदै साट मिळाय।—अनुभववांणी

उ०—३ चंदा मांहि चिकोर की, सुरित वसीहै जाय। हरीया तन दाझै नही, जळत अंगारा खाय। जनहरीया सत सबद मैं, सुरित रैंन दिन पोय। माया की डर की नहीं, रहौ निसंसै होय।
—अनुभववांणी

उ०—४ हरीया पछमि देस की, वाट विखम घर दूरि। सुरित सबद जांह संचरै, ताप त्रिगढ कुं चूरि।—अनुभववांणी

३ देखो 'सूरत' (रू. भे.)

४ देखो 'सुरत' (रू. भे.)

सुरितांण, सुरितांणि—देखो 'सुलतांण' (रू. भे.)

उ०—चींत सुरतांणी आगळि 'चौंडरज', चैन सुरितांण तिम न वौ चेलै।—केसोदास गाडण

सुरियं, सुरियंद-सं. पु.—१ वीर, योद्धा।

उ०—जीवै कै वरस असी धन जोड़ा, नर जीवै कै वंस निवै। चाळीसां मांहै जस चाह्यौ, सुरियंद जायौ भलौं 'सिवै'।
—ओपौ आढौ

२ देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—वजिथाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियंद किया। वेखियां हीज आवै वर्ण, उण दिन तणी अजोधिया।—सू. प्र.

सुरियण—देखो 'सुरगण' (रू. भे.)

उ०—उहव थयां नां कोई वह आवै, सुरियण मारग अन्य मह। मेक वहै अरसीह समोभ्रम, प्रथी विलग्गी तूझ पहं।
—महारांणा हमीरसिंह रौ गीत

सुरिहि—देखो 'सुरभि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुरींद, सुरींद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

उ०—सिगां गिरां मैं गिरंद पटांधरां मैं खगींद्र सोहै, नखत्रां मैं

सीगा चंद्र ग्रहां मैं दिनेस। पारजत व्रछां सीगा सुरां मैं सुरींद्र पवै, पवै सीगा प्रथी नरां मैं नरींद 'सांवतैस'।—सांवतसींघ रौ गीत

सुरी—सं. स्त्री. [सं. सुरभिः] १ सीमा या सरहद का पत्थर।

२ पुण्य निमित्त छोड़ी हुई भूमि के सरहद का पत्थर जिस पर गोवत्स का चित्र अंकित हो, गोचर भूमि की सीमा का पत्थर।

३ देवी, दुर्गा।

उ०—रगता सेता रग्गा, नमौ मा भ्रसना लीला। सीकोतरी आमुरी, सुरी सुसिला गरवीला।—देवि.

४ देवांगना, अप्सरा।

उ०—उग्ग भवग्ग वसग्ग राजा 'अजन', आप सुखासग्ग ऊतरी। लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी।—रा. रू.

सुरीत, सुरीति, सुरीती—सं. स्त्री. [सं. सुरीति] अच्छी या उत्तम रीति, तरीका, ढंग।

उ०—१ सुभ कंठ राग छत्रीस, सुख ओप जोप सुरीत। जगमगत तोरग्ग जोत, गग्गलाल नग ससि गोत।—रा. रू.

उ०—२ हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां।—गु. रु. वं.

सुरीयंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे.)

सुरीयांग—वि.—शूरवीर, बहादुर।

उ०—वातां जातां जुगां 'जोधा' नरां, जाय नई आदू बडा सुरीयांग।—रावत जोधसिंह कोठारिया रौ गीत

सुरीली—वि. स्त्री. [सं.] कर्णप्रिय, मधुर, मीठी।

उ०—उग्गी वेळा रसाळ रै लीला पत्तां मांय लुक नै बैठी कोयलड़ी आपरी कूक री सुरीली तांन छेड़ी अर छोटी काळी चिड़कोली प्रेम मैं लीन आपसरी में वांध्यां मैं वंध्यै जोड़ै कनैं आनै आपरी लांबी सुरीली विगल वजादी।—तिरसंकू

स. स्त्री.—मधुर आवाज, मधुर ध्वनि।

सुरीलौ—वि. [स्त्री. सुरीली] १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा (कंठ, स्वर)।

उ०—डाळ डाळ पंछियां रा सुरीला गीत सुग्गीजग्ग लागा। —फुलवाड़ी

२ मधुर या मीठे स्वर वाला।

उ०—म्हनैं रोज सुग्गाई देवग्ग आळा सुच्छम संदेसड़ला सूं कितरी ई घग्गी सांपरत, परस, गंध, संवरग्ग अर सुवाद रै सगळै गुग्गां सूं छळक्ती, सीतळ फूटरी, नसीली सुरीली वा म्हनैं आपरी मीठी वांथां माय भरनै चाली गई।—तिरसंकू

सुरीस—सं. पु. [सं. सुर+ईश] इन्द्र, सुरेन्द्र।

उ०—साल निवार सुरीस कियौ सुख, वीस भुजा हग्ग वांक रौ। बैख दियौ रघुराज भुजांवळ, राज भभीखग्ग लंक रौ। —र. ज. प्र.

सुरु—देखो 'सरु' (रू. भे.)

उ०—नोवता सुरु हुई जद वारली फौज मैं जांग्गीयौ आज नौवत सुरु हुई है सौ जांग्गां किलांग्गदासजी सासरै सूं आय गया दीसै है। —नैणसी

सुरुगुरु, सुरुगुरू—देखो 'सुरगुरु' (रू. भे.)

उ०—सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सुरुगुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू. प्र.

सुरुचि—सं. स्त्री. [सं.] १ राजा उत्तानपाद की दूसरी पत्नी जो ध्रुव की विमाता थी।

२ उत्तम रुचि, सद्इच्छा।

वि.—१ उत्तम रूचिवाला।

२ स्वाधीन, स्वतंत्र।

सुरुज—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

सुरुजमुखी—देखो 'सूरजमुखी' (रू. भे.)

सुरुतांम—सं. पु. [सं. सुर+राज+तमाम] सब देवता, देवगग्ग।

उ०—तिहां जक्ष क्यंनर सिध साधिक, आविया सुरुतांम। सुरां नारी धवळ गावइ, रची चउरी तांम।—रुकमग्गी मंगळ

सुरुद—सं. पु. [सं. सुहृद] मित्र, दोस्त। (अ. मा.)

सुरू—देखो 'सरु' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीडाढाळी रा सुरू, वंद्या पद अरविंद। अब वंदू अवसांग्ग मैं, ए पद पंकज 'इंद'।—मे. म.

उ०—२ दौलतखांना रौ म्हेल नवौ करायौ। नांव इग्ग रौ पैं'ला अजीतविलास दीयौ थौ, पछै दौलतखांनौ कैग्गौ सुरू हुवौ १७७५। —मारवाड़ री ख्यात

सुरूप—वि. [सं.] १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत।

उ०—१ कोई रसायग्ग औसध खाय कुरूप सूं सुरूप हुवौ। —पंचदंडी री वारता

उ०—२ काळी भोत कुरूप, कस्तूरी कांटै तुलै। सक्कर बडी सुरूप, नरजां तुलै नाथिया।—नाथियौ

२ समान, सदृश्य।

३ पंडित, विद्वान, बुद्धिमान।

४ कवि। (अ. मा.)

सं. पु.—१ अच्छा रूप, सुन्दर रूप, अच्छी आकृति।

२ प्रकृति, स्वभाव।

३ ढांचा, डौल।

[सं. सुरूपः] ४ शिव।

५ कामदेव।

६ तरह, प्रकार, किस्म।

७. देखो 'स्वरुप' (रू. भे.)

सुरूपा—सं. स्त्री.—पुराग्गानुसार एक गाय।

वि.—रूपवती, सुंदरी।

सुरेंगलौ—देखो 'सुरैंगलौ' (रू. भे.)

उ०—वाड़ी वाड़ी भंवरौ भिग्गकै रे सुरेंगलौ, चंद्रमाजी री पाग

बिराजै रे सुरेंगनी सुरेंगली । रोहणदै विर विर निरखै रै सुरेंगली सुरेंगनी ।—लो. गी.

सुरेंद्र-सं. पु. [सं.] १ सुरराज, इन्द्र ।

उ०—१ नरेंद्र कै सुरेंद्र कै बराबरेंद्र कै त्रितू । अकारनीक आप नांहि कारनीक ही ग्रिकू ।—ऊ. का.

उ०—२ तेरा ही पंथ साचा त्रिऊं लोक मैं नाग सुरेंद्र नमै नरनारी ।
—भि. द.

२ विष्णु ।

३ सूर्य्य, रवि ।

४ देवगण, देवता ।

रू. भे.—सुरंद, सुरइंद, सुरयंद, सुरयंद्र, सुरयिंद, सुरिंद, सुरिंद्र, सुरिइंद, सुरिइंद्र, सुरियं, सुरियंद, सुरींद, सुरींद्र, सुरीयंद, सुरयंद ।

सुरेंद्रचाप-सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रधनुष ।

सुरेंद्रलोक-सं. पु. यौ. [सं.] इन्द्रलोक ।

सुरे-सं. पु.—१ स्वरवाला वाद्य ।

२ देखो 'सुरै' (रू. भे.)

सुरेख, सुरेखा-सं. स्त्री. [सं.] १ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ या पैर की शुभ मानी जाने वाली रेखा, सुन्दर रेखा ।

२ सुन्दर रेखा ।

उ०—अणियाळा नयण आंजिया अंजण, काजळ रेख सुरेख कर । इंद्र तणइ दिन मूंठ अपूठी, भळका नांखइ वांम वर ।
— महादेव पारवती री वेलि

सुरेगाय-सं. स्त्री.—गायों की नस्ल विशेष जो हिमालय की तराई वाले क्षेत्र में पाई जाती है । इसी के पूछ का चंवर बनता है ।

सुरेज्यजुग-सं. पु. [सं. सुरेज्ययुग] वृहस्पति का युग जिसमे निम्नलिखित पांच वर्ष होते है :—

१. अंगिरा, २. श्रीमुख, ३. भाव, ४. युवा व ५ धाता ।

सुरेली-सं. स्त्री.—एक प्रकार का घास । (शेखावाटी)

सुरेस-सं. पु. [सं. सुर+ईश] १ सुरराज, इन्द्र ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ कहै सनकादिक चारूं क्रीत, पढै नित नारद धारै प्रीत । रहै नित सेव रमाय सुरेस, आदेस, आदेस, आदेस आदेस ।
—ह. र.

उ०—२ च्यार चक राजन संसय पड़्या रे, धरहर धूजे सेस । रज उडी रे गयणै रवि ढांकियौ रे, संक्यौ मन ही सुरेस ।
—प. च. चौ.

२ विष्णु, ईश्वर ।

३ कृष्ण ।

४ शिव ।

५ लोकपाल ।

रू. भे.—सुरईस ।

सुरेसर—देखो 'सुरेसुर' (रू. भे.)

सुरेसी-सं. स्त्री. [सं. सुरेशी] दुर्गा, देवी ।

सुरेसुर, सुरेस्वर-सं. पु. [सं. सुरेश्वर] १ देवताओं का स्वामी, इन्द्र ।
(नां. मा.)

२ विष्णु, ईश्वर ।

उ०—मोख खमौ खम कंद निगुण निरपख नरेसुर । निरालंब निरलेप अध्रप अछेप सुरेसुर ।—पी. ग्रं.

३ गजानन, गणेश ।

उ०—सिव संभव सिव रूप सुरेसुर । सिव गुण दियण प्रणंम कथेसुर । अति लघु तिकौ सरण तक आवै, पात्र गुणै सुज वडपण पावै ।—रा. रू.

रू. भे.—सुरेसर ।

सुरेस्वरी-सं. स्त्री. [सं. सुरेश्वरी] ३ देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा, देवि ।

२ लक्ष्मी ।

सुरैं—देखो 'सुरै' (रू. भे.)

उ०—चारणां तणी लीनी सुरैं, जुध रवि कौतक जोवसी । सिर घणां भड़ां वाळा समर, हरगळ माळा होवसी ।—पा. प्र.

सुरेंगळौ-सं. पु.—लोकगीतों मे लय का शब्द ।

वि.—सुन्दर, खूबसूरत ।

रू. भे.—सुरेंगलौ ।

सुरै-स. स्त्री. [सं. सुरभि] १ गाय, गौ ।

२ ब्राह्मणों, संन्यासियों व पुजारियों को दान में दी गई भूमि ।

३ उक्त दान दी गई भूमि की सीमाबन्दी हुतु रौपा गया पत्थर जिस पर गाय की आकृति चित्रित होती है ।

४ वह भूमि जो गायों के चारागाह के लिए छोड़ी गई हो ।

सं. पु. [सं. सुर] ५ देवता, सुर ।

सुरोतरि—देखो 'सुरतरु' (रू. भे.)

उ०—सहर लदांणै सिंघ सुरोतरि । कुळ सिणगार नरूकै 'केहरि ।'
—रा. रू.

सुरोदय-सं पु. [सं. सूर्योदय] १ सूर्योदय ।

२ स्वरोदय ।

सुरोमा-वि.—जिसकी रोमावलि सुन्दर हो ।

सुर्यंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू. भे,)

उ०—इम जीतै कनयज अयौ, अति छक वधै अणंद । सुरयंद गीत वहु कीध सुख, जगजीत जयचंद ।—सू. प्र.

सुलंक-सं. स्त्री.—सुन्दर कटि, श्रेष्ठ कटि ।

वि.—सुन्दर कटि वाली ।

सुलंकी-वि. स्त्री.—सुन्दर कटि वाली सुन्दरी ।

सुलंब—देखो 'सुलब' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सुलक्ष, सुलक्षण-सं. पु. [सं. सुलक्षणं] १ किसी के शरीर पर होने

वाला ऐसा कोई चिन्ह, जो उसके भाग्यशाली होने का द्योतक हो, शुभ लक्षण।

उ०—सालहोत्र सुलक्षण साख, लेखां हय चौवीस लाख। सोल सहसं घणै सनमांन, राजै साथै राजांन।—व. व. ग्रं.

[सं. सुलक्षण] २ व्यावहारिक दृष्टि से अच्छी आदत, अच्छा स्वभाव।

३ विद्वान, पंडित।

४ कवि।

वि.—सुन्दर, मनोहर।

रू. भे.—सुलक्षण, सुलखण, सुलखण, सुलख्खण, सुलख्यण, सुलच्छण, सुलछण।

सुलक्षणौ—वि. [सं. सुलक्षणं] (स्त्री. सुलक्षणी) १ जिसके भाग्य के लक्षण अच्छे हों, शुभ लक्षण, भाग्यशाली।

२ जिसकी आदतें अच्छी हों।

३ चतुर, निपुण, गुणवान, व्यवहारकुशल।

४ सुन्दर मनोहर।

५ विद्वान, पंडित।

६ कवि।

७ सीधा, सयाना।

रू. भे.—सुलखणौ, सुलखणु, सुलखणौ, सुलच्छणौ, सुलछणौ।

सुलखण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा)

सुलखणु, सुलखणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—१ यतः धन्ना होइ सुलखणा, कुसती होइ सलज्ज। खारा होइ सीयला, वहु फल फलै अकज्ज।—वि. कु.

उ०—२ औगण-कुवांण री जात नीं। काछ द्रढौ। सुलखणौ। इतबारी। जूंनी वातां-विगतां री परतख अवतारी।—फुलवाड़ी

उ०—३ हूं भंवरौ सुलखणौ, कैर मूळ नहिं खाय। का वैठूं उड केतकी, का सतलंघण रह जाय।—अग्यात

उ०—४ भोळौ ठाकर समझयौ के धणी रै जोखा री बात सुणनै सुलखणी नार सुध-बुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

उ०—५ रावळ मांनसिंह, रावळ परताप रै खवास पदमां, विणी रै पेटरौ, रावळ प्रताप रै और बेटौ को न थौ, नै मांनसिंह निपट सुलखणौ हुतौ, पांच रजपूत देसरा मिळनै मांनसिंह नूं टीकौ दीयौ, राज करै छै।—नैणसी

उ०—६ मेरी सास सुलखणी, कोई करै घणेरा लाड।—लो. गी.

(स्त्री. सुलखणी)

सुलख्खण, सुलख्यण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.)

उ०—तखधीर सुलख्यण, वीर विचख्यण काइम रख्यण कीति। 'सांमौ' मति सागर सूरस गागर राज उजागर रीति।—ल. पिं.

सुळगणौ—वि. (स्त्री. सुलगणी) १ शीघ्र जलने वाला, ज्वलनशील।

२ भली प्रकार अंकुरित होने वाला।

सुळगणौ, सुळगबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)

उ०—अरै पपीहा बावला, आधी रात न कूक। होळै होळै सुलगती सौ तैं डारी फूंक।—अग्यात

सुळगणहार, हारौ (हारी), सुळगणियौ—वि०।

सुळगिओड़ौ, सुळगियोड़ौ, सुलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुळगीजणौ, सुळगीजबौ—भाव वा०।

सुळगाणौ, सुळगाबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

उ०—म्हैं छकड़ा रा पाटिया रै आपौ लगाय नै पग लांबा कर लिया अर सिगरेट सुळगाय ली।—अमरचूंनड़ी

सुळगाणहार, हारौ (हारी), सुळगाणियौ—वि०।

सुळगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुळगाईजणौ, सुळगाईजबौ—कर्म वा०।

सुळगायोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगायोड़ी)

सुळगावणौ, सुळगाववौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

सुळगावियोड़ौ—देखो 'सिळगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगावियोड़ी)

सुळगियोड़ौ—देखो 'सिळगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळगियोड़ी)

सुलग्न—सं. पु. [सं.] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न।

सुलग्नौ—वि. [सं. सुलग्न] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न का।

उ०—रायधण पाछौ फिरियौ सुलग्नौ साहौ जोयनै कुंवर रायधण नूं सजनळ परणाई छै।—रायधण भाटी री वात

सुलच्छण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.)

उ०—तखत तपत जोधांणपत, वरण 'विजौ' विचार। तेज सुलच्छण धरम रत, सव री लेवै सार।—सि. सु. रू.

सुलच्छणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

उ०—सोई पुरस सुलच्छणौ, सोइज पूत सपूत। सोइज कुळरौ सेहरौ, तांडै जस रथ जूत।—वां. दा.

(स्त्री सुलच्छणी)

सुलछ, सुलछण—देखो 'सुलक्षण' (रू. भे.)

उ०—वोह चद्र वदन सुलछण वतीस। सोलै सिंगार आभ्रण छतीस।—सू. प्र.

सुलछणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुलछणी)

सुळझ, सुळझण—सं. स्त्री.—१ सुलझने की क्रिया या भाव।

२ उलझन का विपर्याय।

सुळझणौ, सुळझबौ—क्रि अ.—१ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त होना, छुटकारा पाना।

उ०—जद पट उळझै तौ पग सुळझै। मद मत्त मनां में हास सुझै।

मत हाथ लगावो कांटे रै, श्रो फूल देखतो खड़चो जळे ।—सकुंतला

२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटना, समस्या का समाधान होना ।

३ किसी गूढ़ विषय का आशय समझ में आना, समझना ।

४ भ्रम का निवारण होना, भ्रम मिटना ।

उ०—उळझ'रि सुळझ्या सावकै, जै कोई सरणै जाय । जनहरीया जब ऊबरै, रांम नांम सिवराय ।—अनुभववांणी

५ रस्सी, डोरे, तार आदि में पड़ी हुई गुत्थियां मिटना, गुत्थियां निकल कर सीधा होना, गुत्थी खुलना ।

६ किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़े का निपटारा होना, फैसला होना ।

उ०—केई दीह तांई तो जमीं का झोड़ कीनां, पाछै न्याय तावै सीम काटि सुळझ लीनां ।—शि. व.

७ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त होना ।

सुळझणहार, हारौ (हारी), सुळझणियौ—वि० ।

सुळझिओड़ौ, सुळझियोड़ौ, सुळझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुळझीजणौ, सुळझीजबौ—भाव वा० ।

सळूझणौ, सळूझबौ, सुरझणौ, सुरझबौ—रू० भे० ।

सुळझाड़, सुलझाड़ौ—सं. पु. १—जब किसी प्रकार की उलझन न हो, उलझनरहित स्थिति, अवस्था या भाव ।

२ साफ-सफाई, स्पष्टता ।

३ फैसला, निपटारा ।

४ किसी समस्या का समाधान ।

उ०—उहांरो सुळझाड़ौ कराइयो, सारी धरती पागड़ै लगाय पाछा भटनेर आइया ।—ठाकुर जेतसी री वारता

रू. भे.—सळूझाड़ सळूझाड़ौ ।

सुळझाणौ, सुळझाबौ—क्रि. स. ['सुळझणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ किसी प्रकार की उलझन से दूर करना, उलझन मिटाना ।

२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाना, समस्या का समाधान करना ।

उ०—एक दिन उणरै गांव लखपति सेठ खुद चलायनै कुमार रै घरै आया । कुमार चाक छोडनै वांरै सांमी गियो । तद सेठ केवण लागा—भाया एक बात अळुझगी है, थूं चावै तो सुळझा सकै ।
—फुलवाड़ी

३ किसी गूढ़ विषय के आशय को समझाना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना ।

४ भ्रम निवारण करना, दूर करना ।

५ किसी तार, डोरे रस्सी आदि में पड़ी गुत्थियों को निकालना, गुत्थियां खोलना, सुलझाना ।

उ०—धूजतै हाथां चन्नण री कांघसी सूं केस सुळझाय, ढाळ काढती या धकै केवण लागी—म्हारी काली बातां रो कोई मयारो थोड़ी ई है ।—फुलवाड़ी

६ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त करना ।

उ०—नैंन हमारै यार सुं, रहीया उलिझि उलिझि । हरीया न्यारा नां हुवै, सुळझाया न सुलिझि ।—अनुभववांणी

७ किसी प्रकार झगड़े को निपटाना, फैसला करना ।

सुळझाणहार, हारौ (हारी), सुळझाणियौ—वि० ।

सुळझायोड़ौ - भू० का० कृ० ।

सुळझाईजणौ, सुळझाईजबौ—कर्म वा० ।

सळूझाणौ, सळूझाबौ, सळूझावणौ, सळूझावबौ सुरझाणौ, सुरझाबौ, सुरझावणौ, सुरझावबौ, सुळझावणौ, सुळझावबौ
—रू० भे० ।

सुळझायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की उलझन दूर किया हुआ, उलझन मिटाया हुआ. २ कोई गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाया हुआ, समस्या का समाधान किया हुआ. ३ किसी गूढ़ विषय के आशय को समझाया हुआ, स्पष्ट किया हुआ, व्याख्या किया हुआ. ४ भ्रम निवारण किया हुआ, भ्रम दूर किया हुआ. ५ गुत्थियां खोला हुआ, सुलझाया हुआ. (तार, डोरा, केश) ६ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त किया हुआ. ७ झगड़ा निपटाया हुआ, फैसला किया हुआ ।

(स्त्री. सुळझायोड़ी)

सुलझावणौ, सुलझावबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू. भे.)

उ०—एक दिन सोनल-वरणी कंवरांणी झिरोखा में बैठी सोना री कांघसी सूं केस सुळझावती ही ।—फुलवाड़ी

सुळझावणहार, हारौ (हारी), सुळझावणियौ—वि० ।

सुळझाविओड़ौ, सुळझावियोड़ौ, सुळझाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुळझावीजणौ, सुळझावीजबौ—कर्म वा० ।

सुळझावियोड़ौ—देखो 'सुळझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुळझावियोड़ी)

सुळझियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त हुवा हुआ, छुटकारा पाया हुआ. २ समस्या का समाधान हुवा हुआ, पेचीदगी, गुत्थी या जटिलता मिटा हुवा. ३ गूढ़ विषय के आशय समझ में आया हुवा, स्पष्ट हुवा हुआ. ४ भ्रम निवारण हुवा हुआ. ५ गुत्थियां खुला हुवा, सुलझा हुआ. (तार, डोरा आदि) ६ निपटा हुआ, फसला हुवा हुआ (झगड़ा). ७ बंधन मुक्त हुवा हुआ. ८ मजा हुआ, चतुर ।

(स्त्री. सुळझियोड़ी)

सुळटौ, सुलटौ—वि. (स्त्री. सुलटी) १ उल्टे का विपरीत ।

२ औंधे का विपरीत, सींधा, सीधा ।

३ उचित, सीधा, ठीक ।

उ०—१ छतीस राजकुळी हुई । सुलटै राह चाल्या । रिखभदेवीजी रै पुत्र बाहुबळी हुवौ ।—रा. वंसावळी

उ०—२ जुग चालै जुग राह मैं, इनकी सुलटी चालि। हरियाजन उलटा चलै, जुग डग सवै न हालि।—अनुभववांणी

४ प्रत्यक्ष।

उ०—१ काळ किसी सारै नहीं, मारै सुलटी मूंठ। हरीया हरिजन ऊवरै, उलटि चडै वैकूंठ।—अनुभववांणी

उ०—२ दान दया दिल मैं धरौ, दुख जाइ दहट्टा। धरम करौ कहै धरमसी, सुख होइ सुलट्टा।—ध. व. ग्रं.

५ जिसमें कोई घेराव नहीं हो, जो टेढ़ा मेढ़ा न हो।

उ०—सपनलां सँग हीड़ा-सुमन, उलटा झड़खलां ज्युं झुरड़ीजै है। कुभावना हाला काळी नस रा कीड़ा कुसुम सुलटा तिणखला सा तुरड़ीजै।—दसदोख

सुळणौ, सुळवौ, सुलणौ, सुलवौ–क्रि. अ.—१ लकड़ी या अनाज के दानों में कीड़े पड़ना, कीड़ों द्वारा खाया जाना।

उ०—१ मांन वसै वेचै घणा ए, पंद्रह करमादांन कै। लोभ कै कारणै ए, विणजै सुलियां धांन कै।—जयवांणी

उ०—२ कावड़ तै जूनी थई रे लाल, घुणादिक जीव खाय सुवि। तणियां छींकौ बोदौ थयौ रे लाल, डांडौ सुलियौ जाय सुवि०।—जयवांणी

२ अधिक दिन तक कोई वस्तु निरर्थक पड़ी रह जाने से कार्य-लायक न रहने की दशा में आना, वेकर होना, निरर्थक होना।

उ०—आड ई घड़ावणी व्है तौ तिजौरी मांय सूं मोहरां काढौ, पड़ी पड़ी सुळ जावैला।—फुलवाड़ी

३ कमजोर होना।

उ०—राजाजी नीचौ माथौ करियां खासी ताळ तांई सोचता रह्या। अणछक बोल्या—नाईड़ा, अपारै वडेरां री अकल ई साव सुळियोड़ी ही।—फुलवाड़ी

सुळणहार, हारौ (हारी), सुळणियौ—वि०।

सुळिओड़ौ, सुळियोड़ौ, सुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुळीजणौ, सुळीजवौ—भाव वा०।

सळणौ, सळवौ—रू० भे०।

सुळतांण, सुलतांण–सं. पु. [फा. सुल्तान] वादशाह, सम्राट।

उ०—१ जूसरां धवळ अप्रमांण जव, की विमांण पवमांण कथ। सुलतांण मुगळ माथै सज्या, राजथांण वीकांण रथ।—मे. म.

उ०—२ हिंदुओ राउ आइ दिली लेसी हिवै, सवल मन माहि सुलतांण सोचै।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—सुरतांण, सुरितांण, सुळतांन, सुलतांन, सुलतांण, सुलितांन, सुल्तांन।

सुळतांणी, सुलतांणी–सं. स्त्री. [फा. सुल्तानी] वादशाहत, वादशाही।

रू. भे.—सुरतांणी, सुरितांणि।

सुळतांन, सुलतांन—देखो 'सुळतांण' (रू. भे.)

उ०—१ वडै वडै भूपति सुळतांन उनकै डेरै भयै मंदान।—मीरां

उ०—२ अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत रै सुलतांनां मैं सगळां सूं भारी भिड़मल गिणिजै। उण कनै फौज बळ अणूतौ। खाताळी घुड़सेना अड़घम देती खड़बड़ां खड़वड़ां जाय पड़ती।—चितरांम

सुलता—देखो 'सलिता' (रू. भे.)

सुलप–वि. [सं. स्वल्प] सूक्ष्म, छोटा।

उ०—करामाति दै लै कहूं कहुं पेगंवर कहुं पीर। गुपत प्रगट विचरत फिरत, करि दीरघ सुलप सरीर।—ह. पु. वां.

सुळफ. सुलफ–वि.—१ श्वेत, सफेद।

२ साफ, सुन्दर।

३ देखो 'सुलफौ' (रू. भे.)

सुळफसिला–सं. स्त्री.—स्फटिकशिला।

उ०—सुळफसिला छाया जळ सुंदर, पेख प्रभा ठम रहै पुरंदर। निरख तठै हरि लीध निवास।—र. रू.

सुलफी–सं. स्त्री.—जर्दा या तम्वाखू पीने की चिलम।

उ०—सुलफी गुड़गुड़ियां, चिलम होकांरी हळकी। हांडी वूरै हरख, आभूखण रिपियां रळकी।—दसदेव

सुलफेवाज–वि. [फा. सुल्फ+बाज] गांजा या चरस पीने वाला।

सुलफौ–सं. पु. [फा. सुल्फ] वह सूखा तम्वाखू जिसे गांजे की तरह चिलम में भर कर पीते हैं।

उ०—१ एक नाथ सोनजी री दातारी सूं रींझ'र गांव मैं आसण ही लगा वैठ्यौ। वस ! सुलफै अर भांग री रंगत छिड़गी है।—दसदोख

उ०—२ ना होकौ ना चिलम, पांन-बीड़ी न सुपारी। न सुलफौ ना भांग, कदै ना वणै जुवारी।—नारी सईकड़ौ

रू. भे.—सुळफ, सुलफ।

सुलब्भ, सुलभ–वि. [सं.] १ जो सहज ही उपलब्ध हो, जो आसानी से मिल सके।

उ०—१ अथ औंमकर अक्षर उचार। निस दिवस नांम रट रांम रांम। द्वै सुलभ दीप स्रद्धा समीप, रुचि व्है सु राख दुहुं दिव्य दाख।—ऊ का.

उ०—२ पिंड विहंढ होय चुख चुख पडूं, ताय वरूं रंभ हित तिकौ। सुलभ ही जिकौ पाऊं सुरग, जगत घणौ दुल्लभ जिकौ।—सू. प्र.

२ सहज, आसान, सुगम।

उ०—१ कै धरि दंभ सुलब्भ अब्भ आछादि रहै धर। तर तमाळ वन तरळ, मिळै किर डाळ समंजर। रा. रू.

उ०—२ महासमुद्र तिरवौ भुजा, दोहिलौ तूं जांण। तीखा भाला ऊपर चालवौ, सुलभ नहीं लै सयांण।—जयवांणी

उ०—३ हरीया कठण वूझिवौ, दुलभ चलिवौ गाह। सौ सुलभ संसार मैं, ता दिस जांहि घणाह।—अनुभववांणी

३ उपयोगी, लाभकारी।

४ सीधा, सयाना।

उ०—पछै सिवरांमदानजी संतोकचंदजी दोनूं सुलभ पणै रह्या। तवै दोनूं विमुख रह्या तौ पिण स्वांमीजी उणांरी गिणत राखी नहीं।—भि. द्र.

रू. भे.—सलभ, सुलभौ, सुल्लभ, सुल्लभौ।

सुलभता—सं. स्त्री. [सं.] १ सरलता, ग्रासानी, सुगमता।

२ उपयोगिता।

सुलभौ—देखो 'सुलभ' (रू. भे.)

उ०—ग्राप्या सीस सु तौ ऊतरिया, वसुधा वांदीजै वड गात। 'सींवल' कहै, हमै जस सुलभौ, गरथ सटै बोलै गुण पात।

—सींवळ खंगार रायपालौत रो गीत

सुललित—वि. [स.] ग्रत्यन्त सुन्दर।

उ०—ग्राव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखांण। संग सहु ध्रम सांभलइ रे, धन जीव्युं परमांण।—स. कु.

सुललौतर—सं. पु.—शुभ लक्षण।

सुलव—सं. पु. [सं. शुल्व] तांबा, ताम्र। (ग्र. मा.)

वि.—सूक्ष्म, बारीक।

रू. भे.—सुलव।

सुळसुळ, सुळसुळाहट—सं. स्त्री.—१ कानाफूसी, फुसफुसाहट।

२ ग्रफवाह, जनश्रुति।

उ०—लुचां हरदयाल सूं ग्रड़ंगो लगायौ, छळ करै ग्रापसूं रया छांनै। सतावी हुई सुळसुळ मुलक सेर मैं, मुंसी कोठरियां तणी मांनै।—ऊमरदांन लाळस

सुलह—सं. स्त्री. [फा. सुलह] मेल-मिलाप, संधि, समझौता।

उ०—दूतरो सुणतां दीवांण रै मुंहडै रो रंग फुरगयौ। सांखलै नापै नूं कह्यौ—किण ही भांत सुलह पण हुवै ?—नैणसी

रू. भे.—सलै, सुलै, सुल्लह।

सुलहनांमौ—सं पु. [फा. सुलहनामा] वह पत्र या दस्तावेज जिसमें संधि या समझौते की शर्तें लिखी गई हों, राजीनामा।

रू. भे.—सुलेनांमौ।

सुळाणौ, सुळावौ—क्रि. ग्र.—१ प्रसव के पूर्व मादा पशुग्रों के पेट में दर्द होना।

क्रि. स.—२ लकड़ी या धान में कीड़े पड़ने का ग्रवसर देना।

सुळावणौ, सुळाववौ—रू. भे.।

सुलाणौ, सुलावौ—क्रि. स.—१ शयन कराना, लिटाना, सोने के लिये प्रेरित करना।

२ मैथुन या संभोग के लिये किसी को साथ में लेटाना।

सुलाणहार हारौ (हारी), सुलाणियौ—वि०।

सुलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुलाईजणौ, सुलाईजवौ—कर्म वा०।

सुलावणौ, सुलाववौ—रू० भे०।

सुलायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शयन कराया हुग्रा, लिटाया हुग्रा, सोने के लिये प्रेरित किया हुग्रा. २ साथ में लिटाया हुग्रा।

(स्त्री. सुलायोड़ी)

सुळावणौ, सुळाववौ—देखो 'सुळाणौ, सुळावौ' (रू. भे.)

सुलावणौ, सुलाववौ—देखो 'सुलाणौ, सुलावौ' (रू. भे.)

उ०—उन्हाळै दै ईल, लील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास, ग्राखरचां सुखी सुलावै।—दसदोख

सुलावणहार, हारौ (हारी), सुलावणियौ—वि०।

सुलाविग्रोड़ौ, सुलावियोड़ौ, सुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुलावीजणौ, सुलावीजवौ—कर्म वा०।

सुलावियोड़ौ—देखो 'सुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुलावियोड़ी)

सुळाव्रख, सुळावख—देखो 'साळाव्रक' (रू. भे.)

उ०—वेहु मैरवां तणै सुळाव्रख, वळै सगत नाहर ग्रसवार। मछ-मनोज मोरखट मुखरै, हुग्रौ न रांणै भीम जुहार।—पूरजी भादो

सुलिताण, सुलितांन—देखो 'सुळतांण' (रू. भे.)

उ०—गहि गुरु ग्यांन जागि जीव जोगी, झूठै भरमि भुलांना रे। हरि सूं विमुख नाचि नांना विधि, छाडि तजै सुलितांनां रे।

—ह. पु. वां.

सुळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कीड़ों द्वारा खाया हुग्रा (ग्रनाज या लकड़ी). २ निरर्थक या वेकार हुवा हुग्रा. (धन या सामान) ३ कमजोर हुवा हुग्रा।

(स्त्री. सुळियोड़ी)

सुलूक—देखो 'सलूक' (रू. भे.)

सुलेक—सं. पु. [सं.] एक ग्रादित्य का नाम।

सुलेख—सं. पु. [स.] सुन्दर लेख, सुन्दर लिखावट।

सुलेनांमौ—देखो 'सुलहनांमौ' (रू. भे.)

सुलेमांनी—सं. पु.—१ सफेद ग्रांखों वाला घोड़ा।

२ एक प्रकार का पत्थर जिसका कुछ ग्रंश सफेद व कुछ ग्रंश काला होता है।

३ एक प्रकार का नमक विशेष।

सुलै—देखो 'सुलह' (रू. भे.)

सुलोक—स. पु. [सं.] १ स्वर्ग या वैकुण्ठ।

२ ग्रच्छा व भला ग्रादमी।

सुलोचण, सुलोचन—सं. पु. [सं. सुलोचन] १ मृग, हरिण।

२ रुक्मिणी के पिता का नाम।

३ ग्रच्छे एवं सुन्दर नैत्र।

वि.—ग्रच्छे नैत्रों वाला।

सुलोचणा, सुलोचना—सं. स्त्री. [सं. सुलोचना] १ एक ग्रप्सरा का नाम।

२ मेघनाद की स्त्री व वासु की पुत्री, यह पतिव्रता थी।

उ०—सिव ऊमिया पेमां सुलोचना तुज तणां अवतार त्यां ।
—पा. प्र.

सं. स्त्री.—सुन्दर नेत्रों वाली ।

सुलोमा—वि. [सं.] सुन्दर रोमावली वाला ।

सुलोह, सुलोहक, सुलोहित—सं. पु. [सं. सुलोहकं] पीतल ।

सुलोहिता—सं. स्त्री. [सं.] अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा ।

सुलोही—सं. पु.—एक ऋषि का नाम ।

सुळौ—सं. पु.—१ किसी लकड़ी या अनाज में लगने वाला कीड़ा, घुन ।
२ उक्त घुन लगने की अवस्था या भाव ।
३ शूल, दर्द ।
४ बीमारी, रोग ।

सुल्क—सं. पु. [सं. शुल्क] १ किराया, भाड़ा ।
२ मूल्य, कीमत ।
३ फीस ।

सुल्तांन—देखो 'सुलतांण' (रू. भे.)
उ०—फरिस्ता रै लिखण मैं कीं साच है तौ अलाउद्दीन री फ़ौज मैं अख्तर बख्तर बंधियोड़ा चार लाख पिचंतर हजार घुड़सवार हर घड़ी टंच हुवोड़ा सुल्तांन रै झालै री वाट जोयबौ करता ।
—चितरांम

सुल्लभ, सुल्लभौ—देखो 'सुलभ' (रू. भे.)
उ०—पर जिण त्रिनेत्र गंजण त्रिपुर, समहर पायौ सुल्लभौ ।
जुग अंत मेघ वरसै जिसौ, इसी भांत दरसै 'अभौ' ।—रा. रू.

सुल्लह—देखो 'सुलह' (रू. भे.)

सुल्लौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का मांस के साथ बना व्यंजन ।
वि. वि.—इसमें १० सेर मांस के साथ ३½ सेर चावल, २ सेर घी, १ सेर चना, २ सेर प्याज, ½ सेर नमक, १ पाव अदरक, दो-दो दाम लहसुन तथा गोल मिर्च, एक-एक दाम दालचीनी, इलायची, लौंग आदि सामग्री पड़ती है ।
२ देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

सुवंक—वि.—सुन्दर व मनोहर ।
उ०—साहिब कछूंछ न जांइयइ, तिहां परेरउ द्रंग । भीभळ नयण सुवंक धण, भूलउ जाइसि संग ।—ढो. मा.

सुवंछक—सं. स्त्री.—सखी, सहेली । (अ. मा.)
वि.—शुभचिंतक, शुभेच्छु ।

सुवंस—सं. पु. [सं. सु+वंश] १ वसुदेव का एक पुत्र ।
२ अच्छा व श्रेष्ठ वंश ।

सुव—देखो 'सुत' (रू. भे.)
उ०—धरम खट वरन री जितौ हुवतौ धरा । 'करण' सुव राहतौ साहि केवांण ।—द. दा.

सुवक्ता—वि. [सं.] सुन्दर व्याख्यान देने वाला, वाक्पटु ।

सुवक्षा—सं. स्त्री.—१ विभीषण की माता और मयदानव की पुत्री थी ।
२ वह स्त्री जिसके वक्ष का उभार सुन्दर हो ।

सुवखत—सं. स्त्री.—अच्छा समय, शुभ अवसर ।
उ०—धरावेध खत्रवेद चत्रकोट गढ ढेलड़ी । पूरबा नखत्र सुवखत प्रमांणौ । साह 'अवरंग' अवतार सिसपाळ रौ, 'राजसी' किसन अवतार रांणौ ।—कम्मौ नाई

सुवग—सं. पु.—डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष, जिसके प्रत्येक द्वाले के प्रत्येक पद में चौदह मात्राएँ और अंत में चौकल होता है एवं चौथे चरण में वीप्सा रखते हुए तुकांत मिलाया जाता है ।
उ०—चरणौ चौकळ अंत उचारै, चोथै चरण वीपसा धारै । सम मोहरा चारू सरसावै, गीत मंछ सुवग इम गावै ।—र. रू.

सुवड़—सं. पु. [सं. सुवट] वट वृक्ष । (नां मा.)

सुवच, सुवचन—सं. पु. [सं. सुवचन, सुवचस्] अच्छा वचन, सत्य वचन ।
उ०—झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का कांम । हरीया सुवचन साचका, विसन परा विसरांम ।—अनुभववांणी

सुवचनी—वि.—१ अच्छा वक्ता, वाक्पटु ।
२ मृदुभाषी ।

सुवटियौ, सुवटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सुवटा रे मीनकी डर करणां, बाळक गिणै न वूढां तरणां ।—वि. सं. सा.
उ०—२ मा ! बाग-बगीचां मैं गयी जै, मा ! पाक्या सै दाड़म-दाख । कोयल-सुवटा खाय रह्या जै ।—लो. गी.

सुवण—देखो 'स्वर्ण' (रू. भे.)

सुवणौ, सुवबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)
उ०—१ जिणि देसै विसहर घणा, काळा नाग भुयंग । सुवइ निचंती मारुई, ढोला मेल्है अंग ।—ढो. मा.
उ०—२ जै जागै तौ रांम जप, सुवै तौ रांम संभार ।—ह. र.
उ०—३ दिन मैं पोहर सुवणौ, उपरंत आखड़ी ।—रा. सा. सं.

सुवदन—वि. [सं.] जिसका मुख सुन्दर हो, सुमुख ।

सुवदना—सं. स्त्री [सं.] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी ।

सुवद्द—सं. पु.—तीर वाण । (डि. नां. मा.)

सुवधि—सं. स्त्री.—अच्छा समय या अवधि ।

सुवन—सं. पु.—१ सूर्य, रवि । (नां. डि. को.)
२ चन्द्रमा, शशि । (अ. मा)
३ अग्नि, आग । (नां. मा.)
४ पुत्र, बेटा, सुत ।
उ०— सुवन 'सौंन-सादूळ' भूळ वनचरां विचाळै । जिसौ चंद जग वंद, बीज रख वृंद संभाळै ।—रा. रू.

सुवन्न—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)
उ०—नरक सात दंडक पढम । असुरा नाग सुवंन्न ।—वृ. स्त.

सुवप, सुवपि, सुवपु—सं. पु. [सं. सु. वपु] सुन्दर शरीर ।
उ०—१. नड़ी नाचै-भिड़ै छोह लोहां मिळै । ऊससै सुवप मुख मूंछ

मोतां मिडै ।—ह. भा.

उ०—२ मन गजाज्ञ क्रिमज़, वदन किरि पूनम ससिहर । सुवप चन्न मोवन, गात मैमंत गैमर ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सुवदनि मोड सिंगार, लाज बत्रीसंइ लक्खरण । सम्या गमन भीरज्ज, मीठ संतोख सतोगुण ।—गु. रू. बं.

वि.—जिसका शरीर सुन्दर हो, सुन्दर देहधारी ।

सुवचन–सं. पु. [सं. सुवचन] १ उत्तम व श्रेष्ठ वचन ।

२ मधुर या मीठे वचन ।

सुवर–वि [सं.] सुन्दर व श्रेष्ठ ।

उ०—१ सीवनि भगति सकाजं, रिध सिध सुवर नमो संकर सुत । सुर प्रणियांण समाज स स्ठ, बुधि दीजियै गरणेस्वर ।—सू. प्र.

स. पु.—१ पति, खाविंद ।

उ०—तारण मंत्र आदेश तो, दिढ चा रंग निस संधि दिव । सारंग नयण उमय सुवर, सीस गंग धारंग सिव ।—सू. प्र.

२ श्रेष्ठवर, उत्तम वरदान ।

उ०—करि जोरि सुवर रावी किता, अमर देह अत्रकारियां । संदेह तजो कवि इम सुवंस, रघुवंसी छत्रधारियां ।—सू. प्र.

३ सम्मुख या सामने करने की क्रिया ।

उ०—इतरै मांही वात कहतां वार लागै, पांच सव सांवतां सौं राव तीडै पागड़ो छाडीयौ । वाट छोड अर बरछीयां री सुवर कर अर राव तीडौ भील लड़ता हंता, तिका रै मगरै आयौ ।

—तीडा राठोड़ वीरां री वात

रू. भे.—सुवर ।

३ देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—इमा सुवरां रा मोरां ऊपरां राजानां घोड़ा लगाया छै । बरछियां रा धमोड़ा लाग रह्या छै । चूकमारां री खाटखड़ लाग रही छै । कैई घोड़ा सुवरां रा तूंडां सूं उछल परै पड़ै छै ।

—रा. सा. सं.

सुवरजित–स. पु.—वह घोड़ा जिसके तीन पैर सफेद और सिर में तिलक हो ।

सुवरण–सं. पु. [स. सु+वर्ण] १ अच्छा वर्ण, अच्छा रंग, अच्छा रूप ।

२ अच्छा कुल, अच्छी जाति ।

३ काव्य में शुभ और सुन्दर माने जाने वाले वर्ण, अक्षर ।

उ०—१ देणां उत्तर कविजणां, सुवरण अरथ सनेह । सुकवि सुन सम दाखिए, नहीं तफावत रेह ।—बां. दा.

४ राजा दशरथ का एक मंत्री ।

५ एक वृक्ष विशेष । (नां. मा.)

६ कंचन, कनक, सोना, स्वर्ण ।

उ०—१ पारस वदन वचन चिंतामणि, ग्यांन गुण लाया ए । परसत परस सुवरण होय काया, दया पद पाया ए ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वळि हरियाला मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल ।—वृ. स्त.

७ धन, संपति ।

रू. भे.—सुवरण, सुवन्न, सुवरण्ण, सुवरन, सोव्रंण, सोव्रन ।

सुवरणक–सं. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सुवरणकार–सं. पु. [सं. स्वर्णकार] सुनार, स्वर्णकार ।

सुवरणकेतकी–सं. स्त्री.—लाल केतकी ।

सुवरणगिर, सुवरणगिरि, सुवरणगीरी–सं. पु. [सं. स्वर्णगिरि]

१ सुमेरु पर्वत ।

२ लंका का पर्वत ।

३ जालोर का पर्वत ।

सुवरणधेन, सुवरणधेनु–सं. स्त्री. [सं. स्वर्णधेनु] दान देने के उद्देश्य से बनवाई हुई सोने की गाय ।

सुवरणचूड, सुवरणचूडक–सं. पु.—सोने का एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

रू. भे.—सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक ।

सुवरणपंख–सं. पु. [सं. स्वर्ण+पक्ष] गरुड़ ।

सुवरणपरपटी–सं. स्त्री. [सं. स्वर्ण+पर्पटी] वैद्यक की एक रसौषधि जो प्राय: संग्रहणी रोग के काम आती है ।

सुवरणमालिनीवसंत–सं. स्त्री. [स्वर्णमालिनीवसंत] वैद्यक की एक रसौषधि जो स्वर्ण के योग से बनती है ।

सुवरणवजर, सुवरणवज्र–सं. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सुवरणा–सं. स्त्री. [सं. सु+वर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

सुवरण्ण—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ०—सुवरण्ण वेदी अहिनांणि जांणि, सरदद्वती सूनु अपांण पांणि ।—सालिसूरि

सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक—देखो 'सुवरणचूडक' (रू. भे.)

उ०—"" तिस्रनायक चतुस्रनायक त्रिसरनायक आद्यंगुलीयक मध्यांगुलीयक सरवांगुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक सुवरण्णचूडक मोतीसरी करंगी कंकणी पादवेस्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अस्टादसरक इति आभरणांनि ।—व. स.

सुवरन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

उ०—जथा आप कविता जथा, कीरत 'पता' कमंध । उभय संग मिळ अविकता, सुवरन जथा सुगंध ।—जैतदांन बारहट

सुवराड़णौ, सुवराड़बौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवराबौ' (रू. भे.)

उ०—तितरै रांणीजी री दीकरी रांमसिंघजी री बहू आंवां रांम कहिस्रो । तिण ऊपरि रांमसिंघजी विरागिया । दाढी न सुवराड़ै । कपड़ा न धोवाड़ै । वागो न पहिरो ।—द. वि.

२ देखो 'संवराणौ, संवराबौ' (रू. भे.)

सुवराड़णहार, हारौ (हारी), सुवराड़णियौ—वि० ।

सुवराड़िग्रोड़ौ, सुवराड़ियोड़ौ, सुवराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवराड़ीजणौ, सुवराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

सुवराड़ियोड़ौ—१ देखो 'सुवरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवराड़ियोड़ी)

सुवराणौ, सुवरावौ—क्रि. स.—१ सुधरवाना, ठीक करवाना ।

२ बालों की कटिंग करवाना ।

३ बालों में कंघी आदि करवाना ।

४ सज्जित करना, सजाना ।

५ दाढ़ी आदि बनवाना ।

६ देखो 'संवराणौ, संवरावौ' (रू. भे.)

सुवराणहार, हारौ (हारी), सुवराणियौ—वि० ।

सुवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवराईजणौ, सुवराईजबौ—कर्म वा० ।

सुवराड़णौ, सुवराड़बौ, सुवरावणौ, सुवरावबौ—रू० भे० ।

सुवरायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ सुधरवाया हुआ, ठीक कराया हुआ. २ बालों की कटिंग करवाया हुआ. ३ बालों में कंघी करवाया हुआ. ४ सजाया हुआ, सज्जित कराया हुआ. ५ दाढ़ी आदि बनाया हुआ. ६ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवरायोड़ी)

सुवरावणौ, सुवरावबौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवरावौ' (रू. भे.)

उ०—परभात रा तुरक री मुंहडो नहीं देखता। दरबार री सईयत तुरक था तिण री दाढी **सुवरावता** कांनां मैं मोती घालता।

—पदमसिंह री बात

२ देखो 'संवराणौ, संवरावौ' (रू. भे.)

सुवरावणहार, हारौ (हारी), सुवरावणियौ—वि० ।

सुवराविग्रोड़ौ, सुवरावियोड़ौ, सुवराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवरावीजणौ, सुवरावीजबौ—कर्म वा० ।

सुवरावियोड़ौ—१ देखो 'सुवरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'संवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवरावियोड़ी)

सुवरियौ—देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—**सुवरियौ** रे हुवैलौ जीवड़ा सहरि फिरैलौ, ठरड़क्य ठरड़क्य नास करै ।—ऊदीजी नैंण

सुवस-सं. पु. [सं.] अच्छा या श्रेष्ठ निवास, आवास ।

वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—आप भलांई आविया, **सुवस** वसावौ देस। जंवक ए क्यू जीविया, आसौ, 'किसनौ', महेस ।—महाराजा जसवंतसिंह री दूहौ

२ सीधा, सरल ।

उ०—म्हारै तौ माता ग्रोहीज डायजौ है म्हनै तौ सुख रै वास परणाजै अरथात ऐड़ौ **सुवस** होवै किण सूं लड़ै न भिड़ै गरीव होवै तो सुख है ।—वी. स. टी.

३ सुव्यवस्थित ।

उ०—**सुवस** वसीजै सहर सितारौ, हथणापुर मैं वेढ हुवै ।

—ग्रोपौ ग्राढौ

सुवह—वि.—योद्धा, वीर ।

सुवहू—सं. स्त्री. [सं. सुवधू] पुत्रवधू ।

उ०—वसुदेव पिता सुत थिया वासुदै, प्रदुमन सुत पित जगतपति । सासू देवकी रांमा **सुवहू**, रांमा सासू वहू रति ।—वेलि

सुवां—क्रि. वि.—तक, पर्यन्त ।

सुवांणणौ, सुवांणबौ—देखो 'सुवाणौ, सुवाबौ' (रू. भे.)

उ०—दुसमण री फौज गढ घेरियौ तठै गढ रा धणी साकौकर मरण री विचारी तद स्त्री वोहत समझाय नै **सुवांणिया** कि सुवार रा लड़जौ ।—वी. स. टी.

सुवांणणहार, हारौ (हारी), सुवांणणियौ—वि० ।

सुवांणिग्रोड़ौ, सुवांणियोड़ौ, सुवांण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सुवांणीजणौ, सुवांणीजबौ—कर्म वा० ।

सुवांणियोड़ौ—देखो 'सुवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवांणियोड़ी)

सुवांणी—सं. स्त्री. [सं. सु+वाणी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ श्रेष्ठ व उत्तम वाणी ।

रू. भे.—सुबांण, सुवांण ।

सुवांणौ—वि. (स्त्री. सुवांणी) १ सुवक्ता, अच्छा वक्ता ।

२ मधुरभाषी, मृदुभाषी ।

३ देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

सुवांन—सं. पु. [सं. श्वान] कुत्ता ।

सुवाई—सं. स्त्री. [सं. सु+वायु] १ शुद्ध एवं शीतल हवा, अच्छी हवा ।

२ सुलाने की क्रिया भाव ।

सुवाक्य—सं. पु. [सं.] सुन्दर वाक्य ।

वि.—सुन्दर वाक्य बोलने वाला, सुवक्ता ।

सुवाग—देखो 'सुहाग' (रू. भे.)

उ०—१ **सुवाग** रा एक-दौ साल ही सोरा नीं नीसरै। बाकी तौ सगळी जिंदड़ी दुखरी इकरंजी वरतीजै ।—दसदोख

उ०—२ जद बुढली मन मैं हरखाई, हो जौ थारौ, अमर **सुवाग** ववड़िया सखरणती ।—लो. गी.

सुवागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—१ पहली ब्रह्म-ग्यांन, सुरी वन राखड़ी। पहरि **सुवागण** नारि, झरोखै आखड़ी ।—मीरां

उ०—२ सज सोळै सिणगार, **सुवागण** जळ लै जावै। सांझ सवारै वृद्ध, हथाई होका लावै ।—दसदेव

सुवागत—देखो 'स्वागत' (रू. भे.)

सुवागथाळ—देखो 'सुहागथाळ (रू. भे.)

सुवागो—१ सुन्दर पहनावा, सुन्दर वेश।
उ०—दुपटो एक पोळियो राल्यो। मांय सूं सुवागो मंगाय लियो। पछै राजा जगदेव, सै माथै करि दरबार आया।
—जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'सुहागो' (रू. भे.)

सुवाड़—देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सुवाड़णो, सुवाड़बो—देखो 'सुवाणो, सुवाबो' (रू. भे.)
उ०—१ कुम्भा री मायी ठगाणियो। अवरसेक आंगणै सुवाड़ नाड़ अर मांस भाळियो। कीं नीं। टील ठाडो हेम।—फुलवाड़ी
उ०—२ या लुगाई रात दिन उणरी सेवा बंदगी करै। उणनै तिलग माथै सुवाड़ै अर आप आंगणै सूवै।—फुलवाड़ी
सुवाड़णहार, हारो (हारी), सुवाड़णियो—वि०।
सुवाड़िग्रोड़ो, सुवाड़ियोड़ो, सुवाड़योड़ो—भू० का० कृ०।
सुवाड़ीजणो, सुवाड़ीजबो—कर्म वा०।

सुवाड़ियोड़ो—देखो 'सुवायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवाड़ियोड़ी)

सुवाड़ी—स. स्त्री. [सं. सूता] वह गाय या भैंस (बकरी) जिसे प्रसव किये हुए बहुत ही थोड़े दिन हुए हों। (लवाई)
उ०—रसोई री बारी सूं ऊलळी जाणै सुवाड़ी गाय लुवारै टोघ-डियै पर रांभी है।—दसदोख
रू. भे.—सुवावड़ी, सूवाड़ी।

सुवाड़ी-जांन—सं. स्त्री. यौ.—दूध-मुहे बच्चे की बारात जिसमें वर की माता भी बारात के साथ जाती है। (विश्नोई)

सुवाट—स. स्त्री.—अच्छी राह, अच्छा मार्ग।

सुवाणो—देखो 'सुहाणो' (रू. भे.)
उ०—१ नीम पेम्टी दांत उजाळै, मोती सा चिलकै जबर। मुखड़ै मैं सुगबू सुवाणी, दुरगंध डर दुबकी कवर।—दसदेव
उ०—२ पतळी केळू कांमड़ी है, सरम सुवाणी डाळियां। छांट छीन नै'रां गपेटां, करड़ पटीली बाळियां।—दसदेव
उ०—३ काबुल काती माय, मतीरा मीठो मेवो। सुधियां नित कसमीर, सुवाणी सुसमा सेवो।—दसदेव
(स्त्री. सुवाणी)

सुवाणो, सुवाबो—क्रि. स.—१ सोने के लिये प्रेरित करना, सुलाना।
२ सुलाना, लिटाना।
उ०—१ राजकंवरी नै पाछी मैला लाय सुवाणी। जै वो बगत माथै नीं आवतो तो राजकंवरी रा पाछा सपना मैं ई दरसण नीं व्हैता।—फुलवाड़ी
उ०—२ हूं सुवाण देह री मावळ जाच करी। नी मांस, नी नाड़ अर नी किणी भांत मुड़दावाळी विडरूपता।—फुलवाड़ी
३ बच्चे को नींद लाने के लिये थपकी देना, नींद लाने का उपक्रम करना।
४ किसी को अपने साथ लिटाना, सुलाना।
५ मार गिराना।
६ विश्राम या आराम कराना।
७ पटकना।
८ देखो 'सुहाणो, सुहाबो' (रू. भे.)
उ०—१ पांना फूलां गहगही, सुर नरां सुवाई गेळ। सुरगा सोरंभ आवै घणी, आंगणी नागरवेल।—वि. सं. सा.
उ०—२ ओ तौ सुघड़ सुवायो, छबि छायो रघुवर।
—गी. रां.
उ०—३ त्रिहुए पख तारणी सोभ जुग च्यार सुवाणी। पांच तत्त होमणी रीत मोटी खट रांणी।—रा. रू.
उ०—४ धूड़ छिलकरी धड़ी, घरां ला ताती देवो। मोसड़ मांय विछाय, सुवाती सूता देवो।—दसदेव
सुवाणहार, हारो (हारी), सुवाणणियो—वि०।
सुवायोड़ो—भू० का० कृ०।
सुवाईजणो, सुवाईजबो—कर्म वा०।
सुवांणणो, सुवांणबो, सुवाड़णो, सुवाड़बो, सुवांणणो, सुवांणबो
—रू० भे०।

सुवाणियोड़ो—भू. का. कृ.—१ सोने के लिये प्रेरित किया हुआ, सुलाया हुआ. २ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ. ३ नीद लाने के लिये थपकी दिया हुआ. ४ मार गिराया हुआ. ५ विश्राम या आराम कराया हुआ. ६ किसी को अपने साथ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ. ७ पटका हुआ।
८ देखो 'सुहायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सुवायोड़ी)

सुवाद—देखो 'स्वाद' (रू. भे.)
उ०—१ मंडतै रंगांळा मतीरिया जीमण मैं घणा सुवाद लागै है, ऊपर सूं काकड़ियां गटकावण नै ही जी जागै है'—दसदोख
उ०—२ यूं रंग मैं राति वितीत भई। हीरां की अवलासा पूरण भई। रंग महल कौ समाज बणायौ। प्रांणपियारी नै रति विलास कौ सुवाद आयौ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

सुवाद्य—सं. पु.—श्रेष्ठ व उत्तम वाद्य।

सुवापी—सं. स्त्री.—जर्दे के साथ चूना मिला कर खाने योग्य बनाने की क्रिया।
उ०—तन कर कूंडी, प्यारै मन कर घोटा, सुस्ती री सुवापी बणाई।—मीरां

सुवायंत—सं. स्त्री.—शान्ति।
उ०—सुख सुवायंत करी, दुख दुवायंत टाळी। तेरी रजा करी सैतांन की वेरजा करी, आई बलाय दफै करी।—वि. सं. सा.

सुवाय, सुवायौ—देखो 'सवायौ' (रू. भे.)
उ०—तद मारग मैं जावतां आदमी साथवाळा वातां करण लगा-

जो सिरदार जिसी सुणीयौ थौ, तिण सुं सुवाय निजर आयौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सुवार—क्रि. वि. [सं. श्वः] १ आने वाला कल, आगामी दिवस ।

उ०—तद सूरेजी कही आज न वांधी तौ सुवार दोय फेरा वांधजौ ।
—सूरै खींवै कांधळोत री बात

२ प्रातःकाल, सवेरा ।

उ०—कुंवरजी पधारि अर सुख कियौ । सुवार हुया कूच हुयौ ।
—द. वि.

३ देखो 'संवार' (रू. भे.)

उ०—न क्युं वांना पहरियां, न क्युं घसीयां छार । न क्युं केस वधारियां, न क्युं कीयां सुवार ।—अनुभववांणी

४ देखो 'सवार' (रू. भे.)

उ०—तद आ इहां नै मैहल मांहै लै जाय अर उडण खटोलणी सुवार अर इतरा वैठा ।—चौवोली

रू. भे.—सुहार ।

सुवारणौ, सुवारबौ—क्रि. स.—१ तराशना ।

उ०—विपुल सिलावटिया, सुवारै सिलड़ा सारा । जाळी जथिया खुणौं, वेल, समदर, नद, तारा ।—दसदेव

२ देखो 'संवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारूं तौ राव सुवारियां, अडिया है सगळा भांड ।
—लो. गी.

उ०—२ आज सहैली अंगणौं, ऊभी अंग सुवारि । हरीया सांझ'क स्वार मैं, सूती पाव पसारि ।—अनुभववांणी

सुवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—१ मितराई न दोस्ती, आपौ न प्यार । लोगां नै धका देवै, मोटा-मोटा मै'ल दिखाळै । मुतळव ले'र सुवार करै, लोभ अर सुवारथ मैं मरै ।—दसदोख

उ०—२ विणज वटा धन वौह कीया, आप सुवारथ जांनि । निज परमारथ वाहिरौ, आखरि व्हैगी हांनि ।—अनुभववांणी

सुवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू. भे.)

सुवारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ तराशा हुआ ।

२ देखो 'संवारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवारियोड़ी)

सुवारां, सुवारि, सुवारी, सुवारे, सुवारै—क्रि. वि. [सं. श्वः] कल ।

उ०—१ भांभरकौ घड़ी च्यार-रौ रहै ताहरां जाय कंदोई नै बोलाय ल्याया, सीरौ करावज्यौ, परभात महाजन सुवारां ही जिमावां ।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

उ०—२ जै प्रभात म्हारी गोठ छै सौ सवार होयजै, सुवारै पधारजै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

सं. पु.—१ आने वाले कल का दिन, आगामी दिवस ।

उ०—१ जद भीमराजजी कही काकाजी सुवारै तौ खांमखां अरज करौ ।—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ तारां रावजी कयौ, 'सांणीजी वांणियां तौ गेर रमै है, अठै कद आवै ऊ ? तद साहणी कयौ, 'जी आप सुवारै थांणा आय संभाळज्यौ ।—द. दा.

२ प्रातःकाल ।

उ०—तद सुवारां ही कारीगर नूं बुलाय कै कहियौ सौ तिण भांति दरिद्र भींत मांहीं दिराइयौ ।—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

रू. भे.—सुहारे, सुहारै, स्वार, स्वारै ।

सुवाळ—सं. स्त्री.—सुंदरबाला, सुबाला ।

उ०—छटा विसाल सालतैं छवी घटा छपै नहीं । दिवाळपै सुवाळ दीपमाळसी दिपै नहीं ।—ऊ. का.

सुवाल—देखो 'सवाल' (रू. भे.)

उ०—१ गार्गी उण बेळा चुप होगी । मिनख रै अभिमांन, आडूपणै अर रांगड़ाई रै कारण एक भणीज्योड़ी, समझदार अर लुगाई नैं सुवाल रौ जवाव नीं मिल्यौ । उणरै वजाय उणनै धमकाय दी ।—तिरसंकू

उ०—२ छोरयां सूं तौ उणां रा 'हसबैण्ड' भी कदै ई 'सीरियस' बातां कोनी करै । 'लवरस' रौ तौ 'सीरियस' होवण रौ सुवाल ईज कोनी ।—तिरसंकू

सुवालख—देखो 'सवालख' (रू. भे.)

उ०—सू वेहलिया किण भांत रा छै ? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै, हालार रा छै, सुवालख रा छै, देस देस रा इकरंग सपेत छै ।
—रा. सा. सं.

सुवालखपट्टौ—देखो 'सवालखपट्टौ' (रू. भे)

सुवाव—वि.—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—रिव तता जळ सींवळा, सिख सतगुर का भाव । हरीया रिव गुर ताप तैं, सब गुण होत सुवाव ।—अनुभववांणी

सुवावड़—सं. पु.—१ प्रसव के समय खाने के लिये तैयार किया जाने वाले खाद्य पदार्थ विशेष जो बहुत पौष्टिक होते हैं ।

उ०—कोठचां रै मूंडै ई सुवावड़ सांधीजी । पैलड़ा सात दिनां एक टंक अजमौ अर टक सीरौ । पछै सूंठ, लोद अर गूंद रा लाडू । विदांमा रा लाडू ।—फुलवाड़ी

२ सन्तानोत्पत्ति से प्रसूतिका स्नान तक का समय ।

रू. भे.—सवाड़, सवावड़, सुआड़, सुआवड़, सुवाड़, स्यावड़ ।

सुवावड़ी—देखो 'सुवाड़ी' (रू. भे.)

सुवावणी—देखो 'सुहाणी' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै आंगण आंम पिछोकड़ै मरवौ, औ घर सदा ए सुवावणौ ।—लो गी.

उ०—२ म्हारै चांनण चौक सुवावणौ, जै मैं खेलै भतीजौ नंदलाल । आंगण मैं ऊभी केवड़ौ, जै मैं खेलै भतीजौ नंदलाल ।
—लो. गी.

उ०—२ जाणे जद सूं भेद भावां, कुड कुळ सवै सुवावणी। समझै जद मैं मीर रणांगा, ताता रासै तासणी।—नारी सईकड़ी

(स्त्री. सुवावणी)

सुवावणौ, सुवावबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

उ०—१ छाटी सी पेट, ताडू सा होठ, लोतर बा'री, बरड़ी बोली हारी लुगाई, लोगां नै तीजै घर नीं सुवावै।—दसदोख

उ०—२ मीन वांध सांमणी चलै, फदै तर्क ध्रुव तारियौ। कूंवै बीन गुह दै बोलै, भलो सुवावै वारियौ।—दसदेव

सुवावणहार, हारौ (हारी), सुवावणियौ—वि०।

सुवाविम्रोड़ौ, सुवावियोड़ौ, सुवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुवावीजणौ, सुवावीजबौ—कर्म वा०।

सुवावियोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुवावियोड़ी)

सुवास—सं. स्त्री. [सं. सु+वास] १ सुगंध, महक, खुशबू।

उ०—१ चंदण सुवास पवा चमर ऋत गंगाजळ दास करि। छिड़कंत कल रांगी छहूं, पांणी सेल वसंत परि।—रा. रू.

उ०—२ तरै छोकरी भारी भर ल्याई। तरै सोनगरी पूछियौ—पांणी मांहे इसड़ी सुवास इसड़ी तिरवाळी किण भांत पड़ै छै।—नैणसी

सं. पु.—२ निवास, ग्रावास, रहवास।

उ०—दळ ग्रग्र ग्ररां सिर ईस दियौ, कयळास मैं जाय सुवास कियौ।—पा. प्र.

३ घर, मकान, निवास स्थान।

४ डेरा, पड़ाव।

५ स्थान, जगह।

६ पोशाक, पहराव, वेशभूषा।

७ ग्रच्छा, पड़ौस।

८ शिवजी का एक नामान्तर।

९ श्वास, सांस

रू. भे.— सवास, सुवास, सुवासि, सुवासी।

सुवासणी —१ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

उ०—पोळां मायला हसती थें जेठ तुम्हारा, जी राज हरी-हरी दूब सुवासणी, राज।—लो. गी.

२ देखो 'सुवासिणी' (रू. भे.)

सुवासणौ— १ देखो 'सवासणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सुवासिणौ' (रू. भे.)

सुवासमद—सं. पु.—चंदन। (ग्र. मा.)

सुवासव—सं. पु.—चंदन।

उ०—किरमाल सुवासव वर गिरपत कहां, एतळा थोक देवां दमेसा। जनमैं साथ बिसतार दै पयोजित, भाटियां छात दरगाह भेसा।—रावळ ग्रमैराज री गीत

सुवासि—देखो 'सुवास' (रू. भे.)

उ०— पाटंबर पग पांवड़े सुंदर गांन सुवासि। मुख निरखै हरखै महल, गायण दासि खवासि।—रा. रू.

सुवासिणी—वि. स्त्री.—१ खुशबूदार, सुगंधित।

२ देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

रू. भे.—सुवासणी।

सुवासिणौ—वि.—१ खुशबूदार, सुगंधित।

२ देखो 'सवासणौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सुवासणौ।

सुवासी—वि. [सं. सुवासिन्] १ किसी ग्रच्छे या भव्य निवास स्थान में रहने वाला।

२ देखो 'सुवास' (रू. भे.)

सुवाह—सं. पु. [सं.] ग्रच्छा घोड़ा, उत्तम श्रेणी का ग्रश्व।

सुवि—ग्रव्यय—सभी, सब, समस्त।

उ०—चतुर विध वेद प्रणीत चिकित्सा। ससत्र उखध मंत्र तंत्र सुवि।—वेलि

सुविख्यात—वि. [सं.] ग्रच्छा, ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध, मशहूर, लब्ध प्रतिष्ठित।

सुविग्य—वि. [सं. सुविज्ञ] १ पंडित, विद्वान।

२ ग्रतिशय, बुद्धिमान, चतुर।

सुविचार—सं. पु.—ग्रच्छा व उत्तम विचार, नेक इरादा।

उ०—१ 'सोनंग' ग्राद कमंधां सारां। वात सुणै मांनी सविचारां।—रा. रू.

उ०—२ मिळिया सेज ग्राप रइ समुचइ, वातां रस रहियउ सुविचार। कहइ सती प्रभु रूप प्रगट करि, सिगळउ ही देखइ संसार।—महादेव पारवती री वेलि

सुविधा—सं. स्त्री. [सं.] किसी प्रकार के कार्य से मिलने वाली छूट, रहन-सहन में किसी वस्तु को उपयोग लेने की छूट, ग्राराम, सुख।

उ०—१ वस ग्राखा ऊमर कैंदी वारकर फिर जावै है ग्रर ग्राप ग्रापरी कोटड़ी री सोरप सुविधा वतावण लाग जावै है।—दसदोख

उ०—२ जनवासा में सुख सुविधा री पूरी इंतजांम हो। म्हैं स्नांन ध्यांन सूं निपटनै कपड़ा पलटिया ग्रर थोड़ी ताळ ग्रारांम करण रौ विचार कियौ।—ग्रमरचूंनड़ी

सुविनीत—वि. [सं.] १ विनम्र, बहुत ही नम्र।

२ सुशिक्षित। (पशु)

सुविसाल—वि. [स. सुविशाल] भव्य एवं विशाल।

उ०—चालता साधि पांणी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव तेत्रीस सइ दांतना देवाला, वारइ सइ साग न सुविसाला।—स. कु.

रू. भे.—सव्विसाल।

सुविसाला-सं. स्त्री. [सं. सुविशाला] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुविहांण-सं. पु.—१ शुभ सवेरा, उत्तम दिन।

उ०—१ हितू जांण सुविहांण, खांन इतकाद आद अत। कियौ विदा आलोभ, सोभ सुख वात घात चित।—रा. रू.

उ०—२ आज तौ अडंडौ कै सीस डंड धारै। आज सुविहांण प्रांण ताकै मांण मारै।—रा. रू.

उ०—३ सूरि जिनोदय उदयउ भांण, स्रीजिनराज नमूं सुविहांण। स्रीजिनभद्र सूरीसर भलउ, स्रीजिनचंद्र सकल गुण निलउ।

—स. कु.

सुविहि-सं. स्त्री. [सं. सुविधि] अच्छी विधि, सुविधि।

सुविहित-वि. [सं.] सुव्यवस्थित।

उ०—मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरंग रे। रस राता गुण ग्याता लहइ, परमारथ सुविहित संग रे।—वि. कु.

सुवीर-सं. पु. [सं.] १ स्कन्द का एक नाम।

२ शिव का एक नामान्तर।

३ उत्तम व श्रेष्ठ योद्धा।

४ देखो 'सौवीर' (रू. भे.)

सुवीरक—देखो 'सौवीरक' (रू. भे.)

सुवेण-सं. पु.—सुन्दर व मृदु वचन।

उ०—सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-मार। राजकुंवर सुकमाल छै, करवी न देह री सार।—जयवांणी

रू. भे.—सुरवैण।

सुवेता-सं. पु. [सं. सवितृ] सूर्य्य, सूरज। (नां. मा.)

सुवेध-वि.—१ पंडित, विदग्ध।

उ०—तेहमांहि सगुण सुवेध सुजांण, करइ सहू कौ तेह नूं वखांण। गंभीर गिरूउ नइ गुणवंत, वुद्धि पराक्रमी अति बलवंत।

—नळदवदंती रास

२ रसिक।

रू. भे.—सुवेध।

सवेल-सं. पु.—लंका के पास का एक पर्वत जिस पर रामचन्द्रजी ने अपनी वानर सेना सहित पड़ाव डाला था।

सुवेलड़ी-सं. स्त्री.—सुन्दर लता, वल्लरी।

उ०—वीठू वेल सुवेलड़ी, ऊगी ठांय कुठांय। एक घड़ी रै कारणै, कुळ वोड़त दह मांय।—कुंवरसी सांखला री वारता

सुवेळा-सं. स्त्री.—अच्छा समय, शुभ वेला।

सुवेस-सं. पु. [सं. सुवेश] सुन्दर वेश।

वि.—सुन्दर, स्वरूपवान।

रू. भे.—सुवेस।

सुवै-क्रि. वि.—तक, पर्यन्त।

सुवैण-सं. स्त्री. [सं. सुवेणि] १ किसी स्त्री की सुन्दर चोटी, सुन्दर वेणी।

२ मित्रता, दोस्ती।

३ देखो 'सुवेण' (रू. भे.)

सुवैन-सं. पु.—सूरज। (अ. मा.)

सुवोरोग-सं. पु.—सूतिका रोग।

सुवौ-सं. पु. [स. शुक] १ तोता, कीर, सुग्गा, शुक। (अ. मा.)

उ०—१ सिंघ सी कमर। कुच नारंगी। नख लाल ममोला। ग्रीवा मोर सी। बोली कोकल सी। अधर प्रवाळी। दांत दाड़मी-कुळी। नाक सुवा री चांच।—रा. सा. सं.

उ०—२ भोगावती नांम नगरी छै। तेथी रूपसेन राजा राज करै। तींरै विदग्ध चूड़ांमणि नांन सुवौ पींजरा मांही रहै। सौ महा पंडित छै।—वैताळ पच्चीसी

२ प्रसवकालीन समय, सूतक।

उ०—मूठावै खग मूठ, चालै भारत सामहौ। सुवै ज खाधी सूंठ, मात भळांही मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ देखो 'स्रुवौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

सुव्रख-सं. पु. [सं. सु+वृक्ष] पीपल का वृक्ष।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

सुव्रत-सं. पु. [सं.] १ उत्तम व श्रेष्ठ व्रत।

उ०—सुव्रत साधु समीपै कारतिक। लीधउ संजम भारजी।

—स. कु.

२ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७८ वां ग्रह।

३ जैनियों के भविष्यकाल के ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम।

(स. कु.)

सुव्रन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)

सुव्रिंद-सं. पु. [स. सुर+वृन्द] १ इन्द्र।

२ देवगण।

सुव्रीड़णौ, सुव्रीड़बौ-क्रि. अ.—लज्जित होना, संकुचित होना।

सुव्रीड़णहार, हारौ (हारी), सुव्रीड़णियौ—वि०।

सुव्रीड़िओड़ौ, सुव्रीड़ियोड़ौ, सुव्रीड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुव्रीड़ीजणौ, सुव्रीड़ीजबौ—भाव वा०।

सुव्रीड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—लज्जित हुवा हुआ, संकुचित हुवा हुआ। (स्त्री. सुव्रीड़ियोड़ी)

सुव्विसाल—देखो 'सुविसाल' (रू. भे.)

उ०—विसाल भाल सुव्विसाल अद्धचंद छज्जियं। रउद्दथी रिसाइ जांणि एथि आइ रज्जियं।—ध. व. ग्रं.

सुसंग-सं. पु.—१ अच्छा संग, उत्तम संगति।

२ सत्संग।

सुसंगत-वि. [सं.] युक्तियुक्त, उचित, ठीक।

सुसंगति-सं. स्त्री.—अच्छी संगत, सत्संग।

सुसंधि-सं. पु. [सं.] एक सूर्यवंशी राजा।

रू. भे.—सधि।

सुस—१ देखो 'ससा' (रू. भे.)

२ देखो 'सस' (१) (रू. भे.)

३ देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—ग्रमरसिंघजी तौ गुजरात रा कजिया पछै कजियौ करण री सुस खायियौ नै राजाधिराज जयसिंह सूं कजियौ कियां पछै मारवाड़ मांहै जैसिंह सूंपै छै।—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

सुसकणौ, सुसकबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)

उ०—इसी कहिनै घींन घीस नै सांठ करनै न्हाखिया, नै ग्रक्वाई भीतनै सुसकतौ देख घावां सुं रंज्यौ नांख्यौ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

सुसकल्यौ—देखो 'सस' (१) (ग्रल्पा; रू. भे.)

सुसकार, सुसकारौ-सं. स्त्री.—१ कपड़ा धोते समय धोबी के मुंह से निकलने वाली ध्वनि।

२ ध्वनि, ग्रावाज।

३ देखो 'सिसकारी' (रू. भे.)

रू. भे.—सुस्कार, सुस्कारौ।

सुसकियोड़ौ—देखो 'ससकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुसकियोड़ी)

सुसज्जित-वि. [सं.] १ भली-भांति सजा हुग्रा।

२ शोभायमान, शोभित।

सुसणौ, सुसबौ-क्रि. ग्र.—१ सिकुड़ना, संकुचित होना।

२ सूखकर कम होना, सोखा जाना।

उ०—स्वामीजी बोल्या—ज्यूं तिण ब्राह्मण कोरा करवा में घी घातियौ। सुसजाए तौ पिण जांण्यौ पांनं पड़्यौ सोही खरौ।

—भि. द्र.

सुसत-सं. पु.—१ सुख-शांति, कुशलता। (ग्र. मा.)

उ०—ग्रौ नाठौ पांणी पीवै, इण मैं जळ छै। तिण मैं रुचै सुं ग्रगांणी तरै जळ पीधौ। सुसत जीव मैं हुवौ।

—राव रिणमल री वात

२ सत्य, सच। (ग्र. मा.)

३ देखो 'सुस्त' (रू. भे.)

सुसता, सुसताई-सं. स्त्री. [फा. सुस्ती] १ शांति, तसल्ली।

उ०—१ सुसता उतावळ नांहि, धीरज धरै मन मांहि, सुकोमल साध।—जयवांणी

उ०—२ धीरज सुसताई विचार सारा कांम सुधारै। ग्रर उतावळी सूं निश्चय सारा कांम बिगड़ै।—नी. प्र.

२ उदासी, खिन्नता।

३ ग्रालस्य, प्रमाद, सुस्ती।

सुसताणौ, सुसताबौ—देखो 'सुस्ताणौ, सुस्ताबौ' (रू. भे.)

सुसतायोड़ौ—देखो 'सुस्तायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुसतायोड़ी)

सुसती—देखो 'सुस्ती' (रू. भे.)

उ०—वेयना सुसती कर हेक घडै। कर पेदल पीठ रखौ कनलै।

—पा. प्र.

सुसते, सुसतै-क्रि. वि.—धीरे, शनैः।

उ०—तरै भींवैजी कह्यौ, थां इकेलां सूं टोळणी ग्रासी नहीं, तिणसूं राज बाहिर पालौ नैं वेगा पधारीज्यौ। इसी कहि घोड़ी टोळी। तरै पिउसंधी कह्यौ, धीमा धीमा सुसतै सुसतै चाल्यां जाज्यौ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

सुसतौ—देखो 'सुस्त' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—रावळ जैतसी देवीदास री। देवीदास रै पछै पाट बैठौ। वरस ३५ मास ४ दिन १० जेसळमेर राज कियौ। सुसतौ सो ठाकुर हुवौ।—नैणसी

(स्त्री. सुसती)

सुसद्द—देखो 'सुसवद' (रू. भे.)

उ०—संघ मांहै मांणस सात लाख, ए सहूना परवंधै साख। सरसती कंठा भरण विरुद्द, चउवीस वोलइ भट्ट सुसद्द।—स. कु.

सुसनंद-सं. पु. [सं. श्वसन्+नंदन] हनुमान।

सुसव-सं. स्त्री. [सं. सु+छवि] सुन्दरता, छवि।

उ०—तिण नाद थकत हुई रथ मयंकर, घणूं सुसव जोवतां घणी। काढा कोर वडइ कारीगर, चाहउ चरण जडाव तणी।

—महादेव पारवती री वेलि

सुसवद, सुसवद्द-सं. पु. [सं. सु+शब्द] १ कीर्त्ति, यश, बड़ाई।

(ग्र. मा.)

उ०—१ कवसळ सुता राजकुमार, ग्रवखी वखत सुजन ग्रधार। सुसवद कियौ तिण मत विसार, जीता जिकै नर जमवार।

—र. ज. प्र.

उ०—२ जासी फूल भडेह, पिंड पिरथी सैं ऊपरा। सुसवद तणौ सनेह, वास न जासी वींझरा।—वींझरा ग्रहीर री वात

उ०—३ जोधां राकसं जरद्द, मूंगळा उतारै मद्द। वोहाळी खाटै विरद्द, मरद्दां मरद्द। रिमां खागैं करै रद्द, वहू लियैं सुसवद्द। हींदू ऐ हद, विहद्द जद जद जद्द।—ल. पि.

२ श्रेष्ठ एवं उत्तम शब्द।

३ मधुर शब्द।

रू. भे.—सुसद्द।

सुसमय-सं. पु.—ग्रच्छा समय, ग्रच्छा ग्रवसर।

सुसमा-सं. स्त्री. [सं. सुषमा] १ सुन्दरता, शोभा, छवि।

उ०—१ कावुल काती मांय, मतीरां मीठौ मेवौ। सुधियां नित कसमीर, सुवांणी सुसमा सेवौ।—दसदेव

उ०—२ कोमळ वेल काटियां वरणै सुसमा-संग्रह सुरधरा। कठै

लांमी केल कहीजै, गोळ भुंड सर मुनवरां ।—दसदेव

२ मंद मुस्कराहट, मृदु हास्य ।

[सं. सुष्मं, सुष्म] ३ अग्नि । (डिं. को.)

रू. भे.—सुखम, सुखमा ।

सुसमाथ-वि.—सामर्थ्यवान, समर्थ ।

उ०—'राजड़' नैं 'कुंभै' जिसा, मांगळिया **सुसमाथ** । रूकहथा 'जसराज' रा, पोरस भीम क पाथ ।—रा. रू.

सुसमित-सं. पु. [सं. सुस्मित] १ आनन्द से मुस्कराता हुआ, मुदित ।

उ०—**सुसमित** सुनमित निज वदन सुव्रीड़ित । पुंडरीकाख थिया प्रसन ।—वेलि

२ प्रस्फुटित, प्रफुल्लित ।

सुसमौ—देखो 'ससमौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुसमी)

सुसर-सं. पु.—१ छप्पय छंद का ३६ वां भेद जिसमें ३५ गुरु, ८२ लघु से कुल ११७ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती हैं । (र. ज. प्र.)

२ देखो 'ससुर' (रू. भे.)

उ०—**सुसर** इ वळै जवाई सरिसउ, क्युं हेक खाटउ जीव कियउ ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'सुसरि' (रू. भे.)

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नयर, वाजै **सुसर** वधांमणा । वाजंत्र सुतांन खट त्रीस वगि, सोभै ग्यांन सुहांमणा ।—रा. रू.

४ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

सुसरनंद-सं. पु. [सुसुर=शंकर+नंदन] हनुमान । (नां. मा.)

सुसरमा-सं. पु. [सं. सुशर्मा] त्रिगर्त्त नरेश वृद्धक्षेम का पुत्र जो द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित था एवं महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष में लड़ता हुआ अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

वि. वि.—दुर्योधन के कहने पर इसने मत्स्यदेशाधिपति विराट पर उस समय आक्रमण किया था जबकि पांडव लोग विराट के यहां अपने अज्ञातवास की अवधि बिता रहे थे । उक्त युद्ध में इसने विराट को वन्दी वना लिया था किन्तु अर्जुन, भीमादि ने युद्ध करके पुनः छुड़वा लिया ।

रू. भे.—ससरम, ससरमा ।

सुसराळ-सं. पु. [सं. श्वशुर+आलय] श्वशुर का घर, ससुराल ।

उ०—कुण नगर म्हारौ **सुसराल** मेरी माय, कुण नगर म्हारौ पीवरियौ ।—लो. गी.

सुसरि-स. स्त्री. [सं. सु+सरित्] १ सुन्दर हार, सुन्दर लड़ी या माला ।

उ०—कळ मोतियां **सुसरि** हरि कीरति । कंठसरी सरसती किरि ।
—वेलि

[सं. सुरसरी] २ गंगा नदी ।

३ तालाव, सर ।

क्रि. वि.—१ मधुर एवं मीठे स्वर में ।

उ०—१ वाजै **सुसरि** राजगढ वाजा । रांणी गौड़ परणियौ राजा ।—रा. रू.

उ०—२ आणंद मोर **सुसरि** आवाजै । वीणा वंस मधुर सुर वाजै ।—आसौ वारहठ

२ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

३ देखो 'ससुर' (रू. भे.)

सुसरौ—देखो 'ससुर' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर गोरी ओळूं थारी परी रै निवार, चंपक वरणी बावोसा री ओळूं **सुसरौ** जी भांगसी ।—लो. गी.

उ०—२ **सुसरैजी** रै हुकम कंवरड़ौ चालै, सासड़ रै कंवरांणीजी । सुसरौजी तो पूत सरावै, सासूजी कुळ व्याहीजी ।—लो. गी.

उ०—३ 'सवळै' नूं **सुसरौ** करण, 'मिरजै' किया मुकांम । 'आसावत' छळ ऊजळै, बळ भरियौ वरियांम ।—रा. रू.

सुसलौ, सुसल्यौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—एक **सुसला** रै पाछै दोय छाली नाहर दोड़्या । जद **सुसळौ** न्हास नैं विल मैं पेस गयौ ।—भि. द्र.

सुसवट-पु.—कीर्ति, यश ।

उ०—घण दळ लियां 'घासी' घण नांमी, **सुसवट** सुवद वदीती साखि । भैरू घड़ पाड़ि वाड़ विधि वैरौ, करि भेळा येळा कमळाखि ।—घासीरांम हाडा रौ गीत

सुसवद, सुसवाद-सं. [सं. सु+स्वाद] स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उ०—चोली मइ चरणा चीर सखरा, सुंखड़ा **सुसवाद** ए । रली रंग स्युं लइ जसौभद्रा, जांणइ जेठ प्रसाद ए ।—स. कु.

सुसांत-वि. [सं. सु+शांत] अत्यन्त शान्त, स्थिर, गंभीर ।

सुसा—देखो 'ससा' (रू. भे.)

उ०—१ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जांणि गुरु, नांम लियौ दमघोख नर । हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै **सुसा** सिसुपाळ वर ।
—वेलि

उ०—२ रथ गज त्रिखभ तुरंग रथ, दन अनमिति सत दास । **सुसा** विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास ।—रा. रू.

सुसाध्य-वि. [सं.] जो सहज में किया जा सके, जो सहज में पूरा किया जा सके, सुखसाध्य ।

सुसार-सं. पु.—कमल । (अ मा.)

सुसाणौ, सुसावौ, सुसावणौ, सुसाववौ-क्रि. स. ['सुसणौ' क्रिया का प्रे. रू.] संकुचित करना, सिकोड़ना, सिकुड़ाना ।

उ०—भरियौ हव्वाहोळ, उवक नाळांनै आवै । आंन ओसरै मेह, पेटनै भळै **सुसावै** ।—दसदेव

सुसायोड़ौ, सुसावियोड़ौ-भू. का. कृ—संकुचित किया हुआ, सिकोड़ा हुआ ।

(स्त्री. सुसायोड़ी, सुसावियोड़ी)

सुसिख-सं. स्त्री. [सं. सुशिख] १ अग्नि का एक नाम ।

[सं. सुशिखा] २ सुन्दर वेणी, चोटी ।

[सं. सुशिल्प] ३ सुशिल्प ।

सुसियोड़ो-भू. का. कृ.—१ सिकुड़ा हुआ, संकुचित हुवा हुआ. २ सूखा हुआ, सोखा गया हुआ ।

(स्त्री. सुसियोड़ी)

सुसियौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सुहड़ मावै बोरिया लिप, सुसिया सरणो ओट है । ठायां ठायां टोरड़ी, घर वाकीरां लंगोट है ।—दसदेव

सुसिर-वि. [सं. सुशिर] जिसका सिर सुंदर हो ।

सं. पु. [सं. सुषिर] १ बेंत ।

२ बांस ।

३ अग्नि ।

४ एक प्रकार का वाद्य ।

उ०—तत वितत घन सुसिर पंच वरण्ण वाजित्र वाजइ छद्द ।

—कां. दे. प्र.

रू. भे.—सिसर, सुसिर, सुसरि ।

सुसिला—देखो 'सुसीळा' (रू. भे.)

सुसीतळ-वि. [सं. सु+शीतल] अत्यन्त ठण्डा, शीतल ।

सुसीतळताई-सं. स्त्री.—अत्यन्त ठण्डा होने की अवस्था या भाव, शीतलता ।

सुसीम-सं. स्त्री.—शरदी, शीत ।

उ०—कहियौ सोलंकियां रौ ओज तौ इण समय हिंदुस्थांन रा अंधकार नूं मईंद आगळी मंजा करि वांधवजणां रा दुक्ख रूप सुसीम नै उडावै छै ।—वं. भा.

सुसीर-सं. पु.—चन्द्रमा, चांद । (नां. मा.)

सुसीळ, सुसील-वि. [स. सु+शील] १ उत्तम स्वभाव वाला, सज्जन, भला ।

उ०—१ सुसील सभ्य साच्छरं, स्त्रुति प्रमांन सोहनैं । अमग पुत्ति ओज कै मनोज मूरति मोहनै ।—ऊ. का.

उ०—२ वैजू मुळक्यौ, लीना म्हे गळती मार्थ हो । पे'ली मुलाकात में म्हनै पवन नै अड़ियल अर घमडी समझ्यौ, पण लीना थारी परख सांची निकळी । पवन सुसील, निस्वारथ अर साहसी है ।

—निरसंकू

२ उत्तम चरित्र वाला, चरित्रवान, सच्चरित्र ।

उ०—जै हुंता जगि जाचंध, तै हुवा गुर ग्यांनी । जै हुंता सदा असोच, हुवा सुसील सिनांनी ।—उदोजी नैण

३ सरल-चित्त, सीधा-सादा, भोला-भाला ।

उ०—फूटरी सुसील गुणवांन किन्यावां नै सुखी वणा'र देस रौ टांचौ वदळौ ।—दसदोख

४ विनीत, नम्र ।

सुसीलता-सं. स्त्री.—सुशील होने की अवस्था या भाव, सज्जनता ।

सुसीला-सं. स्त्री. [सं. सुशीला] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक ।

२ यमराज की पत्नी का नाम ।

३ सुदामा की पत्नी का नाम ।

४ देवी, दुर्गा ।

५ एक नदी का नाम ।

उ०—देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला, देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला । देवी गोम गंगा देवी वोम गंगा, देवी गुप्त गंगा सुचीरूप अंगा ।—देवि.

६ राधिकाजी की एक अनुचरी का नाम ।

सुसुक्षा-सं. स्त्री.—अग्नि, आग ।

उ०—स्वक्रोधा सुसुक्षा धगधगित दक्षाधिप-सुता । सिलोचै संभूता धजर अवधुता अदभुता ।—मे. मा.

सुसुपत-वि. [सं. सुषुप्त] १ प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ, निद्रित ।

२ अचेतन, वेहोश ।

३ लकवा मारा हुआ, सुन्न ।

सुसुपति, सुसुपती, सुसुप्ति, सुसुप्ती-सं. स्त्री. [सं. सुषुप्ति] १ गहरी नींद, प्रगाढ़ निद्रा ।

उ०—साधो भाई आ मत लै कोई नर रे, जाग्रत मांय सुसुप्ती वरतै निज स्वरूप थित कर रे ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

२ अचेतनता, जड़ता, अज्ञानता ।

उ०—१ सत्वगुण विस्णु भरण न सुपन, सूक्षम जोत न जूप । तमगुण सिव संघार न सुसुपती, नहीं ज्यां सुंन अनूप ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ सुसुप्ती कास्ठ ज्यूं भाया, ज्यां मांई चेतन अग्नि समाया । सत् सब्द सूं कास्ठ मथांणी, ज्यां मैं ग्यांन अग्नि प्रगटांणी ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

३ पातंजल दर्शन में सुपुप्ति, चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति को माना है, जिसमें जीव, नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है किन्तु जीव को इस वात का ज्ञान नहीं रहता कि उसने ब्रह्म की प्राप्ति की है ।

४ वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था ।

रू. भे.—सुखपत, सुखपति, सुखपती, सुखुपती, सुखुप्ती, सुखोपति ।

सुसुमण-सं. स्त्री. [सं. सुषुम्ण] १ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक ।

२ देखो 'सुसुमणा' (रू. भे.)

सुसुमणा-सं. स्त्री. [सं. सुषुम्णा] १ शरीर की नौ प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहने वाली एक नाड़ी । (हठयोग व तंत्र)

२ देखो 'सुखमणा' (रू. भे.)

सुसुरुत-सं. पु. [सं. सुश्रुत] १ आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आद्याचार्य ।

२ उक्त आचार्य द्वारा रचित आयुर्वेद चिकित्सा का ग्रंथ 'सुश्रुत-संहिता'।

वि.—१ अच्छी तरह सुना हुआ।

२ वेद विद्या में निपुण।

३ प्रसिद्ध, मशहूर।

सुसेण-सं. पु. [सं. सुषेण] १ रामायण के अनुसार एक वानर जो वरुण का पुत्र, वाली का श्वसुर तथा सुग्रीव का वैद्य था।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

सुसेत-वि. [सं. सु+श्वेत] श्वेत एवं उज्जवल, शुभ्र, चमकीला।

उ०—मारु देस उपन्नियां, तांहका दंत सुसेत। कूंझ-बचां गोरंगियां, खंजर जेहा नेत।—ढो. मा.

सुसैंधवी-सं. स्त्री. [सं.] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

सुसोभित-वि. [सं. सुशोभित] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—भाळ विसाळ सिंदूर सुसोभित, हाल मराल, हसत्ती।

—मे. म.

२ सुन्दर, मनोहर।

रू. भे.—ससोभित, सुसोहत, सुसोहित।

सुसोहणौ, सुसोहबौ-क्रि. अ.—शोभायमान होना, शोभित होना।

उ०—जाहर जस सुसबोह जुत, सुदता कुसम सुसोह। कांटां सूं मूंडौ क्रपण, वप अपजस वद बोह।—बां. दा.

सुसोहत, सुसोहित—देखो 'सुसोभित' (रू. भे.)

सुसोहियोड़ौ-भू. का. कृ.—शोभित या शोभायमान हुवा हुआ।

(स्त्री. सुसोहियोड़ी)

सुसौ-सं. पु.—शशक, खरगोश।

उ०—अंगरा रिख सुसा वाह रस हास यण, कळंदीराव कुळ वैस्य त्रय कंज।—र. रू.

रू. भे.—सूंसौ, सूसौ।

सुसौभ-सं. स्त्री. [सं. सुशोभा] शोभा, आभा, कान्ति, छवि।

उ०—नग बंधण अग्र सुसौभ नई। थिर सेहरि दांमणि जांणि थई।—रा. रू.

सुस्क-वि. [सं. शुष्क] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी न हो, जिसमें तरलता न हो, खुश्क, सूखा।

२ जिसमें कोई रस न हो, नीरस।

३ जिसमें हर्ष, आनन्द आदि की अनुभूति न होती हो, नीरस, विरक्त, उदास।

४ भुना हुआ।

५ कृश, दुबला।

६ झूठा, बनावटी।

७ रीता, खाली।

८ व्यर्थ, निरर्थक।

९ कटु, कर्कश।

१० जीर्ण-शीर्ण, पुराना।

सुस्कार, सुस्कारौ—देखो 'सुसकार' (रू. भे.)

उ०—आड़ू भाटा, थळिया, मोथा, गांवेड़ी अर वारतू कैईजण, मोसा बोल सुणण अर मसकरी जोग विचै सुस्कार ई नी करण री धारली।—चितरांम

सुस्त-वि. [फा. सुस्त] १ जिसमें तत्परता या स्फूर्ति की कमी हो, आलसी, प्रमादी।

२ दुर्बल, कमजोर, अशक्त, शिथिल।

३ खिन्न, मलिन, उदास।

४ मंद गति वाला, धीमा, दीर्घ सूत्री।

५ जिसमें काम-शक्ति कम हो।

६ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मंद-बुद्धि।

७ आभा या कान्ति से रहित, निस्तेज।

८ रोगी।

रू. भे.—सुसत।

अल्पा;—सुसतौ।

सुस्ताई—देखो 'सुस्ती'।

उ०—जिण कांम मैं विचार सुस्ताई सूं कांम करै तौ सही मन मांनी सुधरै।—नी. प्र.

सुस्ताणौ, सुस्तावौ-क्रि. स.—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम करना, श्रम दूर करना।

उ०—घुड़लां नै रास्तौ रोक्यां देख नै म्हैं सोच मैं पड़ग्यौ। सरवर री पाळ माथै लीना री बाथां मांय सुस्तातां ज्यांकी घुड़लां री आवाज सुणी वा सांचली कोनी निकळी।—तिरसंकू

२ किसी कार्य को करने से कुछ समय के लिए रुकना, ठहरना।

उ०—तद बखतसिंहजी कही दिन दोय सुस्तायजै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ धैर्य रखना, धीरज धरना।

उ०—मंत्रीपुत्र कहियौ—महाराजकुमार! चंदण अपणै हाथ मैं लगाया चपेटा मारिया छै तीं री यौ विचार छै—दस दिन चांनण पछै मिळस्यां, तितरै थां सुस्ताय रहौ।—वैताळ पच्चीसी

४ प्रतीक्षा या इंतजार करना।

५ आलस्य या सुस्ती फैलाना।

६ नींद लेना।

सुस्ताणहार, हारौ (हारी), सुस्ताणियौ—वि०।

सुस्तायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुस्ताईजणौ, सुस्ताईजबौ—कर्म वा०।

सुसताणौ, सुसतावौ, सुस्तावणौ, सुस्तावबौ—रू० भे०।

सुस्तायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम किया हुआ, श्रम दूर किया हुआ. २ किसी कार्य को करने से कुछ समय के लिये रुका हुआ, ठहरा हुआ. ३ धैर्य रखा हुआ, धीरज धरा

हुआ. ४ प्रतीक्षा या इंतजार किया हुआ. ५ आलस्य या सुस्ती में पड़ा हुआ. ६ नींद लिया हुआ।

(स्त्री. सुस्तायोड़ी)

सुस्तावणौ, सुस्ताबौ—देखो 'सुस्ताणौ, सुस्तावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मारग सुस्तायो नू एक वात री बुहांनो कर अठै सूं विदया होसा।—द. दा.

उ०—२ सांमी दीसती प्याऊ में थोड़ी ताळ सुस्तावण रो मतो करियो।—फुलवाड़ी

उ०—३ पांणी पावण री कह्यौ तद बा डावड़ी बोली—थोड़ी ताळ सुस्तावौ, परसेवौ सूक जावै तो पछै पावूं।—फुलवाड़ी

सुस्ताबियोड़ौ—देखो 'सुस्तायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुस्ताबियोड़ी)

सुस्ती-सं. स्त्री. [फा.] १ आलस्य, प्रमाद।

२ शिथिलता, ढीलापन।

३ दुर्बलता, कमजोरी।

४ मलिनता, उदासी, खिन्नता।

५ गति मांद्य, दीर्घ सूत्रता।

६ बुद्धि मांद्य।

७ काम शक्ति का अभाव।

८ निस्तेजावस्था।

९ रुग्णावस्था।

रू. भे.—सुसती, सुस्ताई।

सुस्थित-सं. पु.—घोड़े का एक ग्रह विशेष, इसके ग्रसित होने पर घोड़ा बराबर हिनहिनाता रहता है और अपने आपको देखता रहता है।

सुस्यांम-वि. [सं. सुश्यामः] सुन्दर एवं श्याम, श्याम सुन्दर।

उ०—नमो पंच व्रन्न-पवित्र सुपीत। सुस्यांम सुनील, सुरत्त, सुसीत।—ह. र.

सुस्यौ—देखो 'सस'। (१) (अल्पा; रू. भे.)

सुस्री-सं. स्त्री. [सं. सुश्री] १ सुन्दर-शोभा।

उ०—गौ गीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई सुस्री। वळी सरद स्रग लोग वासिए, पितरे ही अत लोक प्री।
—वेलि

२ कुमारी, मिस। (Miss)

सुस्रूसा-सं. स्त्री. [सं. शुश्रूषा] १ सेवा-चाकरी, टहल-बंदगी।

२ देख-भाल, संभाल, सुरक्षा।

उ०—अंजन न घालै आंख, मसी न लगावै दांत। सुस्रूसा देह तणी ए, वरजी सासन कै धणी ए।—जयवांणी

सुस्रेय-सं. पु. [सं. सुश्रेय] १ कुशल-क्षेम। (ह. नां. मा.)

२ यश, प्रशंसा।

सुस्वधा-सं. स्त्री [सं.] कल्याण, मंगल, सौभाग्य।

सुस्वप्न-सं. पु. [सं.] अच्छा सपना, शुभ सपना।

सुस्वर-सं. पु.—मधुर व मीठा स्वर, मीठी आवाज।

वि.—जिसका स्वर मधुर हो, सुरीला।

सुहंगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)

उ०—मुळतांणी घर मन वसी, सुहंगा नइ सेलांर। हिरणाखी, हसि नइ कहइ, आंणउं हेडि तुखार।—ढो. मा.

(स्त्री. सुहंगी)

सुह—१ देखो 'सुख' (रू. भे.)

२ देखो 'सुभ' (रू. भे.)

उ०—धन धन तैं नर धरणीयें, जेहनी सफली जीह। जस कहै पास जिणंद नौ, सुह भावै धरमसींह।—ध. व. ग्र.

सुहग्गा—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—ईसर उठ भग्ग धोमर अग्ग, बै बै पग्ग लग बग्ग। सुठि नारि सुहग्गा मिळियौ मग्गा, दांणव पग्गा रच दग्गा।—भगतमाळ

सुहड़, सुहड़ौ—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—१ सौ पड़िया दूजा सुहड़, अन ऊपड़िया खेत। अंग नत्रीठा वाजिया, आद 'दुरग्ग' सचेत।—रा. रू.

उ०—२ हीयाफट हठ न करौ हूरां, नर हिंदु छै तुरक नहीं। बांमीवंध केसरियै वागै, सूर सुहड़ राठौड़ सही।
—हठीसिंह राठौड़ जोगावत रौ गीत

सुहट—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

सुहटौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—ई समय दैत्य दमनी कन्हा सैं सुहटौ एक कागद लेयनै जयमाला कन्है आयौ।—पंचदंडी री वारता

सुहणौ—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

उ०—१ मैं सुहणौ इम पाइयौ, हूं गयौ इंद्र सभाय। तहं तूं दीठी नाचती, वैठा सुरपती राय।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सुहणां ही मां ताहरौ ध्यांन, वाल्हो लागै जेम निधांन।
—वि. कु.

सुहद्र-सं. पु.—यम। (अ. मा.)

सुहद्रागिर-सं. पु. [सं. सुभद्रागिरि] भाद्राजून नामक ग्राम (जोधपुर) के पास की पहाड़ी, सुभद्रागिरी।

उ०—आयौ सुहद्रागिर असुर, छायौ खेह निहंग। आगै 'भांण' तरस्सियौ, गह केवांण अभंग।—रा. रू.

सुहांणी-सं. स्त्री.—१ लोहे का नुकीला औजार विशेष जो बारीक चीजों को पकड़ने के काम आता है।

२ देखो 'सुहावणी' (रू. भे.)

उ०—१ बोलै सीतापत इसडीजी वांणी, सुरनर नागां नै लागै सुहांणी।—र. रू.

उ०—२ माहरै हिव था धणीयांणी, तुं हिज मन मांहि सुहांणी जिम राजा नै पटरांणी।—वि. कु.

रू. भे.—सुणी।

सुहांणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—हरियळ केरां केरां कसूंबल ढाल्ल ई ढाल्ल पळकता हा। कित्ता सुहांणा। किता रूपाळा।—फुलवाड़ी

सुहांमणउ, सुहांमणौ—देखो 'सुहावणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नरवर देस सुहांमणउ, जइ जावउ पहियांह। मारू तणा संदेसड़ा, ढोलइनूं कहियांह।—ढो. मा.

उ०—२ फागण मास सुहांमणउ, फाग रमइ नव वेस। मौ मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो. मा.

उ०—३ एहिज व्रिक्ष सुहांमणा सखी, घणा वली फल फूल।
—वि. कु.

उ०—४ चित हूंत मेटी राय चिंता, वधै चाय वधांमणा। दुरदीह चा दुखगया दुरै, संपजि दीह सुहांमणा।—रा. रू.

(स्त्री. सुहांमणी)

सुहांमणौ, सुहांमवौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

सुहा, सुहाग—सं. पु. [सं. सौभाग्य] १ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, वह समय जब स्त्री का पति जीवित हो, सौभाग्य।

उ०—१ सुहा ताइ विसन ब्रह्म ताइ सुहा, इंद्र सुहा आसीस दीयइ। न कहइ सुहा घणूं नांन्हडियउ, कवळ मजीठउ राव कीयउ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहै वेलि वर लहै कुमारी, परणी पूत सुहाग पति।
—वेलि

उ०—३ कुलीन नारि केकयं, आणंद मैं अनेकयं। सुहाग भाग सूं भरी, अनेक राग उच्चरी।—सू. प्र.

२ स्त्री के शरीर पर का ऐसा पहरावा जो उसके पति के जीवित होने का प्रतीक हो, सौभाग्य चिन्ह।

उ०—१ अवै सुहाग रै इण ओछौ वांहां रै कंचुवै (कांचळी) सूं मोनै बराबरी री स्त्रियां मैं हाथ देखावती नै लाज आवै छै।
—वी. स. टी.

उ०—२ हूं साची रावत जोधार री बेटी हूं तौ ए आपरी सुहाग री चूड़ियां पग पग माथै पछट जमी माथै पटक नै सुहाग आघौ न्हांकूंला।—वी. स. टी.

३ पति की आयु।

उ०—१ रानी कौ राज तपतौ जाय, म्हांकौ सुहाग वधतौ जाय।
—लो. गी.

उ०—२ म्हनै पूरौ भरोसौ है बीरा थांरै वाहुबळ रौ अर इण भरोसा रै पांण इज तौ थां सूं सुहाग री भीख मांगती अमरचूनड़ी री ओढांमणी चावूं।—अमरचूंनड़ी

४ पति का संसर्ग, सौभाग्य-सुख, पति का प्रेम।

उ०—पण अणी सौ ठाकुर मया करै सौ या सुहागण। दुजी तीनौं सौ मया थोड़ी। जदी वेटां री माउवा विचार कीधौ सौ ईणी नै ठाकुर सुहाग दीधौ।—गांम रा धणी री वात

५ विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत।

६ यश, प्रशंसा, तारीफ।

रू. भे.—सवाग सवाग, सुआग, सुभाग, सुवाग, सुहागि।

सुहागण, सुहागणि, सुहागणी—सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा, सुहागन, सौभाग्यवती, जो विधवा न हो।

उ०—१ सूरां खोटौ सूरपण, चूड़ा अजब उतार। हूं बळिहारी कायरां, सदा सुहागण नार।—वी. स.

उ०—२ अणी धड़ कहि, फबै फळ एम। जाळी मझि हत्थ, सुहागणि जेम।—सू. प्र.

उ०—३ फागुन फरहरै वात, प्रभात नौ सीत अपार। नाह सुं फाग रमैं बहु, राग सुहागणि नारि।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ सुरति सुहागन सुंदरी, दुलही सबद सुजांन। सदा सनेही ऊपरै, वारू मन अर प्रांन।—अनुभववांणी

२ वह स्त्री जिसे उसका पति विशेष प्रेम करता हो, मानवती, मानेती।

उ०—१ मांडण री बेटी सुहागण, सीहै री बेटी दुहागण।
—नैणसी

उ०—२ गरीबनाथ उण डावड़ा दुहागण रा नूं दिया, सु आंबा लै डावड़ौ घरै आयौ। तरै सुहागण वैर करन है (रे) हुती, तिण रै छोरू वै आंबा दीठा।—नैणसी

रू. भे.—सवागण, सवागण, सुआगण, सुभागण, सुवागण, सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी।

सुहागथाळ—सं. पु.—भोजन परोसा हुआ वह थाल जिसमें कुछ सुहागिनी स्त्रियां नवागंतुक वधू के साथ भोजन करती है।

रू भे.—सवागथाळ सवागथाल, सुवागथाळ।

सुहागदार-बिड़लौ, सुहागदार-बीड़ौ—सं. पु. यौ.—दूल्हे के स्वागत के समय वधु-पक्ष की स्त्रियों द्वारा दी जाने वाली पान की गिलोरी।

सुहागवती—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

सुहागि—देखो 'सुहाग' (रू. भे.)

उ०—वेळा तिणि व सुहागि धड़हड़ती धूंवा पखइ। तणै अंतेवर ऊठिखी अग्गहुं जांणइ आगि।—अ. वचनिका

सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—१ या मैं एक वदेही पुरखा, इळा पिंगळा रांणी। सुखमिण सदा सुहागिण सूंदरी, मोख मुगति जांह जांणी।—अनुभववांणी

उ०—२ सौय सुहागिन सूंदरी, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया विन इकतार।—अनुभववांणी

सुहागौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का क्षार, इससे स्वर्ण के आभूषण साफ किये जाते हैं।

उ०—ऐसी प्रीत लगी मन मोहन ज्यूं सोनै मैं सुहागा।—मीरां

२ सुन्दर वागा, सुन्दर पौशाक।

रू. भे.—सुआगौ, सवागौ, सवागौ, सुवागौ, सोहागौ।

सुहाणौ-वि (स्त्री. सुहाणी) १ शोभा देने वाला, शोभायमान, शोभित।

२ सुगन्धित।

३ अच्छा, बढ़िया।

४ सुन्दर, मनोहर।

५ स्वादिष्ट।

६ रुचिकर, मनभावना, प्रिय।

रू. भे.—सुवांणौ, सुवाणौ, सुवावणौ, सुहांमणौ, सुहावणौ।

सुहाणौ, सुहावौ-क्रि. अ.—१ अच्छा लगना, मन भाना, रुचिकर लगना, प्रीतिकर लगना।

उ०—१ जबतें मोहि नंद नंदन द्रस्टि परयौ माई। तबतें परलोक लोक कछु नां सुहाई।—मीरां

उ०—२ सतसूरां री बात, हरीया भावै सूर कुं। कायर कुं न सुहात, चोर न चाहै चांदणौ।—अनुभववांणी

उ०—३ दुनीयां भूठै रचणी, साच न पैंडे जाय। सांई भूठ न रचई, हरीया सचि सुहाय।—अनुभववांणी

२ बरदास्त होना, सहन होना।

उ०—१ बेटा रा बाप नैं ग्रो सगळो ठरको सुहायौ कोनीं। बात बात मैं घणी ई खांमियां काढण री अटकळां करी, पण मांढिया कसूर मैं नीं ग्राया जकौ नीं ग्राया।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरीया वचन वमेक का, सबकु कहचा सुणाय। ग्राडा बगतर भरम का, एक न ग्रंग सुहाय।—अनुभववांणी

क्रि. ग्र.—३ शोभायमान होना, शोभित होना।

उ०—१ दळ फूलि विमळ वन नयण कमळ दळ। कोकिल कंठ सुहाइ सर। पांपणि पंख संवारि नवी परि, भ्रूहां रै भ्रमिया भ्रमर। —वेलि

उ०—२ ग्रतही सुहायौ मेरौ साहिबौ सेरौ प्रम दयाळ। ग्रालिम प्रभूजी रो लाडिलो गिरधरलाल गुवाळ।—ग्रालमजी

सुहाणहार, हारौ (हारी), सुहाणियौ—वि०।

सुहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सुहाईजणौ, सुहाईजबौ—भाव वा०।

सउहाणौ, सउहाणौ, सवाणौ, सवावौ, सुवाणौ, सुवावौ, सुवावणौ, सुवायवौ, सुहांमणौ, सुहांमवौ, सुहावणौ, सुहावबौ, सूग्राणौ, सूग्रावौ, सोहांमणौ, सोहांमवौ—रू० भे०।

सुहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—रानियौ निज पुर राय, सुरराय जेण सुहाय। जग कमण देरै जाय, पळ ग्रकळ 'सेर' नवाब।—रा. रू.

सुहार—देखो 'सुवार' (रू. भे.)

उ०—१ दुसमणां फौज गढ घेरियौ तठै गढ री धणी साकौ कर मरण री विचारी नद स्त्री वोहत समभायनै सुवाणिया कि सुहार न रहजौ।—वी. स. टी.

उ०—२ इण सारू उण वीर पुरस री स्त्री नकीब नै कहै रे वैरी दोय घड़ी तो थूं ही जीभ नै जक दै, सुहार होवण री वेळा नकीब बोलण लागौ तिण सूं कहै छै।—वी. स. टी.

सुहारे, सुहारै—देखो 'सुवारै' (रू. भे.)

उ०—१ तरै ग्रासथांन कही—ग्राज ऐ ग्रांपां नुं गांव माहे दया कर ऊतारै छै, सुहारे डेरौ बीजै गांव करसां तरै ग्रांपां नै कुण डेरा गांव मैं करण देसी।—नैणसी

उ०—२ मह कुपी ग्राज धरौ महाराज, सुहारै लीजौ वैर सकाज। —गो. रू.

सुहाली—वि. स्त्री.—सुन्दर, सुहावनी।

सुहालीसेज—सं. स्त्री. यौ.—सुन्दर व सुहावनी शय्या।

सुहावणि, सुहावणी—वि. स्त्री.—१ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ स्वांमी भगति ससनेहलि, ग्रति सुकुमाळ सुहावणी। कहै राघव सुलतांन सुंणी, पहोवी हुइ इसी पदमणी।—प. च. चौ.

उ०—२ जंगळ वीर सुहावणि राजै, फिरै सकति री ग्रांण। मढ मैं ग्रापूंग्राप विराजौ, भळहळ ऊगी भांण।

—राघवदास भादौ

२ जो रुचिकर लगे, मन भावन।

उ०—हिरकणियां ज्यूं दमकता नख। मीठी ग्रर सुहावणी बोली। —फुलवाड़ी

३ शोभायमान, शोभित।

रू. भे.—सुहांणी।

सुहावणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ जब लागै छै खेत रमणीक सुहावणा।—जयवांणी

उ०—२ कांती कंत सुहावणौ प्यारी कियौ वणाव।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ साथण ढोल सुहावणौ, दैणौ मो दाह।—वी. स. (स्त्री. सुहावणी)

सुहावणौ, सुहावबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

उ०—१ सती दीयै ग्रासीस सहु परवार सुहावै। तौ ऊमै गढ धंणी कमण वळ वीयै कहावै।—ग्र. वचनिका

उ०—२ तुं धरम तणउ छइ धोरी, माहरउ मन लीयउ चोरी रे। तुझ दीठां विण न सुहावइ, मुझ जीव ग्रसाता पावइ रे।

—वि. कु.

उ०—३ म्हारा भाग कै म्हैं तौ ग्रठा री सूळां नैई नीं सुहावूं। —फुलवाड़ी

उ०—४ ताहनं मूळ-पसाव ग्रापरी रजपूतांणी नू कैयौ, 'गोत री गाळ मैस नूं सुहावै नहीं। सु पेथड़, म्हैं जांणां, तोनूं नहीं सुहावै। —तीन राठौड़ वीरां री वात

सुहावियोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सुहावियोड़ी)

सुहावौ-वि.—सुन्दर, सुहावना ।

उ०—त्रीजै प्रहरै रैंणकै, मिळिया तेहातेह । घन नहि घरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह ।—ढो. मा.

सुहासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

उ०—वाजा वाजै अति भला, वरत्या मंगल-माल । संतोखै याचक सुहासणी, हरख्या वाल गोपाल ।—जयवांणी

सुहाहीणौ-वि.—मूर्ख, नासमझ ।

सुहिणइ, सुहिणउ, सुहिणौ-सं. पु.—सपना, स्वप्न ।

उ०—१ सहिए फिरि समझावियउ, सुहिणइ दोस न कोइ । सउ जोयण साहिव वसइ, आंण मिळावइ तोइ ।—ढो. मा.

उ०—२ जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात । मारू सुहिणउ लहि कह्यउ, सखियां सूं परभात ।—ढो. मा.

उ०—३ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि । हिव पळपळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि ।
—वेलि

वि.—प्रिय, वल्लभ, प्यारा ।

रू. भे.—सुंहिणौ, सुंहीणौ ।

सुहित-सं. पु. [सं. स्वहित] अपना हित, अपना भला, स्वार्थ ।

उ०—उत्तम धांम दुवारिका, महिमा सुहित संभारि । लियौ महा सुख एक पख, न्रप परसियौ मुरारि ।—रा. रू.

वि.—१ हितैषी, हितु ।

२ लाभदायक, शुभ ।

उ०—सुभ जोग सकळ नव ग्रह सुहित, इसैइ महूरत ऊधरै । असपती मिळण खड़िया 'अमै', जैत हथा जीघाहरै ।
—रा. रू.

३ देखो 'सहित' (रू. भे.)

रू. भे.—सुहित्त ।

सुहितौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

उ०—उणी भांति वौ मांस, उणि भांति रौ सुहितौ, उणि भांति रा झरहता सूळां रौ निकुळ कीजै छै ।—रा. सा. सं.

सुहित्त—देखो 'सुहित' (रू. भे.)

उ०—राज्येंद्रौ जोग्येंद्रौ संगौ सामरथ नेह एकंगौ । लेखै सेव सुहित्त, आसंगौ नइव लेखती ।—रा. रू.

सुहिद्रा-सं. स्त्री.—सुभद्रा ।

उ०—चौरी बैठै चक्रधर वळि सुहिद्रा रौ वीर । बावै नां सवळा विरिद, पुणै कवेसर पीर ।—पी. ग्र.

सुहिलौ-वि.—सुलभ ।

उ०—कोजै रयण तणै नित कुळ क्रत, वैरां ऊपरी वत्र अवत्र । जेइ अहोनिस दुहिला जंगम, सुहिला तइयां म गिणि सत्र ।
—गु. रू. वं.

सुही-सर्व—१ वही, वह ।

उ०—सुही नर 'केहर' वीजळसार, रखी निज पास वडै रिझवार ।
—पे. रू.

२ देखो 'सुखी' (रू. भे.)

सुहुड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—सोलंकी वाघेला सुहुड रोसाला राउत राठउड ।
—कां. दे. प्र.

सुहेल-सं पु. [अ.] यमन देश में उगने वाला एक प्रसिद्ध चमकीला तारा ।

सुहेलु, सुहेलू, सुहेलौ—देखो 'सोहिलौ' (रू. भे.)

उ०—माल्हंतौ घरि आंगणै, सखी सुहेलौ कांम । जो जांणू पिय माल्हणौ जै मल्है संग्रामि ।—हा. झा.

सुहृत-सं. पु. [सं. सुहृत्] १ मित्र, दोस्त, सखा ।

२ राज्य के सात अंगों में से एक ।

सुहृद-वि. [सं.] प्रिय, प्यारा, मित्र । (ह. नां. मा.)

उ०—अणू तैं व्याणू तैं व्रहृदळ विभूतैं अति विभू । तुजै नां जांनै को सुहृद स्वसु जांनै भल त्रभू ।—ऊ. का.

सूं-क्रि. वि.—१ ही ।

उ०—वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौआप सूं । हिव रुखमणी क्रतारथ हुइस्यै, हुऔ क्रितारथ पहिलौ हूं ।—वेलि

२ देखो 'सुं' (रू. भे.)

उ०—१ सखी समूंह मांहि इम स्यांमा, सील आवरित लाज सूं ।
—वेलि

उ०—२ नरनारी सूं क्यूं जळइ, नर सूं नारि जळंत । साल्हकुंवर जोगी कहइ, अहलउ केम मरंत ।—ढो. मा.

उ०—३ एक देस वाहणी न आंण । सुरसरि समसरि वेलि सूं ।
—वेलि

उ०—४ मां रै मूंडै औ नांव म्हारै कांनां इमरत ज्यूं लागतौ । हेलौ मारतां उणरौ गळौ माखण सूं भरचौ ज्यूं लखावतौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—५ धिन आजूणौ दीहड़ौ, यां कहियौ रघुनाथ । धरम निभाहां सांम छाळ, साहां सूं भाराथ ।—रा. रू.

३ देखो 'स्यूं' (रू. भे.)

सूंई-क्रि. वि.—से ही ।

उ०—१ सेवट तौ वांरी कमाई सूंई पार पड़ैला, किणी रै दियां लियां सूं कीं सांधी नीं लागै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थूं भरोसौ राख । इण सूंई वेसी चावै तौ थनै उणरौ फोटू वताय सकां । पण ऐन मौका माथै रूवरू देखणा री हर करणी कम अकल री वात है ।—अमरचूंनड़ी

वि. स्त्री.—१ उल्टी का विपर्याय, सीधी, सुलटी ।

२ चित्त, सीधी ।

३ देखो 'सूई' (रू. भे.)

[illegible]-सं. स्त्री.—[illegible]

उ०—१ [illegible] मिळै [illegible], धोरो हिये न धारो रे! [illegible] नीरो निरधारो रे!—ऊ. का.

उ०—२ [illegible] कांई दीन! राज रा [illegible] हुकम दियो सो [illegible] मिनखां रा हाथ पुराणां [illegible]। पछातू सूंक दी फगत उणनै छोडयो।
—फुलवाड़ी

[illegible]-वि.—रिश्वत लेने वाला, रिश्वतखोर।

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
२ देखो '[illegible]' (अल्पा; रू. भे.)

[illegible]-वि.—रिश्वतखोर।

सूंकड़ी-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का प्राचीन कर।
उ०—सुलतांण कुतबदीन नै पाट सुरतांण महमंद बैठो। महमंद सारै लोगां नै १८ कर लागा। ते कही—१ (प्रथम) दांण। २ (बीजो) मुंडी। ३ हळगत। ४ भोम। ५ भेट। ६ तलार। ७ सूंकड़ी। ८ बंधामणी लाग। ९ मळबो लाग।—नैणसी
२ खलिहान से ब्राह्मण, साधू आदि को दिया जाने वाला अनाज। (मेवाड़)
३ देखो 'सूकड़ी' (४)
रू. भे.—सूंकड़ी।

सूंगरो-सं. पु.—गेहूं या जौ की भूसी जिसे मारवाड़ में 'खाखला' कहते है।

सूंगणी—देखो 'सांगणी' (रू. भे.)
उ०—सूगोड़ी मूठी, मैला-मैला गाभा, माथौ जांणै सूंगणियां रो माळो।—अमरचूंनड़ी

सूंगा, सूंगारलाल-सं. पु.—एक वैश्य जाति जो शराब बनाने व बेचने का व्यवसाय करती थी। (मा. म.)

सूंगी-सं. स्त्री.—१ सूगा जाति की स्त्री।
वि.—२ देखो 'सूंगो' (पु.)
उ०—थू सुद जांणै कै म्हारो नेह अर म्हारी प्रीत इत्ती सूंगी कोनीं।—फुलवाड़ी

सूंगीवाड़ो-सं. पु.—बाजार में वस्तुएँ सस्ती होने की अवस्था या भाव, सस्तापन, मंदी।

सूंगो, सूंघो-वि. [सं. समर्घ] (स्त्री. सूंगी) १ कम दामों में प्राप्त होने वाला, सस्ता।
उ०—सेठ रै आवां ई माल इतो सूंगो कर दियो कै आम्हा चौखळा [illegible] कोनीं।—फुलवाड़ी
२ अल्पमूल्य, जिसकी कोई कदर न हो।
उ०—१ [illegible] सूंगा। कोडी कोडी [illegible] सूंगा।—ऊ. का
उ०—२ [illegible] मोंगा सदा, [illegible] नांम। अब सूरजमल आंगणै, रहै न सूंगो रांम।—पा. प्र.
३ जो कम खर्च या थोड़े से प्रयास से पूरा हो गया हो।
उ०—ऐड़ो सूंगो ब्याव तौ उण जमांनै खुद बांरो ई नीं निवड़ियो। बेटी री ब्याव माईतां री हरड़ै काढ दै।—फुलवाड़ी
४ सहज, आसान, सुलभ।
रू. भे.—सुंहगो, सूंघो, सूंहगो।

सूंघ-सं. स्त्री.—रोचक वचन कहने की क्रिया।
उ०—का तन आळस करत ऊंघ, का फिर सूंघा करत सूंघ।
—अनुभववांणी

सूंघणी सं. स्त्री.—१ नाक में सूंघने की तम्बाखू।
२ देखो सांगणी (रू. भे.)
रू. भे.—सुंघणी, सुंघनी।

सूंघणौ, सूंघबौ-क्रि. स. [सं. शिङ्घनं] १ नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का अनुभव करना।
उ०—भंवरा घूमै हा कळी कळी, सूंघै हा सूणी भली भली। झाला देहा सै झूम झूम, सौरभ बंटै ही घणी घणी।—सकुंतला
२ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गंध का अनुमान लगाना, अनुभव करना, जानना।
उ०—१ अर औ लवारिया जिसौ इण अबोध किसनू जो फगत पांच बरस री है अर इणरी जांमण मरगी, उणनै जै मायड़ रा परसेवा री बास सूंध्यां विना ऊंघ नीं आवै तौ इण में इचरज री बात ई कांई?—अमरचूंनड़ी
उ०—२ धावतो लवारियो मरियां पछै ठांण सूंघती अर डंडाड़ करती गाय री हालत देखी व्हैला।—अमरचूंनड़ी
३ गंध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराना।
उ०—१ नाहका सूंघनै चार पांचेक छींकां खाई तौ पछै उणरा जीव मैं जीव आयौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ ठाकरां तमाखू चोखी तौ है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिवठी भरनै सूंघी अनै बोल्यौ—ठीक इज है।—भि. द्र.
४ ध्यान या तवज्जाह देना, देखना।
उ०—खांड रुपिया री च्यार सेर पक्की मिळती अर गुड़ नैं तौ कोई सूंघतौ ई कोनीं।—अमरचूंनड़ी
सूंघणहार, हारौ (हारी), सूंघणियौ—वि०।
सूंघिओड़ौ, सूंघियोड़ौ, सूंघ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सूंघीजणौ, सूंघीजबौ—कर्म वा०।

सूंघियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का अनुभव किया हुआ। २ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गंध का अनुमान लगाया हुआ, अनुभव किया हुआ। ३ गंध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराया हुआ। ४ ध्यान या तवज्जा दिया हुआ।
(स्त्री. सूंघियोड़ी)

सूंघौ–वि.—१ रोचक वचन कहने वाला।
२ देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)
उ०—घिरत घणी **सूंघी** हुवी, मद मूंघौ अणमाप। कह कहनै कितरी कहूं, प्रभुता तूझ 'प्रताप'।—चिमनदांन रतनू

सूंज, सूंझ–सं. पु.—विवाह के समय दहेज के रूप में तथा प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय कन्या को उसके माता-पिता द्वारा दिया जाने वाला आभूषण, वस्त्र एवं अन्य सामान।
उ०—सझ विसाल अंबर जरीय, नख चख **सूंज** सिगार राज रवन गुरजन अलन, कत कर लग्न कुंग्रार।—कूंभकरण सांदू
रू. भे.—सौंज।

सूंट–सं. पु.—एक प्रकार का कीड़ा, कीट।

सूंटी–सं. स्त्री. [सं. सूत्थिता] नाभि।
उ०—१ सूरजमल वागरी जेह झाल नै कटारी गळा नीचा सूं वाही **सूंटी** आवती रही।—नैणसी
उ०—२ सु कारी न हिंदुस्तांन न खुरासांण मांहै सुणी न दीठी। **सूंटी** रै पाखेडि कारी की।—द. वि.
रू. भे.—सूंठि, सूंठी।

सूंटौ–सं. पु.—वर्षा के साथ चलने वाली तेज हवा जो खड़ी फसल को आडी पटक देती है तथा पेड़ों को तोड़ देती है। (शेखावाटी)

सूंठ–सं. स्त्री. [सं. शुण्ठी] सूखी अद्रक, सोंठ। (अ. मा; डि. को.)
उ०—१ काचां हाडां मैं कुचमाथ हुयगी। गूंद **सूंठ** अर पींपळामूळ जिसा ओखदां मैं तौ वोतौ मारयां पड़्यौ ही रैणौ चाहीजै।
—दसदोख
उ०—२ खांड, सूत, **सूंठ**, पींपळामूळ, घीरत मण १ दुगांणी ६॥ लागै।—नैणसी
रू. भे.—सुंठ, सुंठि, सुंठी।

सूंठि, सूंठी—१ देखो 'सूंटी' (रू. भे.)
उ०—१ आंगणौ धोय-धाय, पूंछ-पांछनै घी हळदी रा **सूंठी** माथै सावता सावता चोपा दिया।—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै एक **सूंठी** तणौ ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै राजाजी कैवण लागा—जै इण दुनियां में सगळा ई मिनख राजा व्हैता तौ कैड़ौ नांमी कांम वणतौ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सूंठ' (रू. भे.)

सूंड–सं. स्त्री. [सं. शुण्डा] १ हाथी की नाक जो हाथी की ऊंचाई से जमीन तक लम्बी होती है। खाने पीने आदि क्रियाओं में हाथी अपनी सूंड को हाथ की तरह प्रयोग में लाता है।
(डि. को.)
उ०—वाजता घंट विहुवै वळां, ऊरध **सूंड** उछाजता। दाझता क्रोध ज्वाळा दग्या, गज मतवाळा गाजता।—मे. म.
२ हाथी की सूंड के आकार का मोट का वह भाग जिसमें पानी वाहर आकर मोट को खाली करता है।
३ हरे रंग का एक कीड़ा, कीट।
रू. भे.—संड, सुंड, सूंडा, सूंढि।

सूंडकियौ, सूंडवयौ—देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—चालौ ए साथणियां अपै, कांमड़ियौ नै जावां। ए तौ कांमड़ियां चोखी म्हारी, **सूंडकियौ** गुंथाऊं।—लो. गी.

सूंडडंड, सूंडदंड—देखो 'सूंडाडंड' (रू. भे.) (डि. को.)

सूंडधर–सं. पु. [सं. शुण्ड+धर] १ हाथी, गज। (डि. को.)
२ गणेश, गजानन।

सूंडर–सं. पु.—राठौड़ वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
(बां. दा. ख्यात)

सूंडळौ, सूंडलौ—देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे)
उ०—मालणि आंपि मोगरा, तंबोळी दिइ पांन। सपरि समधिउं **सूंडलै**, साहमुं आवइ धांन।—मा. कां. प्र.

सूंडहळ–सं. पु. [सं. शुण्डा+धर] हाथी, गज। (डि. को.)

सूंडा–सं. पु.—१ राठौड़ों की एक उपशाखा।
२ पंवारों की एक शाखा।
३ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

सूंडाडंड, सूंडादंड–सं. पु. [सं. शुण्डादण्ड] १ गणेश, गजानन।
उ०—**सूंडादंड** अहेस राग रीझेस समोसर।—सू. प्र.
२ हाथी, गज। (डि. नां. मा.)
उ०—गेंघूमै आरांण घांण मथांण नीसांण धौक, सूकै डांण **सूंडाडंड** वीछुड़ै सीधांण। दोवळा विवांण ठहै खड़ा गरवांण देखै, भड़ै दखणांण हूंत हिंदवांण भांण।—पहाड़खां आढौ
३ हाथी की सूंड।
उ०—दीयै खंभू ठांणां मचौळा, अचाळा झाट **सूंडांडंडां**।
—चैनकरण सांदू
वि.—जिसके सूंड हो, सूडधारी।
रू. भे.—सुंडडंड, सुंडदंड, सुंडाडंड, सुंडाडंडू, सुंडादंड, सूंडड़ंड, सूंडदंड, सूंडाडंडौ।

सूंडाडंडौ—देखो 'सूंडाडंड' (रू. भे.)

सूंडाळ, सूंडाळौ–सं. पु. [सं. सुण्डार] १ गजानन, गणेश।
(ह. नां. मा.)
उ०—१ डसण एक **सूंडाळ**, वरदायक रिध सिध-चरण। विद्या वयण विसाळ, आपीजै आखिर उकत।
—वगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ **सूंडाळौ** लाइक सुंग, रांम सरीखौ रूप। ब्रह्म सतगुरु हूंता वडौ, ईसरदास अनूप।—पी. ग्रं.
उ०—३ **सूंडाळा** दुख भंजणा, सदा जो वाळक भेस। सारां पैली सिवरीयै, गौरी पुत्र गणेस।—जांभौ
२ हाथी, गज। (अ. मा; डि. को; डि. नां. मा; ना. डि. को.)
उ०—१ **सूंडाळा** धड़ सांमही, फैरी जेसलमेर। पाछौ दळ

[illegible] री, [illegible] ।—नैणसी

उ०—२ [illegible] बजाळ । सिरमाळ [illegible] ।—नैणसी

[illegible] ।

रू. भे.—[illegible], मुंडाहळ, मुंडाहळी, [illegible] ।

[illegible]-सं स्त्री—१ हाथी री सूंड ।

उ०—१ [illegible] मुंडाहळ घणी लाल सिंदूर सूं [illegible] ।—रा. सा. सं.

उ०—२ [illegible] । सो तू नैं तावड़े री अगनि सूं [illegible] ने हाथीआंरै सीतळ मुंडाहळां मांहे पेसि [illegible] ।—रा. सा. सं.

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

रू. भे.—[illegible] ।

सूंडियौ-सं पु.—१ एक प्रकार का चरस (मोट) जिसका पानी निकालने का हिस्सा सूंड के आकार का बना होता है ।

२ ऐसा कुआ जिसका पानी सूंडदार चरस द्वारा निकाला जाता हो ।

३ मोठ की फसल में लगने वाला एक कीड़ा विशेष जिसका आकार सूंड के अनुरूप बना होता है । (शेखावाटी)

३ हाथी, गज ।

४ देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)

रू. भे.—सूंड्यौ ।

सूंडी-सं० स्त्री—१ ऊंट के मुख की आकृति ।

२ हाथी, गज ।

उ०—जिन जिन सूंडी नद गडि आवइ साव दळइ सुरतांण ।
—कां. दे. प्र.

३ नाभि ।

उ०—[illegible] सूंडी रतन कचेळियां । जांघ [illegible] जिसी, पांच पानड़ा ओळियां । —नारी नईकड़ी

रू. भे.—सूंडी ।

सूंडीर-सं पु [सं शुण्डीर] १ हाथी ।

२ हाथी री सूंड ।

उ०—[illegible] सूंडीर वरां वळाका [illegible] ।—रा. सा. सं.

सूंडौ-सं. पु —[illegible] का बना हुआ टोकरा जो तगारी के स्थान पर [illegible] काम में लिया जाता है ।

अल्पा; —[illegible] ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सूंड्यौ—१ देखो 'सूंडियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंडौ' (अल्पा; रू. भे.)

सूंण-सं पु —[illegible] की माला ।

सूंडि—१ देखो 'सूंड' (रू. भे.)

उ०—सरळी सूंडि हाथीउ, बांधिउ गांमि गांमि । तेह-थिकी जे ऊगजइ, ते मुझ ल्यावै स्वांमि ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'सूंटी' (रू. भे.)

सूंण—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—१ एक दिन वळै इदकी व्ही । आखातीज रै हळोतियै सूंण मनावण सारू एक जाट आपरै खेतां जावतौ हौ कै सेठ सांम्हा धकग्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जै थूं उडनै सूंण बतावै, तौ थारो । जलम जलम गुण गाऊं रे कागा ।—लो. गी.

सूंणावणौ, सूंणाववौ—देखो 'सुणाणौ, सुणावौ' (रू. भे.)

उ०—दासी जाई सूंणावीयौ । तव धन उठी मोतीय राळ ।
—वी. दे.

सूंणावियोड़ौ—देखो 'सुणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंणावियोड़ी)

सूंणी-सं. स्त्री—१ छोटी चिमटी जो बारीक वस्तुओं या तार आदि को पकड़ने के काम आती है । (स्वर्णकार)

२ शकुनशास्त्र का ज्ञाता, शकुनी ।

सूंणौ, सूंवौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू. भे.)

सूंतणौ, सूंतबौ-क्रि. स. [सं. सुथूर्वणं] १ तीक्ष्ण धार वाले शस्त्र से शरीर का कोई अंग काटना, विच्छेद करना ।

उ०—१ कागज नावणिया री गळी सूंत न्हांकियौ अर किणी रै कानां भणकारी ई नीं पड़ण दियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण नींद में सूता री गळी सूंतण सूं तौ तरवार रौ ई मांन घटै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ दायण सावळ सुथराई सूं आंवळ कांनी नाळौ सूंत्यौ । पाचणा सूं नाळौ मोळ डोरां सूं बांध दियौ ।—फुलवाड़ी

२ गीली रस्सी या गीले वस्त्र को मुट्ठी में गाढ़ा भींचकर खींचना । (इससे उसमें से पानी झर जाता है अथवा खुरदरापन या सलवटें मिट जाती है ।)

३ इसी तरह किसी रसदार पदार्थ का रस निकाल लेना ।

५ लाक्षणिक अर्थ में किसी की ताकत या सत्व निकाल लेना, मोटे ताजे को थकाकर दुबला कर देना ।

५ खींचकर एकत्र करना, इकट्ठा करना ।

६ पतंग उड़ाने की डोर पर पके हुए मेदे (लेई) में पीसा हुआ काच मिलाकर लेपन करना, सूंती देना ।

७ किसी पौधे या पेड़ की टहनी को हाथ या मुंह (जानवरों द्वारा) में पकड़कर खींचते हुए उसके समस्त पत्ते, फूल व फल तोड़ लेना ।

उ०—बाग में खोज कठैई नीं अर इण सागै चोरी री नेम कदैई ढळै नीं । चोर पांन फळ अर फूल सगळा साथै ई सूंतै ।
—फुलवाड़ी

८ उजाड़ करना, उजाड़ना ।

उ०—राजाजी ई देखियौ कै इण भांत वाड़ी नै सूंतणी तौ चोरां रै वस री वात कोनीं। इण मैं अवस कीं न कीं रासौ है।
—फुलवाड़ी

६ दूसरे के धन या दौलत को धीरे धीरे करके अपने कब्जे में कर लेना।

१० पीटना।

उ०—राज री हाथ माथै रैवैला ई सौ अकड़ू अर हैंकड़ीवाज हा जिका साळां री आंतड़ियां-ओजरियां काढ न्हांखांला, सूंत दां ला, पांसलियां रा भचका बोलाय दां ला, तिनका कर काढांला,...... अर गोडा, खुणियां, पुणछा, हांसळियां अर गट्टा तांई उतारतां री आरी-वारी हांक दी।—जहूरखां मेहर

सूंतणहार, हारौ, (हारी), सूंतणियौ—वि०।

सूंतिओड़ौ, सूंतियोड़ौ, सूंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सूंतीजणौ, सूंतीजबौ—कर्म वा०।

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ—रू० भे०।

सूंतियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ तीक्ष्णधार वाले शस्त्र से शरीर का कोई अंग काटा हुआ, विच्छेद किया हुआ. २ मुट्ठी में गाढा भींच कर पानी निकाला हुआ, खुरदरापन मिटाया हुआ (वस्त्र या रस्सी). ३ रस निकाला हुआ, निचोड़ा हुआ (फल, रसदार पदार्थ) ४ ताकत या सत्त्व निकाला हुआ, दुबला-पतला किया हुआ. ५ खींचकर एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ६ पतंग की डोर पर लेपन किया हुआ. ७ फल, फूल व पत्ते तोड़ कर नंगा किया हुआ (पौधा, वृक्ष की डाल). ८ उजाड़ा हुआ. ९ अपने कब्जे में किया हुआ (धन)।

(स्त्री. सूंतियोड़ी)

सूंती—सं. स्त्री—१ सूतने की क्रिया या भाव।

२ मुट्ठी में भींचकर दिया जाने वाला खींचाव, मरोड़।

उ०—चकमक सूं बगदी सिळगाय अणूंता कोड सूं पूंख सेकिया। सूंती देय दांणा झाड़िया।—फुलवाड़ी

३ पतंग की डोर पर पके हुऐ मेदे में पीसा हुआ कांच मिलाकर किया जाने वाला लेपन।

४ तीक्ष्ण या पैनी वस्तु की रगड़।

उ०—ऐड़ौ लखावतौ जांणै कांटां री झाटी सूं उणरी नसां अर काळजा मैं कोई सूंती देवै।—फुलवाड़ी

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ—१ देखो 'सूत्रणौ, सूत्रबौ' (रू. भे.)

उ०—राठोड़ै रिण सूंत्रियौ, सू दखणाध दळांह। जोगणपुर री जूवटौ, माथै जोधपुरांह।— गु. रू. बं.

२ देखो 'सूंतणौ, सूंतबौ' (रू. भे.)

सूंत्रियोड़ौ—१ देखो 'सूत्रियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंत्रियोड़ी)

सूंथण, सूंथणि, सूंथणी—देखो 'सूथण' (रू. भे.)

उ०—१ वेटा भणग्या अंगरेजी'र वणग्या किस्टांण, पैरली सूंथण अर लगाय लियौ तेली रै बळध दाई चसमौ।—वरसगांठ

उ०—२ टोळै टोळै पडइ करांखि, नीर प्रवाह वडइ जिम आंखि। एक फाडइ पहिरण सूंथणी, पाए नेउरी बांजइ घणी।
—कां. दे. प्र.

सूंथारियौ—देखो 'सूथार' (अल्पा; रू. भे.)

सूंथौ—देखो 'सूंतौ' (रू. भे.)

सूंद—देखो 'सूद्र' (रू. भे.)

उ०—पांच तत्व का पूतळा, रज वीरज की बूंद। ऐकै घाटी नीसरचा, बांमणि क्षत्री सूंद।—ह. पु. वां.

सूंदरि, सूंदरी—देखो 'सुंदरी' (रू. भे.)

उ०—१ दै दै थकी संदेसड़ा, सुणि सूंदरि का कंत। मछी जीवै जळ बिनां, तौ तौ बिन मैं जीवंत।—अनुभववांणी

उ०—२ घर घर मैं दाता नहीं, फन फन मिणन न होय। पतिवरता काई सूंदरी, यु जुग मैं जन होय।—अनुभववांणी

सूंदाराय—सं. स्त्री.—सूंधा पर्वत पर निवास करने वाली देवी।

सूंदौ—सं. पु.—१ जालोर जिले के जसवंतपुरा के पास वाला पहाड़।

२ देखो 'सूंधौ' (रू. भे.)

सूंधां, सूंधा—क्रि. वि.—१ सहित, समेत।

उ०—तद वादसाह रा समुद्र रै टापू मांही तीर सू कोस एक ऊपर महल था उठै बूबना नूं परगह सूंधां राखी।
—जलाल बूबनां री बात

२ देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)

उ०—लिव सुधि बुधि का सूंधा लाउं, चित चंदन चरचाय ऐसैं रांम वदेही दुलहौ, ल्यूं अंतर लपटाय।—अनुभववांणी

सूंधावास—सं. स्त्री.—सुवास, सुगंध, खुशबू।

उ०—१ सूंधावास अनै नेउर सद, क्रमि आगै आगमन कहै।
—वेलि.

उ०—२ ऊंचा मंदिर चौखणा, ऊंचा घणु आवास। अजब झरोखां जाळीयां, सीस्यां सूंधावास।—ढो. मा.

सूंधै—क्रि. वि.—१ सुगंध से, खुशबू से।

उ०—१ रजधांनी उच्छव रहसि मणि दीपक अप्रमांण। सूंधै महळ सिंगारिया, सोरंभी लहरांण।—रा. रू.

उ०—२ परभोम पंचायण, घण दियण जस लियण, कळायरौ मोर, सूंधै भीनै गात ...।—रा. सा. सं.

सूंधौ—वि.—१ उलटा या सौंधा का विपर्याय, सुलटा, सौंधा, सीधा।

उ०—उलटी न सुलटी कहै, ऊंधी नैं सूंधी। जन हरिदास सौंसै उसी, दुनियां चकचूंधी।—ह. पु. वां.

२ देखो 'सूधौ' (रू. भे.)

उ०—नवो तुलसी देत जोवे विलूंबी । सुधै अंगदं अंतरानेर सूंघो।
—सू. प्र.

३ देखो 'सोंधो' (रू. भे.)

उ०—१ सींसी सुवे छै. सोंधो पड़े री सीसरा प्यालां में । घात अतर सींजै छै. सूंधो अंगनां लगावजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ पछै पोसाक गहणां पहिरियां, सूंधो चोवो अतर लगाय कस्तूरी री डंडी वणाड़, मेलरा थेगा दे ताडूकतो ताडूंकतो आयो ।
—जगदेव पंवार री वात

उ०—३ अलावदी महल करायो तिण मांहे घणा सुख भोग विलास करै । अतर सूंधा अरगजा माहे गरकाव रहे ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

४ देखो 'सूदो' (रू. भे.) (मा. म.)

उ०—रावळ चाचगदे करमनी रो, चाचगदे सूंधा रै भाखरै देहुंरो चावंडजी रो करायो, संमत १३१२ ।—नैणसी

सूंन—देखो 'सून्य' (रू. भे.)

उ०—रांम कहत रांडी भली, नीको जिनको भाग । रांम विमुख नी जांणियै, हरीया सून सुहाग ।—अनुभववांणी

सूंनउ—देखो 'सूनो' (रू भे.)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज । नव पाड़ा नगर वसई, सो मन सूंनउ अज्ज ।—ढो. मा.

सूंनत, सूंनित—देखो 'सुन्नत' (रू. भे)

उ०—१ काजी मन का मरम न पाया, तातैं सूंनत कीन्ही काया ।
—अनुभववांणी

उ०—२ सुन्नां सूंनित तैं करी, तैं कीया विसमल । खलड़ी गळा कटाय कै क्या कीया वे'कल ।—अनुभववांणी

सूंनी—देखो 'सुन्नी' (रू. भे.)

उ०—गुरमांणी रहमांन अलूनी, सीदी हबस राफसी सूंनी । मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक मगुर जसथांनी ताई ।—रा. रू.

सूंनो—देखो 'सूनो' (रू. भे)

सूंन्य—देखो 'सून्य' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंनी)

उ०—अग्नि उनग अरु जळ दरसता, जैसे पवन सफंदारै । सूंन्य पोळए भूमि कटोरा, यु जग ब्रह्म कहदा रै ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

सूंप-स. स्त्री.—सौंपने की क्रिया या भाव ।

उ०—वधू जै नेग दस्त लोक प्रभुरी सूंप बादसाह नू छै तो इणां री पर दानत वतन रैयत न करै तो आरांम सूं रहै ।—नी. प्र.

सूंपणौ, सूंपबौ-क्रि. स.—१ किसी कार्य का भार, उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी किसी के कंधों पर डालना, संभलाना, सुपुर्द करना ।

उ०—१ नै सीसोदियो चाड़, सिवो चंद्रावत, ऐ वडा रजपूत छै, नै वडा भोमियां छै, थांनू गांव री नागर सूंपां तो ऐ जतन करै ।
—नैणसी

उ०—२ भण्यां गुण्यां नै कला-कारीगरी री किसत सूंपै । मोटा ताजा नै डील सारू तसाई री कोररसी भोळावै ।—दसदोख

२ सुपुर्द करना, देना, संभलाना, हस्तांतरण करना ।

उ०—१ सेठांणी विचाळै ई बोली—जै म्हारै माथै भरोसो नीं हो तो म्हनै आ जोखम क्यूं सूंपी ?—फुलवाड़ी

उ०—२ गांम री भली-भूंडी बातां व्हैती अर आपसी टंटा री पंचायतां बैठती, डंड-मूळ घलीजता अर डंड री गांमसाऊ हिसाब मास्तर नै सूंपीजतौ ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ सोनजी रै हटडै में कैई दिनां सूं धमचक वाजै ही। सेर सेर पक्की सोनौ सागै ही एक एक साहूकार सूंपै ही ।
—दसदोख

३ भेंट करना, देना, समर्पण करना, इनायत करना ।

उ०—१ कोई दूजो जीव अंगेजतौ व्है तौ थारी ऊमर किणी नै सूंप दूं । बिना अंगेजियां म्हैं करूं तौ कांई करूं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ देंत अरड़ायौ—चंडाळां अबै ई मांन जावै । थांनै धन री अखूट खजांनौ सूंपूंला ।—फुलवाड़ी

४ किसी की देख-रेख में करना, ध्यान रखने के लिये सौंपना, चौकसी में रखना या देना ।

उ०—१ जद स्वांमीजी लेजाय नैं जैमलजी नै सूंप्यौ। जद जैमलजी बोल्या—देखो भीखणजी री बुद्धि । किसनोजी नै म्हांनै सूंपता तीन घर वधावणां हुवा ।—भि. द्र.

उ०—२ मोव री इण बेटी पछै दो भाया वळै व्हिया । वै उठै ई दादी रै पाखती रैगा । आपरै सूंप्योड़ा टावरां री आपनै ई जाच कोनी ।—फुलवाड़ी

५ सिखाना, बताना ।

उ०—इण परमेस्वर रै करार री कूंती आंक लियौ बेटी ! म्है थनै म्हारी श्री इज ग्यांन सूंपणी चावती ।—फुलवाड़ी

सूंपणहार, हारौ (हारी), सूंपणियौ—वि०

सूंपिग्रोड़ौ, सूंपियोड़ौ, सूंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूंपीजणौ, सूंपीजबौ—कर्म वा० ।

संपणौ, संपबौ, सांपणौ, सांपबौ, सुंपणौ, सुंपबौ, सौंपणौ, सौंपबौ सौंपणौ, सौंपबौ—रू० भे० ।

सूंपियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी कार्य की जिम्मेदारी, भार या उत्तरदायित्व किसी के कंधों पर डाला हुआ, संभलाया हुआ, सुपुर्द किया हुआ. २ सुपुर्द किया हुआ, दिया हुआ, संभलाया हुआ, हस्तांतरण किया हुआ. ३ भेंट किया हुआ, सुपुर्द किया हुआ. ४ किसी की देखरेख में रखा हुआ, चौकसी में रखा हुआ. ५ सिखाया हुआ, बताया हुआ ।

(स्त्री. सूंपियोड़ी)

सूंफ-सं. स्त्री. [सं शत पुष्पा] १ भारत में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला पांच या छै फुट ऊंचा एक पौधा ।

२ उक्त पौधे का बीज जो जीरे के समान कुछ बड़ा व पीले रंग का होता है।

रू. भे.—सौंफ।

सूंव—देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—१ दातारू सरू कै दिल कै खुस्याळ। सूंवूं कायरू कै नाटसाल।—सू. प्र.

उ०—२ हरीया माया सूंव की, हाथिन दीनी जाय। का डंडै का घर मुसै, का कोई ठगि लेजाय।—अनुभववांणी

उ०—३ कहा सूंव कै मिळै, कहा विणि अवसर मांगै। कहा पर नग्री सूं प्रीति, सील वीणि त्रिया सुहागै।

—सूरजनदास पूनियौ

सूंवड़ौ—देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०— लंगर तळै सूंवड़ा लटकै, जस उप्रवट कै जणोजण।

—भारतदान बारहठ

सूंम–सं. पु.—१ दाव के समान पत्तों वाला एक पौधा जिसके पत्तों की महीन रस्सिएं बनती हैं जो खाट बुनने के उपयोग में ली जाती है।

२ देखो 'सूम' (रू. भे.)

उ०—फाटक रखवाळी करै, फाटक हरै फसाद। सूंम कहै सुख सूं सुवां, फाटक तणै प्रसाद।—वां. दा.

३ देखो 'सुम' (रू. भे.)

उ०—ढालां जैड़ा पुट्ठा। लांबौ वाळचौ। केसावळी लांबी। चौड़ा सूंम। लांबै वेलै। चोड़ौ लिलाड।—फुलवाड़ी

सूंमरा–सं. पु.—यादव वंश की एक शाखा विशेष जिसके सदस्य अधिकतर मुसलमान हो गये हैं।

उ०—पछै वाहड़ री बेटी सोढौ तौ सूंमरां कनै गयौ तिण नूं सूंमरां रातौ कोट दियौ, ऊमरकोट सूं कोस १४।—नैणसी

सूंमरौ–सं. पु.—उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—सहर वसायौ सूंमरै, ऊमरकोट कराय। कहजै ऊमरकोट तै, सोढां लीधौ आय।—वां. दा.

सूंमेर—देखो 'सुमेरु' (रू. भे.)

सूं'रौ– वि. (स्त्री. सूं'री) सीधा, सामने की दिशा में, आर-पार।

उ०—तीर सूं'रौ निकळ गयौ खायौ पीयौ अंग ही नहीं लागौ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सूंसरउ, सूंसरौ, सूहरौ।

सूंलियौ–सं. पु.—खरहा, खरगोस।

सूंवाळौ—देखो 'सुंवाळौ' (रू भे.)

(स्त्री. सूंवाळी)

सूंवौ–वि. (स्त्री. सूंवी) १ सीधा, सुलटा, सौंधा।

२ सीधा, चित, सीधे मुंह।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

उ०—गुवार चिड़ी-मोठ रा खावणहार, भाहरै सादरा, कड़कती नळीरा, कबाड़िया दांतांरा, कमर सूंवा ऊंचा, चिलकता मोरांरा, माडरै खेतरा.......।—रा. सा. सं.

२ ठीक ऊपर।

उ०—सूंवौ सिख्खर दिन आवै जद कठै ही जेल मैं पूरौ सूरज दीखै।—दसदोख

सूंस–सं. पु.—१ शपथ, सौगन्ध, कसम।

उ०—१ तरै वीकमसी कह्यौ—'हूं कठी जाऊं? पण रावळ सूंस दै वीकमसी नूं जाणौ थपायौ।—नैणसी

उ०—२ उदर भरण घर घर अटै, रटै नहीं स्रीरांम। सूंस करै कवड़ी सटै, तै गुण घटै तमांम।—वां. दा.

२ संकल्प, प्रण।

उ०—१ ताहरां श्रौ जाव कल्यांणमल सांभळियौ। ताहरां धांन रौ सूंस घातियौ। कहियौ—बंध छुडायनै जीमीस।—नैणसी

उ०—२ सूंस वरत पचखांण मैं, लागी जावै कोई दोखौ रे।

—जयवांणी

उ०—३ जाय तूं ही करम करण नै, परनारी घर मायौ रे। पंचां मैं सतगुरु नै मूंढै, सूंस लेतां सरमायौ रे।—जयवांणी

३ त्याग।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या—किणहि भाठौ उछाल नै हेठौ माथौ मांड्यौ अनै पछै भाठौ उछालण रा त्याग किया, तौ आगै भाठौ उछाल्यौ तै तौ लागै, पछै सूंस किया तौ पछै न लागै।—भि. द्र.

४ वादा, कौल।

उ०—त्रिविध छकाय हणवा तणाजी, सूंस किया नव कोटि। तिरिया तिरै तिरसी घणाजी, ग्यांन दया तणी ओट।—जयवांणी

५ एक जानवर जिसके चमड़े की ढाल बनती है।

उ०—सूंस गवय कछ स्लेट री, खेटक री नह खंत। झेलण आवध झाटका, वक्ख ढाळ बळवंत।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—सांस, सुंस, सुस, सोंस, सौंस।

सूंसतौ–वि. (स्त्री. सूंसती) समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—तरै कह्यौ—डूंगरसी जैतारण छै। धणी छै। सूंसतौ ठाकुर छै। नै इण कन्है साथ घणौ थौ, तद पंवारै नीमाज लूटी।

—राव मालदेव री वात

सूंसर–सं. पु.—मगर विशेष।

सूंसरउ, सूंसरौ—देखो 'सूं'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ सपरांणा सींगिणी गुणं गाजइ, तीन्दा तीर विछूटइ। जरहजीण आंगा वीधीनइ, अंगि सूंसरा फूटइ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ सींगिणि तणां विकोसां मेली प्रांणि तीर विछूटउ। हस्तक धरि सोलहीनइ वाज्यु, अंगि सूंसरउ फूटउ।—कां. दे. प्र.

(स्त्री. सूंसरी)

सूंसाड़, सूंसाड़ौ–सं. पु.—१ अत्यन्त तीव्र गति से चलने या फेंके जाने के कारण हवा के टकराव से होने वाली सूं-सूं की आवाज, शब्द।

उ०—१ पछै सूरज रै ढळतै पनवाड़ै सूंसाड़ करती गोळी वडगी ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ मर्जीरी घड़ा रै उनमांन टगतो, सीसा री गळाई भारी । नी जगनै नाड़ग वास्तै नीचो लुळियो, जितरै तो सूंसाड़ करतोड़ी एक गोरखियौ उगरै माथै होय नै निकळग्यो ।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ नीला सूवटां री एक लांठी टोळी सूंसाड़ बजावती मेड़ी रै माथा पर निकळगी ।—फुलवाड़ी

२ भयावस्था या दौड़ने के कारण नाक से तेज श्वास निकलने से होने वाली ग्रावाज, शब्द ।

३ सूं-सूं की ध्वनि ।

उ०—मागै सीयाळा री रात सऊं सऊं सूंसाड़ा मारै ।—दसदोख

रू. भे.—सूंगाड़ी ।

सूंसाणौ, सूंसावौ-क्रि. स.—१ ग्रत्यन्त तीव्र गति से फेंकना या चलाना कि उनके चलने से सूं-सूं की ग्रावाज हो ।

२ सूं-सूं की ग्रावाज करना ।

उ०—कैर नहं बिन पानड़ा, रोकै लूग्रां रोस । सुग सूंसातां जोर सू, भूलै हिरणां होस ।—लू

रू. भे.—सूंसावणौ, सूंसावणौ ।

सूंसायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तीव्र गति से चलाया या फेंका हुग्रा. २ सूं-सूं की ग्रावाज किया हुग्रा ।

(स्त्री. सूंसायोड़ी)

सूंसावणौ, सूंसावबौ—देखो 'सूंसाणौ, सूंसावौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोफणियां सूंसावती वा मोसा सुर में वोली—भाटियां नै हाल थांरो पांनो नीं पड़ियो दीसै, इणी खातर ऐड़ी विलळी वात करी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ धनूक निसांणा में तो पारंगत हा इज । सूंसावता तीर छोड़ता जकी भाटां रै ग्रारपार ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मतीरिया-काकड़ियां सूं धापोड़ी थिगै ही । डकार लेवै ही, मागीड़ी सूंसावै ही ग्रर रागळी गुण-गुणावती गैळै वगै ही ।
—दसदोख

सूंगौ—देखो 'सूगौ' (रू. भे.)

उ०—नखाळ'र सूंसौ लुकै, पिण लुकवा में फेर । ग्रांकै वो ग्रर मीन ग्रर, ग्रो निज मीन ग्रवेर ।—रैवतसिंह भाटी

सूंहणौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूंहणी)

सूंहलौ-सं पु.—सोहलौ नामक गीत (छंद) ।

उ०—सुज पंचम सूंहलौ, छटौ जांगड़ौ सु छज्जत ६ । सोरठियौ सातमौ ७ । विहद सुणजस वरणत ।—र. ज. प्र.

सूंहगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)

(स्त्री सूंहगी)

सूंहाळौ-सं पु.—एक प्रकार का व्यंजन ।

उ०—सेव सूंहाली लाडू गल्या, ग्राछा मांडा पापड तूल्या राजे सडक सालणै वडी, कूर कपूर तली पापड़ी ।—कां. दे. प्र.

सू—देखो 'सु' (रू. भे.)

उ०—१ द्वादस मेघ नै दुवौ हुवौ, सू दुखियारी री ग्रांस हुवौ ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ सखी सू सज्जण ग्राविया, हुंता मुज्झ हियाह । सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।—ढो. मा.

उ०—३ तठा उपरायंत माळी फूलां री छावां । ग्रांण हाजर कीजै छै । सू फूल कुण भांत रा छै ?—रा. सा. सं.

उ०—४ ग्रावै भींव भडां ग्राहाड़ां, मोटी सेध सटी मेवाड़ां । सू जुध वंध कमंधां सार्थे, भिड़िया जोड़ भला भारार्थे ।—रा. रू.

सूग्रउ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—तव ग्राकसि सूग्रउ ऊडियौ, पहरि एक चंदेरी गयउ । ढोलउ सरवरि दांतणि करइ, सूडौ जाए इम ऊचरइ ।—ढो. मा.

सूग्रटौ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—कौतुक धरि ते ग्रादमी, लेइ ग्राव्या न्रप परसद मांहि । राय बोलाव्यौ सूग्रटौ, नर भाखा बोल्यौ ते साहि ।—वि. कु.

सूग्रणौ, सूग्रवौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू. भे.)

उ०—मांचा बिना धरती माथै ऊगरांणौ सूईज सकै, रजाईयां बिना फाटीड़ा पूरां में जळेवी वणनै रात काढीज सकै पण पेट रौ खाडौ तो टेंमसर भरणोइज पड़ै ।—ग्रमरचूंनड़ी

सूग्रर—देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—हिरण खिरगोस, सूग्रर, तीतर, वट्टा, तिलोर रै मांस री तो फगत वातां ईं वातां रैंगी ।—फुलवाड़ी

सूग्ररड़ौ—देखो 'सूवर' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—राव ग्रादमी पांच-सात मिळ सम्भाळ हौदै मांही बैठांणै ग्रौर राव ईं वेळा मुंह सूं ग्राहिज कहै छै—जे वडा सरदारां सूग्ररड़े री जावती रावजी, ··· ।—डाढाळा सूर री वात

सूग्ररदंतौ—देखो 'सुग्ररदंतौ' (रू. भे.)

सूग्रागचूड़ी-सं. स्त्री. यौ.—स्त्रियों के हाथ कंगन जो सुहाग चिन्ह माना जाता है ।

सूग्राणौ, सूग्रावौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)

सूग्रायोड़ौ—देखो 'सुहायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. सूग्रायोड़ी)

सूग्रारोग-सं. पु.—सूतिका रोग ।

सूग्रावड़ि, सूग्रावड़ी—१ देखो 'सुवाड़ी (रू. भे.)

उ०—सूग्रावड़ि ना दोख कीयां वलि थापण मोस, बोल्या वलि उत्सूत्र कीयां गुरु ऊपर रोस ।—व. व. ग्रं.

२ देखो सुवावड़ (रू. भे.)

सूग्रावत-सं. पु.—गहलोत वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—खींवारा देवळियै रा धणी, ४ सूआरा सूआवत ।
—नैणसी

सूइ, सूई–सं. स्त्री. [सं. सूची] १ पक्के लोहे के पतले तार का बना सिलाई का एक उपकरण जिसके एक सिरे में छेद होता है जिसमें धागा पिरोया जाता है तथा दूसरा अत्यन्त तीक्ष्ण होता है ।

उ०—१ सूई कै नाकै जिती, सेरी ताहि समांन । हरिया हसती नीसरै, हुय कीड़ी उनमांन ।—अनुभववांणी

उ०—२ थांरा डील माथै सूई री तवोड़ौ ई लागै तो केड़ीक पीड़ व्है ।—फुलवाड़ी

वि. वि.—सिलाई मशीन की सूई का छेद उसकी नोक के ठीक ऊपर बना होता है ।

२ ग्रामोफोन रिकार्ड बजाने की सूई जिसके पीछे छेद नहीं होता तथा वह अत्यन्त छोटी होती है ।

उ०—ग्रांमोफोन रेकार्ड रा खाडा मैं सूई अटकीजगी व्है ज्यूं वार वार एइज समाचार उणरै कांनां मैं गूंजण लाग्या ।—अमरचूंनड़ी

३ किसी बीमार के शरीर में दवाई प्रवेश (नाड़ी या मांस में) कराने का सूई के आकार का उपकरण जो अन्दर से थोथा होता है, इंजेक्शन की निडल ।

रू. भे.—सुइ, सुई ।

सूऔ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिंघ री गुफा मांहै नीपनी, थोहरै विड़ै री, भाखर रै खुड़ै री, सूऐ री पांख, परड़री आंख, रोज मारि, रिंघ मारि....।
—रा. सा. सं.

उ०—२ विधि वतावै छै सूआ इहै पाठक वकता हुआ । सारस छै सरस वांछक छै ।—वेलि टी.

सूकड़ि, सूकड़ी–सं. स्त्री.—१ चंदन ।

उ०—१ धनसार केसर अगर सूकड़ि, अंगलूहण दीस ए । पांच पांच सगली वस्तु ढोवइ, सगति सहु पंचवीस ए ।—स. कु.

उ०—२ कालां पीलां नीलां धउलां इस्यां पटोलां, सूकडिना समूह, कपूरनां पूर, घणां केसरनां अलवेसरपणां, अगरना भर, सुगंधपणपूरी इसी कस्तूरी ।—व. स.

२ एक वनस्पति विशेष ।

उ०—सेवंत्री संवेसरा, सूकड़ि सरकडि साय । सीमंतक सोहइ भला, सरव सदाफळ खाय ।—मा. कां. प्र.

३ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

४ मारवाड़ की एक नदी जो लूनी नदी की एक सहायक नदी है ।

उ०—१ भाई वै भेळा हुवा, असुर नदी सिर आय । सिंधुर घोड़ै सूकड़ी, मेळ न मापी जाय ।—रा. रू.

रू. भे.—सूखड़ी, सूखडी ।

सूकड़ौ—देखो 'सुखड़ी' (रू भे.)

सूकणौ, सूकबौ—देखो 'सूखणौ, सूखवौ' (रू. भे.)

उ०—१ क्यूं नह सूकौ कंवर मै, हातम हंदौ हत्थ । हातम लै उण हत्थ सूं, अपहड़ वांटी अत्थ ।—वां. दा.

उ०—२ सूकी सुदरांणीं भाड़ां रै सा'रै । लाधी विदारांणीं वाड़ां रै लारै ।—ऊ. का.

उ०—३ हियड़इ भीतर पइसि करि, ऊगउ सज्जण रूंख । नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख ।—ढो. मा.

उ०—४ वहै थाट दहुवळां, सरां नदियां जळ सूकै । चाकै दहुं दळ चढै, धरा गुजरात धधूकै ।—सू. प्र.

सूकणहार, हारौ (हारी), सूकणियौ—वि० ।

सूकिओड़ौ, सूकियोड़ौ, सूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूकीजणौ, सूकीजवौ—भाव वा० ।

सूकनंद–सं. पु. [सं. शूकनंद] ४९ क्षेत्रपालों में से ४६ वां क्षेत्रपाल ।

सूकर—१ देखो 'सुक्र' (रू भे.)

२ देखो 'सूवर' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ वंधन देखी ससि म्रग सूकर सोक रसंत । पूछइं प्रमु आधोरण तोरण वारि पहूत ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ अपणौ जांण अभाग, गजव नहिं खाय गधेड़ी । सूकर भूंडी समज, निपट निकळै नहि नेड़ौ ।—ऊ. का.

(स्त्री. सूकरी)

सूकरक्षेत्र, सूकरखेत–सं. पु. [सं. सूकरक्षेत्र] मथुरा ज़िले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ ।

सूकरमुखी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की तोप जिसके मुख का आकार सूवर के मुख के अनुरूप होता है ।

सूकरी–सं. स्त्री.—मादा सूवर, 'भूंडण' ।

सूकरौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरीया साकट सूकरा, दोउं की परि एक । गयंद चलै गय आपनी, कूकर लवौ अनेक ।—अनुभववांणी

सूकळ–सं. पु.—वुरी चाल से चलने वाला, अशिक्षित घोड़ा ।

सूकळापांग—देखो 'सुक्लांग' (रू. भे.)

सूकविक–सं. पु.—एक प्रकार का पक्षी । (सभा)

सूकाणौ, सूकावौ—देखो 'सूखाणौ, सूखावौ' (रू. भे.)

सूकाणहार, हारौ (हारी), सूकाणियौ—वि० ।

सूकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूकाईजणौ, सूकाईजवौ—कर्म वा० ।

सूकायोड़ौ—देखो 'सूखायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूकायोड़ी)

सूकावणौ, सूकाववौ—देखो 'सूखाणौ, सूखावौ' (रू. भे.)

उ०—ज्या'रै जोग वणै, मरतौ मरै, एक टेम जीमै, पेट री दौल सूकावै है ।—दसदोख

सूकावणहार, हारौ (हारी), सूकावणियौ—वि० ।

सूकाविओड़ौ, सूकावियोड़ौ, सूकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूकावीजणौ, सूकावीजबौ—कर्म वा० ।

सूकाविजोड़ौ—देखो 'सूकावोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सूकाविजोड़ी)

सूकोड़ौ-भू. का. कृ.—सूखा हुआ, शुष्क ।
(स्त्री. सूकोड़ी)

सूकौ—देखो 'सूखौ' (रू. भे.)
उ०—१ कालर बीज न नीपजै, सूकै ठूंट न फूल । केवळ त्यांनी बाहज्यौ, कूड़ा कुगरां न भूल ।—वील्होजी
उ०—२ पण बेटी री बाप सूकौ लक्कड़ तथा ठूंठ, लुळै नहीं, टूटणौ जांणै ।—दसदोख
(स्त्री सूकी)

सूक्षम, सूक्ष्म-वि. [सं. सूक्ष्म] १ बहुत छोटा, लघु ।
२ बहुत कम, अत्यन्त अल्प, थोड़ा, कम ।
३ बहुत बारीक, महीन ।
४ पतला, क्षीण ।
५ तीक्ष्ण, नुकीला ।
६ नाजुक, कोमल ।
७ विलक्षण, अद्भुत ।
८ उत्तम, श्रेष्ठ ।
९ ठीक, सही ।
१० गूढ़, गहरा ।
११ चालाक, धूर्त्त ।
सं. पु. [सं. सूक्ष्म] १ सर्वव्यापी परमात्मा, ब्रह्म ।
२ आत्मा ।
३ अणु, परमाणु ।
४ शिव का एक नामान्तरण ।
५ सूक्ष्मता ।
६ केतक वृक्ष ।
७ शिल्प कौशल ।
८ धूर्तता, कपट, फरेब ।
९ महीन डोरा, धागा ।
१० लिंग, शरीर ।
११ योग द्वारा प्राप्त योगियों की तीन शक्तियों में से एक ।
१२ एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है ।
१३ देखो 'सूक्ष्मभूत' ।
रू. भे.—सुक्खम, सूक्षम, सूख्यंम, सुछम, सूखम, सूखिम, सूछम ।

सूक्ष्मदेह—देखो 'सूक्ष्मसरीर' ।

सूक्ष्मदृष्टि-सं. स्त्री. [सं. सूक्ष्मदृष्टि] ऐसी दृष्टि, समझ या बुद्धि जिससे बहुत ही सूक्ष्म दिखाई दे या समझ में आ जाय ।
वि—जिसकी ऐसी दृष्टि हो ।

सूक्ष्मभूत-सं. पु. यौ. [सं.] पंच तन्मात्रा का नाम ।
उ०—राजस अहंकार से दसइंद्री नीपनी । पांच ग्यानेंद्री पांच करमेंद्री । एवं दस तांमस । अहंकार ते पांच महाभूत, पांच सूक्ष्मभूत नीपना ।—द. वि.

सूक्ष्मसरीर-सं. पु. यौ. [सं. सूक्ष्मशरीर] इन सत्रह तत्वों का समूह यथा—पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पाच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि ।
उ०—सूक्ष्मसरीर, व्याकृति बहीर, झीनाति झीन, चित विदित चीन ।—ऊ. का.
रू. भे.—सूखमसरीर ।

सूक्ष्मा-सं. स्त्री. [सं.] विष्णु की नौ शक्तियों में से एक ।
रू भे.—सूखमा ।

सूखड़िया-सं. पु.—एक वर्ग विशेष ।

सूखड़ी—१ देखो 'सुखड़ी' (रू. भे.)
२ देखो 'सूकड़ी' (रू. भे.)

सूखड़ौ—देखो 'सुखड़ी' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ बागां जासी छैल, कवत कह फूलड़ा लेसी । तीज तणै दिन त्रिया, ढील पर महणौ देसी । कागद लिखतां कलम, प्रथम नवसंदी कहसी । जठरा बोह जीवणा दरस सूंमा नह देसी । मीठास अरथ हित रा महण, साळी वाळा सूखड़ा । ताहरा कवत मोहकमा कमंध, दाळ चीणी रा रूंखडा ।—अरजुनजी बारहठ
उ०—२ साथै लाज्यौ सूखडां, रैंण दिराज्यौ रीज । आज्यौ साजां ऊमदां, तरण रमाज्यौ तीज ।—मयारांम दरजी री बात
रू. भे.—सूकड़ ।

सूखडी—देखो 'सुखड़ी' (रू. भे.)
उ०—मंदिर मांहि मांडीउं, सोवन केरूं थाळ । स्वांमि करेवा सूखडी, तिहां तेडयु ततकाळ ।—मा. कां. प्र.

सूखणौ, सूखबौ-क्रि. अ. [सं. शुष्क] १ किसी भीगे हुऐ, आर्द्र या तर पदार्थ की आर्द्रता समाप्त होना, तरावट नष्ट होना, गीलापन न रहना ।
ज्यूं—धोती सूखणी, काकड़ी सूखणी, पांन सूखणौ ।
२ नदी व जलाशयों का जलरहित होना, जलहीन हो जाना ।
उ०—साचांणी अपां जै सावळ पड़ताळ करां तौ ठा' पड़ै कै इण मरुखेतर री ठौड़ कदैई हब्बोळा खावतौ समंदर हौ । पछै समंद री पांणी सूख गियौ । पांणी री लै'रां रेत री लैरां बणगी ।
—चितरांम
३ वृक्षों, पौधों, लताओं, वनस्पतियों आदि की जल के अभाव में जीवन शक्ति नष्ट हो जाना, जीवन शक्तिहीन होना ।
उ०—पण मिनखां रै राजा रा मन में आ बात ग्टी कोनीं । उठा-रा बाग देखतां देखतां सूखग्या । बाड़ियां सूखगी । काळ माथै काळ पड़ण लागा ।—फुलवाड़ी

४ रसहीन होनां, नीरस होना।
५ दुर्बल होना, क्षीण होना।
उ०—नागण तौ नीठ गिण-गिण अै विरवा रा दिन तोड़्या। **सूखनै** सांकळ व्हे ज्यूं व्हैगी।—फुलवाड़ी
सूखणहार, हारौ (हारी), सूखणियौ—वि०।
सूखिओड़ौ, सूखियोड़ौ, सूख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सूखीजणौ, सूखीजवौ—भाव वा०।
सूकणौ, सूकबौ—रू० भे०।

सूखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)
उ०—महिला रइ संगति मिळचां, **सूखम** जीव मरइ नव लाख। भगवंतइं इम भाखीयौ, सूत्र सिद्धांतै लाभै साख।—ध. व. ग्रं.

सूखमसरीर—देखो 'सूक्ष्मसरीर' (रू. भे.)

सूखमा—सं. स्त्री. [सं. सुषमा] १ शोभा, छवि, आभा, कान्ति।
२ एक प्रकार का वृक्ष।
३ देखो 'सूक्ष्मा' (रू. भे.)

सूखाणौ, सूखावौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू. भे.)

सूखायोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सूखायोड़ी)

सूखावणौ, सूखावबौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू. भे.)

सूखावियोड़ौ—देखो 'सुखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सूखावियोड़ी)

सूखिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)
उ०—**सूखिम** गळी नजरि मैं राखै, पांच चरण तळि चूरै। परम जोति कै परचै खेलै, अनहद सींगी पूरै।—ह. पु. वां.

सूखियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आर्दता या तरावट समाप्त हुवा हुआ, गीलापन न रहा हुआ (वस्त्र). २ जलहीन हुवा हुआ, रिक्त हुवा हुआ (जलाशय). ३ जीवन शक्ति नष्ट हुवा हुआ (वृक्ष आदि). ४ रसहीन या नीरस हुवा हुआ. ५ दुर्बल व क्षीण हुवा हुआ।
(स्त्री सूखियोड़ी)

सूखी-खांसी—सं. स्त्री. [सं. शुष्क+कास] शुष्क कास का एक रोग।

सूखेड़ौ—सं. पु.—१ शुष्क वातावरण या आंगण।
२ आर्द्रता या नमीविहीन मौसम।

सूखौ—वि. [स शुष्क] (स्त्री: सूखी) १ आर्द्रता, नमी या तरावट से विहीन, शुष्क।
उ०—धोवण उन्हौं पांणी पाज्यौ। **सूखौ** चारौ न्हाखज्यौ। साधां रौ एवर न्यारौ उछेरज्यौ।—भि. द्र.
२ चिकनाई, स्निग्धता से रहित, फरका, लूका।
उ०—१ वौ मुखिया नै कह्यौ कै पटियां मैं थोड़ौ तेल घालण सारू मन ताखड़ा तोड़ै। संपाड़ौ तौ वावड़ी माथै कर लियौ, पण केस साव **सूखा** है।—फुलवाड़ी
उ०—२ हरीया आधी लाभतां, सारी सुरति न धारि। लूखी **सूखी** खायकै, सांई नांव संभारि।—अनुभववांणी
३ उदास, विरक्त।
४ कोमल भावों से रहित, हृदयहीन।
५ कोरा, केवल, निरा।
सं. पु.—१ अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अकाल।
उ०—बारह-मासी नीपजै, तहां किया परवेस। दादू **सूखा** नापड़ै, हम आये उस देस।—दादूवांणी
२ जंल या वर्षा की कमी वाला प्रदेश (Desert)।
३ सूखा हुआ तम्बाखू का पत्ता।
रू. भे.—सूकौ।

सूखौड़ौ—भू. का. कृ.—सूखा हुआ, शुष्क।
(स्त्री. सूखौड़ी)

सूखौसपाक—वि.—बिल्कुल सूखा।

सूग—सं. स्त्री.—घृणा।
उ०—१ देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यौ है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घांण व्हैग्यौ है। थनै **सूग** ई नीं आवै भोळा?
—अमरचूंनड़ी
उ०—२ मांणस पापी मंस, अंस पिण **सूग** न आंणै। परगट्ट जीवां पिंड, जीभ स्वादै नवि जांणै।—ध. व. ग्रं,

सूगणी—वि. स्त्री.—शुभ लक्षणा।
उ०—ईस अहनिसि अवगण्यु, गिर **सूगणी** नगुरि। घणां अणूरां मेलीई, तेह मांहि हूं धूरि।—मा. कां. प्र.

सूगती—स. स्त्री. [सं. शुक्तिः] शुक्ति, सीप।

सूगतीज—सं. पु. [सं. शुक्तिज] मोती, मौक्तिक।

सूगलवाड़ौ—सं. पु.—गंदगी।
उ०—बैः नीं जांणै आः सेवा नी **सूगलवाड़ौ** है, जिंदगी अलीण करणै रौ अखाड़ौ है।—दसदोख

सूगलियौ—सं. पु.—वर्षा ऋतु में गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के मुंह में होने वाला रोग विशेष।

सूगलौ—वि. (स्त्री. सूगली) १ गंदा, घृणित, घिनौना।
उ०—१ डील सुं सरगड़ा पणैरी **सूगली** गिंध सी आवै सी आवै है।—दसदोख
उ०—२ पण नांव थारौ **सूगलौ** घणौ। बोलतां ताळवा मैं भुरंट ज्यूं खड़कै।—फुलवाड़ी
२ बुरा, खराब, गंदा।
उ०—१ समज तमाकू **सूगली**, कुत्तौ न खावै काग। ऊंट टाट खावै न आ, अपणौ जांण अभाग।—ऊ. का.
उ०—२ सेठांणी मूंडा सूं थूकती थकी बोली—थूकौ थांरा मूंडा सूं, अै **सूगली** बातां मुंडा सूं निकळै कीकर है।—फुलवाड़ी
३ कुरूप, भद्दा।

उ०—हौळै-हौळै वणावां में ई चौगा-मूंडा, गोरा चिट्ट' काळा किट्ट फूटरा'र सूगला, राता-माता'र मुड़दार मिनमिनिया, गळतियौ इतोड़ा सडव्ल'र ।—निनरांम

सूगावणी, सूगावणौ—देखो 'सुगाणी, सुगावौ' (रू. भे.)

उ०—प्रमुत अपवित्र सूगावणा है, मनुष्य तणा कांम भोग। वात पित्त गनेसमाए सुक, सोणित सर्व रोग।—जयवांणी

सूगावियोड़ौ—देखो 'सुगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूगावियोड़ी)

सूड़-सं. पु.—१ खेत में उगने वाले कंटीले पौधे, झाड़ी आदि।

२ खेत की सफाई के लिये उक्त प्रकार के पौधों को जड़ामूल से काटने की क्रिया।

उ०—१ सु आगै रायवण वाप हमीर नै बेटौ भीम हळ खड़ै छै, भींव सूड़ करै छै।—नैणसी

उ०—२ आखातीज रा सुगन मनावण सारू वौ गांव चौधरी गांधै कस्सी लेय सूड़ करण सारू आपरै खेतां वहीर व्हियौ।

—फुलवाड़ी

३ नाश, ध्वंस।

उ०—तप सरिखउ जगि को नहीं, तप करइ करम नौ सूड़ हो।

—स. कु.

४ सफाई।

उ०—तन मन मांहिलै ख्यांत खेती करौ। पहल सांसै तणा सूड़ कीजै।—अनुभववाणी

रू. भे.—सूड़ि।

सूड़उ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मालह कुंअर सूड़उ कहइ, माल्वणी मुख जोइ। प्रांण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ।—ढो. मा.

सूड़ि—देखो 'सूड़' (रू. भे.)

उ०—मवद कुहाड़ी सूड़ि सांसौ, सुक्रिय करि किरसांन। नाज निज कण बौहत नेपै, भूख दुख नसांन।—अनुभववांणी

सूड़ौ—१ देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सुणि सूड़ा सुंदरि कहय, पंखी पड़गन पाळि। प्रीतम पूगळ पंथ सिरि, किम ही पाछउ वाळि।—ढो. मा.

२ देखो 'सूड़' (रू. भे.)

(स्त्री. सूड़ी)

सूचक-वि. [सं.] १ सूचना देने वाला, सूचित करने वाला, बताने वाला।

२ बोधक, ज्ञापक।

उ०—१ भावी सूचक दिया कि भेळा। सिवरासि ग्रहगण समछ।—वेलि

उ०—२ निरां रांणा री सभा में जाय समता रा सूचक पत्र दिया।—वं. भा.

३ दिखलाने वाला, बतलाने वाला, मुखबिर।

४ सिद्ध करने वाला।

५ छेद करने वाला।

सं. पु.— १ शिक्षक।

२ किसी नाटक का प्रधान नट, सूत्रधार।

३ दर्जी।

४ सूई।

५ कुत्ता, श्वान।

६ काग, कौआ।

७ बुधदेव।

८ सिद्ध।

९ दुष्ट, गुण्डा।

१० राक्षस, शैतान।

११ बिल्ली।

सूचना-सं. स्त्री. [सं.] १ बात का परिचय, घटना की जानकारी, (इन्फोरमेशन)।

२ किसी अभियान, षड़यन्त्र या योजना की कार्यवाही की जानकारी जो भिन्न-भिन्न स्रोतों से प्राप्त की जाती है।

३ विज्ञापन व विज्ञप्ति, इश्तिहार।

४ ऐसा राजकीय आदेश जिसके द्वारा किसी नीति सम्बन्धी निर्णय, नियम या प्रणाली को प्रसारित किया गया हो, नोटिस।

५ दुर्घटना की रिपोर्ट।

६ टोह।

सूचना-पत्र-सं. पु.—१ वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की सूचना प्रकाशित की गई हो, परिपत्र।

२ विज्ञप्ति-पत्र, इश्तिहार।

सूचनिका-सं. स्त्री.—१ विगत, सूची, विवरणिका; लिस्ट।

२ एक प्रकार का छन्द। (ल. पिं.)

सूचि-सं. स्त्री.—किरण। (ह. नां. मा.)

सूचिका-सं. स्त्री.—१ सुई।

२ हाथी की सूंड।

सूचिपत्र—देखो 'सूचीपत्र' (रू. भे.)

सूचिमुख-सं. पु.—मूसा, चूहा। (अ. मा.)

वि.—जिसका मुंह तेज व तीक्ष्ण हो।

रू. भे.—सुचमुखौ, सुचिमुख, सुचीमुख, सूचीमुख।

सूचियौ—देखो 'सूचक'।

उ०—जिण समैं महामारी रै मंडांण नरां रौ नास देखि कोईक कच्चा मंत्र रा देणहार आहव रा अमेघ सांमंतर सूचिया घोड़ै चढ़ण री हूंस धारि दारासाह हाथीरूप तखत हूं हेठौ उतरियौ।—वं. भा.

सूची-सं. पु. [सं. सूचि, सूची] १ सेना का व्यूह।

२ इशारा, सैन।

३ भेदन।
४ हावभाव।
५ छेदन।
६ नृत्य विशेष।
७ गुप्तदूत, भेदिया।
८ चुगलखोर।
९ दुष्ट, खल।
१० कपड़ा सीने की सुई।
११ किरण, आभा।
१२ दृष्टि।
१३ अप्सरा।
१४ विगत, तालिका, फहरिश्त।
१५ सुई की नोंक।
१६ कील की नोंक।
१७ विषयानुक्रमणिका।
१८ पिंगलशास्त्र के ८ प्रत्ययों के अन्तर्गत एक प्रत्यय जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कुछ निश्चित वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छंद या वृत बनते हैं तथा उनके आदि और अन्त में कितने लघु व कितनी मात्राएँ होती हैं।
वि. [स. शुचि] १ उजला, शुभ्र।
२ सफेद, श्वेत।
३ पवित्र, शुद्ध।

सूचिकरम—सं. पु. [सं. सूची+कर्म] सीने पिरोने की कला जो चौसठ कलाओं में से एक मानी जाती है।

सूची-पत्र—सं. पु. [सं] वह पत्र, पत्रिका या पुस्तिका जिसमें कई वस्तुओं की विगत दी गई हो, तालिका, फहरिश्त।
रू भे.—सूचिपत्र।

सूचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (नां. मा.)

सूचौ—वि. [सं. शुचि] स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, पवित्र।
उ०—छोटे वडै नीच कुळ ऊंचा, रांम कहत सब ही नर **सूचा**। कहा भयौ जै ऊंच कहायौ, रांम नांम हिरदै नहीं गायौ।
—अनुभववांणी

सूछम—देखो 'सूक्ष्म' (रू. भे.)
उ०—कळह घणा ही कटक नूं, **सूछम** गणै समाथ। नव हत्या वाळी नरां, है छाती सौ हाथ।—वां. दा.

सूज—देखो 'सूझ' (रू. भे.)

सूजड़, सूजड़ी—सं. स्त्री.—देखो 'सुजड़' (रू. भे.)

सूजणौ, सूजबौ—क्रि. अ.—१ किसी चोट, रोग या वात-विकार के कारण शरीर के किसी अंग में सूजन आना, फूलना, शोथ आना।
उ०—१ पण मार खाय-खाय नैं ज्यांरा डील **सूज्यौड़ा** हा वांरै मन मैं तौ औ भौ तीर री गळाई सालतौ हौ कै जै खूनी रौ पतौ नीं लाग्यौ तौ सगळां नैं'ई पाछौ थांणै जावणौ पड़ैला।
—अमरचूंनड़ी
उ०—२ सगळां रै हीयै हरख रौ पार नीं हौ। पण छोटकी वहू री रोय रोय आंख्यां **सूजगी**।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सूझणौ, सूझबौ' (रू. भे.)
उ०—इण मारवण रै थै नैड़ा चाल जो। ज्यूं मारग **सूज्यौ** जाय।
—रसीलैराज रा गीत
सूजणहार, हारौ (हारी), सूजणियौ—वि०।
सूजिओड़ौ, सूजियोड़ौ, सूज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सूजीजणौ, सूजीजबौ—भाव वा०।

सूजन—सं. स्त्री.—१ चोट आघात या रोग के कारण शरीर के किसी अंग में आने वाली शोथ, फुलाव।
२ सूजने की अवस्था या भाव।

सूजनम—सं. स्त्री. [सं. सूर्यनवमी] आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की नवमी।
रू. भे.—सूझनम, सूनम।

सूजांण—देखो 'सुजांण' (रू. भे.)

सूजाउ—देखो 'सुजाव' (रू. भे.)
उ०—१ 'सलखा' सहि अभिनमौ 'सकतौ', सोह चडावै 'करन' **सुजाउ**।—रूकमांगद राठौड़ रौ गीत
उ०—२ घण वींटियौ कवी मोटा घण, घण सात्रवां वहंतौ घाउ। अनिकारां मुहरी ऊंचवहौ, सौहै सूरजमल **सूजाउ**।
—दयालदास राठौड़ रौ गीत

सूजाक, सूजाग—सं. पु. [फा. सूजाक] दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग विशेष जिसमें लिंग का मुंह और छिद्र सूज जाता है तथा मूत्रनलिका में बहुत जलन होती है तथा मूत्रेंद्रिय में घाव हो जाते हैं।
रू. भे.—सुजाक, सुजाग।

सूजाणौ, सूजाबौ—क्रि. स. ['सूजणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ मार-मार कर या पीट-पीट कर किसी के शरीर में शोथ लाना, सूजा देना।
२ रो रो कर आंखें सूजा लेना।
३ रूठकर या नाराज हो कर मुंह फुलाना।
उ०—मूंडौ **सूजायै** रै'ती, आयोड़ा पर भुजती-बळती..........।
—दसदोख
सूजाणहार, हारौ (हारी), सूजाणियौ—वि०।
सूजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सूजाईजणौ, सूजाईजबौ—कर्म वा०।
सूजाणौ, सूजाबौ, सूजावणौ, सूजावबौ—रू० भे०।

सूजायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मारपीट कर शोथ लाया हुआ, सुजाया हुआ. २ रो-रो कर आँखें सुजाया हुआ. ३ मुंह फुलाया हुआ. ४ देखो 'सूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूजावोड़ी)

सूजाव-स पु—१ सूजन रोग।
 २ देखो 'सूजाव' (रू. भे.)

सूजावणी, सूजाववौ—१ देखो 'सूजाणी, सूजाबौ' (रू. भे.)
 उ०—दीठी सदवा नरै-हाथ जोड़ै। बीजी मूं सूजावै, मायौ मोड़ै।—दसदोत
 २ देखो 'सूझावणी, सूझाववौ' (रू. भे.)

सूजावियोड़ो—१ देखो 'सूजावोड़ो' (रू. भे.)
 २ देखो 'सूझावोड़ो' (रू. भे.)
 (स्त्री. सूजावियोड़ी)

सूजियोड़ो-भू. का. कृ.—१ किसी प्रकार की चोट आघात या विकार के कारण सूजन आया हुआ, फूला हुआ, शोथ आया हुआ. (शरीर, अंग)
 २ देखो 'सूझियोड़ो' (रू. भे.)
 (स्त्री. सूजियोड़ी)

सूजो-सर्व—वह, वही।
 स पु. [स. सूचिक] १ दर्जी।
 उ०—ताहरां राजा भोज बात कहै छै। एक हुतो ब्राह्मण री बेटो। एक हुतो सिलावट री बेटो। एक हुतो सूजी री बेटो। एक हुतो सुनार री बेटो यां चारै ही मैं मित्रा-चारो थो।
 —चौबोली
 सं. स्त्री.—२ सूजन, शोथ, फुलाव।
 ३ एक प्रकार का दानादार मेदा जो हलवा बनाने के काम आता है।

सूझ-सं. स्त्री.—१ सूझने-समझने की क्रिया या भाव।
 २ दृष्टि, नजर।
 ३ बुद्धि, समझ, अक्ल।
 उ०—दोनूं राजावां रै वैर सारू दियोड़ा सावूता नै काट-छांट अर सूझ रो अेक हळकोक थट्टो ई घणो।—चितरांम
 ४ वह बौद्धिक-शक्ति जिसके द्वारा कोई अद्भुत बात, नई उद्भावना जाग्रत होती है, समस्या को सुलझाने की शक्ति।
 ५. समझदारी, दूरदर्शिता।

सूझणौ, सूझबौ-क्रि. अ.—दिखाई देना, दृष्टिगत होना, दिखना।
 उ०—१ वयण न सूझै थांम, पोहोम बूजे हय पोड़ा।—मे. म.
 उ०—२ सुदर सुर सीळ कुळ करि सुध। नाह किसन सरि सूझै नाह।—वेलि
 उ०—३ अहि नर जिम दम हूंस अळूझै। सुणै न सबद गात नह सूझै।—सू. प्र.
 २ समझ में आना, ध्यान में आना, मन में आना।
 उ०—१ नाम निवंतां नाम, नामि सूझै सहि सूझै। नाम तणौ रस माहि रैन, दुझै निधि दूझै।—पी. ग्रं.
 उ०—२ थें मरद होय इण भांत हारग्या तौ म्हैं लुगाई री जात कांई करती अर कांई नीं करती, अबै ई थांनै आ वात नीं सूझै?
 उ०—३ लारै आई हूं, इण वास्तै थांरै साथै पाप रा भाग म्हारै ई वंधै। आ ई नीं जचती व्है तौ थांनै ज्यूं सूझै त्यूं करौ।
 —फुलवाड़ी
 ३ बुद्धि द्वारा उपजना, मस्तिष्क में आना, ज्ञान चक्षुओं से समझ में आना।
 उ०—१ हरीया सरवर ढूकड़ै, पग-पग पैंडै मांहि। सुरति विनां सूझै नहीं, आस पास वहि जांहि।—अनुभववांणी
 उ०—२ टूंक चावड़ो राव राजा नै कंवर वीज नांमै राज करै छै। तिको राजाराज तौ आंख्यां संजम छै, पिण हीयारा नेत्र खुल्या छै। आख्यां देखतां सूं घणी सूझै।—जगदेव पवार री वात
 उ०—३ मन का आसन जैं जिव जांनैं, तौ ठौर ठौर सब सूझै। पंचां आंनि एक घर राखै, तब अगम निगम सब बूझै।
 —दादूवांणी
 ४ याद रहना, स्मरण रहना।
 उ०—मालजदा मन मांहि, रांड सूझै दिनराती। मालजादि मन मांहि, यार सूझां अकुळाती।—ऊ. का.
 ५ प्रवृत्ति होना, मन में आना।
 उ०—जद तद सूझै जूंझणौ, वाघ न लागा वीर। इण रै जात सुभाव औ, सौहै समैं सरीर।—वां. दा.
 ६ योग बनना, संयोग होना।
 उ०—हिवै ईयां रा साहा सूझै नहीं। घणुं ही ढूंढि थाया।
 —देवजी बगड़ावतां री वात
 ७ चलना।
 उ०—ओझक ऐंली मैं आवेस अळूझै। सीळी रेळी में चीसळियां सूझै।—ऊ. का.
 ८ उत्पन्न होना, उठना।
 उ०—कह्यौ—वापजी, म्हनै तौ वैराग सूझियौ। म्हारी मुगती अबै आपरै हाथ है।—फुलवाड़ी
 ९ अनुभव होना, समझ आना।
 उ०—१ नागण मूंडो मस्कोरनै कह्यौ—म्हैं तो कठै ई आंधी कोनी, म्हनै तौ तीन भौ री सूझै।—फुलवाड़ी
 उ०—२ पछै स्वांमीजी आहार कर अ.यनै कह्यौ—ओगुण आपरी आतमा रा सूझै है कै म्हारा।—भि. द्र.

सूझणहार, हारौ (हारी), सूझणियौ—वि०।

सूझिओड़ो, सूझियोड़ो, सूझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

सूझीजणौ, सूझीजबौ—भाव वा०।

सुझणौ, सुझबौ, सूजणौ, सूजबौ—रू० भे०।

सूझतउ, सूझतौ-क्रि. वि. (स्त्री. सूझती) १ आंखों वाला, दृष्टि वाला।
 उ०—१ राज काज रीत नीत सूझतौ रह्यौ। वाट आंधरै कि

यार सूझतौ वह्यौ ।—ऊ. का.

उ०—२ नाई राजाजी रै पगां हाथ लगाय बोल्यौ—हां, अंदाता म्हारा मन ई कैवै कै आंधा इण रूप रै सांम्ही ऊभा व्है जावै तौ वांनै सूझतौ व्हैणौ पड़ै ।—फुलवाड़ी

२ विशुद्ध निर्दोष ।

उ०—आहार विहरावइ सूझतउ, गति पांमइजी, सांभलइ सूत्र सिद्धांत, देवगति पांमइजी ।—स. कु.

क्रि. वि.—१ देखते व समझते हुऐ ।

२ दिखता, दिखाई देते हुऐ ।

सूझनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

सूझबूझ–सं. स्त्री.—सोचने-समझने की बुद्धि, दृष्टि और बुद्धि ।

सूझाणौ, सूझावौ—देखो 'सुझाणौ, सुझावौ' (रू. भे.)

सूझायोड़ौ—देखो 'सुझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूझायोड़ी)

सूझावणौ, सूझाववौ—देखो 'सुझाणौ, सुझावौ' (रू. भे.)

सूझावियोड़ौ—देखो 'सुझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सूझावियोड़ी)

सूझियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ दिखाई दिया हुआ, दृष्टिगत हुवा हुआ, दिखा हुआ. २ समझ में आया हुआ, ध्यान में आया हुआ, मन में आया हुआ. ३ युक्ति से जाना हुआ, बुद्धि द्वारा उपजा हुआ, मस्तिष्क में आया हुआ. ४ याद रहा हुआ, स्मरण रहा हुआ. ५ प्रवृत्त हुवा हुआ, मन में आया हुआ. ६ बना हुआ (योग, संयोग). ७ चला हुआ. ८ उत्पन्न हुवा हुआ, उठा हुआ. ९ समझ में आया हुआ, अनुभूत ।

(स्त्री. सूझियोड़ी)

सूटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

सूठ–वि. [सं. सुष्ठु] उत्तम, श्रेष्ठ ।

सूडाहळ—१ देखो 'सूंडाहळ' (रू. भे.)

२ देखो 'सूंडाळ' (रू. भे.)

सूण—१ देखो 'सगुन' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां सूण भला हुआ ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ चढती बाई नै ए सूण भला होया राज । लाडं जंवाई नै ए सूण भला होया राज ।—लो. गी.

उ०—३ सारै-सारै दिन थारा सूण मनावै तो उभा जोवै थारी वाट वदळी । मारूजी रै खेतां जावौ वदळी ।—लो. गी.

२ देखो 'सकुन' (रू. भे.)

सूणघर, सूणहर–सं. पु. [सं. शयन+गृह] शयनाघर, सोने का कक्ष या कमरा ।

उ०—दूलह हुइ आगै पाछै दुलहणि । दीन्हा क्रम सूणहर दिसि ।
—वेलि

सैणापौ, सूणापौ– सं. पु.—सौन्दर्य ।

उ०—१ सूणापौ खुल्लौ बंटै हो, अब प्यार कठै न अंटै हौ ।
—सकुंतळा

उ०—२ आ धरा धरीं या नीर परी, या नभस्यूं उतरी देवनार । पलकां मैं सदा रखण जोगी, कै सूणापौ आग्यौ अपार ।
—सकुंतळा

सूणौ–वि. (स्त्री. सूणी) सुहावना, सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ आ थमी कमळणी नैड़ै-सी, ई सूणै रूप चुरावण नै ।
—सकुंतळा

उ०—२ अंवर रौ रंग सुरंगौ हौ, चंदै री आभा सुणी ही ।
—सकुंतळा

क्रि. वि.—१ तक, पर्यंत ।

२ सहित, युक्त ।

सं. पु.—किसी मोटे व गर्म धातु खण्ड को पकड़ने का एक लोहे का चिमटा ।

सूणौ, सूबौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू. भे.)

उ०—१ सूतौ थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत । वन कांठै मारग वहै, पग पग हौल पड़ंत ।—बां. दा.

उ०—२ तै भांग खाधी न छै । इसा प्रथी मैं कुण छै सौ सूतै काळ नुं जगावै ?—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह । सु जु दुज पुग नीसरै सूतौ, निसा पड़ी चालियौ नह ।—वेलि

सूणहार, हारौ (हारी), सूणियौ—वि० ।

सूयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सूईजणौ, सूईजवौ—भाव वा० ।

सूत–सं. पु. [सं. सूत्रं] १ धुनी हुई रूई को कातकर तैयार किया हुआ बारीक कच्चा धागा, तंतु या रेशा ।

उ०—१ छोरा छोरी छोड वरागण संग वण्यौ है नीकोरै । सूत उन का सांग वणायौ, गोपीचंद कौ टीकौ रे ।—रैदास धत्तरवाळ

उ०—२ वौ आछी तरै जांणतौ हौ कै सती रौ परचौ उणनै अठा तांई काचै सूत बांधनै लावैला ।— फुलवाड़ी

वि. वि.—ऐसे धागों के समूह से लटिकाऐं, लच्छियें तथा कोकड़ियें बनाई जाती हैं । इनसे विभिन्न प्रकार के डोरे, रस्सियां आदि बनाई जाती हैं । कपड़ा बुनने के लिये ऐसे रेशों के बड़े-बड़े गट्टे बनाऐ जाते हैं ।

२ उक्त प्रकार के कच्चे रेशों से बनाया हुआ बारीक डोरा जो सिलाई आदि में काम आता हैं ।

उ०—मन माळा सतगुर दई, सुरति सूत सुं पोय । हरीया घट मैं फेरीयै, जाप अजपा होय ।—अनुभववांणी

वि. वि.—ये डोरे विभिन्न रंगों में मोटे, बारीक कई प्रकार के बनाये जाते हैं । इनमें आवश्यकतानुसार तीन तार, चार तार, पांच तार आदि जोड़े जाते हैं ।

३ उन तारों से बुना हुआ वस्त्र, कपड़ा, सूती वस्त्र।
४ [illegible], पगड़ी।
उ०—१ पीठ तुरस [illegible] कर, प्रास पास रजपूत। मावड़िया [illegible] नहीं, कुण मूछां सिर सूत।—बां. दा.
५ [illegible]।
६ [illegible], डोरी।
उ०—१ भार मोर भातड़ां सूत सिलहां सांमांना। सरव भार [illegible], भार पुरस्कार गजांनां।—सू. प्र.
उ०—२ बात करता करता ई सेठ सूत सूं बणियोड़ा मांचा माथै बैठग्या।—फुलवाड़ी
७ दीवार बनाते समय दीवार की सीध मापने की डोरी, इससे आंगन या छत की समतलता भी नापी जाती है।
८ सूत का ढेर।
९ द्विजों की जनेऊ।
[रा.] १० आभूषण, गहना।
उ०—१ मैं बीजा भूप अनेक मांगिया, मौजां वार अनेक मिळी। गुरु 'किसनेस' वीर गुरु संचियौ, कुजमांना रा सूत कळी।
—ओपौ आढौ
उ०—२ लाडू बड़ा री संभाळ रिपियां-खोपरां री मनुवार। साळ्यां नै बीरी छल्ला अर साळेल्यां नै सूत सांकळी।—दसदोख
११ संपति, धन, पूंजी।
उ०—एक एक कहे बारी जाऊं एहनी रे, इण वैरागे छोड्यौ घर सूत रे। जोवन वय में सुंदर परहरी रे, राजा 'स्रेणिक धारिणी' केरौ पूत रे।—जयवांणी
१२ संचय, संग्रह।
उ०—निरधन नै घरि धन नौ सूत। आपै अपुत्रीया नैं पुत्र, कायर नै सूरापण धरै।—वृ. स्त.
१३ संबंध।
उ०—१ पूरणमल की नूं राज तिरमळ कै पूत। सावक रजवाड़ां को बांध्यौ यक सूत।—शि. वं.
उ०—२ फेर जोग छै तौ एक-दोय मजरौ जायगा करि। इणरौ नाळेर फेर दै। आपां सुं इहां री किसौ सूत छै? काल गाडा भरीया मांणस मारीया छै। जाह सु किसौ सनमंध।
— कुंवरसी सांखला री वारता
१४ विधान, नियम, कायदा।
उ०—१ वैरागर हीरा हुए, कुळवंतिया सपूत। सीपै मोती नीपजै, [illegible] सूत।—बां. दा.
उ०—२ बांन नवाब सरम द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ संधै। दू [illegible] सूत प्रबंधै। नेम लियौ विधि जेम निमंधै।
—रा. रू.
उ०—३ हरीया हरि के नांव बिन, सब ही सूत कसूत। ऐसैं नारी बांझड़ी, दूध न वाकै पूत।—अनुभववांणी
१५ विधि, तरीका।
उ०—यसा सूत सूं कांम बरियांम तूं यम करै, लकड़ मांनै तरस जकड़ लागां।—नगराज री गीत
१६ ढंग, हाल, हालत।
१७ कार्य, काम।
उ०—१ हरीया सोच विचार करि, अपना सूत समोय। या अलपल संसार सुं, कहा पड़ी है तोय।—अनुभववांणी
उ०—२ पण मैवासा रै सबब करै चोरी गोहरी रौ पण सूत।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री वात
१८ उपक्रम।
उ०—रावळा घर मांहे छै एक एक ईसा रजपूत। जिकौ बांधै दिली नै चीतोड़ सूं लड़वा री सूत। जिणसूं किणही नै फरमाय हाथ देखीजै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
१९ प्रभाव, प्रताप।
उ०—इंद्र नरेंद्र नै ज्योतिसी ए, रहै ज्यूं किंकर भूत कै। सुर नर सेवा करै ऐ दया धरम ना सूत कै।—जयवांणी
२० मार्ग।
उ०—अवधिग्यांन प्रयूंजियौ, देण मुगतरा सूत। आपै चव किहा ऊपजां, थासां 'भ्रगु' रा पूत।—जयवांणी
२१ रूप, सौंदर्य।
उ०—जणी छोरी हैं जाती फिरती देखैं नै एक दिन अणी री सूत देखनै कांणा रा मन मैं पाप उपज्यौ।
—कांणा राजपूत री वात
२२ वंदीजन, भाट।
उ०—कितरोइ पुर उच्छव कियौ, दूणौ सुख दरबार। कथ महागुण सूत कवि, चित हित मंत्र उचार।—रा. रू.
२३ वेदव्यास के शिष्य, एक ऋषि का नाम।
उ०—'बांका' वेद पुरांण विच, सायद आ छै सूत। सुख संतोख सराहियौ, आपदत अवधूत।—बां. दा.
२४ रथ हांकने वाला, सारथि।
२५ बढ़ई।
२६ एक प्राचीन वर्ण शंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से होना माना गया है।
२७ इस जाति का व्यक्ति।
वि. वि.—पुराणों में प्राप्त जानकारी के अनुसार सूत कुल में उत्पन्न लोग प्राचीनकाल से ही देव, ऋषि, राजा आदि के चरित्र एवं वंशावली का कथन या गायान का कार्य करते थे जो कथा आख्यायिका गीत (गाथा) आदि में समाविष्ट थे। इसी प्राचीन लोक साहित्य को एकत्रित कर व्यास ने अपने आद्य पुराण की रचना की थी।

२८ व्यवस्था, प्रवन्ध।

उ०—राड़ी सालूळं ग्रत्यगां वेध ववै सोवां रायजादां, सतारा उछाजां जूह उमंडै सजीत। घोर वेळा प्रथम्मी ग्रांणतां सूत हेक घाटं, ग्रासमांन फाटै थंम लगायौ 'ग्रजीत'।

—रावत ग्रजीतसिंह चुंडावत रौ गीत

२९ सीध, सीधाई।

३० घोड़ी या मादा ऊंट की योनि।

वि.—१ सीधा।

उ०—पड़ियौ सेडौ पेखि भवन भेडौ भणणावै, भींतांहि सेडैभरी गरट मांख्यां गणणावै। ग्रावै देख उवाक थूक रा थेचा थाया, उतरचा सूत ग्रणूंत मत रेला नह माया। करजोड़ ग्ररज कांमणि कहै, हाय हमैं, हूं हारगी। भरतार मती भुगताय रे निलज जीवतोई नारगी।—ऊ. का.

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

रू. भे.—सूतर, सूत्र।

ग्रल्पा;—सूतियौ।

सूतक–स. पु. [सं.] १ संतान होने पर घर या परिवार में होने वाला ग्रशौच, प्रसूतिका-ग्रवधि, जन्म-सूतक, जनन ग्रशौच।

उ०—१ तीस दिन सूतक, पांच रुतवंती न्यारी, सेरी करौ स्नांन, सीख संतोख सुच प्यारी।—जांभौ

उ०—२ गायां नै गिरमास ठिकांणौ चोड़ै ठायौ। सूवै सूतक सुधी, तळै छिगास विसायौ।—दसदेव

२ सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय की कुछ घंटों पूर्व की ग्रवधि, ग्रहण ग्रशौच।

३ मृत्यु, ग्रशौच।

४ पारा, पारद।

रू. भे.—सूतग।

सूतका–सं. स्त्री. [सं.] वह स्त्री जिसके हाल ही में वच्चा हुग्रा हो, सद्य:प्रसूता।

रू. भे.—सूतिका।

सूतकाळौ–सं. पु.—किसी की मृत्यु के नवें दिन परिवार एवं संबंधियों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक स्नान। (मेवाड़)

सूतकी–वि. सं. [सूतकिन्] जिसके घर या परिवार में 'सूतक' हो।

सूतग—देखो 'सूतक' (रू. भे.)

सूतगड–सं. पु. [सं. सूतकृत] तीर्थंकरों द्वारा ग्रर्थ रूप में उत्पन्न पर गणधरों द्वारा ग्रंथ रूप दिया गया हुग्रा। (साहित्य) (जैन)

सूतड़ा-चींटूड़ी–सं. स्त्री.—पैर का ग्राभूषण विशेष। (म. मा.)

सूतड़ौ–सं. पु.—हाथ का ग्राभूषण विशेष। (म. मा.)

सूतज–सं. पु. [सं.] दानवीर राजा कर्ण

सूतण—देखो 'सूथण' (रू. भे.)

उ०—सूतण विराजै धरमी रे केसरिया नाड़ौ लाल गुलाल ग्रो।

—लो. गी.

सूततनय सं. पु. [सं.] राजा कर्ण। (ह. नां. मा.)

सूतधार—देखो 'सूत्रधार' (रू. भे.)

सूतनंदन सं. पु. [सं.] राजा कर्ण।

सूतनउमा–सं. पु. यौ. [सं. उमा+सुत] १ स्वामिकार्त्तिकेय।

२ गणेश, गजानन।

सूतपाळ–सं. पु. [सं. सूतपाल] कर्ण। (ग्र. मा.)

सूतबंधी–सं. स्त्री.—सीध, सीधाई।

क्रि. वि.—सीधे लक्ष्य की ग्रोर।

सूतर—१ देखो 'सूत्र' (रू. भे.)

उ०—१ मनुख जनम ग्रति दोहलौ, सुतर सुणवौ सार। सतगुरु सरधा दोहिली, उत्तम कुल ग्रवतार।—जयवांणी

उ०—२ सूतर खडग्गू सार नग्गू जन प्रतग्गू राख ए। कर मांग दग्गू जिए जग्गू दुस्ट ग्रग्गू खाख ए।—करुणासागर

उ०—३ जैसैं सूतर पूतळी, चित्रकार चित्रांम। मैं ग्रनाथ ऐसैं सदा, तुम इच्छा सोइ रांम।—करुणासागर

२ देखो 'सूत' (१, २) (रू. भे.)

उ०—१ ग्रौ सूतर रौ ढौलियौ ग्रर ए पड़वा रा थेपड़ा इण वात रा साक्षी है।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ कंवळा सूतर री सूंतमी नाथां नैं छेड़ा मांथै मोर पांखां री तीखी तुगियां सूं बांधनै त्यार कर राखी है।—ग्रमरचूंनड़ी

सूतळ–वि.—सूत का, सूत संबंधी।

उ०—सूतळ नाथां सर नासां सणकारी, फुरणी घूंघातां रासां फणकारी।—ऊ. का.

सूतळी–सं. स्त्री—१ जूट के बारीक रेशों की वनी पतली डोरी जो वोरे सीने के काम ग्राती है।

उ०—पण ग्रकल तौ वळै ई कांम नीं दियौ। जांणै सूतळी सूं खीलीजगी व्है।—फुलवाड़ी

२ सूत की डोरी।

उ०—कदै न ल्याया भंवरजी ! सूतळी जी हांजी ढोला ! कदै वी बुणी नहीं खाट।—लो. गी.

सूतहार, सूतार—देखो 'सूथार' (रू. भे.)

उ०—१ तद ब्राह्मण कही जी हूं थांनै कठै मिळीस। तद कंवर कही सूतहार उडण खटोलणी लै ग्रासी तेरै साथ ग्रायजौ।

—चौवोली

उ०—२ भोई सोई भरडीया, सोनी नई सूतार। व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईइ तिणी वारि।—मा. कां. प्र.

सूतिका—देखो 'सूतका' (रू. भे.)

सूतिका-रोग–सं. पु. यौ.—प्रसव के कुछ समय वाद स्त्री के होने वाला रोग। (ग्रमरत)

सूतियौ—देखो 'सूत' (रू. भे.)

उ०—सौंठी कलरा दही भिड़का, रोट बाटियां घूतियौ। फोगलासूं मूंगी सरड़क्यां, नट्ठा कानैं सूतियौ।—दसदेव

सूती-वि.—१ सूत का, सूत सम्बन्धी।

२ सूत का बना हुआ।

स. पु.—सूत का वस्त्र।

सूतोड़ौ-वि. (स्त्री. सूतोड़ी) सोया हुआ।

उ०—१ पदमणि पुरसां रै पंगरण नह पूरा। भूखा सूतोड़ा मगरस थै भूरा।—ऊ. का.

उ०—२ निगां री डिगली माथै सूतोड़ी डोकरी नै आठ दस वार देख देख नै गिया तौ ई सावळ पिछांण नीं व्ही।—फुलवाड़ी

सूतौ-वि. [सं. सुप्त] (स्त्री. सूती) १ सोया हुआ, सुप्त।

उ०—१ तूं तौ सूतौ नींद भरि, लिवै नचीतौ धंम। हरीया आया जोवता, एक जुरा एम जम।—अनुभववांणी

उ०—२ फौजी बूंटां मैं पांमोजा पैरयां ही सीधौ साळ मैं आ धमक्यौ। नोर मैं सूती राजी री घणी नराजी सूं नाड़ देखं'र मूंडौ मिचकोड्या।—दसदोख

२ बेहोश, बदहवास।

सूत्र-सं. पु. [सं. सूत्र] १ बहुत थोड़े शब्दों में कही हुई बात, वचन या पद जो गहरा अर्थ प्रकट करे, सारगर्भित एवं गूढ़ार्थी पद, वाक्य।

२ कटिप्रदेश पर करधनी की तरह धारण किया जाने वाला डोरा, कटिसूत्र।

३ यज्ञोपवीत, जनेऊ। ४ जैनशास्त्र, जैनागम।

उ०—१ जद उरजोजी बोल्या, भीखणजी पिण म्हांनै कहै, उ थांनै दोस लागै। जद सेठ बोल्या उवै तो सूत्र री साख सूं समचै दोस कहै। साधां नै औ कांम करणौ नहीं।—भि. द्र.

उ०—२ दस स्रवक तउ इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यउ नहि कोई रे।—वि. कु.

४ संक्षेप में जीव अजीव आदि पदार्थों की सूचना करने वाला पद या वाक्य। (जैन)

५ किसी प्रकार की व्यवस्था करने का नियम।

६ कठपुतली का तार या डोरा जिसे थामकर कठपुतली नचाई जाती है।

७ किसी समस्या का हल निकालने की युक्ति या उपाय।

८ काष्ठ, लकड़ी।

९ देखो 'सूत' (रू भे)

उ०—१ प्रासाद जाति पट घूंघट अनरि, मेळण एक करण अमिळी। मन रुपति कदाछि दूनि मैं, नियमन सूत्र कटाछि नळी।

—वेलि

उ०—२ जरै हाथ वाला पढ्या माप जाया पछै माप री कांचळी सूत्र रचा।—ना. द.

रू. भे.—सूतर।

सूत्रकंठ-सं. पु. [सं.] १ ब्राह्मण, द्विज।

२ कबूतर।

३ खंजन।

सूत्रक-सं. पु. [सं.] लोहे के तारों का बना कवच।

सूत्रकरम-सं. पु. [सं. सूत्रकर्मन्] १ बढ़ई का कार्य या कर्म।

२ बेल-बूटे आदि कसीदा निकालने की क्रिया।

३ चौसठ कलाओं में से एक।

सूत्रकार-सं. पु. [सं.] १ सूत्र का रचयिता, सूत्र बनाने वाला।

उ०—अनेक सूत्रकार सत धरम रा राखणहार खैराइत्तां रा करणहार धज बंधी........।—रा. सा. सं.

२ बढ़ई, सूथार।

३ जुलाहा।

४ मकड़ी।

सूत्रक्रीड़ा-सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का सूत्त का खेल जिसकी गणना ६४ कलाओं में होती है।

सूत्रग्रंथ-सं. पु. [सं.] सूत्र के रूप में रचा हुआ ग्रंथ।

सूत्रणौ, सूत्रबौ-क्रि. स. [सं. सूत्रणम्] १ आरंभ करना, प्रारंभ करना, रचना।

उ०—१ कर ऊभियै महेस कळोधर, सबळा सूं सूत्रै समर।

—अमरसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—२ वाजतै नगारै कटक चालै विसम, जैत्र हथ सूत्रियौ इसौ रण जंग।—नरहरदास बारहठ

२ गूंथना, गुत्थियां डालना।

सूत्रणहार, हारौ (हारी), सूत्रणियौ—वि०।

सूत्रिओड़ौ, सूत्रियोड़ौ, सूत्र्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सूत्रीजणौ, सूत्रीजबौ—कर्म वा०।

सूंत्रणौ, सूंत्रबौ—रू० भे०।

सूत्रधार-सं. पु. [सं.] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नांदी पाठ के अनन्तर खेले जाने वाले नाटक की प्रस्तावना सुनाता है।

२ बढ़ई, सूथार।

३ भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। (सभा)

उ०—तरै राजा रै मन आई 'जु एक इसड़ौ देहुरौ कराऊं, जिसड़ौ म्रत्युलोक मांहे अचंभौ हुवै, सु हमै देसरा सूत्रधार तेड़ीजै छै।

—नैणसी

४ सूत्रों को बनाने वाला।

५ जुलाहा।

६ इन्द्र।

रू. भे.—सूतधार।

सूत्रविपाक—देखो 'विपाकसूत्र' (रू. भे.)

उ०—सूत्रविपाकै इग्यारम अंग, स्लोक बारसै सोलै संग। अंग इग्यार सूत्र मिलै थाय पैंत्रीस सहस दोइ सैं प्राय।—ध. व. ग्रं.

सूत्रसंपदा–सं. स्त्री. [सं.] सूत्र-ग्रंथों का संग्रह।

वि.—शास्त्र के अर्थ-परमार्थ का ज्ञाता।

सूत्रस्थविर–वि.—स्थानांगसूत्र, समवामांगसूत्र के सार या अर्थ को जानने वाला। (जैन)

सूत्रांम, सूत्रांमा—देखो 'सुत्रांमा' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

सूत्रा–सं. स्त्री.—मकड़ी। (अ. मा.)

सूथण, सूथणि, सूथणी–सं. स्त्री.—१ जंजीरनुमा कवच विशेष जो शरीर के अधोअंग में धारण किया जाता था।

उ०—१ हथियार सारा सांतरा करण लागा। बगतर, झिलम, जिरह-सूथण जिरै-जूता, घोड़ां री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छै। मनै ग्यांनै सारी तेवड़ कर रह्यौ छै। सखरा रजपूत तैयार कीजै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ शरीर के अधोभाग में धारण किया जाने वाला वस्त्र, पजामा, पायजामा।

उ०—१ इतरै मांहै रळै पण घर मांहै जाय, सिनांन कर सूथण पहिर पाछीया सौं सूथण फाड़ी।—रळै गढवै री वात

उ०—२ सूथणि वागा इकळंग सीया, कोड़ि अहुंठ कसीदा कीया।
—सूरजनदासजी पूनियौ

रू. भे.—सुथण, सूंथण, सूंथणि, सूंथणी।

सूथांनक–सं. पु. [सं. सुस्थानक] सुमेरु पर्वत। (ह. नां मा.)

सूथार, सूथारियौ—देखो 'सुथार' (रू. भे.)

सूद–सं. पु. [फा.] १ उधार या ऋण के रूप में दिये जाने वाले रुपयों पर बनने वाला ब्याज।

२ लाभ, नफा।

३ वृद्धि।

४ शूद्र।

[सं. सूदः] ५ नाश, वध।

६ कूप।

७ सोता।

८ चश्मा।

९ रसोइया।

१० पकवान।

१० चटनी, कढी।

११ दली हुई मटर।

१३ पाप, गुनाह, कसूर, दोष।

रू. भे.—सूध।

सूदकसाला–सं. स्त्री. यौ. [सं. सूदः+शाला] पाकशाला, रसोईघर। (डिं. को.)

सूदखोर–सं. पु. [फा.] ब्याज लेने वाला, निर्ममता मे ब्याज वसूल करने वाला।

सूदणौ, सूदबौ–क्रि. स. [सं. मृद्] १ काटना, काटकर अलग करना।

उ०—अंबा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्रिंग प्लवंगम तेम।
—मे. म.

२ मर्दन करना, हनन करना।

३ घायल करना, चोटिल करना।

४ वध करना, संहार व नाश करना।

५ निकलना।

६ जमा करना।

७ स्वीकार करना, मानना।

८ पकाना, पकाकर तैयार करना।

सूदन–सं. पु. [सं.] १ काटने, नष्ट करने या वध करने की क्रिया या भाव।

२ विनाश, नाश।

३ वध, कत्ल।

४ निष्कासन, निकास।

५ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र।

उ०—दहकि दहकि दौलपराज किरिराज पुकारै, लवणोदक सौं सुद्धवीर लग वढन बिथारै। बळ सूदन सौ बांमदेव लग अजग उसारै, बड़वा मुख सौं ब्रह्मलोक लगसोक सम्हारै।—वं. भा.

वि.—१ विनाश करने वाला, नाशक।

२ वधिक।

३ प्रेम-पात्र, प्यारा।

४ माशूक, आशिक।

सूदनकिरमर, सूदनकिरमिर–सं. पु. [सं. सूदन+किर्मीर] भीम।
(ह. नां. मा.)

सूदर—देखो 'सूद्र' (रू. भे.)

सूदियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ काटा हुआ, काटकर अलग किया हुआ. २ मर्दन किया हुआ, हनन किया हुआ. ३ घायल व चोटिल किया हुआ. ४ वध किया हुआ, संहार व नाश किया हुआ. ५ निकला हुआ, उड़ेला हुआ. ६ जमा किया हुआ. ७ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. ८ पकाया हुआ, पकाकर तैयार किया हुआ।
(स्त्री. सूदियोड़ी)

सूदौ—१ देखो 'सुदौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै खुणियां सूदा हाथ जोड़नै कह्यौ—अंदाता, औ दुस्टी राज रै तबेला री घोड़ी रौ माथौ वाढ न्हांकियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इतरौ कहै नै साह परदेस गयौ। यौ वरस ५ सूदौ रयौ।
—वंधी बुहारी री वात

उ०—३ धवूस व्है ज्यूं ढूकौ जकौ कड़ियां सूदौ खाड खोद न्हांकियौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सीधौ' (रू. भे.)

उ०—मीरां महलां में ऊतरयाजी, ऊंटां भार कसाय। डावो डोकी मेलसी, कोई सूदा द्वारका जाय।—मीरां
(स्त्री. सूदी)

सूद्र-सं. पु. [सं. शूद्र] (स्त्री. सूद्रणी, सूद्रा, सूद्री) १ स्मृत्यनुसार या हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार मानव-समाज के चार वर्णों में से चौथा एवं अन्तिम वर्ण, शूद्र।
उ०—रळ्या गुळ्या रजपूत, विरांमण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा।—ऊ. का.
२ उक्त वर्ण का कोई व्यक्ति।
उ०—अम्ह काज तुम्ह छंडि अवर वर आंणी, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगरांम सूद्र ग्रहि संग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छां वदनि।
—वेलि
३ सेवक, अनुचर, दास।
४ नैऋत्यकोण स्थित एक देश।
रू. भे.—सुदर, सूद, सूदर।

सूद्रक-सं. पु. [सं. शूद्रक] १ मृच्छकटिका नामक ग्रंथ का रचयिता, शूद्रक।
२ शंबूक नामक शूद्रकुलोत्पन्न एक व्यक्ति जो श्रीराम का समकालीन था, यह बड़ा तपस्वी था।

सूद्रणी, सूद्रांणी, सूद्रा, सूद्री-सं. स्त्री.] सं. शूद्रा, शूद्राणी] १ शूद्र जाति की स्त्री।
२ गाथा छंद का एक भेद जिसमें २७ से अधिक लघु वर्ण होते हैं।
रू. भे.—सुदरांणी, सुदरांनी, सुद्रणि, सुद्रणी।

सूध-सं. पु.—१ शुक्ल (पक्ष)।
उ०—आसाढ़ऊ सूध, नम स्रीनरपती 'अजन्न'। राजा आयो रोहनै, परणीजण सुप्रसन्न।—रा. रू.
२ देखो 'सुद्ध' (रू. भे.)
उ०—१ बेपग सूध जिकै सालहोतरमां वखांणिया तिहड़ा इण भांति रा तेजी, धरा रा खूंदणहार, सुरताळां रा अवखुरां सूं धरती धमकिनै रही छै।—रा. सा. सं.
उ०—२ कनेम्ट वंस सूध छत्तीस ही वंस छत्तीस ही राजकुळी एक एक हवद सोहड़ा मिळी।—ग्र. वचनिका
उ०—३ वरत तणी चोगी करी, सात आंबिल सूध थायो जी। कायी मान दिन तप कीयां, रतन हरण पाप जायो जी।—स. कु.
उ०—४ सूध मन सेव गुरुदेव री साचवै। सगर समझै अरथ सूत्र सिद्धांत।—ध. व. ग्रं.
३ देखो 'सूद' (रू. भे.)

सूधउ-वि.—१ सहज, सरल, आसान।
उ०—इसम पानै दोहिलउजी, सूधउ गुरु संयोग। परमारथ श्रीकार नहीं जी, सदर अथाहो लोग।—स. कु.
२ देखो 'सूधौ' (रू. भे.)

सूधणौ, सूधबौ-क्रि. स. [सं. शोधनम्] १ खोजना, ढूंढना, पता लगाना।
उ०—१ खालक अवै खलक मझ, विरळै सूधा।
—केसौदास गाडण
२ शुद्ध करना, निर्मल करना।
उ०—वेपख सूधति विहूं मास वै। वसंत ताइ सारिखौ वहंति।
—वेलि.

सूधर-सं. स्त्री. [सं. सु+धरा] अच्छी भूमि।
उ०—कीधी फौज वळै कमधज्जां, सूधर सोधण प्रांण सकज्जां।
—रा. रू.

सूधरणौ, सूधरबौ—देखो 'सुधरणौ, सुधरबौ' (रू. भे.)
उ०—गुरु लोक गप्फा चरै, धरै न राजा ध्यांन। सौ किण विध सूं सूधरै, दाखै ऊमरदांन।—ऊ. का.

सूधरियोड़ो—देखो 'सुधरियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सूधरियोड़ी)

सूधलौ—देखो 'सूधौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०— सासू सूधली लड़ै, फोग आलड़ो बाळै।—लो. गी.
(स्त्री. सूधली)

सूधां, सूधा-वि.—१ सहित, युक्त।
उ०—१ यूं कहीनै पचास असवार जीन सालिया नख चख सूधा था त्यांरी गोळ करनै उपाड़ नांखिया।—नैणसी
उ०—२ जीवौं मांहीं जिव रहै, ऐसा माया मोह। सांई सूधा सब गया, दादू नहिं अंदोह।—दादूवांणी
२ सहज, सरल, आसान।
उ०—धूंणी का मन मितर दूधा, इनकुं रांम नांम नहीं सूधा। अपनै तन की आसा वरतै, नांव निरासन की नहीं सुरतै।
—अनुभववांणी
क्रि. वि.—१ रहते हुए, होते हुए।
उ०—चांपावत 'लाखौ' 'फतौ', 'कूंपौ' 'केहर' 'रांम'। यां सूधां कळ जोधपुर, मिटै न आठूं जांम।—रा. रू.
२ लक्ष्य की ओर, सीधा।
उ०—राजा नर ब्रह्म री नांम जियौ तौ' दूतरा हाल होयसी कै सूधां चली आ।—पंचदंडी री वारता

सूधारणौ, सूधारबौ—देखो 'सुधारणौ, सुधारबौ' (रू. भे.)
उ०—सुणि कहै बादल बात, धन धन माताजी ताहरी हीयौजी। सतवंती तूं साच, धन तैं, आपोआप सूधारीयौ जी।—प. च. चौ.

सूधारियोड़ो—देखो 'सुधारियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. सूधारियोड़ी)

सूधियोड़ो-भू. का. कृ.—१ खोजा हुआ, ढूंढा हुआ, पता लगाया हुआ.
२ शुद्ध किया हुआ, निर्मल किया हुआ।

(स्त्री. सूधियोड़ी)

सूधी–क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ प्रमुख वंबावदारां गढ गंजि मैंसरोड़ **सूधी** आय अमल जमायौ ।—वं. भा.

उ०—२ तरै इणौं रांणां री तळाई खरड़ री पोकरण थी कोस १६, फळोधी सूं कोस ८, उठा थी लेनै वीठणोक **सूधी** इण धरती मांगी ।—नैणसी

२ लक्ष्य की ओर, सीधी ।

उ०—रांण ढिली कर वंक पण, लीधी **सूधी** वाट ।—रा. रू.

वि.—सहित, युक्त ।

उ०—१ इण करमसीजी नूं रिणी पटै हुती पड़गनै **सूधी** । अरु करमसीजी बारट आसै भाद्रेसै नूं कोड़ रौ दांन कियौ ।

—द. दा.

उ०—२ ईसौ केहनै घोडचढी नै रौही मै जावता एक तुरत री व्याई हीरणी बच्चानै चूंघावती देखी नै वचा **सूधी** लघू-लाघवी कळासूं रांणी रै वास्तै पकड लाया ।—रीसालू री वात

सूधौ–वि. [सं. शुद्ध] (स्त्री. सूधी) १ सीधा-सादा, भोला-भाला, सरल, शान्त ।

उ०—१ वावा म देइस मारुवां, **सूधा** एवाळांह । कंधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ मझि थळांह ।—ढो. मा.

उ०—२ ऊजळौ सुभाव, चड़ड़ चल्लौ, गांव री बेटी पण सगलां सूं गूंघटौ पल्लौ । **सूधी** गऊ रा ऊपरला दांत ।—दसदोख

उ०—३ ओठी कठैई पड़ग्यौ कै उणनै कोई मार न्हांकियौ । सांयड तौ **सूधी** अर टाळकी दीसै ।—फुलवाड़ी

२ शुद्ध, निर्मल ।

उ०—ध्यावै जेह **सूधै** मन सदगुरु, दिन दिन सुभ परिणांमै ।

—ध. व. ग्रं.

३ उचित, यथोचित, उपयुक्त ।

उ०—चिता कुण वैठा जड मूढ ए, वाग सहू मारौ रूधौ रे इत्यादिक स्रवणौ सुणी, चित्त उत्तर देवै **सूधौ** रे ।—जयवांणी

४ सहित, युक्त ।

उ०—१ धीर मेर रा खड्ग प्रहार सूं कन्ह महर रौ अंस पंसुली **सूधो** झड़ियौ ।—वं. भा.

उ०—२ नै कोई नारायणजी रा चक्र थीं तेजसी तीन सै रजपूतां **सूधौ** भूत री गति पाई ।—जगमाल मालावत री वात

रू. भे.—सूदौ, सूंधौ, सूधउ ।

अल्पा;—सूधलौ ।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ मोटै राजा केलावौ पटै दियौ थौ । संमत १६६२ **सूधौ** रह्यौ । केलावौ, लवेरौ, विकूंकोहर गांव सूं पटै थौ ।—नैणसी

उ०—२ तिण पछै गोळ रौ लोक भी मोरछा मांडि तुपक तीरां रौ वेझौ वणाइ पहर दोय **सूधौ** लड़ियौ ।—वं. भा.

२ से ।

उ०—बादसाह री इजाजत **सूधा** दोनूं एक कबर मैं दफनाया गया ।—जलाल बूवना री वात

३ की ओर, को ।

उ०—हदि को लोपि वेहद **सूधौ** चल्यौ, गांव सुनि गोरिवै निजर गाडी ।—अनुभववांणी

सून–सं. पु.—१ फूल, पुष्प । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सून्य' (रू. भे.)

उ०—१ देख सरप व्है दादुरा, सब्द कळा कर **सून** । पुरख असैंदौ पेख व्है, मावड़ियां मुख मून ।—बां. दा.

उ०—२ गोलां सूं न सरै गरज, गोला जात जबून । ऊखांणी सायद भरै, सौ गोलां घर **सून** ।—बां. दा.

सूनउ—देखो 'सूनौ' (रू. भे.)

उ०—सत्थवाह मोकलावीय मन रंगि धन सागर पुर जोइ । सजन विहूणउं सहूइ **सूनउं**, सुद्धि न पूछइ कोइ ।—हीराणंद सूरि

सूनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

उ०—१ इणी महीना री **सूनम** रै सैं दिन सावा री बात सुणी तद वा मां नै कह्यौ—म्हनै एकर पूछतौ लेणौ हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजां विचार करण लागी—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदस । आ **सूनम** (असाढ सुदनम) गई तौ उणनैं परणीयां नैं पूरा तीन बरस व्हिया अर चौथौ बरस लागग्यौ ।

—अमरचूंनड़ी

सूनसांन—देखो 'सुनसांन' (रू. भे.)

उ०—धवळै दिन रा गांव बिल्कुल **सूनसांन** मसांण व्है ज्यूं लागै ।

—रातवासौ

सूनसायर–सं. पु. [सं. सुनु+सागर] समुद्रपुत्र, कामदेव ।

सूनादोख–सं. पु. [सं. सूनादोष] वह दोष या पाप जो, चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाडू आदि से जीव हिंसा होने पर लगता है ।

(जैन)

सूनापण, सूनापणौ—देखो 'सूनीपणौ' (रू. भे.)

सूनासीर—देखो 'सुनासीर' (रू. भे.)

सूनी–वि. [सं. शून्य] १ निर्जन, शून्य, खाली, रिक्त ।

उ०—१ व्रज **सूनी** ऐ सहेल्यां एक रांम विना व्रज **सूनी** ।

—लो. गी.

उ०—२ विज्जुळियां नीळज्जियां, जळहर तूं ही लज्जि । **सूनी** सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि ।—ढो. मा.

उ०—३ **सूनी** ढांणी मैं सेठांणी सोती, रैगी विणियांणी पांणी नै रोती ।—ऊ. का.

रू. भे.—सूनोड़ी ।

२ देखो 'सुनी' (रू. भे.)

२ देखो 'सूनौ' (रू. भे.)

सूनीयाड़—देखो 'सून्याड़' (रू. भे.)

सूनु, सूनूं, सूनू—सं. पु. [सं. सूनु] १ पुत्र, बेटा, लड़का।

२ देखो 'सूनौ' (रू. भे)

सूनोड़ौ—देखो 'सूनौ' (रू. भे)

उ०—ऊभी मन मगरणार, सूनोड़ी वाड़ी रा माळी।—लो. गी.

सूनोपण, सूनोपणौ—निर्जनता, शून्यता।

सूनौ-वि. [सं. शून्य] (स्त्री. सूनी) १ जनरहित, निर्जन, एकान्त, उजाड़।

उ०—१ गज्जरण नाल्या हे सखी सूना करै अवास। गळेय न पांणी ऊतरइ, हियै न मावइ सास'।—ढो मा.

उ०—२ इण प्रकारै औ नगर सूनौ हुवौ छै।—रीसालु री वात

२ रिक्त, खाली, शून्य।

उ०—१ रात बीतयां दिन उग्यो। आज स्कूल रौ झूंपो सूनौ पड़्यौ हो अर लगातार तीन बरस सूं बोलतौ लोडस्पीकर मूंडौ लटकायां नींवड़ा माथै चुपचाप पड़्यौ हो।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ सूना घर में उण वास्तै मन नीं लागै। थोड़ा वेगा आय जावै तौ आछौ।—फुलवाड़ी

३ बन्धनमुक्त, खुला, स्वतन्त्र।

उ०—ताळ-सूणां सांढ सा सरोढ बेटा-बेटी सूना फिरै। पेमजी खुद दूजै जुवांन वर्ण है।—दसदोख

४ अरक्षित।

रू. भे.—सूनउ, सूनो, सूनउ, सूनु, सूनू, सूनू।

सून्य-सं पु [सं. शून्य] १ खाली स्थान, रिक्त स्थान।

२ जिसका कोई आकार या रूप न हो, निराकार।

३ अभय स्थान।

उ०—जनहरीया गुर आपना, लै पुहचै सून्य गांय। जिन गुर सबद न जांणिया, धका काल का खांय।—अनुभववांणी

४ परमधाम।

५ आकार।

६ एकान्त स्थान।

७ गणित में अभावसूचक चिन्ह।

८ बिन्दी, बिन्दु।

९ बन्धमुक्त।

उ०—अधर धरै रे कोई अधर धरै, सून्य सिखर में वास करै। निमल नाव सरैवा सहजां, रोम रोम रसनां उचरै।

—अनुभववांणी

१० सत्याधार नय।

११ विराट।

१२ विष्णु।

१३ ईश्वर, परमात्मा।

१४ स्वर्ग।

वि.—१ कुछ नहीं, निरर्थक।

२ गुनातीत।

३ जिसका अस्तित्व न हो।

४ जो वास्तविक न हो, असत्।

५ जो खाली हो, रीता, रिक्त।

६ निर्जन, एकान्त।

७ अनाशक्त, विरक्त, निर्विकल्प।

उ०—दादू मन फकीर जग थै रह्या, सद्गुरु लीया लाइ। अह निसि लागा एक सौं, सहज सून्य रस खाइ।—दादूबांणी

८ उदास, रंजीदा।

९ सीदा-सादा, सरल।

१० अर्थ शून्य।

११ नंगा, नग्न।

१२ अचेत, वेहोश, विमूढ़।

उ०—मुझइ रडइ मुहि पडइ मनि कंप थाइ। देखी जतू कटक उत्तर सून्य थाइ।—सालिसूरि

रू. भे.—सुंन, सुंन्य, सुनि, सुन्न, सुन्य, सूंन, सूंन्य, सून।

सून्यमंडल-सं. पु.—१ सौर-मण्डल, आकाश।

२ मस्तक (योग)।

रू. भे.—सुनमंडळ, सुनिमंडळ।

सून्यवाद-सं. पु. [सं. शून्यवाद] बौद्धों का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार जीव व ईश्वर में कुछ भी नहीं माना जाता है।

सून्यवादी-सं. पु.—उक्त सिद्धान्त को मानने वाला बौद्ध।

सून्या-सं. स्त्री. [सं. शून्या] १ नलिका नामक गंध द्रव्य।

२ वंध्या स्त्री।

सून्यागार-सं. पु. [सं. शून्यागार] १ आकाश, गगन।

२ सूनाघर या मकान।

३ सूना कक्ष।

रू. भे.—सुन्नगार।

सून्याड़-सं. स्त्री.—१ सुनसान जगह, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान।

उ०—१ डोकरी उण सून्याड़ रोही में रोवण सारू घणी ई खपी, पण रोईजियौ ई नीं।—फुलवाड़ी

२ खाली एवं रिक्त होने की अवस्था, रिक्तता।

उ०—उण वगत म्हैं थारा सूं कांई कम बेचैतै ही बेटी जिण बिखा री वेळा माथा में फगत थोथी सून्याड़ धरणावै, उण सूं वत्तो कीं दुख कै संताप नीं व्है।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सूनियाड़, सुन्नाळ।

सूपंखौ-वि.—सुवापंखी रंग का, हरे रंग का।

उ०—तरै ऊगै कह्यौ—महाराजा बारै बारै मास कोरड़ धास सूपंखौ म्हांकै माथै छै।—कहवाट सरवहियै री वात

सूप-सं. पु. [सं.] १ पकी हुई दाल, भाजी।
२ रसदार सब्जी।
३ सब्जी का रस, शोरवा।
४ कढी।
५ चटनी।
६ तीर, बांण।
[सं. शूर्प, सूर्पः] ७ अनाज फटकने का एक उपकरण जो बत, बांस, सींक का बना होता है।
उ०—१ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप। किळ सोभण मुख मूभ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप।—वेलि
उ०—२ कुळ मोटै वहुवां कुळ धुवां, मांन महातम निरवहै। कण सूप जिहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै।—गु. रू. बं.
उ०—३ सांमी सेवग सूप ज्युं, एकै मतै वहंत। कंण छाडै कूकस गहै, खाली आप रहंत।—अनुभववांणी
[सं. सूपः] ८ रसोइया।
९ करुण रसपूर्ण एक राग विशेष।
१० एक नायिका विशेष।
११ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।
उ०—वेहद्द हद्द वागै वणाव, चम्मीर हीर जंमै जडाव। जगमगै जोप कसवी अनूप, नीलक्क मसंजर लाल सूप।—गु. रू. बं.
१२ देखो 'सुपनखा' (रू. भे.)
उ०—हेक दांणव व्याधि हरिणियौ, खरां त्रिसरां मूळ खणियौ। लाछि वर सिर सूप लुणियौ, सात्रवं सुणियौ।—पी. ग्रं.

सूपकनौ-वि. [सं. सूर्प+कर्ण] सूप के समान बड़े बड़े कानों वाला।
उ०—ऐकळ जंघा आइया, विमळ वहिथिया वाज। जळ मांणसिया जोइया, सूपकनां सुभराज।—पी. ग्रं.
सं. पु.—हाथी।

सूपकार-वि. [सं. सूपकार] भोजन बनाने वाला, रसोईया।

सूपड़ौ—देखो 'सूप' (७) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—नी रांड रोवण नैं ही, नीं भैंस दोवण नैं अर नीं सूपड़ौ सोवण नैं।—अमरचूंनड़ी

सूपनखा, सूपनिखा, सूपनेखा—देखो 'सुपनखा' (रू. भे.)
उ०—१ सूपनखा रौ स्रमण, नाक वाढियौ निमै नरि। निमौ अकलि रघनाथ, अनंत पंचवटी ऊपरि।—पी. ग्रं.
उ०—२ जका सूपनेखा कटा फूल जाई। अवध्येस रा रूप सूं रीझ आई।—सू. प्र.

सूपरसन-सं. स्त्री. [सं. स्पर्शन] वायु, हवा।

सूफंजर-सं. पु.—वह ऊनी वस्त्र जिस पर स्वर्ण का काम किया हुआ हो।
उ०—पाटंबर पैहरंत, सूफंजर वाफ मसंजर। जमदाढां नमि जडित, वडां जडिया जरकंबर।—गु. रू. बं.

सूफी-सं. पु. [अ. सूफी] (स्त्री. सूफिनि) १ बहुत उदार विचार वाले एवं सभी धर्मो से प्रेम करने वाले मुसलमानों का एक वर्ग।
उ०—कुतब गौस अवदाळ सूफी अनै कळंदर, पीरजादा मिळै सांझ परभात।—नरहरदास बारहठ
वि० वि०—यह वर्ग ब्रह्मवादी व अध्यात्मवादी विचार एवं एकेश्वरवाद को अधिक महत्व देता है।
२ उक्त वर्ग का अनुयायी, कोई संत या फकीर।
उ०—१ सोइ जोगी, सोइ जंगमा, सोई सूफी सोइ सेख। सोइ संन्यासी, सेवड़ा, दादू एक अलेख।—दादूवांणी
उ०—२ योगिनि ह्वै योगी गहै, सूफिनि ह्वै कर सेख। भक्तनि ह्वै भक्ता गहै, कर कर नांना भेख।—दादूवांणी

सूब—देखो 'सूम' (रू. भे.)
उ०—ऊख गिरी धर ऊपरै, यळ खांडांमय आव। तूंवां मीठम होय तौ, सूबां होय सवाव।—वां. दा.

सूबर-सं. स्त्री.—गर्भवती घोड़ी या मादा ऊंट।
उ०—तेंरै पेट री उठै घोड़ी सूबर आंई थी सौ जोगिया कन्है राजूखां रा आदमी मोल लाया था।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात
रू. भे.—सूभर।

सूबांण—देखो 'सुवांणी' (रू. भे.)

सूबादार—देखो 'सूबेदार' (रू. भे.)

सूबादारी—देखो 'सूबेदारी' (रू. भे.)

सूबायत—देखो 'सूबेदार'।
उ०—१ बादसाह लाहोर रै सूबायत नूं ताकीद कीवी जै चोर नूं पकड़ौ।—दूलजी जोइयै री वारता
उ०—२ पांचवैं चौथै वरस सूबायत नवौ आवै सो खेचल हुवै।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

सूबेदार-सं. पु. [फा. सूबःदार] १ किसी प्रान्त या सूबे का अधिपति, अधिकारी।
उ०—जै थटै रौ अमल नहीं आयौ, सूबेदार फिराऊ हुवौ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता
२ फौज या सेना में एक ओहदा या पद।
३ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।
रू. भे.—सूबादार, सोवेदार।

सूबेदारी-सं. स्त्री. [फा.] १ सूबेदार का कार्य।
२ सूबेदार का पद।
रू. भे.—सूबादारी।

सूबै—देखो 'सुवह' (रू. भे.)
उ०—हुवै चम्मरां झाटका जोति हुवै, सदा ऊतरै आरती सांझ

सूवं ।—मे. म.

सूबो-सं. पु [फा. सूबः] १ किसी राज्य का कोई प्रान्त, जिला या सूबा ।

उ०—१ माल जितराहीक लै गयो । नवाब री सूबो उतरीयो । संवत १७१६ रा आसाढ सुदि ६ नवाब कूच कीयो ।—नैणसी

उ०—२ नवाब महोबतखां बुरहांनपुर सूं पूरब नूं रवांना हुवा सुरतनू हरावल तद बुरहांनपुर री सूबो राव रतन नूं भोळायो ।

—बां. दा. ख्यात

उ०—३ सारा ब्रहमंड इकीसा सूबा, पुरंद गुणां सूबायतपूर ।

—र. रू.

[अ. सुबहा] २ शक, संदेह ।

रू. भे.—सुबो, सोबो ।

सूभग-वि.—सुंदर ।

सूभभद्र-सं. पु.—कुशल, मंगल, खैरियत ।

सूभर-वि.—१ सुन्दर ।

उ०—१ सब्द सरोवर सूभर भरा, हरिजळ निरमळ नीर । दादू पीवै प्रीति सौं, तिनकै अखिल सरीर ।—दादूवांणी

उ०—२ भाप करै सर सूभर भरिया, धरती रूप अनेरा धरिया । 'हमीरोत' हूवा गिर हरिया, सीख समापी, घर सांभरिया ।

—आसो बारहठ

२ सुख, सुख रूप ।

उ०—अहपुर महपुर इंद्रपुर, स्यौ ब्रह्मा लौ जोय । जनहरिदास दुभर दुनी, सूभर भरया न कोय ।—ह. पु. वां.

सं. पु.—१ पुष्कर ।

२ छोटा तालाब ।

३ देखो 'सूबर' (रू. भे.)

उ०—१ दूभर द्वीहायन श्रीहायन दोरी । सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी ।—ऊ. का.

उ०—२ भूरी सूभर भर भावड़दा भांगी, मोटी भोटी री आवड़दा मांगी ।—ऊ. का.

सूभरा-वि.—सुन्दर ।

उ०—रतन मैं रातड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा वांहड़ी लहक लोहै ।—रुकमणी मंगळ

सूभाव—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—म्हा सगळा हाथा-जोड़ी करां, राज रै पगां पड़ां । बाई भोळी घर री मारग सूभाव री है । आप मोटा हो मोटी विचारो ।

—फुलवाड़ी

सूभ्र, सूभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू. भे.)

सूम-वि. [अ. शूम] (स्त्री. सूमण) कृपण, कंजूस ।

उ०—१ सीम सीम सूमां नहीं, सूमां नहीं सबाव । सूमां घरै सुगाळ में, रघै रसोड़े राव ।—बां. दा.

उ०—२ थोया गैडंबर संबर बिण थाया, छपनैं सूमां सा आडंबर छाया । तुरत तिजोरी मैं जळ नें जड़ दीनूं, दे दे तांडेला तड़नें तड़ दीनूं ।—ऊ. का.

सं. पु.—१ पुष्प, फूल ।

२ देखो 'सुम' (रू. भे.)

रू. भे.—सुंब, सूंब, सूंब, सूंम, सूब ।

अल्पा;—सुंबड़ी, सुमड़ो, सूंबड़ो, सूमड़ो, सूमो ।

सूमड़ापण-सं. पु.—कंजूसी, कृपणता ।

उ०—हकीमां सूं पूछियो ऐब तिका तमांम गुणां नू ढांकै सो कांई छै—तरै कही—सूमड़ापण ।—नी. प्र.

सूमड़ो—देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

(स्त्री. सूमड़ी)

सूमपण, सूमपणो-सं. पु.—कृपणता, कंजूसी ।

सूममन-वि.—कठोर । ❀ (डि. को.)

सूमरा-सं. पु.—१ पंवारवंश की एक शाखा ।

२ सिंधी मुसलमानों का एक भेद जो पहले राजपूत थे ।

सूमि—देखो 'सुम' (रू. भे.)

उ०—लई पद चंपि अंगूठनि भूमि, सरब्बसु दब्ब लई मनो सूमि ।

—ला. रा.

सूमेर—देखो 'सुमेरु' (रू. भे.)

सूमो-सं. पु—१ आकाश ।

२ दूध ।

३ जल ।

४ देखो 'सूम' (अल्पा; रू. भे.)

सूयंभू—देखो 'स्वयंभुव' । (नां. मा.)

सूयटो—देखो 'सूवो' (रू. भे.)

उ०—सूयटा सोभागी कहि किहां सगुरु दीठा । साकर दूध सेती, मुख करावुं मीठा रे ।—स. कु.

सूयर—देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—जउ गढ नावइ करीय तु परांण, सूयर भक्ष करइ सुरतांणी ।

—कां. दे. प्र.

सूयावड़ि-सं. पु.—प्रसूति काल ।

उ०—सूयावड़ि दूखण घणा, वलि गरभ गलाया । जीवांणी ढोल्या घड़ा, सीलवरत भंजाया ।—स. कु.

सूयीधार—देखो 'सूईदार' (रू. भे.)

सूर-सं. पु. [सं. शूर, सूर, सूरि] १ शूरवीर, बहादुर, योद्धा ।

(अ. मा., डि नां. मा; नां. मा.)

उ०—१ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिणा निज पैज । सौ सूरां सिर सेहरो, नर पुंगव सुर-नैज ।—बां. दा.

उ०—२ थाट थड़ै जमदाढ जुड़ी, उठै बळाबळ तूर । सूर खड़ा पिड़ ले रह्या, कायर भागा दूर ।—अनुभववांणी

२ सूर्य, रवि सूरज। (नां. मां.)
उ०—१ वदि रुद्र खाग स्रीहथां वाहै। **सूर** थंभि रथ हाथि सराहै।—सू. प्र.
उ०—२ सुतरु छांह तदि दीध जगत सिरि। **सूर** राह किय जगत सिरि।—वेलि
३ सिंह, शेर। (ह. नां. मा.)
४ चीता।
५ श्रीकृष्ण का पितामह।
६ विष्णु का एक नाम।
७ सूरदास, अंधा।
८ नाक का दाहिना छिद्र। (योग)
उ०—१ साध मंडळि साथि बिराजै, अनहद नाद अखंडित वाजै। चंद **सूर** समि अरथ विचारै, धुनि मैं ध्यांन कमळ दळ धारै।
—ह. पु. वां
उ०—२ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देलारै। चंद्र **सूर** रा लिया सरोदा, सुखमण सीर चडेलारै।
—स्रीहरिरांमजी महाराज
९ भूरे रंग का घोड़ा।
१० पठानों की एक जाति।
११ राठौड़ों की एक शाखा अथवा इस शाखा का व्यक्ति।
१२ उत्तर और वायव्य के मध्य की दिशा जिधर सप्तर्षि अस्त होते हैं। इसे ऊंध भी कहते हैं।
१३ आक, मदार।
१४ सालवृक्ष।
१५ शूरवीर राजा।
१६ छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राऐं होती हैं।
१७ छप्पय छन्द का ५७ वां भेद जिसमें १४ गुरु, १२४ लघु, १३८ वर्ण या १५२ मात्राऐं होती हैं। (र. ज. प्र.)
१८ मतान्तर से छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें २ गुरु व १४८ लघु होते हैं।
१९ देखो 'सूरि' (रू. भे.)
उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक **सूर**।—ह. र.
वि.—१ तप्त *। (डिं. को.)
२ देखो 'सूवर' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ हिरणां लांवी सींगड़ी, भाजण तणौ सभाव। **सूरां** छोटी दांतळी, दै घण थट्टां घाव।—हा. झा.
उ०—२ **सूरां** रै मोरै भूखावाज ज्यौं असवार नै घोड़ौ आफळि रहिआ छै।—रा. सा. सं.
३ देखो 'सुर' (रू. भे.)

सूरकिरण-सं. पु.—१ छाते के आकार का राजचिह्न।
उ०—सिर चमर चौसर सोह, व्रत्ति **सूरकिरण** विमोह।—रा. रू.
वि. वि.—देखो 'किरणियौ'।

सूरखनीलौ-सं. पु.—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

सूरगुर-वि. [सं शूरगुरु] १ श्रेष्ठ वीर।
उ०—गयौ खीजियौ थकौ सैं देस हूं **सूरगर**, टळण परदेस री न कर टाळौ।—राव भीमसिंघ हाडा री गीत
२ देखो 'सुरगुरु' (रू. भे.)

सूरगुलूं-सं. पु.—एक प्रकार का पुष्प।
उ०—गुललाल कै डंवर **सूरगुलूं** का प्रकास। दावदी अजूवां गुलरोसनूं का उजास।—सू. प्र.

सूरड़ौ—देखो 'सूवर' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—हरसा वीर मेरा रे, वोजै वोजै मेरै ना'री ना'र। जांमण का रे जाया थूंरां रांमैड़ा रे सूरा **सूरड़ी**।—लो. गी.
(स्त्री. सूरड़ी)

सूरज-सं. पु. [सं. सूर्यः] १ सूर्य, रवि, दिनकर (अ. मा; नां. मा.)
उ०—**सूरज** खांखळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पंक। कायर कटक कलंक इम, कुकवी सभा कळंक।—वां. दा.
उ०—२ आवड़ रूप पधारचा अंबा, वणि मांमड़ा रा वाई। सरवर सोखि रोकियौ **सूरज**, भाल कियौ निज भाई।—मे. म.
पर्याय.—अंगारक, अंसुमाळी, अजनमा, अपी, अरक, अरीअंधार, अरुण, अहि, अहिकर, अहिपति, आदीत, आरांण, उतंग, उद्योत, उसनरसम, कपी, कमळविकासण, करनाळ, करमसाखी, कासिपसुतन, किरमाळ, खग, गगणमिण, गगनवटी, गगनपति, ग्रहपति, चक्रधर, चक्रवीर, चित्रभांणु, चोरणअपा, छतरपत, जगचख, जगदीप, जगनैण, जगसाखी, जनककरण, जनकजम, जनकजमण, जनकसनि, जमजनक, जमपिता, जोतप्रकासण, ज्योत, तपधण, तपन, तपी, तमचर, तमरार, तरण, तिमग, तिमगअंस, तिमरहर, तीखंसक्रम, तेज, तेजपुंज, दणियर, दिनंद, दिनकर, दिनेस, दिव, दिवाकर, दीत, दुतिवांन, दुनियण, दोमिण, द्वादसआतमा, धरधूपरा, धात, धीर, धुजअसमांण, नभमिंण, निसारिप, पंकजवंधु, पंकजहती, पतंग, पदमणपति, पपी, पिंगळ, पीथ, पुनीत, प्रकास, प्रद्योतन, प्रभाकर, प्रभू, प्रवीत, वनकर, वयळ, विंव, भग, भगवांन, भरळाटतन, भांण, भासंकर, भासवांन, मणगयण, महचक्र, महाग्रह, मारतंड, मित्र, मिहर, मेटणछपा, रतन, रवि, रातंवर, रानळपति, रांनापति, लोकवंधु, विकरतन, विभाकर, विभावसु, विरळ, विरोचन, विवसवांन, विवसांण, वेदउदय, सपतसपती, सपतहर, सविता, सहसकर, सांमल, सीतहर, सुंमाळी, सुमंत, हंस, हरि, हिरळवंत, हीर।
२ नाक का दाहिना स्वर स्थान।
३ टगण के तृतीय भेद की छः मात्रा का नाम, ।SIS।
४ आक का पौधा।

५ बालक की संज्ञा। ✽

वि.—१ श्वेत सफेद। ✽ (डि. को.)

२ स्वर्ण।

रू. भे.—सुरज, सूरज्ज, सूरज्जि, सूरिज, सूरिजि।

सूरजकांतमणि-सं. स्त्री.—सूर्यकान्तमणि।

वि.—श्वेत, सफेद। ✽ (डि. को.)

सूरजकाळ-सं. पु. [सं. सूर्यकाल] १ दिन का समय।

२ फलित ज्योतिष का एक चक्र जिससे शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है।

सूरजकुंड-सं. पु.—आबू का एक तीर्थ स्थान।

उ०—सो विधना रै लेख सूं मूंडग प्रातकाळ घड़ी दोय रै तड़कै सूरजकुंड में स्नांन करणनूं गई।—डाढाळा सूर री वात

सूरजकुळ-सं. पु. [सं. सूर्य्य+कुल] क्षत्रियों का एक वंश, सूर्य-वंश।

उ०—विर्गे अग्यांन धरम वीसारो। सूरजकुळ चौ धरम संभारो।—सू. प्र.

सूरजग्रह-सं. पु. [सं. सूर्य+ग्रह] १ सूर्य, रवि।

२ सूर्य का ग्रहण।

३ राहु व केतु के नामान्तर।

४ जल घट की तली।

सूरजग्रहण-सं. पु. [सं. सूर्य ग्रहण] १ सूर्य और पृथ्वी के मध्य में चंद्रमा के आ जाने पर और सूर्य आड़ में हो जाने के कारण होने वाला ग्रहण।

२ हठ योग की वह प्रक्रिया जब प्राण पिंगला नाड़ी में होकर कुंडली में पहुंचता है।

सूरजछट-सं. स्त्री.—कार्त्तिक शुक्लाषष्टी।

सूरजनम—देखो 'सूजनम' (रू. भे.)

सूरजनारायण-सं. पु.—सूर्यदेव, सूर्यनारायण।

उ०—ऐ तो सूरजनारायण सुणी वीणती, आ तो वेहमाता सुणेला पुकार।—लो. गी.

सूरजपांख-सं. स्त्री.—सूर्यकिरण, सूर्य प्रभा। (१)

उ०—यातै होगं कै सरीर ऊपर सूरज रूपी जोबन आयो छै। हावभाव दरसावी छै। पाछै सूरजपांख जागी छै।

—वगसीराम प्रोहित री वात

सूरजपुत्र-सं. पु. [सं. सूर्यपुत्र] १ यम।

२ शनि।

३ कर्ण।

४ सुग्रीव।

सूरजपुत्री-सं. स्त्री. [सं. सूर्य+पुत्री] १ यमुना।

२ विद्युत, बिजली।

सूरजपुर-सं. पु. [सं. सूर्यपुर] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।

सूरजपुराण-सं. पु. [सं. सूर्यपुराण] एक ग्रंथ विशेष जिसमें सूर्य्य का माहात्म्य वर्णित है।

सूरजपूजणौ, सूरजपूजबौ-क्रि. स.—प्रसव के पांच, सात, नौ या अट्ठारह दिनों के बाद जच्चा द्वारा स्नान करके बाहर आकर सूर्य की पूजा करना, सूर्य पूजा का संस्कार करना।

सूरजपूजा-सं. स्त्री.—१ सूर्य की पूजा।

२ प्रसव के कुछ दिन बाद प्रसूता द्वारा की जाने वाली सूर्य-पूजा।

सूरजप्रकास-सं. पु.—१ सूर्य का प्रकाश, उजाला।

२ धूप।

सूरजप्रदीप-सं. पु. [सं. सूर्य+प्रदीप] एक प्रकार का ध्यान या समाधि। (बौद्ध)

सूरजमंडळ-सं. पु. [सूर्यमंडल] सूर्य की परिधि।

उ०—जितरा-जितरा पग दीजइ तितरा तितरा अस्वमेघ ज्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण वेदिजइ तठै सूरजमंडळ भेदिजइ।—अ. वचनिका

सूरजमंडळभिद-सं. पु.—वीर, योद्धा। (डि. नां. मा.)

सूरजमणि-सं. स्त्री. [सं. सूर्यमणि] सूर्यकान्तमणि।

सूरजमथवा-सं. पु.—सूर्यावर्त्त नामक सिर दर्द का एक रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरू होता है और सूर्यास्त के बाद स्वयं मिट जाता है।

सूरजमल-सं. पु. [सूर्यमल्ल] दुल्हा के लिए प्रयुक्त शब्द।

उ०—जास्यां घड़ी दोय लागसी ऐ अम्मा मोरी गायड़मल रै डेरै, ए सइयां मोरी, सूरजमल रै डेरै।—लो. गी.

२ पति।

३ राजस्थानी का प्रसिद्ध कवि सूर्य्यमल्ल मिश्रण।

सूरजमाल-सं. पु. [सं. सूर्यमाल] शिव का एक नामान्तर।

रू. भे.—सूरिजमाल।

सूरजमुखी-सं. पु. [सं. सूर्यमुखी] १ पीले रंग के पुष्प का एक प्रसिद्ध पौधा विशेष तथा जिसके पुष्प का मुख सूर्य की दिशा में ही रहता है।

२ उक्त पौधे का फूल।

३ राजाओं, बादशाहों के सिर पर धारण करने का एक प्रकार का राजछत्र विशेष, राज्य चिन्ह।

उ०—इण भांत हाथी रै मेघाडंबर चंवर ढुळतां थकां सूरजमुखी लागियां जलाल आइयो।—जलाल बूबना री वात

४ एक प्रकार का रोग जिससे सारा शरीर श्वेत हो जाता है।

सूरजमुखौ-सं. पु.—आभूषणों में सूर्यमुखी का फूल खोदने का एक औजार विशेष। (स्वर्णकार)

सूरजरोटी-सं. पु.—१ चैत्रमास में रविवार का किया जाने वाला स्त्रियों का व्रत विशेष।

२ इस व्रत के अवसर पर सूर्यदेव को नैवेद्य में चढ़ाया जाने वाला प्रसाद।

सूरजवंस–सं. पु. [सं. सूर्य+वंश] क्षत्रियों का एक वंश, कुल, सूर्यवंश।

सूरजलोक–सं. पु.—सूर्यलोक।

सूरजवंसी–सं. पु.—सूर्यवंशी क्षत्रिय।

उ०—कुळ महिमा वरणं करण, बुध वळ पीढी बंध। सारां **सूरजवंसियां**, कुळ रखवाळ कमंध।—रा. रू.

सूरजसंक्रमण–सं. पु. [सं. सूर्य्यसंक्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने की क्रिया या भाव।

सूरजसुत—देखो 'सूरजपुत्र' (रू. भे.)

सूरजसुता–सं. स्त्री.—१ सूर्य की पुत्री, यमुना। (डिं. को.)

२ विद्युत, विजली।

सूरजा–सं. स्त्री. [सं. सूर्य+जा] १ यमुना।

२ विद्युत।

रू. भे.—सूरिजिजा।

सूरजालोक–सं. पु. [सं. सूर्यालोक] १ सूर्य का तेज प्रकाश।

२ देखो 'सूरजलोक' (रू. भे.)

सूरजि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—किरणावळि **सूरजि** जेम कळक्कळ, घूण घजव्वड खेड धणी।

—गु. रू. बं.

सूरज्ज, सूरज्जि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—१ 'ग्रमर' धरम ग्रांकूर, पटौ दीधौ पाटीधर। राजहंस प्रम ग्रंस, जिसौ **सूरज्ज** सुधाकर।—गु. रू. बं.

उ०—२ **सूरज्जि** जेम सपतास चढि, पदमपांण ग्रावध ग्रहै। गजसिंह लोह खंटत्रीस लै, इम 'जै' पूठी ग्रारुहै।—गु. रू. बं.

सूरज्या–सं. स्त्री. [सं. सूर्या या सूर्य+जा] सूर्य की पत्नी, संज्ञा।

वि. वि.—वैदिक मंत्रों में इसे सूर्य की पुत्री कहा गया है। कहीं कहीं इसे सविता या प्रजापति की कन्या और ग्रश्विनीकुमारों की स्त्री कहा गया है।

उ०—ग्रला सावित्री **सूरज्या** सती सीता। ग्रला ग्यांन ग्रादेस उणिहारि गीता।—पी. ग्रं.

सूरझटकाकरण–सं. स्त्री.—तलवार, खड्ग।

सूरण–सं. पु. [सं. शूरण, सूरण] १ जमीकंद, सूरन, ग्रोल।

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति भांति-भांति रा ग्रंबरस, सिखरण, ग्रांवा, नींबू, **सूरण**, ग्रादा। भांति भांति रा ग्राचार ग्रथांणां। भांति भांति री तरकारी।—रा. सा. सं.

उ०—२ ग्रमरकंद ग्रादूं ग्रलां, **सूरण** रोभ रताळ। वच्छनाग वाकुंभीयां, भेडागारी भाळि।—मा. कां. प्र.

उ०—३ ग्रादा **सूरण** केलां हूग्रां, बीजोरां दाडिम लींवूग्रां।

—कां. दे. प्र.

रू. भे.—सुरण।

सूरत–सं. स्त्री. [फा.] १ मुखाकृति, चेहरा, शक्ल, ग्राकृति।

उ०—१ नांव वतास्यां, गांव वतास्यां। **सूरत** वतास्यां, म्हारै साजन की।—लो. गी.

उ०—२ जठै कंवर मन मैं तौ ग्रावात घणी चाही, चौडै नटवा की **सूरत** दरसाइ।—पनां.

उ०—३ लोई ग्रोढण नै साड़ी लूमाळौ, फूटर लटकंतौ नाड़ौ फूंदाळौ। पावां पचडोरी पगरखियां पै'रै। **सूरत** सिंघण सी वन जंगल वैरै।—ऊ. का.

२ रूप, सौंदर्य।

उ०—१ सिध दाखियौ भळाहळ **सूरत**। पौरस न्रपत तूझ भरपूरत। राजग ज तुं ग्रवस ठहरावै, ग्रवै समैं विण हाथ न ग्रावै।—सू. प्र.

उ०—२ जेवर की न जरूरत **सूरत** मन मोहै। जयमात करनी।

—मे. म.

३ दशा, हालत, स्थिति।

उ०—नोसेरवां बुजरखी मैं हकीमां नूं पूछी जै मांटीपणै री **सूरत** कांई छै।—नी. प्र.

४ चित्र, तस्वीर, फोटो।

५ उपाय, तरकीव, तदबीर, युक्ति।

उ०—बोल नवाव सरस द्रढ वंधै, सुत पितु हूंत महाछळ संधै। यूं रिम **सूरत** सूत प्रवंधै, नेम लियौ विधि जेम निमंधै।—रा. रू.

६ रूपरेखा, डौल।

७ इच्छा, विचार।

उ०—१ सौ दक्षिण री **सूरत** धारी जै बीजापुर रै वादशाह री जाय नोकरी करस्यां।—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ इतरै मैं चांपावत 'वलु' गोपाळदासोत ग्रर भावसिंह जोधपुर छांडि सुरांणै जावण री **सूरत** कीवी।

—ग्रमरसिंह राठौड़ री वात

८ शोभा, छवि, ग्राभा।

९ चित्त वृत्ति, बुद्धि।

१० देखो 'सुरत' (रू. भे.)

उ०—वीर महावळ धीर उर, सूरम **सूरत** धार। ग्रावी ग्रादर ऊठियौ, भावी सीस विचार।—रा. रू.

वि. [सं. सूरत] १ सहृदय, दयालु, कृपालु।

२ कोमल, नाजुक।

३ शान्त, स्थिर।

४ ग्रनुकूल।

रू. भे.—सुरत, सुरता, सुरति, सुरत्त, सूरति, सूरती, सूरते।

ग्रल्पा;—सूरतड़ी।

सूरतड़ी—देखो 'सूरत' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—ग्रांनत रह उण **सूरतड़ी** री, रही तन मन मैं छाय, मंत्री जंत्री सुकनी जोतसी, यांरै हाथ न उपाय।—लो. गी.

सूरतन—देखो 'सूरातन' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] सूरतन चढी [illegible] ।—गु. रू. बं.

उ०—२ [illegible] सूरतन । पाडियो [illegible] ।—गु. रू. बं.

सूरता, सूरताई-सं. स्त्री. [सं. शूरता] १ शूरवीर होने की दशा, पराक्रम या भाव ।

२ शौर्य, पराक्रम ।

उ०—१ सीस सजोत सूरता सारा, तूटण लगा दिवस में तारा ।
—ऊ. का.

उ०—२ तिनूं कायरी सूरताई दई है, जिनी अप्पनी अप्पनी ई ही लई है ।—ला. रा.

रू. भे.—सूरात ।

सूरति, सूरती—देखो 'सूरत' (रू. भे.)

उ०—१ मैं परणनी परणियो, सूरति पाक सनाह । घड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह ।—हा. झा.

उ०—२ मोह तणी वस आज, सूरती चलती रही रे जाया । मीनत पवन थान, माता बैठी थई ।—जयवांणी

सूरद-सं. पु. [सं. सुहृद] १ मित्र, सखा ।

२ वीर, बहादुर ।

उ०—गज समंद गाडा गरू, सिह सूरदां छत्र । 'दुरगा' भोपांनै दई, कोळ तांबापत्र ।—पा. प्र.

सूरदांत-सं. पु.—वाराह का दांत जो मुंह से बाहर निकला हुआ रहता है ।

वि.—कुटिल, टेढा । ॐ (डि. को.)

सूरदास-सं पु —१ अंधे व्यक्ति के लिये आदरसूचक सम्बोधन ।

२ व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि जो अष्टछाप कवियों में प्रमुख थे ।

सूरदेव—देखो 'सुरदेव' (रू. भे.)

सूरपंथ-सं पु [सं. सूर्य+पथ] आकाश, नभ । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—सूरपथ ।

सूरपकार-सं पु.—कामदेव, मदन । (ह. नां मा.)

सूरपण, सूरपणौ-सं. पु.—शूरत्व, शौर्य, पराक्रम, पौरुष ।

उ०—१ सूरा सोटो सूरपण, सूरा अजब उतार । हूं बळिहारी [illegible], सदा सुहागण नार ।—वी. स.

उ०—२ सूरवीर रो सुभाव चाहे जिण मौसिया में होवो सूरपणो परदै नहीं ।—वी. स. टी.

रू. भे.—सूरमण, सूरापण, सूरापणौ, सूरापौ ।

सूरपत, सूरपति-सं. पु.—राजा, नृप । (डि. नां. मा.)

सूरपद—देखो 'सुरपद' (रू. भे.) (अ. मा.)

सूरपनखा-सं. स्त्री. [सं. शूर्पणखा] रावण की बहन का नाम जिसके नाक कान लक्ष्मण ने काट डाले थे ।

सूरप्रभ-सं. पु.—जैनियों के नौवें विहरमान स्वामी के नाम ।

सूरबीर—देखो 'सूरवीर' (रू. भे.)

सूरबीरतन -वि.—कठोर । ॐ (डि. को.)

सूरभि, सूरभी—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

सूरभूमि-सं. स्त्री. [सं. शूरभूमि] १ उग्रसेन की एक कन्या का नाम । (भागवत)

२ जहां पर वीर अधिक उत्पन्न होते हों, वीरभूमि ।

सूरभेई—देखो 'सूरभि' (रू. भे.)

सूरमंडळ-स. पु. [सं. सूर्य+मण्डल] १ सूर्य का वृत्त, घेरा या परिधि ।

उ०—१ कांम पतसाह रै जरद झत्रहळ कियां, सेल सींदूरियो साजै जगीस । पवंग सींदूर व्रन चाढतां पटहथां 'सूरे' सूरमंडळ नांमियौ सीस ।—मालौ सांदू

उ०—२ रजपूती रा रीजवारां नै जीलै चठावस्यां, सूरमंडळै भीळस्यां ।—पनां

२ सूर्य व उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रह, उपग्रहों का समूह ।

सूरमंडळभिद-वि.—सूर्यमंडल को भेदकर जाने वाला, अर्थात युद्ध में अद्भुत शौर्य दिखलाकर वीरगति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा ।

सूरम—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार । आवी आदर ऊठियो, भावी सीस विचार ।—रा. रू.

सूरमटौ (ठौ)-वि.—कायर, डरपोक ।

उ०—मलियेच सुणी यम सूरमटौ । तिण धूपर नाळ दियौ अवटौ ।—पा. प्र.

सूरमण—देखो 'सूरपण' (रू. भे.)

उ०—जगी मसालां जोत पाळ आभास वडौ पण । साथ सरब सिरदार, मैंहर मरजाद सूरमण ।—पा. प्र.

सूरमांनी-वि. [सं. शूरमानिन्] जिसे अपनी शूरता का बहुत गर्व हो ।

सूरमा-सं. स्त्री.—राठौड़ों की १३ शाखाओं में से एक ।

सूरमाई-सं. स्त्री.—वीरता, बहादुरी ।

उ०—बारला गांवां में चुन्हांण-सिरदार बाजै, सूरमाई री वातां करै अर आपनै अन्नदाता सूं अड़ा'र वंसमें बतावै है ।—दसदोख

सूरमापण, सूरमापणौ-सं. पु.—१ वीरता या बहादुरी की अवस्था या भाव ।

उ०—म्हारी पती म्हारा बूढापणां पहलां मारीजसी इसौ सूरमापणौ दीसै छै ।—वी. स. टी.

सूरमू—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

सूरमौ-सं. पु.—१ शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी, साहसी ।

उ०—१ त्यां हूंत अनी वावू तरगि, अगन कंत हित आंगमै । साराह तेज दीठां सती, सीह वराह न सूरमै ।—रा. रू.

उ०—२ रांमायण भारथ्थ, विगत रण चारण वांचै । सांचै दिल सूरमां, खडग ग्रहि मूछां खांचै ।—मे. म.

सूरयौ-सं. पु.—सप्तर्षि के अस्त स्थान से चलने वाला वायु जो श्रावण मास में वर्षासूचक माना जाता है।

उ०—१ विरछां चढ किरकांट विराजै, स्याह सफेद लाल रंग साजै। विजनस वाव सूरयौ वाजै, घड़ी पलक मांहै मेहा गाजै।
—वर्षा विज्ञान

उ०—२ सूरया वीर वदली ल्याइ रे। झाला दै दै तोय बुलाऊं।
—लो. गी.

रू. भे.—सूरियौ, सूरचौ।

सूरलोक-सं. पु. [सं. सूर्यलोक] १ सूर्यलोक, सौरजगत।

२ वह कल्पित लोक जहां वीरगति प्राप्त योद्धागण पहुंचते हैं, सुरलोक।

उ०—चढ विमांण चलाविया, सकौ कमधज सिरदारै। सूरलोक सतलोक, जाइ 'अमरेस' जुहारै।—सू. प्र.

सूरवादी-सं. पु.—योद्धा, सुभट, वीर, वहादुर।

उ०—जोइ गात्र टोळी मळी नाग जादी, वढै सापनै सांमळौ सूरवादी। अभै जग्ग जेठी फरी नीर उंडै, काळी नाग सूं आविग्रौ 'कांन' कूंडै।—ना. द.

सूरवाळौ-सं. पु.—एक प्रकार का घास जो छप्पर छाने में उपयोग लिया जाता है।

सूरविद्या-सं. स्त्री.—युद्ध विद्या।

सूरवीर-वि. [स. शूर+वीर] १ वीर, वहादुर, यौद्धा।

उ०—१ सूरवीर की रीत सूरवीर जांणै। एतौ अवसांण आयां हिम्मत प्रमांणै।—रा. रू.

उ०—२ सूरवीर अवसांण, न चूकै एक रे। हरिहांदास कहै हरिरांम, न छंडै टेक रे।—अनुभववांणी

उ०—३ आपणी आपणी वांणी राजवंसी राजावां कै रूपक सुणाए। सूरवीर सांमत्त ताकूं अनंत सुहाए।—रा. रू.

२ ताकतवर, वलवान।

३ साहसी, हिम्मतवर।

४ पुरुषार्थी।

रू. भे.—सूरवीर।

सूरवीरता-सं. स्त्री.—वीरता, शूरत्व, वहादुरी।

सूरवौ—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिसणां आगै सूरवौ, हरिया भाजि न जाय। घाव सहै समसेर का, इणीयां मंडै आय।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया डरै न सूरवौ अधर ओट निरधार। कायर डरपै वापड़ौ, हरीया कै आधार।—अनुभववांणी

सूरसज्जा-सं. स्त्री. [सं. शूर+शय्या] वीरों की शय्या, रणक्षेत्र।

उ०—हड्डाधिराज हालू सूरसज्जा सोवण रै साधन संपादन करते वांणवै वरस रौ वय वांसै वाळियौ।—वं. भा.

सूरसरौ-सं. पु.—वहादुरों, वीरों की परम्परा, परिपाटी।

सूरसागर-सं. पु.—महाकवि सूरदास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें अनेक राग-रागनियों में श्रीकृष्ण लीला वर्णित है।

सूरसांमंत-सं. पु.—१ युद्धमंत्री।

२ सेनानायक, सरदार।

सूरसाही-सं. पु.—वादशाह शेरशाह सूरी द्वारा चलाया गया सिक्का।

रू. भे.—सूरसाइ, सुरसाई।

सूरसुत-सं. पु. [सं. सूर्य+सुत] १ शनि।

२ यमराज। (ह. नां. मा.)

३ कर्ण।

४ सुग्रीव।

सूरसुता-सं. पु. [सं. सूर्य+सुता] १ यमुना।

२ विद्युत, विजली।

सूरसेत-सं. पु.—सिंह, शेर। (अ. मा.)

सूरसेन-सं. पु.—१ श्रीकृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा।

२ मथुरा के आस-पास के भू भाग का नाम।

सूरसेनप-सं. पु. [सं. शूरसेनप] १ शूरवीरों की सेना का पालन करने वाला।

२ स्वामिकार्त्तिकेय।

सूरसेनपुर-सं. पु.—मथुरा नगरी।

सूरसेनी-सं. पु.—शौरसेनी भाषा।

उ०—तै अपभ्रंस तीसरै, मगध देसी चवथम्मै। सरस सूरसेनी पढ़ूं थानक पंचम्मै।—सू. प्र.

सूरस्वारथी-सं. पु.—वह घोड़ा जिसके चारों पैरों के वाल पीले केसर के समान हो एवं नैत्र काले हों। (शा. हो.)

सूरांगुर-सं. पु.—वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि।

सूरांण-सं. पु. (व. व.) शूरवीर व वहादुर लोग।

उ०—चाडिया चाक जुध पहल चाय। सूरांण हूंत केवांण साय।
—वि. सं.

सूरांणौ-क्रि. वि.—शूरवीर, वहादुर।

उ०—धीरजौ लज मांणी, अवसांण मैं सिध अणमंगौ पौरस पराक्रमौ, सूरांणै सपत चिह्नांनि।—गु. रू. बं.

सूरांतण—देखो 'सूरातन' (रू. भे.)

उ०—लइता जग लहरि तुरंगै लागा, सूरांतण जोवतां सधीर। अग छावडइ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतंगी तीर।
—महादेव पारवती री वेलि

सूरांयर-वि.—वीर वहादुर।

सूरा-सं. पु.—चौहान क्षत्रिय वंश की एक शाखा।

सूराई-सं. स्त्री.—१ वीरता, वहादुरी।

सं. पु. [सं. सुरराज] २ इन्द्र।

उ०—घट घट मन सांमी, सामी सुराई। अंतरजांमी हुय, ओळख न पाई।—ऊ. का.

रू. भे.—सुराई।

सुराण-स. पु. [फा.] १ छिद्र, छेद।

२ रास्ता, मार्ग।

रू. भे.—सुराख, सुराग।

सुराणद-स. पु.—मारवाड़ का एक प्रदेश जो सांचोर तहसील के अन्तर्गत आता है। (बां. दा. ख्यात)

सुरातन-सं. पु.—१ वीरता, शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ हरीया मरिवौ सौ भलौ, सूरातन सुं होय। कायर भागा काळ का, जाती मुख कुण जोय।—अनुभववांणी

उ०—२ सूरातन सहजैं सदा, सांच सेल हथियार। साहिब के दल भंजतां, केते लियै सु मार।—दादूवाणी

२ शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ सूरातन सूरां चढै, सत सतियां सम दोय। आडी धारां ऊतरै, गणै अनळ नूं तोय।—बां. दा.

उ०—२ सूरातन जांही घणद सूरातन, ईसर तणा वाविया अंग।
—महादेव पारवती की वेलि

३ वीरत्व की अवस्था या भाव।

उ०—विजळां भाट थमाट बाजतां, स्यांमध्रम सूरातन साहि। मत छांडै टेभा अवछंडिया, गिड़ भूरा मंडिया गज-गाहि।
—बैरीसालोत हाडां री गीत

रू. भे.—सूरातन, सूरतन, सूरातण।

सुरापण, सुरापणौ—देखो 'सूरपणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुरापण मसळत बळ सधतौ। 'विलंद' 'निजांम' हूंत पसि वधतौ।—सू. प्र.

उ०—२ जुद्ध में अंबाळ नगारा वह-वहिया बाजियां थकां पड़ै पाग्गा अौ है जुध रा बाजा सुण सूरवीरां नै तौ सुरापणौ छूटसी नै कायरां जुद्ध नगारा सुण धूजणी चढसी।—वी. स. टी.

सरापौ—देखो 'सूरपणौ' (रू. भे.)

सूराभिमुख-क्रि. वि. [सं. सूर्याभिमुख] सूर्य के सम्मुख, सूर्य के सामने।

सूरामंडळ—देखो 'सूरमंडळ' (रू. भे.)

उ०—सारी सौ साम ठांम न मायौ, गहमह पूर सपूर गनै। रामपुरौ वसावौ राजा, 'केहर' सूरामंडळ कनै।—अग्यात

सूरायत-वि.—वीर, बहादुर, पराक्रमी।

सूरि-स. पु. [स.] १ पंडित, विद्वान।

उ०—१ मरु रा वगदादा रसनिधु, रसरत्न आदिक साहित्य रा ग्रंथ सूरि जना रा रसना नूं पवित्र करै।—वं. भा.

उ०—२ मानस रूपक अवगत अनूप, सुभ गगन भूरि सत्र साहि सूरि।—ऊ. का.

२ सूर्य, रवि।

उ०—१ करी केडि तुरकांणा पूठि, ए जाएस्यइ दूरि। पूठि मिल्या ताल्या तेजी, जई आथिमतइ सूरि।—कां. दे. प्र.

उ०—२ जागतउ देव तूं हाजर हजूरि, दुरा दोहग अलगां करि दूरि। सदा जुहारूं उगंतइ सूरि, समयसुंदर कहइ करि तूं पडूरि।—स. कु.

३ जैन आचार्यों के नाम के पीछे उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होने वाला शब्द।

रू. भे.—सूरिहिं, सूरी।

सूरिज—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—१ सरण हेम दिसि लीधौ सूरिज। सूरिज ही ग्रिण आसरित।—वेलि

उ०—२ प्रति सूरिज कोटेक प्रकासं। आतम जगमग जोति उजासं।—सू. प्र.

सूरिजन-सं. पु. (ब. व.)—विद्वान लोग, विद्वदजन।

उ०—सूरिजन सांभलजो कथा जी।—धरमपत्र

सूरिजमाळ—देखो 'सूरजमाल' (रू. भे.)

सूरिजि—देखो 'सूरज' (रू. भे.)

उ०—महि गिलै मेह पांणी पवन, सूरिजि ससि भांजै सरै। त्रेभुवण नाथ विद्या तणी, धरणीधर मनछा धरै।—पी. ग्रं.

सूरिजिजा—देखो 'सूरजा'। (ह. नां. मा.)

सूरिमौ—देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—१ गजराज चढै कमधज गरूर। सूरिमां मौड़ महाराज सूर।
—सू. प्र.

उ०—२ 'राजां' भिडंत सूरिमां राह। 'विसनावत' सीहक सिंधुराह।—गु. रू. बं.

सूरियौपवन—देखो 'सूरयौ'।

सूरियौवायरौ—देखो 'सूरयौ' (रू. भे.)

उ०—खेत जांणै ऊभांण आयोड़ौ। सूरियौवायरौ पूंगी बजावै अर बाजरी लै'रां लेवै।—रातवासौ

सूरिवौ-सं. स्त्री—१ शूल।

२ देखो 'सूरमौ' (रू. भे.)

उ०—साध सती अर सूरिवां, सिध सेवग अर संत। आचारै वीर जिग जतंन, जोग जंत कै मंत।—सूरजनदास पूनियौ

सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर—देखो 'सूरीस, सूरीसर' (रू. भे.)

उ०—अरिहंत, सिद्ध सूरिसरू उवज्झाया सहुसाध। दसण नांण चरण वली तम नवदद आराध।—स्रीपाळ रास

सूरी-सं. स्त्री.—१ आभूषणों में छेद करने का कीलनुमा उपकरण विशेष। (स्वर्णकार)

२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वि. स्त्री.—१ वीर स्त्री, सती।

उ०—नरां न ठीणी नारियां, ईखी संगत एहं। सूरां घर सूरी महळ, कायर कायर गेह।—वी. स.

२ देखो 'सूरि' (रू. भे.)

सूरीस, सूरीसर, सूरीसरु, सूरीसरू, सुरीसरौ, सूरीस्वर–सं. पु. [सं. सूरि=पंडित+ईश, ईश्वर] १ आचार्य (जैन)

उ०—१ गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, स्रीजिणचंद सूरीस प्रथम सिस्य स्रीपूज्य ना ए, सकलचंद सुजगीस।—स कु.

उ०—२ युगप्रधांन जिनचंद सूरीसर, सकलचंद तसु सिस्य जी समयसुंदर संतोख छत्तीसी, कीधी सध जगीस जी।—स. कु.

उ०—३ स्रीजिनकुसल सूरीगरु दादा, चिंता आरति चूरि। समयसुंदर कहइ माहरा दादा, मन वंछित फल पुरि।—स. कु.

उ०—४ गच्छराज स्रीजिनचंद्रसूरि, स्रीजिनसिंह सूरीसरौ गणि सकलचंद्र विनेय वाचक, समयसुंदर सुखकरौ।—स. कु.

उ०—५ स्रीजिनरतन सूरीसरू, जोग जांणी हौ, जसु दीधौ पाट। जसु जस जागै इण जगत मैं, गावइ गावइ हौ गीतां रा गहगाट।
—ध. व. ग्रं.

उ०—६ गच्छ मोटौ खरतर गायौ, महावीर पाट चल आयौ रे। सूरीस्वर स्रीजिनरंग रे, तसु सासन स्रावक चंग रे।—प. च. चौ.

२ महापंडित।

रू. भे.—सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर।

सूरू—१ देखो 'सरु' (रू. भे.)

२ देखो 'सूर' (रू. भे.)

उ०—फतूहकै फरसतै, सांम कांम मैं सधीर, सूरू कै सहायक।
—र. रू.

सूरेह—देखो 'सुरभि' (रू. भे.)

सूरौ–सं. पु.—१ छंदशास्त्र में ठगण का दूसरा भेद जिसका रूप यह है —ऽ ऽ। या ठगण की पांच मात्राओं के द्वितीय भेद का नाम।

२ देखो 'सूर' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीआदीसर भेटियउ, ग्रह ऊगमतइ सूरौ जी। दुख दोहग दूरि दल्या, प्रगट्यउ पुण्य पडूरौ जी।—स. कु.

उ०—२ सूरा लड़ै धणी कै कारण, सती सांम कै हेत। हरीया भागां मुय धणी, मुख न सोभा देत।—अनुभववांणी

उ०—३ सूरौ मरणौ आसंगै, पूठा धरै न पाव। हरीया आगै सांम कै, चूक न जावै दाव।—अनुभववांणी

३ देखो 'सूवर' (रू. भे.)

उ०—हरसा वीर मेरा रै, वोजै बोजै मैं रे ना'री ना'र, जांमण का रै जाया, थूंरा रांभेड़ा रै सूरा सूरड़ी।—लो. गी.

सूरयधज–सं. पु. [सं. सूर्यध्वज] कायस्थ जाति का भेद विशेष।
(मा. म.)

वि.—जिसके रथ पर सूर्य के चित्र का ध्वज हो।

सूरयाभ–वि. [सं. सूर्याभ] जिसकी आभा सूर्य के समान हो।

उ०—'परदेसी' न्रप पापियौ, अविनीत नै अभिमांन। इण वरम तणौ प्रसदथी, लह्यौ सूरयाभ विमांन।—जयवांणी

सूरयावरत–सं. पु. [सं. सूर्यावर्त] एक प्रकार का सिर दर्द का भयंकर रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरू होता है और सूर्यास्त के बाद स्वयं मिट जाता है।

सूरयावली–सं पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—हार अरद्धहार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नूपुर करणकूंडल एकावली कनकावली रत्नावली वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरयावली नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडांमणि मुद्रानंतक……इति आभरणांनि।—व. स.

सूरयौ—देखो 'सूरयौ' (रू. भे.)

सूलंधरा सं. स्त्री.—शूल नामक शस्त्र को धारण करने वाली देवी, दुर्गा।

उ०—देवी वाहन नांम कै वप्पवाळी, देवी खग्ग सूलंधरा खप्पराळी
—देवी

सूळ–सं. पु. [सं. शूल] १ बरछे के आकार का प्राचीनकाल का शस्त्र, बरछा, भाला।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट। रांम थट झपट रौंफट।
—सू. प्र.

२ त्रिशूल।

उ०—१ वंदन विंदु ललाट विराजत। रूप अनूप तेज मय राजत। पांन सूळ वाहन वनपत्ती। स्रीकरनी जय जयति सकत्ती।—मे. म.

उ०—२ विजै तू सजै आहवां बाह वीसां, सजै तू हियै हार भूझार सीसां। तु ही हाथ लै सूळ सादूल हक्कै। त्रणां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म.

३ प्राण-दण्ड देने की प्राचीन काल की सूली।

४ ववूल आदि वृक्षों का लम्बा कांटा।

उ०—मासी कीं आगै ई कैवती ही कै उणारा पग मैं सूळ खुवगी। उठै ई हेटै वैठ सूळ बारै काढनै कह्यौ—इण घर री तौ सूळां ई म्हारा सूं खोड़ीलायां करै।—फुलवाड़ी

५ तीक्ष्ण या नुकीला कोई पदार्थ।

६ कांटा या नुकीली चीज के चुभने से होने वाला दर्द।

७ वात-विकार के कारण होने वाला तीव्र दर्द।

८ भय, डर।

उ०—डरै लोग वन डांडियां, सूतै ही सादूळ। जै सूता ही जागता, सबळां माथा सूळ।—वां. दा.

९ टीस, कसक, दर्द।

उ०—१ सांझ पड़ै दिन आथवै, छेला माळण लावै फूल कांई करू ऐ माळण फूलनै हे म्हारी आलीजै विना लागै सूळ।
—लो. गी.

उ०—२ सूरज किरणां चाव मैं, फूटी कळी समूळ। लूआं दीसी

[illegible] सूळ ।—नू

१० मृत्यु, मौत ।

११ दुःख, पाप ।

उ०—नमो सिव मंगळ मंगळ सूळ । मुकुंद मुरारि महातत्व मूळ ।—ह. र.

वि.—नुकीला, तीक्ष्ण ।

सूल–सं. पु.—१ रचना, बनाव ।

२ हाल-चाल, रंग-ढंग ।

उ०—१ या जुग मांहि जीवणा, ज्युं तरवर का फूल । जनहरिया इन जीव का, तन परि पहली सूल ।—अनुभववांणी

उ०—१ तद ऊ गयौ । उवै नै आवती देख खापरै री वहू रोवण लाग गयी । ऊ पण देखण-नै लाग गयौ । पूछियौ–कासूं सूल छै ।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

उ०—२ अन भावै नहीं । मुहड़ै मिळकणी रहै । खाली ओकारी रहै । तद वडारण पूछण लागी, कासु सूल छै ?

—कुंवरसी सांखला री वारता

३ दशा, हालत, अवस्था ।

उ०—राव कटारी लागां पछै पोहरेक जीविया, तरै रजपूतै पूछियौ 'रावळो तौ औ सूल छै, राव रै बेटौ न छै, टीका रौ किणनै हुकम दै ?—नैणसी

४ प्रबन्ध, व्यवस्था ।

५ संस्कार, सुधार ।

उ०— हंसराज तौ मूवौ पड़ीयौ । ताहरां वछराज विचारी, 'जु हमैं भाई री सूल करां ।—हंसराज वछराज री वात

६ उपाय, तरकीब, प्रयास, प्रयत्न ।

उ०—गैलको अमूल सूल धूल में गयौ । मूळकौ गमाय मूळ फूल कयौ रायौ ।—ऊ. का.

७ उद्देश्य, इरादा, मकसद ।

उ०—बुरहांन पिण राहवेचौ रजपूत थौ । इणां री सूल अटकळियौ ।—राव मालदेव री वात

८ कारण, वजह ।

उ०—१ हूं पूछूं उवां नौ वात बोलौ नहीं अर बीजा ही पण घमासा मारै सो कासू सूल छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ राठौड़ नेतसी पवारा नु नींबाज रै दावै भूंवियौ तद पवार राव जगमाल चाट सूं किण ही सूल छोडनै आंबेर कन्है गोढ़ [illegible] हुवी ।—राव मालदेव री वात

९ तरह, भांति, प्रकार ।

उ०—तरै ग्यासदीन घणौ खुस हुवौ । पछै घणी अजीजी की—जु [illegible] मन देवराज नूं पर्छ आंणौ तिका बात करो ।—नैणसी

१० आराम, चैन ।

उ०—[illegible] सूळ[illegible] सखी, घणा वनी फूल फूल । तौ हिव इण हिज थांनकै सखी, वसियै करणै सूल रे ।—वि. कु.

११ विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से नौवां योग । (ज्योतिष)

१२ वस्तु, पदार्थ ।

उ०—आंणौ तिण समै निपट वेगरच छै, सूल सांमांन गांगूर कूं न छै ।—नैणसी

वि.—१ कुशल, प्रवीण ।

२ ठीक, दुरुस्त ।

उ०—अर सांवळ साह नुं बोलावौ । औ वडौ अकलवंत छै । उवै नुं आपां कांम सोंपसां । औ आपां री कांई वात सूल पाड़सी ।

—वीजड़ वीजोगण री वात

क्रि. वि.—१ दशा में, हालत में, स्थिति में ।

उ०—औ तौ मोनुं इण हीज सूल घरै लै जावतौ हुतौ । मैं उण नुं कह्यौ, गांम किसौ ? ताहरां औ बोलियौ, गांम आपणौ । तरै हूं बोली, मोनुं उतारौ, ज्युं कपड़ौ संवाहुं ।

—कांवळी जोईयौ नै तीडी खरळ री वात

२ उपाय से, तरकीब से, ढंग से ।

उ०—तरै रावळ मन मांहै जांणियौ जु-'जरा तौ नेड़ौ आई, यूं ही मर जाईजसी, किणीक सूल नांम रहै तिका बात कीजै ।—नैणसी

३ देखो 'सूळ' (रू. भे.)

उ०—१ ताप सन्निपात जांणौ अतीसार संग्रहंणि, फीहो विध राल पांडु गोला सूल खैण है ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ फीहै जौ विधि कहु वखांणि, गुलम रोग पिण सो विधि जांण । पेट सूल जो होई अगाध, सूल डंभ तैं नासै व्याध ।

—ध. व. ग्रं.

सूळक–सं. पु. [सं. शूलक] १ दुष्ट और उद्दण्ड घोड़ा

२ बिदकने वाला या चमकने वाला घोड़ा ।

सूळगजकेसरीरस–सं. पु. यौ. [सं. शूलगजकेसरीरस] शूल का नाश करने वाली एक औषधि विशेष या इस औषधि की गुटिका ।

सूळग्रह–वि. [सं. शूलग्रह] शूल या त्रिशूलधारी ।

सं. पु.—शिव या महादेव का एक नामान्तर ।

सूळचित–सं. पु.—शृंगार में एक आसन ।

सूळझणौ, सूळझबौ—देखो 'सुळझणौ, सुळझबौ' (रू. भे.)

सूळझियोड़ौ—देखो 'सुळझियोड़ौ' (रू. भे.)

सूळटंकेस्वर–सं. पु. [सं. शूलटंकेश्वर] प्रयाग वट के पास शिव की एक मूर्ति ।

उ०—तिल मंडेस्वरी १, सूळटंकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, ऐ तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।—बां. दा. ख्यात

सूळदावानळरस–सं. पु. [सं. शूलदावानलरस] एक प्रचार की रसौषधि । (वैद्यक)

सूळधन्वौ–सं. पु. [सं. शूल+धन्वन्] शिव, महादेव ।

सूळधर–स. पु. [सं. शूल+धर] शिव, महादेव ।

सूळधरा—सं. स्त्री. [सं. शूलधरा] दुर्गा, पार्वती ।

सूळधारणी, सूळधारा, सूळधारिणी—सं. स्त्री. [सं. शूलधारा, शूलधारिणी] दुर्गा, पार्वती ।

उ०—भवांनी नमौ धारनी सूलधारा, भवांनी नमौ तेज संघात तारा ।—मे. म.

सूळधारी—वि. [सं. शूलधारी] त्रिशूलधारी, शूल धारण करने वाला ।

सं. पु.—१ शिव, महादेव ।

सं. स्त्री.—२ देवी, दुर्गा ।

सूळनासनीवटी, सूळनासिनीवटी—सं. स्त्री. यौ. [सं. शूलनाशिनीवटी] एक प्रकार की रसौषधि । (वैद्यक)

सूळनासी—सं. स्त्री. [सं. शूलनाशिन्] हींग ।

सूळपांण, सूळपांणि, सूलपांणि, सूलपांणी—वि. [सं. शूलपाणिन्] जिसके हाथ में त्रिशूल रहता हो ।

उ०—सूलपांणि संकर तिहां, जात्र मिळी जोऐसी । फालि देई हूं फणगटइ, वाहला ! वाडि पाडेसि ।—मा. कां. प्र.

सं. पु.—१ शिव, महादेव । (अ. मा.)

२ दुर्गा, पार्वती ।

सूलसांमान—सं. पु.—साज-सामान, साधन-सामग्री ।

सूळहती—सं. पु. [सं. शूल+हस्त] दुर्गा, पार्वती । (डिं. को.)

सूळहथ, सूळहथी—सं. पु. [स. शूल+हस्त] १ शिव, महादेव । (डिं. को; ना. डिं. को.)

सं स्त्री.—२ दुर्गा, पार्वती ।

वि.—शूलधारी, त्रिशूलधारी ।

रू. भे.—सूळहस्त ।

सूलहरी—सं. पु.—एक रंग विशेष का घोड़ा ।

उ०—कासनी ताफता पंचकल्यांण । सूलहरी चंपा पट सिचांण ।—सू. प्र.

सूळहस्त—देखो 'सूळहथ' (रू. भे.)

सूळांगारियौ, सूळागारी—उ. पु.—'सूला' (एक प्रकार मांस) बनाने वाला ।

उ०—तठा उपरायंत सूळांगारियां होसनाकां नै हुकम हुवै छै । जाजमां कनारै सूळा तयार करौ ।—रा. सा. सं.

सूळावक, सूळाव्रख—देखो 'साळाव्रख' (रू. भे.)

सूळि—क्रि. वि.—१ अच्छी तरह, भली प्रकार ।

उ०—प्रजंक ओपतें अनोप रूप चूंप पार मैं । हुए विछात सूळि लूंब भूल फूल हार मैं ।—रा. रू.

२ देखो 'सूळी' (रू. भे.)

सूळिक—सं. पु. [सं. शूलिक] १ खरगोश । (डिं. को.)

२ शिवजी का एक नामान्तर ।

वि.—१ त्रिशूलधारी ।

२ फांसी पर चढ़ाने वाला ।

३ वात-विकार से पीड़ित ।

सूळिणी—सं. स्त्री. [सं. शूलिणी] दुर्गा, पार्वती ।

सूळियां, सूलिया—क्रि. वि.—१ ठीक तरह, अच्छी तरह से ।

२ ढंग से, तरीके से ।

वि.—३ स्वस्थ ।

सं. पु.—१ आराम, चैन, सुख ।

२ सुविधा ।

सूळियौ—सं. पु.—भैंस, गाय आदि के बछड़े के मुंह पर बांधा जाने वाला कांटेदार उपकरण जिसके कारण जंगल में चरते समय अपनी मां का स्तन-पान न कर सके ।

सूळी, सूली—सं. स्त्री. [सं. शूल] १ प्राचीन समय में प्राण दण्ड देने का एक उपकरण । यह लोहे का अत्यन्त नुकीला खड़ा दण्ड होता था । जिस पर कैदी को बैठाकर ऊपर से मुंगेरा मारा जाता था ।

उ०—१ चलण कटाय चौरंगी, कोपि कुवा मां राल्यौ । साघ सुदरसंण सेठ पकड़ि सूळी दिस चाल्यौ ।—वील्हौजी

उ०—२ राजा मारण मांडीयउ, रांणी अभया दूखण दाख्यउ रे । सूली सिंहासन थयुं, मइ सेठ सुदरसण राख्यउ रे ।—स. कु.

२ प्राचीनकाल का एक प्राण दण्ड, एक सजा विशेष ।

उ०—१ सूळी देवै सहज देय दै फांसी देखौ । मिरधी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखौ ।—ऊ. का.

उ०—२ आंधा पीसै नै कुत्ता खावै । जवर रुळियार-रासी मचियौ । राज छोडनै जावै उण सारू सूळी री आदेस । रया मांय री मांय सीझै ।—फुलवाड़ी

३ कांटों के समान चुभने वाली कोई चीज ।

४ यातनादायक अवस्था, दुख भरा जीवन ।

५ दर्द, पीड़ा, वेदना ।

६ देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

उ०—सावडदी समोसा मांस सूळी भांति न्यारी । दारू पीय बैठा थाळ आवा री तयारी ।—शि. वं.

[सं. शूलिन्] ७ शिव का एक नामान्तर । (नां. मा.)

वि.—१ कृश, दुर्बल ।

ज्यूं—वौ तौ थाक'र सूळी होग्यौ ।

२ सैद्धान्तिक, उसूल वाला ।

उ०—विनां मखसूद उपाव हुवा जै लड़िजै छै त ई वात बै-सूली । विना लड़िया किराड़ छोडै नहीं ।—अमीपाल साह री वात

रू. भे.—सूळि ।

सूळूं, सूलूं—देखो 'सूळौ' (रू. भे.)

उ०—रोगांन मसालै सैं सूळूं की सीक वणावै । अनेक भांति कै साग तिसका पार न पावै ।—सू. प्र.

सूळौ, सूलौ—सं. पु. [सं. शूलः] (ब. व. सूळा) १ लकड़ी में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो लकड़ी में घुसकर उसका आटा बना

देता है तथा लकड़ी को खोखली कर देता है, घुन ।

२ शरीर में होने वाला घुन के समान कोई रोग जो शरीर को अन्दर अन्दर ही खोखला बना देता है।

उ०—पछ थारै लगन्या मुजब थारो रूप अर जोबन सूळी लागनै छिब छिब घुटै नद जावनै गुमेज ठाणी आवेला ।—फुलवाड़ी

२ मांस की छड़ में घी या तेल के साथ आग पर सेका हुआ एक प्रकार का मांस विशेष ।

उ०—१ एकठा बैठा । वैर न कहीयो । उठि अलगी हूं । वैर उठि मरदै माथै आंगि सूळां री काव मेल्ही । —चौबोली

उ०—२ भरमन प्याली भर, उठ, मुजरो कर कंवरसी नु दीयो । मोकळा नु सूळा अवल उर्व मांह काट देण लागी ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ ताहरू राजकन्यां उथेड़िग्रां री कासू एक बखांण । बजाज री हाट बास्तेरा थान रू री वरकी, पींजी अेंरूग गोटा, गुजराती कागलरा पाठ, इण भांति रा राजकू नीसरिया छै । भीतर वाड़िग्रां हसनाळां नु सूळां री हुकम हुग्रो छै । तिके सूळा कीजै छै ।

—रा. सा. सं.

रू. भे.—सूळी ।

सूलो, सूल्हो-क्रि. वि.—१ सीधे हाथों ।

२ दाहिनी ओर ।

वि. (स्त्री. सूली) १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ सीधा, शरीफ, सज्जन ।

उ०—पीहर पतलां रा संगां रा प्यारा । तारक तूटां रा नैणांरा तारा । सीरी सिटियांरा सूल्हारां मारा, भीड़ी भूखां रा फूलां रा भारा ।—ऊ. का.

३ कुशल, प्रवीण ।

सूवउ—देखो 'सूवौ' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ सूयउ मोल दइ, जा पंछी ग्रह वाम । उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास ।—ढो. मा.

सूवड़-स. पु.—पवार वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

(बां. दा. ख्यात)

सूवड़ो—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—इण भवि थी सूवड़ो कोइ जो, राख्यो रे तैं तो महुव्वत में भरे रे सो ।—वि. कु.

सूवटियौ, सूवटो—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे)

उ०—१ यै घण होस्यो बागा री कोयलडी । पनो-मारू सूवटियौ, होय रहसां म्हां रा राज ।—लो. गी.

उ०—२ ज्यां जिनका वेद पढियो, जातकी कुळ हीन । सूवटा को प्यार करता, मुक्त मारग लीन ।—भगतमाळ

सूवणौ, सूवबौ—क्रि. स. [सं. शयनम्] १ नींद लेने के लिये सोना, शयन करना, नींद लेना ।

उ०—१ जियै ठोड़ सूवता तिका ठोड हेर आया छा । हेरो चौरा कर गया हुता सूवण री ठोड़ ।—नैणसी

उ०—२ राजा नै नींद नीं आवती तो उणरा सिपाही आखा नगर में ई किणी नै सूवण को देता नी ।—फुलवाड़ी

२ विश्राम करना, आराम करना, लेटना ।

उ०—बेटी बुढापै कड़ियां भांग दी, नींतर म्हैं ई बाड़ा रा नीवड़ा हेटै ढळियोड़ा ढुकलिया माथै सूवतो अर रांमजी रो नांव लेवतो ।

—फुलवाड़ी

३ रूठकर सोना ।

उ०—राजकंवर रै वाल्हा दिया । मूंडा माथै हाथ फेरयौ । फल्लो ग्रा थारै सूवण री ठोड़ है कांई । व्है जकी बात निसंक बता ।

—फुलवाड़ी

सूवणहार, हारौ (हारी), सूवणियौ—वि० ।

सूवोड़ो—भू० का० कृ० ।

सूवीजणौ, सूवीजबौ—भाव वा० ।

सुग्रणौ, सुग्रबौ, सुइणौ, सुइबौ, सुवणौ, सुवबौ, सूंणौ, सूंबौ, सूग्रणौ, सूग्रबौ, सूणौ, सूवौ, सोणौ, सोबौ, सोवणौ, सोवबौ ।

—रू० भे० ।

सूवर—सं. पु. [सं. शूकर] वराह, सूग्रर, शूकर ।

उ०—१ भाखरा रा खुडा वेहड़ां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ हींदू कै पण जांणि गऊ की, सूवर की तुरकांणं । दोउं मार भखै मुख मांसां, घटि वधि, कौण वखांणं ।—ग्रनुभववांणी

रू. भे.—सुग्रर, सुकर, सुवर, सूग्रर, सूकर, सूहर ।

अल्पा;—सुग्ररड़ो, सुवरियौ, सूग्ररड़ो, सूकरौ ।

सूवांणणौ, सूवांणबौ देखो 'सुवाणौ, सुवाबौ' (रू. भे.)

उ०—वातां करता करता च्यारू जणा दुगेह सूं बारै ग्रायगा । गूंगी री बेटी नै तप रै पाखती ई विछावणा करनै सूवांण दी ।

—फुलवाड़ी

सूवांणियोड़ो—देखो 'सुवांणियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सूवांणियोड़ी)

सूवाड़—सं. पु. [सं. सूतिका+वृत्ति] १ प्रसव, सौरी ।

२ देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

सूवाड़ी—देखो 'सुवाड़ी' (रू. भे.)

उ०—खोली खीलां री डेढां ढिग ढीली, पोली सेढां री लीलां विण पीली । खड़ती सूवाड़ी वाड़ी विन खटकै मरती मोछड़िया पूंछड़ियां पटकै ।—ऊ. का.

सूवाभळको—सं. पु.—स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष ।

सूवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

उ०—पूत कलित परवार में, सकल रहै उळभाय । सूवारथ का सबको सगा, अंति अकेला जाय ।—ह. पु. वां.

सूवारे—देखो 'सुवारां' (रू. भे.)
उ०—आज तौ आप डेरा करावौ, भोजन करावौ, **सूवारे** जवाव सारी ही हुय जासी ।—रीसाळू री बात
सूवौ-सं. पु. [सं. शुक] १ कीर, तोता, सुग्गा, शुक ।
उ०—१ दादू यहु तन पिंजरा, मांही मन **सूवा** । एक नांम अल्लाह का, पढ हाफिज हूवा ।—दादूवांणी
उ०—२ **सूवा** एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुज्झ । प्रीतम वांसइ जाइ नइं, मुई सुणावै मुज्झ ।—ढो. मा.
२ किसी के घर या परिवार में शिशु जन्म से होने वाला सात से सत्ताईस दिन (जैसा आवश्यक हो) प्रसूतिकाकाल ।
उ०—१ मूठावै खंग मूठ, चालै भारत सांम हा । **सूवै** ज खावी सूंठ, मात भलांई मोतिया ।—रायसिंह सांदू
उ०—२ गायां नै गिरमास, ठिकांणौ चौड़ै ठायौ । **सूवै** सूतक सुधी, तळै छिगास विसायौ ।—दसदेव
३ लोहे की बड़ी सूई जो बोरा आदि सीने के काम आती है, सूवा ।
४ एक मारवाड़ी लोकगीत ।
रू. भे.—सुइयौ, सुऔ, सुवौ, सुहटौ, सूअउ, सूऔ ।
अल्पा;—सुवटियौ, सुवटौ, सूअटौ, सूड़उ, सूड़ौ, सूटौ, सूयटौ, सूवड़ौ, सूवटियौ, सूवटौ, सूहटौ ।
सूस-सं. पु.—१ मगर की तरह का एक बड़ा जल जन्तु ।
२ देखो 'सुस' ।
३ देखो 'सिसु' (रू. भे.)
सूसतौ—देखो 'सुसतौ' (रू. भे)
सूसमदूसम—देखो 'सुखमदुखम' (रू. भे.)
उ०—**सूसमदूसम** त्रीजउ जांणि, बिहु कोडा कोडि हुई परिमांण । त्रीजइ भागइ सरीर दीसंति, एक पल्योपम आउ धरंति ।—बस्तिग
सूसमसूसम—देखो 'सुखमसुख' (रू. भे.)
उ०—**सूसमसूसम** आरउ विचारि, कोडा कोडि सागर सुइ च्यारि । त्रिणि गाऊ मणि ऊचउं देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह ।
—बस्तिग
सूसमार—देखो 'सिसमार' (रू. भे.)
सूसी-सं. स्त्री.—१ ऊंट के चारजामे के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी ।
२ एक प्रकार की धारीदार चारखानों की चादर ।
सूसीम-सं. स्त्री.—शीत, सर्दी, ठंड ।
सूसौ—देखो 'सुसौ' (रू. भे.)
उ०—हरिण **सूसा** नै बाकरा, सूर सांवर नै मोर । दयालराय कोई वाड़ै केई पिंजरै, दुखिया कर रया सोर ।—जयवांणी
सूहड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)
सूहटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—कुच अनार आंवा अधर, देह सुरंगी फूल । मौ मन मधुकर **सूहटौ** रह्यौ ज जित तित डूल ।—कुंवरसी सांखला री वारता
सूहणौ—१ देखो 'सोहणौ' (रू. भे.)
२ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)
सूहर—१ देखो 'सूर' (रू. भे.)
२ देखो 'सूवर' (रू. भे.)
उ०—तरै पंवार कह्यौ 'ओ **सूहर** म्है दीठौ । उणरौ नांव थे मत ल्यौ ।—नैणसी
सूहव-सं. स्त्री—सौभाग्यवती या सुहागन स्त्री, सधवा ।
उ०—१ फिरियौ पछि त्राउ ऊतर फरहरियौ । सहुए **सूहव** उर सरग ।—वेली
उ०—२ **सूहव** अस्त्री मंगळ गावै छै । जै जै कार हुय रह्यौ छै ।
—लाली मेवाड़ी री बात
उ०—३ बहु मोतीय तंदुल थाल भरे, नित **सूहव** नारी वधावत है ।—ध. व. ग्रं.
सूहाकांन्हड़ा-सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
(संगीत)
सूहाटोडी-सं. स्त्री—सब कोमल स्वरों की सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी । (संगीत)
सूहाबिलावल-सं. पु.—सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग । (संगीत)
सूहास्यांम-सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग ।
सूहौ-सं. पु.—स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष ।
उ०—**सूहौ** कसूंभी ओढ डुपट्टौ, झुरमट खेलन जासी । झुरमुट खेल मिळै यदुनंदन, खोल मिळी मिळ छाती ।—मीरां
सेंग—देखो 'सैंग' (रू. भे.)
उ०—१ बोदां रै आडा वहै, सोदा मिलनै **सेंग** । भूकोड़ा भंवता फिरै, लाडू खावै लैंग ।—ऊ. का.
उ०—२ सरधा घटगी **सेंग**, वेग विरधापण वळियौ । निकळण रौ रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियौ ।—ऊ. का.
सेंगटी, सेंगटीघाट-सं. स्त्री. [देशज] तक्र में पकाया हुआ बाजरी का खीचड़ा या घाट ।
सेंगत-वि. [सं. सम+दाति, सह+गति] १ जिसका वातावरण के साथ तारतम्य बैठ रहा हो, जो परिस्थिति के अनुकूल बन गया हो, किसी परिस्थिति या वातावरण विशेष का आदी ।
उ०—खालड़ा री वास सूं तौ वौ खासौ **सेंगत** व्हैग्ण लागौ हौ पण दोनूं धणी-लुगायां रौ संप उणनै भरियौ कोनीं ।—फुलवाड़ी
२ हमसफर, हमराही ।
रू. भे.—सैंगत ।
सेंगर-सं. पु. [देशज] १ राजपूतों का एक वंश ।
२ इस वंश का राजपूत ।
सेंचळ-सं. पु.—एक प्रकार का नमक ।

उ०—[illegible] जोत, [illegible] री [illegible] । समुद्र-पार जांणियो [illegible] ।—जयवांणी

सेंजणो—सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष जिसके लाल, नीले व सफेद तीन रंग के फूल होते हैं ।

सेंजोड़ै—१ देखो 'सेंजोड़ै' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मांनो अगा दोनूं सेंजोड़ै कांटा में भेळा ऊभनै [illegible] जांननै कबूतरां नै चुगावां, तौ थोडौ घणौ पाप पुरैला ।—फुलवाड़ी

२ [illegible] ।

सेंट—देखो 'सेंट' (रू. भे.)

सेंटर—सं. पु. [अं.] १ मध्यस्थान, मध्यबिन्दु ।

२ केन्द्र, प्रधानस्थान ।

सेंटो—१ देखो 'सांटो' (रू. भे.)

२ देखो 'सेंठो' (रू. भे.)

(स्त्री. सेंटी)

सेंट्रल—वि. [अं.] केन्द्र का, केन्द्रीय ।

सेंठाट, सेंठाई—देखो 'सेंठाई' (रू. भे.)

उ०—पछै एकदा विहार करतां उजाड में त्रसा घणी लागी । गुरां नै कहै मोनै त्रसा घणी लागी गुरां कह्यौ—साधु रो मारग है सेंठाट रागो ।—भि. द्र.

सेंठो—१ देखो 'सेंठो' (रू. भे.)

उ०—१ अगाढ़ल डाळाळी दवियो । जांणै कोई उणरै चारूं पगां नै सेंठा भाल जब कर दिया व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] रे, हुआ पाप सूं भारी रे । नीचा जाय बैठा रे, [illegible] सेंठा रे ।—जयवांणी

उ०—३ साधु सूत्र [illegible] में, संसय समकित जाय । निःसंकपणै सेंठो हुवै, स्वरग मुक्ति सुख थाय ।—जयवांणी

उ०—४ पींडिया अर जांघां थरहर कांपण लागती जणां वा [illegible] सेंठी रैवण री घणी ई चेस्टा करती ।—फुलवाड़ी

उ०—५ अठै रा कळा-साहित भी भूगोल रै अमर सूं कोरा कौ रै' सकता नीं । खुदाई अर मीनाकारी री इमारतां नींवरण, मडोर, [illegible], नीवाणा, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर अर तनोट रा सेंठा दुरग चूनीजिया जिणा री भींता नाई बीस बीस फिट [illegible] है ।—[illegible]

२ देखो 'सांठो' (रू. भे.)

सेंतु—देखो 'सेंतु' (रू. भे.)

सेंतर—देखो 'सेंतर' (रू. भे.)

सेंताळीस, सेंतालीस—देखो 'सेंताळीस' (रू. भे.)

सेंताळीसौ, सेंतालीसौ—देखो 'सेंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] धर्मीचंदजी रो सो सेंतालीसै मारवाड़ में [illegible] चौमासा में पगां रै विहार कर गया अनै अमीचंदजी तो चौमासा में पीपाड़ सूं परथूसणां मैं भादवा विद १४ नैं रात रा बाजरी रा गाडा ऊपर बेसीनैं गया ।—भि. द्र.

सेंताळो, सेंतालो—देखो 'सेंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—तेरै सेंतीसैं समै, जायौ सुभ दिन जयकार रे लाल । सेंतालै संयम लीयो, सहु अथिर गिण्यौ संसार रे लाल ।—ध. व. ग्रं.

सेंतीर, सेंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—आगा राज में वांरा सेंतीर तिरै । मोटा मोटा धाड़ायतियां रा थरणा कांपै, पछै औ कुचमादी किण खेत री मूळी ।—फुलवाड़ी

सेंतीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सेंतीसमौं, सेंतीसवौं—देखो 'सैंतीसमौं' (रू. भे.)

सेंतीसे'क—देखो 'सैंतीसेक' (रू. भे.)

सेंतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

सेंद—१ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

२ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

सेंदरूप—देखो 'सैंदरूप' (रू. भे.)

उ०—एक प्रचंड गोरियावर नै बीजो काळिंदर । जांणै सेंदरूप दो मोतां अड़थड़ै । काळ सूं काळ जूंझै ।—फुलवाड़ी

सेंदी—सं. स्त्री.—१ खजूर का आसव ।

वि. वि.—सर्दियों के मौसम में (मार्च तक) खजूर के ठीक मस्तक के पास छिद्र करके एक मिट्टी का पात्र बांध दिया जाता है । रात में उस पात्र में रस टपककर भर जाता है । यह एक स्वादिष्ट व मीठा पेय पदार्थ होता है ।

सेंदेमूंडे—क्रि. वि.—जान-पहचान का होते हुऐ ।

वि.—परिचित ।

रू. भे.—सैंधा-मुहां ।

सेंदेस, सेंदेह—देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

उ०—जग अनंत प्रवाड़ा करै जास । सेंदेस मात कैळास वास ।—रांमदांन लाळस

सेंदौ, सेंदो—१ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

ज्यूं—सेंदो आवै पांमणों, हल्यो आवै चोर ।

२ देखो 'सेंधौ' (रू. भे.)

सेंध—सं. स्त्री. [सं. संधि] १ चोरी करने की दृष्टि से किसी मकान की दीवार में किया जाने वाला बड़ा छेद, सुराख ।

२ बड़ा छेद, सुरंग, नकब ।

३ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

रू. भे.—संधि, सैंध ।

सेंधव, सेंधवौ—देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

सेंधियौ—वि.—'सेंध' लगाने वाला, सुराख करने वाला ।

सं. पु.—१ चोर ।

२ देखो 'सैंदौ' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सैंधौ' (अल्पा; रू. भे.)

सेंधौ-सं. पु. [सं. सैंधव] १ एक प्रकार का खनिज नमक।

उ०—वांमण मांग-तांग नै सेंधा लूण अर अजमा री फाकी लायौ। वांमणी घांटी हिलाय वोली—मौत रै मूंडै तौ इमरत ई विरथा व्है, तद वापड़ी इण फाकी सूं कांई सांधौ लागैला।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—सीधौ, सूंधौ, सेंदौ, सैंधौ।

अल्पा;—सेंधियौ।

२ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

उ०—कितरी एक दूर तौ लाखौ पाळौ गयौ, पछै आगै जातां एक वांमण कठैक सेंधौ थौ तिण कन्हां घोड़ी मंगाय नै चढनै खड़ीया।

—राव लाखै री वात

सेंन-सं. पु.—१ संकेत, इशारा।

उ०—तारै उमर जांणीयौ, ढोलौजी हिवै मांहरै सारू छै। पछै उमर आपरा सिरदारां नै सेंन करनै समझावण लागा।—ढो. मा.

२ शयन, विश्राम।

३ देखो 'सैण' (रू. भे.)

रू. भे.—सेंनी, सैंन।

सेंनप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सेंनी—देखो 'सेंन' (रू. भे.)

उ०—सेंनी मैं समझावै सतगुरु, साध संगत विन मुकति न सुपनै सतगुरु वोल सुणावै।—ऊ. का.

सेंभा-सं. पु.—घोड़ों का एक वात रोग।

सेंमुख—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—इण कलि सेंमुख नवि मिलइ रे, वलि पहुंचइ नहीं कागल मात रे। दूर थकी जै रंग इसी परि रे, राखिस ए पटोलै भांति रे।

—वि. कु.

सेंव-सं स्त्री.—१ एक प्रसिद्ध फल।

उ०—नवरंग, नारंगी, आंबा, अंगूर, अंजीर, जांमुन, जांमफळ, सीताफळ, केळा, दाड़म, सेंव, इरंडकाकड़ी, विदांम..........।

—फुलवाड़ी

२ उक्त फल का पेड़।

रू. भे.—सेव, सेव।

सेंवज-सं. स्त्री.—१ रवी की वह फसल जो वरसात के पानी से होती है, जिसमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती है।

उ०—परगनै मांहै इतरा गांवां सेंवज गेहूं हासलीक गांवां हुवै।

—नैणसी

२ वह जमीन या खेत जिसमें विना सिंचाई के वरसात के पानी से फसल होती है।

उ०—कोस ६ रूपारास मैं। सदा वसी रहै। सींव घणी, खेत सेंवज भला चिणा हुवै।—नैणसी

रू. भे.—सेवज, सैवज।

सेंस—१ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—सेठांणी वौ ई हमेसां वाळौ पडूत्तर दियौ कै लुगाई रा सेंस धरम व्है, मिनख समझणी चावै तौ नीं समझ सकै।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सेस' (रू. भे.)

सेंसनाग—देखो 'सेसनाग' (रू. भे.)

सेंसपा-सं. पु.—सेना का एक वर्ग विशेष।

उ०—माहाराजा जसवंतसिंघ सात हजारी असवार तिण मै पांच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार वावरदी २५८० आसांमी ५ कासमखांन वगेरै.......।—नैणसी

सेंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

से-वि. [सं. सह] सव, समस्त।

उ०—१ राजा 'गाजी' सारिखा, से वड्डा सिरदार। दखणी मार मनाविया, मार कहीजै सार।—गु. रू. व.

उ०—२ से नर आपै थांनै ध्यावतां वारी जाऊं जांकी थै पूरौ आस आज अजमलजी रै छावौ कलम धोकस्यां।—लो. गी.

उ०—३ खळ धारा सिगळाई खूटा, तुं सां वाद कियौ से त्रुटा। करनळ मात निमौ किनियांणी, तूं जोरावर दइतां जांणी।

—पी. ग्रं.

सर्व.—१ वे, वह।

उ०—१ रांम नांम नहीं चेतीयौ, आलस करि करि अंग। हरीया से रीता रह्या, सूरां कूकर संग।—अनुभववांणी

उ०—२ ध्यायौ तोनै ध्यांन धरि, आराह्यौ जग ईस। त्यां पायौ वैकुंठपुर, से जीता जगदीस।—पी. ग्रं.

उ०—३ सांई तू वड्डा धणी, तूझ न वड्डा कोय। तूं जिन्नां सिर हाथ दै, से जग वड्डा होय।—ह. र.

उ०—४ आंखड़िया डंबर हुई, नयण गमाया रोय। से साजण परदेस मइं, रह्या विडांणा होय।—ढो. मा.

२ जो।

उ०—जनहरीया सरवर सवै, ठांम ठांम भरपूर। जांह पायौ तां परम सुख, दुखी रह्या से दूर।—अनुभववांणी

विभक्ति—१ तृतीया और पंचमी की विभक्ति जो नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होती है—

१ द्वारा, मार्फत।

२ अपेक्षा में।

३ आरंभ से।

४ पर।

५ को।

२ करण और अपादानकारक का चिन्ह।

सं. पु.—१ शेष। (एका.)

[illegible] । (जैन.)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
[illegible] । (,,)
१० [illegible] । (,,)
११ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
१२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
१३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सें'—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—[illegible], [illegible], बिडाळ ऊंठा, कालीमरी हर मास री । सें' [illegible], [illegible] [illegible], आछा पछला आम री ।—दसदेव
२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
३ देखो '[illegible]' (६) (रू. भे.)
४ देखो '[illegible]' (४, ८, ६) (रू. भे.)

सेंद्या—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—जिणरी महरी परोटियो होवै उण हीज तरै सगुवां नै मार [illegible] कर रण सेद्या मुवै तो कवी कहे है सुभड़ां थै तरवार उण वीर पुरस रो नाम लै नै यायो मो नांह री कठै ही हार न होवै ।
—वी. स. टी.

सेई—सर्व.—[illegible] ही ।
उ०—१ तो कू जानि और नही जानू, जाचिग होय अजांमका । सेई जाम अजाम न जाता, माता दमड़ी चांमका ।
—अनुभववांणी
उ०—२ कहीयो जु देवां अजैलग मयां री साय सावतो ऊभी छै । यहै उपरि वाल देश री इहै वेळा छै । सेई जीपसी जु हाथ [illegible] ।—वेलि टी.
सं. स्त्री.—१ अनाज मापने का एक पात्र विशेष जो प्रायः आधा मन अनाज का होता है ।
२ आधा मन अनाज ।
उ०—हाट १ महमूंदी यरत १ री लागै । जाणै परगिणै महमूंदी २ लागै । देस मिलै हळ १ सेई ।—नैणसी
३ अनाज की वह मात्रा जो उक्त पात्र में समा जाती हो ।
४ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सेकंड—सं. स्त्री. [अ.] समय का वह भाग जो एक मिनट के साठवें भाग के बराबर होता है ।

सेक—सं. पु.—१ आंच, गर्म पानी या अंगारों द्वारा गर्मी या ताप पहुंचाने की क्रिया ।
२ [illegible] ।

सेकणौ, सेकबौ—क्रि. स.—१ पास में अग्नि जलाकर गर्मी पहुंचाना, गर्म पानी किसी पात्र में डाल कर उसके जरिये गर्मी पहुंचाना, ताप देना, तपाना, गर्म करना ।
उ०—आसा लुब्धी हूं न मुइय, सज्जन-जंजाळेइ । मारू सेकइ हुव्यड़ा भीणी अंगारेइ ।—ढो. मा.
२ आंच पर रखना, पकाना, भूनना ।
उ०—१ पछै मेजड़ी री सूखी किटकिळियां अर बगदी भेळी करियो चकमक सूं बगदी सिळगाय अणूंता कोड सूं पूंछ सेकिया ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जिसी लाय जाळियो, फजर मिळ जाय फकीरां । साह दहण सेकियौ, इसी पेखियो अमीरां ।—रा. रू.
३ दग्ध करना, जलाना ।
उ०—१ रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ । टांभ दिरावइ करहलउ, सेकंता मग्गि जाइ ।—ढो. मा.
उ०—२ जिन दिन भड़ता देखिया, पायौ दुख अणमाप । बळती आपै वेलड़्यां, मतना सेको ताप ।—लू
सेकणहार, हारौ (हारी), सेकणियौ—वि० ।
सेकिओड़ौ, सेकियोड़ौ, सेक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सेकीजणौ, सेकीजबौ—कर्म वा० ।

सेकता—देखो 'सिकता' (रू. भे.)

सेकसन—स. पु. [अं. सेक्शन] उपविभाग, अनुभाग ।

सेकाणौ, सेकाबौ—क्रि. स. ['सेकणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ पास में अग्नि जलाकर गर्मी पहुंचवाना, गर्म पानी किसी पात्र में डलवाकर गर्मी पहुंचवाना, ताप दिलवाना, तपवाना, गर्म करवाना ।
२ आंच पर रखवाना, पकवाना, भुनवाना ।
३ दग्ध कराना, जलवाना ।
सेकाणहार, हारौ (हारी), सेकाणियौ—वि० ।
सेकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सेकाईजणौ, सेकाईजबौ—कर्म वा० ।
सेकावणौ, सेकावबौ—रू० भे० ।

सेकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पास में अग्नि जलवाकर गर्मी पहुंचवाया हुआ, किसी पात्र में गर्म पानी डालकर गर्मी पहुंचवाया हुआ, ताप दिवाया हुआ, तपवाया हुआ, गर्म करवाया हुआ. २ आंच पर रखवाया हुआ, पकवाया हुआ, भुनवाया हुआ. ३ दग्ध कराया हुआ, जलवाया हुआ ।
(स्त्री. सेकायोड़ी)

सेकावणौ, सेकावबौ—देखो 'सेकाणौ, सेकाबौ' (रू. भे.)
उ०—बावन चंदन बालि करि, सोविन-सगड़ि आंणि । ससिवयणी सज्जण-तणां, सेकावइ पय पांणि ।—मा. कां. प्र.
सेकावणहार, हारौ (हारी), सेकावणियौ—वि० ।
सेकाविओड़ौ, सेकावियोड़ौ, सेकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सेकावीजणौ, सेकावीजवौ—कर्म वा० ।

सेकावियोड़ौ—देखो 'सेकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सेकावियोड़ी)

सेकिम—सं. पु. [सं सेकिम] १ मूली ।

२ सलजम ।

उ०—कै उद्धत संग्रहि कलाप । हठि दंत निकारै, सुंडादंड खंड खेरि, ग्रहि रूप उतारै । सेकिम मालाकार सोभ, अतिजोर उपारै, आधोरु घुम्मैं अचेत, कपि ज्यौं द्रुमकारै ।—वं. भा.

सेकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पास में अग्नि जला कर गर्मी पहुंचाया हुआ, किसी पात्र में गर्म पानी डालकर गर्मी पहुंचाया हुआ, ताप दिया हुआ, तपाया हुआ, गर्म किया हुआ. २ आंच पर रक्खा हुआ, पकाया हुआ, भुना हुआ. ३ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ ।

(स्त्री. सेकियोड़ी)

सेकिळगर—देखो 'सिकळीगर' (रू. भे.)

सेक्रेटरी—सं. पु. [अं.] १ सचिव, अमात्य ।

२ मुन्शी, कारींदा ।

३ वर्तमान समय में किसी राज्य के सचिवालय या विभाग का प्रशासनिक अधिकारी, शासन-सचिव ।

सेक्रेटरियेट—सं पु.—सचिवालय ।

सेख—सं. पु. [अ. शैख] १ मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि ।

२ मुसलमानों का एक वर्ग ।

उ०—१ सोबा आद जोधपुर सोजत, च्यारूं तरफ रहे चक्रांकित । सेख रहै भड़ मेछ सनाहै, नूरअली जैतारण मांहै ।—रा रू.

उ०—२ जादम भांण पठांण जुमल्लां । सैद रहीम सेख सादुल्लां ।

—सू. प्र.

३ उक्त वर्ग का मुसलमान ।

उ०—सत्रां दळ मूगळ सैयद सेख, वर्णं ग्रह वाज कबूतर वेख । सरां अप्रमांण पठांण संहारि, लिया कर सेल नरां ललकारि ।

—मे. म.

३ सरदार, अध्यक्ष, नायक ।

उ०—१ सेख सैंण आगै अरज, केरळनाथ करंत । आवण नहं दीजै अठै, गूजरवै बळवंत ।—बां. दा.

उ०—२ हरवळ पठांण तरियल हलाय, वदसाह तणा सइदां बुलाय । सूरमा सेख अति बळ समंद, बावरी बंगाळी तवल-बंध ।

—वि. सं.

४ मुसलमान धर्मोपदेशक, पीर, मुसलमान फकीर ।

उ०—१ जिंदा होय जिंद नहीं जांणी, उलटा नाद बिंद नहीं आंणी । फकर जलाली सेख कहायां, रांम रहीमां दूरि रहाया ।

—अनुभववांणी

उ०—२ सोइ जोगी सोइ जंगमा, सोइ सूफी सोइ सेख । सोइ संन्यासी सेवड़ा, दादू एक अलेख ।—दादूवांणी

उ०—३ जोगी जंगम सेवड़ै, बौद्ध संन्यासी सेख । खट्-दरसन दादू रांम बिन, सबै कपट कै भेख ।—दादूवांणी

५ बड़ा-बूढ़ा, वृद्ध, बुजुर्ग ।

६ कुल का नायक ।

७ प्रतिष्ठित या श्रेष्ठ व्यक्ति ।

८ नामर्द, शिखंडी ।

उ०—आगै कुखत्री एक, तौ जेहौ हूंतौ त्रिपट । सांप्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ नागवी ।—पा. प्र.

सं. स्त्री.—९ आग की लपट, अग्निशिखा ।

१० देखो 'सेस' (रू. भे.)

उ०—१ हुई दौड़ हैमरां, नरां ऊधरां करारां । सेख ज्वाळ सल्लळी, कनां सिव चक्ख विकारां ।—रा. रू.

उ०—२ सेख सळळसला । नाग नव्वै कुळां । प्रव्वंता प्रज्जळा । टंक टळा टळा ।—गु. रू. वं.

उ०—३ सीय वांम अंग मुख अग्र सेख । बजरंग पाय सेवत बिसेख ।—र. ज. प्र.

उ०—४ पूछै अन कवि छंद पढि, गिण जिण मत्त प्रमांण । घटै स गुरु कह गुरु घटै, सेख रहै लघु जांण ।—र. ज. प्र.

उ०—५ यहां विवेक उहां मोहदळ, खेत बुहारचा देख । ऐं मारैं कै वैं मारिलै, संचर रहै न सेख ।—ह. पु. वां.

सेखइकाल—सं. पु.—चातुर्मास के उपरान्त का काल ।

उ०—जै नव कलपी नवि करै रे हां, उद्यत मुदित विहार । मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, सेखइकाल अपार ।—वि. कु.

२ शैशवकाल, बाल्यकाल ।

सेखचिल्ली—सं. पु.— १ झूठ-मूठ बड़े बड़े मंसूबे बांधने वाला व्यक्ति ।

२ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके विषय में बहुत सी हंसाने वाली कहानियां प्रचलित हैं ।

रू. भे.—सेखसली ।

सेखनाग—देखो 'सेसनाग' (रू. भे.)

उ०—धड हडै सात पंयाळ धूजै, सेखनाग धडक्क ए । खित भार दाढ वाराह खड़कै, कोम कंध कड़क्क ए ।—गु. रू. वं.

सेखज्वाळ, सेखज्वाळा—सं. स्त्री. [सं. शेष+ज्वाला] शेषनाग के मुंह से निकलने वाला वह फुत्कार जो आग की लपट के समान होती है ।

उ०—जोवै 'किसन' तणौ 'रांजोधर' सेखज्वाळ सम आयौ समहर । 'जूझारोत' 'फतौ' तिण जांमळ, ज्यौं विध कोप पवन पेखै जळ ।

—रा. रू.

सेखर—सं. पु. [सं. शेखरः] १ शिखर, चोटी, शृंग ।

२ माथा, मस्तक, सिर ।

३ मुकुट, कीरीट ।

४ सिर पर धारण करने का आभूषण।

५ सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला।

६ [illegible] शब्द।

७ संगीत में ध्रुव का स्थायी पद का एक भेद।

[सं. शेखर] = [illegible]।

८ [illegible] (स्वयक) का एक भेद विशेष।

(पि. प्र.)

१० ठगण की पांच मात्राओं के पांचवें भेद का नाम, ।।ऽ।।

(डि. को; र. ज. प्र.)

११ छप्पय छन्द का ६६ वां भेद जिसमें ५ गुरु, १४२ लघु कुल १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। (र ज. प्र.)

सेखरापीडयोजन-सं. स्त्री.—स्त्रियों की चौसठ कलाओं के अन्तर्गत एक कला।

सेखसद्दो-सं. पु.—एक पीर जो मुसलमान स्त्रियों के उपास्य हैं और कभी-कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते हैं।

सेखसली—देखो 'सेखचिल्ली' (रू. भे.)

उ०—१ साफल्य स्वप्न संपति समांन, पांनी मंथन मैं घ्रत प्रमांन। [illegible] चित्त सिद्धांत चूक, मत्र सेखसली कै है सलूक।—ऊ. का.

उ०—२ सेखसली सरखा हुवै, मावड़ियां रै मीत। पोपां बाई प्रगट की, नवी चलावै नीत।—बां. दा.

सेखसाय, सेखसायी-सं. पु. [सं. शेष+शायी] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ विष्णु।

सेखा-सं. पु.—१ दो भगण या छः गुरु का वर्णवृत विशेष।

२ देखो 'सेखावत'।

सेखाअवतार, सेखाअवतारी-सं. पु. [सं. शेषावतार] दसरथ सुत लक्ष्मण जो शेष का अवतार माने जाते हैं। (नां. मा.)

रू. भे.—सेखावतार।

सेखाक्षर-सं. पु. [सं. शेषाक्षर] परब्रह्म, ईश्वर।

उ०—नमामी सरवेसा [illegible] सेसाक्षर नमो। नमो सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमो।—ऊ. का.

सेखाटी, सेखावटी-सं. स्त्री.—जयपुर डिविजन के अन्तर्गत एक भू प्रदेश जहां पहले शेखावत क्षत्रियों का राज्य था। (शेखावाटी)

उ०—वागज नै वानना ही भड़ेच ऊठि गाजै। सेखाटी देस मैं [illegible] फौज ल्याजै।—शि. व.

रू. भे.—सेखावाटी।

सेखावत-सं. पु.—कछवाहा क्षत्रियों की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—१ [illegible] आमेर री गादी बैठो [illegible] राजावत। नरसिंघ रा [illegible]। [illegible] सेखा रा सेखावत।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ 'अमै' तांम पूछै वड रावत, सूरवीर कूरम सेखावत।

—सू. प्र.

उ०—३ सुज कंत अत अमरां सुपुरि, चौओड़ी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह 'चंदू' छडी, सेखावत अत संभरै।—रा. रू.

२ भाटी वंश की शाखा विशेष।

उ०—अरु तीजो बाघंजी रो रायमल वाळो। ऐ सेखैजीरा बेटां री औलाद सेखावत भाटी पूगळिया।—द. दा.

रू. भे.—सेखावत।

सेखावतार—देखो 'सेखाअवतार' (रू. भे.)

सेखावत—देखो 'सेखावत' (रू. भे.)

उ०—नित घूंनै चहुवांण, भाळ धूंनै भटियांणी। तुंवरि सेखावत रीझ चावोड़ी रांणी।—रा. रू.

सेखावाटी—देखो 'सेखावटी' (रू. भे.)

सेखी-सं. स्त्री. [तु. शेखी] १ अहंकार, घमंड, गर्व, हेंकड़ी, अकड़।

उ०—१ पण तो ई सेठजी मैं व्ही नांमी। लखणां जैड़ी बीतगी। अकल री तो जांणै अपची इज व्हियोड़ी। जबरी सेखी निकळी।

—फुलवाड़ी

उ०—२ नीं मिळी जितै राजाजी री ई कित्ती मोटी भरम ही, म्हारा मन मैं। मिळियां तो जबरी सेखी निकळी।—फुलवाड़ी

२ अहंकार भरी बात, डींग।

उ०—माता रुधिर पिता वीरज नो जीवा, लीनो प्रथम तूं आहार। भूल गयो जनम्यां पछै जीवा, सेखी करै अपार।—जयवांणी

३ झूठी शान- शौकत।

४ तारीफ, बड़ाई।

क्रि. प्र.—दिखाणी, निकळणी, बगारणी, मारणी।

सेखीबाज—वि.— १ अहंकारी, घमंडी, अभिमानी।

२ शेखी बगारने वाला, डींग मारने वाला।

सेखू-सं. पु.—बादशाह।

उ०—प्रगट कोट गढपाड, साही धरा पलटजे, सुणै सेखू तणो उवर सीधो। जांन कर परणवा जावतां जैतहत, 'करण' तै माळवो फतै कीधो।—महाराणा करणसिंह री गीत

सेखो-सं. नु.—पीली चोंच और सफेद रंग का एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी विशेष।

उ०—रज्ज भख्या डावर रगत, दमगळ दोख्यां दाव। डुबकी लै उण डावरां, सेखां ह्लां मुरग्वाव।—रैवतसिंह भाटी

सेगार—देखो 'सागार' (रू. भे.)

सेडै-क्रि. वि.—१ एक तरफ, किनारे, एक ओर, परे।

२ अलग, दूर।

३ एकान्त में।

सेड़ो-सं. पु. [फा. सरहद] १ सीमा, हद।

उ०—पण बापजी, चुगलखोरां री कांई सेड़ो। पांवटै-पांवट

चुगलखोर भरया। एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिड़ावैला।

—फुलवाड़ी

२ किनारा, छोर, सरहद।

रू. भे.—सेडौ, सेढौ, सैड़ौ, सैहड़ौ।

सेचरलूण—सं. पु. [सं. सौवर्चल+लवणं] एक प्रकार का नमक।

सेज—सं. स्त्री. [सं. शय्या, प्रा. सज्जा] १ वह चारपाई या खाट जिस पर विस्तर विछा कर सोने योग्य बनाया गया हो, शय्या, पलंग, सेज। (अ. मा.)

उ०—१ एक वार तौ द्वारै आय कांन दै आहाट सुणै छै। वहुरि **सेज** छै, तठै पधारै छै।—वेलि टी.

उ०—२ सूर वाहर चढै चारणां सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आवू। विहंड खळ खींचियां तणा दळ विभाड़ै, पोढियौ **सेज** रण भोम 'पावू'।—वां. दा.

उ०—३ रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी **सेजां** मैं सोवै।—ऊ. का.

२ विस्तर, विछावन।

उ०—चौकी रूप पिलंग चढाए, विमळ पुहप घण **सेजां** विछाए।

—सू. प्र.

रू. भे.—सेजइ सेज्जा, सेज्या, सैज सैभ।

अल्पा;—सेजड़ली, सेजड़ी, सेजरी, सेझरी।

मह;—सेजड़ौ।

३ देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—च्यार ही वरण सुण जो चतुर, पात पुकारै पेज मैं। आ लाज सरम कुळरी अवै, साध गमावै **सेज** मैं।—ऊ. का.

सेजइ—१ देखो 'सहज' (रू. भे.)

२ देखो 'सेज' (रू. भे.)

सेजखांनौ—सं. पु.—वह कक्ष जहाँ शय्या लगी हो, शयनकक्ष।

रू. भे.—सेझरखांनौ।

सेजडली, सेजड़ी, सेजडी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ गिरधर आवणां हे, ऊदांवाई सेजड़ली संवार। आवण री विरियां भई जी, अव महलां ढोल्यौ ढार।—मीरां

उ०—२ चंदमुखी री चूंदड़ी, पिय पिचरंगी पाग। **सेजड़ली** नै सुण सखी, रह्यौ आज रंग लाग।—अग्यात

उ०—३ सीहीअ समांणी **सेजडी** रे, चंदन जेहवी झाल। दावानल जिम दीवडउ रे, कमल जिस्यां करवाल।—हीराणंद सूरि

उ०—४ सूतां हूंता **सेजड़ी**, साथ न मूंकइ नाथ। सहस-गुणउ सुख ऊपजइ, जिम जिम भीडउं वाथ।—मा. कां. प्र.

सेजड़ौ—सं. पु.—१ विश्राम स्थल।

उ०—भूल कस्ट निज, करै भलाई, मरू दरोगी खेजड़ौ। हेरत करत हेजड़ौ पंछी, जिणरौ जूनौ **सेजड़ौ**।—दसदेव

२ देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

सेजपंथ, सेजपथ—देखो 'सहजपथ' (रू. भे.)

सेजपाळ—सं. पु. [सं. शय्या पालक] शयनागार का पहरेदार।

सेजबंध—सं. पु. [सं. शय्या+बन्धन] शय्या का बन्धन।

उ०—आगै जायनै देखै तौ ऊदौजी पोढिया छै। ताहरां मेळै जायनै हथियारां री वाथरयां वाढी। **सेजबंध** वाढिया। अस्त्री री चोटी वाढी।—नैणसी

सेजबरदार—सं. पु.—शय्या विछाने वाला कर्मचारी।

उ०—आळै री कूंची मोहण **सेजबरदार** कन्है छै।

—पलक दरियाव री वात

रू. भे.—सेजव्रदार।

सेजरी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—विसर गया मारूड़ा नैहड़ौ ल्याय, नैणां रा तीर चलाय। रसराज सांवरा सैंण **सेजरियां** मैं, नई नई रमक वताय।

—रसीलैराज रौ गीत

सेजरीओवरी—सं. स्त्री.—महाराणा साहब के आराम करने के पलंग आदि तैयार करवाने का महकमा। (वी. वि.)

सेजलदेवी—सं. स्त्री.—एक देवी विशेष।

उ०—परमार भंवरसेन राजा री वेटी **सेजळदेवी** हुती। सोजत मैं सेजळ रै नांमै सोजत सहर वसियौ हौ।—वां. दा. ख्यात

सेजवट—देखो 'सेझवट' (रू. भे.)

सेजवाळौ, सेजवालौ—सं. पु.—१ पर्दानशीन स्त्रियों के बैठने की वह गाड़ी, रथ या वग्घी जिस पर विस्तर लगाकर लकड़ियों के सहारे चारों ओर ऊपर से पर्दे से बंद कर दिया जाता है।

उ०—१ आगै मारग मैं तळाव आयौ। ताहरां वडेरा ठाकुर हुता सु बोलिया—जु सिनांन करौ, सेवा-पूजा कर अमल करौ। **सेजवाळौ** एकै आंतरै छोडावौ।—नैणसी

उ०—२ नेमिकुंवर वर नींद विराजै, यादव यांनी केसरीया। असीय सहस **सेजवाला** साथै मंगल मुख गावै गोरीयां।—वि. कु.

उ०—३ ताहरां राव जेसी फोज करि **सेजवाळा** जोड़ाइ नै फूल नुं लेनै हालीयौ।—लाखा फूलांणी री वात

२ पालकी, डोली।

३ पर्दानशीन स्त्रियों के रथ या गाड़ी पर वस्त्र डाल कर किया जाने वाला पर्दा।

रू. भे.—सिजवाळौ, सेझवाळौ, सेझवालौ।

सेजव्रदार—देखो 'सेजबरदार' (रू. भे.)

उ०—'वहादर' डूंगर **सेजव्रदार**। सत्रां रिण सेलां मूं वीहत सर।

—सू. प्र.

सेजौं—सं. पु.—हृदय।

उ०—दादू निरंतर पिव पाइया, तीन लोक भरपूर। सव **सेजौं** सांई वसै, लोक वतावै दूर।—दादूवांणी

सेजौ—सं. पु. [सं. श्रोत] १ कूऐ का जल-स्रोत।

उ०—[illegible] बानीता बनै, सेजी नहीं, सेवज चिणा हुवै ।
—नैणसी

२ [illegible], [illegible] ।

३ [illegible] ।

रू० भे०—सेझौ, सैझौ ।

सेज्जातरदोष—सं० पु० [सं० शय्यान्तरदोष] जिनकी आज्ञा लेकर मकान में ठहरे, उनके घर का आहार लेने पर लगने वाला दोष ।
(जैन)

सेज्जा—देखो 'सेज' (रू० भे०)

उ०—[illegible] सेज्जा सिंहासण जांणी रे, ज्योत ऊगां दह दिस भांणी रे ।—जयवांणी

सेज्जासण—सं० पु० [सं० शय्यासन] शय्या का आसन ।

सेज्या, सेझ—१ देखो 'सेज' (रू० भे०)

उ०—१ हे सखी म्हारै विनां एकलो हीज रण मैं सूतो है पण सेझ री गैल नहीं छोडै छै ।—वी० स० टी०

उ०—२ विरह सो फाटत हृदय मेरो, दुख धरै रो होहि । यह मास मास उसास धरि कै, सेझ को मुख जोहि ।—वि० कु०

उ०—३ सावण की नूवा आवै छै । भीजतां सांजै घरां नूं जावै छै । आपरा रेहवास मैं आय पनां सेझ की त्यारी कराई । अगर सावण री [illegible] ।—पनां

२ देखो 'सहज' (रू० भे०)

सेझ—१ देखो 'सेज' (रू० भे०)

उ०—भीतर गरम विछावनां, सेझां अधिक अनूप । नांनाविध मूं [illegible], कवण वखांणै रूप ।—गज-उद्धार

२ देखो 'सहज' (रू० भे०)

सेझखांनौ—देखो 'सेजखांनौ' (रू० भे०)

उ०—सेझखांना रा [illegible] नं-मोहोर १, वेस १ खबर देण आवै तिण नु [illegible] नु मोहोर १ वेस १ ।—मारवाड़ री ख्यात

सेझड़ली, सेझड़ी—देखो 'सेज' (अल्पा; रू० भे०)

उ०—१ मुख नीसासां मूकती, नयणै नीर प्रवाह । मूळी सिरखी सेझड़ी, तो विण जांणै नाह ।—ढो० मा०

उ०—२ अब विदेही वाल्या, नीयारी नांहि । एक अखंडी रम रह्या, सुनि सेझड़ीयां माहि ।—अनुभववांणी

सेझण—सं० स्त्री०—तलाश, खोज, शोध ।

सेझरौ—देखो 'सेज' (अल्पा, रू० भे०)

उ०—आसि पासि सब सखी सहेली, चावत पांन तंबोली । सेझरीयां [illegible], अमल कटोरां घोली ।—अनुभववांणी

सेझवट—सं० स्त्री०—शय्या, बिस्तर, बिछावन ।

उ०—[illegible] सेझवट [illegible] ।—रा० सा० सं०

रू० भे०—सेजवट ।

सेझवाळौ, सेझवालौ—देखो 'सेजवाळौ' (रू० भे०)

उ०—१ अठै पांणी ऊपर सोनगरी री पिण सेझवाळौ आंण ऊभौ राखियौ छै ।—नैणसी

उ०—२ तिण हीज वेळा आपरा कड़ा, मोती, सिरपाव दीधा, नै अमल री गोटी एक, मिठाई रौ करंडियौ, दारू री बतक, पांना मूं भरनै पांनदांन दीधौ ग्रौर सेझवाळौ जोताय आदमी च्यार साथै देनै विदा कीयौ ।—जेतसी ऊदावत री बात

सेझौ—देखो 'सेजौ' (रू० भे०)

उ०—१ जह तन मन का मूळ है, उपजै ग्रोंकार । अनहद सेझा सब्द का, ग्रातम करै विचार ।—दादूवांणी

उ०—२ दादू अनुभव काटै रोग कौ, अनहद उपजै आइ । सेझे का जळ निरमळा, पीवै रुचि ल्यौलाइ ।—दादूवांणी

उ०—३ सांवणू वडा रेलां रा खेत । सेंवज चिणा हुवै । ऊनाळी सिगळी सींव मैं सेझौ । पांणी हाथै ७ तथा ८ घणी मीठौ ।
—नैणसी

उ०—४ ज्युं जळ सेझै सिंध का, वाका थाह न कोय । हरीया सिवरन सहज का, निसदिन घट मैं होय ।—अनुभववांणी

सेटौ—सं० पु०—वह उत्तम नस्ल का सांड जिसे अच्छी नस्ल पैदा करने के लिये विशेष रूप से पाला-पोषा गया हो ।

सेट्ठि—देखो 'स्रेस्ठी' (रू० भे०)

सेठ—सं० पु० [सं० श्रेष्ठिन्] (स्त्री० सेठाणी) १ प्रतिष्ठित एवं श्रेष्ठ व्यक्ति ।

२ धनी व्यक्ति ।

३ व्यापारी, महाजन, साहूकार, वणिक ।

उ०—१ सेठ हाथ जोड़ नै उरवांणै पगां दौड़चा सांमी आया । ठाकरसा नै सेठ अणूंता दुमना निगै आया ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लियां दियां बिनां कैड़ाई मोटा सेठ रै सरै कोनीं ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ पण धनवंती सेठ साहूकारां रा तौ उण परवांना पछै हौसला इज गुम व्हैगा हा ।—फुलवाड़ी

४ वणिक या व्यापारी की उपाधि ।

५ दलाल ।

६ व्यापरियों की पंचायत का मुखिया ।

रू० भे०—सेट, सेठि ।

अल्पा;—सेठड़ौ, सेठियौ, सेठौ ।

सेठड़ौ—देखो 'सेठ' (अल्पा; रू० भे०)

सेठांणी—सं० स्त्री०—१ किसी व्यापारी या वणिक की स्त्री ।

उ०—सूनी ढांणी मैं सेठांणी सोती, रंगी विणियांणी पांणी नै गोरी ।—ऊ० का०

२ धनी ग्रौरत ।

सेठाई, सेठायी–सं. स्त्री.—१ धनाढ्यता, मालदारी।
उ०—मिनख हंसता मुळकता राज अर ठकराई छोड दी, **सेठायां** छोडावण खातर छापा पड़ण ढूका, सागड़ी धणियां सूं छूट गिया पण वापड़ै कसाई री भूंड़ीजणौ अजै तांई नीं छूटौ।—चितरांम
२ सेठ होने की अवस्था, भाव या स्थिति।

सेठि—देखो 'सेठ' (रू. भे.)
उ०—तिणि पुरि निवसइ **सेठि**, धनावह धरमी नइ धनवंत। पदमसिरि तसु घरणी भणीइ, सहजिइं अति गुणवंत।
—हीराणंद सूरि

सेठियौ—देखो 'सेठ' (अल्पा; रू. भे.)

सेठौ—देखो 'सेठ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—नर-नारी वांदण गया, आयौ कारत्तिक **सेठौ** जी। जिनवर वंदना करी, वेठौ छै जिनवर भेटौ जी।—जयवांणी

सेड–वि. [सं. शौण्ड] १ मदोन्मत्त, मस्त, नशे में चूर।
२ निपुण, दक्ष।
३ अभिमानी, घमंडी।
४ शराबी, मद्यप।
५ देखो 'सेढ' (रू. भे.)
उ०—१ सवार सिंझ्या नांनी-मां रै जोड़ै बैठ दुवारी सीखतौ घणाकरी **सेडां** वारै ही ढोळ देतौ—फुलवाड़ी

सेडळ, सेडल–सं. स्त्री.—चेचक रोग की अधिष्ठात्री देवी विशेष, शीतला-माता, शीतला-देवी।

सेडळमाइ, सेडळमाता, सेडळमाय–स स्त्री.—१ शीतला-माता।
उ०—जै तळै बाळौ खेलतौ जी, खेलत चड गयी ताप। वला ल्यूं **सेडळमाता** ए।—लो. गी.
२ उक्त माता के नाम से या उक्त माता के लिये गाया जाने वाला एक लोक-गीत।

सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू—देखो 'सेढावू' (रू. भे.)
उ०—१ घुंटी रै उपरांत पाछौ चेतौ बावड़िग्रां उणनैं ग्रैड़ौ लखायौ जांणै उणरा छळी मन मैं **सेडाऊ** दूध घुळग्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ दांत जांणै **सेडावू** दूध रा इज भाग। हंसणा मुळकणा रै समचै दूध झरतौ।—फुलवाड़ी

सेडी–सं. स्त्री. [सं. चेटि, प्रा. चेड़ि] सखी, सहेली।

सेडौ–सं. पु.—१ प्रायः जुकाम के कारण नाक से निकलने वाला एक गाढ़ा द्रव पदार्थ या मल जो श्लेष्मा मिश्रित होता है, रेंट।
उ०—पड़ियौ **सेडौ** पेख, भवन भेड़ौ भणणावै। भींतां ही **सेडै** भरी, गरट माख्यां गणणावै। आवै देख ऊवाक, थूक रा थेचा थाया। उतरचा सूत अणूत, मूत रेला नह माया।—ऊ. का.
२ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)
रू. भे.—सेढौ।

सेढ–सं. स्त्री.—१ चौपाया मादा जानवरों के स्थनों से निकलने वाली दूध की धारा।
उ०—सांयंड भेरावै **सेढां** रै सारू। वेरै वैढांकर हेरै हथवारू।
—ऊ. का.
२ स्तन।
उ०—खोळी खीलां री डेढां ढिग ढीली, पोली **सेढां** री लीलां विण पीळी। खड़ती सुवाड़ी बाड़ी विन खटके, मरती मोछड़ियां पूंछड़ियां पटकै।—ऊ. का.
रू. भे.—सेड़।

सेढकढियोड़ौ, सेढकढियौ–वि.—तुरन्त का दूहा हुआ, धारोष्ण। (दूध)

सेढाउ, सेढाऊ, सेढावू–वि.—तुरन्त दूहा हुआ, ताजा निकाला हुआ, धारोष्ण। (दूध)
सं. पु.—ताजा निकाला हुआ दूध जो फेनिल होता है और अत्यन्त पौष्टिक माना जाता है।
रू. भे—सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू।

सेढितव–सं. पु.—श्रेणितप। (जैन)

सेढी–सं. स्त्री.—सीढी, जीना। (अ. मा.)

सेढूगारी–सं. स्त्री. [सं. सेध+कारी] तंत्र-मंत्र या तांत्रिक विद्याओं से दूध, दूही या घी चुराने वाली स्त्री।

सेढे, सेढै–क्रि. वि.—१ समीप, निकट, पास, नजदीक।
उ०—१ इत्यादिक अपसुकन तजी, गयौ सनमुख तास। सीमा **सेढै** ऊतरचौ, वीरसेन उल्लास।—वि. कु.
उ०—२ धोधौ हेक भाई काठियां मांहै मोरवी रै **सेढैं** गयौ, उण रै केड़ रा मोरवी हळोद्र विचै छै।—नैणसी
२ पार्श्व में।

सेढौ—१ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'सेडौ' (रू. भे.)

सेण–सं. स्त्री.—१ औजारों की धार को घिसकर तेज करने का पत्थर या कांच का टुकड़ा, सिल्ली।
२ देखो 'सैण' (रू. भे.)
उ०—ज्यांरी जीभ न ऊपड़ै, **सेणां** मांही सेत। वांरा कर किम ऊपड़ै, खळां घिरचां बिच खेत।—बां. दा.
३ देखो 'स्येन' (रू. भे.)

सेणतियौ–सं. पु.—१ वह कुआ जिसमें से सिंचाई के लिए रात-दिन पानी निकाला जाता रहा हो।
२ उक्त प्रकार के कुऐ से निरन्तर पानी निकालने वाला व्यक्ति।

सेणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सेणावइ—देखो 'सेनापति' (रू. भे.) (जैन)

सेरिग—१ देखो 'स्रेणि' (रू. भे.)
उ०—वजंत घाव जूसणं, निहाव उट्ठवेरिणयं। संग्रांम पंड कैरवै कि, खंड बांण **सेरिणयं**।—रा. रू.

२ देखो 'सैणी' (रू. भे.)

सैणिको-स. पु.—एक गुरु एक लघु इस क्रम से ११ वर्ण का एक वर्णिक छन्द विशेष। (डिं. ग्र.)

सैणी—१ देखो 'सैणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सैणी' (रू. भे.)

सैणीको—देखो 'सैणिको' (रू. भे.)

सैणो-वि. [सं. सज्ञान] (स्त्री. सैणी) १ समझदार, योग्य, व्यवहार-कुशल।

उ०—१ नरै सीवै उगानू तेड़ नै यूं हीज पूछियौ। यूं हीज काळ किनी। पछै वेणी री राव सूजो जोधपुर सैणी सौ ठाकुर हुवौ।

—राव जोधा रै बेटां री वात

उ०—२ मागी वाता नीकी मांहे, रघुवर जग सहजग यम माखै। भाखौ म्हारी मांजै सैण, भय मगि निगम ब्रहम रवि भाखै।

—र. ज. प्र.

२ सीधा-सादा, सरल, विनम्र।

उ०—हांवै सुविनीत सैणा रे, थारै गुरु वेणा रे। जैसी ढळती छाया रे, रागी प्रीत सवाया रे।—जयवांणी

३ अनुभवी, दूरदर्शी, विवेकशील।

४ वयस्क, बालिग।

उ०—नगराज काम आयौ। धरती छूटी। बेटा बालक हुंता। तठै माउ प्रगल करै उठै छाणी दे रहै। उण हीज देस माहै। कतराक दीहाड़ा गिए सैणा हुआ।—कल्यांणसिंह बाढेल री वात

५ चालाक, धूर्त, कपटी।

६ सज्जन, शरीफ।

७ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

रू. भे.—सैणो, सैणो।

सैणो, सैवो—१ देखो 'सैवणो, सैवबो' (रू. भे.)

२ देखो 'सहणो, सहवो' (रू. भे.)

सैतंबर—देखो 'श्वेतांबर' (रू. भे.)

उ०—ब्राह्मण सैतंबर दळ जोगी जंगम जाणि। दान संन्यासी सोफिया, सट दरसण वाखाणि।—रा. सा. सं.

सैतंबरी—देखो 'श्वेतांबरी' (रू. भे.)

सैतंबट-स. पु.—पानी, जल। (ना. डिं. को.)

सैत-क्रि. वि.—प्रत्यक्ष।

उ०—दिसौ सैत दरदान नू परमेसरि प्रगताव। राजानांरी रस-रचा जिणि रहि वात बणाव।—रा. सा. सं.

वि.—सहित, साथ।

स. पु.—१ आकाश, नभ। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

३ देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सैत [illegible] न [illegible] हिय [illegible] न [illegible]। [illegible] चवदयौ राव हुवत जंपियै सरोवह।—नैणसी

४ देखो 'सेतु' (रू. भे.)

उ०—वाराधिप सेतां बंधण री, कुळ राक्स जूथ निकंदण री। दिल तूं 'किसना' जग वंदण री, नहचौ रख कोसदळ नंदण री।

—र. ज. प्र.

५ देखो 'स्वेत' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ मैलो अत अदतार मन, रुच जस तणी रहै न। तन काळी विसहर तणी, कंचुक सेत सहै न।—बां. दा.

उ०—२ क्षण राता क्षण पीअला, क्षण नीला क्षण सेत। चोली चरणा पालटइ, हैडउं पूछी हेत।—मा. कां. प्र.

उ०—३ तन घण घटा तराज, धरर धर वाज तिळक धन। पंत दंत बक पाज, वरण सोभाज सेत बन।—सू. प्र.

उ०—४ चौरंग खग असुर विहंडिया चतुरै, करी न ऐसी दुजै अचड़ कंहीं। वामण सेत लाल रंग वेणियौ, नागणि तन ओळखै नहीं।—चतुरा राठौड़ री गीत

उ०—५ प्यारी तेरै रूप की, उपमा कही न जाय। कंवळ सेत तडता चपळ, चंद सकळक कहाय।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ साजन ऐसी प्रीत कर, निस अर चंदै हेत। चंदै विन निस सांवळी, निस विन चंदो सेत।—अग्यात

उ०—७ ज्यांरी जीभ न ऊपड़ै, सेणां मांही सेत। वांरां कर किम ऊपड़ै, खळा घिरयां विच खेत।—बां. दा

उ०—८ अनि आया असपति आवाहनि, भुअवै भुयंग हुआ दळ भग। रहियौ रेण खत्री अ्रम रांणी, सेत उरग कळीधर 'संग'।

—गोरधन बोगसौ

उ०—९ नमो रूप सेत सवै गुण सेस, नवै-कुळ-नाग पयाळ नरेस।

—ह. र.

उ०—१० उतंग नग भीत चीत, मंड मंड मंदरं। कळी सपेत जाणि सेत, धार धम्मलागिरं।—गु. रू. वं.

रू. भे.—सैत, सैद।

सेतअस, सतअसव, सेतअस्व-सं. पु. [सं. श्वेताश्व] अर्जुन।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

सेतकरण-सं. पु. [स. श्वेत+किरण] चन्द्रमा। (डिं. को.)

सेतकुळी-सं. पु. [सं. श्वेत+कुलीन] सर्पों के आठ कुलों में 'सेत' कुल का सर्प जो सफेद होता है।

सेतखांनो-सं. पु. [फा. सेहतखान:] मल त्याग करने का स्थान, शौचालय, पाखाना।

उ०—१ सेतखांना रै मांय, कोई भगी कहै बतलाय। आवौ पग धरौ ए, सोसूं बातां करौ ए।—जयवांणी

उ०—२ घड़ी एक नूं जागिया बडारण लोटौ रखियौ आप ऊठ सेतखांनै गया।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—सहतखानौ, सेतिखांनौ, सेथखांनौ, सेदखांनौ, सेहतखांनौ,

सैंदखांनौ।

सेततरंग–स. स्त्री. [सं. श्वेत+तरंग] गंगा नदी। (अ. मा.)

सेतदंती–सं. पु. [सं. श्वेत+दंतिन्] सफेद हाथी।

सेतद्युत–सं. पु. [सं. श्वेत+द्युति] चन्द्रमा। (डि. को.)

सेतधज–सं. पु. [सं. श्वेत+ध्वज] १ श्वेत ध्वजा।

२ जिसके रथ पर श्वेत ध्वजा हो।

सेतपिंग–सं. पु. [सं. श्वेत+पिङ्ग] शेर, सिंह।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

सेतबंद—देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.)

सेतबंद-रांमेसर– देखो 'सेतुबंध-रांमेसर' (रू. भे.)

सेतबंध—देखो 'सेतुबंध' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ कुंकण कंनवज नइ कलहटौ, मरहठ नइ मुलवारी। स्यंछळ सेतबंध नौ राजा, तैं सविनीया हकारी।

—रुकमणी मंगळ

उ०—२ छाजां मेर स्रंग रूप बाजां सपतास छतौ, पाजां सेतबंध वाजां दुंदभी प्रमांण। साजां सूर राजां जेण सकाजां आजरां सिंध, आजां ओप चाढ रूप राजां चहुवांण।

—राव बखतसिंघ चुवांण रौ गीत

सेतबंध-रांमेस, सेतबंध-रांमेसर, सेतबंध-रांमेस्वर—देखो 'सेतुबंध-रांमेसर' (रू. भे.)

उ०—१ कंकण दांमण सघण काछ पंचाळ निरंतर, सेतबंध-रांमेस लगै नव दीपां सायर। झाड़खंड मेवाड़ खंड गुज्जर वैरागर। वागड़ महियड़ सहित खेड़ पावट पारक्कर।—नैणसी

उ०—२ सेतबंध रांमेस्वर सुणीइ, वांनरि बांधी पाज। वरतइ आंण तिहां जण माहरा, इमूं अम्हारू राज।—कां दे. प्र.

सेतवळ–सं. पु.—जल, पानी। (ना. डि. को.)

सेतवाह–सं. पु. [सं. श्वेत+वाहन] १ अर्जुन। (डिं. को.)

२ चन्द्रमा। (डि. को.)

रू. भे.—सेतवाह।

सेतरंग–सं. पु. [सं. श्वेत+रंग] सफेद रंग, श्वेत रंग।

उ०—दिखण ऊथाळ 'जसराज' जिसड़ा दुरस, प्रकासै लाल झंडा वरण पूर। राखतां दिखण सरणै सुजस सेतरंग, सरस बाधी भुजा अभनमा 'सूर'।—महाराजा मांनसिंहजी रौ गीत

सेतरंगी–सं. स्त्री. [सं. श्वेतरंग+रा. प्रा. ई.] कीर्ति, यश। (डि. को.)

सेतरूंख–स. पु. [सं. श्वेत+वृक्ष] चन्दन का वृक्ष। (ह. नां. मा.)

सेतळ—१ देखो 'सैंतळ' (रू. भे.)

२ देखो 'सैतळ' (रू. भे.)

सेतलै–सं. पु.—श्वेत रंग का घोड़ा।

उ०—१ प्राखिड़ियां पूछाड़िसै, पिंडता निहिं पिछांण। साहिब चढिसै सेतलै, हुइसै निगुरां हांणि।—पी. ग्रं.

उ०—२ सत धरम तणौ कजि आव वड़ा छत्त, ग्यांन रहौ गति-वाळौ ग्रांमि। गिर भाखर वाळा गोसांई, सेतलै चढि प्रिथिमी'रा सांमी।—पी. ग्रं.

वि. वि.—ऐसा कहा जाता है कि कल्कि अवतार श्वेत घोड़े पर सवारी करेगा।

रू. भे.—सेतिलौ।

सेतवाजौ–सं. पु.—एक अद्‌भुत पदार्थ जो सिद्धि प्राप्त पुरुषों के पास मिलता है।

सेतवाह—देखो 'सेतवाह' (रू. भे.)

सेतांबर—देखो 'स्वेतांबर' (रू. भे.)

सेतांबरी—स्वेतांबरी' (रू. भे.)

सेतिखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

उ०—रात घड़ी चार रही तरै जगदेवजी नै जगाया। सेतिखांनै गया। हाथ पग ऊजिळा करि, कुरळा करि दांतण कीनौं।

—जगदेव पंवार री बात

सेतिलौ—देखो 'सेतलौ' (रू. भे.)

उ०—प्रवाड़ां तणी लेखौ किसौ प्रमेसर, नरिंदि घोडै सेतिलै निभै नर।—पी. ग्रं.

सेती–क्रि. वि.—१ से।

उ०—१ सिवदांन 'भीमाजळ' 'करनेस' आद। राह खेती रखवाळै साह सेती वाद।—रा. रू.

उ०—२ वीदौ गुहिलोत भारमल आसाइच त्यांह नूं कहियौ त्यूं करौ ज्यूं दळपतकुंवर सेती वेढ़ि हुवै।—द. वि.

उ०—३ जनहरीया निसदिन भजौ, रसनां सेती रांम। नांव विनां नर निफल है, ज्युं वसती विन गांम।—अनुभववांणी

२ सहित, पूर्वक।

उ०—१ इण भांति महीना च्यार तौ सुख सेती बिताइया।

—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ इण भांति धणी खरी करुणा सेती हाथ जोड़ नमस्कार कर आगा हालिया।—पलक दरियाव री बात

उ०—३ इण भांति प्रेम सेती कागज लिखनै बडारण सूं कही जै इतर लगाय पछै खांम कर थैली रै मांही घाल और प्रोहित नूं दे देय।—कुंवरसी सांखला री वारता

३ को।

उ०—१ जै सतगुर सेती वंदीयै, धरीयै हरि कौ ध्यांन। हरीया जब तैं पाईयै, परापरी कौ ग्यांन।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया मारग अगम की, मौ सेती गम नांहि। कहि कैसी विध पाईयै, चित गयौ ता मांहि।—अनुभववांणी

उ०—४ चांवड सेती भैंसा चाड़ै, भलौ आपणौ चाहै। जुगमैं जीव दया विन देख्यां, सांईकै नहीं राहै।—अनुभववांणी

४ लिये, वास्ते, प्रति।

उ०—१ हरीया सोई सूंदरी, हरि सेती हितकार। ताहि वदूं नहीं

[illegible], मन [illegible] संसार ।—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] सेती नित्त । हरीया [illegible] मैं, [illegible] नित ।—अनुभववांणी

५ [illegible], मार्तंड, [illegible] ।

उ०—१ [illegible] कुरी, [illegible] उतरी व्है आगै । वध्यो [illegible], [illegible] सेती [illegible] ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ प्रथम [illegible] सिव जानि, नांव पारवती दीयौ । ता सेती [illegible], [illegible] मर्त [illegible] । दै नारद उपदेस, नांव सिनकादिक [illegible], गुर नैं [illegible] विदेह, पीव उर मांहि पिछांन्यौ ।

—अनुभववांणी

६ से ।

उ०—[illegible] सेती माळा फिरै, मन विखीया कै मांहि । हरीया [illegible] मैं, [illegible] पड़ै कुछि नांहि ।—अनुभववांणी

७ सग, साथ, निकट ।

उ०—१ [illegible] सेती रचीयै, क्या वहतां सु कांम । भाव जहां [illegible] बोलीयै, वै भावन बेकांम ।—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] माया सेती जु मिल्यौ तै जीवात्मा (अर) माया [illegible] जु भिन रह्यौ तै परमात्मा ।—द. वि.

उ०—३ हरीया चलतां सु चलै, थिर सेतो थिर होय । काया वधी करम सु, छाया निर्प न कोय ।—अनुभववांणी

८ पर ।

उ०—हरीया अंदर ऊपजै, ऐसा निकसै बैंन । मिळीयां सेती मन [illegible], यो दुरजन यो सैन ।—अनुभववांणी

९ नीचे ।

उ०—रांम नांम नहीं चेतीयो, करी विडांणी आस । जनहरीया घर गोरियै, गरिक्यां सेती वास ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सेथी ।

सेतीर, सें'तीर—देखो 'सहतीर' ।

सेतु-सं. पु. [सं.] १ किसी नदी, जलाशय, नहर या समुद्र के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पानी के ऊपर बनाया हुआ पुल, किसी प्रकार का रास्ता जिसके द्वारा एक किनारे से दूसरे किनारे आसानी से आया-जाया जा सके ।

२ पानी के बहाव को रोकने के लिये तथा पानी को एकत्र कर रखने के लिये बनाया हुआ बांध, रोक, रुकावट ।

३ घाटी, दर्रा ।

४ बंधन, प्रतिबंध ।

५ [illegible] ।

६ [illegible] ।

७ [illegible], [illegible] ।

८ सीमा, मर्यादा ।

९ किसी कार्य की कोई निर्धारित विधि, प्रणाली, नियम ।

१० ओंकार, प्रणव ।

रू. भे.—सैंत, सेतु ।

सेतुक-सं. पु. [सं.] १ पुल, सेतु ।

२ बांध ।

३ घाटी, दर्रा ।

सेतुज—देखो 'सेत्रुंज' (रू. भे.)

उ०—सेतुंज वंदिअ तीरथराउ, गुरुया गणहग करउ पसाउ । वाग वांणि हउं समरउं देवि, चिहुं गति गमण कहउं संखेवि ।

—वस्तिग

सेतुबंध-सं. पु. [सं.] दक्षिणी भारत में रामेश्वरम् के आगे लंका की ओर समुद्र में बना पथरीला मार्ग या पुल जिसके लिये ऐसा माना जाता है कि लंका पर चढ़ाई के समय श्रीरामचन्द्रजी ने इस पुल का निर्माण नल-नील नामक वानरों से करवाया था ।

२ रामेश्वर, महादेव ।

उ०—सेतुबंध सिव नै भजां, परमेस्वरजी । ए भोळा भगवंत ईस्वरजी । आप हळाहळ पी गया परमेस्वरजी, औरां नै अमरत पाय, ईस्वरजी ।—गी. रां.

३ द्वादश शिवलिंग में से एक ।

४ ईश्वर, परमेश्वर । (नां. मा.)

५ पुल की बनावट ।

६ पुल बनाने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—सेत, सेतबंद, सेतबंध ।

सेतुबंध, सेतुबंधन-सं. पु. [सं.] पुल बनाने का कार्य ।

सेतुबंध-रांमेसर, सेतुबंध-रांमेस्वर-सं. पु. [सं. सेतुबंध+रामेश्वर] भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित वह स्थान जहां शिव का विशाल मन्दिर है । इस शिव मन्दिर की स्थापना श्रीरामचन्द्रजी ने लंका पर चढ़ाई करते समय की थी और इसके आगे समुद्र में पुल का निर्माण करवाया था । यह हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है ।

उ०—जगंनाथ गंगासागर हैं, साखी गुपाळ व्रजवासी । सेतुबंध-रांमेस्वर ईस्वर, मूळ बटी सुरजा सी ।—मीरां

रू. भे.—सेतबंद-रांमेसर, सेतबंध-रांमेस, सेतबंध-रांमेसर, सेतबंध-रांमेस्वर ।

सेतूत—देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सेतौ-वि.—सहित, पूर्वक ।

उ०—१ खळां भांजणो मांण कैवांण साहै खवां । सुहांणै आपरै मांण सेतौ ।—द. दा.

उ०—२ लर्ग मूळ सिंदूर री भोक सेतौ, अज्यौ मात औहाथ री नोक सेतौ ।—मे. म.

सेत्तुंजि, सेत्रंज—देखो 'सेत्रुंज' (रू. भे.)

उ०—प्रह ऊठी नै नित प्रणमीजइ, तीरथ **सेत्तुंजि** प्रमुख प्रधांन ।
—स. कु.

सेत्र–सं. पु. [सं. श्वेत, प्रा. सेग्र, ग्रप. सेत्त] १ श्वेत, सफेद ।

उ०—कडि मरिण मेहल नूंपर, रूप रहावइं पाय । पहरणि **सेत्र** पटउलीय, कूलीय पांन न माइ ।—जयसेखरसूरि

२ देखो 'खेत' ।

३ देखो 'खेत्र' ।

सेत्रुंज, सेत्रुंजय, सेत्रुंजि, सेत्रुंजौ–सं. पु. [सं. शत्रुंजय] जैनियों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान, शत्रुंजय ।

उ०—१ राजा मन ग्राणंदीयौ रे, रांमति जीपैं एह । सुणि पंथी **सेत्रुंज** नी रे, रांमति जीपैं जेह ।—प. च. चौ.

उ०—२ इति स्त्री **सेत्रुंजय** स्तवनं संपूरणम् ।—वृ. स्त.

उ०—३ सी **सेत्रुंजि** गिरि सिखर समोसरचा, त्रेवीस तीरथंकर स्त्रीग्ररिहंत । ग्राठ करम नउं ग्रंत करी नइ, सीधा मुनिवर कोड़ि ग्रनत ।—स. कु.

उ०—४ **सेत्रुंजा** सिखरै मन लागौ, साहिबनी सूरति चित लागौ ।
—वि. कु.

उ०—५ तठा पछै कितरै हेक दिनै ऐ सोरठ नूं गया । **सेत्रूंजा** सूं कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै ।—नैणसी

रू. भे.—सेतुंज, सेत्तुंजि, सेत्रंज, सैत्रुंज, सैत्रुंजौ ।

सेयखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सेथर–वि. [सं. स्थिर] १ स्थिर, ग्रचंचल ।

२ दृढ़, मजबूत ।

सेथी—देखो 'सेती' (रू. भे.)

सेद–क्रि. वि.—ठीक निकट ।

उ०—वैसाख सुद ५ कांनी लाखण कोहर री **सेद** तळाई डेरा हुवा । भाः लालचद सीवांणा रौ साथ ग्रादमी ८०० नै ग्रायौ ।
—नैणसी

सं. पु.—तरह, प्रकार ।

उ०—जिकां री मूडहथ मोहनाळ, हाथ भर नस, वड़ रै पांन जिसा कांन, ताजणा **सेद** पूंछ, नाहरसा पंजा ।·······—रा. सा. सं.

सेदखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

उ०—स्त्रीमुख सिड़ै **सेदखांना** जिसौ, नाक भरै ज्यूं नारदौ । भव जांणा नरक भोगै जकांनै, लांनत दै ललकार दौ ।—ऊ. का.

सेदज—देखो 'स्वेदज' (रू. भे.)

सेदेव, से'देव' सदेव—देखो 'सहदेव' (रू. भे.)

उ०—देवी कुंति रै रूप तै करण कीधा, देवी सासत्रां रूप **सेदेव** सीधा ।—देवि

सेध–सं. पु.—१ काम, कार्य ।

उ०—भड़ां दुवाहां वंकड़ां, हुई सनाहां सत्थि । **सेध** निवाहां सूरमां, राहां वेध ग्ररत्थि ।—रा. रू.

२ सिद्धि ।

उ०—ग्राखै 'भींव' भडां ग्राहाड़ां, मोटी **सेध** खटी मेवाड़ां । सू जुध वंध कमंधां साथै, भिड़िया जोड़ भला भाराथै ।—रा. रू.

सेधणौ, सेधबौ–क्रि. स.—कार्य साधना, कार्य सिद्ध करना, उद्देश्य पूर्ति करना ।

उ०—करण निवेधी वेघड़ा, **सेधी** सांम छळांह । ग्रस तौरै सांम्हा किया, फौरै सेल फळांह ।—रा. रू.

सेधाळ–वि.—कार्य सिद्धि करने वाला, यशस्वी ।

उ०—वडौ देवोत मांगीगर हुवौ कवि राव, भाट लोगां नूं घणा दांन, मांन दीन्हा, वडौ ही **सेधाळ** राजसधारी सिद्धिवंत हुवौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सेधियोड़ौ–भू. का. कृ.—कार्य सिद्धि किया हुग्रा, उद्देश्य पूर्ति किया हुग्रा ।

(स्त्री. सेधियोड़ी)

सेन–सं. पु. [सं.] १ नाई जाति का एक भक्त । (भक्तमाळ)

उ०—**सेना** काज भयै हरि नाई, भगत ग्रापनौ जांनी ।
—ग्रनुभववांणी

उ०—२ '**सेन**' लागौ संत सेवा, भाव धर उर भूर । रूप धर कर **सेन** कौ हरि, करी दुविधा दूर ।—भगतमाळ

२ वंगाल का एक राजवंश जिसने ११ वीं से १५ वीं शताव्दी तक राज्य किया था ।

३ नाई जाति ।

४ प्राचीन भारतीय व्यक्तियों के नाम के पीछे लगने वाला एक शव्द ।

५ दिगम्वर जैन साधुग्रों का एक भेद ।

६ वंगाल की वैद्य जाति का खिताव ।

७ तन, शरीर ।

८ जीवन ।

९ शयन, विछौना, शय्या ।

वि.—१ जिसका कोई प्रभु हो, सनाथ ।

२ ग्राश्रित, ग्रधीन ।

३ देखो 'सेना' (रू. भे.) (ग्र. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—पारस प्रासाद **सेन** संपेखै, जांणि मयंक कि जळहरी । मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रूमाळा संकर धरी ।—वेलि

उ०—२ चढै **सेन** चतुरंग, सपत किरि साइर फट्टां । एक लाख ग्रसवार, ग्रावि मेवाड निहट्टां ।—गु. रू. वं.

उ०—३ साथ निहाव थयौ नीसांणौ, जग सांमंद्र मथांणौ । मुग्गळ तुंग चढै ससमाथां, **सेन** हडव्वड़ एकण साथां ।—रा. रू.

४ देखो 'सैन' (रू. भे.)

उ०—१ कंचन एक काच मैं देख्या, है दीपक देह मांई । सुरत

[illegible] री सहुना [illegible], मजबूत सेन बनाई। सेन समझ कै साहब [illegible] को [illegible], हरिराम वैरागी बोलै, है सब मैं सबसूं [illegible]।—[illegible] महाराज

उ०—३ [illegible] नू नींद मैं पड़ग्या सेन री करै है।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ देखो 'सैन' (रू. भे.)

उ०—सैन की सुनैन मैं गमावनी सह्यो। सेन साथ नैन को गमावनों रह्यो।—ऊ. का

६ देखो 'स्येन' (रू. भे.)

सेनद-सं. पु. [सं. सेनापति] १ सेनापति। (डि. को.)

२ देखो 'सैनप' (रू. भे.)

सेनपत, सेनपति, सेनपती—देखो 'सेनापति' (रू. भे.)

उ०—अभंग वजीर राजा विरद, भारथ ओटवि उभै भुग्र। सुरतांण सुरम दळ सेनपति, 'बीकम' खंड विहंड हुग्र।—गु. रू. बं.

सेनसुर—देखो 'सुरसेना' (रू. भे.)

सेनांण, सैनांण—देखो 'सैनाण, सैनांण' (रू. भे.)

उ०—१ नीचै मसीरा रै बीजां जिसी छोटी दो आंख्यां। आंख्यां ती कांई, आस्या रा दो सेनांण।—फुलवाड़ी

उ०—२ निरभय नीसाणां नद सेनांणां। जन उमरेस जयंदा है।

—ऊ. का.

२ देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

सेनांणी, सेनांणी—१ देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सैनांण' (रू. भे.)

सेनांणू—देखो 'सैनाण' (रू. भे.)

उ०—वपु ती म्यांन समान वखांणू, मार सनांन जीव सेनांणू।

—ऊ. का.

सेनांनायक—देखो 'सेनानायक' (रू. भे.)

(अ. मा; डि. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

सेनांनी—देखो 'सेनानी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेनांनीरथ-सं. पु. यौ. [सं. सेनानीरथ] १ मोर, मयूर। (अ. मा.)

२ सेनापति का रथ।

सेना-सं. स्त्री. [सं.] १ युद्ध के लिये प्रशिक्षित तथा शस्त्रास्त्र से सज्जित मनुष्यों का दल, समूह, फौज, वाहिनी, कटक।

(डि. को.)

उ०—सेना सितर हजार सूं विचित्र अमित बळवांन। कियौ विदा नृप [illegible], मुदै [illegible]।—रा. रू.

वि. वि.—प्राचीन समय में भारतीय युद्ध कला में इसके चार अंग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज (हाथी), रथ। वर्तमान समय में मुख्यतः तीन प्रकार की सेना होती है—स्थल सेना, जल सेना, वायु सेना। इनके कई उपविभाग भी होते हैं।

२ सेना की अधिष्ठात्री देवी जो कार्तिकेय की पत्नी मानी जाती है।

३ जैनियों की एक देवी विशेष।

उ०—सेना मात कूंखि मांनस सर, राज हंस लीला राजेसर।

—स. कु.

रू. भे.—सेन, सेन्या, सैना, सैन, सैनया, सैंना, सैन्या।

सेनाउलि-सं. स्त्री. [सं. सेना+अवलि] १ फौज की कतार, सेना की पंक्ति।

२ सेना, फौज।

सेनाद, सेनादार-सं. पु.—फौज का अफसर, सेनानायक, सेनापति।

उ०—मिळ रजी दहूं दळां अप्रमांण, जिण वार सेसट चौवी मुजांण। सेनाद हुवा जाव जस काज, अत हरख सूर कायर अकाज।—शि. रू.

सेनाधपत, सेनाधपति, सेनाधिप, सेनाधिपत, सेनाधिपति-सं. पु. [सं. सेना+अधिपति] सेना का अधिपति, सेनापति।

उ०—१ सहू विन्नायत एक सथ, एकै इंगळ ईस। 'पती' कमध सेनाधपत, आगळ फौज अधीस।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ तरै राव गांगै राठौड़ जैताजी नुं कहनै कूंपाजी नुं रावजी वसाया। पछै वळै रावजी रै कूंपोजी सेनाधिपत हुवा।

—राव मालदेव री वात

उ०—३ सहतैररि तावीन समप्पे, सेनाधपति सेन मझि थप्पे।

—गु. रू. बं.

सेनानायक-स. पु. [सं.] सेना का अधिकारी, सेनापति।

रू. भे.—सेनांनायक।

सेनानी-सं. पु. [सं. सेनानी] १ स्वामिकार्त्तिकेय। (ह. नां. मा.)

२ सेनापति, सेनाध्यक्ष।

उ०—१ सांमंत सूरा सुहुड घणा, हय गय सख्य न पार। सेनानी साहसिक भट, मंत्रेस्वर सुविचार।—मा. कां. प्र.

उ०—२ ध्रस्टद्युमनु सेनानी कीउ, बीजउ कन्हडदल सांमह्यउ। पवित्र भूमि सरसति नइ स्रोत्रि, दलु आवाठउं तिणि कुरुखेत्रि।

—सालिभद्र सूरि

सेनानीरथ-सं. पु.—मोर, मयूर। (अ. मा.)

सेनापत, सेनापति, सेनापती-सं. पु. [सं. सेनापति] १ सेना का प्रधान अधिकारी, सेनाध्यक्ष, फौज का प्रमुख अफसर।

उ०—१ सेनापति दूजी सगह, तई पह तिण वार। विसम भणां लीधो 'बीजो' आयो मंत्री उदार।—सू. प्र.

उ०—२ लहै अंगद दक्खणां, माग लीधा, दवादस्स सेनापती, लार, दीधा।—सू. प्र.

२ सेना के किसी एक विभाग का अधिकारी।

३ शिव।

४ हिन्दी साहित्य का एक कवि।

रू. भे.—सेणावइ, सेनपत, सेनपति, सेनपती, सैनपति, सैनपती।

सेनापाल-सं. पु.—सेनापति, सेनानायक।

सेनावेध–सं. पु.—सुभट, वीर, योद्धा। (डि. को.)

सेनामुख–सं पु.—सेना का अग्र भाग, हरावल।

सेनाय—देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

सेनायची—देखो 'सहनायची' (रू. भे.)

सेनावास–सं. पु.—सैन्य-शिविर, छावनी, सेना का पड़ाव।

सेनियौ–सं. पु.—सिपाही, सैनिक।

सेनी–सं पु.—सहदेव का एक नाम जो विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय रक्खा गया था।

सेनेस–स. पु. [सं. सेना+ईश] १ सेना का मालिक।

२ सेनापति।

सेन्या—देखो 'सेना' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ मेलै दुरजणसल भाटी, असुरां **सेन्या** रहै उचाटी। —रा. रू.

उ०—२ हरनाथ 'भीमंग' रु भीम का अवतार, जवन की **सेन्या** कुरु वंस ज्यां लिगार।—रा. रू.

उ०—३ स्रीमाहादेवीजी री अग्या सुं कंकर सब संकर हुवा सु प्रीत रौ इक भाखर मै सारा लिंगाकार रा दरसण हुवा, तरै **सेन्या** सारी नै दरसण हुवा।—नैणसी

सेपटा–सं. पु.—चौहान राजपूत वंश की एक शाखा।

उ०—चहुवांणां री चोईस साख लिखंतै—हाडौ १, खीची २ सोनगरौ ३, वाली ४, सोभादार ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवांण ९, वाकुर १०, चील ११, थेथा १२, दूंदळोत १३, **सेपटा** १४, गरावा·······—वां. दा. ख्यात

सेपटौ–स. पु.—चौहानों की 'सेपटा' शाखा का व्यक्ति।

उ०—ताहरां मेलौ **सेपटौ** भाद्राजण रै कांठै रहै।—नैणसी

रू. भे.—सेभटौ।

सेफ–सं स्त्री.—एक प्रकार की तलवार।

उ०—सू तरवारचां किण भांतरी छै? सीरोही री नीपनी, वेग्रां आंगळां वाढ झेरिया थकां जनैव मगरेब पुड़तकाळ **सेफ** विलायती भुजरी विरांणपुरी हवसांनी फिरंगी।—रा. सा. सं.

सेब–सं. स्त्री.—१ शीत लहर।

उ०—मेघवाळां रौ वास, ऊंचावै माथै घर अर राज रै कोटवाळ री तिरवारी मैं दिवलौ चस ्यौ है। उघाड़ वारणां सूं **सेब** आवै मारजा भेळा भेळा हुवै है।—दसदोख

२ देखो 'सेंव' (रू. भे.)

सेबक—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै आय सव्वासण्यां रायजादी, दरस्सै कई **सेबकां** माय दादी।—मे. म.

सेबळौ–सं. पु.—रास्ते का खर्च, संबल।

उ०—वरस दीहां को **सेबळौ**, घी घणौ खाज्यौ पगाहपरांण। —वी. दे.

सेबू—देखो 'सेंव' (रू. भे.)

उ०—वेदांनै दाखां वेदांनै अनार। चिलकौचै वेह और **सेवूं** का विस्तार। कपूर-गरभ केळी का जूथ केळू की भूंब।—सू. प्र.

सेभटउ—देखो 'सेपटौ' (रू. भे.)

उ०—जइत देवडउ लखण **सेभटउ**, लूणकरण बोलाव्या। साल्हु सोभतु बळवंत राउत, लसकर भणी चलाव्या।—कां. दे. प्र.

सेमंती–सं. पु. [सं.] सफेद गुलाव।

सेमळ, सेमल–सं. पु.—एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसके लाल-लाल फूल लगते हैं और फल में केवल रूई होती है, गूदा नहीं होता।

उ०—दादू जतन जतन कर राखियै, द्रढ गह आत्मा मूळ। दूजा द्रस्टि न देखियै, सवही **सेमल** फूल।—दादूवांणी

२ उक्त पेड़ का फल जिसमें केवल रूई होती है गूदा नहीं। इसमें चोंच मारने वाले पक्षी का परिश्रम व्यर्थ जाता है क्योंकि उसके हाथ कुछ नहीं लगता।

उ०—जब लग प्रांण पिंड है नीका, तब लग ताहि जनि भूलै। यहु संसार **सेमल** कै सुख ज्यौं, तापर तूं जनि फूलै।—दादूवांणी

रू. भे.—सैंबळ, सैमळ, सैमल।

सेमांन—देखो 'सांमांन' (रू. भे.)

उ०—और गढ मैं चोकेळाव मैं वेरौ भाखर मैं सुरंगां सुं खोदाय करायौ नै ऊपर अरठ मंडायौ नै दोय कोठार वाग मैं **सेमांन** रा कराया·······।—मारवाड़ की ख्यात

सेमुंडे, सेमुंडै—देखो 'सेमूंडै' (रू. भे.)

सेमुंदौ—देखो 'सेमूंदौ' (रू. भे.)

उ०—इण परिग्रह रै कारणै ए, वाढी डोढी खाय कै। कोइक इसड़ौ मिलेए, **सेमुंदा** ही गिल जाय कै।—जयवांणी

सेमूंडे, सेमूंडै–क्रि. वि.—१ प्रत्यक्ष, सामने, मुंह के आगे।

२ रुजु, रूवरू।

३ आमने-सामने।

४ मौजूदगी में, उपस्थित रहते हुऐ।

रू. भे.—सेमुंडे, सेमुंडै।

सेमूंदौ–वि. [सं. समुदित] (स्त्री. सेमूंदी) समस्त, सम्पूर्ण, समूचा, सवका, सब।

उ०—हाल नीं तौ म्हैं मरियौ अर नीं म्हारी कारीगरी मरी। पूतळी नै **सेमूंदी** गाळ ऐड़ी पाछी वणावूं कै जांणै फूफोजी परतख मूंडै वोलण लागा।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सेमुंदौ, सैंमुदौ, सैमूंदौ, सैमूदौ।

सेमूळौ–वि. [सं. समूल] (स्त्री. सेमूळी) १ मूल या जड़ सहित।

२ सम्पूर्ण, सब, समस्त।

सेयं, सेय—देखो 'स्रेय' (रू. भे.)

उ०—१ छौरू छत्रपतिवां तणा, दोळा **सेय** दुबाह। न्रप सगाह दीठौ 'अजै', साह तणी दरगाह।—रा. रू.

उ०—२ ज सेदं न समावरै ।—जैन

सेअर-सं पु [अं शेयर] हिस्सा, भाग, अंश ।

सेअर-होल्डर-सं पु. [अं.] हिस्सेदार, भागीदार ।

सेअनी- देखो 'सेही' (अल्पा; रू. भे.) (डि को.)

सेयग्र-सं पु.—धर्म । (अ. मा.)

सेर-सं पु. [सं. सेरः] १ सोलह छटांक या अस्सी तोले का एक मान या तोल ।

उ०—कृपण मनोरथ करै नही, सौ मण जांणै सेर । कर टांकी लै काटही, सुपना मांहि सुमेर ।—बां. दा.

२ उपर्युक्त मान का तौल, बाट या पात्र ।

उ०- कोरै सारै—माया तेरा तीन नांव, फरसियौ, फरसौ अर फरसरांम । नारना दिन भूलग्यौ । सेर री हांडी मैं सवासेर ऊरीजग्यौ । फाटण लागग्यौ ।—दसदोख

३ किसी वस्तु की उक्त मान के बराबर की मात्रा ।

उ०—१ उहां तौ विचार कांम कीयौ छै, जौ आंधी बेटी नु सेर धांन ऊ देसी । सौ म्हारै सिर माथै । आ किसी बात छै ! चालौ, डेरै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जद साधां उपदेस दियौ—सेर धांन खाणौ पड़ै तिण रै अरथै इसा पाप करै । जद कसाइ बोल्यौ—मोनैं तौ भगवांन कसाइ रै घरै मेल्यौ है सौ मोनैं दोख नहीं ।—भि. द्र.

[फा. शे'र] (स्त्री. सेरणी, सेरनी) ४ सिंघ, शेर, व्याघ्र ।

उ०— १ दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जौ लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वांकडौ बीटीयौ दूजां गढां भौळौ, लोहां जाळ घसै केहो नसैंणी लगाय ।—बां. दा.

उ०—२ दुहाड़त सेर हल्यारण धीठ, देव्यां कर चक्र चल्या अणदीठ ।—मे. म.

उ०—३ सिरी घटियाळ अरोहित सेर । मरयां मुक्ताहळ माळ सुमेर ।—मे. म.

५ उर्दू या फारसी कविता के दो चरण या दो चरण का कोई छन्द ।

वि.—वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा ।

उ०—गोपाळदास गरूअत मेर, पर धड विभाड पक्खरह सेर । 'मंदर' सुतन्न सात्रवां सल्ल, मरजाद महा नेठाह-मल्ल ।

—गु. रू. बं.

सेरगीर-सं. पु. [सं. शेरगीर] एक प्रकार का हाथी विशेष ।

सेरड़ौ-स. पु.—एक प्रकार का कर विशेष ।

उ०—कणवारीयां नै लागै । पेटीयौ आटौ घीरत पावै । भोग वण १) सेरड़ा, ताली १ दुगोणी ६, वंटै जाई दुगोणी ३, लवायचै रा दु० २) छूट नवै धांन री दु० बोरा २) छूटा ।—नैणसी

सेरण-सं. स्त्री.—राजस्थान व मध्यप्रदेश के पहाड़ी हिस्सों में पाई जाने वाली एक घास विशेष ।

सेरणी—१ देखो 'सीरणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सेर' (रू. भे.)

सेरणौ—देखो 'सैरीणौ' (रू. भे.)

सेरदहां, सेरदां-सं. स्त्री [फा.] १ पुराणे ढंग की एक बन्दूक विशेष ।

२ एक प्रकार की तोप ।

उ०—हणू हाक चामंड फतैलस्कर काळिक्का, सिभुवांण सेरदां कड़क बीजळी किलक्का ।—रा. रू

वि.—शेर के समान मुख वाला ।

सेरपंजौ-सं. पु.—१ सिंह का पंजा ।

२ सिंह के पंजे के आकार का एक अस्त्र, बघनखा ।

सेरबच्चौ-सं. पु.—१ शेर का बच्चा, सिंह शावक ।

२ वीर पुरुष ।

३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक जिसकी एक ही गोली से शेर का शिकार हो जाता था ।

उ०—सेरबच्चा करावीणी खजर कटार, सिरोही असील तेग बाहैं असवार ।—शि. वं.

सेरबबर-सं. पु.—केसरीसिंह, बब्बरशेर ।

सेरवांनी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का कोट जो घुटनों तक लम्बा एवं नीचा होता है, चोगा, अंगा ।

सेरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू. भे.)

सेराह, सेराहौ-सं. पु. [सं. सेराहः] दूध के समान सफेद रंग का घोड़ा। (डि. को.)

उ०—१ रोझौ निलौ गंगाजळ, हंसला नैण काजळ । अस सेराहा अऊब, खैंग रोहला हाबूब ।—गु. रू. वं.

उ०—२ पांणीपंथा । ऊराहा । सेराहा । कालीकंठा । किहाडा । करडा । करडागर । नीलडा ।—कां. दे. प्र.

रू. भे.—सेरुराह, सेरूराह ।

सेरि—देखो 'सेरी' (रू. भे.)

सेरियौ-सं. पु.—खेतों की मेंढ के बीच का तंग रास्ता ।

उ०—१ चांमड़ियास रै मारग करभावा रै सेरियौ बीजी तरफ रांमासणी री मीठवांणियौ छै । सांगबी मुहता री टीबड़ी अठै छै ।—सोजत रै मंडल री बात

उ०—२ पै'ली पनजी चव्हांण रौ वेरौ आवैला अर पछ अरणां वाळौ सेरियौ । लांबा सेरिया रे दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा ।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सेरीयौ, सैरियौ ।

सेरी-सं. स्त्री.—१ वीथिका, गली, तंग रास्ता । (अ. मा.)

उ०—सिंधु परइ सउ जोयणां खिवियां बीजुळियांह । ढोलउ नरवर सेरियां, वण पूगळ गळियांह ।—ढो. मा.

२ मार्ग, रास्ता ।

उ०—१ महारांणी नै ओड़ौ देवण री सगळी सेरियां यैं थांरै

हाथां ई वंद करदी ही, अबै थैं चावौ तौ ई वैं खुल नीं सकै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ समरथ सौ सेरी समझाइ नैं, कर अण करता होइ। घट घट व्यापक पूर सब, रहै निरंतर सोइ।—दादूवांणी

३ वह छोटा गुप्त मार्ग जो प्रायः छुपकर भागने के काम आता है।

उ०—१ मुनि-घातक ब्राह्मण जिकौ, डरप्यौ मन मैं अपार। सेरी कांनी नीकल्यौ, जावैं नगरी बार।—जयवांणी

उ०—२ उठी सैदजादां तणा थाट आया, संपेखे अठी जोस मारू सवाया। भणंकै नफैरी सुरै तूर भेरी, सुणै कातुरां आतुरां लीध सेरी।—रा. रू.

४ किसी बाड या दीवार को थोड़ी सी तोड़कर बनाया जाने वाला छोटा रास्ता जो मुख्य दरवाजे से भिन्न होता है, छोटा द्वार।

५ छेद, सूराख, दरार।

उ०—१ ताहरां किवाड़ री सेरी मां हाथ घात केवण लागौ।
—पलक दरियाव री वात

उ०—२ गोमती औरै मैं वडती-ही पण वातां सुणन लागगी। जांणियौ मांय कोई वीजौ मिनख हुवैला। किवांड़ां री सेरी मांय सूं जोवै तौ आगै कोई न कांई।—वरसगांठ

६ मुख्यद्वार के वगल में बना छोटा फाटक जो मवेशियों को भीतर आने से रोकने व आवागमन की सुविधा के लिये वनाया जाता है।

७ स्थिति।

उ०—ससहर सूरिज वंस नी, सेरी सरली जांणि। हूं नाचसि त्रिवटी तीणइ, लज्जा लेस न आंणि।—मा. कां. प्र.

८ दो अंगों के वीच का अवकाश, अंतर।

उ०—सू ऊंठ किण भांतरा छै? थापवी तळी रा, सुपवीनळी रा, नाळेरा गोडां रा, वीलफळ इरकीरा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी वगलां रा····।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सेरि, सैरि, सैरी।

सेरीणौ—सं. पु.—प्राचीन कालीन एक प्रकार का कर।

उ०—वोपारी वार था वसत आंणैं तिण नूं सेरीणौ मण धांन घीरत वुस्त सिगळी वसत लागै। नै वीछाहीत नुं दांण नै विकरी लागै।—नैणसी

रू. भे.– सेरणौ।

सेरीयौ—देखो 'सेरियौ' (रू. भे.) (मि. सेड़ी)

सेरुराह, सेरूराह—देखो 'सेराह' (रू. भे.) (शा. हो.)

सेरे'क—वि.—एक सेर के लगभग, करीव एक सेर।

सेरौ—सं. पु.—१ खेत का किनारा।

२ सूराख।

३ वाड़ या दीवार के वीच वनाया छोटा मार्ग।

सेलंग—सं. पु.—रहट के खड़े चक्र के गड्डे के किनारे पर लगी हुई लकड़ी या पत्थर जो उसमें खाद आदि गिरने से रोकता है।

क्रि. वि.—१ लगातार, एक साथ, निरंतर।

२ शृंखलाबद्ध।

३ देखो 'संलग्न' (रू. भे.)

रू. भे.—सेलग, सैलंग।

सेल—सं. पु. [सं. शलः, प्रा. सेल] १ भाला, वरछा, वरछो, साग।
(ना. डि. को.)

उ०—१ सेल घमोड़ा किम सह्या, किम सहिया गज दंत। कठिण पयोहर लागतां, कसमसतौ तू कंत।—हा. झा.

उ०—२ रण आंमागळ रोड़ि, जोड़ि अछरां गठजोड़ां। सेल घमोड़ां सार, मार मुगळां दळ मोड़ां।—मे. म.

उ०—३ मच धांम धूम सर सेल मार। पड़ त्रास आस आठूं पुकार। दिन लाख घटै हैंवर दरक्क, जवनां न पड़ै निस दिवस जक्क।—रा. रू.

[अ. शेल] २ तोप का वह गोला जिसमें गोलियां आदि भरी रहती हैं।

३ वज्र।

४ छिद्र, सूराख, विल।

५ दर्द, टीस, पीड़ा।

६ देखो 'सैर' (रू. भे.)

उ०—गंगेव खीची काग भड़ां किवाड़ वैरियां जडां ऊपाड़, जिण की सेल कहूं वणाय, सुणियां मन प्रसन थाय।—रा. सा. सं.

७ देखो 'सैर' (१) (रू. भे.)

रू. भे.—सेल्ह, सैल।

अल्पा.—सेलड़ौ।

सेलक, सेलक्क—सं. पु.—भाला, वरछा।

उ०—१ धमक सेलक वंवक धकधक। तदि उवकि पत्र चंडकि त्रपतक।—सू. प्र.

उ०—२ विजक्क वळक्क जुरक्क जरक्क। सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क।—सू. प्र.

सेलखड़ी—सं. स्त्री.—१ खरियामिट्टी।

२ एक प्रकार का मुलायम व चिकना पत्थर जो वरतन वनाने के काम आता है।

सेलग—देखो 'सेलंग' (रू भे.)

सेलड़ी—सं. स्त्री.—१ ईख, गन्ना।

उ०—वीजी लागत घणी छै। पांणी घटै तद मांहै वेरी दोय सौ च्यार सौ आखारी सी हुवै छै। ऊपर छोंतरा, गेहूं, तरकारी हुवै। पांणी मीठौ। विणां फागुणियां-मूंग, जवार, सेलड़ी सोह हुवै।
—नैणसी

२ वांस के लम्बे डंडे पर लगा हुआ लोह का हासिया जिससे वृक्ष

की टहनियां काटते हैं।

उ०—[illegible] मड़ हेक मय, खींच खींच खसकाय। सूर ग्वाळ लै सेलड़ी, मोन्हां 'मजा' नराय।—रैवतसिंह भाटी

रू. भे.—सहलड़ी।

सेलड़ो-सं. पु.—१ स्त्रियों की वेणी में गूंथा जाने वाला एक रौप्य आभूषण। (पुष्करणा ब्राह्मण)

२ देखो 'सेल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ एरण ठमक्की म्हैं सुण्यो, रे लोहा घड़ै लुहार। सूरां सारू सेलड़ा, सूटण सारू भाल।—लो. गी.

उ०—२ झळक रह्या छै नीला सेलड़ा। अमा कमधजियो रमै छै शिकार।—लो गी.

सेलणौ, सेलबौ-क्रि. स.—१ चुभाना, घुसेड़ना।

उ०—गुर्ग हाक सांम्हा गजां दंत सेलै। खगां झाटि थाटां विचै टालि मेलै।—वचनिका

२ भाले, बरछे या तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना।

३ कष्ट देना, त्रास देना, पीड़ा देना।

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू. भे.)

सेलणहार, हारौ (हारी), सेलणियौ—वि०।

सेलिग्रोड़ौ, सेलियोड़ौ, सेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सेलीजणौ, सेलीजबौ—कर्म वा०।

सहलणौ, सहलबौ—रू० भे०।

सेलपी-सं. स्त्री.—वनस्पति विशेष।

उ०—गळो गीवळ तणस अवठ, करंजनइ कैळास। विदांम वंण कट सेलपी, फिरतांगरिण पळास।—रुकमणी मंगळ

सेळभेळ, सेळमेळ-सं. पु.—१ मिश्रण।

२ गिल-मिल।

सेलवण-सं. स्त्री.—एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसकी पतली टहनियों से टोकरियां एवं टाटे बनाये जाते हैं।

सेलवणी— देखो 'सेवलणी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेलसुत—देखो 'सैलसुत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सेलहत्थ, सेलहथ-वि.—१ योद्धा, वीर।

२ जिसके हाथ में भाला हो।

उ०—१ भालागीरी भेद में, बळ साह वखांणै। सेलहथां 'तखतेस' सुत, हिंदु तुरकांणै। राजा रावळ राव रांण, जग सारी जांणै, आज 'प्रताप' छळ वट वार वखांणै।—मोडजी आसियो

उ०—२ बारहठ ईसर। १ सेलहथ बाळो। १ मांगळियो किसनो। १ धाधू सेनसी।.........।—नैणसी

रू. भे.—सेल्हथ।

सेलांणी-सं. स्त्री.—१ कोल्हू में पिले हुए अधकचरे तिल, कच्चर।

२ देखो 'सैनांणी' (रू. भे.)

उ०—१ मियायो सूरज धरती छोड, देख्यो सेलांणो मैं सांझ। करै आयूंण घणी अंधेर, लुकावै पीळा टुकियां मांझ।—अज्ञात

उ०—२ वा गळियारा मैं कांणची छोरी नै रमावती ही। बिछड़ता भाई नै कांई सेलांणी देवै। उणरै पाखती आंसुवां रै सिवाय हो ई कांई।—फुलवाड़ी

सेला-वि.—शीतल, ठण्डा।

उ०—१ तन सू तन मन सूं मन मेळा, अंतरि २ भेला रे। ग्रोर सकळ सुख विस भरि लागत, तुम लागत हो सेला रे।

—ह. पु. वां.

उ०—२ मन ही सूं मन मेळा, वैनही सूं वैन सेला। निज घर नैन समाए हो।—ह. पु. वां.

सेलाक-वि.—भाला धारण करने वाला योद्धा, वीर।

उ०—हाक डाक जोगणी त्रंबाक युठ हाक हुवै, ऐराक भचाक छाक सेलाक ऊनाळ। जाक सजै सुराक वैडाक तै वेडाक जादा, केण माथै ऊपड़ै थंडाक प्रळै काळ।—पहाड़खां आढो

सेलार, सेलारौ-सं. पु.—पहाड़ी घोड़ा।

उ०—१ मुळतांणी घर मन वसी, सुहगा नइ सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ, आंणउं हेडि तुखार।—ढो. मा.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह सेलार। पयांण करंत, मेल्हांण दियंत।—गु. रू. वं.

२ भाला, बरछा।

उ०—१ वार विकरार सिरदार विध वाहियो, समर भर भार धर भार सूरै। सार सेलार ऊभार भंभार सर, पार चौधार कर पार पूरै।—नाथो सांदू

उ०—२ 'दुरंग' वडाई दाखवै झाटक्कै कोसीस। अचळ लड़ेवा ग्रोठियो, अंबर लागो सीस। नवरंग टोप बहादरां, अर हज्जारी तार, राव पधारो गढ सिरै खळ मिळिया सेलार।—अ. वचनिका

३ डिंगल का एक मात्रिक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक पद में सोलह-सोलह मात्राऐं होती हैं और अन्तिम पद में विधि अलंकार होता है। मतान्तर से रघुवर जस प्रकाश के अनुसार प्रथम चरण में सोलह, द्वितीय चरण में चौदह तथा तृतीय चरण में पुनः सोलह और चतुर्थ चरण में चौदह मात्राऐं होती हैं। प्रथम और तृतीय चरण में मगणान्त तुकांत होता है तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में यगणान्त तुकांत होता है।

४ तीन सगण और अन्त में लघु वर्ण का एक छन्द विशेष।

उ०—सगण तीनि लघु अंति सभि, तेर मात्र प्रसतार। सहि बत्रीस अनै सातसौ, रूप छंद सेलार।—ल. पि.

५ प्रत्येक चरण में चौदह मात्राओं का एक छन्द।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, इण विध च्यारै अख्य → सौ सेलारौ सेस कहि, देव सेस इम दख्य।—पि. सि.

सेलारसी-सं. पु.—एक भक्त का नाम।

उ०—साध विजैसी सारखा, सेलारसी सरीख। पदवन रै लागा

पगं, ऐ जोइ नयरणं ईख ।—पी. ग्रं.

सेलारियौ–सं. पु.—ववूल वृक्ष की फली ।

सेलाळ–वि.—भालाधारी वीर, योद्धा ।

उ०—सेलाळ जरद् मरद् सकाज । वेधैं वस्त्र भाखर पाखर बाज ।
—सू. प्र.

सेलि—देखो 'सैली' (रू. भे.)

उ०—गय घड गुड़ गडमडत धीर धयवड घर पाडइं । हसमसता सांमंत सरसु, सर सेलि दिखाडइं ।—सालिभद्र सूरि

सेलिया–सं. स्त्री.—१ घोड़ों की एक जाति ।

२ पीलू नामक लाल रंग का एक फल विशेष ।

सेलियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चुभाया हुआ, घुसेड़ा हुआ. २ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार किया हुआ. ३ कष्ट पीड़ा या त्रास दिया हुआ. ४ देखो 'सालियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सेलियोड़ी)

सेळी–सं. स्त्री.—घोड़े की वागडोर में कान के पास लगाया जाने वाला एक उपकरण ।

सेली–सं. स्त्री.—१ ऊन, सूत, रेशम या वालों की बनी एक मोटी डोरी जिसे योगी लोग गले में डालते हैं या सिर पर लपेटते हैं ।

उ०—१ सेली सींगी मेखळां, कांनि मुदरका घालि । हरीया जोगी जुगति विन, पच न सधै पालि ।—अनुभववांणी

उ०—२ कांनां बिच कुंडळ गळै बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे । तुम देख्यां बिन कळ न पड़त है, ग्रह अंगणौ न सुहाई रे ।—मीरां

२ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण ।

३ पगड़ी पर वांधने का एक आभूषण ।

४ छोटा भाला, बरछी ।

५ देखो 'सैर' (रू. भे.)

रू. भे.—सेल्ही ।

सेलीसंद, सेलीसमंद, सेलीसमंध–सं. पु.—एक प्रकार का उत्तम जाति का घोड़ा ।

उ०—१ जिलहरी आवनूंसी जमंद, मुरहरी हरी सेलीसमंद ।
—सू. प्र.

उ०—२ और ही अनेक जात रा घोड़ा तयार कीजै छै । कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेलीसमंद, भूवर वोर सोनैरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केळा महुवा धूमरा.......।—रा. सा. सं.

उ०—३ मौहरी चंपा सेलीसमंध, पंचकल्यांण पहचांणियै । अनेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणियै ।—सू. प्र.

सेलीहालौ–वि.—जिस की पगड़ी पर सेली बंधी हो । (दुल्हा)

उ०—करवा मारू देस का ढोलां कै ढमकै आव, वनड़ा धीमा चलौ महाराज, सेलीहालां धीमैं चलौ महाराज ।—लो. गी.

सेलुत–वि.—भालाधारी ?

उ०—तिहां नगर मध्यै किसा लोक वसइं । भणइराय रांणा । मंडलीक । महाधर । मउड़धर । सांमंत । सेलुत । वरवीर । राउत । पायक । डिंडिमायन ।—सभा

सेलुस–सं. पु. [सं. शेलुप] एक प्रकार का लिसोड़ा ।

सेलून–सं. पु. [अ.] १ कमरे के समान सजा हुआ रेल का डिव्वा जिसमें उच्चाधिकारी यात्रा करते हैं । (अधियान)

२ नाई की दुकान ।

सेळै–क्रि. वि.—चिता में ।

उ०—भड़ जै खुद न भंज दै, अघ व्है आतम घात । सेळै दव मेल्है सती, सदेह सुरग सिधात ।—रैंवतसिंह भाटी

सेलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

उ०—विरद पत जवर प्रताप 'विजपत' विया, सद विजै त्रंबाटां पिसत्र सेलोट । उरड़ जाता वडा करै वा गरदवां, अभै पद वसै वै राज री ओट ।—महाराजा मानसिंह रौ गीत

सेलोत–सं. पु.—गरासिया जाति में मुख्या अथवा प्रधान ।

सेळौ–सं. पु—१ एक प्रकार का छोटा जंतु जिसकी समस्त रोमावली कांटेदार होती है । खतरे का आभास पाते ही यह अपना मुंह व पांव रोमावली में छुपाकर गोल गेंद के समान हो जाता है । यह सर्प को मार सकता है ।

उ०—लास, फोगलू धिंटाल ऊंटां, कातीसरौ हर मासरौ । से' सेळा घुरी घरस्यांळां आळां, पंछयां आसरौ ।—दसदेव

२ गाय को दूहते समय उसके पिछले पैरों में वांधी जाने वाली छोटी रस्सी । (नांजणौ) (पोहकरण)

रू. भे.—सहळौ, सेवळौ ।

सेलौ–सं. पु.—१ एक उत्तम कोटि का वस्त्र ।

उ०—तठा उपरायंत वागां रा चिहरवंद छूटै छै । सूं किण भांतरा वागा छै । सिरीसाप भैरव चौतार कसबी महमूदी फूलगार अध-रस से'ला वाफता डोरियां मोमनी तनजेब सासाहिवी तरै-तरै रै कपड़ै रा वागा छै । सू उतार-उतार उणहीज दरखतांरी साखां ऊपर उरळा कीजै छै ।—रा. सा. सं.

२ मेघवाल (चमार) जाति में लड़की की मंगनी तय हो जाने पर वधू के पिता द्वारा वर के लिये भेजा जाने वाला आठ हाथ लम्बा लाल कपड़ा । (मा. म.)

३ लाल रंग का साफा ।

४ अश्लेषा नक्षत्र का एक नाम ।

५ सीधा-सादा भोला व्यक्ति ।

उ०—मेळ तणौ कज मेलियौ, व्रत रज गत बुधिवांन । सरवंगी सेलौ सुमति, चेलौ नाहरखांन ।—रा. रू.

६ देखो 'सेल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ वीता अधुरां वार पूरां, वेध सूरा वच्चए । सेले प्रहारं धार सारं, मार मारं मच्चए ।—रा. रू.

उ०—२ एक दिन फूल मांनुं कह्यौ 'मां मोनुं एक सेलौ भोल

[illegible] सामा तर सैली मैं दीधी । अली हाथ लीयं केरडा चारै ।
—नाबा फूलांणी री बात

रू. भे.—सेल्हो, सेयलो, सेहलो।

सेल्लि स. स्त्री.—प्रस्तरपट्टिका, सल्ली।

सेल्ह—देखो 'सेल' (रू. भे.)

उ०—उमटड्या नरवारिया, सेल्ह वंदूकां सत्थ। आगै धूप उगेविया, पार्छ भालीहत्थ।—रा. रू.

सेल्हथ—देखो 'सेल्हथ' (रू. भे.)

उ०—कटार्लीया किस्या। भंडार भगीया। आलोचि आतमांनइ आव्या। सत्र मुहाडि हुई। संल्हथ मील्हामण हुई। गोत्र देव्यांनइ नैवेद्य नीपना।—कां. दे. प्र.

सेल्हा—स. स्त्री.—चावलों की एक जाति जो सफेद न होकर कुछ मैले रंग के होते हैं। इनके भी कई प्रकार होते हैं।

सेल्हारस—स. स्त्री.—१ केसर या चन्दन।

उ०—अगं सेल्हारस अगर, पूरी मुलं कपूर। अरिहत पूजा आठमी, करम आठ कर दूर।—ध. व. ग्र.

सेल्ही—देखो 'सेली' (रू. भे.)

सेल्हो—१ देखो 'सेलो' (रू. भे.)

उ०—१ अर वागै नूं वापना सेल्हा अब्वल तरह रा लेती आव।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पाघां उतार माथै सेल्हा वांधियां छै।
—सूरै खींवै कांधळोत री बात

२ देखो 'सेळो' (रू. भे.)

सेवंति, सेवंती, सेवंत्री—देखो 'सेवती' (रू. भे.)

उ०—१ फबै मोगरो सेवती जाय फूली, भ्रंगी पंति सेवंति भूली अभूली। तना माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा. रू.

उ०—२ कणियर तरु करणि सेवंत्री कूजा, जाती सोवन गुलाल जत्र। किरि परिवार सकळ पहिरायां, वरणि वरणि ईए वसत्र।—वेलि

उ०—३ कणेर वृक्ष करणी सेवंत्री। कूजा जाय। सोवन जाइ। गुलाल। सु फूलि रह्या छै। सु वनसपती कै पुत्र प्रसव हुआ। सु मानौ रग रंग कै वसत्रं आपणो परिवार पहिरायौ छै। वरण र या वसत्र पहिराया छै।—वेलि टी.

उ०—४ सेवंत्री मवेसरा मूर्कडि सरकाडि साय। सीमंतक सोहइ भला, सरव सदाफळ साय।—मा. कां. प्र.

सेव—स. स्त्री. [सं. सेविका] १ एक प्रकार का नमकीन खाद्य पदार्थ, जो बेसन में नमक, मिर्च व मसाले मिलाकर, आटे की तरह गूंदकर, झारे के माध्यम से तेल में तल कर लंबे डोरों के रूप में तैयार की जाती है।

वि. वि.—सेवें इच्छानुसार मोटी, बारीक तरह तरह की बनाई जाती हैं। इनकी बनावट 'झारे' पर निर्भर करती है।

२ उक्त पदार्थ के अनुरूप ही मेदे का बनाया हुआ खाद्य पदार्थ जो प्रायः रक्षा-बंधन के त्योहार व ईद पर बनाया जाता है।

वि. वि.—इसे पानी में उबाल कर घी-शक्कर मिला कर खाई जाती है।

३ कुशल-क्षेम, सुख-शान्ति, खुशहाली। (अ. मा.)

४ एक प्रकार का ऊंचा पेड़, जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिये हुऐ सफेद रंग की होती है। यह चमकीली एवं मजबूत होती है।

५ देखो 'सेंव' (रू. भे.)

उ०—१ बोलसरी नारंगियां, अखरोटां, अंजीर। सेव सेवती अति सरस, गहरा बिरख गहीर।—गज-उद्धार

उ०—२ खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अमर सदै। सैंमळ सरीस तज आंन सुण, दाख गंमफळ सेव दै।—र. ज. प्र.

६ देखो 'सेवा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ कुळ देवी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज विस-तारण। धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवां धन सेव अपारण।
—रा. रू.

उ०—२ नहं तीरथ जणणीं समौ, जणणी समौ न देव। इण कारण कीजै अवस, सुभजणणी री सेव।—वां. दा.

उ०—३ भूपती सकळ नमै डंड भरै, कुळ खट त्रींस सेव सह करै।
—सू. प्र.

उ०—४ दादू जै साहिब मांनै नहीं, तऊ न छाडूं सेव। इहि अवलंबन जीजियै, साहिब अलख अभेव।—दादूवांणी

रू. भे.—सैव।

सेवक—सं. पु. [सं.] (स्त्री. सेवकण, सेवकांणी) १ आराधना करने वाला, भक्त, सेवा करने वाला, उपासना करने वाला, उपासक।

उ०—१ दादाळी देसांण हूं, दूर घणूं दरियाव। तारी हाथ पसारि तैं, निज सेवक री नाव।—मे. म.

उ०—२ अतुळीबिळ तपइ सिवपुरी ईसर, अनडां नडण अनाथां नाथ। सिगळां ही सुख दयण सेवकां, हयवर हसत वरीसण हाथ।
—महादेव मारवती री वेलि

[सं. सेवकः] २ नौकर, चाकर, दास, अनुचर, परिचायक।

उ०—१ अदभुत रेख सोभा अमित, कळप तरोवर सेवकां। अंग अंग सोभ वाधै 'अभौ', असहै रूप असेवकां।—रा. रू.

उ०—२ गिरधर गास्यां सती न होस्यां, मन मोह्यो घण नांमी। जेठ बहू को नहिं रांणाजी, थे सेवक म्है स्वांमी।—मीरां

उ०—३ सेवक की सेवक यह स्वांमी, जग सब की हैं अंतरजांमी।
—ऊ. का.

३ पूजा, अर्चना करने वाला, पुजारी।

४ सिलाई का कार्य करने वाला, दर्जी।

५ वोरा ।

वि. [सं. सेवक] १ सेवा, टहल व शुश्रूषा करने वाला ।

२ पूजा, उपासना व भक्ति करने वाला, अनुयायी, उपासक ।

३ नौकरी करने वाला, चाकरी करने वाला ।

४ पराधीन ।

५ सेवन करने वाला, उपभोग करने वाला ।

६ मदद या सहायता करने वाला ।

ज्यूं—समाज सेवक ।

रू. भे.—सेवक, सेवकर, सेवक्क, सेवग, सेवगर, सेवग्ग, सेवागर ।

सेवकरण सेवकरणी—सं. स्त्री.—दासी, सेविका, नौकरानी ।

रू. भे.—सेवकांणी, सेवगण. सेवगांणी ।

सेवकपण, सेवकपणौ—सं. पु.—१ सेवक होने की अवस्था या भाव ।

२ सेवक का कार्य, सेवक का धर्म ।

३ सेवा, चाकरी ।

सेवकर—देखो 'सेवक' (रू. भे.) (अ. मा.)

सेवकांणी—देखो 'सेवकरण' (रू. भे.)

सेवकाइ, सेवकाई—सं. स्त्री.—१ सेवक का कार्य, सेवा, चाकरी, शुश्रूषा ।

२ आवभगत ।

३ नौकरी । ४ भक्ति ।

रू. भे.—सेवगाइ, सेवगाई ।

सेवक्क—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—नमौ बहुनांमिय माधव वृद्ध, **सेवक्क** साधार सदासिव सुद्ध ।
—ह. र.

सेवग—सं पु. [सं. सेवक] (स्त्री. सेवगण, सेवगणी, सेवगांणी) १ शाकद्विपीय, ब्राह्मण वर्ग । (मा. म.)

वि. वि.—इन ब्राह्मणों का उद्गम शकद्वीप से माना गया है । श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने सूर्य मन्दिरों की पूजा एवं सौर यज्ञ के लिए इन्हें आमन्त्रित कर भारतवर्ष में बसाया था । कालान्तर में मन्दिरों की पूजा करना ही इनका मुख्य कार्य रह गया । इन ब्राह्मणों को मग, भोजक, व्यास आदि नामों से पुकारा जाता है ।

२ उक्त वर्ग का व्यक्ति ।

उ०—नाडोलाइ रौ सोभाचंद **सेवग** तिरण नैं बावेचा कह्यौ, भीखणजी खैरवै है सौ त्यांरां अवरणवाद विस्वर जोड़ ।
—भि. द्र.

३ देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—१ मन मेरा सेवग भया, लगा सबद गुर कांन । रोम रोम मैं भिद गया, हंरीया किधू न जांन ।—अनुभववांणी

उ०—२ किता तैं **सेवग** सारण काज । रचै हथरणापुर पंडव राज ।
—ह. र.

उ०—३ पालै दळद **सेवगां** पांणां, दुरंग पालटै 'खुरम' दुवै । 'सूजा' हरौ असहतां सालै, हालै मन मांनियैं हुवै ।—नाथौ सांदू

सेवगरण—देखो 'सेवकरण' (रू. भे.)

सेवगर—देखो 'सेवक' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ केतेक हजूर कै **सेवगर** दुज कवि उमराव मंत्री तिनकूं वगसावै ।—सू. प्र.

उ०—२ विरदाळौ जी विरदाळौ, दुज गाय पखी विरदाळौ । सीताचौ सांम सिघाळौ, पौह **सेवगरां** प्रतपाळौ जी विरदाळौ ।
—र. ज. प्र.

सेवगसाधार—सं. पु.—१ भक्तों के परिपालक, ईश्वर, विष्णु, श्रीकृष्ण ।
(ह. नां. मा.)

२ अपने चाकर या दास की रक्षा करने वाला स्वामी ।

सेवगांणी—१ देखो 'सेवकरणी' (रू. भे.)

२ देखो 'सेवग' (स्त्री.)

सेवगाइ, सेवगाई—देखो 'सेवकाई' (रू. भे.)

सेवगी—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—१ कहूं स्वांमी कहूं **सेवगी**, माया ही पर मूंठि । लड़त जुड़त यूं ही करत, गया किताहि ऊठि ।—ह. पु. वां.

उ०—२ धरण एक धारणा १ पार परमोद अपंवर । सात बाच २ संजमी ३ वाह न करै ४ भागळ पर । माताजीत मनजीत ५ **सेवगी** रौ पख साचौ ६ । सुणौं हाक सातवां 'पाल' न देवै पग पाछौं ।—पा. प्र.

सेवग्ग—१ देखो 'सेवग' (रू. भे.)

२ देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—प्रणम्मै पग परम्म प्रवीत, गायत्री गोरि सावित्री सीत । जुहारै पग्ग जिसा जयदेव, **सेवग्ग** अनेक करै पग सेव ।—ह. र.

सेवग्रह—सं. स्त्री.—सेवा, चाकरी, टहल, वन्दगी ।

सेवड़—सं. पु.—१ राजगुरु पुरोहितों का एक गोत्र जो राठौड़ों के गुरु माने जाते हैं । (मा. म.)

२ उक्त गोत्र का पुरोहित ।

३ देखो 'सेवड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सावढ' (रू. भे.)

सेवड़ौ—सं. पु. [सं. श्वेत+पट] १ जैन साधुओं का एक वर्ग विशेष तथा इस वर्ग का साधु ।

उ०—१ जोगी जंगम **सेवड़ै**, वौद्ध संन्यासी सेख । खट दरसन दादू रांम विन, सबै कपट कै भेख ।—दादूवांणी

उ०—२ सोइ जोगी, सोइ जंगमा, सोइ सूफी सोइ सेख । सोइ संन्यासी, **सेवड़ा**, दादू एक अलेख ।—दादूवांणी

उ०—३ एक दिन पातिसाह आगरइ कोपियौ, दरसनी एक आचार चूकउ । सहर थी दूरि काढौ सवइ **सेवड़ा**, मेवड़ां हाथ फुरमांण मूक्यउ ।—स. कु.

२ एक खास देवता ।

सेवज— देखो 'सेवज' (रू. भे.)

उ०—ऊनाळी करै निजरी हुवै । रेन मांहि सेवज घणा हुवै । नदी लूणी नजीक । तळाव मान ६ पांणी । कुवौ पुरस १० मीठौ । —नैणसी

सेवट-क्रि. वि. [स. सीमट] अन्त में, आखिर, अन्ततोगत्वा ।

उ०—१ अरे भोळा काही डर सूं भागी देखै अत (काळ) सेवट ही छोडण वाळौ नहीं अर्थात् जै जलमें है तै मरे ।—बी. स. टी.

उ०—२ काळी मासी री घणी ना दियोड़ी हो, इण वास्तै इत्ता बरस कोर्ट मनमनी नी भेज्यौ । सेवट गोटीजतां-गोटीजतां सबूरी नीं व्ही नी तीग्यां री ओळावी लेय, सौ कोस री गोती खाय, वै मिळण सारू आया ।— फुलवाड़ी

उ०—३ बीनां हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तौ निगै नीं आयौ सौ नीं ज आयौ । सेवट हार खायनैं सेठ कलकत्ता कांनी ग्यानै व्हिया अर देसाई नैं दिल्ली कांनी दौड़ायौ ।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ भीखम मात अभाव, मात गंग कींकर मनै । सो पख हीण सभाव, सेवट मिटग्यौ सांवरा ।— रांमनाथ कवियौ

सेवड— देखो 'सावड' (रू. भे.)

सेवण-स. स्त्री.— एक प्रकार की घास ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उरहाई, मैंदी देवण री वेळा मुरभाई । सावण रुणी धन ऊणी मन सूंणी, घांमण तांमण बिन जांमण मिर धूणी ।—ऊ. का.

उ०—२ जोड़ नाचणी जैसलमेर था कोस २ ऊगवण नूं कोस १, घास करड़, ऐहख री । जैसलमेर था दिखण नूं कोस २ घास सेवण, कोस २ रै फेर ।—नैणसी

२ उपासना, भक्ति या आराधना करने की क्रिया या भाव ।

३ सेवा-चाकरी या टहल-बंदगी करने की क्रिया या भाव ।

४ मादा पक्षियों द्वारा अण्डे पकाने की क्रिया या भाव ।

५ देखो 'सेवन' (रू. भे)

सेवणौ, सेववौ-क्रि. स. [सं. सेवनं] १ पूजा करना, अर्चना करना ।

उ०—गिलका-सिला सिला-गोमत्ती, मंडावै संजम मूरती । साळगराम । सिना सुध सेविस, अग्गर चंदण धूप उखेविस ।—ह. र.

२ वंदना करना, नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

३ उपासना करना, आराधना करना, भक्ति करना, स्मरण करना ।

उ०—नायन कै नाथु मसतग हाथु, सिव ब्रह्मा सेवंदा है । हरिजन हरिजांनी वेद बखांनी, मेम विमन ध्यावंदा है ।

—अनुभववांणी

४ सेवा-शुश्रूषा करना, टहल करना, चाकरी करना ।

उ०—सेवत ही रहै साध कुं, आलमि कबू न जाय । हरीया जब नद रांम कु, आना भीतरि पाय ।—अनुभववांणी

५ उपभोग करना, भोग करना, भोगना ।

उ०—१ जद ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर चार अनारयं । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विविध भोग विहारयं ।—रा. रू.

उ०—२ सेवंति नवै प्रति नवा सवै सुख, जग चां मिसि वासी जगति । रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति ।—वेलि

६ सानिध्य करना, संसर्ग करना ।

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ खवंद । का वासंदर सेविय्इ, कइ तरुणी कइ मद ।—ढो. मा

उ०—२ वांवळि कांइ न सिरजियां, मारू मंझ थळांह । प्रीतम वाढत कांबड़ी, फळ सेवंत करांह ।—ढो. मा.

उ०—३ अड़सट तीरथ तणौं आभरण, चावौ पावन चार चक । राखण वात सेवियौ रड़मल, जग जणणी वाळो जनक ।—बां. दा.

८ मादा पक्षियों द्वारा अपने अण्डों को पकाने के लिये उन पर बैठना, पोषण करना ।

९ रहना, बसना ।

१० कोई औषधि या पथ्य लेना ।

११ लिप्त होना ।

उ०—सेवतौ पाय अठार, नमता मोह विकार । मरयादा लोपतौ ऐ, अधरम मैं ओपती ऐ ।—जयवांणी

१२ पालन करना ।

उ०—इम अव्रत सींच्यां व्रत वधै तौ तिण रै लेख जावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सू व्रत पुस्ट हुवै ।—भि. द्र.

सेवणहार, हारौ (हारी), सेवणियौ—वि० ।

सेविओड़ौ, सेवियोड़ौ, सेव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सेवीजणौ, सेवीजवौ—कर्म वा० ।

सेणौ, सेवौ, सैंवणौ, सैंववौ, सैणौ, सैवौ, सेवणौ, सेववौ

—रू० भे० ।

सेवति, सेवती-सं. स्त्री. [सं. सेमती] १ एक प्रकार का सफेद गुलाब का फूल ।

उ०—१ मालती सेवती केतकी प्रफुलमांन । फूलूं की सोभा असमांन कै तारूं का विधांन ।—सू. प्र.

उ०—२ तोही आंगू भेइरव चांपा का फूल, चोवा चंदन अग कपूर । पाका पांन घउंटहुली, जाई सेवती नीरवाली का फूल ।—बी. दे.

२ उक्त गुलाब का पौधा ।

उ०—१ फबै मोगरौ सेव्ती जाय फूली, अंगी पंति सेवंति भूली अमूली । लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा रू.

उ०—२ बोलसरी नारंगियां, अखरोटां अंजीर । सेव सेवती अति सरस, गहरा विरख गहीर ।—गज-उद्धार

रू. भे.—सेवति, सेवंती, सेवंत्री ।

सेवन-सं. पु. [सं] १ सेवा करने की क्रिया या भाव ।

२ उपासना, आराधना, भक्ति।
३ उपभोग, भोग, इस्तेमाल।
४ स्त्री मैथुन की क्रिया, भोग।
५ टहल, चाकरी।
६ सानिध्य, संसर्ग।
७ संरक्षण, रक्षा।
८ मादा पक्षियों की अपने अण्डों पर बैठने की क्रिया पोषण।
९ औषधि पथ्य का खान-पान।
१० सीना, सिलाई।
रू. भे.—सेवण, सैवण।

सेवनी–सं. स्त्री.—१ सिलाई, सीवन।
२ टांका।
३ सुई।
४ संधिस्थान।
५ दासी, सेविका।

सेवभद्र–सं. पु.—कुशलता।

सेवमांण–वि.—सेवन करने योग्य।

सेवर—देखो 'सेहर' (रू. भे.)

सेवरड़ौ, सेवरियौ—१ देखो 'सेवरौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवल बनै कौ व्यांव, चोखा सेवरड़ा गूंथ ल्याय।—लो. गी.
उ०—२ **सेवरियौ** सिरपेच कलंगी सोरठड़ी तरवार। मीरां कै प्रभु गिरधर नागर पूरबलै भरतार।—मीरां
२ देखो 'सेहर' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—उमराव बनाजी घुड़ला थै लाइजी है खुरसांणी देस रा। सिरदार वनाजी **सेवरियै** झबूकै औ आबा वीजळी।—लो. गी.

सेवरौ–सं. पु. [सं. शिखर] १ विवाह की एक रश्म जो विवाह मण्डप में कन्या के भाई या मामा द्वारा वर के सामने 'सरवा' घुमाकर अदा की जाती है।
ज्यूं—वीरा **सेवरा**, मामा **सेवरा**।
२ विवाह में प्रत्येक भांवर के समय गाया जाने वाला एक मांगलिक लोक गीत।
३ सेहरा जो विवाह के समय सिर पर बांधा जाता है, शिरमौर।
उ०—१ ठाकरां खंखारौ करतां थका कयौ—हूं **सेवरौ** बांध'र चालसूं जद लोग हंसाई हुसी।—दसदोख
उ०—२ आंधी गिण्यौ न सोपौ, सागै-सागै बदनामी री **सेवरौ** ही बांधता रैया हां।—दसदोख
उ०—३ ओरां रै बांधण पाए ए सुंदर ओरां रै बांधण पागकाछविया रै बंको **सेवरौ** ए।—लो. गी.
उ०—४ सौ माथा पर किलंगी अनै **सेवरौ** केमर रंगिया दुकूळ कपड़ा वागी केसर मैं रंग दौ, आपरा सिरदारां नैं कहै औ म्हारौ चलावण करदौ।—वी. स. टी.
४ पगड़ी में बांधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकाई जाने वाली फूल मालाएँ। (मुसलमान)
५ खजूर का बना हुआ एक प्रकार का मौर जिसके दो गुच्छे नीचे तक लटकते हैं। यह विवाह के समय पहना जाता है। राजस्थान में उत्तरप्रदेश से आए व्यक्ति उपयोग में लाते हैं।
६ माला, हार, विशेषकर रेशमी माला।
७ ब्याह की एक रश्म विशेष जिसके अनुसार भांवर के समय कन्या का भाई हवन का सरवा दोनों हाथों में पकड़कर चार बार वर के सामने करके घुमाता है। इसे सेवरा देना या अदा करना कहते हैं। (श्रीमाली)
८ एक राजस्थानी लोकगीत।
९ मुकुट।
१० द्वार के छज्जे के नीचे वाले पत्थर के नीचे शिल्प कलापूर्ण लगाया हुआ पत्थर।
वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ।
२ शिरोमणि।
रू. भे.—सहेरउ, सहेरौ, सेहरि, सेहरौ, सेहुंरौ, सेहुरौ, सैंवरौ।
अल्पा;—सेवरड़ौ, सेवरियौ, सेहरउ, सेहरियौ।

सेवलणी, सेवलनी–सं. स्त्री. [सं. शैवलिनी] नदी, सरिता, तटनी। (डिं. को.)
रू. भे.—सेलवणी।

सेवळी—देखो 'सेही' (अल्पा; रू. भे.)

सेवळौ–सं पु.—१ सेमल वृक्ष।
उ०—**सेवलां** रा पाट अणावौ, जठै बैठा औ दसरथजी रा सीय। वधावौ म्हांरै घर आवियौ।—लो. गी.
२ कलई पर धारण की जाने वाली एक प्रकार की चूड़ी जो बिलकुल वृत्ताकार न होकर कुछ बल खाई हुई होती है।
३ देखो 'सेळौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—क्रत प्रगत खोट परताप कर, अक्रत रहण अकेवळौ। 'मौकमा' कमंध मोटा मिनख, स्याळ हुसी कन **सेवळौ**।
—अरजुणजी बारहठ

सेवांजळि, सेवांजळी–सं. स्त्री. [सं. सेवांजलि] दोनों हथेलियों के जुड़े हुए सम्पुट से भक्त या सेवक द्वारा अपने उपास्य या स्वामी को कुछ अर्पण करने की क्रिया।

सेवा–सं. स्त्री. [सं.] १ देवताओं की पूजा, अर्चना।
उ०—१ सेवक सुकवि करत नित **सेवा**, मधु मिस्ठान्न चढत अति मेवा।—मे. म.
उ०—२ सांमगरी अग्र धरै सुचा रा। साजै सब साधन **सेवा** रा। हर पूजियां पछै न्रप चितहित, खड़ग पात्र जळ पूर धरै खित।
—सू. प्र.

२ सेवा-शुश्रूषा, तीमारदारी, टहल-बंदगी ।

उ०—१ बींदणी ज्यूं त्यूं आपरा मन नैं समझाय धणी री सेवा बंदगी करण लागी । गिरस्ती री अरटियो गणण-गणण घूमण लागो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रुंकाटा गड़ा ठगैं, मुख रा सीला सास वगैं । आपरा गुरु-जुग री दिनंग सेवा, दिन भर हंसी ठठा, मन रा मेवा । मत्त री जांणैं, हित री कैवै, गाळयां-तकात सुणैं अर सिर मैं दी ही गंवैं ।—दसदोख

३ नोकरी ।

४ आदर-सत्कार, आवभगत ।

उ०—१ सब विधि की सेवा सधी, आदर भयो अमाप । मांननीय गुरु मांनियो, परतापी 'परताप' ।—ऊ. का.

उ०—२ धरम उपदेस नितप्रति सुणती हूं, मन कुचाळ सैं भी टरती हूं । सदा साधु सेवा करती हूं, सुमरन ध्यांन मैं चित करती हूं ।—मीरां

५ उपासना, आराधना, भक्ति ।

६ आश्रय, शरण ।

७ अनुरक्ति, प्रेम ।

८ उपयोग, भोग ।

९ श्रम, परिश्रम ।

उ०—पंखी जु वसंत कै विखै पांखां फूलावै छै तांह आपणी सेवा को फळ पायो छै ।—वेलि टी.

१० समाज-सुधार के कार्य, समाज-सेवा ।

उ०—१ वळै इसी सेवा, ठंठा री लागगी तौ कुण आडौ आसी ? इयै साल तौ पूरा गाभा ही कराया नहीं । एकली वैठी फूसी कळपै-कुढै । वठै मां'रजा, हरिजण बाळकां मैं रीझै-मुळकै ।—दसदोख

उ०—२ म्हारो कांम तौ फगत जनता री सेवा करणौ है । म्हूं गरीबां री दुख नीं देख सक्यो इण वास्तै इज तौ म्हनै चुणाव मैं खड़ो होवणौ पड्यौ ।—अमरचूंनड़ी

११ उक्त कार्य के लिये बनी हुई संस्था ।

उ०—मा'रजा, सेवा लाईब्रेरी रा मिंत्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रांम सेवा संघ रा उपाध्यक्ष, अर आरय समाज रा सदा सू सदस्य है ।—दसदोख

१२ चापलूसी, जी-हजूरी ।

रू. भे.—सेव ।

सेवागर—देखो 'सेवक' (रू. भे.)

उ०—सरण असरण अभैकरण सेवागरां, धरण सरीखा चरण धावैं । जोन संगट हरण वरण वै हुवै 'जसा', गिरां तारण तरण किऊं न गावैं ।—जसजी आढौ

सेवाधरम-सं. पु. [सं. सेवा+धर्म] १ सेवक का धर्म या कर्तव्य ।

सेवाधारी-सं. पु. [सं. सेवा+धारिन्] पुजारी, सेवक ।

वि.—जिसके मूर्ति की पूजा करने का नियम हो ।

सेवापण, सेवापणौ-सं. पु.—१ सेवा-वृत्ति, टहल-बन्दगी ।

२ नौकरी, चाकरी ।

सेवार—देखो 'सेवाळ' (रू. भे.)

उ०—वाळूं वावा देसड़उ, जहां पांणी सेवार । ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लैकार ।—ढो. मा.

सेवाळ, सेवाल-सं. स्त्री. [सं. शैवाल] १ पानी के ऊपर जमने वाली काई, लील ।

उ०—१ भूपाळ विया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संसार कहै । माया जळ कळजुग चं मांहे, राजा कमळ सरूप रहै ।

—जगन्नाथ सांदू

उ०—२ चंदह वैरी वादळी, जळ-वैरी सेवाळ । मांणस वैरी नींदड़ी, माछां वैरी जाळ ।—अग्यात

२ एक प्रकार की घास जो जलाशय या सरोवर के पानी पर जाल की तरह बिछ जाती है ।

उ०—एक दिवस सर नै कूलै गयो रे, जहां बहुला सेवाल । अणजांणतां मांहि अलूझियो, कंठइ आयो काल ।—वि. कु.

३ किसी पदार्थ (विशेषकर द्रव पदार्थ) पर जमने वाली मेल की परत ।

उ०—१ हिंगळू मैं जाळी, भंवरजी, पडगयो जैं, हांजी मारू, काजळ मैं पड़ग्या सेवाळ । अिब घर आवौ, अंधेरैं घर का पावणा जैं ।

—लो. गी.

उ०—२ आलोयण साबुड़ौ सुद्धि करी रे, रखै आवै नी माया सेवाल निस्चय पवित्रपणौ राखजै, पछइ आपणौ नेम संभाल ।—स. कु.

४ आवरण, पर्दा ।

वि.—आसमानी, नीला । ❀ (डिं. को.)

रू. भे.—सेवार ।

सेवावरती-वि. [सं. सेवा+वृत्तिः] जिसके सेवा करने का व्रत हो ।

उ०—सेवावरती थाऊं सार ।—धरम-पत्र

सेवि— देखो 'सेवी' (रू. भे.)

सेविका-सं. स्त्री.—१ दासी, नौकरानी ।

२ परिचारिका, सेवा करने वाली ।

सेवियोड़ो-भू. का. कृ.—१ पूजा किया हुआ, अर्चना किया हुआ. २ वंदना, नमस्कार या प्रणाम किया हुआ. ३ उपासना, आराधना या भक्ति किया हुआ. ४ सेवा-शुश्रूषा, टहल वंदनी या चाकरी किया हुआ. ५ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ, भोगा हुआ. ६ सानिध्य किया हुआ, संसर्ग किया हुआ. ७ सरक्षण किया हुआ, रक्षा किया हुआ. ८ अण्डों पर वैठा हुआ, पोषण किया हुआ. ९ रहा हुआ, बसा हुआ. १० औषधि या पथ्य खाया हुआ ११ लिप्त हुवा हुआ. १२ रस लिया हुआ. १३ सहन किया हुआ, सहा हुआ ।

(स्त्री. सेवियोड़ी)

सेवी–वि. [सं. सेविन्] १ सेवन करने वाला, खाने या पीने वाला ।

२ उपासना करने वाला, आराधना करने वाला, भक्त ।

उ०—हालिया फेर गजनेर करवा सहळ, देखिया कोठियां महल देवी । भाळि दोनूं सहर आय पूठा भळै, सहर देसांण दीवांण **सेवी** ।. —मे. म.

३ सेवा करने वाला, चाकरी करने वाला ।

रू. भे.—सेवि ।

सेवौ, सेवौ–सं. पु.—१ पानी का सोता, श्रोत ।

२ मस्तक नीचा करके चलने वाला ।

३ अपेक्षाकृत कम गहराई पर मिलने वाला भूगर्भीय जल ।

सेव्य–वि.—१ जिसकी आराधना या उपासना करना उपयुक्त हो ।

उ०—सुरनायक **सेव्य** सम्रद्धि वहै । बळ वायक तैं वज व्रद्धि वहै । —ऊ. का.

२ जिसकी सेवा या वंदगी करना उचित हो ।

सेस–सं पु. [सं. शेष, प्रा. सेस] १ पाताल में रहने वाला सहस्र फनों वाला सर्प, जिसकी शय्या पर विष्णु .यन करते हैं और जिसके फन पर पृथ्वी टिकी रहती है । लक्ष्मण और बलराम इसी के अवतार माने गये है, शेषनाग । (ह. नां. मा.)

उ०—१ जिणि **सेस** सहस फण, फणि फणि वि वि जीह, जीह जीह नवनवौ जस । तिण ही पार न पायौ त्रीकम, वयण डेडरां किसौ वस ।—वेलि

उ०—२ जिण समय दौ २ ही फोजां रा हिलोळा समुद्र रैं समांण प्रमांण मैं आया । अर तोपां री गाज हुं **सेस** रा सीसां १ समेत मकराकर मेखळा मही २ रै मचोळा लगाया ।—वं. भा.

२ लक्ष्मण ।

उ०—१ सुण **सेस** रे सुण **सेस** रे, दिल कैंकई उपदेस रे । वनवास जावण वेस रे, इम आखियौ अवधेस रे ।—र. रू.

उ०—२ कोपै तूं मौ राज कज, सांभळ वायक **सेस** । गरवां मत ग्रहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस ।—र. ज. प्र.

३ बलराम, बलभद्र ।

४ परमेश्वर, ईश्वर ।

५ एक प्रजापति ।

६ एक दिग्गज ।

७ हाथी, गज ।

[सं. स=पक्षी+ईश] ८ पक्षिराज गरुड़ । (अ. मा; नां. मा.)

उ०—सट पटत भर **सेस** अति चक्रित अरेस । दिन धूंधळ दिनेस, थरराहइ अर साथ ।—र. ज. प्र.

[सं. शेष] ९ देवताओं की मनौती मनाने के लिये चढाया जाने वाला प्रसाद ।

उ०—महळी कुसळ विरांणौं मूंडै, सूंक हमेस वांटणी **सेस** । कजियारौ कीजै मुंह काळौ, कजियां मैं नित नवौ कळेस । —वां. दा.

रू. भे.—'से', सेह ।

१० पुरुषों की जनेऊ के स्थान पर धारण किया जाने वाला एक स्वर्ण आभूषण विशेष ।

११ वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये ऊपर से लगाया जाने वाला शब्द ।

१२ बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर शेष बचने वाली संख्या ।

१३ बाकी बचा हुआ भाग, अंश या मात्रा ।

१४ मुक्ति, छुटकारा ।

१५ परिणाम, नतीजा ।

१६ समाप्ति, अन्त ।

१७ मृत्यु, मौत ।

१८ नाश, विनाश ।

१९ किसी की यादगार, अवशेष ।

२० सोलंकी राजपूत वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२१ छप्पय छन्द का २५ वां भेद जिसमें ४६ गुरु ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं । (र. ज. प्र.)

२२ टगण का पांचवां भेद, ।।।ऽ । (डिं. को.) पिं. प्र.)

२३ टगण के छठे भेद का नाम, ।ऽऽ। । (र. ज. प्र.)

२४ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ७० गुरु तथा १२ लघु होते हैं ।

वि. [सं. शेष] १ जो बाकी बचा हुआ हो, अवशिष्ट, बाकी, शेष ।

उ०—१ सूरां जमदाढ लई उण संग, लई रवि रेवत माड मलंग । हुवौ असताचळ ओट ग्रहेस, सक्यौ नंह देख कुतूहल **सेस** ।—मे. म.

उ०—२ वसुदेव देवकी सूं ब्राहमणौं, कही परसपर एम कहि । हुए हरण हथळेवौ हूऔ, **सेस** संसकार हुवइ सहि ।—वेलि

२ उच्छिष्ट, छूटा हुआ ।

३ अन्य, और, बाकी, शेष ।

उ०—१ 'सुरजन' परिकर **सेस** सह, देखौ नयण दयाळ । लेतां जस १ अपजस २ लहै, चूकै जै कुळचाल ।—वं. भा.

उ०—२ द्रोण भीस्म न्रप हौ जयवंता, **सेस** कौरव जिकै बलवंता । तीह हुं सविहुं प्रतिमल्ल, एकलु त्रिजगती रि पुसल्ल । —सालसूरि

४ सफेद, श्वेत । ❀ (डिं. को.)

रू. भे.—सेंस, सेस, संस, सैस ।

सेसजी–सं. पु.—१ शेषनाग ।

उ०—हेकण जीहा किम कहूं, मारू बौत गुणांह । इंद्र **सेसजी** गुण कहै, थाह न लामै तांह ।—अग्यात

२ श्रीलक्ष्मण ।

३ शेषनाग, बलराम ।

सेसट-सं. पु.—१ बारह मेघमालाओं में से एक ।

उ०—मिळ रही बहै दळां अप्रमांण, जिण वार सेसट चौथी सुजांण । मेनाक हुवा जाव जन काज, अत हरख सूर कायर अकाज ।
—शि. रू.

२ एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—सुन युवनास सेसट अवेस । निज हुवौ मांनधाता नरेस ।
—सू. प्र.

सेसधर-सं. पु. [सं. शेष+धर] शिव, महादेव ।

सेसन-सं. पु [अं. सेशन्] १ संसद, विधानसभा, व्यवस्थापिका या न्यायालय आदि संस्थाओं का एक बार कुछ दिनों तक या एक निश्चित अवधि तक चलने वाला अधिवेशन, सत्र ।

२ इसी प्रकार कालेजों व स्कूलों की, गर्मी-सर्दी आदि अवकाशों के अतिरिक्त कार्यावधि जिसमें पढ़ाई नियमित चलती रहती है ।

सेसनकोर्ट-सं. पु [अं. सेशन+कोर्ट] जिले की बड़ी अदालत ।

सेसनजज-सं. पु. [अं.] उक्त अदालत का न्यायाधीश ।

सेसनाग-सं. पु. [सं. शेष+नाग] पाताल में रहने वाला, सहस्र फनों वाला सर्प, जिसके फन पर पृथ्वी टिकी रहती है, शेषनाग ।

उ०—सेसनाग री बेटी मुळकती थकी कैवण लागी—म्हनै इण मैं कांई जोर पड़ै । ज्यूं कैवौ त्यूं करण नै त्यार हूं ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सैंसनाग, सेखनाग ।

सेसनाथ-सं. पु.—शेषनाग के स्वामी विष्णु ।

सेसभखण-सं. पु.—पवन, हवा । (ना. डि. को.)

सेसरंग-सं. पु.—श्वेत रंग ।

सेसर-सं. पु. [सं. शेखर] ब्रह्मा । (नां. मा.)

सेसराज-सं. पु. [सं. शेषराज] १ प्रत्येक चरण में दो मगण वाला एक वर्ण वृत्त ।

२ देखो 'सेसनाग' ।

सेससायंत, सेससायी-सं. पु. [सं. शेष+शायिन्] शेषनाग पर शयन करने वाले, विष्णु ।

उ०—नमो वेंद विस्तरण, नमो निसचर बोह नांमण । नमो सेससायंत, नमो हवकव्व हुतासण ।—ह. र.

सेसु, सेसू-सं पु.—जासूस, गुप्तचर ।

उ०—१ सु पाहकरण रै कोट री पोळ कींवाड तद न था । सु नगी धान जोवै छै । सेसू नगाय मेलीया छै ।—नैणसी

उ०—२ पछै असवार ४ वांसै जगमालजी सेसू मेल्हिया-देखां निसरो कासूं करै छै ? सु वै जोय आवी ।—नैणसी

सेह—१ देखो 'सेस' (६) (रू. भे.)

२ देखो 'सह' (४) (रू. भे.)

उ०—सीधांसांन सिलवस सह, ऊंडा मंडै पग्ग । एक कर घतैं दद्दिमां, इक कर खुणै लग्ग ।—सू. रू. वं.

३ देखो 'सेही' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—तिकां हिज हेत दगी नंह तोप, रही बजि रीठ विहूं वळ रोप । जिका सणणंकि भणंकिय जेह, सुवा भड़भुम्मि हुवा धड़ सेह ।
—मे. म.

सेहज—१ देखो 'सहज' (रू. भे.)

२ देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—म्हांरै सेहज रा सिणगार घरै आवो औ जूंझारजी, भगड़ै किण विध जूंजिया ।—लो. गी.

सेहजै-क्रि. वि.—१ अपने-आप, स्वत: ।

उ०—कोइ मंडसूंरी भिस्टी खातौ ही । साहुकार दिसां जातौ सहजै द्रस्टि पड़ी, देखनै मंडसूंरी बोल्यौ—साहजी री पिण मन हुग्रौ दीसै है ।—भि. द्र.

२ सुगमता से, आसानी से ।

३ सहज ही, बात की बात में ।

रू. भे.—सैजे, सैजै ।

सेहट-सं. पु.—कमरा, कक्ष, कोठरी ।

सेहत-सं स्त्री. [अ.] १ स्वास्थ्य, तन्दुरस्ती, तबियत ।

२ शरीर ।

३ शुद्धि ।

रू. भे.—सेहति, सेहथि, सैहत, सैहती ।

सेहतखांनौ—देखो 'सेतखांनौ' (रू. भे.)

सेहति—देखो 'सेहत' (रू. भे.)

उ०—तैं ऊपरि पछतावौ कियौ मै बुरा किया उन्हकै कहियै ऊपरि कहिया । भोपति कूं खुदाइ सेहति द्यौ ।—द. वि.

सेहतूत—देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सेहथ, सेहथि-क्रि. वि.—१ अपने हाथों से, हाथों से, स्वहस्त ।

उ०—खांनखांना पातिसाहजी नूं कहियौ—पातिसाहजी आप सेहथि मारी तौ गाजी हुवौ ।—द. वि.

२ देखो 'सेहत' (रू. भे.)

रू. भे.—सैंहात ।

सेहर-सं. पु. [सं. शेखर:] १ पर्वत-शिखर, गिरि-शृंग ।

उ०—१ कासमीरी विन्है विराजइ कांनैं, सांधां विचइ हरियइ सिंदूर । चढती मउज रसण पिण चढती, सेहरां विचइ ऊगतउ सूर ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ पग पहरी सकत वाजणी पायल, नै प्रांचइ आगळी नद । गोडीरव भाद्रवइ तणी गति, सेहरां ऊपरि सांण सद ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ शिखर, शृंग ।

उ०—१ मचि सोर भळ अप्रमांण री, डूंगरड़ गोळा वांण री । धर जांण सेहर अब धारा, ओवडै अण पार ।—रा. रू.

उ०—२ भुज च्यारै रूप विराजइ भारी, धरहरती घुळती घण

घाव। हेमाचळ गिरवर चा सेहर, वसंत तणी रुत हुई वणाव।
—महादेव पारवती री वेलि

३ मेघ, बादल, मेघ-माला।

उ०—१ पंथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पौहच्याइ। विरह वाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ।—ढो. मा.

उ०—२ वह छूटै कँवर सोक नलीसर, सींघणि संधर साचवियं। धुवि जांण धराहर सालुळि सेहर, मेघ महाभर माचवियं।
—गु रू. वं.

उ०—३ विजळी भिळोमिळ करनै रही छै। बादळां झड़ लायौ छै। सेहरां-सेहरां बीज चमकनै रही छै। जांणै कुळटा नायका घर सू नीसर अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै।—रा. सा. सं.

४ आकाश, नभ। (ना. डिं. को.)

५ मंडप।

६ कंगूरा।

७ शिखर स्थित कलश।

रू. भे.—सेवर, सेवरड़ी, सेवरियौ, सेहरउ, सेहरि, सेहरियौ, सेहरी, सेहरौ, सेहुंरौ, सेहुरौ।

८ देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—जसौ हळोद सु नीसर गयौ। तरै सेहर लूट लीनौ नै सेहरकोट पाडीयौ।—रा. व. वि.

सेहरउ—१ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—गणधर देव तणइ उपदेस, इंद्रइवलि दीधउ आदेस। आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि सेहरउ।—स. कु.

२ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

सेहरकोट—देखो 'सहरपनाह'।

उ०—जसौ हळौद सु नीसर गयौ तरै सेहर लूट लीनौ नैं सेहरकोट पाडीयौ।—रा. वं. वि.

सेहरि, सेहरी—१ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—१ लखि रूप चितांमन वारि लियां, कसि तंग उतंग सु त्यार कियां। नग बधण अग्र सुसौभ नई, थिर सेहरि दांमणि जांणि थई।—रा. रू.

उ०—२ ऊंमटि आई सेहरी, वरसै अगनि अपार। हरीया ऊठि पुकार करि, दाझै दुनीयांदार।—अनुभववांणी

२ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सहरी' (रू. भे.)

सेहरियौ—१ देखो 'सेहर' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सेवरौ' (अल्पा; रू. भे.)

३ देखो 'सेहरी' (अल्पा; रू. भे.)

सेहरौ—१ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—१ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज। सौ सूरां सिर सेहरौ, नर पुंगव सुर-तैज।—वां. दा.

उ०—२ 'जसवंत' न्रप री जगत मै, इक्कौ नांम उदार। सुदतारां रौ सेहरौ, दातारां दातार।—ऊ. का.

उ०—३ आहुड़िया सूर थटै गढ ऊपर, अपछर रथ खडिया ऊमांहि। वेटौ बाप सेहरै बांधे, गौड़ चढै तोरण गजगाहि।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—४ रांम लछमंण भरथ और चत्रघंण, देखि दसरथ हिरदौ सिळायौ। मोतियां लुंब नै कोर हीरां मांण्यकां, सेहरौ सीस सोभा सवायौ।—परमानंद वणियाळ

उ०—५ हरि रै सेहरै सूरज सोहै, मुकट सोहै हीर। कांनै कुंडळ रतन झळकै, निरमळ सांम सरीर।—पदम भगत

उ०—६ जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनी लगाड़ि होम करै छै। घणौ गौ ध्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै। वेद-ध्वनि कीजै छै। दूलह नै दूलहनी सेहरा बांधियां पूरव साहमा बैसांणिया छै। सेहरा दीजै छै। चार फेरा फेरीजै छै।—रा. सा. स.

२ देखो 'सेहर' (रू. भे.)

उ०—ढकी नींव काकोदरां लोक ढूकै। फतै चिन्ह आकास लागौ फरूकै। मिणै मेहरौ—माग पाताळ मांनूं। सकौ देहरौ सेहरौ रत्न सांनूं।—मे. म.

सेहल—देखो 'सैर' (रू. भे.)

सेहलौ—देखो 'सेळौ' (१) (रू. भे.)

उ०—वांटि व्रस्चिक दीसीइ, भूकोटि भू-टंकि। सेहला सावलि संखला, साह विनांणी बहू संक।—मा. कां. प्र.

सेहवीरी—वि. स्त्री.—लज्जाजनक, शर्मनाक।

उ०—ताहरां खीवौ विजौ बोलीया तैं बुरौ कांम कीयौ चोर रौ जायौ नहीं। इसी वात कोई करै। या तौ सेहवीरी वात छै।
—चौबोली

सेहसूळियौ—देखो 'सेळौ' (१) (रू. भे.)

सेहहजारी—सं. पु. [फा.] मुगलबादशाहों के शासन में सरदारों और दरबारियों को मिलने वाली एक उपाधि जो तीन हजार सैनिकों का अधिष्ठाता होने की सूचक थी।

सेहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—सेहाई सतां सेवगां, ताई देणा तापरां। श्रीनाड़ा राधौ भू अखै, पांणां धाड़ा आपरां।—र. ज. प्र.

सेही—सं. स्त्री. [सं. सेधा, शल्लकी] एक प्रकार का रेगिस्तानी ज़ानवर विशेष जिसके शरीर पर नुकीली सूलें होती हैं। यह प्राय: टीबों के विवर में रहता है।

उ०—करसण सेही स्याळ विल, गिर त्रिय वांमण गाय। समरांगण मंह साधणा, चाहै चित्त चलाय।—वां. दा.

रू. भे.—साही, से, सें', सेयली सेवली, सेह, सैंवळी, स्याही।

सेहुंरौ, सेहुरौ—१ देखो 'सेवरौ' (रू. भे.)

उ०—१ पट चौरी पधराविया, वर वेहड़ा सु विंद। सोहै दुल्लह

[illegible], [illegible] [illegible] जिम इंद ।—रांमरासौ

उ०—२ [illegible] दीधा सेहुरा वणि [illegible] विद ।—रांमरासौ

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सं-[illegible] क्रि.—१ ठीक, एकदम ।

उ०—१ [illegible] कोस ६ पोंहच्या । आगै मारग रै सें बिचै [illegible] छै ।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ थोड़ी ताळ मैं इज टावर मे'ल माळियां सूं कुड़ता री [illegible] भरनै पाछौ आयौ अर ऊभी ऊभी इज वांनै आंगणा रै सें बीच नांगनै रमण नै वारै नाटग्यौ ।—अमरचूंनड़ी

२ प्रत्यक्ष ।

उ०—श्रीजिणचंदसूरिंदजी रै, सें हथ दीधौ पाट । महोछव सूरेत [illegible] रै गीतां रा गहगाट ।—ध. व. ग्रं.

वि.—१ खास ।

उ०—१ पूनमौ कैवण लाग्यौ—थारै आयां पछै दीवाळी रै सें दिन गांव मैं धाड़ौ पड़चौ ।—रातवासौ

उ०—२ मां टीमर सुर मैं आगै बोली—थारै जनम रै दो बरसां पे'ली री बात है बेटा, आंपणै गांम मैं धाड़ौ पड़चौ हौ, धनतेरस रै सें दिन ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ टणी महीना री पूनम रै सें दिन मावा री वात सुणी तद बा मां नै कह्यौ—म्हनै अेकर पूछ तौ लेणौ हौ ।—फुलवाड़ी

२ सौ ।

उ०—आया उमराव रायमल का तमांम । ग्यारा सें घोडां का वणिया कमांम ।—शि. वं.

३ सब, समस्त ।

उ०—मासी रा नेह मैं समंदर रै उनमांन तूफांन, गरजण, छोळां, हिबोळा इत्याद सें वातां ।—फुलवाड़ी

सं. पु.—खास दिन, विशेष दिवस ।

उ०—सें होळी नैं ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ । बोतल तौ जगजग करै, कोई प्याला करै पुकार ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

सर्व.—हम ।

उ०—ढोला [illegible] कहइ, मूगी कुडंगा वैण । मारू म्हांजी गोटणी, सें मारू दा संग ।—ढो. मा.

रू. भे.—सैं ।

सेंकड़ौ, सैंकड़ौ—देखो 'सैंकडौ' (रू. भे.)

उ०—पछै थोड़ा दिनां मैं मेह घणौ आयां थी पहिली उतरिया [illegible] रौ पाट भागो । सैंकड़ौ मण बोझ पड़चौ ।—भि. द्र.

सेंग-वि. [सं. सकल] १ सब, समस्त, सभी, तमाम ।

उ०—१ तौ समांन तोनूं तुला, खांवद 'जसवंत' खेंग । तेज लैण जावै नखत, सूरज मंडळ सेंग ।—ऊ. का.

उ०—२ सेठ रै जातां ई मान इत्तौ सूंगौ कर दियौ कै आखा चौखळा री उठै ढूक व्हैगी । दूजी सेंग दुकांनां री कमाई ठाय रै'गी ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ जिनावरां मैं सोधौ स्याळियौ, पंखेरुआं मै कागौ काळियौ अर मिनखां मै नाई-नागौ तथा जाळियौ वाजै है । जियां ही सेंग जात्यां मैं सुनार लछणहीण अर बेविसवासी गिण्यौ जावै है ।

—दसदोख

२ पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण ।

उ०—जिकां नैं म्हैं सेंग उमर दवाय नैं राख्या पण आज वै आणां माथै मुसीबत आई देखनै कारवां कूटै है ।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—सैंग ।

सेंगत—देखो 'संगत' (रू. भे.)

उ०—जटियै पडूत्तर दियौ—वास तौ है ज्यूं री ज्यूं है । थूं ईज सेंगत व्हैगी । थारै नाक री कूंपळ वळगी ।—फुलवाड़ी

सेंगमेंग-वि.—हतप्रभ ।

उ०—लिखमी सेंगमेंग हुयोड़ी टुग-टुग जोय रही ही अर विये री आंख्यां मांय-सूं झर-झर'र मोती रा दांणा अचेत पति रै पगां में पड़ रया हा ।—वरसगांठ

सेंगू-वि.—१ संग, साथ वाला, साथी ।

२ देखो 'सेंग' (रू. भे.)

सेंचनण, सेंचनण, सेंचन्नण-सं. पु.—प्रकाश की अत्यन्त तीव्र किरण, झलक या लौ जिसके कारण परिवेश में पूर्ण उजाला हो जाय, पूर्ण प्रकाश, तेज रोशनी ।

उ०—बीजळियां रा छै सिळाव, सेंचनण वर हुवै रह्यौ जी ।

—रसीलेराज रौ गीत

वि.—पूर्णतया प्रकाशित, जगमगाता हुआ, ज्योतिर्मय ।

उ०—दोय बीजां री जड़ सदा हरी । पांणी नैं मेंणत री । पांणी सूं ई आ धरती हरियळ । मेणत सूं ई आ दुनियां सेंचन्नण । मेंणत आगै मांदेवजी नै ई निवणौ पड़ै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—सैचन्नण ।

सेंजोड़-सं. पु.—दम्पति ।

वि.—१ जोड़ सहित ।

२ समान, सदृश ।

सेंजोड़े, सेंजोड़ै-क्रि. वि.—पति-पत्नी साथ-साथ, पति सहित ।

उ०—सारस केळ करै सेंजोड़ै, ऊंचा भमंग चढै अर ओड़ै । दिस पिछमांण वादळा दोड़ै, तद जळ नदियां ढावा तोड़ै ।

—वर्षा विज्ञान

सेंजोत, सेंजोती-सं. स्त्री. [सं. स+ज्योति] जीवात्मा का परमात्मा से मिलन, ज्योति में ज्योति का मिलना, मोक्ष, सामुज्य मुक्ति ।

उ०—अछरां वरां पळवरां आंमख, सिर सकर सूरां सेंजोत । जिम दीरघ व्हैतां जमजेठी, दीरघ मरण कियौ देसोत ।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

२ ज्योतिर्मय, ज्योतियुक्त, प्रकाशमान, प्रकाशित ।

उ०—रतनां सुग रीतीह, भाटी नैं पूगौ भलौ । जद जस सैंजोत-ह थांन पांन थप थापना ।—पा. प्र

सैंजोर—वि. [फा. शहजोर] बलवान, ताकतवर ।

सैंट—सं. पु. [अं.] इत्र, सुगंधित द्रव्य ।

उ०—कांनां मैं सैंट रा फोवा टांग्या, हाथां रै मैंदी मांडी अर रोजौ राख्यौ । आज दोनूं ड्यूटी सूं छुट्टी लै आया अर करसी आपरा मन चाया ।—दसदोख

रू. भे.—सेंट ।

सैंठाइ, सैंठाई—सं. स्त्री.—१ बलशाली या ताकतवर होने की अवस्था या भाव ।

२ जोरावरी, जबरदस्ती ।

३ बल, शक्ति, ताकत ।

रू. भे.—सेंठाइ, सेंठाई ।

सैंठौ, सैंठौ—वि. [सं. साधीष्ठ, प्रा. साहिट्ठ] (स्त्री. सैंठी) १ किसी प्रकार के भय, त्रास, चिंता कमजोरी या हीन भावना से मुक्त, साहसयुक्त, साहसी, निर्भय, निश्चिंत, दृढ़ ।

उ०—जगरूपसिंघ विहारीदासजी नूं इसी लिखावट करी थी कै मोहतौ थांनूं मारणनूं आदूणी सूं हुकम लेयनै आयौ है, सू थै घणा सैंठा रहज्यौ ।—द. दा.

२ आवेश, जोश, उत्तेजना या आक्रोशपूर्ण विचारों पर काबू रक्खा हुआ, सब्र किया हुआ, विवेकशील, दृढ़ विचार वाला, धैर्यवान ।

उ०—डीकरी घणी ई सैंठी रही तौ ई उण री रीस काबू बारै व्हैगी ।—फुलवाड़ी

३ कष्ट, पीड़ा, हानि आदि को झेलने वाला, सहनशील, सहिष्णु ।

४ अपने उद्देश्य, सिद्धान्त या धर्म पर कायम, दृढ, अडिग ।

५ थकान, आलस्य आदि से मुक्त, तरौताजा, स्वस्थ ।

६ बलवान, शक्तिशाली ।

७ विचलित न होने वाला, अविचल ।

८ अटल, अडिग, निश्चल ।

९ मजबूत, दृढ, पक्का ।

१० सावधान, सचेत ।

११ सख्त, ठोस ।

१२ देखो 'सांठौ' (रू. भे)

रू. भे.—संहटौ, सहटौ, सहंठौ, संठौ, सांठौ, सेंटौ, सेंठौ, सैठौ ।

सैंण—देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—१ स्यांणा स्यांणा सैंण देस मैं गैला दीठा । पुरख कठण पारखा, मांहि खारा मुख मीठा ।—ऊ. का.

उ०—२ तन भूठा जोबन भी भूठा, भूठी सैंण सगाई । माता-पिता सब ही सुत भूठा, आडा कोय न आई ।—अनुभववांणी

उ०—३ बहु आदर सूं बोलियै वारू मीठा बैंण । धन विण सागां 'धरमसी', सगला ही व्है सैंण ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ कहैं तूं बंधू सैंण हकारूं, कोट गढां का राजा । जोगी जंगम सह चुग मारूं, एक न मेल्हूं राजा ।—मेहौजी गोदारी

सैंणकी—देखो 'सैंणी' (अल्पा; रू. भे)

उ०—बापड़ी सैंणकी गाय रै गाडी मैं जुतणौ तौ बस री बात ही पण नीचै सूं मूंतणौ हाथ री बात ही कोनी ।—अमरचूंनड़ी

सैंणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—तनै कांई पंचायती है ? तूं थारै पापै-पुन्नै लाग । आयौ घणौ-ई रांड रौ भाई बण'र । कांनून छांटै है, कोरी सैंणप लगावै है ।—वरसगांठ

सैंणर—देखो 'सज्जन' (रू. भे.)

सैंणला—सं. स्त्री.—वेदा की पुत्री, सैणीदेवी ।

उ०—तैं पावई वडा बिदि पाया, तैं जगदीस जिसा नर जाया । इंमिया खिमिया मांस अहारिणी, चारिणी निमौ सैंणला चारिणी ।—पी. ग्र.

सैंणाई—सं. स्त्री.—१ शहनाई ।

उ०—चारू कांनी बाजा बाजै है । सैंणाई रै सुर सूं दिसावां गूंजै हैं ।—वरसगांठ

२ देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सैंणी—देखो 'सैणी' ।

उ०—बाबर बीखरिया ओढणियै आडै । डाबर नयणां री टांबर वय डाडै । नवळा नगाती संगाती सैंणीं । निरणीं नव अंगा गंगा जळ नैणीं ।—ऊ. का.

सैंणौ—देखो 'सेणौ' (रू. भे.)

उ०—१ आदर ऊंचै कुल अधिक, रिद्धि घणौ निरोग । धरम थकी व्है धरमसी, सैंणां रौ संयोग ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ सौ पनियौ सैंणौ साळस अर निरदोस व्हेतां थकांई एक चोरी रा मांमला मैं पकड़ीजग्यौ ।—अमरचूंनड़ी

(स्त्री. सैंणी)

सैंतळ—सं. स्त्री.—१ हलवा बनाने के लिये घी में भुना हुआ मेदा, आटा, पीसी हुई दाल या सूजी ।

उ०—खुरपै सूं सैंतळ हलावण लागौ ।

—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

रू. भे.—सेतळ ।

२ देखो 'सैतळ' (रू. भे.)

सैंता—देखो 'सैता' (रू. भे.)

सैंताळिस, सैंताळी, सैंताळीस—वि. [सं. सप्तचत्वारिंशत्] चालीस व सात का योग, छियालीस से एक अधिक ।

सं. पु.—चालीस व सात के योग से बनने वाली संख्या, ४७ ।

उ०—सात टगण फिर त्रिकळ यक, अंत रगण इक आंण । मत

सैंताळी गाज मैं, पत वदन रौ आग्य ।—र. ज. प्र.

रू. भे.—सैंताळी, सैंताळीस, सैंतालीस ।

सैंताळीसमौ, सैंताळीसवौं-वि.—छियालीस से आगे वाला, ४७ वां, सैंतालीस के स्थान पर होने वाला ।

सं. पु.—सैंतालीसवां वर्ष ।

सैंताळीसेक-वि.—सैंतालीस के लगभग, करीबन् ४७ ।

सैंतालिसै-क्रि. वि.—सैंतालीसवे वर्ष में ।

रू. भे.—सैंताळीसै, सैंतालीसै, सैंताळै, सैंताले, सैंतालै ।

सैंताळीसौ-सं. पु.—४७ वां वर्ष ।

रू. भे.—सैंताळीसौ, सैंतालीसौ, सैंताळौ ।

सैंताळै—देखो 'सैंताळीसै' (रू. भे.)

सैंताळौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू. भे.)

उ०—ग्राद रतां नवकोट उजाळा, राजा जनन उतन रखवाळा । तुरका ग्रमह थयौ सैंताळौ, चढियौ 'दुरंग' करण घर चाळौ ।

—रा. रू.

सैंतिस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैंतीर, सैंतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

उ०—१ गूदा गड़ा वळा टूचिया, हालां सूं हळ ठाटिया । सिरधर ग्रर सैंतीर साळा खूड भुण थम पाटिया ।—दसदेव

उ०—२ ग्रो पाप फूट फूट नै निकळैला । ग्राज तौ थांरा सैंतीर निरै-मन चाया करलौ ।—फुलवाड़ी

सैंतीस-वि. [सं सप्तत्रिंशत्] तीस ग्रौर सात का योग, छत्तीस से एक ग्रधिक ।

सं. पु.—तीस ग्रौर सात के योग से बनने वाली संख्या, ३७ ।

रू. भे.—सैंतीस, सैंतिस, सैत्रीस, सैतीस ।

सैंतीसमौं, सैंतीसवौं-वि.—सैंतीस के स्थान पर होने वाला, छत्तीस से ग्रागे वाला ।

सं. पु.—सैंतीसवां वर्ष ।

रू. भे.—सैंतीसमौ, सैंतीसवौं, सैतीसमौं, सैंतीसवौं ।

सैंतीसेक-वि.—सैंतीस के लगभग ।

रू. भे.—सैंतीसेक, सैंतीसेक ।

सैंतो-क्रि. वि.—धीरे-धीरे ।

उ०—सैंतो-सैंतो पीड़ ताड़ौ, लपेट लकड़ी लीरड़ा । तीजै दिन वन पयान करै, त्याग दुवाई चीरड़ा ।—दसदेव

सैंतीसौ-सं. पु.—३७ वां वर्ष ।

उ०—सैंतीसौ पूरौ थयौ, ग्रड़तीसै वरसात । ग्रसमर चाळौ उठियौ, समहर साके प्रभात ।—रा. रू.

रू. भे.—सैंतीसौ, सैत्रीसौ, सैंतीसै, सैंतीसौ ।

सैंत्रीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैंत्रीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

उ०—'ग्रसवर' 'तहवर' कुम्भनै, मेलै तातारखांन । सैत्रीसै रा माहवद, नमि रस थयौ निदांन ।—रा. रू.

सैंद-सं. स्त्री.—१ जान-पहचान, परिचय ।

२ जानकारी ।

रू. भे.—सैंद, सेंध, संध ।

सैंदरूप, सैंदरूप-क्रि. वि.—१ सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष, साक्षात ।

उ०—फूफोजी सैंदरूप म्हनै दरसण दिया । कह्यौ कै वै ग्रगत गियोड़ा है ।—फुलवाड़ी

२ वास्तविक रूप, ग्रसली रूप ।

उ०—पण मिनख खुदोखुद ईस्वर रौ ईज एक साचेलो नै सैंदरूप प्रमांण है ।—फुलवाड़ी

सं. पु.—रेशेदार व कड़े छिलके वाला नारियल, श्रीफल ।

रू. भे.—सदरूप, सेंदरूप, सैंदरूप ।

सैंदांण—देखो 'सादियांणी' (रू. भे.)

सैंदांणी—देखो 'सेनांणी' (रू. भे.)

उ०—ग्रमरत केरी रतन मूंदड़ी, या सैंदांणी लीज्यौ । कांमण टूना सब जड़जासी, जाय भंवर नै दीज्यौ ।—लो. गी.

सैंदांणौ, सैंदांन, सैंदांनौ—देखो 'सादियांणौ' (रू. भे.)

उ०—तिसै दासी दोड़ि दरबार जाय बधाई दीधी, जंवाई पधारया छै । सैंदांना सरू हुवा, बधाई बांटी, बधावा बांटण लागा ।

—जगदेव पंवार री वात

सैंदेस-सं. पु. [सं. स्व+देस] १ ग्रपना देश, ग्रपना वतन, स्वदेश ।

उ०—१ इम कहै वयण सैंदेस ग्राय । परदेस दबावौ खळ पजाय ।

—सू. प्र.

उ०—२ 'सीहै' जाइ सैंदेस, कथन कहियौ कमधज्जां । मारि लियौ मारकां, किसा पूरदीप सकज्जां ।—गु रू. बं.

२ देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

सैंदेह, सैंदेही, सैंदेहे, सैंदेहै-वि.—देह के साथ, सशरीर, सदेह, जीवित ।

उ०—१ नारांजां कै भड़ै सूर ग्रच्छरां लगावै नेह । छेह पेलै केही सूर ग्राभड़ै न छोत । देह त्यागै केही सूर जीरणां वस्त्रां दाय, सैंदेह नेवांणां बैठ जावै कै साजोत ।—बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ सैंदेही स्रग गयौ, रायरायां ऊथप्पै । ग्रंतरीख लै ग्रग्रत, सिद्ध पिण ग्राधौ कीन्हौ ।—नैणसी

उ०—३ परणि हौ गिरिणि परमेस पात्र, जीव सहि करै सैंदेहे जात्र ।—पीं. ग्रं.

उ०—४ जरा व्याध तीर तांण, प्रभु कै लगायौ बांण । ताही कूं विवांण सुरग, सैंदेही पठायौ है ।—ऊदौजी ग्रड़ींग

रू. भे.—सैंदेस, सैंदेह, सैदेस, सैंदै, सैंदेह ।

सैंदै—देखो 'सैंदेह' (रू. भे.)

उ०—नै रावजी स्रीकरनीजी रौ दरसण कियौ । ग्रर हाथ जोड़ इग्या मांगी । तद स्रीकरनीजी सैंदै विराजै है । सू स्रीकरनीजी फुरमायौ, 'बीका', भलौ हुसी, सिद्ध कर' ।—द. दा.

सैंदोई–सं. पु.—सहदोई नामक एक प्रकार का क्षुप।

सैंदौ–वि. [स. सधित] (स्त्री. सैंदी) जान-पहचान का, परिचित।

ज्यूं—सैंदौ मसांण, असैंदौ निवांण।

२ जिससे किसी प्रकार का सम्पर्क हो।

रू. भे.—सहंदौ, सेंदौ, सेंधौ, सैंधौ, सैंहदौ।

अल्पा;—सेंधियौ।

सैंध—१ देखो 'सैंद' (रू. भे.)

उ०—तद इवराहीम कही मोनूं तो सूं आगली पिछांण नहीं तिण री फेर सैंध करूं।—नी. प्र.

२ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

सैंधणी–वि.—स्वामी, मालिक।

उ०—१ महाराजा साजां गुणां कविराजां प्रतिपाळ। तेरह साखां सैंधणी, सौ लक्खां देवाळ।—रा. रू.

उ०—२ करम री सैंधणी सरम री कोट। मरम री जांणगर कुंअर मन मोट।—ल. पिं.

क्रि. वि.—१ प्रत्यक्ष, सामने।

२ देखो 'संधीणी' (रू. भे.)

सैंधव–सं. पु. [सं. सैंधवः] १ सिंधु देश का एक घोड़ा विशेष, अश्व। (डिं. नां. मा.)

२ घोड़ा, अश्व।

उ०—१ स्त्रीफळ रतन जड़ित सुखदाई। सैंधव दस दोय गयंद सवाई।—रा. रू.

उ०—२ ऐ जी अकबर काह, सैंधव कुंजर सांवठा। वांसै तौ वहताह, पंजर थया प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

२ सेंधा नमक।

उ०—१ दादू सैंधव कै आपा नहीं, नीर क्षीर परसंग। आपा फटक पखांण कै, मिळै न जळ कै संग।—दादूवांणी

उ०—२ सेंचल सैंधव जांण, आगर री परमांण। समुद्र-खार जांणियौ ऐ, कालौ लूण आंणियौ ऐ।—जयवांणी

३ सिंधु देश।

४ उक्त देश का निवासी।

५ उक्त देश का राजा, जयद्रथ।

६ सिंधु राग विशेष, वीररस पूर्ण राग।

उ०—तुटै कइ सीस कटै तन त्रांन, उठै कइ सूर जुटै कइ आंन। लुटै कइ भोम छुटै सर लाग, रटै कइ जोगड़ सैंधव राग।—पे. रू.

वि. [सं. सैंधव] १ सिंधु देश का, सिंधु देश सम्बन्धी।

२ समुद्र सम्बन्धी, सामुद्रिक।

३ सिंधु नदी सम्बन्धी।

रू. भे.—सिंधव, सेंधव, सेंधवौ, सैंधू, सैंधौ, सैंधव।

सैंधवपति–सं. पु.—सिंधु देश का राजा जयद्रथ।

सैंधवादिचूरण–सं. पु. [सं. सैंधवादिचूर्ण] वैद्यक का एक अग्निदीपक चूर्ण।

सैंधवी–सं. पु.—१ सिंधु राग।

२ भैरव राग की पुत्र-वधू, सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

उ०—तीज गळै अलवैला झूलै, सखियां गाय रही छै समाजी। मिळ रही तांन सैंधवी रा सुर सुं, वण रही रंग री वाजी।
—रसीलैराज रौ गीत

वि.—सिंधु देश की, सिंधु देश सम्बन्धी।

सैंधा-मुहां—देखो 'सेंदेमूंडे' (रू. भे.)

उ०—'सूर' रौ दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियौ। मूंहां सैंदां तणां मार हिंदु मुगळ, मछर सैंधा-मुहां आंण मिळियौ।—देवराज रतनू

सैंधौ-मैंधौ–वि.—परिचित।

उ०—लूंणासर मैं रेल वगै जकी ही मा'रजा रै गांव रै ठेसण लागै। सैंधा-सैंधा घणां आवै अर रेल चढै उतरै।—दसदोख

सैंधी—देखो 'सैंदौ' (पु.)

सैंधू—१ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

२ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

सैंधौ—१ देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

उ०—१ अठा थी भंवर गयौ। उठै सैंधौ पटेल १ थौ तिण कन्है घोड़ी १ मांग नै घुघरट गयौ।—नैणसी

उ०—२ सेवट सेठां री सैंधी वोली सुणनै पाछा मुड़्या।
—फुलवाड़ी

उ०—३ मारू सैंधै मुहे, दुरति धौळै दीहाड़ै। जग-जेठी जमदूत, 'मल्ल' जांणै आखाड़ै।—गु. रू. बं.

उ०—४ वच्चां नूं छोड कठै जाय न सकी व सहर अण सैंधौ थौ।
—साह रांमदत्त री वात

२ देखो 'सेंधौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सैंधी)

सैंन—१ देखो 'सैण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सूती ही सपनै मैं जांनु, सहीत आयै सैंन। आधी हुय हुय मिळवा लागी, ऊघरि आयै नैंन।—अनुभववांणी

उ०—२ हंरीया अंदर ऊपजै, ऐसा निकसै वैंन। मिळीयां सेती मन कहै, यौ दुरजन यौ सैंन।—अनुभववांणी

उ०—३ सूती सपनै रैंन कै, पाय विलंबी सैंन। हरीया जांणु उठि मिळुं, ऊघरि आयै नैंन।—अनुभववांणी

२ देखो 'सेंन' (रू. भे.)

उ०—सांम सखी मिळवा कै कारन, दै दै थाकी सैंन संदेसै। उंन मुंन ध्यांन आतम कौ, एकौ आठुं पौहर हमेसै।—अनुभववांणी

सैंनणी—देखो 'सांजणी' (रू. भे.)

सैंना—देखो 'सेना' (रू. भे.)

सैंनिका–सं. पु.—एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु, एक

खण्ड के चरण में २१ वर्ण होते हैं।

सैफल, सैफलियौ—देखो 'सैफळौ' (रू. भे.)

उ०—घण जग खळ डाकणहरण गजोवळ, सिलहां सकळ ऊजडियं। भर भिड़ै कुआं खळ सुजड़ै सैफळ, धोमग उच्छळ घडहडियं।

—गु. रू. बं.

सैफळौ-स. पु.—युद्ध, समर।

उ०—१ भ्राड नागजियां वहंतां भेलतौ, जोरवर बुधा री वेळ जोरै। सभजीवन हुवौ नाजि खळ सैफळै, अवळ 'दोलां' कमळ लोह ओरै।—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ सैफळै नडै भड असुर सुर, जड़ै मैल खागां जरक। जीनास जेम देवै कळह, ऊभौ रथ थांभै अरक।—सू. प्र.

वि.—अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, शस्त्रधारी योद्धा।

उ०—१ अकळकाळ रण ताळ वडौ इक आव्रत वूहौ। सीसोदां सैफळां, नग्गि राठौड़ां हुअौ।—गु. रू. बं.

उ०—२ सीरांम खळ हुय सैफळां, हुव बांण वहजळ झळहळां।

—सू. प्र.

रू. भे.—सईफळउ, सैफळ, सैफळियौ, सैफळ, सैफळौ।

सैवळ—देखो 'सेमळ' (रू. भे.)

उ०—दया देही कारमी, गरब करौ मत कोय। सैवळ कै सै फूल हैं, देखण कै दिन दोय।—जांभौ

सैभर—१ देखो 'सांभर' (रू. भे.)

उ०—१ अधिप डंडै अजमेर नू चढियौ सैभर सीस। सिर लंका फिर नाम घण, गंम विचारी रीस।—रा. रू.

उ०—२ रामूजी! थै उस्ताद किसौ पीसणौ उठाय लाया। मजौ किरकिर कर दियौ। मरण दो-नी साळी मंगतवाड़ नै, किसी सैभर सुनी हुवै है?—वरसगांठ

२ देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

उ०—चत्री हक गूंझ उठी सहवेड, खगां मुंह झूटत सैभर खेड।

—पा. प्र.

सैभरियौ—देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

उ०—'इन्द्राणै' आयांण रौ, सैभरियौ सावंत। खित पुड़ धड़ सिर सूद रै, हुरक समप्पण हेत।—किसोरदांन बारहठ

सैभरी-सं. स्त्री.—१ सांभर नगर के निकट पहाड़ी पर स्थित एक देवी की मूर्ति जिसे शाकम्भरी देवी भी कहते हैं।

२ देखो 'सांभरियौ' (रू. भे.)

सैमुख, सैमुखि, सैमुखौ—देखो 'सनमुख' (रू. भे.)

उ०—१ सैमुख गुरु रै सुजस, प्रसिद्ध कीजै परसंसा। सगा सणीजा सैण, वखाणौ पूठा वांसा।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ ताहरां राव श्रीकल्यांणमलजी पातिसाहजी सैमुखि तेड़ि घणौ दिलासा दे नै बीकानेर नूं विदा किया।—नैणसी

उ०—३ सैमुखौ कांम न कीजिइं रे लाल, जै पर पूठैं थाय रे सौ०। आलोची मन आपणैं रे लाल, मांडचौ एह उपाय रे सौ०।

—प. च. चौ.

सैलोट—देखो 'सैलोट' (रू. भे.)

उ०—१ अख जड़ तोड मोड़ वैरियां, धर धारूजळ दांत धरै। माहर राव अमी मद मैगळ, कोट गढां सैलोट करै।

—महाराजा जसवंतसिंहजी रौ गीत

उ०—२ मोकमसिंघ कलियांण रौ, मेड़तियौ मन मोट। दिस गुज्जर अस खेड़ियौ, धरकरवा सैलोट।—रा. रू.

सैवणौ, सैववौ—१ देखो 'सेवणौ, सेववौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहणौ, सहवौ' (रू. भे.)

उ०—ऐ: सै: ऊमर भर ऊंधा-सूंधा लोगां रा कोरडा ही सैवता रैवै है।—दसदोख

सैवज—देखो 'सैंवज' (रू. भे.)

उ०—घणां सैवज गोहूं सारी सींव काठा नीपजै छै। मण १ गोहूं वाया मण ६० गोहूं हुवै छै। घणी ज्वार हुवै।—नैणसी

सैवियोड़ौ—१ देखो 'सेवियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सैवियोड़ी)

सैस—१ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—१ सोळा सैस गोपी तज दीनी, कुवजा संग लगाई।—मीरां

उ०—२ सतमेख सदं, अज सैस अदं। मिसटान मदं, अण अव हदं।—र. रू.

२ देखो 'सेस' (रू. भे.)

सैसकार—देखो 'संस्कार' (रू. भे.)

उ०—१ आगै बोली—बापड़ा रा सैसकार थांरै घर रा हुयग्या, महाराज! म्हारै घर रौ अन-जळ चूकग्यौ।—वरसगांठ

उ०—२ बापूजी सूं चोखौ जी रळचोड़ौ है। आगलां रा सैसकार है। जणा ही अफसोच आवै है।—दसदोख

सैसक्रत—देखो 'संसक्रत' (रू. भे.)

सैसमूळी-स. स्त्री.—थोर नामक पौधे के आस-पास होने वाली एक जड़ी विशेष।

सैसार—देखो 'संसार' (रू. भे.)

उ०—खडग कएत तणां तका लागा खड़ै, ऊवरै तका जळधार वारै। गहर भर तारियौ 'छतौ' खत्रियां गुर, तवै सैसार गुर सदा तारै।—राव सत्रसाल हाडा रौ गीत

सैसारी—देखो 'संसारी' (रू. भे.)

उ०—आंढगी केकांण फेर सुरभी एखटी आंणी, जांणी मही सूर चंद्र रिसी तौ जुगाद। देवळा संभाळी बाई आपरी गाय नै देखौ, ऊचारी सैसारी बात निभाई अनाद।—बादरदांन दधवाड़ियौ

सैसी—देखो 'सांसी' (रू. भे.)

उ०—ठगी माथै कमर बांधी, सोखीनाई नैं धोखा धड़ी सूं सांधी।

सैंसी अर मैं'तर तांई आंगै विना नहीं छोडचौ ।—दसदोख

सैंहले—क्रि. वि.—धीरे-धीरे ।

उ०—छळ सूं त्रंव घेंच लयौ सैंहतै, पुळ पूगोय 'पाल' विनां पैहतै ।
—पा. प्र.

सैंहदौ—देखो 'सैंदौ' (रू. भे.)

उ०—जद सुसलौ वोल्यौ—सैंहदौ जागां छूटै नहीं । ज्यूं साची स्रद्धा री रहिस वेठी तौ पिण आगला सैंहदा कुगुरु त्यांरौ संग छोडै नहीं ।—भि. द्र.

(स्त्री. सैंहदी)

सैंहस—देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिड़ै कायमखां छळि भरै ।
सैंहस एक दस लिया सकरड़ै, कूरम तौ न संतोख करै ।
—सादूळसिंघ सेखावत री गीत

सैंहसकर, सैंहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

सैंहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—आरंभ रांम आरंभ गुरु, पारधही फरसां धरण । गजसिंघ महण गंभीर पण, कळा तेज सैंहसकिरण ।—गु. रू. बं.

सैंहात, सैंहाथ—देखो 'सेहथ' (रू. भे.)

उ०—सैंहात जोड़ गाडौ सकत, सेवग पुंचायौ कुसळ सत ।
—रांमदान लाळस

सै—वि.—१ समान, अनुरूप, बराबर ।

उ०—१ दळ भागा विदुर नीवक निड्डुर, चूहड मच्छर धन्न हियं ।
वूहां किरि वज्जर चौरंगि चक्कर, गज्ज गिरव्वर सै गुडियं ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ लखण बतीसै मारुवी, निधि चंद्रमा निलाट । काया कूंकूं जेहवी, कटि केहरि सै घाट ।—ढो. मा.

२ सब, समस्त ।

उ०—१ सहू दईरा दीकरा, लीला लाडै लीक । दई हूंत छांना दिवस, सै काटै विण सोक ।—बां. दा.

उ०—२ लारै फुर'र देखियौ तौ आगै लुगायां, टाबर-टींगर, मिनख, सै मिळा'र कोई १५ जणा ऊभा ।—वरसगांठ

उ०—३ पछै राजा जगदेव, सै साथै करि दरबार आया । बैठां वातां करी । राजा निपट राजी हुवौ ।—जगदेव पंवार री बात

क्रि. वि.—१ में ।

उ०—तिसड़ै फोज विचळी । ताहरां पठांण नाठा । नासतां हीज मांहे हेमू नाठौ जाइ छै । तिसड़ै सै साहु कुळीखांन वळीवेग आपड़ियौ ।—द. वि.

२ से ।

उ०—१ जांहरां ऊ बांभी गांम लांविया रै कनारै सै गयौ । ताहरां बांभी दीठौ—नगारा तौ बजाय लेवां ।—नैणसी

उ०—२ सिरकार पातसाही सै जांन कर सत गुमास्तै अर आदमी अपनै कै ताकीद तमांम करै ।—द. दा.

उ०—३ सांम्रित साख पुरांन कु, सीख'रि भया सुजांन । हरीया अछर हेक विन, चतुराई सै मांन ।—अनुभववांणी

सं. पु. [फा. शह] १ शह, किस्त । (शतरंज)

२ पक्षपात, तरफदारी ।

३ वल, शक्ति ।

४ सहारा ।

५ बचत ।

रू. भे.—सय, सैंह, सैंहे, सैंहेत ।

६ देखो 'सैं' (रू. भे.)

उ०—तिणनुं ढोलै पूछीयौ, मारवणी विरतंत । वोलै वारट सै-मुखै केता गुण कहंत ।—ढो. मा.

७ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—१ अठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद । बुद्धवार तिथ चौथ हुवौ प्रारंभ ग्रंथ हद —र. ज प्र.

उ०—२ गुरज धरा री कपाट होय आपरा बारह सै बांनैतां समेत ।—वं. भा.

उ०—३ चित्तोड़ भिळियौ जद साढै तीन सै लुगायां री जंवर हुवौ ।—बां. दा. ख्यात

८ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—करहौ कंत कंवेरियौ, सुगणी मारू संग । वौ सै उमर सुंमरौ; ताता खड़ै तुरंग ।—ढो. मा.

९ देखो 'सह' (रू. भे.)

सैइ—सं. स्त्री.—सखी, सहेली ।

उ०—वीरौ तौ आयौ सैयां कांकड़े, गोरीड़ां सूं लटक जुहार ।
—लो. गी.

रू. भे.—सैई ।

सैइकौ—देखो 'सईकौ' (रू. भे.)

सैई—देखो 'सेइ' (रू. भे.)

सैकड़ौ—देखो 'सैंकड़ौ' (रू. भे.)

सैकड़—वि.—कई सौ, सैकड़ों ।

उ०—दुकांनां रा सैकड़ूं माथै करचा, चोरां रा हजारू घर खरच मैं ऊधरचा ।—दसदोख

सैकड़े—क्रि. वि.—प्रतिशत, फीसदी ।

सैकड़ौ—वि. [सं. शतकाण्ड, प्रा. सयकंड] सौ, पूर्णसौ, शत ।

उ०—खेल तमासा सरु कराया, सैकड़ां री सराव वाळी । बडार रै नातै गांव नूंत्यौ, सोनजी रात सुखरी नींद सूत्यौ ।—दसदोख

सं. पु.—सौ की संख्या, १०० ।

रू. भे.—सईकड़ौ, सैंकड़ौ, सैंकड़ो, सैकड़ो ।

सैकळ—सं. पु. [अ.] हथियारों को साफ करके उन पर सान चढ़ाने का कार्य ।

सैकलगर-स. पु. [फा.] तलवार, छुरी, चाकू, कैंची आदि पर धार [illegible]।

सैतान—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सैतो—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सैचन्नरा—देखो 'सैचन्नरा' (रू. भे.)

उ०—[illegible] कोई [illegible], भाभा नै सैचन्नरा कर दियो।
—फुलवाड़ी

सैचाल-स. स्त्री.—तलवार के मेल की एक चाल विशेष।

सैचैन—देखो 'सावचेत' (रू. भे.)

उ०—प्रोहितजी सैचेत होय मान कनै आय ऊभो रह्यो, ताहरां मान बोल्यो।—[illegible]

सैज—देखो 'सेज' (रू. भे.)

सैंज—देखो 'सहज' (रू. भे.)

सैंजे, सैंजै—देखो 'सहज' (रू. भे.)

ज्यूं—सैंजे चूड़ी फूटियी, हळको हुवग्यो हाथ। बाई रा बंधण कट्या, भली करी रघुनाथ।—ऊ. का.

सैजोरी-स. स्त्री. [फा. शहजोरी] १ जबरदस्ती, जोरावरी।

२ शक्ति, बल, ताकत।

सैझ—देखो 'सेज' (रू. भे.)

उ०—सैझ फूला माहे गडकर बछाई छै।
—कल्यांणसिंघ वाढेल री वात

सैंझ—देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—तद पनायण उठै सू टैज पाछो घिरियो। तद कूंपै मैराजोत कयो, 'जी वीरमदे सूं सैंझ सू मरै नहीं।'—द. दा.

सैझड़ी-स. पु.—लगातार एक ही समान होने वाली वर्षा।

सैझो—देखो 'सेजो' (रू. भे.)

उ०—मझरा कोटरा पठा हेठै नदी उजार सदा वैहती रहै छै, सैझो री भरा सेवज गोहूं निपा, धरती काळी।—नैणसी

सैण-स. पु.—पति, खाविंद।

उ०—[illegible] इसा कामण कहै, सुण हो कुंजर सैण। अब कब [illegible] आप रो, सो हम देखां नैण।—गज-उद्धार

वि. [स. सज्जन] १ सज्जन, शरीफ, भला।

उ०—[illegible] न भेद जाणियै, उराग सैण दूजणं। संधाण-बांण [illegible], [illegible]।—सू. प्र.

२ [illegible], प्रेमी।

उ०—[illegible] हुई, सात बरस री रैण। नैण न आवै नींदड़ी, [illegible] पट में सैण।—अग्यात

३ मित्र, दोस्त। (डि. को.)

४ [illegible], मददगार।

५ हितैषी, शुभेच्छु।

उ०—१ वातां वैर विसावणा, सैणां तोड़ै नेह। हासै विस पीणा हरख, आछा कांम न एह।—बां. दा.

उ०—२ किणी भाई सैण रो भलो व्है तौ म्हनै गांवतरै फिरणा में कोई हांण।—फुलवाड़ी

६ मेल-मुलाकात वाला, मेल-जोल वाला, मुलाकाती।

७ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

उ०—रजपूतांणी रुत्र मींनाणीं सिरखी। नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी।—ऊ. का.

८ सरक्षक।

९ सीधा-सादा, भोला-भाला।

१० चतुर, होशियार, समझदार। (व्यंग्य)

रू. भे.—सइण, सइयण, सइयणि, सईण, सयण, सहण, सेंन, सेण, सेन, सें'ण, सैंण, सैंन।

सैणप-सं. स्त्री.—१ भलमनसाहत, सज्जनता।

२ सीधापन, सरलता।

३ प्रेम, स्नेह, मेल-जोल।

उ०—तोछी कथा गरीबां री, सैणप सूं झिळकै। थूं रै वैभव ! सुणतां, मत घिरणा सू मुळकै।—फुलवाड़ी

४ होशियारी, चतुरता।

ज्यूं.—घणी सैणप में किरकिर पड़ै।

रू. भे.—सयांणप, सयांनप, सेंणप, सेंनप, सेणप, सेनप, सैंणप, सैणाई, सैंणाई, स्यांणप।

सैणल—देखो 'सैणी' (रू. भे.)

उ०—बींझाणद वळेह, सैणल घर संपजै नहीं। चित डूंगर चढेह, जीवां जितै जोवां घणी।—अग्यात

सैणाई—१ देखो 'सैंणाई' (रू. भे.)

२ देखो 'सैणप' (रू. भे.)

सैणाचार स. पु.—१ सज्जनतापूर्ण आचरण, सौजन्यतापूर्ण व्यवहार।

उ०—जाहर जग जीवाड़णो, मांनै दोयण मेह। किण सूं रावै केहरी, सैणाचार सनेह।—बां. दा.

२ मित्रता, दोस्ती, प्रेम।

३ मेल-जोल।

४ भलाई।

रू. भे.—सैंणाचार।

सैणी-सं. स्त्री.—१ वेदाचारण की पुत्री, जो दुर्गा का अवतार मानी गई है, इसका जन्म कच्छ में हुआ था।

उ०—मिवाळी तुही सीमिका होल सैणी। त्रिदाळी तुही गूंगिका नागवैणी।—मे. म.

वि. स्त्री.—१ सीधी-सादी, भोली-भाली।

उ०—सीधी सैणी सी मैणी सुण मालदे। वैसक पुरवसणी हसणो नजि हाले।—ऊ. का.

२ भली, सज्जन, शरीफ ।

रू. भे.—सयणी, सेणि, सेणी, सैंणकी, सैंणल ।

सैंणू, सैंणौ—१ देखो 'सेणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रसराज आ मिळसां मिळ रहै मेरा स्यांणा । नहीं सहतो विरहा **सैंणू** दा ।—रसीलैराज री गीत

उ०—२ राजा महलै वैसकै, चमर ढुळावियां । **सैणां** मनै संतोख, खळां नह भावियां ।—गु. रू. बं.

उ०—३ **सैणां** ठरिया नयण हिया प्रसणां परजळिया । जस प्रताप वाधियौ, धाउ नीसांणां वळिया ।—गु. रू. बं.

उ०—४ ना कीज्यौ **सैणा**, नरां, काचौ बीजौ कांम । राखै लाजा सतरी, राजा साचौ रांम ।—र. ज. प्र.

उ०—५ दस सेर चावलां रौ चरू चूला ऊपर चढायां ऊपरला चोखा सीज्या हाथ सूं देख्यां तौ **सैणौ** हुवैतै हेठला पिण सीज्या जांणै अनै मूरख हुवै तै जांणै ऊपरला तौ सीज्या पिण हेठै कोरा नहीं ।—भि. द्र.

सैंत—१ देखो 'सेत' (रू. भे.)

उ०—१ जिण घेरियौ भुज जाय, दळ प्रवळ **सैंत** दवाय । धर कीध परवस धाव, रहि कोट ग्रोटां राव ।—रा. रू.

उ०—२ भोपतसिंघ भादरसिंघजी कौ एक भाई । जैनैं पांच गांवां **सैंत** सीवोटां वताई ।—शि. वं.

२ देखो 'सहद' (रू. भे.)

उ०—वेटा रै मुळमुळावतां ई काली मासी रा हांचळ **सैंत** री कोकड़्यां ज्यूं भरीजग्या ।—फुलवाड़ी

सैं'त—देखो 'सहद' (रू. भे.)

सैंतळ–वि.—१ नाश, नष्ट, ध्वस्त ।

उ०—मद तोसूं मन मेळ, जादु कुळ **सैंतळ** हुवौ । मद तोसूं मन मेळ, भोज रावत घर खोयौ ।—अरजुनजी वारहठ

२ समतल, वरावर ।

रू. भे.—सेतळ ।

३ देखो 'सैंतळ' (रू. भे.)

सैतांन–सं. पु. [अ. शैतान] १ ईश्वर विरोधी एक अदृश्य शक्ति जो समस्त दुष्ट प्रवृत्तियों एवं दुर्देवों की अधिष्ठाता के रूप में मानी जाती है । इसका कार्य मनुष्यों में क्रूर व नीच भावनाऐं भरकर ईश्वर विरोधी पाप कर्मों (अमानवीय कार्य) की ओर प्रेरित करना है ।

उ०—डडा डर करि चालियै, डाहा होय सुजांण । विसंन नांय विलंव्यौ रही, जुंवर न मलिसी मांण । जुंवर न मलिसी मांण, तांन **सैतांन** न चालै, ग्रौ मन राखौ ठांय, गोठि सुरां की माल्है ।

—वील्होजी

२ भूत, प्रेत आदि अधम योनि तथा इस योनि का कोई भूत या प्रेत ।

३ दुष्ट, अत्याचारी, क्रूर या आततायी व्यक्ति ।

४ अत्यन्त क्रोध व वासनापूर्ण दुष्ट प्रवृत्ति ।

वि.—१ अत्यन्त दुष्ट, क्रूर, अत्याचारी, दुराचारी, आततायी ।

उ०—पण एक उपाय है, अबार मुसलमांन वद **सैतांन** वौहत जवर है, सू आपां आ कहसां कै म्है हिंदू हां, सू थांसू पैहला उतरसां, तिण माथै ऐ वाद कर पै'ला उतरसी, पीछै आपां सारी वात करसां ।—द. दा.

२ वदमाश, उद्दण्ड, उपद्रवी, शरारती ।

३ प्रचण्ड, रौद्र ।

४ शक्तिशाली, प्रबल ।

उ०—१ अला महा **सैतांन** तोफांन मोडै, अला त्रिधारै खड़ग सां दईत तोड़ै ।—पी. ग्रं.

उ०—२ कबड्डी धिन तारा, **सैतांन** बीरू मारा ।—चितरांम

५ विशाल, भीमकाय ।

उ०—मांमौ-भांणेज दोन्यूं डील रा **सैतांन** अर छाती रा वज्जर । काळजौ इसौ कै दोन्यूं मिळनै हजारां मिनखां रौ सांमनौ करण री हिम्मत राखै ।—अमरचूंनड़ी

६ धर्म-विरोधी, विधर्मी ।

उ०—देवजी न मेळी दुज, पंथ ता पासै टळिया मेल्हि सुगुर की गोठि, जाय **सैतांना** मिळिया ।—वील्होजी

सैतांनी–सं. स्त्री. [अ. शैतानी] १ शैतान का काम ।

२ अत्याचार, दुष्टता ।

३ उद्दण्डता, वदमाशी, शरारत ।

४ शक्ति, वल, पराक्रम ।

सैता–वि.—१ सव, समस्त ।

उ०—रैता गोपाळ वस गांवां दो च्यारि । सारी अणहोती वात **सैता** विचारि ।—शि. वं.

२ सहित ।

रू. भे.—सैंता ।

सैतार—देखो 'सितार' (रू. भे.)

उ०—सलोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माड रै राग सौभाग गावै । वंवी बीण **सैतार** सैनाय बाजै, त्रमाळा घुरै मेघ माळा तराजै ।—मे. म.

सैतीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे.)

सैतीस—देखो 'सैंतीस' (रू. भे.)

सैतीसमौं, सैतीसवौं—देखो 'सैंतीसमौं' (रू. भे.)

सैतीसे'क—देखो 'सैंतीसे'क' (रू. भे.)

सैतीसै, सैतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू. भे.)

सैतूत—देखो 'सहतूत' (रू. भे.)

सैत्रुंज, सैत्रुंजौ—देखो 'सेत्रुंज' (रू. भे.)

उ०—**सैत्रुंजै** नायक वीनति, सांभलौ, स्त्रीरिखहेसर स्वांम । दीन

दमाल तुरकांनै दागिदूं, अंतर बीनग आंम ।—घ. व. ग्रं.

सैद-क्रि. वि.—१ लिये, वास्ते, निमित्त ।

२ देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—१ आया असुरांणं अप्परमांणं, किंकर जांण जमरांणं । उगना मांण रैण विहांणं, सैद पठांणं घमसांणं ।—रा. रू.

उ०—२ इसै रूप सूं 'भीम' खग वाहतौ आवीयौ, विखम भारथ तणी वणी वेळा । भांज दळ सैद गजसिंघ सूं भेळिया; भांज गजसिंघ 'जैनघ' भेळा ।—भीम सीसोदिया रौ गीत

उ०—३ जादम भांण पठांण जुमल्लां, सैद रहीम सेख सादुल्लां ।
—सू प्र.

३ देखो 'सैद' (रू. भे.)
४ देखो 'सैत' (रू. भे.)

सैदखांनौ—देखो 'सैतखांनौ' (रू. भे.)

सैदजादौ—देखो 'सैयदजादौ' (रू. भे.)

उ०—उठी सैदजादां तणा थाट आया । संपेखै अठी जोस मारू सवाया ।—रा. रू.
(स्त्री. सैदजादी)

सैदरूप—देखो 'सैदरूप' (रू. भे.)

उ०—रांमपुर सूं नूतौ आयौ घोड़ा च्यार हाथी एक सैदरूप रुपया १५००) रोकड़ी नूतौ ।—बां. दा. ख्यात

सैदांण—१ देखो 'सैयद' ।

उ०—काजि चकथांण सैदांण वाळै हुकम, असौ जगचख्खि रखायौ अनूकां ।—भीवसिंघ हाडा व गजसिंघ कछवाहा रौ गीत

२ देखो 'सादियांणौ' ।

सैदांणौ, सैदांन, सैदांनौ—देखो 'सादियांणौ' (रू. भे.)

उ०—सैदांनौ बाजतां राजा सहर भीतर आयौ ।
— पलक दरियाव री वात

क्रि. वि.—साक्षात, प्रत्यक्ष ।

उ०—दळ अनेक जोधा प्रभु जीत्या, मोहि विवाह करि आंणी । क्रपानिध क्रपा अब कीजै, प्रगट होय सैदांणी ।—रुकमणी मंगळ

सैदांनौ—देखो 'सादियांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ राठौड़ कूंपै भदै पिण मेत आप रै हाथ आयौ सु उण टौड़ सैदांना बजाय ऊभा रहा ।—नैणसी

उ०—२ यु करता दरबार आगि उतरीया, सैदानां घुरिया ।
—पनां

सैदेव, सै'देव, सैदेव—देखो 'सहदेव' (रू. भे.)

उ०—बापड़ौ जोसी यूं री यूं वनायनै गियौ । एक-एक वात मिळै । जोसी कांई हो सैदेवजी हो परतख सैदेवजी ।—फुलवाड़ी

सैदेह—देखो 'सैदेह' (रू. भे.)

उ०—भार उतारै भोनि अवधि सैदेह उधारै । वसै रांम वैकुंठ, विमळ जस जग विसतारै ।—सू. प्र.

सैधव-सं. पु.—१ द्रव्य, धन, वित्त । (ह. नां. मा)

२ देखो 'सैंधव' (रू. भे.)

सैंधौ-सं. पु.—सुरंग ।

उ०—आय छिपै पुर मैं असुर, निस उर धार विचार । छांना सैंधा छेड़िया, संगि तेड़िआ सुआर ।—रा. रू.

सैन-सं. स्त्री. [सं. संज्ञपन] १ इशारा, संकेत ।

उ०—१ अर दो ही बीरां रा करवाळां वावन ही बीरां रै अरथ बपा खप्पर मैं भरण री सैन दीधी ।—वं. भा.

उ०—२ पीछै दूजै फौजां रा मुहमेफ हुवा नै तठै सारांई सैन करी । तद भीमसिंघजी चुरू रै ठाकर हौदै मैं मा'राज नै हाथ घालियौ ।—द. दा.

२ निशान, चिन्ह, यादगार ।

३ ज्ञान, शिक्षा ।

४ मार्गदर्शन ।

रू. भे.—सेन, सैनी ।

५ लेटना, शयन ।

उ०—गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या कृत सैन नांमी ।
—र. ज. प्र.

६ कामदेव, मदन । (अ. मा.)

७ देखो 'सेन' (रू. भे.)

उ०—१ मीत री लेख 'विसना' तणी मेटियौ, पोत री सैन री चसम पाई । सुपह चहुवांण री कंवर आई सरण, बकस दीधा चरण इंद्रबाई ।—मे. म.

उ०—२ पण मांचा सूं नीचौ उतारियौ तौ सफा नटग्यौ—कै म्हनैं कीं ठा' व्है तौ सैन भगत री सौगन ।—अमरचूंनड़ी

८ देखो 'सैण' (रू. भे.)

उ०—हाथ पांव कर कूबडी, नीचै मुख अरु नैन । इन कस्टां पोथी लिखी, तुम नीकै रखियौ सैन ।—जयवांणी

९ देखो 'सेना' (रू. भे.)

उ०—१ कही व्है कुघाटां घाट खगाटां विछोड़ै कंध, मही धोम पाटां धू निराटां माळ मैन । वीजै 'रूघै' वीखेरी अरावां सूधी आटा-वाटां, सार भाटां बीधूसै सतारा वाळी सैन ।
—प्रभुदांन मोतीसर

उ०—२ सैन रिजमट असंख पलटणां तणी सग, भड़ तिलंग वंग किळंग तणा भिळिया । अभंग जंग भरतखंड पारका ऊसर ऊतै, मारका 'वजंद्र' रै दुरंग मिळिया ।—कविराजा बांकीदास

सैनक-सं. पु.—सर्प ।

उ०—जांणै काळै सैनक पूंछ दबियां फुंफकारै मारै त्यूं उभौ उभौ मूंसाड़ा मारै छै ।—सूरै खीवै कांधळोत री वात

सैनपति, सैनपती—देखो 'सेनापति' (रू भे.)

सैनभोग-सं पु. [सं. शयन+भोग] शयन के समय देवताओं के चढ़ाया जाने वाला भोग ।

सैनया—देखो 'सेना' (रू. भे.)

सै'नसील—देखो 'सहनसील' (रू. भे.)

सै'नसीलता—देखो 'सहनसीलता' (रू. भे.)

सैनांण, सैंनांण—सं. पु.—१ निशान, चिन्ह ।

उ०—नीचै मतीरा रै बीजां जिसी छोटी दौ आंख्यां, आंख्या तौ कांई आंख्यां रा **सैनांण** हा ।—फुलवाड़ी

२ पहिचान, चिन्ह ।

उ०—वेलै कही मोनूं तौ सारा समाचार ठावा कहि **सैनांण** दिखाय घोडा लेगयौ ।—नापै सांखलै री वारता

३ स्मृति, चिन्ह ।

उ०—अरु फरीदखां री कबर पथर री है तिण ऊपर तरवार वाही जिकौ **सैनांण** अद्याप है ।—द. दा.

४ धव्वा, दाग, खरोंच ।

५ प्रतीक ।

६ सकेत ।

७ झण्डा, पताका ।

रू. भे.—सनांण, सहनांण, सहलांण, सहिनांण, सहिलांण, सहीलांण, सेनांण, सेंनांण, सेनाणी, सेनांणू ।

सैनांणी, सैंनाणी—सं. स्त्री.—१ वह वस्तु या यादगार जो किसी की यादगार हो, स्मृतिचिन्ह ।

२ पहिचान, शिनाख्त ।

३ लक्षण, गुण ।

४ न्यादर्श, नमुना ।

उ०—हूं जी मौज देऊं तिण मां सूं **सैनांणी** ३ छांनै सी लै लेवै ।
—पंचदंडी री वारता

रू. भे.—सहनांणी, सेनांणी, सेंनाणी, सेलांणी, सैंदाणी, सैळांणी ।

सैना—देखो 'सेना' (रू. भे.)

सैनाई, सैनाय—सं. स्त्री. [फा. शहनाई] शहनाई, नफीरी, वाजा ।

उ०—वंबी वीण सैतार **सैनाय** वाजै । त्रमाळा धुरै मेघ माळा तराजै ।—मे. म.

सैनिक—सं. पु. [सं.] १ सेना या फौज का आदमी, सिपाही ।

२ सुभट, योद्धा ।

३ प्रहरी, संतरी ।

सैनी—सं. पु.—१ नाई, हज्जाम ।

२ देखो 'सैन' (रू. भे.)

सैनीछर—देखो 'सनिस्चर' (रू. भे.)

उ०—जंपसै जोगेसर सुकर **सैनीछर** सप्त रुसेसर नै ससिहर ।
—पी. ग्रं.

सैन्या—देखो 'सेना' (रू. भे.)

उ०—१ धर पतसाही धूपटै, वळपांण वहादुर । आयौ 'कमरौ' पातसाह, सज **सैन्या** आसुर ।—जूंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—२ **सैन्या** सहर मांहैं पेसती किसी सोभै छै । ताकौ द्रस्टांत । जैसै समुद्र मांहै नदी आय मिळै छै ।—वेलि टी.

सैपाठी—सं. पु.—सहपाठी, साथ पढ़ने वाला, साथी ।

सैपीड़ौ—वि.—निरन्तर दर्द या पीड़ा बना रहने वाला ।

सैप्रत, सैप्रत्त—देखो 'सांप्रत' (रू. भे.)

उ०—दोइ रगण गण देखिजै, पाय जेण **सैप्रत्त** । विजोहा, एही विगत्ति, तवां रांम गुण त्तंत ।—पिं. प्र.

सैफ—देखो 'सेफ' (रू. भे.)

सैफळ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)

सैफळौ—देखो 'सैंफळौ' (रू. भे.)

उ०—झूंझारां आवध झळहळेय, व्रहमंडक वीजा वळवळेय । **सैफळौ** वाजियौ सांमतांह, मेलियौ लोह मुह रावतांह ।—गु. रू. वं.

सैफौ—सं. पु. [अ. सैफा] जिल्दसाजी का एक औजार जिससे किताबों का हाशिया काटा जाता है ।

सैवास—देखो 'सावास' (रू. भे.)

उ०—ताहरां रावळजी कह्यौ—**'सैवास** ! ऊदा **सैवास** !' ताहरां वाघ रावळजी ऊदै नूं वगसियौ ।—नैणसी

सैबासी—देखो 'सावासी' (रू. भे.)

सैबुलबुल—सं. स्त्री.—शह बुलबुल नामक पक्षी ।

सैमत—देखो 'सहमत' (रू. भे.)

सैमळ, सैमल—१ देखो 'सेमळ' (रू. भे.)

उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अमर सदै । **सैमळ** सरीस तज आंन सुण, दाख रांमफळ सेवदै ।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सांमल' (रू. भे.)

उ०—जद किणही पूछ्यौ करियावर मैं गुल गालवा मैं तौ थैंई **सैमल** ईज हुसी नैं वारदांनौ घल्यौ क्यूं ?—भि. द्र.

सैमांन—देखो 'सांमांन' (रू. भे.)

उ०—नीत काज इंगळ न्रपत, सझियौ जुध **सैमांन** । वेलजियम औ सरविया, थिरा उवारण थांन ।—किसोरदांन वारहठ

सैमात—सं. स्त्री.—शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात, किश्त, शिकश्त ।

सैमुदौ, सैमूंदौ, सैमूदौ—देखो 'सेमूंदौ' (रू. भे.)

उ०—१ किणी प्रिथीराज नै चौहांन वंस रौ सूरज, वारवीं सदी रै सगळै राजाधिराजां सूं लूंठौ भिड़मल अर मरोड़ आळौ बतायौ तौ वीजा उणनै **सैमूंदै** भारत नै वारला वैरचां रै हमलां सूं वचावण आळी ढाल मांनी ।—चितरांम

उ०—२ रांमजी नै दया आयगी अर उणां द्रमकुल्य कांनी वांण म्हा दियौ । इण व्रह्मदंड नांव रै अग्निवांण सूं **सैमूंदै** द्रमकुल्य री पांणी तौ कळकळीज अर हवा हूय गियौ अर रुखां समेत मलेच्छ वळ'र भसम हुवा ।—चितरांम

(स्त्री सैंमूडी, सैंमूडी)

सैई—देखो 'सहाई' (रू. भे.)

उ०—आभरण नै छनो दीया, नै सैई को सबद सीवायक। गुर [illegible] गुर सीक्ष [illegible], गुर मुनि परम बनांणी।—जांभौ

सैद-सं. पु.—दास।

उ०—दगट नगा ढांगोणै निजरा नै मार देणीरी मैः लोग सला देवै [illegible] पछै कोई री सैंध अर गायना नी करै।—दसदोख

सैयद-सं. पु.—१ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

उ०—१ गजा दळ मुगळ सैयद सेख, वर्ग ग्रह बाज कबूतर वेख।
—मे. म.

उ०—२ पटै दळ मुगळ सैयद थांण, पटैत कटै कई सेख पठांण।
—मे. म.

२ मुहम्मद साहब का नाती तथा हुसैन का वंशज।

३ मुसलमान।

रू. भे.—सइद, सइयद, सइयद्, सईद, सईयत, सईयद, सयद, सैद, सैय्यद।

सैयदजादौ-सं. पु. (स्त्री. सैयदजादी) मुसलमानों के 'सैयद' वर्ग का व्यक्ति, मुसलमान।

रू. भे.—सैदजादौ।

सैयां-सं. स्त्री. (ब. व.) सखियां, सहेलियां।

उ०—चांदा थारी निरमळ रात सैयां म्हारी ए, चांदा थारी निरमळ रात नणद भोजाई मैलां सांचरी म्हारा राज।—लो. गी.

सं. पु.—प्रियतम, पति।

उ०—सैयां भए कुतवाळ, अब डर काहे का।

रू. भे.—सैय्यां।

सैयारौ—देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

सैयोग—देखो 'सहयोग' (रू. भे.)

सैयोगी—देखो 'सहयोगी' (रू. भे.)

सैय्यद—देखो 'सैयद' (रू. भे.) (अ. मा.)

सैय्यां—देखो 'सैयां' (रू. भे.)

उ०—मैं अपनै सैय्यां संग सांची। अब काहे की लाज सजनी, प्रगट है [illegible] नाची।—मीरां

सैरंध्रिका, सैरंध्रि, सैरंध्री-सं. स्त्री. [सं. सैरन्ध्री] १ द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था।

उ०—सैरंध्रि बांधी इम सल बोलइ, गंधरव देवा तुम्ह को न [illegible], [illegible] नउ तुम्हि मइ म [illegible]।—सालिसूरि

२ दूसरे के घर में रहने वाली स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री।

३ अन्तःपुर में काम करने वाली दासी, जिसकी उत्पत्ति वर्णसंकर जाति विशेष से हुई हो।

४ दासी, सेविका, परिचारिका।

५ नीच जाति की चाकरानी। ६ वर्ण संकर जाति।

रू. भे.—सैरिंध्री।

सैर, सै'र-स. स्त्री. [अ.] १ मनोरंजन के लिये की जाने वाली यात्रा, पर्यटन, तफरीह, सैर-सपाटा, घुमाई, भ्रमण।

उ०—साचैली दुनियां नै छोड वै सपनां अर मंसोबा री दुनियां में अम्टपौ'र सैर करता।—फुलवाड़ी

२ मौज, मस्ती, बहार, मनोविनोद।

उ०—खावण पीवण खैर, सैर करण चीजां सरब। हा हा तौ बिन हैर, जैर जिसौ जग है 'जसा'।—ऊ. का.

३ शिकार, मृगया।

रू. भे.—सेल, सैल, सैहर, सैहल।

४ देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—१ सै'र री जाई गांव में आई अर मरी जद तांई राजी-ताजी रै'यी।—दसदोख

उ०—२ तळाव मांनसागर मा'मींदर मैं नैं नैर पक्की कराई तिण मैं पांणी ठैरै नहीं। और मा'मींदर सै'र बसायौ।
—मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ नहर सुधार रु नीर री, दाटी सै'र दुमार। मैरवांन मुरधर महिप, हैर गया म्है हार।—ऊ. का.

सैरगाह-सं. स्त्री. [अ.] पर्यटन-स्थल, सैर करने का स्थान।

सैरड़ौ—देखो 'सहर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मुरधर रा भूधर कहीजं, लेलवलिया लुळ लैरड़ां। जांणं किसड़ी वाय लागी, धोर धंसै सै सैरड़ा।—दसदेव

सै'रपना, सै'रपनाह, सै'रपनौ, सु'रपनाह, सु'रपनौ—देखो 'सहरपनाह' (रू. भे.)

उ०—१ सै'रपना री कोट, सै'र में मसीतां तथा छतरियां थी तिण पाड़ नै सै'रपनौ करायौ, संमत १७८८ मैं।—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२सै'रपना री कोट पकौ करायौ नै गढ नै सै'र विचलौ कोट मिळतौ करायौ नै पायगा कराई।—मारवाड़ री ख्यात

सैरसपाटा-सं. पु. (ब. व.) भ्रमण, पर्यटन।

सै'रसारणी-सं. स्त्री. [फा. शहर+सं. सारणी] वह भोज जिसमें शहर के समस्त व्यक्तियों को भोजन कराया जाता हो।

उ०—१ सै'रसारणी पर काळौ चढग्यौ, पांणी फिरग्यौ। भूखरै विखै सगळा भाई आव-उतार हुयग्या अर गांव छोडग्या।
—दसदोख

उ०—२ गिटाकड़ वांमण विरमपुरी अर सै'रसारणी जीमी, जिते तौ जसरी थोथी पोथी सी उघाड़ी, धजा फुरकाई।—दसदोख

सैरिंध्री—देखो 'सैरंध्री' (रू. भे.)

सैरि-सं. स्त्री. [सं,] १ कार्तिक मास।

२ एक प्राचीन जनपद।

३ देखो 'सेरी' (रू. भे.)

सैरियौ, सैरी—देखो 'सेरियौ' (रू. भे.)

सैं'रियौ, सैं'री—देखो 'सहरी' (अल्पा; रू. भे.)

सैलंग—देखो 'सेलंग' (रू. भे.)

उ०—माथै गिगन री अनंत सून्याड़, असींव सोसनी रंगत, सूरज री सैलंग उजास अर हैटै कुदरत री वेजोड़ बणाव।—फुलवाड़ी

सैल—सं. पु. [सं. शैलः] १ पहाड़, पर्वत,। (डि. को.)

उ०—१ हुवै गैल चौड़ा जठै सैल हूंता, हलै वैल जोटां घणां वैल हूंता। ठही चोट दै झंझरी कोट ठांणै, छकी पांन जै अट्टरै बट्ट छांणै।—वं. भा.

उ०—२ गुण गंध ग्रहित गिळि गरळ ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखंड सैळ संयोग संयोगिणि, भणि विरहिणी भुयंग भख।—वेलि

२ कोई बड़ा पत्थर, चट्टान।

३ हिमाचल का राजा जो पार्वती का पिता था।

रू. भे.—सईल, सयल।

वि.—१ पत्थर का, पत्थर सम्बन्धी।

२ कड़ा, कठोर।

३ देखो 'सैर' (रू. भे.)

उ०—१ सैल करण सायबी गयौ हुय लीली असवार। कै जंगळ की मिरगळीयां म्हारी लियौ छै स्यांम बिलमाय।—लो. गी.

उ०—२ राज पाट राणा का छोड्या, और कंचन का म्हैल। हाती घोड़ा माल खजांना, और दुनियां की सैल।—मीरां

उ०—३ मेह सुजळ पोटां महीं, सांवण करतां सैल। मोटी हुवै सिताव मन, छोटां री ही छैल।—वां. दा.

४ देखो सेल' (रू. भे.)

उ०—कुंभां सीस चंच गौम विहंगी कराळ कौ सौ, कै ठाठ कौ तराळ लाय झाळ कौ कै ठेल। लेण सिंधां फाळ कौ प्रजाळ कौ कै लंका पूंछ। सवाई 'अजा' रौ धकौ काळ कौ कै सैल।

—महादांन मेहडू

रू. भे.—सयल।

सैं'ल—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—१ सेठां धन नै केवटणौ सैं'ल कांम नीं है।—फुलवाड़ी

उ०—२ छोरी इण वात नै इत्ती सैं'ल नीं जांणी ही।

—फुलवाड़ी

सैलकन्या—सं. स्त्री. [सं. शैल+कन्या] पार्वती, उमा।

सैलकुमारी—सं. स्त्री. [सं. शैल+कुमारी] पार्वती, उमा।

सैलगंगा—सं. स्त्री. [सं. शैल+गंगा] गोवर्द्धन पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

सैलगुर, सैलगुरु—सं. पु. [शैल+गुरु] १ बड़ा, पहाड़।

२ हिमालय पर्वत।

३ सुमेरु पर्वत।

सैलजा—सं. स्त्री. [सं. शैलजा] पार्वती, उमा।

सैलड़ौ—देखो 'सेल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—झळक रया छै तीखा सैलड़ा। अमां कमधजियौ रमै छै सिकार।—रसीलैराज रौ गीत

सैलधन्वा—सं. पु. [सं. शैलधन्वन्] शिव, महादेव।

सैलधर—सं. पु. [सं. शैलधर] १ श्रीकृष्ण, गिरिधारी।

२ श्रीबजरंग, हनुमान।

सैलनंदनी—सं. स्त्री. [सं. शैल+नन्दिनी] पार्वती।

सैलपत, सैलपति, सैलपती—सं. पु. [सं. शैल+पति] १ हिमालय पर्वत।

२ सुमेरु पर्वत।

सैलपुती, सैलपुत्ती, सैलपुत्री—सं. स्त्री. [सं. शैल+पुत्री] १ नौ दुर्गाओं में से एक, पार्वती, दुर्गा।

उ०—प्रथमा तुही पव्वई सैलपुत्ती। दुरगा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती।

—मे. म.

२ आठ विशिष्ठ देवियों में से एक।

सैलराज—सं. पु. [सं. शैलराज] १ हिमालय पर्वत।

२ सुमेरु पर्वत।

सैलसपाटा, सैलसिकार—सं. पु.—आमोद-प्रमोद के लिये किया जाने वाला भ्रमण, सैर।

उ०—बीच हाळां दलालां नै खावकी दी अर सैर मैं सागीड़ा सैलसपाटा तथा चग्घा कराया।—दसदोख

सैलसुत—सं. पु. [सं. शैलसुत] १ स्वर्ण, सोना।

२ शिलाजीत।

रू. भे.—सेलसुत।

सैलसुता—स. स्त्री. [सं. शैलसुता] पार्वती, उमा।

सैलांण—देखो 'सेनांण' (रू. भे.)

उ०—आखी दुनियां मैं तावड़ा री उजास छितरावणियां री कीं सैलांण नीं वच्यौ।—फुलवाड़ी

सैलांणी—वि.—१ सैर करने वाला, भ्रमणशील।

उ०—लागै परदेसां री पांणी, अबै घर आज्या सैलांणी।

—लो. गी.

२ देखो 'सेनांणी' (रू. भे.)

३ देखो 'सेलांणी' (रू. भे.)

उ०—इण रै उपरात दोन्यूं बखत जव-ग्वार री बांटौ सियाळा मैं तिलां री सैलांण्यां अर ऊपर सूं गायां रै घी री नाळां।

—अमरचूंनड़ी

सैलांन—सं. पु.—१ नग, नगीना। (अ. मा.)

२ देखो 'सेनांण' (रू. भे.)

सैलाड़—सं. पु.—१ एक साथ गर्दन से बंधे हुऐ दो बैल, बकरे, ऊंट आदि चौपाये।

२ उक्त प्रकार से बांधने की रस्सी।

३ उक्त प्रकार से बांधने की क्रिया।

४ इन पशुओं का जोड़ा, युग्म ।

५ देवी को एक साथ बलि चढ़ाये जाने वाले दो बकरे या बकरों का युग्म ।

सैलाड़णी, सैलाड़बौ-क्रि. स.—दो बैल, बकरे, ऊंट आदि चौपायों को एक रस्सी से एक साथ गर्दन से बांधना ।

सैलाड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—उक्त प्रकार से एक साथ गर्दन से बांधा हुआ ।

(स्त्री. सैलाड़ियोड़ी)

सैलात्मजा-सं. स्त्री. [सं. शैलात्मजा] पार्वती ।

सैळी- देखो 'सेळी' (रू. भे.)

सैली-सं. स्त्री. [सं. शैली] १ वाक्य-रचना का ढंग, लिखने का ढंग ।

२ चाल, ढंग, तरीका ।

३ परिपाटी, प्रणाली ।

४ रीति, रिवाज, प्रथा ।

५ आचरण, चाल-चलन ।

रू. भे.—सेलि, सैली ।

सैलोट-सं. पु.—१ ध्वंस, नाश, नष्ट ।

उ०—राजा रन पोट पड़ चोट अमागळां, वचन अर ओट लै दीनां दीनै । धमै मन मोट जा सिर ग्रहै धजवड़ा, दीवालां कोट सैलोट दीनै ।—कुंभकरण सांदू

२ समतल ।

उ०—ऊपड़ी वग 'अभसाह' री, अनि आनंग कजि आसुरां । फिर नीरधळा सैलोट कज, मीर पलट्टै सागरां ।—रा. रू.

रू. भे.—सहलोट, सहलोट, सैलोट, सैलोट ।

सैळो, सैलो-सं. पु.—१ मटमैले रंग का ऊंट या कुत्ता ।

२ देखो 'सेळो' (१) (रू. भे.)

सैव-वि. [सं. शैव] १ शिव का, शिव सम्बन्धी ।

२ शैव सम्प्रदायी ।

३ जिसकी सेवा करना उचित हो, सेव्य ।

उ०—देवाधिदेव, सुर असुर सैव, राजाधिराज सविता समाज ।

—ऊ. का.

सं. पु.—१ शैव सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।

उ०—१ वीरा जगम सावज सैव । —धरमवत्र

उ०—२ एक वडे परतिख फल जोड़, सैव धरम थी स्यूं नवि होड़ ।

—सीपाल रास

२ शिव का भक्त, उपासक ।

३ अठारह पुराणों में से एक ।

सैवत—देखो 'सेवत' (रू. भे.)

सैवणौ, सैवबौ—देखो 'सेवणौ, सेवबौ' (रू. भे.)

उ०—देस बिना दरबां तन रेवै ? कीसी सैवै ? सामू एकली [illegible] पर रौ लोकों तरै ग्रन [illegible] मरै ।—दसदोख

सैवपुरांण-सं. पु. [सं. शैवपुराण] शिव पुराण ।

सैवरी—देखो 'सेवरी' (रू. भे.)

सैवळी—देखो 'सेही' (रू. भे.)

सैवांन—देखो 'सादियांणी' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति राजांन राजावत ऐरावरै रिणखेत हाथी आयी छै । रिणजीत नगारी धुर्वे छै. फतै रा सैवांन वागा छै ।—रा. सा. सं.

सैवाळ—देखो 'सेवाळ' (रू. भे.)

सैवालमालना-सं. पु.—एक प्रकार का भाला या सांग ।

सैवी-सं. स्त्री. [सं. शैवी] १ पार्वती, दुर्गा ।

२ मनसादेवी ।

३ कल्याण ।

सैव्या-सं. स्त्री. [सं. शैव्या] अयोध्या के प्रसिद्ध सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की पत्नी, शैव्या ।

सैस—१ देखो 'सेस' (रू. भे.)

२ देखो 'सहस्र' (रू. भे.)

सैंसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

सैसजीभ—देखो 'सहसजीभ' (रू. भे.)

सैसदळ—देखो 'सहसदळ' (रू. भे.)

सैसनैण—देखो 'सहसनयण' (रू. भे.)

सैसफण—देखो 'सहसफण' (रू. भे.)

सैसबाहु—देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे.)

सैसमुख—देखो 'सहसमुख' (रू. भे.)

सैसरनांव—देखो 'सहसनांम' (रू. भे.)

उ०—मंगळ सम भागीरथी, स्रीगीता सैसरनांव । गायन अमरापुर वसैजी पवन व्है सब गांव ।—रुकमणी मंगळ

सैसव-सं. स्त्री. [सं. शैशव] बाल्यकाल, बचपन, लड़कपन, बाल्यावस्था ।

उ०—१ सैसव सु जु सिसिर वितीत थयौ सहु, गुण गति मति अति एह गिणि ।—वेलि

उ०—२ सैसव तनि मुखपति जोव्रण न जाग्रति ।—वेलि

वि.—शिशु सम्बन्धी ।

सैसवदन-सं. पु. [सं. सहस्र+वदन] शेषनाग ।

सैसाजळ-सं. पु.—लक्ष्मण ।

उ०—बोलै सीतापत इसडीजी वांणी, सुरनर नागां नै लागै सुहांणी । सैसाजळ हणमंत जिम ही सरसाई, वीरां अवरांरी कोथी बडाई ।—र. रू.

सैसार—देखो 'संसार' (रू. भे.)

उ०—घाट पालट करै साट रावत धणां, मेळि ऊभा गई क मेळा । ऊजळौ सनस सैसार सोही ऊपरै, चालियौ 'भोज' खत्रीवाट चेळा ।

—राव भोज हाडा री गीत

सैसारजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे.)

उ०—वळिराजा, पुत्र बांणासुर २५, पुत्र स्रगदैत्य २६, पुत्र राजा दक्ष २७, दक्ष पुत्र **सैसारजुन** २८, पुत्र करूप २६,...... ।

—रा. वंसावली

सैस्रणी—देखो 'सहस्रिन' ।

सैह—देखो 'सै' (रू. भे.)

सैहड़ौ—सं. पु. [सं. सुभट] १ योद्धा, सुभट ।

उ०—कर आतुर वूढेय राव किहौ, **सैहड़ां** थट वांटिय सोर सिहौ ।

—पा. प्र.

२ देखो 'सेड़ौ' (रू. भे.)

सैहटा—सं. पु.—राठौड वंश की एक उपशाखा ।

सैहत, सैहती—१ देखो 'सेहत' (रू. भे.)

२ देखो 'सहित' (रू. भे.)

उ०—लै मंजार द्रढ वचन लै, कोळू गयौ कमंद । वरणी अंतहपुर वसै, 'आणंद' **सैहत** अणंद ।—पा. प्र.

सैहनाई—देखो 'सहनाई' (रू भे.)

उ०—सोभ वरण वणि जांन सत्राई, सुर नौवत बाजै **सैहनाई** ।

—रा. रू.

सैहर—१ देखो 'सहर' (रू. भे.)

उ०—सू **सैहर** जोधपुर सूं कोस एक उरै मुंहमेजा हुवा ।

—द. दा.

२ देखो 'सैर' (रू. भे.)

सैहल—देखो 'सैर' (रू. भे.)

उ०—तरै रांणाजी सु कह्यौ—कदैही **सैहलां** नीकळौ नहीं सौ दीवांण पधारौ, काळीयैद्रह विराजज्यौ, म्है पिण आवां छां ।

—राव रिणमल री वात

सैहे, सैहेत—१ देखो 'सै' (रू. भे.)

२ देखो 'सहित' (रू. भे.)

सों—१ देखो 'सुं' (रू. भे.)

उ०—तद झाली खींवसीजी नुं बोलाया । दरवार **सों** ऊठि भीतर आयौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'सोगन' (रू. भे.)

सोंक—देखो 'सूंक' (रू. भे.)

उ०—उणनूं **सोंक** चाहिजै सौ म्हारै कनै नहीं छै ।

—राव अमरसिंह री वात

सोंगणी—देखो 'सांगणी' (रू. भे.)

सोंगसी—सं. स्त्री.—घोड़े के कानों के नीचे और आंखों के ऊपर होने वाली भंवरी (चक्र) जो अशुभ मानी जाती है । (शा. हो.)

सोंगाड़ौ—सं. पु.—वढई का एक औजार विशेष ।

सोंझ—देखो 'सौंज' (रू. भे.)

उ०—ऊठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै वणि **सोंझ** सझाई ।

—रा. रू.

सोंधौ—देखो 'सौंधौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिणि **सोंधै** रै डोरै लगी जाय छै । ऊजळी ठकुरांणी उजळा ठाकुर प्रीतम सूं जाइ जाइ मिळै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ घणी **सोंधे** घणी केसरि अगरचै सूं गरकाव कियां थकां घोड़ां रजपूतां रै घूमरै सूं आइ तोरण वांदिआं छै ।

—रा. सा. सं.

सोंपड़—देखो 'सांपड़' (रू. भे.)

सोंपणौ, सोंपवौ—देखो 'सूंपणौ सूंपवौ' (रू. भे.)

उ०—१ झाली री मां उठा जती नुं बुलाय कांमण करवाया । सो कांमण वेटी नुं **सोंप** पेई मैं घात राखीया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अबु अमीन होय आयौ । कीरोड़ी एक हाजी इतवारी दूजौ मीरसकांरै हवाले आधो-आध परगनौं **सोंपीयौ** । वरस २ अबु री हाकमी रही ।—नैणसी

सोंपणहार, हारौ (हारी), सोंपणियौ—वि० ।

सोंपिओड़ौ, सोंपियोड़ौ, सोंप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोंपीजणौ, सोंपीजवौ—कर्म वा० ।

सोंपियोड़ौ—देखो 'सूंपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोंपियोड़ी)

सोंवौ—सं. पु.—एक प्रकार का घास ।

सोंस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—१ अजीज रावजी रा उमरावां मोनूं नांमा भेज्या छै । और **सोंस** खाय लिखियौ छै ।—नैणसी

उ०—२ इण रा वखत मैं इसड़ी हीज लिखीयौ । थैं आरती करौ । ताहरां **सोंस** काढि नै पाछी गई ।

—कांवळै जोईयौ नै तीडी खरळ री वात

सोंहगौ—देखो 'सूंगौ' (रू. भे.)

उ०—मसलत नूं मुस्किल कै तांई आसांन करणौ री वडी वात जांणौ । सत्य जांणौ इतरी सारी अकलां रौ विचार कर अकल मूं **सोंहगौ** और नफा सूं भरियौ होसी ।—नी. प्र.

(स्त्री. सोंहगी)

सो—सं. पु.—१ शोक । २ दुख । ३ मनुष्य । ४ शरीर । ५ पण्डित । ६ चन्द्रमा । ७ मंत्र । ८ शुक्रवार । (एका.)

सं. स्त्री.—९ पार्वती ।

वि.—१ शुद्ध, पवित्र । २ मलीन, म्लान ३ स्थिर । ४ सब, समस्त ।

उ०—अबै तौ **सो** कांम उलटौ हुयग्यौ । थांनै महीणां-मासरी छुट्टी लैणी पड़सी । आज पूरौ महीणौ आडो रै'यौ है ।—दसदोख

(स्त्री. सी) ४ समान, तुल्य ।

उ०—१ एक दिन रै संजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुराणीक आयौ जिकण बडा बडा ग्रंथां रौ समुद्र को सो पार दरसायौ ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ 'सबळौ' माधवदास समोभ्रम । आहव कर मभ सो जम आनम ।—रा. रू.

प्रत्य.—किसी अनिश्चित मात्रा, माप और मान पर जोर देने के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्रत्यय, शब्द ।

ज्यूं—बटाऊ बोल्यौ बाबाजी थोड़ौ सो दूध घाल दौ तौ न्याल कर दौ चाय बिनां नाड़ां तूटै ।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त ।

उ०—उदै-अग्रजी बारमी भाण ऊगै, पबै अस्त सो पूगियां नीठ पूगै ।—मे म.

२ ऐसा, इस प्रकार से ।

उ०—१ जै जै मरणी जुग मरै, सो मरणौ आसांन । हरीया बिन मरणी मरै, सो तो कठण जांन ।—अनुभववांणी

उ०—२ सो सुनत ही कुतबुद्दीन अटक नदी कों उल्लंघि उतकी आरय अवनी कौ अपनै ही अधीन करत आयौ सो सुनि रत्नसिंह सवितालौं सम्मुह जाइ विग्रह बिरचन विचारचौ ।—वं. भा.

३ अतः, इसलिए ।

उ०—१ जेज व्हियां नाकाबदी होवण रो भौ हो सो भीमड़ौ विजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मांय नै वळियौ ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ जद हाट रौ बणी बोल्यौ-अबारूं तौ स्वांमी जी उतरया है सो आखी पेडी रुपियां सूं जड़ देवौ तौ ही न द्यूं ।

—भि. द्र.

सर्व—१ वह, वे ।

उ०—१ करहा नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर । द्राख बिजउरा नीरती, सो धण रही स दूर ।—ढो. मा.

उ०—२ धनो धन्य सो लोक जो नोक धोकै । वळै गोर हूं और वातां विलोकै ।—मे. म.

उ०—३ स्यांम धरम्मी कांम द्रढ, खीचो 'सिवौ' 'मुकन्न' । सो रहिया साजा पर्णै, राजा तणै जतन्न ।—रा. रू.

२ वही ।

उ०—१ पीछै बाघैजी कवर स्रीबीकैजी नूं कयौ, "हूं तौ आपरी मदत मैं हूं सूं आप कहौ सो तरतोज करूं जिण सूं आपरै फायदौ हुवै ।"—द. दा.

उ०—२ अयुगं इसणां मूं उदै, विमळ हास दुतिवंत । सो संध्या मूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत ।—बां. दा.

३ उस, उसके ।

उ०—छकीयौ घूंमै घाव कौ, सो घट घायल पीर । हरीया घूंमै घाव बिन, भीतर मार सरीर ।—अनुभववांणी

४ उन ।

उ०—साल्ह चलंतइ परठिया, आंगण वीखड़ियांह । सो मइं हियइ लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह ।—ढो. मा.

५ जो ।

रू. भे.—सौ ।

सोअणौ—देखो 'सोवणौ' (रू. भे.)

सोअणौ, सोअबौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू. भे.)

सोअहम-अव्य. [सं. सोऽहम्] वही मैं हूं. अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूं ।

रू. भे.—सोउं, सोहं, सोहंग, सोहंगम ।

सोइ—देखो सोई' (रू. भे.)

उ०—१ दादू जै जै चित बसै, सोइ सोइ आवै चीति । बाहर भीतर देखिये, जाही सेती प्रीति ।—दादूवांणी

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा सोइ । खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ ।—ढो. मा.

उ०—३ संदेसां ही लख लहइ, जउ कहि जांणइ कोइ, ज्यूं धणि आखइ नयण भरि, ज्यंउ जइ आखइ सोइ ।—ढो मा.

उ०—४ जोइ जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, घुरै नीसांण सोइ घणघोर । प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि तंडव गिरि मोर ।—वेलि

सोइतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

उ०—साथीड़ां रै भोजन भात, कोडीला रै मूळामद सोइता ।

—लो. गी.

सोई-सं. स्त्री —१ एक जाति विशेष ।

उ०—भोई सोई भरडीया, सोनी नइं सूतार । व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईइ तिणी वारि ।—मा कां. प्र.

सर्व.—वही, वह ।

उ०—१ सांच बोलियां टुकडा सूका, मिळ जावै सोई मीठा । कूड बोल पकवांन करावै, धूड बरावर धीठा ।—ऊ का.

उ०—२ हरीया करता हेक है, दूजा करता नांहि । सोई करता सिसट का, न्यारा घट घट मांहि ।—अनुभववांणी

उ०—३ पेम भगति नित नेम का, वोह कठण वहवार । हरीया सोई लै निमैं, सुख दुख तज्य संसार ।—अनुभववांणी

वि.—१ शुभचिंतक, हितैषी, मित्र ।

उ०—१ डूबी वात छै, कदाचित भूठी होय जावै तौ पातवी रा सोई तथा गोई डूबी वात जांण कोई हंससी ।

—पलक दरियाव री वात

२ सभी, समस्त ।

३ देखो 'सोजौ' (पु.) (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई यै, लट्टू सा होग्या ज्यारां होठ, जांमण

की यै जाई, आंख्या पर फिरगी सोई मारा की ...।
—जीणमाता री गीत

सोउं—देखो 'सोग्रहम्' (रू. भे.)
उ०—ओउं सोउं सबद की, सहजां सुणी अवाज। जनहरीया इन ऊपरै, ररंकार का राज।—अनुभववांणी

सोऊ—सर्व.—वह।

सोक—सं. पु. [सं. शोकः] १ परिवार में किसी की मृत्यु के उपरांत प्राय आगामी त्यौहार तक रक्खा जाने वाला रंज, जिसमें कोई खुशी या मांगलिक कार्य न तो परिवार में किया जाता है और न ऐसे कामों में भाग लिया जाता है, दुख, रंज।
उ०—१ रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुंह चढ कांम आया सो वैकूंठ री बाट वुहा, जिणां रौ सोक न करणौ।
—डाढाळा सूर री वात
उ०—२ तद रावजी फुरमायी—आज अठै गोठ हुवै सौ सगळां रौ सोक भाजै। आदमी जिनस रै पगां सहर मेलिया।
—डाढाळा सूर री वात
क्रि. प्र.—करणौ, भंगाणौ, भांजणौ, राखणौ, होणौ।
२ दुख, रंज।
उ०—झगड़ा मैं भाजौ तिण सूं सारौ जगत इण नै हंसियौ नैं एक वीर स्त्री न हंसीं सौ उण रै पतिरा भागलपणा री मैंहणी लागी तिण कारण हंसी नहीं सोक कीधौ।—वी. स. टी
३ कष्ट, पीड़ा।
उ०—रोग सोक दुख पाप रिण, ओ मत करौ प्रवेस। रही अनीत अनीत बिण, दाता हुंदै देस।—वां. दा.
४ विपत्ति, संकट।
५ चिंता, संताप, पश्चाताप।
उ०—जकै वज्रपात जिसड़ा वचन सुणतां ही पातसाह रा मन मैं भी पतसाही करण री आधी आस रही। जठै दारा नूं उपालंभ देर पछतावा रै प्रमांण सोक रा समुद्र में मग्न मुगळेस इण रीति कही।—वं. भा.
६ साहित्य में ३३ प्रकार के संचारी भावों में से एक।
उ०—बांह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण, लज्जा सोक निद्रादिक सधइ।—वि. कु.
वि. वि.—साहित्य ग्रंथों में आये संचारी भाव के ३३ भेदों में शोक का नाम नहीं मिलता है।
रू. भे.—सोग।
मह;—सोक।
७ देखो 'सौक' (रू. भे.)
उ०—१ सर सोक वजंत परा सणणौ, तिम हीज जड़ाव तुरंग तणौ।—सू. प्र.
उ०—२ रुडै सिंधड़ौ राग पड़ै सर सोक अपारां।—रा. रू.
उ०—३ विवांण अछरां सोक वाजी हाक डाक वीरां, वीटीयौ सधीरां घणा धारिया विसन।—नैणसी
उ०—४ ओंगड़ा भालोड़ां रा वूम पड़िया छै। सवायै मेहरौ जोरि सोक वाजै तिण भांति पंखांरी रुग वाजिनै रही छै।
—रा. सा. सं.
उ०—५ ग्रीध पंखांरा सरांरी सोक वाजि नै रहिया छै। सेलां रा धमोड़ा पड़ै छै।—रा. सा सं.
उ०—६ असी तरै थी सोकां ठाकर आगै सुहागण री बुरी कही तद ठाकुर साची मांनी अर घणौ इतराज हुवौ।
—गांम रै धणी री वात
उ०—७ अणख वयण हर ईसकौ, चित्त नित्त आही चाल। सहस्यौ क्यूं कर थैं इसा, सोकां वाळा साल।—पनां.
उ०—८ झाली री मां झाली सूं वातां कीवी सोकां री वातां पूछी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

सोकड़—१ देखो 'सौक' (१, २, ३, ४) (रू. भे.)
उ०—१ ओ कुचमादी तौ राजाजी नै ई नीं बगसिया। डोकरी रा गाभा बदळाय खुद राजाजी रा गाभा पैर घोड़ा मायै वैठ सोकड़ मनाई।—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै तौ अेक सोकड़ न्हाटी। पण न्हाटणौ सव अकारथ गियौ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'सौक' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ भला न कैसी कोयक भोग्या भायली, सोकड़ कांई थांनै सणगां ऊपर लै जायली।—लो. गी.
उ०—२ प्रीतम तुम मत जांणियौ, दूर देस का बास। खोड हमारी यहां पड़ी, प्रांण तुम्हारै पास। जी उमराव थांनै किण सोकड़ बिलमाया म्हारा प्रांण, उमराव ओ रसिया।—लो. गी.
३ देखो 'सोक' (मह; रू. भे.)

सोकड़ली—१ देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—जला रे ठंडौ पांणी साहिबजी नै पाइजै रे म्हारी जोड़ी रा जला मिरगानेणी रा जला खारोड़ौ म्हांरी सोकड़ली नै पाइजै रे जला।—लो. गी.

सोकण—देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)
उ०—डाक्या टोडा टोडड़ी, लोपी नद्दी बनास। आडावळौ उलांघियौ, जद छोडी धण आस। जी उमराव थांनै कुण सोकण बिलमाया म्हारा राज।—लो. गी.

सोकरड़ौ—देखो 'सौकरड़ौ' (रू. भे.)
उ०—देवर भाभी देखणौ, ढाहण गजां निसांण। सोकरड़ां रा सिंधू मैं, पुगौ पवन प्रमांण।—वी. स.

सोकळ—सं. पु.—१ शुष्क, साधारण।
उ०—रांणी सोकळ चून री, कमी दिखावौ काय। औरां पहली सीलणौ, म्हारा रौ सिर जाय।—वी. स.

२ प्रतीक्षित ।

सोकाकुळ-वि. [सं. शोकाकुल] शोक से व्याकुल, दुखी, चिंतित ।

उ०—एक नहीं आसांता कांतातुर आठी, ठाई अवलोका सोकाकुळ ठाठी ।—ऊ. का.

सोकातिसार-सं. पु.—शोक एवं चिंता से होने वाला एक अतिसार रोग । (अमरत)

रू. भे.—सौकातिसार ।

सोख-सं. पु.—१ वह घोड़ा जिसके गले में बकरी के समान "गलथने" हों ।

२ देखो 'सोख' ।

सोखरा—देखो 'सोखरा' (रू. भे.)

उ०—आकरखरा वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपंच ।—वेलि

सोखरणी-सं. स्त्री.—१ संहार करने वाली ।

उ०—तुंही सांखरणी पोखणी तीन लोकं तुही जोगणी सोगणी दूर दोनं ।—मे. म.

२ शोषण करने वाली ।

सोखरणौ, सोखवौ-क्रि. वि. [सं. शोषणम्] १ पीना, आचमन करना ।

उ०—१ साकी सोखियो हाकड़ो नांम सिंधू, वहंतो थको रोकियो लोकबंधू ।—मे. म.

उ०—२ वीर बचायो व्याळ रूप वणी, तूटी लाव संधाय । समंद हाकड़ो आप सोखियो, सेठ जिहाज तराय ।—राघवदास भादी

२ सुखाना ।

उ०—१ विढवा चढ गोरधन वाळी. अरि सर सोखरा जांरा उन्हाळा ।—रा. रू.

उ०—२ उरध रोम उल्लसै, जोम अरि करण रसातळ । भजि त्रिसळी निज भाळ, कळा सोखण सत्र कम्मळ ।—रा. रू.

उ०—३ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन मंतोखी रे । आयउ धरि ओलख्यउ नहीं माता, तप करि काया सोखी रे ।

—स. कु.

३ चूसना, शोषण करना ।

उ०—धोरांधोरां धर धूधळ धुरधाई, थळ थळ ऊथळती वळती धुरकाई । पड़ती पुळ पुळ पर नुल मुल भरभुजै, सरकर सर सोखत गिरवर दग्गूजै ।—ऊ का.

उ०—पुड़ियां मांयलो घी तौ गळणी सोख लियौ ।

४ मारना, संहार करना ।

उ०—ऊंची रीत उजाळगी, खीची सुंदरदास । खळ सोखै पड़ियो गहै, पोगै चंद्रप्रहास ।—रा. रू.

५ नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ जूटोड़ा खोळा गाफल गोळा भोळा डस्क भरांदा है । आस्तिक बिन इंदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखंदा है । तजधरम त्रिदंडी, अधिक अफंडी, पाखंडी पोखंदा है ।—ऊ. का.

उ०—२ आप लेतै हैं प्याला तव बोलतै हैं कविराव । सत्रु सोखियै मित्र पोखियै ।—सू. प्र.

६ विष आदि उतारना ।

उ०—आवै सपरा अचींत, जेम वनि अगनि सिळग्गां । सरप विक्स सोखवा, मंत्र आवै सुखमंगां ।—रा. रू.

सोखणहार, हारौ (हारी), सोखणियौ—वि० ।

सोखिओड़ौ, सोखियोड़ौ, सोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोखीजणौ, सोखीजवौ—कर्म वा० ।

सोखता-सं. स्त्री. [सं. शुष्] एक प्रकार की काल्पनिक पिशाचिनी जिसके सहवास से मनुष्य कृशकाय होकर धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त होता है । (वि. पोखता)

उ०—सांप्रत जांणी सोखता, चितली जांण चुड़ेल । हार गयौ अछतौ हुओ, छतौ थकौ ही छेल ।—वां. दा.

सोखायत—देखो 'सौगात' ।

उ०—करी एक उन्मत्त अस्व ईरांन विलायत । पाटंबर जरतार, भार मेवा सोखायत ।—ला. रा.

सोखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पिया हुआ, आचमन किया हुआ. २ सुखाया हुआ. ३ चूसा हुआ, शोषा हुआ. ४ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ५ नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ विष उतारा हुआ ।

(स्त्री. सोखियोड़ी)

सोखी-वि.—१ मित्र, दोस्त, हितैषी ।

उ०—१ मन का सोखी मन है, मन का दोखी मंन । हरीया सोखी सकल का, एकी रांम भजंन ।—अनुभववांणी

उ०—२ तव थी सी मति अब नहीं, तव टोटा अब लाह । दोखी सब सोखी भया, चोर भया सबसाह ।—ह. पु. वां.

२ शौकीन ।

रू. भे.—सोगी, सौखी ।

सोकीटगवरत-सं. पु.—वह घोड़ा जिसके पेट या घुटनों के मोड़ पर भंवरी (चक्र) हो (अशुभ) । (शा. हो.)

सोखीन—१ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)

उ०—खोवा सं सोखीन खावै, जाट सदीनो सेवता । अयाचित अपूरब आरांद, समी विरख दत देवता ।—दसदेव

सोखीनाई—देखो 'सौखीनाई' (रू. भे.)

उ०—१ ठगी माथै कमर बांधी, सोखीनाई नै धोखा-धड़ी सूं सांधी । सैसी अर मैंतर तांई मांगै विना नहीं छोड्या ।—दसदोख

उ०—२ तेल साबरा लगावै, सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तो ही बूढापो वैरी लुकयो नीं चावै । जद ई सोखीनाई मैं ही मजी नीं आवै, गजी ऊपरली गली जावै है ।—दसदोख

सोगंध-सं. स्त्री.—शपथ ।

उ०—**सोगंध** लीव सिकारियां, नह लाहोरी आय। थांरी सेकौ एक वस, लूआं प्रांण सुकाय।—लू

रू. भे.—सोगन, सौगंद, सौगंध, सौगध।

सोग—देखो 'सोक' (रू. भे.)

उ०—१ सज्जण चाल्या हे सखी, नयणें कियौ **सोग**। सिर साड़ी गळि कंचुवौ, हुवउ निचोवण जोग।—ढो. मा.

उ०—२ वेटा ताहरां तात नै मार तूं जहर सस्त्र नैं जोग रे लाला जिम राज्य वेसांणू तौ भणी, म्हारौ मिट जाय दुख नैं **सोग** रे लाला।—जयवांणी

उ०—३ मन मैं धारै अधिकौ **सोग**, हीयड़ौ फाटइ नाह वियोग।
—वि. कु.

सोगटावाजी—सं. स्त्री.—शतरंज या चौसर का खेल।

सोगटी, सोगट्टी—देखो 'सोगटौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जैं थांणैं भड ऊठिया, वैठा तै थांणेंह। **सोगट्टी**, सतरंज जिम, आपौ आंपांणेंह।—गु. रू. वं.

सोगटौ, सोगठौ—सं. पु.—शतरंज या चौसर की गोट, गोटी।

उ०—१ वरस २ तथा ३ हुवा सु कमालदीनूं **सोगटां** रमण घणी चूंप हुती सु एक दिन मूळराज सादौ सौ वागौ पेहर सादा हथियार वांध नै कमालदी चौपड़ रमतौ थौ तठै आय ऊभौ रह्यौ दांण वतावण लागौ।—नैणसी

उ०—२ इण भांति वागांरा चिहुरवंध छूटै छै। कड़िआं लोल लीजै छै। वीजणैं वाउ ढोळीजै छै, घोडां वाउठा कीजै छै, अैराकी टहलावीजै, चौरंगा **सोगठां** री खाटखड़ पड़ि नैं रही छै।
—रा. सा. सं.

उ०—३ करि भोजन बइटा एकठा, आंण्या पासा नइ **सोगठा**।
—ढो. मा.

सोगन—१ देखो 'सोगंध' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ माईतां री लोई पीवण री **सोगन** दिरायां पछै ई डीकरी आपरी ठौड़ वैठी थेपड़ी रै मापै ढिगली सूं गोवर रौ पींडौ लेय नीची घूण करियां थापण रौ कांम उणी भांत चालू करियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ हरसा वीर म्हारा रे **सोगन** मैं खायी रे सरवर पाज पै।
—लो. गी.

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

सोगरौ, सोगरौ-सं. पु.—वाजरी की मोटी रोटी।

उ०—पछेवड़ी मैं **सोगरा** वांधतां चौधरण वोली—दो च्यार जागां भाव तांव पूछनै चीज लीजौ इसी नीं व्है कै भोगनौ मंगाय नै आवौ।—रातवासौ

उ०—२ चौधरण कनै भातौ हौ। दोय **सोगरा** अर चटणी उणनै झिलाय उणरौ नांव पूछ्यौ।—फुलवाड़ी

सोगात—देखो 'सौगात' (रू. भे.)

सोगियौ—वि.—१ भेद लेने वाला।

२ देखो 'सोगी' (अल्पा; रू. भे.)

सोगी—वि. [सं. शोक+रा. प्रा. ई.] १ शोक-संतप्त, दुखी, चिंतित।

उ०—कोप करि लोक तिण पकड़ी कवजै किया, विगर घर वार हूवा वियोगी। नासतां मूंई भारी पड़ी त्यां नरां, सवळ पांनै पड़्या थया **सोगी**।—वि. कु.

२ देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

३ देखो 'सोखी' (रू. भे.)

सोड़—सं. स्त्री.—१ रजाई, सिरख।

उ०—चम चीर वेज वणाय दांवण घलाओ मखमूल री। सूआ भरणी **सोड़** भराय गाल मसीरां गादी गींड़वा।—लो. गी.

२ देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

रू. भे.—सौड़।

सोड़क—सं. पु.—लाव के साथ घूमने वाले चक्र में लगने वाला लोहे का डंडा।

सोड़व—सं. पु. [सं. षाडव] छः स्वरों का एक राग विशेष।

सोड़स—देखो 'सोडस' (रू. भे.)

सोड़सकळा—देखो 'सोडसकळा' (रू. भे.)

सोड़सगण—देखो 'सोडसगण' (रू. भे.)

सोड़सदांन—देखो 'सोडसदांन' (रू. भे.)

सोड़सपूजन—देखो 'सोडसपूजन' (रू. भे)

सोड़समात्रका—देखो 'सोडसमात्रका' (रू. भे.)

सोड़ससंसकार—देखो 'सोडससंस्कार' (रू. भे.)

सोच—सं. पु.—१ चिंता, फिक्र।

उ०—१ भूपति इम भाखियौ, हमैं सुभडां किम व्हीजै। वोल्या भड़ धजवंध, कमधपति **सोच** न कीजै।—मे. म.

उ०—२ **सोच** करौ मत ठाकरां, मौ धड़ जेतै मत्थ। की ताकत जमराज री, तौ सिर घालै हत्थ।—मुकनदांन खिड़ियौ

२ पश्चाताप, पछतावा।

उ०—जव लोक कहै—भीखणजी जगूजी समजतां वीजा नैं इ दोरौ लागौ पिण खेतसी जी लुणावत नै तौ दोहरौ घणौं इज लागौ। **सोच** घणौं करै।—भिक्खु

३ दुख, रंज।

४ आश्चर्य, विस्मय।

उ०—गिरवर रइ सिखर मांडियउ गाहड, तिकौ अचरिज पेखीयउ तिण। **सोच** हुओ मन मांहि संपेखै, वध कमळ किम वार विण।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सोज।

५ देखो 'सौच' (रू. भे.)

उ०—मांहै वांमण थौ जणीं रौ तौ सत छूट गयौ। सौ मांहै हीज **सोच** गयौ।—राजा रा गुर रा वेटा री वात

सोचक—स. पु. [सं. सूचिक] दरजी। (डि. को.)
सोचकेस—देखो 'सोचीकेस' (रू. भे.) (अ. मा.)
सोचणौ, सोचबौ—क्रि. स.—१ चिंता या फिक्र में पड़ना, चिंतित होना।
उ०—१ खबर स्याम के हुम कै, सुनी राकसी सोय। साह हुकम नीठे सखरा, मृग सोचिया मजोय।—रा. रू.
उ०—२ मोड़ै मृग मोड़ै सीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनैं सीतळ गतवाळी। लुच्चा ललचावै लालच घिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण सिग लागै।—ऊ. का.
२ किसी विषय पर मन में विचार करना, कल्पना करना।
उ०—१ नगर रा सगळा कवि भेळा होय गुजरी रै रूप री ओपमावां सोचण लागा।—फुलवाड़ी
उ०—२ वो दरबारियां नैं नवा नवा सवाल पूछतौ। सही जवाब मिळियां मूंडै मांग्यौ इनांम देवतौ। सोचण सारू मोलगत देवतौ।
—फुलवाड़ी
३ निश्चय करना, इरादा करना, विचार करना।
उ०—दैत री मौत अर उणरा रगत सूं बिरथा ओक्या नीं वैठ जावै, इण वास्तै नाहरसिंघ तड़कै सगळी बात बतावण री सोची।
—फुलवाड़ी
४ विशेषतः किसी कार्य परिणाम या प्रणाली के विषय में विचार करना, विचार-विमर्श करना।
५ किसी कार्य के उचित अनुचित का विचार करना।
उ०—आ कंयनै वै तौ मूंडी सोची नीं कोई भली। मिठाइयां माथै किड़कायनै पड़िया जकौ गपाक गपाक मिठाइयां खावणी चालु करदी।—फुलवाड़ी
६ अनुमान करना, अंदाजा लगाना।
७ असमंजस मे पड़ना, पशोपेश मे पड़ना।
सोचणहा, हारौ (हारी), सोचणियौ—वि०।
सोचिओड़ौ, सोचियोड़ौ, सोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सोचीजणौ, सोचीजबौ—कर्म वा०।
सोचिकेस—देखो 'सोचीकेस' (रू. भे.)
सोचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिन्ता या फिक्र में पड़ा हुआ, चिंतित. २ मन मे विचारा हुआ. ३ निश्चय किया हुआ, इरादा या विचार किया हुआ. ४ विचार-विमर्श किया हुआ. ५ औचित्य पर विचार किया हुआ. ६ अंदाजा लगाया हुआ, अनुमानित. ७ असमंजस या पशोपेश में पड़ा हुआ।
(स्त्री. सोचियोड़ी)
सोची—स. स्त्री. [सं. शोचिस्] १ प्रकाश, ज्योति।
२ आभा, कांति, चमक। (ह. नां. मा.)
३ अग्नि, आग।
सोचीकेस—सं. पु. [सं. शोचिष्केशः] अग्नि, आग। (ह. नां. मा.)
रू. भे.—सोचकेस, सोचिकेस।
सोज—१ तैयारी।
उ०—गुरां प्रोहित सुभट गाजी, तेड़ मंत्री अकल ताजी, सला कीध सघीर। सोज लावां करै मादी, गुमर धारै अवध गादी, विराजै रघुवीर।—र. रू.
२ देखो 'सोच' (रू. भे.)
उ०—आध कोस अंतरै, कटक आपणौ चलावां। न को रहां अण सोज, न कूं आलोज उपावां।—रा. रू.
सोजणौ, सोजबौ—देखो 'सोधणौ, सोधबौ' (रू. भे.)
उ०— पुरख तौ ईणां रांडां अठैहीज छिपायौ है। जो थै ही सोज ल्यौ।—राजा रा गुर रा बेटा री वात
सोजाक—देखो 'सूजाग' (रू. भे.)
सोजि—देखो 'सोजी' (रू. भे.)
सोजियोड़ौ—देखो 'सोधियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सोजियोड़ी)
सोजी, सोजी—स. स्त्री.—१ विवेकशक्ति, बुद्धि, ज्ञान।
उ०—थूं हाल टावर है। मूंडो-भलो सोचण री थनै अंगै ई सोजी कोनीं थूं जांणै कै म्है थारौ मूंडौ चींता ला।—फुलवाड़ी
२ ध्यान, पता, जानकारी।
उ०—१ वाजरी री तौ म्हैं फेर ई गम खाय लेती, पण थांनै इण बात री सोजी होवणी चाहीजै कै भाटियां रै सरणै आया सूवर रौ खुद भगवांन ई लारौ करै तौ उणरी पार नीं पड़ै।—फुलवाडी
उ०—२ जै मिनख नैं सांप्रत दीठ सूं आगै दीखण लाग जावै, आगला छिण री सोजी पड़ण लाग जावै तौ उणी पलक बातां रौ पीदौ आय जावै।—फुलवाडी
३ अक्ल, बुद्धि, विचार शक्ति।
उ०—१ बेटी लूखी वांणी मैं जवाब दियौ—म्हारौ मूंडौ-भलौ चींतण री म्हांमैं पूरी सोजी है।—फुलवाड़ी
रू. भे.—सोधी।
४ देखो 'सोजी' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—होठां री सोजी मिट्यां दीवांणजी ई खोड़ा वाळी बात नैं खासी भूलग्या हा। याद राखणां सूं लाज आवती।—फुलवाड़ी
सोजौ, सोजौ—सूजन, शोथ।
अल्पा;—सोजी, सोई।
सोझण—सं. स्त्री.—शुद्ध करने या संशोधन करने की क्रिया।
सोझणौ, सोझबौ—देखो 'सोधणौ, सोधबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हितू जांण सुविहांण, खान इतकाद आद अत। कियौ विदा आलोझ, सोझ सुख बात घात चित्र।—रा. रू.
उ०—२ बेटा री मग रण बवण, बहु री बळणी मग्ग। सोझी पीहर सासरा, लारै रजवट लग्ग।—रैंवतसिंह भाटी
उ०—३ दिस दिक्खण खड़िया 'दुरग', सूरधरा छळ सज्झ।

छोडै मंका ज्यों हणू, लंका सोभरण कज्ज ।—रा. रू.

उ०—४ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुख मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप ।—वेलि

उ०—५ सुरित निरत करि सोझीया, पाया रांम रतंन । तन ताळा मन ताकड़ी, विणजणहार वचंन ।—अनुभववांणी

सोभणहार, हारौ (हारी), सोझणियौ—वि० ।

सोझिग्रोड़ौ, सोझियोड़ौ, सोझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोझीजणौ, सोझीजबौ—कर्म वा० ।

सोझियोड़ौ—देखो 'सोधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोझियोड़ी)

सोट, सोट—सं. पु.—१ गोढ़वाड़ में वच्चे के जन्म के वाद प्रथम होली पर उसकी 'ढूंढ' के संस्कार के अवसर पर अपनी जाति में बांटा जाना वाला खाजा जो पापड़ के आकार का होता है ।

रू. भे.—सोठौ ।

२ देखो 'सोटौ' (रू. भे.)

उ०—गांव मैं वडतांरै सांमै केई वेलीड़ा भळै मिळचा ! सोट सांभ लिया ।—दसदोख

सोटण, सोटी—सं. स्त्री—१ वह लंबी लकड़ी जिससे ज्वार वाजरा आदि की सिट्टियों को कूटकर दाना निकालते हैं । (लकड़ी)

२ देखो 'सोटौ' (अल्पा; रू. भे)

सोटौ—सं. पु.—१ मोटी लकड़ी का मजवूत डंडा, लाठी, लट्ठ ।

उ०—तद गांम रै धणी आपरी असतरी रौ वचन सुणनैं छोकरी रै सोटा री मारी ।—राजा रा गुर रा वेटा री वात

२ भैंसा-सांड ।

उ०—मोडा अेक वहुत ह्वै महिला, ज्यूं भैंसिन मैं सोटा । दै छांटा नारी परवोधै, खसम वतावै खोटा ।—ऊ. का.

३ देखो 'सोठौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सोट ।

सोठागारौ—वि. (स्त्री. सोठागारी) १ मितव्ययी ।

२ कृपण, कंजूस ।

सोठौ, सोठौ—सं. पु.—१ तंगी, अभाव ।

उ०—यां 'राजोधर' अखियौ, सू जादवां सप्रांण । सोठै नांणा जीवणी, तौ पूठै 'जैसांण' ।—रा. रू.

२ मितव्ययता ।

३ कृपणता ।

४ देखो 'सोटौ' (रू. भे.)

रू. भे.—संठौ ।

सोडस—वि.—सोलह ।

सं. पु.—सोलह की संख्या ।

रू. भे.—सोड़स ।

सोडसकळा—सं. स्त्री. [सं. षोड्श्+कला] चन्द्रमा की सोलह कलाएं जिससे वह क्रमशः घटता-वढ़ता रहता है ।

वि. वि.—देखो 'कळा' (२)

रू. भे.—सोड़सकळा ।

सोडसगण—सं. पु. [सं. षोडशगण] ५ ज्ञानेन्द्रियों, ५ कर्मेन्द्रियों, ५ भूत और एक मन इन सोलह का समुह ।

रू. भे.—सोड़सगण ।

सोडसदांन—सं. पु. [सं. षोडसदान] १ धर्मानुसार इन 'सोलह चीजों का दान—पृथ्वी, जल, आसन, वस्त्र, अन्न, पान, दीपक, छत्र, सुगन्धित द्रव्य, फल, पुष्पमाला, खड़ाऊ, शास्त्र, गाय, सोना और चाँदी ।

रू. भे.—सोड़सदांन ।

सोडसपूजन—सं. पु. [सं. षोडश्पूजन] पूजन के सोलह अंग या कृत्य ।

२ षोडशोपचार से की जाने वाली पूजा ।

रू. भे.— सोड़सपूजन ।

सोडसमातका—सं. स्त्री. [सं. षोड़श्+मातृका] सोलह मातृकाओं का समूह या वर्ग जिनके नाम इस प्रकार हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शालि, पुष्टि, धृति तुष्टि, मातृ और आत्म देवता ।

रू. भे.—सोड़समातका ।

सोडसवारखी—वि. स्त्री. [सं. षोडस+वार्षिका] सोलह वर्ष की ।

उ०—वाळी-भोळी अवळा प्रउढा सोडसवारखी रांणी रवतांणी । वहदा वहदी ही आपणा देवर जेठ भरतार का सत देखती फिरइ छइ ।—अ. वचनिका

सोडससंस्कार—सं. पु. [सं. षौडशसंस्कार] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक वैदिक विवान के अनुसार किये जाने वाले सोलह-संस्कार ।

रू. भे.—सोळैसस्कार ।

सोडसी—वि. [सं. षोडशी] १ सोलह वर्ष की आयु वाली ।

२ युवती ।

सं. स्त्री.—१ सोलह वर्ष की युवती ।

२ दस महाविधाओं में से एक ।

३ इन सोलह वस्तुओं का समुह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नी, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम ।

सोडसोपचार—सं. पु [सं. षोडशोपचार] पूजन के सोलह उपचार या अंग—आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांवूल, परिक्रमा और वंदना ।

सोडौ—सं. पु. [अं.] सज्जी को रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके वनाया जाने वाला एक प्रकार का क्षार ।

सोढांण, सोढांयण—सं. पु.—ऊमरकोट का प्राचीन नाम ।

सोढा-सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा।

सोढौ-सं. पु.—१ पंवार वंश की सोढा शाखा का व्यक्ति।

२ वर, पति।

उ०—भावी न मिटै कुंवरी, तुम्है थया छौ एक। मन मांन्यौ सोढौ मिळ्यौ, परणी आंणि विवेक।—वि. कु.

३ एक प्रसिद्ध लोक गीत जो विवाह के समय रात्रि में गाया जाता है। (बां. दा. ख्यात)

सोण-सं. पु. [सं. शोण] १ अग्निकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

उ०—मचायौ सोण री कीच द्रोण सौ दिखायौ मांनूं, तेगां सूं रचायौ ख्यान अनोखौ तमास। छकै छाक लोहां पूर आरवां विमांणां छायौ, हेकंपै भूलोक आयौ मुनिंद्रां सहास।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

३ देखो 'सुगन' (रू भे.)

उ०—म्हांरा सोण सैंफळिया वै पांचो ही मिळ राजा रै पगां लागी।—चौबोली

४ देखो 'सोणभद्रा' (रू. भे.)

उ०—देवी कावेरी तापि अस्त्रा कपीला, देवी सोण सतलज्ज भीमा गुसीला।—देवि

सोणक-वि.—लाल।

सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी—देखो 'स्वरणगिर' (रू. भे.)

सोणत—देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सोणभद्रनद-सं. पु. यौ. [सं. शोणभद्रनद] विंध्याचल से निकलकर पटना के पास गंगा में गिरने वाला एक नद।

सोणभद्रा-सं. स्त्री. [सं. शोणभद्रा] पंजाब की सोन नदी का एक नाम।

रू. भे.—सोण।

सोणहर-सं. पु.—शयनघर।

उ०—ताहरां सोनगरां रिणमल जी सूं चूक तेवड़ियौ। सोणहर रिणमल जी पौढिया हुता।—नैणसी

सोणित-सं. पु. [सं. शोणित] १ रुधिर, खून, रक्त।

उ०—१ जुद्ध में मांझियां नै विरोळै मारनै सोणित लोही सूं रूक तरवार रंग नै पाछौ मुड़ै छै। इणमें पती री वीरता दिखाई है।

—वी. स. टी.

उ०—२ इणी रीति रतळांम रै राजा राठौड़ रत्नसिंह सारथी समेत तरणी नूं तमासै लगाइ केही गजदंतां सहित सुंडादंड सुनां करि दीठा दोवणां रै सोणित भद्रकाळी री खप्पर भराइ वीर वेनाळां नूं गूदरा गाळा जिमाइ विनां माथै भी साहजादां नूं मंराइ लोह छक घूमता गजां री घड़ा में सूरसज्जा सूतै इच्छा रै अनुसार परलोक लियौ।—वं. भा.

२ सिंदूर।

३ केसर।

४ तांबा।

५ शूर राजा का पुत्र एक यादव राजा।

वि.—लाल, रक्तवर्ण। (डिं. को.)

रू. भे.—सांणत, सोण, सोणी, स्रुण, स्रुणि, स्रुणी, स्रोण, स्रोणित, स्रोणी।

सोणितचंदण, सोणितचंदन-सं. पु. [सं. शोणितचंदन] लाल चंदन।

सोणितपुर-सं. पु. [सं. शोणितपुर] १ बाणासुर की राजधानी का नाम।

२ सोजत नगर का एक प्राचीन नाम।

सोणितोद-सं. पु. [सं. शोणितोद] एक यक्ष का नाम।

सोणी—१ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

उ०—वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूं सर सावळ झळहळ ए। अडडै कांछुसळ कुटकै कम्मल, सोणी रळ-चळ खळहळ ए।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'सांणी' (रू. भे.)

सोणूं—देखो 'सोहणौं' (रू. भे.)

उ०—सोणूं तीतर बोल्यौ जाय डोडौ ज्वार री।—लो. गी.

सोणौ, सोवौ—१ देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू. भे.)

उ०—जव सोऊं तव जागवइ जव जागूं तव जाइ। मारू ढोलउ संभरइ, इणि परि रयण विहाइ।—ढो. मा.

२ देखो 'सोहणौ, सोहवौ' (रू. भे.)

सोत-सं. स्त्री.—१ जयपुर राज्य की एक नदी जो झाड़ली और जैतगढ की पहाड़ियों में से निकलकर साबी में गिरती है। (वीर विनोद)

२ देखो 'स्रोत' (रू. भे.)

३ देखो 'सौत' (रू. भे.)

सोतपत, सोतपति, सोतपती—देखो 'स्रोतपति' (रू. भे.) (डिं. को.)

सोतौ—देखो 'स्रोत' (रू. भे)

सोथ-सं. स्त्री [सं. शोथ] सूजन।

सोदंति-सं. पु. [सं.] एक आचार्य जिस पर विश्वामित्रजी ने विजय प्राप्त की थी।

सोदकुंभ-सं. पु.—पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला एक प्रकार का कृत्य।

सोदणौ, सोदवौ – देखो 'सोधणौ, सोधवौ' (रू. भे.)

उ०—ताकत डोलै तीसरा, साथरवाड़ा सोद। पैलां घर पटकी पड़ै, माखां रै मन मोद।—ऊ. का.

सोदणहार, हारौ (हारी), सोदणियौ—वि०।

सोदिओड़ो, सोदियोड़ो, सोदयोड़ो—भू० का० कृ०।

सोदीजणौ, सोदीजवौ—कर्म वा०।

सोदर, सोदरज-सं. पु. [सं. सहोदर, सं. स+उदर] एक ही मां के कोख से उत्पन्न भाई, भ्राता। (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ **सोदर** इम 'सादूळ' रौ, पूरण राज वळ पूर। राज भदावड़ जिण रचै, सात्रव दळ दळि सूर।—वं. भा.

उ०—२ लालसिंह रौ **सोदर** हरिसिंह सिंधु देस रौ अधीस हुवौ जिणरै पुत्र धुंधट उपजियौ जिकण रौ वंस धुंधटिया चहुवांण कहावै।—वं. भा.

सोदरा, सोदरी—सं. स्त्री. [सं. सहोदरा, सं. स+उदरा] १ सगी बहिन, भगिनी। (ह. नां. मा.)

[सं. सुभद्रा] २ श्रीकृष्ण की बहिन का नाम।

उ०—सांवळियौ बहनोई मांगां, **सोदरा** बहन मांगौ; हांडा धोवण फूंकों मांगां, झाड़ू देवण भूवा।—लो. गी.

२ दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

सोदागर—देखो 'सौदागर' (रू. भे.)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया **सोदागर** वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै।—रा. सा. सं.

सोदियोड़ौ—देखो 'सोधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोदियोड़ी)

सोदौ—देखो 'सौदौ' (रू. भे.)

उ०—१ वा घर घर हाट चोवटै सगळै फिरी, नेवरा करचा पण कोई वांणियौ **सोदौ** जोखण सारू राजी नीं व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ गाहै **सोदै** ग्राहकां, ढाहै जै गज ढल्ल। लाहौ लोटै वांणियौ, आ है सांची गल्ल।—बां. दा.

उ०—३ कांम करै नहीं काज करै नहीं, सीरौ चरै सदाई। सीत-प्रसाद नांम धर **सोदां** खूबहि ग्रेंठ खवाई।—ऊ. का.

सोध—सं. स्त्री. [सं. शोध] १ खोज, तलाश और खबर।

उ०—१ पाछा आय खांन नूं कह्यौ—जै घोड़ी कठै पाई नहीं। **सोध** पण नहीं हुई।—सूरे खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ पछै रावतजी नुं खवर हुई सो पाछौ बुलावण री तलास तौ घणी ही कीधी पण इणरी **सोध** किण ही न लीधी।

—प्रतापसिंह म्होंकमसिंघ री वात

२ शुद्धि, संस्कार।

३ अन्वेषण, गवेषण।

४ दुरुस्ती।

५ छिपी हुई रहस्यपूर्ण वातों की खोज।

सं. पु.—६ घर, मकान। (अ. मा.)

७ महल, प्रासाद। (डिं. को.)

८ विचार।

उ०—१ वारली असेस **सोध** वोध तैं करचौ, सोधनां विसेस मांहि **सोध** ना करचौ।—ऊ. का.

उ०—२ पांन प्रयाग बड़ तणै पौढियौ, सुजि हरि समरि अवर करि **सोध**। (ह. नां. मा.)

४ देखो 'सौध' (रू. भे.)

सोधक—वि. [सं. शोधक] १ शुद्ध करने वाला।

२ ढूंढने या पता लगाने वाला।

३ शोध करने वाला।

४ सुधार करने वाला।

सोधणी—सं. स्त्री. [सं. शोधनी] बुहारी, झाडू (डिं. को.)

रू. भे.—सोधनी।

सोधणौ, सोधबौ—क्रि. सं. [सं. शोधनं] १ खोजना, ढूंढना, तलाश करना।

उ०—१ चरवादार **सोधतौ** सौधतौ राजकंवरां रै पाखती पुगौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै राजा घणौ कह्यौ तौ वौ भायां नै **सोधण** सारू पाछौ वहीर व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ भांत भांत रा सांग भर, प्रभू सूं करै न प्रेम। **सोधै** लिछमीं साधड़ा, नाभ कवळ रौ नेम।—ऊ. का.

२ साफ करना, शुद्ध करना।

३ ठीक और दुरुस्त करना, सुधारना।

४ विचार करना, सोचना।

५ आयुर्वेद के अनुसार धातुओं को दोषरहित करना, शोधन करना।

६ छान-बीन करना।

७ गवेषण या अन्वेषण करना।

सोधणहार, हारौ (हारी), सोधणियौ—वि०।

सोधिओड़ौ, सोधियोड़ौ, सोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोधीजणौ, सोधीजबौ—कर्म० वा०।

सोजणौ, सोजबौ, सोदणौ, सोदबौ—रू० भे०।

सोधन—सं. पु. [सं. शोधन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव।

२ दोष, भूल आदि का सुधार।

३ रहस्यपूर्ण एवं नई वातों की खोज करना, अन्वेषण।

४ प्रायश्चित।

५ सजा, दंड।

६ दस्त लगाकर कोठा साफ करना, विरेचन।

७ धातुओं को दोषरहित करना, शोधन करना।

८ नींबू।

सोधनी—देखो 'सोधणी' (रू. भे.)

सोधाणौ, सोधाबौ—क्रि. स. ['सोधणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ खोज या तलाश कराना, ढूंढाना।

२ शुद्ध कराना, साफ कराना।

३ ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना।

४ विचार करने के लिये प्रेरित करना ।

५ वैद्यक में धातुओं का शोधन कराना ।

६ छान-बीन कराना, जांच-पड़ताल कराना ।

७ अन्वेषण कराना, गवेषणा कराना ।

सोधाणहार, हारौ (हारी), सोधाणियौ—वि० ।

सोधावोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोधाईजणौ, सोधाईजबौ—कर्म वा० ।

सोदाणौ, सोदाबौ—रू० भे० ।

सोधावोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ढुंढवाया हुआ, खोज कराया हुआ. २ शुद्ध या साफ कराया हुआ. ३ ठीक या दुरुस्त कराया हुआ. ४ छान-बीन करवाया हुआ. ५ गवेषणा या शोध करवाया हुआ ।

(स्त्री. सोधावोड़ी)

सोधिया-सं. स्त्री.—पड़िहार वंश की एक शाखा जो मालवे में आबाद है ।

सोधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ढूंढा या खोजा हुआ. २ छान-बीन किया हुआ. ३ शुद्ध या साफ किया हुआ. ४ सोचा हुआ, विचारा हुआ. ५ ठीक या दुरुस्त किया हुआ. ६ गवेषणा किया हुआ ।

(स्त्री. सोधियोड़ी)

सोधी—देखो 'सोजी' (रू. भे.)

उ०—१ सोधी नहीं सरीर की, औरौं कौ उपदेस । दादू अचरज देखिया, ये जायेंगे किस देस ।—दादूवांणी

उ०—२ सोधी नहीं सरीर की, कहै अगम की वात । जांन कहावै बापुड़ै, आयुध लीयै हाथ ।—दादूवांणी

सोधौ—देखो 'सौदौ' (रू. भे.)

उ०—जिनावरां में सोधौ स्याळियौ, पंखेरूग्रां में कागौ काळियौ अर मिनखां में नाई नागौ तथा जाळियौ वाजै है ।—दसदोख

सोनंग, सोनंगर, सोनंगरौ—देखो 'सोनगरौ' (रू. भे.)

उ०—'केहरी' पड़ै सोनंगरौ 'दलौ' लड़ै आगा दळां ।—रा. रू.

सोन-सं. स्त्री. [सं. शोण] १ एक नदी जो मध्यप्रदेश के अमरकंटक की अधित्यका से निकलती है तथा अंत में गंगा में मिलती है ।

२ एक सदाबहार लता ।

सोनइयौ-सं. पु.—१ स्वर्णमुद्रा ।

उ०—१ इम कही हय गय सार, लाख सोनइया रोकड़ा जी ।
—प. च. चौ.

उ०—२ लाख सोनइया रोकड़ा रे लाल ।—प. च. चौ

२ एक प्रकार की घास ।

रू. भे.—सोनैयौ, सोनइयौ ।

सोनउ—देखो 'सोनौ' (रू. भे.)

उ०—जी हो सोनउ स्यांम न होय ।—स. कु.

सोनगढ़-सं. पु.—१ जालोर का दुर्ग ।

२ देखो 'स्वरणगिरि' ।

सोनगर-सं. पु.—जालोर नगर का एक प्राचीन नाम । (ऐतिहासिक)

सोनगरा-सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा ।

सोनगरौ-सं. पु.—चौहान वंश की सोनगरा शाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—सोनंग, सोनंगर, सोनिगरौ, सोनगिरौ ।

सोनगिर, सोनगिरि, सोनगिरौ—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

उ०—जिण जाळोर री दूजौ परयाय आरषाव्रत में विदित सोनगिरि इसौ कहावै ।—वं. भा.

सोनचिड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो सफेद एवं काले रंग की होती है, इसके सकुन माने जाते हैं ।

रू. भे.—सोवनचिड़ी, सोहनचिड़ी, सौनचिड़ी ।

सोनजरद-सं. पु.—पीली जूही ।

सोनजाय, सोनजुही-स. स्त्री.—पीले रंग के फूलों वाली जूही, स्वर्ण यूथिका ।

उ०—१ औ विचारां भंवरा भेद कहै है वीजू सोनजुही तौ अग में मिल रहै है ।—र. हमीर

उ०—२ सोनजुह रियावेल चंबेल चवेली कै फुलवाद । मोगरैकी महक गुलाब फुलूंकी सुगंध जवाद ।—सू. प्र.

उ०—३ तठा उपरांयत माळी फूलां री छावां आंण हाजर कीजै छै । सू फूल कुण भांतरा छै । हजारा नौरंग तुररौ मैंहदी किलंगी सोनजुही इसकपेचौ सेरी कोयल मालती चांदणी मुखमल नरगस हवास गुलअनार दाऊदी केवड़ौ ।—रा. सा. सं.

उ०—४ कुमुद ढाक कल्हार, वेण कचनार विराजै, सोनजाय पल्लव असोक सुर धोकसु साजै ।—रा. रू.

रू. भे.—सोवनजाई, सोवनजुही ।

सोनड़ौ-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा विशेष । (शा. हो.)

सोनभद्र, सोनभद्रा—देखो 'सोन' (रू. भे.)

सोनमेनी-सं. स्त्री.—एक नगरी का नाम जो करांची से ३० कोस है ।

उ०—नग्री सोनमेनी पछै गांम नांही, महा कासटा घोर ऊजाड़ मांही ।—मे. म.

सोनल-वि.—१ सोने का, स्वर्णमय, सुनहरा ।

उ०—राजकंवरी रौ रूप सुभट दीसतौ हो सोनल केस । चांद रै उनमांन पळकतौ उणियारौ ।—फुलवाड़ी

२ गौर वर्ण ।

उ०—वादळां नै छोड आ कोई वीजळी नाळ उतरै है कै गिगन छोड कोई चांद नाळ उतरै ! सोना रा केस अर सोनल वरणी ।
—फुलवाड़ी

३ चमकदार, चमकीला ।

सोनलभींग, सोनलभींगी-सं स्त्री.—१ वर्षा ऋतु के बाद एवं शरद ऋतु के प्रारम्भ में पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रंग का ठोस चमकदार आवरण (पदार्थ) होता है ।

२ एक राजस्थानी लोकगीत ।

सोनलिया-सं. स्त्री.—मांगणियार जाति का एक भेद विशेष । (मा. म.)

सोनळवौ, सोनळहलवौ, सोनळहलुवौ—देखो 'सोहनहलवौ' (रू. भे.)

सोनवांणी–सं. पु.—वह पानी जिसमें सोना डुबोया गया हो या स्वर्ण स्पर्श किया हो।

रू. भे.—सोनावांणी।

सोनहरौ–सं. पु. (स्त्री. सोनहरी) वह घोड़ा जिसके काले सुमों पर सफेद रेखा या सफेद सुमों पर काली रेखा हो। (अशुभ) (शा. हो.)

वि.—चमक, दमक, रंग आदि में सोने जैसा, सुनहला।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति कटारी किण भांति री कुनारवंधी, कुनारगांमी, जमदाढ **सोनहरी** नकसी जड़ाव सांतरी! घणौ मुखमल घणौ कतीफै मांहैं गरकाब कीधी थकी।

—रा. सा. सं.

सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

उ०—सत कै **सोनागिर** वाचा हरचंद।—रा. रू.

सोनागेरू–सं. पु. [सं. स्वर्णगैरिक] साधारण गेरू से अधिक लाल एवं मुलायम एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

सोनानांमी–सं. पु.—रुक्मिणी का भाई, रुक्मि।

उ०—निराउध कियौ तदि **सोनानांमी**, केस उतारि विरूप कियौ।—वेलि

सोनामक्खी, सोनामखी—देखो 'सोनामुखी' (रू. भे.)

सोनामछी–सं. स्त्री.—रेतीले मैदान में पाया जाने वाला विषैला जंतु।

सोनामुखी–सं स्त्री. [स्वर्णमक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पत्थर जो सोने के अभाव में औषधियों में काम लिया जाता है, इसका रंग पीला होता है।

२ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियाँ विरेचन के काम आती है, सनाय।

३ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

रू. भे.—सोनामक्खी, सोनामखी।

सोनार—देखो 'सुनार' (रू. भे.)

उ०—मांडणा मांडचा। **सोनार** सूं गेणौ-गांठौ घड़वायौ।

—फुलवाड़ी

(स्त्री. सोनारी)

सोनारूपौ–सं. पु.—एक मारवाड़ी लोक गीत।

सोनावांणी—देखो 'सोनवांणी' (रू. भे.)

सोनावेल–सं. स्त्री.—वन में तथा पर्वतों पर होने वाली लता विशेष।

सोनाहरणी–सं. स्त्री.—वेश्या।

उ०—करहै असवारी कियां, **सोनाहरणी** संग। उण ढोला ज्यूं आपरौ, ढोलौ मानै ढंग।—वां. दा.

सोनिक–सं. पु.—१ खटीक। (डि. को.)

२ कसाई।

सोनिगरा—देखो 'सोनगरा' (रू. भे.)

उ०—खुमांणां **सोनिगरां**, कर ऊधरा सरीस। आद पमांरां सांम छळ, आया वंस छत्रीस।—रा. रू.

सोनिड़ौ—देखो 'सुनार' (अल्पा; रू. भे.)

सोनी—देखो 'सुनार' (रू. भे.)

सोनीड़ौ—देखो 'सुनार' (अल्पा; रू. भे.)

उ० - **सोनीड़ा** नै वेग बुलाय, हरजी सूं हेत लग्यौ। रांणी मा'सती रै गैं'णौ पैराय हरजी सूं हेत लग्यौ।—लो. गी.

सोनू—देखो 'सोनौ' (रू. भे.)

सोनेयौ—देखो 'सोनइयौ' (रू. भे.)

सोनेरण–सं. स्त्री.—सोने की मूठ वाली तलवार या कटार।

सोनेरी–सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

वि.—१ स्वर्ण सम्बन्धी, सोने का।

२ देखो 'सौनहरी' (रू. भे.)

सोनेली–सं. स्त्री.—१ वर्षा ऋतु में होने वाला एक छोटा पौधा जिसके छोटे २ पीले फूल आते हैं, इसे पशु खाया करते हैं।

सोनेलौ—१ देखो 'सोनेली' (अल्पा; रू. भे.)

२ स्वर्ण के समान रंग वाली।

सोनौ–सं. पु. [स. स्वर्ण] १ एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके आभूषण आदि वनते हैं, इसका रंग पीला होता है, कंचन, स्वर्ण।

उ०—खीर खांड री जीमण जीमाऊं, **सोना** चांच मंढाऊं कागा, जद म्हारा पिवजी घर आवै।—लो. गी.

पर्याय.—अगनीबीज, अस्टपाद, कंचन, कनक, करवुर, कळधोत, कुंनण, कुरमदन, गांगोय, गारुड़, गैरूक, चांमीकर, जांवूनद, जातरूप, तपनीय, धातांसार, धातोंपम, पीतरंग, भरम, भूतम, भूर, भूरम, भूरि, महारजत, रजत, रजतधांम, रुकम, लोहुतम, वसू, सातकूंभ, साळ, सुवरण, सेलसुत, सोनूं, सोव्रण, स्वरण, हरन, हाटक, हिरन, हेम।

मुहा.—१ सोना मैं सुगंध=जब दो अच्छी बातों का संयोग हो. २ सोना रा थाल मैं तांवा री मेख=उत्तम वस्तु में घटिया वस्तु का योग होने पर उसके सौन्दर्य में कमी हो जाती है। स्वच्छता पर दाग होने की दशा में, बेमेल कार्य. ३ सोना नै काट नीं लागै =सच्चे व ईमानदार अपने प्रण से नहीं डिगते. ४ सोनौ गयौ करण री लार=भले और महान व्यक्तियों का अभाव होना. ५ सोनौ घड़ाई सूं मूंगौ पड़ै है=आभूषण की घड़ाई स्वर्ण की कुल कीमत से अधिक होने पर मुख्य कार्य से गौण कार्य जब अधिक भारी पड़ता हो. ६ सोनौ देख्यां मुनी रौ ई मन डिगै=लालच बुरी वला होती है. सुन्दर व मूल्यवान् वस्तुओं में आकर्षण होता है. ७ सोना री कटारी पेट मैं नीं मारीजै= कीमती वस्तु भी यदि प्राण लेने वाली हो तो त्याग देना चाहिये. ८ सोना रौ सूरज ऊगणौ=अत्यन्त खुशी की घड़ी आना. ९ सोना रै छोत थोड़ीइ लागै=चंदन विष व्यापै नहीं लपटे रहत

[illegible] १० [illegible] = [illegible] वस्तु, [illegible] आदमी, अत्यन्त शुद्ध.

११ [illegible] = [illegible] बात होना ।

२ [illegible], वस्तु ।

[illegible] (क्रि. [illegible])

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]— १ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

सोपट—वि —प्रत्यक्ष, [illegible], सामने ।

उ०—घर घर घाटां संसोधन घालै, हर हर हाटां विन हंसो उड [illegible] । [illegible] सोपट [illegible], अज्जण मज्जण विण [illegible] ।—क. का.

सोपांन—सं. पु [सं. सोपान] १ जीना, सीढ़ी ।

उ०—[illegible] रै ऊपरै त्रिवली समर सोपांन रै रंग । कटि तटि अति सुछिम कही रे, थूल नितब वखांण रे रग ।

—प. च. चौ.

२ किसी पुस्तक का अध्याय, पाठ ।

३ जैन धर्मानुसार मोक्ष का उपाय ।

सोपारी—देखो 'सुपारी' (रू. भे.)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नारेळ विदांम । सोपारी तिरणी [illegible], हेम हुवा तिहि ठांम ।—गज-उद्धार

सोपारो, सोपारौ—सं. पु.—१ अलगोजा से मिलता-जुलता एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

२ लिंगेंद्रिय का अग्र भाग, मणि ।

सोपो, सोपौ—सं. पु. [सं. स्वाप.] १ रात्रि का वह समय जब सन्नाटा छा जाता है, रात्रि का दूसरा प्रहर, सन्नाटा, शान्ति ।

उ०—१ चंवावाती नगरी । चंद्रसेन राजा । तांबा री खांन हुती । तिण रै सोजल नांवै बेटी हुई । तिका चौसठ जोगणीयां साथै रमती । सु सोपो पड़तो तरै नीसरयी —सोजत रै मंडल री वात

उ०—२ मोरो गांव, छोटो घर, मीयाळै री मैं' अंधारी रात मैं, सत्ता सोपो पड़ र्‌यो है ।—दसदोख

उ०—३ ताहरां रात पोर डोढ गई । सहर में सोपो पड़ियो ।

—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ स्तब्धता, सुनसान, सूनापन ।

उ०—सोपो पड़्यो, सरणाटो छायो । वत्ती काटी, लोटियो बुझायो ।

—दसदोख

३ शांति ।

उ०—पूरी रात गांम में सोपो कोनीं पड्यो । मिनख भींकता रहता । कुत्ता ऊंचो मूंडो कर कर नै कूकता रहता ।

—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—स्वापौ ।

सोफियांनी, सोफियांनौ—वि. [अ. सूफी+इयाना] १ सूफियों का, सूफी सम्बन्धी ।

२ हल्का-फुल्का, साधारण ।

सोफियौ—सं. पु.—सूफी सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

उ०—ब्राह्मण सेतबर वळै, जोगी जगम जांण । दांन संन्यासी सोफिया, खट दरसण वाखांण ।—रा. सा. सं.

सोफी—स. पु.—वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का नशा न करता हो ।

उ०—तद ईयै कही, 'अठै दारू री चाळौ छै । अर थें नहीं पीसो तो थांनै साळा हससी । अर मोनै पिण सहेल्यां हसगी । अर कहिसी सोफी छै । ईयैं सूं कामूं हुसी ।—बूढी ठग राजा री वात

सोफोदर—सं. पु [सं. शोफ:+उदर] उदर पर सूजन आने से होने वाला एक रोग विशेष ।

उ०—पांडू रोग सोफोदर सही, तीजौ रोग जलोदर लहि ।

—ध. व. ग्रं.

सोब—सं. पु.—१ पोशाक, पहनावा ।

उ०—बीरा ओ अबकै तो भेलो म्हारी सोब, सुसरो जी मुसा बोलिया ।—लो. गी.

२ देखो 'सोभा' (रू. भे.)

सोबण—सं. स्त्री.—लकड़ी घिसने का औजार ।

सोबत—सं. पु.—१ व्यापारियों का काफिला, समूह, ।

उ०—१ डूंगरसी दुरजणसल री, विक्रमपुर धणी हुवौ । वडो ठाकर हुवौ । तद मोटो राजा फळोधी बसै छै । तद दांण घणो धरती मांहै लागतो । तद सोवत सोदागरां री आवती हुती । सु राव डूंगरसी आपरा भाई भांनीदास नं सोवत सांम्ही मेल, सोवत तेड़ाय, दांण लेनै सोवत आघी चलाई ।—नैणसी

उ०—२ भांनीदास दुजणसल री सिरहड़ वसियो । पछै सोवत रै मांमलै मोटै राजा फळोधी थकां संमत १६२५ रै टांणै मारियो ।

—नैणसी

२ घोड़ों का झुण्ड, समूह ।

उ०—१ पातसाह रै पांणीपंथा घोड़ां री सोवत आवती थी सु मार ली ।—नैणसी

उ०—२ कितराइक दिन हुवा, ताहरां एक घोड़ां री सोवत आई । सु सोदागरां कनां घोड़ा खोस लिया ।—नैणसी

उ०—३ ताहरां प्रथीराज चढ नै गयो असवार १००० जाय कहीयो, 'अखा जांणै इतरा रुपीया लै पण घोड़ो दै । नहीं तो मार नै सोवत सरब लेसां ।—हांहुल हमीर री वात

३ देखो 'सोहबत' (रू. भे.)

सोवा—देखो 'सोभा' (रू. भे.)

उ०—जिस वखत श्रीमहाराज केसरिया ऊंच पोसाक पहिर खांधी पेच बणवाय । जंवहर कै सिरपेच सिर सोवा जग जोति जगाया ।

—सू. प्र.

सोवादार—देखो 'सूवेदार' (रू. भे.)
उ०—डंडै खांन री मेवास दिली आगरी साह री डंडै, आंन री कीं गिरणां वेहूं राह री अनेक। आंटीपणौ **सोवादार** सतारानाथ नूं आखै, हिंदुवां मैं मांटीपणौं 'राजांन' री हेक।
—महाराजा बहादरसिंघ री गीत

सोवायत—देखो 'सूवेदार'।
उ०—१ अजमेर री **सोवायत** नु फरमांन हुवौ—श्री कहै सु कांम सरभरा कर देजौ।—नैणसी
उ०—२ अजमल भड़ गांधाणी आया, सुण **सोवायत** सहर समाया।—रा. रू.
उ०—३ **सोवायत** सांभर तणौ, पकड़ लियौ पंडवेस। उर द्रढ पायौ कूरमां, अब घर आयौ देस।—रा. रू.

सोवावटी—देखो 'सोभावटी' (रू. भे.)

सोवौ—१ देखो 'सूवौ' (रू. भे.)
उ०—१ लसियौ निवाव कटिया किलम, ग्रह त्रप धरि गजगाह रौ। लसकरी खांन लूटै लियौ, **सोवौ** औरंगसाह रौ।—सू. प्र.
उ०—२ सांमधरम छळ 'खीमसी', साह कियौ सुप्रसन्न। **सोवौ** गुजर खंड रौ, दीनौ खूंद जवन्न।—रा. रू.
२ देखो 'सूवेदार' (रू. भे.)
उ०—असमर भुज ग्रहियां 'अखौ', मोकळसर मेवास। **सोवा** आया तीन सिर, माह वहंतै मास।—रा. रू.

सोव्रण—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)
उ०—जायोड़ा जोडरा, थाट पाटां थायोड़ा। दिल आयोड़ा दाय, तिकै **सोव्रण** तायोड़ा।—मे. म.

सोव्रणकार—देखो 'स्वरणकार' (रू. भे.)

सोव्रन—देखो 'सुवरण' (रू. भे.)
उ०—जरीतारां जरीवाफां नीलंकां जड़ाव जांमां, दांमां पार पावै नकौ देता चित दत्ति। कहां खोटी वार विचै मोटी रीभां 'सेवौ' करै, सासणां **सोव्रन्नां** कड़ा समापै हसत्ति।—नाथौ बारहठ

सोभ—देखो 'सोभा' (रू. भे.)
उ०—१ मातै मैंगळ ज्यूं ढळै, **सोभ** समंदां पार। चंद वदन म्रग लोचनी, आप करी करतार।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ महि नयर घर प्रति दीप मंडित, माळ जोत मनोहरं। किर व्योम नाखत्र परखि कमळा **सोभ** धारत सुंदरं।—रा. रू.
उ०—३ भज रै मन रांम सियावर भूपत अंग घणा घण **सोभ** अनूप।—र. ज. प्र.
उ०—४ म्हैं कीधौ तौ मीत, जोय लाखां मैं 'जसा' पलटै हव क्यूं मीत, पलट्यां **सोभ** न पाइजै।—जसराज
उ०—५ छुटी अलक्क नाग छीन, **सोभ** एम सांज ही। रंथस जांण चंद्ररासि, रूप मैं विराज ही।—सू. प्र.

सोभक—वि.—सुन्दर, सजीला।

सोभग्रीवा—सं. स्त्री.—१ गले में धारण करने का आभूषण विशेष।
२ कण्ठ की शोभा।

सोभण—सं. पु.—१ प्रत्येक चरण में चार रगण और गुरु लघु वर्ण का २३ मात्राओं का छन्द विशेष। (ल. पिं)
२ वस्त्र, कपड़ा।
रू. भे.—सोभन।

सोभणी—१ देखो 'सोभा' (रू. भे.)
उ०—सूर वागा सझै रौद्र हिंदू रजै, **सोभणी** सकजै अमेळां अकजै।—रा. रू.
२ देखो 'सोभनी' (रू. भे.)
उ०—देवी खेचरी भूचरी भद्र खेमा, देवी पद्मणी **सोभणी** कलह प्रेमा।—देवि

सोभणौ, सोभबौ—क्रि. वि.—१ शोभित होना, शोभायमान होना।
उ०—१ नाह विकसै घणौ कमळ जिम भड़ निवड़। भड़ घणां पाड़तौ **सोभियौ** महा भड़।—हा. झा.
उ०—२ आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। **सोभंतु** जंतु अनंत सुखमय, सुखद संपति सार ए।—रा. रू.
उ०—३ **सोभंति** रिखगण चंद्र सोभा, किरण जगमग कास ए।
—रा. रू.
२ जचना, फबना, शोभा देना।
ज्यूं—वडै मूंडै ओछी वात **सोभै** कोनीं।
३ सज्जित होना, सजना।

सोभन—सं. पु. [सं. शोभन] १ शिव, महादेव।
२ सूर्य।
३ मालकोंश राग का एक पुत्र। (संगीत)
४ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से पांचवें योग का नाम।
उ०—नखत विसाखा तिथी चवदस। घड़ी च्यार पल वीस गया निस। मिथन लगन **सोभन** मिळ जोगै। सकुन करण दुख हरण संजोगै।—रा. रू.
५ अग्नि, अग्निदेव।
६ आग।
७ ग्रह।
८ चौबीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में जगण होता है और १४ व १० पर यति होती है।
९ विष्णुवीसी का सत्रहवां वर्ष। (ज्योतिष)
वि.—१ मंगल, कल्याण।
२ सुंदर, मनोहर। (अ. मा.)
३ देखो 'सोभण' (रू. भे.)

सोभना—सं. स्त्री. [सं. शोभना] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

सोभनी—सं. स्त्री.—१ मालकोंश राग की स्त्री रागिनी। (संगीत)

२ देवी दुर्गा रो नाम।

रू. भे.—सोभड़ी।

वि.—सोभा देने वाली।

सोभद-स स्त्री.—सुख प्रदान करने वाली एक देवी का नाम।

सोभरधांम-स. पु.—सोभर ऋषि का धाम अर्थात् यमुना नदी का हृद।

उ०—दुजराज धाम काळी डरै, सोभरधांम संभारियौ। कूरमां नेम कमधज्ज री, ध्यांन नेम कर धारियौ।—रा. रू.

सोभवती-वि.—सुंदर, आकर्षक।

उ०—सोभवती संजती सोळ स्रंगार सकत्ती। हंसगत हालती हंस पारोह हकत्ती।—सू. प्र.

सोभवांन-वि.—१ सौभाग्यवान, सौभाग्यशाली।

२ शोभा वाला।

३ आभा व कान्ति वाला।

४ कीर्तिवान।

सोभा-सं. स्त्री. [सं. शोभा] १ दीप्ती, आभा, कांति, चमक। (डि. को.)

उ०—१ **सोभा** सारिख किरण सविता, दीपै मंदर राज दुहिता। —गु. रू. व.

उ०—२ लळक्कै गजां पोगरा नाळ लोभा, भळक्कै मुखां सूरमां भांण **सोभा**।—सू. प्र.

पर्याय.—अनोपम, आभा, कंकळा, कळा, कांति, कोमळता, छिब, दुति, परभा, प्रभा, बिंब, भा, राढा, विभूखा, विभ्रभा, विमळा।

२ सुन्दरता, छवि, रूप।

उ०—१ रुपक कुकवी रसण सूं, बिगड़ै यूं रसवंत। ज्यूं विसफोटक रोग वस, वप **सोभा** बिगड़ंत।—बां. दा.

उ०—२ पण बगेची री **सोभा** देखनै कीं चेतौ नीं रह्यौ। —फुलवाड़ी

३ रंग, वर्ण।

४ सौंदर्य को बढ़ाने वाला तत्व।

५ प्रशंसा, बड़ाई, कीर्ति।

उ०—१ हरीया कदै न कीजीयै, अपनी **सोभा** मुख। अपने मुख सरावतां, श्रौर पड़ै कोई दुख।—अनुभववांणी

उ०—२ कंचन काच कथीर कौ, पहिर अभूसन अंग। हरीया **सोभा** होत है, ऐसा करियै संग।—अनुभववांणी

उ०—३ सिरोही री मवजी, वरणी नहीं जाय। साखियात इन्दर-लोक, समान **सोभा** छै।—डाढाळा सूर री वात

६ अच्छा गुण।

७ हल्दी।

८ गोरोचन।

९ बीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसमें क्रमशः यगण, मगण दो नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं।

१० आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में ८ गुरु और ४१ लघु से कुल ५७ मात्राएं होती हैं।

रू. भे.—सोव, सोवा, सोभ।

सोभाऊ-स. स्त्री.—वह स्त्री या कन्या जिसे, विवाहित कन्या के प्रथम वार सुसराल जाते समय साथ भेजा जाता है। (मेवाड़)

वि.— शोभा बढाने वाला, केवल सुंदर ही।

सोभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे.)

उ०—१ ऊलो पेलो साथ घणौ कांम आयौ। पिण वेढ मूळराज जीतौ, नै राजा सीहा री बड़ी **सोभाग** हुवौ।—नैणसी

उ०—२ जस **सोभाग** थयउ जग मांहे।—स. कु.

उ०—३ इवड़ा वखत किहां थकी, कायम रहै **सोभाग**। सिर कद आवै माहरै, अंगूठानी आगि।—वि. कु.

उ०—४ जपूं जीह **सोभाग** मौ भाग जागौ, लुळै आय सीमाय रै पाय लागौ।—मे. म.

उ०—५ वागै करै वणाव, ओपि सुंदर पट अंबर। गौखंबर ऊधरां, पाघ **सोभाग** कि मंदर।—रा. रू.

सोभागण, सोभागणी—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

सोभागियौ, सोभागी-वि.—सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

उ०—१ सांतिनाथ **सोभागी** हो लाल, सोलम जिन सागी हो। विनयचंद्र रागी हो लाल, जयो तूं वड भागी हो।—वि. कु.

उ०—२ जाग्यौ जैन चंद सागी, **सोभागी** रागी जैन धरम। वैरागी पुण्याइ जागी अधिकै उछाह।—ध. व. ग्रं.

सोभादर-सं. पु.—१ चौहान वंश की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सोभायमांन-वि.—शोभायुक्त, शोभित।

सोभाळू-वि.—१ सुन्दर, बढिया, प्रशंसनीय।

उ०—इण देसरा घणां कांम **सोभाळू** होय विधा वधै नै हिकमत उपजै।—नी. प्र.

सोभाळौ-वि. (स्त्री सौभाळी) १ यशस्वी, कीर्तिवान।

उ०—सूरौ खीवौ वीर अत, **सोभाळौ** दातार। हीमतधारी मनगरां, हुवा न होणहार।—सूरे खींवै काधळोत री वात

२ सुन्दर, मनोहर।

सोभाव—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

सोभावटी-वि. स्त्री. [सं. शोभा+वती] एक प्रकार की पत्थर की पटिया या लकड़ी का मोटा तख्ता जो खिड़की व दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगाया जाता है, करगहना।

रू. भे.—सोवावटी।

सोभावत-सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उप-शाखा।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सोभित–वि. [सं. शोभित] १ सुन्दर, मनोहर। (ह. नां. मा.)
२ शोभायमान।
३ शोभायुक्त, सजा हुआ, शृंगारित।
उ०—तन सदन **सोभित** करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणौ।
—रा. रू.

सोम–सं. पु. [सं. सोम] १ चन्द्रमा। (अ. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ गाणां गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजै, राजै रूप आंगणौं इंद्र सौ सची रूप। सोळाही कळा सूं **सोम** ऊगियौ प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयौ इसौ भूप।—वादरदांन दधवाड़ियौ
उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माल सुधारै रंभ। थंभ चलेवौ **सोम** रवि, पेखै व्योम अचंभ।— रा. रू.
२ अमृत। (ह. नां मा)
३ यम।
४ सोमवार।
५ स्वर्ग।
६ एक लता विशेष जिसका रस यज्ञ में काम आता था।
७ सोमवल्ली का रस।
८ किरण।
९ कपूर।
१० जल, पानी।
११ पवन, वायु।
१२ कुबेर।
१३ शिव का एक नाम।
१४ मन का एक नाम।
१५ एक प्राचीन वैदिक देवता।
१६ एक प्रकार की औषधि।
१७ आठ वसुओं में से एक वसु।
१८ पितरों का एक गण या समूह।
१९ स्त्रियों को होने वाला एक प्रकार का रोग। (श्वेतप्रदर)
२० मांड।
२१ मालकोश राग का पुत्र। (संगीत)
२२ एक ऊँचा व विशाल पेड़ जिसकी लकड़ी मजबूत एवं चिकनी होती है।
२३ मेवाड़ की एक नदी का नाम। (वीर विनोद)
२४ भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
२५ देवता।
२६ यज्ञ की सामग्री।
२७ एक प्रकार का यज्ञ।
२८ आकाश।
२९ कांजी।
३० जैनियों के ८८ ग्रहों में से बारहवां ग्रह।
३१ जरासन्ध के चार पुत्रों में से एक।
३२ एक ग्रह जो सूर्यमंडल से आठ लाख मील दूर है।
३३ एक अग्नि जो भानु एवं निशा का पुत्र था।
३४ अंगिरस कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
वि.—१ श्वेत। ꙮ
२ लाल। ꙮ
३ शांत, निर्मल।
उ०—रोग रहित पचेंन्द्री परगड़ा **सोम** प्रकृति सुसनेही जी।
—स. कु.

सोमइयौ, सोमईउ, सोमईयौ–सं. पु.—सोमनाथ नामक महादेव का लिंग जिसकी गणना बारह ज्योतिर्लिंगों में की जाती है।
उ०—१ सोरठ मांहै देवकै पाटण **सोमईयौ** महादेव वडौ जोतलिंग हुतौ, तिकौ संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाडियौ।
—नैणसी
उ०—२ देखै तौ पातसाह **सोमइयै** ऊपरां खड़ीयां आवै छै। ताहरां एक दीहाड़ौ कटक में रह नै पाछौ बाहड़ै। आय खबर दीवी, 'माहाराजा पातिसाहा आवै छै।—अरजन हमीर री वात
रू. भे.—सोमीईयौ।

सोमक–सं. पु. [सं.] १ कृष्ण एवं कालिंदी का पुत्र।
२ सोमकवंशीय क्षत्रिय।
३ एक प्राचीन ऋषि।
४ स्त्रियों का एक रोग।

सोमकर–वि.—मधुर। ꙮ (डिं. को.)

सोमकांत–सं. स्त्री. [सं.] १ चन्द्रकांतमणि।
२ सुराष्ट्र देश का एक राजा जो गणेश भक्त था।

सोमकीरती–सं. पु.—धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सोमग्रह–सं. पु.—घोड़ों का एक रोग विशेष, इस रोग से ग्रसित होने पर घोड़ा कांपने लग जाता है। (शा. हो.)

सोमग्रहण–सं. पु.—चन्द्रग्रहण।

सोमघ्रत–सं. पु. [सं. सोमघृत] स्त्रियों के सोम रोग की दवा।

सोमज–सं. पु. [सं.] दूध। (अ. मा; ह. नां. मा.)

सोमदत्त–स. पु.—१ शन्तनु के बड़े भाई के पुत्र का नाम।
२ एक कुरुवंशीय राजा जो प्रतीप राजा का पौत्र था।
३ पांचाल राजा कुशाश्व के पुत्र का नाम इसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे।

सोमदा–सं. स्त्री.—उर्मिला नामक गंधर्व की कन्या।

सोमधात–सं. पु.—सूर्य, भानु। (अ. मा.)

सोमनाथ–सं. पु. [सं.] १ काठियावाड़ में स्थित महादेव का एक लिंग जिसकी गणना प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगों में की जाती है।
२ वह स्थान जहाँ यह लिंग स्थित है।

सोमप–सं. पु. [सं.] १ पितरों का एक समुह जो मानस नामक स्वर्ग

से विधान करते है, उन्हें अवश्य प्राप्त है ।

२ स्कंद का एक सैनिक ।

३ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

४ एक सनातन विश्वदेव ।

वि.— जिसने यज्ञ में सोमरस का पान किया हो ।

सोमपुत्र-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा का पुत्र बुध ।

सोमपुर-सं. पु.—चन्द्रलोक ।

सोमपुरा-सं. पु.—एक जाति विशेष जो तोप ढालने, तसवीर बनाने और स्थापत्य कला का कार्य करती थी । (मा. म.)

सोमप्रदोष-सं. पु. [सं. सोमप्रदोष] सोमवार को होने वाला प्रदोष जो विशेष महत्व का माना जाता है ।

सोमप्रिया-सं. स्त्री. [सं.] १ रात्रि । (ना. मा.)

२ चांदनी ।

सोमबंधु-सं. पु.—१ बुधग्रह ।

२ सूर्य ।

३ कुमुद ।

सोमबल्लि-सं. स्त्री.—सोमलता ।

उ०—कळि कळप वेलि वळि कांमधेनुका, चिंतामणि **सोमवल्लि** नवा ।—वेलि

सोमभू-सं. पु. [सं.] १ बुध का एक नाम ।

२ चंद्रवंशी ।

सोमरस-सं. पु. [सं.] सोम नामक लता का रस जिसका वैदिक काल में ऋषि मुनि पान करते थे ।

सोमरूपाळ-सं. पु.—कर्नाटकी पद्धति का एक राग । (संगीत)

सोमभैरवी-सं. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (संगीत)

सोममंजरी-सं. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (संगीत)

सोममद-सं. पु.—सोमरस पीने से होने वाला मद या नशा ।

सोमयग्य-सं. पु. [सं. सोमयज्ञ] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सोमरस का पान किया जाता था ।

२ हठयोग में तालू की जड़ में स्थित चन्द्रमा से निकलने वाला रस, योगी जीभ उलट कर इसका पान करते है ।

सोमराज-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा ।

सोमराज्य-सं. पु. [सं.] चन्द्रलोक ।

सोमरोग-सं. पु.—अति मैथुन, शोक, परिश्रम के कारण शरीरस्थ जलीय धातु के योनि मार्ग से बहने के कारण होने वाला स्त्रियों का एक रोग ।

सोमल-सं. पु.—१ संखिया नामक विष का एक भेद ।

उ०—कहा होत है रूप तैं, गुण तैं होत निदान । उजळ **सोमल** तैं सरस है । स्यात संमाई प्रान ।—जैतदान बारहठ

२ एक वृक्ष ।

वि.—कड़वा, खारा ।

सोमलखार-सं. पु.—मल्ल नामक विष जिसका शोधन करके औषधि के रूप में प्रयोग में लिया जाता है ।

सोमलता-सं. स्त्री.—१ गिलोय ।

२ ब्राह्मी ।

३ सोम नाम लता ।

सोमवंस-सं. पु. [सं. सोमवंश] १ क्षत्रियों का एक वंश, चंद्रवंश ।

२ युधिष्ठिर ।

सोमवंसपत-सं. पु. [सं. सोमवंशपति] १ युधिष्ठिर का एक नाम । (अ. मा.)

२ चन्द्रवंशी राजा ।

सोमवंसराजा-सं. पु.—युधिष्ठिर । (ह नां. मा.)

सोमवंसी-सं. स्त्री.—१ चन्द्रवंशी क्षत्रिय ।

२ चन्द्रवंशीय व्यक्ति ।

सोमवती-स. स्त्री —१ एक प्राचीन तीर्थ ।

२ देखो 'सोमवतीअमावस' ।

सोमवतीअमावस, सोमवतीअमावस्या-सं.स्त्री. [सं.सोमवती+अमावस्या] सोमवार को आने वाली अमावस्या जो पुराणों के अनुसार पुण्यतिथि मानी जाती है ।

रू. भे.—सोमवती, सोमैती, सोमोती ।

सोमवरचा-सं. पु. [सं. सोमवर्चा] १ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।

२ एक गन्धर्व का नाम ।

सोमवल्लि—देखो 'सोमलता' ।

सोमवार-सं. पु. [सं.] प्रत्येक सप्ताह में रविवार के बाद तथा मंगलवार से पहले होने वाला दिन जो चन्द्रमा का माना जाता है ।

सोमवारी-वि.—१ सोमवार का, सोमवार संबंधी ।

२ सोमवार को पड़ने वाला या आने वाला ।

सोमवारीव्रत-सं. पु.—सोमवार को किया जाने वाला व्रत जो प्रायः श्रावण मास में किया जाता है ।

सोमसद-सं. पु. [सं.] विराट के पुत्र तथा साध्यगण के पितर-मनु ।

सोमसुत-सं. पु. [सं.] चंद्रमा ।

सोमसेन-सं. पु. [सं.] शंबर राक्षस का एक पुत्र ।

सोमा-सं. स्त्री. [सं.] १ एक प्राचीन नदी ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

सोमायन-सं. पु.—महीने भर किया जाने वाला व्रत जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने तथा तीन दिन उपवास करने का विधान है ।

सोमावती-सं. स्त्री. [सं.] चन्द्रमा की माता का नाम ।

सोमास्टमी-स. स्त्री.—सोमवार के दिन पड़ने वाली अष्टमी ।

सोमास्टमीव्रत-सं. पु.—सोमाष्टमी के दिन किया जाने वाला व्रत ।

सोमास्रम-सं. पु. [सं. सोमाश्रम] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सोमिज—देखो 'सोमज' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

सोमित्र-सं. पु. [सं. सौमित्रः, सौमित्रिः] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न ।

सोमीईयौ—देखो 'सोमइयौ' (रू. भे.)

उ०—इम करतां एक दिन माहादेव **सोमीईयै** उपर पातसाही फोज आई।—अरजन हमीर री वात

सोमेसर, सोमेसुर, सोमेस्वर—सं. पु. [सं. सोमेश्वर] १ महादेव, शिव।

२ काशी में स्थित एक शिवलिंग जिसकी स्थापना सोम द्वारा किया जाना माना जाता है।

सोमैती, सोमोती—देखो 'सोमवतीअमावस' (रू. भे.)

सोम्य—वि. [सं.] १ सोम-सम्बन्धी, सोम का।

२ सुन्दर, मनोहर।

३ जो सोम-पान करने का अधिकारी हो।

४ यज्ञ में सोम की आहुति देने वाला।

५ अच्छा, सुन्दर।

६ शांत, गम्भीर।

सोयंप्रभा—देखो 'स्वयंप्रभा' (रू. भे.)

उ०—अहं नांम **सोयंप्रभा** धांम एता, जिकै तात विस्वैक्रमा कीध जेता। हिमांनी सखा माहरै एक हूंती, अठाहूंत सौ उद्धरी भागवंती।—सू. प्र.

सोय—सं. स्त्री.—१ जानकारी, ध्यान, समझ।

उ०—१ तद लिछमी कह्यौ—हाल तांई थांनै इण री **सोय** नीं व्ही। पछै कैणा धूड़ रा पिंडत हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जकी वात थनै वतायां ई समझ मैं नीं वैठै, म्हैं विनां वतायां ई उणरी **सोय** करलूं हूं।—फुलवाड़ी

२ सीध, ठीक सामने की दिशा।

उ०—१ उपरलौ होठ नाक री **सोय** तणियोड़ौ अर हेटलौ ठोडी कांनी लुलियोड़ौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ धणी सूं दवायती लेय वा राखी रै मंगळ त्यूंहार वणाव सिणगार करनैं अणूंती उमाई होय नाडी री **सोय** मैं वहीर व्ही। —फुलवाड़ी

३ टोह।

उ०—१ चारूं दिस सांमी घांटी घुमाय घुमायनै चारा री **सोय** करणी चाही।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजकंवरी विना जीवणौ अवस दूभर व्हैगौ, पण बिना **सोय** करयां मरणौ ई कीकर व्है।—फुलवाड़ी

४ पता, जानकारी।

उ०—१ वींद रै उणियारै औ कोई रूप है, कै रूप रौ वीज है। रूप रै वीज री तौ आज **सोय** व्ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ अर जद उणनै इण बात री **सोय** व्ही कै कालै कस्मीर रा राजाजी रै सागै खुद अंदाता वाड़ी जोवण नै आवैला तौ उणरी तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ।—फुलवाड़ी

५ रुख, इरादा, ध्यान।

उ०—नाई खूंदनै ढव्यौ तौ सेठ सदरी माथै बगतरी ठसाई। बालाबंदी रा ज्यूं त्यूं आंटा दिया। कालै वाळौ जोस नीं हौ। नाई तौ हाजरी साज गवाड़ी री **सोय** करी।—फुलवाड़ी

सर्व.—१ वह, वे।

उ०—जिण दिन रघुवर जंपै, सुकिया अरथ दिवस **सोय** नर संभळ। दखै न राघव जिण दिन, जांण **सोय** आळ जंजाळ।—र. ज. प्र.

उ०—२ **सोय** नर सुभागियौ, वरसाळै वाळाह। पाटा बांधण पदमणी, सुख पूछण साळाह।—अग्यात

२ उसे।

उ०—१ मुलां हरतां तुं भयौ, तुंहीज करता होय। तुंहीज मारै हाथ सूं, तुंही जीवारै **सोय**।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया सारी सिसट का, ठाकुर कहीयै **सोय**। पटा परित नहीं ऊतरै, कै कळि उथल होय।—अनुभववांणी

३ जो।

उ०—१ हरीया दिल सावति भया, चितवा निहचळ होय। रसीया सोई जांणीयै, निज मन वसीया **सोय**।—अनुभववांणी

उ०—२ हरीया हरि की क्या कहै, रांम सकळ मैं होय। जांणत होसी वावरौ, हिरदै धरसी **सोय**।—अनुभववांणी

४ वही।

उ०—हरीया हिरमच लायकै, वैठै विरकत होय। विरकत सोई जांणीयै, विसै विरता **सोय**।—अनुभववांणी

५ देखो 'सौ' (रू. भे.)

उ०—वाड़ौ तौ भरियौ करहलां रे, जिण मांय आछा सा **सोय**। सोयां मांयला दस भला, कोई दसां मांयलौ एक।—लो. गी.

रू. भे.—सौय।

सोयण—सं. पु. [सं. सज्जन] चारण कवि।

उ०—चंदाणणि चीर अमीर न चंचळ, कुंवर भंडार न चित करिया। माहव समा 'खंगार' मरण दिन, **सोयण** सुणिजी संभरिया। —खंगार सोढा रौ गीत

सोयतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

सोयम—वि.—तीसरा, तृतीय।

सोयली—सं. स्त्री.—साड़ी।

सोयलौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का घास।

२ देखो 'सोहिलौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सोयली)

सोयसी—सं. स्त्री. [सं. श्रेयसी] हरीतकी, हरॅं। (नां. मा.)

सोरंभ—देखो 'सौरभ' (रू, भे.)

उ०—१ दहूं हाथ जोड़यां पढै छंद दोहा, वढै मेंमदादीक **सोरंभ** वोहा।—मे. म.

उ०—२ **सोरंभ** अवीर कमकमौ केसर, परिमळ जांणक हट्ट ए। —गु. रू. वं.

सोरभणौ, सोरभबौ-क्रि. अ.—सुगन्धयुक्त होना, सुगंधित होना, महकना।

उ०—सोरह सत्र धारिकइ, चतुर तणै वचनेह। मोह-मुरा सोरभिमउ, फागि भमर भणेह।—ढो. मा.

सोरभगर—देखो 'सौरभगर' (रू. भे.)

सोरभमूळ- देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सोरभी- देखो 'सोरभ' (रू. भे.)

उ०—रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूर्ध महल सिणगारिया, सोरभी लहरांण।—रा. रू.

सोर-स. पु. [फा. शोर] १ कोलाहल, हल्ला।

२ बारूद।

उ०—१ औरंगसाह महाबळी, विसव तणौ वडवाग। रीस तणौ पुत सिर, सोर परस्सी आग।—रा. रू.

उ०—२ धड़कै उर कातर सोर धुबै, मच हक्क किलक्क अनेक मुबै।—रा. रू.

२ ऊँची तथा तीक्ष्ण आवाज, ध्वनि।

उ०—१ पहाड़ां पाखर पड़ी घटा ऊपड़ी मोर सोर मंडै इंद्र धार न खंडै।—रा. सा. स.

उ०—२ लूंबा झड़ नदियां लहर, वक पगत भर बाथ। मोरां सोर ममोलियां, सांवण लायौ साथ।—वां. दा.

उ०—३ हरै लीनी ह्यिौ तनां हरिआलियां, सोर कर सरै दादुर सुहाया।—वां. दा.

३ मधुर ध्वनि, मोहक ध्वनि।

उ०—१ दै धररी तज देहळी, पणघट सांमां पाय। बाजै घूघर पार विण, सोर सरोवर जाय।—वां. दा.

उ०—२ कोकिल सोर मोर तंडवि ऋत, नटवर गांन संगीत करै व्रत।—सू. प्र.

उ०—३ मतवाळी रग मांणतां, घुघर पड़ती घोर। आज सुणी आली अधिक, सिमकारां री सोर।—नारायणसिंह सांदू

४ ध्वनि, आवाज।

उ०—भयंकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग।
—मे. म.

५ आतिशबाजी, पटाखा।

रू. भे.—शोर।

सोरको-सं. पु.—१ डर, भय, आतंक।

उ०—लोगां रै हियै अस्टपोर मामी रै घर री सोरकौ रैं'वती। मन मुरक मुरक करतौ।—फुलवाड़ी

२ चिंता, फिक्र।

सोरखांनौ-स. पु. [फा. शोरखाना] बारूद बनाने व रखने का स्थान, बारूद घर।

सोरगर-सं. पु. [फा. शोरगर] बारूद व आतिशबाजी बनाने व बेचने वाला। (मा म.)

सोरजंत्र-स. पु. [फा. शोर+सं यंत्र] १ बंदूक।

उ०—सहंस फणां सल्लळै, सुजड़ भळहळै सहंसां। सोरजंत्र भुज साझ, कुत धानंख सकस्सां।—रा. रू.

२ तोप।

सोरट, सोरठ-सं. स्त्री.—१ राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में स्थित सौराष्ट्र प्रदेश।

उ०—तठा पछै वे पठांण गिरनार रै थांणैवाळा पातसाह रै बेटै सूं फिर बैठा। सारी सोरठ इणां खाधी।—नैणसी

२ हिंडोल का पुत्र ओडव जाति का एक राग। (संगीत)

अल्पा;— सोरठड़ी।

सोरठगेड़-सं. स्त्री.— शकुनशास्त्र के अनुसार दुलहा-दुलहिन के परिभ्रमण की गति का नाम।

सोरठड़ी-वि. स्त्री.—१ सौराष्ट्र देश की।

२ अच्छी लगने वाली।

३ देखो 'सोरठ' (अल्पा; रू. भे.)

सोरठमलार-सं. पु.— सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग।

सोरठियौ-सं. पु.—डिंगल का एक गीत (छंद), जिसके प्रथम चरण में १८ मात्रा, द्वितीय चरण में १० मात्रा, तीसरे चरण में १६ मात्रा तथा चौथे चरण में १० मात्राएं होती हैं। दूसरे सभी द्वालों में प्रथम चरण १६ मात्रा व चौथे में १० मात्रा इसी क्रम से हों तथा तुकांत लघु होता है। (र. ज. प्र.)

सोरठी-सं. स्त्री.—एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।

उ०—रजै मलार सारंग, रितंग रंग मारगं। रसाल ताल सोरठी, सगांन तांन सांमठी।—रा. रू.

सोरठौ-सं. पु.—१ एक छंद जिसके पहले और तीसरे में चरण ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं।

सोरदांणी-स. स्त्री. [फा. शोरदानी] बारूद रखने का ढक्कनदार धातु का बर्तन।

सोरप—देखो 'सोरापौ' (रू. भे.)

उ०—वस आखा ऊमर कैदी बारकर फिर जावै है अर आपरी कोटड़ी री सोरप सुविधा बतावण लाग ज्यावै है।—दसदोख

सोरबौ—देखो 'सोरवौ' (रू. भे.)

सोरभ—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)

उ०—१ सावण मास सुहावणौ, लागै झड़ जळ लूंम। उण दिन हीं आसव तणी, सोरभ नह लै सूंम।—वां. दा.

उ०—२ हंसा राखि हजूर मां, सखरी बास सुवास। सोरभ आवै सांमिरी, दाखै वारठ दास।—पी. ग्रं.

सोरभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.)

सोरभेय— देखो 'सौरभेय' (रू. भे.)

सोरभखी, सोरभ्रखी-सं. स्त्री. [फा. शोर+सं. भक्षी] तोप, बन्दूक।

सोरम—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)

उ०—धूप-दीप अर अगरवती री **सोरम** तथा गायं घीरी जोत।
—दसदोख

सोरमदे–सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

सोरमौं—देखो 'सोरवौं' (रू. भे.)

सोरवौं–सं. पु.—१ पके हुए मास का रस।

२ सब्जी का मसाला युक्त झोल, वसा।

रू. भे.—सोरबौ, सोरमौं।

सोराई, सोराई–सं. स्त्री.—१ आराम, शांति, तसल्ली।

उ०—जीव मैं **सोराई** वापरियां पछै कैंवण लागी।—फुलवाड़ी

२ सुख।

सोरापौ, सोरापौ–सं. पु.—आराम, सुख, शान्ति, चैन।

उ०—इण खेतर मैं जीवणौ दोरौ, मेनत घणीं, मिनख रात-दिन अवखतौ रैवै, भूंझतौ रैवै, जद जीवै **सोरापौ** नांव री कीं चीज नैड़ी ई कोयनी।—चितरांम

अल्पा;—सोरप।

सोराष्ट्र—देखो 'सौरास्ट्र' (रू. भे.)

सोरोघर–सं. पु.—प्रसूतीगृह।

सो'रौ, सोरौ–वि. (स्त्री. सोरी) १ आरामदायक, सुखप्रद।

उ०—फूठरौ नुवावै। सगळा गाभा धोवै अर **सोरी** मुठ्ठी देय'र सुवाणै आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मनरळी वात वणावै।
—दसदोख

२ सहज, सरल और आसान।

उ०—१ नांई कह्यौ—समझै जका नै तौ समझावणौं ई **सोरौ**, नीं समझै जका नै कीकर समझावां।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण रेगिस्तांन अर पांणी री कसर री असर अठै रै मिनखां, जीव-जिनावरां अर रुंखड़ां माथै तांई साव **सोरौ** दीसै।
—चितरांम

उ०—३ हरीया **सोरी** चोट सर, हाड पासळी छेक। चोट सहेसी सबद की, गरवा ग्यांन वमेक।—अनुभववांणी

३ सम्पन्न, समृद्ध।

४ प्रसन्न, खुश।

५ सुखी, आरामपूर्वक।

उ०—छोटा भाई री पांती खायां सपनां मैं ई **सोरा** नीं व्हैला। म्हारौ काळजौ वाळंचौ वांरौ भगवांन वाळैला।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—आसानी से, आराम से।

उ०—१ बापजी पेट पापी है, **सोरौ** गुजारौ व्है जावैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ काजळ टीकी विन फीकी द्रग कोरां, सधवा विधवा विच विवरौ नहिं **सोरौ**।—ऊ. का.

सं. पु.—१ बारूद।

[फा. शोर:] २ सफेद रंग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकलता है।

३ देखो 'सुसरौ' (रू. भे.)

रू. भे.—सोहरौ, सौरौ।

सोलंकी–सं. पु. (स्त्री. सोलंकणी) १ क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।

२ उक्त वंश का व्यक्ति।

सोळ, सोल–सं. स्त्री.—१ वह गाय जिसके स्तन बड़े हों किन्तु दूध कम देती हो।

२ पीतल या लोहे का बना छोटा लट्टू जिसको रस्सी के एक छोर पर बांधकर दीवार बनाते समय ईंट या पत्थर की सीध देखने में काम लेते हैं।

रू. भे.—सौळ।

३ देखो 'सोळह' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर **सोळ** सिंगार सज, गई सरोवर पाळ। चंद मुळक्कयउ जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ।—ढो. मा.

उ०—२ पहल अठारह बी चवद, **सोळ** चवद लघु अंत।
—र. ज. प्र.

सोळपगौ–सं. पु.—१ कनखजूरा।

२ वे रेंगने वाले जन्तु जिनके सोलह पांव होते हैं।

सोळमौं—देखो 'सोळवौं' (रू. भे.)

सोळमौंसोनौ—देखो 'सोळवींसोनौ' (रू. भे.)

सोळवीं–सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की लपसी जिसमें पांच व दो के अनुपात से अर्थात एक मन दलिये में सोलह सेर घी पड़ता है।

उ०—लापी रंघाडू औ म्हांरा इंदर राजा **सोळवीं** मईनै नीळड़ियौ नारेळ।—लो. गी.

२ देखो 'सोळवौं' (पु.)

सोळवौं–वि. (स्त्री. सोळवीं) १ पन्द्रह और एक के योग से होने वाला क्रमश: पन्द्रह के बाद वाला।

२ जो सोलह के स्थान पर हो।

रू. भे.—सोळमौं।

सोळवींकुनण—देखो 'सोलवींसोनौ'।

सोळवींसोनौ–सं. पु. यौ.—१ सोलह बार तपा कर शुद्ध किया हुआ सोना, पूर्णतया शुद्ध और श्रेष्ठ सोना।

उ०—मेह कौ ममोलौ बावनौ चंदण **सोळवींसोनौ** रायकेळ रौ

सन, मन री बन्नी ।—लाली मेवाड़ी री बात

२ धार्मिक धर्म में पन्द्रह गुणों वाला ईमानदार व्यक्ति ।

रू. भे.—सोळमोनोनी ।

सोळह–वि. [सं षोडन्] पन्द्रह और एक का योग ।

सं. पु.—उक्त योग से बनने वाली संख्या, १६ ।

रू. भे.—सोळ, सोळा, सोळे, सोळै ।

सोळहकळास्वांमी–सं. पु. [सं षोडशकलास्वामी] चन्द्रमा ।

सोलहसिंगार, सोलहसिणगार, सोलहस्रंगार–सं. पु. [सं. षोडश+शृंगार] स्त्रियों की वह सोलह प्रसाधन-क्रियाएं, जो उन्हें और अधिक सुन्दर चित्ताकर्षक एवं मोहक बनाती हैं। ये क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—१ अंग में उबटन लगाना. २ नहाना. ३ स्वच्छ वस्त्र धारण करना. ४ बाल संवारना. ५ काजल लगाना. ६ सिंदुर से मांग भरना. ७ महावर लगाना. ८ भाल पर बिन्दिया लगाना. ९ चिबुक पर तिल बनाना. १० मेहंदी लगाना. ११ फूलों की माला पहनना. १२ मिस्सी लगाना. १३ पान खाना. १४ होठों को लाल रगना. १५ इत्र का प्रयोग १६. आभूषण पहनना ।

रू. भे.—सोळासणगार, सोळासिणगार ।

सोलहो—देखो 'सोळो' (रू. भे.)

उ०—आपनांमी हुवा दातार झूंझार नमक हलाल हुवा सोलहो गायो थो सो सांचो कियो ।—पदमसिंघ री वात

सोळा—देखो 'सोळह' (रू. भे.)

उ०—पदमावत री पदमणी सोळा सौ पालकियां मैं घूम धड़ाकै सूं दिल्ली वईर हुई। आ वात चारूंमेर बिखेर दी कै उण सुल्तांन री कै'णी मांनण री धारली है।—चितरांम

सोलाळी, सोलाली–सं. स्त्री.—धरती, पृथ्वी । (डि. को.)

रू. भे.—सहिलाळी, मोहळाळी, सोहिळाळी ।

सोळासणगार, सोळासिणगार, सोळासंगार—देखो 'सोलहस्रंगार' (रू. भे.)

उ०—वह रिमझिम करती महलां सूं ऊतरी, आती कर सोळासिणगार ।—लो गी.

सोळामारी—देखो 'सोळैकांकरी' (रू. भे.)

सोलियाळ–वि. [सं. मुक्लन्+रा. प्र. ईयार] १ जिसके पास कोई कार्य न हो, किसी कार्य की जिम्मेदारी से मुक्त, कार्य निवृत्त ।

२ जो किसी प्रकार का शारीरिक श्रम न कर सकता हो, नाजुक ।

३ आलसी, निकम्मा ।

सोळियो–सं. पु.—किसी लकड़ी में दूसरी लकड़ी फंसाने के लिये किया गया छेद ।

सोली, सोली–सं. स्त्री.—रहट के चक्र के पृथक भागों के बीच के भाग को जोड़ने वाला लकड़ी का टुकड़ा, यह एक चक्र में चार होते हैं ।

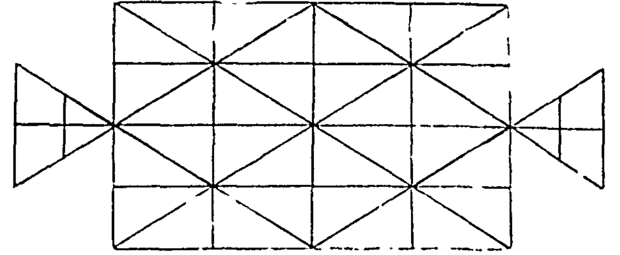
सोळे, सोळै—देखो 'सोळह' (रू. भे.)

उ०—पछै राजाजी सोळै घोड़ां रो सोनल रथ जुताय राजकंवर नै साथै लेय, रांणी नै मनावण सारू वहीर व्हिया ।—फुलवाड़ी

सोळे'क–वि.—सोलह के लगभग ।

सोळेसंस्कार—देखो 'सोडससंस्कार' (रू. भे.)

सोळैकांकरी, सोळैसारी–सं स्त्री.—दोनों पक्षों से सोलह-सोलह कंकरियों से खेला जाना वाला एक शतरंज-नुमा खेल जो अधिकतर राजस्थान के देहातों में खेला जाता है ।



सोळो, सोळो–सं. पु.—१ बच्चे के जन्मोत्सव एवं विवाह से पूर्व गाया जाने वाला राम-सीता के विवाह सम्बन्धी मांगलिक लोकगीत।

२ उक्त गीत के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला जोश, आवेश, उत्साह ।

उ०—सौ जांणै वाभीसा तोरण माथै वींद जांय ज्यूं थांरो देवर सोळो चढियोड़ा जाय रया छै।—वी. स. टी.

३ खुशी एवं हर्ष के गीत ।

उ०—आगै जगदेव रोवै छै त्यां तीरै गयौ । तरै बोली आवौ जगदेव । कह्यौ, थैं हिवारूं आधी रातरी रोवौ छौ, सौ थांनै कांई दुःख छै। तरै उवै बोली, पाटण री जोगणियां छां, तिको प्रभात सवा पौ'र दिन चढतै सिधराव जैसिंह री म्रत्यु छै, तिण सूं रुदन करां छां । म्हांरी सेवा पूजा घणी करतौ, सौ अवै कुण करसी । तिणसूं रोवां छां । राजा पिण सुणै छै । तरै जगदेव बोलियौ, उवै गीत कुं गावै छै । जोगणी कह्यौ, तू उणनै ही पूछ आव । तरै जगदेव उणां कनै गयौ । ज्यूं उणां पिण कह्यौ–आवौ आवौ जगदेव । तठै राजा पिण ऊभौ नेडौ सुणै छै । जगदेव पगै लागिनै कह्यौ, आप खंभायची राग मांहै सोळौ गावौ छौ, वधावौ छौ । सौ थैं कुण छौ नैं किसी वधाई खुस्याल मांहै गावौ छौ । जरै कह्यौ, म्है दिल्ली री जोगणियां छां, जिकै राजा जैसिंह नै लेणनै आई छां । तिण सूं वधावा गीत गावां छां ।—जगदेव पंवार री वात

४ कांति, दीप्ति, तेज ।

५ अंगारा ।

उ०—आज सूरत सोळे उडै, अर उर सोळे उट्ठ । वाळ जय जिण उरवसी, विण सोळै विण कट्ठ ।—रैंवतसिंह भाटी

६ सोलह का वर्ष, सोलहवां वर्ष ।

रू. भे.—सोळहौ, सीहळौ ।

सोल्लास–वि.—१ उल्लासयुक्त ।

सोवंन, सोवंन्न—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—**सोवंन** जड़ित सिंगार, बहु, मारुवणी मुकळाई। गय हेंवर दासी बहुत, दीन्ही पिंगळराई।—ढो. मा.

सोवड़, सोवड़ि—सं. स्त्री.—१ किसी भारी ओढने के वस्त्र के नीचे ओढा जाने वाला हल्का वस्त्र, कम्बल।

उ०—सीत ठंठार सबलउ पड़ई जी, चेलणा प्रीतम साथि। चारित्रियउ चित मां वस्यउ जी, **सोवड़ि** बाहिर रह्यउ हाथि।—स. कु.

२ सर्दी में ओढने का विस्तर, रजाई।

सोवड़ौ—सं. पु.—मुँह, मुख। (शेखावटी)

सोवणग्रह, सोवणघर—सं. पु.—शयनगृह, शयन कक्ष।

सोवणौ—देखो 'सोहणौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताकू तेरौ **सोवणौ** लाल गुलाबी माळ, चरकूं मरकूं फिरै घेरणौ, मुधरी-मुधरी चाल।—लो. गी.

उ०—२ कोई कोठै उतरै पाबू वनड़ौ **सोवणौ**।—पाबू जी रा परवाड़ा

सोवणौ, सोवबौ—१ देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेजां मैं **सोवै**।—ऊ. का.

उ०—२ **सोवै** अळगी सायधण, सुपनै ही नह सग। गणिका सु रांखै गुसट, रसिया तौनूं रंग।—बां. दा.

२ देखो 'सोहणौ, सोहवौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारौ मन नहीं पतीजै हो राज, थंइ ज औ केसरिया। सायब गांव सिधाया, औ अजमौ कुण **सोवसी** औ राज।—लो. गी.

उ०—२ नीं रांड रोवण नैं ही, नीं भैंस दोवण नैं अर नीं सूपड़ौ **सोवण** नैं।—अमरचूंनड़ी

सोवणहार, हारौ (हारी), सोवणियौ—वि०।

सोविओड़ौ, सोवियोड़ौ, सोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सोवीजणौ, सोवीजवौ—कर्म वा०।

सोवन—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—१ आ तौ **सोवन** सिलाड़ियां घोटाऔ भांग। रंग भर दिवलौ भिग रह्यौ।—लो. गी.

उ०—२ सुंदरि **सोवन** वरण तमु, अहर अलत्ता रंग। केसरि लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग।—ढो. मा.

सोवनकार—देखो 'स्वरणकार' (रू. भे.)

उ०—**सोवनकार** घर आंगणइ जी, मुनिवर पहुंतउ जांम। आहार भणी तै मांहि गयउ जी, क्रौंच गळया जव तांम।—स. कु.

सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

उ०—१ पांणी खग रहियौ कुळ पांणी, हर कर गयौ सबळ दळ हार। **सोवनगर** कीन्हौ 'राजड़' सुत, सादूळा वाळौ सिणगार।—लादूरांम बारहठ

उ०—२ **सोवंनगिर** कि सिखर, धजबंधी छतधारी। धौळागिर कौ राव, सुख भुगतै इधकारी।—सूरजनदास पूनियौ

सोवनचिड़ी—देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

उ०—भांत भांत रा रळियावणा रूड़ा पंखेरू रळियां करता हा—तीतर, तिलोर, बाटबड़, मैना, कूकड़ा, फूंदियां, भंवरा, खातीचिड़ा, सुगनचिड़ी कावर कोचर गोगू कुरज जळकाग बटेर अर **सोवनचिड़ी** सरव इत्याद पंछी मीठा बोल सुणावता हा।—फुलवाड़ी

सोवनजाई, सोवनजुही—देखो 'सोनजुही' (रू. भे.)

उ०—कणेर व्रक्ष (व्रक्स) करणी सेवंत्री। कूजा जाय। **सोव्रनजाइ** गुलाल। जु फूलि रह्या छै।—वेलि टी.

सोवनथांभ—सं. पु.—स्वर्ण स्तंभ।

उ०—म्हांरै गाय गळाड़ै भैंस्यां बाड़ै, **सोवनथांम** विलोवणौ।—लो. गी.

सोवनथाळ—सं. पु. [सुवर्णस्थाल] सोने का थाल।

उ०—नणदल करचौ रसोवड़ौ, सरै पुरस्यौ **सोवनथाळ**।—लो. गी.

सोवनदे—सं. स्त्री. [सं. सुवर्ण+देह] वधु के लिए प्रयुक्त होने वाला समान सूचक शब्द।

उ०—म्हारी माता नै ठंढौ सौ पांणी, कुण ज प्यावै ओ मांय! अ म्हारी बहु **सोवनदे**, अमर चुड़ै सुहाग ओ माय!—लो. गी.

वि.—स्वर्ण के समान सुन्दर देह वाली।

सोवनमाखी—सं. स्त्री. [सं. स्वर्ण+मक्षिका] १ एक विशेष प्रकार की मक्खी जिसका शरीर सुनहरा होता है।

उ०—राकसणी **सोवनमाखी** राजा नुं करि नै जटा मांहै राखीयौ। राजा च्यारै ही धरम भाई समरिया।—चौबोली

२ देखो 'सोनामक्खी' (रू. भे.)

सोवनसींगी—वि. स्त्री. [सं. स्वर्णश्रृंगी] सोने के सींग वाली या जिसके सींग स्वर्ण से मंडित हों।

उ०—मास एक बीलंबावज्यौ दुजइ फेरइ प्रीय समझाई। देइस हाथ कउ मुंदड़उ, **सोवनसिंगी** नई कपिला गाई।—वी. दे.

सोवनौ—वि. (स्त्री. सोवनी) १ स्वर्ण का, सोने का।

उ०—१ कर तयार हाजर किया, ओधांदारां आय। साज जरकसी **सोवना**, विध विध नोख वणाय।—सू. प्र.

उ०—२ समपी लंका **सोवनी**, दीन भभीखण दांन।—र. ज. प्र.

उ०—३ हुय कुरंग **सोवनौ** दरसण दरसाया।—केसीदास गाडण

२ सुंदर, सुनहला, सुनहरा।

सोवरण—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोग्रदार—देखो 'सूबेदार'।

सोग्रियोड़ो—१ देखो 'सूवियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'सोवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. सोग्रियोड़ी)

सोग्रिन, सोग्रन—देखो 'स्वरण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ वायस मोती चूपरी, सोविन केरइ थालि। मिलीस जिहांगी मागवइ, हूं मुकिसि तिणि तालि।—मा. कां. प्र

उ०—२ करि उच्छव मूरजकंवर, कीध विदा 'ग्रभसाह'। रिध सोग्रन मोती रतन, वसन ग्रमोल्य विसाह।—रा. रू.

सोग्रणो-वि.—स्वर्ण का, स्वर्णयुक्त।

सोग्रनतन-सं. पु. [स. सुवर्णतन] गरुड़।

(ग्र. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

वि.—जिसका शरीर स्वर्ण का हो।

सोग्रनगिर, सोग्रनगिरि, सोग्रनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोग्रनो—देखो 'सोग्रणो'।

उ०—काज ग्रहोणो ही करै, एक प्रकत खळ ग्रंग। रांमण पठियो रांम दिस, करै सोग्रनो कुरंग।—बां. दा.

सोग्रन्न—देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

उ०—रवै कुंभ सोग्रन्न थंभा ग्ररेह, वणै ग्राद्रवै वंस सोवन्न वेह।

—सू. प्र.

सोग्रन्नगिर, सोग्रन्नगिरी, सोग्रन्नगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू. भे.)

सोस-सं. पु. [सं. शोषः] १ ग्रफसोस, खेद।

उ०—समय सुदर कहइ सांभलिज्यो देतउ नहीं छूं चेलां दोस। जिन ग्राग्या न पाली जमंतरि, तउ सिस्यां दिसि किसउ करूं सोस।

—स. कु.

२ जिसमें मन न लगता हो।

३ चिन्ता, फिक्र, सोच।

४ सूजन।

५ दबने का भाव या क्रिया।

५ देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—घोड़ो एराकी छै। राजा जांणो सो दिवावो। ताहरां राजा कहीयो सोस करो।—हाहुल हमीर री वात

सोसक-वि. [सं. शोषक] १ शोषण करने वाला, चूसने वाला।

२ सुखाने वाला।

३ नाश करने वाला।

४ क्षीण करने वाला।

५ वह जो दूसरों का धन हरण करता हो।

सं. पु.—समाज का वह धनी वर्ग जो गरीबों का धन हरण करता है।

सोसण-सं. पु. [सं. शोषणं] १ सुखाना या खुश्क करने की क्रिया या भाव।

२ शोषण।

३ सोखने की क्रिया।

४ कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखता है।

रू. भे.—सोसन।

सोसणौ, सोसबौ-क्रि. स.—१ सुखाना, खुश्क करना।

उ०—१ साठीकां पर नह चल्यो, लूग्रां रो जद दाव। भूंफ़ळ में सह सोसिया, वेरचां कुंड तळाव।—लू

उ०—२ ज्यूं ज्यूं सूकै जीव जग, त्यूं त्यूं लूग्रां तेज। वाळै जाळै सोसवै, दूणी चढै मगेज।—लू

२ चूसना।

३ लाक्षणिक ग्रर्थ में किसी नाजायज तरीके से किसी का धन कब्जे करना या किसी के श्रम का शोषण करना।

४ किसी की ग्रार्द्रता या नमी दूर करना, सोखना।

सोसणहार, हारो (हारी), सोसणियौ—वि०।

सोसिग्रोड़ो, सोसियोड़ो सोस्योड़ो—भू० का० कृ०।

सोसीजणौ, सोसीजबौ—कर्म वा०।

सोसन-सं. पु.—१ वस्त्र। (ग्र. मा.)

२ देखो 'सोसण' (रू. भे.)

सोसनग्रह-सं. पु.—पारसियों के ग्रनुसार रात्रि के १२ बजे से प्रातःकाल तक का समय। (मा. म.)

सोसनपता-सं. स्त्री.—एक विशेष प्रकार की तलवार, कृपाण।

सोसनिया, सोसनी-वि. [फा. सौसनी] ग्रासमानी, नीला।

उ०—सिर सोसनिया ग्रोढणी, लंहगो लाल सुरंग। पिय पै ग्राई सुंदरी, सेज्यां मांणण रंग।—कुंवरसी सांखला री वारता

सं. पु.—१ ग्रासमानी रंग।

२ ग्रासमानी रंग का घोड़ा विशेष।

उ०—तेलियां मुहा संदली तुरंग, सोसनी सबज हंसा सुरंग।

—सू. प्र.

रू. भे—सौसनी।

सोहं, सोहंग, सोहंगम—देखो 'सोग्रहम्' (रू. भे.)

सोह-वि.—१ सब, समस्त।

उ०—१ सु ग्रावतो राव वातां करतो ग्रावै छै—जै कदाच घाटा मांहै लखो देवल उठै तो हिमार कासुं हुवै। सु लखै वात सोह सांभळी।—राव लाखै री वात

उ०—२ ग्रजामेळ पर ग्राविया, साठ सहंस जम साज। नांम लियां हिक नारियण, भड़ सोह छूटा भाज।—र. ज. प्र.

२ सहित, युक्त।

उ०—तुरक्कां लेखो किमूं तेवड़ो, सदी हजारी मिळिया सोह। महाराजा गिरवर मेवाड़ो, सरगि पुहतो सिलै सोह।

—हिंदू जोवां रो गीत

सं. पु.—१ जोश, उत्साह ।

उ०—१ सारा सिरदार ग्राय हाजर होवौ । नकारौ करौ । सौ सूरां पूरां सोह चढी । कायरां नूं कांपणी छूटी ।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ सोह चढै समहर समै, ग्राहंस द्रढै ग्रमाप । वेस चढै ज्यूं ज्यूं वढै, पौरस ग्रंग 'प्रताप' ।—किसोरदांन वारहठ

२ कीर्ति, सुयश ।

उ०—जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदै महुच्छव कियं । उद्धरी किरिया नयरि विक्कमि, वंस सोह चड़ावियं ।—स. कु.

३ तेज ।

उ०—हुं माया सूं मोहीयउ, मइ कीधा पर द्रोह । ग्रधम तणी संगति ग्रही, न रही संयम सोह ।—वि. कु.

४ इज्जत, प्रतिष्ठा ।

उ०—मइ तउ कीधउ मौ दिसा रे, जि० ताहरइ ऊपरि मोह विनयचंद्र कहै माहरी रे, जि० सगली तुझ नै सोह ।—वि. कु.

५ शोभा ।

उ०—१ चैत्रइ विचित्र थइ रही, ग्रंब तणी वनरायौ जी । थुड़ साखा ग्रंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायौ जी ।—वि. कु.

उ०—२ पाई वसंतइ सोह जिण परि, प्रिया गमनइं पदमिनी । सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित ग्रंगिनी ।

—वि. कु.

६ सिंह, शेर । (ना. डिं. को.)

रू. भे.—सौह ।

सोहग—१ देखो 'सुभग' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर सोहग सुंदरी, ग्रहर ग्रलत्ता रंग । केहर लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग ।—ग्रग्यात

उ०—२ पहिली सोहग सुंदरी रे लाल सोहग तणौ निधांन ।

—स्रीपाल रास

२ देखो 'सोहाग' (रू. भे.)

सोहगी—१ देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

उ०—मन सोनौ मन सोहगी, मन ही काच कथीर । हरीया राखै हेकठौ, सव रस पावै सीर ।—ग्रनुभववांणी

२ देखो 'सोगी' ।

सोहड़, सोहड—सं. पु.—१ राठौड़ वंस की एक उपशाखा, इस शाखा का व्यक्ति ।

२ देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—१ तराछत सोहड़ ग्राछत त्रांण, कलेवर सावण तांत क्रपांण ।—मे. म.

उ०—२ हिव सूमर हेरा हुवइ, मारू भूंबणहार । पिंगळ वोळावा दिया, सोहड़ सौ ग्रसवार ।—ढो. मा.

सोहण—सं. पु.—१ डिंगल का एक गीत (छंद), जिसके प्रथम द्वाले की प्रथम पंक्ति में १८ मात्रा, दूसरी में १४, तीसरी में १६ तथा चौथी में १४ मात्राएें होती हैं ।

२ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

उ०—सोहण याई फर गया, मइं सर भरिया रोइ । ग्राव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ ।—ढो. मा.

सोहणीनिसांणी सं. स्त्री.—ग्रंत गुरु सहित प्रत्येक चरण में २९ मात्रा तथा १३ ग्रौर १६ पर यती वाला डिंगल का मात्रिक छंद विशेष । इसका दूसरा नाम मछटथल भी है ।

सोहणौ—वि. (स्त्री. सोहणी) १ सुहावना, सुन्दर, मनोहर ।

२ प्रिय, मधुर ।

३ शोभा देने वाला ।

४ देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

उ०—हुता सज्जण हियड़ै, सयण हंदा हत्त । जउ सोहणौ साचइ हौ, सोहणौ वडी वसत्त ।—ढो. मा.

सोहणौ, सोहवौ—क्रि. ग्र.—१ शोभा देना, शोभित होना ।

उ०—१ घर ग्रांगण मांहै घणां, त्रासै पड़िया ताव । जुध ग्रांगण सोहै जिकै, वालम वास वसाव ।—वां. दा.

उ०—२ सिला रा किला द्वार चित्रांम सोहै, विभूसां ग्रलोकीक लोकां विमोहै ।—मे. ग.

उ०—३ चौधारां लाखीक चाडतौ, किलम पंचाहर कीयां कर । राड़ विभाड़ सोहियौ राजा, ग्ररक्क ज्यूंई दळ फाड़ यर ।

—चांवडदांन वारहठ

२ जचना, फवना, सुन्दर लगना ।

उ०—१ ग्रजहुं तरु पुहप न पल्लव ग्रंकुर, थोड़ डाळ गादरित थिया । जिम सिणगार ग्रकीधै सोहति, प्री ग्रागमि जांणियै प्रिया ।—वेलि

उ०—२ वाजूवंध वधै गोर वाहु, विहुं स्यांम पाट सोहंत सिरी मणि मैं हींडि हींडलै मणिधर, किरि साखा स्रीखंड किरी ।

—वेलि

३ कीर्ति, यश ग्रादि फैलना, प्रसिद्ध होना ।

उ०—महाराज ग्राजांनभुज रांम रघुवंसमण, राड़ रिमजूथ ग्रवनाड़ रोहै, गढां गह गंजणा । वार निरधार ग्राधार ग्राधार ग्रालम वणै, सरण साधार जिण विरद सोहै, भिड़ै दळ भंजणा ।

—र. ज. प्र.

क्रि. स.—४ सूप में डाल कर ग्रनाज साफ करना ।

उ०—गोरी म्हारी ए हरियाळी सोहीजै क्यूं, यूं म्हारा सायब यूं जी यूं, गोरी म्हारी ए, हरियाळी पीसीजै क्यूं, यूं म्हारा सायव यूं जी यूं ।

—लो. गी.

सोहणहार, हारौ (हारी), सोहणियौ—वि० ।

सोहिग्रोड़ौ, सोहियोड़ौ, सोह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सोहीजणौ, सोहिजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

सोहौ, सोवौ, सोवणौ, सोवबौ—रू० भे० ।

सोहणौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

उ०—साग ऊँचा पेटदा हुवा छै, अमल पांणी किया छै । वाकर सोहिया छै । सोहता हुवे छै ।—उदै उगमणावत री वात

सोहनचिड़ी—देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

सोहनहलवौ-सं. पु.—जमे हुए कतरों के रूप में घी से तर एक मिठाई विशेष ।

रू. भे.—सोनऌवौ, सोनऌहलवौ, सोनऌहलुवौ ।

सोहबत-स. स्त्री. [अ. सोहबत] १ संग, साथ ।

उ०—एक विनय री निगांणी चाहना करणी छै, सोहबत पंडितां धरमवतां री नैं भला सांचा महा पुरसां रै दरसण री ।—नी. प्र.

२ दोस्ती, मेल ।

३ देखो 'सोबत' (रू. भे.)

सोहबरदिया-सं. पु.—सूफी मुसलमानों का एक सम्प्रदाय विशेष । (मा. म.)

सोहमणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

सोहरौ—देखो 'सोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ राघोदास वडौ मरदां ऊपरलौ मरद ऊंट जमी री घणौ सोहरौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ ताहरां वळद ऊपर सखरा बीछावणा, तिण उपर बिणयांणी नूं सोहरी बैसांणी ।—रळै गढवी री वात

(स्त्री. सोहरी)

सोहलाली—देखो 'सोलाळी' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

सोहली—सं. स्त्री.—स्त्रियों का ललाट पर पहनने का आभूषण विशेष ।

उ०—भमुहां ऊपरि सोहली, परिठिउ जांणिक चंग । ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रंग ।—ढो. मा.

सोहळौ—देखो 'सोळौ' (रू. भे.)

उ०—दूलह दुलहणि रौ सोहळा गाईजवां बीकानेर पधारिया छै । —द वि.

सोहांन—देखो 'सांण' (८) (रू. भे.)

उ०—दूजे वध सोहे री जिण अंग नूं दीजे सौ सोहांन खुरसांन सूं घिसियौ जाय ।—नी. प्र.

सोहांमणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरड, वाजइ लहर असाधि । संजोगणी सोहांमणइ, विजोगणी अंग दाधि ।—ढो. मा.

उ०—२ जंबू नांमइ दीप है, दक्षिण भरत मझार । सोरठ देस सोहांमणउ, तिहां छइ नीरय सार ।—स. कु.

उ०—३ सांभी गीत सोहांमणा, ए मइं गाया इकवीस रे । समसमुदर वहद संघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे ।—स. कु.

उ०—४ सहु कुं सुखदायक सुख सोहै, देखतां ही दुख जावै दूर । जसु सुरति अति सोहांमणी, सोहै सोहै हो स्रीजिनचंदसूर । —ध. व. ग्रं.

(स्त्री. सोहांमणी)

सोहांमणौ, सोहांमबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे.)

सोहा—१ देखो 'सोभा' (रू. भे.)

२ देखो 'स्वाहा' (रू भे.)

सोहाग-सं. पु.— १ वृक्ष विशेष ।

उ०—सींवली सादडीग्रा, सरघू सींसव साग । सिवनी असइं तिदूरीया, सरिता-सरिस सोहाग ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'सुहाग' (रू भे.)

उ०—ताहरां ओ भोकाई बोलियौ, थे इण मांटी सूं ठरिस्यौ नहीं । इण सोहाग मैं लक्षण कोई नहीं ।

—कावळै जोइयै नै तीडी खरळ री वात

सोहागण, सोहागणी, सोहागवति, सोहागवती, सोहागिण—देखो 'सौभाग्यवती' (रू. भे.)

उ०—१ सोहण याई फर गया, मइं सर भरिया रोइ । आव सोहागण नींदड़ी, वळि प्रिय देखूं सोइ ।—ढो. मा.

उ०—२ पुत्रवती सोहागवति पतिवरता पिण सोय । स्रीरांणी चूड़ौ सथिर, वांणी भणै सकोय ।—रा. रू.

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट । सोहागिण घर आंगणइ, दोहागिण रइ घट्ट ।—ढो. मा.

सोहागौ—देखो 'सुहागौ' (रू. भे.)

सोहापति-सं. पु. [सं. स्वाहापति] अग्नी, आग । (ह. नां. मा.)

सोहारद-सं. पु. [सं. सौहार्द] १ मित्र, दोस्त । (डिं. को.)

२ सहृदय होने का भाव ।

३ सहानुभूति, सहृदयता ।

४ कृपा, अनुग्रह ।

सोहावणौ, सोहावबौ—देखो 'सोहणौ, सोहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दसमउ अंग सुरंग सोहावइ, प्रस्नव्याकरण नांमइ । सूत्र कल्पतरू सेवई तेतउ, चितानंद फल पांमइ ।—वि. कु.

उ०—२ मन दुरमत आवी रे, सगलां मन भावी रे । वीरभांण सोहावी, भावी जै हुवै रे ।—प. च. चौ.

सोहितौ-सं. पु.—चावल व गोश्त को एक साथ पकाकर बनाया जाने वाला नमकीन मांसोदन ।

उ०—तठा उपरांयत सीरो-पूड़ी वणै छै । सोहितै सारू देवजीभि जोयजै छै । विरंजै सारू चोखा मंगायजै छै । पुलाव सारू कमोद वीणजै छै ।—रा. सा. सं.

वि. वि.—सोहिते में मिर्च, हल्दी, धनिया आदि सब मसाले डाल कर चावलों के साथ मांस पकाया जाता है। कहीं२ पर चावलों के अभाव में बाजरे या काठे गेहूं के दलिये के साथ भी पकाया जाता है । यह पुलाव से भिन्न होता है, क्योंकि पुलाव में नमकीन मसाले

मिर्च, हल्दी, धनिया आदि नहीं डाले जाते सिर्फ सूखा मेवा, काजू, कालीमिर्च, घी आदि डाले जाते हैं।

रू. भे.—सुहितौ, सोइतौ, सोयतौ, सोहतौ, सौहतौ।

सोहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ शोभायुक्त या शोभित हुवा हुआ. २ जचा हुआ, फबा हुआ, सज्जित, सुन्दर लगा हुआ. ३ फैला हुआ, प्रसिद्ध हुवा हुआ (यश). ४ सूप में डालकर साफ किया हुआ। (स्त्री. सोहियोड़ी)

सोहिलौ–वि. (स्त्री. सोहिली) १ आसान, सुगम, सरल।

उ०—१ ए अवसर रे आवंता वली दोहिलउ, पुण्य योगइ रे घन पामंता **सोहिलउ**।—स. कु.

उ०—२ मयमत्ता मेंगल महा, मणिधरि केहरि मल्ल। सगला दमता **सोहिला**, मन दमणौ, मुसकल्ल।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ कर जोड़ी कहइ कांमिनी जी, बंधव सम नहीं कोइ। कहिता वात **सोहिली** जी, करतां दोहिली होय।—स. कु.

२ सुखी।

उ०—१ सरणैं राख कृपा करि साहिव, ज्यूं पारेवौ पल्यौ री। समयसुंदर कहइ तुम्हारी कृपा तैं, हिव रहस्यूं **सोहिली** री।

—स. कु.

उ०—२ **सोहिलौ** थाय संसार, दोहिलौ कोई देखूं नहीं।

—सूरौ टापरियौ

३ सम्पन्न।

सं. पु.—आराम, सुख।

रू. भे.—सोयलौ।

सोही–वि.—शुभचिंतक, हितैषी।

सर्व.—वही, सौ।

सोहोड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—१ असमर अगनि कड़ाई आरियण। लाकड़ **सोहोड़** धुखै कुळ लाज।—प्रथीराज राठौड़ री गीत

उ०—२ साकुर झपट **सोहोड़** थट सांमट, थरहर जगि जस थह थरट। दोयण दंताळ करण गट दुजड़ां, मळै श्रो होट दूछर मरट।

—छतरसिंह हाडा री गीत

सोह्रद, सोह्रिद–वि. [सं. सहृदय] १ मित्र, हितैषी। (डिं. को.)

२ दयावान, कृपालु।

सौं–सं. स्त्री.—शपथ, सौगंध।

सौंज–सं. पु.—१ साज-सामान, साधन, सामग्री।

उ०—१ दादू अंतर आतमा, पीवै हरि जळ नीर। **सौंज** सकल लै उद्धरै, निरमळ होइ सरीर।—दादूवांणी

उ०—२ सदगुरु दाता जीव का, स्रवण सीस कर नैन। तन मन **सौंज** संवारि सव, मुख रसना अरु बैन।—दादूवांणी

उ०—३ आजम दक्खण हूंत उलट्ठौ, विकट धनुख सर जांण विछुट्टौ। उत्तर धरा सु आलम आयौ, **सौंज** नेंज दळ तेज सवायौ।

—रा. रू.

२ भाला चलाने की विद्या या खेल।

उ०—मोती वाग हूंत सव मारू, **सौंज** नेज खड़ि रमण सारू।

—रा. रू.

३ खेती, फसल।

उ०—क्रम नेदांण करि राखि धर्म आपणौ, और उजाड़ कुण करत तेरौ। गोफणी ग्यांन अग्यांन गेरां उडै, सत की वाड़ि गुर सवद फेरौ। आय अनेक जुगमांहि जन नीपनां, नांव लिव लावणी **सौंज** लागा। दास हरिरांम गुण गाहि गाडा भरौ, भूख में दुख ग्या दूर भागा।—अनुभववांणी

३ राह, मार्ग।

उ०—सील संतोख की सनाह, अंगिय पहरिवा। सुमरण की **सौंज** लेवा आगम कूं चालिवा।—ह. पु. वां.

४ खजाना, भण्डार।

उ०—सकल सुखौं की **सौंज** हरि, वार पार मधि नांहि। देह गेह दुनियां तरक, प्रांन गरकतां मांहि।—ह. पु. वां.

५ विशिष्ट कार्य या क्रिया।

६ वह पूजनीय चित्र, वस्त्र आदि जिसे साम्प्रदायिक नियमानुसार किसी स्थान विशेष में रख कर पूजा जाता है।

वि.—सव, समस्त।

उ०—काया कोट विन्यौ विन टांची, कळी न चूनौ लाया। करता पुरख भया कारीगर, नख चख **सौंज** वनाया।—अनुभववांणी

७ देखो 'सूंज' (रू. भे.)

सौंडिक–सं. पु. [सं.] शराब बनाकर बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। (वं. भा.)

सौंण—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—ताहरां गोगैजी पाबूजी नूं कही—आपै परभातै **सौंण** लेस्यां, जौ सौंण आछा हुआ तौ चढस्यां।—नैणसी

२ देखो 'सयन' (रू. भे.)

सौंणहर–सं. पु. [सं. शयनगृह] शयनागार। (डिं. को.)

सौंणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

उ०—पछै उठारा चढिया सांखला हरभौं रै गांव वैहगटी आया। हरभौंजी **सौंणी** हुता।—नैणसी

सौंधाखांनौ–सं. पु.—इत्र, तेल आदि सुगंधित द्रव्य रखे जाने का स्थान या कक्ष।

उ०—**सौंधाखांना** वेल सजि, वटा कहार कहाय। कावड़ सरवण धारि कंध, जांणौ तीरथ जाय।—सू. प्र.

रू. भे.—सांधाखांनौ, सुंधांखांणौ, सुंधाखांनौ।

सौंधौ–सं. पु.—१ राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में पाया जाने वाला एक

घास का नाम, जिससे सुगंधित तेल, इत्र आदि निकाला जाता है, [illegible]।

२ इस घास से निकाला हुआ सुगंधित तेल या इत्र।

उ०—१ [illegible] सौंधा प्रमळ, वंटि अरगजा वळोवळ। जदि [illegible] गजां, हूंतां हाल किलोहळां।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] सौंधै भीनै आज कारै कारै वार संवार [illegible]।—[illegible] राज री गीत

उ०—३ घसिया तनि [illegible] कुमकुमै धोया, सौंधा अखोळित महल [illegible]। नर [illegible] भाद्रवि भोगविजै, रुकमिणि वर एहवी रुत।
—वेलि

वि. वि.—उक्त प्रकार का घास राजस्थान, मध्यप्रदेश, नेपाल, शिमला, अलमोड़ा, काश्मीर, पंजाब आदि के पहाड़ी प्रदेशों व बंबई व मद्रास के पर्वतों में पाया जाता है। इससे गुलाब की (मतान्तर से नारियल की) भी सुगंध आती है और इसका तेल निकाला जाता है। मुख्यतः इसकी दो जातियां होती हैं। एक के फूल सफेद व दूसरे के नीले रंग के होते हैं। जब यह घास नरम रहता है तो पत्तियों का रंग नीला होता है तब इसे मोतिया कहते हैं एवं पकने पर पत्तियां लाल हो जाती हैं तब इसे सोंफिया कहते हैं। इसकी पत्तियां सावन-भादों से कातिक अगहन तक फूलती हैं। इसी समय इसकी पत्तियां तेल निकालने के योग्य हो जाती हैं।

जब घास फूलने लगती है, तब काटकर छोटी-छोटी पूलियां बनायी जाती हैं। उक्त पूलियों को पानी भरे बर्तन में डालकर उबाली जाती हैं। उक्त बर्तन पर तीन-चार अंगुल मोटी व तीन-चार फुट लम्बी नलियों सहित सरपोश लगा रहता है। उक्त नलियों के सिरे तांबे के दो घड़ों से लगे रहते हैं। इस प्रकार इसका आसव खींच लिया जाता है। आसव को किसी चौड़े मुंह के बर्तन में उड़ेल लेते हैं। रोहिष का अर्क थोड़ी देर रहता है। ऊपर से तेल को धीरे-धीरे निकाल लेते हैं। यह तेल गुलाब के इत्र में मिलाकर इसमें ताड़पीन या मिट्टी का तेल मिलाया जाता है। इस प्रकार सुगन्धित पदार्थ तैयार किया जाता है।

३ विभिन्न प्रकार के इत्रादि सुगन्धित पदार्थ।

रू. भे.—सांधो, सुधौ, सूंधो, सोंधो।

सौंन—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—जाकै सिर हरि की रजा, कजा करैगा कौन। जनहरीया बन्दगी बिन, दुनिया देखै सौंन।—अनुभववांणी

सौंपणौ, सौंपबौ—देखो 'सूंपणौ, सूपबौ' (रू. भे.)

उ०—१ निगुणा गुण मानै नहीं, कोटि करै जै कोइ। दादू सब कुछ सौंपियै, सो फिर वैरी होइ।—दादूवांणी

उ०—२ सेर नै वाघ नूं पाकड़ियो। आंण नै रावळजी नूं सौंपियो ताहरां रावळजी कह्यो। सावास ऊदा।
—उदै उगमणावत री वात

उ०—३ हरीया निस दिन धिन घरी, वार पुरब धिन जांनि। अपनै सांई कारणै, तन मन सौंपूं आंनि।—अनुभववांणी

उ०—४ तिसा ही रजपूतवट रा आचार देखनैं महाराजा राजेसर अजमेर रै थांणै राखेआ छै। हसम हुकम सौंपीआ छै।
—रा. सा. सं.

सौंफ—सं. स्त्री.—१ पांच छः फुट ऊंचा पौधा जिसकी पत्तियां सोए के के समान ही बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फूल लम्बे सींकों में गुच्छों के रूप में लगते हैं।

२ उक्त पौधे के बीज जो मसाले व औषधि के काम में लिए जाते हैं।

रू. भे.—सूंफ।

सौंलो—देखो 'संवळो' (रू. भे.)

उ०—अजरांमर का मारग औला, सौंला संत पिछांणै। वंक नाळि मेर संचरि कै, भंवरगुफा सुख मांणै।—अनुभववांणी

सौंस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—१ महाराज विच रहमांण, करि सौंस छिब्बी कुरांण। तदि धरै दिल परतीत, वोलियौ 'अंगजीत'।—सू. प्र.

उ०—२ तेज पुंज आसप आरोगीजै छै। प्यार करनैं सौंस दै दै नै प्याला दीजै छै।—रा. सा. सं.

सौ—सं. पु.—१ शंख. २ शनि. ३ बालक. ४ सूर्य. ५ बुध. ६ भाई. ७ मित्र. ८ जप. ९ अच्छा वाक्य। (एका.)

सं. स्त्री.—१ पृथ्वी, जमीन, धरती। („)

२ क्षुधा, भूख। („)

३ उपासना आराधना। („)

४ सौ की संख्या, १००।

वि.—१ बलवान, पराक्रमी। (एका.)

२ शुद्ध, पवित्र। („)

३ सब, समस्त, सम्पूर्ण।

उ०—१ सासू गहणौ नै कांई पूछो, गहणौ औ म्हारौ सौ परवार।
—लो. गी.

उ०—२ दाळरोटी खाव्या बैठो आंगण सौ परवार।—लो. गी.

[सं. शत] ४ निन्नानवें से एक अधिक, पचास का दुगुना।

उ०—चरख्यां चटीट अंगीठ चख, पीठ समोवड़ पाळणां। पाकेट सज्या सौ कोस पथ, हेकण चांटी हालणां।—मे. म.

मुहा.—१ सौ ई मरज्यौ पण सौवां नै पूरण वाळौ मत मरज्यौ= आश्रित मिट जाय पर आश्रय-दाता नहीं मिटना चाहिये. २ सौ गुंडा पर एक मूंछ मुंडा=हिजड़े के साथ कोई क्या वदमाशी करे. ३ सौ गोलां ई घर सूनौ=केवल नौकरों से घर की शोभा नहीं होती। गुलाम गैर जिम्मेदार होते हैं. ४ सौ ज्यूं पचास=असमर्थों

के लिये पचास की संख्या भी सौ के बराबर होती है: ५ सौ दिन चोर रा एक दिन साहूकार रौ=चोर कभी तो पकड़ में आता ही है. ६ सौ नीच नैं एक आंख मींच=एक काना सौ बदमाशों से बढ़कर होता है. ७ सौ बरस रौ सिलावटौ नैं बारैं बरस रौ घर धणी=शिल्पकार को वही करना पड़ता है जो मकान-मालिक कहे, शिल्पकार के अनुभव की मकान-मालिक आगे कोई कीमत नहीं. ८ सौ बातां री एक बात=सार बात, सार वस्तु, सारांश. ९ सौ रांडां भांग नैं एक रंडवौ घड़चौ=रंडुवे या विधुर में सौ विधवाओं के गुण होते हैं। अधिक छल-छन्द करने वाले के लिये है. १० सौ रा भाई साठ=देखो 'सौ ज्यूं पचास'. ११ सौ री एक खोवैं=नासमझ के लिये है जो अपने कई पूर्वजों की संचित पूंजी व्यर्थ गमाता हो. १२ सौ री विनती नैं एक री सोठी=जहाँ विनय व शराफत से काम न बने तो शक्ति प्रयोग करना चाहिये. १३ सौ सुल्टी नैं एक कुल्टी=एक कुटिल क़ई शरीफों से बढ़कर होता है. १४ सौ सोनार री नैं एक लवार री=बलवान की एक ही चोट पर्याप्त होती है. १५ सौ सोगी नैं एक दोगी=एक दुश्मन सौ मित्रों के बराबर होता है। दुश्मन कभी छोटा नहीं होता. १६ सौ स्यांणा रौ एक मतौ=समझदारों में मतान्तर नहीं होता, समझदारों का मत एक होता है।

५ देखो 'सो' (रू. भे.)

उ०—१ दुनियां मैं कोई ऐड़ी चीज नीं सौ वारैं कोठै नीं मिळै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ मांदां मिनखां नैं तौ बतावैं सौ ई औखद जचैं।
—फुलवाड़ी

उ०—३ कुतरां रैं कनारैं धवळौ सौ देखैं तौ क्यूं पड़ियौ छैं जोयौ। देखैं तौ अमल री पोतौ छैं।—ऊदै उगमणावत री बात

उ०—४ रघुवर सौ प्रभू तज कर औयरा जै अवरां अमर अभि-यासत। त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूंप खणत नर मूरख।
—र. ज. प्र.

रू. भे.—सउ।

सौक–सं. स्त्री. [सं. सहपत्नी] १ सौत।

उ०—१ सौ अठै ही सेझ री रीत नहीं भूलौ और ग्रीधां सूं कांम लियौ तौ सायत सुरग मैं अपछरां वर ली तौ म्हारैं सौक होय जायला सौ चाल सीस लैं ताकीद सत कर हाजरी मैं जाऊं।
—वी. स. टी.

उ०—२ आ नित दीसैं साजना, रीस रखूं की रोळ। साजनिया सालैं नहीं, सालैं ल्होड़ी सौक।—अग्यात

२ एक प्रकार की ध्वनि जो बाण, वायु, विमान अथवा पक्षियों आदि के तीव्र गति से चलने या उड़ने से उत्पन्न होती है, सर-सराहट।

उ०—१ परां सौक पक्खरां, धमक वागी धजराजां। अनळपंख उड्डियां, गिळण जांणैं गजराजां।—सू. प्र.

उ०—२ सौक पड़ैं सायकां, सेल धमरोळ सतावा। मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळां नवावां।—सू. प्र.

३ तीव्र गति या रफ्तार।

४ तीव्र गति से भागने की क्रिया।

रू. भे.—सउक, सउकि, सोक।

अल्पा;—सोकड़, सोकड़ली, सोकरण, सौकड़, सौकड़ली।

५ देखो 'सौख' (रू. भे.)

सौकड़—देखो 'सौक' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आंगणियैं रे ढोला हवद खुणाय, पितकळनैं पड़ै रे म्हाजी सौकड़ वैरण गालती दी रे म्हाराज।—लो. गी.

सौकड़ली—देखो 'सौक' (१) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आडी रे आडी ढोला भीतड़ली रे चुणाय, निजरां नहीं देखां रे इयं सौकड़ली नैं मालती रे म्हाराज।—लो. गी.

सौकण—देखो 'सौक' (१) (रू. भे.)

सौरकड़ौ–स. पु.—१ बन्दूकों का वह समूह जो प्राचीन काल में घोड़ा-गाड़ी या ऊंटगाड़ी के पिछले हिस्से में कसा जाकर काम में लिया जाता था।

उ०—१ सौकरड़ा भड़ तणा सह्या, नरी सही गगनाळ। बीजड़ झड़ सह वंस पर, आंण न दी अवगळा।—अग्यात

उ०—२ अनैं सौकरड़ां रा सिंधु मैं सोकरड़ा री गाडिया होवैं है वां गाडियां रा सिंधु दरियान मैं पवन ज्यूं पूगौ।—वी. स. टी.

वि. वि.—प्राचीन समय में आधुनिक मशीनगनों की जगह प्रयोग होने वाला लगभग सौ डेढ सौ बन्दूकों का समूह जो घोड़ागाड़ी, ऊँटगाड़ी और बैलगाड़ी के पिछले भाग में फिट कसा रहता था। युद्ध में इन गाड़ियों को तीव्रगति से दौड़ाते हुए शत्रु सेना के बिलकुल समीप ले जाकर गाड़ियों को वापिस उल्टा घुमाकर शत्रु सेना को बन्दूकों की मार में लेकर बन्दूकों को पलीता लगा देते थे। इससे गाड़ी पर कसी बन्दूकें एक साथ मशीनगन की तरह गोलियों की बौछार करने लगती। युद्ध-स्थल में इस प्रकार की बन्दूकें कसी गाड़ियों के समूह एक के बाद एक क्रमशः आते रहते थे। सभी बन्दूकों की नालों का मुँह पीछे की तरफ होता था।

२ देखो 'सौक' (२) (मह; रू. भे.)

रू. भे.—सोकरड़ौ।

सौकरतीरथ–सं. पु. [सं. सौकरतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सौकलटी–सं. स्त्री.—१ स्त्री के सिर के वे बाल जो आगे लट के रूप में निकले रहते हैं। (अशुभ)

वि. वि.—समाज में ऐसी धारणा है कि इस प्रकार की लट वाली औरत को सौत का मुँह देखना पड़ता है।

सौकातिसार—देखो 'सोकातिसार' (रू. भे.)

सौकिया–क्रि. वि.—१ शौक की प्रवृत्ति के वश होकर कार्य करने

[illegible]।

२ [illegible] मनोरंजनार्थ किये गये नाचे।

सौखिन—देखो 'सौखीन' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मूं थांनै सौखिन तबीयत रौ आदमी हूं। [illegible] सभा री गैल [illegible] ही।

—अमरचूंनड़ी

सौखिनी—देखो 'सौखीनी' (रू. भे.)

सौखूणौ, सौखूनौ—देखो 'सांखूणौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सौखूणी)

सौख-सं. पु. [अ. शौक] १ किसी पदार्थ की प्राप्ति या निरन्तर भोग के लिए अथवा कोई कार्य करते रहने के लिए होने वाली तीव्र लालसा।

उ०—[illegible] सिव सौख रिम सीस चाढै पौहप, ओख खत्रवाट कुळवट उगायौ। सौख मार्गां जगी रमै रांमत समत्र, जौख मांगां असी सारायौ।—बहादरसिंघ री गीत

क्रि. प्र.—करणौ, राखणौ, होणौ।

२ आकांक्षा, लालसा।

३ व्यसन, चसका, चाट।

४ प्रवृत्ति, झुकाव।

५ देखो 'सोक' (रू. भे.)

उ०—दिवांणां परां ना चलां सौख वाणी, लवै हूर रंभा वहै वादि ताणी।—सू. प्र.

रू. भे.—सोक, सौख, सौक।

सौखी—१ देखो 'सोखी' (रू. भे.)

२ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)

सौखीन-वि. [अ. शौकीन] वह व्यक्ति जिसे किसी बात का बहुत शौक हो, साध रखने वाला।

२ वह व्यक्ति जो सदा बना-ठना रहता हो, सदा बना-ठना रहने वाला।

३ ऐय्याश, तमाशबीन, रंडीबाज।

रू. भे.—सौखिन, सोखीन।

सौखीनाई-सं. स्त्री.—१ शौकीन होने का भाव या अवस्था।

२ रंडीबाजी, तमाशबीन, ऐय्याशी।

रू. भे.—सोखीनाई।

सौखीनी—१ देखो 'सौखीनाई' (रू. भे.)

२ देखो 'सौखीन' (रू. भे.)

३ देखो 'सोखी' (रू. भे.)

सौगंद, सौगध—देखो 'सौगंध' (रू. भे.)

सौगंधिक-सं. पु. [सं.] कुबेर का एक वन जिसकी सुगंध के साथ पवन कुबेर सभा में कुबेर की सेवा करता है।

सौगंधिकवन-सं. पु. यौ. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ जहां ब्रह्मादि-देवता, सिद्ध, मुनि, नाग, गंधर्व, किन्नर आदि निवास करते हैं।

सौगंधिका-सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी जो कुबेर नगरी में बहती है।

सौगत-सं. पु. [सं.] धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सौगन—देखो 'सोगंध' (रू. भे.)

उ०—१ थांनै आंख्यां री सौगन धकै अेक पावंडौ ई वधियौ तौ। नदी री ठाडी पांणी पीवौ, घमेक बिसाई खावौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हैं तौ भायजी री सौगन पोहरै चढ्यां पछै अवै घरै आयौ हूं।—फुलवाड़ी

सौगात-सं. स्त्री. [तु.] उपहार के रूप में व्यक्ति विशेष को दी जाने वाली स्थानीय उपज की कोई वस्तु या चीज।

रू. भे.—सोखायत।

सौगाळौ-सं. पु. [सं. शोक+आलुच्] एक रस्म विशेष जिसमें मृतक के परिवार वालो को उनके सगे-संबंधियों द्वारा मद्यपान आदि करवा कर शोक-भंजन कराया जाता है। (मेवाड़)

सौड़—देखो 'सोड़' (रू. भे.)

सौच-सं. पु. [सं. शौच] १ शरीर की शुचिता के लिये सवेरे सो कर उठते ही किया जाने वाला कृत्य।

२ शुचिता, शुद्धता।

३ टट्टी जाना, मल त्यागना।

४ देखो 'सोच' (रू. भे.)

सौण—१ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सौणी—१ देखो 'सुगनी' (रू. भे.)

२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)

सौत-सं. स्त्री. [सं. सपत्नी] किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका, सपत्नी।

सौति-सं. पु. [सं.] उग्रश्रवा ऋषि का एक नाम।

सौतेलौ-वि. (स्त्री. सौतेली) सपत्नी का, सौत का।

स. पु.—विमाता का पुत्र।

सौदरा—१ देखो 'सुभद्रा' (रू. भे.)

२ देखो 'सोदरा' (रू. भे.)

सौदांमणी, सौदांमनी, सौदांमिणी-सं. स्त्री. [सं. सौदामनी] १ विद्युत, बिजली। (ह. नां. मा.)

उ०—अर उच्छाह रै अनुसार भाला नूं भमाय सौदांमिणी रा सा सळाव देता अति ही समीप आय अड़िया।—वं. भा.

२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री।

३ एक अप्सरा का नाम।

सौदागर-सं. पु. [फा.] १ व्यापारी, व्यवसायी।

उ०—१ बीकमपुर रा पिण आदमी तेडण आया। मु सौदागर मांडणसर बीकांनेर सूं कोस १२ तठै आयौ। कह्यौ अठै मोनुं आप

नै तेड़ जासी पिण मारग जाय सूं ।—राजा उदैसिंघ री बात

उ०—२ सौदा एक सकल तन भीतरि, विणजै विरळा भाई जनहरिरांम मिळै सौदागर, सौदै साट मिलाई ।—अनुभववांणी

२ घोड़ों का व्यापारी ।

रू. भे.—सोदागर ।

सौदागरी–सं. स्त्री. [फा.] १ व्यापार का कार्य, रोजगार, व्यवसाय ।

२ सौदागर का कार्य ।

सौदास–सं. पु.—१ कौसल के राजा सुदास के पुत्र तथा ऋतुपर्ण के पौत्र का नाम ।

२ च्यवन के पुत्र सुदास के पुत्र का नाम ।

सौदौ–सं. पु. [अ. सौदा] १ क्रय-विक्रय का सामान, माल ।

उ०—गरु घलाली वाहिरौ, सिवरन सौदौ लेह । हरीया भाव'र भगति कौ, भाजै नांहि संनेह ।—अनुभववांणी

क्रि. प्र.—लाणौ मंगाणौ, खरीदणौ ।

२ लेन-देन की बात-चीत, व्यवहार, व्यवसाय, व्यापार ।

उ०—१ जीव गयौ दहवाट, कारिज कौ सरीयौ नहीं । जनहरीया हरि हाट, सुक्रिथ सौदा नां कीया ।—अनुभववांणी

उ०—२ कालै अेक सौदा मैं खासौ नफौ रैग्यौ हौ । सेठ राजी हा ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मैंहघा मौल दियै मेघाउत, लियै अपार नफौ जसलाह । आडावळै मोतियां असड़ौ, सौदौ करै वळापति साह ।

—महाराजा छतरसिंह रौ गीत

क्रि. प्र.—वैठणौ, करणौ, व्हैणौ ।

३ शरीर की एक धातु ।

४ मस्तिष्क-विकार, पागलपन ।

५ प्रेम, इश्क ।

६ वस्तु-विनिमय ।

७ पशुओं का क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान, सट्टा ।

८ कार्य ।

वि.—१ चालाक, धूर्त ।

रू. भे.—सोदौ ।

सौध–सं. पु.—१ भवन, महल, अट्टालिका । (अ. मा.)

उ०—अटै सोध अवरोध अचांणक, वोध मोद विसराए प्रांणनाथ हा नाथ जोधपुर, गौख सौध गणणाए ।—ऊ. का.

रू. भे.—सोध ।

सौधरमइंद्र–सं. पु. [सं. सौधर्मइन्द्र] वह इन्द्र जिसने भगवान महावीर के विश्वकल्याणकारी उपदेश के लिए उपदेशशाला-समवशरण अपने कोषाध्यक्ष कुवेर को आदेश देकर वनवाया था ।

सौधन्वा–सं. पु. [सं.] सुधन्वा के पुत्र ऋभु का एक नाम ।

सौनंद, सौनंद–सं. पु. [सं.] १ वलराम का एक नाम विशेष, जो मूसल रखने के कारण पड़ा ।

२ वलराम का मूसल ।

सौनइयौ—देखो 'सोनइयौ' (रू. भे.)

उ०—त्रणसै कोडि अठचासी कोडि असी लाख उपर वलि जोडि । इतरा सौनइया नौ मांन, दै सहु अरिहंत वरसीदांन ।—ध. व. ग्रं.

सौनक–सं. पु. [सं. शौनक] भृगुवंशी शुनक ऋषि के पुत्र एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य ऋषि ।

सौनचिड़ी–सं. स्त्री.—१ वह नटी जो कलावाजियाँ दिखाने में अत्यधिक निपुण हो । (मा. म.)

२ देखो 'सोनचिड़ी' (रू. भे.)

सौनहरी, सौनेरी–सं. पु.—१ सिंह की एक जाति व इस जाति का सिंह । (अ. मा.)

उ०—तहां सौनहरी-पटैत विकराळ रूप वाघ भभकार उठै रोस का रूप जांखि जमराज रूठै — सू. प्र.

२ देखो 'सोनैरी' (रू. भे.)

सौपरण–सं. पु. [सं. सौपर्ण] विष्णु के वाहन गरुड़ के अस्त्र का नाम ।

सौपाक–सं. पु.—एक प्राचीन वर्णसंकर जाति ।

सौवत—१ देखो 'सोहवत' (रू. भे.)

२ देखो 'सोवत' (रू. भे.)

सौवल्य–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन जनपद का नाम ।

सौवायल, सौवाहौ—देखो 'सूवेदार' ।

उ०—'अखई' माधौदास रौ, तिण वेळा तुड़तांण । यूं सौवाहां ऊठियौ, साहां गंजण मांण ।—रा. रू.

सौभ–सं. स्त्री.—१ एक काल्पनिक नगरी का नाम जो आकाश में स्थित मानी जाती है, राजा हरिश्चन्द्र की नगरी ।

२ शाल्वों का एक नगर ।

सौभद्र–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ ।

सौभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू. भे)

उ०—१ सलोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै ।—मे. म.

उ०—२ आतल नै पिण ओहटै, वलि संवाहै काठी वाग कि । तारै आपणपौ तिकौ, सहु मांहै पांमै सौभाग कि ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ गुण रा जांण ग्यांन रा गौरख, तप रा भांण मांण रा त्याग । वित रा पांण 'हणू' रा वरसै, सत रा ढांण घणौ सौभाग ।—आईदांन पाल्हावत

उ०—४ कांम वखतेस चै भांजतै क्रूरमां, प्रथी मां वाह सौभाग पायौ । वाहि विहाड़ि वधि पूरिजळ चाडिवंस, अभिनवौ करमसी कुसळ आयौ ।—कीरतदांन वारहठ

सौभागण, सौभागणी, सौभागिणी—देखो 'सौभाग्यवती' ।

सौभागिनेय–सं. पु. [सं.] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो ।

सौभागियौ—देखो 'सोभागियौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सोभागिणी, [illegible] । [illegible] [illegible]—[illegible]

सौभाग-सं. पु.—१ अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत ।
 २ [illegible] ।
 ३ [illegible] ।
 ४ [illegible], सुन्दरता ।
 ५ धन, सम्पत्ति, वैभव ।
 ६ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, सुहाग, सौभाग्यपन ।
 ७ शुभ-सन्देश, मंगल-कामना ।
 ८ ज्योतिष के २७ योगों में से चतुर्थ योग का नाम । (ज्योतिष)
 ९ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में एक लघु वर्ण सहित नगण, रगण और यगण आता है । (र. पिं.)
 रू. भे.—सभाग, सोभाग, सौभाग ।

सौभाग्यतीज, सौभाग्यत्रतीया-सं. स्त्री. [सं. सौभाग्यतृतीया] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो अति उत्तम मानी जाती है ।

सौभाग्यवती-सं. स्त्री.—१ सधवा या सुहागिन स्त्री ।
 २ सुंदर स्त्री ।
 वि.—१ अच्छे किस्मत वाली ।
 २ शुभ लक्षणों वाली ।
 रू. भे.—सुहागवती, सोभागण, सोभागणी, सोहागण, सोहागणी, सोहागवती, सोहागिणी ।

सौभाग्यवान-वि.—१ खुशकिस्मत, अच्छे भाग्यवाला ।
 २ वैभवशाली, सम्पन्न ।

सौभाग्यव्रत-सं. पु. [सं.] फाल्गुन शुक्ला तृतीया को किया जाने वाला व्रत ।

सौभाग्यसूंठी-सं. स्त्री.—सूतिका रोग के लिए बहुत उपकारी माना जाने वाला एक आयुर्वेदिक पाक ।

सौमत्रेय-सं. पु.—१ लक्ष्मण । (नां. मा.)
 २ शत्रुघ्न ।

सौमन-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन अस्त्र ।

सौमनस-सं. पु. [सं.] १ पश्चिम दिशा का दिग्गज । (पौराणिक)
 २ उदयगिरी पर्वत के एक शिखर का नाम । (पौराणिक)

सौमनसा-सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी । (रामा.)

सौमनस्य-सं. पु. [सं.] १ आनन्द, खुशी ।
 २ पारस्परिक सद्भाव ।
 ३ श्राद्ध में पुरोहित के हाथ में फूल देने का कार्य ।

सौमित्रा—देखो 'सुमित्रा' (रू. भे.)

सौम्य-वि.—१ शांत, गंभीर ।
 २ नम्र, कोमल ।
 ३ ठंडा, शीतल, स्निग्ध ।
 ४ स्वच्छ, निर्मल ।
 ५ सुंदर, मनोहर ।
 ६ प्रसन्न, खुश ।
 ७ उज्ज्वल, चमकीला ।
 ८ चन्द्रमा संबंधी ।
 ९ शुभ, मंगलमय ।
 सं. पु.—१ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम ।
 २ चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
 ३ साठ संवत्सरों में से एक ।
 ४ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक ।
 ५ वार व नक्षत्र संबंधी बनने वाले २८ योगों में से पांचवां योग ।

सौम्यगिरि-सं. पु.—एक प्राचीन पर्वत ।

सौम्या-सं. स्त्री.—दुर्गा ।

सौयंवर—देखो 'स्वयंवर' (रू. भे.)

सौय—देखो 'सोय' (रू. भे.)

सौरंभ—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)
 उ०—१ सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ **सौरंभ** सिभू विमोहै । —रा. रू.
 उ०—२ मुकट परखि मुख तांम रूप किर कांम पलट्टै । अंगराग आरंभ परम **सौरंभ** प्रगट्टै ।—रा. रू.

सौरंभचर—देखो 'सौरभचर' (रू. भे.) (नां. मा.)

सौरंभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू. भे.)

सौरंम—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)
 उ०—तांम छोळां व्रत तणी, बणै ऊपरां वहोतरि । छकै मसालां डमर, तकै **सौरंमां** अम्मरि ।—सू. प्र.

सौर-सं. पु. [सं.] १ सूर्य का पुत्र, शनि ।
 २ यमराज ।
 ३ दाहिनी आंख ।
 ४ तुंबरु ।
 वि.—१ सूर्य का, सूर्य संबंधी ।
 २ सूर्य से उत्पन्न ।
 ३ देखो 'सोर' (रू. भे.)
 उ०—वहै सेल दूधारा चोधारा धारा रुद्र वहै, उडै सीस केवाणां निराळा हुवै अंग । काळा **सौर** ऊछळै कराळ झाळ दहूं कांनी, जोधपुरां आमेरां मंडांणी महाजंग ।—वखतसिंघ री गीत

सौरकौ—देखो 'सोरकौ' (रू. भे.)
 उ०—राजा री खीझ रा डर सूं उणरी जीव तौ **सौरकां** चढण लागौ । अबै करै तौ कांई करै —फुलवाड़ी

सौरत—देखो 'सोहरत' (रू. भे.)

सौरभ-सं. स्त्री. [सं.] १ सुगन्ध, खुशबू, महक ।

उ०—पळकै ही आभा चंदै ज्यूं, मटकै ही नैण लाज री ज्यूं।
सांसां मैं **सौरभ** सामेड़ी, होठां मैं हास राज हौ ज्यूं।—सकुंतळा

२ केसर।

३ सुरभि, गाय।

४ तुंवरु।

५ धनिया।

६ बोल नामक गंध-द्रव्य।

७ आम।

रू. भे.—सोरंभ, सोरंभी, सौरंभ, सौरम।

सौरभचर-सं. पु. [सं.] भौंरा, भ्रमर।

रू. भे.—सोरंभचर, सौरंभचर।

सौरभमूळ-सं. पु. [सं. सौरभ+मूल] चंदन।

रू. भे.—सोरंभमूळ, सौरंभमूल।

सौरभेई-सं. स्त्री [स. सौरभेयी] गाय। (ह. नां. मा.)

सौरभेय-सं. पु. [सं. सौरभेय] वैल। (डिं. नां. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—सोरभेय।

सौरभेयी-सं. स्त्री. [सं.] एक अप्सरा का नाम।

सौरम—देखो 'सौरभ' (रू. भे.)

उ०—१ किरियौ तौ **सौरम** रा चार सरड़ाटा खांचिया अर मस्त व्हैगौ। मस्ताई मै मंडोवर रा वगीचा री सोय मैं **सौरम** रै समचै आपरी घांटी वधावण लागौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वौ नैंना टावर री गळाई खोळा मैं पसरग्यौ अर आंख्यां मींचनै उण **सौरम** रौ अणछक आणद लूटण लागौ।

—अमरचूंनड़ी

सौरमास-सं. पु.—सूर्य के किसी एक राशि में रहने में रहने तक माना जाने वाला महीना, एक सूर्य संक्रान्ति से दूसरी सूर्य संक्रान्ति तक का समय।

सौरसेन-सं. पु. [सं. शौरसेन] १ वर्तमान व्रजमण्डल का प्राचीन नाम।

२ उक्त जनपद के निवासी।

सौरसेनी-सं. स्त्री. [सं शौरसेनी] शौरसेन प्रदेश में बोली जाने वाली एक प्राचीन भाषा का नाम, सौरसेनी अपभ्रंश।

सौरसेय-सं. पु. [सं.] स्वामिकार्तिकेय का एक नाम।

सौरास्ट्र-सं. पु. [सं. सौराष्ट्र] राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में स्थित गुजरात, काठियावाड़ का एक प्राचीन नाम।

रू. भे.—सोरट, सोरठ।

सौरि-सं. पु. [स. शौरि] १ विष्णु।

२ वसुदेव।

३ कृष्ण।

४ वलदेव।

३ शनिश्चर ग्रह।

सौरी-सं. स्त्री. [सं.] राजा कुरु की माता का एक नाम।

सौ'रौ, सौरौ—१ देखो 'सोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ ज्यूं त्यूं करनै वीस वरस तौ **सौरा** दौरा काढ सकूं।

—फुलवाड़ी

उ०—२ जबाब दियौ—माड पंचायती करणी **सौरौ** कांम नीं है। थांरी समझ व्है तौ थैं ई करौ।—फुलवाड़ी

(स्त्री. सौरी)

२ देखो 'सुसरौ'।

सौरच-सं. पु. [स. शौर्य] १ वीरता, साहस।

२ पराक्रम, पौरुष।

३ शक्ति, वल।

सौळ—देखो 'सोलह' (रू. भे.)

सौवस्तिक-सं. पु. [सं.] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५९ वां ग्रह।

सौवीर-सं. पु.—सिंधु नदी के आस-पास स्थित एक प्राचीन प्रदेश का नाम अथवा इस प्रदेश का निवासी।

रू. भे.—सुवीर।

सौस—देखो 'सूंस' (रू. भे.)

उ०—पण भागणी, तैं सूरज रौ **सौस** खाधौ हुंतौ तौ परमेस्वर पर दाद नहीं पावै।

—नाहरी हरणी धरमै कै वावत सांवतसी री वात

सौसनी—देखो 'सोसनी'।

सौह—देखो 'सोह' (रू. भे.)

उ०—१ **सौह** चढावण तेरह साखां, 'लखौ' 'प्राग' तण ओडण लाखां।—रा. रू.

उ०—२ आवै दाव कळहण दुनियांन **सौह** ऊचरै, वडी घर राव रूकां विभाड़ी। उधारी राड़ि रजपूत आंवेरि धरि, पहाड़ी कामां लै भोग पाड़ी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका री गीत

सौहगी—देखो 'सुहागौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरिरांम हम रांम का, रांम हमारा यार। ज्यूं सोनौ अर **सौहगी**, मिळग्या तारौतार।—अनुभववांणी

सौहड़—देखो 'सुभट' (रू. भे.)

उ०—आसत खग लियां करामत ईजत, **सौहड़ां** चेळा लियां समाथ। आठौ पौहर जरद ऊपावै, नाथ नवां जिम गोपीनाथ।

—गोपीनाथ री गीत

सौहतौ—देखो 'सोहितौ' (रू. भे.)

सौहरत-सं. पु.—१ प्रसिद्धि, ख्याति।

२ कीर्ति, यश।

रू. भे—सौरत।

सौहागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे.)

उ०—तद **सौहागण** वोली कथा मांहै कांही ओगण है धरम री

[illegible] स्कन्द की पत्नी की माता

स्कंद-सं. पु. [सं. स्कन्द] १ स्वामिकार्तिकेय का नाम।

२ शिव, महादेव।

३ बालक, पुत्र।

४ विद्वान, पण्डित।

५ शरीर।

६ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।

वि. वि.—उक्त नौ ग्रहों के नाम इस प्रकार है—स्कन्द, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेय।

रू. भे.—सकंद।

स्कंदछट, स्कंदछटी, स्कंदछठ, स्कंदछठी—देखो 'स्कंदसस्टी' (रू. भे.)

स्कंदजणणी, स्कंदजननी-सं. स्त्री. [सं. स्कंदजननी] स्कन्द की माता, पार्वती।

स्कंदजित, स्कंदजीत-सं. पु. [सं. स्कंदजित्] विष्णु।

स्कंदधर-सं. पु. [सं.] भगवान् विष्णु का नाम।

स्कंदपुरांण-सं. पु. [सं. स्कंदपुराण] अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

स्कंदमात, स्कंदमातरी स्कंदमाता, स्कंदमात्री-सं. स्त्री. [सं. स्कंदमातृ] १ स्वामिकार्तिकेय की माता, पार्वती।

२ नवदुर्गाओं में से एक दुर्गा।

रू. भे.—सकंदमात, सकंदमाता, स्कंदमात, स्कंदमातरी, स्कंदमाता, स्कंदमात्री, स्कंधमात, स्कंधमाता, स्कंधमात्री।

स्कंदसस्टी, स्कंदसस्टी, स्कंदसस्ठी-सं. स्त्री. [सं. स्कन्दषष्ठी] १ चैत्र-मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी, इस दिन स्वामिकार्त्तिकेय देव-सेनापति पद पर आसीन हुए थे।

२ स्कंद की भार्या एक देवी का नाम। (तांत्रिक)

रू. भे.—स्कंदछट, स्कंदछटी, स्कंदछठ, स्कंदछठी।

स्कंदापसमार, स्कंदापस्मार-सं. पु. [सं. स्कंदापस्मार] बालकों के प्राणघातक नौ ग्रहों या रोगों में से एक।

स्कंध-सं. पु. [सं. स्कन्धः] १ कन्धा।

२ शरीर, बदन।

३ सेना।

४ नृप, राजा।

५ नारियल।

६ शाखा, डाल।

७ आर्या छन्द का एक भेद।

८ [illegible] राम-लक्ष्मण की रक्षा करने वाला वानर।

९ [illegible] नाम।

स्कंधकवच-सं. पु. [सं.] कवच का वह भाग जो कंधे पर धारण किया जाता है।

स्कंधतर, स्कंधतरु-सं पु. [सं. स्कन्धः+तरुः] नारियल का पेड़।

स्कंधतरांण, स्कंधत्रांण-सं. पु. [सं. स्कन्धत्राण] कन्धे पर धारण किया जाने वाला एक प्रकार का कवच विशेष।

स्कंधफळ, स्कंधफल-सं पु. [सं स्कन्ध+फलः] १ नारियल का पेड़ या नारियल।

२ विल्ववृक्ष।

स्कंधमण, स्कंधमणि, स्कंधमणी-सं. पु [सं. स्कन्धमणि] एक प्रकार का मंत्र या तावीज।

रू. भे.—स्कंधमिण, स्कंधमिणि, स्कंधमिणी।

स्कंधमात, स्कंधमाता, स्कंधमात्री—देखो 'स्कंदमात' (रू. भे.)

स्कंधमिण, स्कंधमिणि, स्कंधमिणी—देखो 'स्कंधमण' (रू. भे.)

स्कंधाख्ख, स्कंधाक्ष, स्कंधाख-सं. पु. [सं. स्कंधाक्ष] देवताओं के एक गण का नाम।

स्कंधावार-सं. पु. [सं. स्कंधावार] १ सेना, फौज।

२ सेना का पड़ाव।

३ शिविर।

रू. भे.—सकंदवार, सकंदावार, सकंधवार, सकंधावार।

स्काउट-स. पु. [अं.] बालचर।

स्काउटिंग-सं. स्त्री. [अं.] बालचर का कार्य, अवस्था या भाव।

स्कूल-सं. स्त्री. [अं.] १ पाठशाला, विद्यालय।

उ०—पण अै सगळी बातां मन मैं सोचती ई रह जावती अर कदै स्कूल अर कदै कालेज अर उण री ढेर सारी पोथ्यां, उणां नैं पढावण नैं झांभरकै ई प्रोफेसर आ धमकती।—तिरसंकू

२ विद्यालय की इमारत, भवन।

रू. भे.—सकूल।

स्खलन-सं. स्त्री. [सं स्खलनं] १ चुवन, रिसन, टपकन।

२ रगड़न।

३ भूल-चूक।

स्खलित-वि. [सं.] १ चुआ हुआ, टपका हुआ।

२ गिरा हुआ।

स्टांप-सं. पु. [अं.] १ डाक का टिकट।

२ मोहर।

३ एक प्रकार का सरकारी कागज जो भिन्न२ मूल्यों के होते हैं। इस पर किसी प्रकार की पक्की (अपरिवर्तनीय) लिखा-पढ़ी की जाती है।

स्टाप, स्टाफ-सं. पु. [अं. स्टाफ] किसी कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी।

स्टीयरिंग, स्टीरिंग, स्टेयरिंग, स्टेरिंग-सं. पु. [अं.] कार, जीप, ट्रेक्टर, ट्रक आदि को नियंत्रित करने का यंत्र।

उ०—जीप त्यार खड़ी है। बै खुद स्टीयरिंग सम्हाळ्यां बैठ्यी है। दूजी कांनी लीना है अर बीच मैं मनैं बैठांण्यो है।—तिरसंकू

स्टेसरण, स्टेसन—देखो 'टेसरण' (रू. भे.)

स्टैंड–सं. पु. [अं.] १ पड़ाव, रुकाव ।
२ अड्डा ।
३ गाड़ियों के रुकने का स्थान ।
४ सहारा ।
५ स्थाम ।
उ०—वैजू रै कनै वारा वोर री दुरबीरण लाग्योड़ी दुनाळी भारी वंदूक अर लीना कनै हलकी अमरीकी गन जीं नैं जीप माथै लाग्योड़ै स्टैंड माथै राखनै निसांनौ बांध्यौ जा सकै है ।—तिरसंकू

स्टोव–सं. पु. [अं.] एक प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो टंकी में भरे तेल आदि से गर्म होकर (जल कर) ताप उत्पन्न करता है ।

स्तंब–सं. पु. [सं.] १ भुट्टा, बाल ।
२ भाड़ी ।
३ गुच्छा ।
४ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक ।

स्तंबतरण, स्तंबत्रण, स्तंबत्रिण–सं. पु. [सं स्तंब+तृण] घास, भाड़ी ।

स्तंबवन–सं. पु. [सं.] १ खुर्पी ।
२ हंसिया ।

स्तंभ–सं. पु. [सं. स्तम्भः] १ खम्भा ।
२ मूर्खता ।
३ रोग आदि के कारण होने वाली मूर्च्छा ।
४ गतिहीनता ।
५ सुन्नता, संज्ञाहीनता ।
६ तना ।
७ प्रतिबन्ध, रुकावट ।
८ साहित्य दर्पण के अनुसार एक प्रकार का सात्त्विक भाव ।
९ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक सप्तर्षि का नाम ।

स्तंभक–वि. [सं.] १ रोकने वाला, स्तंभन करने वाला ।
२ सम्भोग करते समय वीर्य को स्खलित होने से कुछ समय तक रोके रखने वाला ।

स्तंभकी–सं. स्त्री. [सं. स्तंभकिन्] एक देवी ।

स्तंभरण–सं. पु. [सं. स्तम्भनं] १ रुकावट, अवरोध ।
२ कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।
३ वीर्यपात रोकने वाली दवा ।
४ सम्भोग आदि के समय वीर्य को स्खलित होने से रोकने की क्रिया, अवस्था या भाव ।
५ देखो 'थंभरण' ।

स्तंभेसतीरथ–सं. पु. [सं. स्तंभेशतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसमें सौरभेयी नामक अप्सरा शाप वश ग्राह रूप में रहती थी । इसका उद्धार पांडुनंदन अर्जुन ने किया था ।

स्तंभेस, स्तंभेसवर, स्तंभेसुर, स्तंभेस्वर–सं. पु. [सं. स्तंभेश्वर] एक शिवलिंग का नाम जो विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुत व स्कंद द्वारा स्थापित किया गया था ।

स्तन–सं. पु. [सं. स्तनः] १ किसी स्त्री के उरोज, चूंची ।
उ०—एजु रुखमणीजी कै कठिन स्तन छै सु करि कहतां हस्ती तिरण का कपोल करि वरणया छै । नवी वेस का कवि कहै छै । वांणी करि रूड़ा वखांणी । स्तनां उपरि स्यांमता सोभै छै । सु जांणै जोवन का दांण दिखाळिया छै ।—वेलि टी.
२ मादा पशु या जानवरों के थन ।

स्तनधय–सं. पु [स. स्तनधयः] बालक, शिशु । (ह. नां. मा.)

स्तनांतर–सं. पु. [सं.] १ हृदय, दिल ।
२ एक प्रकार का सामुद्रिक चिन्ह विशेष जो स्त्रियों के स्तन पर होता है एवं वैधव्य का सूचक माना जाता है ।

स्तब्ध–वि. [सं.] १ गतिहीन, गतिरहित ।
२ सुन्न ।
३ सुस्त ।

स्तब्धता–सं. स्त्री. [सं.] स्तब्ध होने की अवस्था, दशा या हालत ।

स्तव, स्तवरण, स्तवन–सं. पु. [सं. स्तवः, स्तवनम्] १ स्तोत्र, स्तव ।
२ प्रशंसा, स्तुति, गुणगान ।
उ०—गुरु सांथइ रे चैत्य प्रवाडि करइ खरी, देवइ वांदइ रे सक्र स्तव पांचै करी । उपासिइ रे आवी इरिया पडी कमी, आगमणउ रे आलोयइ नीचउ नमी ।—स. कु.
रू. भे.—सतवन ।

स्तुति, स्तुती–सं. स्त्री. [सं. स्तुतिः] १ प्रशंसा, तारीफ ।
उ०—निज रोस रु ध्वेस सं कांम नहीं, उर हांम आरांम हरांम नहीं । गरवै स्तुति निंद समांन गिनै, हरवै न वनै नंहि विंद हनै ।—ऊ. का.
२ विरुदावली ।
३ ठकुरसुहाती, चापलुसी ।
४ देवी-देवताओं के गुणों का आदर भाव से पाठन करने की क्रिया या भाव ।
५ देवी का एक नाम ।
सं. पु.—६ शिव का एक नाम ।
रू. भे.—सतुति, सतूति, सतूती ।

स्तुभ–सं. पु. [सं.] भानु नामक अग्नि के छः पुत्रों में से एक ।

स्तोक–वि. [सं. स्तोक] १ तनिक, थोड़ा । (अ. मा.)
२ ह्रस्व, लघु ।
३ कुछ ।
४ निम्न ।

स्तोतर, स्तोत्र–सं. स्त्री. [सं. स्तोत्र] १ प्रशंसा, तारीफ ।
२ विरुदावली ।

स्तोम-सं. पु. [सं. स्तोमः] १ यज्ञ, हवन, होम।
 २ समूह।
 ३ विरुदावली, प्रशंसा।
 ४ धन, दौलत।
 रू. भे.—सतोम, सातोम, सातोमि।

स्त्रसतर, स्त्रसत्र, स्त्रस्तर, स्त्रस्त्र-सं. पु [सं. तृण+सस्तर] तृण शय्या।

स्त्रींद्रिय, स्त्रींद्री-सं. स्त्री. [सं. स्त्रीन्द्रिय] भग, योनि।

स्त्री-सं स्त्री [सं] १ नारी, औरत। (डि. को)
 २ पत्नी, जोरू।
 ३ व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्त रूप।
 ४ मादा जन्तु या प्राणी।
 रू. भे.—असतरी, अस्तरी, अस्त्रिय, अस्त्री, अस्त्रीय।

स्त्रीकरण-सं. पु [सं] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीकाम-सं. स्त्री [सं. स्त्री+काम] १ मैथुन हेतु अभिलाषी।
 २ भार्या प्राप्ति की कामना।

स्त्रीगमण, स्त्रीगमन-सं. पु. [सं. स्त्रीगमन] स्त्री से सम्भोग करने की क्रिया, मैथुन।

स्त्रीग्रह-सं. पु.—ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने जाते हैं। (ज्योतिष)

स्त्रीचिन, स्त्रीचिह्न-सं पु. [सं. स्त्रीचिह्न] १ स्त्री जाति के लक्षण।
 २ भग, योनि।

स्त्रीधन-सं पु.- स्त्रियों के छः प्रकार के वे धन जिन पर उनका पूर्ण अधिकार हो।

स्त्रीधरम-सं पु. [सं. स्त्रीधर्म] १ पत्नी या स्त्री का कर्तव्य।
 २ स्त्री का रजस्वला होना।
 उ०— दिन ऊगौ। ताहरां अहीरणी फूल नुं कह्यौ, राज जाड़ेचा ठाकुर छौ। अर हूं स्त्रीधरम हुती। म्हारौ छोरू नीमीयौ छै एक कागद रावळै हाथ रौ करि द्यौ।—नार्व फूलांणी री बात
 ३ मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीधरमणी, स्त्रीधरमिणी-सं. स्त्री. [सं. स्त्री+धर्मिणी] रजस्वला स्त्री।

स्त्रीप्रसंग, स्त्रीप्रसंग-सं पु [सं. स्त्रीप्रसंग] संभोग, मैथुन।

स्त्रीभोग-सं पु. [सं] संभोग, मैथुन।

स्त्रीमंत्र-सं. पु. [सं.] ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो।

स्त्रीमांनी-सं. पु. [सं. स्त्रीमानी] भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम।

स्त्रीरासि, स्त्रीरासी-सं. स्त्री. [सं. स्त्रीराशि] ज्योतिष के अनुसार स्त्री जाति की राशियां यथा—वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन।

स्त्रीलखणा, स्त्रीलखण, स्त्रीलखण-सं. पु. [सं. स्त्रीलक्षण] पुरुषों की ३२ लक्षणों में से एक।

स्त्रीलिंग-सं पु. [सं.] १ व्याकरण में स्त्रीवाचक एक प्रकार का लिंग।
 २ भग, योनि।

स्त्रीवरत—देखो 'स्त्रीव्रत' (रू. भे.)

स्त्रीवार-सं. पु. [सं.] ज्योतिष के अनुसार तीन वार जो स्त्रीजाति के माने जाते हैं—यथा—बुध, चंद्र और शुक्र।

स्त्रीवास-सं. पु [सं.] १ संभोग या मैथुन के समय उपयुक्त वस्त्र।
 २ संभोग या मैथुन के लिए उपयुक्त स्थान।

स्त्रीविसय, स्त्रीविसै-सं. पु. [सं. स्त्रीविषय] संभोग, मैथुन।

स्त्रीव्रत-सं. पु. [सं.] १ वह पुरुष जो अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री की कामना न करता हो।
 २ अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री की कामना न करने की क्रिया या भाव।
 रू. भे.—स्त्रीवरत।

स्त्रीसंग-सं. पु. [सं.] मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसंभोग-सं. पु. [सं.] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसमागम-सं. पु. [सं.] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसुख-सं. पु. [सं.] १ गृहस्थाश्रम का आराम व आनन्द।
 २ स्त्री से मिलने वाला आनन्द।
 ३ मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसेवण, स्त्रीसेवन-सं. पु. [सं. स्त्रीसेवन] सम्भोग, मैथुन।

स्थंभणौ-सं. पु.—पार्श्वनाथ का नाम।

स्थग-वि. [सं.] १ धूर्त, कपटी।
 २ ढीठ, लापरवाह।
 ३ गुण्डा, बदमाश।

स्थपत, स्थपति, स्थपती-सं. पु. [सं. स्थपति] १ राजा, शासक।
 २ कारीगर।
 ३ रथ हांकने वाला, सारथी।
 ४ कुबेर।
 ५ बृहस्पति।
 ६ अन्तःपुर का रक्षक।

स्थर—देखो 'स्थिर' (रू. भे.)

स्थळ-सं. पु. [सं. स्थल] १ भूमि, जमीन।
 २ भू-भाग।
 ३ जलरहित भूमि या वह भू-भाग जहां पानी की कमी हो।
 ४ मरुभूमि।
 ५ पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।
 रू. भे.—असतळ, असथळ, अस्तळ, अस्थळ।

स्थळकाळी-सं. स्त्री. [सं. स्थलकाली] दुर्गा देवी की एक सहचरी का नाम।

स्थांणु-सं. पु. [सं. स्थाणु] १ शिव, महादेव।

२ ग्यारह रुद्रों में से एक ।

३ एक प्रजापति का नाम ।

४ घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष ।

५ एक प्राचीन तीर्थ ।

६ एक प्राचीन ऋषि ।

स्थांन—सं. पु. [सं. स्थान] १ जगह, स्थल ।

२ भू-भाग, जमीन ।

३ मकान, घर आदि रहने की जगह ।

४ व्यर्थ या किसी कार्यवश हमेशा बैठने की जगह ।

५ मंदिर, देवालय ।

६ पद, ओहदा ।

७ उदासीन होकर बैठने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

रू. भे.—सथांन ।

स्थांनक—देखो 'थांनक' ।

उ०—ज्यूं पांच महाव्रत पचखी आधाकरमी **स्थांनक** निरंतर भोगवै । इत्यादिक अनेक दोख सेवै । तिण रौ प्रायस्चित पिण नहीं लेवै । औ मोटौ देवालौ लोच सूं नै तपस्या सूं कठै ऊतरै ।

—भि. द्र.

स्थांनकवासी—देखो 'थांनकवासी' ।

स्थांनजफ—सं. पु.—मुसलमानों का एक तीर्थ स्थल । (बां. दा. ख्यात)

स्थाई—देखो 'स्थायी' (रू. भे.)

स्थापन—देखो 'थापन' ।

स्थापननिक्षेप—सं. पु. यौ.—अर्हत् की मूर्ति का पूजन । (जैन)

स्थापना—देखो 'थापना' ।

स्थापनानिक्षेप—सं पु. यौ.—एक वस्तु के गुणों की किसी दूसरी ऐसी वस्तु में उसके गुणों की कल्पना करना जिसमें वह गुण न हों ।

स्थायी—वि. [सं.] १ हमेशा बना रहने वाला । (परमानेंट)

२ गीत का पहला चरण या पंक्ति, टेक ।

३ दृढ़, मजबूत ।

रू. भे.—थायी, स्थाई ।

स्थायीभाव—सं. पु. [सं.] मनुष्य के मन में सदा रहने वाले वे मूल तत्व या भाव जो विशिष्ट अवसर पर या अन्य कारण से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं । (साहित्य)

वि. वि.—इन्हीं भावों के आधार पर साहित्य के नौ रस स्थिर हुए हैं । ये भाव दूसरे भावों के आने पर भी स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण स्थायी भाव कहलाते हैं ।

रू. भे.—थायीभाव ।

स्थाळ—देखो 'थाळ' (रू. भे.)

स्थाळी—देखो 'थाळी' (रू. भे.)

स्थावर—सं. पु. [सं.] १ अचेतन, पदार्थ ।

२ पहाड़, पर्वत ।

३ स्थूल-शरीर ।

४ अचल सम्पति ।

वि.—१ जो हट न सके, स्थिर ।

२ जंगम का विलोम ।

३ अचल ।

स्थावरता—सं. स्त्री.—स्थावर होने की अवस्था या भाव ।

स्थित—सं. पु. [सं.] १ निवास, अवस्थान ।

२ अचल ।

३ उपस्थित, मौजूद ।

४ दृढ़, पक्का ।

५ बसा हुआ ।

६ वर्तमान ।

७ तैयार ।

स्थितव्विकासण, स्थितविवेकासन—सं. पु. [सं. स्थितविवेकासन] योग के चौरासी आसनों में से एक प्रकार का आसन विशेष, जिसमें हाथों तथा पैरों की अलग-अलग पलथी मारकर सीधा मर्यादापूर्वक बैठना होता है ।

स्थितता—सं. स्त्री.—स्थित होने की अवस्था या भाव ।

स्थिति—सं. स्त्री. [सं.] १ स्थित होने की क्रिया या भाव ।

२ टिकाव, ठहराव ।

३ हालत, दशा ।

४ पद, मर्यादा आदि के अनुसार समाज में मिलने वाला स्थान ।

५ ढंग, तरीका ।

६ सीमा, हद ।

रू. भे.—सथिति ।

स्थिर—वि. [सं.] १ स्थायी ।

२ सदा एक ही स्थिति में रहने वाला, निश्चल ।

३ जिसमें किसी प्रकार की चंचलता आदि न हो, शान्त ।

४ निश्चित, पक्का ।

५ दृढ़, मजबूत ।

६ निर्दय, निष्ठुर हृदय ।

सं. पु. [सं. स्थिरः] १. २८ योगों में से एक योग ।

२ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्रों संबंधी तृतीय योग ।

३ स्थिर राशियाँ—वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ । (ज्योतिष)

४ ४९ क्षेत्रपालों में से एक ।

५ शनिग्रह ।

६ देवता ।

७ पर्वत, पहाड़ ।

८ वृक्ष, पेड़ ।

९ शिव, महादेव ।

रू. भे.—समारत।

स्मारत-सं. पु. [सं. स्मार्त] स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक सम्प्रदाय का व्यक्ति।

स्मरति, स्मरती-सं. स्त्री. [सं. स्मृति] १ धर्म संहिता।

२ स्मरण शक्ति, याददाश्त।

३ अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम।

४ एक प्रकार का छंद।

५ अठारह की संख्या का सूचक शब्द। ✱

रू. भे.—समृत, समृति, समृत, समरति, समरती, सम्रती, सम्रिति, समृद।

स्म्रतिकार-सं. पु. [सं. स्मृतिकार] धर्म संहिता बनाने वाला, धर्मशास्त्री।

रू. भे.—समरतिकार।

स्म्रतिवेता-वि. [सं. स्मृतिवेत्ता] स्मृतियों का जानकार।

रू. भे.—समृतवेता, सम्रतिवेता।

स्यंगार—देखो 'सिंगार' (रू. भे.)

उ०—रस स्यंगार र हासरस, बिच जिण कवित बखांण। जाता-संग जिण नुं कहै, वरणव रांम वखांण।—र. ज. प्र.

स्यंगासण, स्यंगासन—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

स्यंघल, स्यंघलदीप, स्यंघलद्वीप—देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

उ०—कुकण कनवज नइ कनहटी, मरहठ नइ मुलवारी। स्यंघल सेनवंघ नो राजा, तें सवि लीया हकारी।—रुकमणी मंगळ

स्यंघासण, स्यंघासन—देखो 'सिंहासन' (रू. भे.)

उ०—बीच आंगण स्यंघासण बणाय, आभूसण कर त्रियै बैठ श्राय। अंतर फुलेल चिरचंत अंग, सभळिया किनका गोद अंग।
—बगसीरांम प्रोहित हीरां की वात

स्यंद-सं. पु. [सं. स्यन्दः] रथ, गाड़ी।

रू. भे.—स्यंध।

स्यंदण, स्यंदन-सं. पु. [सं स्यंदन] १ विशेषतः युद्ध में काम आने वाला एक प्रकार का रथ, गाड़ी। (डि. को.)

२ बहाव, कटाव।

३ जैनियों के अतीतकालीन तेईसवें तीर्थंकर का नाम। (स. कु.)

४ वायु, हवा, पवन।

५ जल, पानी।

६ चन्द्रमा, चांद।

७ घोड़ा, अश्व।

रू. भे.—संदण, संदन, संदि, संदी, सिंदण, सिंदन।

स्यंदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे.)

उ०—हार डोर कुच सोहइ, भरया मांग स्यंदूर। राखड़ी रतन प्रभोत मछरइ, जांणि उग्या सूर।—रुकमणि मंगळ

स्यंध—१ देखो 'स्यंद' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—१ अधर व्यंब सम अरुण, समह भुज नागरी ज सख। सिल समांन उर समर, अथघ सम स्यंध उदर अख।—र. ज. प्र.

उ०—२ राघव अनुरागी भव बडभागी, मति सुम लागी पथ मही। हरि संत कहाही जम भय नांही, स्यंध तिरां ही सुभ वसही।
—र. ज. प्र.

स्यंभ—देखो 'स्वयंभू' (रू. भे.)

उ०—तिण दी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है। बोलै स्रुत संम्रत स्यंभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है।
—र. ज. प्र.

स्यंमतकमण, स्यंमतकमणि, स्यंमतकमणी, स्यंममिण, स्यंमतमिणि, स्यंममिणी, स्यमंतकमण, स्यमंतकमणि, स्यमंतकमणी, स्यमंतकमिण, स्यमंतमिण, स्यमंतमिणी-सं. स्त्री. [सं. स्यमंतकमणि] एक प्रकार की बहुमूल्य मणि जिसको सत्यभामा के पिता ने सूर्य की तपस्या करके प्राप्त की थी।

स्यांणप—देखो 'सैणप' (रू. भे.)

उ०—१ होणहार सो हीज हुवो, स्यांणप थी क्या होय वै। राजा कोपै भी भरयो, वरजण सको कोय वै।—रीसाळू री वात

उ०—२ जांन रै आछै हीडै-चाकरी रो हकारी भरयो, अर बाकी सारी वातां भरमा-भरमी मैं ही राखी। स्यांणप सूं सौदो पटायो, वेटै री बाप नांव-नांमून मैं आयो।—दसदोख

उ०—३ हूनर करो हजार, स्यांणप चतुराई सहित। हेत कपट विवहार, रहै न छांना राजिया।—किरपारांम

स्यांणो—देखो 'सेणो' (रू. भे.)

उ०—१ अर स्यांणा लोकां कयो है सो कणी रा जनांना मांहे जाजे नहीं।—गांम रा धणी री वात

उ०—२ हरीया दुरमति सठकी, पिंड प्रांण लग होय। भावै स्यांणा वौह मिळो, सठ न समझै कोय।—अनुभववांणी

उ०—३ सब ही स्यांणा हुय रह्या, नहीं ईयांणो कोय। त्यांणो सोई जांणीयै, अनख ओळखै सोय।—अनुभववांणी

उ०—४ सगळी गायां इत्ती स्यांणी अर समझणी कै उण वेळा पूछड़ी ई नीं हिलावती। वादळ मन करतो जणा ई दूध चुरड़ लेतो।—फुलवाड़ी

उ०—५ लाड, मोह अर प्रीत मैं अबूझ, नादांन, छोटो टाबर जित्तो समझै, उत्तो स्यांणो, समझणो अर लांठो मोट्यार ई नीं समझै।—फुलवाड़ी

उ०—६ जिकै मूरखां अजरायत था, त्यांरो रो तो रंग लाल हुवण लागो। अर जिकै स्यांणा काचा था, त्यांरो रंग सपेती पकड़ लागो।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—७ मूळी री पापा रजवाड़ां मैं रैवणियो स्यांणो हाजरियो, राजनीत सूं रंग्योड़ी-मुंबरचोड़ी मिनख! ख्यात अर जात नैं जांणै,

विड़द अर वडाई वखांणै ।—दसदोख

उ०—८ स्यांणा पंडित आवै, भाड़ोळा काजी जावै। पंडित जाप करै, पूजारी माळा फेरै। जोतकी टीपणै मैं गिरै—गोचर संभाळै, कोतकी धूप खेवंता थका जोत करै।—दसदोख

(स्त्री. स्यांणी)

स्यांन—देखो 'सांन' (रू. भे.)

उ०—१ लाभ नहीं अहलोक नहीं परलोकह निरभय। सुमति नहीं ज्यां **स्यांन**, खांत ज्यां नहीं पाप खय।—र. ज. प्र.

उ०—२ पोहरै पधरावेह, **स्यांन** गमावै सहज मैं। दावै वेदावेह, मुनसी खावै मुरधरा।—ऊ. का.

उ०—३ **स्यांन** छोड वहै साध, रसा माता पितु रोवै। सुत तिरिया दुख सहै, जिकण दिस फेर न जोवै।—ऊ. का.

स्यांनमठ—वि.—मूर्ख, बेवकूफ। (अ. मा.)

स्यांनै—क्रि. वि.—किसलिए।

उ०—**स्यांनै** राखै छै इहां, स्युं रहिवा नौ कांम। हूं छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै आंम।—वि. कु.

स्यांम—सं. पु. [सं. श्याम] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। (अ. मा.)

उ०—१ **स्यांम** नदी कांठै सघण, तरवर **स्यांम** तमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहत **स्यांम** समाळ।—बां. दा.

उ०—२ कह म्हारी चिड़िया सुगन री वातां, कद आवैला म्हारा **स्यांम** धणी। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, बाट जोऊं थारी कदकी खड़ी।—मीरां

२ रामचन्द्रजी का एक नाम। (अ. मा.)

उ०—सुत तिण तणौ तिर सायर करि निज, **स्यांम** तणौ सिध कांम। लंका जाळि सीत सुध लायौ, रुळीयाईती कीधी स्रीस्यांम।—र. ज. प्र.

३ भगवान, ईश्वर।

४ एक प्राचीन देश का नाम।

उ०—१ रवद **स्यांम** कै रूम कै, सुनी राफसी सोय। साह हुकम चौड़ै स्रवण, सुण सोचिया सकोय।—रा. रू.

उ०—२ तिण री धाक ईरांन तूरांन रूम **स्यांम** फिरंग रूस चीन्ह म्हाचीन्ह ईव देसां देसां रा पातसाह ईण रा हुकम रा आधीन सारा डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ प्रयाग का अक्षयवट।

६ श्रीराग का पुत्र एक राग। (संगीत)

[सं. श्यामक] ७ सांवा नामक एक प्रकार का (कंगनी या चने की जाति का) कदन्न। (डिं. को.)

रू. भे.—सांऊं।

[स. श्यामा] ८ रात, रात्रि।

उ०—खासौ खुलासौ जितौ भी कदै आसौ करौ खुसी, वासौ वसै जासौ वळै पासौ नहीं वार। हासौ रखै करासौ ज्यूं 'ओपै' कहै भजौ हरि, **स्यांम** सौ विमांसौ नरां तमासौ संसार।—ओपौ आढौ

९ कृष्ण पक्ष।

उ०—१ अठ्ठारै तैंयासियै, चैत मास नम **स्यांम**। रूपक 'वंक' वणावियौ, धवळ पचीसी नांम।—बां. दा.

उ०—२ एकोतरै अठारसौ, सांवण दसमी **स्यांम**। बुध धुर रची वतीसका, पोखण सुकव तमांम।—बां. दा.

१० स्वामिकार्तिकेय का नाम। (डिं. को.)

११ बादल, मेघ। (अ. मा.)

१२ समय, वक्त। (अ. मा; ह. नां. मा.)

१३ छप्पय का पन्द्रहवां भेद। (र. ज. प्र.)

वि.—१ काला, कृष्ण। (ह. नां. मा.)

उ०—१ रेत रेत रेत मैं परेत सौ परचौ, **स्यांम** बारसेत ह्वै सचेत सौ करचौ। काळ है, अंदेस नां संदेस औ करचौ, देसनै विदेस वास त्रासतै डरचौ।—ऊ. का.

उ०—२ सरळ सच्चिकण **स्यांम** कंच, मुकता मांग मझार। तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—३ पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी **स्यांम** वसन गण। गौरै वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा।—र. ज. प्र.

२ देखो 'सांमी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ 'पाता' बोधस अग्गळा, बोलै जोध 'मुकन्न'। **स्यांम** गरज्जां ओछणा, तिकै अकज्जां तन्न।—रा. रू.

उ०—२ कमंध **स्यांम** कांमयं, जुटै अरद्ध जांमयं। मुड़ै घड़ा मलेछणी, विचार धार भज्जणी।—रा. रू.

उ०—३ सुख सेज दैण ढीलौ सदा, अमल लैण नै आखतौ। इण **स्यांम** हूंत आछी हुती, रांम कंवारी राखतौ।—ऊ. का.

उ०—४ **स्यांम** विना फागण इसड़ौ फीकौ लागै ओ, साग फीकौ ओ लूण विना, फागण फीकौ ओ।—लो. गी.

उ०—५ किसोयक समरथ **स्यांम** मेरी माय, किसोयक छोटौ देवरियौ। चंदरमा सौ **स्यांम** मेरी माय, लिछमण सौ छोटौ देवरियौ।—लो. गी.

३ देखो 'सांम' (रू. भे.)

४ देखो 'स्यांमा' (रू. भे.)

रू. भे.—सांम्य।

स्यांमकंठ—सं. पु. [सं. श्यामकंठ] १ शिव, महादेव।

२ मोर, मयूर।

स्यांमक—सं. पु. [सं. श्यामक] १ एक देश का नाम।

२ रामकपूर।

स्यांमकरण—सं. पु. [सं. श्यामकर्ण] वह घोड़ा जिसका सम्पूर्ण शरीर

[illegible] नेत्रों का रंग श्याम हो।
(शुभ) (शा. हो.)

रू. भे.—[illegible], [illegible]।

स्यांमकल्यांण-सं. पु. [सं. श्यामकल्याण] एक राग विशेष जो संध्या के समय गाई जाती है। (संगीत)

स्यांमकारतिक, स्यांमकारतिकेय, स्यांमकारितिक—देखो 'स्यांमीकारतिकेय' (रू. भे.) (नां. मा; ह. नां. मा.)

स्यांमग्रीव-सं. पु. [सं. श्यामग्रीव] एक प्रकार का सारस विशेष जिसकी गरदन काली होती है।

स्यांमचिड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की चिड़िया विशेष।

स्यांमज-सं. पु. [सं. शामज] १ हाथी, हस्ती। (अ. मा.)
२ स्याम देश का निवासी।
रू. भे.—सांमज, सांवज, सांमाज, सावज।

स्यांमजीरो—देखो 'स्याहजीरो' (रू भे.)
उ०—कमोद तुलछी स्यांमजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरव कपूर पोहप प्रमग हुरंबी सौरंभ कुमुमवा किय जगनाथ भोग ग्रैसी चौरासी भांति जिन्हु कै गंज दरसावै।—सू. प्र.

स्यांमण—देखो 'सांमण' (रू. भे.)

स्यांमणी—देखो 'सांमणी' (रू. भे.)

स्यांमतवाळ, स्यांमतमाळ-सं. पु. [सं. श्यामतमाल] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—स्यांम नदी कांठै सघण, तरवर स्यांमतमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—वां. दा.

स्यांमतर, स्यांमतरु-वि. [सं. श्यामतर] १ श्यामवर्ण का, सांवला।
२ श्याम के समान।
उ०—घर स्यांमा सरिस स्यांमतर जळधर, घेघूंबै गळि वाहां घाति। भ्रमि तिणि संध्या वंदन भूला, रिखिय न लखै सकै दिन राति।—वेलि

स्यांमता-सं. स्त्री. [सं. श्यामता] १ सांवलापन, कालापन।
उ०—१ कामिणि कुच कठिन कपोळ करी किरि, वेस नवी विधि वाणि वखांणि। अति स्यांमता विराजति ऊपरि, जोवण दांण दिखाळिया जांणि।—वेलि
उ०—२ नजि स्यांमता जांणि वपि ताजै, राकापति निकळंक छवि राजै। स्री चक्र एण रूप वणि आवै, आच हूंत पतिव्रता उठावै।
—सू. प्र.
उ०—३ सुंदर रूप अनूप स्यांमता, अंजण नयण मुनी रिख अंजै। नीलमाळदरसी छै तनपुर, गौरव कांम क्रोध अघ गंजै।
—र. ज. प्र.

स्यांमताळ, स्यांमताळू, स्यांमाताळू-सं. पु. [सं. श्यामतालु] एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसका तालू श्याम वर्ण का होता है।
(अशुभ) (शा. हो.)

स्यांमतीतर-सं. पु. [सं. श्याम+तित्तर] लगभग डेढ़ बालिश्त लंबा और सदा अकेला रहने वाला एक प्रकार का पक्षी।

स्यांमद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्यांमद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्यांमधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)
उ०—रजपूतां रै स्त्रीयां री तौ धरम पती रै लारै काठां चढ जाणौ नैं रजपूतां री धरम स्यांमधरम सारू तथा निज कुळ सारू तरवारां री धारां सूं वढ जावणौ।—बी. स. टी.

स्यांमधरमाई, स्यांमधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)
उ०—याकूब फरमायौ तू बधारणै लायक छै। स्यावास थारी स्यांमधरमाई नूं पछै उणनूं बधार मोटौ कियौ।—नी. प्र.

स्यांमधरम्म, स्यांमध्रम, स्यांमध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)
उ०—रटै अवर कथ 'रयण', सूर स्रंगार संपेखै। सरब धरम सिरपोस, स्यांमध्रम ध्रम सदेखै।—सू. प्र.

स्यांमधरमी, स्यांमध्रमी, स्यांमध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमनद, स्यांमनदी-सं. स्त्री. [सं. श्याम+नदी] यमुना नदी का नाम।
उ०—स्यांमनदी कांठै सघण, तरवर स्यांमतमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—वां. दा.

स्यांममंजरी-सं. स्त्री.—जगन्नाथजी के आस-पास की भूमि में [illegible] जाने वाली एक प्रकार की मिट्टी जिसे वैष्णव लोग पवित्र मा[illegible] हैं तथा उसका तिलक लगाते हैं। इसका रंग काला होता है।

स्यांमळ-सं. पु. [सं. श्यामल] काला रंग।
वि.—श्यामवर्ण का।

स्यांमला-सं. स्त्री. [सं. श्यामला] एक देवी।

स्यांमवायक-सं. पु. [सं. सामवाक्य] मित्र, दोस्त।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

स्यांमसुंदर-सं. पु. [सं. श्यामसुंदर] श्रीकृष्ण का एक नाम।

स्यांमांग-सं पु. [सं. श्याम+अंग] बुध ग्रह।
वि.—जिसका रंग श्याम हो।

स्यांमा-सं. स्त्री. [सं. श्यामा] १ राधिका का एक नाम।
उ०—स्यांमनदी कांठै सघण, तरवर स्यांम तमाळ। संजुत स्यांमा सायधण, साहब स्यांम समाळ।—वां. दा.
२ लक्ष्मी, रमा। (अ. मा.)
३ पृथ्वी, भूमि। (नां. मा.)
४ रात, रात्रि। (नां. मा.)
५ कोयल नामक पक्षी।
६ छाया।
७ छाया, प्रतिबिम्ब।
८ रुक्मिणी का नाम।

उ०—१ सांभळि अनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वंछती वर। हरि गुण भणि अपनी जिका हर, हर तिणि वंदै गवरि हर।—वेलि

उ०—२ संगि संति सखीजण गुरुजण स्यांमा, मनसि विचारि ए कहि महंति। कुसस्थळी हूंता कुंदणपुरि, किसन पधारया लोक कहंति।—वेलि

८ कालिका।

९ कस्तूरी।

१० यमुना नदी।

११ सोलह वर्ष की युवती।

१२ श्यामवर्ण की गौ, गाय।

१३ सुन्दरी, स्त्री।

१४ हल्दी।

१५ गुग्गुल।

१६ शीशम।

१७ तुलसी।

१८ नील।

१९ हर्रे।

२० गोरोचन।

२१ हरी दूब।

२२ पीपल, पिप्पली।

२३ मेरु की नौ पुत्रियों में से एक पुत्री का नाम।

२४ सवा या डेढ बालिश्त लंबा काले रंग का एक पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं।

वि. स्त्री.—काले रंग की।

रू. भे.—स्यांम।

स्यांमाधार—सं. पु. [सं. श्यामाधार] पीपल, पिप्पल। (अ. मा.)

स्यांमायन—सं. पु. [सं. श्यामायन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

स्यांमी—देखो 'सांमी' (रू. भे.) (नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ जिण विलोकि कहियौ जगजांमी, सिव छै सुखी सिवा तौ **स्यांमी**। कहि इम प्रभु आतिथ-ध्रम कीधौ, दखि प्रमांण आसण त्रण दीधौ।—सू. प्र.

उ०—२ व्रत जिग वर उपवास, धणी इण्या विना सूना। **स्यांमी** सेवा तणा, धणाखरा सुरग नमूना।—नारी सईकड़ौ

स्यांमीद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्यांमीद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्यांमीधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमीधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीधरम्मी, स्यांमीध्रमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्यांमीध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्यांमीध्रमी, स्यांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्या—देखो 'सा' (रू. भे.)

स्याई—देखो 'स्याही' (रू. भे.)

स्याजस, स्याजिस—देखो 'साजिस' (रू. भे.)

उ०—पछै पताई रावळ रै साळौ सइयौ वांकलियौ तिकेरौ वडौ मांमलौ, वडौ इतवार, गढी री कूंची तै वसू। तद पातस्याह सूं **स्याजस** कीवी। कह्यौ जू - म्हनै सगळां ऊपर करौ तौ हूं गढ री कूंची देऊं।—नैणसी

स्यात, स्याति, स्याती—वि.—१ पूर्ण, पूरा।

सं. पु.—१ समय, वक्त।

२ देखो 'सायद' (रू. भे.)

(यौ. घड़ीस्यात)

स्यातेक, स्याते'क—वि.—करीब, लगमग।

सं. पु.—१ घड़ी भर समय या तनिक समय।

२ देखो 'साते'क' (रू. भे.)

स्यादवाद, स्याद्वाद—सं. पु.—जैन दर्शन जिसमें नित्यत्व, अनित्यत्व, सत्त्व, असत्त्व आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्यात यही हो, स्यात वही हो आदि।

रू. भे.—सियवाय।

स्यापौ—देखो 'सोपौ' (रू. भे.)

उ०—गांव मैं **स्यापौ** छायोड़ौ, पांनड़ौ ई नहीं हिलै, चिड़ी रौ जायौ ई नहीं फरूकै, कुत्ता ई जांणै पताळ मैं पेठग्या। धवळै दिन रा गांव बिलकुल सून-सांन मसांण व्है ज्यूं लागै।

—रातवासौ

स्याफी—देखो 'साफी' (रू. भे.)

स्याबास—देखो 'साबास' (रू. भे.)

उ०—१ रांणी कही **स्याबास** नापै नूं नापौ आंपणौ हीज छै।

—नापा सांखला री वारता

उ०—२ देस देस सह कौ दियै, सूरां नूं **स्याबास**। ज्यांरौ कौतक देख जग, हुवै मुनिंद्रां हास।—बां. दा.

स्याबासणौ, स्याबासबौ—देखो 'साबासणौ, साबासबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुत **स्याबासै** सुपह, पांन दीधा निज पांणै। कम धरि कसै कटार, 'अजै' बह छक चित आंणै।—सू. प्र.

उ०—२ रटूं जणिहूं करूं वाधि रिण, तौ आपरौ बंधव 'अंजमल' तण। इम सुणि वयण हुवौ आणंदवर, **स्याबासियौ** बंधव राजेसुर।—सू. प्र.

स्याबासणहार, हारौ, (हारी), स्याबासणियौ—वि०।

स्याबासिओड़ौ, स्याबासियोड़ौ, स्याबास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्याबासीजणौ, स्याबासीजबौ—कर्म वा०।

स्याबासियोड़ौ—देखो 'साबासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्याबासियोड़ी)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] मुसलमान [illegible] नांमी पांम [illegible]। [illegible] जाता। [illegible] नाबै [illegible] है।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] मरद सुजांन। मोटी जायगा [illegible], [illegible] प्रान।—[illegible] आमेर रै धणी री वारता

स्याव—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

स्यार—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] रै [illegible] मैं नच करती गी ग्रेक [illegible]। ग्रर [illegible] रै [illegible] गोळी [illegible]। [illegible] ! जाणै मौत रै स्यार लागी।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] री [illegible] रै जाणै स्यार लागी। पग पटकता [illegible]—[illegible] झाळ झाळ ऊठै। वयू नाईडा, सेठां रै [illegible] म्हारै [illegible] हळाहळ झूठ बोलग्यो।—फुलवाड़ी

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

स्यारी-सं. स्त्री.—वह स्त्री जो मंत्रों द्वारा घी, दूध आदि की चोरी करती हो, डायन।

उ०—१ [illegible] गाम री, सोच करै स्यारी। धांन धणी री [illegible], [illegible]।—[illegible]

उ०—२ गांम, दूध ग्रर गाधी जेहड़ा गुणी मिनखां जांमें तथा मिनख नै देवपणो दिरावणै मैं सफल हुवै, बियैनै ग्राज री इक्कसवी सदी में ही ग्रगत-मुसटडा लोग सामखां डाकण-स्यारी कैवणै री हिम्मत कर लेवै है ग्रर निरपराध निस्सहाय ग्रबलावां री दुरदसा भी कर नाखै।—दसदोख

रू. भे.—सारी।

स्याळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

उ०—१ करसण सेही स्याळ बिळ, गिर त्रिय बांमण गाय। [illegible] माघणा, चाहै चित्त चलाय।—बां. दा.

उ०—२ कारज सरै न कोय, बळ प्राक्रत हिम्मत बिना। हल-कारयां की होय, रंग्या स्याळां राजिया।—किरपारांम

(स्त्री. स्याळण, स्याळणी)

मुहा.—१ स्याळया कद सिकार करी=कायर व्यक्ति कभी बहादुरी का कार्य नहीं कर सकता, [illegible] वालों के प्रति कथन, (मि. सियाळिया कद दही बिलोयो) २ स्याळ कैड़ा बोल्या कै मूंडा [illegible]=जो जैसा होगा वह वैसा ही कार्य करेगा. ३ स्याळ [illegible] भरी=एक ही प्रकृति के प्राणी एक दूसरे की बात पर जल्दी ही सहमत हो जाते हैं, ग्रप्रतिष्ठित व्यक्ति की [illegible] प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा दी जाने पर प्रयुक्त कथन. ४ स्याळ री मौत ग्रावै जणै गांव कांनी जावै=विनाश काले विपरीत बुद्धि, जब हानि का योग होता है तब बुद्धि भी विपरीत दिशा में कार्य करती है. ५ स्याळ सू सांड थोड़ो ई फाटै=अपनी क्षमता से अधिक कोई कार्य नहीं कर सकता।

स्याल, स्यालक-सं. पु. [सं. स्यालः, श्यालक.] जोरू का भाई, शाला। (व. स.)

उ०—"" " सतरि सहस्स गुजरात नु धणी, जुनुंढ चांपानेर प्रमुख विखम गढ लीधा, मनवंछित काज हेलां सीधा, सघला राजा आंण मनाव्या, सेव कराव्या, इसिउ एक राजाधिराज स्रीमहिमुद पातसाह वरणवीतउ सोभइ, ग्रहो स्याळक बोलि।—व. स.

रू. भे.—साल, सालक, सालिक, सिग्राल, सिग्रालक, सियाल, सियालक, सीग्राल, सीग्रालक, सीयाल, सीयालक।

स्याळकियो, स्याळकौ, स्याळक्यौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

(स्त्री. स्याळकी)

स्याळभुग्रा, स्याळभुवा, स्याळभूग्रा, स्याळभूवा-सं. स्त्री.—लोमड़ी।

उ०—लुळ खाखुय सायक वैण लगै, परधांन जगायौ दै हाथ पगै। ग्रख बोलत भूखिम स्याळभुग्रा, वरजातां ऐ मारग ना'र बुवा।—पा. प्र.

स्याळसींगी, स्याळियासींगी-सं स्त्री.—सिद्ध-योगियों के पास मिलने वाली एक अलौकिक बूंटी, जिससे किसी व्यक्ति को अपने वश में किया जा सकता है।

उ०—पाघ ऊपर चौकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। पण ग्रेक ग्रतीत री दियोड़ी यंत्र पाघ मै रहतौ ग्रौर महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्याळियासींगी सदा पाघ रै मांही रहती तिणसूं सरीर री रक्षा रहती।—पदमसिंह री बात

रू. भे.—सियाळसींगी।

स्याळियौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

स्याळू—१ देखो 'सीयाळू' (रू. भे.)

उ०—सी एक जागां कन्हा म्हां मुकातो कराय लेवौ। उपरां कर साख स्याळू ग्राई छै सी लोगां कन्है वहावौ।

—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ देखो 'साळु' (रू. भे.)

स्याळौ—देखो 'स्रगाळ' (ग्रल्पा; रू. भे.)

स्यावक-सं. पु. [सं. श्यावक] एक प्राचीन राजर्षि का नाम।

स्यावड़—१ देखो 'सावढ' (रू. भे.)

२ देखो 'सुवावड़' (रू. भे.)

स्यावड़माता—देखो 'सावढ' (१) (रू. भे.)

स्यावज—१ देखो 'सावज' (रू. भे.)

२ देखो 'स्यांमज' (रू. भे.)

स्यावळ, स्यावल-सं. पु. [सं. स्यावल] १ सूत की डोरी में बंधा लोह, पत्थर या अन्य धातु का वह गोल लट्टू, जिससे कारीगर दीवार की सीध देखते हैं।

२ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

रू. भे.—सहावळ।

स्याह–वि. [फा.] कृष्ण, काला ।

उ०—जरद् लाल सेत स्याह, जाळियां पखांण ए । सपत्त मैं खणा ग्रामास, ओपि असमांण ए ।—गु. रू. बं.

सं. पु.—१ काला रंग ।

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

स्याहगोस–वि. [फा.] जिसके कान काले हों, काले कान वाला ।

सं. पु.—वन-बिलाव ।

स्याहजवांन–सं. पु. यौ.—वह हाथी, घोड़ा या बैल जिसकी जीभ श्याम रंग की हो । (अशुभ)

स्याहजादौ – देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

उ०—जिका पातसाह रौ दसतूर जिका ही बसत वा आदमी दोढी में जाय जिणां नूं देखनैं जावा देवै । घणी हाजर रहै । किणही सूं स्याहजादौ छांनौ वात करै तद औ भी आय कांन देवै । .

—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात

स्याहजीरौ–सं. पु. यौ. [फा. स्याह + हिं. जीरा] १ काला जीरा ।

२ गर्म मसाले में दाने वाला एक प्रकार का मसाला । (अमृत)

रू. भे.—स्यांमजीरौ ।

स्याहज्यादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)

स्याहताळ, स्याहताळु, स्याहताळू—देखो 'स्याहजवांन' ।

स्याहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्जं, दखै जै ज्या बोल ग्रांनेक दुज्जं ।—र. ज. प्र.

स्याही–सं. स्त्री. [फा.] १ लिखने एवं छपाई आदि में काम आने वाला रंगीन तरल पदार्थ, इंक, मसि ।

२ देखो 'सेही' (रू. भे.)

३ देखो 'साही' (रू. भे.)

रू. भे.—सई, स्याई ।

स्याहीचूंस, स्याहीचूस, स्याहीसोख, स्याहीसोखतौ–सं. पु.—वह कागज जो स्याही को सोख लेता हो, सोखता कागज ।

रू. भे.—सईचूस ।

स्युं, स्यूं–सर्व. [गु.] १ क्या ।

उ०—१ मन लोभीड़ा मांनुस तन पांवी नै कारज स्युं कीधौ ।

—व. स.

उ०—२ तुम पासैं आव्या तणी रैं, अधिक ऊमाहउ थाय । पिण स्युं कीजइ साहिबा, आव्या नै छै अंतराय ।—वि. कु.

२ क्यों ।

उ०—सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस भीली, सांभलि मुझ वात रसीली । हठीली तेहनैं स्युं झूरै, तैं नजर थकी थयौ दूरै, हिव मुझ नै थापि हजूरै ।—वि. कु.

क्रि वि.—१ कैसे, किस प्रकार ।

उ०—स्युं कहुं कीरति राज तुम्हारी, तुमै छउ बाल ब्रह्मचारी हौ । राजुल नारी तैं विरहागर क्यारी, पोतां नी कर तारी हौ ।

—वि. कु.

२ साथ, से ।

रू. भे.—सिउं, सूं ।

स्यूढ–वि. [सं. समूढ] दीर्घ, बड़ा । (अ. मा.)

स्येन–सं. पु. [सं. श्येन] १ बाज नामक पक्षी ।

२ एक महर्षि ।

३ दोहे का एक भेद जिसमें १९ गुरु और १० लघु मात्राऐं होती हैं ।

स्येनगांमिण, स्येनगांमिन, स्येनगांमी–सं. पु. [सं. श्येनगामिन्] खर राक्षस के बारह अमात्यों में से एक ।

स्येनजित, स्येनजीत–सं. पु. [सं. श्येनजित्] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।

२ भीभ के मामा, एक महारथी का नाम ।

स्येनी–सं. स्त्री. [सं. श्येनी] १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम ।

२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री का नाम, जो पक्षियों की माता कही जाती है ।

३ पुरुवंशीय प्रवीर राजा की पत्नी का नाम ।

स्यौं, स्यौ–सर्व.—क्या, कैसा ।

उ०—इम कहि लेइ सीख सनेह सुं, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि, सुगुण नर एकलड़ौ पिण स्यौ डर तेहनैं, जगगुरु जेहनैं रे पूठि ।

—वि. कु.

स्रंखळ—देखो 'स्रंखळा' (रू. भे.)

स्रंखळक–सं. पु. [सं. शृंखलक] ऊंट ।

स्रंखळता–सं. स्त्री. [सं. शृंखलता] क्रमबद्ध या सिलसिलेवार होने की अवस्था या भाव ।

स्रंखळा, स्रंखला–सं. स्त्री. [सं. शृंखला] १ जंजीर, सांकल ।

२ हाथी के पैरों में बांधने की जंजीर ।

३ बेड़ी, हथकड़ी ।

४ क्रम, सिलसिला ।

५ सिक्कड़ ।

६ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार ।

रू. भे.—स्रंखळ ।

स्रंखळाबद्ध, स्रंखलाबध–वि. [सं. शृंखलाबद्ध] १ जंजीर से बंधा हुआ, जकड़ा हुआ ।

२ सिलसिलेवार, क्रमबद्ध ।

स्रंग–सं. पु. [सं. शृंग] १ चोटी, शिखर । (डि. को.)

उ०—१ कपोत कंठ पोत केम, मोह ओपमा मिळी । जिका तनूज भांणि जांणि, मेर स्रंग मंडळी ।—सू. प्र.

उ०—२ अंवा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्रंग प्लवङ्गम

[illegible] । [illegible] मास मवास, कुर्क घट पावस धाम कूवाफ ।
—मे. म.

उ०—३ ज्यों [illegible] उम्मल वर्ण त्यौं हेमाचळ का स्रंग [illegible] । जैसैं जोवन कैं आर्द नायिका की कटि गौण होइ । त्यौं [illegible] । पर [illegible] जंगमल अर उर कुच ऐं वढै ।
—वेलि टी.

२ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के सींग ।

उ०—१ [illegible] नग भाळ तूटै । जमराज कै राज-[illegible] तूटै । सो कैसै मस्तक गजराजूं कै आकार आरोध करै । सांगजै मावळ मैं स्रंग जोम सैं ग्रंथै ।—सू. प्र.

उ०—२ इस तरह केसरसिंघ पटैत नळै भाड़ भभकार सांमुहे [illegible] । [illegible] का दाय ओभकि भड़ स्रंगू का घाव दारुणूं [illegible] न पावै ।—सू. प्र.

३ मकान, दुर्ग आदि का ऊंचा भाग, कगूरा ।

४ चूड़, शिखर । (ग्रनेका.)

५ ऊंचाई ।

६ सींगी नामक वाद्य जो फूंककर बजाया जाता है ।

७ निशान, चिन्ह ।

८ कमल ।

९ अदरक ।

१० सोंठ ।

११ कुच, स्तन ।

१२ पानी का फुहारा, पिचकारी ।

१३ काम-वासना ।

१४ प्रमुखता, प्रधानता ।

१५ एक औषधि विशेष ।

१६ एक प्राचीन ऋषि का नाम । (रांमरासो)

उ०—आणी रिख स्रंग कहै विप्र एह, मुगता होय इंदरा जिम मेह ।—रांमरासो

१७ एक शिवपार्षद का नाम ।

[सं. शृक] १८ माला ।

उ०—[illegible] जोगण पावर चढवै, सिभ कमळां स्रंग । जग गीत [illegible] जाहर, सुजस हुवै सुढंग ।—र. ज. प्र.

१९ देखो 'स्रंगी' (रू. भे.)

उ०—१ मन मद जोजन स्रंग लख तण, रेण जन सत वरत [illegible] ।—र. ज. प्र.

उ०—२ [illegible] वपि बीजा-चळा, स्रंग कूंभायळा वीम [illegible] ।—[illegible]

रू. भे.—सिरग, सिरंग, सिंग, सिंगी, सींग ।

स्रंगक-सं. पु. [सं. शृंगक] १ सींग ।

२ कोई सींगदार चीज ।

३ शिखर, चोटी ।

रू. भे.—सिंगक ।

स्रंगणि, स्रंगणी-सं. स्त्री. [सं. शृंगिणी] १ गाय, गौ ।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ देखो 'सींगण' (रू. भे.)

उ०—वारण सिर तोड़ै खग वंकी, तांणै स्रंगणि अढारह टंकी । तांणै तठी जोम खळ तूटै, फील पांच एकणि सर फूटै ।—सू. प्र.

स्रंगधर-सं. पु. [सं. शृंगधर] १ पर्वत, पहाड़ ।

२ वृषभ, बैल ।

३ सींगधारी पशु ।

स्रंगबेर—देखो 'स्रंगवेर' (रू. भे.)

स्रंगरिख, स्रंगरिखि, स्रंगरिखी, स्रंगरिस, स्रंगरिसि, स्रंगरिसी-सं. पु. [सं. शृंगीऋषि] शमीक ऋषि के पुत्र का नाम ।

रू. भे.—सींगीरिख, सींगीरिखी, सींगीरिसी, स्रंगीरिख, स्रंगरिखी, स्रंगीरिसी ।

स्रंगवण-सं. पु.—शृंगार, बनाव ।

स्रंगवांण, स्रंगवांन-सं. पु. [सं. शृंगवान्] एक ऋषि का नाम ।

स्रंगवेस-सं. पु. [सं. शृंगवेस] कौरव कुलोत्पन्न एक नाग ।

स्रंगवेर-सं. स्त्री. [सं. शृंगवेरं] १ अदरक । (डि. को.)

२ सोंठ ।

३ गंगा के तट पर बसे एक प्राचीन नगर का नाम जो वर्तमान में मिर्जापुर के पास है, शृंगवेरपुर ।

रू. भे.—स्रंगबेर ।

स्रंगवेरपुर-सं. पु.—एक प्राचीन नगर जो निषादराज गुह की राजधानी थी ।

स्रंगाटक-सं. पु. [सं. शृंगाटक] १ सिंघाड़ा ।

२ दरवाजा, द्वार ।

३ चौराहा ।

४ प्राचीनकाल में खाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था ।

५ मस्तिष्क में वह स्थान जहां नाक, कान, आंख व जीभ से संबंधित चारों शिराएँ होती हैं ।

स्रंगार-सं. पु. [सं. शृंगारः] १ साहित्य के नौ रसों में से एक प्रसिद्ध एवं प्रमुख रस जो रसराज व रससम्राट माना जाता है ।

वि. वि.—शृंगार दो शब्दों के योग से बना है—शृंग तथा आर । शृंग का अर्थ कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि होता है । दूसरे शब्दों में काम अंकुरित होने को शृंग कहते हैं । 'आर' गत्यर्थ 'ऋ' धातु से बना है जिसका अर्थ यहाँ प्राप्ति है । इस प्रकार शृंगार कामोद्रेक अथवा काम वृद्धि की प्राप्ति का द्योतक है । साहित्य के नौ रसों में यह प्रधान माना गया है । इसी कारण शृंगार को विद्वान साहित्यकारों ने रस सम्राट माना है ।

इसके मुख्य दो भेद माने जाते हैं—संयोग तथा वियोग। मनुष्य की कामवासना से संबंधित वातों से मिलने वाला आनंद या सुख ही इस रस का मूल आधार है।

२ अपने आपको अधिक आकर्षक एवं सुंदर बनाने के लिए सुंदर वस्त्र, आभूपण आदि धारण करने की क्रिया, सजावट।

३ किसी मूर्ति, शरीर आदि में ऐसी चीज जोड़ना या लगाना कि वे और अधिक आकर्षक बन जाय।

४ शोभा, सौंदर्य।

५ स्त्रियों के सौभाग्य व सौन्दर्य प्रशाधन सामग्री, आभूपण आदि।

६ मैथुन, रति, सम्भोग।

७ श्याम, कृष्ण। ❀

८ देखो 'सिणगार' (रू. भे.)

रू. भे.—संगार, सरणंगार, सणगार, सयंगार, सिंगार, सिंघार, सिंणगार, सिणगार, सींणगार, स्यंगार, स्रिंगार।

स्रंगारजनमा, स्रंगारजन्मा—सं. पु. [सं. शृंगारजन्मा] कामदेव, मनोज।

स्रंगारजोनि, स्रंगारजोनी—देखो 'स्रंगारयोनि।

स्रंगारणौ, स्रंगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

उ०—सू दिल्ली अभसाह, चित्त ओछाह विचारै। कमधज्जां नव कोट, सुभट मन मोट स्रंगारै।—रा. रू.

स्रंगारणहार, हारौ (हारी), स्रंगारणियौ—वि०।

स्रंगारिओड़ौ, स्रंगारियोड़ौ, स्रंगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रंगारीजणौ, स्रंगारीजबौ—कर्म वा०।

स्रंगारभूखण, स्रंगारभूसण—सं. पु. [सं. शृंगारभूपण] सिंदूर।

स्रंगारमंडळ, स्रंगारमंडल—सं. पु. [सं. शृंगारमंडल] १ वह स्थान जहां प्रेमी-प्रेमिका क्रीड़ा करते हैं।

२ ब्रज का वह स्थान जहां श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था।

स्रंगारयोनि, स्रंगारयोनी—सं. पु. [सं. शृंगारयोनि] कामदेव, मनोज।

रू. भे.—स्रंगारजानि, स्रंगारजोनी।

स्रंगारवेख, स्रंगारवेस—सं. पु. [सं. शृंगारवेश] प्रेमी द्वारा प्रेमिका के पास जाते समय धारण किया जाने वाला वेश, पौशाक।

स्रंगारहाट—सं. स्त्री. [सं. शृंगारहाट] १ वह स्थान या वाजार जहां प्राय: वेश्याएं रहती हों, चकला।

२ वह स्थान जहां सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री मिलती हो।

स्रंगारिण, स्रंगारिणी—सं. स्त्री. [सं. शृंगारिणी] १ शृंगार करने वाली स्त्री।

२ एक प्रकार की रागिनी विशेष।

३ यथेष्ट शृंगार की हुई स्त्री।

स्रंगारियोड़ौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रंगारियोड़ी)

स्रंगारियौ—सं. पु.—१ वह व्यक्ति जो शृंगारकला में दक्ष हो।

२ देवमूर्तियों का शृंगार करने वाला व्यक्ति।

३ बहुरूपिया।

स्रंगारी—वि. [सं. शृंगारिन्] शृंगार सम्वन्धी, शृंगार का।

स्रगाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू. भे.)

स्रंगी—सं. पु. [सं. शृंगी] (स्त्री. स्रंगणी) १ बैल, वृप।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

२ सींग वाला पशु।

उ०—कै दंती स्रंगी किता, किता नखी वन जंत। समझाया दै दै सजा, सादूळै वळवंत।—वां. दा.

३ पर्वत, पहाड़। (अ. मा; नां. मा.)

४ वह घोड़ा जिसके कान की भौंरी के पास ही दो और भौंरियां हों। (शा. हो.)

५ हाथी, हस्ती।

६ पेड़, वृक्ष।

७ सिंगिया नामक जहर, विष।

८ महादेव, शिव।

९ एक प्राचीन देश का नाम।

१० शमीक के पुत्र एक ऋषि जिसके शाप से तक्षक ने परीक्षित को डसा था।

११ बरगद, वट।

१२ सोना, स्वर्ण।

१३ आंवला।

१४ देखो 'सिंगी' (रू. भे.)

रू. भे.—स्रंग, स्रींगी।

स्रंगीगिर, स्रंगीगिरि, स्रंगीगिरी—सं. पु. [सं. शृंगीगिरि] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि ने तपस्या की थी।

स्रंगीरिख, स्रंगीरिखी, स्रंगीरिसी—देखो 'स्रंगरिखी' (रू. भे.)

स्रंगेरी—सं. पु. [सं. शृंगेरी] दक्षिण में स्थित शंकराचार्य के मतानुयायी संन्यासियों का मठ।

स्रंगोत—सं. पु.—वीकावत राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

स्रंगोन्नति—सं. स्त्री. [सं. शृंगोन्नति] नक्षत्र, ग्रह आदि की एक प्रकार की गति। (ज्योतिप)

स्रंजय—सं. पु. [सं. सृञ्जय] १ उग्रसेन का दामाद व वसुदेव के भाई का नाम।

२ सूर्यवंशी राजा श्विलि के पुत्र का नाम, इनके सुवर्णष्ठीवी नामक पुत्र था।

३ उत्तम मनु के पुत्रों में से एक।

स्रंजयी—सं. स्त्री. [सं. सृंजयी] मजमान की दो पत्नियों के नाम।

स्रक—सं. स्त्री. [सं. सृक] १ माला, पुष्पहार। (अनेका.)

२ [illegible]।

३ [illegible]।

४ [illegible]।

५ [illegible]।

६ [illegible] में एक प्रकार का रोग।

७ भे.—[illegible]।

[illegible]-सं. पु. [सं. [illegible]] १ कपोल, गाल। (डि. को.)

२ मुख के दोनों ओर के कोने।

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. स्वर्ग+द्वार] सूरज, सूर्य। (नां. मा.)

[illegible]-सं. पु.—जल, पानी। (ह. नां. मा.)

[illegible], [illegible]—देखो 'स्वरगलोक' (रू. भे.)

उ०—[illegible] धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई [illegible]। [illegible] स्रगलोक वासिए, पितरे ही अतलोक प्री।
—वेलि

[illegible]-सं. पु.—स्वर्ग जाने का रास्ता।

[illegible]—देखो 'स्वरगविहारी' (रू. भे.) (नां मा.)

[illegible]-सं. पु. [सं. स्वर्ग[illegible]] कल्पवृक्ष। (अ. मा.)

[illegible], [illegible]-सं पु. [सं. शृगाल] (स्त्री. स्रगाळी) १ गीदड़, सियार। (डि. को.)

२ कायर, डरपोक व्यक्ति।

३ निर्दय व्यक्ति।

४ धूर्त, चालाक व्यक्ति।

रू भे.—[illegible], साळ, सियार, सियाळ, स्यार, स्याळ, स्रंगाळ।

[illegible];—[illegible], [illegible], साळयो, साळयो, साळचो, सियाळियो, सियाळयो, स्याळियो, स्याळचो।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ देवी [illegible] रूप मच्चं, देवी अव्यळा सव्वळा [illegible]। देवी स्रग मूं उतरी सिव साथै, देवी सगर सुत हेत [illegible] साथै।—देवि.

उ०—२ नमो [illegible] मुकुंद, नमो कळि राम [illegible]। नमो [illegible] निगम्म [illegible], नमो खळ-मार हयांनन [illegible]।—ह. र.

[illegible]-सं. पु—१ एक विश्वदेवा का नाम।

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible]-क्रि. स.—१ प्राप्त करना।

२ देखो 'सरजणी, सरजबी' (रू. भे.)

उ०—ब्रिजै तू स्रजै आहवां वाह बीसां, सजै तूं हियै हार झूझार सीसां। तुही हायळै सूळ सादूळ हक्कै, अणां मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म

स्रजणहार, हारौ (हारी), स्रजणियौ—वि०।

स्रजिओड़ौ, स्रजियोड़ौ, स्रज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रजीजणौ, स्रजीजबौ—कर्म वा०।

स्रणिका-सं. स्त्री. [सं. सृणिका] लार। (डि को)

स्रणी-सं पु [सं. श्रणिः] १ अंकुश।

उ०—दरसै मुख आगळ दांत दुवै, वक बादळ आगळ जांण वुवै। दुति चातक घंट स्रणी दमकै, चपला घण जांण घणी चपकै।
—मे. म.

[सं. सृणी] २ चंद्रमा, चांद।

स्रणीक-सं. पु. [स. सृणीक] १ वायु, हवा।

२ आग, अग्नि।

स्रत, स्रति, स्रती-सं. पु. [सं. सृति] मार्ग, रास्ता। (ह. नां. मा)

स्रद्धणौ, स्रद्धबौ—देखो 'सरधणौ, सरधबौ' (रू. भे.)

स्रद्धणहार, हारौ (हारी), स्रद्धणियौ—वि०।

स्रद्धिओड़ौ, स्रद्धियोड़ौ, स्रद्धचोड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रद्धीजणौ, स्रद्धीजबौ—कर्म वा०।

स्रद्धांजळि, स्रद्धांजळी-सं. स्त्री. [सं. श्रद्धांजलि] १ किसी बड़े व पूज्य व्यक्ति के लिए श्रद्धा व आदरपूर्वक कही जाने वाली बातें।

२ श्रद्धापूर्वक दी जाने वाली अंजलि।

स्रद्धा-सं. स्त्री. [सं. श्रद्धा] १ किसी धर्म, ईश्वर या पूज्य लोगों के प्रति मन में उत्पन्न होने वाला आदरपूर्ण भाव, आस्था या भावना।

उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूंगर बळती नैं देखै दुखदाई। रचनां ईस्वर री ईस्वरता रोचै, संम दम स्रद्धा विण संभव नहि सोचै।—ऊ. का.

२ किसी काम या बात की प्रबल इच्छा, वासना, उग्र कामना।

३ गर्भवती स्त्री के मन की अभिलाषा, वासना, दोहद।

४ घनिष्ट परिचय, घनिष्ठता।

५ सम्मान, प्रतिष्ठा।

६ चित्त की प्रसन्नता।

७ विश्वास।

८ वेद शास्त्र और आप्त वाक्यों में विश्वास।

९ वैवस्त मनुकी एक पत्नी, कामायनी।

१० दक्ष प्रजापति की कन्या एवं धर्म ऋषि की पत्नी जो शुभ व काम की माता थी।

११ सूर्य की एक कन्या का नाम।

१२ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी, अनुसूया।

१३ कर्दम प्रजापति की पुत्री जो अंगिरा ऋषि की पत्नी थी ।

रू. भे.—सरधा, सिरधा, स्रधा ।

स्रद्धादेवी–सं. स्त्री. [सं. श्रद्धादेवी] वसुदेव की पत्नी व गवेषण की माता का नाम ।

स्रद्धाळु, स्रद्धालु, स्रद्धाळू, स्रद्धालू–वि. [सं. श्रद्धालु] १ श्रद्धा रखने वाला, श्रद्धावान ।

२ अभिलाषी, इच्छावान ।

सं. स्त्री. [स. श्रद्धालुः] वह गर्भवती स्त्री जिसके मन में तरह-तरह की अभिलाषाएँ उत्पन्न हों ।

स्रद्धावति, स्रद्धावती–सं. स्त्री. [सं. श्रद्धावती] वरुणदेव की नगरी का नाम ।

स्रद्धियोड़ौ—देखो 'सरधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रद्धियोड़ी)

स्रधा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

उ०—**स्रधा** सुपनैं सुख संपति सोइ, क्रपा हरिरांम विना नहिं कोइ । सुनूं हरिरांम गुनूं किय साफ, महाप्रभु मांगत आगत माफ ।

—ऊ. का.

स्रप—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—गोम गज है पाए गाही, **स्रप** फुण सहस तपै सगळाही । लागा अंबर करण लडाई, पूरव दळ आय, पतसाही ।—गु. रू. बं.

स्रपाटी–सं. स्त्री.—चौंच, चंचु । (डि. को.)

स्रपी–वि.—तृप्त, संतुष्क ।

उ०—लगी नर है तिल हेक लगांण, जरद् मरद् कटै जंगमांण । सदा सिव तांम लियै खळ सीस, स्रुणी **स्रपी** चंड देत असीस ।

—सू. प्र.

स्रप्प—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—१ विनै जड़ाव वाजुवंध, सम्म पाट सोहिया । स्रिखंड साखि जांणि **स्रप्प**, मैणधार मोहिया ।—सू. प्र.

उ०—२ सांमळा गात डोहत्ति गै-सूंडयं, **स्रप्प** हींडै फिरै साख स्रीखंडयं । घूघरां पाखरां रोळ घंटा-सुरं, चोळ कप्पोळ सिंदूर मैं चम्मर ।—गु. रू. बं.

स्रब--देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—१ असंख्यात दत कमण गिणावै, असि गज द्रब नग पार न आवै । धिन धिन न्रप नभ वांणि हुई धुर, **स्रब** जग सिरै ज तूं दांनेसुर ।—सू. प्र.

उ०—२ सुणि प्रोहित हित वात सुहाई, विध **स्रब** कहि न्रप दसा वताई । सोभा नांम रूप विसतारा, सुपन चिहन कहिया न्रप सारा ।—सू. प्र.

उ०—३ पकवांनै पांनै फळै सुपुहपै, सुरंगै वसत्रै दरव **स्रब** । पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव ।—वेलि

स्रबकांमधुन, स्रबकांमधुनि–सं. पु.—वेद । (अ मा.)

स्रबकारण–सं. पु. [सं. सर्व+कारण] ईश्वर, प्रभु ।

उ०—नमौ बहुनांमिय बुद्ध, सेवक्क साधार सदासिव सुद्ध । नमौ **स्रबकारण** सारण स्यांम, उवारण गोकुळ इंद्र उदांम ।—ह. र.

स्रबजांण, स्रबजांणग–वि. [स. सर्वज्ञ] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञ ।

उ०—१ तूं **स्रबजांण** राज प्रभुताई, अजै अतीत परख नह आई । दिव नयणां चेतनै दरसियौ, हूं न्रप तूझ देखि इम हसियौ ।

—सू. प्र.

उ०—२ सीखंत वेद पंडत सकळ, दाता दांन विध दसदसौ । **स्रबजांण** उतम विद्या प्रसध, जगतगरु राजा 'जसौ' ।—सू. प्र.

रू. भे.—स्रवजांण ।

स्रबथा–क्रि. वि.—सर्वथा ।

स्रबदायक–सं. पु. [सं. सर्वदायक] कल्पवृक्ष । (अ. मा.; नां. मा.)

स्रबसेव–सं. पु.—सूर्य, सूरज ।

स्रब्ब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी । पति स्रापहुं देह पाई पखांणै, जिका दिव्य देहा हुई **स्रब्ब** जांणै ।—सू. प्र.

स्रब्बेस–सर्व.—१ सर्व, सब, समस्त ।

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजंगेस देवेस **स्रब्बेस** भेळा । विदेहं प्रतंग्या कहै एम वाकं, पुत्री जौ वरै सो ज तांणै पिनाकं ।

—सू. प्र.

२ देखो 'सरवेस' (रू. भे.)

स्रब्बवियाप, स्रब्बवियापी, स्रब्बवियाप, स्रब्बवियापी–वि. [सं. सर्वव्यापिन्] जो सर्वत्र और सर्व पदार्थों में व्यापक है ।

सं. पु.—१ ईश्वर ।

२ परब्रह्म ।

३ शिव, महादेव ।

स्रम–सं. पु. [सं. श्रमः] १ परिश्रम, मेहनत ।

उ०—१ जिण दीध जनम जगि मुख दै जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै । कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, **स्रम** कीधा विणु केम सरै ।—वेलि

उ०—२ धर कवि कोट जनम **स्रम** धावै, इण कुळ गुण पर पार न पावै । धर हरि अंस हुवै धरपत्ती, सस्त्रवंध सामरथ सकत्ती ।

—रा. रू.

क्रि. प्र.—करणौ ।

२ साहित्य में संचारी भावों के अंतर्गत एक भाव ।

३ दौड़धूप, प्रयत्न, प्रयास ।

४ थकावट, थकान ।

५ व्यायाम, कसरत ।

६ अभ्यास ।

७ खेद, रंज ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्रमकण-सं. पु. [सं. श्रमकण] परिश्रम करने से निकलने वाली पसीने की बूंदें ।

स्रमजळ, स्रमजल-सं. पु. [सं. श्रमजल] पसीना, स्वेद ।

स्रमण-सं. पु. [सं. श्रमण] १ सर्व पाप, दोषादि से रहित साधु, मुनि । (जैन)

२ भगवान महावीरस्वामी का उपनाम ।

उ०—साहण स्रमण सारयादिकै, मांडी मोटी साल । असनादिक निरजास नै, दांन दैऊ दग चाल ।—जयवांणी

३ बौद्ध भिक्षुक ।

वि. [सं. श्रमण] १ परिश्रमी, मेहनती ।

२ तपस्या करने में तत्पर, तपस्या का कष्ट सहन करने वाला ।

३ दुष्ट, पतित ।

४ पाखंडी, ढोंगी ।

५ देखो 'स्रवण' (रू. भे.)

उ०—१ नटगि नै स्रमण वेवड निहौ, कठै तात माता कठै । निगुण ना किणही जायौ नहीं, उठै आप आतिमि अठै ।—पी. ग्रं.

उ०—२ सूपनखा रो स्रमण, नाक वाढियौ निभै नरि । निमो सकति रघनाथ, अनंत पंचवटी ऊपरि ।—पी. ग्रं.

उ०—३ धरी स्रमण सभी परवांनै, अकस अमीर लगौ असमांनै । सुरगावी सुज बात सुण्यांनै, कमधांनाथ सुणी सुज कांनै ।

—रा. रू.

स्रमबिंदु-सं. पु. [सं. श्रमबिन्दु] पसीना, स्वेद ।

स्रमविभाग-सं. पु. [सं. श्रमविभाग] मजदूरों के संबंध का विभाग ।

स्रमसीकर-सं. पु. [सं. श्रमशीकर] श्रमबिंदु ।

स्रमिस्ठ-सं. पु. [सं. श्रमिष्ठ] अक्रूर एवं अश्विनी के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

स्रम्म—देखो 'स्रम' (रू. भे.)

स्रयांणी-सं. स्त्री.—स्त्री, औरत ।

स्रयक-सं. पु. [सं. सृक] घोड़ा, अश्व । (डि. नां. मा.)

स्रलोक, स्रलोकौ—१ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—स्रलोकां सुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी साढ रै राग गौसाळ गावै । बंसी वीण सैतार सैनाय वाजै, त्रमाळा घुरै मेघ माळा नगारै ।—मे. म.

२ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे.)

स्रवंति, स्रवंती-सं. स्त्री.—नदी, सरिता । (अ. मा; ह. नां. मा.)

स्रव-सं. पु. [सं. श्रवः] १ कान, कर्ण । (अ. मा; डि. को)

२ झरना, सोता । (डि. को.)

३ मूत, मूत्र, पेशाब । (डि. को.)

४ देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—१ तूं स्रव बीज अबीज सांइ सुभीयांणी ।

—केसौदास गाडण

उ०—२ माता मारीछ तणी तै मारि, आयौ इहिला नां आज उधार । बळाक्रम तुझ निमो स्रव वाप, चत्रभुज आप चढावै चाप ।

—पी. ग्रं.

स्रवजांण—देखो 'सरबजांण' (रू. भे.)

स्रवण-सं. पु. [सं. स्रवनं] १ चुआव, टपकाव ।

२ पसीना, स्वेद ।

३ मूत्र, पेशाब ।

[सं. श्रवणं] ४ कान, कर्ण । (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ धर अंबर रज डंबर अंधारां, जोगण करि चवसठि जैकारां । आतसवांण चिला मझि आंणै, तेज अमोघ स्रवण लगि तांणै ।—सू. प्र.

उ०—२ जिहा न बोलै झूठ, स्रवणां झूठ न सांभळै । वरजै कुण वैकूठ, माधव दरगह मोतिया ।—रायसिंह सांदू

उ०—३ सुणि स्रवणि वयण मन माहि थियौ सुख, झमियौ तासु प्रणांम करि । पूछत पूछत ग्यौ अंतहपुरि, हुऔ सुदरसण तणौ हरि ।—वेलि

५ गर्भपात ।

६ स्तन ।

७ कान से प्राप्त होने वाला ज्ञान, अनुभूति ।

[सं. श्रवणः] ८ तीर के आकार का सत्ताईस नक्षत्रों में से बाइसवां, नक्षत्र । (ज्योतिष) (अ. मा; नां. मा.)

उ०—स्रवण नखित्र मझ जनम तास सुण, कहियौ सरव गाह चौ कारण । गाथा नाम छत्रीस गिणावै, ग्रंथ अनेक वडा कवि गावै ।—र. ज. प्र.

९ नवधा भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति जिसमें आराध्य देव के चरित्र कथा आदि का श्रवण करते हैं ।

१० शेषनाग ।

११ मुरासुर के सात पुत्रों में से एक, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

१२ सोम की सत्ताईस स्त्रियों में से एक स्त्री का नाम ।

१३ अक्रूर एवं अरुणा के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक ।

१४ एक तपस्वी जो वैश्य पिता एवं शूद्र माता का पुत्र था । इसकी मृत्यु दशरथ के हाथों हुई ।

वि. वि.—यह अपने माता-पिता का बड़ा ही भक्त था । अपने अंधे माता-पिता की काशीयात्रा की अभिलापापूर्ति हेतु उन्हें कन्धे पर बिठाकर काशीयात्रा प्रारम्भ की । यात्रा के दौरान यह एक बार रात को जलाशय से पानी लेने गया था । उस समय इसके पानी भरने की आवाज से इसे कोई वन्य प्राणी समझकर मृगया हेतु

आये दशरथ ने इस पर शरसंधान किया और इसकी मृत्यु हो गई।

अपनी असावधानी से हुई ब्रह्महत्या से दशरथ विह्वल हुआ किन्तु इसने उसका समाधान किया। तत्पश्चात् इसके माता-पिता ने दशरथ को पुत्र के शोक से पीड़ित होकर मृत्यु पाने का शाप दिया। इसकी अकाल मृत्यु के कारण इसके माता-पिता की भी दुख से मृत्यु हो गयी।

रू. भे.—सरवण, सवण, स्रमण, स्रव्वण।

स्रवणद्वादसी–सं. स्त्री. [सं. श्रवणद्वादशी] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की श्रवण नक्षत्र में होने वाली द्वादशी।

स्रवणपथ–सं. पु.—वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है, कान।

स्रवणपाल, स्रवणपालि, स्रवणपाली–सं. पु. [सं. श्रवण+पालिः]
१ कान की नोक।
२ कान में धारण किया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण विशेष।
उ०—''' मणिजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरण्णसर कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेसक नुटक संकलिक स्रवणपीठ **स्रवणपाल** वैस्टिक हस्तसंकलिका''''इति आभरणांति।
—व. स.

स्रवणपीठ–सं. पु. [सं. श्रवणपृष्ठः] कान में धारण करने का एक आभूषण विशेष।
उ०—''''मणिजालक रत्नजालक मांनक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरण्णसर, कदंबपुस्प कललभंगक अभ्रमेसक नुटक संकलिक **स्रवणपीठ** स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसंकलिका '''इति आभरणांनि।
—व. स.

स्रवणौ, स्रवबौ–क्रि. अ. [सं. श्रवणं=श्राव] १ वहना।
२ बरसना।
उ०—१ जळजाळ **स्रवति** जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आधोफरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल।—वेलि
उ०—२ नाइका आउस दीध नरींद. आंणी रिख संग **स्रवै** जिम इंद।—रांमरासौ
३ झरना, रिसना, चूना।
उ०—लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस। रटति पूत मिसि मधुप रूंखराइ, मात **स्रवति** मधु दूध मिसि।—वेलि
४ टपकना, गिरना।
५ सुनना।
उ०—वंभण मिसि वंदै हेतु सु बीजौ, कही **स्रवणि** संभळी कथ। लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ।—वेलि

स्रवणहार, हारौ (हारी), स्रवणियौ—वि०।

स्रविओड़ौ, स्रवियोड़ौ, स्रव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रवीजणौ, स्रवीजवौ—भाव वा०।

स्रवत–सं. पु. [स. स्रष्ट] ईश्वर। (नां. मा.)

स्रवता–सं. पु. [सं. सविता] सूर्य, सूरज। (डिं. को.)

स्रवती–सं. स्त्री.—नदी। (ह. नां. मा.)

स्रवदायक–सं. पु. [सं. सर्वदायक] कल्पवृक्ष। (अ. मा; नां. मा.)

स्रवमंगळा, स्रवमंगला—देखो 'सरवमंगळा' (रू. भे.) (अ. मा.)

स्रवस–सं. पु. [सं श्रवस्] १ दक्षसावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।
२ भृगु ऋषि के पुत्रों में से एक।
३ अमिनाभ देवों में से एक।

स्रवसार–सं. पु.—शब्द, ध्वनि। (अ. मा.)

स्रवाड़ा–सं. पु.—कथा, वात, वृत्तान्त।

स्रवियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वरसा हुआ. २ टपका हुआ, गिरा हुआ. ३ रिसा हुआ, चूआ हुआ. ४ बहा हुआ. ५ सुना हुआ।
(स्त्री. स्रवियोड़ी)

स्रविस्टा, स्रविस्ठा–सं. पु. [सं. श्रविष्ठा] १ घनिष्ठा नक्षत्र।
२ श्रवण नक्षत्र।

स्रवेति, स्रवेती–सं. स्त्री.—नदी, सरिता। (ह. नां. मा.)

स्रव्व—देखो 'सग्व' (रू. भे.)

स्रसतर—देखो 'स्रस्तर' (रू. भे.) (डिं. को.)

स्रस्ट, स्रस्टा–सं. पु. [सं. स्रष्टृ] १ ब्रह्मा।
२ विष्णु।
३ शिव, महादेव।
४ ईश्वर।
वि.—१ सृष्टि का निर्माता, कर्त्ता।
२ देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)
उ०—जग रखवाळ जगतचौ जांमी, सुरनर इस्ट **स्रस्ट** चौ सांमी।
—रा. रू.

स्रस्टि–सं. स्त्री. [सं. सृष्टिः] १ संसार, विश्व।
उ०—१ नमौ नमांमी अंतरयांमी, सरव स्वांमी **स्रस्टि** ए। वंदौ सदाई सुखदाई, चित्त आई इस्ट ए।—करुणासागर
उ०—२ नमौ अपरम्म नमौ अखिलेस, नमौ अव्यक्त नमौ सरवेस। नमौ ॐ रूप नमौ ऊंकार, नमौ अजरांमर **स्रस्टि** आधार।—ह. र.
२ संसार के चराचर प्राणी व पदार्थ।
३ पृथ्वी, जमीन।
४ निर्माण, रचना।
५ कंस के एक भाई का नाम।
६ एक देवी का नाम।
रू. भे.—ससटी, सिसट, सिसटी, सिस्टी, स्रस्ट, स्रस्टि, स्रस्टी, स्रिस्ट, स्रिस्टि, स्रिस्टी।

स्रस्टिकरता–सं. पु. [सं. सृष्टिकर्तृ] १ ब्रह्मा।
२ सृष्टि की रचना करने वाला, ईश्वर।

स्रस्टिवेल, स्रस्टिवेलि, स्रस्टिवेली–सं. स्त्री.—एक प्रकार की लता गिलोय।

उ०—संगाहूनी सतावरी, स्रस्टिवेलि नड सोम। सायरि सारस गोमटी, दूर्गामह परि रोम।—मा. कां. प्र.

स्रस्टी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

उ०–सारी स्रस्टी में कुंडळ छळ करियौ, भारी हा हा! रव भूमंडळ भरियौ। वसुधा काळी री ताळी तड़ वागी, भिड़ियां सोनां री निड़ियां पड़ भागी।—ऊ. का.

स्रस्टीवार–सं. पु.—सृष्टि के क्रमानुसार।

उ०—निरद्वंद नाथ आश्रम अनाथ वह स्रस्टीवार प्रलयांत पार। विस्रामव्यूह गोतीत गूढ, निरगुण निरीह आधार ईह।—ऊ. का.

स्रस्तर–सं. पु. [सं. संस्तर:] १ शय्या, बिस्तर।

२ घास, फूस आदि का आसन।

रू. भे.—सरसतर।

स्रांत–वि. [सं. श्रांत] १ परिश्रम से थका हुआ।

२ दु:खी, खिन्न।

३ जितेन्द्रिय। (डि. को.)

४ जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो।

सं. पु.—साधु, तपस्वी।

स्राद्ध–सं. पु. [सं श्राद्धम्] १ श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला कार्य।

२ वह कृत्य जो सनातनी हिंदुओं में शास्त्र के विधानानुसार पितरों के उद्देश्य से तीर्थ स्थानों में किया जाता है।

उ०—इसड़ा पुरांण रा वचन सांभळ संग साथ करि गयाजी हालियौ। तेथी जाय स्नांन दांन स्राद्ध क्रिया करि पिंडदांन करणौ लाग्यौ।—वैताळ पच्चीसी

वि. वि.—श्राद्ध अपने मृत प्रियजनों की आत्मशांति के लिए किया जाता है। प्राय: श्राद्ध मृत्यु की वर्षगांठ पर या अमावस्या के दिन किया जाता है। इस दिन महाविष्णु के ध्यान के पश्चात पितरों के प्रीत्यर्थ तर्पण श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन करवाते हैं। गया, बद्रीनाथ आदि पुण्य स्थलों पर श्राद्ध करने से दिवंगत आत्मा को विष्णु पद की प्राप्ति होती है, ऐसा विश्वास किया जाता है। यह कृत्य आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में किया जाता है। इसे पितृपक्ष भी कहते हैं।

३ आश्विन मास का कृष्ण पक्ष।

४ आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में मृत व्यक्ति या पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कृत्य या कर्म।

रू. भे.—सराद, सराध, साद, साध, स्राध।

स्राद्धकरता–सं. पु. [सं. श्राद्धकर्ता] श्राद्ध करने वाला व्यक्ति।

स्राद्धदेव, स्राद्धदेवता–सं. पु. [सं. श्राद्धदेव] १ मार्कण्डेय पुराणानुसार वैवस्वत मनु का एक नाम जो श्रद्धा का पति था।

२ यमराज, धर्मराज।

३ ब्राह्मण।

रू. भे.—साददेव, साधदेव।

स्राद्धपक्ख, स्राद्धपक्ष, स्राद्धपख–सं. पु. [सं. श्राद्धपक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष।

रू. भे.—सरादपक्ष, सरादपख, सराधपक्ष, सराधपख, सादपख, सादपक्ष, साधपख।

स्राद्धपूनम, स्राद्धपूरणिमा–सं. स्त्री. [सं. श्राद्धपूर्णिमा] भादो मास की पूर्णिमा।

रू. भे.—सरादपूनम, स्राधपूनम, स्राधपूरणिमा।

स्राध—देखो 'स्राद्ध' (रू. भे.)

स्राधपूनम, स्राधपूरणिमा—देखो 'स्राद्धपूनम' (रू. भे.)

स्राप—देखो 'सराप' (रू. भे.)

उ०—१ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूंत गोतम्म तारी। पति स्राप हूं देह पाई पखांणौं, जिका दिव्य देहा हुई स्रव्व जांणै।—सू. प्र.

उ०—२ तरै इण वूट कह्यौ—मैं तौ थांनूं वरजियौ थौ। पण थै मांनियौ नहीं। हमैं गोहिलां सूं खेड़ जाज्यौ। पड़िहारां सूं मंडोवर जाज्यौ। इणां दोनां ही वूंट स्राप देनै उड़ गई।—नैणसी

उ०—३ इतरी कहि भरमल बोली—जौ रै पापी थै आया, सौ बुरी करी। जुंवाई कर मारणौ न थौ। इण तरह कासू सिध करस्यौ। थांनूं महापाप स्राप लागसी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

स्रापणौ, स्रापबौ—देखो 'सरापणौ, सरापबौ' (रू. भे.)

उ०—इण रा न्याय रौ कायदौ इण नूं न पहुंचौ छै नै अन्याई स्रापियौ सारा संसार रौ तौ अन्याई पणा रौ तोटौ उणां नूं न पहुंच्यौ छै।—नी. प्र.

स्रापणहार, हारौ (हारी), स्रापणियौ—वि०।

स्रापिओड़ौ, स्रापियोड़ौ, स्राप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

स्रापीजणौ, स्रापीजबौ—कर्म वा०।

स्रापियोड़ौ—देखो 'सरापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. स्रापियोड़ी)

स्रायक–वि. [सं. श्रव्[बरसाने वाला, देने वाला।

उ०—१ सूर प्रभवती तेज, तेज नह इम्रत स्रायक। यिम्रत स्रायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक।—र. ज. प्र.

उ०—२ नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सयण। भगत-विछळ मन महण सुभायक, निमौ सुधा स्रायक नयण।—र. ज. प्र.

स्राव–सं. पु. [सं. स्राव:] १ बहाव, रिसाव, टपकाव।

२ गर्भपात, गर्भस्राव।

३ पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं के भीतरी अंगों से निकलने वाला तरल पदार्थ, रस।

४ युवनाश्व प्रथम का पुत्र, शावस्त ।

उ०—आरद्र जेयसुत वंस ओप, जै सुत जवनासव व्रह्म जोप ।
संभ्रम जवनासव हुवौ स्राव, व्रहदस्व जेण सुत तप वधाव ।
—सू. प्र.

स्रावक, स्रावग–सं. पु [सं. श्रावक] (स्त्री. स्राविका) १ शिष्य, अनुयायी ।

उ०—१ पाली मैं एक जणौ भीखणजी स्वांमी सूं चरचा करतां ऊंधौ अवलौ बोलै । कहै—थांरा **स्रावक** इसा दुस्टी सौ किणही रा गला मांहि थी पासी नहीं काढै ।—भि. द्र.

उ०—२ स्वांमीजी रा **स्रावकां** रै संका घालवा रौ उपाय करवा लागा । जद स्त्रावक पिण उणां रै ठागा रौ उघाड़ करवा लागा ।
—भि. प्र.

२ जो बारह सूत्रों का पालन करता हो, जैन धर्मानुयायी, जैनी ।

उ०—१ एतौ कुंवर सुबाहु तिण समै, **स्रावक** हुवौ छै आयौ रे ।
भेद जीव अजीव ना ओलख्या, जांण्या भलै पुण्य नै पायौ रे ।
—जयवांणी

उ०—२ परंतु प्रथ्वीराज रौ मंत्री उणरा उक्तरूप इंद्रजाळ रा उव्दंघन मैं न आयौ र **स्रावक** रा प्रेरिया समस्त ही फंद जांण लिया ।—वं. भ.

उ०—३ पंच महाव्रत जै धरइ गति पांमइजी, **स्रावक** ना व्रत बार देवगति पांमइ जी । ध्यांन भलुं हियड़इ धरइ गति पांमइ जी, पालइ सील उदार देवगति पांमइ जी ।—स. कु.

३ वौद्ध संन्यासी ।

४ जैन संन्यासी ।

५ धर्मोपदेश सुनने वाला, श्रोता ।

७ वौद्ध भक्त ।

वि.—१ चुआने वाला, बहाने वाला ।

२ सुनने वाला ।

रू. भे.—सावक, सावग ।

स्रावगी–सं. पु. [सं. श्रावगी] जैन स्रावक, जैनी ।

उ०—१ एक दिन घणा **स्रावगिया** स्वांमी नैं कह्यौ—आप वस्त्र न राखौ तौ आपरी करणी भारी घणी । जद स्वांमीजी कह्यौ—म्हें स्वेतांवर सास्त्र थी घर छोडया है । तिण मैं तीन पछैवड़ी चोलपटौ आदि कह्या है जिणां सूं राखां हां ।—भि. द्र.

उ०—२ सांमजी रांमजी बूंदी रा वासी । **स्रावगी** जाति रा बेद । दोनूं भाई वेला रा (जोड़ै जनम्या) । उणींयारौ सूरत एक सरीखी दिसै । केलवै. दीक्षा लेवा आया ।—भि. द्र.

उ०—३ हरीया कळिका वंभना, करम करै किरसांन । का तौ होवै **स्रावगी**, सेवै मड़ा मसांन ।—अनुभववांणी

रू. भे.—सरावगी, सावगी ।

स्रावण–वि.—१ देने वाला, चुआने वाला, बरसाने वाला ।

उ०—प्रफुलंत अथध दतवार, तप अोज सरण **स्रावण** अम्रत ।
तन एक रांम दसरथ सुतण, विहद सात गुण निरवहत ।
—र. ज. प्र.

२ सांवण संवधी, सांवण मास का ।

३ देखो 'सांवण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ अगिणत दांन निजर पह आगै, लूंबां किर **स्रावण** झड़ लागै । उर 'अगजीत' हरख अधकायौ, सरद निसा कि उदधि सवायौ ।—रा. रू.

उ०—२ तद भरमल अरज कीवी, "जौ मनैं वैण देवौ तौ थांनुं घोड़ां पुहचाऊं ।" तद कुंवरसी कह्यौ, "किसौ वैण मांगौ ?" तद इण कही, "**स्रावण** री तीज अठै पधारौ ।"
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ देखो 'स्रावण' (रू. भे.)

स्रावणि, स्रावणी–सं. स्त्री [सं. श्रावणी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मण तर्पण यज्ञोपवीत धारण करते हैं एवं इसी दिन रक्षाबंधन त्यौंहार होता है ।

२ देखो 'सांवणी' (रू. भे.)

स्रावणौ, स्राववौ–क्रि. स.—१ बरसाना ।

२ गिराना, टपकाना ।

३ बहाना ।

स्रावणहार, हारौ (हारी), स्रावणियौ—वि० ।

स्राविओड़ौ, स्रावियोड़ौ, स्राव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

स्रावीजणौ, स्रावीजवौ—कर्म वा० ।

स्रावस्त–सं. पु. [सं. श्रावस्त] इश्वाकुवंशीय राजा जो वृहदश्व का पिता एवं युवनाश्व (द्वितीय) का पुत्र था । मतान्तर से श्राव राजा का पुत्र था ।

स्रावस्ति, स्रावस्ती–सं. स्त्री. [सं. श्रावस्ती] श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव की राजधानी का नाम ।

स्रावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बरसाया हुआ. २ गिराया हुआ, टपकाया हुआ. ३ बहाया हुआ ।
(स्त्री. स्रावियोड़ी)

स्रिग—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

स्रिगक—देखो 'स्रंगक' (रू. भे)

उ०—गज रूपां सीस फावि फरहरिया, उण उणिहार इक्ख ए ।
आरुहि करि अछर मेरगिरि स्रिगी, विभ्रम **स्रिगक** पेख ए ।
—गु. रू. वं.

स्रिगार—देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—१ पदमणि तठै तेजमणि भूपति, आतुर गयौ मदन सुख आरति । सुंदरि दीठ **स्रिगार** सोळ सझि, मुरछा आय पड़ै उपमझि ।—सू. प्र.

उ०—२ बाजोटा ऊतरि गादी वैठी, राजकुंअरि **स्रिगार** ।

उरै गर पाली नै पावी, प्रांनन मागळि आदरन ।—वेलि

स्त्रिगी—देखो 'स्रग' (रू. भे.)

उ०—गज गता नीन पाति फरहरिया, उण उणिहार इक्ख ए । पारि हरि मद्धर मेरगिरि स्त्रिगी, विभ्रम स्त्रिगक पेख ए ।

—गु. रू. बं.

स्त्रि—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

स्त्रिक—देखो 'स्रक' (रू. भे.) (अनेका.)

स्त्रिखंड—देखो 'श्रीखंड' (रू. भे.)

उ०—जिन जड़ाव बाजुबंध, सम्म पाट सोहिया । स्त्रिखंड साखि आंगि स्रप, मैग वार मोहिया ।—सू. प्र.

स्त्रिज—देखो 'स्रक' (रू. भे.) (अनेका.)

स्त्रिय—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

उ०—१ दिन गत सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी । स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, सुख सकस पखि जिम सुदरी ।—रा. रू.

उ०—२ रमा हुतासणि सरणि न्हाए, हथि रांमण स्त्रिय छांह हराए । छाया हरण हुवा दुख छाया, माया अवसि मोहवसि माया ।

—सू. प्र.

उ०—३ करि वनफळ जळ अग्र जोड़ि कर, वंदन करि वन हलै स्त्रियावर । छनतां उमा एह नह छळिया, चित प्रणांम स्त्रिय रांम न चळिया ।—सू. प्र.

स्त्रियखंड—देखो 'श्रीखंड' (रू. भे.)

उ०—स्त्रियखंड वर अगसार, संग अंबर तर घणसार । सुभ आज समधि प्रसिद्ध, करि गार तिण जुति किद्ध ।—रा. रू.

स्त्रिया—देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

उ०—कवि ओपम ऐसी कहा, ओपम और विचार । जांणिक भायो रूप मन, पायो स्त्रिया मुरार । रा. रू.

स्त्रियावर, स्त्रियावर—देखो 'सीतावर' (रू. भे.)

उ०—१ करि वनफळ जळ अग्र जोड़ि कर, वंदन करि वन हलै स्त्रियावर । छनतां ऊमा एम नह छळियां, चित प्रमांण स्त्रिय रांम न चळिया ।—सू. प्र.

उ०—२ भुजां दुय च्यारि भुजां वळ भूप, रचै गजग्राह स्त्रियावर रूप । वहै खग सावळ तांत विनांण, कटै जरदांण जुवांण केकांण ।

—सू. प्र.

स्त्रिलोक, स्त्रिलोकूं—१ देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—ऐसो विध पंडतराज चातुरय कळा प्रवीण स्त्रिलोकूं का प्रबंध अनेक विध विमळ वांणी सैं उच्चरै जिनूं सैं रीझ स्त्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया ।—सू. प्र.

२ देखो 'त्रिलोकी' ।

स्त्रिस्ट, स्त्रिस्टि, स्त्रिस्टी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे.)

स्त्रींगी—देखो 'स्रंगी' (रू. भे.) (अ. मा.)

स्त्री-सं. स्त्री. [सं. श्री] १ लक्ष्मी, रमा । (एका.) (अ. मा.)

२ पृथ्वी, भूमि, जमी । („)

३ धन-दौलत, सम्पत्ति । („)

४ कीर्ति, यश । („)

५ कान्ति, चमक । („)

६ मर्यादा, सीमा । („)

७ इज्जत, प्रतिष्ठा ।

८ कुशलक्षेम । („)

९ प्रकाश । („)

१० शोभा, सौन्दर्य । („)

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

११ सरस्वती ।

१२ सिद्धि ।

१३ गिरजा, पार्वती । (अ. मा.)

१४ सीता । (अ. मा.)

१५ हाथी के मस्तक का आभूपण विशेप ।

१६ त्रिवर्ग-धर्म, अर्थ और काम ।

१७ धूप ।

१८ साल वृक्ष ।

१९ पैर के तलुए में होने वाली एक रेखा जो शुभ मानी जाती है । (सामुद्रिक)

२० एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है ।

२१ स्त्रियों के माथे का आभूपण विशेप ।

२२ बुद्धि, प्रतिभा ।

२३ स्त्री, पत्नी ।

२४ अलौकिक शक्ति ।

२५ सजावट ।

२६ वेल का पेड़ ।

२७ कमल ।

२८ सफेद चंदन ।

२९ एक औपधि विशेप ।

३० ऊर्ध्व पुंड्र के बीच लम्बी नोकदार लाल रंग की रेखा ।

३१ अविकार ।

३२ उच्च पद ।

३३ एक आदर सूचक शब्द जिसका प्रयोग देवी-देवताओं, राजाओं, धार्मिक ग्रन्थों के नाम के पूर्व किया जाता है ।

ज्यूं—स्त्रीपाबूजी राठौड़, स्त्रीभागवत, स्त्रीमहमाय साय छै ।

३४ धर्म ऋपि की पत्नी का नाम ।

सं. पु.—१ ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

३ कुबेर ।

४ संपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)
५ वैष्णवों का एक सम्प्रदाय विशेष।
६ एक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक पद में एक गुरु होता है।
७ मंगल-सूचक शब्द जो किसी लिखावट के आरम्भ में प्रयुक्त होता है।
वि.—१ बुद्धिमान। (एका.)
२ श्रेष्ठ, सुन्दर।
३ शुभ, उत्तम।
४ योग्य, लायक।
सर्व—अपने, स्वयं के। (सम्मान)
उ०—१ महाराज कै जोधांण कै राव हथळूं पहल कीए बीजळूं कै घाव। केतेक वाघूं पर आप असि धरै। सेल तरवारू का घाव स्री हथूं सैं करै।—सू. प्र.
उ०—२ वोहौ लोह भूप सुभड़ां वकसि, स्री हाथै खग साहियौ। करि क्रोध मधू माथैं किनां, लखमी-बर नंदक लियौ।—मे. म.
रू. भे.—सरी, सिरि, सिरी, सी, स्रि, स्रिय, स्रिया, स्रीय, स्रीया।

स्रीकंठ—सं. पु. [सं. श्रीकंठ] शिव, महादेव। (अ. मा; नां. मा.)
रू. भे.—सीकंठ।

स्रीकंठसखा—सं. पु. यौ. [सं. श्रीकंठसखा] कुबेर।

स्रीकंठी—सं. स्री. [सं. श्रीकंठी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

स्रीकंत—सं. पु. [सं. श्रीकांत] लक्ष्मीपति, विष्णु।
रू. भे.—सीकंत।

स्रीकमळ—सं. पु. [सं. श्रीकमल] मुख।

स्रीकर—सं. पु. [सं. श्रीकर] १ विष्णु।
२ लालकमल।
वि.—शोभा वढ़ाने वाला।

स्रीकरी—सं. स्री. [सं. श्रीकरी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

स्रीकरण, स्रीकरणा, स्रीकरणिक, स्रीकरणीक, स्रीकरिणिक—वि. [सं. श्रीकरण] १ खजाने की देखरेख करने वाला, कोषाध्यक्ष।
उ०—जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सांमंत लघुसांमंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक तांडकपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहकहक स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक·······।—व. स.
२ वैभव की वृद्धि करने वाला।
३ धन इकट्ठा करने वाला।
रू. भे.—स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक।

स्रीकांत—सं. पु. [सं. श्रीकांत] १ विष्णु।
२ श्रीरामचंद्र भगवान।
३ श्रीकृष्ण।
४ महादेव, शिव।

स्रीकार—वि. [सं. श्रीकार] १ श्रेष्ठ, उत्तम, कल्याणकारी।
उ०—१ ची विधि देव मिली रच्यौ, समवसरण स्रीकार। स्वांमि वैठा सिंहासणैं, वैठी परसद वार।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ नंदी सूत्र मइं मांन वखांण्यउ, मांन ना पांच प्रकार रे। मति सुति अवधि अनइ मन, परयन केवल मांन स्रीकार रे।—स. कु.
उ०—३ जठै तठै इण जगत मैं, जीकारौ स्रीकार। वालौ जस रा वायकां, तूंकारौ तन सार।—बां. दा.
२ श्री अक्षर का आकार, वनावट।
३ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं। (ल. पिं.)

स्रीकिसण, स्रीकिसन—देखो 'स्रीक्रस्ण' (रू. भे.)

स्रीकीरति—सं. पु.—ताल के आठ भेदों में से एक भेद।

स्रीकास्ट, स्रीकास्ठ—सं. पु. [सं. श्रीकाष्ठ] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था।
उ०—पस्चिम दिसिना एतला देस, सवल सैन्यइ करी जीपइ नरेस। बरवर वूजर कास्मीर कार, स्रीकास्ठ स्रीराज्य हिमालय सार।—नळदवदंती रास

स्रीक्रसण, स्रीक्रस्ण, स्रीक्रिसण, स्रीक्रिस्ण—सं. पु. [सं. श्रीकृष्ण] श्रीकृष्ण भगवान् का नाम।
रू. भे.—सीकिसण, सीकिसन, स्रीकिसण, स्रीकिसन।

स्रीखंड, स्रीखंडस—सं. पु. [सं. श्रीखण्ड:] १ चंदन। (अ. मा; नां. मा; ह. ना. मा.)
उ०—१ वाजूवंध वंधै गोर वाहु विहुं, स्यांम पाट सोहंत सिरी। मणिमैं हींडि हींडळै मणिधर, किरि साखा स्रीखंड की।—वेलि
उ०—२ डोहंत सूंडा डंड ए, स्रीखंड सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्थै मैंगळां, वळकत्त वीजक वद्दळां।—गु. रू. वं.
२ दही, चीनी, केशर, कपूर, मेवें आदि के मिश्रण से बनाया जाने वाला एक प्रकार का गाढ़ा पेय पदार्थ, शिखरन।
रू. भे.—सीखंड, स्रियखंड।

स्रीखंडसेल—सं. पु. यौ. [सं. श्रीखंडशैल] मलयागिरि पर्वत।

स्रीखांवद, स्रीखांविद, स्रीखावंद, स्रीखाविंद—सं. पु. [सं. श्री+फा. खांविद] १ विष्णु।
२ श्रीरामचन्द्र।

स्रीगंण—सं. पु.—नैऋत्य और दक्षिण के मध्य की उपदिशा।

स्रीग—देखो 'स्रंग' (रू. भे.)

स्रीगणेस—सं. पु. [सं. श्री+गण+ईश] १ किसी ग्रंथ, पत्र आदि के आरंभ में लिखा जाने वाला शब्द।
२ आरंभ, शुरुआत।

स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक—देखो

'स्रीगरणित' (रू. भे.)

उ०—१ एकदा समाइ बइठउ भूप, इंद्र सरीखुं उद्भुत रूप। स्रीगरणा करणा घणा. मंत्रीक मुगुया नहीं मणा।

—नळदवदंती रास

उ०—२ गाइ मनमिइं मेल्हिउ रोस, प्रजा सहूनइ हवु संतोस। स्रीगरणा वटगरणा मिली, प्रधांन सहू विमासइ वली।

—नळदवदंती रास

उ०—३ किरणाइ करी जीवनइ सुख होइ, ग्रह नक्षत्र नु नायक सोइ। पुण्य राजा नु आदेस ज पालइ, स्रीगरणा ए च्यारइ माहलइ।—नळदवदंती रास

स्रीगिर, स्रीगिरि, स्रीगिरी–सं. पु. [सं. श्रीगिरि] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

रू. भे.—सिरगिर, सिरगिरि, सिरगिरी, सिरिगिरी।

स्रीचक्र, स्रीचक्कर, स्रीचक्र–सं. पु. [सं. श्रीचक्र] भगवान् का दिव्य आयुध, चक्र, जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।

स्रीजी–सं. पु.—राजा-महाराजाओं, ठाकुरों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम के स्थान पर प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द।

उ०—१ तठा पछै वेगी हीज स्रीमहाराजाजी री फौज पोकरण ऊपर आई। रावळ सबळसिंघ खारै रा डेरां आदमियां ७०० सूं आय स्रीजी रा साथ भेळो हुवो।—नैणसी

उ०—२ पछै स्रीजी घणो आदर कर वडो पटो ८०००) रेख लवेरो घणां गांवां सूं भोवाळ वधारै दी।—नैणसी

स्रीजुक्त, स्रीजुक्त, स्रीजुत–वि. [सं. श्रीयुक्त] श्री से युक्त।

रू. भे.—स्रीयुत।

स्रीतळ, स्रीतल–सं. पु. [सं. श्रीतल] एक नरक का नाम।

स्रीतीरथ–सं. पु. [सं. श्रीतीर्थ] एक तीर्थ का नाम।

स्रीद–सं. पु. [सं श्रीदः] १ कुबेर।

(डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ विष्णु।

स्रीदत–सं. पु. [सं श्रीदत्त] १ कुबेर। (अ. मा.)

२ पृथ्वी, जमीन। (नां. मा.)

स्रीदांम, स्रीदांमण, स्रीदांमन—देखो 'सुदांमो'।

स्रीदेवा–सं. पु.—वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

स्रीदेवियांण, स्रीदेवीयांण–सं स्त्री.—१ बीज मंत्राक्षरों में से एक बीज मंत्राक्षर।

२ बीजाक्षर।

३ बारहट ईसरदास कृत देवी की स्तुति का छोटा ग्रन्थ।

स्रीधन्वी–सं. पु.—एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्रीधर–सं. पु.—१ जैनियों के अतीतकालीन सातवें तीर्थंकर का नाम।

२ विष्णु का एक नाम।

३ श्रीरामचन्द्र भगवान का एक नाम।

४ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

५ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर, स्रीपत, करणाकरण कारण कारण। व्रजनायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंद घण।—र. ज. प्र.

६ त्रेतायुग का एक राजा।

स्रीधांम–सं. पु. [सं. श्रीधाम] १ लक्ष्मी का निवास स्थान।

२ स्वर्ग, वैकुंठ।

स्रीनंदण, स्रीनंदन–सं. पु. [सं. श्रीनंदन] १ कामदेव, मनोज।

(अ. मा.)

२ श्रीरामचन्द्र।

३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

स्रीनाथ–सं. पु. [सं. श्रीनाथ] १ लक्ष्मीपति विष्णु।

उ०—विराजै नगां आप सूं रूप वीठी, दळांनाथ स्रीनाथ रो रूप दीठो। वणे सांमळे गात झीणं वसत्रं, तिसी भूखणं जोत मोती रतन्नं।—रा. रू.

२ श्रीकृष्ण।

३ श्रीरामचन्द्र।

४ महादेव, शिव।

स्रीनितंबा–सं. स्त्री. [सं. श्रीनितम्बा] राधिका।

स्रीनिध, स्रीनिधि, स्रीनिधी–सं. पु. [सं. श्रीनिधि] भगवान् विष्णु का नाम।

स्रीनिवास–सं पु. [सं. श्रीनिवास] विष्णु का नामांतर।

स्रीपंचमी–सं. स्त्री. [सं. श्रीपंचमी] माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी जिसे वसंतपंचमी भी कहते हैं।

स्रीपत, स्रीपति, स्रीपती–सं. पु. [सं. श्रीपति] १ विष्णु। (डिं. को.)

उ०—स्रीपत सरण सरोज री, गंगाजळ मकरंद। अलियळ ज्यूं कर पांन अब, अधिकावण आणंद।—बां. दा.

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति, तारू कवण जु समुद्र तरै। पंखी कवण गयण लगि पहुचै, कवण रंक करि मेरु करै।—वेलि

३ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

४ श्रीरामचन्द्र।

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रजनायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंदघण।—र. ज. प्र.

५ कुबेर। (अ. मा.)

रू. भे.—सीपत, सीपति, सीपती।

स्रीपाळी–सं. स्त्री.—सोंठ। (अ. मा.)

स्रीपूज, स्रीपूजनीय, स्रीपूज्य–सं. पु.—१ जैन धर्मानुसार संप्रदाय के अधिपति, संघनायक, आचार्य।

२ जतियों के आचार्य ।

स्रीफळ, स्रीफल—सं. पु. [सं. श्रीफल] १ नारियल । (डि. को.)

उ०—१ करै पळ कमळ स्रीफळ कीध, लुही घट काढ जिकौ घ्रत लीध । धुवै रणताळ सभाळ नधोम, हुकां धुनि वेद करै इम होम ।
—सू. प्र.

उ०—२ पणघट पर पणिहार, नीर कज नीसरी । स्रीफळ तणौ प्रमांण क सोभा सीस री । कच वेणी गूंथी कुसुम लपेटा लागणी, सांपडि खीर समदक निकसी नागणी ।—सिववक्स पाल्हावत

२ आंवला ।

३ वेल का वृक्ष । (ह. नां. मा.)

स्रीवंध, स्रीवंधव, स्रीवंधु—सं. पु. [सं. श्रीवंधु] १ चंद्रमा, चांद ।
(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ अमृत ।

रू. भे.—सीवंध, सीवंधव, सीवंधु ।

स्रीभरतार—सं. पु [सं. श्रीभर्तृ] १ विष्णु ।

उ०—हंस मीन कूरम हुऔ स्रीभरतार समत्थ । सरित हुवौ द्रव सोय सौ, किसू अच्छेरा कत्थ ।—बां. दा.

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

स्रीभांण, स्रीभांणु, स्रीभांनु—सं. पु. [सं. श्रीभानु] श्रीकृष्ण व सत्यभामा के एक पुत्र का नाम ।

स्रीभ्रात, स्रीभ्राता—सं. पु. [सं. श्रीभ्रातृ] १ चन्द्रमा, चाँद ।

२ घोड़ा, अश्व ।

३ अमृत, सुधा ।

स्रीमंडळ, स्रीमंडळू—सं. पु. [सं. श्रीमंडल] १ एक वाद्य विशेष ।
(रा. सा. सं.)

उ०—देवतूं कै मन भूलतै डोलतै हैं म्रदंगूं कै परन धौलकूं कै टिकौर । सुरवीणू कै भणहण तंवूरू कै घोर । ताळू की भमक भंभरू कै भणकार । कांम कै घुघर जैसै जंत्र कै तार पिनाकूं का परवेज स्रीमंडळू का सवाद ।—सू. प्र.

२ एक राग विशेष ।

उ०—इण भांति री आखाड़ै रंभा पात्र निरत करणी सोळै सिणगार किआं थकां कांन रा भांभर वाजि नै रहिआ छै । स्रीमंडळ राग कलावंत घमंड राग जमावि नै रहिआ छै ।
—रा. सा. सं.

स्रीमंत—सं. पु. [सं. श्रीमंत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण ।

२ किसी आदरणीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्वोधन ।

स्रीमति, स्रीमती—सं. स्त्री. [सं. श्रीमती] १ परणीता स्त्रियों के लिए सम्मानसूचक शब्द जो उनके नाम के पूर्व लगाया जाता है ।

२ सुंदरी, स्त्री ।

३ एक गन्धर्व कन्या का नाम ।

४ सृंजय राजा की कन्या दमयंती का नामांतर ।

रू. भे.—सीमति, सीमती ।

स्रीमदभगवलगीता—देखो 'भगवदगीता' ।

स्रीमदभागवत—देखो 'भागवत' ।

स्रीमांण, स्रीमांन—सं. पु. [सं. श्रीमान] १ आदरणीय व्यक्तियों के नाम के पहले लगाया जाने वाला आदरसूचक शब्द ।

२ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

वि.—१ धनाढच, वैभवशाली ।

२ श्री से युक्त ।

स्रीमात, स्रीमाता—सं. स्त्री. [सं. श्रीमाता] कर्नाटक नामक राक्षस की वधकर्तृ एक माता नामक देवी का अवतार ।

स्रीमाळ—सं. पु. [सं. श्रीमाल] १ भीनमाल कस्वे का एक प्राचीन नाम ।

२ वैश्यों की जैनमतावलम्वी जाति । (मा. म.)

स्रीमाळी—सं. पु. (स्त्री. स्रीमाळण) १ ब्राह्मणों की एक प्रसिद्ध जाति ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

रू. भे.—सिरमाळी ।

स्रीमुख—सं. पु.—विष्णु का मुख, वेद ।

२ सन्त, महात्मा, राजा, महाराजा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के 'स्वयं' के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

उ०—१ बुधवार सुत 'अगजीत' रौ, रिण खळां अंतक रीतरौ । दिसि अस्ट स्रीमुख दाखवि, मोरचै फुरमांण ।—रा. रू.

उ०—२ हुवौ मूरछा मंत्रियां लीध हांमां, तकै रांन लेगा रथां चाढि तांमा । कहै स्रीमुखां रांण जोधां करारां, हणू पूंछ रू घ्रत वांधौ हजारां ।—सू. प्र.

३ ब्रह्मावीसी का सातवां वर्ष । (ज्योतिष)

सर्व.—अपने, स्वयं के ।

रू. भे.—सिरीमुख ।

स्रीय, स्रीया—देखो 'स्री' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ फळं कंदळी स्रीय स्वादै अफारा, छयै स्रीय वादांम पिस्ता छुहारा । सुधा साव नारंगियां रंग सोहै, महादेव देवेस मेवै विमोहै ।—रा. रू.

उ०—२ आपनां आप मारै अनंत इसौ ग्यांन महाराज रौ । माहरौ कंत प्यारौ मनां, स्रीय सुहावै बुरौ छौ ।—पी. ग्रं.

स्रीयुत—देखो 'स्रीजुत' (रू. भे.)

स्रीरंग—सं. पु. [सं. श्रीरंग] १ भगवान विष्णु का एक नाम ।
(डि. को.)

उ०—१ तन मछ जोजन स्रंग लख तण, रेण जन सत वरत रखण । समंद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वांणी ।—र. ज. प्र.

उ०—२ स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण ।

रतनाकर तिमेंग विसंभर, धरनामी आणंदघण ।—र. ज. प्र.

२ श्रीकृष्ण ।

उ०—ऊतबार जरासंध आगळ, स्रीरंग त्रिमहा टीकम दीव वग । रेति ध्यान सारै मधुसूदन, असुर घात नासै अलग ।

—जमणोजी सोदो

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ अहि मार्गनी किमय श्री, रगवाळै स्रीरंग । तंना न सुजिमै श्रीरमा, अनि मै निका मुडंग ।—पी. ग्रं.

उ०—२ रसणा रटै नी राम रट, आंमय लगै न अंग । जै सुख नाडै जीव री, (तो) सुमरि सुमरि स्रीरंग ।—ह. र

४ श्रीरामचन्द्र ।

उ०- मचट मोड अथा घण स्रीरंग, कोड़ जमां भय कापै । आसा गघव पूर अनेकां, थांनक दासां थापै ।—र. ज. प्र.

स्रीरमण, स्रीरवण—सं पु [स. श्रीरमणः] १ एक संकर राग । (संगीत)

२ विष्णु भगवान् ।

उ०—देवै भव दरियाव, रची पगां सूं स्रीरमण । नरा अपूरब नाव, नाविक विण निरभर नदी ।—बां. दा.

३ श्रीकृष्ण ।

४ श्रीरामचन्द्र ।

स्रीरांमलव—स. पु.—हनुमान, पवनसुत । (अ. मा.)

स्रीराग—सं. पु.—संगीत में छः रागों में से तीसरा सम्पूर्ण जाति का एक राग ।

स्रीराज, स्रीराज्य—सं पु [सं श्रीराज्य] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था ।

उ०—पश्चिम दिसिना एतला देस, सबल सैन्यइ करी जीपइ नरेस । बरबर बूजर कासमीर कार, स्रीकास्ठ स्रीराज्य हिमालय सार ।—नळदवदंती रास

स्रीवंति, स्रीवंती-सं स्त्री — नदी, सरिता । (अ मा.)

स्रीवक्षस्थळ, स्रीवक्षस्थळ, स्रीव्रखस्थळ—सं. पु. [सं. श्रीवक्षस्थल] १ श्रीकृष्ण । (अ मा.)

२ श्रीविष्णु ।

३ ईश्वर, परमेश्वर । (नां मा.)

स्रीवच्छ, स्रीवछ, स्रीवत्स—स. पु [सं. श्रीवत्सः] १ भगवान् विष्णु का एक नाम ।

२ भगवान् के वक्षस्थल पर लगा भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न ।

उ०—सुभांमणि बोलई सुणि ब्राह्मण, आदि विस्नु अहिनाण । पाई पदम उर स्रीवछ लछन, कोटइ कौस्तुभ मयण ।

—रुकमणि मंगळ

वि. वि.—मतान्तर से भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न भृगु के चरण-प्रहार का नहीं है । दक्ष यज्ञ के समय, भगवान् शंकर ने एक प्रज्वलित त्रिशूल चलाया था । दक्ष यज्ञ का विध्वंस करके, वही त्रिशूल भगवान् विष्णु की छाती में आ लगा । भगवान् के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न उसी त्रिशूल-प्रहार का है ।

३ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक । (ज्योतिष)

४ वार, नक्षत्र, सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में आठवां योग ।

स्रीवर—सं. पु. [सं. श्रीवर] १ भगवान् विष्णु । (नां. मा.)

२ श्रीरामचन्द्र ।

उ०—१ कीजै वारणै छिन्न कांम कौटिक, दीन दुख दाधौ । साभाव सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राधौ ।—र. ज. प्र.

उ०–२ सेतबंध रघुनंद नाहर, छत्री सरण हित ऊछाहर । भभीखण कर लंक स्रीवर, मौज की महराज ।—र. ज. प्र.

३ परमेश्वर, ईश्वर । (नां. मा.)

उ०—१ ऊफणै दूध जळतां अगन, अंग तेम सत ऊफणै । स्रीवर सहाय धारै सती, आय खड़ी रायअंगणै ।—रा. रू.

उ० – २ रांम भजन विण अहळ जनम रे, नांम समर पय सिर नित नम रे । मांस असत तन चरमसु मळ रे, स्रीवर रट रट रसण सफळ रे ।—र. ज. प्र.

४ श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—सिरीवर, सीवर ।

स्रीवलभ, स्रीवल्लभ—सं. पु. [सं. श्रीवल्लभः] १ भगवान् विष्णु ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीवास—सं. पु. [सं. श्रीवासः] १ भगावन् श्रीविष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

३ कमल ।

स्रीव्रख, स्रीव्रक्ष, स्रीव्रख—सं. पु [सं. श्रीवृक्ष] १ पींपल का वृक्ष । (अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

२ बेल का वृक्ष ।

३ घोड़े के माथे व छाती पर की भौंरी ।

रू. भे.—सीव्रवख, सीव्रक्ष, स्रीव्रख, सीव्रवख, सीव्रक्ष, सीव्रख ।

स्रीव्रखक—सं. पु. [सं. श्रीवत्सकिन] वह घोड़ा जिसकी छाती पर भौरी हो । (शा. हो)

स्रीव्रत—सं. पु. [सं. श्रीव्रत] चैत्र शुक्ला पंचमी को किया जाने वाला व्रत ।

स्रीसंग—सं. पु. [सं. श्रीसंज्ञं] लौंग, लवंग । (अ. मा.)

स्रीसंघ—सं. पु. [सं. श्रीसंघ] १ जैन धर्मानुसार जहाँ श्रावक, श्राविका, साधु और साध्वी इन चारों का संगम या मिलाप हो ।

२ जैन धर्मानुसार श्रावक, श्राविका, साधु व साध्वी इन चारों का समूह ।

उ०—गांम नगरपुर विहरता रे, आव्या जिणचंदसूरि । स्रीसंघ

सांम्हउ संचरइ रे, वाजइ मंगल तूरि ।—स. कु.

स्रीसंप्रदाय–सं. पु.—वैरागी साधुग्रों का एक सम्प्रदाय विशेष ।

स्रीसंभूता–सं. स्त्री.—ज्योतिष में कर्ममास (श्रावण) की छठी रात्रि ।

स्रीसमाध, स्रीसमाधि, स्रीसमाधी–सं. पु. [सं. श्रीसमाधि] १ श्री, शुद्ध, मालश्री, भीमपालश्री टंक को मिलाकर बनाया जाने वाला एक राग ।

२ भविष्यकाल के सतरहवें तीर्थंकर का नाम ।

स्रीसहोदर–सं. पु. [सं. श्रीसहोदरः] १ चंद्रमा, चांद ।

२ मोती ।

३ समुद्र-मंथन के समय समुद्र से निकलने वाले चौदह रत्नों में से कोई एक ।

स्रीसाप, स्रीसाफ–सं. पु.—१ एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा ।

उ०—१ सिकलात मुखमल खास, तहताज ग्रतलस तास । खुल इलायची खमखाप, सुजि मुलमुल **स्रीसाप** ।—सू. प्र.

उ०—२ वागां रा चिहुरबंध छूटै छै । सौ किण भांत रा वागा? **स्रीसाफ** भैरव चौतार हजारी, गंगाजळ खासा वासता, इण भांति वागां रा चिहुरबंध छूटै छै ।—रा. सा. सं.

रू. भे.—सिरीसाप ।

स्रीसुत, स्रीसुतण–सं पु. [सं. श्रीसुतः] कामदेव, मनोज । (डिं. को.)

स्रीसुपास–सं. पु. [सं. श्री पार्श्वनाथ] जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से तृतीय तीर्थंकर, श्रीपार्श्वनाथ का नाम ।

स्रीस्यांम–सं. पु. [सं. श्रीश्याम] १ विष्णु भगवान् ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ शिव, महादेव ।

५ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीस्रीमाल–सं. पु.—जैन धर्म के ग्रंतर्गत एक जाति विशेष । (मा. म.)

स्रीहजूर–सं. पु.—एक प्रकार का प्राचीन कर ।

रू. भे.—स्रीहुजूर ।

स्रीहर, स्रीहरि–सं. पु. [सं. श्रीहरि] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

स्रीहुजूर—देखो 'स्रीहजूर' (रू. भे.)

स्रुक—देखो 'सुक' (रू. भे.)

उ०—भर फूल फळित ग्रढारभार, जुथ करत भ्रमर भणहण गुंजार । मिळि करत नाच छत्र कोहक मोर, **स्रुक** चात्रिग कोकिल करत सोर ।—सू. प्र.

स्रुग, स्रुगि, स्रुगी—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

उ०—इम करि करि बहुग्रचड़, मोह परहर वप माया । दिव धरि धरि सुर देह, ग्रछर वर **स्रुगि** ग्राया ।—सू. प्र.

स्रुण, स्रुणि, स्रुणी—१ देखो 'सोणित' (रू. भे)

उ०—लगी नर है तिल हेक लगांण, जरद्द मरद्द कटै जंगमांण । सदा सिव तांम लियै खळ सीस, **स्रुणी** स्रपी चंड देत ग्रसीस ।

—सू. प्र.

२ देखो 'स्रोण' (रू. भे.)

३ देखो 'स्रोणि' (रू. भे.)

स्रुतंजय, स्रुतंजै–सं. पु. [सं. श्रुतञ्जय] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई जो ग्रर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ पुरुरवा का पौत्र व सत्यायु का पुत्र ।

स्रुत–सं. पु. [सं. श्रुत] १ राजा भगीरथ के एक पुत्र का नाम ।

उ०—भगीरथ सुत जिण तप ग्रभंग, गौ सुरग ग्रहुति जिण ग्रांणि गंग । भगीरथ संभ्रम सुत मुवाळ, नाभंग हुवौ **स्रुत** सुत न्रपाळ ।—सू. प्र.

२ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक ।

३ वासुदेव एवं शांतिदेवा के पुत्रों में से एक ।

४ पांचालराज द्रुपद का एक पुत्र ।

[सं. श्रुतं] वेद, श्रुति ।

उ०—१ सुरसरी राघव सुजस मंजण जिण कीध्र सुध चित मांनव । तीरथ ग्रड़सठ तेण, बोलै **स्रुत** लाभ ग्रह वासत ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै कच्चा है । बोलै **स्रुत** संभ्रत स्यंभ ग्रज वायक, सीता नायक सच्चा है ।

—र. ज. प्र.

रू. भे.—सुत ।

स्रुतकरमण, स्रुतकरमन–सं. पु. [सं. श्रुतकर्मन्] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

२ सहदेव का एक पुत्र जो महाभारत में ग्रश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

३ ग्रर्जुन के एक पुत्र का नाम ।

स्रुतकीरत, स्रुतकीरति, स्रुतकीरती–सं. पु. [सं. श्रुतकीर्ति] १ ग्रर्जुन व द्रौपदी के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो ग्रश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

सं. स्त्री.—२ दशरथ-पुत्र शत्रुघ्न की पत्नी व जनक-भ्राता कुशध्वज की पुत्री का नाम ।

३ वसुदेव की बहन का नाम ।

रू. भे.—सुतकीरति, सुतक्रिता, स्रुतिकीरत, स्रुतिकीरति, स्रुतिकीरती ।

स्रुतग्यांन–सं. पु. [सं. श्रुतज्ञान] वह ज्ञान जो शास्त्रों को पढ़ने व सुनने से इन्द्रिय ग्रौर मन को प्राप्त होता है । (जैन)

स्रुतग्यांनी–वि. [सं. श्रुतज्ञानी] श्रुतज्ञान को जानने वाला, समझने वाला ।

स्रुतदेव–सं. पु. [सं. श्रुतदेव] १ कृष्ण के महारथी पुत्रों में से एक ।

२ एक विरागी कृष्ण भक्त ब्राह्मण ।

२ विष्णु का एक पार्षद ।

स्रुतदेवा-सं. स्त्री. [सं. श्रुतदेवा] वसुदेव की बहन और दन्तवक्त्र की माता का नाम ।

स्रुतदेवी-सं. स्त्री. [सं. श्रुतदेवी] १ शूर राजा की कन्या जो करूषदेशीय वृद्धशर्मन को ब्याही गई थी, यह वसुदेव की बहन थी ।

२ सरस्वती देवी ।

स्रुतधज—देखो 'स्रुतध्वज (रू. भे.)

स्रुतधर-सं. पु. [सं. श्रुतधर] कान, श्रवण ।

स्रुतधुज, स्रुतध्वज-सं. पु. [सं. श्रुतध्वज] विराट राजा का एक भाई ।

रू. भे.—स्रुतधज ।

स्रुतसेण, स्रुतसेन-सं. पु [सं. श्रुतसेन] १ भीमसेन व द्रौपदी के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

२ एक नाग ।

३ परीक्षित राजा का पुत्र, एक राजा ।

४ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ जनमेजय के एक भाई का नाम ।

स्रुतस्रवा-सं. पु. [सं. श्रुतश्रवा] १ सोमश्रवा के पिता एक महर्षि का नाम ।

२ मगधनरेश जरासंध का पौत्र व अयुतायु का पिता ।

३ सूर्यपुत्र शनैश्चर का नामांतर ।

४ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ सावर्णि मनु का नामांतर ।

सं. स्त्री.—६ शिशुपाल की माता, वसुदेव की बहन और चिदिनरेश दमघोष की पत्नी का नाम ।

स्रुतांत-सं. पु. [सं. श्रुतांत] भीमसेन द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

स्रुतांनीक-सं. पु. [सं. श्रुतानीक] विराटनरेश के एक भाई का नाम ।

स्रुतायु-सं. पु. [सं. श्रुतायु] १ अंवष्टनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ कलिंगनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

३ पुरुरवा का पुत्र व वसुमान का पिता एक राजा ।

स्रुतावति, स्रुतावती-सं. स्त्री. [सं. श्रुतावति] भरद्वाज ऋषि व घृताची नामक अप्सरा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्री ।

स्रुति-सं. स्त्री. [सं. श्रुति] १ सुनने की क्रिया या भाव, श्रवण ।

२ शब्द, ध्वनि ।

३ कान, कर्ण ।

उ०—१ ऊभो मड्ड मांगिए प्रसंहिता श्रुति, किंतारथी प्री मिळण मन । अटन सेज द्वार विधि आहुटि, स्रुति दे हरि घरि समाधित ।—वेलि

उ०—२ अब रूढ़ घोर अंधार, बिन रवि चंद्र विकासण । प्रगट करन द्रुम उभय, दस स्रुति नवग्रह सुभासण ।—र. ज. प्र.

उ०—३ वभूती की टीकी निज अलिक नीकी नित वसै । कड़ा डोरी मूरती लवंग पुग्गिपूरती स्रुति लसै ।—मे. म.

४ वेद । (अ. मा.)

उ०—१ अविणासी को हलकारो जग मैं आयो, लोकन मैं सक्ति अलौकिक लारै लायो । स्रुति समाचार को सार पुकार सुनायो, धरमी सुख धार अधरमी सीस धुनायो ।—ऊ. का.

उ०—२ सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईखण जै अभिलाख । माथ पगां सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै । पार गुणां करतार न पावै, सौ स्रुति संम्रत साख ।—र. ज. प्र.

५ ध्वनि, आवाज ।

६ चौसठ योगनियों के अंतर्गत बत्तीसवीं योगनी ।

७ युक्ति, कथन ।

८ जनश्रुति ।

९ अत्रि ऋषि की कन्या तथा कर्दम ऋषि की पत्नी ।

१० अनुप्रास का एक भेद ।

११ संगीत में किसी स्वर का अन्तराल ।

१२ श्रवण नक्षत्र ।

१३ चार की संख्यासूचक शब्द । ❀

रू. भे.—सुरति, सुरती स्रुत ।

स्रुतिकटु-सं. पु. [सं. श्रुतिकटु] काव्य रचना में एक प्रकार का दोष ।

स्रुतिकीरत, स्रुतकीरति, स्रुतिकीरती—देखो 'स्रुतकीरति' (रू. भे.)

स्रुतिधर-वि. [सं. श्रुतिधर] वह व्यक्ति जिसकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र हो । (अमरत)

स्रुतिमुख-सं. पु. [सं. श्रुमिमुख] जिसके चार मुख हों, ब्रह्मा ।

स्रुतिरंजण, स्रुतिरंजणी, स्रुतिरंजनी-सं. स्त्री. [सं. श्रुतिरंजनी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागनी । (संगीत)

स्रुतिवांण, स्रुतिवांणी, स्रुतिवांन-सं. स्त्री. [सं. श्रुति+वाणी]

१ वेद वाक्य, वेदों की वांणी ।

उ०—संसकार स्रुतिवांण सुणि, कूरम कै सवकार । परणावै पधरावियो, महलै राजकंवार ।—रा. रू.

२ जो वेदों में आस्था रखता हो ।

उ०—गुनवांन कुरांन पुरांन गुनैं, स्रुतिवांन स्रुती सब सास्त्र सुनैं । मतभेदन खेद खुवी मत की, सत चूंप चुभी उपनीसत की ।

—ऊ. का.

स्रुतिविदा-सं. स्त्री. [सं. श्रुतिविदा] कुशद्वीप में प्रवाहित होने वाली एक नदी का नाम ।

स्रुवौ-सं. पु. [सं. स्रुवा] यज्ञाग्नि में घी इत्यादि की आहुति देने के लिए प्रयोग में लाया जानें वाला लकड़ी का चम्मच ।

स्रूत-सं पु.—कान, कर्ण ।

स्रूल-सं. पु.—गढ, किला ।

स्रेणता-सं. स्त्री.—पंक्ति ।

उ०—सरी नौसरै हार मोती संजोया, पड़ै स्रेणत हीणता सुक्र पोया। परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरौ, सुमै सूर आकास जांणै सनूरौ।—रा. रू.

स्रेणि, स्रेणी—सं. स्त्री. [सं. श्रेणिः] १ रेखा, पंक्ति।
२ समुह, दल।
३ कारीगरों का संघ, व्यापारियों का संगठन।
४ शृंखला, सिलसिला।
५ सेना, फौज।
६ जीना, सीढी।
७ वर्ग, विभाग, दरजा। (क्लास)
रू. भे.—सेणि, सेणी।

स्रेणीबद्ध—क्रि. वि.—पंक्तिबद्ध, कतार में।

स्रेय—वि. [सं. श्रेयस] १ बहतर, उत्कृष्टतर।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ मंगलकारी, कल्याणकारी।
४ शुभ।
५ यश, कीर्ति देने वाला।
सं. स्त्री.—१ उत्तमता, अच्छापन।
२ शुभ आचरण।
३ भलाई, कल्याण।
रू. भे.—सेय।

स्रेयसी—सं. स्त्री. [सं. श्रेयसी] हरड़ै। (ह. नां. मा; नां. मा.)

स्रेयस्कर सं. पु. [सं. श्रेयस्कर] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ६६ वां ग्रह।

स्रेयांस, स्रेयांसनाथ—सं. पु. [सं. श्रेयासनाथ] जैनियों के वर्तमान काल के ११ वें तीर्थंकर का नाम (स. कु.)

स्रेवड़ा—सं. पु.—१ जैन साधु।
२ साधु, संन्यासी।

स्रेस्ट—देखो 'स्रेस्ठ' (रू. भे.)
उ०—नमौ सुक्र सध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महालक्ष्मी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात रौ तात 'सांमुद्र नांमो'।—मे. म.

स्रेस्टता—देखो 'स्रेस्ठता' (रू. भे.)

स्रेस्टास्रम—देखो 'स्रेस्ठास्रम' (रू. भे.)

स्रेस्टी—देखो 'स्रस्ठी' (रू. भे.)

स्रेस्ठ—सं. पु. [सं. श्रेष्ठः] १ विष्णु।
२ कुवेर।
३ ब्राह्मण।
४ राजा, नृप।
५ सुधामन् देवों में से एक।
[सं. श्रेष्ठं] ६ गाय का दूध।
वि.—१ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।
२ मुख्य, प्रधान।
३ वृद्ध, बूढा।
रू. भे.—स्रेस्ट।

स्रेस्ठता—सं. स्त्री. [सं. श्रेष्ठता] १ प्रधानता।
२ खासियत, विशेषता।
रू. भे.—स्रेस्टता।

स्रेस्ठास्रम—सं. पु. [सं. श्रेष्ठाश्रम] श्रेष्ठ आश्रम, गृहस्थाश्रम।
उ०—मिळगा धूळी ज्यूं जेस्ठास्रम जूना, सालै सूळी ज्यूं स्रेस्ठास्रम सूना।—ऊ. का.
रू. भे.—स्रेस्टास्रम।

स्रेस्ठी—सं. पु. [सं. श्रेष्ठिन्] प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ।
रू. भे.—स्रेस्टी।

स्रोण—सं. पु. [सं. श्रोणः] एक प्रकार का रोग विशेष।
वि.—१ लंगड़ा, लूला।
२ लाल, रक्तवर्ण।
३ देखो 'सोणित' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ विढै मल्ल पांणां जिही जुंझवांण, पठांणै कमंध कमंधै पठांणं। खळां स्रोण रंगै वहै खग्ग खग्गै, अकासै घटा जांण माळा उमंगै।—रा. रू.
उ०—२ वहै लोह वंका, घटां ह्वै धणंका, विनै तीर वारा, धड़ां स्रोण धारा। करं पाव केकं, उडै धू अनेकं, करै लै कराळा, महारुद्र माळा।—सू. प्र.
४ देखो 'स्रोणि' (रू. भे.)
उ०—पदमनी रुखमणीजी कौ जु नाभि सु प्रियाग करि वरणयौ। नाभि कै विखै जु त्रिवलि छै सु त्रिवेणि करि वरणवी छै। स्रोण कहतां नितंब सोई तट हुउ।—वेलि टी.
रू. भे.—स्रुण, स्रुणि, स्रुणी, स्रोन।

स्रोणि—सं. पु. [सं. श्रोणिः श्रोणी] १ चूतड़, नितम्ब।
उ०—धरधर स्रंग सधर सुपीन पयोधर, घणीं खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि, त्रीवलि त्रिवेणी स्रोणि तट।—वेलि
२ कटि, कमर।
३ मार्ग, रास्ता।
रू. भे.—स्रुण, स्रणि, स्रुणी, स्रोण।

स्रोणित—देखो 'सोणित' (रू. भे.)

स्रोणी—सं. स्त्री. [सं. क्षोणी] १ भूमि, पृथ्वी। (नां. मा.)
२ देखो 'सोणित' (रू. भे.)
उ०—१ सुजड़ां मुंहि संघर लडिया लसकर, डिगमिग कांइर कळह डरै। खागां पळ खंडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै।—गु. रू. वं.
उ०—२ पणिहार सकति पांणी भरै, स्रोणी खप्फर कूं भलै।

'सोणत' तणं मज्जन कियो, गिर तठाई भूपाळ लै ।—गु. रू. बं.

उ०—३ 'ग्रमरावत' ऊपरि दळ ग्रताळ, माथै किरि ग्राबू मेघमाळ । सीसोद सीस स्रोणी निवेस, मस्तक जांणि गंगा महेस ।

—गु. रू. बं

३ देखो 'स्रोणि' (रू. भे.)

स्रोणीसूतर, स्रोणीसूत्र–सं. पु. [सं. श्रोणि:+सूत्र] एक प्रकार का ग्राभूषण विशेष, कटिमेखला ।

उ०—हार ग्रर्द्धहार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नूपुर तरुणकुंडल एकावली कनकावली रत्नावलि वज्रावली पत्रावली चंद्रावली सूरावली, नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट ...... इति ग्राभरणानि ।—व. स.

स्रोत–सं. पु. [सं श्रोत] १ कर्ण, कान । (ग्र. मा; डि. को.)

२ हाथी की सूंड ।

[सं स्रोत] १ चश्मा, सोता, धार । (ग्र. मा.)

२ जलप्रवाह, तेजप्रवाह वाली नदी । (ग्र मा.)

३ वह ग्राधार या साधन जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या ग्राती रहे ।

४ वंश-परम्परा ।

५ लहर, तरंग ।

६ जल, पानी ।

७ इन्द्रिय ।

रू. भे.—सरोत, सोत, सोतौ ।

स्रोतईस–सं. पु. [सं. स्रोत+ईस] नदियों का स्वामी, समुद्र ।

स्रोतपत, स्रोतपति, स्रोतपती–सं. पु. [सं. श्रोतपति] समुद्र, सागर । (डि. को.)

रू. भे.—सोतपत, सोतपति, सोतपती ।

स्रोतस्वी, स्रोतस्विनी–स. स्त्री. [सं. स्रोतस्विनी] नदी, सरिता । (ह. नां. मा.)

स्रोता–वि. [सं. श्रोता] सुनने वाला ।

सं. पु.—१ सुनने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ दादू स्रोता स्नेही रांम का, सो मुझ मिळव हु ग्रांणि । तिन ग्रागै हरि गुण कथूं, सुणत न करई कांणि ।—दादूवांणी

उ०—२ साहित्र चुगल समान है, सो हिज बुरी सुणंत । स्रोता वकता होत सम, भणिया लोक भणंत ।—बां. दा.

[सं. श्रोतस्] १ नदी, सरिता ।

२ जल, पानी ।

३ चश्मा, सोता, जलप्रवाह ।

स्रोत्र–सं. पु. [सं श्रोत्र] १ कान, कर्ण ।

२ वेदों का ज्ञान ।

३ वेद ।

४ तुषित देवों में से एक ।

स्त्रोन—देखो 'स्रोणित' (रू. भे.)

स्लिप–सं. स्त्री. [ग्रं.] कागज का छोटा टुकड़ा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो, चिट, पर्ची ।

उ०—१ ग्रापरै हुकम बिनां कोई इंसपेक्टर किणी नैं पकड़'र नीं लै जा सकै । इंसपेक्टर कनै कोई 'सरच नोटिस' कोनीं ही सर ! उण रै कनै, मांय घुसणै री ग्रापरी स्लिप भी कोनीं ही ।

—तिरसंकू

स्लीपद–सं. पु. [सं. श्लीपदम्] एक रोग विशेष जिससे पैरों में सूजन ग्रा जाती है । (ग्रमरत)

स्लीपर–सं. पु [ग्रं.] १ एक प्रकार की लकड़ी जिसके बड़े-बड़े पाटिये (तख्ते) बनते हैं ।

२ एक प्रकार की चप्पल ।

स्लेट–सं. स्त्री.—१ चिकने पत्थर, लोह व गत्ते की बनी चौकोर तखती या पटरी जिस पर बच्चे लिखने का ग्रभ्यास करते हैं ।

२ मलमल के तह डालकर बनाई जाने वाली ढाल, ईरानी ढाल ।

स्लेस–सं. पु. [सं. श्लेष] १ साहित्य में एक प्रकार का ग्रलंकार जिसमें एक शब्द के दो या दो से ग्रधिक ग्रर्थ निकलते हों ।

२ ग्रालिंगन ।

३ जुड़न, मिलन ।

स्लेसम–सं. पु. [सं. श्लेष्म] १ लिसोड़े का वृक्ष ।

२ देखो 'स्लेस्म' (रू भे.)

स्लेस्म–सं पु [सं. श्लेष्म] पाँच प्रकार के कफों में से एक प्रकार का कफ । (ग्रमरत)

रू. भे.—स्लेसम ।

स्लोक–सं. पु. [सं. श्लोक] १ प्रशंसा, तारीफ ।

३ यश, कीर्ति ।

४ पुकार, ग्राह्वान ।

५ प्रशंसात्मक छंद, कथन ।

उ०—राजा देवसरमां रा मुख सूं स्लोक सुण पूछी—हे ब्राह्मण देवता, थां कुण छौ, ग्रर कठा सूं ग्राइया छौ सो कहो । तौ देवसरमा ग्रापरी सारी बात कही । राजा सुण'र वहोत प्रसन्न हुवौ छै ।—सांई री पलक मैं खलक

६ संस्कृत का पद्य, छंद ।

उ०—कोई पंडितराज कविराज पूछै मनकै बीच संदेह राखि तिस संदेहकै मेटणैंकी दोइ ग्रंथ एक व्रतरतनाकर दूसरा स्रुतबोध साखि ग्रौर फिर एक ग्रागलै पंडितका बणाया स्लोक इसही साखिका सो कहणैंमैं ग्रावै साखि उही सच्ची जो ग्रौरका कह्या बतावै सो कैसै कहि दिखाय ।—सू. प्र.

७ ध्वनि, ग्रावाज ।

८ लोकोक्ति, कहावत ।

रू. भे.—सरलोक, सलोक, सिरलोक, सिलोक, स्रलोक,

स्लोकौ, स्लिोक, स्लिोकूं ।

स्व–सर्व. वि. [सं.] १ निजू, अपना, स्वयं का ।

२ अपनी जाति का, सजातीय ।

३ स्वाभाविक, प्रकृतिगत ।

सं. पु. [सं. स्वः] १ नातेदार, रिश्तेदार ।

२ जीवात्मा ।

[सं. स्वं; स्वः] ३ धन-दौलत, सम्पति । (ह. नां मा.)

स्वकरमी–वि. [सं. स्वकर्मिन्] १ स्वार्थी, मतलबी ।

२ अपने कर्त्तव्य व धर्म का पालन करने वाला ।

स्वकीय–सं. पु. [सं.] १ स्वजन, कुटुम्बी ।

उ०—इसडी कहाई तौ भीं नरेस सुरजन आपरा डेरा जुदा न टाळिया । अर एक ही घर रौ जु····जांणि अठी उठी दौ ही तरफ रा सरब ही **स्वकीय** भाळिया ।—वं. भा.

२ अपना, निजी ।

उ०—तिण समय चंद्रमा रै चोतरफ परिवेस रै प्रमांण भालैसिंह देव साठि हजार सेना सूं **स्वकीय** स्वांमी रा सिविर रै छबीनां रौ चक्र चलायौ ।—वं. भा.

रू. भे.—सुकिय ।

स्वकीया–सं. स्त्री. [सं.] वह नायिका या स्त्री जो केवल अपने पति से अनुराग करती हो । (साहित्य)

रू. भे. —सुकिया, सुकीया, सुक्किया ।

स्वगत–वि. [सं.] १ मन में आया हुआ ।

अव्य.—२ स्वतः, अपने-आप ।

स्वच्छंद, स्वछंद–सं. पु. [सं. स्वछंद] १ कार्तिकेय या स्कंद का एक नाम ।

सं. स्त्री.—२ अपनी इच्छा या मर्जी ।

वि. [सं. स्वछंद] १ मनमाना काम करने वाला, मनमौजी ।

२ किसी अंकुश, नियंत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए अपनी इच्छानुसार आचरण करने वाला ।

३ भयरहित, निर्भय ।

उ०—रही **स्वछंद** रैत तव राजस, सुभ अमंद सुखियारी । आणंद कंद एक दम उठग्यौ, 'तखत' नंद अवतारी ।—ऊ. का.

क्रि. वि.—१ अपनी इच्छानुसार, अपनी मर्जी से ।

उ०—**स्वछंद** कियौ निज कांम सोर, उडि गयौ चंद्र की वांम ओर । उपमा कवि ऊमर दै अमोल, ततकाळ समय टंकार तोल ।

—ऊ. का.

२ विना किसी भय, विचार या संकोच के ।

रू. भे.—सच्छंद ।

स्वछंदचारण, स्वछंदचारणी, स्वछंदचारिण, स्वछंदचारिणी–सं. स्त्री.—१ वेश्या, रंडी ।

२ वदचलन स्त्री ।

स्वछंदचारी–वि. (स्त्री. स्वछंदचारण, स्वछंदचारणी, स्वछंदचारिण, स्वछंदचारिणी) स्वेच्छाचारी, मनमौजी ।

स्वछंदता–सं. स्त्री.—स्वछंद होने का गुण, भाव या अवस्था ।

स्वच्छ–वि. [सं.] १ जिसमें किसी प्रकार का मेल या गन्दगी न हो ।

२ साफ, निर्मल ।

३ सुन्दर, मोहक ।

उ०—**स्वच्छ** कपोल महेळियां, मभ छवि नकू मिणांह । पात समर सोनी किया, जर जाफरी तणांह ।—बां. दा.

४ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

५ पवित्र, शुद्ध ।

६ निष्कपट ।

७ स्पष्ट ।

उ०—गौ तिमर गच्छ सूझंत **स्वच्छ** दरसन दयाळ क्रपया कराळ । स्वांमी सचेत अति गुन उपेत, सेवक विसार सौ लीन सार ।

—ऊ. का.

रू. भे.—सुच्छ ।

स्वच्छता–सं. स्त्री. [सं.] १ स्वच्छ रहने का भाव, गुण या अवस्था ।

२ निर्मलता, सफाई ।

३ स्पष्टता ।

रू. भे.—सुच्छता ।

स्वजन–सं. पु. [स.] १ आत्मीयजन ।

२ रिश्तेदार, संबंधी ।

स्वजनता–सं. स्त्री. [सं.] १ आत्मीयता ।

२ रिश्तेदारी ।

स्वजात–सं. पु. [सं.] पुत्र, वेटा ।

वि.—अपने से उत्पन्न ।

स्वजाति–सं. स्त्री.—अपनी जाति, अपनी कौम ।

स्वजातीय–वि.—१ अपनी जाति का ।

२ एक ही जाति या वर्ग का ।

स्वतंत्र–वि. [सं.] १ जिस पर किसी का दवाव या शासन न हो ।

२ जो किसी प्रकार के वंधन में न पड़ा हो, आजाद ।

३ काम या वात जिसमें किसी दूसरे का सहारा न लिया गया हो ।

४ अलग, जुदा, भिन्न ।

५ नियमों आदि से वन्धनरहित ।

रू. भे.—सुतंतर, सुतंत्र ।

स्वतंत्रता–सं. स्त्री.—१ स्वतंत्र रहने या होने का भाव ।

२ आजादी ।

३ स्वाधीनता ।

रू. भे.—सुतंतरता, सुतंत्रता ।

स्वतिस्री—देखो 'स्वस्तिस्री' (रू. भे.)

उ०—**स्वतिस्री** दिल्लीपुर सुथांन, सल्तनत मुगळ कुळ सावधांन ।

[illegible] सदर दौरान दराज, नालाबुलंद दन्नांन ताज ।—ऊ. का.

स्वत:—अव्य [सं. स्वतस्] अपने आप, आप से आप, स्वयं ।

रू. भे.—सुता, सुतेई, सुतै ।

स्वत्व-सं. पु. [सं. स्वत्व] १ किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने व काम में लाने का अधिकार, हक ।

२ अपनापन ।

स्वदेस-सं. पु. [सं. स्वदेश] अपना देश, वतन ।

स्वदेसी-वि [सं. स्वदेशी] १ अपने देश का ।

२ अपने देश में होने वाला ।

स्वधरम-सं पु. [सं. स्वधर्म] १ अपना धर्म ।

२ अपना कर्तव्य ।

स्वधा-सं. स्त्री. [सं.] १ पितरों के निमित्त दिया जाने वाला भोजन, पितृ अन्न ।

२ दक्ष की एक कन्या, जो पितरों की पत्नी मानी जाती है ।

३ अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम ।

अव्य.—४ देवताओं तथा पितरों को हवि देते समय उच्चारण किया जाने वाला मंत्र ।

स्वधाधिप, स्वधाधिपत, स्वधाधिपति, स्वधाधिपती-सं. पु. [सं. स्वधा+अधिपति] आग, अग्नि ।

स्वधाप्रिय-सं. पु. [सं.] आग, अग्नि ।

स्वधोद-सं. पु.—लांगल नामक राजा जिसका दूसरा नाम राहुल था ।

उ०—तिण सुत संजय रघुकुळ तारण, सावय संजय सुत दुसह संघारण । सभ्रम सावय स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा ।—सू. प्र.

स्वनदा-सं. स्त्री.—दुर्गा ।

स्वन-सं. पु.—१ सत्य के एक पुत्र का नाम ।

२ शब्द, ध्वनि ।

[सं. श्वन्] ३ कुत्ता, श्वान ।

स्वनचक्कर, स्वनचक्र-सं. पु. [सं. स्वनचक्र] एक प्रकार का रतिबंध या संभोग का आसन ।

स्वनांमधन्य-वि. [सं. स्वनामधन्य] जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो ।

स्वपच-सं. पु. [सं. श्वपच:] १ श्वान का मांस पकाकर खाने वाला व्यक्ति, चांडाल ।

२ पतित जाति का व्यक्ति ।

स्वपथ-सं. पु.—स्वर्ग का मार्ग या रास्ता ।

स्वपन, स्वपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू. भे.)

स्वपाळ, स्वपाल-सं. पु. [सं. स्वपाल] स्वर्ग का रक्षक ।

स्वप्न-सं. पु. [सं.] १ सोने की क्रिया या अवस्था, नींद ।

उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, इनतें अलग रहाया । तीन गुणां री जहां उत्पती नांही, पांच भूत नहीं काया ।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

२ निद्रावस्था में किसी काल्पनिक घटना, विचार, चित्र आदि का मस्तिष्क में आना जो प्राय: अवास्तविक होता है ।

३ निद्रावस्था में आने वाले विचार, बात आदि जो कभी-कभी सत्य भी होते हैं ।

उ०—थिरू मूरती सूर रै नूर थाई, तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां बताई ।—मे. म.

४ मन ही मन की जाने वाली बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ और योजनाएँ आदि, ख्वाब ।

५ एक राजस्थानी लोक-गीत ।

वि.—१ क्षणभंगुर, नाशवान ।

२ मिथ्या ।

रू. भे.—सपणौ, सपनौ, समणउ, समणौ, सुपण, सुपणौ, सुपन, सुपंन, सुपनउ, सुपनूं, सुपनू, सुपनौ, सूहणौ, सोहण, सोण, सोहणौ, स्वपन, स्वपनौ ।

स्वपनदोस-सं. पु. [सं स्वप्नदोष] १ निद्रावस्था में कोई कामोदीपक या शृंगारिक दृश्य देखने के कारण वीर्यपात होने का रोग ।

रू. भे.—सपनदोख, सपनदोस, सुपनदोस ।

स्वभाउ, स्वभाव-सं. पु. [सं. स्वभाव] १ अपना या निज का भाव ।

पर्याय.—अनिज, आतम, गत, गति, गुणआतम, चलगत, चलगति, निसरग, प्रगति, रीति, लखण, विसव, संसिध, संसिधि, सततरूप, सभाव, सरग, सहज, सांनिज, सुभाव ।

२ सदा बना रहने वाला मूल गुण, खासियत ।

३ जीव-जन्तुओं और प्राणियों की वह प्रकृति जो जन्म से होती है ।

४ मनुष्य के मन का वह पक्ष जो बहुत कुछ जन्मजात होता है तथा सदैव देखने में आता है ।

ज्यूं—सुरेसजी ती स्वभाव सूं ई रीसट्ट है ।

५ आदत, बान ।

रू. भे.—सबाव, सभाय, सभाव, सामाय, साभाव, सुभाई, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ, सुभाय, सुभाव, सोभाव ।

स्वभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू. भे.)

स्वभावोकति, स्वभावोक्ति, स्वभावोगत, स्वभावोगति-सं. स्त्री. [सं. स्वभावोक्ति] एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी जातिवाचक पदार्थ व व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों का वर्णन होता हो ।

स्वभू—देखो 'स्वयभू' (रू. भे.)

स्वयं-वि. [सं. स्वयम्] अपने-आप अपना कार्य करने वाला ।

सर्व.—१ खुद, आप ।

अव्यय.—२ अपने आप ।

रू भे.—सवं, सुयं ।

स्वयंजोत, स्वयंजोति, स्वयंज्योत, स्वयंज्योति, स्वयंज्योती-सं पु.

[सं. स्वयंज्योति] १ परमेश्वर, ईश्वर ।
२ परब्रह्म ।
स्वयंदूत–सं. पु. [सं.] वह नायक जो अपना प्रेम नायिका पर स्वयं प्रकट करता हो । (साहित्य)
स्वयंदूति, स्वयंदूती–सं. स्त्री. [सं.] नायक के समक्ष स्वयं ही अपना दूतत्व करने वाली परकीया नायिका ।
स्वयंप्रभ–सं. पु. [सं.] १ जैनियों के भविष्यत्काल के चौथे तीर्थंकर का नाम । (स. कु.)
२ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ६४ वां ग्रह ।
स्वयंप्रभा–सं. स्त्री. [सं.] १ इंद्र की एक अप्सरा जिसे मयदानव चुरा ले गया था । इसी के गर्भ से मंदोदरी का जन्म हुआ था, मंदोदरी की माता ।
वि. वि.—यह मेरुसावर्णि की पुत्री, रावण की सास व मेघनाद की नानी थी । यह ऋक्षबिल में रहती थी । सीता की खोज करते समय हनुमान आदि से इसकी भेंट हुई थी । इसने सब वानरों की आँखें बंद कराकर ऋक्षबिल से समुद्र के किनारे भेज दिया था ।
२ अर्जुन के स्वागत-समारोह में इन्द्रभवन में नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम ।
रू. भे.—सोयंप्रभा ।
स्वयंप्रभु–सं. पु. [सं.] अट्ठाईस व्यासों में से एक ।
स्वयंफळ–सं पु [सं. स्वयंफल] जो आप ही अपना फल हो ।
स्वयंबर—देखो 'स्वयंवर' (रू भे.)
स्वयंभुव, स्वयंभू–सं पु. [सं स्वयंभुः] १ ब्रह्मा, विरंचि ।
[सं स्वयंभुवः] २ प्रथम मनु का नाम ।
३ शिव, महादेव ।
[सं. स्वयंभूः] ४ विष्णु ।
५ कामदेव, मनोज ।
६ काल जो मूर्तिमान हो ।
७ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक ।
वि.—[सं. स्वयंभू] आप से आप उत्पन्न होने वाला ।
रू. भे.—सम्भुमन, संभुमनु, सम्भूमुनी, संभूमन, संभूमनु, संभूमुनी, सयंभू, सियभू, सूयंभू, स्यंम, स्वभू ।
स्वयंभोज–सं. पु. [सं.] राजा शिवि के एक पुत्र का नाम ।
स्वयंवर–सं पु. [सं.] १ स्वयं वरण करने की क्रिया, स्वयंवरण ।
२ वह उत्सव या समारोह जिसमें कन्या स्वयं अपने लिए उपस्थित व्यक्तियों में से वर को वरण किया करती थी या चुनती थी ।
उ०—फेर मारग चालतां मड़ौ बोलियौ—राजा सांभळ । चंपावती नांम एक नगर, तेथी चंपकेस्वर राजा, तिंव रै एक पुत्री भुवनसुंदरी । सौ वर प्रापति लायक हुई । तठै राजा विचार कियौ पुत्री रै कारण स्वयंवर रचायजै । जोग वर आंणिजै ।
—वैताळ पच्चीसी
३ कन्या द्वारा स्वयं के लिए वर को वरण करने की रीति या विधान ।
४ विवाह, शादी ।
रू. भे.—सइंवर, सइंवरि, सयंवर, सयंवर, सयंवरु सुयंवर, सुयंवर, स्वयंवर
स्वयंसेवक, स्वयंसेवी–सं. पु. [सं.] किसी ऐसे संगठन का सदस्य जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की सेवा करना होता है ।
स्वयमेव–क्रि. वि. [सं. स्वयं+एव] स्वयं ही, खुदबखुद ।
स्वर–सं. पु. [सं. स्वरः] १ किसी पदार्थ पर आघात पड़ने या प्राणी के कंठ से उत्पन्न शब्द ।
२ आघात अथवा संघर्षण से उत्पन्न स्निग्ध एवं अनुरागात्मक ध्वनि जिसका निश्चित स्वरूपहो और जो सुनने वाले के मन को अनुरंजित कर सके ।
३ संगीत में वह शब्द जिसका कुछ निश्चित रूप हो, ये सात प्रकार के माने गये हैं यथा—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद ।
४ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसका उच्चारण आप से आप हो, तथा जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता हो । स्वर वर्ण–ये तेरह होते हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ऋ ।
५ किसी वाद्य की ध्वनि, आवाज ।
उ०—घण माळ ज्युंही असुरांण घड़ा, खित आव्रत मेन किसेन खड़ा । रिण तूर नफेरिय भेर रूड़ै, गहरै स्वर तांम दमांम गुड़ै
—रा. रू.
६ वेदपाठ में शब्दों का उतार चढाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकार का होता है ।
७ पवन जो नथुनों से होकर निकले ।
८ सोते समय नाक से निकलने वाला शब्द खर्राटा ।
९ सात की संख्यासूचक । ※ (डि. को)
[सं. स्वर्] १० स्वर्ग ।
११ आकाश, अन्तरिक्ष ।
१२ सूर्य और ध्रुव के बीच का स्थान ।
१३ तीन व्याहृतियों में से तीसरी व्याहृति ।
रू. भे.—सर, सुर ।
स्वरकळानिध, स्वरकळानिधि, स्वरकळानिधी–सं. स्त्री. [सं. स्वर+कलानिधि] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (संगीत)
स्वरक्षस–सं. पु. [सं.] अट्ठाईस व्यासों में से एक ।
स्वरगंगा–सं. स्त्री. [सं. स्वर्+गंगा] आकाशगंगा ।
स्वरग–सं. पु. [सं. स्वर्ग] १ अन्तरिक्ष में स्थित सात लोकों में से तीसरा लोक, जहां देवता, पुण्यात्मा तथा सत्कर्मी निवास करते हैं, देवलोक, वैकुंठ ।

उ०—१ मन्द पड़ा जिन ऊजळौ, दिन दिन घटा विलंद । नगर मझा रा निरखियां, स्वरग छटा व्हे मंद ।—बां. दा.

उ०—२ जिण में रहा राजपूत तिके स्वरग रा उतावळा, नैपुडां लोलड़, धवणां विन्दां रा वहणहार, तिणां री बाग उपरी । गोस दीप-नीन ऊपर जावतां वै मुंडण-रेढां नूं पहूंचिया ।
—डाडाळा सूर री वात

पर्याय—अमरापुर, अमरालय, अमरावती, अवय, ...दिव, उरघगति, उरधलोक, गऊ, ग्यांनसत, तविखि, त्रदसतप, त्रिदस, त्रिदसासदन, त्रिदिव, त्रिवस्ट, दिवत, दिविग्रोक, ...ठ, नाक, पतावग, सुव, सुरधांम, सुरआलय, सुररिखय-वन, सुरलोक ।

मुहा.—१ स्वरग जाणौ या सिधाणौ=मरना, मृत्यु होना. २ स्वरगपुरी होणौ=अत्यन्त रमणीक स्थान होना. ३ स्वरग री मौज करणी=अत्यन्त सुख भोगना, आनन्द लूटना ।

२ अन्य धर्मों के अनुसार एक विशिष्ठ स्थान जो आकाश में माना जाता है ।

३ कोई ऐसा स्थान जहां सर्व सुख प्राप्त होता हो ।

४ आकाश, आसमान ।

५ ईश्वर ।

६ सुख ।

७ देखो 'सरग' (रू. भे.)

रू. भे.—सग, सग्ग, सरग, सरगि, सरग्ग, सुरग, स्रग, स्रग्ग, स्रुग, स्रुगि ।

स्वरगगमण, स्वरगगमन–सं. पु. [सं. स्वर्गगमन] स्वर्ग जाने की क्रिया, अवस्था या भाव, मरना ।

स्वरगगांमी–वि [सं. स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग की तरफ जाने वाला ।

२ मरा हुआ, मृत ।

स्वरगगिर, स्वरगगिरि, स्वरगगिरी–सं. पु. [सं. स्वर्गगिरि] सुमेरुपर्वत ।

स्वरगतरंगिण, स्वरगतरंगिणी–सं. स्त्री. [सं. स्वर्गतरगिनी] आकाश-गंगा ।

स्वरगतर, स्वरगतरु–स. पु. [सं. स्वर्गतरु] १ कल्पवृक्ष ।

२ पारिजात ।

स्वरगद–वि. [सं. स्वर्गद] स्वर्ग देने वाला ।

स्वरगधेन, स्वरगधेनु–सं. स्त्री. [सं. स्वर्गधेनु] कामधेनु ।

स्वरगनद, स्वरगनदी–सं. स्त्री. [सं. स्वर्गनदी] आकाश-गंगा ।

रू. भे.—सरगनद, सरगनदी, सुरगनदी, सुरगीनदी ।

स्वरगपत, स्वरगपति, स्वरगपती–सं. पु. [सं. स्वर्गपति] स्वर्ग का मालिक, इन्द्र ।

रू. भे.—सरगपत, सरगपति, सरगपती, सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती ।

स्वरगपुर, स्वरगपुरी–सं. स्त्री. [सं. स्वर्गपुरी] अमरावती, वैकुण्ठपुरी ।

रू. भे.—सरगपर, सरगपुर, सरगपुरी, सरगापुर, सरगापुरी, सुरगपुर, सुरगपुरी ।

स्वरगमंदाकनी, स्वरगमंदाकिनी–सं. स्त्री. [सं. स्वर्गमंदाकिनी] आकाश-गंगा ।

रू. भे.—सुरगमंदाकनी, सुरगमंदाकिनी ।

स्वरगलोक–सं. पु. [सं. स्वर्गलोक] १ देवलोक ।

उ०—जिण री संगति रै प्रभाव स्वरगलोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास भाळियौ ।—वं. भा.

२ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

क्रि. प्र.—व्हेणौ, जाणौ ।

रू. भे.—सरगलोक, स्रगलोक, सुरगलोक, स्रगलोक, स्वरलोक ।

स्वरगलोकेस, स्वरगलोकेसर, स्वरगलोकेसु, स्वरगलोकेसुर–सं. पु. [सं. स्वर्गलोकेश, स्वर्गलोकेश्वर] १ इन्द्र ।

२ तन, शरीर ।

स्वरगवधु, स्वरगवधू–सं स्त्री. [सं. स्वर्गवधू] अप्सरा ।

रू. भे.—सवरगवधू, सुरगवधू ।

स्वरगवास–स. पु. [सं. स्वर्गवास] १ बैकुंठवास, देवलोक ।

उ०—कायर घर आवण करै, पूछै ग्रह दुज पास । स्वरगवास खारौ गिणै, सब दिन प्यारौ सास ।—वां. दा.

२ स्वर्ग का निवास ।

३ देहावसान, मृत्यु, मौत ।

रू. भे.—सरगवास, सुरगवास ।

स्वरगवासी–वि. [सं. स्वर्गवासी] १ स्वर्ग में रहने वाला ।

२ स्वर्गीय ।

रू. भे.—सरगवासी, सुरगवासी ।

स्वरगविहारी–सं. पु. [सं. स्वर्गविहारी] देवता, देव ।

रू. भे.—सुरगविहारी, स्रगविहारी ।

स्वरगगात्री–सं. स्त्री. [सं.] अप्सरा ।

स्वरण–सं. पु. [सं. स्वर्ण] १ सुवर्ण, सोना, कनक ।

२ धतूरा ।

३ कामरुप देश की एक नदी ।

रू. भे.—सवरण, सोवंन, सोवंन्न, सोव्रण, सोवन, सोवरण, सोविरण, सोव्रण, सोव्रन, सोव्रन्न ।

स्वरणकाय–सं. पु. [सं. स्वर्णकाय] गरुड़ का एक नाम ।

स्वरणकार–सं. पु. [स. स्वर्णकार] स्वर्ण के आभूषण बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

रू. भे.—सोव्रणकार, सोवनकार ।

स्वरणगिर, स्वरणगिरि, स्वरणगिरी-सं. पु. [सं. स्वर्णगिरि] १ सुमेरुपर्वत ।

२ लंका का दुर्ग ।

३ जालोर का दुर्ग ।

४ मगध देश की प्राचीन राजधानी।

रू. भे.—सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी, सोनगढ, सोनगिर, सोनगिरि, सोनगिरी, सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि, सोनागिरी, सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी, सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी, सोव्रनगिर, सोव्रनगिरि, स्रोव्रन्नगिरी, सोव्रन्नगिर, सोव्रन्नगिरि, सोव्रन्नगिरी।

स्वरणचूड़—सं. पु. [सं. स्वर्णचूड़] १ नीलकंठ नामक पक्षी।

२ महादेव, शिव।

स्वरणजात, स्वरणजाति, स्वरणजाती—सं. स्त्री. [सं. स्वर्णजाति] पीली चमेली।

स्वरणपक्ख, स्वरणपख, स्वरणपक्ष—सं. पु. [सं. स्वर्णपक्ष] गरुड़।

स्वरणप्रस्थ—सं. पु. [सं. स्वर्णप्रस्थ] जंबू द्वीप का एक उपद्वीप। (पुराण)

स्वरणभूखण, स्वरणभूसण—सं. पु. [सं. स्वर्णभूषण] १ सोनागोरू।

२ सोने के आभूषण।

स्वरणाद्रि, स्वरणाद्री—सं. पु. [सं. स्वर्णाद्रि] भुनेश्वर नामक तीर्थ। (उड़ीसा)

स्वरभंग—सं. पु. [सं.] १ आवाज बैठ जाने व ठीक-ठीक स्वर न निकलने का एक प्रकार का रोग विशेष। (वैद्यक)

२ उच्चारण में होने वाली बाधा।

स्वरभांण, स्वरभांणु, स्वरभांनु—सं. पु. [सं. स्वरभानु] १ श्रीकृष्ण एवं सत्यभामा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

२ राहु नामक ग्रह।

स्वरभूखणी, स्वरभूसणी—सं. स्त्री. [सं स्वरभूषणी] कर्नाटिकी पद्धति की एक रागिनि। (संगीत)

स्वरमंडळ—सं. पु. [सं. स्वरमंडल] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

स्वरलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू. भे.)

उ०—पातरां पांच नाजर उभै, भल वाई अत भावियौ। 'जसवत' सुतन सतियां सहित, यौं **स्वरलोक** सिधावियौ।—रा. रू.

स्वरवीथी—सं. स्त्री. [सं स्वर्वीथी] ध्रुव-पुत्र वत्सर की पत्नी का नाम।

स्वरवेस्या—सं. स्त्री. [सं. स्वर्वेश्या] अप्सरा।

स्वरवैद्य—सं. पु. [सं. स्वर्गवैद्य] अश्विनीकुमार।

स्वरसंक्रम—सं. पु. [सं.] संगीत में स्वरों का उतार और चढाव।

स्वरसंधि—सं. स्त्री. [सं.] व्याकरण में दो या अधिक पास-पास आने वाले स्वरों का मिलकर एक होना।

स्वरस—सं. पु.—औषधि का रस। (अमरत)

स्वरा—सं. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की पत्नी, गायत्री की सपत्नी।

२ उत्तानपाद एवं सूनृता की एक कन्या का नाम।

स्वराज्य—सं. पु. [सं.] १ अपना देश, वतन।

२ वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था विदेशी शासकों के हाथ से निकलकर देशवासियों के हाथ में आ चुकी हो।

स्वराट—सं. पु. [सं.] १ इंद्र, देवराज। (ना. डि. को.)

उ०—छत्रीलौ घणौं खास-आवास छाजै, लखै घाट **स्वराट** रौ पाट लाजै।—मे. म.

२ ब्रह्मा।

३ परमेश्वर, ईश्वर।

स्वराभरण—सं पु [सं.] कर्नाटकी पद्धति का एक राग। (संगीत)

स्वरालाप—सं. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

स्वरास्ट्र—सं. पु. [सं. स्वराष्ट्र] अपना राष्ट्र, वतन।

स्वरूप—सं. पु. [सं.] १ आकार, वनावट, आकृति।

२ रूप, शक्ल।

३ सौंदर्य, सुन्दरता, रूप।

उ०—इतरै एक जख आइयौ सो मदनावती रौ रूप देख उठाय वींनूं विंध्याचळ पर लेय गयौ। तेथी कहियौ छै—अति **स्वरूप** नाहीं भलौ, नाहीं भलौ गुमांन। अति की चाह भली नहीं, ऐ त्रय वचन प्रमांण।—वैताळपच्चीसी

४ मूर्ति या चित्र।

५ किसी चीज का ढंग या पद्धति।

६ स्वभाव, आदत, प्रकृति। (ह. नां. मा.)

७ आत्मा।

८ विद्वान, पंडित।

९ ईश्वर, भगवान्।

उ०—तुरीयै नांम कहण सूं न्यारां, निज अपरोक्ष अनूपा। कारज कारण लेस न कोई, सोई सुखरांम **स्वरूपा**।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

१० पांच प्रकार की मुक्तियों में से सारूप्य नामक मुक्ति।

वि.—१ मनोहर, सुन्दर, रूपवान।

उ०—और सुरसुंदरी आवास थकी अपणी पाळतू मदनमंजरी, सारिका, तींनूं पूछियौ कै तूं जांणै तौ वताय, मौ लायक वींद कुण होसी? सारिका कही—भोगावती नगरी रौ राजा रूपसेन, सौ नांम सकळ गुण जांण, अति **स्वरूप** सौ थारै भरतार होयसी।

—वैताळपच्चीसी

२ तुल्य, समान।

३ देखो 'सरूप' (रू. भे.)

रू. भे.—सारूप।

स्वरूपमांन, स्वरूपवांन—वि. [सं. स्वरूपवत्] सुन्दर, खूबसूरत।

स्वरूपी—वि.—स्वरूप वाला, स्वरूपवान।

रू. भे.—सरुपी।

स्वरेणू—सं. स्त्री. [सं.] सूर्य-पत्नी संज्ञा का एक नाम।

स्वरोदय—सं. पु. [सं.] वह ज्ञान जो दाहिने और वाएँ नथुने से निकलते हुए श्वासों के आधार पर सब प्रकार के शुभाशुभ फल जानने

के लिए होता है।

स्वल्प-वि. [सं.] बहुत थोड़ा, अल्प।

स्ववश-वि. [सं. स्ववश] जो अपने वश में हो।

स्वसन-सं. पु. [सं. श्वसन] १ हवा, पवन। (ह. नां. मा.)

२ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

स्वसरिता-सं. स्त्री. [सं. स्वः+सरित्] गंगा।

स्वसा-सं. स्त्री. [सं. स्वसृ] बहन।

उ०—जिमु 'गंगा' थारी स्वसा, एक तजै ग्रांमैर। क्रम ईखै देणी कंवर, वर वध कुळ घर वैर।—वं. भा.

स्वसाद-सं. पु.—एक सूर्यवंशी राजा, शशाद।

उ०—सुन विकुक्ष सकुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जं सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन विस्टरास।
—सू. प्र.

स्वसुंदरी-सं. स्त्री. [सं. स्वःसुंदरी] अप्सरा।

स्वसुर, स्वसुरौ—देखो 'सुसरौ'।

स्वस्ति-स. स्त्री. [सं.] १ ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक।

२ पत्रों के प्रारम्भ में मंगलकामना हेतु लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—लिखि स्वस्ति स्री स्री स्री विराज, लिखियै जु प्रिय जोग आज। उपमा जु लिखौ जेती बनाय, सौ सकळ अंग तुम्हरै लखाय।
—समानबाई

अव्य —१ मंगल हो, भला हो। (आशीर्वाद)

२ मान्य है, ठीक है।

३ कल्याण, क्षेम।

उ०—हूंतौ थयौ मूरख रे दाक्षिणवंत थी, वात कही सहु तुझ रे। राज चाहुं पाछै, खोटी मति आछै, थाज्यौ तौ तुझनं रे स्वस्ति महीपति।—वि. कु.

४ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे.)

उ०—कुटी चडतइ वेडि विचि, महिला मूकी जाइ। ऊंदिरडु मुखि मूंजरइ, तु तै स्वस्ति भणाइ।—मा. कां. प्र.

स्वस्तिक-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का मांगलिक चिन्ह जो मांगलिक अवसरों पर भवनादि में अंकित किया जाता है।

२ सथिया जैसा सामुद्रिक चिह्न जो प्रायः हथेली या पैर में होता है एवं शुभ माना जाता है। (सामुद्रिक)

३ एक प्रकार का शुभ द्रव्य जो विवाहादि के समय भिगोये हुए चावलों को पीसकर बनाया जाता है।

४ सथिया जैसा चिन्ह।

५ एक विशेष प्रकार का राजप्रासाद।

६ चौराहा।

७ एक प्रकार का पकवान।

८ एक प्राचीनकालीन यंत्र जो शरीर में गड़े हुए शल्य आदि निकालने के काम आता था।

९ सांप के फन पर की नीली रेखा।

१० एक विशेष प्रकार का मकान जिसके पश्चिम व पूर्व की ओर दो दालान हों।

११ लहसुन।

१२ मूली।

१३ रतालू।

१४ लंपट, रसिया।

१५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५८ वां ग्रह।

१६ एक प्रकार का योगासन।

रू. भे.—सठिक, सखियौ, सतियौ, सथियौ, साकियौ, साखियौ, साख्यौ, साथियौ, स्वस्ति।

स्वस्तिका-सं. स्त्री.—चमेली।

स्वस्तिकासण, स्वस्तिकासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक, जिसमें दोनों जंघाओं के बीच के भाग में और दोनों पावों की पिंडलियों के बीच में दोनों पांवों के पंजों को रखना और शरीर को सीधा रखकर बैठना होता है। (योग)

स्वस्तिमत, स्वस्तिमति, स्वस्तिमती-सं. स्त्री. [सं. स्वस्तिमती] स्वामी-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

स्वस्तिस्री-सं. पु.—पत्र के प्रारम्भ में लिखा जाने वाला मांगलिक शब्द।

उ०—स्वस्तिस्री चंद्रगढ सुभं स्थांन अनेक ओपमा लाइक ब्राजमांन प्यारी सजीली लजीली फबीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अंगीली रंगीली बंकीली लोरंकली रमकीली समकीली चटकीली ''।—र. हमीर

रू. भे.—स्वतिस्री।

स्वस्न-सं. पु. [सं. स्वश्न] एक असुर का नाम।

स्वस्रप, स्वस्रिप-सं. पु. [सं. श्वसृप] सैंहिकेय नामक असुर जो हिरण्यकशिपु का भतीजा था।

स्वस्व-सं. पु. [सं. स्वश्व] एक राजा जिसके पुत्र रूप में सूर्य ने जन्म लिया था।

स्वांग-सं. पु. [सं.] १ किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने शरीर पर इस प्रकार धारण करना कि देखने वालों को वही दूसरा व्यक्ति जान पड़े।

उ०—१ दूजी बातां तौ राजाजी रै घणी मोड़ी समझ में आवती, पण मरजी रा खवास री आ वात वांरै तुरत समझ में आयगी। बोल्या—हां, आ वात तौ थारी साची, वौ जात रौ नाई नीं हो, नाई रौ स्वांग लायौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जै डोकरी रै वदळै वौ किणी दूजा वेस में व्हैतौ तौ

म्हैं किणी भाव फिटक मैं नीं आवतौ। मारचां ई छोडतौ। पण उणरा भाग कै वौ डोकरी रौ इज **स्वांग** लायौ।
—फुलवाड़ी

२ कोई वहाना बनाकर दूसरों को भ्रम में डालने या अपना काम निकालने के लिए धारण किया जाने वाला झूठा रूप।

उ०—राईकौ ऊंचौ मूंडौ करनै जोयौ। देखतां ई तुरत पिछांणग्यौ कै औ निस्चै कोई भांड है। पै'ला तौ लुगाई रौ वेस धरनै आयौ। दाळ नीं गळी तौ अबै दूजौ **स्वांग** लायौ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, लाणौ।

३ ढोंग, आडम्बर।

उ०—१ सेठांनै तौ लड़णा सारू मिस चाहीजतौ हौ। व्याव री वात घणी धकै नीं वधै इण वास्तै सेठ लड़ण री तुरत **स्वांग** रच लियौ। सेठांणी रौ माजनौ पाड़तां कैवण लागा—थैं तौ आ इज चावौ कै म्हैं मर जावूं तौ पाप कटै।—फुलवाड़ी

उ०—२ उणी भांत थैं मिनख लुगायां रा तोख उठावौ, वांरा सूं प्रीत करण रौ **स्वांग** रचौ। प्रीत करण सारू तौ थांरौ मूंडौ घणौ वळै अर प्रीत रौ जोखौ उठातां भाईत मरै। औ किण रै घर रौ न्याव।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—रचणौ।

४ देखो 'सांग' (रू. भे.)

स्वांगी–वि.—१ ढोंगी।

उ०—**स्वांगी** सब संसार है, साधु सोध सुजांण। पारस परदेसां भया, दादू बहुत पखांण।—दादूबांणी

२ नकल करने वाला, नकलची।

३ बहुरूपिया।

स्वांत, स्वांति–सं पु.—१ अपना अंत, मृत्यु।

२ मन, अंतःकरण।

३ देखो 'स्वाति' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ तव कीति स मोर भंगौर करै, घन वूठां तूठां दोख हरै। सुख सारंग **स्वांति** जिसि पपियैं, मुखि मीठी वांणी सदा जपियै।
—गोकळजी

उ०—२ **स्वांति** वूंद वुधवंत सरजिया, वांणी जौति नीर वाखांण। कीमति नारी तणा गहणा कजि, चाहि लिया अमज चहूवांण।
—महाराजा छतरसिंघ रौ गीत

स्वांन–सं. पु. [सं. श्वान] १ कुत्ता।

उ०—१ करै चाड़ पर काचड़ा, अठी उठी नूं ईख। पगविच हाडक परछियां, तिण सूं **स्वांन** सरीख।—वां. दा.

उ०—२ वदियौ **स्वांन** वनंचरां, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै।—सू. प्र.

२ दोहा नामक छंद का एक भेद जिसमें २ गुरु और ४४ लघु होते हैं।

३ छप्पय का एक भेद जिसमें ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं।

[सं. स्वानः] ४ शब्द, ध्वनि, आवाज। (डिं. को.)

उ०—भवांनी नमौ कच्छपी **स्वांन** भासा, भवांनी नमौ ऐन ईसांन आसा। भवांनी नमौ व्योम गंगा वलच्छा, भवांनी नमौ चेतना देन दच्छा।—मे. म.

वि—क्रूर। ※ (डिं. को.)

रू. भे.—सुआंन।

स्वांननिद्रा–सं. स्त्री.—थोड़े से खटके या आहट से खुलने वाली निद्रा, हल्की नीद, अल्पनिद्रा।

स्वांम, स्वांमि—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ रति रयण सुदि नर नारि रांमति गाळि प्रमदति गावही, मुख गांन दिन निस **स्वांम** मंगळ वैण चंग वजावही।—रा. रू.

उ०—२ वीनति एक करूं मोरा **स्वांम**, द्यौ मोहि मुगतिपुरी कौ धांम। किसकै हरि हर किसकै रांम, समयसुंदर करै जिनगुण ग्रांम।—स. कु.

उ०—३ दिपैं गुण निम्मल मुत्तियदांम, सेवुं मन सुद्ध तिकौ हिज **स्वांम**। सुरासुर सरव करै जसु सेव, दियै सुख वंछित रिखभदेव।
—ध. व. ग्रं.

स्वांमिकारतिक, स्वांमिकारतिकेय—देखो 'स्वांमीकारतिकेय' (रू. भे.)

स्वांमिद्रोह—देखो 'स्वांमीद्रोह' (रू. भे.)

स्वांमिद्रोही—देखो 'स्वांमीद्रोही' (रू. भे.)

स्वांमिधरम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमिधरमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

उ०—तीं सूं दूजा नूं पण चाहनां **स्वांमिधरमी** जोव देखणौ री हीवै।—नी. प्र.

स्वांमिधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

उ०—ठावै हम ठक्कुर सुकुळ ठीक, नोकरी चहत नजदीक नीक। सुभ **स्वांमिधरम्म** सेवक सुसील, अनुसरन असुर ईमांन ईल।
—ऊ. का.

स्वांमिधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमिध्रम, स्वांमिध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमिध्रमी, स्वांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमी—देखो 'सांमी' (रू. भे.)

उ०—१ गज तजंता पुळिया गिरौं, **स्वांमी** कासिम संग। दळ भग्गौ दिल्लीस रौ, जांणौं परवळ जंग।—वं. भा.

उ०—२ स्त्री पुत्र जगाय लक्ष्मी रा वचन कहिया। तठै स्त्री बोली—अैतौ कारज नहीं करौ तौ अैती दिहाड़ी खातां क्यौं छूटोला। पाछै पुत्र कही—हूं धन्य छूं, म्हारौ सरीर **स्वांमी** रै अरथदेव रै कांम आवै।—वैताळ पच्चीसी

स्वांमीकारतिक, स्वांमीकारतिकेय–सं. पु. [सं. स्वामिकार्त्तिकेय:]

देवों का सेनापति जो तारकासुर का वध करने के लिए अवतरित हुआ था।

वि. वि.—पुराणों में सर्वत्र इसे शिव और पार्वती का अथवा अग्नि का पुत्र माना गया है एवं इसे छः मुख वाला भी कहा गया है। इसके जन्म के विषय में कई प्रकार की कथाएँ पुराणों में प्रसिद्ध हैं। ब्रह्माण्ड के अनुसार एक समय शिव और पार्वती एकान्तवास में थे, उस समय इंद्र ने अनल नामक अग्नि से उनके एकान्त का भंग करवाया। इस कारण शिव के वीर्य का अर्द्धांश भूमि पर गिर पड़ा। अग्नि के इस प्रकार की उद्दण्डता के कारण पार्वती ने इस पर कोप किया एवं अग्नि को शाप देकर शिव के वीर्य को धारण करने के लिए बाध्य किया। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार शिव के वीर्य को अग्नि अधिक समय तक धारण न कर सका अतः उसने गंगा को दे दिया। गंगा भी धारण न कर सकी अतः उसने भूमि पर छोड़ दिया। आगे चलकर उसी वीर्य से स्वामिकार्तिकेय का जन्म हुआ।
महाभारत में यह वृत्तान्त भिन्न रूप से प्राप्त होता है। एक समय सप्तऋषियों के यज्ञ में अग्नि सप्तऋषियों की पत्नियों पर आसक्त हो गया और अपनी पत्नी स्वाहा को त्याग दिया और अरुंधति के अतिरिक्त छः ऋषि-पत्नियों के साथ यह रमण करने लगा। अग्नि-पत्नी स्वाहा को यह पता लगा तो उन छः ऋषि-पत्नियों में वह समाविष्ठ हो गई, पश्चात् उसे ही ऋषि-पत्नी समझ कर उसके साथ संभोग करने लगा। स्वाहा ने अग्नि से प्राप्त उसका सारा वीर्य एक कुंड में रख दिया। आगे चलकर स्वामिकार्त्तिकेय का जन्म हुआ। तारकासुर का वध करने के लिए ही इनका अवतार हुआ था। ब्रह्मा ने तारकासुर को अवध्यत्व का वर दे दिया था और कहा था कि इसका वध सात वर्ष की आयु वाला ही बालक कर सकेगा। इस कारण जन्म के पश्चात् सात दिन की अवधि में ही इसने तारकासुर से युद्ध कर उसका वध कर दिया था। महाभारत में तारकासुर के साथ महिषासुर का भी वध इसने ही किया था। इसकी पत्नी का नाम देवसेना था।

पर्याय.—अगनीभू, आसुतरेस्वर (स्वर), उमाकुमार, क्रतकाकुमार, क्रोंचार, खटमातर, खटमुख, गुह, गंगासुत, चखबारह, चखदेव, छमा, तारकारि, द्रदक, परभ्रति, प्रग्रतवाह, ब्रह्मचार, भूरिअक्ष, महासेन, मोररथ, रुद्रात्मज, विसाख, सरभू, सिखंडी, सुकुमार, सेनांनी।

रू. भे.—स्वांमकारतक, स्वांमकारतिक, स्वांमकारतिकेय, स्वांमि-कांरतिक।

स्वांमीद्रोह-सं. पु. [सं. स्वामिन्+द्रोह] स्वामी या मालिक के प्रति विद्रोह, बगावत।

रू. भे.—सांमद्रोह, सांमीद्रोह, स्वांमद्रोह, स्वांमीद्रोह, स्वांमिद्रोह।

स्वांमीद्रोही-वि. [सं. स्वामिन्+द्रोह+ई. प्रत्य] स्वामी या मालिक के विरुद्ध, विद्रोह करने वाला, स्वामी के विरूद्ध विद्रोह-कर्ता व्यक्ति।

रू. भे.—सांमद्रोही, सांमीद्रोही, स्यांमद्रोही, स्यांमीद्रोही, स्वांमिद्रोही।

स्वांमीधरम-सं. पु [सं. स्वामिन्+धर्म] स्वामि के प्रति वफादारी, स्वामीभक्ति।

रू. भे.—सांमधरम, सांभधरमाई, सांमधरम्म, सांमध्रम, सांमध्रम्म, सांमिधरम, सांमिधरम्म, सांमिध्रम, सांमिध्रम्म, सांमीधरम, सांमीधरम्म, सांमीध्रम, सांमीध्रम्म, स्यांमधरम, स्यांमधमाई, स्यांमधरम, स्यांमधरम्म, स्यांमध्रम, स्यांमध्रम्म, स्वांमिधरम, स्वांमिधरम्म, स्वांमिध्रम, स्वांमिध्रम्म, स्वांमीधरम्म, स्वांमीध्रम, स्वांमीध्रम्म।

स्वांमीधरमी-सं. पु. [सं. स्वामिन्+धर्म+ई. प्रत्य] १ स्वामी के प्रति वफादारी रखने वाला, स्वामीभक्त।

२. स्वामिभक्ति, स्वामी के प्रति वफादारी।

रू. भे.—सांमधरमी, सांमधरमी, सांमधरम्मी, सांमध्रमी, सांमध्रम्मी, सांमिधरमी, सांमिधरम्मी, स्यांमधरमाई, स्यांमधरमी, स्यांमधरम्मी, स्यांमध्रमी, स्यांमध्रम्मी, स्वांमिधरमी, स्वांमिधरम्मी, स्वांमिध्रमी, स्वांमिध्रम्मी।

स्वांमीधरम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमीधरम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमीध्रम—देखो 'स्वांमीधरम' (रू. भे.)

स्वांमीध्रमी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वांमीध्रम्म—देखो 'स्वांमीधरम' (रू भे.)

स्वांमीध्रम्मी—देखो 'स्वांमीधरमी' (रू. भे.)

स्वागत-सं. पु. [सं. स्वागतं] १ अगुवानी, अभिनंदन।

उ०—जाळ खेजड़ा झाड़खा, झट खनैं बुळा स्वागत करै। मरु दातार देव वना विच, छांय सुला विपता हरै।—दसदेव

२ उक्त अवसर पर पूछा जाने वाला कुशल-मंगल।

३ किसी के आने के बाद उसकी की जाने वाली आवभगत, खातिरी।

उ०—ती नूं देखतां ही लुगाई ऊठी, गरम जळ सूं हाथ पग धुलाया, आगत स्वागत करण लागी।—जैसो खाय तैसी बुद्धि री वात

४ किसी के विचारों आदि को मान्य करने की क्रिया या भावना।

५ शकुनि राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—सवागत, सुआगत, सुवागत।

स्वात-सं. पु. [सं.] १ कश्यप एवं ब्रह्मधना के पुत्रों में से एक पुत्र राक्षस।

२ देखो 'स्वाति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलइ पीहचाइ। निकसी

वेणी सापणी, स्वात न वरसउ आइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सीप उडेकै स्वात जळ, चकई उडेकै सूर । नवा उडेकै रण निडर, सूर उडेकै हूर, दारूड़ौ दाखां रौ ।—लो. गी.

स्वातग–सं. पु.—१ चातक ।

उ०—हिया पीतम परहरत, स्वातग भई सुभाय । भीर तवै कर अंक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ देखो 'स्वाति' (रू. भे.)

स्वातज–सं. पु.—मोती, मुक्ता । (अ. मा.)

स्वाति–सं. पु. [सं] १ मोती, मुक्ता ।

उ०—रतन मैं राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरां वांहड़ी लहक तोड़ं । स्वाति नौ विंदलौ नासिका निरमयौ, आज आल्यंगन ऋस्न कोड़ं ।—रुकमणी मगळ

२ शुभ माना जाने वाला सत्ताईस नक्षत्रों में से पन्द्रहवाँ नक्षत्र ।

उ०—१ ढाढी जै साहिब मिळइ, यूं दाखविया जाइ । आंख्यां सीप विकासियां, स्वाति ज वरसइ आय ।—ढो. मा.

उ०—२ नमौ सुक्र संध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रां तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ । महालक्ष्मी मात 'धापां' नमांमी, नमौ मात रौ तात 'सांमुद्र' नांमी ।—मे. म.

३ सूर्य की एक पत्नी का नाम ।

रू. भे.—स्वांत, स्वांति, स्वात, स्वातग, स्वाती ।

स्वातिसुत, स्वातिसुतण, स्वातिसुतन–सं. पु.—मोती, मुक्त ।

स्वाती—देखो 'स्वाति' (रू. भे.)

स्वाद–सं. पु. [सं.] १ किसी चीज को खाने या पीने पर रसनेंद्रिय को होने वाला अनुभव, जायका ।

उ०—१ जद आ बोली वीरा काचरी रा स्वाद री तौ तिखण मिली हुंती तौ खबर पड़ती । जद अे बोल्या—तीखण कांई । जद आ बोली—काचरियां वंदारवां नैं छुरी न मिली ।—भि. द्र.

उ०—२ मीठा रौ स्वाद आयां पछै सेठ आगै पांणी ई नीं पीयौ । इण भांत रौ मीठौ पांणी पीयां आगै पीवण री लत पड़ जावै तौ ! औ तौ मारग ई खोटौ ।—फुलवाड़ी

२ भोजन ।

३ किसी काम बात या चीज़ से प्राप्त होने वाला आनंद, मजा ।

उ०—१ जद लूंकड़ी बोली—अरै चोधरपण मैं तौ बडौ स्वाद है । जद मुसलौ बोल्यौ—थारौ मन हुवै तौ तूं लै । म्हारै तौ कोई चाहीजै नहीं ।—भि. द्र.

४ संभोग ।

उ०—विभचार मांय पायौ विभौ, जातां जुगां न जावसी । नित स्वाद लियौ परनार मैं, याद घणा दिन आवसी ।—ऊ. का.

५ आराम, सुख, आनंद ।

उ०—१ जद मूलजी मूंहतौ बोल्यौ—इण चरचा मैं स्वाद न पावोला । मोकळौ कह्यौ पिण मांन्यौ नहीं ।—भि. द्र.

उ०—२ म्हनै हाल तांई ठा' नीं पड़ी कै औ हित्यारौ आपरै स्वाद री खातर क्यूं जंगळ रै जीवां रा प्रांण लेवतौ भंवै । पण मूं सोरै सास इण दुस्ट रै हाथ आवणियौ म्हैं ई कोनीं ।—फुलवाड़ी

६ रस, आनंद ।

उ०—सुगण सुणंज्यौ स्रुतिधरी, परहौ तजौ प्रमाद । वीजै खंड वखांणता, सुणता उपजै स्वाद ।—प. च. चौ

७ इच्छा, कामना ।

उ०—मन वरज्यौ लागै नहीं, जागै विखीया स्वाद । हरीया मन की कीजियै, मन ही सूं फरियाद ।—अनुभववांणी

८ आदत, लत ।

९ मीठा, रस ।

१० तत्व, गुंजाइश, सार ।

वि.—स्वादिस्ट ।

रू. भे.—सवाद, सवादौ, साद, साव, सुआद, सुवाद ।

स्वादक—देखो 'सवादक' (रू. भे.)

स्वादियौ—देखो 'स्वादु' (अल्पा; रू. भे.)

स्वादिस्ट, स्वादिस्ट–वि. [सं. स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद अच्छा हो, जायकेदार ।

उ०—जक्षणी आय प्राप्त हुई । आई हाथ जोड़ि कही—कींसूं आग्या छै ? जोगी कही—इयै विदेसी नूं सत्कार कियौ चाहिजै । इतरी आग्या पाय सौ महल रचियौ । नांना प्रकार रा व्यंजन रचिया । तींनूं स्वादिस्ट यथेच्छा भोजन कराय सुख भुगाया ।—वैताळपच्चीसी

स्वादी–स. स्त्री—दाख, द्राक्ष । (अ. मा.)

वि.—१ स्वाद वाला, स्वादपूर्ण ।

२ स्वाद लेने वाला ।

३ रसिक, रसिया ।

४ हठी, जिद्दी ।

रू. भे.—सवादी ।

स्वादीलौ–वि. (स्त्री. स्वादीली) १ स्वादिष्ट, स्वादयुक्त, जायकेदार ।

२ स्वाद लेने वाला, स्वादरसिक ।

स्वादु–सं. पु. [सं. स्वादु] १ मधुर रस ।

२ गुड़ ।

३ मीठास ।

४ महुआ ।

५ बेर ।

६ दुग्ध, दूध ।

वि.—१ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उ०—१ एक दिन राजा रै अरथ कोई तपस्वी महारसायण रौ निदांन एक अपूरव स्वादु फळ दीधौ ।—वं. भा.

२ मधुर, मीठा।

३ मनोहर, प्रिय।

४ स्वादिष्ट चीजें खाने का शौकीन, चट्टू।

अल्पा;—स्वादिलौ।

स्वाधिस्ठांण-सं. पु. [सं. स्व+अधिष्ठान] कुंडली के ऊपर पड़ने वाले छः चक्रों में से दूसरा चक्र जिसका रंग लाल होता है। इसका स्थान शिश्न के मूल में माना जाता है। इसके देवता विष्णु माने गये हैं। (हठयोग)

स्वाधीन-वि. [सं.] १ जो पराधीन न हो, आत्मनिर्भर। (डि. को.)

उ०—सुमन मगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन सुख रासी। सन्मुख मंगल मगन अग्नि सी, पराधीन दुख पासी।—ऊ. का.

२ स्वतंत्र, निरंकुश। (आजाद)

उ०—राव राय रांणी सहित, सको थया स्वाधीन। यां छूटा जग जाळ ज्यौं, जळ विछुट्टा मीन।—रा. रू.

स्वाधीनता-सं. स्त्री. [सं.] १ स्वाधीन होने का भाव, आजादी।

२ स्वतंत्रता।

स्वाधीनपतिका-सं. स्त्री. [सं.] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो। (साहित्य)

स्वाध्याय-सं. पु. [सं.] १ वेदों का निरंतर अभ्यास करने की क्रिया या ढंग।

२ किसी गंभीर विषय का भली प्रकार से किया जाने वाला अध्ययन।

स्वापतेय, स्वापतेयक-सं. पु. [सं स्वापतेय] धन, दौलत।

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा)

स्वापद-सं. पु. [सं. श्वापदः] १ हिंसक पशु।

उ०—रौद्र घोर भयंकर। मनुष्य रहित। अनेक स्वापद सहित। किहां इक सिवा फूत्कार। घूहड़ तणा घू घू सब्दकार। सिंह तणा सिंहनाद। वाघ तणा गुंजारव। सूअर तणा घरघरा रव।

—सभा

२ चीता।

वि.—हिंसक, भयंकर।

स्वाभाविक-वि. [सं.] १ जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो, जो आप ही हुआ हो, प्राकृतिक।

उ०—रूप चतुरता माधुरी, स्वाभाविक गुण एह। सुमधुर स्वर भामणी, विना चपळता देह।—वैताळपच्चीसी

२ जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणतः हुआ करता हो।

रू. भे.—सभाविक, साभाविक, स्वभाविक।

स्वायंत-सं. पु.—१ संतोष, शान्ति।

उ०—मन परचै विनां ध्यांन कैसै धरै, त्याग परचै विनां स्वायंत नावै। सुरत परचै विनां उरध कैसै चरै, नाद परचै विनां बिंद जावै।—अनुभववांणी

२ देखो 'स्वाति'।

उ०—ब्रह्म आणंद मैं पेम विरखा वणी, उलटि वरसाल चहूं दिस धारूं। स्वायंत की बूंद आकास मैं घर कीया, नांव नग हीर पाया अपारूं।—अनुभववांणी

स्वायंभु, स्वायंभुव, स्वायंभू-सं. पु. [सं. स्वायंभुवः] एक सुविख्यात राजा जो स्वायंभुव नामक पहले मन्वंतर का अधिपति (स्वायंभुवमनु) माना जाता है। मनुस्मृति नामक धर्म-शास्त्र का कर्ता यही माना जाता है।

स्वार—देखो 'सुवारि' (रू. भे.)

उ०—१ आज सहेली आंगणै, ऊभी अंग सुवारि। हरीया सांझ'क स्वार मैं, सूती पाव पसारि।—अनुभववांणी

उ०—२ सांझि सभ स्वार वया करत नर बावरा, वेंग भजि वेंग हरि दाव आई। दास हरिरांम तन खाक मिळ जांहिगै, चूक सब जांणि जुग चतुराई।—अनुभववांणी

स्वारथ-सं. पु. [सं. स्वार्थ] १ स्वयं का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, मतलब।

उ०—१ एक कहै आपरै, कियौ मत स्वारथ कज्जै। एक कहै अणगंम, रीत अण प्रीत सु रज्जै।—रा. रू.

उ०—२ हर रांम रु रांम गिनौ हरसै, जग मैं गुरु जेमल मैं दरसै। सुपनैं मनसा नहिं स्वारथ की, प्रभू प्रारथना परमारथ की।

—ऊ. का.

२ केवल अपना हित, लाभ।

उ०—१ बेटी कह्यौ—थूं समझावै अर म्हैं समझूं कोनीं, कांई थारी समझावणी ओछी ई है मां! इण भुळावण मैं थारै विचै म्हारौ स्वारथ वत्तौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ लुगायां री विणास करियां तौ थां मिनखां री पैं'ला विणास व्है जावै, इण वास्तै खुद री स्वारथ पूरण सारू थैं वांनै जीवती राखौ।—फुलवाड़ी

३ उद्देश्य, प्रयोजन।

रू. भे.—सवारथ, सुआरथ, सुवारथ, सूवारथ।

स्वारथता-स. स्त्री.—खुदगरजी, स्वार्थपरता।

स्वारथत्याग-सं. पु.—दूसरों के हित के लिए अपने हित या लाभ को छोड़ना।

स्वारथी-वि. [सं. स्वार्थिन्] १ अपना मतलब सिद्ध करने वाला, मतलबी, अपना-उल्लू सीधा करने वाला, खुदगरज।

उ०—१ घर रा चांनणा सारू तौ दीवौ ई घणौ, पण आखी दुनियां मैं उजास छितरावणिया सूरज नै कोई घर री मेड़ी मैं बंद करणी चावै तौ वौ निपट स्वारथी।—फुलवाड़ी

उ०—२ वांरी भोळप अर काली वातां सूं कोई स्वारथी लोगां री मतलब सरतौ हौ। घरवाळा आपरै नाता रै कारण साथै

रैवणी चावता अर कुलालची आपरै लालच सारू ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'सारथी' (रू. भे.)

उ०—लंकाळ सेवग तूझ लांगी, भ्रात लिछमण खळां भांगी।
पतीकुळ **स्वारथी** पांगी, करण असह निकंद ।—र. ज. प्र.

रू. भे.— सवारथी, सारथि, सारथी, सुप्रारथी, सुवारथी ।

स्वारै—देखो 'सुवारै' (रू. भे.)

स्वाल—देखो 'सवाल' (रू. भे.)

उ०—१ जवनपती जांणियौ । हेक इण वात हरक्खै । महाराजा 'अभमाल' **स्वाल** सुण ग्रौर न अक्खै ।—रा. रू.

उ०—२ मतौ विचारै रांण रा **स्वाल** माथै उदैपुरां वीच मांही; वेर लेण हाल माथै हांकिया व्रहास । मांटीपणा ख्याल मावै छकौ ग्रायौ देवगढां वेरिसाल माथै बियौ 'माल', भैरूदास ।

—भैरूदास सांदू रौ गीत

स्वालक—देखो 'सवाळख' (रू. भे.)

स्वालकपट्टी, स्वालखपट्टी—देखो 'सवाळखपट्टी' (रू. भे.)

स्वास-स. पु. [सं श्वास] १ एक रोग विशेष जिसमें सांस बहुत जोर-जोर से चलता है, दमा ।

उ०—हिरणां न मावै हियै, सड़वौ दीठां **स्वास** । वाघ घणा मिळ वीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास ।—वां. दा.

२ देखो 'सास' (रू. भे.)

स्वासकुठार-सं. पु. [श्वासकुठार] आयुर्वेद की वह रसौषध जो श्वास रोग के मरीज को दी जाती है ।

स्वासणि, स्वासणी—देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

उ०—भाइ सहु ह्वै भीर, गुणी जन कीरति गावै । **स्वासणि** द्यै ग्रासीस, सासरै रह्यौ सुहावै ।—ध. व. ग्रं.

स्वासा-सं. स्त्री [सं. श्वासा] दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

स्वास्थ्य-सं. पु.—निरोगता, तंदुरूस्ती ।

स्वाहा-सं. स्त्री.—स्वायंभुव मन्वन्तर के दक्ष एवं प्रसूति की एक कन्या जो अग्नि की पत्नी थी ।

वि. वि.—इसने अपने पूर्वायुष्य में अधिक तप किया जिसके कारण देवों को हवि भाग पहुंचाने का शुभ कार्य इसको सौंपा गया । अग्नि से इसका पावक, पवमान एवं शुचि नामक तीन पुत्रों एवं स्वारोचिषमनु नामक मन्वंतराधीश राजपुत्र उत्पन्न हुआ । एक बार इसने सप्तर्षियों की पत्नियों का रूप धारण कर अग्नि से संभोग किया जिस कारण इसे स्कंद नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । आगे चलकर स्कंद ने अपनी माता को आशीर्वाद दिया कि तुम समस्त प्राणी मात्र के लिए पूज्य रहोगी एवं अग्नि में आहुति देते समय लोग स्वाहा कह कर तुम्हारा नाम लेंगे ।

२ वैवस्वत मन्वतंर के वृहस्पति एवं तारा की एक कन्या जो वैश्वानर अग्नि की पत्नी थी ।

३ माहिष्मती के नील ध्वज राजा की पुत्री जो अग्नि की पत्नी थी ।

वि.—जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो ।

२ जिसका पूर्णतया नाश या अंत कर दिया गया हो ।

अव्य.—एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञ में आहुति देते समय मंत्रों के अंत में किया जाता है ।

स्वाहाग्रसण, स्वाहाग्रहण-सं. पु. [सं. स्वाहा+ग्रसन] देवता ।
(डि. को.)

स्वाहापत, स्वाहापति, स्वाहापती-सं. पु. [सं. स्वाह +पति] आग, अग्नि । (अ. मा; ह. नां. मा.)

स्विच-सं. पु. [अं.] विद्यु त-प्रवाह को संयुत्त या असंयुत्त करने का यंत्र ।

स्विचवोरड-सं. पु. [अं.] वह काष्ठफलक जिस पर स्विच आदि लगाये जाते हैं, संयुत्तफलक ।

उ०—उण आपरै हाथ सूं कमरौ बंद कर दियौ—बोली, रोसनी घणी तेज है । उण **स्विचवोरड** रै कांनी देख'र तेज रोसनी बंद करदी अर मंदरी सोसन्या रोसनी जगा दी ।—तिरसंकू

स्वीकार-सं. पु. [सं. स्वीकारः] १ अंगीकार, मंजूर, कबूल ।

उ०—सोही **स्वीकार** करि गौळवाळ री दोही दुहिता नूं साथ लेर राजकुमार देवसिंह ऊमरथूणैं आइ पिता हूं प्रच्छन्न आपरी प्रांणप्रिय छोटी कुमरांणी गोडि मदनावती ।—वं. भा.

२ रजामंदी ।

स्वीकारणौ, स्वीकारबौ-क्रि. स.—अंगीकार करना, कबूल करना, स्वीकार करना ।

उ०—जद अैनी आपां री दोनां री है, ज्यूं कै आ आपरा मूंडै सूं **स्वीकारै**, फेर एकलौ धणियाप लगावणौ खुदगरजी है ।

—एक बीनणी दौ बीन री वात

स्वीकारणहार, हारौ (हारी), स्वीकारणियौ—वि० ।

स्वीकारिग्रोड़ौ, स्वीकारियोड़ौ, स्वीकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

स्वीकारीजणौ, स्वीकारीजबौ—कर्म वा० ।

स्वीकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—अंगीकार किया हुआ, कबूल किया हुआ, स्वीकार किया हुआ ।

(स्त्री. स्वीकारियोड़ी)

स्वीकृति-सं. स्त्री. [सं. स्वीकृति] मंजूरी, रजामंदी ।

स्वेच्छा-सं. स्त्री. [सं.] अपनी इच्छा ।

स्वेच्छाचार-सं. पु. [सं.] अपनी इच्छानुसार कार्य करने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

स्वेच्छाचारी-वि. [सं.] मनमानी करने वाला, निरंकुश ।

स्वेत-वि. [सं. श्वेत] १ धवल, सफेद ।

उ०—वूठौ सार मेघ अत वूठौ, जळरत खूठौ जुवौ जुवौ । **स्वेत** नीर बहतौ सर सांभर, हमकै भाद्रवि लाल हुवौ ।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

२ निर्मल, साफ।
३ उज्ज्वल, उजला।
४ उदासीन, मंद, कांतिहीन, कमजोर।
५ दोषरहित, निष्कलंक।
६ स्पष्ट, साफ।
सं. पु.—१ सफेद रंग।
२ चांदी, रजत।
३ शंख।
४ कौड़ी।
५ शिव का एक अवतार।
६ पुराणानुसार एक द्वीप।
७ शुक्र ग्रह का एक नाम।
८ स्कन्द का एक अनुचर।
९ सर्पों के आठ कुलों में से एक तथा इस कुल का सर्प।
१० सफेद घोड़ा।
११ पुच्छल तारा।
१२ नील व शृंगवान पर्वत के पास के एक पर्वत का नाम।
१३ विराट नरेश का भाई जो भीष्म द्वारा मारा गया था।
१४ विप्रचित्ति नामक असुर का पुत्र।
१५ राम-रावण युद्ध में राम पक्षीय एक वानर का नाम।
१६ मणिवर एवं देवजनी के पुत्रों में से एक पुत्र, यक्ष।
रू. भे.—सेत।

स्वेतअंजणी, स्वेतअंजनी—सं. पु. [सं. श्वेत+अजनी] अशुभ माना जाने वाला वह घोड़ा, जिसकी पसलियां श्वेत हों। (शा. हो.)

स्वेतकुंजर—सं. पु. [सं. श्वेतकुञ्जर] ऐरावत का एक नाम।

स्वेतगंडक, स्वेतगंडकी—सं. स्त्री. [सं. श्वेत+गंडकी] गंडक नदी की एक सहायक नदी। (वीरविनोद)

स्वेतगज—सं. पु. [सं. श्वेत+गज] ऐरावत हाथी।

स्वेतनायक—सं. पु [सं. श्वेत+नायक] एक प्रकार का आभूषण विशेष।
उ०—""संकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैंस्टिक हस्तसंकलिका पादसंकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार मध्यनायक अग्गनायक नीलनायक पीतनायक स्वेतनायक रक्तनायक व्रतनायक निम्ननायक चतुस्रनायक त्रिसरनायक ""इति आभरणांनि।
—व. स.

स्वेतपख्ख, स्वेतपख, स्वेतपक्ष—सं. पु. [सं. श्वेत+पक्ष] शुक्ल पक्ष।
उ०—महाराजकुमार स्रीदळपतिजी दिन दिन स्वेतपक्ष चंद्रमा री ज्यूं परिवंधवंत होता पूरणिमा रै चंद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूसित गात्र नीपना छै।—द. वि.

स्वेतपिंगळ—सं. पु. [सं. श्वेतपिंगल] शिव, महादेव।

स्वेतम्रग, स्वेतम्रिग—सं. पु. [सं. श्वेत+मृग] एक प्रकार का मृग।

स्वेतरंगी—सं. स्त्री.—यश, कीर्ति।

स्वेतवक्त्र—सं. पु. [सं. श्वेतवक्त्र] स्वामिकार्तिकेय के एक सैनिक अनुचर का नाम।

स्वेतवाहण, स्वेतवाहन—सं. पु. [सं. श्वेतवाहन] १ अर्जुन का एक नाम।
२ चंद्रमा का एक नाम।

स्वेतांबर—सं. पु. [सं. श्वेताम्बर] १ जैन धर्म की दो प्रमुख शाखाओं में से एक जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।
२ उक्त शाखा का अनुयायी।
रू. भे.—सयंबर, सितांवर, सेतांबर।

स्वेतांबरी—वि. [सं. श्वेताम्बरी] जैन धर्म के श्वतेतांवर शाखा का अनुयायी।
रू. भे.—सितांबरी, सेतंबरी, सेतांबरी।

स्वेता—सं. स्त्री. [सं. श्वेता] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।
३ कश्यप एवं क्रोधा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्री।

स्वेतोदर—सं. पु. [सं. श्वेतोदर] १ एक पर्वत का नाम।
२ कुबेर का एक नाम।

स्वेद—सं. पु. [सं.] पसीना।

स्वेदज, स्वेदज्ज—सं. पु. [सं.] पसीने से उत्पन्न होने वाला जंतु।
उ०—अंडज्ज स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज, माया सब तुझ म भूलव मुझ। म राख पड़दी आडी मूंह, जहां कुछ देखूं त्यां स्रव तूं ह।
—ह. र.
रू. भे.—सेदज।

स्वेदण, स्वेदन—सं. पु.—पसीना, स्वेद।
उ०—भूरै मुखड़ै पर स्वेदण कण भारी, पहुंची पोळ्‌छ में प्रीतम री प्यारी। नाचै खेलावण मेलावण नांहीं, जोवण जोगी वा वेळा जग मांहीं।—ऊ. का.

स्वै—वि.—अपना, निज का।

स्वैरी—वि. [सं. स्वैरिन्] (स्त्री. स्वैरिणी) १ व्याभिचारी।
२ दुराचारी, बदचलन।

ह

ह—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवां व्यञ्जन (अंतिम वर्ण) जो उच्चारण तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से कंठ्य-घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।

हंऊडौ-सं. पु.—कूए में पत्थर तोड़ने का लोहे का बना एक भारी औजार।

हंकणौ, हंकबौ—देखो 'हकणौ, हकबौ' (रू. भे.)

उ०—की ह्वै तूंबा बांधियां, सूंमां हंके सत्थ। नर डूबै बहतो नदी, सायर तरण समत्थ।—बां. दा.

हंकणहार, हारौ (हारी), हंकणियौ—वि०।

हंकिओड़ौ, हंकियोड़ौ, हंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकीजणौ, हंकीजबौ—भाव वा०।

हंकरणौ, हंकरबौ—देखो 'हांकरणौ, हांकरबौ' (रू. भे.)

हंकरणहार, हारौ (हारी) हंकरणियौ—वि०।

हंकरिओड़ौ, हंकरियोड़ौ, हंकरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकरीजणौ, हंकरीजबौ—भाव वा०।

हंकराड़णौ, हंकराड़बौ—देखो 'हंकराणौ, हंकराबौ' (रू. भे.)

हंकराड़णहार, हारौ (हारी), हंकराड़णियौ—वि०।

हंकराड़िओड़ौ, हंकराड़ियोड़ौ, हंकराड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकराड़ीजणौ, हंकराड़ीजबौ—कर्म वा०।

हंकराड़ियोड़ौ—देखो 'हंकरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकराड़ियोड़ी)

हंकराणौ, हंकराबौ-क्रि. स. 'हांकरणौ' क्रिया का प्रे. रू. १ स्वीकार कराना, स्वीकृत कराना।

२ मानने के लिए मजबूर करना, मनवाना, कबूल कराना।

३ किसी को कोई कार्य करने के लिए राजी कर लेना, सहमत कर लेना।

उ०—लोगां थर पेड़ा पंचां सागै लड़-भिड़'र आछी रड़कां काढी। नो'रा कढाया, चिणी री सीरौ'र चिणा-चावल हंकराया।
—दसदोख

४ मन में छिपी या गुप्त बात को उगलवा लेना।

हंकराणहार, हारौ (हारी), हंकराणियौ—वि०।

हंकरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकराईजणौ, हंकराईजबौ—कर्म वा०।

हंकराड़णौ, हंकराड़बौ, हंकरावणौ, हंकराववौ—रू० भे०।

हंकरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्वीकार कराया हुआ, स्वीकृत कराया हुआ. २ मानने के लिए मजबूर किया हुआ, मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ. ३ किसी कार्य को करने के लिए राजी किया हुआ; सहमत किया हुआ. ४ गोपनीयता प्रकट कराया हुआ।

(स्त्री. हंकरायोड़ी)

हंकरियोड़ौ—देखो 'हांकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकरियोड़ी)

हंकाड़णौ, हंकाड़बौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे.)

हंकाड़णहार, हारौ (हारी), हंकाड़णियौ—वि०।

हंकाड़िओड़ौ, हंकाड़ियोड़ौ, हंकाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकाड़ीजणौ, हंकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

हंकाड़ियोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकाड़ियोड़ी)

हंकाणौ, हंकाबौ—देखो 'हकाणौ, हकाबौ' (रू. भे.)

हंकाणहार, हारौ (हारी), हंकाणियौ—वि०।

हंकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकाईजणौ, हंकाईजबौ—कर्म वा०।

हंकायोड़ौ—देखो 'हकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकायोड़ी)

हंकार—देखो 'अहंकार' (रू. भे.)

उ०—१ दादू धरती व्है रहै, तज कूड कपट हंकार। सांई कारण सिर सहै, ता को प्रत्यक्ष सिरजनहार।—दादूवांणी

उ०—२ सतगुरु वचन बांण सत लागा, मोहा जाळ नींद माहुं जागा। कांम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खड़ग ले सबी संघारा।—स्रीसुखरांम जी महाराज

२ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

हंकारणौ, हंकारबौ-क्रि. स.—१ स्वीकार करना, स्वीकृत करना।

उ०—लिगतो नही सभाव, जीवड़ौ वस रै सारै। मांण राखणौ रूप, वसत नो'रा हंकारे।—नारी सईकड़ौ

क्रि. अ.—२ किसी कार्य को करने के लिए राजी होना, सहमत होना।

३ मानने के लिए मजबूर होना।

४ मन में छिपी या गुप्त बात उगल देना।

हंकारणहार, हारौ (हारी), हंकारणियौ—वि०।

हंकारिओड़ौ, हंकारियोड़ौ, हंकारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

हंकारीजणौ, हंकारीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हंकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत किया हुआ. २ किसी कार्य को करने के लिए राजी हुवा हुआ, सहमत हुवा हुआ. ३ मानने के लिए मजबूर हुवा हुआ. ४ मन में छिपी या गुप्त बात को उगला हुआ।

(स्त्री. हंकारियोड़ी)

हंकारौ—१ देखो 'हुंकारौ' (रू. भे.)

उ०—१ पीछे उण आय जोधपुर जोधैजी नूं समाचार मालम

[illegible] मदत री हुंकारो भरियो नहीं ।
—द. दा.

उ०—२ [illegible] री बेटी मुन्नी, पूरै पनरा बरसां री जुवांन, [illegible] जोग । पण कठै परणावै । काग नै देवै क मोर नै ? [illegible] तो मानै नहीं । ई घर नूं साख री हुंकारो कुण भरै । कतळ [illegible] नूं कुण नीं कतरावै ।—दसदोख

उ०—३ दोनूं यां हुकम नूं हुंकारो दियो अर ढाळ्यां रै घर रो [illegible] लियो ।—दसदोख

२ देखो 'हुंकार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हराम गोरां नूं नैड़ा आवण देवो । जाहरां तीर-वह मांहे आमो, ताहरां म्हे हुंकारो करसां ।—राजा नरसिंघ री वात

हंगियोड़ो—देखो 'हगियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. हंगियोड़ी)

हंगणो, हंगबो-क्रि. अ.—मल त्याग करना, टट्टी करना ।

उ०—यो जाट अमूंता मळीच सुभाव रो हो । हंगनै लारै भाळतो ।
—फुलवाड़ी

हंगणहार, हारो (हारी), हंगणियो—वि० ।
हंगिओड़ो, हंगियोड़ो, हंग्योड़ो—भू० का० कृ० ।
हंगीजणो, हंगीजबो—भाव वा० ।

हंगाम—देखो 'हंगामो' (रू. भे.)

उ०—१ धांम धाम मगळ धवळ, हुए हंगांम हलोर । छडक पगारां नीर छित, घुरै नगारा घोर ।—र. रू.

उ०—२ लिगन्नां नारेळ लेर देर सावो नको लीधो, सजायै ठिकांणां वेहूं व्याव का सांमांन । हंगांमा होकवा राग रंग रा हमेस हुवैं, अठी जांन वाळी सोभा बणावै आजांन ।—बादरदांन दधवाड़ियो

उ०—३ ऐसो सूणत पांण कुंवरजी मूंछ्यां हाथ घालनै राजी हय-नै कहीयो — हिरणजी ! हिवै हुं थांहरै पूठी रखो छुं । आप नित्य सदा ही हंगांम करो ।—रिसाळू री वात

उ०—४ सुदि फागण माही सरस होळी गोठि हंगांम ।
—सिवबक्स पाल्हावत

हंगामो-वि. [फा. हंगाम+रा. प्र. ई.] १ क्रान्तिकारी, उपद्रवी ।
२ उत्साही, साहसी ।
३ योद्धा, वीर ।
४ हुल्लड़ मचाने वाला, हल्ला करने वाला ।
रू. भे.—हगांमी ।

हंगामो-सं. पु. [फा. हंगामः] १ युद्ध, जंग, लड़ाई ।

उ०—१ तरवार बरछियां री खड़ाखड़ लाग रही छै । घोड़ा [illegible] जावै छै । हंगांमो माच रहियो छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ [illegible] री मोरचै बंधी हुई, हंगांमो हुवो सो महीना नव [illegible] हुई ।—[illegible] री वारता

२ क्रान्ति, विप्लव, विद्रोह, उपद्रव ।

उ०—और बाहर चोडै हंगांमो कियो ।
—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

३ कोलाहल, शोरगुल, हल्लड़ ।

उ०—१ आठों पहर अणंद हंगांमा होकबा । राग रंग रस रीझ अणंद अलोकबा ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ घोड़ा दौड़ रह्या छै । होकारा हंगांमा हुय रह्यो छै ।
—रा. सा. सं.

४ दंगा-फसाद, मारपीट, छीना-झपटी ।

उ०—'सो' रै बीच में किणी इन्सपेक्टर नै म्हैं मांय घुस'र हंगांमो कोनी मचावण देवूंला ।—तिरसंकू

५ सेना, सैन्य-दल ।

उ०—बडो हंगांमो लगायो रांम सांम्हो कूच कियो ।
—महाराजा जयसिंह री वारता

६ जन-समूह, भीड़, मेला ।

उ०—१ अर उठै दिन पांच कुंवरसी टिकीयो । सो ज्युं ही तो भुंजाई हुवै, ज्युं ही वळकुळै । लोक आय भेळो हुवो । केई देखण नु आवै । कई मांगण नु आवै । सो वडो हंगांमो लाग रह्यो छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ जिण नूं कठै ही मिळै नहीं सु उण वखत भुजाई लै जलाल री रहवास आवै सो मलिया भोजन जीमै । बडो हंगांमो लागियो रहै ।—जलाल बूबना री वात

७ धूम-धाम ।

उ०—फेर तीसरे बरस रो सावण आवियो । गोठां री हंगांमो लाग रहियो छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

८ हर्ष, खुशी, आनन्द ।

उ०—हंगांमा होकवा राग रंग रा हमेस हुवै ।
—बादरदांन दधवाड़ियो

क्रि. प्र.—करणो, कराणो, मचणो, मचाणो, हुणो ।
रू. भे.—हगांमो, हिंगांमो ।
मह.—हंगांम, हगांम ।

हंगाड़णो, हंगाड़बो—देखो 'हंगाणो, हंगावो' (रू. भे.)
हंगाड़णहार, हारो (हारी), हंगाड़णियो—वि० ।
हंगाड़िओड़ो, हंगाड़ियोड़ो, हंगाड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
हंगाड़ीजणो, हंगाड़ीजबो—कर्म वा० ।

हंगाड़ियोड़ो—देखो 'हंगायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. हंगाड़ियोड़ी)

हंगाणो, हंगावो-क्रि. स. [हंगणो क्रिया का प्रे. रू.] मल त्याग करने के लिए प्रवृत्त करना, टट्टी कराना ।
हंगाणहार, हारो (हारी), हंगाणियो—वि० ।
हंगायोड़ो—भू० का० कृ० ।

हंगाईजणौ, हंगाईजवौ—कर्म वा० ।
हंगाड़णौ हंगाड़बौ, हंगावणौ, हंगाववौ—रू० भे० ।
हंगायोड़ौ–भू. का. कृ.—मल त्याग कराया हुआ, टट्टी कराया हुआ ।
(स्त्री. हंगायोड़ी)
हंगावणौ, हंगाववौ—देखो 'हंगाणौ, हंगाबौ' (रू. भे.)
हंगावणहार, हारौ (हारी), हंगावणियौ—वि० ।
हंगाविओड़ौ, हंगावियोड़ौ, हंगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंगावीजणौ, हंगावीजवौ—कर्म वा० ।
हंगावियोड़ौ—देखो 'हंगायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंगावियोड़ी)
हंगियोड़ौ–भू. का. कृ.—मल त्याग किया हुआ, टट्टी किया हुआ ।
(स्त्री. हंगियोड़ी)
हंगोड़ौ, हंगोड़ौ, हंगोरी, हंगोरौ–वि. (स्त्री. हंगोरी) वह जो बार बार मल त्याग करता हो, जो इस रोग का मरीज हो ।
हंचणौ, हंचवौ—देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू. भे.)
उ०—खुचंती खुरी रुधिर खीची री, घणा असुर हंचे घण घाय । कुंभड़ा री कुटकै क्रम देती, गऊ-त्रिया ली गोरी राय ।
—कुंभा खीची री गीत
हंचणहार, हारौ (हारी), हंचणियौ—वि० ।
हंचिओड़ौ, हंचियोड़ौ, हंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंचीजणौ, हंचीजवौ—कर्म वा० ।
हंचियोड़ौ—देखो 'हिचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंचियोड़ी)
हंज—देखो 'हंस' (रू. भे.)
उ०—पावास री तीजणी, मांन सरोवरि हंज । सीह वीलुधा सांकळे, ज्यौं घण दीसै संझ ।—जांभो
हंजर–वि.—सुन्दर, सुरूप, खूबसूरत ।
हंजरणौ, हंजरवौ—देखो 'हिजरणौ, हिजरबौ' (रू. भे.)
उ०—हंजा तमीणौ हेत, सर सारी ही डोवियौ । सर में पंखी ढेर, नहीं मु आवि हंजरै ।—अग्यात
हंजरियोड़ौ—देखो 'हिजरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हंजरियोड़ी)
हंजलौमारू–सं. पु.—१ एक राजस्थानी लोक गीत जो वर वधू के स्वागत में वर के यहाँ गाया जाता है ।
२ देखो 'हंजामारू' (अल्पा; रू. भे.)
हंजा–सं. स्त्री. [सं. हञ्जे] १ दासी, चेरी ।
२ पति, प्रियतम ।
उ०—हांजी ल्याया पनामारू तुर्रराजी टांग, वारी घण वारी ओ हंजा ।—लो. गी.
३ प्रेमी ।
उ०—पेच सुरंगी पाघ रा, ढांकै मत धर ढाल । काळी चढ आछी कहूं, हंजा भींजण हाल ।—वां. दा.
४ लोक गीतों की एक लय ।
क्रि. वि.—ढंग से, उचित तरीके से ।
हंजामारू–सं. पु.—१ पति, प्रियतम ।
उ०—सूता हंजामारू सुख भर नींद । इतरै मैं राइकौ हेलौ मारियौ जी म्हारा राज ।—लो. गी.
२ रसिक. प्रेमी ।
उ०—रुपये री देऊं हो हंजामारू अधोड़ी छटांक । हे कोई मोहर री देऊं म्हारा मदछकिया मोकळी हो म्हारा राज ।—लो. गी.
हंजीरौ–सं. पु.—नाश. विध्वंस, तहस-नहस ।
हंजौ—देखो 'हंजा' (२,३) (रू. भे.)
उ०—नाच गा कर निलजता, रच वप भूसण रास । मार निजारा मोहियौ, हंजौ अधरे हास ।—वां. दा.
२ देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ हंजा घरि हंजा हुवै, कग्गां कगा विहाय । ऊढांणी घर जखखड़ी, नग नीपजै स न्याय ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात
उ०—२ बतक सरदा घरट हंजा तरै है, सारसां रा टोळां झिगोर करै है ।—र. हमीर
हंझ. हंझि, हंझौ—देखो 'हंस' (रू. भे.)
उ०—१ डीं भू लंक, मराळि गय, पिक-सर एहि वांणि । ढोला एही मारुई, जेहा हंझ निवांणि ।—ढो. मा.
उ०—२ दादू हिण दरियाव, मांणिक मंझेई । टुबी डेई पांण में, डिठी हंझेई ।—दादूवांणी
२ देखो 'हंजा' (रू. भे.)
हंटर–सं. पु. [अं.] १ लम्बा चाबुक, कोड़ा ।
२ शिकारी ।
हंडक—१ देखो 'हाडक' (मह; रू. भे.)
उ०—आयौ मास असाढ, हंडक लै लारै हुयौ ।—भगवांनजी रतनू
२ देखो 'हंडियौ' (मह; रू. भे.)
हंडवाई—देखो 'हांडी' (रू. भे.)
उ०—उमादे गुरवांणी उठ नै उन्ही पांणी कियौ, सांपडी हंडवाई घोई ।—पंचदंडी री वारता
हंडिज्जणौ, हंडिज्जवौ–क्रि. अ.—भ्रमण करना, घूमना ।
उ०—दीसइ विवहचरीयं, जांणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो । अप्पांण च कळिज्जइ, हंडिज्जइ तेण पुहवीए ।—ढो. मा.
हंडिज्जियोड़ौ–भू. का. कृ.—भ्रमण किया हुआ, घूमा हुआ ।
(स्त्री. हंडिज्जियोड़ी)
हंडियौ–सं. पु.—१ लकड़ी, धातु या हाथी दांत की बनी अफीम रखने की डिबिया ।
मह.—हंडक ।
२ देखो 'हांडी' (मह; रू. भे.)
हंडी—देखो 'हांडी' (रू. भे.)

हुडुकाहट—देखो 'हिडकाट' (रू. भे.)

उ०—पाखरा नर हैत, मिलै हुंडुकाहट भूलां। जमी नोल गुल-नार, दर्वं मुगण मम फूलां।—सू. प्र.

हंडो-सं. पु.—१ मिट्टी या धातु का बना जल पात्र। (जयपुर)

२ देखो 'हांडो' (रू. भे.)

३ देखो 'हांडो' (रू. भे.)

हणू—देखो 'हनुमान' (रू. भे.)

हणं—देखो 'हणां' (रू. भे.)

उ०—विहेरी छै हूंणं तो हूं फेरां छां। हिडोकै साल चराय पछै मुहडै पागै पांण फेरीस।—राठोड़ रिणमल सावड़ियै री वात

हंत-प्रव्य.—१ दुःख या खेदजनक दशा में बोला जाने वाला अव्यय शब्द, हाय, घोर।

उ०—१ होय सबद हा हंत, पड़ पुढकर भयंकर। कर हुंता घर कांम, नांम थावै नारी नर।—साहिबो सुरतांणियो

उ०—२ मेरगांन भर समर, कहर परमे घर कंदळ। लोथ लोथ ऊपरा, गरा भिड़जां गज तंडळ। दंत फुळी अंगुळी, मत्थ पग हत्थ निराळा। अंत तंत्र विलुरी, हंत दाढाळ हठाळा। रवि सेख महूरत एक रहि, ईन वेर वै भाव री। फुरमाय हाय गज फेरियो, बीती सज नवाव री।—रा. रू.

२ आश्चर्य सूचक शब्द।

३ उद्दीपक या उत्तेजक दशा में बोला जाने वाला अव्यय शब्द।

उ०—आपा चारण खावकां, बीड़ी मौज वटंत। दूरा केम दका-ळनां, हूंचकतां भड़ हंत।—वी. स.

४ आशीर्वचनात्मक सौभाग्य सूचक शब्द।

५ दया व रहम सूचक शब्द।

६ देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—राजा राकसणी री जटा माहे विमासै छै। म्हारी अकल चूक जु गंगाजी रै कंठ मरण हुवै हंत तो मुगति जावंत।—चौबोली

हंतकार-सं. स्त्री.—पितरों की तृप्ति के लिये ब्राह्मण अथवा जोशी को दी जाने वाली रोटी या रोटियां।

रू. भे.—हतकार।

हंता—देखो 'हूंता' (रू. भे.)

उ०—१ तद रांणी कही, थानं जै वास्ते वंसै राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं।—चौबोली

उ०—२ अठै मोखर रा हेर हेता हीज।

—मोखर छाडावत री वात

हंतो—१ देखो 'हूंतो' (रू. भे.)

उ०—१ तद कुंवर फूलमती नुं हाथ पकड़ अर फेरा लै नै परणीज अर उठै भोगवी। तैमों भै राकस री डर री मारी संकोचीज अर रही हंतो तद कुंवर रो हाथ लागो तोसुं फूल गई।—चौबोली

उ०—२ उठै एक गोही हंतो तठै रोही मांहै एक सूयार घर वासी-दार रहे।—चौबोली

२ देखो 'हांतो' (रू. भे.)

हंतीया—देखो 'हूता' (रू. भे.)

उ०—तठै ठकुरो साह उवां दिनै पांच सब जिहाज रो जोखम लीयो हंतो। सु काई वांव वाजी, तैसूं जिहाज कहीं पसवाड़ै जाय नीस-रीयां। जद जेरै जिहाज हंतीया, जिकै ठकुरै पासै आया।

—ठाकुरै साह री वारता

हंतोगत, हंतोगति-सं. स्त्री.—कृपा, दया, अनुग्रह।

(अ. मा; ह. नां. मा.)

हंतो-वि. [सं. हंतृ] (स्त्री. हंती) १ मारने वाला, वध करने वाला।

२ देखो 'हूंतो' (रू. भे.)

उ०—१ राजा रै मछ तेल करावणो हंतो। तद नदी मांहै जाळ नाखीयो।—चौबोली

उ०—२ ऊभो राहां सीस भांण जेतै अंत ऊगो, अनोखा अंदरा गोखां पूंगो आसमांन। भूरो जसा कांम जोगो हंतो वेढीगारो भूप, जसै कांम कांम आयो जांणीयो जिहांन।—चावंडदांन महड़ू

हंद—देखो 'हद' (रू भे.)

हंदइ, हंदा-प्रव्य.—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, जो सम्बन्ध-सूचक होता है।

उ०—१ पीहर-संदी डूंमणी, ऊंमर-हंदइ सथ्थ। मारवणी नूं तंत-मइ, कहि समझावर कथ्थ।—ढो. मा.

उ०—२ हुंता सज्जण-हीयड़ै, सयणां-हंदा हत्त। जउ सोहणो साचइ होग्रइ, सोहणो वडी वसत्त।—ढो. मा.

उ०—३ जोर दिखायो साह रो, फोर घरै प्रसताव। घर घर हंदा मांझिया, कर कर वात द्रढाव।—रा. रू.

उ०—४ अनमंता इंद्रजीता, अहिनिस रता रांम। मन मींता परमारथी हरिजन हंदा कांम।—श्रीहरिरांमदासजी

हंदी-प्रव्य—षष्ठी विभक्ति के सम्बन्ध सूचक शब्द का स्त्री रूप, की।

उ०—अंग अंग मझ ऊफणै, जोवण आठो जांम। त्यां हंदी तसवीर रो, कलम हुवै नह कांम।—वां. दा.

हंदे, हंदै-प्रव्य.—षष्ठी विभक्ति का बहुवचनात्मक रूप के।

उ०—१ पो फाटां चालै पही, सिर आयां किरणाळ। नीठ नीठ पहुंचे कहे, धोरां हंदै ढाळ।—यळवट वत्तीसी

उ०—२ दह्लू प्रवाड़ा एक दिन, गो वाको गुजरात। विहूं हजूर वोलावियो जोधां हंदै छात।—रा. रू.

रू. भे.—संदै।

हंदो-प्रव्य.—षष्ठी विभक्ति का चिन्ह, का।

उ०—१ यळ हंदो फूटी रखो, अेवड़ जांणै आथ। सुतर ज जांही करण रो, हूनर ज्यां रै हाथ।—यळवट वत्तीसी

उ०—२ आढाळी सूं रूड़ो लागै, यळवट हंदो देस। माऊजी सूं प्यारो लागै, देसांणा रो देस।—अज्ञात

रू. भे.—संदइ, संदउ।
हंफणी—देखो 'हांफणी' (रू. भे.)
हंवा हंवै-अव्य.—स्वीकृति सूचक अव्यय शब्द, हाँ।
हंम—देखो 'हम' (रू. भे.)
उ०—मोरी आदि न जांणंत, महियळ धूं वां वखांणंत; उरध ढाकिलैं तिसूळूं, आदि अनादि तौ हंम रचीलौं।—जांभौ
हंवुक-सं. पु.—४९ क्षेत्रपालों में से अन्तिम क्षेत्रपाल।
हंस-सं. पु. [सं.] (स्त्री. हंसणी, हंसी) १ बड़े बड़े सरोवरों या झीलों के किनारे रहने वाला, बतख के आकार का एक सफेद जल-पक्षी। (ह. नां. मा.)
उ०—१ हंस हाल परहरै, बचन पलटै दुरवासा। मह मोरां झड़ मंडे, इंद नहिं पूरै आसा।—चौथ वीठू
उ०—२ बोलंति मुहुरमुह विरह गमैं वें, तिसी सुकळ निसि सरद तणी। हंसणी तै न पासैं देखैं हंस, हंस न देखैं हंसणी।—वेलि
उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलौ कीध। हंसां नग हर नूं तुचा, (अर) दांत किरातां दीध।—बां. दां.
२ सूर्य, भानु, रवि।
(अ. मा; ना. डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)
उ०—१ लोथ बथ्थां भिड़ै सूर पीठांण, राचबा लागौ, बेखै ख्याल हंस भी खाचबा लागौ बाज। बैणतार भणंका दै मुनिंद्र नाचबा लागौ, कपाळी जाचबा लागौ मुंडमाळी काज।
—सुखदांन कवियौ
उ०—२ हेत किरण हरि हंस, अंग अवतंस उजासै। अरत्त हुवां संगि अस्त, उदै संग उदै प्रकासै।—रा. रू.
३ शिव, महादेव। (रुद्र)
उ०–गैणरा ऊछाह भूल बारंगां रा बांधै गंथी। महाभांण रत्थां खाग खुराटां मांडीस। हंस बीर पेखवा तमासा ताळी देदै हत्थी, तत्तथेई थेई करै आरूढै तांडीस।—करणीदांन कवियौ
४ ब्रह्मा। (ह. नां. मा.)
उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक।—वेलि
५ विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। (नां. मा.)
उ०—१ तूं बलि तूं हिज व्यास, पित्थ हरि हंस मुनितर। जरा राख्यौ हय ग्रीव, धुव तूं आप धनंतर।—गज-उद्धार
उ०—२ देवी नारद रूप तै प्रस्न नाख्या। देवी हंस रै रूप तत ग्यांन भाख्या। देवी ग्यांन रै रूप तूं गहन गीता, देवी क्रस्ण रै रूप गीता कथीता।—देवि.
६ परमात्मा, परब्रह्म, ईश्वर।
उ०—रमैं तूं रांम जुवा धरि रंग, तुं हीज समंद तुं हीज तरंग। अनोअन मांय तुहाळौ अंस, हमैं न संताय छतौ थयौ हंस।
—ह. र.
७ विष्णु का एक नामान्तर।
८ मन।
उ०—१ संगीत अत सोहती, मुनेस हंस मोहती। अनंग रंग आतुरी प्रिया नचंत पातुरी।—सू. प्र.
उ०—२ बिछायत समियांन वणिया, तई जरकसि हीर तणिया। सिंघ आसण छत्र सोहै, महा जगमग हंस मोहै।—सू. प्र.
९ जीवात्मा, प्राण।
उ०—१ घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊंच नीच छिछ ऊछळै अति। पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हंस नीसरै सति।—वेलि
उ०—२ मारचो बांण सरीर मैं, बिण सांठी विण भालि। जन हरिया मन मरि रहयौ, हंस गयौ सर हालि।—अनुभववांणी
उ०—३ अरू सांवत राय समेत घोड़ौ भागौ। सू जादूराय रै हाथी कनै जावतौ पड़ियौ। पड़तां घोड़ै रा हंस गया।—द. दा.
१० शरीरस्थ प्राण वायु।
क्रिया. प्र.—उडणौ, जाणौ, निकलणौ, हालणौ.
१२ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र जो जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता रहा।
१३ साध्यदेवों में से एक।
१४ एक गंधर्व विशेष।
१५ जरासंध का एक मंत्री।
१६ रजत, चांदी। (अ. मा; ह. नां. मा.)
१७ पर्वत, पहाड़।
१८ एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)
१९ घोड़ा, अश्व। (डिं. को.)
२० कामदेव, अनंग।
२१ सन्यासियों का एक भेद, एक सम्प्रदाय विशेष।
२२ अनिरुद्ध का एक नाम।
२३ ज्ञानी और भक्त पुरुष।
२४ शिवदेवों में से एक।
२५ वसुदेव एवं श्रीदेवा के पुत्रों में से एक।
२६ जरासध की सेना का एक राजा जो कृष्ण-जरासंध युद्ध में बलराम के द्वारा मारा गया।
२७ एक श्रेष्ठ पक्षी जाति जो कश्यप-पत्नी ताम्रा का पौत्र एवं धृतराष्ट्री की संतान मानी जाती है।
२८ दोहे का एक भेद, जिसमें १४ गुरु और २० लघु होते हैं।
२९ प्रथम एक यगण व अन्त में दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छन्द।
३० हंस के आकार का बनाया जाने वाला प्रासाद जिस पर शृंग बना हो।
३१ एक मंत्र विशेष।

१२ नर, नारि । (अनेका.)

१३ सफेद रंग । ● (डि. को.)

वि.—सफेद श्वेत । ○

रू. भे.—हंज, हंस, हूंस ।

अल्पा.—हंजौ, हंसौ, हंसलउ, हंसलौ, हंसौ, हांसौ ।

मह.—हंसाव ।

हंसक—सं. पु. [सं. हंसकः] १ पैर की अंगुली का बिछुवा ।

उ०—हंसक पाय हंसगत, हस हस, अंसक अथा उदंत । बांझि नारि कुळ सीक विसुंगक, कहत नपुंसक कंत ।—ऊ. का.

२ नूपुर ।

३ देखो 'हिंसक' (रू. भे.)

हंसग—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा, विधाता । (नां. मा.)

हंसगत, हंसगति—सं. स्त्री.—१ ब्रह्मत्व की प्राप्ति, सायुज्य की प्राप्ति ।

२ हंस के समान सुन्दर धीमी चाल, गति ।

उ०—हंसक पाव हंसगत हस हस, अंसक अथा उदंत । बांझ नारि कुळलीक विधुंगक, कहत नपुंसक कंत ।—ऊ. का.

३ एक प्रकार का मात्रिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में २०-२० मात्राएं होती है ।

रू. भे.—हंसागति ।

हंसगमण, हंसगमणा, हंसगमणि, हंसगमणी—देखो 'हंसगामिणी' (रू. भे.)

उ०—१ हंसगमण अगली अणी, मुहि बोलइ हे मंगल चार ।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ प्रीतवती मुख आगालेजी, मुळकंती मोहन-वेल । चतुरां ना मन मोहतीजी, हंसगमणी सूं करता बहु केल ।—जयवांणी

हंसगरब्य, हंसगरभ—सं. पु.—एक रत्न विशेष ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रलीन सवकर विभकर ज्वर हर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्यणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्य पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि ।—व. स.

हंसगवणी, हंसगामनि, हंसगांमणी, हंसगांमिणी, हंसगोणी—सं. स्त्री.—[सं. हंसगामिनी] हंस के समान सुन्दर धीमी चाल चलने वाली स्त्री, सुन्दरी ।

उ०—१ दीठउ मांनासागर समंदनणी वहार, हंसगवणी अग लोचणी नार । एक भरइ बीजी कलरव करइ, तीजी धरी पीवजै ठंडा नीर ।
—बी. दे.

उ०—२ हंसी तू मती मूरती दच्छ छोगी, गती मत्त मातंग तू हंसगोणी ।—मे. म.

वि. स्त्री.—हंस के समान सुन्दर चाल वाली ।

रू. भे.—हंसगमनि, हंसगमणी, हंसागमणी, हंसीगवणी ।

हंसड़—देखो 'हंसी' (मह; रू. भे.)

उ०—देखो काकाजी ! मांन जावो । लोगां में हंसड़ मत करावो ।
—वरसगांठ

२ देखो 'हंस' (मह; रू. भे.)

हंसड़ौ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आसा लूंध उतारियउ, धण कुंचुवउ गळांह । घूमइ पड़िया हंसड़ा, भूला मांनसरांह ।—ढो. मा.

हंसचर—वि. [सं. हंस=प्राण; जीव] मांसाहारी ।

उ०—पतीव्रती धारि चौज संकरां ग्रीधरां पोखै, हंसचरां पोखै भरा पत्रां चंडी हांम । परी वरै चांपां छात सुरां तणी लोक पूगी, धणी 'दूदां' तणी पूगौ परम्म रै धांम ।
—कुसळसिंघ मेड़तिया री गीत

सं. पु.—मोती ।

हंसजा—सं. स्त्री. [सं.] १ सूर्य की पुत्री; यमुना ।

२ हंस की पुत्री ।

हंसण—सं. स्त्री.—हसने की क्रिया या भाव, हंसी ।

रू. भे.—हंसन ।

हंसणौ—सं. पु.—हंसने की क्रिया ।

उ०—भटियांणी रै डावै दै जेड़ी । दोनूं एक लखणी । हंसणौ तौ जांणती ई नीं ।—फुलवाड़ी

हंसणौ, हंसबौ—क्रि. अ. [सं. हसे] १ आनन्द या खुशी के आवेग में चेहरा खिलना और आंखों में कुछ फैलाव आकर गले से 'ह-ह-ह-ह' की ध्वनि निकलना, हंसना, खिलखिलाना, ठहाका मारना ।

उ०—१ पड़ै कटि सीरस वीर पठांण, मुद्राचळ चक्र चमू महरांण । गुड़ै गिड़कंध मदंध मुगल्ल, रुयाली रिखराज हंसै खलखल्ल ।
—मे. म.

उ०—२ हंसती दै ताळी हरखि, कसती लक कबांण । मद मसती भरियां मदन, जोबन हसती जांण ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ एकला मिनख सूं नीं तौ हंसीजै नीं रोईजै । कोई बावलौ व्है तौ वात न्यारी ।—फुलवाड़ी

२ मुस्कराना, मंद मंद हंसना ।

उ०—मंनि संकांणी मारुवी, खुणसउ राखइ कंत । हंसतां प्रीसूं वीनवइ, संभळि प्री विरतंत ।—ढो. मा.

३ खुश होना, आनन्दित होना ।

उ०—सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ । चंद मुळक्कयउ जळ हंस्यउ, जळहर कंपी पाळ ।—ढो. मा.

मुहा.—१ हंसणौ-बोलणौ=खुशी में बातें करना, मन की बात कह कर खुश होना, आमोद-प्रमोद करना ।

२ हंस-हंस नै दोवड़ौ हुणौ=खूब हंसना, हंसते हुए लोट-पोट हो जाना ।

४ किसी स्थान या वस्तु का सुन्दर लगना, शोभित होना ।

उ०—सोई सज्जण आविया, जांह की जोती वाट । थांभा नाचइ

घर हंसइ, खिलण लागी खाट ।—ढो. मा.

क्रि. स.—५ मजाक करना, व्यंग करना, चुहलबाजी करना।

६ हंसी उड़ाना, दिल्लगी करना, परिहास करना ।

उ०—पिरोळ माथै पूगा तौ दरवाजौ बंद । किला रौ दरवाजौ भाखर रै उनमांन ऊंचौ माथौ कियां मांनखा री निवळाई माथै हंसण लाग्यौ ।—अमरचूंनड़ी

मुहा.—१ (किणी माथै) हंसणौ=किसी की कमजोरी की हंसी उड़ाना, किसी को मजाक बनाना ।

२ हंस'र बात टाळणी=किसी विषय या प्रस्ताव की अवहेलना करना । किसी बात को तुच्छ समझ कर उसकी उपेक्षा करना ।

हंसणहार, हारौ (हारी), हंसणियौ—वि० ।

हंसिग्रोड़ौ, हंसियोड़ौ, हंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हंसीजणौ, हंसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

हसणौ, हसबौ, हासणौ, हासबौ—रू० भे० ।

हंसन—देखो 'हंसण' (रू. भे.)

हंसपदी, हंसपादी-सं. स्त्री. [सं. हंसपदिका] एक प्रकार की औषधि जिसका क्षुप जलाशयों के पास पाया जाता है । इसे हंसराज भी कहते हैं ।

हंसवाहण—देखो 'हंसवाहण' (रू. भे.) (डि. को.)

हंसवाहणी—देखो हंसवाहणी' (रू. भे.)

उ०—हंसवाहणी होय, गिरा बाकबांणी गवै । सुरसत सारद सोय, बेधाधी भारती वर्णौ ।—डि. को.

हंसभख-सं. पु. [सं. हंस-भक्षणम्] मौक्तिक, मोती । (ह. नां. मा.)

हंसमंगळा-सं. स्त्री.—संगीत में एक संकर रागिनी ।

हंसमाळा-सं. पु.—एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम सगण, फिर रगण और अंत में गुरु होता है ।

हंसमुख-वि.—प्रसन्न-वदन, विनोदशील, हास्य-प्रिय ।

हंसमोती-सं. पु.—शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

हंसरथ-सं. पु. [सं.] ब्रह्मा । (डि. को.)

हंसराज-सं. पु.—स्वर्णकारों के काम आने वाला एक लोहे का कीला विशेष, जिससे आभूषणों पर खुदाई की जाती है ।

२ देखो हंसपदी' ।

हंसराजा-सं. पु.—प्राण, जीव ।

उ०—तरै रीस आई लाखानूं, सु कनै भलकौ पड़ियौ थौ तिकौ भाल नै लाखै सोलंकी राज नूं चूंकलियौ, सु राज रै थण रै लाग गयौ, सु वात करतां राज सोलंकी रौ हंसराजा उड गयौ ।

—नैणसी

हंसल—देखो 'हंस' (मह; रू. भे.) (नां. मा.)

हंसलउ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मांनसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ झकझोल । तिम साहिब सूं मन मिल्यउ रे, करइ सदा कल्लोल ।—वि. कु.

हंसलिपि, हंसलिवी-सं. स्त्री. [सं. हंसलिपि] लिपि विशेष ।

उ०—हंसलिवी, भूयलिवी जक्खा लह रक्खसीह बोधव्वा । उड्डी जवणि तुरक्की कीरी, दविडी य सिंधविया । मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसीय बोधव्वा । तह य निमित्ती अ लिवी, चांणक्की मूलदेवी अ ।—व. स.

हंसली—देखो 'हांसली' (रू. भे.)

उ०—ओ लै ए म्हारी सोक कलाली म्हारी हंसली गर्णौ राखौ ए ए आवेन्नो मद छकियौ आलीजौ जीनै थोड़ी दीज्यो ए दारूड़ी ।

—लो. गी.

हंसलौ—देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ अनइ कालुआ किहाडा किसोयरा गंगाजला हंसला नीलडा हरीअडा कछेला भुंगरा इस्या तुरंगम ।—व. स.

उ०—२ सांवरिया ! तूं सरवर म्हे हंसला, रांम प्यारा रे ! म्हे चातक तूं मेह ।—गी. रां.

उ०—३ साधु सदा संयम रहै, मैला कदे न होइ । सून्य सरोवर हंसला, दादू विरळा कोइ ।—दादुबांणी

उ०—४ सोना रा रथ में बैठ कवूड़ी रै वहीर व्हैतां ईं डोकरी रौ हंसलौ उडग्यौ, जांणौ उण कवूड़ी में ईं उण रा प्रांण व्है ।

—फुलवाड़ी

(स्त्री. हंसली)

हंसवंस-सं. पु. यौ. [सं. हंस+वंश] सूर्य वंश ।

उ०—सीगनेस गिरिजा गिरा, गुरु गिरीस मनाय । हंसवंस कुळ कच्छ गुन, वरनूं ग्रंथ बनाय ।—शि. वं.

हंसवडि-सं. पु.—वस्त्र विशेष ।

उ०—अथ वस्त्राणि—देवदूस्य, देवांग, चीनांसुक, पट्टदुकूल, नील-नेत्र, वार्यंगणनेत्र, पांडूअ, पट्टहीर, पट्टसाउलि, पंचराइआ, नरमर-वरव, फूलपगर, जादर, नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट, गजवडि, सुवर-णवडि, हंसवडि, कालपडि ।—व. स.

हंसवाहण-सं. पु यौ. [सं. हंस+वाहनं] १ ब्रह्मा ।

२ देखो 'हंसवाहणी' (रू. भे.)

रू. भे.—हंसबाहण ।

हंसवाहणी, हंसवाहिणी-सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+वाहनं] वह जिसकी सवारी हंस है, सरस्वती । (डि. को.)

रू. भे. हसवाहणी, हंसवाहण ।

हंससुता-सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना ।

हंसाई—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—ठाकरां खंखारौ करतां थकां कैयौ हूं सेवरौ बांध' र चाल सूं जद लोग हंसाई हुसी ।—दसदोख

हंसागति-वि. स्त्री.—१ हंस के समान सुंदर व मंद चाल वाली ।

उ०—हंसागति तणी आतुर थ्या हरि सूं, वाघा ऊभा जेही वहै ।

[illegible] चलै नै उर मद, [illegible] मागै आगमन करै।—वेली

२ देखो 'हंसगति' (रू. भे.)

हंसागमन-सं. स्त्री. [सं. हंस+गमनं] हंस की चाल।

उ०—[illegible] रो सिणगार। मनुज पौरस घर चंड मुंड बोलिया—हंसागमण री हाम पुरां।—मा. वचनिका

हंसागमनि, हंसागमणी—देखो 'हंसगांमिणी' (रू. भे.)

उ०—मंदमुखी हंसागमणि, कोमळ दीरघ केस। कंचन वरणी कामणी, [illegible] पावि मिळस।—ढो. मा.

हंसाड़णौ, हंसाड़बौ—देखो 'हंसाणौ, हंसाबौ' (रू. भे.)

हंसाड़णहार, हारौ (हारी), हंसाड़णियौ—वि०।

हंसाड़िग्रोड़ो, हंसाड़ियोड़ो, हंसाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

हंसाड़ीजणौ, हंसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

हंसाड़ियोड़ो—देखो 'हंसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हंसाड़ियोड़ी)

हंसाणौ, हंसाबौ-क्रि. स. ['हंसणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ हँसने के लिए प्रेरित करना, हँसाना।

२ खुश करना, आनन्दित करना।

३ शोभित करना, सुन्दर लगने लायक करना।

४ मजाक कराना, व्यंग कराना, चुहलबाजी कराना।

५ हंसी उड़वाना दिल्लगी कराना, परिहास कराना।

हंसाणहार, हारौ (हारी), हंसाणियौ—वि०।

हंसायोड़ो—भू० का० कृ०।

हंसाईजणौ, हंसाईजबौ—कर्म वा०।

हंसाड़णौ, हंसाड़बौ, हंसावणौ, हंसावबौ—रू० भे०।

हंसायोड़ो-भू. का. कृ.—१ हंसने के लिये प्रेरित किया हुग्रा, हंसाया हुग्रा। २ खुश किया हुग्रा, आनन्दित किया हुग्रा। ३ सुन्दर लगने लायक बनाया हुग्रा, शोभित किया हुग्रा। ४ मजाक, व्यंग या चुहलबाजी कराया हुग्रा। ५ हंसी उड़वाया हुग्रा, दिल्लगी कराया हुग्रा, परिहास कराया हुग्रा।

(स्त्री. हंसायोड़ी)

हंसारी-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

हंसारूढ़-सं. पु. [सं. हंस+आरूढ़ः] १ ब्रह्मा।

सं. स्त्री—२ सरस्वती।

वि.—हंस पर सवार, हंस पर आरूढ।

हंसाल-सं. पु.—१ छंद विशेष।

२ घोड़ा, अश्व। (डि. नां. मा.)

३ देखो 'हंसाळू' (रू. भे.)

४ देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

हंसाळू, हंसाळू-वि—१ हंसी या मनोरंजन करने वाला, विनोद प्रिय।

२ खुश-मिजाज।

सं. पु.—१ विनोद प्रिय व्यक्ति।

२ किसी नाटक या खेल का मजाकिया पात्र (कोमेडियन)

रू. भे.—हंसाळ।

हंसावणौ, हंसाववौ—देखो 'हंसाणौ, हंसाबौ' (रू. भे.)

हंसावणहार, हारौ (हारी), हंसावणियौ—वि०।

हंसाविग्रोड़ो, हसावियोड़ो, हंसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

हंसावीजणौ, हंसावीजबौ—कर्म वा०।

हंसावळी-सं. स्त्री.—१ निसांणी छंद का एक भेद।

वि. वि.—देखो 'रूपमाळा'।

[सं. हस+ग्रवली] २ हँसों की पंक्ति।

हंसावळो-सं. पु.—डिंगल का वह गीत जिसमें 'बेलिया' नामक छंद में 'रा' 'रा' शब्द रीति सहित आकर उल्लेखालंकार का प्रयोग होता है।

वि. वि.—देखो 'वेलियौ'।

हंसावियोड़ो—देखो 'हंसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हंसावियोड़ी)

हंसासण-सं. पु.—योग के ८४ ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन, जिसमें प्रथम मयूरासन की तरह स्थिर होकर पीछे दोनों पांवों के पंजों को पृथ्वी से स्पर्श कराकर स्थिर होना होता है।

हंसासणी-सं. स्त्री. यौ. [सं. हंस+ग्रासन+रा. प्र. ई. ग्रथवा हंसासना] सरस्वती, शारदा। (ग्र. मा.)

उ०—स्री सारद विधि सुता घरण, वीणा घवलांबर। हंसासणी हुलास परम बोधक त्रिभुवनपुर।—केहर प्रकास

हंसि—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—दर्बं रद खोट न ग्रोट दकूल, फबै हंसि होठ चंड्यां मुख फूल।—मे. म.

हंसियौ-सं. पु.—१ लोह-निर्मित ग्रर्द्ध चन्द्राकार ग्रोजार जिससे फसल ग्रादि काटी जाती है।

२ हाथी के ग्रंकुश का ग्रग्र टेढा भाग।

हंसी-सं. स्त्री—१ राजस्थान में दूध देने वाली गायों की एक ग्रच्छी जाति तथा इस जाति या नस्ल की गाय।

२ हंसने की क्रिया या भाव, खिलखिलाहट।

उ०—हंसण जोग बात तौ समझ-समझायां पछै ऊमर में ई नीं व्ही, बाळपणा साथै हंसी ई छूटगी।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—ग्राणी, करणी, कराणी, निकळणी, होणी।

३ मुस्कान, मृदुहास्य।

उ०—सायद वा म्हारी हंसी सूं घायल होयगी।—तिरसंकू

४ मजाक, परिहास, दिल्लगी।

उ०—१ तरै ग्रादमी दोय मांणस घर रा चाढनै मेलिया—'म्है भूखा मांहरा हाथी ग्रांखियां ग्रदीठ किया था सु उरा दीजै। नहीं दौ तौ म्हांनै थां बुराई होसी। रे गवळ रा ग्रादमी धार गया। पंवार सूं जाय मिळिया। गवळ कहाड़ियो थौ सु कह्यौ। वात हंसी

री विख-सी हुई ।—नैणसी

उ०—२ वो बोल्यो—नीं, नीं, इण री कोई जरूरत नहीं है । भो कतल री केस है, कोई हंसी ठट्टा नीं है ।—अमरचूंनड़ी

मुहा.—१ हंसी उड़ाणी=मजाक करनी, व्यंग्यपूर्ण निंदा करना ।

२ हंसी-खेल समझणौ=किसी कार्य को साधारण या तुच्छ समझना ।

३ हंसी में उड़ाणौ=तुच्छ समझ कर (किसी वस्तु की) उपेक्षा करना ।

४ हंसी रा बुड़बुड़िया उठणा=मन्द मन्द हंसी आना ।

५ हंसी समझणौ=किसी गम्भीर बात को मजाक समझना ।

यौ.—हंसी-खेल, हंसी-मजाक, हंसी-खुशी ।

५ वह बात जो हंसी के क्रम में की जाय ।

६ वक्रोक्ति-युक्त निंदा ।

७ जग हंसाई, निंदा ।

८ मादा हंस ।

९ आर्या या गाहा छंद का भेद, जिसके चारों चरणों में मिलाकर २ गुरु और ५३ लघु सहित ५७ मात्रा हो ।

१० प्रत्येक चरण में ८ गुरु वर्ण फिर १२ लघु वर्ण और अन्त में दो गुरु का वर्णिक छंद विशेष ।

११ २२ अक्षरों का एक वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है ।

रू. भे.—हंसाई, हंसि, हसि, हसी, हांसी, हासा, हासी ।

मह.—हंसड़, हंसौ, हांसौ ।

हंसीगवणी—देखो 'हंसगामिणी' (रू. भे.)

हंसौ—१ देखो 'हंस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ म्हां मैं कुडा औगुण काढै छै सो जै म्हारी गति हुई जिकी थारी गति हुइज्यौ, इतरी ही कहि हंसौ चलतौ हुवौ ।
—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ सो ज्यूं हाथ जमी रै मारियौ त्यूं ही दळ पड़ियौ हंसौ चलतौ रहियौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ आंख्यां सूं दीसै नहीं, पगां सूं चालीजै नीं अर कांनां सूं सुणीजै नीं पण उमर री डोर टूटै नीं अर हंसौ काया री पिंजरौ छोड़ै नीं ।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ एक समय मोतियन कै धोकै हंसा चुगत जुवार । सरवर छांड तलैया बैठै, पंख लपट रही गार ।—मीरां

उ०—५ परम तेज प्रकास है, परम नूर निवास । परम ज्योति आनंद मैं, हंसा दादू दास ।—दादूवांणी

उ०—६ हंसा होय हसंगति जांणै, परम हंस करै सेवा । आवागमण आवै नहिं कबहूं, वै जाहिर योगी देवा ।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—७ कई जनम का सोता हंसा हमकै जाग गया । तन मन खोज जोरा री वातां, इसमैं लाग रया ।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—८ जनहरिया मन जांह कीया, सुंन्य सरवर मैं वास । वळै न जांमण मरण की, धरै न हंसौ आस ।—अनुभववांणी

२ देखो 'हंसी' (मह; रू. भे.)

हंहकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

ह—१ हरख । (एका.)

२ चोर । (,,)

३ हर, शिव । (,,)

४ काष्ट । (,,)

५ निरवेधा । (,,)

६ मृगाक्ष । (,,)

७ शून्य ।

८ आकाश ।

९ जल, पानी ।

१० चन्द्रमा, शशि ।

११ ध्यान ।

१२ स्वर्ग ।

१३ ज्ञान ।

१४ कल्याण, मंगल ।

१६ खून, रक्त ।

१६ डर, भय ।

१७ कारण, सबब ।

१८ विष्णु, लक्ष्मीपति ।

१९ वैद्य, चिकित्सक ।

२० घोड़ा, अश्व ।

२१ लड़ाई, युद्ध ।

२२ अभिमान, घमंड ।

२३ योग में एक प्रकार का आसन ।

२४ हास, हंसी ।

२५ राजस्थानी कविता में पाद-पूर्ति में अधिक उपयोग किया जाने वाला, व्यंजन ।

अव्यय.—पाद-पूरक अव्यय, तक ।

उ०—ढोला ढीली ह्र कियां, मूक्यां मनह विसारि । संदेसउ ह न पाठवइ, जीवां किसइ अधारि ।—ढो. मा.

हआं—देखो 'हां' (रू. भे.)

हइवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—वसि करिय मीरि गढ वास वत्थ, पाधरा किया तेरहइ पत्थ । हइवरा भड़ां दुहुं हुंइ हल्लि, मुलिताण मन्नि घातिय मुगुल्लि ।
—रा. ज. सी.

हइ—अव्यय.—हे, अरे, ओ ।

उ०—१ गिरह पखाळण, सर भरण, नदी हिंडोळणहारि । सूती

हेजइ दूजी, हइ हइ दइव म मारि।—ढो. मा.

उ०—२ हइ रे जी, निठुर तूं, निकस्यू जात न तोहि। प्रिय विछुड़त निकसत नहीं, रज्यउ नजावण मोहि।—ढो. मा.

२ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—१ पांगड़ियां दे दिउं नहीं, दैव मवाड़ू ज्यांह। चकवीकइ हइ पंगड़ी, रयणि न मेळउ त्यांह।—ढो. मा.

उ०—२ नयन कुमुदउ प्रापिय पापिय प्रम्ह परबोल। जोतइं जागत जागतु मांगमु न हइ तै ढोर।—जयसेखर सूरि

३ देखो 'हृदय' (रू. भे.)

उ०—पंचाली केसि [ग्रहीनि] तांणी, प्रांणी सभा मुझारि। तै दुःख हई थी [नवि] जाइ, करतां कोहि पुकार।—नळाख्यांन

हइकंप—देखो 'हैकंप' (रू. भे.)

उ०—हइकंप हिंदूकार घर-घर प्रति हूवउ घणउ। मिळियइ मंडप-गाड-गड़, कुण ऊगरइ कंधार।—ग्र. वचनिका

हइमर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—मोटा मुगल्ल मद्दोन्मत्त, श्रमिळित दियइ ग्ररि ग्रावरत्त। 'कमरद्द' कोपि कीया कटक्क, हइमरा हींस भड़ हुइ हक्क।

—रा. ज. सी.

हइरांन—देखो 'हैरांन' (रू. भे.)

उ०—संदेस चोग्रा कछू मरदन, दरद होइ ग्रसमांन। प्रिय पोस माग गरीर मोसत, हूं भई हइरांन।—वि. कु.

हइवइ—सं. पु. यौ. [सं. हय+पति] १ राजा, नृप।

उ०—१ हइवइ ग्रनणइ हाथि, पाडै कमर पंचाहरइ। ग्रांग्रावळि पाहइतउ, भेळउ हुइ भारथि।—ग्र. वचनिका

२ देखो 'हैवै'।

३ देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—पनर समत ग्रेकांणव पवत्तरि, पुणि मागसिरि प्रथम पखि पूंगरि। हठमल हइवइ सउ हथियारे। विढियउ जइत चउथि सिनिवारे।—रा. ज. सी.

हइवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—हइवर गइवर पाइदळ पुहवि न पारावार। गोरी राउ गिरि धामनउ, गढ गढ गंजणहार।—ग्र. वचनिका

हई—१ देखो 'हय' (रू. भे.)

उ०—छोगो सिर मोनहरी छवगाळ, मळकंत सूरज रूप भळाळ। वडे गज नेत नटां जिम वंस, हई घट फटत छूटत हंस।—सू. प्र.

२ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—हई हई ! देव किमू करिउं, रत्न ऊदालिउ हथिय। कालि किमूं कारण हतूं, ग्राज ग्रनेरी मत्ति।—मा. कां. प्र.

हईग्रगवीन—देखो 'हयग्रंगवीन' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

हईइ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—हुरदो नु नचावणहार, ए त्रिहुग्नट कलामिणगार। ग्रस्ववंध [illegible] हईइ।—सालिसूरि

हईडइ, हईडौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ कंठ ग्रहण करी रहियउ, हईडइ दीधउ हेलि। तै संघातइ स्या थिकी, खेलंतां नर खेलि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ दैवइं लिखिउं तै नवि टलइ, बाउव रहिउ विचारी। धीर धरी धर रडितु, हईडा ! हवइ म हारि।—मा. कां. प्र.

हईदळ—देखो 'हयदळ' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै रायसिंघ चढै घण जोस, रमै झट तेग 'ग्रनावत' रोस। समोभ्रम 'राजड़' रूप समत्थ, हईदळ वाढत वीजळ हाथ।—सू. प्र.

हईवर—सं. पु.—१ योद्धा, वीर।

उ०—हईवर पाय ग्रसीसत हूर, समोभ्रम 'केहर' कायम सूर। सझै जुध वीजळ मूगळ साथ, रिपु 'जंसराज' तणौ रुघनाथ।—सू. प्र.

२ देखो 'हयवर' (रू. भे.)

हउं—देखो 'हूं' (रू. भे.)

उ०—देवि पांडव नरेंद्र पुरेंद्री द्रूपदी तणइ हउं जि सुविद्री।

—सालि सूरि

हउंस—देखो 'हूंस' (रू. भे.)

उ०—ढोलउ नितु फेरवइ प्रभाति, सउदागर पणि तेडइ साथि। भगति जुगति जीमण तसु-तणी, पूरी हउंस साल्ह वसुतणी।

—ढो. मा.

हउ—ग्रव्य.—ग्ररे।

उ०—भाई कहि वतळावसूं, नागर वेल निरेस। हउ हउ करहा, कुंवर-नइ मत लै जाव विदेस।—ढो. मा.

हउणौ, हउवौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू. भे.)

उ०—१ हउग्रो (हुइतो) संभालु, [मन] मारु ठारु। सोकाग निजवा [ला लागी] छि, सीतल [वचनि] वारु।—नळाख्यांन

उ०—२ खोड़उ हउं तउ डांभिज्यउं, बंधियउ भूख मरुंह। जाउं ढोल रइ सासरइ, सफळा मूंग चरुंह।—ढो. मा.

हऊणौ, हऊवौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू. भे.)

उ०—धरणी पडि पाछी पडी, हऊउ हाहाकार। हृदय सिद्धि राजा रुउइ, सूझइ नहीं विचार।—मा. कां. प्र.

हए—भू. का. कृ.—हते, मारा।

उ०—हरि हुए वराह हए हरिणाकस, हूं ऊधरी पताळ हूं। कहो तई करुणामै केसव, सीख दीध किण तुम्हां सूं।—वेली

हकंड—देखो 'हैकंड' (रू. भे.)

उ०—उरड़ ग्रकुळाय ग्राधा पड़ै ग्राय ग्रत, पड़ावै माजनूं लाजनूं खो ग्रपत। रीछलै तमाखू दांम दे रोकड़ा, हकंड भूंडा लगै हाथ मैं होकड़ा।—ऊ. का.

हक—सं. पु. [ग्र. हक़] १ स्वत्व, अधिकार, दावा।

उ०—१ भटियांणी कह्यौ—म्हैं क्यूं भूंडी मांनूं। जायोड़ो भलाई व्हौ, म्हारै विचै इण माथै थारो हक वत्तो है, म्हैं इण वात नै भलपण विचै मरणो ग्राछो समझूं।—फलवारी

उ०—२ लेणी-देणी कींकर नीं है वोफा ! राजा इण धरती री धणी है, इण मुलक रो मालिक है। इण धरती माथै जिकी चीज निपजै उण माथै उणरो हक है ।—अमर चूंनड़ी

२ न्याय, प्रथा आदि से प्राप्त अधिकार ।

उ०—२ ओ कैड़ो राज ? किणरो राज ? आं राज करणियां नै कुण ओ हक सूंप्यो जको वै चंवरयां बैठी किणी लुगाई नै झपटलै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ किणी री मंसा परवारी दुख देवण री ओ हक जे राजा नै भगवांन ई सूंप्यो तौ ओड़ा भगवांन री पूजा ई किताक दिन तक व्हैला ।—फुलवाड़ी

३ किसी कार्य को करने का अधिकार ।

४ सत्य, यथार्थ ।

उ० हफत-हजारी हफत सझै हक सद जै सायत । आय हफत ईसफां, मिळो हफतम सझि हिम्मत ।—सू. प्र.

५ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—हकां बेली हक है, वेहकां वेहक । हरीया हेकै हक विन, सब दिन जांहि अन्हक ।—अनुभववांणी

६ ठीक कार्य, सीधा कार्य ।

उ०—काजी सरै हक है तेरै. तौ अनहक जीव क्युं मारै । कुछी एक दीन तणी डर दुनियां, सिर अपनै सुं टारै ।—अनुभववांणी

७ पक्ष, हिस्सा, भाग ।

उ०—उण दोनूं घोड़ा आपां रै हक मैं छोड़ दिया । सोनै री गांठड़ी भी दी । इण सगळी बातां रै अलावा वचन दियौ कै आज सूं उण री तरफ सूं वैर-भाव खतम है ।—तिरसंकू

८ पारिश्रमिक, मेहनताना ।

उ०—मुंई मिटीया मुरदार कहत हैं, हाथै हक हलाळा । काजी धणी'र और धलाली, सब स्वारथ का चाळा ।—अनुभववांणी

वि.—१ मृत ।

उ०—१ पातिसाही करता थका एक दिन मुणा रै पातिसाह हमाऊं चढिया हुता तिहांथी पड़िया अर हक हुआ ।—द. वि.

उ०—२ इतरी कहता पांण तौ अमरसिंहजी ऊभा तिकी जगां सूं तमक जाय खांन सूं भेळा हुइ गया । कटारी दोन्ही सौ पेट में हाथ तक गरक हो गयो । और कही पाजी मुंह सूं सावळ वोल । यूं कही फेर दूजी दी सौ मियां तौ हक ही गयो ।

—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

२ जायज, ठीक, वाजिव ।

उ०—१ हिमत हक हिसाब है, रहमांण रवाकी । मोह सराब खराब है, छत उमत छाकी ।—केसोदास गाडण

३ युक्ति संगत, युक्ति-युक्त ।

४ देखो 'हाक' (रू. भे.)

रू. भे.—हक्क ।

हकडक—सं. स्त्री.—१ हंसने की ध्वनि, खिलखिलाट ।

२ देखो 'हकबक' (रू. भे.)

हकड़ाणौ, हकड़ाबौ—देखो 'हकलाणौ, हकलाबौ' (रू. भे.)

हकड़ाणहार, हारौ (हारी), हकड़ाणियौ—वि० ।

हकड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हकड़ाईजणौ, हकड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

हकड़ायोड़ौ—देखो 'हकलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हकड़ायोड़ी)

हकड़ी—सं. स्त्री—अटक कर बोलने या तुतलाने की क्रिया, हकलाहट ।

उ०—जीभरै फाला जकै सूं हकड़ी खा'र बोलै । मन मैं वसै दुनिया फंसै ।—दसदोख

हकड़ौ—देखो 'हाकड़ौ' (रू. भे.)

हकणौ, हकबौ—क्रि. अ.—१ गतिमान होना, चलना, रवाना होना ।

उ०—थे जीमो थांरा कंवर जिमावो, थे जीमो थांरा कंवर जिमावो । म्हारी रेल हक जाय म्हारा ए साथीड़ा उठ जाय ।

—लो. गी.

ज्यूं—ई गाडी रै हकण रो टेम कणेक रो है ।

२ जुतना, चलाना ।

उ०—नहचो थळ निरधार, हळ. तौ आसाढां हकै । व्है मण धांन हजार, मासै कातिक 'मोतिया' ।—रायसिंह सांदू

३ युद्ध करना, भिड़ना ।

उ०—भुजंगी लचकै देत कोम धकै भोम भार, वकै वळोवळी खेळा किलकै वीरांण । छिळै घाव चळ्ळां सूरमां घावा लोह छकै, उभै सेन हकै ऊचकै आरांण ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

४ आग पर गरम करने से द्रव्य पदार्थ का भाप बनकर उड़ना ।

५ कम होना, घटना ।

६ देखो 'हाकणौ, हाकबौ' (रू. भे.)

उ०—महा क्रोधंगी गनीमां हुंता हुचकै नरिंद 'माधो', भू-लोक भूचकै बाधो चकै कोम भार । वोमगी अरांवां भाळ वेताळ वभकै वकै, बाजेंद्रां 'वहादरेस' हक्कै तेणवार ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

हकणहार, हारौ (हारी), हकणियौ—वि० ।

हकिओड़ौ, हकियोड़ौ, हक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हकीजणौ, हकीजबौ—भाव० वा० ।

हाकणौ, हाकबौ—रू० भे० ।

हकदार—वि. यौ. [अ. हक+फा. दार] १ स्वत्व या अधिकार रखने वाला, अधिकारी ।

उ०—प्रीत री कूख सूं जलमियो राजगीदी री हकदार नीं व्है अर व्याव री कूख सूं जलमियो राज री हकदार व्है ।—फुलवाड़ी

२ पात्र ।

३ दावेदार ।

हकनाक, हकनाहक—अव्य. यौ. [अ. हक+फा. नाहक] १ निष्प्रयोजन

[illegible] में, [illegible] में।

उ०—१ [illegible]—बाई थंगा, हकनाक इत्तो वगत खराब करयो। [illegible] राव ई नीं वही तो थे काई नव री तेहरं करैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] मूं नर जोर मारै, पण ऊंचायो कद मिळै। लक्ष्य [illegible] नहै, फंकै हकनाहक गळै।—नारी सईकड़ी

२ अनुचित।

उ०—[illegible] नाई हीमत करी। घड़ांम करती रो ऊभो ऊभो ई [illegible] रे पगां पड़यो। जोर सूं कूकयो—अन्याव व्है, अंदाता हकनाहक अन्याव व्है। बेकसूर दीवांणजी नै हकनाक राज रै हाथां [illegible] मिळै।—फुलवाड़ी

हकबक-वि.—हक्का-बक्का, भौचक्का, स्तंभित।

रू. भे.—हकबक, हकवाक।

हकबकणी, हकबकबो—देखो 'हकबकाणी, हकबकाबो' (रू. भे.)

उ०—धकधकै खोण मिळ करद धूर, हकबकै काय बकबकै हूर। कर कोप प्रठी कमधज करूर, पिसादीय लोक भर रोस पूर।
—पे. रू.

हकबकाणी, हकबकाबो-क्रि. अ.—१ हक्का-बक्का होना, स्तंभित होना।

क्रि. स.—२ किसी को हक्का-बक्का करना, स्तंभित करना।

हकबकाणहार, हारो (हारी), हकबकाणियो—वि०।

हकबकायोड़ो—भू० का० कृ०।

हकबकाईजणो, हकबकाईजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

हकबकणो, हकबकबो—रू० भे०।

हकबकायोड़ो-भू. का. कृ.—१ हक्का-बक्का हुवा हुआ, स्तंभित हुवा हुआ।

२ किसी को हक्का-बक्का या स्तंभित किया हुआ।

(स्त्री. हकबकायोड़ी)

हकबकियोड़ो—देखो 'हकबकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हकबकियोड़ी)

हकवाक—देखो 'हकबक' (रू. भे.)

उ०—[illegible] डायण थांमै डाक, वहकीय रंग हुआ हकवाक।
—गो. रू.

हकमोरूसी-सं. पु. [अ.] पितृ-परम्परा से प्राप्त होने वाला अधिकार, उत्तराधिकार।

हकळाणो, हकळाबो-क्रि. अ.—जीभ तेजी से न चलने के कारण अटक-अटक कर बोला जाना, हकलाना, बोलते-बोलते अटकना।

हकळाणहार, हारो (हारी), हकळाणियो—वि०।

हकळायोड़ो—भू० का० कृ०।

हकळाईजणो, हकळाईजबो—भाव वा०।

हकड़ाणो, हकड़ाबो, हकळावणो, हकळावबो—रू० भे०।

हकळायोड़ो-भू. का. कृ.—बोलने-बोलने अटका हुआ, हकलाया हुआ।

(स्त्री. हकळायोड़ी)

हकळावणो, हकळावबो—देखो 'हकळाणो, हकळाबो' (रू. भे.)

हकळावणहार, हारो (हारी), हकळावणियो—वि०।

हकळाविओड़ो, हकळावियोड़ो, हकळाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकळावीजणो, हकळावीजबो—भाव वा०।

हकळावियोड़ो—देखो 'हकळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हकळावियोड़ी)

हकलो—देखो 'हाकड़ो' (२) (रू. भे.)

(स्त्री. हकली)

हकसफा-सं. पु. [अ. हक+शफ्अ:] पड़ोसी अथवा गांव के हिस्सेदार को किसी जमीन को खरीदने में अन्य क्रेता की अपेक्षा प्राप्त पूर्व-अधिकार।

हकां—देखो 'हाक' (रू भे.)

उ०—ऊठि अचूंका बोलणा, नारि पयंपै नाह। घोड़ां पाखर धमधमी, सींधू राग हुवाह। हुवो अति सींधवो राग वागी हकां, थाट आया विसण घाट लागै थकां। अखाडा जीति खग अरि घड़ा खोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अचूंका बोलणा।—हा. झा.

हकाड़णो, हकाड़बो—देखो 'हकाणो, हकाबो' (रू. भे.)

हकाड़णहार, हारो (हारी), हकाड़णियो—वि०।

हकाड़िओड़ो, हकाड़ियोड़ो, हकाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकाड़ीजणो, हकाड़ीजबो—कर्म वा०।

हकाड़ियोड़ो—देखो 'हकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हकाड़ियोड़ी)

हकाणो, हकाबो-क्रि. स. ['हकणो' क्रिया का प्रे. रू.] १ गतिमान कराना, चलाना, रवाना कराना।

उ०—सिगाळ धवळ मोडी सुरह, केई पीळी अंभाड़ कर। वाछड़ा भेल सांमी वळी, ग्वाळ हकाई टोळ घर।—पा. प्र.

२ जुताना, चलाना।

३ युद्ध करने के लिए प्रेरित करना, भिड़ाना।

४ द्रव पदार्थ को आग पर गर्म करके भाप बनाकर उड़ाना।

हकाणहार, हारो (हारी), हकाणियो—वि०।

हकायोड़ो—भू० का० कृ०।

हकाईजणो, हकाईजबो—कर्म वा०।

हकाड़णो, हकाड़बो, हकावणो, हकावबो—रू० भे०।

हकायोड़ो-भू. का. कृ.—१ गतिमान कराया हुआ, चलाया हुआ, रवाना कराया हुआ. २ जुताया हुआ, चलवाया हुवा (हल). ३ युद्ध के लिये प्रेरित किया हुआ, भिड़ाया हुआ. ४ भाप बना कर उड़ाया हुआ।

(स्त्री. हकायोड़ी)

हकार-सं. पु.—१ 'ह' अक्षर या वर्ण।

२ शब्द, ध्वनि, पुकार।

[प्रा. हक्कार] ३ ललकार, हुंकार।

उ०—१ हाथियां कपोळा केक भूमै लूथबत्थां होय, केक आय लूमै दौळां साथियां हकार। बंसां नीर चाढै भूप अबीहां जनेबा बाहै, संभरी बांघळा सीहां विभाड़ै सिकार।
—रांमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ उड़ पड़ै पोगरां धरति आंण, जनमेज जाग रा नाग जांण। हाथियां दांत पग घर हकार, मीरजां जंगी हवदां मभार।
—वि. सं.

४ देखो 'अहंकार (रू. भे.)

उ०—विसन नांम तौ सबहो भूंडा, पंच बडा जोधार। कांम क्रोध मोह लोभ हकारा, यै तजै सौ साधू सार।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

रू. भे. हकारि, हकाळ, हक्कार, हेकार।

हकारणौ, हकारबौ—क्रि. स —१ बोलना, कहना।

उ०—बारैं आवरै रिण रोपण बंका, बंध सुग्रीव बकारैं। ऊठै सुण ग्रमजघड़ अधायौ, धींग क्रोध उर धारैं। हूं हिव आवियौ पगमांड हकारैं।—र. रू.

२ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

उ०—लहै जोत सोभा भड़ां मैं सलोभा, सदा खेत प्रांमै गैहल्लोत सोभा। सबै मंत्रवी व्यास प्रोहित्त सार्थं, हकारैं कवी वाहता खग्ग हार्थं।—रा. रू.

३ बुलाना।

उ०—१ हिंदू तुरक हकारिया, नरपति अनै निवाब। आरावां भेळौ अटक, मेलो भड़ां सताब।—रा. रू.

उ०—२ हिंदू तांम हकारिया सिंघ 'जसो' जैसिंघ। किया विदा कूरम कमंघ, श्रै बेवै अरडिंग।—वचनिका

४ चलाना।

उ०—राजा भड़ां हकारिया, तोलै खग्ग करग्ग। उर पैलां लग्गी तिकर, जग्गी अग्ग सिळग्ग।—रा. रू.

५ ललकारना।

उ०—१ वधिया भुज भोम लगै विमळा, क्रम देतेय टीकम जेम कळा। भड़ वीर हकारत 'पाल' भला, वरियांम चढै वहळा बहळा।
—पा. प्र.

उ०—२ सीसोद कमधां सैंफळा, वहि सेल झळहळ वीजळा। हुय लूथवाथ हकारियां, कर खंजर वाह कटारियां।—सू. प्र.

उ०—३ हत्यौ महारावण तेण हकारि, बच्यौ महिखासुर बीर बकारि।—मे. म.

६ सचेत करना।

उ०—जिहां हकारइ मोहि, तोहि साचउ करि जांणइ। आदि अंत उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछांमइ।—प. च. चौ.

क्रि. अ.—चलना।

हकारणहार, हारौ (हारी), हकारणियौ—वि०;

हकारिओड़ौ, **हकारियोड़ौ**, **हकारचोड़ौ**—भू० का० कृ०।

हकारीजणौ, **हकारीजबौ**—कर्म वा०, भाव वा०।

हक्कारणौ, **हक्कारबौ**—रू० भे०।

हकारवाड़ा—सं. पु.—१ ध्वनि, आवाज।

उ०—हुवै बाननेस वीरां विखमी हकारवाड़ा, घरां पारवाड़ा सरां साबलां सधोम। सिंधु राग रेड़तै आहुटै कै सिंगारवाड़ा, भूटकै मेड़तै मारवाड़ा वीर-भोम।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ हुंकार।

हकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बोला हुआ, कहा हुआ. २ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ. ३ चला हुआ, रवाना हुवा हुआ. ४ बुलाया हुआ. ५ चलाया हुआ. ६ ललकारा हुआ. ७ सचेत किया हुआ.

(स्त्री. हकारियोड़ी)

हकारौ—सं. पु.—१ आवाज, ध्वनि।

उ०—तठा उपरांयंत कमांणां कुरमांणां मांहे मेलजै छै। तिकै कमांणां किण भांतरी छै? बारै वरस दरियावां मांहि जहाजां हेठै बंधी आइ चिलेवाइ हकारा करती गुण-भार वंकी अढ़ार-टंकी, असली जादी पठांण री बेटी ज्यूं तुंही तुही करती थकी, बलोचणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भांत री कमांणां उणांहीज दरखतां री साखां सूं नांगळजै छै।—रा. सा. सं.

२ देखो 'हुंकारौ' (रू. भे.)

उ०—ठाकर सगळी बातां री हकारौ भरघौ, गुलाब री मां धूप-दीप करघौ।—दसदोख

हकाल—देखो 'हकार' (२) (रू. भे.)

हकालणौ, हकालबौ—क्रि. स.—१ बलपूर्वक अथवा डरा धमका कर कहीं से भगाना, खदेड़ना।

उ०—हकावै अभाड़ां चौतरफ्फां नरां फौज हल्लै, भल्लै जठै बोल दै दकालै कै भाराथ। 'अजो' दूजौ गाढेराव गयंदां वकाळै असां, प्रळै काळा मयंदां हकालै प्रथीनाथ।—सूरजमल मीसण

२ चलाना, हांकना।

उ०—दवै रद खोट न ओट दकूळ, फवै हंसि होठ चव्यां मुख फूल। हकालत बीस हय्यां नव-हथ्थ, रूड़ा सुखपालक हालत रथ्थ।
—मे. म.

३ उत्तेजित करना, ललकारना।

उ०—काळी पत्र भालै ईवै धरा धमै कूंभकाळी, हकालै दवाळीबंध बराकां हणेस। चाव स्रोण लाली पीठ लाली पीठ लेंण धूंधमाती चालै, गुलाली बणाव कीधां दकालै गणेस।—नंदजी सांदू

४ विरुदाना, वकारना।

उ०१ —पड़ै आरपारं। जुधाणं जुधारं। हकालै हेआरं। पीउसं पयारं।—कल्यांणसिंघ नगराजोत री बात

उ०—३ हकासै दमामां नीसरगढ़ां नगां फौज हल्लै, मल्लै जठै बीर दै हक्कै कै भागर।—सूरजमल मिसण

५ ललकारना, जोर से बोलना, आवाज करना।

उ०—उहै दनि गैड़ नगां उतमंग, गहै भट कंज करां जट-गंग। ललाट राय हकालत मुंड, रोड़ां नभ घुम्मर घालत रुंड।

—मे. म.

६ पुकारना, आवाज लगाना।

७ ललकारना।

उ०—उरजै पगां ज ईन, चरै मन मोज सूं, बिचरै साग्यां बीच, फिरै नहीं फौज सूं, पातै मिहां घात, हकासै हेकला। मिळै क्रमतां मग मांह, टळै नहि टेकला।—सिववक्स पाल्हावत

हकालणहार, हारो (हारी), हकालणियो—वि०।

हकालियोड़ो, हकालियोड़ो, हकाल्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकालीजणो, हकालीजबो—कर्म वा०।

हकालियोड़ो-भू. का. कृ.—१ खदेड़ा हुआ. २ आवाज लगाया हुआ. ३ चलाया हुआ, हांका हुआ. ४ उत्तेजित किया हुआ. ५ खिजाया हुआ. ६ ललकारा हुआ।

(स्त्री. हकालियोड़ी)

हकालो—देखो 'हाको' (रू. भे.)

उ०—तठै आंम री छाया नै चमेली मोगरै नजीक महर फारंज कहै सूपर डार नूं लियां सूतो छै। सो देख बागवांन हकालो देय गाळी काढी।—ढाढाळा सूर री वात

हकावणो, हकावबो—देखो 'हकाणो हकाबो' (रू. भे.)

हकावणहार, हारो (हारी), हकावणियो—वि०।

हकावियोड़ो, हकावियोड़ो, हकाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकावीजणो, हकावीजबो—कर्म वा०।

हकावियोड़ो—देखो 'हकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हकावियोड़ी)

हकीकत—सं. स्त्री. [अ.] १ वृतान्त, हाल, विवरण।

उ०—१ ताहरां मांन्यां नुं सलांम की छै। ताहरां राजा अजैपाळ मानधाता नुं वात पूछी। सारी हकीकत मालीम की।—चौबोली

उ०—२ ताहरां घोरीयै नुं मूळवै पूछीयो, 'जु वेसवटो कठै?' ताहरां घोड़ै री हकीकत पूछी।—मूळवै सांगावत री वात

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति फेर पातसाहजी हुकम कीयो। हकीकत दूत कहै छै।—रा. सां. सं.

उ०—४ तठा उपरांत सातलजी नूं लै आयो। आपरी कोटड़ी मांहै उतारीयो। पछै वडा हीड़ा कीया, अर पूछीयो, 'थां किम जोधपुर सो छाडीया?' ताहरां ईहां सरव हकीकत मांड नै कही।

—सातल जोधावत री वात

२ सचाई, वास्तविकता, यथार्थ।

उ०—एक कहै घरवनि, तिकै मन हकत विलायत। हफत नकल लिख हफत, कमध फुरमांण हकीकत।—सू. प्र.

३ सूचना, खबर, समाचार।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति अतरा मांहै महमद मुसतफा खांन रा चार दूत विचारिआ हूंता त्यां हकीकत राजांन रा पातसाह आगै पोहचाई।—रा. सा. सं.

४ घटना।

उ०—अठी-उठी री मोकळी आडी डोडी वातां हुई पण दोन्यूं जणा उण दिन वाळी हकीकत जबांन माथै ई नीं लाया। पण मन में छकै पंजे सावधांन।—अमर चूंनड़ी

५ मन्तव्य।

२ इतिहास।

रू. भे.—हकीगत, हगीगत।

हकीकी–वि. [अ.] १ सच्चा, असली।

२ आत्मीय।

३ वास्तविक, यथार्थ।

हकीगत—देखो हकीकत' (रू. भे.)

उ०—१ सीहैजी वीरांमणा नुं आदर दीयो नै कयो, वीरांमणां थे सारा भेळा हांय नै किण कांम आया छो। अब थांरी हकीगत कहो।—रा. वं. वि.

उ०—२ राव कल्यांणसिंघजी मदत करी अरु मेड़तिया पण इणां रै सांमल हा तिका हकीगत इण तरै है—पठांण हाजीखांन ऊपर अजमेर राव मालदे फौज मेली।—द दा.

उ०—३ वसी (बीच में ई) अवळा रूपी गायां नहीं, सांचेली गायां। इत्ती कै'र सारी हकीगत समझायी।—वरसगांठ

उ०—४ फूलचन्दजी रै पूछणै पर बेगराजजी रै ओसर री सारी हकीगत बतावै है।—दसदोख

उ०—५ संझ्या समै रावजी महिलां पधारिया तरै अपछरा मुजरो करै नै सीख मांगी। अवै तो साहिबजी मोनै लोकां दीठी। राज पीण हकीगत कीही सो म्हें तो जावसूं।

—वीरमदे सोनगरा री वात

हकीम–सं. पु. [अ.] १ यूनानी पद्धति से चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

उ०—हकीम वैद्य सरब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंबा, अंत्रा वांसै आई।—मे. म.

२ मीमांसा का पण्डित, मीमांसक।

उ० —सो आं वचनां सूं सीख मांनै नीयत रैयत रै ऊपर किरपा करै हकीमां कही छै अदल भलो खरो गुण छै।—नी. प्र.

हकीमी–सं. स्त्री. [अ.] १ यूनानी चिकित्साशास्त्र।

२ यूनानी चिकित्सा का कार्य।

वि.—यूनानी चिकित्सा से सम्बन्धित।

हकीयत–सं. पु. [अ. हक़+रा. प्र. यत] हक होने का भाव, स्वत्व,

अधिकार।

हकूक–सं. पु. [अ. हुक़ूक़ हक व. व.] कई प्रकार के स्वत्व या अधि-कार।

हकूमत–सं. स्त्री. [अ.] १ राज्य, सरकार।

२ शासन, प्रशासन।

उ०—मोकळा महीणा वीतग्या। मा'राजा लूंणसर में चोखीतरां रसवसग्या। चोखो खावै-कमावै अर मंडी रा मिनखां माथै आछी प्रेम हकूमत करै।—दसदोख

क्रि. प्र.—करणी।

मुहा.—हकूमत करणी या चलाणी=दूसरों को साधिकार आज्ञा देना।

३ सत्ता, अधिकार।

हकूमत जताणी=रोब या प्रभुत्व प्रदर्शित करना।

रू. भे.—हुकमत, हुकूमत।

हकौ—देखो 'हाकौ' (रू. भे.)

उ०—१ सत्रां महपति करंत संघार, धड़ां पग दे खग वाहत धार। करै अप वीर जय जय कार, हकां करि जांणि रमै होळियार।

—सू. प्र.

उ०—२ गहर पग मांडो ठकराहां, हूं आयो सुण वाहर हकौ। मोनु भां अतरी छै मालम, सांलम धन लै जाय न सकौ।

—ठाकर रांमसिंघ री गीत

हकौबकौ—देखो 'हक्कौबक्कौ' (रू. भे.)

हक्क—देखो 'हक' (रू. भे.)

उ०—जिन्हा तज जुलमांणी, हक्क सराहियां। रुख चुगलक ब...... जांनी, सिरहद सभियां।—र. ज. प्र.

२ देखो 'हाक' (रू. भे.)

उ०—१ हुअै रिणि हक्क किलक्क हमस्स, उडै रत छोळि दिसेह अरस्स। अखै धिन धिन्न रतन्न अरक्क, चढावै मेछ घड़ा खग चक्क।

—र. वचनिका

उ०—२ मोटा मुगुल्ल मद्दोनमत्त, अमिळित्त दियइ अरि आव-रत्त। 'कम्मरइ' कोपि कीया कटक्क, हइमरां हींस भड़ हुइ हक्क।

—रा. ज. सी.

उ०—३ फौजक्क रोसक्क फारक्क फरक्क, हूरक्क वरक्क हुवै खळ हक्क। सीसक्क सभक्क हारक्क हरक्क, ग्रिधक्क गहक्क गूंदक्क गटक्क।—सू. प्र.

हक्कणौ, हक्कबौ–क्रि. अ.—१ कमजोर होना।

२ देखो 'हकणौ, हकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ थटां काळ सी डंकाळ सी तोपां यौ सावात धक्की, मैंगळां है खुरां जम्मी मचक्की प्रमांण। वीर छंडां लीधा साथ चंडका किलक्की वक्की, आंमेरनाथ री सेना यौ हक्की आरांण।

— सुखदांन कवियौ

उ०—२ ईख भांण आरांण तमासै तुरी तांण ऊभो, वारंगां विवांण हक्कै, काथा मंगां बोम। फौलां भंडा फरक्कै, वभक्कै घावां तनां फावै, धधक्कै लोयणां क्रोध, जुड़ै रूपी धोम।

—बुधसिंह सिंढायच

हक्कणहार, हारौ (हारी), हक्कणियौ—वि०।

हक्किओड़ौ, हक्कियोड़ौ, हक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हक्कीजणौ, हक्कीजबौ—भाव वा०।

हक्कबक्क—देखो 'हक्कौबक्कौ' (मह, रू. भे.)

हक्कल—देखो 'हैकल' (रू. भे.)

हक्काबुक्कौ—देखो 'हक्कोबक्कौ' (रू. भे.)

उ०—अथ राजप्रस्थांनं, पवनोद्धद धूलि पट सहस्रसंछन्नतरणि-किरणि, सुभट विमुक्त हक्काबुक्कार विशित कातर जन.......

—व. स.

हक्कार—देखो 'हकार' (रू. भे.)

हक्कारणौ, हक्कारबौ—देखो 'हकारणौ, हकारबौ' (रू. भे.)

हक्कारण हार, हारौ (हारि), हक्कारणियौ—वि०।

हक्कारिओड़ौ, हक्कारियोड़ौ, हक्कारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हक्कारीजणौ, हक्कारीजबौ—कर्म वा०।

हक्कारियोड़ौ—देखो 'हकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हक्कारियोड़ी)

हक्कियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कमजोर हुवा हुआ।

२ देखो 'हकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हक्कियोड़ी)

हक्कोबक्कौ–वि. [स्त्री. हक्कीबक्की] १ आश्चर्यचकित, विस्मित।

उ०—पण म्हारै डरावणा विचारां रै बीच लीना री मीठी पण तीखी किलकारी कोयल री कूक ज्यूं गूंजगी—'पवन'! अर म्हैं सव कुछ भूल नै कीं सोच्यां बिना ई हक्कोबक्को सो उठै ईज अभो रह्यौ।—तिरसंकू

२ अचानक किसी घटना के कारण जो घबरा गया या शिथिल पड़ गया हो, किंकर्त्तव्यविमूढ़।

उ०—कागद देखतां ही बौ भूं भूं रोवण लागग्यौ। छोटकी साळी तौ हक्कीबक्की हुयगी, सासू खट सगळो खेल समझ गयी।

—दसदोख

३ स्तंभित, भौंचक्का।

रू. भे.—हकोबको, हुक्कौबुक्कौ।

मह;—हक्कबक्क।

हक्कोहक्क–वि.—१ ठीक, उचित।

२ देखो 'हाक'।

उ०—१ नीसांणि धाइ वलइं, पताका झलहलइं, आरेणि माडी-यइ, अरधचंद्र बाल खंडियइं, भट हक्कोहक्क करइं, देवांगना वीर वरइं।—व. स.

उ०—२ वध वीर किलक्कं हक्कोबक्कं, धूप सवक्कं धमचक्कं।

नग बार धमक बाघा रंक, रुक झटक रहचक्क ।—रा. रू.

हक्को-सं. पु.—१ बारह तूर्य-वाद्यों में से एक ।

उ०—आरम तूरय निरघोष नादा नाम—हक्का, ढक्का, मरम, काहल, दुन्दभेर, मागुर्ग, पड़हो, झुग, संख, करड, पागय, मुद्दल, नाल, रणनंदी, इति रणनंदी तूरय ।—व. स.

२ धन, कीर्ति ।

३ ललकार, हाक ।

४ देखो 'हाको' (रू. भे.)

हगमगो-वि. (स्त्री. हगमगी) प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित ।

हगाम—देखो हगांमो' (मह; रू. भे.)

उ०—१ अथार गत रा ही क्यूं गोळां री गजर मांडी हो सुहारं फजर परभात रा हीज हगाम जुद्ध है—नेठाव कियां नजर देख लेगो ।—वी. स. टी.

उ०—२ जोरावर कदे दंद्र अखाड़े आवसी जांणु, लगावसी कदे गळां ताळवे लगांम । रीझै वळी-वळी कदे कसुंबो पावसी राजां, हूळीवळी भड़ां कदे चावसी हगांम ।—वलूंनसिंघ री गीत

उ०—३ घट बोळ सत्रां घर, जोस घणो । तंय होय हगांमां कूच तणो ।—गो. रू.

उ०—४ हगांमां हमेसां वजत त्रिदवेसां नववती । अई 'इंदू' अंबा जयति जगदंबा भगवती ।—मे. म.

हगांमी—देखो 'हगांमी' (रू. भे.)

उ०—ग्राप पधारिया वेलीड़ां रै साथ हगांमी ढोला रे । थांरी घोलूंड़ी घण नै आवती हो राज ।—लो. गी.

हगांमो—देखो 'हंगामो' (रू. भे.)

उ०—आठू पहर ही दरीखानै हगांमो लागियो रहै ।

—ठाकुर जयतसी री वारता

हगीगत—देखो 'हकीकत' (रू. भे.)

उ० —अबै करींज वाकबी हगीगतूं अंवेलनैं । प्रचंड जूंझ मल्लनै, बुलाय धीर पालनैं ।—पा, प्र.

हड़-क्रि. वि.—जल्दी, शीघ्र ।

हड़कायो—देखो 'हिड़कियो' (रू. भे.)

उ०—काटै जथा गंडक हड़कायो, खील त्रिलाय नीकळै खांख । दाप तणा नांवरी ओखद, अंग न दूखै न दूखै आंख ।

—वखतो आसियो

हड़कियावाव—देखो 'हिड़कियावाव' (रू. भे.)

हड़कियो—देखो 'हिड़कियो' (रू. भे.)

हड़ड़-सं. स्त्री. [अनु.] १ ध्वनि विशेष, जो प्राय: परत के रूप में जमी हुई वस्तुओं के गिरने से उत्पन्न होती है । दीवार आदि के ढहने की आवाज ।

उ०—इतरा मैं तो न मालम कीकर ई सांकळ नीकळगी अर हड़ड़ड़... ...ड़ धम्मीड़ करती पट्टी आंगणा पर । जे म्हूं फुरती आगो नहीं सरक जावतो तो चटणी........चटणी ।—[illegible]

२ देखो 'हड़हड़' (रू. भे.)

उ०—रिख हड़ड़ ठड़ड़ अस दड़ड़, रत वड़वड़ अछखां धांमणो । गड़गड़ अंबाट तड़तड़ प्रगट, उरड़ थाट अधियांमणो ।

—वखतो सिढ़ियो

उ०—२ फींफर काळज हुय फड़ड़ दहड़ रुधिर घर डाक । सड़ड़ गजां मद सूं किया हड़ड़ वीर हुय हाक ।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—३ चड़ड़ ऊधड़ प्रगड चख अड, खड़ड़ नरहड रूपर खड़-खड़ । हड़ड़ नारद बीर हड़हड़, घड़ड़ आतस सिखर घड़हड़ ।

—र. ज. प्र.

हड़ड़ाट-सं. स्त्री.—हड़ड़ की ध्वनि ।

हड़ताल-सं. स्त्री. [सं. हट्ट+ताला] १ असंतोष, विरोध या शोक प्रकट करने हेतु कर्मचारियों द्वारा काम बन्द करके व्यापारियों द्वारा दुकानें बन्द करके एवं विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन बंद करके किया जाने वाला सामूहिक प्रदर्शन या अभियान ।

उ०—आगरै सहर हड़ताळ पड़िया 'अमर', मारवा राव दरियाव मांहै । हाथ पाठ पहिरै तठै हाथ हुय ही रिया । लोह वहै छोह असमांन लागै ।—अमरसिंह राठौड़ री वात

२ न होने की स्थिति, अभाव ।

उ०—क्यूं मौत री मरजी माथै, जीवण री पड़गी हड़ताळ । हिरणी बोली रया करै कंई, रखवाळां री पड़ग्यो काळ ।

—नैतमांनखा

३ देखो 'हरताळ' (रू. भे.)

रू. भे.—हटताळ, हठनांळ, हडताल, हरताळ, हरताल ।

हड़ताळतीज-सं. स्त्री.—हरियाली तृतीया ।

हड़दे-क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी से ।

२ देखो 'हिरदो' (रू. भे.)

हड़दो-सं. पु.—१ अत्यधिक परिश्रम का घरेलु कार्य ।

२ देखो 'हिरदो' (रू. भे.)

हड़प-वि.—१ अनुचित रीति से प्राप्त कर अपने अधिकार में किया हुआ ।

२ गले में उतारा हुआ, निगला हुआ ।

३ गायब, अलोप, पार ।

उ०—नंई तो वो समझेलो कै गांठड़ी म्है राखली । वो आ भी समझ सकै है कै गांठड़ी तूं बीच में ई हड़प करग्यो ।—तिरसंकू

सं. स्त्री.—हड़पने की क्रिया या भाव ।

रू. भे.—हड़फ ।

हड़पणो, हड़पबो-क्रि. स.—१ अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दबा लेना ।

२ गायब करना, उड़ाकर लेना, पार कर देना ।

हड़पणो, हड़पवो–क्रि. स.—अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दबा लेना।

२ गायब करना, उड़ा लेना, पार कर लेना।

उ०—वैजू अर बापू गांठड़ी हड़पणी चावै है। लीना उण नै ठोकर मार'र चली गई है।—तिरसंकू

३ पेट में उतार लेना, निगल जाना।

४ झपटना, छीनना।

हड़पणहार, हारो (हारी), हड़पणियो—वि०।

हड़पिग्रोड़ो, हड़पियोड़ो, हड़प्योड़ो—भू० का० कृ०।

हड़पीजणो, हड़पीजवो—कर्म वा०।

हड़प्पणो, हड़प्पवो, हड़फणो, हड़फवो, हड़पफणो, हड़पफवो —रू० भे०।

हड़पियोड़ो–भू. का. कृ.—१ अनुचित रूप से किसी का माल (पदार्थ) प्राप्त कर अधिकार किया हुआ, दबाया हुआ. २ गायब किया हुआ, उड़ाया हुआ, पार किया हुआ. ३ पेट में उतारा हुआ, निगला हुआ. ४ झपटा हुआ, छीना हुआ।

(स्त्री. हड़पियोड़ी)

हड़प्पणो, हड़प्पवो—देखो 'हड़पणो, हड़पवो' (रू. भे.)

हड़प्पणहार, हारो (हारी), हड़प्पणियो—वि०।

हड़प्पिग्रोड़ो, हड़प्पियोड़ो, हड़प्प्योड़ो—भू० का० कृ०।

हड़प्पीजणो, हड़प्पीजवो—कर्म वा०।

हड़प्पियोड़ो—देखो 'हड़पियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हड़प्पियोड़ी)

हड़फ—देखो 'हड़प' (रू. भे.)

हड़फणो, हड़फवो—देखो 'हड़पणो, हड़पवो' (रू. भे.)

हड़फणहार, हारो (हारी), हड़फणियो—वि०।

हड़फिग्रोड़ो, हड़फियोड़ो, हड़फ्योड़ो—भू० का० कृ०।

हड़फीजणो, हड़फीजवो—कर्म वा०।

हड़फियोड़ो—देखो 'हड़पियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हड़फियोड़ी)

हड़पफणो, हड़पफवो—देखो 'हड़पणो, हड़पवो' (रू. भे.)

उ०—सड़पफै वीजूजळां हास मोहा वड़पफै सूर, सीसहार झड़पफै पड़क्खे नथी संभ। ग्रीधणी हड़पफै पळां सांमळी हड़पफै गूद, रुंड केई अड़पफै पड़पफै वरा रंभ।—बद्रीदास खड़ियो

हड़पिफयोड़ो—देखो 'हड़पियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हड़पिफयोड़ी)

हड़बड़—देखो 'हड़बड़ी' (रू. भे.)

उ०—हड़वड़ जोगण खेतल होय, सड़वड़ कायर पंथ संजोय।
—गो. रू.

क्रि. प्र.—लागणी, होणी, मचणी।

हड़बड़णो, हड़बड़वो—देखो 'हड़बड़ाणो, हड़बड़ावो' (रू. भे.)

उ०—केई जणा तो इण भांत सुट्ट व्हैगा, जांणै सगळी सुध-बुध माथै बांण व्हैगी व्है। केई जणा मिनकी रै प्रगट व्हियां ऊंदरां हड़बड़ ज्यूं कांनी कांनी न्हाटा।—फुलवाड़ी

हड़बड़णहार, हारो (हारी), हड़बड़णियो—वि०।

हड़बड़िग्रोड़ो, हड़बड़ियोड़ो, हड़बड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

हड़बीजणो, हड़बीजणो—भाव वा०।

हड़बड़ाट–सं. स्त्री.—१ हड़बड़ की ध्वनि, कोलाहल, शोरगुल।

उ०—सारा जिणसां लियां थकां सिरोही पोळ मैं बैठा, हड़बड़ाट सुण जाळी में मूंढो काढ रावजी पूछियो—साथ किणरो।
—बां. दा. ख्यात

२ शीघ्रता, जल्दबाजी।

३ देखो 'हड़बड़ी' (रू. भे.)

क्रि. प्र.—लागणो।

रू. भे.—हड़बड़ाट, हुटुहुडाट।

हड़बड़ाणो, हड़बड़ावो–क्रि. अ.—१ बहुत जल्दी करना, अत्यन्त शीघ्रता करना।

उ०–ग्रेक दिन वंसी तावड़ै में ऊभो आप रै विचारां में गरक हो। इत्ते में ग्रेक जणै कैयो—आ देखो, वंसी भाई! थांरी गाय'र बच्छी। वंसी हड़बड़ाय'र उठियो।—वरसगांठ

२ अधिक जल्दी के कारण घबड़ाहट उत्पन्न होना। आतुर होना, अधीर होना। संतुलन खो देना।

३ भय या खुशी के मारे इधर उधर भागना।

क्रि. स.—४ जल्दी या शीघ्रता करने के लिए प्रेरित करना।

ज्यूं—म्है थोड़ो उणां नै हड़बड़ाय'नै आऊं।

हड़बड़ाणहार, हारो (हारी), हड़बड़ाणियो—वि०।

हड़बड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

हड़बड़ाईजणो, हड़बड़ाईजवो—कर्म मा०।

हड़बड़णो, हड़बड़वो, हड़बड़ावणो, हड़बड़ाववो, हड़बड़णो, हड़-बड़वो, हड़बड़ाणो, हड़बड़ावो—रू० भे०।

हड़बड़ायोड़ो–भू. का. कृ.—१ जल्दी किया हुआ, शीघ्रता किया हुआ. २ अधिक जल्दी के कारण घबराया हुआ, आतुर, अधीर, असंतु-लित. ३ इधर उधर भागा हुआ. ४ जल्दी या शीघ्रता के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. हड़बड़ायोड़ी)

हड़बड़ावणो, हड़बड़ाववो—देखो 'हड़बड़ाणो, हड़बड़ावो' (रू. भे.)

उ०—दोय जणा-ग्रेक कईक ढळती ग्रौस्था-री अर ग्रेक मोटियार जिकै-रै हाथ में लालटेण, बारणो खोल'र हड़बड़ावता खाया-खाया टुर पड़्या।—वरसगांठ

हड़बड़ावणहार, हारो (हारी), हड़बड़ावणियो—वि०।

हड़बड़ाविग्रोड़ो, हड़बड़ावियोड़ो, हड़बड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

हड़बड़ावीजणो, हड़बड़ावीजवो—कर्म वा०।

हड़वड़ाणियोड़ी—देखो 'हड़वड़ायोड़ी' (रू. भे.)
(स्त्री. हड़वड़ाणियोड़ी)

हड़वड़ियोड़ी—देखो 'हड़वड़ायोड़ी' (रू. भे.)
(स्त्री. हड़वड़ियोड़ी)

हड़वड़ियो-वि. (स्त्री. हड़वड़ी)—जल्दबाज, उतावला, आतुर।

हड़वड़ी-सं. स्त्री.—१ सेना की हलचल की ध्वनि।
क्रि. प्र.—चलणी।
२ झुंड में प्राणियों के एक साथ चलने से उत्पन्न ध्वनि।
३ वह स्थिति, जिसमें हड़बड़ाते हुए कोई काम करना पड़ता है, घबराहट, व्याकुलता।
क्रि. प्र.—मचणी, लागणी।
४ शीघ्रता, जल्दबाजी, उतावलापन।
रू. भे.—हड़बड़, हड़बड़ाट, हड़ब्बड़, हड़वड़, हड़वड़ाट, हड़व्वड़, हड़हड़, हड़वड़।

हड़वच-सं. स्त्री.—मुंह से किसी को काटने की क्रिया या भाव।
ज्यूं—कुत्ते हड़वच घाल दी।
क्रि. प्र.—घालणी, भरणी।
रू. भे.—हड़भच।

हड़वो—देखो 'हिड़वो' (रू. भे.)
उ०—ग्रमी रे कोटा तू उजळा में, हड़वी काच विड़ाया रे, म्हारो गोरबंद लूंबाळो।—लो. गी.

हड़वू-सं. पु.—[देश.] १ राजपूत कुलोत्पन्न एक सिद्ध पुरुष जिनको कई लोग पूजा करते हैं।

वि. वि—'हड़वूजी' पंवार वंशीय सांखला शाखा के राजपूत थे इनके पिता का नाम मेहराज (मेहाजी) था। इन्होने राव जोधाजी का कष्ट के दिनों में सहयोग दिया। इनमें अतिथि सत्कार की असीम श्रद्धा थी। मंडोवर पर जब चित्तोड़ के महाराणा का अधिकार हो गया तब राव जोधाजी अपने १२० अनुगामियों सहित हड़वूजी के पास पहुँचे। दुर्भाग्य वश जोधाजी के पहुँचने तक सदाव्रत बँट चुका था। ऐसे समय हड़वूजी को 'मुज्द' नामक एक लकड़ी, जो रंगाई के काम आती है, याद आई। इन्होने उस लकड़ी का एक टुकड़ा छीला और उसके बुरादे को आटे चीनी और मसालों के साथ पकाया इससे वह एक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बन गया। राव जोधजी, अपने साथियों सहित इस पदार्थ को खाकर सुख की नींद सो गये। वे मंडोर के दुख को कुछ काल तक भूल गये। प्रातः काल उठने पर प्रत्येक व्यक्ति ने देखा कि उनकी मूंछों पर सायंकालीन भोजन का रंग लगा हुआ है। इससे सभी व्यक्तियों को आश्चर्य हुआ। हड़वूजी ने इस घटना को जादूइक रूप दिया और जोधाजी को आशीर्वाद दिया कि इस पदार्थ के पेट में रहते तुम अपना घोड़ा जितनी दूर फेरोगे वहां तुम्हारा राज्य हो जायगा। हड़वूजी की बात सही निकली और राव जोधाजी को राज्य वापस मिल गया। इसके बाद राव जोधाजी ने इनका सम्मान किया और फलोदी के पास 'बेंगटी' नाम गांव शासन में दिया। वहां पर आज भी हड़वूजी का प्रभाव लक्षित होता है।

हड़वूजी ने सिद्ध पुरुष रामदेवजी तंवर की सत्संग की थी इनकी योग्यता एवं श्रद्धा को देखकर रामदेवजी के गुरु योगी बालकनाथजी ने इनको अपना शिष्य बना लिया। यहीं से ये हथियार त्याग साधु बन गये और भजन में लीन हो गये। ये एक वीर सिपाही एवं तपस्वी भक्त थे। इनका जीवन कठोर तपस्या से युक्त एवं पवित्र था। सिद्ध पुरुष रामदेवजी की समाधि के ठीक आठवें दिन इन्होने भी, उन्ही के पास समाधि ले ली।

२ भट्टी से कोयले निकालने व डालने का एक लोहे का उपकरण जिसके पीछे लकड़ी का डंडा लगा हुआ होता है।
रू. भे.—हरवू, हरभू।

हड़व्वड़—१ देखो 'हड़वड़ी' (रू. भे.)
उ०—हुई हड़व्वड़ सेन में, भेर भणंके सद्ध। पड़ियो डाको अंवके, चढ़ियो व्याळ रवद्ध।—रा. रू.
२ ध्वनि विशेष।

हड़वोचो-सं. पु.—मुंह द्वारा काटने की क्रिया या ढंग।

हड़भच—देखो 'हड़वच' (रू. भे.)

हड़मंत, हड़मत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

हड़मल-वि.—कुलटा, पुंश्चली, छिनाळ।
उ०—रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेजां में सोवै।—ऊ. का.

हड़मांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)
उ०—१ कै तो जिवावे माता सीता सतवंती, कै तो जिवावै हड़मांन जती। लिछमन कै वांण लग्यो सकती लिछमण कै।
—लो. गी.
उ०—२ तो रांमजी भला दिन देवै हड़मांनजी री बगेची रा उण पुजारी नैं!—अेक गांव में अेक निपोचियो वाणियो रै'वतो।
—फुलवाड़ी

हड़मांनो—देखो 'हनुमांन' (अल्पा; रू. भे.)

हड़वड़—देखो 'हड़वड़ी' (रू. भे.)
उ०—१ कटकां विहूं हुइ कूच, गड़गड़ अंबागळ गुड़ै। हड़वड़ भड़ हुइ हैवरां, चढ़िग्रा पोरस चूंच।—र. वचनिका
उ०—२ हड़वड़ जोगण खेतल होय, सड़वड़ कायर पंथ सजोय।
—गो. रू.

हड़वड़णो, हड़वड़बो—देखो 'हड़वड़ाणो, हड़वड़ावो' (रू. भे.)
हड़वड़णहार, हारो, (हारी), हड़वड़णियो—वि०।
हड़वड़िग्रोड़ो, हड़वड़ियोड़ो, हड़वड़योड़ो—भू० का० कृ०।
हड़वड़ीजणो, हड़वड़ीजबो—भाव वा०।

हड़वड़ाणो, हड़वड़ावो—देखो 'हड़वड़ाणो, हड़वड़ावो' (रू. भे.)

हड़वड़ाणहार, हारौ (हारी), हड़वड़ाणियौ—वि० ।
हड़वड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़वड़ाईजणौ, हड़वड़ाईजवौ—कर्म वा० ।
हड़वड़ायोड़ौ—देखो 'हड़बड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हड़वड़ायोड़ी)
हड़वड़ियोड़ौ—देखो 'हड़वड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हड़वड़ियोड़ी)
हड़वड़ाट—देखो 'हड़बड़ाट' (रू. भे.)
हड़वा-सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा । (बां. दा. ख्यात)
हड़व्वड—देखो 'हड़वड़ी' (रू. भे.)
उ०—हय जीण हड़व्वड़ हूंत हूवा, जवनां पण लीधा पंथ जुवा ।
खग बांध चढ़ै अस तूंग खड़ा, घण थाट कमंध अबीह घड़ा ।
—रा. रू.
हड़सोली—देखो 'हींयोड़ी' (रू. भे.)
हड़हड़-सं. स्त्री.—१ जोर से हंसने या अट्टहास से उत्पन्न ध्वनि, खिलखिलाहट ।
उ०—१ वीर हड़हड़ सूर वर चड़, धार सर भड़ भिदै अरि घड़ ।
वूर पड़ि जंवूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खडभड़ ।—रा. रू.
उ०—२ वढि कंधड़ मुख करत बड़वड़, फरड़ फिफरड़ कळिज फडफड़ । फील घड़ पड़ अभड़ भड़फड़, हुय दड़ड़ रत मुनंद हड़हड़ । पड़ै दळ अणपार ।—सू प्र.
उ०—३ हड़हड़ हसत मसत मदिरा मद, धड़ हड़ सेर घुवाड़ै ।
चड़ चड़ चाव जोगण्यां चोसट, धड़ धड़ भूमि धुजाड़ै ।—मे. म.
२ ध्वनि विशेष ।
रू. भे.—हड़ड़, हड़ाहड़, हडहड ।
हड़हड़णौ, हड़हड़वौ—क्रि. अ.—१ जोर से हंसना, अट्टहास करना, खिलखिलाना ।
उ०—१ हरचंद वीर मुनंद हडहड़िया, खेत समर सांम्हा असि खड़िया । पुर वाहिर इकवार वधूपुर, आया उठै नृपति दळ आतुर ।
—सू. प्र.
उ०—२ पीठ बडबड़ाट कूरम, छटा प्रळै री, मही खड़खड़ात हैजम मचोळां । मुनि हड़हड़ात, धड़ड़ात तोपां महत, गयण गड़ड़ात पड़ भाट गोळां ।—कविराजा बांकीदास
२ गूंजित होना, गूंजना ।
उ०—फींफरड़ भूट गोळां गजां फरहड़ै, जंगी होदा गजां खडहड़ै जोम । घडहड़ै घोम वै मुसाहव लड़ै धर, विहु साहव हंसै हड़हड़ै वोम ।—हुकमीचंद खिडियौ
हड़हड़णहार, हारौ (हारी), हड़हड़णियौ—वि० ।
हड़हड़िग्रोड़ौ, हड़हड़ियोड़ौ हड़हड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हड़हड़ीजणौ, हड़हड़ीजवौ—भाव वा० ।
हडहडणौ, हडहडवौ—रू० भे० ।
हड़हड़ाट-सं. स्त्री.—१ जोर से हंसने की ध्वनि ।
२ हड़हड़ की आवाज ।
हड़हड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ जोर से हंसा हुआ, अट्टहास किया हुआ.
२ गूंजा हुआ ।
(स्त्री. हड़हड़ियोड़ी)
हड़ाहड़—देखो 'हड़हड़' (रू. भे.)
उ०—हड़ाहड़ रिक्खि हुग्रै हर हार, जयज्जय जोगणि किद्ध जिग्रार । महारिणि पोढ़ै सूर मसत्त, दिगंबर जांणि अखाड़ै दत्त ।
—र. वचनिका
हड़ींदौ-सं. पु. [अनु.] ऊंचे स्थान से किसी भारी वस्तु के यकायक गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
मि. धड़ींदौ ।
हड़ीप-वि.—१ साहसी, वीर ।
२ शक्तिशाली, बलवान ।
३ दृढ़ मजबूत ।
हड़ुमांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)
उ०—गळा में जरख री दांत अर मंत्रायोड़ौ मादळियौ । चोटी में हड़ुमांन जी री मिळाई ।—फुलवाड़ी
हड़ूडी-सं. पु. [देश] परस्पर मस्तक भिड़ाकर खेला जाने वाला एक खेल ।
उ०—भड़ै असुंडां भूमि भूमि इण भाव सूं । खरी हड़ूडी खेल रमै महाराव सूं ।—सिववक्स पाल्हावत
हड़ूमांन देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—परालब्ध का पावणा, देख दई का खेल । भभीखण नै लंक, अर हड़ूमांन नै तेल ।—अज्ञात
हड़ोई—देखो 'हडोई' (रू. भे.)
हड़ौ-सं. पु.—१ वायु का ववंडर, वातचक्र, बतूला ।
२ देखो 'हूड़ौ' (रू. भे.)
हच—देखो 'हिचण' (रू. भे)
उ०—पौरस सारा है प्रथी, 'कला' पराई चाड । रावत मछरा राखतां, हच लोही वल हाड ।—कल्यांणसिंघ वाढेल री वारता
हचकणौ, हचकबौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकवौ' (रू. भे.)
उ०—हचकै वहु बैल करै हमला, टहलै लगि गैल गयंद टला ।
—मे. म.
हचकणहार, हारौ (हारी), हचकणियौ—वि० ।
हचकिग्रोड़ौ, हचकियोड़ौ हचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हचकीजणौ, हचकीजबौ—भाव वा० ।
हचकाड़णौ, हचकाड़बौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू. भे.)
हचकाड़णहार, हारौ (हारी), हचकाड़णियौ—वि० ।
हचकाड़िग्रोड़ौ, हचकाड़ियोड़ौ, हचकाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हचकाड़ीजणौ हचकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हचकारियोड़ौ—देखो 'हिचकारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचकारियोड़ी)

हचकाणौ, हचकाबौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू. भे.)
हचकाणहार, हारौ (हारी), हचकाणियौ—वि०।
हचकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हचकाईजणौ, हचकाईजबौ—कर्म वा०।

हचकायोड़ौ—देखो 'हिचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचकायोड़ी)

हचकावणौ, हचकावबौ—देखो 'हिचकाणौ, हिचकाबौ' (रू. भे.)
हचकावणहार, हारौ (हारी), हचकावणियौ—वि०।
हचकाविश्रोड़ौ, हचकावियोड़ौ, हचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हचकावीजणौ, हचकावीजबौ—कर्म वा०।

हचकावियोड़ौ—देखो 'हिचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचकावियोड़ी)

हचकियोड़ौ—देखो 'हिचकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचकियोड़ी)

हचकौ—देखो 'हिचकौ' (रू. भे.)
उ०—१ हे! धनि तरवार रा धावण सुधारण वाळा री स्त्री धणिधावण री लुगाई थारै पीव रै हाथां री बलिहारी वारणा लेऊं इसी तरवार सुरसांण चढाय त्यार कर दीधी है। सो रिण मैं दुसमणां ऊपरै झाटकतां हाथ रै नांम भर झटको हचको नहीं पावै जिण दुसमण माथै वहै सो निरलंग होतौ निजर आवै।
—वी. स. टी.
उ०—२ इण समै रा कापुरसां (कायरां) नै बिरदाय माडांणी जोतिया तिण गाडौ किणनूं ही खंचियौ नहीं। सो खेंचातांण करी पग टकै हीज हचका खावै पण चलै नहीं जद उण हीज वीर धवळा रो वाछड़ वांधड़ो, तिको हीज इण सकट रै कंध लगाय नैं ताडूकै छै—अरथात म्हारो पिता जिण गाडा रै बोझ वुहो वो कायरां सूं गंचै नहीं हूं ईज खेंचसूं।—वी. स. टी.

हचरकणौ, हचरकबौ—देखो 'हिचरकणौ, हिचरकबौ' (रू. भे.)
हचरकणहार हारौ (हारी) हचरकणियौ—वि०।
हचरकिश्रोड़ौ हचरकियोड़ौ, हचरक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हचरकीजणौ, हचरकीजबौ—भाव वा०।

हचरकियोड़ौ—देखो 'हिचरकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हचरकियोड़ी)

हचल—देखो 'हिचल' (रू. भे.)

हचणौ, हचबौ—देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू. भे.)
उ०—१ जठै जुध धमचै उठै हकां जरक, देव अपछरां थरक दीधी। हचण लग सुभट जम दाढ ग्रहियां हरक, करी वाळै [illegible] लीधी।—[illegible] रौ गीत
उ०—२ 'हरना' हर मांडै जुध हचियौ, ऊजवाळौ कुळ नांम अभंग। सत्त चरा धुपै सेतर ताळौ, भूतेसर वाळौ चित भंग।
—केसरीसिंह चुंडावत रौ गीत
हचणहार, हारौ (हारी), हचणियौ—वि०।
हचिश्रोड़ौ, हचियोड़ौ, हच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हचीजणौ, हचीजबौ—भाव वा०।

हचां—क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से।
उ०—श्रा कंयनै वा तौ साचांणी वेरा में पड़ण सारू हचां हचां वहीर व्हैगी।—फुलवाड़ी

हचियोड़ौ—देखो 'हिचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचियोड़ी)

हचीड़ौ, हचीड़ौ-सं. पु.—१ जोर का धक्का, जोर का झटका।
उ०—१ उदास मन सूं वांनै कियांई ठिरड़तौ ठिरड़तौ मोटर मैं श्राय नै बैठ्यौ तौ बैठतां पांण एक जोर रा हचीड़ा सागै या स्टारट होगी।—श्रमरचूंनड़ी
उ०—२ मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तर तर वधतीज जावती श्रोर मोटर रा हचीड़ा रै सागै उणमैं उछाळ पण श्रावता रैवता।—श्रमरचूंनड़ी
उ०—३ श्रांख्यां सांम्ही श्रोळूं री कावड़ घूमण लागी इज ही कै राहड़ी रौ हचीड़ लाग्यां उणनै चेतौ व्हियौ।—फुलवाड़ी
२ जोर की टक्कर।

हचोळणौ, हचोळबौ—देखो 'हिचोळणौ, हिचोळबौ' (रू. भे.)
उ०—हाथळां खळां कुंभाथळां हचोळै, मैंगळां दळां भुजबळां मारै। बाधा इंदा गळै सांकळी मंडीवर, धणी देखै 'श्रभौ' श्रंजस धारै।—लखपत इंदा रौ गीत
हचोळणहार, हारौ (हारी), हचोळणियौ—वि०।
हचोळिश्रोड़ौ, हचोळियोड़ौ, हचोळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हचोळीजणौ, हचोळीजबौ—कर्म वा०।

हचोळियोड़ौ—देखो 'हिचोळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हचोळियोड़ी)

हचोळौ-सं. पु—वाहनों पर चलते समय श्राने वाला हल्का झटका या झोंका।
उ०—लोभांणी नवौढा नेह नसा रा कचोळा लेती, भासै श्रंग श्रचोल सचोळा लेती भाव। करां केतमक्र रै लचोळा लेती तूंजी कना, नक्र रै मचोळा सूं हचोळा लेती नांव।—र. हमीर
२ धक्का, टक्कर।
३ तरंग, लहर, हिलोर।

हज—देखो 'हज्ज' (रू. भे.)
उ०—१ मैं सुणी छै थैं हज घणी कीवी छै। थां एक हज री फळ म्हांनूं वेचो तौ थांनूं संपति मिळै मोनूं धरम जुड़ै।—नी. प्र.
उ०—२ श्रकबर कसमीर में जद खबर मक्का री हज करण मुसळमांन जाता हा हिंदसूं ज्यांनूं बळोचां लूटिया। श्रा बात

सुणतां ही अकबर नाक सळ घालियौ तीरै मार बफादार राजा वीरवळ वलोचां माथै विदा होतौ हुवौ ।—बां. दा. ख्यात

हजम–वि. [अ.] जो खा लेने के बाद आमाशय में पच गया हो; पचा हुआ ।

२ दबाया हुआ, अधीकृत किया हुआ ।

सं. पु.—सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी जिसे चाट कर वह खाना हजम करता हैं।

उ०—डाकयां घर डाकी सुहड, डट लै ले न डकार । हजम चाट जिम सिंह हजम, करे खूब खज खार ।—रैंवतसिंह भाटी

हजरत, हजरति–सं. पु. [अ. हज्रत] १ आदर या सम्मान-सूचक शब्द, श्रीमान ।

उ०—१ उठै जायनै साहिजादी सिसोदिया सिवारौ सैंमांन कराय दियौ । नै पातसाहजी सूं मालम कियौ—'पातसाह सलांमत' ! मोनूं नदी मांहै सूं बूडती नूं एकै सिसोदियै रांणा रै भाई काढी छै । तिणनूं म्हैं भाई कहि बोलायौ छै, सो हजरत उस कूं पांवा लगावौ नै चाकर करौ ।—नैणसी

उ०—२ जे थे बादसाही चाकर सै छौ थे हरांमखोर सूं क्यूं सांमल हुवा ? तद इहां कहाई—जे हरांमखोर हजरत का भी न है । पाजी मुंह से हजूर में गैरजवांन बोलै सो कैसे ।
—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

उ०—३ म्हांरौ लोक आधौ मुलक सीरोही रौ पातसाही खालसे कीयौ छै, तठै थांणौ राखियौ छै । हजरत रै दाय आवै तिण जागीरदार नूं दीजै, भावै करोड़ी भेजीजै, राव हुकमी चाकर छै ।
—नैणसी

२ बादशाह ।

उ०—पीछै घोड़ा हजार तीन सूं मीर हमजौ चढियौ । पीछै प्रथीराजजी कासीद अमरसिंघजी नूं मेलियौ, कै मैं दोय बात री हजरत सूं पैज करी है, सू मारण वालै नूं मारजे वा पकड़ीजै मती ।
—द. दा.

३ महात्मा, महापुरुष ।

४ चालाक, दुष्ट या लुच्चा व्यक्ति । (व्यंग्य)

रू. भे.—हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति ।

हजरतसलांमत–सं. पु. [अ. हजरतसलामत] प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए सम्बोधन वाचक शब्द ।

२ माननीय पुरुष, सज्जन पुरुष ।

हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति—देखो 'हजरत' (रू. भे.)

उ०—१ अवलीए आसलीक कवलै जिहांनिआं हजरति पातिसाह मुहमद मुसतफाखांन रा उमराउ हुसन हुसेनखां अलीखांन सरीखा गोरी, पठांण, सैद, मुगळ, उजबका मुसलमांन आकीनदार, त्रीस सीपारा रा पढणहार, पांच बखत निवाज रा करणहार, सुद्ध कलमें रा पढणहार, पेसता, आरबी, पारसी रा बोलणहार, आउखी ढाढी राखणहार ।—रा. सा. सं.

उ०—२ सहर देखै दिली मिळै पातिसाह सूं, खलक देखत सिवौ नांम खारै । आवियौ वळै कुसळै वळै आप रे, हांथि घसि रह्यौ हजरत्ति हारै । —ध. व. ग्रं.

उ०—३ हसम हुकम सोंपीआ छै । हजरिति सूं मालिम छै । रांजान कुअर बत्रीस लक्षणौ छै ।—रा. सा. सं.

हजांम–सं. पु. [अ. हज्जाम] हजामत बनाने वाला, नाई ।

हजाज–सं. स्त्री. [अ. हजाज] १ बफा ।

उ०—अर हजाज री बात चालै तरै उण नूं अन्याय रै कारण सारा धक धक करै नै स्राप देय ।—नी. प्र.

हजामत, हजामति–सं. स्त्री. [अ.] १ सिर या दाढ़ी के बाल कटाने या बनवाने की क्रिया, क्षौर ।

उ०—हजामति कराड़ि अर सहु कहीं ठाकुरां नै कहियौ जु डाढी रखावौ ।—द. वि.

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, बणवाणी, बणाणी ।

२ बढ़े हुए बाल जो हजामत की श्रेणी में आते है ।

क्रि प्र.—कराणी, बढणी, बढाणी, बधणी, बधाणी ।

३ ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी से जबरन कुछ ले लिया जाय, ठगी । (व्यंग्य)

क्रि. प्र.—करणी, होणी ।

मुहा.—बिना पाचरणै हजामत करणी=जबरदस्ती खर्चा कराना ।

हजार–वि. [फा.] सौ का दस गुना, दस सौ, सहस्त्र ।

सं. पु.—२ एक संख्या जो सौ की दस गुणी होती है, सहस्त्र की संख्या ।

उ०—१ सेना सितर हजार सूं, विचित्र अमित्र बळवांन । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखांन ।—रा. रू.

उ०—२ दलाल सै चीज वसत मिला'र हजार खंड तो देणा ही पड़ेला नहीं चौखी कोनी लागै ।—दसदोख

२ उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००० ।

हजारमेखी–वि.—जिसकी बनावट में हजार मेखें (कीलें) लगी हों, हजार मेखों वाला ।

सं. पु.—एक प्रकार का कवच ।

उ०—हजारमेखी दसतै हाथ में पहरियां जैमळजी रात रा तीनूं पहरांरी चोकी में आप फिरता । संग्रांम नांमा बंदूक अकबर रा हाथ री छूटी । गोळी जैमल रै लागी ।—बां. दा. ख्यात

हजारवौं–वि.—१ हजार के स्थान पर होने वाला ।

२. ९९९ के बाद वाला ।

सं. पु.—किसी इकाई का हजारवां अंश या भाग ।

उ०—ऐड़ी अकल री हजारवौं रेसोई हाथ आय जावै तो निहाल

[illegible] मारै ।—[illegible]

हजारी-सं. पु.—१ एक हजार मुद्रा के मूल्य का घोड़ा ।

उ०—[illegible] हजारी तड़खिया, रोळ भुज चड़खिया [illegible] । [illegible] घाड़वी निवड़ [illegible] कड़खिया, धड़चिया 'पदमसी' [illegible] ।—[illegible] चूंडावत री गीत

२ एक प्रकार रा बहुमूल्य नगाड़ा ।

उ०—[illegible] जाजा [illegible] बोल रा [illegible], गाजी बहादर [illegible] नौबत नार, अरबाक, बादलै मासावरी, विलाती, हजारी [illegible] रा [illegible], देस देस रा, जाति जाति रा मीरजादा भेळा [illegible] है ।—रा. सा. सं.

३ एक हजार सिपाहियों का सरदार, सेना नायक ।

उ०—१ हजूर अमीर [illegible] नांमदार मकरा । कमरदीखांन दोरां [illegible] बगम । साह का दरगाह अथाह निजर आवै, बारै बारै हजारियां की गिनत को पावै ।—रा. रू.

उ०—२ अमरां [illegible] दीयंतो अमरसिंघ, थाट हजारी तणो [illegible] । [illegible] बोई गोम पुड़ बोम पुड़ हेकठा । खिवी दांमण [illegible] बजर खिरियो ।—राव अमरसिंह राठौड़ री गीत

वि.—१ हजार के मूल्य का ।

उ०—उण घोड़ा दीठा । रण नैं राजा नैं कहीयो, 'घोड़ा सखरा [illegible] । राज, हजारी छै पण लाखी नहीं ।—हाहूल हमीर री वात

२ हजार का, हजार से सम्बन्धित ।

३ हजार की गणना में, तादाद में ।

उ०—[illegible] करणी मोमदै री भायेलो, हजारी रकम भळै घांमै ।
—दसदोख

४ हजार वर्षों की ।

उ०—खोटी पाडी पकड़ावतां बोल्या—जीवतो रै भाया—रांम थारी हजारी ऊमर करै ।—बिज्जी

५ [illegible] संकर, दोगला ।

६ हजारे का ।

उ०—कसुमल पाग केसरियां जांमा, ऊपर फूल हजारी । मुकुट ऊपरै छत्र बिराजै, कुंडळ की छबि न्यारी ।—मीरां

७ देखो 'पंचहजारी' (रू. भे.)

हजारीगुल-सं. पु.—एक प्रकार का पुष्प ।

उ०—[illegible] मैं थानैं [illegible] यूं कयो, जटकै ने सरवरियै मत जाय [illegible], [illegible] री नोजर लागसी, रायजादो हजारीगुल रो फूल, [illegible] री नीजी पांकड़ी ।—लो. गी.

हजारीघास-सं. स्त्री.—एक विशेष प्रकार की घास, जिसे महीन पीस कर [illegible] के लगाते हैं ।

हजारीमह-सं. पु. [फा. हजारी+सं. मह] हजारवां महोत्सव ।

हजारीहजार—देखो 'हजारहजारी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हजारीहजार नहि, पांन यहंतां पावियो । [illegible]

होय मुदफरअली, 'अजण' भूप दिस आवियो ।—सू. प्र.

हजारूं-वि. [फा. हजार+रां प्र. ऊं] १ कई हजार, सहस्रों ।

उ०—१ पण अटकल जांणै न ढंग, कोरी करड़ावण री रंग । हजारूं भेळा करै अर ऊंधा सूंधा लगावै, बीच-बीच में बूही पावतो जावै ।—दसदोख

उ०—२ सांभर सुड़ सुड़ मरै, रचावै जग मैं रोळा । पंच भद्रा रै पीड़, हजारूं हिड़दै सोळा । डीड़वांण रो डील, विगाड़ै आदम आखो । सारी भोलां खपै, नीकाळै लूण लाखो ।—दसदेव

२ अत्यधिक, बहुत ।

३ हजारों की तादाद में ।

उ०—१ बड़ला रै नीचै हजारूं मनुस्य भेळा थया । घणां उछव मोच्छव सहित स्वांमीजी रै हस्तै दीक्षा लीधी ।—भिक्खु.

उ०—२ सेवट हजारूं जीवां नै मार एक दिन मरणो तो है ईज ।
—फुलवाड़ी

रू. भे.—हभारां ।

हजारेक-वि. यौ. [फा. हजार+रा. प्र. एक] एक हजार के लगभग ।

उ०—ग्रोर केई हिंदू रजपूत कांम आया था त्यांरा प्रसंगी भाई आदमी हजारे'क वाहरला आया था त्यांनू तो पण खांन उठै ही जे टिकाया था ।—सूरेखांव कांधलोत री बात

हजारो-सं. पु.—१ पीले और लाल रंग का छोटी छोटी पंखड़ियों का फूल ।

उ०—केवड़ू की वाड़ी सिरू का विकास । नाफरमां हजारा ग्रोर गुलहूवास । गुललाल के डंबर सुरगुलूं का प्रकास ।—सू. प्र.

२ उक्त फूल का पौधा, जो प्रायः सर्दी में फूल देता है ।

अल्पा.—हजारि ।

हजुरि—देखो 'हजूरी' (रू. भे.)

उ०—याद कियो हरि पदमया नै, दिया निवांण पठाय । क्रपा करी हरि परि, लियो हजुरि बुलाय ।—रुकमणी मंगळ

हजूमी-वि.—प्राकृतिक, नैसर्गिक ।

उ०—धूमी घणहर री घटा, विरछां लूमी वेल । नरां विलूमी नारियां, खरो हजूमी खेल ।—सिवबक्स पाल्हावत

हजूर—देखो हुजूर' (रू. भे.)

उ०—१ आळसवां अजजाणवां, दिल खोटंतां दूर । साहिब सांचां साधवां, है हाजरां हजूर ।—ह. र.

उ०—२ पीपा कूं प्रभु परच्यो दीन्हो, दिया रे खजीना भरपूर । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिळ्या छै हजूर ।—मीरां

उ०—३ तेरे तो आसांन सब, मेरे बौहत जरूर । हरीयै कुं आपनी राखो रांम हजूर —अनुभववांणी

उ०—४ दोढीया जाय दरवांन नैं खमा है कहवायो । बारै ढाढी ऊभा छै । कंवरजी कह्यो हजूर आवै ।—ढो. मा.

उ०—५ जात री दरोगो, हजूर रो धाभाई दादो । हस्ती सो

सिंघ लिखै, मरतौ सो आपरो नांव मांडै ।—दसदोख

उ०—६ अर ओर भी भाई भतीजा वडा वडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघ री हजूर रहै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—७ सो अमरसिंघ सिरसो बडो भाई बिगोई बादसाह री हजूर रहवै छै तीनूं रोवै छै।—राजसिंघ री वात

उ०—८ तिको फौज सुं अळगो निसरै थो, तरां रजपूतां दीठो। गोहरी नै पकड़ियौ, तिको रावजी रै हजूर आंण्यो।

—राव रिणमल री बात

उ०—६ सु हाथी लियां लियां सहर आया। ताहरां सेतरांमजी राजा री हजूर आया।—नैणसी

उ०—१० दिस कमधा पैसोर, ज्यास मोकळे दिलासा। आवौ मूझ हजूर, सूर साखेत सज्यासा।—रा. रू.

उ०—११ ताहरां राजा कह्यौ, मांणस किसड़ोक छै? हजूर आवण लायक छै क नां? विदा नाहर सों ही दीजै।

—मूळवै सांगावत री वात

उ०—१२ जनहरि रांम जहां घर पाया, जनम मरण संदेह मिटाया। विन गुर गम देखै नर दूरा, ब्रह्म बताया आप हजूरा।

—हरिरांमदास जी महाराज

हजूरि—देखो 'हजूरी' (रू. भे.)

उ०—भूरसिंघ नाथावत डूंगरचा ठिकांणों। भेज्यौ हजूरि को तमांम फौज जांणं।—शि. वं.

उ०—२ पछतावैगो प्रांणिया, हरि सूं पड़सै दूरि। हरीया पहली चेत लै, तन मन थकै हजूरि।—हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ पतिवरता सो जांणियै, हरि सूं नित हजूरि। जनहरिया विभचारणी, तन नैड़ी मन दूरि।—हरिरांसदास जी महाराज

हजूरिय—देखो 'हजूर' (रू. भे.)

उ०—पूर अपूरिय आस, तौ विण उमरथी पूरिय। हाथ जुड़त तिल चढ न, हाथ दुळ हाथ हजूरिय।—र. ज. प्र.

हजूरियौ—देखो 'हजूरी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ तद एक हजूरियै कही—जी हजरत सलांमत, जे तकसीर माफ हुवै तौ अरज करूं, वेअदवी की अरज छै।

—जलाल बूबना री वात

उ०—२ इतरै कुंवर विचित्र नूं बुलायौ सौ कुंवर पोसाख भली भांति सूं करि, आपरा हजूरिया नै साथै ले आयौ।

—पलक दरियाव री बात

हजूरी—देखो 'हजूरी' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवर दैपाळदै री हजूरी पासै मुहतौ वेणीदास, चंदन छड़ीदार सारां ही नै राजा कनकरथ ज्यूं था त्यूंही राख्या।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ अै चहुवांण हजूरी आया, भूपति तणै सदा मन भाया। खगि ऊधरो 'दलावत' 'खेतौ', दीठो बळ वांकां छळ देतो।

—रा. रू.

उ०—३ म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हांरे मन राखोला सरण हजूरी। बैल बंधावो भावैं घोड़ा बंधावो, चाहै करावो मजूरी।—मीरां

उ०—४ तठा उपरांयत गंगेव नींबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.

उ०—५ सेवग हाजरि चाहिजै, साहिव सदा हजूरि। पून्यूं पूरा चंद ज्यूं, जहां तहां भरपूरि।—ह. पु. वां.

उ०—६ हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कळाप। मुल्ला तहां पुकारियै, जहं अरस इलाही आप।—दादूबांणी

उ०—७ अन्त—'रंग छहरते हैं। कपड़े पहरते हैं। तोसक सीलयावता है। हजूरी पावता है। चढते उतरते पाव दे सलांम करांवदे है।—रा. सा. सं.

हजूरीवांन—देखो 'हजूरीवांन' (रू. भे.)

उ०—हरीया होदै वैस करि, निजर लगी असमांन। कै आगै पूठा खड़ा, केई हजूरीवांन।—हरिरांमदास जी महाराज

हज्ज—सं. पु. [अ.] मुसलमानों का एक धार्मिक कृत्य, जो उन्हें मक्का और मदीना में जाकर करना पड़ता है, तीर्थ यात्रा।

वि. वि.—धनाढ्य लोगों को उम्र में एक बार इसके करने का हुक्म है।

क्रि. प्र.—करणी।

रू. भे.—हज।

हझार—देखो 'हजार' (रू. भे.)

हट—१ देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—१ हट अटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर सधीर। हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकंत जोति अति जिल-हदार —सू. प्र.

उ०—१ जनहरीया मन एक विन, मिळै न सौदै सट। जुग सारौ फिर आवीयो, लख चौरासी हट।—अनुभववांणी

२ देखो 'हठ' (रू. भे.)

हटक, हटकण—सं. पु.—१ भय, डर।

मुहा०—हटक में रखणो=आतंक में रखना।

२ आज्ञा, अनुशासन।

मुहा.—हटक में रहणो=आदेशों का पालन करना।

३ रौब, धाक।

४ मर्यादा, सीमा, बंधन।

मुहा.—हटक में राखणो=मर्यादा या सीमा में रखना।

५ मना करने का भाव, वर्जन।

६ हांकने की क्रिया या भाव।

५ नियंत्रण।

हटकणो, हटकबो-क्रि. स.—१ मना करना, वर्जन करना, रोकना।

उ०—१ भीलणी देख मना करजी। मतीनार रो क्रोध उपज्यो। तणा नूं हटकिया। नरं वे ममकरी करण लागा।

—कल्यांणसिंघ बाढेल री बात

उ०—२ म्हारो मन देख्यां मटको। कुल कुटंब सजण सकळ बार बार हटकी, बिसरयां ना लगन लगां मोर मुगट नटकी।—मीरां

उ०—३ किणरोई रह्यो न हटकियो, निज हट कियो निभाव। मांडे नहूर थकियो नहीं, बाळापणे ई सुभाव।—जैतदांन बारहठ

२ डांटना, धमकाना, फटकारना।

उ०—नाहरां थांनें रै कुंवर नूं खबर गई जु चोरियै, जिनावर मारियो छै। नाहरां कुंवर आयो। चोरियां नूं हटकिया।—नैणसी

३ पीछे हटाना, परास्त करना।

उ०—थांणै वरदेत समंध वळ दाखै, छतीस भुजां डंड लेव। रांणा रावळ राव मुरड़ंतां, दोयण हटक्या वीरम देव।

—वीरमदेव मेड़तिया रो गीत

४ प्रतिबन्ध लगाना, रोक लगाना।

उ०—गोविंद सूं प्रीत करो, तब ही क्यों न हटकी। अब तो बात फैल गई, जैसे बीज बटकी, बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी।—मीरां

५ हटाना, दूर करना।

६ नियंत्रण में रखना, नियंत्रण रखना।

उ०—१ हणीया पांच पचीस कुं, हटिक्या रहै न राखि। जिन राख्या जिन सहज सुं, रांम नांम कुं आखि।—अनुभववांणी

उ०—२ थाड़ी चटकी भव भटकी, नाच्यो हूं विधि नटकी राजि। दिव मन हटकी आपरी अटकी, लागो तुम्ह पाय लटकी।—मीरां

उ०—३ मन नैं हटक, भटक मती मूरख। घट में धीरप राख धको।—भीमजी रतनू

हटकणहार, हारो (हारी), हटकणियो—वि०।

हटकिओड़ो, हटकियोड़ो, हटक्योड़ो—भू० का० कृ०।

हटकीजणो, हटकीजबो—कर्म वा०।

हटकारणो, हटकारबो—रू० भे०।

हटकारणो, हटकारबो—देखो 'हटकणो, हटकबो' (रू भे.)

हटकार—सं. स्त्री.—लानत, फटकार।

हटकारियोड़ो—देखो 'हटकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हटकारियोड़ी)

हटकारो-वि.—१ वर्जन, निषेध।

२ डांट, फटकार।

३ हटाने की क्रिया या भाव।

४ मूंछों पर ताव देने का भाव।

उ०—भीड़ भारातूर मूंछाड़ा मारै, वै'तां कुरणां रा फूंकाड़ा वाजै। हाळी मूंछरा लेता हटकारा, फिरता पूंछां रा देता फटकारा।

—ऊ. का.

हटकियोड़ो—भू. का. कृ.—१ मना किया हुआ, रोका हुआ, निषिद्ध वर्णित. २ डांटा, फटकारा हुआ, धमकाया हुआ. ३ पीछे हटाया हुआ, परास्त किया हुआ. ४ रोक लगाया हुआ, प्रतिबंधित, ५ हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ६ नियंत्रित।

(स्त्री. हटकियोड़ी)

हटकी-हटकी—अव्य. [अनु.] अटक-अटक कर. रुक-रुक कर।

उ०—माधव ! मन माहरा-मांहि, तइं बंधिउ हींदोल। हटकी-हटकी हींचतां, हईडइ हाल कलोल।—मा. कां. प्र.

हटक्क—देखो 'हटक' (रू. भे.)

उ०—इम आवै इक ऊपरां, हाटी लोप हटक्क। सलभ मुआं सिर संक्रमें, कीड़ी जेम कटक्क।—बां. दा.

हटड़ी—सं. स्त्री.—१ काष्ठ या धातु निर्मित खानेदार वह पात्र, जिसमें नमक, मिर्च आदि मसाले रखे जाते हैं।

२ दीवार में आळे (ताक) की तरह रखी जाने वाली जगह, जिसके कपाट भी लगाते हैं। (शेखावटी)

३ देखो 'हाट' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—ग्यांन ध्यांन का तोला तकडी, डिगै न मन की डांडी। सुरत निरत सुं तोलण लागा, काया हटड़ी मांडी।—अनुभववांणी

हटड़ो—सं. पु.—१ वह स्थान जहां एक ही व्यवसाय की कई दुकानें हों।

उ०—हाट बजार री अर सुनारां रै हटड़ां री सोभा देख'र बगता री आंख्यां खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

२ देखो 'हटड़ी' (मह, रू भे.)

हटणो, हटबो—क्रि. अ.— १ किसी स्थान को छोड़ कर इधर-उधर होना, सिरकना, खिसकना। स्थान से टल जाना, हट जाना।

उ०—अरि झाड़ खगे 'अंगजीत' छळ, पड़े क्रीत खाते पटे। धर आध जको ऊदां' घरां, आहव आध न ओ हटै।—रा. रू.

उ०—घटियो वळ दैतां घणां, हटियो नह हारे। रांम हुकमि भड़ रांम रै, करि झाटि करारे।—सू. प्र.

३ किसी बात या काम का नियत समय से आगे सरकना, समय टलना। स्थगित होना।

४ दूर होना, न रहना, मिटना।

५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहना। विचलित होना।

६ दूर रहना, अलग रहना, अन्यत्र रहना।

उ०—सारांस वीर पुरसां री पक्रती विसय दुर वासना सूं हटीयोड़ी रहै है नें आपरा पुरांणा वैर लेवणा रात दिन धाटघड़ में. वणिया रह है।—वी. स. टी

हटणहार, हारो (हारी), हटणियो—वि०।

हटिश्रोड़ौ, हटियोड़ौ, हट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हटीजणौ, हटीजबौ—भाव० वा० ।
हठणौ, हठबौ—रू० भे० ।

हटताळ—देखो 'हड़ताल' (रू. भे.)

हटवांणीयौ–स. पु.—व्यापारी, दुकानदार ।
उ०—तौ कह्या—'मुहर केथी करौ ?' कह्यौ—जी हटवांणीयौ नुं देवां छां । तीयं मुहर में इतरौ रोज लेवा छां ।
—स्यांमसुंदर री वात

हटवाड़ी, हटवाड़ौ–सं. पु.—१ सप्ताह में किसी नियत दिन लगने वाला बाजार या हाट ।
उ०—१ सतगुरु माथै कर धरचा, सोवत लिया जगाय । सोवण री बिरीयां नहीं, यहि हटवाड़े आय ।—ह. पु. वां.
उ०—२ काचौ देह तणौ कमठांणौ, पड़तां नह लागै पलक । दुनियां तणी निहली दौलत, हटवाड़ा वाली हलक ।—बां. दा.
२ हाट समूह । वह स्थान जहां बाजार लगता हो ।
उ०—दुनियां सब कांम पांच दिन आया महमांणा, हटवाड़ा संसार है. बाजार मंडांणा । सब आवै व्यापार कूं ले करम किरांणा एकां लाभ विसावियां, मुळ हेक ठगांणा ।—केसोदास गाडण
३ बाजार ।
रू. भे.—हठवाड़ौ ।

हटवाणौ, हटवाबौ–क्रि. स.— ['हटणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ किसी स्थान को छुड़ा कर इधर-उधर कराना, खिसकवाना, टलवाना ।
२ सामने से दूर चले जाने में प्रवृत्त करना, विमुख कराना ।
३ किसी बात या काम को नियत समय से टलवाना, स्थगित करवाना, आगे सरकवाना ।
४ दूर करवाना, न रखवाना, मिटवाना ।
४ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहने में प्रवृत्त करना, विचलित करना ।
६ दूर, अन्यत्र या अलग रहने के लिये प्रेरित कराना ।
हटवाणहार, हारौ (हारी), हटवाणियौ—वि० ।
हटवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हटवाईजणौ, हटवाईजबौ—कर्म वा० ।
हटवाड़णौ, हटवाड़बौ, हटवावणौ, हटवावबौ—रू० भे० ।

हटवायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी स्थान को छुड़ा कर इधर-उधर कराया हुआ, सिरकाया हुआ, खिसकाया हुआ. २ सामने से दूर चले जाने में प्रवृत्त किया हुआ. विमुख कराया हुआ. ३ किसी बात या काम को नियत समय से टलवाया हुआ, स्थगित कराया हुआ, आगे सरकवाया हुआ. ४ दूर कराया हुआ, न रखवाया हुआ, मिटवाया हुआ. ५ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहने में प्रवृत्त किया हुआ, विचलित कराया हुआ ।
६ दूर, अलग या अन्यत्र रहने के लिये प्रेरित करवाया हुआ ।
(स्त्री. हटवायोड़ी)

हटवावणौ, हटवावबौ—देखो 'हटवाणौ, हटवाबौ' (रू. भे.)

हटवावियोड़ौ—देखो 'हटवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हटवावियोड़ी)

हटवौ–सं. पु.—हाट पर बैठकर सौदा बेचने वाला, दुकानदार, व्यापारी ।
उ०—मा, सहस वजारां में मैं गयौ जे, मा, हटवा सै खोली अै हाट. बाजीगर का कम रह्या जे ।—लो. गी.

हटाड़णौ, हटाड़बौ—देखो 'हटाणौ, हटाबौ' (रू. भे.)
हटाड़णहार, हारौ (हारी), हटाड़णियौ—वि० ।
हटाड़िश्रोड़ौ, हटाड़ियोड़ौ, हटाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हटाड़ीजणौ, हटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हटाड़ियोड़ौ—देखो 'हटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हटाड़ियोड़ी)

हटाणौ, हटाबौ–क्रि. स.—१ किसी स्थान से इधर-उधर करना, सिरकाना, खिसकाना, स्थान से टालना, हटाना ।
२ सामने से दूर करना, विमुख करना ।
३ किसी बात या काम को नियत समय से आगे सरकाना या समय टालना, स्थगित करना ।
४ दूर करना, मिटाना, न रखना ।
उ०—मीरां के प्रभु सदा सहाई, राखै विघन हटाय । भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बळि जाय ।—मीरां
५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि से डिगाना, विचलित करना ।
६ दूर अलग या अन्यत्र रखना ।
हटाणहार, हारौ (हारी), हटाणियौ—वि० ।
हटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हटाईजणौ, हटाईजबौ—कर्म वा० ।

हटायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी स्थान से इधर-उधर किया हुआ, खिसकाया हुआ, टाला हुआ, हटाया हुआ. २ सामने से दूर किया हुआ. ३ किसी बात या काम को नियत समय से आगे सरकाया हुआ, या समय टाला हुआ, स्थगित किया हुआ. ४ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, न रखा हुआ. ५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि से डिगाया हुआ' विचलित किया हुआ. ६ दूर, अलग या अन्यत्र किया हुआ ।

हटारडी —देखो 'हाट' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—अकवर सै रूप लोभी रे खोभी नहीं कटारड़ी । पर नार बेटी वळ बोल्यौ, हटवै हाट हटारडी ।—नारी सईकड़ौ

हटाळ, हटाळौ—देखो 'हटी' (मह; रू. भे.)
उ०—१ कमठाळ हटाळ डळां कळता, वह लावेंय पीठ वसै वळता ।

[illegible] लिया, मन [illegible] डूंगर ठेक लिया ।
—पा. प्र.

उ०—२ [illegible] गाल रा, बेतरफ काळ रा [illegible] । हटाळा '[illegible]' मोहर मह हाल रा, भीम जै माल रा [illegible] ।—जसवंतसिंह चूंडावत री गीत

हटाबणौ, हटावबौ—देखो 'हटाणो, हटावौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] 'चांपा', करै हाथियां हाथ भाराथ '[illegible]' । '[illegible]' कूंतां भरी नाग काळा, हटावै धुजै सिंघ जेहा हटाळा ।—रा. रू.

हटावणहार, हारौ, (हारी), हटावणियौ—वि० ।

हटावियोड़ौ, हटावियोड़ौ, हटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हटाबीजणौ, हटावीजबौ—कर्म वा० ।

हटावियोड़ौ—देखो 'हटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हटावियोड़ी)

हटि—सं. स्त्री.—१ शरीर की बनावट ।

२ शक्ति, बल, ताकत ।

३ देखो 'हठ' (रू. भे.)

उ०—हरीया छोडा होड करि, हटि पचि मरो न कोय । सहज रांम गुन गाईयै, भाव भजन गुर होय ।—हरिरांमजी महाराज

४ देखो 'हाट' (रू. भे.)

५ देखो 'हठी' (रू. भे.)

रू. भे.—हटी, हट्टि ।

हटियाळ—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—पुळ वाळ करां पुण चाळ लियूं, कर क्रोध कवांण कुंडाळ लियूं । धुरजाळ उलाळ अताळ धसै, हटियाळ कांधाळ कराळ हसै ।—पा. प्र.

हटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी स्थान को छोड़कर इधर-उधर हुवा हुआ, खिसका हुआ, खिसका हुआ, टला हुआ, हटा हुआ. २ सामने से हटा हुआ, विमुख हुवा हुआ. ३ कोई बात या काम समय से आगे सरका हुआ, समय टला हुआ, स्थगित हुवा हुआ. ४ दूर हुवा हुआ, मिटा हुआ. ५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ. ६ दूर, अलग या अन्यत्र हुवा हुआ ।

(स्त्री. हटियोड़ी)

हटी—१ देखो 'हटि' (रू. भे.)

२ देखो 'हठी' (रू. भे.)

हटीलौ—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किण से सहूं । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहूं ।—मीरां

(स्त्री. हटीली)

हटीलौ—वि.—हठ वाला, हठी, जिद्दी ।

उ०—कूंभायळां लागै नरां हैमरां ढोहता कोप, हाथळां हाथियां घड़ा ढोहता हटैल । हाक वागा फौज नूं रोहतां लथोबथ्यां होय, पाड़ै घसा दूजो 'सतो' नोहथ्या पटैल ।—रांमसिंघ हाडा रो गीत

हटोकटौ—देखो 'हट्टोकट्टौ' (रू. भे.)

हटोटी—सं. स्त्री.—कला, बुद्धि, चतुराई ।

उ०—१ बांणिया रै भाई ई हटोटी हाथ लागी । आपरा घर सूं कदै ई संपत खांडी नीं होवण दी पछै संपत रो वासो छोड नै लिछमी जावै तो कठै जावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बुढापै सरधा खूट्यां पछै बेटा पोता नै सगळी माया सूंप दी । वांनै ई विणज री सगळी हटोटियां बताय दी ।—फुलवाड़ी

हट्ट, हट्टण, हट्टन—देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—१ जावौ जीभां ना कहूं, वधौ सवाई वट्ट । ऊघड़सी थां आवियां, हेतारथ रा हट्ट ।—जलाल बूबना री वात

उ०—२ तुं जा भूंडण भाखरां, म्है जाऊं रण घट्ट । मैं'लां रोवाऊं कांमणी, मांस बिकाऊं हट्ट ।—डाढाळा सूर री वात

उ०—३ पुर पट्टण ज हट्टण बीजपुरं, अरि हुवै न जैसिंघ तेणी डरं । पुर पटण न हटण न बीजपुरं ।—मिरजा राजा जैसिंघ रो गीत

हट्टसोभा—सं. स्त्री.—दुकानों की छवि ।

उ०—सरवत्र मारग चोखाल्लिया, गोमय पांणी सिंचाइ, मंचीनमंच वांधा, वानरवालि वांधी, हट्टसोभा सरवत्र रची ।—व. स.

हट्टस्रेणि—सं. स्त्री.—दुकानों की कतार, पंक्ति ।

उ०—जे नगर मांहइ दांनसाला पौसधसाला, धरमसाला, गढ मढ मदिर प्रकार, चुराली चुहुटांनी हट्टस्रेणि. मांहइ वस्त संपूरण वरतइ......... ।—व. स.

हट्टांत—अव्य—दुकानों से, दुकान से ।

उ०—कलसांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, वंधनांत नियोग, वियदांळ खलमैत्री, गजांत लक्ष्मी, नांयकांत समर, हट्टांत व्यवहार, कसवटांत सुवरण्ण, राजसभांत वाद, प्रवासांत स्नेह, नामांत जोस, हारांत स्रंगार, वच्चांत गणित ।—व. स.

हट्टि—१ देखो 'हट' (रू. भे.)

उ०—मारू आवी चउहट्टइ, गांधी-केराइ हट्टि । हट्ठ लूटायउ वांणीयइ. वळद गमाना जट्टि । ढो. मा.

२ देखो 'हठी' (रू. भे.)

हट्टीका—देखो 'हट' (रू. भे.)

उ०—सस्त्र सूत्र व्रत तेंळ कठा इत्यादि विचित्र हट्टिका सोभा विसाल रमणीय चतुःसाल द्विभूमिक, त्रिभूमिय, चतुर भूमिकादि नंदावस्त, स्वस्तिकादि विचित्र प्रासादमाल ।—व. स.

हट्टोकट्टौ—वि. [सं. हृष्ट+काष्ठ] (स्त्री. हट्टीकट्टी) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू. भे.—हटोकटौ

हट्ठ—देखो 'हठ' (रू. भे.)

हठ्ठपुट्ठ—वि.—हृष्ट-पुष्ट ।

हठ-सं. पु. [सं.] १ जिद्द, दुराग्रह ।

उ०—१ तरै इण चारण तौ घणौ ही उजर कियौ, पण पातसाह हठ पड़ियौ कहै—एक वार जेसौ म्हांनूं आंखियां दिखाव ।
—नैणसी

उ०—२ लाखां बातां हठ लागौ, आयौ खड़ सोवायत आगौ । वापू तणौ नगारौ वागौ, जागौ सा कमधजियां जागौ ।—बरजू बाई

२ अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति या स्नेह पूर्वक किया जाने वाला आग्रह ।

उ०-१ बांणियौ तौ ई तिथ नीं छोडी । ज्यूं बापजी नटिया त्यूं वौ घणौ आड़ौ लियौ । सेवट बापजी नै ई भगत रौ हठ देख नै निवणौ ई पड़ियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मां, साथणियां अर भाई हठ झेल्यौ तौ रांणी नौ दिन वळै ढबगी ।—फुलवाड़ी

मुहा.—१ हठ करणौ, हठ पड़णौ=किसी बात का जिद्द करना, आग्रह करना, बात पकड़ कर बैठ जाना ।

२ हठ मांनणौ, हठ राखणौ=किसी के हठ की पूर्ति करना, किसी की बात, इज्जत या मर्यादा रखना ।

३ योग के दो भेद राज-योग व हठ योग में से एक ।

उ०—१ साध सोई जाकै सहज समाधि, हठ पचि मरै न और न उपाधि ।—अनुभववांणी

उ०—२ संन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, कांइ इवड़ा हठ निग्रह किया । प्रांणी भवसागर वेलि पढंता, थिया पार तरि पारि थिया ।
—वेलि

४ दृढ संकल्प, प्रतिज्ञा ।

५ दुश्मन के पीछे से किया जाने वाला आक्रमण ।

६ मर्यादा, टेक ।

७ जबरदस्ती ।

८ अनिवार्यता ।

रू. भे.—हट, हटि, हट्ट, हट्ठ ।

हठजोग-सं. पु. यौ. [सं. हठः+योग] योग का वह भेद, जिसमें आसन-सिद्धि, प्राणायाम, नैति, धोति आदि कठिन मुद्राओं और आसनों द्वारा चित्तवृत्ति को हठात् बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुख किया जाता है।

वि. वि.—इसमें शरीर के अन्दर कुण्डलिनी और अनेक प्रकार के चक्र भी माने गये हैं । इसके सबसे बड़े आचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं ।

हठणौ, हठबौ-क्रि. अ.—१ हठ करना, दुराग्रह करना, जिद्द करना ।

उ०—अहइ रूप असंभव भूवलइ, कवण कांमिनि एह समी तुलइ । हिव हठिउ मझ मन्मथ मारिवा, एह ऊडण अंग ऊगारिवा ।
—सालिसूरि

२ देखो 'हटणौ, हटबौ' (रू. भे.)

हठणहार, हारौ (हारी), हठणियौ—वि० ।

हठिओड़ौ, हठियोड़ौ, हठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हठीजणौ, हठीजबौ—भाव वा० ।

हठधरम-सं. पु. यौ. [स. हठः+धर्म] १ बिना उचितानुचित का विचार किए किसी बात पर अड़े रहने या जिद्द करने की क्रिया या भाव, दुराग्रह ।

२ धर्म, मत या सम्प्रदाय में होने वाला कट्टरपन ।

रू. भे.—हठधरमी ।

हठधरमी-वि.—१ हठ पर दृढ़ रहने वाला, हठ करने वाला ।

२ देखो 'हठधरम' (रू. भे.)

हठधारी-वि. [सं. हठ+धारिन्] १ हठ को धारण करने वाला, हठी, जिद्दी, दुराग्रही ।

२ दृढ़-प्रतिज्ञ ।

३ हठयोग की साधना करने वाला ।

हठनांळ-सं. स्त्री.—दुकानों की पंक्ति ।

उ०—हठनांळ पेठ बाजार हाठ, प्रांजळै महल चंदण कपाट । चाचरै गयण चक चूर चोट, कांगरां अंबारथ भुरज कोट ।
—वि. सं.

२ देखो 'हड़ताळ' (रू. भे.) (जयपुर)

हठमल, हठमल्ल-सं. पु.—१ योद्धा, वीर ।

उ०—१ हाथळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायसाल दूजौ रिम-राह । चौड़ै खेत अखाड़ै अणचळ, बांकड़मल ओखळ खगवाह ।
—नवलसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ राठउड़ उदियउ 'चउंडराउ', वेगड़इ सांड वीरम वियाउ । साळवड़ी थांणउ दै सधीर, हठमल्ल राउ थांणै हमीर ।
—रा. ज. सी.

हठवाड़ौ—देखो 'हटवाड़ौ' (रू. भे.)

हठाड़णौ, हठाड़बौ—देखो 'हटाणौ, हटाबौ' (रू. भे.)

हठाड़णहार, हारौ (हारी), हठाड़णियौ—वि० ।

हठाड़िओड़ौ, हठाड़ियोड़ौ, हठाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हठाड़ीजणौ, हठाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हठाड़ियोड़ौ—देखो 'हटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हठाड़ियोड़ी)

हठाणौ, हठाबौ—देखो 'हटाणौ, हटाबौ' (रू. भे.)

हठाणहार, हारौ (हारी), हठाणियौ—वि० ।

हठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हठाईजणौ, हठाईजबौ—कर्म वा० ।

हठायोड़ौ—देखो 'हटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हठायोड़ी)

हठाळ, हठाळौ—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—१ उठै भीम हरवलां, हुवौ खुमांण हठाळौ । अवर खांन ऊबरां, चढै लसकर कळिचाळौ ।—सू. प्र.

उ०—३ [illegible] हठाळ तठै 'कुमळेस' पघै रिणताळ। [illegible] घोर घजराज, जिसी सिघ सामंद बीन जिहाज।

—सू. प्र.

उ०—३ [illegible] हठाळा महागाढ पूरा, मुरंगा सगाहा सकोपा [illegible]। [illegible] प्राग नाहै, निवां हाथ लट्ठी ममां सेल [illegible]।—रा. रू.

उ०—४ [illegible] वीराळा [illegible] निमाळा जीवता सही, अडाळा हठाळा [illegible] मीम [illegible]। [illegible] वानाळा बोल जंगाळा पगाळा [illegible], [illegible] हाले हाडा रे सुभाव।

—सनमांनसिघ हाडा रो गीत

हठावणो, हठाववो—देखो 'हटाणो, हटावो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मानासोना माना ज्या नेंइ भूठा पाड़े है तो ग्रो तो [illegible] तांबा रो [illegible] है सो इणनें तो हठावणो सोरो है।

—भि. द्र.

हठावणहार, हारो (हारी), हठावणियो—वि०।

हठाविप्रोड़ो, हठावियोड़ो, हठाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

हठावीजणो, हठावीजवो—कर्म वा०।

हठावियोड़ो—देखो 'हटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हठावियोड़ी)

हठी-वि. [सं. हठिन्] १ हठ करने वाला, जिद्दी, दुराग्रही।

उ०—[illegible]जी सारी कुंवरांणियां नुं बुलाय कही बेटा थां जांणो [illegible]। कुंवरसी घणो हठी वादी छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ योद्धा, वीर।

उ०—१ हठी रणजीत सगरांम 'कुंभा' हरै, घडा दांणव तणी सभै रण घाय। घणो तो सूर ससि ग्रहणहूँ दुयघडी, पख उभै सरव-गन वीध पतसाय।—महारांणां संग्रामसिघ रो गीत

उ०—२ सूर मुरड़ि दम साहसूं, लूटै हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठी, ग्रायो घरत उछाह।—वं. भा.

३ दुस्मन को पराजित करने वाला, जीतने वाला, ग्ररिमर्दन।

उ०—रेवा सागर ग्रमल मैं, ग्रागै हो ग्ररड़ींग। हमैं सिघ सागर हठो, परणायो तै 'भींग'।—बां. दा.

रू. भे.—हटाळ, हटाळो, हटियाळ, हटियाळो, हटीलो, हठाळ, हठाळो, हठीलो।

मह.—हठेल।

हठीलो—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] तांबाड़, मिळै जद गायां ग्रड़वड़ जाय। [illegible] भूर पावणी गाय, हठीला टावरिया लड़ जाय।—सांझ

उ०—२ मान लुगी ग्रर नणद हठीली, लड़ लड़ दै मोहि गाळी, हे माय। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ की वारी, हे माय।—मीरां

उ०—३ [illegible] काम छाकिया, हुवा हाकियां हठीलां। प्रचंड नीम जमि पीठ, निलै ग्रसळै जमि नीलां।—सू. प्र.

उ०—४ मांग ग्रोर पाटी उतार धरूंगी, ना पहिरूं कर चूड़ो। मीरां हठीली कहे संतन सौं, वर पायो छै मैं पूरो।—मीरां

(स्त्री. हठीली)

हठेल—देखो 'हठी' (मह; रू. भे.)

उ०—चहूं छत्रधारी सुण बाखांणिया रायथांनां, हकां वंका फटै संका उजक्कै हठेल। लेवा ग्रायो छाक जकै पाछो माग लागो, ऊभो जेत-खंभ हुग्रां (थको) संभरी ग्रठेल।

—रावत जोधसिघ कोठारिया रो गीत

हड—देखो 'हाड' (रू. भे.)

हडजोड़, हडजोड़ा-सं. स्त्री.—एक ग्रोषधि विशेष जो वात कफ नाशक एवं टूटी हड्डी को जोड़ने वाली होती है।

हडताल—देखो 'हड़ताल' (रू. भे.)

उ०—व्यापारी विधि विधि मिल्या, हाटै सहू हडताळ। करि कूंचो कंधि कणा, फरि फरि देता फाळ।—मा. कां. प्र.

हडफूटण, हडफूटणी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का रोग विशेष जिससे शरीर की प्रत्येक हड्डी या जोड़ में तीव्र पीड़ा होती है।

२ चमगादड़।

हडफोड़-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिड़िया।

२ देखो 'हडफूटण'।

हडव—देखो 'हाड' (रू. भे.)

उ०—स्रीमंत घरमाहि पइसी सूयइं, दारिद्रि लोक सीतइं कांपइं, सकल लोक ग्रंगीठै तापयइं, टाढि हडवां खडइं, राति मरि जिम सांकुडइं.........।—व. स.

हडवडी-सं. स्त्री.—१ एक वनस्पति विशेष।

उ०—हनुमंती नइं हडवडी, हीराउलि हर-मज्जि। हाथा जोडी हींकणी, हेलां ग्रावइ कज्जि।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हड़वड़ी' (रू. भे.)

हडमंत, हडमत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—१ काका भतीजा बिहूं, गोरउ ग्ररु बादलल। पद्मनी काज भारथ कीउ, हडमत जिम सर भल्ल।—प. च. चौ.

उ०—२ किप हडमत विना समंद कुण कूदै, ग्ररण विना कुण गमै ग्रंधार। 'मांडण' विना थांणा कुण मारै, सारै यम कहियो संसार।—तेजसी खिड़ियो

हडवड—देखो 'हड़वड़ी' (रू. भे.)

उ०—घू नाचे भड घड, फींफड फडहड, लोडै लड थट लोहि लडै। वीयै दळ वड चढ हुई हडवड, जोवै घडतह ग्रनड ग्रडै।

—गु. रू. वं.

हडसंहारी, हडसेलि-सं. स्त्री. [सं. हड्डसंकरी] एक प्रकार की लता व उसका डंठल।

उ०—दांतण पांणी तउ करूं, जउ बंभ वइसाड वेलि। कांमसेन

कूलौ करउ, सइ काढ़उ हडसेलि।—मा. कां. प्र.

वि. वि.—इसकी लकड़ी का दातुन भी करते हैं। यह बात कफ नाशक तथा टूटी हड्डी को जोड़ने वाली मानी जाती है।

हडहड—देखो 'हड़हड़' (रू. भे.)

उ०—हडहड हडती तै इसी, तालोटा कर वेय। 'माधव' तुं मूरिख खरु ! मइ जांणिउ भल भेय।—मा. कां. प्र.

हडहडणौ, हडहडवौ—देखो 'हड़हड़णौ, हड़हड़वौ' (रू. भे.)

उ०—रथचक्र चांणीती करोडि कडकडइं, वेताल हडहडइं, भाग्य-वंत जयलक्ष्मी वरइं, आपणु काज करइ, युद्ध।—व. स.

हडहडियोड़ौ—देखो 'हड़हड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हडहडियोड़ी)

हडा—देखो 'हाडा' (रू. भे.)

हडाराहा-सं. स्त्री.—घोड़े की एक जाति विशेष।

उ०—घोटक जाति, केहाडा नीलडा हरियाडा सेसहा। हडाराहा कोहाणा भरयणा ताई तुरगी ऊधसीया नीधसीया डाटकिया डोट-किया खेलवि (या) मल्हाविया लडाविया पुलाविया सरला तरला छोट करणा एकरण्णा।—व. स.

हडूंबी—देखो 'हिडंबी' (रू. भे.)

हडूमांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (अ. मा.)

हडोई-सं. स्त्री.—१ वक्षस्थल की हड्डी।

उ०—मोरां पसवाड़ां पींडां री मांस देगचां मैं घात जै छै। हडोई रा मांस पासै चरुवां मैं गातजै छै।—रा. सा. सं.

२ मांस रहित अस्थियों का समूह, मांसहीन अस्थियाँ।

उ०—हडोई ऊपर चीलकां, कागला झड़फड़ा करनै रह्या छै। तिका कागला नूं मलूकजादा कुंवर गिलोळां री चोटा कर रह्या छै।—रा. सा. सं.

रू. भे.—हड़ोई।

हडोती—देखो 'हाडोती' (रू. भे.)

उ०—दो ही बीर सांकड़े मिळियां दाव करता बचता हडोती कै मारग वहिया आवै।—वं. भा.

हडौ—देखो 'हाडौ' (रू. भे.)

उ०—सरगुण निरगुण हो ही, हंस होय न हडा

—केसोदास गाडण

हड्डु—देखो 'हड्डी' (मह; रू. भे.)

उ०—१ कसूमल छोळ भरै नड खड्डु, करद्दम आंमिख हड्डु कवड्डु। गजां ढळ पड्ड गरद्दन गोप, हिया भ्रम भंजत कज पहोप।—मे. म.

उ०—२ सूवर वाही दांतळी, आंण खटक्की हड्डु। भाई ब्है तौ वावड़े, गया विरांणा छड्डु।—लो. गी.

हड्डा-सं. पु.—१ घोड़ों के होने वाला एक रोग विशेष।

२ देखो हाडा' (रू. भे.)

हड्डी-सं. स्त्री. [सं. अस्थि, प्रा. अत्थि, अट्ठि] शरीर के भीतर सफेद रंग का वह कठोर अंग या तत्व जो रीढ वाले प्रायः सभी प्राणियों के होता है, अस्थि।

मह.—हड्डु, हड्ढ।

हड्ढ—देखो 'हड्डी' (मह; रू. भे.)

उ०—वसन वेधि कटाक्ष, कोर कुलटा द्रग कढ्ढिय। हड्ढ वेधि जमदड्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय।—ला. रा.

हण—१ देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—एको हि जादम भीड़ न आवै, रौद पेख उग्रसेण रहै। आवै हण न गुरड़ न आवै, कमध आव रिण छोड़ कहै।

—सिवा वाढेल री गीत

२ देखो 'हणौ' (रू. भे.)

उ०—हण फूल खिल्यौ ईं रज में, मां वोली 'धरती' मांजी, जांमण री वेळा आई, हूं करम धरम स्यूं वांधी।—संकुलता

हणकंस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—देवी छकारां रूप तैं रांम छळियां, देवी रांम रै रूप दसकंध दळिया। देवी कांन रै रूप गिरि नक्ख चाडै, देवी नक्ख रै रूप हणकंस फाडै।—देवि.

हणकणौ, हणकवौ—क्रि. अ.—हाक करना, हुंकार करना।

हणकणहार, हारौ (हारी), हणकणियौ—वि०।

हणकिओड़ौ, हणकियोड़ौ, हणक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हणकीजणौ, हणकीजवौ——भाव वा०।

हणक्कणौ, हणक्कवौ—रू० भे०।

हणकियोड़ौ—भू. का. कृ.—हाक किया हुआ, हुँकार किया हुआ.

(स्त्री. हणकियोड़ी)

हणक्कणौ, हणक्कवौ—देखो 'हणकणौ, हणकवौ' (रू. भे.)

उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणांक्कै, यै विमांण रंभा, लोयणां भणक्कै डंड मणांक्का लेवांण। हुवै पंखा झड़पफा ग्रीधांण वीर है हणक्कै, कैमरां संणक्कै वाजै खड़क्का केवांण।—प्रभूदांन मोतीसर

हणक्कियोड़ौ—देखो 'हणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हणक्कियोड़ी)

हणणांक-सं. स्त्री.—घोड़ों के हिनहिनाहट की ध्वनि।

उ०—ठणणांक घंट गदळां ठहै, गणणांकै पळचर गयण। हणणांक हीस हैगांम हय, जय कणणांकै बंदीजण।—वं. भा.

हणणांकणौ, हणणांकवौ—क्रि. अ.—घोड़ों का हिनहिनाना।

हणणांकणहार, हारौ (हारी), हणणांकणियौ—वि०।

हणणांकिओड़ौ, हणणांकियोड़ौ हणणांक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हणणांकीजणौ, हणणांकीजवौ—भाव वा०।

हणणांकियोड़ौ-भू. का. कृ.—हिनहिनाया हुआ। (घोड़ा)

(स्त्री. हणणांकियोड़ी)

हणण-सं. पु. [सं. हन्] १ मार डालने या वध करने की क्रिया, वध, हत्या।

२ [illegible] के लिखने की क्रिया या भाव ।
[illegible]
३ [illegible] या प्रहार ।
४ [illegible] के गुणन या गुणा करने की क्रिया ।

[illegible]—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)

उ०—[illegible] काळवी हणणाहट हींस करी । [illegible] लगी, चपळागत आवत सीस सुणी ।
—पा. प्र.

हणणौ, हणवौ–क्रि. स. [सं. हन्] १ वध करना, संहार करना, मारना । (उ. र.)

उ०—१ [illegible] हेक ताड़का मारी, चंड सुबाहु हणे कर चाव । [illegible] धनुस भंग जानम, रंग भुजां थारा रघुराव ।
—र. रू.

उ०—२ [illegible] ऊमरकोट रां, सिर कटियां समसेर । वाहे हणिया [illegible], 'बांका' भारथ बेर ।—बां. दा.

उ०—३ [illegible] सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ । [illegible] महाहवि निरजणिउ, इसिउं भीस्म पितामह [illegible] ।—मालिसूरि

२ आघात या प्रहार करना ।

उ०—[illegible] भागळ वण जुद्ध सूं जीवता आय कांई कीधौ [illegible] हाय हाय कर बळती थकी छाती में दोनूं हाथ हणिया [illegible] में मूथीयां वाही तद भागळ कही है धण थारै इण घणौ [illegible] सीधौ ।—वी. स. टी.

३ मारना, पीटना ।
४ कष्ट देना, सताना ।
५ हराना, परास्त करना ।

[illegible], हणौ (हाणौ), हणणियौ—वि० ।
हणिग्रोड़ौ, हणियोड़ौ, हण्योड़ौ —भू० का० कृ० ।
हणणीजणौ, हणणीजबौ—कर्म वा० ।
हनणौ, हनबौ, हिणणौ, हिणबौ—रू० भे० ।

हणमंत, हणमंति, हणमंतौ, हणमत, हणमति, हणमतौ —देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ [illegible] का हुंनर अगूंणा बनाव । हणमंत रूप [illegible] में भुजंग [illegible] पर दम्ननाक दिया ।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] रघुवर विमाळ, जंपै जम्मर, मुगत मरथ [illegible] । हणमंत [illegible], सेवा सुमेव, किनी कपेस ।
—र. रू.

उ०—३ हणमंति [illegible] महल दांणव संघारै ।—पी. ग्रं.

उ०—४ [illegible] हणमंत रांम, नारायण तूझ तणौ नह नांम ।
—पी. ग्रं.

उ०—५ [illegible] निज संता । कीधौ अमर जांनकी कता, हुकमीदास जांण हणमंता ।
—र. ज. प्र.

उ०—६ हणमत सिवौ बरोबरि हुम्रा । पौरिस बळ दाखिवै प्रमांण, अेक गयौ गढ लंक उचीडै, दिली अेक गमणै डांण ।
—जोगीदास चारण

हणमांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—बगलै में हणमांन बाबौ जाग्या, परींडै पीतर देवता जाग्या, मिंदर में सती माता जाग्या, मठ में भैरूं बाबौ जाग्या ।
—लो. गी.

हणमांन-चाळीसौ–सं. पु.—१ चालीस छन्दों का एक लघु काव्य जिसमें हनुमानजी की महिमा वर्णित है ।

उ०—म्हैं मन में हणमांन-चाळीसौ जपणौ सरु कियौ अर लट्ठ लेय'र एक दम ऊभौ व्हैगौ ।—रातवासौ

२ उपर्युक्त पदों के संग्रह की पुस्तक ।

हणवंत, हणवत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ तदि लखण अंगद सुग्रीव हणवंत, नीळ नळ नर नाह । जामवंत क्रुध झळ जळहळी, सुक्खेण मयंदह सतबळी ।—सू. प्र.

उ०—२ तन वरतै काली कळस तेम, जुध गिणै सती नाळेर जेम । सांम रै कांम एहा सधीर, रांम रै कांम हणवंत वीर ।—वि. सं.

हणहण—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)

उ०—जूजूइ जाति-तणा घणा, प्लवंग न लब्भइ पार । वेगि वहंता वाचनइ, हणहण घणा हींसार ।—मा. कां. प्र.

हणहणणौ, हणहणबौ—देखो 'हिणहिणणौ, हिणहिणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रह फूटी, दिसि पुंडरी, हणहणिया हय-थट्ट । ढोलइ घण ढंढोळियउ, सीतळ सुंदर घट्ट ।—ढो. मा.

उ०—२ कटक मांहि हाथी पाखरिया, पटा दंतूसलि घाल्या । वीटिउं नगर तुरी हणहणिया, पोलि पाघरा चाल्या ।—कां. दे. प्र.

हणहणा–सं. स्त्री.—घोड़े के बोलने की ध्वनि, हिनहिनाना ।

उ०—न जांणीइं पूरव न जांणीइं पस्चिम, केवलं गज गलगला रवि करी जांणीइं, तुरंगम हणहणा रवि करी जांणीइं, रथ चक्र चित्कार करी जांणीइं.........।—व. स

हणहणियोड़ौ—देखो 'हिणहिणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हणहणियोड़ी)

हणां, हणा–क्रि. वि. [सं. अधुना, प्र. अहुणा] इसी समय, अभी ।

उ०—तद राजा 'जैत' नूं कहियौ, 'जु मैं तौ थां नूं सगळौ उपर कीयौ थौ, तिको तू बाहर चढ नैं बांणीयां रौ हणा बखतौ माल छोड आयौ ।—जैतमाल पुमार री वात

रू. भे.—हणैं, हणे, हणौं, हणौ, हांणे, हांणै, हेणां, हैणां ।

हणियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वध या संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ आघात या प्रहार किया हुआ. ३ मारा हुआ, पीटा हुआ. ४ हराया हुआ, परास्त किया हुआ. ५ कष्ट दिया हुआ, सताया हुआ ।

(स्त्री. हणियोड़ी)

हणुं, हणुमांन, हणु, हणुअंगी, हणुमंत, हणुमत, हणुमांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ हणुं हुवा जिण जग होय, हरखित चाह वेद वियार। तत पंच कर खट तरक तैं, दरियाव सात उदार।—र. ज. प्र.

उ०—२ पवैं उठाहै हणु जिऊं चाहै, मुनि जैम सिध पीए, विजै की संवाहै मही डाड जिऊं बाराह। गाढा भीम मतारा गनीमां गजां जैम गाहै, सतारा सुं तैग तुंही साहौ 'विजैसाह'।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ सुग्रीव अंगद हणुमत सहतं, आतम धनि आहंसियां। जिण वंस रांम प्रगटै जिको, वंस सुधिन रघुवंसियां।—सू. प्र.

उ०—४ सदा पग आगळ लोटैं सेस, गुणा असतूति करंत गणेस। पगां हणुमंत करंत प्रणांम, सोहै पग आगळ कातकसांम।

—ह. र.

उ०—५ चढे इम वैरिसाल अभंग, रचावण जुद्ध रमायण रंग। चढै हरिसीह मुछां धर हाथ, मनौ हणुमत लंका गढ माथ।

—शि. सु. रू.

उ०—६ सीमुख सूं हणुमांन जी रा बखांण।—र. रू.

हणुमा—सं. पु.—१ भारी दाढ़ या जबड़े वाला।

२ देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

हणुरत्तम—सं. पु.—एक प्रकार की वात व्याधि। (अमरत)

हणूं, हणूमांन, हणू—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—१ अमरावत 'नाथौ' दळ आगळ, कळहण गैलो जांण दवी कळ। 'तेजावत' 'वाघौ' रिण तैसो, जुध बळ वणूं हणूं कवि जैसो।—रा. रू.

उ०—२ रिमांखेसैं लागी दीखै इंद्र ज्यूं जंभ पै रूठो, आहंसी भाराथां ऊठौ हणूं ज्यूं ओपाळ। छूटा डांण लाठां मदां पांण हूं भूरेस छूटौ, गोरां गजां माथै रूठौ सींघळी 'गोपाळ'।

—गुलावसिंह महड्ड

उ०—३ सकौ राकसां एकणी हाथ साहे, मेलुं लंक साहेत पाताळ माहे। जपै वैण ऐहा हणूमांन ज्यारां, तेडै मांन वभीखण भ्रात त्यारां।—सू. प्र.

उ०—४ मारू जोधां रिणमलां, भळै सम्रोधां भार। जांण हणू धावण मतैं, द्रोण उठावण वार।—रा. रू.

हणूओ—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—बांण यथा अरजुन-तणां, हणूआ पूंछड जेम। तिम तनि वद्धइ माहरइ, माधव-केरु प्रेम।—मा. कां. प्र.

हणूफाळ—देखो 'हनुफाळ' (रू. भे.)

हणूमत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—महबळ सूर दिनां मकरंद, चखां करि चोळ लड़ै भड़ 'चंद'। जठै भड 'तेज' हणूमत जाति, जुडै हरनाथ करूर जमाति।

—सू. प्र.

हणूमांन—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.) (डिं. को.)

हणूयौ—देखो 'हनुमांन' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जिसी प्रीति हणूया सुग्रीव, जांणै नहीं जूजूआ जीव। सीकरि छत्र चमर ढालीइ, साचइ न्याइ लोक पालीइ।

—कां. दे. प्र.

हणे—देखो 'हणां' (रू. भे.)

हणेहण—सं. स्त्री. [अनु] मार-काट की ध्वनि।

हणें, हणै—देखो 'हणां' (रू. भे.)

उ०—१ हणें तौ चालौ, क्यूं जिक्कर करौ हौ। काल हड़मांनजी री बगेची में पांच वजी सिज्या नैं सैं भेळा हौ जासां।—वरसगांठ

उ०—२ दरखत रा गात हरचा हा, सांपड़दै प्रांण भरचा हा। सूका ठूंठां सा होग्या, कीं खातर हणैं खड्या हा।—सकुंतळा

हत—वि. [सं.] १ मरा हुआ, मृत।

२ आहत, घायल, जख्मी।

३ पीड़ित, ग्रस्त।

४ रहित, विहीन, वंचित।

५ बिगड़ा हुआ।

६ ध्वस्त, नष्ट।

७ परेशान, दुःखी, त्रस्त।

८ निर्बल, कमजोर।

९ हताश, निराश।

सं. पु.—१ रिपु, वैरी।

रू. भे.—हत्त।

२ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—लोक कुटंबी बरज बरज ही, बतियां कहत बणाय। चंचळ चपळ अटक नहिं मांनत, पर हत गयै बिकाय।—मीरां

हतआसा—वि.—निराशा।

हतक—सं. स्त्री.—१ बेइज्जती, तोहीन।

२ हत्या, संहार।

वि.—१ मारा हुआ, हत।

२ घायल।

उ०—झखां खंजरीटां अगां, संवर हतक सरांह। जैतवार ज्यांरा नयण, सरोरुहां सुथरांह।—बां. दा.

हतकड़ी—देखो 'हथकड़ी' (रू. भे.)

हतकार—देखो 'हंतकार' (रू. भे.)

हतणपुर, हतणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

हतणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हतणौ, हतबौ—क्रि. स. [सं. हन्] १ मार डालना, वध करना, संहार करना।

उ०—१ केहरि छोटौ बहुत गुण, मोड़ै गयंदा मांण। लोहड़ बडाई

को करै, नरां नखत परमांण । नखत परमांण वाखांण वाघो नरै । धावगो झूंक री मार भुजि धापरै । मेटणो भीड़ भुंजि गयंद री मोटियां । छावड़ वळ हतै वछाइयां छोटियां ।—हा. झा.

उ०—२ पूजै सिव वरहूं वर पाई, कनिया हतण ग्रजोग्य कमाई । ग्रनुचित काज न कीजै ऐहो, जुध वर उचित काज तो जेहो ।

—सू. प्र.

२ ग्राघात करना, पीटना ।

३ पीड़ित करना ।

४ घायल करना, जख्मी करना, ग्राहत करना ।

उ०—समरंगि मरिवा मन बीह तउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ कठिन कंटक कोडि कुटीरडइ पडिउ, वेधि पडइ पुणि ग्रारडइ ।

—सालिसूरि

५ हराना, परास्त करना ।

६ हटाना, ले जाना ।

७ वंचित करना ।

८ परेशान करना, दुःखी करना ।

९ नाश करना, ध्वस्त करना, मिटाना ।

१० हताश करना, निराश करना ।

हतणहार हारो (हारी), हतणियो —वि० ।

हतिग्रोड़ो, हतियोड़ो, हत्योड़ो —भू० का० कृ० ।

हतीजणो, हतीज्यो – कर्म वा० ।

हतणो, हतवो – रू० भे० ।

हतयाह् —देखो 'हतवाह' (रू. भे.)

उ०—देखीजै निज गोमड़ै देवर री हतवाह् । भाभी थैं गिणता गरब, सो सोलै सो नाह् ।—वी. स.

हतभाग, हतभागी, हतभाग्य-वि. यौ. [सं. हत+भाग्य] भाग्य-हीन, ग्रभागा, बदकिस्मत ।

हतरस-वि.—हस्तमैथुन करने का ग्रभ्यस्त ।

उ०—लड़ पड गळ नंजा हतरस हंजा, मनमथ कांम मदंदा है । जागी कर जोगी मठ गिर जोरी, फोरी हाथ फथंदा है ।—ऊ. का.

रू. भे.—हथरस, हथळस ।

हतळेवो—देखो 'हथळेवो' (रू. भे.)

हतवा—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—हिंदू तुरक वखाणै हतवा, माल्ही धन कमधज मन मोट । राजा छोट रणी के रावत, ग्रगरन तुज कटारी ग्रोट ।

—दुरगादासजी ग्रासकरनोत री गीत

हतवाग्रो—देखो 'हथवाहो' (रू. भे.)

हतवार, हतवाह —देखो 'हथवार' (रू. भे.)

हतवाह् —देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—सारदै 'रतनेस' समोभ्रम, ग्रोछै दिन देखनां घणी । कथ हुइ रहसी रमधज, सो वाळो हतवाह् तणी ।

—महाराजा मांनसिंह (जोधपुर)

हतां, हता-भू. क्रि—थे ।

उ०—१ मुंता तोमरमल तेजमालोत परगनै फलोदी सुं साथै छै नें दीना २ नोर गयो हतां पछै ग्राया भेळा हुवा ।

—राठौड़ वंस री विगत

उ०—२ ताहरां सरब हजूरी, पासवांन, खवास तेरू हुता तिकै सरब तळाव ढूंढियो ।—पलक दरियाव री बात

रू. भे —हुंता, हुंतीया ।

हतायळी, हतायली—देखो 'हथायळी' (रू. भे.)

हतास-वि. [सं. हत+ग्राशा] १ जिसकी ग्राशा टूट चुकी हो, निराश ।

२ साधनहीन ।

३ मजबूर, विवश ।

हतियारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—१ मित्र जांणियों ग्रमल, हुवो दुसमण हतियारा । किसा किसा में कथूं, थिरा में ग्रोगण थारा ।—ऊ. का.

उ०—२ मिरगानेणी ग्रायो थारी ग्रासा पजोय हां ए मनै सोगन थारी ए, कोई हां ए हतियारी ए । कोई ग्रास निरास्यो गजवण तें करयो जी राज ।—लो. गी.

उ०—३ सुण रे मन सगरांम, कहू इतो रीस मत राख । बोय न्हाखसी पापणी, हतियारण हकनाक । हतियारण हकनाक कह्यो जो मानै म्हारो । कर जरणा सूं प्रीत भलो व्हे जासी थारो ।

—सगरांम

(स्त्री. हतियारण, हतियारी)

हतियोड़ो-भू. का. कृ.—१ मारा हुग्रा, वध किया हुग्रा, संहार किया हुग्रा. २ ग्राघात किया हुग्रा, पीटा हुग्रा. ३ ग्रस्त हुग्रा, पीड़ित ४ घायल किया हुग्रा, जख्मी, ग्राहत. ५ हटाया हुग्रा. ६ हराया हुग्रा, परास्त किया हुग्रा. ७ वंचित किया हुग्रा. ८ हताश या निराश किया हुग्रा. ९ दुःखी या परेशान किया हुग्रा. १० नाश किया हुग्रा, ध्वस्त या मिटाया हुग्रा ।

(स्त्री. हतियोड़ी)

हती—देखो 'हूंती' (रू. भे.)

हतीक-क्रि. वि.—निश्चय ही ।

उ०—सही ग्राज इग्यारसी, म्हारै हिवड़ै तीख । करसां तो ही पारणो, जो पिय मिळे हतीक ।—ग्रज्ञात

हतीको-वि. [सं. हस्तकृतः] (स्त्री. हतीकी) १ ठीक स्थान पर ।

२ प्रत्यक्ष, हाथोंहाथ ।

३ विश्वासपात्र ।

४ हाथ का रखा हुग्रा ।

५ प्रसिद्ध, मशहूर ।

रू. भे.—हथीको ।

हतीयारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—सीसड़ली मूमल री सरूप नारेळ ज्यों, हाजी रे केसड़ला हतीयारी रा वासंग नाग ज्यों, मारी साचोड़ी मूमल हालौ नी रे अमरांणै रे देस ।—लो. गी.

(स्त्री. हतीयारी)

हतूंडिया–सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा ।

हतेरण–सं. पु. [सं. हस्तकरण] १ लेख या साक्षी-पत्र, दस्तावेज, सनद ।

उ०—आखियौ जिती धर ओयण थायौ इळा, सुभोजन चाखियौ थाळ साथै । तांम्रपत्र ढाकियौ चाखड़ौ थांन तळ, हतेरण राखियौ आप हाथै ।—खेतसी वारहठ

२ आभूषण या वह वस्तु जिसको गिरवी रख कर रुपये उधार लिये जाते हैं ।

रू. भे.—हथेरण ।

हतेरी—देखो 'हथेळी' (रू. भे.)

उ०—अब कै पार लगावौ, नांतर, हंसेगे बजा के हतेरी । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यौ प्रभुग्रांन सवेरी ।—मीरां

हतोटी—देखो 'हथोटी' (रू. भे.)

हतोड़ौ—देखो 'हथोड़ौ' (रू. भे.)

हतोळियौ–सं. पु.—वह हल जिसे आदमी अकेला खींचता हो ।

हतौ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—१ सहर रै नैंकाळ बड़ौ तळाव हतौ ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ हूं बराकी धणी ! मोकियउ रोस । पांव की पांणही सुं कियउ रोस । मे य हसंती बोलीयौ, आपणइ मांन हतौ मांनस छइ सांस ।—बी. दे.

उ०—३ कांन्हड़दे नी घरणी हती, तेह भणी लिखी विनती । ऊमादे नइ कमळादेवि, जइतळदे नइ भावळदेवि ।—कां. दे. प्र.

हत्त—१ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—हुंता सज्जण-हीयड़ै, सयणां-हंदा हत्त । जउ सोहणौ साचइ होग्रइ, सोहणौ वडी वसत्त ।—ढो. मा.

२ देखो 'हत' (रू. भे.)

हत्तीबीस—देखो 'बीसहती' (रू. भे.)

उ०—महाराव छंडेव छंडेव न्है न दै न गूंड, बजंडेव डम्मरू चंडेव हत्तीबीस । संडेव छंडेव मेख पाथ बांण पाय साथ, उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस ।—बद्रीदास खिड़ियौ

हत्तोडौ—देखो 'हथोड़ौ' (रू. भे.)

हत्थ, हत्त्य—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—१ सत्य न को वळ हत्थ के, नां जंपै छळ मत्त । जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंता छत्रपत्त ।—रा. रू.

उ०—२ कित करण अकरण अन्नथा करणं, सगळै ही थोकै सरामत्थ । हा लिया जाइ लगाया हूंता, हरि साळै सिरि थापे हत्थ ।—वेलि.

उ०—३ तंवेरम कुंभ दुहाथळ तत्थ, आडांगिरि मत्थ क हत्थ अगत्थ । प्ररोहत होफर खोफ अपार, अधोफर आभ डरै असवार ।

—मे. म.

उ०—४ इंद वधू अणपार क वारिज बिस्थरी, मूंगफळी समतूळ क अंगुळी हत्थ री ।—सिवबक्स पाल्हावत

हत्थड़ौ – देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रांणै भीम न राखियौ, दत विन दीहाड़ौ ह । हय गय दैणौ हत्थड़ौ, मरणौ मेवाड़ौ ह ।—महाराजा मांनसिंह जोधपुर

हत्थळ—देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

उ०—भूख री लाय सूं उणरा रूं-रूं में काळ रमण लागौ । पछै वा तौ भली सोची नीं कोई भूंडी गाय रै माथै हौकारां रै सागै मलापनै ताचकी जकौ एक ई हत्थळ में ठायै राख दी ।—फुलवाड़ी

हत्थांण—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—मौत तुम्हारी होइयौ, मेरे हत्थांणं । जब दैत मन जांणियौ बोलै बंधांणं ।—गज-उद्धार

हत्थि—देखो 'हाथी' (रू. भे.)

उ०—१ हटी घुमाय हत्थ तैं, हुलैं घुमाय हत्थि कौ । प्रखेल अंत खेल में, भिखार दे प्रमत्थि कौ ।—ऊ. का.

उ०—२ चिरे वहित्थ हत्थि के, चिकार चूर चूर है, भिरे भटालि भाल में, भिखार भूर-भूर है । – ऊ. का.

२ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—रहि रे तूं चाली म कहि, इम अवनी-तटि नत्थि । कहितां कोडि सवा-तणउं, मांणिक आपिउं हत्थि ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ हई ! हई ! देव किसूं करिउं, रत्न ऊदालिउ हत्थि । काली किसूं कारण हतूं, आज अनेरी भत्ति ।—मा. कां. प्र.

हत्थिप–सं. पु. [सं. हस्तिप] १ हाथी का अंकुश ।

२ महावत ।

हत्थी–क्रि. वि. [सं. हस्त] हाथ से, हाथ पर ।

उ०—गैणाग ऊछाह भूल बारंगां रा वांवै ग्रंथी, महामांण रत्थां खाग खुराटां मांडीस । हंसबीर पेखवा तमासा ताळ दे दे हत्थी, तत्तथेई थेई करै आरूढै तांडीस ।—करणीदांन कवियौ

वि. स्त्री.—१ हाथ के माप वाली, हाथ की ।

उ०—एक विकराळ नौ हत्थी सिंघणी रै कारण जंगळ में इण भांत सून्याड़ न्हैगी ही ।—फुलवाड़ी

२ हाथों वाली, हाथों की ।

उ०—हरी वच्छ स्रीलच्छ तू त्रीस हत्थी । तु ही पन्नगाधीस रै सीस प्रत्थी ।—मे. म.

३ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

उ०—एक महूरत सार भड़, मांतौ ताती वांण । लग्गा हत्थी भग्गणै, या वग्गा आरांण ।—रा. रू.

४ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

५ देखो 'हत्थी' (अल्प; रू. भे.)

हत्थु, हत्थी-सं. पु.—१ मशीन या किसी औजार का वह भाग जिसे हाथ में पकड़ कर घुमाया, चलाया या संचालन किया जाता है, दस्ता, मूठ।

२ विशिष्ट प्रकार का ऐसा उपकरण या औजार जो हाथ का सा काम देता है।

३ कमठाण (राज-बेलदार) करते समय हाथ के नीचे रखने का पत्थर या ईंट।

४ थप्पड़, मार पिटाई।

५ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ नीसुं पगीसां गुर तणी, पूगउ एकु जु पत्थु। गहावेहु तउ मिमणइ, मन्नइ देविगु हत्थु।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ मातंग भोजाई पंचां नै माल-मत्तीदा खवाड़ अर कीं मूठी निवाई कर मासी हत्यो मार लियो।—फुलवाड़ी

हत्थ—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—अन करण प्रकरण अन्नया करण, सगळे ही थोके ससमरथ। हाथिया जाइ लगाया हुंता, हरि साळे सिरि थापे हत्थ।—वेलि

हत्थोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

उ०—मांस पलच्चर गीम मिल, हंस अपच्छर हत्थ। 'चंपो' चंगा पूत ज्यूं, होयगो हत्थोहत्थ।—राव चांदा री दूहो

हत्या-सं. स्त्री. [सं.] किसी शस्त्र, लाठी या किसी अन्य साधन या तरीके से किसी जीव का किया जाने वाला प्राणान्त, कत्ल, वध।

उ०—१ आज पैं'ली थूं किसी हत्यावां करी वा थूं इज जांणै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ जगदइ ए जामक जुहिय यूं हियडउ निरधार, देखउं केवडी केवडी लेवडी करवत धारि। प्रिय विण चंगि नारंग रंग ना आवइ धाउ, हिव मइं हत्या साधवी माधवी वेलि न काजु।

—जयसेखर सूरि

उ०—३ 'तो तूं हत्या, वध अर मिरतू मांय भेद कोनी कर सकै? 'हत्या अर वध करया जावै, मिरतू हो जावै।—तिरसंकू

मुहा.—हत्या लागणी=किसी की आह लगना, वध करने का पाप लगना, अभिशप्त होना।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, टळणी, टाळणी, लागणी, व्हैणी, होणी

रू. भे.—हितिया, हित्या।

हत्यारो-वि. [स्त्री. हत्यारण, हत्यारणी, हत्यारी] १ किसी का वध या कत्ल करने वाला, वधिक।

उ०—१ हा हा रावण मां हत्यारो रे, नहीं आंणी दया लिगारो। ऐसो राणी री कमाई रे, जोवसो स्वारथ नी सगाई।—जयवांणी

उ०—२ दुनिया समझैली विचारै नें हत्यारणी डोरी मूं बांधणी। हत्या सूं दुनिया बचै हंत नईं करैलो।—तिरसंकू

२ सताने वाला।

३ क्रूर, निर्दयी।

उ०—तूं हाल 'जात हीण' अर 'वरगहीण' समाज री बात 'यूटोपिया' मान'र 'असमांनता' री हत्यारी आंधी रै दुख अर पीड़ सूं दूर है।—तिरसंकू

रू. भे.—हतियारो, हतीयारो, हथियारो, हितियारो, हित्यारो।

हथ—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ आज सहेली दंत को, चूड़ो पहरयो हथ। हरीया सिंभ सवेर में, चली अडोळी वथ।—अनुभववांणी

उ०—२ हुय चोप कोड चमंड हयं. कर कोड नवै कतियांण कथं। खट कोडलखै ब्रहमांण खडी, नव आखइ लोवाळियाळ लडी।

—पा. प्र.

उ०—३ ऊठि अ गा बोलणा कांमणि आखै कंत, अै हल्ला तो ऊरां हूंकळ कळळ हुवंत। हूंकळे सीधवो वीर वळहळ हुवै, वरण कजि अपछरां सूरिमां वह वुवै। अिजड़-हथ मयंद जुध गयंद-घट्ट तोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अढंगा बोलणा।—हा. झा.

उ०—४ वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ। ज्यां सधिया अठजोग, त्यां किया कौटक तीरथ।—र. ज. प्र.

मुहा.—हथउधार=देखो 'हाथउधार'।

हथकंडो-सं. पु. [ब. व. हथकंडा] १ किसी कार्य में दिखाई जाने वाली कुशलता, हस्तकौशल।

२ किसी कार्य को करने में बरती जाने वाली चालाकी या धूर्तता।

३ साधन, स्रोत।

उ०—म्हे तो आ-भी करां हां उस्ताद! थै जांणो कोयनी, अै भी इण रा हथकंडा है। हूं तो पांच-सात संस्थावां नै जांण-बूझ'र गळै घालियै राखूं हूं।—वरसगांठ

रू. भे.—हथखंडो।

हथकड़ी-सं. स्त्री. [सं. हस्तकट्टक] शासनिक अधिकारी द्वारा अपराधी को पहनाई जाने वाली लोहे की कड़ी या जंजीर।

उ०—१ सिफाईडा वयूं ही रायफलां में रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यूं ही सांसै में सागीड़ा सिक्या अर सीझ्या। हथकड़ी देखतां ही आकळ-बाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—२ नित नूंवा ऊंधा-पाधरा कांनून निकळै। जे इण देवतावां नै टैमसर अर मरजी परवांणै धूप नीं खेवो तो हथकड़ियां त्यार। अबै आप इज विचार करो कै केड़ो'क मजो है अबार विणज वैपार में।—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—हतकड़ी, हाथकड़ी।

हथकती-सं. स्त्री. [सं. हस्तकृति] १ हाथ की बनाई हुई वस्तु, दस्तकारी।

२ हाथ की लिखी प्रति या पुस्तक।

हथलंडो—देखो 'हथकंडो' (रू. भे.)

हथखरच—देखो 'हाथखरच' (रू. भे.)

उ०—वादसाह कही—दस हजार री जागीर पावौ छौ, सागे तीन हजार रोकड़ हथखरच रा ही पावौ छौ, तौ ही निबाह क्यूं ना हुवै ?—जलाल बूबना री बात

हथखारौ-वि.—१ हाथों का खार खाया हुआ, कुपित, झल्लाया हुआ।

उ०—ताहरां ईंदा छै सु सारा ही हथखारै सांतरा थका रहै। युं करतां छव मास हुवा।—नैणसी

२ गुस्सैल, जिसके हाथ की चोट भारी पड़ती हो।

हथड़ौ—देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—करहा काछी काळिया, भुइं भारी घर दूर। हथड़ा कांइ न खंचिया, राह गिलंतइ सूर।—ढो. मा.

हथजोड़ौ-वि.—सदा हाथ जोड़ कर खड़ा रहने वाला, खुशामदी, चाटुकार।

उ०—हथजोड़ा रहिया हुवै, गढवी काज गरथ। ऊ 'राजड़' छत्र-धारियां, गयौ जोड़ावण हत्थ।—महाराजा गजसिंह जोधपुर

हथडौ—देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

हथणांपुर, हथणाउर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—१ इण महांमुनि ना ए अधिकारा, नित सांभलतां ह्वै निसतारा। एण भरतखेत्र चउथा आरा, हथणाउर सुरपुर अणु-हारा।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ किता तें सेवग सारण काज, रचै हथणांपुर पंडवराज। जलंती उत्रा ग्रभ (गब्भ) मझार, अनंत परीखत संत उबार।

—ह. र.

हथणी-सं. स्त्री. [सं. हस्तिनी] १ सरोवर आदि की सीढियों के बगल में तल से ऊपर तक क्रमवार बना हुआ चबूतरा।

२ मादा हाथी।

उ०—तिल मातर भीत न बीत तणी, थमि हालत अग्रकियां हथणी।—मे. म.

३ हरिजन जाति की स्त्री।

रू. भे.—हथिणी, हाथणी, हाथिणी।

हथणौ, हथबौ-क्रि. स. [सं. हस्त+रा. प्र. णौ.] १ हाथ में पकड़ना, हाथ में लेना।

२ हस्तगत करना, अधिकार में करना।

३ अपने प्रभुत्व या संरक्षण में लेना।

४ दूसरे की वस्तु पर बलात् या धूर्त्तता से अधिकार कर लेना, हथिया लेना।

५ देखो 'हतणौ, हतबौ' (रू. भे.)

उ०—रमां हुतासणी सरणि रहाए, हथि रांमण लिय छांह हराए। छाया हरण हुवा दुख छाया, माया अवसि मोह वसि माया।

—सू. प्र.

हथणहार, हारौ (हारी), हथणियौ—वि०।

हथिओड़ौ, हथियोड़ौ, हथ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हथीजणौ, हथीजबौ—कर्म वा०।

हथियाणौ, हथियाबौ—रू० भे०।

हथनाळ, हथनाल, हथनाळि, हथनाळी-सं. स्त्री.—१ हाथ की बन्दूक।

उ०—१ कुहक बांण हथनांळ, विसख बरखै तिण वारां। अति सांमण वद्दळां, जांण घण मत्तौ धारां।—रा. रू.

उ०—२ हथनाळ दगण आरब हसंम, मांहुत चढियां मेंगळां। देवळां तरा घर करि दुगम, जंगम जूथ बीझाजळां।—सू. प्र.

२ देखो 'गजनाळ'।

उ०—१ सबलै संग्रामै भिड़ंता भूप भूपाळ। अति राता ताता वहै, गोळा हथनाळ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ सहंस बार गज धुज अनि साथी, हथनाळियां मुहरं लख हाथी, जोड़ जंबूर रहकळा जमला, इसी तरह दोहूं दिस अमला।

—सू. प्र.

उ०—३ फौजां आगै आतस चालै जै। जंवरजंग नाळि, किलकिला नाळि, जंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतरनाळ, कुहकबांण, रांम चंगी कई भांति भांति रा आराबा रहकूए घाती आवै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—४ हथनाळि हवाई कुहकबांण यांकौ सोर आघात होण लागौ वीरजु वडा वडा जोधा। त्यांकी वीर हाक होण लागी।

—वेलि टी.

हथपाह—देखो 'हथबाह' (रू. भे.)

उ०—हाफा पीथळ हाक हक हथपाह हड़ंदै। बाघण व्याई वेढ मैं कुण दूर करंदै।—पा. प्र.

हथफूल-सं. पु. यौ. [सं. हस्त+पुष्प] स्त्रियों का एक पुष्पाकार आभूषण विशेष जिसको हथेली के ठीक पृष्ठ भाग पर पहना जाता है। इसका एक सिरा कलाई से तथा दूसरा अंगूठियों से जुड़ा रहता है।

उ०—१ हस्ती दांत री चूड़ौ। मजीठ सूं रंगियोड़ौ। बिलियां रै धकै चांदी री पुणचियां। हाथां चांदी री हथफूल।—फुलवाड़ी

उ०—२ वंगड़ी बाजूबंद चोळ रंग चूड़ला। फबि पहुंची हथफूल छाप मुंदड़ी छला।—सिववक्स पाल्हावत

हथफेरी-सं. स्त्री.—हाथ की सफाई, तांत्रिक क्रिया।

उ०—फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणी माथै हथफेरी करणी पैलाई।—दसदोख

हथबाह-सं. पु.—शस्त्र प्रहार की कला।

उ०—बीर अवसांण केवांण उजबक वहै, रांण हथबाह दुयराह रटियौ। कट झलम सींस बगतर वरंग अंग कटै, कटै पाखर सुरंग तुरंग कटियौ।—गोरधनजी बोगसौ

रू. भे.—हतबाह, हतवा, हतवाह, हथपाह, हथवा, हथवाह।

हथबोलणौ-सं. पु.—१ शादी के बाद आगन्तुक नव वधू के प्रथम परिचय निमित्त अदा की जाने वाली एक रस्म जिसमें घर की सब

[illegible] पर वधू के साथ भोजन करती है।

उ०—तद् [illegible] साम् रै पर्गा लागी, बीजी मामुवां रै पर्ग लागी। सो [illegible] लागी [illegible] रही। हथबोलणं री जीमण तयार हुवो। [illegible] पाछ आय बैठी। सो सोरां भरमल री रूप [illegible] रही [illegible] गई।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ [illegible] के लिये बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

उ०—[illegible]। पंतरपट कर महेल्यां हथबोलणं री कसार [illegible] घणी [illegible]। ताहरां भरमल ग्ररज होळै सै कीवी—'जो [illegible] कर विराजै तो मोटी करै।'

—कुंवरसी सांखला री वारता

हथमार, हथमारो-वि.—अपने हाथ से दूसरों का सिर काटने वाला, [illegible], ग्राघात या प्रहार करने वाला।

उ०—१ मो लिख हथमारोह, वेगा वेग वतायदे। तज दूं घर [illegible], नांनी हूं रहसूं नहीं।—पा. प्र.

उ०—२ आप पाछो ग्रावतो मोहनसिंहजी कही—भाभीजी, हथमारो जावै, सो पहोंच साळै रै दीवी सो दोय बटका हुवा अर तरवार मांही नीसर थांभै में लागी सो पत्थर रो टुकड़ो दूर जाय पड़ियो।—पदमसिंहजी री वात

स. पु.—जल्लाद।

उ०—१ राजाजी रो ग्रादेस मिळतां ई हथमार अर राज रा ग्रसवार वर्णा रा जूता हाथां में लै लिया।—फुलवाड़ी

उ०—२ सूळी चढ़ावतां हथमार उण नै मन री कोई इंछा दरसावण सारू पूछ्यौ, तद वो कह्यौ—म्हारै पड़ोसी सेठां रो फरजन साथै लेय नैं मरणो पड़ै, इण रो अवस पिछतावो है।—फुलवाड़ी

हथमेळो—देखो 'हथळेवो' (रू. भे.)

उ०—हथमेळा रै हाथ, घरै नाळेर हसती, सलभ सदा मनसमी, [illegible] पर तणी वसनी।—अरजुण जी बारहठ

हथमोड़ो—देखो 'हथबोलणो'।

हथयार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

उ०—ग्रादमी १२०० रांणी ग्राय मांम्ही लड़ाई कराई छै। लोकां नूं बाहुरारै छै. जणी जणी पाछी लागी हथयार बांधा थकां।

—राजा नरसिंघ री वात

हथरस—देखो 'हथरस' (रू. भे.)

हथलो—१ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—महाराज [illegible] के राव। हथलूं पहल कीए बीजळूं के घाव।—सू. प्र.

२ देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

हथलस—देखो 'हतरस' (रू. भे.)

हथलेवो—देखो 'हथळेवो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] तिण ठाम, हथळेबो वेगो मंगाय। साथ पंडित ईम उचरई, ब्रह्माण देवतणां भुणकार।—बी. दे.

हथळेव—देखो 'हथळेवो' (रू. भे.)

उ०—१ कंवर वांण जमूर ग्रराति कढि, हायां किये जमदढि हथळेव। फिरि फिरि अफिरि किये सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव।—कल्यांणदास राव

उ०—२ अंघूळे ग्रारे करी, सत वात सुणांणां, कमध प्रणावै 'कूपसी', धीय आप घरांणां। गत पांमें वैकूटग्या, जेकार जपांणां, वीरां जद दीधा वचन, हथळेव छुडांणां।—वी. मा.

हथळेवड़ो—देखो 'हथळेवो' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—ग्रादि विस्नु नइं ग्रादि माया, हूम्रा ग्रंचळ गंठि। मघु-पुरस हथळेवड़ो, वरमाळ वीठळ कंठि।—रुकमणी मंगळ

हथलेवो-सं. पु. [सं. हस्त+लग्न] १ विवाह में वर द्वारा वधु का प्रथम बार हाथ पकड़ने का संस्कार, पाणिग्रहण।

उ०—१ एक गढ मांहे पधारो तरै कहिजो—'सहर उमरकोट सारीखो नहीं। एक सोनगरी सूं हथळेवो जोड़ो तरै कहीजो—सोढी सारीखो सोनगरी रो हाथ नहीं।—नैणसी

उ०—२ वसुदेव देवकी सूं ग्राहमणै, वही परसपर एम कहि। हुए हरण हथलेवो हूम्रो, सेस संसकार हुवइ सहि।—वेलि

उ०—३ हरीया चोरी चहुं दिसां, सत व्रत रोप्या थंभ। हरि हथळेवो हरख सूं, किरत कमाई कंभ।—ग्रनुभववांणी

क्रि. प्र.—छुडाणो, छूटणो, छोड़णो, जुड़णो, जोड़णो, जोड़ाणो।

मुहा.—१ हथळेवो जुड़णो=विवाह होना, रिश्ता होना।

२ हथळेवो जोड़णो=विवाह करना, पाणिग्रहण संस्कार करना।

३ हथळेवो छूटणो=वैवाहिक रश्म पूरी होना।

२ उक्त ग्रवसर पर गाया जाने वाला लोक गीत।

३ उक्त ग्रवसर पर वधु के सम्बन्धी व मित्र-गणों की तरफ से दी जाने वाली भेंट।

४ हाथ पकड़ने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—हतळेवो, हथळेवो, हथळेव।

ग्रल्पा.—हथळेवड़ो।

हथवड़ो—देखो 'हथोड़ो' (रू. भे.)

उ०—ताहरां ईयै तिमरलिंग दोनां ही हाथ सो दोय हथवड़ा संवाया। संमाय नै जिकै भांत कूंभार रा पग गार मांहे जावै, तिकै भांत, डांडै सूधा घणा मांहे हाथवड़ा जावै छै।

—तिमरलिंग री वात

हथवा—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—पड़िय सिर 'पाल' धरा न पड़ै, हथवा हथ साथ्रव सेन हुड़ै। लग ग्राभ भुजा घड जंग लहै, मुम्र मार बकै पिंड खेत महै।

—पा. प्र.

हथवार, हथवाह-वि. [सं. हस्तं+वृणतीति, हस्तवारः (री)] वह गाय या भैंस जो एक ही व्यक्ति के हाथ से दुहाने की ग्रादी हो गई हो।

रू. भे.—हतवार, हतवारू ।

हथवावो-वि.—१ घात करने वाला, प्रहार करने वाला, घातक ।

२ वधिक, मारने वाला ।

रू. भे.—हथवाहो ।

हथवासो-वि. [सं. हस्त+वाह] ढाल पकड़ने का हत्था ।

उ०—१ सोनही री फूलां नकसी फूलां मुखमल गादी घातियां, सांवरा हथवासां, वुलगारी डाबां सहित ऊग्रांस राजानां रा हाथां री उहांग्रोज वड़ां नें ग्रा पीपलांरी ग्रां साखा सूं नागलिग्रां ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ ग्रागे ग्राय साथ रै दै हथवासै ढालां नें उतर पड़िया, सारो साथ मारियो।—नैणसी

रू. भे.—हथवाहो, हथोसो ।

हथवाह—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—१ संत जरण तरण चख क्रपा रुख साहरै, साह रै विरद भुजडंड सिधाळा । वीस भुज भांजरण समर हथवाह रे, वाह रे रांम ग्रवधेस वाळा ।—र. ज. प्र.

उ०—२ हे वाभीजी सा ग्रापरा गोखड़ा सूं ग्रापरा देवर री हथवाह तरवाह वहती देख लेराग्रो वाभीसा ग्राप खरच गिणता हा वो म्हारो पति सीलै छै ग्ररथात् हाथी रै चैंवर्च (होदे) पर तरवार वाहै छै ।—वी. स. टी.

हथवाही-सं. स्त्री.—प्रहार करने की क्रिया या भाव ।

उ०—कोई लड़ाई में पंचा में हथवाही अधिक कर ग्रावै तो उणां नूं इनांम देणो ।—नी. प्र.

हथवाहो-वि.—१ मारने वाला, शत्रु ।

उ०—तद भूणसिघजी कयो, 'भाभीजी, हथवाहो जीवतो जावै है ।—द. दा.

२ देखो 'हथवासो' (रू. भे.)

हथसंकळ, हथसंकळी, हथसांकळ, हथसांकळि, हथसांकळी-सं. स्त्री.—[सं. हस्त+श्रृंखला] हाथ का ग्राभूषण विशेष । (व. स.)

उ०—जदि राजा कड़ा मोती कंठसरी, दुगदुगी, जनेऊ, हथसांकळां सिरपेच, कड़ीयां री तरवार, ढाल कटारी, खंजर तरगस, वांण, सरव वगसीया ।—जगदेव पंवार री बात

हथसाळ-सं. स्त्री. [सं. हस्ती-शाला] हाथियों को रखने का स्थान ।
(उ. र.)

हथाई-सं. स्त्री. [सं. ग्रस्थाई] १ गांव के मध्य का वह स्थान या जगह जहां गांव के व्यक्ति फुरसत में बैठकर इधर-उधर की बातें करते हैं, बैठक, चौपाल ।

उ०—१ रात रा हथाई में इण बात री ईज चरचा छिड़गी ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ भरी हथाइयां बैठा बाईसा रा बाप, कागदियो दीधो वांरै हाथ ।—लो. गी

उ०—३ जसवंतजी चांग गया । ग्रागै मेर मांणस ३०० तथा ४०० हथाई बैठा था ।—राव मालदेव री बात

२ वार्तालाप, बातचीत, गपशप ।

उ०—१ रात री हथाई ठाकरां रै जमांनै री जुगती वण रैयी ही ।—दसदोख

उ०—२ वगत वटावा हेत, खेत किरसांणां तांई । वन मैं पसवा प्रेम, हमीरां ग्रांम हथाई ।—दसदेव

उ०—३ सैल सपाटां नार, नहीं नर होड हथाई । पर पुरखां री पांत, जुड़ गिणै जांमी भाई ।—नारी सईकड़ो

क्रि. प्र.—करणी, जुड़णी, बैठणी, बैसणी, होणी ।

हथायली-सं. स्त्री.—१ हल के ऊपरी छोर की लकड़ी ।

२ कुम्हार का चाक घुमाने का काष्ठ का डंडा ।

रू. भे.—हतायली ।

हथाळि, हथाळिय—देखो 'हथेळी' (रू. भे.)

उ०—१ उणां हथाळियां रै मूंडै ग्रमल जमायो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हथाळियां रा छाळां नै देखता सिसकारियां न्हाकता ।
—फुलवाड़ी

हथाळियो-वि.—१ हथेली जैसा ।

२ हथेली के ग्राकार का ।

३ हथेली में समाने योग्य ।

उ०—सू ऊंठ किण भांत रा छै ? थापवीतळी रा, सुपबी नळी रा, नाळे रा, गोड्यां रा बीलफळ इरकी रा, हथाळियै ईडर रा, ससा सेरी वगलां रा.........।—रा. सा. सं.

हथाळी—देखो 'हथेळी' (रू. भे.)

उ०—१ टुकड़ा करि करि ग्रर हिंदुवां नूं हेक हेक पाघड़ी री टुकड़ो ग्रर गंगोदक हथाळी मांहै दिया ।—द. वि.

उ०—२ फेरां रै पै'ली हथळेवा मैं बींदराजा रो हाथ कांई झिलियो, जांणै गिगन रा नवलख तारा बींदणी री हथाळी मैं ग्राय खिरिया ।
—फुलवाड़ी

हथाळो-सं. पु. [सं. हस्त+ग्रालुच्] १ वीर, योद्धा ।

उ०—चूंडा वीरम सळख, साख तेरह ग्रजुग्राळा । छाडा तीड़ा छात्र हुग्रा, कमधज्ज हथाळा ।—र. वचनिका

२ दानी, दातार ।

हथि—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—घन दिहि सइ हथि थापिय, वापी ग्र वर ग्रारांमि । मणि कण घण संपूरिय, पूरिय द्वारका नांमि ।—जयसेखर सूरि

हथिग्रार—देखो 'हथियार' (रू. भे.) (गु. रा.)

हथिणाउर, हथिणापुरि, हथिणापूर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—१ तिण काळै नै तिण समै, जंबू द्वीपै ही भरत क्षेत्र मांय । हथिणाउर नगर हुंतो, धन धांनै ही समृद्ध कहाय ।—जयवांणी

उ०—२ ग्रह दैवट्ट वसि तेवि पंच ए पंडव वणि चलिय ।

हथिणापुरि मांहि मुरसावइं, नित माल पीव।—शांतिभद्र सूरि

हथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हथिणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—हथिणापुरं मझार बन मभं, उतरया हो ग्यांनी बुध सारं।
—जयवांणी

हथिनाळ—१ देखो 'गजनाळ'।

उ०—नफर होर नगिनां मझार, धुर चडै गरब हथिनाळ धार। गजमस्त तेजक बंध गाधि, बहु बीजळ मूंढाडंड बांधि।—सू. प्र.

२ देखो 'हथनाळ' (रू. भे.)

हथियाणो, हथियाबो—देखो 'हथणो, हथबो' (रू. भे.)

हथियाणहार, हारो (हारी), हथियणियो—वि०।

हथियायोड़ो—भू० का० कृ०।

हथियाईजणो, हथियाईजबो—कर्म वा०।

हथियायोड़ो—देखो 'हथियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हथियायोड़ी)

हथियार-सं. पु.—१ वह चीज जिससे किसी पर प्रहार किया जाय, अस्त्र शस्त्र।

उ०—१ कवचइ जीण, कमांण-गुण, भीजइ सब हथियार। इण रुति साहिब ना चलइ, चालइ निपट गिमार।—ढो. मा.

उ०—२ काम क्रोध को फेंक के रे, सील लियै हथियार। जीती मीरां एकली रे, हारी राणां की धार।—मीरां

उ०—३ म्हल्या पदचार सवार रथां, हथियार छतीस प्रकार हथां।
—मे. म.

२ औजार।

३ शिश्नेन्द्रिय, शिश्न। (बाजारू)

४ हाथी का शिश्न। (,,)

रू. भे.—हथयार, हथिग्रार, हथीग्रार, हथीयार, हथ्यार।

हथियारबंद-वि.—अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित, सशस्त्र।

हथियारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—हरिजन हथियारा है हुसियारा, न्यारा हुय नाचंदा है, रमणी में राची कुछ में काची, हांजी हुंग हरंदा है।—ऊ. का.

हथियोड़ो-भू. का. कृ.—१ हस्तगत किया हुआ, हाथ में पकड़ा हुआ. २ दूसरे की वस्तु पर बलात् या कौशल से अधिकार किया हुआ, हथियाया हुआ. ३ अपने प्रभुत्व या संरक्षण में लिया हुआ। ४ अधिकार में लिया हुआ।

५ देखो 'हथियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हथियोड़ी)

हथी-सं. स्त्री.—१ कपाट के मध्य लगा हुआ पकड़ने का हत्था।

वि.—१ हाथी वाला।

२ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

हथीग्रार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

उ०—हरि हथीग्रार हलावंता, मुरखह मंधी वट्टि। तै मुख-तीयइं ग्रावि जै, नाकि घणा जिणि घट्टि।—मा. कां. प्र.

हथीको—देखो 'हतीको' (रू. भे.)

उ०—कीजै मया मुझ सेवक कीजै साचो, कीजो मत ग्रवर हथीको।—ध. व. ग्रं.

हथीड़ो, हथीडो—देखो 'हाथी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—सूज हर, मिळै ग्रध्रियांमण साज सूं, जेत खंभ ग्राज रो किला जेरै। वारण लियण हेरै नहं बिसातो, हथीड़ा दूकळां खळां हेरै।
—राजा उम्मेदसिंह सिसोदिया रो गीत

हथीणाउर, हथीणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—'राजग्रही' वैभारगिरी, यात्रा करी संघ साथ। 'हथीणापुर' जिन वांदीया, सांति कुंथु ग्ररनाथ।—साह लाधो

हथीयार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

उ०—सूरातन हथीयार गहि, मारि किसी कूं नांहि। मारै तो मन मोह कूं, पांच वसी हुय जांहि।—हरिरांमदासजी महाराज

हथूंडिया-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

हथूंडियो-सं. पु.—राठौड़ वंश की हथूंडिया शाखा का व्यक्ति।
(बां. दा. ख्यात)

हथेरण—देखो 'हतेरण' (रू. भे.)

उ०—तिमणियै रै बाद ग्राई वाड़ली, कातरियां नै कड़ोलियां री वारी। क्यूंकै पेट मैं तो भूखो रै'बोजे नीं ग्रर विना हथेरण सेठ लोग पेढी माथै ई चढण देवै नहीं।—रातवासो

हथेळी-सं. स्त्री. [सं. हस्ततल प्रा. हत्थतल] कलाई ग्रौर ग्रंगुलियों के मध्य का कोमल भाग, हस्ततल, करतल।

उ०—छोरा कंवेला रात नैं पवन ग्रापरै कमरै मांय कोई छोरी लियायो हो। म्है झट देणी सी उठ र उण मूंडै माथै म्हारी हथेळी लगा दीनी।—तिरसंकू

मुहा.—१ हथेळी माथै जांन राखणी=जान हाथ में रखना, जोखिम का काम करना।

२ हथेळी माथै थुकाणी=भारी खुशामद करना, ग्रत्यन्त प्यार करना।

३ हथेळी माथै राखणो=बहुत सावधानी से रखना, बिल्कुल कष्ट न देना।

४ हथेळी में खाज हालणी=हथेली में खुजलाहट होना, द्रव्य प्राप्ति की सूचना होना।

५ हथेळी में सरसूं उगाणी=बहुत शीघ्रता करना।

६ हथेळी रो छाळो=ग्रत्यन्त प्रिय।

७ हथेळी लगाणी=सहारा देना, हां में हां मिलाना, चापलूसी करना।

रू. भे.—हथाळि, हथाळिय, हथाळी, हाथाळो।

मह.—हथाळो, हथेळो।

हथेळो-सं. पु.—१ हल की वह लकड़ी जो हल चलाते समय हाथ में

रहती है।

२ देखो 'हथेळी' (मह; रू. भे.)

हथोड़ी—देखो 'हथोड़ो' (अल्पा; रू. भे.)

हथोड़ो-सं. पु. [सं हस्त-घोट:] स्वर्णकार, लौहार, सुथार आदि कारीगरों के काम आने वाला एक मुष्ठिकाकार ठोस लोहे का उपकरण जिसके ठीक मध्य में एक बड़ा छेद होता है जिसमें लकड़ी या लोहे का (बेंट) दस्ता लगा रहता है। वि. वि.—यह उपकरण चोट मारने के काम आता है। इसकी बनावट आवश्यकतानुसार छोटी बड़ी होती है।

रू. भे.—हतोड़ौ, हत्तोड़ो, हथवड़ो, हथोड़ो, हाथोड़ो।

अल्पा;—हथोड़ी।

हथोटी-सं. स्त्री. [सं. हस्तकृति] १ किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।

२ हस्तकौशल, दक्षता, निपुणता।

रू. भे.—हटोटी, हतोटी,

हथोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

उ०—हर्स दीध आसीस आणंद हूंती, अखै भाग सोभाग हो पुत्रवंती। जुवा खेल जीता हथोहत्थ जूटा, खुमै छेहड़ा तेहड़ तांम खूटा।—सू. प्र.

हथौसो—देखो 'हथवासो' (रू. भे.)

उ०—सोनै-रूपै रा चांद-फूल, मुखमल री गादी, सांवर रा हथौसा, बोयदार री डावां कसा इण भांत री ढालां सू उणहीज दरखतां री साखां सूं नागळीजै छै।—रा. सा. सं.

हथ्थ—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहु अकयथ्थ। जिए चडघा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढो. मा.

हथ्थड़, हथ्थड़ौ—देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ० —ऊलवै सिर हथ्थड़ा, चाहदी रस-लुब्ध। विरह-माहूघण ऊमटघउ, थाह निहाळइ मुध्ध। —ढो. मा.

हथ्थळ—१ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

२ देखो हाथळ' (रू. भे.)

उ०—देख गुडाल्यां हालै उण दिन, डूंगर डिगणी चहीजै। ओड़ी हथ्थळ मेलै, रे बेटा, आभौ झुकणौ चहीजे।—चेतमांनखा

हथ्थहेक-स. स्त्री.—कटारी। (ना. डिं. को.)

हथ्थार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

हथ्थी-वि. स्त्री —हाथों वाली।

उ०—भवानी नमौ जोगनी जुथ्थ सथ्थी, भवानी नमौ भैरवी वीस हथ्थी।—मे. म.

हथ्थां-क्रि. वि.—हाथों से, हाथ से।

उ०—हकाळत वीस हथ्थां नवहथ्थ। रूड़ा सुखपाळक हालत रथ्थ।
—मे. म.

हद-सं. स्त्री. [अ.] १ आखिरी किनारा, सीमा, छोर।

उ०—१ सु पातसाह महिपै नूं राख अर हद ऊपर सांम्हो आयो। लड़ाई हुई पातसाह सूं :—नैणसी

उ०—२ नागोर सुं तरफ दिखणाद गांव कोणेचो कोस १८ मेड़ता री हद लागै।—नैणसी

उ०—३ पाखती भाई बंध छाजू रा भोमिया था, तिणां रा चोर कसबा नूं लागता सु छाजू मनह कराया। वार वार चोरी कीवी थी। तिणां नूं आपड़ नै मारिया। सु उठा सूं ही हद पड़ गई।
—नैणसी

उ०—४ अगम निगम दोई जांण न पावै, हद वेहद के पारा। केवल पद कथणी मैं नाहीं, सब्द थकेगा सारा।
—हरिरांमजी महाराज

मुहा.—१ हद करणी=किसी बात या विषय को चरम सीमा तक पहुँचाना। सीमा से बाहर का कार्य करना।

२ हद होणी=आवश्यकता से अधिक होकर रहना।

२ मर्यादा, सीमा।

उ०—१ साहां ऊथप थप्पणी, पह नर नाहां पत्त। राह दुहूं हद रक्खणो, 'अभैसाह' छत्र पत्त।—रा. रू.

उ०—२ आदर अणी धणीं छळि आया, सेहर सजळ जिसा दरसाया। उदियांभांण प्रांण अणमायो, औ किर हद न जवन सिर आयो।—रा. रू.

३ तारीफ, साधुवाद।

उ०—हद हाथां जी हद हाथां, है लंक ग्रवी हद हाथां। सत्र भंज जुधा समराथां, गुण राखण विसुधां गाथां। जी हद हाथां।
—र. ज. प्र.

४ तह, परत।

५ औकात।

वि.—१ अत्यन्त, बहुत, खूब।

उ०—१ इण में थारी कुछ चूक नहीं छै, आ सूरत मोमूं साह सूं हुई सो हद नरमाई भारी रकमाई छै।—नी. प्र.

उ०—२ असि धावक आविया, सस्त्र मांजिया सताबी सांणां चढिया सुक्र, फूल झड़िया हद फावी।—मे. म.

२ असाधारण, विशेष।

उ०—१ हद डांण म्रिगां अभिमांण हरै, प्रलंबी कुरबांण उडांण परै।—मे. म.

उ०—२ हद चांटी हालतां हवा हालत रद होवै। तवि जूनौं सपतास, जिकां कांनी रवि जोवै।—मे. म.

३ भयंकर, भीषण।

उ०—जरदाळ घण पखराळ जुड़ि विहंड खाल नारंग वहै। हद रूरां इसौ जुध विहद हूं, करां झोकी सूरिज कहै।—सू. प्र.

४ पूर्ण, पूरा।

उ०—[illegible] करै [illegible] राव। उर वधत [illegible] दमाम। बद्ध करत नाटक अगर [illegible] नाव, हद अवर [illegible] भेट दै बहु भाव।
—र. रू.

रू. भे.—हंद, हदि, हदेस, हद्द, हद्दि।

हदरी-सं. स्त्री.—कंपन, थरथराहट।
उ०—[illegible] लुगाई-टाबर धूजता-कांपता दरसण करै, [illegible] हदरी मारै।—दसदोख

हदला-सं. स्त्री.—वात, पित्त, कफ आदि नाशक एक ओषधि विशेष।

हदपन-सं. पु.—मन्दिर, देवालय। (ह. नां. मा.)

हदनीगंभर-सं. पु.—समुद्र, सागर।

हदफ-सं. पु. [अ.] १ लक्ष्य, निशाना।
उ०—[illegible] कर सोगुणा जोस मैं आवै छै। तीरमदाज बंदुकजी हदफां ठनारै छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात
२ वह गोलाकार निशान जिस पर निशाना सीखने के लिए गोलियां चलाते हैं, चांदमारी।
उ०—[illegible] हुवा थका वाह करै छै। जिण भांत बाग मांहि हदफ री चोट घारै ईण भांत ईण वेळा मैं चोप घारै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

हदवंत-सं. पु. [अ. हद+सं. वंत] देश, मुल्क। (अ. मा.)

हदवाट-क्रि. वि.—सीमा की ओर, सीमा पर।
उ०—दावड़ी औरठै परणायो। जिण कारण सूं नैणसी वाड़मेर हदवाट मेलियो वाड़मेर ओळ रै कगार रै काठ रा किवाड़ हुता जिकै आण जाळोर गढ री पोळ चढाया।—वां. दा. ख्यात

हदवाळो-वि. [अ. हद+सं. आलुच्] मर्यादा में रहने वाला।

हदवि, हदवी-क्रि. वि. [अनु.] धीरे-धीरे, शनैः शनैः।
उ०—सीरांम चरण महाराज इसी दीवी है पदवी, जिका बताऊं थनै हमैं तो हदवी हदवी। हदवी या हदवी हमैं करो भजन रा ढेर, ज्यूं हो दूजी नहीं तीन लोक मैं फेर।—अग्यात

हदसाही-सं. स्त्री.—बादसाहत, राज्य।

हदि-सं. पु.—१ संसार।
उ०—१ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम सनेह। बेहद [illegible], अति आनंद अछेह।—अनुभववांणी
उ०—२ हदि बैठा हदि की कहै, वेद पुरांनां वाचि। हरीया वेहद बावरा, रह्या रांम सूं राचि।—अनुभववांणी
उ०—३ सहज का भेद कोई संत जांणै, हदि कूं जीत वेहद मांणै। सहज का [illegible] सहज आसा, सहज मैं खेलणां सहज पासा।
—अनुभववांणी

२ अज्ञान।
उ०—१ हरि छाडि वेहद गया, हरीया रांम हजूर। आनंद उजाळा [illegible], निसा न ऊगै सूर।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया वेहद के घरां, नही हदि की आस। संसा सोग न ताप न, नांव निरासा वास।—अनुभववांणी
३ असत्य, झूठ।
उ०—१ हदि का रता हदि मैं, वेहद का वेहद। हरीया वेहद पाय कै, हदि भई सब रद।—अनुभववांणी
उ०—२ हदि सूं जांणै दूरि हरि, वेहद ठावो ठीक। हदि वेहद की सुधि हुय, हरीया रांम नजीक।—अनुभववांणी
उ०—३ जनहरीया हम कुं कह्या, सतगुरु अैसा दाव। हदि का पासा छाडि दै, वेहद सांम्हा आव।—अनुभववांणी
४ मृत्युलोक।
उ०—वेहद कुं पुहचै नहीं, हरीया हदि के लोक। तन तौ माटी मैं मिल्यौ, मनग्यौ सांसै सोक।—अनुभववांणी
वि.—१ सांसारिक, लौकिक।
उ०—हरीया हदि आसामुखो, ताहि न करीयै हेत। वेहद वास निरास घर, ताकुं तन मन देत।—अनुभववांणी
२ अज्ञानी।
उ०—वचन सुन्या वेहद का, हदि न आवै दाय। हरीया सुन्य मैं सांईयां, तां सु ध्यांन लगाय।—अनुभववांणी
३ देखो 'हद' (रू. भे.)

हदियौ-सं. पु.—सीमा पर गड़ा हुआ पत्थर।
वि.—लौकिक।

हदीस-सं. स्त्री. [अ.] १ नई बात, नई खबर।
उ०—तन मन सौज संवार सब, राखै बिसवा बीस। सो साहिब सुमिरे नहीं, दादू मांन हदीस।—दादूवांणी
२ हिन्दुओं में 'स्मृति' ग्रन्थ जैसा मुसलमानों में मुहम्मद साहब की कही हुई बातों का संग्रह-ग्रन्थ।
उ०—जुमलै तीन ईदगा। हदीस में कहै है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी।—वा. दा. ख्यात

हदेस—देखो 'हद' (मह; रू. भे.)
उ०—रूपजी वांस री हदेस रै फळसै छै।—नैणसी

हदोहद्द-वि.—हठपूर्वक।
उ०—निहाव सबद्दां चंडां सोक नीर कूप नद्दां, मद्दां छाकां दुरद्दां छक्की फरकै समाथ। कै भड़ां सधीरां जंग छकावै जरद्दां कोधां, हदोहद्दां मरद्दां करद्दां झलै हाथ।—सुखदांन कवियौ

हद्दंबिहद्दं-वि.—अपार, असीम।
उ०—जिकै वार बोलै वडा पात जद्द, वडा वंस वाखांण हद्दं-विहद्दं। छुटै अम्रताधार अप्पार छंद, चवै वंस वाखांण वै भांण चंदं।—सू. प्र.

हद्द—देखो 'हद' (रू. भे.)
उ०—१ पड़ै निहाव भेरि, घाव उल्लटा पभंगयं। महा समुद्र लोप हद्द जांण लीध मग्गयं।—रा. रू.

उ०—२ फिरंग जनां री फौज मैं, 'पातल' प्रथी प्रसिद्ध। करनळ व्हैणौ है कठण, हुयगौ जनरल हद्द।—जुगतीदांन देथौ

उ०—३ ताहरां तिणि कहियौ—पातिसाहजी सलांमति मिरी हद्द है जु हूं हजरत रे पाए आवतं नुं पालूं।—द. वि.

उ०—४ देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कवंध घाता। बिसूरखण क्रीत वातां, हद्द हातां हद्द हातां।—र. ज. प्र.

हद्दि—देखो 'हद' (रू. भे.)

उ०—धनि आखै सारी धरा, मनि कांपै महमंद। साकावंध कमंध रा, वाका हद्दि समंद।—रा. रू.

हधूण-सं. पु.—आधा मन, बीस सेर।

उ०—मण पक्कै पांणी री लोट, कच्चै हधूण आटै रौ पाव री, खीर हाळौ तबलौ अर ओढण-बिछावण रा गाभा कांधै नांख्यां, न्हास्या वगता।—दसदोख।

हधूर-सं. स्त्री.—दुत्कार।

उ०—केई दांति आंगुली लेई ओलगइं, केई वेलगाडी ओलगइं, केई स्कंधि कुठार घाली ओलगइं, केई हधूर चालइ लोटइ लीलइं ओलगइ, इसिउ प्रतापी राजा राज्य करइ।—व. स.

हनंकणौ, हनंकवौ—देखो 'हिणहिणणौ, हिणहिणवौ' (रू. भे.)

उ०—हनंकिय वाजि मिळै दुहुँ ओर, घुनंकिय तोप धुनि उडि सोर। गनंकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, भनंकिय आंमिख-हारन लक्ख।
—ला. रा.

हनंकणहार, हारौ (हारी), हनंकणियौ—वि०।

हनंकिओड़ौ, हनंकियोड़ौ, हनंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हनंकीजणौ, हनंकीजबौ—भाव वा०।

हनंकियोड़ौ—देखो 'हिणहिणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हनंकियोड़ी)

हनणौ, हनवौ—देखो 'हणणौ, हणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जनमैं रक्त वीज तन ज्यौं ज्यौं। तैं निर्बीज कियै हनि त्यौं त्यौं।—मे. म.

उ०—२ तुही सरजै पाळै हनि, पुनि संभाळै उतपती। अई 'इंदू' अंबा जयति, जगदंबा भगवती।—मे. म.

हनणहार, हारौ (हारी), हनणियौ—वि०।

हनिओड़ौ, हनियोड़ौ, हन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हनीजणौ, हनीजबौ—कर्म वा०।

हनफी-वि. [अ.] इमाम अबू हनीफा के अनुयायी। (मुसलमान)

हनुग्रह-सं. पु. [सं.] जबड़े बैठने का एक रोग विशेष। (अमरत)

हनुफाळ-सं. पु.—प्रत्येक चरण में १२ मात्राओं व अन्त में एक लघु वर्ण वाला मात्रिक छंद।

रू. भे.—हणूफाळ।

हनुमंत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—जिम रांम कज्ज हनुमंत करि, महिरावण बंध्यउ तिखिणि। काटउ ज बंध राउ रत्न कै, तु साहस भंजउ साह हणि।
—प. च. चौ.

हनुमंती-सं. स्त्री.—एक वनस्पति विशेष।

उ०—हनुमंती नइं हडवडी, हीराउलि हर-मज्जि। हाथाजोड़ी हींकणी, हैलां आवइ कज्जि।—मा. कां. प्र.

हनुमत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

हनुमत्कवच-सं. पु. [सं.] १ हनुमानजी का एक स्तोत्र।

२ हनुमानजी को प्रसन्न करने का एक मंत्र, जिसे तावीज में लगा कर बाधा जाता है।

हनुमांन-सं. पु. [सं. हनुमत्] एक सुविख्यात वानर जो सुमेरू के राजा केसरिन् एवं गौतम कन्या अंजना का पुत्र था। यह राम का अनन्य भक्त था।

उ०—१ रांम लखन अरु भरत सत्रुहुउ, अगवांणी हनुमांन। मीरां कै प्रभु रांम सियावर, तुम ही कृपानिधांन।—मीरां

उ०—२ दीन्हौं जीवदांन हनुमांन हिंगळाज दांन। घरनी पै भूभिफ परै धरनी-धरन कौं।—मे. म.

वि० वि०—वैशाली नगरी के उत्तर-पूर्व पर्वत प्रदेश में मरुत्त नामक एक पौराणिक मानव जाति निवास करती थी। हनुमान की उत्पत्ति इसी मरुत्त जाति में होनी मानी गई है। इसीलिए इसका नाम मारुति भी है। पौराणिक मतानुसार इसे शिव और वायु के अंश से उत्पन्न होना माना गया है।

यह किष्किन्धा के वानरराज सुग्रीव का मुख्य अमात्य था। यह एक संभाषण चतुर राजनीतिज्ञ, वीर सेनानी था। साथ ही यह, विनम्रता, निर्भीकता, निरभिमान, वाणी-माधुर्य आदि सत्व गुणों से युक्त था। राम एवं सुग्रीव की मैत्री में इसने प्रमुख भूमिका निभाई और सुग्रीव का राज्य स्थापित करवाया। इसने राम दाशरथी की बहुत सेवा की। सीता की खोज, लंका-दहन एवं राम-रावण-युद्ध में इसने कई असाध्य कार्य किये।

इन्द्र, यम, वरुण, सूर्य, ब्रह्मा, शिव आदि देवों से इसको कई प्रकार के वरदान प्राप्त हुऐ। इन्द्र ने इसको वज्र दिया और अवध्यत्व व हनुमत् नाम दिया। सूर्य ने इसको शास्त्रविद् बनाया। इस प्रकार यह दैवीगुणों से युक्त हुआ।

देवताओं से शास्त्रास्त्रों से युक्त होने के कारण एक बार यह अत्यन्त ही उत्सृंखल हो गया, तब भृग, अंगिरस आदि ऋषियों ने इसको शाप दिया कि 'इसकी अगाध दैवी सामर्थ्य इसे स्मरण नहीं रहेगी और कोई देवतातुल्य व्यक्ति ही इसे याद दिलायेगा तभी उसका सदुपयोग होगा।

यह अखण्ड ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय एवं उर्ध्वरेतस् था। ब्रह्मचारी होने के कारण इसका अपना कोई परिवार नहीं था लेकिन इसके पसीने की बूंद से मछली के गर्भ से उत्पन्न मकरध्वज नामक मत्स्यराज को इसका पुत्र होना आनन्द रामायण में माना गया है।

[illegible] महावीर देव एवं राम के परमभक्त व दासानुदास [illegible] माने गये हैं।

वि.—१ वीर, बहादुर।

२ [illegible] का बड़े वाला।

रू. भे.—हनू, हड़मंत, हड़मत, हड़मान, हड़ूमान हटूमांन, हडमंत, [illegible], हड़ुमान, हड़मान, हण, हणमत, हणमत, हणमति, हणमांन, [illegible], हणमंत, हणमत, हणु, हणूमांन, हणु, हणुमंगी, हणुमंत, [illegible], हणुमान, हणुमा, हणू, हणूमांन, हणू, हणूमत, हनुमंत, हनुमत, हनू, हनूमंत, हनूमत।

अल्पा.—हड़मानो, हणमंतो, हणमतियो, हणमतो, हणूयो।

हनुमानजयन्ती-सं. स्त्री. यौ. [सं. हनुमत्+जयन्ती] चैत्र की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला उत्सव, जो महावीर हनुमान का जन्म-दिवस माना जाता है।

हनुमानबैठक-सं. स्त्री.—एक पैर पैतरे की तरह आगे बढ़ाते हुए बैठने उठने की एक कसरत विशेष।

हनू, हनूमंत, हनूमत—देखो 'हनुमांन' (रू. भे.)

उ०—१ सावधान वैनतेह अमीधार मुनी तेम, कुंज नाग ज्वाळा [illegible]। ईम मेर माह हनू वधी अजं जाप ओप, अहुं [illegible] राजै 'भगतेस'।—भगतरांम हाडा रो गीत

उ०—२ सीता तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिग्या [illegible] तणी, पवनवेग फला हनूमंत तणी, मर्म दुरयोधन तणी।

—व. स.

हनोज, हन्नोज, हन्नोज-क्रि. वि. [फा. हनोज] १ अब तक, अभी तक।

उ०—१ काबिल कलांम कहियत करीम, रहमांन इल्म रय्यत रहीम। मातरी नजर घर करहु खोज, हम हैं न सजा लायक हनोज।—ऊ. का.

उ०—२ चित्रूटगो निधी नीर नीहाय बांमै, पुरी में सको सीर हन्नोज पांमै। सजा हूं छुड़ायो भाई राव सेखो, लाई पुत्र पिग्नेस गो लोव लेखो।—मे. म.

२ नित्य, हमेशा।

३ नहीं तो।

४ अन्यथा, वरना।

हप, हप्प-सं. पु.—मुंह से जोर से श्वांस छोड़ते हुए एक दम होठ बंद कर लेने से उत्पन्न शब्द।

वि. वि.—प्राय: छोटे बच्चों को सिखाते समय या प्रताड़ना देते हुए ऐसी ध्वनि की जाती है।

क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, तुरन्त, सहसा, एकदम।

उ०—साथी तुरत की जबाब देवण वाळो हो कै दोनूं टावर हप्प [illegible] साथी नूं लड़नग्या।—फुलवाड़ी

हफ्त-वि. [फा. हफ्त] १ सात की संख्या।

उ०—एक कहै असपत्ति, लिखै खत हफत बिलायत। हफत नकल लिख हफत, कमध फुरमांण हकीकत।—सू. प्र.

२ सात दिन की अवधि, सप्ताह।

हफतहजारी-सं. पु. फा. हफ्त+हजारी] मुगलकालीन एक पदवी, जो सात हजार सैनिकों के सरदार को दी जाती थी।

उ०—हफतहजारी हफत, सभै हक सद जै सायत। आय हफत ईसफां, मिळी हफतम सभि हिम्मत।—सू प्र.

रू. भे.—हजारीहफत।

वि.—सात हजार वाला, सात हजार का।

हफतो, हफ्तो-सं. पु. [फा. हफ्तः] सात दिनों के समूह की एक अवधि, सप्ताह।

उ०—वठै सूं फारम लियो अर भर्यो एक हफ्तै तांई इण वास्तै बिना कांम घूमतो फिरयो क्यूं कै भरती रै वास्तै 'टैस्ट' आगलै सोमवार नै होवणो हो।—तिरसंकू

हब-क्रि. वि. [अनु.] १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

२ आसानी से। ३ अब।

हबकणो, हबकबो-क्रि. अ.—१ छलकना, उछलना।

२ फिरना, घूमना।

३ निरुद्देश्य घूमना, आवारा फिरना।

४ काटने के लिए झट से मुंह खोलना।

५ द्रव पदार्थ का तेज गति से ध्वनि करते हुए बहना, उछलना।

हबकणहार, हारो (हारी), हबकणियो—वि०।

हबकिओड़ो, हबकियोड़ो, हबक्योड़ो —भू० का० कृ०।

हबकीजणो, हबकीजबो —भाव वा०।

हबक्कणो, हबक्कबो—रू० भे०।

हबकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ छलका हुआ, उछला हुआ. २ काटने के लिए झट से मुंह खोला हुआ. ३ आवारा फिरा हुआ।

(स्त्री. हबकियोड़ी)

हबको-सं. पु. [ब. व. हबका] मृत्यु के समय अन्तिम श्वास लेने की क्रिया।

उ०—डैण हबका खावण लागो। ओझाजी आया। गीता सुणाई, दखणा ली।—वरसगांठ

हबक्कणो, हबक्कबो—देखो 'हबकणो, हबकबो' (रू. भे.)

उ०—म्हारै पती तो जोधारां रै लागोड़ा घाव हबक्कै जोलै, अनै रिण बावळा हुवोड़ा जोधार बकै जिकै तमासा म्हारै पती रै देखण लायक जांणणा।—बी. स. टी.

हबक्कणहार, हारो (हारी), हबक्कणियो—वि०।

हबक्किओड़ो, हबक्कियोड़ो, हबक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।

हबक्कीजणो, हबक्कीजबो—भाव वा०।

हबक्कियोड़ो—देखो हबकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हबक्कियोड़ी)

हवड़-हवड़-क्रि. वि.—१ शीघ्रतापूर्वक, शीघ्रता से, तेज गति से।
२ 'सवड़का' मारते हुए।

हवड़ाक-क्रि. वि.—तुरन्त, शीघ्र, उसी समय।

हवद—देखो 'हौदो' (मह; रू. भे.)
उ०—उड़ पड़ै पोगरां धरति आंरा, जनमेज जाग रा नाग जांण।
हाथियां दांत पग धर हकार, मीरिजां जंगी हवदां मझार।
—वि. स.

हवबाहरा—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे.) (डिं. को.)

हवरकै—देखो 'अबरकै' (रू. भे.)
उ०—भारथां देखि साथी घरणां भाजिया, समर रौ हुवौ गजगाह साथी। आगै भीमड़ै हाथी घणां उछाळीया, हवरकै भींव नखि गुड़ै हाथी।—गर्जसिंघ कछवाहा रौ गीत

हववाहरा—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे.)
रू. भे.—हववाहरा।

हवस-सं. पु. [अ. हबस] १ मिश्र के दक्षिरा में पड़ने वाला अफ्रीका का एक प्रसिद्ध देश।
२ देखो 'हविस' (रू. भे.)
३ देखो 'हबसी' (रू. भे.)
उ०—१ सीसा जांमंग सोर, भार गाडा बांणां भर। चव हजार सुत्रनाळ, हवस उसताज बहादर।—सू. प्र.
उ०—२ खुरसांणी रहमांन अखूंनी, सीदी हवस राफसी सूंनी। मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जस थांनी ताई।—रा. रू.

हवसनफस-सं. पु.—प्राणायाम। (मा. म.)

हवसांणी, हवसांनी-सं. स्त्री.—१ घोड़ों की एक जाति विशेष।
उ०—सू घोड़ा कुण जात रा छै, कुण रंग भांत रा छै? ऐराकी, आरबी, तुरकी, खंधारी, ताजी, सिकारपुरी, धारी, काछी, माळवी, हवसांनी, पूरबी, टांघण, पहाड़ी, चिन्हाई और ही अनेक जात रा घोड़ा तयार कीजै छै।—रा. सा. सं
२ उक्त जाति का घोड़ा।
३ एक प्रकार की तलवार।
उ०—सू तरवारियां किरा भांत री छै। सीरोही री नीपनी वै आंगळ वाढ फेरियां थकां जनैब मगरैव फुड़तकळ सेफ विलायती गुजरी बिरांणपुरी हवसांनी फिरंगी सू म्यांनां मांहां काढ घास मैं नाखजै।—रा. सा. सं.

हवसी-सं. पु. [अ. हबशी] १ उत्तरी अफ्रिका के प्रसिद्ध देश 'हबश' का निवासी जिसका शरीर बिल्कुल काला होता है।
२ हबश देश के मुसलमान जो सुन्नी मुसलमानों का धर्म पालन करते हैं। (मा. म.)
उ०—हवसी साह हुसेन, तरह मवला तूरांनी। सेरसाह इसफहां, अभंग अहियौ ईरांनी।—सू. प्र.
३ एक प्रकार का काला अंगूर।
वि.—हबश देश का, हबश देश सम्बन्धी।
रू. भे.—हब्स।

हबास—देखो 'हवास' (रू. भे.) (अ. मा.)

हबिंद, हबिंदौ, हबींद, हबींदौ-सं. पु. [अनु.] किसी के गिरने या टकराने से उत्पन्न होने वाली एक तेज व भारी आवाज।
उ०—१ डोलर हींडा ज्यूं, सिळगती गवाड़ी घूमण लागी। काळजा में जांणै तोपां रा हबिंदा गूंजण लागा।—फुलवाड़ी
उ०—२ चार पौहरा खाया जद नौठ वौ बावड़ी माथै पूगौ। पाज माथै धरनै बोरी मांय सिरकाय दी। जोर सूं अेक हबिंदौ सुणी-जियौ।—फुलवाड़ी
उ०—३ तद वौ खेसला रै पल्लै बंध्या काछवा नै खोल हबिंद करतो हेटै थरकाय बोल्यौ—अर म्हारी जूं इत्ती लांठी।
—फुलवाड़ी
रू. भे.—हब्बंद।

हबीड़—देखो 'हबीड़ौ' (मह; रू. भे.)

हबीड़णौ, हबीड़बौ-क्रि. स.—१ गिराना, पटकना।
२ मारना, पीटना।
हबीड़णहार, हारौ (हारी), हबीड़णियौ—वि०।
हबीड़िप्रोड़ौ, हबीड़ियोड़ौ, हबीड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हबीड़ीजणौ, हबीड़ीजबौ—कर्म वा०।

हबीड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गिराया हुआ, पटका हुआ. २ मारा हुआ, पीटा हुआ।
(स्त्री. हबीड़ियोड़ी)

हबीड़ौ-सं. पु. [अनु.] १ किसी भारी वस्तु के ऊपर से गिरने पर उत्पन्न ध्वनि, धमाका।
उ०—झटक झाडबड रटक सूड़ पर उठण दे हबीड़ौ रे वेलो। घीरै रे।—कानदान कल्पित
२ चोट, प्रहार।
३ जोर का धक्का, जोर की टक्कर।
रू. भे.—हब्बीड़ौ।
मह.—हबीड़, हब्बीड़।

हबीब-सं. पु. [अ.] १ मित्र, दोस्त।
२ प्रेमपात्र, माशूक।

हबूब-सं. पु. [अ.] १ आंधी, तूफान।
२ पानी का बुलबुला।
३ निस्सार बात।

हबै—देखो 'हवै' (रू. भे.)
उ०—वांका जेह न लागा बीजा, साहिगाजी औरंग सुकंठि। हठि हठि घणौ चढायौ हिंदू, हबै उतरसी घणैं हठि।
—जैसिंघ कछवाहा रौ गीत

हबोथब, हबोथबी-क्रि. वि.—१ गुत्थम-गुत्था।

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वांन। घर दोनां पखां हाळा हुवा [illegible] हबोळवी निकळ्या, हार्थं बांगे नी रैया।—दमदोस

सं. पु.—२ [illegible] रा एक छन्द विशेष। (किराड़ रागी)

३ [illegible] [illegible] हुवा, तिरोहित।

हबोळो-सं. पु.—१ लहर, तरंग, हिलोर।

उ०—१ [illegible] ओछणा मारै छै हबोळा।—पाबूजी रा परवाड़ा

उ०—२ मासी रा मेह में समंदर रैं उनमांन तूफांन, गरजण [illegible], हबोळा उन्माद में वातां।—फुलवाड़ी

२ उमंग।

३ भूमते हुए चलने की क्रिया या भाव।

उ०—नर वरनी मृग नोज, हंसगति चालवो। हाव-भाव गावंत, हबोळै चालवो।—वगगीरांम प्रोहित री बात

४ समूह, भुंड।

उ०—१ घटा घोर अंबक घरहरिया, फीलां पर झंडा फरहरिया। फौजां तणा हबोळा फिरिया, ओळा जिम गोळा ओसरिया।

—बरजू बाई

उ०—२ सोनै री भाड नीलाड रैं ऊपर दीना। कुरजां री टोळी। [illegible] री हबोळो। साथ तीनां ऐ लागणां लोयणां।—पनां

उ०—३ फागण फाग राग फरहरिया, फोज मनोज हबोळा फिरिया। मांनो जी मांनो मुरघरिया, क्यूं ऐ भेस विदेसां करिया।

—बारामासां रो गीत

उ०—४ मिळ 'गंग' विसाल 'हैयाळ' मुणी, तिणताळ हबोळोय [illegible] तणो। दंत वालाय वाहिर भोल दियां, कमठाळय तेल चंपेल किया।—पा. प्र.

५ नमक।

उ०—हूय मावण घण बीज हबोळै, हींडा कांमण तीज हिलोळै। [illegible] सरवर नद नीर झकोळै, वालम चढण न कीजै भोळै।

—अग्यात

६ मन की इच्छा, मौज।

७ जलना।

८ टक्कर, भिड़ंत।

उ०—फौजां ज्यूं आसार घट, गोळा गैण गरज्ज। पर टोळां सिर 'दानवो', करै हबोळां रज्ज।—किसोरदांन वारहठ

रू. भे.—हिबोळो।

हब्बंद—देखो 'हुबिंद' (रू. भे.)

उ०—तीजी टक्कर तो किला रो दरवाजो चूळिया समेत उखलनै नीचो पड़ग्यो। हब्बंद हब्बंद करतोड़ो।—अमरचूंनड़ी

हब्बोड़, हब्बोड़ो—देखो 'हुबोड़ो' (रू. भे.)

उ०—१ घड़ीड़ घड़ीड़ हब्बोड़ हब्बोड़ मोटर रा छाजला में मिनखां रा छोटा मोटा दांगा दछ्छ दछ्छ नै नीचा पड़ता।

—अमर चूंनड़ी

उ०—२ चोधरी रा घै छिलग्या। भंवळ सी आवण लागी। पण हिम्मत बांधी। अबै उखळ में माथो देयनै हब्बोड़ा सूं कांई डरणो। व्हैला जिकी भाग री।—अमर चूंनड़ी

उ०—३ तीखा तीखा लोखंड रा सिरिया रूपी दांत लियां वो हाथियां सूं हब्बोड़ा लेवण री हिम्मत राखतो, मिनख बापड़ा री कांई जिनात।—अमर चूंनड़ी

हब्बोडब्बो-सं. पु.—प्राय: बच्चों को होने वाला श्वसन रोग, न्यूमूनिया।

हब्सेबेजा-सं. पु. [अ.] अवैध रूप से रोकने की क्रिया।

हमंचौ-सं. पु.—१ गांव में कृषि कार्य शीघ्रतापूर्वक करते हुए उच्चारण किया जाने वाला शब्द।

२ संदेश, सूचना, समाचार।

हमंस-सं. पु.—कोलाहल, शोर।

उ०—विलहिया तुरी सह राजवंस, हइमरां भड़ां हूई हमंस। जइ जिसउ तुरी तइ दीन्ह जांणि, पाट रउ पवंग पंडव पलांणि।

—रा. ज. सी.

हम-सर्व. [सं. अस्मत्] मैं का बहुवचन, हम।

उ०—नारी हूं सिख नाथ री, गोरख ध्यांन ग्रहाह। किस कारण कमधज कहै, हम झड़ देख रहा।—पा. प्र.

सं. पु.—अहम्, घमण्ड।

वि. [फा. हम:] सर्व, सब, समस्त।

रू. भे.—हम्म।

हमअसर-वि. [फा. हम:+अ. असर] एक ही समय में होने वाला, एक समान प्रभावशाली।

हमउमर, हमउम्र-वि. [फा. हम.+अ. उम्र] समान आयु का, समवयस्क।

हमकर-सं. पु.—१ गर्व, अभिमान।

उ०—फकर देतां हमकर परहरण, दे दिलाय सो खुदाय, पिंड पोखण भरण।—केसोदास गाडण

२ देखो 'हिमकर' (रू. भे.)

उ०—हे नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम। महत सुजस विसतार न मावै, भरत खंड मझ रांणा भीम।

—महाराजा मांनसिंह

हमकली, हमकलै, हमकै-क्रि. वि.—इस बार, अबकी बार।

उ०—१ ताहरां वीरमदेजी कह्यौ—हमकै हूं कांम आइस। हमकै नीसरूं नहीं, घणी ही वार नीसरियो।—नैणसी

उ०—२ हमकै 'अजमल' होत, अंसधारी वागड़ इळा। गढ़ छोडै गहलोत, जातो नह रावळ 'जसू'।—दलजी महडू

उ०—३ कई जनम का सोता हंसा, हमकै जाग गया। तन मन खोज जोग की वार्ता, इसमें लाग रया।—हरिरांमजी महाराज

हमकोम-वि. [फा. हम:+अ. कौम] अपनी जाति का, स्वजातीय।

हमगीर-वि. [फा. हम:गीर] १ समस्त, समग्र, पूर्ण, कुल।

२ विस्तारपूर्ण, विस्तृत ।

उ०—वणी दहुं काळ तणी तसवीर, गणी नह जाय घणी हमगीर ।
सझ्या खग खप्पर चक्र त्रसूळ, झल्या कर डेरव भैरव भूळ ।

—मे. म.

३ अग्रगण्य, अगुआ नेता ।

उ०—१ हमगीर जिको वागां हकां, सिंधुर ऊपर सेर सो । 'सूरज' पसाव ऐराक सुध, सूरज तुरंगां एरसो ।—सू. प्र.

उ०—२ नाहर वंस निपाति हुवौ हमगीर सो । वसुधा करै वखांण बहादर वीर सो ।—सिवबक्स पाल्हावत

४ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—१ तिण सोमेसर तनय, हुवा उभै हमगीर । एक भरत दूजो उरथ, निज कुळ चाढण नीर ।—वं. भा.

उ०—२ हमगीर करण जुध हैमरां, घोम अराबां धरहरै । चिल-तह छतीस आवध चुरस, कुळ छतीस राजस करै ।—सू. प्र.

५ मारने व नष्ट करने वाला ।

उ०—दुख मेटण पोट कबीर घरां दिस, हाकल कीध वईर हरी । करवा दुय चीर सरीर झुकायौ, कांप रयौ हमगीर करी ।

—भगतमळ

६ सभा के नियमों को तोड़ने वाला, उद्दण्ड, उत्पाती ।

उ०—होय सभा हमगीर, दुय हाथां खेंचै दुसट । चळ्यौ पुरांणी चीर, सिर सूं चाल्यौ सांवरा ।—रांमनाथ कवियौ

७ अनुगामी ।

उ०—वंध्यौ वळ धी गळ कंज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास । ह्रदै हुय नांम हली हमगीर, सवी रग रोम खुली सुख सीर ।

—ऊ. का.

८ उत्तेजित ।

उ०—हुवौ अधिक हमगीर हाथ नहि होवसी । सींहां वंस सताव खणै, जड़ खोवसी ।—सिवबक्स पाल्हावत

९ मित्र, दोस्त, सहायक, साथी ।

१० मस्त, उन्मत्त ।

११ प्रसन्न, खुश ।

क्रि. वि.—साथ ।

उ०—पंच अयुत लय संग दळ, होय किलम हमगीर । कियौ मुकांम उलंघि जळ, खळ वाघिस्टी तीर ।—ला. रा.

हमगीरता–सं. स्त्री.—१ मित्रता, दोस्ती ।

उ०—वीरता 'पता' की, रनधीरता 'पता' की । हमगीरता 'पता' की, पर पीरता 'पता' की जू ।—किसोरदांन बारहठ

२ नेतृत्व ।

हमचौ–सं. पु.—१ नौवतखाने में वाद्य-वादन के समय शहनाई के अतिरिक्त नगारे, दमामे एवं घूंसे पर किया जाने वाला वादन ।

२ उक्त वाद्य के साथ किया जाने वाला नृत्य ।

क्रि. प्र.—लेणौ ।

३ रावळों द्वारा रात्रि का खेल (रांमत) समाप्त करने के बाद प्रातः देवी के सामने किया जाने वाला नृत्य ।

हमचौ–सं. पु.—१ आक्रमण ।

२ तैयारी ।

३ वीर-ध्वनि ।

४ संदेश, समाचार ।

हमजोळी, हमझोळी–सं. पु.—साथी, सखा, मित्र ।

हमणौ–सर्व.—हमारा ।

उ०—कुखत्री लोपी कार, बूढै नै जींदै वहू । चौड़ै चूंथ चकार, हमणौ वत लै हींडिया ।—पा. प्र.

क्रि. वि.—अब ।

हमतम, हमतमौ–सं. पु.—तूंतूं-मैंमैं, लड़ाई ।

उ०—१ विण त्रीठ रीठ उडै विखम, हमतम ऊधम हैमरां । सक फौज कीध संका सहित, जांण क लंका वन्नरां ।—रा. रू.

उ०—२ उण देस चालौ जठै प्रांणां री वोपार जिण सिरदार रै हमतम होवै कठैई सत्रुवां ऊपर चढै है कठा सूं ई दुसमणां री फौज ऊपर आय गई है इण तरै प्राणां रो वौपार होवै जठै लै चालौ ।

—वी. स. टी.

रू. भे.—हमतम्म ।

हमतम्म—देखो 'हमतम' (रू. भे.)

उ०—सुणै कीध 'अभसाह', किलम ताकीद हुकम्मां । विहुंवै फौज नकीब, तांम फिरिया हमतम्मां ।—सू. प्र.

हमदरद–वि. [फा. हमदर्द] सुख-दुख का साथी, सहायक ।

हमदरदी–सं. स्त्री. [फा.] सहानुभूति ।

हमपेसा–वि. [फा. हमपेश:] एक ही तरह का पेशा करने वाला, सह-व्यवसायी ।

हममजहब–वि. [फा.] एक ही धर्म को मानने वाले, सहधर्मी ।

हमरंग–वि.—समान रंग वाला ।

उ०—ज्वाव ज्वाव कै ऊपर सबज हमरंग वर मतंग धरै । सुनही गुलजार कस्मीर कै कांम ।—सू. प्र.

हमरकै—देखो 'हमकै' (रू. भे.)

उ०—१ जायै जीव नूं मरणौ छै, हमरकै आंपै भेळा हुय जास्यां, देखां गोविंद कासूं करै ।—नैणसी

उ०—२ अठै देवड़ां रै खबर आई । आज हमरकै जीवण रो सोस कोई नहीं । पैहली हाथी दीठा हंता । हमरकै ता वडाळियौ ।

—राव तीडै री बात

रू. भे.—हमलकै ।

हमराह–सं. पु. [फा.] १ साथी, मित्र ।

२ संग, साथ ।

उ०—मासमांनी मोहरा किये पल्लै सै भिलतै आए । छछोहे हौस-

[illegible] री हमगार में दूटी ।—मू. प्र.

[illegible]—१ [illegible] ।

२ [illegible] नवने मारा, राहू का साथी ।

हमरोट—देखो 'हमरकोट' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] गवगाल मनें, हमरोट घरात वारात हलें ।
[illegible] गुंग रिनूं, [illegible] जनी गड़ ग्रावहियूं ।
—पा. प्र.

उ०—२ [illegible] हमीर । तै हमरोट कहावही,
[illegible] मनीर ।—बां. दा.

हमरोटी-सं. स्त्री.—ऊमरकोट री स्त्री ।

उ०—[illegible] तन ग्राभरण, जके ग्रावता भून । हंसगती हम-
रोटियां, [illegible] ।—पा. प्र.

हमल-सं. पु.—१ समुद्र, सागर ।

उ०—[illegible] मेर मर्फ विढ संग्रह, हमल हिलोळै ग्राय हथ ।
[illegible] जिम रतन काढ़िया, महण मंडोवर खंड मथ ।
—द. दा.

२ समूह, झुंड, दल ।

उ०—[illegible] एराकियां हुवंतां, हाथियां मद बहतां हमल । देखै
गजबंध तणा दूथियां, दूजै देगोतां दहल ।—किसनो ग्राढो

हमलकै—देखो 'हमरकै' (रू. भे.)

हमलो, हमल, हमलो-सं. पु. [ग्र. हम्लः] १ ग्राक्रमण, हमला ।

उ०—१ [illegible] हरोल चढोल [illegible], मक्र कोल गयंद मयंद
मुगी । हनकै वहुबैल करै हमला, टहलै लगि गैल गयंद टला ।
—मे. म.

उ०—२ झरणै री तळाई रै चयारूं मेर चमगादड़ां हमलो बोल
दियो ग्रर वणां री चामड़ी री बड़ी पांखां सूं सांय सांय री डरा-
वणी ग्रवाज सगळी घाटी मांय फैलगी ।—तिरसंकू

उ०—३ [illegible] तै वार [illegible] कलपंत, वाधी लै [illegible] ग्रयी बळवंत ।
[illegible] बेता बार हमल, मये महरांणव हेकल-मल्ल ।—ह. र.

उ०—४ [illegible] हमल्ल [illegible] करीन ढल्लपे हल्ले । वहे न ढल्ल
[illegible] ग्रोर की बनें ।—ऊ. का.

उ०—५ [illegible] कै हमल्लै वांक पट्टै फूलहत्यूं दाव । नजरवछेक
[illegible] बचाव । हणुमन [illegible] जगजेठून भुंजंग दंडूं पर ।
—सू. प्र.

२ ग्राघात, चोट, वार, प्रहार ।

उ०—[illegible] गोर [illegible] जोर धूजे, मरै वाग विच्छोहिया ग्राग
[illegible] । हमल्लां [illegible] सीस हल्लै, दिसा ग्रग्र वाजू सकाजू
[illegible] ।—रा. रू.

३ चढ़ाई, युद्ध प्रयाण ।

उ०—१ हमलो [illegible] गढ़ सूं ग्रयांणचक गया । सो
गांव सूं ग्रेक कोस उरै जाय नोवत बजाई ।
—सूरे खींवे कांधळोत री वात

उ०—२ जुड़ै ग्राय सव्वासण्यां रायजादी, दरस्सें कई सेवकां माय
दादी । हमल्लै घनो उंदरी सेन हंदे, मनों मैथली बंदरी सेन बंदे ।
—मे. म.

४ झटका ।

उ०—तद मूसलै ग्रायनै देपाळ नुं बांधीयो । पातसाह री वेटी नु
ऊठांण दीवी । तद देपाळ हमला दीया पिण रसी तुटी नहीं ।
—देपाळदे धंध री वात

५ टक्कर, भिड़ंत ।

६ दांव-पेंच ।

हमस-सं. पु.—१ सेना, फौज ।

उ०—ज्यूं 'दुरग' 'ग्रगजीत' मुरद्धर माफळी । ग्राहव ग्राहव ग्रग
वणायो भुजवळी । सधर 'पता' कर सार इळा इंगळेस रै, हमस
हलावणहार सहायक देसरै ।—किसोरदांन वारहठ

२ गर्व, ग्रभिमान ।

३ भूमि, पृथ्वी ।

४ कोई बड़ा कार्य ।

५ इच्छा, ग्रभिलाषा ।

रू. भे.—हमस्स ।

हमसर-सं. पु.—बराबरी के दरजे का व्यक्ति ।

हमसरी-सं. स्त्री.—बराबरी, समानता ।

हमसाया-सं. पु. [फा.] पड़ोसी ।

हमस्स—देखो 'हमस' (रू. भे.)

हमां-सर्व.—हम ।

हमांम-सं. पु. [ग्र. हम्माम] १ नहाने या स्नान करने का कमरा या
कक्ष, स्नानागार ।

उ०—सूरज कुंड चांदपोळ वारै १६७२ रा जेठ वद २ नै ऊपर
हमांम करायो ग्रोर बंगळो १ सूरजकुंड माथै नागै करायो १७२६
में, जिण रा दांम सिरकारी लागा, जसवंतसिंघजी री वार में ।
—नैणसी

२ वह ग्रन्धकारमय तहखाना, जिसमें दण्डित ग्रपराधी को डाल
दिया जाता है, तलगृह ।

उ०—होय न हिकमत लख हणी, हीणां डाल हमांम । धारण करणो
पर धरम, हिय विच गिणै हरांम ।—रेंवतसिंह भाटी

३ कोई कमरा या कक्ष विशेष ।

उ०—जांणै सातम सररी सुहागण हमांम रै झरोखै झांपां खाइ
नै रही नै च्यार टांक चावळ खाए तो सरीर ग्रहार-विकार धाए ।
—रा. सा. सं.

[ग्र. हमामः] १ कपोत, कबूतर ।

२ गले पर कण्ठीदार पक्षी ।

हमांमदस्तौ-सं. पु. [फा. हावनदस्तः] लोहे की ओखली व मूसल ।
उ०—तथा लोह रा **हमांमदस्ता** आदि पिण पाड़िहारा रात्रि ग्रहस्थ रा थका रहै तिण मैं दोस नहीं तौ सूई कतरणी छुरी ए पिण ग्रहस्थ रा थका पाड़िहारा रात्रि रहै तिण मैं दोस नहीं ।
—भि. द्र.
रू. भे.—अमांमदस्तौ, मांमदस्तौ, हिमांमदस्तौ ।

हमाऊ-सं. पु.—सुरखाब नामक पक्षी, जिसके बारे में किवदंती है कि जिस किसी पर उसकी छाया पड़ जाय, वह बादशाह बन जाता है ।
उ०—१ **हमाऊ** रसं सारसं राजहंसं, व्रखं भौंर भंकार बेपार वंसं ।
—रा. रू.
उ०—२ **हमाऊ** परां तोकरां छांह हेकौ । न को पार ओतार थारा अनेकौ ।—मे. म.
रू. भे.—हमायुं, हमायूं ।

हमाट-सं. स्त्री.—ध्वनि विशेष ।

हमात—देखो 'हमायत' (रू. भे.)

हमायचौ-सं. पु.—एक माप या परिमाण विशेष ।
उ०—सात **हमायचा** भांग, सात सुराई सराव की, सात सीकां जमनाजळ री......... ।—तिमरलिंग पातसाह री वात

हमायत-सर्व.—हम, मैं ।
रू. भे.—हमात ।

हमायुं, हमायूं—१ देखो 'हमाऊ' (रू. भे.)
उ०—सिर छाया राज **हमायुं** समपै, सो इक पीढी राज समाज । कर छायां थांरी राजा कमधज, रैणव अनंत पीढियां राज ।
—सांवळदास कवियौ

हमार-क्रि. वि.—अभी, इस समय ।
उ०—भाटियै कह्यौ—टीकौ काढां ।' तरै देवीदास कह्यौ—टीकौ **हमार** हूं कोई कढाऊं नहीं ।—नैणसी
रू. भे.—हमारूं, हमारू, हिमार, हिमारूं, हैमार ।

हमारउ—देखो 'हमारौ' (रू. भे.)
उ०—बाबहिया डूंगर-दहण, छांडि **हमारउ** गांम । सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउकउ नांम ।—ढो. मा.

हमारूं, हमारू—देखो 'हमार' (रू. भे.)
उ०—फेर मन मैं आ विचारै छै—कै **हमारू** वड़ सूं नीचै उतरनै हाथ पकड़ घरै लै जाऊं ।—पलकदरियाव री बात

हमारौ-सर्व. [स्त्री. हमारी] हमारा, मेरा ।
उ०—मारू नूं आंखइ सखी, एह **हमारी** बुज्झ । साल्ह कुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि सउ वर तुज्झ ।—ढो. मा.
रू. भे.—हमारउ ।

हमाल-सं. पु. [अ.] १ बोझा ढोने वाला मजदूर, भारवाहक, कुली ।
उ०—१ मखं ग्रेह पैठे करे भेख मल्लां, हमालां लखां आंणियौ नींठ हल्लां । हरी बाळ चंमांट जेही चहोड़ै, तमासा ज्युंही खांचि धांनंख तोड़ै ।—सू. प्र.
उ०—२ किस्तुरी काळी भली, राती भली गुलाल । राजन तौ पतळा भला, जाडा भला **हमाल** ।—लो. गी.
२ संभालने वाला, रक्षक ।
रू. भे.—हम्माल ।
वि. [अ.] सदृश, समान ।

हमासत-सर्व.—हमारे जैसे ।

हमीणौ-सर्व.—हमारा ।

हमीर-सं. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा । (बां. दा. ख्यात)
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो 'हम्मीर' (रू. भे.)

हमीरकोट—देखो 'अमरकोट' ।

हमेल, हमेलबेग-सं. पु [अ. हमाइल] १ बगल में लटकाने की वस्तु ।
२ छोटा कुरान, जिसे गले में लटकाया जा सके ।
३ घोड़े के गले में पहनाने का एक आभुषण विशेष ।
४ स्त्रियों के गले में पहनने का एक स्वर्णाभूषण ।
उ०—१ **हमेळबेग** चंद्रहार, सोभयं सकाजयं । उडंत नेक चंद्र अग्र, राज पंत राजयं ।—सू. प्र.
उ०—२ 'भाऊ' व्रप सिवराज भूजाळा, हद गजरा गज देवण हार । 'मांन' भूप 'बळवंत' महाराजा, हुआ **हमेल** अनें चंद्रहार ।
—स्वांमी गणेसपुरी
उ०—३ रतना' मैं धिठाई प्रगट हुई लाज थी सू भागी, पायल बिछिया मौन कीवी कटि मेखला वागी । छिब मैं छिलिया, हार **हमेल** हिलिया । छातियां थहरै, केस छूटा छहरै ।—र. हमीर
वि. वि.—उक्त आभूषण स्वर्ण मोहरों का हार होता है, जिसके बीच में एक बड़ी चौकी होती है । इस चौकी में तसवीर भी जड़ी जाती है ।
रू. भे.—हुमेल ।

हमेलहार—देखो 'हमेल' (३ व ४)

हमेळौ—देखो 'हांमेळौ' (रू. भे.)
उ०—नैण दीठा क्या हुवै, जै न **हमेळौ** थाय । पेट पड़्यां ही धापियै, ऊवै खेत गमाय ।—जलाल बूबना री बात

हमेस, हमेसां-क्रि. वि. [फा. हमेशः] १ सदा, सर्वदा ।
उ०—१ ज्यां घण बूंद तळाब जळ, मिळ पर दियण **हमेस** । इव संग्रह गुण लेहु उण, सुण 'प्रताप' उपदेस ।—जैतदांन बारहठ
उ०—२ आइंदा **हमेसां** वास्तै पूरा सौ रिपियां रौ महीनौ वांध दियौ ।—फुलवाड़ी
२ प्रतिदिन, नित्य, रोजाना ।
उ०—१ कुमार कुमारी भेळा बेठ नित **हमेसां** नीं नीं व्है जैड़ी अजोगती बातां विचारता रैवता ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] हमेसा [illegible] सांझ [illegible] विरद, [illegible] री दोय [illegible] ।—मे. म.

उ०—३ [illegible] हमेस । [illegible] ।—सिवबक्स पाल्हावत

३ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] भवांनी गढ़ां पांण [illegible] । हमेसा [illegible] । सुणै रत्र रोतामळो [illegible] ।—मे. म.

उ०—२ [illegible] हमेसां बजन [illegible] नवबती । [illegible] मंबा [illegible] ।—मे. म.

४ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] विरांणि मूंडे, मूक हमेस बांटणो मेस । [illegible] मुंह काळो, रजिया मैं नित नवो कळेम ।

—बां. दा.

उ०—[illegible] हमेस गोठ अजमेर री । अरज जिकण री आय [illegible] ।—सिवबक्स पाल्हावत

रू. भे.—हिमेस ।

हमे, हमैं, हमो–क्रि. वि.—१ अब ।

उ०—१ [illegible] सागर अमल मैं, आगे ही अरड़ींग । हमैं सिंध सागर [illegible], [illegible] तें गींग ।—बां. दा.

उ०—२ [illegible] कहण लागो जु—'राज मोनूं कूड़ो कळंक दे [illegible] री काढ़ियो सो मो हमैं मान कूड़ री आसकरण ने पूछै नै [illegible] ।—नैणसी

उ०—३ प्रवाड़ा किसूं हेक जीहा पुणीजै; करां जोड़ियां कोड़ि [illegible] कीजै । धजाळो हमैं फेर सोनार धारघो; वडो कांम [illegible]-[illegible] विचारघो ।—मे. म.

२ इस बार, इस समय ।

रू. भे.—हिमें, हिमैं, हिमैं, हिमैं ।

हमग—देखो 'हम' (रू. भे.)

हमर–सं. पु. [सं. हय+वर] घोड़ा ।

हम्मांण—देखो 'हमांण' (रू. भे.)

हम्मान—देखो 'हमान' (रू. भे.)

उ०—[illegible], हम्मान [illegible] हजार । तदि जंवहरी हट [illegible], [illegible] ।—सू. प्र.

हमीर–सं. पु.—१ प्रसिद्ध [illegible] गढ़ का एक चौहान राजा जो [illegible] के साथ युद्ध में सन् १३०० ई० में मारा गया था ।

२ [illegible] ।

३ [illegible] के संगीत का एक संकर राग ।

रू. भे.—[illegible] ।

हम्मीरनट–सं. पु.—नट और हम्मीर के योग से बनने वाला एक संकर राग ।

हयं, हयंद, हय–सं. पु. [सं. हय] १ अश्व, घोड़ा ।

(अ. मा; डिं. नां. मा.)

उ०—१ जसोल जवाब, सजत सताब । हिसार हयंद, गराज गयंद ।

—सू. प्र.

उ०—२ वनैं बरोळ बावनी, हरोळ होय हारसी । हलैं हयंद हेसतै, सजैं गयंद सारसी ।—ऊ. का.

उ०—३ लै भड़ भिड़जां लार हयंवा हांकियां । वीर धीर अणबीह सीह उपडांखियां ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—४ झळहळ पखर सिलह अश्व झाले, हय असवार दोय लख हालें । सीहां तेज पराक्रम सहसै, बरकंदाज दोय लख बहसै ।

—सू. प्र.

२ तुषित एवं साध्य देवों में से एक ।

रू. भे.—हयण, है ।

अल्पा,—हइयो ।

क्रि. वि.—हा ।

उ०—सोहड़ सहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार । नर नारी सहु बिल बिलइ, हय हय सरजणहार ।—ढो. मा.

हयअंगवीन–सं. पु. [सं. हैयङ्गवीनम्] १ मक्खन, नवनीत ।

२ घी, घृत । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—हईयंगवन ।

हयग्रीव–सं. पु.—१ विष्णु का एक अवतार । (नां. मा.)

उ०—तूंवळि तूंहिज व्यास, पिरथ हरि हंस मुनिंतर । जग राख्यो हयग्रीव, धुंव तूं आप धनंतर ।—गजउद्धार

२ एक असुर, जो कश्यप एवं दिति के पुत्रों में से एक था ।

३ एक दानव, जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था ।

४ एक असुर, जो नरकासुर का प्रमुख अनुयायी एवं उसके राज्य की रक्षा करने वाले प्रमुख असुरों में से एक था ।

५ एक राजा, जिसने क्षात्र धर्मानुसार उत्तम रीति से राज्य कर मुक्ति प्राप्त की ।

६ विदेहवंश का एक कुलंगार राजा ।

७ कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रावस्था में वेदों को चुराने वाला एक राक्षस ।

रू. भे.—हेग्रिव, हेग्रीव, हैग्रीव ।

हयग्रीवा–सं. स्त्री.—दुर्गा देवी का एक नामान्तर ।

हयण—देखो 'हय' (रू. भे.)

हयघट्ट–सं. पु.—१ अश्व समूह, अश्वदल, अश्वसेना ।

२ अश्व सेना ।

हयदळ–सं. पु. [सं. हय-दलः] अश्वदल, अश्वसेना, घुड़सेना ।

रू. भे.—हईदळ ।

हयनाळ-सं. स्त्री. [सं. हय+नाल:] १ घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली या घोड़ों की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली तोप।

उ०—विव ग्रभ गंजण पैड़सी, हैरैं की हयनाळ। घण जीवण वाल्हा घुवैं, एण जाव तज ग्राळ। —रैंवतसिंह भाटी

२ घोड़ों की टाप (क्षुर) में, सुरक्षार्थ लगाई जाने वाली चन्द्राकार लोहे की पत्ती, खुरताल।

हयमेध—देखो 'ग्रस्वमेध'

हयवर-सं. पु. [सं.] १ श्रेष्ठ घोड़ा, उत्तम जाति का घोड़ा।

उ०—१ हयवर गयवर हींसता, गो महिसी थट्टा। लाछ दु लीगी भूंवका, पल्लिग सु घट्टा।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ जीहो-दीधा मेंगळ मोतीड़ा, लाला दीधा हयवर हार। जीहो-दीधा सोनी साबटू, लाला दीधा ग्ररथ भंडार।—जयवांणी

२ घोड़ा, ग्रश्व।

उ०—सवल दांन वहुमांन कणय कव्वाहि समप्पइ, हेलू हयवर कोडि जोडि मगगण थिर थप्पइ।—व. स.

रू. भे.—हइंवर, हइमर, हइवर, हईवर, हेंवर, हेमर, हैंमर, हैंवर, हैमर, हैराव, हैवर।

ग्रल्पा;—हैमरौ, हैवरौ।

हयसाला-सं. पु. यौ. [सं. हय+शाला] वह स्थान जहां पर घोड़े बांधे जाते हैं, ग्रश्वशाला, घुड़शाला।

हयहरि-सं. पु.—पीले रंग का घोड़ा।

हयांणी, हयांणीग्रा-सं. स्त्री. [सं. हय+ग्रनीक:] ग्रश्व-सेना, घुड़सेना।

हयांणौ-सं. पु.—एक जाति विशेष का घोड़ा।

उ०—तेजी उरंडा गहवरा, तोरणा खुरसांणा भयांणा हयांणा रोहवाला, रूंडवाला तोरका, मंदकोरा, पीलूग्रा भादिजा ग्रोराहा केकांणा सूनडा सिरखंडा महूडा दक्षिणपंथा पांणपथा मांकडा नीलडा क्याहडा गंगाजल सिंधूया पाखरा ग्रस्वजातय:।—व स.

हयांराज-सं. पु. [सं. हयराज] १ बड़ा घोड़ा, हयेन्द्र।

२ घोड़ा। (डि. को.)

हया-सं. स्त्री. [ग्र.] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—स्याळ मौत ग्रावै ज्यूं सांप्रत, गांव तरफ गड़बड़िया है। हया गमावण इण हवाल मैं, ऊमर सूं ग्रब ग्रड़िया है।—ऊ. का.

२ शर्म, लज्जा।

३ दया, करुणा।

उ०—१ इसैं सगत मांणस नै घोखैं रै जाळ मैं लेय'र मारतां दया नहीं ग्राई, पथर हिड़दा मैं हया नहीं वापरी।—दसदोख

उ०—२ तन छीजै जोवन हटै, घटै वयस धन धरम। मदगत पसगत एक-सी, ज्यां मैं हया न सरम।—ग्रग्यात

४ भावुकता।

उ०—वांणियै री वेटी हया दया वा' यौ, हिसाब किताब मैं कांमण गारौ।—दसदोख

हयाऊत-सं. पु.—एक पक्षी विशेष।

हयात-सं. स्त्री. [ग्र.] जीवन, जिन्दगी।

उ०—१ बैं महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी। बै दिल वदकार ग्रालम, हयात मुरदनी।—दादूवांणी

उ०—२ जिण भांति वादसाह हयात सूं बणी सूरत हाल इण भांति थी।—नी. प्र.

हयादार-वि. [ग्र. हया+फा. दार] १ लज्जाशील, शर्मीला।

२ दयावान, करुणाशील।

३ भावुक।

४ मान, प्रतिष्ठा व इज्जत वाला।

हयानन-सं. पु. [सं. हय+ग्रानन] विष्णु का एक ग्रवतार, हयग्रीव।

उ०—नमौ मछ्छ सग्ग-मंडांण मुकंद, नमौ काळि रास दइत निकंद। नमौ है-ग्रीव निगम्म सहेत, नमौ खळ मार हयानन खेत।—ह. र.

हय्येक [सं. स्त्री.] एक ही बात।

उ०—तरै भील मांहो-माहे बोल्या, म्हारै डीकरै रपचूयैं हय्येक दाख्खूं छै, क्ह्यौ हतौ त्यूं हीज ग्रायौ।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

हर-सं. पु. [सं. हर:] १ शिव, महादेव।

(ग्र. मा; डिं. को; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ ढोला साथ धण मांणजै, झीणी पासळियांह। कइ लाभै हर पूजियां, हेमाळै गळियांह।—ढो. मा.

उ०—२ सांभळि ग्रनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वंछती वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिण वंदै गवरि हर।

—वेलि

उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगलौ कीध। हंसां नण हर नूं तुचा, दांत किरातां दीध।—बां. दा.

२ ग्रग्नि, ग्राग।

३ सूर्य, भानु। (ना. डिं. को.)

४ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

५ विभीषण का ग्रमात्य एक ग्रसुर।

६ राम की सेना का एक प्रमुख वानर।

७ गणित में वह संख्या जिसका किसी ग्रन्य संख्या में भाग दिया जाता है, भाजक-संख्या।

८ छप्पय छंद का दसवां भेद जिसमें ६१ गुरु, ३० लघु से ९१ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती है।

९ तीन दीर्घ वर्ण वाले टगण के प्रथम भेद का नाम।

१० पौत्र, वंशज।

उ०—यां 'मधकर' हर वज्जिया, ग्राद विखै ग्रणरेह। ज्यां उलटै मेधा रवी, सिद्ध पलट्टै देह।—रा. रू.

११ पानी, जल। (ना. डिं. को.)

१२ गधा, गर्दभ।

[illegible] स्त्री. [[illegible]] १३ [illegible], प्रबल [illegible]।
उ०—[illegible] [illegible] तणो मन स्यांमा, वर प्रागति वंदनी वर।
[illegible] [illegible] जिता हर, हर जिम वंदे गवरि हर।
—वेलि.

१३ [illegible], [illegible]।
उ०—१ [illegible] [illegible], वांधीजै दळ संग। हर संकोचे मीरजां, [illegible] [illegible]'।—रा. रू.
उ०—२ [illegible] कुमार तणो मुख बीजी, पुणे सुणे जण आप पर। [illegible] [illegible] तणो वर पायो, हर न करो मनि राय हर।—वेलि
१५ [illegible], [illegible]।
उ०—[illegible] [illegible] बात कांई व्ही। सगळा ही म्हारी हर [illegible] [illegible]।—फुलवाड़ी
१६ [illegible]।
उ०—तरै मांनो वेठो छै। अठै साय घणो कांम आयो। पैलो [illegible] [illegible], नै उणां मांनै साय वेठ जीती देख नै नगारो दीयो। [illegible] [illegible] [illegible] फूटो थो सु नगारा री हर कर नै नगारा री तरफ [illegible]।—राव मालदेव री वात
१७ स्मरण, याद, स्मृति।
उ०—१ ढोला, ढीलो हर किया, मूंवया मनह विसारि। संदेसउ न [illegible], [illegible] [illegible] प्रधारि। —ढो. मा.
उ०—२ ढोला, ढीलो हर मुझ, दीठउ घणे जणेह। चोळ बरन्नै [illegible], गावर धन श्रंगेह। —ढो. मा.
१८ जिद, दुराग्रह, हठ।
१९ ऊंट पर लदे हुए बोझे का एक तरफ अधिक झुकाव।
२० हरियाली।
[illegible]—१ एक विशेषण प्रत्यय जो यौगिक शब्दों के अन्त में लगकर निम्न अर्थ प्रगट करता है:—१ हरण करने वाला, लूटने वाला, छीनने वाला। २ दूर करने वाला, हटाने वाला। ३ धारण करने वाला।
उदा.—धनहर, पापहर, रोगहर, जळहर आदि।
२ प्रत्येक, हर एक, एक-एक, हरेक।
उ०—[illegible] एक मूंटी तणो ऊंचो निस्कारो न्हाका नै बोली—बेटी! [illegible] मूं हर लुगाई रै मूंडै ग्रो सवाल भमकै पण आज दिन [illegible] [illegible] जवाब दे सकी? —फुलवाड़ी
३ हरेक, सदैव। ० (डि. को.)
क्रि. वि—१ पूर्व कालिक क्रिया सूचक अव्यय शब्द, कर।
उ०—[illegible] [illegible] वेटै सूं मिळ हर राजी हुवो। —चौबोली
२ देखो 'हरि' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—[illegible] [illegible] छूट दे, कर हर भर विसरांम। भर भर घर घर [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] नांम। —ह. र.
३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

हरई-सं. पु—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा (शा. हो.)
हरकंकण—देखो 'हरकांकण' (रू. भे.)
हरक-वि. [सं.] १ हरण करने वाला।
२ ले जाने वाला, पहुंचाने वाला।
सं. पु.—१ गणित में भाजक।
२ प्रलयंकर रूप में शिव का एक नाम।
३ देखो 'हरस' (रू. भे.)
उ०—१ हात कमाई घाट हरक सूं, पतळो गट गट पीणीं। घोर रेत सम चेत घमंडी, चोर लियोड़ी चीणीं। —ऊ. का.
उ०—२ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणां। कोमळ किसोर तो ही कमंध, दुति कठोर उर दुज्जणां।—रा. रू.
हरकण—देखो 'हरख' (रू. भे.)
उ०—हरकण छाई दिस चिलकारी हरियो, करसण करसणियां किलकारी करियो। झेलण हलवेडर झलकी तन झांई, मरिया डेडर ज्यूं हरिया मन मांहीं।—ऊ. का.
हरकणो, हरकवो—देखो 'हरखणो, हरखबो' (रू. भे.)
उ०—ब्रह्मा विस्णु सिव सनकादिक, हरकत निस दिन ख्याल। सुर नर मुनि सब जोवण आयें, ऐसो इधक को ख्याल।
—स्रीहरिरांमजी महाराज
हरकणहार, हारौ (हारी), हरकणियौ—वि०।
हरकिग्रोड़ौ, हरकियोड़ौ, हरक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हरकीजणौ, हरकीजवौ—भाव वा०।
हरकत, हरकति-सं. स्त्री. [अ.] १ गति, चाल।
२ चेष्टा।
उ०—पण कंवर री तरफ सूं कीं हरकत नीं व्ही। वै तो मड़ा री गळाई जुम्मा रै आसरै टिक्योड़ा ऊभा हा।—फुलवाड़ी
३ स्पंदन, धड़कन।
उ०—कांमेती खासा जंझेड़िया तो ई कीं हरकत नीं। नाड़ अर सांस जोयो तो हंसलो आप रै ठांणे पूगो हो।—फुलवाड़ी
४ उद्दण्डतापूर्ण कार्य, बदमाशी, शैतानी।
उ०—जसोदा मैया नित सतावै कनैया। वाकी हरकत क्या कहूं मैया।—मीरां
५ खुशी, उत्साह।
उ०—सुकरत करतां हरकत आवै, तो ना पछतावो करियो।
—जांभोजी
हरकवनोळो-सं. पु. [देशज] श्रीमाली ब्राह्मणों में एक वैवाहिक प्रथा, जिसमें प्रथम कन्या के विवाहोपलक्ष में कन्या का पिता, लग्न से पहले दिन अपने कुटुंबियों को लपसी, कढ़ी; चावल आदि का भोजन कराता है। (मा. म.)
हरकांकण-सं. पु.—महादेवजी का कंकण।
उ०—'वखतेस' खळां सिर वेढगरो, हरकांकण सो 'अमरेस' हरो।

संग 'रांम' 'रूपं' जेसिंघ सही, गजरूप सभै रिम टेक ग्रही।
—रा. रू.

रू. भे.—हरकंकण।

हरकाईचंद्रा-सं. स्त्री.—एक प्रकार की औषधि विशेष।

हरकारौ—देखो 'हलकारौ' (रू. भे.)

उ०—अेक दिन राजा रौ हरकारौ कागद लेय ठिकांणा मैं आयौ।
—फुलवाड़ी

हरकियोड़ौ—देखो 'हरसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरकियोड़ी)

हरक्क, हरक्ख—देखो 'हरस' (रू. भे.)

हरक्खणौ, हरक्खबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे.)

उ०—सुरां गुर पूर झिलै अंगि सार, तजै असि भौमि वढै तिण-वार। हरक्खि कटंज धरै रंभ हार, अंत्रावळि पाय रुळंत अपार।
—सू. प्र.

हरक्खणहार, हारौ (हारी), हरक्खणियौ—वि०।
हरक्खिओड़ौ, हरक्खियोड़ौ, हरक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हरक्खीजणौ, हरक्खीजबौ—भाव वा०।

हरक्खियोड़ौ—देखो 'हरसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरक्खियोड़ी)

हरख—देखो 'हरस' (रू. भे.)

उ०—१ सो आधी रात तांई तौ हरख खुसहाळी रही।
—सूरै खींवै कांधलोत री बात

उ०—२ कुमाए मता लै घरै आया छै। अठै घणा हरख सूं रहै छै।—पंचमार री वात

उ०—३ मां रै हिवड़ै हरख री सरवर हिबोळा खावण लागौ।
—फुलवाड़ी

हरखण—देखो 'हरसण' (रू. भे.)

हरखणौ, हरखबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा रांणी हरखिया, हरख्यउ नगर अपार। साल्ह कुंवर पधारियउ हरखी मारू नार।—ढो. मा.

उ०—२ हिंदसथांन हरखियौ तांम दहले तुरकांणौ। जगत सरब जांणियौ, जोध लेसी जोधांणौ।—सू. प्र.

उ०—३ वधू वंध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती। अई इंदू अंबा जयत्ति जगदंबा भगवती।—मे. म.

उ०—४ हरखिउ अरजुनु जांरथि चडिउ दांणव धरि बुंबाखु पडिउ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—५ नयणे करि निरखौ जी, हियडै वलि हरखौ। सत्रुंजय सरीखौ जी, पुहवि न कौ परखौ।—ध. व. ग्रं.

उ०—६ ताळ्यां दे तिण बार हरखि हुलसै हसै। केकी ज्यां छंद करै केक गरदन कसै।—सिवबक्स पाल्हावत

हरखणहार, हारौ (हारी), हरखणियौ—वि०।
हरखिओड़ौ, हरखियोड़ौ, हरख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हरखीजणौ, हरखीजबौ—भाव वा०।

हरखत—१ देखो 'हरसित' (रू. भे.)
२ देखो 'हरकत' (रू. भे.)

हरखमांण-वि. [सं. हर्षमान] हर्षित, प्रसन्न, खुश, हर्षायमान।
(डिं. को.)

हरखवंत-वि.—प्रसन्न, हर्षित।

उ०—कुंवर रै कुंवर हुवौ। वडौ हरख हुवौ। नांनांणै सहर वधाई गई। तद राजा हरखवंत होय घोड़ौ अेक, सिरपाव, कड़ा-मोती, रिपिया हजार दोय देनै विदा किया।—पलक दरियाव री वात

हरखा-सं. स्त्री.—राठोड़ों की एक उप शाखा।

हरखाड़णौ, हरखाड़बौ—देखो 'हरसाणौ, हरसावौ' (रू. भे.)

हरखाड़णहार, हारौ (हारी), हरखाड़णियौ—वि०।
हरखाड़िओड़ौ, हरखाड़ियोड़ौ, हरखाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हरखाड़ीजणौ, हरखाड़ीजबौ—कर्म वा०।

हरखाड़ियोड़ौ—देखो 'हरसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरखाड़ियोड़ी)

हरखाणौ, हरखाबौ—देखो 'हरसाणौ, हरसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मात पिता मैं दोसण मोटौ, प्रथम मिलया सुख पाई नै। नग दोनां मिळ औ निपजायौ, हिया फूट हरखाई नै।—ऊ. का.

उ०—२ परस्पर दंपति संपति पाय, हिकोहिक भेट करै हरखाय।
—मे. म.

हरखाणहार, हारौ (हारी), हरखाणियौ—वि०।
हरखायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हरखाईजणौ, हरखाईजबौ—कर्म वा०।

हरखायोड़ौ—देखो 'हरसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरखायोड़ी)

हरखावणौ, हरखाववौ—देखो 'हरसाणौ, हरसावौ' (रू. भे.)

उ०—ओथ बावड़ी पागोडा थिर नीलम जड़िया, रतन-नाळ जुत हेम-कंवळ जळ फूटर भरिया। तिरती हंसा डार कचोळै मन हरखावै, पावासर की याद पेखियां तोय न लावै।—मेघ

हरखावणहार, हारौ (हारी), हरखावणियौ—वि०।
हरखाविओड़ौ, हरखावियोड़ौ, हरखाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हरखावीजणौ, हरखावीजबौ—कर्म वा०।

हरखावियोड़ौ—देखो 'हरसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरखावियोड़ी)

हरखित—देखो 'हरसित' (रू. भे.)

उ०—१ इतरी वात सुणै रांणी खुसी हुई। बहुत हरखित हुई छै। कितरै हेकै दिनै पुत्र हुवा।—नैणसी

उ०—२ हणु हुवा जिण जग होय, हरखित चाह वेद चियार। तत पंच कर खट तरक तै, दरियाव सात उदार।—र. ज. प्र.

उ०—[illegible] हरखित मिळे। वै हेतु [illegible] 'कोकिला'।—[illegible]

[illegible] (स्त्री. हरखीजी) हर्षित, [illegible]।

उ०—[illegible] म्हारा जी।
—लो. गी.

[illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible], कर [illegible] नमोध।
[illegible], धारै हरख मन [illegible] नवीर।
—गि. गु. रू.

हरगज, हरगिज–अव्यय [फा. हरगिज] कदापि, कभी भी।

उ०—१ [illegible] हरगज तीन [illegible]।—दसदोख

उ०—२ [illegible] आदमी री कैयोड़ी बात नै [illegible] ही [illegible]। नटणौ मानर हरगिज नहीं।
—दसदोख

हरगिर, हरगिरि–सं. पु. [सं. हरगिरि] कैलाश पर्वत।

उ०—हरगिर [illegible] वेळ चिराणो, [illegible] धरांणो। द्रुम द्रुम जोवण जोग [illegible] पुळ सोभा [illegible] मांवळो दुरटी सोवै।—मेघ

रू. भे.—हरगिर।

हरगीता–सं. स्त्री.—प्रत्येक चरण में अन्तिम गुरु वर्ण सहित २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद। (पि. प्र.)

हरगौरीरस–सं. पु.—एक आयुर्वेदिक रसौषधि विशेष।

हरगिर—देखो 'हरगिर' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हरगिर [illegible]। [illegible] सुरतार मनो घन [illegible]।—[illegible]

हरड़—देखो 'हरड़ै' (रू. भे.)

उ०—हरड़ [illegible] आंवळा, घी [illegible] मैं खाय। हाथी दावै खाख [illegible]।—अज्ञात

हरड़को–सं. पु.—१ [illegible] के दोहने की क्रिया।

२ दोहते समय [illegible] से होने वाली आवाज।

हरड़ाट, हरड़ाटो–सं. पु.—१ तेज वायु आंधी, बरसात या किसी के [illegible] से होने वाली आवाज।

उ०—१ [illegible] छेनी पूरता हरड़ाट [illegible]।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] हरड़ाटो [illegible] दोनूं [illegible] आई।
—फुलवाड़ी

उ०—३ [illegible] व्हिया पण [illegible] हरड़ाट [illegible]।—फुलवाड़ी

रू. भे.—[illegible]।

हरड़ी, हरड़ै–सं. स्त्री. [सं. हरीतकी] १ एक पेड़ विशेष जिसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह चौड़े होते हैं।

(अ. मा; ना. मा; ह. नां. मा.)

२ उक्त पेड़ का फल जो औषध में काम आता है।

उ०—हरड़ै बैड़ा आंवळा, चौथो नीम गिलोय। कूट छेत कर घर लै बेटा, रांम करै सो होय।—अज्ञात

३ शक्ति, सामर्थ्य, औकात।

४ गुदेन्द्रिय का भीतरी मांसल भाग।

उ०—बेटी रौ ब्याव माईतां री हरड़ै काढ दै।—फुलवाड़ी

मुहा.—हरड़ै काढणी=शक्तिहीन करना, बर्बाद करना।

रू. भे.—हरड़, हरड, हरडी, हरड्ड।

हरड़ो–सं. पु.—रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—कै लीला कै कागड़ा, करडा हरड़ा केक। मुसकी नुकरा मेटिया, इसड़ा तुरंग अनेक।—पे. रू.

हरचंद–अव्यय [फा.] १ कितना ही, कितना भी।

२ यद्यपि, अगरचे।

३ जितना कुछ, जिस कदर।

४ देखो 'हरिस्चंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ सत हरचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण। सुर तर आस सपूर, जाण पारस सेवक जण।—र. ज. प्र.

उ०—२ देवी दांन रै रूप बळराव दीधी, देवी संत रै रूप हरचंद सीधी। देवी रुद्र रै रूप दसकंध रूठी, देवी सील रै रूप सोमित्र त्रूठी।—देवि.

हरचंदर—देखो 'हरिस्चंद्र' (रू. भे.)

हरचंदवारा–सं. पु.—१ राजा हरिश्चन्द्र का शासन काल।

२ आनन्द का समय।

रू. भे.—बारहरचंद।

हरचंदि—देखो 'हरिस्चंद्र' (रू. भे.)

उ०—डूंब नइं घरि जल वहिउं हरचंदिइं। भालडी मरण लाध मुकुंदिइं।—सालिसूरि

हरचंदोत–सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हरचंनण—देखो 'हरिनंदन' (रू. भे.)

हरज–सं. पु. [अ.] १ हानि, नुकसान।

२ उपद्रव, गड़बड़।

३ अड़चन, बाधा, रुकावट।

४ आपत्ति, विरोध, ऐतराज।

रू. भे.—हरज्ज।

अल्पा;—हरजी।

हरजस—देखो 'हरिजस' (रू. भे.)

हरजट–वि.—पीला, पीत। ❋ (डि. को.)

हरजटा—देखो 'हरिजटा' (रू. भे.)

हरजस-सं. पु [सं. हरि+यश] १ ईश्वर सम्बन्धी गायन, स्तुति या भजन।

२ ईश्वर का यश या कीर्ति।

हरजांणी, हरजांनी-सं. पु.—१ वह धन, जो किसी हानि की पूर्ति हेतु दिया जाय, मुम्रावजा।

२ नुकसान, हानि।

हरजाई-वि. स्त्री.—१ उजाड़ करने वाली, आवारा।

उ०—पळ खावण चसको पड़्यौ, प्रदत्तै पुस्कळ पीव। थिर रह हरजाई थिरा, जाच्यां देसी जीव।—रैंवतसिंह भाटी

२ व्यभिचारिणी स्त्री, वैश्या।

हरजी-सं. पु.—१ किसी सतह को चौरस करने की संगतराशी की टांकी।

२ देखो 'हरज' (अल्पा; रू. भे.)

हरज्ज—देखो 'हरज' (रू. भे.)

उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहंस धरण समझ्झ। 'पता' छिहंतर वरस पण, हेकण न कौ हरज्ज।—जैतदांन बारहठ

हरड, हरडइ, हरडि, हरड्ड—देखो 'हरड़ै' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—हरड्ड हरडि हींमजी, हरडां हलद्रह बेर। हरबी हाथुडी हरी, हुंफर हुंसि हसेर।—मा. कां. प्र.

हरणंक, हरणंक्ख, हरणंख, हरणंखुर—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हुयौ जेम हरणंक, ज्यम साह 'अवरंग' हुग्रौ, ग्रहै सुर नरां छोडै दियौ गाढ। अवन अणथाह जातां हुई अबरकै, 'दुरग' री तेग वाराह री दाढ।—भोजराज मईयारियौ

२ देखो 'हिरण्यकस्यप' (रू. भे.)

उ०—नख हरणंख उधेड़ि नांखियौ, असुरां रिपि जुग-जुग अलख। —ह. नां. मा.

हरण-सं. पु. [सं. हरणं] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के बिना, अपने अधिकार में करने या ले लेने की क्रिया। छीनने, लूटने या चोरी करने की क्रिया या भाव।

२ वंचित करने की क्रिया या भाव।

३ हटाने, मिटाने या दूर करने की क्रिया या भाव।

ज्यूं—पीड़ हरण, संकट हरण।

४ किसी को बलपूर्वक, चोरी या धोखे से उड़ा कर ले जाने तथा लेजाकर छुपा देने की क्रिया, अपहरण।

उ०—निरखै ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळै दोख विवरजित साहौ, हुंतौ जई हुग्रौ हरण।—वेलि

५ अपनी ओर खींचने की क्रिया, भाव या अवस्था।

ज्यूं.—मन हरण, चीर हरण।

उ०—दुख-वीसारण, मन हरण, जउ ई नाद न हुंति। हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जंति।—ढो. मा.

६ पकड़ने की क्रिया।

७ संहार, नाश।

८ विभाजन।

९ वहन।

१० विद्यार्थी के लिये दिया जाने वाला दान।

११ यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा।

१२ बाहु।

१३ वीर्य धातु।

१४ स्वर्ण, सोना।

वि.—१ चुराने वाला, चोरी करने वाला।

२ मिटाने वाला, दूर करने वाला, नष्ट करने वाला।

उ०—बप रूप ओप नव धन वरण, हरण पाय-त्रय-ताप-हरि। गुणमांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यांन ओ ध्यांन करि। —रा. रू.

३ देखो 'हिरण' (रू. भे.)

रू. भे.—हरन, हिरण।

हरणकस्यप, हरणकुंस, हरणकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—१ हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा कै फिर खासी। तौ पण भूख न गी तिण तावैं, बावौ खाय उबासी।—र. ज. प्र.

उ०—२ जै जुध हरणकुस नूं जरियौ, धड़ नाहर मांनव चौ धरियौ। जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सूं। —र. ज. प्र.

हरणक्ख, हरणख—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

हरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू. भे.)

उ०—चीजां इतरी दीवी, (१) तखत, (२) छत्र, (३) चंवर, (४) ढाल, (५) तरवार, (६) सांखलै हरबू दीवी तिका कटार, (७) लक्ष्मीनारायण हरणगरभ, (८) नागणेची कुळ-देवी री स्वरूप अठार भुजी, (९) करंड, (१०) भंवर ढोल, (११) वैरीसाल नगारौ थापन जांभै दियौ तिकौ, (१२) दळ सिणगार घोड़ौ, (१३) भुंजाई री थेगां वगेरै चीजां लीवी। पीछै माजी सूं सीख कर रावजी फौज री कूच कियौ।—द. दा.

हरणांखु—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

हरणांखुर-सं. पु.—घोड़ा।

हरणाकस, हरणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—१ हरणाकुस हत्तै महणसु मथ्थै, छितलै बळि छळंता है। —र. ज. प्र.

उ०—२ द्रुपद सुतारौ चीर बढायां, दुसासण मद मारण। प्रहलाद परतग्या राख्यां, हरणाकुस नौ उद्र बिदारण।—मीरां

उ०—२ और तरी [illegible] हणाई, हरणाक्ष हिरणाक्ष।
—अनुभववांणी

हरणाक्ष, हरणाच्छ, हरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हरणाछ [illegible], [illegible] मीटर घर रसातळ [illegible]।—र. ज. प्र.

हरणाखी—देखो 'हरिणाखी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] विरंगिया, पड़ियड जोइण जाद। हरणाखी [illegible], [illegible] एदि निसाद।—ढो. मा.

हरणाट-सं. स्त्री.—१ नगाड़े की ध्वनि।

उ०—[illegible] तणा [illegible] हुय धमाधम, वेण रा तंत्र तरणाट वाजै। नवीवा बोल हरणाट हुय नोबतां, गयण धर सबद गरणाट गाजै।—सेतसी बारहठ

२ ध्वनि विशेष।

३ देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)

हरणाश्व-सं. पु.—१ एक रंग विशेष का घोड़ा। (शा. हो.)

२ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—हरणाश्व वांकळ वोदलीया हद, भुतड़ीया मलीया भलीया।
बादरदांन दधवाड़ियौ

हरणायस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हरणकस्यप हेमुत हरणायस, ताया कै फिर खासी। तोपण भूप न गो तिण तावो, वावो साथ उवासी।—र. ज. प्र.

२ देखो 'हिरणकस्यप'।

हरणी-वि. स्त्री.—१ हरण करने वाली।

२ देखो 'हरिणी' (रू. भे.)

हरणीमन-वि. स्त्री.—१ मन को लुभाने वाली, सुन्दर, आकर्षक।

२ देखो 'मनहरण' (रू. भे.)

हरणौ-वि. [सं. हर] (स्त्री. हरणी) १ हरण करने वाला, चुराने वाला।

२ छीनने वाला, लूटने वाला।

३ मिटाने वाला, दूर करने वाला, हटाने वाला।

४ नष्ट करने वाला।

५ [illegible] वाला।

६ [illegible] करने वाला।

हरणौ, हरबौ-क्रि. स. [सं. हरणं] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विरुद्ध या उसकी जानकारी के बिना, अपने अधिकार में कर लेना या ले लेना, छीनना, लूटना, चोरी करना।

२ हटाना, दूर करना, मिटाना। (ऊ. र.)

उ०—[illegible] देत सूत [illegible], पीड़ा कसट रोग दळ पांण। [illegible] हरे [illegible] बहुली, देवलोक हुंदी दीवांण।—दोनौ

३ किसी को दल पूर्वक, चोरी से, धोखे से या फुसला कर, उड़ा ले जाना तथा ले जाकर छुपा देना, अपहरण करना।

उ०—१ हुवा रांम अोतार सीता हरांणी। पछै जोड़वा आविया देति पांणी।—सू. प्र.

उ०—२ बळिबंध समरथि रथ लै बैसारी, स्यांमा कर साहे सुन्दरि। बाहर रै बाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि।
—वेलि.

उ०—३ अस्वबंध एह वीर नकीजइ, अस्व विद्य सघली हरइ हुईइ।—सालिसूरि

४ अपनी ओर खींचना, आकर्षित करना।

ज्यूं—मन हरणौ।

५ पकड़ना।

६ पूर्ण करना, पूर्ति करना।

उ०—हरौ अभिलाख कव 'अमर' री हमरकै, जोगणी वीसरौ मती जाता। कदम दे दास री नेस पावन करौ, मूझ सिर धरौ धणियाप माता।—सेतसी बारहठ

७ संहार करना, नाश करना।

८ विभाजन करना।

९ वहन करना।

हरणहार, हारौ (हारी), हरणियौ—वि०।

हरिओड़ौ, हरियोड़ौ हरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हरीजणौ, हरीजबौ—कर्म वा०।

हरत—देखो 'हरित' (रू. भे.)

उ०—अंत लघु तगण धन नास पत अकास, पिता जम मात दिखणा हरत पेख। विसिस्ट रिख वैल आरूढ रस सांत वण, उजेणी सूद्र लोयण उभै मेख।—र. रू.

हरतण, हरतणू हरतनु. हरतनू-सं. पु. [सं. हरतनुः] प्रातः काल में तृणादि पर दिखाई देने वाला जल बिन्दु, ओस-कण।

हरता-वि. [सं. हर्त्ता, हर्तृ] १ हरण करने वाला, चोर।

२ जबरदस्ती छीनने वाला, डाकू, लुटेरा।

३ संहार व नाश करने वाला, मारने वाला।

उ०—१ मुलां हरता तु भयो, तूं हीज करता होय। तुं हीज मारै हाथ सुं तुझी जीव रै सोय।—अनुभववांणी

उ०—२ दीन विनां दाता नहीं कोई, हरता करता सब का सोई। ग्यांन ध्यांन गलतांन गभीरा, पेम सहत मन वचन सरीरा।
—अनुभववांणी

४ दुःख, शोक, पीड़ा आदि मिटाने, दूर करने वाला।

५ आकर्षित करने वाला।

६ उड़ा कर ले जाने वाला।

७ विभाजक।

८ सूर्य।

रू. भे.—हरत्ता।

हरतार-वि. [सं. हर्त्तरि] हरण करने वाला, हर्ता।

हरताळ, हरताल-सं. स्त्री. [सं हरिताल] संखिया और गंधक के योग का एक खनिज पदार्थ, उप धातुग्रों में से एक, गोदंत । (अ. मा.)

वि.—१ पीला, पीत । * (डिं. को.)

रू. भे.—हरिताल, हरियाळ, हरियाल ।

२ देखो 'हड़ताल' (रू. भे.)

हरतेज-सं. पु. [सं. हरतेजस्] पारद, पारा ।

हरत्ता—देखो 'हरता' (रू. भे.)

उ०—तुं ही करत्ता धरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तुं हीं । तुं ही नाही मरत्ता अभय भय हरत्ता नित तुं हीं ।—ऊ. का.

हरथांनक-सं. पु. [सं. हर-स्थानः] १ शिवमन्दिर, शिवालय ।

२ हिमालय पर्वत ।

[सं. हरि-स्थानः] ३ विष्णु का मन्दिर ।

हरद—देखो 'हल्दी' (रू भे.)

हरदम-क्रि. वि. [फा.] १ प्रति-क्षण, हर-क्षण, हर वक्त, हर समय ।

उ०—१ दादू हरदम मांहि दिवांन, सेज हमारी पीव है । देखूं सो सुबहांन, यह इस्क हमारा जीव है ।—दादूबांणी

उ०—२ अठै करणी तौ जूनां कैदचां वेगी कीं कोनी, पण पुरांणा कैदी तौ करणी सूं भारी हमदरदी दिखाळै । करणी रै मुंढै माथै हरदम ऊमर कैद री डरावणी सूनाळ नींद लेवै है ।—दसदोख

उ०—३ उठतां-बैठतां, खावतां-पीवतां हरदम उण री आंख्यां रै आगै वा काळी अंधारी मौत सूं ई डरावणी रात फिरण लागती ।

—अमरचूंनड़ी

२ निरन्तर, लगातार ।

उ०—माटी नै पगां हेटै खूंदणां सूं हरदम औ चेतौ रेवै के वगत आयां आ माटी अपांनै पाछी खूंदेला ।—फुलवाड़ी

३ सर्वदा, सदा ।

उ०—जठै ग्राजै रे रांम क्रस्ण महाराज । ज्यांरै हरदम रे हरिजी सूं काज ।—गी. रां.

रू. भे.—हरधम ।

हरदय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हरदास—देखो 'हरिदास' (रू. भे.)

(स्त्री. हरदासी)

हरदासियौ—देखो 'हरिदास' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हर भज रे हरदासिया, दाखै ईसरदास । मोल लियां सूं नहिं मिळै, कोट मोहर इक सांस ।—ह. र.

हरदासी—देखो 'हरिदासी' (रू. भे.) (अ. मा.)

हरदी—देखो 'हळदी' (रू. भे.) (अ. मा.)

हरदोखी, हरदोसी-सं. पु. यौ. [सं. हर+दोषी] कामदेव, मदन ।

(डिं. को.)

हरदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—आठौं पहर अखाड़ै आनंद, झरणाअत झरजावै । हरदा वीचि हुवै हरियाळी ठीक आंख ठर जावै ।—ऊ. का.

हरद्वांन-सं. पु.—एक स्थान का नाम जहां की तलवार प्रसिद्ध है ।

हरधम देखो 'हरदम' (रू. भे.)

उ०—नमौ हरधम निराकारं, नमौ निगम निरुपनं । नमौ अवचळ नमौ अनुभै, नमौ एक अनूपनं ।—अनुभववांणी

हरन—१ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

२ देखो 'हिरण' (रू. भे.)

३ देखो 'हरण' (रू. भे.)

उ०—करि सहाय कमलासन केरी । हरन दनूज दसौं दिस हेरी ।

—मे. म.

हरपुर-सं. पु. [सं.] १ शिव-धाम, कैलाश ।

२ देखो 'हरिपुर' (रू. भे.)

उ०—चींतवियउ चहवांणि, जउहर की मांडउ जुगति । हुव हुइस्यां हरपुर दिसा, वेगावेगि विहांणि ।—अ. वचनिका

हरपेड़ी, हरपैड़ी—देखो 'हरिपैड़ी' (रू. भे.)

हरप्रि, हरप्रिय-सं. पु. [सं. हर+प्रियः] १ धनपति कुबेर । (नां. मा.)

२ देखो 'हरिप्रिय' (रू. भे.) (अ. मा.)

हरप्रिया-सं. स्त्री. [सं. हर+प्रिया] १ उमा, पार्वती ।

२ दुर्गा, भवानी ।

३ देखो 'हरिप्रिया' (रू. भे.) (अ. मा.)

हरफ-सं. पु. [अ. हर्फ़] १ अक्षर, वर्ण ।

२ शब्द, आवाज ।

उ०—दूजां रा मन ल्यै, आप तो होठां सूं हरफ ही नहीं काढै । पिंडतजी हा ! हा ! कर'र हंस्या अर फूलचंदजी रै घर री गळी लीनी ।—दसदोख

३ दोष, ऐब, बुराई ।

४ लक्ष्य, निशान ।

हरफगीर-वि. [अ. फा. हर्फ़गीर] १ बहुत बारीकी से अक्षर-अक्षर का गुण-दोष निकालने वाला ।

२ ऐब या गलती निकालने वाला, छिद्रान्वेषी ।

३ आलोचना करने वाला आलोचक ।

हरफगीरी-सं. स्त्री. [अ. फा. हर्फ़गीरी] १ हरफगीर का कार्य या धर्म, छिद्रान्वेषण ।

२ आलोचना ।

हरफोरवड़ी-सं. स्त्री.—कमरख की जाति का एक वृक्ष विशेष जो अति सुन्दर होता है तथा जिसके गूनर के आकार के खट्टे-मीठे फल

[illegible])

[illegible]—[illegible] हुआ [illegible] घर या कक्ष जिसके [illegible] बना होता है।

[illegible]—[illegible]

[illegible]—[illegible] मैं, [illegible] हिरण।
—शकुंतला

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] धाम [illegible], चांनै चेली पांचसी [illegible]। [illegible] धाया, [illegible]।—बी. मा.

[illegible]—१ देखो 'हरयांम' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'हरिनांम' (रू. भे.)

[illegible]—सं. पु.—एक वृक्ष विशेष।

उ०—[illegible], हरडां हलद्रह बेर। हरची हाथुडी हरी; [illegible]।—मा. कां. प्र.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] नर माथा चुणता घर घाड़ा, पाबू हरबू रा सुणता [illegible]।—ऊ. का.

[illegible], हरभांति—क्रि. वि.—हर तरह से, हर प्रकार से, तरह-तरह से।

उ०—[illegible] अरज कीवी—जैसळमेर सुं म्हांरै कोई कांम नहीं [illegible]। [illegible] भाटीयां रो कदीम [illegible] छै। नै पोकरण सदा म्हांरो [illegible]। म्हारी जागीर मांहि पातसाही दफतर लीखीजै छै। हजरत [illegible] हरभांत कर उरी लेवां।—नैणसी

[illegible] हरभो—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] चढिया सांखला हरभों रै गांव वैंहगटी आया। हरभों जो [illegible] हुता।—नैणसी

हरम-सं. पु. [अ.] १ महल या राज-प्रासाद का वह भाग या कक्ष जिसमें रानियां रहती हैं, जनान खाना, अन्तःपुर।

उ०—१ पातसाह री हजूर अमराव मंमूसाह, मीर गाभरू, सु हरम री [illegible] मुरगांव्यां पगां उवाणा सो तीजै भाई नूं आंप-[illegible] बात छै, सु ऐ पचीस हजार घोड़ां रा धणी [illegible] बैठा था।—नैणसी

उ०—२ [illegible] अलावदीन, राघव, हकारीय, नयण नारि [illegible], [illegible] हरम हकारीय।—प. च. चौ.

उ०—३ [illegible] निजमन करि अति नरम। हरसै ते [illegible], [illegible] नै हरम।—ध. व ग्रं.

२ [illegible] में रहने वाला स्त्री-समाज।

[सं. [illegible]] ३ बड़ा महल, अट्टालिका। (अ. मा.)

उ०—[illegible], तरवर [illegible] होय। हरम ढहै डूंडा [illegible]।—बां. दा.

४ [illegible] का वह क्षेत्र जिसमें किसी जीव की हिंसा करना महापाप माना जाता है।

५ गुंबद।

६ बुढ़ापा,।

सं. स्त्री.—७ पत्नी, स्त्री।

८ बादशाह की बेगम।

उ०—मोकलांणि सरोवरि हुतउ, हरम सहित आंण्यउ जीवतउ। साहमु राउल मांड्हीइ गयउ, मालदेव सिर नांमी रह्यउ।
—कां. दे. प्र.

९ वह स्त्री जिसे पत्नी बना कर रख लिया गया हो, रखेल।

१० दासी, बांदी, चेरी।

रू. भे.—हरम्म, हरम्य, हुंरम, हुरंम, हुरम।

हरमखांनौ-सं. पु. [अ. फा.] जनानखाना, अन्तःपुर।

रू. भे.—हुरमखांनौ।

हरमजदगी—देखो 'हरांमजादगी' (रू. भे.) (मा. म.)

हरमजादौ—देखो 'हरांमजादौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरमजादी)

हरमजी-दाडिम-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का अनार। (व. स.)

हरमज्जि-सं. स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी।

उ०—हनुमंती नई हुडवडी, हीराउलि हरमज्जि। हाथाजोड़ी हींकणी, हेलां आवइ कज्जि।—मा. कां. प्र.

हरमल-सं. स्त्री.—एक प्रकार की झाड़ी जो करीब डेढ़-दो हाथ ऊंची होती है।

हरमी-खजूर-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का खजूर, छुहारा।

उ०—चंगाल खजुर, फउद खजुर, पैमी खजुर, रतवी खजुर, नवद्-साक खजुर, मधुफलद खजुर, हरमी-खजुर, मधुरू मांकडुं, दीप सिखा समांन।—व. स.

हरमीजोसीरू-सं. पु यौ.—एक प्रकार का फल।

उ०—हरमीजोसीरू, आदनी सखु, सेलडीना कटकडा, तरुणां करणां नारिंगा जंबीरां कमरक दोहंगा सदाफल........।—व. स.

हरमेखलिक-वि.—सिद्धाई रखने वाला, सिद्ध।

उ०—मौजिक सूपकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य वृखभवैद्य मंत्रिक तंत्रिक गारुडिक हरमेखलिक लेखक कथक कविकर तालचर कविराज सभ्य सभापति......... । —व. स.

हरम्म हरम्य-सं. पु. [सं. हर्म्य] १ राजभवन, महल।

उ०—१ चलैं कुचार वार वौं सुचार मैं चलावनी। हलैं हसंति हिक्कली हरम्म को हलावनी।—ऊ. का.

उ०—२ दसा विसम्य संभ्यहा अगम्य गम्य है नहीं। रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं।—ऊ. का.

२ हवेली, बहुत बड़ा मकान।

३ देखो 'हरम' (रू. भे.)

हरयंदुदर—देखो 'हरियंदुदर' (रू. भे.) (अ. मा.)

हररय-सं. पु. यौ. १ शिव का नन्दी।

उ०—हररथ माठौ होय, सकत रथ होयै सयांणी। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराध पयांणौ। —चौथबीठू

२ बैल। (ह. नां. मा.)

३ देखो 'हरिरथ' (रू. भे.)

हररांणी—सं. स्त्री. [सं. हर+राज्ञी] १ उमा, पार्वती।

उ०—तज बरखण कुळवाट समर्थ आपौ एड़ौ। सिव हररांणी हेत चढण नै सरणी जेड़ौ। —मेव

२ देखो 'हरिरांणी' (रू. भे.)

हरराट—देखो 'हरड़ाट' (रू. भे.)

हरराया—सं. पु.—विष्णु।

हररोज—क्रि. वि.—नित्य, प्रतिदिन, रोजाना।

हरलोयण—सं. पु. [सं. हर+लोचनं] १ शिव का नेत्र।

२ तिकोनी वस्तु। *

वि.—त्रिकोण। * (डि. को.)

हरवकत, हरवक्त, हरवखत—क्रि. वि. [फा. अ. हरवक्त] हर क्षण, हर समय, हर दम।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणां मैं डूब्योड़ौ रैवै। पण जेळ मैं आ बात जावक निजोरी।—दसदोख

हरवळ—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै कटक कर राव कोटवाळ हरवळ हुवा।

—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

उ०—२ पेखै चंद हरवळ खळ पाड़ै। उरड़ै फौजां वाग उपाड़ै।

—सू. प्र.

हरवळी—देखो 'हरावळी' (रू. भे.)

हरवल्ल—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ ईंदा आहव आगळां, पड़िहारां पण भल्ल। हुरवल्लां आगै हुवा, चढै अलल्लां भल्ल।—रा. रू.

उ०—२ लीधां हलकौ साथ सह, आप हुवा हरवल्ल।

—गज-उद्धार

हरवांम, हरवांमा—सं. स्त्री. [सं. हर+वामा] १ उमा, पार्वती।

२ गंगा।

३ देखो 'हरिवांमा' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू. भे.—हरबांम, हरबांमा।

हरवाइ, हरवाई—सं. स्त्री.—नीचता, कुकर्म, दुष्टता।

हरवाहण, हरवाहन—सं. पु. [सं. हर+वाहन] १ शिवजी की सवारी, नन्दी।

२ बैल।

३ देखो 'हरिवाहण' (रू. भे.)

हरवौ—देखो 'हळवौ' (रू. भे.)

हर-संकरौ—सं. पु.—एक प्रकार का मादक पदार्थ विशेष।

उ०—इण भांत तमासो करतां पाछलौ चौघड़ियौ आय रह्यौ छै। अमलां री वखत हुवौ छै। तद खिजमतगारां नै हुकम हुवौ छै—सताबी सूं हर-संकरौ तयार कीजे। सू हर-संकरै री तयारी कीजै छै। सू हर-संकरौ किण भांत री छै। भांगेपुर घोटिया री पींडी घणां मसालां समेत री आंणजै छै। गळिया अमल में भांग गाळजै छै। फेर दारू सूं उलटाय काढजै छै। रूमाल सूं तिवारा छांणजै छै।—रा. सा. सं.

हरस—सं. पु. [सं. हर्ष] १ आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।

उ०—गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी, गिउ पारथ उत्तर सहित मनु हरस भारी।—सालिसूरि

२ उत्फुल्लता, प्रफुल्लता, रोमांच।

३ संयोग शृंगार के अन्तर्गत साहित्य में एक संचारी भाव जिसमें प्रसन्नता के कारण रोएं खड़े होने या चेहरे पर कुछ पसीना आने की किया होती है।

४ धर्म के तीन पुत्रों में से एक।

५ देखो 'हरसवरद्धन'।

रू. भे.—हरक, हरक्क, हरक्ख, हरख, हरख्ख, हरिख, हरिखि, हरिस, हरीख।

हरसक, हरसकर—वि. [सं. हर्षक, हर्ष-कर] आनन्दप्रद, प्रसन्न-कारक, खुश करने वाला।

हरसकीलक—सं. पु. [सं. हर्ष+कीलक] कामशास्त्र के अनुसार एक आसन।

हरसखा—सं. पु. [सं.] धनपति कुबेर। (ह. नां. मा.)

हरसचरित—सं. पु. [सं. हर्ष-चरित्र] बाणभट्ट द्वारा रचित एक संस्कृत गद्य-काव्य, जिसमें सम्राट हर्षवर्द्धन के जीवन वृत्त का वर्णन है।

हरसण—सं. पु. [सं. हर्षण] १ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

२ काम की तीव्रता से पुरुष की इन्द्रिय का तनाव।

३ एक नेत्र रोग विशेष।

४ श्राद्ध कर्म का अधिष्ठाता एक देवता।

५ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से चौदहवां योग।

सं. स्त्री.—६ प्रसन्न या खुश होने की अवस्था या भाव।

७ प्रसन्नता, खुशी।

८ एक प्रकार का श्राद्ध।

वि.—१ आनन्द दायक, प्रसन्न कारक।

२ हर्ष-उत्पादक।

रू. भे.—हरखण।

हरसणाकल—सं. स्त्री.—हर्ष-ध्वनि।

उ०—जिम आकासि माहि सरव पदारथ आवइं तिम दधि दुरवा अक्षत चंदन कुसम कुंकम, पूज्य व्रद्धासीरवाद, द्व दसतूरचनिनाद, विवाहादि हरसणाकल, अनेरायइ पुत्र जन्मादि महोत्सव.........।

—व. स.

हरसणौ, हरसबौ—क्रि. अ. [सं. हर्षणं] १ खुश होना, प्रसन्न होना,

२ हंसना।

उ०—[illegible] हरसै दरसै सुत दरसाई। बारैई मास [illegible], [illegible]।—ऊ. का.

३ खिलना, खिलखिलाना।

हरसणहार, हारौ (हारी), हरसणियौ—वि०।

हरसियोड़ौ, हरसियोड़ौ, हरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हरसीजणौ, हरसीजबौ—भाव वा०।

हरखणौ, हरखबौ, हरसाणौ, हरसाबौ, हरसणौ, हरसबौ, हरीसणौ, हरीसबौ—रू० भे०।

हरसत—देखो 'हरसित' (रू. भे.)

उ०—[illegible] जाता रहि, पुरब दिसा तणा वाय वाजइ, लोक हरसत थाई।—व. स.

हरसवरधन, हरसवरधन—सं. पु. [सं. हर्षवृद्धनः] भारत का एक प्रसिद्ध सम्राट, जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुआ था।

हरसाणौ, हरसाबौ-क्रि. अ. [सं. हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना।

उ०—कमळ समान कळेवर कोमळ, हेर हियौ हरसायौ।
—गी. रां.

२ हंसना।

क्रि. स.—१ खुश करना, प्रसन्न करना।

२ हंसाना।

हरसावणहार, हारौ (हारी), हरसावणियौ—वि०।

हरसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हरसाईजणौ, हरसाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

हरसाड़णौ, हरसाड़बौ, हरसाणौ, हरसाबौ, हरसावणौ, हरसावबौ
—रू० भे०।

हरसायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ. २ हंसा हुआ. ३ खुश किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ. ४ हंसाया हुआ।

(स्त्री. हरसायोड़ी)

हरसित-वि. [सं. हर्षित] प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

उ०—सरसा काळ हुइ, वहितौ रहिउ कुयउ, वावि पांणी भरता रह्या। [illegible]। मेघ तणा पांणी वहै, पंथी गांमइ जाता रहै। [illegible], लोक सहु हरसित थाय।—रा. सा. सं.

रू. भे.—हरसत, हरसित, हरसन।

हरसियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ प्रसन्न हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, आनन्दित हुवा हुआ. २ हंसा हुआ।

(स्त्री. हरसियोड़ी)

हरसिरा-सं. स्त्री [सं.] गंगा नदी। (ह. नां. मा.)

हरसुत-सं. पु. [सं.] १ शिव के पुत्र स्वामि कार्तिकेय।

उ०—नाचै हरसुत मोर हरख में मोह गुंजाता। कोयां जिणरा जांण [illegible]।—मेघ.

२ गणेश, गजानन।

हरसेखरा-सं. स्त्री. [सं. हरशेखरा] गंगा नदी।

हरसेन-सं. पु. [सं. हरिसेना] राम की वानर सेना, बंदर सेना।

उ०—देवी खगेसं रूप तें नाग खाधा। देवी नाग रै रूप हरसेन बाधा।—देवि.

हरस्वांत-सं. पु.—पपीहा। (अ. मा.)

हरहंस-सं. पु.—सूर्य। (ना. डि. को.)

उ०—हुवै जेम हरहंस सूं, वासर कमळ विकास। एम धरम जस व्है उभै, दत सूं बांकीदास।—बां. दा.

हरहार-सं. पु.—शिवजी के गले का हार, सर्प।

उ०—सा बाळा प्री चिंतवइ, खिणखिण रयणि विहाइ। तिण हरहार परठ्ठ्यउ, ज्यूं दीवलउ बुझाइ।—ढो. मा.

हरांन—देखो 'हैरांन' (रू. भे.)

हरांम-वि. [अ. हराम] १ इस्लाम धर्म के अनुसार हलाल का विपर्याय।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणा में डूब्योड़ौ रैवै। पण जेळ में आ बात जावक निजोरी। फाटण वेगी जिनावर कठै सूं आवै? हलाल विना ही हरांम वणै।—दसदोख

२ जो धार्मिक दृष्टि से या धर्म शास्त्र में वर्जित माना गया हो, निषिद्ध, अधार्मिक।

उ०—नाथू जात रौ मैंणौ व्हैतां थकांई वडौ असराफ अर भलौ आदमी हो। उणरै वडेरां चोरी चकारी भलांई कीधी व्है, उण रै वास्तै तौ दूजां री चीज हरांम बरोबर ही।—अमरचूंनड़ी

३ जिसका खाना निषिद्ध हो, वर्जित।

४ जो नाजायज हो, अनुचित।

उ०—मुई हरांम कहै हक मारी, पसुवौ करत पुकारा। काजी जाव कौंण सा देसी, सांई के घर बारा।—अनुभववांणी

५ बुरा, खराब, दूषित, दोष पूर्ण।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया वडी हरांम। जन हरीया तिह लोक मैं, केता करै विरांम।—अनुभववांणी

६ बहुत ही कटु, अप्रिय।

७ कठिन, दूभर।

उ०—१ एक दिन विणियांणी भांवी रा पाड़ौस मूं अणूंती आंती आय वांणिया नै कैवण लागी—म्हनै तौ म्हारै पीहर पुगाय दौ, के औ गांव ई छोड़ दौ। रोटी खावणी ई हरांम व्हैगी।
—फुलवाड़ी

उ०—२ पंथी एक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलांम। जब थी हम तुम वीछड़े नयणां नींद हरांम।—ढो. मा.

८ बेकार, व्यर्थ।

उ०—खाट त्याग खट तुरत खोड़ नै सोच सिधावौ। हाजत हुवै हरांम, कांम मैं विलम करावौ।—टावर सईकड़ौ

सं. पु.—१ अधर्म, पाप।

उ०—१ आपरा सत आगै तौ म्हारी अकल कह्यौ ई नीं करै। पूतळी री कारीगरी री एक टकौ ई लेवणौ म्हारै वास्तै हरांम है।
—फुलवाड़ी

उ०—२ हरांम का हठवाड़ा, हरांम जादु की हाट, खोटुं का खजांना, परें तु की पाट।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ मिनख मारणियां सूं लोग बात करणी ही माड़ौ कांम समझै। घर री पांणी पीणौ ही हरांम गिणै।—दसदोख

२ बुराई।

३ स्त्री-पुरुष का नाजायज सम्बन्ध, व्यभिचार।

४ निषिद्ध की हुई वस्तु।

मुहा.—हरांम मूंडै लागणौ=बुरी आमदनी का चस्का लगना, रिश्वत की आदत पड़नी, मुफ्त का माल खाने की प्रवृत्ति बननी।

हरांम री कमाई=रिश्वत की आय, चोरी का माल, नाजायज ढंग से की जाने वाली कमाई, काला बाजारी।

हरांम समझणौ=बुरा व अनुचित समझना, पाप समझना।

(नींद) हरांम होणौ=जीना दूभर होना।

(रोटी) हरांम होणौ=सुख में दुख आना, रस बेरस होना, विषमय वातावरण होना।

हरांमकारी-सं. स्त्री. [अ. फा. हरामकारी] पर-स्त्री गमन, व्यभिचार।

हरांमखोर-वि. [अ. फा. हरामखोर] १ कृतघ्न, नमक हराम।

उ०—१ पछै लाखै' री मा, 'लाखै' री राजलोक आयौ। खेत मांहे लाखौ' पोढियौ छै। जीव नहीं नीसरियौ छै। ताहरां राखायत निजीक पड़ियौ दीठौ। ताहरां लाखै' री राजलोक कहण लागौ—'औ हरांमखोर अठै क्यूं पड़ियौ ? दूर करौ।' तरै लाखोजी बोलिया—'औ राखायत सांमधरमी छै हरांमखोर नहीं छै।
—नैणसी

उ०—२ लायौ मस्तक काटकर, हरांमखोर नूं मार। आवै सारौ लोग जे हमैं करौ करनार।—गोपाळदास गौड़ री वारता

२ अनुचित रूप से धन कमाने वाला, हराम की कमाई खाने वाला।

३ कामचोर, निकम्मा, मुफ्तखोर।

४ दगाबाज, धोखेबाज।

उ०—१ होळे सी कुंवरजी नूं जगाइया अर कही जे हरांमखोर बाहर खड़ा छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ मूंडी भूंडी बापड़ा चीणियां री जो कांकड़ री मांयली कांनी ई पग देय दे। पग कलम नीं कर नांखूं हरांमखोरां रा।
—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—हरमखोरौ, हरांमखोरौ, हरांमीखोर।

हरांमखोरी-सं. स्त्री. [फा. हरामखोरी] १ हरामखोर का कार्य।

२ कृतघ्नता, नमकहरामी।

उ०—इसड़ी हरांमखोरै हरांमखोरी की, तिण ऊपरि रांमसिंघजी बुलावण नूं आया समाधि पूछिवा।—द. दा.

३ कामचोरी, मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

४ पाप की कमाई, चोरी।

५ धृष्टता, बदमाशी।

उ०—तद कुसळसिंह कही हरांमखोरी म्हां कीवी, बीजां ऊभोड़ां किसी म्हांसूं परभारी सांम-धरमी कीवी।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

हरांमखोरौ - देखो 'हरांमखोर' (रू. भे.)

उ०—आमेरनाथ को लून खाय, लीनी हरांमखोरौ उठाय। जो करहि चेत 'जगतेस' राय, तब काढि खाल भूसी भराय।
—ला. रा.

हरांमड़ौ - देखो 'हरांमी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरीया देख हरांमड़ौ, रोस न कीजै रांम। अब तौ तेरौ हुय रह्यौ, और न मेरै कांम।—अनुभववांणी

हरांमजादगी-सं. स्त्री. [फा. हराम+जादगी] १ हरामजादे का कार्य, हरामखोरी।

२ धृष्टता, कृतघ्नता।

३ चोरी, बेईमानी।

४ दुष्टता, बदमाशी।

५ मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

६ दोगलापन।

रू भे.—हरमजदगी।

हरांमजादौ-वि. [अ. फा. हरामजादः] (स्त्री. हरामजादी) १ हराम की औलाद, दोगला, जारज, वर्णसंकर।

२ धूर्त, दुष्ट, पाजी।

३ हरामखोर, निकम्मा।

रू. भे.—हरमजादौ।

हरांमी-वि. [अ. हरामी] १ हराम की पैदाइस, व्यभिचार से उत्पन्न, दोगला।

उ०—मर स्साळा हरांमी तेरी.........थांणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनै मुलजिम नै हवालात मैं बंद कर दियौ।—अमरचूंनड़ी

२ दुष्ट, धूर्त, पाजी।

उ०—आ भूल कींरै वगी ? कूड़ी कलम कैंया चाली ? मुनीम दोनूं हरांमी, इन्याव रा कांम करै। हरगज तीन सौ नीं हांकरै।
—दसदोख

३ कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—१ कुळ ग्रंजस धरै जोय 'पता' री पराक्रम, धणी रा हरांमी जका धूजै। प्रवाड़ा सदा नत नवा खाटै 'पतौ', 'पता' रा भुजा

[illegible] हुवै ।—[illegible] रो गीत

उ०—२ [illegible] फांटीखत्तूं, मांगी फोजां फांटीवणे [illegible] । [illegible] मांगी मागतो ऊघांटी पणो, मांटी [illegible] ।—महादान महडू

४ [illegible], हरामखोर, निकम्मा ।

[illegible]—[illegible]

हरामीखोर—देखो 'हरामखोर' (रू. भे.)

उ०—[illegible] न कोय, राम तुम सब के दाता । जीव हरामीखोर, [illegible] माया मद माता ।—ह. पु. वां.

हरा–सं. स्त्री.—१ उमा, पार्वती, गिरिजा । (अ. मा; ह. नां. मा.)

२ हरितकी, हर्रे, हरड़ । (अ. मा.)

हराउळ—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

हराड़–सं. स्त्री.—हार, पराजय ।

उ०—मन धीरा न मीटै चत्र मासे, जैत हराड़ जांणी । घुरै नगारो [illegible] पखणी, प्रसण भगा तज पांणी ।

—ठाकुर रांमसिंह री गीत

हराणौ, हराबौ–क्रि. स. [सं. हृ] १ युद्ध, लड़ाई, द्वन्द्व या प्रतियोगिता में अपने प्रतिपक्षी को परास्त करना, हराना, शत्रु को पछाड़ना ।

२ शिथिल करना, थकाना, नाकामयाब करना ।

३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश करना, निरुत्तर करना ।

४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित करना ।

उ०—देवी लखमणं रांम पीछै पठाई, देवी रावणं रूप सीता हराई ।

—देवि.

हराणहार, हारौ (हारी), हराणियौ—वि० ।

हरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हराईजणौ, हराईजबौ—कर्म वा० ।

हरावणौ, हरावबौ, हारावणौ, हारावबौ—रू० भे० ।

हराद–सं. पु. [सं. ह्लादः] ध्वनि, आवाज ।

उ०—वळि निगिवांन हराद नाम वदि । की गजराज आवाज पुकार ।—ह. नां. मा.

हरापण, हरापणौ–सं. पु.—१ हरे होने की अवस्था या भाव, हरितता ।

२ हरे रंग या वर्ण की झलक ।

हरायत–सं. पु.—१ संदेश वाहक, खबर नवीस ।

२ देखो 'हरावत' (रू. भे.)

उ०—[illegible] लाहौर सूं फौज लाय ग्रेक सूं दिल्ली चलाय आया । [illegible] दिल्ली में पातसाह हुमायूं थो सू भाज नीसरियो नै हरायत गयो [illegible] । पीछै सूरमां नै मनेगर्ना दिल्ली रै गढ दाखल हुआ ।—द. दा.

हरायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अपने प्रतिपक्षी को परास्त किया हुआ, शत्रु को पछाड़ा हुआ. २ शिथिल किया हुआ, नाकामयाब किया हुआ, थकाया हुआ. ३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश किया हुआ. ४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित किया हुआ. (स्त्री. हरायोड़ी)

हरारत–सं. स्त्री. [अ.] १ मंद ज्वर, हलका ज्वर, बुखार का हलका सा असर ।

२ गर्मी, उष्णता ।

हरालउ–वि.—हर्षित ।

उ०—तीहं कूंयरह तीहं कूंयरह माहि दो वीर । इकु अरजुनु आगलऊ अनइ करणु हीयइ हरालउ ।—सालिभद्र सूरि

हरावणौ–वि. (स्त्री. हरावणी, हरावनी) १ हार या पराजय दिलाने वाला ।

२ हराने वाला, पराजित करने वाला ।

उ०—हरांमखोर चोर कौं कुहक्क दे हरावणौ । कराळ कंठ ळंकनीय डंकनी डरावणौ ।—ऊ. का.

३ हरण कराने वाला ।

हरावणौ, हरावबौ—देखो 'देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ जे पासा थईनि हरावु ते अह्मो छूं, महाराज ।

—नळाख्यांन

उ०—२ चरण चारिहिं हंस हरावती । वचनि जीणइं जीती भारती ।—सालिसूरि

उ०—३ पवन चंदनगंध हरावतउ । वदनि वासि वसइ दिसि वासतु ।—सालिसूरि

हरावणहार, हारौ (हारी), हरावणियौ—वि० ।

हराविग्रोड़ौ, हरावियोड़ौ हराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हरावीजणौ, हरावीजबौ—कर्म वा० ।

हरावळ हरावल–सं. पु. [फा.] १ सेना का अग्र भाग ।

२ फौज में सब से आगे चलने वाला सिपाहियों का दल ।

३ अग्र भाग, आगे का हिस्सा ।

उ०—दूर अगूणा परवतां री हरावळ रै लारै सूं परभात री गेरो कसूमल पल्लो अबार तांई अंधारै मांय सिमट्यो पड़्यो हो ।

—तिरसंकू

रू. भे.—हरवळ, हरवळ, हरवल्ल, हराउळ, हरोळ, हरोल, हरोळाई, हिरावळ, हिरोल ।

हरावियोड़ौ - देखो 'हरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हरावियोड़ी)

हरास—१ देखो 'ह्रास' (रू. भे.)

२ देखो 'हरारत'

हराहर–सं. पु.—सोलंकी क्षत्रियों की एक शाखा ।

हरि–सं. पु. [सं.] १ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा । (नां. मा.)

उ०—१ सांभळि अनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वंछती

वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका जिका हर, हर तिणि वंदै गवरि हर।—वेलि.

उ०—२ बप रूप ओप नव घन वरण, हरण पाप-त्रय-ताप-हरि। गुण मांन दांन चाहे सु ग्रहि, कवि सुग्यांन औ ध्यांन करि।

—रा. रू.

उ०—३ हरीया सब हरि हाथि है, हरि मारै जीवारि। हरि धारै जो कुछि करै, त्यै डूबंता तारि।—अनुभववांणी

२ विष्णु।

उ०—हेलौ कवि हिंगळाज रौ, कांन करौ करनैल। खाथी डग मारग खड़ौ, हरि हाथी री हेल।—मे. म.

३ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—१ नर मारगि एक एक मगि नारी, ऊमिया अति उछाह करेउ। अंकमाळ हरि नयर आपिवा, बाहां तिकरि पसारी बेउ।

—वेलि

उ०—२ पुरातन प्रीत जिसी हरि पथ, राजा लोमज हनै दसरथ।

—रांमरासौ

४ श्रीरामचन्द्र, श्रीराम।

५ ब्रह्मा।

६ इन्द्र।

उ०—बग रिखि राजांन सु पावसि बैठा, सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै बलाहकि चंचळ, हरि सिणगारै अंबहर।—वेलि

७ सूर्य, रवि। (ह. नां. मा.)

८ शिव, महादेव।

उ०—हरि कहइ जिकै करि भाव घणइ हित, दासां तियां तणउ हूं दास।—महादेव पारवती री वेलि

९ चन्द्रमा, चांद।

१० वायु, हवा।

११ अग्नि, आग।

१२ कामदेव, मदन। (ह. नां. मा.)

१३ मानव, मनुष्य।

१४ यमराज।

१५ शुक्रग्रह।

१६ सिंह, शेर। (डि. को.)

१७ हाथी, गज।

उ०—रथ पदाति रूपक तणा स्वांमी नीलंजण रिद्धंजस हरि एरावण मातलि दांमिट्ठी हरिणेगमेखी सरवांगि सन्नाह पेहिरि, द्रढ कसा बंधि, धनुखि गुण चडावी रह्या।—व. स.

१८ वानर, बंदर, लंगूर। (नां. मा.)

१९ अश्व, घोड़ा।

२० इन्द्र का घोड़ा।

२१ हिरन, मृग। (ह. नां. मा.)

२२ भ्रमर, भौंरा। (ह. नां. मा.)

२३ मयूर, मोर।

२४ तोता, कीर।

२५ गीदड़।

२६ हंस।

२७ जल, पानी।

उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात

२८ सर्प, सांप।

उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात

२९ मेंढक।

उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गयै हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात

३० एक प्राचीन पर्वत।

३१ एक वर्ष या भू भाग का नाम।

उ०—तेह युगलीयांना च्यारि भेद, छप्पन्न अंतरदीप १ हैमवंत, हैरण्यवंत २ हरि वा रम्यक तणां ३ देवकुरु उत्तरकुरु ४ एकति पाहि अनुक्रमइ अनंत गुण बल रूव सुख........।—व. स.

३२ गरुड़ के पुत्रों में से एक।

३३ भर्तृहरि का नामान्तर।

३४ तारकाक्ष का पुत्र एक असुर।

३५ तामस मन्वन्तर का एक देवगण।

३६ भूरा या पीला रंग। ❋

३७ जैनियों के ८८ ग्रहों में से उनचालीसवां ग्रह।

३८ छप्पय छन्द का ९ वां भेद जिसमें ६२ गुरु, २८ लघु से १५२ मात्राएँ तथा ९० वर्ण होते हैं। (र. ज. प्र.)

३९ मतान्तर में छप्पय छन्द का एक अन्य भेद जिसमें ५५ गुरु तथा ४२ लघु मात्राएँ होती हैं।

स. स्त्री.—४० किरण, रश्मि।

४१ सिंह राशि।

४२ इच्छा, कामना।

४३ कोयल।

४४ घोड़ों की एक जाति। (इस जाति के घोड़ों की गर्दन पर बड़े बड़े बाल होते हैं, शरीर के रोयें सुनहले रंग के होते हैं)

वि.—१ भूरा, कपिल, बादामी।

२ पीला।

उ०—लाल हरी सिकळात, जिलह जाळियां अजीदां। रसां कसै रेसमां, हेम रूपी हरि हौदां।—सू. प्र.

३ हरा, धानी।

४ काला-श्वेत। ❋ (डि. को.)

[illegible]

[illegible]

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]-सं. पु. [सं.] १ पीले या भूरे रंग का घोड़ा ।

२ [illegible] ।

३ [illegible] ।

[illegible] । (डिं. को.)

हरिकथा-सं. स्त्री. [सं. हरि+कथा] १ ईश्वर के अवतारों एवं चरित्रों का वर्णन, कथानक ।

२ इन कथानकों के संग्रह की पुस्तक ।

हरिकाय-सं. पु. [सं. हरितक] शाकाहार, फलाहार ।

उ०—कंद मूल फल बीज नो, भोजन हरिकाय । साध ने भोगवणो नहीं, पाप दीसण थाय ।—जयवांणी

हरिकीरतन, हरिकीरत्तन-सं. पु. [सं. हरिकीर्त्तनं] भगवान के नाम का कीर्तन, भजन, गायन ।

रू. भे.—हरीकीरतन, हरीकीरत्तन ।

हरिकेत-सं. पु.—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—सुरेस्वर भूपतलि रहे, हरिस्चंद्र हरिकेत । वइतरणी-विचि वर्द्द न्हातां, मरणि मयावइ प्रेत ।—मा. कां. प्र.

हरिकेश-सं. पु [सं. हरिकेश] १ सूर्य की एक कला ।

२ शिव, महादेव ।

हरिकेसि, हरिकेसी-सं. पु. [सं. हृषिकेशः] १ श्री कृष्ण ।

उ०—जहि पहुतउ जन माहिय, नाहिय प्रभु हरिकेसि । मांनि न परिहत्त उत्तम कुलम वयणु म भरोसि ।—जयसेखर सूरि

२ एक ऋषि चाण्डाल कुल में उत्पन्न होने पर भी संयम प्रताप से ऋषीश्वर हो गये ।

उ०—ऊंचै कुल 'ब्रह्मदत्त' हुवो, नीचं कुल हरिकेसी रे ।

—जयवांणी

हरिक्षेत्र-सं. पु. [सं.] पटना के पास का एक तीर्थ स्थान ।

रू. भे.—हरिखेत, हरिखेतर ।

हरिगत-सं. पु.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार लघु तथा फिर दो दीर्घ वर्ण इसी क्रम से बारह वर्ण होते हैं ।

(ल. पि.)

२ देखो 'हरख' (रू. भे.)

उ०—सहज सरूप सुंदरी, जांणी रंभा अवतार । नरखी निरखी हरिख पाम्यु चित्र नेमि टार ।—नळाख्यांन

हरिख—देखो 'हरख' (रू. भे.)

हरिखेत, हरिखेतर—देखो 'हरिक्षेत्र' (रू. भे.)

हरिगीतिका-सं. स्त्री. [सं.] अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द जिसकी पांचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु होती है । सोलह व बारह पर यति होती है तथा अन्त में लघु गुरु होता है ।

हरिचंद—देखो 'हरिस्चंद्र' (रू. भे.)

उ०—१ सतवादी हरिचंद से राजा, नीच घर नीर भरै । पांच पांडु अरु कुंती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै ।—मीरां

उ०—२ ध्रु कंवार अप मोरधुज, अंबरीक हरिचंद । पद सेवा परि पंडवां, की नव कोट नरिंद ।—रा. रू.

हरिचंदण, हरिचंदन-सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का चन्दन विशेष ।

२ स्वर्ग का एक वृक्ष ।

उ०—१ कळपव्रक्ष संतांन, पारिजाती हरिचंदण । तर मंदार दुवार, आंण ऊगा सुख अप्पण ।—रा. रू.

उ०—२ मंदार पारजाती कलप, हरिचंदन संतांन तर । परसियो 'अभै' व्रंदा विपन, कुंज पुंज तरवर निकर ।—रा. रू.

रू. भे.—हरचंदण, हरचनण, हरीचंदण, हरीचंदन ।

हरिचरित, हरिचरित्र-सं. पु.—ईश्वर का चरित्र या उसका गुणगान ।

रू. भे.—हरीचरित, हरीचिरत ।

हरिचाप-सं. पु. [सं] इन्द्र धनुष ।

हरिजख-सं. पु. [सं. हर्यक्ष] सिंह, शेर । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—हरजक्ष, हरीजख ।

हरिजटा-सं. स्त्री. [सं] रावण की अनुचरी एक राक्षसी, जो अशोक वाटिका में सीता को समझाने के लिये नियुक्त थी ।

रू. भे.—हरजटा

हरिजण, हरिजन-सं. पु. [सं. हरि+जन] १ ईश्वर का भक्त ।

उ०—जी रज हुवा ज क्या भया, उडि उडि लागै अंग । हरीया हरिजन जांणीयै, जैसा पांणी गंग ।—अनुभववांणी

२ भंगी, मेहतर ।

उ०—एकली बैठी फूसी कळपै-कुढै । वठै मा'रजा, हरिजण वाळकां मैं रीर्फ-मुळकै ।—दसदोख

हरिजस-सं. पु [सं. हर्यश्व] १ दृढ़ाश्व के पुत्र एक सूर्यवंशी राजा ।

[सं. हरियश] २ ईश्वर का यश, ईश्वर की कीर्त्ति जो भक्तों द्वारा बखान की जाती है, भक्तों द्वारा गाई जाती है, ईश्वर का स्तुति-गान ।

३ देखो 'हरिकीरतन' ।

हरिण-सं. पु. [सं. हरिणः] (स्त्री. हरिणी) १ एक सींगदार प्रसिद्ध चौपाया जंगली जानवर, मृग, हिरन । (ड. र.)

उ०—सर सांधी राउ केडइ धाइ, हरिणउ हरिणी सहितु पुलाइ ।

—सालिभद्र सूरि

वि. वि.—इसके शरीर के बाल अत्यन्त मुलायम होते हैं और इसकी खाल ऋषि-मुनियों के पहनने के काम आती है । इसके नेत्र बड़े सुन्दर होते हैं जिनकी उपमा स्त्री के सुन्दर नेत्रों को दी जाती है (मृगनयनी) । यह चौकड़ियां भरते हुए अत्यधिक तेज दौड़ता है । हिरन प्रायः सफेद, पीले व काले रंग के होते हैं, इनका कद

बकरे के समान होता है, परन्तु इनकी कई नस्लें होती हैं जिनके अनुसार इनके रंग व कद में विभिन्नता पाई जाती है। सबसे प्रसिद्ध हिरन 'बारहसिंगा' होता है जिसके मुख्य दो सींगों में से कई छोटे-छोटे अन्य सींग निकले हुए होते हैं। इसका रंग काला होता है।

२ हंस। ३ सूर्य।

४ विष्णु।

५ शिव।

६ सफेद रंग।

७ ब्रह्मा।

वि.—१ श्वेत।

२ पीला।

३ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.)

रू. भे.—हरण, हरन, हरिन, हिरण, हिरण्ण, हिरण्य, हिरन, हिरिण।

अल्पा.— हिरणलौ, हिरण्यौ।

हरिणईख, हरिणख—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—पहलाद संभरियौ आयौ जमपति, चत्रभुज नमौ भगत री चाड। बहनांमी रै दाढ तणै बळ, हरिणख तणी जांणियौ हाड।
—पी. ग्रं.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

हरिणनयणा, हरिणनयणी-सं. स्त्री.—मृग के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री, मृगनयनी।

हरिणनाभ-सं. पु.—१ हरण्यनाभ नामक एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—सुत जय हरिणनाभ सुभियांणौ। पुरब अप जै सुत इंद्र प्रमांणौ।—सू. प्र.

२ मृगनाभि जिसमें किस्तूरी होती है।

हरिणली—देखो 'हरिणी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रांनह न सिरजी हरिणली। सूरह न सिरजी धीणु गाई।
—बी. दे.

हरिणांकुस—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

हरिणांखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू. भे.)

उ०—जे कै घरि हरिणांखी नारि। तौ किम भमई पार कइ बारि।—बी. दे.

हरिणाकस, हरिणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—कोपमांन नरसिंघ रूप करि, विकट विराट वदन विकराळ। सोखै रगत असुर हरिणाकुस, प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ।
—ह. नां. मा.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हरि हुए वराह हए हरिणाकस, हूं ऊधरी पाताळ हूं। कही तई, करुणा मैं केसव, सीख दीध किए तुम्हां सूं।—वेलि.

हरिणाक्षी, हरिणाखी-सं. स्त्री. [सं. हरिणाक्षी] मृग के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री, मृगनयनी।

उ०—१ हरि समरण रस समभ्रण हरिणाखी, चात्रग खळ खगि खेत्र चढि। वैसैं सभा पारकी बोलण, प्रांणी वंछइ त वेलि पढि।
—वेलि.

उ०—२ मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीध निरास, बिलबिलै राजुल आंखीय भरि भरि नाखी निरास।—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—हरणांख, हरणांखी, हरणाखी, हरिणांखी, हरिणाखी, हिरणांखी, हिरणाखि, हिरणाखी, हिरणाखिं।

हरिणि, हरिणी-सं. स्त्री. [सं. हरिणी] १ मादा हिरन, मृगी।

उ०—जइ तुं पूछइहौ धरह नरेस। वन खंड रहती हरिणि कइ वेस।—बी. दे.

२ कामशास्त्र के अनुसार चित्रणी नामक स्त्रियों की जाति का नाम।

३ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में ७ गुरु और ४३ लघु वर्ण सहित ५७ मात्रायें होती हैं।
(ल. पिं.)

४ सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा।

५ सोनजुही नामक लता।

रू. भे.—हरणी, हिरणि, हिरणी।

अल्पा.—हरिणली।

हरिणेगमेखी-सं. पु.—जैन मान्यतानुसार शकेन्द्र की पैदल फोज के सेनापति देव का नाम।

उ०—.........१६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक, नाट्य गंधरव हय गज व्रखभ रथ पदाति रूपक तणा स्वांमी नीलंजणा रिद्धंजस हरि एरावण मातलि दांमिट्ठी हरिणेगमेखी सरवांगि सन्नाह पेहिरि, द्रढ कसा बंधि, धनुखि गुण चडावी रह्या,......।
—व. स.

वि. वि.—गर्भ परिवर्तन संतान समस्या में इसका आराधन करने का विधान भी जैनागमों में आता है।

हरित-सं. पु. [सं.] १ विष्णु का एक नामान्तर।

२ सूर्य।

३ सूर्य का एक घोड़ा, कुम्मेद घोड़ा।

४ सिंह, शेर।

५ हरा, पीला या धानी रंग।

६ घास, तृण।

७ दिशा।

८ द्वादश मनवन्तर का एक देव गण।

९ मान्धाता के पौत्र व युवनाश्व के पुत्र का नाम।

वि.—१ हरे रंग का, हरा।

३ [illegible] ।

[illegible]

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]—सं. पु.—[illegible] । (जैन)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—सं. स्त्री. [सं.] [illegible], मरकत ।

[illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. हरितालः] १ पीले रंग का कबूतर ।

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

रू. भे.—[illegible], [illegible] ।

[illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. हरितालिका] १ भाद्र शुक्ला [illegible] ।

२ दूर्वा घास, दूब ।

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]-व्रत—सं. पु. यौ. [सं.] भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को किया जाने वाला व्रत विशेष ।

[illegible], हरितास्री—सं. स्त्री.—१ तलवार का धारदार अग्र भाग, तलवार की धार ।

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.) (टि. को.)

[illegible]—सं. स्त्री. [सं. हरि+प्रिय] १ सरस्वती, शारदा ।

उ०—पीठ [illegible] पट्टी, हरितिय चित्रण हार । तोइ तोरा [illegible], परम न लाभै पार ।—ह. र.

२ लक्ष्मी ।

[illegible]—सं. पु. [सं. हरिदर्भ] हरे घोड़े वाला सूर्य ।

[illegible]—देखो 'हरिद्वार' (रू. भे.)

[illegible]—सं. पु. [सं.] (स्त्री. हरिदासी) १ ईश्वर का भक्त ।

२ रामस्नेही सम्प्रदाय के एक महात्मा ।

३ विष्णु भक्त ।

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible];—[illegible] ।

[illegible]—सं. पु. [सं. हरिदासिन्] १ ईश्वर की भक्त, भक्तिन, साध्वी-[illegible] ।

२ लक्ष्मी, रमा ।

३ पार्वती ।

४ रिद्धि-सिद्धि ।

५ [illegible], माया ।

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible], [illegible]—सं. पु. [सं.] विष्णु की उपासना का दिन, एका-[illegible] ।

[illegible]—सं. स्त्री. [सं. हरि+दिशा] पूर्व दिशा ।

[illegible]—सं. पु. [सं.] १ विष्णु ।

२ [illegible] ।

हरिद्वार—सं. पु. [सं.] उत्तर भारत में स्थित वह तीर्थ स्थान जहाँ पर 'गंगा' पहाड़ों को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है ।

उ०—१ हरिद्वार कुरुखेत जनकपुर, गोदावरी हुलासी । तीरथ बडै प्रयाग गयाजी, कासी तरुवर वासी ।—मीरां

उ०—२ अनुहरतां सुरघंट अपारै, दीपं किरि झल्लरि हरिद्वारै । कोपि अगम ओपम नवकोटां, सतु गढ कोट करण सैलोटां ।

—रा. रू.

रू. भे.—हरिदवार ।

हरिधनुख, हरिधनुस—सं. पु. [सं. हरिधनुष] इन्द्र धनुष ।

हरिधांम—सं. पु. [सं. हरि+धाम] विष्णु लोक, स्वर्ग ।

हरिध्रम—सं. पु. [सं. हरि+धर्म] १ ईश्वर का भजन ।

उ०—विखै करम कुं सब कोई आधा, हरिध्रम सेती पाछा । जन हरिरांम रांम रस पीजै, छाडि सूवर गऊ वाछा ।—अनुभववांणी

२ विष्णु धर्म ।

हरिन—१ देखो 'हरिण' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.)

हरिनख—सं. पु.—१ बाघ का नाखून लगा एक ताबीज ।

२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

वि. वि.—देखो 'बाघनख' ।

वि.—कुटिल, टेढा ।

हरिनैंणी—सं. स्त्री.—मृगनयनी ।

हरिनांम—सं. पु.—ईश्वर का नाम, स्मरण ।

हरिनांमी—सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

हरिनाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

हरिनाक्ष—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

हरिनाथ—सं. पु. [सं.] हनुमान का एक नामान्तर ।

रू. भे.—हरीनाथ ।

हरिन्मणि—सं. स्त्री. [सं.] हरे रंग की मणि, पन्ना ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्तराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चंद्रकांत नील महांनील इंद्रलील सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतांमणि ।—व. स.

हरिपद—सं. पु. [सं.] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

२ मोक्ष, मुक्ति ।

३ वसंत कालीन वह दिन जब दिन व रात बराबर होते हैं, २१ मार्च ।

रू. भे.—हरीपद ।

हरिपदि, हरिपदी—सं. स्त्री. [सं.] गंगा नदी का एक नाम, विष्णुपदी ।

(ह. नां. मा.)

रू. भे.—हरीपदि, हरीपदी ।

हरिपुर—सं. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

रू. भे.—हरपुर, हरीपुर।

हरिपैड़ी-सं. स्त्री.—१ हरिद्वार में गंगा का एक प्रसिद्ध घाट।

२ उक्त घाट पर बनी सीढियां।

रू. भे.—हरपेड़ी, हरपैड़ी।

हरिप्रिय-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का चंदन।

हरिप्रिया-सं. स्त्री. [सं.] १ लक्ष्मी, कमला।

२ पृथ्वी, धरती।

३ तुलसी।

४ द्वादशी तिथि।

५ शराब, मद्य।

६ शहद, मधु।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १२, १२, १२, १० के विराम से ४६ मात्राऐं होती है और अन्त में गुरु होता है।

रू. भे.—हरप्रिय, हरप्रिया।

हरिप्रवोधणी, हरिप्रबोधती-सं. स्त्री. [सं. हरिप्रबोधिनी] कार्तिकशुक्ला एकादशी।

वि. वि.—चातुर्मास में देवशयनी के दिन विष्णु शयन करते हैं और कार्तिक मास की शुक्लएकादशी के दिन जागृत होते हैं। इस दिन का अत्यधिक माहात्म्य है। इस दिन लक्ष्मी अपने गुणों से अपने पति (विष्णु) को जीत कर नैत्रों से देख कर सुख पाती है।

हरिप्रीता-सं. स्त्री.—ज्योतिष में एक मुहूर्त।

हरिबल्लभा—देखो 'हरिवल्लभा' (रू. भे.)

हरिबाहण, हरिबाहन—देखो 'हरिवाहण' (रू. भे.) (डिं. को.)

हरिबोधनी, हरिबोधिनी-सं. स्त्री. [सं. हरिबोधिनी] कार्त्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

हरिभक्त-सं. पु. [सं.] जो ईश्वर में विश्वास एवं श्रद्धा रख कर निरन्तर ईश्वर की भक्ति करता हो, ईश्वर-भक्त।

रू. भे.—हरिभगत।

हरिभक्ति-सं. स्त्री. [सं.] ईश्वर की भक्ति, ईश्वर-प्रेम।

रू. भे.—हरिभगति।

हरिभगत—देखो 'हरिभक्त' (रू. भे.)

उ०—वन में हुती स्योरी भीलणी, ज्यांका आरोग्या ठाकुर बोर। ऊंच नीच हरि नां गिणें, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर।

—मीरां

हरिभगति—देखो 'हरिभक्ति' (रू. भे.)

उ०—कुंण ऊंचा नीचा कवण, जांस पटंतर जोय। हरीया ऊंची हरिभगति, करै स ऊंचा होय।—अनुभववांणी

हरिमंथक-सं. पु. [सं. हरि+मन्थकः] १ छोटा मटर।

२ चना।

हरियंदुदर-सं. पु. [सं. हरितेन्दुदर] भ्रमर, भौंरा। (अ. मा.)

हरिय-सं. पु. [सं. हरित] १ वनस्पति।

२ पीत रंग का घोड़ा। (डिं. को.)

हरियर-सं. पु.—एक प्राचीन राजकुल।

उ०—राजकुली ३६, सूरयवंस सोमवंस यादववंस कदंब परमार इक्ष्वाक चहुमांन चालुक्य मोरी सेलार सैंधव बिंदक चावोत्कट प्रतिहार लब्धक रास्ट्रकूट सक करवट कारट पाल चांदिल गोहिल गुहलिपुत्रक धांन्यपाल राजपाल अनंग निकुंभ दधिकर कालामुह दापिक हूण हरियर डोसमार।—व. स.

हरियळ, हरियल-वि.—१ हरे रंग का, हरा।

उ०—१ उतरतौ भादरवौ। सरस हरियळ धरती री कूख पांवडै पांवडै हिवड़ा री हरख दरसावती ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ गांम सूं उगमणा आयोड़ा डूंगर नीला हेवन व्हैग्या हा. अर वांरै ढाळ में आयोड़ा कोसां लांबा खेत, इसा लागता हा जांणै हरियळ जाजम बिछयोड़ी व्है।—अमरचूनड़ी.

उ०—३ मेड़ी रा छाजा माथै एक हरियल सूवटौ आयनै बेठ्यौ। वौ आखतौ होय बोल्यौ—मां, सूवौ, सूवौ!—फुलवाड़ी

२ जो सूखा न हो, हरा। (पेड़, पौधे, घास, वनस्पतियां आदि)

उ०—१ कैतां पांण ठाकर रा मन में आ बात जचगी। अजेज ऊभा ज्यूं ई बाग में गिया। हरियल पांनां रै विचाळै फूल दीप दीप करता हा। सौरम सूं ठाकर री रग रग नाचण लागी।

—फुलवाड़ी

उ०—२ उण री आ विकट दरद भरी बतळावण सुणनै एकण सागै गिगन रा सात तारा तूट्या, रूंखां री कूंपळा बळगी, हरियल पांन झड़ग्या अर बाग-बगेच्यां रा केई फूल मुरझायग्या।

—फुलवाड़ी

३ हरा भरा, प्रफुल्लित, पुष्पित-पल्लवित।

उ०—तंबुवां उतरै राठोड़ां री जांन कोई, हरियल बागां पाबू बनड़ी सोवणी ए मोरी सइयां।—पाबूजी री गीत

४ जो फलने-फूलने लायक हो, विकासशील।

स०—दुनियां री सिरजण करण वाळी हरियल कूख नै म्हैं म्हारै ई हाथां मसांण बणायो, इण अथाग दुख री थूं कूंतौ कर सकै बेटी।—फुलवाड़ी

सं. पु—एक प्रकार का पक्षी, जिसका मांस बढ़िया होने के कारण इसका शिकार किया जाता है।

रू. भे.—हरियाळ, हरियाल, हरीयाल।

हरियांणउ, हरियांणौ, हणियांनौ-वि. (स्त्री. हरियांणी) १ हरा-भरा, सर-सब्ज।

उ०—सक्कर पय खांणा हैं हरियांणा। जहां सिंधु दा थिर थांणा। वसतै अवधूता सिद्ध सबूता, जोग जगूता सबजांणा।—पा. प्र.

२ प्रसन्न, हर्षित।

३ पुष्पित, पल्लवित।

[illegible] —[illegible] एक प्रान्त विशेष जिसकी सीमाएँ राजस्थान व [illegible] से मिलती है।

उ०—[illegible] नदेरी मल्लिवाल महुवर महोब हरिकोलाट [illegible] मसूर [illegible] मोहियांग जालंधर सिंधु प्रारब [illegible] सिंध [illegible] महमोट चीण महाचीण........।—व. स.

हरियाळ-सं. पु.—गाय, भैंस, बैल आदि पशुओं को होने वाला एक रोग जो वर्षा ऋतु में हरा घास अधिक खाने से होता है।

हरियाळ, हरियाल-सं. पु. [सं. हरिकाल] १ वक्त, समय। (अ. मा.)

२ देखो 'हरताळ' (रू. भे.) (उ. र.)

३ देखो 'हरियाळ' (रू. भे.)

४ देखो 'हरियळ' (रू. भे.)

हरियाळी, हरियाली-सं. स्त्री.—१ हरे भरे वृक्ष, पौधों या वनस्पतियों का समूह।

उ०—१ बधज्यो, कड़वा नीम ज्यूं, वीरा बधज्यो, थो हरियाळी री दूब, पधारो जी म्हारै घर आवियो।—लो. गी.

उ०—२ मटकियां में पांणी जम जातो। पांनां माथै पड़ी ओस री कणीयां बण जातो। नित री कारकरी सूं हरियाळी पीळी पड़गी। —फुलवाड़ी

२ हरा घास, दूब।

उ०—गळी अर पांगळी नदियां नै पगां हलावै। सूखा में हरियाळी उगावै [illegible] रा मांडणां मांडै। धांन निपजावै।—फुलवाड़ी

३ पेड़-पौधों, घास व वनस्पतियों की प्रस्फुटित, पुष्पित-पल्लवित होने की अवस्था या दशा।

उ०—वाजरियां हरियाळियां, विचि विचि वेलां फूल। जउ भरि वूठउ भादवउ, मारू देस अमूल।—ढो. मा.

४ आर्द्रता, गीलापन, नमी, सूखे का विपर्याय।

५ हरापन।

उ०—पीलू पीदुम सनै, कजळी छिब उणियारै। जांणै वणै अंगूर, [illegible] हरियाळी मारै।—दसदेव

६ पावस, वर्षा।

उ०—[illegible] धन धणउ, बीजळि खिवइ अगास। हरिय ली [illegible] भरी, घर गंगनि [illegible] पास।—ढो. मा.

७ लाक्षणिक अर्थ में आनन्द, खुशहाली।

रू. भे.—हरियाळो, हरीयाळी, हरीयाली, हिराळी।

हरियाळी अमावस-सं. स्त्री. यौ.—श्रावण मास की अमावस्या।

हरियाळी-टाणी-सं. स्त्री. यौ.—लड़कियों द्वारा गाया जाने वाला एक मारवाड़ी लोक गीत।

हरियाळी तीज-सं. स्त्री. यौ.—श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया। स्त्रियों के लिए यह एक त्यौहार माना जाता है।

हरियाळी-बनड़ो-सं. पु. यौ.—१ नया दूल्हा।

उ०—अर हरियाळी-बनड़ो, महेलां पधारयो ए, महेलां में सहर सरायो, ए बाईजी म्हारा राज।—लो. गी.

२ एक लोक गीत।

हरियाळो, हरियालो-सं. पु.—१ हरे-भरे पौधों का समूह, विस्तार।

उ०—हेरै हरियाळो भूतळ हरखाती, गहरो ऊंचै गळ हरियाळो गाती। धिन धण छकि जाती छाती सख छाती, जांफर फणकाती जाती मदमाती।—ऊ. का.

२ खेतों में कार्य करते समय किसान स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—१ गोरी म्हारी ए, हरियाळो वूठीजै क्यूं, यूं म्हारा सायब यूं जी यूं। गोरी म्हारी ए हरियाळो वायी जै क्यूं, यूं, म्हारा सायब यूं जी यूं।—लो. गी.

उ०—२ हेरै हरियाळो भूतल हरखाती। गहरो ऊंचै गळ हरियाळो गाती।—ऊ. का.

३ हरा घास।

४ हरा-भरा वातावरण।

५ एक खास जाति का घोड़ा।

वि.—१ जो सूखा न हो, हरा, आर्द्र, ताजा।

उ०—हरियै हरियाळै डाळै काळी कोयल बोलै राज। बोलै बोलावै, सैयां सबद सुणावै राज।—लो. गी.

२ हरे रंग का, हरा।

उ०—एवड छेवड सात चिड़कली, बीच मैं हरियालो सूवटो। चक-चक बोलै सात चिड़कली, इम्रत बोलै हरियो सूवटो।—लो. गी.

३ हरा-भरा।

उ०—१ सुत 'अजमल' रत घणी, सहांमण, सीख दियो हरियाळै सावण।—अग्यात

उ०—२ हेत रा गिगना री परनाळा उघाड़ा परबतां माथै रपट'र गुदगुदै हरियाळै मैदांन नैं कद पार करया अर कद ऊंची-ऊंची ल्हैरयां खाता समदर मांय समायग्या।—तिरसंकू

हरियो-भरियो-वि. यौ.—१ हरा-भरा।

२ पुष्पित-पल्लवित।

३ सुखी, प्रसन्न, प्रफुल्लित, सम्पन्न।

४ पर्याप्त, पूर्ण।

उ०—हरियो भरियो धांन, ऊतरै सदा सतोलो। छिगला लगै ललांम, घोर धन देवण पोलो।—दसदेव

हरियो-सं. पु. [सं. हरित] १ हरा घास, हरा चारा, वनस्पति।

२ हरे रंग का विस्तार।

३ एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—कुमैत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूवर बोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केला महुवा धूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्यांण पवण गुरड़ मंजाव संदली सीहा चकवा अबलख

सिराजी। फेर ही अनेक रंग रा घोड़ा तयार कीजै छै।
—रा. सा. सं.

वि.—१ हरे रंग का, हरा।

उ०—१ सू मूंग किण भांतरा छै? मगरै रा नीपना, भरत रै खेतरा, हरियै रंग रा, चुंवळां जेड़ा, इण इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकाय जै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ चक वक बोलै सात चिड़कली इम्रत बोलै हरियौ सूवटौ।
—लो. गी.

२ जो सूखा न हो, जो मुरझाया हुआ न हो, ताजा, हरा, आर्द्र, नम।

उ०—हरिये हरियालै डाळै काळी कोयल बोलै राज। बोलै बोलावै सैयां सबद सुणावै राज।—लो. गी.

३ पुष्पित, पल्लवित।

ऊ०—१ भाप करै सर सूभर भरिया, धरती रूप अनेकां धरिया। हमीरोत, हूवा गिर हरिया, सीख समापी घर सांभरिया।
—आसो बारहट

उ०—२ हरिया गिरवर धर तर हरिया, गै धूंवै अंबर घर हरिया। धारोळा वादळ धर हरिया, सुकव विदा कर घर संमरिया।
—अग्यात

४ हरियाली से भरा हुआ।

५ प्रसन्न, प्रफुल्लित।

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, किती ही तुलावौ चावै मंडी सूं माल। मा'रजा रौ मन सतवाड़ै हरियौ हुयग्यौ। ऊंचौ उछळ पड़यौ।
—दसदोख

६ देखो 'हरि' (अल्पा; रू. भे.)

हरिरक्षा—सं. पु—राम रक्षा नामक एक स्तोत्र विशेष।

उ०—वूभ व्यास, प्रोहितां समर सूरां गुर सिक्षा। सकत मंत्र सिव कवच विरग्गु पंजर हरिरक्षा।—रा. रू.

हरिरथ—सं. पु [सं. हरि+रथ:] विष्णु का वाहन गरूड़।

उ०—हरिरथ माठौ होय, सगत रथ होय सयांणौ। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराद पयांणौ।—चोथ वीठू

रू. भे.—हररथ।

हरिरस—देखो 'रांमरस'।

उ०—ज्युं लाभै ज्युं लीजीयै, हरीया हरिरस जांनि। तन मन देतां सीस कु, मत पछतावौ आंनि।—अनुभववांणी

हरिरांणी—सं. स्त्री.—१ लक्ष्मी।

२ पार्वती।

३ सरस्वती।

रू. भे.—हररांणी।

हरिराय—सं. पु.—ईश्वर, परमात्मा।

हरिरूपा—सं. स्त्री. [सं.] विष्णु रूपा, गंगा।

उ०—देवी हारणी पाप श्री हरिरूपा, देवी पावणी पतितां तीर्थ भूपा।—देवि.

हरिलंकी—वि. स्त्री. [सं. हरि+लंक] जिसकी कमर सिंह की कमर के समान पतली हो, सुन्दरी।

उ०—सरि-वदन अगलोचना रे, हरिलंका सुविसाल। राजा मांनै अति घणी रे, जीव सूं अधिक रसाल।—जयवांणी

सं. स्त्री.—पतली कमर वाली सुन्दर स्त्री।

हरिलीला—सं. स्त्री. [सं.] १ ईश्वर की माया, ईश्वर की लीला।

२ चौदह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

हरिलोक—सं. पु. [सं.] विष्णु-लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

हरिवंस—सं. पु. [सं. हरि+वंश] १ सूर्य वंश।

२ कृष्ण का वंश।

३ महाभारत का एक परिशिष्ट, जिसमें कृष्ण के वंश का वर्णन है।

हरिवंसपुरांण—सं. पु. यौ. [सं. हरि+वंश+पुराण] एक पुराण का नाम।

उ०—परभात सखरौ महूरत देख महलां में देवसरमा नूं बुलाइयौ अर उण सूं स्रीहरिवंसपुरांण कथा आरंभ कराई।
—सांई री पलक में खलक री बात

हरिवल्लभा—देखो 'हरिप्रिया'।

उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रभा। अवर ग्रहै अस्थिरा इंदिरा रांमा हरिवल्लभा रमा।—वेलि

हरिवसु—वि [सं. हरि+वश] ईश्वर के अधीन।

उ०—दांणा पांणी हरिवसु, जांह जावै तांह देह। खांणा पीणा जिद कुं, हरि का करि करि लेह।—अनुभववांणी

हरिवांम, हरिवांमा—सं. स्त्री. [सं. हरि+वामा] १ लक्ष्मी, कमला।
(अ. मा.)

२ सरस्वती।

३ पार्वती।

४ सीता।

रू. भे.—हरबांम, हरबांमा, हरवांम, हरवांमा।

हरिवासर—देखो 'हरिदिन'।

उ०—देव दसमि एकादसी, हरिवासर जो होइ। पुन्य प्रथम ते पारणइ, द्वादस नी दिनि जोइ।—मा. कां. प्र.

हरिवाहण, हरिवाहन—सं. पु. [सं. हरि+वाहन] विष्णु का वाहन, गरूड़। (अ. मा.)

वि.—पीला, पीत। * (डिं. को.)

रू. भे.—हरवाहण, हरवाहन, हरिबाह, हरिबाहन।

हरिविक्रम—सं. पु.—शृंगार में एक आसन विशेष।

हरिव्रत—सं. पु. [सं. हरि+व्रत] हरि भक्ति; ईश्वर की आराधना।

उ०—हरीया हरिव्रत छाडिकै, करै और ही वास। जेसैं गिनका पीव विन, औरां सुं घरवास।—अनुभव वांणी

[illegible] [सं. हरि+भक्ति] १ ईश्वर भक्त, हरिभक्त।
  २ [illegible], [illegible], भक्त।
[illegible] [सं. [illegible]] एक जाति पक्षी विशेष।
[illegible]-सं. पु. [सं. हरि+शंकर] १ विष्णु का एक नामांतर।
  उ०—[illegible] हरिसंकर गमरीगो हर।
  —महादेव पारवती री वेली
  २ विष्णु व शिव री जोड़ी।
[illegible]-सं. पु. बी. [सं.] विष्णु व शिव।
  उ०—[illegible] कदम कपरद कमंडळ हरिहर [illegible]।—मे. म.
[illegible]-सं. पु. [सं. [illegible]] १ पर्ण रोग।
  २ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
[illegible]-सं. पु [सं. [illegible]] १ अर्जुन का एक नामान्तर। (अ. मा.)
  २ [illegible]।
  रू. भे.—[illegible]।
[illegible], हरिसेन-सं. पु.—१ एक चक्रवर्ती राजा। (जैन)
  २ [illegible] मनु का एक पुत्र।
[illegible]-सं. पु. [सं. हरिश्चन्द्र] एक सूर्यवंशी राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे। ये [illegible] सत्यवादी एवं दानी थे।
  उ०—[illegible], हरिस्चंद्र हरिकेत। वइतरणी-त्रिचि [illegible], [illegible] प्रेत।—मा. कां. प्र.
  रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], हरिचंद।
हरिहंस, हरिहंसन—देखो 'हरहंस' (रू. भे.)
  उ०—[illegible] पुनरभव [illegible], त्रिमळ कमळ दळ ऊरि [illegible]। [illegible] हरिहंस सावक ससिहर [illegible]।—वेलि.
[illegible], [illegible]-सं. पु.—बिहार में स्थित एक तीर्थ स्थान जहाँ [illegible] पूर्णिमा को गंगास्नान का बड़ा माहात्म्य माना जाता है।
[illegible]-सं. पु.—१ एक वृक्ष विशेष।
  उ०—[illegible], हरदां [illegible] बेर। हरवी हाबुडी हरी, [illegible]।—मा. कां. प्र.
  २ [illegible]।
  उ०—[illegible] पनियो तो उण मूं [illegible] पांवडा आगै [illegible]। [illegible]। नीं कोई री हरी में अर नीं कोई री [illegible]।—[illegible]
  ३ देखो '[illegible]' ([illegible])
  उ०—१ [illegible] दरिद्र तणो दीधो दरिद्र। [illegible], हरी [illegible] हरिद्र।—वेलि
  उ०—२ हरी [illegible], निज [illegible]। [illegible]।—सू. प्र.

  उ०—३ तठा उपरांयत गंगेव नीबावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां करै छै। कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू नारंगिया सपेत।—रा. सा. सं.
  ४ देखो 'हरि' (रू. भे.) (डि. को.) (उ. र.)
  उ०—गुरु संतन की सोहनि सूरति उर बिचि आइ अरी। मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, सरणै राखि हरी।—मीरां
हरीअडो-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।
  उ०—अरब छइ जे घोडा, हेरंमा हरीअडा नील नीलडा कालूंआ काजला किहाडा कोसीरा अहिठांणा पइठांणा ऊजळा जीहडा...।
  —व. स.
हरीआळी, हरीआली—देखो 'हरियाळी' (रू. भे.)
  उ०—हरै लीनी हियौ तनां हरीआलियां, सोर कर सरै दादुर सुहाया। गाज ऊंडो करै मेघ आया गयण, नागरी कांनजी घरै नाया।—वां. दा.
हरीकीरतन, हरीकीरत्तन—देखो 'हरिकीरत्तन' (रू. भे.)
हरीख-क्रि. वि.—१ हर्षित होकर।
  उ०—स्रीपाल राजा कीधी परीख, कोढ रोग गयौ हुंतौ बहु वरीख। निरधार मूरति नयणे निरीख, समयसुंदर गुण गावइ हरीख।
  —स. कु.
  २ देखो 'हरस' (रू. भे.)
  उ०—आवी अबांसई सांचरी। हीयडइ हरीख मन रंग अपार।
  —बी. दे.
हरीखणी, हरीखबौ—देखो 'हरसणी, हरसबौ' (रू. भे.)
  उ०—पूजी देव्या मनी हरीखीयौ। बहु मादळ वाजै तिणी ठाई।
  —बी. दे.
हरीखियोड़ौ—देखो 'हरसियोड़ौ' (रू. भे.)
  (स्त्री. हरीखियोड़ी)
हरीखौ—देखो 'हरसित'।
  उ०—ढोलाजी रै ऊंटिया बोलावौ, ढोलाजी रै काठियां मंडावौ। ढोलाजी रै होई नै हरीखा, ढोलाजी रै आंसू लेवा जाए।
  —लो. गी.
हरीचंदण, हरीचंदन—देखो 'हरिचंदण' (रू. भे.)
  उ०—फुंकार अहेस, हरीचंदण पयोध फैण, माहेस त्रिनैण इंद्र जुन्हाई समाय। गिरवांणां सहाई मनोज धेनु ध्यांन गोभा, नाराज, वरीस, सोभा इसी प्रांणनाथ।—र. रू.
हरीचरित, हरीचित्त—देखो 'हरिचरित' (रू. भे.)
हरीजस—देखो 'हरिजस' (रू. भे.) (ना. डि. को.)
हरीतकी-सं. स्त्री [सं.] १ हरड़े, हर्र।
  २ हर्र का पेड़।
  रू. भे.—हरितकी।
हरीतणोपित्त-सं. पु.—१ शेषनाग की शैया।

२ शेषनाग ।

हरीतन-सं. पु.—हरियाली ।

उ०—सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । त्रण वल्ली विसतरी, वर्ण ग्रह वरी दिसा वन ।—रा. रू.

हरीनाथ—देखो 'हरिनाथ' (रू. भे.)

हरीपड़ौ-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा । (शा. हो.)

हरीपद—देखो 'हरिपद' (रू. भे.)

हरीपदि, हरीपदी—देखो 'हरिपदि' (रू. भे.)

हरीपुर—देखो 'हरिपुर' (रू. भे.)

उ०—फिरै मुहड़ै गंजां फोजां, धजां नेजां ढाहि । 'भांण' री गौ गयण भेदै, 'मांन' हरीपुर माहि ।—जैतौ महियारियौ

हरीफ-वि. [फा.] प्रतिद्वन्दी, शत्रु, दुश्मन ।

उ०—वर रौ बी व्हाली वसै, हरीफ रे हिरदेह । भैखज दे थाकै भिसग, छुवै न रूज निच छेह ।—रैंवतसिंह भाटी

सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सारीपी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ वयराजीउं महिदउरउं तीतञागिउं कचीयउं पीठ समुसी पीठ देवगिरू मंदील होलीउं तल-पकाउ नरम्म हरीफ प्रभृति वस्त्रजाति ।—व. स.

हरीभरीवाड़ी-सं. स्त्री.—१ लताओं, पौधों एवं पुष्पों से भरी वाटिका ।

२ हरा भरा खेत ।

३ ऐसा परिवार या घर जो सुखी और सम्पन्न हो ।

हरीभाजी-सं. स्त्री.—हरा शाक, सब्जी ।

हरीयड़-सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश विशेष ।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायंगणि गया । जयवंता यादव वीहल्ल, नर निकुंभ गिरूया गोहिल्ल ।—कां. दे. प्र.

हरीयड़ौ, हरीयडौ-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा ।

उ०—१ देवसीह भोजउ भड़ वेउ अणतउ धड़सी तेजउ जेउ । एक सहस पल्हांणा कीध, एह हरीयड़ा तेजी दीध ।—कां. दे. प्र.

उ०—२ हांसइं हयवर नीलड़ा हरीयडा गंगाजळा सांमळा । तेहे यादव संचरचा परवरचा तेजी तुखारै चड्या ।—धनदेवगणि

हरीयल, हरीयाळ—देखो 'हरियल' (रू. भे.)

हरीयोनीलौ-सं. पु.—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

हरीरौ-सं. पु.—एक प्रकार का पतला हलवा जो प्रायः रोगियों को खिलाया जाता है ।

हरीस-सं. पु. [सं. हरीश] १ वानरों का राजा ।

२ हनुमान ।

हरीसखा—देखो 'हरिसखा' (रू. भे.)

हरीसरी-सं. स्त्री.—गंगा नदी ।

हरीसौ-सं. पु.—एक प्रकार का व्यंजन विशेष जो १० सेर मांस, ५ सेर कुटा हुआ गेहूं, २ सेर घी, १/२ सेर नमक, २ दाम दारचीनी आदि मिश्रण से बनता है । उक्त सामग्री से पांच रकाबियां भर जाती है ।

हरीहय-सं. पु.—देवराज इन्द्र ।

हरी होणी-सं. स्त्री. [देशज] गाय, भैंस आदि का गर्भ धारण करना ।

हरेई-सं. पु.—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।

उ०—हरेई चढ्यौ बाजि साहाब दीनं, भये कंध केकीन के मांन हीनं ।—ला. रा.

हरेक-वि. [फा. हर+सं. एक] प्रत्येक, हरएक ।

उ०—१ अंध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोड़ी वात नै सांची मांनण खातर ही बण्यो है ।—दसदोख

उ०—२ हरेक वार नवौ हीरौ देखतां ई एक बार तो मैंमड़ी री आंख्यां चमकण लागती पण थोड़ीक जेज में पाछी मगसी पड़ जावती ।—अमर चूंनड़ी

हरेबौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा ।

उ०—के आरब ऊधरा हेक घजराज हरेबौ । आरूहतां उत्तंग अंग जुगि लगै रकेबौ ।—रा. रू.

२ देखो 'हरेवी' (रू. भे.)

हरेवा-सं. स्त्री.—१ हरे रंग की बुल-बुल ।

२ छोटा मकान ।

हरेवी-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की खटाई युक्त दाल ।

उ०—कमोद तुळछी स्यांमजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसंग हरेवी सौरंभ क्षुभवा किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भांति जिन्हुं के गंज दरसावै ।—सू. प्र.

२ देखो 'हरेबौ' (रू. भे.)

हरोळ हरोल—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ 'दळपति' अमर विदा करि दीधा, कूरम आति हरोळां कीधा ।—सू. प्र.

उ०—२ उणनैं सरणैं राखीजै । अरू मौंनै हरोल कीजै नें अव-रंगजेबसूं लड़ाई अर आंटा री बात दाखीजै ।

—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री बात

हरोळाई, हरोळिय, हरोळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ धुर लूंटण धांधळ पूत धरा । चव मुज्ज हरोळिय सारंग रा ।—पा. प्र.

उ०—२ सांजी मेळा सांग देव राखी चंदोली । मिंदर मंडी मसांण होळिका फाग हरोळी ।—ऊ. का.

उ०—३ लेखै रांम सुलिखमण बाळक, तेज रिखी अण तोली । हेरै भूप कह्यौ हूं हाजर, हालूं साथ हरोळी ।—र. रू.

उ०—४ हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोली । पाय तंता गरण छिद अपाळै ।—र. ज. प्र.

हरौ-सं. पु.—१ पौत्र, वंशज ।

२ ताजी घास या पत्ती का सा रंग ।

३ उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा ।

[illegible] [illegible] १ [illegible] रंग रा, [illegible] ।
२ [illegible] में मस्तूर हो ।
[illegible]
३ [illegible] न हो ।
४ [illegible] न हो (पान) ।
५ [illegible] प्रसन्न, प्रफुल्लित ।

[illegible], हरौळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)
उ०—१ '[illegible]' [illegible] हरौळ [illegible] दीपै ।
[illegible] 'प्रमरेस' घवेनी ।
—रा. रू.
उ०—२ संवत १६८१ रा [illegible] सुदि १५ [illegible] नदी ऊपर साहजादै [illegible] नुं [illegible] हुई । राजाजी नुं हरौळ कीया था, फतै [illegible] ।—नैणसी
उ०—३ केई [illegible] हरौळां घोरै फतै किधी । केई फौजां मार [illegible] कमंध ।—किरपारांम कवियौ

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—१ [illegible] भरया, हरघा अठारै भार । विण [illegible], हरिजन [illegible] हार ।—अनुभववांणी
उ०—२ [illegible] हरया हा, सांपड़ दै प्रांण भरया हा । [illegible] हरणी [illegible] हा ।—सकुंतला

[illegible]-वि.—जिसका अंतिम अक्षर या वर्ण हल् हो ।
रू. भे.—हलित ।

[illegible]-सं. पु. [सं. हल] १ कृषि कार्य का एक प्रमुख उपकरण या यंत्र जो जमीन को जोतने तथा बीज बोने में काम आता है। यह पहले लकड़ी का और अब लोहे का भी बनता है ।
उ०—१ 'हरिया' हळ हाक मतो कर मन हठ, जाच किसन ज्यूं [illegible] । [illegible] न भाजे ऊणत, गीत फिटा कर फोग [illegible] ।—हरदांन बारहठ
उ०—२ [illegible] रा दिन है । गु आगै रायधण बाप हमीर नै [illegible] हळ [illegible] ।—नैणसी
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला आयुध जो [illegible] उपकरण (हल) के आकार का बना होता था । (व. स.)
उ०—बळिभद्रजी [illegible] हळां सुं दुसमणां का माथा टूटै छै । जैसे [illegible] आघात होय । इणि भांति [illegible] हळ वहै छै ।—वेलि टी.
३ [illegible] उतना माप जितना एक हल द्वारा एक दिन में बोया [illegible] ।
४ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार पैर की एक रेखा या चिन्ह ।
५ [illegible] ऊपर बनी कृत्रिम रेखा ।
उ०—[illegible] रा [illegible], माटी रा [illegible], ऊपर [illegible] रा [illegible], गांव री [illegible] छै, [illegible] रा पंता छै. दांतरा मुकाळा छै. सोन्हे री हळ लिखी छै ।—रा. सा. सं.
रू. भे.—हळि, हळी, हल्ल, ।
अल्पा.—हळियौ ।

हल-सं. पु. [अ.] १ किसी समस्या का समाधान, निराकरण, ।
२ गणित में किसी सवाल का उत्तर निकालने के लिए तैयार किया जाने वाला विवरण ।
३ किसी सवाल का उत्तर ।
[सं. हल्] ४ वह शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो ।
[देशज] ५ गति, चाल ।
उ०—वदळै डार गई दस वाटां, हुई लार अण पार हल । धकै चाढ सरदार धकाया, मार घणी ओलाळमल ।—महादांन महडू
६ हिलने डुलने की अवस्था या भाव, झटका, कम्पन ।
रू. भे.—हल्ल ।

हलक-सं. पु. [अ. हल्क] १ गले की नली, कंठ ।
२ गला ।
३ मण्डली ।
४ मण्डल, घेरा, वृत्त ।
५ क्षेत्र, इलाका ।
६ चहल-पहल ।
उ०—काचौ देह तणौ कमठांणी, पड़तां नह लागै पलक । दुनिया तणी निहली दोलत, हठवाड़ा वाळी हलक ।—बां. दा.
[सं. हल्लकं] ७ कुसुम, फूल । (अ. मा; ह. नां. मा.)
८ लाल कमल ।
९ सुन्दरता, शोभा ।
उ०—१ पेख्यां हलक हिमाळ सारस-वार पयांण । कोंच-रंध्र अखियात, पारस कीरत आंणै ।—मेघ
उ०—२ जोधांणी जसराज री, खूबी करै खलक । खाणा पीणा गांठ रा, जोबण री वडी हलक ।—अग्यात
१० आनन्द ।
११ देखो 'हलकौ' (रू. भे.)
उ०—१ हस्ती थै लाई जी कजळी देस रौ । हस्तियां रै हलक पधारजो रे तोरै आवजो ।—लो. गी.
उ०—२ नगर हलक हालै नर नारी, घर वंधी छोड़ै परवारी । मिळ तांजू दी सीख उमंग ।—र. रू.
रू. भे.—हलक्क, हलग ।

हलकणौ, हलकबौ-क्रि. अ.—१ भरे हुए पात्र में द्रव पदार्थ का हिलना डुलना ।
२ हिलना-डुलना, हिलोरे खाना ।
उ०—पगांळी जोड़ां एडी पर अड़े है । लेंगै री नाड़ी लारनै ले लियां । ढोल हवा ज्यूं हलके है । ऊपर में ना बोली जकी आज गाड़ाद्धा मारै है —दसदोख

क्रि. स.—३ ललकारना, उकसाना।

उ०—सवार हुवौ, तरै रावळ आपरी साथ हलकनै तूट पड़ियौ। पैली कांनी सूं राव री साथ आयौ।—नैणसी

हलकणहार, हारौ (हारी), हलकणियौ—वि०।

हलकिस्रोड़ौ हलकियोड़ौ, हलक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हलकीजणौ, हलकीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

हलक्कणौ, हलक्कबौ—रू० भे०।

हलका-सं. स्त्री.—एक प्रकार की कमान।

उ०—१ सो किण भांति री कवांण थेट विलाती, सींगरी सिगणीं, तूंजी हलका, अठारै टांक चिलैरी खाअणहार........।

—रा. सा. सं.

उ०—२ इण भांति री तूंजी हलका ज्यौं लचकती, रतनाळा लोचनां, अणियाळा काजळ सारीजे छै।—रा. सा. सं.

हळकाई-सं. स्त्री.—१ हल्कापन।

उ०—हळकाई तीर की ज्यूं जांण जै सौ कमांन सूं निकाळियां पछै पाछौ नहीं फिरै।—नी. प्र.

२ विनम्रता।

उ०—जिकौ कांम नरमी हळकाई सू आदरै तौ सही आछै अरथ नहीं सुधरै आगलै दुख री कारण होय संसार सूं सरमिंदगी होय।

—नी. प्र.

३ लघुता, तुच्छता।

हलकाणौ, हलकाबौ-क्रि. स.—१ हिलाना-डुलाना, हिलोरे देना।

२ ललकारना।

हलकाणहार, हारौ (हारी), हलकाणियौ—वि०।

हलकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हलकाईजणौ, हलकाईजबौ—कर्म वा०।

हळकापण, हलकापण, हळकापणौ, हलकापणौ-सं. पु.—१ वजन या भार की दृष्टि से हल्का होने की अवस्था, गुण, हल्कापन।

उ०—लकड़ा नें पांणी में न्हांखियां ऊंचौ आवै तो कुण ही ल्यावै नहीं पिण हलकापणा रा योग सूं तिरै।—भि. द्र.

२ तुच्छता, ओछापन।

३ लघुता, छोटापन।

हलकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ, हिलोरे दिया हुआ।

२ ललकारा हुआ।

(स्त्री. हलकायोड़ी)

हलकार-सं. स्त्री.—ललकार।

उ०—१ पन्नामारू हलचल हुई हलकार। खळभळ हुई राठोड़ां री चाकरी हो म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ हलकार भीरू वडा हिंदू, ताहरा तुड़तांण। समसेर झालै करौ सेहरा, सांभळै सुरतांण।—जसौ बारहठ

हलकारणौ, हलकारबौ-क्रि. स.—१ ललकारना, चुनौती देना, उकसाना, जोश दिलाना।

उ०—१ कपि पकड़ौ पकड़ौ कहै राकस हलकारै। जूटा हुकम प्रमांण, जोध कपि हूँ अधिकारै।—सू. प्र.

उ०—२ अभै दळां हलकारिया, कळ आगळा लंकाळ। चड़िया सायक वेग ज्यौं, पायक ऊपरि माळ।—रा. रू.

उ०—३ रिण रसीयौ आलिम रंढाळ, हळकारचा जोधा जिम काल। करी किलकी जिम दोड़घा देत, कायरपांण तजै निकसी जैत।—प. च. चौ.

२ हांकना, प्रेरित करना।

उ०—काती! छाती मांहि तइं, हलकारिउ हीमाल। धूजइ अंग अम्हारडुं, अै ताहरी चक चाल।—मा. कां. प्र.

३ बुलाना, पुकारना।

उ०—'राजड़' रांण तणौ हलकारै, अग्र कमंधां वात उचारै। ऐ दीवांण तणा पत्र ईखौ, समहर राखौ मेळ सरीखौ।—रा. रू.

हलकारणहार, हारौ (हारी), हलकारणियौ—वि०।

हलकारिस्रोड़ौ, हलकारियोड़ौ, हलकारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

हलकारीजणौ, हलकारीजबौ—कर्म वा०।

हलकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ, उकसाया हुआ, जोश दिलाया हुआ. २ हांका हुआ, प्रेरित किया हुआ. ३ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ।

(स्त्री. हलकारियोड़ी)

हलकारु, हलकारू, हलकारौ-सं. पु.—१ दूत, संदेशवाहक, पत्रवाहक।

उ०—१ याही समै हलकारू कही आंन ऐसी। तहवरखां साह मारा, जैसी की तैसी।—रा. रू.

उ०—२ पीछै मालदेजी हलकारा मेल खबर करायी सू इणांरै खरची री मौकाळ दैखी नै हलकारां आय कयौ—राज, खरची तौ घणी है।—द. दा.

उ०—३ सौ गौड़ आया जिकांरी हलकारां अरज करी।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—४ कोस पंद्रह री डेरौ ठहरायौ और आप पण तोपखांनौ सारौ साथ लेय थटै भखर सांम्ही कूच कियौ। कोस दोय गयौ तद जोहिया नूं हलकारा जाय कही—जै जलाल नूं इसी ताकीद आई छै सो दर मजल ताकीदी सूं जायसी।—जलाल बूबना री बात

२ ध्वनि, आवाज।

रू. भे.—हरकारौ।

हलकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हिला हुआ, डुला हुआ. २ ललकारा हुआ, उकसाया हुआ।

(स्त्री. हलकियोड़ी)

हळकौ-वि. (स्त्री. हळकी) १ जो वजनी न हो, गुरुता या भार हीन, भार का विपर्यय।

[illegible] जांणे या फूल [illegible] हळको [illegible] ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] करौ, प्रभू पढ़िनौ हुंता प्रथमी । [illegible] मूं हळको, काढ़ नहीं जिण माहि कमीं ।
—पि. प्र.

उ०—३ [illegible] हळको [illegible] भारी, (मैं तो) लियो री [illegible] ।—मीरां

३ [illegible] ।

उ०—[illegible] देख सकां, समभाय सकां, [illegible] हळको [illegible] कर सकां । पण इण पनुड़ा नै [illegible], इण नै कांई कैय नै धीरज बंधावां ?
—अमर चूंनड़ी

२ [illegible], ओछा, न्यून स्तर का ।

उ०—१ या बात [illegible] तो कहिसी, इसड़ी हळकी बात [illegible] । बाबा, तूं [illegible] छै पण रजपूत रै मांथै मायो हुवै [illegible] । अबै इसड़ी हळकी बात कदै मतां कहो ।
—अरजन हमीर भीमोत री वात

उ०—२ [illegible] एक [illegible] । चांरी वठै ही हळकी माड़ी वात [illegible] हुवै है ।—दगदोळ

उ०—३ [illegible] करो [illegible] सूं क्यूं इसी हळकी वात [illegible] ।—[illegible] री वारता

४ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] स्वभाव सूं [illegible] हळको बोलनो लगै क्यूं ही [illegible] ।—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ राजा [illegible] कांई बात करै राजा कनै हळका मांणस ऊभा रहै सो [illegible] बात करै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ [illegible] मैं नर हळका जिकै, बोलै हळका बोल । आप तणी [illegible], सुरत करदै मोल ।—बां. दा.

५ [illegible] ।

उ०—[illegible] कमालदी नूं विदा करै छै । कमालदी उजर [illegible]—'हजरत [illegible] रै रहै सोनूं हळको पाड़ियो ।
—नैणसी

६ मंद, धीमा ।

उ०—[illegible] रै दिन हळको पाणी सूं आछो ठाकारीजियो ।
— फुलवाड़ी

७ [illegible], बारीक ।

८ जो [illegible], रीत, शिक्षाज्ञान की दृष्टि से न्यून हो, प्रकारान्तर [illegible] दृष्टि से न्यून ।

उ०—[illegible] हळको है ।

९ [illegible] ।

१० [illegible] ।

११ किसी उत्तरदायित्व से मुक्त, भार मुक्त, निश्चित ।

१२ जिसमें कुछ भरा न हो, खाली ।

१३ ताजा, प्रफुल्ल ।

रू. भे.—हलकौ, हल्को ।

हलको-सं. पु. [अ. हल्का] १ प्रशासनिक दृष्टि से कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खण्ड ।

२ परिधि, वृत्त, घेरा ।

३ दल, समूह, झुण्ड ।

उ०—हाथियों के हलकै खंभू ठांणा तें खोलें एरापत के साथी भद्रजाती कै टोळै ऋत देहुकें दिग्गज विंध्याचल कै सुजाव रंग रंग चित्रे सुंडाडंडूं कै वणाव ।—र. रू.

४ सौ हाथियों का समूह या दल ।

उ०—दोय हजार गांव दीधा, घोड़ा हजार दोय हाथियां री हलको पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया ।
—जगदेव पंवार री वात

रू. भे.—हलक्को, हल्को ।

५ देखो 'हळको' (रू. भे.)

उ०—१ लकड़ा नें पांणी मैं न्हांख्यां ऊंचो आवै तै कुण ही ल्हावे नहीं पिण हलकापणा रा योग सूं तिरै । तिम जीव पिण करमैं करी हलको थयां देवगति मैं जावै ।—भि. द्र.

उ०—२ किणही पूछ्यो—जीव हलको किम हुवै, जद स्वांमीजी बोल्या—'पइसो पांणी मैं मेल्यां डूबै, अनैं उण ही पइसा नें ताप लगाय कूट कूट'र वाटकी कीधी तै तिरै । उण वाटकी मैं पइसो मेलै तो तै पइसो पिण तिरै । तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधां तिरै ।—भि. द्र.

उ०—३ रथ हलको घणो वाजणो, वलै च्यार पेड़ां री जांण रै लाला ।—जयवांणी

उ०—४ तुरत हिज परखि धरमसी, तुला घडी जणावै सीस धुणि । हलको तिकोज ओछो हुवै, गुरु ओ कहिजै नगण गुण ।
—ध. व. ग्रं.

(स्त्री. हलकी)

हलक्क—देखो 'हलक' (रू. भे.)

उ०—ऊंचां गोखां बैठणो, नीचै वहै खलक्क । खलक जेम सजणां मिळै अइयो वाह हलक्क ।—जलाल बूबना री वात

हलक्कणो, हलक्कबो—देखो 'हलकणो, हलकबो' (रू. भे.)

उ०—किता अग्र पाछै किता चक्र कुंडै, तरक्कै किता साहुता वाह तुंडै । भिदै सार सेलै कटारी भळक्कै, हिलोळां कि सांमुंद्र वेळा हलक्कै ।—रा. रू.

हलक्कियोड़ो—देखो 'हलकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हलक्कियोड़ी)

हलक्को—देखो 'हलको' (रू. भे.)

उ०—हलक्कां गजां बाजां हुवै हकाळां, भड़ां छक ग्रावळां ग्रोध भाळां। हेतुवां पातुवां तणौ दाळद हरौ, हरौ इंद राजीव इंद व्हाळा।—छत्रसिंह हाडा री गीत

हलख—देखो 'हलक' (रू. भे.)

उ०—हार जितोही ग्रांतरौ, हियै न सहियौ रात। राज हलख री ग्रांतरौ, किम सहसी परभात।—ग्रग्यात

हळखड़, हळखड़ौ—सं. पु.—कृषि पर जीविका उपार्जन करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ चंदांणा जाति रा हळखड़ रजपूत री पुत्री नूं वळ मैं ग्रतुळ जांण परणियौ।—वं. भा.

उ०—२ जमीरत दूटियां पछै कोई ग्रागै ही ग्रौर न करसी। ग्रौर ग्रठै हळखड़ हुय जासी।—गोपाळदास गौड़ री वारता

हळगणत—सं. पु.—मुफ्त में काम ग्राने वाले हल।

उ०—पूनियै रै परगनै मैं हळगणत-ग्रावै। डीडवांणै रा साहूकारां री बरसोत ग्रावै। परबतसर चौरासी मारोठ री दाळ ग्रावै ग्रौर चारू पासां रौ माल खायजै।—सूरै खींवै कांधलोत री वात

हळगत—सं. पु.—खेत को जोतने पर हलों के हिसाब से लिया जाने वाला कर।

उ०—सुरतांण कुतबदीन नै पाट सुरतांण महमंद बैठौ। महमंद्र बारै लोकां नै १८ कर लागा। तै कही—१ (प्रथम) दांणा। २ (बीजी) पूंछी। ३ हळगत। ४ मोम। ५ भेट......।—नैणसी

हलगल—सं. स्त्री.—१ ग्रफवाह, गप्प।

२ चर्चा।

हलचल—सं. स्त्री.—१ घबराहट, बेचैनी, खळबळी, हड़बड़ाहट।

उ०—१ पन्नामारु हलचल हुई हलकार। खळ भळ हुई राठौड़ां री चाकरी हो म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ भला रावतां ठाकुरां मांही हा-हूं हलचल हुई रही छै। डाढाळौ सूग्रर रात्र सूं विकराळ होय लड़ियौ, भला भरोसावंध राजपूतां रा घोड़ा रुळ रहिया छै।—डाढाळा सूर री वात

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—परदळ ग्राया जांणि हो रा., कोलाहल हलचल हुई ग्रति घणीजी। चित चमक्यौ वीरभांण हो रा., धाया सुर सुभट जूझण भणीजी।—प. च. चौ.

३ भगदड़, ग्रव्यवस्था।

४ कंपन, ग्रातंक, भय।

५ युद्ध, लड़ाई।

उ०—सत्रहरां नारि नहं नींद भरि सोवसी, हलचलां सही हालां घरै होवसी।—हा. झा.

६ धूमधाम, रौनक, चहलपहल।

उ०—मेहलां मैं बैठी हो रांणी कमलावती, झीणी तौ ऊडै मारग खेह, जोवै तमासौ हो इखुकार नगर नौ। कोतुक उपनौ मनमैं एह। सांभळ हे दासी ग्राज नगर मैं, हलचल किम घणी।—जयवांणी

७ गतिशीलता।

उ०—हलचल सास सरीर मैं, मन छाड्यौ ग्रहंकार। पूत पिता परवार मैं, संग न चालणहार।—ग्रनुभववांणी

८ ग्रसर, प्रतिक्रिया।

उ०—निजर रै पैल झबकै ई तीनूं जणा एक दूजा नै सुभट ग्रोळख लिया। काली मासी रा मन मैं तौ कीं विसेस हलचल नीं व्ही, पण बाप बेटी माथै तौ ग्रोळखांण रै समचै ई जांणै बीजळी पड़ी। —फुलवाड़ी

९ स्वागत, सत्कार।

उ०—कछवाहौ मांनसिंह कंवरपदे ग्रकबर पातसाह गुजरात मेलियौ छौ, तद चीतोड़ धणी प्रताप छै, सु रांणैजी मांनसिंह कनै सोनगरौ मांनसिंह ग्रखैराजोत डोडियौ भींव सांडावत मेल नै हलचल कराई हुती, सु मानसिंह कछवाहौ पाछौ वळतौ डूंगरपुर ग्रायौ।—नैणसी

१० किसी प्रकार की क्रिया, हरकत।

रू. भे.—हलचली, हलचल्ल, हलचल्ली, हलचल्लै।

मह.—हलचलौ।

हलचलणौ, हलचलबौ—क्रि. ग्र.—१ घबराहट होना, बेचैनी होना, हड़-बड़ाहट होना, खलबली मचना।

२ शोर गुल होना, हल्ला-गुल्ला होना।

३ भगदड़ मचना, ग्रव्यवस्था होना।

४ ग्रातंकित होना, भयभीत होना।

५ युद्ध होना, लड़ाई होना।

६ धूमधाम होना, रौनक होना, चहल-पहल होना।

७ गतिशील होना।

८ ग्रसर होना, प्रभाव होना, प्रतिक्रिया होना।

९ स्वागत-सत्कार होना।

१० किसी प्रकार की क्रिया होना, हरकत होना।

हलचलणहार, हारौ (हारी), हलचलणियौ वि.।

हलचलिग्रोड़ौ, हलचलियोड़ौ, हलचल्योड़ौ—भू. का. कृ.।

हलचलीजणौ, हलचलीजबौ—भाव वा.।

हलचल्लणौ, हलचल्लबौ—रू. भे.।

हलचलियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घबराया हुग्रा, बेचैन, हड़बड़ाया हुग्रा, खलबली मचा हुग्रा. २ शोर-गुल या हल्ला-गुल्ला हुवा हुग्रा. ३ भगदड़ मचा हुग्रा, ग्रव्यवस्थित. ४ ग्रातंकित हुवा हुग्रा, भयभीत, कंपित।

५ लड़ाई या युद्ध हुवा हुग्रा।

६ धूम-धाम या चहल-पहल युक्त।

७ गतिशील।

८ प्रभावित, प्रतिक्रिया युक्त।

९ ग्रादृत, सत्कारित।

१० [illegible]।

([illegible])

[illegible]—[illegible] '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मगां [illegible] तरह, [illegible] निरत [illegible]। [illegible] नंदो भुगां [illegible], हलचलो दिली [illegible] ।—[illegible]

[illegible]—देखो '[illegible]' (मह; रू. भे.)

उ०—१ [illegible] ४-५ मारिया। अबै किण ही री आंगवण हुवै [illegible]। [illegible] हुवो।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ [illegible] जमवंत मूं हलचलो। उडियां लोह अंबर [illegible]।—[illegible]

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] रण जूंझि मवार पचीम। वेला उण आभ अड़या [illegible]। [illegible] हाकलियो करनल्ल, चराचर सस्टि थई [illegible]।—मे. म.

उ०—२ [illegible] लीजियै, नित कीजियै हमल्ल। मिटै न सोच [illegible] उर, घटै न घर हलचल्ल।—रा. रू.

[illegible], हलचल्लवो—देखो 'हलचलणो, हलचलवो' (रू. भे.)

[illegible]हार, हारो (हारी), हलचल्लणियो—वि०।

[illegible]लियोड़ो, हलचल्लियोड़ो, हलचल्लयोड़ो—भू० का० कृ०।

[illegible]जणो, हलचल्लीजवो—भाव वा०।

[illegible]लियोड़ो—देखो 'हलचलियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. [illegible])

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] छतीम कुळ, सीस 'अजो' पत धार। हलचल्लो [illegible] धरा, वां [illegible] तरवार।—रा. रू.

[illegible]—स. पु.—मेला।

उ०—[illegible] हळचो मंडयो, असरै दोन्ही आंण। रांमदयै कीयो [illegible], दूंनी छुरायो दांण।—जांभो

[illegible]—स. स्त्री.—भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की षष्ठी तिथि।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मुगरै नूं कही हलणो करो।—साह रांमदत्त री वारता

[illegible], हलवो—१ देखो 'हालणो, हालवो' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] पाइदळ पाइक, हिळवळिया हलिया [illegible]। [illegible] गुड़ंता, गात्र गिरोवर नाग गति।

—वेलि

उ०—२ [illegible] रै नहं हलो, हलो न किण रै हटय। मूरति [illegible], [illegible]।—क. न. री.

उ०—३ [illegible] रजधोम, [illegible]। धर [illegible], [illegible] दिन हलै 'अभैमल'।—सू. प्र.

उ०—४ [illegible] दुरै, नैण भरै पण नांमरै। जिणवार 'जोया' लारै हली त्रिया बल्लभ हिय सांमरै।—अरजुनजी वारहठ

उ०—५ खूब दांन-पुण्य-धरम जो करणो थो सो कियो। यूं करतां दिन च्यार व्यतीत हुआ। पांचवें दिन देवसरमा हलणै री तैयारी कीवी।—सांई री पलक में खलक री वात

उ०—६ जगामग मोड़ दहूं वळ जोत, हूरां गठ जोड़ दहू बळ होत। दहूं वळ वीर बिदीरण दंस। हलै परलोक दहूं वळ हंस।

—मे. म.

२ देखो 'हिलणो, हिलवो' (रू. भे.)

उ०—स्रिगपति चलिब हलिय वसुमत्ती। स्रीकरनी जयजयति सकत्ती।—मे. म.

हलणहार. हारो (हारी), हलणियो—वि०।

हलिओड़ो, हलियोड़ो, हल्योड़ो—भू० का० कृ०।

हलीजणो हलीजवो—भाव वा०।

हळत-पळत—सं. पु.—लालन-पालन, भरण-पोषण।

उ०—अलख अछेव अजोनी सिंभू पार तिह को कोण लहे। हळत-पळत तिह सरण विसन भक्त ऊदो कहै।—ऊदो नैण

रू. भे.—हळति-पळति।

हळति—सं. स्त्री—मर्यादा, सीमा।

उ०—भूला जांहि स जांहीं जांहीं, चोईसा कै पह पेडै जांहि। हळति को मारग छाडि कै, पळति को लै जांहि।—वि. सं. सा.

हळति-पळति—देखो 'हळत-पळत' (रू. भे.)

उ०—म्हांरै तोह विणि अवर न कोय तूं र दियावें तूं दिवै। कुटंब पिता परिवार हळति-पळति सांमी सरणी त्यैंह।—ऊदो नैण

हळद, हलद—देखो 'हळदी' (रू. भे.) (अ. मा.) (उ. र.)

उ०—१ सहंस समपि कपिळा इक साथे। हळद दोब चंदण दधि हाथे।—सू. प्र.

उ०—२ जीरो, अंजमो, सोवा, धांणा, विराळी, हळद मण १ दुगांणी ३॥ लागै।—नैणसी

उ०—३ मांहे वेसवार हळद धांणा सूंठ मिरच जाइफळ तज लांग घातजे छै।—रा. सा. सं.

हळदघाट—देखो 'हळदीघाटी' (रू. भे.)

हळदिया—वि.—हल्दी के रंग का, पीला।

उ०—मारग में एक डोकरियो थकियो। धोळी पाग, धोळी ई अंगरखी अर हळदिया धोती, धोळो ई खत।—फुलवाड़ी

हळदियो—सं. पु.—१ एक रोग विशेष जो कामला रोग का ही एक भेद है।

२ गेहूं की फसल का एक रोग जिसके कारण पकते समय वालें पीली पड़ जाती है।

३ सफेद सीधे तने का एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी हल्दी के समान पीली होती है।

वि.—हल्दी जैसे रंग का, पीला, पीत।

हळदी-सं. स्त्री. [सं. हरिद्रा] १ हल्दी नामक पौधे की जड़ जो सोंठ के समान ही होती है और जिसका रंग पीला होता है। यह मिरच मसालों में तथा औषधि में काम आती है।

उ०—१ लेपन रै पैला नास्कांटा री जड़ां मीठा तेल मैं उकाळ खासी ताळ तांई मालिस करती। थोड़ी सी हळदी री पुट देय गुळ री भरभरती सीरी खवाड़ती।—फुलवाड़ी

उ०—२ ठौड़ ठौड़ रेसम वाळ नै दाड़गौ। घी हळदी रा फूंबा लगाया।—फुलवाड़ी

उ०—३ हळदी तौ पीठी म्हारै अंग लगटाई। मंहदी सूं राच्या म्हारा हाथ।—मीरां

२ दूल्हे को उबटन करते समय हल्दी के नाम से गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—म्हारी हळदी रौ रंग सुरंग, निपजै माळवै। हळदी मोल पंसारी री हाट, बनड़ै रै सिर चढै।—लो. गी.

रू. भे.—हरद, हरदी, हळद, हलद, हळद्द, हळिद्र, हल्द, हल्दी।

हळदीघाटी—मेवाड़ स्थित नाथद्वारा-गोगूंदा के मार्ग पर अरावली की पर्वत श्रेणियों का संकरा दर्रा विशेष, जहां पर ४०० वर्ष पूर्व जून १५७६ में महाराणा प्रताप व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह (अकबर के सेनापति) के बीच भयंकर युद्ध हुआ था।

वि. वि.—नाथद्वारा-गोगुंदा के मार्ग पर पहाड़ियों के बीच एक संकरा दर्रा है। आज से चार सौ वर्ष पहले यह दर्रा इतना संकरा गलियारा था कि दो घुड़सवार भी एक साथ रास्ता पार नहीं कर सकते थे! मुगल सेना का बायां पक्ष खमनौर गांव से २-३ मील दूर इस घाटी के मुहाने पर रखा गया था। मुगल सेना का दाहिना पक्ष तथा मध्य भाग पूर्वी घाटी के मुहाने से लेकर पश्चिम में बनास तक फैला हुआ था। राणा की सेना दर्रे के पीछे से आयी थी और हाकिम खां सूर के नेतृत्व में हरावल दस्ता पहाड़ी के पश्चिम भाग से निकला था। स्वयं राणा हाकिम खां सूर के पीछे 'अज-मियाने-धारी' से बाहर आये थे।

हल्दी घाटी की पीले पत्थरों से जड़ी कठोर पीली मिट्टी की दुर्गम भूमि उस समय घनी कंटीली झाड़ियों से ढकी हुई थी। इसी घाटी में दोनों सेनाओं का तीन प्रहर का यह भीषण संग्राम इस युग का इतिहास बनता है।

हल्दी घाटी के क्षेत्र में मिट्टी का रंग हल्दी के समान पीला है। इसीलिये इसे हल्दी घाटी का नाम दिया गया। महाराणा प्रताप और अकबर के सेनापति व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह की सेनाओं में जिस स्थल पर सबसे घमासान लड़ाई हुई उसे आज भी 'रक्त तलाई' के नाम से पुकारा जाता है।

रू. भे.—हळदघाटी, हल्दघाट, हल्दघाटी।

हळद्द—वि.—१ पीला, पीत।

२ देखो 'हळदी' (रू. भे.)

उ०—वसिस्ठ आदि व्रह्मयं, करंत जात क्रंमयं। हळद्द कुंकम हरी, करंत छोह केसरी।—सू प्र.

हळद्दर—देखो 'हळधर' (रू. भे.)

हळद्दरजोड़, हळद्धरजोड़-सं. पु. यौ.—बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।

उ०—नमौ जदुराज हळद्धर-जोड़, रैणायर-रूप नमौ रणछोड़।
—ह. र.

हळधर, हलधर-सं. पु. [सं. हलधर] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम का एक नामान्तर। (नां. मा.)

उ०—१ विसरियां विसर जस बीज बीजिजै, खारी हाळाहळां खळांह। त्रूटै कंध मूळ जड़-त्रूटै, हळधर का वाहतां हळांह।
—वेलि.

उ०—२ गज घोड़ा देख भुलांणी रे, देव दांनव नै चक्री हलधर, व्रह्मा विस्णु बखांणी रे।—जयवांणी

२ हल चलाने वाला व्यक्ति, किसान, कृषक।

उ०—ऊंटां हळधर आकरा, ऊंटां दुद्ध पियंत। सदा सोक दुख मैं रहै, मुख मैं पीळा दंत।—थळवट बत्तीसी

रू. भे.—हळद्दर, हळिधर, हळिधरि।

हळधरबंधव-सं. पु. यौ.—श्रीकृष्ण।

उ०—हळधर-बंधव गोकुळ-बाळ, खिमाव्रंत साधुव्र दुस्ट खेंगाळ।
—ह. र.

हळनांगळ-सं. पु.—हल से सम्बन्धित उपकरण, हल की सामग्री।

हळनाड़ियौ, हळनाड़ौ-सं. पु.—हल में हरिस के साथ जूवा बांधने का का चमड़े का रस्सा।

हळपळणौ, हळपळबौ—देखो 'हळफळणौ, हळफळबौ' (रू. भे.)

उ०—सेठ निपटनै घर रै मांय वड़ता हा कै हळपळियोड़ौ बांमण सीधौ वांरा घर मैं वड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

हळपळणहार, हारौ (हारी), हळपळणियौ—वि०।

हळपळिओड़ौ, हळपळियोड़ौ, हळपळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हळपळीजणौ, हळपळीजबौ—कर्म वा०।

हळपळियोड़ौ—देखो 'हळफळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हळपळियोड़ी)

हळपांणि-सं पु. [सं. हलपाणि] हल-आयुध रखने वाले, बलराम का एक नामान्तर।

हलफ-सं. स्त्री. [अ.] किसी कार्य के सम्बन्ध में न्यायालय या न्यायालय द्वारा अधिकृत व्यक्ति के समक्ष ली जाने वाली शपथ, सौगंध।

हलफ-नांमौ-सं. पु. [अ. हलफ नामा] शपथ-पत्र।

हळफळ-सं. स्त्री.—१ व्याकुलता, व्यग्रता, आतुरता, घबराहट, बेचैनी।

उ०—रह रह सुंदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ। डांभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ।—ढो. मा.

२ शीघ्रता, ताकीद, उतावलापन।

उ०—बगसी अरज करै बोलावै, आच्छौ सौ मोहूरत है आज।

[illegible] हाली पटा री काज। हळफळ करें [illegible], [illegible] । बरजत हार जिसो वाड़ी रो, [illegible] ।—[illegible] री गीत

३ [illegible] ।

४ [illegible], विचार-विमर्श, [illegible], सलाह मशविरा ।

उ०—[illegible] गिरनार [illegible] । तरै जांम इण रो करार [illegible] जांम सूं हळफळ करी ।—नैणसी

[illegible], हळफळबो, हळफळणो, हळफळबो—क्रि. प्र.—१ व्याकुल होना, आतुर, अधीर और बेचैन होना ।

उ०—१ [illegible] एक हाथ सूं तो वर माळा पैरावै छै । अर एक [illegible] सूं [illegible] बुजावै छै । [illegible] वो उतावळ में इसी [illegible] छै । [illegible] नो भूल गई अर हार समाळै छै ।—पनां

उ०—२ [illegible] उण नै आपरी छाती माथै किण री जीभ [illegible] री [illegible] लगायो । वो हळफळियो झिझकनै बैठो [illegible] ।—फुलवाड़ी

उ०—३ [illegible] हळफळी बोल किमाड़ । ताहरा पति ना [illegible] मोटी धाड़ ।—घ. व. ग्रं.

२ घबराना, डरना ।

उ०—१ [illegible] जांण गोरियावर हळफळतो वांटका में [illegible] ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हळफळ [illegible] हाथ, मुरियारी ऊठी चमक । नाथ अभी [illegible], किम चौथी होसी किसूं ।—पा. प्र.

उ०—३ [illegible] हळफळियो कोटवाळ, मुझ नें जांणि [illegible] ।—घ. व. ग्रं.

३ आश्चर्य चकित होना, विस्मित होना, चौंकना ।

उ०—[illegible] चूनड़ी वास्तै वांरो डोरो नीं बांध्यो है [illegible], [illegible] कानीं सूं तो म्हनै अमर चूनड़ी मिळणी चाहिजै । [illegible] मुर में बोली ।—अमर चूनड़ी ? दोन्यूं मांमो भांणेज [illegible] हळफळता बोल्या ।—अमर चूनड़ी

४ दौड़ना, भागना ।

उ०—[illegible], [illegible] जावा नै सळभळ्या, चोर सळसळ्या [illegible] हळफळ्या । [illegible], मेह करि माता ।—रा. सा. सं.

५ परेशान होना, हैरान होना ।

उ०—[illegible] देखनै बाई री तो अकल ई कह्यो [illegible] । वा हळफळियोड़ी [illegible] माथी आय नें कैवण लागी, [illegible] । कसूर करियो जका रै पगां माथो निवाय [illegible] । [illegible] न्याव ! म्हैं वीं कंधो कांम नीं करियो ।

—फुलवाड़ी

६ शीघ्रता करना, ताकीद करना ।

उ०—[illegible] हळफळ्या, [illegible] मंदिर-धांनि । अवनि थया [illegible], [illegible] ।—सा. सां. प्र.

हळफळणहार, हारो (हारी), हळफळणियो—वि० ।

हळफळिग्रोड़ो, हळफळियोड़ो, हळफळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हळफळीजणो, हळफळीजबो—भाव वा० ।

हळपळणो, हळपळबो, हळफळाणो. हळफळाबो—रू० भे० ।

हळफळाणो हळफळाबो—देखो 'हळफळणो, हळफळबो' (रू. भे.)

उ०—१ वा डरनै उठा सूं दौड़ी । भाखर री ढाळ में ई वा हळफळाई वेग सूं न्हाटण ढूकी कै अणछक उण रो पग रपटग्यो ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ दरबार में पूगतां ई सेठजी जोर सूं बांग मेल कूक्या तो राजाजी री झेर खुली । झिझकनै ऊभा व्हिया । हळफळाया होय मांय दौड़ण लागा ।—फुलवाड़ी

उ०—३ राजाजी नाई नैं देखतां ई हळफळाया होय उणरै सांम्ही दौड़िया । थूक उछाळता पूछ्यो—बोल, म्हारी नवी जुगत सूं कांम पटियो कै नीं । - फुलवाड़ी

हळफळाणहार, हारो (हारी), हळफळाणियो—वि० ।

हळफळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

हळफळाईजणो हळफळाईजबो—भाव वा० ।

हळफळायोड़ो—देखो 'हळफळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हळफायोड़ी)

हळफळियोड़ो–भू. का. कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ, अधीर और बेचैन हुवा हुआ. २ घबराया हुआ, डरा हुआ. ३ आश्चर्य चकित व विस्मित हुवा हुआ, चौंका हुआ. ४ दौड़ा हुआ, भागा हुआ. ५ परेशान हुवा हुआ, हैरान हुवा हुआ. ६ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ७ बातचीत किया हुआ, सलाह किया हुआ ।

(स्त्री. हळफळियोड़ी)

हळफळो–वि. (स्त्री. हळफळी) १ जिसका संतुलन खो गया हो, असंतुलित ।

उ०—जांन में चालो चालो हुई । बैनोई बीन नै बागो पैरायो हळफळो सो बीन री बाप मह-मडी कर उठ्यो अर आपरा भायलां नै पैड़ियां में लेजा'र सागीड़ा समझाया ।—दसदोख

२ आतुर, व्यग्र ।

३ शीघ्रता करने वाला ।

हलब–सं. पु. [फा.] फारस की तरफ का एक प्राचीन देश जहां का शीशा प्रसिद्ध था ।

हळवळ—देखो 'हळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ हळवळ आगली अणी रा रावत हैं तिकै कहै आवा रहजो आवा रहजो उण वेळा रावतां रा पग खरड़ै डिगण ढूक जावै हळवळ म्हासण री आगत री लाग जावै ।—वी. स. टी.

उ०—२ हळवळां दळां मुजरा हुवै, गह हाका पहाड़ गह । तण 'अजण' नगारै तीमरै, सुंदर गज चढ़ियो सुगह ।—सू. प्र.

उ०—३ वीजळ हळवळ वळवलां, दरलिय यळ दरियाव। घटा प्रघळ वाजरा लगी, विरह जगावरा वाव।—र. हमीर

हळवळणौ, हळवळवौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळवौ' (रू. भे.)

हळवळाणौ हळवळाबौ—देखो 'हळवळाणौ, हळवळावौ' (रू. भे.)

उ०—घरवाळी घणौ हळबळायौ तौ एक दिन वौ काटीजियोड़ा राचां नै उजाळिया। संवारनै टंच करचा।—फुलगाड़ी

हळवळायोड़ौ—देखो 'हळवळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हळबळायोड़ी)

हळवळाहट-सं. स्त्री.—१ भय, घबराहट आदि के कारण होने वाली मनःस्थिति, घबराहट।
२ शीघ्रता।
३ भगदड़।

हळवळियोड़ौ—देखो 'हळवळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हळबळियोड़ी)

हळबळौ, हलबलौ-सं. पु.—१ भय, आतंक।
उ०—पछै फौज री हलबलौ पड़चौ जद भाया तौ रात्रि रा कांनी २ न्हास गया।—भि. द्र.
२ शोर-गुल, हल्ला।
उ०—डागळां अर पाड़ोस्यां रै घरां वारणां ही कांन पड़यौ नीं सुणीजै है। हळबळौ हुवै, सांवरा रा सा बादळ घुटै है।—दसदोख
३ भगदड़, अव्यवस्था।
४ शीघ्रता, ताकीद।

हळवांणी-सं. पु.—लोहे की लम्बी छड़, जिसका एक शिरा तीक्ष्ण एवं नोकदार होता है।
वि. वि.—यह हल में लगाने का एक उपकरण होता है जो हल के नीचे की ओर फंसा रहता है। हल चलाते समय इसका नोकदार शिरा जमीन में घुसकर चलता है जिससे सीता बनती जाती है।
रू. भे.—हळवांणी, हलवांणी।

हळबांणै—देखो 'हलमांणै' (रू. भे.)
उ०—दळिया रांधै दळबळिया हळबांणै। वेचण वींदणियां ईंधणियां आंणै।—ऊ. का.

हळबा—देखो 'हळवा' (रू. भे.)
उ०—जींव थोड़ी हळबा ६० तथा ७० खेत सखरा। जवार तिल कपास हुवै।—नैणसीं

हळबी-वि. स्त्री.—हलब देश की, हलब देश संबंधी।
सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की तलवार।
२ एक प्रकार का काच, आईना, शीशा।
३ देखो 'हळवी' (रू. भे.)

हळवेडर-सं. स्त्री.—हल के पीछे बंधा रहने वाला बीज बोने का एक उपकरण जो बांस के खोखले डंडे का बना होता है।
उ०—झेरण हळवेडर झळकी तन झांई। मरिया डेडर ज्यूं हरिया मनमांहीं।—ऊ. का.

हळबोळ, हलबोल-सं. पु.—कोलाहल, शोरगुल।
उ०—आडंबर करता थका, न धरै किसि प्रवाह मं.। कोलाहल हलबोल सुं, मंत्री कहै सुणि नाह।—स्रीपालरास

हळभळ—देखो 'हळवळ' (रू. भे.)
उ०—१ सूरजमल रीस करी रांणै नहचौ, 'हाथी माडां आयौ' घणी हळभळ की। दिन १ आडी घात नै कहचौ, 'आवै सिकार सूअरां री मूळां री खेलसां।'—नैणसी
उ०—२ पछै मुदायत रांणै रायमल जैमल नूं कीयौ, तिकौ राव सुरतांण नूं जोर कुमया करै, इणै तौ घणी ही हळभळ की, जैमल मांनै नहीं, पग पड़ियौ आवै।—नैणसी
उ०—३ तरै राव हजूर तेड़ नै इणां नुं हळभळ कर सीख दी। वीरमदे मेड़तै आयौ।—नैणसी
उ०—४ पछै सीहौजी तौ आपरै डेरै मांहे गयौ नै मूळराज नूं वारै वेसांण नै बीच आपरा परधांन हुता सु फेरनै पुछायौ—थे म्हांसुं इतरी हळभळ करौ छौ, सु म्हांसुं थांहांरै कोई कांम हुवै सु फुरमावौ।—नैणसी

हळभळी-सं. स्त्री.—१ खलबली, भगदड़।
२ घबराहट, बैचेनी।
३ हलचल।

हलभ्रत-सं. पु. [सं. हलभृत] बलराम का एक नामान्तर।

हलमांणै-क्रि. वि.—साथ-साथ।
उ०—पावस हुयां व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकांणै। दूंत-गत भागा दौड़, हेड रमता हलमांणै।—दसदेव
रू. भे.—हळवांणै।

हळमुख, हळमुखी-सं. पु.—पिंगल में एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, सगण, क्रमशः होते हैं।
उ०—रगणा नगण सगणौ, भगण ए हळमुख भणौ। ईसरी गिरंज अखीयै, सव्व मंगळ सुख दीयै।—पिं. सि.

हलरावणौ, हलराववौ-क्रि. स.—१ छोटे बच्चे को गोद में उठाकर दांये-बांये घुमाना, एक हाथ से थपकी देते हुए हुलराना।
२ बच्चे को सुलाने के लिये या चुप कराने के लिये कुछ गाना गुन-गुनाना।
३ पालने में सुलाकर झूला देना।
उ०—मातां धोतां अमल, झुलरायौ झोली। हालरि हलरावियौ, हीडोल हिंचोली।—ध. व. ग्रं.
हलरावण हार. हारौ (हारी), हलरावणियौ—वि.।
हलराविओड़ौ, हलरावियोड़ौ, हलराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हलरावीजणौ, हलरावीजवौ—कर्म वा०।

हलरावियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गोद में उठाकर दांये-बांये घुमाया हुआ, थपकी देते हुऐ हुलराया हुआ. २ सुलाने या चुप कराने के लिये कुछ

[illegible] हुवा ।

[illegible])

[illegible] करने या [illegible] करने की क्रिया या [illegible] ।

२ [illegible] की क्रिया या भाव, [illegible] ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] मीना, [illegible] मांडया, सबलोड छड्या, हलवइ [illegible] मीना, [illegible] मीना, उत्तन स्त्रीइ ओरया, सुजांण स्त्रीइ [illegible], [illegible] उतारया, [illegible] प्रणीप्राना सरग फरहरा [illegible] ।—व. स.

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible], [illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] गुरु ध्यांन, पाव द्रिढ मत्त पट्टै, जुग कौतग जोइया, [illegible] पट्टै । धरै [illegible] गिरधरण, वंस माळा भलै कर । [illegible], पार जमवारौ उतर । आ घात वात रमतौ [illegible] मूनिस पगां । हरिनांम वरत ऊार हलव जीव [illegible] 'जगा' ।—ज. गि.

[illegible] हळवद्द-सं. पु.—एक प्रदेश का नाम ।

उ०—[illegible] मुरधर पति, [illegible] चलियौ हळवद्द । जगपुर धर [illegible] 'जगौ', [illegible] गयौ निज मद्द ।—रा. रू.

[illegible]-सं. स्त्री.—१ चिंघाड़, चिंघाड़ने की ध्वनि ।

उ०—१ गजराजूं की हळवळ । वाज राजूं की कळहळ । नाळूं का [illegible] । [illegible] का मिळाव, अंबागळूं के डाकै । जसोल्लूं के हाकै ।

—सू. प्र.

२ आवाज, ध्वनि, कोलाहल ।

उ०—१ [illegible] तुरी वळवळ [illegible], दळं हळवळ दीवांण । सरद [illegible] सर, देखां गास वर्खाण ।—रा. रू.

उ०—२ हळवळ दळ अथळ हैमरां हंस्ळ, सबहर न थियै मनै [illegible] । [illegible] पायौ [illegible] तड़ मोहण, रूपसिंघ गजराज रुक ।

— ऊको वोगसो

३ शीघ्रता, ताकीद ।

उ०—१ [illegible] देव हळवळ अवळ, अति मंगळ अमरावती । निस [illegible] दीठौ निजर, पड़ै न भूठौ मंपती ।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] वजवाळा, वगधा जळवळ एक हुआ । [illegible] पुळ [illegible], हळवळ कर वयूं त्यार हुआ ।

—मयाराम दरजी री वात

४ [illegible], आवाज, बोली, शब्द ।

उ०—१ [illegible] हळवळ [illegible] गरां, त्रिमळ सळ वळो-[illegible] तुरां ।—[illegible]दान मेहडू

उ०—२ [illegible] हळवळ सुणी तो [illegible] रै मांय ऊभौ [illegible] 'कुण व्हैर्ड, कुण व्हैर्ड' री हाक [illegible] ।—[illegible]

५ भगदड़ ।

उ०—१ मेघ करारां ऊारां, हुवा नगारा सद्द । दळ हळवळ भाका दिया, रांकां जांण समंद ।—रा. रू.

उ०—२ झलि आई फौज सावळां झळहळ, द्रोमझि लूंबिया जंगळ दळ । हळवळ कळळ चहूंवळ हळवळ, मांगळिया माथै मंडळ ।

—हीरा मांगळिया रा जुध रौ गीत

उ०—३ हय कंप नरां तुरां गज हळवळ, तूटि अंगारां सार-तड़ । आप 'धराज' वचांणौ ओलै, भुळसांणौ मेवाड़ भड़ ।

—राजा बखतसिंह रौ गीत

६ व्यग्रता, व्याकुलता, आतुरता, बेचैनी ।

७ घबराहट, भय ।

८ परेशानी, हैरानी ।

९ चकाचौंध, क्रोध ।

उ०—बीजळियां हळवळ हुइ, आभै कियौ वणाव । धरमंडण धर आवियौ, धर मंडण धर आव ।—र. हमीर

१० आदर-सत्कार, स्वागत ।

रू. भे.—हळवळ, हळवळी ।

हळवळणौ, हळवळबौ-क्रि. अ.—१ हल्लागुल्ला होना, शोर गुल होना, कोलाहल होना ।

२ शीघ्रता करना, ताकीद करना ।

३ उत्सुक होना, व्यग्र होना, व्याकुल होना ।

उ०—तेरस तेरै वर गई, आज न लागै थाग । हिवड़ौ हळवळियौ हमैं ऊभीजै ऊभाग ।—अज्ञात

४ तेज चलना, द्रुतगति से जाना ।

उ०—जु रुकमणीजी का साथ कौं रखणां कौ पाइदळ पाइक हुया छै । हळवळीया कहतां घणौ उतावळा छै ।—वेलि टी.

५ चहल-पहल होना, हलचल होना, आवाज होना, बोलना, शब्द होना ।

६ भगदड़ मचना ।

७ घबराना, डरना ।

८ परेशान होना, हैरान होना ।

९ आदर-सत्कार होना, स्वागत होना ।

१० चकाचौंध होना, कौंधना ।

हळवळणहार, हारौ (हारी), हळवळणियौ—वि० ।

हळवळिओड़ौ, हळवळियोड़ौ, हळवळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हळवळीजणौ, हळवळीजबौ—भाव वा० ।

हळवळणौ, हळवळबौ, हिळवळणौ, हिळवळबौ—रू० भे० ।

हळवळाणौ, हळवळाबौ-क्रि. स. ['हलवळणौ' क्रि. का प्रे. रू.]

१ हल्ला-गुल्ला, शोर-गुल कराना, कोलाहल कराना ।

२ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना, त्वरा करना ।

३ उत्सुक, व्यग्र, व्याकुल या आतुर होने के लिये प्रेरित करना ।

४ तेज या द्रुत गति से चलाना।

५ चहल-पहल कराना, हलचल कराना, आवाज कराना, बोलाना, शब्द कराना।

६ भगदड़ मचवाना।

७ डराना।

८ परेशान करना/कराना, हैरान करना/कराना।

९ आदर-सत्कार कराना, स्वागत कराना।

हळवळाणहार, हारौ (हारी), हळवळाणियौ—वि०।

हळवळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हळवळाईजणौ, हळवळाईजबौ—कर्म वा०।

हळवळाणौ, हळवळावौ—रू. भे.।

हळवळायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हल्ला-गुल्ला या शोर कराया हुआ, कोलाहल कराया हुआ. २ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद कराया हुआ, त्वरा कराया हुआ. ३ उत्सुक, व्यग्र, व्याकुल या आतुर होने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ तेज या द्रुतगति से चलाया हुआ. ५ चहल-पहल या हलचल कराया हुआ, आवाज या शब्द कराया हुआ. ६ भगदड़ मचवाया हुआ. ७ डराया हुआ. ८ परेशान या हैरान करवाया हुआ. ९ आदर-सत्कार या स्वागत कराया हुआ।

हळवळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हल्ला-गुल्ला या शोरगुल हुवा हुआ, कोलाहल हुवा हुआ. २ शीघ्रता, ताकीद या त्वरा किया हुआ. ३ उत्सुक, व्यग्र या आतुर हुआ हुआ. ४ तेज या द्रुत गति से चला हुआ. ५ डरा हुआ. ६ परेशान या हैरान हुवा हुआ. ७ आदर, सत्कार या स्वागत हुवा हुआ।

(स्त्री. हळवळियोड़ी)

हळवळी—देखो 'हळवळ (रू. भे.)

उ०—धुबि तबळ बंब उडि अरणधज, हलै धमळ हुय हळवळी। हाथियां टिला वेलां हमल, हठां नींठ कठठै हली।—सू. प्र.

हळवां-हळवां-क्रि. वि. [अनु.] धीरे-धीरे।

उ०—वीरा रे, तूं हळवां-हळवां बोल, मेरी देरांणी-जेठांणी सौ सुणे जी, म्हां रा राज।—लो. गी.

रू. भे.—हळवा-हळवा।

हळवांणी, हलवांणी—देखो 'हळवांणी' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यौ-रोग तो गंभीर री चढयौ अनै कहै म्हारै खूजाळी। पिण खूजाळयां साता न हुवै। हलवांणी रा डांम दिया साता हुवै।—भि. द्र.

उ०—२ हलवांणी रा छेहड़ा दोनूं कांनी बळै अनै वीचै ठंडी। उठी सूं पकड़ यां हाथ बळै ने दूजा छेहड़ा सूं पकड़ै तोही हाथ बळै। —भि. द्र.

हळवा-सं. स्त्री.—१ उतनी जमीन १०० या ४० हलों से एक दिन में जोती जा सके।

उ०—१ जैतारण था कोस ३ दिखण था डावो। जाट वांणियां वसै। धरती हळवा १०० बाजरी मोठ हुवे। खेत कंवळा ऊन्हाळी अरट ८ ढीवड़ा १०, सेंवज चिणा हुवै।—नैणसी

उ०—कोस ५ ऊगवणी, वेरी १ तळाव १। हळवा ५०। गांव देवड़ां री छै। गांव जमींयां पछै एक साखीयो।—नैणसी

२ बोऐ हुए खेत में फसल से खाली रह जाने पर बीच बीच में दुबारा की जाने वाली बोवाई। (बीकानेर)

३ ऐसी वर्षा जिससे हल चल सके।

४ देखो हलवाह' (रू. भे.)

हळवा-हळवा—देखो हळवां-हळवां' (रू. भे.)

हलवाइ, हलवाई, हलवायी-सं. पु.—मिठाई बनाने व मिठाई का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कंदोई।

वि.—बातूनी, वाचाल, वाक्पटु।

हळवाह-सं. पु.—१ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम।

२ देखो 'हळवा' (रू. भे.)

हळवाहण-सं. पु.—बैल।

हळवी, हलवी-वि. स्त्री.—१ तुच्छता, ओछी।

उ०—१ तरै झालै रायसिंघ कह्यौ—'म्हारा ठाकुर। इसड़ी बात हळवी कासूं करौ छौ? पैंडा री गांव छै। घणा ही पैंडे नीसरसी, थै किण किण सूं वेढ करसौ?—नैणसी

उ०—२ हळवी बात हरांम तजि, धरणि धर सूं ध्यांन धरि। मोसरि मिनखां देह कै, इणि अवसर उपगार करि।—जांभो

२ छोटी, लघु, पतली।

३ निर्बल, अशक्त।

उ०—प्रथीराज नुं कह्यौ—राव मालदै रै आगै ही बडा ठाकुर था सु सारा कांम आया छै। नै आपै ही मरस्यां तौ ठकुराई हळवी पड़सी।—नैणसी

४ भारमुक्त, हल्की।

उ०—पाप टलै नहीं आलोयण पखै, कहै ग्यांनी सहु कोय। परही मूक्यां सिरनी पोटली हलवी गावड़ी होय।—ध. व. ग्रं.

५ सुख-साध्य।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे, शनैःशनैः।

रू. भे.—हळवी।

हळवे—देखो 'हळवै' (रू. भे.)

हळवे-हळवे, हलवे-हलवे-क्रि. वि. [अनु.] धीरे-धीरे, शनैः शनैः।

उ०—१ पछै सीसोदियौ परबतसिंघ देवड़ै रांमै सिलावट तेड़ाय हळवे-हळवे भींत खोलाय नै अखैराज नुं काढ लीयौ।—नैणसी

उ०—२ हलवे-हलवे ऊतरचा रै, वांद्या मुनि ना पाय। मात पिता नै पूछनै रै, मैं लेसां संजम सुखदाय।—जयवांणी

रू. भे.—हळवै-हळवै, हलवै-हलवै, हवले-हवले, हवलै-हवलै।

हळवै, हळवै-क्रि. वि.—धीरे।

उ०—१ करि साकणि डाकणी संग कई, लंगड़ा मग जंग मलंग

[illegible] हळवै तन मैन चुड़ैल हवी ।
—मे. म.

उ०—[illegible] निजरंधो दीठो. जांणियो उक- [illegible] । [illegible] हळवै नै ऊठी नै तरवार फाडी नै [illegible] ।—[illegible] मुनसा नाटी री वारता

रू. भे.—[illegible], हळवे, हळिवइ, हळिवई, [illegible] ।

[illegible] —देखो 'हळवै हळवै' (रू. भे.)

उ०—[illegible] गांगार करै रहतो, सु रिण- [illegible]—[illegible] ? 'पावो सांढियां लगां । संगार विण [illegible] ।' तरै फेरनै मांदि [illegible] नै हळवै-हळवै जाण [illegible] ।—[illegible]

हळवौ-वि.—१ छोटा, लघु ।

२ [illegible], थोड़ा ।

३ [illegible], थोड़ा ।

४ [illegible], भारमुक्त ।

५ जो पावान, प्रभाव, असर की दृष्टि से हलका हो ।

उ०—[illegible] हळवौ गो चांदै रायमलोत रै लागो ।—द. वि.

रू. भे.—हळवौ, [illegible], हलुवउ, हलुवौ ।

हलवौ-सं. पु.—१ मेदा, सूजी, आटा आदि को घी में भून कर उसमें निश्चित अनुपात में शक्कर एवं गर्म पानी डाल कर बनाया जाने वाला एक स्वादु पदार्थ, हलवा, सीरा, मिष्ठान्न, मिठाई ।

उ०—[illegible], पीठा, मांगवा भत्त, पेई, पिलांण, पाचरा । हलवै [illegible] हाले, पोग [illegible] आंचरा ।—दमदेव

२ मोहन भोग ।

रू. भे.—हलुवउ, हलुवौ ।

३ देखो 'हळवौ' (रू. भे.)

उ०—१ हलवा काम्ट नो झूंपरो, वलै चोड़ा पेड़ा जोत रे लाला ।
—जयवांणी

उ०—२ [illegible] देवी सरीर सांचो कीयो १, गांमरादेवी सरीर हलवो कीयो २, [illegible] सरीर अभंग कीनो ३, तारादेवी सरीर [illegible] कीयो ४ ।—रा. वं. वि.

हलोतियौ, हलोतियौ—देखो 'हळोतियौ' (रू. भे.)

हलहल, हलहल-सं. स्त्री.—१ शीघ्रता, ताकीद ।

उ०—[illegible], हलहल करइ [illegible] । एराकी अोसंभिया, [illegible] ।—डो. मा.

२ [illegible], खलबली, [illegible] ।

उ०—हलहल [illegible], [illegible] । पवन संग [illegible] ।—रा. रू.

३ [illegible] ।

उ०—[illegible] हलहल [illegible] का निवास । गोखुं के बीच में जोति का उजास ।—सू. प्र.

४ कोलाहल, शोर-गुल ।

उ०—तीरां री सांठी टूटी, भालां री गांस मांही रही सो लोहा सूं पूर हुवो थको पार होय जा बरड़ी ऊपर खड़ो रहियो । भला रावतां ठाकुरा मांहीं हा-हू हलहल हुई रही छै ।
—डाढाला सूर री वात

५ घबराहट, बेचैनी ।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे, शनैः-शनैः ।

उ०—परसंसी पाछा वल्या, सेना सकल विहांण । हलहल हय गय संतरिया, निरघोस्यां नीसांण ।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हलहल्ल ।

हलहलणौ, हलहलबौ-क्रि. अ.—१ कांपना ।

उ०—१ उण वार रत नद ऊभळै, हुय हाक धर गिर हलहलै ।
—सू. प्र.

उ०—२ इंद्र नै चंद्र नागेंद्र चित चमकीया, धड़हड़यौ सेस । नै धरा धूजै । लचकि किचकीच करै पीठ कूरंमतणी, हलहलै मेरु दिगदंत कूजै ।—प. च. चौ.

२ डरना, घबराना ।

उ०—तइं पतिसाह तणंह पायांणउ पारंभ सुणी । हलहलिया हेकां- णवइ गढपति गर्म-गमेह ।—अ. वचनिका

३ अधीर होना, विचलित होना ।

उ०—१ हांमलै जवांन अवर नर हलहलै, अबरकै धीर मन धरै अेहवो । 'जसो' महाराज नाराज अहे जरै, कसे कुळराज नाराज केहवो ।—जयसिंह कछवाहा री गीत

उ०—२ गढ ऊपरि वातां गई रै, हलहलियौ हिंदुग्रांन । गढपति भाल्यो आपणोजी, कीधयै केहौ पांन ।—प. च. चौ.

४ भगदड़ मचना, खलबली मचना ।

५ कोलाहल होना, शोर-गुल होना ।

६ हिलना-डुलना ।

७ शीघ्रता करना, ताकीद करना ।

हलहलणहार, हारौ (हारी), हलहलणियौ—वि० ।

हलहलिग्रोड़ौ, हलहलियोड़ौ, हलहलयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलहलीजणौ, हलहलीजबौ—भाव वा० ।

हलहलणौ, हलहलबौ—रू० भे० ।

हलहलाणौ, हलहलाबौ-क्रि. स.—१ कंपायमान करना ।

२ डराना ।

३ अधीर करना, विचलित करना ।

४ भगदड़ मचवाना, खलबली मचवाना ।

५ कोलाहल कराना, शोर-गुल कराना ।

६ हिलवाना, डुलवाना ।

७ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना ।

८ सलाह करवाना, विचार करवाना ।

हलहलाणहार, हारौ (हारी), हलहलाणियौ—वि० ।

हलहलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलहलाईजणौ, हलहलाईजबौ—कर्म वा० ।

हलहलायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कम्पायमान किया हुआ. २ डराया हुआ. ३ अधीर किया हुआ, विचलित किया हुआ. ४ भगदड़ मचवाया हुआ, खलबली मचवाया हुआ. ५ कोलाहल कराया हुआ, शोरगुल कराया हुआ. ६ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ. ७ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद करवाया हुआ. ८ सलाह करवाया हुआ, विचार करवाया हुआ ।

(स्त्री. हलहलायोड़ी)

हलहलियोड़ौ-भू का. कृ.—१ कम्पित. २ डरा हुआ, घबराया हुआ. ३ अधीर या विचलित हुवा हुआ. ४ भगदड़ या खलबली युक्त. ५ कोलाहल पूर्ण हुवा हुआ. ६ हिला हुआ, डुला हुआ. ७ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ८ सलाह किया हुआ, विचार किया हुआ ।

(स्त्री. हलहलियोड़ी)

हलहली-वि. स्त्री.—सजी हुई ।

उ०—जीमा जूव्या रम रमा ए मांमी पोढण ठौर बताय । ऊंची मंडी हलहली जी दिवलौ चसं यं मुमाल रांनी सोरठी ।—लो. गी.

हलहल्ल—देखो 'हळहळ' (रू. भे.)

हलहल्लणौ, हलहल्लबौ—देखो 'हलहलणौ, हलहलबौ' (रू. भे.)

उ०—हलहल्लिय लंक गढ बंकसौ, दस-धू पं हल काहल्लिय । हल्लिय पताख गजराज पं, विजं कटक राघव हल्लिय ।—र. ज. प्र.

हलहल्लियोड़ौ—देखो 'हलहलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलहल्लियोड़ी)

हलांण-सं. स्त्री.—गति, चाल ।

उ०—रांणौ सूरजमाल रै, पमंगा हुवा पलांण । पोह फाटी परभात री, हलबल हुई हलांण ।—पा. प्र.

हलांणौ-सं पु.—१ विवाह के बाद कन्या की पिता के घर से विदाई, गौना ।

उ०—१ चौंरी मांहै बैठा, परणायौ । परणाइ नै कांवळौ जांनी-वासै गयौ । तीडी नुं घर मैं लै गया । प्रभात हुवौ । जांन नुं भगति हुई । दिन ४ राखीया । हीड़ा किया । जांनी बोलीया, हलांणौ करौ ।—कांवळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ आज अठै टिक मिजमांनी जीमौ बीजी म्हैं झट तयारो कर हलांणौ ही कर देयस्यां ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ विदाई के समय कन्या के पिता द्वारा दिया जाने वाला धन, दहेज ।

३ प्रथम प्रसव के बाद कन्या की पिता के घर से वस्त्राभूणों सहित की जाने वाली विदाई ।

उ०—जेतपुर मांही एक तेली रहै, तिण रै भटनेर रौ तेली पर-णियौ सौ सासरै हलांणं नूं आयौ ।—ठाकुर जेतसी री वारता

४ प्रस्थान, गमन ।

उ०—तरै सोलंकणी आसथांन नुं समझाय नै कही—अठै थांहां रौ टिकाव कोई नहीं । ऐ सांम्हौ कोहीक ऊपाव कर मारसी । आंपं हालौ, म्हांरै पाटण जावां । तरै इण हलांणा री दिन ५ तथा ६ माहै तयारी कर, दस मांणस रजपूत राख नै पाटण नै चालीया ।

—नैणसी

रू. भे—हलणौ, हलावणौ, हल्लांणउ, हल्लांणौ, हहलांणउ, हह-लांणौ, हालांणौ ।

हलांम-सं. पु.—सेना, फौज ।

उ०—धरा पै हमलां हलांम चोळां सुं नाग धूजै, सभै ब्रोज नथी डढां कोल रा समैत । चमु देख सोगणी जै ऊपरा चखां, वइडां नांखीया बांभी ओळरा वांनैत ।—ठाकुर महेसदास रौ गीत

हला-सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, धरती ।

२ सखी ।

३ शराब ।

४ पानी, जल ।

हळाई-सं. स्त्री.—१ हल की बारह सीताओं (रेखाएँ) की एक इकाई ।

उ०—जमीं माथै मंडियोड़ी आं हळाइयां रा आखरां नै कुण पूग सकै ।—फुलवाड़ी

वि. वि.—देखो 'हळाव'

२ खेत या भूमि का वह भाग जिसमें उक्त सीताएँ आती है ।

३ हल जोतने का समय । (शेखावाटी)

हलाक-वि. [फा] १ मृत हुआ, मृत, हत, वध किया हुआ ।

२ नष्ट ।

उ०—प्रांण जितै जग आपणौ, प्रांण जितै तन पाक । प्रांण प्रयांण कियां पछै, व्है नर नांम हलाक ।—बां. दा.

हलाकत्त-सं. स्त्री. [फा.] हत्या, मृत्यु, वध, नाश ।

हलाकुएल-सं. पु. [फा.] सेना का भयंकर आक्रमण ।

उ०—हलाकुएल सेल तं सदा उथेलतै हलें । चितार पेट भेट कै चपेट मेलतै चलें ।—ऊ. का.

हलाकू-वि [फा.] मारने वाला, वध करने वाला, हत्यारा ।

हलाड़णौ, हलाड़बौ—देखो 'हलाणौ, हलाबौ' (रू. भे.)

हलाड़णहार, हारौ (हारी), हलाड़णियौ—वि० ।

हलाड़िओड़ौ, हलाड़ियोड़ौ, हलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलाड़ीजणौ, हलाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हलाड़ियोड़ौ—देखो 'हलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलाड़ियोड़ी)

हलाणौ, हलाबौ-क्रि. स. ['हालणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ चलाना, चलायमान करना, चलने के लिए प्रेरित करना ।

२ [illegible] करना।

३ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, भेजना।

उ०—[illegible] साहू माहरै मुं फाजीर हलायौ।

—देवजी बगड़ावत री वात

४ रवाना करना, सीख देना।

उ०—मैं हलाणी नही, थ्रो रहै जाय जाता करां। तद केसरिदे [illegible] मैं थेरी हलाई।—ठाकुरै साह री बात

५ घुमाना, फिराना।

६ देखो 'हिलाणौ, हिलावौ' (रू. भे.)

हलाणहार, हारौ (हारी), हलाणियौ—वि०।

हलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हलाईजणौ, हलाईजबौ—कर्म वा०।

हलावणौ, हलावबौ, हल्लाणौ, हल्लावौ—रू० भे०।

हलाणौ-चलाणौ—देखो 'हलावौ-चलावौ' (रू. भे.)

हळाबोळ-वि.—१ बिल्कुल, नितान्त, सरासर।

२ प्रबल।

उ०—हळाबोळ जोधाळ दैतेस हल्लं। प्रणी मूळ में बांधिया बाघ पल्लं।—सू. प्र.

३ ऊपर तक भरा हुआ, लबालब, परिपूर्ण।

४ समुद्र के समान लहरें देता हुआ।

उ०—गज्जि दळ झळहळ सकळ, गयंद चढियौ गह धारै। हळाबोळ दळ हुवै, वाजि दुंदुभ जिण वारै।—सू प्र.

५ अत्यधिक, बहुत।

६ तेज।

उ०—दिया गुरु जियाराम मेरा, किया जिन सुन्न में सेरा। कहै सुखरांम निमरथ दासा, ग्रह्या हळाबोळ प्रकासा।

—श्री सुखरांमजी महाराज

७ बुरा, खराब।

रू. भे.—हाळबोळ।

हळाम-सं पु.—वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या अति गहरे रंग के बाल बराबर कुछ दूर तक हों।

हलायुध, हलायुध-सं. पु. [सं. हलायुद] १ हल के आकार-प्रकार का एक आयुध जिसे कृष्ण के भाई बलराम रखते थे।

उ०—हलायुध हलायुधई मुसलायुध मुसलायुधई, सूलायुध सूलायुधई, [illegible] —व. स.

२ बलराम का एक नामान्तर। (ह. नां. मा.)

हलायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चलाया हुआ, चलायमान किया हुआ, चलने के लिए प्रेरित किया हुआ. २ गतिमान किया हुआ, शुरू किया हुआ. ३ अग्रसर किया हुआ, आगे बढ़ाया हुआ, भेजा हुआ. ४ घुमाया हुआ, फिराया हुआ. ५ रवाना किया हुआ, सीख दिया हुआ।

६ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलायोड़ी)

हलारकी-सं. पु. [देशज] हलार देश में उत्पन्न एक प्रकार का घोड़ा।

हलारियौ-सं. पु. [देशज.] कुंमट व बबूल की फली।

हलाल-वि. [अ.] १ उचित, वाजिब।

उ०—हैवांन आलम गुमराह गाफिल, अव्वल सरीयत पंद। हलाल हरांम नेकी बदी, रसै दांनि समंद।—दादूवांणी

२ जिसका खाना पीना धर्म शास्त्र में वर्जित न हो।

३ मुसलमानी शरअ के अनुसार खाने वाले जानवर की गरदन पर धीरे धीरे छुरी चलाते हुऐ मारने की क्रिया।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणां में डूब्योड़ौ रेवै। पण जेळ में आ बात जावक निजोरी। काटण वेगी जानवर कठै सूं आवै। हलाल बिना ही हरांम वणै।—दसदोख

हलालखोर-सं. पु. [अ., फा.] मेहत्तर, भंगी।

उ०—ताहरां रुपीयो १ रा टका मंगाया। मंगाइ नै राखीया। कह्यो, जा हलालखोर बुलाई ल्याय। हलालखोर बुलायौ। घर फूस राख सूं भरीयौ पड़ियौ हुतौ, सु आछौ भटकायौ बुहारि आछौ कियौ।—स्यांम सुंदर री वात

वि.—मेहनत या श्रम की कमाई खाने वाला।

हलालखोरी-सं. पु. [अ. फा.] १ हलालखोर का कार्य।

२ मेहनत, परिश्रम।

३ परिश्रम से की जाने वाली कमाई।

हलालियौ-वि.—कृतज्ञ।

हलाली-वि. [फा.] १ जिसका कत्ल किया जाय, जिसका हलाल किया जाय।

उ०—बक्कर का हलाली खांणा, सूकर का कोन खांणां।—शि. वं.

२ हलाल करने वाला। (मा. म.)

३ उत्तम, अच्छा।

उ०—चरि फिरि आवै सहजि दुहावै तिहको खीर हलाली।

—जांभो

सं. पु.—हलाल करने की क्रिया या भाव।

उ०—असल मुसलमान हुवै जको मजब रै कायदै सूं निवाज पढै रोजा राखै अर बरस में दो-चार बार हलाली कर परो'र मालकनै मूंढो दिखाळै।—दसदोख

हळाव-सं. पु.—१ हल की बारह सीताओं (रेखाओं) की एक ईकाई।

वि. वि.—जुताई या बुवाई करते समय खेत का कुछ अंश, प्रायः बारह सीताएँ निकलने योग्य अंश, खाली छोड़कर एक सीता निकाली जाती है। फिर आते जाते उस सीता के आजू-बाजू दूसरी सीताएँ निकाली जाती है। इस प्रकार जब छोड़ा हुआ अंश भर जाता है तब फिर उतना ही अंश खाली छोड़ कर दूसरी सीता निकाली जाती है। यह क्रम पूरे खेत की जुताई-बुवाई तक चलना

रहता है। इस प्रकार से बनने वाली इकाइयों को 'हळाव' कहा जाता हैं। बुवाई-जुताई के बाद गौर से देखने पर ये इकाइयाँ स्पष्ट लक्षित होती हैं।

२ खेत का वह ग्रंश जिसमें उक्त इकाई ग्राती है।

हलावणौ—देखो 'हलाणौ' (रू. भे.)

उ०—बडारण सगळा समाचार कहिया सो सुण राजी हुवा सर-वरा तयारी हलावणौ री होवै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

हलावणौ, हलाववौ—१ देखो 'हलाणौ, हलाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ माता जसोदा पालना हलावै, हलावै हाथ मैं लेकर दोरा। —मीरां

उ०—२ लाखौ लड़तां जेज न लावै, हरी तणौ लख धके हलावै। नाहर वखत सिंघ वै नाहर, सुत लखधीर मीर लखि सिंधुर। —रा. रू.

उ०—३ हरि हथिग्रार हलावतां मुकरव्यह रूंधी वट्ट। तै मुझ-लीधइं ग्राविजै, नाकि घणा जिणि घट्ट।—मा. कां. प्र.

उ०—४ सुक साहमुं जोइ नहीं जागंतु जोगेस। सास न चूकु सील-वर सीस हलाविउ सेस।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू. भे.)

हलावणहार, हारौ (हारी), हलावणियौ—वि०।

हलाविग्रोड़ौ, हलावियोड़ौ, हलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हलावीजणौ, हलावीजबौ—कर्म वा०।

हलावियोड़ौ—१ देखो 'हलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो हिलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलावियोड़ी)

हलावौ-चलावौ-स. पु.—मृतक के शव को श्मसान ले जाने का कार्य-क्रम।

उ०—म्हैं दुनियां मैं कंजूसी रै बेजोड़ गुण री मिसाल थापनै जावूंला। हलावौ-चलावौ करौ ग्रर म्हनै सीढी मैं घाल ठेट मसांण तांई रोवता-रोवता लेय जावौ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हलाणौ-चलाणौ।

हळासीक-वि.—विषयुक्त।

उ०—महाभारतां क्रतंत किनां पड्डी ग्रठी मंत, नदी हळासीक किनां ग्ररंदीक नाग। जळावौळ सिंधवाळी मांनौ प्रळैकाळ जाळ, खळां तळावौळ बीजा तूझ वाळी खाग।—भैरुदांन बारहठ

हळाह-सं. पु. [सं.] कबरे रंग का घोड़ा। (डिं. को.)

हळाहळ-सं. पु. [सं. हलाहल] प्रचंड-विष, महाविष जो समुद्र मंथन के समय समुद्र से निकला था।

उ०—१ घर घर घट कोल्हू चलै, ग्रमी महारस जाइ। दादू गुरु के ग्यांन बिन, विसय हळाहळ खाइ।—दादूबांणी

उ०—२ पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री। बिरह भवंग मेरौ डसौ है काळजौ, लहरि हळाहळ जागी री। —मीरां

२ देखो 'हळाहळयोग'।

वि.—१ प्रचण्ड, तेज।

उ०—दुतिय ग्रनंग रूप दरसांणा, पांण पांच दीरघ निज पांणां। वाहग्रजांन तेज ग्रतुळीवळ। हरचख झळ मधि जेठ हळाहळ। —सू. प्र.

२ कुपित, नाराज।

उ०—पातसाहजी रा० वीरमदे सुं राजी हुवा। पातसाह ग्रागै ही राव मालदे सूं हळाहळ हुय रह्यौ छै। तिण समै बीकानेर रा धणी पण कंवर भींवराज जैतसीयोत मु. नगौ ऐ ही फिरीयाद गया छै। —नैणसी

३ बिलकुल, कतई।

उ०—तिण देस रा स्तंभ मैं बेगी खळळ पड़ै नींव बादसाहत री मैं उत्पात हळाहळ हलचल हुवै।—नी. प्र.

४ सरासर, साफ, स्पष्ट।

उ०—१ जोर सूं कूक्यौ—ग्रन्याव व्है, ग्रंदाता हळाहळ ग्रन्याव व्है। बेकसूर दीवांणजी नै हकनाक राज रे हाथां डंड मिळै। —फुलवाड़ी

उ०—२ वै खुद चलाय-चलाय नै मौत रै मूंडै कीकर गिया। ग्रौ तौ हळाहळ इण पांचवां रौ ग्रन्याव है।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हळाहळि, हाळाहळ हालाहल।

हळाहळयोग-सं. पु. [सं. हलाहल+योग] फलित ज्योतिष के ग्रनुसार तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी चतुर्थ योग।

हळाहळि—देखो हळाहळ' (रू. भे.)

उ०—संप्रति वरत्तइ कळिकाळ, महाकूड़ कपट काळ। चाड़ चबाड़ साक्षात् हळाहळि, सासु बहु परस्पर कळि।—रा. सा. सं.

हलाहिव-ग्रव्य.—ग्रभी, तुरन्त।

उ०—मुंछ बल घालि बहू रोस भाखै रतन। हलाहिव साहि नइं करां सीधौ।—प. च. चौ.

हळि-सं. पु. [सं. हलिन्] १ बलराम का एक नामान्तर। (ग्र. मा.)

२ हल चलाने वाला कृषक।

रू. भे.—हळी।

३ देखो 'हळ' (रू. भे.)

हळिद्र—देखो 'हळदी' (रू. भे.)

उ०—वधाउग्रां ग्रहै ग्रहै पुरवासी, दळिद्र तणौ दीधौ दळिद्र। ऊछव हुग्रा ग्रखित ऊछळिया, हरी द्रोव केसर हळिद्र।—वेलि

हळिधर, हळिधरि—देखो 'हळधर' (रू. भे.)

उ०—जैसें बीजां हळां सौ रूंखां का मूळ जड़ त्रूटतां ग्राघात होय। इणि भांति हळिधरि जी कौ हळ वहै छै।—वेलि टी.

[illegible] [illegible] १ [illegible] । (डि. को)

[illegible] । (व. मा.)

[illegible] [[illegible]+[illegible]] १ शराब, मदिरा ।

२ [illegible] ।

[illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] [[illegible]] १ [illegible] ।

[illegible] संजोगिता, [illegible] । [illegible]मुंवा [illegible] ।—रा. प्र.

२ [illegible] ।

३ [illegible] (रूभेद; रू. भे.)

उ०—१ [illegible] हळियो [illegible] । दोय तो [illegible] ।—लो. गी.

उ०—२ झिरमिर झिरमिर [illegible] बरसै, बादळियो घररावै ए । [illegible] हळियो [illegible] ए ।—लो. गी.

[illegible]—देखो 'हळवो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] नी कहै, अदिक न दीजइ गाळि । हळिवइ [illegible], जिम जळ [illegible] पाळि ।—ढो. मा.

[illegible]—१ देखो '[illegible]' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

२ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible], [illegible]—सं. पु. [सं. हल+पाणि] बलराम का [illegible] । (ह. नां. मा.)

[illegible], [illegible]—सं. पु. [अ. हलीम] १ [illegible] ।

[अ. हलीम] २ मुहर्रम में बनने वाला एक प्रकार का खाना ।

३ एक प्रकार का [illegible] जो हसन और हुसेन के लिये पकाया जाता है ।

४ [illegible] ।

५ [illegible] ।

६ एक प्रकार का व्यंजन विशेष जो गोश्त, गेहूं, चना, मसाले व [illegible] १ सेर घी, पाव-पाव भर शलजम, गाजर, [illegible] के मिश्रण से बनता है । उक्त सामग्री से १० रका-[illegible] भर जाती है ।

वि. [अ. हलीम] १ [illegible], गम्भीर ।

२ [illegible], [illegible] ।

उ०—१ [illegible], दाव घण सिर घाव दिया । [illegible], [illegible] हलीम किया ।
—तेजसी सांदू

उ०—२ [illegible] हलीम [illegible] निसाणी छै ।—नी. प्र.

[illegible] [अ.] [illegible] का एक भेद । (अमरत)

[illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible] श्रोघाट पगै । हलीलां हिलै संत फौजां हसत्ती, प्रिथी संग लग्गा केई देस-पत्ती ।—वचनिका

हलीलो–सं. पु. [देशज] साधारण गृह-कार्य ।

उ०—दाई श्रातै दिन उठे ई रेवती । नित री हलीलो करती । पोतड़िया धोवती । आटा री लोई फेरती । जच्चा रै पीठी करती ।
—फुलवाड़ी

हलीसक–सं. पु.—एक प्रकार का नृत्य विशेष ।

उ०—मिळ मभ्क साकरिण डाकरिण भोत, हलीसक नाच भली विधि होत ।—मे. म.

हलुअउ—१ देखो 'हळवो' (रू. भे.)

२ देखो 'हलवो' (रू. भे.)

हलुआपण, हलुआपणू, हलुआपणो–सं. पु. [राज. हळवो+पणो] १ लघुत्व, लघुता ।

२ ओछापन, तुच्छता ।

उ०—लाजि सीस नीचां नमै याचवूं अति हलुआपणूं । सूं करि जु मन वसि नहीं तेज ढांक्यूं तै तणूं । —नळाख्यांन

हळुओ—देखो 'हळवो' (रू भे.)

हलुओ—देखो हलवो' (रू. भे.)

हलुकरम–सं. पु.—हलका कार्य ।

रू. भे.—हलूकमउ ।

हलुकरमी–वि.—हलके कर्मों वाला, जिसके कर्म न्यून स्तर के हों ।
(जैन)

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या— दाल हुवै तो मूंग मोट चणां री हुवै पिण गोहां री दाल न हुवै । ज्यूं हलुकरमी बुद्धीवंत हुवै तै समझै पिण बुद्धी हीण न समझै ।—भि. द्र.

उ०—२ सत गुरु सब्द ज सांभलू, जद मनड़ो हुवै राजी जी । हलुकरमी हरखै घणा, मिथ्यात-मत जावै भाभी जी ।—जयवांणी

रू. भे.—हलूकरमी, हलूक्रमी ।

हलुहार–सं पु.—एक प्रकार का घोड़ा जिसके अंडकोश काले होते हैं और माथे पर दाग होते हैं ।

हलू, हलूइ–वि.—हलका, धीमा, मन्द ।

उ०—१ अनइ अनपय पुहतिनइ संयोगि, मननइ ऊलटि, मंडोग मगनी दालि, वुभक्षांनी कालि, फोतिरे छांडी, हलू हथीयें खांडी, त्रिछड कीधी घणइ पांणी सीधी... . ...।—व. स.

उ०—२ एक लगें पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, वेलणस्यूं वेलीइ, हलू हस्यूं मेल्हींइ, अन स्यूं मिल्या, लोह कडां हैं तल्या ।—व. स.

हलूक्रमउ—देखो 'हलुकरम' (रू. भे.)

उ०—ढंढण कुमर हलूक्रमउ, प्रति बूधउ ततकालो जी । नेमि समीपि संजम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी ।—स. कु.

हलूकरमी, हलूक्रमी—देखो हलुकरमी' (रू. भे)

हलूर–सं. स्त्री.—तरंग, लहर ।

उ०—ग्रहां सिरि सरां देवां सिरै गढपत्यां, स ऊजळ हलूरां उरड़ साभाव ।—भगतरांम हाडा रौ गीत

हलूस-सं. पु.—उत्साह, उमंग ।

उ०—फिळै मैं ग्राई घर्णे हलूस, लागी पर्गे सुहागरा भूख ।—सांझ

हलूसणौ, हलूसबौ-क्रि. अ.—१ उत्साहित होना, उमंगित होना, प्रसन्न होना ।

२ यकायक उचकना या झपटना ।

हलूसियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ उत्साह या उमंग से भरा हुआ, प्रसन्न. २ उचका हुआ, झपटा हुआ ।

(स्त्री. हलूसियोड़ी)

हळोचळ-वि.—विचलित, व्याकुल ।

हळोटौ-सं. पु.—जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन कर जो प्रति हल चार रुपये के हिसाब से वसूल किया जाता था ।

हळोतियौ-सं. पु.—बीज बोने लायक होने वाली मौसम की पहली वर्षा जिस पर पहली बार हल चलाया जाता है ।

उ०—हळिया जोती रै कांमेती, खेती निपजै धणियां हेती, हाळी बीज रौ हळोतियौ ।—चेतमांनखौ

रू. भे.—हळसोटी, हळसोतियौ, हळौतरौ, हळौतियौ ।

हळोद, हळोदपुर-सं. पु.—एक प्राचीन शहर का नाम ।

उ०—१ तरै मारग मैं हळोद जसा झाला सुं लडीया । जसौ हळोद सूं नीसर गयौ । तरै सेहर लूट लीनौ नै सेहर कोट पाडीयौ ।
—रा. वं. वि.

उ०—२ साथ भंडारी थांनसी, सकतै आद कमंध । आया मार हळोदपुर, पय लाया छत्रवंध ।—रा. रू.

हलोर—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)

उ०—धांम धांम मंगळ धवळ, हुए हंगांम हलोर । छडक पगारा नीर छिन, घुरै नगारां घोर ।—र. रू.

हलोरणौ, हलोरबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' ।

हलोरणहार, हारौ (हारी), हलोरणियौ—वि० ।

हलोरिग्रोड़ौ, हलोरियोड़ौ, हलोरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हलोरीजणौ, हलोरीजबौ - कर्म वा० ।

हलोरियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हलोरियोड़ी)

हलोळौ—देखो हिलोळौ' (रू. भे.)

उ०—हाका तीरंदाजा होय, हलोळा वाहरां हंदा, ग्राखै प्रथी सारी दौरा हरां हंदा येम । हींदू पती गळै नेत बांधीया थाहरां हंदा, जोव ज्यौ नाहरां ग्राभूसणां जेम ।—महादांन महडू

हळोवळ, हळोवळां, हळोवळी-क्रि. वि.—१ चारों ओर, चौ तरफ ।

उ०—फजर गज पीठ पीचरंग नेजा फरक, हळोवळ पाखरां हुडंड भड़ै हरक । गुमर घर पतसाह सुभट सीलहां गरक, चठठ हम लांट टलां बोल तोपां चरख ।—रांमलाल बारहठ

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—परखियां ग्रनळ चळ दळ सुपरि, वळवळ सुचळ हळोवळां । चक्रवति सतरि सिर चल्लियौ, जांणि महण छिळियौ जळां ।
—रा. रू.

हलौ-सं. पु.—१ ग्राक्रमण, हमला ।

उ०—१ ग्ररु लाख दोय पोठिया रेत सूं भराय नैं हलौ कियौ सू ग्रठै वडौ झगड़ौ हुवौ ।—द. दा.

उ०—२ कोई एक वीर पुरख मारीज गयौ नैं लारै नाबाळक जांण सत्रुग्रां हलौ करणौ विचारियौ तठै उण वीर खतरी री स्त्री ग्रापरा बाळक रौ परिचै सत्रुग्रां नैं करावै छै ।—वी. स. टी.

२ हल्ला-गुल्ला, शोर गुल ।

हळौतरौ, हळौतियौ—देखो 'हळोतियौ' (रू. भे.)

उ०—१ मेह तौ पे'लौ हळौतरौ कराय नै गयौ सो गयौ ईंज गयौ ।—रातवासौ

रू०—२ म्हनैं इण बरस ई ग्रासार माड़ा निजर ग्रावै । सूनम रै टांणै हळौतियौ व्हे जावै तौ पग टिकै ।—फुलवाड़ी

हळ्कौ—देखो 'हळकौ' (रू. भे.)

उ०—१ बोलो इणां पर कांई ग्रसर पड़ै ? ग्रर संसार मैं 'मा' सबद कांई इतरौ हळ्कौ व्हैग्यौ है के उण री यूं ग्रपमांन कियौ जावै ।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ मजाल है पेढी चढ्यौ कोई गिराक जेब हळ्की कियां विना नीचो उतर जावै ।—ग्रमरचूंनड़ी

(स्त्री. हळ्की)

हल्कौ—देखो 'हलकौ' (रू. भे.)

हल्द—देखो 'हळदी' (रू. भे.)

हल्दहात, हल्दहाथ-सं. पु.—विवाह के समय वर या वधू के हल्दी लगाने की प्रथा ।

हल्दियौ-वि.—हल्दी के रंग का, पीला ।

सं. पु.—१ एक शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो.)

२ एक प्रकार का कामला रोग ।

हल्दी—देखो 'हळदी' (रू. भे.)

हल्दीघाट, हल्दीघाटी—देखो 'हलदीघाटी' (रू. भे.)

हल्ल-सं. स्त्री.—१ आवाज, शब्द ।

उ०—१ हुई ग्रप्रमांण ग्रचांणक हल्ल, कुंभी हय सैयद सेख कत्तल्ल । पड़ै कटि सीरस वीर पठांण, मद्राचळ चक्र चमू महरांण ।
—मे. म.

उ०—२ घमघम बाग त्रमागळां, हुवै नकीबां हल्ल । सादां ग्राजै सम्मळी, किनियांणी करनल्ल ।—महाराजा बखतावर सिंह ग्रलवर

२ सेना, फौज ।

३ देखो 'हल' (रू. भे.)

उ०—कद थै नाग विसासिया, सैण लिया ग्रग झल्ल । मांनसरोवर

[illegible] —[illegible]

[illegible] (र. मै.)

[illegible], हवडी (र. मै.)

[illegible] मास न देह । जी [illegible] —डी. मा.

[illegible] मगरी हमीर कटीर । बोरा [illegible] —मालिभद्र सूरि

[illegible] गेरन मौन प्रमान । मैदान तज [illegible] —रा. रू.

[illegible]—वि० ।

[illegible] हल्लौड़ी—भू० का० कृ० ।

[illegible]—भाव वा० ।

[illegible]—सं. पु. स्त्री.—१ [illegible], अंदेशा ।

[illegible] हिमाव । की हल्लर-फल्लर [illegible] —दां. दा.

२ [illegible] ।

३ [illegible] ।

[illegible]—देखो 'हलाणी' (रू. भे.)

[illegible] घणु [illegible] देह । भव भव [illegible] —डी. मा.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible] हल्लाणियौ—वि० ।

[illegible]—भू० का० कृ० ।

[illegible]—कर्म वा० ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

([illegible])

[illegible]—सं. पु.—१ [illegible] ।

२ [illegible] किया जाने वाला वर्तुलाकार [illegible] ।

[illegible] हल्लीमक [illegible] —वं. भा.

[illegible]—१ [illegible], धावा, आक्रमण

उ०—१ [illegible] हल्लौ करि दरिया 'अम-[illegible] —वं. भा.

उ०—२ [illegible] हल्लां [illegible] । [illegible] —[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] हल्लौ

कर, घर दरवाजै आग लागा ।—नैणसी

उ०—२ पछै गांव नूं हल्लौ कियौ ।—नैणसी

४ युद्ध की ललकार, चुनौती ।

५ काम-काज, धंधा, कार्य ।

उ०—१ दिन रै अंधारै सगली दुनियां हल्लै लागै । उण वगत म्हनै अंधारा मैं मुळकौ दीसै ई नीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ लोगां नै हेला पाड़ पाड़ जगाया । कैवता—ऊठौ रे वेल्यां ऊठौ, हाल ताई कीकर सूता हौ । घर रौ हल्लौ करौ । हाट बजार सूना पड़्या-मोलो लोजो ।—फुलवाड़ी

हव–सं. पु. [सं.] १ यज्ञ की अग्नि में किसी देवता के निमित्त दी जाने वाली आहूति, बलि, चढ़ावा ।

२ आग, अग्नि ।

३ यज्ञ ।

क्रि. वि.—१ अब, इस समय, अभी ।

उ०—१ जगपत रांण तणां जाळाहळ, जगत कथै जस जुवौ जुवौ । हैवर दणियर अघर हालतौ, हव सवर आधार हुवौ ।

—महाराणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ म बीह रे मूरख मूंछ मोडी, तूं बोलतु सवै निंकूडी । मइं ओलगी तउं हव अंगु साति, भाजउं जिसिइं कौरव सैन्य वाति ।

—सालिसूरि

हवइ हवई–क्रि. वि.—अब, अभी, इस समय ।

उ०—१ जां मज्झि हउं फिरउं संसार तां तुम्ह ध्यांन करउं सविचार । अविचल भगतिइं मागउं योग, क्षण इकु रखै हवइ वियोगु ।—वस्तिग

उ०—२ हवइं कूकड़ा बोल्या, लगारेक नींद थी डोल्या । नींदइं भकोल्या, मूकी संभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डगडोल्या ।

—रा. सा. सं.

हवख हवखि–सं. पु.—१ वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय, हवि ।

उ०—बडै व्रव दीधौ व्रत हवखि ।—रांमरासौ

२ घृत, घी । (अ. मा; ह. नां. मा.)

हवट–सं. पु.—घोड़ा, अश्व ।

उ०—तो जाया करनेस का, मेलूं घमसांणा । हवटां अत कहूं भडां, थट्टां भूजांणा ।—द. दा.

हवड–सं. पु.—समय, वेला ।

क्रि. वि.—अब, अभी ।

हवडां, हवडा–क्रि. वि. [सं. अधुना] १ अब, अभी । (उ. र.)

उ०—१ मैं जांणूं मारूं हूं हवडां दुस्यासन माहापापी । जेणैं केस ग्रहीनै आंणी द्रपदसुता संतापी ।—नळाख्यांन

उ०—२ महीपति ! को माधव इहां, हूंतउ हवडां तेह । ऊजेणी माहि आज छट, पणि सही पाडसि देह ।—मा. कां. प्र.

२ इधर ।

उ०—झाल झाझी झटका करइ, जिम जांणै दव दाह। हूं हरणी हवड़ां वलूं, सार करिसिन ? नाह।—मा. कां. प्र.

३ कभी-भी।

उ०—सासूनली आयु सोवन केरी, हवड़ां नहीं लीजइ बीजी अनेरी, वे कर जोड़ी वरराज मांगइ, सासूसली आपतां वार न लागइ, अहो सीआलक बोलि।—व. स.

हवड़ौ–क्रि. वि [सं. अधुना] १ अब, अभी।

उ०—गूजर फतै नंदगिर गोरंभ, जुड़ काबल दळ कीध जुवौ। कीधां सांमां जेर कलासुत, हवड़ौ कै जग जेठ हुअौ।—द. दा.

२ देखो 'हिवड़ौ' (रू. भे.)

हवणार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—पछांण्यांय जींद वूड़ौ पौहवाल। वूहौ राव हेकल काढ वै गाळ। हयौ वित्त लाग घणूं हवणार। बुरै मुख कीनव जींद जवार।—पा. प्र.

हवणौ–क्रि. वि.—इस समय, अब।

उ०—आगै वरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हवणौ का अलियळ हुआ, वारवधू वप वाग।—बां. दा.

हवणौ, हवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—आ बात हवण की नहीं।—नैणसी

हवद—देखो 'हौद' (रू. भे.)

उ०—१ रांणीसर रै बुरज ऊपर अरट मंडाय नै नाळां घलाय नै अरट नग ४ रा कुंडीया कराय फतैमेल रा हवद मैं पांणी लावण वास्तै कराया।—नैणसी

उ०—२ धण रै तो आंगण हवद खिणावो साहिब झूलण रै मिस आवो रे। हांजी रै ऊजळ दंतीरा साहिब केण बिलमाया रे।

—लो. गी.

२ देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहल्या पदचार सवार रथां, हथियार छतीस प्रकार हथां। हुबि रोस कईक चढ्यां हवदां, रण कारण जोस बढ्या रवदां।

—मे. म.

उ०—२ जंगी हवद जड़िया जम जाळा, पांच हजार गयंद पखराळा।—सू. प्र.

हवदौ–देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—हाथियां तणां जंगी हवदां मैं, रोपूं सेल घड़ां रवदां मैं।

—सू. प्र.

हवदाळौ–वि.—अंबारी या चारजामा-युक्त।

उ०—वहतां घण गोळां विकराळा। हाथी उडै जंगी हवदाळा।

—सू. प्र.

हवद्द—१ देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—हाथियां मेघ डंबर हवद्द, जंगी कसि हवदां विखम जद्द।

—सू. प्र

२ देखो 'हौद' (रू. भे.)

हवद्दौ—देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—सेखावत हाथियां हवद्दा मैं सेल बायौ, कूडि कै ठिकांणै बखतेस कांमि आयौ।—शि. वं.

हवन–सं. पु. [सं.] १ घी, जौ, तिल आदि पदार्थों का मिश्रण कर उन्हें मन्त्रोच्चारण के साथ, किसी देवता के निमित्त अग्नि में डालने की क्रिया, होम, यज्ञ।

२ चढावा, बलि, नैवेद्य।

३ आह्वान, आमन्त्रण, प्रार्थना।

४ ललकार।

हवनिया–सं. पु.—चार मास का समय।

हवनीय–वि.—हवन करने योग्य।

सं. पु.—घी, घृत।

हवरु, हवरू–क्रि. वि.—अभी, इस समय।

उ०—ताहरां नरसंघ घरा वतांनां कहायौ, 'पैहलोकै तौ म्हाहरौ निवाह थौ सु हुसी। म्हारी धरती तुरकां हेठै छै। दिन म्हारौ उपर घणी कीजो। हवरू तौ म्हांनू विखौ छै।

—राजा नरसिंघ री वात

हवल—देखो 'हवाल' (रू. भे.)

हवलदार–सं. पु.—१ सेना का एक छोटा अधिकारी जिसके अधीन थोड़े से सिपाई होते हैं।

२ राज्य कर की ठीक-ठीक वसूली तथा फसल की निगरानी के लिये तैनात किया जाने वाला अधिकारी।

रू. भे.—हवालदार।

हवळै, हवलै—देखो 'हळवै' (रू. भे.)

उ०—१ वहिया पंथ डाक पाछा न वळै। हय ठांभय चंद कह्यौ हवळै।—पा. प्र.

उ०—२ ओछा कुळ मैं ऊपना, दोभा डावड़ियांह, हवळै बोलै होट मैं, मूरख मावड़ियाह।—बां. दा.

हवलै-हवलै—देखो 'हळवै-हळवै' (रू. भे.)

हवल्ल—देखो 'हवाल' (रू. भे.)

उ०—चंपा मांणै निर चढै, आंबा भखै अवल्ल। अरबद सूं अळगा रहै, ज्यांरा कूण हवल्ल।—डाढाळा सूर री वात

हववाह—देखो हव्यवाह' (रू. भे.)

हवां—देखो 'हों' (रू. भे.)

उ०—मांणस हवां त मुख चवां, म्है छां कूंझड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दै पंखड़ियांह।—ढो. मा.

हवांभाव—देखो हावभाव' (रू. भे.)

उ०—धर कांमची उर धाक, अपछर छव धरै, हवांभाव कर अद्‌हेर वोली सुण हरै।—र. रू.

हवा-सं. स्त्री. [अ.] १ [illegible] प्राणियों के लिये परमावश्यक एक तत्व [illegible] में व्याप्त रहता है। यह [illegible] वायु, पवन।

उ०—[illegible] लगावो के भी [illegible] जीवै, आपरा विस्वास रै [illegible]

[illegible] हवा हालत रद होवै। तवि जूनी [illegible] रवि जोवै।—मे. म.

२ [illegible]।

उ०—[illegible] पवन रो हवा पड़ि नै रही छै। [illegible] मूं छांटीजै छै।—रा. सा. सं.

मुहा.—हवाई किला बणाणा=कल्पना में महल आदि बनाना, मन में वैभवशाली होने के भाव आना, स्वाब देखना।

हवाई बातां करणी=निराधार या निर्मूल बात कहना।

हवा ज्यूं हळको=अत्यन्त हलका, जिसका वजन इतना कम हो जो देखने में आश्चर्यजनक लगे।

हवा भखणी=वायु के आधार पर जीवन-यापन करना।

हवा में उडणी=बिना सिर-पैर की बातें करना, व्यर्थ की शेखी दिखाना, किसी बात को महत्व न देना।

हवा में बातां करणी=स्वगत कथन करना, अकेले बातें करना, बड़बड़ाना।

हवा में मे'ल बणाणा=देखो 'हवाई किल्ला बणाणा'।

हवा होणी=अत्यन्त तीव्र भागना, चंपत हो जाना।

३ वातावरण।

उ०—कळजुग री हवा में मांस लेवणिया क्यूं कळजुग री धरम नीं निभावो। थें हान तांई गाय जैड़ा पाप री क्यूं मोद करै।

—फुलवाड़ी

४ भूत, सनक।

५ भूत, प्रेत।

६ मातृका का प्रभाव।

मुहा.—हवा वहणी=किसी बालक के शरीर में मातृका का प्रभाव हो जाना।

हवाइ, हवाई-सं. पु. १ एक प्रकार का आग्नेयास्त्र।

उ०—१ हथनाळि हवाई कुहक बांण दांको सोर आघात होण लागो वीर नु दहा वहा जोधा। त्यांरी वीर हाक होण लागी।

—वेलि टी.

उ०—२ धर कुहर तोरमानां सधीर, ज्यां पीछ अरांनां गज अधीर। सझजोड़ तिरछी लियां साथ, हथनाळ हवाई बांण हाथ।

—वि. स.

२ एक प्रकार की आतिशबाजी।

उ०—सीकोतरि गणहूंत सवाई, हुवै जियां हयझाळ हवाई।

—सू. प्र.

३ चार मास या दो ऋतुओं का समय।

वि.—१ हवा का, हवा सम्बंधी।

२ हवा में चलने वाला।

३ हवा में छोड़ा जाने वाला।

४ व्यर्थ, निर्मूल, निरर्थक।

५ असत्य।

हवाई-जंत्र-सं. पु.—तोप।

उ०—जोगणी उबक्कै पत्र हुबक्कै हवाई-जंत्र, लोथि छक्कै धुबक्कै लटक्कै गजां लोथ।—राजा बखतसिंघ रो गीत

हवाईमे'ल-सं. पु.—१ काल्पनिक महल।

२ देखो 'हवामैल' (रू. भे.)

हवाचक्की-सं. स्त्री.—अनाज पीसने की वह चक्की जो हवा के प्रभाव से चलती है।

हवादार-वि. [अ.] जिसमें हवा के आवागमन को पर्याप्त गुंजाइश हो, वातायनों से युक्त।

हवामहल, हवामैल-सं. पु.—वह महल जिसमें, हवा आने के विशेष साधन, वातायन झरोखे आदि हों।

उ०—१ बादळी बरसै क्यूं नी ए। बीजळी चमकै क्यूं नी ए। म्हारां भंवर सा रा हवामहल में चंपो सूखै ए।—लो. गी.

उ०—२ ओर गढ में हवामैल हमार वाजै तिको करायो। ओर कपड़ां रो कोठार करायो।—नैणसी

रू. भे.—हवाईमैल।

हवाल-सं. पु. [अ. हाल] १ दशा, अवस्था, हालत, गति।

उ०—१ देख हवाल भाल कर देवी, चाल मराल चलाई। मोखम-पुरै 'विसन' हुय मांदो, पूरण अड़चल पाई।—मे. म.

उ०—२ तरै इण हीज हवाल परणाया, नै मैं थांरी चाकरी कीवी। परमेसर आछी कीवी, आपरा दिन ऊभा, नै मोनूं जस आवणहार।—नैणसी

२ दुर्दशा, बुरा हाल, शोचनीय दशा।

उ०—१ नरसिंघ नु खबर पोहती। सुपीयारी पाछी आई। तरै नरसिंघ घणा हवाल कीया।—नैणसी

उ०—२ तिण भारमल नुं तो रायमल पखतोत मारियो नै कूपेजी मेरां मांहै घण हवाल कीया।—राव मालदे री बात

३ हाल-चाल, हालात।

उ०—म्हारी बाईजी रो कांई छै हवाल। राजिंद चालै छै चाकरी।

—रसीलै राज रो गीत

४ समाचार, खबर।

५ विगत, विवरण।

६ परिणाम।

रू. भे.—हवल, हवल्ल, हुवाल।

हवालगीर-सं. पु. [फा.] एक अधिकारी ?

उ०—आठूं मिसल कै हवालगीर केज धाए। फरासूं नै आवासूं वीच विछायत वणवाए।—सू. प्र.

हवालदार—देखो 'हवलदार' (रू. भे.)

उ०—हाजरिया हवालदार एकां-तांगां तथा वैल्यां री कतार सजाई। वीन-वीनणी खातर रूड़ी रणभुणी रथ लाया खड़ी कियौ।—दसदोख

हवालात-सं. स्त्री.—१ जेल, कैद खाना।

उ०—थांणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनें मुलजिम नै हवालात मैं बंद कर दियौ।—अमरचूंनड़ी

२ नजर बंदी।

हवाली-मुवाली-सं. पु. यौ.—परिग्रह।

उ०—कुंवर राजा रै मुजरै गयौ, आगै जाय बैठौ। इतरै सारा ही हवाली-मुवाली मुजरौ कर वैसै छै।—पलक दरियाव री बात

हवाले, हवालै-वि.—[अ. हवालः] १ सुपुर्द।

उ०—१ अबु नुं मेहमद मुराद कही—राजा रा लोग सुं थै असनाव छौ। इणां री रदल-बदल थै करौ। पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकड़ीया था सौ 'अबु' रै हवालै कीया।—नैणसी

उ०—२ माया दोरी घणी भेळी करी। यूं कमसलां री धमकीयां सूं वांरै हवालै करदां तौ कीकर पार पड़े।—फुलवाड़ी

क्रि. वि.—१ अधिकार में, कब्जे में, अधीन।

उ०—१ सांकर सूरावत। वडौ राजपूत राव मालदेव रौ। सांकर रै हवालै अजमेर रौ गढ थौ।—नैणसी

उ०—२ संवत १५९४ रावजी जैतमालोत कनां सूं सिवांणौ लियौ जद मांगळिया देवा रै हवालै कियौ।—बां. दा. ख्यात

२ वश में, काबू में।

उ०—१ ताहरां राजा कह्यौ—दैपाळदै बिना म्हारै घड़ी एक सरै नहीं। वांसली सरम सारी बात री थांहरै हाथ हवालै छै।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ जेर हवालै जांण चढावै गढ्ढै चौड़ै। वेड़ी लीनां वहै खास पग धरदे खोड़ै।—ऊ. का.

रू. भे.—हुवाले, हुवालै।

हवालौ-सं. पु. [अ. हवालः] १ उल्लेख, वर्णन।

उ०—वात सुणावती वगत वावा रौ ई काळजौ चिपग्यौ। थोड़ी ताळ रुकनै कैवण लागौ—उण वगत वां दोनां रा मन माथै कांई वीती म्हैं नांढ आदमी उण री कीकर हवालौ दै सकूं।—फुलवाड़ी

२ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त।

उ०—ग्रंथां मैं जठै कठै ही रूढी-रिवाजां री वात आवै, पांनौ मोड़ देवै अर आपरै लेखां मैं हवालौ देवै।—दसदोख

३ संदर्भ, प्रसंग।

४ प्रमाण।

५ हवलदार का कार्यालय।

६ अधिकार, कब्जा।

७ हस्तान्तरण, सुपुर्दगी।

८ खालसे का गांव।

९ कर, लगान।

उ०—१ गुनहगारी आप लीवी और सारै परगनै रै सिर हवालौ ठहरायौ।—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ तद कही भली वात छै पण वरस एक री मांहृ रौ हवालौ दोनूं फसलां रौ देवौ।—ठाकुर जेतसी री वारता

१० एक विभाग जो भूमि-लगान वसूल करता था। (प्राचीन)

रू. भे.—हुवालौ।

हवास-सं. पु.—पुष्प, फूल। (अ. मा.)

२ घोड़ा, अश्व।

रू. भे.—हआस।

हविं, हवि-क्रि. वि. [सं. अथवा, प्रा. अहवा] १ अब।

उ०—१ हविं पकवांन आंणि तै केहवा वखांणि सतपुडां खाजां, तुरत कीधा ताजा, सदला नि साजा, मोटा जांणै प्रासादनां छाजा।

—व. स.

उ०—२ हवि ए उपकार करि, तेहनि पासि परवरु; [जूठा एह मुझ गुण] कहीनि चित्त तां तेहनूं हरु।—नळाख्यांन

२ अग्नि, आग। (डिं. को.)

रू. भे.—हवौ।

सं. पु. [सं. हविस्] १ यज्ञ की अग्नि में मंत्र पढ़ कर डाला जाने वाला पदार्थ, हवन-सामग्री।

उ०—होम जजै हवि कवि हुतासण, सेवत स्यांम किलै दरभासत। पिंड किता हद जोग प्रकासण, पूरक कुंभ करै चक आसण।

—रा. वी. गी.

२ घृत, घी। (अ. मा.)

हविख-सं. पु. [सं. हविष] घी, घृत।

वि. [सं. हविष्य] हवन करने योग्य पदार्थ।

हवियोड़ौ—देखो 'हौयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हवियोड़ी)

हविवाह, हवियाहण, हविवाहन—देखो 'हव्यवाहन'। (ह. नां. मा.)

हविस—देखो 'हविस्य' (रू. भे.)

हविस्मती-सं. स्त्री. [सं. हविष्मती] कामधेनु।

हविस्मांन-सं. पु. [सं. हविष्मन्] यज्ञ करने वाला।

हविस्यंद-सं. पु. [सं. हविष्यंद] विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

हविस्य-वि. [सं. हविष्य] १ हवन करने योग्य।

२ जिसकी आहुति दी जाने वाली हो, बलि, हवि।

[illegible]

[illegible] [फा. [illegible]] [illegible] के माने सौगन्द [illegible], हलाहल, [illegible]

[illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible] जिन [illegible], हवी [illegible] नाहि । [illegible] [illegible], [illegible] न [illegible] नाहि ।—मा. का. प्र.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—[illegible] ।

उ०—[illegible] मन मंतोस । [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] ।—मा. कां. प्र.

[illegible]—[illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible] स्वामी मारो, दादू सन्मुख सेवक तारो ।

—दादूवांणी

[illegible]—स. स्त्री.—[illegible] आदि के साथ बनाई हुई चने की दाल ।

[illegible]—स. स्त्री. [अ.] पत्थर या ईंटों का बना हुआ बड़ा मकान जिसमें [illegible] से [illegible] दो मंजिल होती है, भवन, महल, प्रासाद ।

उ०—१ [illegible] तो [illegible] हवेली बैठा रह्या । पछै फिदाईखांन [illegible] साहजादा [illegible] मानै नहीं ।—नैणसी

उ०—२ [illegible] रै आयां [illegible] सरस ई हवेली री नींव दिरावूंला । [illegible] [illegible] दिरावूंला । बीनणी नै ओढी सोना-गैणो पैरनै [illegible] मैं बैठैला जद आपनै [illegible] जमारो सुफळ व्हैला ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]—स. पु. [फा.] पारसियों के अनुसार सायंकाल से बारह बजे रात्रि तक का समय । इसमें वे चौथी बार नमाज पढ़ते हैं ।

[illegible]—[illegible]—[illegible], [illegible] ।

उ०—[illegible] घणी, पदमणी पेखण प्रेम । गढ हाथे [illegible], [illegible] हवै [illegible] ।—[illegible] च. चौ.

सं. पु.—१ स्वीकृति सूचक शब्द, हां ।

उ०—[illegible] कह्यो—बादळजी ! देखो छो ! [illegible] रा पग [illegible] । [illegible] सांगसराव री बीज छै । ताहरां बादळ [illegible]—हवं हवं ! [illegible] रै घरै सांगस रावजी री डेरो हुंतो ।

— नैणसी

२ [illegible] ।

उ०—[illegible]—बेटा [illegible] ! देखै, मेमैरी मा री टापरी [illegible] हवं नी ?—नैणसी

[illegible]—सं. पु. [सं.] १ [illegible], घी ।

२ [illegible], नैवेद्य ।

उ०—[illegible] हव्य [illegible] मैं दहै ।—ऊ. का.

३ [illegible] सामग्री ।

वि.—[illegible] ।

हव्यवाह, हव्यवाहण, हव्यवाहन—सं. स्त्री. [सं. हव्यवाहन] अग्नि, आग ।

रू. भे.—हवबाहण, हववाह, हविवाह, हवीवाह ।

हसंव, हसंम—देखो 'हसम' (रू. भे.)

उ०—१ वस ऊंरां पह वसै, थाट जाळंघर थांणै । हसंव थाट सझि हलै, पंथ गुजरात पयांणै ।—सू. प्र.

उ०—२ पातसाह रा डेरा हसंम रवत तबलूयां हूंता सु आंणि थांणै दाखलि कीया छै ।—रा. सा. सं.

हस—सं. पु. [सं. हास्य] हंसी, विनोद, परिहास ।

हसणि, हसणी—सं. स्त्री.—हँसने की क्रिया या भाव, हंसी, मुस्कान ।

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रवण सोखण सर पच । चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा संच ।—वेलि

हसणौ—सं. पु.—हँसने की क्रिया या भाव, हंसी ।

उ०—म्हनैं दुख मैं ई हसणौ आयग्यो ।—अमरचूंनड़ी

हसणौ, हसबौ—देखो 'हंसणौ, हंसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दसण निपाप करिस दांमोदर, आणंद तूझ हसै गिरवर घर । अहर निपाप करिस अघ वारण, मुळकै तूझ प्रेम मधु मारण ।

—ह. र.

उ०—२ हड़ हड़ हसत मसत मदिरा मद, घड़ हड़ सेर घुवाड़ै । चड़ चड़ चाव जोगण्यां चोसट, धड़ धड़ भूमि धुबाड़ै ।—मे. म.

हसणहार, हारौ (हारी), हसणियौ—वि० ।

हसिओड़ौ, हसियोड़ौ, हस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हसीजणौ, हसीजबौ—भाव वा० ।

हसत—१ देखो 'हस्त' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मां.)

२ देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ जुध सांकळ परठै जैताउत, अरि खांमिया सहित आयांण । आकुस कळा तणी सिर ऊपर, सांकै हसत मांनै सुरतांण ।

—कुसळो बीठू

उ०—२ मसत हमत बहु भांत द्वार झूमै खळदाहण । बालां हीसै बाज वर्णे जांणै रवि वाहण ।—वां. दा.

हसतणी—देखो 'हस्तिनि' (रू. भे.)

उ०—१ च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतायी ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ तठै काळबूत हसतणी रै फरस करि नैं छिबतरी खाड मांहि पड़ै छै, पछै लोह सांकळ रा प्रास नाखि नै तिकै हाथी पकड़ीजै छै ।—रा. सां. सं.

उ०—३. सवाग भाग सुंदरी अनुराग लाग खातरी, हसतणी चितरणी पदमणी, घणी जणी बणी ठणी ।—पनां

हसतनखतर, हसतनखत्र, हसतनखित्र—सं. पु. [सं. हस्त-नक्षत्र] खुले हुए हाथ की आकृति का एक नक्षत्र विशेष ।

उ०—पछै इण कोटड़ी ठौड़ रांग कोटडी री भराई। राव वरसिंघ दुर्द ग्रा ठौड़ संमत १५१८ चैत्र सुदी ६ नुं हसतनखतर कहै छै वासी।—नैणसी

हसतबंध—देखो 'गजबंध'।

उ०—सक हसतबंध सगाह, संग दिया महमंद साह। उरि वेण प्रीत उचारि, सुख वार वार संभारि।—रा रू.

हसति, हसती—देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (ना. डिं. को; ह नां. मा.)

उ०—१ पदमिणि रखपाळ पाइदळ पाइक, हिलवळिया हलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुड़ंता, गात्र गिरोवर नाग गति।

—वेलि

उ०—१ हालै जिण अगर घूमता हसती, ताता गयण भूमता तुरंग। पैदल प्रवळ रथां ह्लदवंगी, चतुरंगी अत फौज सुचंग।

—र. रू.

उ०—२ हसत्यां रै होदै रांणी काछवी जी म्हारा राज।

—लो. गी.

हसतीवंद, हसतीबंध—देखो 'गजबंध' (रू. भे.)

उ०—१ राजै भुपती कण घर रतनो, धजबंद खाटण नवो धरा। बीजा होड करै कुण बापौ, हसतीबंद दळसींग हरा।

—ठाकुर महेसदास रो गीत

उ०—२ आस धरै विद्याधर आया, कवि सुज हसतीबंध कह या।

—रा. रू.

हसतेजांमा-सं. पु.—एक प्रकार का सरकारी कर।

हसत्ति, हसत्ती—देखो 'हस्ति' (रू भे.)

उ० —१ दिग्रा वधारा देस दै, हैंवर द्रव्य हसत्ति। पातिसाही थां ऊपरां, यूं कहिग्रौ असपत्ति।—वचनिका

उ०—२ भाळ विसास सिंदूर सुसोभित, हाल मराळ हसत्ती। रूप अनूप तेज मय राजत, मिलक पलक मदमत्ती।—मे. म.

उ०—३ ज्यां कर जोड़ ऊभा समजत्ती, ज्यां ग्रागै गड़ि पड़ै, महा मैंमंत हसत्ती।—जगो खिड़ियो

हसन-सं. स्त्री. [सं.] १ हंसने की क्रिया या भाव, हंसी।

२ मजाक, दिल्लगी, विनोद, हास-परिहास।

सं. पु.—३ अली के दो बेटों में से एक, जिसका शोक मुहर्रम के दिन मनाया जाता है।

हसब-अव्य. [अ.] अनुसार, मुताबिक।

हसम-सं. पु [अ.] १ सेना, फौज।

उ०—१ हयनाळ दगण आरब हसम, माहुत चढिया मैंगळां। देवळां तरा धर करि दुगम जंगम जूथ वीभाजळां।—सू. प्र.

उ०—२ मुलक लेवरणै नूं लसकर सेवक हसम सांमांन सै चाहिजै पण सारां सूं बुद्धि वळ नूं भलौ जांणी जै।—नी. प्र.

२ अश्व, घोड़ा।

उ०—तिण वेत नदी ऊपर वडो जंगल छै। तिण मैं द्रोब, कड़व री वडी ऊगम छै। तिका ठौड़ जोय आया। जांणियौ-मांहरी हसम थाट अठै चरसी।—नैणसी

३ लश्कर, समूह।

उ०—सुक्त इमारत मोटा वाग वैकुंठ जिसां री घर वाग रैयत रां मांही चाकरां हसम नूं उतरणै न देवणौ।—नी. प्र.

४ नौकर-चाकर, सेवक।

उ०—१ ग्रोर भार सरब हसम लोक मोहड़ै कनै घातीयो पठांणां तो डेरो जाय कीयो छै अर रात पहर गई। घोड़ा नूं रातव दै खाणी-दांणी कर नै गढ मांहा नीसरीया।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ राजपूत वट रा आचार देख नें महाराजा राजेसर अजमेर रै थांणै राखैग्रा छै। हसम हुकम सौंपीग्रा छै।—रा. सा. सं.

५ भाग्य।

उ०—हिंदुग्रां मौड राठौड़ मोटै हसम, पुहवि पत्ति मांहि परताप प्राभौ। अनूपसिंह राजवी अटक कटके अडिग, आप सीजी करै जास आभौ।—ध. व. ग्रं.

६ वैभव।

रू. भे.—हसंव, हसंम, हसम्म, हसम्मि, हसम्मी, हसीग, हस्म्म, हासम।

हसमपत, हसमपति, हसमपती-सं. पु.—सेनापति।

उ०—कमंद मुरड़ कुसळेस जम प्रथी चळ-चळ करण, खलपहां चारवा वण साव खारौ। देलसां कोय तण दनै वळै दाखसां। हसमपत धूकळां करण हारी।—ठाकुर कुसाळसिंघ जी रो गीत

हसमस-सं. पु.—१ धक्का, प्रहार।

२ उत्साह जोश।

उ०—१ हियडइ हसमस करता, प्रकट थिया थण वेउ।

—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०—२ रज रमी रूप हारतउं गगन आछादिउं, आदित्यकिरण निरुद्ध हुग्रां, हसमस हयदलै हेखारवि हरिण कन्हा।—व. स.

हसमसणौ, हसमसवौ-क्रि. स.—१ धक्का देना, ढकेलना।

२ उत्साह दिखाना, जोश दिखाना।

उ०—गयघडगुड गडमडत धीर धयवड धर पाडइं। हसमसता सांमंत सरसु सरसेलि दिखाडइं।—सालिभद्र सूरि

हसमसणहार, हारौ (हारी), हसमसणियौ—वि०।

हसमसिओड़ौ, हसमसियोड़ौ, हसमस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हसमसीजणौ, हसमसीजवौ—कर्म वा०।

हसमसियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ धक्का दिया हुग्रा, धकेला हुग्रा।

२ उत्साह दिखाया हुग्रा, जोश दिखाया हुग्रा।

(स्त्री. हसमसियोड़ी)

हसम्म, हसम्मि, हसम्मी—देखो 'हसम' (रू. भे.)

उ०—१ गाजणइ तणा चड़िया गरट्ट, थलवाह पईठा खिड़िय थट्ट

[illegible] हसम, [illegible] हाड मांस्हा हसम्म ।
—रा. ज. सी.

[illegible] हसिम [illegible], [illegible] नाग [illegible] कुणाद ।
[illegible] साद, [illegible] ज्ञाति मेल्ही जजाद ।
—रा. ज. सी.

[illegible] [फा. [illegible]] [illegible] के सवारों का एक भेद ।

[illegible] हसाई-सं. स्त्री [illegible] १ हंसी, मजाक ।
२ [illegible] ।

[illegible], [illegible] —देखो '[illegible], हसावौ' (रू. भे.)
[illegible]हार, हारौ (हारी) हसाणियौ—वि० ।
हसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हसाईजणौ, हसाईजवौ—कर्म वा० ।

[illegible]-वि [illegible] १ उचित, ठीक, श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—[illegible] रोटी [illegible] की, आधी मिळै हसाब । जो चाहे लो [illegible], तो तृप्ति नहीं सबाब ।—अनुभववाणी
२ देखो 'हिसाब' (रू. भे.)
उ०—[illegible] पेंत-तीन चिड़्यां रै चुग्गै रा रिपियै सइकड़ै रै हसाब सूं देणा पड़सी ।—दसदोख

[illegible]—देखो 'हंसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हसायोड़ी)

हसारथ-सं. स्त्री—हंसी ।
उ०—[illegible] बात केई सीतांमण, इम कांम्हदे राइ । पइसी प्राणि समुर मारज्यौ, रसां हसारथ थाइ ।—कां. दे. प्र.

हसावणौ, हसाववौ—देखो 'हसाणौ, हंसावौ' (रू. भे.)
हसावणहार, हारौ (हारी), हसावणियौ—वि० ।
हसाविप्रोड़ौ, हसावियोड़ौ, हसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हसावीजणौ, हसावीजवौ—कर्म वा० ।

हसावियोड़ौ—देखो 'हसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हसावियोड़ी)

हसि—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

हसित-सं. पु.—पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक ।
वि.—हंसा हुआ, खुश, प्रसन्न, हर्षित ।

हसितमद-सं. पु.—हास्य शब्द ।

हसी—देखो 'हंसी' (रू. भे.)
उ०—[illegible] पूछिऊ तब हसी हंस वांणी वदि । विरहि वेदन [illegible] मानति रिदि ।—[illegible]

हसीम—देखो 'हसन' (रू. भे.)
उ०—[illegible] हसीम, भारथ भीम, नरपति नीम । सेनाधिपत्त, हमीर [illegible] ।—घ. वचनिका

हसेर-सं. पु.—एक वृक्ष विशेष, पेड़ ।
उ०—[illegible] हसेर [illegible], [illegible] हुलहह बेर । हरवी हाबूड़ी हगी, हुंकड़ हंसौ हसेर ।—मा. कां. प्र.

हसौ-सं. पु.—हंसने की क्रिया या भाव, हंसी, विनोद, हास्य ।
उ०—इण सारु गहणा रै भेळौ नाळेर राखियौ सो देखनै इण में हसौ रौ कारण श्रो है कै नणद तो सती है श्रौर नणदोई सूरवीर है इण खुसी रो हसौ श्रायौ ।—वी. स. टी.

हस्त-सं. पु. [सं.] १ कुहनी से अंगुलियों तक का भाग, कर, हाथ ।
२ कुहनी से अंगुलियों तक के हाथ की लंबाई का एक माप, परिमाण ।
३ तेरहवां नक्षत्र जो हाथ के आकार का व पांच तारों का होता है । (नां. मा.)
४ हस्त लिपि ।
५ सबूत, प्रमाण ।
६ सहायता, मदद ।
७ नृत्य का एक भाव ।
८ वसुदेव के रोचना के गर्भ से उत्पन्न पुत्रों में से एक पुत्र ।
९ देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (अ. मा.)
रू. भे.—हसत ।

हस्तउड-सं. पु. [सं. हस्त-उडु] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।

हस्तक-सं. पु. [सं] १ हाथ, हस्त ।
२ संगीत का एक ताल ।

हस्तकौसळ-सं. पु. [सं. हस्तकौसल] हस्त-लाघव, हाथ की सफाई, हस्त कला ।

हस्तक्रिया-सं. स्त्री. [सं.] १ हाथ के कार्य की निपुणता ।
२ हाथ से इन्द्रिय संचालन ।

हस्तक्षेप-सं. पु. [सं.] किसी कार्य में या बात में किया जाने वाला दखल ।

हस्तगत-वि. [सं] जो हाथ में आ गया हो ।
क्रि. वि.—अधिकार में, काबू में ।

हस्तग्रह-सं पु. [सं.] पाणि ग्रहण, विवाह संस्कार ।

हस्तणी, - देखो 'हस्तिनि' (रू. भे)
उ०—सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारू जाति । पदमणी चित्रणी हस्तणी संखणी ऐसी भांति ।—प. च. चौ.

हस्तत्रांण-सं. पु. [सं. हस्तत्राण] अस्त्र-शस्त्रों से रक्षा के लिये हाथ में पहना जाने वाला दस्ताना या कवच ।

हस्तनक्षत्र, हस्तनखत्र-सं पु. [सं. हस्तनक्षत्र] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।
उ०—हस्तनखत्र जांणौ चंद्रमा कै वीचि वेध्यौ छै । दूसरौ भाव । जांणै आधा कमळ कै विखै । अलि कहतां भ्रमर तांहकी पंकति फिरी छै ।—वेलि टी.

हस्तनी—देखो 'हस्तिनी' (रू. भे.)

उ०—हस्तनी चित्रणी कर संखिनी, पुहवी बडी पदमावती। इम भणइ विप्र साचउ वछ्रण, आलमसाह अलावदी।—प. च. चौ.

हस्तपुर-सं.—देखो 'हस्तिनापुर'। (रू. भे)

हस्तपुरपत, हस्तपुरपति-सं. पु. [सं. हस्तिनापुर-पति] युधिष्ठिर का एक नामान्तर। (अ. मा)

हस्तबंध—देखो 'गजबंध' (रू. भे.)

उ०—राजा अगर री वास सूं मन मैं विचारियो-जै एथ कोई हस्तबंध राजा छै। कै पवनबंध योगी छै। तैरै अगर बळै छै। —चौबोली

हस्तभुजासण, हस्तभुजासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें बांये पांव को हाथ के कंधे पर चढ़ाकर उसी हाथ से गर्दन को पकड़ा जाता है। इसे वामहस्त भुजासन कहा जाता है। इसके विपरीत करने पर दक्षिणहस्त भुजासन होता है। दोनों साथ करने पर हस्तभुजासन कहा जाता है।

हस्तमैथुन-सं. पु. [सं.] हाथ से किया जाने वाला मैथुन।

हस्तरेखा-सं. स्त्री. [सं.] हाथों की रेखा। (सामुद्रिक शास्त्र)

हस्तलक्षण-सं. पु. [सं.] हथेली में पड़ी रेखाओं के आधार पर शुभाशुभ भाग्य का निर्णय।

हस्तलाघव-सं. पु. [सं.] १ चौसठ कलाओं में से एक।

२ हस्तकौशल।

हस्तलिखित-वि. [सं.] १ किसी कवि, पंडित या विद्वान के हाथ का लिखा हुआ।

२ हाथ से लिखा हुआ।

हस्तव्रक्षासन, हस्तव्रखासण, हस्तव्रखासन, हस्तव्रिक्षासण, हस्तव्रिक्षासन-सं. पु. [सं. हस्तवृक्षासन] योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें दोनों हाथों के ठेउनी से मोड़कर पंजे को पृथ्वी पर लगा कर शिर को जमीन पर रख कर हाथ के आधार से उल्टे खड़े रहना होता है।

वि. वि.—केवल सिर से खड़े रहकर हाथ के आधार को छोड़ देना मुक्त हस्तव्रिक्षासन कहलाता है।

हस्तसंकलिका-सं. स्त्री [सं.] हाथ का एक आभूषण विशेष।

उ०—अभ्रमेसक नुटक संकलिक स्वरणपीठ स्वरणपाल वैस्टिक हस्तसंकलिका पादसंकलिका उतरिका पादक ग्रैवेयक............ इति आभरणांनि।—व. स.

हस्तसूत्र-सं. पु [सं.] रक्षा बन्धन।

हस्तांगुलक--सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र। (व. स.)

हस्ताक्षर-सं. पु. [सं.] किसी प्रकार की लिखावट या लेखन के नीचे अपने हाथ से लिखा जाने वाला अपना नाम, दस्तखत।

उ०—प्रांणांत पहुमि परिणांमयस्य, रट्ठौर सकळ संबत रहस्य। हस्ताक्षर हेरहु हिय हुलास, दुरद्धर दुरूहरस दुरगदास। —ऊ. का.

हस्ति-सं. पु. [सं.] १ हाथी, गज।

उ०—मल्ल हस्ति तुरंग रथ पायक टंकसाली व्यायांम कारक। —व. स.

२ ऐरावत।

३ हाथी की सूंड।

४ बरछी। (ना. डिं. को.)

रू. भे.—हसत, हसति, हसती, हसत्ति, हसत्ती, हस्त, हस्ती।

हस्तिणि, हस्तिणी—देखो 'हस्तिनि' (रू. भे.)

हस्तिनागपुर, हस्तिनागपुरु, हस्तिनापुर-सं. पु. [सं. हस्तिनापुर] वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर एक प्राचीन नगर जहां कौरव-पाण्डवों की राजधानी थी। (पौराणिक)

उ०—इंदपत्थु तिलपत्थु पुरु वारुणु कीसी च्यारि। हस्तिनागपुरु पांचमुं आपीउ मत्सरु वारि।—सालिभद्र सूरि

रू. भे.—पुरहथण, हतणपुर, हतणापुर, हथणाउर, हथिणाउर, हथिणापुर, हथिनापुर, हथीणाउर, हस्तपुर।

हस्तिनी-सं. स्त्री. [सं.] १ मादा हाथी।

२ चार प्रकार की स्त्रियों में से एक, जिसके अधर, नितंब, अंगुलियां, वक्षस्थल आदि अंग स्थूल काय होते हैं तथा जो रतिक्रिया में अधिक रुचि रखती है।

३ सुगन्ध द्रव्य या रूखरी विशेष।

४ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में कुल मिलाकर चार 'सकार' का प्रयोग होता है। (र. ज. प्र.)

रू. भे.—हसतणी, हस्तणी, हस्तनी, हस्तिणि, हस्तिणी।

हस्तिमुख--सं. पु.—गणेश का नामान्तर।

हस्तिसाळ, हस्तिसाल, हस्तिसाळा, हस्तिसाला-सं. स्त्री. [सं. हस्ति+शाला] हाथियों को बांध कर रखने का स्थान।

उ०—१ जिनमंदिर धवलमंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल, पौसधसाल रथसाल हस्तिसाल तुरंगसाल व्यायांमसाल टंकसाल आस्थांन सभा......... —व. स.

उ०—२ क्षण एक जाइ वयगरणि, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण एक जाइ हस्तिसालां, क्षण एक जाइ आयुधसालां, क्षण एक जाइ वाहणि.........—व. स.

हस्ती-सं. पु. [फा.] १ कोई अस्तित्ववान या प्रभावशाली व्यक्ति।

२ अस्तित्व, सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—बाप माडांणी फोटी हंसी रा दांत काढती कैवण लागी—म्हांरी हस्ती ई कांई कै म्है रावळी सोच करां।—फुलवाड़ी

[सं.] ३ सुहोत्र का पुत्र एक चन्द्रवंशी राजा जिसने हस्तिनापुर बसाया था।

४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

५ देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ ढाढी, जै राज्यंद मिळइ, यूं दाखविया जाइ। जोवण हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ।—ढो. मा.

उ०—२ [illegible] दुरजोधन राजा, जैसे गज मतवारौ। सिर होय [illegible] हारे, करी फजीती सारौ।—मीरां

[illegible]—देखो '[illegible]'।

हस्ते, हस्तै-क्रि. वि. [सं. हस्त] १ हाथ से, मार्फत, द्वारा।

२ हाथ में, हाथ पर।

उ०—[illegible] करि छुरी विद्या विनोदा मुसं। तांबूलं [illegible] मारक गोदस।—रा. सा. सं.

३ [illegible]।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], हहकारो—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] गयो अंत पायो, पांन वटो हहंकार थयो। [illegible] 'नागो' [illegible], सीध घपावण हार गयो।

—सांगा पींपाड़ा रो गीत

उ०—२ सुर तेतीसूं कोट, आंण नीरंता चारो। नह खावत नह [illegible], मनै करतो हहकारो।—महारांणा कुंभा रो कवित्त

उ०—३ नाहि तिण समाहि आमी, हहकारो प्रतियो। धन्य तेरो [illegible], सीमती साको कियो।—जांभो

हहयाधीन-सं. पु. [सं. हहयाधीन] सहस्रार्जुन।

हहरणौ, हहरबौ-क्रि. अ.—१ कांपना, थर्राना, धूजना।

२ डरना, घबराना, भयभीत होना, दहलना।

हहराणौ, हहराबौ-क्रि. स.—१ कंपाना, धूजाना।

२ डराना, भयभीत करना, दहलाना।

हहरायोड़ो-भू. का. कृ.—१ कंपाया हुआ, धूजाया हुआ।

२ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ, दहलाया हुआ।

(स्त्री. हहरायोड़ी)

हहरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ कांपा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ।

२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयभीत, दहला हुआ।

(स्त्री. हहरियोड़ी)

हहलांणउ, हहलांणौ—देखो 'हलांणौ' (रू. भे.)

उ०—जदि [illegible] परिस्यां [illegible], तदि हहलांणउ कुमरी [illegible] पीहरि राखी राजकुमारी, पिगळ राय चाल्यउ तिणि वारि।

—ढो. मा.

हहा-सं. स्त्री.—१ हंसने की ध्वनि।

२ हंसी, मजाक, ठट्ठा।

३ दुख या पश्चात्ताप को व्यक्त करने के लिये कहा जाने वाला शब्द 'हा'।

उ०—[illegible] प्रांनी जुगति नहि जांनी अग हहा। महा [illegible] मुक्ति नहि मांनी अग महा।—ऊ. का.

४ [illegible]।

५ [illegible]।

६ गंधर्व विशेष।

हहाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

हहौ-सं. पु.—१ हंसी, मजाक, परिहास, विनोद।

२ देवनागरी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण 'ह', जो काव्य में दग्धाक्षर माना जाता है।

उ०—हहौ करै हित हांण, झभी तन व्याध जगावै। धधो राज भय धरै, ररौ धन नास करावै।—र. रू.

हां-अव्यय [सं. आम्] १ स्वीकृति या सम्मति सूचक अव्यय।

उ०—घर नुं सूत्र सही मनि गणी तिणि अवसरि तिणइ 'हां' भणी घरि आविउ मनि चिंता करइ 'एह काज हिव किण परि सरइ।'

—हीराणंद सूरि

२ किसी प्रश्न, आवाज या सम्बोधन के प्रत्युत्तर में बोला जाने वाला स्वीकृति सूचक शब्द।

उ०—स्वांमीजी बोल्या-त्याग है थारै। चट त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवारै वासतै नव वरस थें राख्या है के ? हां स्वांमीनाथ।—भि. द्र.

३ होने की अवस्था या दशा।

उ०—पण अरजनिये रो तो सयानास ही खोय दघो। जाटणी रो जायो, जाट सूं ही अड़ै अर सेड़ै। जात-जात में ही भेद भरै। वांणियां थोड़ा ही हां, जको कैद-फांसी सूं डरां।—दसदोख

रू. भे.–हुआं।

हांक—देखो 'हाक' (रू. भे.)

हांकणौ, हांकबौ-क्रि. स.—१ रथ में जुते घोड़ों को या गाड़ी में जुते बैलों को अथवा किसी जानवर या जानवर समूह को चलने या आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करना, चलाना, चलाने के लिये मुंह से कुछ शब्द करना, हांकना।

२ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना।

३ बढ़-बढ़ कर बातें करना, शेखी बघारना, गप्पें मारना।

४ चलाना।

उ०—जरै कंवर रो परिकर नागोर आय सो सासन ग्रामारां रा दाहिमां नु मुणाय रस्सा रा तंतुवां रै समांन एक मतै हुवौ अर नागपुर री लज्जा कैमास नूं भळाय अणिहलपुर गजनवी रा अनीक में रातिवाह देंण हांकियौ बणाय हुवौ।—वं. भा.

५ आवाज देना, पुकारना।

६ चिल्लाना।

हांकणहार, हारौ (हारी), हांकणियौ—वि०।

हांकिओड़ो, हांकियोड़ो, हांक्योड़ो—भू० का० कृ०।

हांकीजणौ, हांकीजबौ—कर्म वा०।

हाकणौ, हाकबौ, हाकरणौ, हाकरबौ—रू० भे०।

हांकरणौ, हांकरबौ-क्रि. स.—१ हां करना, स्वीकार करना।

२ मानना, कबूल करना।

हांकरणहार, हारौ (हारी), हांकरणियौ—वि०।
हांकरिओड़ौ, हांकरियोड़ौ, हांकरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
हांकरीजणौ, हांकरीजवौ—कर्म वा०।
हंकरणौ, हंकरबौ, हाकरणौ, हाकरबौ—रू० भे०।

हांकरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हां किया हुआ, स्वीकार किया हुआ।
२ माना हुआ, कबूल किया हुआ।
(स्त्री. हांकरियोड़ी)

हांकल–सं. स्त्री.—१ जोर की पुकार, आवाज।
उ०—यूं जांण घोड़ी नूं कायजौ देय, गट्टी सुद्धां बाहर काढी। खांच अर धूळ कोट री बुरज थी, हाथ दसे 'क ऊंचौ, चण ऊपर चाढी। फदाकी मार ऊपर चाढियौ। चढनै हांकल कीवी—जै सरदारां हूं राजूखां छूं, घोड़ी म्हारी लियां जाऊं छूं।
—सूरै खींवै कांधळोत री बात
२ ललकार।
३ देखो 'हाक'।

हांकलणौ, हांकलबौ—देखो 'हाकलणौ, हाकलबौ' (रू. भे.)
हांकलणहार, हारौ (हारी), हांकलणियौ—वि०।
हांकलिओड़ौ, हांकलियोड़ौ, हांकल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हांकलीजणौ, हांकलीजबौ - कर्म वा०।

हांकलियोड़ौ—देखो 'हाकलियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हांकलियोड़ी)

हांकांधाकां—देखो 'हाकांधाकां' (रू. भे.)

हांकार–स. पु.—१ हां, स्वीकृति।
२ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

हांकारणौ, हांकारबौ–क्रि. स.—१ स्वीकार करना, अंगीकार करना।
उ०—है तौ ओ-ई मौत-री जागां ताव हांकारणौ। पण खैर घणी, बुराई तो टळ जासी।—वरसगांठ
२ मनवाना, कबूल कराना।
हांकारणहार, हारौ (हारी), हांकारणियौ—वि०।
हांकारिओड़ौ, हांकरियोड़ौ, हांकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
हांकारीजणौ, हांकारीजबौ—कर्म वा०।

हांकारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ. २ मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ।
(स्त्री. हांकारियोड़ी)

हांकारौ—देखो 'हुंकारौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां हांसू कह्यौ—थें मांह रै घरै आवेज्या, मावीतां कन्हां मो नूं मांगौ, हूं मावीतां कन्हां हांकारौ भणायीस, हूं घरै जाऊं छूं. थें वांसै वेगा पधारिज्या।—कूंगरै बळोच री वात
उ०—२ पीछै ऐ पूलौ वगैरै साराई नरसिंघ सूं मिळिया, अरू कयौ, 'म्हारौ वदळौ घेरावौ थांनूं बारै महीनां मैं इतरौ मासूल भरसां। पीछै कर ठहराई, तद उणां हांकारौ भरियौ, अरु लाधड़ियं हेरा मेलिया।—द. दा.
उ०—३ दोनां रै घणौ संवाद हुवौ चोर हांकारौ करै नहीं, सिंगार मंजरी छोडै नहीं।—पंचदंडी री वारता

हांकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घोड़े, बैलों या मवेशियों को चलाया हुआ, चलाने के लिये मुंह से शब्द किया हुआ. २ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ. ३ बढ़-बढ़ कर बातें किया हुआ, शेखी बघारा हुआ, गप्पें मारा हुआ. ४ आवाज दिया हुआ, पुकारा हुआ. ५ चिल्लाया हुआ।
(स्त्री. हांकियोड़ी)

हांचळ–सं. पु; ब. व. [सं. अञ्चल] १ किसी स्त्री के उरोज, स्तन।
उ०—१ माता जुद्ध मैं जातां कहै म्हारा हांचळ चूंगियौ है सो लजाजै मती, लुगाई बिलिया देखाय कहै चूड़ा री लाज राखजौ।
—वी. स. टी.
उ०—२ जाहरां माता रै हांचळै पान्हौ आयौ। कह्यौ बाळक ल्यावौ ज्यूं चूघावां।—देवजी बगड़ावतां री बात
उ०—३ दोवड़ी कमर, पिचक्योड़ा गाल नै बैया रै, ओला जिसा लटकता हांचळ।—फुलवाड़ी
२ मादा पशु या जानवरों के स्तन।
उ०—१ सिङ्या रा सिंघणी चूंघावण आई तो वौ हांचळां मूंडौ नीं घाल्यौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ मां मरती रै हांचळां लाग रह्या बाखोट। लूआं मती उघाड़ज्यौ, आतां जातां ओट।—लू

हांजी–सं. पु.—१ 'हां' करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति सूचक शब्द।
२ हां में हां मिलाने की क्रिया या भाव।
उ०—१ न जांणू हांजी चुप रहि, मेट अग्नि की झाळ। सदा सजीवन सुमरियै, दादू वंचै काळ।—दादूवांणी
उ०—२ ऐ लोग रईस अर हूं जूंवारौ खायोड़ौ कंगलौ कलीर। थरका पड़ता, लोग हांजी करता। अर अबै कै हुयग्यौ? छोडी है तौ नोकरी छोडी है।—दसदोख
३ बड़े व्यक्ति के पुकारने पर प्रत्युत्तर में बोला जाने वाला आदर-युक्त शब्द।
४ लोकगीतों में प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन।
उ०—१ धण रै तौ आंगण हवद खिणावौ साहिब झूलण रै मिस आवौ रे। हांजी रे ऊजळ दंती रा साहिब केण बिलमाया रे।
—लो. गी.
उ०—२ होठड़ला मूमल रा रेसमीयै रा तार ज्यौं, हांजी रे दांतड़ला ऊजळ दंतीरा दाड़म बीज्यौ।—लो. गी.

हांजीड़ौ–वि.—हां में हां मिलाने वाला, चापलूस।

हांडणौ–वि. [सं. हिण्ड] १ आवारा घूमने वाला, आवारा।
२ भटकने वाला।

हांडणौ, हांडबौ—देखो 'हांढणौ, हांढबौ' (रू. भे.)

[illegible] —देखो 'हांडी' (रूभा; रू. भे.)

उ०—[illegible] मांडी [illegible] हांडलउं [illegible] मांडुल मांना मिरिया......।
—व. स.

हांडाहांडी-स. पु.—[illegible] सम्बन्धी कार्य।

हांडियोड़ी—देखो 'हांडियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हांडियोड़ी)

हांडी-स. स्त्री. [सं. हण्डिका] १ मिट्टी का बना, बटलोई के आकार का छोटा बरतन जो प्राय: खाद्य वस्तु पकाने के काम आता है।

उ०—१ कुमार हांडी घडइ।—ढ. र.

उ०—२ नगरपालिका री नोकरी, भाग री बात! गांव री गांव में [illegible] हांडी रो भात।—दसदोख

२ पात्र।

उ०—नाना [illegible], काया हांडी मांहि। दादू पाका मिळ [illegible] जीव [illegible] नांहि।—दादूवांणी

मुहा.—(१) चढ़ी हांडी जाणी=बने हुए भोजन को छोड़कर जाना।

(२) चढ़ी हांडी रैणी=भोजन बनने के बाद ज्यों का त्यों रहना, उपयोग न होना।

(३) मोटी हांडी=ऐसा घर या स्थान जहां बहुत कुछ करने की गुंजाईश हो, जहां बहुतों का गुजारा होता हो।

(४) रांधियोड़ी हांडी रैणी=देखो 'चढ़ी हांडी रैणी'।

(५) सेर री हांडी में सवा सेर घालणी=क्षमता से अधिक उत्तरदायित्व डालना, गुंजाईश से ज्यादा।

(६) हांडी मोटी होणी=कुपात्र होना।

(७) हांडी चोखी होणी=सुपात्र होना।

(८) हांडी बंद रै'णी=रसोई न बनना।

(९) हांडी में खटाणी=घर में रख लेने की क्षमता होना।

रू. भे.—हंडवाई, हंडी।

हांडो-स. पु.—१ बड़े पेट का मिट्टी का बर्तन, बड़ी हंडिया।

उ०—१ उठा रजपूताणी ओढी नें जणी माहे हांडा चाट्र ओर [illegible] मार्थ नें चाल्या।—पंचमार री बात

उ०—२ सांवळियो बहनोई मांगो, सोदरा बहनड़ मांगो। हांडा [illegible] मांगो, माड़, देवण भूवा।—लो गी.

२ कोई बड़ा पात्र।

३ बड़े पेट वाला व्यक्ति।

४ मोटा-ताजा आदमी।

रू. भे.—हंडो।

अल्पा.—हंडियो, हांडलउ, हांडलो।

हांडणो, हांडबो—क्रि. स. [सं. हिण्ड] १ भटकते हुए फिरना, भटकना, दर दर की ठोकरें खाना।

उ०—कोई अवगुण मन बस्या, चित थें धरी उतार। दादू पति बिन सुंदरी, हांडै घर घर बार।—दादूवांणी

२ आवारा घूमना, आवारा फिरना।

हांडणहार, हारो (हारी), हांडणियो—वि०।

हांडिओड़ो, हांडियोड़ो, हांड्योड़ो—भू० का० कृ०।

हांडीजणो, हांडीजबो—कर्म वा०।

हांडणो, हांडबो—रू० भे०।

हांडियोड़ो-भू. का. कृ.—१ दर दर की ठोकरें खाया हुआ, भटका हुआ. २ आवारा घूमा हुआ. फिरा हुआ।

(स्त्री. हांडियोड़ी)

हांण-सं. स्त्री.—१ ऊंट के जवानी के दांत।

उ०—सो किण भांति रा ऊंठ, किण भांति रा हांण किण भांति रा डांण, किण भांति रा पलांण नै किण भांति रा बखांण......।
—रा. सा. सं.

२ ऊंट के आयु की दांतों द्वारा की जाने वाली पहचान।

३ आयु।

४ शत्रु।

५ देखो 'हांणि' (रू. भे.)

उ०—१ एम 'दुरग' आखियो, सुणो कमधां समरत्थां। हांण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्थां।—रा. रू.

उ०—२ 'बांका' हरख न अघ्रि सूं. हांण हुवां नहं सोक। हरि संतोख दियो हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक।—बां. दा.

उ०—३ सुहाग री लाखीणी रात बींद बींदणी नै सीख री बात बताई के वा पर-घर नीं तौ कदेई बासदी लावण सारू जावै अर नीं कदेई परीडो रीतो राखै। आं दोनूं बातां में खांमी रै'गी तो सुहाग में हांण पड़ जावैला।—फुलवाड़ी

हांणक-सं. पु. [सं. हानिक] दुस्मन, शत्रु, बैरी।

(अ. मा; ह नां. मा.)

उ०—विघूंसण जांणक हांणक भूप। रच्या अप्रमांण सुदरसण रूप।—मे. म.

वि.—१ हानि या नुकसान पहुंचाने वाला।

२ चोट करने वाला।

हांणफांण-सं. स्त्री—१ किसी कार्य या चलने में की जाने वाली अत्यन्त शीघ्रता।

२ श्वास की तीव्र गति।

वि.—१ अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त।

उ०—वै विरंगोड़ा रूंख, जठै मूखी छांहड़ली। हांणफांण सी घास काय काया री ढिगली।—सत्तिदांन कवियो

२ भयभीत, डरा हुआ, विकल, व्याकुल, बदहवास।

उ०—आदमी 'र लुगायां सब हांण-फांण व्हियोड़ा, पेट रा गोळा

ऊंचा चढचोड़ां, छाती मैं सांस मावै नी। आदमी धोतियी पकड़ै तौ पोतियौ बिखर जावै अर पोतियौ संभाळै तौ धोतियौ खुल जावै।

—रातवासौ

हांणि, हांणी–सं. स्त्री. [सं. हानि] १ नुकसान, हानि, क्षति।

२ नाश, संहार, बरबादी।

३ ह्रास, क्षय।

४ अभाव, कमी।

५ बुराई, अपकार, अनिष्ट।

६ घाटा।

७ छूट, त्याग।

८ असफलता।

९ अनुपस्थिति।

१० कष्ट, तकलीफ, दुख।

रू. भे.—हांण, हांन, हांनि, हांनी।

हांणीकर, हांणीकारक–वि. [सं. हानिकारक] १ नुकसानदायक, हानिकारक, हानिप्रद।

२ कष्ट-प्रद, दुखदायी।

हांणू–वि.—१ हनन करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला।

२ हानि पहुंचाने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला।

हांणै हांणौं—१ देखो 'हणां' (रू. भे.)

उ०—दादू भांती पावै पसु पिरी, हांणैं लाइ न वेर। साथ सभोई हल्लियौ, पोइ पसंदौं केर।—दादूवांणी

२ देखो 'हांनै' (रू. भे.)

हांती–सं. स्त्री. [सं. हिन्त + अण् = हान्ती] विवाहादि कुछ विशिष्ट (शुभाशुभ) अवसरों पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य पदार्थ का वह अंश जो पड़ोसियों, सगे-सम्बन्धियों एवं बंधु-बांधवों में बांटा जाता है।

उ०—बडार रै नातै गांव नूंत्यौ, सोनजी रात सुख री नींद सूत्यौ। लापसी'र घी रौ घूंतौ नूंतौ कर दियौ है। हांती अर हरख रौ मजौ ले लियौ है।—दसदोख

रू. भे.—हंती।

हांतौ–सं. पु.—स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवी के निमित्त रंग-बिरंगे कागजों द्वारा बनाये गये चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते हैं।

हांन—१ देखो 'हांण' (रू. भे.)

२ देखो 'हांणि' (रू. भे.)

हांनि, हांनी—देखो 'हांणि' (रू. भे.)

हांनै, हांनै–क्रि. वि.—१ यथा स्थान।

२ अधिकार में, कब्जे में, वश में।

रू. भे.—हांणै, हांणौं।

हांनौ–सं. पु.—१ ऊंट के चारजामे के आगे का वह भाग जहां सामान लटकाया जाता है। जीन का अग्रिम भाग।

उ०—१ वस्तुवां नूं तयार कर ऊंट पर घाल गंगाजळी पांणी री एक हांनै घाली। वांक एक पताकै बांधी।

—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ सो एक दिन सिकार नूं वन मैं गयौ, हिरणी भाग गई एक छोटौ बच्चौ थौ सो भाग नहीं सक्यौ, सो पकड़ हाथ पग बांध हांनै ऊपर मेल्ह सहर नूं हालियौ।—नी. प्र.

हांपणौ, हांपबौ—देखो 'हांफणौ, हांफबौ' (रू. भे.)

हांपणहार, हारौ (हारी), हांपणियौ—वि०।

हांपिओड़ौ, हांपियोड़ौ, हांप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हांपीजणौ, हांपीजबौ—भाव वा०।

हांपियोड़ौ—देखो 'हांफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हांपियोड़ी)

हांफ–सं. स्त्री.—उमंग, इच्छा, ख्वाहिश।

उ०—नीठ माळा फेरतै फेरतै औ संजोग बणियौ हो, पण भाग मैं भाठौ लिखियौ। कदास भळैं जिसौ होंवतौ तौ तनैं राजी करता' र मन री हांफ..........—वरसगांठ

हांफणी–सं. स्त्री—१ तीव्र गति से श्वास आने की दशा या भाव।

२ श्वास रोग, दम की बिमारी।

रू. भे.—हंफणी, हांफी।

हांफणौ, हांफबौ–क्रि. अ. [सं. उष्मायते, प्र. उम्हायइ] तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लेना, उसांसें लेना, हांफना।

उ०—दीपि कांपइ, पय भारि मेदिनी हांफइ, घांट खलकई.......।

—व. स.

हांफणहार, हारौ (हारी), हांफणियौ—वि०।

हांफिओड़ौ, हांफियोड़ौ, हांफ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हांफीजणौ, हांफीजबौ—भाव वा०।

हांपणौ, हांपबौ, हूंफणौ, हूंफबौ—रू० भे०।

हांफरड़ै–क्रि. वि.—तीव्र गति से, तेज, जोर से, हांफने की स्थिति में।

उ०—सोनजी री बूढी मां बहू रै कोड मैं डागळै चढै अर ऊतरै है। सैंर हालै दरै मारग कांनी जोवतां-जोवतां आंख्यां दूखण लागगी, पग थकग्या अर सांस हांफरड़ै सरु हुयग्यो।—दसदोख

हांफळणौ, हांफळबौ–क्रि अ.—उतावला होना, त्वरित होना।

उ०—तन अखत रोड़ डोलै तिकै, उर अंतर सूं आफळै। इम पिवण घूंट पेछू उमग, होका दीठां हांफळै—ऊ. का.

हांफळियोड़ौ–भू. का. कृ.—उतावला, त्वरित।

(स्त्री. हांफळियोड़ी)

हांफियोड़ौ–भू. का. कृ.—तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लिया हुआ।

(स्त्री. हांफियोड़ी)

हांफी—देखो 'हांफणी' (रू. भे.)

हांभाड़-सं. स्त्री.—गाय के रंभाने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—[illegible] हिणाड़ करै, बन गाय हांभाड़ आंभाड़ करै।
—पा. प्र.

हांम-सं. स्त्री.—१ मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा, चाह, मनोरथ।

उ०—१ [illegible] घोड़ा [illegible], भिड़ज्जा बाहू जंघ वै [illegible]। [illegible] तोड़ पै कंध पूरा, संग्राम विचै हांम [illegible]।—[illegible]

उ०—२ मिर दोड़ै संग्राम, सिर जोड़ै माळा सके। वर सूरां [illegible], पूरै हांम।—रा. रू.

उ०—३ [illegible] 'नाद' तणो 'फतमाल', तई सग भाड़ि भरै रत [illegible]। 'दलो' 'परांदेस' 'सुनत' दुगांम, 'हरी' सळ ढाहत पूरत हांम।—सू. प्र.

उ०—४ [illegible] देस तांम निमै पाग तीस नांम। हेतवा सपूर हांम, [illegible] नियां वांम।—र. रू.

२ उत्कण्ठा, लालसा।

उ०—जसा सरीखी जगत में, महिल नहीं म्यारांम। पंचोलण है पदमणी, हाली पूरण हांम।—मयारांम दरजी री वात

३ उत्साह, उमंग, जोश।

उ०—१ हांम घणी हरदास रै, जोड़ै रांम दुझल्ल। हरी सुजूंझा माह पह, सूजा दुरजण सल्ल।—रा. रू.

उ०—२ कांम धणी हररांम का, हांम घणी जूंझार। पाछै कहिया वीर वर, यांसूं आगळियार।—रा. रू.

४ क्षमता, योग्यता।

उ०—१ सखी भणइ सांमिणि हिव सुणउ, एह दोस नवि कुणह तणउ। दैविहि कीधां छइ जे कांम, तेह मांजिवा धरइ कुण हांम।
—हीराणंद सूरि

उ०—२ तरै साह कह्यो, इणां घोड़ां री धाव कोस च्यार तांई एकै सिराड़ै देखो, तरै इणां री हांम पूरी पोचसी, तिण सूं महाराज, सिरड़ो माथै दिरावां।—कहवाट सरवहियै री वात

५ धैर्य धीरज।

[अ. हाम:] ७ कपाल, खोपड़ी, मस्तक।

८ अपने गोत्र या जाति का नायक।

रू. भे.—हांमू।

हांमजोम-सं. पु.—मनोवेग, मन का आवेग।

हांमकांमलोचनी-सं स्त्री.—१ वह स्त्री जिसके नेत्रों में काम भावना का निवास हो, मदिरेक्षणा।

२ अत्यन्त सुन्दर।

उ०—अत्यन्त पोसाक आभरण पहर हांमकांमलोचनी आभैरी बीजळी सांवण री तीजणी पावासर री हंस ज्यूं मलहफती थकी मुंधे भीनै थार रुमभुम करती आई—कुंवरसी सांखला री वारता

हांमकांमा-सं. स्त्री.—१ अत्यन्त सुन्दर नैत्रों वाली स्त्री।

२ इच्छा पूर्ण करने वाली स्त्री।

३ रति की इच्छा करने वाली स्त्री।

हांमगीर-वि.—देखो 'हमगीर' (रू. भे.)

उ०—लोग सारो हांमगीर थयो आपो आप कांम नूं लाग गयो।
—सुंदरदास भाटी वीकूंपुरी री वारता

हांमळ-सं. स्त्री—स्वीकृति, स्वीकारोक्ति, सहमति।

उ०—१ राजा री सिखायो कसाई वांनै पटाया। वै तो ईं हांमळ भर दी।—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठजी पिंडतजी नै इचरज सूं खरावता दूजी वार वळै पूछ्यो—जांन री ई सगळो खरचो ओढण सारू हांमळ भरी, कठै ई जात-खांप मैं कांण-कोचर तो नीं है।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—भरणी।

हांमलो-वि.—१ प्रसन्नचित्त, खुश।

२ सौहार्द पूर्ण।

हांमस-सं. स्त्री.—इच्छा, कामना।

उ०—राजसी पणै मोदन रखै खाट खाय निज खागरी। पल करै प्रवाडा रवि उदय सदा हांमस भाग री।—पा. प्र.

हांमी-सं. स्त्री.—१ हां करने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति।

२ सहमति।

वि.—शुभ चिंतक, हितैषी, मददगार।

हांमू—देखो 'हांम' (रू. भे.)

उ०—अजामेळ जैसो महा अपराधी, लियो यार हैको तिकै गत लाधी। हियै पुत्र बोलाड़वा तेण हांमूं, निमो रांम नांमूं, निमो रांम नांमूं।—भगतमाळ

हांयली—देखो 'हांसली' (रू. भे.)

हांस-सं. पु.—१ स्त्रियों के गले में धारण करने का एक आभूषण विशेष। (व. स.)

उ०—१ सपत लडी कंचन सुभग, हांस हार सुहेल। नवसर कण नवरंग के, चोसर फूल चमेल।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ म्हांरी रखड़ी रतन जड़ाओ सा, म्हारा हिवड़ा नै हांस मंगाओ सा।—लो. गी.

२ देखो 'हंस' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरायंत सिरदारां देखीतां तळाव मैं भूलण री हांस करै छै। लाल लांगीरी पोतां पहरजे छै।—रा. सा. सं

हांसउ—देखो 'हांसो' (रू. भे.)

उ०—राजा रांणी नूं कहइ वात विचारउ जोइ। आज विखइयां दीकरी, हांसउ हसिसी लोइ।—ढो. मा.

हांसड़ो-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

२ देखो 'हांसो' (अल्पा; रू. भे.)

हांसल-सं. पु.—१ एक प्रकार का घोड़ा। (शा. हो.)

२ देखो 'हासिल' (रू. भे.)

उ०—१ थेट्ठ छोड ववां थोक मह अध दीघ हांसल मोक। सातूं ईतरी नह सोक, लंगर सुखी सगला लोक।—र. रू.

उ०—२ ग्रौर सवाई राजपूतां सूं हांसल मांगै तीं सूं उवै दोहरा।
—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री बात

उ०—३ जै बाग री दसूंध दरबार मैं ग्रावै तौ घणौ हांसल बधै ग्रर रैयत रौ पण कुछ विगड़ै नहीं हमैं बाग रौ हांसल सगळां सू लेयस्यां।—नी. प्र.

हांसली-सं. स्त्री—१ गर्दन के नीचे व छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी।

२ गले में पहनने का एक चन्द्राकार ग्राभूषण।

रू. भे.—हंसली, हांयली, हांस।

हांसलीग्रौ हांसलीयौ-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मूगीग्रां चलवलीग्रां चारूलीग्रां परवालीग्रां मांडलीग्रां खाजलीग्रां पिपलीग्रां पोपटिग्रां हांसलीग्रां चंपकदुरगीग्रां विद्यापुरीग्रां देकापाटकीग्रां कास्मीरीग्रां......—व. स.

हांसलौ-सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—१ घोड़ौ तौ भींजै धरमी हांसळौ, मोतीड़ै जड़ी लगांम ग्रो। जांमौ विराजै धरमी रै केसरिया, पांच मोहर गज पाग ग्रो।
—लो. गी.

उ०—२ मेघउ लोलु नइ देवाइत, मूळराज महियडउ जइत। वालि मांहि जे तेजी भला, एक सहस दीधा हांसला।—कां. दे. प्र.

हांसिल—देखो 'हासिल' (रू. भे.)

उ०—तद नेणसी ग्ररज कीवी जै हूं तौ राज मैं हांसिल बधतौ लियौ राज रौ विस्वौ गमायौ नहीं।—रा. सि.

हांसी-सं. स्त्री.—१ श्वास रोग से पीड़ित एक प्रकार की गाय विशेष।

उ०—कपला कवळी नैं बारै पुचकारै, लाखर लाखर ऐं ग्राखर मन मारै। हांसी वासीसी सूकी हिय हारै, संसणी लसणी लख द्रैदसणी सारै।—ऊ. का.

२ देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—१ थाळ ग्राइयौ। दोनूं सरदार भैळा बैठिया ठट्ठौ मसकरी हांसी हो रही छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उठै दोनूं मिळिया हांसी करणै लागिया।
—भाटी सुंदरदास बीकंपुरी री वारता

उ०—३ लोगां मैं बात जाहर होय सै तौ लोग हांसी करसै।
—नापै सांखलै री वारता

उ०—४ गोकुळ की नारि देखत, ग्रानंद सुखरासी। एक गावत एक नांचत, एक करत हांसी।—मीरां

उ०—५ झालि झलामल नागला, नाग लागा छइं गालि। देसि हूं ग्रोपम तिहां सीय ? हांसी य जीवए चालि।—ग्रागम मांणिक्य

हांसौ-सं. पु. [सं. हास्य] १ हंसने की क्रिया या भाव।

२ हंसी, विनोद, मजाक, परिहास।

उ०—सीता छांडै सत्त, जत्त लिछमण सूं जावै। महा जोध हणमंत कळा बळहीण कहावै। नारद जुध निरखता, तिको पिण हांसौ तज्जौ, भयण ग्रंभ भोजन, भूख जीमियां न भज्जै।—चोथ वीठू

३ किसी की उपेक्षा करने या ग्रपमान करने के लिये किया जाने वाला मजाक, दिल्लगी, बदनामी, खिल्ली।

उ०—१ तरै सिधराव निसासौ मेलि नै कह्यौ, कंवरजी, दुख छै तिकौ तौ माहिलौ सरीर जांणै छै, कह्यां सूं हांसौ हुवै नै गरज पिण किणही सूं सरै नहीं, नै राज म्हांरा जीवरा दातार छौ, नै म्हारै भलौ परताप दीसै छै सो राज री उपगार छै।
—जगदेव पंवार री बात

उ०—२ म्है तौ राज रा रजपूत छां पिण लाकड़ी रा गोढ दिसा ग्रठै थांहरौ हांसौ जोर हुवौ।—राव रिणमल री वात

४ हँसने की ध्वनि।

५ सफेद जीभ वाला बैल।

६ देखो 'हंसी' (मह; रू. भे.)

७ देखो 'हंस' (ग्रल्पा; रू. भे.)

रू. भे.—हांसउ, हांसड़ी, हासउ, हासू, हासौ।

हां-हां-ग्रव्य.—मुंह से बोला जाने वाला एक शब्द जिसके उच्चारण भेद से ही स्वीकृति सूचक या निषेधात्मक ग्रर्थ प्रकट होते हैं।

हा-ग्रव्य. [सं.] १ दुःख, उदासी, पीड़ा का द्योतक एक ग्रव्यय।

२ ग्राश्चर्य या ग्राह्लाद सूचक शब्द।

३ क्रोध या भर्त्सना सूचक शब्द।

४ है का भूतकालिक रूप, था, थे।

उ०—१ क्रत करण ग्रकरण ग्रन्नथा करणं, सगळै ही थोकै समत्थ। हा लिया जाइ लगाया हूंता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।
—वेलि

उ०—२ दरखत रा गात हरया हा, सांपड़दे प्रांण भरया हा। सूका ठूंठां सा हो'ग्या, कीं खातर हणैं खड्या हा।—सकुंतला

५ एवम्, ग्रथ। (उ र.)

हाइफण, हाइफन-सं. पु. [ग्रं.] यौगिक शब्दों के बीच में लगने वाला एक चिह्न विशेष जो ग्रत्यन्त छोटी ग्राडी लकीर के रूप में होता है।

हाइ-भाइ—देखो 'हावभाव' (रू. भे.)

उ०—ग्रवसरि तिणि प्रीति पसरि मन ग्रवसरि, हाइ-भाइ मोहिया हरि। ग्रंग ग्रनंग पया ग्रापांणा, जुड़िया जिणि वसिया जठरि।
—वेलि

हाईकोट, हाईकोरट-सं. पु. [ग्रं. हाईकोर्ट] उच्चन्यायालय।

हाईस्कूल-सं. पु. [ग्रं. हाईस्कूल] वह विद्यालय या पाठशाला जहाँ दशवीं या ग्यारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई होती है।

उ०—हाईस्कूल वेगी तौ जैपर ग्रर बीकानेर रै बीचाळै भूखा-तिसा

[illegible] ई [illegible] । —[illegible]

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] [illegible] [सं.] [illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible] [देशज] [illegible] भयानक जंतु जिसका जिक्र [illegible] को डराने-धमकाने के लिये किया जाता है, होवा ।

उ०—[illegible] ली ले लिया, [illegible], भरणी तूं मति जाय रे ।

—जयवांणी

[illegible]—सं. पु.—एक प्रकार की बेल ।

[illegible] —[illegible] ।

[illegible]—स्त्री. [सं. हक्क] १ जोर से पुकारने की आवाज, बुलाने के लिये की जाने वाली जोर की पुकार । (उ. र.)

उ०—१ [illegible] भीरो नूं मारि ले-नै, उठे भरमल राणी हुती [illegible] । [illegible] हाक मारी, बोलै काई नहीं ।

—ऊमादे भटियांणी री वात

उ०—२ [illegible] री हकबक सुणी तो बाजरी रै मांय ऊभो एक [illegible] सोकण लिवां 'कुण है ई, कुण है ई' री हाक लगा-[illegible] बारै [illegible] ।—फुलवाड़ी

२ [illegible], शोरगुल ।

उ०—[illegible] हाक हकरयं, तबै ऊतंत तकियं । घड़ै अनंत धारयं, [illegible] मारियं ।—रा. रू.

३ हुंकार, घोर ध्वनि ।

उ०—[illegible] सुर नर, मुनिवर जस जंपै । [illegible] री हाक हुवां [illegible], जग जननी जोड़ न जायो रे, हनु. ।—गी. रां.

४ ललकार ।

उ०—१ 'हरी' 'सबळेस' तणी करि हाक । करं रण [illegible] घणा [illegible] ।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] री [illegible] सूं, [illegible] करंत । हाक धरा पर [illegible], [illegible] वळंत ।—बां. दा.

४ ललकारने या प्रोत्साहन देने के लिये बोले जाने वाले जोश पूर्ण शब्द ।

उ०—१ [illegible] री रीठ बाजियो । [illegible] चोकड़ी पड़ रही छै । हाक [illegible] हुय रही छै । बीर नाच रहिया छै ।

—सूरै खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ [illegible] जै सहै हाकां बाजंताह । त्यां घरि [illegible] ।—हा. भा.

५ [illegible] ।

उ०—[illegible] हाक वह जीव विमानई । एक धुमइ [illegible] ।—मालिभद्र सूरि

६ [illegible] आवाज, जोर का शब्द ।

उ०—१ [illegible] हाक [illegible] हाक चोटै, नार नंदी [illegible] । [illegible] नागणी जागतां आयो रोस मतै, नवी परां पीपळ उडंडी काळी नाग ।—जसो आढो

उ०—२ चढि आभ धड़ाळ चमंक चुभी, सुरताळ धमंक पताळ सुभी । वहि हाक धमागळ डाक वजी, त्रिपुरासुर-संभु समाधि तजी ।

—मे. म.

७ बहुत से लोगों के सम्मिलित स्वर में बोलने से होने वाली भारी ध्वनि ।

उ०—दूजै भळाके ई सगळा नगरवासी आडा जड़नै सूयग्या । एक ई गळी में फिरतो निगै नीं आयो । नीं खम्माघणी री हाक सुणीजी ।—फुलवाड़ी

८ डांट-फटकार, प्रताड़ना ।

९ डर, भय, आतंक ।

रू. भे.—हक्क, हकां, हांक, हाकणी, हाकल, हाकि ।

हाकड़णौ, हाकड़बौ—क्रि. अ. [सं. हिक्कतिम्] अटकते-अटकते बोलना, हकलाना ।

हाकड़णहार, हारौ (हारी), हाकड़णियौ —वि० ।

हाकड़िओड़ौ, हाकड़ियोड़ौ, हाकड़्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

हाकड़ीजणौ, हाकड़ीजबौ—भाव वा० ।

हाकड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—अटकते-अटकते बोला हुआ, हकलाया हुआ । (स्त्री. हाकड़ियोड़ी)

हाकड़ियौ—वि.—१ तेज चाल से चलने वाला ।

२ देखो 'हाकड़ौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—खाती कूप बचायो अहिवण, तूटी लाव संधांणी । हाकड़िया री हेक फळ कर, पीगी आवड़ पांणी ।—राघवदास भादो

हाकड़ौ—सं. पु. [देशज] १ सतलज नदी की शाखा के रूप में बहने वाला एक नद जिसे आवड़ देवी ने एक बनजारे की सहायता के लिये रोक दिया था ।

उ०—थिरा आवड़ा नांम विख्यात थायो, छिता-सत्रु सो तेमड़े छत्र छायो । सको सोखियौ हाकड़ो नांम सिंधू, वहंतो थको रोकियो लोकबंधू ।—मे. म.

[स्त्री. हकड़ी, हाकड़ी] २ हकलाते हुए बोलने वाला व्यक्ति ।

उ०—बांगड़ां विरद साजण खबीठ, रांगड़ा बजावै खाग रीठ । हाकड़ा तणी गुण सुण हकाळ, गड़वड़ै सत्र उर पड़ैय साळ ।

—पे. रू.

रू. भे.—हकड़ो, हकलो ।

अल्पा; रू. भे.—हाकड़ियौ ।

हाकडाक—सं. स्त्री. [सं.हक्क+टांकृतिः] १ रण भेरी, रण वाद्य ।

२ वीरों की हुंकार ।

उ०—हुवै हाक-डाक बकी कायरां ऊचकै हियो । डक डकै भैरवी बजावै रुद्र डाक ।—ठाकुर सुरतांण सिंह री गीत

हाकणी—वि.—१ ललकारने वाली, हांकने वाली ।

उ०—देवी कंटकां हाकणी वीर कंवरी, देवी मात वागेस्वरी महा-गवरी।—देवि.

२ देखो 'हाक' (रू. भे.)

हाकणो, हाकबो—देखो 'हांकणो, हांकबो' (रू. भे.)

उ०—१ पड़िया पंचायणनी परि हाकइ, रोस लगि मुंछ मुंछ फरकावइ। रथ चक्र चांपी ती-करोड़ि कड़हड़इ।—रा. सा. सं.

उ०—२ आसमुद्द धरहि घणिय दक्केवकइं कडिचीरि। हाकीउ रल जिम काढीइउ आथमतई सूरि।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हाकी भड ऊठाडइ आगला ति पाडइ। सरसै जंपउ ढाडइ राउत रु'साडइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ घर रा लोग राजस करै हा। कमाई में सर्फ अर वरकत ही। सगळा सिरज्योड़ा चालै, एक रा हाक्या हालै।—दसदोख

हाकणहार, हारौ (हारी), हाकणिड़ौ—वि०।

हाकिओड़ौ हाकियोड़ौ, ह क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हाकीजणौ, हाकीजबौ—कर्म वा०।

हाकबंवाळ-वि.—बहादुर, वीर, पराक्रमी।

उ०—आसथांनजी रा धूहड़जी, धूहड़जी रा बेटां री विगत—रायपाळ महिरेळण १. जोगाइत उडणौ २. वेगड़ कटारमल ३. जाळू गज उछाळ ४. कीतपाळ अभैउर सिणगार ५. पेथड़ हाक-बंबाळ ६. कहाणौ।—बां. दा. ख्यात

हाकबक, हाकबाक—देखो 'हाकियो-ब्राकियो' (रू. भे.)

उ०—१ झलंवा झलूस साज सहेल्यां री साथ जोवै, बांदी बीजी हुइ रूप देखै हाक-बाक। कुरवां बधारै लाडी जसां नै सुनाथ कीजै, चैल (छैल) बना लीजै दुंवारै की चाक।

—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ कांनजी हाक-बाक व्हैग्यो। वो आपरी लुगाई री रीस नै आछी तरियां जांणै हो। उणै कह्यौ—थोड़ी धीरै बोल भली मिनख, कोई बाड़ कांटो सुणैला, कतल रो मांमलो है अर हाल मुकद्दमो ई दरज व्हैणौ है।—अमरचूंनड़ी

हाकम—देखो 'हाकिम' (रू. भे.)

उ०—१ संमत १७८१ में महाराजा स्री अभैसिंघजी पाट बैठा नै हाकम मुंणोयत सांवतसिंघ आयो। नै संमत १७८५ रा गनीमां जाळोर मारी। पछै संमत १७९१ मुंतो किसनचंद हाकम आयौ।

—नैणसी

उ०—२ पछै बावेचां जेठमलजी हाकम कनै जाय कूचीआं न्हाख कह्यो-के तो भीखणजी रहसी के म्है रहस्यां। जद हाकम बोल्यो: इसो अन्याय तो म्है नहीं करां।—भि. द्र.

हाकमारीघरुलाग-सं. स्त्री.—प्रजा से वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का कर या लगान विशेष जो हाकिम के निजी व्यय के लिये होता था।

हाकमी—देखो 'हाकिमी' (रू. भे.)

हाकर-डाकर-सं. स्त्री.—वीरों की हुंकार।

हाकरणौ, हाकरबौ-क्रि. स.—१ गरजना, दहाड़ना।

उ०—नाथ परताप नह धरै धड़क नरपति, चमू सत्रहरां चकरै धकै चाळ। डांखियो सेर साजी अणी हाकरै, पेसकस भरै किम बियो 'बिजपाळ'।—जवांनजी आढौ

२ ललकारना, चुनौती देना।

३ चिल्लाना।

४ देखो 'हांकणौ, हांकबौ' (रू. भे.)

उ०—हिवा हाथियां आस्वासायइं, उंघ्रा मउड पडइं, रेवंत रडवडइं, पडिया पंचायणनी परि हाकरइं, रोस लगीं मुंच्छ-मूंच्छ फरकावइ, रथचक्र चांपीती करोडि कडकडइं........।—व. स.

५ देखो 'हांकरणौ, हांकरबौ' (रू. भे.)

हाकरणहार, हारौ (हारी), हाकरणियौ—वि०।

हाकरिओड़ौ, हाकरियोड़ौ, हाकरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हाकरीजणौ, हाकरीजबौ—कर्म वा०।

हाकरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गरजा हुआ, दहाड़ा हुआ।

२ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ।

३ चिल्लाया हुआ।

४ देखो 'हांकियोड़ौ' (रू. भे.)

५ देखो 'हांकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हाकरियोड़ी)

हाकळ-सं. पु.—१ एक चौकल तथा पंचकल युक्त १४ मात्रा का एक छन्द विशेष।

२ प्रथम और द्वितीय चरण में ग्यारह-ग्यारह तथा तृतीय और चतुर्थ चरण दश-दश वर्ण का एक वर्णिक छन्द। इसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्राऐं और अन्त में एक गुरु होता है।

३ तीन चौकल तथा अन्त में गुरु से १४ मात्रा का एक मात्रिक छन्द।

४ प्रथम और तृतीय चरण में दश वर्ण सहित १४ मात्राऐं तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में ग्यारह वर्ण सहित १४ मात्राओं का एक छन्द।

उ०—आदि त्रियै पायै दस आखर, पठि इग्यार बियै चौथै पर। दीजै तात्रा पाइ चउद्दह, हाकळ एम कहीजै छंदह।—पिं. प्र.

हाकल—देखो 'हाक' (रू. भे.)

उ०—१ खां भी नूं कही हाकल मारू थारो नाव कासूं उण कही जी जमाल छै।—नापै सांखळै री वारता

उ०—२ गोळी लागतां ई इक्कड़ अरड़ाट कियो अर सन्मुख आई झाड़ी में बड़ग्यो कुंवर अर उणारा साथीड़ा सगळाई झाड़ी नैं घेर नैं ऊभा व्हैग्या। जोर री हाकल हुई।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ माहै सिरदार ऊभो छै—तिण वास्तै टूक टूक हुय पड़ै छै, राजा री हाकल सी। का तो राजा सी कोई दाव करो, राजा

[illegible] —[illegible] री बात

[illegible]—४ [illegible] सारी [illegible], सिर परि छाती न होय। यूं चिड़ियां [illegible], हाकल करै न कोय।—अनुभववांणी

[illegible] [illegible] निरख कै, पांच पचीसूं नारि। न्यारी [illegible] निज नहैं, हाकल दिलूं न वारि।—अनुभववांणी

[illegible] हाकबि, हाकबी, [illegible]।

हाकणौ, हाकबौ-क्रि. स.—१ चलाना, हांकना।

उ०—[illegible] हाकियौ [illegible]। चराचर सस्टि चढ़ै हलचल्ल।
—मे. म

२ ललकारना, चुनौती देना।

उ०—हाकै गोला सूं [illegible] नाखतो जै बूंदी हाडा। बूंदी भाडा-[illegible] गाढ़ो बगैर।—जीवोजी माढ़ो

३ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना।

४ डांटना, फटकारना, दुत्कारना।

५ जोश दिलाना, उत्तेजित करना।

६ जोर से पुकारना, आवाज देना।

७ हुंकार करना, गरजना।

८ डराना, भयभीत करना।

उ०—अमरांत गुरड़ न उड़ही, ताळी अजड़ तणेह। हाकलियां कूला हुवै, पंखी पवर [illegible]।—हा. झा.

हाकणहार, हारौ (हारी), हाकणियौ—वि०।

हाकियोड़ो, हाकवियोड़ो हाकल्योड़ो—भू० का० कृ०।

हाकीजणौ, हाकीजबौ—कर्म वा०।

हाकळणौ, हाकळबौ, हाकालणौ, हाकालबौ—रू० भे०।

हाकलि—१ देखो 'हाकळ' (रू. भे.)

२ देखो 'हाकळी' (रू. भे.)

हाकलिका-सं. स्त्री.—पन्द्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

हाकलियोड़ो-भू. का. कृ.—१ चलाया हुआ, हांका हुआ. २ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ. ३ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ. ४ डांटा हुआ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ. ५ जोश दिलाया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ६ जोर से पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ. ७ हुंकार किया हुआ, गरजा हुआ. ८ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ।

(स्त्री. हाकलियोड़ी)

हाकलियौ-वि.—ललकारकर बोलने वाला, हकलाने वाला।

रू. भे.—हाकलू।

हाकली-सं. स्त्री.—१ दस अक्षरों वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु होता है।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे.)

रू. भे.—हाकलि।

हाकल्ल-सं. पु.—१ फौज, सेना।

२ घोड़ा, अश्व।

उ०—सिर विलंद झलै भुज भार सार। हाकल्ल दसा बारह हजार। आवता देख कहि वाह-वाह। इम कियौ मारवा मन उछाह।—सू. प्र.

३ सिपाही, सैनिक।

वि.—१ हांका जाने वाला।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे.)

हाकहीक, हाकहूक—देखो 'हाकाहाक' (रू. भे.)

उ०—१ विविध प्रकारि जै छइ पालखी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवे पायकै परिवा-रउ।—व. स.

हाकांणौ-सं. पु.—दुर्भिक्ष के समय मवेशियों को ऐसे स्थान पर ले जाने की क्रिया जहां पानी व घास अधिक मात्रा में हो।

हाकांताकां, हाकांधाकां-क्रि. वि.—१ देखते-देखते, खुले-आम।

उ०—१ देखण वाळां नै तो फगत धूड़ री गोट इज निजर आयो। हाकांधाकां मैं जोड़ी आगै निकळगी अर घोड़ो लारै रैगयो।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ वींदणी सांनी सूं की समझावै उण पैलां ई कांमेती रै सागै आठ-दसे'क आदमी उणनै माडांणी हाकांधाकां रथ माथै धरकाय दी।—फुलवाड़ी

२ बलवान्, हठात्।

रू. भे.—हांकाधाकां।

हाकादड़बड़-सं. पु. [अनु.] शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—दरबार रै पाखती पूगी तो सांम्ही हाकादड़बड़ सुणीजी। राज रै तबेला सूं एक बोछरड़ी घोड़ी न्हाटती आई। लारै चरवा-दार।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हाकैदिड़बड़, हाकोदड़बड़।

हाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

हाकारौ—देखो 'हाहाकार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—समहि खाग आंण्यो उर ऊपरि, हिरण करै हाकारौ। मेरी वारी मोहि विणासौ, अवळा मूळि न मारौ।—जांभौ

हाकालणौ, हाकालबौ – देखो 'हाकलणौ, हाकलबौ' (रू. भे.)

उ०—हाकालीया केहरी 'गुमांन' वाळा वगां हाका, रारीयां भभका क्रोध ढंकां वंबी रोड़। गजां काळा मोड़ वाळा रखै तूं दूसरा 'गजा', जोड़ वाळा पीढ़ां री मरोड़ जाडी जोड़।
—गोपाळजी धधवाड़ियौ

हाकालणहार, हारौ (हारी), हाकालणियौ –वि०।

हाकालिओड़ो, हाकालियोड़ो, हाकाल्योड़ो—भू० का० कृ०।

हाकालीजणौ, हाकालीजबौ—कर्म वा०।

हाकालियोड़ो – देखो 'हाकलियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हाकालियोड़ी)

हाकाहाक-सं. स्त्री.—१ बहुत से व्यक्तियों के सम्मिलित स्वर से होने वाली ऐसी आवाज जिसमें एक आवाज पर दूसरी आवाज तीव्र-तर होकर उठती हो, शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला।
उ०—१ हर रावत भीड़ियां ऊभा छां। ज्यां ऊपरै कोरडी तरवार ही वाही, फुलधारां का बाढ जड़यां हर बारा पड़्या, हाकाहाक हुइ, कोहक माची।—पनां
उ०—२ हाका दड़बड़ अर कोपरियां रा बणबट सुणनै आड़ोसी पाड़ोसी जाग्या। मार हाकाहाक मची। सिरदार लुकता छिपता साव नैड़ा आयग्या।—फुलवाड़ी
२ हुंकार पर हुंकार, वीर ध्वनि।
क्रि. प्र.—करणी, मचणी, मचाणी, होणी।
रू. भे.—हाकहीक, हाकहूक।

हाकि—देखो 'हाक' (रू. भे.)
उ०—बिहुं पखां हाकि हाकि, हिणि-हिणि मारि-मारि।
—रा. सा. सं.

हाकिनी-सं. स्त्री.—तंत्र की एक प्रकार की घोर देवी।

हाकिम-सं. पु. [अ.] १ राजा, नरेश, बादशाह।
२ स्वामी, मालिक।
३ शासक।
४ किसी प्रान्त या जिले का सब से बड़ा अधिकारी।
५ अध्यक्ष, सरदार, नेता।
वि.—हुकूमत करने वाला, शासन करने वाला, हुक्म चलाने वाला।
रू. भे.—हाकम।

हाकिमी-सं. स्त्री. [अ.] १ हाकिम का कार्य।
२ शासन, हुकूमत।
३ स्वामित्व, मालिकी।
रू. भे.—हाकमी।

हाकियोड़ो—देखो 'हांकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. हाकियोड़ी)

हाकियौ-वाकियौ-वि. यौ. (स्त्री. हाकीवाकी) हक्का-बक्का, भौंचक्का, हतप्रभ।
उ०—मांहिलो साथ हाकियौ-वाकियौ हुवौ, रंग मांहे भंग कीयौ। इणां तौ लोह वबायौ। आदमी सो दोढ मारिया।
—जेतसी ऊदावत री बात
रू. भे.—हाक-वाक, हाकवाका, हाकी-वाकौ, हाक्यौ-वाक्यौ।

हाकी-सं. स्त्री. [अं. हॉकी] १ गेंद खेलने की एक विशेष प्रकार की छड़ी जो आगे से कुछ अर्द्धचन्द्राकार मुड़ी हुई होती है।
२ उक्त छड़ी एवं गेंद से खेला जाने वाला एक विश्व प्रसिद्ध खेल।

हाकीवाकी-वि. स्त्री.—१ हक्की-बक्की, हतप्रभ।
उ०—जठै पनां की साथण्यां तौ हाकीवाकी रही, हर रावत भीड़्या ऊभा छां, ज्यां उपरै कोरडी तरवार ही वाही।—पनां
२ देखो 'हाकियौ-वाकियौ' (रू. भे.)

हाकैदिड़बड़, हाकोदड़बड़—देखो 'हाकादड़बड़' (रू. भे.)

हाकोटणौ, हाकोटबौ-क्रि. स.—हांकना।
उ०—पंचाइण दळ पूर, पैठो ईसर को प्रगट। हैवै थट हाकोटिश्रा, अणी चढावै ऊर।—वचनिका

हाकोटां-वि.—१ प्रसन्न, खुश।
२ स्वस्थ, स्वच्छ।

हाकोटियोड़ो-भू. का. कृ.—हांका हुआ।
(स्त्री. हाकोटियोड़ी)

हाकोबेदो-सं. पु. यौ.—शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल।

हाकौ-सं. पु. [राज. हाक] १ जोर की आवाज, जोर का शब्द।
२ पुकार, आवाज।
उ०—१ वींदणी अळगा सूं ई हाका करचा पण सुभट सुणीजियो कोनी।—फुलवाड़ी
उ०—२ बीजै दिन कुंवरि जोरावरी कर वेस्या रै घर सूं बाहर निसरी बाजार मांहे ऊभी रही नै हाकौ दियौ।
—पंचदंडी री वारता
३ शोर, हल्ला, कोलाहल।
उ०—सुणतां हाकौ सहज ही, कीधी जेज कधी न। नींदाळू अब छोडणा भीड़ाणा कुच पीन।—वी. स.
४ ललकार, चुनौती।
उ०—कळह विहूं कूरमां कजाकां, हिणियौ 'अभै' सेन करि हाकौ।
—सू. प्र.
५ किसी को बुलाने या लोगों को एकत्र करने के लिये किया जाने वाला शब्द, आवाज।
उ०—१ पैलां तौ म्हैं भूत जाण्यो। भगवान झूठ नोज बुलावै, अंदाता, म्है डरयो। म्हारा सूं हाकौ ई नीं व्हियो।—फुलवाड़ी
उ०—२ आ बात कैय वा हाकौ करण वाळी ही के दीवांणजी हाथ जोड़नै बोल्या—थांनै थांरा धणी री सोगन हाकौ करचौ तौ। साचांणी म्हैं दीवांण इ हूं। कुचमादी रै भरोसै हाकौ कर दियौ तौ अबारूं लोग भेळा व्है जावैला।—फुलवाड़ी
उ०—३ म्हैं धापू नै हाकौ कियौ तौ वा पाड़ोस रा घर सूं दौड़ी आई। पण सदैई का ज्यूं आयनै पगां में बाथ नीं घाली।
—अमरचूंनड़ी
६ खुली चर्चा, खबर, अफवाह।
उ०—१ राजाजी अर महारांणी रै डर सूं भेळा होय पंचायती के हाकौ करण री हीमत तौ किणी री नीं ही, पण कांनां ई कांनां में हळाहळ फूटण लागी जकौ रात पड़्यां पै'ली पै'ली किणी सूं आ बात अछांनी नीं री........।—फुलवाड़ी

[illegible] हाको रो हुवणो। [illegible]-जणीका [illegible] ।—फुलवाड़ी

४ [illegible], [illegible], [illegible] आदि के लिए कहा जाने [illegible] ।

उ०—[illegible] हाको [illegible]—म्हारै मोरचा रो पत्तो तो घोड़ो म्हारै [illegible] । मूंडाढ़ा [illegible] एक मामूली टोग-[illegible] ।—फुलवाड़ी

५ [illegible], हाय-त्राय।

उ०—[illegible] । दो नुट्टी झालनै पोढ़ो जंभेड़ी। [illegible] हाको [illegible] । पाड़ोस-पाड़ोस रा लोग भेळा हुवा।

—फुलवाड़ी

६ [illegible] ।

७ [illegible] के लोगों के या प्राणियों के एक साथ बोलने पर सम्मि-[illegible] में होने वाली आवाज।

उ०—'[illegible]' [illegible] । [illegible] गुलाबी अतर पहरि [illegible] । [illegible] हाकै होतै अंदर सूं बाहर पधारै।

—सू. प्र.

क्रि. प्र.—[illegible], कराणो, छूटणो, मचणो, मारणो, होणो।

रू. भे.—हाको, हाक, हाको, हकाळो।

हाक्को-बाक्को—देखो 'हाकियो-बाकियो' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] हाक्का-बाक्का [illegible] परकोटा रै मांय वड़िया। [illegible] जोवनै उठी जोवै, सांमी जोय नै पाछो लारै जोवै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई [illegible] नै समझावण सारू वीं नवी बात माथै [illegible] लागो ई हो कै उण रै कांनां रथ री आवाज साव [illegible] । हाक्को-बाक्को होय फिळो गोल्यो। परथरावती [illegible] बोल्यो—पंडाता तो पधारग्या।—फुलवाड़ी

हाकड़बाट-सं. पु.—१ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, विनोद।

२ [illegible], ठाट-बाट।

रू. भे.—हाकड़बाट।

हाकड़ि, हाकड़दि-सं. स्त्री.—हाहाकार, त्राहि-त्राहि।

उ०—धाकड़दि धनक धोवण घहलै घर, दाकड़दि दिसां दहलै दिगराळ। हाकड़दि हुवै आलम हैरांन, काकड़दि कयांमत जांण कराळ।—र. रू.

हाकड़बाट—देखो 'हाकड़बाट' (रू. भे.)

उ०—हाकड़बाट [illegible], जीव [illegible] कर जांणगो। 'जीव-[illegible]' [illegible] ज्यूं, मगरै मजलिस मांणगो।

—अरजुणजी बारहठ

हाकोड़—देखो 'हाकोड़' (रू. भे.)

हाड़ी-सं. स्त्री.—रबी री फसल। (गंगानगर)

हाजत-सं. स्त्री. [अ.] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा, ख्वाहिश।

२ मल त्याग की इच्छा, टट्टी की शंका।

३ शंका, संदेह।

रू. भे.—हाजित।

हाजमो-सं. पु. [अ. हाजिम] पाचन शक्ति, पाचन क्रिया।

उ०—चाय में आधो चिमचो भेंस री दूध हो, उण री चिकणाई सूं हाजमो बिगड़ग्यो।—फुलवाड़ी

मुहा.—(१) हाजमो खराब होणो=पाचन क्रिया बिगड़ना, बद-हजमी होना, पेट में खराबी होना, सहनशीलता की कमी होना, विवेकहीन होना, बात को मन में न रख पाना। (२) हाजमो दुरुस्त होणो=पाचन क्रिया ठीक होना, सहनशील होना, विवेकशील होना, बात को मन में रख पाने की क्षमता होना। (३) हाजमो बिगड़णो=देखो 'हाजमो खराब होणो'।

हाजर—देखो 'हाजिर' (रू. भे.)

उ०—१ लेसै रांम सुलिखमण बाळक, तेज रिखि अण तोली। हेरै भूप कह्यो हूं हाजर, हालूं साथ हरोळी।—र. रू.

उ०—२ तठा उपरायंत पुरांणै अगर रो चिकायो संधो मंगायजै छै-मीसी खुलै छै। मोती पुड़ै री सीप रा प्यालां में घात हाजर कीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ गुजराती कसमीरी करूरी मारवाड़ी वखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रंग-रंग री बनात मुखमल कलाबूती सोनै रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजै छै।

—रा. सा. सं.

हाजर-जवाब—देखो 'हाजिर-जवाब' (रू. भे.)

हाजर-जवाबी—देखो 'हाजिर-जवाबी' (रू. भे.)

हाजर-नाजिर-सं. पु. [अ. हाजिर=तैयार+नाजिर=कर्मचारी] वह नौकर या सेवक जो सेवा के लिये तैयार रहता है।

उ०—थे जो पलक उघाड़ो दीनानाथ, म्है हाजर-नाजिर कब की खड़ी।—मीरां

क्रि. वि.—खुले आम, दिन दहाड़े।

हाजरात—देखो 'हाजिरात' (रू. भे.)

हाजरि—देखो 'हाजिर' (रू. भे.)

उ०—१ ऊजळां प्राचां री खवास्यां ऊजळां रूपोटां लीग्रां हाजरि खड़ी मिसरी, अफीण सूं अरोगाड़ी जै छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ रांम सकळ मैं रमि रह्या, हाजरि खड़ा हजूर। हरीया अंध न देखई, चुंह दिस ऊगा सूर।—अनुभववांणी

२ देखो 'हाजरी' (रू. भे.)

हाजरियो-सं. पु.—१ सेवक, अनुचर, नौकर।

उ०—दिन ऊगो, सिनांन-पांणी करया अर बीन-बीनणी रै मौड़ बांध्या। हाजरिया-हवालदार एकां तागां तथा बैल्यां री कतार सजाई।—दसदोस

२ संदेशवाहक।

उ०—१ पण जूतां री हुकम मिळतां ई बादळ पाछौ पेंतरौ बदळियौ। एक हाजरिया नै भेज पोळिया नै तेड़ायौ।—फुलवाड़ी

३ हाथ में रखने का डंडा।

हाजरी–सं. स्त्री. [अ. हाजिरी] १ उपस्थिति, मौजूदगी या वर्तमान होने की अवस्था या भाव।

२ किसी कार्य विशेष या अवसर पर उपस्थित रहने की अवस्था, मौजूदगी।

३ कार्यालय या नौकरी पर नियत समय पर उपस्थित होने की क्रिया, उपस्थिति।

उ०—छठै दिन दरबार में पाछौ हाजर व्हैणौ। डोढ दिन मारग री। आधी ढळियां ई घोड़ै नीं चढिया तौ हाजरी में चूक व्है जावैला।—फुलवाड़ी

४ विद्यार्थियों, मजदूरों, सिपाइयों आदि की ली जाने वाली रोजाना की उपस्थिति।

उ०—सोपौ पड़ग्यौ, सरणाटौ छायौ। वत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ। हाजरी हुई अर सोवण री घंटी वाजी।—दसदोख

क्रि. प्र.—देणी, बोलणी, लैणी होणी।

५ उपर्युक्त उपस्थिति के फलस्वरूप किसी पंजिका में किया जाने वाला अंकन, हस्ताक्षर आदि।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, मांडणी, लगाणी, लिखणी, लैणी।

६ कर्त्तव्य, ड्यूटि।

उ०—भाग सूं उणरी ड्यूटी बी. डी. ओ. सा'ब रै घरै इज लागी। वौ जितरौ नाचण-गावण में हुंसियार हौ, उतरौ ई हाजरी साजण में पण पाटक हौ।—अमरचूंनड़ी

७ सेवा, चाकरी, टहल।

उ०—१ बठै म्हारै ही कांम वेगौ, चौधरीजी री हाजरी में आखी रात खड़ा अटकता रैया।—दसदोख

उ०—२ बेटौ इग्याकारी ऐड़ौ कै बाप नै सपना में ई ओड़ौ को देवै नीं। आठ पौ'र बाप री हाजरी में हाथ जोड़्यां एक पग रै पांण ऊभौ रैवतौ।—फुलवाड़ी

८ अपने स्वार्थ के लिये या उद्देश्य पूर्ति के लिये किसी के पास बार-बार जाने की क्रिया या भाव।

उ०—खासा दिनां तांई सेठ री बीणती साव ऐळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड़ आपरा मन समझावणौ ई सावळ जांणियौ। जणा जणा री हाजरी साझियां कांई सार।—फुलवाड़ी

९ देखो 'हाजिर' (रू. भे.)

रू. भे.—हाजरि, हाजिरि।

हाजित—देखो 'हाजत' (रू. भे.)

उ०—मध सिवरन जू ऐसै भाई, रांम विनां हाजित नहीं कांई। गद गद कंठा कवळ विगासा, पाया पेम भया परगासा।

—अनुभववांणी

हाजिर–वि. [अ.] १ उपस्थित, मौजूद, वर्तमान, विद्यमान।

२ प्रस्तुत।

३ सन्नद्ध, सावधान, तैयार।

४ उपलब्ध।

रू. भे.—हाजर, हाजरि, हाजरी, हाजिरि, हाजिरी।

हाजिर-जवाब–वि. यौ. [अ.] प्रत्येक बात का तत्काल युक्तियुक्त उत्तर देने में निपुण, प्रत्युत्पन्न-मति।

रू. भे.—हाजर-जवाब।

हाजिर-जवाबी–सं. स्त्री. [अ.] १ 'हाजिर-जवाब' होने की अवस्था या भाव।

२ प्रत्युत्तर की निपुणता, प्रत्युत्पन्नमतित्व।

रू. भे.—हाजर-जवाबी।

हाजिरात–सं. स्त्री. [अ.] भूत-प्रेत आदि को बुलाने की क्रिया।

रू. भे.—हाजरात।

हाजिरि–सं. पु.—१ छड़ीदार, प्रतिहार। (ह. नां. मा.)

२ देखो 'हाजरी' (रू. भे.)

रू. भे.—हाजिरी।

हाजिरियौ—देखो 'हाजरियौ' (रू. भे.)

उ०—गळ विच सेली हाथ हाजिरियौ, अंग बिभूति रमायौ। मीरां कै प्रभु हरि अविनासी, भाग लिख्यौ सोही पायौ।—मीरां

हाजिरी—१ देखो 'हाजरी' (रू. भे.)

२ देखो 'हाजिरि' (रू. भे.)

हाजी–सं. पु. [अ.] वह व्यक्ति जिसने हज की यात्रा करली हो, हज किया हुआ।

हाजी-विट्ठल–सं. पु.—मुसलमान हिंजड़ों का एक पीर। (मा. म.)

हाट–सं. स्त्री. [सं. हट्ट] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहां वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है, दुकान।

उ०—१ तूं सरवर की मछली, कौंण पिता कुंण माय। अलप संनेही कारणै, हाटौ हाट विकाय।—अनुभववांणी

उ०—२ सांवळगढ रै अड़ूड ब्यांनणै में सेठ-साहूकारां री माल-मत्ता री सत्ता सरूप सांगो-पांग ठा' पड़ैयौ हो। हाट बजार री, अर सुनारां रै हटड़ै री सोभा देख'र वगता री आंख्यां खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

क्रि. प्र.—करणी, खुलणी, मंडणी, मांडणी, लगाणी, लागणी।

२ वस्तुओं के क्रय-विक्रय का केन्द्र, बाजार।

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न विकतौ जोय। हरीया गाहक पेम कौ, सिर दे लेसी सोय।—अनुभववांणी

उ०—२ जंगळ जाट न छेड़ियै, हाटां बीच किराड़। रांगड़ कदै न छेड़ियै, पटकै टांग पछाड़।—अग्यात

[illegible] —[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

[illegible] —[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], हाटी, हाट्ट ।

[illegible] —[illegible], [illegible], हाटि, हाटो ।

हाटक—सं. पु. [सं.] १ स्वर्ण, सोना । (ह. ना, ह. नो. मा.)

उ०—१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], हाटक-कोट पचीस बिहं- [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पद हाटक नूपर । नखलासी [illegible], [illegible] [illegible] सुंदर ।—रा. रू.

उ०—३ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], उनमत्त मुनेस्वर दत्त प्रदां । [illegible] हाटक [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] जिम नाटक मुंड करै ।

—मे. म.

२ देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—[illegible] [illegible] नव हाटक, हाटक दान प्रवीण ।. करइं ति गायण [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।—जयसेखर सूरि

हाटककोट, हाटकपुर—सं. पु. यौ. [सं.] स्वर्ण निर्मित नगर, लंका ।

हाटकलोचन—सं. पु. यौ. [सं. हाटक+लोचन] हिरण्याक्ष नामक दैत्य ।

हाटको—१ देखो 'हाटक' (रू. भे.)

२ देखो 'हाट' (अल्पा; रू. भे.)

हाटकेस—सं. पु. [सं. हाटकेश] शिव की एक मूर्ति जिसकी उपासना [illegible] के तट पर होती है ।

हाटड़ी, हाटडि, हाटड़ो—१ देखो 'हाट' (अल्पा; रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ [illegible] [illegible], [illegible] सोटां, उंमळ माटड़ी । साह [illegible] दाम [illegible], ज्यांही नगरां हाटड़ी ।—दसदेव

उ०—२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देपस्यां तीसूं तूं हाटड़ी कर मायं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवो जायसी ।

—साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'हटड़ी' (रू. भे.)

हाटी—सं. पु. [सं. हाट्टिक] १ हाट लगाने वाला वणिक, व्यापारी ।

उ०—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हाटी लोप [illegible] । [illegible] [illegible] सिर [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।—बां. दा.

२ देखो 'हाट' (रू. भे.)

हाटू—देखो 'हाट' (रू. भे.)

हाटेको—सं. पु. [सं. हाट्टिक] हाट लगा कर माल बेचने वाला, दुकानदार ।

हाटोहाट—क्रि. वि.—एक दुकान से दूसरी दुकान, दुकान-दुकान पर ।

उ०—[illegible] [illegible] की [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] संनेही [illegible], हाटोहाट [illegible] ।—अनुभववांणी

हाठ—देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—[illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] लेइ नै एक हाठ में [illegible] ।—[illegible]

हाडु [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—होकारै होकारो होइ नै रहियो छै । लाल बरछी यकी न रही छै । पगेज बराबर चालता घोड़ां रा हाडुआं उपरि अघ लोही ए रा झाग तजारै री वाड़ी री भांति विराज नैं रहिया छै । फौज बराबर चालतां आकास उरे सेहरा डंबर हुइ नैं रहिया छै ।

—रा. सा. सं.

हाड, हाडक—सं. पु. [सं. हड्ड] १ किसी प्राणी के शरीर का अस्थि समूह, हड्डी, अस्थि । (उ. र.)

उ०—१ बाप री हाड-हाड कुळतो हो । वो तो एंडी टरयो के काळजो सुरक सुरक करण लागो । ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तो वै पूरा हाय-गाय व्है जावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पुलिस गांम मांयनैं सूं पनरै आदमियां नैं पकड़'र लेयगी अर लेजायनैं ठरकावणा सरू किया तो पछै भजलो रै भोड़ गांम नैं । मार-मारनैं सगळां रा ई हाड जोजरा कर नांख्या ।

—अमरचूंनड़ी

२ मृत प्राणी के शरीर की हड्डी का टुकड़ा, अस्थि-खण्ड ।

उ०—१ मीत पूत अवलजा, लज पर हथि अलजै । रुळै हाड एकळ, गीध खाडी स्यावजै ।—जांभो

उ०—२ तीं मैं च्यार कळस, त्यां रै म्होंडा बंद, च्यारां पर अळग-अळग च्यार नांम लिखिया । सो राजी राजी लेय म्होंडा खोलिया तो कंकड़ कोयला तुस अर हाड नीसरिया ।—सिंघासण बत्तीसी

३ शरीर, पिंड ।

उ०—१ पांच पांडु अरु कुंती द्रोपदी, हाड हिमालय गरै । जग किया वळि लेण इंद्रासण, सो पाताळ धरै ।—मीरां

उ०—२ अंधारी रात, फळसो उघाड़ो, मसोड़ ठरै, तुलसी जाड़ो । ठंडा किरता बिछायणा मैं मारजा किया आपारा सोयसी । कोढिबै जाड़ै हाड धोळा कर राख्या है । - दसदोख

उ०—३ ब्राह्मण नितां वरुण करंतां सिंधु न ध्यु मारुआडि । तु सूं पुण्य करपूं मि मनमूं, चिता पांमि हाडि ।—नळाख्यांन

४ वंश का गौरव, वंश की मर्यादा, कुलीनता ।

वि.—सफेद, श्वेत । ✱ (डि. को.)

मह;—हाडम, हाडळ हाडाळ ।

रू. भे.—हाडि, हाडी ।

हाडकाड़ो-सं. पु.—वह स्थान जहां मृत पशुओं की हड्डियां पड़ी रहती है ।

रू. भे.—हाडकोड़ ।

हाडको—देखो 'हाड' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—किण हिं सुं डरता नहीं, एतो हुना श्री ज़ोरावरी जोध कै । मारी नै गाड़ दिया ज्यांरी हाडकियां नहीं सकिया सोध कै ।

—जयवांणी

हाडको—देखो 'हाड' (मह; रू. भे.)

उ०—१ ठौड़ ठौड़ गांवा रै बारै ढोर-डांगरां रै हाडकां रा ढिग लाग्योड़ा पड़्या हा अर जठै तठै बाटकां रै ओलै मिनखां री लासां

पड़ी ही ।—रातवासौ

उ०—२ फगत पनरै दिनां मैं ईंज मेथकी भूंडी दीखण लागगी। आंख्यां धंसगी जबाड़ा बैठग्या अर हाडका निकळ गया।

—रातवासौ

उ०—३ जच्चा-रांणी रै हळद, तेल अर गुज्जी रै आटा री पीठी करनै आखौ डील मसळियौ। बाटां उतारी। हाडका लुळाया। सांधौ-सांधौ दबायौ।—फुलवाड़ी

मुहा.—१ हाडका कुळणा=शरीर में अत्यन्त दर्द होना. २ हाडका-हाडका खुलणा=शरीर की जकड़न दूर होना. ३ हाडका जोजरा करणा=बुरी तरह पीटना. ४ हाडका दूखणा=शरीर में दर्द होना. ५ हाडका फोड़णा=पीटना. ६ हाडका भांगणा=बुरी तरह पीटना. ७ हाडका भागणा=जगह-जगह शरीर में दर्द होना. ८ हाडका निकळणा=कमजोर होना, कृशकाय होना. ९ हाडका बंधणा=शरीर में जकड़न पड़ना. १० हाडका बोलणा=कमजोरी के कारण चलते समय हड्डियों से कट-कट की आवाज होना. ११ हाडका में रीळां ऊठणी=रह-रह कर शरीर में कसक होनी, दर्द की चीस चलनी. १२ हाडका लुळाणा=उबटन आदि करके शरीर के अंगों को इधर-उधर मोड़ना, व्यायाम कराना।

हाडकोड़—देखो हाडकाड़ौ' (रू. भे.)

हाडख—देखो 'हाड' (मह; रू. भे.)

हाडजळ-सं. पु.—अग्नि, आग। (ना. डि. को.)

हाडजुर-सं. पु.—हड्डियों का ज्वर, अस्थि-ज्वर।

हाडजोड़-सं. पु.—शरीर की हड्डियों का संधिस्थल, हड्डियों का जोड़।

हाडफूटणी, हाडफूटि, हाडफूटी-सं. स्त्री. [सं. हड्डस्फूटि] हड्डियों में होने वाली पीड़ा, दर्द। (अमृत)

हाडफोड़-वि.—१ बलवान।

२ मांसाहारी।

हाडबरड़-वि.—जबरदस्त। (बांकीदास)

हाडबेर, हाडबैर-सं. पु. [सं. हड्डु-वैर] वह दुश्मनी या वैर जो किसी निकट सम्बन्धी को मारने से उत्पन्न होता है।

उ०—१ भूंगड़ा चुगायनै ऊगै कह्यौ, सुणि हो सांखळा, ठाकर मोटा मोटा गढपती छत्रपती था, तिणां रै नै थारै कोई लांबौ वैर नहीं, धरती रौ विरोध नहीं, कोई हाडबैर नहीं। तैं इणां री इसी भांत इज्जत गमाई।—कहवाट सरवहियै री वात

उ०—२ खून कियां जांणौ खलक, हाडबैर जो होय। वणै सगाई वयण तौ, कल्पत रहै न कोय।—र. ह.

रू. भे.—हाडवैर।

हाडवड़ियौ-सं. पु.—कृषि कार्य में खेत में काम कराने के बदले काम करने वाला।

वि. वि.—परस्पर सहयोग की दृष्टि से एक किसान दूसरे किसान के खेत में कार्य करता है। इस कार्य की कोई मजदूरी न लेकर वह अपने खेत में वापस उससे अपने खेत में कार्य करवा लेता है। इस प्रकार की चढी हुई पार को उतारने वाले को 'हाडवड़ियौ' कहा जाता है।

हाडवड़ी-सं. स्त्री.—'हाडवड़ियै' का कार्य, कार्य के बदले किया जाने वाला कार्य। (कृषि)

हाडवैर—देखो 'हाडबैर' (रू. भे.)

हाडसंकलि-सं. स्त्री. [सं. हड्डु+शृंखला] अस्थि-पंजर, अस्थि-समूह।

उ०—ताहरां भोपतजी रा नळ छूटि छूटि पड़िया। आंखि अर इंद्री छूटि पड़िया। हाडसंकळि जुदी हुई।—द. वि.

हाडहोड, हाडहौड-सं. स्त्री.—१ प्रतिस्पर्धा।

२ बहस, तर्क, दलील।

३ शोरगुल, हल्ला।

रू. भे.—हाड़होड़।

हाडा-सं. पु.—१ चौहान क्षत्रियों की एक शाखा।

उ०—१ कुळ हाडां कूरमां, किया विण आडा कारण। ज्यां आगै मृगराज, धरै गजराज न धारण।—रा. रू.

उ०—२ सोनीगरा का हूं करूं वखांण, हाडा बूंदी का धणी।

—बी. दे.

२ राठौड़ों की एक उपशाखा।

उ०—खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३......।—बां. दा. ख्यात

रू. भे.—हडा, हड्डा।

हाडारौखेत-सं. पु. यौ.—वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का क्षुप।

हाडारौतिल-सं. पु. यौ.—एक प्रकार का तिलहन जो बिना बोये होता है।

हाडाळ—देखो 'हाड' (मह; रू. भे.)

हाडाहोड—देखो 'हाडहोड' (रू. भे.)

हाडि—१ देखो 'हाड' (रू. भे.)

उ०—तन मन पहली भाडि दै, हरीया नेह न छाडि। सूर सहै रिण खेत मैं, यु मांसा चूकी हाडि।—अनुभववांणी

२ देखो 'हाडी' (रू. भे.)

हाडी-सं. स्त्री. [देशज] १ हाडा राजपूतों की कन्या।

उ०—सीसोदणी बहूजी हाडी जी री मा' कछवाही भगवंतसिंघजी री मा ३।—बां. दा. ख्यात

२ मादा कौवा।

३ ऊंट का एक रोग जिससे उसके पिछले पैर की हड्डी बाहर निकल जाती है।

४ देखो 'हाड' (रू. भे.)

रू. भे.—[illegible] ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] तालो री दलिदार, [illegible] बनावो, ऐ पणिया—[illegible] हाडेराव री ।—बो. बी.

[illegible]—सं. पु.—हाडौती में होने वाला एक प्रकार का घास ।

[illegible]—सं. स्त्री.—१ हाडौती प्रदेश की ।

२ हाडौती प्रदेश में उत्पन्न [illegible] ।

उ०—[illegible] राज री रावटीयो नै है बूटादार जिलम सवागण यूं [illegible] सरदार, मनवारा जा ड्योढ़ी जाजम पर होको [illegible] जिलम में होरो महरो गुजे राज हाडोतण प्यारी लागे [illegible] ।—मां. मी.

३ देखो 'हाडी' (१) (रू. भे.)

हाडोती—सं. स्त्री.—राजस्थान का वह भाग या प्रदेश जहाँ कोटा तथा बूंदी के [illegible] स्थित है और जहाँ पर हाडा शाखा के चौहानों का राज था ।

उ०—[illegible] मामलो रो, तिण रा हाडोती नूं छै ।—नैणसी

रू. भे.—हाडोती ।

हाडोराव—सं. पु.—१ हाडा शाखा का क्षत्रिय राजा ।

२ एक प्रकार का लोक गीत जो दुल्हे के तोरण पर आने पर गाया जाता है ।

रू. भे.—हाडेराव ।

हाडोहाड—देखो 'हाडोहाड' (रू. भे.)

उ०—[illegible] म्हारै तो विदतजी-वाळी बात हाडोहाड बैठगी ।

—वरसगांठ

हाडो—सं. पु. (स्त्री. हाडी) १ हाडा जाति का क्षत्रिय ।

उ०—१ हाडो [illegible] छत्रसालोत साथै काम आयो ।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ [illegible] पटो लागो [illegible] दानें, [illegible] मळ करणां गरद । [illegible] दळ [illegible] दळ पो [illegible], हाथी हाडो मसत हद ।

—महाराज छत्तरसिंह रो गीत

२ कौवा ।

उ०—[illegible] फौज कूच कीधो। [illegible] रा [illegible] इण विध आभै [illegible] हाडो [illegible] पड़्यो । हळवळ होकारां रैं [illegible] फौज [illegible] बघती [illegible] । [illegible] मैं इण हळवळ रैं समचै हाडा [illegible] करता कांनी कांनी उडण लागा ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—[illegible], हाडो ।

हाडोहाड—क्रि. वि.—१ [illegible] प्रसंग में, सम्पूर्ण अंग में ।

२ यथोचित, ठीक ।

रू. भे.—हाडोहाड ।

हात—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] हात [illegible] हुवै [illegible] रा, वहै रन जेम सांवण बहाळा । आप आवो वरी जोय नै आड़ियो, सड़ै रिण भळ भळा निराताळा ।—र. रू.

उ०—२ भई हूं दिवांनी तन सुध भूली, कोई न जांणै म्हांरी बात । मीरां कहै बीती सोई जांणै, मरण जीवण उन हात ।

—मीरां

हातकमाई-सं. स्त्री.—१ स्वयं का उपार्जित धन, खुद की कमाई ।

२ जो वस्तु अपने हाथ की या अपनी मेहनत से बनी हो ।

उ०—हात-कमाई घाट हुरक सूं, पतली गट गट पीणी । घोर रेत सम चेत घमंडी, चोर लियोड़ो चीणी ।—ऊ. का.

हातम—देखो 'हातिम' (रू. भे.)

हातमताई-सं. पु. [फा.] फारस देश का एक व्यक्ति जो दीन-दुःखी जनों की सहायता करने के लिये प्रसिद्ध था ।

उ०—हातमताई हरख सूं, पोखंतो पहियांह । अमर नांम उण रो अजें, की जादा कहियांह ।—बां. दा.

रू. भे.—हातिमताई ।

हातळ—देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

उ०—पाड़तो अरी हातळ खड़ग पछटोतो, देख दमंगळ मंगळ पड़ै दारू । गोड़ करता गयंद खदमार्थ गयो, मयंद हद ढांकीया जेम मारू ।—रांमदांन लाळस

हातळियो—देखो हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—पूगो पातळियाह, हातळिया जोड़त हुवा । फूकें कावलियाह वावलिया तें वोविया ।—जुगतीदांन देथो

हातली-सं. स्त्री.—आरा की मूठ या बेंट जिसे दोनों हाथों से पकड़ कर आरा को खींचा जाता है ।

हातवीसाळी—देखो 'वीसहथी' (रू. भे.)

उ०—वीणापत सक्त हातवीसाळी, सुकळा अंबर आंणंद सीदी । मुकतागळ जयं उजळ माळी, सारद तुज नीमांमी नमस्तें ।

—रांमदांन लाळस

हाता-वि. स्त्री.—संहार करने वाली, हनन करने वाली ।

उ०—देवी नारसिंघी वराही विख्यात्ता, देवी इला आधार आसूर हाता ।—देवि.

हातापाई-सं. स्त्री.—१ द्वन्द्व युद्ध, झगड़ा ।

२ परस्पर की छोटी लड़ाई जिसमें हाथों पैरों से प्रहार होता है ।

हाताळो—देखो 'हाथाळ' (रू. भे.)

हातिम-वि. [अ.] १ दानी, उदार ।

२ निपुण, चतुर ।

सं. पु.—१ न्यायाधीश, जज ।

२ काजी ।

३ एक बड़ा कौवा ।

रू. भे.—हातम ।

हातिमताई—देखो 'हातमताई' (रू. भे.)

हाती—देखो 'हाथी' (रू. भे.)

हाते, हातै–क्रि. वि.—१ हाथ से ।

सर्व:—२ स्वयंमेव, अपने-आप, स्वतः ।

उ०—हमैं कोई नै उलं पासै मतां आवण देज्यौ । घड़ी दोय रात गयां हूं हातै आऊं छू ।—पलक दरियाव री वात

३ हाथ में ।

हातोताळी–क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी ।

हातोपाई–सं. स्त्री —१ हाथो का प्रक्षालन, हाथ धोने की क्रिया ।

उ०—सु गुरु कहै वेगा हुवौ उठौ, गुरु हातोपाई करण गयौ ।
—पंचदंडी री वारता

२ देखो हातापाई' (रू. भे.)

हातोहात, हातोहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

हातौ–सं. पु.—१ घेरा हुआ स्थान, अहाता ।

२ सीमा, हद ।

३ रोक, निषेध ।

४ स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवि के लिये बनाये गये रंग बिरंगे कागजों के चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते हैं ।

५ देखो 'हाथौ' (रू. भे.)

हात्थियौ, हात्थीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—इसिइ समय [पर] दलइ वरत्तमांनि राजा सन्नद्धवद्ध लोह चूरण हुई सुहुड सुहडइं, सुगड हात्थीया लूडइ......... ।
—व. स.

हाथ–सं. पु. [सं. हस्त] १ मनुष्य जाति के प्राणियों के शरीर का कंधे से लेकर पंजे तक का अंग, भाग या हिस्सा, हस्त, हाथ, कर ।
(उ. र.)

उ०—१ पण खवास री आंख्यां में आंसू छळक आया । वळै पगां रै हाथ लगाय बोल्यौ—अंदाता, औ कांई हाको व्हियौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ तिसोता जिसौ नीर गंभीर टांकौ, विलूंमै विचै जाळ भुज्जाळ बांकौ, जिका कोट नूं देवता हाथ जोड़ै, चहूँ कूंट रै बीच वैकूंट चोड़ै ।—मे. म.

पर्याय.—आच, आचित, कर, करग, जुधजय, तस, दोर, पंचसाख, पांचूसाख, पण, पाणि, बाहू, भुज, भुजा, सय, सुकर, हसत, हात ।

मुहा०—१. हाथ अंजळी करणौ=हाथ जोड़ना, दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर ऐसे गूंथाना कि दोनों हाथों की स्थिति एक पात्रनुमा हो जाय । २. हाथ अटकणौ=कार्य करते समय एका-एक हाथ रुकना, किसी वस्तु या उपकरण के अभाव में कार्य रुकना, अर्थाभाव के कारणवश कार्य रुकना । ३. हाथ अटकाणौ= बाधा या रुकावट उत्पन्न करना । ४. हाथ आणौ=मिलना या उपलब्ध होना । ५. हाथ उठावणौ=उपस्थिति अथवा समर्थन में हाथ ऊपर करना, मारपीट करना । ६. हाथ उतरणौ=किसी चोट या झटके के कारण हाथ की हड्डी चटखना, संधिस्थलों से हड्डी का अलग हो जाना, अधिकार या कब्जे से चला जाना । ७. हाथ उत्तर देणौ=मांगने वाले को न्यूनाधिक कुछ देकर विदा करना । ८. हाथउधार, हाथ उधारौ=ऐसा ऋण जो बिना लिखा-पढी के जबानी तौर पर अल्प समय के लिए लिया जाता है । ९. हाथ ऊंचौ करणौ=देखो 'हाथ उठावणौ' । १०. हाथ ऊपर हाथ धर नै बैठणौ=अकर्मण्य होकर बैठना, निकम्मा हो जाना, कुछ करने धरने की दशा में न होना । ११. (दो-दो) हाथ करणा=प्रतिस्पर्धा करना, मुकाबला करना । १२. हाथ काटणौ= देखो 'हाथ बाढणौ' । १३. हाथ काठौ व्हैणौ=मितव्ययता का स्वभाव होना, कंजूस होना । १४. हाथ खड़ौ करणौ=उपस्थिति अथवा समर्थन में हाथ ऊपर करना । १५ हाथ खाणौ=किसी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाना, किसी को मारने-पीटने के लिए तत्पर रहना, किसी पर क्रोध करना । १६. हाथ खींचणौ= खाना खाते हुए रुक जाना, खर्च से हाथ खींच लेना, तटस्थ हो जाना । १७. हाथ खाली होणौ=धन या आभूषणों का अभाव होना । १८. हाथ खुजाळणौ=आय होने की स्थिति होना, कहीं से रुपये पैसे प्राप्त होने के संकेत मिलना । १९. हाथ खुलणौ=खर्च करने की प्रवृति होना, अधिक खर्च करना, कुछ करने का हौसला होना । २०. हाथ खोळौ व्हैणौ=मन से उदार होना, दानी होने का गुण होना, अधिक खर्चीला होना । २१. हाथ घालणौ=किसी कार्य में हाथ डालना, शरीक होना, कार्य संभालना । २२. हाथ घिसाई करणौ=किसी कार्य का अभ्यास करना, व्यर्थ श्रम करना । २३. हाथ चढणौ=हाथ में आना, काबू में आना, वश में आना । २४. हाथ चालणौ=धन की कमी न रहना, यथा अवसर साधन मिल जाना, गुजारा होना, प्रहार होना, दक्ष और चतुर होना । २५. हाथ छोडणा=किसी की मदद करना छोड़ देना । २६. हाथ झटकणौ=झटका देकर हाथों को साफ करना, गीले हाथों को झटका देना जिससे पानी छूट कर गिर जाय, किसी कार्य से इन्कार करना, अपनी असमर्थता प्रकट करना । २७ हाथ जमणौ=किसी कार्य में दक्षता प्राप्त करना, कुशल होना । २८. हाथ झाट-कणौ=देखो 'हाथ झटकणौ' । २९ हाथ जोड़णौ=अभिवादन करने के लिए दोनों हाथों को मिलाकर ऊपर उठाना, कर-बद्ध होना, क्षमा मांगना, झंझट के कार्यों से दूर रहना, छुटकारा पाना । ३०. हाथ झालणौ, हाथ झेलणौ=किसी का हाथ पक-ड़ना, वर द्वारा वधु का पाणिग्रहण करना, किसी को सहारा देना, किसी के कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना । ३१. हाथ झाड़णौ=देखो 'हाथ झटकाणौ' । ३२. हाथ टाळणौ=अलग हट जाना, बचाव करना । ३३. हाथ ठरणौ=सर्दी से हाथ ठिठु-रना, हाथ सुन्न होना । ३४. हाथ ढीलौ करणौ=उदारता

[illegible] । ३५. हाथ डीलो तो जगत गोलो=देखो '[illegible] तो जगत गोलो' । ३६. हाथ डीलो तो जगत लीलो=[illegible] सभी प्रसन्न रहते हैं । ३७. हाथ तंग [illegible] नहीं होना, कमाई या मजदूरी तौर पर रुपये-पैसे [illegible] । ३८. हाथ [illegible], हाथ ताणणो=सर्दी उड़ाने [illegible] के सामने हाथ करना । ३६. हाथ दबावणो, हाथ [illegible] कम करने के लिए हाथों को धीरे धीरे दबाना, [illegible] को दबा कर कोई गुप्त संकेत करना । ४०. हाथ [illegible] या मदद करना पाणिग्रहण करना । ४१. हाथ [illegible] किसी ज्योतिषी को हाथ की रेखाएँ दिखाकर भाग्य [illegible], चतुराई, बहादुरी या हस्त कौशल दिखलाना । ४२. हाथ देखणो=भविष्य बताने के लिए हाथ की रेखाओं का अध्ययन [illegible], हस्तकौशल देखना । ४३. हाथ देणो, हाथ धरणो=सहा-[illegible], सहायता देना । ४४. (माथै) हाथ देणो, (माथै) हाथ धरणो=वरद हस्त रखना । ४५ हाथ धरणो=हाथ [illegible] । ४६. हाथ धूजणो=हाथ में कम्पन होना, हाथों में वात [illegible] होना, भय के कारण हाथ कांपना, कामासक्त होना । ४७. हाथ धोय बैठणो=खो के बैठ जाना । ४८. हाथ धोय लारै पड़णो=किसी का पीछा करना, किसी को बात-बात में तंग करना । ४६. हाथ नीं धरण देणो=किसी का वश नहीं चलने देना, होशियार रहना । ५०. हाथ नी लगावणो=स्त्री का रज-[illegible] होना, [illegible] होना, कार्य नहीं करना, छूना तक नहीं । ५१. हाथ नै हाथ नी सूझणो=गहन अन्धकार होना । ५२. हाथ [illegible]=नितांत अविश्वसनीय स्थिति होना, एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने में तैयार रहने की दशा होना । ५३. हाथ पक-ड़णो=किसी का हाथ पकड़ना, पाणिग्रहण करना, सहारा देना, [illegible] रहना । ५४. हाथ पकड़ पुंणचो पकड़णो=अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना, धीरे धीरे या शनैः शनैः काबू में करना, [illegible] में लेना । ५५. हाथ पग पलाणा=देखो 'हाथ पग पट-कणा' । ५६ हाथ पग चिपणा=जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाना, हिलने-डुलने की स्थिति में नहीं रहना, भाग नहीं सकना । ५७. हाथ पग जोड़ना=हाथा-जोड़ी करना, अनुनय-विनय करना । ५८. हाथ पग टूटना=अस्वस्थता के कारण हाथों-पांवों में दर्द होना । ५६. हाथ पग टेढा होणा=वात रोग से ग्रसित होना । ६० हाथ पग ठंडा पड़णा=मरणासन्न होना, शरीर की गर्मी समाप्त हो जाना । ६१. हाथ पग पटकणा=छटपटाना, हाथ पांव मारना, छूटने का [illegible] प्रयत्न करना । ६२. हाथ पग फूलणा, हाथ पग फूली-[illegible]=घबरा जाना । ६३. हाथ पग मारणा=पानी से निकलने के लिये हाथ-पांव हिलाना, देखो 'हाथ पग पटकणा' । ६४. हाथ पग [illegible]=[illegible] कार्य में समर्थ होना, कार्य करने योग्य होना, [illegible] काम करने की दशा में होना । ६५. हाथ पग हिलाणा=

हाथ-पावों में हरकत होना, चेतन्य होना, किसी कार्य के लिये प्रयास करना । ६६. हाथ पड़णो=हाथ में आना, उपलब्ध होना, सहसा कहीं से मिल जाना, वश में या काबू में आना । ६७ हाथ पसारणो=हाथ फैलाना, अपना प्रभुत्व फैलाना, बांह पसारना, भीख मांगना । ६८. हाथ पांणी घातणो, हाथ पांणी घालणो, हाथ पांणी देणो=किसी को करने, किसी बात को कहने या किसी वस्तु को उपयोग में लेने के निषेध में हाथ में पानी देकर शपथ दिराना, निषेध कराना । ६६ हाथ पांणी लेणो=हाथ में पानी लेकर शपथ लेना । ७०. हाथ पाधरा राखणा=हाथ सीधे रखना, सीधा एवं सरल व्यवहार करना । ७१. हाथ पीळा करणा=शादी कर देना. ७२. हाथ पोलो नै जगत गोलो=उदारता दिखा कर जगत को गुलाम बनाया जा सकता है । ७३. हाथ फेंकणो=पासा फेंकना, पासा चलाना । ७४. हाथ फेरणो=किसी के माथे पर आशीर्वाद का हाथ रखना, किसी पर धीरे-धीरे हाथ फिराना, ठग लेना । ७५. हाथ फैलाणो=देखो 'हाथ पसारणो' । ७६. हाथ बंधणो=किसी प्रकार के बंधन में आना । ७७. हाथ बळणो=आग से हाथ जलना । ७८. हाथ बारै करणो=मुक्ति देना, छोड़ना । ७६. हाथ बारै होणो=वश में नहीं रहना, अधिकारच्युत होना । ८०. हाथ बाळणो=आग से हाथ जलाना । ८१. हाथ बिकाणो=किसी के पूर्ण अधीन होना । ८२. हाथ बैठाणो=अभ्यास करना । ८३. हाथ भरीजणो=धन या आभूषणों से हाथ परिपूर्ण होना । ८४ हाथ भींजणो=हाथ गीला होना, कृपण होना । ८५. हाथ मलणो=देखो 'हाथ मसळणो' । ८६. हाथ मसळणो=दोनों हाथों को परस्पर रगड़ना, विवशता या मजबूरी में पछताना, पश्चाताप करना । ८७. हाथ मांजणो=हाथ धोना, हाथ साफ करना, अभ्यास करना । ८८. हाथ मांडणो=मेंहदी आदि से हाथ पर चित्रकारी करना, याचना करने के लिए किसी के आगे हाथ फैलाना, कुछ लेने के लिए हाथ पसारना । ८६. हाथ माथै हाथ देय बैठणो=काम-काज कुछ नहीं करना, निकम्मा हो जाना । ६०. हाथ माथो कूटणो=हाय-त्राय मचाना, कुहराम मचाना । ६१. हाथ मारणो=चोरी करना, माल हड़पना । ६२. हाथ मिळाणो, हाथ मिळावणो=किसी से हाथ मिलाना, दोस्ती करना, मुलाकात करना, संधि करना । ६३ हाथ मींजणो=देखो 'हाथ मसळणो' । ६४. हाथ मैं आणो=हाथ आना, हाथ लगना, अधिकार में आना । ६५. हाथ मैं कीं नीं होणो=हाथ खाली होना, आभूषणों का अभाव होना, धन का अभाव होना, किसी कार्य को करने का कोई अधिकार नहीं होना । ६६. हाथ मैं खाज हावणो= =हाथ में खुजली चलना, रुपये-पैसे की आमदनी का संकेत होना । ६७ हाथ मै गंगाजळ उठावणो या लेणो=अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के पक्ष में गंगाजल का कोई पात्र हाथ में लेना । ६८. हाथ मैं ठीकरो लेणो=भिक्षा मांगना, मांगते हुए फिरना ।

९९. हाथ मैं डुळावणौ=हाथों में डोलाना, झुलाना । १००. हाथ मैं नीं होणौ=हाथ में न होना, वश में या अधिकार में न होना। १०१. हाथ मैं माळा अर पेट मैं कुदाळा=बकध्यानी होना, बुगलाभक्ति करना । १०२. हाथ मैं राखणौ=हाथ में रखना, काबू में रखना । १०३. हाथ मैं हाथ देणौ=हाथ से हाथ मिलाना, आत्म समर्पण करना, शादी करना या करवाना । १०४. हाथ मैं हुनर होणौ=उद्यम जानना, हाथ में कला या व्यवसाय होना, हाथ का कारीगर होना । १०५. हाथ मैं होणौ=हाथ में होना, वश में होना, अधिकार में होना । १०६. हाथ मेळावणौ=हाथ से हाथ मिलवाना, शादी करवाना । १०७. हाथ रंगणौ=हाथ मैं किसी प्रकार का रंग लगाना, हाथ से किसी का खून करना । १०८. हाथ रखावणौ=सहारा देना, मदद करना । १०९. हाथ रगड़णौ=कठिन परिश्रम करना । ११०. हाथ राखणौ=सहारा देना, मदद रखना । १११. हाथ री कमाई=खुद के परिश्रम से अर्जित धन, स्वयं की आय। ११२. हाथ री करामात=हस्तकौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफाई । ११३. हाथ री कलम=हाथ की लिखावट, हाथ से की गई कोई चित्रकारी, हस्ताक्षर । ११४. हाथ री खाज=अपना स्वयं का कार्य एवं उत्सुकता । ११५. हाथ री खाज हाथ सूं भागणी=अपना कार्य अपने से ही होना । ११६. हाथ री बात=वश की बात । ११७. हाथ री सजावट=हाथ से की गई सजावट, हाथ से की गई बारीकी या तकनीकी विशेष । ११८. हाथ री सफाई=हस्तलाघव, जादुई चमत्कार, चोरी । ११९. हाथ रुकणौ=चलता कार्य रुकना, बाधा आना, अड़चन पड़ना, रुपये-पैसे की कमी होना । १२०. हाथ रै नीचै आणौ= अधिकार में आना, अधीन होना, काबू में रहना । १२१. हाथ रोकणौ=मदद बन्द करना, कार्य बन्द करना । १२२. हाथ रोड़णौ=तंगी में होना, तंग करना । १२३. हाथ री उत्तर=मांगने वाले को कुछ न कुछ देना । १२४. हाथ रौ कांम=हस्तलाघव, हाथ की कारीगरी, वश का काम, अपने अधिकार का काम, हाथ से किया हुआ कार्य । १२५. हाथ रौ कूड़ौ=झूठा, चोर, उचक्का, अविश्वसनीय । १२६. हाथ रौ छालौ=बहुत महत्वपूर्ण, जिसका अधिक ध्यान रक्खा जाता हो । १२७. हाथ रौ दियौ=अपने से दिया हुआ, जो चुराया हुआ न होकर किसी का दिया हुआ हो, पुण्य, धर्म । १२८. हाथ रौ धंधौ=हाथ की कारीगरी, अपने काबू का कार्य । १२९. हाथ रौ बळियौ नैं पंगां रौ सुधारियौ=अपना स्वयं का बिगाड़ा हुआ दूसरों के सुधारे हुए ठीक होना । १३०. हाथ रौ मेल=अत्यन्त तुच्छ, साधारण, मामूली । १३१. हाथ रौ राजा=अत्यन्त उदारवृत्ति वाला । १३२. हाथ रौ साचौ=इमानदार, विश्वसनीय, दक्ष । १३३. हाथ रौ हुनर=हाथ की कारीगरी, हाथ का काम । १३४. हाथ लगावणौ=स्पर्श करना, छूना, किसी कार्य में सहायता करना । १३५. हाथ लागणौ=किसी का हाथ लगना, सहयोग मिलना, हाथ में कार्य होना, नफा होना, उपलब्धि होना, कुछ मिलना, हाथ में आना, वश में आना, पकड़ में आना । १३६. (ई) हाथ लियौ'र वीं हाथ डकारग्यौ=इधर से लिया और उधर हजम कर लिया, माल हड़पने में दक्ष होना । १३७. हाथ लेणौ=किसी की लड़की को अपने लडके के लिए स्वीकार करना, सहायता के लिए किसी को रजामन्द करना । १३८. हाथ वाढ नै देणौ=अपने हाथ काट के देना, ऐसा लिख कर दे देना जो सामने वाले का पक्ष मजबूत करे, लिखावट द्वारा स्वतः बंधन में आना । १३९ हाथ वाढ नैं लेणौ=किसी से ऐसा लिख कर लेना कि लिखावट से अपना पक्ष मजबूत हो, लिखावट से किसी को बंधन में कर लेना । १४०. हाथ संकड़ीजणौ, हाथ संकराइजणौ=देखो 'हाथ तंग होणौ' । १४१. हाथ समेटणौ=अपना हाथ खींच लेना, कार्यक्षेत्र से हट जाना, खर्चा बन्द कर देना, तटस्थ हो जाना । १४२. हाथ सांधणौ=टूटे हुए या उतरे हुए हाथ को ठीक बैठा कर इलाज करना । १४३. हाथ साफ करणौ=हाथों की सफाई करना, डट कर खाना, माल उड़ा जाना, चोरी करना । १४४. हाथ सिरकणौ=आसानी से रुपयों आदि का काम निकलना । १४५. हाथ सुमरणी=हाथ में माला । १४६. हाथ सूं कांम निकाळणौ=खुद काम करना, किसी उपकरण के बिना भी कार्य करना। १४७. हाथ सूं जाणौ=अपने पास किसी वस्तु का खो जाना, वश के बाहर होना, अधिकार में न रहना । १४८. हाथ सूं राख उडावणी, हाथ सूं राख नांखणी=अपने हाथ से खुद अपनी इज्जत उडाना, अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान नहीं रखना, अपना कार्य खुद ही बिगाड़ना । १४९. हाथ सूं हाथ नीं वढै=अपनी हानि खुद के द्वारा नहीं होती । १५०. हाथ सोरौ चालणौ, हाथ सोरौ सरकणौ, हाथ सोरौ हालणौ=ऐसी आय होना कि जिसमें अपना खर्चा आसानी से चल सके । १५१. हाथ हळकौ करणौ=पास में जो है वह खर्च देना, उत्तरदायित्व से मुक्त होना, किसी रोग पीड़ित व्यक्ति या प्राणी पर मंत्र जपते हुए हाथ घुमाना । १५२. हाथ हिया माथै आणौ=हाथ दिल पर आना, किसी कार्य को पूरा करने की चिन्ता होना, जोखम सिर पर आना । १५३. हाथ हिया माथै धरणौ, मेलणौ=दिल पर हाथ रखना, कुछ त्याग करना, दिल की धड़कन संभालना । १५४. हाथ हिया माथै होणौ=देखो 'हाथ हिया माथै आणौ' । १५५. हाथ ई वळिया नै पूंखई दुळिया=परिश्रम का व्यर्थ जाना, कुछ भी हाथ न आना । १५६. माथै हाथ होणौ=किसी की छत्रछाया होना, किसी का वरद हस्त मिलना, बड़े आदमी का सहारा मिलना । १५७. हाथ होणौ= अधिकार में होना, वश की बात होना, सहायक होना, समर्थन करना । १५८. हाथां पगां दिया बळणा=अत्यन्त उद्दण्ड होना, अत्यन्त चंचल होना । १५९. हाथां पगां बायरौ होणौ=हाथ पांव रहित होना, अविश्वास का पात्र होना, विश्वास न करने योग्य ।

१६०. हाथां बाई काडणी=किसी कार्य को अच्छी तरह से जांच करना, किसी को अच्छी तरह विदाई करना। १६१. हाथां माथै उठावणौ=अपने हाथों पर उठाना, गोद में लेना, कंधे पर उठाना, किसी को प्यार व इज्जत देना। १६२. हाथां माथै राखणौ=अत्यधिक लाड प्यार रखना, संभाल कर रखना। १६३. हाथां में जनमणौ=अपने सामने जनमना, किसी का अपने से अत्यधिक छोटा होना। १६४. हाथां में मोटौ होणौ=बचपन से लेकर बड़े होने तक अपने सामने खेलते कूदते बड़े होना। १६५. हाथां में सरसूं उगावणी=कठिन कार्य करना, असम्भव कार्य करना। १६६. हाथां रो सत निकळणौ=अत्यन्त शिथिल होना, अत्यन्त थकान होना। १६७. (आडै) हाथां लैणौ=किसी को बुरी तरह से फटकारना। १६८. हाथा छूट=खुले हाथों, अत्यधिक तेज। १६९. हाथा पाई करणी=मारपीट करना। १७०. हाथै ही करम फोड़णौ=अपना अनिष्ट स्वयं करना। १७१. हाथोहाथ=तुरन्त पड़े-पड़े, एक हाथ से दूसरे हाथ, कई हाथों के सहयोग से।

२ कुहनी से पंजे तक की लम्बाई के बराबर का एक माप।

उ०—छट्ठउ आरउ आयतउ जोइ एक वीस वरिस सहस तै होइ। हाथ दुइ देह, विहु अंगुल नी ओटि सोल वरिस माहि आउखा ओटि।—वस्तिग

३ ताश के खेल में जीता जाने वाला 'सर'।

उ०—म्हारा पांच हाथ तो बणग्या अबै जीतण नैं दो हाथ भळै बणावणा है।

४ (चौरड़) चौसर के खेल में बड़े पासे के साथ आया हुआ छोटा पासा।

५ पारी।

क्रि. वि.—१ वश में, काबू में, अधिकार में।

उ०—दांणी पांणी रिजक धन, हुंणी हरि कै हाथ। मतो करै जाकुं दिसै, भरि भरि नंखै बाथ।—अनुभववांणी

२ देखो 'हाथिल'।

रू. भे.—हत, हत्त, हत्थ, हत्थि, हत्थौ, हत्थु, हत्यौ, हथ, हथा, हथ्थ, हाथि, हथी।

अल्पा;—हथड़ौ, हथरौ, हथ्थाण, हाथड़, हाथड़ौ।

मह;—हथ्थड़, हथ्थळ, हथ्थांण, हाथड़, हाथळ।

हाथकड़ी—देखो 'हथकड़ी' (रू. भे.)

उ०—देवीदास रै हाथकड़ियां लागै छै। सु रा. जैमल सरफदीन नकीब तण रै माथै मांहै उण बेड़ी री दी, सु भेजी फूट नै नाक दिसा नीसरी।—नैणसी

हाथ-खांन-सं. पु. यौ—यज्ञोपवीत या वैवाहिक कार्य की शुरुआत जिसमें पहले गणपति का पूजन कर आगे के कार्य प्रारम्भ किए जाते हैं। (पुष्करणा ब्राह्मण)

हाथखरच-सं. पु. यौ. [सं. हस्त+फा. खर्च] निज का खर्च, जो भोजन या आवश्यक खर्च के अलावा होता है।

२ उक्त खर्च की निर्धारित धन राशि।

३ राजाओं द्वारा सामन्तों को उनकी जागीर के बदले में दिया जाने वाला वह समस्त खर्च जिससे वे अपना निर्वाह करते थे।

रू. भे.—हथ-खरच।

हाथगरौ-वि.—आश्रित।

हाथड़—१ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—अर गोइंद टेमांणी खेड़ी नांखि, अर वे हाथड़ तरवार उतारी अर मदनै ऊपरि आइ अर कहियौ केथ रे मदनो।—द. वि.

२ देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

हाथड़ौ—१ देखो 'हाथ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—जलाल हदा हाथड़ा न जोगा अहीयांह। सार पछंटण वैरियां, का रमावण सहियां।—जलाल बूबना री बात

२ देखो हाथळ' (अल्पा; रू. भे.)

हाथणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हाथफूल—देखो 'हथफूल' (रू. भे.)

उ०—हाथां रा हाथफूल भाभी ढीला कीकर पड़ग्या हो।

—लो. गी.

हाथबाय-वि. स्त्री.—इच्छानुसार तीव्र गति से चलने वाली।

(सांढ़, ऊंटनी)

उ०—तरै देवराज री धाय डाही थी, तिण देवराज नूं प्रो। लूंगा नूं सूंपियो, कह्यौ—थांरै सांढ १ हाथबाय छै, तिका नांवजादीक छै। थे इतरौ आपणा धणी री बीज उबारौ, ले नीसरौ।

—नैणसी

हाथरू-सं. पु.—हाथी, गजराज। (बांकीदास)

हाथ रौ कुरब-सं. पु.—देशी राजाओं द्वारा दिया जाने वाला सम्मान या ताजीम।

वि. वि.—जिसको यह ताजीम मिलती है उसे बांह पसाव वाले की तरह महाराजा का घुटना या दामन छूने पर महाराजा उसके कंधे पर हाथ लगाकर अपने हाथ को अपने वक्षस्थल तक ले जाते थे। यह ताजीम इकहरी व दोहरी दोनों प्रकार की होती थी। और उन्हीं के अनुसार महाराजा खड़े होकर आदर देते थे।

हाथळ-सं. स्त्री. [सं. हस्त+तल] १ सिंह का अगला पंजा।

उ०—१ केहरि मरू ं झळाइयां रूहिरज रतड़ियांह। हेकणि हाथळ गै हणै, दंत दुहत्था ज्यांह।—हा. झा.

उ०—२ केहर रै हाथळ करी, कीधी दात वराह। सूर काज कीधौ सुजड़, विध करतापण वाह।—बां. दा.

२ मनुष्य के हाथ का पंजा, हथेली, करतल।

उ०—१ इसै मोकै अचांणचकै ही मोवी गुलाब री मां अंगाड़ी उबासी तोड़ती थकी धूजण लाग ज्यावै है। हाथळ पटकै है अर तोतली आवाज में तैं: तैं:, पैः पैः करै है।—दसदोख

३ बाहु, भुजा ।

उ०—आपरी पौरस सीह वाजण रो नहीं-हाथळ (भुजा रा) जोर सूं हाथियां नै भांजे अरथात जिकां री तरवार सूं हाथियां रा असुंड (सीस) वैरीजै वै भड़सिंघ वाजै ।—वी. स. टी.

४ शस्त्र प्रहार ।

उ०—१ दाखै ऐ गज घड़ां दमंगळ । वाह करै हाथळ वीजूजळ ।
—सू. प्र.

उ०—२ 'रांम' सुतन बोलै 'सिंघ राजड़' । घण खग हाथळ वहूँ त्रविध घड़ ।—सू. प्र.

५ हाथ का कवच ।

उ०—१ बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमी वाड़ किम्रां बगतर, हाथळ, टोप, झिलमैं, चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किम्रां, गरकाब हूआ थका छत्रीस आउध डाविया रहै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ कसै हाथळा टोप मोजां झगल्लं, जमद्दाढ वांमै जिकै खाग ढल्लं ।—वचनिका

रू. भे.—हत्थळ, हथळ, हथ्थड़; हथ्थळ, हातळ, हाथड़ ।

अल्पा;—हाथड़ौ ।

५ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

हाथळचेरी-सं. स्त्री.—हर समय उपस्थित रहने वाली दासी ।

उ०—बारै गायण वळै, वळै नव पड़दा वेगण । हाथळचेरी उभै दो जणी हजूरण ।—रा. रू.

हाथळणौ, हाथळबौ-क्रि. स.—हाथ के पंजे से प्रहार करना ।

हाथळियोड़ौ-भू. का. कृ.—हाथ के पंजे से प्रहार किया हुआ ।
(स्त्री. हाथळियोड़ी)

हाथलियौ-सं. पु.—हल के ऊपर का वह भाग जो पकड़ने के काम आता है ।

हाथलूहांण-सं. पु.—हाथ पौंछने का कपड़ा ।

उ०—हाथै मिलिउ गलणै गलिउ, अत्यंत धवल प्रीणीइ मुखकमल कपूर इस्या धोल, ऊपरि उन्हां टाढां पांणी, सीकरी वासितावासित पाडलवासित एलचीवासित इस्यां पांणी, खीरोदक चीर हाथलू-हांण ।—व. स.

हाथलौ-सं. पु.—बैलगाड़ी का एक उपकरण विशेष ।

हाथसाडइ-सं. पु.—हाथ पोंछने का रूमाल ।

उ०—तदनंतर करपूर पाडल चंपक सुगंध सीकिरी वास्यां पांणी तेहै मुख पवित्र करी, हाथसाडइ हाथ लूही, बीड़ां आप्यां......।
—व. स.

हाथां-क्रि. वि. [सं. हस्त] हाथों में, हाथ में ।

उ०—१ नवै चढाव री तांत, रेसमैं रौ मेदांन गूंथियां थकां, राजा नां देसौतां रै हाथां दीजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ इसै मस्तांनै रूप सूं दुनिया हरै है । हाथां भळै आंकड़ हाळी गेड, घरां लौ री तिरसूल अर सांकळ मढ मैं मेल राखी है ।
—दसदोख

२ अपने हाथ से, खुद के द्वारा ।

उ०—१ पछै वौ दीवांणजी री घोड़ी लेजाय पायगा मैं बांध्यौ । हाथां दांणौ दियौ । - फुलवाड़ी

उ०—२ हाथां करनै आफत निवती । अबै कांई उपाव व्है सकै ।
—फुलवाड़ी

हाथांहेल-वि.—बड़ा दानी, बड़ा त्यागी, उदारचित्त ।

उ०—मिजलस हंदो मोड़ै, हगांमां मांण री, हाथांहेल 'हमीर', नाथ हिंदवांण री ।—महादांन महडू

हाथाछूट, हाथाछूटौ-क्रि. वि.—तीव्र गति से, तेजी से ।

हाथाजोड़ी, हाथाजोडी-सं. स्त्री.—खुशामद, नम्रता, आजीजी ।

उ०—नकीब फेरनै सारौ लसकर भेळौ कराय नै आप चढनै वाड़ी घेरी । हाथाजोड़ी करी, नै कह्यौ—'सको हुसियार हुजौ । जिण मांहै हुय जेसौ जासी तिण नूं हूं मारीस ।—नैणसी

उ०—२ भांबीड़ा हाथाजोड़ी करण लाग्या—आप बड़ा हौ, आप मालक हौ, आप धणी हौ, आप रोटियां रा देवाळ हौ ।
—रातवासौ

२ औषधि के काम आने वाला एक पौधा विशेष ।

उ०—हनुमंती नइं हडवडी, हीराउलि हर-मज्जि । हाथाजोडी हींकणी, हेला आवइ कज्जि ।—मा. कां. प्र.

हाथाताळी-सं. स्त्री. [सं. हस्त+ताल] १ दोनों हाथों से बजाई जाने वाली ताली ।

२ दोनों हाथों से ताली बजाने में लगने वाला समय ।

हाथापाई-सं. स्त्री.—१ हाथ-पांव चलाकर की जाने वाली लड़ाई ।

उ०—च्यारूं जणा परणीजण सारु माहौमाह वाद करण लागा । कोई नीं मांन्यौ तौ राड़ बधगी । होठा-जीभी सूं हाथापाई माथै उतरग्या ।—फुलवाड़ी

२ मस्ती, मौज ।

उ०—हंसै-बोलै अर हाथापाई करै है । अड़द्या-भड़द्यां अर ओलै—छांनै, सूग अर स्यांणप ही नीं राखै ।—दसदोख

३ हाथ-पांव धोने की क्रिया ।

रू. भे.—हाथोपाइ, हाथोपाई ।

हाथाळ-वि.—१ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—माझी 'मेघ' हरौ मछराळ, हूंतल्लमल्ल हाथाळ । जैत्र वादी जंमजाळ, केवियां रौ काळ, सूरधीर सप्पखाळ ।—ल. पिं.

२ आजान बाहु ।

उ०—हाथाळ हेम हमीर हूंतल, आप कुळ अजुआळ । हीमति बहादर हींमती, कळि भडां घोडां कीमती ।—ल. पिं.

३ शस्त्र चलाने में प्रवीण, निपुण, चतुर ।

४ हाथल वाला ।

४ [illegible] ।

उ०—[illegible] बढ़ाईं, हुई रेट हाथाळ गोनै [illegible] । [illegible] नांनै भटकै, तुटै तुट मुरां प्रचंडां [illegible] ।—[illegible]

[illegible] —[illegible] ।

रू. भे.—[illegible], हाथाळो ।

हाथावेत—वि.—[illegible] किया हुआ, प्राप्त ।

उ०—[illegible] पर्णं पर्णं भाव हित प्रीति घणी । [illegible] किनी हाथावाथ, मन वंछित फळ रुखमणी ।—वेलि

हाथाळी—देखो 'हथेळी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] निमट भरि, सुणि महाजनि सोइ । हाथाळी [illegible], पीर निचोंट निचोइ ।—ढो. मा.

हाथाळो—देखो 'हथाळो' (रू. भे.)

उ०—१ हाथाळो अठ 'हमें', गळ रह हंदी लज्ज । 'इदो' 'भोज' [illegible], '[illegible]' [illegible] ।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] छिब गांमड़ा में वणावण सारू ओट (ओसरो) वणायो थांत नै हाथाळै 'गिध' हाथीयां नै हण 'मार' नै परवान हाथीयां री फोज मारनै हाथीयां रा पिंजर सर री कोट नाम दोळो वणाय दीधो ।—बी. स. टी.

उ०—३ 'मवळ' तणो वळ दाग नवायो, प्रण भंग रूप घणो छळ आयो । [illegible]' 'बळ' तणो हाथाळो, माहदै आयो वळ चाळो ।

—रा. रू.

हाथि—१ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] रहि गई, कुछ न चली माथि । जनहरीया [illegible] बिन, [illegible] रोनै हाथि ।—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] हाथि वीणा, वस्त्राडंबर भीणा । धवळ स्रंगार [illegible], मुक्ताफळ तणा हार । सरवांग सुंदर, वन मांहि रमइ भूप पुरंदर ।—रा. सा. सं.

२ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

उ०—जेतइ वीर मस्तक चडइं तेतइ कायर पणि पिठि चडइं, हाथि [illegible] हाथि इ, घोडो घाडइ, रथ रथइं, पायक पायकइं....... ।

—व. स.

हाथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] भूयणि भमउं, इच्छा छइ मन माहि । [illegible] हाथिणी यं [illegible] सुमिणा माहि ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ [illegible] री हाथिणी, आवइ पवन परांणि । ऊंमाडी [illegible] नारइ [illegible]-बांणु ।—मा. का. प्र.

हाथियो—देखो 'हाथी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ [illegible] देष वीहना, हाथिया जिम निनादि सीह [illegible] । [illegible] नगर ऊपरि चाली ।

—सालिसूरि

उ०—२ गहरांणक सुमन दातै गढो, थाटकु भकन थाट थया । 'जोधा' तणै सांमहा जातां, गाडां भय हाथिया गया ।

—मोहोजी लिडियो

हाथी-सं. पु. [सं. हस्तिन्] १ एक विशाल एवं स्थूल शरीर वाला, प्रसिद्ध स्तन पाई चौपाया जानवर, गज, हस्ती ।

(उ. र; ह. नां. मा.)

उ०—१ हाथी डग मारग खड़ो, हरि हाथी री हेल । जी मेहाई थारां बाई सारी करीजे उवेल ।—मे. म.

उ०—२ दिन दूजे मिळ मारवां, हाथी रिद्ध तुरंग । दरसाया दीवांण नूं, फिर जोया 'अवरंग' ।—रा. रू.

वि० वि०—इसकी नाक (सूंड) बहुत लम्बी जमीन तक लटकती हुई होती है, चारों पैर बड़े स्तंभ के समान होते हैं, कान बड़े तथा आंखें अपेक्षाकृत छोटी होती है । इसके दो दांत बहुत बड़े होते हैं जो मुंह के दोनों ओर डंडे की तरह निकले रहते हैं । इन दांतों का चूड़ा बनता है जो बहुत कीमती होता है, इसके अतिरिक्त इससे खिलौने सजावट का सामान आदि कीमती वस्तुएं भी बनती है ।

२ शतरंज का एक मोहरा ।

३ हरिजन, भंगी ।

४ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो भूमि में गड्ढा बना कर रहता है तथा चींटियों को खाता है ।

उ०—गढ घुस अरियां गजवा, लड़ै भंवर लाडोह । हाथी जिम कीड़चां हणै, खण खित बिच खाडोह ।—रैंवतसिंह भाटी

रू. भे.—हत्थि, हत्थी, हथी, हाथि ।

अल्पा;—हथीड़ो, हथोडो, हात्थीयो, हाथियो, हाथीड़ो ।

हाथीखांनो-सं. पु. [सं. हस्तिन्+फा. खाना] वह कक्ष या स्थान जहां हाथियों को रखा जाता है, हस्तीशाला, फीलखाना ।

हाथीड़ो—देखो 'हाथी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—बावै डायो हाथीड़ा री सूंड ।—पाबूजी रा प्रवाड़ा

हाथीदांत-सं. पु.—हाथी के वे बड़े बड़े दांत जो मुंह से बाहर निकले रहते हैं । ये बहुत मजबूत एवं कीमती होते हैं । इनसे चूड़े, सजावट का कीमती सामान, खिलौने आदि बनते हैं ।

उ०—चुडलियो चुडलियो, गोरी कांई विलखै, मेह बिन धरती तरसै मेहड़ो हुवण दे । चुड़लो चिरावूं हाथीदांत रो मेहड़ो हुवण दे ।—लो. गी.

हाथीनाळ-सं. स्त्री.—हाथी की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली एक पुरानी तोप विशेष ।

हाथीपगो-सं. पु.—फील पांव नामक एक रोग विशेष, जिसमें पैर फूल कर हाथी के पैर जैसा हो जाता है ।

हाथीबंध-सं. पु.—वह व्यक्ति जिसकी स्थिति हाथी रखने लायक हो, जिसके घर हाथी बंधा रहता हो ।

हाथीवच-सं. पु.—एक प्रकार का पौधा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

हाथीमती-सं. स्त्री.—ईडर की एक नदी विशेष जो पूर्वी सीमा से आकर प्रदेश के बीच में से गुजरती हुई अहमदनगर के पास साबरमती में मिलती है। (वी. वि.)

हाथीमोगरौ-सं. पु.—मोगरे की जाति का पौधा विशेष।

हाथीयउ—देखो 'हाथी' (रू. भे.)

हाथीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सांधिइ सांधि जूजूई कीधी, थर पाडेवा लागा। ऊपरि थिका हाथीया घोडा, घरा तणै घाए भागा।—कां. दे. प्र.

हाथीवांन-सं. पु.—हाथी को चलाने व उसकी देख रेख करने वाला व्यक्ति, महावत, फीलवान।

हाथी-सिरोपाव-सं. पु.—राजाओं के समय में दिया जाने वाला एक पुरस्कार, सिरोपाव।

वि. वि.—जिसको यह सिरोपाव मिलता था उसको राज्य से कपड़ों वगैरा के सब मिला कर ७८० रु० दिए जाते थे।

(जोधपुर)

हाथुड़ी, हाथुडी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हींमजी, हरडां हलभद्र वेर। हरबी हाथुडी हरी, हुँफट हुंसि हसेर।—मा. कां. प्र.

हाथुलि, हाथुली-सं. स्त्री. [सं. हस्त+लि] हाथ का एक आभूषण विशेष।

उ०—गलइ नगोदर नइ भूमणूं, घणु सणगार हुव केहु भणूं। हाथि हाथुलि करि मूद्रडी, मांणिक मोती हारे जडी।

—प्राचीन फागु-संग्रह

हाथूंडिया-सं. पु.—राठौड़ राजपूतों की एक उपशाखा।

(बां. दा ख्यात)

हाथूंडियौ-सं. पु.—राठौड़ राजपूतों की 'हाथूंडिया' शाखा का व्यक्ति।

हाथेवालइ—देखो 'हथलेवौ'।

उ०—हाथेवालइ हाथ नवि घरूं, नहीं वइसूं जीमण माहिरू। चाहू आंणनउं कुल निकळंक, जिस्यउ पूनिम तणउ मयंक।

—कां. दे. प्र.

हाथे हाथै-क्रि. वि.—१ हाथ में।

उ०—१ हाथे न लेवइं वस्त्र, आधा ओढै वस्त्र। लोक सीसिआट करइं, चीपूं उछरइं, ताटइ न चरइं।—रा. सा. सं.

उ०—२ लखीजै असी भांति आकास लागौ, भवांनी खड़ा पांण लीधां त्रभागौ। हमेसां रहै सत्रु री सीस हाथै, मुखै रत्र रोतासळौ छत्र माथै।—मे. म.

२ काबू में, पकड़ में, वश में।

उ०—जदी कोट वाळ घणी ही जाबतौ राखै। पण चोर हाथै आवै नहीं।—पंचमार री वात

३ हाथ से।

उ०—१ टोलउ चालयउ हे सखी, वाज्या विरह निसांण। हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुया संधांण।—ढो. मा.

उ०—२ देवाळै पैसि अंबिका दर सै, घणै भाव हित प्रीति घणी। हाथै पूजि कियौ हाथालगि, मन वंछित फळ रूखमणी।—वेलि

३ खुद ब खुद, स्वतः, अपने आप।

उ०—आखियौ जिती घर ओयण थायौ इळा, सुभोजन चाखियौ थाळ साथै। तांम्रपत्र ढाकियौ चाखड़ां थांन तळ, हुतेरण राखियौ आप हाथै।—खेतसी बारहठ

हाथोगळ-सं. स्त्री.—गले पर हाथ रखकर शपथ लेने की क्रिया या भाव।

उ०—मुणै वैण खग तोल सेस उठ्यौ रोसा जळ, करंमाणंद परधांन आय दाढी हाथोगळ।—पा. प्र.

हाथोड़ी—देखो 'हथोड़ौ' (अल्पा; रू. भे.)

हाथोड़ौ—देखो 'हथोड़ौ' (रू. भे.)

हाथोताळी—देखो 'हाथाताळी' (रू. भे.)

हाथोपाइ, हाथोपाई—देखो 'हाथापाई' (रू. भे.)

हाथोहाथ-क्रि. वि.—१ एक हाथ से दूसरे हाथ, प्रतिहस्त।

२ लगे हाथ, तुरन्त, शीघ्र।

उ०—१ थें तौ सगळा जांणौ ईज हौ कै म्हारै इत्तौ नैठाव कठै हाथोहाथ फारगती करी।—फुलवाड़ी

उ०—२ नाहरसिंघ नै ई चकवा री बात रौ हाथोहाथ परचौ मिळग्यौ। जद खेंखार रै मिस लाल वाळी बात साची निकळी तौ राजा वाळी बात ई साची निकळैला इणमें कीं मीनमेख नीं।

—फुलवाड़ी

३ प्रत्यक्ष।

४ खुद, स्वयं।

५ किसी कार्य को कई लोगों द्वारा मिल कर शीघ्र ही पूरा करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—हत्योहत्थ, हथोहत्थ, हातोहात, हातोहाथ, हाथौहाथ।

हाथौ-सं. पु. [सं. हस्तक] १ किसी औजार या उपकरण का दस्ता, मूठ, बेंट।

२ हाथ में पकड़ने का वह भाग जो कंघी के ऊपर नीचे दोनों तरफ होता है तथा जिससे कपड़ा बुनते समय कपड़े को ठोका जाता है। (जुलाहा)

३ शहर के द्वार पर किसी वीर योद्धा या सती स्त्री के हाथ का चिन्ह।

उ०—भोजौ जोधावत। संमत १६०० सईके सूर पातसाह आयौ तद जोधपुर गढ री प्रोळ हाथौ दै तुरकां सूं विढ मुंऔ।—नैणसी

४ देखो 'हातौ' (रू. भे.)

हाथौड़ौ—देखो 'हथोड़ौ' (रू. भे.)

हाथौहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] नौबड़ा री दिना मैं [illegible] फिर [illegible] होसी ।—धनरूंनड़ी

उ०—२ [illegible] पांगळो ठिरड़ैला, [illegible] ।—फुलवाड़ी

[illegible]-सं. पु. [अ. हाफिज] वह मुसलमान जिसको कुरान [illegible] हो ।

उ०—[illegible] मन लिख्या, माड़ो मनसूबा । एक नाम पतसाह का, [illegible] ।—दादूवांणी

वि. [अ. मुहाफिज] रक्षक ।

उ०—[illegible] का महोवा कंधारू का कोट, हीजड़ो का हाफज जाफ का कोट ।—दुरसादन बारहठ

हाबुस-सं. पु.—घोड़ों की एक जाति ।

हाबे, हाबै-सर्व.—तुम, स्वयं ।

क्रि वि.—स्वत: अपने आप ।

हाबाबाव-वि.—१ जिसके मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ गया हो, अस्थिर चित्त, उद्विग्न, व्यग्र, पागलपंयुक्त ।

उ०—सेठांणी हाब-बाब व्हियोड़ी घरमाळो मैं आई । [illegible] सुर मैं दकाई गावती बोली ।—फुलवाड़ी

२ भयभीत, घबराया हुआ, स्तंभित ।

उ०—१ ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तो वै पूरा हाबगाब हो जावै । वो गिरणायनो बोल्यो—म्हनै छोड़ नै कठै ई मत जावो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हाबगाब व्हियोड़ी चित्रगुप्त डरतो-डरतो कैवण लागो—सबै सरीसा गूं भो पांग बण नी आवै । कै तो आप हरछिण [illegible] मार्गे आंकस रावो कै मुनीम वधावो ।

—फुलवाड़ी

हाबर-वि.—सुन्दर, मनोहर ।

उ०—बिखरी हिरणांगी किरणी बिजकाती, मुखड़ो मुसकाती जोरो [illegible] । मोरै मक माटा कोलै जिम कुयिणी, हाबर भामणियां [illegible] ।—ऊ. का.

हाबो-सं. स्त्री.—[illegible] ।

हाबू-सं. पु.—वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का कीट (पतंग) ।

हाबुर-सं. पु.—रंग विशेष का घोड़ा ।

उ०—[illegible] गंगाजळ हमला नेण काजळा श्रम नेराह प्रकब [illegible] हाबुर ।—सू. रू. बं.

हाबो-सं. पु.—१ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

२ रोने की आवाज, क्रंदन ।

उ०—[illegible] पर मांडे येम कुकवो कीयो, जु म्हारो मांटी कीयो, जु [illegible] चोर मारियो, आप ई, कूकवो हुवो, सको लोक हाबो [illegible] ।—नैणसी

३ [illegible]-पुकार, चिल्लाहट ।

उ०—ललता पंतारा पैलू लागोड़ा, भूखा भमता रा भीतर भागोड़ा । डिगतो डोकरियां डोकरिया डोलै, बाबा टुकड़ो वो हावा कर बोलै ।—ऊ. का.

हाय-सं. स्त्री. [सं. हा] १ अत्यन्त दुख, शोक या शारीरिक पीड़ा के कारण तड़फने या तड़फते हुऐ कूकने, रोने, चिल्लाने की क्रिया, दशा या भाव, त्राहि-त्राहि ।

उ०—हरीया बाळक जनमीयो, ता दिन भलो कहय । एक दिन याही मुख तैं, आय कहैं हाय हाय ।—अनुभववांणी

२ शाप, बद्दुआ, दुराशीष ।

उ०—चोरी करणी तो किणी लांठा धींग री घर ई फाड़णी । खासी भली मता तो हाय लागै । दुबळा नै संतायां तो फगत हाय पलै पड़ै ।—फुलवाड़ी

३ परवशता के कारण मुख से निकलने वाली आह ।

उ०—कर जोड़े साजन कहै, हाय कछू नहि हाथ । दोरी लागै देखतां, सोकड़ल्यां रो साथ ।—अज्ञात

हायछी-सं. स्त्री.—घृणित वस्तु, घृणित बात, मल, विष्ठा ।

हायणी-सं स्त्री.—पचास से साठ वर्ष तक की आयु या अवस्था । (जैन)

हायतराय हायत्राय-सं. स्त्री.—१ चिल्लाहट, करुण-क्रंदन, विलाप, व्याकुलता, व्यग्रता ।

उ०—१ किणहि रै रोगादिक ऊपनां हायतराय करै ।—भि. द्र.

उ०—२ क्रुर क्रुर हायत्राय कर कर नैन पर, नर को न काम यहै कांम अबला को है ।—जेतदांन बारहठ

उ०—३ विणवारचा कूकी, हायत्राय मचाई । वेवड़ा फूटग्या । कोई हेटै गुड़ी, कोई पितळी ।—फुलवाड़ी

२ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला अत्यधिक परिश्रम, भागदौड़, चिन्ता ।

क्रि. प्र.—करणी, मचणी, मचाणी, होणी ।

हायधाय-सं. स्त्री.—दुख भरी आवाज ।

उ०—सुकाय सीत भीत मैं निसीथ धूजती सही । निकाय हायधाय मैं उपाय सूझती नहीं ।—ऊ. का.

हायन-सं. पु.—१ वर्ष, साल, संवत्सर ।

२ शोला, अंगारा ।

३ एक प्रकार का चावल विशेष ।

वि.—१ गुजरा हुआ, बीता हुआ, विगत ।

२ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त ।

हायचोय-सं. स्त्री.—१ कूकने की आवाज, शोरगुल, हल्ला ।

२ विलाप, क्रन्दन ।

उ०—हे सखी जुद्ध री इला आंन कहतां दूसरा भड़ दीठा सो वे निरदय (विना दया रा) है, क्यूं कि कूकावै पसै न दुसमणां री फौज नै कूकावै अरयात हायचोय करावै ।—वी. स. टी.

३ प्रलाप, बकवास ।

हायहाय—देखो 'हायत्राय'।

हार-सं. स्त्री. [सं. हारः, हारि.] १ युद्ध, लड़ाई तथा खेल-कूद, भाग-दौड़ आदि प्रतियोगिता में होने वाली पराजय, शिकस्त, जीत का विपर्याय।

उ०—१ एम 'दुरग' आखियौ, सुणौ कमधां समरत्थां। हांण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्थां।—रा. रू.

उ०—२ 'जेत' भूप 'जैतरी' हार 'कमरा' री होसी। अड पोसी मुंडमाळ जगतचख कौतुक जोसी।—मे. म.

उ०—३ हार जीत मन आपनी, और किसी की नांहि। जनहरीया मन हैकलौ, सारी वातां मांहि।—अनुभववांणी

२ वह दशा अवस्था या भाव जब आदमी किसी कार्य में सब तरफ से असफल हो कर थक कर बैठ जाता है, निराशा, असफलता, थकान।

उ०—१ अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयौ, मन नाहीं मांनी हार। या जग मैं कोई नहीं अपणां, सुणियौ स्रवण कुमार।—मीरां

उ०—२ आप लोगां नै समझावण री बाद भगवांन ई करै तौ वण नै हार मांनणी पड़ैला। म्हैं तौ आप लोगां री बातां रै मिस आपरी अकल रौ पींदौ देखणौ चावूं।—फुलवाड़ी

सं. पु.—३ स्वर्ण, चांदी, पुष्पों, मोतियों आदि की माला, जो गले में धारण की जाती है।

उ०—१ डाडी रा चौक मैं स्यांम बुंद विराजै छै, जांणै चंद्रमा रै मगीर हार राजै छै।—पनां

उ०—२ माथै सोना रौ ई मुगट। अमोलक नग पळपळाट करै। गळै सोना रौ ई हार। तरवार अर कटारी रै सोना री मूठ अर सोना री म्यांन।—फुलवाड़ी

४ मुंडमाला।

उ०—आभूखण वज्रतणा अथाहै। माथातणा हार गळि माहै।

—सू. प्र.

५ युद्ध, लड़ाई, संग्राम।

६ एक दीर्घ या गुरु मात्रा का नाम।

उ०—अठ दुजबर खटकळ सुयक, एक हार गण अंत। मवनहरा सौ छंद मुणि, राघव सुजस रटंत।—र. ज. प्र.

७ प्रथम गुरु के रगण का नाम। (र. ज. प्र.)

८ छन्द शास्त्र के अनुसार ठगण का चौथा भेद जिसमें मात्रा क्रम दो गुरु एक लघु इस प्रकार होता है—(ऽऽ।)। (डिं. को.)

९ अंक गणित का भाजक, विभाजन।

१० वन, जंगल।

११ खेत।

१२ राज्य द्वारा किया जाने वाला हरण, जब्ती।

१३ पंक्ति।

१४ देखो 'हारौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया प्यांणी दुलभ है, ज्युं खांडै की धार। इन सरवर कै नीर कुं, विरही पीवन हार।—अनुभववांणी

उ०—२ बाप बाप हो! थारा आरंभ पारंभ लागि गढ लेयण हार, किना बाप बाप हो! थारा सत तेज अहंकार, राइ दुरग राखण हार।—रा. सा. सं.

हारक-सं. पु. [सं] १ चोर।

२ हरण करने वाला, लुटेरा।

३ धूर्त, कपटी।

४ मुक्ताहार।

५ विभाजक।

वि.—हारने वाला।

रू. भे.—हारिक।

हारणौ-वि. (स्त्री. हारणी) १ हरण करने वाला, नष्ट करने वाला, पाप हरने वाला।

उ०—१ देवी रोग भव हारणी त्राहि मांम, देवी पाहि पाहि देवी पाहिमांम।—देवि.

उ०—२ देवी हारणी पाप स्त्री हरि रूपा, देवी पावणी पतितां तीरथ भूपा।—देवि.

२ हारने वाला, पराजित होने वाला।

३ निराश होने वाला, थकने वाला।

हारणौ, हारबौ-क्रि. स. [सं. हृ, हारयति प्रा. हारणं] १ युद्ध, लड़ाई, मुकद्दमे, खेल, प्रतियोगिता आदि में अपने प्रतिद्वन्द्वी से पराजित होना, शिकस्त खाना, हारना।

उ०—अमीरखांन नै जांम सतै माहोमांह एको छै। पछै अजमखांन गिरनार, नवानगर ऊपर असवारी की, वेढ हुई। जांम सतो नै अमीरखांन वेहूं हारिया।—नैणसी

२ अपना दांव गमा देना, खो देना।

उ०—प्रहरै प्रहर ज ऊतरघुं, दिवला साख भरेह। धण जीती प्रिव हारियउ, वेल्हा मिळण करेह।—ढो. मा.

३ किसी कार्य में परिश्रम करने के बावजूद असफल होना, परिश्रम करके थकना, असफल होकर निराश होना, हतोत्साहित होना।

उ०—१ हकीम वैद्य सरब पचि हारघा, दीनी बहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंबा, अंबा बांसै आई।—मे. म.

उ०—२ कुसळ विहावउ सज्जणां, पर मंडळै थयांह। जउ विह हिया न हारिस्यइ, वळै मिळैवउ त्यांह।—ढो. मा.

उ०—३ नांनी पोटाय पोटाय, बिलमाय बिलमाय हार थाकी पण दस बरसां रौ बाळ-हठ रांगै नीं आयौ सौ नीं आयौ।—फुलवाड़ी

४ अपनी हार मान लेना।

उ०—पण अंत मेनकां हारी, बोली 'हूं' नारी माड़ी। तू जोगी जग रो जीत्यो, आ काया चरणां डाळी।—सकुंतळा

[illegible] सुआ देना, स्वर्ण सोना, [illegible] ।

उ०—१ [illegible], [illegible] उतरै पार । दूजी दुनीयां [illegible] हार ।—अनुभववांणी

उ०—२ [illegible] विचारि । नारी [illegible] न हारि ।—जयशेखर सूरि

५ [illegible] देना, [illegible] ।

उ०— [illegible] जोर रमणी रिद्धि रजित गहु कोद । [illegible] तणी निति हारती बात ।

—वस्तिग

हारणहार, हारो (हारी), हारणियो—वि० ।

हारियोड़ो, हारियोड़ो, हारयोड़ो—भू० का० कृ० ।

हारीजणो, हारीजबो—कर्म वा० ।

हारद-सं. पु. [सं. हार्द] १ प्रेम, स्नेह, प्यार । (अ. मा; ह नां. मा.)

२ कृपालुता, दयालुता ।

३ कोमलता, नाजुकता ।

४ अभिप्राय, इरादा, मन की बात ।

उ०—गुरु नूं बतावई भेजि आपरी हारद पिता नूं जणायो ।

—वं. भा.

५ दृढ संकल्प ।

६ प्रेमी, मित्र । (अ. मा.)

हारदा-सं. पु. [सं. हृदय] हृदय, दिल, मन ।

हारदिक-वि. [सं. हार्दिक] १ हृदय का, हृदय से सम्बन्धित, हृदय से निकला हुआ ।

२ सच्चा, वास्तविक ।

हारबंद, हारबंध-सं. पु. [सं. हार+बंध] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें वर्णों के अक्षर हार के आकार में रखे जाते हैं ।

हारहमेल—देखो 'हमेल' (३)

उ०—'रसना' में ढिठाई प्रगट हुई । लाज री मूं भागी, पायल [illegible] पटिमेखळा वाणी । छिव छिलिया हारहमेल [illegible] ।—र. हमीर

हारमोनियम-सं. पु. [अ.] सन्दूक के आकार का एक वाद्य, जिसमें एक तरफ हवा भरने का पर्दा लगा रहता है तथा ऊपर स्वर लगते रहते हैं । पर्दे से हवा भर कर, स्वरों को अंगुलियों से दबाते हुए विभिन्न राग रागिनियों की धुनें बजाई जाती हैं, पेटी बाजा ।

हारमोर-वि.—१ [illegible], [illegible], [illegible] ।

उ०—१ [illegible] सबै कुदेखियां, म दैं संग महमाय । निजरां आगै [illegible], हारमोर ह्वै जाय ।—बां. दा.

उ०—२ घर, हवेलियां, गैर, सड़का, आकरिया, तळाव, कुआ-बावड़ी [illegible] देस-देस नै रूड़ा री माटी कर नांखी, पण टावर तो जांणै हारमोर हुय [illegible], जांणै मोर ऊंचो निटली कै जांणै जीवता नें धरती ऊकारगी ।—अमरचूंनड़ी

२ नष्ट, समाप्त ।

हारल-सं. स्त्री.—एक प्रकार की चिड़िया जो हर वक्त अपनी चोंच में कोई लकड़ी या तिनका दाबे रहती है, यह झुंड में रहती है ।

रू. भे.—हारिल ।

हारवणो, हारवबो—देखो 'हराणो, हराबो' (रू. भे.)

उ०—हांमावत एको हारवसी, दळ अर दाख दहण खग दाहि ।
कुंजर कोड़ मिळै जो कारी, सीह झड़फतो सकै न साहि ।

—साहिब हमीरोत रो गीत

हारवल्ली-सं. स्त्री.—माला ।

उ०—वांनरी हारवल्ल्या किं करोति, विधवा स्त्री किं करोति, वणिक खंगेन किं करोति, दिगंबर पट्टकूलेन किं करोति........।

—व. स.

हारसणगार, हारसिंगार, हारसिंगार-सं. पु. [सं. हार+शृंगार] १ शरद ऋतु में होने वाला, मंझोले कद का एक प्रकार का वृक्ष, जिसके पुष्प अत्यन्त सुन्दर एवं सुगन्धित होते हैं, पारिजातक वृक्ष ।

[सं. हार+शृंगार] २ वस्त्राभूषणों द्वारा किया जाने वाला शृंगार ।

हारहूर-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का मद्य ।

हारहूरा-सं. स्त्री.—१ मुनक्का दाख, द्राक्षा । (डिं. को.)

२ अंगूर ।

हाराड़-सं. स्त्री.—१ लड़ाई, झगड़ा ।

२ युद्ध, जंग ।

हारावणो हारावबो—देखो 'हराणो, हराबो' (रू. भे.)

उ०—अगावती मुझ नै मिलै, चढि आयो अप चंड प्रद्योत कि हिम्मति करि हारावीयो, पाल्यो नै उदय नै पोत की ।

—ध. व. ग्रं.

हाराावियोड़ो—देखो 'हरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हाराावियोड़ी)

हारि—देखो 'हार' (रू. भे.)

उ०—१ जूइ राजा केरी हारि, पूछि नांम गोत्र विस्तार । जे आगलि जई कन्या रहि, पिहिलूं, तेहना मननि ग्रहि ।—नळाख्यांन

उ०—२ का तौ पासौ हारि कौ, का तौ पासौ जीत । हरीया दोउं दूरि करि, एको मतो अजीत ।—अनुभववांणी

उ०—३ हाडै राव लीनी मास एक की लड़ाई । बूंदी सैर लूट्यो देखि पाछै हारि पाई ।—शि. वं.

हारिक—देखो 'हारक' (रू. भे.)

उ०—विया 'गिरमेर' यो हारबो जीतबो, सारिखां तणी करनार मारै । हारिकां तणी तो जीत मारै नहीं, मारिकां तणी तो हारि मारै ।—धीरतसिंघ मोची रो गीत

हारिख-सं. पु.—एक प्रकार का रोग।

उ०—१२ जवर, १३ संनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आंमवात, ८४ वायु. ३६ महावायु दोख, ४५ खाधाविकार, १०८ फोडि। ५ गुल्मक्षयन, २० स्लेस्मा, ८ उदर, १० व्याधि, १०० सइमउ अत्यु, ७६ चक्षुरोग, कास, स्वास, हारिख, अतिसार, गुड, गूंवड, देह रोगा।—व. स.

हारित-सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का कबूतर।

२ हरा रंग।

वि.—१ हारा हुआ, पराजित।

२ भेंट किया हुआ।

रू. भे.—हारीत।

हारिनास्वा-सं. स्त्री. [सं. हरिनाश्वा] संगीत में एक मूर्च्छना जिसका स्वर ग्राम इस तरह का है—ग म प ध नि स रे। स रे ग म प ध नि, स रे ग म प।

हारिल—देखो 'हारल' (रू. भे.)

हारी—देखो 'हार' (रू. भे.)

हारीत-सं. पु. [सं. हारीतः] १ एक कबूतर विशेष।

२ धूर्त या कपटी व्यक्ति।

३ जाबाल ऋषि के पुत्र का नाम।

४ सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का पुत्र।

५ एक स्मृतिकार, जिसके पुत्र का नाम कमठ था। इसने कई स्मृति ग्रंथों की रचना की।

६ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र।

७ एक अंगिरस कुलोत्पन्न तत्त्वज्ञ, जिसके द्वारा प्रणीत संन्यास मार्ग का तत्त्वज्ञान 'हारीतगीता' नाम से विख्यात है।

८ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित था और शरशय्या पर पड़े भीष्म से मिलने भी गया।

९ देखो 'हारित' (रू. भे.)

हारु, हारू-वि.—१ कायर, डरपोक।

२ कमजोर, अशक्त।

३ हार मानने वाला।

४ देखो 'हार' (रू. भे.)

उ०—हारू त्रोड़ती वलय मोड़ती। आभरण भांजती, वस्त्र गांजती। किंकणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती। वक्षस्थल ताडती, कंचुउ फाडती।—रा. सा. सं.

५ देखो 'हारौ' (रू. भे.)

हारौ-प्रत्यय—एक प्रत्यय जो क्रिया शब्दों के पीछे लगकर उन्हें विशेषण बनाता है, वाला।

उ०—फूलांना पगर भरचा, अगरना गंध संचरचा। धांन गादी चातुरि चाकळा, बइसण हारा बइठा पातळा।—रा. सा. सं.

सं. पु.—१ चूल्हा।

२ देखो 'हार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—ढलक ढलक आंसू पड़ै, जांणै तूट्यौ मोत्यां री हारौ जी। कुंवर कनै माता आय नैं, भाखै वचन उदारौ जी।—जयवांणी

रू. भे.—हारु, हारू।

हालंदियौ-वि. (स्त्री. हालंदी) चलने वाला।

उ०—हंम जंहीं हालंदियां, धाटेचियां तियांह। कनक लता कठ-यांणियां, जोड़ै नंहीं जियांह।—बां. दा.

हाल-सं. पु. [अ.] १ दशा, अवस्था, हालत।

उ०—१ रांणीजी वेचेतै व्हिणोड़ा सूता हा। वै मरग्या तौ पेट री आसा री कांई हाल व्हैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ क्याहू जणियां कह्यौ—नीं ओ मा'राज, इत्ती भुळावण दियां पछै कांई धोखौ खावां। थांरौ भो भो ई भलौ व्है, जकौ सगळी बात बताय दी। नींतर रांम जांणै कांई हाल व्हैता।

—फुलवाड़ी

२ रंग-ढंग, स्थिति।

३ समाचार, खबर, संवाद।

४ ब्यौरा, विवरण, वृत्तान्त, बयान।

उ०—तथा स्रीचंद फरजंद परतू तणौं, पाय संकट घणौ खुड़द पूगौ। कसट सहियौ जिकौ हाल मालुम कियौ, हाल कहियौ अतै व्हाल हूगौ।—मे म.

५ आख्यान कथा।

६ व्यवस्था।

७ चलने का ढंग, गति, चाल।

उ०—१ तौ कुंवर विचारी हाल तौ मांटी री नहीं बैर री दीसै छै।—रायवण री वात

उ०—२ दांता री पांणी, कडीयां री केहरी, हाल री हंस, भूंआंरी भमर, कुरज री नस। अलकां री नागण, पलकां री कुरंग, कंठ री कोयल, सोनै री अंग।—मयारांम दरजी री वारता

उ०—३ हंस हाल परहरै, बचन पलटै दुरवासा। मह मोरां झड़ मंडै, इंद नहिं पूरै आसा।—चौथ बीठू

उ०—४ भाळ विसाळ सिंदूर सुसोभित, हाल मराल हसत्ती। रूप अनूप तेज मय राजत, मिळत पलक मदमत्ती।—मे. म.

८ सुख, चैन।

९ वर्तमान काल।

१० वर्तमान से कुछ पहले का समय।

[सं. हालः] ११ हल।

१२ हल की वड़ लम्बी पट्टी या लट्ठा, जिसका एक सिरा हल के बीच में फंसा रहता है तथा दूसरे सिरे पर जूआ बांधा जाता है, हरिसा।

१३ बलराम का एक नाम।

१४ शालिवाहन का एक नाम।

[illegible]

[illegible] मोटा [illegible], बड़ा [illegible],

[illegible]

[illegible] ३ [illegible], तत्काल ।

[illegible] हाल । [illegible]

[illegible] —[illegible]

[illegible] जग जंजाळ । मीरां [illegible] ।—मीरां

[illegible] ।

उ०—१ [illegible] नीं सीख्या तो पछै कांई [illegible] मरणो पड़ै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] दीमै । कांम हाल सगळोई [illegible] । [illegible] है, बिलोवणो करणो है ।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ [illegible] नीं । म्रां कांळिदर रा [illegible] मोटा करिया, वांनै इण बात [illegible] । [illegible] पोतड़िया धोया अर हाल धोवूं ।

—फुलवाड़ी

३ [illegible] ।

४ [illegible] ।

उ०—[illegible] हाल [illegible], वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उण [illegible] मिळै कोनी । म्हैं उण नैं गोदी में ऊंचाय [illegible] ।—अमरचूंनड़ी

[illegible]-सं. पु. [सं.] बादामी या भूरे रंग का घोड़ा । (ना. डो.)

वि.—[illegible] । (डि. को.)

[illegible]-सं. पु. [देश.] हैंगा या पटेला नामक कृषि उपकरण ।

[illegible]-सं. पु. बौ.—१ दसा, हालत, अवस्था, स्थिति ।

२ [illegible] ।

३ [illegible], खबर ।

४ विवरण, वृत्तान्त ।

५ [illegible] का ढंग ।

[illegible]-सं. स्त्री.—१ चलने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ [illegible] रहै घर घेरा, फौजां साह तणी चौफेरा । [illegible] दिन दिन तिमिर अंधेरा, हालण सोध नकांम नहेरा ।

—रा. रू.

उ०—२ [illegible] दिन म्हैं वानैं म्हारै माथै हालण री बात करी जद [illegible] माथै हाथ फेरता [illegible] कंठ सूं गुवर रै सांम्ही देखनै [illegible] अठै थोड़ बांरो [illegible] दूजी ठौड़ जावणो नीं [illegible] ।—फुलवाड़ी

२ [illegible] होने की क्रिया या भाव ।

[illegible]-सं. स्त्री.—हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

उ०—हालणडोलण बोह बकण, मन पवना थिर नांहि । हरीया परमानंद सुख, उर्द नहीं उर मांहि ।—अनुभववांणी

२ छोटा-मोटा कार्य, साधारण फुटकर कार्य ।

हालणसींगो-सं. पु. (स्त्री. हालणसींगी) वह बैल जिसके सींग हिलते हों ।

हालणो, हालबो-क्रि. स. [सं. हल्लनं] १ गतिमान होना, चलना ।

(उ. र.)

उ०—१ बेटी, थारै दिनां, माथै भाखर री भार उखणियां ई म्हैं थाकेला नैं नेड़ो नी फटकण देती, पण अबै म्हारा दिन ढोळै बैठग्या, थारै जोड़ै कीकर हाल सकूं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हद चांटी हालतां हवा हालत रद होवै । तवि जूनों सपतास, जिकां कांनी रवि जोवै ।—मे. म.

उ०—३ इम हालियौ थाट दिस उत्तर । कमळा नभ रज चढै भयंकर । एण समूह मंझ अकुळावै, पंछी अहि उडता अत पावै ।

—सू. प्र.

२ रास्ते चलना, आगे बढना, जाना ।

उ०—१ चौधरण री आधी दूधी मन बुझग्यो । तोई वा हेठै नीं न्हाकी । धणी सारू एक फूटरा नांव री सोच मैं वा धकी हालती री ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सास बहू रै इण भांत वंतळ होवती ही अर चौधरी तो ऊंडी ऊंडी डकारां खावतौ जोधांणा रै मारग भरणाटै हालतौ रह्यौ ।—फुलवाड़ी

३ कहीं जाना, जाना, चलना ।

उ०—१ मां साळ रै मांय बड़ आडो जड़ दियो । बेटी होळै होळै चितवंगी व्है ज्यूं बाड़ा कांनी हालण लागी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै महा वैराग ऊपनो । रह्यो न गयो । तद पुत्र भीम-सीगै, काका मेमसी नूं सारोही भळाय नै हालिओ ।

—कल्यांणसिंह वाढेल नगराजोत री बात

४ प्रस्थान करना, रवाना होना, चलना ।

उ०—१ मा आंवां जाय खड़ा मांहीं क्यूं बैठ सै । इतरी कहि आगानै मेड़तै सांम्हे हालिया ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ हालिया पटा-झर तणी हाल, मिळ पातसाह बहु दीध माळ । कुसळात पूछ इम हेत कीध, देवौ रसाळ जब हार दीध ।

—वि. सं.

उ०—३ तरै हेक दीहाड़ै रजपूतांणी सूं कहीयोज म्हे हमे पर भोम पजक रै आंटै हालां तो वेठा काहूं करां । तरै हालण लागी ।

—कल्यांणसिंघ वाढेल नगराजोत री बात

५ घूमना, फिरना, टहलना, विचरण करना ।

उ०—१ जिन की कळा से हालत चालत धरण अकास-अधारा । जिन कौतक मैं सब जग भूल्यौ, यै ही पुरस है न्यारा ।—मीरां

उ०—२ बिनां अजाद हालतौ वहतौ, बधतौ क्रोध हीळोल वप।
नीर बिनां कीधौ आमेरी, तांहांरौ सोखा बीर तप।
—राव दुरजण साल हाडा रौ गीत

६ हिलना-डुलना, झोले खाना।
उ०—नगर माहि चतुरंग कटक चालतइ, तेहनइ भारि सेसनाग हालतइ तुरंग चडिउ,......... ।—व. स.
७ कांपना, धूजना।
८ उडना।
उ०—जद पून चली आथूणी, पत्ता सागै सै हाल्या। कीं अटक्या वीच मगां मैं, कीं दूर दूर तक चाल्या।—सकुंतला
९ होना, चलना।
उ०—१ घरां मैं तौ कांनां ई कांनां बातां हालती, पण कांकड़ मैं ई डरता धूजता छांनै-ओलै बात करता।—फुलवाड़ी
उ०—२ रांड बैठां-सूतां केड़ा भंवरजाळ मैं न्हाक दिया। इण भांत री कचकच खासी ताळ तांई हालती री।—फुलवाड़ी
१० आना, चलना।
उ०—पांचवै महीनै टाबर पेट मैं टळवळण लागौ। मांय हुरड़ियां देवतौ सौ लखायौ। जच्चा रांणी नै होबरड़ा हालण लागा।
—फुलवाड़ी
११ किसी से व्यभिचारिक सम्बन्ध रखना, किसी के साथ व्यभिचार करना।
उ०—सु सातमी वार गंगोदक कावड़ भरी नै आंणतौ हुतौ सु किणहेक सहर वटाउ थकौ किणहेक रै चौंतरै उतरियौ हुतौ सु उणरी बैर किणीहेक जिदा सूं हालती हुती।—नैणसी
१२ प्रचलन में होना, व्यवहार में होना, जारी होना या रहना।
उ०—किण ही पूछ्यौ—आप रौ इसौ सांकड़ौ मारग कितांक वरस चालतौ दीसै है। जद स्वांमी बोल्या—सरधा आचार मैं सैंठा रहै। वस्त्र पात्र उपगरण री मरयादा न लोपै। थांनक नहीं बंधीजै। जठां तांई मारग चोखौ हालतौ दीसै है।—भि. द्र.
१३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग में आते रहना।
ज्यूं—औ कमीज थारै हाल तांई हालै।
१४ चलना।
उ०—लखू सिसकारा भरती बोली—वरसां सूं म्हारै औ मोटौ रोग लाग्योड़ौ। खाज आगै जीव जावै। हालणौ सरू व्हियां पछै ढबै ई नीं।—फुलवाड़ी
हालणहार, हारौ (हारी), हालणियौ—वि०।
हालिओड़ौ, हालियोड़ौ, हाल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हालीजणौ, हालीजबौ—कर्म वा०।
हलणौ, हलबौ, हलवणौ, हलववौ, हल्लणौ, हल्लबौ—रू० भे०।

हालत-सं. स्त्री. [अ.] १ दशा, अवस्था।
उ०—१ बाई रांमचरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगळा समाचार सुण लिया हा। जै इण टाबरां री बंधण नीं व्हैतौ तौ वै कदैई औ घर बार छोडनै नाठ गया व्हैता।—दसदोख
२ घर की अवस्था, आर्थिक स्थिति।
उ०—कै—जदी छोटू मारजा री हालत दुरवळ नीं होती तौ अवस एम० ए० तांई पढ लिख जावता।—दसदोख
३ परिस्थिति, वातावरण।
४ वृत्तान्त, हाल, विवरण।
५ समाचार, खबर।

हालतसींगौ-सं. पु. (स्त्री. हालतसींगी) वह बैल जिसके सींग झुके हुए तथा हिलते हुए हों।

हालतांई-क्रि. वि.—अभी तक, अब तक।
उ०—पण हालतांई उणनै कोई इसौ मौकौ नीं मिळ्यौ हौ कै वो कांनजी सूं राजीपौ करतौ।—अमरचूंनड़ी

हाळबोळ—देखो 'हळाबोळ' (रू. भे.)
उ०—हाळबोळ छक हूंत, हलै असि चढण झळाहळ। इम दीसै उण वार, समंद मथसी साहंस बळ।—सू. प्र.

हालमकर-सं. पु.—अनार, दाड़िम। (अ. मा.)

हालर—देखो हालरियौ' (मह; रू. भे.)
उ०—पिलंग म्हारौ हालर पोढसी, कांई पाटी वांधी हालरिया री मायजी।—लो. गी.

हालर-फालर-सं. पु. यौ.—चापलूसी, खुशामद।

हालर-हूलर-सं. पु. यौ.—१ व्यर्थ का प्रलाप।
२ व्यर्थ का कार्य, झंझट।
३ व्यर्थ की हंसी या हंसी की आवाज।

हालरि, हालरियुं, हालरियौ-सं. पु.—१ बच्चा, पुत्र, बेटा।
उ०—१ हमै कांई करसां औ हालरिया रा बाप, माताजी चमकिया देस मैं।—लो. गी.
उ०—२ मण भर धागड़ौ मैं फिर घर ल्याई जी गोद मेरी हालरियौ मेरौ स्यांम लटकौ आयौजी।—लो. गी.
उ०—३ थेइज औ मांनेतण रांणी हालरियौ जिणजौ। घेनड़ियौ जिणजौ औ अजमौ मारा भावोसा मोलवै औ राज।—लो. गी.
२ बच्चे को मीठी थपकी दे कर या किसी झूले में डाल कर सुलाते समय गाया जाने वाला लोक गीत, लोरी।
उ०—१ रूड़ा रिखभजी घरि आवउ रे, हालरियु गाऊं रे गाउं। मरुदेवी माता इण परि बोलइ, जीवन तोरी बलि जाउं रे।
—स. कु.
उ०—२ मातां धोतां अमल झुलरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ हींडोल हिंचोली। वलि रमीयौ अठ दस बरस तुं बालक टोली, परणावै तुं नइ पछै दयिता हुइ दोली।—ध. व. ग्रं.
उ०—३ उणैं इज किण रा काळा तिल चोरिया है, उणैं इज

[illegible] हलगो लोहो मारी है।
[illegible] कर लगु रै वाली देस देस मै
[illegible] ।—[illegible]

[illegible] देस में केई वात मुणावली। घेरड़ घेरड़
[illegible] ।—[illegible]

[illegible], भुनवा, भुना।

[illegible] भुनाने की क्रिया, भुनाने के लिये
[illegible], जिमेवा, मोवा।

[illegible] नहीं कलेवा, वालणियैं गोढाय रे, गिर०।
[illegible], कलेवा, म्हारै हुंस रही मन मांय रे, गिर०।

—जयवांणी

[illegible] पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

[illegible] गाया जाने वाला एक लोक गीत।

[illegible] एक आभूषण।

[illegible]।

[illegible]।

[illegible]—१ वीर रस पूर्ण गायन।

उ०—[illegible] रहे न कोइ गीज ओटी, करे की नाल [illegible] । धागाळा झालरा नागां अंगीठी काळ रा [illegible], [illegible] घोमरी ई घनोठी वांण हूंत।—वखीदास लिड़ियो

२ [illegible] एक आभूषण विशेष।

उ०—[illegible] हालरा [illegible] रा नाद घंटा, घयोला मणी झालरा लूम [illegible]।—वं. भा.

३ [illegible] को हाथ के इशारे से बुलाने की क्रिया या भाव।

४ देखो 'हालरियो' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] देरांणी-जेठांणी जाया हालरा, गरवण थें कांई [illegible] ओक। [illegible], भंवर, म्हां नै चोणोटियो।

—लो. गी.

उ०—२ हुवै वीर [illegible] चोगट दीयै हालरा, जुवां प्रण चाल [illegible]। [illegible] सोगत भरै तालरा, करग फन- [illegible] मुता पड़ै।—[illegible] धधवाड़ियो

उ०—३ [illegible] न दीधो हालरो जी, वह नहीं गाड़ी रे पाय। एक [illegible] न जनमियो जी, हंस रही मन-मांय रे जाया।—जयवांणी

उ०—४ [illegible] दे जी ए जायो हालरो, उजळदंती ए जायो [illegible]।—लो. गी.

[illegible]-सं. पु.—[illegible], तरफा ?

उ०—[illegible] सीर वार नूं मनांत कर रहे छै, हेबीके म्हारा [illegible]। [illegible] दोनां ही [illegible] हालयद वाधा [illegible] सिरै [illegible] हजार सेनामिरी घोड़ै रै छै।

—[illegible] हमीर [illegible] री वात

हालवो-सं. पु.—व्यभिचार या रति क्रीड़ा के लिये आने जाने की क्रिया या भाव।

उ०—राजा प्रथीराज चहुंवांण री वैर सुहवदे जोइयांणी इणरो वावरै घरै हुती, तिण नूं रातूरी आसरी उण रै वाप माळियो करायो, इसो ऊंचो, जिण री दीयो अजमेर दीसै, तिसूं गूंदळगाव हालवो मांडियो सु इसड़ो सुरंग एक वणाई, जिका उणरै गांव थी सुहवदे रै माळियै छांना आवै —नैणसी

हालहवाल-सं. पु. यौ.—१ दशा, अवस्था, हाल-चाल।

२ समाचार, खबर, वृत्तान्त।

हालहुकम हालहुकम्म, हालहुक्म-सं पु. यौ.—हुकूमत, शासन।

उ०—१ भंडांण री मूंवौ, सर लूणासर ग्रांम री सवाल, मा'रजा री हाल-हुकम, वांणियां भूपाल। दोसती-मितराई मोटी चाल, कितो ही तुलावो चावै मंडी सूं माल।—दसदोख

उ०—२ जिण कीधा हो जवहर व्यापार, तउ मणिहारी मनि किम गमइ। जिण कीधउ हो सदा हालहुकम्म, तउ वे तूंकारघउ किम गमइ।—स. कु.

हालांणी—देखो 'हलांणी' (रू. भे.)

हाला-सं. स्त्री. [सं.] १ भाटी वंश की एक शाखा।

२ शराब, मदिरा। (अ. मा.)

उ०—१ हुवै धत्त लोहित्त मैगत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळां निवाला। मधू-मास आसोज मैं रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे. म.

उ०—२ घोड़ा सवार ऐहिज घणा, चांपर कर मागै चडण। मैं चढै पीठ डालामथै, लै हाला आई लड़ण।—मे. म.

हालाडूलो, हालाडोई, हालाडोळी, हालाडोलो-सं. पु.—१ घर का छोटा-मोटा कार्य।

२ व्यर्थ का गोरख-धंधा।

रू. भे.—हालादोळी, हालाहीलो।

हालादोळी-सं. स्त्री.—१ प्रार्थना, स्तुति, वंदगी।

उ०—आगै देखै तो राजाजी उघाड़ै माथै माताजी रै आगै हाला-दोळी करै छै।—जैतसी ऊदावत री वात

२ देखो 'हालाडोई' (रू. भे.)

हालार-सं. पु.—गुजरात का एक प्राचीन प्रदेश, जहाँ पहले हाला भाटियों का राज्य था।

उ०—जिमो देस हालार मैं वन जंगळ।—नैणसी

रू. भे.—हालाहर।

हालाहर-सं. पु —१ यादव या भाटी वंश की हाला शाखा का व्यक्ति।

उ०—रिम गंजण सिंध मछरियो राजा, जो जिण ठांम स जुवा जुवा। झाला चौंडा समा झळहळै, हालाहर है-कंध हुवा।

—द. दा.

२ देखो 'हालार' (रू. भे.)

उ०—राव खंगार हालांनूं कछ मांहे सूं काढिया । उवै जाय हाला-हर वसिया ।—वां. दा. ख्यात

हाळाहळ, हालाहल—देखो हळाहळ' (रू. भे.) (अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ विसरियां विसर जस वीज बीजिजै, खारी हाळाहळी खळांह । त्रूटै कंध मूळ जड़ त्रूटै, हळधर कां वाहतां हळांह ।
—वेलि

उ०—२ जन्म पछी तां जनक नइं, हेलां हवुं जघांन । पासइ धरतां पांमयु, हर हालाहल पांन ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ जौ हालाहल जरयौ, जोइ मन्मथ रिपु तैं । भाल नैत्र महि भरयौ, वलै वन अनल वदीतैं ।—ध. व. ग्रं.

हालाहीलौ—देखो 'हालाडूलौ' (रू. भे)

हाळि, हालि—देखो 'हाळी' (रू. भे.)

उ०—सूर खळां सिर साखती, हरीया आज'क कालि । लाटौ लूटै लोभीयां, हकै आयौ हाळि ।—अनुभववांणी

हाळिड़ौ—देखो 'हाळी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—म्हांरै बेतां नै चारौ मोठ रौ, म्हांरै हाळिड़ां नै गुदळी खीर आज बदळी म्हांरी वरसेगी ।—लो. गी.

हालिद्दौ–वि. [सं. हारिद्र] पीत, पीला । (जैन)

सं. पु.—१ पीला रंग ।

२ कदंब का वृक्ष, क्षुप ।

हालियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ. २ रास्ते चला हुआ, आगे बढा हुआ, गया हुआ. ३ कहीं गया हुआ, चला हुआ, गया हुआ. ४ प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ, चला हुआ. ५ घूमा हुआ, फिरा हुआ, टहला हुआ, विचरण किया हुआ. ६ हिला हुआ, डुला हुआ, झोले खाया हुआ. ७ कांपा हुआ, धूजा हुआ. ८ उडा हुआ. ९ हुवा हुआ, चला हुआ. १० आया हुआ, चला हुआ. ११ व्यभिचारिक सम्बन्ध हुवा हुआ या किया हुआ. १२ प्रचलन में हुवा हुआ, व्यवहार में हुवा हुआ, जारी हुवा हुआ. १३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग में आया हुआ. १४ चला हुआ ।

(स्त्री. हालियोड़ी)

हाळियौ—देखो 'हाळी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—सातमी वार गंगोदक री कावड़ भरि नै आंणतौ हुतौ सु किणहेक सहर वाटाउ थको किणहेक रै बारणै चौंतरै उतरियौ हुतौ, सु उण री वैर किणीहेक जिंदा सूं हालती, सु वा सासती जिंदा रै जाती, सु तिण दिन उण री मांटी कठै कै हाळियौ हुतौ सु घरै आयौ ।—नैणसी

हाळी, हाली–सं. पु. [सं. हलिन्, हालिकः] १ हल चलाने वाला, किसान, कृषक ।

उ०—१ ताहरां राव चवंडोजी एक दिन दरवार जोड़ बैठा छै । जितरै हेक हाळी आयौ ।—नैणसी

उ०—२ आकास धड़हड़ै खाळ खड़हड़ै । पंखी तड़फड़इ, वडा मांणस लड़थड़इ, काठ सड़इ, हाळी हळ खड़इ ।—रा. सा. सं.

उ०—३ ग्वाळां नै म्हारै गळछट चूरमौ. हाळ्यां नै खीर लापसी ए ।—लो. गी.

उ०—४ जाट वसै । धरती हळवा ४५ वाजरी मोठ खेत कंवळा । ऊनाळी अरट ७ हुवै । हाळी थोड़ा छै सु वसी एक गांव में राखै छै ।—नैणसी

२ कृषि कार्य में रखा जाने वाला वह नौकर जो हल चलाने, बैल हांकने से लेकर समस्त कृषि सम्बन्धी कार्य करता है ।

उ०—१ रांम नांम चेत्यौ नहीं, गाफिल पणै गिवार । हरीया रहिसें पारकै, हाळी घर घर बार ।—अनुभववांणी

उ०—२ कुंवारै री कमाई, जोर अर घूंस खोर री माया तथा बादळी री छाया कितीक दूर चालै ? हटड़ौ जड़ दियौ, खेत खड़ लियौ । ऊंट लीनौ. हाळी राख्यौ, ल्हास करी अर खेत वुह्यौ ।
—दसदोख

३ कृषि कार्य में मजदूरी करने वाला मजदूर, श्रमिक ।

उ०—सु जीजी खेत मैं हुती । जुवार रौ खेत हुतौ । सु चूंटांवण गई हुती ।........राव खेत मैं पधारिया । हाळीयां नूं पूछीयौ, 'जीजी केथ' ? ताहरां हाळीयां कह्यौ, 'घरै गई' । ताहरां राव घरै आयौ ।—जीजी डाभी री वात

४ पति, खाविंद । (किसान)

वि.—१ हांकने वाला, चलाने वाला, चालक ।

२ लोभी ।

उ०—रात रा सेठ मतै ई वात छेड़ी । कैवण लागा—अबै संन्यास लेलूं तौ सावळ है । फगत थांरौ ध्यांन आयां मन डिगमिगै । आं माया रै हाळी बेटां रै भरोसै थां मै फोड़ा पड़ैला, नींतर कदै ई हेमाळै गुफा मैं वास कर लेतौ ।—फुलवाड़ी

३ पापी ।

उ०—जेवडउ अंतर बहिन नइं साली, जेवडउ अंतर दीवाली (नइ होली), जेवडउ अंतर पुण्यवंत नइ हाली जेवडउ अंतर हंस नइ काग ।—व. स.

रू. भे.—हाळि, हालि ।

अल्पा;—हाळिड़ौ, हाळियौ, हाळीड़ौ ।

हाली–सं. स्त्री.—१ चलने का ढंग, चाल, गति ।

२ हरन-सहन का ढंग, आचरण, व्यवहार ।

३ बूंदी राज्य का प्राचीन रुपया ।

हाळीअमावस–सं. स्त्री. यौ.—वैशाख मास की अमावस्या ।

हाळीड़ौ—देखो 'हाळी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ टीवै तौ ओळै, ए लाडो बेटी, टीबड़ी, जैं तळै हाळीडै री खेत बाबैजी नै कहियौ ए, हाळी नैं बेटी क्यूं दयी ।—लो. गी.

उ० [illegible] हाळीड़ी [illegible] । [illegible] हाळीड़ रा [illegible] ।—[illegible]

[illegible], हाळा-[illegible], हंग ।

[illegible], हाळीड़ी-[illegible] स्त्री.—जागीरदार द्वारा किसान को [illegible] (किसान को) भूमि या खेत [illegible] की गई हो ।

हाळीपण, हाळीपणौ, हाळीपौ-स. पु.—१ 'हाळी' का कार्य, 'हाळी' के [illegible] ।

उ०—१ [illegible] हाळीपणौ, सील संतोष की रासि [illegible] । [illegible] मांगरा, निरत की नीव सूं [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible]—काने 'हा' दोनों के बड़ा मूं निरळै जको [illegible] री बात सुणाय जावै । नीं सुणावै जको [illegible] हाळीपौ करै ।—फुलवाड़ी

२ हाळी के कार्य का [illegible] या पारिश्रमिक ।

हाळीबाळी-स. पु.—[illegible] ।

उ०—१ आदमी पर आदमी, बुलावै पर बुलावौ, न्हाना-ल्होड़ा [illegible] करै । पण दोढ़ी में पाव नीं राखै । हाळी-बाळदी [illegible] ।—दसदोख

उ०—२ हाळीबाळदी, रथ भर बंदयां नै [illegible] ल्यासी ।

—दसदोख

हाळीबीज-सं. स्त्री.—वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया । इस दिन [illegible] हल जोतते हैं, बहनें पाथेय ले जाती हैं । जागीरदार [illegible] किसानों को भोजन करवाता है ।

उ०—[illegible] निरखै धणियां हेली, हाळीबीज री हळोतियौ ।

—चेतमांनखौ

हाळेड़, हाळेड़-वि.—१ जो किसी स्थान पर जाने या किसी वस्तु को [illegible] का आदी हो गया हो, आदी । (पशु)

२ [illegible], बंधन रहित ।

स. पु.—वह [illegible] पशु जो किसी स्थान पर जाने या स्थान विशेष का कोई पदार्थ-विशेष खाने का आदी हो और बंधन से [illegible] ही सीधा वहीं जाता हो ।

हाळेवौ—देखो 'हाळौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हाळेवौ, सेत निरखै धणियां हेली । हाळी [illegible] री हळोतियौ ।—चेतमांनखौ

हाळोचाळौ-सं. पु. दो.—[illegible], शोरगुल, हलचल ।

उ०—[illegible] लागी गहमई । हैठे हाळो-[illegible] रहमई ।—दसदेव

हाळोर—देखो 'हाळार' (रू. भे.)

उ०—[illegible] छोडनै छै । सु किण भांत [illegible] हाळोर

गा छै ।—रा. सा. सं.

हालोहळ, हालोहाल-सं. पु.—१ शोरगुल ।

उ०—१ नोबतूं के निहाव वीरारस वाजै । जिस वखत जळाबोळ हालोहळ सें फौज हल्ली । नाळू के निहाव सेती धरती धरसली ।

—सू. प्र.

उ०—२ हुई चाल हळवळ, हम तम हालोहळ । धरावां नाळि उपाडि, चोटां मूं नगारा घाडि ।—गु. रू. बं.

उ०—३ सिहमल सिळकिया करमट कूदिया । कटकां हुई ज हालोहाल ।—ग्रमरसिंह राठौड़ री बात

२ देखो 'हळाहळ' (रू. भे.)

हालौ-सं. पु.—१ चलने का संकेत, हाथ का इशारा ।

२ चलने या ग्राचरण-व्यवहार करने की क्रिया या भाव ।

३ भाटी वंश की 'हाला' शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ रायधणां विचै हालां रै वर्षु पांच दस गांव इधकेरा था । दस मांणसां री जोड़ इधकी थी । भींव हमीरोत लाखड़ी री साहबी ली, तरै हालै जांणियो, भींव ठाकुराई रो धणी हुवो तो म्हे कांईक ठोड़ ग्रोटहां तो रूड़ा ।—नैणसी

उ०—२ हाला ग्ररु भाला जोड़ हाथ, 'माला' हर ग्रागळ नाय माथ । जत कोळी काढी पुर प्रजाळ, ग्रालेट रमंतां कीध ग्राळ ।

—वि. सं.

हाळौ, हालौ-प्रत्यय—वाला ।

उ०—१ सावळ कावळ करण हाळौ तौ मालक है, पर राजी रै चेड़ै नै काढण री तजवीज करस्यूं ।—दसदोख

उ०—२ घर हाळा धणी ही समभावै, पण सिर मैं गूंग चढायोड़ी, मुंबाळी माती फिरै ।—दसदोख

हालौचळ—देखो 'हलचल' (रू. भे.)

हालोहल, हालोहाल,-सं. स्त्री.—हलचल ।

उ०—डेरै हालोहळ हुई, हुग्रा सचाळां सत्य । ग्राज विहांणै रट्ठवड़, करिसी को भारत्थ ।—गु. रू. बं.

हाल्ट-सं. पु. [ग्रं.] १ रुकने की क्रिया या भाव, रुकाव ।

२ सेना के किसी दल को या ग्रन्य किसी को सहसा रुकने के लिये दिया जाने वाला ग्रादेश ।

हाल्यौ-मोल्यौ-वि.—तुच्छ, ग्रोछा ।

उ०—हाल्या-मोल्यां सूं काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार कांमदारां मूं कांम नहीं रे, मैं तो जाब करूं दरबार ।—मीरां

हाव-सं. पु [सं.] १ संयोग शृंगार में नायिका की वे चेष्टाएं जिनके द्वारा वह नायक को ग्राकर्षित करती है, नाज, नखरा ।

उ०—नव यौवन निज सुंदरी, मन्मथ ग्रालि ग्रकत्थ । हाव भाव हुई ग्रथा, चढी नपुंमक-हत्थ ।—मा. कां. प्र.

२ साहित्य में होने वाले ग्यारह हाव, यथा—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टयित, कुट्टमित, बिब्बोक, विहृत, ललित ग्रौर हेला ।

३ प्रेमालाप।

४ बुलावा, पुकार।

हावउ-क्रि. वि.—१ ऐसे, इसी तरह।

उ०—नीरि निरखिय नीरज, नीरज हावउं केमु। टालइं ए केलीहर दीहर खल जिम खेमु।—जयसेखर सूरि

२ जैसे, जिस तरह।

हावनगह-सं. पु. [फा.] पारसियों के अनुसार पौ फटने से लेकर दोपहर तक का समय जिसमें वे पहली बार नमाज पढते हैं।

हावभाव-सं. पु. यौ. [सं.] १ प्रेमिका की वे श्रृंगारिक चेष्टाऐं जिनके द्वारा प्रेमी को आकर्षित करती है, नाज, नखरा।

उ०—१ पण हे अंतरजांमी, थूं म्हारी इत्ती करड़ी परख क्यूं ली। जिण नैं धुरकार मेड़ी सूं बारे काढियो, उणनैं ई हावभाव सूं पाछौ रिझावणो है।—फुलवाड़ी

उ०—२ बूबना आप बादसाह सलांमत नूं अमल-पांणी कराय, हावभाव बताय नै बस करिया।—जलाल बूबना री बात

उ०—३ बचन बिलास बिनोद रस, हावभाव रति हास। प्रेम प्रीति संभोग रस, कै सिणगार आवास।—ढो. मा.

उ०—४ हावभाव लावै मंद हासा, त्रेवट आट करंत तमासा। सोभा रूप गांन व्रत सोहै, महीप किसूं इंद्र मन मोहै।—सू. प्र.

२ नृत्य की मुद्राऐं, चटक-मटक।

उ०—१ अमरावती माही दैत्य दमनी इंद्र कनै अखाड़ौ नाचै छै। गावै छै। हावभाव ख्याल करै छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ गायणी व्रत संगीत, रंग करत उखस रीत। करि हावभाव अनेक कटाच्छ मनमथ केक।—सू. प्र.

३ प्रभाव।

उ०—या तैं हीरां के सरीर ऊपर सूरज रूपी जोवन आयौ छै। हावभाव दरसायौ छै।—बगसीरांम प्रोहित री वात

४ संकेत, भाव।

उ०—गूंगी रै धणी खवासजी सूं भेटका व्हिया तौ ई वै नीं एक दूजा नै बतळायौ अर नीं सैंध-पिछांण ई काढी। सुभट पिछांण लिया तौ ई कीं हावभाव नीं जतळायौ।—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणा, दिखाणा।

रू. भे.—हाइभाई, हाउभाउ।

हावर-सं. पु.—एक प्रकार का वृक्ष जो राजस्थान, मध्यप्रदेश, तथा मद्रास में प्रचुर मात्रा में होता है।

हावै-वि.—१ भयभीत, स्तंभित।

उ०—चली फौज चावै, हुवौ लोक हावै। अठी ऐ अछाया, उठी खेंप आया।—रा. रू.

२ हर्षित, प्रसन्न।

उ०—पूघरणां कोई पार न पावै, हारीया असुर हुआ सुर हावै। बनौ द्रौपदी तणौ वधावै, गुण जेरा नारायण गावै।

—सिवदांनजी बारहट

३ आश्चर्यान्वित, चकित।

उ०—भड़ां बाधि सोभा सुरां हूंत भाजैं, रहे इंद हावै जिसौ बींद राजै। अनेकं अनोपै गजै रूप ऐसौ, करै एक ऐरापती दाप कैसौ।

—रा. रू.

४ किंकर्त्तव्य विमूढ, हतप्रभ।

उ०—हुवौ सोच आसुरां, हुवौ मद मोच दिलेसर। हुवा देस भैचक्क, हुवा अवनेस भयंकर। हावै हुए जिहांन, हुए सांमांन दुरंगां। सादर गढ साहबा हुवौ आदर अण-भंगां।—रा. रू.

हावौ-सं. पु.—१ भय, आतंक।

उ०—हुवै सतै होमतां हुए देखत्त जग हावौ।—भगवांन रतनू

२ आश्चर्य, अचंभा।

हास-सं. पु. [सं. हासः] १ हंसने की क्रिया या भाव।

२ हंसी, मुस्कान।

उ०—१ सखियां रै साथ इसी सोवै, ज्यूं चिरम्यां मैं मोती अनूप। होठां पर हास इसौ मोहै, ज्यूं तारा री जोती सरूप।—सकुंतला

उ०—२ फिरि जिनुका जसका प्रकास मनुं हंसका सा विलास। किधुं हर जू का हास, किधुं सरद पुंन्युं का सा उजास।

—रा. सा. सं.

उ०—३ सुंदर भाळ विसाळ, अलक सम माळ अनोपम। हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम।—रा. रू.

उ०—४ अधुरां डसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवंत। सौ संध्या सूं चंद्रिका, फैली जांण फबंत।—बां. दा.

३ विनोद, मजाक, ठिठोली, दिल्लगी, व्यंग, मसखरी।

उ०—१ फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास विणोद कीजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ वाहन विसी आपणि सांचरि सब आकास। इंद्र केहि 'ठाला पडि अप्सरा करसि हास।—नळाख्यांन

४ हर्ष, खुशी, उल्लास।

उ०—१ नेत्रों मैं हास की लहर दरसावै, मुख राग की सोभा कमळ कूं लजावै।—रा. रू.

उ०—२ नंदिखेण विहरण गयउ, गणिका कीधुं हास हो। भ्रस्टि करी सोनातणी, मइं तसु पूरी आस हो।—स. कु.

५ निंदा, अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा, जग हंसाई।

उ०—मैं पग छंडूं किस वजै, हुय हास हमारी। तेग बंधी मैं तखत सैं, काची नह धारी।—सू. प्र.

६ उपहास, खिल्ली, हंसी।

७ साहित्य में नौ प्रकार के रसों में से एक।

वि.—श्वेत। * (डिं. को.)

हासउ—देखो 'हांसौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हासक हींसै [illegible] विला- [illegible] —[illegible]

हासक-सं. पु. [सं.] १ हंसी-मजाक, विनोद।

२ मसखरा, विनोदी व्यक्ति।

३ देखो 'हास'।

उ०—[illegible] रण रहस हासक वीर रजै।

—रा. रू.

हासकारी-वि. [सं. ह्रास+कारक] १ ह्रास करने वाला, क्षीण करने वाला, कम करने वाला।

उ०—[illegible] को हासकारी चिंता को विनासकारी। तितिक्षा को [illegible] अवताई को।—ऊ. का.

[सं. हास्य+कारक] २ मजाक करने वाला, हंसाने वाला, विनोदी।

३ हंसने योग्य, हास्यास्पद।

हासक्रीडा-सं. स्त्री. [सं. हास्य+क्रीड़ा] मजाक, दिल्लगी, हंसी।

हासणो, हासबो—देखो 'हंसणो, हंसबो' (रू. भे.)

हासविलास-सं. पु. यौ.—हंसी-मजाक, ठिठोली।

हासम-सं. पु. [अ. हाशिम] १ मुहम्मद साहब के वंशज, मुसलमान।

२ रोटी बनाने वाला, नानबाई।

उ०—[illegible] कूं आंणि जगावौ, फरहा को असवारी। हासम [illegible] गोसया, फिर [illegible] मुरदारी।—गोकलजी

३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)

हासरस-सं. पु. [सं. हास्य+रस] साहित्य में नौ रसों में से एक रस। यह शृंगार रस से उत्पन्न होता है और शुभ माना जाता है। इसका स्थाई भाव 'हास्य' होता है। यह शृंगार, वीर और अद्भुत रसों का पोषक माना जाता है।

उ०—[illegible] वीररस किया, रौद्र रौद्ररस किया। अपछरा [illegible] रस किया। नारद हासरस किया।—दर्पनिका

रू. भे.—हासारस।

हासल—देखो 'हासिल' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] हासल [illegible] न देवै। [illegible] माफ [illegible] (किरो) [illegible] नहीं देवै।—वि. सं. सा.

उ०—२ [illegible] ३१००) गांवां रो हासल। [illegible] गांवै लागै [illegible] ६० तथा ७० छै। [illegible] हुवै ५ सौ, मण रो [illegible] —नैणसी

उ०—३ बरस [illegible] हासल [illegible] रो आधो-आध [illegible]।—नैणसी

हासलीक-वि.—१ हासिल का, हासल सम्बन्धी।

उ०—१ [illegible] हासलीक। [illegible], खटवांण नूं लागै।

—नैणसी

२ [illegible] के रूप में प्राप्त होने वाला।

उ०—परगनै मांहे इतरा गांवां सेवज गेहूं हासलीक गांवां हुवै।

—नैणसी

३ हासिल देने वाला।

उ०—कसबै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक बरसाळु जुपै छै।

—सोजत रा मंडळ री वात

हासविलास-सं. पु. यौ.—आमोद-प्रमोद, हंसी-मजाक, मनो-विनोद।

हासा—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—हरीया संगति साध की, हासा खेल न जांनि। अपना सीस उतारिकै, धरै पगां तलि आंनि।—अनुभववांणी

हासारस—देखो 'हासरस' (रू. भे.)

उ०—आद सगत रीझीया, सोण किधा तर प्याला, रुद्र रीझीयां ऊवर, पहरी रुंड माळा। रिख नारद रीझीया, जिकां हासारस पाया, हूर अछ रीझीया, महासूरा वर पाया।—अरजुनजी बारहठ

हासियो-सं. पु.—१ फैली हुई वस्तु का किनारा, गोट, मगजी।

२ लेखन के समय कागज के दांये-बांये छोड़ा जाने वाला स्थान।

३ उक्त छोड़े हुए स्थान में लिखी जाने वाली टिप्पणी।

हासिल-सं. पु. [अ.] १ जागीरदार, जमींदारों अथवा राजाओं द्वारा किसानों से लिया जाने वाला, कृषि उपज का वह निश्चित भाग, जो राज्य कर के रूप में वसूल किया जाता था, राजस्व।

उ०—१ कह्यो म्हांनुं वास करण नुं २४ ठांम द्यो। म्हें थांहरी चाकरी करिस्यां नै हासिल ही देस्यां।—देवजी बगड़ावतां री वात

उ०—२ सोई निपज्या साध, हरीया हासिल नांव को। दूजा दाध वळाध, एकै हासिल बाहिरो।—अनुभववांणी

२ जमीन की उपज से होने वाली आय।

३ उपज, पैदावार।

४ लाभ, जमा, फायदा।

५ लगान, कर।

६ नतीजा, परिणाम।

७ गणित में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बचता हो।

वि.—१ प्राप्त, उपलब्ध।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद। दीदार अर वाहै, आंमद मौजूदे मोजूद।—दादूवांणी

२ वसूल किया हुआ।

रू. भे.—हांसल, हांसिल, हासल।

हासी—देखो 'हंसी' (रू. भे.)

उ०—दिली को नांम सुण कमांन कूं खांचै। मोरै फुरमांण हासी त वाचै।—रा. रू.

हासू—देखो 'हांसो' (रू. भे.)

उ०—करी कूच जाई नई लेज्यो, माहम्राहि नूं पासूं। पातिसाह एहवूं मुखि बोलइ, वली रखे हुइ हासूं।—कां. दे. प्र.

हासो—देखो 'हांसी' (रू. भे.)

उ०—१ चडे खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासो। विढण एम वेखवे, तरण रथ थांमि तमासो।—सू. प्र.

उ०—२ काको सेखौजी कांम ग्राया, तरै राजा सूंडा री वैर पहरियौ थौ, सौ दसराही पिण दिन २० मैं ग्रायो नै बोल रै सलूक दीसै नहीं छै। भायां मैं हासो होसी। सूराचंद पिण ग्रळगी नै राजा सूं मांमलो करणो, तिण सूं फिकर घणी।

—जेतसी उदावत री बात

उ० —३ हायभाव लावै मंद हासा। त्रेवट ग्राट करंत तमासा।

—सू. प्र.

हास्य—वि. [सं. हास्यः] १ हंसने योग्य, उपहास करने योग्य।

उ०—सुणे हास्य विध कहै नरेसुर। गनिका ग्रेहं ग्रासण जोगेसुर। वनखंड गिर झंगर नह वसियौ, हुँ ग्रो देख कतूहळ हसियौ।

—सू. प्र.

२ देखो 'हास' (रू. भे.)

उ०—१ जुरें समीप दीपसो, प्रदीप जोवनी नहीं। मयंक हास्य ग्रंक मैं निसंक सोवनी नहीं।—ऊ. का.

उ०—२ रुखमणीजी का योवन ग्राया ग्रणंद प्रकट हुग्रौ। इहां तौ चंद्रमा का उदौ। रुखमणीजी कौ मद हास्य छै। सोई चंद्रमा कौ प्रकास भयौ।—वेलि टी.

हास्यकथा—सं. स्त्री. [सं.] हंसी की बात, मनोरंजक कहानी।

हास्यकर—वि. [सं.] १ हंसी ग्राने लायक, हास्यास्पद।

२ हंसाने वाला।

हाहंत—ग्रव्य.—ग्रत्यन्त शोक सूचक शब्द।

हाहा—सं. स्त्री. [ग्रनु.] १ हंसी की ग्रावाज।

उ० – सब धन कर स्वाहा, उठता ग्राहा, हाहा हास हसंदा है।

—ऊ. का.

२ रोने की ग्रावाज, रुदन।

उ०—सारी स्रस्टी मैं कुंडळ छळ करियौ। भारी हाहा रव भूमंडळ भरियौ। वसुधा काळी री ताळी तड़ वागी। भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड़ भागी।—ऊ. का.

३ त्राहि-त्राहि।

४ ग्रत्यन्त दुखी होने पर मुंह से निकलने वाला शब्द 'हा', ग्राह।

उ०—खारी रे ग्रा समै दूखारी, हाहा बड़ी हत्यारी रे।—ऊ. का.

हाहाकार—सं. पु.[सं.] बहुत बड़ी खलबली, होहल्ला, तहलका।

उ०—१ धना सेठ व सिंगार मंजरी नूं लेय गया। गांव मांहै हाहाकार हुवौ।—पंचदंडी री वारता

२ करुण पुकार, करुण विलाप, क्रंदन, हायग्राय, कुहराम, रुदन।

उ०—१ देखै तौ देही निरजीव देखी तद हाहाकार सबद हुग्रौ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ चखि पेखै साह धरा खगचाळो, जिद विना कळ नींद जुई। मचि दुंद ग्रपार दिलो पुर मंडळ, हाहाकार पुकार हुई।

—रा. रू.

रू. भे.—हंहकार, हहंकार, हहकार, हहाकार, हाकार।

ग्रल्पा;—हहकारौ, हाकारौ, हाहाकारौ।

हाहाकारौ—देखो 'हाहाकार' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ भाई मारि भूंडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी। सील राखण नारी सती, सील वडउ संसारो जी।—स. कु.

उ०—२ मुगल वसत लूंट घणी, मांम कोठार भंडारो रे। माथै कीधी मेदनी, हुग्रो गढ हाहाकारौ रे।—प. च. चौ.

हाहाळीठी—सं. स्त्री. [ग्रनु.] हंसी की ग्रावाज।

हाहाहूहू—सं. पु—१ व्यर्थ का हल्ला, शोर।

२ व्यर्थ की हंसी।

३ जोर की हंसी।

हाहुळि हाहुळी सं पु. [देशज.] १ उदार, दातार।

उ०—बाहुड़े फतै कर सधर ऊभांवरां, हाहुळी समंद वढ चीत 'जेता'-हरा। भुजां ग्रद लियां दत्त देण 'करण' भोज रा, महपतां मुदी 'खुसियाळ' दध मोज रा।—विसनदासजी बारहठ

२ योद्धा, सूरवीर।

उ०—ग्रारुहे गयद ग्रबदळ ग्रली, सैद महावळ सद्दळां। हाहुळि ग्रसंख मिळि हल्लिया, जांणक वावळ वद्दळां।—रा. रू.

हाहूं, हाहू—सं. पु [ग्रनु.] शोर, हल्ला, हलचल, चिल्लाहट।

उ०—१ ग्रर इहां री फौज डेरां ऊपर ग्राय खड़ी रही तद डेरां रै बाजार री लोग हाहू करण लागियौ।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

उ०—२ गोर मैं हाहू मच्योड़ी ही। एक कांनी मोट्यार लाठियां मैं मजबूत गाळा घाल नै घेरौ दियां ऊभा हा।—ग्रमरचूंनड़ी

हाहूबोर—देखो 'हाऊबोर' (रू. भे.)

हिं—देखो 'ही' (रू. भे.)

उ० – ग्रकळ तु हिंज कै कोई ग्रवर बोहोनांमी बुझव्व।—ह. र.

हिंग्रोड़ी—सं. स्त्री. [देशज] दो मोटी लकड़ियों के एक-एक सिरे को परस्पर फंसा कर बनाया हुग्रा एक प्रकार का कृषि उपकरण।

वि. वि.—करीब २-२ फुट की लम्बी दो लकड़ियों को एक सिरे से परस्पर फंसा दिया जाता है। इसकी शक्ल ग्रंग्रेजी के 'वी' (V) की तरह हो जाती है। किसान लोग नए बछड़ों (बैलों) को गाड़ी हल ग्रादि के लिये प्रशिक्षण देने में इस उपकरण को काम में लेते हैं। एक लट्ठे के एक सिरे में ग्राडी लकड़ी फंसा (बांध) कर उसे उक्त उपकरण में फंसा देते हैं ग्रौर दूसरे सिरे में जूग्रा बांध कर उससे बछड़ों को जोत कर दूर-दूर तक घुमाया जाता है। इस उपकरण का प्रयोग हल एवं कुछ भारी सामान (चारा ग्रादि) खेत में ले जाने हेतु भी करते हैं। इसके लिए हल को इसमें फंसा दिया जाता है ग्रौर हरिसा के सिरे पर जूग्रा बांधा जाता है। इसका

[illegible] हींगोळी, हींगोळी।

[illegible] [illegible] के मोटे डंडे का कैंचीनुमा बना बड़ई का [illegible] जिस पर मोटे लट्ठे रख कर आरे से चीरे जाते हैं।

[illegible] स्त्री—किसी कार्य के लिए या किसी बात के लिए लगा- [illegible]

[illegible] बालिकी बगुनी मार हिंगरड़ी [illegible] बाम्वा दें मेलो नीं भूको

—फुलवाड़ी

[illegible] स्त्री—सिंध और बलूचिस्तान की पहाड़ियों में स्थित [illegible] नदी पर दुर्गाजी की एक मूर्ति विशेष। [illegible] से उत्तर की ओर समुद्र के किनारे से [illegible]।

[illegible]—१ [illegible] चाहयां [illegible] चालिया। [illegible] हिंगळाज मय हालिया।—मे. म.

[illegible]—२ [illegible] हिंगळाज दरबार। माता नूं गुण [illegible] गुरार।—रा. रू.

[illegible]

[illegible]—सं. पु. [सं. [illegible]] [illegible]। (अमरत)

[illegible]—सं. पु.—वह [illegible] या पतंग जिसके पांवे लाल रंग [illegible] होते हैं।

[illegible]—[illegible] रे, आछी, [illegible] होय-होय [illegible]।—लो. गी.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—वि.—प्रचुर, पर्याप्त।

[illegible]-चूरण—सं. पु. [सं. [illegible]-चूर्ण] वैद्यक का प्रसिद्ध, अजीर्ण [illegible] चूर्ण, इसमें हींग की प्रधानता रहती है।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—सं. स्त्री—वह प्रदेश जहां 'हिंगळाज' देवी की मूर्ति स्थित है। [illegible]—देखो '[illegible]'।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—सं. पु.—[illegible] की एक आयुर्वेदिक औषधि विशेष।

(अमरत)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.) (डि. को.)

हिंगुल—सं. पु.—इंगुदी का वृक्ष। (शेखावाटी)

रू. भे.—हींगण, हिंगुणी।

हिंगुलियो—सं. स्त्री.—इंगुदी वृक्ष का फल। (शेखावाटी)

हिंगोड़ी—देखो 'हिंगोड़ी' (रू. भे.)

हिंगोट—सं. पु. [सं. हिंगुपत्र] मंझोले कद का एक झाड़दार, कंटीला जंगली वृक्ष। इसका तना सफेदी लिये हुए मटमैले रंग का होता है। फल मजबूत कपड़े धोने के काम आता है।

रू. भे.—हिंगोटी हिंगोटी, हिंगोरी, हिंगोटी।

हिंगोटियो—सं पु—'हिंगोट' वृक्ष का फल।

हिंगोटी—देखो 'हिंगोट' (रू. भे.)

हिंगोटी—देखो 'हिंगोट' (रू. भे.)

हिंगोरी—देखो 'हिंगोट' (रू. भे.)

हिंगोळ—देखो 'हिंगळाज' (रू. भे.)

उ०—१ मनंछा परब्रह्म हिंगोळ माता। समै सात पोरां रमै दीप माता।—मे. म.

उ०—२ देवी माइ हिंगोळ पच्छम्म माता, देवी वेद देवाधि वरदांन दाता।—देवि.

हिंगोळराय—देखो 'हिंगळाज'

हिंग्वादि-चूरण—सं. पु. [सं. हिंग्वादि चूर्ण] हींग के योग से बनने वाला एक प्रकार का चूर्ण जो आनाह, अर्श, संग्रहणी, गुल, उन्माद आदि रोगों में दिया जाता है।

हिंचणी, हिंचवौ—देखो 'हिंचणी, हिंचवौ' (रू. भे.)

उ०—'पदम' 'कुसळ' अवसांण सांपनै, हिंचियो खागां खड्ग हथ। कांमण सदा जिका कथ कहती, कीध जिका हिंव साच कथ।

—व. रा.

हिंचणहार, हारौ (हारी), हिंचणियौ—वि०।

हिंचिओड़ो, हिंचियोड़ो, हिंच्योड़ो—भू० का० कृ०।

हिंचीजणौ हिंचीजवौ—कर्म वा०।

हिंचियोड़ो—देखो 'हिंचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हिंचियोड़ी)

हिंचोळणी, हिंचोळवौ—देखो 'हिंचोळणी, हिंचोळवौ' (रू. भे.)

उ०—तनु तरणा सरखु हुवु, भूटइ रखे हिंचोळि। वनिता तुझनइ वानम्यइ, रहि रिदयांनी खोळि।—मा. कां. प्र.

हिंचोळियोड़ो—देखो 'हिंचोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हिंचोळियोड़ी)

हिंजड़ो—देखो 'हींजड़ो' (रू. भे.)

हिंजरणो, हिंजरवौ—क्रि. स.—१ वियोग, विरह या किसी की याद में निरन्तर रोना, करुण विलाप करना, सिर धुनना, झुरना।

२ वात्सल्य प्रेम में विलाप करना।

३ किसी की ओर टकटकी लगा कर देखना।

४ किसी की शरण या आश्रय लेना।

५ घोड़ों का हिनहिनाना ।
हिंजरणहार, हारौ (हारी), हिंजरणियौ—वि० ।
हिंजरिग्रोड़ौ, हिंजरियोड़ौ, हिंजरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हंजरणौ, हंजरबौ, हींजरणौ, हींजरबौ, हीजरणौ, हीजरबौ —रू० भे० ।

हिंजरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विरह में रोया हुआ, विलाप किया हुआ, सिर धुना हुआ, झुरा हुरा. २ वात्सल्य प्रेम में विलाप किया हुआ. ३ टक-टकी बांध कर देखा हुआ. ४ शरण या आश्रय लिया हुआ. ५ हिनहिनाया हुआ ।
(स्त्री. हिंजरियोड़ी)

हिंजीर-सं. स्त्री.—हाथी के पैर में बांधने की रस्सी या जंजीर ।

हिंडणौ, हिंडबौ—देखो 'हींडणौ, हींडबौ' (रू. भे.)
उ०—ग्रह पुहप तणौ तिणि पुहपति ग्रहणौ, पुहप ई ओढण पाथरणि । हरखि हिंडोळि पुहपमै हिंडति, सहि सहचरि पुहपां सरणि ।
—वेलि
हिंडणहार, हारौ (हारी), हिंडणियौ—वि० ।
हिंडिग्रोड़ौ, हिंडियोड़ौ, हिंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिंडीजणौ, हिंडीजबौ—भाव वा० ।

हिंडळणौ, हिंडळबौ—देखो 'हिंडुळणौ, हिंडुळबौ' (रू. भे.)

हिंडळाट—देखो 'हिंडोळाट' (रू. भे.)
उ०—कटहड़ा मंडप कराळ, झळि काठ वभकत झाळ । हिम हीर जळि हिंडळाट, अंगीर दमंग उपाट ।—सू. प्र.

हिंडळियोड़ौ—देखो 'हिंडुळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिंडळियोड़ी)

हिंडाणौ, हिंडाबौ—देखो 'हींडाणौ, हींडाबौ' (रू. भे.)
उ०—पहली हिंडा मेरी सात सहेली, मनै फेर हिंडायी रे ।
—लो. गी.
हिंडाणहार हारौ (हारी), हिंडाणियौ—वि० ।
हिंडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिंडाईजणौ, हिंडाईजबौ—कर्म वा० ।

हिंडायलौ-सं. पु.—कूऐ के अन्दर की ओर लटकती हुई लकड़ी को बांधने वाली रस्सी । (मालेरियौ)

हिंडायोड़ौ—देखो 'हींडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिंडायोड़ी)

हिंडी-सं. स्त्री. [सं.] दुर्गा का एक नाम ।

हिंडुक-सं. पु. [सं.] शिव का एक नाम ।

हिंडुळणौ, हिंडुळबौ-क्रि. अ.—१ हिलना, डुलना, झोले खाना, लटकना ।
उ०—१ भणौ भाळ सिंदूर ज्यौं ज्वाळ झाळा, मुद्राळी गळै हिंडुळै मुंडमाळा । भुजां भांमणां कंकणां सज्ज कीधां, लसै सूळ डैरू खड़-ग्खप्र लीधां ।—मे. म.
उ०—२ महासूर सुरति निळै ऊपटै 'सहसमल', मारकां तौ जिसां मिळै जुध मैंच । जड़ळका कटै बिचि गळै ठहरै जकै, परी वरमाळ जिम हिंडुळै पेच ।—सहसमल राठौड़ री गीत
२ झूला-झूलना ।
३ मस्त चाल में झूमते हुऐ चलना ।
४ मस्ती में घूमना ।
हिंडुळणहार, हारौ (हारी), हिंडुळणियौ—वि० ।
हिंडुळिग्रोड़ौ, हिंडुळियोड़ौ, हिंडुळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिंडुळीजणौ, हिंडुळीजबौ—भाव वा० ।
हिंडळणौ, हिंडळबौ—रू० भे० ।

हिंडुळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हिला हुआ, डुला हुआ, झोले खाया हुआ लटका हुआ. २ झूला झूला हुआ. ३ मस्त चाल से झूमते हुवे चला हुआ. ४ मस्ती में घूमा हुआ ।
(स्त्री. हिंडुळियोड़ी)

हिंडोरचौ—देखो 'हींडोरचौ' (रू. भे.)

हिंडोरौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)
उ०—१ अराहै सराहै घणू अव्वलोकै, रुघौ नाग लोकां तणौ राज लोकै । इसी भागणी कोख जै कूख जायो, हिंडोरौ घलायो घरै हुल्लरायो ।—नागदमण
उ०—२ आज आई छै सांवणियां री तीज मिजाजीड़ा, खेलण चालो चंपाबाग मैं । ऊंचै बिरछ हिंडोरौ बांध्यौ, झोटा दैदै झुलावै साथण मोरी ।—रसीलैराज री गीत

हिंडोल-सं. पु. [सं. हिन्दोल] १ गांधार स्वर की सन्तान एक राग विशेष ।
२ देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

हिंडोळणौ, हिंडोळबौ-क्रि. स. [सं. हिण्डनम्] १ किसी झूले या पालने में बैठाकर या सुलाकर झुलाना, झूले के हल्का सा धक्का देना, झूले के रस्सी बांधकर उस रस्सी को खींचना व छोड़ना ।
उ०—कांमण चली हिंडोळणै, गावै आल जंजाळ । 'जंभ' अचंभौ न गावही, जो वंचै जंभ काळ ।—वि. सं. सा.
२ हिलाना, झकझोरना ।
क्रि. अ.—३ रस्सी, माला, हार आदि का किसी आश्रय पर लटकना, लटकते हुऐ हिलना-डुलना, झूलना ।
उ०—पेर्यां नाग छोडिया जो, छोडौ मीरां कै महल, हिवड़ै हार हिंडोळिया, कोई तुम जांणौ रघुनाथ ।—मीरां
४ पानी की लहर या भांवर उठना ।
उ०—गिरह पखाळण, सर भरण नदी हिंडोळणहार । सूती सेजइ एकली, हइ हइ दइव म मारि ।—ढो. मा.
हिंडोळणहार, हारौ (हारी), हिंडोळणियौ—वि० ।
हिंडोळिग्रोड़ौ, हिंडोळियोड़ौ, हिंडोळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिंडोळीजणौ, हिंडोळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

हींडोळणौ, हींडोळबौ, हींडोलणौ, हिंडोलबौ, हींडोलणौ, हींडोलबौ —रू० भे०।

हिंडोळाट-सं. पु.—एक वस्त्र विशेष।

उ०—हिंडोळाट सुगाट हद, कंचन मणि को कांम। सेज सकोमळ सुं नरम, सुख री सब ठाम।—गज-उद्धार

रू. भे.—हिंडळाट, हींडोळाट।

हिंडोळि—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—पट पुहप तणी तिणि पहरणि प्रहणौ, पुहप ई ओढण पाय-रणि। हरणि हिंडोळि पुहप मैं हिंडति, महि महचरि पुहपां मरणि।
—वेलि

हिंडोळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी पालने या झूले मे झुलाया हुआ. २ लटका हुआ, लटकने हुए हिला हुआ, झूला हुआ. ३ मथा हुआ, लहरें उठा हुआ, भंवर पड़ा हुआ. ४ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ।

(स्त्री. हिंडोळियोड़ी)

हिंडोळी-सं. स्त्री. [सं.] संगीत की एक रागिनी।

हिंडोळौ-सं. पु. [सं. हिंडोलक:] १ किसी पेड़ की मोटी डाल के लम्बी-लम्बी रस्सियां बांध कर बनाया जाने वाला झूला, जो प्राय: श्रावण-मास में बांधा जाता है तथा जिस पर नव युवतियां व नव वधूएँ झूलती है।

उ०—१ बनखंड में हिंडोळौ मांड्यो, रेसम री पट डोर, ओ जी। राणी रैणादे हींडण बैठ्या, धरती न झेलै भार, ओ जी।
—लो. गी.

उ०—२ मेल्हइ वैराग, खेलइ फाग। अति सुविसाल आंबानो डाल। तिहां बांधहि हिंडोळा, रमइ नर भोळा।—रा. सा. सं.

उ०—३ सरिता री कळ कळ कांमणियां, रम्मै ही घणी किलोळां मैं। हो रूप निहारै चारु कमळ, झूलै हो लहर हिंडोळां मैं।
—सकुंतला

उ०—४ तद वलतो 'हरि' कुवियो रे सारचो 'नेम' नो हाथो। हिंडोला जिम हींचिया रे, गोप्यां तणो इज नाथो।—जयवांणी

२ पालना।

३ वह यणिक जो व्यवसाय न करके मांग कर खाता हो।

४ एक लोक गीत विशेष।

उ०—थोटड़िया रामाजी मारनै मांटां पाछी आंगी तै नोर तळै पाणी पाद दोड़ करास राईकानूं दूध पायो। उणसमै रा हिंडोळा—माडो मोर मो टंतरो, गाधी माइ रो माध। चइढि महारा नेतमी, राडो तरदम दाद। नठौ वटाड़ूं नीळी, लप धी अमारियो खाय। हाद वैतरै मानरै, मैं काटाड़वा जाद।—बा. दा. ख्यात

वि.—मूर्ख, अज्ञानी।

रू. भे.—हिंडाणौ, हिंडोळि, हींडोल, हींडोलणौ, हींडोळौ, हींडोल, हींडाळड़।

हिंडौ—देखो 'हींडौ' (रू. भे.)

उ०—सात सहेल्यां रै सागै आयो, वीरा गोद भतीजो ल्याई रे। पहलो हिंडो दे मेरी मात सहेली, मनै फेर हिंडायी रे।—लो. गी.

हिंताळ-सं. पु. [सं. हिंताल] एक प्रकार का जंगली खजूर तथा उसका पेड़।

हिंद-सं. पु. [फा.] भारत वर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।

उ०—१ ऐळची हिंद सैं इहां आय। जिस पास करी रद वदळ जाय।—सू. प्र.

उ०—२ सतरंज री रांमत, केसां रौ कळप, पंचाख्यांन ग्रंथ—ऐ नौसेरवां रै वकत तीन चीजां हिंद सूं ईरांन मैं गयी।
—बां. दा. ख्यात

रू. भे.—हींद।

हिंदग्रांण—देखो 'हिंदवाण' (रू. भे.)

हिंदगी सं. स्त्री.—हिन्दी भाषा। (अमरत)

हिंदव—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

हिंदवांण, हिंदवांणौ—देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

हिंदव—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—१ नेत-बंध बळा-नाथ दोय राहां 'छता' नंद, तुरकां हिंदवां वदै तूझ वाळी तेग।—भगतरांम हाडा रो गीत

उ०—२ जवन जोस वरजोर, हेक सम तोर हजारां। हीण तवै हिंदवां एक लेखवै अपारां।—रा. रू.

हिंदवसथांण, हिंदवसथांन—देखो 'हिंदुस्तांन' (रू. भे.)

उ०—फतै तेग जेहान फैलतां, घणा राजडंड रांन घणा। राजा हिंदवसथांन राखियो, तो भुजडंड 'गुमांन' तणा।
—नाथूरांम लाळस

हिंदवांण-सं. पु.—१ भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा थां खोळै, ओ हिंदवांण बचावौ ओळै। समहर मो दळ लियौ समेळा, 'भीम' सहत खूमांणा भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ कठठ्यो घमसांण प्रमांण किसा, दहल्यो हिंदवांण दिसा विदिसा। त्रिदसालय चाव चढ्या तरुणां, समचार थळी छत्रधार सुणां।—मे. म.

२ हिन्दू-समाज, हिन्दू, आर्य।

उ०—१ हिंदूपति 'परताप', पत राखी हिंदवांण री। सहे विपति संताप, सत्य सपथ कर आपणी।—महारांणा प्रताप री सोरठी

उ०—२ परीछत साहिजिहांन सुत कोपियो, तक्षक होमण गहण सह सुत तांणि। तपोधनि जहीं हिंदवांण चाढण प्रभति, जल रखपाळ जैसिंघ सुत जांणि।—राजा रांमसिंघ री गीत

उ०—३ जगा रा आगि वरजागि घनो जैतसी, खाग ताहरै खैर ह्व खट खुरसांण। मगज रा कोटि मेछांण मूढ मरै, ऊबरै राजि री पीठि हिंदवांण।—राव जैतसिंघ सेखावत रो गीत

३ हिन्दू-धर्म, हिन्दुत्व ।

उ०—अजमेर कूच कर आवियौ, आंण फेर धर ऊपरा । 'अवरंग' अंग छिवतै वरस, हुटै मग्ग हिंदवांण रा ।—रा. रू.

रू. भे.—हिंदआंण, हिंहवांण, हिंदवांणौ, हिंदवांणी, हिंदुआंण, हिंदुआंन, हिंदुवांण, हिंदूवांण, हींदवांण ।

हिंदवांणी-सं. स्त्री.—हिन्दू जाति की स्त्री, हिन्दू-स्त्री ।

उ०—तठै मुलतांन मैं पातसाह पातसाही करै । तैरै एक हुरंम तिका हिंदवांणी, नांम गंगा ।—देपाळ धंध री वात

वि.—१ हिन्दुओं का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ धांणी तोपां भुजांणी दाखियौ कासवांणी धाड़, फरंगां कीं मजौ चाखियौ सेलां कूट । मिळंतै पारका भीम ठांणी हिंदवांणी मौड़, खरंदे 'माधांणी' जंगां जांणी च्यार कूट ।

—जसा आढा रौ गीत

उ०—२ बकसी मात राव 'बीका' नै, धर थळवट रजधांणी । रिड़मल तणै मुरधरां राखी, है साखी हिंदवांणी ।—मे. म.

२ देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

उ०—बांधोड़ी कमरां ओ भाभीसा नहीं खोलौ, लाजै म्हारी जरणी रौ दूध ए । हिंदवांणी झगड़ै जूंजिया ।—लो. गी.

रू. भे.—हिंदुआंणी, हिंदुवांणी, हींदणी, हींदूआंणी ।

हिंदवांणौ-वि.—१ हिन्दुओं का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ थूं हिंदुसथांन मैं, जंगळधर देस न जांणै । जठै चवद्दह जणां, हुता राजा हिंदवांणै ।—मे. म.

उ०—२ एकादसी वरस हिंदवांणै, रोजा ईद भया तुरकांणै । करि करि ईद इग्यारधि रोजा, रांम रहीम न पाया खोजा ।

—अनुभववांणी

उ०—३ बडा घरां की छोरी कहावौ, नांचौ दै दै तारी । बर पायौ हिंदवांणौ सूरज, अब दिल मैं कहा धारी ।—मीरां

२ देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

उ०—१ राजा करण माधव बांभण नागर तियैरी पुत्री घर मांहै घाती । तिको जाय नै पातस्याह अलावदीन आगै पुकारियौ । पातसाही फौजां लायौ । पछै गुजरात तुरकै लियौ । पछै तुरकांणौ राज हुवौ । हिंदवांणौ मिटियौ ।—नैणसी

उ०—२ महिहूंत खप्परांणी मिटै, हिंदवांणौ मुरधर हुवौ । जोधांण 'अजौ' आयौ जदिन, दुजड़ पांण 'गजबंध' दुवौ ।—सू. प्र.

रू. भे.—हिंदुवांणौ ।

हिंदवाद-सं. पु.—हिन्दुस्तान, भारतवर्ष ।

उ०—दाखै दाद हिंदवाद राज रीज वनां भाखौ । लाखां वातां गौरा दळां रटक्कां लेवाड़ ।—राघोदास सांदू

हिंदवासूरज-सं. पु.—उदयपुर के महाराणाओं की उपाधि ।

हिंदवी-सं. स्त्री.—१ हिन्दू-स्त्री ।

२ देखो 'हिंदी' (रू. भे.)

उ०—नकल फुरमांण पड़गनां बावनां रो । नकल हिंदवी अखर मैं । जलालुदीन महमंद अकबर पातसाह गाजी ।—द. दा.

हिंदवेराय-सं. पु.—हिन्दू-राजा ।

हिंदसथांण, हिंदसथांन—देखो 'हिंदूस्तांन' (रू. भे.)

उ०—१ 'केहर' रूप 'करन्न' रौ, सब हिंदसथांणा । तेण प्रवाड़ा चितवां, खत्रवाट वखांणा ।—द. दा.

उ०—२ जसवंत विना जिहांन, पांन चळ जांणै पवनै । कना केतु साकंप, थया मन हिंदसथांनै ।—रा. रू.

हिंदी-सं. स्त्री.—१ भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है तथा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है ।

रू. भे.—हिंदवी ।

२ किसी की भद्द, दिल्लगी, मखौल, खिल्ली ।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, होणी ।

हिंदु—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—अनेक हिंदु आसुरे प्रकोप सेल पिंजरे । वहे सहेत वारयं, मुणंत मार मारयं ।—रा. रू.

हिंदुआंण—देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

हिंदुआंणी-सं. स्त्री.—१ हिन्दू-स्त्री ।

स. पु. [फा. हिंदुआन] २ तरबूज नामक एक देशी फल ।

३ देखो 'हिंदवांणी' (रू. भे.)

हिंदुआंन-सं. पु. [ब. व.] १ हिन्दू-गण, आर्य ।

उ०—गढ ऊपरि बातां गई रे हलहलियौ हिंदुआंन । गढपति झाल्यौ आपणौ जी, कीज्यै केहोपांन ।—प. च. चौ.

२ देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

हिंदुकर, हिंदुकार—देखो 'हिंदूकार' (रू. भे.)

२ हिन्दू-लोग, हिन्दू-जगत ।

हिंदुग-वि.—हिन्दुओं का, हिन्दू राजाओं द्वारा शासित ।

उ०—मिरजै इब्राहम इम कहियौ जु न करै खुदाय जु घर की पातिसाही खोवूं । पातिसाह गुजरात ल्यौ । हूं हिंदुग देस जाइ करि लेइसि ।—द. वि.

हिंदुपति, हिंदुपती—देखो 'हिंदूपति' (रू. भे.)

उ०—मैं अपणा क्रत करम सुं, असुर कुलै अवतारौ रे । पूरब पुण्य प्रमांण सुं, तूं हिंदुपति सारौ रे ।—प. च. चौ.

हिंदुपछात-सं. पु.—हिन्दुओं का राजा ।

हिंदुवांण—देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

उ०—हिंदुवांण खुरसांण पांणि ग्रह पद्धर आया । कर मोसूं घमसांण कुण निज मांण बचाया ।—रा. रू.

हिंदुवांणी—देखो 'हिंदवांणी' (रू. भे.)

हिंदुवांणौ—देखो 'हिंदवांणौ' (रू. भे.)

उ०—विमळ कतूहळ वधै, हुवौ उच्छव हिंदुवांणै । 'अवरंग' चित ओदकै, तेज घाटियौ तुरकांणै ।—सू. प्र.

[illegible] हिंदुस्तान [illegible] [फा. हिंदुस्तान] [illegible], फारसीगी, [illegible]

[illegible] हिंदुस्तान [illegible] ठौड़ ठौड़ थकां [illegible] जठै गवदूर [illegible] हिंदुस्तां ।—मे. म.

[illegible] हिंदुस्तान तर, [illegible] मनोहर । पाई पवरंग [illegible] ।—रा. रू.

[illegible] —१ [illegible] रो [illegible], [illegible] मनोहर रो, इस्तो [illegible] रो [illegible] रो, नगुराई गुजरात [illegible] हिंदुस्तान रो [illegible] रो ...।—रा. सा. सं.

[illegible] —[illegible], हिंदुस्तान, हिंदस्तान, हिंदुस्थान, हींदुस्तान, [illegible], हींदुस्तान, हींदुस्तान ।

हिंदुस्तानी–सं. पु.—१ भारत का नागरिक, भारत का निवासी, भारतीय ।

सं. स्त्री.—२ भारत की भाषा, हिन्दी भाषा ।

वि.—भारत का, भारत सम्बन्धी ।

हिंदुस्थान—देखो 'हिंदुस्तान' (रू. भे.)

हिंदू–सं. पु. [फा.] १ भारत में बसने वाले मनुष्यों का वह वर्ग जो वैदिक संस्कृति का अनुयायी हो, हिन्दू धर्म को मानने वाला भारतीय, [illegible] ।

उ०—१ [illegible] दल ऊपरै, ज्यां [illegible] जाळ । घर हिंदू सुर [illegible], [illegible] ।—रा. रू.

उ०—२ हिंदू [illegible]धिराज [illegible] राजावत [illegible] ऐरावत [illegible] री है ।—रा. सा. सं.

२ हिन्दू धर्म का अनुयायी ।

रू. भे.—हिंदव, हिंदव, हिंदु, हींदव, हींदु, हींदू, हैंदू ।

हिंदूकार–सं. पु.—हिन्दू होने की अवस्था या भाव, हिन्दुत्व ।

उ०—१ [illegible] हुवो हिंदूकार हरि हेम । राव राजा जांणै [illegible] ।—नैणसी

उ०—२ [illegible] हिंदूकार पर धर प्रति [illegible] । [illegible] [illegible] ।—घ. वचनिका

उ०—३ [illegible] बळ [illegible], [illegible] राजियां [illegible] [illegible] हिंदूकार [illegible], [illegible] सिर [illegible] ।

—राव भोज हाडा री गीत

रू. भे.—[illegible], हिंदूकार, हींदूकार ।

हिंदूकुश–सं. पु. [फा. हिंदूकुश] [illegible] में स्थित हुई अफगानिस्तान [illegible] में एक पर्वत श्रेणी ।

हिंदूधरम, हिंदूध्रम–सं. पु. [फा. हिन्दू+सं. धर्म] १ वह धार्मिक मत [illegible] वेद पुराण तथा उपनिषदों में किया गया है, [illegible] ।

उ०—१ [illegible] रहै [illegible], [illegible] पावन [illegible] ।

[illegible] मत्थर बार रागियौ, 'पातल' हिंदूधरम पणौ ।

—दुरसौ आढौ

उ०—२ राम धाम जसराज, गयौ हिंदूध्रम आगळ । मास सपत 'अजमाल', मात अभयास महाबळ ।—रा. रू.

२ हिन्दुओं के आचार-विचार, हिन्दुओं के सिद्धान्त ।

३ हिन्दुओं के रीति-रिवाज ।

हिंदूपण, हिंदूपणौ–सं. पु.—१ हिन्दू होने की अवस्था या भाव, हिन्दुत्व ।

२ हिन्दुओं का गौरव ।

हिंदूपत, हिंदूपति, हिंदूपती–सं. पु. [फा. हिन्दू+सं. पति] हिन्दुओं का राजा ।

उ०—हिंदूपत परताप, पत राखी हिंदवांण री । सहे विकट संताप, सत्य सपथ कर आपणी ।—दुरसौ आढौ

रू. भे.—हिंदुपत, हिंदुपति, हिंदुपती, हींदूपत, हींदूपति ।

हिंदूयांण—देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

उ०—हिंदूयांण रो अांण देसांण हूगौ, उणौ री अलंकार आकार ऊगौ । बुरज्जां नहूँ जांण लोकेस-वाका, अधी आभ रौ बीच भागै पताका ।—मे. म.

हिंदोरणौ, हिंदोरबौ–क्रि. स.—किसी तरल पदार्थ में हाथ डाल कर इधर उधर घुमाना, मथना ।

हिंदोरणहार, हारौ (हारी), हिंदोरणियौ —वि० ।

हिंदोरिओड़ौ, हिंदोरियोड़ौ, हिंदोरयोड़ौ —भू० का० कृ० ।

हिंदोरीजणौ, हिंदोरीजबौ —कर्म वा० ।

हिंदोरियोड़ौ–भू. का. कृ.—हाथ डाल कर इधर-उधर घुमाया हुआ, मथा हुआ । (तरल पदार्थ)

(स्त्री. हिंदोरियोड़ी)

हियालौ–सं. पु.—एक मारवाड़ी लोक गीत ।

हियोड़ौ—देखो 'हिओड़ौ' (रू. भे.)

हियौ—देखो 'हियौ' (रू. भे.)

उ०—मूळी री हियौ फूटण लागग्यौ, रळभळ्यौ होल उपड़्यौ चित्त भरम हुयग्यौ ।—दसदोख

हिव —१ देखो 'हिम' (रू. भे.)

२ देखो 'हव' (रू. भे.)

हिवणां, हिवणा–क्रि. वि.—अभी, तत्काल ।

उ०—पंचम भगवती सूत्र सुधम्म, पनर सहस सतसैआवन्न । ग्याता धरम कथा अंग छट्ठ, हिवणां पंच हजारै दिट्ठ ।—ध. व. ग्रं.

हिवळास–सं. पु.—धीरज, धैर्य, ढाढ़स ।

उ०—कंवरां माथै हाथ फेरज्यो, रांणी नै हिवळास । भाई-भतीजां नै मुजरा कहज्यो, माजी नै घणा सिलांम ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

हिवाए–क्रि. वि.—अभी, इसी समय, तत्काल ।

उ०—तठै देखै तौ अस्त्री छै। देख नै माथौ धूंणै छै। नै जांण्यौ परमेस्वर रा घर-मांहै घणी रीध छै, नै आ जौ म्हांरै बेर होयनै इण रै पेट रो कोई नग नीपजै तौ हूं प्रथ्वी मांहै अमर होवूं पिण हिंवाळू वतळाऊं तौ माथौ वाढै।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

हिंस—देखो 'हींस' (रू. भे.)

हिंसक-वि. [सं.] १ हिंसा करने वाला, मारने या वध करने वाला, हत्यारा।

उ०—चोर हिंसक नै कुसीलिया, यांरै तांइ ही साधां दियौ उपदेस। यांनै सावद्य रा निरवद्य किया, एहवौ छै हो जिन दया धरम रेस।—भि. द्र.

२ हानिकारक, अनिष्ट-कर।

३ दूसरों को कष्ट या पीड़ा पहुँचाने वाला।

सं. पु. [सं.] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन।

२ जंगली जानवर।

रू. भे.—हंसक।

हिंसा-सं. स्त्री. [सं.] १ किसी जीव को मारने की क्रिया या भाव, जीव हत्या, शिकार, वध, हत्या।

उ०—१ मारण मारण समझै मूरख, तारण लखै न ताई नै। रात दिवस हिंसा सूं राजी, कर दै मात कसाई नै।—ऊ. का.

उ०—२ संसार सुपहु करता ग्रह संग्रह, गिणि तिणि हीज पंचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि। —वेलि

उ०—३ इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्यां सेवायां अव्रत सींची तौ उण रै लेखै व्रत पिण वधती कहिणी।—भि. द्र.

२ अहिंसा का विपर्यय।

३ ऐसा कार्य, हरकत या प्रवृत्ति जिससे किसी अन्य को पीड़ा, कष्ट या आघात पहुंचे।

४ पीड़ा, कष्ट।

५ विनाश, नाश।

६ अनिष्ट, बुराई।

७ उत्पात, लूट-मार।

रू. भे.—हिंस्या।

हिंसा-करम-सं. पु. यौ. [सं. हिंसा+कर्म] १ ऐसे कार्य जो हिंसा की संज्ञा में आते हैं, हिंसात्मक कार्य।

२ वध, हत्या।

३ कष्ट, पीड़ा।

हिंसात्मक-वि. [सं.] जिसमें हिंसा निहित हो, हिंसायुक्त।

हिंसा-धरमी-वि. [सं. हिंसा+धर्मी] हिंसात्मक कार्यों में विश्वास करने वाला।

उ०—हिंसाधरमी कहै हिंस्या बिना धरम नहीं हुवै।—भि. द्र.

हिंसार, हिंसारव-सं. पु. [सं. हेषा+रव] घोड़ों की हिन-हिनाहट।

उ०—१ जसौल जबाव, सजत सताव। हिंसार हयंद गराज गयंद।—सु. प्र.

उ०—२ हक होय हिंसारव साद हुवै, धूंसा छक काहुळ भेर धुवै। —गो. रू.

हिंसावांन-वि.—हिंसात्मक भावना रखने वाला, हिंसक, हत्यारा।

उ०—चोरी करसी चोर, जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावांन, जवा रमसी जूवारी।—ऊ. का.

हिंस्या - देखो 'हिंसा' (रू. भे.)

उ०—१ आप नपौ चाहै भलौ, परकौ भलौ न चाय। जनहरीया ता दिस्ट मैं, हिंस्या उपजी आय।—अनुभववांणी

उ०—२ थे हिंस्या मैं धरम कहो सो थांरै लेखै कुसील मैं पिण धरम ठहरचौ।—भि. द्र.

हिंस्र-वि. [सं.] १ हिंसक, हिंसात्मक प्रवृत्ति वाला, हिंसालु।

२ खूंखार, खतरनाक, भयानक।

३ अनिष्टकर, घातक।

५ निष्ठुर।

५ उपद्रवी।

सं. पु. [सं.] १ हिंसक पशु या जानवर।

२ शिव।

३ भीम का एक नामान्तर।

हि-सं स्त्री. [सं.] १ एक प्राचीन विभक्ति।

उ०—सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूं लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मति हि विछोहउ होइ।—ढो. मा.

२ टिटहरी। (एका.)

सं. पु. [सं. हय] ३ अश्व, घोड़ा।

उ०—हारचा हि गज रथ वाहन दिवस दिवसि नित्य। नारि कहि करू, रायजी, कांइ धरम केरां कृत्य।—नळाख्यांन

४ खेद, अफसोस। (एका.)

५ सर्प, सांप। („)

६ मोर, मयूर। („)

७ हाथ, पाणि। („)

वि.—१ हरा। („)

२ देखो 'ही' (रू. भे.)

हिअ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हिअकांम—देखो 'हितकांम' (रू. भे.)

हिअय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हिआउ, हिआव-सं. पु. [सं. हृद] साहस, हिम्मत।

हिएसी, हिऐसी—देखो 'हितैसी' (रू. भे.) (जैन)

हिओ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

हिक-वि. [सं. एक] एक।

उ०—१ हिक हिकमत करे [illegible] बाजन्द, सो पड़िया बंका मुहड़ । [illegible] री [illegible] री, [illegible] रामें [illegible] ।—रा. रू.

उ०—२ [illegible] हिक [illegible] करै, भर [illegible] दुवाब कबाब [illegible] हिक [illegible], परमें नम मुंड [illegible] पणै ।

—मे. म.

हिकमत-सं. स्त्री. [अ. हिकमत] १ बुद्धि, अक्ल, बुद्धिमानी ।

उ०—१ [illegible] बिना [illegible], [illegible] । हिकमत हुनर [illegible], [illegible] न जाइ ।—दादूबांणी

उ०—२ [illegible] उमराव [illegible] में हिकमत इसी कांई पै [illegible] नूं नहीं [illegible] ।—नी. प्र.

२ उपाय, तरकीब, युक्ति ।

उ०—हिकमत करो हजार, [illegible] जाचो घणा । धीरज मिळसी [illegible], [illegible] हिमनिधा ।—प्रयात

३ विद्या, ज्ञान ।

उ०—[illegible] देस रा [illegible] सोमाळ होया विद्या वधै नै हिकमत [illegible] ।—नी. प्र.

४ कला, कारीगरी, कौशल ।

५ चतुराई, चालाकी ।

६ नीति, चाल ।

उ०—[illegible] दस्तूर अकल नै कायदा हिकमत रा सूं न [illegible] ।—नी. प्र.

७ यूनानी चिकित्सा ।

८ चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद ।

९ विज्ञान ।

रू. भे.—हिकमति, हिकमती, हिगमत, हीगमत ।

हिकमति, हिकमती-वि. [अ. हिक्मत] १ अपने कार्य में कुशल, चतुर ।

२ चालाक, [illegible] ।

३ ज्ञानवान, पंडित ।

४ बुद्धिमान, अक्लमंद, व्यवहार-कुशल ।

सं. पु.—१ वैद्य, हकीम ।

२ देखो हिकमत' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] मीठी ऊंडी नदी, आय मिल्यो [illegible] न्याय । हिकमति [illegible], कीजे कोड उपाय ।—प. च. चौ.

उ०—२ [illegible] हुंता तिके रे, तेह हुआ मति मंद । हिकमति [illegible], राय पड़्यो बहु फंद ।—प. च. चौ.

उ०—३ [illegible] मुख नै मिलै, चढि आयो [illegible] चंद्रप्रद्योतकि हिकमति करि [illegible], [illegible] नै उदय नै पोत कि ।—ध. व. ग्रं.

हिकमत-सं. पु.—१ दो या दो से अधिक व्यक्तियों के परस्पर सम्बन्ध की वह दशा जिसमें भावात्मक एकता होती है। अर्थात् जैसे किसी एक का मन वैसा सभी का मन, मिलकर रहने की अवस्था, प्रेम, मेल ।

उ०—साहरी जोध जोतां समंद, कठहड़ै चढण मलफै कमंद । किस-मांग मीर हिकमन्न कीद, दइवांण पांण जमदाढ दीद ।—वि. सं.

२ एक मत ।

वि.—एकाग्रचित्त, दत्तचित्त ।

हिकरंगो-वि.—१ जिसका रंग कभी बदलता नहीं हो, एक ही रंग में रहने वाला ।

२ जो अपने आचार विचार व सिद्धान्तों को कभी नहीं बदलता हो, अपने आचरण पर दृढ़ रहने वाला ।

उ०—रैहणा हिकरंगाह, केहणा नही कूड़ा कथन । चित ऊजळ चंगाह, भला ज कोई 'भेंरिया' ।—बळवंतसिंह

३ किसी रंग से मिलते हुऐ रंग का ।

४ समान अवस्था वाला ।

हिकरदन-सं. पु. [सं. एक+रदनः] गणेश, गजानन ।

उ०—रज गुलाल सोणित रंगी, वरवर तण पर वाय । रमैं फाग जण हिकरदन, सिंधुर इस्यो सुहाय ।—रेंवतसिंह भाटी

हिकोहिक-क्रि. वि.—१ सब के सब, सभी ।

उ०—परस्पर दंपति संपति पाय, हिकोहिक भेट करै हरखाय । हली विहुं ओड़ भली चंद्रहास, तणी तद वाग घणी सपतास ।

—मे. म.

२ एक-एक करके ।

उ०—रही कटि फोज गई अधरात, वेई तद तेण हियै मभवात । जड़ै समसेर हिकोहिक 'जैत', पड़ै रण जूझि अनेक पटैत ।

—मे. म.

३ परस्पर, आपस में ।

हिक्कलो-वि.—अकेलो ।

उ०—चलैं कुचार बार कौं सुचार मैं चलावनी, हलैं हसंति हिक्कली हरम्म को हलावनी ।—क. का.

हिगमत—देखो 'हिकमत' (रू. भे.)

उ०—चंद्रावती जूनै चंद्रगढ रहे. तठै इमरती नूं मेली। आगै खबर देण रो तो मिस नै हिगमत खेली ।—र. हमीर

हिगळुओ-वि.—'हिंगळाज' देवी के दर्शनार्थ यात्रा करने वाला ।

हिगंमिग-सं. पु.—हर्षोल्लास ।

उ०—थाळी रै झणझणाटा सूं हवा रा रेसा चोरीजण लागा । मासी री गवाही तो हिगंमिग लागी पण लागी । पण आखा गांव माथै जांणै किड़किड़ायनै बीजळी पड़ी ।—फुलवाड़ी

हिगोटो—देखो 'हिंगोट' (रू. भे.)

हिगोणियो—देखो 'हिंगोणियो' (रू. भे.)

हिड़कणो-सं. पु.—१ पागल कुत्ता ।

२ पागलपन के रोग वाला कोई पशु या मनुष्य ।

हिड़कणो, हिड़कबो-क्रि. स.—१ काट खाने के लिए टूट पड़ना, उचक कर आना ।

२ किसी पर अनावश्यक चेंटना, नाराज होना, लड़ाई करना।

३ पागल होना। (पशु)

हिड़कवा-सं. स्त्री.—१ पागल कुत्ते या गीदड़ आदि के काटने से होने वाली बीमारी जिसमें मनुष्य प्यास से व्याकुल रहता है पर पानी देख कर चिल्ला कर भागता है। इस बीमारी में मनुष्य जिंदा नहीं रह सकता।

२ पागलपन का रोग जो अधिकतर कुत्तों को होता है।

३ पागलपन का कार्य, शैतानी।

रू. भे.—हिड़काव, हिड़कियाबाव, हीड़कियाबाव।

हिड़कायौ—देखो 'हिड़कणौ' (रू. भे.)

हिड़काव—देखो 'हिड़कवा' (रू. भे.)

हिड़कियाबाव—देखो 'हिड़कवा' (रू. भे.)

हिड़कियौ, हिड़क्यौ-सं. पु.—१ पागलपन के रोग वाला कुत्ता। इस रोग के प्रभाव से कुत्ते के जबड़े खराब हो जाते हैं और लार टपकने लगती है। किसी को जबरदस्ती काटने की ताक में रहता है और यह जिसको काटता है उसे भी पागलपन का रोग हो जाता है।

उ०—१ सौ पचास पांवडा आगै निकळ्यां बाद ठाकर बोलतौ—डरजै मत ए बाइ। ए हिड़किया कुत्ता है तौ म्हूँ ई भाटी भीमौ हूं। फाड़ नै खाय जाऊं साळां नै समझ्या कै नी।—रातवासौ

उ०—२ आम्ही-साम्ही तरवारां री लड़ाई मैं तौ आप सिरदारां सूं सिंघ अर हिड़किया कुत्ता ई डरै। उठै म्हांरी अकल नीं भंवै।
—फुलवाड़ी

२ पागल।

उ०—दुसमणां लाभ दांनां दहण, खुली न कांनां खिड़कियां। नर परम धरम बूझै नहीं, हूको सूझै हिड़कियां।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—उठणौ, होणौ।

रू. भे.—हड़कायौ, हड़कियौ, हीड़कियौ।

हिड़चाळ, हिड़चाळौ-सं. पु. [सं. हुडुचाल] १ सिंह, शेर।

२ भिड़ने वाला या टक्कर लेने वाला, योद्धा।

उ०—१ चाळागारो हिड़चाळ करग करमाळ करारो।—रा. रू.

उ०—२ 'चांडा' रै वडचीत हुवौ रिणमल हिड़चाळौ—रा. रू.

हिड़दौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ अंदाता आपनैं कांई ठा' टाटचा रै हिड़दा री पीड़ कैड़ी व्है। म्हैं तौ जांणू कै टाट्या रा नांव बिचै कोढ्यौ हजार गुणौ वत्तौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ आध घड़ी रै उपरांत वेद टिचकारी देवतौ कैवण लागौ, देखौ म्हारौ रांम निकळियौ। एक खास बूंटी तौ भूल ई गियौ। बुढापा मैं हिड़दौ कांम ई नीं करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ डसै सगत मांणस नै धोखै रै जाळ मैं लेय'र मारतां दया नीं आई, पथर हिड़दा मैं हया नीं वापरी।—दसदोख

हिड़मच-सं. स्त्री. [अ. हिरमिजी] १ एक प्रकार की लाल मिट्टी विशेष।

२ उक्त मिट्टी को घोल कर बनाया हुआ रंग।

रू. भे.—हिरमच, हिरमची।

हिड़मची-वि.—उक्त मिट्टी के अनुरूप लाल रंग का।

सं. पु.—इसी रंग का घोड़ा।

हिचक-सं. स्त्री.—१ किसी कार्य को करते समय होने वाली झिझक, आगा-पीछा सोचने की प्रवृत्ति, संकोच, मन की रुकावट। किसी कार्य से पीछे हटने की क्रिया या भाव।

उ०—कूंजड़ौ मोळौ पड़तां कह्यौ—भलां, आप ई आ कांई बात करी, आपरै साथै धंधौ करणा मैं कैड़ी हिचक।—फुलवाड़ी

२ भय, डर।

३ अनिच्छा, उदासीनता।

४ लचक।

५ धक्का।

हिचकणौ, हिचकबौ-क्रि. स.—किसी कार्य को करते समय झिझकना, संकोच करना, आगा-पीछा सोचना।

२ अनिच्छा या उदासीनता दिखाना।

३ पीछे हटना, मुख मोड़ना।

उ०—वड़ी हिम्मत रौ मरद मेहनत रा भार सूं हिचकै नहीं।
—नो. प्र.

४ डरना, भय खाना।

५ लचकना।

६ हिलना डुलना।

हिचकणहार, हारौ (हारी), हिचकणियौ—वि०।

हिचकिओड़ौ, हिचकियोड़ौ, हिचक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हिचकीजणौ, हिचकीजबौ—कर्म वा०।

हचकणौ, हचकबौ, हचक्कणौ, हचक्कबौ, हिचकिचाणौ, हिचकिचाबौ—रू० भे०।

हिचकिचाणौ, हिचकिचाबौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकबौ' (रू. भे.)

हिचकिचाणहार, हारौ (हारी), हिचकिचाणियौ—वि०।

हिचकिचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हिचकिचाईजणौ, हिचकिचाईजबौ—भाव वा०।

हिचकिचाट, हिचकिचाहट—देखो 'हिचक'।

हिचकिचायोड़ौ—देखो 'हिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हिचकिचायोड़ी)

हिचकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी कार्य को करते हुए झिझका हुआ, संकोच किया हुआ, आगा-पीछा सोचा हुआ. २ अनिच्छा या उदासीनता दिखाया हुआ. ३ पीछे हटा हुआ, मुख मोड़ा हुआ. ४ डरा हुआ, भय खाया हुआ. ५ लचका हुआ. ६ हिला-डुला हुआ।

(स्त्री. हिचकियोड़ी)

हिचकी-सं. स्त्री. [सं. हिक्का] १ पेट में स्थित एक विशेष प्रकार की

[illegible] कंठ में आघात करती है तथा [illegible] होती है।

उ०—१ [illegible] उणरी पांवां रै [illegible] रात फिरण लागती, [illegible] मूरती पर मेवट हिचको माथ [illegible] लागो हो।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ [illegible] हिचकी [illegible] टाबर, तूटै नभ सूं तारो। वेचै रमणी [illegible] नहा रो—[illegible]

उ०—३ और जोगी दई भाग हिचको अड़े, सैन ही सैन समझाय [illegible]। [illegible] रहे जीव वांमै रहे, धोग सूं धको ऊत कांय [illegible]।—[illegible]

वि० वि०—[illegible] तरह इसमें भी वात गुल्म बनता है। वह मुंह से [illegible] समय कंठ में झटका देकर आवाज करता है।

२ एक प्रकार का वात रोग जिसमें उक्त क्रिया बार-बार होती है।

३ [illegible]।

उ०—१ [illegible] करती उणरी मा आयगी अर कस्सी रै हिचकी [illegible] नै ऊभी होगी।—रातवासो

उ०—२ [illegible] डोकरी हिचको रा काळा मरमा नै [illegible] कैवण लागी—थें दोनूं मिळ परा नै बूढी डोकरी सूं कोगतां तो नी करो [illegible]।—फुलवाड़ी

४ [illegible] सिसकने का शब्द।

५ [illegible] को उल्टा घूमने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकड़ी।

६ ऊंट का एक रोग जिसमें वह खाना पीना बंद कर देता है।

क्रि. प्र.—आवणी, चालणी, हालणी।

हिचको-सं. पु.—१ धक्का।

२ [illegible]।

३ कष्ट, पीड़ा, तकलीफ।

४ परिश्रम, जोर।

क्रि. प्र.—आवणो, खावणो, देणो, लागणो।

रू. भे.—हचको।

हिचड़ो-सं. पु.—बड़ी-बड़ी टांगों वाला कीड़ा जो मंदगति से चलता है। ([illegible])

हिचण-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई।

उ०—[illegible] जोधार, हिचण तोलै नभ हाथै। रण प्रारंभ [illegible], [illegible] कारन [illegible] माथै।—मे. म.

२ देखो 'हीचण' (रू. भे.)

रू. भे.—हचण, हिचावण, हिचि, हीचण।

हिचणो, हिचबो-क्रि. अ.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना।

उ०—१ [illegible] बाधक आंण दुबाह, हिचै रण कुंत मचै हयवाह। करै किरमाळ वहै तिण काळ, कटै भडपाळक भाळ कपाळ।
—रा. रू.

उ०—२ अंबा इण आदक ओर अनेक, हिचै रण हेकण हूं वहि हेक। सेना बण ओपम कोप कसांण, जाळै मझ पंडव संडव जांण।—मे. म.

उ०—३ समोभ्रम 'केहरि' पाथ समाथ, हिचै 'किरमाळ' झटां 'हरनाथ'। 'धनावत' 'अम्मर' कोप धियाग, खळां घट भूक करै झट खाग।—सू. प्र.

उ०—४ सझै खग झाट हणं खळ साथ, हिचै 'भगवांत' तणो 'हरनाथ'। तठै 'करनोत' लड़ै खग ताह, थटां मझि सांमत अंगद थाह।—सू. प्र.

२ टक्कर लेना, सामना करना, भिड़ना।

उ०—१ काळ हुकमि जिम काळ रा, किंकर कहरारै। होय लटां-चट्टां हिचै, विकटां वाकारै।—सू. प्र.

उ०—२ मचियै कांकळ मदत री, वीर न देखै वाट। एक अनेकां सूं हिचै, छाती वजर कपाट।—बां. दा.

३ युद्ध में वीर गति प्राप्त होना।

उ०—१ जगच्चख भाळत कोतुक जुद्ध, माळा कज संकर, ठाळत मुद्ध। विचै वह हूर कियां गळबांह। मियां रजपूत हिचै रण मांह।
—मे. म.

उ०—२ निहसै सळां 'नवल्ल' रो, अग्गै दळां दुझाळ। हिच पड़ियो रज रज हुवै, सांदू सूरजमाल।—रा. रू.

उ०—३ ईखतै अरक कंदळ अतुळ, गजां कमळ कीधा गरा। खळ प्रबळ मीर झड़िया खगं, हिचि पड़िया 'चांपा' हरा।
—रा. रू.

हिचणहार, हारो (हारी), हिचणियो—वि०।

हिचिओड़ो, हिचियोड़ो, हिच्योड़ो—भू० का० कृ०।

हिचीजणो, हिचीजबो—कर्म वा०।

हंचणो, हंचबो, हचणो, हचबो, हिंचणो, हिंचबो, हींचणो, हींचबो, हीचणो, हीचबो—रू० भे०।

हिचरमिचर-सं. पु. यौ.—१ किसी कार्य में आगा-पीछा सोचने की अवस्था या भाव, झिझक, हिचकिचाहट।

२ टालमटूल।

हिचावण—देखो 'हिचण' (रू. भे.)

उ०—जगणी किणी'न खाधी जावै, खारण खाटी खारो। हेवै दळां हिचावण हीदू, हेको तेड़ण हारो।—वीरभांण रतनू

हिचि—देखो 'हिचण' (रू. भे.)

हिचियोड़ो-भू. का. कृ.—१ युद्ध या लड़ाई किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, सामना किया हुआ, भिड़ा हुआ. ३ वीर गति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. हिचियोड़ी)

हिचोळणौ, हिचोळबौ–क्रि. स.—१ झूला झुलाना, झूले के धक्का देना, हिंडाना।
उ०—मातां धोतां ग्रमल झुलरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ, हीडोळ हिचोळी।—ध. व. ग्रं.
२ पकड़ कर हिलाना।
हिचोळणहार, हारौ (हारी), हिचोळणियौ—वि०।
हिचोळियोड़ौ, हिचोळिग्रोड़ौ, हिचोळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिचोळीजणौ, हिचोळीजबौ—कर्म वा०।
हचोळणौ, हचोळबौ, हिंचोळणौ, हिंचोळबौ—रू० भे०।
हिचोळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ झूला झूलाया हुग्रा, झूले में धक्का दिया हुग्रा. २ पकड़कर हिलाया हुग्रा।
(स्त्री. हिचोळियोड़ी)
हिचोळौ–सं. पु.—१ धक्का, झोंका।
२ झटका।
हिज—देखो 'हीज' (रू. भे.)
उ०—१ बांधव पूरब ग्ररध एण बिध, यम हिज जांण जगण उत्तरारध। काय छठै थळ यक लघु कीजै, दुसट विखम थळ जगण न दीजै।—र. ज. प्र.
उ०—२ ग्रम्हं विसटाळै ग्रावियौ, लगि ज्यां हिज लारै। कंटक सुणि ग्रंगद कहै, पित तुझ प्रकारै।—सू. प्र.
उ०—३ साधु पणौ लेइ चोखौ पालै तै मोटा पुरख। कइ कहै पांच मैं ग्रारा मैं साधु पणौं पूरौ पलै नहीं, इसौ हिज ग्रवारू निभै।—भि. द्र.
हिजरी–सं. स्त्री. [ग्र. हिज्री] १ मुहम्मद साहब के मदीने भागने की तारीख।
२ इस्लामी संवत्सर जो हजरत मुहम्मद की हिज्रत से ग्रारंभ होता है।
वि. वि.—इसका प्रारम्भ १५ जुलाई ६२२ ई. या श्रावण शुक्ला द्वितीया विक्रम संवत ६७९ से माना जाता है।
हिजारौ–सं. पु.—कमर तक की ऊंचाई तक दीवार में लगाया जाने वाला पत्थर।
हिजूर—देखो 'हुजूर' (रू. भे.)
उ०—हाथी तुरंग सबै लै हालौ। साह हिजूर सतावी चालौ।
—रा. रू.
हिज्जै–सं. पु. [ग्र. हिज्जः] किसी शब्द के वर्ण, वर्णों की ठीक ग्रवस्था व किसी शब्द के मात्रा सहित ग्रक्षर।
वि. वि.—किसी शब्द में ग्राने वाले वे वर्ण जो निर्धारित ढंग से रक्खे जाने पर ठीक ग्रर्थ व्यक्त करते हैं। इस में स्वर तथा व्यंजनों की ठीक योजना की जाती है।
हिठाकर–वि.—युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर।
हिडंब—देखो 'हिडिंब' (रू. भे.)
हिडंबा—देखो 'हिडिंबा' (रू. भे.)
उ०—चलण निहाइं जागिउं सहू पणमी बोलइ हिडंवा वहू। माइ माइ ऊठाडउ राउ ए रूठउ ग्रम्हारउ ताउ।—सालिभद्र सूरि
हिडंबौ–सं. स्त्री. [सं. हिडंवक] १ भैंस, महिषा। (डि. को.)
२ एक प्रकार का ग्राइना, कांच।
रू. भे.—हड़बौ, हडूंबौ।
४ देखो 'हिडिंबा' (रू. भे.)
हिडंबु—देखो 'हिडिंब' (रू. भे.)
उ०—विस खप्पर कीचका बकु हिडंबु कमीरु मारिउ। लहु वंधवि ग्ररजुनि दुन्नि वार तुह जीउ ऊगारिउ।—सालिभद्र सूरि
हिडायलौ–सं. पु.—कुए के ग्रन्दर की ग्रोर लटकती हुई लकड़ी (मालटियौ) को बांधने वाली रस्सी।
हिडिंब–सं. पु. [सं.] १ एक राक्षस जो पांडवों के वनवास के समय भीम द्वारा मारा गया था।
२ भैंसा, महिष।
रू. भे.—हिडंब, हिडंबु।
हिडिंबा–सं. स्त्री. [सं,] हिडिंब राक्षस की बहन ग्रौर भीम (पांडव) की पत्नी। इसका पुत्र घटोत्कच बड़ा वीर व पराक्रमी था।
रू. भे.—हिडंबा, हिडंबौ।
हिडोकै–क्रि. वि.—इस बार, ग्रब की।
उ०—इण च्यारां ही ग्राय ग्राप री माता नूं सवण कहीया, माता, सवण तौ हिडोकै वारूसा छै।—वरसै तिलोकसी भाटी री वात
हिण—देखो 'इण' (रू. भे.)
उ०—दादू हिण दरियाव, मांणिक मंझेई। टुब्बी डेई पांण मैं डिठो हंझेई।—दादूबांणी
हिणणाट, हिणणाहट—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)
उ०—भवती हिणणाट करै भंवरी।—पा. प्र.
हिणणौ, हिणबौ—देखो 'हणणौ, हणबौ' (रू. भे.)
उ०—चढियौ जस-कळस ग्रादि लग 'चूंडा', पै गज घाट गिळण गोपाळ। दांणव, देव, मांनव कोय दाखौ, पग सूं गंज हिणतौ प्रित माळ।—गोपाळदास चूंडावत रौ गीत
हिणणहार, हारौ (हारी), हिणणियौ—वि०।
हिणिग्रोड़ौ, हिणियोड़ौ, हिण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिणीजणौ, हिणीजबौ—कर्म वा०।
हिणहिण—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)
हिणहिणणौ, हिणहिणबौ–क्रि. स.—१ घोड़े का बोलना, हिनहिनाना।
२ जोर-जोर से हंसना।
हिणहिणणहार, हारौ (हारी), हिणहिणणियौ—वि०।
हिणहिणिग्रोड़ौ, हिणहिणियोड़ौ, हिणहिण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिणहिणीजणौ, हिणहिणीजबौ—कर्म वा०।
हणहणणौ, हणहणबौ, हनंकणौ, हनंकबौ—रू० भे०।

[illegible]—सं. स्त्री.—१ घोड़े के बोलने की आवाज।
[illegible] मामी री नवाड़ी हिणहिणाट करतो [illegible] —[illegible]

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], हिणहिणाट, हिणहिण।

[illegible], [illegible]—क्रि. घ.—१ घोड़े का बोलना, आवाज [illegible] हिणहिणाना।
२ [illegible]।

[illegible]—भू. का. कृ.—१ बोला हुआ, हींसा हुआ. २ हंसा हुआ।
(स्त्री. [illegible])

[illegible]—क्रि. वि. [सं. [illegible]] इस समय, इस वक्त।
उ०—[illegible] – जे कदाचित हूं हाथ पकड़ियो तो हूं तो [illegible] घर [illegible]। मनै मारि इयै नै परहो नं जासी। [illegible] हिणा तो चुप रह जावणो।
—पलक दरियाव री वात

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
(स्त्री. [illegible])

[illegible]—सं. स्त्री.—वह गाय या भैंस जो दूध न देती हो। (अमरत)

हित—सं. पु. [सं.] १ लाभ, फायदा, मुनाफा।
उ०—[illegible] जीव जनेती साथि। हरीया तोरण [illegible], हित [illegible] हाथि।—अनुभववांणी
२ भला, कल्याण, मंगल।
३ आनन्द, सुख।
उ०—[illegible] तन प्रभा नयण सुख लीधो। कनियां दहूं मिळै हित कीधो।—सू. प्र.
४ शुभ कार्य, उपयुक्त कार्य।
उ०—[illegible], गुरु चूक जांणि गुरु, नांम लियो दमघोख नर। [illegible] हित हुवै पुरोहित, वरै सुता सिसुपाळ वर।
—वेलि
५ उपकार, भलाई, हित।
६ शुभ कामना।
७ तंदुरस्ती, स्वस्थता।
८ देखो '[illegible]' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ देव [illegible] अंबिका दरसे, घणं भाव हित प्रीति घणी। [illegible] किधो [illegible], मन वंछित फळ [illegible]। वेलि
उ०—२ हित [illegible], [illegible] पहिली [illegible]।—डो. मा.
९ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
१० देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—१ हित [illegible] हुवो, दियो माह [illegible] को दुवो।
—रा. रू.
उ०—२ आलम हाथ रो रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक। दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक।—र. ज. प्र.
रू. भे.—हिति।

हितकर—वि. [सं.] १ हित करने वाला, हितकारी।
२ लाभप्रद, फायदेमंद, फलदायक।
३ अनुकूल, उपयोगी।
४ स्वास्थ्यप्रद, स्वास्थ्य के लिए लाभकारी।
५ माफिक पड़ने वाला।

हितकांम—सं. पु.—१ भलाई की इच्छा या भाव।
२ भलाई का कार्य।
वि.—१ भलाई करने वाला।
२ शुभेच्छु, हितेच्छु।
रू. भे.—हिप्रकांम, हितकांमी।

हितकांमी—देखो 'हितकांम' (रू. भे.)
उ०—'सीमंधर' युग मंदिर स्वांमी, बाहुजी सुबाहुजी हितकांमी।
—जयवांणी

हितकार, हितकारक, हितकारी—वि. [सं. हित—कार, कारक] १ हित करने वाला, भला करने वाला, उपकार करने वाला, उपकारी, शुभेच्छु।
उ०—१ मेरा सो हरिजन हितकारी, वांके पेम भगति अधिकारी। समझि बूझि ऐसें नर भाई, मनवा एक दोय फळदाई।
—अनुभववांणी
उ०—२ हितूआं हितकारी हुवै, वांको ही कोइ वेण। पारिख रतन परीखतां, निरखें वांकी नेण।—ध. व. ग्रं.
उ०—३ वळ गहलोत वडा व्रत धारी, कमंधां धणी तणा हितकारी। वीरमदे पत धरम सवायो, जोस भुजे दूणो जांणायो।
—रा. रू.
उ०—४ कहे दास सगरांम सुणो सज्जन हितकारी। कर सुकत भज रांम पनोती आई भारी।—सगरांमदास
२ लाभ पहुंचाने वाला, फलदायक।
३ गुणकारी, फायदेमंद।
४ कल्याणकारी।
उ०—उत्पतिया बुद्धि आगला, भिक्षु गुण भंडार। हितकारी द्रस्टंत तसु, सांभळतां सुखकार।—भि. द्र.
५ प्रेमी, स्नेही।
६ दया करने वाला, कृपालु।
७ आनन्ददायक, सुखप्रद।
रू. भे.—हितकारो, हितिकारी, हेतिकरण।

हितकारो—देखो 'हितकारी' (रू. भे.)
उ०—खात्र खणी, गांठी छोडी नै, ताला कूंची घर वाट वाहोजी। नाघो वस्तु नटूं नहीं, ए कराय दो हितकारो जी।—जयवांणी

हितचकोर-सं. पु. [सं. चकोर+हित] चंद्रमा, चांद ।

हितचिंतक-सं. पु. [सं.] शुभचिंतक, शुभेच्छु ।

हितचिंतन-सं. पु. [सं.] १ हित करने की इच्छा ।

२ हित व भलाई के लिये की जाने वाली कामना, शुभकामना ।

हितव-सं. पु.—चारण कवि ।

उ०—हितवां स बींटियां अळग न होवै, छाए ऊपरि घर छात । मणिधर तेथि जेथि मळयातर, 'पांचौ' जेथि तेथि कवि पात ।

—नांदण बारहट

हितवादी-वि.—हित की बात कहने वाला ।

हितवारज-सं. पु. [सं. वारज+हित] सूर्य, रवि ।

हितापन-वि.—जिससे अपना हित हो ।

उ०—छोड गुमांन कांन दै सजनी, सौत लगाय रही है घतियां । रांमलला सिखमांन हितापन हरि हिय लाय जुड़ावै छतियां ।

—रांमलला

हितारथ-क्रि. वि. [सं. हितार्थ] हित के लिये, भलाई हेतु, कल्याणार्थ ।

उ०—हरि को हितारथ ऐसो लखै न कोई । दादू जै पीव पावै अमर होई ।—दादूवांणी

सं. पु.—प्रेम, स्नेह ।

उ०—सुख सेभ रमता ढोलो मारवणी हितारथ सूं धापै न छै ।

—ढो. मा.

रू. भे.—हेतारथ, हैतारत, हैतारथ ।

हिति—१ देखो 'हित' (रू. भे.)

२ देखो 'हितू' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—अनंत देवकी ग्रभ उपना, हिति देवा देतां अति हांणि ।

—ह. नां. मा.

हितिकारी—देखो 'हितकारी' (रू. भे.)

उ०—हितिकारी हिरदै वसै, यु गुडीयन की डोरि । जनहरीया तन अंतरै, मन मिळग्यो ता ओरि ।—अनुभववांणी

हितिया—देखो 'हत्या' (रू. भे.)

हितियारौ—देखो 'हत्यारौ' (रू. भे.)

उ०—जीव मारया हितियारै रे, पाप लागा लारै रे ।—जयवांणी (स्त्री हितियारण, हितियारी)

हितु, हितू-वि.—१ हित करने वाला, भला करने वाला, हितेच्छु, शुभेच्छु, हितैषी ।

उ०—१ आपै मारै आप को, यहु जीव विचारा । साहिब राखण-हार है, सो हितू हमारा ।—दादूवांणी

उ०—२ लेख हितू राजी थयो, देख अकब्बर साह । दक्खी तांम 'दुरंग' नूं, सोच तमांम सलाह ।—रा. रू.

उ०—३ आगळ अपती वात उचारी, समै पाय निज अत सु विचारी । मुकनदास कर अरज मिळाया, लेख हितू अप पाय लगाया ।—रा. रू.

२ काम में आने वाला, उपयोगी ।

३ अपने पक्ष वाला, पक्षधर ।

उ०—विगत सुणी सारी विपर, आया हितू हजूर । अरि भमरांणी आवियो, दळां न वै था दूर ।—रा. रू.

४ दयालु, कृपालु, खैरख्वाह ।

५ प्रेमी प्रिय ।

सं. पु.—१ मित्र, दोस्त, प्रेमी ।

२ भाई, सहोदर ।

३ नातेदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी ।

रू. भे.—हित, हिति, हेतव, हेतु, हेतू ।

हितेच्छु-वि. [सं.] १ हित चाहने वाला, भला चाहने वाला, शुभ-चिन्तक ।

२ कृपालु, दयालु ।

३ सहयोगी ।

हितैसी—देखो 'हितेच्छु' ।

रू. भे.—हिएसी, हिऐसी ।

हितोपदेस-सं. पु. [सं. हितोपदेश] १ संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें व्यवहार-नीति की बहुत सी अच्छी बातें कहानियों के रूप में कही गई हैं ।

२ किसी का हित करने या भलाई करने के उद्देश्य से दिया जाने वाला उपदेश, अच्छी नसीहत ।

हित्या—देखो 'हत्या' (रू. भे.)

उ०—१ वील्हदेव अस कीन्ह विचारा, छोड देवो सब राज दवारा । इनकै हित्या कर सतसंगी, इह सब लोगन करै कुसंगी ।

—वील्होजी

उ०—२ तद आसकरण जांणियो, 'जो भाई हित्या लागी, अरु राज पण मिळियो नहीं ।' तिण सूं लाज खाय नै तीरथां गयो ।

—द. दा.

हित्यारौ—देखो 'हत्यारौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजकंवर नै देखतां ई दीवांणजी अर लक्खी विणजारा माथै तो जांणै वांण वैगो । दोनूं जणा आंधा होय न्हाटण लागा कै राजकंवर आदेस करचो—आं हित्यारां नै पकड़ो, जावण मत दो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ खांधी चवै तो ई उण हित्यारा नै दया नीं आवै । पूंछ मरोड़ मरोड़नै आंटा कर दिया —फुलवाड़ी

(स्त्री. हित्यारण, हित्यारी)

हिदायत-सं. स्त्री. [अ.] १ आदेश, हुक्म, निर्देश ।

२ सन्मार्ग, पथ-प्रदर्शन ।

३ गुरुमंत्र ।

४ चेतावनी ।

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] मांहि हूं पाट।
[illegible], [illegible] मवार्ट।
—[illegible] मं. मा.

[illegible] मोगी
[illegible] विधि [illegible]।—[illegible] मंच्छ

[illegible] [illegible], [illegible]।

[illegible] [सं. हि[illegible]] १ [illegible], [illegible], बचाव।

२ [illegible] जिसमें उस वस्तु की क्षति या [illegible], [illegible], [illegible] इन्तजाम।

[illegible] वोट री मायरी जेब में हिफाजत सूं [illegible]।—[illegible]

३ [illegible], देखभाल।

४ [illegible], [illegible]।

५ [illegible], [illegible], सावधानी।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] जांणै हंसी री अथाग समंदर [illegible] मारग [illegible]।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] हिचोळा खावतो सरवर देखनै वा उठै ढबगी। [illegible] ई [illegible] मनाई।—फुलवाड़ी

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]-सं. पु. [सं. [illegible]] १ बर्फ, पाला, तुषार।

उ०—[illegible] हिम [illegible] पचवावै, पुरण हुय चूरण मुख पावै।
—सू. प्र.

[सं. हिम:] २ ठंड, जाड़ा, सर्दी, शीत।

उ०—१ [illegible] पडणा कहै, आयो मिगसर मास। चहूं दिसा [illegible], [illegible] हिये विमास।—अग्यात

उ०—२ हिम [illegible] हिम [illegible] निसा [illegible], दिवस क्रिम गुण [illegible]। [illegible] जिम प्रति [illegible], सुख चकोर विसेखियै।
—रा. रू.

३ सर्दी का मौसम, शीतकाल, जाड़े की ऋतु।

४ [illegible] पर्वत।

उ०—[illegible] प्रकार विध, हिम [illegible] विहून।
—रां. रा.

५ [illegible], [illegible]।

६ [illegible]।

७ [illegible]।

८ [illegible]।

९ कपूर।

१० मक्खन।

११ श्रौषधि बनाने की एक प्रक्रिया विशेष जिसमें औषध को रात भर ठंडे पानी में भिगोकर सवेरे मल कर छान लिया जाता है।

१२ उक्त प्रकार से बनाई जाने वाली दवा, ठंडा क्वाथ।

वि. [सं. हिम] १ श्वेत, सफेद। *

२ शीतल, ठण्डा। *

३ देखो 'हेम' (रू. भे.)

उ०—१ सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सरै। भिड़ रांवण भंजै गढ हिम गंजै, अमरां रजे ग्रहम अरै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ ऊंचो गढ लागो आकास, हर भूल्यो जांण्यो कविलास। हर रांणी तब कीधो हास, हिम गढ चढीयो हेमाचळ पास।
—प. च. चौ.

रू. भे.—हिंव, हिंवं।

हिमउपल-सं. पु. [सं.] वर्षा की बूंदों के साथ कभी कभी पड़ने वाले बर्फ के छोटे छोटे खण्ड, श्रोला, हिम-खण्ड।

हिमकरण-सं. पु. [सं. हिमकण:] १ बर्फ का छोटा कण।

२ ओस की बूंद।

हिमकर, हिमकरि-सं. पु. [सं. हिमकर:] चंद्रमा, शशि।

उ०—१ है नभ जितै अहिमकर हिमकर, नरपुर अतै रहण री नीम। महत गुजस विसतार न मावै, भरत खंड मझ रांणा 'भीम'।
—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ नयण कंज सम निपट, सुभग आंणण हिमकर सम। जप सम 'ग्रीवह' जळद, तवत सम हीर डसण तिम।—र. ज. प्र.

उ०—३ गजरा नवग्रही प्रोंचिया प्रोंचे, वळै वळै विधि विधि वळित। हसत नखित्र वेधियो हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित।—वेलि

२ कपूर।

रू. भे.—हमकर।

हिमकिर, हिमकिरण-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा, शशि।

हिमखंड-सं. पु. [सं.] १ बर्फ का टुकड़ा।

२ हिमालय पर्वत।

हिमगर, हिमगिर—देखो 'हिमगिरि' (रू. भे.)

उ०—अत घागो जस ऊजळो, जेहल दिस दिस जोय। हिमकर तो घटवध हुवै, हिमगिर गळ जळ होय।—बां. दा.

हिमगिरसुता-सं. स्त्री. [सं. हिमगिरि+सुता] पार्वती, उमा।

हिमगिरि, हिमगिरी-सं. पु. [सं. हिमगिरि] हिमालय पर्वत।

उ०—यौवन ! जा रे पापीया, तूं हिमगिरि पारि। भूंडा ! तूझनइं नोग विसि, मवि बीजइ भरयारि।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हिमगर, हिमगिर।

वि.—श्वेत, सफेद। (डि. को.) *

हिमगु-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा, शशि।

हिमचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

हिमची—देखो 'हमची' (रू. भे.)

हिमजा-सं. स्त्री. [सं.] १ पार्वती, उमा।

२ गंगा नदी।

३ हरड़, हर्रे, हरितकि। (अ. मा; ह नां. मा.)

४ आंवा हल्दी का पौधा।

हिमत—देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)

हिमतण-सं. स्त्री.—वह स्त्री जो साहसी हो, निर्भीक हो।

हिमतभरियौ-वि.—१ साहसी, निर्भीक।

२ बहादुर, पराक्रमी।

रू. भे.—हिम्मतभरियौ।

हिमताळू-वि.—साहसी, हिम्मतवान।

उ०—मारग री अवळी वेळा मैं जे ईनक जिसा हिमताळू चलार नहीं हुवता तो आज ठिकांणै लागणो मुसकल हो।

—एक वीनणी दो वीन

हिमद्रजा-सं. स्त्री. [सं. हिम+अद्रि+जा] पार्वती, उमा।

उ०—रमै हिमद्रजा तुही अनेक रूपनी, अवै 'समुद्रजा' स्वरूप मद्र ऊपनी।—मे. म.

हिमप्रकास-सं. पु. [सं. हिमप्रकाश] १ शीतल प्रकाश।

२ चांदनी।

हिमभांन, हिमभांनु-सं. पु. [सं. हिमभानु] चन्द्रमा, शशि।

हिममयूख-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा, चांद।

हिमरके, हिमरकै-क्रि. वि.—इस बार, अब की।

उ०—तरै ईडर रै धणी कह्यौ—हिमरकै आंपै ही खेड़ां री वाधण करस्यां। पछै ऐ मेवाड़ आया।—नैणसी

हिमरस्मि-सं. पु. [सं. हिमरश्मि] चन्द्रमा, शशि।

हिमरा-सं. स्त्री.—तरफदारी, पक्षपात।

उ०—जीया जितै पूरी सारी पख पाळी अर हियाळी सूं राख्यी। हर वात मैं हिमरा चळ्या अर भीर बोल्या।—दसदोख

हिमरित, हिमरितु-सं. स्त्री. [सं. हिम+ऋतु] हेमन्त ऋतु।

उ०—सोळसै साक चववीस तास, मधि हिमरित वर अग्रण मास।

—सू. प्र.

रू. भे.—हिमरुत।

हिमरुचि-सं. पु. [सं.] चन्द्रमा, चांद।

हिमरुत—देखो 'हिमरितु' (रू. भे.)

उ०—यी वरखा रित बौळगी, वीती सरद अदूंद। हिमरुत आधी वीच त्यौं, फेर प्रगट्टयौ फंद।—रा. रू.

हिमवंत, हिमवत-वि.—१ हिम के समान, बर्फ जैसा।

२ शीतल, ठंडा।

सं. पु. [सं. हिमवत्] हिमालय।

रू. भे.—हैमवत।

हिमवंतपरवति-सं. पु. [सं. हिमवत्+पर्वत] हिमालय पर्वत।

उ०—एतला प्रदेस माहरी वास भूमि, पुण हिमवंत-परवति पद्म-द्रहि एक कोडि वीस लाख साधिक पद्मि परिखरिउ तिहा माहरउ वास।—व. स.

हिमवांन-सं. पु. [हिमवत्] १ हिमालय पर्वत।

२ चन्द्रमा।

वि.—१ जिसमें हिम हो, बर्फीला

२ ठंडा, शीतल।

हिमवार-सं. स्त्री.—हेमन्त ऋतु का समय, शीतकाल।

उ०—संमत मेक सपत्त, मिळै गुणसठो छमच्छर। सरप पार हिमवार, सकळ रित हूं रित सुंदर।—रा. रू.

हिमसैलजा-सं. स्त्री. [सं. हिमशैलजा] पार्वती, उमा।

हिमसुत-सं. पु. [सं.] चंद्रमा।

हिमहित-सं. पु.—चंद्रमा।

हिमांचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

उ०—नदी जु पूर वहती थी सु घटि होण लागी। अर हिमांचळ परवत्त का लिग वधण लागा। जैसें जोवन कै आयें नायिका की कटि खीण होय। त्यौं नदी खीण हुई।—वेलि टी.

हिमांणी, हिमांनी—देखो 'हेमांणी' (रू. भे.)

हिमांमदस्तौ—देखो 'हमांमदस्तौ' (रू. भे.)

हिमांसु हिमांसू, हिमांस्रु-सं. पु. [सं. हिमांशुः] १ चन्द्रमा।

उ०—क्रतध्वंसी विस्णू कमळ भव जिस्णू स्तुति करै। हिमांसू उस्णासू पदम-पद पांसू सिरधरै।—मे म.

२ कपूर।

३ रजत, रूपा, चांदी। (ह. नां. मा.)

रू भे.—हिमंस, हेमंसु, हेमंसू।

हिमाइयत—देखो 'हिमायत' (रू. भे.)

उ०—वहरांम नूं इणरी हिमाइयत पसंद आई। घोडौ तौ लीन्हौ नहीं आपरै घर पाछौ आयौ।—नी प्र.

हिमाकत-सं. स्त्री. [अ.] मूर्खता, बेवकूफी।

हिमाचळ-सं. पु. [सं. हिम+अचल] १ हिमालय पर्वत।

उ०—१ देख तपंती ताव सूं, मुरधर अख रै भांण। हियौ हिमाचळ अूभळ्यौ, बह चाल्यौ बरफांण।—लू

उ०—२ सबळ जळ सभिन्न सुगंध भेट सजि, डिगमिग पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूंत हिमाचळ, कांमदून हर प्रसन कर।—वेलि

२ शिव के श्वसुर का नाम जो हिमप्रदेश का शासक था, ... का पिता।

रू. भे.—[illegible], हीमाचळ, हेमाचळ, [illegible]
[illegible]।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible] [सं.] [illegible] पर्वत।

रू. भे.—[illegible]।

[illegible]—सं. स्त्री. [अ.] १ [illegible], [illegible], समर्थन।

[illegible]।

उ०—[illegible] नहीं होवै तौ सबळा निबळां नूं मार [illegible]।—[illegible]

३ [illegible]।

उ०—[illegible] रौ [illegible] इण भांत रौ तिको हिमायत जीव री [illegible] विचार [illegible] छै।—नी. प्र.

४ [illegible]।

उ०—[illegible] छै तौ तोनूं दस भरत री हिमायत [illegible]।—नी. प्र.

५ [illegible]।

रू. भे.—[illegible], [illegible], हिमायत।

हिमायती—वि.—१ हिमायत करने वाला।

उ०—[illegible] लगावणं जुटग्या। [illegible] रै हिमायत्यां नै गाळ भी ठोकणं लागग्या।
—दसदोख

२ [illegible], मददगार।

३ [illegible], समर्थक, तरफदारी करने वाला।

४ रक्षक, [illegible]।

५ मित्र, दोस्त।

रू. भे.—हीमायती।

हिमार—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible]—हिमार बात परगट करणी नहीं। हूं [illegible]। पछै [illegible] ऊपर जामा।—नैणसी

हिमाराति—सं. स्त्री. [सं. हिम+अराति] १ अग्नि, आग।

२ सूर्य, सूरज।

हिमारूं, हिमारू—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible]—[illegible] रावळजी देस [illegible] छै, जै हूं [illegible] तुरत [illegible] आवै। हूं [illegible]।—नैणसी

उ०—२ [illegible] बात छै। तरै जगचंद कह्यो—हूं [illegible]।—राय [illegible] री वात

हिमाळय, हिमालय, हिमाळिय, हिमाळे, हिमाळै, हिमाळो—सं. पु. [सं. हिमालय] भारत की उत्तरी सीमा पर फैला हुआ एक बहुत बड़ा पर्वत जिसकी [illegible] नामक चोटी विश्व की समस्त पर्वत [illegible] से ऊंची है।

उ०—१ सतवादी हरिचंद सै राजा, नीच घर नीर भरै। पांच पांडु घर कुंती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै।—मीरां

उ०—२ पोग भरै निस वासर पाळो, हुवा परहरै विलग हिमाळो। सेज ठरै एकण सियाळो, चढण विदेसां छोडो चाळो।
—अग्यात

रू. भे.—हीमाळइ, हीमालउ, हीमाळै, हीमाळो, हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय, हेमाळे, हेमाळै, हेमाळो, हैमाळै, हैमाळो।

हिमें, हिमे—देखो 'हमैं' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ गांव छै हिमें वास जीवण सांवळ रा नै हरदास राघोदास रा छै।—नैणसी

उ०—२ दुव विलास मझ येम हद आखै कविता अंग। जपूं हिमें मो मत जथा, सियवर कथा प्रसंग।—र. रू.

हिमेण—सं. पु.—प्रथम गुरु के सगण का नाम। (र. ज. प्र.)

हिमेस—सं. पु. [सं. हिमेश] १ हिमालय पर्वत।

२ देखो 'हमेस' (रू. भे.)

हिमैं, हिमै—देखो 'हमैं' (रू. भे.)

उ०—१ तरै डूंगर रावळ समरसी नै राखियो सु डूंगर भील मासर खंभ, हिमैं डूंगरपुर वसायो छै तठै रहता।—नैणसी

उ०—२ हिमैं दिन च्यार आडा घाल नै उमादे आपरा भरतार सौं कहियो थें जुवांन था तद मैं बोलणो बोलायो थो।
—पंचदंडी री वारता

हिम्मत—सं. स्त्री. [अ.] १ साहस, हौसला, उत्साह, जोश।

उ०—१ मूळी भूजी-बळै। पेमजी धूजै-ढळै। ओपरी अर उलाड़ी तावै नीं आवै। पेमजी दबग्यो, केणै री हिम्मत नहीं पड़ै। मूळी सिर चढगी।—दसदोख

उ०—२ ईरांण वतन हिम्मत अथाह, सिर विलंद तुज्ज मिरखा सिपाह। सांमहो न हालै ग्रह सार, भूम रो न झालै सेस भार।
—वि. सं.

२ बल, शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ भगड़ो अबकै जबरो चेत्यो, अलेलां चीणी कीड़ियां रै ज्यूं ग्रांपणी कांकड़ माथै चढनै आया है। आपणा जवांन हिम्मत अर बा'दरी सूं वांरै मुकाबलै मैं अड़ियोड़ा है।—अमर चूंनड़ी

उ०—२ मांमो-भांणेज दोन्यूं डील रा संतांन अर छाती रा वज्जर। काळजो इसो कै दोन्यूं मिळनै हजारां मिनखां रो सांमनो करण री हिम्मत राखै।—अमर चूंनड़ी

३ कठिन व दुस्साध्य कार्यों के लिये रखी जाने वाली मानसिक दृढ़ता।

उ०—म्हारी चिंता नै म्हूं सहन कर सकूं हूं, पण टाबरियां रा दुख नै सहन करणो म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है।
—अमर चूंनड़ी

रू. भे.—हिमत, हींमत, हीमत, हीमत्त।

हिम्मतभरियौ—देखो 'हिंगतभरियौ' (रू. भे.)
हिम्मति, हिम्मती—देखो 'हीमती' (रू. भे.)
उ०—वड विना क्रांमति न को वीरति, विड हुई मत जाय संपति।
हमें इण भति धरो हिम्मति, पुळी पर खिति रहौ नरपति।
—रा. रू.
हिय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
उ०—१ बारी बात वालाबकस बिए रै, हियै रै मांहि तकलीफ हूगी। जरां हूं याद पोहकरी जिम करी जद, पयादा हरी ज्यौं इंद्र पुगी।—मे. म.
उ०—२ साल्ह चलंतइ परठिया, आंगण बीखड़ियांह। सो मइं हियइ लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह।—ढो. मा.
हियड़लु, हियड़लौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ हियड़लुं राति नइ दिवस हीसै।—स. कु.
उ०—२ अरध मडित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हियड़ला बारि रे।—स. कु.
हियड़ौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ संदेसड़ै न जिवाय, जा नयणै दिन दीस। नेड़ो नीर न तिस हरै, जा हियड़ै नहीं पीस।—पंचदंडी री वारता
उ०—२ प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाभणती डरपाहि।—ढो. मा
उ०—३ दादू इस हियड़ै यह साल, पिव बिन क्योंहि न जाइसी। जब देखूं मेरा लाल, तब रोम-रोम सुख आइसी।—दादूवांणी
हियड, हियडउ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
उ०—१ हियडइ ताहरइ हे सखी, यण हरनुं थड वंक। अलग धरइ आलिगतां, रायंगणि जिम रंक।—मा. कां. प्र.
उ०—२ जगडइ ए जासक जूहिय, मूं हियडउ निरधार। देखउं केवडी केवडी, जेवडी करवत धारि।—जयसेखर सूरि
हियडलइ, हियडलउ, हियडलौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा; रू भे.)
उ०—१ नेम नगीनउ मंइ पायउ, सखिजी, एह अमूलिक नग। गुण गुंफी प्रेम कुंदन जड़ी जी, राखिसि हियडलइ रंग।—स. कु.
उ०—२ हुं तउ मूरख ए अतिजांण ए असरीखउं किम घटइ ए। वली विमासिइ हियडला माहि, दैवचिंता नवि जांणीइ ए।
—हीराणंद सूरि
हियडौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
उ०—चोली नीला नेत्रनी, कणयर वन्नु चीर। आभरणै उद्योत अति, हरती हियडा-हीर।—मा. कां. प्र.
हियत्थ-सं. पु.—हितार्थ, मोक्ष। (जैन)
हियरौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
हियां-अव्यय.—यहां, इस जगह।
हियाखाई-सं. स्त्री. [सं. हृदय-खाति] १ किसी बात या कार्य के प्रति होने वाली हिचक, संकोच।
२ भय, डर।
३ शंका, संदेह।
हियाफूट, हियाफूटोड़ौ, हियाफूटौ-वि. (स्त्री. हियाफूटी, हियाफूटोड़ी)
१ मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ, शिर-फिरा।
उ०—१ अकबर कूट अजांण, हियाफूट छोडै न हठ। पगां न लागण पांण, पणधर रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
उ०—२ मात पिता मैं दोसण मोटौ, प्रथम मिळ्या सुख पाई नैं। नग दोनां मिळ ओ निपजायौ, हियाफूट हरखाई नैं।—ऊ. का.
२ खिन्नचित्त, उदास।
रू. भे.—हींयाफूटौ, हीयाफूट, हीयाफूटोड़ौ, हीयाफूटौ।
हियाळी, हियाली-सं. स्त्री.—१ वात्सल्य, प्रेम, स्नेह।
उ०—हुस्यार करचौ, मुनीम वणायौ, व्याह मांड्यौ, अर घर पक्कौ करायौ। जीया जितै पूरी सारी पख पाळी अर हियाळी सूं राख्यौ।—दसदोख
२ तसल्ली, धैर्य, ढाढस।
३ हंसी, मजाक।
४ बदतमीजी, अभद्र व्यवहार।
रू. भे.—हींयाळी, हीयाळि, हीयाळी, हीयाली।
हियाव-सं. पु.—लगाव।
उ०—लोह अकोड़ करै अनियाव, चाड़ी चुगली सूं घणौ हियाव।
—वील्होजी
हियाहीण, हियाहीन-वि. [सं. हृदय+हीन] १ मूर्ख, अज्ञानी।
२ कायर, डरपोक।
३ क्रूर, दयाहीन, हृदयहीन।
रू. भे.—हीयाहीण।
हियुं, हियु, हियू, हियौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
उ०—१ दव जिम दीठइं करुणए, करणइ ए हियुं निकांमु। मरुउ वरुउ दमनकि मन, किहि नहीं य विस्रांमु।—जयसेखर सूरि
उ०—२ रही कटि फौज गई अधरात, वेई तद तेण हियै मझ वात।—मे. म.
उ०—३ नित समरूं एहनो नांम रे, सहु वातै समरथ स्वांम रे। हिव पूगी हिया नी हांम रे, ओहिज मुझ आतम रांम रे।
—ध. व. ग्रं.
उ०—४ जब जब सुरत लगै वा घर की, पल पल नैनन पांनी। ज्यौं हियै पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकांनी।—मीरां
उ०—५ हियै तहव्वर खांन रै, व्यापी यौं विपरीत। दाह अकब्बर भोगयौ, 'नौरंग' साह नचीत।—रा. रू.
हिरणंख—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)
हिरणंखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू. भे.)
उ०—जिम नौ गुण अवनी अमर, जिम हिरणंखी हार। इम गढवा बाधा गळे, जेहल राजकुंवार।—बां. दा.

हिरण—सं. पु. [सं. हिरण्य] १ स्वर्ण, सोना ।

उ०—[illegible] किया प्रवेश, हिरण दे दे विप्रां हथ । ज्यां सधिया [illegible], [illegible] किया [illegible] तीरथ ।—र. ज. प्र.

२ [illegible], धन, दौलत, संपत्ति । (ह. नां. मा.)

उ०—[illegible] मनरत, [illegible] माथा निझ संगा । राम तमासा [illegible], हुकम मार्गे हुरदंगा । माजी मेळा सांग देव रामी चंदोळी । [illegible] मही मसाण, होळिका फाग हरोळी । भागवत कथा भूतावळी हिरण [illegible] हिंडोरणा, परवीण होय जाणें पुरस, मालजादां रा मोरणा ।—ऊ. का.

३ देखो 'हरिण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ इतरै बीन हिरणां रा डार प्राय नीसरै छै । तिकै किण भांत रा हिरण छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ सीयर, गूरटां री बोनी गुणियां अर्थ उण नैं ऊबका पावता । पर्वे नीं हिरण श्राछा लागता अर नीं विरगोम ।

—फुलवाड़ी

४ देखो 'हरण' (रू. भे.)

उ०—जन रा मन वास रा जुगठिळ इळ रा थंभ कुळ रा अजुआळ । दुन रा हिरण देव रा हिरसण पन रा प्रविस्त छै व'न रा पात ।—म. रि.

रू. भे.—हरण, हरन, हिरिण ।

हिरण-उपवन—सं. पु. यौ.—ब्रह्मा । (डि. नां. मा.)

हिरणक, हिरणकस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हुय सूग्रर हिरणक हणै, धरती उर चारै । चंद रवी चलें, धूनै थिर सारै ।—भगतमाळ

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—हिरणक राकस तू ही नर सिंघ निदांणा ।

—केसोदास गाडण

हिरणकसप हिरणकसिपु, हिरणकस्यप—सं. पु [सं. हिरण्यकशिपु] १ एक दानव जिसने शिव के वरदान से एक अर्बुद वर्षों के लिए सारे देवताओं का ऐश्वर्य प्राप्त किया था । इसने मेरुपर्वत को भी हिलाया था ।

२ कश्यप एवं दिति की दैत्य सन्तानों में से एक सुविख्यात असुर, जो दैत्यवंश का आदिपुरुष माना जाता है ।

उ०—१ नरहर दर प्रह्लाद निवारै, हिरणकसप वप नखां प्रहारै । ईसैं दुरयोधन अनियाई, सकळ पांडवां चीन सभाई ।—रा. रू.

उ०—२ हिरणकस्यप जिसा प्रथमी सान प्रचंड ।—अ. मा.

वि. वि.—दैत्यवंश में उत्पन्न तीन इन्द्रों में से यह एक था । शेष दो इन्द्रों के नाम थे—प्रह्लाद व बलि । यह एव इसका भाई हिरण्याक्ष सर्वप्रथम दैत्य माने जाते हैं क्योंकि अधिकांश दैत्यकुल इन्हीं के पुत्र-पौत्रों के द्वारा चलाये गये थे । मगध नरेश जरासंध भी इसी के वंश में उत्पन्न हुआ था ।

कश्यप ऋषि द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ के समय कश्यप-पत्नी दिति गर्भवती थी और दस हजार वर्षों से उक्त गर्भ को पेट में ही पाल रही थी । जब दिति यज्ञ मण्डप में होतृ के लिए रखे मुख्य सुवर्णासन पर जा बैठी तब उसी सुवर्णासन में प्रसूत हुई, एवं उसका नवजात शिशु वहीं सुवर्णासन पर अधिष्ठित हुआ । इस प्रकार जन्म से ही सुवर्णासन पर अधिष्ठित होने के कारण इसे 'हिरण्यकशिपु' कहा गया ।

इसने अपने भाई हिरण्याक्ष के वध का बदला विष्णु से लेने हेतु ब्रह्मा की कठोर तपस्या की । तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इसे वर दिया कि घर में या बाहर, दिन में या रात में, मनुष्य से या पशु से, शस्त्र से या अस्त्र से, सजीव से या निर्जीव से, शुष्क से या आर्द्र से, यह अवध्य रहेगा । इस वर के कारण इसने घोर अत्याचार शुरु कर दिये ।

इसकी तपस्या-काल में इसकी पत्नी कयाधु गर्भवती थी । इसकी अनुपस्थिति में नारद ने उसे विष्णु-भक्ति का उपदेश दिया, जिसका प्रभाव उसके गर्भ में स्थित बालक प्रह्लाद पर भी पड़ा । इससे वह जन्म से पूर्व ही विष्णुभक्त हो गया । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद की विष्णुभक्ति नष्ट करने के अनेकानेक प्रयत्न किये पर इसे असफलता ही मिली । अतः तंग आकर इसने प्रह्लाद से कहा, 'सारे चराचर में भरा हुआ तुम्हारा विष्णु इस खम्भे में भी होना चाहिये । तुम इसे बाहर आने के लिए क्यों नहीं कहते ?' इतना कहते ही खम्भे से श्रीविष्णु का रौद्र नृसिंहावतार प्रकट हुआ एवं नाखुनों से सांयकाल के समय इसका वध किया ।

पूर्वजन्म में यह व इसका भाई हिरण्याक्ष भगवान् विष्णु के जय व विजय नामक द्वारपाल थे । पुनर्जन्म में यह रावण बना ।

रू. भे.—हणकंस, हरणांक, हरणांख, हरणांखुर, हरणाकस्यप, हरणाकुंभ, हरणकुस, हरणाक्स, हरणाख, हरणाकस, हरणाकुस, हरणाख, हिरणायख, हरिणाईख, हरिणाख, हरिणांकुस, हरिणाकस, हरिणाकुस, हरिणाख, हिरणाक, हिरणकस, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस, हिरणाख, हरिण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप, हिरनकस्यप ।

हिरणखुरी—सं. स्त्री.—१ वर्षा ऋतु में उगने वाली एक लता विशेष, जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते-जुलते होते हैं ।

२ रात्रि में हरिन के बैठने का स्थान ।

उ०—हिरणखुरी दो आंगळी, धरती लाख पसाय । लिखिया अखिया नां टळै, जहा पासा तहा दाव ।—अज्ञात

रू. भे.—हिरनखुरी ।

हिरणखि—देखो 'हिरणाखी' (रू. भे.)

उ०—लागां कुसुम सरीख वप, ज्यारै पड़ै खरोट । हद नाजक हिरणखियां, है मांभळ हमरोट ।—बां. दा.

हिरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू. भे.)

(अ. मा; नां. मा; ह. नां. मा.)

उ०—विमळांनन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी सुमरण। भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हरण।—र. ज. प्र.

हिरणचवौ–सं. पु.—एक प्रकार का घास।

हिरणजंप, हिरणझंप–सं पु.—१ डिंगल का एक छंद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण में १६ मात्रा, द्वितीय में १४ मात्रा, तृतीत चरण में २४, चतुर्थ और पंचम चरण में १४-१४ तथा छठे चरण में २४ मात्राएँ होती हैं। इसके पहली, दूजी, चौथी व पांचवी तुक के अंत में भगण तथा नगण और अंत में लघु होता है। तीसरी व छठी तुक के अंत में जगण होता है।

२ मृग की छलांग।

हिरणदा–सं. स्त्री. [सं. हिरण्यदा] पृथ्वी। (डिं. को.)

हिरणरेत–सं. पु. [सं. हिरण्यरेतस्] १ अग्नि, आग।

२ शिव, महादेव।

३ सूर्य, रवि।

४ बारह आदित्यों में से एक।

रू. भे.—हिरण्यरेत, हिरण्यरेता।

हिरणलौ—देखो 'हरिण' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—किहां गया कुंवरजी प्रभात का, किण ठांमै किण ठोर वे। रांणी कहै रे हिरणला, ताहरी बाहर जोय वे।—रीसालू री वात

हिरणांखी—देखो 'हिरणंखी' (रू. भे.)

हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—१ करकै तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ़ निरोस निवार मुड़ै। सुत कै बळ एक मुरार तणौ सज, थंभ विडार गिलार थडै।—भगतमाळ

उ०—२ करचौ रूप नरसिंघ कौ, सुण्यौ संत कौ साद। हिरणाकुस फाड़चौ उदर, राख लियौ पहळाद।—गज-उद्धार

उ०—३ हिरणाकुस प्रल्हाद सतायौ, जार अगन बिच डाल दियौ री। राज छांड दियौ नांव न छांड्यौ, खंभ फाड़ प्रभु दरस दियौ री।—मीरां

उ०—४ पुत्र हिरणाकुस २०, पुत्र पहिलाद २१ पुत्र वैरोचन २२, पुत्र वलिराजा २६।—रा. वंसावळी

उ०—५ जेण कंसासुर मारियौ, मध कीचक समंदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगंज गंज उनथ नथै।—वि. सं. सा.

हिरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ जेण कंसासुर मारियौ, मध कीचक समंदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगंज गंज उनथ नथै।—वि. सं. सा.

उ०—२ प्रथम्मो जाती रेस पयाळ, दाढां विच राखी दीन-दयाल। राखी धरवार किता तैं रांम, सभै हिरणाख विखै संग्रांम।—ह. र.

हिरणाखि, हिरणाखी—१ देखो 'हरिणाक्षी' (रू. भे.)

उ०—१ हिरणाखी रुखमणीजी त्यांका कंठ कै विखै। अंतरि जु सरसती थी। सु मांनौ बाहरि लाल रूप करि प्रगट हुई छै।—वेलि टी.

उ०—२ हिरणाखी हंस हाली चरजा उचारै। सेवक पढत सतूती देवळ निज द्वारै।—मे. मं.

उ०—३ माळवणी तूं मन समी, जांणइ सहू विवेक। हिरणाखी हसिनइ कहइ, करउं दिसाउर एक।—ढो. मा.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—लंकापति रावण कहां, कुंभ करण कहां वंस। हिरणाकुस हिरणाखि कहां, महकासुर कहां कंस।—ह. पु. वा.

हिरणायख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—हिरणायख हांणौ संख सभांणौ, हयग्रीवा खळ हंता है। हरणाकुस हत्तै महण सु मथ्थै छित लै वळि छळंता है।—र. ज. प्र.

हिरणावटियौ–सं. पु.—कच्चे झोंपड़े के मध्य में स्तम्भ रूप खड़े किये हुए काष्ठ के ऊपरी हिस्से पर चारों ओर लगाई जाने वाली लकड़ी।

हिरणावटी–सं. स्त्री.—मोट के खाली होने वाले स्थान पर लगे पत्थर में सीधी खड़ी लगाई हुई लकड़ी।

हिरणियौ–सं. पु.—१ गरीब व्यक्ति।

२ देखो 'हरिण' (अल्पा; रू. भे.)

हिरणी–सं. स्त्री.—१ मादा हरिन, मृगी।

उ०—१ जिणि दीहै तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ। तांह दिहां री गोरड़ी, पड़तउ झालइ आभ।—ढो. मा.

उ०—२ बिडरी हिरणीं सी फिरणीं बिजकाती, मुखड़ौ मुसकाती जोरौ जतळाती। आलै भक आटा कोलै जिम कुयिगी, हावर भांमणियां सांमणियां हुयगी।—ऊ. का.

२ सोन जुही। (अ. मा; नां. मा.)

३ स्वर्ण की चमक।

४ मृगशिरा नक्षत्र।

५ देखो 'हिरणीखूंटौ'।

रू. भे.—हरणी।

हिरणीखूंटौ–सं. पु.—गाड़ी में लगाया जाने वाला लकड़ी का डंडा जो बोझा ढोने के निमित्त माकड़े में सीधा खड़ा किया जाता है। ऐसे चार डंडे लगाये जाते हैं।

हिरण्ण—देखो 'हिरण्य' (रू. भे.)

हिरण्मय–सं. पु. [सं.] १ ब्रह्मा।

२ जंबू द्वीप के नौ खण्डों में से एक खण्ड जो कि श्वेत व शृंगवान पर्वतों से घिरा हुआ है।

३ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वि.—१ सोने का।

२ [illegible] ।

हिरण्य-सं. पु. [सं.] १ ब्रह्मा ।

२ [illegible] ।

३ [illegible] ।

४ [illegible] । (डि. ना. मा.)

५ [illegible] ।

६ [illegible] ।

७ [illegible] ।

८ [illegible] ।

९ धन, दौलत । (डि. ना. मा.)

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], हिरण्ण ।

हिरण्यकसिप, हिरण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप—देखो 'हिरणकसिपु' (रू. भे.)

हिरण्यकामधेन, हिरण्यकामधेनु-सं. स्त्री. [सं. हिरण्य+कामधेनु] सोने की बनाई गई कामधेनु गाय जो दान देने के निमित्त बनाई जाय ।

हिरण्यकार-सं. पु. [सं. हिरण्य+कृ] स्वर्णकार, सुनार ।

हिरण्यकेस-सं. पु. [सं. हिरण्यकेश] भगवान विष्णु का एक नाम ।

हिरण्यगरभ-सं. पु. [सं. हिरण्यगर्भ] १ वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा एवं सृष्टि की उत्पत्ति हुई ।

२ ब्रह्मा, विरंचि ।

३ विष्णु ।

४ आत्मा, जीव ।

५ ईश्वर ।

६ [illegible] ।

७ शुक्राचार्य ।

रू. भे.—[illegible], हिरणगरभ ।

हिरण्यधन, हिरण्यधनु-सं. पु.—एकलव्य के पिता निषादराज ।

हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभि-सं. पु. [सं. हिरण्यनाभ] १ भगवान् विष्णु ।

२ मैनाक पर्वत का एक नाम ।

हिरण्यपुर, हिरण्यपुरी, हिरण्यपुरो-सं. पु. [सं.] समुद्र के पार वायुमण्डल में स्थित असुरों का एक नगर ।

हिरण्यबाह, हिरण्यबाहु-सं. पु. [सं. हिरण्यबाहु] १ शिव का एक नाम ।

२ सोन नदी का एक नाम ।

३ वासुकि नाग वंशोत्पन्न एक नाग ।

रू. भे.—[illegible] ।

हिरण्यबिंद, हिरण्यबिंदु-सं. पु. [सं. हिरण्य+बिन्दु] हिमालय पर्वत के [illegible] का नाम ।

हिरण्यरेत, हिरण्यरेता—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

हिरण्यरोमा-सं. पु. [सं. हिरण्यरोमन्] १ मरीचि के पुत्र एक लोक-[illegible] ।

२ विदर्भ नरेश भीष्मक का एक नाम ।

हिरण्यव-सं. पु. [सं.] १ वह धन जो किसी देवता या मन्दिर पर चढ़ाया गया हो ।

२ स्वर्ण का गहना ।

हिरण्यवती-सं. स्त्री. [सं.] कुरुक्षेत्र में बहने वाली एक नदी ।

हिरण्यवरमा-सं. पु. [सं. हिरण्यवर्मा] दशार्ण देशाधिपति जो पाञ्चाल राजकुमार शिखण्डी का श्वसुर था ।

हिरण्यवसतर, हिरण्यवस्तर, हिरण्यवस्त्र-सं. पु. [सं. हिरण्यवस्त्र] सुनहले तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा विशेष ।

हिरण्यवाह—देखो 'हिरण्यबाह' (रू. भे.)

हिरण्यवीरय-सं. पु. [सं. हिरण्यवीर्य] १ अग्नि, आग ।

२ सूर्य, सूरज ।

हिरण्यस्रंग-सं. पु. [सं. हिरण्यशृंग] कैलाश पर्वत के समीपस्थ एक पर्वत जिसमें रत्न-खाने हैं ।

हिरण्याक्ष, हिरण्याख-सं. पु. [सं. हिरण्याक्ष] १ दक्ष प्रजापति की पुत्री दिति एवं कश्यप ऋषि के संसर्ग से उत्पन्न एक दानव जो हिरण्यकशिपु का भाई था ।

उ०—हिरण्याक्ष रा अंग ज्यों महावराह दंत तुंडाघात-सोमित ।

—वं. भा.

वि. वि.—पूर्वजन्म में यह विष्णु का विजय नामक द्वारपाल था । सनकादिक ऋषि के शाप के कारण असुर हो गया । इसका विवाह वृषपर्वा की पुत्री उपदानवी से हुआ था । ब्रह्मा के वर के कारण यह अत्यन्त बलशाली व पराक्रमी हो गया था अतः यह पृथ्वी को उठा कर पाताल ले गया । विष्णु भगवान ने वाराह अवतार लेकर इसको मारा था । पुनर्जन्म में यह रावण का भाई कुम्भकर्ण हुआ ।

२ श्यामक एवं शूरभूमि के संसर्ग से उत्पन्न पुत्रों में से एक पुत्र जो वसुदेव का भतीजा था ।

रू. भे.—हरणांक, हरणांक्ख, हरणांख, हरणांखुर, हरणाक्ख, हरणाख, हरणांख, हरणांखु, हरणाकुस, हरणाक्स, हरणाक्ष्य, हरणाख, हरणायख, हरिणाईख, हरिणाख, हरिणांकुस, हरिणाकस, हरिणाकुस, हरिनाक्ष, हिरणक, हिरणक्स, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस, हिरणाख, हिरणाखि, हिरणाखी, हिरणायख ।

हिरण्यासव, हिरण्यास्व-सं. पु. [सं. हिरण्याश्व] घोड़े की सोने की मूर्ति जो दान देने के लिये बनाई जाय ।

हिरद, हिरदय—देखो 'हिरदो' (रू. भे.)

हिरदावळ-सं. पु. [सं. हृदावर्त] घोड़े की छाती पर होने वाली भौंरी (दोष) । (शा. हो.)

हिरदेगंम-सं. पु. [सं. हृदयगंम] १ किसी विषय या बात को चित्त में अच्छी तरह बैठा लेने की अवस्था या भाव ।

२ किसी विषय या विद्या को इस तरह सीख-समझ कर हृदय में

धारण कर लेना कि वह कभी भुलाई नहीं जा सके।

वि.—हृदय या चित्त में समाहित।

रू. भे.—हीयागम।

हिरदै, हिरदौ—सं. पु. [सं. हृदय] १ प्रत्येक प्राणी के शरीर में वक्षस्थल के नीचे स्थित वह शारीरिक अवयव जो समस्त शरीर में रक्त संचालन करता है तथा जिसके स्पंदन से श्वास प्रक्रिया चलती है। (Heart)

उ०—१ **हिरदै** रोग स्वास अरु खास, डंभ क्रिया तिहां पंच प्रकास। हुदैं लीक अरु वरत्तुल च्यार, दंभ अस्थि कैं मध्य विचार। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ रसनां प्रथम सत सवद कुं दिढ करि, दूसरै कंठ लिव पेम आया। तीसरै सास उसास **हिरदै** उठै, चतुरथै नाभ घट खेल लाया।—अनुभववांणी

उ०—३ रांम रांम रसनां लीया, मास दोय विसरांम। हरीया **हिरदै** कंठ मैं, सागर वरस मुकांम।—अनुभववांणी

२ मस्तिष्क या चित्त की वह चेतना शक्ति जिसके द्वारा प्राणी के मन में रागद्वेष, हर्ष-शोक, प्रेम आदि की अनुभूतियां होती है तथा जिसके द्वारा वह प्रत्येक बात के औचित्य पर विचार करता है। अन्तः करण, चित्त, मन।

उ०—१ साधु मिळै तब ऊपजै, **हिरदै** हरि का भाव। दादू संगति साधु की, जब हरि करै पसाव।—दादूवांणी

उ०—२ **हिरदै** ऊणा होत, सिर धूणा अकबर सदा। दिन दूणा टैसोत, पूणा व्है न प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—३ द्रढ़ हिंगळाज दांन **हिरदा** मैं, ढावी कवि ढूढाड़ै। गति अदभूत रमत गिरजा नैं, चिरजा अम्रत चखाड़ै।—मे. म.

३ ज्ञानेन्द्रिय।

उ०—१ पहली स्रवण द्वितीय रसना, त्रितीय **हिरदै** रमइ। चतुरथी चिंतन भया, तव रोम-रोम ल्यौं लाइ।—दादूवांणी

उ०—२ प्रथम रांम रसनां सवरि, दुतीयै कंठ लगाय। त्रितीयु **हिरदै** ध्यांन धरि, चौथै नाभ मिलाय।—अनुभववांणी

४ वक्षस्थल, छाती, सीना।

५ मुख, जवान।

उ०—छोटै वडै नीच कुल ऊंचा, रांम कहत सबही नर सूचा। कहा भयौ जै ऊँच कहायौ, रांम नांम **हिरदै** नहीं गायौ। —अनुभववांणी

६ किसी वस्तु का सार या मर्म, मूल तत्व।

७ अत्यन्त प्रिय-जन, अत्यन्त प्रिय वस्तु।

८ जीवन, प्राण।

९ प्रेम, प्यार।

१० स्मरण-शक्ति।

रू. भे.—रदि, रदी, रदे, रदै, रदौ, रिदय, रिदि, रिदौ, हईइ, हईडइ, हईडौ, हड़दै, हड़दौ, हरदय, हरदौ, हिग्र, हिग्रौ, हिड़दौ, हिदे, हिदै, हिदौ, हिय, हियड़इ, हियड़लु, हियड़लौ, हियड़ौ, हियडइ, हियडउ, हियडलइ, हियडलौ, हियडौ, हियरौ, हिरद, हिरदय, हींयौ, हीग्र, हीइ, हीग्रौ, हीय, हीयइं, हीयइ, हीयउ, हीयऊ, हीयड़ई, हीयड़लौ, हीयड़ौ, हीयडइ, हीयडउ, हीयडौ, हीयरौ, हीयौ, हीरद्द, हीरद्दौ, हैये, हैयै।

हिरन—१ देखो 'हरिण' (रू. भे.)

२ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.) (अ. मा.)

हिरनकस्यप—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—भक्त कारण रूप नर हरि, धरयौ आप सरीर। **हिरनकस्यप** मार लीनौ, धरयौ नाहिन धीर।—मीरां

हिरनखुरी—देखो 'हिरणखुरी' (रू. भे.)

हीरनहीरनाछी—सं. पु.—वह घोड़ा जिसका आधा शरीर हरे रंग का तथा आधा शरीर सफेद रंग का हो। (अशुभ) (शा. हो.)

हिरनाख्य—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—उस विरयौं वज्जीर दौल कूं कहै कुतव्वी। जांनिक सुरगै लेन कौ, **हिरनाख्य** मुरव्वी।—ला. रा.

हिरमच, हिरमची—देखो 'हिड़मच' (रू. भे.)

उ०—हरीया **हिरमच** लायकै, वैठै विरकत होय। विरकत सोई जांणीयै, विखै विरता सोय।—अनुभववांणी

हिरळवत—सं. पु. [सं. हिरण्यवत्] सूर्य, रवि। (अ. मा.)

हिरस—सं. स्त्री. [सं. हिर्स] १ तृष्णा, वासना, लोभ, लालच।

उ०—१ नफस गालिव किब्र काविज, गुस्सः मनी एस्त। दुई दरोग **हिरस** हुज्जत, नांम नेकी नेस्त।—दादूवांणी

उ०—२ लोका रंजन होत है, मनुख जनम का भंग। **हिरस** धका दै जात है, अहैस काचा रंग।—ह. पु. वां.

२ ईर्ष्या, द्वेष, विद्वेष।

उ०—जिकौ क्रोध वास्तै **हिरस** रै नै लालच नैं अहंकार आय दिखाई रा नूं होय सौ भुंडी छै।—नी. प्र.

३ डर, भय, खतरा।

उ०—अफरासियाव लसकर आपरा नूं फरमायौ मरणै री **हिरस** मैं रहौ तौ उमर घणी पावौ अर मरणै नूं तयार रहौ तौ दौलत इजत पावौ।—नी. प्र.

४ हविस, ख्वाहिस।

उ०—हैं **हिरस** जोधपुर हरन हाल, खालसौ करन खाली खयाल। किल मारवारि वस करहिं कोय, हम हंस-वंस निरवंस होय। —ऊ. का.

५ कार्य करने की स्पर्धा।

हिराती—सं. पु.—औसत दर्जे के डील-डौल वाला तथा दोहरे हाथ-पैर वाला एक विशेष जाति का घोड़ा जो गरमी में नहीं थकता।

हिराबोल—सं. पु.—एक पौधा विशेष।

[illegible]

[illegible] हिराळी [illegible] । [illegible]

[illegible] —[illegible]

[illegible]

[illegible] सारै देस [illegible] ।

[illegible] हिरावळ [illegible]

[illegible]

[illegible] (रू. भे.)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] (रू. भे.) ([illegible] मा.)

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] हिरदै की [illegible] —अनुभववांणी

[illegible] [सं. [illegible]] १ लज्जावान, लज्जाशील ।

२ [illegible]

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] [सं. हिल्] १ [illegible] होना, [illegible] ।

उ०—१ [illegible] लपटाय । जन [illegible], हिळीयो [illegible] ।—ह. पु. वां.

उ०—२ [illegible] हाथ मिळी मन [illegible] भाई । मिळ [illegible] ।—[illegible] का.

उ०—३ [illegible] आवै नहीं दळै । [illegible] हिळी पठांण गिळै ।

—[illegible] चहुवांण री गीत

२ [illegible] होना, प्रवृत्ति का झुकाव एक ही तरफ [illegible] ।

उ०—१ [illegible] चोर । हिळ्योड़ो वळै [illegible] ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] पकड़ै । [illegible] हिळ्योड़ो [illegible] आवै ।

—फुलवाड़ी

३ [illegible] होना, आकर्षित होना ।

[illegible]

हिळणहार, हारौ (हारी), हिळणियौ—वि० ।

हिळिओड़ो, हिळियोड़ो, हिळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हिळीजणौ, हिळीजबौ—भाव वा० ।

हेळणौ, हेळबौ—रू० भे० ।

हिलणौ, हिलबौ—क्रि. अ. [सं. हिल्] १ चलायमान होना, चलना ।

उ०—सनाहे असल्ली, हिलै फौज हल्ली । लड़ंगै अलेखै, दिली ख्याल देखै ।—रा. रू.

२ स्थिर न रहना, हिलना, डुलना ।

उ०—लड़का उतारण वाळी सी । मोरां माथै पांणी री कोरी मटकी । उघाड़ी डील । पण वै टिमची री गळाई हिल्या नीं कोई डुल्या ।—फुलवाड़ी

३ चलना, जाना, सरकना, अपने स्थान से टलना, इधर उधर होना, खिसकना ।

उ०—गोडा जांणै मुड़ग्या व्है ज्यूं, उण सूं तौ आगै लारै हिली-जियौ ई कोनीं ।—फुलवाड़ी

४ कांपना, धूजना ।

उ०—बापड़ा भोळा पंछियां रा तौ चुग्गा-पांणी हा जठै रा जठै ई छूटग्या । वांरी कुरळाट सुणनै आभौ हिलण लागौ ।—फुलवाड़ी

५ झूमना, लहराना ।

उ०—'रतना' मैं धिटाई प्रगट हुई लाज थी सू भागी, पायल बिछियां मौन कीवी कटि मेखळा वागी । छिब मैं छिलिया, हार हमेल हिलिया । छातियां थहरै केस छूट छहरै । कुचा पर फावी अलकरी वोकम, कलभरा कुंभां जांणै मदन महावत रा हीज आंकस ।—र. हमीर

६ जमकर न रहना, विचलित होना, डिगना, चंचल होना ।

७ कोई हरकत होना, हिलना ।

८ चंचल होना ।

९ फिरना, घूमना ।

हिलणहार, हारौ (हारी), हिलणियौ—वि० ।

हिलिओड़ो, हिलियोड़ो, हिल्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हिलीजणौ, हिलीजबौ—भाव वा० ।

हलणौ, हलबौ—रू० भे० ।

हिलब—सं. स्त्री.—एक गुफा विशेष ।

उ०—मुसलमांन रै कितावां मैं लिखै है—अंगरेजां रै आगै रूम री पातसाह भाजि हिलब मैं जावसी, पछै इमांम महदी हुसी, कितराहीक बरस पातसाही करसी, पछै अंगरेजां रै हाथ औ सहीद पछै कयांमत हुसी ।—बां. दा. ख्यात

हिलबौ—देखो 'हिलणौ' ।

हिलम-सं. स्त्री. [सं. हिल्म] १ भल मनसाहत, भलाई ।

उ०—कांई छै घणी हिलम नरमी जिकौ जहर दै तोनूं तिण नूं मिस्री देय कम मन ना रहै ।—नी. प्र.

२ गंभीरता, धीरता, शान्ति।
६ सहिष्णुता, सहनशीलता।
४ विवेक।

हिळमिळ-सं. स्त्री.—१ मिलने-जुलने की अवस्था या भाव।
२ परस्पर सहयोग, किसी उद्देश्य या कार्य के लिये एक साथ होने की दशा।
उ०—१ सत् की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसंग सुगरा पाई। निरमळ संत समझ कौ मारग, **हिळमिळ** नाव चलाई।
—स्त्री हरिरांम जी महाराज
उ०—२ तन की ताप मिटी सुख पाया, **हिळमिळ** मंगळ गाया जी।—मीरां
३ प्रेम और मित्रता से एक साथ रहने की अवस्था।
उ०—१ सात सहेलियां रै झूलरै ग्रौ पणिहारी ए लौ। **हिळमिळ** गई रै ताळाव वालाजी ग्रौ।—लो. गी.
उ०—२ मिनखा जन्म ग्रमोलक मूरख पांमर फेर न पावै। **हिळमिळ** हंसणौ वेवळ वसणौ ग्रौ मौसर कद ग्रावै।—ऊ. का.
४ स्नेह, प्रेम।
उ०—मंजस ग्रँजन करै करै, करै पोसाक सुरंगी। कुटुंब सूं **हिळमिळ** करै, दुनि दिस दोय दुरंगी।—ग्ररजुनजी वारहठ
५ घुल-मिल जाने की स्थिति, ग्रवस्था या भा भाव।

हिळमिळणौ, हिळमिळबौ-क्रि. ग्र.—१ प्रेम से हिल-मिल जाना, भेद-भाव रहित प्रेम होना, एकाकार होना।
उ०—१ हिवड़ै री कळियां खिलगी, काया नै ममता मिळगी। मनमधु री सरस हिलोरां, वै इकरस मैं **हिळमिळगी**।—सकुंतळा
उ०—२ महात्मा ग्रात्मा ए परम परमात्मा **हिळै मिळै**। झिलै जीवौ ज्योती झगमगत ज्योती झिळमिळै।—ऊ. का.
२ मित्रता या दोस्ती होना।
३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र होना।
उ०—ग्राखती-पाखती रै सै वनां रा जीव-जिनावर इण जंगळ मैं ग्राय वसग्या। वौ नाहर वांरौ साचैलौ राजा वण्यौ। जंगळ रा सै कायदा-कांनून बदळ दिया। सगळा जिनावर **हिळमिळ** नै रैवण लागा।—फुलवाड़ी
४ मिल-जुलकर चलना।

हिळमिळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ भेदभाव रहित प्रेम हुवा हुग्रा, प्रेम से हिल-मिल गया हुग्रा, एकाकार हुवा हुग्रा। २ मित्रता या दोस्ती हुवी हुई। ३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र हुवा हुग्रा। ४ मिल-जुल कर चला हुग्रा।
(स्त्री. हिळमिळियोड़ी)

हिलमोचिका, हिलमोची-सं. पु. [सं. हिलमोचिका] १ एक प्रकार का पौधा विशेष।
२ एक प्रकार का शाक।

हिलराणौ, हिलराबौ—देखो 'हुलराणौ, हुलरावौ' (रू. भे.)
हिलराणहार, हारौ (हारी), हिलराणियौ—वि०।
हिलरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हिलराईजणौ, हिलराईजबौ—कर्म वा०।

हिलरायोड़ौ—देखो 'हुलरायोड़ौ' (रू. भे.)

हिळवळणौ, हिळवळबौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळबौ' (रू. भे.)
उ०—पदमिणि रखवाळ पाइदळ पाइक, **हिळवळिया** हलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुड़ंतां, गात्र गिरोवर नाग गति।
—वेलि

हिळवळियोड़ौ—देखो 'हळवळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिलवलियोड़ी)

हिळवाळियौ-वि.—१ उत्तेजित, उतावला।
२ घवड़ाया हुग्रा, भयभीत।
३ हड़वड़ाया हुग्रा, जल्दी किया हुग्रा।

हिलवी-सं. पु.—१ हलव जाति का मुसलमान।
२ हलव देश का निवासी।
३ एक प्रकार का दर्पण विशेष।
वि.—१ हलव देश का, हलव देश सम्वन्धी।
२ हलव का।
रू. भे.—हिलवी।

हिळा—देखो 'इळा' (रू. भे.)
उ०—जंग जळध जरमन जहर, **हिळा** प्रजाळण हार। सुत 'तखतेस' महेस रौ, इळ पातळ ग्रवतार।—किसोरदांन वारहठ

हिळाणौ, हिळाणौ-क्रि. स. ['हिळणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ चस्का लगाना, लगाव पैदा करना, लगाना।
२ ग्रादी करना, निर्भर करना।
३ ग्रनुरक्त करना, ग्राशक्त करना, ग्राकर्षित करना।
४ घुसाना, पैठाना।
हिळाणहार, हारौ (हारी), हिळाणियौ—वि०।
हिळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
हिळाईजणौ, हिळाईजबौ—कर्म वा०।
हिळावणौ, हिळावबौ—रू० भे०।

हिलाणौ, हिलाबौ-क्रि. स. ['हिलणौ' क्रि. का प्रे० रू०] १ चलायमान करना, चलाना।
२ स्थिर न रहने देना, हिलाना-डुलाना।
उ०—मोट्यार ग्रर पोठा थापती छोरियां-सगळौ गांम एक साथै इज माथा **हिलाय** नैं गुणगुणावण लाग जावै।—ग्रमरचूंनड़ी
३ चलाना, भेजना, सरकाना, ग्रपने स्थान से टालना, इधर-उधर करना, खिसकाना।
४ कंपाना, धूजाना।
५ झूमने व लहराने के लिये प्रेरित करना।

[illegible] निर्भर [illegible], [illegible], [illegible] करना ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible], हारो (हारी), [illegible]—वि० ।

[illegible]—भू० का० कृ० ।

[illegible]—कर्म वा० ।

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], **हिलावणो, हिलाववो,** [illegible] रू० भे० ।

[illegible]—भू० का० कृ०—१ [illegible] लगाया हुआ, लगाव पैदा किया हुआ [illegible] हुआ। २ आदी किया हुआ, निर्भर किया हुआ। ३ [illegible] किया हुआ, आसक्त किया हुआ, आकर्षित किया हुआ। ४ [illegible] हुआ, पैठाया हुआ ।

(स्त्री [illegible])

[illegible]—भू० का० कृ०—१ चलायमान किया हुआ, चलाया हुआ। २ [illegible] हुआ, भेजा हुआ, सरकाया हुआ, अपने स्थान से टाला हुआ, इधर-उधर किया हुआ, खिसकाया हुआ। ३ कंपायमान किया हुआ, [illegible] हुआ। ४ झूमने व लहराने के लिये प्रेरित किया हुआ। ५ जमकर न रहने दिया हुआ, विचलित किया हुआ, डिगाया हुआ, [illegible] किया हुआ। ७ कोई हरकत किया हुआ, हिलाया हुआ। ८ चंचल किया हुआ। ९ फिराया हुआ, घुमाया हुआ ।

(स्त्री [illegible])

[illegible]—सं० पु०—[illegible] की फली ।

[illegible]—सं० स्त्री०—देखो '[illegible]' (पु०)

उ०—[illegible] रै मार्ग पांच [illegible] ही। वै तौ सगळी डग [illegible] में [illegible] बैठगी। पारणी ई अेक लांठी [illegible] ही। पीळै [illegible]। [illegible] रै उनमांन धोळी [illegible], [illegible] उण बांवळिया री छींया ढावली ।

—फुलवाड़ी

[illegible]—सं० पु०—१ किसी वस्तु, पदार्थ या बोझ की वह मात्रा जो [illegible] है ।

२ [illegible] प्रकार से ढोवाई का श्रम ।

३ [illegible] ढोवाई के प्रत्येक श्रम में लगने वाला समय ।

४ [illegible] प्रकार से ढोवाई के लिये दिया जाने वाला पारिश्रमिक ।

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible], [illegible]' (रू. भे.)

[illegible], हारो (हारी), [illegible]—वि० ।

[illegible], [illegible], [illegible]—भू० का० कृ० ।

[illegible], [illegible]—कर्म वा० ।

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible], [illegible]' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हिलावती बोल्यी—पर्छ रोज सिनांन करूं'ला कपड़ा ई नवा पेहरू'ला ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ धारून करनै बूझ्यो—कुण व्है ई ? डोकरियो धांटो **हिलावती** बोल्यो—श्री तौ म्हैं वेद ।—फुलवाड़ी

उ०—३ थोड़ी ताळ तांई वो घरवाळी री देह माथै तूंड **हिलावती** रह्यौ। पछै उठा सूं तूटता तारा रै वेग न्हाटो ।—फुलवाड़ी

उ०—४ बांणियो धांटी **हिलावती** कैवरण लागो—थांरी आ वात म्हैं मरियां ई नी मांनूंला ।—फुलवाड़ी

हिलावणहार, हारो (हारी), हिलावणियो—वि० ।

हिलाविश्रोड़ो, हिलावियोड़ो, हिलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हिलावीजणो, हिलावीजवो—कर्म वा० ।

हिळावियोड़ो—देखो 'हिळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हिळावियोड़ी)

हिलावियोड़ो—देखो 'हिलायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हिलावियोड़ी)

हिळियोड़ो—भू. का. कृ.—१ चस्का लगा हुआ, लगाव हुवा हुआ, लगा हुआ. २ आदी हुवा हुआ, निर्भर हुवा हुआ. ३ अनुरक्त, आशक्त या आकर्षित हुवा हुआ. ४ घुमा हुआ, पैठा हुआ ।

(स्त्री. हिळियोड़ी)

हिलियोड़ो—भू. का. कृ.—१ चलायमान हुवा हुआ, चला हुआ. २ स्थिर न रहा हुआ, हिला हुआ, डुला हुआ. ३ चला हुआ, गया हुआ, सरका हुआ, अपने स्थान से टला हुआ, इधर-उधर हुवा हुआ, खिसका हुआ. ४ कांपा हुआ, धूजा हुआ. ५ झूमा हुआ, लहराया हुआ. ६ जमकर न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ, डिगा हुआ, चंचल हुवा हुआ. ७ हरकत हुवा हुआ, हिला हुआ. ८ चंचल हुवा हुआ. ९ फिरा हुआ, घूमा हुआ ।

(स्त्री. हिलियोड़ी)

हिळियो-मिळियो—वि.—घनिष्ठ परिचित ।

हिळीमिळी, हिळीमोळी—वि. स्त्री.—घनिष्ठ प्रेम में बंधी हुई, स्नेह युक्त, प्रेम युक्त ।

उ०—इम मारवणी कुमरी प्रतै, समभावी सुभ वांण। **हिळी-मोळी** हित हेजसु, कीधी सुख सुजांण ।—ढो. मा.

सं. स्त्री.—स्नेह या प्रेम युक्त होने की अवस्था या भाव ।

हिलूर—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)

उ०—१ है गै हिलूर आसुर हलै पूर वगत्तर पक्खरां। वन अगन सवायै संग विघ बळ उतंग मीरां वगं ।—रा. रू.

उ०—२ चांपावत करनोत साहंस कै सुर। एक ओर ऊदा जोर सागर हिलूर ।—रा. रू.

हिलूसणो, हिलूसवो—देखो 'हुलसणो, हुलसवो' (रू. भे.)

उ०—आडा डूंगर, दूरि घर, वरगड न जांगड भत्त। सज्जरण-मंदई कारणइ, हियड हिलूसइ नित्त ।—ढो. मा.

हिलोड़णौ, हिलोड़बौ–क्रि. स. [सं. उल्लोलनम्, उल्लोडनम्] १ जल या किसी द्रव पदार्थ को हाथ, लकड़ी या किसी वस्तु से हिलाना, तरंगित करना, विलोड़ित करना।
२ द्रव पदार्थ को मथना, विलोड़ित करना।
२ लहराना, डुलाना।
४ विचलित करना, तितर-बितर करना। (सेना)
५ तरंगित करना।
६ चलायमान करना, चलाना।
हिलोड़णहार, हारौ (हारी), हिलोड़णियौ—वि०।
हिलोड़िग्रोड़ौ, हिलोड़ियोड़ौ, हिलोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिलोड़ीजणौ, हिलोड़ीजबौ—कर्म वा०।
हलोरणौ, हलोरबौ, हिलोरणौ, हिलोरबौ, हिलोलणौ, हिलोलबौ, हिलोहणौ, हिलोहबौ, हिलौळणौ, हिलौळबौ, हीलोळणौ, हीलोळबौ, हीलौळणौ, हीलौळबौ, हौलोळणौ, हौलोळबौ—रू० भे०।

हिलोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हाथ, लकड़ी या किसी वस्तु से तरंगित किया हुआ. (द्रव पदार्थ) २ मथा हुआ. ३ लहराया हुआ, डुला हुआ. ४ तरंगित किया हुआ. ५ चलायमान किया हुआ. ६ विचलित या तितर-बितर किया हुआ। (सेना)
(स्त्री. हिलोड़ियोड़ी)

हिलोड़ौ— देखो 'हिलोळौ' (रू. भे.)
उ०—पग धूजण लागा, माथौ घूमण लागौ। हींयै मैं **हिलोड़ौ** उठियौ अर आंख्यां आडी रात आयगी।—वरसगांठ

हिलोर–सं. स्त्री.—१ उमंग, आनन्द की लहर।
उ०—१ वालंभ एक **हिलोर** दै, आइ सकइ तउ आइ। वांहड़ियां वै थक्कियां, काग उडाइ उडाइ।—ढो. मा.
उ०—२ हिवड़ै री कळिया खिलगी, काया नै ममता मिळगी। मनमधु री सरस **हिलोरां**, वै इकरस मैं हिळ मिळगी।—सकुंतळा
२ तरंग, लहर।
उ०—घेर-घुमेर खेजड़ी री जाडी छींया। सांम्ही हव्वा-होळ **हिलोरां** भरती नाडी। कमोद री जात निरमळ पांणी।
—फुलवाड़ी
३ झौंका, झौला।
४ प्रवाह।
५ कल्लोल, क्रीड़ा।
रू. भे.—हलोर, हिलूर, हिलोळ, हिलोल, हिल्लोण, हिल्लोल, हीलोळ, हीलौळ।

हिलोरणौ, हिलोरबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)
हिलोरणहार, हारौ (हारी), हिलोरणियौ—वि०।
हिलोरिग्रोड़ौ, हिलोरियोड़ौ, हिलोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
हिलोरीजणौ, हिलोरीजबौ—कर्म वा०।

हिलोरव–सं. पु.—१ डोलने, झूलने या झौंका खाने की क्रिया या भाव।
उ०—सात मैं पाताल वासंग नागरै माथै टपूकड़ा खाइ नै रहिग्रा छै। त्यांरी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरग सूं हेलूस नै उतरै देवांसुरां रा विवांण **हिलोरव** खाइ नै रहिग्रा छै।
—रा. सा. सं.
२ चक्कर, भांवर।
३ तरंग, लहर।
४ समुद्र।

हिलोरियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिलोरियोड़ी)

हिलोळ, हिलोल—देखो 'हिलोर' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ अनंग न अंग उमंग इलोल, हरी पद संगम गंग **हिलोल**। निराळिय नीति उदंगळ नांय, मुनी किय मंगळ जंगळ मांय।
—ऊ. का.
उ०—२ भलां अगराज चढ़ी छळ भूप, रच्यौ रण तीरथ राज सरूप। हाथ्यां मवताहळ गंग **हिलोळ**, छिलै रत्रधार सरस्वति छोळ।—मे. म.
उ०—३ घड़ाळ नौबती घुरंत, जैदराज नागरं। **हिलोळ** मैं किलोळ होत, सद्द जेम सागरं।—सू. प्र.
उ०—४ म्हारा जीवण मैं सुख री आ एक ई **हिलोळ** आई, इणनै ई थूं सुखावणी चावै।—फुलवाड़ी
उ०—५ सरसा सरोवर विमल जल सै भरै हैं भरपूर। लख लोल वरत **हिलोल** हरसित हंस पक्षि पडूर।—वि. कु.

हिलोळणौ, हिलोळबौ— देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ मैंगळ कुटंब सहत उनमत्त रै, आव **हिलोळ** चोळ की अतरै। धूंम सुणै चख आग धकतरै, जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै।
—र. ज. प्र.
उ०—२ **हिलोळि** छड़ाळ ग्रहै चंद्रहास। तछै धण मीर कलम्म तरास।—सू. प्र.
उ०—३ चंद्रमांनै कुण सीतल करइ, अग्निनै कुण दाह करइ। दूध नै कुण छोळै छै, समुद्र नै कुण **हिलोळै** छै।—रा. सा. सं.
उ०—४ हेजमां **हिलोळ** हथां तेगां उछांटीलौ हलै, साथ वीरां चलै चंडी चांटीलौ संवंध। वेध धंकी जंगां मेळै वारंगां वांटीलौ वींद, केकांणां कोमंखी वागौ आंटीलौ कमंध।
—हुकमीचंद खिड़ियौ
उ०—५ रावण साह तणा दळ रोळै, जोध **हिलोळै** जुवाजूग्रौ। हालियौ 'सिवौ' झांपा भरि हणमत, हेक डंगाळ बंगाळ हूग्रौ।
—जोगीदास चारण
हिलोळणहार, हारौ (हारी), हिलोळणियौ—वि०।
हिलोळिग्रोड़ौ, हिलोळियोड़ौ, हिलोळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हिलोड़ीजणौ, हिलोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

हिलोड़ियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिलोड़ियोड़ी)

हिलोळौ—सं. पु. [सं. हिल्लोल] १ आनन्द की लहर, उमंग ।
उ०—१ तिन सम सेन सु मेर सजनी, हीयौ हिलोळा लेत । आवौ धाट धरोली मेरे, अवछा अरज करेस ।—अनुभववांणी
उ०—२ परिहर सांसत पीव कहै म्हैं कै कियौ, मारी नै मति मार हिलोळा नै हियौ । नारी दामै लूण जळण हुव जीव रौ, ऐसौ सांस न सांस परोसा पीव रौ ।—मिचक्रम पाल्हावत
२ लहर, तरंग ।
उ०—१ नारायी हिलोळा सरदिया मैं असन्न कसूंबौ केसर रै उनमान हिलोळा खाय रह्यौ ।—अमरचूंनड़ी
उ०—२ समदरसाम्त्र सूं भी आ बात पक्की व्है कै मारवाड़ री ठौड़ पर ई समदर हिलोळा लेवतौ हौ । ढांणियां रै पागती रेतूड़ रै धोरा मांयै रमतै टाबरां नै अजु तांई कदैई गुळगुचिया तौ कदैई सीप घर सग मिळै है ।—चितरांम
३ उमंग, जोश, उत्साह ।
४ झोंका, झोला ।
५ गति, चाल, प्रवाह ।
६ आक्रमण हेतु तैनात होने की अवस्था ।
उ०—१ सूवर सूती नींद मैं सूंडण पहरा देत । उठौ सूवर नींदा-ळा फौज हिलोळा लेत ।
उ०—२ फौजां नै हिलोळां ओळा दोळा अज्ज सिंधू फूटा । महा गजां गोळा वज्र तूटां जज्ज साग ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
७ घबराहट का दौरा, भय का संचार ।
उ०—'चांपै' पल्लक कटक चलाया, ऊपरि खांन तणै फिर आया । दमगळ मह्रै निवाबा दोळा, हुवा मळां फिर प्रांण हिलोळा ।
—रा. रू.
८ धक्का, आघात ।
९ प्रहार, चोट ।
उ०—माग मार पग्गां मंची, खांन तहव्वर वागां खंची । हेकण दिन धा मार हिलोळौ, आहाड़ां कीधौ दळ ओळौ ।—रा. रू.
रू. भे.—हलोळौ, हिलोड़ौ, हीलेड़ौ, हीलोळौ ।

हिलोहणौ, हिलोहबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—पुळिंद प्रीति सखबट पारिखतै, जीति जीति सत्रहर जस जीति । मोटे नांमि हिलोहि नीड़ां नख, चढियौ रुख सारंग रगि चीति ।—श्रीकरुदे सौड़ री गीत
हिलोहणहार, हारौ (हारी), हिलोहणियौ—वि० ।
हिलोहियोड़ौ, हिलोहियोड़ौ, हिलोह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हिलोहीजणौ, हिलोहीजबौ—कर्म वा० ।

हिलोहळ-सं. पु. [सं. हिल्लोहल] १ समुद्र, सागर । (ना. डि. को.)
उ०—१ अयग अनळ धिन 'जोध' अभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सीर । हरि मेलियौ हथै हिलोहळ गांजियौ रावण मेरगिरं ।
—किसानौ आढौ
उ०—२ मेर गिर हूंत गिरवर किसौ मीढजै । हिलोहळ मींढ सरवर किसौ होय ।—अग्यात
२ मंथन, विलोड़न ।
उ०—'जसै' धखि कोध धरै जगजाळ, तठै सिज काठिय खाग उताळ । हिलोहळ रोद चहूंवळ होय । दळां खग टूक करै दोय दोय ।—सू. प्र.
३ लहर, तरंग ।
उ०—ऐसै कविराज जिस वखत महाराजा की राजसभा कै बीच भांति भांति गुण गावतै है । विद्यावांणी कै हिलोहळ दरियाव का सा हिलोहळ दरसावतै हैं ।—सू. प्र.
वि.—पूर्ण, परिपूर्ण ।
उ०—साईवांन देखियां संकै, पावन जांणां ठोड़ पत । व्है दरबार सिरै हिलोहळ, चक्रत रहै चळ विचळ चित्त ।—कपूत री गीत
रू. भे.—हिलोहिल, हीळोहल ।

हिलोहियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिलोहियोड़ी)

हिलोहिळ—देखो 'हिलोहळ' (रू. भे.)
उ०—बादळ छाया देस मैं, ए लौ, नदियां नीर हिलोहिळ रे । बादल चमकै बीजळी, चमक चमक झड़ लाय ।—लो. गी.

हिलौ—देखो 'हीलौ' (रू. भे.)

हिलोळणौ, हिलोळबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—बीळी चसम्मा मजीठ रौळी नखंगी धूप रै वागां, पैनां तीर गोळी सांग लाया आरपार । हौळी फागां जेम खागां उनंगी 'पीथळै' हाडै, हिलोळी फिरंगी सेना पैंतीस हजार ।—जसौ आढौ

हिलोळियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हिलोळियोड़ी)

हिल्लोण—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)

हिल्लोळ—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)
ऊ०—वधै लूर सापूर फौजां वखांणै, जळानिद्ध उच्छेदियौ बंध जांणै । महाराज मेन्या वहै राज मग्गै, वधै बाजुवां लोल हिल्लोळ वग्गै ।—रा. रू.

हिवं—१ देखो 'हिम' (रू. भे.)
२ देखो 'हिव' (रू. भे.)

हिव-क्रि. वि. [सं. अधुना] १ अब, अभी ।
उ०—१ कसन रात्रि हिव हूं तूं करतौ, धरणीधर ममता मन धरतौ । तुझ विणै मत दै धू तारण, कूप संसार काढ स्रव कारण ।—ह. र.
उ०—२ एक बीनती हिव अम्हतणी, संभळि तूं सोवनगिरि-धणी ।

कुंअरि तुम्हारी अपछर जिसी, पिंगळराय-तणइ मनि वसी।
—ढो. मा.

उ०—३ वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौ-आप सूं। हिव रुखमणी क्रतारथ हुइस्यै, हुऔ क्रतारथ पहिलौ हूं।—वेलि

२ इसके बाद, तदन्तर।

उ०—१ रीरीया करता राउत हथियार हलइं, घाइ घूमिया सुभट ढळइं। पड़िया पाइक न ऊससीयइं। हिव हाथियां आस्वासीयइं।
—रा. सा. सं.

उ०—२ कोई न त्रिहु जगि हुईय नारि हिव पछी कोइ न होइसि ए। एक महेलीय पंच भरतार सतीय सिरोमणी गाई ए।
—सालिभद्र सूरि

रू. भे.—हिवं, हिवइ, हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवैं, हिंवै।

हिवइ—देखो 'हिव' (रू. भे.)

उ०—१ वळतउ चाचिगदे वीनवइ, रखै कटक लै अखउ हिवइ। नहीं सोनगिरि केहनइ पाडि, जास्यइ आपण ही गढ छाडि।
—कां. दे. प्र.

उ०—२ हिवइ रितिराउ कहतां वसंत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुणगतिमति सहित यौं परिगह लै आयौ।
—वेलि टी.

हिवकै—क्रि. वि.—अब की, इस बार।

उ०—मोनुं परणीयां वरस २ हूआ। पिण म्हारी मा मोनुं मेल्हती नहीं। हिवकै इण रजपूत आइ नै गाढ कीयौ, ताहरां मोनुं मेल्ही।
—तीडी खरळ री वात

हिवड़उ—देखो 'हिवड़ौ' (रू. भे.)

उ०—मारू-मारू कळाइयां, उज्जळ-दंती नारि। हसनउ दै हुंकार-ड़उ, हिवड़उ फूटणहारि।—ढो. मा.

हिवड़लौ—देखो 'हिवड़ौ' (रू. भे.)

उ०—पेटड़लौ मूमल रौ पींथळियै रौ पांन ज्यूं हांजी रे। हिवड़लौ हतीयारी रौ संचै ढाळीयौ, मारी नाजुकड़ी मूमल।—लो. गी.

हिवड़ां, हिवड़ा, हिवड़ै—क्रि. वि.—अभी, इस समय।

उ०—१ हिवड़ां तौ जीव पचै रे घणौ, कोई पार नही रे दुखां तणौ। तेर तिण गाटी लागै लारौ।—जयवांणी

उ०—२ कह्यौ—हिवड़ा री घड़ी मांहै जिकूं मांगीस सू पावीस।
—सयणी चारणी री वात

रू. भे.—हिवडां, हिवडा।

हिवड़ौ—सं. पु. [सं. हृदय] १ मन, दिल, चित्त, हृदय, अन्तःकरण।

उ०—१ वीसारियां न वीसरइ, चितारियां नावंत। मारू सायर लहर जूं हिवड़ै द्रव काढंत।—ढो. मा.

उ०—२ ओ जी म्हारै हिवड़ै रा जीवड़ा। मत ना सिधारौ पूरब री चाकरी जी।—लो. गी.

उ०—३ थारी माता कौ हिवड़ौ ऊकळै, बा तौ नैणां नीर ढरकावै यै म्हारै हरियै वन री कोयली।—लो. गी.

उ०—४ म्हांनै गुर मिळिया अविनासी दई ग्यांन की गुटकी। लगी चोट निज नांव धणी की, म्हारै हिवड़ै खटकी।—मीरां

२ वक्षस्थल, छाती, सीना।

उ०—१ थारौ हाथ म्हारै हिवड़ै ऊपर राख। पेम रस महंदी राचणी।—लो. गी.

उ०—२ लीनी हंजा मारू हिवड़ै लगाय। आंसुड़ा तौ पूंछ्या हरियै रूमाल सूं जी म्हांरा राज।—लो. गी.

उ०—३ हिवड़ै हांस घड़ाय भंवर म्हारै हिवड़ै नै हांस घड़ाय, हौ जी म्हारी तिमण्यौ हीरां जड़ाय भंवर म्हांनै खेलण दौ गणगोर।
—लो. गी.

उ०—४ दूजै दिन ई धणी सूं छांनै-ओलै आपरै हिवड़ा रौ हार अेक सुनार नै वेच दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—५ हिवड़ै ऊपर हार, म्हारै गळै में डोरौ रै। कसूंवड़ै री कांसळी नै डील गोरौ रै। लूअर लेवण दै।—भंवरलाल सुथार

३ वक्षस्थल के नीचे, शरीर के अन्दर स्थित अवयव, जो शरीर में रक्त संचार करता है।

उ०—हा हा करूं हिवै कासूं रे, माहरौ हिवड़ौ फटै मांसूं।
—जयवांणी

रू. भे.—हवडौ, हिवड़ौ, हिवड़उ, हिवड़लौ, हिवडौ।

हिवडां, हिवडा—देखो 'हिवड़ां' (रू. भे.)

उ०—१ आगउ अह्म वरांसउ वीतउ, हिवडां छळ नवि छांडूं। असपत्तितां दळ सांम्हउ चाल्यउ, लेई ऊघाडउं खांडूं।
—कां. दे. प्र.

उ०—२ राउ भणइ तेहनी तम्है हिवडां कांई जांणउ सार। भेठि भणइ कइ तूं ह जि जांणइ कइ जांणइ करतार।
—हीराणंद सूरि

हिवडौ—देखो 'हिवड़ौ' (रू. भे.)

हिवार, हिवारुं, हिवारु, हिवारूं, हिवारू—क्रि. वि.—अभी, इस समय, अबार।

उ०—१ ताहरां वीजाणंद कहियौ—भलां। हिवार री वरियां वही जावै छै सू छै मास माहै भरि लेयीस।—सयणी री वात

उ०—२ हुकम हुवै तौ कांई खारौ मीठौ गाचां, हुकम हुवै तौ परमेस्वर-रौ जस गावां। आप कह्यौ—हिवारूं परमेस्वर-रौ कांई छै।—प्रतापमल देवड़ा री वात

उ०—३ म्हारै बाप री छांह म्हारौ वचन छै, हिवारू मांगै सू पावै।—सयणी री वात

उ०—४ सीह हिवारूं काची व्याधि छै। परहौ मरौ म्हांनुं कोई दुख न सुख।—देवजी बगड़ावतां री वात

हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवैं, हिवै—देखो 'हिव' (रू. भे.)

उ०—१ पडिया पाइक न ऊसासीइ, हिवा हाथियां आ[illegible]सायइं,

[illegible], रेवंत [illegible], पडिया पंचायणनी परि [illegible]............ ।—व. स.

उ०—२ हिवि कुतनियानां गुण सांभलउ ।—व. स.

उ०—३ मांमा नीं बोल्या मुनैं, जद मैं राख्यौ मांन । हिवैं परगु [illegible], गालूं तुज्झ गुमांन ।—प. च. चौ.

उ०—४ [illegible] हिवै कानूं रे । माहरौ हिवड़ौ फटै मां सूं ।
—जयवांणी

उ०—५ [illegible] बिनि की संधि सु वयसंधि कहावै । जैसैं सुपिणौ । न सोवै छै न जागै छै । आगै पल पल चढती होसी । पिणि हिवै वैसंधि को [illegible] प्रथम ग्यांन ताकी इसी परिछै ।—वेलि टी.

उ०—६ हिवै जगदेवजी हवेली भाड़ै लेनै पाछा घोड़ां री ठौड़ आवै नीं चावड़ी. घोड़ा दीसै नहीं नै रथ रा खोज दीसै ।
—जगदेव पंवार री वात

उ०—७ सुजा वलै आलिम सु एम, बोलै बादल गोरौ जेम । दिली सु चढि आयौ नहि हिवैं, भिड़तौ भागै मति जाय ।—प. च. चौ.

हिस-स स्त्री. [सं हिस्] १ पशु-पक्षी या किसी जानवर को ताड़ने, दुत्कारने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त क्रिया के लिये मुंह में श्वास को दबाकर निकालते हुए किया जाने वाला शब्द, ध्वनि, हुस्ट ।

उ०—जवार रा कणुका मूठी सूं छूटतां ई हंसती । पछै कबूड़ा चुगना जगा हंसती । वांनै हिस हिस करनै उडावती । किलकारियां करती । कूदती-फांदती रमती ।—फुलवाड़ी

[अ हिस] ३ संवेदन, एहसास, अनुभव ।

४ संवेदन शक्ति, अनुभव शक्ति ।

हिसाट, हिसाटि—देखो 'हींस' (रू. भे.)

उ०—ढोल नगै ढमढिमाट, परह तणै गुमगुमाटि, रणतुर तणै रणरणाटि, घोड़ा तणी हिसाटि, गजेंद्र नै गडगडाटि, राजा श्रीदसारणभद्र चालउ ।—व. स.

हिसाब-स पु. [अ] १ वह विद्या जिसमें, विभिन्न प्रकार की संख्याओं की जोड़, बाकी, गुणा, भाग करके कुछ निश्चित परिणाम निकाला जाता है, गणित विद्या ।

उदा.—म्हनै हिसाब आवै, थूं म्हनै ठग नीं सकै ।

२ उक्त विद्या के अनुसार किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण ।

उ०—कामदारां ! मईनां रा तौ हीया फूटगा । आटा में लूण जितौ खोट तौ खटै । वै तौ भाव धाड़ा ई मारण लागग्या । तकेना रौ आधा सूं वत्तां दांणौ डकार जावै । म्है लीद जोखन सब हिसाब कर लियौ ।—फुलवाड़ी

३ व्यापार में आय-व्यय का रखा जाने वाला विवरण, ब्यौरा, लेखा ।

उ०—१ पचास बरसां में कदैई भूल-चूक सूं ई हिसाब रै मेळ में भूल नीं रही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बीस बरस री कंवारी किन्या घोड़ी व्है ज्यूं आंगणै घूमै, थोड़ौ घणौ तौ विचार करौ । हिसाब रा आखर तौ अंधारा मैं ई बांचलो, पण धीवड़ी री आमै छायौ जोबन थांनै निजर ई नीं आवै ।—फुलवाड़ी

४ लेन-देन का विवरण, खाता ।

उ०—बांणियै री बेटी ह्या-दया बा'रौ, हिसाब किताब मैं कांमण गारी । धरमादै रै पीसियां सूं घर रा कांम काढतौ ही नीं संकै ।
—फुलवाड़ी

५ बकाया देनदारी ।

उ०—१ मूं'ता रै आदमी दाळ-चावळ माग्या । बळतै मैं पूळौ पड्यौ, चोटी मैं वटकौ बोढ्यौ अर कैयौ—आगलौ हिसाब कर'र पीसा चुकावौ, पछै पल्लौ मांडौ ।—दसदोख

उ०—२ मा'रजा मर-पच'र पांच सौ रा नोट जोड़्या, अर घर-वालां री हिसाब करणै खातर आपरै गांव नै दौड़्या ।
—दसदोख

६ गणना, शुमार, गिनती ।

उ०—संवत अर तिथ सूं हिसाब लगायां जाच व्ही कै बादळ गूंगी री बेटी सूं फगत चाळीस दिन मोटौ हौ ।—फुलवाड़ी

७ किसी वस्तु का *मान, परिभाषा या मात्रा का निर्धारण* करने की क्रिया ।

८ दर, मूल्य, भाव ।

९ नियम, कायदा, परिपाटी ।

उ०—टाबर जितरा पढण नै आवै, वांरै हिसाब सूं वारी बांध दी जावै ।—अमरचूंनड़ी

१० चाल, ढंग, तरीका, रीति, युक्ति ।

उ०—सेठ सगळां नै ई आपरै हिसाब सूं कूंतै ।—फुलवाड़ी

११ व्यवस्था, प्रबन्ध ।

उ०—कांमेती घणाकरी वेळा ठिकांणा रै हिसाब मैं रुंध्योड़ौ रैवतौ ।—फुलवाड़ी

१२ हृदय की प्रकृति की परस्पर अनुकूलता ।

१३ मितव्ययता की अवस्था या भाव ।

१४ मत-सम्मति, विचार ।

१५ आमदनी या जायदाद का निरीक्षण, जांच ।

उ०—तिण दिन पातसाहजी रै कचेड़ी दीवांन खोजी अवलहुसेन छै सौ राजाजी सुं खुणस राखै छै । सुउणै जागीरी री हिसाब कीयौ ।—नैणसी

१६ मूल्यांकन ।

उ०—..........जिका आपरी जिंदगी देस सूं ऊंची मांनता हुवै वांनै देस नैं गद्दार रै अलावा कांई मांनणौ चाईजै । वीरता अर बहादरी नैं लोग आप-आप रै विचार सूं कई तरियां कूंतै अर हिसाब लगावै ।—तिरसंकू

रू. भे.—हसाव, हैसाव, हैसाव ।

हिसाव-वही—सं. स्त्री.—वह पुस्तक, पंजिका या वही जिसमें आय-व्यय या लेन-देन का विवरण रखा जाता हो ।

हिसार—सं. पु.—एक प्रदेश का नाम ।

उ०—परगनै जैतारण रा गांव ७ मेरां रै दाखल छै । तिकै जैतारण री फिरसत मांहै अगै न छै नै **हिसार** मेरां रा गांव मांडीया तरै मेरां रा ऐ गांव जैतारण दाखल मांडीया छै ।—नैणसी

हिस्ट—वि. [सं. हृष्ट] हृष्ट पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ ।

क्रि. वि.—हट, धत् ।

हिस्ट-पुस्ट—वि. [हृष्ट-पुष्ट] स्वस्थ, मोटा-ताजा ।

हिस्टीरिया—सं. पु.—एक प्रकार का मूर्छा रोग जो प्रधानतः स्त्रियों को होता है ।

हिस्सादार—देखो 'हिस्सेदार' (रू. भे.)

हिस्सादारी—सं. स्त्री.—किसी में हिस्सेदार, भागीदार या साझेदार होने की अवस्था या भाव, साझेदारी ।

उ०—मोटौड़ौ वेटौ मिडिल फेल हौ, वौ जिला में एक सेठ री **हिस्सादारी** मैं सिमंट रौ होल-सेल डीलर वणग्यौ अर छोटौड़ौ इंजिनियरिंग कालेज जोधपुर मैं पढण लाग्यौ ।—अमरचूंदड़ी

रू. भे.—हिस्सेदारी ।

हिस्सेदार—सं. पु.—किसी कार्य, व्यापार, लेन-देन सम्पति आदि में कुछ अधिकार या हक रखने वाला, भागीदार, साझेदार ।

रू. भे.—हिस्सादार ।

हिस्सेदारी—देखो 'हिस्सादारी' (रू. भे.)

हिस्सौ—सं. पु. [अ. हिस्सः] १ उतनी वस्तु जो किसी अधिक वस्तु से अलग हो गई हो, अंश, भाग ।

२ विभक्तिकरण या विभाजन के कारण होने वाला खण्ड, टुकड़ा, विभाग ।

३ वंटवारे में मिलने वाला अंश, भाग ।

४ किसी का अंश, छोर, भाग ।

उ०—मूंडौ पिलकावतौ समंदर गिड़गिड़ायौ कै द्रमकुल्य नांव रौ म्हारौ अेक **हिस्सौ** धोराऊ दिख मैं है । उठै रौ पांणी पी अर मलेच्छ पाप करै अर मनै ई पाप रौ भागी विणावै । औ वांण जै उठै ठोकीज जावै तौ म्हारा पाप ई भसम परा व्है ।—चितरांम

५ किसी कार्य में दिया जाने वाला योग-दान ।

६ साझेदारी ।

७ किसी कार्य में विशेषता रखने का गुण ।

८ मिश्रित वस्तुओं में प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित अंश ।

९ वर्गीकरण या फैलाव के कारण होने वाला कोई उपविभाग, शाखा ।

१० किसान से कृषि उपज में से जागीरदार द्वारा लिया जाने वाला अनाज का निश्चित भाग या अंश ।

रू. भे.—हेंसौ, हैंसौ, हैसौ ।

हींकणी—सं. स्त्री.—एक वनस्पती विशेष ।

उ०—हनुमंती नई हडवडी, हीराउलि हर मज्जि । हाथा जोडी **हींकणी**, हेलां आवइ कज्जि ।—मा. कां. प्र.

हींकार, हींकारी—सं. स्त्री. [सं. हुंकार] वीज मंत्र की ध्वनि ।

हींग—सं. पु. [सं. हिंगु] १ अफगानिस्तान और फारस में स्वतः होने वाला एक पौधा विशेष ।

२ उक्त पौधे से निकलने वाला गोंद, दूध या तरल पदार्थ, जिसे जमाकर औषध या शाकादि में मसाले के रूप में काम लिया जाता है । (डि. को.)

उ०—१ तिलोर तीतर करवांनक मुरगावी होसनाक वणावै छै । पोटा चीरजै छै । पेटाळजी चीरजै छै । मुहड़ै मैं **हींग** भरजै जै । पेट मैं जीरौ भरजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ तांवौ, कांसौ, पीतळ, जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, **हींग**, सुखड़ौ, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा, वसतै दुगांणी ८ मण १ लागै ।—नैणसी

३ बांस की वह लम्बी तीली या खपची जो पतंग के वीचोवीच सीधी लगती है ।

४ देखो 'सींग' (रू. भे.)

रू. भे.—हिंगू, हींगू ।

हींगड़—देखो 'सींग' (मह; रू. भे.)

हींगड़ौ—देखो 'सींग' (अल्पा; रू. भे.)

हींगण—देखो 'हिंगूण' (रू. भे.)

हींगणौ, हींगवौ—क्रि. स.—१ लालयित होना, ललचाना ।

२ दीनता दिखलाना ।

हींगळू, हींगलू—सं. पु. [सं. हिंगुल] एक प्रकार का खनिज, जो सप्त उप धातुओं में से एक माना जाता है । यह चीन आदि देशों में पाया जाता है । स्त्रियां इसे बिंदी लगाने या मांग भरने के काम में लाती हैं । ईंगुर, सिंदूर । (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ मोतियां री मांग भरजै छ । ललाड़ ऊपर अरधचद्र विराज रह्यौ छै । केसर सी खोळां कीजै । **हींगळू** री बंदी दीजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ ग्रिह ग्रिह प्रति भींति सुगारि **हींगळू**, ईंट फिटक मै चुणी अचंभ । चंदण पाट कपाट ई चंदण, खुंभी पनां प्रवाळी खंभ ।

—वेलि

हींगळू-ढोलियौ—सं. पु. यौ.—वह पलंग, चारपाई या खाट जिसके पाये सिंदूर से रंगे हुए हों ।

हींगवघार—सं. पु.—१ पुष्करणा ब्राह्मणों की एक प्रथा जिसके अनुसार वारात व वर जव भोजन के लिये आते हैं तव हींग को जलते अंगारे पर डाल कर उनका स्वागत किया जाता है ।

२ हींग का वघार, छौंका ।

हींगवण—देखो 'हींगोट'।

उ०—यूं किण भांत रा वाकरा छै, रातड़ियै रिण रा, उजळा दळां रा, घणी गांगुवण हींगवण रा चरणहार।—रा. सा. सं.

हींगाठेन–वि.—बहुत, काफी, पर्याप्त। (वां. दा. ख्यात)

हींगापाई–सं. स्त्री.—खलबली, हलचल, परेशानी।

उ०—पण राज री परथै ग्रर धनवंतियां रै तौ हींगापाई लागी पण लागी। ग्री कुचमादी तौ ग्रापरी कुचमाद सूं राज री सगळी नींवां हिलाय दी।—फुलवाड़ी

हींगु—देखो 'हींग' (रू. भे.)

उ०—सूयर कदाचित् वालीयइ, ऐरावण कदाचित् दांमीयइ, चिंतामणि कदाचित् पांमीइ, कांमगवी कदाचित् वाहीइ, हींगु कदाचित् वघारीइ,..........।—व. स.

हींगोट, हींगोटौ–सं. पु. [सं. इंगुदी] इंगुदी नामक वृक्ष विशेष।

वि० वि०—इसके बड़े बड़े वृक्ष जंगल में पाये जाते हैं। इसके फल-फूल नींबू के समान कुछ लम्बे व गोल होते हैं। इसके कांटे भी होते हैं। यह कफ, रक्ताम, ग्रन्थि ग्रौर व्रणविनाशक है। इसका फल स्वादिष्ट, कड़वा, स्निग्ध, गरम तथा कफ व वात विनाशक होता है।

हींगोरौ—देखो 'हींगोटौ'।

उ०—हींगोरै हैइउं वरिउं, जौ सहिकार सवाद। मद्य न दीठउं माटि तइं, मूंत्रि चढि उनमाद।—मा. कां. प्र.

हींच–सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई।

उ०—हींच महीं घायल हुग्रा, जोया जखमी जेताह। फिर स्रीमुख फुरमावियौ, रैंवत वाधर ताह।—पा. प्र.

२ प्रहार, चोट, ग्राघात।

उ०—हींच उडै हाथेह, लग गांगौ दोलौ लड़ै। मचियै जुध माथेह, कमधज ग्रोरी काळवी।—पा. प्र.

रू. भे.—हीच।

हींचकौ–सं. पु.—१ झूला, हिंडोला।

उ०—हेलि वंधावइ हींचका, सुरतर केरी साख। माधव-साथिं हींचसिउं, लीलां लटकइ लाख।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हिचकौ' (रू. भे.)

उ०—तूल तलाई ढोलिया, पछेडा चोली चंग। हीर ग्रछोडइ हींचका, हींडोलाटि सुचंग।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हीचौ।

हींचण–सं. स्त्री.—१ मकड़ी की जाति का एक जंतु जिसकी बनावट केंकड़े के समान होती है।

२ देखो 'हिचण'।

हींचणौ–सं. पु.—एक प्रकार का ग्रशुभ घोड़ा। (शा. हो.)

हींचणू, हींचणौ–सं. पु.—झूला, हिंडोला, पालना। (डिं. को.)

हींचणौ, हींचबौ–क्रि. स.—१ झूला झूलना।

उ०—१ एकि वादिइं फूल चुटइं, व्रक्ष तणा पल्लव खूंटइं। हिंडोळइं हींचइ, झीलतां वादिइं जालिइं सींचइं।—रा. सा. सं.

उ०—२ हेलि वंधावइ हींचका, सुरतर-केरी साख। माधव साथिं हींचसिउं, लीला लटकइ लाख।—मा. कां. प्र.

२ हिलना-डुलना, लटकना, लटकते हुए झूलना।

उ०—मांणिक मूडा जेवडुं, तिणइ कि हींचइ हार। कांमिनि कीजइ ग्रेहनइं, ग्रलगा-थिकां जुहार।—मा. कां. प्र.

३ भ्रमण करना, विचरण करना।

उ०—विसहर ! तूं निरविस जरी, खरी न ग्रावइ खंति। ससिहर सिर-ऊपरि रहइ, तूं हेठिली हींचंति।—मा. कां. प्र.

४ खूंटे से बंधे बछड़े का मुक्त होने के लिये तड़फना, ग्रातुर होना।

उ०—हींचता वाछड़िया तांवाड़, मिळै जद गायां ग्रड़वड़ जाय। टाळतां भूल ग्रापणी गाय, हठीला टावरिया लड़ जाय।—सांझ

५ मुरट नामक घास की बाले काटकर एकत्र करना।

६ उपलब्ध होना, मिलना।

उ०—पीतल तां लगि पहिरिइ, जां नह हींचइ हेम। जां मूं-सिऊं मिलती नथी, तां माधव-सिउं प्रेम।—मा. कां. प्र.

७ देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू. भे.)

उ०—वेढ हुतां पण घणी वेळा हुई थी। माहोमांही हींचिया था।—नैणसी

हींचणहार, हारौ (हारी), हींचणियौ—वि०।

हींचिग्रोड़ौ, हींचियोड़ौ, हींच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हींचीजणौ, हीचीजवौ—कर्म वा०।

हीचणौ, हीचवौ, हीचवणौ, हीचवणौ—रू० भे०।

हींचाहींच–सं. स्त्री.—खीचा तान, लूट-खसौट।

उ०—ग्रंत काल इन जीव की, व्हैगी हींचाहींच। जनहरीया नर देह मैं, कुण ऊंच कुण नीच।—ग्रनुभववांणी

रू. भे.—हीचाहीच।

हींचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ झूला-झूला हुग्रा. २ हिला हुग्रा, डुला हुग्रा, लटका हुग्रा, लटकते हुऐ झूला हुग्रा. ३ भ्रमण किया हुग्रा, विचरण किया हुग्रा. ४ मुक्त होने के लिये तड़फा हुग्रा, ग्रातुर हुवा हुग्रा. ५ काटकर एकत्र किया हुग्रा. ६ उपलब्ध हुवा हुग्रा, मिला हुग्रा. ७ देखो 'हिचियोड़ौ' (रू. भे.)।

(स्त्री. हींचियोड़ी)

हींचोल, हींचोळौ, हींचोलौ–सं. पु.—झूले या पालने के दिया जाने वाला धक्का हिलोरा।

उ०—१ मुगध जोइ नितु टेपरी, माता दइ हींचोल। नितु नितु मांनि घूघरी, ग्रेम करी रंग रोल।—मा. कां. प्र.

उ०—२ हींडो मैं टावर हींडै हौ, मां दै रही हींचोळा। हालरिया रै सागै सागै, टावर कर रह्यौ किलोळा।—सांतिलाल देवेरा

हींचौ—१ देखो 'हींचकौ' (रू. भे.)

२ देखो 'हिचकौ' (रू. भे.)

हींजड़ौ—न. पु.—१ मनुष्य जाति का वह विकृत हुआ प्राणी जो न स्त्री होता है न पुरुष होता है, अर्थात् जिसके न तो पुरुषेन्द्रिय का विकास होता है और न उसमें स्त्रियोचित चिन्ह होते हैं, नपुंसक।

वि० वि०—हींजड़े का सीधा एवं प्रत्यक्ष अर्थ नपुंसक होता है अर्थात् मनुष्य जाति का वह प्राणी जो न पुरुष श्रेणी में आता है न स्त्रियों की श्रेणी में गिना जाता है। यह बीच की स्थिति का होता है। पहिचान के तौर पर इसके पुरुष चिन्ह का कुछ अंश होता है।

जो प्राणी इसी अवस्था में पैदा होते हैं वे प्राकृतिक हींजड़े होते हैं। लेकिन बच्चों के पुरुष चिन्ह को क्षत करके बनावटी हींजड़े भी तैयार किये जाते हैं।

इन प्राणियों की बोली का स्वर मर्दाना होता है तथा हाथ, पांव, नाक-नक्शे में भी स्त्रियों की सी कोमलता न होकर मर्दानापन ही झलकता है। लेकिन ये वस्त्र स्त्रियों के पहनते हैं, नाम भी स्त्रियों के ही रखते हैं और हाव-भाव भी स्त्रियों के से ही दिखाते हैं। हींजड़े हिन्दू-मुस्लिम दोनों वर्गों में हैं और समाज में हंसी-खुशी के मौकों पर नाचना-गाना इनका पेशा है।

चूंकि शारीरिक बनावट में मर्दानापन अधिक होता है इसलिये इनके डाढी-मूंछ भी आती है और स्त्री वेष में रहने के कारण ये डाढी-मूंछ रख नहीं रख सकते, इसलिये इनका डाढी मूछ मुंडाई का खर्चा अधिक होता है।

स्त्री एवं पुरुष वर्ग की तरह हींजड़ों का भी एक बहुत बड़ा वर्ग है, परन्तु इसमें नाजर, फातड़ा, खोजा आदि कुछ उप वर्ग भी हैं और उनमें कुछ भिन्नता भी होती है। यथा :—

(१) **फातड़ा या पवैया**—गुजरात में हींजड़े को फातड़ा या पवैया कहते हैं। लेकिन वास्तव में पवैया हींजड़े न होकर उनका एक सहवर्ग है। ये लोग हींजड़ों के साथ रहकर नाचने गाने में सहयोग करते हैं तथा हींजड़ों के ही अन्य छोटे-मोटे कार्य करते हैं।

२ **नाजिर या खोजा**—नाजिरों के इतिहास की शुरुआत चीन की तवारीखों से मानी है। इन तवारीखों में ऐसा उल्लेख है कि जो व्यक्ति चोरी छुपे व्यभिचार करते पाये जाते थे उन्हें नपुंसक बना कर राज महलों या शाही महलों में टहलवंदगी करने के लिये रख दिया जाता था। कभी कभी बागियों को भी यही सजा दी जाती थी। नाजिरों का मुख्य कार्य शाही महलों में जनानखानों की चौकीदारी करना था। लेकिन मुस्लिम शासन काल में इनका महत्व बहुत बढ़ गया और शाही महलों में नाजिर रखना एक आम रिवाज हो गया। इससे इनका वर्ग भी बहुत बढ़ गया और इनको बड़े बड़े पद या ओहदे दिये जाने लगे। सुलतान अलाउद्दीन ने अपने ख्वाजासरा मालिक कपूर (नाजिर) को जो सम्मान दिया वह इतिहास प्रसिद्ध है।

हींजड़ों एवं नाजिरों में इतना फर्क है कि नाजिरों के हींजड़ों की तरह डाढी मूंछे नहीं आती, वे मर्दाने वेष में रहते और शाही महलों में ही कार्य करते। हींजड़ों की तरह नाचने गाने का पेशा नहीं करते।

इतिहास—इन प्राणियों की उत्पत्ति आदि सृष्टि से ही मानी जाती है। पुराणों में भी इनका उल्लेख मिलता है महाभारत युद्ध में राजा द्रुपद के पुत्र शिखंडी को भीष्म पितामह ने नपुंसक की श्रेणी में मानकर उस पर शस्त्र नहीं उठाया था। अज्ञातवास के समय अर्जुन ने भी वृहन्नला नामक हींजड़े का वेप धारण किया था और विराट की पुत्री को नाच-गान सिखाने का कार्य किया था। मध्य युगीन मुस्लिम हींजड़ों की उत्पत्ति मक्का-मदीना से मानी जाती है।

सोजत व जैतारण के पास एक गोरम नामक पहाड़ है जिसके नीचे प्रति वर्ष फागुण कृष्ण १४ को एक मेला लगता है वहाँ बहुत से हींजड़े एकत्र होते हैं। और नाच-गान करते हैं।

ऐसे प्राणी मनुष्य जाति में ही हों ऐसी बात नहीं है वरन्—चौपाये जानवरों में भी ऐसे प्राणी होते हैं।

२ वह व्यक्ति जो अपना पुरुषत्व खो चुका हो, नामर्द।

उ०—लालचियां संतोस ज्यूं, मन हींजड़ा मनोज। ऊमर मैं नह उपजै, इम मावडियाँ मौज।—बां. दा.

६ कायर व डरपोक व्यक्ति।

वि.—१ नपुंसक, नामर्द।

२ कायर, डरपोक।

उ०—अर फेर ज्यूं किसन भगवान अरजुन नै नपुंसक, हींजड़ौ, नामरद कह'र जिण तरियां 'महाभारत' री लड़ाई करवाई उणी तरियाँ म्हनै बुजदिल कह'र म्हारै कनै सूं पूरौ आतम समरपण करवाय लियौ।—तिरसंकु

३ अशक्त, कमजोर।

४ उत्साहहीन।

रू. भे.—हिंजड़ौ, हींजरौ।

हींजड़ापण, हींजड़ापणौ—सं. पु.—नपुंसक, नामर्द या क्लीव होने की दशा या भाव, क्लीवता।

हींजरणौ, हींजरबौ—देखो 'हिंजरणौ, हिंजरबौ' (रू. भे.)

उ०—गजराजां अग्राज, गाज हुवै त्रांबागळां। फौजां धज नेजां फररि, वहता हींजरि वाज।—वचनिका

हींजरियोड़ौ—देखो 'हिंजरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हींजरियोड़ी)

हींजरौ—सं. पु.—१ वियोग जनित दुःख, विछोह की पीड़ा।

२ देखो 'हींजड़ौ' (रू. भे.)

हींट, हींठ—सं. पु.—१ अंगूठा।

२ लिंग या योनि के पास के बाल, केश।

हींड-सं. स्त्री.—१ झूले में झूलने की क्रिया या भाव।

२ एक किंवदंती के अनुसार, वीरगति प्राप्त किसी प्रसिद्ध योद्धा की आत्मा का, रात्रि के समय, मसाल लेकर लगने वाला चक्कर या गश्त।

उ०—मिनख भींकता रह्या, कुत्ता ऊंची मूंडी कर कर नै कूकता रह्या अर धांनपुर री कांकड़ मै रात भर मांमाजी री हींड री गळाई झपाझप करती लालटेणां फिरती री।—अमरचूंनड़ी

३ देखो 'हींड़' (रू. भे.)

४ देखो 'हींडौ' (मह; रू. भे.)

उ०—१ नी गांव रै निकाळै एक बड़ी खेजड़ी छै जठै हींड बांधी छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ लचकै गोडी लागतां, मचकै हींड मचोळ। तन दमकै दांमणि तरह, झमकै पग रिमझोळ।—सिववख्स पाल्हावत

हींडण-सं. स्त्री. [सं. हिण्डनम्] १ झूला झूलने की अवस्था या भाव।

२ लम्बे पैरों वाला एक प्रकार का जन्तु।

वि.—झूलने वाला। (डि. को.)

हींडणियौ-वि.—१ झूलने वाला।

२ लटकने वाला।

हींडणौ, हींडबौ-क्रि. स. [सं. हिण्डनम्] १ झूला झूलना, हींडना।

उ०—१ गांव री लुगाई छोकरी खड़ी छै गीत गावै छै। मोटियार हींड हींडै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ नींवूड़ै री छइया हींडो घालै हे ओ धणवारी रे हंजा। छैलो नै मारवण दोइ हींडो हींडसी ओ राज।—लो. गी.

२ छोटे वच्चों का पालने में झूलना।

उ०—१ आगै मांहे पैस देखै तौ पालणै मैं वाळक हींडै छै।

—देवजी वगड़ावतां री वात

उ०—२ जठै एक कन्या कही राजा री छै। तिका राखस लै आयो छै। सु पालणै मैं वैठी हींडै छै।—चौवोली

३ मस्ती में झूमना।

उ०—१ मातै हाथी ज्यूं हींड रह्या छै। तीन भांत री पवन वाज रह्यौ छै — सीतळ मंद सुगंध। गरमी मिटायजै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ तरां आप उठिया छै। मातै गजराज ज्यूं हींडता थका खवास-पासै वांणां रै हाथ ऊपर हाथ दियां घूमता थका घोड़ै पधारै छै।—रा. सा. सं.

४ लहरे लेना, हिलोरें खाना।

उ०—अर तीन पांडुवां रै विचाळै मारग वेवती काळी मासी रै गळां पड़्या जूना खोळियां मैं जांणै अेकर पाछौ वाळपणौ हींडण लागो।—फुलवाड़ी

५ लटकना।

उ०—बाजूवंध वंधै गोर वाहु विहुं, स्यांम पाट सोहत सिरी। मणिमै हींडि हीडलै मणिधर, किरि साखा सीखंड की।—वेलि

६ विचरण करना, भ्रमण करना।

उ०—१ हंस चडी हींडइ सदा, वीणा पुस्तक पांणि। निगम निरंतर आलवइ, घोरतार मधि वांणि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ मन तौ उण री हवा रै सागै उडतौ, उजास रै भेळौ पळकतौ, चांदणी साथै झोला खावतौ अर वादळां रै माथै हींडतौ।

—फुलवाड़ी

७ भटकते हुए फिरना, भटकना।

उ०—क्षण एक थ्युं छांडी गयां, तां-मिस मंडिउं मांड। नाहनडलीनइं सोधती, वनि-वनि हींडसि रांड।—मा. कां. प्र.

८ गमन करना, जाना।

उ०—कुखत्री लोपी कार, 'वूढै' नै 'जींदै' वहू। चोड़ै चूंथ चकार, हमणौ व्रत लै हींडिया।—पा. प्र.

९ चलना, दौड़ना। (डि. को.)

हींडणहार, हारौ (हारी), हिंडणियौ—वि०।

हींडिओड़ौ, हींडियोड़ौ, हींड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हींडीजणौ, हींडीजबौ—कर्म वा०।

हिंडणौ, हिंडबौ, हींडळणौ, हींडळबौ, हीडणौ, हीडबौ—रू० भे०।

हींडळ-सं. पु.—झूला, पालना।

हींडळणौ, हींडळबौ—देखो 'हींडणौ, हींडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हाथी घणा घरां हींडळसी, सूर हरा असा सभाव। दूणा पटा वधारा देसी, आप जसा करसी अमराव।—तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ जांणै नागण हींडळै, खंभा सोनारां। औपन लाडी ऊमदा तखतांण तैयारां।—मयारांम दरजी री वात

उ०—३ है थाटां वीच हींडलै हाथी, छत्रपत जिसा चालिया चढै। गजवंध तणा आवतां गढवां, गढपत जड़ै किंवाड़ गढै।

—किसनौ आढौ

हींडळणहार, हारौ (हारी), हींडळणियौ—वि०।

हींडळिओड़ौ, हींडळियोड़ौ, हींडळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हींडळीजणौ, हींडळीजबौ—कर्म वा०।

हींडळियोड़ौ—देखो 'हींडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हींडळियोड़ी)

हींडाणौ, हींडाबौ—क्रि. स. ['हींडणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ झूला झूलाना, हींडाना।

२ छोटे वच्चों को पालने में झूलाना।

३ मस्ती में झूमाना।

४ लहरें खिलाना, हिलोरें खिलाना।

५ लटकाना।

६ विचरण कराना, भ्रमण कराना।

७ भटकाना, भटकते हुए फिराना।

८ जाने या गमन करने के लिए प्रेरित करना।

९ चलाना, दौड़ाना ।

हींडाणहार, हारौ (हारी), हींडाणियौ—वि० ।

हींडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हींडाईजणौ, हींडाईजबौ—कर्म वा० ।

हींडायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ झूला झूलाया हुआ, हींडाया हुआ. २ पालने में झूलाया हुआ. ३ मस्ती में झूमाया हुआ. ४ लहरें लिराया हुआ, हिलोरें खिलाया हुआ. ५ लटकाया हुआ. ६ विचरण कराया हुआ, भ्रमण कराया हुआ. ७ भटकाया हुआ, भटकते हुए फिराया हुआ. ८ जाने या गमन करने हेतु प्रेरित किया हुआ. ९ चलाया या दौड़ाया हुआ ।

(स्त्री. हींडायोड़ी)

हींडियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ झूला झूला हुआ, हींडा हुआ. २ पालने में झूला हुआ. ३ मस्ती में झूमा हुआ. ४ लहरें लिया हुआ, हिलोरें खाया हुआ. ५ लटका हुआ. ६ विचरण किया हुआ, भ्रमण किया हुआ. ७ भटका हुआ, भटकते हुए फिरा हुआ. ८ गमन किया हुआ, गया हुआ. ९ चला हुआ, दौड़ा हुआ ।

(स्त्री. हींडियोड़ी)

हींडी—सं. स्त्री.—बच्चों को झुलाने का झूला ।

उ०—**हींडी** मैं पड़ियौ टाबर गट्टां-पट्टां सूं रमै जद मावड़ उणनैं रम्मत मैं लागोड़ौ गिणै ।—चितरांम

हींडोळ, हींडोल—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ मातां धोतां त्रमल झुलरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ **हींडोल** हिचोलीं । वलि रमीयौ अठ दस बरस नुं वालक टोली, परणावौ तुं नइ पछैं दयिता हुइ दोली ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ कइरी **हींडोलइ** चढी, कोकिल किहां कुहुकाय । कांम-कंदला तूं चढी, माहारा हियडा मांहि ।—मा. कां. प्र.

हींडोलणौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—हरख **हींडोलणइ** झूलइ नेमिप्रभ जिनराय । जिहां सुद्ध आसय भूमि पटली, लोहियइ थिरथाय ।—वि. कु.

हींडोळणौ, हींडोळबौ, हींडोलणौ, हींडोलबौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंडोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **हींडोळै** झरोखा हेटै, खुंभालां झाटका देता ।

—मांधोसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—२ पालणड़इ पउढयउ रमइ म्हारउ बालुयड़उ, **हींडोलइ** अचिरा माय म्हारउ नान्हड़ियउ ।—स. कु.

उ०—३ भूपति धिनौ आखै धनि भूरा, सह पूरा खत्रवाट साराह । थरि मह गळै **हींडोळै** थांरै, वळै वीर वदीयौ वाराह ।

—भगतसिंघ हाडा रौ गीत

हींडोळाखाट—सं. स्त्री.—चारपाईनुमा झूला या पालना ।

हींडोलाट, हींडोलाटि—सं. पु.—१ झूला, धक्का ।

२ देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—तूल तलाई ढोलीया, पछेडा चोली चंग । हीर अछोडइ हींचका, **हींडोलाटि** सुचंग ।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हीडोलाट ।

हींडोळि, हींडोळी—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—मयण कला मंदोदरी, उन्नत उयर पवित्र । कइरी-सरिखुं कुच-युगल, चडी **हींडोलि** चइत्रि ।—मा. कां. प्र.

हींडोळियोड़ौ—देखो 'हिंडोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हींडोळियोड़ी)

हींडोळौ, हींडोलौ—१ देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ जां वसै तेतीसूं कोड़ि छल्या कचोळा अमी का । वै गुर परसाद पीवांहि **हींडोळै** पंगि वैसि कै ।—वि. सं. सा.

उ०—२ गजेंद्र कुंभस्थल सीस ढोलइं । कीई **हींडोला** जिय सीस डोलइं ।—सालिसूरि

उ०—३ चापली जा सद्रिस भ्रलता, विकसित लोचन वदन कपोल, चैत्रमासि **हींडोला** समांन स्रवण, द्वितीया ससि सद्रिसविसाल भाल, एवं विध बाला ।—व. स.

२ देखो 'झूलौ' ।

हींडौ—सं. पु. [सं. हिंडनम्, हिंदोल] १ किसी पेड़ की मोटी डाल के लम्बी रस्सियां बांध कर बनाया जाने वाला झूला, जो प्रायः श्रावण मास में बांधा जाता है तथा जिस पर नव युवतियां व नव वधूएं झूलती है, झूला । (डिं. को.)

उ०—१ ए मा, चंपा बाग मैं **हींडौ** घला दै, तीज नुहेली आई । ए मा, और सहेल्यां रे घर रौ **हींडौ**, म्हारै हींडौ नांही ।

—लो. गी.

उ०—२ गुड्डी वालै, **हींडा** हींडै है अर खेलै कूदै पण म्हांकाळी चिड़कली रौ विछोवौ करौ हौ, जकौ ठीक नीं है ।—दसदोख

उ०—३ कुंवरसी दीठौ वडौ जावतौ **हींडा** वांधिया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ माघ री पूनम नै धणिया रोपणी रोपाई रै । आंवळकी इग्यारस नै **हींडौ** मंडियौ रै । वड़लै री सांखां में, कै हींडा लेवण दै ।—भंवरलाल सुथार

२ पालना ।

३ पालने मैं झुलाने की क्रिया ।

उ०—एक वीर सुया सती आपरा पुत्र नै **हींडा** देती घर री रीत सिखावै है ।—वी. स. टी.

४ वह चारपाई जो झूले के समान झूलती हो, चारपाईनुमा झूला ।

रू. भे.—हिंडौ ।

मह;—हींड ।

हींण—देखो 'हीण' (रू. भे.)

उ०—**हींण** दोख सौ हुवै, जात पित मुदौ न जाहर । निनंग जेण नै निरख, विकळ वरणण विन ठाहर ।—र. रू.

हींगो—देखो 'हींगो' (रू. भे.)

हींद—देखो 'हिंद' (रू. भे.)

हींदणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू. भे.)

हींदव—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—१ गिरां में सुमेर ओपै सुरतांण राहां गणां, जत्यां मैं मारुत प्रजापति रिग्गां जांण। जाप में अजपा जहि सांची वळी गजा जिसो, महाराजा तपै लीयां हींदवां चो मांण।

—भगतरांम हाडा रो गीत

उ०—२ अर रांणी नै भाखरसी भगाया हंता तिकां पठांण उवा नू आदमी मेलीया—यारी पाछा आवै। हींदवां चूक कीयो।

—राजा नरसिंघ री वात

हींदवांण—देखो 'हिंदवांण' (रू. भे.)

उ०—हींदवांण छात हींदवांण सूर, अजमेर जोधपुर मांण पूर। अजवाळ वंस अस गांव अरोड़, ढीलड़ी वीच महिपत्यां मोड़।

—रा. सा. सं.

हींदवाछात, हींदवोछात-सं. पु.—हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा।

उ०—कठठ कांठळ कटक रौस चामांस कर, जवन पत हींदवांछात जूटा। अभंग जसराज सर कणेगर ऊपरा, खाग वादळ वरस वार तूटा।—अरजुण जी बारहठ

हींदणौ, हींदवौ—देखो 'हींडणौ, हींडवौ' (रू. भे.)

उ०—सावण आयां घरै थारै हींदा जिको घालेला। हींदिया छै तौ परियां थोकै परियां खांच जावेला।—रा. सा. सं.

हींदियोड़ौ—देखो 'हींडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हींदियोड़ी)

हींदु—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—अकबर गरव न आंण, हींदु सह चाकर हुवा। दीठौ कोई दिवांण, करतौ लटका कटहड़ै।—अग्यात

हींदुसथांन, हींदुस्तांन—देखो 'हिंदुस्तांन' (रू. भे.)

उ०—१ संमत १६८४ काती वद १३ माहे पातसाह जांहांगीर फौत हुआ। जुनेर था साहजादा माहावतखांन हींदुसथांन नुं आया।—नैणसी

उ०—२ सिवलाल जसां को रूप देखनै मन मै उदास हुओ—जमां री जोड रो आदमी हींदुसथांन मै एक ही नजर न आवै।

—मयारांम दरजी री वात

हींदू—देखो 'हिंदू' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सुर असुरा इण आहुड़ै, आही एक अवक्क। पिड़ि जितरा हींदू दड़ै, तेता महम तुरक्क।—रा. सा. सं.

उ०—२ हींदू पूजै देहरा, मुसलमांन मसीत। हरीयै चेतन चेतीया, पथा अचेतन प्रीत।—अनुभववांणी

हींदूवांणी—देखो 'हिंदवांणी' (रू. भे.)

हींदूकार—देखो 'हिंदूकार' (रू. भे.)

उ०—१ हींदू हींदूकार, रांणा जै राखत नहीं। अकबर तौ एकार, पौ सौ करत प्रतापसी।—अग्यात

उ०—२ हींदूकार तणा हलकारै, घणौं कटक बंध मेल घणां। इडर वळै वेद इधराया, ताडै दळ सुरतांण तणां।

—महारांणा सांगा रो गीत

हींदूपत, हींदूपति—देखो 'हिंदूपति' (रू. भे.)

हींदूसथांन, हींदूस्थांन—देखो 'हिंदुस्तांन' (रू. भे.)

उ०—संधु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट संखोद्धार, एतला संजिगत अम्हारा देस-देसाउर........।—व. स.

हींदोल, हींदोलइ—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ माधव मन माहरा मांहि, तइं वंधिउ हींदोल। हटकी हटकी हींचतां, हईडइ हाल कलोळ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ सिर वंधी क्षिण सातमइ प्रगटसि दीवा मासि। हींचसि हींदोलइ चढी उल्लालिसी आकासि।—मा. कां. प्र.

हींदोलाट—देखो 'हिंडोळाट' (रू. भे.)

उ०—१ क्षणु पालखि क्षणु ढोलिइ, कौ हींदोलाट। तूल तलाई पाथरी, अतिलसना ऊछाट।—मा. कां. प्र.

उ०—२ घम घम वाजइ घूघरी, हींचइ हींदोलाट। कांमिनि सिउं क्रीडा करइ, नींलज वेडा नाट।—मा. कां. प्र.

हींदोलि, हींदोलु—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ हींदोलि हरखइं चढी, हींचण लागी हेलि। उल्लालइ अंबर भवनि, माधव दीठइ ठेलि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ घट माहरु घर ताहरुं, सास तै दोरी सार। मनि हींदोलु वांधिउ, माधव हींचणहार।—मा. कां. प्र.

हींदौ—देखो 'हींडौ' (रू. भे.)

उ०—जावती न आग माथै चहरा नै चूंथ जावसी। सावण आयां घरै थारै हींदा जिको घालेला।—रा. सा. सं.

हींप, हींफ-सं. स्त्री.—शीतल वायु।

उ०—घणी सीतळ पांणी सूं सीचिआ थका वीभणां वाइफांयां सूं हींफा खाइ रहीआ छै।—रा. सा. सं.

रू. भे.—हीप।

हींवांण-सं. पु.—एक जाति विशेष का घोड़ा।

उ०—भारिज सीवूया हींवांण, पहिठांणां उत्तराही। घोडा ऊंदिरा कनूज देसना, कुलथ हांसला मध्याही।—कां. दे. प्र.

हींमजी-सं. पु.—एक वृक्ष विशेष।

उ०—हरडू हरडि हींमजी, हरडां हलद्रह वेर। हरवी हायुडी हरी, हुंफट हुंसि हसेर।—मा. कां. प्र.

हींमत—देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)

उ०—हीमत मत छाडौ नरां, मुख तैं कहता रांम। हरीया हींमत सुं कीया, ध्रू का अटल वांम।—अनुभववांणी

हींमती—देखो 'हीमती' (रू. भे.)

उ०—हीमति बहादर **हींमती** कळि भडां घोड़ां कीमती। देसपति संभ्रम दमरा ऊदम अंगम गम हींदुआं ओपम।—ल. पिं.

हींयाफूटौ—देखो 'हियाफूटौ' (रू. भे.)

हींयाळी—देखो 'हियाळी' (रू. भे.)

हींयोड़ी—देखो 'हिओड़ी' (रू. भे.)

हींयोड़ौ—देखो 'हिओड़ौ' (रू. भे.)

उ०—तीन वरस व्हैतां व्हैतां वौ म्हांनै गांठ देय ढांण काढै, पछै **हींयोड़ौ** फेरै, हळ जोतै अर गाडी खड़ै।—फुलवाड़ी

हींयौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—**हींयै** खटूकौ लागगौ, विरहन सेती आय। का घरि आवौ सजनां, का मोकूं लै जाय।—अनुभववांणी

हींस—सं. स्त्री. [सं. हेष, हेषः] १ घोड़े के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट। (डिं. को.)

उ०—१ वप तीर छरा छरा रंध्रवंरा, हय **हींस** हरा हरा मचग हरा। तरवार खरा खरा तूट तरा, परा मंत्र भरा भग रसरा परा।—र. रू.

उ०—२ होवै भड़ हाकळ हैंवर **हींस**। चढै मारका भड पावुअ सीस।—पा. प्र.

रू. भे.—हीस।

२ देखो 'हूंस' (रू. भे.)

रू. भे.—हिंस, हिसाट।

हींसरणौ—सं. पु. [सं. हेषरा] घोड़ें के बोलने की क्रिया, शब्द या आवाज।

उ०—कै इत्ता मैं बादळ रै घोड़ा रौ **हींसरणौ** सुणीजियौ।
—फुलवाड़ी

हींसणौ, हींसबौ—क्रि. अ. [सं. हेषणं] १ घोड़े का बोलना, हिनहिनाना।

उ०—१ मसत हसत बहु मोल द्वार घूमैं खळदाहरा। बाळां **हींसै** बाज वर्णं जांणं रविवाहरा।—बां. दा.

उ०—२ घोड़ौ तौ बादळ री मंसा परवांणै हुकम बजावतौ। गवाड़ी मूंडागै हिणहिणाट करतौ **हींसतौ** जणा आंगणै मोत्यां री झड़ लागती।—फुलवाड़ी

२ उमंगित होना, उत्साहित होना, प्रसन्न होना।

उ०—१ ज्यांनै वांद्यां हिवड़ौ **हींसौ**, स्त्री विहरमांन वंदू वीसौ।
—जयवांणी

उ०—२ सुंदर मूरति प्रभु तणी, निरखंतां सुख थायौ जी। हियड़ौ हींसइ माहरौ, पातिक दूर पुलायौ जी।—स. कु.

३ तरसना, लालायित होना।

उ०—केवल जिम दूर थकी दीसैं, हीयड़ौ जिन देखरा नैं **हींसै**। वाखांणै सहु विस्वा विसैं, यात्रा दीधी ए जगदीसैं।—ध. व. ग्रं.

हींसणहार, हारौ (हारी), हींसणियौ—वि०।

हींसिओड़ौ, हींसियोड़ौ, हींस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हींसीजणौ, हींसीजबौ—भाव वा०।

हींसवणौ, हींसववौ, हीसणौ, हीसबौ—रू० भे०।

हींसळ, हींसल—सं. पु. [सं. हेषिन्] घोड़ा, अश्व।

उ०—१ वाजिंद गज वाकर मांनव वळ, पोहौ अनि होम हुवा वोही पूर। हाडा रिण तीरथ करि **हींसळ**, सरियौ राज मेध जगि सूर।—राव सूरजमल हाडा रौ गीत

हींसवणौ, हींसववौ—देखो 'हींसणौ, हींसबौ' (रू. भे.)

उ०—बोल नक्कीवरां **हींसवै** हैमरां, धज धींगरां ऊपरां ऊछळै।
—सू. प्र.

हींसवणहार, हारौ (हारी), हींसवणियौ—वि०।

हींसविओड़ौ, हींसवियोड़ौ, हींसव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हींसवीजणौ, हींसवीजबौ—कर्म वा०।

हींसवाटा—सं. स्त्री.—सोलंकी राजपूत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हींसवियोड़ौ—देखो 'हींसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हींसवियोड़ी)

हींसांण—सं. स्त्री.—घोड़े के हींसने या हिनहिनाने की क्रिया या आवाज।

उ०—निहसंत नीसांण हुवै वाज **हींसांण**। सझ काज घमसांण अपांण भड़ ओघ।—र. ज. प्र.

हींसार, हींसारव—सं. स्त्री.—हिनहिनाहट।

उ०—१ जाक्या जाता ऊचरइ, हयवर मुखि **हींसार**। चियार छत्र चांमर ढळइ, भूप चढिउ गज भारि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ हय **हींसारव** गज घमक, वळीया सुहड बहूत। क्रमि क्रमि मारग मूंकतां, कांमावती पहूत्त।—मा. कां. प्र.

रू. भे.—हीसाल।

हींसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हिनहिनाया हुआ, बोला हुआ. २ उमंगित, उत्साहित व प्रसन्न हुवा हुआ. ३ तरसा हुआ, लालायित हुवा हुआ।

(स्त्री. हींसियोड़ी)

हींसौ—सं. पु.—घोड़ा, अश्व। (डिं. को.)

हींसू—सं. पु.—भूमि खोदने का एक औजार विशेष।

उ०—भारी सत्र कवाड़ां भांजै, अरियां भेड़ै भांत असी। हैंसळ हूंत वडा अर **हींसू**, कूट 'लालियै' किया कसी।
—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

रू. भे.—हैंसु, हैंसू।

हींसोड़ी—सं. स्त्री.—१ जुलाहों का एक कैंचीनुमा औजार जिस पर ताना फैला कर पाई करते हैं।

२ देखो 'हिओड़ी' (रू. भे.)

हीं-हीं—सं. स्त्री. [अनु.] १ हँसी, खिलखिलाहट।

२ हैंसी री आवाज ।

रू. भे.—ही-ही ।

ही-अव्यय [सं.] १ भी ।

उ०—जिणि सेन महा फण फणि फणि त्रि त्रि जीह, जीह जीह नव नवी क्रम । तिणि ही पार न पायौ त्रीकम, वयण डेडरौ किसौ क्रम ।—पीरदान

२ एक मात्र, केवल ।

उ०—१ सेवक ही रहै साध कु, आळसि कबू न जाय । हरीया जब तब राम कुं, आसा भीतरि पाय ।—अनुभवांणी

उ०—२ जिणि देसै सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ । उआं लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ ।—ढो. मा.

३ निश्चयात्मक या निर्णय सूचक अव्यय ।

उ०—१ वैदां री बेटी, पल्लीवाळां रै परणायोड़ी । राजी नांव सदा राजी ही रैवै है ।—दसदोख

उ०—२ जै जीवण जिन्हां-तणां, तन ही मांहि वसंत । धारइ दूध पयोहरे बाळक किम काढंत ।—ढो. मा.

४ आश्चर्य, थकावट, शोक आदि को सूचित करने के लिये प्रयुक्त होने वाला अव्यय ।

भू. का. कृ.—थी ।

उ०—१ उणरी हाजरी साजण मारू फगत एक डावड़ी ही । डावणी स्यांणी, साळम अर समभणी ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण वास्तै आज वांनै पूरा जावता सूं खरचा नांखनै पटकण री तजवीज ही ।—अमरचूनड़ी

सं. पु. [सं. हृदय] दिल, हृदय, मन ।

उ०—अखंड ब्रम्हचरज कै सिखंड खंड अज्ज कै । सधीर ही हमीर मै गंभीर भीर गज्जतै ।—ऊ. का.

रू. भे.—हि, हि, हीज ।

हीअ, हीअउ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.) (उ. र.)

हीआहीण, हीआहीन—देखो 'हियाहीण' (रू. भे.)

उ०—कायर किरकिरइं, मधर धारमिक हीइ धम्मध्यांन धरइं, देव देवी रहइ इच्छ पडीच्छ करइ, नारू नरिवा मावचांन हूआ, हीआहीण अगवुडई वाहणि मूआ ।—व. स.

हीइ, हीओ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—धवळ कुसुम सिणगार, धवळ बहु वस्त्र सुहावै । मोताहळ मणि रयण, हार हीइ ऊपरि भावै ।—प. च. चौ.

हीक-स स्त्री. [सं. हिक्क] १ क्रोध की ज्वाला, क्रोध का आवेग ।

उ०—१ चडै गाढ़ हीक तुरी उर चोट, काळाहळ भूस हुवै ब्रज कोट । मेवाळ जरद्द मरद्द मकाज, वेदै वज्र भाखर पाखर बाज ।

—सू. प्र.

उ०—२ हीकां धरै माहंसी वैरियां बू चलाया हाथ, आहंसी नरींदा कांठी मळाया आंसोग । पाथ ज्यू अनम्मी खंग खंमन चाढियौ पांणी, यूं पछै ऊमठां नाथ पोढियौ आरांण ।

—सूरजमल मीसण

२ तीव्र मानसिक व्यथा, कसक ।

उ०—पवै तरां पालणा, रुदन बाळक मछरीकां । सुण चमकै सुरतांण, हियै सालै दुख हीकां ।—सू. प्र.

३ किसी प्रकार का तीक्ष्ण दर्द, टीस, चीस ।

४ किसी पदार्थ से उठने वाली सड़ी हुई व तीव्र गंध ।

५ किसी तीक्ष्ण पदार्थ या औषधि के सेवन से या शरीर पर लगाने से होनी वाली जलन या दाह ।

हीकणौ, हीकबौ—क्रि. स. [सं. हिक्क] १ छाती ठोक कर ललकारना, चुनौती देना ।

उ०—दुलहा नै दुलही तणा, हथळेव जोड़ाया । 'हांसू' छाती हीकतौ, कथ एम कहाया, दलौ मारै गोगादै, मन कीया चाया ।

—वी. मा.

२ मारना, वध करना, नष्ट करना ।

उ०—अभंग पाथ हातां 'जसा' खळीळू आंगमण, कहहर नर का जळै भड़ै कांमू । आठ ही नगारा बांध हेकण उरड़, हीक घर लै गयौ विया हांमू ।—राव जसवंतसिंह चूंडावत री गीत

३ चोट करना, आघात करना, प्रहार करना ।

हीकणहार, हारौ (हारी), हीकणियौ—वि० ।

हीकिओड़ौ, हीकियोड़ौ, हीक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हीकीजणौ, हीकीजबौ—कर्म वा०

हीकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छाती ठोक कर ललकारा हुआ, चुनौति दिया हुआ. २ मारा हुआ, वध किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ३ चोट किया हुआ, आघात किया हुआ, प्रहार किया हुआ ।

(स्त्री. हीकियोड़ी)

हीगमत—देखो 'हिकमत' (रू. भे.)

उ०—चंद्रावती जूनै चंद्र गढ रहै तठै इमरती नूं मेली आगै खबर देण गै तौ मीम नै हींगमत खेली ।—र. हमीर

हीड़-सं. पु.—दीपावली की संध्या को ग्रामीण बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला एक उत्सव जिसमें, एक मिट्टी के पात्र के लकड़ी का डण्डा बांधा जाता है, पात्र में घर घर से मांग कर तेल डाला जाता है व रूई के बिनौले डाल कर जलाये जाते हैं ।

रू. भे.—हींड ।

हीड़कियोबाव—देखो 'हिड़कवा' (रू. भे.)

हीड़कियौ—देखो 'हिड़कियौ' (रू. भे.)

हीड़ाऊ—देखो 'हेड़ाऊ' (रू. भे.)

उ०—हाथियां तणौ ऊमेद बड़ हीड़ाऊ, पड़ाऊ लियण री व्यसन पड़ियौ ।—उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

हीड़ाकढ, हीड़ागर-सं. पु.—१ सेवा चाकरी करने वाला, सेवक, चाकर ।

उ०—निराकार निरमै रे संतौ, जौ अकार सजावै। **हीड़ागर** हीड़ा कूं दौड़ै, सौ भी धणी कहावै।—ह. पु. वां.

२ वेगार में काम करने वाला वर्ग, वेगारी लोग।

उ०—१ तरै जोधपुर सुं वरसिंघ साथै चाकर वावर **हीड़ागर** परज लोग आया था सु सारा परा जांण लागा।—नैणसी

उ०—२ तरै गुढ़ा री लोग महाजन, छोकरी, **हीड़ागर**, घांची-मोची सिकौ महेसजी रौ गिलौ करै—जै बीजौ साथ रावजी रा तौ घांची मोची **हीड़ागर** कस करै छै।—राव चंद्रसेन री वात

हीड़ौ—सं. पु.—१ सेवा, सुश्रुषा, टहल, बंदगी।

उ०—१ ताहरां वीरमदैजी कह्यौ—राजमलजी ! थैं म्हांरै वडा सगा, थां मांहरा वडा **हीड़ा** किया। पछै वीरमदैजी उठासूं सीख कीवी।—नैणसी

उ०—२ अवै म्हैं ई थनै सुभट ओळख लियौ। थारा नीं नीं व्है जैड़ा **हीड़ा** करिया जकां रौ थूं म्हनै औ फळ दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ संवत १६२८ राव कांणूं जै वसियौ। रावत पंचायण घणा **हीड़ा** कीया।—राव चंद्रसेन री वात

२ चाकरी, नौकरी।

उ०—तरै जैतेजी नुं वीरमदै कहाड़ीयौ—राव सुं वीणती करौ नै म्हां कन्हां राव रा **हीड़ा** करावौ। ज्यु थैं चाकरी करौ छौ त्युं म्है ही राव री चाकरी करां।—राव मालदेव री वात

३ रोगी या अस्वस्थ की सेवा, तीमारदारी, इलाज।

उ०—१ तद एकै दिन वींदणी बोली, म्हारै धणी रौ डील-चाक नहीं छै, तौ पण म्हांनु एकै कोटड़ी मांहै राखौ ज्यौं **हीड़ा** करती जावां।—ठाकुरै साह री वात

उ०—२ वापड़ा नासतिक मिनख सांची कैया करै है कै—दायजी देय'र बेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड़ लोभी लोग मरज-मांदगी रै समै भी बहू रौ **हीड़ौ** क्यूं करै?—दसदोख

उ०—३ कहसी—औ मुंवौ, इण रा **हीड़ा** न किया। पछै आपनुं तपाया, सेकिया, चेतौ वाहुड़ै नहीं। तरै गांव मैं स्यांणा था त्यांनूं पूछियौ, कह्यौ—कोई उपाव करौ जिणसूं औ जीवै।—नैणसी

४ आदर, सत्कार, खातरी।

उ०—१ परगनै मेड़तै रौ गांव रायण पटै थौ। पातावतां री भांणेज हुतौ। केईक दिन चोटीलै रह्यौ थौ, तद पातावतै घणा **हीड़ा** किया।—नैणसी

उ०—२ इण भांति दिन पांच रांणा कनै रहा। रांणी वड़ा **हीड़ा** हरख किया।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ प्रभात हुवौ। जांन नुं भगति हुई। दिन ४ राखीया। **हीड़ा** कीया। जांनी बोलीया हलांणौ करौ।

—तीडी खरळ री वात

उ०—४ राव सं. १६३५ डूंगरपुर था पाछा आया तद तणां ठाकुरां रै गुढै आया। भला कीया, पछै रतनसी रै वेटै घणा धरती रै छळ राव चंद्रसेन रा **हीड़ा** कीया।

—राव चंद्रसेन री वात

५ इज्जत, सम्मान।

उ०—ताहरां औ भोकाई बोलियौ, 'थै इण मांटी सुं ठरिस्यौ नहीं। इण सोहाग मै लक्षण कोई नहीं। हुं रजपूत छुं। जै म्हारै साथै हालौ तौ हुं थांहरा **हीड़ा** करूं।

—तीडी खरळ री वात

६ मनो-विनोद, क्रीड़ा।

७ ऐसा कार्य जो किसी की चापलूसी करने के उद्देश्य से वेगार में किया जाता है।

उ०—सूधा अर भोळां नैं भरमावै है। स्यांणा, चतरां अर हुसनाकां री **हीड़ौ** चाकरी तथा गरज करती रेवै।—दसदोख

८ काम-काज, कार्य।

उ०—१ ठाकर नैड़ा वैठ परा'र पूछै हैं—हे महाराज ! मांग-जाग'र लेवौ, हुकम रा चाकर हां अवला नै क्यूं पीड़ौ। म्हां लायक **हीड़ौ** ओढावौ।—दसदोख

उ०—२ लोक भेळौ हूवौ। ताहरां रावत सांमै आपरां आदमीयां नूं कहीयौ, 'अजमेर रौ धणी परणायौ, तिकै रौ **हीड़ौ** काढणौ।

—राजा नरसिंघ री वात

हीच—देखो 'हींच' (रू. भे.)

उ०—असुर सर विलंद भागौ पड़ै आंवळा, खग खहण **हीच** चत्र पौहर खहिया। आठ मौ उदध लियौ 'अभौ' अधपति, रौद हौदां सहित डूव रहिया।—अभैसिंह राठौड़ रौ गीत

हीचड़णौ, हीचड़वौ—देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू. भे.)

उ०—जेतइं दल आधा खिसइं तेतइ कायर खुणैं खिसइं, जेतइं वै दल **हीचडइं** तेतइ तत्काल कायर तापडइं।—व. स.

हीचण—१ देखो 'हींचण' (रू. भे.)

२ देखो 'हिचण' (रू. भे.)

हीचणौ, हीचवौ—देखो 'हिचवौ, हिचवौ' (रू. भे.)

उ०—रावळ रै साथ दीठौ—जु राव जीवै छै। वेढ हूतां पण घणी वेळा हुई थी। माहोमांहीं **हीचिया** था।—नैणसी

हीचणहार, हारौ (हारी), हीचणियौ—वि०।

हीचिओड़ौ, हीचियोड़ौ, हीच्योड़ौ—कर्म वा०।

हीचीजणौ, हीचीजवौ—कर्म वा०।

हीचवणौ, हीचववौ—१ देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू. भे.)

उ०—'रुघपत्ती' 'सोढ' री, विढै वढियौ व्रतधारी। **हीचविया** हरदास, 'जगौ' 'सगतौ' 'गिरधारी'।—रा. रू.

२ देखो 'हींचणौ, हींचवौ' (रू. भे.)

हीचवियोड़ौ—देखो 'हिचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हीचवियोड़ी)

हीचाहीच—देखो 'हींचाहींच' (रू. भे.)

हीजियोड़ी—देखो 'हिजियोड़ी' (रू. भे.)
(स्त्री हीजियोड़ी)

हीज-अव्य.—१ केवल, मात्र ।
उ०—१ म्हारै पण कन्या नहीं जिण थी म्हारो धन लगाइ भाड सगराट रै। पुत्रियां रा कन्यादांन री फळ लेण री म्हैं हीज त्यारी है ।—द भा.
उ०—२ हरिया पीजै पेमरस, रसनां लीजै रांम । जब लग जुग मैं जीव है, दीजै दो हीज कांम ।—अनुभववांणी
उ०—३ राजांन कुमार घणैं हरख सूं आणंद सूं उछाह सूं नवल रस, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेभ बात उहा हीज जांणी पिण बीजो उण सुख उण वातां कुण जांणै ।—रा. सा. स.
उ०—४ सोभत रा कांम ११ परवांण कूण मांहे । मेर हीज रहै छै। धरती हळवा ३० तथा ३५, बाजरी मोठ, तिल हुवै ।
—नैणसी

२ तैयार, तत्पर, सन्नद्ध ।
उ०—रजपूत रै घर मावै जावतां माथौ साथै नई लै जावणी क्यूं कि इसा रजपूत केसरिया करियोड़ा हीज बैठा है तिकै माथौ पाछौ लाण देवै नहीं उणै हीज लेवै ।—वी. स. टी.

३ लगभग, करीब, प्राय ।
उ०—१ अर फेर ही म्हैं तौ थांरा ही चाकर छां । थां बिनां म्हारी आ दसा हुई सौ आप दीठी हीज हुती ।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ यूं कहि व्यासजी मोड़ बांध ऊभा रहिया, तद सारा चुप रहिया । इतरै मैं फौज आई हीज ।—अमरसिंघ री वात

४ एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी बात पर जोर देने के लिये किया जाता है ।
उ०—१ चतुरंग फौजां बौहरंग बांना किणि भांति सू विराजमांन दीसै । जांणै अढार भार वनसपती रित वसंत भिलि फूलि रही । दीठा हीज वणि आवै । न जाइ कही ।—वचनिका
उ०—२ [illegible] सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियंद किया । देखियां हीज आवै वणी, उण दिन तणी अजोधिया ।
—सू. प्र.

५ निश्चय या दृढ़ता सूचक अव्यय ।
उ०—१ ताहरा पहिली तौ नटि गयौ पछै कहियौ जी— वसंतराय औ हीज है ।—द. वि.
उ०—२ घाड़ौ आंणियौ वासौ राखणौ नहीं, मांढीयां तुरत बैच दीनी, इण हीज वेला ।—रा. सा. स

६ अनन्यता, आधिक्य ।
उ०—१ अर्ने रघनाथजी रा गुरु बुदरजी नौ घर मैं थकां ऊंट हीज मारचौ ।—भि. द्र.

उ०—२ तारां वीरमदे यूंतौ ठौड़ देखण नूं गया तांहरा खींयौ मुहती आधौ हीज हालियौ अर वीरमदे नूं कह्यौ—मरण री ठौड़ तौ मेड़तै हुंती ।—द. दा.
उ०—३ भाखरसी भांनीदास रौ । चैराई पटै । संमत १६७७ बेरू पटै । संमत १६६३ अमरसिंघजी रै गयौ, उठै हीज मुंवौ ।
—नैणसी

७ अनन्यता सूचक अव्यय ।
८ अल्पता या परिमिती सूचक अव्यय ।
९ देखो 'ही' (रू. भे.)
उ०—थांरी पाखती जेठवा केलवै रहै छै, सु त्यानुं मारलौ । उण हुकम दियौ हीज थौ, नै जेठवैं काठियां भेळां हुयनै कह्यौ—'ओ आंपणी धरती मांहे मांडी आय पैठौ ।—नैणसी
रू. भे.—हिज ।

हीजर-सं. पु. [अ. हिजार:] पाषाण, प्रस्तर, पत्थर ।
उ०—हीर पखौ हीजर करैं, डाकां तणां डभीड़ । गुर हीणां गळ कटणां, न जांणै पर पीड़ ।—वि. सं. सा.

हीजरणौ, हीजरबौ—देखो 'हिजरणौ, हिजरबौ' (रू. भे.)

हीजरियोड़ौ—देखो 'हिजरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीजरियोड़ी)

हीजरौ-सं. पु.—वियोग का दुःख ।

हीटौ-वि.—१ बंधन मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद ।
उ०—हूं बळिहारी रांणियां, थाळ वजांणै दीह । वीर जमी रा जै जणै, सांकळ हीटा सीह ।—वी. स.
२ रहित, विना ।
३ ढीठ, धृष्ट ।

हीड-सं. पु.—समूह, भीड़ ।
उ०—छुटै तीर सा जोम त्यां व्योम छायौ, उडै चील कै हीड कै तीड आयौ ।—रा. रू.

हीडणौ, हीडबौ—देखो 'हींडणौ, हींडबौ' (रू. भे.)
उ०—माथै भीडैं हीडइं पलंतु इंद्र वाहणि इकि जई ऊपजंति । गजह रूप तउं करि रै आज तीह नइ वांसइ चडइ देवराज ।
—वस्तिग

हीडणहार, हारौ (हारी), हीडणियौ—वि० ।
हीडिओड़ौ, हिडियोड़ौ, हीडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हीडीजणौ, हीडीजबौ—कर्म वा० ।

हीडवण सं. स्त्री.—एक प्रकार की मिश्री विशेष ।
उ०—तिको आरणां मांहे घणौ खासा पकाय, पछै अवल घ्रत सेर ७ मगरै री नीपनो आंणियौ । आंण सेर ७ गुळ हीडवण मिसरी हुवै तिसड़ो सेर ७ गुळ आंणीयौ नै रोटा घ्रत मांहे जोजर छिट-काय जिसड़ा पई तिसड़ा पछै घ्रत गुळ मांहे घणौ काठा मसळ चूरमै रा पींडा सात करीया ।—तिमरलिंग पातसाह री वात

हीडाऊ—देखो 'हेड़ाऊ' (रू. भे.)

हीडियोड़ौ—देखो 'हींडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीडियोड़ी)

हीडोलणौ, हीडोलबौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंडोळबौ' (रू. भे.)
उ०—सारंग चाप चडाविय डाविय बाहु नइ प्रांणि। हरि हेला **हीडोलिय** तोलिय तसु वलु प्रांणि।—जयसेखर सूरि

हीडोलाखाट, हीडोलाखाटणी–सं. पु.— छत के कड़ों में रस्सी के सहारे झूले की तरह लटकाई हुई खाट, चारपाई।
उ०—नितु नवा अलंकार वावरइ, उत्फुल्ल पुख्यसिय्या आदरइ, **हीडोलाखाटणी** लीला धरई, भोग पुरंदर, होठ फुरइ।—व. स.

हीडोलाट—देखो 'हींडोलाट' (रू. भे.)
उ०—कवि कहइ रतिपति तणु विचार आछां अंवर पहिरणि सार। बावनिचंदन सिर लाइइ, **हीडोलाट** खाट पुढीइ।
—प्राचीन फागु संग्रह

हीडोलियोड़ौ—देखो 'हिडोळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीडोलियोड़ी)

हीण-वि. [सं. हीन] १ निम्न स्तरीय, न्यून, घटकर, घटिया, हल्का, ओछा।
उ०—१ द्रोण सोण तुरगै रथ दीसइ, जेउ युद्धि कुंण **हीण** कलीसइ। युद्धसत्रि जिम राउ जि मंत्रइ, एक दीहि भड कोडि निमंत्रइ।—सालिसूरि
उ०—२ भाई अर माइतां रै उठै ढवनै दिन तोड़णा उणनै सपनै ई कबूल नीं हा, पण बाण री औ **हीण** अर ओछौ वरताव द्रेखनै उणरी सारी सुध-बुध माथै जा'णै पाळौ पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी
२ कायरता पूर्ण।
उ०—सौ सपूत जै पीछौ राखै, दुरजन **हीण** कदै ना भाखै। वैरां तिणां विसारै वेहा, सौ जाया ही अणजाया जेहा।
—डाढाळा सूर री वात
३ रहित, विना, हीन, अभाव ग्रस्त।
उ०—१ अकसमात मिळियौ इंद्रोखै, नैण **हीण** इक नाई। दोनौ हाथ जोड़ दुरगां नै, दुरबळ दसा दिखाई।—मे. म.
उ०—२ प्रथी करण थिर वेद पुरांणां, करम जिकां वळ **हीण** कुरांणां।—रा. रू.
४ अशक्त, कमजोर, क्षीण।
उ०—१ महिपति अमीर तन **हीण** मांन, पांना दिस कोई धर न पांण। तद तेज वांण नरसिंघ ताय, 'अभमाल' पांन लीन्हौ उठाय।—वि. स.
उ०—२ भड़िया सनाह तन तुरंग जीण, हय गया मुगळ दुख दहल **हीण**।—रा. रू.
५ क्षीणकाय, पतला, दुवला।
उ०—चंपा वरनी, नाक सळ, उर सुचंग विचि **हीण**। मंदिर वोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण।—ढो. मा.
६ तुच्छ, नगण्य, निरर्थक, महत्वहीन।
७ लघु, छोटा।
८ रिक्त, खाली।
९ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, त्यक्त।
१० दोषयुक्त, त्रुटियुक्त, अशुद्ध।
११ अल्पतर, कम।
१२ वर्जित।
१३ नष्ट।
१४ कायर, डरपोक।
१५ साहित्य में खलनायक, अधम नायक।
१६ धर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा साथी जो विश्वसनीय न हो।
१७ काव्य सम्बन्धी एक दोष।
१८ मूर्ख। (ह. नां. मा.)
१९ नीच, पामर।
रू. भे.—हींण।
अल्पा;—हीणु, हीणौ, हीन।

हीणअंग—देखो 'हीनांग' (रू. भे.)

हीणउ—देखो 'हीणौ' (रू. भे.)
उ०—वालंभ दीपक पवन भय, अंचळ सरण पयट्ठ। कर **हीणउ** धूणइ कमळ, जांण पयोहर दिट्ठ।—ढो. मा.

हीणउपमा—देखो 'हीनोपमा' (रू. भे.)

हीणकरम–सं. पु. [सं. हीन+कर्म] १ नीच कार्य, कुकृत्य।
२ बुरे कर्म, बुरे भाग्य।

हीणकरमी, हीणकरमौ–वि. [सं. हीन+कर्मिन्] १ भाग्यहीन, हत-भाग्य।
२ बुरे कर्म करने वाला, कुकर्मी।
३ अन्यायी, दुष्ट।

हीणचरित्त–वि. [सं. हीन+चरित्र] दुश्चरित्र, चरित्रहीन।

हीणता–सं. स्त्री. [सं. हीनता] १ हीन होने की दशा या भाव।
२ अभाव, कमी।
उ०—सरी नौसरै हार मोती संजोया, पड़ै स्रेणता, **हीणता** सुक्र पोया। परीखै सरीकंठ मैं हीर पूरी, सुमै सूर आकास जांणै सनूरी।
—रा. रू.
३ तुच्छता, ओछापन।
उ०—वुंदी कोटौ वीकपुर, सारा भूप अवंक। राज दिखावै **हीणता**, ज्यां धन खावै रंक।—रा. रू.
४ कमजोरी, दुर्वलता।
उ०—'हैमत' हिम्मत ऊधरौ, 'सगतावत' उण वेर। विखै वरजै **हीणता**, ऊठ गरज्जै फेर।—रा. रू.
५ बुराई, नीचता, निकृष्टता।

६ बुरे कर्म ।
७ न्यूनता, अल्पता ।
८ कायरता ।
९ क्रूरता ।
रू. भे.—हीनता ।

हीणदंत, हीणदंती, हीणदंतो—सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ चिन्हों वाला घोड़ा । (शा. हो.)
रू. भे.—हीनदंत ।

हीणदोस—सं. पु.—डिंगल साहित्य में (विशेषकर गीतों में) नायक के माता-पिता व जाति का अर्थ ठीक न होने पर, होने वाला एक साहित्यिक दोष ।

हीणपक्ख, हीणपक्ष, हीणपख—सं. पु. [सं. हीन+पक्ष] १ कमजोर या दुर्बल पक्ष ।
२ वह बात जो दलील या तर्क से प्रमाणित न की जा सके ।
३ किसी विषय का कमजोर पक्ष । (Weak Poin)
रू. भे.—हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख ।

हीणपण, हीणपणौ—सं. पु.—१ हीन होने की दशा या भाव ।
२ न्यूनता, अल्पता ।
३ दुर्बलता, कमजोरी ।
४ नीचता, धृष्टता ।
५ कायरता ।
उ०—बोल उचारण बाहुबळ, जण जण मुख जस जाप । पख नह धारण हीणपण, पीरस इण परताप ।—जैंतदांन बारहठ

हीणपद—वि.— पदच्युत, पद से हटा हुआ, पद से गिरा हुआ ।
उ०—'अभो' कहै रीझै अमर, वैगी कीजै वात । मिच्छ सिधावै हीणपद, अह आवै गुजरात ।—रा. रू.

हीणपुण्ण, हीणपुण्या, हीणपुण्यौ, हीणपुन्या—वि. [सं. हीण+पुण्य] १ भाग्यहीन, हतभाग्य ।
उ०—१ बाप नै मरावतां वेळा जैड़ी काठी छाती करी, वैड़ी छाती इण हीणपुण्या राजकवर नै छिटकावतां नीं कर सकै ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै वांग स्वारथ मायं थूकती कह्यौ—बापड़ा हीणपुन्या जाद मनरा सूं ई सगळी वातां सारणी चावै ।—फुलवाड़ी
२. जिसके पुन्य क्षीण हो ।

हीणमांण, हीणमांन—वि. [सं. मान+हीन] १ जिसका मान घट गया हो, बेइज्जत, अप्रतिष्ठित, हतवीर्य्यं ।
उ०—राज राव अनै रांण, पिनाक पै धरै पांण । हिलै होय हीणमांन दईवांण दईवांण ।—र. रू.
२. हताश, निराश ।

हीणमेध—वि [सं. मेधा+हीन] १ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी ।
(ह. नां. मा)
२ जिसकी बुद्धि कमजोर हो, अल्प बुद्धि ।

हीणरस—देखो 'हीनरस' (रू. भे.)

हीणी—वि. स्त्री.—ओछी, हल्की, न्यून ।
उ०—ठेलै सिर अरियांण थट, कहै न हीणी कत्थ । वहै भरोसै बाहुबळ, 'पातळ' लहै प्रभत्त ।—जैंतदांन बारहट
२ छोटी, लघु ।
३ नीची, हीन, निम्न ।

हीणु, हीणौ—देखो 'हीण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ दाखां बहुलौ द्रव्य हुवैं अधिकौ कुल हीणौ । बल पांमौ अति बहुल प्रबल हुइ सरपै पीणौ ।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ थांन हीणा जितां थांन थिर थापिया, थांन धारी दिया नरां उथाप । प्रथी साधार चा बिड़द हद पांमिया, प्रकट इण हणूमत तणौ प्रताप ।—रतनसिंघ राठौड़ री गीत
उ०—३ खितपति देख हुवौ सिव खीणौ, हाथी जेम महामंद हीणौ ।—सू. प्र.
उ०—४ पाप तणा फल देखौ रे प्रांणी, पाप सब दुख होई रे । हीणा दीणा दीसैं दुमना, सार न पूछै कोई रे ।—जयवांणी
उ०—५ वर हीणौ अपणौं भलौ है, कोढी कुस्टी कोई । जांकै संग सीधारतां है, भला कहै सब लोइ ।—मीरां
रू. भे.—हींणौ, हीणउ ।

हीणौदाव—सं. पु.—१ कायरता, भीरूता ।
उ०—पग पग कांटा पाथरै, बादीलौ बन राव । होणी ज्यूं ही होवसी, दियै न हीणौदाव ।—वां. दा.
२ कमजोर पक्ष ।
३ दीन वचन ।

हीतळ हीतल—सं. पु. [सं. हृदय+तल] हृदय तल, अन्तःकरण, अन्तःस्थल ।
उ०—१ मौड़ै मुख मौड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सतवाळी । लुच्चा ललचावै लालच विन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै ।—ऊ. का.
उ०—२ ताप संताप मिटैं भवकै सब, दंड दसा कबहुं नहि देखैं । सीतल कौ मुख देखत ही मुझ, हीतल सीतल होत विसेखैं ।
—ध. व. ग्रं.

हीन—देखो 'हीण' (रू. भे.)
उ०—किसुं पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि विलउ । अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन झूझिती मइं सुं हीन ।
—सालिभद्र सूरि

हीनक्रम—सं. पु. [सं.] काव्य में होने वाला दोष जो, गुण गिनाने के क्रम में गुणी न गिनाने पर होता है ।

हीनता—देखो 'हीणता' (रू. भे.)
उ०—नारद कै मन भया अनेसा, फिर बूज्या गुरु कूं उपदेसा ।

नारद आप **हीनता** भाखी, गुरु कुं गुभि हिरदै की दाखी।
—अनुभववांणी

हीनदंत—देखो 'हीणदंत (रू. भे.)

हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख—देखो 'हीणपख' (रू. भे.)

हीनबळ—वि. [सं. बल+हीन] जिसका बल क्षीण हो गया हो, अशक्त, कमजोर।

हीनयांन—सं. पु. [सं. हीनयान] बौद्धों की एक प्राचीन शाखा जिसके ग्रन्थ पाली भाषा में हैं।

हीनयोग—सं. पु. [सं] औषधियों का ऐसा योग जो उचित परिमाण से कम हो।

हीनयोन, हीनयोनि—सं. स्त्री. [सं.] १ नीच जाति, नीच कुल।
२ नीच योनि, अधम योनि।
वि.—नीच योनि का, नीच जाति या कुल का।

हीनरस—सं. पु. [सं.] काव्य रचना का एक दोष जो प्रसंग के विपरीत रस की योजना करने पर होता है।

हीनवाद—सं. पु. [सं.] १ मिथ्या तर्क, झूठा या निरर्थक वाद।
२ झूठी गवाही।

हीनवादी—वि. [सं. हीनवादिन] १ मिथ्या तर्क देने वाला, झूठा या निरर्थक वाद प्रस्तुत करने वाला।
२ परस्पर विरोधी कथन कहने वाला।
३ झूठी गवाही देने वाला।

हीनवीरज, हीनवीरज्य—वि. [सं. हीन+वीर्य्य] १ कमजोर, अशक्त, दुर्बल।
२ कायर, डरपोक।
३ निस्तेज, मंद।

हीनांग—वि. [सं अंग+हीन] १ जिसके कोई अंग न हो, अंग-भंग, अंग-हीन।
२ खण्डित, अधूरा।
रू. भे.—हीणअंग।

हीनोपमा—सं. स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का एक भेद जो, किसी बड़े उपमेय के लिये छोटे उपमान की योजना करने पर होता है।
रू. भे.—हीणउपमा।

हीप—देखो 'हींप' (रू. भे.)

हीबणौ, हीबबौ—क्रि. स.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना।
२ मारना, पीटना, कूटना।
३ संहार करना, वध करना।
४ पछाड़ना, पटकना।

हीबर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)
उ०—**हीबर** बोह हळवळ सुंडि सळवळ, पदमा पुवंगां कोई पार नहीं। अवतार असा दस आप तणां, जुध जीपण जांणि विसन सही।—वि. सं. सा.

हीबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ. २ मारा हुआ, पीटा हुआ, कूटा हुआ. ३ संहार किया हुआ, वध किया हुआ. ४ पछाड़ा हुआ, पटका हुआ।
(स्त्री. हीबियोड़ी)

हीमंसु—सं. पु. [सं. हिमांशु] १ चन्द्रमा, शशि।
२ रूपा, चांदी।

हीमत—देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)
उ०—१ आयौ 'करन' 'मुकन्न' तण, भड़ मेळै चंद्रभांण। 'हैमत' **हीमत** अग्गळौ, 'पीथौ' पत्थ प्रमांण।—रा. रू.
उ०—२ किणी री **हीमत** नीं ही कै राजाजी रै ऊंधी पज्योड़ी वात नैं सावळ संवी करनै केवटै। सगळां रा मूंडा उतरियोड़ा हा।
—फुलवाड़ी
उ०—३ **हीमत** मत छाडौ नरां, मुख तैं कहता रांम। हरीया हीमत सुं कीया, घ्रू का अटळ धांम।—अनुभववांणी
उ०—४ माळी रा है जठै ई पग चिपग्या। थोड़ी ताळ पछै नीठ **हीमत** करनै धकै हालियौ।—फुलवाड़ी

हीमतण—वि. स्त्री.—हिम्मत वाली, साहसी।

हीमतभरियौ—वि.—१ जिसमें हिम्मत हो, साहस हो, हिम्मती, साहसी।
२ बल, पौरुष वाला।

हीमतवर—वि.—हिम्मती, साहसी।
उ०—कंवर अणूं तो समझवांन, निडर अर **हीमतवर** हौ।
—फुलवाड़ी

हीमति, हीमती—वि. (स्त्री. हीमतण) साहसी, निडर, बहादुर।
उ०—हाथाळ हेल हमीर हूंतल आप कुळ अजुआळ। **हीमति** बहादर **हीमती** कलि भडां धोडां कीमती।—ल. पिं.
रू. भे.—हिम्मति, हिम्मती, हींमती।

हीमत्त—देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)
उ०—थेटू धर संवर ऊंडा सर थागै, आं रै माळागर मूंडा रै आगै। सारी कीमत है करियोड़ा सारै, हीमत्त भरियोड़ा **हीमत्त** नह हारै।—ऊ. का.

हीमाचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)
उ०—**हीमाचळ** नारद सूं हसिया, कुंवरि आविया गोदकियइ। वर कोइ एक साखइत वतावउ, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।
—महादेव पारवती री वेलि

हीमायत—देखो 'हिमायत' (रू. भे.)
उ०—तठै मेड़तौ जागीर मांहै मंडियौ नहीं, कहौ—औ माहावतखांन थांनुं **हीमायत** कर दीरायौ थौ, दरगाही मनसप माहे दीयौ नहीं।—नैणसी

हीमायती—देखो 'हिमायती' (रू. भे.)

हीमाळ, हीमाळ—सं. स्त्री.—ठण्डी लहर, शीतलहर।
उ०—काती छातिमांहि तइं, हलकारिउ **हीमाळ**। धूजइ अंग

...... हमारी ...... ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हिमालय' (रू. भे.)

हीमाळइ, हिमाळइ, हीमाळे, हीमाळी—देखो 'हिमालय' (रू. भे.)

उ०—१ ...... जै नर उलग ईण महूरत जाई । ...... जागि हीमाळइ राजा गलीया ही जाई । —बी. दे.

उ०—२ हीमाळइ ...... हुई हाल कल्लोल । डगळा डोटी ...... मुनि भरीह नवीन ।—मा. कां. प्र.

हीय, हीयड़, हीयड़, हीयउ, हीयऊ, हीयड़इ, हीहड़लौ, हीयड़ौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ ...... चरीउ थुणीजइ, किम रणणायरू हीयइं ...... । ...... तणइ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ ...... नदीय वनास । नारि का नाड़ि नू, हीयउ ...... ।—बी. दे.

उ०—३ मारवणी नूं अति चतुर, हीयइ चेत गिंयार । जउ कंता नूं कांमइउ, करहउ कांबै मार ।—ढो. मा.

उ०—४ बारमट बरस मील्यौ धन-नाह । हीयऊ लइ हाथि गला मही बांह ।—बी. दे.

उ०—५ ...... नाकारउ नवि करयउ, दीक्षा लीधी भाई वहु मांनि रे । बार बरस व्रत मांहि रह्यउ, हीयड़इ धरतउ नागिला नउ ध्यांन रे ।—स. कु.

उ०—६ अरध मंडित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हीयड़ला मांहि रे ।—स. कु.

उ०—७ केवल जिम दूर थकी दीसैं, हीयड़ौ जिन देखण नैं हींसै । बाणांणी महू बिस्वा बिसैं, यात्रा दीधी ए जगदीसै ।—ध. व. ग्रं.

हीयड, हीयडइ, हीयडउ, हीयडलू, हीयडलौ, हीयडौ, हीयरौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ तु रंगि रमवा गयु, जिहां अवरनी आंण । होळी हीयडइ ...... कीधी कंत सुजांण ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ चोरी रहो धन हीयडउ लगाई । जांणिक बाछरू है ...... गाई ।—बी. दे.

उ०—३ दासी टाहिम आपणी रे, रंजि मुझ मनमोर । ...... रहयु रे, हीयडउं करी कठोर ।—हीराणंद सूरि

उ०—४ हीयडु ...... ।—स. कु.

उ०—५ हीयडलू घणुं गहिबरिउं, तुं गुणि न अम्हारा नाथ जी । ...... मनरयउ, हूं मरगि न मेल्हूं साथ जी । —कां. दे. प्र.

उ०—६ ...... करी, माधव हीयडा मांहि । बाई ...... ।—मा. कां. प्र.

हीयणा-क्रि वि. [सं. अधुना] अभी, अब ।

उ०—...... हीयणइ ...... । ...... जोवन पूर ।—बी. दे.

हीयतल-सं. पु. [सं. हृदय+तलः] अन्तःस्थल, हृदयतल ।

उ०—जल करैं सीतल हीयतल, जेठ मैं ए ठहराय । जो ठीक जोतखी तैं कहो, कदि मिलै जेठ कौ भाय ।—ध. व. ग्रं.

हीयागम—देखो 'हिरदेगम' (रू. भे.)

उ०—हीयागम आगम उलटा पण होवैं । साध्वी दुख देखैं कुलटा सुख सोवैं ।—ऊ. का.

हीयाफूट, हीयाफूटोड़ौ, हीयाफूटौ—देखो 'हीयाफूटौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीयाफूटी, हीयाफूटोड़ी)

उ०—संदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउं हीयाफूटि । पारेवाका भूल जिऊं पड़िनइं आंगणि त्रूटि ।—ढो. मा.

हीयालि, हीयाली—देखो 'हियाळी' (रू. भे.)

उ०—१ भूंटि भूंबिय महितलि रोली । काढिवा वसन कीध हीयाली, अंतरालि थई राक्षिसी राखी । तीणइ हूई हिव होअत चाखी ।—सालिसूरि

उ०—२ वात वाजत गई कुरुगेहिं, दाध दुरजन पडिउ अति देहिं । ए इसिउं बल न पांडव टाली, कूड काजि अह्य एह हीयाली । —सालिसूरि

उ०—३ कहौ पंडित ए हीयाली, मत करिज्यौ बात विचाली रे । निरखी मैं सुंदर नारी, धरमी आदर करि धारी रे ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ अरथ कहौ तुम वहिली, एहणौ सखर हीयाली रे सार । चतुर नर एक पुरख जग मांहै परगड़ौ, सहु जांणै संसार । —ध. व. ग्रं.

हीयाळै—देखो 'हिमालय' (रू. भे.)

उ०—१ कासी करवत सिर सहै, गळै हीयाळै देह । हरीया निज फल दूरि है, लागौ फूल वनेह ।—अनुभववांणी

उ०—२ जाय हीयाळै गळत जिंद, उलटि राखत नाद विंद । कोटि गउ दिज दांन देत, मरत कासी मुगति खेत ।—अनुभववांणी

हीयौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ लांभ लेइजै लोयणां, सजन रखै सखरी । उलसै देखण नै हीयौ, वैरण लाभ बुरी ।—पनां

उ०—२ धी कौ बोलनूं मांनीयौ बाप, कांई न मारी राजा पाई वचन । कांई कहैसी सासरइ, गांव न उतरचौ हीया थी एक । —बी. दे.

उ०—३ सूरजना किरण पच्छिम ढल्या, पंथी सगां नइ मिल्या । विरहीना हीया वल्या, गोवाळ धरै वल्या ।—रा. सां. सं.

उ०—४ एतलइ सुसरमा दलि ढोल वाजइं । जांणै आसढू किरि मेह गाजइ । हीया ध्र सूकइं सर सेस सूकइं, भय बीहता कायर जीव मूंकइ ।—सालिसूरि

उ०—५ ताप सन्निपात जांणी अतीसार संग्रहांणि, फीही विध राल पांडु गोला सूल खैंण है । हीया रोग सास खास रुधिर प्रवाह

रूप, सीस पीड रोग अरू जेतैं रोग नैंन हैं ।—ध. व. ग्रं.

उ०—६ वौ आपरी घरवाळी नैं समभावण सारू वात करी कै वा तड़कनैं कह्यौ—म्हनैं समभावण नैं आया है, पैला थांरा **हीया** माथै हाथ धरनैं सोचौ कै एकाएक बेटा नैं दिसावर भेजण सारू थैं राजी व्हिया इज कीकर ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ हीया गांव जाणा=अक्ल व समझ चली जाना, नासमझी की दशा होना, बेवकूफी के काम करना । २ हीया फूटणा=बुद्धि समाप्त हो जाना, समझ चली जाना, सूझ-बूझ न रहना । ३ हीया माथै हाथ धरणौ=तसल्ली एवं धैर्य के साथ किसी वात पर विचार करना, विवेकपूर्ण वात करना । ४ हीया माथै हाथ होणौ=जोखम या जिम्मेदारी वहन करना, जोखमपूर्ण कार्य की चिंता होना । ५ हीया मैं कांगसी फेरणौ=किसी वात पर व्यावहारिक बुद्धि से विचार करना, सोच विचार कर काम करना, अपने कार्यों का पुनरावलोकन करना । ६ हीया मैं गोटौ ऊठणौ=हृदय में उत्साह भरना, उभंगित व उत्साहित होना, शोक पूर्ण वात पर मन में घुटन होना । ७ हीया मैं वसणौ=किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु की याद दिल में हर वक्त रहना, अत्यन्त प्रिय होना । ८ हीया मैं वैठणौ=कोई वात या कार्य समझ में आ जाना, कोई वात दिल में घर कर जाना । ९ हीया मैं लाय लागणी=अत्यन्त दुख या शोक के कारण मन में पीड़ा होना, दिल में आग लगना, शोक संतप्त होना, दुख में तड़फना । १० हीया री दाझ या हीया री दाह=दुख की आग, मन की तड़फन, वेदना, दुख, शोक, पीड़ा । ११ हीया री पीर=देखो 'हीया री दाझ' । १२ हीया री हांम=हृदय की उत्कण्ठा, इच्छा, तीव्र आकांक्षा । १३ हीया सूं उतरणौ=किसी के प्रति अनिच्छा या अरुचि होना, किसी व्यक्ति के प्रति अच्छे खयाल न रहना, इम्प्रेशन विगड़ना । १४ हीयैं ऊकळणौ=मस्तिष्क से कोई वात उपजना, कुछ याद आना, युक्ति निकलना । १५ हीयैं झरणौ=किसी वात या परिस्थिति को सहन करना, वरदाश्त करना, मन से मान लेना । १६ हीयैं वतूळिया ऊठणा=मन में कई तरह के विचार उठना, तरह-तरह के तीव्र भावों का संचार होना । १७ हीयैं वात ढूकणी=वात समझ में आना, वात मान लेना, जंचना, उचित लगना । १८ हीयैं वैठणौ=समझ में आना, सीख में आना, हृदय में वसना । १९ हीयैं भाटौ होणौ=पत्थर दिल होना, दया, ममता, प्रेम, क्षमा आदि कोमल भावों का हृदय में अभाव होना । २० हीयैं राम वापरणौ=किसी के मन में भलाई की वात आना, भला कार्य या भली वात करना । २१ हीयैं रोग होणौ=मानसिक व्यथा होना, मानसिक व्यथा के कारण शारीरिक एवं वौद्धिक क्षति होना, उत्साह व उमंग न रहना । २२ हीयैं रा हूंस=मन की तमन्ना, लालसा । २३ हीयौ उळसणौ=हृदय उत्साहित होना, उमंगित होना, लालायित होना, खुश होना, प्रसन्न होना । २४ हीयौ खुलणौ=बुद्धि का विकास होना, संकोच मिटना, वौद्धिक विकास होना । २५ हीयौ गोटीजणौ=मन के अन्दर घुटन होना, मन कुण्ठित होना, अन्दर ही अन्दर घुटना । २६ हीयौ ठंडौ करणौ=दिल को तसल्ली देना, संतोष करना, आशा पूरी करना । २७ हीयौ दवकणौ=आतंकित होना, भयभीत होना, घवराना, प्रभावित होना । २८ हीयौ दैणौ=किसी के प्रेम में फंस जाना, दिल दे देना । २९ हीयौ फूटणौ=बुद्धि या समझ समाप्त हो जाना । ३० हीयौ वैठणौ=घवराहट होना, अनिष्ठ की आशंका से चिंतित होना, परेशान होना, भयातुर होना । ३१ हीयौ सालणौ=मानसिक व्यथा के कारण अन्दर ही अन्दर कष्ट पाना, दुखी होना, मन में कोई टीस लगना । ३२ हीयौ हथाळी लैणौ=साहसिक कार्य हेतु तत्पर होना । ३३ हीयौ हीयौ दळीजणौ=घुटन होना, पिसना, दम घुटना ।

हीर—सं. पु. [सं.] १ हीरा नामक रत्न ।

उ०—१ संग तेण विराजति याळ सरी, रमणी अलकावलि सोभ हरी । सुभ सोभत पंकज **हीर** सिरैं, ऋति नीं ससि हस्ति असोभ करै ।—ऊ. का.

उ०—२ ऊपरि पद पलव पुनरभव ओपति, त्रिमळ कमळ दळ ऊपरि नीर । तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहंस सावक ससि हर **हीर** ।—वेलि

उ०—३ नयण कंज सम निपट, सुभग आंणण हिमकर सम । जप सम 'ग्रीवह' जळज, तवत सम **हीर** डसण तिम ।—र. ज. प्र.

२ मोतियों की माला, हार ।

उ०—मांनहु रूप मनोज अधिक वांकी अदा, जर पवसाखां जोख सोभ भूखण सदा । पहरि पना पुखराज मुकताहळां, ऊगै फजर अदीत किनां चढती कळां ।—सिववख्स पाल्हावत

३ सूर्य, भानु । (ना. डिं. को.)

४ विद्युत, विजली ।

५ इन्द्र का वज्र ।

६ शक्ति, वल ।

७ सर्प, सांप ।

८ शेर, सिंह ।

९ लाक्षणिक अर्थ में किसी अमूल्य वस्तु के लिये उपमा ।

उ०—इयै रै वनै री क्या जोवसौ रे, औ तौ हाटां मांयली **हीर**, विलालौ रै जोवसां म्हांरा राज ।—लो. गी.

१० किसी वस्तु के भीतर का मूल तत्व, सार भाग, सत, गूदा ।

११ लकड़ी के नीचे का सार भाग ।

१२ धातु, वीर्य्य ।

१३ रेशम ।

उ०—१ सुचि कीजै स्नांन संपाड़ा, सहु पहिरै नवि नवि साड़ा । **हीर** चीर पाटंवर हेम, पहिरौ, सहु भूखण प्रेम ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ [illegible] नारी [illegible] की, सुधि बुधि बिसरी सार । हरीया [illegible] हीर [illegible] ।—अनुभववांणी

उ०—४ [illegible] हीर नगिया । [illegible] ।—सू प्र.

१४ रेशम का धागा ।

१५ रेशम का वस्त्र ।

१६ [illegible] के पिता का नाम ।

१७ [illegible] का एक नामान्तर ।

१८ [illegible] छन्द का ६४ वां भेद जिसमें, ७ गुरु, १३८ लघु के अनुसार १५२ मात्राएं तथा १४५ वर्ण होते हैं ।

१९ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में रगण होता है । रघुवर जस प्रकास में इसे २१ मात्राओं का माना है ।

२० ठगण की पांच मात्राओं में से चौथे भेद का नाम ।

२१ प्रायः सारे भारत में पाई जाने वाली एक प्रकार की लता ।

२२ रांझा की प्रेमिका हीर जो रांझा ख्याल की मुख्य नायिका है ।

हीरइ, हीरउ—देखो 'हीरौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीहइं वनिइ सीह, पात्र गुणी, गुणी पात्र, सीनउं हीरइं हीरउ सोनइ, अमात्यइं राज्य राज्यइं अमात्य सोभइ ।—व. स.

उ०—२ पदक प्रियु तउ हूं मोतिन माला, हीरउ तउ हूं मूंदरड़ी रे वल्हिनी । चंद्र प्रियु तउ हूं रोहिणी थाऊं, चंदन मलय डूंगरड़ी रे वल्हिनी ।—स. कु.

हीरक, हीरकण—सं. पु. [सं.] १ हीरा नामक रत्न । (डि. को.)

उ०—नीरधर साहसां मीर तखतेस नंद । हीरकण साह तौ पतौ नर हेम ।—जुगतीदान देथौ

२ वज्र ।

रू. भे.—हीरकि, हीरकौ ।

हीरकणी—सं. स्त्री.—१ हीरे का छोटा कण, टुकड़ा ।

उ०—सदा सीर री सायनैं रहै बिणिया सगा, चूंप मिणिया जवर चार चीठा । दान नौ **हीरकणियां** जिसा दिखावै, फिटक मिणिया जिसा सहज फीटा ।—उदैभांण बारहठ

२ कांच काटने का वह औजार जिसमें हीरे का कण लगा होता है ।

रू. भे.—हीरांकणी, हीराकणी ।

हीरकि, हीरकौ—देखो 'हीरक' (रू. भे.)

उ०—[illegible] केवटी आनइ रूप । दीनइ मुकुट [illegible] **हीरकि** नव नवइं रूप ।—जयसेखर सूरि

हीरडु, हीरडौ—१ देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हीरडा [illegible] जागु सिवरानि । गोरी कंठ [illegible] ।—गुणचंद सूरि

२ देखो 'हीरौ' (अल्पा; रू. भे.)

हीरणी, हीरवौ—देखो 'हेरणौ, हेरवौ' (रू. भे.)

हीरद, हीरदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—दावा गिरा **हीरदां** जैं औ गाजै वंदूकां दारू, जगायौ कंठीर छाजै तराजै जोधा दार ।—जैत्रसिंह राठौड़ री गीत

हीरपट, हीरपट्ट—सं. पु.—रेशमी वस्त्र ।

उ०—अथ वस्त्र: देव दूष्य चीतांसुक गोजी नीलनेत्र सचोपां पाटणीयां **हीरपट्ट** साउला विलि विलिया नरम्म खमी ।........—व. स.

हीरबुद—सं. पु.—पारसी धर्म का पुजारी । (मा. म.)

हीरवडि—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पट्टफूल, **हीरवडि** गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि सोवनवडि जादर पोती पट साउली अगहल""""—व. स.

हीरवणी—सं. स्त्री.—कपास का पौधा । (शेखावाटी)

हीरांकणी—देखो 'हीरकणी' (रू. भे.)

उ०—वसुधा सवज वनात विछायत ज्यौं वणी । जिलह ओसकण जेण जोति किनां **हीरांकणी** ।—सिवबख्स पाल्हावत

हीराउलि, हीराउली—सं. स्त्री.—वनस्पति विशेष ।

उ०—हनुमंती नइं हडवडी, **हीराउलि** हर मज्जि । हाथाजोडी हींकणी, हेलां आवइ कज्जि ।—मा. कां. प्र.

हीराकणी—देखो 'हीरकणी' (रू. भे.)

उ०—दुरै निहारै दंतड़ा, वादळ दांमणियांह । अति ऊजळ ज्यां आगळी, की **हीराकणियांह** ।—अग्यात

हीराकसी, हीराकसीस—सं. पु.—१ गंधक के रासायनिक योग से होने वाला लोहे का विकार जो देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है ।

२ विधवाओं के वस्त्र रंगने का एक प्रकार का रंग विशेष ।

हीरागर, हीरागरउ—सं. पु.—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ वइरागरउं **हीरागरउं** फुल्लयागरउं पूतलीउं वहूमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं फूटडउं रातउं फूटडउं सूपउती मेघावलि मेघडंबर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्रांणि ।—व. स.

उ०—२ वयरागरां **हीरागरां** पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि""""।—व. स.

२ एक जाति विशेष ।

३ उक्त जाति का व्यक्ति ।

हीरानांनीचोपण—सं. पु.—१ सोने, चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का स्वर्णकारों का एक औजार ।

हीरानांमी—१ चांदी का एक आभूषण विशेष जिसे स्त्रियां पैरों में पहनती हैं ।

२ सोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का स्वर्णकारों का एक औजार ।

३ आभूषणों पर की गई एक प्रकार की खुदाई ।

हीराबेधी-सं. पु.—राजस्थानी छप्पय छन्द का एक भेद विशेष जिसमें एक शब्द के दो अर्थ होते हैं ।

हीरामण, हीरामन-सं. पु.—१ तोते की एक जाति ।

२ उक्त जाति का तोता जिसका रंग सोने के समान माना जाता है । (कल्पित)

उ०—विखम क्रिया विखमी साधन वक्र । चौकै पंचभेदवै खट-चक्र । वंकीनाळ चढावै वाटां, घण अटकै **हीरामण** घाटां ।
—सू. प्र,

हीराळ-सं. पु.—तेज गति से चलने वाला एक प्रकार का घोड़ा ।

उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाळ प्रवाळ किसै । अकड़ाळ चंगी वोहौ राळ अजबीयै, जोजव्र वाज **हीराळ** जीसै, वसनाग: सींगाळटी: ताजी यै वैंगड़, मांणक रूप मलाळ कीयै ।
—किसनजी दधवाड़ियौ

हीरालूलि-सं. पु.—एक प्रदेश का नाम ।

उ०—देस संख्या, आदिइं अयोध्या नगरी,·········कांमरु ७० सहस्र डाहला नवलक्ष, लोहर ९ लक्ष, लाड नव लक्ष, **हीरालूलि** ७२ सहस्र ।·········—व. स.

हीरावणी-सं. स्त्री.—१ ससुराल में नव वधु को प्रतिदिन प्रातःकाल कलेवे के रूप में दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ, नाश्ता ।

२ देखो 'सिरांवण' (रू. भे.)

हीरावळ, हीरावळी-सं. पु.—१ ओढने का एक वहुमूल्य वस्त्र विशेष जिसके वीच में काली काली धारियां होती हैं ।

उ०—तूं **हीरावळ** हीर, (म्हनै) मोहराता मिळसी घणा । पाटण रौ पटचीर, नवौ ओढाग्यौ नागजी ।—अग्यात

सं. स्त्री.—हीरों की पंक्ति, कतार या माला । (व. स.)

३ एक प्रकार की ऊन की कम्वल विशेष ।

हीरावोल—देखो 'हीरावोल' (रू. भे.)

हीरू-सं. स्त्री.—वापंद की पुत्री व वहचराय की वहन जो देवी का अवतार मानी जाती है ।

हीरौ-सं. पु. [सं. हीरः] १ एक प्रकार का वहुमूल्य पत्थर या रत्न जो खानों में पाया जाता है और अपनी कड़ाई एवं चमक के लिये प्रसिद्ध है, हीरा नामक रत्न । (अ. मा.)

उ०—१ वारू सोवनमि वीटी घडावु, जु लोभ हुइ तु भंडार रखावु ।—व. स.

उ०—२ केसरी अंगिया, घणौ विरांणपुरै री कोर पटै लागां थकां, सीस ऊपर **हीरा** रौ सीस फूल वणायजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—३ हरि **हीरा** पाया, विणज हलाया, तोल न मोल लहंदा है । हरि **हीरा** होती, पारिख कोती, खोट न चोट चड़ंदा है ।
—अनुभववांणी

२ महत्वपूर्ण वस्तु ।

उ०—१ हरिजन **हीरा** पेमरस, सौदा रांम संनेह । जव इनका गाहक मिलै, हरीया गांठि खुलेह ।—अनुभववांणी

उ०—२ गरीव, निवळा अर अभ्यागतां सारू सोना री वौ सूरज रांम जांणै ऊगतौ ऊगतौ कद ऊगैला । पण वांरै ऊग्योड़ा **हीरा**-मोत्यां वाला सूरज नै वस पूगतां कीकर वडो होवण दै ।
—फुलवाड़ी

३ वहुत अच्छा व्यक्ति ।

उ०—चाय री चुस्कियां अर चिलमां री फूंकां रै विचाळै माखा मलूकदास री तारीफां रा पुळ वांधता-वाह रे मास्तर वाह ! है पूरी खांनदांनी आदमी । दूजोड़ी कैवतौ—वस्ती रा भाग है जरै इसौ **हीरौ** मिळयो है ।—अमरचूंनड़ी

वि.—कठोर । ❀ (डिं. को.)

रू. भे.—हीरइ, हीरउ ।

हीळ, हील-सं. स्त्री.—१ वंधन ।

उ०—तूटी वूढी सूं तरां, हेतारथ री **हील** । कालू सांमा कदमई, भूप भरै नह भील ।—पा. प्र.

२ रोक, निषेध, प्रतिवन्ध ।

३ डर, भय, आतंक ।

उ०—घूत वजारी धरम री, हिए न मांनै **हील** । मन चलाय खांपण मही, काढै नकौ कुचील ।—वां. दा.

४ शंका, संदेह ।

५ शीतलवायु, ठण्डी हवा ।

६ वात रोग, वायु ।

उ०—१ थैं जायनै कैंदी कै सेठां री पेट घणौ दूखै । **हील** री उठाव व्हियौ दीसै । कालै आयनै मिळज्यौ । म्हांरै तौ जीव री पड़ी है नै थांनै सीदी भावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ **हील** री पेट दूखणा री वात सुणी जद पंडै कह्यौ—उण मैं डरण जैड़ी कीं वात नीं । म्है **हील** रै दरद रौ नांमी ओखद जांणू । —फुलवाड़ी

७ वृत्तान्त, हाल ।

रू. भे.—हेळ, हेल ।

हीलणौ, हीलबौ-क्रि. स.—१ वंधन में लेना, वांधना ।

२ वन्द करना, रोक लगाना, प्रतिवन्ध लगाना ।

३ सीलवन्द करना, मुहरवन्द करना ।

४ ठण्डी हवा खाना, ठण्डी हवा लगना ।

५ ठण्डा होना, शीतल पड़ना ।

६ डरना, भय खाना ।

हीलणहार, हारौ (हारी), हीलणियौ—वि० ।

हीलिओड़ौ, हीलियोड़ौ, हील्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हीलीजणौ, हीलीजबौ—कर्म वा० ।

हीलहुज्जत-सं. स्त्री.—आनाकानी, वहस, प्रतिवाद ।

उ०—छोटकियौ भाई तौ पछै कीं **हील-हुज्जत** करी नीं । द

[illegible] बैठा । मेह लगना ऊँ नीत दांव हारय्या ।
—फुलवाड़ी

हीलाणौ, हीलाबौ क्रि. स. ['हीलणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ बन्धन में [illegible] ।
२ बन्द करवाना, गोट लगवाना, प्रतिबन्ध लगवाना ।
४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित करना, ठण्डी हवा लगवाना ।
५ [illegible] भय पैदा करना ।
६ ठण्डा करना, शीतल करना ।
७ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू. भे.)
हीलाणहार, हारौ (हारी), हीलाणियौ—वि० ।
हीलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हीलाईजणौ, हीलाईजबौ—कर्म वा० ।
हीलावणौ, हीलावबौ—रू० भे० ।

हीलायोड़ौ भू. का. कृ.—१ बन्धन में डलवाया हुआ, बंधवाया हुआ. २ बन्द कराया हुआ, गोट लगवाया हुआ, प्रतिबन्ध लगवाया हुआ. ३ सीलबन्द कराया हुआ, मुहरबन्द कराया हुआ. ४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित किया हुआ, ठण्डी हवा लगवाया हुआ. ५ डराया हुआ, भय पैदा किया हुआ. ७ ठण्डा किया हुआ, शीतल किया हुआ. ७ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीलायोड़ी)

हीलावणौ, हीलावबौ—१ देखो 'हीलाणौ, हीलाबौ' (रू. भे.)
उ०—[illegible] में सो उरू-रसन, हय-हाथा हीलाव । मठड्यां ऊनी [illegible], पाई पड़िया पाव ।—रैवतसिंह भाटी
२ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू. भे.)

हीलावियोड़ौ—१ देखो 'हीलायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'हिलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीलावियोड़ी)

हीलियोड़ौ भू. का. कृ.—१ बन्धन में लिया हुआ, बांधा हुआ. २ बन्द किया हुआ, गोट लगाया हुआ, प्रतिबन्ध लगाया हुआ. ३ सीलबन्द किया हुआ, मुहरबन्द किया हुआ. ४ ठण्डी हवा खाया हुआ, ठण्डी हवा लगा हुआ. ५ ठण्डा या शीतल हुआ हुआ. ६ भय खाया हुआ, डरा हुआ ।
(स्त्री. हीलियोड़ी)

हीलोड़ौ—देखो 'हिलोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—[illegible] बादस्या फौजा नीं दीनी हंकवाय, हीळेड़ी [illegible] देवरा ।—लो. गी.

हीलोळ—१ देखो 'हिलोळ' (रू. भे.)
उ०—१ [illegible] हीलोळ वप । [illegible] बीर नर ।
—राव दुरजनसाल हाडा री गीत
उ०—२ [illegible] हीलोळ [illegible] । अणी आरवां पुरवां घाट आडा ।—सू. प्र.
२ देखो 'हिलोळी' (रू. भे.)

हीलोळणौ, हीलोळबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ कर मेर अकब्बर साह नूं, सेस जोस नेतै सरू । सुरतांण महण हीलोळियौ, दुरगदास आसंगरू ।—रा. रू.
उ०—२ तिहि गंग हीलोळेहै जाय सतगुर चीन्है सहेजै न्हाय ।
—वि. सं. सा.

हीलोळियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हीलोळियोड़ी)

हीलोळौ—देखो 'हिलोळौ' (रू. भे.)
उ०—१ झाग नाग झारिया, कई ऊझलै कचोळा । घण केसर घोळिया, होद लेवै हीलोळा ।—मे. म.
उ०—२ मा, सहस तळावां मैं मैं गयी जै मा, भरिया हीलोळा खाय, हंसा बुगला खेल रह्या जै ।—लो. गी.

हीलोहळ—देखो 'हिलोहळ' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—१ हळहळ वळ विस्तरै जांण हीलोहळ फट्टौ । पवन संग पेरियां प्रवळ दव दंग प्रगट्टौ ।—रा. रू.
उ०—२ धुनि वेद सुणति कहुं सुणति संख धुनि, नद झल्लरि नीसांण नद । हेका कह हेका हीलोहल, सायर नयर सरीख सद ।
—वेलि
उ०—३ हैदळ पैदळ हसत, हलै दळ दळ हीलोहळ । उदध सात उलटियां, जांणि बारह घण वद्दळ ।—सू. प्र.
उ०—४ लंक नगर हीलोहळौ रूबा 'क्यारू' घाट ।—वि. सं. सा.

हीलौ—सं. पु.—१ किसी कार्य की सिद्धि के लिये सोचा हुआ मार्ग, उपाय, रास्ता ।
२ काम, कार्य ।
उ०—लकड़ीकार लुहार, खांमिया सेव रंगीला । छोड़ कूवटौ करै, हरांमी खासा हीला ।—दसदेव
३ व्यवसाय, रोजी ।
४ द्वार, दरवाजा ।
५ व्याज ।
६ बच्चों को सुलाने के लिये गाया जाने वाला गीत, लोरी ।
उ०—हीलौ नै हालरियौ म्हारा लाडला नै गाऊं ।—लो. गी.
क्रि. वि.—मिलजुल कर, शामिल ।
उ०—तद राजा कह्यौ, थांहरौ दरवार छः अठै ही रोजगार मिळसी, घर तौ छना ही छः, तिण सुं पांच दिन अठै हीला रहां ।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात
रू. भे.—हिलौ ।

हीलौंळ—देखो 'हिलोर' (रू. भे.)
उ०—धाट तण विसन ऊपाट रजवट अथग, जगत हीलौंळ वळेवंळ जोम ।—राव दुरजणसाल हाडा री गीत

हीलौळणौ, हीलौळबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—हेळा आगथीं सिंध ज्यूं अेकै आच हूत **हीलौळिया,** धीस खगां अेकै ज्यूं वोळिया नाग धींग ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

हीलौळियोड़ौ—देखो 'हिलोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हीलौळियोड़ी)

हीव—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—वेलण वेली वांह, लाल होठां रंग भीनौ। सांचै ढळियौ **हीव,** कंवळ चुण कर मैं लीनौ ।—नारी सईकड़ौ

हीवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—**हीवर** वौह हळवळ सुंडि सळवळ, पदमां पुंवगां कोई पार नहीं। अवतार असा दस आप तणां, जुध जीपण जांणि विसन सही ।—वि. सं. सा.

हीस—देखो 'हींस' (रू. भे.)

उ०—किसतूरी आसी उसाथ, वार वार मैं वाही वात। आलूं आवै ओलगणांरी, वा घोडा री **हीस** पियारी ।—पनां

हीसणौ, हीसबौ—देखो 'हींसणौ, हींसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सघालानि मन भावी, पहिलुं फलहल प्रीसइ, सघलाना हीया **हीसइ,** पाका आंवा नी कातली ।—व. स.

उ०—२ लोक सगलां कन्है जीजीया लिजियै, देहरां ठांम महिजीद दीसै। थरहरै गाय इण राव इंद्रसी थकां, हियौ इण राज सु केम **हीसै** ।—ध. व. ग्रं.

हीसाळ—सं. पु.—१ घोड़ा, अश्व ।

२ देखो 'हींसार' (रू. भे.)

हीसियोड़ौ—देखो 'हींसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हीसियोड़ी)

हीसूं—सं. स्त्री.—हंसने की क्रिया ।

उ०—न कुण **हीसूं** हंसइ, सदा नीससइ, वोलावि खीजइ, दिहाड़इ दिहाड़इ देह खीजइ ।—रा. सा. सं.

ही ही—देखो 'हीं हीं' (रू. भे.)

हुं—अव्यय. [सं. हुं, हुम्] १ स्वीकृति सूचक, अव्यय, हां ।

२ किसी वात, आवाज या प्रश्न के प्रत्युत्तर में बोला जाने वाला शब्द, हां, जी, हुंकारा आदि, प्रश्नद्योतक अव्यय ।

३ स्मृति, याद ।

४ संदेह, शक ।

५ क्रोध, गुस्सा ।

६ घृणा, अरुचि ।

७ भत्सर्ना, निंदा ।

वि० वि०—उपर्युक्त सभी भावों की अभिव्यक्ति 'हुं' शब्द से होती है। जैसा भाव व्यक्त करना होता है वैसी ही आकृति वना कर यह शब्द 'हुं' कहा जाता है।

८ देखो 'हूं' (रू. भे.)

उ०—१ आगइ द्वापर माहि जु वीतौ, पंचह पंडव तणउ चरीतौ। हरखि हिया नइ हुं भणउ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ कर जोडि हुं पणमउं पाय, मइं तुम्हि परणउ पांडवराय। तुम्ह उपकार करिसु हुं घणा दूख दलिसु वण वासह तणा ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—३ उंचै चित्रसाळी माळिआ, या हुं चतुरा नार। साहिव चतुर सुजांण रस, नित विलसौ भरतार ।—ढो. मा.

उ०—४ ताहरां जीजी कह्यौ, 'हुं घरै जाऊं छुं। थे कह्या, घरै गई।' ताहरां जीजी घरै गई ।—जीजी डाभी री वात

उ०—५ ताहरां माताजी वीड़ौ झालियौ। हुं ईयांनुं छेतरीस। पिण ईयां रो वैर कुण लेसी। ताहरां ठाकुरां फुरमायौ हुं लेईस।
—देवजी वगड़ावत री वात

उ०—६ रे कलियुग गज मत गरज, हुं हिज आज अवीह। तुझ मद उत्तारण तपै, सकजी जिन ध्रमसीह ।—ध. व. ग्रं.

उ०—७ कांमण कांई सीखिउं नहीं, कांमकंदळा नारि। वळद थई हुं वाझनु, वंभण ताहरइ वारि ।—मा. कां. प्र.

हुंकळ—देखो 'हूंकळ' (रू. भे.)

उ०—आप वळ पांण जै सींगहर आभरण, दाखवै उसीला वसै दूजा। करै हींदु तुरक जोड़ दोहुं **हुंकळां,** 'पाळ' रा तणी कीरमाळ पुजा ।—वळुजी री गीत

हुंकळकळळ—देखो 'हूंकळकळळ' (रू. भे.)

हुंकार—सं. स्त्री. [सं. हुंकारः] १ सिंह, व्याघ्र या किसी वीर पुरुष की जोशपूर्ण आवाज, गर्जना ।

उ०—प्रतापसिंह पड़तां ई जोर री हाकौ व्हियौ अर भीमड़ा नै च्यारूंमेर सूं घेर लियौ। त्राटक वाजण लाग्यौ। तड़ाक-तड़ाक करता माथा उडण लाग्या। जोर री **हुंकार** हुई ।—अमरचूंनड़ी

२ जोर का शब्द, ध्वनि, घोष, टंकार ।

उ०—चिलैरी तांणी, **हुंकार** करती, वड़ै पठांण री वेटी ज्यूं तूही तूही करती, इण भांति री कवांणां री चकारी उतरै छै सु उआं-हीज वड़ां नै पीपलां री आ साखा सूं नांगळीजै छै ।—रा. सा. सं.

३ लड़ने-भिड़ने, ललकारने या चुनौति देने का शब्द ।

४ डांटने या फटकारने का शब्द ।

५ चिल्लाहट, चीत्कार, चींघाड़ ।

उ०—सीह ज्यूं लंकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं वठठाठ करता थका, वैस्यां ज्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं **हुंकारां** करता थका। इसा ऊंठ झेकजै छै ।—रा. सा. सं.

६ करुण क्रन्दन, रुदन, हाहाकार ।

उ०—१ जु उमादै मंडळ मांडियौ थौ तिण मांहै विघ्न हुवौ, सह वाळक मारिया सू घर घर **हुंकार** पड़ियौ छै ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ विद्यारथियां नूं कही थांहरै घरै जावौ, सु उण रै घर रोवै पीटै छै, घणौ **हुंकार** पड़ियौ छै ।—पंचदंडी री वारता

[illegible] हुंकार, हुंकार, हुंकार।

हुंकारड़उ—देखो 'हुंकारो' (रू. भे.)

उ०—[illegible] दैवी नाहि। हुंकार दै हुंकारड़उ, [illegible]।—डो मा

हुंकारणौ, हुंकारबौ—क्रि० स० [सं० हुंकार] १ हुंकार करना, गर्जना, जोश पूर्ण आवाज करना।

२ जोर का शब्द या ध्वनि करना, घोष या टंकार करना।

३ चिल्लाना, चीत्कारना, [illegible]।

४ ललकारना, चुनौति देना।

५ डाटना, फटकारना।

६ बुलाना, पुकारना, आवाज देना।

उ०—[illegible] नित। बीप्र हुंकारै वेग तुरंत। [illegible], पाड्या हु थारै गुणदास।—बी. दे.

७ रोना, करुण क्रन्दन करना, हा-हा कार करना।

८ किसी बात के साथ मे 'हुं-हुं' शब्द कहना। (इसलिये कि उस बात को सुन रहा है और समझ रहा है)

हुंकारणहार, हारौ (हारी), हुंकारणियौ—वि०।

हुंकारिप्रोड़ो, हुंकारियोड़ो, हुंकारयोड़ो—भू० का० कृ०।

हुंकारीजणौ, हुंकारीजबौ—कर्म वा०।

हुंकारव—१ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

२ देखो 'हुंकारो' (रू. भे.)

हुंकारियोड़ो—भू० का० कृ०—१ हुंकार या गर्जना किया हुआ, जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, गुर्राया हुआ. २ जोर का शब्द या ध्वनि किया हुआ, घोष या टंकार किया हुआ. ३ चिल्लाया हुआ, चीत्कारा हुआ, [illegible] हुआ. ४ ललकारा हुआ, चुनौति दिया हुआ. ५ डाटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ. ७ करुण क्रन्दन किया हुआ, रोया हुआ, [illegible] किया हुआ. ८ किसी बात के साथ में 'हुं हुं' शब्द कहा हुआ।

(स्त्री० हुंकारियोड़ी)

हुंकारियौ—सं० पु०—बात के साथ 'हुंकारा' देने वाला, 'हां' या 'हुं' कहने वाला।

उ०—[illegible] बात रा हुंकारियां थै अबी उमर हुयज्यो, थारै कांनां [illegible] पूर्छ।—फुलवाड़ी

हुंकारौ—सं० पु० [सं० हुंकार, आमकार] १ 'हुं' कहने की की क्रिया या भाव।

२ किसी कही हुई बात के साथ मे 'हुं हुं' करते चलना जो इस बात का सूचक होता है कि वक्ता की बात सुनी व समझी जा रही है।

उ०—१ किसी हुंकारा बिन बात, किसो मित बिहूणो साथ। [illegible], किसो [illegible] बिन भात।—फुलवाड़ी

उ०—२ मुनि मून पारसी भणै, हुंकारै खट काया हणै। अण बोल्या ई उदम करै, तौ बोल्या कही काहु गति करै।—भि. द्र.

उ०—३ अबकी जड़ाव मासी म्हारै माथै जयां देवती बोली—रांम-मारघा वात रै बिचाळै हुंकारौ तौ दिया कर। बिना हुंकारै बात री सगळी मठ ई मर जावै।—फुलवाड़ी

२ स्वीकृति, इजाजत, अनुमति, स्वीकारोक्ति।

उ०—१ ठाकरां थोड़ा मुळक नै हुंकारौ दे दियौ। पटेल री जोड़ी चोखळै चावी ही तौ रावळौ घोड़ौ पण हजारां मैं एक हौ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ घरवाळी पगांतियै ऊभी कैवण लागी—पूरी इक्कीस रातां उपरांत काले ई तौ पाछा बावड़िया अर भांभरकै ई चौधरी-बावा रै बेटा री जांन मैं जावण री हुंकारौ भर लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ चार दाइयां रा आडा भचीड़, वांनै जगाई, रोय रोय पग भाल्या, घणा ई नेवरा करचा, पण एक ई हुंकारौ नीं भरचौ।

—फुलवाड़ी

२ सहमति, हां।

उ०—सिरदार हुंकारौ भरता बोल्या—सुणी तौ म्हां ई हां, पण निजरां नीं देखी।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हुंकारी, हुंकारड़उ, हुंकारव, हूंकारौ।

हुंकाळ—देखो 'हुंकळ' (रू. भे.)

उ०—सूंघै मेंगळ-सूंड हुंकाळां चोळ करंतां। फळिया गूलर अन्न, सुहांणी चाल वहंतां।—मेघ

हुंछ, हुंछउ—देखो 'हूंछ' (रू. भे.) (उ. र.)

हुंड—देखो 'हुड' (रू. भे.)

हुंडन—सं. पु. [सं.] शिव के एक गण का नाम।

हुंडी—सं. स्त्री.—१ पुराने जमाने में सेठ साहूकारों या व्यापारियों द्वारा लिखा जाने वाला एक भुगतान पत्र जिसके आधार पर एक स्थान के व्यापारी को रुपये देकर दूसरे स्थान के व्यापारी से रुपये ले लिये जाते थे। यही प्रणाली आजकल बैंक ड्राफ्ट द्वारा चलती है, भुगतान पत्रों में इसका प्रतिहस्तान्तरण या बेचान भी होता है।

उ०—तै बोल्या—म्हैं चोर छां। थैं हुंडी बटायनै हजार रुपइयां री थैली मांय नैं मेली, सौ म्हैं देखता हा।—भि. द्र.

२ किसी साहूकार या महाजन द्वारा लिखा जाने वाला वह पत्र जिसको किसी भी स्थान पर दिखाकर उसमें अंकित रुपये या उतने रुपये की वस्तु प्राप्त की जा सकती थी। यही दशा वर्तमान समय में रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा जारी किये गये नोट या अमेरिकन डालर की है, नोट।

३ ऋण लेते समय ऋण लेने वाले द्वारा लिखा जाने वाला पत्र जिसमें रुपयों के साथ भुगतान की अवधि व ब्याज की दर भी लिखी होती है, प्रोमेजरी नोट।

४ हुक।

उ०—घोड़ां रै उपरै पाखरां पडै छै। स्हौड जरद भीड़ियां **हुंडीयां** जड़ै छै उण वेळां कंवर कनै सिदवी आसावरी गाइजै, दूसरा डंका लागत, मांगळ गरहरै छै।—पनां

रू. भे.—हूंडी।

हुंडीपुरजौ—देखो 'हुंडी'।

हुंडीवही–सं. स्त्री.—वह वही या किताब जिसमें हुंडी की नकल रखी जाती है।

हुंडीवाळ–सं. पु.—वह महाजन जिसकी लिखी हुंडी से आसानी से रुपया प्राप्त हो जाता हो या जिसकी हुंडी आसानी से पटती हो।

रू. भे.—हूंडीवाळ।

हुंणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—जोत्यग मां सव कुछच लीखां। ह सव जोतिग मांहि। **हुंणहार** होत्यत्र की। आगति लखी न जाय।—वि. सं. सा.

हुंत—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

हुंतउ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—१ सातळसीह **हुंतउ** भूभार, तिणइ कटक करिउ सिंघार। कान्हड देवउ किसउ वखांण, हठि चडीउ हाकइ सुरतांण।

—का. दे. प्र.

उ०—२ एक भणइ ए **हुंतउ** भरूंसउ, जै छोड वसइ कांन्ह। कीवउ मेळ मिल्या दळि आवी, तेह तणा परधांन।—कां. दे. प्र.

उ०—३ आंखि **हुंतउं** काजल हरइ, कोसि बांधी सिल धरइ, जीणइं वोलतइं माथांना केस ऊभा थाइं।—व. स.

हुंतासण, हुंतासन—देखो 'हुतासन' (रू. भे.)

उ०—१ गज ग्रस व्रवि नागौर गढ, दै बहु कुरव दिलेस। ताव **हुंतासण** देखि तन, राव कहै 'अमरेस'।—सू. प्र.

हुंति, हुंती—देखो 'हूंती' (रू. भे.)

उ०—१ सरसती **हुंति** विद्या सिरै विमळ अकळ कहिजै विसन। सूर सां तेज विणियौ सरस कोड़ि कोड़ि वधतौ किसन।

—पी. ग्रं.

उ०—२ वाइ वाजइ प्रवल, उडइ धूलिना पटल। सीयालइ **हुंति** मोटी रात्र तै नान्ही थई रात्रि।—रा. सा. सं.

उ०—३ तावदिदं सकलजगज्जीवति ईस्वरै विस्व कर त्रित्वमांमनंति मनीखिण, एकि संसारनी स्रस्टि ईस्वर **हुंति** कहइं एकिं ब्रह्मा, वैस्णवी, एकि सांव माया।—व. स.

उ०—४ राजि उठा **हुंती** भलै मुहूरत खड़िया छै, पातिसाहजी सु घणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै।

—द. वि.

उ०—५ दुरजण-केरा वोलड़ा, मत पांतरजउ कोय। अणहुंती **हुंति** कहइ, सगळी साच न होय।—ढो. मा.

उ०—६ जइ रूंखां मारू हुई, छत्रडउ पड़ियउ तास। तइ **हुंती** चंदउ कियइ, लइ रचियउ आकास।—ढो. मा.

हुंतु—देखो 'हूंती' (रू. भे.)

उ०—त्रिहुं पुरुख देखता वाट उठाडिइ, वगति करति आंवालुवि त्रोडइ. पगछेहि गांठि छोडइ, आंखि **हुंतु** काजल हरइ, केसवंधी सिला धरइ.........।—व. स.

हुंतौ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—१ चीतारंती चुगतियां, कुंभी रोवणियांह। दुरा **हुंता** तउ पलइ, जंऊ न मेल्ह हियांह।—ढो. मा.

उ०—२ चंदमंडल **हुंतां** किसिइं अग्निस्फुलिंग उल्ललइं, किम करपूरजल विगंधाइ, किम मयूराश्रुजल कलुस थाई।—व. स.

उ०—३ राजांन जांन संगि **हुंता** जु राजा कहै मु दीध ललाटि कर। दूरा नगर कि कोरण दीसै, धवळागिरि किन धवळहर।

—वेलि

उ०—४ कसवौ आंतरी वडौ सहर छै, नै सहर मांहै वडौ महाजन **हुंतौ**। सौ कसवा मांहै चोर घणा लागै।—नैणसी

उ०—५ पड़िया राणी री फेंट, संदक महलां हेट। सुकोमल साथ, एसौ **हुंतौ** मुज वंधवौ ए।—जयवांणी

हुंदउ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ चित्त विमासियउ, मारू देस अळग्ग। आपण जाए जांइयउ, करहा-**हुंदउ** वग्ग।—ढो. मा.

हुंफट–सं. स्त्री.—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हींमजी, हरडां हलद्रह वेर। हरवी हाथुडी हरी, **हुंफट** हुंसि हसेर।—मा. कां. प्र.

हुंबड़–सं. पु.—पंवार राजपूत वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

हुंरम—देखो 'हरम' (रू. भे.)

हुंमायु, हुंमायू—देखो 'हुमायू' (रू. भे.)

हुंस—देखो 'हूंस' (रू. भे.)

उ०—१. माह मैं माहट मांड्यो मेह तै आहट रूंस। नौ पिण माहरैं नाह न पूरी माहरी **हुंस**।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ राय वींहतइ तीणइं अवसरि दीधी तास चपेट। मफ घरि म रहिसि रे तूं लंपट पुरु **हुंस** पूरिउं पेट।—हीराणंद सूरि

हुंसरड़ौ–सं. पु.—वह ऊंट जो चलने समय नकेल खींचने पर भी नहीं रुकता और आगे बढ़ जाता है, अड़ियल ऊंट।

हुंसि–सं. स्त्री.—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हींमजी, हरडां हलद्रह वेर। हरवी हाथुडी हरी, हुंफट **हुंसि** हसेर।—मा. कां. प्र.

हुंसियार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—१ भाग सूं उणरी ड्यूटी वी० डी० ओ० सा'व रै घरै इज लागी। वौ जिलरी नाचण-गावण मैं **हुंसियार** हौ, उतरौई हाजरी साजण मैं पण पाटक हौ।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ लड़का नैं सहर मैं भेज्यौ तौ इण वास्तै हौ कै पढ़

निरं'र हूंसियार वर्णीला अर कुळ री नांम वधावेला ।

—अमरचूंनड़ी

हूंसियारी—देखो 'होसियारी' (रू. भे.)

हूंसेर—सं. स्त्री.—उत्कण्ठा, अभिलाषा । (मरु भारती)

हूंस्यार, हूंस्यार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—१ राजाजी नैं वळे हंसी आयगी । वां टाटचा सिरदारां अर नगर सेठां सांम्हौ देखनैं हंसता हंसता पूछ्यौ—म्हनैं ठा' नीं पड़ी कै थैं लोग ई इत्ता हूंस्यार होय कीकर ठगीजग्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ भौजाई हूंस्यार ही । धणी नैं कह्यौ—कै वौ गाडियां रै गालती जाय ऊभ जावै तौ भाई नैं ई थोड़ौ घणौ संकौ आवैला ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ कंपनी सा' निरखण नैं आयौ, रांघड़ वडौ हूंस्यार । भळ-भळ तौ माथौ करै, नैणा जळै मसाळ ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

हूंस्यारी—देखो 'होसियारी' (रू. भे.)

उ०—गुटियौ हूंस्यारी करनै भाईयां री ठौड़ डाकण रै सातूं वेटां नैं सुवांण, ताखौ राख, डाकण रै घर सूं सोकड़ मनाई ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ वेटा री हूंस्यारी देखनैं सेठ अणुंता राजी व्हिया । कह्यौ—म्हैं कद थारै माथै चिड़ूं हूं । म्हैं तौ अठै वैठौ ई सब समझग्यौ हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—३ तठा उपरांत दीवांणजी हाजरिया नै भेज आपरै विस्वास रा आदमियां नैं बुलाया । जणा जणा नैं आप आपरै कांम री मुळावण दैदी । अैड़ी हूंस्यारी वरतणी कै पीढचां तांई कोई कुच-मादी माथौ ऊंचौ नीं करै ।—फुलवाड़ी

हु—सं. पु. [सं.] १. नृप, राजा । (एका.)

२ निंदा, आलोचना । (")

३ निश्चय, निर्णय । (")

४ संभारण । (")

५ अतिरेक ।

६ निवेदन ।

७ भेंट ।

८ यज्ञ ।

९ खाना ।

हुअण—देखो 'होणी' (रू. भे.)

हुअणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—पिण भावी अति प्रवळ सकळ वस प्रांण असेखा । हुअणहार सिध करै, वार न धरै विध रेखा ।—रा. रू.

हुअणी—देखो 'होणी' (रू. भे.)

२ देखो 'हुवा' (रू. भे.)

हुआ—वि.—१ पर्याप्त, वहुत ।

हुआसण, हुआसन—देखो 'हुतासन' (रू. भे.) (जैन)

हुउं—अव्यय—नकारात्मक, नहीं, इन्कार ।

हुक—सं. पु.—१ अंकुस की तरह मुड़ी हुई कांटादार मोटी कील जो किसी चीज को फंसाने या दीवार में लगा कर किसी चीज को लटकाने के काम आती है, कांटा ।

२ देखो 'हूक' (रू. भे.)

हुकम—सं. पु. [अ. हुक्म] १ राज्य या शासन की ओर से जारी की जाने वाली किसी प्रकार की राज्याज्ञा जिसका पालन करना अनिवार्य हो आदेश, फरमान । (अ. मा; डिं. को; ह. नां. मा.)

उ०—स्री सूरसिंघजी साहायवां कंवरजी स्री गजसिंघजी नैं हुकम दीयौ कै पातसाह सलांमत आया नैं जाळोर सांचोर इनायत कीया है सु थैं सारी साथ लै जाळोर जाईजी ।—नैणसी

२ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये दिया जाने वाला आदेश ।

उ०—१ वै दोन्यूं जणा तौ आज वजार कांनी गयौड़ा है, कुण जांणै पाछा करै वावड़ै अर आपनैं तौ हुकम परवांणै तुरत किलै पूगणौ चाहिजै ।—अमरचूंनड़ी

उ०—२ बुधवार सुत अगजीत रौ, रिण खळां अंतक रीत रौ दिसि अस्ट स्रीमुख हुकम दाखवि मोरचै फुरमांण ।—रा. रू.

उ०—३ पाय हुकम पागड़ै पाव दीधौ छत्रपत्ती । भैरव दोनौं भेजि सकति तेड़ी त्रिसकत्ती ।—मे. म.

उ०—४ लंगर मैं वैठ'र जीमै, कतार मैं वासण मांजै, तूंवा डरता रंवै वोदां री भौ भाजै । अफसर रै हुकमां हालै जकौ मौज सूं मालै ।—दसदोख

उ०—५ सैलां-सिकारां रौ दुवौ हुवौ छै, भाई अमराव साहणियां नै हुकम हुवौ छै ।—रा. सा. सं.

३ निर्देश, मार्ग-दर्शन ।

४ अधिकार, शासन ।

उ०—१ हुकम हासल सारौ रांणी रौ । मुंहडा आगै मुतसद्दी वैठ सारौ कांम करै ।—गौड़ गोपालदास री वारता

उ०—२ कीरां ही वांण चालै, कीरां ही हुकम हालै ! कोई घूस दावै, कोई ल्हाज सूं ढावै ।—दसदोख

५ स्वीकृति, अनुमति, इजाजत ।

उ०—जद ब्राह्मण वावेचा नैं जाय कहयौः वापूजी पांच रुपइया री हुकम कियौ है ।—भि. द्र.

६ प्रभुत्व, प्रभाव ।

७ नियम, विधान, विधि ।

८ शिक्षा ।

९ व्यवस्था, प्रवंध ।

१० वड़ों का या गुरुजनों का वचन जिसका पालन करना कर्त्तव्य होता है ।

उ०—हवां मैं आयां तौ आथरण ही पीरां री धोक—ध्यावना कर परा'र सोवूंली जै सदा दांई सपनै मैं आया तौ आपरी सारी वात वूझ नाखूंली। जिसौ हुकम देवैला विसौ ही आपनैं भुगता देवूंली।
—दसदोख

११ वड़े व्यक्ति की वात के उत्तर में वोला जाने वाला आदरयुक्त शब्द। यथा–हाँ जी, जी, हुकम आदि।

उ०—ठाकरां फरमायौ–गुलाब री मा नै कैः दिया–हूं खुद(ठाकर) सिझ्या वेळा धूप दीप कर परा'र चडावौ-परसाद लियां आरैयौ हूं। जोत करावूंला, कळस मंडावूंला। दोनूं वां हुकम सूं हुंकारी दियौ अर ढाढयां रै घर रौ गैलौ लियौ।—दसदोख

१२ किसी पर चलाया जाने वाला व्यर्थ का रौब।

उ०—मूळी सिर चढगी हुकम ओढावै अर घर री कांम करावै है।
—दसदोख

१३ तास का एक रंग, काला।

रू. भे.—हुकमांण, हुकमेण, हुकमौ, हुकम्म, हुकम्मा, हुक्म।

हुकमखरच–सं. पु.—महाराणा साहव के निजी खर्च का हिसाव रखने वाला महकमा। (वी. वि.)

हुकमणौ–वि.—आज्ञा या हुकम देने वाला।

हुकमत—देखो 'हकूमत' (रू. भे.)

हुकमदार–वि.—१ अधिकार रखने वाला।

उ०—पैलां रौ पटवारी, हाल मैं पूगळ–पट्टै रौ आघूंतौ हुकमदार! ज़ात रौ दरौगौ, हजूर रौ धा भाई दादौ! डरतौ सौ सिंघ लिखै, मरतौ सौ आपरौ नांवौ मांडै।—दसदोख

२ हुकम देने वाला।

हुकमनांमौ, हुकमनांवौ–सं. पु. [अ. हुकमनामः] १ वह पत्र जिसमें कोई आदेश जारी किया गया हो, आदेशपत्र।

२ आदेश।

३ किसी राजा के उत्तराधिकारी को उत्तराधिकार सौंपने का आदेश जो वादशाह द्वारा जारी किया जाता था।

उ०—संवत १६५६ सगतसिंह नूं सोजत हुई हुकमनांवौ तालकौ राठौड़ भांण जैतमाल लै आयौ।

—महाराज सूरजसिंह रै राज री वात

वि० वि०—परम्परा के अनुसार किसी राजा के मरने पर उसकी जागीर या राज्य जब्त समझा जाता था और उस राज्य पर वादशाह का सीधा अधिकार हो जाता था। मृत्यु के वारहवें दिन मातमपुरसी के अवसर पर वादशाह एक हुकम जारी करके राजा के उत्तराधिकारी को उस राज्य का पट्टा इनायत करता था, उसके वदले में इस नवीन राजा के राज्य की एक वर्ष की आय जो पट्टे में ही लिखी होती थी, वादशाह के नजर करनी पड़ती थी। छोटे ठाकुरों की जागीर के विषय में यही प्रथा राजाओं द्वारा पूरी की जाती थी।

रू. भे.—हुक्मनांमौ, हुक्मनांवौ।

हुकमवरदार—देखो 'हुक्मवरदार' (रू. भे.)

हुकमवरदारी—देखो 'हुक्मवरदारी' (रू. भे.)

हुकमांण—देखो 'हुकम' (रू. भे.)

हुकममय–सं. पु.—नौकर, चाकर। (अ. मा.)

हुकमी–वि. [अ. हुक्मी] हुकम मानने वाला, आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, अनुयायी, तावेदार।

उ०—१ कर जोड़ै माहाराज का, सिर हुकम चढाया। पटौ समापं कर क्रपा, थिर हुकमी थाया।—द. दा.

उ०—२ कथन कीया सौ कंवरजी सिर माथै धरस्यां म्हे तौ हुकमी रावळा कहस्यौ सौ करस्यां।—पनां

उ०—३ जै नांमी गढ लंक जयंता, सिव एकादसमा निज संता। कीधौ अमर जांनुकी कंता, हुकमी दास जांण हणमंता।
—र. ज. प्र.

उ०—४ सकत रा हुकमी धिनी धांधळ-सुतन, जगत धिन जिका पित मात जणियौ। कहै कवि गिरवरौ उकत परवांण कथ, समदरां अळग वाखांण सुणियौ।—गिरवरदांन सांदू

उ०—५ उजर करै ना हम कछु, हुकमी चाकर जांण। रुपया है करडा वहुत, सुणलै साह पठांण।—गौड़ गोपाळदास री वारता

हुकमेण, हुकमौ—देखो 'हुकम' (रू. भे.)

हुकम्म, हुकम्मा—देखो 'हुकम' (रू. भे.)

उ०—१ कारण अरजणसिंघ नूं, भूप निवारण भ्रम्म। भाटी नै चांपावतां सिर धारियौ हुकम्म।—रा. रू.

उ०—२ ज्वाळानळ जाळण काळ जवन्न, कियौ मुचकुंद हुकम्म किसन्न।—ह. र.

उ०—३ हाजर हुकम्म फुरमांण होय। दूदौ उमेद चहुवांण दोय।
—वि. सं.

हुकहुकी–सं. स्त्री.—वोलने की उत्कण्ठा।

ज्यूं—तन्नै हुकहुकी आवै तौ मन्नै लुटलुटी आवै।

हुकाधारी—देखो 'होकाधारी' (रू. भे.)

हुकी–सं. स्त्री.—शृगाल की वोली या वोली की आवाज।

हुकुम—देखो 'हुक्म' (रू. भे.)

हुकुमनांमौ—देखो 'हुक्मनांमौ' (रू. भे.)

हुकूमत—देखो 'हकूमत' (रू. भे.)

हुकौ—देखो 'होकौ' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरायंत हुका री हौंस कीजै छै। चाकरां नै हुकम हुवौ छै। हुका तयार कीजै छै।—रा. सा. सं.

हुक्कांम–सं. पु. [अ. हुक्काम] हाकिम आदि उच्च-पदाधिकारी वर्ग।

उ०—हुक्कांम हुकम हाजिर हजूर, करियै न तदारुक वेकसूर।
—ऊ. का.

हुक्कौ—देखो 'होकौ' (रू. भे.)

उ०—हुक्को बाज रह्यो छै। गोला लाल चिलमी हुवा छै। चाम्हा छिटक रह्या छै। मबरै मबरै हुक्कां नूं तमाखू खावजै छै।
—रा. सा. सं.

हुक्म--देखो 'हुकम' (रू. भे.)
उ०—१ दुस्मन दूर है, सब दुनी में हुक्म मंजूर है। मगरूरां की मगरूरी दफै करतै है, छत्रधारी की भी रीस धरतै है।
—रा. सा. सं.
उ०—२ म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रौ हुक्म मिल्यौ है।—अमरचूनड़ी

हुक्मनांमौ, हुक्मनांवौ—देखो 'हुकमनांमौ' (रू. भे.)

हुक्मबरदार-सं. पु. [अ. हुकम+फा. बरदार] १ हुक्म उठाने वाला व्यक्ति, अनुचर, सेवक, आज्ञाकारी।
२ शासन चलाने वाला, हुक्म चलाने वाला।
३ शासक।
४ हाकिम।
रू. भे.—हुकमबरदार।

हुक्मबरदारी-सं. स्त्री. [अ.] १ 'हुक्म बरदार' होने की अवस्था या भाव।
२ आज्ञाकारिता, अनुपालना, सेवा, चाकरी।
३ शासन या हुक्म चलाने की क्रिया।
४ शासन, हुकूमत।

हुक्मी—देखो 'हुकमी' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यौं राखै त्यौं रहैंगे, मेरा क्या सारा। हुक्मी सेवक रांम का, बंदा बेचारा।—दादूवांणी
उ० २ तौ जिकौ मुणै तौ विरुद्ध विचारै जो इणां नं कूवत सामर्थ्य छै नै लोक जेर दस्त इण रा हुक्मी छै।—नी. प्र.

हुड़-सं स्त्री.—१ आशा, अभिलाषा, इच्छा।
२ जोश, आवेश।
३ उमंग, उत्साह।
४ देखो 'हुड' (रू. भे.)
उ०—१ खाग प्रहार छाग हुड़ खंडत, मुंड रुंड लोहित झड़ मंडत। पान रुधिर करि लहह्य त्रिपत्ती, श्री करनी जय जयत्ति सकत्ती।
—मे. म.
उ०—२ वगां वीचाळै काढिया, हुड़ जिम पग झलै। ऊभी मेली माहरी, गढ गोख महलै।—केसोदास गाडण
उ०—३ फिट बीकां फिट कांधळां, फिट जंगळधर लेडांह। दळपत हुड़ ज्यूं बांधियौ, भाज गई भेड़ांह।—अग्यात

हुड़क-सं. पु. [सं. हुडुक्क] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।
रू. भे.—हुड़क्क।

हुड़कणौ, हुड़कबौ-क्रि. स.—१ उमंग, साहस और उत्साह के साथ कूदना, उछलना।
२ जोश के साथ भाग कर आना।
३ हमला करना।
हुड़कणहार, हारौ (हारी), हुड़कणियौ—वि०।
हुड़किअोड़ौ, हुड़कियोड़ौ, हुड़क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हुड़कीजणौ, हुड़कीजबौ—कर्म वा०।
हुड़क्कणौ, हुड़क्कबौ—रू० भे०।

हुड़कळ-स. स्त्री.—१ एक प्रकार की चिड़िया।
२ भीलों की एक याचक जाति।

हुड़कळी-सं. स्त्री.—एक चिड़िया विशेष।

हुड़कियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ उमंग, साहस और उत्साह के साथ कूदा हुआ, उछला हुआ. २ जोश के साथ भाग कर आया हुआ. ३ हमला किया हुआ।
(स्त्री. हुड़कियोड़ी)

हुड़कौ-सं. पु.—१ 'हुड़कल' जाति का व्यक्ति।
२ पशु का आक्रामक भाव।

हुड़क्क—देखो 'हुड़क' (रू. भे.)

हुड़क्कणौ, हुड़क्कबौ—देखो 'हुड़कणौ, हुड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—मही चौ धड़क्कै तठ लड़क्कै सेसरा माथा, खड़क्कै हुड़क्कै काळी कड़क्कै खांणास।—प्रभूदांन मोतीसर

हुड़क्कियोड़ौ—देखो 'हुड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुड़क्कियोड़ी)

हुड़खौ-सं. पु.—सोच, विचार, चिन्ता, फिक्र।

हुड़तपौ-सं. पु.—१ तेज धूप की गर्मी के कारण घर की दीवारें तपने से अन्दर महसूस होने वाली गर्मी, उमस।
२ किसी मकान या कक्ष का द्वार सूरज के रुख की ओर होने के कारण सीधी किरणें पड़ने से होने वाली गर्मी।

हुड़दंग-वि.—१ मजबूत।
२ मस्त, मोटा-ताजा।
३ देखो 'हुड़दंगौ' (रू. भे.)

हुड़दंगी-सं. स्त्री.—१ मजबूत स्त्री।
२ मोटी-ताजी, हृष्ट-पुष्ट स्त्री।
३ वेचाल, छिनाल।
उ०—रांमा अभिरांमा कांमातुर रोवै, हड़मल हुड़दंगी सेजां में सोवै। ललनां लातरियां खातरियां खारी, भड़वी भगतणियां पातरियां प्यारी।—ऊ. का.

हुड़दंगौ-सं. पु. (स्त्री. हुड़दंगी) १ उत्पात, उपद्रव।
२ मस्त आदमी।
वि.—१ उपद्रवी, उत्पाती।
उ०—मुर मैं फोग महेस, रेत भसमी पर राचै। चांद आगिया माथ, जटा लासूड़ा जांचै। गांठ गंठीली माळ, महक फूलीरी गंगा, आक धतूरै पास, कैर भूतां हुड़दंगा।—दसदेव

२ मस्त, मतवाला, मौजी।

उ०—तीरथ जात समस्त सकळ साधां मिळ संगा, रास तमासां रमैं हुळस नाचैं हुड़दंगा।—ऊ. का.

३ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।

रू. भे.—हुड़दंग, हुरदंगौ।

हुड़दाविगम, हुड़दाबेगण, हुड़दाबेगम, हुड़दावेगम—सं. स्त्री. [तु. उर्दू + बेगम] १ मर्दानी पोशाख एवं शस्त्रों से सुसज्जित वह स्त्री जो मुसलमानी बादशाहों के जनानाखानों की रक्षार्थ नियुक्त रहती थी।

२ शैतान या उद्दण्ड स्त्री।

हुड़बौ—सं. पु.—घाणी की लाठ को आगे सरकने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकड़ी।

हुड़ियार—सं. पु. [सं. हुड] नर मेष, भेड़ा।

हुड़ियौ—देखो 'हुड' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—कुंभौ बाहुड़ियौ, ताहरां बांसै रजपूत हसण लागा। 'जांणां छां कूंभौजी नांनांणै जाइ हुड़ियां रै माथै कटारी भांजसी।' आ कूंभै नूं खबर हुई।—नैणसी

हुड़ी—सं. स्त्री.—१ तेजगति, तीव्रता, दौड़।

२ शीघ्रता, जल्दी।

उ०—बाबल आतां पेख, वालिया हुड़ी न करसी। बालां होड़ा होड़ फेर नीं कड़ियां चडसी।—सक्तिदांन कवियौ

३ आक्रमण, हमला।

उ०—तद इणां रै भला भला रजपूत वास हुता, तिकै आगै हुवा, कै पाछै हुवा, कै दोनूं बाजुवां हुवा, गरट करनै हुड़ी कीवी, इणा नुं लै नीसरिया।—नैणसी

४ देखो 'हुडी' (रू. भे.)

हुड़ौ—देखो 'होड़ौ' (रू. भे.)

हुचक—देखो 'हूचक' (रू. भे.)

हुचकणौ, हुचकबौ—क्रि. स. [सं. उच्चकनम्] १ युद्ध करना, लड़ाई करना।

उ०—१ जोगणी ऊवकै जंत्र हुवकै हवाई जंत्र, लोथ लचां धुबकै लटकै गजां लोथ। भटकै अकारी सोन वेडीगारौ क्रोधा भाय, 'जोधा' हरौ हुचकै 'अजा' रौ माहा जोध।—पहाड़खां आढौ

उ०—२ महाक्रोधंगी गनीमां हूंत हुचकै नरिंद 'माधौ' भू लोक भूचकै बाधी चकै कोम भार। बोमंगी अराबां भाळ वेताळ बभकै बकै, वाजंद्रां 'बहादरेस' हकै तेण वार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ भिड़ना, टक्कर लेना।

उ०—रोक रोक तुरी भांण आरांण विलोकै रीझै, विभ्र मोक त्रिलोक त्रंबक धोक बाज। वेध वेध सोक भोक तोक वांण सेल खाग, सीसोद गनीमां तणा थोक हुचकै सकाज।

—बद्रीदास खिड़ियौ

३ वीरगति प्राप्त करना।

हुचकणहार, हारौ (हारी), हुचकणियौ—वि०।

हुचकिओड़ौ, हुचकियोड़ौ, हुचक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुचकीजणौ, हुचकीजबौ—कर्म वा०।

हुचक्कणौ, हुचक्कबौ, हूंचकणौ, हूंचकबौ, हूचकणौ, हूचकबौ

—रू० भे०।

हुचकाणौ, हुचकाबौ—क्रि. स. ['हुचकणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ युद्ध कराना, लड़ाई कराना।

२ भिड़ाना, टक्कर लिराना।

३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना।

४ पीटना, मारना।

५ धक्का देना।

६ धमकाना, डराना।

हुचकाणहार, हारौ (हारी), हुचकाणियौ—वि०।

हुचकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हुचकाईणौ, हुचकाईजबौ—कर्म वा०।

हुचकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध या लड़ाई कराया हुआ. २ भिड़ाया हुआ, टक्कर लिराया हुआ. ३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ पीटा हुआ, मारा हुआ. ५ धक्का दिया हुआ. ६ धमकाया हुआ, डराया हुआ।

(स्त्री. हुचकायोड़ी)

हुचकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध या लड़ाई किया हुआ. २ भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. ३ वीरगति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. हुचकियोड़ी)

हुचकौ—सं. पु.—१ झटका, धक्का।

२ रोने का भाव, सुबकने की क्रिया।

३ रुक-रुक कर सांस आने की क्रिया या भाव।

४ लकड़ी का एक उपकरण जिस पर पतंग की डोर लपेटी जाती है, गिड़गिड़ी।

५ आघात, चोट।

रू. भे.—हूचकौ।

हुचक्क—सं. स्त्री.—१ चोट, आघात, प्रहार।

उ०—वोहौ सीस उडक्क हिचक्क उवासक, अंधक केट हुचक्क उडै। झुकि जीह सकल्लर नारंग भल्लर, रल्लर वासग जेम लडै।

—सू. प्र.

२ धक्का, झटका।

३ युद्ध, लड़ाई।

हुचक्कणौ, हुचक्कबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ झुकै भूल वारंगां थरक्कै गजां पीठ झंडा। केहरी हुचक्कै जठै ऊवक्कै क्रोधार।—किरपाराम कवियौ

उ०—२ बांघळा हुचक्कै वै कजाकां सेन बादौ-बदां, तोपां भाळ

उनरै वागीना मुरै नाम ।—भगनराम हाडा री गीत

उ० —३ मेर मान वान्द हिंदु तुरकांन हुचक्किय । हल्लौ करि हिरि हूनि, देग मवलोक मचक्किय ।—ला. रा.

हूचनियोड़ौ—देखौ 'हूचक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूचनियोड़ी)

हूचटौ—देखौ 'हूचटौ' (रू भे.)

हूचणौ हूचबौ-क्रि स—१ खदेड़ना, ताड़ना, प्रताड़ना, भगा देना ।

२ मुरट नामक घास के पौधों व बालों को पीट कर बीज निकालना ।

हूचणहार, हारौ (हारी), हुचणियौ—वि० ।

हूनिग्रोड़ौ, हूचियोड़ौ, हूच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हूचीजणौ, हूचीजबौ—कर्म वा० ।

हूंचणौ, हूंचबौ, हूचणौ, हूचबौ, हूछणौ, हूछबौ—रू० भे० ।

हूचरियौ, हुचरचौ—देखौ 'हूचियौ' (रू. भे.)

उ० ३ पज्या गिग ग्रट्टाग, कैतो 'ग्रौ हुचरचौ ग्रटकै । पटकै बीम्यौ, डरकीम्यै खिरगोन्यौ मूडै लटकै ।—ग्रोळूं री ग्रोळचां

हूचियोड़ौ-भू का. कृ.—१ खदेड़ा हुग्रा, ताड़ा हुग्रा, प्रताड़ा हुग्रा, भगाया हुग्रा. २ बीज निकाला हुग्रा ।

(स्त्री. हूचियोड़ी)

हूचियौ, हुचग्रौ-स पु —कुत्ते का छोटा बच्चा ।

रू भे —हूचग्यौ, हुचरचौ ।

हुजदार-स पु.—१ हाथी का महावत, फीलवान ।

उ० —१ बढै गजराज नि रंग चढाय, करै उन्मत्त घनूं मद पाय । चढै छत्नतै हुजदार कजाक, मनौ हनमंत चढ्यौ मयनाक ।

—ला. रा.

उ०—२ झनकिन झल्लिय कंठनि मोर, मनौ वरखागम-बुल्लिय मोर । चलावन अंकुसतै हुजदार, मनौ गिरिकै सिर वज्र प्रहार ।

—ला. रा.

२ नोकर, ग्रनुचर, कर्मचारी ।

उ०—हुजदारां ग्रापरां वेग तावीद करावौ । दखिण गुजराति दिसा, पेसग्वांना पधरावौ ।—सू. प्र.

३ पदाधिकारी, प्रमुख कर्मचारी ।

उ० —१ तरै वीरम रावळै भला मांणस हाकम हुजदारां सांभळतां ग्रा कही—मौ हो टाकुरै । ऐग री मांणस छै । इण नूं सूंपै जाऊं छूं ।—कल्याणसिंघ वाढेल नगराजोत री वात

उ०—२ पछै रामजी तिरवाड़ी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सौ यांनूं कैद किया, ग्रापरी तरफ रा नव हुजदार खड़ा किया ।

—बां. दा. ख्यात

उ०—३ भोपत वांसै नागौर रहियौ । सु वांसै घोड़ा खजीनूं सहु गाढ़ै लेसी, ग्रर हुजदार बांधिसी, ग्रर काकां नूं माथि लै ग्रर पातिसाही वन्दै ग्राडमी ।—द. वि.

उ०—४ नै देवराज रा हुजदार पिण वडा मांणस हुता, तिण भलौ समौ जोय नै धारा रा मुंहता नूं रावळ सूं मिळायौ ।

—नैणसी

४ सामंत ।

उ०—तरै जसवंतजी कह्यौ-उण मां' रावजी रौ दोस कोई नहीं । ग्रो तेजसी रौ दोस । जैतारण री धणी लाख दुगांणी रै वास्तै रावजी रा हुजदार ग्रभा सरीखा नै क्युं रोकै ? थाळी राव री क्युं लै ? सारा वात कही ।—राव मालदेव री वात

५ प्रतिनिधि ।

उ०—मांगळीयौ वीरम एक हुजदार रावळी मेड़तै मांहे रहेसी । तरै कोट पड़सी ।—नैणसी

६ सेना के व्यवस्थापक ।

उ०—इम सलाह करि 'ग्रमै' हुकम दीधा हुजदारां । करौ वेग ताकीद, जंग साजति जोधारां ।—सू. प्र.

रू. भे.—हुजदारौ ।

हुजदारौ—सं. पु.—१ हुजदार होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ प्रमुख पद, ग्रोहदा, ग्रधिकार ।

उ०—हुजदारौ रुघनाथ सूं, खेम कियौ दीवांण । धरपत 'ग्रजन' वधारियौ दीपाहरां प्रमांण ।—रा. रू.

३ देखो 'हुजदार' (रू. भे.)

उ०—कव हुवौ हाकम हुजदारौ रे, वलि दफतर खांन लटारौ रे । एतौ वांकां नै ग्रमीनौ रे, हेतधर दरोगौ कीनौ रे ।—जयवांणी

हुजूर—सं. पु. [ग्र.] १ बादशाह, सम्राट ।

२ हाकिम, न्यायाधीश ।

३ बादशाह, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, सभा ।

४ ईश्वर, मालिक ।

५ सेवा, टहल, वंदगी, नौकरी ।

६ उपस्थिति, हाजिरी ।

७ मौजूदगी, विद्यमानता ।

८ राज्य, शासन ।

९ बड़े लोगों को सम्बोधन करने का एक ग्रादर सूचक शब्द ।

क्रि. वि.—१ सेवा में, नौकरी में, चाकरी में, हाजिरी में ।

२ सामने, समक्ष ।

३ दरबार में, कचहरी में ।

उ०—उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमादित्य राज करै । उण रै हुजूर एक कळावंत ग्राइयौ । तीं कै साथ एक परम रूपवती स्त्री ग्रर एक पुरुस थौ ।—सिंघासण बत्तीसी

रू. भे.—हजुर, हजूर, हजूरिय, हजूरियौ, हजूरी, हिजूर ।

हुजूरण—सं. स्त्री.—ग्रन्त:पुर की खास दासी ।

उ०—बारै गायण बळै बळै, नव पड़दा वेगण । हायळ चेरी उमै, उमै दौ जणी हुजूरण ।—रा. रू.

हुजूरी-सं. स्त्री. [अ.] १ नौकरी, चाकरी, सेवा, टहल ।
२ किसी बड़े आदमी का सामीप्य ।
३ किसी की हाजरी में रहने की अवस्था या भाव ।
४ खुशामद ।
वि.—१ हुजूर में रहने वाला ।
२ खास सेवा में रहने वाला ।
रू. भे.—हजूरी ।

हुजूरीवांन-सं. पु.—अर्दली, सेवक, चाकर ।
रू. भे.—हजूरीवांन ।

हुज्जत-सं. स्त्री. [अ.] १ तर्क, प्रतिवाद, दलील ।
२ विवाद, बहस, वाद-विवाद, तकरार ।
३ प्रमाण, सबूत ।
४ कलह, झगड़ा, बखेड़ा ।
उ०—नफ्स गालिब, किब्र काविज, गुस्सः मनी एस्त । हुई दरोग हिर्स हुज्जत, नांम नेकी नेस्त ।—दादूवांणी
५ तूं-तूं, मैं-मैं ।
६ जिद्द, हठधर्मी ।
रू. भे.—हूजत ।

हुज्जती-वि. [अ.] १ हुज्जत करने वाला, ।
२ बहस करने वाला, प्रतिवाद करने वाला ।
३ हर बात में तकरार करने वाला, झगड़ालू ।
४ तर्क या दलील देने वाला ।
५ प्रमाण या सबूत पेश करने वाला ।

हुटकारणौ, हुटकारबौ-क्रि. स.—फटकारना, दुत्कारना ।
उ०—पण मुनीम रोब दिखाळै अर हुटकारै । कैवै—सेठां सूं मिळौ, म्हांनै ठा' नीं ।—दसदोख

हुटकारियोड़ौ-भू. का. कृ.—फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।
(स्त्री. हुटकारियोड़ी)

हुटणौ, हुटबौ-क्रि. अ.—१ रुकना, ठहरना ।
२ दम घुटना, घबराहट होना ।

हुटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ ।
२ दम घुटा हुआ, घबराया हुआ ।
(स्त्री. हुटियोड़ी)

हुडुहुडाट—देखो 'हड़बड़ाट' (रू. भे.)
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुडुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारि निधि प्रलइ, किसिउं भूधर कोपिं टलटलइ ।
—सालिभूरि

हुडंबौ-सं. पु.—गणेश, गजानन । (डिं. को.)

हुडंवेस-सं. पु. [सं. हिडिंवा+ईश] पांडुपुत्र भीम ।

हुड-सं. पु. [सं.] (स्त्री. हुडी) १ नर-मेष, मेढा, भेड़ा । (डिं. को.)
२ ग्रामशूकर ।
३ एक प्रकार का अस्त्र ।
४ लोहे का डंडा या गदा ।
५ लोहे का खम्भा या मेख जो चोरों से बचने के काम आती हैं ।
६ एक प्रकार का हाता ।
७ मूढ, मूर्ख ।
८ दैत्य, राक्षस ।
रू. भे.—हुंड, हुड़, हूड ।
अल्पा;—हुड़ियौ ।

हुडक, हुडकी-सं. स्त्री.—शब्द, आवाज, शोरगुल ।
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुटुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारिनिधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि

हुडक्कणौ, हुडक्कबौ—देखो 'हुड़कणौ, हुड़कबौ' (रू. भे.)

हुड़क्कियोड़ौ—देखो 'हुड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुडक्कियोड़ी)

हुडरकौ-सं. पु.—चिंता, फिक्र ।
उ०—त्रीवीणी न्हायौ न्ही त्रीकै मैं जप्यौ न तप (कीया) । कहि केसौ सुवीच्यारि करि हुडरकौ न करि रे हीया ।—वि. सं. सा.

हुडियार-सं. पु.—नर-मेष, भेड़ा ।
उ०—और मुसळमांन सूअर खावौ । नांजै हुडियार नाजै ऐन खावौ तौ हुडियार कड़ाहि विचि वाहौ अर रांधौ, जै हुडियार हुंता सूअर होइ तौ हिंदू मुसळमांन रळि खावौ ।—द. वि.

हुडी-सं. स्त्री.—भेड़, मेषी । (डिं. को.)

हुडीजणौ, हुडीजबौ-क्रि. अ.—भेड़ का गर्भवती होना ।

हुडीजियोड़ी-वि. स्त्री.—गर्भवती । (भेड़)

हुडुक, हुडुक्क-स. पु. [सं. हुडुक्कः] १ एक विशेष प्रकार का ढोल ।
२ किवाड़ों में लगी चटखनी ।
३ नशे में चूर व्यक्ति ।
४ दात्यूह पक्षी ।

हुण-क्रि. वि.—अब ।
उ०—हुण दिल लागा हिकसां, मैं कू येहा तांति । दादू कम्म खुदाय कै, बैठा दीहै राति ।—दादूवांणी

हुणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)
उ०—१ दूहव्रण राय धरइ तिणिवार, व्यास भणइ नवि टलइ हुणहार । स्त्रीमालीनी चाडइ मूआ, देवलोकि तै राउत हूआ ।
—कां. दे. प्र.
उ०—२ मांहौ मांहै मीटै मिल्या ए, मांन महातम खोय । पछा-ताप तै अति करै ए, हुणहार जिम होय ।—ध. व. ग्रं.

हुणौ, हुबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हुई अप्रमांण अचांणक हल्ल । कुंभी हय सैयद सेख कतल्ल ।—मे. म.

उ०—२ विदुर सुदामा घरि जनमिया, ज्यांकै पावणां हुआ गोपाळ । कांई दुहाई वसुदेव री, कंस रियो रोवाळ ।—मीरां

उ०—३ भागड़ता नवाब आराय देगें अगळ, साहजहां सुतन पटकै नामी सीस । सीस सुज हूती मन 'नींब' हर ऊपरां, रौद रौदां सरस नामी सीस ।—नवलो सांदू

उ०—४ जिणु न हुइ गुरु भगति लगइ माटि नउ किध्दु । अह निसि गुरु आराधतउ एकलव्यु हुउ सिध्दु ।—सालिभद्रसूरि

उ०—५ उण सूं गांम में तौ कांई पण चोखळा में ई हा हू मचगी । पूनिम री रातवांई नर हुई अर सुवा-नीला भेळाइज वळण लागा ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—६ पहवु भूपति अति अनोपम नैसध केरु राय । जु जिव्हा सहस्र ज हुयि तु तेहना गुण कहिवाय ।—नळाख्यांन

हुतंसन—देखो 'हुतासन' ।

हुत—सं. पु. [सं.] शिव का एक नामान्तर ।

२ नैवेद्य, चढ़ावा, प्रसाद ।

३ हवन सामग्री ।

वि.—१ हवन किया हुआ, होमा हुआ ।

२ पीड़ित, ग्रस्त ।

३ नष्ट किया हुआ, हत ।

४ विध्वंस किया हुआ ।

उ०—हणि नवाब जालोर कियौ हुत ।—वं. भा.

क्रि. वि.—होना क्रिया का भूतकालिक रूप, था ।

हुतव—देखो 'होतव' (रू. भे.)

हुतभख, हुतभक्ष, हुतभख, हुतभुक, हुतभुख, हुतभुज—सं. पु. [सं. हुतभक्ष, हुतभुज्] अग्नि, आग ।

(अ. मा; डि. को; ना. डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ **हुतभुक** सस्त्र धनुख धर हाथै, हसम पचास पायदळ साथै ।—सू. प्र.

उ०—२ पग पग जम डाका पड़ै, 'बांका' धार विवेक । **हुतभुक** बिच जळ स्याम व्है, उडणौ है दिन हेक ।—बां. दा.

हुतळ—सं. स्त्री.—पृथ्वी, धरती, भूमि ।

रू. भे.—हुतळ, हुतल ।

हुतवह—सं. स्त्री. [सं.] अग्नि, आग । (डि. को.)

हुतसेस—सं. स्त्री. [सं. हुतशेष] हवन करने से अवशिष्ट बची हुई सामग्री ।

हुतां, हुता—क्रि. वि.—१ 'होना' का भूत कालिक रूप, था, थे ।

उ०—१ सखी सु सज्जण आविया, हुंता सु मझ हियाह । मूका था सु पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।—ढो. मा.

उ०—२ रह्यौ—आसकरण मनावत रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वैर रह्यौ ।—दूदै जोधावत री वात

उ०—३ पीछै यां सिरदारां कनै घोड़ा एक हजार पांचसौ **हुता** सु सिरदार प्रथीराज नूं समझाय पाछा मारवाड़ नूं वहीर हुवा । नैं वेढ कीवी नहीं ।—द. दा.

२ होते हुए, होकर के ।

ज्यूं—पाछा वळतां तळाव हुता आइजौ ।

३ से ।

उ०—तव ब्राह्मण बोल्यौ । कुंदणपुर हुता आयौ । वसुं पणि कुंदणपुरि । यौं कहि ठाकुरजी कै हाथि कागळ दीयौ ।

—वेलि टी.

हुताग्नि—सं. स्त्री. [सं.] १ यज्ञ या हवन की अग्नि ।

२ जिसने हवन किया हो, अग्निहोत्री ।

हुतास, हुतासण, हुतासणि, हुतासणी—सं. स्त्री. [सं. हुत+अशनः] अग्नि, आग ।

(अ. मा; डि. को; ना. डि. को; ह. नां. मा.)

उ०—१ गंधरव सेण नूं जयंत रौ हरी नूं **हुतासण** रौ विक्रम नूं धरम कहियौ ।—वं. भा.

उ०—२ अजै सूर झलहळै, अजै प्राजळै **हुतासण** । अजै गंग खळहळै, अजै सावत इंद्रासण ।—कम्मौ नाई

उ०—३ रमा **हुतासणि** सरणि रहाए । हथि रांमण त्रिय छांह हराए ।—सू. प्र.

उ०—४ तेल भरीनइं तावडउ, हेठलि मेहलि **हुतास** । तली तली तुम्हनइं दीउं, तन्न खुधामय मांस ।—मा. कां. प्र.

२ तीन प्रकार की अग्नियों में से एक ।

३ शिव की एक उपाधि ।

४ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि एवं वार सम्बन्धी पंच योगों में से पांचवां योग ।

रू. भे.—हुंतासण, हुंतासन, हुआसण, हुआसन, हुतासन, हुतासनि, हुतासनी, होतासण ।

हुतासणी-पूनम—सं. स्त्री. यौ.—फाल्गुण मास की पूर्णिमा ।

हुतासन, हुतासनि, हुतासनी—देखो 'हुतासण' (रू. भे.)

उ०—१ हीम **हुतासन** जु सरइ, इंदू झरइ अंगार । लिखिया पणि निलवट-तणा, नहू लोपाइ लगार ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ विरह-**हुतासनि** हूं दही, चूंनुं थयुं सरीर । आगि नदि जळि ऊपजइ, तु किम नांमुं नीर ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ हरखि रमइ **हुतासनी**, निरखी निरमल चंद । साधइ सुरत-तणां सुवच, वाधइ अति आनंद ।—मा. कां. प्र.

हुती—क्रि. वि.—१ थी ।

उ०—१ सु आगै लखण सेन रै वैर सोढी ऊमरकोट री **हुती**, सु निपट जोरावर हुती ।—नैणसी

उ०—२ वरिखा रित हुती सु गई । सरद रित आवी । कवि कहै छै । तै कौ वरणन करौं छौं ।—वेलि टी.

२ से ।

उ०—वरापुर महसेर वेहू खेत नेतबंध, बरावरि लागै सुजस रा बोल। काची वात महा पात मुखां **हुती** मता काढौ, तिसा दीठा विसा कहौ विहु एकै तोल।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ होते हुऐ।

उ०—समुद्र अजी मार्यादा न लोपइं, सूर्य अजी उदय वेलिइ उदयउ छइ, अजी मेघनी व्रस्टि **हुती** जोईइ, प्रथ्वी रसातलि नहीं जाइ।—व. स.

हुतोज, हुतौ–क्रि. वि.—१ 'है' का भूत कालिक, था।

उ०—१ 'जवौ' सीगरोत, सींगट जगरांम, जगरांम जवणसीश्रोत। तिण 'जवै' वीदैजी नूं नारेळ मेलियौ, वेटी परणाई। सु 'जवौ' मायाधारी ठाकुर **हुतौ** नै भायां सूं वडौ वैर। ताहरां राव वीदै नूं परणायौ।—नैणसी

उ०—२ सपत पंयाळ न सात समंद, दसै द्रगपाळ न चंद दुंदिद। सुमेर न सेस पहल्ला सोज, **हुतोज** हुतोज हुतोज हुतोज।—ह. र.

उ०—३ सींधळ रांणा री चाकरी करतौ। चाकर थकौ नै कायलांणौ बसतौ। सु नरवद रूण रा सांखळां रै परणीयौ **हुतौ**। सु सुपीयारी नरसिंध री वैर तिण री वहन नुं नरवद परणीजै।—नैणसी

उ०—४ पिता रौ हुकम सुन चौगुणा पाळियौ, वजाया धरा लै खरा वाजा। **हुतौ** राजी तरै हेक राजा हुतौ, रीसीयौ साहतौ विनै राजा।—द. दा.

हुत्कच–सं. पु. [सं.] एक दैत्य का नाम।

हुदहुद–सं. स्त्री. [अ. हुदहुद] भारत व बर्मा में प्रायः सर्वत्र पाई जाने वाली एक कलंगीदार चिड़िया।

हुदावरत–सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा। (शा. हो.)

हुदौ, हुद्दौ—देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया हसती कै **हुदै**, निरपत वैठै आय। दूजी दुनियां पग तळै, तैस मैंस हुय जाय।—अनुभववांणी

उ०—२ धांम गांम दै दै केता **हुद्दां** पर धरिया। चंद भट्ट पौत्रवां नै जौ पोळपत किल्लादार करिया।—केहर प्रकास

हुनर–सं. पु. [फा.] १ कारीगरी, दस्तकारी, निर्माण-कला, फन।

उ०—तद कारीगर कह्यौ—अंनदाता, म्हारौ **हुनर** अमोलक है, म्हैं उण रौ मोल नीं कूंतणी चावूं। आप फरमायौ कै म्हारी कारीगरी तौ मूंडै वोलै, सौ औ ढोलियौ मतै ई मूंडै वोल आप रौ मोल वताय दैवैला।—फुलवाड़ी

२ विद्या, इल्म।

उ०—१ उठै एक रोही हंती तठै रोही मांहै एक सूथार घर वासीदार रहै। सु उडण खटोलणी रौ **हुनर** जांणै।—चौवोली

उ०—२ नाई नरमाई सूं जवाव दियौ—धणियां नै राजी राखण सारू **हुनर** सीखणा पड़ै।—फुलवाड़ी

२ हाथ की सफाई, कौशल।

४ विशेषता, खूबी, गुण।

उ०—पैदा कीया घाट घड़, आपै आप उपाय। हिकमत **हुनर** कारीगरी, दादू लखी न जाय।—दादूवांणी

५ चालाकी, चतुराई।

६ युक्ति, सूझ-बूझ।

रू. भे.—हुन्नर, हूनर, हून्नर।

हुनरबंध, हुनरमंद–वि. [फा.] १ किसी प्रकार का 'हुनर' जानने वाला, कारीगर, शिल्पी।

२ चतुर, चालाक।

रू. भे.—हुन्नरबंध।

हुन्नर—देखो 'हुनर' (रू. भे.)

उ०—१ आगमूं कै जांणगर सव **हुन्नर** खबरदार, राजकाजूं कै करत्ता इक हुकम कै इकतार।—र. रू.

उ०—२ सिरै साह परेज, रूमपति ग्रहै वहादर। गौहरि पारज ग्रेह, हठी फिरंगी वहु **हुन्नर**।—सू. प्र.

हुन्नरबंध—देखो 'हुनरमंद' (रू. भे.)

उ०—जिस वखत्त मैं और भी **हुन्नरबंधु** नै सब हुन्नर का तमासा दिखाया।—सू. प्र.

हुब–सं. पु. [अ.] १ प्रेम, स्नेह, मुहब्बत।

२ मुसलमान।

३ शोर, हल्ला।

उ०—ऐ ती जणियांस ऐकटी आई आपांणी, साहौ भुजबळ सांमता, किम जैज करांणी। तुरंगा चाढी तीजणियां **हुब** कूक होवांणी, सांप्रत वेटी साह री, जगमालह जांणी।—वी. मा.

हुबकणौ, हुबकबौ—देखो 'ऊबकणौ, ऊबकबौ' (रू. भे.)

उ०—ए मरद एकणी वाजी या रा हवा, एक गढ छांडियां पांण आथांण। हीयै राव माल रै ऊपरै **हुबक**, सबळ संख्या पंखौ सिला सुरतांण।—ठाकुर जेतसी री वारता

हुबकियोड़ौ—देखो 'ऊबकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हुबकियोड़ी)

हुबक्कणौ, हुबक्कबौ—देखो 'ऊबकणौ, ऊबकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जतन्नै घणौ केइ वैसै जिहाजै, अथगै जलै आइ कुव्वाइ वाजै। घटा टोप मेघा गडडुंत गाजै, **हुबक्कै** तरंगां विरंगांहु वाजै।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ जोगणी उबक्कै पत्र **हुबक्कै** हवाई जंत्र, लोथि छक्कै धुवक्कै लटक्कै गजां लोथ। मुटक्कै अकारौ सेन वैढेगारौ क्रोधां भाय, जोधारौ हुचक्कै अजारौ महाजोध।—बखतसिंध रौ गीत

हुबक्कियोड़ौ—देखो 'ऊबकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हुबक्कियोड़ी)

हुबचळ–सं. पु.—समर, युद्ध।

हुबणौ, हुबबौ–क्रि. स. [सं. उभ्] १ क्रोधित होना, गुस्सा करना।

[illegible] हुविचार छतीस प्रकार हुवां,
[illegible] जोम वदणा रवदां ।
—मे. म.

२ [illegible] में होना, जोश में बोलना ।
३ युद्ध करना, लड़ाई करना ।
उ० [illegible] जुधि कहर लंक मझि गजर
[illegible] हुय करै [illegible], घू विना करै घड पघट धार ।
—सू. प्र.

४ क्रोधित, [illegible], जोश करना ।
उ० [illegible] करै हुयवाह कूभायळ कूत ।
[illegible] जागिक गैनव व्याळ ।
—सू. प्र.

५ जलना, प्रज्वलित होना ।
उ० —[illegible] मांन संसार विचार मन ।
[illegible] हुवतौ आंगण ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

६ प्रकाशित होना, जगमगाना ।
७ मारना, वध करना ।
८ भिड़ना, टक्कर लेना ।
उ०—मोरी 'टीकम' 'पीथळ' मांहे, सांमि जतन आया खग साहे ।
पुरं प्रत आया पचोळी, हुविया दळां करण खग होळी ।—रा. रू
९ कुढ़ना जलना ।
१० उन्मादित होना ।
हुवणहार, हारौ (हारी), हुवणियौ—वि० ।
हुविग्रोड़ौ, हुवियोड़ौ, हुव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुवीजणौ, हुवीजबौ—कर्म वा० ।
हुव्वणौ, हुव्वबौ, हुवणौ, हुवबौ—रू० भे० ।
हुवास—देखो 'होवास' (रू. भे.)
उ०—१ [illegible] जांग छेकरी बीजरी ताळ: माल आवा
[illegible] वारै मास । अदै वांधं करी छाती छीज री समापी
[illegible] तीज री हुवास ।—चमनजी आढौ
उ०—२ मनोहम मांवळ भौकि हुवास । दियै खग झाटक
[illegible] ।—सू. प्र.
हुवासि, हुवासी—देखो 'होवास' (रू. भे.)
उ०—[illegible] मुग्घरा मेतरा वळ अमाप ।
[illegible] वह मोल रूप वळवंत हुवासि ।
—सू. प्र.
हुवियोड़ौ—भू. का.—१ कुस्सा किया हुआ, क्रोधित. २ जोश में या जोर
से बोला हुआ. ३ युद्ध या लड़ाई किया हुआ. ४ आवेश या जोश
[illegible] हुआ. ५ उन्मादित हुआ हुवा. ६ जला हुआ, प्रज्वलित हुवा
हुआ ७ प्रकाशित हुवा हुआ, जगमगाया हुआ. ८ मारा हुआ, वध
किया हुआ. ९ भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. १० कुढ़ा हुआ,
जला हुआ ।
(स्त्री. हुवियोड़ी)
हुवौहुव, हुवौहूव—देखो 'हूवहू' (रू. भे.)
हुव्वकणौ, हुव्वकबौ—देखो 'ऊवकणौ, ऊवकबौ' (रू. भे.)
उ०—पात गदा कै पुट्ठली फटकार फवाया । घाय हुव्वकै रंग कै
जळ जंत चलाया ।—वं. भा.
हुव्वकियोड़ौ—देखो 'ऊवकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुव्वकियोड़ी)
हुव्वणौ, हुव्वबौ—देखो 'हुवणौ, हुवबौ' (रू. भे,)
उ०—मरा मीर मसूर कौ दुख धारा तव्वी । ज्यौं घ्रत डारा आगि
मैं हिय पावक हुव्वी ।—ला. रा.
हुव्वियोड़ौ—देखो 'हुवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुव्वियोड़ी)
हुमकणौ, हुमकबौ—क्रि. स.—१ उछलना, कूदना ।
२ पैरों से धक्के लगाना, ठेला मारना ।
३ जोर से दवाना, दवाव डालना ।
हुमकणहार, हारौ (हारी), हुमकणियौ—वि० ।
हुमकिग्रोड़ौ, हुमकियोड़ौ, हुमक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हुमकीजणौ, हुमकीजबौ—कर्म वा० ।
हुमगणौ, हुमगबौ—रू० भे० ।
हुमकियोड़ौ—भू. का.—१ उछला हुआ, कूदा हुआ. २ पैरों से धक्का
लगाया हुआ, ठेला मारा हुआ. ३ जोर से दवाव डाला हुआ ।
(स्त्री. हुमकियोड़ी)
हुमगणौ, हुमगबौ—देखो 'हुमकणौ, हुमकबौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुमगियोड़ी)
हुमणी—सर्व.—अपनी, हमारी ।
उ०—तत व्याव उमंग धरी तन री, वरदायक चीत रखौ बन री ।
त्रिजडा लाय जांन हलै तुमणी, हव बांधव वात सुणौ हुमणी ।
—पा. प्र.
हुमस—देखो 'उमस' (रू. भे.)
हुमणी—देखो 'हमणी' (रू. भे.)
(स्त्री. हुमणी)
हुमा—सं. स्त्री. [फा.] एक प्रकार का कल्पित पक्षी, जिसके बारे में एक
किंवदंती है कि जिस किसी व्यक्ति पर इसकी छाया पड़ जाय वह
बादशाह वन जाता है ।
हुमाऊ, हुमायु, हुमायू—सं. पु. [फा. हुमायू] एक मुगल बादशाह जो
बावर का पुत्र व अकबर महान का पिता था ।
उ०—राय रांणा भू अरिजन साथी, वरतावी निज आंण । बरबर
वंस हुमाऊ नंदन, अकबर साहि सुजांण ।—ऐ. जै. का. सं.
रू. भे.—हुमाऊ, हुमायू, हुंमायु, हुंमायू ।

हुमेल—देखो 'हमेल' (रू. भे.)
हुयोड़ौ–भू. का. कृ.—जो हो चुका हो।
हुरंम—देखो 'हरम' (रू. भे.)
उ०—तठै मुलतांन मैं पातसाह पातसाही करै। तैरै एक हुरंम तिका हिंदवांणी, नांम गंगा।—देपाळ धंध री वात
हुरकणियौ–सं. पु.—वेश्याओं का दलाल।
हुरकणी, हुरकनी–सं. स्त्री. [सं. हुडुकिनी] हिन्दू वेश्याओं का एक वर्ग या इस वर्ग की वेश्या।
उ०—१ जूनी ख्यातां मैं अलाउदीन आयौ जद चहुवांण सात त्रिकळस ग्रांम बैठौ हुरकणियां रौ नाच करायौ हौ।
—वां. दा. ख्यात
उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुरकणियां रा हाथ। हाथ नहीं मन किम हिचै, भेळै अस भाराथ।—वां. दा.
हुरकिया–सं. पु.—गाने-बजाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।
हुरकियौ–सं. पु.—उक्त जाति का व्यक्ति।
हुरखणौ, हुरखबौ—देखो 'हरसणौ, हरसबौ' (रू. भे.)
उ०—लगै दिली फळसा अठी द्वारका समंद लग। दळां सनकारती धरा हुरखी। जोर वर जोय भरतार अगजीत तूं, पत करणां तज एक पुरखी।—द्वारकादास दधवाडियौ
हुरखणहार, हारौ (हारी), हुरखणियौ—वि०।
हुरखिओड़ौ, हुरखियोड़ौ, हुरख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हुरखीजणौ, हुरखीजबौ—भाव वा०।
हुरखियोड़ौ—देखो 'हरसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हुरखियोड़ी)
हुरड़ा–सं. पु.—चौहान क्षत्रियों की एक शाखा।
हुरड़ाई–सं. स्त्री.—उत्कण्ठा, लालसा।
उ०—पछै कह्यौ—थारां सूं मिळण री कोडायौ हीया री हुरड़ाई सूं म्हैं नीठ इत्ती भांय ठिरड़ीजतौ आयौ।—फुलवाड़ी
हुरड़ी–सं. स्त्री.—टक्कर, धक्का।
उ०—१ पछै क्यूं पूछौ ! जांणै मौत रै स्यार लागी। दोनूं ई काळा होय हुरड़ियां देवता फौज नै फिरोळण लागा।—फुलवाड़ी
उ०—२ छातां माथै कोपरियां री ढिगलियां खिड़कली। देखतां ई बणावट बोलाजौ। ऐंड़ी नीं व्है कै हुरड़ी देय रावळां मैं वड़ जावै।
—फुलवाड़ी
हुरदंगौ—देखो 'हुड़दंगौ' (रू. भे.)
उ०—जीव आंधौ हुवौ कदै वोलौ रे, आंख मैं फूलौ डंवक डोलौ रे। हुवौ वांगौ मुंगौ नै गूंगौ रे, कदै डंवक डील हुरदंगौ रे।—जयवांणी
हुरभुज–सं. पु.—एक प्राचीन देश का नाम।
उ०—दीठौ सगळउ दक्षण देस, चतुर नारि तनि चंचळ वेस। माळव नैइ काबिल, मुकरांण, कासमीर, हुरभुज खुरसांण।
—ढो. मा.
हुरम—देखो 'हरम' (रू. भे.)
उ०—१ हुरमां हाथियां चढी पछाड़ी नूं खडी थी सौ लूट लीवी चलता रहिया।—पदमसिंह री वात
उ०—२ हुरम कवीला रिद्ध तर साथै मीर प्रचंड। इण वांसै कर चल्लियौ, आसा खंड विखंड।—रा. रू.
हुरमखांनौ—देखो 'हरमखांनौ' (रू. भे.)
उ०—फौज हजार असी सूं, अरु विच मैं पातसाह आलमगीर है। तथा पछाड़ी हुरमखांना है।—द. दा.
हुरमटी–सं. स्त्री.—गाय की छोटी वछिया।
हुरमत, हुरमति–सं. स्त्री. [अ. हुर्मत] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा।
उ०—विदग री हुरमत वाधारण, वेळा चढियौ समंद वरै। दुआ 'उम्मेद' तूझ विन दूजौ, कवियण नै कुण वंधव करै।
—मांनजी लाळस
२ ईमान, धर्म।
२ सतीत्व, इस्मत।
४ धार्मिक दृष्टि से किसी वस्तु के खान-पान या किसी कार्य की मनाही, निषेध, परहेज।
५ स्त्री, पत्नी।
उ०—१ मूमना विसेस समझदार नहीं छै, तिणसूं आ वादसाह अगतमायची नूं देवौ। तिण रै तीन सौ साठ हुरमत छै, पण मोटौ सगौ छै।—जलाल वूवना री वात
उ०—२ जुरा पहुंती जांण्य, मांण घर छाडि पधारचौ। तांण तज्यौ तिणवार हेत हुरमती सह हारचौ।—देवौजी
हुररा, हुर्रै–सं. स्त्री. [अं. हुर्रा] १ एक प्रकार की हर्ष ध्वनि।
२ वेइज्जती, हंसी।
हुरळ–सं. स्त्री.—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र द्वारा किया जाने वाला प्रहार या आघात।
उ०—हुरळां खहकां ओझड़ी, झवरक्कां फट्टै। वीर वीरवर सूर धीर, रथ चौरंग चट्टै।—द. दा.
हुरळणौ, हुरळबौ–क्रि. स.—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार करना, आघात करना।
हुरळियोड़ौ–भू. का. कृ.—पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार किया हुआ, आघात किया हुआ।
(स्त्री. हुरळियोड़ी)
हुरहुर, हुरहुल—देखो 'हुलहुल' (रू. भे.)
हुरट्टक–सं. पु.—हाथी का अंकुश।
हुरुमयी–सं. स्त्री.—एक प्रकार का नृत्य।
हुलंब–वि.—लम्वा-चौड़ा, विस्तृत।
उ०—हुलंव काच तौ देह कौ माच तौ हदौ हद, साच तौ राग वागां सजीलौ। आज री वार संभ साल धन आच तौ, नाचतौ दीयौ गुलदार नीलौ।—महादांन महडू

हूळ, हूल-सं. पु. [सं.] १ किसी पैने शस्त्र का प्रहार, आघात ।

उ०—[illegible] सन्मुख [illegible], बीजळ हुळ दांतळ करि बाह [illegible] खिगि [illegible], बैगहर जुड़िया बाराह ।

—कैंबीमाल हाडा रा वंशजां रा गीत

२ एक प्रकार की दुधारी छुरी ।

३ सीसोदिया क्षत्रिय वंश की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ हूल करण कीनाउत बटी वेड़ में कांम आयौ ।

—बां. दा. ख्यात

उ०—२ जठै रहियौ रवि कौतक जोय, दियै खग झाट जठै हुल दोय । 'अजावत' साहिबसींघ 'अनोप' उमेदहवार लड़ै भड़ ओप ।

—सू. प्र.

रू भे.—हुल्ल, हूळ, हूल ।

हूळकी, हूलकी-सं. स्त्री.—मन्द ज्वर, हल्का बुखार ।

वि. स्त्री.—हल्की, मन्द ।

उ०—पगां लागूं, गुरु मा'राज ! ऊंचा विराजो । हूळकी, मीठी, मधरी बोली में पेमजी मुरळी दलाल नै कैयौ अर आप मुड्डै माथै बैठग्यौ ।—दसदोख

हूलड़—देखो 'हुल्लड़' (रू. भे.)

उ०—हूळां ग्रौर नंगूळां बणै, होळी हुलड़ दाज सा । बरसाळै बैं'-कुपिया सा फोग त्रिणां सिर ताज सा ।—दसदेव

हूलणी-सं. स्त्री—सीसोदिया क्षत्रिय वंश की 'हुल' शाखा की स्त्री ।

उ०—गाव छाडै रो ग्रंतेवर रांणी बीरां हूलणी । तैरो बेटो तीडो ।

—नैणसी

हूळणौ, हूळबौ-क्रि. अ. [सं. हुल्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना ।

उ०—नैं सौ लाख नमाणिया, रावळ लालच छड्ड । सांसण सीचांणा जिमा, जेथ हूळै जलहड्ड ।—बां. दा.

२ उमंगित होना, उत्साहित होना ।

उ०—ग्रोळंगुवा पण हूळनै गावै छै । रबाब-सारंगी, ढोल-मंजरी बाजै छै । इसो ही कंठ रो गावणौ छै ।—पलक दरियाव री बात

हूळणहार, हारौ (हारी), हूळणियौ—वि० ।

हूळिग्रोड़ौ, हूळियोड़ौ, हूळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हूळीजणौ, हूळीजबौ—भाव वा० ।

हूलणौ, हूलबौ-क्रि. अ.—छोटे बच्चे का हुलराना ।

उ०—हूल रे नैन्या हुल रे, यूं पालणियां में झूल रे ।

—ग्रमरचूंनड़ी

हूलणहार, हारौ (हारी), हूलणियौ—वि० ।

हूलिग्रोड़ौ, हूलियोड़ौ, हूल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हूलीजणौ, हूलीजबौ—भाव वा० ।

हूलदन-सं. स्त्री.—चर्चा, खबर ।

उ०—चोधरयां थांगो रपोट कर दी, पंचां मुळजमां रौ परची कटा दियौ । हाकौ'र हुलवग फूटगी ।—दसदोख

हुळम, हुलम-सं. पु.—एक प्रकार का शीशा ।

उ०—ग्राखत पग ऊठतां, पूठ साखत पखराळी । काच हुळम कोमाच, नाच पातर नखराळी ।—मे. म.

हुलरणौ, हुलरबौ-क्रि. अ. [सं. उल्ललनम्] हुलराया जाना, लोरी गाया जाना ।

उ०—बधू वंध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती । अई इंदू ग्रंबा जयति जगदंबा भगवती ।—मे. म.

हुलराणौ, हुलरावौ-क्रि. स. [सं. उल्ललनम्] १ बच्चे को खिलाने या सुलाने के लिये लोरी गाना ।

उ०—१ म्हारी ए नांव हमीर, ग्रौ सुंदर म्हारी ए नांव हमीर. भूवाजी हुलरायौ रांणी काछवी, काछवी, जी म्हांरा राज ।

—लो. गी.

उ०—२ जाया मैं तुम सरीखा कन्हैया, एकण नालै सात रे । एकण नै हुलरायौ नहीं कन्हैया, गोद न खिलायौ खण मात रे ।

—जयवांणी

उ०—३ पालणै हींडै नैना वाळ, मावड़ी हालरियै हुलराय । कंठ में छळकै नेह अपार, हियै रा हार हिलोळा खाय ।—सांझ

२ बच्चों को प्यार करना, स्नेह या ममत्व दिखलाना ।

उ०—दीयै सूं निज कंवर देखियौ, हियै लियौ हुलराई नैं । मा वाजण नैं वळियौ-मूंढौ, ग्रौ ग्रळियौ सुत जाई नैं ।—ऊ. का.

३ गायन करना, गाना ।

उ०—विधि एणि वधावै वसंत वधा ए, भालिम दिन दिन चढि भरण । हुलरावणै फाग हुलरायौ । तरु गहवरिया थिय तरुण ।

—वेलि

४ बच्चे को पालने में झूला देना, झुलाना, झुलाते हुऐ लोरी गाना ।

५ झुलाना ।

६ रेंगना ।

हुलराणहार, हारौ (हारी), हुलराणियौ—वि० ।

हुलरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हुलराईजौ, हुलराईबौ—कर्म वा० ।

हिलराणौ, हिलरावौ, हुलरावणौ, हुलरावबौ, हुल्लराणौ, हुल्लरावौ

—रू० भे० ।

हुलरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बच्चे को सुलाने या खिलाने के लिये लोरी गाया हुग्रा. २ बच्चे को प्यार किया हुग्रा, स्नेह या ममत्व दिखाया हुग्रा. ३ गायन किया हुग्रा, गाया हुग्रा. ४ बच्चे को पालने में झूला दिया हुग्रा, झुलाया हुग्रा, झुलाते हुए लोरी गाया हुग्रा. ६ रेंगा हुग्रा ।

(स्त्री. हुलरायोड़ी)

हुलरावणौ, हुलरावबौ—हुलराणौ, हुलरावौ' (रू. भे.)

उ०—१ चन्नण रा पालणा मैं **हुलरावती** वेळा वा खरखरा सुर मैं कोड सूं गावती-जसौदा हरि पालनै झुलावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ घरि घरि वसंत राग **हुलरावीजै** छै। कांमदेव री दुहाई देता फिरै छै। पंचम राग गाईजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ सजन चल्या हे सखी हुं दीनां पूठ। हीया ऊपर **हुल-रावती** कदै न कहती ऊठ।—ढो. मा.

उ०—४ काचवियै री जात कुजात, बाई जी म्हारा ओ, काछवियै री जात कुजात। काछवियौ जूंवा ज्यूं **हुलरावै**, हुलरावै जी म्हां रा राज।—लो. गी.

उ०—५ वधू वंध्या ध्यावै हुलर **हुलरावै** हरखती। अई 'इंदू' अंवा जयति जगदंबा भगवती।—मे. म.

उ०—६ सोभागी सहु नइ तूं वाल्हउ, हरखइमां **हुलरावइ** रे रिखभदेव तणा मन रगइ, समयसुंदर गुण गावइ रे।—स. कु.

हुलरावणहार, हारौ (हारी), हुलरावणियौ—वि०।

हुलराविओड़ौ, हुलरावियोड़ौ, हुलराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुलरावीजणौ, हुलरावीजवौ—कर्म वा०।

हुलरावियोड़ौ—देखो 'हुलरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हुलरावियोड़ी)

हुलस—देखो 'हुलास' (रू. भे.)

उ०—पांन तणी ए महिमा जांणौ, तिणथी सूत्र लिखांणौ जी। उत्तम मन मैं **हुलस** ज आंणौ, संका मूल न जांणौ जी।—जयवांणी

हुळसण, हुलसण—सं. स्त्री. [सं. उल्लास] हुलसने, प्रसन्न होने, उमंगित या उत्साहित होने की क्रिया या भाव।

उ०—१ सयण **हुलसण** दुयण सकुचण। ग्रहण मोखण धरण सुरगण। जपण कविजण सुजस जणजण, जैत रांम अंगज।
—र. ज. प्र.

उ०—२ उरधण **हुळसण** हरख मन, रीझण खीजण रूप। लाज सुरंगा लोयणां, राजै अरां अनूप।—अग्यात

हुळसणौ, हुळसवौ, हुलसणौ, हुलसवौ—क्रि. अ. [सं. उल्लसनम्] १ हर्षित होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, आल्हादित होना।

उ०— मिलावै थूं वाळा दिन रैण, **हुलसता** हिवड़ा नेह लगाय। भलां कद होसी कह परभात, कळपती चकवी रै चित मांय।
—सांझ

२ उमंगित होना, उत्साहित होना।

उ०—१ वीर पतनी फौज देख नै पती नै कह रही है—हे पती आप जुद्ध सारू झूटौ ही हाकौ सुण नै **हुलसता** हा सौ हे पती आज हुंईज वधाई पार हूं तथा वधाईदार रै झूटै हाकै ही जुद्ध सारू हुळसता राजी होवता हा तौ ऊठौ आज सिव महादेव साचौ कर दियौ है।—वी. स. टी.

३ उमड़ पड़ना, उमड़ कर आना।

उ०—१ वनी रौ जिण दिसड़ी मैं देस, उणी दिस हिवड़ौ **हुलस्यौ** जाय। फिरै वां आंख्यां मैं वै रूंख। अचपळी ओलूं कर रह जाय।
—सांझ

उ०—२ पण दीवांणजी रै आया पैं'ली मूंडौ उघाड़्यां जै आखौ मांनखौ अड़वड़ नै माथै **हुलस** गियौ तौ पछै किणी रै वस री बात नीं रैवैला।—फुलवाड़ी

४ उत्कण्ठित होना, लालायित होना, उत्सुक होना।

उ०—१ पूत तौ असंक फौज मैं जुद्ध कर मरण नै जावै छै नै वहू वळण (सतकरण) सारू **हुळस** रही छै।—वी. स. टी.

उ०—२ वहू वळैवा **हुळसै**, पूत मरैवा जाय।—वी. स.

५ चमकना, दीप्तिमान होना, जगमगाना।

६ मंडराना, फैलना।

उ०—वींद-वींदणी रा रंगमैल मैं एक नवौ ई आभौ **हुलसग्यौ** हौ। नवाई तारा अर नवौई चांद। कुदरत रा जुगां जूंना आभा सूं औ आभौ इदक सुहावणौ हौ।—फुलवाड़ी

७ झुकना।

उ०—नांनी-मां रूंख री वडचोड़ी डाळ ज्यूं उणरै माथै **हुळसी** दौ तीन वळा वादळ री नांव लेय जोर सूं वतळायौ।—फुलवाड़ी

८ उतावला होना, आकुल होना।

९ प्रवृत्त होना, झुकना।

उ०—दीवांणजी री अकल अर वांरा रुतवा माथै अणूंतौ भरोसौ हौ जकौ एक छिण मैं लोप व्हैगौ। अवै किण रौ भरोसौ। निरास मामापत्तियां रौ मन भगवांन माथै **हुळसियौ**। ठौड़ ठौड़ मिंदरा री नींवा दिरीजण लागी। जूनां मिंदरां मैं अस्टपौ'र पूजां होवण लागी।—फुलवाड़ी

१० टूट पड़ना, झपटना।

उ०—केहर टळ जावै कठै, तन सूं ओलौ ताक। हाकै सांमौ **हुलसणौ**, है सूवर हुसनाक।—ऊ. का.

हुळसणहार, हारौ (हारी), हुळसणियौ—वि०।

हुळसिओड़ौ, हुळसियोड़ौ, हुळस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हुळसीजणौ, हुळसीजवौ—भाव वा०।

हुळसाणौ, हुळसावौ—रू० भे०।

हुळसाणौ, हुळसावौ, हुलसाणौ, हुलसावौ—क्रि. स. ['हुळसणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ प्रसन्न करना, आनन्दित करना, हर्षित करना, आल्हादित करना। २ उमड़ाना, उमड़ा कर लाना।

३ उत्कण्ठित करना, उत्कण्ठा, लालसा व उत्सुकता जाग्रत करना।

४ चमकाना, दीप्तिमान करना।

५ झुकाना।

६ उत्साहित करना, उमंगित करना।

उ०—मै मंद भागण करम अभागिण, कीरतै कैसै गाऊं ए माय। विरह-पिंजर की वाड़ साखी री, उठ कर जी **हुलसाऊं** ए माय।
—मीरां

७ देखो 'हुळसणौ, हुळसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] निवाजी मूं बीछड़ी, जोवा जिग राज-[illegible]। [illegible] हुळसाणी जी निवाजी मूं ऊचरै ।—गी. रां.

उ०—२ [illegible] मन हुलसाय तीसूं अपणै आप [illegible] घर जाय ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ [illegible] हुलसाय, घण रत गुग्गळ पीत [illegible] ।—सू. प्र.

हुळसाणहार, हारौ (हारी), हुळसाणियौ—वि० ।

हुळसायोड़ो—भू० का० कृ० ।

हुळसाईजणौ, हुळसाईजबौ—कर्म वा० ।

हुळसायोड़ो-भू. का. कृ.—१ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित व आल्हादित किया हुआ. २ उत्साहित व उमंगित किया हुआ. ३ उमड़ाया हुआ. ४ उत्कण्ठा, लालसा व उत्सुकता जागृत किया हुआ. ५ चमकाया हुआ, दीप्तीमान किया हुआ. ६ झुकाया हुआ.

७ देखो 'हुळसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. हुळसायोड़ी)

हुळसियोड़ो-भू. का. कृ.—१ हर्षित, प्रसन्न, आनन्दित व आल्हादित हुवा हुआ. २ उमंगित व उत्साहित हुवा हुआ. ३ उमड़ा हुआ, उमड़ कर आया हुआ. ४ उत्कण्ठित व लालायित हुवा हुआ. चमका हुआ, दीप्तीमान हुवा हुआ. ६ झुका हुआ. ७ मंडराया हुआ, फैलाया हुआ. ८ उतावला हुवा हुआ, आकुल हुवा हुआ. ९ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ. १० टूट पड़ा हुआ, झपटा हुआ।

(स्त्री. हुळसियोड़ी)

हुळहुळ-स पु —१ एक छोटा बरसाती पौधा जिसकी पत्तियों का रस कान के दर्द में लाभकारी होता है।

२ देखो 'मुळमुळ' (रू. भे.)

रू भे.—हुरहुर, हुरहुल ।

हुलाउ-सं पु —शोर गुल, कोलाहल ।

उ०—किलंवां संग्रामि विवनउ करन्न, थरहरिय सवै मरुआडि वन्न । हुइ कंपि देस हुअउ हुलाउ, राठउड विवन्नउ करन राउ।

—रा. ज. सी.

हुलास-सं. पु. [सं. उल्लास] १ हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, आल्हाद।

उ०—१ हुकम हुवौ तन मुख हुवां, हुवा नगारां सद्द कूच । हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द ।—रा. रू.

उ०—२ इसी जवांण उच्चरै, किलोळ कोकिला करै । प्रफुल्ल प्रकासयं, हुसंत कै हुलासयं ।—सू. प्र.

उ०—३ सादूळौ वन संचरै, करण गयंदां नास । प्रवळ सोच मनगं पड़ै, हंसां हुवै हुलास ।—बां. दा.

उ०—४ नैण निहारो म्हांनै नेह सूं हो । हांजी म्हांरा हिवडां मैं भरोनी हुलास ।—गी. रां.

२ उत्साह, उमंग ।

उ०—निस वसियौ सुख ग्रेह निज, वाधै रमणि विलास । अरज करै मुख औरतां, हित रिति गरम हुलास ।—रा. रू.

३ उत्कण्ठा, लालसा ।

४ रोमांच ।

५ चमक, आभा, दीप्ती ।

६ एक अलंकार विशेष जिसमें एक के गुण-दोष से दूसरे के गुण-दोष दिखलाये जाते हैं। इस के चार भेद माने गये हैं।

७ किसी ग्रंथ का एक भाग, अंश, खण्ड, पर्व या अध्याय ।

८ एक छंद जो चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बनता है।

रू. भे.—हुलास, हुल्लास ।

हुलासी-वि. [सं. उल्लसित] १ प्रसन्न-चित्त, आनन्दित, हर्षित, मुदित-मन ।

२ कान्तिवान, दीप्तीवान, तेजस्वी ।

३ चमकदार, दमकदार ।

४ उत्साहित, उमंगित ।

५ उत्कण्ठित, लालायित ।

हुळियार-सं. पु.—होली के अवसर पर रंग खेलने वाला, होली खेलने वाला ।

उ०—तप धार रमैं मिळियार तेम । जोधार मीर हुळियार जेम ।

—वि. सं.

हुळियोड़ो भू. का. कृ.—१ उत्पन्न या पैदा हुवा हुआ. २ उमंगित, उत्साहित. ३ हुलराया हुआ ।

(स्त्री हुळियोड़ी)

हुलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू. भे.)

हुल्ल—देखो 'हुल' (रू. भे.)

हुल्लड़-सं. पु. [सं. हुल हुल] १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल ।

२ उपद्रव, दंगा । ३ विद्रोह ।

४ हलचल ।

क्रि. प्र.—करणौ, कराणौ, मचणौ, होणौ ।

रू. भे.—हुलड़ ।

हुल्लराणौ, हुल्लरावौ—देखो 'हुलराणौ, हुलरावौ' (रू. भे.)

उ०—अराहै सराहै घणूं अव्वलोकै, रुधी नाग लोकां तणी राज लोकै । इसी भागणी कोण जौ कूख जायौ, हिंडोरौ धलायौ धरै हुल्लरायौ ।—नागदमण

हुल्लरायोड़ो—देखो 'हुलरायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. हुल्लरायोड़ी)

हुल्लास—देखो 'हुलास' (रू. भे.)

हुवणौ, हुवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पात सुजस अखियात पयंपै, दातव असमर वात दुवै । जग मैं रांम तुहालै जोडै, हुवौ न कोइ फेर हुवै ।—र. रू.

उ०—२ करण इक राह पतसाह खसियौ कितौ, प्रथी जोगणपुरौ

दाखवै पांण । धरम खट वरन रौ जितौ हुवतौ धरा, करण सुव राहतौ राहि केवांण ।—द. दा.

उ०—३ दळां गहमह कीध डंवर, चौसरा सिर हुवा चम्मर गाजतां गजमेघ गाजा, वाजतां मंगळीक वाजा ।—सू. प्र. ।

हुवणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—वीजौ पण हुवणहार लार मारवाड़ रौ थौ, वखतसिंघजी री ओडी कोई ठावौ सरदार कांम आइयौ ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

हुवणी—देखो 'होणी' ।

हुवर—देखो 'हूर' (रू. भे.)

हुवा—वि.—१ बस, काफी ।

२ अलभ्य, दुर्लभ्य ।

३ समाप्त, खत्म ।

४ पर्याप्त ।

६ अधिक, वहुत ।

रू. भे.—हुआ ।

हुवारियौ—सं. पु.—१ आवाज देने की क्रिया या भाव ।

२ लम्बी आवाज ।

वि. वि.—देखो 'टहुकौ' ।

हुवाल—देखो 'हवाल' (रू. भे.)

उ०—पछै घड़ी दोय सूं कलमदांन कागद लै लिखण वैठी । सौ धणी मोज मनुहार लिखी । वचन लियौ थौ तैरी अरज लिखी । पछै आपरा हुवाल रा दूहा लिखिया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

हुवाले, हुवालै—देखो 'हवालै' (रू भे.)

उ०—नोट अर नगदी कोट री जेव रै हुवालै करचा तथा डागळै री पेड़चां सूं हेठै उतरचा ।—दसदोख

हुवालौ—देखो 'हवालौ' (रू. भे.)

हुवास—देखो 'होवास' (रू. भे.)

उ०—छिलै छाकिया किया छछोहा छूटा छोगाळा छवीला छैल, आंटैल्ल सछोहा जिलै जाकिया अमीर । भांतीलां सुवासां मढै जोसेल ढाकिया स्वेहां, हुवासां अछैहां चढै हाकिया हमीर ।—र. हमीर

हुविए, हुविऐ—क्रि. वि.—अव, अभी ।

हुवोड़ौ—देखो 'होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हुवोड़ी)

हुवौ—सं. पु.—कुए से मोट खाली करते समय बोला जाने वाला शब्द ।

क्रि. वि.—बस, काफी, पर्याप्त ।

हुसंड—वि.—१ जो शरीर से मोटा-ताजा हो, प्रचण्ड शरीर वाला, हृष्ट-पुष्ट ।

उ०—वैराड़ देस रा कै वरास, हालता झांप भरता दुवास । पींडास चाक अरु तन प्रचंड, हरडा सा वाज ताजी हुसंड ।

—पे. रू.

२ शक्तिशाली, वलवान ।

उ०—हुसंड हुकळै वांघळां प्रचंड गज हिंडुळै, वळै दळ वाज त्रंवाळ वाजा । गढपती पोकरण लीध लागै गढां, राज रौ ताप 'जस' राज राजा ।—महराजा जसवंतसिंहजी रौ गीत

३ स्वस्थ ।

सं. पु.—घोड़ा, अश्व ।

उ०—परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंवर सामा ऊछळता ।

—गु. रू. वं.

रू. भे.—हुस्तंड ।

हुस—अव्यय—किसी अनुचित बात या कार्य के निषेध में प्रयुक्त होने वाला एक अव्यय जो कभी कभी प्रताड़ना में काम आता है ।

रू. भे.—हुस्त ।

हुसन—सं. पु. [अ. हुस्न] १ सुन्दरता, खूवसूरती, सौंदर्य ।

उ०—प्यारी तेरै हुसन पर, म्हैं हौ रह्या लवलीन । तुझ विन मैं ऐसा दुखी, जैसै जळ विन मीन ।—लो. गी.

२ आभा, कान्ती, नूर, लावण्य ।

३ शोभा, छटा, रौनक ।

४ यौवन का उभार ।

५ सतीत्व ।

६ भलाई, अच्छाई ।

७ उत्तमता श्रेष्ठता ।

वि.—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।

२ अच्छा भला ।

उ०—पातिसाह मुहमद मुसतफाखांन रा उमाराउ हुसन हुसेनखां अलीखांन सारीखा गोरी ।—रा. सा. सं.

रू. भे.—हुस्न ।

हुसनाक, हुसनायक—वि.—जिसमें हुस्न हो, सौंदर्य हो, खूवसूरत, सुन्दर ।

उ०—१ आलीजा अलवेलिया, हो हंसा हुसनाक । भीनोड़ा रसिया भमर, छैल पियौ मद छाक ।—वां. दा.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै भोगिआ भमर लंजा छयल हुसनाक । जुवांन निजरवाज वाजार मांहै ऊभा जोहां खाए छै ।

—रा. सा. सं.

२ कान्तीमान, दीप्तिमान, ओजस्वी ।

३ प्रभावशाली, प्रतिभाशाली ।

उ०—आळौ दोळौ हाथ रौ पोलौ । सूधा अर भोळां नै भरमावै है । स्यांणां, चतरा अर हुसनाकां रौ हीड़ौ-चाकरी तथा गरज करतौ रैवै ।—दसदोख

४ अच्छा, भला ।

५ उत्तम श्रेष्ठ ।

६ साहसी, हिम्मतवर ।

७ गुण, स्वभाव ।

उ०—वेहर टळ जावं कठै, तन सूं ग्रोली ताक । हाकै सांमी हुलसणी, है सूवर हुसनाक ।—ऊ. का.

८ चतुर, होशियार ।

सं. पु.— शाहजादा ।

रू. भे.—हौसनाइक, हौसनाक, हौसनायक, हौसनाइक, हौसनाक, हौसनायक ।

हुसमंद—देखो 'हौसमंद' (रू. भे.)

उ०—हुरमां रागै ग्रंतरै, उड़दावैगण दुंद । हाजर खिजमत कारणै, मुख नाजर हुसमंद ।—रा. रू.

हुसिग्रार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—इण विध 'सांगै' ग्राखियौ, सुणतां सगळै साथ । हुसिग्रारा मेळूं खळां, सौ मारी भाराथ ।—रा. रू.

हुसिक—सं. पु.—१ हौसला, होश ।

उ०—जरासी जाखूं मैं हुसिक नहिं राखूं जिय जरै । महावैरी मेरौ घमंड घन घेरौ मन मरै ।—ऊ. का.

२ इच्छा, ग्रभिलाषा, कामना ।

हुसियार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—१ नकीब फेरनै सारी लसकर भेळौ करायनै ग्राप चढनै वाड़ी घेरी । हाथाजोड़ी करी, नै कह्यौ—सकौ हुसियार हूजौ । जिण मांहे हुय जेसौ जासी तिण नूं हूं मारीस ।—नैणसी

उ०—२ पीवै पिलावै रांम रस, माता है हुसियार । दादू रस पीवै घणां, ग्रौरौं कौ उपकार ।—दादूवांणी

हुसि.यारक—सं. पु.—द्वारपाल, प्रतिहार, दरवान, छड़ीदार ।

(ह. नां. मा.)

हुसियारगी, हुसियारी—देखो 'होसियारी' (रू. भे.)

उ०—सू इणारै बीच में मालदेजी री तरफ सूं जैतसी ऊदावत नै नेमौ ऊदावत सला करण ग्राया । नै समंचार सारा कैया । तद कूंपै नै जैतै वडी हुसियारगी वंधायी ।—द. दा.

हुसियारौ—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—ग्रला इह जुगि तीजै मोमिणां, होय चालौ हुसियारौ । ग्रला इह जुगि चौथै मोमिणां, ग्रब जीवां की वारौ ।—दीन सुदरदी

हुसीयार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—१ घर घर लगी लायणी, घर घर ग्राह पुकार । जनहरीया घर ग्रापणौ, रखैलो हुसीयार ।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ भलां तुं ग्रावियौ मुझ मन भावीयौ, दूत रजपूत मूंकी कहायौ । हूं हिजै साहि हुसीयार हिवै जाह मत, भला सिंघल थकी भाजि ग्रायौ ।—प. च. चौ.

हुसीयारौ—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—साहि कहै सुभटां भणी, होज्यो हिवै हुसीयारौ रे । मरदांनी मरदां तणी, देखेंगे इण वारौ रे ।—प. च. चौ.

हुसैन—सं. पु. [ग्र.] मोहम्मद साहब के दौहित्र तथा हजरत ग्रली व फातिमा का द्वितीय पुत्र, जो कर्बला के युद्ध में मारे गये थे । ये शिया मुसलमानों के पूज्य हैं ।

वि० वि०—मुहम्मद साहब की वफात के पश्चात् उनके पांचवें उत्तराधिकारी ग्रमीर मुग्राविया खलीफा बने । ग्रब तक किसी खलीफा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नही बना था । खलीफा उसी को बनाया जाता था जिसकी सर्वाधिक वैयत (धार्मिक लोकप्रियता) होती थी । इसलिये मुहम्मद साहब के दौहित्र इमाम हसन को ग्रमीर मुग्राविया का उत्तराधिकारी बनाना निश्चित हुग्रा, लेकिन ग्रमीर मुग्राविग्रा के पुत्र यजीद ने षड़यंत्र करके इमाम हसन को मरवा दिया ग्रौर फौज के बल पर खुद खलीफा बन बैठा । इमाम हसन की हत्या के बाद 'हुसैन' की वैयत सार्वाधिक हो गई, तब यजीद ने हुसैन पर जुल्म करने शुरु कर दिये । ग्रन्त में कूफा नगरवासियों की प्रार्थना पर 'हुसैन' ग्रपने साथी एवं सम्बन्धियों के साथ कर्बला से कूफा के लिये रवाना हो गया । ७२ व्यक्तियों का यह काफिला जब इराक के गजरिया नामक गांव के निकट फरात नदी के किनारे डेरा डाले हुऐ था तब यजीद की ८४००० सिपाहियों की सेना ने ग्राकर इन पर हमला कर दिया । 'हुसैन' सत्य के लिये लड़ता हुग्रा शहीद हो गया ग्रौर सत्य पर ग्रसत्य की जीत हो गई ।

यह घटना ६१ वें हिज़री संवत के प्रथम मास की दस तारीख की है । मुसलमान प्रतिवर्ष इसी तारीख को इस दुखद घटना की याद मोहर्रम के रूप में करते हैं ।

ग्रनुश्रुतियों में, ईसा की चौदहवीं शताब्दी के ग्रन्तिम दशाब्द में तैमूरलंग के भारत पर ग्राक्रमण के समय से ताजियों का प्रचलन माना जाता है । तैमूर ने कर्बला में इमाम हुसैन के रोजे पर प्रतिवर्ष दशवें मोहर्रम पर जाने की मिन्नत मांगी थी । लेकिन विस्तृत साम्राज्य व ग्रावागमन के साधन सीमित होने तथा पीछे से राजधानी में विद्रोह होने की सम्भावना के कारण प्रतिवर्ष जाना संभव नहीं हो सका । ग्रतः तैमूर ने रोजे की हूबहू नकल तैयार करवाई ग्रौर मिन्नत मांग कर उसी दिन नष्ट करवा दिया । सुल्तान तैमूर के ग्रनुकरण में जनता भी इसे वास्तविक रोजा समझ कर पूजने लगी ग्रौर यह प्रचलन ग्राज भी जारी है ।

ताजियों का निर्माण भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, ग्रफगानिस्तान ग्रौर ईरान के ग्रतिरिक्त ग्रन्य देशों में नहीं होता है ।

हुसैनी—वि.—हुसैन का, हुसैन सम्बन्धी ।

सं. स्त्री.—१ मुसलमानों की एक भाषा ।

२ यवन भाषा । (ग्र. मा.)

३ एक प्रकार की तलवार ।

हुसैनी-कान्हड़ा—सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों में गाया जाने वाला एक राग ।

हुस्तंड—हुसंड' (रू. भे.)

उ०—च्यारू रेढां रा डील ई ऊमर परवांण श्रणूंता। हुस्तंड व्हियोड़ा हा।—फुलवाड़ी

हुस्त—देखो 'हुस' (रू. भे.)

उ०—'मोटर-वाळा भागवांना! सात जीव भूखा है। कुंई किरपा करावौ। हुस्त भाग जाग्रौ।'—वरसगांठ

हुस्न—देखो 'हुसन' (रू. भे.)

हुस्यार—देखो 'होसियार' (रू. भे.)

उ०—ग्ररजन रा साथी उजड़रण नै त्यार, घर हाळा झगड़रण नै हुस्यार।—दसदोख

हुस्यारी—देखो 'होसियारी' (रू. भे.)

उ०—टावरां रा साच ग्रागै बडेरां री हुस्यारी ढोळै वैठ जावै। —फुलवाड़ी

हुहव-सं. पु.—एक नरक का नाम।

हुहु, हुहू-सं. पु.—१ देवता। २ एक गंधर्व।

३ देखो 'हूहू' (रू. भे.)

हूं-सर्व. [स. ग्रहम्] मैं, मैंने, मुझे।

उ०—१ वदनारविंद गोविंद वीखियै, ग्रालोचै ग्रापौ ग्राप सूं। हिव रुखमणी क्रतारथ हुइस्यै, हुग्रौ, क्रतारथ पहिलौ हूं।—वेलि

उ०—२ ऐला चीत्तौड़ सहै घर ग्रासी, हूं थारा देखियां हरूं। जगणी इसौ कहूं नह जायौ, कहवैं देवी धीज करूं।—वारूजी सोदा

उ०—३ कायथ त्याग विचारै काया, केसरिसिंघ रांम का जाया। इण विध ग्ररज दई लिख ग्रागै, भाखव हूं तिण थी भ्रम भागै। —रा. रू.

उ०—४ भारती भगवती एक मांगूं, चित्त पांडव तणें गुणि लागउं। ग्रापि मूं वचन तूं रसवांणी, हूं करउं जिसि प्राक्रतवांणी। —सालिसूरी

उ०—५ ग्रजमेर ग्रावतां पेहली महावतखांन पातसाह सूं मालम कीयौ—जु राजा गजसिंघ म्हारौ माथौ वाढण रै वास्तै नागौर लियौ हुतौ सु हूं पाऊं।—नैणसी

ग्रव्यय (विभक्ति चिन्ह] १ से।

उ०—१ हरि हुए वराह हए हरिणाक्स, हूं ऊधरी पताळ हूं। कहौ तई करुणा मैं केसव, सीख दीध किण तुम्हां सूं।—वेलि

उ०—२ उठा हूं नागरणेच्चां भमण ग्राविया, लाविया सरब रण-वास लारै। गती गजराज हंसा गवण गांमणी, इंद्र पर कांमणी लवण वारै।—मे. म.

उ०—३ कहियौ न्रप सिध हूं जोड़ै कर, ग्रायस हसै चौक किण ऊपर।—सू. प्र.

उ०—४ पनरह दिन हूं जागती, प्रीसूं प्रेम करंत। एक दिवस निद्रा सवळ, सूती जांणि निचंत।—ढो. मा.

२ से, द्वारा, मार्फत।

उ०—तठै ग्रागवौ खाग हूं छाग तोड़ै, चंडी काळिका मातरै स्रोण चोड़ै।—मे. म.

३ से, ग्रपेक्षाकृत, तुलना में।

उ०—ग्रादीता हूं ऊजळौ, मारवणी-मुख-ब्रन्न। झीणा कप्पड़ पहिरणई, जांणि झंखइ सोव्रन्न।—ढो. मा.

४ को।

उ०—चरखां गडि चक्र मगां मचलै, चर हूं थिर थाय पगां न चलै। जड़ हूं करि जंगम देत जिका, तन ग्रद्र मतंगज रंग तिकां। —मे. म.

५ के।

उ०—वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीध। साल्ह महल हूं ढूकड़ा, ढाढी डेरउ लीध।—ढो. मा.

६ वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक-वचन का रूप।

उ०—ग्रारंभ मैं कियौ जेणि उपायौ, गावण गुण निधि हूं निगुण। किरि कठ चीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि

७ स्वीकृति या समर्थन सूचक शब्द, 'हां'।

रू. भे.—हुं।

हूंकरणी-सं. स्त्री.—१ किसी जानवर की वोली, ग्रावाज।

२ उमंग, प्रवल इच्छा।

उ०—उणरा मन मैं इतौ गुमेज व्हियौ कै उणनै हूंकरणी छूटी। वौ जोर सूं भूकियौ।—फुलवाड़ी

हूंकणौ, हूंकबौ-क्रि. स.—१ हुंकार भरना, हुंकारना।

२ गर्जना, गर्जन करना।

३ सिसकना, रोना।

४ वोलना, ग्रावाज करना। (जानवर)

हूंकणहार, हारौ (हारी), हूंकणियौ—वि०।

हूंकिग्रोड़ौ, हूंकियोड़ौ, हूंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हूंकीजणौ, हूंकीजबौ—कर्म वा०।

हूंकर—देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

हूंकळ- सं. [सं.उत्कललनह] १ कोलाहल, शोर-गुल।

उ०—१ हैदळ कळळ पायदळ हूंकळ, सीसोदै खडतै सनद। गैहकै हो वीजागढ पतियां, गंजै ग्रगंजी त्रिकुट गढ। —महारांणा लाखा रौ गीत

उ०—२ रोज़ सिकारां खेलणी, देखै वाग तड़ाग। हूंकळ दळ गज हैवरां, ग्रमरख नरां ग्रथाग।—रा. रू.

२ गर्जना, हुंकार।

उ०—१ ऊठि ग्रढंगा बोलणा, कांमणि ग्राखै कंत। ग्रै हल्ला तौ उपरां, हूंकळ कळळ हुवंत।—हा. झा.

उ०—२ ग्ररर हूंकळ मत ऊछळै, विग्रह बुरी बलाह। जोयां पिंव तौ जावसी, ग्रोयण चिपक इलाह।—रेवतसिंह भाटी

३ घोड़ों की हिनहिनाहट।

उ०—१ मैं गा प्रगट्ट मच्छण मिळै, केका हुय हूंकळ कळळ। गिर-श्रंग रस मावळ गिर्वै, कंस बंस कमगा कमळ।—मे. म.

उ०—२ गाज हूंकळ गळळ वळवळ। खळळ चळवळ सरित गळाळ।—र. ज. प्र.

४ शब्द, आवाज, ध्वनि।

उ०—१ मरनै जिण दोय हजार मारिया, खागां रत वूहा खळळ। तुरग मुरग नियां गी 'केहर', कटकां री हूंकळ कळळ।

—केसरीसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ जजरंग घाट तूटै जरद, झाट पड़ै झड़ ग्रोझड़ा। दळ गोद घडै हूंकळ दिल्ली, घोकळ कीधौ वूहड़ा।—सू. प्र.

५ युद्ध, लड़ाई।

उ०—काळी नाहक की डरै, सेती लाभ म खोय। धरती रा जेथी धणी, हूंकळ तेथी होय।—वी. स.

६ सिंधु राग का गायन।

७ गायन की ध्वनि।

८ गायन, गाना।

रू. भे.— हुंकळ, हुंकाळ, हूकळ, हूकल।

हूंकळचाळौ-सं. पु.—उपद्रव, बखेड़ा, दंगा।

हूंकळणौ, हूंकळबौ-क्रि. अ.—१ कोलाहल या शोरगुल होना।

२ गरजना, हुंकार होना।

३ हिनहिनाना।

४ शब्द, आवाज या ध्वनि होना।

५ सिंधु राग गाया जाना।

उ०—हूंकळै गींधवौ वीर कळहळ हुवै। चरण कजि ग्रपछरां सुरिमा वह धुवै।—हा. झा.

हूंकळणहार, हारौ (हारी), हूंकळणियौ—वि०।

हूंकळिग्रोड़ौ, हूंकळियोड़ौ, हूंकळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

हूंकळीजणौ, हूंकळीजबौ—भाव वा०।

हूकळणौ, हूकळबौ—रू. भे.।

हूंकळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कोलाहल या शोरगुल हुवा हुग्रा. २ गर्जा हुग्रा, हुंकार हुवा हुग्रा. ३ हिनहिनाया हुग्रा. ४ शब्द, ध्वनि या आवाज हुवा हुग्रा, ५ सिंधु राग गाया हुग्रा।

(स्त्री. हूंकळियोड़ी)

हूंकार-सं. स्त्री.—१ स्वीकृति, सहमति, हां।

२ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

उ०—नांमियौ ग्रनमंधौ तीठ कीधौ नहीं, समर भर पियौ पतिसाह माथै। सार ऐराक 'वीका' हरै नाहिया, मांड हूंकार तां दीव माथै।

— राव जैतसी री गीत

हूंकारौ-देखो 'हुंकारौ' (रू. भे.)

उ०—१ मुनि मून पारसी भर्णै, हूंकारै खट काया हर्णै। ग्रण बोल्याई उदम करै, तौ बोल्या कहौ काइ गति करै।—भि. द्र.

उ०—२ जेलर साहब हूंकारौ दियौ ग्रर पोसटमारटम रै पछै करणै री ल्हास री जुलस निकाळणौ।—दसदोख

उ० — ३ पछै दसवैं दिन सेठांणी तांगियां खावती बावड़ी में पड़ण सारू वहीर व्ही जणा वौ राजी खुसी गंगाजी जावण वास्तै हूंकारौ भर लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ ग्रय लै रांण ग्रभालै ग्रवकी, भोग वियाप तणा मन भाव। भूपत येता भलपण भणतां, भारत हूंकारा न भराव।

—महारांणा कुंभा री गीत

हूंकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हुंकारा भरा हुग्रा, हुंकारा हुग्रा. २ गर्जा हुग्रा, गर्जन किया हुग्रा. ३ सिसका हुग्रा, रोया हुग्रा. ४ वोला हुग्रा, ग्रावाज किया हुग्रा। (जानवर)

(स्त्री. हूंकियोड़ी)

हूंचकणौ, हूंचकबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू. भे.)

हूंचकियोड़ौ—देखो 'हुचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूंचकियोड़ी)

हूंचणौ, हूंचबौ—देखो 'हुचणौ, हुचबौ' (रू. भे.)

हूंचियोड़ौ—देखो 'हुचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूंचियोड़ी)

हूंचौ-सं. पु.—मुरट नामक घास की कंटीली वाल से बीज निकालने की क्रिया।

उ०— काळीगा तूसां कुळी, हूंचा हूंत जियंत। ऊमर दिन ग्रोछा करण, पंगी राव पियंत।—थळवट वत्तीसी

हूंछ-सं. पु.—मुरट नामक घास का बीज।

उ० —जिण मुड़ पन्नग पीयणा, कयर-कंटाळा रूंख। ग्राकै-फोगै छांहड़ी, हूंछां भांजइ भूख।—ढो. मा.

रू. भे.—हुंछ।

हूंठ-सं. पु. [सं. ग्रर्द्ध-चतुष्ट्य] साढ़े तीन की संख्या।

वि.—साढे तीन।

हूंठा-सं. पु.—साढे तीन का पहाड़ा।

रू. भे.—ग्रऊठा।

हूंड-वि.—लम्बा।

उ०—देव मांहि कुण हूं न स्वांमी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न वधिर, न विधर, न कूवड़, न वांभण, न हूंड, न छोटा, न पांगुला, न ग्रांधला, तिहां डांस मुंसा मांकुण यू प्रमुख न उपजइं……।

—व. स.

हूंडा-सं. पु.—चौपड़ के खेल में तीन पक्के पासे लगातार ग्राने पर पासों के निरस्त हो जाने की क्रिया, ग्रवस्था या भाव।

हूंडी-सं. स्त्री.—१ नाभि।

२ देखो 'हुंडी' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी वोल्या—थांरै वाप हूंडचां लीखी, थांरै दादै हूंड्यां लीखी, पाटा पाटी येइ संवेल्या कोइ नहीं।—भि. द्र.

उ०—२ ए पिण वंदणा झेलै नहीं, घर मैं माल बिनां हूंडी सीकारनी आवै नहीं । अनै साधां नैं वंदना करै ।—भि. द्र.

हूंडीवाळ—देखो 'हुंडीवाळ' (रू. भे.)

उ०—ऐ दलाल ऐ खुड़दिया, हूंडीवाळ बजाज । ऐहिज करै पसारटौ, केवळ धन रै काज ।—बां. दा.

हूंडौ-सं. पु.—एक प्रकार की डलिया जो गोल छबड़ीनुमा होती है । यह पशुओं को चारा खिलाने के काम आती है ।

हूंणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—लाखैं घणौ पछतावौ कीयौ, जांणियौ, परमेस्वर आ किसी उपाध की, मोनूं किसी कुबुध आई, हूंणहार जोर कौ नहीं ।
—नैणसी

हूंणी—देखो 'होणी' (रू. भे.)

उ०—झड़ झड़ पत्ता झड़ता हा, ही पतझड़ री रीतु आई । वै एक एक पड़ता हा, हूंणी री मनस्या आही ।—सकुंतला

हूंत-अव्य.—१ तृतीया विभक्ति चिन्ह, 'से' ।

उ०—१ पाताळ लोक आतप पड़ै, अड़ै आभ भालां अणीं । जां हूंत भिड़ै 'जैतौ' जठै, तनैं लाज मेहातणीं ।—मे. म.

उ०—२ सोर आग सपरस्स, किना वड़वाग अकारी । माग हूंत सांमंद्र, ध्याग वरतण उर धारी ।—रा. रू.

उ०—३ रे अधम समझ मुख नांम रट, सीत-वर समराथ कौ । कह जीह हूंत 'किसना' कवी, निज प्रत जस रघुनाथ कौ ।
—र. ज. प्र.

उ०—४ आजू हीलोहळ धू अटळ, देव धरम वांणारसी । पतसाह हूंत चीतोडपत, रांण मिळै किम राजसी ।—कम्मौ नाई

२ तुलना में, से ।

उ०—रच्यौ फेर प्रासाद बाहादरा रौ, धनौ भाग भू भाग भाठी धरा रौ । हुवौ ना इसौ थांन आंन हूंणौ, दियै इंदरां मंदिरां हूंत दूंणू ।—मे. म.

३ सहित, समेत, युक्त, से ।

उ०—अरि चारौ जड़ हूंत ऊपाड़ै, साकुर धौरि हांक सर । ल्हास करै फौजां वड लंगर, क्रोध निनांणी हमल कर ।
—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

४ का, के, की ।

उ०—सप्तपुरी सिरताज, क्रत अपवरग हूंत समकारण । उत्तम धांम अजोध्या, ओपै नांम ग्रांम पुर ऊपर ।—रा. रू.

५ द्वारा, मार्फत ।

उ०—पधरावियौ सुभ प्रात, छळ हूंत मुरधर छात । दळ कमंध साह दवार, अन रहै सांम उबार ।—रा. रू.

६ होना क्रिया ।

रू. भे.—हूंत, हूंता, हुंत, हूंतां, हूंता, हूत, हूतां, हूता ।

हूंतउ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—१ आंखि हूंतउं काजल हरइ, केसि बांधी सल धरइ, बोलतां मस्तकना केस ऊरद्ध थाइं, दाधनी वेटी.......।—व. स.

उ०—२ पोलइं हूंतउं पोलीउ, राइं हकारिउ तेह । ए मंदिर कहि रे किहि-तणां, किसिउं लीइ छइ श्रेह ।—मा. कां. प्र.

हूंतळ-क्रि. वि.—शामिल, साथ ।

उ०—चक्रवत कन्है धरा लख चाळौ, टांणौ तिण न दियै पळ टाळौ । तज साचोर 'पाल' हर तेजल, हिवपति काज रिणमलै हूंतळ ।—रा. रू.

रू. भे.—हूतळ, हूतल ।

हूंतां, हूंता—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—१ वडै प्रात स्रीमात मंजीर बाजै, जरां गात जंभात जंमात जागै । सुणीजै अलंकार झंकार स्रूतां, हुवै नींद विक्षेप ताकीद हूंतां ।
—मे. म.

उ०—२ पूगळ हूंतां पुहकरइ, ढाढी क्रीध प्रयांण । माळवणी का मांणसां, आए मिळ्या अजांण ।—ढो. मा.

उ०—३ धरणी धर गिरधार धनौ, स्रीधर ध्रू धारण । हाथी ग्रह निज हाथ, तोय हूंता झट तारण ।—मीरां

उ०—४ जिण रांणी चवदै सुत जाए, सौ पित हूंता तेज सवाए । दक्खिण लीध जीपि खग दावै, कपाळिया भड़ तिकै कहावै ।
—सू. प्र.

उ०—५ संगि संति सखीजण गुरुजण स्यांमा, मनसि विचारि ए कही महंति । कुससथळी हूंता कुंदणपुरि, किसन पधारचा लोक कहंति ।—वेलि

हूंति, हूंती-अव्यय—१ से ।

उ०—१ हसैं दीध आसीस आणंद हूंती । अखैं भाग सोभाग हौ पुत्रवंती ।—सू. प्र.

उ०—२ अम्रत हूंती किसिउं कालकूटच्छटा उच्छलइ, चंद्रमंडल हुंता किसिउं अग्निस्फुलिंग उल्लइं,.......।—व. स.

२ की ।

उ०—नेसालीया तैं देखी मूरख मूरख चट्ट कहंति । तिम तिम तैं मनि दूहवीइ अंतराय फल हूंति ।—हीराणंद सूरि

३ थी ।

उ०—१ सखिए साहिब आविया, जांहकी हूंती चाइ । हियड़उ हेमांगिर भयउ, तन-पंजरै न माइ ।—ढो. मा.

उ०—२ हिमांनी सखा माहरै एक हूंती । अणहूंत सौ उद्धरी भागवंती ।—सू. प्र.

रू. भे.—हंती, हती, हुंती, हूति, हूती ।

हूंतूं-सर्व.—मैं व तूं ।

उ०—क्रसन राखि हिव हूंतूं करतौ, धरणी धर ममता मन धरतौ ।
—ह. र.

हूंतै-क्रि. वि.—१ से, द्वारा ।

[illegible] हूंतै [illegible], [illegible] हूंत [illegible]। —[illegible]
२ [illegible] हूं।
३ [illegible]।

हूंतौ [illegible] —१ [illegible]।
२ [illegible]।
३ [illegible]।
४ [illegible]।
रू. भे.—[illegible], हूतौ, हुंतउ, हूंतु, हुंतौ, हुंतउ, हूंतउ, हुतउ, हूंती।

हूंफणौ, हूंफवौ - देखो 'हांफणौ, हांफवौ' (रू. भे.)
उ०—वेउ हूंफइं वेऊ वाकर वाड़, राय तणा मनि रीझ ऊपाइं। [illegible] गाजइ गयणु, हारिइ जीतइ जयजय वयणु।
—सालिभद्र सूरि

हूंफियोड़ौ—देखो 'हांफियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री हूंफियोड़ी)

हूंमड़—स पु—पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हूंमणौ, हूंमवौ—देखो 'होमणौ, होमवौ' (रू भे.)
उ०—सिरी गंग री नीर संन्नान साक्, दसत्तूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आमावरी धूप हूंमैं, घणां सांघणां दीप सांमीप घूंमैं।
—मे. म.

हूंमियोड़ौ—देखो 'होमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हूंमियोड़ी)

हूंस—स स्त्री. [स. उत्स] १ प्रबल इच्छा, अभिलाषा, उत्कण्ठा।
उ०—१ ब्रयकूट विलासन की तजि कै बध कौन चहैं जमपासन की। मृगराज पलानन त्यागन कै चित हूंस धरी नहि घासन की।
—र. ज. प्र.
उ०—२ हग्गी न दीवौ हालरौ जी, बहू नहीं पाड़ी रे पाय। एक ही पुत्र न जनमियौ जी, हूंस रही मन मांय रे जाया।
—जयवांणी
उ०—३ जो रावल जिम तिम करी, पकड़ीजै है तो पहुंचै मन हूंस कि। आनोनी मन आपणु, धीरज धरि है मन पूर्ग हूंस कि।
—प. च. चौ.
उ०—४ म्हारी आ ऊमर तो ताळी रै फटकारै खूटै। सगळी कुदरत नै जीनण री हूंस [illegible]। थळ, पांणी अर हवा मैं म्हारी [illegible] सूं [illegible] उगावणी चावूं।—फुलवाड़ी
२ उमंग, उत्साह, जोश।
उ०—१ 'हटी' सुत 'जीवण' पौरस हूंस। [illegible] भाट डंडेहड़ [illegible]। —सू. प्र.
उ०—२ ज्यूं ज्यूं लोग बतावौ अर बरजियौ त्यूं त्यूं उण रा मन [illegible] घणी घणी हूंस बधी।—फुलवाड़ी
३ हर्ष, खुशी, आनन्द।
उ०—सेठां री हूंस हाल मिटी नीं ही। मुधरा मुधरा मुळकता बोल्या - गीगला री मां थांमैं औ इज तो मोटौ ओगण कै बोलता डरौ ई नीं, सुरड़ताई जावौ।—फुलवाड़ी
४ मोद, गर्व, अभिमान।
उ०—केसर वरणी कोमल काया, मूढ करै मन हूंस। ए पिण जहर हलाहल जांणी, जैसी थली गी तूस।—जयवांणी
५ हिम्मत, हौसला।
उ०—वै मिनख रै सांमी देखनै थोड़ी घणी करड़ावण सूं कैवण लागा—थारी बधती हूंस माथै तो म्हारौ ई आंकस नीं रह्यौ। सगळी दुनियां मैं थूं हाय-त्राय मचायदी।—फुलवाड़ी
६ प्रवृत्ति।
उ०—इण परिग्रह रै कारणै ए, न हुवै धरम नी हूंस कै। ममता राखै घणी ए, काढै कूड़ा सूंस कै।—जयवांणी
७ मौज, मस्ती।
८ आभा, कान्ती, दीप्ति, चमक।
उ०—भूल की जलूस वीरघंटू कै ठणकै, वादळों की जगमया मेरै भोरौं की भकी भंणकै। कळ कदमूं कै लंगर भारी कनक की हूंस, जवाहर कै जेहर दीपमाळा की रूस।—रा. सा. सं.
रू. भे.—हौंस, हुंस, होंस।

हूंसनायक, हूंसियौ—देखो 'हुसनाक' (रू. भे.)
उ०—१ प्रथी भुगतै तरण फतै पणै, हूंसनायक पणै मुनंद हंसियौ। 'मांन' हर धाड़ रै धाड़ जोबन मसत, राड़ रै वगीचै तणौ रसियौ।—महाराजा बहादर सिंघ री गीत
उ०—२ दड़ी ज्यूं दोठाय दोठा दै (तरवारां सूं कूटनै) आंरिण झगड़ा रा हूंसिया हूंस वाळा नै ठेट घर मैं घालसी। (दड़ी ने हदतां लै जावै ज्यूं)।—वी. स. टी.

हू—सं. स्त्री.—शृगाल या सियार की बोली।
उ०—पंथी मारग पांतरै, हियाफूट हियाहार। जंवक हू हू रव करै, सूनी माळ मझार।—थळवट वत्तीसी

हूक—सं. स्त्री.—१ छाती या सीने में होने वाली तीव्र पीड़ा, दर्द।
२ हृदय में रह रह कर उठने वाली कसक, दिल का दर्द, मानसिक पीड़ा, वेदना, दुख।
उ०—१ मोटयार पणा मैं घणा वरसां सूं पेट मंड्यौ ही कै घर भागग्यौ। कोई आठ दस वरस नीठ चूड़ी हाथ रह्यौ व्हैला कै रंडापौ आयग्यौ। पड़ता दुकाळ अर व्हैती रांड री हूक वड़ी जोर री व्है पण करम री गति नै कुण टाळै?—अमरचूंनड़ी
उ०—२ हिवड़ै हालै हूक जग मैं मिळै न जेठवौ।—जेठवौ
उ०—३ कांपै अनुकंपा लांपी कर लीनां, दांनां दांनांपण हांनै धर दीनां। किण ढिग ढूकां म्हैं किण ढिग म्हैं कूकां, हरदम हिया मैं ऊठै हरि हूकां।—ऊ. का.
६ तड़फन, कराह, आह।

उ०—काग पटकिया मरै, उनाळौ काळौ काती', हिवड़ै हालै **हूक**, जळै किरसांणां छाती ।—दसदेव

४ करुणा भरी बात, शोक समाचार ।

उ०—ताहरां रजपूत कहियौ—थारौ साबतौ ही गयौ । हूं तौ कांम आईस । ताहरां ऊ रजपूत वांसै जाय नै कांम आयौ । **हूक** फूटी । —नैणसी

५ धड़कन ।

६ पश्चाताप, दुख ।

उ०—समय न चूकै चतुर नर, कहत कविजन कूक । चतुरन कै खटकत हियै, समय चूक की **हूक**।—अग्यात

रू. भे.—हुक ।

हूकणौ, हूकबौ—क्रि. अ.—१ छाती या सीने में तीव्र पीड़ा होना, दर्द होना, २ हृदय में रह रह कर कसक उठना, दिल में दर्द होना, मानसिक पीड़ा होना, वेदना या दुख होना ।

३ कराहना, आहें भरना, तड़फना ।

४ करुणा या दुख भरी बात होना, शोक समाचार आना ।

५ धड़कना ।

६ पश्चाताप होना, दुख होना ।

हूकणहार, हारौ (हारी), हूकणियौ—वि० ।

हूकिओड़ौ, हूकियोड़ौ, हूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हूकीजणौ, हूकीजबौ—भाव वा० ।

हूकळ, हूकल—देखो 'हूंकळ' (रू. भे.)

उ०—१ बड जीव जळ थळ विकळ वळ, संघ मेर सळसळ हुए सकळ । दुहुं ओर **हूकळ** कळळ दळ, वध वहै वीजूजळ विमळ । —र. रू.

उ०—२ हुय **हूकळ** कळहळां, हलै दळ प्रघळ जळाहळ । धर सळकै अहि धुकै, मरट वजि कमठ कळम्मळ ।—सू. प्र.

उ०—३ बीजौ दिसि राजा चल्यौ, मारग छोडी जांम रा० । कोढी व्रंदै निरखीयौ, **हूकल** करता तांम रा० ।—स्रीपाळ रास

हूकळणौ, हूकळबौ—देखो 'हूंकळणौ, हूंकळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जांगडिआंरी जोड़ी आडिआंर बांज झालिआं थकां **हूकळि** नै रही छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ मन मोद अलंक्रत सूं मढिया, सब साथ बणाव करै चढिया । रंग पेज कुंआं रखवा रुळता, हळ आगळ जांगड़ **हूकळता** । —पा. प्र.

हूकळियोड़ौ—देखो 'हूंकळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूकळियोड़ी)

हूकलियौ—देखो 'होकौ' (अल्पा; रू. भे.)

हूकळी—सं. स्त्री.—फौज के चलने पर उत्पन्न ध्वनि, शोर, कोलाहल ।

हूकाधारी—देखौ 'होकाधारी' (रू. भे.)

उ०—नरक नै कमर बांधी निठुर, घिरै न किण रा घेरिया । अमलियां हूंत इधका अपत, **हूकाधारी** हेरिया ।—ऊ. का.

हूकारौ—देखो 'हुंकारौ' (रू. भे.)

हूकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छाती या सीने में तीव्र पीड़ा हुवी हुई, दर्द हुवा हुआ. २ हृदय में रह-रह कर दर्द या कसक उठा हुआ, मानसिक पीड़ा हुवा हुआ, वेदना युक्त. ३ आहें भरा हुआ, तड़फा हुआ, कराहा हुआ. ४ धड़का हुआ. ५ पश्चाताप हुवा हुआ, दुख हुवा हुआ ।

(स्त्री. हूकियोड़ी)

हूकौ—देखो 'होकौ' (रू. भे.)

उ०—१ **हूकौ** लेतां हाथ मैं, चेतौ गयौ चुळाय । पड़ै धमाधम पदमणां, अधमाधम अकुळाय ।—ऊ. का.

उ०—२ संसार मांहि अवगुण सरव, ज्यूं **हूकौ** हि सांमळ हालसी । —ऊ. का.

हूड़ौ—देखो 'होड़ौ' (रू. भे.)

हूचक—सं. पु. [सं. उच्चकन] १ युद्ध, समर, लड़ाई ।

उ०—ऊठ्यौ दिली हूं औरंगसाह एक राह तणैं आंटै, महाबाह विहूं राहां मेटवा म्रजाद । थकां थकां चकां **हूचकां** खडग्ग धारा, वीर हक्कां हींदवा तुरक्कां भिडै बाद ।—महाराणा जयसिंह रौ गीत

२ भिड़ंत, टक्कर ।

३ वीरगति ।

४ प्रहार, टक्कर ।

उ०—हाथियां घड़ **हूचक** झूल अकज्झक रंग तकत्तक हूर रहै । करि केयक कंतक उभक अंत्रक वींद विमांणक धारि वहै । —सू. प्र.

हूचकणौ, हूचकबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ थै कहौ हौ कै म्है राजपूतां नैं पौरस चढाय दकाळण वाळा हां-तौ साथै रहौ—भड़ **हूचकै** लड़ै तठै हंत मरौ मारौ । —वी. स. टी.

उ०—२ कपि कटक **हूचक** कटक दैतक, उरक वेवक सरक ऐतक । —सू. प्र.

उ०—३ जांण रिण गेरिया, डंडौड़ह हाथै, मद्दू वीरम मंडिया, सज आंमां सांमां । हाथी जांणक **हूचकै**, मदमत अमांमां, दोनू तरफां रां दिसां, दिग पूर दमांमां ।—वी. मा.

हूचकणहार, हारौ (हारी), हूचकणियौ—वि० ।

हूचकिओड़ौ, हूचकियोड़ौ, हूचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हूचकीजणौ, हूचकीजबौ—कर्म वा० ।

हूचकियोड़ौ—देखो 'हुचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूचकियोड़ी)

हूचकौ—देखो 'हुचकौ' (रू. भे.)

उ०—वौ आंती आय नैं रोवण लागग्यौ । म्हूं उण नैं छाती रै चेप नैं बुचकारण लागग्यौ तौ **हूचकै** भरीजग्यौ ।—अमरचूंनड़ी

हूचटौ-सं. पु.—१ झटका।

उ०—१ [illegible] री मृदा री गाडी मुं करार वत्ती ही। [illegible] नांई मायौ तोड़ती। हूचटौ देय खूंटै [illegible]।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] मागै हूचटा देय आपरा हाथ छुड़ाया।

—फुलवाड़ी

२ धक्का।

उ०—[illegible] भरती बोली—वौ मैंसा जैड़ी मातौ, म्हनै [illegible] ! [illegible] री नाय [illegible] ई हूचटौ देय दौड़ग्यौ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—हूचटौ।

हूचलौ, हूचबौ—देखो 'हुचणौ, हुचबौ' (रू. भे.)

हूनियोड़ौ—देखो 'हूनियोड़ौ' (रू. भे.)

हूलणौ, हूलबौ—देखो 'हूलणौ, हूलबौ' (रू. भे.)

उ०—मारवणी तू मती करि गुमांन। मूंडी है मुरट थळिया रा मालवणी हूलता जी।—मारवणी मेवाड़ी संवाद

हूलियोड़ौ—देखो 'हूलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हूलियोड़ी)

हूजत—देखो 'हुज्जत' (रू. भे.)

हूड—देखो 'हूड' (रू. भे.)

उ०—प्रतिहारिइं पगलां भरियां, कहिउ संदेसुं एह। हूड सभा वभरण कहइ, बाहरि बइठउ तेह।—मा. कां. प्र.

हूरण-सं. पु.—१ एक प्राचीन मंगोल जाति (मनुष्य) जो पहले चीन की पूर्वी सीमा पर लूट-मार करती थी और कालान्तर में अत्यन्त क्रूर एवं प्रबल हो गई तथा एशिया व योरप के सभ्य देशों में फैल गई। अब यह अन्य सभ्य जातियों में मिल कर समाप्त प्रायः हो चुकी है।

उ०—जोगाग चीगा हूरण मरहट्टय कोकय डुविलय कुलखय सरमुख तुरगमुग मिटमुग हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभति अनारचदेस मनुस्य।

— व. स.

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

३ एक राजवंश।

उ०—सोलकी राठउड़ प्रमार जांगी झल्हलमल्ल भूभार। वनयता वारड नट हूरण, तेह नरगइ मुखि मांडइ कूरण।

—कां. दे. प्र.

४ पंवार राजपूत वंश की एक शाखा।

५ देखो 'होगी' (रू. भे.)

हूरणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—१ राजा धीरज देन लागी हूरणहार मिटै नहीं। पूरा दिन हुवा। राजा री पेटी फाटी। टाबर नीसरीयौ। राजा री म्रत्यु हुई।—चौबोली

उ०—२ तरै म्हे कह्यौ—थूं तौ मोनूं दोखण लागै, नै मोनूं इसड़ी थकी ही परणावौ तौ हूं इणरै हाथ लगावूं, मूंवौ तौ छै हीज, जो कदाच जीवै तौ माहरौ भाग, ज्युंही हूरणहार छै, त्युंही हुसी।

—नैणसी

हूणौ, हूबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सूती पड़ी रणेहि, जोयइ दिसि जातां तणी। जागी हाथ मळेहि, विलखी हूई वल्लहा।—ढो. मा.

उ०—२ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पांव। सयणै घाटा वउळिया, वइरिजु हूआ वाव।—ढो. मा.

उ०—३ बार री बात बालावकस विए रै, हिए रै मांहि तकलीफ हूगी। जरां हूं याद पोहकरी जिम करी जद, पयादा हरी ज्यौं इंद्र पूगी।—मे. म.

उ०—४ हथिणाउरि पुरि कुर नरिंद केरौ कुल मंडणु। सहजिहिं संतु सुहागसीलु हूउ नरवरू संतणु।—सालिभद्रसूरी

हूत—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

हूतउ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

उ०—घर हूतउ नवि वयाहइं जाई, सघला कुटुंब ऊभीठउ थाइ।

—वस्तिग

हूतद्रव्य-सं. पु. [सं.] वह पदार्थ जिसे होमा जाता है, हवन सामग्री।

उ०—प्रथम निसा अजपा जपइ, होम दीइ हूतद्रव्य। तरयण तिस तुलसी तणां, जग्ननोइ सव्यासव्य।—मा. कां. प्र.

हूतळ, हूतल—देखो 'हुतळ' (रू. भे.)

उ०—सादूळौ किण ही समै, लटियौ लांघणियोह। तौ पिण नह खावण तकै, हूतळ पर हणियोह।—वां. दा.

हूतां, हूता—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—ताहरां नरै रा वांणीया हूंता तिका उठ कपड़ै रा भरवा पार नू चालीया हूता।—जेतमाल पमार री बात

हूति, हूती—देखो 'हूंती' (रू. भे.)

हूतौ—देखो 'हूंतौ' (रू. भे.)

हूनर, हून्नर—देखो 'हुनर' (रू. भे.)

उ०—कलाबुतू का हूनर साईवांनूं का कांम। जरकस कै वगीचै लगै ठांम ठांम।—सू. प्र.

हूपड़ौ-सं. पु.—बैलगाड़ी के थाटे के आगे लगा हुआ वह त्रिभुजाकार तख्ता जिस पर गाड़ीवान बैठकर गाड़ी हांकता है।

हूवकणौ, हूवकबौ—देखो 'ऊवकणौ, ऊवकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ उवक्कै अरावां आग, हूवकै जोधार अंग। (जठै) ताता जंगां पमंगां मेलिया निराताळ।—बुधसिंह सिंढायच

उ०—२ केतां सह केकांण अटै रत ऊवकै। घट अंतर कढ घाव हजारां हूवकै।—किसोरदांन बारहट

उ०—३ आरवां वाजिया अनंत मिळ एकठा। एंखतां छाडिया पांण आयांण। हियै राव माल रै ऊपरै हूवकौ। सबळ असमांण ज्यूं सिला सुलतांण।—द. दा.

हूवकणहार, हारौ (हारी), हूवकणियौ—वि० ।
हूवकिश्रोड़ौ, हूवकियोड़ौ, हूवक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हूवकीजणौ, हूवकीजबौ—कर्म वा० ।

हूवकियोड़ौ—देखो 'ऊवकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हूवकियोड़ी)

हूवणौ, हूवबौ—देखो 'हुवणौ, हुवबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हुवै हींदू घडासेन **हूवै** हुवै, मूझ उपकंठ सगरांम मातौ । घणौ सीसोदियै बहै खाई घडा, रुधर घण मिळै तण नीर रातौ ।
—महारांणा रायमल्ल रौ गीत
उ०—२ धनि धनि सुत चंद बाहतां धजवड़, **हूवतां** अरि मारै उर हूंत । ऊकसतां रसतां ओल्हसतां, कसतां विकसतां कूंत ।
—मालौ सांदू
उ०—३ हुवै चम्मरां भाटका जोति **हूवै** । सदा ऊतरै आरती सांभ सूवै ।—मे. म.
हूवणहार, हारौ (हारी), हूवणियौ—वि० ।
हूविश्रोड़ौ, हूवियोड़ौ, हूव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हूवीजणौ, हूवीजबौ—कर्म वा० ।

हूवहू—वि. [फा.] १ विल्कुल एक सा, समान, सदृश, एक जैसा ।
२ बरावर, तुल्य ।
३ ज्यों का त्यों, जैसा का जैसा ।
रू. भे.—हुवौहुव, हुवौहूव, हूवोहूव, हूवौहूव ।

हूवियोड़ौ—देखो 'हुवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हूवियोड़ी)

हूवी—सं. स्त्री.—ऊंट के तालू में होने वाला एक ग्रन्थि-रोग ।
(शेखावाटी)

हूवोहूव, हूवौहूव—देखो 'हूवहू' (रू. भे.)
उ०—वौ आपरी घरवाळी नै केई वळा कैवतौ कै विरमाजी नै एकर इण दुनियां रा जीव जिनावर, पंछी अर मिनख घड़तां देखलूं तौ वौ दूजै दिन ई वांरी **हूवौहूव** सांचौ उतार दै ।—फुलवाड़ी

हूमस—देखो 'ऊमस' (रू. भे.)

हूयोड़ौ—देखो 'होयोड़ौ' (रू. भे.)

हूर—सं. स्त्री.—१ मुसलमानों के बहिश्त की परी ।
उ०—१ लोंठी थकी कोसि नह लेस्यौ, दाखै **हूरां** अछर दिसी । माथै सिखा न कांनां मोती, कहौ कमळ विण खवर किसी ।
—हठीसिंघ राठौड़ रौ गीत
उ०—२ **हूरां** कह तुरक अछर कह हिंदू, वरण काज दोय वरग वढै । हठीसिंघ ऊपरि लागी हठ, चौकस होय न रथां चढै ।
—हठीसिंघ राठौड़ रौ गीत
उ०—३ खित **हूर** अपच्छर वींद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै ।
—रा. रू.
उ०—४ अछरां स्रंगार धरि ऊमही, **हूरां** हरखि उचारियौ । महि गयण संग खेळां मिळै, आगम जंग विसारियौ ।—रा. रू.
२ स्वर्ग की अप्सरा, परी ।
उ०—१ भड़ां धड़ सांगि छटै अद्भुत, धतांधत भांगि नटै अवधूत । हूथां वरमाळ उमाहत **हूर**, सूरां हथवाह सराहत सूर ।
—मे. म.
उ०—२ सांमठा लड़ै धड़ पड़ै सूर, हरखंत वरै बह रंभ **हूर** ।
—सू. प्र.
उ०—३ निरत करवै मैं **हूर** जग जंगू मै गरीत सालोतरू मैं पूर चांमीकर की सागत....।—र. रू.
३ वेश्या, रंडी, नगर वधू ।
४ सुन्दर स्त्री ।

हूरळ—सं. पु.—१ पैने शस्त्र द्वारा जोर से किया जाने वाला प्रहार, आघात ।
२ शूल, हूक ।

हूरव—सं. पु. [सं. हूरवः] शृगाल, गीदड़ ।

हूरवर, हूरांवर—सं. पु.—युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला योद्धा । ऐसी किवदन्ती है कि ऐसे योद्धा को स्वर्ग की अप्सरा वरण करती है ।
उ०—धिन धिन रवि उचरै धाड़ धाड़, राठौड़ मुगळ इम करत राड़ । वर अचर विसै वर जैण वार, **हूरांवर** वरिया सर हजार ।
—वि. सं.

हूरीचंद, हूरीचंदक—देखो 'हरीचंद' (रू. भे.)

हूळ, हूल—स. स्त्री. [सं. शूल] १ प्रहार, आघात, वार ।
उ०—१ सावळां **हूलां** हूं अणी कैवरां सूं मदगरां, बीजळां ऊजळां धारां चौळ गोळां न्रंन्न । ऊभै रांम पातसाही हाथि आयी नहीं, आलम चै 'रांम' कांमि आयां आयी दूसरै 'रतन्न' ।
—रांमसिंघ रौ गीत
उ०—२ तीर सूळ **हूळ** भर खफर रग्त । तइ पीद सगत गड़गड़ा तंत ।—रांमदांन लाळस
२ भय, त्रास ।
उ०—पयोधर पार पय ऊतरै अवध पत, पाजवंध चारसैं कोस पैरा । **हूल** असुरांड पड भूल सुध मांण हट, फिरै चित्त डूल जिम चाक फेरा ।—र. रू.
३ कोई भयंकर पीड़ा, दर्द ।
४ दुख, कसक, वेदना ।
सं. पु.—५ चौदहवीं बार उलटाकर बनाया हुआ शराव ।
उ०—सौ किण भांति रौ दारू, उलटै रौ पलटै, पलटै रौ अैराक, अैराक रौ वैराक, वैराक रौ संदली, संदली रौ मोद, मोद रौ कमोद, कमोद रौ **हूल** ।—रा. सा. सं.
६ देखो 'हुल' (रू. भे.)

हूलाहूल—सं. पु.—वेदना, पीड़ा या कसक जो निरन्तर उठती रहती हो ।

उ०—जेज उठी जिहर इहां, हिवड़ै हूला-हूल। रे परदेसी वल्लहा, हेज हिड़ता हूल।—जलाल बूबना री वात

हूलियौ-सं. पु.—[फ़ा. हुलियः] १ आकृति, शक्ल, चेहरा।

२ रूपरंग, बनावट।

३ किसी मनुष्य की शक्ल सूरत का ब्योरा।

रू. भे.—हूलियौ, होलियौ।

हूवणौ, हूवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दीनासर देदासर करनीसर कूवा, मा करनीसर कूवा। कदम करन्द कमंडळ हरिहर, विधि हूवा, जयमात करनी।

—मे. म.

उ०—२ आंख का गोसा सिव कै जैसा, मन का गंगाजळ, मुकनीणी ज्यूं छदां ऊजळ, ऐसा हजार घोडै राव आंगा हाजर हूवा छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ हित पत धरम कंद वस हूवौ, दियौ साह पूछण कौ दूवौ।—रा. रू.

हूवियोड़ौ—देखो 'होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हूवियोड़ी)

हूवेली—देखो 'हवेली' (रू. भे.)

हूस वि.—१ अड़िग।

उ०—प्रारब्ध प्रतिग्या द्रढ प्रतीत, पुरुसारथ प्रग्या परम प्रीत। रनवंका ध्वज धज धुर रहंत, हैं कौन हूस रट्ठोर हंत।—ऊ. का.

२ अशिष्ट, असभ्य।

३ बेहूदा, उज्जड़, मूर्ख।

हूसनांइक, हूसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिकै छोगाळा छयळ छबीला जुग्रांन हूसनांइक फूलां रा छोगा नाखीयां थकां फूलां रा चोमर पेहरीयां थकां ....।—रा. सा. सं.

हू-हल्लौ-सं. पु.—शोरगुल, कोलाहल।

उ०—भेळा मिनखां में सदा सूं हू-हल्लौ हुंतौ आयौ है, पण कदी तौ आंख में घाल्या नीं रड़कै।—दसदोख

हूहू-सं. पु. [सं.] १ गन्धर्व विशेष। (अ. मा.)

२ देवता।

३ अग्नि के जलने का शब्द, धू-धू, धांय-धांय।

रू. भे.—हुहु, हुहू।

हेंकड़ी—देखो 'हेकड़ी' (रू. भे.)

हेंकड़ीबाज—देखो 'हेकड़ीबाज' (रू. भे.)

उ०—पण कीं तौ राज रै खातर रै लालच अर कीं नटणैं सूं धांणी पिलीजण रै डर सूं हां करदी। राज री हाथ माथै रंवैला-रज सौ अमदू'र हेंकड़ीबाज हा जिणा साळां री आंतड़ियां काड नाखांला, पांनड़ियां रा भचका बोलायदांला....।—चितरांम

हेंड-सं. पु. [अं.] १ हाथ, हस्त।

२ किसी विशेष स्थिति या गुण वाला व्यक्ति।

उ०—कांनजी मिलटरी री रिटायर हेंड एक साधारण घर धणी आदमी हौ।—अमरचूंनड़ी

हेंवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—सोवन-जड़ित सिगार बहु मारुवणी मुकलाइ। गय, हेंवर दासी बहुत दीन्हीं पिंगळ राइ।—ढो. मा.

हेंस, हेंसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू. भे.)

उ०—दत्त राव स्री जोधाजी रौ। बाहरेट रेप चाहैडोत रोहड़ीया नुं। पछै रेपा री हेंस गळी। तेमा चाहड़ोत री हेंस रा हमैं बारैट चूंडौ अखावत छै।—नैणसी

उ०—२ गांव री खेड़ौ विणजारैं फूल रौ बसायौ छै। देहरौ १ कुवौ १ फूल रौ करायौ छै। सु फुलाज कहीजै। सु मेर सुवरत वस बुरड वसैं, हेंसा दौ छै।—नैणसी

उ०—३ वाहळौ १ गांव नजीक छै, तिणां रै बेरीयां पीवै। हेंसौ ४ मेरां रौ छै।—नैणसी

हेंहें-सं. [अनु.]—धीरे धीरे हंसी की आवाज, शब्द।

हे-अव्यय [सं.] १ सम्बोधनात्मक अव्यय जो किसी को सम्बोधन करते समय या पुकारते समय उसके नाम के पहले बोला जाता है, अरे, ओ।

उ०—१ हे किरतार किसिउं कीउं, अतिहिं असंभव एह। अण विमासिउं अचींतविउं, कीचउ कांई जेह।—हीराणंद सूरि

उ०—२ हे मेहाई तोनैं आई री दुहाई वेगी आव।—मे. म.

२ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या शत्रुता द्योतक अव्यय।

३ देखो 'है' (रू. भे.)

उ०—तरै मीयां बुढण कयौ—ऐसा तुमारा भाइ हे तौ हमारी सांडीयां लेवेगा? तरै महेची कयौ—हमांरा भाइ ऐसा ही हे सौ तुमारी सांडीयां लेवेगा।—रा. सा. सं.

रू. भे.—हैय।

हेअर-सं. पु.—हय, घोड़ा, अश्व।

उ०—पडै आर पारं जुवांणं जुवारं। हकालै हेआरं, पीउसै पयारं।

—कल्यांणसिंह वाढेल नगराजोत री वात

हेउ—देखो 'हेतु' (रू. भे.)

हेकंकार-वि.—समान, एक समान, तुल्य, बराबर।

हेकंखण, हेकंखियौ-वि.—विमूढ, अवाक्।

हेकंड-वि.—जबरदस्त, जोरदार।

उ०—मेलै ऊपरै मांखियां, गणणांटा लै गैल। हेकंड कठीनैं हालिया, डवी खलींगण डैल।—ऊ. का.

हेकंपणौ, हेकंपबौ-क्रि. अ.—१ कंपायमान होना, कांपना, थर्राना, धूजना।

२ भयभीत होना, डरना।

उ०—यहां तौ नर दीसै छै कोई, सती तहां हेकंपै होई। राखै सील

भांगेला भोई, हेठी बैठी अंग गुपोई ।—जयवांणी

३ आश्चर्यचकित होना ।

हेकंपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कंपायमान हुवा हुआ, कांपा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ. २ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. ३ आश्चर्यचकित हुवा हुआ ।

(स्त्री. हेकंपियोड़ी)

हेक—वि. [सं. एक]—१ एक, एक मात्र ।

उ०—१ हरीया करता हेक है, दूजा करता नांहि । सोई करता सिसट का, न्यारा घट घट मांहि ।—अनुभववांणी

उ०—२ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जांणि गुरु, नांम लियौ दमघोख नर । हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै सुसा सिसुपाळ वर ।

—वेलि

उ०—३ अबै बीनती हेक हिंगोळ वाळी, जिका ध्यांन दै कांन कीजै धजाळी । लहैरी महैरांण भूपाळ 'लच्छौ', 'अंखौ' दूसरौ रीभ खीजाळ अच्छौ ।—मे. म.

उ०—४ हेक धकौ चौड़ै हुवां, असमर करांआ देस । डेरा डेरां वत्ताड़ी, डेरा डेरां जोस ।—रा. रू.

२ करीवन, अंदाजिया, अनुमानित ।

उ०—१ पूरव गयौ देवजी क पासि, चहचौ संनेसौ करि अरदासि । हेक ऊंठ कीता हेक दांम, देव देस्यौ तौ रहिसी मांम ।

—वि. सं. सा.

उ०—२ बीजा ही सगडि दपेसै समेत सहि लावां भला आदमी साठि हेक उठा खड़ि अर राजड़वाळै आइ ऊतरिया ।—द. वि.

सं. स्त्री.—एक की संख्या । (डिं. को.)

उ०—१ पूरव गयौ देवजी क पासि, कहचौ संनेसौ करि अरदासि । हेक ऊंठ कीता हेक दांम, देव देस्यौ तौ रहिसी मांम ।

—वि. सं. सा.

उ०—२ सींगाळी अवखल्लणौ, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुरांणी वाड़ जिम, जिण जिण मत्थै पाय ।—हा. भा.

क्रि. वि.—१ एक तरफ, एक ओर, एक तो ।

उ०—हेक पराया जव चरौ, हालौ ऊगां सूर । दाढाळा भूडण भणै, भागौ भाखर दूर ।—हा. भा.

२ कई, कुछ ।

उ०—जळ जाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल । आधौ फरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल ।—वेलि

हेकड़—वि. [सं. हल्कटु] १ एक ।

उ०—सय हेकड़ सीरावणी, हूकौ वीजै हात । माथा ऊपर मींगणा, (ऐ) लाखबरीस लसात ।—किसोरसिंह बारहस्पत्य

२ अड़ियल, उद्दण्ड ।

३ देखो 'एकड़' ।

हेकड़ी—सं. स्त्री.—१ उद्दण्डता, अड़ियलपना ।

२ बल प्रयोग से किया जाने वाला कार्य, जबरदस्ती, जोरावरी, बलात् ।

३ शेखी, शान, अकड़ ।

उ०—फूलचंदजी रौ एक पोतौ गोरधन भाई, डूंगर कालेज सूं फैल हुय'र आयौ । देस सूं भाज्यौ, दिसावर रौ कांम संभाळचौ । खाता पत्तर खोल्या, हेकड़ी छांटी ।—दसदोख

४ गर्व, अभिमान, मान ।

उ०—१ लुगाई रौ जमारौ पाय थूं जापा री पीड़ नीं भुगती तौ बाकी सगळा सुख भूठा है । थोथी हेकड़ी रौ भरम छोड़ अर इणी पगां पाधरी-पाधरी वीकांणै ढळजा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण घणां दिनां तक कोसिस करतां थकांई हाजरिया नै रंभा री हेकड़ी तोड़ण रौ मोकौ नहीं मिळचौ ।—रातवासौ

५ हठ ।

उ०—औ खांगौ अवियाट, तुरकां ही नूं तेवड़ै । भाला ही नूं भाट, हालां ही नूं हेकड़ी ।—नैणसी

रू. भे.—हेंकड़ी ।

हेकड़ीबाज—वि.—१ शेखी मारने वाला ।

२ गर्वीला, घमण्डी ।

३ शक्तिशाली, बलवान ।

रू. भे.—हेंकड़ीबाज ।

हेकड़ौ—वि.—अकेला ।

उ०—रूक बहादर राड़ मैं मुज आभ लगाई, हिंद विलायत हेकड़ौ तूं वीर कहाई । एकै 'पातल' ऊजळा छत्रपत साराई, एकै चंदै ऊजळा नव लाख लखाई ।—मोडजी आसियौ

हेकठ, हेकठा, हेकडा—क्रि. वि.—१ इकठ्ठा, एकत्र ।

उ०—धर न गम पंछी पाटौ धर, हेकठ जुग युग घणा हुआ । दळ फळ डाळां पंछी दूखावै, द्रमुंग म खावै रतन दुवा ।

—छत्तरसिंघ हाडा रौ गीत

२ एक साथ, साथ-साथ ।

उ०—१ वीकमसी रावळ वदै, करदै जौ करतार । हूं जेसळगिर हेकठा, वाळै प्रधांनै वार ।—नैणसी

उ०—२ सवद वतावै हेकडा तव होय कल्यांणा ।

—केसोदास गाडण

३ मिल-जुल कर, सम्मिलित होकर ।

४ एक ही जगह, एक ही स्थान पर ।

हेकण—देखो 'एकण' (रू. भे)

उ०—१ चरख्यां चटीठ अंगीठ चख, पीठ समोवड़ पालणां । पाकेट सज्या सौ कोस पथ, हेकण चांटी हालणां ।—मे. म.

उ०—२ मूवौ न कोई मीर छल, च्यार खूंट कांनै चड़ी । हैरांन आठ हेकण संमै, हुआ ज मुरधर बापड़ी ।—वि. सं. सा.

उ०—३ आलम हाथ रौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक ।

[illegible] हेकरा संग ।—र. ज. प्र.

उ०—४ सद ग्रीमर वठो घमसारा । हटकै हेकल पांच हजारां ।

—सू. प्र.

हेकणजमै-वि.—इकट्ठा, एकत्रित ।

उ०—तुरै मुसायब मांन यार कीया हेकणजमै, नै पड़ै ग्रनेकां काळ लेरा भमै । नरमा गोची मरण जाण ग्रानां नमै, ऊरसरी तेग भाटी सरग ग्रगमै ।—जमजी ग्राटी

हेकणि, हेकणी—देखो 'एकरण' (रू. भे.)

उ०—१ हेकणि हाथ ग्रछर हयलेवो । करि हिक खग वाहं वर लेवो । —सू. प्र.

उ०—२ वेदांगन धम्म विचारि वेदविद, कंपिन चित्त लागा ग्रहण । हेकणि नुपी नरिम किम होवै, पुनह पुनह पांणि ग्रहण ।

— वेलि

उ०—३ वेहरी मर्म कळाइयां, महिरज रत्तड़ियांह । हेकणि हाथळ गैहणी, दन दुहत्था ज्यांह ।—हा. भा.

हेकमन-स. पु.—१ मन मिलने की ग्रवस्था या भाव ।

२ एक मन, एक राय, मतैक्य, सहमत ।

३ एक मन, ऐक्य ।

४ एकाग्रता ।

उ०—स स करिनि दीन हिव हुए हेकमन, जाइ जादवां इंद्र जत्र । माहरै मुख हंता ताहरै मुखि, पग वंदण करि देइ पत्र ।—वेलि

५ प्रेम, प्यार, स्नेह, ग्रनुराग । (ग्र. मा; ह. नां. मा.)

हेकमहेक—देखो 'एकमेक' (रू. भे.)

हेकर—देखो 'एकर' (रू. भे.)

हेकरसां, हेकरसूं, हेकरसे, हेकरसै—देखो 'एकरसू' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां दरवानी फेर ग्राय ग्रर कही, 'माहाराज, चारण कहै छै, हेकरसां मांनू हजूर ग्रावण देवौ ।

— मूळवै मांगावत री वात

उ०—२ ताहरां सांगमराव ऊठ ग्रर नगारौ करायौ । सांगमराव कुटक ऊपर चढियौ । ताहरां भाईयां कह्यौ—'जी, हेकरसूं तौ वैर रौ वैर लेग्रो । —नैणसी

उ०—३ तद हेकरसै दिन च्यार हुइ गया सौ वळ रो ढंग नहीं बैठो तद कही—रे ग्रो इसो दरिद्र री भाटी छै, सो परो काढौ ।

—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

उ०—४ तद कुंवरसी कही फेर बुलास्यौ जद हाजर छां पण ईव हेकरसै सीख दिरायजै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

हेकल—देखो 'एकल' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदरि बिनां न सारतै, निसदिन करतै नेह । सै जंगळ मैं पोढिया, हरीया, हेकल देह ।—ग्रनुभववांणी

उ०—२ जिना नै वार विजै कल्पन, वांधी नै ग्रंग प्रथी वळवंत । इसडी सेना वार हमल्ल, मयै महरांणव हेकल मल्ल ।—ह. र.

उ०—३ कूंभेण दससिर ग्रासंती, पह भंज हेकल रघुपती । रिण कुंभ सुरघण मार रांवण, कठण खळ जण कीध कण कण ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ गयणाग सीस छिवतै गरूर, सभ फतै ग्रावियौ दियौ 'सूर' । गवां बचाय थट मुगळ गाय, मारै गिड हेकल दिली माय ।

—वि. सं.

हेकलगिड़—देखो 'एकलगिड़' (रू. भे.)

हेकलि, हेकली-वि. स्त्री.—ग्रकेली ।

उ०—ग्रवही मेली हेकली, करही करड कळाप । कहियउ लोयां मांमि-कउ, सुंदरि, लहां सराप ।—ढो. मा.

हेकले, हेकलै-वि.—ग्रकेले ।

हेकलौ, हेकल्लौ—देखो 'एकलौ' (रू. भे.)

उ०—१ घाव घण थटां ग्रत पिसण दळ घालणौ । पांच सै पाखरचा हेकलौ पालणौ ।—हा. भा.

उ०—२ पछिम दिस भिडांणां वाप बेटा पछिम, भिड़ै पूरब दिसा बिन्हे भाई । हेकलौ वळा री दिखण चढियौ हठी, कठै बांटी नहीं कुळ कमाई ।—सुभरांम गौड़ री गीत

(स्त्री हेकली, हेकल्ली)

हेकहेकोज-वि.—एक ही, ग्रकेला ही, कईयों में एक ।

उ०—नारी गांठियां सूंठ दूजी न खायौ, जनूनी तुंही हेकहेकोज जायौ । ग्रायौ नाग सूं भूझ लेवा ग्रतागै, ग्रडीला हुग्रा ग्राज पाछा न ग्रागै ।—ना. द.

हेकहेकौ-वि.—ग्रकेला, केवल ग्रकेला ।

उ०—ग्राजीम पाय कहियौ तिकां, वाह विनोधिन वाहुजा । लाख हूं हेकहेकौ लड़ण, भुजठाळक भाली भुजां ।—मे. म.

हेकांणी-वि.—१ एक ।

२ ग्रकेला ।

३ एक बार ।

हेकांणवइ-वि.—नव्वे तथा एक, इक्याणवे, इकराणवे ।

उ०—नइ पतिमाह तणेह पायांणउ पारंभ सुणी । हळहळिया हेकांणवइ गढपति गर्म-गमेह ।—ग्र. वचनिका

सं. स्त्री.—इक्याणवे की संख्या व उक्त संख्या का ग्रंक ९१ ।

हेका-वि.—१ एक ही ।

उ०—प्रमेसर सांभळ देव पुकार, विदेवा सज्ज हुवौ तिण वार । ग्रिहां सूं हेका लीग्रो ग्राय, नरोवर मांभ कियौ जुध नाथ ।—ह. र.

२ ग्रकेला ।

क्रि. वि.—१ एक ग्रोर, एक तरफ ।

उ०—धुनि वेद सुणनि कहुं सुणति संख धुनि, नद भल्लरि नीसांण नद । हेका कह हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद ।—वेलि

२ इधर-उधर ।

३ देखो 'एका' (रू. भे.)

हेकार—देखो 'हकार' (रू. भे.)

हेकारु, हेकारू—देखो 'एकारू' (रू. भे.)

हेकाहेक, हेकाहेकी—देखो 'एकाएक' (रू. भे.)

उ०—१ खंडन मंडन मूरत सेवा, श्रापौ श्रापी श्रलख श्रभेवा। मात पिता सुत भात न कोई, हेकाहेक निरंजन होई।

—श्रनुभववांणी

उ०—२ ताहरां राव रिणमलजी हेकाहेक पगडांडी चढिया। वांसै फौज चढी। ताहरा सीहणी री थह बरावर गया।—नैणसी

हेके, हेकै—देखो 'एकै' (रू. भे.)

उ०—१ सूरौ सोई सांम बिन, गहै न दूजी श्रोट। हरीया हेकै चोट सूं, मारै मन का खोट।—श्रनुभववांणी

उ०—२ ताहरां हेकै रजपूत नूं भुवाळा हूं भालि भोकि करि नींचौ नांखियौ।—द. वि.

हेकोहिक, हेकोहेक—क्रि. वि.—एक-एक करके, बारी-बारी से।

उ०—पत्रां भरि रत्र हेकोहिक पांण। श्रांणै कर कंठ कढावत श्रांण।—मे. म.

हेकौ—सं. पु.—१ एक की संख्या का श्रंक, '१'।

क्रि. वि.—एक बार।

उ०—हमाऊ परां तोकरां छांह हेकौ, न कौ पार श्रोतार थारा श्रनेकौ।—मे. म.

२ देखो 'एकौ' (रू. भे.)

उ०—१ सीहणि हेकौ सीह जणि, छायर मंडै श्रालि। दूध विटाळण कापुरस, बौहळा जणै सियालि।—हा. भा.

उ०—२ जती बोलियौ बालिनूं रांम जारै। महाबाह हेकौ बहै बांण मारै।—सू. प्र.

उ०—३ हरीया सीप समंद मैं, हेकौ बूंद संनेह। पतिवरता सौ पीव विन, करै नि किन सूं नेह।—श्रनुभववांणी

हेखारव—सं. पु. [सं ह्रस या ह्लेप] शब्द या श्रावाज।

उ०—पछै वांणी फारक तणी पद्धति, ततौ हस्तीघंटा सीत्कार करती, पाखरीयांनी श्रेणी हेखारव मेल्हती, पंच सब्द तणा निरघोख जमला उच्छलइं।—व. स.

हेखि—सं. पु. [सं. हर्ष] खुशी, प्रसन्नता, हर्ष।

उ०—भूभतां न्रप सवै जउ वारउं, जइ किमइ न्रप सुयोधन मारउं। तउ युधिस्टिर पराभव पेखी, काइं वात करसिइ श्रति हेखि।

—सालिसूरि

हेग्रिव, हेग्रीव—देखो 'हयग्रीव' (रू. भे.)

उ०—देवी रूप हेग्रीव रै निगम सूख्या, देवी हेग्रिवं रूप हेग्रीव धूंस्या। देवी राहु रै रूप तैं श्रमी हरिया, देवी विस्णु रै रूप तैं चक्र फरिया।—देवि.

हेड़—सं. स्त्री.—१ चौपाये जानवरों की भीड़, समूह, वर्ग।

उ०—पावस हुयां व्यतीत, टिकै ना टीब ठिकांणै। व्रंत-गत भागा दौड़, हेड़ रमबा हल मांणै।—दसदेव

२ भीड़, समूह।

उ०—लोगां री हेड़ श्रावती देखी तौ सेठ हळफळाया होय पाछा नाडी मै वड़ग्या।—फुलवाड़ी

३ जानवर या मनुष्य जाति के किसी एक ही वर्ग के समवयस्क प्राणियों का समूह, टोली, वर्ग।

उ०—दीवांण रै सागै राजाजी ध्यांन देय एक-एक उणियारा री छांणबीण करता हा। श्राखी हेड़ मांय सूं फगत पांच लुगायां टाळणी।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हेड़ि, हेड़ी।

हेड़णौ, हेड़बौ—क्रि. स.—१ हांक कर ले जाना, हांकना।

उ०—१ 'हैमत्त' सत्र हेड़तौ, श्रठी मेड़तियौ श्रायौ। श्रसुरां दळ ऊपर, सार वाजियौ सवायौ।—रा. रू.

उ०—२ तेड़ियां बाराह लोह छोड़ियां भमंग तिसा, खेड़िया ब्रजागि जांणै रांम सखा छंद। हेड़िया पिनाकी वाच गणां रा समूह हलै, नेड़ियां सुभट्टां राखै 'भगतेस' नंद।

—सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—३ धड़छतौ कूरमां गजां देतौ धका, हेड़तौ रिमांपति समौ हाथै।—वीरभांण रतनू

२ एकत्रित करना, इकट्ठा करना, घेरे में लाना।

उ०—हैदळ गैदळ प्रवळ हेड़तै नीजोड़तै किता नर नाह। समरथ कही न सकू सूरावत, गुण म्हारां थारा 'गजगाह'।

—केसोदास गाडण

३ भगाना, पीछा मोड़ना, डराना।

उ०—चातुरंगी वरोळण थाटकै श्रावळा चमु, मुकाजवा वळां खळा दाटकै भनेव। श्रारांण छेड़ीयां चखां भाटकै व्रजाग श्राग, भाटकै वचाळै श्रंबा हेड़ीयां जनेव।—जत्रांनजी श्राढौ

४ ललकारना, चुनौती देना।

५ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना।

६ छोड़ना, बंधन मुक्त करना।

उ०—श्रायौ उरेड़ियौ जोम रौ पटेल माथै धारै श्रांट, रवत्तेस दूर हूं तेड़ियौ काथै राग। सांकळां हूं लांबणीक हेड़ियौ बीहतौ सेर, पूछ चांप सूतौ फेर छेड़ियौ पैनाग।—बद्रीदास खिड़ियौ

७ चलाना, फैंकना।

उ०—पथ खतंग हेड़बौ यंद ससत्र पाछटां, त्रखग परि खेड़बौ मंगळसिंग तेम।—सहसमल राठौड़ रै भाला रौ गीत

८ रखना, डालना, पटकना।

९ खदेड़ना।

१० देखो 'हेरणौ, हेरबौ' (रू. भे.)

हेड़णहार, हारौ (हारी), हेड़णियौ—वि० ।
हेड़ियोड़ौ, हेड़ियोड़ौ, हेड़्योड़ौ —भू० का० कृ० ।
हेड़ीजणौ, हेड़ीजबौ—कर्म वा० ।
हेड़वणौ, हेड़वबौ, हेड़वणौ, हेड़वबौ—रू० भे० ।

हेड़रणौ, हेड़वौ—देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ' (रू. भे.)

हेड़वरीस-वि.—घोड़ों के समूह का दान करने वाला दानी ।
उ०—सुर दाता येम कहै गोवरधन, हेड़वरीस कल्यांण हरौ। किसूं सिणगार हुवै तन कीधां, कीरति तणौ सिणगार करौ ।
—गोरधन कल्यांणोत रौ गीत

हेड़ रौ सिणगार-वि.—किसी भीड़, समूह या वर्ग में जो सर्वश्रेष्ठ हो ।

हेड़व—देखो 'हेडाऊ' (रू. भे.)

हेड़वणौ, हेड़वबौ—१ देखो 'हेरणौ, हेरबौ' (रू. भे.)
उ०—इणरै नणद रै कनै नाळेर पेड़ में हेड़व देखनै वाली हंसी हंसण रौ कारण नणद नै पती रौ भरोसो है जुद्ध में मारीस सी नद म्हनै मन करणौ है।—वी. स. टी.
२ देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ मेदनियौ सूरो पग समरथ, हेड़वण दुयण भारत्थ हत्थ ।
—रा. रू.
उ०—२ धरियौ अणी मुहरि गिरधारी, हैवै दळ हेड़वण हजारी ।
—वचनिका
उ०—३ चगत्थां सथां हेड़वै खग्ग चांपां, करै हाथियां हाथ भाराथ कपा। करभीन कूता अरी नाग काळां, हटावै बुजै सिंघ जेहा हठाळां ।—रा. रू.
हेड़वणहार, हारौ (हारी), हेड़वणियौ—वि० ।
हेड़विओड़ौ, हेड़वियोड़ौ, हेड़्व्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हेड़वीजणौ, हेड़वीजबौ—कर्म वा० ।

हेड़वियोड़ौ—१ देखो 'हेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'हेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हेड़वियोड़ी)

हेड़वियौ, हेड़वीयौ-वि.—१ 'हेड़ने' वाला ।
२ वीर ।
उ०—पाळां ऊपर पात, वाद भर्ने वीजूभळां। हेड़विया खड़ हाथ, धुरजाळां घोरां घकै ।—पा. प्र.

हेड़ाउ, हेड़ाऊ-सं. पु. [सं. हेडावुक्क:] १ घोड़ों का व्यापारी. सौदागर ।
उ०—१ श्री ऊनड़ लाखां अहिनांणै, वसुह उवारण वारां। घोड़ा दै घमड़ोह घातिया, हेड़ाऊ हेकारां ।—नैणसी
उ०—२ हेड़ाऊ का तुरीयं ज्युं। तुयै दिन दिन हाथ फेरनइ सौ वार ।—बी. दे.
२ पशुओं का व्यापारी ।
३ पशुओं को घेरने वाला, ढूंढने या तलाश करने वाला ग्वाला ।
वि.—जाने वाला ।
उ०—तरै रावळ कह्यौ—कुण वास्तै ? आपै तौ सरगरा हेड़ाऊ छां, तोनूं दिलगीरी मन में क्यूं आई ?—नैणसी
रू. भे.—हीड़ाऊ, हीडाऊ, हेड़व, हेडाउ, हेडाऊ ।

हेड़ि-वि.—१ 'हेड़ने' वाला ।
२ तलाश करने वाला, लौटाने वाला ।
३ देखो 'हेड़' (रू. भे.)

हेड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हांक कर लेजाया हुआ, हांका हुआ. २ एकत्रित किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, घेरे में लिया हुआ. ३ भगाया हुआ, पीछा मोड़ा हुआ, डराया हुआ. ४ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ. ५ उत्साहित किया हुआ, प्रोत्साहन दिया हुआ. ६ चलाया हुआ, फैंका हुआ. ७ रखा हुआ, डाला हुआ, पटका हुआ. ८ छोड़ा हुआ ।
९ देखो 'हेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हेड़ियोड़ी)

हेड़ी—१ देखो 'हेड़ि' (रू. भे.)
उ०—लोटचै तोड़चौ पींजरो, रै करण्यै काटी वेड़ी। हाथ पकड़ वायर करचौ, कोई बौ वंधवां की हेड़ी ।
—डूंगजी जंवारजी री छावली
२ देखो 'हेड़' (रू. भे.)

हेड़ौ-सं. पु.—वह बड़ा भोज जिसमें हर जाति के, हर प्रान्त व हर आगन्तुक व्यक्ति को भोजन कराया जाता है और किसी के लिये कोई प्रतिवन्ध नहीं होता ।

हेच-वि. [फा.] १ तुच्छ, नाचीज, छोटा ।
२ व्यर्थ, बेकार ।

हेचणौ, हेचबौ—देखो 'हिचणौ, हिचबौ' (रू. भे.)
उ०—हेचै दळ सोभा हरौ, जूटौ जोगीदास। कुसळावत उजवाळ कुळ, वसियौ सुरपुर वास ।—रा. रू.
हेचणहार, हारौ (हारी), हेचणियौ—वि० ।
हेचिओड़ौ, हेचियोड़ौ, हेच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
हेचीजणौ, हेचीजबौ—कर्म वा० ।

हेचियोड़ौ—देखो 'हिचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हेचियोड़ी)

हेज-सं. पु. [सं. हृदयज, प्रा. हियज] १ दाम्पत्य प्रेम, प्यार ।
उ०—भांवण तुरत जवाब दियौ—इण में विचार करै जैड़ी कांई वात, धणी-लुगायां रै हेज तौ व्हैणौ ई चाहीजै, बिरथा लड़णा में कांई सार ।—फुलवाड़ी
२ मन, दिल, चित्त ।
उ०—सेजां आवै सुंदरी, जद सोभा दै सेज। तौ बिन सेज विरंगियां, कही न लागै हेज ।—कुंवरसी सांखला री वारता
३ इश्क, लगाव ।
उ०—हरिद्रा तणउ रंग, पांणी तणउ तरंग, दासि तणउ हेज,

आंवा तणउ मउर कालालनउं लेखउं''''।—व. स.

४ स्नेह, ममता, प्रेम, लाड, दुलार।

उ०—१ जिण कुंवर सूं राजा रै हेज, वलै 'केसी' नांम भांणेज।
—जयवांणी

उ०—२ मही अरीयां-नइं मांनीइ, भली परि भांणेज। आसा पूगइ बहिनिनी, हरखि आंणइ हेज।—मा. कां. प्र.

५ वात्सल्य प्रेम।

६ दोस्ती की भावना, दोस्ती, प्रेम, हेत।

उ०—गंगा पाखइ जळ नहीं, वंधु पाखइ वळ नहीं। मित्र पाखइ हेज नहीं, रवि पाखइ तेज नहीं।—रा. सा. सं.

७ मेल-मिलाप।

उ०—फूस नी आग, जमाइ नौ भाग, कस्बौ ताग पांणी नौ साग। दीवा नौ तेज, दुरजन नौ हेज, उधारा नौ वैपार रांड नौ सिणगार।
—रा. सा. सं.

८ श्रद्धा।

उ०—सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी सांभलौ, विनय तणा ज वयण। हुं तुझ चरणें हो आयौ ध्यायौ हेज सुं, साचौ जांणी सइण।—वि. कु.

९ आदर, सम्मान।

उ०—डाढ़ाळी कीं पडूत्तर देवै उण पै'ला चीलहरा हेज छळकावता कैवण लागा—जलम देय पगां आपौ संभळायां पछै आप दोनां रौ फरजन तौ पूरौ व्हियौ। —फुलवाड़ी

१० स्वाद रस।

उ०—अनइ द्वितीय रीत्या, मेघ पाखइ जळ नहीं, बांह पाखइ बल नहीं, अन्न पाखइ हेज नहीं चक्षु पाखइ तेज नहीं।—व. स.

रू. भे.—हेजि, हैज।

हेजइ—क्रि. वि.—'हेज' से प्रेम से, प्यार से।

उ०—चंद चकोर तणी परइ, निरखंता सुख थाय। हीयडुं हेजइ उल्हसइ, आणंद अंगि न माय।—स. कु.

हेजणौ, हेजवौ—क्रि. स.—१ प्रेम करना, प्यार करना, मुहब्बत करना।

उ०—यै चारों पद पलिंग कै, सांई की सुख सेज। दादू इन पर बैस कर, सांई सेती हेज।—दादूवांणी

२ लाड करना, दुलारना या दुलराना।

३ वात्सल्य भाव से द्रवित होना।

उ०—वा कुत्ती म्हारै सूं तौ लाख गुणा वत्ती बड़ भागण है। कूकरियां नै हेज, बोवा तौ चुंघाया।—फुलवाड़ी

४ उल्लसित होना, उमंगित होना।

उ०—हंस गमणि हेजइं हीइं, राति दिवस सुख संग। रांणौ लीण हुऔ तुरत, जिम चंदन तरुहि भुजंग।—प. च. चौ.

५ दोस्ती या मित्रता करना।

६ मेलमिलाप करना।

७ श्रद्धा होना, आदर करना।

८ रस लेना, स्वाद लेना।

९ इश्क या लगाव होना।

हेजणहार, हारौ (हारी), हेजणियौ—वि०।

हेजिओड़ौ, हेजियोड़ौ, हेज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हेजीजणौ, हेजीजवौ—कर्म वा०।

हेजम—देखो 'हैजम' (रू. भे.)

हेजाळु, हेजाळू, हेजालू—वि.—१ जिसके मन में प्रेम हो, स्नेह हो, प्रेमी, स्नेही।

उ०—आज हो हेजइ रे हेजालू हियडै हरखियइजी।—त्रि. कु

२ जिसमें वात्सल्य हो।

हेजि—क्रि. वि.—१ 'हेज' से, प्रेम से, प्यार से।

उ०—सवल पणइ सघली अवल, ऊजाइ असि वेगि। जोइ माधव आवतु, हरखइ हीयडा-हेजि।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हेज' (रू. भे.)

उ०—इम जांणी अति अलवइं, आपइ रति फल सार। कपट-हेजि हलती करइ, लोभ न गणइ लगार।—मा. कां. प्र

हेजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रेम, प्यार या मुहब्बत किया हुआ। २ लाड किया हुआ, दुलारा हुआ, ममत्व युक्त. ३ उल्लसित या उमंगित हुवा हुआ. ४ दोस्ती या मित्रता किया हुआ. ५ मेल मिलाप किया हुआ. ६ आदर किया हुआ, श्रद्धा युक्त. ७ रस या स्वाद लिया हुआ. ८ इश्क या लगाव हुवा हुआ. ९ वात्सल्ययुक्त। (स्त्री. हेजियोड़ी)

हेजी-मोगर—सं. पु.—आग पर पकाई हुई निम्न जलांशीय चने की दाल, 'फरकी' चने की दाल।

उ०—अमल खावै, चूंटियौ चूरमौ चाटै। ऊपर सूं हेजीमोगर अर प्याज पापडां रा साग लहसण रै लाल झोळ मैं फलकां री मोळ मेटण जीमै है।—दसदोख

हेजे, हेजैं, हेजै—क्रि. वि.—प्रेम से, प्यार से, श्रद्धा से।

उ०—१ (विद्या) पदमणी सेजै पोढुं नहीं रे, हेजै न करूं रे, संग। पदमणी ऊपरि कीजै उवारणा रे, राज रमणी सरवंग।
—प. च. चौ.

उ०—२ आज रा मीत बहुला इसा, कोई गिणैं नहीं हित कियौ। कहौ इसै मित्र धरमसीह कहै, हेजें किम विकसै हियौ।
—ध. व. ग्रं.

उ०—३ दादू तौ पिव पाइयै, भावै प्रीति लगाइ। हेजै हरी बुलाइयै, मोहन मंदिर आइ।—दादूवांणी

हेजौ—देखो 'हैजौ' (रू. भे.)

हेट—वि.—१ निम्न स्तर का, नीचा।

उ०—पछै सं. १६५२ राजा सूरजसिंघ लवेरा वांसै गांव २५ दिया, तठा पछै परधांनगी दी। पछै सं. १६६३ लवेरा रै पटै ऊपर आसोप

गो गयो । [illegible] माहे हेट री जैनवार हुवौ ।—नैणसी

२ [illegible] हीन, नाचीज ।

रू. भे.—हेट ।

३ देखो 'हेटै' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] गांगी री हेट, मंडक महलां हेट । सुकोमल साथ, [illegible] हुवौ, मुज बणी ए ।—जयवांणी

उ०—२ मन जांणै मीरग हुग्रां, वींटै धान वहंत । वींभी ढाळै ढोलियो, पार्गं हेट रहंत ।—ग्रग्यात

हेटड़ी—देखो 'हाट' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—[illegible] हीण तन हेटड़ी, निज मन परखणहार । जन हरीया [illegible], मोल मोल की मार ।—ग्रनुभववांणी

हेटणौ, हेटबौ—क्रि. स.—नीचा दिखाना, निस्तेज करना ।

उ०—गगाटां भाट वैडाक तीखा खड़ै, मगज करता जिकै घणू मन मैं । 'जगा' ग्रजरेल हूंतां गूमर जेटियां, दोय तड़ हेटिया हेक दिन मैं ।—जगवंतसिंह चूडावत रौ गीत

हेटलौ—वि. (स्त्री. हेटली) नीचे का, नीचे वाला ।

उ०—१ देवीसिंगजी वगरै पकड़िया ज्यांनूं रस्सी सूं वांध भोजन-साळा हेटली ग्रोरियां ज्यां मैं घालिया ।—वां. दा. ख्यात

उ०—२ मेठांणी री हेटली सास हेटै ग्रर ऊपरली सास ऊपर । हळफळाई होय बोली—थूं मां रै साथै ई धोखौ करैला कांई ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ मिंदरा रा हेटला पगोतिया माथै एक कोढ़ण बैठी माखियां उडावती ही ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हेठलौ, हेठिलौ ।

हेटवाळियौ—वि. (स्त्री. हेटवाळण) १ मातहत, ग्रधीनस्थ ।

२ नीचे का, नीचे वाला ।

३ जो दबता हो, दबाव में ग्राकर रहने वाला, ग्रपमान सहन करने वाला ।

हेटा—क्रि. वि.—नीचे, नीचे की ग्रोर ।

उ०—दाटां (दातड़ी) सूं सूरवीरां नैं ग्रोभाड़िया भटको दै हेटा न्हांकिया ।—वी. स. टी.

वि.—नीचा, निम्न, न्यून ।

रू. भे.—हेठा ।

हेटि, हेटी—क्रि. वि.—१ नीचे जमीन पर ।

उ०—भागां चढी चरी वेटी रै हाथां हेटी पड़गी........ ।

—फुलवाड़ी

२ नीचे की ग्रोर, ग्रव्यवस्थित, नीचे स्थित ।

३ नीचे ।

४ देखो 'हेठी' (रू. भे.)

रू. भे.—हेठि ।

हेटियां—क्रि. वि.—नीचे से । (गंगानगर)

रू. भे.—हेठियां ।

हेटे, हेटै—क्रि. वि.—१ नीचे की ग्रोर, नीचे, ऊंचाई से नीचे की ग्रोर ।

उ०—१ काळा लोई री तूंताड़ियां पळकती पगोतियां हेटै ढळण लागी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थांनै कोई जोसी भरमाय नै गियो । हेटै उतर ग्राडो खोलौ, म्है साव उघाड़ा हां, उजास व्हैगी तौ भूंडी व्हैला ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ ठाकरसा घोड़ा सूं हेटै उतर बेटा नै संभाळियौ तौ वा माटी ।—फुलवाड़ी

२ जमीन पर, ग्राधार पर ।

उ०—१ पण कंवरसा कांनी सूं राव रत्ती ई हरकत नीं व्ही तौ उण रै हीयै सरण चाली । हेटै सुवांण देह री सावळ जांच करी ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ मासी कीं ग्रागै ई कैवती ही कै उणरा पग मैं सूळ खुवगी । उठै ई हेटै बैठ सूळ काढ़ण लागी ।—फुलवाड़ी

३ किसी के नीचे, ग्रधीन, ग्रधिकार में ।

उ०—१ जूंजणूं रा भोजराजोत ज्यां हेटै नव सौ गांव है ।

—वां. दा. ख्यात

४ तल में, दायरे में ।

उ०—१ दंती हिंडौळै भरोखां हेटै खुंमाळा भाटका देता ।

—माधोसिंघ सिसोदिया री गीत

उ०—२ ठौड़-ठौड़ कचरा रा ढिगला, ग्रांगणा रा नींवड़ा हेटै बींटां रा थोकड़ा, ऐंठवाड़ा वासण, उघाड़ी परींडी री ग्रर भरणाट करती माखियां । सगळा घर माथै एक ग्रजांणी उदासी, एक ग्रण बोली छियां ।—ग्रमरचूंनड़ी

८ नीचे ।

उ०—१ कांनजी माथै तौ जांणै विजळी पड़गी । पगां हेटै सूं धरती खिसकगी ।—ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ सूळी चाढ़णौ, सिंघ रा पींजरा मैं न्हाकणौ, हाथी रा पग हेटै किचरावणौ, माथै वाद बंधाय मारणौ''''।—फुलवाड़ी

उ०—३ उडता विमांण रौ पायौ भाल हेटै टिरगी ।—फुलवाड़ी

५ ऊंचाई से नीचे ।

उ०—१ कै इत्ता मैं पुटियौ हेटै उतरतौ कैवण लागौ—

—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रेक दिन सोनल-वरणी कंवरांणी भिरोखा मैं बैठी सोना री कांघसी सूं केस सुळभावती ही । तूट्योड़ा केसां री कोयौ हेटै फैंक्यौ तौ ग्रेक उडती चील उणनै झांप लियौ ।—फुलवाड़ी

६ ग्रधोभाग में ।

उ०—लोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी कांनी मुरजां ३ कराई । तिकै ग्रदूरी रही ।—मारवाड़ री ख्यात

हेटो—वि. (स्त्री. हेटी) १ नीचा, निम्न, निम्न स्तर का ।

उ०—गया पाप परदेस, पहौम जित घुरतै बेठा । गंग चढी ब्रह्मंड, अटचा हर करता हेटा ।—ह. पु. वां.

२ नीच, तुच्छ, हीन ।

३ जिसकी ऊंचाई कम हो ।

४ नीचा, नीचे ।

५ शान्त ।

उ०—विगर मदत नरमी रै क्रोध किणी बादसाह री हेटौ न वैठै । —नी. प्र.

रू. भे.—हेठौ, हेटौ ।

हेट्टिम, हेट्ठिम–वि. [सं. अधोवर्ती] जघन्य संयमधारी, केवल वेषधारी, 'अधोवर्ती' (जैन)

हेठ–वि.—१ नीचा ।

२ कम, घटकर ।

रू. भे.—हैठ ।

३ देखो 'हेटै' (रू. भे.)

उ०—१ दिन येता रही वरै नह दूजौ, जुध केता बीता जम जाळ । साही चाल अछर तिय सहति, वाही उत्तरि हेठ वरमाळ । —उदैभांण राठौड़ री गीत

उ०—२ यादव कुळ ना सेठ नैं, जेठ कही समझाय । नांणी द्रेठ नैं हेठ तै, मौ मैं कवण अन्याय ।—ह. पु. वां.

उ०—३ सुर नर मुनिवर वस कियै, ब्रह्मा विस्णु महेस । सकळ लोक कै सिर खड़ी, साधू कै पग हेठ ।—दादूवांणी

हेठलौ–देखो 'हेटलौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक उसीसइ तडफडइ, पांगति पडीया एक । सिज्या हेठलि साथरइ, सूता रहइ अनेक ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ सरप कही–म्हारै छाती हेठली मूठी दोय धूळ लेय जा । तोनूं जिकौ विरोध भाव जोवै तिकां ऊपर एक चुटकी धूळ गेरजै सौ भसम होय जासै ।—सांई री पलक मैं खलक री वात

उ०—२ गळा हेठला केस, कक्षादिक गुह्य प्रदेस । तै संवारै नहीं ए विरेचन लेवै नहीं ए ।—जयवांणी

(स्त्री. हेठली)

हेठा—देखो 'हेटा' (रू. भे.)

हेठि—१ देखो 'हेटि' (रू. भे.)

उ०—१ कांन हेठि करु करिउ जु सूतउ तउ अम्हि कहीयइ करग्ग निरूत्तउ, इसीय वात मन भींतरि जांणी गूझू न कहीउ कूंती रांणी ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक परवत ऊपरि चढइ, एक ऊतरइ हेठि । कांम क्रोध मद मारतु, जिम राउ रमइ आखेटि ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'हेठी' (रू. भे.)

हेठियां—देखो 'हेटियां' (रू. भे.)

हेठिलौ—देखो 'हेटलौ' (रू. भे.)

उ०—विसहर ! तूं निरविस जरी, खरी न आवइ खंति । ससिहर सिर ऊपरि रहइ, तूं हेठिली हींचंति ।—मा. कां. प्र.

(स्त्री. हेठिली)

हेठी–सं. स्त्री.—१ अप्रतिष्ठा, अपकीर्त्ति ।

२ बेइज्जती, अपमान ।

३ हीनता, न्यूनता, तुच्छता ।

रू. भे.—हेठि ।

४ देखो 'हेटी' (रू. भे.)

५ देखो 'हेटै' (रू. भे.)

उ०—१ मुलतांण उतपति, कुरवांण रहति, बारै बारै वरस दरिआवा माहे जेहाजां हेठी चली आवी ।—रा. सा. सं.

उ०—२ इहां तौ नर दीसै छै कोई, सती तिहां हेकंपै होई । राखै सील भांगेला मोई, हेठी वेठी अंग गुपोई ।—जयवांणी

उ०—३ मोनै सूंप्यौ कवण जंजाल ए । फरसी दीधी हेठी राल ए । —जयवांणी

हेठै, हेठै—देखो 'हेटै' (रू. भे.)

उ०—१ वरसै नूं रायपाल कह्यौ—'तूं घरै जा । सांवण री तीज छै ।' ताहरां वरसै कह्यौ—'आपणौ जावणौ तरवारियां हेठै छै । —वरसै तिलोकसी री बात

उ०—२ दिनै ऊंचा रहै । रात्रि हेठै दुकांन मैं वखांण देवै, पर-खदा घणी होवै ।—भि. द्र.

उ०—३ देवळी रा तळाव वांसै वाहळी छै । तिण परै खेड़ौ छै । सीं० दुरगा रौ बसायौ । खेत देवळीयां सै खड़ीजै छै, नै लाडपुरा हेठै खेत आया छै ।—नैणसी

उ०—४ राव जोधै धरती लेनै कुंवर वीदै नूं दीधी हुती । सु आज धरती वीदैजी रा पोत्रां वीदावतां हेठै छै ।—नैणसी

उ०—५ दक्खिण मैं साह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर, दुरग दाबि पचहत्तरि लाख ७५०००० रौ मुलक दिल्ली हेठै पटकियौ ।—वं. भा.

उ०—६ आय नै उतरियौ हौ ढोला अखीवड़ रै हेठै । मेहड़लौ वूठौ हौ म्हारा गाढां मारू हीरां मोतीयां रे ।—लो. गी.

हेठौ—देखो 'हेटौ' (रू. भे.)

उ०—१ सौ जांणौ आपरी त्रोटि मैं पनंग नूं पोय पंखां री प्रसार करतौ गरुड़ री बाळक आकास मारग सूं हेठौ थियौ ।—वं. भा.

उ०—२ ताहरां इयां ठाकुरां बीरमदै नूं पकड़ बांह अर गढ सूं हेठौ उतारियौ, नै गांगै नूं टीकौ दियौ ।—नैणसी

उ०—३ सखी री जल सीतल पीजै जेठौ, पीउ नायौ अजहु वेठौ । जांण्यौ कुण करिहै वेठौ, नांणी मुझ नजरां हेठौ हो लाल । —ध. व. ग्रं.

उ०—४ पछै गजराज मस्तक समेत दाहिमौं वाहण त्रिहूण हेठौ आय पड़ियौ ।—वं. भा.

हेड-सं. पु. [अं.] १ मस्तक, सिर।
२ प्रधान, मुख्य।
३ उच्चाधिकारी।
४ भे—हेट।

हेडक्वारटर-सं. पु. [अं.] १ मुख्य कार्यालय, प्रधान कार्यालय।
२ सेना का सदर मुकाम।
३ वह कार्यालय जहां तैनाती हो, जहां ड्यूटि हो।

हेडणौ, हेडबौ—देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ' (रू. भे.)
उ०—मुकळांणी घर मन वसी, मुहंगा नइ सेनार। हिरणाखी, हसि नइ गहद, श्रांगुड हेडि तुखार।—ढो. मा.
हेडणहार, हारौ (हारी), हेडणियौ—वि०।
हेडियोड़ौ, हेडियोड़ौ, हेड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हेडीजणौ, हेडीजबौ—कर्म वा०।

हेडवणौ, हेडवबौ-क्रि. स.—देखो 'हेड़णौ, हेड़बौ (रू. भे.)
उ०—धरिया मुहरि अणि गिरधारी। हेवै दळ हेडवण हजारी।
—वचनिका
हेडवणहार, हारौ, (हारी), हेडवणियौ—वि०।
हेडविग्रोड़ौ, हेडवियोड़ौ, हेडव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हेडवीजणौ, हेडवीजबौ—कर्म वा०।

हेडवियोड़ौ—देखो 'हेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हेडवियोड़ी)

हेडाउ, हेडाऊ—देखो 'हेड़ाऊ' (रू. भे.)
उ०—जिम हेडाऊ तुरंगम पालइ, जिम वणिक हथेली नउ फोडउ पालइं, जिम तंबोली पांन संभालइं, तीणइं परि पुत्र पालइ ····।
—व. स.

हेडिंग-सं. पु. [अं.] शीर्षक।

हेडियोड़ौ—देखो 'हेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हेडियोड़ी)

हेडी-सं. स्त्री.—सेही नामक जतु विशेष। (डिं. को.)

हेडोकी, हेडोकै, हेडौंकै-क्रि. वि.—इण वार, अब की बार।
उ० - १ पेहलोकै तौ म्हारौ ऊपर सोळंकीया कयौ छै। हेडोकी वाजी थां सारू छै।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ थांहरै कहीयां भावरसी, रांणी सागै तौ हेडोकै नीसरी।
—राजा नरसिंघ री वात
उ०—३ बीजै फेरै हमीर बाप नूं सलांम कर कहै छै, हेडौंकै म्हारा हाथ देखौ।—अरजन हमीर भीमोत री वात

हेणां, हेणा—देखो 'हणां' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां नरसंघ कहीयौ, अजमेर आवै तद सासरै जासूं, हेणां तौ सासरै जावूं नहीं।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ हेणा भां भाई करम छै। विद्या मेल अर रावळै मांनीयौ छै। आठ पोहर हजूर रहै।—ठाकुरै साह री वात

हेत-सं. पु.—१ प्रेम, प्रीति, स्नेह, प्यार। (अ. मा.)
उ०—१ इणा री हेत गाढ देख हांकारौ भरियौ फेर डेरै आया।
—गोपाळ दास गौड़ री वारता
उ०—२ कुसळात पूछ इम हेत कीध, देवौ रसाळ जवहार दीध।
—वि. सं.
उ०—३ वडै हेत 'श्रोरंग' वतळावै, नांम महम्मतराय कहावै।
—रा. रू.
उ०—४ अण हितकारी आदमी, असें वदर छांह। इन की थिर छाया नहीं, हरीया हेत न तांह।—अनुभववांणी
२ वात्सल्य, ममता, लाड, दुलार।
उ०—१ दस मास उदरि धरि वळै वरस दस, जौ इहां परिपाळै जिवड़ी। पूत हेत पेखतां पिता प्रति, वळी विसेखै मात वड़ी।
—वेलि
उ०—२ अमल खारा भला, खड़ग धारा भला, हेत मां रा भला, धात पारा भला, हाथ वहता भला, माल खरचता भला,·······।
—रा. सा. सं.
३ लगाव, मोह।
उ०—१ मांस भखैं अर मद पीयें, भांगि धतूरां हेत। हरीया ऊखड़ि जावसें, ज्युं मूळै का खेत।—अनुभववांणी
उ०—२ हरीया सांमी मन मुखी, माया मांही हेत। क्युंईक गाडै रेत मैं, और बीयाजू देत।—अनुभववांणी
४ श्रद्धा, भक्ति।
उ०—१ ज्यूं थां कुगुरां रै जोग सूं खोटा मत मैं पड़ची हौ। तिण नैं उत्तम पुरखां चोखौ मारग पमायौ। अनैं तै वली कुगुरां सूं हेत राखै तौ वडो मूरख।—भि. द्र.
उ०—२ ऊंचा कुळ नींचा करमन का, भगति विनां भांडा भरमन का। हेत प्रीत अंजन तै राखै, नांव निरंजन का नहीं दाखै।
—अनुभववांणी
उ०—३ लोचां गौरां श्रौर मागौ, पूल्ह वचन विचार। ऊदौ अतली हेत सेती, फूलै जंभ दवार।—वि. सं. सा.
५ मेल-मिलाप, सम्पर्क।
६ इश्क, मोहब्बत, यौन सम्बन्ध।
७ आनन्द, हर्ष।
उ०—मधु प्यार पगलिया लै लीन्या, पायलियां झणकै जगां जगां। नैण मंगलिया भुवळक फ्रुवळक, हा हेत खिडावै मगां मगां।
—सकुंतला
८ देखो हेतु' (रू. भे.)
उ०—१ तिण राव दुरगै कसवौ नवौ वसायौ नै श्री रांमचंद्रजी रै नांम सूं रांमपुरी ठाकुरां रै हेत नांम दियौ।—नैणसी
उ०—२ तिकां हिज हेत दगी नंह तोप, रही वजि रीठ विहूं वळ रोप। जिका सणणंकि भणंकिय जेह, सुवा भड़ मुम्मि हुवा धड़

सेह ।—मे. म.

उ०—३ संखेपै तै सकल ग्रंथनूं लई केटलूं **हेत** । कहीस कथा हूं नल राजा नी थोडा मांहै संकेत ।—*नळाख्यांन*

उ०—४ सिख गुर कुं सिर धरत है, हरीया हरि कै **हेत** । विरण वूझ्यां गुर ग्यांन कुं, सौ काहै कुं देत ।—अनुभववांणी

उ०—५ धूपिया धकै चिटकां थिरत धकधकै, वारूनी डकडकै तरफ वांमी । वकवकै बीर जोगरण छकै दौ वखत, भकभकै हुतासरण **हेत** भांमी ।—मे. म.

११ देखो 'हित' (रू. भे.)

रू. भे.—हेता, हेती, हेतौ ।

हेतइं—देखो 'हेतु' (रू. भे.)

उ०—तिरण **हेतइं** भाखौ मुझ कि, गुझ हिरदै तरणौ रे । कीजै तसु उपरि काज कि, विचारी आपरणौ रे ।—प. च. चौ.

हेतभाव—सं. पु.—प्रेमभाव ।

उ०—हा, हा री हंसी विखरै ही, जांरणै मस्ती रौ रंग उड़ै । जंगळ री हिंसा थमगी ही, औ **हेतभाव** विखरचौ सगळै ।—सकुंतला

हेतव—सं. पु.—१ चारण कवि । (डिं. को.)

उ०—द्रव न्याय नीर करखत दुरस, वरखत दुरस उदार वळ । कळाधर कमुद अविकास कर, किय विकास **हेतव** कमळ ।

—केहर प्रकास

२ कवि ।

उ०—रतन पव स्रवत उमंड खत्रवट रिध, जळ कळा सघन ध्रुव वरद उजवाळ । हस रज प्रिया रिखपाळ जग **हेतवां**, अतर ससि मेर यंद वियौ 'छाताळ' ।—सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

३ देखो 'हितु' (रू. भे.)

उ०—तेज भूप देख तांम, निमै पाय सीस नांम । **हेतवां** सपूर हांम, वरमाळ लियां नांम ।—र. रू.

हेता—देखो 'हेत' (रू. भे.)

उ०—दुनीयां दुख सुख भुगतै केता, रांम नांम सुं नांही **हेता** । नांव सनेह न जांनै कोई, मैं संतन कहि थाका सोई ।

—अनुभववांणी

हेतारथ—देखो 'हितारथ' (रू. भे.)

उ०—१ औसर आयै बोलिबौ, हरीया हरि कै हेत । हरि **हेतारथ** वाहिरौ, ता मुख पड़सी रेत ।—अनुभववांणी

उ०—२ वाच्या गूझ भोज जै आव्या, कुंअरी नां लेख । हेत संकेत हेत **हेतारथ**, माहइ घरणां विसेख ।—रुखमणी मंगळ

हेताळ, हेताळु, हेताळू—वि.—१ हित चाहने वाला, हितैषी ।

उ०—१ माड़धरा सैं ऊन मंगाई, ताजी कराई तयार । चार गजां कै फेर मैं हुंती ओढ लेतौ अवसार । जिका गोधी 'रैवंतै' लीन्ही जी कारीगर कीमियै कीन्ही जी, **हेताळू** हेत सूं दीन्ही जी ।—अग्यात

उ०—२ गताघम मैं दिन काडतां अेकर आपौ आप नै राजस्थांनी री **हेताळु** वतावरिणयै अेक भलै मिनख नैं कैवतां सुरिणयौ कै राजस्थांनी तौ कोरी सामंती भासा ई रैई । भलै मिनखां नै कुण समझावै, पांच वडेरां रा नांव जीसा सूं सुरिणया जिका तौ ऊंट खड़ता कै सुत्तरसवार हा । पछै म्हारै घर मैं आ धरनौ कीकर दियौ ।—चितरांम

२ प्रेमी, स्नेही ।

उ०—१ पधारौ घरण **हेताळ** साहिबां, ऊभी जोऊं वाटड़ली ।

—लो. गी.

उ०—२ चोटी चौथै मास, गूंथी गुरणां सजाय नै । **हेताळू** री गांठ, जाझै दुख मैं नीं खुलै ।—अग्यात

३ मित्र, दोस्त ।

हेति—सं. स्त्री. [सं.] १ अस्त्र, हथियार ।

२ वज्र ।

३ भाला ।

४ आघात, चोट, प्रहार ।

५ प्रकाश, चमक ।

६ शोला, अंगारा ।

उ०—धुरीन तोप की अलात, धोर सोर पैं धरैं । प्रदीपमांन **हेति** अच्छ, स्वच्छ अच्छ मैं परैं ।—ऊ. का.

७ मधु मास या चैत्र मास में सूर्य के रथ पर रहने वाला प्रथम राक्षस राजा ।

वि० वि०—यह प्रहेति नामक असुर का भाई था, इसकी पत्नी का नाम कालकन्या भया था । इसके विद्युत्केश नामक पुत्र तथा सुकेशी नामक कन्या थी ।

हेतिकरण—देखो 'हितकारी' (रू. भे.)

उ०—सोहै दिनकर कुंभ सिर, पच्छिम पवन प्रकास । **हेतिकरण** वरिणगौ हुवां, आयां फागरण मास ।—रा. रू.

हेती—१ देखो 'हेत' (रू. भे.)

उ०—१ तन मन करि **हेती**, रसनां सेती, रांमोरांम रटंदा है ।

—अनुभववांणी

उ०—२ अहिनिस रांम नांम अवगाहै, ऐकै तन मन **हेती** । जन हरिरांम तिरै सोई तारै, आपा सेवग सेती ।—अनुभववांणी

२ देखो हेतु' (रू. भे.)

हेतु—सं. पु. [सं.] १ कारण, वजह, सबब, उद्देश्य ।

उ०—१ वंभरण मिसि वंदै **हेतु** सु वीजौ, कही स्रवरिण संभळी कथ । लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाधै अरथ ।

—वेलि

उ०—२ इत्यादिक प्रस्नोत्तर करतां, **हेतु** जुगति हिया मांहि धरतां । परदेसी राजा प्रति बोध्यउ, केसी गुरु स्रावक कियौ सूधउ ।

—स. कु.

उ०—३ मांहौं मांहि वातां कर **हेतु** युक्ति सीख सुमति आछी तरै

[illegible] —भि. द.

२ [illegible], निशाना, [illegible] ।

३ साधन, [illegible] ।

४ अभिप्राय, उद्देश्य, कारण या उत्पादक विषय ।

५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके होने से कोई बात हो, प्रमाणित करने वाली बात ।

६ ज्ञात विषय ।

७ तर्क विज्ञान व न्याय दर्शन में वर्णित प्रमाणों में से कोई प्रमाण ।

८ एक अलंकार विशेष, जिसमें कारण का कार्य सहित वर्णन होता है ।

उ०—हेतु अलंकार जब हुवै, कारज कारण संग । जो कारज कारण जवै, वरनन एक ही अंग ।—पि. सि.

क्रि वि —१ लिये, वास्ते, निमित्त ।

२ देखो 'हित' (रू भे.)

उ०—पलका मिनिया पछै हेतु टळ-टळ नै जावै ।

—अरजुनजी बारहठ

रू भे —हित, हेउ, हेत, हेतड, हेती, हेतू, हेतै ।

हेतुभेद-स पु. [सं.] ज्योतिष में ग्रह-युद्ध का एक भेद ।

हेतुमांन-वि. [सं. हेतुमत्] जिसका कुछ कारण हो, हेतु हो ।

हेतुवाद-सं. पु. [स.] १ तर्क विद्या, तर्क शास्त्र ।

२ कुतर्क ।

३ नास्तिकता ।

हेतुवादी-वि. [सं.] १ 'हेतुवाद' के सिद्धान्त को मानने वाला ।

२ तार्किक ।

३ नास्तिक ।

हेतुविद्या-स स्त्री. [स.] तर्कशास्त्र ।

हेतुहेतुमद्भाव-स. पु. [सं] कारण और कार्य का सम्बन्ध ।

हेतुहेतुमद्भूतकाल-सं. पु. [सं.] क्रिया के भूतकाल का एक भेद ।

(व्याकरण)

हेतू—१ देखो 'हितु' (रू भे)

उ०—१ चित मैं घणौ ज प्यार, मिळतां मन हरखित मिळै । वै हेतू लगवार, मिळजौ दिन मैं मोनिया ।—रायसिंह सांदू

उ०—२ दीपचंद मुणोत मन मैं धरी देई आपरा हेतू मित्रां नै कह्यौ—भीमराजजी रो वचन इसौ निकल्यौ सौ पाटा-पाटी समेटतौ दीसै है ।—भि. द्र.

२ देखो 'हेतु' (रू. भे.)

हेतै—देखो 'हेतु' (रू. भे.)

उ०—तिण हेतै लसकर तुमै, विदा करावौ साहि । सहस पंच राखौ सरै, जौ डर आंणौ मन मांहि ।—प. च. चौ.

हेतौ-वि.—१ हतप्रभ, निराश, हतोत्साह ।

उ०—चक्र खपर धारिया आप कर ली चंडी, हारिया सिंध दळ होय हेता । मीर धण पीर सांम्हें धकै मारिया, जारिया जवनथट जुडै जेता ।—बालाबक्ष बारहठ

२ देखो 'हेत' (रू. भे.)

उ०—भायां भायां माही मांहि मैं, थोडौ होसी हेतौ रे । घणी लड़ाई नै ईसकौ, वधसी इण भरत खेतौ रे ।—जयवांणी

हेनाळ-सं. स्त्री.—घोड़े के सुम की नाल, खुरताल ।

हेप, हेफ—देखो 'हैफ' (रू. भे.)

हेमंक-सं. पु.—हिमालय पर्वत ।

उ०—पत्रां विहंगेस वाळी मंदार हेमंक पव्वै, धोम काळकूट मेघधारां गंगधार । धूप दांन श्रीत रांम माह वाह मोटा धणी, तीनूं वातां तूझ तणी मोखरी दातार ।—र. रू.

हेमंग-सं.पु. [स.] १ विष्णु ।

२ ब्रह्मा ।

३ गरुड़ ।

४ शेर, सिंह ।

५ सुमेरु पर्वत ।

६ हिमालय पर्वत ।

७ बर्फ, हिम ।

उ०—१ जळै अरख नीला वहै विरख भाळा, वहन्नै सहस्सें वध व्योम व्याळा । वडा स्रंग सीतंग हेमंग वाळा, जरी फूंक आगै भरै टूंक फाळा ।—ना. द.

उ०—२ कसै पाखरां चम्मरां जूह काळा, वणै जांणि पाहाड़ हेमंग वाळा । वजां फावि नेजां गजां सीस ढल्लं, माथै उड्डिअं जांणि गुड्डी महल्लं ।—वचनिका

८ स्वर्ण, सोना, कंचन ।

९ चंपक वृक्ष ।

वि.—१ सुनहला ।

२ ठंडा, शीतल ।

रू. भे.—हेमांग ।

हेमंत, हेमंतरित, हेमंतरितु-सं. स्त्री. [सं. हेमन्त, हेमन्त-ऋतु] १ षट् ऋतुओं में से एक ऋतु जिसमें मार्गशीर्ष व पोष मास आते हैं । मतान्तर से इसमें पोष व माघ मास भी माने गये हैं ।

उ०—१ रितु हेमंत पोस नै माह । फागुण चैत वसंत आराह ।

—जयवांणी

उ०—२ हेमंतरित लागी । सिसिर रित जागी । रूक रहिल वागी । काइरां नूं ठंडि लागी । हाथ पग धूजै धड़ धड़ ।—वचनिका

उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति उणि हेमंतरित मांहे वाळी मूंध मुहव गोरी गयां तनां रौ रस छाती री रस अधरां रौ सवाद अम्रत सरिखौ लागै छै ।—रा. सा. सं.

२ शीतकाल ।

उ०—हेमंत जु महा सीत तैं कै डरि कोई निसि कहतां राति कै पैंडै नहीं चालै छै।—वेलि टी.

३ एक छन्द विशेष।

उ०—अंतेय दो दिव आदि दुवेज कारं। हेमंत सेस कथीयौ कवि कंठ हारं।—पिं. सि.

रू. भे.—हिमंत, हेमंता, हेमंति, हेमंतु, हेवंत, हैमंत।

हेमंता—देखो 'हेमंत' (रू. भे.)

हेमंति, हेमंतु—देखो 'हेमंत' (रू. भे.)

उ०—१ भजंति सुग्रह हेमंति सीत मैं, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्रे कोइ कंवळि, जण भारियौ रहंति जगि।
—वेलि

उ०—२ अति वसंतु आवियौ रितु हेमंतु। जिहां सीय ना भर, सेवइं, निरवात घर।—रा. सा. सं.

हेमंसु, हेमंसू—देखो 'हिमांसु' (रू. भे.) (अ. मा.)

हेम—सं. पु. [सं. हेमिन] १ स्वर्ण, सोना, कंचन।
(अ. मा; ह. नां. मा.)

उ०—१ किहां ऐरावण किहां अजा ? किहां पीतल किहां हेम। अवर सहू अै अंधीउ, माधव जोतां तेम।—मा. कां. प्र.

उ०—२ गौ-कोटि-दांन ग्रहणै तु कासी, मकरै प्रयागै निज कल्पवासी। सुमेरु तुल्यं दै हेम दांनं, नहिं तुल्य नहिं तुल्य गोविंद नांम।
—ह. र.

उ०—३ साह तांम समसेर, जड़त जवहरां जमंधर। मुलक वधारै समपि, हेम तौड़ा गज हैंमर।—सू. प्र.

२ वह वस्त्र जिस पर सोने का कार्य किया हुआ हो।

उ०—१ कनक काया घट कूंकूं लोल, कठीण पयोहर हेम कचौळ।
—बी. दे.

उ०—२ सुचि कीजै स्नांन संपाड़ा, सहु पहिरै नवि नवि साड़ा। हीर चीर पांटंवर हेम, पहिरौ सहु भूखण प्रेम।
—घ. व. ग्रं.

३ हेमंत ऋतु।

उ०—१ हेम सिसर रित मेड़तै, रहियौ कमंधा राव। संभ विहांणै ऊगणै, दिन दिन दूणौ चाव।—रा. रू.

उ०—२ सरद हेम नैं सिसर रित, रिति वसंत ग्रीखम्म। वरखां दांन वखांणि तूं, ए खट रित औपम्म।—रा. सा. सं.

उ०—३ रवि वैठौ कळसि थियौ पालट रितु, ठरैंजु डहकियौ हेम ठंठ। ऊडण पंख समारि रहै अलि, कंठ समारि रहै कळकंठ।
—वेलि

४ सुमेरु पर्वत।

५ पानी, जल।

६ धतुरा।

७ केसर का फूल।

८ गौतम बुद्ध का नाम।

६ बादामी रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

वि.—१ शीतल, ठण्डा।

उ०—१ प्रीतम री मुख पेखतां, हिवड़ौ होवै हेम। लूआं पण रोकै मिळण, भलौ निभावै नेम।—लू

उ०—२ साग साल मळियागरी, वळि नाळेर विदांम। सोपारी खिरणी सरस, हेम हवा तिहिं ठांम।—गज-उद्धार

२ श्वेत, सफेद। ❀ (डिं. को.)

३ पीत, पीला। ❀ (डिं. को.)

४ देखो 'हिम' (रू. भे.)

उ०—१ उदधि सुजळ ऊफळै, हेम प्रघळै जळ हल्लै। दइत लाग नर देव, दसै द्रगपाळ दहल्लै।—सू. प्र.

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, विमळ स्रंग लागा वाधण। जोवनागमि कटि क्रस थायै जिम, थायै थूळ नितंव थण।—वेलि

उ०—३ मागुं तुझनइं मागसिर, जउ मुझ आंणि प्रेमि। हृदय कमलि रांमा रही, त्यांह म पाडिमि हेम।—मा. कां. प्र.

उ०—४ असारांण राजेस कमठांण कीधा अकळ, कोड़ जुग लगा जस कळिया। पाळ जोय हेम रा गरब टळिया पहळ, टाळ जोय समंद रा गरब टळिया।—जोगीदास कवियौ

उ०—५ अंव विवर तन, सीत सुतौ सव तीरथ न्हावै। कासी छाड देह, हेम वसि हाड गमावै।—ह. पु. वां.

उ०—६ मैं तौ दासी राज री, दुख दै कीनी नेस। अव तौ गळणा हेम मैं, आह घर री रेस।—स्री हरिरांमजी महाराज

हेमअद्र—सं. पु. [सं. हेम-अद्रि] १ हिमालय पर्वत।

उ०—गरव सत्रां गंजणा, रमा सुचित रंजणा। भुजां सजोर मंजणा, चढाय सिभ चाप। गळै दुजेस गाव रा, सधीर जै सभाव रा। अभंग हेमअद्र सा, अडोळ नंग आप।—र. ज. प्र.

२ सुमेरु पर्वत।

हेमअनड़—स. पु.—१ सुमेरू पर्वत।

२ हिमालय पर्वत।

उ०—कहर करांमत 'जसा' हींदवांण चा सहसकर, जुझ कुण छातधर अवर झालै। तेज सुजड़ां तणै तोप सत्र 'गजण' तण, हेमअनड़ां जुई गळै हालै।—नाथौ सांदू

हेमअरि—सं. पु. [सं.] स्वर्ण का शत्रु, सीसा।

हेमकार—सं. पु. [सं.] १ स्वर्णकार, सुनार।

उ०—सरवंगि सीस मुंडित विहाल, मग लोपि जात वांमांग व्याल। धत पात्र रोम चरमा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार।
—ला. रा.

२ सोना, स्वर्ण।

हेमकूट—सं. पु. [सं.] हिमालय के उत्तर में स्थित एक पर्वत।
(पौराणिक)

हेमकेस-सं. पु. [सं. हेमकेश] शिव या महादेव का एक नामान्तर ।

हेमगढ़-सं. पु. [सं.] १ सोने का गढ़ ।

२ लंका ।

उ०— [illegible] हेमगढ़ [illegible], गांकै गुरासांण छत्र खंड [illegible] । [illegible] 'जगराज' [illegible] गढ तीन वंस, थाटथंभ नमै आय [illegible] ।—[illegible] बारहठ

हेमगर, हेमगिर, हेमगिरि-सं. पु. [सं. हेमगिरिः] १ सुमेरु पर्वत जो [illegible] माना जाता है । (डि. को.)

उ०—हेमगिर [illegible] चंद अव ब्रहम, हू निज जनां पाळगर [illegible] ।—र. ज. प्र.

२ हिमालय पर्वत ।

उ०—नदि [illegible] नीर घटे निसि, गाढ धरा द्रव हेमगिरि । [illegible] नदि [illegible] जगत गिरि, सूर राह किय जगत सिरि ।
—वेलि

रू. भे.—हेमागिर, हेमगिरि, हेमागिर, हेमागिरि ।

हेमचंद, हेमचंदर, हेमचंद्र-सं. पु. [सं. हेमचंद्र] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो विशाल राजा का पुत्र था ।

२ कलिकाल सर्वज्ञ के नाम से प्रसिद्ध एक जैनाचार्य जो सन् १०९९ व ११७३ में हुए थे । इन्होंने व्याकरण एवं अन्य कई ग्रन्थ लिखे थे ।

हेमजा-सं. स्त्री. [सं. हिमजा] १ हरीतकी, हड़ ।

२ पार्वती, उमा ।

हेमजाळ, हेमजालक-सं. पु.—एक आभूषण विशेष ।

उ०—दस मुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेमजालक मणिजालक रत्न-जालक मोनक ।—व. स.

हेमता-वि.—सोने का ।

उ०—कनक थार भारियां गडई कटोरी भारीयां । रूपाय हेमता चस रसोईदार गरमरु ।—वि. सं. सा.

हेमतुला-सं० स्त्री [सं.] १ सोने का तुलादान, तराजू ।

२ वह तराजू या तुला जिसमें सोना तोला जाता है ।

हेमदत्ता-सं. स्त्री [सं.] एक अप्सरा विशेष ।

हेमदिस, हेमदिसा, हेमदिसि-सं. स्त्री [सं. हिमः=हिमालय+दिशा] उत्तर दिशा का नाम ।

उ०—आकुळ थ्या लोक [illegible] अनिरज, वंछित छाया ए विहित । [illegible] हेमदिसि [illegible], [illegible] ही विम्ब आसक्ति ।—वेलि

हेमपथ, हेमपंथ-सं. पु. [सं. हेम-पथ] १ हिमालय पर्वत ।

उ०—[illegible] मांय हेमपंथ सोहता स भटकाळी. मेहाळी सोहता नेत्र [illegible] मांस ।—नवलजी लाळस

२ उत्तर दिशा का मार्ग ।

हेमपरवत-सं. पु [सं. हेमपर्वत] १ सुमेरु पर्वत ।

२ स्वर्ण की वह राशि जो दान में दी जाय । (महादान)

३ हिमालय पर्वत ।

हेमपुसप, हेमपुस्प सं. पु. [सं. हेम पुष्प] १ चंपा का पुष्प । (डि. को.)

२ गुलाब का पुष्प विशेष ।

हेमफूल, हेमफूलिका-सं. स्त्री.—सोनजुही का पौधा (डि. को.)

हेममाळ, हेममाळा-सं. पु. [सं. हेममालिन्] १ सूर्य, रवि ।

२ खर की सेना का सेनापति एक राक्षस ।

हेमर-सं. पु.—देखो 'हयवर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—तठा उपरांति करिनैं राजांन सिलांमति असवारां री वाग ऊपाड़ी किलकिला ज्यों ऊपाड़ि ऊपाड़ि हेमरां नाखीजै छै। भूसणां ऊपरै बरछी चमकिनैं रही छै ।—रा. सा. सं.

हेमलंब-सं. पु.—विष्णुवीसी का ग्यारहवां वर्ष । (ज्योतिष)

हेमळ-सं पु. [सं. हेमलः] १ स्वर्णकार, सुनार ।

२ कसौटी ।

३ गिरगिट ।

हेमवंत-सं. पु.—हिमालय पर्वत ।

उ०—नैमसारण्य वसेख कुरुह जांगळय कहीजै । अरबुद हेमवंत निमख जो वास लहीजै ।—गज-उद्धार

हेमवंती, हेमवती-सं. स्त्री. [सं. हेमवती] १ पार्वती, गौरी ।
(अ. मा.)

२ गंगा नदी । (अ. मा; ह. नां. मा.)

३ हरितकी, हर्रे, हड़ । (अ. मा; ह. नां. मा.)

रू. भे.—हैमवती ।

हेमवरण-वि.—१ कनक वर्ण, स्वर्णमय, स्वर्णिम ।

उ०—देही पांच सै धनुख तणी, हेमवरण उपमा घणी । सहस आठ लक्षण नांमी, सुमरौ स्रीसीमंधर स्वांमी ।—जयवांणी

२ पीला । ✱ (डि. को.)

३ श्वेत, सफेद । ✱ (डि. को.)

सं. पु.—१ पीला रंग ।

२ सफेद रंग ।

हेमवळ-सं. पु. [सं. हेमवल] मुक्ता, मोती ।

हेमसुता-सं. स्त्री. [सं.] १ पार्वती, गिरिजा ।

२ दुर्गा ।

हेम हेड़ाऊ-सं. पु यौ. [सं. हेम+हेडावुक्कः] १ एक चारण जो घोड़ों का प्रसिद्ध व्यापारी था व महान दातार था ।

२ इसके नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

हेमांग—देखो 'हेमंग' (रू. भे.)

हेमांगद-सं पु. [सं. हेम-अंगद] सोने का बाजूबंध ।

हेमांगिर, हेमांगिरि—देखो 'हेमगर' (रू. भे.)

उ०—सखिए साहिब आविया, जांहकी हूंती चाड । हियड़उ हेमांगिर भयउ, तन पंजरै न माइ ।—ढो. मा.

हेमांणि, हेमांणी-सं. स्त्री. [सं. हेम-खानी] १ स्वर्ण का खजाना ।

उ०—थारै मांय सांस अटक्योड़ौ है तौ थूं नीं जावै जित्तौ डोकरड़ी जीवती तौ रैवैला। अबै रोवै तौ पैला मांदी छोड नांनेरै क्यूं उखलियौ। उठै कांई **हेमांणी** गडचोड़ी ही ?—फुलवाड़ी

२ धन, दौलत, लक्ष्मी।

३ प्राचीन काल की रुपये-पैसे रखने की एक थैली विशेष।

रू. भे.—हिमांणी, हिमांनी।

हेमा—सं. स्त्री. [सं.] १ पृथ्वी, धरती।

२ मंदोदरी की माता एक अप्सरा।

हेमागिर, हेमागिरि—देखो 'हेमगिरि' (रू. भे.)

उ०—१ अहल्या पद रज तरै, पंडव **हेमागर** चाढै। भारत भीखम मरै, जठै सिखंडी जीवाड़ै।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ **हेमागिरि** थी हाथिणी, आवइ पवन परांणि। ऊंमाडी ऊपरि चढी, मारइ मन्मथ-वांण।—मा. कां. प्र.

हेमाचल, हेमाचल, हेमाछळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

उ०—१ चढिया 'दसतय' ऊपरा **हेमाचळ** हाकी। धैंसाहर पाखर रवद थरहर धर थाकी।—मालौ सांदू

उ०—२ नदी अर दिन वधण लागा, तळावां रौ पांणी अर राति घटण लागी। धरा कहतां प्रिथी गाढ पकड़चौ, कठोर हुई। **हेमाचळ** परवत परघळचौ।—वेलि टी.

उ०—३ फौजां ऊपरां ऊजळा भालां रा डंबर भळलाट करि जगाजोति जागी। जांणै वरफ रा टूक **हेमाचळ** पहाड़ माथै विराजमांन हुआ।—वचनिका

हेमाजळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

हेमाद्रि, हेमाद्री—देखो 'हिमाद्रि' (रू. भे.)

हेमायत—देखो 'हिमायत' (रू. भे.)

उ०—केइ भूप पखायत वंधकणी। धुर मुज्ज **हेमायत** 'पाल' धणी।—पा. प्र.

हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय—वि. [सं. हेमन्] स्वर्णिम, सुनहरा।

सं. पु.—१ दीपक का पुत्र एक राग। (संगीत)

२ देखो 'हिमाळय' (रू. भे.)

उ०—सिधांमाळ सु वीटीयौ ज **हेमाळ** सदा लहै सौभा, वहै चंद्रभाळ तारां वींटीयौ वखांण। वींटियौ अमरां माळ मेर वदै, रहै पातां माळ सु वींटीयौ 'भीमौ' रांण।—कविराजा बांकीदास

हेमाळे, हेमाळै—देखो 'हिमाळय' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला सायवण मांणजै, भीणी पांसलियांह। कइ लाभै हर पूजियां, **हेमाळै** गळियांह।—ढो. मा.

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम **हेमाळै**, विमळ सिग लागा वधण। जीवनागमि कटि क्रस थायै जिम, थायै थूळ नितंब थण।—वेलि

हेमाळौ—देखो 'हिमाळय' (रू. भे.)

उ०—१ पायां रौ फिळौ आडौ कांई ऊभौ हौ, जांणै **हेमाळौ** भाखर आडौ ऊभौ है। घर वाळां वास्तै औ हेमाळौ लांघणौ दूभर व्हैगौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वा खुद जलम सू ई पांगळी है तौ पछै उणरा अंतस मैं बसियोड़ौ साच कीकर दुखां रौ **हेमाळौ** लांघैला।—फुलवाड़ी

हेय—वि, [सं.] १ त्यागने या छोड़ने योग्य, त्याज्य।

२ निकृष्ट, घृणित, बुरा।

रू. भे.—हैय।

हेरंब, हेरंबौ, हेरंभ [सं. हेरम्ब] गजानन। (ह. नां. मा.)

उ०—पांण रा करन्न महा आरांण रा गदापांणी, नागरी पूडांण रा प्रम्मांण रा निधांन। सांमांन रा इंद्र लोका जांणरा **हेरंबौ** सदा, मांण रा दुजोण भोका 'गुमांन' रा 'मांन'।—उमेदसिंघ सांदू

२ हाथी, गज।

उ०—तिकां अग्ग **हेरंब** कै छैलै तूटै। छकांया सुरा रौ धरै खेल छूटै।—वं. भा.

३ भैंसा।

उ०—चक्री-पीवणौं पाय भाई बचायौ, क्षुधाळी हणै हेक **हेरंब** खायौ।—मे. म.

४ शेखीबाज वीर।

रू. भे.—हेरंम, हेरम, हैरंब।

हेरंभ-माता—सं. स्त्री. [सं. हेरंब+माता:] गणेश की माता, पार्वती, दुर्गा।

उ०—भवांनी नमौ सत्य आलाप बाला, भवांनी नमौ व्रंद विद्या विसाला। भवांनी नमौ देव **हेरंभ-माता**, भवांनी नमौ तन्नमौ संत त्राता।—मे. म.

हेरंम—देखो 'हेरंब' (रू. भे,)

हेरंमकारी, हेरंमा—सं. पु.—घोड़ों की एक जाति या इस जाति का घोड़ा।

उ०—अरब छइ जै घोडा, **हेरंमा** हरीअडा नील नीलडा कालूंआ काजला किहाडा कोसीरा अहिठांणा पइठांणा ऊजला जहिडा सीहतंग टारतेजी तोखार तोरका **हेरंमकारी** गंगाजला खुरसांणी सीधूआ कासमीर कुंकणा ऊदिरा, अनेक वांनि नव नवा, नीला काला स्वेत राता पीला एहवा एक अस्व पागगि सोभता छइ।—व. स.

हेर—सं. स्त्री.—१ छानबीन, खोज या पीछा करने की क्रिया या भाव।

२ छानबीन, तलाश, खोज।

उ०—उण ठांम आय अवसांण पाय, आसुर अनीत तिण हरी सीत। बन जिकण वेर हम करत **हेर**, बनकै विहार अंजन कंवार....।—र. रू.

३ गश्त, फेरी।

उ०—मरदां मैं थूं मरद आगळी, हेरचां थूं लाट। रांमगढ़ की **हेर** लगादै, जद जांणूं तोय जाट।—डूंगजी जवारजी री छावली

१२ [illegible], [illegible] ।

उ० — [illegible] इकार नर पुर [illegible], हेर यार विनमो हुई । उण [illegible], [illegible] धार मुग्धानरू आग्ही ।—रा. रू.

हेरई — सं. पु. — एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा । (शा. हो)

हेरड — देखो 'हेरो' (रू. भे.)

उ० — [illegible] हेरड [illegible], नव नाटि किरड, धनद यक्ष भंडारउ [illegible], [illegible] गाउल नरेस्वर ।—व. स.

हेरण — सं. स्त्री. — १ हेरने, ढूंढने या तलाश करने की क्रिया ।

२ तलाश, खोज, छानबीन ।

रू. भे. — हेरन ।

हेरणौ, हेरबौ — क्रि. स. — १ ढूंढना, तलाश करना, खोजना ।

उ० — १ सो म्होकमसिंघ तो वठै थक अर तलास में लाग रह्यो है। भाड़-भाड़ पहाड़-पहाड़ हेरतां थकां रात दिन एक सौ कोच में लाग रह्यो है ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ० — २ राज री कोजी सूं कोजी लुगायां हेर-हेर मंगावै अर वांरै साथै प्रीत करै । — फुलवाड़ी

उ० — ३ हरिया हेरत हेरतौ, हेरत ही रह्यौ हेर । बूंद समांणी समद में, हेरी जाहि न फेर ।—अनुभववांणी

उ० — ४ उण राज री धारी कै परकोटा रै मांय घड़ी रात थकां जको ई मिनख अणचींत्यौ वड़ै उणनै राजगरु बणाय देणौ । धंटा नगा अर नाच वोलणिया मिनख सूरज हेरै तौ ई नीं लाधै ।
—फुलवाड़ी

२ पता लगाना, सुराग लगाना, जासूसी करना, खबर करना, जांच पड़ताल करना ।

उ० — १ गोगादेजी दबो मार बैठा हुता । इत्तरै हेरो आयो । कह्यो — जी, 'दलो' हेरियो छै, चीरदै हेरियो छै ।—नैणसी

उ० — २ सु मूळवै चारण वेसवटै नू राजा वीमलदै रै मेलीयो अर कह्यौ, 'जु राजा रै घोड़ी कोड़ीधज छै । सु हेर आवजो ।
—मूळवै मांगावत री वात

उ० — ३ पछै गोगाजी तो हलांणो लेनै आपरै ठिकांणै गया । वांसै पाबूजी हरियै चोरी नूं कह्यो-रे हरिया दोदै री सांढियां हेर आव, ज्यु वार्ट नूं सांढियां आंण देवां ।—नैणसी

३ पीछा करना ।

४ फेरी लगाना, चक्कर लगाना, गश्त लगाना ।

५ देखना, अवलोकन करना ।

उ० — १ नमि आगै तिहां थी नमिनाथ, इकवीसम आपै सिव आथि । टाळो जीव जयणाए हेर, वंदो जिनवर बीकानेर ।—ध. व. ग्रं.

उ० — २ छिन छिन वाट हेरतां छाया, होय कळळ घोड़ा हींमाया । घणचींत्या वैरी चढ़ आया, ऊठो पीव पांहुणां आया ।—वरजूबाई

उ० — ३ एक एक नाग नै हेर लियौ पण उणरी चापळियोड़ी नींद रो पतौ नीं पड़्यौ ।—फुलवाड़ी

६ गौर से देखना, टकटकी लगाना, ताकना ।

७ विचार करना, पुनरावलोकन करना ।

हेरणहार, हारो (हारी), हेरणियौ — वि० ।

हेरिओड़ौ, हेरियोड़ौ, हेरयोड़ौ — भू० का० कृ० ।

हेरीजणौ, हेरीजबौ — कर्म वा० ।

हीरणौ, हीरबौ, हेड़णौ हेड़बौ, हेड़वणौ, हेड़वबौ — रू. भे. ।

हेरन — १ देखो 'हिरण्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

२ देखो 'हेरण' (रू. भे.)

हेरफेर — सं. पु. — १ इधर-उधर करने की क्रिया या भाव ।

२ परिवर्तन, फेर-बदल ।

३ अदल-बदल, विनिमय ।

४ हस्तान्तरण, स्थानान्तरण ।

५ घुमाव, चक्कर ।

६ शब्दाडंबर, वाग्जाल ।

७ कुटिल युक्ति, दाव पेच, चाल ।

८ अन्तर, फर्क ।

९ घट-बढ ।

रू. भे. — हेराफेरी ।

हेरम — देखो 'हेरंब' (रू. भे.)

हेरां क्रि. वि. — जासूसी करने के लिये, गुप्तचरी के लिये ।

उ० — ताहरां नरसिंघ री नाई हेरां ऊभी हुती, तै साळू रै सहनांण कियौ ।—नैणसी

हेरांन — देखो 'हैरांन' (रू. भे.)

हेराउ, हेराऊ — वि. — १ तलाश करने वाला, ढूंढने वाला, खोज करने वाला ।

२ जासूसी करने वाला, जासूस ।

३ पीछा करने वाला ।

४ देखने वाला ।

५ संदेश वाहक, दूत, चर ।

रू. भे. — हेरु, हेरुअ, हेरू, हेरूअ ।

हेराफेरी — देखो 'हेरफेर' (रू. भे.)

हेरायत — सं. पु. — १ गुप्तचर, जासूस ।

उ० — तद रायमल हेरा लगाया कै गांव धोळहरै राव गांगै री वरसी छै । सु आज गोठां करसी पण गांगीजी घरै जावै तद मनै खबर देज्यौ ।" पीछै हेरायत धोळहरै गया नै जाय आस पास हेरौ लगायौ ।—द. दा.

२ संदेश वाहक, दूत ।

वि. — १ खोजने वाला, ढूंढने वाला, तलाश करने वाला ।

२ जासूसी करने वाला ।

३ पीछा करने वाला ।

४ देखने वाला ।

रू भे.—हरायत।

हेरिक–सं. पु. [सं.] १ गुप्तचर, जासूस।

२ संदेश वाहक, दूत, चर।

हेरियोड़ौ–भू. का. कृ.—ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ, खोजा हुआ. २ पता लगाया हुआ, सूराख लगाया हुआ, जासूसी किया हुआ, खबर किया हुआ, जांच-पड़ताल किया हुआ. ३ पीछा किया हुआ. ४ फेरी लगाया हुआ, चक्कर लगाया हुआ, गश्त लगाया हुआ. ५ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ. ६ गौर से देखा हुआ, टकटकी लगाया हुआ, ताका हुआ. ७ विचार किया हुआ, पुनरावलोकन किया हुआ।

(स्त्री. हेरियोड़ी)

हेरु, हेरुअ—देखो 'हेराउ' (रू. भे.)

उ०—१ सौ कागद वांचनै रांमदासजी तिण हीज वीरीयां हेरु मेलिया, अनै कयौ अंन तौ सांढीयां लीयां वसां।—रा. सा. सं.

उ०—२ अखजै धन हेरुअ फेर अठै। कहौ तेण वतायोय 'पाल' कठै।—पा. प्र.

हेरुक–सं. पु. [सं.] १ गणेश, गजानन।

२ महाकाल शिव का एक गण।

हेरू, हेरूअ—देखो 'हेराउ' (रू. भे.)

उ०—१ नरो पोकरण लेण री मन घणी हर राखै छै। सु नरा रा हेरू पोकरण नुं लाग रह्या छै।—नैणसी

उ०—२ तरै अरड़कमल हेरू मेलिया, नै आप २०० सू चढ खड़िया। बीच नाहरां ४ चार रौ सवण हुवौ।—नैणसी

उ०—३ त्रीजा हेरू आव्या राति, मारवणी जीवी ए वात। ढोलउ लियै जाइ एकलौ, हिव धाडउ कीजइ तउ भलउ।—ढो. मा.

हेरौ–सं. पु.—१ खोजने, ढूंढने या तलाश करने की क्रिया या भाव।

२ खोज, तलाश, छान-बीन, जांच-पडताल, खबर, पता।

उ०—१ ताहरां दूदौ डकरियौ–भोज नूं मारू। पातासाह रै दरबार विचै मारू। ताहरां वांसै सूं दूदौ ही सीकरी फतैहपुर गयौ। जायनै हेरौ करायौ।— नैणसी

उ०—२ वरजांग सुचतौ हुवौ, सु ओरही वेगी छै। ईण राव नुं कह्यौ—हूं कटक रौ हेरौ करण जाऊं छू मुगळां रौ डेरौ कुसांणै हुवौ छै।— नैणसी

३. पीछा।

उ०—वेटौ ऊमरकोट परणीजण मेलियौ थौ सु साथ सोह वेटा साथै मेलियौ थौ। आप छड़वड़ै हीज साथ थौ, सु रावळ हेरौ करायौ।—नैणसी

४ गुप्तचरी, जासूसी।

उ०—ताहरां नरै आपरै प्रोहित नूं कह्यौ—तूं जौ एक बात करै तौ आपां पोकरण ल्यां। ताहरां प्रोहित कहियौ—हूं हेरौ करीस।

—नैणसी

५ खबर, सन्देशा।

उ०—हिव सूंमर हेरा हुवइ, मारू भूंवणहार। पिंगळ वोळावा दिया, सोहड़ सौ असवार।—ढो. मा.

६ जासूस, गुप्तचर, भेदिया।

उ०—१ रावत भींवौ बीजा ही असवार ४०० भेळा हुई आया। कटक नुं हेरा लगाया। हेरै कहायौ घात छै।—नैणसी

उ०—२ अठै एक कतार रेसम सौं भरी आय घाटी उतरीया, च्यार पहर रात खडीया थाका आय उतरीया। सु सोढां रौ हेरौ वांसै आवै छै।—वरसै तिलोकसी री वात

उ०—३ अठै पठांणां रौ हेरौ आयौ हंतौ, तिकौ पाछौ गयौ। जाय कहीयौ -'दिन उगतां तांई साथ कोई नहीं। आदमी २०० तथा ३०० छै।—राजा नरसिंघ री वात

७ दूत, संदेश वाहक।

उ०—नै रात पोहर एक गई तद नकोदर हेरै नूं मळकी खनै मेलियौ जू तनें लेण नू आया है। पीछै हेरै जाय मळकी नूं कयौ।

—द. दा.

८ ढूंढने वाला, खोजने या तलाश करने वाला।

उ०—साह तणा हेरा सगळाई, ऊपर रयण जरां मिळ आई। दिस दिक्खण 'दुरगौ' वरदाई, कमंध खड़ंतां सोध न काई।

—रा. रू.

रू. भे.—हेरउ।

हेळ, हेल–सं. पु. [सं. हेलन] १ क्रीड़ा, खेल, तमाशा।

उ०—दिली तखत दइवांण, हेल मांही करि हिंम्मति। ऊथळ पथळ अनेक, पांन जिम किया असप्पति।—सू. प्र.

२ खलवली, हलचल।

उ०—खेड़धणी सिरि खीजियां, हुई मुगल्लां हेल। ज्यौं गज वारि विहारतां, वीचै वारिज वेल।—रा. रू.

३ अपराध, गल्ती, भूल।

उ०—खाली कदै न जांणीयै, आपा ऊपरि खेल। हरीया आपा वाहिरौ' जोयज होसी हेल।—अनुभववांणी।

४ अनिष्ठ, बुरा।

उ०—हरीया पैंडा भगति का, अधर इणी का खेल। उलटि पड़ै तौ ऊवरै, नहीं तौ होसी हेल।—अनुभववांणी

५ उमंग, उत्साह, जोश।

उ०—संभु ग्यांन मैं गहीर रौ प्रमाद भाग पायौ संतां, जहांनवी नीर रौ क सांपड़ैवौ जहांन। डोरी व्रज कुंज कासमीर रौ क आज दीठौ, वीरमदै हेळ मैं हमीर रौ वदन।—साहिवौ सुरतांणियौ

६ लहर, तरंग, हिलौर।

उ०—हेळां अगस्त संध ज्यु हेकै हात हूंत हीलोळीया, धीस खगां हेकै ज्यूं वोळीया नाग धींग। सुरांपती हेकै वज्र रोळीया पाहाड़ सारा, सारा खळां हेकै ऊंतौळीया चांद सींग।—हुकमीचंद खिड़ियौ

७ [illegible] ।

८ [illegible], वायु ।

९ [illegible], मढ़ाई ।

उ०—[illegible] पावनी, प्रारा वाळी हेल । भागा तीनो [illegible] मजानी मेल ।—[illegible]

उ०—[illegible], हरि हाथी री हेल । जी मेहाई थांरा [illegible] ।—मे. म.

१० मेल-जोल, घनिष्ठता ।

११ [illegible] ।

उ०—[illegible], जब गोऊं तब बेल । सोहणा, थें मने [illegible], दीसी तीजी हेल ।—ढो. मा.

वि १ समान, तुल्य, बराबर ।

उ०—[illegible] नहुंवाण अनावद हेल । खांगी-बंध 'जैत' रच्यो खग [illegible] ।—मे. म.

२ सहज, आसान ।

उ०—१ सुभ देह नीरद सुंदरं, साधार सेवग सीवरं । रघुनाथ नाथ अनाथ रौ, हेल अघ हरणं ।—र. ज. प्र.

उ०—२ 'जगा' तरा राज सामुद्र पग जांणियो, बयण वाखांणियो [illegible] । 'करन' हर तमासै हेल माटै कियो, मूरांपत बिमासै [illegible] ।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—३ सुत मरात छंद छट पंच नव संपूरण, भेदगर च्यार दस [illegible] । अरक जुत बोलवौ हेळ बीजा 'अजा', वेळ अम्रत तणा उदधवाळी ।—र. ज. प्र.

३ किंचित, थोड़ा ।

४ नगण्य ।

उ०—हूं करूं हूं करूं करै गाडा टेढा कांय हालौ, निमेख में गाडा टेढा करै दीनानाथ । मेदनी आकास बीच काळ तणां डाढां मांहै, हेळ मात्र मंदी काया साढ़ै तीन हाथ ।—ओपौ आढौ

५ जिसमें तरंगे हों, लहरदार ।

६ देखो 'हील' (रू. भे.)

हेलइ, हेलउ—देखो 'हेलौ' (रू. भे.)

उ०—१ अवसर आयइ नवि संभारउ, केम भवोदधि हेलइ वारउ ।
—वि. कु.

उ०—२ गज्जळियां वउळाइ वउ, मदिर वइठी आइ । मंदिर [illegible] नाग जिउं, हेलउ दै दै माइ ।—ढो. मा.

हेळणौ, हेळबौ—१ देखो 'हिळणौ, हिळबौ' (रू. भे.)

उ०—[illegible] न हेळियौ, गुणां न रीझवियोह । हेली थारी [illegible], मह्मानी गमियोह ।—जलाल बूबना री वात

२ देखो 'हिळाणौ, हिळाबौ' (रू. भे.)

हेलन-स. पु.—१ दोष, अपराध, कसूर, भूल ।

२ पाप ।

हेळमेळ—सं. पु. १ मित्रता, दोस्ती ।

२ घनिष्ठता ।

हेळवणौ, हेळवबौ—देखो 'हिलाणौ, हिळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मावै हेळवी दखणी दळ मांहै, मुगलां दळां मझारी । अरियां उग्ररि बिचै घसि आघी, कूंपळै चरै कटारी ।
—नाहरसिंह आसियौ

उ०—२ पाटवी हेळवी वेग मैं पैलकै, तैं समैं गैलकै लीध टाळा । पागती 'दलौ' नै 'रत्तन' परणीजतै, वाट जोती रही 'गजन' वाळा ।
—नरहरदास बारहठ

उ०—३ हेळवी 'अमर' री करती हरख । 'जसा' अपछर रही वाट जोती ।—नरहरदास बारहठ

२ देखो 'हिळणौ, हिळबौ' (रू. भे.)

हेळवियोड़ौ—१ देखो 'हिळायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'हिळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री हेळवियोड़ी)

हेळहमीर, हेळांहमीर—वि.—बहुत बड़ा दानी, दातार ।

उ०—१ लख धीर वडौ लखलूट, खिति खगिति आगि अखूट । निज वांसि चडावण नीर, हद वेहद हेलहमीर ।—ल. पि.

उ०—२ मुरधर रूप सिरै रिड़मालां, गज ढालां ढाहण हमगीर । आंपण 'वलू' 'दुरग' जिम आथां, हाथां 'चिमनौ' हेलहमीर ।
—बुधजी आसियौ

हेळा, हेला—सं. स्त्री. [सं. इला, हेला] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (नां. मा.)

उ०—१ सबळ दळ आस्ट्रिया विलोमां साझतां, बाजतां त्रांबगळ कहर वेळां । 'पतौ' ईडरपती ढिलीवै पखायत, हुवौ दळ छत्रियां छत्र हेळां ।—जुगतीदांन देथौ

उ०—२ सबल दांन बहुमांन कणय कव्वाहि समप्पइ, हेळा हयवर कोडि जोडि मग्गण थिर थप्पइ ।—व. स.

२ तरंग, लहर, उमंग ।

उ०—१ हेळा 'अगथी' सिंध ज्यूं एकै आच हूंत हीलोळिया, धीस खगां एकै ज्यूं वौळिया नाग धींग । सुरांपती एकै वज्र रौळिया पहाड सारां, सारां खळां ऊतोळिया एकै चांदसींग ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ हेळा उदार अंगज हुवौ, रुद्रदत्त सिवदत्त रै ।—वं. भा.

३ क्रीड़ा, खेल ।

उ०—राज तिहां परिपालए, टालए वयर विवाद । हेलां परदल नामए पामए रणि जयवाद ।—प्राचीन फागु-संग्रह

४ नायक से मिलते समय नायिका की विनोद सूचक प्रेमपूर्ण क्रीड़ा की मुद्रा ।

५ दुख ।

उ०—मूकी सेवरा री हेळा उरहाई, मैंदी देवरा री वेळा मुरझाई । खावरा हरा घन ऊणी मन खूणैं, धांमरा तांमरा विन जांमरा सिर

धूणौं ।—ऊ. का.

६ चिल्लाहट, हल्ला ।

७ चढाई ।

८ धावा, हमला, आक्रमण ।

९ डांट-फटकार ।

१० कठिनाई ।

११ हीन भावना, तिरस्कार, अपमान ।

१२ सरलता, भोलापन ।

उ०—हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रहस्पति तणी, प्रतिग्या फरुसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दांन बलि तणउं, अवस्टंभ मेरुतणउ.... ......।—व. स.

क्रि. वि.—सरलता से, सुगमता से, आसानी से, सहज ही।

उ०—१ सारंग चाप चडाविय डाविय बाहु नइ प्रांणि। हरि हेला ही डोलिय तोलिय तसु बलु प्रांणि।—जयसेखर सूरि

उ०—२ तुरंगमि चडिउ, लोकि तरवरिउ, सत्तरि सहस्स गुजरातनु धणी, जुनुगढ चांपांनेर प्रमुख विसमगढ लीधा, मन वंछित काज हेलां सीधा, सघला राजा आंण मनाव्या...........।—व. स.

वि.—१ दानी, दातार।

उ०—१ देवावत लिछमण जग दाता, हेळा 'करण' खिताव हुवौ। भिड़जां भड़ां चारणां भाटां, मुंहगा वरतणहार मुवौ।—बां. दा.

उ०—२ हेला भगवांन भोज क्रन हातां, दांन करण कव हरण दुख। छत्रधर कवर आंन नह छाजै, राज कंवार जवांन रुख।

—जवांनजी आढौ

२ काम का पाबन्द।

३ मैला उठाने वाला।

हेलारिया—देखो 'हिलारिया' (रू. भे.)

हेलि—देखो 'हेली' (रू. भे.)

उ०—१ भारि अढारै वन भरिउं, सांभलि नागरवेलि। अलगी रहि अेरडि तुं, चंपि चढी दिइ हेलि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ हेलि भणि सुणि रे हण्यां, माहरूं कीधउं जोई। कलि चंपावउं जै समइ, सुद्धि न जांणइ कोई।—मा. कां. प्र.

उ०—३ कालि मेलावसि कांमिनी, हीइ म हारिसि हेलि। तूं तंनया अम्ह आज थी, माधव माहरी वेलि।—मा. कां. प्र.

उ०—४ हेलि वंधावइ हींचका, सुरतर केरी साख। माधव साथि हींचसिउ, लीलां लटकइ लाख।—मा. कां. प्र.

हेळियोड़ौ—१ देखो 'हिळियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'हिळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हेळियोड़ी)

हेली—सं. स्त्री. [सं. सहकेलि] १ सखी, सहेली।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, सूर धीर समरत्थ। जुध में बांमण डंड जिम, हेली बाधै हत्थ।—बां. दा.

उ०—२ हे हेली पती रा प्राक्रम री इचरज जैड़ी वात हैं थनै कांही कहूं हूं तौ औ पौरस देख वलिहारी जाऊं।—वी. स. टी.

उ०—३ हेली थारौ करहलौ, मोही बिलगौ बार। कै कांटां री बाड़ कर, कै घर बांधौ चार।—अग्यात

२ देखो 'हवेली' (रू. भे.)

उ०—१ अगरवालां आपरी हेली मैं मां'रजा री बेटी री जांननै एक जीमणवार देवणरौ जोस देखाळ्यौ।—दसदोख

उ०—२ अबकै तौ बैं लूंटी कतारां, अब लूंटैगौ हेली। आसांमी ठस पड़गी, होगी रुपिया की थेली।—डूंगजी जवारजी री छावली

रू. भे.—हेलि।

हेलु, हेलू—देखो 'हेलौ' (रू. भे.)

उ०—दूतै कंठ फैळू, थयौ दुहेळू, अज्जा मेळू, अंत वेळू। करतै पुत्र हेलू नांम कहेलू, सव क्रमठेलू, छू टेलू।—भगतमाळ

हेलूर—सं. पु.—घोड़ों का समूह।

हेलूसणौ, हेलूसबौ—देखो 'हुलसणौ, हुलसबौ' (रू. भे.)

उ०—सात मैं पाताळ वासंग नागरै माथै टपूकड़ा खाइ नै रहिया छै। त्यांरी सौरंभ री बास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरग सूं हेलूस नैं उतरै छै देवांसुरां रा विवांण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै।

—रा. सा. सं.

हेलूसियोड़ौ—देखो 'हुलसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हेलूसियोड़ी)

हेलौ—सं. पु.—१ सहायनार्थ किसी को बुलाने के लिये दी जाने वाली आवाज, दर्द भरी पुकार, आर्त्त-पुकार।

उ०—१ वीस भुजाळ स्यायक पातां वळ, हुवै हाजर सुण हेलौ।

—जसकरण जी लाळस

उ०—२ लांठापै पागड़ै लागा, खोस खोस पैलां धन खाय। हूं कंगाळ करूं तौ हेलौ, दुरबळ भगत न आऊं दाय।—टीकमदास

उ०—३ धरणीतळ व्याकुळ छेलौ सिर धुणियौ, सरणागत वच्छळ हेलौ नह सुणियौ। लिछमी बर छांनूं कांनूं लै लीनूं, दीनन बंधू हुय दीनन दुख दीनूं।—ऊ. का.

२ किसी को कुछ कहने या सम्बोधन करने के लिये दी जाने वाली आवाज, पुकार, सम्बोधन।

उ०—१ तिण सगत सीहजी मार रांणाजी नै हेलौ पाड़ कह्यौ घोड़ो तीनां पगां है तद देख जीण उतारतां ही घोड़ौ छूटौ रांणैजी महा विलाप कियौ।—वी. स. टी.

उ०—२ मां रै मूंडै औ नांव म्हारै कांनां इमरत ज्यूं लागतौ। हेलौ मारतां उणरौ गळौ माखण सूं भरचौ ज्यूं लखावतौ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ जद स्वांमीजी बोल्या रे मूरख हेलौ पाडचां पिण पाछौ बोलै नहीं। वेणीरांमजी स्वांमी नरमाइ करनै बोल्या महाराज मैं सुणियौ नहीं।—भि. द्र.

[illegible] सिंगारादि, हुला।

उ० — १ [illegible] काळी मनै वीर मेना, हेला [illegible] । [illegible] वंनै वाहा वोगा [illegible] 'कुमारी' [illegible] वीर मेन।

—प्रभुदान मोतीसर

उ० — २ [illegible] रे, वनू वनू हुई छै देह [illegible] रे, राजा देही मू नांख्यी नेह रे।

—जयवांणी

४ [illegible]।

उ० — [illegible], घड़ी मुहारां ऊंच। टणकापण रा [illegible] (भारी) मारै हेला मूछ।—अग्यात

५ नाद।

उ० — [illegible] मांथै हालर [illegible] चौपड़-पासा, सिकार, [illegible] लड़ायां, रथ-दौड़, घुड़-दौड़, पाडा, भैंसा, [illegible] लड़ायां रा वरणांग तो घणाई करिया है। [illegible]

६ [illegible] का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम पद में १६, दो पदों में १४-१४ मात्राएँ तथा अन्त में चौकल सहित तुकान्त मिलता है। तीसरे पद में १० मात्रा और अन्त में गुरु लघु होकर तुकान्त मिलाया जाता है।

उ० — कळ [illegible] दुपद, [illegible] अंत चौकळ आंगिये। पद [illegible] दीह लघु पड, ठीक मोरा ठागिये। इण भांत फिर पद तीन उचरै, पूर द्वाळै पाइयै। कळ सोळ धुरपद प्रभू गुण कर, गीत हेला गाइयै।—र. रू.

रू. भे. — हेलउ, हेलउ, हेलु, हेलू।

हेल्थ-सं. स्त्री. [अं.] तन्दुरुस्ती, स्वास्थ्य।

हेवत - देखो 'हेमत' (रू. भे.)

हेव-क्रि. वि. [सं. एव] १ अब, वस्तुतः।

उ० — १ जगपति हुउं जि मनाविसु भाव सुहावउ हेव। संभलि स्वामीय देवर देव म्हउं तुज्भ सेव।—जयसेखर सूरि

उ० — २ मुगधां नव नव परि मालणां, सूत्रयां सरहां धी अनि [illegible]। [illegible] सुरही सेव, सूकी सीग खांड घ्रित हेव।

—हीराणंद सूरि

उ० — ३ [illegible] आयो छं हेव रे, काच तजो पाच गहो परसेव रे।—[illegible]

२ [illegible], सूचक शब्द, हां।

हेवन [illegible], कहन ?

उ० — [illegible] उण वरस चोखी पाक्योड़ी ही। गांम सूं डगमगा [illegible] नीला हेवन [illegible] हा अरवारै डाळ में आयोड़ा [illegible], [illegible] हा जांणै हरियल जाजम विछि-योड़ी है।—[illegible]

हेवा-वि. अभ्यस्त, आदी, किसी पर निर्भर।

उ० — १ म्हारी दुख तो म्हैं ज्यूं-त्यूं भुगत लियौ। म्हैं तो विरखा रै हेवा व्हैगी। सुख री तो नांव ई म्हारै हीयै भरै कोनीं।

—फुलवाड़ी

उ० — २ डोकरी कह्यौ—रांम मारचा पूरी बात तौ सुण, अठी री उठी भिड़ावण रै हेवा है, नीं व्है तो राजाजी नै ई अठै भेज दीजै।

—फुलवाड़ी

उ० — ३ हिंदी अंग्रेजी लिखीजै तौ परी पण मूंडौ राजस्थानी रै हेवा पड़ियोड़ौ। करतां-करावतां ठैट हमैं जावता होट अंग्रेजी हिंदी माखूं फरां फरां हिलण रै हेवा पड़िया।—जहूरखां मेहर

सं. स्त्री.—आदत, स्वभाव।

उ० — माथौ ऊंचौ करनै बोल्यौ—आपनै कीं उजर नीं व्है तौ म्हैं चाटलूं। आ खाज इण इज हेवा पड़गी तौ पछै दूजौ काई इलाज।

—फुलवाड़ी

हेवै-सं. पु. [सं. हय-पति, प्रा. हयवई] १ बादशाह, सम्राट

उ० — १ 'ईदा' 'जैता' भोजराज, चोज कमंधां काज। हीण करण हेवै दळां, जीण भिड़ज्जां साज।—रा. रू.

उ० — २ हेवै दळां अमंगळ हूवौ, मुवौ सेख मिरजौ पण मूवौ। आसू वद वारस दिन आसुर, मौत अचिंत गया कर संभर।

—रा. रू.

उ० — ३ प्रमगुर कहै पधारौ 'पात्तल' प्राभा करण प्रवाड़ा। हेवै सरस अमलिया हींदू, मौसूं मिळ मेवाड़ा।—दुरसौ आढौ

२ मुसलमान।

उ० — ऊठी वाग दवाग अलल्लै, हेवै मार लियौ हरवल्लै।

—रा. रू.

२ मुर्गी द्वारा प्रजनन हेतु रखे अण्डों पर बैठने की क्रिया।

३ अभ्यस्त होने की क्रिया, आदी होने की क्रिया, भाव या अवस्था।

कि. वि.—अब।

उ० — पछै भाटियां कनै कोहेक मेहराज रौ चाकर राख दियौ रजपूत गयौ, तिण कह्यौ—'हूं मैराज नूं मराइस हेवै कटक खांचियौ।—नैणसी

रू. भे.—हेव, हैवे, हैवै।

हेवैंपत, हेवैंपति-सं. पु. बादशाह, सम्राट

उ० — १ जतन कियौ सहिजावतौ, अवदुल्ला खां आय। हेवैंपत आयां हुवै, तै मनुहार सवाय।—रा. रू.

उ० — २ वै भाई विरदाळ, औरंगसाह मुराद इम। हेवैंपति भेळा हुवा, जुध मंडण जमजाळ।—वचनिका

रू. भे.—हैवेंपत, हेवेपति, हैवैंपत, हैवैंपति।

हेवैंपुर-सं. पु.—दिल्ली नगर का नाम।

उ० — समनाय साय भागौ सुणे' दिल्लीनाथ दहल्लियौ। करि एम

फतै पहली कुंवर, हेवैपुर सिर हल्लियौ ।—रा. रू.

रू. भे.—हैवेपुर ।

हेसमी–सं. पु.—एक प्रकार का व्यंजन विशेष ।

उ०—दहीथरां तिलसांकली फीणा वरसोला, साकरीग्रा चंणा, कोहलायाक, दूधपाक, सेलडीपाक, खरगां पाजां, जलेवी **हेसमी** वारू पडसूधी तणा आछा मांडा ···।—व. स.

हेसा–सं. स्त्री—हिनहिनाने की ध्वनि, ग्रावाज, हींस ।

हेसारी–वि.—हिसार प्रदेश का ।

उ०—गुजराती, सुरती, खंभाइची, भुजनगरी, **हेसारी**, उज्जीण रा, वणिया धणौं सीसूरा, पीतल लोह दांत रा जड़िया ।—रा. सा. सं.

हेसियत—देखो 'हैसियत' (रू. भे.)

हेहेकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

उ०—**हेहेकार** पुकार हुइ, रांम रांम भणि रांम । धणू कहर बीती घड़ी, जहर लहर विधि जांम ।—वचनिका

हैं–ग्रव्यय—१ एक ग्रव्यय शब्द जो ग्राश्चर्य, भय, हतप्रभ होने की दशा में मुंह से ग्रनायास ही उच्चरित होता है ।

२ किसी बात पर ग्रसहमति या इन्कारी सूचक ग्रव्यय ।

३ 'होना' क्रिया का वर्त्तमान कालिक वहुवचनीय रूप ।

हैंकंप—देखो 'हैकंप' (रू. भे.)

उ०—**हैंकंप** हुग्रा नाग वासिक ईस ब्रह्मा रूप । मुख करै ऊंचौ वेलि रै मिस देखि डरइ ग्रकूप ।—प. च. चौ.

हैंजम, हैंज्जम—देखो 'हैजम' (रू. भे.)

उ०—लै वनवास हराय महालछ, कप **हैंज्जम** ग्रणपार कस । काटां हिव भालै किरमाळां, दस सिखाळां सीसदळा ।—र. रू.

हैंडवेग–सं. पु. [ग्रं.] सफर या यात्रा में सामान डाल कर ले जाने का थैला, हाथ में रखने का थैला ।

हैंडल, हैंडिल–सं. पु. [ग्रं.] १ साईकिल, मोटर ग्रादि वाहनों या मशीनों को चलाने या संचालन करने का हत्था ।

२ किसी उपकरण का मुठिया या दस्ता ।

हैंदू—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—हरीया ग्रपनै ब्हाल मैं, खलक फिरै खुसियाळ । होसी खालिक वाहिरौ, हैंदू तुरक वेहाळ ।—ग्रनुभववांणी

हैंवर, हैंवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—१ सक चोवनउ सौ सोम, हांकि संका विण **हैंवर** । पांणी पथ लग पूगी, धणी वणियौ ग्रारज धर ।—वं. मा.

उ०—२ दिग्रा वधारा देस दै, **हैंवर** द्रव्व हसत्ति । पतिसाही थां ऊपरां, यूं कहिग्रौ ग्रसपत्ति ।—वचनिका

उ०—३ मच धांमधूम सर सेल मार, पड़ त्रास ग्रास ग्राठूं पुकार । दिन लाख घटै **हैंवर** दरक्क, जवनांन पड़ै निस दिवस जक्क ।

—रा. रू.

हैंसत—देखो 'हैसियत' (रू. भे.)

उ०—छोटू मारजा एक मामूली **हैंसत** रौ नौकरियौ मिनख ग्रापरौ ग्राघौ धिकावै ।—दसदोख

हैंसु, हैंसू—देखो 'हींसू' (रू. भे.)

हैंसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू. भे.)

उ०—१ ह्रांम कांम लोचणी उलाळी ग्राकास जावै । चावळ रौ चौथौ **हैंसौ** खावै····।—रा. सा. सं.

उ०—२ रावजी रौ चाकर कोई विगर हुकम न राखै । माहाजन पाछौ ग्रावै तिण रौ धांन गडीयौ छै, तिण रौ **हैंसौ** ३ रावळै **हैंसौ** १ धांन रौ धणीयां रौ छै ।—नैणसी

उ०—३ टंकसाळ व्याज मैं **हैंसौ** ४, मुदत उप्रंत हुवां **हैंसौ** ८ तिण रा रु० २०००) री ठोड़ ।—नैणसी

है–सं. पु.—जल, पानी । (ना. डि. को.)

क्रि.–१ 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप ।

उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पांव । सयणै घाटा वउळिया, वइरि जु हूवा वाव ।—ढो. मा.

उ०—२ सूरा सकजा सापरसि, कलि मैं होय ग्रनेक । हरीया मन इंद्री जिता, जुग मैं है कोई एक ।—ग्रनुभववांणी

२ देखो 'हय, (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ ग्रारुहियौ ईखवा साह दरगह सकबंधी । है गै दळ हल्लिया, मिळै ग्रणकळ ग्रनिमंधी ।—रा. रू.

उ०—२ है थाटां विच हींडळै हाथी, छत्रपत जिसा चालिया चढै । 'गज-बंध' तणा ग्रावतां गढवां, गज-पत जड़ै किंवाड़ गढै ।

—किसनौ ग्राढौ

३ देखो 'हे' (रू. भे.)

उ०—ग्राहवी वेलां कुहुनि न पडि मांनुखनि भवि ग्रावी । है रे विधाता इम कां पीडि उत्तम देहडी लावी ।—नळाख्यांन

रू. भे.—हइ, हई ।

हैकंड–सं. पु.—१ योद्धा, वीर । २ शक्तिशाली, वलवान

३ दीर्घकाय, मोटा-ताजा ।

४ वड़ा ग्रफीमची ।

५ ग्रश्व, घोड़ा ।

रू. भे.—हकंड ।

हैकंप–सं. पु.—भय, डर, त्रास, ग्रातंक ।

उ०—१ कसि वांक वाळां काढि वैराइयां सिर वाढि । **हैकंप** भौ महलार, त्यां दीध द्रव्य तोखार ।—रा. रू.

उ०—२ धर सारी पड़ि धाक, पुरतुर गिर कीजै पहट । **हैकंप** उर नागिंद्र हुग्र, चक च्यारू चढि चाक ।—वचनिका

वि.—भयातुर, कंपित, ग्रातंकित ।

उ०—वाधै तुझ पवंग 'लूणावत', घड़ ग्ररि भांजतौ घण घाय । धमस तैण **हैकंप** थए धरती, निमध कंध थरहरै निहाय ।

—गेहौ मीसण

[illegible] ।

[illegible] —क्रि. अ.— डरना, भयभीत होना, घबराना, आतंकित [illegible] ।

उ०—१ [illegible] राजा [illegible] विरांन [illegible] । आवी [illegible] ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—२ [illegible] समधी पांवड़ां देवे, रिमां सीन [illegible] । हैकंपै कायरां प्रांण छूटगा वीरांण [illegible] भांण ।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ [illegible] होना, थर्राना

उ०—[illegible] घरियाळ तिर, प्रळै काळ रौद्रां प्रबळ । [illegible] हैरांणिया, आगि पवन्न सिधु जळ ।—रा. रू.

हैरांणियोड़ौ—भू. का. कृ. १ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ, आतंकित हुवा हुआ. २ कंपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ । (स्त्री. हैरांणियोड़ी)

हैरांण—देखो 'हैरांन' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हैकंपण, उलट गढ [illegible] कियौ उदंगळ । औदरै मंदो-[illegible] आया महम ।—वि. सं. सा.

[illegible]—सं. पु.—घोड़े के गले में पहनाया जाने वाला एक गहना ।

वि.—तौल में कुछ ज्यादा, अधिक ।

हैकार—सं. पु.—हाहाकार ।

उ०—[illegible] हैक सांकळियौ, त्रिहूं लोकै हैकार तवै । वीता [illegible] वहतां, रावत पड़ै न खड़ै रिवै ।

—जगतसिंह सगतावत

हैसारव—सं. पु.—शब्द, आवाज ।

उ०—[illegible] सींगड़िया तणी स्रेणी, पट्टै वांणी फारक तणी [illegible] । ताौ हस्ती घंट सीत्कार करती, पाखरियांनी स्रेणी हैसारव [illegible] । पंच शब्द तणां निरघोस, जमला उच्छलइ रण-[illegible] ।—व. सा. सं.

हैगढ़, हैगांन—सं. पु.—घोड़ों का समूह, अश्वदल, घुड़सेना ।

उ०—[illegible] हीन हैगांन हय जय [illegible] वंदिजए ।—वं. भा.

हैग्रीव—देखो 'हयग्रीव' (रू. भे.)

उ०—[illegible] हैग्रीव [illegible], दत्तात्रेय हंस दामोदर । राव [illegible] प्रभ ।—ह. र.

[illegible]—सर्व.—[illegible] ।

उ०—[illegible] में [illegible] री नांम कीना । हाथूं हाथि सावक [illegible] दीनां ।—शि. वं.

हैज—सं. पु. [अ.] १ स्त्री का मासिक धर्म ।

उ०—[illegible] देख कै, घड़ घड़ी [illegible] । औरत कै हैज कै [illegible] आवै ।—दुरगादत्त बारहठ

२ देखो 'हैजौ' (रू. भे.)

हैजम—सं. पु.—१ सैन्य दल, सेना, फौज ।

उ०—१ कहि यम हैजम करै, विसम रूपी विकराळा । चडि मद-भर चालियौ, तूर वाजतां वंबाळा ।—सू. प्र.

उ०—२ चाळीस कोस हैजम चलाय । जाळीस धरत वाली स जास

—वि. सं.

२ अश्व, घोड़ा । (डि. को.)

३ दल, समूह ।

४ तलवार । (डि. को.)

रू. भे.—हेजम, हैंजम, हैंज्जम, हेज्जम ।

हैजमप, हैजमपत, हैजमपति—सं. पु.—सेनापति, सेनानायक ।

हैजौ—सं. पु. [अ. हैज:] प्राय: गर्मी की मौसम में होने वाला एक घातक रोग जिसके कारण रोगी को कै व दस्त अत्यधिक मात्रा में होने लगते हैं। यह अत्यन्त घातक एवं संक्रामक रोग होता है, विसूचिका ।

उ०—मुलक में हैजा री ऐड़ी कोप व्हियौ कै मिनख माखियां री गळाई दटाक दटाक मरण लागा ।—फुलवाड़ी

हैज्जम—देखो 'हैजम' (रू. भे.)

हैट—सं. पु. [अं.] १ एक छज्जेदार अंग्रेजी टोप ।

२ देखो 'हेट' (रू. भे.)

हैटलौ—वि. [स्त्री. हैटली] नीचे वाला ।

१ निम्न, दबा हुआ, शोषित ।

उ०—पला कुजकोई री कोई गिनार ई कौ करतौनी । समाज रै हैटलै तबकै रै मिनखां रै मन विलमास री रम्मतां किसी ही अर कीकर रमीजती इण माथै कुण गिनार करै ।—चितरांम

२ देखो 'हेटौ' (रू. भे.)

३ देखो 'हेटलौ' (रू. भे.)

हैठ—देखो 'हेट' (रू. भे.)

हैठे, हैठैं—देखो 'हेटै' (रू. भे.)

उ०—१ ईण विध सूं राजा डूंगर सूं उत्तर नै आंवां हैठैं आयौ नै छड़ी री दैनै आंवां लेनै आपरी फौज में आयौ ।

—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ नोट अर नगदी कोट री जेब रै हुवालै करचा तथा डागळै री पैड़चां सूं हैठैं ऊतरचा ।—दसदोख

उ०—३ अरसिंह देव भी साथ ही हैठैं आय खड्ग खेल्ह मचाय महा-प्रळय री महानट री आभा धरी ।—वं. भा.

हैड—देखो 'हेड' (रू. भे.)

हैडइ, हैडई—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—पावस बरसइ पराणडै, नयणै वाली नींक । हैडइ गाढइ हुं दीऊं, ढीलूं करवा ढींक ।—मा. कां. प्र.

हैडउ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—क्षणु राता क्षणु पीअला, क्षणु नीला क्षणु सेत । चोली

चरण पालटइ, हैडउं पूछी हेत ।—मा. कां. प्र.

हैडर—सं. पु.—सुरक्षित घास का मैदान ।

उ०—वीकमपुर कनै लूडी रौ **हैडर** कहीजै है । ऊ विक्रमादित्य गायां, भैंसां, सांढां, छाळियां सूं भिळायौ ।—वां. दा. ख्यात

हैडु, हैडौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ नींसासइ नींठइ नहीं, सासतणउ ऊसास । फादक नहीं फिटकारीउं, हैडुं धरतूं ग्रास ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ तीव्र स्वर तिमरी करइ, भरइ वींहुला वाद । स्त्रावण तउ पणि माहरइ, हैडा भीतरि दाह ।—मा. कां. प्र.

हैणौ, हैबौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू. भे.)

हैतारत, हैतारथ—देखो 'हितारथ' (रू. भे.)

उ०—ग्राप मरंत मरण न दहै, हर **हैतारत** खड़ै सही । एह धरम विस्णोइयां तणौ, विस्ण भक्त 'उधौ' कही ।—वि. सं. सा.

हैताळ—सं. स्त्री—१. घोड़े के सुमों की ठोकर ।

उ०—मेवास तूटगा मगज मेट । फूटगा गिरंद **हैताळ** फेट ।

—वि. सं.

२ देखो 'हेताळु' (रू. भे.)

हैथंड, हैथट, हैथट्ट, हैथाट—सं. पु.—१ ग्रश्व दल, ग्रश्वारोही-दल, घुड़सेना ।

उ०—१ वेल्हतौ गजां **हैथाट** लागा ग्रटल, रीठ वागां खगां दुवै राहां । जोध 'जसराज' पूगौ भलौ जूजवौ, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां ।

—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—२ हिलै संप **हैथाट**, चलै वांना वहरंगी, इळ जळनिध उल्लटै, जांण वड़वानळ संगी ।—रा. रू.

उ०—३ **हैथाटां** वीच हींडळै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै । 'गजबंध' तणा ग्रावता गढवां, गढपत जड़ै किवाड़ गढै ।

—किसनौ ग्राढौ

२ सेना, फौज । (ह. नां. मा.)

हैदर—सं. पु.—दीवारों में लगाये जाने वाले बड़े व भारी पत्थर ।

हैदरा-वादी-सिंधी—सं. पु.—एक प्रकार का मुसलमानी सैनिक दल जो रुपयों के लोभ से युद्ध करता था । यह दल मीरखां पींडारी के पास था ।

हैदळ—देखो 'हयदल' (रू. भे.)

उ०—१ त्रेपन तुड कछवाह, साख साखरां सुमट्टां । **हैदळ** पैदल मिळै, यवन हिंदु गज थट्टां ।—ला. रा.

उ०—२ **हैदळ** कळळ पायदळ हूंकळ, सीसीदै खडतै संनढ । गहकै ही बीजांगढ पतियां, गंजै ग्रगंजी त्रिकूट गढ ।

—महारांणा लाखा री रीत

हैप, हैफ—सं. पु. [ग्र.] १ ग्राश्चर्य, विस्मय, ताग्रज्जुव ।

उ०—१ 'पातल' वरख पिचंतरां, सतरां त्रपत 'सुमेर' । जुड़िया जाता जरमणां, **हैप** हुवै वळ हेर ।—किसोरदांन वारहठ

उ०—२ जोधै हठमल जेम, करै कुण नेम करग्गे । सिर पड़ियां साभियौ, खेफ विळ **हैफ** खड़ग्गै ।—रा. रू.

२ ग्रफसोस, खेद ।

रू. भे.—हेप, हेफ ।

हैबंर, हैबर—देखो 'हयवर' (रू. भे.) (डिं. को.)

हैबौ-सं. पु.—हल्ला, शोर ।

उ०—तरै ग्राप नै पोरस हुवौ । ग्राप हंकारिग्रा । सखरा राजपूत नूं वाढिग्रौ । तरै महा **हैबौ** हुग्रौ । महा वेढ हुई ।

—कल्यांणसिंघ वाढेल नगराजोत री वात

हैमंत—सं. पु.—१ घोड़े द्वारा पानी में मुख रखकर नासिका से किया जाने वाला शब्द ।

२ देखो 'हेमंत' (रू. भे.)

हैमर—देखो 'हयवर' (रू. भे,) (ह. नां. मा.)

उ०—उभै सहंस ग्रठसठ धुज ऊतंग, वीस सहंस **हैमर** धुज वैछंग ।

—सू. प्र.

उ०—२ होमिया नाग 'ग्रजा' नर **हैमर**, गढपतीयै होमिया गयंद । 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूंटां चहूंऐ तणा कुरंद ।

—रांणा जगतसिंह री गीत

हैमवत—वि. [सं. हेमवत्] १ वर्फ के समान, हिम जैसा ।

२ हिमालय जैसा, हिमालय के समान ।

३ हिमालय का, हिमालय, सम्बन्धी ।

४ हिमालय पर होने वाला ।

५ देखो 'हिमवत' (रू. भे.)

हैमवती—देखो 'हेमवती' (रू. भे.)

हैमार—देखो 'हमार' (रू. भे.)

उ०—कतराक दीहाड़ा गिऐ सेणा हुग्रा । तरै वचारिग्रोज **हैमार** एहड़ी सतुक नहीं जौ ग्रांटौ लीजै । पण क़माय खाणौं, पछै रांमजी भली करसी ।—कल्यांणसिंह वाढेल नगराजोत री वात

हैमाळै, हैमाळौ—देखो 'हिमाळय' (रू. भे.)

हैमुख—सं. पु.]सं. हयमुख[१ वड़वानल का एक नाम । यह ग्रौर्व ऋषि का क्रोध रूपी तेज जो वड़वानल के रूप में समुद्र में स्थिति माना गया है ।

२ हयग्रीव ।

उ०—हरणकस्यप **हैमुख** हरणायख, खाधा कै फिर खासी । तौ पण भूख न गी तिण तावौ, वावौ खाय उवासी ।—र. ज. प्र.

हैय—१ देखो 'हे' (रू. भे.)

उ०—१ **हैय** देवह हैय दैवह, दुट्ठ परिणांमु । पिय्ं पंचह पेखतां, द्रुपद धीय कडिचीरु कड्ढीय ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ **हैय** देव कुण दुरमति दीधी । एउ ग्रोलग ग्रह्मं कांई लीधी ।—साळिसूरि

हैये, हैयै—१ देखो 'हैहय' (रू. भे.)

२ [illegible] (रू. भे.)

उ०—[illegible] सांम्है, हेरो पाखमानर हैये हुलासै ।

—दैवि.

हेरड़ [illegible] (रू. भे.) (ग. मा.)

हेरां [illegible] १ [illegible] सूचक अव्यय शब्द ।

२ [illegible] (रू. भे.)

हेरांन, हैरांन-वि [अ. हैरान] १ परेशान, अशान्त, दुखी, तंग ।

उ०—१ [illegible] निरासा मे तो पारगत हा उज । गुंगावता तीर [illegible] माता रै पारधार । तिणियारपा गोवती बिलखती । [illegible] हैरांन । मामा दिनां नांई वळै नवर रानी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ [illegible] वगर्न वहान मैं, रना जुग जेहांन । गुर गोविंद [illegible], होसी सब हैरांन ।—अनुभववांणी

उ०—३ मुनि दैं काजी मुसलमांनां, गरदड़ी काटि कीया हैरांनां [illegible] रय गला कटावैं, अनहक करि करि हक मिटावैं ।

—अनुभववांणी

उ०—४ उग मरद री वचन सुणियो तरै हैरांन हुवौ अर सभा माहीं सू बाहिर आयौ । तुरंत रै समाचार अजीज नूं लिख भेजिया ।

—नी. प्र.

२ निराश, हताश, थकित ।

उ०—१ पण गोरी वेळा री तो दोपार व्हैगी अर दोपार वीत्यां सांझ पड़गी पण टावर रो तो कठैई पतौ इज नीं । मां-वाप वापड़ा फिर-फिर नै हैरांन व्हैग्या ।—अमरचूनड़ी

उ०—२ गद्दिद गदिद । गाल उधेड़ नांखी पण माटो भाठो बोलै तो मूंडै बोलै । पुलिस मार-मार नै हैरांन व्हैगी ।—अमरचूनड़ी

३ आश्चर्य चकित, निस्तब्ध, हक्का-बक्का, विस्मित ।

उ०—१ सरफदीन आगोळाई ऊतरीयो । रा० वीठलदास अजांणरो दरबार जैमल बैठो थो । तठै आय ऊभो रह्यो, पगै लागो । जैमल देख नै हैरांन हुवौ ।—नैणसी

उ०—२ दूजै दिन पीचड री सोरम सूं चारूं कूंटां मार भभरोळां पड़ण लागी । लोग-बाग देखता जकौ ई हैरांन । अैड़ी अनूठी रूंख तो आज पैंली कोई देख्यो ई नीं ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—[illegible], हरांन, हेरांन ।

हैरांनी–स. स्त्री. [अ. हैरानी] १ परेशानी, अशान्ति, कष्ट, दुख, तकलीफ ।

उ०—सेठ री महीणी, धांन दो कोस नेड़ै, पग बळ जासी, घणी हैरांनी हुवसी, पण महाराज री परची तौ पूरी करणौ ही पड़सी ।

—दसदोख

२ निराशा, थकांन ।

३ आश्चर्य, विस्मय ।

हैराव—देखो 'हयवर' । (डि. को.)

उ०—प्रथम करनि सिरपाव, जमदड़ खग जवहरत जड़ित । हाथी गड हैराव, साह दीध 'गजसाह' नूं ।—सू. प्र.

हैवंत–सं. पु.—घुड़सवार, अश्वारोही ।

हैव–सं. पु.—१ एक प्रदेश का नाम ।

उ०—चीरण महाचीण सिवस्थांन पुरासन मूलथांण मद्र अंद्र अंतरवेध विराट करहउ वाइव हैव, आरयावरत्त ब्रह्मावरत्त त्रिगरत्त प्रभृति देसा ।—व. स.

२ देखो 'हैवं' (रू. भे.)

उ०—हैवह हिय साल थारी हद, विहद खटकै पंच वखत । लोह जसो दुखै नह लागो, अण लागो दूखै अखत ।

—महारांणा राजसिंघ री गीत

हैवर, हैवरौ– देखो 'हयवर' (रू. भे.)

(डि. को; डि. नां. मा; ना. डि. को.)

उ—१ होइ लोह गोळा मुगळ दोळा जोर जुड़ीया जंग । हैवरां गळि गजगाह बंधे रह्या बिड़द अभंग ।—प. व. चौ.

उ०—२ रोड़ बजि हैवरां आगि धकि रारियां, धजर भालां खेवण अभागो धारियां । भौमि गूगळी गयण चढै रज भारियां, तूटिसी घणा सिर आजि तरवारियां ।

—जालमसिंघ मेड़तिया री गीत

हैवांन–स. पु. [अ. हैवान] १ पशु, जानवर, चौपाया ।

उ०—१ एक बडो पुरुस कही छै दया माया हैवांनां ऊपर कियां इण संसार री बादसाही पाई छै ।—नी. प्र.

उ० २ हैवांन आलम गुमराह गाफिल, अव्वल सरीयत पंद । हलाल हरांम नेकी बदी, दरसै दांनिस मंद ।—दादूवांणी

२ उज्जड़, असभ्य या गंवार व्यक्ति ।

हैवांनी–सं. स्त्री. [अ. हैवानी] १ 'हैवांन' होने की अवस्था या भाव ।

२ पशुत्व ।

३ उज्जड़पन, असभ्यता ।

वि.—पशुओं का, पशु सम्बन्धी ।

हैवे—देखो 'हैवै' (रू. भे.)

हैवेपत, हैवेपति—देखो 'हैवैपति' (रू.भे.)

हैवेपुर—देखो 'हैवंपुर' (रू. भे.)

हैवेराइ, हैवेराज, हैवेराय—देखो 'हैवंपति' ।

हैवै—देखो 'हैवं' (रू. भे.)

उ०—१ घरिओ अणी मुहरि गिरधारी, हैवै दळ हेड़वण हजारी । विरुदां तणी मौड़ सिर बाधी, मारण मरण करण रण 'माधौ' ।

—वचनिका

उ०—२ दुल्लह 'रयण' दुभाळ, सूरा पूरा जांन सहि । हैवै घड़ दुलहणी हुई, धज तोरण गज ढाल ।—वचनिका

हैवैपत, हैवैपति, हैवैपती—देखो 'हैवैपति' (रू. भे.)

उ०—वै भाई बिरदाळ, औरंगसाहि मुरादवै । वै भाई भेळा हुआ, जुध मंडण जमजाळ ।—वचनिका

हैसलौ, हैसल्लौ—देखो 'होसलौ' (रू. भे.)

उ०—है गै रथ पायक **हैसल्लां,** मिळिया दळ जोधां रिड़मल्लां। महि मेड़तै संभाळै मारू, सझि खड़िया दिल्लीपुर सारू।
—रा. रू.

हैसाव, हैसाव–वि.—१ उचित, ठीक।

उ०—ताहरां वीरमदै कहै—जोधपुर रा आंबा वाढीस! ताहरां लोकै कह्यौ—आ आपनूं **हैसाव** नहीं। ताहरां छुरी लेनै कांबड़ी वास्तै आंबारी एक डाहळी वाढी।—नैणसी

२ देखो 'हिसाव' (रू. भे.)

हैसियत–सं. स्त्री. [अ.] १ शक्ति, सामर्थ्य, हौसला।

२ दशा, अवस्था, स्थिति, ढंग।

३ आर्थिक स्थिति, वित्तीय अवस्था।

४ योग्यता, पात्रता।

५ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

६ मूल्य, कीमत।

७ श्रेणी, दर्जा।

रू. भे.—हेसियत, हैंसत।

हैसूड़ौ—देखो 'हींसू' (रू. भे.)

हैसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू. भे.)

उ०—चौकीदारां अटकळीयौ नहीं। (उण दीठौ) भली वात हुई। उपरा तौ उतरीयौ। म्हाहरौ **हैसौ** होसी।—चौबोली

हैहय–सं. पु. [सं.] १ यदु से उत्पन्न एक क्षत्रिय वंश।

२ सहस्त्र बाहु का एक नाम। (डिं. को.)

रू. भे.—हैये, हैयै,

हैहयराज, हैहयाधिराज–सं. पु.—हैहय वंश में उत्पन्न कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

है, है–अव्यय—खेद, शोक, दुख आदि की अवस्था में मुंह से उच्चरित होने वाला एक अव्यय शब्द, हाय।

हैहैकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

उ०—राजा नुं खबरि हुई। एकण सहर का च्यारे सह भेळा हूवा। सारै ही **हैहैकार** हूवौ। राजा अंन खाइ नहीं।—चौबोली

हैहैबोल–सं. पु.—वीर ध्वनि।

हों–अव्यय—१ 'होना' क्रिया का संभाव्य रूप, होना।

२ देखो 'हौं' (रू. भे.)

रू. भे.—हवां।

होंपरड़ीह, होंफरड़ीह—देखो 'होफरड़ीह' (रू. भे.)

होंस—१ देखो 'हूंस' (रू. भे.)

उ०—१ जांणै साहिजादै रा ताइत, वभूत लगायोड़ा जोगीसा छै। तिणां री **होंस** मांणजै छै। मधरौ-मधरौ खांचजै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ दादू जैसा नांम था, तैसा लीया नांय। काती करस्यां खेत ज्यूं, **होंस** र्‌ही मन मांय।——दादूवांणी

२ देखो 'होस' (रू. भे.)

उ०—वडारण घणी धीरज दीवी और छोकरियां पवन करणै लागी **होंस** करायौ। कुंवरसी सांखला री वारता

होंसलौ—देखो 'हौसलौ' (रू. भे.)

उ०—एक तौ उणां कन्है फौज हजार बीस छै फेर मुलक जीत **होंसलौ** वढ गयौ छै सौ लड़ियां पार पड़ै नहीं।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

होंसियौ–वि.—कायर, डरपोक।

उ०—भूंडण-चीलहरां सूं मुकावलौ हुवौ। आदमी दस-पंद्रह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोड़ा बीस तीस घायल हुआ। **होंसियौ** लोग थौ सौ नाठौ आयौ। सहर मांही खबर हुई।—डाढाळा सूर री बात

होंसौ–सं. पु.—अशुभ माना जाने वाला एक प्रकार का वैल।

उ०—**होंसौ** धोरी हळ वैवै, कवळी दूजै गाय। कंथ कहै रे बाळका, जड़ा मूळ सूं जाय।—अग्यात

हो–सं. पु. [सं.] पुकारने या संबोधन करने का शब्द।

उ०—१ वेगि वालि रथ **हो** व्रहन्नडा, कउण सैन्य फिरइ कौरव वापुडा। तांम हस्ति मदिमातउ गाजइ, जांम केसरि निनाद न वाजइ।—सालिसूरि

उ०—२ वाप वाप **हो**। थारा आरंभ पारंभ लागि गढ लेयण हार, किना वाप वाप **हो**। थारा सत तेज अहंकार, राइ दुग राखण हार।—अ. वचनिका

अव्यय—१ हे, अरे, ओ।

उ०—तुझ रणांगणि कारणि कउण हउं, न्रपति तेडी आगलि हूं रहिउं। कहि कि द्रोण कि भीस्म कि करण कइ, समरि **हो** हिव तेडउं कइ सवइ।—सालिसूरि

२ देखो 'हौ' (रू. भे.)

होक–सं. स्त्री—१ सिंह की क्रोधपूर्ण दहाड़।

२ हुक्का।

उ०—कूंडी कुतकौ **होक** चींपियौ कमरकस उठ वूवौ रे। झोळी झंडा और पींजरौ, जिण मांही एक सूवौ रे।—वि. सं. सा.

होकड़ौ—देखो 'होकौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—रीछलै तमाखू दांमदै रोकड़ा। हैकंड भूंडा लगै हाथ मैं **होकड़ा**।—ऊ. का.

होकबौ–सं. पु.—उत्सव, जळसा, समारोह, आयोजन।

उ०—१ असा चढ़ण आखेट **होकबा** गोठ हंगांमा। प्रात नीत कथ पढण करण इंसाफ सकांमा।—केहर प्रकास

उ०—२ हंगांमां **होकबा** राग रंग रा हमेस हुवै। अठी जांनवाळी सोभा वणावै आजांन।—वादरदांन दधवाड़ियौ

वि.—वाहुल्य, अधिक, प्राचुर्य।

[illegible] उगी करनै, मरन [illegible] री मारना
[illegible] (रू. भे.)
[illegible] करी जुवी जुवी । मीयर [illegible] हिमायत हुई ।—नैणसी

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
[illegible] घरारै । घोड़ा मीन मेलीयां, [illegible] । होरक्को [illegible] बाहली विहारां, ग्राछ- [illegible] ग्रमराग । नाम ग्रम चाड 'जूझार' मुत, [illegible] री । पांतीरी थाट जोधो ग्रटर, राड़ रूप [illegible] री । [illegible]

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
(स्त्री [illegible])

[illegible]—जिसका हुक्का पानी बन्द कर दिया गया हो, अपनी जाति या समाज से बहिष्कृत ।

होकाधारी-वि.—हुक्का पीने वाला, हुक्के का व्यसनी ।
उ०—[illegible] सिक निपुण, पामर गांजी परखिया । अमलिया [illegible] प्रबल, होकाधारी हरगिया ।—ऊ. कां.
रू. भे.—हुक्काधारी ।

होकापांणी, होकापांनी-सं. पु.—१ साथ-साथ उठने बैठने व मिलजुल कर खाने-पीने की दशा या अवस्था या भाव ।
२ हुक्का-पानी ।

होकार—देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ०—[illegible] दीन्हो होकार, रांम वैराग निवारै । राखी रेख अलेख, मन मोह [illegible] पसारै ।—चि. सं. सा.

होकारो-सं. पु.—१ किसी को डराने, चौंकाने, प्रताड़ने या सावधान करने के लिये मुख से की जाने वाली कोई आवाज या शब्द ।
उ०—[illegible] सूर री सिकार चढिग्रो छै । भेर घाउ वळिग्रो छै । [illegible] होकारो होठ नै रहिग्रो छै ।—रा. सा. सं.
२ आवाज, शब्द, नाद ।
उ०—[illegible] री वांस फटवां री गड़बड़ाट हुय नै रह्यो छै । होकारा हुवै [illegible] ।—रा. सा. सं.
३ भैंस, गाय आदि पशुओं को रोकने का संकेतात्मक शब्द ।
उ०—सो घोड़ी उछळती, [illegible] भरती आवै छै, सो जांणै आकास [illegible] आवै छै । सो चाकर आय उणरी भोंगड़ी [illegible] होकारो दियो । [illegible] पग घोड़ी [illegible] रोपिया जांणजै मेख्यां [illegible] ।—सूरै खीचै कांधळोत री वात
४ घोड़े की हिनहिनाहट, हींस ।
उ०—[illegible] हुवै तुरियां होकारा । विरयां दुसमन [illegible] ।—ऊ. का.
५ हुंकार ।
६ मौज, मस्ती, आनन्द ।
७ उत्सव, जलसा ।
८ देखो 'हुंकारो' (रू. भे.)
रू. भे.—हौकारो ।

होको-सं. पु. [अ. हुक्क:] धूम्रपान करने का एक बड़ा उपकरण, जो पांच छः प्रकार की बनावट का होता है ।
उ०—१ होको राज री राय रंगीलो, 'नै' है बूंटादार । चिलम सवागण यूं कहै, म्हनै फेर भरो सिरदार ।—लो. गी
उ०—२ विन रांम भजन खोवै वखत, उळझ अमल होकां अठै । इक सास अंत पुल मैं अहह, कोडि महोर मिळणू कठै ।—ऊ. का.
उ०—३ पीछै होको पीवण सारू बायर बिरादरी मैं पधारिया है, वा धाय भाई होको पाय रयो है ।—द. दा.
२ पल्लीवाल ब्राह्मणों द्वारा 'मोसर' (मृत्युभोज) में किया जाने वाला विष्णु यज्ञ । (मा. म.)
रू. भे.—हुको, हुक्को, हूको ।
अल्पा;—हुकलियो, होकड़ो ।

होड़—देखो 'होड' (रू. भे.)
उ०—१ करै मुख रगत युवगत आलिमधणी, डारिद्र फूंकि थकी गढ चीतोड़ । रांण सुं पदमणी चिडी जिम पाकड़ूं, कवण हिंदू करै हम तणी होड़ ।—प. च. चौ.
उ०—२ आप राजा हो । अेकर कोसिस करी तौ हाथ जुड़ग्या, म्हनै सीखतां वरस लागैला । भलां राजां री होड़ कुण कर सकै ।—फुलवाड़ी
उ०—३ दांत जांणै मोती खैराद उतरचा । मोरायां जांणै गुलाब री इज कळियां । सांस मैं उणरै केसर री सौरम । आंख्यां री ठौड़ जांणै दो तारा पळकै । वेमाता जांणै किणी सूं होड़ करनै वा पूतळी रची ।—फुलवाड़ी

होड़ाचकर, होड़ाचक्र-सं. पु.—ज्योतिष के अन्तर्गत राशि, नक्षत्र, स्वामी, गण, वरण, आदि बातों का स्पष्टीकरण कराने वाला चक्र ।
रू. भे.—होडाचक्र ।

होड़ाहोड़, होड़ाहोड़ी—देखो 'होडाहोडी' (रू. भे.)
उ०—१ मिसरी मोतीपाक, मुरट री इतरी खोड़ी । रसगुलियां रै रूप, मधुर है होड़ाहोड़ी ।—दसदेव
उ०—२ रात दिवस तूं तप तप मूवो, तप ऊठी थारी भोडी रे । पाड़ोसी नो धन देखी नैं तूं तड़फै होड़ाहोड़ी रे ।—जयवांणी

होड़ो-सं. पु.—१ दरवाजे को मजबूती से बन्द करने के लिये या किसी दीवार को बचाने के लिये मोटी लकड़ी या पत्थर का दिया जाने वाला सहारा ।
उ०—लोह रा किंवाड़ां रै सैंठो होड़ो लगाय वो मिन्नी रै लारै फिरियो ।—फुलवाड़ी

२ वह मानसिक दशा जिसमें अत्यन्त घबराहट होती है और प्राणी कुछ कहने, अपने भाव प्रगट करने में असमर्थ रहता है। मानसिक अस्थिरता की दशा। कई बार ऐसा वात विकार के कारण भी होता है।

उ०—बारणै ऊभा मां, बेटा दोनूं डुसुड़ डुसुड़ रोवता हा। थोड़ी ताळ तौ सेठजी ई भेळमभेळ रोवता रह्या। रोवणा सूं मन खासौ हळकौ व्हियौ। काळजा रौ होड़ौ मिटचौ।—फुलवाड़ी

३ सहारा, रोक।

रू. भे.—हुड़ौ, हूड़ौ।

होट—सं. पु. [सं ओष्ठ] प्राणियों के मुख विवर का वह किनारा जिससे दांत ढके रहते हैं और मुह को खोला व वन्द किया जाता है, ओष्ठ, दन्तच्छद।

उ०—१ पण पेटा री बात होटां कदै ई नीं आवती, क्यूं कै ठिकांणा मैं जरबां रौ सराजांम माकूल हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जळ मतीरा अम्रत जठै, मांनै मेधा मंद। होटां सूं पीवै हरख, कैर कुसुम मकरंद।—थळवट बत्तीसी

उ०—३ काकवत स्वर, मार्जार नेत्र, उस्ट्रवत् लंव होट, मुखकवत् लघु करण्ण, मुकं रा दखनिरगर तंत बहिट।....—व. स.

मुहा०—१ होट खावणा=होठों को दांतों से पकड़ना २ होट खुलणा=कुछ कहने का प्रयास करना, कहना, बोलना, बात प्रगट करना. ३ होट चावणा=देखो 'होट खावणा'. ४ होट ढोकळा होणा=किसी कारण से होठ सूज जाना. ५ होट फरूकणा=गुस्से के कारण होठों में फड़कन होना. ६ होट सूकणा=परेशानी या घवराहट के कारण होठों पर शुष्की आना. ७ होट हिलणा=कुछ कहने की क्रिया होना. ८ होटां आयोड़ी बात=ऐसी दशा जव कोई बात मुह से प्रगट होने को ही हो. ९ होटां ईं होटां मैं=अत्यन्त धीरे बोलने की क्रिया, जिससे स्पष्ट आवाज सुनना संभव न हो. १० होटां नी निकाळणी - भेद की बात प्रगट न करना, अपनी बात प्रगट न करना. ११ होटां लागणी=चश्का लगना, आदत पड़ना. १२ होटां सूं हरफ नीं काढणौ=कुछ न बोलना।

रू. भे.—होठ, हौठ।

अल्पा;—होटड़ौ, होठड़लौ, होठड़ौ।

होटड़ौ—देखो 'होट' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—चुगली करतां चुगल रा, जुग होटड़ा जुड़ंत। मळ नांखण जांणै मिळै, दोय ठीकरा दंत।—वां. दा.

होटल—सं पु. [अं.] १ वह दुकान, मकान या स्थान जहाँ मूल्य चुका कर भोजन किया जाता हो, भोजनालय, ढावा।

उ०—पढै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ मैं मिळ जावै। अंगरेजी पढ अवल, होटलां मैं हिळ जावै।—ऊ. का

वि. वि—कहीं कहीं ऐसी जगह कुछ दिन ठहरने की व्यवस्था होती है।

२ वह दुकान जहां पर वैठ कर मीठाई, नमकीन, चाट व चाय-पानी आदि खाया पीया जाता हो, रेस्टोरेण्ट।

उ०—चिलम-बीड़ी चौसै, चमड़ा चूंचावै है। मांस-मिट्टी खावै अर होटलां मैं जावै है।—दसदोख

होठ—देखो 'होट' (रू. भे.)

उ०—१ उपरलौ होठ नाक री सोय तणियोड़ौ अर हेटलौ ठोडी कांनी लुळियोड़ौ। दांत बिना हंसियां ई दीखै। होठ धुराधुर सांवळा।—फुलवाड़ी

उ०—२ नवहथी भोकरा, बाथि मैं कंधरा, छत्र धारी माथै रा, कोरि मैं कांन रा, साइमैं वांनरा, तजिमैं होठां रा, कसतूरिआं पटांरा ...।—रा. सा. स.

होठड़लौ होठड़ौ—देखो 'होट' (अल्पा; रू. भे)

उ०—होठड़ला मूमल रा रेसमीयै रा तार ज्यौं हांजी रे दांतड़ला ऊजळ दंती रा दाड़म बीज ज्यूं।—लो. गी.

होड—सं. स्त्री. (सं. होड्) १ वरावरी, समानता।

उ०—१ पारखी होड तूं म करि रे प्राणिया, पुण्य पाखइ म करि हूंसि खोटी। बापड़ां जीव वाबी तइंजउ बाजरी, कहि किस लुणिसि तुं सालि मोटी।—स. कु.

उ०—२ पण सेठ (फूलचंद जी)! थांरळै कांमांरी होड कदेही नहीं हुवै। बेटां पोतां रै पल्लै भूख नीं, अमर जस नांव है।

—दसदोख

उ०—३ चौधरी माथौ धूणतौ कैवण लागौ—नीं अंदाता नी, एड़ी कमाई रांम टाळै। म्हे जिनावर आप वड भागियां री होड कीकर कर सकां।—फुलवाड़ी

२ प्रतिस्पर्द्धा, स्पर्धा।

उ०—१ सिणगार करै मन कीधौ स्यांमा, देवि तणा देहरा दिसि। होड छंडि चरणै लागा हंस, मोती लागि पांणही मिसि।—वेलि

उ०—२ आज सखी हम यु सुण्यौ, पौ फाटत पिय गौण। पौ अर हिवड़ै होड है, पहली फाटै कौण।—अग्यात

३ शर्त, बाजी।

उ०—१ चोट री रीभ पर गांठ री होड लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ ताहरां सीरोहीयौ बोलीयौ, 'होड मारू', 'अखा' रौ आवै तौ। तुं निचींत। हू 'अखै' नुं हुं पालीस।

—कांवळा जोइया नै तीडी खरळ री वात

उ०—३ माहौमाह होड आया कै जीतणियौ हारचोड़ा री वैन परणीजैला। राजकंवर नै आपरी जीत माथै अडिग विस्वास हौ इज। पछै होड करणा मैं क्यूं पाछौ सिरकतौ।—फुलवाड़ी

४ ईर्ष्या, द्वेष।

५ मुकावला, सामना।

क्रि. प्र.—करणी, मारणी, लगाणी।

रू. भे.—[illegible], होड, होडि ।

होडहार-[illegible] स्त्री —[illegible] ।

होडहोड—देखो 'होडाहोड' (रू. भे.)

उ०—[illegible], [illegible] ठाँजण नै थांन मुकांन संन्या [illegible] । [illegible] होडहोड किसनजी [illegible] मोड़्या ।—[illegible]

होडावाडी—देखो 'होडाहोड' ।

होडाहोड-क्रि वि.—१ देखादेखी, दूसरों को करते देखकर ।

उ०—१ [illegible] मेलड़ा रे कीना होडाहोड । जमा पाप तूं [illegible] प्राणी, जाय पलक में छोड ।—जयवांणी

उ०—२ [illegible] होडाहोड करि, हटि पचि मरी न कोय । सहस [illegible] गुन [illegible], भाव भजन गुर होय ।—अनुभववांणी

२ प्रतिस्पर्द्धा से, जिद्दाजिद्दी के कारण ।

३ ईर्ष्या या द्वेष वश ।

४ बराबरी में, समता में, तुलना में ।

५ शर्त लगाकर, बाजी लेकर ।

६ मुकाबले में, सामने ।

रू. भे.—होडाहोडा, होडाहोडी, होडाहोड ।

होडाहोडा, होडाहोडी—देखो 'होडाहोड' (रू. भे.)

उ०—१ भगा मोला ऊंचा घोड़ा, हर हीसै होडाहोडा । तेजी [illegible] ज्याता, उचास भगी आपड़ता ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ नैणा बरसै सेज पर, आंगण बरसै मेह । होडाहोडी [illegible] लगी, उत सांवण इत नेह ।—अग्यात

होडि—देखो 'होड' (रू. भे.)

उ०—[illegible] जगि देवल देवां कोडि, हुवै नहीं कोई इयै री होडि । नर्म नर नारी सको नितमेव, दियै सुख वंछित रिखभदेव ।

—ध. व. ग्रं.

होण-क्रि. वि.—१ होने के लिये ।

उ०—धड़ चीलहों ग्रीधण्यां, कमळ संकर उपकारू । हंस परचां पति होण, सोण चंडी पत्र सारू ।—मे. म.

२ देखो 'होणी' (रू. भे.)

उ०– हूं म्हारी मजूरी कर दिन काढस्यूं । पछै होण होय सो ही हुवौ । मोनूं थां राजी होय सीख देवौ ।—साह रांमदत्त री वारता

होणपदारथ—देखो 'होणहार' ।

उ०—सगती देवळ सारखी, थां सरखौ परवांन । टालेती टेवै जिसी, होणपदारथ जांन ।—पा. प्र.

होणहार, होणहारी, होणार-सं स्त्री.— ऐसी घटना या बात जो होकर ही रहे, जिसे टाला नहीं जा सके, होनहार, भवितव्यता, भावी ।

उ०—१ होणहार अहड़ी हुती, मारवाड़ री आज । बखतसिंह रै पख री, कोई न आवी काज ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ तद बीबी कही होणहार होय सो मिटै नहीं—होकर ही रहै छै ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

उ०—३ सोर भाळां न लागा न बागा धार सूंडाहळां, घीक जांगी कांवळा न बागा वीर घोर । जोरावार चूकै भूरौ 'केहरी' चांमंड जेहौ, जोरावार होणहार हुतौ केहौ जोर ।—किरपारांम कवियौ

उ०—४ कयौ—'ठाकुर आया नै आंपां नूं दीठा । डूंम ऊठ परौ गयौ । वात होणहारी थी सु हुइ चुकी । लाखौ बीजी हीज वैरां रै घरै सुय रह्यौ ।—नैणसी

वि.—जिसके लक्षण अच्छे दिखाई देते हों, जो सुयोग्य हो, जिसके भाग्यशाली होने की संभावना हो, उदीयमान । विशिष्ट लक्षणों वाला ।

उ०—१ सेठां नै वो होणहार अणूंतो लखायौ । कांनां री लोळां जाडी, उभरियोड़ो लिलाड़, दांतां री चौकी कीं मोटी । मांय थोड़ी सी छेती अर मूंडा रै जीवणी वाजू आंख सूं थोड़ौ सौ हेटै एक मस्सौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ वडोड़ो कुंवर वडौ होणहार हौ पण दूजोड़ी लड़ाई में कांम आयग्यौ ।—रातवासौ

रू. भे.—हवणहार हुंणहार, हुअणहार, हुणहार हुवणहार, हूंणहार, हूणहार, होनहार होवणहार ।

होणी—सं. स्त्री.—होनहार, भवितव्यता, भावी ।

उ०—१ होणी होकर ही रहै, विसर जात तै सुद्ध । जाकी जस भवितव्यता, ताकी तैसी बुद्ध ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ इंदरापुरी री अपछरावां रा ई भोळा भांगै जैड़ी अवोट अर अखूट रूप अर लाखीणी सेज़ माथै काळिदर री जोग । होणी री माया अर होणी रा चाळां नै सपनौ ई नीं पूगै ।—फुलवाड़ी

रू. भे.—हुअण, हुंणी, हूण हूणी, होण, होवण, हौंण, हौण ।

होणेहार—देखौ 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—सूरौ खींवौ वीर अति, सोभाळौ दातार । हीमत धारी मनगरां, हुवा न होणेहार ।—सूरै खींवै कांधळोत री वात

होणौ, होबौ–क्रि. अ. [सं. भू, प्रा. होइ] १ स्वयंमेव कुछ घटित होना, कुछ होना, हो जाना, होना ।

उ०—१ तठां उपरांति करिनैं राजांन सिलांमति जिण भांत लैणायत दीठां दैणायत घटै तिम तिण भांति दिन दिन निस दीठैं सूरज री तेज घटण लागौ नैं सूरज रौं तेज घटियौ रति मोटी होण लागी । वडाई पाई ।—रा. सा. सं.

उ०—२ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळया, हूं लागि गळि रोइ । डरपत पलक न खोलही, मति हि विछोहउ होइ ।—ढो. मा.

२ अस्तित्व रखना, अस्तित्व में रहना ।

उ०—तिण काळै नैं तिण समैजी, 'जंबू' द्वीप मझार । 'भरत' क्षेत्र 'स्वेतांबिका' जी, नयरी होती विस्तार हौ ।—जयवांणी

३ उपस्थित रहना, मौजूद रहना, हाजर रहना ।

उ०—द्रुपदी रहइं ओलग कीजइ, तूं कन्हइं हिव दीह गमीजइ ।

जां न राज सह पांडव होइ, मूं हरइ अवर ठांम नं कोई ।

—सालिसूरि

४ निर्मित होना, बनना ।

उ०—यह तन जारी मसि करूं, धूंआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, बरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो. मा.

उ०—२ फूलां मखतूळ जमा जळ झाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग । मंदाकण भांण-नंदा बह मंद, बहै सरसुत्ति प्रवाह बलंद ।—मे. म.

५ काम निकलना, कार्य सिद्धि होना ।

ऊ०—१ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख संपत्ति, व्यापत नांहि विपत्ती ।—मे. म.

उ०—२ प्रेमिका सू मिळणौ रा मीठा मनसूबा बांधै अर मंतर सीधा होणै री अवधी नै आंख्यां फाड़चा अडीकै है ।—दसदोख

६ कार्य का पूर्णता की स्थिति में आना, पूर्ण या पूरा होना ।

७ निवृत्ति की अवस्था में आना ।

८ बीतना, गुजरना ।

९ परिणाम या नतीजा निकलना ।

१० असर दिखाई देना, प्रभाव पड़ना ।

उ०—बाबा, वाळूं देसड़उ, जिहां डूंगर नहिं कोइ । तिणि चढि मूकउं धाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ ।—ढो. मा.

११ हानि या क्षति पहुंचना ।

१२ भुगतना, वहन करना ।

१३ उचित क्रम या नियम से चलते रहना ।

उ०—प्रति दिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन । धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ ।

—मे. म.

१४ परिवर्तित अवस्था में पहुंचना ।

ज्यूं—छोरी जवांन होगी है ।

उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि । हिव पळ पळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि ।

—वेलि

उ०—२ सो किण भांति री मेलवणी, लंवग, डोडा, जायफळ, जावंत्री, नागकेसर, तज, तमालपत्र सींगीमुहरा, धतूरौ, भूटंटी एक खांन, इहमदावादी खांन, हाथा छूटौ रायागंण मैं पड़ै तौ सात सात टुकड़ा होइ जावै इण भांति री बत्रीसी काढीजै छै ।

—रा. सा. सं.

१५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आना, प्रगट होना, देखने में आना, दीखना, जन्मना ।

उ० पैंत्रीसै रा चैत वद, चउथ अनै बुधवार । पुत्र हुवौ जसराज रै, भांजण दुख संसार ।—रा. रू.

१६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त होना ।

उ०—१ थां सूतां म्हे चालिस्यां, एह निचिंती होइ । रइवारी ढोलउ कहइ, करहउ आछउ जोइ —ढो. मा.

उ०—२ धरती री इंदु होणै तिण भांति जग छेल कर नैं धणौं सोनैं रूपै री मेह होइ नैं तूठौ छै ।—रा. सा. सं.

उ०—३ पांणी सूं धुड़ होवनै वा एक बड़ला री छींयां में बैठ मस्ताई सूं वागोलण लागी ।—फुलवाड़ी

१७ आना, जाना, पहुंचना ।

उ०—१ राजा कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ । माळवणी मारइ तियउ. पूगळ पंथ जिकोइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सूरां जमदाढ़ लई उण संग, लई रवि रेवत माड मलंग । हुवौ असताचळ ओट ग्रहेस, सक्यौ नंह देख कतूहळ सेस ।—मे. म.

१८ चमकना, प्रकाशित होना ।

उ०—१ भयंकर सोर सिवा अग्रभाग, चोळे मुख होत उदोत चराग । जिकां जगि जोति छिपा छिपजात । द्रगां मग भोत सपस्ट दिखात ।—मे. म.

उ०—२ रातिज बादळ सघण घण, बीज-चमंकउ होइ । इण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ ।—ढो. मा.

१९ मिलना, प्राप्त होना ।

उ०—देस सुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ । मारू कांमण भुइं दखिण, जइ हरि दियइ त होइ ।—ढो. मा.

२० व्यापना, आना, छाना ।

उ०—जिण दीहे पावस झरइ, समनेहां सुख होइ । तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ ।—ढो. मा.

२१ किसी रोग, व्याधि या प्रेत बाधा आदि का आना फैलना ।

२२ निकलना, प्रगट होना ।

उ०—एकउ बोल हुवै आपांणी, जुध मेवाड़ जुदौ मत जांणौ ।

—रा. रू.

२३ मिलना, भेंटना ।

उ०—पिंडत-पिंडत अर साधू-साधू, साग हुवै जद सागीड़ा लड़ै-झगड़ै ।—दसदोख

२४ अवतरित होना ।

उ०—१ धर हरि अंस हुवै धरपत्ती । सस्त्रबंध सांमरथ सकती ।

—रा. रू.

उ०—२ मांमड़ रै माल्हिया, नांव आवड़ नैं आई । आई रौ अवतार, हुवा करनळ मेहाई ।—मे. म.

२५ विकार सूचक क्रिया किया जाना ।

२६ गरज सरना, काम चलना ।

२७ नाते, रिश्ते या मोह-ममता में बंधना, निकटवर्ती या घनिष्ठ बनना ।

उ०—जगांगम मोड़ दहूं ब्रळ जोत । हूरां गठ जोड़ दहूं वळ होत ।

—मे. म.

होणहार, होरो (होरी), होणियौ—वि० ।
होतोड़ौ—भू० का० कृ० ।
होईजणौ, होईजबौ—भाव वा० ।
हैणौ, हैबौ, वैणौ, वैबौ, वैणौ, वैबौ, व्हैणौ, व्हैबौ, हुवणौ,
हुवबौ, हुवणौ, हुवबौ, हुवणौ, हुवबौ, हुणौ, हुबौ, हुवणौ, हुवबौ,
हूणौ, हूबौ, हूवणौ, हूवबौ, हैणौ, हैबौ, होवणौ, होवबौ, होणौ,
होबौ, होवणौ, होवबौ, ह्वैणौ, ह्वैबौ—रू० भे० ।

होत-स पु [सं होत्र] यज्ञ, हवन ।

उ०—प्रात प्रदोष दुरंग जगमगै जोतां । मंगळ धमळ हमेसां व्हे पुरसन होतां ।—मे म.

रू भे – होता ।

होतव, होतब्य, होतव, होतवता, होतव्य, होतव्यता–सं. स्त्री. [सं. भवितव्यता] होनहार, होनी, भावी ।

उ०—१ संपति देख न हरखीऐ, विपत कहा सोगा । ज्युं संपति त्युं विपत है, जो होतव जोगा ।—अनुभववांणी

उ०—२ कुरजोधन जांणियौ, पाट हथणापुर बैठूं । एहड़ी कद जाणतौ, जायजळ भीतर पैठूं । मुह कौरव लै साथ, कियौ भारत मुदा सूं । मन री मन में रही, मुऔ भीम री गदा सूं । त्रयलोकनाथ होतव तणा, अलप करै कुण अवखरां, कवि ओप अग्यांनी नर कहै, नीनां री तेरह करां ।—आपी आढौ

उ०—४ जैसी हो होतव्यता, वैसी उपजै बुद्ध । होणहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब सुद्ध ।—अग्यात

रू भे.- हुतव, होतिव ।

होता–वि [सं होतृ] १ यज्ञ करने वाला, यज्ञ में आहुति देने वाला ।
२ देखो 'होत' (रू. भे,)

होतासण—देखो 'हुतासण' (रू. भे.)

उ०—१ कण होतासण होमिए, तब कड़ चक रस मिटि जाय । जन हरिदास निरमळ वस्त, निरमळ मांहि समाय ।—ह. पु. वां.

उ०—२ हरीया उर सीतळ भया, पाया तत अनूप । जै होतासण जुग जळया, मेरै उदग सरूप ।—अनुभववांणी

होतिव—देखो 'होतव' (रू. भे.)

उ०—होतिव काजि हठवाद करि विण विरोध विचाखिया । एक एक तंत नीति करि, तिणि सराप सुर तिखिया ।—जांभो

होती–क्रि —'है' का भूत कालिक स्त्रीलिंग रूप । थी ।

स स्त्री.—किसी कार्य के प्रति व्यक्त की जाने वाली संभावना ।

उ०—१ हरि हीरा होती, पारिख कोनी, खोट न चोट चडंदा है ।
—अनुभववांणी

उ०—२ होती हूंगी यां सेनां लसकार कोई, लड़ती तो होगी 'पाल' भवर री डायनी, ए मोरी सइयां ।—पाबूजी री छावली

होतौ–क्रि. — 'है' का भूतकालिक रूप, था ।

होद—१ देखो 'हौज' (रू. भे.)

उ०—१ सजना बूझी पांणी री पणियार, होद बतावौ, ए पणि-यारयां हाडेराव री ।—लो. गी.

उ०—२ भाग नाग भारिया, कई ऊभळै कचोळा । घण केसर घोळिया, होद लेवैं हीळोला ।—मे. म.

२ देखो 'होदौ' (रू. भे.)

होदळ–वि.—कम्पित ।

उ०—खळ कर समहर उच्च खग, हरख करै वै हाथ । खाविंद धर पर धर खड़ी, होदळ ऊरध हाथ ।—रैंवतसिंह भाटी

होदाय—देखो 'होदौ' ।

उ०—हुइ साद नकीब सिताब हलां, इभ होदाय जीण बणै अललां । मिळ अंग बगतर मैं, सज सार खड़ा लख इक्क समै ।
—रा. रू.

होदौ—देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—हजारां गुड़ै वीछुड़ै एक होदां, रहच्चक्क मातौ छुटै तक्क रौदां । सिपायां सिरै सार वाजै सचाळी, वधै दांमणी सौ अणी भूप वाळी ।—रा. रू.

होनहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—हमनै कहा आंखिन का देखा, तुम कांनी सुनि सोय रांम । मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, होनहार सौ होय रांम ।—मीरां

होफ, होफर–सं. स्त्री.—१ सिंह की दहाड़ गर्जना ।

उ०—१ तंबेरम कुंभ दुहाथळ तत्थ, आडागिरि मत्थ क हत्थ अगत्थ । आरोहत होफर खोफ अपार, अधीफर आभ डरै असवार ।
—मे. म.

उ०—२ मांझी नौहत्था रूप होफरां किला मैं मारै । सावड़ी पुकारै बीबी अल्ला नू सलांम ।—संकरदांन सांमोर

उ०—३ वजाई कुवेर चढै बींद ज्यूं अनोप बांनै । अगोप गै भांजै यसौ हाथलां उठाय । अताळां करंतौ होफ जंगां रोसा वक्र ओप । कोप-तोप झाळां लोप आयौ महाकाय ।—बद्रीदास खिड़ियौ

२ जोशपूर्ण आवाज, वीर ध्वनि ।

३ आवाज, ध्वनि ।

उ०—१ खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हयं । इभ घंट ठनक्किय नद्द रनक्किय, भेरि भनक्किय सद्द भयं ।
—ला. रा.

उ०—२ घूघरमाळ घोड़ा री वाज रही छै, हींस कळळ होफ हुयनै रही छै ।—रा. सा, सं.

रू. भे.—हौप, हौफ, होफर ।

होफरड़ीह–वि. [स्त्री. होफरड़ीह] सिंह के समान गर्जनापूर्ण आवाज करने वाला ।

उ०—व्है सिंघ होफरड़ीह, पतसाहां परचा दिया । डरपी डोकरड़ीह, मा आती मेवात मैं ।—रांमनाथ कवियौ

रू. भे—हौपरड़ीह, होफरड़ीह ।

होफरणौ, होफरबौ–क्रि. स.—१ गर्जना, दहाड़ना।
२ जोशपूर्ण आवाज करना, जोश में बोलना।
३ क्रोध करना, रोष करना।
होफरणहार, हारौ (हारी), होफरणियौ—वि०।
होफरिओड़ौ, होफरियोड़ौ, होफरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
होफरीजणौ, होफरीजबौ—कर्म वा०।
हौफरणौ, हौकरबौ—रू० भे०।

होफरियोड़ौ–भू का. कृ.—१ दहाड़ा हुआ, गर्जा हुआ. २ जोशपूर्ण आवाज किया हुआ. ३ क्रोध किया हुआ, रोष किया हुआ। (स्त्री. होफरियोड़ी)

होफरैळ–सं. पु.—सिंह, शेर।
उ०—पैंण धारा खरै सौ जरै सौ काळकूट प्याला, आकास बास री हूंस धरै सौ अघात। बनां आई मरै सौ फरै सौ कल्ला दोळा वैरी, **होफरैळ** कांठळै करै सौ आघा हात।—महादांन महडू

होबड़–सं. स्त्री.—१ ठोड़ी, हिचकी।
२ मुंह, मुख।
३ ओष्ठ, अधर, होठ।
४ देखो 'थोबड़ौ'।

होबरड़ौ–सं. पु.—बात-विकार या किसी अन्य कारण से जी में घबराहट होने के कारण आने वाली खाली उबकाई। इसमें कै नही होती पर कै होने जैसी चेष्टाएँ होती है, उबकाई।
उ०—१ पांचवै महीनै टावर पेट मैं टळवळण लागौ। मांय हुरडियां देवतौ सौ लखायौ। जच्चा रांणी नै **होबरड़ा** हालण लागा।—फुलवाड़ी
उ०—२ डाकण नै ओळचा सूं **होबरड़ा** आवण ढूका। गुलगुला वाळा छोरा नै नीं खावै जित्तै काळजा री वळत नीं मिटेला।
—फुलवाड़ी

होबास—वेखो 'होवास' (रू. भे.)

होम–सं. पु. [सं.] १ हवन, यज्ञ। (अ. मा.)
वि. वि.—देखो 'हवन'
उ०—साह की बातैं सुणैं त्यौं त्यौं उमंग प्रकासै। घिरत का कुंभ सींचै **होम** ज्यां उजासै।—रा. रू.
उ०—२ हण ताडका निज ठाहरां, जिग मांड आरंभ जाहरां। उत **होम** धूम विलोक आया, निडर राकस नीच। जिग अर सुवाहू जांणनै, तन हतै सायक तांणनै, सर पवन परसौ चार कोसां रह्यौ थंभ मरीच।—र. रू.
२ यज्ञ में आहुति देने की क्रिया।
रू. भे.—हौम।

होमआटम, होमआठम—देखो 'होमास्टमी' (रू. भे.)

होमकाट, होमकाठ–सं. पु. [सं. होम+काष्ठ] १ यज्ञ की लकड़ियां, समीधा।
२ देखो 'होमकास्ठी' (रू. भे.)

होमकास्ठी–सं. स्त्री. [सं. होम+काष्ठी] यज्ञ की अग्नि दहाकाने की फूंकनी।
रू. भे—होमकाठ।

होमकुंड–सं. पु. [सं.] वह गढ्ढा या कुंड जिसमें अग्नि जला कर यज्ञ किया जाता है, हवन-कुण्ड।

होमछाळणा–सं. स्त्री.—विश्नोई जाति की एक रश्म विशेष जिसके अन्तर्गत कोई झगड़ा या वाद तय किया जाता है। इसके अन्तर्गत कोई एक पक्ष जांभौजी की कसम खाता है। कसम खिलाने वाला घी लेकर आता है और कसम खाने वाला हवन करता है।

होमणौ–वि. (स्त्री. होमणी) १ होमने वाला, आहुति देने वाला।
उ०—सावत्री सरसत्ती, गवरि गंगा गोमत्ती। मिळ सतियां धरि महरि, करै इण परि कीरत्ती। त्रिहुए पख तारणी, सोभ जुग च्यार सुवांणी, पांच तत्त **होमणी**, रीत मोटी खट रांणी। धिन मात पिता कुळ जात धिन, सत अवदात महासती। साहाय थकी निज सांमि संग, वसी आय अमरावती।—रा. रू.
२ नष्ट करने वाला, वरबाद करने वाला।
३ बलिदान करने काला।

होमणौ, होमबौ–क्रि. सं. [सं. होमम्] १ हवन करना, यज्ञ करना।
उ०—चांमरियाळ धड़ा चूडाक्रम, अधपति काठ जळै अहंकार। हरराजउत अंब **होमतां**, 'पैंजसाउत' पौहतौ पार।
—प्रथीराज राठौड़ री गीत
२ यज्ञ की अग्नि में किसी वस्तु की आहुति देना, होमना।
उ०—१ **होमिया** नाग अजा नर हैमर, गढपतीयै **होमिया** गयंद। 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूंटां चहुंएं तणा कुरंद।
—रांणा जगतसिंह रौ गीत
उ०—२ देवां कीध न कीधा दांणव, सांगै जै निरमैं सुकर। हसत ज्याग जग प्रसध **होमतां**, हुवा विधाता हेक हर।
—महारांणा सांगा रौ गीत
उ०—३ कास्टमयी ततकाळ अगनि काढी छै सु अगनि। लाकड़ी अगर की छै। आहुति दैण नै घी अर कपूर घणौ **होमज्यै** छै।
३ बलिदान करना।
उ०—१ चित्तोडगढ नांव रै इण असर रा कारण वै हजारां लाखां भिड़मल है जिणां रीत-पांत री रुखाळ सारू विना नाक मै सळ घाल्यां घांटकियां दै काडी अर आपौआप नै **होम** दिया।
—जहूरखां मेहर
उ०—२ मध्यकाल रै राजस्थांन रै इतिहास री अणूंती मालदारी नै सगळाई इतिहास लिखारा अंगेजै। मावड़ भौम री रुखाल खातर सै की मुळकंता **होम** देणी इण खेतर रै इतिहास री घणी महताउ वात गिणीजै।—चितरांम
४ जलाना।

उ०—[illegible], दिन दिन बंजड़ [illegible]। उजड्या सा [illegible] नहीं, [illegible] नै मत होम।—रू

५ नष्ट करना, बरबाद करना, समाप्त करना।

६ अर्पित करना।

होमणहार, हारो (हारी), होमणियो—वि०।

होमियोड़ो, होमियोड़ो, होम्योड़ो—भू० का० कृ०।

होमीजणो, होमीजबो—कर्म वा०।

हूमणो, हूमबो—रू० भे०।

होमदूध-सं. पु.—आहुति दिया जाने वाला दूध।

होमपाठ-सं. पु.—हवन करते समय या हवन के लिये पढ़ा जाने वाला मंत्र या किसी मंत्र का जाप।

उ०—परसंट चंट कर होम पाठ, अवठाय दिया पतसाह आठ। —वि. सं.

होमास्टमी, होमास्ठमी-सं. स्त्री. [सं. होमाष्टमी] चैत्र व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी जिस दिन देवी के निमित्त हवन किया जाता है।

रू. भे.—होमग्राटम होमग्राठम।

होमि-सं. पु. [सं] १ अग्नि।

२ घी, घृत।

होमियोड़ो-भू. का. कृ.—१ हवन किया हुआ, यज्ञ किया हुआ. २ अर्पण किया हुआ. ३ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ. ४ बलिदान दिया हुआ. ५ जलाया हुआ. ६ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुआ।

(स्त्री होमियोड़ी)

होमियोपैथिक-वि [अं.] होमियोपैथी चिकित्सा का, होमियोपैथी चिकित्सा के अनुसार।

होमियोपैथी-सं. पु. [अं] पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धान्त विशेष या चिकित्सा विधि जिसके अन्तर्गत विषों की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग-निदान किया जाता है।

होमीजणो, होमीजबो-क्रि. अ.—१ अत्यन्त गर्मी या उमस के कारण त्रसित होना, कष्ट पाना, बेचैन होना।

२ दुःखी होना, परेशान होना।

३ नष्ट होना या किया जाना, बरबाद होना या किया जाना।

४ आहुति दिया जाना, होमा जाना।

५ अर्पित होना। ६ बलिदान किया जाना।

होमीजियोड़ो-भू. का. कृ.—१ अत्यधिक गर्मी या उमस से त्रसित हुवा हुआ, कष्ट पाया हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ अर्पित हुवा हुआ ३ दुखी, परेशान हुवा हुआ. ४ बलिदान हुवा हुआ. ५ नष्ट या बरबाद हुवा हुआ. ६ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ।

(स्त्री होमीजियोड़ी)

होयोड़ो-भू. का. कृ.—१ स्वयमेव कुछ घटित हुवा हुआ. कुछ हुवा हुआ. २ अस्तित्व रक्खा हुआ, अस्तित्व में रहा हुआ. ३ उपस्थित, मौजूद व हाजर रहा हुआ. ४ निर्मित या बना हुआ ५ काम निकला हुआ, कार्य सिद्ध हुवा हुआ. ६ पूर्णता की स्थिति में आया हुआ, पूर्ण या पूरा हुवा हुआ (कार्य). ७ निवृत्ति की अवस्था में आया हुआ. ८ बीता हुआ गुजरा हुआ. ९ परिणाम या नतीजा निकला हुआ. १० असर या प्रभाव पड़ा हुआ. ११ हानि या क्षति पहुंचा हुआ. १२ भुगता हुआ वहन किया हुआ. १३ उचित क्रम या नियम से चला हुआ. १४ परिवर्तित अवस्था में पहुंचा हुआ. १५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आया हुआ, प्रगट हुवा हुआ, देखने में आया हुआ, जन्मा हुआ. १६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त किया हुआ. १७ आया हुआ, गया हुआ, पहुंचा हुआ. १८ चमका हुआ, प्रकाशित हुवा हुआ. १९ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ. २० व्याप्त या छाया हुआ. २१ निकला हुआ प्रकट हुवा हुआ. २२ मिला हुआ, भेंटा हुआ. २३ अवतरित. २४ विकार सूचक किया किया हुआ. २५ गरज सरा हुआ, काम चला हुआ. २६ नाते-रिश्ते या मोह-ममता में बंधा हुआ, निकटवर्ती या घनिष्ठ बना हुआ।

(स्त्री. होयोड़ी)

होर-सं. स्त्री.—इच्छा, अभिलाषा।

होरा-स्त्री. [सं.] १ राशि का उदय।

२ राशि का आधा भाग।

होरी—देखो 'होली' (रू. भे.)

उ—सत गुरू ऐसी होरी खेलाई। होरी खेलाई मेरै मन भाई। जांण लिया हर राई।—हरिरांमजी महाराज

होरीलौ-वि. (स्त्री. होरीली) हठ करने वाला, हठी। (बालक)

होरौ-सं. पु.—१ हठ, जिद्द।

२ बालक का हठ, बाल-हठ।

होल-सं. स्त्री—१ आवड़ देवी की बहिन, एक देवी।

उ०—सिंधाळी तुही सीमिका होल सैणी, अदाळी तुही गूंगिका नाग वैणी। खगाळी तुही खिव्वड़ा चख्खड़ाई, मुद्राळी तुही आवड़ा मांमड़ाई।—मे. म.

२ चित, मन, दिल।

उ०—मूळी रौ हियौ फूटण लागग्यौ, उभळ ग्यौ, होल उपड़ग्यौ अर चित्त भरम हुयग्यौ।—दसदोख

होळका—१ देखो 'होलास्टक'।

२ देखो 'होळी' (रू, भे.)।

होलड़-सं स्त्री.—छोटी पंडुकी।

होळां-क्रि. वि.—धीरे, आहिस्ता।

उ०—आप तुरंत ऊठ महल भींतर नूं पधारिया, सुंआई वाळां नूं होळां सी कह गयौ। जै पहर रात पाछली सूं उठ कर सुआई तइयार करज्यौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

होळा–सं. पु. [व. व.]—गेहूं या चने के कच्चे दाने जिनको पौधों सहित आग में भूनकर खाया जाता है।

होला–सं. स्त्री.—गप्प।

होलात—देखो 'हवालात' (रू. भे.)

उ०—लूंगाड़ा टापरी चाटग्या, च्यांरू वेटा **होलात** मैं दाटग्या। जमानत देवणियौ ही कोई लाधै नहीं।—दसदोख

होळावौ–सं. पु.—एक शिकारी पक्षी विशेष।

होळास्टक, होलास्टक–सं. पु. [सं. होलाष्टक] १ फाल्गुन शुक्ला अष्ठमी से होलिका पर्यन्त की अवधि।

२ उक्त अवधि में लगने वाला नक्षत्र विशेष जिसके कारण इस अवधि में शुभकार्य वर्जित माने जाते हैं।

होलाहड़ौ–सं. पु.—एक प्रकार का घोड़ा विशेष। (शा. हो.)

होळि—१ जलाशय का वह भाग जहां नावें व जहाजें बंधी रहती है?

उ०—ऊपरि वड़ां नै पीपळां री घटा वधिजिनैं रही छै। नैं तळाव नैं तै छाया री हांस तरस मांणण नूं हजार असवारां सूं राज नैं आइ पागड़ा छाडिया छै। **होळि** मैं जिहाजां पाथरीजै छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'होळी' (रू. भे.)

होळिका, होलिका—देखो 'होळी' (रू. भे.)

उ०—पकवानै पांनै फळै सुपुहमै, सुरंगै वसत्रै दरव स्रव। पूजियै कसटि भंगि वनसपती, प्रसूतिका **होळिका** प्रव।—वेलि

उ०—२ तठा उपरांति करिनैं राजांन सिलांमति **होळिका** प्रव पूजिजै छै। आगै वखांणिया तिण भांतिरा अमळ मांणीजै छै। हमैं ग्रीखम रित रा वरणाव कीजै छै।—रा. सा. सं

उ०—३ वणि **होळिका** थंभ जुध वेरां, सिर पर बह झेलूं समसेरां। धार विहार अणी घट धौरंग, चुख-चुख होय पडूं रिण चौरंग।—सू. प्र.

उ०—४ अव **होळिका** नर नारि पूजित माघ पूरण मंगळी। जोधांण प्रतपै छात जोधां, 'अभौ' कीरति ऊजळी।—रा. रू.

होळिय—देखो 'होळी' (रू. भे.)

उ०—सिल्है घट वेधत वाहत सेल। खेलै जिम **होळिय** फागण खेल।—सू. प्र.

होळियार–सं. पु.—१ होली के त्यौहार पर चरचरी नृत्य करने वाला।

उ०—१ करै न्रप वीर जय जय कार, हकां, करि जांणि रमै **होळियार**।—सू. प्र.

उ०—२ 'अमर' री 'मोहकम' रा असूरां, वह हणै धड़ वेहड़ां। खग झाट जुधि **होळियार** खेलैं, हरखि जांणि डंडेहडां।—सू. प्र.

२ होली के अवसर पर रंग खेलने वाला, होली खेलने वाला।

होलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू. भे.

होलींदौ–सं. पु.—ज्वार का लंबा डंठल जिसके सिरे को दीपावली के दिन जलाते हैं।

होळी–सं. स्त्री. [सं. होली] १ फाल्गुन की पूर्णिमा (कभी कभी चतुर्दशी) को मनाया जाने वाला हिंदुओं का एक वड़ा त्यौहार या पर्व।

उ०—१ **होळी** अर दीवाळीयां, घर घर दीपग मांहि। हरीया दीपग और दिन, कोई क द्यै कोई नांहि।—अनुभववांणी

उ०—२ जवडउ अंतर वहिन नइं साली, जेवडउ अंतर दीवाली [नइ **होली**], जेवडउ अंतर पुण्यवंत नइ हाली।—व. स.

२ उक्त त्यौहार के दिन मुहल्ले के चौक या किसी स्थान विशेष पर छोटा गड्ढा खोद कर रोपी जाने वाली झाड़ी की डाली—जिसे घास-फूस व ऊपले डाल कर रात में जलाया जाता है। इसे ही होली कहते हैं।

उ०—१ करि ढालां झट ओट कजाकां। **होळी** थंभ जेम करि हाकां। जरद धरा ऊंडळ बंध जकड़ै, पह रुद्रसेन जीवतौ पकड़ै। —सू. प्र.

उ०—२ फागुण मास वसंत रुत्त, आयउ जइ न सुणेसि। चांचरिकइ मिस खेलती, **होळी** झंपावेसी।—ढो. मा.

३ उक्त त्यौहार के दूसरे दिन (रांमा-सांमा के दिन) खेला जाने वाला रंग का खेल—जिसमें समवयस्क स्त्री-पुरुष एक दूसरे पर रंग गुलाल, अवीर आदि डालकर खूब मनोविनोद, आनन्द, उत्साह करते हैं, इसे फाग खेलना भी कहते हैं।

उ०—१ **होळी** खेल प्यारी पिय घर आयें, सोइ प्यारी पिय प्यार रे। मीरां कै प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ वळिहार रे। —मीरां

उ०—२ लज्जा जोजन लक्ष करि, तनि मनि ताळी देसि। अनहत चंग सुणी सुणी, हूं **होळी** खेलेसि।—मा. कां. प्र.

४ फाल्गुन मास व होली के आसपास के दिनों में गाये जाने वाले शृंगार-रस प्रधान गीत, फाग। ये गीत अधिकतर चंग (डफ) पर गाये जाते हैं।

५ लाक्षणिक अर्थ में अग्नि, आग।

उ०—एक धाक अर धक पळी, एक मिनख री राख करी। वैरीड़ा छळ-कपट सूं ठगै, काळज्यां **होळी** जगै है। अरजन रा साथी उज़ड़णनै त्यार, घर हाळा झगड़णनै हुस्यार।—दसदोख

६ आग की लपट, लौ।

७ चिंगारी।

उ०—छेड़ हुई कांठायतां, आया खेड़ अपार। झड़ लागौ सर गोळियां, हुय **होळियां** दुधार।—रा. रू.

८ फाख्ता नामक पक्षी।

[सं. होलिका] ९ एक प्रसिद्ध राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की वहन व भक्त प्रहलाद की वूवा थी।

वि. स्त्री.—अशक्त, कमजोर, कम प्रभावशाली, हल्की।

उ०—मारवाड़ रा भला भला सिरदार कांम आया जिण सूं

[illegible] । [illegible] पाणी नी वड़ै [illegible] ।—[illegible]

[illegible] होटिल, होटीरा, होटी ।

[illegible] प्रकार का [illegible] विशेष ।

[illegible] होलीड़ं [illegible] हरीक प्रभाति [illegible] ।—[illegible]

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

[illegible]—[illegible] राग विशेष ।

होलेड़ी—देखो '[illegible]' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—[illegible] गयो, [illegible]-गयो होलेड़ी रे थांन ए, रंगीली [illegible] ।—लो. गी.

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

होळै-क्रि. वि.—१ धीरे, धीमे, आहिस्ता ।

उ०—१ [illegible] उतरतां एक चोकीदार कही जै चूकूं नहीं तो [illegible] है । होळै सी वेली नूं कही ।

—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ [illegible], पण करै तो कै करै । आगै कूवो [illegible] । [illegible] पाछो थाट'र काढ्यो । होळै सैं हंकारो भरयो ।—दसदोख

२ मंद गति से ।

उ०—[illegible] मत जावै छानियै मत जावै तो नीबी म्हांरै डेरां आयै [illegible] होळै मन बरसै ठंडा मत बरसै रीनी मत आयै । काठी [illegible] ।—लो. गी.

रू. भे.—होळु होळै, होळै ।

होळैमीर, होळैसै-क्रि. वि.—धीरे से, आहिस्ता से ।

उ०—१ [illegible] बिना बोल्यां आवड़ी कमरा में आई । होळैमीर [illegible]—नगर सेठजी पधारया ।—फुलवाड़ी

उ०—२ एक दिन आधी डळियां रै पछै कुमारी आपरा धणी नै [illegible] । होळैमीर उणरा कांन में कंवण लागी ।—फुलवाड़ी

२ चुपके-चुपके ।

उ०—पर म्हारै ही [illegible] अर गैं'णो आय'र होळैसै मेल जाया ।

—दसदोख

रू. भे.—होळैमीर ।

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू. भे.)

होल्डर-सं. पु. [अं.] १ किसी धातु, लकड़ी या प्लास्टिक का बना [illegible] जिसके मुंह में निब फंसा रहता है और स्याहि में डुबोकर लिखा जाता है, कलम ।

२ पीतल, लोहे आदि का बना एक उपकरण जिसमें बिजली का बल्ब फिट किया जाता है ।

३ [illegible] ।

होवण—देखो 'होणी' (रू. भे.)

होवणहार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—१ आप विचार उपाए, होवणहार वात पर हत्थै । आसा वार न पारं, विधि तिण ज्यास थयी परवस्सै ।—रा. रू.

उ०—२ बडा वीर बांका यह, राजपूत सरदार । कळा हुनर जांणै अजब, है यह होवणहार ।—ठाकुर जैतसी री वारता

होवणौ, होवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जोधां साथ नाथ छळ जोवण, हरवळ दळां खळां सिर होवण ।—रा. रू.

उ०—२ हरीया कळि का बंभना, करम करै किरसांन । कातौ होवै लावगी, सेवै मड़ा मसांन ।—अनुभववांणी

उ०—३ गांम दुसाखियौ होवण सूं गांम वाळां नै फगत लूंण मोल लेवणौ पड़ै ।—अमरचूंनड़ी

उ०—४ लाधूरांम राज दरवार रौ इतो बडौ निधड़क चोधरी होवतां थकां भी भूत-पलीत, डोरां-डांडा, देई-देवता, अर डाकण स्यारी नै कदै ही कूड़ नीं बतावै ।—दसदोख

होवणहार, हारौ (हारी), होवणियौ—वि० ।

होविओड़ौ, होवियोड़ौ, होव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

होवीजणौ, होवीजबौ—भाव वा० ।

होवनगार—देखो 'होणहार' (रू. भे.)

उ०—छोटू मा'रजा रै तीन बेट्यां, जकां में सूं बडोड़ी रौ साख डूंगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिस्तरी रै दसवीं पास बेटै सूं मंड्यौ है । टावर होवनगार है ।—दसदोख

होवास-सं. पु.—घोड़ा, अश्व । (डिं. को.)

रू. भे.—हुवास, हुवासि, हुवासी, हुवास, होबास ।

होवियोड़ौ—देखो 'होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री होवियोड़ी)

होस-सं. पु. [फा. होश] १ बोध, ज्ञान की वृत्ति, बुद्धि, समझ, अक्ल ।

२ संज्ञा, चेतना, होश ।

उ०—१ कूंजड़ौ तो एक घड़ी पछै होस में आयौ । सेठ कह्यौ—ऐ तौ बंधा है । यूं पैं'ला ठेका में ई कांई गुड़ग्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ केसर, केवड़ाजळ सूं संपाड़ौ करायौ । अंतर फुलेल री सौरम सूं राजगरु होस में आया । पलकां उघाड़ी तौ सांम्ही वां उणियारां रा झांवळा दीखण लागा ।—फुलवाड़ी

३ विवेक ।

४ शिष्टता, तमीज ।

५ सावधानी, सतर्कता ।

६ किसी प्रकार के नशे या बीमारी आदि के कारण होने वाली मानसिक अचेतनतायुक्त सामान्य अवस्था ।

उ०—बेटा रै पाखती आयां कैवती—देख बेटा अबै थारा भायजी नै चेतौ व्हियौ है । ऐ होस में सांतरी वातां करै ।—फुलवाड़ी

७ स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

८ मौज, मस्ती ।

उ०—सिकार सरब एक ठोकर रहकलां ऊंठां ऊपर घातजै छै। होस मांणण तळाव आया छै।—रा. सा. सं.

९ किसी प्रकार का उत्तरदायित्व सम्भालने की अवस्था, परिपक्वावस्था ।

१० इच्छा, कामना ।

उ०—मांस रक्त तैरी खसबोय फूटनै रही छै। त्यांरी खसबोय लेवण नूं तैंतीस कोड़ देवतागण गंध्रव होसां खाय रह्या छै।
—रा. सा. सं.

११ उत्साह, उमंग ।

रू. भे.—होंस, हौंस, हौस ।

होसनाइक, होसनाक, होसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकायजै छै। चुण-वीण कांकरा काढजै छै। सू मूंग होसनाक वणावै छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ इण भांत री भांग काढ तयार कीजै छै, कसूंबां नूं होसनाक पवन करै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ तठै भला भला भोगी भंवर होसनाक खसवोई लेणनैं ऊभा रहै। तठै रूप सुगंधाई काळी भैंरू जाड़ेची रै महल हमेसा आवै।—जगदेव पंवार री वात

उ०—४ जिस वखत विहार सूरति पाक होसनायकां नै नजर गुजराए।—सू. प्र.

होसमंद, होसलामंद—वि.—१ होश वाला, सावधान ।

२ समझदार, बुद्धिमान ।

रू. भे.—हुसमंद, हौसलामंद ।

हासलौ—सं. पु. [अ. हौसल:] १ किसी कार्य के लिये होने वाली सामर्थ्य शक्ति ।

२ साहस, उत्साह, हिम्मत ।

३ सहन शक्ति ।

४ जरूरत, आवश्यकता ।

५ धृष्टता, ढीठाई ।

६ उत्तरदायित्व संभालने या कष्ट सहन करने की अवस्था ।

रू. भे.—हैसलौ, हैसल्लौ, होंसलौ, हौसलौ ।

होसियार—वि. [फा. होशियार] १ चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल ।

२ समझदार, बुद्धिमान, व्यवहारकुशल ।

३ सचेत, सावधान, सतर्क, खबरदार ।

४ धूर्त्त, चालाक, ठग, छलिया ।

रू. भे.—हुंसियार, हुंस्यार, हुंस्वार, हुसिआर, हुसियार, हुसीयार, हुस्यार ।

अल्पा;—हुसियारौ, हुसीयारौ ।

होसियारी—सं. स्त्री. [फा. होशियारी] १ चतुरता, निपुणता, दक्षता, कौशल ।

२ समझदारी, बुद्धिमानी, व्यवहार कुशलता ।

३ सतर्कता, सावधानी ।

४ चालाकी, धूर्त्तता, छल, ठगी ।

रू. भे.—हुंसियारी, हुंस्यारी, हुसियारगी, हुसियारी, हुस्यारी ।

होस्टल, होस्टेल—सं. स्त्री. [अं.] छात्रावास, वोर्डिंग हाऊस ।

उ०—वौ वळदेव रै लारै लारै उणरै होस्टल तांई गयौ अर पोटाय-पुटूयनै उणनैं घरै चालणनैं राजी कर लियौ।—अमरचूंनड़ी

होहा—सं. स्त्री.—१ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल ।

उ०—नागहारी मोहा संच्चै, वेताल समोहां नच्चै। महाकाळ होहा तच्चै, कोहा मच्चै मीच।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ हाहाकार ।

होहौ—सं. पु. [अनु.] पशुओं को ठहराने के लिये कहा जाने वाला एक संकेतात्मक शब्द ।

होहोकार—सं. स्त्री.—हाहाकार ।

उ०—हारै वीर नाच केई होहोकार करै हाकां, वेढ वांका 'लाडांणी' न थाका वांका वीर।—सुखदांन कवियौ

हौं—सर्व.—मैं, हम ।

उ०—१ सखियां मिळि दुइचारी, वावरी सी भई न्यारी। हौं तौ वाकी नीकै जांनौं, कुंज कौ विहारी है।—मीरां

उ०—२ घुमाय लट्ठ अट्ठ जांम हौं फिरौं घमां घमां।—ऊ. का.

रू. भे.—हों ।

हौंकार—देखो 'हौकार' (रू. भे.)

हौंण—देखो 'होणी' (रू. भे.)

उ०—हौंण मतै सौ हौंण दै, राखि एक मन ठांय। दांणा पांणी जेथ का, हरीया जासी गांय।—अनुभववांणी

हौंणौ, हौंबौ—देखो 'होणी, होत्रौ' (रू. भे.)

उ०—हौंण मतै सौ हौंण दै, राखि एक मन ठांय। दांणा पांणी जेथ का, हरीया जासी गांय।—अनुभववांणी

हौंस—देखो 'होस' (रू. भे.)

उ०—१ राजा नूं दैत्य दमनी री हौंस हुई छै।
—पंचदंडी री वारता

उ०—२ दादू जैसा नांम था, तैसा लीया नांहि। हौंस रही यहु जीव मैं, पछितावा मन मांहि।—दादूवांणी

उ०—३ सुनि वातां सखीयन खिनै, करत कुंवारी हौंस। हरीया पीव विन परसीयां, होय नियारी रौंस।—अनुभववांणी

हौ—भू. का. कृ.—१ था ।

उ०—१ राजा खुद तौ ग्यांनी नीं हौ, पण ग्यांनियां रौ आदर अवस करतौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण जोगी हरां अडिग हौ वौ अंतर जगत रमै हौ। इकलग नरतन रमणी रौ, पग पग कठैहि न थमैं हौ।—सकुंतला

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] सौनगी पाग अर चौथी फैल हो। [illegible] घर मां [illegible] लाड राखतौ जिण सूं [illegible]।

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] —१ [illegible], [illegible], शब्द।

[illegible]।

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] १ [illegible], [illegible] तीर [illegible] दारवां। अम्ह [illegible], [illegible] मारवां।—सू. प्र.

[illegible] २ [illegible] हौरवा, जहं प्राण छतनती। तांम गजां ऊतरै, [illegible]।—सू. प्र.

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] मिनै नौ नावंनराय घोड़ै असवार हुवौ [illegible]।

[illegible] क्रि. स.—जोशपूर्ण आवाज करना, क्रोधपूर्ण आवाज [illegible], गरजना।

[illegible], [illegible] ([illegible]), हौकरणियौ —वि०।

[illegible], हौकरियोड़ौ, हौकरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

[illegible], [illegible] —कर्म वा०।

[illegible] —रू० भे०।

[illegible] भू. का. कृ.—जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, क्रोधपूर्ण [illegible] किया हुआ, [illegible] हुआ, गरजा हुआ।

([illegible])

[illegible] —१ [illegible], गर्जना।

[illegible] १ [illegible] आंगै अगणित सिघ होकारां [illegible]। —फुलवाड़ी

[illegible]—२ [illegible] हौरार [illegible] हिरणां रा [illegible] पग है [illegible]। —फुलवाड़ी

२ [illegible]।

[illegible] दैनराज होकारां भरतो टापू [illegible] अर दोय वास लांबी।

— फुलवाड़ी

[illegible] शोर का शब्द, हल्ला, शोर।

[illegible] हौरागां रै मार्ग फौज आगै बधती गी।—फुलवाड़ी

[illegible]।

[illegible], [illegible]।

रू. भे.—[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]।

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] (रू. भे.)

[illegible] (रू. भे.)

हौज—सं. पु. [अ.] पानी जमा रखने के लिये बनाया हुआ कुंड, पानी का कुंड, कोठा।

उ०—१ दादू हौज हजूरी दिल ही भीतर, गुसल हमारा सार। उजू साजि अलह कै आगै, तहां नमाज गुजार।—दादूवांणी

उ०—२ चादर हौज फुंहार नीर चलि, अम्रत नदी आय फिर ऊभळि।—सू. प्र.

उ०—३ चली अगम कै देस काळ देखत डरै। (जहां) भरा प्रेम का हौज, हंस केळां कर।—मीरां

उ०—४ गुल कंचन रस तै लगै, वणी त वागां मौज। कनक महळ कुंदन कळस, वणी फुहारां हौज।—गज-उद्धार

रू. भे.—हवद, हवद्द, होद, हौद।

हौठ—देखो 'होट' (रू. भे.)

हौड—देखो 'होड' (रू. भे.)

उ०—१ नमो तूझ आतम सकति 'दुरंग' अनडां नड़ण, रिमां दै झाट त्रंमाट रोड़ै। हौड करता जिकै लड़ण हाथूं कियौ, जिकै हाजर खड़ा हाथ जोड़ै।—दुरगादास राठौड़ री गीत

उ०—२ भारत अरिहीण करां भूतेसर, हारां नहीं कर लै हर हौड। आच कियौ उमापति आगै, कर मैं कर दीधौ कर कौड।

—मोहवत वारहठ

हौडाहौड—देखो 'होडाहोड' (रू. भे.)

उ०—केसरियां पहर मौड़ माथै कस, हंसै वहसिया हौडाहौड। कीवा भला देहुरा कारण, कार्क अनै भात्रीजै कौड।

—सुजांणसिंघ नै भवांनीसिंघ सेखावत री गीत

हौद—देखो 'हौज' (रू. भे.)

उ०—वहि सूंडि घणा रत हौद विचि, उडि पडै पडि ऊछळै। जनमेज जाग जांणै भुजंग, अगनि कुंड मझि आकुळै।—सू. प्र.

२ देखो 'हौदौ' (रू. भे.)

उ०—मगरूर हौद जंगियां मझार। धुर चढै अरव हथिनाळ धार।

—सू. प्र.

हौदळ—सं. पु.—गले का एक आभूषण विशेष।

हौदौ—सं. पु. [अ. हौदजः] १ हाथी पर सवारी करने के लिये उसकी पीठ पर रख कर कसा जाने वाला एक आसन विशेष जो आगे से खुला तथा ऊपर-नीचे तीनों ओर से बन्द रहता है। अंदर बैठने व पीठ टिकाने की गद्दी बनी होती है, अमारी, अम्मारी।

उ०—१ जड़ि कपोळ जमदाढ, ठीक जिण कर ठहरायै। दंतूसळां पग दियै, जंगी हौदां चढि जाए।—सू. प्र.

उ०—२ हरीया हौदै ऊपरै. रावत वाई रीठ। मारयौ राजा मोह कुं, पड़यौ तळफै पीठ।—अनुभववांणी

उ०—३ हौदा कसिया हाथियां, नीवसिया नीसांण। लारै रंभ रमिया लियां, ऊससियां अप्रमांण।—सिवबक्स पाल्हावत

२ तांगे में आगे और पीछे की ओर बना हुआ वह स्थान जहां

चालक व सवारी के पांव रहते हैं।

३ मकान के अग्रभाग में बना वह भाग जो दीवारों से बाहर निकला रहता है, बालकॉनी।

४ देखो 'हौज' (रू. भे.)

उ०—भरिया **हौदां** बहुत क गहर गुलाला सौं, होवै सहद हगांम खूब इण ख्याल सौं।—सिववख्स पाल्हावत

रू. भे.—हवद, हवदौ, हवद्द, हवद्दौ, हुदौ, हुद्दौ, होद, होदौ।

हौप, हौफ, हौफर—देखो 'होफ' (रू. भे.)

उ०—हुय बौतकारां, **हौफरां** धर अंबर धरहर धरधरा।—सू. प्र.

हौफरणौ, हौफरबौ—देखो 'होफरणौ, होफरबौ' (रू. भे.)

उ०—सेलां हियां दुसार, लोह वाहै लालरता। वीखरता वाबरां भ्रगुट फाटां **हौफरता**।—सू. प्र.

हौफरिहोड़ौ—देखो 'होफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हौफरियोड़ी)

हौम—देखो 'होम' (रू. भे.)

हौर–सं. पु.—१ भय, त्रास, आतंक।

उ०—हिय मैं न मावै **हौर**, कावली कुरांनिन कै। त्रसित तुरांनिन कै थंड थहरत है।—किसोरदांन वारहठ

२ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

हौल–सं. पु. [अ.] १ भय, त्रास, आतंक, धाक।

उ०—१ सूतौ थाहर नींद सुख, सादूळौ बळवंत। वन कांठै मारग वहै, पग पग **हौल** पड़ंत।—बां. दा.

उ०—२ दळ गयंद टाळा दियै, वाघ तणी वघवाह। **हौल** पड़ै प्रसणां हियै, गहन 'पतौ' गजगाह।—किसोरदांन वारहठ

२ गड्डा, खड्डा, खाडा।

उ०—१ वैरियां री फौज रै म्हारौ पती जावतां ही दुसमणां री छाती मैं **हौल** खाडा पड़ण ढूक जावै।—वी. स. टी.

उ०—२ तोपां री अवाज री तौ धरती ऊपरै दरजां **हौल** पड़ै पहाड़ां रा सिर टूंक गोळां री झाट सूं टूट टूट पड़ै।—वी. स. टी.

३ बेचैनी, घबराहट।

हौलदिल–सं. पु.—१ दिल धड़कने का रोग विशेष।

२ उन्माद रोग।

३ देखो 'हौलदिलौ' (रू. भे.)

हौलदिलौ–वि.—१ बुजदिल, डरपोक, कायर।

२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर।

रू. भे.—हौलदिल।

हौळी—देखो 'होळी' (रू. भे.)

उ०—**हौळी** फागां जेम खागां उनंगी 'पीथळै' हाडै, हिलौळी फिरंगी सेना पैंतीस हजार।—जसौ आढौ

हौळू—देखो 'होळै' (रू. भे.)

हौळे, हौळै—देखो 'होळै' (रू.)भे.

हौळै—देखो 'होळै' (रू. भे.)

उ०—१ असवार लाख एक री जोड़ि करि तुंगा जुदा-जुदा क[illegible] नै कह्यौ, कोई बूझै तौ कहिज्यौ, अनंतराय सांखळा रा चाकर [illegible] भाई-भतीजां रा छां। इसौ वहिनौ करि **हौळै-हौळै** कोई क[illegible] कोई कठी होय जेहाजां बैस नै कोई सोबत रौ मिस करि चा[illegible] होयनै बेगा आय भेळा होज्यौ।—कहवाट सरवहियै री वात

उ०—२ पण मा आधी ऊभी-ई आंगली फेरी, जकैनै देख' सैरा-सै चुप हुयग्या अर **हौळै-हौळै** एक-बीजै-नै सैन-सूं कैयौ— देखै है भला, मा देखै है भला।—वरसगांठ

हौळोळणौ, हौलोळबौ—देखो 'हिलोड़णौ, हिलोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—तठै महावेळ खाड़ी रै कनारै जळ री **हौलोळियौ** संदरै [illegible] महावीर मोटौ मछ आय पड़ियौ।

—कल्यांणसिंघ वाढेल नगराजोत री व[illegible]

हौवणौ, हौवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—कहीयां माया संपजै, मन सु जांण्यां ब्रह्म। हरीया [illegible] मुख तैं, उदग्या सेती ध्रम।—अनुभववांणी

हौवणहार, हारौ (हारी), हौवणियौ—वि०।

हौविओड़ौ, हौवियोड़ौ, हौव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हौवीजणौ, हौवीजबौ—भाव वा०।

हौवा–सं. स्त्री.—१ वह पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम ([illegible]) के साथ उत्पन्न की गई, जो मनुष्य जाति की आदि माता जाती है। (मुसलमान)

सं. पु.—२ एक काल्पनिक भयंकर जंतु जिसका उल्लेख बच्चों डराने-धमकाने व नियन्त्रण में लाने के लिया जाता है।

रू. भे.—हौआ।

हौस—देखो 'होस' (रू. भे.)

उ०—उण दिन साची वात कह्यां राज रा कांई हवाल व्हैता कांई नीं व्हैता, पण सोळै वरसां पछै आ वात सुण्यां राजाजी रा **हौस** उडग्या।—फुलवाड़ी

हौसनाइक, हौसनाक, हौसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू. भे.)

उ०—जोख नोख गुलजार, कलावूंतां बणि कम्मळ। तरह [illegible] तारीफ, **हौसनायक** झाळाहळ।—सू. प्र.

हौसलामंद—देखो 'होसमंद' (रू. भे.)

हौसलौ—देखो 'होसलौ' (रू. भे.)

उ०—पण धनवंती सेठ-साहूकारां रा तौ उण परवांनां पछै हौ[illegible] इज गुम व्हैगा हा।—फुलवाड़ी

ह्यां–अव्यय—यहां, यहां पर।

उ०—तुम **ह्यां** ही रहौ रांम रसिया, थारी सुरति (मैं) बसियां।—मीरां

ह्यांकी–सर्व—१ मेरी। (अमरत)

२ इनकी।

उ०—रोहितास तणैं हित नंनुराव। तप मुत सुदेव तपभांण ताव।—सू. प्र.

ह्रिदय, ह्रिदै, ह्रिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ हे नग्नवनी म्हैं म्हारा ह्रिदय में मन री जांणी उक्ती लायौ हूं·······।—वी. स. टी.

उ०—२ रांम कहंतां रे ह्रिदा, सहजां होय सयांण। जै तूं गुण जांणै नहीं, पूछव वेद पुरांण।—ह. र.

उ०—३ गिरंकंध अंबा ह्रिदै अगिआंनं, मरै मारै जांणै जिकै अभिमांनं।—वचनिका

ह्रींकार—सं पु. [सं.] बीजाक्षर।

उ०—जिम अक्षर माहि उंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधरव माहि तुवर छत्रमाहि मेघाडंबर ·······।—व. स.

ह्री—सं. स्त्री. [सं.] १ लज्जा, लाज, शर्म।

२ नम्रता, शिष्टता।

३ मदिरा, शराब। (अ. मा.)

४ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म की पत्नी।

ह्रीबेर—वि.—नेत्रवाला। (डि. को.)

ह्रीहत, ह्रीह्रत—वि.—[सं. ह्रीहत] निर्लज्ज, बेशर्म।

उ०—हे सविता कविताअत ह्रीहत, मूसलपै घ्रत ज्यूं मुरझायौ।

—ऊ. का.

ह्लादिणी, ह्लादिनी—वि. स्त्री. (सं. ह्लादिन्) १ प्रसन्नकारक, हर्षप्रद।

२ देखो 'ह्लादनी' (रू. भे.)

ह्वां—अव्यय—वहां।

ह्वाल—देखो 'हवाल' (रू. भे.)

उ०—हरीया अपनै ह्वाल में, खलक फिरै खुसीयाल। होसी खालिक बाहिरौ, हैंदू तुरक बेहाल।—अनुभववांणी

ह्वैसणियापांन—सं. पु.—समुद्र देश का एक पान विशेष।

ह्वै—अव्यय—१ स्वीकृतिसूचक अव्यय, हां।

२ है।

ह्वैणौ, ह्वैबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नवौ जन्म लै कुंड कंठीर न्हावे, महासुद्ध ह्वै मुद्ध मा नूं नमावै।—मे. म.

उ०—२ नवै मंछ कवि ह्वै तिकै दवावैत विध दोय। एक सुद्ध बंध होत है, एक गद्दबंध होय।—रा. रू.

उ०—३ मुगलनी पछै हकीकत मारी। ह्वै है पति बंदगी हमारी।

—रा. रू.

ह्वैयोड़ौ—देखो 'होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ह्वैयोड़ी)

